DESH DOOT

1947 G. K. U.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

080344

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

~~RT-475~~

~~0804~~

080344

Stock Verification-2[redacted]

Stock Verification-2[redacted]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या पुस्तिकालय
गुरुकुल कांगड़ी.

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

र, २८ दिसम्बर, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 28th December, 19

080344

080344

के बाद भारतीय रेलवे।
श्री पुरुषोत्तमदास टंडन।

ख्वाजा नाजिमुद्दीन प्रधान मंत्री, पूर्वी बंगाल (पाकिस्तान)

श्रीमालवंकर, भारतीय यूनियन पार्लामेंट के स्पीकर चुने जाने के बाद अधिवेशन के अवसर पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूँकि बुरी श्वाँस भी व्यापारिक और सामाजिक असुविधाओं में से है, इसलिए मैं कोलगेट डेण्टल क्रीम से दिन में कम से कम दो बार अपने दाँतों को साफ करता हूँ।

कोलगेट डेण्टल क्रीम—बिना किसी प्रकार की हानि पहुँचाये हुए दाँतों के पर्तों को साफ करता और मसूड़ों को नर्म रखता है। कोलगेट के छेदों में प्रवेश करनेवाले फेन आपके दाँतों के दरारों के भीतर घुसकर खाद्य पदार्थों के उन अंशों को हटाने में मदद करते हैं जिनसे श्वाँस में दुर्गन्धि पैदा हो जाती है।

कोलगेट डेण्टल क्रीम का आज ही से नित्यप्रति बार बार इस्तेमाल करना शुरू कर दीजिए यह नोट कर लीजिए कि यह दाँतों को वास्तव में किस प्रकार पूर्ण रूप से साफ और चमकदार बना देता है तथा मसूड़ों को स्वस्थ और श्वाँस को किस प्रकार मधुर कर देता है।

DC 4

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

'मंजरी'

जनवरी १९४८ से प्रकाशित होगी

- तिरङ्गा और मोहक आवरण, दर्जनों चित्र और कलापूर्ण छपाई,
- हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कहानी-लेखकों और अन्य प्रान्तीय भाषाओं की कलात्मक कहानियाँ,
- कथा-साहित्य के क्रम-विकास पर गम्भीर समीक्षात्मक लेख,
- कथा-साहित्य के नवीन प्रकाशनों की निष्पक्ष समीक्षा,
- मासिक कथा-साहित्य का सिंहावलोकन।

दिसम्बर के अन्त तक ग्राहक और एजेण्ट हो जानेवालों की प्रतियाँ सुरक्षित रहेंगी। इसके बाद होनेवाले ग्राहकों और एजेण्टों को 'मंजरी' का पहला अङ्क दुर्लभ रहेगा। वार्षिक मूल्य ६) रु० और प्रति अङ्क ॥) आने।

प्रथमांक के कुछ आकर्षण

औपन्यासिक सम्राट् वृन्दावनलाल वर्मा
चक्रवर्ती राजगोपालाचारी
कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी
उपादेवी मित्रा
होमवती देवी
विष्णु प्रभाकर
शम्भुरत्न मिश्र 'मुकुल'
डाक्टर ब्रजमोहन गुप्त, एम० ए०, डी० फिल०
कृष्णचन्द्र शर्मा, एम० ए०, एल्-एल० बी०

सम्पादक
देवीदयाल चतुर्वेदी

प्रकाशक
इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

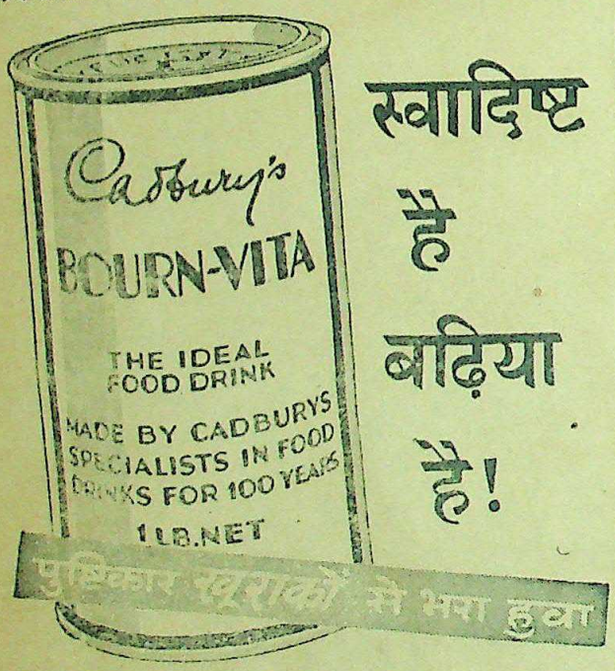

स्वादिष्ट है बढ़िया है!

'बोर्न-विटा' में हड्डी बनाने और ताक़त देनेवाले उपादन ९५ सैकड़ा से अधिक ही होते हैं। साथ ही साथ यह ऐसा मज़ेदार होता है कि इससे हाज़मा तेज़ हो जाता है और यह आसानी से हज़म भी हो जाता है। ख़ास तौर पर गर्भ और स्वास्थ्य लाभ के दिनों में।

के. डबलीका

निश्चित रूप से

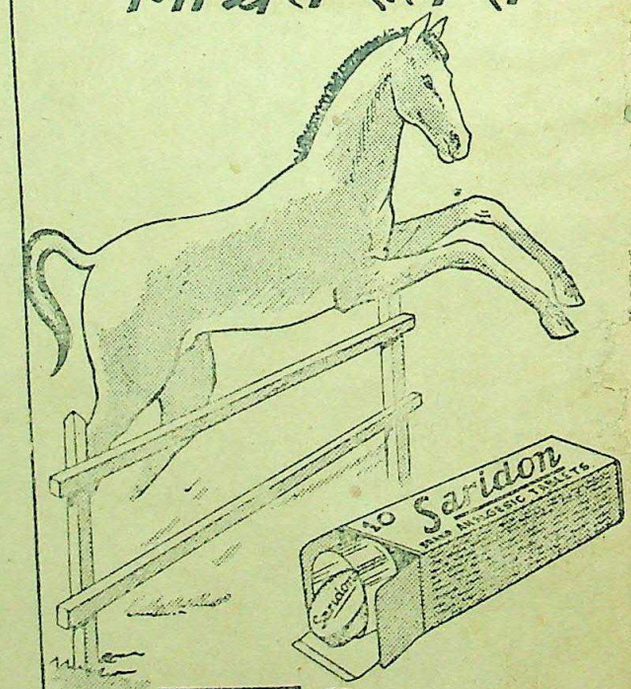

सारिडन

सरका दर्द शीघ्र दूर करता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष १०, संख्या १७] [रविवार, १४ दिसम्बर, १९४७

प्रसिद्ध लिबरल नेता डाक्टर सच्चिदानन्द सिनहा का कहना है कि जब तक एक राष्ट्रभाषा का विकास नहीं होता है तब तक अँगरेजी में ही भाषण किया जाना चाहिए। अपने राम की राय में अगर इसी आदर्श का पालन किया जाता तो भारत को स्वतन्त्रता शायद ही मिल पाती। क्योंकि म हिन्दू-मुस्लिम एकता होती और न अँगरेज भारत को स्वराज्य प्रदान करते। बात तो असल यह है कि अँगरेज तो भारत से चले गये लेकिन अँगरेजियत के गुलाम अभी पुरानी ही रफ़्तार पर चले जा रहे हैं। समझने की बात है कि अगर हिन्दी ही में भाषण किया जाये तो कौन गठरी छिन जाने का भय है? अँगरेजी में भाषण करने की भूख अगर पिछले सौ वर्ष के अँगरेजी राज्य से नहीं दूर हुई है तो भारत के स्वतन्त्र हो जाने पर वह कैसे दूर हो सकती है?

* * *

सरदार बल्लभभाई पटेल को अपने कटक और नागपुर के दौरे में अभूतपूर्व सफलता मिली है। उड़ीसा और छत्तीसगढ़ के राज्यों और राजाओं ने अपनी इच्छा से ५६ हजार वर्गमील भूमि का शासन भारत सरकार को सौंप दिया है। संयुक्त उड़ीसा, मध्यप्रान्त तथा बरार की भूमि अब बहुत बढ़ गई है। समय की पुकार सचमुच इसी प्रकार सुनी जाती है। लेकिन अभी डेढ़ चावल की खिचड़ी पकानेवाली छोटी-बड़ी रियासतें कई हैं, देखना है उन्हें सुबुद्धि कब आती है? हैदराबाद तो तिकड़म कर ही रहा है, काश्मीर को पाकिस्तानी हड़प करने की ओर लगे ही हुए हैं। समय की घंटी बज रही है, सुननेवाले क्रियात्मक कदम उठा रहे हैं लेकिन बहरे या सुनकर भी टालनेवाले अपना दिन गिन रहे हैं। कौन किधर जाता है, इसी की प्रतीक्षा है।

* * *

सीमाप्रान्त में विद्रोह का ज्वालामुखी सुलग रहा है, यदि मुस्लिम लीगी सरकार ने रवैया न बदला तो वह फट पड़ेगा। कयूम-मंत्रिमंडल के विरुद्ध जनता बगावत करने को तैयार है। अपने राम की समझ में बात आती है और सही भी है लेकिन मुस्लिम लीगियों तथा पाकिस्तानियों को क्या? पाकिस्तान के मालिक तो अँगरेज हैं, जो कुछ वह चाहेंगे वही होगा। जिन्ना-एण्ड कम्पनी ने तो पाकिस्तान की व्यवस्था अँगरेजों को सौंप दी है और उन्हीं के कहने से पाकिस्तान बनाया भी गया है। इसलिए वहां जो चाहे सो फट जाये, बला से, ज्वालामुखी नहीं पहाड़ फट जाये। जिसकी खेती है वह देखेगा, कयूम एण्ड कम्पनी तो अँगरेजों के मोस्ट ओबीडियेंट सर्वेन्ट हैं।

* * *

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के समझौते के लिए वार्तायें बहुत होती हैं, कमेटियां भी बनती और बिगड़ती हैं लेकिन कुछ परिणाम नहीं दिखाई देता। अपने राम की समझ में यही आता है कि परिणाम कुछ हो तो कैसे हो, हिन्दुस्तान का शासन चलता है जनता के बल पर और पाकिस्तान का शासन लदा है अँगरेज शासकों पर। फिर समझौता हो तो कैसे हो? मियां लियाकत अली समझौता शासक कान में तेल डालकर अपनी अलग खिचड़ी पकाते हैं। इसलिए समझौता कब और कैसा होगा इसे तो खुदा जाने लेकिन हिन्दुस्तान को अपने बल पर आगे बढ़ाना है, तभी कल्याण होगा, समझौता और झूठी एकता की दुन्दुभी तो [illegible] वर्ष से बजती आ रही है।

* * *

सरदार बलदेवसिंह ने एक वक्तव्य में बतलाया है कि आगामी १ अप्रैल से भारत के प्रधान सेनापति का स्थान किसी हिन्दुस्तानी को सौंपा जायेगा। संवाद तो बड़ा ही शुभ है किन्तु अप्रैल की १ तारीख माकूल नहीं है। जनरल सर आकिनलेक तो चले ही गये जिन्होंने बड़ी लम्बी-लम्बी लड़ाइयां लड़ी थीं, देखना है अब कौन से भारतीय के सर प्रधान सेनापति का सेहरा मढ़ा जाता है? अपने राम जानते हैं कि पाकिस्तान की स्थापना से हिन्दुस्तान के लिए भावी खतरा तो है ही इसलिए प्रधान सेनापति जरा तगड़ा व्यक्ति चाहिए। रामाय स्वस्ति और रावणाय स्वस्ति वाला नहीं। 'नेशनलिस्ट' होना तो और भी खतरे से खाली नहीं।

* * *

'नेशलिस्ट' होना भी आज के भारतीय जगत् की एक सामयिक 'फिजां' है। सचमुच अगर मुसलमान 'नेशलिस्ट' होता है तब तो किसी को नूनच करने की गुंजाइश ही नहीं किन्तु अगर पाकिस्तानी बुरके में वह 'नेशलिस्ट' बना रहा तब तो भगवान् ही रक्षक है। अपने राम जानते हैं कि बिना साम्प्रदायिक एकता के अथवा साम्प्रदायिकता के पराभव से राष्ट्र का उद्धार होनेवाला नहीं है लेकिन अवसरवादियों के लिए कहा ही क्या जा सकता है? हलुआ खाने के लिए तो इस राशनिंग के जमाने में मुर्दे भी जिन्दा बन जाते हैं, फिर अवसरवादी मुसलमान 'नेशलिस्ट' बनकर अगर कमाते-खाते हैं तो क्या बुरा? पाकिस्तान का भूत मुसलमानों के के सर से धीरे-धीरे गायब हो रहा है और वह समय आनेवाला है जब कि मुसलमानों को 'नेशलिस्ट' बनने की गुंजाइश ही नहीं रह जायेगी। फिर भी एक अवसरवादी नेशलिस्ट पाकिस्तानी से भी बदतर है।

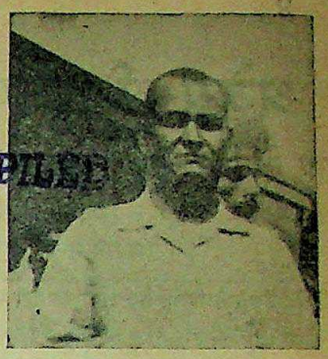

बंबई में होनेवाले हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के अध्यक्ष महापंडित राहुल सांकृत्यायन

इसलिए 'नेशनलिस्टों' को सावधान होना चाहिए।

* * *

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के अल्पसंख्यकों की समस्या को हल करने के लिए एक संयुक्त सभा होनेवाली है। जरूर होनी चाहिए। अल्पसंख्यकों के सत्त्वों की रक्षा करने का यही एक असली ढंग है। अँगरेजी शासन सदा से राष्ट्र के प्रमुख प्रश्नों को सभा-समितियों और कागजी लिखा-पढ़ी के गड़बड़-झाले के सिपुर्द करता आया है और वह रवैया आज भी जारी है। देखना है अल्पसंख्यकों की नैया किस घाट लगती है?

* * *

महात्मा गांधीजी की विश्व-विख्यात बकरी 'निर्मला' का सेवाग्राम में देहान्त हो गया है। जिस नीम के वृक्ष की दातून स्वर्गीय कस्तूरबा किया करती थीं उसी वृक्ष के नीचे 'निर्मला' को दफनाया गया है। मृत्यु के समय इस बकरी की उम्र केवल सात वर्ष की थी। किन्तु इसी अल्पकाल में इस बकरी ने देश-विदेश के अनेक राजपुरुषों, नेताओं, ब्रिटिश तथा अमेरिकन पत्रकारों तथा प्रतिनिधि मण्डलों की मुलाकात ली थी। गांधीजी से मिलने आनेवाले बड़े-बड़े व्यक्ति इस बकरी की पीठ पर हाथ थपथपाये बिना नहीं रहते थे। जब कांग्रेस वर्किंग कमेटी की गुप्त बैठकें होती थीं तब यह बकरी बिना हिचकिचाहट अन्दर आ जाती थी। कस्तूरबा जब झुककर कोई काम करती रहतीं तो उन पर छलांग मारे जाने में इसे आनन्द आता। एक बार यहां इतनी जोर से में-में करने लगी थी कि पण्डित नेहरू इस पर बुरी तरह बिगड़ उठे थे। गांधी जी को इसका दूध बहुत ही प्रिय था।

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

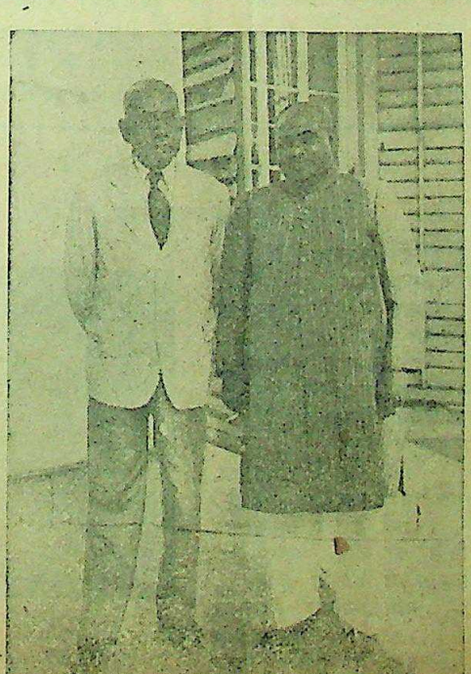

वह [illegible] फासले प[illegible] सुनसान, छोटी सड़क बा[illegible]

प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू माननीय [illegible] राजगोपालाचार्य से बातें कर हैं।

पश्चिमी बंगाल के भूतपूर्व गवर्नर सर श्री० एल० मित्तर और ख्वाजा नाजिमुद्दीन प्रधान मंत्री, पूर्वी बंगाल (पाकिस्तान)

श्रीमालवंकर, भारतीय यूनियन पार्लामेंट के स्पीकर चुने जाने के बाद अधिवेशन के अवसर पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धेय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन

राष्ट्र के लिये त्यागी और तपस्वी जीवन की एक झाँकी

लेखक, श्री मौलिचन्द्र शर्मा
(प्रधान मन्त्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन)

श्रद्धेय टंडनजी हिन्दी संसार की ही नहीं राष्ट्र की एक महान् विभूति हैं। आपका तपस्वी और त्यागी जीवन प्रत्येक भारतीय के लिये आदरणीय है। इस लेख में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्रधान मन्त्री ने श्रद्धेय टंडन जी के जीवन का एक सुन्दर चित्रण किया है, जो पठनीय तथा अनुकरणीय है।

आज से ५० वर्ष पूर्व सारे उत्तर-भारत में सरकारी दफ्तरों व कचहरियों आदि में कहीं हिन्दी का नाम तक न था। अरबी लदी और फारसीनिष्ठ उर्दू सब जगह प्रतिष्ठित थी। पट से पेशावर तक इसी का चलन था। जहाँ वकील अदालतों में वह सजावटी—मुरस्सर—उर्दू बोलते और लिखते थे, जो १००० में से ९९९ देशवासियों के लिये एकदम दुर्बोध थी। सभ्य नागरिक आपस में मिलते, तो आदाब अर्ज से आरम्भ कर बहुत करके खुदा हाफिज पर समाप्त करते। एक दूसरे के घर-बार की बातचीत पूछते, तो वालिद साहिब और हमशीरा साहिबा, बरखुरदार अजीज, अजदाद की झड़ी लग जाती। बड़े बच्चों को उपदेश देते, कि "शीन काफ से दुरुस्त" जबान बोलना सीखें। स्वीकारों और विवाहादि तक में, राजलें माना सभ्यता का चिन्ह माना जाता। भाव-भरे पुराने हिन्दी-गीत तो गँवारू समझे जाते थे। आज से ४० वर्ष पूर्व, बचपन में जब मैंने मदरसे में फारसी की जगह संस्कृत पढ़ने का आग्रह किया तो हमारे मुहल्ले के अनेक सज्जनों ने मेरे पिता तथा अन्य गुरुजनों को बड़ी सहानुभूति पूर्वक समझाया, कि लड़के की जिंदगी बरबाद न करें। बिना फारसी पढ़े उर्दू पर कुदरत हासिल नहीं होती; और बिना उर्दू जाने, क्या बगल में पोथी दबाकर, कथा बाँचता फिरेगा? परन्तु जब वे न माने और मैं और अनेक लड़कों सहित उर्दू पढ़ने लगा, तो वे दया और आश्चर्य-भरी निगाहों से हमें बर्बाद होता देखते, और जब कभी अन्तर उबल ही पड़ता, तो हाथ फैला कर कहते—'बेटे, पछताओगे!'

ऐसे घोर समय में जिन लोगों ने हिन्दी-भाषा की रक्षा और प्रचार का काम किया उन्होंने इस राष्ट्र के निर्माण में कितना बड़ा भाग लिया, यह हम लोग अब आंक सकते हैं।

इस क्षेत्र के अनेक कार्यकर्त्ताओं में से आज जो हमारे बीच वर्तमान हैं, उनमें सबसे बड़ा नाम है श्री श्रद्धेय बाबू पुरुषोत्तमदास जी टण्डन का। हिन्दी-आन्दोलन को नियमित रूप से एकाग्र मन से अपना प्रबल ध्येय बनाकर, संगठित करने और चलाते रहने का श्रेय, अकेले श्री टण्डन जी को है। सम्मेलन उनकी एकनिष्ठ तपस्या का फल है।

हिन्दी-प्रचार का काम तो, अनेक क्षेत्रों में, अनेक प्रकार से चल रहा था। उसके पीछे राष्ट्रीय जागरण की लहर थी। धार्मिक-क्षेत्र में, आर्य-समाज और सनातन धर्म-सभा आदि, हिन्दी और संस्कृत का प्रचार करती थीं। स्कूल, कालेजों में भी, संस्कृत-हिन्दी का पठन-पाठन बढ़ रहा था। स्थान-स्थान पर हिन्दी-प्रचार की संस्थाएँ काम कर रही थीं। हिन्दी के समाचारपत्र आदि निकलने को थे और अच्छी उन्नति कर रहे थे। कलकत्ता और बम्बई में हिन्दी के पत्र और पुस्तक-प्रकाशन का काम आरम्भ हो गया था। तुलसी, सूर तथा पुराणों और महाभारत के हिन्दी के अनुवाद सहस्त्रों की संख्या में गाँवों में फैल रहे थे। फिर भी सार्वदेशिक-संगठन के रूप में हिन्दी-प्रचार का कार्य सम्मेलन द्वारा ही हुआ, और उसकी चक्की चलाने का कार्य श्री टंडन जी ने ही किया है। सम्मेलन का नाम आते ही, श्री टण्डन जी की भव्य मूर्ति आँखों के सामने आ जाती है। वे और सम्मेलन अभिन्न हैं।

टण्डन जी ने देश के उत्थान में हिन्दी का स्थान पहचाना, और इसी के लिए अपना जीवन अर्पण कर दिया। आज सम्मेलन जो कुछ है अब तक वह जो कुछ कर सका है, हिन्दी जिस ऊँचे स्थान पर पहुँच रही है, इस सबका बड़ा श्रेय इन महापुरुष को ही है।

टण्डन जी कर्मयोगी हैं। थोड़ा-सा भी जो उन्हें जानता है, वह जानता है कि अपने जीवन में कितनी सादगी, तस्तापन वे बरतते हैं। उनकी एक पुरानी लोई है, जिसे वे जाड़ों में ओढ़ते हैं। उनके किनारे घिसे देर हुई। अब उन पर सूती गोट लगवा ली गई है। खादी की धोती फट जाती है तो उसकी बंडियें और रूमाल बनवा लिये जाते हैं। वे अपने ऊपर खर्च नहीं करते।

उनके भोजन के भी कुछ विचित्र नियम हैं। वे दूध या दूध से बनी कोई वस्तु नहीं लेते। कहते हैं—"मैं शाकाहारी हूँ, यह पशुजन्य वस्तु मेरा खाद्य नहीं हो सकती। गौ का दूध, गोवत्स के लिए है, मेरे लिए नहीं।" अतः मक्खन और घी भी वे नहीं लेते। कभी चिकनाई चाहिए तो तेल लेते हैं। नमक भी वे नहीं खाते—वह खनिज और पार्थिव है, मनुष्य का भोजन नहीं। चीनी भी वे नहीं लेते। चीनी बनाने में मीठे के अनेक गुणकारी तत्त्व नष्ट हो जाते हैं। वह केवल स्वाद की वस्तु है—भोजन नहीं। अतः मीठे की चाह होने पर, गुड़ या शक्कर लेते हैं। मिर्च, खटाई, मसाला राजस भोजन है। वे भी त्याज्य हैं। अब सोचिए, उनका भोजन कैसा होता होगा। दूध, मक्खन, घी, चीनी, नमक, मिर्च, खटाई, मसाला छौंक सब वर्जित। उबले हुए बिना नमक, मसाले के शाक, कभी गुड़ का मीठा, सूखे फुलके, सूखे दाल-चावल। और यह भोजन वे निरंतर ३० वर्ष से करते आ रहे हैं। इस तितिक्षा ने उनके मानस में आर्य दृढ़ता पैदा की है। फल खाकर टण्डन जी प्रसन्न होते हैं। दाख और बादाम भी उन्हें प्रिय हैं, परन्तु समय पर और थोड़े से। चाय वे नहीं पीते जब तक कोई कारण न हो। मैंने एक दिन "काफी" के लिए आग्रह किया तो ले ली। यह उनका प्रेम था। कभी औषधि के रूप में पान भी लेते हैं; परन्तु कत्था-चूना लगाकर नहीं, सादे पत्ते लेकर चबा जाते हैं। देखकर आश्चर्य-सा होता है।

पहनते हैं वे खादी; और जैसा पहले ही बताया, कपड़े को वे तब तक नहीं छोड़ते, जब तक तार-तार न हो जाये। जूते भी किरमिच के पहनते हैं। चमड़े के लिए पशुओं की हत्या की जाती है, इसी कारण वे चमड़े का व्यवहार नहीं करते।

टण्डन जी बड़े दृढ़ हिन्दू हैं। वे उन दुर्बल-हृदय राष्ट्रवादियों में से नहीं हैं, जिन्हें हिन्दू कहलाते डर लगता है। गंगा-स्नान कर वे बड़े प्रसन्न होते हैं। मैं कई दिन प्रयाग रहकर भी रोगी होने के कारण गंगा स्नान करने न गया तो टण्डन जी को आश्चर्य हुआ।

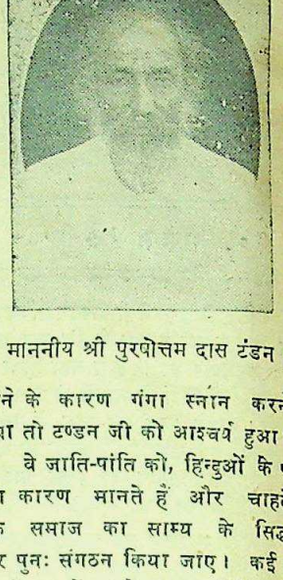

माननीय श्री पुरुषोत्तम दास टंडन।

वे जाति-पांति को, हिन्दुओं के पतन का कारण मानते हैं और चाहते हैं कि समाज का साम्य के सिद्धान्त पर पुनः संगठन किया जाए। कई बार उनके मन में यह प्रेरणा आती है कि अब शेष जीवन हिन्दू-समाज के उद्धार में लगा दें। यदि हिन्दी उत्तर-भारत के समाज की मातृभाषा और देश की राष्ट्र-भाषा के रूप में प्रतिष्ठापित हो जाये; और इस काम से देश उन्हें निश्चित कर दे तो वे निःसन्देह हिन्दू-समाज के नव-संगठन का कार्य उठावेंगे।

राजनीति में उनका एक विशेष स्थान है। वे शुद्ध राष्ट्रवादी हैं। उनकी राष्ट्रीयता किसी के सामने झुकना नहीं जानती। उन्हें अपने ऊपर विश्वास है; और जहाँ उनकी बुद्धि एक बात को स्वीकार नहीं करती, वहां वे अपना मत दबा कर नहीं रखते। हिन्दी के विषय में महात्मा गांधी के विरोध में खड़े होना उनके नैतिक साहस और दृढ़ता का उदाहरण है। इसी प्रकार मुस्लिम तुष्टि और अहिंसा-सिद्धान्त के राजनीति में स्थान-प्रयोग का खुला विरोध कर, इस समय उन्होंने, देश का महान् उपकार किया है। इस वर्ष में कई बार अ० भा० कांग्रेस कमेटी में, उनकी अकेली आलोचनात्मक गूँज का तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत हुआ है। परन्तु जब मतगणना का समय आया, तब तालियाँ बजाने-वालों के हाथ टण्डन जी के पक्ष में न उठ सके। यही है, तंत्री जीवन की विडम्बना।

टण्डन जी के लिए, सार्वजनिक जीवन सेवा का क्षेत्र है। यश-प्राप्ति का साधन नहीं। पिछले दो वर्षों में युक्त-प्रान्तीय असेम्बली की प्रमुखता उन पर भार-सी रही है। न जाने कितनी बार उन्होंने इस भार को उठा-उठाकर फेंका है। यदि उनके स्वच्छन्द जन-सेवा के पक्ष में यह व्याघात सिद्ध हो, तो उन्हें यह नहीं चाहिए। लोकतंत्र के इतिहास में यह पहला उदाहरण है, कि सभा-प्रमुख राजनीति में भाग लेता रहे। यह उन्हीं का उदात्त चरित्र है, जिसके कारण यह सम्भव हुआ है, कि एक ओर कांग्रेस की—जिसके हाथ में शासन है—करारी आलोचना और दूसरी ओर मुस्लिम-लीग का घोर विरोध करते हुए भी वे सभा का—प्रत्येक सदस्य का—पात्र रह सके। वे हमारे सार्वजनिक जीवन में अद्वितीय स्थ...

गीत

लेखक, श्री नर्मदाप्रसाद खरे

कौन मधुरस घोलता है?
बाल रवि में मुसकुराता
हास भू पर आंकता-सा
विहग-स्वर में गा प्रभाती
हर दिशा से झांकता-सा,
राग रञ्जित कर-निकट से
कमललोचन खोलता है।
मिलन की मनुहार लेकर
मदिर मन में झूमता-सा,
सजल श्यामल मेघ से झर
अर्घ्य दे पद चूमता-सा,
दामिनी का दीप लेकर
गगन-पथ में डोलता है।
यूथिका-यौवन खिलाकर
सुरभि से जग लीपता-सा,
इन्दु में साकार होकर
तारकों में दीपता-सा,
[illegible] कर [illegible] बोलता है।
कौन मधुरस घोलता है?

CC-0. Vasishtha Tripathi Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिए

पंजाब का भयंकर हत्याकाण्ड

अराजकता, हत्या और लूटमार का एक रोमांचकारी वर्णन

लेखिका, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

[३]

पंजाब में होनेवाले गत हत्याकाण्ड का भारत के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान है। दंगों से पीड़ित क्षेत्रों की दुर्दशाग्रस्त जीवन श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ने अपनी आँखों देखा था और शरणार्थियों की सेवा के लिये अनेक स्थानों का निरीक्षण भी किया था। इसलिये इस लेख में जो कुछ लिखा गया है, उसमें वास्तविकता तो है ही, साथ ही हृदय को विचलित करनेवाली मार्मिक वेदना तथा पीड़ित भावना का चित्रण भी है। इस लेखमाला के दो लेख गत २० जुलाई और १० अगस्त के 'देशदूत' में छप चुके हैं। यह तीसरा है। डाक की गड़बड़ी से यह लेख हमें देर में प्राप्त हुआ है। लेख पठनीय और सुन्दर है।

इस लेख की लेखिका श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

पंजाब में जो कुछ हुआ उसमें रोने की सामग्री बहुत है। परन्तु कुछ ऐसी घटनाएँ भी घटी हैं जिनसे इस अँधेरे में प्रकाश की झलक दिखाई देती है। मुझे इस बात का गौरव है कि इन घटनाओं में स्त्रियों का बहुत ऊँचा स्थान है। यह दो प्रकार की हैं एक तो हिन्दू-सिक्ख स्त्रियों द्वारा किया गया अल्प बलिदान जो उन्होंने अपने सतीधर्म और मान-रक्षा के लिए किया। दूसरा मुसलमान, स्त्रियों का अपनी हिन्दू और सिख बहनों के साथ वह प्रेममय कर्त्तव्य-पालन जो उन्होंने जान को खतरे में डालकर किया।

१८ मार्च को अमृतसर में मैंने पहली बार सुना कि रावलपिण्डी में ४० सिख बहनों ने कुएँ में कूदकर आत्मघात कर लिया। ४० बहनों ने एक साथ ऐसा किया इसका विश्वास आना कुछ कठिन था। मैं समझी किसी एक दो ने ऐसा किया होगा बात बढ़ गई है। १-२ की ३०-४० बन गई है; उनकी जो कुछ मैंने स्वयं आंखों से जाकर देखा उससे मालूम हुआ कि जो कुछ सुना था वह उससे बहुत कम था जो वास्तव में हुआ। मैं नीचे अपने एक दो अनुभव लिखती हूँ—रावलपिण्डी पहुँचकर मुझे इस बात की प्रबल इच्छा हुई कि वहां के जिन गांवों में यह दुर्घटना हुई थी उनको मैं आंख से देखूं। मैंने रिलीफ कमेटी के सेक्रेटरी से प्रार्थना की कि वह मेरा और मेरे साथ की बहनों के गांव जाने का प्रबन्ध कर दें। सेक्रेटरी ने कहा—उन गांवों में अभी तक लाशें पड़ी सड़ रही हैं, मनुष्यों की हड्डियां और खोपड़ियां बिखरी पड़ी हैं, उस तरफ अभी खतरा भी काफी है। वह स्थान स्त्रियों के जाने योग्यन हीं हैं। शायद उन दृष्यों को देखकर बर्दाश्त न कर सकेंगी, मैं आपको वहां जाने की सलाह नहीं दे सकता! परन्तु हमारा निश्चय तो दृढ़ था। हमने स्वयं फौजी और दूसरे अफसरों से मिलकर जाने का बन्दोबस्त कर लिया। फौजी और सरकारी आज्ञा के बिना उन इलाकों में किसी को जाने नहीं देते थे हमको दोनों मिल गये। तीन हथियारबन्द सिपाही बन्दूकें लेकर लारी में हमारे साथ कर दिये गये। हम १०-१२ बहनें और कुछ भाई ३० मार्च को सुबह ही रावलपिण्डी से चले। सबसे पहले कोआखालसा नाम के गांव में गये। यह गांव रावलपिण्डी के २८ मील के फासले पर अटक की तरफ है। रास्ता सुनसान, सूखे सलेटी पत्थरों की छोटी-छोटी पहाड़ियों में से होकर जाता है। सड़क बहुत खराब नीचे गढ़ों और ऊपर पहाड़ों में से गुजरती है। उस समय के वातावरण में वह इलाके का दृष्य काफी खतरनाक दिखाई देता था। २-२½ घंटे के सफर के बाद हमको गांव के टूटे खँडहर दिखाई देने लगे। कोआखालसा पहुँचने पर हम गांव के भीतर या यूं कहना चाहिए कि गांव के खँडहरों के भीतर घुसे। सारे गांव में एक भी मकान साबूत न बचा था, सब जल चुके थे। गांव के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फिरे। बचे-खुचे खँडहर गांव की खुशहाली का पता दे रहे थे, सब ही मकान पक्के बने हुए थे। कुछ स्थानों पर सीमेंट-कंक्रीट के सुन्दर ऊँचे सितून बचे खड़े रह गये थे जिनसे मकानों की विशालता और सौन्दर्य का अनुमान किया जा सकता था। गांव नया बना था। दो-ढाई हजार सिखों की आबादी थी। परन्तु अब तो केवल मकानों के खँडहर, उनमें रहनेवालों की हड्डियां और खोपड़ियां और सिखों के नाजों से पाले हुए केशों का ढेर ही दिखाई देता था। खँडहरों में लोहे की पेटियों, लोहे के पलँग, बिजली के पंखे, ट्रंक और दूसरे गृहस्थी का जला-टूटा, विध्वंस हुआ सामान पड़ा था। इस सबसे मालूम होता था कि यह कोई साधारण गांव नहीं था। गांव ऊँची पहाड़ी पर बसा था, वहां से नीचे जाकर एक अच्छा विशाल बाग था जिसमें भांति भांति के फलों के वृक्ष लगे हुए थे। पास ही धान और गेहूँ की हरी-हरी खेतियां लहलहा रही थीं। चारों ओर छोटे-छोटे हरे वृक्षों से लदे हुए पहाड़ दिखाई दे रहे थे। जिस समय हम वहां पहुँचे ठंडी सुहावनी वायु चल रही थी। वहीं एक पक्की साफ-सुथरी पानी की बावली थी जिसकी तुलना शहरों के Swimming tanks तैरने के टैंकों से की जा सकती थी। दो विशाल कुएँ पक्के थे। वातावरण शान्त, दृश्य स्मरणीय और स्थान साफ-सुथरा था। आदमी तो वहां कोई दिखाई नहीं देता था, परन्तु इतना सुंदर सुथरा और व्यवस्थित मैंने पहले कभी नहीं देखा था। इस गांव के मुखिया सरदार गुलाबसिंह एक सरकारी ठेकेदार थे, जिन्होंने लड़ाई के दिनों में ठेके के काम से बहुत पैसा कमा लिया था, गांव में काफी जायदाद थी और वह पक्का विशाल कुआं जिसमें उनके कुटुम्ब की स्त्रियों ने कूदकर आत्म-हत्या की उन्हीं का, बनाया हुआ था।

घटना इस प्रकार हुई।

१२ मार्च को आसपास के दस-बारह हजार हथियारबन्द मुसलमानों ने इस गांव पर चढ़ाई की। सिख जमींदारों के मुसलमान काश्तकार पास ही कच्ची झोपड़ियों में रहते थे। उन्होंने गांववालों की रक्षा करने का वचन दिया। हमलावरों को शान्त करनेवालों के लिए पहले ७,०००) फिर १०,०००) गांववालों से लेकर दिये; परन्तु आक्रमणकारियों की मांग बढ़ती ही जाती थी। अन्त में उन्होंने गांव को लूटना शुरू कर दिया और साथ ही मकानों में आग भी लगाने लगे। गांव के काश्तकारों ने उनका साथ दिया; अब उनकी मांग थी कि इस्लाम कबूल करो नहीं जान से मार देंगे। जो लोग लुक-छिपकर गांव से भाग सके वह भाग गये। कुछ के केश काटकर उनको मुसलमान बनाया गया। शेष जो रहे वह चार दिन तक इस बात का प्रयत्न करते रहे कि अब भी किसी प्रकार समझौता हो जावे; परन्तु १६ की दोपहर तक यह निश्चय हो गया कि किसी भी शर्त पर समझौता की कोई आशा नहीं है। तब गांव के कई मुखिया नौजवानों ने अपनी ही तलवारों से एक दूसरे को और अपनी स्त्रियों को मार डाला।

गांव की सब स्त्रियां गुलाबसिंह के मकान पर जमा हो गई थीं। जब लूट-मार, आग और कत्ल उनके मकान तक आन पहुँचा तब वह सब पहाड़ी के नीचे बाग में उतर आईं। वे शब्द* बोलती और जपजी साहब का पाठ करती हुई कुएँ के पास जाकर वहां वृक्षों के नीचे आ बैठीं। जवान, बूढ़ी, बालिकाएँ बड़ी-छोटी सब एक साथ थीं। जब पास खड़े हुए मुसलमानों ने कहना शुरू किया—यह स्त्री मेरी होगी वे उसकी होगी आदि। तब यह देखते - सुनते ही सरदार गुलाबसिंह की वीर पत्नी क्रोधित होकर बोली—ऐ पापियो! मेरी इन बहू-बेटियों के पांव भी छूने की तुममें शक्ति नहीं है। यह कहकर वह ऊँचे स्वर से "सत्सरीय अकाल" का नारा लगाती हुई कुएँ में कूद पड़ीं और शेष स्त्रियों को संकेत किया वे उनका अनुकरण करें। इस बहन की आयु ५०-५२ वर्ष की थी। दयावान्, धर्मशील, अच्छी स्त्री थी जिनका प्रभाव गांव की सब बहनों पर था; बस उनकी इस शानदार आत्मबलि के प्रभाव से उनके कुटुम्ब की बहू-बेटियों और गांव की अन्य स्त्रियां खुशी से "सत श्री अकाल" बोलती हुई बच्चों को गोद में लिए हुए एक-एक करके कुएँ में कूद पड़ीं। इस बार १०५ स्त्रियों ने अपने सतीत्व और धर्म की रक्षा के लिए कोई दूसरा उपाय न रहते हुए आत्म-बलिदान किया। उनमें से कितनों के पुरुष वहां मौजूद थे जो उनको रोकते रहे; परन्तु उन्होंने एक न सुनी और यही कहा—यह समय जीने का नहीं मरने का है। मरने ही में हमारी रक्षा है। इन १०५ स्त्रियों में से २३ को पीछे जीवित निकाल लिया। ८२ स्त्रियों की लाशें उस कुएँ में आज तक पड़ी हैं।

जिस दिन हमने इस पवित्र स्थान के दर्शन किये इस घटना को १८ दिन बीत चुके थे। उन सुन्दर स्त्रियों की लाशें फूलकर ऊपर पानी की तह पर आ गई थीं। उनके रंग-बिरंगे कपड़े, काली लम्बी चोटियां साफ दिखाई दे रही थीं। दो तीन स्त्रियों की गोदों में छोटे बच्चे अभी तक छाती से चिपके दिखाई दे रहे थे। हमारी पार्टी में कोई भी स्त्री-पुरुष ऐसा नहीं था जिसकी आंखों से अश्रुओं की धारा न बह रही थी। मिलाप अखबार के मालिक महाशय खुशहालचन्द हमारे साथ थे। उन्होंने गिनकर बताया कि कुल २९ लाशें दिखाई दे रही थीं। हम देर तक खड़े न रह सके, क्योंकि दुर्गन्ध ऐसी सख्त थी कि वहां थोड़ी देर भी ठहरना असम्भव हो रहा था। हम सबने उन सती स्त्रियों को नमस्कार किया। कुछ दूर जाकर वृक्ष की छाया में हम लोग बैठ गये, उन वीर ललनाओं के इस उच्च बलिदान को सराहते रहे।

इस उज्ज्वल घटना की बात इतिहास के पत्रों में स्वर्ण के अक्षरों में लिखी जावेगी। आनेवाली नसलें उसे याद करके अपने आपको धन्य मानेंगी। यह सब तो चले और परस्पर इसकी चर्चा करते रहे। इस पवित्र स्थान पर पहुँचकर इन सतियों के दर्शन करने का सौभाग्य हमको मिला इसके लिए हमने अपने आपको धन्य माना।

* ग्रन्थ साहब के मन्त्रों को पंजाबी में शन कहते हैं।

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

गीत

लेखिका, श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा 'सुधा'

मैं विजन का फूल हूँ क्यों,
व्यर्थ सुन्दरता मिली है।
विश्व देखे या न देखे,
मौन मेरी साधना को।
सांस अन्तिम रोक सकती,
इस अथक् आराधना को।
पथ-भ्रमित कोई बटोही,
आ गया यदि राह मेरी।
पा सकेगा छांह शीतल
सुन सकेगा आह मेरी।
एक क्षण के ही लिए तो यह
हृदय-कलिका खिली है।
रात भर मैं देखती हूँ
रात भर है रात रोती।
पांच ऋतुओं की विषमता,
है सदा बरसात धोती।
धूल है अस्तित्व मेरा,
शूल में ही मैं पली हूँ।
है मुझे विधि ने सँवारा, किन्तु विधि से ही छली हूँ।
एक गहरी सांस के ही, छल जीवन की हिली है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदराबाद का स्वातंत्र्य आन्दोलन

निजाम का भारतीय संघ में शामिल होना जरूरी है

लेखक, श्री त्रिलोकीनारायण दीक्षित, एम० ए० (रिसर्च स्कालर)

हैदराबाद अभी तक भारतीय सङ्घ में शामिल नहीं हुआ है। हैदराबाद की जनता निजाम के साम्राज्यवादी तथा पाकिस्तानी प्रवृत्ति से परेशान हो उठी है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने हैदराबाद के जन-आन्दोलन पर दृष्टिपात करते हुए प्रमाणित किया है; शासन-सूत्र जन-सत्तात्मक हाथों में आना अत्यन्त आवश्यक है। लेख सामयिक तथा पठनीय है।

पन्द्रह अगस्त भारतीय राजनीति में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दिवस है। बरसों के अनवरत संघर्ष, सहस्रों वीरों तथा अपने लाड़ले रत्नों का बलिदान देकर अन्त में भारतमाता स्वतन्त्रता के प्रकाश से इसी पन्द्रह अगस्त को आलोकित हो उठीं। परन्तु पन्द्रह अगस्त का दिवस भारतीय इतिहास का एक नवीन पृष्ठ भी खुल गया। इसी दिवस हमारे देश का बँटवारा हुआ। इसी दिन पश्चिमी पंजाब में दानवता का स्पष्ट चित्र दृष्टिगत हुआ और शान्ति उस भूमि में भैरव का ताण्डव नृत्य हुआ। इसी दिन काश्मीर, जूनागढ़ और हैदराबाद के विषय में एक नवीन प्रश्न उपस्थित हो गया। समस्या जटिल होती गई कि काश्मीर, जूनागढ़ और हैदराबाद पाकिस्तान में शामिल हों या भारतीय संघ का आश्रय ग्रहण करें। काश्मीर का भाग्य निपटारा हो गया। वह भारतीय संघ में आ गया। जूनागढ़ में पाकिस्तानी षड्यन्त्रों को कुचलती हुई अस्थायी सरकार ने अधिकार स्थापित करके भारतमाता का मस्तक उन्नत किया। पर हैदराबाद ज्यों का त्यों बना रहा। हैदराबाद कभी पाकिस्तान की ओर खीस निकालकर देख लेता है और कभी भारतीय संघ को अपने में शामिल होने का आश्वासन देता है। उसकी वणिक्-वृत्ति का अभी अन्त नहीं हुआ। हैदराबाद का भारतीय संघ में सम्मिलित होना परमावश्यक है। परमावश्यक इसलिए नहीं कि वह अत्यन्त धनी रियासत है, क्षेत्र में भारतीय रियासतों में सर्वश्रेष्ठ वरन् उसकी भौगोलिक स्थिति, उसकी जनता में हिन्दुओं का बहुसंख्यक होना तथा इसी प्रकार के अन्य अन्य कारण हैं जो प्रत्येक तर्कशील व्यक्ति को स्वीकार करा देते हैं कि भारतीय संघ में शामिल हो। हैदराबाद के उत्तर में बरार तथा मध्यप्रान्त हैं। दक्षिण तथा पूर्व में मद्रास प्रेसीडेन्सी, और पश्चिम में बम्बई प्रेसीडेन्सी फैली हुई है। हैदराबाद की जनसंख्या १,६३,३८,५३४ है। संयुक्तराष्ट्र संघ में सम्मिलित होनेवाली ५७ रियासतों में हैदराबाद जनसंख्या में ४४ रियासतों से बड़ा है। क्षेत्रफल में वह २१ रियासतों से बड़ा है। इसकी वार्षिक मालगुजारी १६ करोड़ है। इसके पास प्रायः १०० करोड़ के स्थायी कोष होने का अनुमान किया जाता है। निःसन्देह हैदराबाद संसार में सबसे धनी रियासत है। इस रियासत की जनसंख्या वर्गों के क्रम से इस प्रकार है:—

हिन्दू (८२%)	
(क)....अछूत	२१,२८,०४०
(ख)....अन्य	१,०३,८२,००५
	१,३३,१०,०४५
मुसलमान (१३%)	२०,९७,४७५
ईसाई	२,१५,९८०
ऐंग्लो इंडियन	३,६६०
सिक्ख	५,३३०
जैन	२४,८५३
यहूदी	२०
अन्य वर्ग	६,७८,१४९

हैदराबाद भाषा भाषियों की तालिका निम्नलिखित है।

क—तेलगू	५०%
ख—मराठी	२५%
ग—कनारी	१०%
घ—उर्दू	१५%

हैदराबाद रियासत में ६६५ मील तक छोटी लाइन और७९९ मील तक बड़ी लाइन चलती है। इस रियासत में प्रायः ८,००० मील लम्बे पक्के रास्ते हैं—बम्बई, मद्रास, कलकत्ता, और बरार से इसका रेलों, सड़कों तथा वायु द्वारा सीधा यातायात है। हैदराबाद का अपना विश्वविद्यालय है। वहां ९०% व्यक्ति किसान हैं जो चावल और दाल का उत्पादन करते हैं। यहां पर कपास की भी अच्छी पैदावार होती है।

इतनी महत्त्वपूर्ण रियासत भारतीय-संघ में सम्मिलित हो अथवा पाकिस्तान में यह समस्या विषम होती जा रही है। गत ७ अगस्त को हैदराबाद की कांग्रेस कार्यकारिणी ने अपनी एक विशेष बैठक में यह प्रस्ताव पास किया कि हैदराबाद भारतीय संघ में सम्मिलित हो। तदनुसार उसने 'भारतीय संघ में शामिल हो' आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। इसके पश्चात् १५ अगस्त को निजाम साहब ने हैदराबाद को एक स्वतन्त्र रियासत घोषित कर दिया जिसके फलस्वरूप वहां की कांग्रेस का आन्दोलन और भी उग्र हो गया। आज हैदराबाद कांग्रेस दो लक्ष्यों की पूर्ति के हेतु संघर्ष कर रही है। प्रथम यह कि हैदराबाद भारतीय संघ में शामिल हो और द्वितीय लक्ष्य यह है कि हैदराबाद में प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना हो। परन्तु निजाम को इनमें से दोनों ही बातें अस्वीकार हैं। फलस्वरूप आज तक इस आन्दोलन में ७,००० कांग्रेस कार्यकर्ताओं की गिरफ़्तारी हो चुकी है। रियासत के अन्दर ३४५ स्थानों पर आन्दोलन-केन्द्र हैं—स्वामी रामानन्द तीर्थ के सभापतित्व में स्टेट कांग्रेस ने आन्दोलन प्रारम्भ किया था। पन्द्रह अगस्त के दिन ही स्वामी रामानन्द, श्री जे० केशवराव, डाक्टर जी० एस० मेलकोट, श्रीमती मेलकोट जैसे उच्च कोटि के नेता गिरफ़्तार हो गये। आज वहां के कांग्रेस आन्दोलन का संचालन श्री डी० जी० विन्दु, श्री जे० के० प्रनेशचार्य, श्री गोविन्ददास शराफ तथा श्री महीपति रामचन्द्र राव कर रहे हैं।

हैदराबाद का भारतीय संघ में निम्नलिखित कारणों से शामिल होना आवश्यक है।

(१) हैदराबाद की भौगोलिक स्थिति इस प्रकार की है कि वह चारों ओर से भारतीय सीमाओं से घिरा हुआ है। भारतवर्ष के प्रमुख शहर तथा बन्दर मद्रास, बम्बई तथा कलकत्ता से उसका सीधा और निकट सम्बन्ध है। यदि वह आज पाकिस्तान में शामिल हो जायगा तो कल से यातायात सम्बन्धी अनेकानेक विषयों पर मतभेद तथा झगड़ा होना प्रारम्भ हो जायगा।

(२) हैदराबाद तथा भारतीय सीमाओं के बीच में कोई प्राकृतिक विभाजन नहीं है। इन दोनों क्षेत्रों के मध्य में कोई पर्वत, नदी या झील ऐसी नहीं है जो उन दोनों को पूर्णतया पृथक् बना दे और हैदराबाद पाकिस्तान में मिल सके।

(३) हैदराबाद में हिन्दुओं की आबादी ८२% है और मुसलमानों की आबादी केवल १३%। अतः पाकिस्तान में इसका शामिल होना अन्याय है।

(४) वहां की बहुसंख्यक जनता का मत है कि हैदराबाद भारतीय संघ में ही शामिल हो।

(५) हैदराबाद की तिजारत और यातायात का भारतीय बन्दरों से सीधा सम्बन्ध है। यदि हैदराबाद पाकिस्तान में शामिल हो जायगा तो दो विभिन्न राष्ट्रों में व्यापार-सम्बन्धी विवाद सदैव बना रहेगा। व्यापार-सम्बन्धी सभी भावी झंझटों को दूर रखने के लिए हैदराबाद का भारतीय संघ में सम्मिलित होना परमावश्यक है।

हैदराबाद के निजाम बहादुरशाह

प्रत्येक निष्पक्ष व्यक्ति का यही कथन है कि हैदराबाद का भारतीय संघ में सम्मिलित होना ही उचित है। परन्तु लक्षण कुछ उलटे से दीख रहे हैं। इसी विवाद पर अभी हैदराबाद के प्रधान मंत्री नवाब छतारी ने त्यागपत्र दे दिया। कुछ दिवस पूर्व पत्रों में छपा था कि हैदराबाद में पाकिस्तान से प्रायः २०,००० मुसलमान तथा एक करोड़ लागत के अस्त्र पहुँच गए हैं। उसके पश्चात् ही वहां से प्रायः १०,००० हिन्दुओं के भागने का समाचार छपा। ये सभी बातें निजाम के निश्चय की द्योतक हैं। पाकिस्तानी भूत उनके दिमाग पर अपना रंग जमा ले गया है। इन घटनाओं से हैदराबाद की बहुसंख्यक जातियों और बरार के सर्वसाधारण के हृदय में घबराहट फैल गई है। निजाम बरार पर भी दांत लगाए हुए है और उसे पुनः अपने अधिकार में लाना चाहता है। बरार का हैदराबाद-विषयक अपना निजी इतिहास है। वास्तव में सन् १७२५ के पूर्व बरार निजाम के अधिकार में कभी नहीं था। सन् १७९९ में तत्कालीन निजाम ने टीपू सुल्तान के विरुद्ध युद्ध में ईस्ट इंडिया कम्पनी को सहायता प्रदान की। सन् १८०३ में उक्त नवाब मर गए; परन्तु उनके पुत्र सिकन्दर-जाह ने द्वितीय मराठा युद्ध में अँगरेजों की बड़ी तत्परता से सहायता की। फलतः युद्ध में जीतने के पश्चात् अँगरेजों ने बरार सिकन्दरजाह को दे दिया। १८५३ की सन्धि द्वारा निजाम ने बरार को अँगरेजों को पुनः वापस कर दिया और तब से बरार निरन्तर अँगरेजों के अधीन है। परन्तु अँगरेजों के जाने के पश्चात् निजाम पुनः बरार के लिए लालायित हो उठा है।

श्री डी० जी० विन्दु वर्तमान सभापति सनातन धर्म-सभा आदि, हिन्दू और ...

श्री जे० प्रनेशचार्य, मन्त्री स्टेट ...

श्री गोविन्ददास स्टेट कांग्रेस के अत्यन्त जनप्रिय सदस्य।

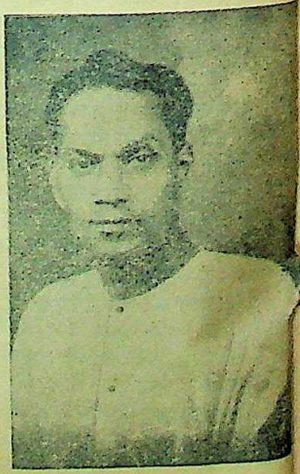

श्री महीपति रामचन्द्र राव, स्टेट प्रमुख कार्यकर्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय रेलवे की आज की स्थिति

भारत के विभाजन के बाद रेलवे की स्थिति क्या है?

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

[२]

राष्ट्र के विभाजन के बाद अर्थात् हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के उपनिवेशों के स्थापित हो जाने पर भारतीय रेलों का प्रश्न और भी जटिल हो गया है, किन्तु भारत-सरकार प्रश्न को हल करने में लगी हुई है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने भारतीय रेलों की वर्तमान समस्या का एक अध्ययन विस्तृत रूप में किया है। इस लेख का प्रथम अंश गतांक में प्रकाशित हो चुका है। लेख पठनीय तथा विचारणीय है।

रेलवे का संचालन-व्यय असाधारण रूप से बढ़ गया है, इसको रोकने के लिए सरकार कुछ कर रही है यह डा० जान मथाई के वक्तव्य से स्पष्ट नहीं होता। प्रश्न तो यह है क्या इस समय किराया बढ़ाना उचित है? आम हड़ताल की धमकी गवर्नमेंट के सिर पर डीमास्थनीज की तलवार के समान लटक रही थी। सरकार इनमें रेलवे और अन्य विभागों के कर्मचारियों को एक ही श्रेणी में रखती रही है, और इसके साथ यह भी कहती रही है कि रेलवे व्यावसायिक संस्था है। ये दोनों बातें एक साथ नहीं चल सकतीं। रेलवे व्यावसायिक संस्था है और इसके कर्मचारी मुल्की विभागों के कर्मचारियों से सर्वथा भिन्न बर्ताव की माँग करते हैं। रेलवे कर्मचारियों के वेतन और भत्ते का विचार करते हुए वेतन-कमीशन और सरकार ने इस पहलू को सर्वथा भुला दिया था। अन्त में सरकार को उनकी बात माननी पड़ी और इसके साथ डा० जान मथाई ने भारत-सरकार की तिजोरी में रेलवे की ओर से दी जानेवाली ७॥ करोड़ ० की रकम भी देने से रोक ली।

बढ़ेगा—बग़ैर टिकट के सफर करनेवालों के कारण रेलवे को ८ करोड़ ० का घाटा प्रतिवर्ष हो रहा है। पर प्रश्न यह है क्या किराया बढ़ाने से इसमें कुछ कमी आयेगी या इसमें और अधिक वृद्धि होगी? दूर सफर करनेवालों पर किराया बढ़ाने का और भी ज्यादा अधिक बुरा प्रभाव पड़ेगा। उपनगरों की यात्रा पर भी किराया बढ़ा दिया गया है। १९ कोटि ३८ लाख के घाटे में से ९ कोटि १५ लाख का घाटा पूरा करने के लिए पहले दर्जे का ३० पै० दूसरे दर्जे का १६ पै० इंटरोढ़े का सैंजर से ७॥ पै० और मेल से ९ पै० और तीसरे दर्जे का पैसेंजर से ४ पै० और मेल से ५ पै० किराया कर दिया गया है। इस वृद्धि का बम्बई-पूना की यात्रा पर कैसा प्रभाव पड़ेगा यह नीचे देखिए :—

बम्बई से पूना ११९ मील

दर्जा	वर्तमान किराया		जनवरी १९४८ से किराया	
	०	आ०	०	आ०
पहला	१६	१३	१८	१४
दूसरा	८	६	९	१५
इंटरोढ़ा	५	४	५	९
तीसरा	२	११	३	२

१९३९ के बाद से सीजन टिकटों का किराया नहीं बढ़ाया गया था। पर इस बार उसका भी बढ़ा दिया गया है। उपनगरों के सीजन टिकटों के किराये के दर में पहले दर्जे में प्रति ० ८ आना दूसरे दर्जे का प्रति रुपया ४ आना, इंटरोढ़े का प्रति पया ३ आना और तीसरे दर्जे का प्रति पया २ आना बढ़ाया गया है। दूर के सीजन टिकटों के बारे में कहा गया है, जहाँ ऐसे टिकट हैं वहाँ एक ओर के किराये का २४ गुना किराया कर दिया जाय? सैनिकों के लिए निम्न दर से सफर करने की सुविधा थी। इस सुविधा का अब अन्त हो गया है।

हवाई यात्रा—सीजन टिकटों का किराया बढ़ाने का परिणाम क्या होगा? बम्बई और पूना के बीच दूसरे दर्जे का सीजन टिकट ७५ रु० में इस समय मिलता है। यह भविष्य में २३८ ० ८ आना में मिलेगा। किराया बढ़ाने का यह भी परिणाम हुआ है कि पहले दर्जे का किराया लगभग विमान के किराये के समान हो गया है। बम्बई से दिल्ली ८६१ मील है। नई दर से एक ओर का किराया १३४ ० ८ आना पड़ेगा। ग्वालियर की राह दिल्ली से बम्बई का एक ओर का हवाई-यात्रा का किराया १४० ० है और यदि आने-जाने दोनों का लिया जाय तो १३३ ० ही पड़ता है। फलतः जिन नगरों के बीच हवाई-सर्विस है लोग वहाँ रेल की अपेक्षा हवाई-यात्रा पसन्द करेंगे। क्योंकि जल्दी काम पर पहुँच जावेंगे। भविष्य में सरकार रेलवे में चार की जगह तीन दर्जे रखने का विचार कर रही है। रेलवे का किराया बढ़ाने के फलस्वरूप वह स्वतः हो जावेगा। क्योंकि पहले दर्जे के मुसाफिर अब रेलवे की अपेक्षा विमान को पसन्द करेंगे। पर यह ध्यान रखना चाहिए कि रेलवे ने पहले दर्जे का किराया प्रतिमील २॥ आना ही बढ़ाया है, जब कि हवाई-सर्विस का प्रतिमील ४ आना बढ़ाया गया है। इसका अर्थ है कि हवाई यात्रा का खर्च और कम हो सकता है। पर रेलवे को अभी विमानों से प्रतियोगिता का भय नहीं है। क्योंकि हवाई-सर्विस कुछ निश्चित भागों पर ही है! फिर साथ में रेलवे के समान ज्यादा सामान नहीं ले जाया जा सकता। यह होते हुए भी मुसाफिरों से रेलवे को होनेवाली आय के घटने का भय बन हुआ है, क्योंकि भारत की अवस्था अन्य देशों से भिन्न है। भारत की प्रतिव्यक्ति राष्ट्रीय आमदनी उनसे कम है, और उन लोगों का सफर-व्यय हमारी अपेक्षा अधिक होता है। पश्चिमी देशों में सैलानी लोग सफर करनेवाले बड़ी संख्या में हैं और वे बढ़े किराये की मात्रा कुछ अंश में बर्दाश्त कर सकते हैं। पर भारत में अधिकांश रेल-यात्रा आवश्यकतावश ही नहीं बल्कि अनिवार्य होने पर ही की जाती है। इसलिए किराया बढ़ाने से मुसाफिरी की आय में कमी होने का भय अकारण नहीं कहा जा सकता।

अवस्था के प्रतिकूल—अवध-तिरहुत रेलवे को छोड़कर सब रेलवे लाइनों का किराया एक समान कर दिया गया है। रेलवे मन्त्री का यह निर्णय विचारपूर्ण न माना जायगा। विभिन्न रेलवे-लाइनों का अलग-अलग किराये की दर रखने का कारण था, प्रत्येक रेलवे-लाइन जिस प्रदेश में से गुजरती है, उन सबकी विभिन्न अवस्था है। इस कारण विभिन्न रेलों का संचालन-व्यय भी अलग अलग होता है। किराया संचालन-व्यय को प्रतिलक्षित करनेवाला रखा गया था। आबादी की रफ्तनी के अधिक मात्रा में होने से पैसेंजर ट्रेन का संचालन-व्यय कम होगा। पर जहाँ आबादी विरल है, वहाँ निस्सन्देह किराया ज्यादा होगा। दक्षिण भारत की रेलवे के लिए मुसाफिरी ट्रेनें ज्यादा महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि वहाँ माल-गाड़ियों का महत्व कम है। बी० एन० में अवस्था इससे सर्वथा विपरीत है। कुछ रेलवे लाइनों का मानदण्ड भी नीचा है। इन सब बातों का ध्यान रखकर रेलवे-यात्रा का मूल रेट निश्चित किया गया था। इन सब बातों को कलम की एक नोक से उड़ा देना खतरे से खाली नहीं है। सबको एक समान सतह पर लाने में क्या लाभ सोचा गया है, यह समझना कठिन है। सब रेलों का टिकट समान किराये की दर करने से ज्यादा आमदनी होगी, यह भविष्य ही बतायेगा।

घाटे का कारण—रेलवे की कुल आमदनी १०७ करोड़ ० कूती गई है। इसमें मालगाड़ियों से ५४·३० करोड़ ० और मुसाफिरगाड़ियों से ४५·९० करोड़ रु० की आशा की गई है। अन्य विशेष गाड़ियों से ५·३० करोड़ रु० की आशा की गई है। मालगाड़ी से आमदनी आशा से कम है। माल-वाही डिब्बों का एक बड़ा भाग अनाज और कोयला ले जाने में का है। मगर जिनमें आमदनी कम है। ई० आई० आर० के इंजन ड्राइवर आदि पाकिस्तान चले गए हैं और दंगों की वजह से भी बहुत से डिब्बे खाली पड़े हैं। दंगों के समय १३०,०० भरे वैगन हो खाली किए जा सके। दिल्ली इलाके में ही ८,००० वैगन माल से लदे खड़े थे और उन पर से माल उतारनेवाला कोई नहीं था। व्यवसायी लोग भी माल भेजते हुए आजकल घबराते हैं। पर पार्सलों की आमदनी में विशेष कमी नहीं आई है। विभाजन के बाद के २ ढाई मासों में डा० जान मथाई के मतानुसार पंजाब में रेलवे को २३४ करोड़ ० का नुकसान हुआ है। पर इस हानि का एक बहुत बड़ा भाग कम हो गया है, क्योंकि शरणार्थियों को लाने-ले जाने का खर्च सरकार ने सहा है।

खर्चे का अनुमान १०७·१८ करोड़ ० का किया गया है। साधारण संचालन-व्यय ९९·६२ करोड़ रु० है। घिसा फण्ड में ६·८२ कोटि रु० विनियोग किया गया है और चली लाइनों के भुगतान में ७४ लाख रु०। इसके विपरीत विविध आमदनी को मिलाकर कुल आमदनी १०८·२४ करोड़ रु० है। इसलिये विशुद्ध आमदनी

श्री जान मथाई भारत-सरकार के रेलवे-सदस्य।

१·०६ करोड़ ० है। पर ब्याज का व्यय १३·४४ करोड़ रु० है। इस प्रकार घाटा १२·३८ करोड़ रु० हो जाता है। यदि रेलवे यह ब्याज देना बन्द कर दे, तो १३·४४ करोड़ रु० बच सकते हैं। यह रु० इंग्लैंड को प्रतिवर्ष से जाता है। वे लोग सूद के रूप में ही मूल से कई गुणा ले चुके हैं। अतः उनको ब्याज देना अब बन्द करना चाहिए। क्या सरकार इस पर विचार करेगी? क्योंकि रेलवे के घाटे का मूल कारण यह ब्याज ही है।

घाटा कम करके १४॥ प्रतिशत कर दिया गया है। सरकारी तिजोरी में रेलवे कुछ नहीं दे रही है। इसके साथ ही रेलवे की विभिन्न निधियाँ—रेलवे महानिधि और जनमंगल निधि में रेलवे कुछ जमा नहीं कर रही है। नवीन रचनात्मक कार्य में ४ करोड़ रु० की कमी कर रही है। अब केवल जी० आई० पी० की एक उखाड़ी लाइन बनाई जावेगी और झकरा डाम बनाने के लिये रोमड़-लालीरा लाइन बनाई जावेगी। इनके बनाने में १·२४ करोड़ ० व्यय होगा। बजटकाल में और तीन लाइनें बनाई जावेंगी। पर यह लाइन का सर्वे करने से आगे शायद ही बढ़ सके। इनमें से दो तो कोण-क्षेत्रों में बनाई जावेगी और एक उत्तरीय बंगाल को आसाम से मिलाने के लिए बनाई जावेगी। गौहाटी का दिल्ली से सीधा सम्बन्ध स्थापित करने के लिये यह जरूरी है। सुरक्षा के विचार से भी यह आवश्यक है। आसाम का अकेलापन दूर करने के लिए यह आवश्यक है। इसमें दार्जिलिंग-हिमालियन रेलवे की ७० मील मीटर गाज लाइन ब्राड गाज में बदली जावेगी और ८६ मील नई रेलवे लाइन बनाई जावेगी। इसमें ४७५ करोड़ रु० व्यय होगा। इसके निर्माण को सर्वप्रथम स्थान देना उचित ही है। रेलवे कर्मचारियों और जनता की सुख-सुविधा को बढ़ाने पर जनमंगल निधि में से इस वर्ष ३८४ करोड़ रु० खर्च किया जावेगा।

पर वास्तविक प्रश्न यह है कि आमदनी के बढ़ने पर भी इतना अधिक अन्तर क्यों है? इसका उत्तर यह है कि वेतन-कमीशन की सिफारिशों के मानने से साढ़े सात मास में १७·२५ करोड़ रु० खर्च बढ़ गया है। यह साल भर में अकेले भारत के लिये २७ कोटि से अधिक रु० होगा। यह अर्थमन्त्री के अनुमान से ज्यादा है। क्योंकि संयुक्त भारत के लिये अनुमान किया गया था कि २५ करोड़ ० होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे अकेले भारत के लिए ज्यादा है। रेलवे की अनाज दुकानों का खर्चा ५·२५ करोड़ रु० बढ़ गया है। रेलवे कर्मचारियों को बाजार से सस्ते रेट पर अनाज दिया जाता है। कोयले का दाम भी बढ़ गया है। 'श्रम मंडल सेस' लगाने से ईंधन-बिल १·६० करोड़ रु० बढ़कर हो गया है। डा० जान मथाई ने आश्वासन दिया है कि इसके अतिरिक्त और खर्च का बोझा 'एडज्युडिकेटर-रेकर्ड' के कारण और न बढ़ेगा। इसके निर्णय के कारण काम के घण्टे कुछ कम कर दिए जावेंगे। छुट्टियों के नियम कुछ नरम किए जावेंगे, इससे अधिक आदमी काम पर लगाए जा सकेंगे। पर वर्तमान स्टाफ आवश्यकता से अधिक है। इसके निर्णय के फलस्वरूप १९४८-४९ में रेलवे-मन्त्री को ४ करोड़ रु० बचत होने की आशा है।

इसलिये घाटे की पूर्ति के लिए किराया और भाड़ा बढ़ाया गया है। पर इसके बाद भी ३·२३ करोड़ रु० का घाटा शेष रह जाता है। यह रेलवे रिजर्व फण्ड (रेलवे महानिधि) से लेकर पूरा किया जायगा। अब इस निधि में विभाजन के कारण ५० कोटि रु० की जगह ४० कोटि रु० जमा किया जावेगा। १५ अगस्त १९४७ को इस निधि में ७·९८ करोड़ रु० था। अब प्रस्तावित रकम निकालने के बाद इस निधि में ४·७५ करोड़ रु० रह जावेगा। इस फण्ड और जनमंगल फण्ड में वृद्धि होना अब अनिश्चित मालूम होता है।

उत्पादन में कमी—जन-परिवर्तन के ढाई मासों में शरणार्थियों के लाने में रेलवे ने शानदार कार्य किया है। अकेले रेलवे २५ लाख आदमियों को लाई है। इसके कारण अन्य भागों से डिब्बे और स्टाफ को वहां भेजना पड़ा और अन्य जगहों में गाड़ियां भी कम करनी पड़ीं। सितम्बर के अन्त में अभूतपूर्व कोयला-संकट उत्पन्न हो गया। वैगनों की कमी और ई० आई० रेलवे के ४७ प्रतिशत चालकों के पाकिस्तान चले जाने के कारण यह संकट आया। माल के डिब्बों का भेजना ४५ प्रतिशत कम हो गया। फलतः खानों में कोयला बड़ी मात्रा में जमा हो गया। जमा कोयला हटाने के लिये प्रतिदिन अतिरिक्त २०० वैगनों की जरूरत थी। पाकिस्तान से आये १,२६,००० जनों में से २२,००० जनों को अभी काम पर लगाना शेष है। वर्कशापों में मरम्मत में ज्यादा समय अब लगने लगा है। ब्राडगाज के उत्पादन में २० प्रतिशत और मीटरगाज के उत्पादन में ६० प्रतिशत कमी हो हो गई है। इनका उत्पादन बढ़ाने की जरूरत है। रेलवे कर्मचारियों की कार्य-क्षमता घट रही है। इनका काम औसतन दो जन-घण्टा प्रतिदिन से ज्यादा नहीं है। इसलिये रेलवे के कर्मचारियों को अपने काम से सिद्ध करना है कि उनके साथ जो उदारतापूर्ण बर्ताव किया गया है उसके वे पात्र हैं।

एंजिनों की अवस्था—रेलवे की एंजिनों की दृष्टि से अच्छी अवस्था नहीं है। सारे युद्ध-काल में केवल ९३० एंजिन बनाए गए। भारत जापान के विरुद्ध लड़ाई में युद्ध का मुख्य अड्डा था। अतः इससे अधिक मात्रा में नये एंजिन मंगाए जा सकते थे। पर जिस प्रकार ब्रिटेन ने भारत में एंजिन बनाने की ओर ध्यान नहीं दिया, उसी प्रकार इस ओर ध्यान नहीं दिया। विभाजन से पहले ८,४०० एंजिन थे, जिनमें २,९०० पुराने और अपनी आयु समाप्त कर चुके थे। विगत फरवरी में आशा थी कि ब्रिटेन में ३०० एंजिनों का आर्डर दिया जावेगा। पर अब मालूम हुआ है कि ब्रिटिश फर्म इस कार्य को करने में असमर्थ है। अमरीका से १२ एंजिन आ रहे हैं। पर इनका मूल्य और इनकी आयु देखते हुए ये बहुत महँगे हैं। इनकी उमर केवल २० साल होती है। कनाडा और आस्ट्रेलिया भारत को एंजिन देने को तैयार हैं। डा० जान मथाई ने आशा दिलाई है कि १९४९ में नए एंजिन आ जावेंगे। एक एंजिन की साधारणतः आयु ३५ साल मानी गई है; मगर यह युद्ध-पूर्व के दामों के आधार पर था। पर अब मूल्य बढ़ गया है। उसकी मरम्मत और कायम रखने का खर्च भी बढ़ गया है। इसलिए इसका हिसाब फिर से करने की जरूरत है। इस दृष्टि से अध्ययन के लिए एक अफसर को अमरीका भेजना उचित ही है।

सिंहभूमि का वर्कशाप ताता ने १९४५ में खरीदा था और वायलर बना रहा है। अजमेर में मीटर-गाज एंजिन बनाये जाते हैं, पर उत्पादन की मात्रा कम है। यह ७० एंजिन बना रहा है। पर कितने दिनों में बनायेगा यह ज्ञात नहीं है। कांचनमारा से एंजिन बनाने की फैक्टरी हटाई जावेगी। इसको आसनसोल लाया जा रहा है। पर आवश्यकता है कि इसको और देश के अन्दर और लोहे-कोयले की कानों के पास लाया जाय। इस दृष्टि से जमालपुर अधिक अच्छा स्थान सिद्ध होगा। आशा है कि डा० जान मथाई इस सुझाव पर अनुकूलता से विचार करेंगे।

आप अपनी त्वचा के लिये कौनसे तेल पसंद करती हैं? वास्तव में प्राकृतिक तेल ही न! चेहरे को उज्ज्वल, स्वच्छ और ताज़ा रखने के लिये सुगंधित, कोमल और सेतीन-से मुलायम पॉन्ड्स कोल्ड क्रीम और पॉन्ड्स वेनिशिंग क्रीम की परीक्षा कीजिये। सर्वत्र रूपवती स्त्रियाँ पॉन्ड्स का ही प्रयोग करती हैं।

पॉन्ड्स क्रीम्स

पॉन्ड्स दिनचर्या

पॉन्ड्स कोल्ड क्रीम : पॉन्ड्स कोल्ड क्रीम को चेहरे पर कोमलता से रमाते हुये दिन में दो बार उसे साफ़ कीजिये; उंगली के कोमल पोरों से उसे थपथपाइये। पॉन्ड्स टिशू से स्वच्छ कर लीजिये।

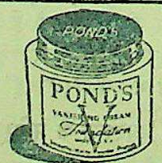

पॉन्ड्स वेनिशिंग क्रीम : कोल्ड क्रीम को साफ़ करके उंगली के पोरों से पॉन्ड्स वेनिशिंग क्रीम लगाइये। त्वचा को सुरक्षा देता हुआ वह आपके प्रयोग के साथ ही अंतर्धान हो जाता है।

पॉन्ड्स पाउडर : यदि आप की इच्छा हो तो पुष्पपंखड़ी की भांति कोमलता के लिये पॉन्ड्स पाउडर थपथपाइये।

व्यापार-सम्बंधी पूछताछ के लिये लिखिये :
एल. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लिमि० बम्बई • कलकत्ता • कराची • मद्रास.

Copyright: Pond's Extract Co.

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाँदी का चम्मच

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

जीवन में ऐसे अवसर आते ही रहते हैं जब कि मनुष्य विजय और पराभव दोनों का अनुभव करता जाता है। मान और अपमान, उतार-चढ़ाव और उत्थान-पतन का दृश्य उसे देखना ही पड़ता है। रजनीकांत के जीवन में भी एक ऐसा अवसर आया जब कि उसे अपमानित होना पड़ा और उसके जीवन की प्रगति एक नई दिशा की ओर मुड़ पड़ी। कहानी सुन्दर, पठनीय और रोचक है।

जीवन में ऐसे अवसर कम ही आते हैं कि जब मनुष्य अपने स्तर से ऊँची जगह पर जाकर बैठता हो। समाज के ऊँचे व्यक्तियों से मिलता हो। वह उन बड़े आदमियों के बीच में खड़ा है, ऐसा भी अनुभव कर सका हो। निदान, उस दिन, दैवयोग से, जब रजनीकान्त को एक ताल्लुकेदार के यहां दावत खाने के लिए जाना पड़ा, तो वहां पर, कुछ अपने परिचित मित्रों के अतिरिक्त, नगर के बड़े-बड़े अधिकारियों, राव-रईसों को आया देख, उसने समझा कि आज मिला है उसे ऐसा अवसर कि जब वह समाज के उच्चतम वैभव को देख सका और पा सका है, ताल्लुकेदार साहब के लड़के के विवाह की दावत थी; इसलिए, उस अवसर पर खान-पान के अतिरिक्त नाच-गाने की भी व्यवस्था की गई थी। एक बड़ा शामियाना लगा था। वह बन्दनवारों और अनेक प्रकार के चित्रों से सजाया भी गया था। इत्र-फुलेल की सुगन्ध का भी चारों ओर दौर-दौरा था।

रजनीकान्त जिस टेबुल के पास बैठा हुआ था, उसके पास ही, दूसरी मेज पर तीन युवतियां आकर बैठ गईं। वे सभी सुन्दर थीं और मनोरम, उनमें मालती नाम की लड़की कुछ विशेष अल्हड़ और हँसमुख स्वभाव की थी। रजनीकान्त की परिचित। वह भी उसी कालेज की छात्रा थी, जिसका रजनीकान्त। जब मालती ने रजनीकान्त की ओर देखा, तो कहा—'ओ, आप....."

'जी, मैं!' बरबस, रजनीकान्त ने अपनी आंखों में हँसी का खुमार लाकर कहा।

अपनी जगह पर बैठे हुए मालती ने कहा—'रजनी बाबू, आप इन्हें जानते हैं—इस प्रमदा और कुसुम को?'

सुनकर रजनीकान्त चुप रह गया। उसने उन दोनों लड़कियों की ओर देखा।

मालती ने कहा—'इन्होंने ही तो पिछले साल 'कप' जीत लिया था—हमारी कालेज टीम के साथ!'—वह बोली—'यह प्रमदा है, बैरिस्टर नलिनी-रंजन बाबू की लड़की और यह कुसुम—जानते तो होगे ही पाण्डेय जी को, डी० ए० वी हाईस्कूल के हेडमास्टर! उन्हीं की लाड़ली हैं, यह कुसुम रानी।'

रजनीकान्त ने कहा—'हां, मैं तो पाण्डेय जी का शिष्य हूँ। वहीं पढ़ा हूँ।'

कुसुम ने नमस्ते किया। प्रमदा ने भी अपने हाथों को उठा दिया।

रजनीकान्त ने कहा—'इस परिचय के लिए तुम्हें धन्यवाद, मालती।'

मालती ने कहा—'यह हैं रजनीकान्त—हाकी के मशहूर....."

'हां, हां, मैं समझ गई री, मालती!' कुसुम ने एकाएक ही बात रोककर कहा।

प्रमदा ने कहा—'मैंने नाम भी सुना। खेल भी देखा। खूब खेलते हैं, आप।'

रजनीकान्त ने कहा—'जी, कभी खेलता था। अब तो किताबों में ऐसा उलझा कि सभी कुछ छूट गया।'

उसी समय ताल्लुकेदार के साहबजादे वहां आये। वे रजनीकान्त के मित्र और सहपाठी। उन लड़कियों को लक्ष कर, वह रजनीकान्त से बोले—'क्यों रजनी बाबू, कुछ पीओ, तो मँगाऊँ!'

रजनीकान्त ने कहा—'जी, नहीं।'

'अरे, पी मरदूद! आज पी।'

सुनकर रजनीकान्त हँस दिया। उसने देखा, इतनी-सी बात पर उन लड़कियों ने भी हँस दिया।

मालती ने कहा—"पीना बुरा है, पिलाना बुरा नहीं। पीना हराम है।"

पास बैठी हुई प्रमदा ने कहा—'क्यों री, पिलाना बुरा क्यों नहीं?'

'इसलिए कि अच्छा लगता है, पिलानेवाले को इसी में आनन्द आता है।'

'मूर्ख!'—बात सुनते ही, कुसुम ने तपाक से कहा—'तो पीना हराम क्यों? वह भी बुरा नहीं।'

इतना सुन, रजनीकान्त ने ताल्लुकेदार के लड़के अलिन की ओर देखा। उसका ध्यान शायद कहीं और चला गया। रजनीकान्त का संकेत पाकर, जैसे वह चौंक गया। बोला—क्या, हां, बात क्या!'

'अजी, जनाब! कहा जा रहा है, पीना बुरा नहीं, पिलाना बुरा नहीं।'

'जी, बात का जवाब दिया है। वैसे मेरा यह मत नहीं।' बात सुनते ही कुसुम ने आतुर भाव में कहा।

किन्तु रजनीकान्त ने भी धीर भाव में कहा—'मेरा भी यह मत नहीं।'

लेकिन मालती और प्रमदा ने जैसे इतनी-सी बात को भी अधिक महत्त्व नहीं दिया। उनमें से मालती ने तुरन्त ही कहा—'रजनीक बाबू, जब पीना बुरा है, तो पिलाना बुरा है।'

सुनकर, रजनीकान्त तब भी चुप रह गया।

किन्तु वहां से चलते-चलते अलिन कहता गया—'मालती देवी, बुरा कुछ नहीं। यह भी नहीं....वह भी नहीं।'

सुनकर, लड़कियों के साथ, रजनीकान्त भी खिलखिला कर हँस दिया।

* * *

अभ्यागतों को भोजन खिलाना आरम्भ हो गया था। जब रजनीकान्त भोजन करने लगा, तो उस विशाल और अनुपम दावत में उसे अनेक नये-नये मिष्ठान्न तो देखने को मिले ही, साथ ही, उस बड़े नक्काशीदार थाल में जो चांदी का चम्मच देखने को मिला, वह सचमुच ही, अपनी दर्शनीयता के साथ आकर्षण का विषय था। रजनीकान्त को पता था कि उस बड़ी दावत का प्रबन्ध शहर के एक बड़े होटल ने किया था। उस होटल के मालिक को हजारों रुपया इस काम के लिए दिया गया था। रजनीकान्त की टेबुल पर एक और सज्जन बैठे हुए थे। वे उस विशाल शामियाने के मनुष्य-समाज में बैठे हुए सम्भवतः एक ही व्यक्ति थे कि जिनका वहां पर एक ही काम था—एक ही लक्ष; कि उस सुस्वादु खाद्यान्न को जल्दी से जल्दी अपने उदर में रख लेना। वे खाते जाते थे और बार-बार रजनीकान्त तथा दूसरी टेबुल के पास बैठी हुई लड़कियों को देखते जाते थे। और रजनीकान्त ठीक उनके विपरीत बराबर बात कर रहा था और हँस रहा था। लड़कियां भी बात करतीं और कभी जोर का ठहाका मारकर आस-पास बैठे हुए अन्य अभ्यागतों को अपनी ओर देखने के लिए विवश करती जाती थीं।

मालती ने कहा—इन्होंने ही तो पिछले साल कप जीत लिया था।

उसी समय, रजनीकान्त के सामने आ गया, वह चम्मच। वह चांदी का तो था ही, साथ ही, वह जिस प्रकार की कारीगरी से पूर्ण दर्शनीय बनाया गया था, वह उसके लिए विशेषतः आकर्षण की वस्तु बन गया था। उस चम्मच को देखकर, एकाएक, रजनीकान्त के मन में आया—'मेरे पास भी होता, ऐसा ही एक चम्मच! सच, सुन्दर है यह! अनुपम।'

तभी कानों में पड़ा, मालती कह रही थी—'सुना, रजनी बाबू यह कुसुम कह रही है, आप किसी दिन मेरे घर आइए—जरूर!'

सुनकर रजनीकान्त चौंक गया। बात सुनकर, उसने कहा—'जी जरूर!'

और तभी, उसकी अवस्था को देख, सामने बैठे हुए उन प्रौढ़ महाशय ने गिलास भरा पानी पीकर और डकार लेकर कहा—'आप खा नहीं रहे हैं। बातों में उलझे हैं....शायद किसी समस्या में।'

तब भी, अवाक् बनकर रजनीकान्त ने मन में कहा—'मूर्ख!' और उनसे बोला—'जी हां, हां।' उसने कहा—'अब खाता हूँ—लीजिए, वह फिर खाने में लग गया।

उसी क्षण उसके मन में आया—'यह कुसुम भी अनुपम है। मालती से अधिक सरस...अधिक सुन्दर!'—उसने कहा—'दिन भी बहुत हो गये कि वह पाण्डेय जी के यहां नहीं गया। उनसे नहीं मिला। अब जायेगा—जरूर!'

'पर,—पर,—" उसने फिर बरबस ही, कहा—'पर पांण्डेय जी के सामने जाकर वह कुसुम से नहीं बोल सकेगा, नहीं मिल सकेगा।'—वह बोला—'वह किसी दिन जायेगा तो जरूर, पर ऐसे समय नहीं जायेगा कि जब पाण्डेय जी घर पर हों। वह स्कूल में हों।'

और तब फिर उसने कहा—'यह चम्मच...यह चांदी का नक्काशीदार चम्मच!'

मानो वह चम्मच—वह कुसुम—यों मिली-जुली एक गुलझटदार समस्या बन गई कि जिसमें वह रजनीकान्त फँस गया। अन्तर इतना ही था कि एक जड़ थी, एक सजीव! उसके प्राणों को हिलाने की क्षमता रखनेवाली! आह, कितनी सुन्दर थी वह कुसुम!' कितनी मोहक! वह जब-जब रजनीकान्त की ओर देखती, तो लगता कि समर्पण और प्यार की भावना साकार और मूर्तिमान बनी हुई उसकी आंखों में डोलती दिखाई दी। कितनी भोली थी उसकी सूरत! उसने सोचा, वह कुसुम को देखता रहे—सच! लेकिन, वह चम्मच भी जड़ पदार्थ जरूर था, पर कला की वस्तु कुसुम प्रकृति की कला थी और चम्मच पुरुष की। जैसे वह भी प्रकृति-पुरुष की सन्निध्य हुई कलात्मक क्रिया का एक प्रमाण था, प्रकृति-पुरुष की एक देन; इसलिए, स्वभावतः रजनीकान्त की उस पर दृष्टि थी—उसे पाने की एक इच्छा! उत्कट। अधीर।

इतने में भोजन समाप्त हो गया। लोगों का लौटना भी आरम्भ हो गया। अपनी जगह से खड़ी होकर, उन तीनों लड़कियों ने फिर रजनीकान्त की ओर देखा। कुसुम ने स्वयं ही, उसको लक्ष करके कहा—'तो आप मिलेंगे न—जरूर।'

जल्दी से रजनीकान्त ने कह दिया—'जी जरूर।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो कल ही आइए—शाम को पांच बजे।'

कुछ सोचकर, रजनीकान्त ने कहा—'अच्छा, पांच बजे।' कहते हुए, वह भी चलने के लिए उठ खड़ा हुआ। देखा कि उसका मन चंचल था। जैसे उद्विग्न। वह बार-बार अपने आस-पास भी देख रहा था।

उसी समय, उसके पास बैठे हुए उस प्रौढ़ व्यक्ति ने खड़े होकर जरा हँसते हुए कहा—'बाबू, एक तमाशा दिखाऊँ, आपको।'

रजनीकान्त ने जैसे चौंककर कहा—'जी, तमाशा—दिखाइए।'

उस व्यक्ति ने कहा—'यह चम्मच देखते हैं न आप; ऐसा ही एक और है, मैंने जादू से भगा दिया—छिपा दिया है मैंने!'

'जादू से छिपा दिया है, आपने!' चकित भाव से मालती ने कहा और सबके साथ, सूखे और खिन्न हुए भाव को लिये रजनीकान्त को पाया।

प्रौढ़ व्यक्ति ने कहा—'तो दिखाऊँ वह तमाशा? वह अनोखा जादू!'

मालती ने आतुर मन से कहा—'जी, दिखाइए न, जल्दी।'

और उस व्यक्ति ने जरा आगे बढ़ रजनीकान्त के कोट की जेब में हाथ डालकर चम्मच निकाल लिया और कहा—'देखिए, यह है मेरा जादू! यह चांदी का चम्मच!'

सबने यह देखा, तो खिलखिला करके हँस दिया। किन्तु यह किसी ने लक्ष नहीं किया कि उसी समय, रजनीकान्त के ऊपर जैसे घड़ों पानी पड़ गया। उसके मन में आया कि उस व्यक्ति को पकड़ ले और उसका गला घोंट दे। किन्तु वह तो एक अभ्यागत था—अपनी ही स्थिति का एक मेहमान! परन्तु खेद यह था कि उसने जीवन में एक चोरी की और वह भी पकड़ ली गई। उसी समय, कुसुम ने आगे बढ़कर कहा—'अच्छा, रजनी बाबू, नमस्ते।'

उदास भाव से रजनीकान्त ने कह दिया—'जी, नमस्ते!'

कुसुम चलने लगी, तो उसी समय, मालती ने एक युवक को लक्ष करके रजनीकान्त से कहा—'उस महाशय को देखते हैं न आप, वही है, इस कुसुम का भावी पति! पाण्डेय जी ने उसे ही पसन्द किया है।'

और इस बात के अन्तराल में डूबने के साथ, रजनीकान्त के मन में उठ रहा था कि वह चालाक व्यक्ति उसकी चोरी पकड़कर लज्जित तो कर ही गया, साथ ही, वह चम्मच स्वयं अपनी ही जेब में डालकर ले गया—धूर्त!

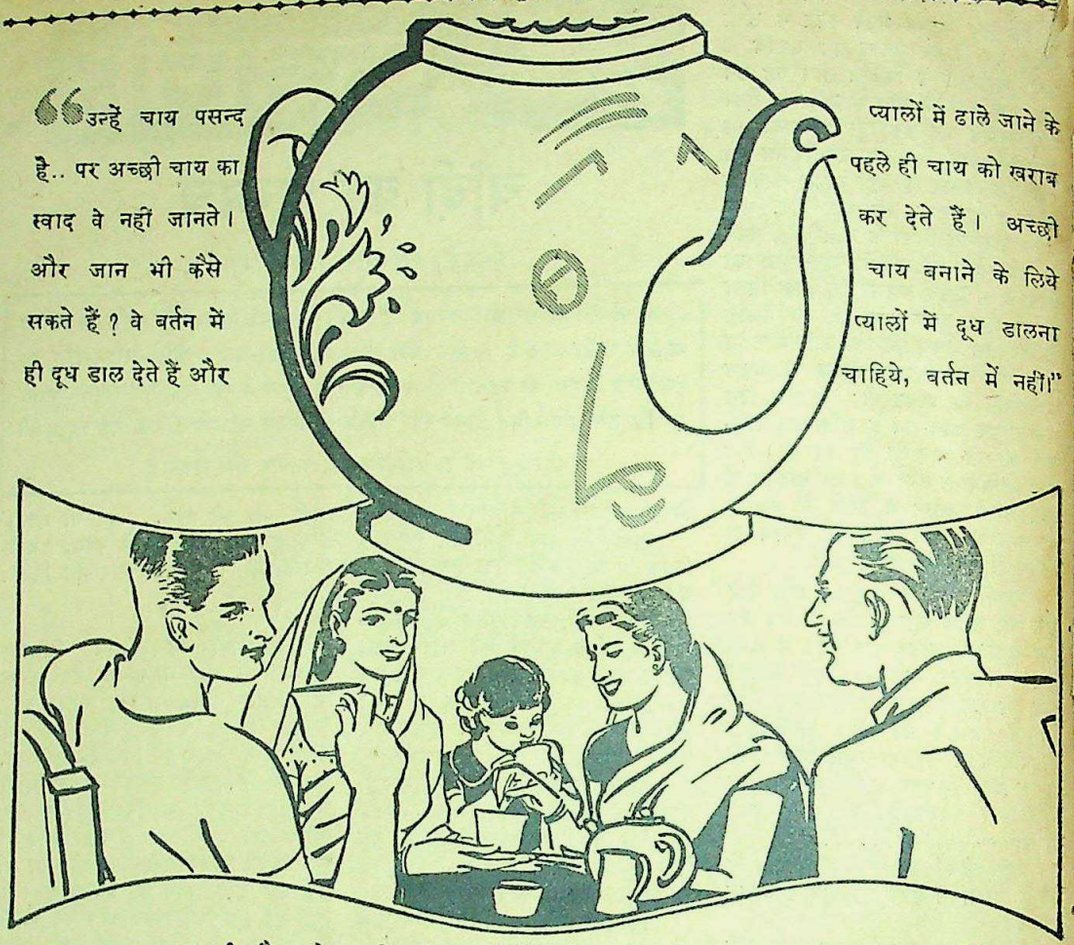

"उन्हें चाय पसन्द है.. पर अच्छी चाय का स्वाद वे नहीं जानते। और जान भी कैसे सकते हैं? वे बर्तन में ही दूध डाल देते हैं और प्यालों में ढाले जाने के पहले ही चाय को खराब कर देते हैं। अच्छी चाय बनाने के लिये प्यालों में दूध डालना चाहिये, बर्तन में नहीं।"

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती; सिर्फ पांच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

पांच सरल नियम

१. सिर्फ ताजा और फौरन खौला पानी लीजिये। २. चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये सूखी चाय डालिये। ४. तीन से पांच मिनट तक चाय को सीझने दीजिये। ५. दूध प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोस्ट बक्स २१७२ कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मँगाई जा सकती है।

अच्छी चाय बनाने से अच्छी चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IE 299

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास-परिहास

भंग की तरंग

हमारे प्रान्त के अड़तीस नगरों से राशनिंग समाप्त कर दी गई। इन स्थानों के सप्लाई-विभाग के कर्मचारी पुलिस-विभाग में जाने की सोच रहे हैं। आशा है सरकार इनके लिए उचित व्यवस्था करेगी।

* * *

पंडित जवाहरलाल को एक पुरानी बंदूक उन्हें लौटाई जायगी। अहिंसावादी नेहरू जी वह बंदूक लेकर क्या करेंगे! उन्हें वह बंदूक मित्रवर कायदे आज़म को भेंट कर देनी चाहिए!

* * *

सुना जाता है कि बिहार के गवर्नर श्री जयरामदास दौलतराम भारत के खाद्य-सदस्य होनेवाले हैं। भोजन-विभाग के अधिकारी को दौलतदास होना भी चाहिए।

* * *

कमलाकांत के पश्चात् हमारे प्रान्त के प्रथम न्यायाधीश विभुभूषण हो गये। आगे कोई ब्राह्मण रहें तो रोटेशन अच्छा रहे।

* * *

लोग कहते हैं कि कराची में लीग की बैठक कायदे आज़म मुर्दाबाद कहा गया। उन्हें लोगों ने न कहा होगा। जहांगीराबाद के तुक पर पाकिस्तान का नया नाम रखा होगा।

* * *

महाराज बीकानेर ने कहा कि राजवाले समय के साथ चलने को तैयार हैं। मैं तो समझता हूँ कि विवाह और घुड़दौड़ में वह समय से भी आगे चलने को तैयार हैं।

* *

इंडिया हाउस समाप्त होनेवाला है। उस मकान में होटल बन जाना चाहिए जिसमें भारत के लोग जाकर ठहर सकें।

* * *

लार्ड माउंट बेटेन ने जयपुर में कहा कि मैं सदा भारत की एकता का समर्थक रहा हूँ। सभी अँगरेज रहे हैं। यह तो ईश्वर के कारण विभाजन हो गया। अँगरेज क्या करें?

* * *

महात्मा गांधी हरिजन में लिखते हैं कि शरणार्थी सरकार से सहयोग करें। जब उन्हें सरकार में ले लिया गया तब तो यहां के लोगों को हटाकर उन्हीं को रख लेना चाहिए।

* * *

काशी में खेर साहब ने कहा कि आयुर्वेद का विश्व भर में प्रचार हो। मैं तो कहूँगा कि ब्रह्मांड में प्रचार हो। किन्तु भारत में हो कि न हो इसलिए डाक्टरों से पूछना पड़ेगा।

* * *

पन्तजी कहते हैं कि युवक साम्प्रदायिक उन्माद से दूर रहें। यौवन का अर्थ ही उन्माद है वह दूर कैसे रह सकते हैं!

* * *

पाकिस्तान शस्त्रास्त्र भेजने के अपराध में कई यूरोपियन पकड़े गये हैं। क्या करें बेचारे भारत को हथियाने का कोई उपाय करना ही चाहिए!

—अगड़धत्त शर्मा

'बेढब' दोहावली

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

बिना नेह रहता सदा है जीवन बेकार,
बे पेट्रोल चले कहो कैसे मोटर कार।

* * *

अर्थ भला लाये कहां से रचना में, हंत!
पैसा-पैसा रट रहे कविता कामिनि कंत।

* * *

नूपुर धुनि सुन मन चलै ले गति सदा अन्यून,
ज्यों घंटी का शब्द सुन कर दफ़्तर का प्यून।

* * *

चंद्रानन से गिर रहे श्रमकण अपरम्पार,
रसगुल्ले से जिस तरह बहती रस की धार!

* * *

यों वियोग में बढ़ रहा है उर का संताप,
बेढब सूद उधार का जैसे बढ़े अमाप।

* * *

प्रिये गिर रही आंख से यों आंसू की धार,
जैसे छपता आजकल रोटरी से अखबार॥

बिहार के मंत्री अनसारी सैयद ने कहा है कि मुसलमानों को हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के मिलाने के लिए लड़ना चाहिए। मुसलमानों को शिक्षा लड़ने ही की होनी चाहिए चाहे कुछ भी हो।

* * *

इस सप्ताह में अनेक विश्वविद्यालयों के कनवोकेशन हो गये। भाई अनेक नेताओं के भाषण देने का अवसर मिल गया। खेद है कि अभी इतने विश्वविद्यालय नहीं हैं जहां सभी नेताओं को बोलने का अवसर मिल जाय। आशा है सरकार इस पर ध्यान देगी।

* * *

सर राधाकृष्णन हिन्दू विश्वविद्यालय चले गये। दिल ने बुलाया, मित्र ने विदा किया। इसमें कोई हानि नहीं है।

* * *

लोगों को जानना चाहिए कि वह हिन्दू-विश्वविद्यालय से भी बढ़कर आक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय से संबंध रखते हैं। आर्य संस्कृति न फैला सके तो क्या शब्दों में भी न फैलाएंगे!

* * *

कई लोग बहुत अधिक साबुन प्रयोग करके अपने शरीर को झाग से ढक लेते हैं परन्तु इससे क्या अधिक सफाई होती है? नहीं।
उचित तो यह है कि अभाव के इन दिनों में साबुन को अल्प-व्ययता से प्रयोग कर हमाम और ५०१ साबुन को बचाया जाये।

हमाम और ५०१ साबुन

दी टाटा आइल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

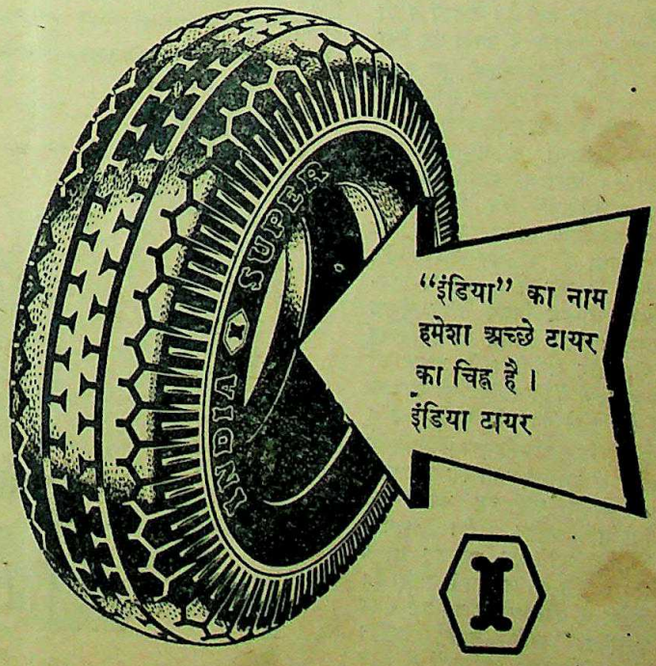

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

'स्वप्न और सत्य'

कलात्मक कहानियों का संग्रह

लेखक, प्रोफेसर वंशीधर श्रीवास्तव, एम० ए०

'स्वप्न और सत्य' डाक्टर ब्रजमोहन गुप्त की आज से लगभग दस वर्ष पहले लिखी गई कहानियों का संग्रह है ऐसा उसकी भूमिका से मालूम पड़ता है। इस दस वर्ष में कहानी-कला में ही प्रगति नहीं हुई है, युग बदल गया है। जीवन की मान्यताएँ बदल गई हैं। फलतः वे निर्णायकों से आशा करते हैं कि आज की मान्यताओं की कसौटी पर विशेषतः प्रगतिवाद की मान्यताओं पर वे उनके इस संग्रह की कहानियों को संभलकर ही परखें। प्रगतिवाद की कसौटी पर यदि ये कहानियां खरी न उतरें तो उन्हें निकृष्ट न कहा जाय ऐसी ध्वनि उनके कथन से निकलती है। प्रगतिवाद के प्रति प्रारम्भ से ही उनकी आस्था रही है। आज भी शायद है। इसीलिए उनका यह मोह आशंका बनकर सामने आ गया है। उनकी आज से दस वर्ष पहले लिखी जानेवाली इन कहानियों को लोग आज के प्रगतिवाद की कसौटी पर परखकर भी खरी बतावें ऐसा मोह उन्हें हुआ ही क्यों? और किसी भी वाद-विशेष की कसौटी पर किसी साहित्यिक कृति को परखकर यदि उसे निकृष्ट बता दिया जाय तो उसका दुःख ही क्यों। एक समीक्षक से तो उन्हें यही आशा करनी थी कि वह उनकी रचना को 'देश-काल' की सीमा के भीतर रखकर ही परखेगा यद्यपि देश-काल की सीमा से बंध जानेवाला साहित्य बहुत उच्च कोटि का साहित्य नहीं होता।

आज 'प्रगतिशील साहित्य' के नाम पर जो सब कुछ धन्य हो रहा है उसकी सबसे बड़ी कमजोरी भी यही देश-काल का बन्धन है। आज का प्रगतिवाद एक प्रकार से 'उपयोगिता' का पर्याय हो रहा है। आज के प्रगतिवाद में कला का ध्येय युद्ध 'उपयोग' हो गया है। पाठकों से तो नहीं, लेखक महोदय से मैं इतना कह देना चाहता हूँ कि 'लोक-कल्याण' का तत्त्व, जिसकी चर्चा उन्होंने अपनी भूमिका में की है, आज के इस प्रगतिवादी रूप में उनकी कहानियों में प्रमुखता नहीं पा सका है। अगर वह वहां है तो अपने प्राचीन आदर्शवादी रूप में ही है। प्राचीन आदर्शवाद मानव-हृदय की उन उदात्त वृत्तियों की, जो लोक-कल्याण और लोक-रंजन के मूल में हैं, सुखमय परिणीत और अन्तिम विजय से ही संतुष्ट हो जाता है; परन्तु आज का प्रगतिवाद राजनीति और अर्थनीति के प्रचार का साधन बन जाने में ही साहित्य का साफल्य देखता है। सोने का यदि कोई मूल्य है तो इसलिए कि वह सिक्के-रूप में विनिमय का साधन है इसलिए नहीं कि अलङ्कार का रूप धारण कर वह रमणी की सौन्दर्य-वृद्धि करता है। अथवा स्वयं कला का अंग बनकर मानव की सौन्दर्य-वृत्ति को चरितार्थ करता है। ठेठ उपयोग की इस कसौटी पर इस संग्रह की कहानियां खरी नहीं उतरतीं।

"अधिक से अधिक व्यक्तियों के लिए अधिक से अधिक सुखमय संसार" को जो निर्माण-कार्य आज प्रगतिशील साहित्य द्वारा हो रहा है उस कार्यक्षेत्र में कूद पड़ने की बहुत सीधी स्पष्ट प्रेरणा भी इन कहानियों में नहीं हो पाती। प्रधानता सर्वत्र व्यक्ति की ही रहती है। बात यह है कि जिस समय ये कहानियां लिखी गई थीं, उस समय प्रगतिवादी आलोचकों के शब्दों में ही 'पलायनवाद का युग' था। आदर्शवाद को तो ये समीक्षक 'यथार्थ से पलायन वृत्ति' का पर्याय मानते थे और इन कहानियों के अधिकांश पात्रों में इस प्रकार की पलायन वृत्ति है। कभी हृदय की भावुकता की आड़ लेकर कभी परिस्थिति से हार मानकर कहानियों के अधिकांश चरित्र कर्मक्षेत्र से अलग हो जाते हैं—अलग कर दिये जाते हैं। जिसके लिए वे अलग हो जाते हैं—बड़े से बड़ा त्याग कर बैठते हैं—वह जनता का सुख नहीं अपनी आत्मा का संतोष है। आत्मा का यह संतोष, यह त्याग, प्राचीन आदर्शवाद में भले ही लोक-कल्याण का एक रूप रहा हो पर आज के प्रगतिवाद में उसे 'पलायनवाद' की संज्ञा ही मिलती है। पलायनवाद इसलिए कि उसमें आत्मगत अनुराग का परित्याग नहीं है, 'यथार्थ का आत्मगत के प्रति विद्रोह' नहीं है, बुद्धि के लिए हृदय का हनन नहीं है। 'कर्तव्य-पथ' का राजनाथ अपने को गिरफ्तार करा देता है। महेन्द्र अपनी कुसुमांजलि पर दूसरे को पुरस्कार पाते देखकर सूर्य की अंतिम किरणों से रक्तिम होते हुए बादलों पर आंख गड़ाये चल देता है। डोनाटेलो एक क्षणिक मोह का संवरण न कर सकने के कारण जब अंधा हो जाता है तब हिटलर का यह प्रबोध कि हम असफल नहीं हुए, परिहास-सा लगता है। 'किसके लिए' का जेम्स अपना 'सेक्स' परिवर्तन कर लेता है और विलियम राकेट में चन्द्रलोक को उड़ जाता है जहां से वह फिर नहीं लौटता। 'लिली' के फोटो-मात्र से असंतुलित हुआ 'प्रेम-कीटाणु' का नायक समुद्र के गर्भ में विलीन हो जाता है। 'दो प्रश्न' के कुसुम और सतीश होटल में बैठे हुए शराब के प्याले से अपना गम गलत करते हुए नजर आते हैं। कथाकार के प्रायः सभी पात्र ईमानदार हैं, साहसी हैं। बड़े से बड़ा त्याग वे कर जाते हैं। पर इस त्याग के मूल में जो हृदय का तत्त्व ह, जो आत्मगत सुख-संतोष है वह प्रगतिवाद की कसौटी पर खरा उतरता है क्या? जीवन की कठोर वास्तविकता से इस प्रकार विमुख हो जाने को वहां क्या आदर की दृष्टि से देखा जायगा? परिस्थितियों से हार मान लेने, दब जाने की जो एक प्रवृत्ति सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है उसे प्रगति कहना क्या ठीक होगा? मैं यह नहीं कहता कि सुखान्तता अथवा परिस्थितियों पर विजय प्रगतिवाद का अनिवार्य लक्षण है। वह तो नहीं है। पर प्रगतिवाद में व्यक्ति के दब जाने का उत्तरदायित्व कठोर यथार्थ की अनिवार्यता पर होता है हृदय की किसी कोमल वृत्ति पर नहीं।

प्रगतिवाद यथार्थ से विमुख नहीं होता। यथार्थ वहां गौण भी नहीं होता। पर इस संग्रह की प्रायः सभी कहानियों में जो प्रमुख हो उठा है वह तो वही तत्त्व है जिसे स्वयं कथाकार ने 'स्वप्न' की संज्ञा दी है। 'सत्य' तो प्रायः सर्वत्र इस स्वप्न की पृष्ठभूमि बनकर ही आया है। इन कहानियों में सत्य और यथार्थ से जो अधिक व्यापक और अधिक सत्य है वह तो यह 'स्वप्न' ही है। वैज्ञानिक कहानियों में किसी वैज्ञानिक सत्य की व्याख्या कथाकार का ध्येय नहीं है। राजनीतिक कहानियों में किसी राजनीतिक समस्या का निराकरण भी उसने नहीं किया है। इनमें तो उस 'स्वप्न' की एक झलक भर है जो कठोर सत्य से दबकर भी दब नहीं पाता—कुचल कर भी पुष्प की भांति जो उसे अधिक सुरभित कर जाता है। जलदाता और जीवनदाता होने के कारण वर्षा ऋतु में उमड़-घुमड़ कर घिर आनेवाले बादल ही विश्व के लिए अधिक सत्य हैं। पर अचानक उनमें कौंध जानेवाली विद्युत-लता का—उनके श्याम हृदय में सोते हुए उस जाज्वल्यमान स्वप्न का—क्या कोई मूल्य ही नहीं है? अथवा जीवन और जगत् में सचमुच ही जिसका कोई मूल्य नहीं है, उस सप्तरंगी इन्द्रधनुषी को आप क्या कहिएगा। मानव क्या सचमुच 'रोटी' में ही अपनी पूर्णता प्राप्त कर लेगा? आज भले ही हम यह सोचने लगे हों पर जिस युग की ये कहानियां हैं उस युग में यह मान्यता मान्य न थी। कहानियों में 'सत्य' के भीतर से जो स्वप्न उभर आया है वह युग-धर्म ही कहा जायगा। इन कहानियों में एक और भी ऐसा तत्त्व है जिसे हम युग की देन कह सकते हैं। वह कहानीकार की अपनी व्यक्तिगत प्रवृत्ति भी हो सकती है। इन कहानियों में प्रेम के जिस रूप का चित्रण हुआ है वह मांसल तनिक भी नहीं है। पात्रों के प्रेम में शारीरिक नहीं है—वासना नहीं है।

प्रसिद्ध कथाकार डाक्टर ब्रजमोहन गुप्त।

राजनाथ के हृदय का प्रेम कभी शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं होता। लिली जेम्स से एक बार भी नहीं कहती कि मैं तुम्हें प्यार करती हूँ। लिली को छोड़ दीजिए विलियम के प्रेम में भी वह ज्वाला और ताप नहीं है जो वासनामय मांसल प्रेम का प्रमुख लक्षण है। विनायक के हृदय में तारा के लिए जो प्रेम है वह अपने एकान्त पूत-पावन रूप में ही पाठक के सम्मुख आता है। प्रेम का अर्थ है दो कुसुमों की सुगन्ध का अनिल में लय होकर एक दूसरे से घुल-मिल जाना। इस प्रकार का वासनाहीन प्रेम मुखर नहीं होता; और इस संग्रह की प्रेम-कहानियों में जो इस प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है वह सर्वत्र संयत और कलात्मक है। लेखक ने अप्रत्यक्ष रूप से संकेतों द्वारा ही उसे व्यक्त करके अपनी सुरुचि का ही नहीं कहानी में टेकनिक पर अपने अधिकार का भी परिचय दिया है। इस प्रकार का संकेत ही कहानी-कला का प्राण है। कहानी के भावों की व्याख्या नहीं व्यंजना होती है। यही संकेत और यही व्यंजना कहानी की अपनी

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

प्रगतिशील लेखकों को राहुलजी का सन्देश

अभी-अभी 'प्रयाग प्रगतिशील-लेखक-संघ' की ओर से आदरणीय महा-पंडित राहुल सांकृत्यायन जी को उनके साहित्य-सम्मेलन के सभापति निर्वाचित होने पर सम्मान-पत्र दिया है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि सम्मेलन ने राहुल जी को अपना सभापति चुनकर एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य का पालन किया है। राहुल जी का अस्तित्व हिन्दी के लिए एक शोभा है। अपने पद और उत्तर-दायित्व के अनुकूल ही उनका जो सन्देश प्रगतिशीलों तथा अन्य हिन्दी वर्गवादी साहित्यकारों के लिए आया, वह आँख खोल देनेवाला है। राहुल जी सच्चे अर्थ में एक प्रगतिशील और हिन्दी के महाहितचिन्तक हैं। उनके सत्यस्पर्शी दृष्टिकोणों के विस्तार को कोई भी वर्ग खरीद नहीं सकता। वे सदैव ही बहुत सन्तुलित और सुस्पष्ट रहे हैं। अपने संदेश में उन्होंने कहा कि साहित्य का सम्बन्ध किसी एक सीमित देश-काल और पात्र से न होकर सर्वयुगीन और सर्वव्यापक है। साहित्य सच्चे अर्थ में जनता और समाज के जीवन का प्रतिनिधि, निर्देशक और शुभाकांक्षी है। वह एक वर्ग का नहीं, सभी वर्गों के हितों का समावेशक है।

कोई भी पीढ़ी अपने समय के साहित्य का निष्पक्ष विवेचन नहीं दे सकती। उसकी दृष्टि अपने युग-देश और पात्रता की रेखाओं से सीमित होती है। किन्तु साहित्य रूढ़ि-अर्थ में अमर न होकर अनन्त कालीनता के अर्थ में अमर अवश्य है, आज जो साहित्य लिखा जा रहा है। उसका पारखी आगे आनेवाली पीढ़ी होगी। जिस पर हमारा कोई प्रचार (प्रोपेगेंडा) और कोई वकालत असर नहीं कर सकती। वह तो साहित्य के सच्चे मूल्यों के आधार पर उसका परीक्षण करेगी। साहित्य सदैव प्रगतिशील है, यदि वह सच्चा साहित्य है। मैं एक प्रगतिशील होने के नाते साहित्य की प्रगतिशीलता को किसी बँधी वर्ग रेखा से घेरना नहीं चाहता। हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्वाभाविक और जन्मजात अधिकार प्राप्त है। अपभ्रंश भी हिन्दी का आदि रूप है, और आज भी भारत के विभिन्न प्रान्तों के निवासी एक साथ होने पर हिन्दी में ही विचार-विनिमय करते हैं। मेरा सम्पर्क तो विभिन्न संत-जमघटों से भी रहा है। आज हिन्दी का उत्तर-दायित्व बहुत बड़ा है। विभिन्न क्षेत्रों में उसका भांडार भरना है। हिन्दी के विकास का अर्थ जनपदी और प्रान्तीय भाषाओं का संहार नहीं। हिन्दी तो भारत की एकता का प्रतीक है और उसे इसके लिए सब प्रकार से समर्थ बनाना हिन्दी के शुभ-चिन्तकों और सेवकों का कर्त्तव्य है। आज सभी प्रकार के दृष्टि-संकोच को छोड़कर हमें हिन्दी-सेवा के पथ पर बढ़ना है।

प्रगतिशील-लेखक-संघ के आयोजन में इससे बढ़कर महत्त्वपूर्ण और आवश्यक सन्देश क्या हो सकता है। सचमुच आज 'रक्त, पीब, आग, बुर्जुआ आदि अधकचरे नारों से साहित्य के भंडार में घोंघे और खाली सीप नहीं भरना होगा। नारों और पुस्तकीय नुस्खों से आगे बढ़कर जनता और समाज के जीवन में गहरे उतरना होगा। भारत और रूस तथा जर्मनी में बड़ा अन्तर है। इन देशों की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परम्पराओं में बड़ा अन्तर है। साहित्य और कला तो सच्चे इतिहास की प्रेरणा पर चलता है। उसका 'इलहाम' नहीं होता, वह तो किसी देश अथवा समाज की सांस्कृतिक परंपरा का अग्रविकास होता है। आशा है हिन्दी के वर्गवादी साहित्यिक और प्रगतिशील - नामधारी लेखक की आँख राहुल जी के इस सन्देश से अवश्य खुल जायगी।

प्रयाग —श्रीपालसिंह क्षेम

मारवाड़ किस ओर ?

मारवाड़ (जोधपुर) में रक्षा के नाम पर सामन्तशाही को मजबूत बनाकर जनता को कहा जाता है कि हिन्दुओं पर संकट पड़ने पर उन्हें ये लोग मदद देंगे। जनता को हिन्दुओं के साथ इन सामन्तों की कितनी सहानुभूति है, वह तो साफ ही है। अपने हितों की रक्षा करने में किस निर्दयता से जाटों की हत्या करवाई जा सकती है उसे आज कौन नहीं जानता। जनता को राजनैतिक अधिकार देने में कितनी तत्परता इन लोगों की है वह सबको मालूम ही है। जनता को राजकाज में हिस्से देने के अभिप्राय से जिस जनता द्वारा बहिष्कृत निकम्मी अधिकारहीन असेम्बली के जरिए ठगा जा रहा है, वह भी आज पुरानी बात हो चुकी है। अपनी जाति में भी मतभेद करनेवाले ये सामन्त क्या हिंदुओं की रक्षा कर सकेंगे ?

सवाल यह है कि आखिर यह सब क्यों किया जा रहा है। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि यह जनतन्त्रवाद से घबराने लगे हैं। इनकी भरसक कोशिश यह रहेगी कि हिन्दुस्तान में जनतन्त्रवाद नहीं पनपे। जनतन्त्रवाद में सरमायादारों, सामन्तों व जागीरदारों को कोई स्थान नहीं। ये लोग आज तक भोली जनता का शोषण करने में लगे थे और खब एय्याश भरी जिन्दगी का स्वाद चख चुके हैं। अब इन्हें अपना भविष्य अन्धकारमय प्रतीत हो रहा है और ये लोग अपनी सत्ता कायम रखने के लिए प्रयत्नशील हैं।

अभी हाल ही में दशहरे के दिन हमारे मारवाड़ के महाराजा साहब बहादुर ने मारवाड़ियों के हितो के नाम पर जिस मंत्रि-मंडल की घोषणा की है उनमें ४ राजपूत हैं, २ बीगर मन्त्री भी इन्हीं के स्वत्वों की रक्षा करनेवाले हैं। इस तरह से शासन में राजपूती तत्त्व लाए गए हैं। [illegible] असेम्बली में भी राजपूतों का ही बोलबाला है। जनता हितों के नाम पर जागीर-दारों के हितों की ही रक्षा होगी।

जनता का इस मामले में क्या कर्त्तव्य है! उन्हें समय रहते स्वार्थी सामन्तशाही के खतरे से सावधान हो जाना चाहिए। अगर जनतन्त्रवाद की दुश्मन सामन्त-शाह की विजय हो गई तो जनता को बड़ी-बड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। इसलिए जनता का फर्ज है कि वह सुसंगठित हों। अन्तरजातीय वैमनस्य को उखाड़ फेंक और मारवाड़ में अमन (शांति) कायम रक्खें और शांति कायम रखने के लिए जोधपुर की भांति यहाँ भी नेहरू ब्रिगेड (स्वयंसेवक दल) की स्थापना करें। नेहरू सरकार को मजबूत बनायें और इस सामन्तशाही का मुका-बला करने के लिए तैयार हो जायें। हिम्मत से काम लो—मारवाड़ियो विशेष-कर नागौर परगने के लोगो! अपनी ही एकमात्र राष्ट्रीय हित-साधक राज-नैतिक संस्था लोक-परिषद् को मजबूत बनाओ। ज्यादा से ज्यादा लोक-परिषद् के सदस्य बनो, क्योंकि इस संस्था में जाती-यता जैसे संकीर्ण विचारों के लिए कोई स्थान नहीं। देश का हित-साधन ही इस संस्था का ध्येय है। लोक-परि-षद् आपकी संस्था है। जनता की ताकत ही इसकी ताकत है! आज हमें अपने सारे भेद-भाव मिटाकर इसके झंडे के नीचे अपनी आवाज बुलन्द करनी चाहिए और हमारा आज का नारा यह रहे कि मौजूदा असेम्बली को भंग किया जाय। बालिग मताधिकार के आधार पर विधान-समिति बनाई जाय। मौजूदा मंत्रि-मंडल को भंग किया जाय। उनकी जगह अन्तःकालीन सरकार बनाई जाय। जिसमें तमाम तबकों के लोगों को लिया जाय।

डिस्ट्रिक्ट लोक-परिषद्, नागौर —शिवदयाल दुबे प्रधान मंत्री

महाकवि निराला और कम्यूनिस्ट

प्रिय महोदय,

'देशदूत' में इधर कई हफ्तों से कोई विद्यार्थी या सज्जन प्रगतिशील लेखक-संघ के विरुद्ध अपने 'सरस' हृदय के उद्‌गार प्रगट कर रहे हैं। उनकी भाषा और शैली का बिना अनुकरण किये आपके पाठकों को यह बतलाना हम उचित समझते हैं कि हिन्दी के प्रगतिशील लेखक अपना केन्द्रीय दफ्तर बनाना चाहते हैं; इसमें वह कोई लज्जा की बात नहीं समझते। यही माँग वह जनता के सामने रक्खेंगे। श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन के सुझाव पर प्रगतिशील लेखक-सम्मेलन ने सर्वसम्मति से यह निश्चय किया कि 'निराला' जी के प्रति अपने सम्मान के चिन्हस्वरूप इस दफ्तर का नामकरण 'निराला - भवन' हो। यह अधिकार किसी भी 'निराला' भक्त और हिन्दी भक्त से नहीं छीना जा सकता। 'निराला' जी की सेवा और साहित्यकार संसद के लिए प्रगतिशील लेखकों ने क्या किया और 'सरस' जी तथा उनके साथियों ने क्या किया, इसका लेखा-जोखा बनाने का यह स्थान नहीं है।

प्रयाग —प्रकाशचन्द्र गुप्त
१५दिसम्बर, ४७ —पहाड़ी

५००) रुपये पुरस्कार

एक आश्चर्यमय आविष्कार

जादू की अँगूठी

यह अँगूठी जादू और मस्मेरिज्म की शक्ति की सहायता से तैयार की गई है। यह आश्चर्य के काम करती है। जो कोई इस अँगूठी को पहनेगा, वह किसी भी उद्देश्य में, वह कितना ही कठिन और दुःसाध्य हो, सफल होगा। यह आपकी सब प्रकार के संकटों या रोगों से रक्षा करेगी। ग्रहों का कोई बुरा प्रभाव नहीं हो सकता। इस अँगूठी का पहननेवाला किसी भी व्यक्ति (पुरुष या स्त्री) पर वह कितना ही कठोर हृदयवाला हो, अपना पूरा नियंत्रण रखेगा। यही नहीं, वह अत्यंत विनीत बन जायेगा और अनुपस्थिति से अपने को दुःखी अनुभव करेगा। आप प्रेम, मुकदमे-बाजी और नौकरी में सफल होंगे और बहुत-सा धन प्राप्त करेंगे। संक्षेप में, अँगूठी शरीररक्षक का काम देगी। एक बार आज-माइए और ठीक पहली रात को इसके आश्चर्यमय परिणाम देखिए।

मूल्य एक अँगूठी २ रु०। तीन अँगूठी ५ रु०। पैकिंग और पोस्टेज अतिरिक्त।

श्री शंकर भण्डार
पोस्टबाक्स २४३, कानपूर

चटपटी, मजेदार, सस्ती और सुन्दर पुस्तकें

लखनऊ की रंगीन रातें—लखनऊ के नवाबों, वेश्याओं और बिगड़े हुए रईसों के पतन की नंगी तसवीर देखना चाहते हैं तो इसे जरूर पढ़ें। मूल्य १)।

मजनू की चिट्ठियाँ—इसमें फिल्म स्टूडियोज में होनेवाले व्यभिचार का भंडाफोड़ किया गया है। मू० २)।

विवाहित मनोरंजन—इसमें नव-विवाहितों को बतलाया गया है कि वह परस्पर संभोग का सच्चा सुख किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं। मू० १)।

चित्रावली—प्रेम-मिलन व संसार की सुंदरियों के गुप्त चित्रों का आकर्षक संग्रह। मू० ३।)।

बम्बई की चाँदनी रातें—इसमें एक अभिनेत्री की आत्मकथा जिसे पढ़कर आप सिनेमा-क्षेत्र का असली रूप देख सकेंगे। मू० १)।

फिल्मी अप्सराएँ—यौवन की मस्ती के बोझ से लदी हुई ५० अभिनेत्रियों के चित्र एवं जीवनियाँ, सजिल्द का मू० २)

सोहागरात—प्रथम मिलन की भाँति मादक यह पुस्तक आपके विवाहित जीवन को सुखमय बना देगी। मू० १।)।

वशीकरण मंत्र—अनेकों प्रकार के वशीकरण मंत्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह। मू० १।)।

नोट—पोस्टेज पैकिंग प्रत्येक पर अलग लगेगा।

पता—एस के सक्सेना (६०) रंगमहल, अलीगढ़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमंदिर

स्त्री-समस्या की स्थिति

सैनिक-शिक्षा देना आवश्यक

लेखक, राजगुरु पंडित हरिदत्त शास्त्री

देश की संस्कृति स्त्रियों के शक्तिशाली जीवन पर अधिकांश निर्भर है। इस समय भी अहिंसात्मक स्वाधीनता के विराट् संग्राम में भारतीय माताओं ने पर्याप्त भाग लिया है, अतः भारतीय देवियों में शौर्यबल का विकसित कराना स्वाधीन भारत की विजय-पताका है। भारत के साहित्य में स्त्रियों को शक्ति तथा आदि देवि के नाम से सम्बोधित किया गया है। आत्मनिष्ट पूज्यपाद आदि शंकराचार्य ने, शक्ति नाम से स्त्री-रूपस्व का वर्णन किया है, संसार के निर्माण में शक्ति तत्त्वों का आधिक्य और प्रबलता दिखाई है। भक्ति-मार्ग में भगवान् को माता के स्वरूप में ध्यान करने से भोग और मोक्ष दोनों की सिद्धि साथ साथ दिखाई है, स्त्रियों के बलहास होने से देश रसातल को जाता है, स्त्रियों को अबला कहना पाप है, समग्र बल की प्रसव-भूमि स्त्रियां हैं।

भारतीय महिलाओं ने गत दीपावली का उत्सव इसी प्रकार मनाया था।

यह देश शक्ति-पूजक परम्परा से रहा। जब से देश दासता की शृंखला में बंध गया था तब से विदेशी शासकों ने देश की शक्ति क्षीण करने के लिए ऐसा वातावरण रचा, स्त्रियों का स्वाभाविक शौर्य क्रमशः अस्ताचल की ओर जाने लगा, उनकी शिक्षा-दीक्षा-पद्धति से उनको अबला बनाकर देश पर अपने प्रभुत्व का जाल फैला दिया था, अब देश स्वाधीन हो गया है। अब प्रमुख सञ्चालक और देशहितैषियों का काम है कि देश में जो अमानुषीय-दुर्घटनाएं हो रही हैं उनका चित्र दृष्टि-कोण में रखकर देश के कल्याण और शान्ति के लिए सबसे प्रथम स्त्रियों के प्रति ऋण से मुक्त होना।

ऋण यह कि यह स्त्रियों को देवी और शक्ति कहते आये हैं उनका यह स्वत्व इन्हें न देकर इनका अपमान करना है। स्वत्व इनमें पुनः शक्ति के स्वरूप का विकास कराना है। यही स्वरूप माताओं का सम्मानात्मक विग्रह है, इसी शक्ति-स्वरूप के पूर्ण विकास से निरुपद्रव जीवन और देश में शान्ति मिल सकती है। गिरिराज हिमालय की राजपुत्री पार्वती के सुकुमार जीवन और सौन्दर्यप्रचुर मूर्त्ति का परिचय इतिहासज्ञ जनता से छिपा नहीं है, इसी हिमालय की राजकुमारी ने शुंभ निशुंभ के अत्याचार से संसार की रक्षा के लिए कालिका का रूप धारण कर धर्म और देश जाति की रक्षा कर शान्ति स्थापित की है। इससे समझना चाहिए गिरिराज ने अपनी वंश-पताका पार्वती को सैनिक शिक्षा में कितनी निपुणता प्राप्त कराई थी। इसलिए भारत-भूमि में शक्ति का पूजन चला है। शक्ति के पुजारी शायद वीर होते हैं, निर्वीज नहीं होते हैं अतः अब अवलम्ब देश शान्ति के लिए स्त्रियों को सैनिक शिक्षा देनी चहिए तथा सैनिक विभाग में सम्मान पूर्वक उनका स्थान होना चाहिए। पाश्चात्य शिक्षा से जो दूषित कीटाणु स्त्रियों के मन-मन्दिर में विदेशियों-द्वारा सञ्चार किये गये हैं उनका मार्जन एकमात्र उनके वास्तविक स्वरूप के दिखाने से होगा। अर्थात् यह बताते हैं कि आप शक्ति और देवी हो अबला-स्वरूप भारतीय कन्याओं का नहीं है, यह आसुरी जगत् ने तुम्हारा अबला स्वरूप अधर्म तथा अन्याय कराने के लिए कहा था स्त्रियों की शिक्षा हमने एक पुस्तिका में छपाकर सब जगह वितरण की है जिससे प्रधान शिक्षा के तीन वर्ग दिखाये हैं—

(१) मद्य कालिवर्ग जिसमें पूर्ण सैनिक शिक्षा, (२) महालक्ष्मी जिसमे अर्थशास्त्र व्यवहार निपुणता (३) महासरस्वती वर्ग जिसमें ज्ञान-विज्ञान आदि इस प्रकार शिक्षा-शिविरों की योजना नगर नगर और ग्राम-ग्राम में होनी चाहिए।

"धनकुबेर का खजाना!"

(१) १९४७ का वर्ल्ड डाइरेक्टरी जिसमें भारत तथा दुनिया के हर भागों से निकलनेवाले २००० भिन्न भिन्न विषयक दैनिक, साप्ताहिक व मासिक समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, मैगेजिन आदि के नाम व पते हैं। यह अंगरेजी में है। १ प्रति का मूल्य २) मनीआर्डर से भेजिये। डा० खर्च माफ। इसमें आपकी सर्व मनोकामना पूर्ण होगी।

(२) प्रचुर धन कमाने की १०१ रहस्य-मयी तरकीबें की सूची केवल –)॥ के टिकट (स्टाम्प) भेजकर मुफ्त मँगा लें। पताः—
Proprietor Hind Mail Service,
P. B.No. 36 Monghyr (Behar)

अपना-पराया

पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' लिखित इस मनोरंजक उपन्यास में एक चीनी तरुणी का मेनका-नृत्य जहाँ आपको आत्म-विभोर कर देगा, वहीं तिब्बत और चीन की नैसर्गिक छटा और वहाँ के अजीबोग़रीब रस्म-रिवाज भी आपके सामने नाच उठेंगे। चीन की यह रहस्यमयी तरुणी किस प्रकार भारत आती और अपने धर्म तथा स्वदेशाभिमान की रक्षा कर, एक भारतीय नौसैनिक की सहायता से अपने देश लौट जाती है, आदि प्रसंग आपको प्रणय की रंगीनियों का सजीव परिचय देंगे। पृष्ठ २३२, सजिल्द और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २॥) रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

फाउण्टेन पेन और पेंसिल पेन

यू० एस० ए० में निर्मित

विभिन्न रंगों और आधुनिक डिजायनों के फाउण्टेन पेन तथा पेंसिल पेन बेचे जा रहे हैं। प्रत्येक फाउण्टेन पेन 'गोल्डेन निब और क्लिप' से युक्त है। साधारण २॥), उत्तम ३॥), सर्वोत्तम ४॥)। १४ केरेट रोल्ड गोल्ड—गोल्ड-प्लेटेड निब-सहित ५॥) १४ के रेट रोल्ड गोल्ड गोल्ड निब-सहित ८), सर्वोत्तम १०)। प्रत्येक अतिरिक्त निब ।=), उत्तम ॥), सर्वोत्तम १।)। १४ केरेट गोल्ड निब ३।), सर्वोत्तम ४)। पेंसिल पेन साधारण ३), उत्तम ३॥), सर्वोत्तम ४॥)। एक दर्जन अतिरिक्त लेड ॥), एक साथ तीन दर्जन १=)। नोट—प्रत्येक फाउण्टेन पेन के साथ एक निब और तीन लेड प्रत्येक पेंसिल पेन के साथ मुफ्त दिए जाते हैं। तीन पेन या पेंसिल पेन मँगाने पर १२॥% की दर से कमीशन दिया जाता है। डाक व्यय ॥)।

पत्र-व्यवहार अँगरेजी में ही करें।

स्टैण्डर्ड वाच कं०

पोस्टबाक्स नं० ११४१९, कलकत्ता, ६, (डी०)

अपने देश की बनी हुई वस्तुएँ अपनायें

भारत के होशियार कारीगरों के बनाये हुये

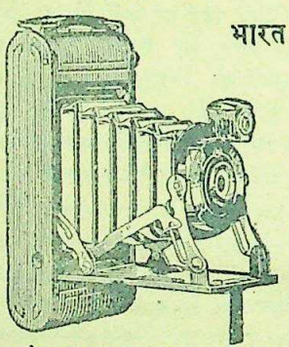

स्वदेशी कैमरे

सुन्दर मजबूत, नया डिजायन, विश्वसनीय, कीमत में सस्ते, काम में अच्छे, इन कैमरों से आप चाहे जिस दिलपसन्द चीज का टिकाऊ मनोहर फोटो खींच सकते हैं। इन कैमरों से बढ़िया फोटो खींचने की गारंटी है।

कैमरे के साथ, फिल्म कार्ड, मसाला और फोटो खींचने की तरकीब मुफ़्त भेजी जाती है। कीमत बक्स कैमरा ४।), बढ़िया बक्स कैमरा ५॥), पोस्टेज पैकिंग १=) अलग, बढ़िया फोल्डिंग कैमरा तथा फोटो खींचने की तरकीबसहित १५), पोस्टेज पैकिंग १॥) अलग।

ग्लोब फोटो स्टूडियो (एन० पी० १८) अलीगढ़ सिटी।

१९४८ में क्या होनेवाला है?

यदि आप १९४८ में होनेवाली अच्छी व बुरी घटनाएं समय से पूर्व जानना चाहते हैं, तो आज ही केवल एक पोस्टकाड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिख कर भेज दें, बस फिर हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का हानि लाभ, किस व्यापार में लाभ होगा, किस साधन से धन प्राप्ति होगी, रोजगार कब मिलेगा, वेतन-वृद्धि, परीक्षा में सफलता अर्थात् कार्ड की तारीख से लेकर एक वर्ष तक होनेवाली कुल बातों का संक्षेप अर्थात् मासिक वर्षफल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक-व्यय अलग।

श्री स्वामी योगीराज ज्योतिष आश्रम,

फगवाड़ा (कपूरथला स्टेट)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंग-मंच

'जीवन-यात्रा'

निर्माता शांताराम की एक सुन्दर कृति

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

भारतीय-फिल्म-उद्योग के प्रथम श्रेणी के अभिनेता, निर्देशक तथा निर्माता स्वर्गीय श्री विनायकराव कर्नाटकी ने अनूठे एवं समाज-सुधार के क्रान्तिकारी सन्देशों से परिपूर्ण कहानी "छाया" तथा सामाजिक-कुरीतियों पर तीव्र व्यंगों से युक्त, अमर-रचनाओं "अर्धाङ्गी", "देवता", "प्रेमवीर", "ब्राण्डी की बोतल", "धर्मवीर", "ज्वाला", "ब्रम्हचारी", आदि का निर्माण तथा उनमें अपने कुशल अभिनयनों का प्रदर्शन करने के राजकमल कलामन्दिर की वर्तमान नवीनतम रचना "जीवन-यात्रा" का सफल दिग्दर्शन किया है। प्रस्तुत चित्र के निर्माता हैं, सुप्रसिद्ध महान् चित्र-शिल्पी श्री व्ही० शान्तारामजी।

स्वर्गीय मास्टर विनायक, जीवनयात्रा के डाइरेक्टर।

"जीवन-यात्रा" की कहानी रजत-पट पर इस भांति प्रस्तुत की गई है :— जीवन-शान्ति को लक्ष्य कर 'विश्वेश्वर' 'मोटर सर्विस' की 'बस' काशी-नगर की ओर प्रस्थान करती है। 'बस' यात्रियों तथा दर्शकों से परिपूर्ण रहती है। अभाग्य-वश मार्ग में भयंकर तूफान आता है और समस्त यात्री, उस रात्रि को, एक मन्दिर में शरण लेते हैं। यात्रियों में रामशास्त्री तथा लक्ष्मीचन्द चन्द्राबाई पर मुग्ध हो जाते हैं, परन्तु वह तो राजा, एक निडर अनाथ 'क्लीनर' से .....। चन्द्रा को अपने यत्न में असफलता प्राप्त करने के कारण, वह मुरली काका, 'बस-ड्राइवर' का सहारा लेती है, जिसके फलस्वरूप 'बस' राजा तथा कालिन्दी, एक धनवान दुखी मा को त्यागकर, अन्य अवशेष यात्रियों व दर्शकों सहित, अपने आगामी पथ की ओर अग्रसर हो जाती है। कालिन्दी से विचलित उसका पुत्र मोहन, राजा के समान होने के कारण, उसे राजा अत्यधिक–प्रिय प्रतीत होता है। सौभाग्य-वश ये उसी 'बस' के समीप आ पहुँचते हैं। राजा अपनी चतुरता द्वारा सुनन्दा, एक आधुनिक-युवती तथा उसी बस के एक पुतिका-कीट यात्री, विद्याधर की भावी पत्नी को भगा ले जाता है। पर वह दुखिया कालिन्दी पूर्व के एक ग्राम में रह जाती है। दुर्भाग्यवश सरदार विश्वास के नेतृत्व में डाकुओं का एक समूह उन यात्रियों पर आक्रमण कर, अपने अधिकार में कर लेता है। राजा के वीरत्व का मान करने के लिए, सरदार विश्वास पर प्रसन्न होकर, एक कटार भेंट करते हैं सरदा के सहयोगी रणधीर को यह अत्यन्त अधिक अरुचिकर दृष्टिगोचर होता है। वह राजा से प्रतिकार लेने के लिए सुनन्दा को अनेक कष्टों को देने की चेष्टा करता है। राजा यह सहने में असमर्थ होकर रणधीर से युद्ध करता है। वह, राजा का सामना करने में असमर्थ रहता है और एक पहाड़ी के नीचे गिरता है। कानन के नियमानुसार राजा को मृत्यु-दंड दिया जाता है। कालिन्दी अपने पुत्र के रक्षणार्थ वहां आ पहुँचती है। सौभाग्यवश विश्वास के रूप में उसे अपना पति तथा राजा के आवरण में अपना पुत्र, मोहन प्राप्त होता है। अहोभाग्यवश रणधीर की मृत्यु नहीं होती। राजा की रक्षा होती है और समस्त यात्री पुनः स्वतंत्रता के अधिकारी होते हैं। राजा और सुनन्दा का विवाह हो जाता है। समस्त यात्री एवं दर्शकगण उसी 'बस' द्वारा सागर-किरण की ओर प्रस्थान करते हैं।

कथाकार प्रोफेसर श्री एन० एस० फड़के द्वारा लिखित कहानी सामाजिक तथा उच्च कोटि की है, परन्तु अस्वाभाविकताओं से परे नहीं। जैसे—'रणधीर का इतनी ऊँची चोटी से गिरकर जीवित रहना', 'सुनन्दा का विवाह राजा से होने पर विद्याधर तथा उसकी मा का कुछ न कहना', इत्यादि-इत्यादि। वर्तमान काल के पाखण्डी पण्डितों का अत्यधिक सुन्दर चित्रण किया गया है। आधुनिक-काल की मनचली नवयुवतियों तथा पाश्चात्य सभ्यता का अनुसरण करनेवाली रमणियों की 'छीछालेदर' का वास्तविक प्रदर्शन किया गया है। वास्तव में वर्तमान युग में रामशास्त्री नहीं दृष्टिगोचर होते, वरन् 'कामशास्त्रियों' का मान है। श्री फड़केजी ने 'विश्वेश्वर-मोटर-सर्विस' की 'बस' में रामशास्त्री जैसे लोभी एवं चरित्रहीन पंडित, लक्ष्मीचन्द जैसे सूदखोर, चन्द्राबाई जैसी वेश्या, कालिन्दी जैसी दुखिया मा, राजा जैसा निडर अनाथ, मुरलीका का जैसा 'ड्राइवर' जिसके वृद्धावस्था में भी यौवनावस्था की लहरें झोंके मारती हैं, एक धनवान् मां, सुनन्दा जैसी आधुनिक रमणी तथा विद्याधर जैसा किताबी कीड़ा तथा एक निर्धन रूढ़वादी मनुष्यों को स्थान देकर पूर्ण चित्र की मनोरंजकता में और चार चांद लगा दिये हैं, जो भारत के चालीस करोड़ मानव-विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। दृश्य-दृश्यावलियां, संवाद तथा गीत-लेखन-कार्य श्री दीवान शरर ने सफलता के साथ किया है। संवाद भावुक व मनोरंजक हैं। उदाहरणार्थ—'निर्धनों के पेट की गर्मी तुम्हारी पीठों की गर्मियों से सहस्र गुना बलशाली है।' 'आम, तुम पूंजीपतियों के स्वर्ण की चमचमाती किरणों से नहीं पक सकता वरन् प्राकृतिक-सूर्य की प्रथम-किरण से।' 'मि० दन्तमंजनजी! इसने आपको 'अंगरेजी, में गाली दी है, आप हिन्दुस्तानी में ऐसा चांटा मारिए कि बस मजा आ जाय' 'कहां चले मेरे राजा....चांद?' और 'तुम कहां चली रानी.....अमावस्या की रात।' गीत प्रसंशनीय हैं। श्री वसंत देसाई के संगीत-निर्देशन ने पूर्ण चित्र में नवीनता का संचार कर दिया है। रुचिकर साजों का प्रयोग किया गया है। श्री मिनू टैम्पल का चरित्र-चित्रण-कार्य सराहनीय हुआ है। श्री माधव बुलबुले का चित्रालेखन उच्च कोटि का है। प्रतीकवाद के चित्रण देखने योग्य हैं। दृश्य-दृश्यावलियां नेत्रों को शीतलता प्रदान करती हैं। कला-निर्देशन, श्री वसन्तराव जाधव ने सफल किया है। 'मेक-अप' स्वाभाविक तथा ध्वनि-आलेखन निर्दोष हुआ है।

अभिनय-कला की दृष्टि से सबसे सुन्दर एवं उच्च कोटि का अभिनय सरदार विश्वास की भूमिका में बाबूराव पेंढारकर ने अभिभूत किया है। नायिका सुनन्दा की कल्पना में नयनतारा ने प्रथम प्रदर्शन में अत्यधिक सफलता का परिचय दिया है। कथोपकथन के समय की भाव-भंगियां अस्वाभाविक हैं, परन्तु गायनों में मधुरता है। नायक राजा की काया में याकूब ने अस्वाभाविक व द्वितीय श्रेणी के अभिनय का प्रदर्शन किया है। एक 'क्लीनर' के वेश में आप अत्यधिक फबे हैं, परन्तु किसी-किसी स्थान पर 'ओवर-ऐक्टिंग' हो गई है। यद्यपि हास्य-अभिनेता दीक्षित ने मनोरंजकता का उदाहरण प्रस्तुत किया है 'ओवर-ऐक्टिंग' सहित। विद्याधर की छाया में कलाकार जानकीदास ने अत्यधिक हास्य-मय अभिनय किया है। प्रस्तुत चित्र में मनोरंजकता का संचार करने के लिए आपने चरित्र-चित्रण में असतर्कता से कार्य किया है। कालिन्दी की भूमिका में प्रतिमादेवी ने सफलता से अपना अभिनय अभिनीत किया है। शेष कलाकारों का अभिनय उल्लेखनीय नहीं है।

उपरोक्त लिखित विचारों को दृष्टिगत रखते हुए यह सरलता से कहा जा सकता है कि हास्य-दिग्दर्शक स्वर्गीय श्री विनायक ने द्वितीय श्रेणी का दिग्दर्शन दिग्दर्शित किया है। श्री व्ही० शान्ताराम के योग ने चित्र की लोकप्रियता को अत्यधिक विस्तृत कर दिया है। 'टेकनिक' के दृष्टिकोण से "जीवन-यात्रा" प्रथम श्रेणी का चित्रपट प्रदर्शित हुआ है; परन्तु अभिनय की दृष्टि से द्वितीय श्रेणी का। कलानेत्री नयनतारा को एक सफल अभिनेत्री घोषित करने का निर्देशक तथा निर्माताओं ने अत्यधिक परिश्रम किया है। दिग्दर्शक ने रहस्यवाद को अत्यन्त कुशलता के साथ चित्रित किया है। चित्र में कुटुम्बवाद की आवश्यकता होने पर भी उसे कोई स्थान नहीं दिया गया है। आदर्शवाद एवं शृंगार-रस का रसास्वादन, दर्शकगण "जीवन-यात्रा" में आद्योपान्त करेंगे—इसमें कोई सन्देह नहीं है। प्रस्तुत चित्र के दो गीतों में कुछ अश्लील शब्दों का स्थान निरखकर हृदय रो उठा, परन्तु अन्य गीतों का मैं हृदय से स्वागत करता हूँ। "जीवन-यात्रा" चित्र प्रत्येक मानव के देखने योग्य एक कला-कृति है। आशा है, आर्यावर्त की समस्त जनता "जीवन-यात्रा" को निरखकर उस स्वर्गीय आत्मा का सहर्ष स्वागत करेगी। श्री विनायक का आगामी आकर्षण 'बड़ी मा', 'मन्दिर' तथा 'नया आदमी' है।

अन्त में मैं दर्शकों की ओर से तथा 'देशदूत' के सहयोग द्वारा उस स्वर्गीय विभूति के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्तरोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए० लाहौरवाले फतेहपुरी (D. A.) देहली से मशवरा (सम्मति) मुफ्त लेकर अपना जीवन सुधार लें।

पुरुष स्त्रियों से क्या चाहता है?

पुरुष बड़े मनोरंजक होते हैं। वे छोटी चीजों जैसे हास्य, मन्द मुस्कान, स्थायी सुगन्धि द्वारा आकर्षित होते हैं।

काश्मीर बुकेट के टाल्क में आप मन्द सुगन्धि पायेंगे। स्नान के पश्चात् काश्मीर बुकेट टाल्क को शरीर पर छिड़किए।

इसकी शीतलता को अपने चर्म में प्रवेश करने दीजिए। यह घंटों आप में ताजगी और प्रसन्नता रक्खेगी

अब आपको अपने सौन्दर्य में सन्देह नहीं रहेगा। उस सुगन्ध को धन्यवाद है, "जिसे मनुष्य पसन्द करता है।"

Cashmere Bouquet Products WITH THE FRAGRANCE MEN LOVE

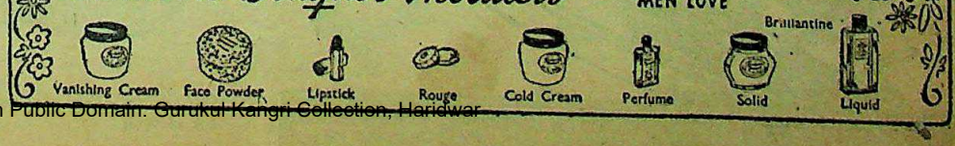

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पेज ५ का शेष)

इस कुएँ को अब पाट दिया गया है। लाशें उसी में पड़ी हैं। ऐसा विचार है कि यहां छोटा-सा मन्दिर या समाधि बना दी जावेगी, जिसमें इन पवित्र आत्माओं की यादगार कायम रहे। निस्सन्देह स्त्रियों के लिए तो एक तीर्थ-स्थान होगा जो आनेवाली नसलों को हमारी पुरानी सभ्यता, धर्म-परायणता और संस्कृति की याद दिलावेगा। कोआखालसा के पास ही एक दूसरा गांव दुभेख नाम का है। यहां ७९२ बच्चों, स्त्री-पुरुषों के मारे जाने की खबर है। कहते हैं केवल ८ आदमी यहां से निकल पाये। इन आंकड़ों में कुछ अन्तर हो सकता है; परन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि यहां की आबादी का बहुत बड़ा भाग नाश कर दिया गया। यहां एक मकान में २००-२५० आदमी जिनमें स्त्रियों और बच्चों की संख्या बहुत ज्यादा थी, जलाकर भस्म कर दिये गये। कोआखालसा का हृदय-भेदी दृश्य देखकर हमारे मन इतने व्याकुल हो गये थे कि हमने आना-जाना मुल्तवी किया; परन्तु महाशय खुशहाल-चन्द जी जिनकी चर्चा मैंने पहले की है दो-चार दिन पीछे वहां गये थे। आंसुओं की झड़ी के साथ बताते थे कि उस समय तक गांव में झुलसी, जली, सड़ी लाशें बिखरी पड़ी थीं। जिनकी असह्य दुर्गन्ध दूर-दूर तक फैली हुई थी, वहां के लोगों के सामने भी यही प्रस्ताव रखा गया कि जान बचाना चाहते हो तो इस्लाम कबूल करो। इन वीर ललनाओं और साथ के पुरुषों ने प्रचण्ड अग्नि में भस्म हो जाना कबूल किया; परन्तु धर्म-परिवर्तन पर राजी नहीं हुए।

यह सब देख-सुनकर विश्वास होता है कि बूढ़े भारत में अभी बहुत जान बाकी है। इसके गौरव और उच्च आदर्शों के लिए जान देनेवाले विशेष करके स्त्रियां अभी विद्यमान हैं। गांव में रहनेवाली इन अनपढ़ स्त्रियों ने जो कुछ कर दिखाया वह पद्मिनी के जौहर और राजपूत स्त्रियों के आत्म-बलिदान से घटकर नहीं था। जिस देश में ऐसी वीर स्त्रियां हों, वह कभी मर नहीं सकता है।

मुझे अभी तक यह पूर्ण विश्वास है कि आम हिन्दू-मुस्लिम जनता में परस्पर कोई दुश्मनी नहीं है। सैकड़ों वर्ष के सम्बन्ध से उनके दिलों में जो प्रेम-भाव पैदा हो गया था वह अभी मरा नहीं है। उसकी झलक इस काले वातावरण में भी कहीं-कहीं बराबर दिखाई दी है। इसके भी कुछ दृष्टान्त मैं नीचे लिखती हूँ—

१—उसी कोआखालसा के गांव में जहां इतने अनर्थ हुए थे, एक भाई को जिसकी वहां जमींदारी थी, मैंने एक मुसलमान भाई से यह कहते अपने कान से सुना कि "भाई जब तक मैं लौटकर आऊँ मेरी खेती तुम्हारे जिम्मे है। कोई नुकसान न होने पावे।" इस सिख भाई को अपने मुसलमान मुजारे पर इतना भरोसा था कि वह जानता था कि यह मेरी खेती की पूरी रक्षा करेगा और कोई नुकसान न होने देगा।

इसी तरह कितने ही शरणार्थियों ने कहा कि वे अपना माल-असबाब अपने मुसलमान पड़ोसियों के सुपुर्द करके आये हैं जिनकी ईमानदारी पर उन्हें भरोसा है। बहुतों ने कहा कि अपने घर छोड़कर जब वे भागे तो मुसलमान पड़ोसियों ने उन्हें शरण दी और उनकी जान बचाई।

२—मरी और कोहाला के बीच में देवल नाम का एक गांव है। यहां जब मुसलमान आग लगा रहे थे और दंगा कर रहे थे तो एक मुसलमान बहन ने जिसका अपना बाप आग लगानेवालों में था, एक सिख-परिवार को शरण दी। रात भर उसने उन्हें घास के तूदों में छिपा रखा। जब बलवे का जोर कम हुआ और शरणार्थी सिख-परिवार के सम्बन्धी आन पहुँचे तब उसने उनको निकाला। वाह कैम्प में पीछे इस बहन ने इस सिख-परिवार के लिए कपड़े भेजे। यदि बल-वाइयों को मालूम हो जाता कि इस औरत ने ऐसा किया है तो वह क्रोध के आवेश में उसको मार डालते तो कोई आश्चर्य की बात न थी।

३—इसी तरह किसी दूसरे गांव में एक हिन्दू स्कूल मास्टर को गांव के मुसलमानों ने छिपा रखा। फौजी बस जब छुड़ाने के लिए आई तब वे किसी तरह छिपा-लुकाकर उसको बस तक पहुँचा आये और इस तरह उसकी जान बचाने में सफल हुए।

४—रावलपिण्डी जिले में जब मार-काट शुरू हुई तो एक सुनार-परिवार अपने सारे जेवर लेकर पड़ोसी कुम्हारों के पास गया। जेवरों की भेंट देकर उन्होंने कहा कि इन जेवरों के बदले में हमारे बालकों की रक्षा करो। यह तुम्हारे सुपुर्द हैं। कुम्हारों ने जेवर ले लिये। जैसे-तैसे बच्चों की जानें बचाईं; परन्तु झगड़ा शान्त होने पर बच्चे और जेवर दोनों को उनके बहनों के हवाले किया।

५—जिला झेलम के सैयद गांव में बहुत अत्याचार हुए। परन्तु एक सिख-परिवार की जान और उनके धर्म की रक्षा एक बुद्धिमान् भली मुसलमान स्त्री ने की। जब सिखों को मसजिद में मुसलमान बनाने के लिए ले गये तो इस बहन ने कहा कि स्त्री-बालकों का मसिजद में जाना ठीक नहीं, इन्हें मैं अपने घर पर ही कल्मा पढ़ा लूंगी। इस बहाने से उसन पूरे परिवार को रोक लिया और जब बचाव के लिए फौजी ट्रक आई तो उनके हवाले किया।

६—इसी सैयद गांव के निकट एक-दूसरे गांव की घटना है। वहां जब बाहर-वालों ने आकर आक्रमण किया तो गांव के सब मुसलमान मुकाबले के लिए निकल खड़े हुए। तीन दिन तक उन्होंने बलवाइयों को रोके रखा; परन्तु उनकी संख्या बहुत कम थी इसलिए बलवाइयों को भगा नहीं सके। अन्त में इस बात पर समझौता हुआ कि वे माल-असबाब सब लूट लें परन्तु जान से किसी को न मारें न किसी हिन्दू-सिख को मुसलमान बनावें। सब हिन्दू-सिखों को बड़ी हवेलियों में रखकर मुसलमान हथियार लेकर बाहर बैठ गये और कहा कि एक भी हिन्दू के मारे जाने से पहले हम एक-एक मुसलमान कट मरेंगे। बलवाइयों ने उनको न छेड़ा। माल असबाब लूट लिया और चले गये।

जिन मुसलमानों ने अपनी जानों को खतरे में डालकर अपने विधर्मी भाई-बहनों की रक्षा की है उनकी याद भी हमारे दिलों में सदा बनी रहनी चाहिए।

लाहौर में भी कुछ मुसलमान भाइयों ने अपने मुहल्लेवाले हिन्दुओं की अच्छी रक्षा की। कहीं-कहीं झगड़ा केवल इस-लिए नहीं हो पाया कि मुहल्ले के हिन्दू-मुसलमानों में एका था।

यदि पुलिस की उत्तेजना और उसका हाथ न होता तो जो कुछ हुआ उसका आधा भी न हो पाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

प्रयागराज जैसे त्रिवेणी के संगम तथा प्रान्त की राजधानी के स्थान पर आज ता० १४ दिसम्बर ४७ को एलफ्रेड पार्क में श्री नेहरू जी द्वारा एक संग्रहालय की नींव डाली गई। पार्क में एक ओर महारानी विक्टोरिया तथा महाराजा पंचम जार्ज की मूर्तियाँ स्थापित थीं तथा दूसरी ओर एक सुन्दर शामियाने के बीच वेदध्वनि का पाठ चल रहा था। प्राचीन रूढ़ि के अनुसार ही जमीन पर सभी आमंत्रित स्त्री-पुरुषों के बैठने का इन्तजाम किया गया था। श्री नेहरू जी के साथ श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित भी थीं। शामियाने के मध्य में शिलान्यास का इन्तजाम था। चारों ओर सुन्दर चौक पूरे गये थे, खंभों पर हस्तचित्र टाँगे गए थे। बीच में एक नींव की दीवाल का चबूतरानुमा भाग बना था जिसके ऊपर "क्रेन" से एक बड़ा चौकोर शिलाखंड टाँग रखा था जिसमें सामने की ओर संगमरमर पर संस्कृत में श्री नेहरू जी द्वारा शिलान्यास करने का विवरण लिखा था। चबूतरे पर एक ओर एक सुन्दर तसले में कुछ तैयार सीमेंट रखा था तथा साथ में एक सुन्दर चाँदी की कन्नी (सीमेंट लगाने का औजार) रखी थी जिस पर श्री नेहरू जी द्वारा शिलान्यास के विषय में खुदा था जिससे वह भी संग्रहालय के जन्म-स्मारक की तरह संग्रह की एक अनुपम वस्तु बन जायेगी।

पहले कन्याओं द्वारा वन्देमातरम् का गान हुआ। फिर उसके बाद श्री नेहरू जी को कई मानपत्र भेंट किये गये। जिनके उत्तर में श्री नेहरू जी ने अपने हृदय में प्रयाग का निवासी होने के नाते हमदर्दी जाहिर करते हुए उसकी उन्नति की ओर बढ़ते कदमों को पाकर दिली खुशी जाहिर की और आश्वासन दिया कि उसमें सहयोग देने में भरसक यथा-संभव प्रयत्न करेंगे। उन्होंने यह भी बतलाया कि खेद का विषय यह है कि भारतीय प्राचीन संग्रह-योग्य वस्तुओं का सबसे बड़ा संग्रह लंदन में है तथा वहाँ आजकल उन चीजों की शायद सबसे बड़ी प्रदर्शनी भी हो रही है। उन्होंने यह भी कहा कि वे सभी चीजें धीरे-धीरे भारत आ जायेंगी।

बाद को श्री विजयलक्ष्मी पंडित कमलों तथा नारियल से परिपूर्ण डाली जो पंडित नेहरू जी को भेंट की गई थी लेकर चलीं। श्री नेहरू जी ने अपनी हस्त-लिखित जीवनी तथा हीरक जयन्ती में प्राप्त डाक्टरेट की डिगरी का सार्टीफिकेट संग्रहालय की भेंट करने को कहा। इस तरह से जलसा समाप्त हुआ।

—श्रीकृष्णलाल गुमाश्ता

प्रयाग दारागंज में नाइयों की एक सभा त्रिवेणी नाईबाड़े के सम्बन्ध में हुई जिसमें यह प्रस्ताव पास हुआ और अधिकारियों तथा त्रिवेणी माघमेला मैनेजर के पास भेजा गया है।

नाईबाड़ा प्रतिवर्ष जैसा कि बनाया जाता था उसी तरह बनना चाहिए गंगा जी या यमुना जी के दोनों तरफ न बनाया जाकर एक बाड़ा होना चाहिए। नाईबाड़े में अधिक से अधिक पाइप (नल) बनाया जाय। पेशाबखाना या टट्टी जो बनाई जाती है, नाईबाड़े के पास से हटाकर दूर बनाई जाय। बाड़ा आम सड़क या घाट के पास ही होनी चाहिए। जिससे जनता को सुविधा हो। नाईबाड़े में उचित रूप से रोशनी का प्रबन्ध होना चाहिए। किसी भी नाई भाई से किसी प्रकार की बेगार न ली जाय। नाईबाड़े में जो वालंटियर रहते हैं वे हम नाई भाइयों पर यात्रियों द्वारा प्राप्त धन पर प्रतिबन्ध लगाते हैं, यह उचित नहीं।

—शेषनारायण (नाई)

प्रयाग का अर्द्धकुम्भी मेला जो कि ता० २४ फरवरी १९४८ तक होगा उसमें सदा की भाँति इस वर्ष भी बाबा काली कमलीवाला क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से पौष बदी अमावास्या से ही साधु-महात्माओं के लिए अन्नक्षेत्र जारी कर दिया जायेगा और क्षेत्र की ओर से यात्रियों के ठहरने का भी प्रबन्ध रहेगा। छप्पर, तम्बू, छोलदारी लगाई जा रही है, जो भक्त प्रयागराज में जाकर कल्पवास करना चाहें, वह पत्र-द्वारा ३१ दिसम्बर तक रा० व० पंडित श्रीदत्त शर्मा स० मंत्री बाबा काली कमलीवाला क्षेत्र ऋषिकेश और इसके बाद काली कमलीवाला पंचायती क्षेत्र गंगापार झूँसी प्रयाग से पत्र द्वारा ठहरने की उचित व्यवस्था करा सकते हैं।

—संवाददाता

प्रयाग विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती पर आयोजित अन्तर्विश्वविद्यालय हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता में गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के प्रतिनिधि (बु० शम्भूनाथ और बु० धुरेन्द्रनाथ) विजयी हुए। उन्हें चाँदी का विजयोपहार तथा पारितोषिक में हिन्दी-साहित्य की पुस्तकें प्रदान की गईं। स्मरण रहे कि पटना-विश्वविद्यालय की रजत जयन्ती पर आयोजित वाक्-संघर्ष में भी गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी ही विजयी रहा था।

—शंकरदेव विद्यालंकार

वृन्दावन में गत ३० नवम्बर से १५ दिसम्बर तक प्रसिद्ध गोस्वामी सार्वभौम स्वर्गीय श्री गोपाललाल महाराज का महोत्सव उनके पौत्र श्रीकृष्णचन्द्र गोस्वामी द्वारा समारोह के साथ मनाया गया।

वृन्दावन का राशन स्टाफ सी० आई० डी० का स्टाफ, कांग्रेस कार्यकर्त्ता चोर-बाजारी के विरुद्ध कमर कसकर खड़े हो गये हैं। १९ ता० को वृन्दावन के राशन इन्सपेक्टर चौधरी रामसिंह—प्रेमवल्लभ पाठक, चौधरी निरंजनसिंह ने कांग्रेस के सभापति बनवारीलाल शर्मा, दुर्गाप्रसाद शर्मा के साथ यहाँ की नामी फर्म के यहाँ छापा मारा और सामान बरामद किया। चावल, चीनी, गेहूँ, जौ, नमक आदि सभी राशन की चीजें थीं। चावल अधिक तादाद में था।

इसी प्रकार वृन्दावन के स्पेशल मजिस्ट्रेट श्री हेमन्तकुमार, राशन इंसपैक्टर निरंजनसिंह व कांग्रेस के कार्यालय मंत्री गोस्वामी अद्वैतकुमार ने राधा दामोदर के मन्दिर पर छापा मारा। वहाँ पर ३॥ मन के करीब चावल बरामद किया।

पुराने शहर में एक शरणार्थी की बिसातखाने की दूकान में आग लग गई। जिससे कि एक हजार का नुकसान हो गया।

वृन्दावन के पोस्टआफिस में पुलिस की नाक के नीचे ही चोरी हो गई। चोर पोस्टमास्टर के क्वार्टर की दीवाल लाँघ कर अन्दर खुस गये। कुछ सामान ले गये। वृन्दावन का पोस्टआफिस थाने के बहुत पास है यहाँ पर बराबर चोरियाँ हो रही हैं, पर पुलिस क्या कर रही है?

—संवाददाता

बीकानेर महाराजा ने, जो कोटा महाराव तथा महाराजकुमार बीकानेर आदि के साथ ता० १४ की संध्या को वनस्थली विद्यापीठ देखने आये थे, विद्यापीठ-परिवार को एक सभा में राजस्थानी भाषा में कहा कि "मैं और कोटा महाराव यहाँ आज आये। हम विद्यापीठ की सब प्रवृत्तियों को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। छात्राओं की कलाकृतियों, घुड़सवारों और साइकिल सवारों से हम बड़े प्रभावित हुए। मुझे आशा है कि यह संस्था भविष्य में फूले-फलेगी।"

कलाभवन में विद्यापीठ की छात्राओं द्वारा निर्मित चित्र, सिलाई-कशीदे की वस्तुएँ, विविध सामाजिक, राजनैतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक और साहित्यिक मान-चित्रादि देखकर तीनों ने विद्यापीठ के अन्य विभागों शारदा मंदिर, गोपीनाथ पुरोहित पुस्तकालय, श्री कमला नेहरू चिकित्सालय, वनस्थली-रसायनशाला आदि और बालिकाओं के शारीरिक व्यायाम और खेल-गृहकार्य देखे। लाठी की लड़ाई, घुड़सवारी, साइकिल-सवारी, संगीत आदि से वे अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होंने विद्यापीठ की प्रवृत्तियों की सराहना करते आशा प्रकट की है कि संस्था का भविष्य समृद्धिशाली होगा।

—संवाददाता

देहरादून कन्या गुरुकुल में २० जनवरी से एक योग्य नेत्र-चिकित्सक की निगरानी में आँखों की सब प्रकार की बीमारियों की मुफ्त चिकित्सा करने का प्रबन्ध किया गया है। जो महानुभाव इससे लाभ उठाना चाहें उन्हें २० जनवरी तक गुरुकुल पहुँच जाना चाहिए। रोगियों को अपने पास उपयुक्त वस्त्र तथा बिस्तरा अवश्य लाना चाहिए। असहाय, निर्धन तथा असमर्थ रोगियों को भोजनादि भी गुरुकुल की ओर से दिया जायगा।

—मुख्याधिष्ठाता

उदयपुर में अ० भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् की राजपूताना कार्य-समिति के महिला-विभाग द्वारा आयोजित कार्यकर्त्रियों के लिए एक मास का ट्रेनिंगकोर्स रखा गया है। कार्यकर्त्रियों की योग्यता कम से कम मिडिल तक हो। एक बहन पर ट्रेनिंग खर्च लगभग ५०) रुपये तक लगेगा। ट्रेनिंग में सम्मिलित होनेवाली बहनें आवेदनपत्र तथा विशेष जानकारी के लिए निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें।

—कमलाकुमारी श्रोत्रिय

फैजाबाद—गवर्नमेंट कालेज की ओर से ता० १९ दिसम्बर को एक बृहत् कवि-सम्मेलन हुआ। थोड़े ही समय के भीतर हिन्दी-सभा के कार्यकर्त्ताओं ने अपनी तत्परता से इस प्रकार की व्यवस्था की कि अप्रत्याशित रूप से एक सुन्दर कवि-सम्मेलन सम्पन्न हो सका। फैजाबाद कालेज की हिन्दी-सभा की ओर से प्रतिवर्ष एक विराट् कवि-सम्मेलन होता आया है। इतने सीमित समय के भीतर इतना सफल कवि-सम्मेलन भी इसी कालेज का श्रेय है। प्रयाग से श्री महेन्द्र, श्रीपालसिंह क्षेम, केशवचन्द्र वर्मा (हास्य-रस के कवि), काशी के सुप्रसिद्ध गीतकार श्री शम्भूनाथसिंह, कल्पनाथ चौबे, भुवनेश्वर गौड़ तथा कानपुर और लखनऊ के अन्यान्य तरुण कवि सम्मिलित हुए थे। स्वतन्त्र भारत में कवि-सम्मेलनों का भी यदि समुचित उपयोग किया जाय तो इससे हिन्दी का अच्छा प्रचार हो सकता है। फैजाबाद का कालेज इस दिशा में अपनी एक प्रतिष्ठित परम्परा रखता है और इसके लिए वह बधाई का पात्र है।

—संवाददाता

नाहिल (शाहजहाँपुर) के श्री आत्मनगर में श्री परब्रह्म परिव्राजकाचार्य नपोनिष्ट श्री १००८ श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज की निधन-तिथि ता० १२, १३, १४ को मनाई जायगी यह जलसा आत्म ऋषिकुल महा विद्यालय का तृतीय जलसा होगा। इसमें कृषि-विभाग की नुमाइश, तथा भजनोपदेशकों का सम्मेलन, नाटक, सिनेमा इत्यादि का प्रबन्ध किया गया है। कीर्तन भी नियम रूप से होगा। ता० १२ को आश्रम में एक विराट् किसान-सभा माननीय बाबू दामोदरदास जी एम० एल० ए० की अध्यक्षता में होगी।

—श्रीकृष्ण शर्मा

बम्बई में होनेवाले अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए सेवदह विद्यालय (पटना) से श्री मथुराप्रसादसिंह, श्री हरिहरप्रसादसिंह, श्री शुकदेवसिंह और श्री विमलाशरणसिंह ४ प्रतिनिधि २३ दिसम्बर को बम्बई के लिए रवाना हो गये हैं।

—विद्यानंद विद्यार्थी

फिरोजाबाद वीर प्रिंटिंग प्रेस से पुराना राष्ट्रीय 'लोकमित्र' अखबार अब साप्ताहिक होकर पं० सुरेन्द्रचन्द्र 'वीर' शास्त्री, कविरत्न के सम्पादकत्व में जनवरी महीने से प्रकाशित होगा।

—संवाददाता

अपनी बात

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण वैश्य

मनुष्य के चरित्र में किस प्रकार की दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर करके वह किस प्रकार अपने जीवन को उन्नत बना सकता है, यह बात इस पुस्तक में बहुत ही ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है और लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर। अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) बारह आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पेज १२ का शेष)

विशेषता है जो उपन्यास से अलग करती है। कर्तव्यपथ में राजनाथ के जीवन की जिन दो महत्त्वपूर्ण घटनाओं द्वारा उसके सबल चरित्र का अंकन किया गया है उनमें रजनी के लिए जो उसके हृदय में भावुकता है उसका केवल परीक्षा संकेत-मात्र है। यदि कहानी के अंतिम अनुच्छेद को देने का लोभ लेखक संवरण कर पाता तो कला की दृष्टि से यह बहुत ही उच्च कोटि की कहानी होती। अनावश्यक की विस्मृति भी कहानी-कला का अत्यन्त आवश्यक अंग है। 'किसके लिए' में व्याख्या की प्रवृत्ति कुछ अधिक है फिर भी इस संग्रह के वैज्ञानिक रोमांसों में वह कला की दृष्टि से सबसे अधिक सफल कहानी है। यद्यपि इस कहानी की कथावस्तु के संघटन में विज्ञान-जगत् के दो अत्यन्त मनोरंजक आविष्कारों (सेक्स परिवर्तन और राकेट) का उपयोग किया गया है फिर भी घटना-चरित्र को दबा नहीं पाई है। वह साध्य न बनकर साधन ही रही है। कहानी में घटना का यही कलात्मक उपयोग है। विलियम जम्स और लिली सभी के चरित्र की रेखाएँ किंचित् मोटी होती हुई भी स्पष्ट सजीव और सबल हैं। सधे हुए अकंपित हाथों से उन्हें खींचा गया है। विलियम और जेम्स दोनों ही का त्याग आदर्श है। फिर भी उसमें अस्वाभाविकता और अतिरंजना नहीं है। उनके चरित्र की मानव-सुलभ दुर्बलताएँ उन्हें कठपुतली होने से बचा लेती हैं।

कहानी मनोरंजन, 'अनुभूति' घटना और चरित्र-चित्रण के समन्वय की सबसे सुन्दर उदाहरण है। 'प्रेम-कीटाणु' की कल्पना में मौलिकता और नवीनता अवश्य है पर चरित्र-चित्रण की दृष्टि से वह बहुत सफल कहानी नहीं है। जेम्स ऐसे वैज्ञानिक का लिली के फोटोमात्र से इस प्रकार अपना संतुलन खो देना कुछ समझ में नहीं आता। संग्रह की शेष वैज्ञानिक कहानियों में मनोरंजन के तत्त्व की ही प्रधानता है। वैज्ञानिक-साधना षड्यंत्र और विज्ञानशाला में तीनों ही। घटना-प्रधान कहानियां हैं। षड्यंत्र में अँगरेजी की प्रसिद्ध कहानी 'हान्टेड हाउस' की असंदिग्ध छाप है। सम्भव है लेखक ने उसे पढ़ा हो। अस्तु ये वैज्ञानिक कहानियां घटना-प्रधान हों अथवा चरित्र-प्रधान, हिन्दी में नये प्रयोग हैं और आज दस वर्ष के बाद भी वे अपने ढंग की नई चीज बनी हुई हैं।

संग्रह की कुछ दूसरी कहानियों में 'क्रान्ति' की पृष्ठभूमि है। (अपाधिव रोमान्स के लिए इससे अच्छी पृष्ठभूमि मिल भी नहीं सकती।) पर ये सभी कहानियां भाव-प्रधान हैं। उनमें कल्पना की मात्रा कम और अनुभूति की मात्रा ही अधिक है। 'कर्तव्य-पथ', 'सहारा' 'प्रश्न का उत्तर' आदि में लेखक की अनुभूतियां ही किंचित् काल्पनिक घटनाओं का सहारा लेकर कहानियां बन गई हैं। फलतः 'दो प्रश्न' को छोड़कर प्रायः सभी में चरित्र-चित्रण के लिए संकेतात्मक-शैली का ही अवलंबन किया गया है। मैं पहले कह आया हूँ कि कहानी के सीमित क्षेत्र के भीतर इस कार्य के लिए यही शैली श्रेष्ठ होती है। 'दो प्रश्न' में कथाकार ने प्रेम-जनित ईर्ष्या के अध्ययन का प्रयास किया है। प्रारम्भ में इस अध्ययन में गति और सजीवता है पर अन्त तक लेखक उसे संभाल नहीं पाया है। 'रजनी' के विवाह के उपरान्त कुसुम और शतीश के चरित्र का विकास निपट रूढ़िगत हो गया है। प्रेमिका के बिछुड़ जाने पर प्रेमी शराब पीने लगते हैं—फिर उन्हें हल्का-सा बुखार हो आता है फिर खुटखुट खांसी आती है और फिर.....। अथवा जिस प्रेमिका के बीच में आ जाने से जिन दो अन्तरंग मित्रों में विरोध हो जाता है उनके मार्ग से हट जाने से फिर वे दोनों एक दूसरे के निकट आने लगते हैं। यह सर्वथा रूढ़िगत मार्ग है। रूढ़ि का चित्रण जब इस प्रकार प्रधान हो जाता है तो अनुभव के साक्षात्कार में सन्देह होने लगता है। 'दो प्रश्न' में सत्य जितना भी हो 'अपना पन' नहीं है।

केवल 'सत्य और यथार्थ' से जिनका सम्बन्ध है, ऐसी भी दो-तीन कहानियां इस संग्रह में हैं। लेकिन कला की दृष्टि से वे 'उत्तम' नहीं कही जा सकतीं। 'पथ-निर्देश' में 'सशस्त्र क्रान्तिवाद और यहां तक महात्मा गांधी द्वारा संचालित कांग्रेस-आन्दोलन' के पक्ष-विपक्ष में बहुत ही परिचित तर्क-वितर्क के अतिरिक्त विशेष कुछ नहीं है। कहानी कला की दृष्टि से 'अमिट ज्वाला' अधिक श्रेष्ठ कृति है। धीरेन्द्र के भावुक हृदय पर परिस्थितियों की जो प्रक्रिया हुई है और फलस्वरूप जो अंतिम परिणति हुई है उसके चित्रण में सजीवता है। धीरेन्द्र के हृदय में बुझती हुई अमिट ज्वाला को फिर से धधका देनेवाले शिब्बू वाले 'एपिसोड' का चित्रण बड़ा ही मार्मिक है। बुढ़िया और धीरेन्द्र के कथनोपकथन में नाटकीय गति और क्षिप्रता है। धीरेन्द्र को घटनास्थल से चुपके से खिसका देने में एक संयम है जो संकेतात्मक चरित्र-चित्रण का बड़ा ही सुन्दर उदाहरण है। 'कुसुमांजलि' की चर्चा मैं नहीं करता। पर कहानी के उठान उसके निर्वाह और चरम स्थिति में जो नाटकीय गति है वह संग्रह की कम कहानियों में है। एक के बाद दूसरी घटना सिनेमा के रील की तरह उसी त्वरा और प्रभावोत्पादकता के साथ आंखों के सामने आती जाती है कथोपकथनों में भी घटना की गति के अनुकूल ही लाघवता है। कहानी के विभिन्न अवयवों में इस प्रकार का समन्वय ही सफल कहानी की पहली शर्त है।

'भूत-वर्तमान-भविष्य' और 'स्वप्न चित्र' को कहानी न कहकर गद्य-काव्य ही कहना उचित होगा। इनमें से पहली कहानी अत्यन्त हल्की चीज है। 'स्वप्न चित्र' में मानव-प्रकृति की समस्या पर लेखक के अपने दृष्टिकोण की व्याख्या है। इस कहानी की भाषा बहुत ही प्रांजल और कोमल है। कथाकार का कवि, डाक्टर ब्रजमोहन गुप्त कवि भी हैं, यहां उभर आया है।

कहानियों की शैली और भाषा के विषय में मुझे कुछ नहीं कहना है। कथाकार को अपने माध्यम पर अधिकार है और उसके द्वारा उसे जो कुछ व्यक्त करना है वह उसे सफलतापूर्वक कर सका है।

इधर-उधर न भटकिए

न्यू इरा बुक हाउस

तथा

न्यू इरा एजेंसी

८६, हिवेट रोड, प्रयाग

इण्डियन प्रेस तथा अन्य बड़े-बड़े प्रकाशकों की हिन्दी, अँगरेज़ी और उर्दू की सभी पुस्तकें आप हमारे यहाँ से ले सकते हैं।

इंडस्ट्रियल रिसर्च हाउस, प्रीमियर फर्निशर्स और हिन्दुस्थान टैक्स्टाइल लि० का सामान भी हमारे यहाँ मिलेगा।

सारे कुटुम्ब को अपच

जो कुछ उन्होंने खाया बीमार ही हुए

अब सब बहुत अच्छे हैं

चार बच्चे की एक माँ ने लिखा है—"मैं और मेरे कुटुम्ब के चार आदमी अपच से बीमार पड़ गये। कमर में दर्द और अपच के अन्य दर्दों से हम लोग दुखी थे। मैंने जो कुछ दवा की उसका उल्टा फल निकला। परन्तु जब से (तीन महीने से) मैंने क्रुशेन खाना शुरू किया तब से हम प्रत्येक चीज खा सकते और सारे भोजन का स्वाद पाते हैं। अब हम लोगों में किसी प्रकार का अपच नहीं रहता। मुझे यह बड़ा ही आश्चर्य मालूम पड़ता है। इसका बुरा परिणाम नहीं मालूम हुआ। चाहे जो कुछ हम खायें, पर, क्रुशेन नहीं छोड़ते।

जब आपके शरीर के अन्दर पाचन रस कम हो जाते हैं, उस समय आपका भोजन पचने के बजाय आपके शरीर में जमा हो विषैला और हानिकारक बन जाता है। उस समय आपको जो शक्तिदायिनी औषधि की आवश्यकता होती है वह—प्रकृति की अपनी शक्तिदायिनी औषधि है। वह प्राकृतिक खनिज नमक के सारे तत्त्वों में निहित है।

क्रुशेन के अन्दर आपको ये सारे खनिज नमक मिलेंगे। और प्रत्येक में अपनी एक निजी क्रियाशीलता मिलेगी। इसका प्रथम कार्य तो यह है कि यह भूख अथवा राल बढ़ाता है जिससे भूख बढ़ती है। दूसरा कार्य यह कि पेट के अन्दर पाचनशक्ति प्रदान करके उन्नति देता है जिससे जमा भोजन को बाहर होने में शीघ्रता होती है। इस नमक से पाचन क्रिया में सहायता मिलती है।

क्रुशेन साल्ट सभी रासायनिक और दूकानदारों की दूकान पर मिलता है। दाम १॥=) प्रति बोतल।

चर्म-स्वास्थ्य यह मनोहर त्वचा का रहस्य है, और आप अपनी त्वचा आरोग्य-रहित हों तो, सौन्दर्य प्राप्त नहीं कर सकते। यहां वही रेक्सोना का विपुल शीघ्रोत्पादक झाग है जो कैडील नामक औषधी से बनाया गया है और त्वचा-आरोग्य के लिये मूल्यवान् (उत्तम) है। यह अँन्टिसेप्टिक, शांति-दायक, त्वचा-पुष्टिकर तैलों से विशेषरूपेण बनाया हुआ है, रेक्सोना का शीघ्रोत्पादक फेनदार झाग, उक्त कैडील को नन्हे नन्हे त्वचा-रंध्रों में गहराईतक ले जाता है, वहां की मलीनता को हटाके, त्वचा को साफ़-सुथरी करता है, उसको (त्वचा को) शांति प्रदान करता है और सुंदर बनाता है। इस में लेशमात्र भी शंका नहीं कि, चर्म-स्वास्थ्य त्वचा-माधुर्य (सौन्दर्य) की नींव है, और उक्त रेक्सोना का औषधी (मिश्रित) झाग त्वचा-सौन्दर्य की वृद्धि करता है।

पुरुषों के लिये रेक्सोना: आप कभी यह विचार न करें कि, रेक्सोना यह केवल स्त्रियों के लिये उपयुक्त साबुन है, अपितु वह पुरुषों के लिये भी अत्यंत आवश्यक साबुन है। पुरुष कांतिमय स्वास्थ्य में गर्व करता है, जो कि स्वस्थ त्वचा की देन है, चर्म-स्वास्थ्य एक संपत्ति है, जो रेक्सोना के कैडील की सम्पति है, वह (कैडील) चर्म-स्वास्थ्य बनाये रखता है।

बच्चों के लिये रेक्सोना: रेक्सोना का संरक्षक मृदु झाग बच्चों की कोमल त्वचा को शांत करता है। रेक्सोना का कैडील (बच्चों के) नन्हे नन्हे अवयवों की रगड़ (खुजली) और फुंसियों से सुरक्षा करता है। रेक्सोना, बच्चों के लिये उत्कृष्ट साबुन है।

★रेक्सोनाका कैडील, यह विशेषतः अँन्टिसेप्टिक आरोग्यकर एवं पौष्टिक तैलों का मिश्रण है; जो कि, त्वचा की रक्षा के लिये अत्यंत आवश्यक है।

REXONA PROPRIETARY LIMITED

BF. 80-392 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्दी और खाँसी में
याद रखिये
सिरोलीन
"रोच"
सारे संसारमे व्यवहार होता है

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं नियमावली मुफ़्त मँगायें। पता:—

इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

कैसी सिल्क साड़ी आकर्षक डिज़ाइन

कलापूर्ण ३-४ इंच चौड़ा बार्डर

नं०	७	८	९	५ गज
	१८)	२३)	२८)	

२) पेशगी बाकी वी० पी० से थोक व्यापारियों को खास सुभीता

भारत इन्डस्ट्रीज, जुही नं० ९ कानपुर

१००) इनाम

सिद्ध वशीकरण यन्त्र—के धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होता है। आप जिसे चाहते हैं, चाहे वह पत्थर-दिल क्यों न हो, आपके पास चली आयेगी। इससे भाग्योदय, नौकरी, धन की प्राप्ति, मुक़दमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य ताँबा का २), चाँदी का ३), सोने का १२) झूठा साबित करने पर १००) इनाम।

श्री बालमिकी आश्रम, नं० D.
पो० कतरी सराय (गया)

मेरी तरह तन्दुरुस्ती हासिल करो
खराब खून को साफ करता है
डा. वामन गोपाल
आयोडाइज्ड सार्सापरिला
हर जगह मिलता है

इलाहाबाद के एजन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एल० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स

बचत भिन्न भिन्न काल में
२ जब रुपया चञ्चल था

भूले हुये प्राचीन काल में एक अपूर्व बुद्धि वाले अनुद्योगी व्यक्ति ने ऐसी गणना की कठिनाइयों से तंग आकर—जैसे कि एक गधे के बदले कितने चावलों की आवश्यकता होगी – यह उपाय सोचा कि प्रत्येक वस्तु के मूल्य को जिनिस के रूप में ही दिया जावे। आज कल भी पूर्वी अफ्रीका की कुछ जातियों में ऐसा व्यवहार है। यह एक जिनिस कदाचित् बकरी थी।

एक शिकारी-चाकू १० बकरियों के तुल्य समझा जाता था। ५० केले बकरी के एक बच्चे के बदले में प्राप्त हो सकते थे। और इसी प्रकार अन्य वस्तुएं भी मिल सकती थीं। किसी व्यक्ति के धन का अनुमान बकरियों की संख्या से किया जाता था। तनिक विचार कीजिए कि माल ख़रीदने के लिये अपनी बकरियां लिये लिये फिरना कितना विचित्र और कठिन प्रतीत होता होगा। बचत भी बकरियों के रूप में ही होती थी। यह कोई विशेष लाभप्रद मद न थी। बकरियों के पालन पोषण पर भी व्यय करना पड़ता और चोरों, जंगली पशुओं और रोगों के भय का तो कहना ही क्या! एक धनी रात भर में दरिद्र हो सकता था।

इस के विपरीत आज कल माल के ख़रीदने या बचत करने में कोई विशेष असुविधा नहीं होती परन्तु लाभप्रद मद का चुनाव अभी भी सहल नहीं। एक अच्छा व्यापारी जानता है कि आज कल की रुपया लगाने की सर्वोत्तम मद नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स हैं। ये पूर्णतया सुरक्षित हैं और अवधि की समाप्ति पर इन का मूल्य ५०% बढ़ जाता है – अर्थात १० रुपये १२ वर्ष के पश्चात १५) बन जाते हैं। ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। अब सर्टिफ़िकेट्स १८ मास के पश्चात भी भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १ वर्ष के पश्चात भुनाया जा सकता है)। थोड़ी बचत वाले ।), ॥), और १) की कीमत के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सकता है कि

आप को इस की भावना न हो

लेकिन

बर्मा-शेल हवाई

सरविस

भारत और पाकिस्तान

भर में

१०० से ज़्यादा

'हवाई जहाज़—मैदानों' में

इस्तेमाल होती है.....

बर्मा-शेल

हवाई

सरविस

बर्मा-शेल आइल स्टोरेज अैंड डिस्ट्रीबूटींग कम्पनी आफ़ इंडिया लि० (इंगलिस्तान में इंकार्पोरेट की गई) एजंटस्.

इन सब कष्टों को १ आने में दूर कीजिये

पीठ की दर्द

सिर की दर्द

जोर जोर की दर्द व खींचन

ऐस्प्रो से ही ऐसा कर सकना संभव है

दर्द रोकने और हरारत दूर करने में दुनियाँ की सबसे महान औषधि

ASPRO DOES NOT HARM THE HEART

जब आपको दर्द मालूम होती है तो इसका मतलब होता है कि आपके शरीर को सहायता की जरूरत है—और वह भी उसी वक्त। 'ऐस्प्रो' फौरन् असर करती है—यह आपकी दर्द रोकती है, आराम सुख और भले चंगे होने की भावना पैदा करती है और दर्द के कारण तक जाकर उसे निकाल बाहर करने में प्रकृति की मदद करती है। 'ऐस्प्रो' कि प्रत्येक टिकिया मनुष्य की आवश्यकताओं के मुताबिक पूरी सावधानी और चतुराई से बनाई जाती है। इसीलिये यह आधुनिक औषधि इतनी फलप्रद है

बुखार की स्थिति से कष्ट पानेवालों के लिये 'ऐस्प्रो' वरदानस्वरूप है। यह ताप कम करती है व तकलीफों का निवारण करती है।

'ऐस्प्रो' समय नहीं खोती फौरन् आपकी सहायता करती है।

दाम :
३ टिकिया १ आना
६ टिकिया २ आना
३० टिकिया १० आना

वितरक :
जे, एल, मौरिसन, सन एण्ड जोन्स (इण्डिया) लि:
पोष्ट बक्स ३८७ कलकत्ता टेलिफोन कलकत्ता ७९६

हर जगह बिकती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

... प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक मूल्य ७॥।
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

विवार, १४ दिसम्बर, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 14th December, 19

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

जय सोमनाथ, जय जय भारत !
आज के विज्ञान का भविष्य कैसा ?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

काश्मीर पर विश्व-साम्राज्य की दृष्टि
मातृ-मन्दिर, रंगमंच, हास-परिहास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप भी अत्यधिक सुन्दरी हो सकती हैं

क्या तुम यह चाहती हो कि वह (पुरुष) तुमसे प्रेमविनय करे कि "प्रिये तुम मेरी हृत्तन्त्री हो ?"

तब काश्मीर बुकेट फेस पाउडर इस्तेमाल करो। वह तारों के चूर्ण की भाँति चिकना है। यह तुम्हारे चेहरे को कितने ही घंटों तक चमकदार रक्खेगा। तुम्हारे चेहरे की वास्तविक प्राकृतिक स्फूर्ति प्रदर्शित कराएगा।

इसकी आनन्ददायक सुगन्ध जल्द नहीं उड़ेगी, क्योंकि काश्मीर बुकेट में "माम डि चेमो" पदार्थ मिला है जो इस फेस पाउडर को अत्युत्तम बना देता है।

काश्मीर बुकेट को सुगन्धित शृङ्गारिक वस्तु से अपने पूर्ण सौन्दर्य को विकसित करो क्योंकि सुगन्धि ही से मनुष्य प्रेम करता है।

Cashmere Bouquet Products WITH THE FRAGRANCE MEN LOVE

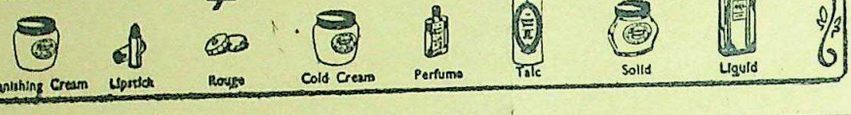

केपीपिल्कमाड़ी आकर्षक डिजाईनें

कलापूर्ण ३-४ इंच चौड़ा बार्डर
नं० ७ ८ ९ ५ गज
१८) २३) २८) में
२) पेशगी बाकी वी० पी० से
थोक व्यापारियों को खास सुभीता

भारत इन्डस्ट्रीज,
जुही नं० ६ कानपुर

इस रिवॉल्वर के गुणों का वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाना है, क्यों इसका संक्षिप्त परिचय कराना ही आवश्यक हो जाता है—विशेष इसलिये कि यह है असली अमेरिकन रिवॉल्वर की भाँति ही इसमें कारतूस रखने का स्थान बना है और चलाने करने पर चलाने हुई गोली ६ फीट दूर जाती है। आवाज तो इसकी ऐसी है कि सुनने वाला भी दंग रह जाता है। बच्चे तथा सम्पत्ति की रक्षा के लिए अति उत्तम वस्तु है। इसमें ६ गोली के कारतूस लगाये जाते हैं। सम्पूर्ण मे लगभग ६ इंच लंबा वजन मे १५ औंस है। बिल्कुल शराब की बोतल जैसा सुन्दर ही चोर चोर साहू कोसों दूर भागते हैं।

मूल्य नं० २२२२-(ग) सर्द सहित, मूल्य नं० ३३३३-(ग) रक्षा चौकीदारी शर्ट सहित, मूल्य नं० ४४४४-(ग) लेदर स्यूडसिंह सिलीव लॉ सहित, लम्बाई की बन्दूक की खुदर पेटी ही, अतिरिक्त कारतूस ४ सैकड़ा मूल्य ३), कार्टूस के लिए पेटी ११) डोरी।

पूनादेवी ट्रेडर्स, पोस्ट बाक्स नं० १४३ कानपुर

आविष्कार शीघ्र गुणकारी निरापद, शान्तिदायक और निश्चित फलप्रद औषधि आ ही गई

सर्दी लगी हो—डेंगू ज्वर आया हो—बदन में दर्द हो या हरारत हो तो 'ऐस्प्रो' की दो टिकिया जरा से पानी या गर्म पेय से गले के नीचे उतार जाइये। इतना करते ही आप भले चंगे हो जायंगे। आपको इसका शान्तिदायक व आरामप्रद असर फौरन मालूम पड़ेगा – इतनी जल्दी आराम आयगा कि आप चकित रह जायंगे। पीठ की दर्द, सिर की दर्द, शरीर भर की दर्द, जोड़ जोड़ की दर्द निकल जायगी। गर्मी लगी हो या ठण्डक, जाड़ा लग रहा हो या बुखार से चेहरा लाल हो रहा हो : ये सब दब जाते हैं और उनकी जगह शान्ति तथा आराम आ जाता है। 'ऐस्प्रो' आप और आपके परिवार को पचासों तरह से कायदा पहुँचायगी।

जरा से पानी के साथ 'ऐस्प्रो' की दो टिकिया निगल लीजिये

दर्द और बुखार से दुःख क्यों उठाँय जब कि 'ऐस्प्रो' आपको चंगा कर सकती है

दाम
३ टिकिया १ आना ६ टिकिया २ आना
३० टिकिया १० आना

'ऐस्प्रो' क्या करती है

- १ मिनट में सिर दर्द रोकती है
- रात भर में सर्दियां शमन करती है
- पन्द्रह मिनटों में बुखार कम करती है
- दांत-दर्द और स्नायुशूल फौरन बन्द करती है
- सुख दर्द भगाती है
- नींद न आनेवाली बीमारी नींद लाती है
- चिड़चिड़ापन दूर करती है
- स्त्रियों का दर्द दूर करती है
- हमारे कहने पर गले को खराबियां दूर होती है
- कहीं और इल्लाफूंकने का आना करती है
- खाली भी दवा से गले डेंगू बुखार आराम करती है
- संक्रामक रोगों से दूर रखती है

वितरक :
जे. एल. मौरिसन, सन एण्ड जोन्स (इण्डिया) लि:
पोष्ट बक्स ३८७ कलकत्ता टेलिफोन कलकत्ता ७९६

68 HINDI

मेरे श्वास में दुर्गन्धि ?

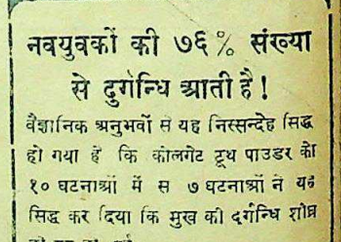

नवयुवकों की ७६% संख्या से दुर्गन्धि आती है !

वैज्ञानिक अनुभवों से यह निस्सन्देह सिद्ध हो गया है कि कोलगेट टूथ पाउडर की १० घटनाओं में से ७ घटनाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि मुख की दुर्गन्धि शीघ्र ही दूर हो गई।

धन की बचत—दूसरी दवाओं की अपेक्षा कोलगेट एक बड़े डिब्बे में दाँत साफ करने की ३० मात्रा अधिक रहती है, उससे बड़े डिब्बे में ४६ मात्रा अधिक रहती है। परन्तु दाम वही है।

धूम्र-पान करनेवाले—कोलगेट दाँत का मंजन तम्बाकू की दुर्गन्धि और मैल को दूर करता है।

आज ही कोलगेट खरीद लीजिए।

कोलगेट टूथ पाउडर
कोलगेट आज ही खरीदिए.

CLEANS BREATH AS IT CLEANS TEETH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष १०, संख्या १२] [रविवार, १४ दिसम्बर, १९४

भारतीय उपनिवेश के प्रधान मंत्री माननीय पं० जवाहरलाल नेहरू

काश्मीर का युद्ध जारी है, पाकिस्तानी साथ ही पाकिस्तान के प्यारे अँगरेजों का गठबंधन रंग ला रहा है। भारतीय फौजें दुश्मन फौजों को काश्मीर की सीमा के बाहर खदेड़ने में लगी हैं। लेकिन जान यह पड़ता है पाकिस्तानी और अंग्रेज दोनों के मेल से काश्मीर में जो कुछ हो रहा है, ठीक वैसा ही चीन में कम्यूनिस्टों द्वारा हो रहा है। अपने राम के कहने का मतलब यह है कि काश्मीर का युद्ध चीन के युद्ध के समान होता हुआ दिखाई दे रहा है। पाकिस्तानी कम से कम यही चाहते हैं। देखना है काश्मीर का युद्ध आगे कैसा रंग लाता है?

* * *

काश्मीर के सम्बन्ध में विलायती अखबारों में एक नया शिगूफा फूटा है। कुछ अखबारों ने यह सुझाव दिया है कि काश्मीर का बटवारा हो जाना चाहिए। जरूर हो जाना चाहिए, बात यह है कि अभी हिन्दुस्तान को दो भागों में विभाजित करके विलायतियों की भूख नहीं गई है। हिन्दुस्तान में कुछ हुआ और विलायती लोगों ने बटवारे या तोड़-फोड़ का सुझाव पेश किया। ऐसा क्यों न हो, क्योंकि अँगरेज हिन्दू-मुसलमान दोनों के बड़े पक्के हिमायती हैं। इसलिए काश्मीर के बटवारे की सनक सवार हुई है। अपने राम की समझ में आ रहा है कि अँगरेज जाति को आजकल क्या एशिया और क्या योरोप, सिवा बटवारे के और कुछ सूझ ही नहीं रहा है। भाई, सूझे क्यों ना, बटवारे से ब्रिटिश का भला तो होता ही है, फिर अपने भले के लिए कौन क्या नहीं करता है, दुनिया का यही दस्तूर है।

* * *

सिंध के प्रधान मंत्री ने कमखर्ची के कारण बलूचिस्तान को सिंध में मिलाने की सिफारिश की है। प्रधान मंत्री ने यह भी कहा है कि पाकिस्तान को कम से कम एक करोड़ रुपया बिलोचिस्तान को देना पड़ेगा, किंतु अब वह रुपया देने में असमर्थ है। अपने राम की राय में यह नुस्खा अच्छा है। अगर स्टेट किसी राज्य को सहायता न दे सके तो उसे अपने कब्ज में कर ले, जिससे सोलह आना के सोलह आना खजाने में जमा रहे। लेकिन बिलोचिस्तान पाकिस्तान की कब सुनने लगा। वह सहायता लेगा या अपने को पाकिस्तान के सुपुर्द कर देगा? मिस्टर खूरो ने बचत का यह अच्छा सुझाव पेश किया है। यही नहीं सिंध सरकार गर्मियों में क्वेटा जाने की भी तैयारी कर चुकी है। मान न मान में तेरा मेहमान। पाकिस्तान के सुझाव की बलिहारी है। लेकिन जब पाकिस्तान संयुक्तराष्ट्र-संघ से कर्जा लेने जा रहा है तो रुपये की कौन सी कमी है? बिलोचिस्तान को सिंध में मिलने की जरूरत?

* * *

मियां गजनफर अली भी क्या गजब के जीव हैं। रंगत बदलते देर नहीं लगती। कुछ दिन पहले आपने हिन्दुस्तान को लड़ाई के लिए ललकारा था किंतु अब उनकी बोलती बंद हो गई है। अब उर्द-अरहर का भाव मालूम होने लगा है। पिछले दिनों आपने लाहौर की एक सभा में भाषण देते हुए पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में होनेवाले साम्प्रदायिक दंगों के संबंध में बड़ा ही खेद प्रकट किया और अंत में यह भी कहा कि दंगों में दोनों ओर की महिलाओं का जो अपहरण हुआ है, जांच करके उन्हें यथास्थान पहुँचा दिया जाना चाहिए। बात तो बावन तोला पाव रत्ती अच्छी और माकूल है किंतु मियां गजनफर अली को सूझी भी तो बहुत देर में। और सूझी क्यों, इसे तो खुदा ही जानें किंतु अच्छा है अगर पाकिस्तानी अब भी रास्ते पर आ जायें?

* * *

फिलिस्तीन का बटवारा हो गया। संयुक्तराष्ट्र-संघ ने अपनी करतूत का झंडा गाड़ दिया, लेकिन अरब बटवारे को मंजूर कदापि नहीं करेंगे। जेरूसलम के ग्रांड मुफ्ती ने ललकारा है कि अब तलवार से बातें होंगी, जबानी जमा-खर्च के दिन लद गये। अरब और यहूदी अपनी सेनाएँ जमा करने में लगे हैं। वह बटवारे के निर्णय का विरोध करेंगे। अपने राम की राय में यह अच्छा ही हो रहा है। हिन्दुस्तान के लीगी मुसलमानों ने तो विदेशियों के हाथ अपने को बेच डाला है किन्तु बहादुर अरब योरोपियनों के हाथ अपने को बेचने के लिए तैयार नहीं हैं। हिंदुस्तान में इस्लाम जिन्दा है या नहीं किंतु अरब में तो जिन्दा है, इसमें तो शक है ही नहीं।

* * *

कराची के डाक्टर चौथाराम भिडवानी ने महात्मा गांधी को लिखा है कि पाकिस्तान में हरिजनों की बड़ी दुर्दशा है। अपने राम की समझ में यह कोई नई बात नहीं है। जब पाकिस्तान में मुस्लिम लीगियों तथा मुस्लिम जमात को शान्तिपूर्वक रोटी नहीं मिल रही है, और उन्हीं को अपनी जान के लाले पड़ रहे हैं, तो हरिजन किस खेत की मूली हैं, उनकी हालत यदि गड़बड़ है तो कौन सी नई बात है? इसलिए डाक्टर अम्बेडकर के कथनानुसार हरिजनों को पाकिस्तान छोड़कर हिन्दुस्तान आ जाना चाहिए। पाकिस्तान का आनन्द तो लीगी मुसलमान ही प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि पाकिस्तान उन्हीं के लिए खास तौर से बना है।

* * *

सुना जाता है कि कायदे आज़म मिस्टर जिन्ना का स्वास्थ्य खराब हो रहा है, इसलिए वह वाइसराय के पद से अवकाश ग्रहण करके कुछ दिन योरोप में कहीं आराम करेंगे। यह भी खबर है कि विलायत से कोई मुसलमान सज्जन वाइसराय बनकर कराची आनेवाले का हैं। नये वाइसराय को मिस्टर चर्चिल आर्शीवाद प्राप्त है। यदि यह खबर सच है तो पाकिस्तान के दिन फिरनेवाले हैं।

* * *

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

महात्मा गांधी को एक पत्र-द्वारा मालूम हुआ है कि कराची में राजविप्लव होनेवाला है। अपने राम की राय में ऐसा तो होगा ही। जिस राज्य में लोग न रह सकेंगे, न खा-पी सकेंगे, न आ-जा सकेंगे, न घूम-फिर सकेंगे और लुटेरे जिसे चाहेंगे लूट लेंगे और घेलवे में औरत बच्चों को भी भगा ले जायेंगे, वहां राजविप्लव नहीं होगा तो क्या शान्ति-सम्मेलन होगा? बेचारे सरकारी नौकर जो हिन्दुस्तान से पाकिस्तान गये, हैंवह फाके कर रहे हैं, तनखाहों का कहीं पता भी नहीं है। बिना उधार लिये अब काम चल ही नहीं रहा है तो आखिर किया क्या जाये? पाकिस्तान तो फौरन से पेश्तर जिन्ना साहब ने ले लिया लेकिन उसका कारबार कैसे चलाया जाये, इस पर सोचने की उन्हें फुरसत कहां थी? मुस्लिम जनता को पाकिस्तान वाकई मिला है कि नहीं इसका निर्णय तो बाद में भी हो जायेगा लेकिन जिन्ना साहब राजा बन गये, इसमें तो कोई शक ही नहीं।

बरमा के प्रधान-मंत्री थाकिन नू नई दिल्ली में महात्मा गान्धी से बातें कर रहे हैं महात्माजी बरमी किमानों की तरह हैट लगाये हैं, जिसे प्रधान मंत्री ने भेंट किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाहाबाद यूनिवर्सिटी

पिछले ६० वर्ष के इतिहास का संक्षिप्त लेखा-जोखा

[सन् १८८७-१९४७ ई०]

लेखक, डाक्टर लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, एम० ए०, डी० लिट्०
(अध्यापक, हिन्दी-विभाग)

संयुक्तप्रांत ही नहीं भारत तथा विदेशों में प्रयाग विश्वविद्यालय की प्रमुख शिक्षा-केन्द्रों में गणना होती है। आजकल विश्वविद्यालय की हीरक-जयंती बड़े समारोहपूर्वक मनाई जा रही है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने प्रयाग विश्वविद्यालय की पिछले ६० वर्ष की प्रगति पर एतिहासिक, सुंदर और संक्षिप्त प्रकाश डाला है। लेख पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी ने विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर दीक्षांत भाषण दिया।

भारत में आधुनिकता और नव जागरण के जन्म में पश्चिमी वैज्ञानिक अविष्कारों, ज्ञान-विज्ञान और विचार-धारा का बहुत बड़ा हाथ रहा है। यह क्रम अठारहवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध और विशेषतः उन्नीसवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध, से ही शुरू हो गया था। ऐतिहासिक दृष्टि से यह क्रम केवल भारतवर्ष तक ही सीमित नहीं था, वरन् वह लगभग उसी समय से मिस्र, टर्की, अरब, ईराक, ईरान, अफगानिस्तान, चीन, जापान, जावा, सुमात्रा, मलद्वीप आदि समस्त पूर्वी संसार का जीवन स्पंदित कर रहा था। उस समय योरप ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति कर संसार का नेतृत्व ग्रहण कर चुका था। भारतवर्ष तथा अन्य एशियाई देशों के साथ यह नवीन क्रियात्मक संपर्क स्थापित करने में वैसे तो योरप की अनेक जातियों ने भाग लिया, किंतु एंग्लो-सैक्सन सभ्यता की संदेशवाहक ब्रिटिश जाति ने प्रमुख भाग लिया। इस दृष्टि से विश्व-इतिहास में ब्रिटिश जाति का नाम अमर रहेगा। अपने स्वार्थ-साधन में रत रहने और स्वार्थ-साधक प्रायः सब प्रकार की नीतियों का अवलंबन ग्रहण करने पर भी वह, घुणाक्षर न्याय से, विजित देशों में उच्च आदर्शों की पोषक विचारधारा के प्रचार का साधन बनी। उसने भारतवर्ष में पाश्चात्य शिक्षा का प्रचार किया। जिससे देश का जीवन फिर से नये सांचे में ढाला जाने लगा। भारतवासियों ने शीघ्र ही जीवन की परंपरागत और नवीन परिस्थितियों के बीच संतुलन पैदा कर भविष्य-निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया।

जिस समय प्लासी के युद्ध के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी का राज्य स्थापित हुआ उस समय देश में प्राचीन नियमानुसार अनेक विद्यालय और पाठशालाएँ स्थापित थीं। बहुत दिनों तक अँगरेजों ने शिक्षा-प्रचार का प्राचीन नियम जारी रक्खा। उस समय पाठशालाओं में संस्कृत विद्या और दर्शन-शास्त्र की शिक्षा दी जाती थी। मकतबों में अरबी-फारसी शिक्षा दी जाती थी। कंपनी के अधिकारियों ने इस प्राचीन शिक्षा-क्रम का पूरा ध्यान रक्खा। साथ ही उन्होंने अपनी ओर से भी कई संस्थाएँ स्थापित कीं। १७९१ में विल्वर्फोस की आयोजना पर बहस करते हुए पार्लियामेंट के एक सदस्य ने कहा था कि अँगरेजी शिक्षा का प्रचार कर हम अमरीका हाथ से खो ही चुके हैं, अब भारतवर्ष में वही गलती नहीं करनी चाहिए। इसलिए उस समय हिन्दू और मुसलमानों को क्रमशः संस्कृत और फारसी के माध्यम द्वारा सांस्कृतिक शिक्षा देने का ही प्रयत्न किया गया। वारेन हेस्टिंग्ज ने १७८० में ललकत्ता के मदरसे की और कार्नवालिस ने १७९१ में संस्कृत कालेज, बनारस की नींव डाली। १८१३ के चार्टर में गवर्नमेंट की ओर से भारतवासियों को शिक्षा देना राज्य-कर्त्तव्य माना गया। इसलिए यदि इस चार्टर से ही भारतवर्ष में सरकारी शिक्षा का उद्गम माना जाय तो अनुचित न होगा। चार्टर में केवल पूर्वीय विद्याओं की भाषा का उल्लेख है। अधुनिक भाषाओं अथवा पश्चिमी विद्याओं और अँगरेजी भाषा के प्रचार का उसमें कुछ वर्णन नहीं है। किंतु राजा राममोहन राय जैसे भारतीय और ईसाई मिशनरी सोसाइटियां आधुनिक नवीन शिक्षा के प्रचार के पक्षपाती थे। वे समय-समय पर कंपनी की शिक्षा-नीत की आलोचना भी करते रहते थे। संभवतः अँगरेजी शिक्षा-प्रणाली का प्रचार करने में गवर्नमेंट को डर लगता था। उसका यह रुख १८३३ तक रहा। किन्तु १८३४ में शिक्षा-नीति में परिवर्तन हुआ। १८१३ वाले चार्टर में स्वीकृत धन का कहां तक सदुपयोग हुआ है, इस संबंध में मैकाले की सम्मति ली गई। उन्होंने तत्कालीन शिक्षा-नीति की आलोचना कर आधुनिक अँगरेजी शिक्षा-प्रणाली की नींव डाली। १८४४ में हार्डिंज का घोषणा-पत्र प्रकाशित हुआ कि सरकारी नौकरियां अँगरेजी पढ़े-लिखे लोगों को दी जायँ।

१८५३ में ईस्ट इंडिया कंपनी को फिर नया चार्टर मिला। पहली आयोजना को बीस वर्ष हो चुके थे। पिछले अनुभव के प्रकाश में सर चार्ल्स वुड और डलहौजी शिक्षा-सुधार की बात सोचने लगे जिसके फलस्वरूप १८५४ में चार्ल्स वुड का आयोजना-पत्र प्रस्तुत हुआ। इस नवीन आयोजना-पत्र में शिक्षा-विभाग के पुनर्संगठन और शिक्षा के प्रसार पर जोर दिया गया है। उच्च शिक्षा के साथ-साथ वर्नाक्यूलर शिक्षा, देशी भाषाओं और पाश्चात्य विज्ञान, साहित्य और इतिहास के ज्ञान के प्रचार की व्यवस्था की गई। उस समय उत्तर-पश्चिम प्रदेश में बनारस (१७९१), आगरा (१८२३), दिल्ली (१८२५) और बरेली (१८२७) इन चार स्थानों में ही कालेज थे। १८५७ के विद्रोह के फलस्वरूप आगरा, दिल्ली और बरेली का शिक्षाक्रम बहुत कुछ अव्यवस्थित हो गया था। इसलिए शिक्षाप्रचार के लिए एक नवीन संस्था की अवश्यकता थी। १८५४ के आयोजना-पत्र के अनुसार १८५७ में कलकत्ता, मद्रास और बम्बई की यूनिवर्सिटियां स्थापित हुईं। १८८२ में पंजाब यूनिवर्सिटी की स्थापना की गई। किन्तु अभी तक उत्तर-पश्चिम प्रदेश में कोई यूनिवर्सिटी नहीं थी।

पंजाब यूनिवर्सिटी की स्थापना के साथ-साथ उत्तर-पश्चिम प्रदेश में भी एक यूनिवर्सिटी स्थापित करने का विचार उत्पन्न होने लगा था। १८६७ में सर विलियम म्योर ने इस बात की चेष्टा की थी कि कलकत्ता यूनिवर्सिटी की, जिससे उत्तर-पश्चिम प्रदेश के कालेज सम्बद्ध थे, सिंडीकेट की एक शाखा इलाहाबाद में खोल दी जाय। किन्तु व्यावहारिक कठिनाइयों के कारण कलकत्ता यूनिवर्सिटी ने उनका प्रस्ताव स्वीकार न किया। सर विलियम म्योर को असफलता अवश्य मिली, किन्तु कलकत्ते से अलग उत्तर-पश्चिम प्रदेश में अपनी यूनिवर्सिटी स्थापित करने का विचार लोगों में दृढ़ होता गया। १८९६ के दरबार में सर विलियम म्योर ने इलाहाबाद में एक कालेज (म्योर सेंट्रल कालेज) स्थापित करने का विचार प्रकट किया। उत्तर-पश्चिम प्रदेश के लिए एक यूनिवर्सिटी का यह प्रारम्भिक रूप था। शिक्षित जनता ने उनके प्रस्ताव का स्वागत किया, यद्यपि केन्द्रीय सरकार से उन्हें अधिक प्रोत्साहन न मिला। तत्पश्चात् हंटर कमीशन (१८८२) ने भी उत्तर-पश्चिम प्रदेश के लिए एक पृथक् यूनिवर्सिटी स्थापित करने की सिफारिश की और शिक्षाविदों के एकमत न होने पर भी १८८७ की इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी बिल पेश किया गया। उसी वर्ष वह इलाहाबाद यूनिवर्सिटी ऐक्ट के रूप में स्वीकृत भी हुआ।

इलाहाबाद यूनिवर्सिटी का सर्वप्रथम दीक्षान्त समारोह म्योर सेंट्रल कालेज में १५ नवम्बर, १८८७ को हुआ। उस समय वाइस-चान्सलर सर जान एज थे। यूनिवर्सिटी बी० ए०, एम० ए०, एल-एल० बी०, बी० एस०-सी० तथा सिविल इंजीनियरिंग और भैषज्य की डिग्रियां और ला (कानून) विज्ञान और भैषज्य में डाक्ट्रेट प्रदान कर सकती थी। १८९३ में 'फैकल्टी आव इंजीनियरिंग' और १८९४ में 'फैकल्टी आव साइंस' की स्थापना हुई। 'फैकल्टी आव इंजीनियरिंग केवल दस वर्ष तक रही। १८८९ में बी० ए० और एल-एल० बी० की प्रथम परीक्षाएं हुईं। १८९० तक एम० ए० के लिए केवल पांच कालेज यूनिवर्सिटी से सम्बद्ध थे—म्योर सेंट्रल कालेज, इलाहाबाद; क्वीन्स कालेज बनारस; आगरा कालेज आगरा; एम० ए० ओ० कालेज अलीगढ़; कैनिंग कालेज लखनऊ। बी० ए० के लिए अजमेर, बनारस, बरेली, जयपुर और लखनऊ के पांच कालेज और इंटरमीडियेट के लिए फैजाबाद, अल्मोड़ा, आगरा, ग्वालियर और मसूरी के पांच कालेज सम्बद्ध थे। १८८९-१८९२ की एन्ट्रेंस परीक्षा में बड़ी-बड़ी दूर तक के विद्यार्थी परीक्षा में बैठे।

१९०४ के यूनिवर्सिटीज ऐक्ट के अनुसार यूनिवर्सिटी को प्रोफेसर, लेक्चरर आदि नियुक्त करने तथा पुस्तकालय, प्रयोगशालाएं, अजायबघर आदि स्थापित करने, विद्यार्थियों के रहने का प्रबन्ध और चरित्र-सम्बन्धी देखभाल रखने और कालेज सम्बद्ध करने तथा उनका निरीक्षण करने के सम्बन्ध में विशेषाधिकार प्राप्त हुए। १९०४ की सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार आगरा और अवध, बरार, मध्य-प्रान्त, अजमेर-मेरवाड़ा और राजपूताना तथा मध्यभारत की देशी रियासतों के कालेज यूनिवर्सिटी से सम्बद्ध हो सके

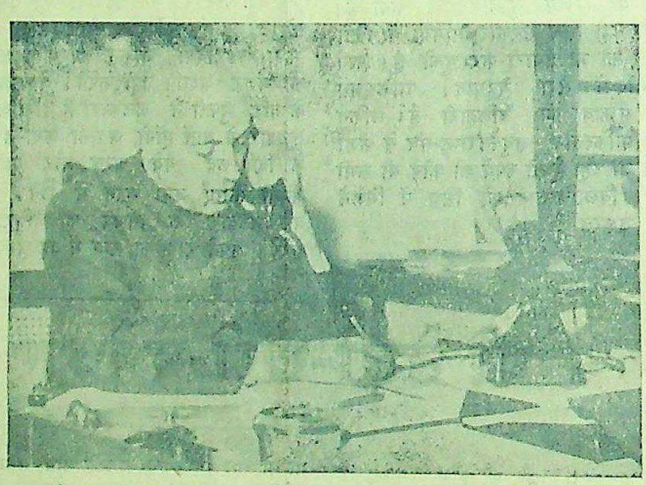

भारत के प्रधान मंत्री पंडित नेहरू को 'डाक्टर' की उपाधि दी गई है।

प्रयाग विश्वविद्यालय के भूतपूर्व वाइस चांसलर पंडित अमरनाथ झा।

प्रयाग विश्वविद्यालय वर्तमान वाइस चांसलर डा० ताराचंद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

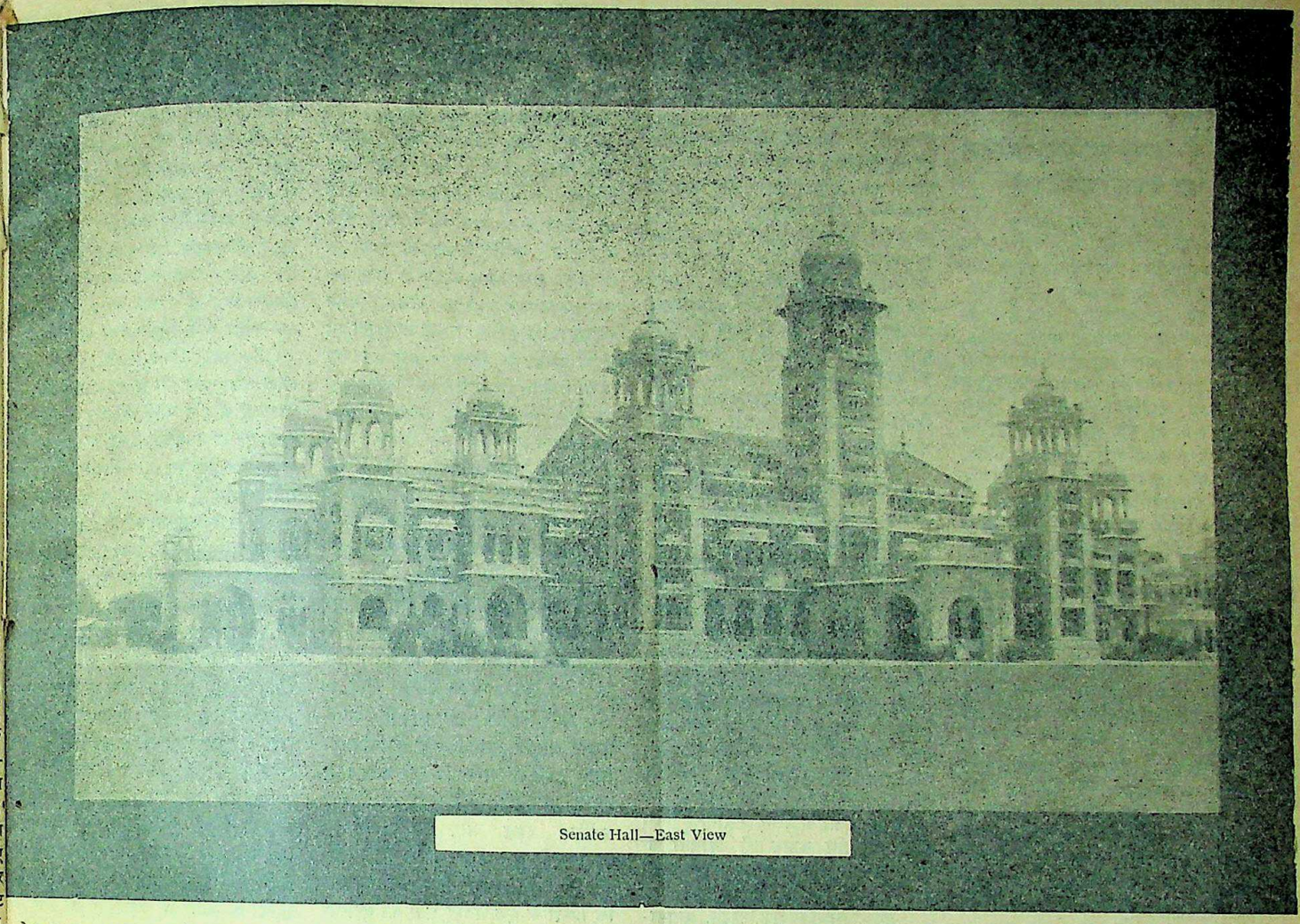

Senate Hall—East View

थे। उस समय लाटूश चांसलर और मि० जस्टिस नाक्स वाइस-चांसलर थे। १९०४ से १९२० तक साहित्य, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, राजनीति, भाषा-विज्ञान, अर्थ-शास्त्र, कामर्स (व्यापार) आदि अनेक विषयों के अध्ययन की व्यवस्था और कालेजों के लिए अनेक होस्टलों और ट्रेनिंग कालेजों की स्थापना हुई। गवर्नमेंट ने भारत के प्राचीन ज्ञान-विज्ञान के अध्ययन की सुविधाएँ प्रदान करने में भी किसी प्रकार का संकोच न किया। १९१५ में बनारस हिन्दू-यूनिवर्सिटी की स्थापना हुई। १९२० में सर हाईकोर्ट बटलर ने यूनीवर्सिटी की व्यवस्था में कुछ आवश्यक परिवर्तन किये। १८८८ में यूनिवर्सिटी से १३,१९०७ में ३८ और १९२१ में ३६ कालेज सम्बद्ध थे। १८८९ में परीक्षार्थियों की संख्या १८३९ और १९२१ में ८३५७ थी। धीरे-धीरे इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से सम्बद्ध कालेजों की संख्या कम होती गई। यह क्रम १९१५ में बनारस हिन्दू-यूनिवर्सिटी की स्थापना से शुरू हुआ। तत्पश्चात् १९२० में लखनऊ यूनिवर्सिटी और अलीगढ़ यूनिवर्सिटी, १९२३ में नागपुर यूनिवर्सिटी और १९२७ में आगरा यूनीवर्सिटी की स्थापना हुई। ये यूनिवर्सिटियां इलाहाबाद ही की शाखाएँ मानी जानी चाहिए। १९२७ के बाद म्योर सेंट्रल कालेज, ईविंग क्रिश्चियन कालेज और कायस्थ पाठशाला कालेज ही इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से सम्बद्ध रह गये थे। १९२२ से १९२७ तक यूनिवर्सिटी-व्यवस्था के दो पक्ष थे—अपना और सम्बद्ध कालेजों से सम्बन्ध रखनेवाला। इन दोनों पक्षों में प्रायः संघर्ष हो जाया करता था। १९२७ में यूनिवर्सिटी केवल यहां रहकर पढ़नेवाले विद्यार्थियों की शिक्षा-संस्था-मात्र रह गई।

१९२२ और १९३२ के बीच कामर्स (व्यापार) हिन्दी, उर्दू, नागरिक-शास्त्र, राजनीति और कृषि के पृथक्-पृथक् विभागों में शिक्षा-कार्य प्रारम्भ हुआ। उसके बाद चित्रकला, संगीत, सैनिक शिक्षा, एल-एल० एम०, जर्मन, फ्रेंच, चीनी, रूसी भाषाओं और शिक्षण-कार्य तथा स्थानीय स्वायत्त शासन-तंत्र (एम० ऐड० और एल० एस० जी० डी०) में डिप्लोमा कोर्स, एअर ट्रेनिंग कोर, फोटोग्राफी, सोशल सर्विस (समाज-सेवा) वैदेशिक नीति आदि के सम्बन्ध में नवीन आयोजनाएँ हुई हैं। विज्ञान-विभाग में एग्रीकल्चरल, बोटेनी, जूलोजी व कैमिस्ट्री और लड़कियों के लिए एक नया बी० एस-सी० कोर्स खोला गया है। यद्यपि पिछले दस-बारह वर्षों की राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों का यूनिवर्सिटी पर भी प्रभाव पड़ा और अनेक संकटापन्न परिस्थितियां उत्पन्न हुईं तो भी यहां की शिक्षा का स्टैंडर्ड गिरने नहीं पाया और केवल संयुक्तप्रान्त से ही नहीं वरन् भारतवर्ष के अन्य प्रान्तों से भी अत्यन्त कुशाग्रबुद्धि विद्यार्थी यहां आते हैं। हाल ही में फ्रांस, बेलजियम, केनिया और चीन के विद्यार्थी भी यहां अध्ययन करने आये हैं। आशा है अब भविष्य में संसार के अन्य देशों के विद्यार्थी भी यहां आवेंगे। इस वर्ष तो विद्यार्थियों की संख्या चार हजार के लगभग पहुँच गई है। विभिन्न विषयों में, विशेष रूप से हिन्दी में खोज-कार्य बड़ी तत्परता और लगन के साथ किया जा रहा है। यूनिवर्सिटी ने पिछले दस-ग्यारह वर्ष के समय में श्री डा० अमरनाथ झा और श्री डा० ताराचंद की अध्यक्षता में अभूत-पूर्व चौमुखी उन्नति की है। दोनों वाइस-चांसलरों ने यूनिवर्सिटी को उच्च उठाने में सक्रिय भाग लिया है जिसके लि: प्रत्येक शिक्षा-प्रेमी उनका कृतज्ञ रहेगा।

यूनिवर्सिटी की शिक्षा में यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी का प्रधान और महत्त्वपूर्ण स्थान है। १८८७ में जब यूनिवर्सिटी-बिल पेश किया गया था तो बाबू वीरेश्वर मित्र ने यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी स्थापित करने की आवश्यकता बताई थी, किन्तु बहुत दिनों तक उनकी बात पर किसी ने ध्यान न दिया। यूनिवर्सिटी के चांसलर, सर अल्फ्रेड लायल ने यह कहा था कि इस संस्था का प्रधान उद्देश्य उच्च शिक्षा की व्यवस्था करना है। इसलिए उस समय इलाहाबाद की पब्लिक लाइब्रेरी और म्योर सेंट्रल कालेज की लाइब्रेरी से काम चला लिया जाता था। १९०६ में जाकर प्रान्तीय सरकार केन्द्रीय सरकार से चालीस हजार रुपया शुरू में और पांच वर्ष तक बीस हजार रुपया वार्षिक की स्वीकृति लेने में सफल हो सकी। काफी सोच-विचार के बाद सिंडीकेट ने पुराने पुलिस ट्रेनिंग स्कूल और सिविल अस्पताल के कहीं निकट यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी बनवाने का निश्चय किया। किन्तु अन्त में चांसलर की इच्छानुसार १९०९ में उसका उस स्थान पर बनवाना निश्चित हुआ जहां वह आज है। उसका शिला-न्यास १७ जनवरी, १९१० में सर जान हीवेट द्वारा हुआ। १९१४ में इमारत का बनना शुरू होकर १९१५ में समाप्त हो सका। इमारत बनवाने का कार्य सर स्विन्टन जैकोब को सौंपा गया था। लाइब्रेरी बनवाने में एक लाख अस्सी हजार रुपया व्यय हुआ। प्रारम्भ में केवल पचास हजार पुस्तकें सुरक्षित रखने की दृष्टि से इमारत बनवाई गई थी। किन्तु १९१३ के बाद यूनिवर्सिटी की व्यवस्था में परिवर्तन होने और अनेक ो जाने के फलस्वरूप पुस्तकों की संख्या में वृद्धि हो गई है और अब स्थानाभाव है। यूनिवर्सिटी की अपनी अलग लाइब्रेरी का कार्य १९१६ से प्रारम्भ हुआ। किन्तु प्रथम महायुद्ध के कारण उसकी तीव्र प्रगति न हो सकी। युद्ध के समाप्त हो जाने पर सरकार ने उसे पचास हजार रुपये की आर्थिक सहायता दी। १९१९ से लेकर आज तक यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी में अनेक देशी-विदेशी साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक आदि पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। लगभग सभी विषयों पर पुस्तकों का अत्यन्त उपयोगी संकलन किया गया है। यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी में हस्तलिखित ग्रंथों के संकलन की व्यवस्था भी है और खोज-कार्य के लिए सभी सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। यद्यपि लाइब्रेरी को जितनी आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए उतनी तो नहीं मिल रही है, तो भी आज उसमें १,१९१०१ से भी अधिक पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं की संख्या ३९० है। लाइब्रेरी में जितनी पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं उनकी एक सूची वैज्ञानिक ढंग से तैयार रहती है। इसी वर्ष रावसाहब ए स० आर० रंगनाथन् ने यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी में कुछ महत्त्वपूर्ण सुधारों की दृष्टि से एक रिपोर्ट प्रस्तुत की है—जो, आशा है, अत्यन्त उपयोगी और लाभदायक सिद्ध होगी।

यूनिवर्सिटी की खास-खास इमारतों में म्योर सेंट्रल कालेज, सीनेट हाउस, लाइब्रेरी, ला कालेज तथा विभिन्न विषयों के विभागों की इमारतें हैं। आठ होस्टल हैं जिनमें से पांच का प्रबन्ध यूनिवर्सिटी के हाथ में है। लाइब्रेरी का दरभंगा हाल, यूनियन हाल और स्पोर्ट्स स्टेडियम नई इमारतें हैं। म्योर सेंट्रल कालेज का शिलान्यास ९ दिसम्बर, १८७३ को

शेष पृष्ठ १७ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

बम्बई में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का ३५वाँ अधिवेशन

भाषा किसी भी राष्ट्र, समाज और संस्कृति की प्राणवायु है। भारत आज स्वतन्त्र हो गया है, अँगरेज जा रहे हैं, अँगरेजी जा रही है, अँगरेजी का स्थान लेनेवाली एक राजभाषा की आज देश को आवश्यकता है। हिन्दी ही अपनी सबलता, सुबोधता, स्वाभाविकता और उपयोगिता के कारण हमारे देश की राजभाषा हो सकती है तथा राजलिपि देवनागरी। हिन्दी नैपाल तथा भारतीय संघ के ९ प्रान्तों के ३० करोड़ लोगों में से, बिहार, यू०पी०, सी० पी० राजपूताना एवं पूर्वी पंजाब आदि पांच प्रान्तों के २० करोड़ लोगों की मातृभाषा है। वह भारत में बोली जानेवाली योरोपीय भाषा-परिवार की ७ बड़ी संस्कृत प्रसूत आर्य भाषाओं एवं द्राविड़ परिवार की चार भाषाओं में सबसे सबल, सबसे मेल खानेवाली एशिया की सबसे बड़ी और सुगम भाषा है। इस प्रकार बंगाली, उड़िया, आसामी, मराठी, गुजराती, (आर्य), कन्नाड़, तामिल, तेलगू, मलयालम, (द्राविड़) आदि भाषाओं का हिन्दी से ही अधिक साम्य है।

इसी प्रकार संसार में प्रचलित सभी लिपियों में देवनागरी ही सर्वश्रेष्ठ लिपि है, क्योंकि वह जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी भी जाती है रोमन या उर्दू (अरबी) लिपि विदेशी और दोषपूर्ण है। जिनमें सब कुछ ठीक ठीक लिखा या पढ़ा नहीं जाता। देवनागरी लिपि हमारे पांच सहस्त्र वर्षों की सांस्कृतिक परम्परा के विकास का परिणाम है। बंगला, मराठी, गुजराती, गुरुमुखी आदि देश के २० करोड़ लोगों की लिपि की वर्णमाला से इसकी समानता है। आज भी भारत के गांवों के ९० प्रतिशत निवासी बिना जाति-धर्म के भेद-भाव के अपनी प्रान्तीय मातृभाषा का ही व्यवहार करते हैं। दो राष्ट्रों का सिद्धांत विघातक और गलत है। गुजराती मुस्लिम, पारसी, गुजराती ही बोलता लिखता है, बंगाली मुसलमान, बंगाली उर्दू नहीं। यहां तक ही नहीं स्वतन्त्र प्रगतिशील इस्लामी देश टर्की ने भी विदेशी अरबी लिपि और भाषा का परित्याग कर अपनी टर्किश भाषा और रोमन-लिपि को अपनाया है।

दुर्भाग्य से देश के टुकड़े हो गये हैं, और पाकिस्तान ने उर्दू राजभाषा मान ली है; अतः भारतवर्ष को भी आज हिन्दी को राजभाषा घोषित कर देना चाहिए। सुदूर दक्षिण (मद्रास-प्रान्त) एवं सुदूर पूर्व, आसाम, नैपाल में भी इसका प्रबल प्रचार है। यों तो काश्मीर से कन्याकुमारी तक संतों के जमाने से ही हिन्दी समझी जाती है। और उर्दू (अरबी) अब तक निजाम हैदराबाद द्वारा २५ साल से १ करोड़ रुपया हर साल खर्च करने पर भी रियासत के पांच प्रतिशत में भी उच्च शिक्षा न फैला सकी। कारण वह विदेशी होने से भारतीय प्रजा की प्रकृति और संस्कृति के अनुकूल नहीं है। हम सब हिन्दी की बात करते हैं, तो अन्य भाषाओं के साथ अन्याय नहीं चाहते, अन्य भाषाएँ अपनी अपनी जगह पर फूलती-फलती रहें। जो लोग आवश्यकता से अधिक अल्पसंख्यकों को बढ़ावा देते हैं, वे जाने-अनजाने भी राष्ट्र-भाषा के नाम पर दुर्भाग्य से साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन देते हैं।

आज तो पूर्वी पंजाब और यू० पी० की सरकारों, बड़ौदा तथा राजपूताना की रियासतों के अलावा भारतीय विधान-परिषद् के कांग्रेस दल ने भी हिन्दी को राज-भाषा मान लिया है तथा देवनागरी को राजलिपि। शीघ्र ही बिहार-सरकार तथा सी० पी० की सरकारें भी इसे प्रान्तीय राजभाषा मान लेंगी। इसलिए देश के पत्रों को चाहिए कि वे देवनागरी लिपि को स्वीकृत कर लें। बम्बईप्रान्त में भी हिन्दी-भाषियों की आबादी १५ लाख से ऊपर है, किन्तु दुःख है प्रान्तीय सरकार ने अभी हिन्दी को प्रान्तीय भाषा नहीं माना, आशा है वह शीघ्र ही गौर करेगी। बम्बई प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन इस बारे में प्रयत्नशील है।

सन् १९१२ में प्रातःस्मरणीय स्व० महर्षि मालवीय जी की अध्यक्षता में बम्बई में अ० भा० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का नवां अधिवेशन हुआ था। आज २८ साल बाद ३० भाषाओं के विद्वान् महा-पंडित राहुल सांस्कृत्यायन के सभापतित्व में इसका ३५वां अधिवेशन इसी दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में होने जा रहा है, साथ में राष्ट्रभाषा-परिषद् का सभापतित्व भारत-सरकार के उद्योग-मंत्री डा० श्यामा-प्रसाद मुकुर्जी जैसे विख्यात विद्वान् ने स्वीकार किया है। हिन्दी को राजभाषा स्वीकार करने एवं राजभाषा बन जाने पर उसमें विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति, समाज, दर्शन, इतिहास एवं व्यापार आदि की उच्च शिक्षा के लिए सर्वांगीण उच्च साहित्य-निर्माण कराने की योजना की दृष्टि से इस अधिवेशन का बड़ा महत्त्व है।

सर्वश्री पुरुषोतमदास टण्डन, श्यामा-प्रसाद मुकुर्जी, आचार्य नरेन्द्रदेव, सम्पूर्णा-नन्द, पं० बालकृष्ण शर्मा; डा० अमरनाथ झा, आचार्य क्षितिमोहन सेन (विश्वभारती शान्तिनिकेतन) तथा बिहार यू० पी०, सी० पी० एवं पंजाब और राजस्थान के मंत्रीगणों के साथ साथ देश के बड़े बड़े विद्वान् और जननायक इसमें भाग लेंगे। समय बहुत थोड़ा है और कार्य महान् है। अतः मैं बम्बई के समस्त नागरिकों से हार्दिक अपील करता हूँ कि वे महानगरी बम्बई की प्रतिष्ठा के अनुरूप तन, मन, धन से सहयोग देकर सम्मेलन को सफल बनाने में हमारा हाथ बँटावें, क्योंकि बम्बई भारत की आर्थिक राजधानी है। स्वागत-समिति का संगठन हो चुका है। अब तो आप सबके हार्दिक सहयोग की आवश्यकता है, जिससे हम अपने एक राष्ट्र, एक भाषा और एक लिपि के स्वप्न को साकार कर सकें।

बम्बई —राधाकृष्ण खेतान
८ दिसम्बर, ४७ (स्वागताध्यक्ष)

* * *

महाकवि निराला के नाम पर लूट

आज के वस्तुवादी युग में अगर आज हमें किसी के दैनन्दिन व्यवहार में भी उसकी आध्यात्मिक आस्था सच्चे रूप में चरितार्थ होती है, तो वे महाकवि निराला ही हैं। उनका बाह्य जीवन उनके अन्तर की प्रतिच्छाया है। विशालकाय, उन्नत वक्ष, उच्च और प्रशस्त ललाट के साथ उनकी दार्शनिक गरिमामयी दृढ़ गति में उनका निरपेक्ष अलहड़पन, उनका हिमालय शृंग की भांति अटूट-अदम्य व्यक्तित्व, अन्तर में शत-शत भावोच्छ्वास के सहानुभूतिमय निर्झर छिपाये ऊपर से पाषाणी अभिव्यक्ति सभी कुछ उन्हें आज के युग से ऊपर [illegible] है। उनके औदार्य की कहानियाँ उनके जीवन के निकट रहनेवाले सभी व्यक्तियों के कंठ में चिर-मुखरित रहती हैं और आज यदि हिन्दी का सामान्य पाठक उनसे परिचय न भी प्राप्त कर सका हो, तो इसमें कोई अस्वाभाविकता नहीं; क्योंकि उनके पीछे प्रचार की कोई मशीन नहीं और न उनका अपना कोई प्रचार-मंच ही है। ऐसे अलहड़ अवढर दानी का साथी ही कौन हो सकता है, क्योंकि निराला का व्यक्तित्व तो आज के सामान्य जीवन से ऊपर उस स्तर पर खड़ा है जहाँ चार क्षण भी रुकने पर समाज के भौतिकतालिप्त प्राणी का दम फूलने लगता है। किसी ने कहा निराला में संयम नहीं, किसी ने कहा निराला बड़ा उग्र और अस्तव्यस्त है, किसी ने कहा वह अस्पष्ट है। कोई उसे देखकर त्रस्त हुआ, कोई आश्चर्यचकित और कोई मौन! एक साथ निराला इतने लोगों में इतने प्रकार के प्रभाव उत्पन्न कर सका, यही उसकी विशेषता है। मुझे तो बिहार के सुप्रसिद्ध साहित्यिक विद्वान् श्री पं० जानकीवल्लभ शास्त्री के ये शब्द अब तक याद हैं कि निराला बहुत कम को पसन्द आता है और जिसे पसन्द आ गया, फिर उसे कोई दूसरा नहीं पसन्द आता।

किन्तु निराला जी का यही असाधारण औदार्य आज कितनी ही अवसरवादी संस्थाओं द्वारा अनुचित रूप से शोषित हैं हिन्दी-साहित्य के अब तक उपेक्षित रहने और किसी केन्द्रीय व्यवस्था के अभाव के कारण व्यक्तिगत रूप से किसी को क्या आवश्यकता कि हिन्दी के एक महान् सेवी की दुखस्था की ओर ध्यान दे, और हिन्दी की संस्थाओं में इतनी ईमानदारी किसमें कि इस ओर ध्यान दे। आज तक हिन्दी-शोषक संस्थाओं ने ही अपने पर हिन्दी-सेवा का बिल्ला चिपका रखा है। हिन्दी के साहित्यकारों और लेखकों को चूसना उनका ध्येय रहा है। इसके लिए निराला जी भी अपने शांकरी स्वभाव के कारण शिकार बनाये गये।

गत वर्ष काशी में उनकी स्वर्ण-जयन्ती मनाई गई। पत्र-पत्रिकाओं और पत्रकों द्वारा गिरि-शिखर से यह घोषित किया गया कि निराला-जयन्ती का उद्देश्य हिन्दी की ओर से उन्हें सम्मान देना और उनकी सुविधा के लिए एक ऐसे कोष का संचय करना है जिससे कम से कम उनकी सामान्य जीवन-आवश्यकताओं की पूर्ति होती चले। जयन्ती समाप्त हो गई, किन्तु अन्त में निराला जी के हाथ कितना रुपया आया अथवा उनके हाथ में जब वह धन दिया जा रहा था, तो उसमें वास्तव में कितने के नोट थे, कौन जाने। तथ्य तो यही है कि उसके बाद निराला जी को फिर उन्नाव में श्री सुमित्राकुमारी सिनहा के यहाँ ही जाना पड़ा, जहाँ से वे जयन्ती के लिए लिवा लाये गये थे। यह तो है हिन्दी के साहित्यिकों की सत्यता।

इधर 'प्रगतिशील लेखक संघ', जिन्हें 'कम्यूनिस्टों के साहित्यिक सैनिक' कह सकते हैं, निराला जी के लिए द्रवित हो उठा है। अभी-अभी प्रयाग प्रदर्शनी के कवि-सम्मेलन मंच से यह घोषणा हुई है कि प्रयाग में 'निराला-भवन' बनवाने [illegible] जा रहा है, जिसमें प्रत्येक हिन्दी-सेवी का सहयोग आवश्यक है। बात तो ठीक ही है और ठीक कम्यूनिस्टों के स्वभावानुसार अवसर की। पार्टी के पास अपना आफिस शायद निजी रूप से नहीं है और 'वर्करों' के चाय-पानी से बचाकर धन एकत्र करना सम्भव नहीं। अतः निराला जी ही, जिन्हें हिन्दी की अधिकांश अवसरवादी संस्थाओं ने चूसा है, इसके लिये उपयुक्त हैं। खेद तो यह है कि समझ नहीं पड़ता कि निराला जी और 'प्रगतिशील-लेखक-संघ' का सम्बन्ध क्या है? निराला जी हिन्दी के एक प्रकांड कवि और उद्भट साहित्यकार हैं। देवनागरी उनकी लिपि है। 'प्रगतिशील लेखक-संघ' की न तो कोई निश्चित भाषा है और न कोई निश्चित लिपि है। उसमें एक साथ हिन्दी, हिन्दुस्तानी और उर्दू के समर्थक विभिन्न दृष्टिकोणों के विद्वान् तथा लेखक हैं। उनको न एक आस्था है और न एक साधन। मुझे सभी भाषाओं के साथ सहानुभूति रखनेवाली संस्थाओं से विरोध नहीं, किन्तु वास्तविकता तो यह है कि आज अपने को हिन्दी की संस्था घोषित करनेवाली कोई भी संस्था यदि हिन्दी के विषय में अपनी नीति स्पष्ट घोषित नहीं करती, तो वह हिन्दी की विघातिनी है। आज 'अश्वत्थामा मृतो नरो वा कुंजरो' की नीति का समय नहीं। आज हिन्दी की स्थिति जीवन-मरण के सन्धि-स्थल पर है। आज दुहरी नीति बरतना हिन्दी को धोखा देना है। जब तक 'संघ' इस विषय में अपनी स्पष्ट नीति घोषित नहीं कर देता, उसे हिन्दी या हिन्दी के किसी भी कलाकार की आड़ में अपना उल्लू सीधा करने का प्रयत्न सरासर बेईमानी है।

आये दिन इसी प्रकार की अफवाहें सन्धियाँ चलाई जा रही हैं। मेरा हिन्दी जगत् से यह अनुरोध है कि बिना सत्यता जाने मौखिक घोषणाओं पर धोखा न खायें। इधर कई संस्थाएँ निराला जी के शोषण का प्रयत्न कर रही हैं: अब हिन्दी के हित-चिन्तकों को सावधान हो जाना है। अन्त में हिन्दी के साहित्य-महारथी और चिर-शोषित कवि श्री पं० सूर्यकान्त जी त्रिपाठी निराला के पुनीत चरणों में शीश नवाकर हम पुनः एक बार हिन्दी वालों को सावधान कर देना चाहते हैं।

प्रयाग —शिवकंठलाल श्री
१० दिसम्बर, ४७

इधर-उधर न भटकिए
न्यू इरा बुक हाउस
तथा
न्यू इरा एजेंसी
८६, हिवेट रोड, प्रयाग
इण्डियन प्रेस तथा अन्य बड़े प्रकाशकों की हिन्दी, अँगरेज़ी और की सभी पुस्तकें आप हमारे यहाँ से सकते हैं।
इंडस्ट्रियल रिसर्च हाउस, प्रीमि फ़र्निशर्स और हिन्दुस्तान टैक्स्टाइल का सामान भी हमारे यहाँ मिलेगा।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जय सोमनाथ, जय जय भारत !

प्राचीन भारतीय संस्कृति और गौरव की एक महान् देन

लेखक, श्री उमाशंकर शुक्ल, वर्धा

गुजरात के सुप्रसिद्ध प्राचीन तथा सांस्कृतिक मन्दिर सोमनाथ का पुननिर्माण पुनः होनेवाला है। मुसलिम शासनकाल में महमूद गजनवी ने सोमनाथ के मन्दिर को ध्वंस किया था। इस लेख के योग्य लेखक ने सोमनाथ की प्राचीनता के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए उसके पुनरुद्धार का स्वागत किया है। लेख पठनीय, सामयिक और सुन्दर है।

भारतवर्ष की गुलामी के बाद स्वतंत्र हुआ है। इस स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए न जाने कितने वीरों ने अपना खून बहाया, न जाने कितनी स्त्रियों का सिंदूर असमय में पुता और न जाने कितने बच्चों के प्राण गये। सब कुछ हुआ—हम आजाद हुए। हर देश का इतिहास ऐसा है कि स्वतन्त्रता के लिए लाखों व्यक्तियों ने अपनी कुर्बानियां कीं और तब कहीं वे आजाद हुए। भारत की प्राचीन संस्कृति, सभ्यता व गौरव आज हमारे नेताओं के हाथों सुरक्षित है। भारत ने सदैव विश्व को कल्याण का मार्ग बताया है। वही आज वह पुनः करेगा—इसमें सन्देह की गुंजाइश नहीं है। इतिहास साक्षी है व हमारी संस्कृति सिखाती है कि हम शांतिप्रिय हैं। हमारा साम्राज्य, हमारी विजय, दूसरे ही प्रकार की रही है। हमने दूसरों को जंजीरों से, चाहे वह लोहे की हो या सोने की—कभी बांधने की कोशिश नहीं की। दूसरों को हमने अपने साथ लोहे की जंजीर से भी ज्यादा मजबूत, मगर सुन्दर और सुखद रेशम के धागे से बांध रखा है और बंधन धर्म का है, संस्कृति का है, ज्ञान का है। हमारी जिन्दगी और संस्कृति में वह है जिसने हमें समय के थपेड़ों के बावजूद जिन्दा रहने की शक्ति दी है। भारत को अभी राजनीतिक स्वतन्त्रता ही प्राप्त हुई है—अभी उसे आर्थिक व सामाजिक क्रान्ति करना है और जब यह सब कुछ हो जायगा, हम दुनिया के उन्नत राष्ट्रों के साथ कंधा से कंधा भिड़ाकर चलेंगे और विश्व को बता देंगे कि भारतीय संस्कृति व सभ्यता कितनी महान् है। वृद्ध भारत आज भी सभी देशों का सिरमौर है।

प्राचीन संस्कृति की रक्षा

अपनी प्राचीन संस्कृति की रक्षा के लिए ही उस दिन सरदार वल्लभभाई पटेल ने घोषणा की कि सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार किया जायगा। देश की आंखें 'सोमनाथ' पर जा लगीं। इतिहास के विद्यार्थी पढ़ते थे कि सोमनाथ मंदिर बहुत बड़ा मंदिर था और उसमें ६० मन सोने का घंटा लगा था और रोज 'सोमनाथ' जी के स्नान के लिए गंगाजल आता था और आज तक वह सोमनाथ का मंदिर भग्न दशा में पड़ा रहा। न किसी ने मरम्मत की और न उसे देखा। अँगरेजों को क्या पड़ी थी कि वे उसका जीर्णोद्धार कराते। मुसलमान बादशाहों ने भी कुछ ध्यान नहीं दिया उल्टे उसे नष्ट-भ्रष्ट किया। अभी भी भारत में ऐसे कई मंदिर, ऐतिहासिक स्थान, किले, इमारतें आदि चीजें हैं जो बिना मरम्मत किये हुए पड़ी हैं। हजारों वर्ष पूर्व की बनी हुई ये चीजें हमारी भारतीय संस्कृति की याद दिलाती हैं, मानो संसार को कहती हों कि हमारा निर्माण करनेवालों के कलाकौशल व बुद्धि को देखो। एक ओर अजंता की गुफायें हैरत में डालती हैं तो दूसरी ओर बम्बई के उस पार एलफेंटा की गुफायें मन को आकर्षित करती हैं। मुक्तागिरि (अमरावती जिला) की रमणीयता, रतनपुर (बिलासपुर जिला) के भग्नावशेष उज्जैन की इमारतें, चुनार का किला आदि विदेशियों को चक्कर में डालते हैं। भारत की स्वाधीनता के साथ सबके दिन फिर गये हैं। आज सोमनाथ के निर्माणकर्ताओं की आत्मा स्वर्ग से अपना मक संदेश सुना रही होगी कि वह प्रसन्न है।

पुनर्निर्माण में आपत्ति क्यों ?

एक सहस्र वर्ष के बाद सोमनाथ के मंदिर का जीर्णोद्धार होने जा रहा है। इस जीर्णोद्धार में भी मुसलमानों ने नाक-भौं सिकोड़ना शुरू किया है। सीमाप्रान्त के प्रधान मंत्री अब्दुलकयूम इस मंदिर के जीर्णोद्धार को इस्लाम के लिए चुनौती बतलाते हैं। अफगानिस्तान से आपने कहा है कि वहां के भूतपूर्व राजा महमूद गजनवी ने इस मंदिर को तोड़ा था, अतः इसका पुनर्निर्माण अफगानिस्तान के लिए चुनौती है। कितनी हास्यास्पद बात है। जिन्ना के पाकिस्तान-निर्माण से पंजाब की जो दुर्दशा हुई है—सदियों तक पीढ़ियां याद करेंगी। यह कैसा पाकिस्तान है? सच पूछा जाय तो पाकिस्तान का नाम ही मानवता के साथ और पवित्र इस्लाम के साथ विद्रोह करना है। अरब के जंगली और धर्महीन लोगों में जब पवित्र इस्लाम का प्रचार हुआ तब भी वह देश पाकिस्तान न कहला सका और परम पूज्य हजरत मुहम्मद भी पाकिस्तानी न कहला सके—पर जिनमें पवित्र इस्लाम की गंध भी नहीं है ऐसे कायदे आजम जिन्ना और उनके संगी-साथी आज पाकिस्तानी कहलाने में गर्व का अनुभव करते हैं—यह पवित्र इस्लाम का कितना भयंकर अपमान है। सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण अगर होने जा रहा है, तो मुसलमानों के लिए इसमें आपत्ति करने की जरूरत भी क्या है? मुसलमानों ने इस देश की संस्कृति व सभ्यता को नष्ट करने की कोशिश की, पर वे कामयाब नहीं हो सके। हिन्दुओं ने उन्हें अपना भाई समझा, पर मौका आने पर मुसलमानों ने हिन्दुओं की गर्दनें काटीं। अब तक हो चुका—अब ऐसी स्थित नहीं आने दी जायगी। देश स्वतंत्र होने पर पहले अपनी सभ्यता व संस्कृति की रक्षा करते हैं। यही स्वाधीनता की कसौटी है। आज से लगभग छः सौ वर्ष पूर्व रूस पर मुसलमानों का अधिकार हो गया था। उन्होंने रूस की राजधानी मास्को की छाती पर बड़ी-बड़ी मस्जिदें खड़ी कीं, जिनके नीचे गगनचुंबी व विशाल चर्च दबा दिये गये। परंतु ज्यों ही रूस ने करवट ली और उसकी भुजाओं में बल आया—उसने मुसलमानों को खदेड़ दिया और उनकी मसजिदों के देवस्थल पर गगनचुंबी गिरजाघर बनाये और उन पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा गया—"आक्रमणकारियों से बदला लिया गया"। उस समय टर्की का सुलतान कुछ न बोला—जब कि मसजिदों का गिराना इस्लाम का सबसे बड़ा अपमान माना जाता है। भारत में मसजिदें तो नहीं गिराई गईं, किन्तु सोमनाथ के पुनर्निमाण से ही चौंकने की क्या जरूरत? संसार में धार्मिक स्वाधीनता का स्थान सर्वोपरि है। हिन्दुस्तान तो सत्य व न्याय के पथ पर चलकर अपनी उन्नति की आकांक्षा करता है न कि पाकिस्तान के समान अन्याय व असत्य के मार्ग पर चलकर अपने ऊपर कलंक लगवाना चाहता है। यहां हिन्दू व मुसलमान सब एक हैं। अल्पसंख्यकों की रक्षा यहां की जा रही है। यह कितना ऊंचा आदर्श है।

महमूद गजनवी द्वारा लूटपाट

सोमनाथ का मंदिर पट्टन में सोमनाथ तालुका में स्थित है। अरब समुद्र की उत्ताल तरंगें उसका प्रक्षालन करती हैं। कोई यह ठीक से नहीं बता सकता कि उक्त शिवालय कब का बना हुआ है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति के केंद्र सोमनाथ मंदिर के भग्नावशेष का एक दृश्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

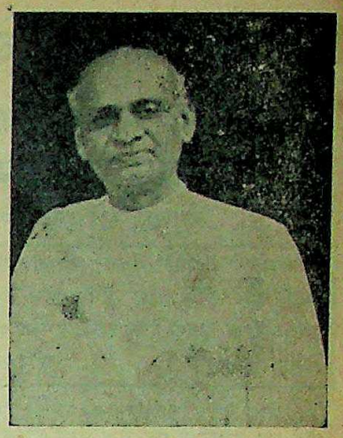

माननीय सरदार पटेल ने सोमनाथ के मंदिर के पुनर्निर्माण का आश्वासन दिया है।

इतिहास में इसका कुछ भी पता नहीं चलता। ग्यारहवीं शताब्दी में महमूद गजननवी को किसी ने बता दिया था कि सोमनाथ के मंदिर में अपार धनराशि है। जब उसने भारत पर चढ़ाई की तो हजारों हिन्दुओं की हत्या की, मंदिरों को नष्ट किया और लूटा। सोमनाथ मंदिर को लूटा। उसकी रक्षा के लिये वहां के पुजारियों ने बहुत प्रयत्न किया, पर वे असफल रहे। वह वहां के दरवाजे ले गया, धन ले गया और मंदिर को नष्ट-भ्रष्ट किया। १८४२ ईसवी में गवर्नर जनरल लार्ड एलिनबरो ने अफगानिस्तान से मंदिर के दरवाजे लाये थे जो कि अभी भी आगरा के किले में सुरक्षित हैं और बीते दिनों की करुण कहानी बता रहे हैं। प्रसिद्ध विश्वभ्रमण करनेवाला यात्री मार्कोपोलो ने सोमनाथ के संबंध में लिखा था कि "सोमनाथ पश्चिम का राज्य है जहां के निवासी कट्टर मूर्तिपूजक हैं।" अरब के भौगोलिक रजी ने वर्णन किया है कि—"अरब समुद्र के तट पर बसा हुआ सोने की मूर्तियों का शहर।"

दिन फिर गये

सिर्फ महमूद गजनी ही नहीं था जिसने कि सोमनाथ पर चढ़ाई की और उसे लूटा। एक बार पहले पहल उक्त मंदिर लूटा गया था, पर बाद में वह पूर्ववत् बना दिया गया। बाद में सन् १३०० ईशवी में अलाउद्दीन ने चढ़ाई की और उसे नष्ट-भ्रष्ट किया। तब से वह अब तक यों ही पड़ा रहा। न जाने कितनी बरसातों ने उसे भिगोया, न जाने कितने वसंतों ने उस पर आंसू बहाये और न जाने कितने हेमंत आये और गये। दिन सबके फिरते हैं। समय एक-सा कभी नहीं रहता। सोमनाथ चुप होकर दिनों के फेर से बैठा था और वह सोच रहा था कि जब अच्छे दिन आने को होंगे तब बनते देर न लगेगी। वही हुआ—आज सोमनाथ प्रसन्न है, क्योंकि भारत की स्वतंत्र राष्ट्रीय सरकार उसका जीर्णोद्धार करा रही है।

सोमनाथ के दर्शनार्थ दुनिया के कोने-कोने से यात्री आते थे। एक बार एक पारसी कवि शेख सउदी आया। वह शिराज का रहनेवाला था। वह भारत भर घूमा। उसने सोमनाथ को देखकर १२३० ईस्वी सन् में लिखा था—

"मैंने सोमनाथ में हाथीदांत की एक मूर्ति देखी थी। इस्लाम के प्रारम्भिक समय में जिस प्रकार मनत हीरों जटित थी—उसी तरह वह मूर्ति भी थी। उस पर जो नकाशी का काम था वह बहुत ही सुंदर था।"

जय सोमनाथ, जय जय भारत !

दीपमालिका के दिन भारत के लौह-पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने घोषणा की कि "सोमनाथ" का जीर्णोद्धार होगा। सारे देश में प्रसन्नता फैल गई। वह

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान का भविष्य कैसा होगा ?

आज के संसार के लिए वैज्ञानिकों का आविष्कार ध्वंसात्मक है अथवा रचनात्मक !

लेखक, श्री श्यामसुन्दर राय बी० एस-सी०

आजकल के संसार में विज्ञान की क्या परिभाषा है और विज्ञानवेत्ताओं की वास्तविक प्रगति और रुचि क्या है ? आटम बम के इस युग में वैज्ञानिकों का आविष्कार ध्वंसकारी है अथवा रचनात्मक, इसका वर्णन इस लेख में किया गया है। लेख सुन्दर और पठनीय है।

आज हम परमाणु-युग की ड्योढ़ी पर खड़े हैं। हमारे सामने एक ऐसी दुनियां दीखती है जिसमें शक्ति तथा मैटर (पदार्थ) का भेद नहीं रहा। यों कहिए कि हमारे पास ऐसे साधन प्राप्त हुए हैं जिनसे हम दुनिया भर का कार्य चलाने के लिए शक्ति थोड़े खर्च में पैदा कर सकेंगे। हम प्रकृति की गुप्त बातें जानने के संग्राम में एक कदम और आगे आये हैं।

अनजान क्षेत्र में जो हमने सुनहली दुनिया का स्वप्न देखा तो नींद खुलने पर घबराहट आई। जो ऐसे समय में स्वाभाविक सा दीखता है। दुनियां का इतिहास इसका साक्षी है। आज का सभ्य कहनेवाला योरप गैलीलियो महोदय के टेरिसकोप में देखना तक मंजूर न किया। लोगों ने उसे जादूगर तक कह डाला। इसके बाद भी हमारे इतिहास में कितने मौके आये। पहले भी आये थे, भविष्य में भी आयेंगे। लेकिन मुझे दीखता है हम लोगों ने इतिहास से पूरा-पूरा फायदा नहीं उठाया। प्रकृति को जीतने, उसके भेद तथा प्रभेद जानने और उसका पूर्ण उपयोग करने का संग्राम क्या आज समाप्त हो गया ? क्या इतने दिनों के विज्ञान ने हमारा अनभल किया ? अगर इसने मानवता का केवल संहार ही किया तो ऐसा आंजन किस काम का जो आंखें फोड़ डाले ? आज ऐसा समय हमारे सामने है, ऐसा आकार है कि हम अपने पिछले अनुभवों को गौर से देखें। उस पर गौर करें और भविष्य के लिए अपना रास्ता चुनें।

आज की दुनिया के प्रसिद्ध विद्वान् डा० जोड महोदय ने परमाणु आविष्कार को मानवता के इतिहास का अकेला सबसे बड़ी दुर्घटना कहा है। उन्होंने यहां तक कहा है कि क्या कोई ऐसा नहीं जो घृणित वैज्ञानिकों को किसी जेल में बंद कर दे। अमेरिका में भी इस तरह की आवाज जोर पकड़ रही है। महात्मा गांधी जी की पीछे लौट चलने की राय तो हम बहुत दिनों से सुनते आ रहे हैं। तो ऐसी परिस्थिति में हमें विचार कर लेना है कि आखिर हमारा रास्ता आगे को है या पीछे को। हम प्रगतिशील हों या हाथ पर हाथ रख जितना है उसी को लेकर चुपचाप बठ जायँ ?

इस सवाल का हल निकालने के लिये यह आवश्यक है कि हम पहले विचार करें कि आखिर विज्ञान है क्या चीज ? किसे हम विज्ञान कहते हैं ? तब उसके बाद विचार करें कि इसने मानवता की बुराई इतनी क्यों की ?

सीधे और सच्चे अर्थ में देखा जाय तो विज्ञान कोई ज्ञान का भंडार नहीं कहा जा सकता। यह तो एक कार्य तथा सोचन-प्रणाली है और इसके पीछे आदमी की अधिक से अधिक जानने की इच्छा है। किसी छिपी चीज को जानने की उत्कंठा मानवता को जन्म से ही मिली है। हम प्रकृति का निरीक्षण करते हैं। किसी घटना को होते देखते हैं। जैसे न्यूटन ने पेड़ से फल गिरते देखा था। उसने इस क्रिया के कारण को समझने की कोशिश की। ऐसे अवसर मानवता के इतिहास में भरे पड़े हैं। यहीं पर विज्ञान की सोचने-वाली प्रणाली हमारी सहायता को आती है। हम शान्त और एकाग्र भाव से बैठ कर किसी घटना की परिस्थिति पर विचार करते हैं। आंकड़ा इकट्ठा करते हैं। उसका एकत्रीकरण करते हैं; और इन्हीं के बीच हम उनका मनन करते हैं और जब बहुत से आंकड़े तथा प्रमाण हमारे पास आते हैं तो हम फिर कोई ऐसी बात सोचते हैं जो उन सबका कारण बन सके। इसे अँगरेजी में हाईपोथिसिस कहते हैं। वैज्ञानिकों की दूसरी पीढ़ी इन्हीं आंकड़ों को फिर लेती है, प्रकृति निरूपण से नई बातों को चुन अपने भंडार में रखती है और इस बात को सोचने और समझने की कोशिश करती है कि अभी उसी हाईपोथिसिस में सब बातों का स्मरण मिलता है। अगर नहीं तो फिर दूसरा कारण ढूंढकर सबको एक नियम के सूत्र में बांधने की कोशिश की जाती है। इसी तरह पीढ़ी दर-पीढ़ी हम आज तक बढ़ते आये हैं। जब वैज्ञानिक किसी (अस्थायी) सत्य पर पहुँचता है और एक प्रकृति के अन्तः-पुर की झांकी पाता है तो खुशी के मारे नाच उठता है। लेकिन वह वहीं पर चुप बैठ नहीं जाता। अपनी बुद्धि की सहायता से सोचता है कि अगर उसका सोचना सत्य है तो उक्त बात भी इस तरह से होगी और इसी तरह उसको एक प्रमाण भी मिल जाता है। न्यूटन को किसी तरह यह बात मालूम हुई कि सूर्य की किरणों में सात रंग हैं। तब उसने एक प्रयोग सोचा। एक थालीनुमा कूट की पहिया बनाकर उसने उसे उन सात रंगों से रंगा। जिनका सूर्य में पाये जाने की संभावना थी। रंगने के बाद उस पहियों को उसने घुमाना शुरू किया। देखने पर उसे उसकी पहिया सतरंगी नहीं एक सफेद रंग की दिखाई दी। तब जाकर उसे अपनी खोज पर विश्वास हुआ। स्पेक्ट्रम से उसने सूर्य की किरणों में सात रंग पहले देखा था। उसने अब यह भी देख लिया कि सात रंग जोड़ देने पर भी सफेद रंग हो जाता है, क्योंकि सतरंगी पहिया के सब रंग करीब करीब एक ही बार आंखों के सामने आते हैं। इसी प्रयत्न, इसी सोचने-समझने की शैली और इसी तरह कार्य करने की विधि ने हमें प्रकृति के इस सत्य पर पहुँचाया कि सूर्य के रश्मि में सात रंग हैं। इतिहास साक्षी है। हमारे वैज्ञानिकों ने इसी तरह कार्य किया। अर्थ लाभ के ख्याल से नहीं। प्रतिष्ठा के ख्याल से नहीं बल्कि अपनी धुन में ही वे डूबे रहे। संसार के आमोद-प्रमोद को छोड़ उन्होंने इस व्रत को लिया और निभाया। आज उन्हीं के संतान उसका फायदा भोग रहे हैं। हां, यहां मैं यह लिखना तो भूल ही गया कि जब वैज्ञानिक ने प्रकृति की अंतः-पुरी की बातों को जाना तो उससे फायदा उठाया। आज हमारे सामने जो साधन हैं वे इन्हीं फायदा उठानेवाले प्रयत्नों के कारण हैं। इसे हम भूल नहीं सकते। रेडियो है तार है, आदि आदि। जब मानवता शिशु थी तो उसके पास अपने चारों ओर की घटित घटनाओं को जानने की इच्छा— वह भी पूरा साफ नहीं— के सिवा उसके हाथ खाली थे। वैज्ञानिक हमें बतलाते हैं कि "पत्थर-युग" में जब हमारे हाथ उन्हीं पत्थरों के बने हथियार आये तो उसका विविध उपयोग भी हमने इसी सोचने की प्रणाली से पाया।

विज्ञान का साधारण रूप आपके सामने रखने के बाद मैं अब आपसे सवाल पूछता हूँ, जो अभियोग आज वैज्ञानिकों पर लगाये जा रहे हैं, वे कहां तक सत्य हैं ?

विज्ञान ने मुझे यह बतलाया कि खास खास चीजों का एक मिक्सचर बनाकर आग लगाने से वह फैलती है और वायु-मंडल को शोर से कंपा देती है। मैं यहां यह भी लिख दूं कि जब बारूद में आग लगाई जाती है तो वह फैलती है और जो शोर हम सुनते हैं वह बारूद के कारण नहीं। वह उस फैलाव के जोर से धक्का वायु को लगता है, इसी कारण तो मैं पूछता हूँ बारूद के इस ताकत से पहाड़ भी तोड़े जाते हैं, और आदमी आदमी को भी मारता है। इसमें दोष किसका ?

सूर्य हमें रोशनी देता है। गर्मी देता है। फल पेड़-पौधों को ताकत देता है और देता है मानव को जीवन-शक्ति। वह पथिकों को दुःख भी देता है। गर्मी के दिनों में कितनी ही तरह की बीमारियां भी फैलाती हैं। हमें विचार करना है यह क्यों ?

स्टीम अपने जोर से टनों बोझ कहां का कहां ले जाता है। कितनी बीमारी में उससे फायदा होता है। लेकिन हाथ पड़ने पर वह हाथ जला भी देता है। आग भी इसी तरह की शक्ति है, जो हमें बेहद लाभ पहुँचाती है और हानि भी।

परमाणु-शक्ति ने प्रथम चरण में ही मानवता का संहार किया और डर है आगे भी करे। लेकिन क्या हम अपनी आंखें डरकर मूंद लें और उन बातों के ऊपर ध्यान न दें जिससे हमारा अपरिमित लाभ हो सकता है ? जंगली हाथी को देखकर ही हम भागते तो क्या आज वह हमारा सेवक नहीं मालिक नहीं बना रहता ?

यही तर्क है जो आज भी उतना ही सामयिक है जितना कभी पहले था। जैसा कि हमने पहले भी किया है उसी तरह आज भी हमें आगे बढ़ना है। विज्ञान के तरीके पर। उत्सुक मानव क्या अपने सामने अनोखी दुनिया छोड़ पीछे लौट सकता है ? अपनी प्रकृति के विरुद्ध उसे कहां शान्ति मिलेगी। उसका "जीवन-संग्राम" कहां होगा ? अगले लेख में मैं दिखाऊँगा, विज्ञान के विनाशकारी उपयोग में हमारे वैज्ञानिक कहां तक दोषी हैं।

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं नियमावली मुफ्त मँगायें। पता :—
इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

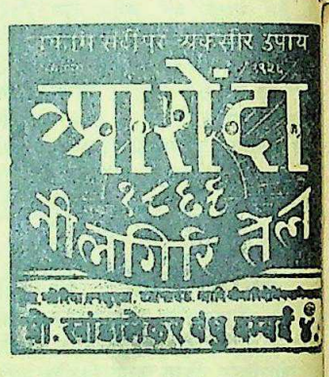

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम बनाम जीवन

लेखक, श्री श्रीपालसिंह क्षेम बी० ए०

प्रेम और जीवन का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। प्रेम के बिना जीवन और जीवन बिना प्रेम के व्यर्थ है। इस कहानी में कुछ सामाजिक घटनाओं से आधार पर जीवन और प्रेम की भावनाओं का चित्रण किया गया है और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जीवन के संघर्ष और प्रेम की वास्तविकता का निरूपण किया गया है। कहानी सुन्दर और मनोवैज्ञानिक तथा पठनीय है।

१३, कमला नेहरू रोड,
प्रयाग।

मेरी टूटती सांसों के अन्तिम स्वर,

बरसात के ये घिरे-घिरे धूमिल दिन, रह-रहकर बूंदों की रुनझुन गुंजाकर थिरक जाती हुई श्रावणी झरियों की छटा और मां वसुन्धरा की शालियों से बुनी श्यामल साड़ी का लहराता अंचल-छोर—कैसे सुहावने क्षणों में मेरी विदाई का आह्वान हो रहा है। मेरी डोली सजाई जा रही है शायद पीहर जाने के लिए, उस पीहर को जहां से कह नहीं सकती, कब फिर तुम्हारे चरणों के दर्शन हो सकें। मेरे मंदिर के देवता, पुजारिन से आज शायद उसकी आराधना का अधिकार ले लिया जानेवाला है! मेरे तुच्छ फूलों में न कोई रस रहा है और न परिमल का सुवास; फिर भी तुमने उसे अपनाया। इसके लिए पुजारिन के रोम रोम आभार से झुके जा रहे हैं। मेरे सपनों के राजा, मेरे जीवन की उजाड़ बगिया में तुम्हारे प्रेम के कोकिल-स्वर ने मधु-ऋतु का वैभव छा दिया, मीठे सपनों की कोपलें भर दीं किन्तु आज शायद वह बगिया ही मिट जाने को है! मेरे आसमान के चांद, तुमने अपने प्रेम की चांदनी से मेरी कुहा-निशा को प्रकाश-रश्मियों से जगमगा दिया! तुम रहे वादक और मैं वीणा का साज! तुमने अनेकों स्वर फूंकें और मैं आनंद की विविध रागिनियों में बजती रही। मैं थी राह की अकिंचन धूल और तुमने उसे उठाकर ताज पर चढ़ा लिया। किन्तु मेरे प्राणों के प्रियतम, तुम्हारी यह प्रेम-पुजारिनी मेरे परिजात, तुम्हारी यह स्वर्ण-छाया आज तुम्हारे साधना-मंदिर से उठ जानेवाली है! मुझे अब तक याद है वे दिन जब मेरे पिता मेरी मां और मुझे प्रयाग की गलियों में दर-दर भटकने को अनाथ छोड़कर सदा के लिए चले गये। मकानवाले का कई महीनों का किराया बाकी रह गया था। श्राद्ध भी न बीतने पाया था कि उसने सामान नीलाम करवाकर घर से निकल जाने का फरमान भिजवा दिया। तीन दिनों की भूखी मेरी मां और मैं, मुझे अच्छी तरह याद है उस भीगती हुई सांझ में उस दिन सड़क के किनारे बैठी थीं कि तुम्हारी साइकिल आ गई। हम लोगों को उदास बैठे देखकर तुमने पूछा था, "आप लोग कौन हैं? क्या आप लोगों से मैं पूछ सकता हूँ?" मां ने रोते हुए सारी कहानी कह डाली और तुम भरी-भरी आंखों को धरती पर गड़ाये कभी रूमाल से मुंह रगड़ते हुए—तुम सुनते जा रहे थे। उसके बाद का किस्सा तो तुम्हारी सहृदयता का—तुम्हारे देवत्व का इतिहास ही रहा है!

चैत की सांझ थी और धूसर-धूसर दिशाएँ, भगवान् भुवन भास्कर दिन के वियोग में साश्रुनयन अस्ताचल की घाटियों में छिपे जा रहे थे। बैठक की चौपाल आये हुए मेहमानों और भाई-बन्धुओं से भरी हुई थी जब तुम्हारे विवाह का प्रस्ताव लेकर एक तहसीलदार साहब आये थे। तुम्हारा साहस! तुमने उसी पिता की बातों का खुलेदिल प्रतिवाद किया जिसकी भक्ति को तुम अपने जीवन की सिद्धि समझते रहे थे। पिता जी की लाल-लाल विकराल आंखें, और तुम्हारा वह नतमुख दृढ़निश्चय, "मैं कमल से ही शादी करूंगा, नहीं तो आजीवन कौमार्य पालन करते हुए पिता जी की चरण-छाया में ही समय बिता दूंगा।"—सारी बातें मेरी बुझती आंखों में आंसुओं के साथ तिरती-सी आ रही थीं!

तुमने पिता के विरुद्ध, भाई-बन्धुओं के विरुद्ध और समाज के विरुद्ध मुझे अपनाया। मुझ अकिंचिनी की मांग भरी। के ट्यूशन पर मेरा और पढ़ाई का भार एक साथ सँभाला, पर तुम झुके नहीं अपने निश्चय के सामने—हिमालय से अटूट अपने निर्णय के समक्ष!

मैं अभागिनी जो ठहरी! विवाह के छः मास के बाद ही मां ने भी मेरे सर से अपना आंचल उठा लिया। मैं ओसारे में बैठी रो रही थी और तुम अपनी गोद में मेरा सिर झुकाये समझा रहे थे—"रोओ न कमल, धैर्य धरो, तुम समझो न, तुम्हीं संसार में अभागिनी नहीं हो! जाने कितने अनाथों के करुण-क्रन्दन से यह आकाश प्रतिपल भर रहा है। फिर तुम्हारे साथ ही तो मेरे भाग्य का छोर भी जुड़ा है! प्रिये हम दोनों विपदाओं की झंझा के नीचे से एक दूसरे का हाथ पकड़े चले चलेंगे। कौन जाने भविष्य में क्या है?"

बचपन की दीनता से जर्जर मेरा स्वास्थ्य! सदा तुम मेरी बीमारी ही की चिन्ता में घिरे रहे। यही चारपाई का सिरहाना, यही जिसे आज तुम्हारी अनुपस्थिति में कांपते हुए हाथों से जोर से

रोओ न कमल, समझो न, तुम्हीं संसार में अभागिन नहीं हो।

दबाये जा रही हूँ—तुमने कितनी ही ठंड से कांपती माघ-पूस की रातें, चैत-बैसाख की कितनी ही धूसर संध्याएँ मुझे बहलाने के लिए कहानियां कहकर बिताईं। तुमने न दिन को दिन समझा और रात को रात। माना मेरे दुःख में तुम्हारे शीतल स्पर्श का सुख था, किन्तु तुम्हारे जीवन के मधुमासी प्रभात में तो मैं संध्या की छाया ही थी न!

सोचती हूँ क्या लिखती जा रही हूँ, क्योंकि यह सब मेरा अकेले का ही अनुभव न था किन्तु क्या करूँ दिल नहीं मानता। बीती स्मृतियां नवीन होकर एक नवीन दुर्निवार आकर्षण से मुझे खींचे जा रही हैं। [illegible]

अक्षरों में सजाकर तुम्हारी अन्तिम भेंट कर दूं। मुझ अकिंचना के पास और तो कुछ न रहा, केवल तुम्हारी स्मृतियां जिन्हें आज अपनी जीवन की सघन सांझ से तुम्हारे काल्पनिक चरणों पर बरसा दूं! मेरे देव आज हमारे-तुम्हारे प्रणय जीवन का तीसरा वर्ष समाप्त हो रहा है, कौन जाने इसके साथ ही आज हमारा जीवन-दीप भी बुझ चले। इसी से सोचती हूँ इन आंखों के मूंदने के पहले एक बार तुम्हें देख लेती! सदा अपनी ओर से तुम्हें दुख ही देती आई, सुख न दिया, तो आज सबकी महापरिणति पर तुम्हें एक कष्ट और देती। तुम्हारे कोमल हाथों का अन्तिम सुखद स्पर्श, प्राणनाथ! क्या तुम मेरी इस अन्तिम कामना को पूरी कर सकोगे? मानती हूँ नौकरी का मामला है और निस्सन्देह आज के दिन नौकरी का छूट जाना, जीवन का छूट जाना है! कन्तु—किन्तु मेरे देवता.....तुम्हारी पुजारिन.....देखो, देखो, चारों ओर से आंधियां-सी उठती आ रही हैं, दिशाओं का अंधकार घनीभूत होता जा रहा है। रात मेरा दम घोटती आ रही है—लगता है जैसे अब मेरे जीवन का नन्हा दीप बुझाकर ही रहेगी, क्या ही अच्छा होता यदि इसकी लौ बुझते-बुझते तुम्हारे चरणों की छाया छू पाती। क्या लोग मेरी सांसों की अन्तिम आरती—आंसुओं का अन्तिम अर्घ्य मेरे देव!

पत्र को समाप्त करते करते दिनेश ने अनुभव किया, उसका सर चकराता आ रहा है। आखों के आगे अंधकार छाता जा रहा है। कहीं गिर न पड़े, अतः पत्र को छाती से चिपटाते हुए चारपाई पर धमाके के साथ गिर पड़ा। उसे लगा जैसे एक साथ सैकड़ों बर्छियां उसके हृदय में धँसाई जा रही हों और उसके मुंह में जड़ता का पत्थर भर दिया गया है। नगर के राज-मार्ग पर बिजलियों का प्रकाश-पुंज जगमगा उठा, उन मोटरकारों के आने-जाने से संध्या की बेला कुछ अधिक घनी हो चली है और जैसे संसार का दिन भर से चलता कठोर कर्म-चक्र कुछ ढीला और अश्वस्त होता जा रहा है। नौकरानी आई और किवाड़ की जंजीर बजाकर बाहर से ही लौट गई। दिनेश कमरे में ही पड़ा रह गया। दुष्कल्पनाओं के शत-शत छाया-रूपों से उसके मस्तिष्क के तार तार झकझोर उठे थे। वह रात भर सोता रहा, स्वप्न देखता रहा अथवा जागता रहा, इसका उसके चेतन को कुछ भी ज्ञान न रहा।

* * *

दूसरे ही दिन दिनेश सवेरे उठा और बिना नहाये-धोये ही साइकिल उठाकर दफ़्तर की ओर चल पड़ा। मुख एकदम निस्तेज, बाल बिखरे हुए और कपड़ों का सजाव अस्तव्यस्त। देखने से भान होता, किसी ने अभी अभी उसकी मुखाकृति सारी चमक यंत्र से खींच ली है और उसके स्थान पर उसके मुख की रेखाओं में विषाद की घनी-काली लकीरें भर दी हैं। वह शून्य की भांति यंत्रवत् दफ़्तर की ओर चला जा रहा था। वहां जाकर वह पंद्रह दिनों की छुट्टी का प्रार्थना-पत्र अपने सहकारी को देकर डेरे पर लौट आया।

दिनेश जब लखनऊ स्टेशन पर आकुल विचारों में उलझा कभी बोझिल-बोझिल आंखों से इधर देखता और कभी उधर' कभी हाथ की मुट्ठियों में अपनी जँभाई का श्वास-भार भर देता कि ठीक दस बजे प्रयाग जानेवाली गाड़ी प्लेटफार्म से आ लगी। यात्रियों का इधर-उधर विश्राम करता हुआ समुद्र डिब्बों की ओर उछल पड़ा और भीतर के यात्री बाहर भी न निकल सके थे कि दरवाजों के भीतर चढ़नेवाली भीड़ कस उठी। थोड़ी देर तक दिनेश ने प्रतीक्षा की, शायद अब भीतर जाने का रास्ता मिल जाय! उसे जगह जमाने की उतनी चिन्ता न थी, क्योंकि उसे तो किसी भांति रात के दम रहते तक जागकर बिताना है, सबेरे ट्रेन प्रयाग पहुँच ही जायगी। गाड़ियों की कमी से यात्रियों की भीड़ इतनी बढ़ गई थी कि लोग इंटर और सेकंड क्लास तक के डिब्बों में कसे खड़े थे। टिकट और दर्जे का प्रश्न ही जैसे वहां न था। दिनेश ने देखा, ऐसे शायद जगह भी न मिले और गाड़ी भी छूट जाय। उसने खिड़की से अपना सामान एक इंटर क्लास के डिब्बे में फेंक दिया और स्वयं खिड़की से उछलकर भीतर जाने लगा कि भीतर की भीड़ की कसमकश न उसे ठेलकर एक कोने में ला खड़ा कर दिया। दस मिनट गाड़ी चल देने के बाद जब सब बैठ गये, तो उसने अपना बेग खोजना शुरू किया। पैरों के लतामर्द में पिचका हुआ उसका झोला बर्थ के नीचे मिला और उसको नीचे रखकर खड़े-खड़े खिड़की से मुंह लगाकर बाहर देखने लगा।

ट्रेन अपनी पूरी गति से झकझकाती चली जा रही थी और दिनेश की आंखें झटके के साथ सामंजस्य में आखें पीछे बढ़ती हुई बाहर की चांदनी में खोई जा रही थीं। जब भीड़-भाड़ की अतिरिक्त व्यस्तता से मन में शान्ति हुई, तो दिनेश के आगे अतीत की अनेकानेक [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की भांति ट्रेन के हलके झटके उसके स्मृति-पत्र को जैसे आगे खिसकाते जाते और बीती घटनाओं के अक्षर उस पर छपते जाते। वह सोचता जा रहा था, किस प्रकार उसकी पढ़ाई के दिनों में कमल और उसकी मां से उससे भेंट हुई और किस प्रकार उसने उन्हें लाकर पास के घर में उन्हें ठहराया। कमल के साथ का उसका पहला संस्मरण—आह! वह हरिणी-सी भोली-भाली लड़की अपने जीर्ण वस्त्रों में किसी निर्वासिता-अभिशप्ता देवकन्या की भांति मन में कितनी दया को उभाड़ दे रही थी। उसके दुबले-पतले मुख की मलिन रेखाओं में जैसे करुणा रो रही हो! विपत्ति की वह करुण दशा और उसकी मां वह तो जैसे साक्षात् कोई वृद्धा वन-देवी हो, जैसे विपत्तियों की आंधी ने उड़ाकर इस नृशंस समाज के जाल में डाल दिया हो! .....

एक संध्या को जब दिनेश उनके घर गया था तो बहुत सी सुख-दुःख की बातों के बाद उस तपस्विनी ने भीगे कोरों से कहा था, "बेटा दिनेश तुम्हारे उपकार से मैं जीवन भर उऋण नहीं हो सकती। तुमने जैसा किया भगवान् करे विपत्ति में शत्रु को भी वैसा सहारा मिले! बेटा बस एक बात की चिन्ता इस बूढ़ा को और दुखी बनाये हुए है! तुम्हारी कमल अब सयानी हो चली है और अब कहीं किसी सुपात्र के हाथ इसे सौंप पाती तो एक बहुत बड़ा भार हलका हो जाता और तब दिनेश ने कहा था—"मां जी, मुझे ध्यान है। मैं भी कमल के लिए कम चिन्तित नहीं। मैंने अपने एक मित्र से बात चलाई है। वे मेरे साथ बी० ए० में ही पढ़ रहे हैं, पहला साल है, और कुछ उदार और नये विचार के मालूम पड़ते हैं। हमें आशा है हम अपने कार्य में शीघ्र ही सफल हो जायेंगे।"

और तब मां ने जैसे रोम-रोम के आशीष को स्वरित करते हुए कहा था—"बेटा, कमल तो तुम्हारी ह ही, मैंने उसके लिए क्या किया और क्या करने योग्य थी ही।" और इतना कहते ही उस बूढ़ा की आंखें छलछला आई थीं। कमल वहां से हट गई थी।

दिनेश ने कितने ही मित्रों से बात चलाई। कितनों ने ही अपनी प्रगतिशीलता का दम भरा, किन्तु जब वह उनके आन्तरिक विचारों से परिचित हुआ, तो उसे बड़ी ग्लानि हुई और वह सोचने लग जाता कि जब देश के शिक्षित नौनिहालों की यह दशा है तो भगवान् इस देश का कल्याण करें! ऊँचे विद्यालयों में पढ़नेवाली देश की नई पौध नैतिकता में इस भांति गिर गई है, उसका मन घृणा से भर आता।

कमल से शादी ही कौन करता? जितने ही उच्च विचारों के सम्पर्क में वे लाये जाते हैं, स्वार्थ की निकृष्ट भावनाएँ उनमें घर करती जा रही हैं। श्वशुर के धन से विदेश जाने की कामना और एम० ए०-बी० ए० की शिक्षिता लड़कियों के साथ ब्याह कर एक निकृट अस्वस्थ यौन-तृप्ति की सुनहली आशा में एडवांस्ड बननेवाले विश्वविद्यालय के विद्यार्थी ऐसी लड़कियों से रोमांस भले ही लड़ा सकते हैं, किन्तु ब्याह का उत्तरदायित्व! आह, इससे तो वे बहुत दूर भागना चाहते हैं। रही बात मध्यम श्रेणीवालों की, वे तो हाड़ और खून देखते हैं, वंश की ऊँचाई देखते हैं। कमल चारों ओर से अनाथ थी। दिनेश के आदर्श दिनों-दिन उसे कमल की ओर गहरा बनाते गये और.....दिनेश के मन में उसके विवाह का वह सुनहला दृश्य उदित हो उठा जब पिता और सगे-संबंधियों के लाख समझाने पर उनके शब्दों में अपने कुछ साथी प्रोफेसर सक्सेना और शहर के कुछ आर्य-समाजी उदार नेता ही आ पाये थे। साथियों ने फबतियां भी कसीं पर वह इन सबके बहुत ऊपर था।....

कुछ दिनों के बाद कमल की मां भी स्वर्ग को चल बसी और पिता के कोप का भाजन दिनेश उसी घर में कमल के साथ रहने लगा। ज्यों-ज्यों दुनिया के धागों ने दिनेश को छोड़ना शुरू किया, कमल के साथ उसके प्रेम का धागा दृढ़ होता गया। वह ट्यूशन करके जो कुछ चालीस-पचास लाता उसी से गृहस्थी चलती। कमल बर्तन स्वयं मांज लेती, घर की चक्की में अनाज पीस लेती और भोजन बनाकर दोनों प्राणी खा लेते। धीरे-धीरे कमल और दिनेश का प्रेम इतना गाढ़ा हो गया कि संसार की काली भौतिक छायाओं के ऊपर उनका स्वर्ग दिनोंदिन सुनहला ही होता गया। पारस्परिक प्रेम की आर्द्र भावुकता ने उनके सारे अभावों की शुष्कता को ढक लिया। "अभाव तो मन का असन्तोष है" दिनेश कहता—"मनुष्य जितना ही चाह बढ़ाता जाता है, उसकी अभाव की खाई उतनी ही फैलती जाती है और इसी चाह के लोभ में एक दिन वह अनजाने में अपनी मृत्यु की भी चाहना कर जाता है।"

प्रेम की इस गम्भीरता ने अपनी रेशमी किरणों के द्वारा कमल के मन का विषाद भी धो दिया था और उसकी आंखों में दिनेश के नित्य नवीन सपने भरते आते। दिनेश ने उसकी अधूरी पढ़ाई को भी पूरी करवा दी थी और अब कमल प्रवेशिका की योग्यता तक पहुँच चुकी थी। उसके लेखन फूल से अक्षर जैसे पत्रों में उसके हृदय को लेकर उतर आते और दिनेश के खाली क्षणों के लिए ये पत्र एक शान्तिप्रद मनोरंजन बन गये थे।

दिनेश के मुंह पर हवा का एक ठंढा झोंका लगा और तब उसने सजग होकर मुंह भीतर करते हुए एक बार डिब्बे के भीतर दृष्टि डाली। यात्रा की थकावट और ट्रेन के हलके-हलके झोंकों ने यात्रियों की पलकों में एक मधुर तंद्रा का सृजन कर दिया था। इस बीच गाड़ी दो-एक स्टेशनों पर खड़ी भी हो चुकी थी और काफी मुसाफिर उतर चुके थे। अब डिब्बा कुछ सुविधाजनक हो गया था। वह खड़ा हो गया और कुछ लोगों से खिसकने की प्रार्थना कर, झोले को बगल में रखकर फैलकर बैठ गया। जेब से एक सिगरेट निकाली और पीने की आदत न रहने पर भी यात्रा में सहायक समझ-कर एक लकड़ी जलाई। ऊपर से ही पीते हुए नाक से कड़ुवे-कड़ुवे धुएँ के दो-तीन कश निकाले और फिर सुस्थिर होकर बैठ गया। दिनेश की भीतरी आंखें फिर अतीत के अक्षरों पर दौड़ गईं .....

दिनेश के लिए साल के बीतते न बीतते, कमल एक अनिवार्य अंग बन गई। न कमल के लिए दूसरा नाता था और न दिनेश के लिए दूसरा प्रिय-पात्र! वह पढ़ाई छोड़ चुका था और 'सेक्रेटेरियेट' में ७५) का लेखक था। दफ्तर से शाम को पांच बजे छुट्टी पाता और साइकिल से आध घंटे में कमला नेहरू रोड के मकान नम्बर १३ में आ जाता। जलपान के बाद दफ्तर का पूरा काम करने बैठता। कमल भी बगल में बैठकर अपने हास-परिहास की रोशनी में काम पूरा करवा देती। इसके बाद चारपाई आंगन में निकालकर दिनेश रसोई के छज्जे के सामने बैठ जाता और कमल प्रेमपूर्वक खाना पकाने में लग जाती। इसी प्रकार सुगंधि के एक झोंके की भांति घर का रात-दिन [illegible] काम से विश्राम के क्षणों में रात के अगले बुन डालती, कभी किताब उठाकर जी बहलाती और कभी खिड़की से कान लगाकर सुन आती घंटी की उस टन-टनाहट को जिसकी झनकार का एक तार सदैव उसके प्रतीक्षाकुल मन में झनझनाया करता।.....

सहसा दिनेश को लगा, उसके सीने पर कुछ ठंढी आर्द्रता-सी लग रही है। उसने देखा आंसुओं की एक पांत ढुलककर उसकी ठुड्ढी से सीने पर टपक रही है। उसने सजग होकर इधर-उधर देखा और झट रूमाल निकालकर मुंह पोंछ डाला। सिगरेट जलकर अब लगभग उसकी उँगलियों तक पहुँच चुका था। उसने राख झाड़ते हुए एक कश खींची और उसे बाहर फेंक दिया।...

सहसा दिनेश को उसकी बीमारी और उसके पत्र की सुधि फिर हरी हो आई और वह विकल हो उठा। अब उसका मन अतीत की शृंखला को सिहलाते-सिहलाते वर्तमान कड़ी तक पहुँच चुका था। बीते दिनों के रंगीन चित्र सहसा भविष्य और वर्तमान के विषाद में डूब गये और उसके सामने चारपाई से सटी, क्षीणकाय, दयनीय कमल का चित्र आ गया जिसके चारों ओर मणि के चतुर्दिक सांप की भांति उसका मन घूमने लगा। ट्रेन अपनी गति में बढ़ी जा रही थी और उसका मन अपने केन्द्र के चारों ओर मँड़राता रहा!

* * *

चारों ओर रात्रि का घना अन्धकार जैसे किसी प्रतीक्षा में चुपचाप अचल खड़ा हो। बाहर एकदम निःस्वन वातावरण जैसे किसी महा उत्पात की आशंका में मौन हो गया हो। पश्चिम के आकाश की ओर लुढ़कता चन्द्र कुछ भयभीत होकर जैसे एक-सा हो गया था। कमरे में दीपक पर मिट्टी के तेल का एक चिराग प्रकाश से अधिक अपनी दुर्गंधि से कमरे को भर रहा था। बीच से थोड़ा हटकर पश्चिम की दीवाल से लगी रोगी की चारपाई थी। सामने दो बालिश्त की दूरी पर एक स्वच्छ तिपाई पर एक सुराही जो एक शीशे के गिलास के ढकी थी, एक लाल दवा से भरी शीशी तथा दो पुड़िया दवा रखी थी। दक्षिण ओर कमरे के आर-पार पूर्व-पश्चिम लगी रस्सी जिस पर कपड़े टँगे थे और जिसके नीचे एक चालीस-वर्षीया वृद्धा औरत पड़ी ऊँघ रही थी। बाहर कभी कुत्ते भूंक जाते। धीरे-धीरे रात अपने चतुर्थ प्रहर के मध्य में आ रही थी। सहसा रोगी बर्रा उठा—"आह, प्राणनाथ मैं....मैं आ रही हूँ..... आप....आ गये अच्छा मैं उठी...."

"क्या है बहू? कौन आ गया?" बुढ़िया चटाई पर से उठ बैठी और लगी सम्भ्रम दृष्टि से इधर-उधर देखने! "क्या है बहू, क्या है? पानी चाहिए?"

रोगी ने जगकर कराहते हुए कहा—"कुछ...नहीं, कोई ....न.... हीं।' फिर एक क्षण के मौन के बाद एक बड़े जोर की खांसी आई और उसके स्वर से सारा कमरा गूंज उठा। "कितनी रात है, बन्नो जीजी?" और उन मर्माहत शब्दों की पीड़ा से कमरे का सारा वायु-मंडल कांप उठा। "आराम.....हो तो...करती हूँ जीजी, वे अब तक... आये...नहीं।"

शेष पृष्ठ १२ पर देखिए

लक्स टॉयलेट साबुन
गीता निज़ामी की
त्वचा को ताज़ा तथा कोमल रखता है...

यह मनोहर एवं बुद्धिमति अभिनेत्री, अपनी त्वचा के लिये नियमित सौन्दर्य–परिपाठ किसप्रकार महत्त्वकारी है, यह जानती है। वह सदैव अपनी कोमल एवं मनोहर रंगरूप की लक्स टॉयलेट साबुन से सौम्य सुरक्षा करती है। वह कहती है कि, उस की राय में अपनी त्वचा को निर्मल एवं निर्दोष रखने का यही उत्तम मार्ग है। आप भी इसका अनुभव क्यों नहीं करते? आप को इस शुद्ध, सफ़ेद साबुन का सुगन्धित, मलाईदार झाग लुभायेगा।

गीता निज़ामी ने हाल में नवयुग चित्रपट प्रॉडक्शन के "रिटर्न ऑफ पन्ना" चित्र में अभिनय किया है, जो उसकी एक उत्कृष्ट भूमिका सिद्ध हुई है।

लक्स टॉयलेट साबुन
फिल्मी स्टार्स का सौन्दर्य–साबुन!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वस्थ रुचि और स्त्री-शरीर का प्रदर्शन

शरीर और मन को एक साथ ही ले चलना पड़ेगा

लेखिका, श्रीमती माया गुप्ता, बी० ए०

इस लेख की लेखिका, श्रीमती माया गुप्ता, बी० ए०।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के साथ साथ हमारी सुरुचि के मानदंड में भी फर्क आना चाहिये पर उसका कोई भी लक्षण दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है। स्त्रियों के लिये यह बड़ी अपमानजनक बात है कि हर मौके पर उनके नग्न या अर्द्धनग्न शरीर का प्रदर्शन किया जाय और इसके बूते पर चीजों का विज्ञापन किया जाय। मुझे तो यह देखकर आश्चर्य होता है कि प्रत्येक मासिक, साप्ताहिक के मुखपृष्ठ पर, विज्ञापनों में, चित्रों में जहां देखो वहां बताये हुए तरीके मे स्त्रियों के शरीर का प्रदर्शन होता है।

आश्चर्य तो यह है कि स्त्रियां भी अपने इस अपमान को समझती नहीं हैं, और इसके सम्बन्ध में सचेत नहीं हैं। मैं कोई कृच्छ्रवादिनी नहीं हूँ और न यह समझती हूँ कि शरीर का रूप या यौवन कोई पाप की वस्तु है। अवश्य ही सुन्दर, सुगठित अच्छे भावपूर्ण चेहरायुक्त शरीर गर्व तथा एक हद तक प्रदर्शन की वस्तु है, ऐसा शरीर प्राप्त करने के लिए जो भी परिश्रम किया जाय, व्यायाम, आसन या साधना की जाय, यहां तक कि प्रसाधन किया जाय, उसमें भी कोई खराब बात मैं नहीं देखती, पर क्या यह लज्जाजनक नहीं है कि हर मौके पर एक विशेष उद्देश्य से स्त्रियों के ही शरीर का प्रदर्शन किया जाय।

यह कहना कि इस प्रकार जिस रुचि का परिचय मिलता है, वह आकस्मिक है या कुछ लोगों की दुष्टता या षड्यंत्र के कारण हैं बिल्कुल गलत है। कोई भी बात कार्यकारण से परे या आकस्मिक नहीं होती वर्तमान अवस्था में केवल भारतवर्ष में ही नहीं, समस्त देशों में (रूस के सिवा) सुरुचि का यह जो रूप फैला हुआ है, इसकी तह में गहरे सामाजिक आर्थिक कारण हैं। नग्न या अर्द्धनग्न स्त्री-शरीरों का प्रदर्शन इस बात को सूचित करता है कि हमारा समाज पुरुष-प्रधान है, और इसमें क्रयशक्ति पर पुरुषों का ही करीब-करीब एकाधिकार है। जब पुरुष ही माल के खरीदनेवाले हैं और उन्हीं के पास पैसे हैं तो स्वाभाविक रूप से उन्हीं को आकर्षित करने का प्रयास होगा। इस सम्बन्ध में यह द्रष्टव्य है कि जिन चीजों को प्रत्यक्ष रूप से स्त्रियां ही खरीदती हैं, परोक्ष रूप से उनके क्रेता पुरुष ही होते हैं क्योंकि वे ही पैसा देते हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि जब तक समाज की आर्थिक व्यवस्था ऐसी रहती है, और पुरुष ही उत्पादक श्रम, पूंजी तथा श्रम के साधनों के मालिक बने रहते हैं, तब तक इस प्रकार की व्यवस्था के विरुद्ध तथा इस रुचि के विरुद्ध आन्दोलन करना बहुत-कुछ अरण्यरोदन प्रमाणित होगा। इस रुचि में परिवर्तन लाने के लिए समाज में स्त्री और पुरुष के वर्तमान सम्बन्ध को बदल देना पड़ेगा।

मैंने जो कुछ लिखा उससे यह गलत-फहमी हो सकती है कि शायद में यह चाहती हूँ कि जैसे स्त्रियों के शरीर का व्यवसायिक प्रदर्शन किया जाता है वैसे पुरुषों के शरीर का भी प्रदर्शन किया जाय तो मेरी समानता की आकांक्षा तृप्त हो जायेगी। पर ऐसा समझना बहुत गलती होगी।

क्या दुनिया में और कोई तरीका या और कोई आकर्षण है ही नहीं कि पुरुषों को आकर्षित करने के लिए स्त्रियों का नग्न तथा अर्द्धनग्न शरीर तथा स्त्रियों को आकर्षित करने के लिए पुरुषों का नग्न तथा अर्द्धनग्न शरीर दिखलाया जाय? सचमुच ही यह किसी जाति के लिए बड़े ही दुर्भाग्य की बात होगी कि इस प्रकार Sex appeal के बगैर किसी को अपनी बात कही न जा सके। नहीं है जितनी कि उच्च तथा मध्यवित्त वर्ग की रुचि है, क्योंकि इन्हीं में क्रयशक्ति है और इन्हीं को लुभाने के लिए विज्ञापन-दातागण अपने विज्ञापन देते हैं। पूंजीवादी देशों में तो जनता को भरपेट खाने को ही नहीं मिलता, विज्ञापन के लक्ष्य इसलिए वे नहीं हैं।

मैं यह नहीं कहती कि जिसे हम सर्वहारा तथा किसान-वर्ग कहेंगे, उनकी रुचि वर्त्तमान समय में कोई विशेष उन्नत है नहीं, बल्कि उनकी बातचीत को सुना जाय तो ऐसा ज्ञात होगा कि उनकी रुचि बहुत ही निम्नकोटि की है, और वे अपनी बातचीत में अश्लीलता का बहुत प्रयोग करते हैं। पर यह किसी आधारगत कमी के कारण नहीं, बल्कि फिर एकबार मुझे कहना पड़ता है कि परिस्थितियों के कारण है। जब एक ही कोठरी के अन्दर कई परिवार रहेंगे, जब उनके पुरुषों तथा स्त्रियों को खुले तरीके पर नहाना यहां तक कि टट्टी फिरना पड़ेगा तब ऐसे लोगों में रुचि के विकास की कोई गुंजाइश कहां है? जिन्हें पढ़ने-लिखने की सुविधा प्राप्त नहीं है और जो बाप-दादों से अश्लील तरीके से बात करने को एकमात्र तरीका समझते आ रहे हैं, वे सुरुचि का पता कहां से पायेंगे। जब सिनेमा में कोई शयनकक्ष का दृश्य आता है तो उसे कथित भले आदमी भी देखते हैं, और वे उसका उपभोग भी करते हैं, नहीं तो वह बनाया ही क्यों जाता, पर अनपढ़ मजदूर वर्ग के लोग उस दृश्य को देखकर सीटी वगैरह देते हैं और कुछ मन्तव्य भी कर डालते हैं।

संक्षेप में सभी तबकों में स्वस्थ रुचि का अभाव है। मैं पहिले ही बता चुकी हूँ कि शारीरिक सौन्दर्य के प्रदर्शन के अवसर हो सकते हैं और उनमें आवश्यक रूप से कोई बुराई नहीं होगी, पर उसका उद्देश्य सामाजिक रूप से हितकर होना चाहिये। यदि इस प्रदर्शन का उद्देश्य यह है कि दर्शक या दर्शिका के बुरे स्व का फायदा उठाकर उसकी जेब कतर ली जाय, तो अवश्य ही बहुत निन्दनीय होगा, पर यदि उसका उद्देश्य यह हो कि लोगों को ऐसे शरीर दिखाकर उस प्रकार के सुन्दर शरीर बनाने के लिये अनुप्रेरित तथा उत्तेजित किया जाय, तो वह दूसरी ही बात होगी।

प्राचीन ग्रीकों में शरीर-चर्चा एक बहुत ऊँची सतह पर पहुँच गई थी। वहां शारीरिक सौन्दर्य का अर्थ प्रत्येक अंग-प्रत्यंग का विकास तथा पुष्टि थी। इसी उद्देश्य से लोग शरीर-शास्त्र का अध्ययन करते थे, तथा व्यायाम करते थे। यदि ग्रीक मूर्तियों के चित्र को देखा जाय तो हमें इस बात का पूरा परिचय मिलेगा कि कहां तक उनमें शरीर-चर्चा सही अर्थों में राष्ट्र-निर्माण के अंक के रूप में था।

पर यहां इस दृष्टि से शरीर का प्रदर्शन या चर्चा कब की जाती है? जाग्रत् नारी-समाज का काम यह तो होगा ही कि स्त्रियों के शरीर के इस प्रकार के प्रदर्शन को रोके, केवल यही नहीं सब तरह से नारी देह के क्या [illegible] ध्यान न देकर हमारे शरीर पर जो ध्यान दिया जाता है, उसे रोका जाय। स्त्रियां पुरुषों की तरह मन की अधिकारिणी हैं, फिर क्या कारण है कि जब देखो तब उनके शरीर का ही प्रदर्शन किया जाता है?

अब तक पुरुष-प्रधान समाज ने हमारे साथ जो अन्याय किया है, वह ऐसा है जिसे अब किसी तरह सहन नहीं किया जा सकता। यह स्मरण रहे कि स्त्री-समाज में वे स्त्रियां भी हैं जो पुरुष की दृष्टि से शायद सुन्दरी न समझी जायँ। जिस समय हम स्त्रियों की स्वतन्त्रता की बात करती हैं, तो उसमें इन स्त्रियों की बात भी आ जाती है। लेनिन ने एक अवसर पर स्त्रियों की स्वतन्त्रता के विषय में बोलते, हुए यह कहा था कि स्त्रियों की स्वतन्त्रता जिसमें कुरूपा स्त्रियों की स्वतन्त्रता भी शामिल है; जब स्त्रियों के शरीरों का विज्ञापनवाली के लिए प्रदर्शन किया जाता है, तो वह इस कारण भी मानहानिजनक है कि स्त्रियों के हिस्से को उससे दुगुना अपमान किया जाता है और उनमें बिना कारण एक हीनता की भावना पैदा की जाती है, मानो शारीरिक सौन्दर्य के अतिरिक्त एक स्त्री की कोई उपयोगिता ही न हो। इस प्रकार यह गलत धारणा पैदा की जाती है कि मानो स्त्री का सबसे बड़ा गुण उसके लिए गोरी चिकटी होना है और जो इस प्रकार नहीं है, उनका जीवन ही व्यर्थ है।

आमतौर से ऐसा कहा भी जाता है कि पुरुष के सुन्दर होने की क्या जरूरत है, उसका स्वस्थ होना तथा आर्थिक रूप से तथा दृढ़ होना ही काफी है। पुरुष के सम्बन्ध में यह दृष्टिकोण भी उसी सामाजिक अवस्था का परिचायक है जिसका मैं पहले उल्लेख कर चुकी हूँ। इस प्रकार के दृष्टिकोणों को बदलने से ही सही किस्म की सुरुचि की उत्पत्ति होगी। वर्तमान समय में रुचि का जो मानदंड फैला हुआ है, उसे आवश्यकता पड़ने पर कानून बना कर बन्द करना पड़ेगा। एक स्वस्थ जाति के लिए यह आवश्यक है कि वह स्वस्थ दृष्टि से प्रत्येक वस्तु को देखे। केवल यौन आवेदन को हम अपने दृष्टिकोण का एकमात्र आधार नहीं बना सकतीं। शरीर तथा मन को एक साथ ले चलना पड़ेगा। स्वस्थ शरीर अवश्य ही ठीक है, पर उसका उपयोग व्यवसायिक उद्देश्य न होना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आ जायेंगे, बहू अभी आज सुबह पत्र मिला होगा।"

रोगी ने एक कराह के साथ करवट ली और एक बार चिराग की धुँधली लौ में बुझती आंखें मिलाकर पलकें बन्द कर लीं। दूर पार्क की इमली पर से नीलकंठ चीख उठा। धीरे-धीरे दूर सड़कों पर इक्के-तांगों की घड़घड़ाहट सुनाई पड़ने लगी, जिसका स्वर प्रभावोन्मुख वायु की लहरों से आकर कमरे की निस्तब्धता में विलीन हो जाता था। धन्नो जीजी एक बार उठीं और कमरे के बाहर आंगन में झांक आईं। चांद प्रतीची पर बेहोश होकर गिरा जा रहा था। अन्धकार का दम घुटता जा रहा था और पूर्व में उसकी फूल कर बाहर निकली आती हुई आंखों की ललाई जैसे गहरी होती जा रही थी। धन्नो भीतर चली आई और किवाड़ लग गये।

* * *

ज्यों ही लखनऊ ट्रेन प्रयाग स्टेशन पर लगी, दिनेश उछलकर प्लेटफार्म पर आ गया। गेट पर टिकट दिया और एक तांगे पर झोला रखते हुए कहा—"कमला नेहरू रोड चलो।" तांगेवाले ने कहा, "अच्छा बाबू, अभी पहुंचाया" और घोड़े पर कोड़ा फेंकते हुए पूछा—"बाबू जी आप कहां से आ रहे हैं? आप तो यहीं 'सिकरेत' में न काम करते हैं?" दिनेश ने देखा, तांगावाला उसी के मुहल्ले का है, उसने कहा, 'हां, लेकिन अब हमारा दफ्तर लखनऊ चला गया है और मैं एक महीने से वहीं था।"

तांगेवाला तेजी से हांकता हुआ कटरा पार कर चुका था और दिनेश मुख पर चिन्ता की रेखाओं से घिरा हुआ किसी गहरे विषाद में डूबा जा रहा था।

तांगा मकान नम्बर १३ के सामने रुक गया और दिनेश ने जल्दी से पैसा बढ़ाते हुए कहा, "रोको" दिनेश ने उतरते ही देखा, धन्नो जीजी वायु-वेग से उसकी ओर बढ़ती आ रही थीं और हाथ पकड़कर बोलीं—"दिनेश भैया, दिनेश भैया, बड़ा गजब हो गया। बहू को डाक्टर ने तपेदिक बतलाया है और कहा है कि इन्हें अलग रखा जाय और इनके पास सब न आवें।" दिनेश को काटो तो रक्त नहीं! 'तपेदिक' उसको मानो बिजली मार गई—"इनके पास कोई जाय न, नहीं तो ..!" दिनेश के पैरों में पत्थर बँध गये थे। वह जैसे घसीटता हुआ आगे बढ़ता जा रहा था।

"बहू, बहू, उठो, देखो दिनेश भैया आये हैं।" सुनते ही जैसे रोगी में सौ गुनी शक्ति आ गई—"कहां?" और एक झटके के साथ उठना चाहती थी कि चारपाई पर गिर पड़ी।

खिड़की से आती हुई पीली किरणों के उदास प्रकाश में दिनेश ने देखा, कमल—उसकी कमल अब कंकाल में बदल गई है। वह क्या जानता था कि उसकी बीमारी इतनी बढ़ जायगी और उसका लखनऊ जाना पाप हो जायगा। चिकने-फूले-कोमल गालों की उभड़ी हड्डियों की सिकुड़न और सफेदी से भरा चर्म मढ़ रहा था। आंखें बुझती जा रही थीं। एक बिजली की लहर में वह अपने सपनों की राख देख गया। वह चारपाई के पैताने पैर रखकर खड़ा हो गया। उसकी एकटक आंखों ने देखा, वह कंकाल फिर उठने का प्रयत्न कर रहा था। धन्नो बाहर चली गई।

कंकाल ने कहा—"मेरे प्रि...य... त..म्..मुझे...गो...द...में...ले..लो... मैं..तु..म्हें...एक...बार....चू... चूमना...चाहती..हूँ" और कहते-कहते आकस्मिक उद्वेग के संघात से एक बार वह फिर चेतना-शून्य होने लगी। दिनेश की आंखों से आंसुओं की धारा फूटी आ रही थी। छाती के तन्तु तनते जा रहे थे। किन्तु जाने क्यों वह जड़ हो में कुछ अस्पष्ट ध्वनि के साथ उठे, फिर गिर गये। कंकाल की आंखों से आंसू की अविरल धारा बही जा रही थी। आंखों की बुझती ज्योति जैसे अब भी दिनेश के आंसुओं में प्रतिबिम्बित हो रही थी, किन्तु दिनेश रोता रहा—उसी प्रकार खड़ा रोता रहा!

सहसा कंकाल को एक जोर की खांसी आई और फिर उसका मुंह कुछ खुलकर रह गया—आंखें खुलकर टंग गईं। दिनेश के पैर कँपे। एकाएक वह पीछे की ओर लड़खड़ा पड़ा। लड़खड़ाहट की आवाज सुनकर धन्नो जीजी जब कमरे की ओर बढ़ीं, तो दिनेश सिसकता हुआ बाहर चला आ रहा था। धन्नो जीजी सहसा चीख उठीं। कमल दुनिया से उठ गई थी। जिस कमल के लिए उसने घर छोड़ा, भविष्य के सुनहले सपने छोड़े, उसी को अन्तिम क्षणों में एक चुम्बन न दे सका! यही है जीवन की विवशता, जहां प्रेम भी पराभूत हो जाता है।

चेसलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन योग्य प्रयोग में लाइये।
वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।
सभी दुकानों पर
Copyright:

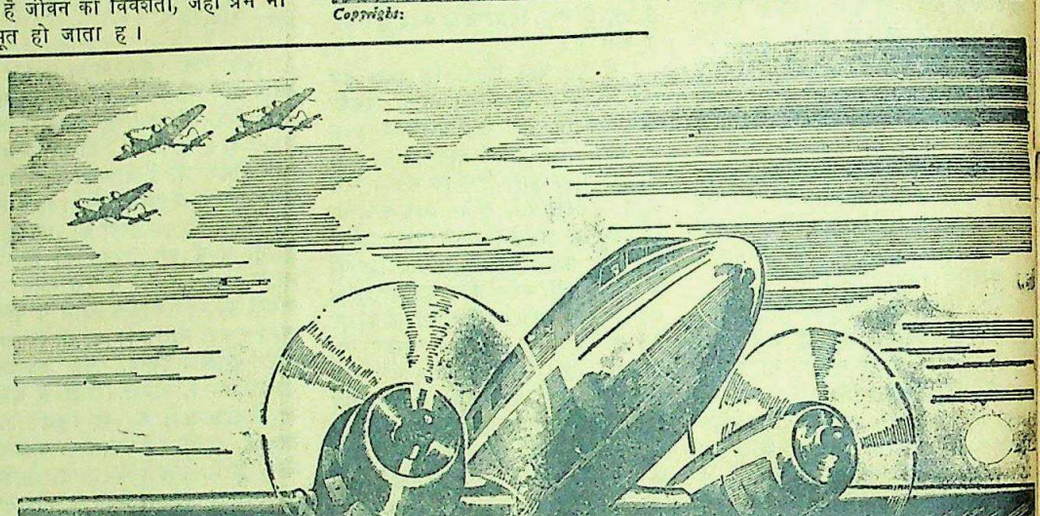

१२ सैकंड हवा में—यह थी सब से पहली सफल हवाई उड़ान जो अमरीका के एक निवासी, ओरविल राइट, ने १७ दिसम्बर १९०३ में की थी। तदनन्तर मनुष्य ने वायु मंडल पर विजय प्राप्त करने के उद्योग किये हैं। आज कल वायुयान बजाये दिनों के घंटों में ही कई एक महाद्वीपों को पार कर जाते हैं। कलकत्ता से देहली तक ९०० मील की यात्रा सुविधा और सुखपूर्वक किसी भी दिन ३ घंटे में की जा सकती है। निस्सन्देह मानुषी साहस और कल्पना शक्ति की कोई सीमा नहीं परन्तु इस उन्नति के साथ साथ बम-मार हवाई जहाज़ द्वारा भयंकर विनाश शान्ति-प्रिय जनता को तैमूर और चंगेज़ ख़ाँ के आक्रमणों से भी कहीं अधिक भयभीत करता है। क्या हवाई यात्रा का यह भयंकर प्रलय रूप बीते स्वपन की याद का रूप धारण करके रह जायेगा?—यह निर्भर है उस विवेक और बुद्धि पर जिसकी सहायता से विभिन्न राष्ट्र अन्तर-राष्ट्रीय समस्याओं का निवारण करेंगे।

विवेक और बुद्धिमत्ता द्वारा ही हम भी अपनी एक और समस्या की निवृत्ति कर सकते हैं—वह समस्या है चढ़ी हुई कीमतें। कई एक वस्तुएं ऐसी हैं जिनके बिना भी निर्वाह हो सकता है और कई ऐसी भी हैं जिन का आजकल की चढ़ी कीमतों पर ख़रीदना आवश्यक नहीं। ऐसी अनावश्यक वस्तुओं को इस समय न ख़रीद कर हम कीमतें गिराने में सहायता दे सकते हैं और इस प्रकार रुपये के मूल्य में वृद्धि कर सकते हैं। धन का अपव्यय या अरक्षित मद में लगाना कीमतों को चढ़ाने में सहायता देना है और यह व्यक्ति और राष्ट्र के लिये भय सूचक है। अपने धन को शत्रु बनाने की अपेक्षा मित्र बनाइए।

बीमा पॉलिसी, सहकारी साख समिति, डाकख़ाने का सेविंग्ज़ खाता, नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स और सरकारी लोन (कर्ज़े), धन लगाने की सुरक्षित मद हैं।

भूमि, सम्पत्ति, सोना चांदी के पांसे, आभूषण, द्रव्य, कला माल या सट्टेबाज़ी पर रुपया व्यय न कीजिए। इन के मूल्य बहुत चढ़े हुए हैं और आशा है कि शीघ्र ही कम हो जायेंगे।

चढ़ी कीमतों को रोकिए

धन का अपव्यय न कीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवयुवकों और युवतियों की चिट्ठियों का ताँता

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेता अशोककुमार का सन्देश

लेखक, श्री उमेश जोशी

भारतीय रजतपट के लोकप्रिय कलाकार अशोककुमार के पास भारतीय नवयुवक तथा नवयुवतियों की चिट्ठियां इतनी बड़ी संख्या में आती हैं कि उनको इस कार्य के लिए एक अलग क्लर्क रखना पड़ा है। उन चिट्ठियों को पढ़कर आपको नवयुवकों तथा नवयुवतियों पर काफी तरस आता है। कभी-कभी तो इन पत्रों को पढ़कर उन्हें झुंझलाहट भी आ जाती है। भूल से आपकी निजी डाक में इस प्रकार के पत्र चले आते हैं। यह पत्र-प्रेषकों की अधिकतर आकांक्षा सिर्फ एक ही होती है, वह यह कि फिल्मी दुनिया में किसी प्रकार प्रवेश मिल जाये। कोई-कोई पत्र-प्रेषक चालीस-पचास बार रिमाण्डर्स भेजकर कलाकार अशोक की नाक में दम कर देता है। कलाकार भी इस प्रकार के पत्र-प्रेषकों से परेशान हो जाता है। एक दिन मिस्टर अशोककुमार ने मुझसे पूछा—"मिस्टर जोशी इन पागल पत्र-प्रेषकों से कैसे बचा जाये, मैं तो परेशान हो गया हूँ, क्या करूँ? कभी ये पत्र-प्रेषक चिट्ठी का सिलसिला शुरू करते हैं, तो कभी स्वयं ही आ धमकते हैं।" मैंने कहा—"इनसे बचने का सिर्फ यही एक तरीका है कि आप एक अखबारों के लिए सन्देश दीजिए, उसे मैं हिन्दी के अखबारों में प्रसारित करवा दूंगा। आपके सन्देश को पढ़कर फिर ये भूले-भटके नवयुवक-नवयुवतियां आपको तंग न करेंगे। अभी तो ये लोग बिलकुल अन्धकार में हैं। ये लोग सिनेमा के बाहर की चमक देखकर ही सिनेमा की ओर दौड़ते हैं। उनको यहां की वास्तविकता का ज्ञान नहीं, इसीलिए वे जीवन के मार्ग पर अपना रास्ता भूल जाते हैं।"

मिस्टर अशोककुमार का सन्देश आपके सामने प्रस्तुत करने से पूर्व मैं आपके सामने चन्द पत्रों को रख रहा हूँ जो कि उनके पास प्रायः आया करते हैं। एक पत्र में लड़के का दंगा और दो लड़कियों के, इन पत्रों से सिनेमा में प्रवेश करने के इच्छुक युवक और युवतियों की वृत्तियों का अध्ययन किया जा सकता है।

लखनऊ, १०-८-४६

* * *

प्रिय अशोक,

सप्रेम नमस्ते।

आप शायद मेरा पत्र पाकर चौंकें, लेकिन मैं आपके प्रेममय अभिनय से इतनी प्रभावित हो गई हूँ कि मैं आज यह पत्र लिखने बैठ गई। मैं इस वक्त बी० ए० फाइनल में पढ़ती हूँ। मेरी उम्र सिर्फ उन्नीस और बीस के बीच में है। जाति की मैं ब्राह्मण हूँ सुन्दर हूँ या कुरूप इस बात का निर्णय मैं स्वयं क्या करूँ? इसे तो आप ही अच्छी तरह कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में मुझे कुछ कहना भी नहीं, हां इतना ही कहना है कि मैं आपके योग्य हूँ। मुझे नहीं मालूम कि आप शादीशुदा हो या नहीं, यदि हैं भी तो भी कोई नुकसान नहीं—मुझे आपका थोड़ा सहारा चाहिए। मैं आपके साथ रजतपट पर एक बार उतरना चाहती हूँ। क्या आप मेरी विनती को स्वीकार करेंगे। मैं आशा रखती हूँ कि आप मुझे अवश्य अपने जीवन में तथा फिल्मी-दुनिया में स्थान देंगे। मैं अपने को बड़ी सौभाग्यशाली समझूंगी यदि आपने मुझे अपना लिया। इस पत्र के साथ मैं अपना फोटो भी भेज रही हूँ। इस फोटो से आप मेरी सुन्दरता का अन्दाज लगा लें, यदि कहेंगे तो मैं बम्बई आ भी सकती हूँ। पत्र की प्रतीक्षा में।

—निर्मलाकुमारी मिश्रा

* * *

नागपुर
१२-७-४७

प्राणप्यारे अशोक,

मेरे पवित्र हृदय का स्वच्छ प्रेम स्वीकार कीजिए। मैंने अब तक बीस पत्र तुमको डाले, लेकिन जवाब एक पत्र का भी नहीं मिला, ऐसी भी क्या निष्ठुरता देव! रजतपट पर तो तुम इतने निष्ठुर मालूम नहीं देते, फिर तुम निजी जीवन में इतने पाषाण-हृदय क्यों बन गये? मुझे देखिए कि मैंने अभी तक अपने साहस को खोया नहीं। अभी भी मैं आशा लगाये बैठी हूँ, और मुझे विश्वास है कि तुम अपनी भूल समझकर मेरे लिए आशापूर्ण पत्र डालने की कृपा करेंगे। मैं सच कहती हूँ अशोक, कि मैं तुम्हारे मधुर मुस्कराहट पर लुट गई, न्यौछावर हो गई काश तुम मेरे हृदय को जान पाते। वैसे तो तुम नारी-हृदय के बहुत बड़े पारखी हो, फिर मेरे हृदय के परखने में क्यों भूल कर रहे हो? मेरी इच्छा सिर्फ तुम्हारे साथ अभिनय करने की है, तुम्हारे साथ बातचीत करने की है। न मालूम क्यों मैं तुम्हारे एक भी चित्र को बिना देखे नहीं छोड़ती। क्या मैं अब उम्मीद रक्खूं। हां यह भी मैं पुनः लिखे दे रही हूँ कि मेरी इस वक्त अवस्था अठारह साल की है। मैंने एफ० ए० पास कर लिया है। संगीत-विशारद भी पास कर लिया है। गला भी मेरा मधुर है। और मैं क्या लिखूं। मैं तब तक शादी नहीं करूँगी, जब तक कि आप मुझे अपने पास न बुला लें। ऐसा मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया है। समझे अशोक—अच्छा अब विदा पत्र की आशा में—

—आपकी, छाया

* * *

कलकत्ता
३०-७-४७

भाई अशोक,

जयहिन्द!

मुझे आप अपना छोटा भाई समझिए। मुझे आपसे बहुत आशाएँ हैं। क्या आप मेरी मदद कर सकेंगे मैंने इस वक्त बी० ए० एल० एल० बी० पास कर लिया है। अब मैं फिल्मी-दुनिया में आना चाहता हूँ। एक बार मैं पांच सौ रुपया लेकर बम्बई गया था, लेकिन सब रुपयों को फूंककर अपना-सा मुंह लिए हुए घर वापिस आया। परन्तु फिर भी मैं अपनी उस इच्छा को दाब न सका। आज जब कि मैंने तुम्हारे दो चित्र देखे तो पुनः मेरी दबी हुई इच्छा फिल्मी-दुनिया में जाने की हो गई। मैं बंगाली ब्राह्मण हूँ। क्या आप मुझे फिल्मी-दुनिया में बुला सकेंगे। मैं हर कष्ट उठाने को तैयार हूँ, अपनी अभिलाषा की पूर्ति के लिए। पत्र का जवाब लौटती डाक से देना। साथ में मैं अपना चित्र भी भेज रहा हूँ। प्रसंग के सिलसिले में मैं यह भी बता देना चाहता हूँ कि मैंने दो नाटकों में भी काम किया है। मुझे अभिनय का ज्ञान है। आपको मेरे साथ अधिक कष्ट न उठाना पड़ेगा।

—आपका, प्रफुल्ल घोष

* * *

मेरी तमाम नवयुवकों तथा नवयुवतियों के लिए यही नेक सलाह है कि वे फिल्मी-दुनिया की तरफ न दौड़ें। फिल्मी-दुनिया की तरफ दौड़ने से पहले अपने को पूर्ण रूप से उसके योग्य बना लें और योग्य बनने पर भी फिल्मी-दुनिया के किसी भी कलाकार से चिट्ठी-पत्री न करें और न बम्बई आने का कष्ट करें। क्योंकि व्यर्थ में क्यों धन बर्बाद किया जाये। आज हमारे युवक-युवतियां बम्बई में पड़ी हुई हजारों रुपयों पर पानी फेर रही हैं और फिर भी उनको कामयाबी नहीं मिल रही, क्योंकि उन्होंने गलत मार्ग अपनाया। आज मैं यह देखता हूँ कि प्रत्येक युवक फिल्मी-दुनिया में आने के लिए बेचैन हैं। पर इस बेचैनी से काम नहीं चलेगा। थोथी चमक के पीछे न दौड़िए। मैं यह स्पष्ट कहे देता हूँ कि फिल्मी-दुनिया में ही व्यक्ति कामयाब हो सकता है जो कि संयमी हो, जिसको कि अपने विचारों का नियंत्रण रखने का अभ्यास हो। जो कि सुन्दरता के खुशनुमा फूलों को देखकर, चारित्रिक-सतह से रपट न जाता हो, वही व्यक्ति फिल्मी-दुनिया में आने का साहस करे। इसके अलावा व्यक्तित्व भी ऊँचा व आकर्षक होना चाहिए, प्रतिभाशाली भी होना चाहिए, प्रखर बुद्धि का होना चाहिए जिनमें ये गुण न हों, वे तो स्वप्न में भी फिल्मी-दुनिया की तरफ न दौड़ें और जिनमें ये गुण हों वे भी किसी कलाकार को पत्र न लिखें, बल्कि सिने मैगजीन में अपना चित्र गुणों के साथ प्रकाशित करने का कष्ट करें—बस इससे अधिक उद्योग उनको न करना चाहिए।

मेरी तो ईमानदारी की यह सलाह है कि आपको जब जीवन के अन्य पहलुओं में सफलता न मिले तब आप इस तरफ आइए, और जब तक आपको अन्य क्षेत्र में जाने की गुंजाइश हो तब तक फिल्मी-दुनिया की तरफ भूल करके भी न आइए। अभी फिल्मी-दुनिया को आपकी जरूरत नहीं है—जब जरूरत होगी, तब आपको स्वतः ही बुला लिया जायेगा।

मैंने देखा है और सुना है कि फिल्मी कलाकार बनने की आशा में अनेक युवक-युवतियां अपने जीवन को बर्बाद कर बैठे। वे न घर के रहे और न घाट के। न खुदा ही मिला न बिसाले सनम। इसलिए आप फिल्मी-दुनिया की तरफ देखिए भी नहीं—हां कभी-कभी मनोरंजन के लिए पिक्चर अवश्य देख सकते हैं, उसमें कोई हर्ज नहीं, लेकिन हां फिल्मी-दुनिया की तरफ दौड़ने के लिए मेहरबानी करके पिक्चर भी न देखा करें।

यदि आप लोग मेरी इस सलाह को मानेंगे, तो आप अवश्य ही जीवन में तरक्की के रास्ते पर बढ़ते जायेंगे। मेरा, उन सभी पत्र-प्रेषकों से कहना है, जिनके कि पत्र मेरे पास आते हैं कि वे अपने को विचारों में उच्च बनायें—अपने को वासना के दलदल से निकालें। भारतीय कला के विकास में अपने को खपायें। मैं उम्मीद रखता हूँ कि अब भविष्य में मेरे पास कोई भी पत्र न डालेगा।

(लेखक-द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

सुप्रसिद्ध और लोकप्रिय फिल्म-अभिनेता श्री अशोककुमार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास परिहास

भंग की तरंग

चीनी पर से कंट्रोल उठ गया। देखें जापानी पर से कब उठता है?

* * *

कुमारी एलिजाबेथ के विवाह के अवसर पर भारत-सरकार ने भेंट में 'कम-ख्वाब' भेजा है। विवाह के अवसर पर 'कमख्वाब' ही भेजना भी चाहिए। जागने को ही समय रहता है, नींद का नहीं।

* * *

निजाम सरकार से एक साल के लिए समझौता हो गया। एक वर्ष में वह बहुत कुछ हथियार एकत्र कर लेगी।

* * *

डाक्टर ताराचन्द अफगानिस्तान के दूत नियुक्त हो गये। कौन कहता है कि सरकार शिक्षा-विभाग के लोगों को राजनीतिक कार्यों में नहीं नियुक्त करती? आशा है अगले वाइस-चांसलर नेपाल के राजदूत होंगे।

हैदराबाद की विराम-संधि से हिन्दू-महासभा को बहुत असन्तोष है। जान पड़ता है हिन्दू-महासभा में शिवाजी का अवतार हो चुका है।

* * *

कांग्रेस-अध्यक्ष भी मंत्रिमंडल की बैठकों में सम्मिलित हुआ करेंगे। क्या जिन्होंने मंत्रिमंडल बनवाया वही नहीं मंडल में बैठेंगे?

* * *

फील्ड मारशल आकिनलेक भारत से विदा हो गये। हमें दुख है। आदमी वाकई अच्छे थे।

* * *

पंडित सुन्दरलाल हाल में पाकिस्तान से लौटे हैं। कानपुर में उनका वहां के अनुभव पर भाषण हुआ। अवश्य ही उनका अनुभव वहां बहुत ही अच्छा हुआ होगा और इस्लामी संस्कृति फैलाने का आपका उत्साह दूना हो गया होगा।

* * *

ऐसा समाचार कुछ पत्रों में छपा है कि पाकिस्तानी सरकार इंगलैंड में लड़ाकू विमान खरीद रही है। वह अवश्य ही लड़ने के लिए न होंगे, सिंध में पुलाव बरसाने के लिए होंगे। वहां भोजन की कमी है।

बीते हुए बहुतायत के दिनों में तो उड़ाऊ व्यक्ति को क्षमा योग्य समझा जा सकता था।

परन्तु आजकल अल्पव्ययता के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमाम और ५०१ साबुन के छोटे छोटे टुकड़े भी सुरक्षित किये जायें।

हमाम और ५०१ साबुन

दी टाटा आइल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

बेढब-दोहावली

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

कीर्ति तुम्हारी इस तरह, हो जग में विख्यात;
मह मह महके जिस तरह, बासमती का भात।

* * *

दग्ध हृदय रो रो हुआ, और अधिक बेहाल;
जलते तावा पर दिया, मानो पानी डाल।

* * *

वेणी उनकी देखिए, लम्बी ललित ललाम;
जैसे कोई वाक्य हो जिसमें न हो विराम।

* * *

सुन्दर भी, वय भी नई, किन्तु न यौवन ताप;
बिना नमक जैसे बना, हो आलू का चाप।

* * *

ऊँचे पद पर यदि नहीं, दिये गये तुम ठेल;
क्यों उदास हो? कब गये, दो दिन को भी जेल?

* * *

मीठी वाणी का भला, कैसे हो आभास;
शक्कर का मुख में नहीं, बेढब कभी निवास।

स्वाधीन भारत में सबकी उन्नति होगी किंतु रेडियो-विभाग की उन्नति नहीं होगी। लखनऊ रेडियो स्टेशन संभवतः आयोग्य व्यक्तियों का अजायबघर बनाया जा रहा है।

* * *

डाक्टर अमरनाथ झा का कथन है कि संस्कृतयुक्त हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा होनी चाहिए। हां होनी तो चाहिए, किंतु हम लोगों को महात्मा गांधी और काका कालेलकर का भी सम्मान करना चाहिए और इसलिए उर्दू अर्थात् हिन्दुस्तानी को ही राष्ट्रभाषा मानना चाहिए।

कायदे आजम ने कराची में एक भाषण में एक नई बात बताई। आपने कहा कि राष्ट्रोत्थान के लिए शिक्षा आवश्यक है। हम कैसे मानें? चंगेज, तैमूर, नादिरशाह क्रिस दारुलउलूम के फाज़िल अथवा आलिम थे।

* * *

फिर आपने यह कैसे समझ लिया कि सब मुसलमान पढ़ लेंगे तो आपकी बात मानेंगे?

* * *

सुना जाता है कि डाक्टरों की फीस पर भी कंट्रोल लगा है। कहीं डाक्टर भी न ब्लैक मार्केटिंग करने लगें?

—अगड़धत्त शर्मा

अपना-पराया

पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' लिखित इस मनोरंजक उपन्यास में एक चीनी तरुणी का मेनका-नृत्य जहाँ आपको आत्म-विभोर कर देगा, वहीं तिब्बत और चीन की नैसर्गिक छटा और वहाँ के अजीबोगरीब रस्म-रिवाज भी आपके सामने नाच उठेंगे। चीन की यह रहस्यमयी तरुणी किस प्रकार भारत आती और अपने धर्म तथा स्वदेशाभिमान की रक्षा कर, एक भारतीय नौसैनिक की सहायता से अपने देश लौट जाती है, आदि प्रसंग आपको प्रणय की रंगीनियों का सजीव परिचय देंगे। पृष्ठ २३२, सजिल्द और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २॥) रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

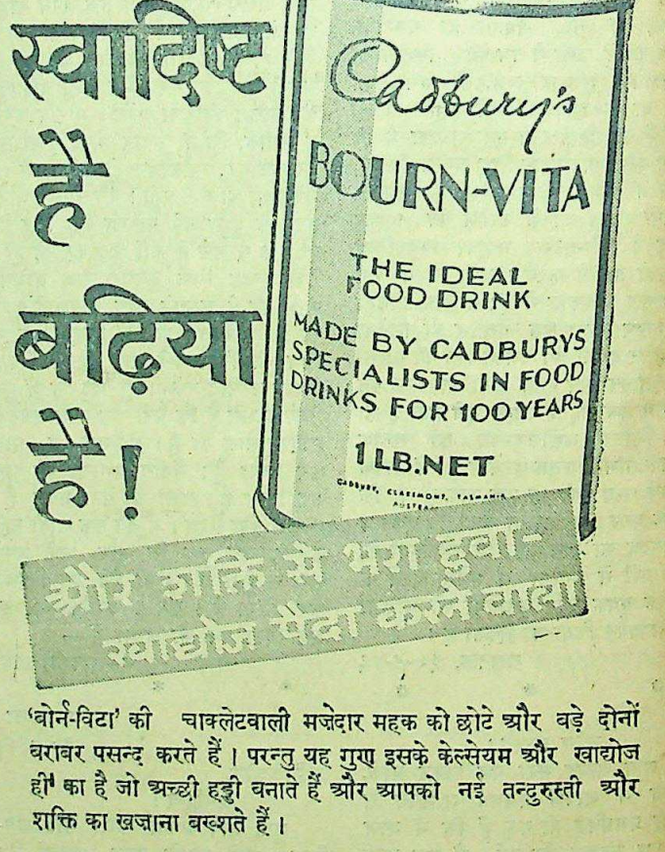

'बोर्न-विटा' की चाक्लेटवाली मज़ेदार महक को छोटे और बड़े दोनों बराबर पसन्द करते हैं। परन्तु यह गुण इसके केल्सेयम और खाद्योज ही का है जो अच्छी हड्डी बनाते हैं और आपको नई तन्दुरुस्ती और शक्ति का खज़ाना बख्शते हैं।

कैडबरी का बोर्न-विटा
केल्सेयम और खाद्योज से भरपूर

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

गोरखपुर सेंट एंड्रूज डिग्री कालेज की हिन्दी-सभा ने गत ता० २९-३० नवम्बर को शरणार्थी-सहायता-कोष के लिए एक अखिल भारतवर्षीय कवि-सम्मेलन का आयोजन किया था। हिन्दी-सभा के प्रबन्ध से सामने मैदान में एक विशाल पंडाल बनाया गया था। इसमें गोरखपुर की जनता तथा वहां के राशनिंग-कर्मचारियों ने भी अपना हार्दिक सहयोग दिया था। कोष के लिए पर्याप्त धन एकत्र हुआ। इसमें वहां के, पंजाब से आये हुए हिन्दी के लेक्चरर महोदय का श्रम प्रशंसनीय रहा। कवि-सम्मेलन के सभापति हिन्दी के प्रख्यात कवि श्री अनूप शर्मा थे। तीन बैठकें हुईं और तीनों में जनता बहुत अधिक संख्या में उपस्थित थी। गोरखपुर के कवि-सम्मेलनों की यही विशेषता है कि वहां की जनता बड़ी शान्त है और कविता-पाठ को बड़ी सहृदयता से सुनती है। उपस्थित कवियों में प्रयाग से श्री महेन्द्र और श्रीपालसिंह 'क्षेम' तथा श्री गोपेश, फतेहपुर से सुप्रसिद्ध गांधीवादी कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी, काशी के सर्वश्री बेधड़क बनारसी, शम्भूनाथसिंह, नर्मदेश्वर, द्विजेश, लखनऊ के श्री नरेश मेहता, सी० पी० के शुभचिन्तक सम्पादक श्री नर्मदाप्रसाद खरे, और बिहार से हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यिक विद्वान् और सुगायक कवि श्री जानकीवल्लभ शास्त्री का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त श्री फलक तथा स्थानीय कवियों में सर्वश्री, देवेन्द्र शास्त्री, रामाधार मिश्र, 'जीवन' विमल, मादक और श्याम ने भी अपनी रचनाएँ सुनाईं।

पहली बैठक २९ की रात को ९ बजे से प्रारम्भ हुई और १ बजे तक चलती रही। डी० पी० कालेज के हिन्दी-अध्यापक श्री हरिदेव मिश्र सम्मेलन के संचालक थे। देर हो जाने से जनता की राय के विरुद्ध भी सम्मेलन समाप्त कर दिया गया। दूसरी बैठक दोपहर में प्रारम्भ हुई और तीन बजे तक चलती रही। ऐसा लगता था जैसे जनता कविताओं से कभी तृप्त ही नहीं होगी।

तीसरी बैठक ३० की रात में ८॥ बजे से शुरू हुई और एक बजे तक चलती रही। इस बैठक की कविताएँ लखनऊ रेडियो स्टेशन से डिले भी की गईं। सारे सम्मेलन में श्री जानकीवल्लभ शास्त्री को श्रोताओं ने बहुत ही पसन्द किया।

गोरखपुर का सुदूर प्रान्त साहित्य और कविता के लिए इतना उपयुक्त कोना बन जायगा, कौन बिना देखे विश्वास कर सकता है। सेंट एंड्रूज कालेज की हिन्दी-सभा इसके लिए प्रशंसा की पात्र है।

—संवाददाता

* * *

वृन्दावन मण्डल कांग्रेस की मीटिंग कांग्रेस के नये दफ्तर में हुई, जिसमें कि कई एक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास किये गये। तीन सदस्यों की एक शरणार्थी सहायक कमेटी बना दी गई है। एक जन-सम्पर्क कमेटी तथा वार्ड कांग्रेस कमेटियां भी बनाने को तय किया गया। एक प्रस्ताव द्वारा केन्द्रीय सरकार से सारे कन्ट्रोल तोड़ देने की प्रार्थना की गई है।

वृन्दावन में विश्वप्रेमी राजा महेन्द्र-प्रताप जी की वर्षगांठ ६१वीं जयन्ती प्रेम महाविद्यालय में समारोह के साथ मनाई जा रही है। ६ ता० को प्रेम महाविद्यालय के पुरातन छात्र एवं वृन्दावन के प्रसिद्ध घी व्यापारी बाबू कन्हैयालाल जी गुप्त ने राजा साहब को उनकी जयन्ती के उपलक्ष में एक शानदार टी पार्टी दी। जिसमें कि वृन्दावन के सभी गण्यमान व्यक्ति मौजूद थे।

वृन्दावन के मन्दिरों में हरिजन-प्रवेश-बिल से घबड़ाहट होनी प्रारम्भ हो गई है। यहां के प्रसिद्ध श्री राधारमण मंदिर के ट्रस्टियों ने हरिजन-प्रवेश-बिल के खिलाफ अपनी बंदिश बांध ली है और मंदिर के ऊपरवाले हिस्से में किसी को भी न चढ़ने की पाबन्दी लगा दी है। तथा एक कटघरा भी लगा दिया गया है। मन्दिर के और ट्रस्टियों में इससे असन्तोष है और वह कुछ सोच रहे हैं।

वृन्दावन के टिकारीवाले मंदिर के जमादारों ने एक पंजाबी शरणार्थी को इतना मारा कि उसका सर फट गया। जब एक कांग्रेस कार्यकर्ता बाबू वर्धाचरण-दत्त ने उसे बचाना चाहा तो उसे भी मारने की धमकी दी गई। पुलिस में रिपोर्ट कर दी गई है। वह पंजाबी उनके मंदिर के सामने कपड़े धो रहा था।

वृन्दावन के प्रसिद्ध कांग्रेस-कार्यकर्ता व पत्रकार गोस्वामी अद्वैतकुमार जी जो कि काश्मीर की हालत को देखने जा रहे थे उन्हें केन्द्रीय पार्लियामेंट के स्पीकर माननीय जी० वी० मावलंकर का एक पत्र मिला है। जिसमें कि उन्हें लिखा गया है कि सरकार स्वतन्त्र रूप से किसी भी पत्रकार को काश्मीर जाने की सुविधा न देगी। किसी पत्र एजेंसी के द्वारा जाने पर विचार किया जायगा।—संवाददाता

* * *

नागपुर का समाचार है कि माननीय पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र, मंत्री स्वायत्त शासन ने काटोल से ६ मील की दूरी पर पराडसिंगा की उच्च बुनियादी शाला के प्रथम प्रीति-सम्मेलन की अध्यक्षता की। इस सुन्दर गांव में, आस-पास के गांवों से लोग इकट्ठे हुए थे और वहां आनन्द का वातावरण था। पं० मिश्र जी ने उपस्थित जनता से आग्रह किया कि वह अपनी स्वतन्त्रता का सर्वोत्तम उपयोग करे और उन्होंने वयस्क शिक्षा और सैनिक शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया। इसके पश्चात् डा० झा डायरेक्टर आफ पब्लिक इन्सट्रक्शन्स ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया जहां शाला के विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई वस्तुएँ उचित रूप से जमाई गई थीं। इसके पश्चात् विद्यार्थियों ने राइफल ड्रिल के साथ शारीरिक कसरत का प्रदर्शन किया। रात्रि में प्रचार-विभाग ने ग्राम-उद्योग-सम्बन्धी फिल्मों का सिनेमा दिखाया।

पराड़सिंगा से नागपुर लौटते समय मिश्र जी और उनके साथी काटोल पहुँचे जहां स्वायत्त-शासन के मंत्री को काटोल के म्युनिसिपल कमेटी के अध्यक्ष सेठ राठी ने मानपत्र दिया। मानपत्र के उत्तर में प्रभावशाली भाषण देते हुए मिश्र जी ने देश के सामने उपस्थित अनेकों समस्याओं का विस्तृत रूप से विवेचन किया और उन्होंने जनता से उन समस्याओं का साहसपूर्ण परन्तु विवेकयुक्त ढंग से सामना करने का आग्रह किया। सरकार की तरफ से उन्होंने म्युनिसिपैल्टी को इस सम्मान के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने स्वायत्त-शासन-विभाग को जो वे पदग्रहण के पश्चात् से ही सँभाले रहे हैं उल्लेख किया और उन्होंने इसमें जो परिवर्तन किये उनका वर्णन किया। उन्होंने भविष्य में और भी अधिक कार्य करने की आशा प्रकट की जिनसे (उन्होंने कहा) कि शहर और विशेषकर देहातों के लोगों को अपनी स्थिति सुधारने के लिए अधिक अवसर मिलेगा। —संवाददाता

* * *

उन्नाव रायबरेली की सरहद पर आकमपुर व नयाखेड़ा के बीच में स्थित गड़ेरियन खेड़ा में कांग्रेस के बुनियादी संगठन के उद्देश्य से ता० १-१२-४७ को बाबा गोविन्दानन्द के सभापतित्व में एक सभा हुई जिसमें [illegible] के पुराने कार्यकर्ता पं० रामसागर त्रिवेदी के सारगर्भित भाषण हुए। वहीं के मनऊ गड़ेरिया ने एक प्रीतिभोज दिया जिसमें सभी ने जातिभेद त्यागकर योग दिया।

सभा में जनता ने कांग्रेस व सरकार से मांग की कि राष्ट्र के बुनियादी तत्त्व ग्राम-निवासियों पर शीघ्र व विशेष ध्यान दिया जाय, क्योंकि ताल्लुकेदार, जमींदार, महाजन व सप्लाई-विभाग के कर्मचारी जनता का हक हड़प कर उसे और अधिक सता रहे हैं। पता नहीं ऐसे ही लोग हमारी उन्नति के किस प्रकार जिम्मेदार बना दिये जाते हैं। इससे भय लगता है। अतः कांग्रेस व सरकार को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

—उमाशंकर वर्मा

* * *

लखनऊ युक्तप्रान्तीय सरकार ने हिन्दुस्तानी साहित्य-कोष से इस वर्ष शुद्ध साहित्य, इतिहास, समाजशास्त्र, दर्शन तथा व्यावहारिक विज्ञानविषयक हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों के लेखकों को पारितोषिक देने का निश्चय किया है। व्यावहारिक विज्ञान की केवल उन पुस्तकों पर विचार किया जायगा जिनसे साधारण व्यक्ति विज्ञान-सम्बन्धी जानकारी प्राप्त कर सकें।

रचनाएँ भेजने की इच्छा रखनेवाले लेखकों को अपनी पुस्तकों की ६, ६ प्रतियां सेक्रेटरी, शिक्षा-विभाग के पास १५ दिसम्बर १९४७ तक भेज देनी चाहिए। पांडुलिपि नहीं ली जायगी। केवल उन्हीं पुस्तकों पर विचार किया जायगा जो गत तीन वर्षों के भीतर प्रकाशित हुई हैं। उर्दू के लिए विषयों की घोषणा बाद में की जायगी।

—संवाददाता

* * *

जोधपुर साहित्य-सदन ने अपने कार्यालय बालोरीगेट से एक विज्ञप्ति निकाली है जिसमें सम्मेलन को स्थगित कर ता० २३, २४ व २५ दिसम्बर के लिए निश्चित किया है। सम्मेलन के उद्घाटन के लिए श्रद्धेय टंडन जी का आना निश्चित हो चुका है। नवीन जी भी आ रहे हैं और प्रभाकर माचवे अध्यक्ष चुने गये हैं। इन सभी साहित्यकारों के स्वागत की तैयारियों में सभी संस्थाएँ सक्रिय सहयोग दे रही हैं। जोधपुर में इस प्रकार का यह प्रथम ही सम्मेलन होगा। विज्ञप्ति में भारत के तरुण साहित्यकारों व कलाकारों से अपील की गई है कि वे उपस्थित होकर सम्मेलन को सफल बनाने के लिए प्रयत्न करें। हिन्दी राष्ट्रभाषा के लिए इस प्रकार का उत्साह सराहनीय है। —संवाददाता

* * *

हरिद्वार के श्री रामायण आश्रम सामोद हाउस के संचालक श्री फरलिया जी हरिद्वार में आये पीड़ित शरणार्थियों की सेवा में लगे रहने के कारण आश्रम के सहायतार्थ कहीं बाहर नहीं गये और हरिद्वार के सहायक और दानियों का ध्यान भी शरणार्थियों की ओर लगे रहने के कारण इनसे भी अपील न की तो भी श्री स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती जी ने १० रुपये और सेठ सीताराम जी प्रेमी म्यू० कमिश्नर कनखल ने ५ रुपये आश्रम की सहायतार्थ देने की कृपा की है। आशा है कि अन्य प्रेमी महानुभाव भी गत वर्ष की नाईं अपनी सहायता भेजकर अनुगृहीत करेंगे।

दो दिन हुए श्री जय भारत साधु महाविद्यालय गनेशघाट हरिद्वार के दो कमरों में जहां कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक के कई कार्यकर्ता रहते थे, पुलिस ने तलाशी ली और एक कारतूस और कुछ कागजात अपने साथ ले गई।

—संवाददाता

एटा हिन्दी-साहित्य-समिति के सभापति श्री होतीलालदास के निमंत्रण पर अ० भा० व्रज-साहित्य-मंडल का आगामी पंचम वार्षिक अधिवेशन एटा में होना निश्चित हुआ है। अतः यह आवश्यक है कि आगामी वर्ष के लिए सभापति का निर्वाचन भी कर लिया जाय। स्थायी समिति ने इस वर्ष सभापति-पद के लिए मंडल के वर्तमान सभापति माननीय पं० श्री कृष्णदत्त जी पालीवाल का केवल एक नाम ही प्रस्तावित किया है। परन्तु सदस्यों को पूर्ण स्वतन्त्रता है कि वह मण्डल के हित की दृष्टि से किसी भी योग्य व्यक्ति का नाम अध्यक्ष-पद के लिए प्रस्तावित करें। यह प्रस्ताव मिती मार्गशीर्ष शुक्ला ८ शनिवार ता० २० दिसम्बर '४७ से पूर्व कार्यालय में पहुँच सकते हैं।—गोपालदास व्यास प्रधान मंत्री

ताल बेहट 'मृगेन्द्र' पुस्तकालय ताल बेहट के संचालक सीताराम 'मृगेन्द्र' आगामी जनवरी ४८ से 'बालवाणी' नामक नव मासिकपत्र निकाल रहे हैं। वार्षिक मूल्य ३) एक प्रति का ।)॥ है। जनवरी के अन्त तक २॥) में ही प्राप्त कर सकते हैं। पत्र को हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री पं० माखनलाल जी चतुर्वेदी, पंडित रामनरेश जी त्रिपाठी, लक्ष्मीनारायण जी टंडन प्रेमी का सौहार्द्र एवं सहानुभूति प्राप्त है।

—संवाददाता

दिल्ली आयुर्वेद-सम्बन्धी उच्च कोटि का सचित्र मासिकपत्र डा० गणपतिसिंह वर्मा के सम्पादकत्व में १५ जनवरी १९४८ को रसायन कार्यालय, पोस्ट-बाक्स १२५ देहली से प्रकाशित होगा। वार्षिक मूल्य ६ रुपये। —व्यवस्थापक

५५ साल के बुढ़ापे में भी पूर्ण स्वस्थ

पति और पत्नी क्रूशन साल्ट का सम्मान करते हैं

'रुपया बुद्धिमानी से खर्च किया गया'

बहुत-से पुरुषों और स्त्रियों को आधी ज़िन्दगी पार करते-करते पेट की शिकायतों से थोड़ा-बहुत दर्द और पीड़ा होने लगती है। लेकिन श्रीयुत और श्रीमती पैट्रिक को नहीं। उनका स्वास्थ्य २० साल से अच्छा है और इसका जो रहस्य है, उसे हर कोई बिना किसी कष्ट के और थोड़े से ही खर्च में जानकर लाभ उठा सकता है। श्रीमती पैट्रिक लिखती हैं :—

'पिछले २० वर्षों में हमने नित्य सबेरे चाय के प्याले में क्रूशन साल्ट की थोड़ी-सी मात्रा का सेवन किया है—हम कभी नागा नहीं करते, छुट्टी के दिन भी नहीं। मैं और मेरे पति का जो अच्छा स्वास्थ्य है, वह इसी कारण है और यह कहने में हमें कोई संकोच नहीं। हमारे डाक्टर का 'बिल' वस्तुतः नगण्य रह गया है और मेरे पति, यद्यपि ५५ वर्ष के हो चुके हैं, लेकिन ४५ वर्ष से अधिक के नहीं दिखते। पूर्ण स्वास्थ्य के वह प्रतीक हैं, हालाँ कि उनका काम उन्हें हर मौसम में बाहर ले जाता है। क्रूशन इस्तेमाल करने के पूर्व उनकी भुजा में वात रोग था। परन्तु यह रोग सालों पहले ठीक हो जाने पर भी, वह क्रूशन का सेवन बन्द नहीं करते। क्रूशन साल्ट पर हमने जो खर्च किया है, वह रुपया बुद्धिमानी से खर्च किया गया है।'

—(श्रीमती) एल० सी० पैट्रिक।

क्रूशन छः प्राकृतिक नमकों का ऐसा मिश्रण है, जो आपके यकृत को उद्दीपक बना देता है; मूत्राशय और पाचन-नली को स्वस्थ तथा नियमित क्रियाशील बना देता है। इससे भीतरी सफ़ाई होती और रक्त-प्रवाह विशुद्ध रहता है। सभी दवा-फ़रोश क्रूशन साल्ट बेचते हैं; कीमत १॥=) प्रतिबोतल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य और व्यायाम

सूर्य्य-चिकित्सा क्या है? रोगों का निवारण कैसे हो सकता है?

लेखक, श्री वीरेन्द्रनाथ उपाध्याय

सूर्य्य-चिकित्सा हमारे लिये कोई नवीन वस्तु नहीं है। आयुर्वेदशास्त्र में सूर्य्य-चिकित्सा का एक विशेष स्थान है। सूर्य्य-चिकित्सा का बराबर प्रयोग न होने के कारण हम उसे प्रायः भूल सा गए हैं।

मनुष्य का शरीर पाँच तत्त्वों से मिलकर बना है, जब ये पाँचों तत्त्व हमारे शरीर में उचित मात्रा में रहते हैं तो हमारा शरीर निरोग रखता है। परन्तु इन पाँचों तत्त्वों में से कोई भी तत्त्व की कमी हुई, बस शरीर रोगों का शिकार हो जाता है। तत्त्व भिन्न भिन्न रंग के होते हैं। रंगों का प्रयोग बोतलों द्वारा किया जाता है। वास्तव में सूर्य्य-चिकित्सा का सार यही है कि हमारे शरीर में जिस रंग (तत्त्व) की कमी हुई उस कमी को पूरा करने के लिए सूर्य्य-चिकित्सा में उसी रंग के बोतलों में पानी भर सूर्य्य के धूप में रख औषधि के रूप में दी जाती है और उसी रंग की रोशनी डाली जाती है। बस यही सूर्य्य-चिकित्सा है।

सूर्य्य-चिकित्सा द्वारा कुछ रोगों का निवारण इस प्रकार हो सकता है—

सिर-दर्द—सिर दर्द में नीली रोशनी डालनी चाहिए।

गीली खांसी—गीली खांसी में नारंगी रंग के बोतल का जल देने से रोगी को आराम मिलता है। इससे फेफड़े ठीक हो जाते हैं। केवल दो बार सुबह और दो बार शाम को जल पीना चाहिए। इस रीति से खांसी १५ दिन में जाती रहेगी।

गला बैठना—यदि गला बैठ जाय, और आवाज भारी हो जाय तो नीले रंग की बोतल के जल का सेवन करना चाहिए। गहरे नीले रंग के बोतल का जल पिया जाय, तो और अच्छा होगा। जल छः माशे बराबर पीना चाहिये, जिससे गला रंग से तर रहे, ऐसा करने से बीमारी धीरे-धीरे घटकर २४ घन्टे के अन्दर दूर हो जायगी।

घाव—घाव चाहे किसी प्रकार का क्यों न हो, उस पर कुछ दिनों हरी रोशनी डालने से पूरा आराम हो जाता है।

खुजली—अगर शरीर में खुजली हो जाय तो हल्के नीले रंग की बोतल के जल से बराबर धोकर उस पर नीली रोशनी डालनी चाहिये। रोगी को कम से कम दो घन्टे नीली रोशनी में अवश्य बैठना चाहिये।

कब्जियत—कब्जियत को दूर करने के लिये प्रातःकाल और सायंकाल नारंगी रंग के बोतल का जल सेवन करना चाहिए।

(पेज ७ का शेष)

स्वाभाविक भी थी। आज देश ने एक नई करवट ली है—देश आजाद हुआ है और अब हम भारतवासियों का यह परम कर्तव्य है कि देश की आजादी को टिकाये रखना। स्वतंत्रता के लिए हमारे पूर्वजों ने जो खून बहाया है वह स्वतंत्रता रूपी इमारत की नींव के नीचे बह रहा है। हमें अभी बहुत कुछ करना है। अभी तो श्रीगणेश है। भारत पुनः एक बार विश्व को मानवता का संदेश देगा और पूर्व का प्रकाश पश्चिम में चकाचौंध करेगा। भारतवासियों के लिए आज का समय आराम करने का नहीं; किन्तु कुछ कार्य करने का है जिससे हमारा देश प्रगति-पथ पर अग्रसर हो ताकि हम सब सुख व शांति से रह सकें। जय सोमनाथ! जय जय भारत!

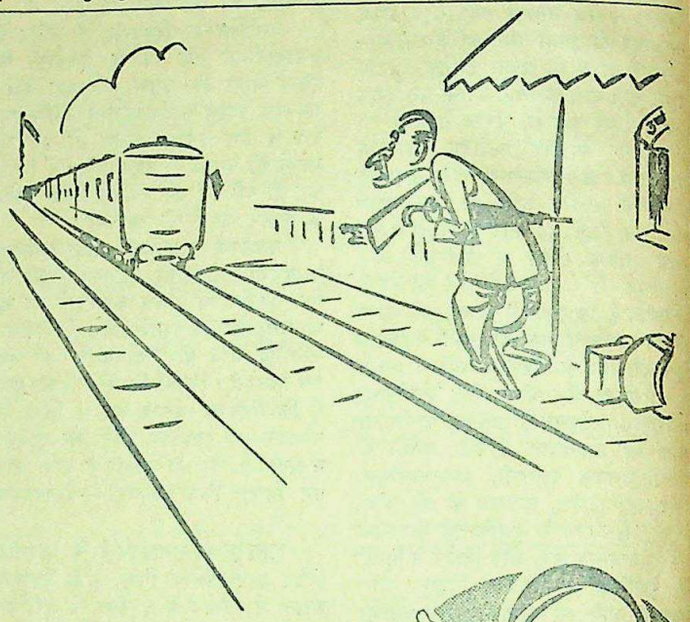

नित्य प्रति की झंझटें

चाय से मिटाइये

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 308

सर्दी और खाँसी में

यूकेलिप्टस सिरोलीन "रोच"

सारे संसारमें व्यवहार होता है

अपने देश की बनी हुई वस्तुएँ अपनायें

भारत के होशियार कारीगरों के बनाये हुये

स्वदेशी कैमरे

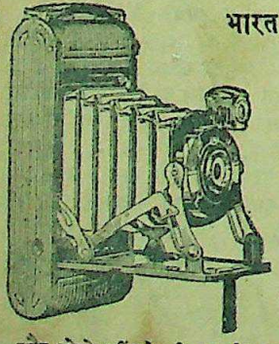

सुन्दर मजबूत, नया डिजायन, विश्वसनीय, कीमत में सस्ते, काम में अच्छे, इन कैमरों से आप चाहे जिस दिलपसन्द चीज का टिकाऊ मनोहर फोटो खींच सकते हैं। इन कैमरों से बढ़िया फोटो खींचने की गारंटी है।

कैमरे के साथ, फिल्म कार्ड, मसाला और फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त भेजी जाती है। कीमत बक्स कैमरा ४।), बढ़िया बक्स कैमरा ५॥), पोस्टेज पैकिंग १=) अलग, बढ़िया फोल्डिंग कैमरा तथा फोटो खींचने की तरकीबसहित १५), पोस्टेज पैकिंग १॥) अलग।

ग्लोब फोटो स्टूडियो (एन० पी० १८) अलीगढ़ सिटी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी का रंगमंच

चीनी और गुड़ पर से कन्ट्रोल हट गया है

क्या पन्त-मंत्रिमन्डल का विस्तार होगा ?—लखनऊ के समीप आदर्श नगर—अदालती नोटिसों का उपक्रम खत्म होगा—२० प्रतिशत लाइसेन्स जब्त होंगे—शराब की बिक्री पर प्रतिबन्ध

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

चीनी का कण्ट्रोल हटना कुछ अन्य कन्ट्रोलों के भी टूटने का पूर्ण संकेत है। मुझे अत्यन्त विश्वस्तसूत्र से ज्ञात हुआ है कि निकट भविष्य में ही अन्न का नियन्त्रण भी समाप्त हो जायगा और सम्भवतः जनवरी से ही अन्न नियन्त्रण का टूटना प्रारम्भ हो जाय। भारत सरकार के खाद्य-विभाग ने अन्न का कंट्रोल तोड़ने का दृढ़ निश्चय कर लिया है और उसके अन्तर्गत युक्तप्रान्त में क्षीघ्र ही चावल और मक्के का कंट्रोल हटने जा रहा है। गेहूँ और जौ चना पर, जो रबी की फसलें हैं, आगामी फसल के बाजार में आने तक कंट्रोल जारी रहेगा, क्योंकि किसी संकट काल में स्थिति सँभालने के अभिप्राय से सरकार इन खाद्यान्नों का कुछ स्टाक संग्रहीत कर लेना चाहती है।

* * *

कंट्रोल के सम्बन्ध में मन्त्रिमडल में बड़ा मतभेद हुआ। किसान मजदूर प्रजा दल के नेता तथा सूचना-मंत्री पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल कंट्रोल हटाने के पक्ष में हैं और समाजवादी खाद्य-मन्त्री श्री चन्द्रभानु गुप्त कंट्रोल जारी रखने के पक्ष में मन्त्रिमण्डल में श्री गुप्त का ही मत स्वीकृत हुआ। किन्तु पालीवाल जी उसके विरुद्ध रहे और सार्वजनिक सभाओं में भी कंट्रोल के विपक्ष में प्रचार करते रहे। श्री चन्द्रभानु गुप्त ने इस पर प्रधान मंत्री को एक कड़ा पत्र लिखा कि यदि सूचना-मंत्री मंत्रिमंडल के स्वीकृत निर्णय के विरुद्ध प्रचार करते रहेंगे, तो कैसे काम चलेगा। जब तक प्रधान मंत्री इस विषय में सोचें, केन्द्र ने कंट्रोल के विपक्ष में निर्णय दिया और मामला दब गया।

* * *

यद्यपि यह अनेक बार पुष्ट किया जा चुका है कि प्रान्तीय मंत्रिमंडल की संख्या-वृद्धि न होगी, परन्तु अभी कुछ लोग निराश नहीं हैं, बल्कि पं० पन्त से असन्तुष्ट एक दल मंत्रिमंडल के विस्तार की मांग अब भी करता जा रहा है। पिछले विस्तार के समय श्री मोहनलाल सक्सेना को मंत्रिमंडल में लेने की चर्चा चली थी, किन्तु संयोगवश वे न लिए जा सके। इस पर उनका दल पन्त जी से अत्यन्त असन्तुष्ट हो गया। परन्तु उस दल के प्रमुख सदस्य श्री गोपीनाथ श्रीवास्तव को पब्लिक सर्विस कमीशन का सदस्य बनाकर पन्त जी ने दल को सन्तुष्ट करने की चेष्टा की। फिर भी यह दल सन्तुष्ट नहीं है और आश्चर्य न होगा, यदि मंत्रिमंडल में एक सदस्य बढ़ा लिया जाए।

* * *

युक्तप्रान्तीय सरकार लखनऊ के समीप एक आदर्श नगर बसाने की योजना कार्यान्वित करने जा रही है। यह नगर लखनऊ से ८ मील दूर कानपुर रोड पर अमौसी हवाई अड्डे के उत्तर पश्चिम में बसाया जाएगा, जिसके लिए आसपास के गांवों की ३ लाख एकड़ भूमि हस्तगत की जा रही है। सरकारी अनुमान के अनुसार इस नगर में एक लाख व्यक्तियों के निवास का प्रबन्ध होगा, जिनमें से अधिकांश पंजाब से आए हुए शरणार्थी होंगे। इस नगर में औद्योगिक मजदूरों की भी बस्तियां होंगी और उद्योग-धंधों के लिए उसमें स्थान रखा जाएगा। प्रधान मंत्री पं० गोविन्दवल्लभ पन्त के नाम पर इस नगर का नामकरण किया जायगा।

* * *

हमारे न्याय मंत्री ठाकुर हुकुमसिंह न्याय बेचने की प्रथा को अन्याय समझते हैं और इसीलिए वे अदालतों से कोर्ट-फीस हटाने का उपक्रम कर रहे हैं। लखनऊ विश्वविद्यालय में कानून के छात्रों के समक्ष बोलते हुए ठाकुर साहब ने कहा कि वर्तमान मुद्रास्फीति के कम होते ही प्रान्तीय सरकार कोर्ट-फीस हटा देगी।

* * *

ज्ञात हुआ है कि शस्त्रास्त्रों के लाइसेंसों पर सरकार ने जो दुबारा जांच की है, उसके अन्तर्गत प्रायः २० प्रतिशत लाइसेंस जब्त हो जाएँगे। सरकार ऐसे ही लोगों के लाइसेंस जब्त करेगी, जिनके आचरण के सम्बन्ध में सरकार को उपयुक्त आशंका होगी।

* * *

प्रान्तीय सरकार ने राजधानी के नृत्यगृहों और बालरूमों के मालिकों को आदेश दिया है कि अपने अतिथियों को शराब बेचते समय वे इस बात का ध्यान रखें कि भारतीय स्त्री पुरुषों को शराब न दी जाए। यूरोपियन शराब पी सकते हैं, पर भारतीयों को मद्यहीन पेय पदार्थ दिए जाने चाहिए, उक्त आदेश में कहा गया है।

(पेज ५ का शेष)

वाइसराय, लार्ड नार्थब्रुक-द्वारा हुआ था। इससे पहले अधुनिक दरभंगा कैसिल में कार्य होता रहा। म्योर सेंट्रल कालेज का विजयानगरम् हाल वास्तव में बहुत सुन्दर और देखने योग्य है। वह ८२ फीट लम्बा और ३६ फीट चौड़ा है। उसके ऊपर बनी मीनार २०० फीट ऊँची है जहां से इलाहाबाद नगर के अत्यन्त सुन्दर दृश्य दिखाई देते हैं। म्योर कालेज का नकशा मि० इमर्सन ने बनाया और इमारत के बनवाने में ८,८९,६२७ रुपया व्यय हुआ। १८९८ में और उसके बाद विभिन्न वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ बनीं। समय-समय पर वे और भी बढ़ती ही रही हैं। सीनेट हाल भी बहुत सुन्दर इमारत है जिसमें कई स्थापत्यकलाओं का अद्भुत मिश्रण है। इसके पूर्व में ला कालेज और पश्चिम में लाइब्रेरी है। सीनेट हाल का ३ अगस्त, १९१२ और ला कालेज का १९१४ में उद्घाटन हुआ। सर स्विन्टन जैकाब ने ला कालेज, सीनेट हाल और लाइब्रेरी इन तीनों इमारतों का नकशा बनाया था। तीनों इमारतों में दो-दो मंजिलें हैं। सीनेट हाल की इमारत ३७६′ ८″ लम्बी और १७५′ ६½″ ऊँची है। बीच का हाल १३०′ लम्बा और ६०′ चौड़ा है। उसके बगल के दोनों कमरों में से हर एक ५२′ लम्बा और ३६′ चौड़ा है। हाल के ऊपर एक सुन्दर और ऊँचा घंटाघर है। समयानुसार बढ़ी हुई आवश्यकताओं के अनुसार अब अन्य अनेक नई-नई इमारतों की आवश्यकता है। संगीत-भवन और बांदा अतिथि-गृह का शिलान्यास तो भूतपूर्व वाइस चांसलर श्री डा० अमरनाथ झा द्वारा हो चुका है, किन्तु अभी इमारतें नहीं बनीं। एक नया होस्टल भी इस समय बन रहा है। विद्यार्थियों की संख्या इतनी अधिक बढ़ गई है कि अभी ऐसे कई और होस्टलों की आवश्यकता है।

इस प्रकार गत साठ वर्षों से इलाहाबाद यूनिवर्सिटी हमारे प्रान्त में ज्ञान-विज्ञान का प्रकाश फैलाती रही है। पंत, महादेवी आदि हिन्दी के कई प्रसिद्ध कवि और लेखक यहां के विद्यार्थी रह चुके हैं। यहां पर कई ऐसे प्रसिद्ध विद्वान् अध्यापक रहे हैं और हैं जिनका नाम भारतवर्ष और भारतवर्ष से बाहर आदर के साथ लिया जाता है। यहां पर शिक्षा प्राप्त किये हुए अनेकानेक विद्यार्थियों ने देश के सार्वजनिक जीवन में भाग लेकर अपना, अपनी संस्था और देश का नाम उज्ज्वल किया है। हमारे प्रान्त के लगभग सभी बड़े-बड़े नेता, जैसे, स्वर्गीय महामना मालवीय, स्वर्गीय मोतीलाल नेहरू, डा० तेजबहादुर सप्रू, श्रीगोविन्दवल्लभ पंत, ठंडन जी, आदि इसी यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी थे। आज उनमें से अनेक स्वतन्त्र भारत के शासन की सुयोग्यतापूर्वक बागडोर सँभाले हुए हैं। यहीं पर शिक्षा-प्राप्त विद्यार्थी विभिन्न जिलों में छोटे-बड़े सभी प्रकार के सरकारी अफसरों के रूप में फैले हुए हैं। यह कहना अनुचित न होगा कि इलाहाबाद यूनिवर्सिटी केवल भारतवर्ष ही की नहीं, वरन् समस्त एशिया की दो-चार प्रसिद्ध यूनिवर्सिटियों में से एक है। और यदि यथेष्ट आर्थिक सहायता प्राप्त होती रही तो आशा है यह यूनिवर्सिटी संसार की एक महान् शिक्षा-संस्था ब सकेगी।

प्रसिद्ध यात्राओं की कथा

प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान से लेकर वर्तमान युग के एवरेस्ट की चोटी पर चढ़नेवाले साहसी वीरों तक की कथा इस पुस्तक में है। जिन यात्रियों ने प्राणों की बाजी लगाकर स्थल और जल के अज्ञात देशों में भ्रमण किया था और उनके परिश्रम से संसार का जो लाभ हुआ उसका रोचक वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। मूल्य ॥।-)

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

चटपटी, मजेदार, सस्ती और सुन्दर पुस्तकें

लखनऊ की रंगीन रातें—लखनऊ के नवाबों, वेश्याओं और बिगड़े हुए रईसों के पतन की नंगी तसवीर देखना चाहते हैं तो इसे जरूर पढ़ें। मूल्य १)।

मजनू की चिट्ठियाँ—इसमें फिल्म स्टूडियोज में होनेवाले व्यभिचार का भंडाफोड़ किया गया है। मू० २)।

विवाहित मनोरंजन—इसमें नव-विवाहितों को बतलाया गया है कि वह परस्पर सँभोग का सच्चा सुख किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं। मू० १)।

चित्रावली—प्रेम-मिलन व संसार की सुंदरियों के गुप्त चित्रों का आकर्षक संग्रह। मू० ३।)।

बम्बई की चाँदनी रातें—इसमें एक अभिनेत्री की आत्मकथा जिसे पढ़कर आप सिनेमा-क्षेत्र का असली रूप देख सकेंगे। मू० १)।

फिल्मी अप्सराएँ—यौवन की मस्ती के बोझ से लदी हुई ५० अभिनेत्रियों के चित्र एवं जीवनियाँ, सजिल्द का मू० २)

सोहागरात—प्रथम मिलन की भाँति मादक यह पुस्तक आपके विवाहित जीवन को सुखमय बना देगी। मू० १।)।

वशीकरण मंत्र—अनेकों प्रकार के वशीकरण मंत्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह। मू० १॥)।

नोट—पोस्टेज पैकिंग प्रत्येक पर अलग लगेगा।

पता—एस० के० सक्सेना (६०) रंगमहल, अलीगढ़।

आप शीघ्र ही सफल होंगे

यदि आपके श्वास में विकार न हो !

बुरी श्वास के कारण आपको मूल्यवान् अवसर खो देना पड़ता है। पर मैं अपने दाँतों को साफ और चमकीला रखने के लिए कोलगेट डेण्टल क्रीम से दिन में कम से कम दो बार अवश्य साफ करता हूँ। मेरा सारा मुँह ताजा और सुगन्धित रहता है।

और मैं यह भी जानता हूँ कि मेरी श्वास में विकार न होगा क्योंकि कोलगेट के भीतर घुसनेवाले फेन दाँतों की दरारों में घुसकर सड़े हुए ऐसे खाने को निकाल देते हैं जिनसे श्वास में विकार पैदा हो जाता है। कालगेट डेण्टल क्रीम बिना किसी हानि के दाँतों को साफ और चिकना कर देता है।

आज ही से डेण्टल क्रीम का इस्तेमाल नियमित रूप से कई बार करना आरम्भ कर दीजिए। याद रखिए दूसरा दन्तमंजन ऐसा नहीं है।

NO BAD BREATH BEHIND HIS SPARKLING SMILE!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे देशी राज्य

देशी रियासतों में जनतंत्र

कोठी राज्य प्रजामंडल की गति-विधि

नाम की दृष्टि से 'प्रजामंडल' शब्द 'कांग्रेस' से कहीं अधिक भारतीय और जनसत्तात्मक है, किन्तु दुर्भाग्य से प्रजा-मंडलों की छत्रछाया में स्वाधीनता का स्वप्न देखनेवाली रियासती जनता अभी तक उसी प्रकार पराधीन और पीड़ित है जिस तरह वह १५ अगस्त सन् १९४७ के पहले थी। यह स्थिति भारतीय राज-नीतिज्ञों की एक विशेष मानसिक स्थिति की सूचक है, सन्देह नहीं।

अँगरेजी शासन-काल में भी रियासती जनता के आन्दोलनों से कांग्रेस ने चाहे मौखिक सहानुभूति भले ही प्रकट की हो कभी सक्रिय सहयोग नहीं दिया। रियासती जन आन्दोलनों से तटस्थता और नरेशों से समझौता करने की उसकी बहुत पुरानी रीति-नीति है। यह कौन नहीं जानता कि कांग्रेस, सदैव क्रान्ति करने की अपेक्षा समझौता के पथ से चलना ही अधिक उपयुक्त समझती आ रही है।

शान्ति और अहिंसा के पुजारियों से एक विशेष जनता की स्वाधीनता की हत्या की कल्पना करना भी महापाप है, किन्तु कांग्रेस ने रियासती जनता की स्वाधीनता का तनिक भी ध्यान नहीं रखा और अँगरेजी भारत की जनता को स्वाधीन बनाने के श्रेय का सारा स्वांग भी पूरा कर लिया।

आज देशी रियासतों में दमन और अत्याचार का जो बोलबाला है, पहले कभी न था। कारण स्पष्ट है। कांग्रेस ने उनके साथ एक प्रकार का समझौता करके उन्हें स्वतंत्र छोड़ दिया है, वे अपने राज्य के एक-मात्र ईश्वर हैं; चाहे जिसे मारें चाहे जिसे जिलायें। बड़ी बड़ी रियासतों को छोड़ भी दीजिए तो ५० हजार की रियासत भी स्वतंत्र राज्य तथा राज्य के हाथ सार्व-भौम सत्ता के अधिकार का अभिनय करती है। इसके विरुद्ध जनतंत्र शासन की चर्चा चलानेवालों की जो अमानुषिक दुर्गति की जाती है, उसके विषय में कुछ कहना व्यर्थ है। जो भी हो, रियासतों की अंधाधुन्धी केवल इसलिए है कि केबिनेट मिशन ने रियासती जनता की अवहेलना करके केवल नरेशों के अधिकारों को स्वीकार किया है। उसने रियासती जनता के प्रतिनिधियों की परवाह नहीं की, न उनको बुलाया, न उनसे राय ली और न उसके हितों का ध्यान रखा। नरेशों को बुलाया और उन्होंने जो कहा वही किया। इस प्रकार इंग्लैंड की मजदूर सरकार ने रियासती जनता के साथ घोर अन्याय किया और अपने लोकतांत्रिक तथा समाजवादी सिद्धान्तों के साथ गद्दारी की। जो भी किया, वे गये।

स्वतंत्र भारत की शासन-सत्ता को सँभालनेवाले जन-सेवकों (कांग्रेस) को यह उचित था कि सर्वोच्च सत्ता के स्वामी अँगरेजों को निकालने पर रियासतों में भी जनमत के अनुसार जनतंत्रात्मक शासन-व्यवस्था स्थापित करने के लिए नरेशों को विवश करते। यह उससे नहीं हुआ और उसने [illegible] बँटवारा किया, जैसे रियासतें कोई लूट का धन हों?

इसमें एक राजनीतिक पेंच है। कैबिनेट मिशन अपनी सर्वोच्च सत्ता कांग्रेस के हाथों में सौंपने को तैयार नहीं था और स्वतंत्रता के अदम्य उत्साहक, स्वतंत्रता न सही तो उसकी पूँछ ही लेने को तैयार थे। फलतः देश बँटा और रियासती जनता और अधिक गुलाम हो गई। बस, भारत स्वतंत्र हो गया। अर्थात् देशी राजे स्वतंत्र हो गये। और स्वतंत्रता-दिवस की खुशियाली रियासती जनता ने रक्त की फुलझड़ियों से मनाई है। उसी दिन मेरे सामने रियासती जनता होने का अभिशाप चरमतम रूप में सामने आया।

कोठी राज्य, मध्यभारत की रूलिंग रियासतों में प्रायः सबसे छोटी है। करीब एक लाख की आय और २५००० जनता की आबादी है, किन्तु इंडियन इंडिपेन्डेन्ट एक्ट के अनुसार वह भी परम स्वतंत्र राज्य है और उसके नरेश व्यक्ति सत्ता के चरम हिमायती हैं।

अँगरेजी शासन-काल में इस रियासत को शासन-व्यवस्था की दुर्गति और अधि-कारियों के अत्याचार के कारण पोलिटि-कल एजेन्ट ने अपने अधिकार में ले लिया था। राजा हसाब को एक निश्चित रकम मिलने लगी, दीवान को अलग कर दिया गया और सारी शासन-सत्ता एक एडमि-निस्ट्रेटर को सौंप दी गई। जनता उन दिनों अपने नरेश के प्रति बराबर सहानुभूति दिखलाती हुई उनके राज्य वापसी की कामना करती रही। राज्य वापस मिला है और राजा साहब ने उन्हीं दीवान को वापस बुलाकर ज्यों का त्यों शासन करना प्रारम्भ किया। अबोध जनता त्राहि त्राहि कर पीड़ित है, वह दुखी है, वह भूखी है, वह प्यासी है, वह अपमानित है—वह सर्वांशतः शोषित है; वह आह भरेगी किन्तु सच तो यह है कि जनता इसलिए भी उद्विग्न है कि शासन की इस आतंकवादी दुर्व्यवस्थाओं के कारण राज्य फिर से न कहीं जब्त कर लिया जाय और हमारा सम्भ्रान्त राज-परिवार कष्ट में पड़ जाय, क्योंकि इन दीवानों की बात क्या? निकाल दिया निकल गये बुला लिया आ गये।

यहाँ यह स्मरण दिलाना अनुचित न होगा कि कोठी राज्य प्रजामंडल की स्थापना तभी हो चुकी थी जब राज्य एडमिनिस्ट्रेटर के अधिकार में थी। उसका यह प्रस्ताव भी पास हो चुका था कि कोठी राज्य की शासन-सत्ता से हमें १६ जनवरी सन् १९४७ के भीतर उत्तरदायित्वपूर्ण शासन प्राप्त कर लेना है। इस प्रकार प्रजा और शासन में द्वन्द्वयुद्ध की तैयारियाँ होती रही थीं कि भारत स्वतंत्र हो गया। मानवता का चरम सौभाग्य स्वतंत्रता पाकर प्रत्येक भारतीय विभोर हो उठा।

कोठी राज्य की जनता को दूनी प्रसन्नता, क्योंकि उसने सोचा उसे स्वतंत्रता मिलेगी और उसके राजा को राज्य। कोई भी जनता उस राजा के प्रति, सहानु-भूति रखकर भी कोई भलाई नहीं कर सकती जिसकी शासन-प्रणाली का परि-णाम राज्य की जब्ती हो। कांग्रेस नरेशों से और चाहे जो समझौता किये हो पर समय और सुविधा देखकर एक एडमिनि-स्ट्रेटर भेजने में उससे भूल होना सम्भव नहीं, क्योंकि समस्त भारत की समस्त जनता की पूर्ण स्वतंत्रता-प्राप्त ही कांग्रेस का अन्तिम लक्ष्य है। आगे जो भी हो इस समय कोठी राज्य की स्थिति अत्यन्त शोचनीय है

१५ अगस्त को भी राज्य की किसी इमारत में झंडा नहीं लगाने दिया गया। प्रजा को उचित अधिकार देने का वचन देकर भी कुछ नहीं दिया गया। ये सब राजा साहब के कर्मचारियों की करतूतें हैं। कोठी राज्य की जनता इतनी पढ़ी-लिखी और प्रगतिशील है कि शासन में राजा साहब का सहयोग कर सके, किन्तु प्रमुख कर्मचारी प्रायः बाहरी हैं। प्रजा-मंडल की इस छोटी-सी माँग पर भी राजा साहब ने ध्यान नहीं दिया कि शासन में बाहरी व्यक्तियों को न घुसेड़ा जाय। परिणामस्वरूप समस्त जनता असंतुष्ट और क्षुब्ध है। लगान-सम्बन्धी समझौते को भी शासन ने नहीं माना। आशय यह कि कोठी राज्य का शासन बोतल की गर्मी और संगीन की नोक पर चल रहा है।

अस्तु, कोठी राज्य प्रजामंडल का वार्षिक अधिवेशन दिसम्बर के तीसरे सप्ताह में हो रहा है जिसके बाद राज्य में सत्याग्रह का प्रारम्भ होगा, क्योंकि जनता १६ जनवरी के भीतर भीतर उत्तरदायित्व शासन प्राप्त कर लेने के अपने व्रत पर निश्चित है। राज्य की ओर से दमन की पूरी तैयारी हो रही है। बाहरी पद-लोलुपों ने आन्दोलन को दबाने के लिए बाहर से आदमियों की सहायता पहुँचाने को राजा साहब को अश्वासन दे रखा है और राजा के जयचन्दों तथा विभीषणों को भी भड़का रखा है।

मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि कोठी राज्य की जनता इन धमकियों और बँदरघुड़कियों से डरनेवाली नहीं, उसे साहसी शान्ति और त्याग के साथ अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होना है। चाहे आकाश फट जाय, पृथ्वी धँस जाय पर जनता स्वतंत्र होकर ही रहेगी, यह घोरतम सत्य है।

कोठी राज्य की जनता के लिए यह आवश्यक है कि वह सुगठित सुव्यवस्थित होकर स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए कटिबद्ध हो जाय फिर उसकी सफलता में सन्देह नहीं।

कोठी राज्य, प्रजा मंडल —गंगाप्रसाद पाण्डेय प्रचार-मंत्री

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्तरोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए० लाहौरवाले फतेहपुरी (D. A.) देहली से मशवरा (सम्मति) मुफ्त लेकर अपना जीवन सुधार लें।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निश्चेलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।–) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक और पैकिंग खच अलग।

रू५ विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

सारिडन

सर्व्वप्रकारका दर्द दूर करता है

आदमी

आदमी की

रुचि

बदलती

लेकिन

जब

हवाई

सरविस की

बात

आती है तो

एयर फ्रांस एयर-इंडिया अंबिका एयरलाइन बी. ओ. ए. सी., इंडियन नेशनल एयरवेज के. एल. एम. और ओरियन्ट एयरवेज़ भारत और पाकिस्तान में बर्मा-शेल हवाई सर्विस का प्रयोग करते हैं

बर्मा-शेल हवाई सरविस

"एयरलाइनों के भरोसे की सर्विस"

SHELL

बर्मा-शेल आइल स्टोरेज ब्रैंड डिस्ट्रीब्यूटिंग कम्पनी आफ़ इंडिया लि० (इंगलिस्तान मे इंकार्पोरेट की गई) एजंटस्

6 MIN.

सिक्कों और काग़ज़ के नोटों से यह सुविधा थी कि वे आसानी से प्रत्येक स्थान पर ले जाये जा सकते थे। परन्तु ज्यों ज्यों यातायात के साधनों और व्यापार की उन्नति हुई अत्यन्त दूर के स्थानों से भी रुपये का लेन देन आवश्यक हो गया। प्रत्येक बार किसी हरकारे के हाथ रुपया भेजना सम्भव न था। इस के लिये किसी दूसरे सरल उपाय की आवश्यकता हुई। इस समस्या को सुलझाने के लिये भारतीय महाजनों ने 'बिल आफ़ एक्सचेंज' अर्थात् हुन्डियों का तरीक़ा निकाला। यह हुँडी किसी विशेष व्यापारी के नाम एक चिट्ठी के रूप में होती है कि लिखित व्यक्ति को निश्चित रुपया दे दिया जावे। यही आगे चल कर वर्तमान युग के चैक ड्राफ़्ट बन गये। ज़रा सोचिये प्राचीन काल के अदल-बदल के व्यापार की अपेक्षा यह कितनी उन्नति है। आज कल आप भारतवर्ष या संसार के किसी भी स्थान में माल ख़रीद सकते हैं और किसी प्रसिद्ध बैंक के नाम चैक या ड्राफ़्ट भेज सकते हैं।

बचत भी सुरक्षित और लाभदायक बन गई है। आप सिक्योरिटी ख़रीद सकते हैं या किसी बैंक में रुपया जमा कर सकते हैं। परन्तु एक योग्य व्यापारी समझता है कि आज कल नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स सब से अधिक लाभदायक होने के साथ साथ पूर्णतया सुरक्षित हैं। ये अवधि पूरी होने पर ५०% बढ़ जाते हैं—प्रत्येक १०) बारह वर्ष में १५) बन जाते हैं। इस व्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। अब आप ५) से १५०००) की मालियत के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं। थोड़ी बचत वाले ।), ।।), १) के नेशनल सेविंग्ज स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं। अब आप सर्टिफ़िकेट्स १८ मास के उपरान्त भुना सकते हैं (५ रु० के सर्टिफ़िकेट्स १२ मास के उपरान्त)।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

ये डाकख़ानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं। AC 215

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घड़ाघड़ बिक रहा है। शीघ्रता कीजिए

वार्षिक बालसखा १९४७

इसकी छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएँ और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों क इस अंक का मूल्य ३)। मासिक ग्राहकों को रियायती मूल्य २॥) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

विज्ञापन

यह सूचित किया जाता है कि शिक्षा-प्रसार-विभाग निम्नलिखित पुरस्कार उन पुरुषों को देगा जो संयुक्तप्रान्त में निरक्षरता-निवारण-सम्बन्धी कार्यों पर प्रकाश डालनेवाले सुन्दर पोस्टर बनाकर भेजेंगे।

प्रथम पुरस्कार १२५) तृतीय पुरस्कार ७५)
द्वितीय पुरस्कार १००) चतुर्थ पुरस्कार ७५)

ये पोस्टर तीन रंगों में तैयार किये जायँ और रजिस्ट्री द्वारा शिक्षा-प्रसार-अध्यक्ष के पास भेजना चाहिए।

इनका आकार २०" × ३०" का होना चाहिए। भेजने की तिथि २० दिसम्बर, १९४७ निधारित है।

शिक्षा-प्रसार-अध्यक्ष, संयुक्त-प्रदेश, प्रयाग

खराब खून को साफ करता है
डा. वामन गोपाल
आयोडाइज्ड सारसापरिला
हर जगह मिलता है

इलाहाबाद के एजन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एम०धोलकिया एन्ड ब्रदर्स

घर की स्त्रियाँ

निकोटा

पारिवारिक टूथ पेस्ट का व्यवहार करता है!

क्योंकि निकोटा दाँतों को सफेद और सुन्दर रखता है जिससे स्त्रियाँ सुखी दिखती हैं। यह सबसे अधिक 'किफायती' और समस्त परिवार के लिये प्रथम श्रेणी का टूथ पेस्ट है।

लगभग सभी दवाई एक रुपये में कम में मिलता है।

★ स्वा दि ष्ट
★ स्फू र्ति प्र द
★ कीटाणु नाशक

एक सुन्दर लाल बक्स में सभी वैरीएन्ट व 'पारिवारिक' के नाम मिलता है।

पारिवारिक टूथ पेस्ट

Copyright

* यह रूपवती है! यह पॉंड्स का प्रयोग करती है!

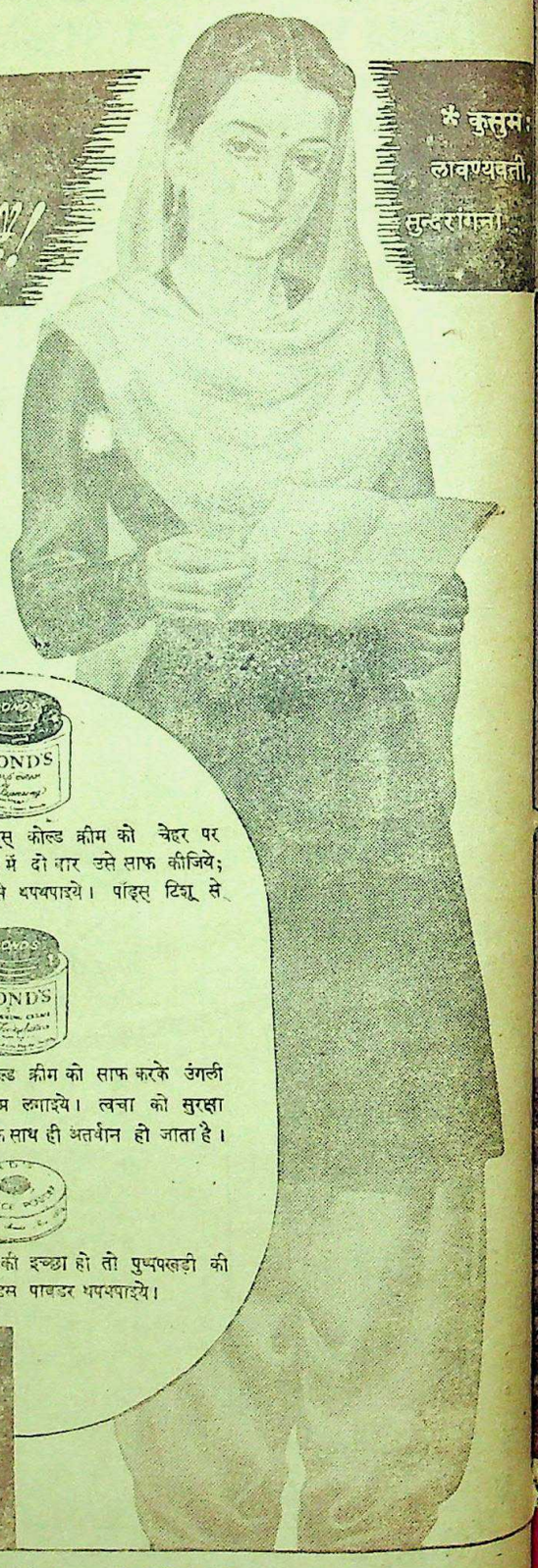

* कुसुम: लावण्यवती, सुन्दरांगना

आप अपनी त्वचा के लिये कौनसे तेल पसंद करती हैं? वास्तव में प्राकृतिक तेल ही न! चेहरे को उज्ज्वल, स्वच्छ और ताजा रखने के लिये सुगंधित, कोमल और सेतीन-से मुलायम पांड्स कोल्ड क्रीम और पॉंड्स वेनिशिंग क्रीम की परीक्षा कीजिये। सर्वत्र रूपवती स्त्रियाँ पॉंड्स का ही प्रयोग करती हैं।

पॉंड्स दिनचर्या

पॉंड्स कोल्ड क्रीम: पॉंड्स कोल्ड क्रीम को चेहर पर कोमलता से रमाते हुये दिन में दो बार उसे साफ कीजिये; उंगली के कोमल पोरों से उसे थपथपाइये। पांड्स टिशू से स्वच्छ कर लीजिये

पॉंड्स वेनिशिंग क्रीम: कोल्ड क्रीम को साफ करके उंगली के पोरों से पॉंड्स वेनिशिंग क्रीम लगाइये। त्वचा को सुरक्षा देता हुआ वह आपके प्रयोग के साथ ही अंतर्धान हो जाता है।

पॉंड्स पाउडर: यदि आप की इच्छा हो तो पुष्पपखड़ी की भाँति कोमलता के लिये पॉंड्स पाउडर थपथपाइये।

पॉंड्स क्रीम्स

व्यापार-सम्बंधी पूछताछ के लिये लिखिये:
एच. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लिमि० बम्बई - कलकत्ता - कराची - मद्रास

Copyright Pond's Extract Co.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

विवार, ७ दिसम्बर, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 7th December, 19

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

ईरान योरोप का एक ज्वालामुखी
हैदराबाद की आज की परिस्थिति

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

संयुक्त-प्रांत की राजभाषा हिन्दी
सेवाग्राम का राष्ट्रीय महत्त्व क्यों ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एलाइड लाउडस्पीकर पर इतीमनान रखिये

ब्याह मेले जलसे सरकस तथा हर मौके पर इस्तेमाल कीजिये

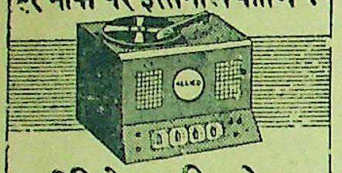

खरीदिये या किराये पर लीजिये

एलाइड एलेक्ट्रिक एण्ड रेडियो कारपोरेशन

हज़रतगंज कैनिंग रोड लखनऊ एलाहाबाद

सर्दी और खाँसी में

याद रखिये सिरोलीन "रोच"

सारे संसारमे व्यवहार होता है

अद्भुत कहानियाँ

दो रंगों में छपी इस सचित्र पुस्तक में एक से एक बढ़िया कहानियाँ हैं। इसमें इतिहास, स्वामिभक्ति और भाग्य के खेल का वर्णन पढ़ते ही बनता है। मूल्य ॥=)

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

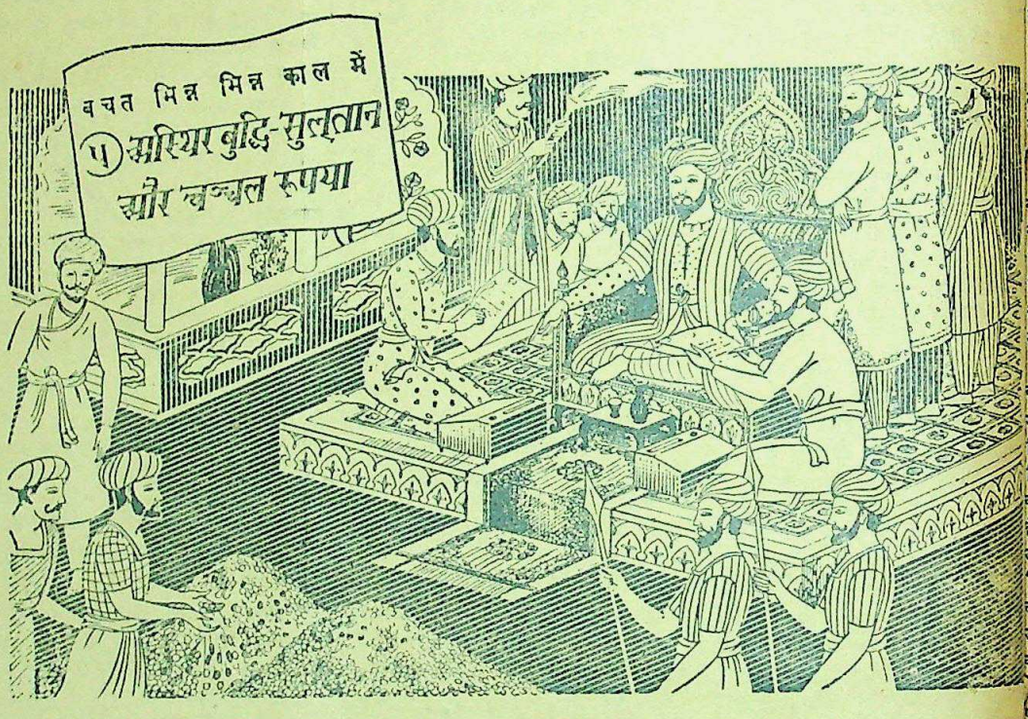

सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक (१३२५ से १३५१) पहला बादशाह था जिसने भारतवर्ष में कागज़ के नोट प्रचलित करने का विचार किया। इस के अमितव्ययी राज्य प्रबन्ध ने राजकोष को ख़ाली कर दिया। इन कठिनाइयों से छुटकारा पाने का साधन सोचते सोचते उसे चीन देश के कागज़ के नोटों का ध्यान आया। उस ने सोचा "यदि चीन का सम्राट अपने देश में कागज़ के नोट सफलता पूर्वक चला सकता है तो क्यों न मैं भी अपनी राजकीय शक्ति के आधार पर चांदी की मुद्रा की बजाय तांबे की मुद्रा चलाऊं?" परन्तु भारतवर्ष उस समय सांकेतिक सिक्के के लिये तैयार न था।

उस समय बचत चांदी या सोने की ईंटों या मुद्राओं को संचय करके ही की जाती थी। और अब सुल्तान के आदेश से वे केवल तांबे के साथ ही बदली जा सकती थीं। इस कारण प्रजा ने इन नये सिक्कों का दृढ़ता पूर्वक विरोध किया। और तांबे के यह सिक्के प्रचलित न हो सके। इस कारण इन व्यर्थ तांबे के सिक्कों के ढेर के ढेर जिन का मूल्य कंकड़ समान था तुग़लकाबाद में एकत्रित होने आरम्भ हो गये।

आज कल रुपये के मूल्य की अस्थिरता का तनिक भी भय नहीं। अब हर कोई कागज़ के नोट शीघ्र ही स्वीकार कर लेता है क्योंकि भारतवर्ष की सम्पत्ति इन का आधार है। यह भी आवश्यक नहीं की सोना चांदी के संचय करने के रूप में ही बचत की जावे। आप अपनी बचत सुरक्षित मद में लगा कर अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की मद में लगाया हुआ धन पूर्णतया सुरक्षित है और अवधि पूरी होने पर यह ५०% बढ़ जाता है अर्थात् प्रत्येक १०) बारह वर्ष में १५) बन जाते हैं। इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। अब आप ५) से १५,०००) तक इस मद में लगा सकते हैं। (थोड़ी बचत वाले ।), ॥), और १) के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं)। ये सर्टिफ़िकेट्स अब १८ मास के उपरान्त भुनाये जा सकते हैं (५ रु० के सर्टिफ़िकेट्स १२ मास के उपरान्त)।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

ये डाकख़ाना, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं। AC21

घर की स्त्रियाँ

निकोटा

पारिवारिक टूथ पेस्ट का व्यवहार करता है!

क्योंकि निकोटा दांतों को सफेद और सुन्दर रखता है जिससे स्त्रियां युवा दिखती हैं। यह सबसे अधिक 'किफायती' और समस्त परिवार के लिए प्रथम श्रेणी का टूथ पेस्ट है।

लगभग सभी जगह एक रुपये से कम में मिलता है।

★ स्वादिष्ट
★ स्फूर्तिप्रद
★ कीटाणुनाशक

एक सुंदर लाल बक्स में सभी केमिस्ट व व्यापारियों के यहाँ मिलता है।

पारिवारिक टूथ पेस्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

वर्ष १०, संख्या १४] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, ७ दिसम्बर, १९४७

भारतीय पार्लियामेंट में वार्षिक बजट
रेल-भाड़े में वृद्धि और कपड़े पर निर्यात चुंगी बढ़ेगी

भारतीय पार्लियामेंट में भारत-सरकार के अर्थमंत्री माननीय श्री आ०के० षण्मुखम् चेट्टी ने स्वतन्त्र और स्वाधीन भारत का सर्वप्रथम बजट पेश करते हुए कहा कि इस बजट का काल केवल साढ़े सात मास है और इसका प्रारम्भ गत १५ अगस्त १९४७ को हुआ और ३१ मार्च १९४८ को समाप्त हो जायगा। प्रस्तावित बजट के अनुमानानुसार आमदनी १७१·१५ करोड़ रुपया और व्यय १९७·३९ करोड़ रुपया और फलतः घाटा २६·२४ करोड़ रुपयों का होता है।

आमदनी के साधन इस प्रकार हैं—

चुंगी, केन्द्रीय आवकारी, कारपोरेशन टैक्स, इनकमटैक्स, नमक, अफीम, ब्याज, नागरिक शासन टकसाल, नागरिक-कार्य अन्य साधन, डाक तार, और रेलवे।

व्यय की मदें इस प्रकार हैं आमदनी का मार्ग (वसूली करने का खर्च), आबपाशी, कर्ज, नागरिक व्यवस्था, टकसाल, नागरिक कार्य, पेन्शन, प्रान्तीय, सहायता, विशेष खर्च, रक्षा (सेना आदि) और अन्य खर्च (शरणार्थी विदेशों से आनेवाला अनाज आदि)।

देश की साधारण आर्थिक स्थिति का अवलोकन करते हुए माननीय अर्थ-मंत्री ने कहा "यद्यपि किसी प्रकार की ढिलाई डालने की गुंजाइश नहीं है, फिर भी किसी प्रकार निराशापूर्ण दृष्टि-कोण को भी स्थान नहीं दिया जा सकता है।" आमदनी की स्थिति को मजबूत और आशाजनक बतलाते हुए आपने कहा "हमें अपने साधनों व सीमाओं से परे या दीवालियापन की ओर नहीं जाना है। अर्थमंत्री ने (रक्षा), शरणार्थी और अनाज की क्षतिपूर्ति सम्बन्धी विषयों का उल्लेख करते हुए कहा कि एक बार साधारण परिस्थिति स्थापित हो जाय और हम रक्षा-सम्बन्धी व्यय को शान्तिकालीन स्थिति में ले आवें और विदेशों से आने-वाले अनाज पर भरोसा करना छोड़ दें तब हम अपने बजट का सही और उचित संतुलन कर सकेंगे। आपने घोषणा की कि अगले वर्ष ही साधारण स्थिति स्थापित होने का विचार आवश्यकता से अधिक आशावाद होगा, लेकिन मेरा विचार है कि यदि जुटकर हर प्रकार की कोशिश की जाय तो आगामी १९४९-५० वर्ष में हम ऐसी स्थिति कायम करने में अवश्य सफल होंगे।

आमदनी	व्यय
	(लाख रुपयों में)
चुंगी	५,०५०
केन्द्रीय आवकारी-कर	१६५
कारपोरेशन-कर	२,२०८
आमदनी-कर	४,२७१
नमक	७,५२९
अफीम	५०
ब्याज	८९
सिविल शासन-व्यवस्था	६६
करेन्सी और टकसाल	२२६
सिविल-वर्क्स	१४१
अन्य उपायों से आमदनी	१५
डाक व तार से प्राप्त	२७२
रेलवे से प्राप्त	२०३
घाटा—दो प्रान्तों को मिलनेवाली आमदनी कर से आय—	३,००५
कुल आमदनी	१७,२८०

व्यय	
	(लाख रुपयों में)
एकत्रित करने का खर्च	५३३
सिंचाई	७
कर्जा	२,०५२
सिविल शासन-व्यवस्था	२,०२४
करेंसी और टकसाल	१२०
सिविल-वर्क्स	६२१
पेंशन	१९८
विविध व्यय	
शरणार्थियों के लिए	२,२००
बाहर से मँगाये गये अनाज में क्षतिपूर्ति के लिए	२,२५२
अन्य खर्चे	२३०
प्रान्तों को	४५
खास खर्चे	१९२
रक्षा-सर्विसों के लिए (कुल)	९,२७४
कुल व्यय	१९,७३९
कुल घाटा	२,४५९

अपने प्रस्तावित-बजट में २६·२४ करोड़ के घाटे का उल्लेख करते हुए कहा कि विदेशों को भेजे जानेवाले सूती कपड़े और सूत पर लगाई गई वृद्धि-चुंगी से, यह घाटा केवल २४·५९ करोड़ रह जायगा।

आगे चलकर श्री चेट्टी ने युद्ध-प्रसार और विदेशों पर निर्भर रहने के खतरों से बचने के लिए उत्पादन में अधिकाधिक वृद्धि करने के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

अनेक टैक्सों की आलोचना करते हुए कुछ लोगों ने कहा है कि इनके कारण किसी उद्योग में पूंजी लगाने की प्रेरणा का अभाव हो गया है इनके उत्तर में अर्थ-मंत्री ने विश्वास दिलाया कि वार्षिक बजट बनाने से पूर्व ऐसी स्थिति पर पूर्ण विचार किया जायगा।

* * *

आपने कहा कि आगे चलकर अन्त में भारत का आर्थिक ढांचा कुछ भी हो। अभी काफी दिनों तक उद्योगों में व्यक्ति-गत पूंजी लगाये जाने की काफी आव-श्यकता और गुंजाइश है।

आपने अपना विश्वास प्रकट किया कि "हमारे देश की आर्थिक प्रणाली एक ऐसी मिली-जुली प्रणाली होनी चाहिए जिसमें कि व्यक्तिगत और सरकारी दोनों प्रकार के उद्योग-धन्धे फल-फूल सकें।"

* * *

देश-विभाजन के फलस्वरूप अनेक नई समस्याओं के उत्पन्न हो जाने का जिक्र करते हुए आपने कहा कि यद्यपि इस थोड़े से समय में विशेषज्ञ समितियों ने काफी मामले सुलझा दिये हैं फिर भी अभी कुछ बाकी हैं और जिनका मामला एक पंचायत द्वारा हल होगा।

दोनों उपनिवेशों के बीच जब तक पूर्ण समझौता नहीं हो जाता है तब तक तो स्थिति ज्यों की त्यों रहेगी, दोनों के बीच स्वतन्त्रतापूर्वक बिना किसी रोक-टोक या आयात-निर्यात प्रतिबन्ध के व्यापार चलाने का इरादा है। आगामी ३० सित-म्बर १९४८ तक दोनों की मुद्रा-प्रणाली रिजर्व बैंक द्वारा संचालित होगी।

* * *

अर्थमंत्री ने गत मार्च से होनेवाली आर्थिक गड़बड़ी का जिक्र किया और कहा कि पंजाब और सीमाप्रान्त के दंगों और आबादी-परिवर्तन आदि के कारण हमारी आर्थिक व्यवस्था पर बड़ा जबर्दस्त प्रभाव पड़ा है। हमारी खाद्य-स्थिति को भी बड़ा धक्का पहुँचा है।

* * *

आमदनी-सम्बन्धी अनुमान पेश करते हुए आपने कहा कि अभी इनमें घट-बढ़ हो सकती है। आपने यह भी कहा कि हो सकता है कि घाटे की रकम अभी और बढ़ जाय, क्योंकि पूर्वी पंजाब और पश्चिमी बंगाल के नये प्रान्तों को भी सहायता देनी होगी।

* * *

आमदनी बढ़ाने के सम्बन्ध में आपने कहा कि विदेशों को भेजे जानेवाले सूती कपड़े और सूत पर चुंगी बढ़ा दी गई है। उसके अनुसार अब कपड़े पर चार आना प्रतिवर्ग गज और सूत पर छः आना प्रतिपौंड हो गई है।

* * *

ब्रिटेन पर भारतीय कर्ज और पौंड-पावना के सम्बन्ध में आपने कहा कि उद्योग और कृषि बढ़ाने के लिए मशीनें आदि खरीदने में ही हम उसका उपयोग करेंगे आपने बतलाया यद्यपि इस कर्ज की रकम कम हो रही है फिर भी गत जुलाई से नवम्बर तक केवल २१ करोड़ का ही अन्तर पड़ा है। ब्रिटिश सरकार ने, यद्यपि कई देशों से अपने समझौते तोड़ दिये लेकिन हमारा समझौता ज्यों का त्यों है।

* * *

अन्त में आपने कहा कि कानून का आदर यद्यपि राजनीतिक शिक्षा और परम्परा का विषय है और गुलामी व स्वाधीनता के बीच के संक्रान्ति-काल में इसके होने के लिए एक नए वातावरण की आवश्यकता होती है, फिर भी यदि राज्य का आधार मजबूत है तो हमारी सफलता अनिवार्य है।

कांग्रेस के अध्यक्ष राजेन्द्र बाबू की जयन्ती सारे देश में धूमधाम से मनाई गई।

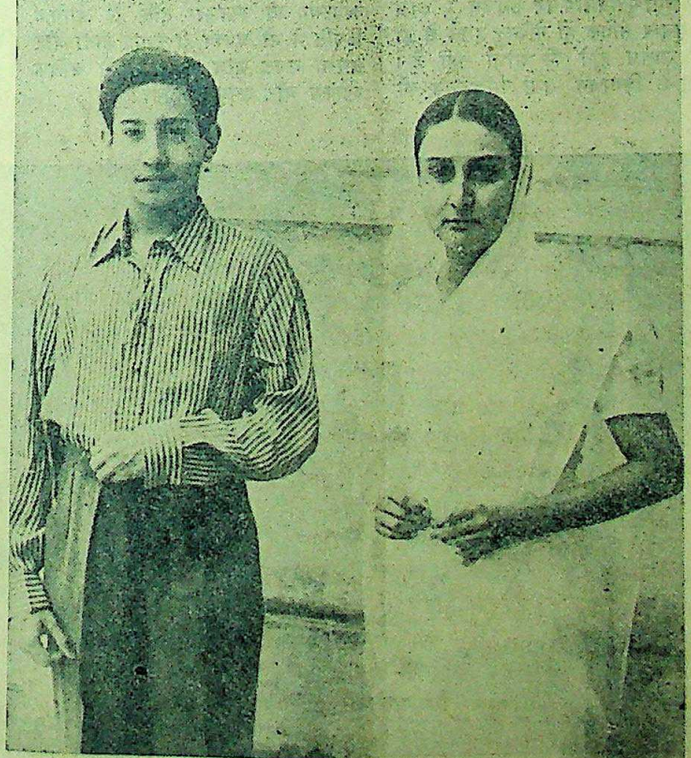

त्रिपुरा राज्य के १४ वर्ष के नाबालिग महाराजा मानिक्य कीर्ति वीर विक्रम किशोर देव बरमन बहादुर अपनी माता महारानी कंचनप्रभा देवी के साथ पिछले दिनों दिल्ली में त्रिपुरा राज्य की सुरक्षा के लिये दिल्ली में सरदार वल्लभ भाई पटेल से भेंट की थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

भारत-सरकार का बजट

भारतीय पार्लियामेंट में अर्थमंत्री श्री षण्मुखम् चेट्टी ने साढ़े सात महीने के लिए जो बजट प्रस्तुत किया है, वह विचारणीय है। स्वतन्त्र भारत का यह प्रथम बजट है। यद्यपि भारत-सरकार चाहती तो बिना व्यवस्थापिका सभा की स्वीकृति के भी काम चलाने के लिए अस्थायी तौर से बजट बनाकर काम चला सकती थी क्योंकि ऐसा करने का उसे विशेष अधिकार प्राप्त है किन्तु जो जनता की सरकार है वह जनता के प्रतिनिधियों की बिना सम्मति से कैसे आगे बढ़ सकती थी? इसीलिए अर्थमंत्री को व्यवस्थापिका सभा से बजट की स्वीकृति लेनी पड़ी।

बजट के अनुसार कुल १७१ करोड़ १५ लाख की आय होने का अनुमान किया गया है। व्यय का अनुमान १९७ करोड़ ३९ लाख का है। इस प्रकार २६ करोड़ २४ लाख रुपये के घाटे का अनुमान लगाया गया है। घाटे की पूर्ति के लिए कपास, कपड़ा और सूत के निर्यात पर कर लगाया गया है। इसकी आमदनी के बावजूद भी घाटे का अनुमान २४ करोड़ ५९ लाख रुपये का कूता गया है। २२ करोड़ का व्यय तो केवल शरणार्थियों के मद में तत्काल अनुमान किया गया है। भारत-सरकार ने विदेशों से अनाज मँगाने का भी प्रबन्ध किया है। किन्तु जो अनाज बाहर से आयेगा उसे भारत में कन्ट्रोल-भाव पर बेचने में भारत-सरकार को २२ करोड़ ५२ लाख रुपया सहायता के तौर पर देना पड़ेगा। अर्थात् बाहर का अनाज जिस भाव पर सरकार खरीदेगी उस भाव से उतर कर वह कन्ट्रोल-भाव पर बेचेगी और भोजन की स्थिति को सँभालेगी। इसके सिवा अर्थमंत्री ने ९२ करोड़ ७४ लाख रुपया रक्षा-विभाग पर खर्च करने का अनुमान लगाया है।

इस प्रकार आय और व्यय के अनुसार बजट दो दृष्टियों से विचारणीय है। भारत के स्वतन्त्र हो जाने पर राष्ट्र को जिस विषम स्थिति से गुजरना पड़ रहा है उसमें घाटे का होना अनिवार्य है। विशेष कर अनाज सम्बन्धी-कठिनाई को सँभालने के लिए भारत-सरकार विदेशों से अन्न मँगा कर कन्ट्रोल-भाव पर उसे बेचने का जो प्रबन्ध कर रही है, वास्तव में यह बड़ा ही दुखद है। भारत ऐसे कृषि-प्रधान देश को विदेशों से अन्न मँगा कर काम चलाना पड़े, यह वास्तव में बड़ा क्लेशप्रद है। इसीलिए अर्थमंत्री ने अपील की है कि राष्ट्र की उत्पादन शक्ति की वृद्ध की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए, साथ ही अन्न उपजाओ आन्दोलन को क्रियात्मक स्वरूप मिलना चाहिए। सच तो यह है कि भारत में लाखों बीघा भूमि ऊसर पड़ी हुई है, यदि सरकार ध्यान दे और सुविधाएँ प्रदान की जायें तो अन्न की उपज अधिक से अधिक हो सकती है। राष्ट्र को आज अन्न की पूर्ति के लिए विदेशों का मुंह ताकना पड़ता है साथ ही अधिक से अधिक रुपया भी व्यय करना पड़ता है। यदि अन्न उपजाने की ओर पूर्ण सफलता प्राप्त होने लगे तो राष्ट्र के पूर्ण रूप से स्वावलम्बी होने में तनिक भी सन्देह नहीं किन्तु यह सफलता सरकार और जनता दोनों के सहयोग से ही संभव हो सकता है।

दूसरा प्रश्न है रक्षा-सम्बन्धी विभाग के खर्च का। एक समय था जब कि हमारी यह मांग होती थी कि सरकार को रक्षा-सम्बन्धी खर्च में कमी करनी चाहिए। किन्तु अब राष्ट्रीय सरकार और सेना भी अपनी है। सेना का राष्ट्रीयकरण भी तेजी से हो रहा है। इसलिए आवश्यक हैं कि हम अपनी सैनिक-शक्ति का पूर्ण रूप से संगठन करें और रक्षा-सम्बन्धी विभिन्न कार्यों को दृढ़ बनायें। देश की आज जो भयंकर स्थिति है, सम्भावना है उससे भी भयंकर स्थिति के आने की। उस स्थिति को सँभालने के लिए सैन्य-संगठन अत्यन्त आवश्यक है। अर्थमंत्री के कथनानुसार स्वतन्त्र भारत में सेना के राष्ट्रीयकरण तथा पुनर्निर्माण पर लगभग २ लाख ६० हजार सैनिक हों गेकिन्तु इतने से ही कार्य सम्पन्न होने की आशा नहीं है। भारत के विभाजन तथा पाकिस्तान की स्थापना से रक्षा-सम्बन्धी प्रश्न अधिक व्यापक हो गया है। इसलिए आवश्यक है सनिक शिक्षा जन-साधारण के लिए अनिवार्य कर दी जाये और लोगों को हथियार बांधने को कानूनी तौर पर संगठित किया जाय। क्योंकि सांघातिक अवसर के मुकाबले के लिए यही एक मार्ग है।

बजट पर दृष्टि डालने से और घाटे का अनुमान करके क्षोभ तो होता है किन्तु विचार करने पर सन्तोष होता है कि स्थिति को देखते हुए घाटा होना अनिवार्य है। यदि आज का असाधारण समय न होता तो घाटे की पूर्ति का कोई न कोई मार्ग सुलभ हो जाता। फिर भी परिस्थिति देखते हुए भारत-सरकार का बजट संतोषप्रद है। हम आशा करते हैं कि राष्ट्र की स्थिति सँभलते ही तथा शान्ति और व्यवस्था की स्थापना होते ही आर्थिक स्थिति में भी अवश्य ही सुधार होगा और अगला बजट आज के बजट से अधिक व्यापक और उपयुक्त होगा।

सुप्रसिद्ध एतिहासिक और विद्वान् डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी एम० ए० डी० एस-सी०, अध्यक्ष, इतिहास विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय, विश्वविद्याल निर्वाचन क्षेत्र से संयुक्तप्रांतीय असेम्बली की सदस्यता के लिये खड़े हुए हैं।

हैदराबाद मार्ग पर

हैदराबाद रियासत तथा भारत-सरकार के बीच जो संघर्ष छिड़ा था वह एक वर्ष के लिए स्थगित हो गया। यद्यपि निजाम-सरकार भारतीय संघ में अभी सम्मिलित नहीं हुई किन्तु विदेशी रक्षा-सम्बन्धी मामलों में उसने भारत-सरकार का नियंत्रण स्वीकार कर लिया। देश के राज्य विभाग के प्रमुख अधिकारी सरदार वल्लभभाई पटेल ने हैदराबाद को एक वर्ष का अवसर दिया है कि वह अपनी स्थिति समझ ले। हमें प्रसन्नता है कि हैदराबाद और भारत-सरकार के बीच उत्पन्न होनेवाला संघर्ष तत्काल समाप्त हो गया किन्तु सरकार को निजाम ऐसे महाजन से सतर्क रहना चाहिए। हम भारत के वाइसराय लार्ड लुई माउंटबेटेन को विशेष रूप से बधाई देते हैं जिनकी कूटनीति से भावी संघर्ष का फिलहाल अन्त हो गया।

* * *

मुस्लिम लीग समाप्त हो रही है

कहा जाता है कि करांची में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग कौंसिल की बैठक होनेवाली है। कौंसिल में यह निश्चय होगा कि लीग का अखिल भारतीय रूप समाप्त कर दिया जाये। सच ही नहीं उचित है और लीगी लीडरों ने ठीक ही सोचा है। कायदे आजम जिन्ना साहब पाकिस्तान के वाइसराय बन ही गये, भियां लियाकत-अली प्रधान मंत्री बन गये, दो-चार जो शेष थे, उनमें से कोई गवर्नर बना दिया गया कोई कुछ बन गया और कोई कुछ। इसलिए मुस्लिम लीग समाप्त न होगी तो क्या होगी? जब जिन्ना साहब ही लीगी नहीं रह गये तो बाकी कौन बचा? अब जिन्ना साहब या तो वाइसराय ही बनकर रहें या मुस्लिम लीग के सभापति ही। एक बात और है। जिन्ना साहब किसी को लीग का सभापति बनने भी न देंगे क्योंकि आखिर वह अपने रास्ते में कांटा क्यों बोवें? इसलिए यदि मुस्लिम लीग खतम कर दी जाती है तो समें बेजा बात क्या है? इस वक्त पाकिस्तान में लीग की जरूरत नहीं है और हिन्दुस्तान में लीगियों की गुंजाइश नहीं, फिर आखिर लीग रहें कहां? इसलिए बेहतर है उसे निर्वाणपद प्राप्त करा दिया जाये।

अहमदाबाद (गुजरात) की लेडी विद्यागौरी नीलकांत, यद्यपि वृद्धा हो चली हैं किन्तु सामाजिक कार्यों में प्रमुख भाग लेती हैं।

मिस्र (ईजिप्ट) के प्रमुख कानूनी सलाहकार जो पिछले सप्ताह भारत अपने नवीन पद को सुशोभित करने के लिए आ गये हैं। और काम में लग गये हैं।

मंगरोल (जूनागढ़ स्टेट) के शेख साहब अब्दुल खालिक ने भारतीय संघ से सम्बन्ध स्थापित कर लिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईरान का प्रसुप्त ज्वालामुखी

धर्म के तकाजे की अपेक्षा भूख के तकाजे अधिक प्रमाणित हो रहे हैं

लेखक, श्री रतनलाल जोशी, एम० ए०

ईरान का प्रस्तुत ज्वालामुखी कब भभक उठे, इसे कौन जाने ? क्योंकि ईरान के तैल-क्षेत्र पर साम्राज्यवादी राष्ट्रों के साथ ही सोवियट रूस की दृष्टि अड़ी हुई है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने ईरान के अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए यह प्रमाणित किया है कि यही क्षेत्र है जहाँ से पुनः महायुद्ध का श्रीगणेश हो सकता है। लेख सुन्दर और पठनीय है।

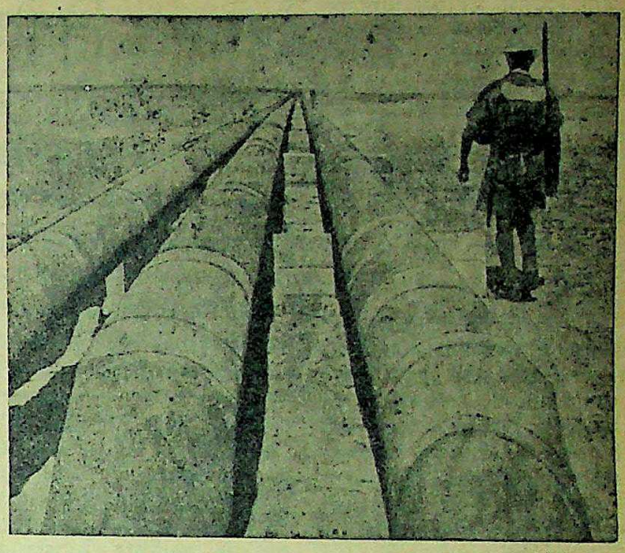

ईरान में पेट्रोल की टंकियाँ जहाँ चौबीस घंटे फौजों का पहरा रहता है।

ईरान की भाग्य-लिपि पिछले अर्द्ध-शतक से रक्त-रंजित अक्षरों में लिखी जा रही है। अराजकता और राजनीतिक षड्यन्त्रों का जो अशुभ क्रम शाह मुहम्मद अली के समय में शुरू हुआ था, वह आज तक अक्षुण्ण चला आ रहा है। अभी पिछले वर्ष तेहरान-सरकार और अजरबैजान की प्रान्तीय सरकार के बीच युद्ध छिड़ गया था। अजरबैजान ईरान के उत्तर-पश्चिमी कोण में अवस्थित स्वायत्त शासनप्राप्त प्रान्त है जिसका क्षेत्रफल ४०,००० वर्गमील और जनसंख्या १५ लाख के करीब है। विस्तार की दृष्टि से अजरबैजान बम्बई से थोड़ा ही बड़ा है। भूमि अधिकांश पर्वतीय एवं पथरीली है जिसमें खनिज सम्पत्ति की प्रचुरता है। अजरबैजान मध्य एशिया के उस कोण का भी स्पर्श करता है जहां राजनीतिक जागरण की प्रगति यूरोपीय देशों के साथ-साथ कदम मिलाती आ रही है।

इस ईरानी अजरबैजान के पास ही सोवियत् अजरबैजान है जो क्षेत्रफल और खनिज-सम्पत्ति में अपेक्षाकृत कहीं अधिक विस्तृत और भाग्यशाली है। पेट्रोल, तांबा, सीसा, गंधक, लोहा, कोयला, नमक और चांदी यहां की खानों से प्रचुर मात्रा में निकाली जाती है और रेलों एवं काफिलों द्वारा कृष्णसागर के बन्दरगाह बातुम में लाई जाती है। कपड़ों और दरियों के निर्माण के लिए भी सोवियत् अजरबैजान आज नित्य नवीन महत्त्व पकड़ता जा रहा है। संगमरमर के पत्थरों का भी यहां अच्छा व्यापार हो जाता है। इसी समृद्धि के कारण सोवियत अजरबैजान मास्को को काफी प्रिय हो गया है और बोलशेविक राज्य-तंत्र ने उसके सर्वांगीण जागरण और उत्थान में किसी बात की कमी नहीं रक्खी है। यहां के निवासियों को स्वावलंबी होने के लिए प्रत्येक प्रकार की सहायता दी गई है।

* * *

ईरानी अजरबैजान की अवस्था इसके पूर्णतया विपरीत है। वहां के निवासियों को जीवनयापन की ऐसी सुविधायें कभी नहीं मिली हैं। आजीविका-उपार्जन के लिए जो क्षेत्र उनके आसपास हैं वे अनन्त काल से दी गई प्रकृति की देन-मात्र ही हैं—उद्योग-धंधे का वहां अभी श्रीगणेश भी नहीं हो पाया है। यही कारण है कि यह भाग ईरान की विपत्तियों का सदैव उर्वर क्षेत्र रहा है। विपत्ति की सघन घटायें ईरानी अजरबैजान से ही उठती आई हैं। सन् १९१९ में डाक्टर सलामुल्ला जाविद ने ईरान के इस प्रान्त को सोवियत् यूनियन में सम्मिलित करने का आन्दोलन शुरू किया था जो १६ जुलाई सन् १९४६ तक चलता रहा। इसी तारीख को ईरान और अजरबैजान के बीच एक संधि हुई थी जिसके अनुसार डाक्टर जाविद ईरानी अजरबैजान के पहले गवर्नर-जनरल बनाये गये। किन्तु संघर्ष के कीटाणुओं का अन्त नहीं हुआ।

सिद्धान्ततया ईरान में वैधानिक राजतंत्र है। २६वर्षीय शाह मोहम्मद रजा उसका सूत्रधार है। उसका एक मंत्रिमंडल है और एक धारा-सभा है, जिसे 'मजलिस' कहा जाता है। किन्तु वास्तव में ईरान में ४०० परिवारों का अपना निजी शासन है। शाह तो उनके हाथों की कठपुतली-मात्र है। सारी भूमि पर उनका अधिकार है। धारा-सभा, मंत्रिमंडल और न्यायालय सब वे ही हैं। सारी अर्थ-व्यवस्था के साथ सैन्य-विभाग भी उन्हीं के हाथों में है। रूस की प्रेरणा पर संस्थापित तूदह-पार्टी के पूर्व निरीह जनता न तो वाक्-स्वातन्त्र्य की अपेक्षा अनुभव करती थी और न राजनीति के प्रति उसे कुछ रुचि ही थी। इस प्रकार ईरान की सामाजिक पार्श्वभूमि किसी राजनीतिक क्रान्ति के लिए अनुकूल नहीं थी। एक ओर ४०० धनिक परिवार हैं एवं दूसरी ओर सिर्फ चाय-रोटी पर जीवन-निर्वाह करनेवाली शेष निरीह-निरुपाय जनता। मजदूरों की संख्या भी केवल पचास हजार ही है। मध्यवर्ती वर्ग तो वहां हैं ही नहीं। हो भी नहीं सकता, क्योंकि व्यापार और शासन दोनों पूंजीपतियों के एकाधिकार बने हुए हैं।

* * *

ईरान के दक्षिण-पूर्व प्रकोष्ठ में जहां मेसोपोटामिया का दीर्घकाय मरुस्थल ईरान की शृंगमालाओं के चरणों का स्पर्श करता है, वहां सारे मध्यपूर्व का स्नायु-केन्द्र अवस्थित है। विशाल पाइप-प्रणालियों से १५० मील रेगिस्तान के आरपार प्रतिवर्ष १,४०,००,००० टन तेल संसार की सबसे बड़ी तेल शोधशाला से निर्यात किया जाता है। यह शोधशाला अबदान में स्थित है।

यह एँग्लो-ईरानियन तेल-कम्पनी है जो ईरानी सरकार से संधि और समझौते के कारण इस क्षेत्र के तेलस्रोतों पर एकाधिकार किये हुए है। मध्य-पूर्व की यह सबसे बड़ी तेल-कम्पनी है जो ईरान की आय का काफी बड़ा हिस्सा रायल्टी के रूप में प्रतिवर्ष देती है और आवश्यक विदेशी विनिमय की पूर्ति के लिए ग्रेट-ब्रिटेन का सबसे बड़ा अवलम्ब है।

एँग्लो-ईरानी तेल-कम्पनी की भौगोलिक स्थिति पश्चिमीय एवं पूर्वीय जनतंत्रों के सम्पर्क-बिन्दु पर है—एक ओर पाश्चात्य जनतंत्रीय पूंजीवाद सारे प्रशान्त पर अपनी लोलुप जिह्वा फैलाता है, दूसरी ओर तथाकथित पूर्वीय जनतंत्रवाद जो मध्ययुगीन सामंतवाद एवं पूंजीवाद के अशुभ सम्मेलन का परिणाम है, जनता की राजनीतिक प्रसुप्ति से अनुचित लाभ उठाने में लगा हुआ है। इन दोनों के बीच में द्वितीय महायुद्ध के साथ ही कम्यूनिज्म भी अपना हिस्सा बँटाने को कूद पड़ा है।

एँग्लो-ईरानियन तेल-कम्पनी से कुछ ही घंटों की हवाई यात्रा के बाद दक्षिण-पश्चिम में बेहरीन और सौदी अरेबिया में अमेरिका के तेल-क्षेत्र हैं, जो अभी तक फारस की खाड़ी में अवस्थित ब्रिटिश हितों की सुरक्षित छाया में निर्द्वन्द्व थे; किन्तु युद्धोत्तर ब्रिटेन के दौर्बल्य ने उन्हें स्वावलम्बी होने पर विवश कर दिया है। अमेरिका अकेला ही सारे मध्य-पूर्व के तेल के ४२ प्रतिशत का स्वामी बना हुआ बैठा है। ब्रिटेन के साथ तेल-पैक्ट ने इस प्रतिशत को और भी बढ़ा दिया है।

* * *

द्वितीय महायुद्ध के बाद ईरान का पारिवारिक कलह स्थानीय न रहकर अन्तर्राष्ट्रीय राजमंच का जटिल प्रश्न बन गया। युद्धकाल में जिस ईरान की भूमि पर 'तीन बड़ों' ने मानव-मुक्ति की योजना बनाई थी उसी भूमि पर युद्ध के बाद विश्व की महती शक्तियों के राजनीतिक षडयंत्र पोषित होने लगे। ईरान के कविमनीषी शेख सादी ने अपनी एक कविता में शिकारी के बाण से आहत शुतुर्मुर्ग के मुंह से कहलवाया है—

"ओह! यह बाण जो मेरे जीवन-स्रोत को शुष्क कर रहा है! अरे, यह तो हम लोगों के ही पंखों से बनाया गया है।"

ईरान के वर्तमान दुर्भाग्य के विषय में भी यही अनुभूति चरितार्थ होती है। उसकी सारी विपत्तियों का एकमात्र कारण वहां की तेल-सम्पत्ति है। आज का ईरान सैकड़ों विडम्बनाओं एवं दुरभि-संधियों का स्नायु-जाल है। उसकी राष्ट्रीय सार्वभौमता और स्वाधीनता भ्रान्ति ही नहीं, मर्मभेदी व्यंग्य का रूपान्तर है। ईरान का अविस्मरणीय शासक रजा पहलवी जो १९४१ में एँग्लो-रशियन फौजों द्वारा सिंहासन-च्युत कर दिया गया था, ईरान के इस भविष्य को भली भांति अनुभव करता था। सन् १९४० में उसने स्पष्ट कहा था—"कभी-कभी दुर्भाग्य-ग्रस्त ईरा-

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

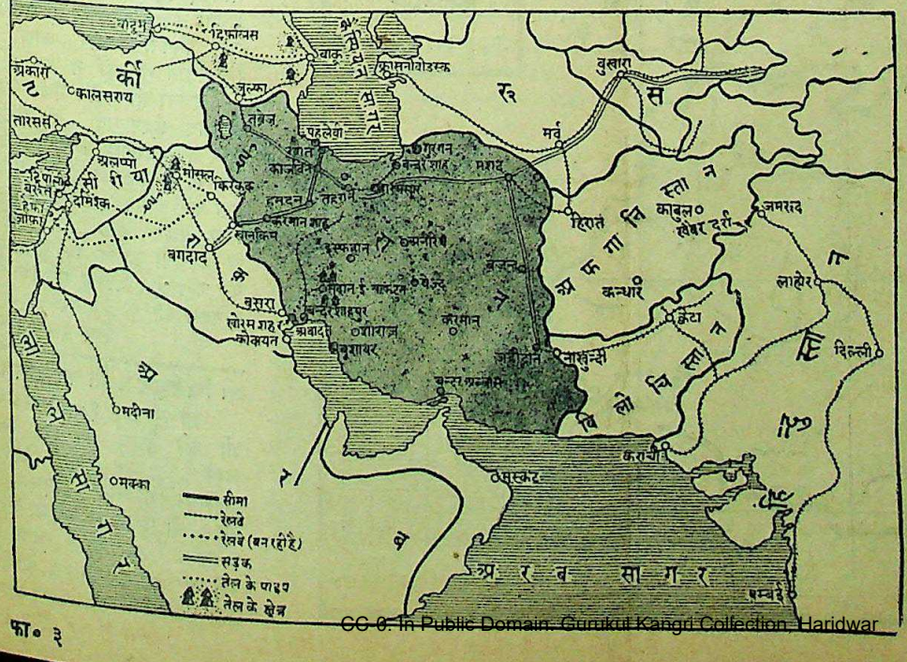

फा० ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदराबाद विद्रोह के पथ पर क्यों?

निजाम और इत्तिहादुल मुसलमीन के कारनामों का अब भंडाफोड़ हो रहा है

लेखक, श्री श्यामबिहारी विरागी, बी० ए०

हैदराबाद रियासत काफी अर्से तक विद्रोह के पथ पर रही और आज भारत-सरकार से एक वर्ष के लिये जो यथा-स्थित समझौता हुआ है, इस पर भी उसकी नीति क्या होगी अथवा एक वर्ष बाद वह पुनः कौन-सी नीति ग्रहण करेगा, इसे कौन जाने? इस लेख में हैदराबाद की पहले की विद्रोही नीति पर प्रकाश डालते हुए लेखक ने आज की राजनीति पर प्रकाश डाला है। लेख सामयिक है और समझौते के कुछ ही पहले लिखा गया है।

अभी हाल में मेरे एक मुसलमान मित्र जो एक व्यापारी हैं मुझसे मिलने आये। बातचीत के सिलसिले में यह पता चला कि वे अब इलाहाबाद छोड़ रहे हैं।

"कहां और क्यों जा रहे हो?" मैंने पूछा।

"यहां अब व्यापार की हालत गड़बड़ है इसलिए इलाहाबाद छोड़ना पड़ रहा है।" उन्होंने बतलाया।

"मगर जा कहां रहे हो?" मैंने फिर पूछा।

"हैदराबाद।"

"हैदराबाद की हालत तो कोई अच्छी नहीं। इससे तो अच्छा था कि पाकिस्तान चले जाते।" मैंने उनसे सवाल किया।

"बात तो आप ठीक कह रहे हैं। मगर पाकिस्तान से अच्छा हम लोगों के लिए हैदराबाद ही होगा। पाकिस्तान की सरकार से बहुत उम्मीद नहीं। निजाम की सरकार तो हर तरह से सहूलियतें दे रही है और बहुत मुमकिन है कि कुछ दिनों में हम लोग इज्जत के साथ साथ अपनी माली हालत भी अच्छी बना लेंगे।"

अपने मित्र की उपरोक्त बातों पर मैं बहुत देर तक विचार करता रहा। आज हैदराबाद की सरकार हिन्दुस्तान के मुसलमानों को अपने यहां क्यों चाहती है और एक साल तक भारत-सरकार से यथास्थित समझौता करने पर क्यों तुली हुई है ये दोनों प्रश्न मेरे मस्तिष्क में नाचते रहे।

निजाम की परेशानी

यह बात अब स्पष्ट है कि निजाम कायदे आजम जिन्ना के इशारों पर नाचते रहे हैं और मन से उसकी इच्छा पाकिस्तान में शामिल होने की है। परन्तु उसके सामने दो ऐसी बड़ी कठिनाइयां उपस्थित हैं जिसके कारण पाकिस्तान में शामिल होने का निर्णय वह आज नहीं कर सकता। सबसे पहली कठिनाई उसके सामने हैदराबाद रियासत की जनमत की है। वहां के गैर मुस्लिमों की आबादी लगभग ८५ फी सदी है। स्वतन्त्र भारत में अब कोई भी राजा जनमत के विरुद्ध नहीं जा सकता अन्यथा भयानक जन-विद्रोह की लहर को वह संभाल नहीं सकेगा। निजाम जानता है कि उसकी प्रजा का बहुमत पाकिस्तान में शामिल होने को नहीं होगा। दूसरी निजाम की परेशानी हैदराबाद रियासत की भौगोलिक स्थिति है जिसका ख्याल पाकिस्तान या हिन्दुस्तान में जाने के पहले उसे कर लेना है। भौगोलिक दृष्टि से हैदराबाद पाकिस्तान में शामिल नहीं हो सकता। इन्हीं दोनों कठिनाइयों को पार करने के लिए निजाम अपनी रियासत में मुसलमानों का स्वागत कर रहा है और एक साल के लिए भारत-सरकार से यथास्थिति समझौता करना चाहता है।

निजाम की भीतरी मंशा

एक साल तक तटस्थ रहने की जो इच्छा निजाम की है इसमें उसकी एक बहुत गहरी चाल छिपी है। समझौते में उसकी एक शर्त विदेशों में अपने दूत रखने की है। यह शर्त भी एक जहरीली कूटनीति का द्योतक है। निजाम के पास धन की कमी नहीं, क्योंकि वह दुनिया का सबसे बड़ा धनी व्यक्ति समझा जाता है। आज के जमाने में जब दुनिया तेजी से भौतिकता की ओर बढ़ती जा रही है, धन की एक विशेष महत्ता है। इस एक साल की अवधि में निजाम जनमत को अपने पक्ष में कर लेना चाहता है। भौगोलिक स्थिति से उसे विशेष परेशानी नहीं, क्योंकि जन-इच्छा के सामने यह प्रश्न बहुत गौण स्थान पा जाता है। विदेशों में दूत रखने की योजना से वह अन्तर्राष्ट्रीय जनमत अपने पक्ष में करना चाहता है। साथ ही साथ अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रियावादी शक्तियों का सहयोग लेकर उसकी इच्छा शक्ति संचय करने की है।

मुस्लिम लीगी हथकंडे

अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निजाम ठीक वही पथ अनुसरण कर रहा है जिसके ऊपर चलकर मुस्लिम लीग आज भारतीय एकता तथा स्वतन्त्रता का सबसे बड़ा शत्रु बन गई है। कायदे आजम की गंदी राजनीति, नारकीय चालें तथा अमानुषिक हथकंडे से अब हम लोग काफी परिचित हो चुके हैं। अतएव पाकिस्तान के नादिरशाह का पिट्ठू बनकर निजाम भी वही पथ अनुसरण करे तो इसमें आश्चर्य ही क्या हो सकता है। मुस्लिम लीग के पिछले तथा आज के कामों का विश्लेषण करने पर मोटे रूप से उसके तीन निम्नांकित हथकंडे काफी स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं:—

(१) मुसलमानों का एक ऐसा गुंडा दल तैयार करना जो साम्प्रदायिकता का जहर फैलाकर मुस्लिम जनता को बरगलावे और घृणित से घृणित काम करने के लिए तैयार करे।

(२) गैर-मुस्लिमों में गुण्डागिरी से ऐसा आतंक पैदा करना कि जिससे घबड़ाकर वे भाग खड़े हों।

(३) अछूतों को नाना प्रकार के प्रलोभन देकर अपनी तरफ मिलाना ताकि गैर-मुस्लिमों की शक्ति क्षीण हो और हिन्दुओं में आपसी मतभेद भीषण रूप पकड़ ले अछूतों के नामधारी नेता श्री जोगेन्द्रनाथ मंडल इसके एक सबूत हैं जिन्होंने आज अपने को चांदी के कुछ टुकड़ों पर कायदे आजम के हाथ बेच दिया है।

हैदराबाद में लीगी नीति की पुनरावृत्ति

निजाम के देश में आज लीग के ये तीनों उपरोक्त हथकंडे स्पष्ट दिखलाई पड़ रहे हैं। इत्तिहादुल मुसलमीन मुसलमानों का एक ऐसा गुण्डा दल वहां तैयार हो गया है जो व्यवस्थित रूप से नाना प्रकार के अनर्थ कर रहा है। अभी हाल में हैदराबाद के निजाम ने हैदराबाद की राज्य कांग्रेस के सामने समझौते की जो शर्तें रखी थीं वे अब प्राप्त हो गई हैं। उनका आशय इत्तिहादुल मुसलमीन को

हैदराबाद के निजाम

उत्तरदायी सरकार के आवरण में शासन-सत्ता सौंपना और एक ओर निजाम के सरकार का अन्त करना और दूसरी ओर हिन्दू बहुसंख्यकों के लोकतन्त्रात्मक अधिकारों को कुचल देना था। निजाम आज इस इत्तिहादुल मुसलमीन को पूर्ण रूप से सहायता दे रहा है और यह दल खुलेआम अपनी गुण्डागिरी दिखला रहा है। देशभक्त श्री कोडा वेंकट पैया ने अभी अपने एक महत्त्वपूर्ण वक्तव्य में बतलाया है, "इत्तिहादुल मुसलमीन दल के सशस्त्र गुण्डे बदमाश दिन-रात सड़कों पर और गांवों में भी घूम-घूमकर हिन्दुओं से लड़ते हैं और लड़ने का बहाना ढूंढा करते हैं। रात को इन मुसलमान गुण्डों के पूर्ण सशस्त्र दल मोटर, लारियों, बसों और मोटर-गाड़ियों में संगठित रूप से निकलते हैं। उनका प्रधान मोटर साइकिल पर आगे रहता है और वे लाउड स्पीकरों के द्वारा हिन्दुओं से कहते हैं कि हैदराबाद अब पाकिस्तान हो गया है और हिन्दू यहां से तुरन्त निकल जायें नहीं तो वे सब मार डाले जायेंगे। मुसलमानों को हर तरह के शस्त्र लेकर घूमने की आज्ञा है; परन्तु हिन्दुओं के घरों की तलाशियां लेकर उनके शस्त्र तथा लाठियां तक छीन ली गई हैं। ये समाचार प्रायः नित्य ही सुने जाते हैं कि निरपराध हिन्दुओं को निर्दयतापूर्वक मार डाला गया, उनके घर द्वार जला दिये गये, मालमता लूट लिया गया और स्त्रियां भगाई गईं। स्त्रियों पर बलात्कार करने तथा छोटे-छोटे बच्चों की हत्यायें करने की खबरें भी मिलती हैं।"

वेंकटपैया जी के इस वक्तव्य को बिलकुल निराधार कह देना शायद ठीक नहीं। इन समाचारों में असलियत तो है ही। यदि ऐसा न होता तो आज लाखों हिन्दू अपना सर्वस्व छोड़कर हैदराबाद के बाहर नहीं निकलते और लाखों मुसलमान हिन्दुस्तान से वहां न जाते।

इतना ही नहीं। वेंकट पैया जी आगे चलकर हैदराबाद की परिस्थिति का और भी भंडाफोड़ करते हैं। उन्होंने उसी वक्तव्य में कहा है, "हैदराबाद राज्य में एक करोड़ रुपया हरिजनों के उद्धार के लिए मंजूर किया गया है। इन रुपयों से हरिजनों को खुलकर मुसलमान बनाया जा रहा है। प्रत्येक मुसलमान बननेवाले हरिजन को १००) नकद, एक लुंगी और

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

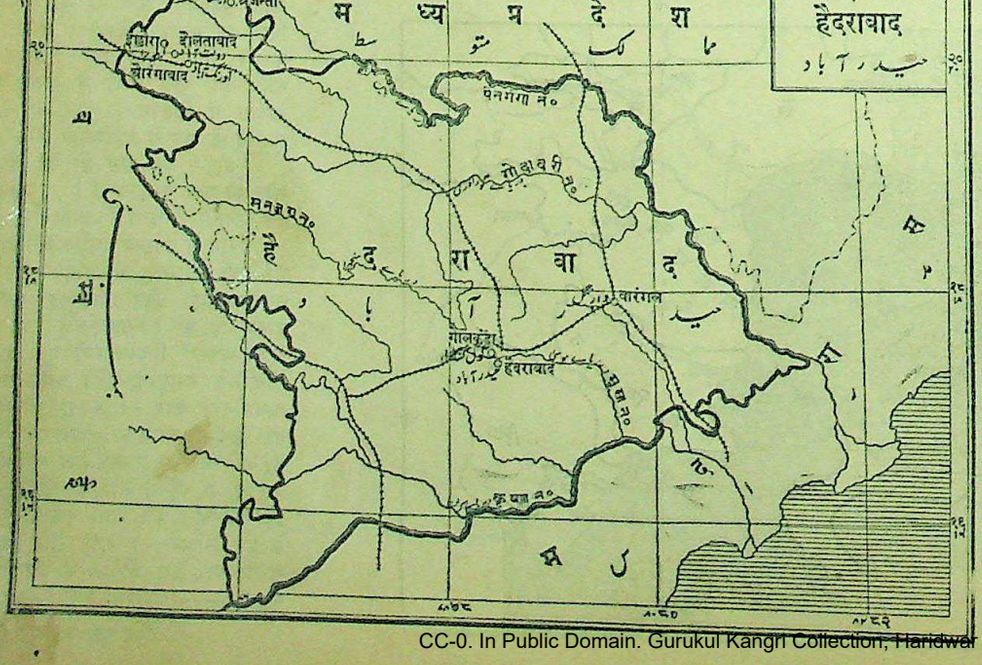

श्री चित्रकूट पर्वत की दमानाशक बूटी
श्री महात्मा १०८ एस० पी० दास जी की तैयार की हुइ अनुभवसिद्ध जड़ी केवल एक खुराक मिती मार्गशीर्ष सुदी पूर्णिमा ता० २७-१२-४७ में सेवन करन से पुराने से पुराना श्वास (दमा) सदैव के लिए नष्ट हो जाता है।
श्री चित्रकूट दमानाशक आयुर्वेदिकसिद्ध सेवाश्रम, पो० चित्रकूट (बांदा) यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् ४७ का सेवाग्राम कैसा है ?

गांधीवादी राष्ट्रीय साधना तथा जागृति का केन्द्रस्थल

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

साबरमती आश्रम की स्थापना के बाद महात्मा गांधी ने सेवाग्राम की स्थापना की; महात्मा जी के वहाँ रहने से कुछ ही समय में सेवाग्राम भारत की ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय जगत् का एक महत्त्वपूर्ण राजनैतिक केन्द्र बन गया। अनेक नये साधन भी एकत्रित हो गये। श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी ने अपना अधिकांश समय सेवाग्राम में ही रहकर बिताया है। इस लेख में विविध दृष्टियों से सेवाग्राम का महत्त्व बतलाया गया है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

सेवाग्राम के महान् संत महात्मा गांधी

'देशदूत' के पाठक अच्छी तरह जानते हैं कि सेवाग्राम पहले कितनी छोटी बस्ती थी। आश्रम भी कितना छोटा था। गांधी जी को शुरू-शुरू में कितनी मुसीबतें उठानी पड़ी हैं। हरएक चीज की असुविधा थी। सोने, खाने-पीने का समुचित प्रबन्ध पहले यहां नहीं था। बबूल के जंगलों में गांधी जी ने अपने रहने का स्थान चुना था। गांव से तीन-चार फर्लांग की दूरी पर गांधी जी ने अपने आश्रम की बुनियाद रक्खी थी। उस वक्त साफ पानी पीने के लिए मिलना कठिन था। आश्रम के आस-पास कोई बढ़िया कुआं तक उस वक्त नहीं था। गांधी जी के रहने, खाने-पीने आदि के लिए केवल एक छोटी-सी झोपड़ी थी। उसी में गांधी जी अपने सहयोगियों और मेहमानों के साथ ठहरे हुए थे और तिस पर गांव के मरीजों को भी उसी में रखते थे, वर्किंग कमेटी के माननीय सदस्यों से विचार-विनिमय करते थे।

सेवाग्राम आने पर गांधी जी ने कहा था—मैं यहां अकेले रहना पसन्द करता हूँ। किसी को रखना मुझे अच्छा नहीं लगता। गांव की सेवा मैं स्वयं करना चाहता हूँ। लेकिन धीरे-धीरे बापू जी ने एक-एक करके सबको सेवाग्राम में बुलाकर एक बड़े कस्बे का रूप प्रदान किया यानी आदर्श ग्राम की रूपरेखा रख दिया। आज सेवाग्राम विशाल आश्रम में परिणित हो गया है। भिन्न-भिन्न संस्थाओं का अखिल भारतीय कार्यालय बन चुका है। जहां पहले एक पेड़ नहीं दिखता था वहां आज सैकड़ों पेड़ लग गये हैं। हजारों आदमियों की बस्ती है। हर समय आश्रम में किसी नये प्रयोग का शोध होता रहता है।

पक्की सड़कें बन गई हैं। सैकड़ों मकान बन गये हैं। टेलीफोन ने दुनिया से अपना नाता जोड़ा है। आम और सन्तरों के सैकड़ों पेड़ों में मीठे फल-फूल लगे रहते हैं। आश्रम का अपना सुन्दर बगीचा बन गया है। तरह-तरह की भाजियां पैदा की जाती हैं। सड़कों के किनारे नीलगिरि और सदाबहार के पौधे हमेशा लहराते हुए दिखाई पड़ते हैं। नीम के पेड़ों की बहुतायत है। आश्रम के बीचवाले मैदान में बहुत से नीम के पेड़ बढ़कर तैयार हो गये हैं। गांधी जी की झोपड़ी के पास एक सुन्दर मन को आकर्षित करनेवाला वट-वृक्ष भी तैयार खड़ा हो गया है। उस वृक्ष की शोभा सुबह-शाम प्रार्थना के वक्त बहुत ही सुन्दर मालूम होती है। कहने का मतलब वट-वृक्ष बहुत ही सुन्दर है।

आश्रम में आये अतिथियों को ठहराने के लिए एक अतिथिगृह भी बन गया है। रोगियों की दवा करने के लिए एक बड़ा दवाखाना भी बन गया है। कई डाक्टर काम करते हैं। रोज सैकड़ों रोगियों की चिकित्सा की जाती ह। गांव के आस-पास के बहुत से गरीब किसान अपने रोगों की मुफ्त चिकित्सा कराते हैं। प्रसूति-गृह भी है, गरीब माताओं को बिना दाम का दूध और फल खाने को दिया जाता है। बहुत दूर-दूर की बहनें यहां आकर बच्चों को जन्म देती हैं। रोगियों की सेवा बड़ी देखभाल से की जाती है। गरीब निर्धन मरीजों को आश्रम दूध फल आदि खर्च मुफ्त में देता है। रोगियों से कोई फीस यहां नहीं ली जाती।

आश्रम के हाते में अब कई बड़े-बड़े पक्के कुयें बन गये हैं। पानी की अधिकता रहती है। खेतों को सींचने का काफी प्रबन्ध हो गया है। आश्रम के लोगों के लिए एक गौशाला भी है जहां से सबको स्वच्छ और साफ दूध मिलता है। बाहर के विद्यार्थियों को गोपालन और खेती आदि का काम भी अच्छी तरह सिखाया जाता है।

हिन्दुस्तान में शिक्षा की कितनी आवश्यकता है, इसे हर कोई महसूस करता है। शिक्षा में आजकल कितनी खराबी आ गई है, इसे भी सब मानते हैं। पढ़-लिखकर विद्यार्थी भाररूप होकर समाज के बोझ बन जाते हैं। उनकी चर्चा सभी करते हैं। लेकिन विद्यार्थी बेकार न हो, समाज का बोझ न बनें, अपनी जीविका आसानी से चला सके, पढ़ते समय भी विद्यार्थी अपना कुछ खर्च स्वयं निकाल सके, ऐसी पढ़ाई का प्रबन्ध अब तक हिन्दुस्तान में नहीं किया गया था। यह महात्मा गांधी की ही सूझ और देन है। उन्होंने नई तालीम की बुनियाद सेवाग्राम में रख दी है और पढ़ाई का मुख्य केन्द्र श्रम और उद्योग-धन्धा रक्खा है। उद्योग के जरिये ही विद्यार्थी हाईस्कूल तक की परीक्षा आसानी से प्राप्त कर सकता है।

इसका मुख्य प्रयोग सेवाग्राम में बड़े पैमाने पर चल रहा है। सैकड़ों विद्यार्थी भिन्न-भिन्न प्रान्तों से आकर नई तालीम का अनुभव ले रहे हैं। श्री आर्यनायकम् जी और श्रीमती आर्यनायकम् दोनों इस प्रयोग में तन-मन-धन से लगे हुए हैं। इन्हीं लोगों के हाथों में नई तालीम का भाग्य है। तालीमी संघ का अखिल भारतीय केन्द्र सेवाग्राम आश्रम से लगा हुआ है।

गांधी जी का जीवन और प्राण ग्रामीण उद्योग-धन्धों की तरक्की में लगा हुआ है। देश की तरक्की का एकमात्र साधन गांधी जी उद्योग-धन्धों को ही मानते हैं। हाथ-उद्योग को गांधी जी सबसे पहले तरजीह देते हैं और जोर देकर कहते हैं कि—यदि सात लाख गांवों को जिन्दा रखना है या रहना है तो ग्रामीण उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहन देकर खूब आगे बढ़ाओ गांवों के भीतर हाथ-उद्योग-धन्धा ही चल सकता है।

ग्रामीण उद्योग-धन्धों को जीवित रखने के लिए गांधी जी सतत प्रयत्न कर रहे हैं। इसी कारण उन्होंने अखिल भारत चर्खा-संघ और अखिल भारतीय संघ की स्थापना की है गांधी अपने को बुनकर और जुलाहा भी कहते हैं। गांधी जी के जीवन में चर्खे का बहुत बड़ा महत्त्व है। चर्खा-संघ का एक विशाल इतिहास गांधी जी के जीवन के साथ गुंथा हुआ है। चर्खा-संघ के मानी हैं गांधी जी का इतिहास। चर्खे के द्वारा गांधी जी ने देश को कितना आगे बढ़ाया है! राष्ट्र को कितना जगाया है। बच्चे-बच्चे में राष्ट्र का प्रेम भरा है। खादी को पहनकर एक पापी और चोर भी अपने को देश-प्रेमी कह सकता है। लोगों की निगाह में अच्छा बन जाता है, यह है गांधी की बड़ी देन? आज खादी का तिरंगा राष्ट्र का राष्ट्रीय झंडा है वह सरकारी मकानों पर लहरा रहा है। चीन, रूस, अमेरिका, आदि में फहरा रहा है। खादी का पर्यायवाची अर्थ देश-सेवा बन गया है। देश-विदेश में खादी का बहुत बड़ा स्थान बन गया है। खादी आज राष्ट्रीय वर्दी के रूप में है खादी की महिमा चारों तरफ फैली हुई है।

गांवों के लिए खादी का जन्म हुआ है। महात्मा जी ठीक ही कहते हैं—"जो काते वह पहने। काते समझ बूझकर।" व्यापार के लिए खादी नहीं है। यह गांवों के लिए है। ग्रामीण चर्खा काते और अपना सूत गांव में ही बुनाकर पहने। इसका प्रयोग सेवाग्राम के आस-पास के गांवों में जोरों से हो रहा है। अब तक काफी सफलता मिल रही हे। अखिल भारतीय चर्खा-संघ का मुख्य केन्द्र भी इसी लिए सेवाग्राम में आ गया है। उसकी कई प्रवृत्तियां यहां चल रही हे। खादी की सारी शिक्षा यहां लोगों को दी जाने की कोशिश हो रही है। बाहर के बहुत से विद्यार्थी यहां आकर खादी की उच्च शिक्षा ले रहे हैं। खादी की 'विशारद' और रत्न परीक्षा ली जाती है और उत्तीर्ण छात्रों को 'विशारद' और 'रत्न' की उपाधि दी जाती है।

गांवों की सारी प्रवृत्तियों की शिक्षा पाने के लिए समग्र ग्राम-सेवा विद्यालय सेवाग्राम में खुला हुआ है। बौद्धिक शारीरिक और हाथ-उद्योग-धन्धों की सारी शिक्षा सेवाग्राम में दी जाने लगी है। सेवाग्राम में आज कई तरह के प्रयोग हो रहे हैं। ग्रामीण उद्योग-धन्धों की एक तरह की यूनिवर्सिटी बन गई है।

महिलाश्रम की बहन शांता जी रेने।

आचार्य जे० सी० कुमारप्पा।

श्रीमती मेडेलिन स्लेड।

प्रसिद्ध दार्शनिक आचार्य विनोबा भावे।

फा० ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्तप्रांत की राजभाषा हिन्दी क्यों

उर्दू भाषा-भाषियों, पत्रों तथा अँगरेजी के गुलाम मुस्लिम जमात की प्रतिक्रिया

लेखक, श्री युगलकिशोर गुप्त, एम० ए०, बी० एल०

संयुक्तप्रांत की राजभाषा हिन्दी है, इसकी घोषणा सरकारी तौर पर हो गई है। सरकार के इस उपयुक्त निर्णय की प्रतिक्रिया उर्दू भाषा-भाषियों, पत्रों तथा अँगरेजी के कायल गुलाम मुस्लिम जमात पर किस प्रकार हुई, इसका उल्लेख इस लेख में बड़ी सुन्दरता से किया गया है। लेख खोजपूर्ण तथा राजभाषा हिन्दी की विरोधी प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालनेवाला है।

जब से संयुक्तप्रान्त की कांग्रेसी सरकार ने अपने दल के बहुमत का प्रयोग करके देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी-भाषा को राज्य-भाषा का पद प्रदान किया है, मुसलमानों में विशेषत: मुस्लिम लीग में खलबली मच गई है। उन्हें यह भय होने लगा है कि अब भारतीय संघ में साम्प्रदायिकता का प्रवेश हो गया है और मुसलमानों की भाषा और संस्कृति खतरे में है। मुस्लिम लीग ने अपना विरोध-प्रदर्शन करने के लिये इस प्रस्ताव पर वोट के उपरान्त संयुक्तप्रान्तीय असेम्बली से "वाक आउट" किया था। परन्तु इस विरोध में कितना हार्दिक अंश था और कितना बाह्य यह कहना कठिन है। कलकत्ते के सुप्रसिद्ध उर्दू दैनिक "हिन्द" और साप्ताहिक "उजाला" के सम्पादक श्री मलीहाबादी ने संयुक्तप्रान्त के इस निश्चय की मुक्त-कंठ से सराहना की है और आशा की है कि यदि भारतीय संघ की राष्ट्र-भाषा देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी हो जाये फिर भी मुसलमानों को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए, क्योंकि हिन्दू प्रधान राष्ट्र की भाषा तो हिन्दी होनी चाहिए। मियां जिन्ना के दो राष्ट्रों के सिद्धान्त का यह तर्कसंगत परिणाम है। दो उर्दू पत्रों के मुसलमान सम्पादक के इस महत्त्वपूर्ण समर्थन का हम हार्दिक स्वागत करते हैं और हम आशा करते हैं कि अन्य मुसलमान भी यदि ठंडे दिमाग से पक्षपातविहीन विवेचना करेंगे तो संयुक्तप्रान्तीय सरकार के निश्चय को सहर्ष स्वीकार करेंगे। परन्तु वह मुसलमान जिनमें धर्मांधता की मात्रा कुछ विशेषरूप से पाई जाती है और जो अभी तक मुगल-शासन जैसी समस्त भारत पर इस्लामी हुकूमत का स्वप्न नहीं भूले हैं और एक अल्पसंख्यक जाति का मत बहुसंख्यक जाति पर लादने को सदैव इच्छुक रहते हैं, इस प्रश्न पर निष्पक्ष रूप से अपनी राय देने में असमर्थ हैं।

कानपुर का "मोमिन गजट" पेशेवर (जुलाहे, कुंजड़े, धोबी, दर्जी, चमार, मेहतर) मुसलमानों का साप्ताहिक मुखपत्र है। चूंकि मुस्लिम लीग ने पेशेवर मुसलमानों को अखिल भारतीय मुस्लिम लीग कौंसिल या कार्य-कारिणी-समिति, प्रांतीय असेम्बलियों और मंत्रिमंडलों में उनकी जन-संख्या के अनुपात से प्रयाप्त प्रतिनिधि देने में संकोच किया तो वह राष्ट्रवादी मुसलमान बन गये और उन्होंने अपना निजी व्यक्तित्व कायम रखते हुए कांग्रेस के साथ गत प्रान्तीय असेम्बलियों के निर्वाचन में सहयोग किया। इस समय बिहार-मंत्रिमंडल में श्री अब्दुल कयूम अंसारी मोमिनों के प्रतिनिधि हैं। कांग्रेस के निर्वाचन घोषणापत्र से प्रभावित होकर नहीं अपितु अपने निजी स्वार्थों के वशीभूत होकर मोमिन इस समय कांग्रेस का साथ दे रहे हैं। यदि कांग्रेस का असेम्बली में प्रभाव कम हो गया तो वह निश्चितरूप से उसी दल को अपना सहयोग प्रदान करेंगे जो मंत्रिमंडल में उनके कुछ प्रतिनिधि शामिल करने को राजी हों। वरना मोमिनों की अलग राजनीतिक संस्था की आवश्यकता ही क्या है ?. वह सभी कांग्रेस के सदस्य होकर मोमिन कांफ्रेंस का अंत कर सकते हैं और कांग्रेस को उनकी बात सुनने के लिये बाध्य कर सकते हैं। मोमिन कांफ्रेंस का अस्तित्व कायम रखकर वह अधिक लाभ की आशा करते हैं वनिस्बत उसका अन्त करके। अस्तु।

"मोमिन गजट" ने संयुक्तप्रान्तीय सरकार को इसलिये कोसा है कि अपने बहुमत का प्रयोग करके पंत-मंत्रिमंडल ने केवल देवनागरी लिपि लिखित हिन्दी भाषा को राजभाषा का पद प्रदान किया है। यह प्रजातंत्र के नियमों से भले ही ठीक हो, परन्तु सामाजिक तथा नैतिक दृष्टि से क्षम्य नहीं है। "मोमिन गजट" के विचार में संयुक्तप्रान्त की भाषा हिन्दुस्तानी है जो देवनागरी और फारसी दोनों लिपियों में लिखी जाती है। उसके विचार से हिन्दुस्तानी हिन्दू और मुसलमान दोनों के पारस्परिक मेल-जोल से बनी है और सभी इसे आसानी से समझ सकते हैं। बेचारे अबोध सम्पादक को यह नहीं पता कि जब तक समस्त भारत में अँगरेजों ही राजभाषा थी उस समय तक ब्रिटिश भारत में हिन्दी या उर्दू का महत्त्व केवल उपन्यास और कहानियों तक सीमित था इसलिये बाजार में प्रचलित हिन्दुस्तानी भाषा से आसानी से काम चल सकता है। हिन्दी या उर्दू के अधिकांश उपन्यास और गल्प एक-आध संस्कृत, फारसी या अरबी शब्द के अनुवाद मात्र से एक भाषा से दूसरी भाषा में अनूदित किये जा सकते थे, क्योंकि साधारण बोल चाल के लिए हिन्दी और उर्दू के शब्द भाण्डार और व्याकरण एक ही हैं; परन्तु जब हिन्दुस्तानी को राजभाषा का पद देने का प्रस्ताव उपस्थित होता है तो हमें सैकड़ों पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता पड़ेगी जो अभी हिन्दुस्तानी में चालू नहीं हैं। इसके लिये या तो संस्कृत की शरण लेनी पड़ेगी या अरबी या फारसी की। Constituent Assembly को लीजिए इस समय नई दिल्ली में है। चूंकि स्वराज्य के पहले इस नाम की कोई चीज नहीं थी अतएव उसके लिये हिन्दुस्तानी में कोई शब्द नहीं है। सभी भाषाओं को शब्द गढ़ने पड़े। कोई इसे विधान-परिषद् कहता है, कोई इसे गणपरिषद्, कोई विधान निर्मात् परिषद् और उर्दू के अखबार इसे दस्तूर साज असेम्बली कहते हैं। इसलिये हिन्दुस्तानी में एक शब्द न होकर Constituent Assembly के लिये दो शब्द प्रयुक्त करने पड़ेंगे—विधान-परिषद् और दस्तूर साज असेम्बली और कोई दूसरा समझौता हो ही नहीं सकता। कोई उर्दू अखबार विधान-परिषद् शब्द को चिमटे से भी नहीं छूएगा और न कोई हिन्दी समाचारपत्र स्वप्न में भी दस्तूर साज असेम्बली का प्रयोग करेगा। इसलिये यह जरूरी हो गया कि संयुक्तप्रान्त की बहुमत का रुख देखते हुए सरकार ने हिन्दी और उर्दू में केवल हिन्दी को राजभाषा के लिये चुना। "मोमिन गजट" यदि वह शिकायत करता है कि बहुमत ने हिन्दी को उर्दूभाषी मुसलमान अल्पसंख्यकों पर लादा तो यदि उर्दू को राजभाषा और फारसी लिपि भी स्वीकृत की जाती तो अल्पसंख्यकों की भाषा को बहुमत पर लादने का प्रश्न न उठता? यदि प्रजातंत्र की पार्लामेंटरी-प्रणाली के अनुसार अल्पसंख्यक बहुसंख्यकों का मत मानने के लिये तैयार नहीं है तो उनके लिये पाकिस्तान का दरवाजा खुला है। वहां वह शौक से उर्दू को बंगालियों पर लाद सकते हैं और यदि पूर्वी बंगाल के बंगाली बंगला को समस्त पाकिस्तान की राजभाषा बनाने के लिये उत्सुक हों तो क्या उनका प्रयास "मोमिन गजट" के प्रजातांत्रिक नियमों के अनुसार युक्तिसंगत होगा? क्यों? समस्त पाकिस्तान में बंगला के राजभाषा तथा राजलिपि होने की क्या संभावना है, क्या मोमिन गजट के सम्पादक बतावेंगे?

संयुक्तप्रान्त में उर्दू को राजभाषा स्वीकार करने में जो कठिनाइयां थीं उनमें उर्दू की अपूर्व लिपि, मुद्रण में असुविधा टाइप करने में कठिनाई, प्रत्येक वस्तु को दो भाषाओं में उल्था करने का भयंकर झंझट इत्यादि प्रमुख थीं। दूसरे यदि मुसलमानों ने धर्म के सिद्धान्त पर पाकिस्तान बनने पर जोर न दिया होता और भारत अखंड रहता तो भारत हिन्दी और उर्दू दोनों को ही राष्ट्रभाषा का पद प्रदान करता।

"मोमिन गजट" जब यह कहता है देवनागरी और फारसी लिपि में लिखि हिन्दुस्तानी भाषा को राजभाषा स्वीकृ किया जाता तो ज्यादा युक्तिसंगत हो तो वह गलती पर है। हमने यह दिख है कि हिन्दुस्तानी एक भाषा नहीं व दो भाषायें हैं एक तो संस्कृत शब्दों ग्रहण करनेवाली देवनागरी में लिखि हिन्दी और दूसरे फारसी लिपि में लिखि और अरबी फारसी शब्दों से भरपूर भाषा इसलिये संयुक्तप्रान्त की राजभाष दो होतीं—हिन्दी तथा उर्दू। एक देश दो राष्ट्रभाषायें कोई नई बात नहीं

"मोमिन गजट" ने इस संबंध में कन का उदाहरण दिया है, वहां एक ही लिपि लिखी जानेवाली अँगरेजी और फ्रांसी दो राष्ट्रभाषायें हैं। बिल्कुल ठीक परन्तु क्या "मोमिन गजट" ने इस की ओर भी ध्यान दिया है कि कन कितना शिक्षित डोमिनियन है; संयुक्तप्रांत में केवल नाम-मात्र के लिखों की संख्या जनसंख्या के १० प्रति से भी कम है। जब एक भाषा पढ़ इतना कठिन है तो दो भाषाओं का ज्ञ लादना कहां तक युक्तिसंगत होगा? नागरी लिपि तो एक दिन में सीखी सकती है; परन्तु फ़ारसी लिपि सीखने कितना समय व्यतीत होगा? इतना नहीं कनाडा का क्षेत्रफल यद्यपि संयु प्रान्त की अपेक्षा ३६ गुणा है परन्तु कनाड जनसंख्या संयुक्तप्रान्त की जनसंख्या केवल पांचवां भाग है। दूसरे शब्दों इलाहाबाद कमिश्नरी की जनसंख्या बराबर। तदुपरान्त मुसलमानों ने भा द्वारा स्वराज्य प्राप्ति में हमेशा रोड़ा काया है। जब पाकिस्तान बन भी तो वहां न जाकर भारतसंघ में टिके हैं भारत संघ की ओर वफादारी न दिखा पाकिस्तान की ओर टकटकी बांधे इसलिये संयुक्तप्रान्त की सरकार उन खुश रखने के लिये उर्दू भाषा और फा लिपि क्यों स्वीकार करे? यदि जो मु मान संयुक्तप्रान्त के इस निश्चय से हैं तो वह अपनी भाषा और संस्कृति रक्षा के लिये सहर्ष पाकिस्तान प्रस्थान सकते हैं जिस प्रकार उनके अनेक नेता ने खुले आम या चुपके किया है। चौ खली कुज्जमा ने उनके सामने कैसा उ उदाहरण रखा है। चूंकि इस वृद्धाव में वह हिन्दी नहीं सीख सकते इसलिये पाकिस्तान चले गये हैं। यह क्यों नहीं कहते कि टर्की में पाकिस्तान का राज

शेष पृष्ठ १६ पर देखि

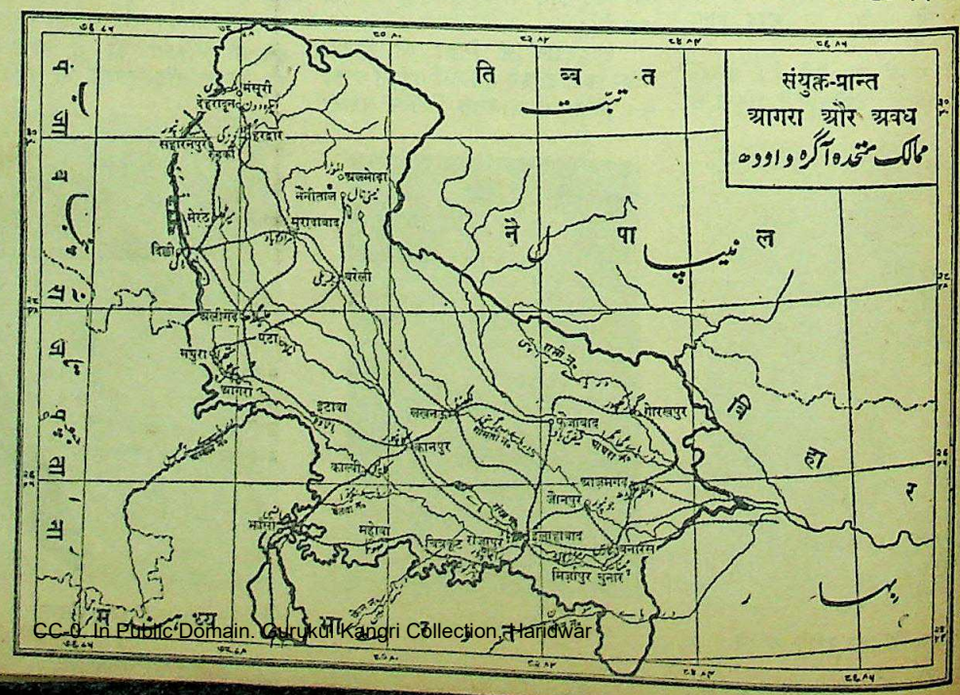

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाटक

अकेल बलमा दुइ दुइ नारी

लेखक, डाक्टर रमेशचन्द्र वर्मा, एम० ए०, डी० फिल्०

सामाजिक जीवन में ऐसी घटनायें प्रायः घटित होती हैं जो प्रभावशालिनी ही नहीं मनोरंजक भी होती हैं। इस एकांकी में लेखक ने दो पत्नियाँ करने की विडम्बना का एक मनोरंजक चित्र अंकित किया है। पंडितजी के दो पत्नियाँ होने के परिणामस्वरूप धोबी का पत्नीव्रत भंग नहीं हो पाया। एकांकी सामाजिक दृष्टि से सुंदर और मनोरंजक है।

[रंगमंच पर परदे के बाहर धोबिन और उसका पीछा करते हुए धोबी दिखाई पड़ते हैं। धोबिन नाराजी के कारण मुह फुलाये है, उसके बगल में एक गठरी है जिसमें उसके कपड़े लिपटे हैं।]

धोबी—(याचना के स्वर में) अब की बार मान जाओ, चलो घर चलें। अब ऐसी भूल कभी नहीं होगी।

धोबिन—तुम लौट जाओ, मैं नहीं जा सकती। पिछली दफा ऐसे ही हुआ तो कहने लगे अब की बार माफ कर दो; कान पकड़ता हूँ अब ऐसी भूल नहीं करूँगा, जो सजा चाहे दे दो पर मुझे छोड़कर मत जाओ। इसी तरह हर दफे कहते हो। मै नहीं मान सकती।

धोबी—(चिढ़कर) अच्छा मत मान, चली जा। देखूं तो कहां जाती है?

धोबिन—(उसकी तरफ मुड़कर) इतना रोष! यह न समझो कि तुम्हारे घर के सिवा मेरा कहीं ठिकाना ही नहीं है। मैं अपने बाप के घर चली जाऊँगी।

धोबी—(गुस्से में) फिर कहता हूँ मान जा, नहीं तो अकल ठिकाने लगा दूँगा।

धोबिन—क्या ठिकाने लगाओगे, जरा मैं भी सुनूं।

धोबी—एक बार मैं और कहता हूँ मान जा, नहीं तो रोएगी।

धोबिन—(जाते हुए) अच्छा मैं जाती हूँ। तुम्हें जो करना हो कर लो।

धोबी—(चिल्लाकर) मैं बतलाये देता हूँ रोते रोते जिन्दगी न कटेगी।

धोबिन—अच्छा! अच्छा! रोना तो मुझे पड़ेगा। तुम्हे काहे की फिकिर।

धोबी—(और जोर से चिल्लाकर) तो कान खोलकर सुन। मैं दूसरी मेहरारू लाऊँगा। फिर देखता हूँ तू क्या करती है?

धोबिन—(लौट आती है और उसके सामने आंख तथा अँगुलियों को नचाकर) ले आ दूसरी मेहरारू, फिर देखना जनम भर रोते न बीते तो मेरा नाम नहीं।

धोबी—क्यों?

धोबिन—पंडित की हालत नहीं जानते?

धोबी—(उत्सुकता से) क्यों क्या हुआ?

धोबिन—(उसका हाथ पकड़ अन्दर ले जाते हुए) चलो जरा देख लो, फिर दूसरा व्याह करने की सोचना।

* * *

(रात दस बजे का समय। एक छोटे से कच्चे मकान का आंगन। आंगन के एक तरफ ओसारा है, ओसारे के ऊपर छत। आंगन से ही छत को सीढ़ियां गई हैं। ओसारे में एक अधेड़, पर गठे बदनवाली स्त्री भोजन पका रही है।

इसी समय दरवाजे से एक पंडितजी प्रवेश करते हैं। वृद्ध, सांवले, एक धोती पहिने हुए, नंगा शरीर है जिस पर जनेऊ है। उनके पीछे पीछे एक चोर भी अन्दर आ जाता है। चोर शरीर में तेल मले, सिर्फ एक लंगोटी पहिने, मुंह में कालिख लगाये है। वह धोती की आड़ में छिप जाता है। पंडितजी को देखतेही एक उन्नीस-बीस वर्ष की युवती कमरे से बाहर निकल आती है।)

युवती—(पंडितजी को चारपाई पर बिठाकर पैर धोते हुए) तुम्हारी राह देखते-देखते आंखें पथरा गईं। अँधेरी रात में इतनी देर बाहर रहना ठीक नहीं। संध्या को ही चले आया करो।

पंडितजी—(आराम का अनुभव करते हुए) अहा, जिन्दगानी का मजा तो तुम्हारे साथ ही मिला। उस बुढ़िया के साथ तो मैं नरक भोग रहा था। तुम जैसी मेरी कौन सेवा कर सकता है?

प्रथम पत्नी—क्या फुसफुस बातें हो रही हैं जी?

पंडितजी—(रोष से) बातें क्या हो रहीं हैं। यही तो कह रहा हूँ कि तेरे साथ मैंने जिन्दगी का सुख कभी नहीं जाना। तू भी कभी इस तरह पानी लेकर मेरा पांव धंता थी?

प्रथम पत्नी—अच्छा अच्छा चले हैं बड़ी प्रशंसा करने। चूल्हा-बासन, झाड़-बुहारू, रसोई—सब तो मैं करूँ—यह इंच सा सिफुला दे तो यही सब कुछ हो गई—यह मत समझो कि मैं तुम्हारी उस छैल-छबीली से कम हूँ।

(लोटे में पानी लिये पंडितजी के पास आती है)

पंडितजी—यह क्या है री?

प्रथम पत्नी—पांव नीचे करो, मैं धोऊँगी।

पंडितजी—छोटकी ने तो धो दिया है, क्यों मुझे तंग करती है?

पंडितजी—(डरकर) कुछ तो नहीं!

प्रथम पत्नी—कुछ कैसे नहीं। मैं देखती हूँ न (पंडितजी के पास आ जाती है)।

पंडितजी—(सहसा बिगड़कर) तो फिर मैं भी जोर से कहता हूँ तू ने कभी मेरी इतनी फिक्र नहीं की। खिलाया था कभी घी?

प्रथम पत्नी—अच्छा तो छिपाकर घी डाला गया है। (वह रसोई में जाकर हाथ में घी का पात्र लिये लौटती है तथा पंडितजी की दाल में घी डाल देती है) लो, मैं तुम्हें इतना घी खिलाऊँगी कि उसने आंखों से भी नहीं देखा होगा।

पंडितजी (चिल्लाकर) अरे अरे, यह तूने क्या किया? सारी की सारी दाल खराब कर डाली।

प्रथम पत्नी—खराब हो गई तो मैं क्या करूँ। मैं क्या उससे कम हूँ?

पंडितजी—(उठते हुए) तेरे कारण आज मेरा भोजन भी नहीं हुआ।

पहली पत्नी क्रोधित होकर पंडितजी की ओर दौड़ पड़ी।

प्रथम पत्नी—(जबरदस्ती पांव को चारपाई से नीचे लटका) मैं जरूर धोऊँगी। क्या मैं उससे कम हूँ?

पंडितजी—(इस दुर्भाग्य को समक्ष आत्म-समर्पण करते हुए) अच्छा भाई धो लो, मेरा क्या नुकसान होता है।

प्रथम पत्नी—उठो, अब जीम लो।

(प्रथम पत्नी जाकर रसोई में खाना परोसती है। पंडितजी खाने लगते हैं। इसी समय छोटकी चुपके से दाल में घी डाल देती है)

प्रथम पत्नी—यह तुमने क्या डाला जी?

(मुंह-हाथ धोकर पंडितजी दबे पांव सीढ़ी पर चढ़ते हैं। अन्तिम सीढ़ी पर छोटकी हाथ में पान लिये घूंघट काढ़े खड़ी है। उसे देख पंडितजी के मलिन मुख पर तनिक सी प्रसन्नता आ जाती है)

पंडितजी—(मुस्कराकर) पान लिये खड़ी है। तेरे हाथ से पान खाकर मुझे बड़ी तृप्ति होती है।

छोटकी—(रोनी आवाज में) मैं तो तुम्हारा इतना ख्याल रखती हूँ और तुम उस बुढ़ढी के पीछे दौड़ा करते हो।

पंडितजी—(मुस्कराते हुए)—तुम भी कैसी बातें करती हो। भला तुम्हें छोड़ मैं उस बुढ़ढी के पास जाऊँगा?

प्रथम पत्नी—(अन्दर के कमरे से) खूब घुल-घुलकर बातें हो रही हैं। खबरदार मैं बतलाये देती हूँ अपनी उस प्यारी के साथ जाना मत। नहीं तो मैं तुम दोनों का सिर फोड़ दूंगी।

पंडितजी—(डरकर जोर से कहते हैं) अरे तू भी कैसी बातें करती है। भला तुझे छोड़ मैं उसके पास जाऊँगा। प्यारी तो मुझे तुम ही हो। उसे तो तुम्हारी सेवा करने के लिये ब्याह लाया हूँ।

छोटकी—(बिगड़कर) अच्छा तो मैं तुम्हारी उस बुढ़ढी की दासी हूँ? जाओ, उसी के पास। मैं चली। (पंडितजी सीढ़ी पर चढ़ उसका हाथ पकड़ लेते हैं और धीमे स्वर में कहते हैं) छोटकी, तू इतनी जल्द नाराज हो जाती है। इतना भी तेरी समझ में नहीं आता कि मैं उसे भुलावा दे रहा था। चल, चलें।

(इसी समय कमरे से हाथ में पान लिये पंडितजी की प्रथम पत्नी निकल आती है) अच्छा, मैं तो पान लगा रही थी और तुम मुझे धोखा देकर निकल जाना चाहते थे।

पंडितजी—(उसे देख पहले तो हतप्रभ हो जाते हैं, फिर बनावटी हँसी हँसकर) तुम चलो अन्दर। मैं अन्दर आ रहा हूँ। मैंने सोचा पान इसी से ले लूं।

(छोटकी अपना हाथ छुड़ाने का प्रयत्न करती है; परन्तु पंडितजी उसे जोर से पकड़े रहते हैं)

प्रथम पत्नी—(सीढ़ी के पास पहुँचकर और डांटकर) चलो मेरे साथ।

पंडितजी—(इधर-उधर देख, फिर दूसरा सहारा न पाकर बिगड़ पड़ते हैं) मैं नहीं जाऊँगा।

प्रथम पत्नी—(लाल-लाल आंखों से उनकी तरफ घूरती हुई) जनम भर मैंने तुम्हारी सेवा की, सुख-दुःख मैंने तुम्हारे साथ झेले, अब यही तुम्हारी सब कुछ हो गई?

पंडितजी—अच्छा बक-बक मत करो। जाकर सो जाओ।

(यह कहकर जाने के लिये मुड़ते हैं)

प्रथम पत्नी—(पंडितजी का हाथ पकड़कर) देखूं तो अब तुम कैसे जा सकते हो?

पंडितजी—(क्रुद्ध स्वर में) छोड़ दो, नहीं तो ठीक नहीं होगा।

प्रथम पत्नी—मैं नहीं छोड़ूंगी, जो करना हो, कर लो।

(पंडितजी को छोटकी अपनी तरफ खींचती है तथा प्रथम पत्नी अपनी तरफ।

पंडितजी—(चिल्लाते हैं) छोड़, छोड़! मेरा हाथ टूट रहा है।

प्रथम पत्नी—(जलती हुई आंखों से उन्हें देखते हुए) यही तो मैं चाहती हूँ या तो आज तुम्हारी जान ले लूंगी, नहीं तो मैं ही मर जाऊँगी।

पंडितजी—(दर्द के मारे कराहते हुए) बचाओ, मेरा हाथ टूटा। यह जान ले लेगी।

(चोर जो यह दृश्य बड़े ध्यान से देख रहा है, अपने पर अधिकार खो अट्टहास कर उठता है। पंडितजी तथा उनकी पत्नी कुछ समय के लिये स्तब्ध हो उठते हैं, फिर चोर चोर चिल्लाने लगते हैं। गांववाले दौड़ आते हैं, चोर पकड़ा जाता है)

* * *

(कस्बे के थाने का आंगन। दारोगाजी एक कुर्सी पर बैठे हैं। एक तरफ हेड मुंशी तख्ते पर बैठे कागज पलट रहे हैं। सामने पुलिसवाले चोर को पकड़े खड़े हैं। पास ही गांववाले चारपाई पर बैठे हैं)

पंडितजी—(हाथ जोड़कर) सरकार ऐसी सजा दीजिए जिसे यह जिन्दगी भर न भूले। वह तो कहिए मेरी नजर पड़ गई; नहीं तो यह सारा घर ही लूट ले जाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दारोगा—बतला बे, पंडितजी के घर में क्यों घुसा?

चोर—(बिलखते हुए) दोहाई सरकार की।

मुंशीजी—(कागज देखते हुए) सरकार पिछले दारोगाजी के समय में भी यह सेंध में पकड़ा गया था। उस बार दरोगाजी ने इसे बिना सजा के छोड़ दिया था। पर इसकी आदत ही नहीं छूटती।

दारोगा—अच्छा तो अब की बार मैं इसे ऐसी कड़ी सजा दूंगा कि छठी का दूध याद आ जायेगा। देखूं तो, फिर कैसे किसी के घर में घुसता है।

चोर—(सहसा अपने को सिपाही के हाथ से छुड़ा लेता है और रोते रोते दरोगा जी का पैर पकड़कर) दोहाई सरकार! जो चाहे सो कीजिए पर मुझे कठिन सजा मत दीजिए।

दारोगा—(पैरों से उसे धक्का देते हुए) छोड़ सुअर के बच्चे। मैं तुझे बहुत कठिन सजा दूंगा। तू पंडितजी के घर में क्यों घुसा?

चोर—(रोते हुए) हुजूर मां बाप हैं, रक्खें तो हम रहेंगे नहीं तो दुनिया से गये ही हैं। कठिन सजा हमें मत दीजिए।

दारोगा—(डांटकर) चुप बे (सिपाहियों से) इसे पकड़कर ले जाओ। दिन भर धूप में मुर्गा बनाकर रखना, शाम को खूब पीटकर कोठरी में बन्द कर देना। फिर देखूं तो कैसे इसकी आदत नहीं छूटती।

चोर—(खुश होकर) सरकार की बरक्कत हो! सरकार बड़े दयालू हैं। अब मुझे कोई फिकिर नहीं।

दारोगा—(आश्चर्य से) क्या इतनी सजा तेरे लिये काफी नहीं है?

चोर—(डरकर कि कहीं दारोगा जी बदल न जायें) हम तो समझे थे कि आप कठिन सजा दीजिएगा।

दारोगा—(चकित होकर) क्या यह कठिन सजा नहीं है?

चोर—(चकित-सा कि दारोगाजी इतना भी नहीं समझ सकते) नहीं सरकार, कठिन सजा तो दो विवाह करना है।

दारोगा—(मूर्खों-सा उसे देखते हुए) क्या कहता है बे?

चोर—(उसकी आंखों के सामने सारा दृश्य फिर जाता है और वह बड़े जोर से हँसने लगता है) अरे सरकार जो आप देखे होते। पंडितजी महाराज का एक हाथ तो छोटी पंडिताइन खींच रही थीं और दूसरा बड़ी पंडिताइन। ये बेचारे बीच में चिल्ला रहे थे। इसी कारण तो मुझे हँसी आ गई और मैं पकड़ा गया—दोहाई सरकार की, फांसी मंजूर है पर दो विवाह नहीं।

(सब लोग हँसने लगते हैं। पंडितजी लज्जा से सिर झुका लेते हैं)

दारोगा—(हँसते हुए) भाग सुअर! अब किसी के घर में मत घुसना।

(चोर अपने दोनों हाथों को फैलाकर ऐसी मुद्रा बनाता है, मानो दोनों तरफ से उसके हाथ खींचे जा रहे हैं; फिर भाग जाता है। सब लोग हँसने लगते हैं)

* * *

(धोबी धोबिन फिर बाहर निकलते हैं)

धोबिन—क्यों जी देख लिया दो विवाह का मजा!

धोबी—देख लिया महारानी!

धोबिन—तो करोगे दूसरा विवाह?

धोबी—कान पकड़ता हूँ भाई! अब ऐसी बात कभी जबान पर नहीं लाऊँगा, चलो घर।

धोबिन—(मुस्कराकर) अब मैं नहीं जाती (फिर उसका हाथ पकड़ गाने लगती है)

अकेल बलमा घर में दुइ-दुइ नारी।
छोटकी कहै चलो हिलमिल के सोइ रहैं,
बड़की कहै आज पारी हमारी।

(धोबी भी साथ-साथ गाता है। फिर दोनों अन्दर जाते हैं)

(यवनिका-पतन)

इधर उधर का

सोवियट-संघ का औद्योगिक भविष्य

यह तो सभी जानते हैं कि सोवियट-सरकार ने देश की औद्योगिक अवस्था को, जो युद्ध के पहले थी और जर्मनों द्वारा नष्ट कर दी गई थी, फिर प्राप्त करने और उसको पहले से अधिक समृद्ध करने के लिए एक पंचवर्षीय योजना कार्यान्वित की है जो कि १९५० में पूरी हो जाएगी। यहां हम उस धंधे के विषय में दो शब्द कहेंगे जो कि सर्वसाधारण के लिए प्रतिदिन काम में लाए जानेवाली वस्तुएँ तैयार करते हैं। १९४६ के अन्त में सोवियट सरकार ने कपड़ों, जूतों और घर के सामान इत्यादि बढ़ाने के विषय में एक कानून पास किया। पिछले वर्ष ही सर्वसाधारण के उपयोग की वस्तुओं की उत्पत्ति युद्ध के पहले की अपेक्षा बीस से लेकर पचास प्रतिशत तक बढ़ गई थी। इस मार्ग की कठिनाइयां हटा ली गई हैं और सर्वसाधारण के उपयोग की वस्तुएँ तेजी के साथ तैयार की जा रही हैं। सोवियट जनता को यह विश्वास है कि उसे इस काम में पूरी सफलता प्राप्त होगी।

यद्यपि युद्ध के समय में इस उद्योग को थोड़े परिमाण में बिजली मिलती थी सरकार ने अब इसका प्रबन्ध किया है कि उसे आवश्यकतानुसार बिजली मिल सके।

कारखानों के समाचार-पत्र

सोवियट संघ में यह प्रथा है कि वहां के कारखाने अपना अन्य काम करने के अतिरिक्त निजी समाचार-पत्र भी प्रकाशित करते हैं। इन पत्रों को पढ़नेवाले एक आधुनिक सोवियट कारखाने के विषय में अच्छा ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इन पत्रों में कारखानों की सफलताओं के वृत्तान्त, कारीगरों के कार्य की आलोचना इत्यादि ही नहीं, पर विविध आन्तरिक और विदेशीय विषयों पर मसाला रहता है। कारखाने में काम करनेवाले सभी श्रेणी के लोग इसमें लेख, कहानियां, आलोचनायें इत्यादि छपाते हैं। अवसर पड़ने पर कारीगर फैक्टरी के शासन की तीव्र आलोचना भी करते हैं। चुटकुलों और व्यंग-चित्रों को भी इनमें स्थान मिलता है। पैसे के लिए यह पत्र विज्ञापन नहीं छापते; अपना खर्च [illegible] तथा व्यापार-संघों और फैक्टरी-द्वारा दी गई सहायता से चलाते हैं।

अनुसंधान करनेवालों को पुस्तकों की सहायता

१९२० में लेनिन ने यह प्रथा चलाई थी कि अनुसन्धान करनेवालों को किसी भी पुस्तकालय से पुस्तक भेजी जा सकें। १९४६ में मास्को के लेनिन नामक पुस्तकालय ने डेढ़ लाख पुस्तकें देश के भिन्न-भिन्न कोनों में भेजीं। इससे इस प्रथा की लोकप्रियता प्रकट होती है। इस विषय में मास्को की लेनिन लाइब्रेरी (पुस्तकालय)—जो कि सोवियट संघ में सर्वोत्तम लाइब्रेरी है और समस्त संसार की लाइब्रेरियों में एक प्रमुख स्थान रखती है—बहुत दिलचस्पी लेती है। इस पुस्तकालय ने जितनी पुस्तकें शहर के बाहर भेजी हैं उतनी और किसी ने नहीं। मास्को के ऐतिहासिक पुस्तकालय का इस विषय में दूसरा नम्बर आता है। पुस्तकों की नकल करने और कुछ पृष्ठों की फोटो खींचने का काम भी यहां किया जाता है। पिछले वर्ष २०,००० पृष्ठों की नकल की गई थी और २५,००० पृष्ठों के चित्र लिए गये थे।

पुस्तकालयों का विकास

सोवियट जनता के लिए अध्ययन करने की आदत अनिवार्य सी हो गई है। युद्ध के पूर्व २,४०,००० पुस्तकालय देश में थे और इनमें पैंतालीस करोड़ पुस्तकें थीं जिनका निःशुल्क उपयोग जनता कर सकती थी। प्रतिवर्ष नए पुस्तकालय देश में खोले जा रहे हैं। जारशाही रूस में न केवल पुस्तकालयों की संख्या कम थी, न केवल उनका निःशुल्क उपयोग करना असम्भव था पर अच्छी से अच्छी कृतियां जनता के सामने न आ सकती थीं। आजकल पुराने लेखकों की कृतियां उतनी ही लोकप्रिय हैं, जितनी आधुनिक लेखकों की। सामाजिक, राजनैतिक और वैज्ञानिक विषयक पुस्तकों की बहुत मांग है। सोवियट शासन की अवधि में, अर्थात् १९१७ से आज तक, साढ़े आठ लाख नई पुस्तकें पुस्तकालयों में रक्खी जा चुकी हैं।

कैसी सिल्क साड़ी आकर्षक डिज़ाइन

कलापूर्ण ३-४ इंच चौड़ा वाडर
नं० ७ ८ ९ ५ गज
१८) २३) २८)

२) पेशगी बाकी वी० पी० से
थोक व्यापारियों को खास सुभीता

भारत इन्डस्ट्रीज,
जुही नं० ९ कानपुर

सारिडन
सर्व्वप्रकारका दर्द दूर करता है

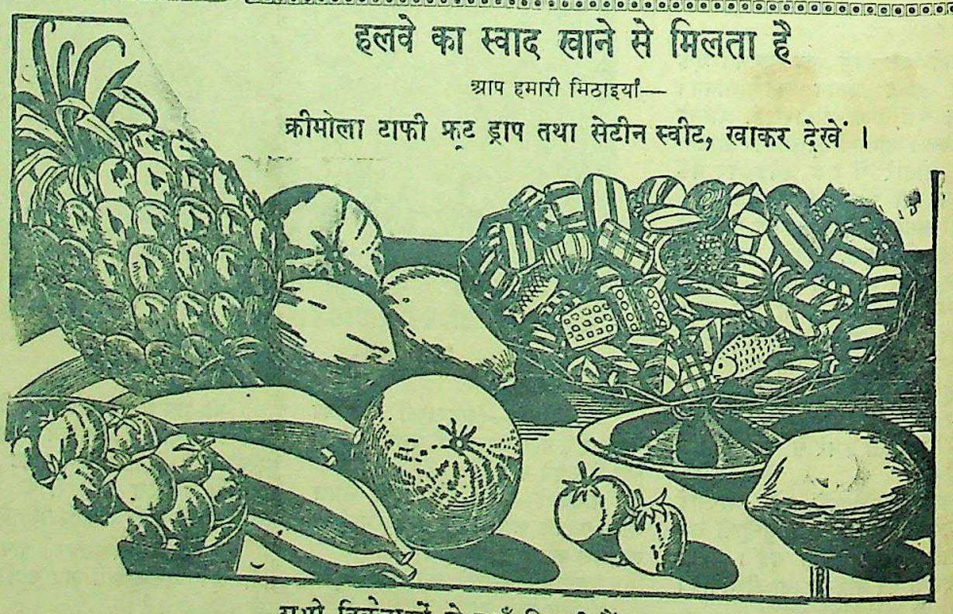
हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयां—
क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।
सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमान 'भारतीय संघ' के वफादार बनें

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेत्री वीणा का भारत में निवास करनेवाले मुसलमानों को सन्देश

लेखक, श्री उमेश जोशी

रजतपट की लोकप्रिय अभिनेत्री वीणा ने अभी हाल में ही एक सामयिक सन्देश मुसलमानों के लिए दिया है। आप पहली अभिनेत्री हैं, जिन्होंने साम्प्रदायिक दलदल से आगे बढ़कर इस प्रकार का सन्देश दिया जिससे कि भटकते हुए मुसलमान ठीक रास्ते पर आ जायें। वीणा हमेशा से राष्ट्रीय खयालात की रही हैं। आपके अन्दर संकीर्ण भाव बिलकुल नहीं। आप फिल्मी दुनिया में रहते हुए भी बाहरी जगत् से भी सम्बन्ध रखती हैं। कला प्रेम के साथ-साथ आप राजनीति से भी दिलचस्पी रखती हैं। आप प्रायः पंडित नेहरू व महात्मा गांधी जी के वक्तव्यों को अवश्य पढ़ती हैं। इन दोनों महापुरुषों की योग्यता पर आपको अटल विश्वास है। मुसलमान होते हुए भी आपके अन्दर मजहबी संकीर्णता नाममात्र को भी नहीं—यही आपकी विशेषता है। वैसे भी आप उन्हीं चित्रों में काम करना पसन्द करती हैं, जिनसे कि हिन्दू-मुसलमानों के अन्दर मेल-मिलाप बढ़े।

आपने इस वक्त फिल्मी दुनिया में काफी नाम कमा लिया है। 'नजमा' और 'हिमायूं' का अद्वितीय अभिनय भुलाया नहीं जा सकता। आपका यह गाना अभी तक लोगों की जबान पर है—"मैं तो ओढ़ूंगी गुलाबी चुनरी" अब आप अशोककुमार के साथ शीघ्र ही बड़ी सजधज के साथ आ रही हैं। इतनी थोड़ी उम्र में इतनी ख्याति कला की दुनिया में उपलब्ध कर लेना यह वीणा जैसी प्रतिभाशाली अभिनेत्री का ही कार्य है। अभी हाल में आपने शादी मिस्टर अलनासिर के साथ की है। वीणा के इस चुनाव से कम से कम हम खुश नहीं हैं, क्योंकि मिस्टर अलिनासिर सिनेमा संसार में तलाक के लिए अधिक मशहूर हैं। वीणा की सरलता का नाजायज फायदा न उठाया जाये, यही हमको आशंका है। फिर भी हमारी शुभकामनायें नवदम्पति के साथ हैं।

अब आपके सामने वीणा का अमूल्य सन्देश रख रहा हूँ, जो कि आज की पागल दुनिया को विशेष लाभकर होगा।

"मैं तो आश्चर्य करती हूँ कि आज इन्सान, हैवान क्यों हो गया? क्या हैवानियत प्रदर्शन करके ही अपने अधिकार लिए जा सकते हैं? मैं तो समझती हूँ कि हैवानियत कभी भी इन्सान को अधिकारों को प्राप्त नहीं करा सकती। इसी हैवानियत एवं गुंडागिरी की वजह से आज मुसलमान हिन्दुओं के "विश्वास की दुनिया" से सैकड़ों कोस की दूरी पर हो गया। आज के युग में साम्प्रदायिक राज्य कभी कामयाब नहीं हो सकता, मेरा तो मिस्टर जिन्ना से भी यही कहना है कि वह दूसरों के बहकाओं में न आयें, बल्कि समझदारी से काम लें। आज जिस रास्ते पर पाकिस्तान जा रहा है, क्या वह सही रास्ता है? मेरा यह विश्वास है कि यदि पाकिस्तान का यही रवैया रहा तो वह इस दुनिया में चन्द दिनों का मेहमान है। सच्चे मुसलमान का यह फर्ज नहीं कि वह हिन्दुओं की बहू-बेटियों पर बलात्कार करे, उनके बच्चों को मौत के घाट उतार दे, उनके आबाद घरों को श्मशान बना दे। इस प्रकार की बातें करना हमारी पवित्र पुस्तक कुरान में तो लिखा नहीं। कुरान हमें कभी इस प्रकार की बेहूदगी करने को आदेश नहीं देता। जिस ईमानदारी के साथ हिन्दुओं ने मुसलमानों को अपनी ओर करने का कदम उठाया, यदि मुसलमानों ने भी उनके ईमानदारी के कदम को समझा होता तो आज हम दुनिया के सामने इतने जलील साबित न होते। मुसलमान हमेशा गलतफहमी की दुनिया में रहा। अँगरेजों ने अपना उल्लू सीधा करने के लिए मुसलमानों को हमेशा उलटी पट्टी पढ़ाई ताकि वे हिन्दुओं से मिलकर इतने ताकतवर न बन जायें कि हमारे मुकाबले आ जायें। आज अँगरेज हिन्दुस्तानरूपी फाटक की ओर से दुनिया को दिखाने के लिए जा रहा है, लेकिन पाकिस्तानरूपी गुप्त खिड़की में से पुनः आने में संलग्न हैं। यह है अँगरेजों की मक्कारी!

बँटवारा तो हो ही गया, परन्तु यह फिर खून-खच्चर क्यों? मैं तो यह दावे के साथ कहती हूँ कि आज की अराजकता एवं लूटमार में अस्सी फीसदी मुसलमानों का ही हाथ है, हां देखा-देखी हिन्दू लोग भी करते हैं, क्योंकि यह स्वाभाविक बात है कि जब इन्सान खून-खच्चर देखता है तो उसके अन्दर बदला लेने की भावना जाग उठती है। यदि मुसलमान आज शान्ति हो जायें तो कोई वजह नहीं कि हिन्दू फिर मुसलमानों को सतायें। मुझे यह कहने में तनिक भी शर्म नहीं कि एक मुसलमान से एक हिन्दू अधिक रहमदिल होता है। हिन्दू लड़ेगा भी तो कुछ अपने साथ सिद्धान्त व आदर्श लेकर। उसके सामने उसूल होंगे खैर "बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि लेय।"

अब हमें पीछे की ओर न देखना चाहिए। जो कुछ हो गया, वह हो गया। उसको भुला देने में ही हमारी भलाई है।

मेरी उन तमाम मुसलमानों को जो कि भारतीय संघ में हैं यही नेक सलाह है कि वे ईमानदारी के साथ भारतीय संघ के प्रति वफादार रहे। अब उनको अपनी पुरानी नीति को छोड़ देना चाहिए, यदि वे सम्मान के साथ हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं। "मुस्लिम लीग" की भी अब कोई आवश्यकता नहीं। इस संस्था को अब तत्काल ही भंग कर देना चाहिए। आजकल बहुत से मुसलमान गुमराह हैं। उनको अपना रास्ता ही नहीं सूझता। मेरा तो यह दृढ़ विचार है कि जिस देश के अन्दर रहे, उसके प्रति हमेशा ईमानदारी के साथ वफादार रहना चाहिए। आजकल यह देखा गया है कि अधिकतर मुसलमान अब भी हिन्दुस्तान में रहकर एक दूसरे पाकिस्तान के ख्वाब देख रहे हैं। इस प्रकार के विचारवाले मुसलमान कहीं के न रहेंगे। उनका पतन निश्चय है। अब यह डेढ़ ईंट की मसजिद अलग नहीं बन सकती। इसलिए अब हिन्दुस्तान में रहनेवाले मुसलमानों को चाहिए कि वे नेहरू सरकार के साथ पूर्ण सहयोग करें ताकि आप लोग अपना खोया हुआ विश्वास पुनः प्राप्त कर सकें। क्या मैं आप लोगों से उम्मीद रक्खूं कि आप अब मजहब के नाम पर खून का बहाना बंद करेंगे और सच्चे दिल से हिन्दुओं के साथ सहयोग करेंगे? दूसरों के ऐब ढूंढने से पहले अपने ऐबों पर दृष्टि डालनी चाहिए। इस तथ्य को हमेशा याद रखना चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि हिन्दू भी मुसलमानों की सच्ची वफादारी पर विश्वास करेंगे।"

(लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

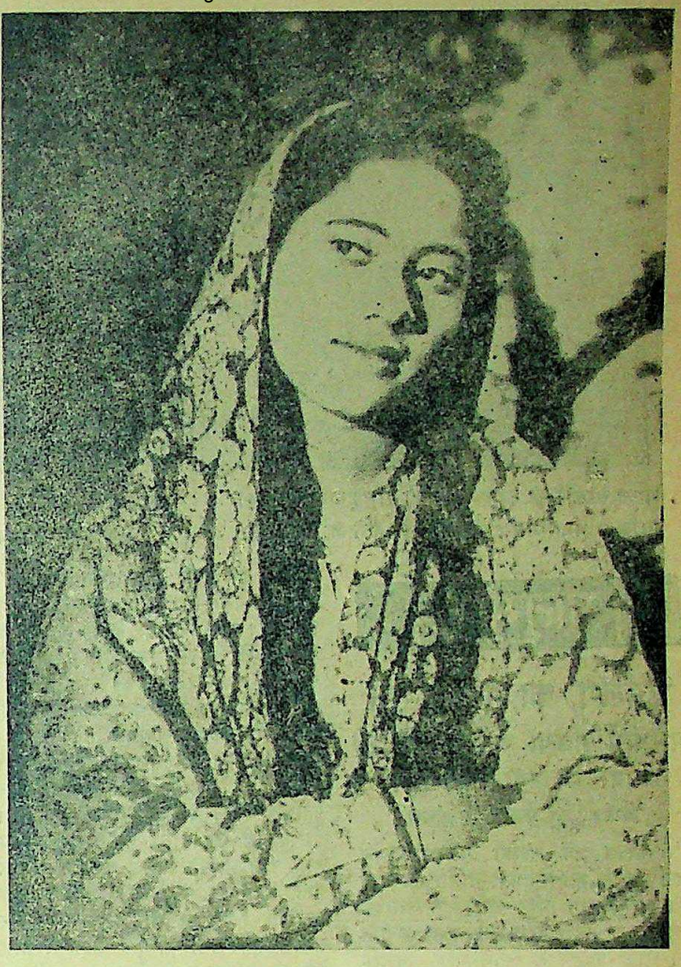

'वरमा के पथ पर' फिल्म में अभिनय करनेवाली अभिनेत्री पारुल कार

अपना-पराया

पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' लिखित इस मनोरंजक उपन्यास में एक चीनी तरुणी का मेनका-नृत्य जहाँ आपको आत्म-विभोर कर देगा, वहीं तिब्बत और चीन की नैसर्गिक छटा और वहाँ के अजीबोगरीब रस्म-रिवाज भी आपके सामने नाच उठेंगे। चीन की यह रहस्यमयी तरुणी किस प्रकार भारत आती और अपने धर्म तथा स्वदेशाभिमान की रक्षा कर, एक भारतीय नौसैनिक की सहायता से अपने देश लौट जाती है, आदि प्रसंग आपको प्रणय की रंगीनियों का सजीव परिचय देंगे। पृष्ठ २३२, सजिल्द और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २॥) रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

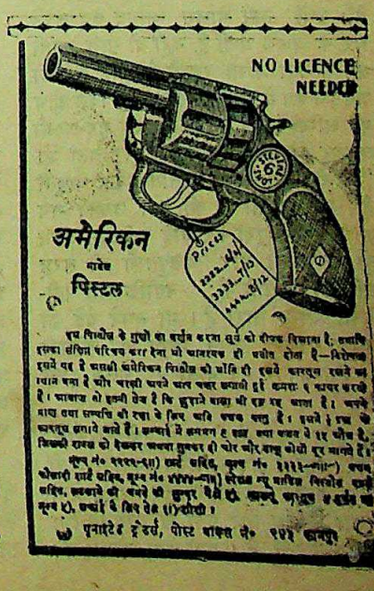

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

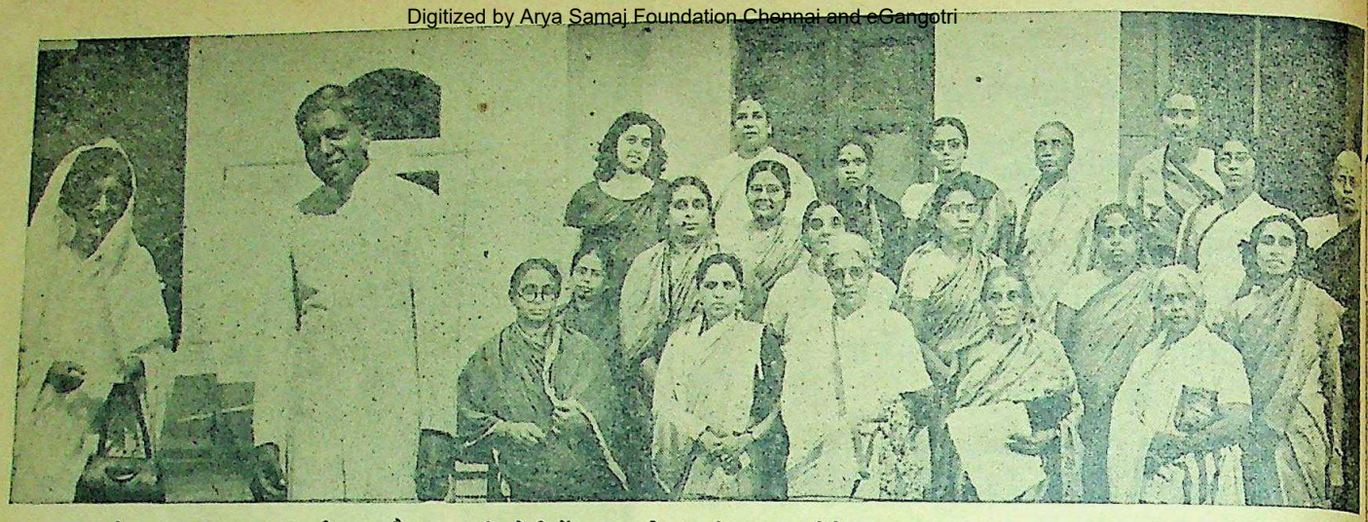

भारत सरकार की स्वास्थ्य-सदस्या राजकुमारी अमृतकौर एशिया श्रमसम्मेलन में सम्मिलित होने जा रही हैं।

पिछले दिनों मद्रास महिला-सम्मेलन का अधिवेशन हुआ था। इस चित्र में सम्मेलन का उद्घाटन करनेवाली डाक्टर राधाबाई सुब्रामन, श्रीमती रुक्मिणी लक्ष्मीपति तथा अन्य सदस्यायें दिखाई दे रही हैं।

मातृमंदिर

'डार्लिंग' का नया फैशन

भारतीय पत्नियाँ आखिर विदेशी जामा कब उतार फेकेंगी ?

लेखक, श्री प्रेम कपूर कंचन

भारत की साध्वी पत्नियां आज 'डार्लिंग' के रूप में हमारे सामने आ रही हैं। लाज, शर्म और हया का आवरण उनके मुख पर नहीं। पर्दा-प्रथा कुरीति है। साड़ी पहनने से काम-काज सुचारु रूप से नहीं चलता, इसलिये उनके सिर पर से साड़ी का आंचल भी उतर चुका है उन्हें आप अपने प्रियतम के बाहों में बाहें डाले, नागिन सी काली-काली दो चोटियां सामने लहराती हुई, नीले फ्राक एवं सफेद सलवार में देख सकते हैं।

ये हैं वह नारियां जिन्हें आप सभ्यता के उच्चतम शिखर पर बैठाना चाहते हैं। इनके घरेलू कर्त्तव्य अवांछनीय हैं। भारत में जन्म लेकर इन्होंने भारत को एक दूसरा युग प्रदान किया है। पर इनका जीवन सदा धोखे की टट्टियों में शिकार करता रहा है और भला इस स्थिति में किसी का घर बस सकता है? भारत वह है जहां लोगों ने इस जीवन को नाशवान मानकर परलोक बनाने की चेष्टा की है। यहां पाश्चात्य प्रणाली संचालित नहीं हो सकती जब कि पाश्चात्य निवासी इस जीवन को स्वर्ग बनाने की चेष्टा में हैं।

कुछ बाबू-वर्ग ने इस प्रणाली को भारत में प्रचलित करने की चेष्टा की है। उन्हें नहीं मालूम शायद वह अपने घर के अकेले प्रणी हैं, नहीं तो सास अपनी बहू से क्या आशा रखती है। वह बहू को जबइस रूप में पाती है तो उसका दिल क्रोध की अग्नि में जल उठता है। बहू गृह-लक्ष्मी बनकर घर में पधारती है पर वहां भी "डार्लिंग" का जीवन व्यतीत करना चाहती है। वह चाहती है की पती उसकी सब आशाओं को पूरा करे चाहे पती इस योग्य हो या न हो और कठपुतली की तरह पती को नचाती है; क्योंकि वह पढ़ी-लिखी 'योग्य' नारी है। मां अपने बेटे को विमुख पाकर अपने भाग्य को कोसती है। इस प्रकार हर बातों पर कलह होती है।

सास अगर सीधी-सादी हुई तो दासी से बुरी दशा में अपना जीवन व्यतीत करती है और बहू, मालकिन बनकर आज्ञा देती है, रात के दस बजे पती के साथ सिनेमा देखकर लौटती है। यदा-कदा दोस्तों की जमघट हो जाती है। दुर्भाग्यवश अगर सास का गरम मिजाज हुआ तो रोज कलह होती है। आये दिन घर के बड़े बूढ़े फैसला करने आते हैं और एक दिन मां बेटे का चूल्हा घूं घूंकर अलग अलग जल उठता है।

इन्हीं "डार्लिंग" के कारण सगे भाई-भाई में मुकदमा-अदालत होती है। इनके प्रियतम जो पत्नीव्रता होते हैं अपने बड़े बूढ़ों और बाप दादों के नाम पर कालिख पोतने में जरा भी नहीं हिचकते।

यह है उस नारी-जीवन का महत्त्व जहां रोज ही नित्य नए कलह उपस्थित होते हैं। वह पति-पत्नी अपने क्षणिक सुख के लिए, मां-बाप, भाई-बन्धु और समाज के बन्धनों को एक झटके में तोड़ देने को प्रस्तुत रहते हैं।

पाश्चात्य देश की नारी न सभ्य पत्नी-ही है न अर्द्धांगिनी-ही। उसकी उपस्थित पार्लियामेंट तथा टाइपरायटरों और टेली-फोन इक्सचेंज पर दृष्टिगत है। वह 'बुकिंग आफिस' पायलेट की रत्न और सौदागरी नारी है। उसको गर्व है अपने किये काम पर। वह सोचती है कि इस प्रकार उसने मनुष्य के काम को हलका कर दिया है। वह कार्यक्षेत्र में मनुष्य की प्रतिद्वन्द्वी है और कमी पूरा करने में प्रयत्नशील है। इस प्रकार वह घर गृहस्थी से परिचित नहीं उसका आनन्द केवल डार्लिंग शब्द में है वह इसी शब्द में जीती है। वहां मातृत्व की कोई महिमा नहीं।

पश्चिम के बच्चे नर्सरी हास्पिटल और शिशुपालन गृहों में डाले जाते हैं। उनको स्वास्थ्यवर्द्धक प्रेम तथा सरल और आत्मिक मातृ-चुम्बन का सौभाग्य कहां? उनका लालन-पालन व्यापारिक वातावरण एवं आर्थिक परिस्थिति में होता है।

इस प्रकार वहां बाप-बेटे से मां-बेटी से परिचित नहीं, पर यह सब वहीं भाता है और वहीं चल सकता है जब कि वहां सब चीज में नकल है। असली प्रकृति का जीवन वहां छू तक नहीं गया। प्रकृति ने घर-गृहस्थी का जीवन प्रश्न बड़ा गठीला बना दिया है। इसलिए भारतीय नारियों के जीवन में "डार्लिंग" का कोई महत्त्व नहीं, एक वेग है जो पाश्चात्य शिक्षा के साथ भारत में आया था। आज हम स्वतंत्र हैं हमें अपने गृह का निर्माण करना है, इसलिए इस प्रश्न को हल करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है। अगर हम चाहते हैं कि हमारा जीवन भी जड़ता में न जाकर प्रकृति की गोद में फले-फूले और हम आत्म-उन्नति के शिखर पर पूरा-पूरा चढ़ सकें।

लेकिन केवल चाहने ही से काम पूरा नहीं हो सकता। मन के लड्डू खा लेने से पेट नहीं भरता। उसके लिए हमें त्याग करना होगा, मेहनत करनी होगी। जिस प्रकार जितना परिश्रम हम करेंगे हमें उसका उतना ही फल मिलेगा। परिश्रम किसी भी रूप में सफल हो सकता है। अब न हमें लम्बे भाषणों की आवश्यकता है न सुन्दर और मनभावक लेखों की। हमें कोरी पटिया पर बार-बार नहीं लिखना है।

क्योंकि जब आज की नारी में इतनी जागृति है कि वह समाज में और देश में पुरुष के बराबर या उसके अधिकारों से अपने को महानतम समझने लगी है तो हमें उसको रास्ता नहीं दिखाना है। अब तो उन्हीं को अपने पथ का निर्माण करना होगा।

चाहे नारियां इसे न स्वीकार करें पर उन्हें किसी न किसी स्थिति में यह अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा कि भारतीय नारियों में अधिकांश अभी जागरण की आवश्यकता है। यह ठीक है कि जब नारियों के जागरण के उदाहरण हमारे सामने हैं तब साथ ही साथ उनके सुप्त अंग की दशा देखकर रोना भी आ जाता है। पर जिस जागरण या जागृति की भारत को आवश्यकता है, वह "डार्लिंग" शब्द से या "क्लब हाऊज" जाकर 'टी पार्टी' या सिनेमा-घरों में नये नये फैशन में आकर पूरी नहीं हो जाती।

हम या कोई भी भारतीय कहलाने-वाला व्यक्ति यह कभी भी सहन न करेगा कि लोग पश्चिमी व्यवसायी नारियों की तरह भारतीयों से भी बर्ताव करें। नारी के सामने कृत्रिमता एवं असत्यता का एक पहाड़ खड़ा है। उस पहाड़ को चीरकर नारी को उपस्थित होना उसमें नारी पक्की उतरेगी इसका हमें विश्वास है क्योंकि भारतीय नारी सतीत्व का मूल्य जानती है। पुरातन इतिहासों में नारी का जीवन कंचन के समान पक्का होता है। उस समय की नारी की स्वतन्त्रता और जागृति में और आज की स्वतन्त्रता और जागृति में कितना बड़ा अन्तर है। इस अन्तर की पूर्ति उस समय तक पूर्ण-रूप से सफल नहीं हो सकती जब तक नारी स्वयं अपने मूल्य को न समझे।

इससे आगे भी मजा तो तब आता है जब बाबू या पढ़े-लिखे लोग अपनी पत्नी को इस "डार्लिंग" के योग्य बनाने की चेष्टा करते हैं। वे चाहते हैं कि उनकी पत्नी उनके सामने बिलकुल खुलकर रहे। अगर वह लज्जा से या शीलता से किसी बातों को कहने में संकोच करती है तो वे उसे सहन नहीं कर सकते वे तो चाहते हैं कि उनकी पत्नी प्रेम से गले में बाहें डाल-कर झूल पड़े। वे नहीं चाहते कि उनकी पत्नी मिलने पर शीलता से चरण स्पर्श करे या नमस्ते करे। वे पत्नी की इन सब क्रियाओं का महत्त्व नहीं समझते।

उस पुरातन भारत में और आज में केवल एक कारण है.... विद्या! "विदेशी राज्य के जब यहां चरण जम रहे थे; उस समय लार्ड मैकाले ने कहा था—कि यदि भारत में अगर शासन करना है तो सबसे प्रथम हमें वहां की भाषा और संस्कृति का विनाश कर अपनी भाषा और संस्कृति का जमाना होगा जिसके प्रभाव से हमें भारत में एक ऐसा बाबू-वर्ग पैदा 'करना है जो रंगरूप से कहलाने के लिए हिन्दुस्तानी या भारतीय हो पर काम पूरा हम लोगों की तरह करे।"

ठीक उसके कथनानुसार आज हम विद्या और संस्कृत के साथ-साथ अपने जीवन के मूल्य को खो चुके हैं। इसलिए अगर हमें फिर अपना घर बसाना है तो डार्लिंग की महानता भूलकर प्रिये और प्रियतम, लज्जा और शीलता के बन्धन में बँधना होगा। तभी ज्ञान,आलोक और श्री हममें निवास करेगी। हमारा भाग्य पलटेगा और हम विश्व में अपनी अर्धांगिनी के साथ एक-एक स्वतन्त्र पथ ग्रहण कर सकेंगे, लेकिन इसके लिए नारियों को भी हमारे पदचाप के साथ अपने पदचाप मिलाने होंगे।

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी के और होम्योपैथिक थायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं नियमावली मुफ्त मँगायें। पता:—

इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

अन्तू सरदार

भरोस सरदार के लड़की के सिवा कोई सन्तान न थी। और भरोस था ऐसा लठैत जिससे पुलिस भी डरती थी। एक जमींदार के यहाँ भरोस नौकर था। उसने अपनी बेटी को भी लाठी चलाना सिखला दिया था। इसका ब्याह जिस अनन्त (अन्तू) से किया गया था वह भरोस से सवाया था। एक झमेले में बड़ी मार-काट हुई। इसमें अन्तू की स्त्री भी मारी गई और भतीजा प्रताप पागल-सा हो गया। पुलिस ने अन्तू को गिरफ़्तार कर सज़ा करा दी। इधर प्रताप भी चल बसा। यह कहानी है तो बड़ों के लिए भी रोचक, परन्तु बच्चों को बहुत पसन्द आवेगी। सुन्दर सरल भाषा, कई चित्र और कवर-पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल बारह आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

विधान-परिषद् और राष्ट्रभाषा हिन्दी

हिन्दी की गरिमा से परिचित कराना पिष्टपेषण करना है! आपको विदित होगा कि विधान-परिषद् की आगामी बैठकों में हिन्दी का प्रश्न सामने आनेवाला है। यदि हिन्दी की सर्वप्रियता और श्रेष्ठतम योग्यता का भली भांति प्रचार आप नहीं करेंगे तो भय है कि कुछ विशिष्ट कारणों से हिन्दुस्तानी को ही विजयश्री मिले। हिन्दी का भविष्य उस दशा में एकदम अन्धकार में चला जायेगा, उसके साथ देश का भी।

हिन्दी-हिन्दुस्तानी के सम्बन्ध में विधान-परिषद् के अहिन्दी-प्रान्तीय सदस्य प्रायः अनभिज्ञ से हैं। हिन्दी की ऐतिहासिक परम्परा से अन्य भारतीय भाषाओं की परम्परा में कितना सादृश्य है और हिन्दुस्तानी की परम्परा इन सबसे कितनी दूर है, इसकी ठीक-ठीक धारणा उन्हें नहीं है। आपका कर्त्तव्य है कि हिन्दी-हिन्दुस्तानी का विवेचन करके सिद्ध करें कि राष्ट्रभाषा होने की क्षमता एकमात्र हिन्दी ही में है। हिन्दी के साथ साम्प्रदायिकता का जो अज्ञानवश नाम लिया जाता है उस मोह का भी निराकरण करना चाहिए। जायसी, रहीम, रसखान और सैयद अली 'मीर' की दुलारी भाषा को साम्प्रदायिकता से गठबन्धन करानेवाले उचित पथ पर नहीं हैं।

हिन्दुस्तानी गिलक्रिस्ट, हाब्सन-जाब्सन, कष्ट, स्मिथिन, मरे, हैरप, आदि योरोपीय विद्वानों एवं श्री सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या सरीखे भारतीय विद्वानों द्वारा एक स्वर से उर्दू की ही प्रतिकृति मानी गई है। इसकी घोषणा आपको खुले शब्दों में करनी चाहिए। हिन्दीभाषी प्रान्तों में ही जब हिन्दुस्तानी को शरण नहीं मिल रही है, इन प्रान्तों का बहुमत फारसी लिपि और फारसी-अरबी से पोषित उर्दू या हिन्दुस्तानी को ठुकरा चुका है तो भला यह कहां का न्याय होगा कि समस्त भारतवर्ष के लिये हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा बनाई जाय? माना पाकिस्तान का उर्दू के प्रति ममता की प्रतिक्रिया हमें नहीं दिखलानी है; परन्तु हिन्दी का प्रश्न तो एकदम स्पष्ट है। हिन्दी राष्ट्रभाषा केवल इसीलिये होने की क्षमता रखती है कि अन्य प्रान्तीय भाषाओं का शब्दकोष ७५ प्रतिशत हिन्दी की भांति संस्कृतोद्भूत है और हिन्दी उनके साहित्यों के पारस्परिक लेन-देन के लिये सर्वसुगम माध्यम बनी रही है। हिन्दी का महत्त्व भौगोलिक ऐतिहासिक और वैज्ञानिक तीनों कारणों से सर्वस्वीकृत है। स्वयं महात्मा गांधी जी 'प्रेम, संघ-सेवक आदर्श' से भरी-पुरी हिन्दी का समर्थन आज से ग्यारह वर्ष पूर्व कर्नाटकवाले भाषण में कर चुके हैं। आज देश के अभाग्यवश वे हिन्दुस्तानी के पक्ष में हैं। जनता की सम्मति आपको इस विषय में अविदित न होगी। भारतीय संघ की जनता भारतीय परम्परा से अनुप्राणित और मध्य-देश की सार्वदेशिकता से ओत-प्रोत हिन्दी को छोड़ अन्य भाषा को और देवनागरी को छोड़ अन्य लिपि को अपनाना नहीं चाहेगी। विधान-परिषद् के सामने जनता की इस वाणी को पहुँचाना आपका आज सबसे बड़ा धर्म है। न केवल हिन्दी के नाते, परन्तु स्वदेश की रक्षा के लिये आज आप सन्नद्ध होकर हिन्दी के विषय में जो लोकमत हो उसकी खुले शब्दों में घोषणा करें।

आशा है, आप इस प्रार्थना को स्वीकार कर अपने प्रख्यात पत्र में इस विषय पर प्रति सप्ताह कुछ न कुछ प्रकाश डालेंगे एवं प्रतिदिन निम्नलिखित वाक्य मुख-पत्र पर मोटे अक्षरों में छापेंगे

"विधान-परिषद् को एक मत से हिन्दी को राजभाषा एवं देवनागरी को राजलिपि स्वीकार करके लोकमत की प्रतिष्ठा करनी चाहिये।"

विधान-परिषद् जब तक हिन्दी के प्रश्न पर निर्णय नहीं हो जाता है तब तक अनवरत रूप से यह प्रचार होना चाहिए। इसी से आपका, हमारा और हमारी भारत माता का कल्याण निहित है।

प्रयाग —उदयनारायण तिवारी
२८ नवम्बर, ४७ एम० ए०, डी० लिट्
संयोजक

* * *

राष्ट्रीयता और प्रार्थना, वर्दी तथा नमस्कार की एकरूपता

भारत के स्वतंत्र हो जाने पर अब यह आवश्यक है कि हमें दैनिक राष्ट्रीय जीवन में एक डिस्प्लिन की स्थापना होनी चाहिए। सार्वजनिक दृष्टि से राष्ट्रीय प्रार्थना, वर्दी पहनने तथा नमस्कार आदि में एकरूपता आवश्यक है।

राष्ट्रीय प्रार्थना का राष्ट्र की एकता में एक अद्वितीय स्थान है। राष्ट्र का विभाजन हो जाने से यह प्रश्न और भी सरल हो गया है। भाषा इस सम्बन्ध मे अब कोई बाधा नहीं प्रस्तुत कर सकती। तीन विभिन्न राष्ट्रीय गायनों का प्रचार आजकल है। पहिला "वन्दे मातरम्" दूसरा "जन-गन-मन अधिनायक" तथा तीसरा "सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा"। इनमें से केवल एक ही राष्ट्रीय प्रार्थना की दृष्टि से लेना चाहिये। अन्य दो राष्ट्रीय गायन की दृष्टि से रखे जा सकते हैं। राष्ट्रीय प्रार्थना छोटी, किन्तु अत्यन्त उत्तेजनात्मक होनी चाहिए। इसमें लोगों को देश-भक्ति की भावना उत्पन्न करने की क्षमता होनी चाहिए। सुन्दर तथा सरस होने के अतिरिक्त इसमें वह गुण होना चाहिए ताकि सभी लोग इसे अपना सकें और मार्चिंग आदि करते समय इसका उद्धरण कर सकें। इन सभी गुणों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि "वन्दे मातरम्" ही हमारा अभिप्राय सिद्ध करता है। इससे अच्छे किसी अन्य राष्ट्रीय प्रार्थना के अभाव में सरकार को इसे ही राष्ट्रीय प्रार्थना का पद प्राप्त करने के लिये घोषित कर देना चाहिए।

१५ अगस्त के उत्सव में हमारे नेताओं के लिये यह एक हंसी की बात थी कि उनका अपना कोई वस्त्र नहीं था। कोई धोती, कोई ढीला पाजामा, कोई चूड़ीदार इस भांति अनेक वस्त्र पहिने थे। उचित वस्त्र का अभाव मुख्यतः ऐसे अवसरों पर हमारे लिये दुख की वस्तु है। ग्रीष्म तथा जाड़े दोनों ऋतुओं का उत्सवों के लिये सरकार को अपना मुख्य वस्त्र रखना चाहिए। अचकन तथा चूड़ीदार पैजामा प्रचलित रूप में है और इसे रहने दिया जाना चाहिए। टोपी के सम्बन्ध में मतान्तर होने की संभावना है। सबसे उत्तम तथा सुन्दर गांधी टोपी ही होगी।

१५ अगस्त के अवसर पर देश के विभिन्न प्रान्तों में नमस्कार का प्रदर्शन भी विभिन्न रीतियों से हुआ। नमस्कार करने का कोई भी मुख्य ढंग न था। कुछ लोगों ने सेना के ढंग से और कुछ ने हाथ जोड़कर मानो वे किसी मन्दिर में किसी मूर्ति की पूजा करने गये हों, ऐसे हास्यास्पद अवसर पर दूरवर्ती देशों के निवासियों को हंसने का बड़ा अवसर है। मार्चिंग करते समय नमस्कार सेना के ढंग का होना चाहिए। पश्चिमी ढग को अपनाने में कोई विशेष हानि नहीं यदि उससे चस्त दिखाई पड़ते हैं।

राष्ट्र के जीवन में इन वस्तुओं का तथा आदर्श का देश रहा है। उसे उसके स्थान से च्युत नहीं कराना चाहिए। भारत एक प्रजातन्त्र राज्य होने जा रहा है। हम अपने देश का गौरव तथा कीर्ति मुख्य अवसरों पर ही दिखा सकते हैं और वह हमारी सभ्यता तथा संस्कृति से ही प्रकट होगा।

प्रयाग —जगदीशनारायण
३० नवम्बर, ४७ शुक्ल

* * *

कृषि-विज्ञान के विद्यार्थी किधर

आज से कुछ समय पहले व आज भी हमारी यह मनोवृत्ति रहती है कि हम बी० एस० सी० (एग्रिकल्चर) पास कर लें कृषि-विज्ञान के ग्रेजुएट हो जायें और अच्छी सी नौकरी मिल जाय। भारत अब आजाद हो गया है, परन्तु यह मनोवृति अब भी हमारे दिमाग से नहीं निकली, वरन् और भी दृढ़ होती जा रही है। फिर इस लड़ाई के समय सरकार ने कुछ ऐसे विभाग खोल दिये हैं जिसमें युवकों का ध्यान झूठ, कपट और चोरी से धन कमाने की ओर खींचा है। ऐसी नौकरियां करके न जाने कितने युवकों ने, जिनसे सम्भवतः बहुत कुछ आशा की जाती थी, अपना जीवन बरबाद कर डाला है। जिसका ध्येय घूंसखोरी करना, दिन-रात किसी न किसी को फँसाने की ही सोचते रहना तथा अन्य प्रपंच रचना ही रह गया है। क्या हम सबके लिये यह दुःखदायी नहीं है?

हर साल विद्यार्थी कृषि-परीक्षा पास करते हैं और अधिकतर नौकर हो जाते हैं। भारत की ऐसी हालत में जब कि देश में भोजन की कमी है, हजारों, लाखों प्राणी भूखों मर रहे हैं। हमारे नेता लोग दिन-रात चिल्लाते हैं, खाद्य सामग्री का उत्पादन बढ़ाइये, साग-भाजी का उत्पादन बढ़ाइये, परन्तु सुनता कौन है? गत ता० २५ को माननीय शेरवानी साहब (कृषि-मन्त्री संयुक्तप्रान्त) इलाहाबाद एग्रिकल्चर इन्स्टीट्यूट में पधारे थे। अपने भाषण में उन्होंने कहा "जब कि देश में भोजन की कमी है, लाखों प्राणी भूखों मर रहे हैं, कृषि के विद्यार्थियों का कर्त्तव्य है कि वे नोकरी के कीड़े को दिमाग से निकाल दें और तन मन धन से देश के भोजन-उत्पादन में मदद दें, अपने फार्म चलाकर तथा किसानों में उन्नत खेती का प्रचार करें।"

सच तो यह है कि हम किसान कहलानेवाले गुमराह होते चले गये और चले जा रहे हैं; परन्तु आज हम आजाद हैं, स्वतन्त्र भारत में हैं। हम पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है जिसको हम भूल रहे हैं।

शासन-व्यवस्था के लिए नौकरी जरूरी चीज है, उसके लिये कृषि-विभाग में नौकरी करना। अगर सरकार को हमारी आवश्यकता है, तो हमारा पहला कर्त्तव्य है। क्योंकि मनुष्य वहां के लिये बाहर से तो नहीं लाये जायेंगे? लेकिन नौकरी करने में हमारा ध्यय लूटमार का, घूंसखोरी कर पैसा कमाना नहीं होना चाहिए। अगर सत्यता, ईमानदारी व देश के किसानों को ऊंचा उठाने का ध्येय रखकर नौकरी की जाय तो बहुत ही उत्तम होगा, हम देश की सबसे बड़ी सेवा कर सकेंगे! इसमें हमको अफसर बनकर नहीं वरन् किसान बनकर गांव-गांव घूमकर प्रचार करना होगा और खेती को उन्नतिशील बनाना होगा।

हमें आधुनिक ढंग से खेती कर उसी ढंग की खेती का प्रचार करना चाहिए। इसके लिए हमें दृढ़ संकल्प करना चाहिए तथा क्रियात्मक रूप में काम करना चाहिए।

कृषि-कालेज, [illegible] सिसोदिया
प्रयाग —चतुर्थ वर्ष (कृषि)

महाकवि निराला और कम्यूनिस्ट

महाकवि निराला न केवल आधुनिक हिन्दी-काव्य के एक प्रमुख युग-प्रवर्तक कवि हैं, वरन् वे भारत के एक महान् साहित्यिक व्यक्ति भी हैं। उनके अन्दर एक ऐसी प्रकान्त प्रतिभा उतरी है जिसने अपनी चूड़ान्त उँचाई में उनके समस्त जीवन को ढक लिया है। उनकी प्रचण्ड व्यक्तित्व-शिलाओं में हृदय की एक ऐसी महामानवीय उदारता का कोमल श्रोत है, जिसमें सामान्य व्यावसायिक जीवन की सीमा-रेखायें डूब गई हैं। यही कारण है कि इस महान् व्यक्तित्व का शोषण भी पर्याप्त हुआ। निस्सन्देह उनकी आज की अवस्था समस्त हिन्दी-समाज और सारे राष्ट्र के लिये एक चुनौती है।

पिछले दिनों प्रयाग में होनेवाली 'प्रदर्शनी' के प्रगतिशील लेखक संघ-द्वारा आयोजित कवि-सम्मेलन में यह घोषणा की गई है कि संघ निराला-भवन बनवाने की योजना प्रस्तुत कर रहा है। दबी जबान, शायद सत्य पर आवरण डाल सकने की मनोवैज्ञानिक असमर्थता के कारण यह स्वीकार भी किया गया कि संघ के पास कोई अपना निजी कार्यालय नहीं है। प्रयाग में निराला-भवन बनेगा, पर कौन जानता है कि हिन्दी का वही महान् साहित्यकार जिसके नाम पर भवन बनेगा, किस झोपड़ी के टूटे खंडहरों में सोता मिल जायगा? 'निराला-वस्त्रालय' बनेंगे, पर निराला के शरीर पर जीर्ण-शीर्ण चिथड़े ही होंगे। "निराला-अन्नागार" बनेगा, पर निराला कब तक अपनी भूख-तृषा को नीलकंठ के विष की भांति पीता जायगा, कौन कह सकता है? अभी-अभी 'निराला स्वर्ण-जयन्ती' भी मनाई गई थी और कोष की भी व्यवस्था थी, पर उत्सव की समाप्ति पर कितना धन बच रहा, किसको पता है?

मैं आपके सम्मानित पत्र द्वारा समस्त हिन्दी-संसार को यह सूचित कर देना चाहता हूँ कि कम से कम निराला जी के नाम को शोषण करने का दुष्प्रयन्त न किया जाना चाहिए। घाव जो मुरझाया हुआ अन्तर्मुखी होकर पड़ा है, उसे कुरेदकर उसमें व्यथा की चिनगारियां न भरी जायें तो बेहतर है। आज यदि 'निराला' जैसा व्यक्ति किसी और देश में होता तो उसकी पूजा होती, किन्तु अभागिनी हिन्दी के तो मस्तक पर यह लिख दिया गया है कि तुम विद्रोह और उपेक्षा की वनयोगिनी हो और तुम्हारा सेवक जीवन-सुख से दूर पथ के कंटकों का प्रिय-पात्र।

माना कि कम्यूनिस्ट पार्टी और प्रगतिशील लेखक-संघ के पास कार्यालय नहीं है, किन्तु इसके लिए निराला के नाम का अशोभन डाकेजनी करने का मार्ग क्यों खोज निकाला जा रहा है? अगर कम्यूनिस्ट इस स्थल पर अपनी अवसर वादिता का बाना न उठावें तो बहुत अच्छा हो। शोषण के और भी अनेक मार्ग हैं, कम से कम निराला जी के हित की आड़ में इस तरह के काण्ड न किये जायें तो बहुत अच्छा है।

३० नवम्बर, ४७ —शिवकंठलाल शुक्ल
'सरस'

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्तरोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए० लाहौरवाले फतेहपुरी (D. A.) देहली से मशवरा (सम्मति) मुफ्त लेकर अपना जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य-चर्चा

एरण्ड—अनेक रोगों की दवा

इसका प्रयोग कब और किस रोग में किया जाना चाहिए ?

लेखक, श्री रामेश वेदी आयुर्वेदालंकार
(हिमालय हर्बल इन्स्टिट्यूट, गुरुकुल कांगड़ी)

भारत के बहुत बड़े क्षेत्र में एरण्ड की खेती हो रही है। इसके बीज और तेल दोनों ही व्यापार के महत्त्वपूर्ण पदार्थ हैं। तेल चिकित्सा में सारे संसार में बहुत परिमाण में प्रयुक्त होता है। हमारे घरों में इसका प्रयोग इतना अधिक होता है कि हम सब एरण्ड तेल के अनुलोमक गुणों को भली भांति जानते हैं। अनुलोमन के लिये तथा दूसरे अनेक रोगों को दूर करने के लिये इसके प्रयोगों का संक्षिप्त वर्णन हम इस लेख में दे रहे हैं।

आदर्श अनुलोमक

एरण्ड का तेल एक निरापद सुरक्षित क्रियाशील अनुलोमक ओषधि है जो प्रत्येक आयु के सब प्रकार के स्वभाववाले व्यक्तियों को बिना झिझक दी जा सकती है। बिना किसी प्रकार का क्षोभ और गरमी उत्पन्न किये यह निश्चित रूप से कार्य करती है। गर्भावस्था में और प्रसव के बाद की अवस्था में स्त्रियों के लिये, बवासीर और भगन्दर के ग्रस्त व्यक्तियों के लिए, नाजुक स्त्रियों, बच्चों, बूढ़ों और कमजोरों के लिए सुरक्षिततम और सर्वोत्तम विरेचक है। पेट-सम्बन्धी शल्यकर्मों (आपरेशन) में, वस्तिगह्वर के रोगों में, पर्यावरण शोथ (पेरिटोनाइटिश) में, ज्वरों में, विशेष कर टाइफाइड (आन्त्रज्वर) की मलबन्ध में और सेण्टोनीन की एक मात्रा से पूर्व या पश्चात् एरण्ड-तेल का प्रयोग सुरक्षिततम है। शरीर के निचले अवयवों की शोथक संशमन दवा के रूप में सुश्रुत ने एरण्ड का उल्लेख किया है। इसके फूल भी प्रायः अनुलोमक ओषधि के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जड़ की छाल में भी विरेचक गुण समझा जाता है। लाल मिरच और तम्बाकू के पत्तों के साथ इसको पीसकर निबू के बराबर मोदक बना लेते हैं; घोड़ों की कोष्ठबद्धता के लिये यह अत्युत्तम दवा है।

कितना और कैसे देना चाहिए ?

एक जवान आदमी को अनुलोमक (हल्के जुलाब) के लिये एरण्ड तेल को तीस बूंद की न्यूनतम मात्रा से आठ औंस तक अधिकतम मात्रा में देने की जरूरत पड़ती है। सामान्यतया जवान आदमियों को एक बारी में चार से छः ग्राम की मात्रा में दिया जाता है। बच्चे कभी-कभी बड़ी मात्राएँ पचा जाते हैं। नवजात शिशु के लिये एक छोटा चाय का चम्मच भर बड़ी मात्रा नहीं ह । शीत-निष्पीडन से निकाला हुआ तेल लगभग स्वाद-रहित होता है और काड लिवर आयल (मछली के तेल) की तरह दिया जा सकता है। तेल की अरुचिकर गन्ध, चिकनापन और खराब सा स्वाद कीकर की गोंद के लैस या अण्डे की जर्दी के साथ घोल (इमल्शन) बनाने से या कैटस्पूल्स में भरकर देने से हटाये जा सकते हैं। सर्दियों में पिलाने से पहले एरण्ड तेल को गरम जरूर कर लेना चाहिए। गरम काफी या दूध के ऊपर तैरता हुआ तेल लिया जाय या तेल की एक मात्रा लिये जाने के दो-घण्टे बाद एक चाय का प्याला गरम पानी पी लिया जाय तो प्रायः इसके कार्य में सहायता मिलती है। भोजन इसके कार्य को रोकता है या मन्द करता है। कहा जाता है कि तारपीन के तेल की कुछ-बूंदें इस में मिला देने से इसका

पेट के रोग

अपच के कारण उत्पन्न शिशुओं के तथा बड़ों के दस्तों में एरण्ड-तेल की एक मात्रा देने से ही लाभ होता है। दस्तों की तीव्र अवस्था में अहिफेन मद्यासव (टिंक्चर ओपिआई) मिलाकर दिया जा सकता है। उदर रोगों में स्नेहपान करने के बाद चरक एरण्ड-तेल को दूध में पकाकर पिलाते हैं जिससे विरेचन द्वारा मल की शुद्धि हो जाय। उदावर्त में दूध, मांसरस, त्रिफला का काढ़ा, गोमूत्र, मदिरा आदि के साथ एरण्ड का तेल दिया जाता है। शूल में सोंठ और एरण्ड की जड़ के काढ़े में हींग तथा सौंचल नमक डालकर पीने से जल्दी आराम आ जाता है । वारुणी शराब में एरण्ड-तेल मिलाकर वायुगोले में दिया जाता है और वात-गुल्म में तेल को दूध में डालकर पिलाया जाता है। बड़ी आंतों और गुदा के भ्रंश में तेल एनिमे के रूप में सफलता के साथ दिया जाता है।

पेचिस

तीव्र प्रवाहिका (पेचिश, एक्यूट डिसेण्ट्री) की यह अत्युत्तम औषधि है। रोग शुद्ध होने पर ही दी जानी चाहिए और अहिफेन मिलाकर दी जाय तो मरोड़ें भी जल्दी ही बन्द हो जाती हैं। एरण्ड का तेल दो से चार ड्राम और अहिफेन मद्यासव दस से बीस बूंद तक की मात्रा में दिया जाना चाहिए। इसी तरह छोटी मात्राओं में पुरानी पेचिश में भी लाभ करता है। इसके लिये एरण्ड-तेल की पन्द्रह से बीस बूंदों को अहिफेन मद्यासव की पांच से दस बूंदों के साथ जलीय घोल (इमल्शन) बनाकर दिया जाता है। एरण्ड की जड़ को दूध में पकाकर प्रवाहिका (पेचिश) में पिलाया जाय तो चरक कहते हैं कि, प्रवाहणों में रक्त जाना बन्द हो जाता है।

बवासीर में एरण्ड के पत्तों के गरम काढ़े से गुदा को धोया जाता है।

गठिया और वायु के रोग

दर्द करनेवाले जोड़ों पर पत्तों को गरम करके बांधा जाता है। पुराने आमवातिक (रहुमेटिक) विकारों में तेल बहुत प्रभावकारी समझा जाता है और विभिन्न शास्त्रीय योगों में प्रयुक्त होता है। एरण्ड की जड़ भी अनेक आमवातिक विकारों में और वातसंस्थान के रोगों में दिये जानेवाले कई योगों में दी जाती है। चरक ने पुंस्त्वशक्ति को बढ़ाकर वीर्य को पुष्ट करनेवाली और वायुनाशक ओषधियों में एरण्ड की जड़ को उत्तम माना है। जोड़ों के पुराने आमवात (रहुमेटिज्म) में एरण्ड-तेल की मालिश वेदना को दूर करती है और जोड़ों की अकड़ाहट को कम करती है। संस्कृत में एरण्ड का एक प्रसिद्ध नाम वातादि (वायु रोगों का शत्रु) इस वायुरोगों को नष्ट करने के विशेष गुणों की ओर संकेत करता है। भावमिश्र का विश्वास है कि आमवात जैसे बड़े रोग को नष्ट करने में एरण्ड-तेल अकेला ही पर्याप्त है ।

कमर की दर्द, टांग की बड़ी नाड़ी गृध्रसी (शियाटिका) का दर्द, शरीर के किसी हिस्से का मारा जाना (पक्षाघात) आदि वायु के स्थानिक विकारों में यह ओषधि पुराने संस्कृत साहित्य में बहुत लाभप्रद समझी गई है। छिलके उतारे हुए बीजों

पीना कटिशूल और गृध्रसी की उत्कृष्ट दवा समझी जाती है। गो-मूत्र के साथ एक महीने तक सुबह एरण्ड-तेल को पीने से गृध्रसी और टांगों का लकवा ठीक हो जाता है। भावमिश्र बताते हैं कि एरण्ड-तेल के साथ हरड़ को विधिवत् सेवन करने से आमवात, गृध्रसी, बृद्धि और मुख का लकवा (फेशिपल पेरेलिसिस) ठीक हो जाता है। गठिया तथा आमवातजन्य शोथ और पर्यास्वनी स्त्रियों की छाती की शोथ को कम करने के लिए बीजों को कुचलकर बनाई हुई पुल्टिस लगाई जाती है। पत्तों का उपयोग भी यही गुण करता है, पर थोड़े अंश में। घावों और चोटों को साफ करने के लिए रस का उपयोग होता है।

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ गीति-काव्य

कवि और छवि

लेखक, सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव

कविश्री बालकृष्ण राव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपकी नवीनतम गीति-काव्यों का सर्वश्रेष्ठ संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्दृष्टि से परिपूर्ण तो है ही साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाले हैं। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संग्रहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम, सचित्र और सजिल्द—मूल्य केवल २) रु०।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

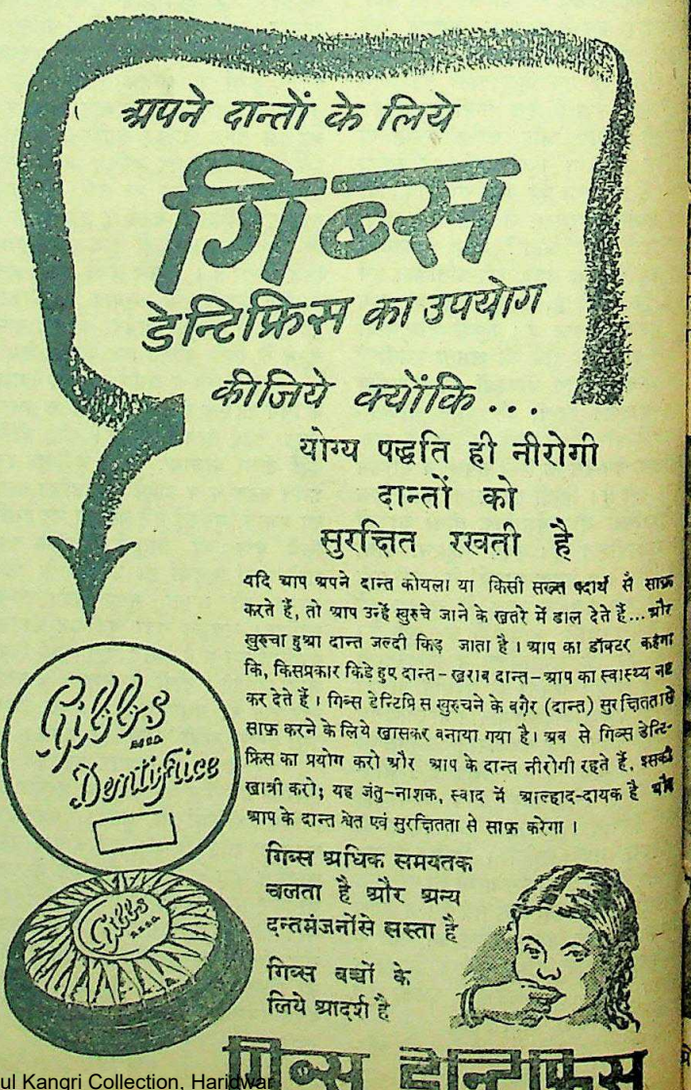

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत चित्रावली

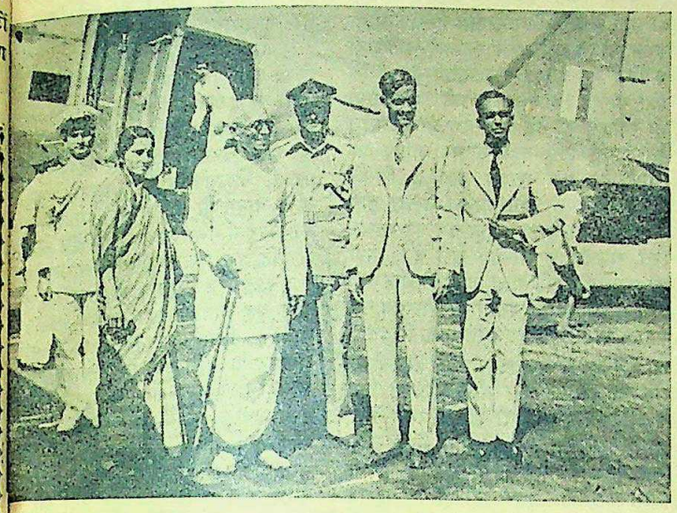

भारत के वाइसराय माननीय चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचारी का दिल्ली हवाई अड्डे पर स्वागत।

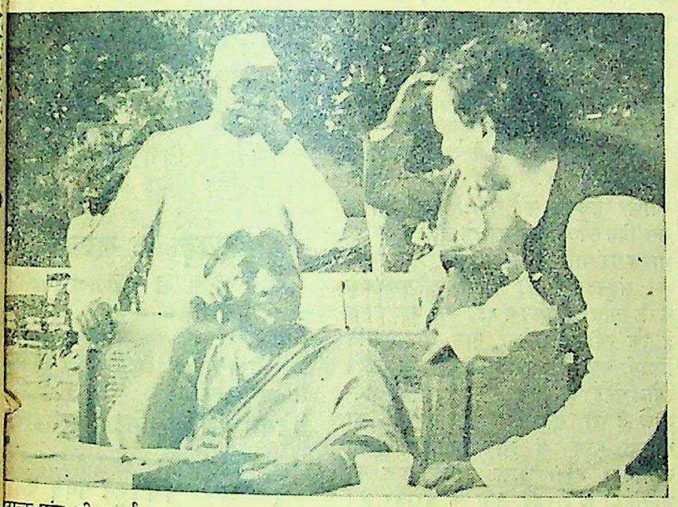

संयुक्त प्रांत की गवर्नर माननीया श्रीमती सरोजिनी नायडू काशी में होनेवाले लेखक-सम्मेलन के अवसर पर डाक्टर मुल्कराज आनन्द और विजयानगरम् के महाराजा कुमार से वार्ता कर रही हैं।

कांग्रेस के भूतपूर्व प्रेसिडेंट आचार्य कृपलानी दिल्ली में कांग्रेस वर्किंग कमेटी में सम्मिलित होने जा रहे हैं।

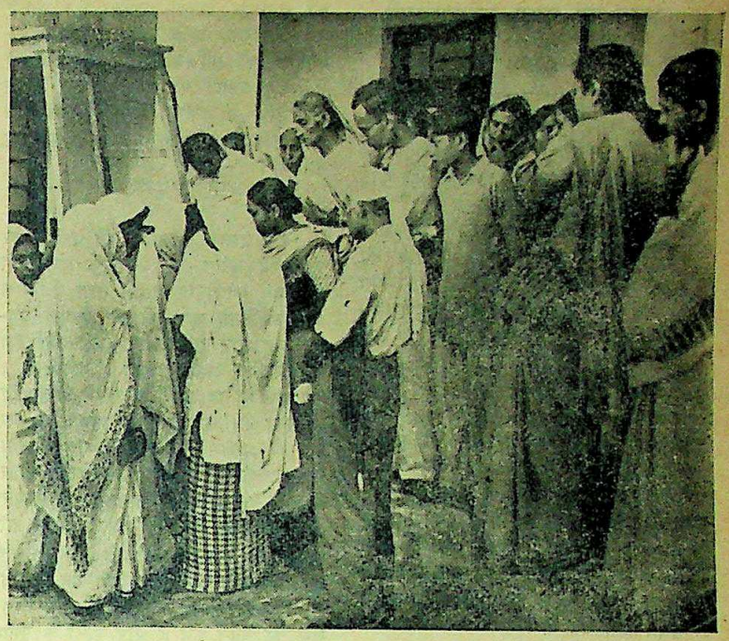

पंजाब से आई हुई शरणार्थी महिलाओं को देखने के लिए स्टेशन पर भीड़।

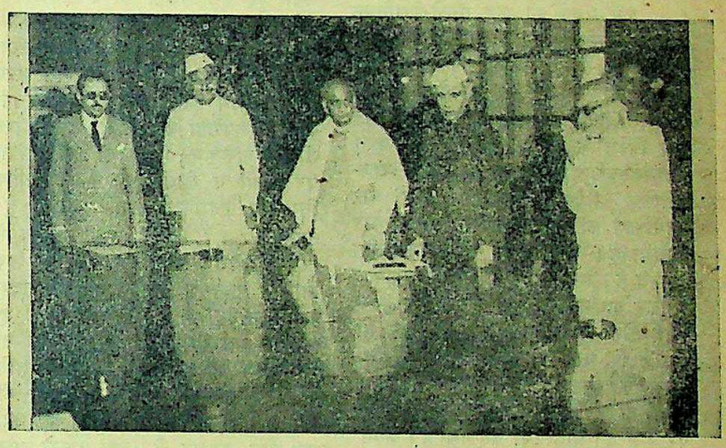

वाइसराय श्री राजगोपालाचारी के साथ भारत-सरकार के पांच प्रमुख संचालक।

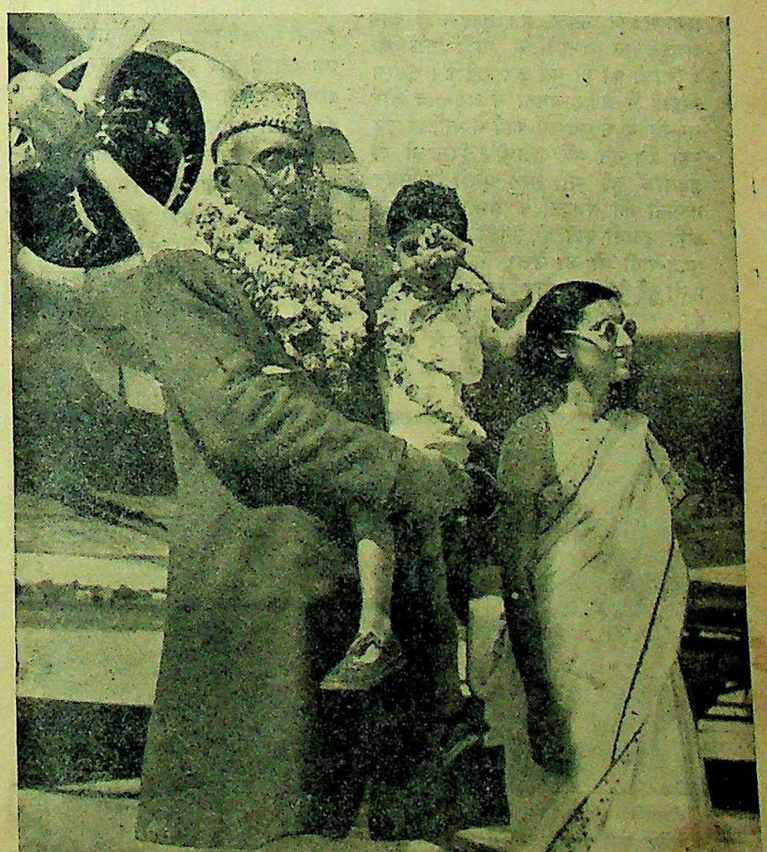

दिल्ली के हवाई अड्डे पर कश्मीर के नेता शेख अब्दुल्ला श्रीमती इन्दिरा गांधी और उनका पुत्र राजीव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईरान का प्रसुप्त ज्वालामुखी

(पेज ५ का शेष)

नियों का धैर्य मुझे विगलित कर देता ह—मैं कामना करता हूँ कि अच्छा हो यदि वे क्रान्ति करें—किन्तु यह क्रान्ति उनकी अपनी निजी हो। बाहर का कोई प्रभाव उसे उत्तेजित न करता हो।"

रजाशाह की यह आन्तरिक अनुभूति थी जिसमें विवशता और विषाद का गहरा रंग स्पष्ट व्यक्त हो रहा है। अपने छः वर्ष के शासनकाल में उसने यह अनुभव कर लिया था कि वह एवं उसकी प्रजा ईरान के तेल को हड़प करनेवाली ताकतों के हाथों में शतरंज के मोहरों की भांति हैं। उनकी स्वतन्त्रता एक दम्भ है। यही कारण है कि उसने एक क्रान्ति की कामना की थी जिसके द्वारा ईरान की जनता विदेशी दानवों को अपनी मातृभूमि से बाहर निकाल सकी। किन्तु रजाशाह का मनोरथ पूरा न हो सका। ईरान के भाग्य में शोषण और रक्तपात, दैन्य और बेबसी ही लिखी हुई है। आज ईरान अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष क्षेत्र बन गया है।

* * *

इस संघर्ष की जड़ एँग्लो-ईरानियन आयल कम्पनी ह। ब्रिटेन के हाथों में ईरान के तेल का एकाधिकार है जिसे वह किसी भी शर्त पर छोड़ने को राजी नहीं है, क्योंकि ईरान में केवल तेल पर ही ब्रिटेन का एकाधिकार नहीं है, वरन् समस्त दक्षिणीय ईरान पर उसका राजनीतिक अधिकार भी है। रूस और अमेरिका को ब्रिटेन का यह एकाधिकार असह्य है। वे भी इसमें भागीदार बनना चाहते हैं। अमेरिका ने ब्रिटेन का साहूकार बनकर यह मनोरथ पूरा कर लिया है—और दोनों के स्वार्थ इतने एकाकार हो गये हैं कि दोनों मिलकर रूस के ईरान-प्रवेश का सशक्त विरोध कर रहे हैं। अमेरिका तो सारे अन्तर्राष्ट्रीय राजमंच पर रूस का प्रतिस्पर्धी बन गया है। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए रूस ने जो मार्ग अपनाया है वह नाजियों की पंचमांगी-प्रणाशी की नकल है। तूदह-पार्टी और अजरबैजान डेमाक्रेटिक पार्टी रूस की प्रेरणाओं को ही मूर्त कर रही हैं। सशस्त्र विद्रोह से लेकर जनता में असन्तोष और वर्ग-विद्वेष फैलाने का कार्य ये पार्टियां कर रही हैं। गत वर्ष दक्षिणीय ईरान में जो हड़तालें हुई थीं और एँग्लो-ईरानियन कम्पनी को मजदूरों के अभाव में काफी क्षति उठानी पड़ी थी, उसका सारा कारण तूदह-पार्टी थी जो उत्तर से दक्षिण तक फैली हुई है। इस प्रकार ईरान की विपत्तियों का कारण औद्योगिक न होकर राजनीतिक है। रूस तूदह-पार्टी के हाथों में ईरान की बागडोर देखना चाहता है। ब्रिटेन एवं अमेरिका शाह और उसके ४०० सामन्तों को सर्वेसर्वा बनाये रखना चाहते हैं। इस प्रकार दो साम्राज्यवाद ईरान की भूमि में टकरा रहे हैं—जनता के दैन्य-दारिद्र्य की चिन्ता किसी को भी नहीं है।

* * *

इस प्रकार ईरान में भी यूरोप और चीन की भांति दो वैचारिक प्रणालियों में संघर्ष काफी गहरा हो गया है। एक ओर सोवियत् रूस की प्रसारोन्मुख प्रवृत्तियां हैं और दूसरी ओर एँग्लो-अमेरिकन पूंजीवाद का आक्रमणात्मक शोषण-प्रसार। गत वर्ष से यह संघर्ष और भी आतंकप्रद हो गया है। रूस के सामने ईरान के तेल का ही प्रलोभन नहीं है, किन्तु द्वितीय महायुद्ध के बाद उसकी अन्तर्राष्ट्रीय नीति में आत्म-सुरक्षा की आवश्यकता भी अत्यन्त तीव्र हो उठी है। ईरान के तेल पर तो रूस की गृद्ध-दृष्टि है ही सही, किन्तु सुरक्षा-परिधि का सवाल भी वह उठाने से नहीं चूकता है। रूस के पास उष्ण समुद्रतट बहुत कम है और जारों के समय से ही उसकी आंख फारस की खाड़ी पर लगी हुई है। बसरा के बन्दरगाह पर अधिकार करके वह फारस की खाड़ी के पद से हिन्द महासागर में प्रवेश करना चाहता है। तेल-स्रोतों को हस्तगत करने के साथ-साथ रूस की सुरक्षा-व्यूह-रचना की एक रूपरेखा यह भी है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के हेतु वह पिछले दो वर्षों से ईरान पर किसी न किसी रूप में राजनीतिक नियन्त्रण स्थापित करना चाहता है। तूदह-पार्टी की स्थापना इसी उद्देश्य से हुई थी और अस्थायी रूप से मौन एवं निष्क्रिय रहने के बाद आज फिर तूदह-पार्टी बगावत का झंडा लेकर खड़ी हो रही है। अजरबैजान डेमाक्रेटिक पार्टी का शिलान्यास भी इसी हेतु से हुआ था। इन दोनों राजनीतिक दलों ने जनता की शताब्दी गत राजनीतिक प्रसुप्ति को जहां एक ओर जगाया है वहां दूसरी ओर सोवियत ढंग के कम्यूनिज्म का भी यथेष्ट प्रचार किया है। यही कारण है कि ईरान में वर्ग-विद्वेष की भयानक हिलोरें उठ रही हैं और देश का सारा सामाजिक ढांचा लड़खड़ा रहा है। आज के ईरान की जनता धार्मिक अंधविश्वासों के आवरणों को चीरकर बाहर निकल रही है। साम्पत्तिक वैषम्य का जितना क्षोभपूर्ण अनुभव उसे हो रहा है उतना मुस्लिम जगत के किसी भी कोने में आज तक नहीं हो सका है। 'धर्म' के तकाजों की अपेक्षा भूख के तकाजे ज्यादे जरूरी साबित हो रहे हैं।

संयुक्तप्रांत की राजभाषा हिन्दी क्यों?

(पेज ८ का शेष)

बनने की संभावना है। कनाडा में अंगरेज फ्रांसीसी दोनों ही राष्ट्र के प्रति वफादार हैं।

"मोमिन गजट" ने स्वीजरलैंड का उदाहरण भी दिया है जहां एक नहीं, दो नहीं, तीन राष्ट्रभाषायें हैं—फ्रांसीसी जर्मन और इटालियन। उसकी जानकारी के लिये हम इतना और बताये देते हैं कि वहां सन् १९३७ में एक चौथी राष्ट्रभाषा भी स्वीकृत की गई है उसका नाम रोमांश है। परन्तु उन्हें नहीं भूलना चाहिए कि स्वीजरलैंड एक आदर्श देश है जिसमें अल्पसंख्यकों की समस्या को उत्पन्न होने ही नहीं दिया जाता। वहां धर्म पर आधारित राजनीतिक संस्थायें नहीं हैं। वहां की फ्रांसीसीभाषी प्रजा फ्रांस की ओर नहीं देखती। जर्मनभाषी जर्मनी की ओरहाथ नहीं बढ़ाते और न ही इटालियनभाषी इटली का अंग बनना चाहते हैं। तीनों ही स्वीजरलैंड की प्रजा हैं और अपने देश की रक्षा के लिये आक्रमणकारी फ्रेंच, जर्मन और इटालियनों का खून बहाने के लिये सदैव तैयार रहते हैं। गत महायुद्ध में जर्मनी स्वीजरलैंड को हड़प नहीं ही कर सका। इसके विपरीत भारतीय संघ के देशद्रोही मुसलमानों भारतीय संघ और पाकिस्तान में युद्ध होने पर भारतीय संघ की सहायता देना पसन्द नहीं करेंगेऔर पांचवें दस्ते की तरह भारत में पाकिस्तान की सहायता करेंगे। भारतीय संघ के मुसलमान स्वयं को भारतीय संघ का नागरिक घोषित करने में कतराते हैं। उनका दृढ़विश्वास है कि भारतीय संघ के मुसलमान केवल किसी इस्लामी हुकूमत के प्रति वफादारी कर सकते हैं किसी हिन्दू बहुमत काफिर हुकूमत की नहीं। इसलिये वह उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब समस्त भारत पर पाकिस्तान का झंडा लहरायेगा।

संयुक्तप्रान्त की तुलना स्वीजरलैंड से करते समय "मोमिन गजट" यह भूल जाता है कि स्वीजरलैंड का नाम और ख्याति जितनी बड़ी है उतना बड़ा देश वह नहीं। स्वीजरलैंड का क्षेत्रफल १५,९५० वर्ग-मील है जो संयुक्तप्रान्त के क्षेत्रफल का सातवां भाग है और स्वीजरलैंड की जनसंख्या ४१॥ लाख संयुक्तप्रान्त की जनसंख्या के तेरहवें भाग के बराबर है। दूसरे शब्दों में स्वीजरलैंड की आबादी और क्षेत्रफल प्रायः गोरखपुर कमिश्नरी के बराबर है। इस प्रकार एक कमिश्नरी में जितने सरकारी कागजों के छपाने की आवश्यकता पड़ेगी, उससे कहीं अधिक सारे प्रान्त में आवश्यकता पड़ेगी। स्वीजरलैंड में विभिन्न भाषाभाषी जनता की संख्या निम्न प्रकार है—

जर्मन	३० लाख
फांसीसी	८॥ लाख
इटालियन	२॥ लाख
रोमांश	४४ हजार

अगर संयुक्तप्रान्त भी उतना छोटा देश होता जितना स्वीजरलैंड यहां के मुसलमान भारतीय संघ के सचमुच वफादार होते तो संयुक्तप्रान्त ८४ लाख मुसलमानों की उर्दू भाषा भी राजभाषा का पद मिलता।

जब किसी सरकार से मुसल किसी भी अधिकार की मांग पेश हैं तो वह सरकार उचित रूप से पूछ सक है कि क्या मुसलमानों ने उस सर के प्रति अपना कर्त्तव्य पालन किया परन्तु संयुक्तप्रान्त के मुसलमानों क बाबा आदम ही निराला है। वह तो अधिकार मांगना जानते हैं प्रान्तीय सर के प्रति अपना कर्त्तव्य पालन करना क्या कोई ऐसा मुसलमान नागरिक चाहे वह लीगी हो या मोमिन या वादी —जिसने सरकार के किसी अफसर या मजिस्ट्रेट को किसी मुसल के यहां छिपे अस्त्र-शस्त्र की सूचना दी ऐसी अवस्था में देशद्रोही मुसलमान कार से किसी प्रकार की मांग करने धृष्टता ही कैसे कर सकते हैं? उन्हें रखना चाहिए कि वह दिन हवा हुए खलील खां फाख्ता उड़ाया करते भारत को अखंड रहने की आशा में हिन्दुओं के हर प्रकार के अधिकारों अवहेलना करके मुसलमानों को रखने की चेष्टा करती रही; परन्तु पाकि बन जाने पर उसकी अव्यवस्था दे कांग्रेसी सरकारों का हृदय क्षोभ से गया है और अब वह पाकिस्तान में तक विश्वास करनेवाले भारत म मुसलमानों को किसी प्रकार की सु देने के लिये तैयार नहीं।

गुदड़ी के लाल

इस पुस्तक की कहानियां बहु सरल और रोचक भाषा में लिखी हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद खुश हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों को दीजिए। मूल्य ॥)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहा

(रजिस्टर्ड) **चित्रकूट पर्वत**

श्वांस (दमा) की अनुभवसिद्ध जड़ी-मार्गशीर्ष सुदी पूर्णिमा ता० २७-१ रात्रि को एक खुराक सेवन करने से न पुराना श्वांस (दमा) हमेशा के लिए हो जाता है। घर बैठे मँगवाकर सेवन मँगाने का पता—**श्री महात्मा नागा**

आयुर्वेदाश्रम, पोस्ट चित्रकूट, यू० पी ६६

कोमलता से सुगंधित किया गया **वेसलीन व्यू सील पोमेड** बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।

वेसलीन व्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

सभी दूकानों पर

Copyright

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे **"वीर्यसंजीवनसत"** ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।—) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रि में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ **"तिला मस्ताना"** की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

वृन्दावन में शरणार्थी-दिवस समारोह के साथ मनाया गया। सारे शहर में जुलूस निकला, जिसमें सरकारी अधिकारी भी सम्मिलित थे। रात में गोविन्द जी के मंदिर पर सभा हुई। सर्वश्री रामजीदास गुप्ता, जिला मजिस्ट्रेट गंगाराम यादव और अद्वैतकुमार गोस्वामी के भाषण हुए।

प्रान्तीय सरकार मथुरा-वृन्दावन के शरणार्थियों के लिए अब तक १५ हजार रुपया, १ हजार रजाइयां, ६५ गांठ कपड़ा दे चुकी है। ३ हजार रजाइयां और कम्बल और आ रहे हैं। गत २५ तारीख को मथुरा-वृन्दावन रोड पर बिजली कम्पनी के पास एक मिलिटरी की मोटर ट्रक से भयानक दुर्घटना हो गई। एक १३ साल की चमार की लड़की तो घटनास्थल पर ही मर गई, प्रेम महाविद्यालय के वर्कशाप सुपरिन्टेन्डेंट श्री आर० पी० त्रिपाठी सख्त घायल हुए। उनकी साइकिल टूट गई।

अमृतबाजार पत्रिका के सम्पादक श्री तुषारकान्ति घोष अपने राजपूताना दौरे के बाद कुछ घंटों के लिए वृन्दावन आये। स्थानीय पत्रकार गोस्वामी अद्वैतकुमार जी ने आपसे अपनी काश्मीर-यात्रा के सम्बन्ध में व देश की वर्तमान राजनैतिक परिस्थिति पर बातें कीं।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधान मंत्री और विधान-परिषद् के सदस्य आचार्य जुगलकिशोर जी एम० एल० ए० की धर्मपत्नी श्रीमती शान्तीदेवी के दिल्ली में पेट का आपरेशन करके प्रथम पुत्र हुआ है। अब वह स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

वृन्दावन के प्रसिद्ध विद्वान् गोस्वामी दामोदराचार्य शास्त्री अपने परिवार के साथ वृन्दावन रेल में आ रहे थे कि वह अपने कीमती कपड़ों की गठरी जिसमें कि कुछ जेवर भी थे रेल में ही भूल गये। जब उन्होंने वृन्दावन के स्टेशन-मास्टर से मथुरा स्टेशन पर तार व टेलीफोन करने को कहा तो उन्होंने मना कर दिया। फिर वह जब मथुरा गये तो छावनी स्टेशन पर वृन्दावन के गार्ड ने व वहां के स्टेशन-मास्टर ने तथा पुलिस कांस्टेबिल ने उनका वह सब सामान उन्हें ज्यों काह्यों वापस कर दिया। गोस्वामी जी ने उनके कर्त्तव्य की सराहना करते हुए उन्हें धन्यवाद दिया।

वृन्दावन की श्रीकृष्ण चैतन्य सभा की ओर से ३ दिन तक कलिपावनावतार भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु का वृन्दावन शुभागमनोत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया गया। अक्रूरतीर्थ पर भारतप्रसिद्ध सर्वशास्त्री के प्रकाण्ड विद्वान् श्री गोस्वामी दामोदरलाल जी शास्त्री का भाषण हुआ। २८ ता० को जुगलघाट-स्थित अमिय गौरांग महाप्रभु जी के मंदिर से चैतन्य महाप्रभु की सवारी का डोला बड़े समारोह के साथ सारे शहर में निकला। हजारों का जनसमूह सवारी के साथ था। श्रीकृष्ण चैतन्य सभा के मंत्री गोस्वामी गौरकृष्ण जी शास्त्री हैं।

—संवाददाता

* * *

इलाहाबाद जसरा बाजार में एक बड़ी सभा पूज्य स्वामी श्रीकृष्णानंद तीर्थ, उड़िया बाबा के सभापतित्व में हुई। लगभग ६७ गांवों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।

सभा में श्री उड़िया बाबा के भाषण से प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। सभी उपस्थित सज्जन उड़िया बाबा के भाषण द्वारा प्रभावित हुए।

सर्वसम्मति से यह योजना स्वीकृत हुई कि सर्वकुल ब्रह्मचर्य विद्यालय की स्थापना की जाय। विद्यालय में संस्कृत तथा अँगरेजी दोनों साथ साथ पढ़ाई जाय। विद्यालय के संचालनार्थ एक समिति बनाई गई—सभापति पूज्य स्वामी श्री कृष्णानंद तीर्थ, उड़िया बाबा, उपसभापति पं० शारदाप्रसाद शुक्ल, शास्त्री, मंत्री पं० मोतीलाल शुक्ल, उपमंत्री पं० ब्रजमोहनलाल शुक्ल। सदस्य पं० कृष्णाराम पाण्डेय पं० दीनबन्धुजी दुबे कोषाध्यक्ष पं० शारदाप्रसाद मास्टर। विद्यालय के लिये पं० कृष्णराम पाण्डेय ने १५ बीघा जमीन विद्यालय को दानस्वरूप प्रदान की।

* * *

इलाहाबाद जसरा में जमुनापार ब्राह्मण सेवक समिति का द्वितीय वार्षिकोत्सव समारोह के साथ पं० हरप्रसाद दुबे के सभापतित्व जसरा में मनाया गया। सभा में हजारों की संख्या में ब्राह्मण थे। ब्राह्मण जाति के अभ्युत्थान के लिए सभा ने विधान तैयार किया। पिछले वर्ष के आय-व्यय पर विचार करके अगले वर्ष का बजट पास किया गया। सभा में सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पास हुआ कि ब्राह्मण सेवक-समिति का विस्तार इलाहाबाद जिले भर में किया जाय। द्वितीय वर्ष के लिए पदाधिकारी चुने गये—सभापति पं० हरप्रसाद दुबे, भौटा, उपसभापति पं० आनंदीप्रसाद दुबे, पचखरा, मंत्री पं० शारदाप्रसाद शुक्ल शास्त्री अमरेहा, उपमंत्री पं० ब्रजमोहनलाल शुक्ल जसरा, कोषाध्यक्ष पं० शारदाप्रसाद मास्टर जसरा और सदस्य पं० मोतीलाल शुक्ल, चिल्ला, पं० दीनबन्धु दुबे पांडर, पं० भगवतीप्रसाद वसंती, श्री छेदीलाल जसरा।

—संवाददाता।

* * *

लखनऊ रानी कटरा से श्री प्रेमनारायण टंडन, एम० ए०, लिखते हैं—

'हिन्दी-सेवी संसार' व समस्त हिन्दी जगत् का परिचयात्मक संदर्भ ग्रंथ है। इसमें समस्त हिन्दी-सेवियों, संरक्षकों, सरकारी-गैरसरकारी संस्थाओं, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशकों, पुस्तकालयों एवं पुरस्कारों का संक्षिप्त परिचय रहेगा। इसके नवीन संस्करण के लिए आई हुई सामग्री का संपादन-कार्य आरंभ हो गया है। अतः इस ग्रंथ के लिए जो सामग्री अभी तक नहीं भेजी गई है, वह १५ दिसंबर तक अवश्य भेज दी जाय।

इस संबंध में एक बात हमें यह निवेदन करनी है कि स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी के योग्य ही इस संदर्भ ग्रंथ का नया संस्करण हम प्रकाशित करना चाहते हैं। इसके लिए समस्त हिन्दी-सेवियों का कृपापूर्ण सहयोग अपेक्षित है और इसके अभाव में, ग्रंथ के अपूर्ण रह जाने के उत्तरदायी केवल संपादक नहीं, अन्य हिन्दी-सेवी भी होंगे। आशा है, इस महत्त्वपूर्ण कार्य को सफल बनाने के लिए सामग्री एवं निर्देश १५ दिसंबर तक भेजकर सभी हिन्दी-सेवी अपना कृपापूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

—संवाददाता

* * *

कानपुर बालसेवा-सदन गांधी नगर से बालहित-सम्बन्धी विषयों पर प्रकाश डालने तथा जन-समुदाय की गुत्थियों को सुलझाने के लिए "बालसेवा" मासिक पत्र के प्रकाशन का आयोजन किया गया है। इसमें बाल-साहित्य, बाल मनोविज्ञान तथा अन्य बालहित विशेषज्ञों के लेखों के अतिरिक्त देश-विदेश के बाल-आन्दोलन का भी उल्लेख रहेगा।

—लोकेश्वरनाथ "दादाजी"

प्रयाग हिन्दू छात्रावास, प्रयाग विश्वविद्यालय, की साहित्य परिषद् के अंतर्गत एक अखिल भारतीय हिन्दी कहानी प्रतियोगिता होनेवाली है। अध्यक्ष—डा० रामशंकर शुक्ल 'रसाल' डी० लिट०, श्रीयुत कृष्ण माधव चौधरी साहित्य मंत्री, सहायक-संयोजक श्री घनश्याम शुक्ल, श्री शिवशंकर भारद्वाज लिखते हैं—

भारतीय-संघ का प्रत्येक नागरिक इस प्रतियोगिता में भाग लेने का अधिकारी है। सर्वश्रेष्ठ दो कहानियों को 'बहुमूल्य-पुरस्कार' (स्वर्णिम विजयचिन्ह आदि) प्रदान किये जायेंगे। साथ ही अत्यन्त मार्मिक अथच विचित्र मनोवैज्ञानिक कथावस्तु एवं शैली के दृष्टिकोण से एक 'विशेष पुरस्कार' भी भेंट किया जायेगा। प्रतियोगिता में भेजी जानेवाली प्रत्येक कहानी के साथ 'प्रवेशशुल्क'—जो कि सर्वसाधारण के लिए एक रुपया तथा विद्यार्थियों के लिए आठ आना मात्र है—अवश्य आना चाहिए। कहानियां सोमवार तदनुसार ता० २२ दिसम्बर, १९४७ तक संयोजक के पास अवश्य आ जानी चाहिए—उसके उपरान्त कोई भी कहानी प्रतियोगिता में सम्मिलित न हो सकेगी।

—संवाददाता

* * *

पटना से पुस्तक-भंडार के व्यवस्थापक लिखते हैं—हिन्दीप्रेमियों से नम्र निवेदन है कि 'हिमालय-पुस्तकमाला' बारह सजिल्द खंडों में निकलकर साहित्य-संसार में बहुत लोकप्रिय हुई है, जिससे उत्साहित होकर हम 'हिमालय' को जनवरी १९४८ से उसी तरह सजिल्द मासिक पत्र के रूप में निकालने जा रहे हैं। उसका सम्पादन पूर्ववत् श्री शिवपूजनसहाय ही करेंगे। उसके लिए नई समुचित व्यवस्था की गई है जिससे वह नियमित रूप से हिन्दी पाठकों की सेवा में प्रति मास पहुँच सके। आशा और विश्वास है कि अब तक उसको हिन्दी-संसार में जैसा आश्रय मिला है वैसा ही आगे भी मिलता रहेगा।

—संवाददाता

* * *

हरिद्वार कनखल में एक पश्चिमोत्तर पंजाब से आई हुई पीड़ित सर्दारनी जो कि यहां किराये का मकान लेकर ठहरी हुई थी, सनसनीदार चोरी हो गई। चोर ताला तोड़कर लगभग ७१ तोले सोने के और लगभग २० तोले चांदी के जेवरात जिनका मूल्य लगभग १० हजार रुपये बताया जाता है, ले गये पुलिस ने खोज करने पर दो सिख युवकों को मालसहित गिरफ्तार कर लिया है।

कनखल आदि स्थानों में पश्चिमी पंजाब से आये पीड़तों को शीत-निवारणार्थ रजाइयां वितरण हो रही हैं। पीड़ित हिन्दू-सहायक-सभा के कर्मचारी और कनखल में सेठ सीताराम प्रेमी म्युनिसिपल कमिश्नर स्वयं रजाइयां वितरण कर रहे हैं।

—संवाददाता

* * *

मुरेना ग्वालियर मण्डी में बाबू हजारीलाल जी मुत्ता की काफी कोशिश करने पर गुमाश्ता संघ की स्थापना हुई जिनके प्रधान की मुन्नालाल जी मारवाड़ी व मंत्री श्री सीताराम जी वांदिल चुने गये, सदस्य भी काफी तादाद में बन रहे हैं यह योजना सारे रियासत में जारी होने जा रही है।

स्थानीय कांग्रेस कमेटी का वार्षिक चुनाव भी बालमुकुन्द जी मुगदल की अध्यक्षता में हुआ जिसमें श्री हजेला प्रेसीडेण्ट, मंत्री बाबू हजारीलाल जी गुप्ता चुने गये और २२ प्रतिनिधि जनरल कमेटी के चुन गये।

—संवाददाता

हिन्दी के सुप्रसिद्ध नाटककार पंडित उदयशंकर भट्ट, ऑल इंडिया रेडियो दिल्ली के नाटक-विभाग के सलाहकार नियुक्त हुए हैं।

देवरिया में लवकनी छमांवा में ठाकुर रामभरोससिंह सदस्य समाजवादी पार्टी और पालकी साह कार्यकर्ता कांग्रेस के उद्योग से किसानों की एक विराट् सभा हुई। लगभग तीन-चार सौ किसानों की उपस्थिति में रामजी भाई किसान कार्यकर्ता का भाषण किसानों के सगठन पर, पं० रामचन्द्र शर्मा मंत्री किसान-सभा जिला देवरिया का भाषण हिन्दू-मुसलिम एकता पर तथा श्रीरामसहाय श्रीवास्तव का भाषण किसानों की आर्थिक उन्नति पर हुआ। जनता पर इस सभा का अच्छा प्रभाव पड़ा सबने गुंडई के अन्त करने का निश्चय किया।

—संवाददाता

हमीरपुर तहसील महोबा ग्राम ग्योड़ी में श्रीमान् लालबहादुर शास्त्री मंत्री न्याय-विभाग, पधारे। साथ में श्री श्रीपतिसहाय रावत, एम० एल० ए०, हमीरपुर तथा श्रीमान् पं० मन्नीलाल गुरुदेव जी सभापति जिला कांग्रेस हमीरपुर आदि पधारे श्री श्रीपतिसहाय रावत एम० एल० ए० ने झण्डा फहराया। श्रीमान् लालबहादुर शास्त्री को कांग्रेस कमेटी की ओर से २०१) की थैली ठा० हरपालसिंह द्वारा भेंट की गई और ५१) की थैली श्रीमान् श्रीपतिसहाय जी रावत एम० एल० ए० जी को ठा० मुरलीसिंह द्वारा भेंट की गई। ५१) की थैली श्रीमान् पं० मन्नीलाल गुरुदेव सभापति जिला कांग्रेस हमीरपुर को ठा० दृगपालसिंह द्वारा भेंट की गई। इन सबों के भाषण हुए। यहां पर जनता ८००० के लगभग एकत्रित थी।

—संवाददाता

मथुरा में प्रान्तीय प्रेम-संगीत प्रतियोग्यता व संगीत-सम्मेलन शीघ्र होने का आयोजन हो रहा है। प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले छात्र व छात्राओं को चाहिए कि अपनी तैयारी आरम्भ कर दें।

—बैजनाथ दाणी
मंत्री

दिल्ली चावड़ी बाजार, स्वास्थ्य-सदन से 'छाया' हिन्दी में पहला सचित्र मासिक होगा जो स्वास्थ्य जैसे गहन विषयों पर मार्मिक विवेचन करेगा और वैज्ञानिक विचारों का प्रचारक होगा।

—प्रकाशक
स्वास्थ्यसदन

श्वास दमा (खाँसी) के रोगियो नोट कर लो। श्री चित्रकूट कामद गिरबूटी जिसकी केवल एक ही खुराक मिती मार्गशीर्ष पूर्णिमा ता० २७-१२-४७ के सेवन करने से पुराने से पुराना श्वास (दमा) खाँसी सदैव के लिए नष्ट हो जाती है। मँगाने का पता—
श्री महात्मा तपसी बाबा, श्री रामगुफा चित्रकूट, पो० चित्रकूट, जि० बाँदा यू०पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

बम्बई में ३५ वाँ अधिवेशन

बम्बई में अ० भा० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का ३५वां महाधिवेशन होने जा रहा है। अतः हिन्दी के राजभाषा होने और राजभाषा हो जाने पर उसमें वैधानिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, दार्शनिक, व्यावसायिक आदि विभिन्न विषयों के उच्च रचनात्मक साहित्य के निर्माण आदि की विविध दृष्टियों से इस अधिवेशन का बड़ा महत्त्व है। समय बहुत कम है, कार्य महान् है। अतः विराट् हिन्दी-जगत् से सविनय निवेदन है कि वह इस सम्मेलन को सब प्रकार से सफल बनाने में स्वागत समिति को तन, मन, धन से संपूर्ण सहयोग दे। अधिवेशन के अध्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त साम्यवादीविद्वान् महापंडित राहुल सांकृत्यायन चुने गये हैं। राष्ट्रभाषा परिषद् के प्रधान डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी (उद्योग व रसद मंत्री, भारत सरकार) दर्शन परिषद् के अध्यक्ष आचार्य क्षितिमोहन सेन (शांति-निकेतन, विश्वभारती) समाजशास्त्र परिषद् के सभापति श्री कमलापति त्रिपाठी एम० एल० ए०, विज्ञान परिषद् के प्रधान डा० ब्रजमोहन निर्वाचित हुए हैं। साथ में कवि सम्मेलन, लोकगीत सम्मेलन, अंतर्भाषा-साहित्य-सम्मेलन, मनोरंजन, साहित्य-कला-प्रदर्शन, हिन्दी पंपद, पत्रकार परिषद्, सिनेमा साहित्यकार परिषद्, संस्कृत परिषद् आदि 'ललित' कार्य-क्रम भी होंगे।

स्वागत कार्य समिति का संगठन इस प्रकार हुआ है—

स्वागताध्यक्ष—श्रीराधाकृष्ण खेतान, उपाध्यक्ष सर्वश्री उमाशंकर दीक्षित, डा० मोतीचन्द चौधरी, सेठ गंजाधर सोमाणी, सेठ भगवानदास सिहानियां। स्वागत मंत्री—ठाकुर काशीप्रसादसिंह। कोषाध्यक्ष—श्री घनश्यामदास पोद्दार, राष्ट्रभाषा परिषद्—स्वागताध्यक्ष, प्रधानाध्यापक, नरहरि रघुनाथ पाठक, स्वागत मंत्री, कांतिलाल जोशी, साहित्य परिषद् डा० जगदीशचन्द्र जैन, स्वागत मंत्री, श्री श्यामसुन्दर गुप्त, समाजशास्त्र परिषद् स्वागताध्यक्ष, श्री रणछोड़लाल ज्ञानी, स्वागत मंत्री श्री रमणलाल अग्रवाल, विज्ञान परिषद्—स्वागताध्यक्ष, डा० माताप्रसाद जी, स्वागत मंत्री, श्री ज्योतिरंजन शास्त्री, दर्शन परिषद्—स्वागताध्यक्ष, आचार्य तेजसिंह, कवि-सम्मेलन—श्री निधि द्विवेदी (संयोजक) अंतर्भाषा-साहित्य-सम्मेलन स्वागताध्यक्ष मामा वरेरकर स्वागत मंत्री, कृष्णलाल वर्मा, लोकगीत सम्मेलन स्वागताध्यक्ष, श्री करसनदास माणेक स्वागत मंत्री श्री रामप्रताप शुक्ल पत्रकार सम्मेलन—स्वागताध्यक्ष, श्री सीताराम चतुर्वेदी, स्वागत मंत्री, श्रीधर पाठक, विद्यार्थी, सम्मेलन, श्री जगदीश शुक्ल (संयोजक) महिला-सम्मेलन, सिनेमा, साहित्यकार सम्मेलन, संस्कृत सम्मेलन, प्रदर्शनी आदि का भी आयोजन किया गया है। उपमंत्री—सर्व श्री रामेश्वर साबू (अर्थ) दाऊदत्त उपाध्याय (प्रचार) ब्रजानंद वर्मा (प्रकाशन) शंकरलाल बजाज (मनोरंजन) श्रीनिवास बगड़का (पंडाल) रामानंद दीक्षित (स्वयंसेवक) सत्कार समिति आदि चुने गये हैं। सदस्य—सर्वश्री सातोसकर, रामाधार शुक्ल सूर्यानारायण शर्मा, श्रीनाथ तिवारी, प्रो० सत्यपाल, प्रयागनारायण शुक्ल, दुधनाथसिंह, जयंतीलाल रुइया, सातादीन खेतान, नरेंद्र शर्मा, राजा गोविंदलाल जी पित्ती, जेठालाल जोशी, श्यामबहादुरसिंह, सुदर्शन जी, उमाकान्त मिश्र, जयसुखलाल शर्मा, जयदेव सिहानियां, बाबू लाल गुप्त, करुणाशंकर पंड्या, श्रीमती लीलावती मुंशी डा० कैलाश आदि। कार्यालय—श्री नाथूराम जी पोद्दार की वाडी, ११९, ठाकुरद्वार रोड, बम्बई २ —राधाकृष्ण खेतान (स्वागताध्यक्ष) काशी प्रसादसिंह। (स्वागत-मंत्री) दाऊदत्त उपाध्याय (प्रचार-मंत्री)

शरणार्थियों को बचाओ

हरद्वार पंडित चिरंजीवलाल शर्मा प्रधान मंत्री पीड़ित हिन्दू सहायक सभा पीड़ित शरणार्थियों की सहायतार्थ जनता से अपील करते हुए लिखते हैं—

लाखों वीरों के बलिवेदी पर समर्पित हो जाने के अनन्तर स्वतन्त्रतादेवी के दर्शन भारत को हुए इस समुद्र-मन्थन में अमृत के साथ-साथ विष का भी आगमन हुआ जो कि सीमाप्रान्त, पंजाब और सिन्ध के हिन्दुओं के भाग्य में आया वे अपना सर्वस्व लुटाकर पाकिस्तानी अत्याचारों के फलस्वरूप अपनी पैतृक संपत्ति का भी परित्याग करके लाखों की संख्या में भारतवर्ष में प्रविष्ट हुए। यह लोग मठ, मन्दिरों, धर्मशालाओं, तीर्थस्थानों और शरणार्थी-शिविरों तथा अन्यान्य स्थानों में रह रहे हैं और इनमें से बहुत से स्थानाभाव के कारण सड़कों पर वृक्षों के नीचे बिना सामान आदि के असहाय अवस्था में पड़े हैं। इन प्रवासियों में लाखों लखपती, करोड़पति और विविध योग्यता रखनेवाले प्रत्येक श्रेणी के व्यक्ति हैं। आज यह सर्वस्व हीन हो सतृष्ण नेत्रों से भारतीय जनता की ओर सहृयता के लिए पुकार रहे हैं।

उनमें से लाखों लोगों ने स्वातन्त्र्य युद्ध में अन्य प्रान्त के निवासियों से कम हिस्सा नहीं लिया, आजादी के कल्पवृक्ष को सींचने के लिए जलियांवाला बाग में रक्तधारा बहानेवाला पंजाब ही तो है। आज वे शहीद आत्मायें स्वर्ग में पंजाब के खानाबदोश बने हुए भाइयों, नग्न स्त्रियों और रोते बिलखते बच्चों की अवस्था देखकर खून से आंसू बहा रहे होंगे। इनकी संख्या लगभग ३०-३५ लाख होगी। इस शीतऋतु में बिना निवासस्थान और वस्त्र के इन पीड़ित भाइयों को तड़पते देखकर प्रत्येक हिन्दू का कर्त्तव्य हो जाता है कि उनकी सहायता को हाथ बढ़ाएँ।

इसमें सन्देह नहीं कि केन्द्रीय सत्ता और प्रान्तीय सरकार अपनी शक्ति के अनुसार उनकी सहायता करने में भरसक प्रयत्न कर रही है। पर ऐसे समय में जब कि काश्मीर पर आक्रमण हो रहा है और हैदराबाद तथा जूनागढ़ की समस्याएँ सरकार को उलझन में डाल रही हैं। तब प्रत्येक हिन्दू का यह आवश्यक कर्त्तव्य हो जाता है कि वह इस कार्य में सक्रिय सहयोग दें।

मैं प्रत्येक हिन्दू से चाहे वह लखपती है या निर्धन गृहस्थ है या संन्यासी है। स्त्री या पुरुष सबसे उन बिलखते हुए बच्चों और पीड़ित भाई-बहनों के नाम पर अपील करता हूँ कि जिसके पास अपनी आवश्यकता से अधिक अन्न, वस्त्र, बर्तन और नौकरी के लिए स्थान आदि जो कुछ भी है, उसे वे अपने समीपवर्ती शिविरों में विशेषतः कुरुक्षेत्र, पानीपत, करनाल, आदि स्थानों में भेज दें। जहां पर लाखों की संख्या में असहाय और निराश्रय व्यक्ति पड़े हैं।

वर्मा शेल

इसमें सन्देह नहीं कि आजकल यात्राओं, व्यापारिक कामों, अनेक प्रकार की खबरों और समय की बचत की दृष्टि से हवाई जहाज तथा मोटर अपना विशेष महत्त्व रखते हैं। यह प्रायः सभी को मालूम है कि प्राचीन समय में जो कार्य वर्षों, महीनों, हफ्तों और दिनों में होते थे, वही आजकल उपरोक्त सवारियों के प्रचार के कारण महीनों, सप्ताहों, दिनों और मिनटों में हो जाते हैं। जिन लोगों ने इन वाहनों का निर्माण किया है, संसार

(पेज ६ का शेष)

कुछ बरतन दिये जाते हैं। इत्तिहादुल मुसलमीन दल का राज्य में बड़ा प्रभाव है। यही दल सेना तथा सिविल विभागों के कार्यों का संचालन करता है। निजाम भी उसकी इच्छाओं के विरुद्ध कुछ भी नहीं कर सकते। दल का संचालन मिस्टर जिन्ना पाकिस्तान से बैठे करते हैं। दल का नेता जुबेरी अभी हाल ही में करांची जाकर जिन्ना से मिला था और आदेश लेकर हैदराबाद लौट आया। उसके कहने पर दल के एक नेता कासिम रजवी ने बहुसंख्यक मुसलमानों का विराट् समूह एकत्र किया। यह समूह उस समय के दीवान नवाब छतारी के घर पर चढ़ गया इसके बाद उन्हीं मुसलमानों ने निजाम का महल भी घेर लिया। निजाम को यह वादा करना पड़ा कि भारत-सरकार से वार्ता करने के लिए समझौते का मसविदा दिल्ली नहीं जायेगा।"

भीषण अराजकता

उपरोक्त समाचारों से यह स्पष्ट है कि हैदराबाद का शासन आज निजाम के हाथ में नहीं है। वह तो इत्तिहादुल मुसलमीन के हाथ का कठपुतला बना हुआ है और रियासत में सर्वत्र भीषण अराजकता फैली हुई है। भारतीय विधान सम्मेलन के सदस्य श्री के० एम० मुंशी ने एक वक्तव्य में ठीक ही कहा है, "यदि हैदराबाद के निजाम ईमानदारी के साथ अपने राज्य में वैधानिक सुधार करने के लिए उत्सुक हैं तो उनको अनिवार्यतः महाराज मैसूर तथा दक्षिणी राज्यों के अन्य नरेशों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए अपने राज्य में जनता की सरकार कायम करना और भारतीय यूनियन में शामिल हो जाना चाहिए। हैदराबाद के निजाम यह अनुभव करने में असफल हुए हैं कि वर्त्तमान भारत में कोई भी देशी नरेश अपनी प्रजा की आकांक्षाओं की उपेक्षा नहीं कर सकता। यदि निजाम अपने राज्य को भारतीय यूनियन से स्वतन्त्र रखने की वार्ता चलाते हैं तो वह अवास्तविक है। राजनीतिक तथ्यों की दृष्टि से सार्वभौमिक सत्ता—चाहे उसका जो भी नामकरण किया जाय—भारतीय डोमिनियन को हस्तान्तरित की जा चुकी है और भारतीय यूनियन हैदराबाद राज्य की जनता की आजादी और उनकी सुरक्षा के प्रति उदासीन नहीं रह सकती। श्री मुंशी की उपरोक्त बातों का कहां तक असर निजाम पर पड़ेगा इसे कहना बहुत कठिन है। हैदराबाद की वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए यह आशा नहीं कि निजाम आसानी से भारतीय यूनियन में शामिल होगा। इस समय जो षड्यन्त्र हैदराबाद में चल रहा है उससे देश को आगे चलकर काफी खतरे का अन्देशा है।

विज्ञापन

यह सूचित किया जाता है कि शिक्षा-प्रसार-विभाग निम्नलिखित पुरस्कार उन पुरुषों को देगा जो संयुक्तप्रान्त में निरक्षरता-निवारण-सम्बन्धी कार्यों पर प्रकाश डालनेवाले सुन्दर पोस्टर बनाकर भेजेंगे।

प्रथम पुरस्कार १२५) तृतीय पुरस्कार ७५)
द्वितीय पुरस्कार १००) चतुर्थ पुरस्कार ७५)

ये पोस्टर तीन रंगों में तैयार किये जायँ और रजिस्ट्री द्वारा शिक्षा-प्रसार-अध्यक्ष के पास भेजना चाहिए।

इनका आकार २०" × ३०" का होना चाहिए। भेजने की तिथि २० दिसम्बर, १९४७ निर्धारित है।

शिक्षा-प्रसार-अध्यक्ष, संयुक्त-प्रदेश, प्रयाग

अपने देश की बनी हुई वस्तुएँ अपनायें

भारत के होशियार कारीगरों के बनाये हुये

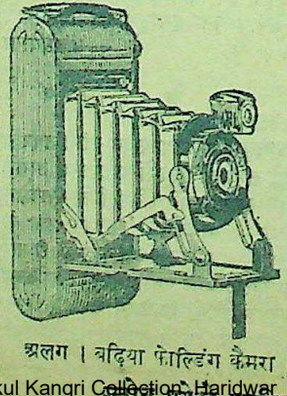

सुन्दर मजबूत, नया डिजायन, विश्वसनीय, कीमत में सस्ते, काम में अच्छे, इन कैमरों से आप चाहे जिस दिलपसन्द चीज का टिकाऊ मनोहर फोटो खींच सकते हैं। इन कैमरों से बढ़िया फोटो खींचने की गारंटी है।

हर एक कैमरे के साथ, फिल्म, कार्ड, मसाला और फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त भेजी जाती है। कीमत बक्स कैमरा ४।), बढ़िया बक्स कैमरा ५॥), पोस्टेज पैकिंग १=) अलग। बढ़िया फोल्डिंग कैमरा १४), पोस्टेज पैकिंग १॥) अलग।

स्टार फोटो स्टूडियो (नं० ३४) अलीगढ़ सिटी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

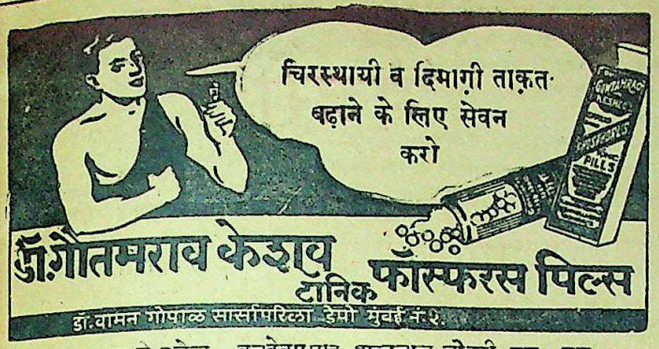

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एस० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

घड़ाघड़ बिक रहा है। शीघ्रता कीजिए

वार्षिक बालसखा १९४७

इसकी छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएँ और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का मूल्य ३)। मासिक ग्राहकों को रियायती मूल्य २॥) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

*चिंता :

आँखों में निशाकी सघनता...चेहरे पर उषा की अरुणाई...

आप भी यह जानती हैं न कि परिपूर्ण स्वच्छता ही शरीर की सबसे बड़ी आवश्यकता है! चेहरे को उज्ज्वल, स्वच्छ, और ताज़ा रखने के लिये कोमल, सुवासित पॉन्ड्स क्रीम्स् की सहायता लीजिये।

*वह रूपवती है!
वह पॉन्ड्स का प्रयोग करती है!

पॉन्ड्स दिनचर्या

पॉन्ड्स कोल्ड क्रीम : पॉन्ड्स कोल्ड क्रीम को चेहरे पर कोमलता से रमाते हुये दिन में दो बार उसे साफ़ कीजिये; उंगली के कोमल पोरों से उसे थपथपाइये। पॉन्ड्स टिशू से स्वच्छ कर लीजिये।

पॉन्ड्स वेनिशिंग क्रीम : कोल्ड क्रीम को साफ़ करके उंगली के पोरों से पॉन्ड्स वेनिशिंग क्रीम लगाइये। त्वचा को सुरक्षा देता हुआ यह आप के प्रयोग के साथ ही अंतर्धान हो जाता है।

पॉन्ड्स पाउडर : यदि आप की इच्छा हो तो पुष्पपंखड़ी की भांति कोमलता के लिये पॉन्ड्स पाउडर लगाइये।

पॉन्ड्स क्रीम्स्

व्यापार-सम्बंधी पूछताछ के लिये लिखिये :
एल. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लिमि०
बम्बई - कलकत्ता - कराची - मदरास.

Copyright: Pond's Extract Co.

अपनी बात

लेखक, श्रायुत चन्द्रभूषण वैश्य

मनुष्य के चरित्र में किस प्रकार की दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर करके वह किस प्रकार अपने जीवन को उन्नत बना सकता है, यह बात इस पुस्तक में बहुत ही ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है और लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर। अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।॥) बारह आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग।

मेरे श्वास में दुर्गन्धि ?

नवयुवकों की ७६% संख्या से दुर्गन्धि आती है!

वैज्ञानिक अनुभवों से यह निस्सन्देह सिद्ध हो गया है कि कोलगेट टूथ पाउडर को १० घटनाओं में से ७ घटनाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि मुख की दुर्गन्धि शीघ्र ही दूर हो गई।

धन की बचत—दूसरी दवाओं की अपेक्षा कोलगेट एक बड़े डिब्बे में दाँत साफ करने की ३० मात्रा अधिक रहती है, उससे बड़े डिब्बे में ४६ मात्रा अधिक रहती है। परन्तु दाम वही है।

धूम्र-पान करनेवाले—कोलगेट दाँत का मंजन तम्बाकू की दुर्गन्धि और मैल को दूर करता है।

आज ही कोलगेट खरीद लीजिए।

कोलगेट टूथ पाउडर
कोलगेट आज ही खरीदिए।

CLEANS BREATH AS IT CLEANS TEETH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक उष्णता के वजह से ..

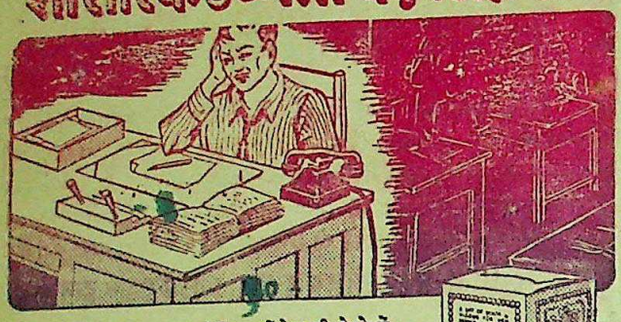

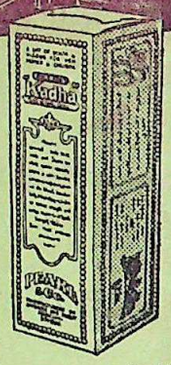

अगर आप निम्न-लिखित उष्णताकी शिकायतों से दुःखी हो रहे हों—
(१) सारे शरीर के अपर और अन्दर खूब गरमी और जलन होना, आंखों की जलन, हथेलियों और पाँव के तलुओं में जलन, ब्रान्डी के रंगके (पीले) पेशाब की जलन;
[२] खाना बेस्वाद लगना, कायमी बदहजमी और अरुचि, खाने के बाद जलन होना और खट्टी डकारें आना, पित्ताशय की मन्द पाचनशक्ति, कायमी कब्ज़;
[३] शरीर और दिमागकी थकान, निर्बलता, गरमी के कारण सम्भोगकी अयोग्यता;
तो 'पर्ल काढ़ा' की बोतलका सेवन शुरु कीजिये। २५ से भी ज्यादा सालों तक पर्ल काढ़ाने इस दवाईके सेवन करनेवाले हजारों लोंगोको अच्छा कर दिया है।
पर्लकाढ़ा जवान और बूढ़े स्त्री, पुरुष और बच्चे-सभीको समान रुपसे फ़ायदा करताहै। यहांतक कि प्रसूता स्त्रियोंको भी फ़ायदा करता है।

शारीरिक उष्णता के लिये मशहूर अनुभूत इलाज!

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

एकबार परीक्षा कर स्वयं अज़माइये!

8/46 HI/2

पर्ल कंपनी, आर्योषधी कारखाना, राणीबाग, बम्बई २७

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड कम्पनी, बिरहना रोड, कानपूर।

खरीदने मे पहले इस ट्रेड मार्क का देखा

वुडवर्ड के ग्राइप वाटर के बोतल सदैव साथ रक्खें। यह बच्चा का तन्दुरुस्त रखता है!

WOODWARD'S GRIPE WATER

keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 105—11 W WOODWARD LTD. LONDON. ENGLAND

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

'मंजरी'

सम्पादक देवीदयाल चतुर्वेदी — प्रकाशक इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

जनवरी १९४८ से प्रकाशित होगी

- तिरङ्गा और मोहक आवरण, दर्जनों चित्र और कलापूर्ण छपाइ,
- हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कहानी-लेखकों और अन्य प्रान्तीय भाषाओं की कलात्मक कहानियाँ,
- कथा-साहित्य के क्रम-विकास पर गम्भीर समीक्षात्मक लेख,
- कथा-साहित्य के नवीन प्रकाशनों की निष्पक्ष समीक्षा,
- मासिक कथा-साहित्य का सिंहावलोकन

ये सारी विशेषताएँ आप 'मंजरी' में पायँगे

दिसम्बर के अन्त तक ग्राहक और एजेण्ट हो जानेवालों की प्रतियाँ सुरक्षित रहेंगी। इसके बाद होनेवाले ग्राहकों और एजेण्टों को 'मंजरी' का पहला अंक दुर्लभ रहेगा। वार्षिक मूल्य ६) रु० और प्रति अङ्क ॥) आने।

आकार-प्रकार

'मंजरी' के मुद्रित पृष्ठ का आकार-प्रकार होगा ७½ इंच × ६ इंच ÷ २ कालम स्क्रीन—११० लाइंस।

विज्ञापन-दर

चौथा आवरण	....	८०) रु० प्रतिबार
दूसरा या तीसरा आवरण	....	६०) ,, ,,
साधारण पूरा पृष्ठ	....	४०) ,, ,,
आधा पृष्ठ	....	२०) ,, ,,
चौथाई पृष्ठ	....	१०) ,, ,,
अष्टमांश पृष्ठ	....	५) ,, ,,

मैं भी आपका बहुत आभारी हूँ

पेट के दर्द का रोगी मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर की प्रशंसा करता है

यदि आप मंदाग्नि से पीड़ित हैं, और भोजन के बाद दर्द या अन्य कष्टदायी लक्षणों का अनुभव होता है तो मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर लीजिये। यह रोग का शीघ्र निराकरण कर देगा और पाचन-शक्ति को सुधार देगा।

प्रिय महोदय,
मैंने अभी एक दूसरे रोगी द्वारा की गई आपके स्टमक पावडर की प्रशंसा पढ़ी, और मैं अनुभव करता हूँ कि मैं भी आपका बहुत आभारी हूँ। आपके पावडर और गोलियों दोनों के नुस्खे वास्तविक वरदान हैं।

मैं पथ्य-भोजन पर आगया था.....किन्तु मैंने नियमित रूप से आपके पावडर का सेवन किया, और आज मैं अपनी रुचि की प्रत्येक चीज खा सकता हूँ और अपने को स्वस्थ अनुभव करता हूँ। मैं आपके प्रति आभार प्रदर्शन करता हूँ।

(हस्ताक्षर) जे. डी.

मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर की व्यापक ख्याति उदकी हृदय-दाह, उदरवा-वायु, जी मिचलाने एव अपचन से होने वाले पेट के दर्दों के निवारण में वह प्रभावोत्पादकता का मान्य प्रमाण है।

"एलेक्स सी. मेकलीन" के हस्ताक्षरवाला मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर और गोलियाँ ही प्रामाणिक हैं।

MACLEAN Brand Stomach Powder

गोलियों के रूप में भी

Alex. C. Maclean

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

वार, ३० नवम्बर, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 30th November, 1947

गुरुकुल कांगड़ी.

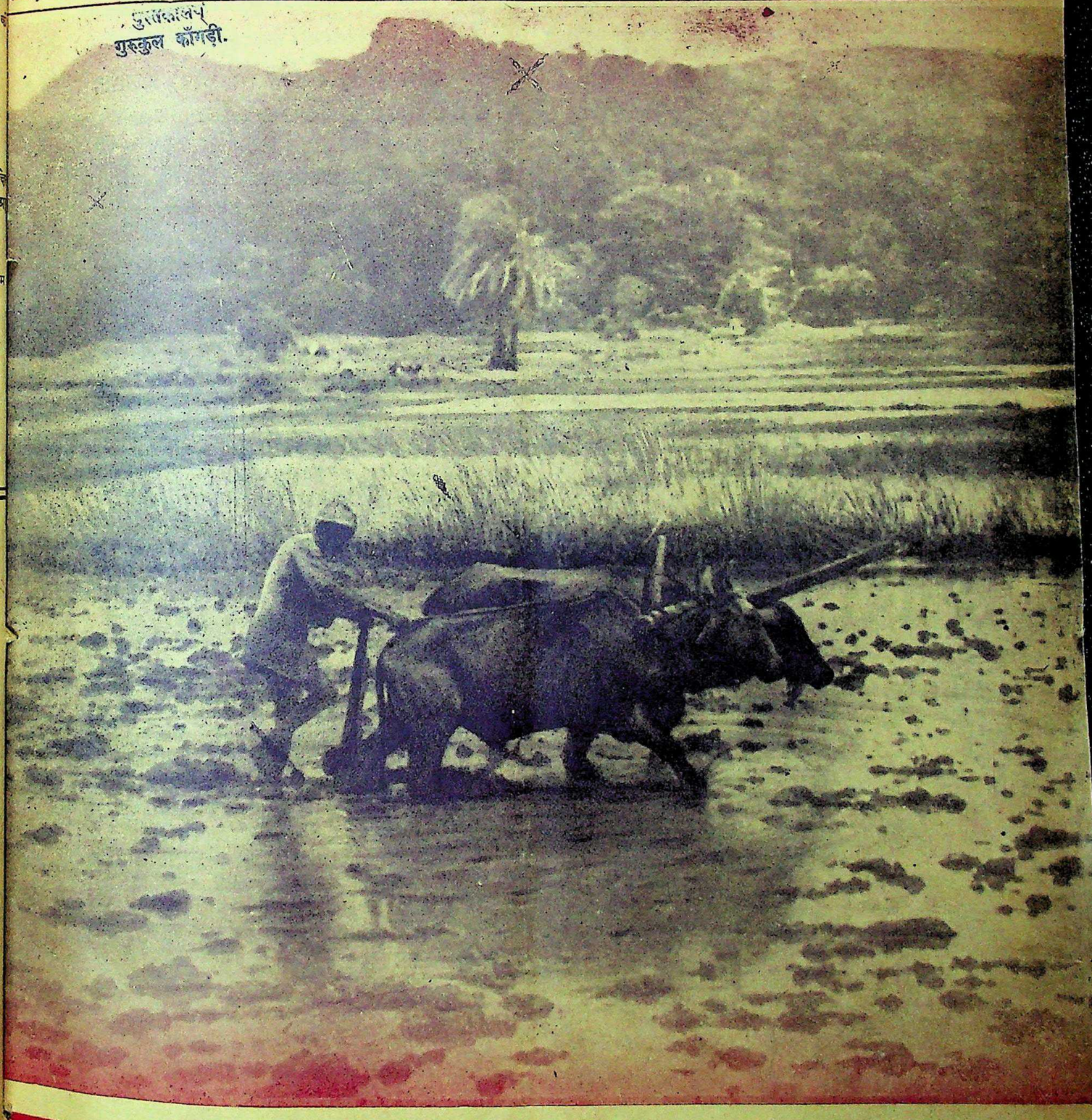

साम्प्रदायिकता और गृह-कलह

हम हिन्दी में लिखें बोलें क्यों नहीं ?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र

मूल्य २ आना

भारत में आज का भोजन-संकट

विश्व-शांति की स्थापना कैसे हो ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धड़ाधड़ बिक रहा है। शीघ्रता कीजिए

वार्षिक बालसखा १९४७

इसकी छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएँ और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का मूल्य ३)। मासिक ग्राहकों को रियायती मूल्य २॥) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

शीशे में बंद

...धूल और मैल से सुरक्षित रखता है

डा. वेस्ट्स जल-अभेद्य है

- दांतों को ६० प्रतिशत अधिक स्वच्छ करता है
- वर्ष भर की गारंटी

पशुओं के बालों से रहित

डा. वेस्ट्स ट्रूथ ब्रुश और ट्रूथ पेस्ट

व्यापारिक पूछताछ के लिये: एल. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लिमि०
बम्बई - कलकत्ता - कराची - मद्रास

Copyright
W. 583 Hin.

दीपावली— के उपलक्ष में भारी रियायत—आज ही मँगायें, ३॥) रु० में ६ नई पुस्तकें

प्रेम-जीवन—(सचित्र) केवल विवाहितों के देखने योग्य दाम्पत्य जीवन को सुखी सन्तुष्ट बनानेवाली काम विज्ञान की गुप्त पुस्तक १)। वशीकरण विद्या—अनेकों वशीकरण मंत्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह १)। हिन्दी-अँगरेजी शिक्षा—घर बैठे अँगरेजी लिखना, पढ़ना, बोलना सीखो १)। हारमोनियम तबला मास्टर—हारमोनियम, तबला बजाना और गान-विद्या सीखो १)। हुस्न पैरिस—केवल पति-पत्नी के देखने योग्य १२ फोटो १)। व्यापार की कुंजी—अनेकों हुनर सीख कौड़ियों से रुपया पैदा करो १)।

६ पुस्तकों के सेट का मूल्य केवल ३॥) रु०, पोस्टेज पैकिंग ॥) अलग।

ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (सी २१२) अलीगढ़ सिटी।

हमारा नया प्रकाशन

'रवीन्द्र साहित्य सीरीज' की पुस्तकें

लेखक, डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर

योगायोग

कवीन्द्र का यह उपन्यास जैसा कवित्वमय है वैसा ही मनोविज्ञान की बारीकियों से परिपूर्ण। इसमें बंगाल के समाज का बहुत ही अपूर्व चित्रण है। नायिका है धर्म-प्राण कुमुद और नायक है राजा बहादुर मधुसूदन घोषाल जो गरीब घर का लड़का होकर अपने पौरुष से बहुत बड़ा मालदार हुआ है। अपने विरोधी घराने की बेटी से विवाह करने पर उसके चित्त में जो विरोध के बादल उमड़ते हैं उनका गर्जन और नई दुलहिन कुमुद का शान्त-शिष्ट प्रतिकार देखकर बरबस लेखक की सराहना करनी पड़ती है। इसमें गृहिणी की क्षमता का अपूर्व उदाहरण है। भाषा, भाव और कथानक सभी दृष्टियों से 'योगायोग' कवीन्द्र के उपन्यासों में सर्वश्रेष्ठ है। इसे एक बार पढ़कर दुबारा तिबारा पढ़ने को जी चाहता है। अच्छा काग़ज़, बढ़िया जिल्द, पृष्ठ सवा तीन सौ से अधिक। मूल्य केवल चार रुपये।

विश्व-परिचय

यह विज्ञान-विषयक पुस्तक है। इसमें परमाणुलोक, नक्षत्रलोक, सौरजगत्, ग्रहलोक और भूलोक आदि शीर्षकों में विषय का विशद विवेचन है। एक स्थान पर लेखक ने लिखा है "वस्तुएँ सब रंगों को ग्रहण नहीं कर सकतीं, किसी किसी को वापस कर देती हैं। वह लौटाया हुआ रंग ही हम देखते हैं। ब्लाटिंग पेपर जिस रस को सोख लेता है वह किसी काम नहीं आता—जिस रस को वह ले नहीं सकता वही बचा हुआ रस हमारा प्राप्य है।" इस प्रकार सरल रीति से कठिन विषय समझाया गया है। पुस्तक बालकों के लिए होने पर भी वयस्क विद्वानों को कम आनन्द न देगी। अच्छे काग़ज़ पर छपी हुई सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

रूस की चिट्ठी

डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर वृद्धावस्था में रूस गये थे। वहाँ का आँखों देखा हाल उन्होंने चिट्ठियों में लिखकर भेजा था। वह बड़ा विचित्र है। इधर तो रूस के सम्बन्ध में बहुत सी बातें प्रकट हो गई हैं पर जिस समय रवि बाबू वहाँ गये थे, रूस का हाल हमें विकृत रूप में बताया गया था। उसको कवि ने सुन्दर भाषा में प्रकट किया है। पुस्तक सचित्र और सजिल्द है। अच्छे काग़ज़ पर छपी पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिग्दर्शन

वर्ष १०, संख्या १३] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, ३० नवम्बर, १९४७

कन्ट्रोल की विदाई

कन्ट्रोल की पद्धति अब समाप्त होने-
ी है। आगामी वर्ष के पूर्व खाद्य पदार्थों
वस्त्रों पर लगा हुआ प्रतिबंध दूर
की आशा की जा रही है। यद्यपि
ा कन्ट्रोल के विरुद्ध सदा से थी किन्तु
कर ही क्या सकती थी? गत महायुद्ध
समय ब्रिटिश सरकार ने कन्ट्रोल की
प्रचलित की थी, बाद को जब केन्द्र
प्रान्तों में जन सरकारों की स्थापना
तब भी कन्ट्रोल की वही नीति जारी
और आज तक चली आ रही है।
किसी सीमा तक कहा जा सकता है
यदि कन्ट्रोल की नीति सरकारी दृष्टि
ग्रहण न की जाती तो जनता भूखों
जाती, वस्तुओं का अभाव हो
और एक प्रकार से देश को भयंकर
ल का सामना करना पड़ता किन्तु
री ओर कन्ट्रोल की प्रतिक्रिया ने
ना व्यापक रूप ग्रहण किया कि
बाजार और घूसखोरी का बोलबाला
गया। सरकारी कर्मचारी, व्यापारी
यातायात से सम्बन्ध रखनेवालों
कन्ट्रोल की आड़ में साथ ही जनता की
के नाम पर ऐसा भ्रष्टाचार उत्पन्न
कि मानवता का स्तर गिर गया
स्वार्थ लिप्सा इतनी व्यापक रूप
फैल गई है कि उसका एकाएक अन्त
ना सरल नहीं है। व्यापारियों ने कन्ट्रोल
इस युग में जितना लाभ उठाया है
ना युद्धकाल में भी शायद नहीं उठाया।
जार में वस्तुओं का एकदम अभाव नहीं
ा बल्कि उसकी प्राप्ति में कठिनाई
ने लगी। वस्तुओं का मूल्य चढ़ गया।
वाली जनता ने अधिक से अधिक
य में अथवा चोरबाजार से वस्तुओं
प्राप्ति की। जनसाधारण निरीह
गया। उसके वास्तविक हित की
सी को परवाह न रह गई। कहना यह
हिए कि व्रायः रक्षक ही भक्षक बन बैठा।
ट्रोल के लाभ का प्रचार तथा उसकी
योगिता के पर्चों के वितरण की धूम
ा दी गई किन्तु जन-साधारण को
तिदिन परेशानी का ही अनुभव करना
ा। उसकी सुनवाई किसी ओर भी
हीं होती।

* * *

महात्मा गांधी ने भी कन्ट्रोल से
त्पन्न भ्रष्टाचार की व्यापक कहानियां
हीं। सुन-सुनकर उन्होंने परेशानी का
नुभव किया किन्तु करते क्या? क्योंकि
खिर जनता की सरकार की नाक के नीचे
तो चोरबाजारी और भ्रष्टाचार का बोल-
ाला था? महात्मा जी ने सबसे पहले वनस्पति
ी के विरुद्ध आन्दोलन प्रारम्भ किया
ौर वह सफल भी हुआ। भारत-सरकार
वनस्पति घी के प्रचार के विरुद्ध प्रतिबन्ध
गा दिया। किन्तु कुछ ही समय के बाद
नस्पति घी रंग-बिरंगे रूप में पुनः चालू
ो गया। ऐसा क्यों और कैसे हुआ कुछ
हा नहीं जा सकता। इसके बाद गांधी
ने कन्ट्रोल के विरुद्ध आन्दोलन प्रारम्भ
या। यद्यपि आजकल महात्मा जी जो
छ बातें कहते हैं, उस ओर विशेष
ध्यान नहीं दिया जाता। सरकार भी
महात्मा जी के सुझावों की उपेक्षा
हीं कर सकती किन्तु कार्यरूप में
रिणत करने में वह अपने को तत्काल
समर्थ अवश्य पाती है। महात्मा जी
सार्वजनिक हित की दृष्टि से आलोचना
करते हैं किन्तु सरकार सार्वजनिक हित
की दृष्टि से शासन-कार्य भी करती
है। ऐसी दशा में स्थिति का पेचीदा हो
जाना अनिवार्य है।

* * *

पिछले दिनों से गांधी जी ने कन्ट्रोल
के विरुद्ध जिस तीव्र गति से आवाज
उठाई है उसका व्यापक प्रभाव पड़ा है।
जनता तो पहले ही से परेशान है किन्तु
अब सरकार भी परेशानी का अनुभव कर
रही है। आखिर कन्ट्रोल की नीति कब
तक जारी रहेगी? कितने दिनों तक चोर-
बाजारी और भ्रष्टाचार का बोलबाला
रहेगा? कब तक सरकार की नाक के
नीचे स्वार्थ-लिप्सा तथा मानवता—
विरोधी कार्यशैली प्रचलित रहेगी?
जनता की सरकार तो जनता के हित के
लिए है न कि चोरबाजारवालों तथा
मुनाफा कमानेवाले व्यापारियों के हित
के लिए? इस दृष्टि से महात्मा गांधी
का आन्दोलन सफल हो रहा है और
आशा की जाती है कि खाद्य पदार्थों तथा
वस्त्रों पर सरकारी तौर से कन्ट्रोल हटा
लिया जायेगा। भारत सरकार की ओर
से इस सम्बन्ध में वक्तव्य प्रकाशित किया
जाने वाला है।

* * *

इसमें सन्देह नहीं है कि कन्ट्रोल की
पद्धति समाप्त होने पर एक बार बाजार में
गड़बड़ी उत्पन्न होगी, किन्तु थोड़े ही समय
के लिए। जहां वस्तुओं का आदान-प्रदान
प्रारम्भ हुआ, व्यापारियों में प्रतिद्वंद्विता
प्रारम्भ हुई वहां वस्तुओं का मूल्य नीचे
गिरा। भारत में कपड़ा बनाने की मिलों
की कमी नहीं है, फिर इतनी मिलें तो
हैं ही जिनकी उत्पादन संख्या कम नहीं
है। खाद्य पदार्थ भी भारत में जन-साधारण
के लिए कम नहीं उत्पन्न होता। कुछ ही
खाद्य पदार्थ हैं जिन्हें बाहर से भी मंगाया
जाता है। बात सब सही है किन्तु कन्ट्रोल
के हट जाने से बाजार में वस्तुओं के
आदान-प्रदान में समता उत्पन्न होगी और
यह तो हो ही नहीं सकता है कि वस्तुयें
प्राप्त ही न हो सकेंगी।

* * *

महात्मा गांधी प्रतिदिन अपनी
प्रार्थना में व्यापारी वर्ग से अनुरोध
करते हैं कि वह कन्ट्रोल के समाप्त
हो जाने पर जनता की सहायता
करें और ऐसी स्थिति उत्पन्न होने से देश
को बचायें जो सरकार तथा जनता की
हित की दृष्टि से घातक हो। बात सही
भी है। यदि भारत का व्यापारी वर्ग आज
इस बात पर सन्नद्ध हो जाये कि वह जनता
की आवश्यकता की पूर्ति करेगा तो हो
नहीं सकता है कि बाजार में दैनिक
उपयोग की वस्तुओं का अभाव हो। किन्तु
स्वार्थलिप्सा जिस सीमा को पहुँच चुकी
है उसका प्रभाव भी धीरे ही धीरे समाप्त
होगा। व्यापार से रुपया कमाना उचित
है, क्योंकि व्यापार का अर्थ हानि उठाना
कदापि नहीं है किन्तु शोषण करना भी
कानूनी ही नहीं नैतिक दृष्टि से भी वर्जित
है। भारत अब स्वतन्त्र हो गया है। यदि
स्वतन्त्रता प्राप्त होने के बाद भी भारत
का व्यापारी वर्ग ब्रिटिश-शासन के समय
की नीति अपनायेगा तो वह राष्ट्र तथा
राष्ट्रीयता के प्रति एक प्रकार से विश्वास-
घात करेगा। हमें आशा है कि व्यापारी
वर्ग महात्मा गांधी के आदेशानुसार कन्ट्रोल
समाप्त होने के बाद राष्ट्र को धन-धान्य
से पूर्ण करने में पूरा सहयोग देगा।

* * *

फिर भी भारत सरकार को इस ओर से
असावधान भी नहीं होना चाहिए। कन्ट्रोल
की नीति तो समाप्त कर ही देनी चाहिए
लेकिन उसे कुछ ऐसे प्रतिबन्ध बनाये
रखना चाहिए जिससे वस्तुओं के यातायात
में चोरबाजारी अथवा भ्रष्टाचार न पनपने
पाये। क्योंकि शेरों को रक्त का स्वाद
मिल गया है। स्वाद की आदत बलवती
हो गई है, मानवता ने निजी स्वार्थ का
स्थान ग्रहण कर लिया है, इसलिए
भारत सरकार व्यापारियों को कन्ट्रोल
नीति उठा लेने के बाद, व्यापार में जहां
एक ओर छूट दे वहां दूसरी ओर उन पर
अंकुश भी लगाये रहे। हमारा विश्वास
है कि कन्ट्रोल के समाप्त होने के बाद
जनता को दो-तीन मास तक कठिनाई
का अवश्य ही सामना करना पड़ेगा
किन्तु जहां बाजार में विभिन्न वस्तुओं
का आगमन हुआ और प्रतिद्वन्द्विता हुई
वहां मूल्य अपनी स्थिति में आ जायेगा।
देखना है कन्ट्रोल की अलविदा कब होती
है?

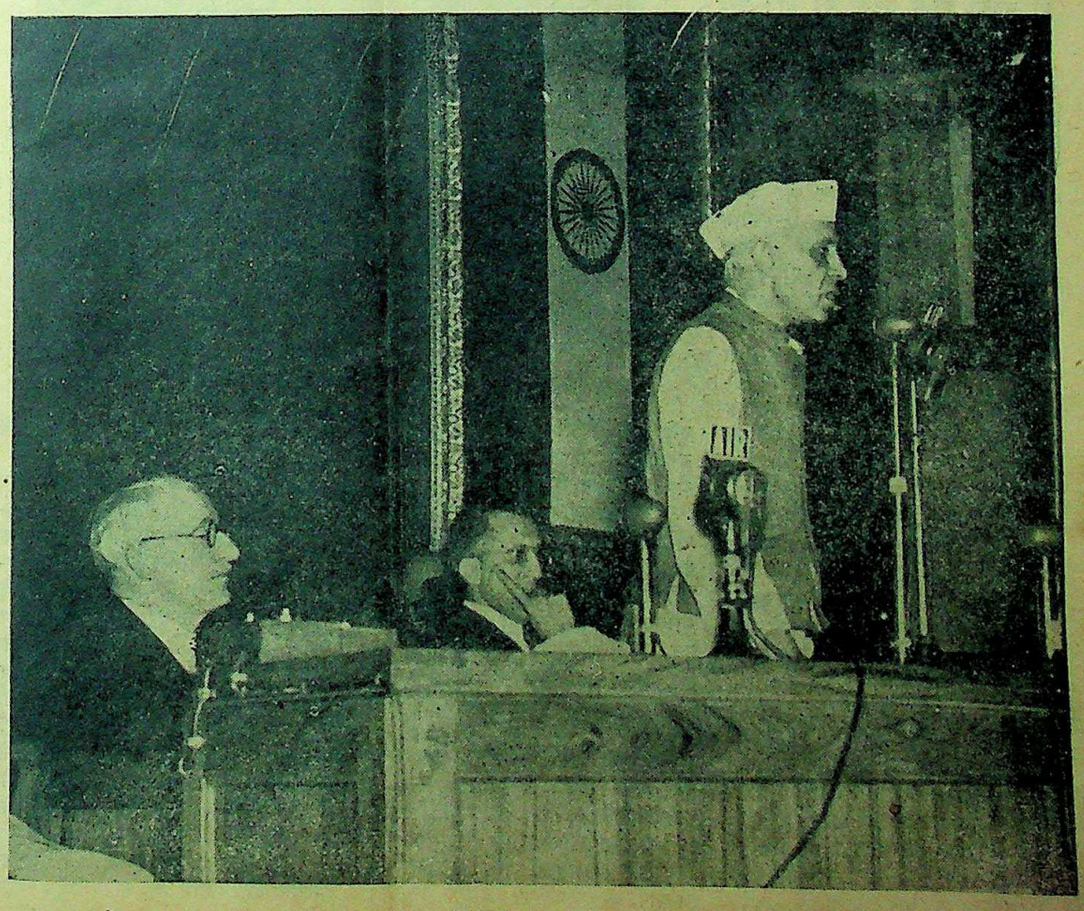

भारत के स्थान पंडित जवाहरलाल नेहरू नई दिल्ली में एशियाई सम्मेलन में प्रतिनिधियों का स्वागत कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषिवर स्वर्गीय मालवीयजी

भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता की एक महान् विभूति

लेखक, श्री जयनारायण पारीक 'साहित्यरत्न'

महामना पूज्य मालवीय महाराज का स्वर्गवास हुए कई वर्ष हुए किन्तु आज भी उनकी आत्मा अमर है और भारतीयों के बीच में उनकी स्मृतियाँ जाग्रत तथा जीवित हैं। काशी विश्वविद्यालय में २५ नवम्बर से १ दिसम्बर तक पूज्य मालवीयजी की स्मृति में श्राद्ध-सप्ताह मनाया जा रहा है। इस लेख में लेखक ने पूज्य मालवीयजी के जीवन पर सुन्दर प्रकाश डाला है, जो पठनीय तथा सामयिक है।

आज से ८५ वर्ष पूर्व २५ दिसम्बर सन् १८६१ ई० को प्रयाग के पंडित ब्रजनाथजी के यहां एक दिव्य ज्योति प्रकाशित हुई थी, जो अपने उत्तरोत्तर विस्तार से राष्ट्र के कोने-कोने को आलोकित करती हुई तारीख १२ नवम्बर सन् ४६ को मुक्तिधाम काशी में अपनी शाश्वत ज्योति में समा गई। उस दिव्य ज्योति का नाम ऋषिराज महामना पंडित मदनमोहन मालवीय था।

मुस्लिम लीग की सीधी कार्यवाही दिवस के अवसर पर कलकत्ते में साम्प्रदायिक विद्वेषाग्नि भड़क उठी; जिसके फलस्वरूप हजारों निरीह, बेगुनाह प्राणियों की जीवनाहुति चढ़ गई। फिर उसी अग्नि-ज्वाला ने नोआखाली में हिन्दुओं पर अमानुषिक अत्याचार बलपूर्वक संगठित धर्म-परिवर्तन, बलात्कार, अपहरण, लूटमार और विचित्र पैमाने पर आगजनी के रूप में "सुजलां सुफलां शस्य श्यामलां" बंगभूमि को भस्मीभूत कर दिया! इसी दर्दनाक घटना से उनका कोमल हृदय पीड़ा से कराह उठा। उनकी अन्तरात्मा सम्पूर्ण शक्ति के साथ पुकार रही थी कि मेरे पर लग जायँ और मैं उड़कर अपने अत्याचार-पीड़ित देशबन्धुओं के बीच पहुँचकर उनकी सेवा में अपनी आहुति दे दूं। परन्तु, शरीर कहता था मैं रोगशैया से नीचे उतरने में भी लाचार हूँ। यही आन्तरिक और बाह्य-संघर्ष उनकी जीवन-लीला-समाप्ति का कारण बना।

आततायियों-द्वारा आक्रान्त पूर्वी बंगाल के हिन्दुओं की भीषण चीत्कार उनके मस्तिष्क में गूंज रही थी। रक्त-रंजित नोआखाली उनकी करुणापूर्ण आंखों में घूम रही थी। वह अचेत अवस्था में भी नोआखाली, नोआखाली चिल्ला उठते थे। उनका रुग्ण शरीर बनारस में था, लेकिन घायल आत्मा हताहत बन्धुओं के बीच घूम रही थी। महात्मा गान्धी के निश्चित अनशन के समाचार ने उन्हें और भी अधीर कर दिया। साम्प्रदायिक विद्वेष के भीषण आवर्त में फँसी स्वदेश नौका के उद्धारार्थ गान्धी और जवाहर पर ही उनकी आशा अटकी हुई थी। उन्हें भय था कि देश के प्राण महात्मा गान्धी को कुछ न हो जाय। आखिर विकल आत्मा शरीर के बन्धन को सहन न कर सकी और 'हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण हरे हरे' की रटन लगाती हुई दिव्य-धाम को चली गई।

जिस तपस्वी ऋषीश्वर ने अपने जीवन के ८५ वर्ष हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान के अभ्युत्थान और श्रीवृद्धि में समर्पित कर दिये, आइये उसके पावन चरित्र की झांकी करके नतमस्तक हो श्रद्धा के पुष्प समर्पित करें।

प्राचीन हिन्दुत्व के पुजारी धार्मिक पिता ने अपने पुत्र को भी प्रयाग की 'धर्म-ज्ञानोपदेश-पाठशाला' में प्रविष्ट कराके धार्मिक शिक्षा आरम्भ की। १८ वर्ष की अवस्था में सन् १८७९ में इलाहाबाद हाईस्कूल से कलकत्ता विश्वविद्यालय की एन्ट्रेंस परीक्षा पास की। फिर म्योर-सेण्ट्रल कालेज में पढ़ना आरम्भ किया और सन् १८८४ में सफलतापूर्वक बी० ए० पास किया। कालेज-जीवन में ही सार्वजनिक सेवा के भाव जाग्रत् हो गये थे। आपने 'साहित्य-सभा' और 'हिन्दू-समाज' की स्थापना की थी। एम० ए० की पढ़ाई आरम्भ की; परन्तु पिताजी की बीमारी के कारण पढ़ाई छोड़नी पड़ी और ५०) मासिक पर स्थानीय जिला स्कूल में सहायक अध्यापक हुए। तीन वर्ष बाद नौकरी छोड़ दी।

सन् १८८६ में कांग्रेस का द्वितीय अधिवेशन कलकत्ते में दादाभाई नौरोजी के सभापतित्व में हुआ। आप भी अपने गुरू आदित्यरामजी के साथ पधारे। आपकी भी इच्छा व्याख्यान देने की हुई। धनुषयज्ञ में विश्वामित्र की तरह गुरुदेव ने इशारा किया। आप रंग-मंच पर आये और अपने विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान से सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर लिया। कांग्रेस के पिता ह्यूम साहब तो इतने प्रभावित हुए कि वहीं मुक्तकंठ से प्रशंसा करने लगे।

यहीं कालाकांकर-नरेश से आपका परिचय हुआ और उनके हिन्दी के "हिन्दुस्तान' दैनिक पत्र के सम्पादक बनकर लौटे। हिन्दुस्तान के सम्पादन-काल में ही वकालत की पढ़ाई भी शुरू कर दी और सन् १८९१ में वकील हो गये। थोड़े दिनों में ही आपकी विद्वत्ता की धाक चारों ओर जम गई। आपकी विलक्षण प्रतिभा से प्रभावित होकर 'ह्यूम साहब' ने कहा था—पंडित मदनमोहन, तुम्हें ईश्वर ने विलक्षण बुद्धि दी है। थोड़े दिन—केवल १० वर्ष वकालत में परिश्रम कर लो तो तुम उच्च श्रेणी में पहुँच जाओगे।

मालवीयजी राष्ट्रोत्थान में पत्र-पत्रिकाओं की बड़ी आवश्यकता अनुभव करते थे। प्रयाग का सुप्रसिद्ध दैनिक 'लीडर', साप्ताहिक अभ्युदय और मासिक मर्यादा आप ही द्वारा प्रकाशित हुए।

प्रयाग का मैकडानेल हिन्दू बोर्डिंग हाउस, भारतीय भवन पुस्तकालय मिण्टो पार्क आप ही के प्रयत्न के फल हैं।

पहले अदालतों में उर्दू का ही बोलबाला था। भला हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान के पुजारी को यह अन्याय कैसे सहन हो सकता था? मातृभाषा की इतनी अवहेलना कैसे सहन कर सकते थे? आपने इसके विरुद्ध देशव्यापी आन्दोलन का बीड़ा उठाया। विरोधी हैरत में पड़ गये जब सन् १९०० ई० में कानून बन गया कि अदालतों का काम हिन्दी, उर्दू दोनों भाषाओं में हो सकता है।

जिस 'हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन' ने भारत के कोने कोने में हिन्दी-भाषा का सन्देश पहुँचाया, जिसके अथक परिश्रम से हिन्दी राष्ट्रभाषा होने का गौरव प्राप्त कर सकी है। उसकी नींव पूज्य मालवीयजी के कर-कमलों-द्वारा सन् १९१० ई० में पड़ी और आप ही उसके सर्वप्रथम सभापति हुए।

सन् १९०२ ई० में सरकार ने आपको प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा में सदस्य नियुक्त किया। वहां बड़े बड़े भारत-विरोधी अँगरेज सदस्यों से टक्कर लेते हुए सफलतापूर्वक आपने कार्य किया। सरकार भी आपसे इतनी प्रभावित हुई कि जब सन् १९०९ ई० में पहली बार नियम बना कि प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा दो प्रतिनिधि चुनकर वाइसराय की केन्द्रीय कौंसिल में भेज सकती है तो एक प्रतितिधि महामना मालवीयजी थे।

सन् १९०९ ई० में आप लाहौर कांग्रेस के अध्यक्ष हुए और आपके मिण्टो-माले सुधारों पर दिये गये आलोचनात्मक व्याख्यान ने तत्कालीन कांग्रेस की विचार-धारा में एक अभूतपूर्व क्रान्ति उत्पन्न कर दी।

जब प्रयाग में पहली बार प्लेग का प्रकोप हुआ, मोहल्ले के मोहल्ले काल के मुख में समाये जा रहे थे। तब आप मृत्यु से पंजा लड़ाते हुए देवदूत की तरह मरीजों को ढूंढ़ ढूंढ़कर उनकी दवा-दारू करने, अस्पताल भेजने तथा उनकी हर प्रकार से सहायता करने में तल्लीन थे। प्रयाग की सेवा-समिति तथा महावीरदल आपकी ही सेवा भाव के प्रतीक हैं।

हिन्दू-विश्वविद्यालय आपकी अटूट आशावादिता और अथक परिश्रम की

स्वर्गीय महर्षि मालवीयजी

कीर्तिस्तंभ है। ऐसा कोई नेता नहीं जिसे विश्वविद्यालय न हो, जो वहां न गया हो। आनेवाला शायद ही कोई वाइस जो विश्वविद्यालय में जाकर मालवीयजी की महानता के सा मस्तक न हुआ हो।

सन् १९०४ में जिस हिं विद्यालय का स्वप्न मालवीयजी ने १४ वर्ष की अनवरत तपस्या के १९१८ में उसका साकाररूप उन आया। शास्त्रोक्त-विधि से वेद-मंत्र के साथ उसकी नींव डाली गई। तत्कालीन वाइसराय लार्ड ह इसका गौरव प्राप्त हुआ।

उसी बीच में श्रीमती एनीबे दरभंगा-नरेश भी विश्वविद्यालय के लिये प्रयत्नशील थे लेकिन मा की विचारधारा ने उन सबकी को अपने में विलीन कर लि महान्भिक्षुक ने करोड़ों रुपये देश कोने से लाकर विश्वविद्यालय चढ़ाये। भारत के अद्वितीय विद्वान् से इसका गौरव बढ़ाया। आचा चन्द्र शुक्ल, आचार्य श्यामसुन्दर अयोध्यासिंह उपाध्याय, बाबू और सर राधाकृष्णन् जैसे विश्व साहित्य महारथी इसके शिक्षक आसीन हुए। काशी-हिन्दू-विश्व संसार के श्रेष्ठतम विश्वविद्या अपना मस्तक ऊँचा किये हुए और नालन्दा-विश्वविद्यालयों दिलाता हुआ भारतीय सभ्यता, और हिन्दुत्व की ध्वजा फहरा

वह चाहते थे हिन्दू फिर उसी गौरव से प्रतिष्ठित होकर संसार के पर आयें और जगत् को अपना दिव्य सुनायें। उनकी दृष्टि में हिन्दू का अर्थ—"भारत में स्थापित किसी का अनुयायी था। उस तपस्वी के मनोनेत्र के सामने उस काल का भव्य दृश्य घूम रहा ब्राह्मण अपने शाश्वत जीवन की पहेलियों को सुलझाते हुये "सर्वभूतेषु" का अमृत छककर में विश्वात्मा को प्रत्यक्ष करता यज्ञ-हवन की अग्नि शिखाओं से आलोकित हो रही हैं। प्राकृतिक के बीच वेद-मंत्रोच्चारण और देव- हो रही है। अमल धवल देव-मं प्रांगण में शंख-ध्वनि और घंटे-घ का तुमुल नाद निनादित हो रहा है का एक लक्ष, एक साधना, एक ध सभ्यता और संस्कृति। न राग, न हिंसा, न प्रतिहिंसा! बस सु सम्पन्न। वह राम-राज्य का स्व उसी गौरवपूर्ण अतीत को भारत- अवतरित करने के लिये जीव प्रयत्न करता रहा।

जननी जन्मभूमि के किसी चोट लगने पर आपका हृदय कराह उठता था। पंजाब के भीषण काण्ड ने ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध मस्तिष्क को झकझोर डाला। को मातृभूमि के भीषण अपमान चित दंड देने में लाचार होते उस समय आपने जो क्रियाशीलता उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

देश के वर्तमान नेताओं में ऐसे भी नहीं जिसे जीवन के ६० साल की सेवा में समर्पित करने का गौर हुआ हो। यद्यपि समय समय पर से आपका मतभेद भी रहा, फिर भी कांग्रेस के प्रति सदा वफादार रहे कांग्रेस ने आपको भुलाया न आपने को। जब जब कांग्रेस मुसीबत के में फंसी, कांग्रेस ने आपको अपने

शेष पृष्ठ १८ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिये

अराजकता तथा गृह-युद्ध!

इस विषम परिस्थिति का सामना कैसे किया जा सकता है?

लेखक, डाक्टर बालकृष्ण केसकर
(भूतपूर्व प्रधान मन्त्री, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी)

देश में आज अराजकता तथा गृह-युद्ध का बोलबाला है। मुस्लिम लीग की कुचेष्टाओं तथा साम्प्रदायिक दुर्भावनाओं के परिणामस्वरूप राष्ट्र में अशांति उत्पन्न हो गई है। प्रसिद्ध समाजवादी विचारक डाक्टर केसकर ने इस लेख में आज की राजनीति की विषद विवेचना की है और वर्तमान परिस्थिति का कारण भी बतलाया है। लेख विद्वत्तापूर्ण और विचारणीय है।

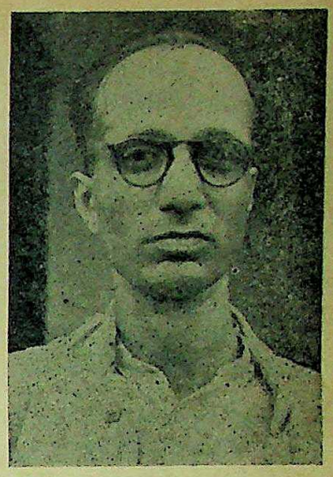

इस लेख के लेखक प्रसिद्ध समाजवादी नेता डाक्टर केसकर।

पश्चिम पंजाब के भीषण नर-संहार में निर्दोष व्यक्तियों के वध और उसकी इस ओर की प्रतिक्रिया ने बाकी घटनाओं को म्लान-द्युति कर दिया है। अगस्त १५ तथा भारतवर्ष में अँगरेजी साम्राज्यवादी सत्ता का अवसान पृष्ठभूमि में पड़ गये हैं। स्वतन्त्रता की देहरी पर पैर रखते ही हमारे सामने ऐसी समस्या आ खड़ी हुई है जो हमको बना या बिगाड़ सकती है। वर्तमान संकट को किसी तरह पार करने के लिए भी सम्भवतः दसियों वर्ष निरन्तर परिश्रम करना पड़ेगा ताकि अधिक क्षति पूरी की जा सके। हमको एक नये आधार पर सोचना और योजना बनाना है।

इस सर्वनाश की जड़ कहां है? संक्षेप में वह हमारे हाई कमाण्ड (कांग्रेस के कुछ चोरी के नेता जो उसकी नीति निर्धारित करते हैं) द्वारा मुस्लिम लीग की महत्त्वाकांक्षा और उसकी नीयत की गम्भीर आगाही लेने से इन्कार करने में है। हालां कि यह हमारा पहला कर्तव्य था कि पाकिस्तान के निर्माताओं के मानसिक निर्माण तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों का गम्भीर अध्ययन तथा विवेचन करें, पर ऐसा करने के लिए कोई प्रयत्न नहीं किया गया। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी आदत के अनुसार स्पष्ट स्वीकार किया कि सरकार बे-खबर पड़ी हुई थी (जब पंजाब में उपद्रव हुए)। यह अज्ञान हमको बड़ा मँहगा पड़ा। इससे एक ओर हमको कमी का पता चलता है, केन्द्रीय जासूस-विभाग का पक्षाघात अथवा नालायकी जो कि आगामी भयावनी घटनाओं की तनिक भी आगाही न दे पाया।

और फिर भी चेतावनियों की कोई कमी न थी। अल्पसंख्यकों के प्रति मुस्लिम लीग के सन्देहजनक इरादों के विषय में अनेक बार चेतावनियां दी जा चुकी हैं। लीग के कारनामे अस्पृह थे और उनसे हमारे बीच विश्वास करनेवाले लोगों को सावधान हो जाना चाहिए था। लीगी अखबारों, भाषणों तथा प्रकाशनों में काफी मसाला मौजूद रहता था जिससे उनकी विचारधारा और योजनाओं का एक खाका खींचा जा सकता था। हमने कई बार लिखा है कि हमारे नेताओं को बहुत आदर्शवादी नहीं होना चाहिये और पर्याप्त बचाव के साधन प्रस्तुत रखने चाहिये। जो घटनायें घटी हैं उनसे हमारी बड़ी से बड़ी आशंकायें सच साबित हुई हैं।

बड़ी मुश्किल तो यह है कि मौलिक रूप में हमारे नेताओं का लीग तथा पाकिस्तान की समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण राजनैतिक न होकर नैतिक तथा आदर्शवादी है। हमारी सरकार एक वास्तविक परिस्थिति का मुकाबला आदर्श रूप से करने की कोशिश करती है। जाहिर है कि यह हमारी गांधीवाद की पचीस साल की रहन-सहन का मौजूदा परिस्थिति के साथ एक राजीनामा करने की कोशिश है। यह एक विकच असम्भवता है जिसने हमको काफी बड़ी दिक्कत में डाल दिया है। यह सही और दुरुस्त है कि हम अपनी समस्याओं को साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से देखने से इन्कार कर दें। हम राष्ट्रवादी होने का दावा करते हैं और ऐसा ही आचरण भी करेंगे। हमारा दृष्टिकोण असाम्प्रदायिक तथा गैर-मजहबी है। पर इसके मानी यह नहीं हैं कि हम साम्प्रदायिकता का मुकाबला करने से डरें, विशेषतः जब उसका प्रदर्शन अल्पसंख्यक लोग करें। मुस्लिम लीग के साथ लंबे व्यवहार करने में हमने अर्से से एक ऐसा हीन भाव अपना लिया है कि हमारे नेता लीग की डटकर मुखालफत करने में बेहद घबराते से मालूम पड़ते हैं चाहे लीग की हरकतें या बातें कितनी ही गुस्सा दिलानेवाली हों। एक वक्त था जब लीग के साथ लल्लो-चप्पो करने की हमारे लिये काफी वजह थी, पर अब परिस्थिति बिल्कुल बदल गई है और उसी पुरानी आदत से चिपके रहना हमको सर्वनाश की ओर ले जा रहा है। मुझे प्रसन्नता है कि हाईकमांड के रुख में एक बदलाव दिखलाई पड़ता है, पर पेश्तर इसके कि चिड़िया खेत चुग जाय कुछ काम कर दिखाना जरूरी है।

पिछले तीन महीनों के अनुभव से एक राजनैतिक अन्धे को भी यह इतमीनान हो जाना चाहिए कि लीग के दृष्टिकोण और रुख में रत्ती भर भी बदलाव नहीं हुआ। राजभक्ति की दुहाई किसी की आंख में धूल नहीं झोंक सकती। मैं फिर अनगिनत बार दुहराता हूँ और हर गुजरता हुआ वाकया इसको साबित कर रहा है कि लीग की जहनियत बिल्कुल नात्सी है। इसकी समझ में सिर्फ पाशविक बल आता है। यह बेरहम और बेदर्द है। यह हर प्रदान को बजाय दोस्ती के कमजोरी का सबूत समझती है। यह धार्मिक नहीं बल्कि राजनैतिक आन्दोलन है जो अपनी तजबीजों को पूरा करने के लिये मक्कारी के साथ धर्म को इस्तेमाल करता है। हिटलर ने अपनी विजयों का हथियार नस्ल को बनाया था और बदली हुई परिस्थितियों में मिस्टर जिन्ना धर्म का प्रयोग कर रहे हैं।

अधिक गौर से देखने पर हिटलर की जर्मनी के साथ जिन्ना के पाकिस्तान की समानता चकरा देनेवाली और घबरा देनेवाली है। जिन्ना उतनी ही सावधानी के साथ हिटलर और हेनलीन की धौंस तथा धुड़की की चालें चल रहा है जितनी हमारे नेता चेम्बरलेन और दलादियर की नीति थी। सफलता ने उसे केवल अधिक दुस्साहसी बना दिया है। जर्मन चाहे पृथ्वी में कहीं भी हो हिटलर उसकी राजभक्ति पर नियन्त्रण रखता था। जिन्ना, पाकिस्तान का गवर्नर जनरल, अब भी बाहर की दुनिया के सामने पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के तमाम मुसलमानों नुमाइन्दे के बतौर बात करता है और किसी को उज्र करने की हिम्मत नहीं। हिन्दुस्तान में पाकिस्तान का हाई-कमिश्नर हिन्दुस्तान के मुसलमानों की तरफ से बोलता है। जैसा हिटलर ने आस्ट्रिया और सुडेटनलैंड में किया था, कश्मीर और हैदराबाद में वैसे ही जिन्ना गैर-सरकारी लड़ाई चला रहा है।

हमको चाहिए कि वास्तविकता को आंख खोलकर देखें। मुस्लिम लीग हिन्दुस्तान के ९० प्रतिशत मुसलमानों की वफादारी और वोट पाती है। पाकिस्तान के बनने से न तो यह परिस्थिति बदली न उनकी लीग के प्रति आस्था हटी। उनमें से कुछ खिन्नता या परेशानी महसूस शायद करते हों पर उनके लिये अभी तक लीग की हुक्म-उदूली करने का विचार तक नहीं उठा। पाकिस्तान के पैदा होने के बाद वे हर इशारे के लिए, राजनैतिक अथवा अन्य, कराची में बैठे हुए लीडरों की ओर ताकते हैं। लीग के साथ सहानुभूति रखनेवालों की अधिकतर संख्या की अब्वल वफादारी पाकिस्तान के लिये है।

दो राष्ट्रवाला सिद्धान्त कार्यरूप में अब भी चालू है और काफी कामयाबी के साथ। सरदार वल्लभभाई पटेल, गृह-मंत्री ने कांग्रेस की पिछली बैठक में स्वीकार किया था कि उन्हें अनुभव से पता चला है कि हिन्दुस्तान की गवर्नमेंट का हर मुसलमान नौकर, यहां तक कि चपरासी भी, मुस्लीम लीगी और पाकिस्तानी है। यह बात प्रान्तों के बारे में भी सही है।

इसके अलावा लीग के अनुयाइयों को सिखलाया गया है कि वे गैर मुसलमानों को कमजोर और आसानी से दबोचे जाने लायक समझें। उनकी नजरों में हिन्दुस्तान एक बड़ा बेकाबू हाथी है, जिसके कई स्थानों पर बीमारी है, जो कि अन्ततोगत्वा उसका पतन करेगी। विभिन्न मुसलमान प्रधान स्थलों में से जो कुल मिलाकर तीन से लेकर चार करोड़ तक होंगे, पांचवें दस्ते का काम करने की आशा की जाती है और यह समझा जाता है कि हिन्दुस्तान के ऐक्य और मजबूती की उन्नति में ये काफी बुरा असर डालेंगे। हर गांव में कुछ न कुछ इस तरह के नुमाइन्दे होंगे। परिणामतः यद्यपि हिन्दुस्तान के मुकाबले में पाकिस्तान एक हर तरह से छोटा राज्य है पर वह हिन्दुस्तान से डरता नहीं, क्योंकि वह अपने विपक्षी की कमजोरियों और कमियों को जानता है। हिटलर और नाजियों की तरह, प्रजातन्त्रवादी योरप के मुंह पर, लीगी लोग यह आशा करते हैं कि इस देश में भी कमजोरी या सम्भवतः पराभव तक हो जाय, सामने से धावा बोलकर उतना नहीं जितना अन्दर से घुन लगकर।

दुर्भाग्यवश हमारे मुकाबले में, मुस्लिम लीग तथा इसके नेताओं की परख वस्तुस्थिति के अधिक समकक्ष है। हमारे अविकसित सम्भव शक्तियां, आध्यात्मिक सांस्कृतिक तथा राजनैतिक प्रचुर हैं। यहां तक सम्भव है कि हमारी सद्यः प्राप्त स्वतंत्रता पर आघात, सीधा या घुमा-फिराकर, हमारी उतमोत्तम शक्तियों को जगाये और हिटलर तथा उसके दल के प्रतिपक्ष में जैसे पाश्चात्य प्रजातन्त्रों ने किया था, हम भी अपनी शक्तियों का पुंजीभूत करके परम यातनाओं के बाद विजय प्राप्त करें। पर विकासमान परिस्थिति की अनिश्चतता पूर्वगण्य नहीं है और न हमारी विजय इतनी निश्चित। विच्छेदात्मक शक्तियां इस क्षण इतनी मजबूत हैं कि ऐसा कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि हम पूर्ण अराजकता तथा असम्बद्धता के छोर पर हैं। सिर्फ छूने और जाने भर की देर है। एक गलत कदम अथवा कमजोर नेतृत्व हमारा आनेवाली शताब्दियों तक पूर्ण अनर्थ कर सकता है।

बेशक इस परिस्थिति में सबसे अधिक खतरनाक तत्त्व लीग और उसकी दो राष्ट्रवाली जहनियत है। पर इस झमेले को और भी गड़बड़ा देनेवाली दूसरी बातें भी हैं। कांग्रेस, जो हिन्दुस्तान की प्रधान राजनैतिक शक्ति है, अन्दरूनी मतभेदों तथा वैयक्तिक झगड़ों से फटी जा रही है। स्वतन्त्रता को हासिल कर लेने के बाद इसकी कोई निश्चित गतिशील नीति, अपने संगठन अथवा देश के लिए, नहीं है। कांग्रेस की इस अस्थिरता का प्रतिबिम्ब केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों की नीति में परिलक्षित होता है, ऐसा मालूम पड़ता है कि उन्होंने नया कार्य आरम्भ करने की शक्ति खो दी है और तभी कदम उठाते

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

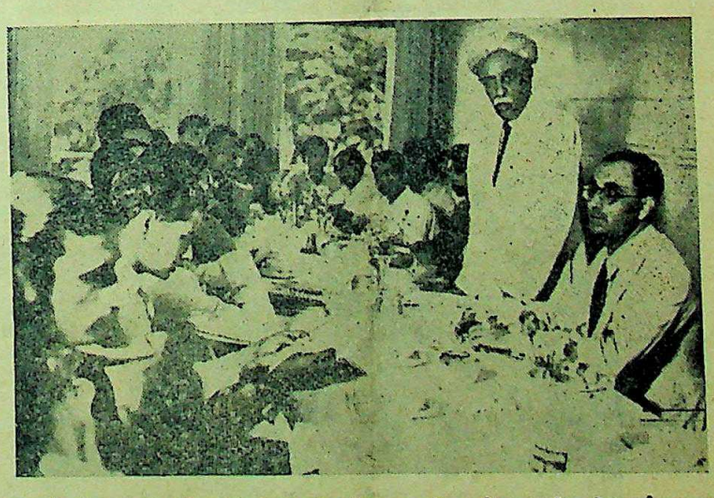

बम्बई की एक सभा में अखिल भारतीय शिया सम्मेलन के सभापति हुसेनभाई लाल जी मुसलमानों से गोवध रोकने का अनुरोध कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप हिन्दी में क्या नहीं बोलते ?

अँगरेजी तथा अँगरेजियत की अनैतिकता कब समाप्त होगी

लेखक, देवनाथ उपाध्याय एम० ए०, साहित्यरत्न

पिछले एक शताब्दी में, अँगरेजी राज्य ने अँगरेजी शिक्षा तथा विदेशी संस्कृति ने भारतीय संस्कृति रीति-रिवाज तथा दैनिक जीवन पर भयंकर आघात किया है। अँगरेजियत ने भारतीयों विशेषकर हिन्दुओं पर व्यापक प्रभाव ही नहीं डाला, वरन् विचारों तथा जीवन में एक प्रकार से अभारतीयता का जामा पहना दिया है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने अँगरेजी शिक्षा के व्यापक प्रभाव का मनोरंजक उल्लेख किया है और यह भी बतलाया है कि जब कि राष्ट्रभाषा हिन्दी है तब अपनी भाषा का हम निरंतर प्रयोग क्यों न करें ? लेख सुन्दर और विचारणीय है।

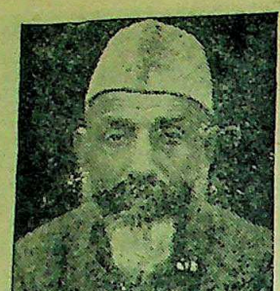

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्राण श्री पुरुषोत्तमदास टंडन।

अब भी हमारे समाज के अधिकांश लोग, जो अपने को पढ़ा-लिखा समझते हैं और अपनी गणना शिष्ट समुदाय में करते हैं, अँगरेजी अथवा अँगरेजी मिश्रित हिन्दी का प्रयोग अपनी बातचीत में किया करते हैं। अँगरेजी का प्रयोग सम्भवतः अब भी रोब गालिब करने के लिए किया जाता है। मानो बोलनेवाला यह बतला देना चाहता है कि वह अँगरेजी जानता है और इसलिए वह साधारण मनुष्य से परे है। बात यह है कि जब हम गुलाम थे तो हम गौरांग महाप्रभुओं से अपना सान्निध्य प्रकट करने में गौरव समझते थे, ठीक वैसे ही जैसे नौकर मालिक की नकल करने में या विद्यार्थी अध्यापक की कुर्सी पर बैठने में गौरव समझता है। हमने बात-बात में अँगरेजों की नकल की। उनकी पोशाक, उनका भोजन, उनका रहन-सहन उनकी बोलचाल को हमने अपनाया। हमने अपनी कालिमा को खरच-खरचकर उस पर चोखा रंग चढ़ाने की कोशिश की। इसमें हम कहां तक सफल हुए, इसका विवेचन करना यहां अभीष्ट नहीं है। लगे हाथ इतना ही कहना है कि गौरांग महाप्रभुओं की हमने ज्यों-ज्यों नकल की, त्यों-त्यों हम गिरते गये।

जब मैं छोटे दर्जे में पढ़ता था तब मास्टर साहब का हुक्म था कि हम लोग अँगरेजी में बोला करें। जैसा हुक्म, हम लोग लगे अँगरेजी में बोलने। हम एक-दूसरे की बोली पर खूब हँसते थे। कठिनाई तो यह थी कि अपनी अँगरेजी को स्वयं हिन्दी में समझाना पड़ता था। कोई कहता 'आई वाज वेन्ट'; कोई कहता 'ही इज गो' आदि आदि। बातचीत के दौरान में वह सही अँगरेजी मालूम होती थी, किन्तु जब उस शब्द-समूह पर शान्तिपूर्वक विचार करते थे तो हँसी आती थी। वैसे ही आप सफेदपोश भाइयों का संभाषण सुनिये। उस संभाषण के कुछ अंश को लिख लीजिये और फिर उस पर विचार कीजिये। आप देखेंगे कि व्याकरण की दृष्टि से बहुतेरे वाक्य गलत हैं, कितने ही शब्दों का दुरुपयोग हुआ है और अपना भाव प्रकट करने के लिए वक्ता को घुमा फिराकर कई तरह से समझाना पड़ा है। नौसिखिये कितना रुक-रुककर बोलते हैं, किस प्रकार एक ही शब्द का बार बार उच्चारण करते रह जाते हैं—मानो वे हकलाते हैं। अँगरेजी बोलने की धुन में विचारों की पूरी कसरत हो जाती है।

और सबसे अधिक हँसी तो तब आती है जब लोग अँगरेजी-मिश्रित हिन्दी बोलते हैं। हिन्दी शब्द-समूह में एकाध शब्द अँगरेजी के आ पड़ते हैं। यह बड़ी कमजोरी है जो थोड़े से संयम से दूर हो सकती है। किन्तु बात कुछ और ही है। हम इसे कमजोरी समझते ही नहीं और न इसे दूर करने की कोशिश करते हैं। हम तो यह जताना चाहते हैं कि हम अँगरेजी भी जानते हैं। कई सार्वजनिक कार्यकर्ताओं और वक्ताओं में भी यह कमजोरी आ गई है। अपने भाषणों में वे अँगरेजी के शब्द रखते जाते हैं और कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि वे जान-बूझकर अँगरेजी के शब्द रखना ही चाहते हैं। व्यवस्थापिका सभाओं में हिन्दी के बीच अँगरेजी शब्दों अथवा अँगरेजी के बीच हिन्दी शब्दों का चलन सा हो गया है। ऐसे वक्ता उपहास के पात्र हैं और कभी-कभी तो अपने अज्ञान का परिचय देने के साथ साथ श्रोताओं का बड़ा मनोरंजन भी करते हैं। एक दिन मैंने सुना एक वक्ता ने अपने हिन्दी भाषण में 'सरेन्डर' (हार मानना) शब्द डालना चाहा। ठीक शब्द का ज्ञान उन्हें न था, उन्होंने कहा 'फौज ने सलेंडर कर दिया'। इस पर बड़ी हँसी हुई। लेकिन वे काफी होशियार थे। उन्होंने भांप लिया कि उच्चारण में कुछ गलती हुई। चटपट सुधारा और कहा 'फौज ने सिलेंडर' कर दिया। और जोर की हँसी हुई, किन्तु अबकी बार वे न समझ सके कि हँसी क्यों हुई। अक्सर मैं सुनता हूँ, लोग 'कलेक्टिव फाइन' के स्थान पर 'कलेक्टरी फाइन' कहा करते हैं। 'सामूहिक जुर्माना' वे न कहेंगे। एक वक्ता को कहना था 'यही मेरा आबजेक्ट (उद्देश्य) है'। उन्होंने कहा 'यही मेरा आबजेक्शन (आक्षेप) है'। बिलकुल उल्टा अर्थ हो गया। ऐसे लोगों से हमारा निवेदन है कि वे अपनी भूल को सँभालें। हिन्दी शब्दावली के बीच अँगरेजी का एक शब्द वैसे ही बुरा लगता है जैसे धोती कुर्ते के ऊपर टाई। रही अँगरेजी के ज्ञान से जनता को प्रभावित करने की बात अथवा अँगरेजी का ज्ञान न रखते हुए भी अँगरेजी जानने का बहाना करने की बात, सो उन्हें अब अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि अँगरेजी के दिन कम से कम भारत में हट गये।

जब हम रेलगाड़ी के डिब्बे में घुसते हैं और जगह की तलाश करते हैं तो अपना संभाषण अँगरेजी में प्रारम्भ करते हैं। विशेषकर जब कि हम एक जगह के लिए लड़ते हैं तब तो अँगरेजी की झड़ी लगा देते हैं। ऐसे समय वक्ता का अभिप्राय संभवतः यही है कि वह जता दे कि वह अँगरेजी जानता है और इसलिए वह व्यक्ति-विशेष है। एक दिन मैंने देखा एक साहब रेलगाड़ी में बे-टिकट सफर कर रहे थे। कुछ ज्यादा पढ़े-लिखे न थे। टिकट देखनेवाला जब आया तो उन्होंने अपनी अँगरेजी शुरू की। टिकट देखनेवाला तो हिन्दी में बोलता था और ये साहब अँगरेजी झाड़ते रहे। अन्ततः टिकट का दाम जुर्माने के साथ वसूल हुआ। उनका अँगरेजी बोलना कहां तक उचित था, यह तो वे जानें, लेकिन टी० टी० के चले जाने के बाद बड़ी देर तक मजाक चलता रहा। किसी ने कहा अँगरेजी पढ़े हैं, टिकट लेकर क्यों चलें, दूसरे ने कहा 'गिटपिट गिटपिट करने से टी० टी० थोड़े छोड़ देगा?' आदि। निस्सन्देह, वे साहब टी० टी० पर इसकी छाप डालना चाहते थे कि वे अँगरेजी जानते हैं। साथ ही वे अपनी बातों को अन्य यात्रियों से छिपाना चाहते थे। अपने परिवार में जब हम अपने भाई से कोई बात कहना चाहते हैं जो हम नौकर से छिपाना चाहते हैं, तो हम अँगरेजी में ही बोलते हैं। हमारी मुखमुद्रा तथा हाव-भाव से नौकर कभी-कभी ताड़ जाता है और कभी-कभी कोरा मुँह ताकता रह जाता है। मैं इसे भी कोई बुद्धिमानी नहीं समझता। हम अपने नौकर से करें, कितने दुःख की बात है। हम न नौकर को वहां से हटा दें अपने विचार दिल खोलकर व्यक्त करें।

जब हम होटलों में जाते हैं, हम अँगरेजी बोलना जरूर शुरू हैं। होटलों में छुरी-कांटों का प्रयोग हैं और उनके मेल में अँगरेजी जब बोलते हैं। परसनेवाले को 'ब्वाय' कर पुकारते हैं। 'ब्वाय' का अर्थ है हां, 'ब्वाय' का उच्चारण भी कुछ ढंग से किया जाता है। आप अँगरेज पढ़े हों, लेकिन 'ब्वाय' कहने का ढंग सीखने के लिए आपको किसी में ही दीक्षा लेनी पड़ेगी। 'ब्वा अँगरेजी में ही बोलेगा। पूछेगा टेरियन' या 'नान वेजीटेरियन' हारी या मांसाहारी)। अच्छा लोग 'ब्वाय' के स्थान पर 'छोकरा' शुरू करें।

स्पष्ट है सदियों की गुलामी का हमारे विविध कार्य-कलाप पर आज हम स्वतन्त्र हैं, हमें गुलामी बन्धनों को तोड़ना चाहिए। बोलचाल की भाषा पर अँगरेजी रंग चढ़ा हुआ है, वह हमारे लि घातक सिद्ध होगा। यू० पी० की सरकार ने हिन्दी को सरकारी का की भाषा मान ली है। इसके लि उसे धन्यवाद देते हैं। किन्तु हम बोलचाल में हिन्दी का उपयोग इसके लिए कोई भी सरकार-कानू बनायेगी। यह हमारी निजी सम और इसे हमें स्वयं हल करना है। बोलने से हमारा यह अभिप्राय नहीं हम संस्कृतमयी परिमार्जित भाषा प्रारम्भ कर दें, जो सर्वसाधारण की में आसानी से न आवे। उर्दू की श जो दैनिक बोलचाल में आती है, मजे में प्रयोग में लाई जा सक अँगरेजी के कुछ शब्द भी हमारे में आ गये हैं, उन्हें भी हम अपना हैं, जैसे स्टेशन, स्कूल, टिकट, कार, बक्स, ग्लास आदि आदि। हिन्दी व्यापक भाषा है। हमारी बोलचा भाषा और भी व्यापक होनी च अँगरेजी के ऐसे चलते शब्दों के हिन्दी शब्द ढूंढ़ना असुविधाजनक ही

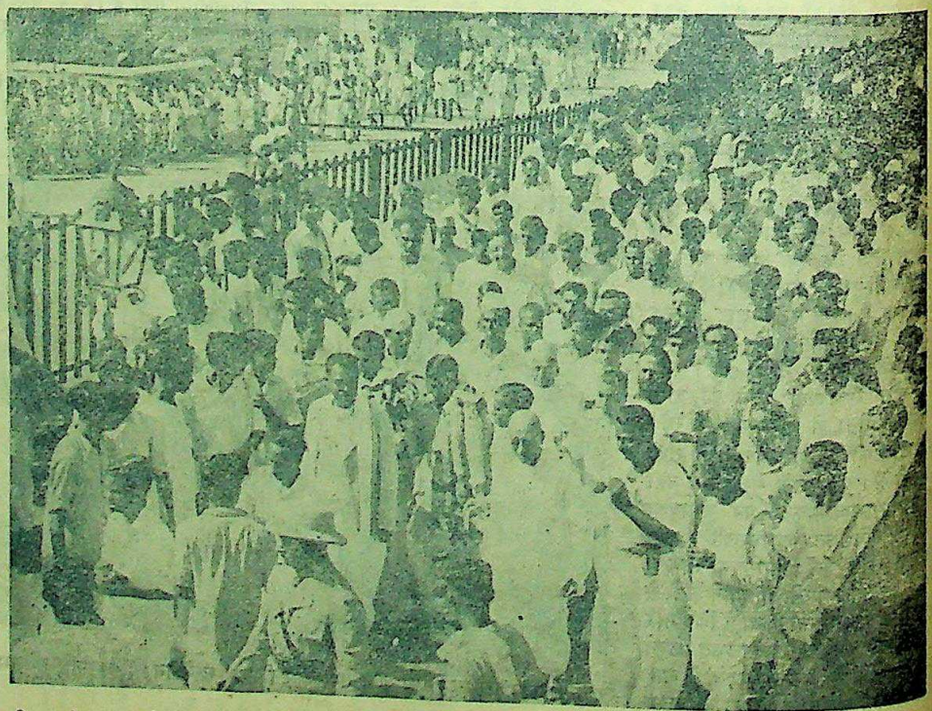

श्री राजगोपालाचार्य तामिलनाद (दक्षिण) के प्रसिद्ध कवि सुब्रह्मण्य भारती के स्मारक का उद्घाटन करने जा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज का हमारा भोजन-संकट

सरकार को वैज्ञानिक ढङ्ग से खेती तथा पशुओं का प्रश्न हल करना चाहिए

लेखक, डाक्टर हीरालाल दुबे, एम० एस-सी०, डी० फिल०
(अध्यापक, प्रयाग-विश्वविद्यालय)

भारत को आज भोजन-संकट का शिकार क्यों होना पड़ रहा है? इसका प्रमुख कारण है कृषि की ओर वैज्ञानिक ढंग से सक्रिय उपाय की ओर सजग न होना और पशुओं की सुरक्षा के प्रश्न का असमाधान। विद्वान् ने लेखक इस लेख में भोजन कि विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बाधाओं के निवारण की ओर जनता तथा सरकार का ध्यान आकर्षित किया है। लेख पठनीय ही नहीं, विचारणीय भी है।

इस विश्वव्यापी अन्न-संकट में हमारे भोजन की समस्या ने विकराल रूप धारण किया है। जिस भूमि में अन्न की कमी नहीं होती थी, वहां पर आज मनुष्य भूखे मर रहे हैं। जहां की गायों के स्तनों से दूध के स्रोत बहा करते थे, वहां आज दूध देखने को भी नहीं मिलता। जहां के मनुष्य देवता समान होते थे, वहां आज अध-भुखमरे पंजर दीख पड़ते हैं। क्या इन सब का कारण इस विश्वव्यापी हलचल पर ही निर्भर है, या हम पर भी? इस प्रश्न का उत्तर है 'दोनों पर'। अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का प्रभाव तो हर एक देश पर पड़ता ही है, परन्तु इस संकट में हमारा भी बहुत बड़ा हाथ है।

सदियों से हमारे भोजन का प्रश्न नहीं उठा; परन्तु एकाएक यह संकट हमारे ऊपर आ पड़ा। इसका मुख्य कारण है कि हमने अपनी खेती और पशुओं पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया और जहां तक हो सका इन दोनों को इस निर्दयता से निचोड़ा कि अब ये दोनों शुष्क हो गये और साथ ही साथ हमारी जनसंख्या भी जोरों से बढ़ती गई। हमारा भोजन खेती और पशुओं पर ही निर्भर है और इस लेख में इन्हीं पर कुछ विचार प्रकट किए गये हैं।

हमारे भोजन के दो मुख्य भाग हैं। पहले भाग के अन्तर्गत अन्न, तरकारी और भाजी हैं और दूसरे भाग में दूध, दही और घी आदि हैं। मांस, मछली और अण्डे आदि का प्रश्न यहां पर नहीं उठता, क्योंकि अधिकतर भारतवासी अहिंसा के उपासक हैं।

अन्न आदि का प्रश्न तो खेती पर निर्भर है और भारत का प्रधान व्यवसाय भी खेती ही है। इस ओर दो बातों पर ध्यान देना आवश्यक है। एक तो अधिक से अधिक उपज हो और दूसरे अधिक से अधिक जमीन में खेती की जाये।

जमीन को उपजाऊ बनाने के दो मुख्य उपाय हैं खाद और सिंचाई। इन दोनों के बिना खेती असम्भव है। हमारे देश में इन दोनों विषयों पर ध्यान नहीं दिया गया है और इसका फल हम आज भोग रहे हैं। हमें पूर्ण आशा है कि हमारी लोकप्रिय सरकार इस ओर बहुत शीघ्र ही ध्यान देगी और किसानों को इन विषयों पर शिक्षा देगी। खेती में नाइट्रोजन-वाली खाद बहुत ही आवश्यक है और भारत की जमीन में इसकी बहुत कमी है। इसके लिए अमोनियम सल्फेट आदि रासायनिक खादों की आवश्यकता है जो कि पाश्चात्य देशों में सरलता से बड़ी मात्रा में बनाई जाती है। हमें प्रसन्नता है कि इस ओर हमारी सरकार का भी ध्यान गया है। परन्तु केवल रासायनिक खाद का उपयोग बहुत अच्छा साबित नहीं हुआ है और इस कारण इसमें घास, पत्ती और गोबर आदि की भी खाद मिलाकर काम में लाने से फसल में अधिक बढ़ती होती है। खाद के विषय में एक दो बातों की ओर ध्यान देना आवश्यक है, क्योंकि इस निर्धन देश के लिए खाद के समान उपयोगी वस्तु का नष्ट करना महापाप है। गोबर तो खाद के काम आता ही है परन्तु बहुत बड़ी मात्रा में ईंधन का भी काम देता है। गोबर का जलाना सदुपयोग नहीं है बरन दुरुपयोग है और जहां तक हो सके गोबर को खाद के काम में ही लाना चाहिए। दूसरे हमारे पशुओं का मूत्र बेकार ही जाता है। इसका भी उपयोग खाद के रूप में ही हो सकता है। जहां पर गायें और भैं बांधी जाती हैं, वहां यदि पत्तियां बिछा दी जायें तो पत्तियां उस मूत्र को सोख लेंगी और फिर इन पत्तियों की अच्छी खाद बन सकती है।

* * *

दूसरी बहुत ही उपयोगी खाद मनुष्यों का मल है जो बहुत बड़ी मात्रा में बेकार हो जाता है। बड़े-बड़े शहरों का मल तो नदियों सेप्टिक टैंकों में बर्बाद कर दिया जाता है। गांवों में स्त्री-पुरुष दिशा-फराकत के लिए खेतों में जाते हैं; परन्तु इस मल का बहुत-सा भाग पशु और पक्षी ही खतम कर देते हैं और रहा-सहा या तो सूखकर हवा में उड़ जाता है या वर्षा के पानी में बह जाता है। इस उपयोगी खाद को बेकार न जाने देने के लिए सबसे अच्छी रीति यह है कि खेतों में छोटी-छोटी खाइयां बनाकर उन्हीं में पाखाने के लिए बैठा जाय और फिर मल को मिट्टी से ढंक दिया जाय इस प्रकार मल का सभी भाग खेत में मिल जायगा। यह बहुत ही स्वाभाविक रीति है जिसे कुत्ते बिल्ली आदि सहज बुद्धि से सदैव करते हैं।

* * *

खेती का दूसरा मुख्य अंग सिंचाई है। कुछ जगह तो नहर से सिंचाई होती ही है; परन्तु इसकी बहुत अधिक आवश्यकता है। इस ओर भी हमारी सरकार का ध्यान गया है और अच्छा उपाय यह होगा कि बड़े-बड़े पानी के कुण्ड उपयुक्त स्थानों पर बनाये जायें और इनसे न केवल सिंचाई का ही काम लिया जाय; परन्तु बिजली भी पैदा की जाय। इस प्रकार सिंचाई के साथ ही साथ हमारे व्यवसाय-धन्धों के लिए काफी मात्रा में सस्ती बिजली भी मिल सकेगी।

खाद और सिंचाई के अलावा हमारा ध्यान अधिक से अधिक जमीन में खेती करने की ओर भी जाना चाहिए। भारत में बहुत बड़ी मात्रा में ऊसर भूमि पड़ी हुई है और इस ओर सरकार द्वारा कोई प्रयत्न नहीं किया गया है। ऊसर जमीन को उपजाऊ बनाने का प्रयत्न दूसरे देशों में किया गया है और उन्हें इस ओर सफलता भी मिली है। हमारे वैज्ञानिक इस ओर ध्यान दें तो हजारों एकड़ ऊसर जमीन में काफी मात्रा में हमारे भोजन पदार्थ पैदा किये जा सकते हैं। दूसरे बहुत सी भूमि ऐसी ही पड़ी रहती है जिसमें सरलता से खेती हो सकती है।

शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

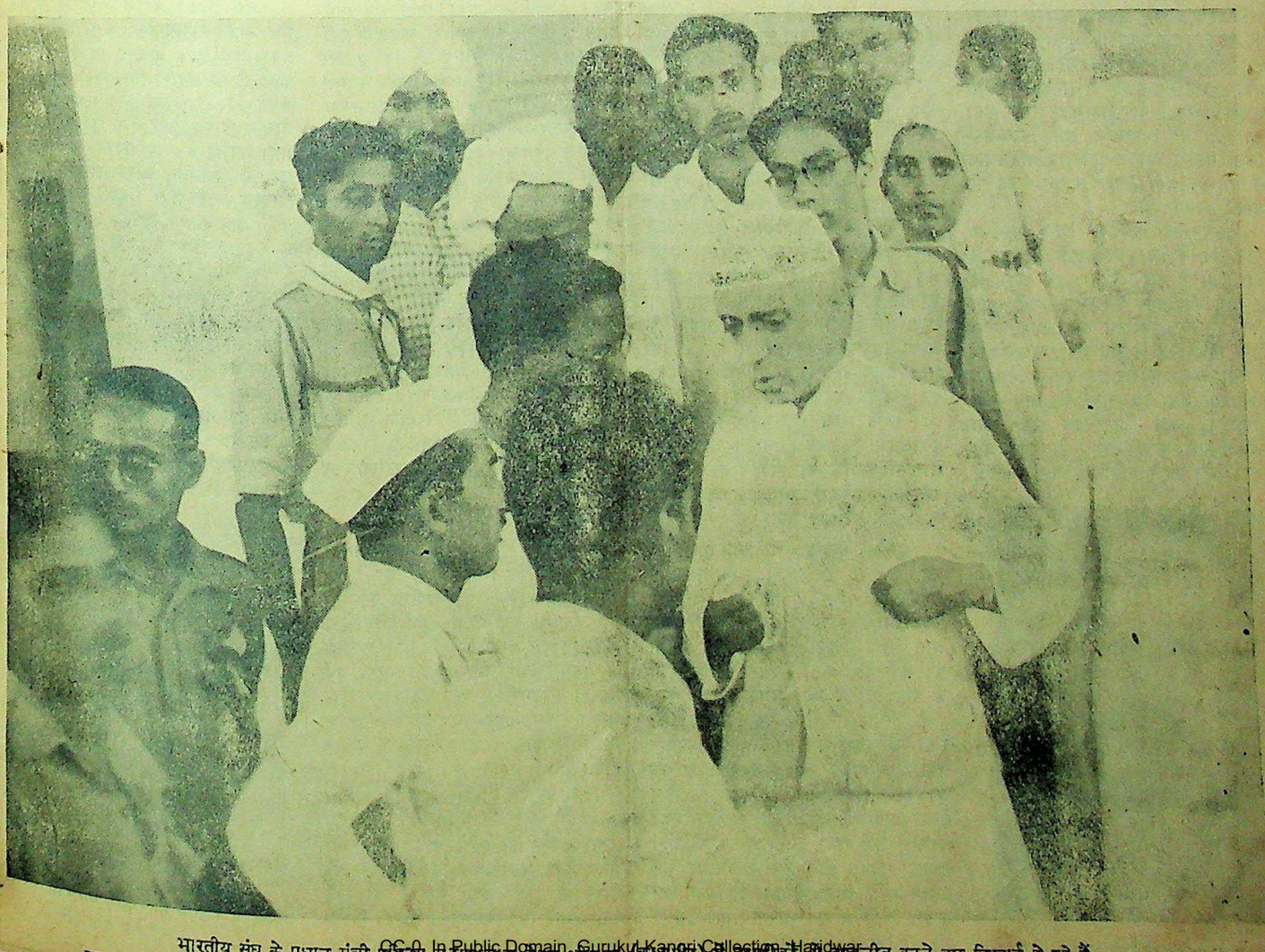

भारतीय संघ के प्रधान मंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू श्रीनगर (काश्मीर) में नागरिकों से बातचीत करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व-शान्ति की समस्या किधर ?

क्या अशांति और संघर्ष का निवारण परमाणु-शक्ति के नियंत्रण से ही हो सकता है ?

लेखक, श्री श्यामसुन्दर राय बी० एस-सी०

भारत ही नहीं योरोप तथा अमरीका में भी अशांति का साम्राज्य है। योरोपीय शांति का व्यापक प्रभाव समस्त विश्व पर पड़ना अनिवार्य है, किन्तु क्या साम्राज्यवादी राष्ट्रों की लिप्सा, अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण तथा साम्राज्य-विस्तार के स्वार्थ के होते हुए सचमुच विश्व-शांति की स्थापना हो सकती है ? इस लेख में विश्व में फैली हुई अशांति के कुछ पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए शांति-स्थापना की आवश्यकता बतलाई है। लेख में जानकारी की सामग्री है।

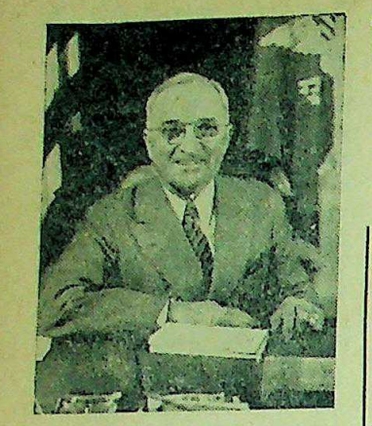

अमरीका के प्रेसीडेंट ट्रूमन ने आटमबम का श्रीगणेश किया।

यह प्रगट है कि विश्व-शान्ति की समस्या अगर बिलकुल नहीं तो बहुत बड़े अंशों में, परमाणु-शक्ति के नियंत्रण के ही ऊपर आधारित है। जब तक इस शक्ति पर (और इसके साथ ही साथ हमें कीटाणु प्रयुक्त विनाशकारिणी शक्तियों को हमें नहीं भूलना चाहिए) हमारी पृथ्वी के राष्ट्रों की केन्द्रीय सभा का पूरा अधिकार नहीं हो जाता, एक राष्ट्र का दूसरे के खिलाफ लड़ने और इन शक्तियों के प्रयोग करने का भय दूर नहीं होता। हां, यह बात बहुत जरूरी है सब राष्ट्र खासकर बड़े राष्ट्रों में प्रेम तथा एक दूसरे पर विश्वास का रहना भी अत्यन्त आवश्यक है। अगर माना कि और सब बातें राष्ट्रों में तय हो गईं लेकिन एक दूसरे के विरुद्ध जो शक के बादल दुनिया को अच्छादित किये हैं, नहीं हट पाये तो कौन उन्हें इस विनाशकारी युद्ध से रोक सकता है ? चाहे जितना भी ताकतवर और बढ़िया इन्तजाम इस विषय की देख-रेख करनेवाली समिति ने क्यों न किया हो, छिपकर एक राष्ट्र परमाणु बम बना सकता है, जहरीले कीटाणुओं को जमा कर सकता है, फेंके जानेवाले मिसिलों की ताकत प्रयोग द्वारा बढ़ा सकता है, ताकि घर बैठे ही परमाणु तथा विषैले कीटाणुओं से भरे बमों को फेंक सके। इसलिए हमें विश्व-प्रेम, किसी समस्या को अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति में समझने तथा उसका पालन करने की आदत डालनी होगी।

हमारी समझ में जो जिस इस समय राष्ट्र-संघ के अस्त्र-शस्त्रवाले विभाग में पैदा हुआ है और जो जो बहसें वहां हुई हैं, उन्हें ध्यानपूर्वक समझने पर यही ज्ञात होता है कि अमेरिका इस समय केवल यही चाहता है कि रूस राष्ट्रसंघ की ओर से बनी समिति को परमाण बम बनानेवाली फैक्टरियों तथा उन खानों की जांच तथा निरीक्षण, जहां यूरेनियन २३५ या प्लोटोनियम पाया जाता है, सौंप दें। दूसरी ओर रूसी प्रतिनिधि यह चाहते हैं कि पहले अमेरिका अपने परमाणु बमवाले भंडार को नष्ट कर दे और परमाण बम का बनाना स्थगित कर दे। यह पहले तुम और पहले तुमवाला जो किस्सा इस समय उठ खड़ा हुआ है, वह केवल एक दूसरे के प्रति शक का द्योतक है और कुछ नहीं। हम इस समय यह नहीं विचार करते कि किसका कहना युक्तिसंगत है और कौन अपने मतलब की बात कह रहा है।

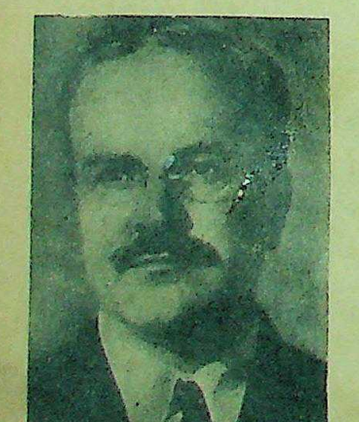

सोवियट रूस के डिक्टेटर मार्शल स्टेलिन।

परमाणु बम पर राष्ट्रसंघ का कंट्रोल स्थापित हो जाने के बाद दो एक सवाल उपस्थित होंगे जिनके ऊपर विचार कर लेना इस समय अच्छा होगा। पहला तो यह कि जांच-पड़तालवाली कमेटी जब अपना काम शुरू करेगी तो राष्ट्रमान (Sovereignty) और उसके मर्यादा को कुछ बट्टा लगना आवश्यक है। माना कि उक्त समिति के इंस्पेक्टर हिन्द में जांच करने आये। उनके पास तो पहले ही से हमारे देश में कितनी खान यूरेनियम की है और कहां प्लोटोनियम तैयार किया जाता है और परमाणु-शक्ति पर अनुसंधान करनेवाली प्रयोगशाला कहां कहां है, इसकी लिस्ट रहेगा ही। उस जांच-पड़ताल के दौड़ान में अगर उन्हें इस बात का शक हो गया कि इलाहाबाद फोर्ट में भी परमाणु-सम्बन्धित प्रयोग होते हैं तो उसे इसकी जांच करने का भी हक होगा। चाहे यह बात कितनी भी सच हो कि वहां इस तरह की कोई बात नहीं; फिर भी भारत-सरकार उसे रोक नहीं सकती। जांच करने पर उस समिति के सदस्यों को यह तो मालूम हो ही जायगा कि यहां कितनी सेना है, भीतर कौन-कौन-सी चीजें हैं आदि, आदि। हमें यह खयाल करना चाहिए कि इस तरह के समाचार हमारे दुश्मनों को लड़ाई के लिए बड़े लाभदायक सिद्ध होंगे। तो चाहे उक्त समिति के कामों तथा जांच-पड़ताल का क्षेत्र कितना भी सीमित (बिलकुल सीमित भी करने पर हमारा इरादा नहीं सिद्ध होगा) और साफ साफ हो, हमें इस तरह के हस्तक्षेप सहन करने ही होंगे। यह समस्या और भी नाजुक और कठिन हो जायेगी, जब रूस, इँगलैंड तथा अमेरिका जैसे विशाल देशों का निरीक्षण होगा।

दूसरी समस्या जो सामने आयेगी वह होगी, परमाणु बम-सम्बन्धी प्रयोगशाला तथा उत्पादन के लिए फक्टरियों की। इन्हें कहां स्थापन किया जाय और किस पैमाने पर इन जगहों पर काम हो; क्योंकि वर्तमान परिस्थिति में मान लीजिये कि विश्व-युद्ध छिड़ गया (जो की अब निरी कल्पना न रही) तो जिन-जिन देशों में इस तरह के कारबार होंगे, निश्चय ही उसी देश का उस पर अधिकार होगा और जो लड़ाई के लिए कम सहायक नहीं सिद्ध होगा। फिर परमाणु बम तथा कीटाणुओं का प्रयोग खुलकर होगा और हम लोगों का सब प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध होगा। यह कहा जा सकता है कि ये सब कारबार एक देश में रहें यह भी समझ नहीं।

तो समस्या यह खड़ी होती है कि आखिर किया क्या जाय ? किस प्रकार इस परिस्थिति का सामना किया जाय ? क्या मानव अपने घर को सँभालने में भी असमर्थ रहा ? क्या विज्ञान को गैरकानूनी घोषित कर दिया जाय ? क्या सारे वैज्ञानिक समाज को इस दिशा से रोकने के लिए उन्हें जेल में जगह बना दी जाय और उनसे यह कह दिया जाय कि आप महानुभावों तथा आपके ज्ञान को जिसे दुनिया विज्ञान कहती है, अब तनिक भी आवश्यकता नहीं ? क्या हम यह एलान कर दें कि हम आज से प्रगतिशील न रहें ? अब हमारा रास्ता 'पीछे' का होगा। लेकिन यहां पर हमें यह भी देखना होगा कि कहां तक यह सम्भव होगा कि हम अपने को वैज्ञानिकों की सेवाओं से अलग रखें ?

आज ही की परिस्थिति में अगर हम 'आगे' बढ़ते हैं तो इसमें शक नहीं कि इसका अन्त लड़ाई है—मानवता का विनाश, आचरण का पतन। विजित और पराजित में कोई फर्क न होगा। वह समस्या एक मैदान में पड़े दोनों पक्ष के घायल सिपाहियों की-सी होगी। कोई मरहम-पट्टी करनेवाला भी न होगा। उस समय विज्ञान तथा उनके ज्ञान के भंडार भी हमारी सहायता नहीं कर सकते। हो सकता है कि हमारी आज की हरी-भरी पृथ्वी हमारे पड़ोसी चांद की तरह वीरान हो जाय। हो सकता है परमाणु-बम प्रहार के दौड़ान में ही परमाणु विघटन का न अन्त होनेवाली प्रतिक्रिया शुरू हो जाय। तब हमारी पृथ्वी पिंड न रहकर सूर्य्य की तरह एक जलता हुआ गैस बन जायेगी। वैज्ञानिक अभी इस डर को दूर नहीं कर पाये हैं। कुछ लोग यह भी सोचते हैं कि तीसरी लड़ाई के बाद विजयी राष्ट्र सारी दुनिया पर शासन करन लायक रहेगा और उसी समय दुनिया में शान्ति होगी। चाहे बल के भरोसे क्यों न हों। उनका यह भी कहना है कि शुरू के ५० साल जरूर जनता के लिए कठिनाइयों के दिन होंगे, लेकिन फिर बाद में चिर शान्ति स्थापित हो जाने के बाद धीरे-धीरे सब दुख, तकलीफ रफा हो जायेंगे।

मेरी राय में तो इस तरह का सोचना हमारे लिए बड़ा बुरा होगा। तीसरी लड़ाई जो संसार में होगी, वह इतनी कीमती होगी कि उसके बाद की श्मशान-वाली शान्ति का विचार हमें छोड़ देना चाहिए। इस तरह का सोचना और उसी के अनुसार चुप लगाकर बैठ रहना हमें हिजड़ा या नपुंसक बना देगी तब फिर शान्ति किस काम की ? इस तरह के विचार क्रियाहीनता तथा नैराश्य के विचार होंगे। इसमें जीवन कहां ?

जब मैं यह सोचता हूँ कि हम लोगों ने लड़ाई के समय कितने बड़े-बड़े और असाध्य कार्य किये तो मुझे भरोसा हो जाता है कि अगर आज हम फिर उसी तरह तैयार हो जायँ। कमर कस लें, तो कोई काम हमारे लिए असाध्य न होगा। विश्व-शान्ति के लिए लड़ाई हमारी समस्याओं के

ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री एटली एटमबम के शासन के पक्षपाती हैं।

अपने आप सुधार देगी, यह सोच हम विश्राम नहीं कर सकते। अब तक हमने लड़ाई लड़ने में अपूर्व साहस और धैर्य दिखाया है। आज से हम लड़ाई रोकने में अपना धैर्य तथा साहस पहले से भी अधिक मात्रा में दिखायेंगे, क्योंकि इस बार हम आदमियों की जान मारने का नहीं, बचाने का प्रयत्न करते होंगे। इस बार का हमारा ध्येय उच्च और स्वर्गीय होगा। अब हम राष्ट्रीयता तथा राष्ट्र-सम्मान की बेड़ियों में नहीं बधेंगे। सारी दुनिया हमारी मातृभूमि होगी। मानव-कल्याण हमारा ध्येय होगा। इससे हम अपनी मर्यादा खोयेंगे नहीं, बढ़ायेंगे।

लेकिन सवाल उठता है कैसे ? हमारा रास्ता क्या होगा ? जब हमने अपना ध्येय-बिन्दु देख लिया तो अपना रास्ता तो पहचाना ही होगा और उसे तय करना होगा।

इस समय मुझे यही सूझता है कि हम विश्व-सरकार कायम करने के लिए प्रयत्नशील हों। बरट्रैन्ड रूसेल महाशय कहते हैं कि तीसरी विश्वव्यापी लड़ाई से बचने के लिए हमें विश्व-सरकार का निर्माण करना होगा और राष्ट्रीय सम्मान तथा मर्यादा के पुराने ख्यालों को परमाणु युग में संशोधित करना होगा। राष्ट्र कल्याण की जगह हमें विश्व-कल्याण को अहमियत देनी होगी। रूस में तो इसी तरह के विधान हैं (National sovereignty) राष्ट्र सम्मान के क्षेत्र में महान् क्रान्तिकारी परिवर्तन किया है। विश्व-सरकार भी रहेगी और राष्ट्रीय सरकारें भी। दोनों के समन्वय में ही हमारा कल्याण है। गांधी जी का मानव-प्रेम हम इसमें पा सकेंगे। इसमें शक नहीं कि यह बड़ी कठिन चीज है, इसे प्राप्त करने में हमें बड़े धैर्य से काम लेना पड़ेगा, लेकिन इसमें भी तनिक शक नहीं कि यही हमारा राजमार्ग है।

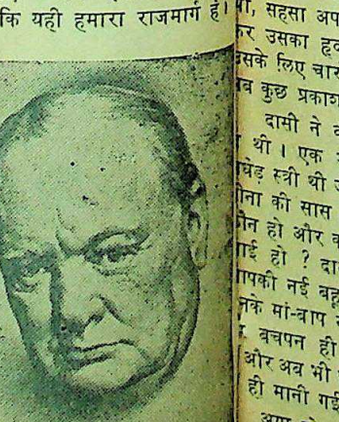

ब्रिटेन के कट्टरपन्थी दल के सर्वेसर्वा विन्स्टन चर्चिल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह चली गई

लेखिका, कुमारी गौरा पन्त

समाज में पारिवारिक जीवन में परिस्थितियाँ आती और विलीन होती रहती हैं। कब कौन सी परिस्थिति आ खड़ी हो, इसे कोई नहीं जानता। वीना के जीवन में ऐसी ही परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं और उसने उनका सामना भी किया। लेखिका ने जीवन के उथल-पुथल का इस कहानी में सुन्दर चित्रण किया है, जो पठनीय है।

वीना आज स्कूल न मालूम क्यों नहीं गई? उसका हृदय उदास था। वह अपने कुटुम्ब में एकमात्र कन्या थी, इस कारण सभी ओर उसकी मांग थी। यदि कभी वह सुस्त अथवा बीमार पड़ जाती तो समस्त घर दुखी हो जाता था, आज भी सभी उसके पास आए और आग्रह-पूर्वक उसकी तबीयत का हाल पूछने लगे। किन्तु उसने कुछ न बताया 'कुछ नहीं' कहकर सबको टाल दिया। मां-बाप अत्यधिक चिन्तित हो उठे।

वीना की आयु उन्नीस साल की हो चुकी थी। उसके माता-पिता को भी उसकी शादी की चिन्ता होने लगी। वह चाहते थे कि उन्हें कोई सुयोग्य वर मिल जाय, तो हम अपनी एक-मात्र संतान का पाणि-ग्रहण-संस्कार कर दें।

सौभाग्य से वीना को एक वर मिला जो स्वयं भी अपने मां-बाप का एकलौता पुत्र था। जब वीना के पिता को ज्ञात हुआ कि लड़का अपने मां-बाप की एक-मात्र संतान है तो उन्होंने वे सोचे समझे उस लड़के के साथ अपनी प्यारी कन्या का विवाह कर दिया। वीना धना-ढ्य कुल की धी ही, खूब धूम-धाम से शादी हुई, एक माह तक शादी की रौनक रही। वीना के पति का नाम रमाकान्त था।

रमाकान्त अपनी ससुराल की चीजों से मालामाल हो गया। वीना अपने पति के घर गई। उसकी मां अपनी कन्या के वियोग में विकल हो उठी। जिसे वह एक क्षण भी अलग न करती, उसे आज उसने हमेशा के लिये विदा कर दिया। वह बेचैन हो उठी। उससे न रहा गया। उसने अपने पति से अनुमति लेकर अपनी एक दासी को उसका सन्देशा लाने को भेजा।

वीना की मां ने दासी से रोते हुए कहा कि एक बार शीघ्र तुम मुझे उसकी खबर दे जाना और फिर तुम्हें हमेशा ही उसके पास रहना होगा। दासी ने अपनी मालकिन की आज्ञा का पालन किया और प्रसन्नता-पूर्वक लखनऊ गई। वह भी वीना को प्यार करती थी। उसके यहां काम करते-करते वह बुढ़िया हो चुकी थी, बचपन से उसका लालन-पालन उसी ने किया था। लखनऊ जाते हुए वह विचारों के पुल बांध रही थी। वह वीनू तथा उसके पति के लिए अपना सर्वस्व निछावर कर देगी, वह भावों में मग्न थी ही कि सहसा लखनऊ का स्टेशन आ पहुँचा। वह उतरी, उसे अमीनाबाद जाना था।

दासी वीना के मकान को देखकर उसकी तकदीर पर रो उठी। हाय मेरी वीना, आज तुम्हारी तकदीर तुम्हें इस टूटे मकान में खींच लाई, जो वस्तु कुछ दिन पहले सोना था आज वही सोना तल मान कर जमीन पर पड़ा है। वीना! बोलो क्या सच यह तुम्हारी ससुराल है? क्या तुम्हें अपना समस्त जीवन यहीं निर्वाह करना है।

वीना अन्दर एक कोने में बैठी विकल थी, सहसा अपनी दासी का विलाप सुन-कर उसका हृदय जाग उठा। अभी तक सब कुछ प्रकाश हुआ।

दासी ने वीना से पूछा, किन्तु वीना चुप थी। एक मैली-सी धोती पहने एक अधेड़ स्त्री थी जो कि वीना की सास थी। वीना की सास ने दासी से पूछा कि तुम कौन हो और कहां से और किससे मिलने आई हो? दासी ने उत्तर दिया कि मैं आपकी नई बहू से मिलने आई हूँ। मुझे उनके मां-बाप ने भेजा है। मैंने इस कन्या को बचपन ही से लालन-पालन किया है और अब भी इसे पालने की अधिकारिणी होकर ही मानी गई हूँ। मैं अब यहीं रहूँगी।

आप तो जानती ही होंगी कि यह अपने मां-बाप की एकमात्र सन्तान है, और उनके कुल की दीपिका है। बहूजी ने कहा है कि मैंने अपनी प्यारी वीनू से कभी काम नहीं लिया। यह कन्या अपने मां-बाप के घर बड़ी लाड़-प्यार से पली है।

बहूजी ने मुझे आज्ञा दी है कि एक बार तुम मेरी बेटी के ससुराल जाओ और यदि वहां पर उसको किसी भांति की तकलीफ हो तो उसे भी दूर कर आना। इस समय मैं केवल वीनू को देखने आई हूँ, किन्तु कुछ दिन पश्चात् मुझे यहीं रहने की आज्ञा दी है।

दासी की बातें सुनकर वीना की सास हक्की-बक्की रह गई। उसने अपने हृदय ही में सोचा कि हाय! यह तो मेरे ऊपर अच्छी बला आ पड़ी, एक तो लड़की को पालूं और दूसरे उस दासी को भी। मेरे पास इतना धन कहां से आया जो कि इस बहू को लाकर इतना खर्चा उठाऊँ। मुझे यह अच्छी बहू मिली। जैसे संसार में आज तक कोई बहू ही नहीं बनी। दुलारी है तो अपने मां-बाप की होगी।

उसने क्रोध में आकर दासी से कहा कि तुम्हें यहां रहने की आवश्यकता नहीं है। मेरी आधी अवस्था से अधिक हो पहुँची, किन्तु मैंने यह रिवाज कहीं नहीं देखा कि बिटिया के पीछे दासी भी जाय। यदि उनकी बिटिया दुलारी है तो उनके लिये है। यहां पर रहकर उसे सब काम सीखना पड़ेगा। तुम उसके पीछे कब तक रहोगी आखिर तुम भी तो बुढ़िया हो ना!

यह सब बातें वीना एक कोने में बैठी सुन रही थी। उसका हृदय इन बातों को सुनकर और भी विकल हो उठा। उससे न रहा गया, अन्त में उसकी आंखों से सावनी वर्षा होने लगी और साथ ही हृदय में अनेकानेक भाव आने लगे। वह सोचने लगी कि मेरे पूज्य जनों ने कभी भी मेरे लिए कटु व्योहार नहीं किया, किन्तु पता नहीं इस बार उनकी बुद्धि में क्या हुआ, जो कि मुझे ऐसी जगह दिया।

किन्तु सहसा उसके हृदय में विचार हुआ कि हाय दुखिनी तुझे तो कष्ट सहना ही है अपने साथ तू सबों को दोषी क्यों ठहरा रही है? मुझे तो अब इसी घर में अपना जीवन निर्वाह करना है।

वीना शिक्षित थी इस कारण उसे सब बातों का ज्ञान था। वह बराबर अपने मां-बाप को धैर्य बँधाती और कहती कि अब मुझे इसी जगह अपना समस्त जीवन निर्वाह करना है, जो हुआ सब ठीक है अब पश्चात्ताप करना बेकार है।

वीना की शादी के पश्चात् जब वीना के पिता को वीना की ससुराल की दशा विदित हुई तो वह बड़े विकल हुए। क्या सोचकर उन्होंने अपनी कन्या को वहां दिया और क्या हुआ? उन्होंने सोचा था कि जिस प्रकार वीना एकमात्र होने के कारण यहां पर सुखी थी उसी प्रकार एक-मात्र पुत्र की धर्मपत्नी बनकर वहां भी सुखी रहेगी। वह क्या जानते थे कि अब वीनू के दुख के दिन आ रहे हैं। वह बार-बार सोचते की वीनू मुझे धिक्कारती न होगी। यह सब देखकर उनका हृदय हर समय दुखी रहता था। वह इस दुख में घुल-घुलकर सूखने लगे।

अब वीना शादी के पश्चात् अपने मां के घर गई। वीना को कई दिवस पश्चात् देखने से समस्त घर प्रसन्नता से खिल उठा। सबों के इतने दिनों से मुरझाए हुए चेहरे पर आज वीना रौनक ले आई। जब वीना अपने माता-पिता के सम्मुख गई तो वह कई प्रकार से उससे उसके ससुराल की बातें पूछने लगे, किन्तु वह उनको दुखी न करना चाहती थी। वह भलीभांति जानती थी कि मेरे न बताने पर भी वह जानते हैं; किन्तु वह अपने मुंह से न बताना चाहती थी।

जब वीना ने देखा कि मेरे पिता मेरे दुख से स्वयं भी दुखी होकर क्षीण होते जा रहे हैं तो उसे और भी दुख हुआ। वह कई प्रकार से बनावटी रूप में अपने ससुराल की बड़ाई करती, किन्तु उसकी बड़ाई का असर उसके पिता पर क्षण-मात्र भी न पड़ता था।

वीना का विचार था कि यह मुझे देखकर ज्यादा दुखी होते होंगे, यदि मैं इनके आंखों से पीछे होऊँ तो शायद इनका दुख कुछ कम हो जाय, यह सोचकर उसने अपने माता-पिता से ससुराल जाने की अनुमति। मांगी अनुमति न मिलने पर उसने आग्रह किया, अन्त में उसके आग्रह से लाचार होकर उन्हें विदाई देनी ही पड़ी।

इस बार वह ससुराल को भली स्थिति में लाने के लिये कई प्रकार की वस्तुएँ ले गई। उसकी प्रबल इच्छा थी कि मेरी ससुराल अच्छी स्थिति में आ जाय; किन्तु दुखी वीना की यह इच्छा भी पूर्ण न हो पाई। यदि कभी वीना घर के कोई भी कार्य में स्वयं भाग लेती तो उसकी सास ऐसे कटु वाक्य कहती जो वीना के हृदय में तीर की भांति बेधता। वीना क्या करती, वह रोकर ही अपने हृदय को समझाती।

वीना के पति भी अच्छे स्वभाव के न थे, घर में तो उनका कोई सम्बन्ध ही न था। दिनोंदिन वह बाहर पड़े रहते थे, वीना ने कई प्रकार से अपने पति को समझाया, किन्तु उन्होंने वीना की एक भी न सुनी। वीना को देखकर वह और भी जलते थे। अपने पति के इस कटु व्यवहार को वीना ने पहले तो खूब सहा, किन्तु जब वह कहीं आस-पास जाती तो सभी जगह अपने पति की बदनामी सुनकर अत्यन्त दुखी हो उठती थी।

एक दिन वीना अपनी एक पुरानी सखी के यहां गई, उसने भी रमाकान्त की सुनी कथाएँ कहना आरम्भ किया। अब वीना को अपनी सखी द्वारा अपमान का बड़ा भारी दुख हुआ। वह घर पहुँचते ही अपनी सास तथा पति से बड़बड़ाने लगी अपने लड़के की निन्दा व दूसरी ओर रमाकान्त अपनी पोल खुलते देख चिढ़ गया और दोनों मां-बेटा मिलकर बहू को गालियां देने लगे। बहू से अब न रहा गया उसे भी अत्यन्त क्रोध आया, अब उस घर में वीना का कोई भी सहायक न था वह अनाथ सी हो गई, उसके हृदय में आग-सी जल रही थी, सास और पति का अपमान अब उससे न सहा जा रहा था। वह पलंग पर

वह अर्द्ध रात्रि में किवाड़ खोलकर बाहर निकल गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

माँ आनन्दमयी*

सुप्रसिद्ध वाग्मी स्वामी विवेकानन्द के गुरु परमहंस रामकृष्ण देव का नाम बहुतों ने सुना होगा। उनका जीवन-चरित और कथामृत भी पढ़ा होगा। आलोच्य पुस्तक को पढ़ने से ऐसा लगता है कि मां आनन्दमयी उक्त परमहंस देव का संशोधित संस्करण हैं। इनका जन्म संवत् १९५३ में खेउड़ा ग्राम (जिला त्रिपुरा) में हुआ था, और विवाह सं० १९६६ में। पढ़ी-लिखी आप बहुत कम हैं। आपका कोई गुरु भी नहीं। फिर भी आपको आसन, प्राणायाम और योग आदि की सहज सिद्धि प्राप्त हो गई। साधन की दशा में आपको बाह्य ज्ञान से अतीत देख, लोग तरह-तरह की बातें करते थे—कोई भूत-बाधाग्रस्त बतलाता तो कोई हिस्टीरिया की बीमारी। अन्त में कुछ लोगों ने पहचान कर कहा कि य तो नित्य-सिद्ध हैं। इनको किसी प्रकार की बीमारी या बाधा नहीं है। धीरे धीरे उनका प्रभाव बढ़ा। लोगों ने उनके चमत्कार देखे तो विस्मित होकर वन्दना की। मां आनन्दमयी अब अधिकतर युक्त-प्रान्त (विन्ध्याचल और काशी आदि) में निवास करती हैं। लोगों को आपकी संगति से लाभ उठाना चाहिए।

मां आनन्दमयी पर बँगला-भाषा में कई पुस्तकें हैं, पर हिन्दी में एक भी नहीं। इस कारण हिन्दी भाषा-भाषी जनता को आपका पूर्ण परिचय पाने में कठिनाई थी। पाठकों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि यू० पी० सरकार के भूतपूर्व एडवाइजर और कमिश्नर डाक्टर पन्नालाल एम० ए०, एल्-एल बी०, डी० लिट्० की कृपा से अब यह कमी दूर हो गई है। यह पुस्तक वास्तव में श्रीमती गुरुप्रिया देवी लिखित बँगला पुस्तक (चार भागों) के आधार पर लिखी गई है, परन्तु इसका सम्पादन इस उत्तमता से हुआ है कि पाठक की जिज्ञासा पूर्ण हो जाती है। भाषा सीधी-सादी सरल है। हिन्दीवालों को ऐसी अच्छी पुस्तक अर्पण करने के लिए डाक्टर महोदय धन्यवाद के पात्र हैं। विशेष प्रसन्नता की बात यह है कि आजीवन अँगरेजी में ही काम करते रहने पर भी डाक्टर साहब ने अपने चौथेपन में मातृभाषा हिन्दी को अन्तःकरण से अपना लिया है। आशा है, वे हिन्दी सेवा का यह क्रम यथावत्-जारी रक्खेंगे।

—'प्रकाश'

* 'मां आनन्दमयी' पृष्ठ-संख्या २०० और मूल्य २)। लेखक से—
१९ थार्नहिल रोड, प्रयाग से प्राप्य।

एक अंधेरे कमरे में लेटी थी। सहसा उसके हृदय में भाव आया कि हाय बन्दी, तू अब यहां किसके भरोसे रह रही है? जिसके साथ जीवन व्यतीत करना है, उसने तो तेरा त्याग कर दिया। अब तू भी यहां से अपना त्याग कर दे। यह सोचकर वह चट से पलंग से उठी, उस समय अर्धरात्रि थी, आहिस्ते से किवाड़ खोलकर बाहर निकल गई।

अपना-पराया

पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' लिखित इस मनोरंजक उपन्यास में एक चीनी तरुणी का मेनका-नृत्य जहाँ आपको आत्म-विभोर कर देगा, वहीं तिब्बत और चीन की नैसर्गिक छटा और वहाँ के अजीबोग़रीब रस्म-रिवाज भी आपके सामने नाच उठेंगे। चीन की यह रहस्यमयी तरुणी किस प्रकार भारत आती और अपने धर्म तथा स्वदेशाभिमान की रक्षा कर, एक भारतीय नौसैनिक की सहायता से अपने देश लौट जाती है, आदि प्रसंग आपको प्रणय की रंगीनियों का सजीव परिचय देंगे। पृष्ठ २३२, सजिल्द और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २॥) रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

फैंसी सिल्क साड़ी आकर्षक डिज़ाईन

कलापूर्ण ३-४ इंच चाड़ा बाडर
नं० ७ ८ ९ ५ गज
१८) २३) २८)

२) पेशगी बाकी वी० पी० से
थोक व्यापारियों को खास सुभीता

भारत इन्डस्ट्रीज,
जुही नं० ९ कानपुर

पुरुष स्त्रियों से क्या चाहता है?

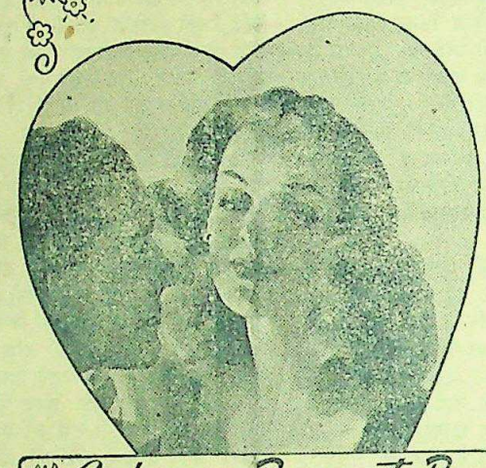

पुरुष बड़े मनोरंजक होते हैं। वे छोटी चीजों जैसे हास्य, मन्द मुस्कान, स्थायी सुगन्धि द्वारा आकर्षित होते हैं। काश्मीर बुकेट के टाल्क में आप मन्द सुगन्धि पायेंगे। स्नान के पश्चात् काश्मीर बुकेट टाल्क को शरीर पर छिड़किए।

इसकी शीतलता को अपने चर्म में प्रवेश करने दीजिए। यह घंटों आप में ताजगी और प्रसन्नता रक्खेगी

अब आपको अपने सौन्दर्य में सन्देह नहीं रहेगा। उस सुगन्ध को धन्यवाद है, "जिसे मनुष्य पसन्द करता है।"

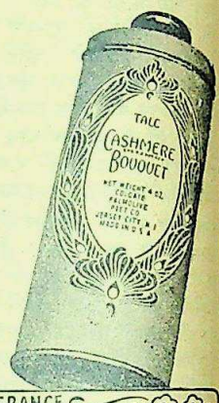

Cashmere Bouquet Products WITH THE FRAGRANCE MEN LOVE

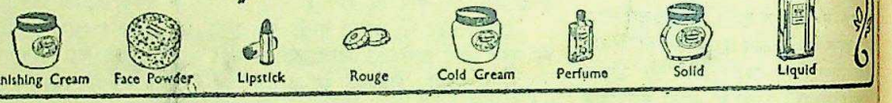

CB 3

सौन्दर्य का प्रताप

अर्थात् स्वस्थ त्वचा की कीर्त्ति

व्यक्तिगत सौन्दर्य अधिकतर मनोहर त्वचा पर अवलंबित रहता है और केवल स्वस्थ त्वचा ही त्वचा-माधुर्य की कीर्ति प्राप्त कर सकती है। रेक्सोना, न केवल त्वचा को स्वस्थ बनाये रखता है, किन्तु त्वचा-सौन्दर्य निर्माण करने में भी सहायकारी होता है; क्यों कि वह कैडील से बनाया हुआ है, जो ॲन्टिसेप्टिक त्वचा-पुष्टिकर तैलों का अभिनव शास्त्रीय मिश्रण है। रेक्सोना का विपुल फेनदार, शीघ्रोत्पादक झाग इस त्वचा-रक्षक कैडील को रोमरंध्रोंमें गहराई तक ले जाता है, जो त्वचा को शान्ति प्रदान करता है और मनोहर रखता है। रेक्सोना ही कैडील नामक औषधी से बनाया हुआ साबुन है, जो त्वचा को दूषित होनेसे बचाता है, चर्म-स्वास्थ्य की वृद्धि करता है और त्वचा-सौन्दर्य निर्माण करता है, जो प्रत्येक स्त्री की त्वचा-सौन्दर्य की अभिलाषा होती है।

पुरुष, जो आरोग्य-युक्त, कांतिमय त्वचा का महत्व जानते हैं, वे रेक्सोना के त्वचा को आनन्द देनेवाले, ओजस्वी उत्तम परिणाम का आदर करते हैं, यह सत्य कहा जा सकता है कि, जो पुरुष स्वस्थ त्वचा की आकांक्षा करते हैं, उन के लिये रेक्सोना अवश्यम्भावी साबुन है।

बच्चों के लिये रेक्सोना: बच्चों की कोमल, मृदु त्वचा को विशेषकर रगड़ और फोड़े-फुंसीयों का उपद्रव रहता है, रेक्सोना का औषधीयुक्त, शान्तिप्रद झाग सर्व-साधारण त्वचा-रोगों से बच्चों के नन्हे नन्हे अवयवों की रक्षा करता है।

★रेक्सोना का कैडील यह विशेषत: ॲन्टिसेप्टिक आरोग्य-दायक पुष्टिक तैलों का औषधी मिश्रण है, जो कि, त्वचा सुरक्षित रखने के लिये खासकर बनाया गया है।

त्वचा-आरोग्य के लिये रेक्सोना

B.P. 81A-392-40 HI

REXONA PROPRIETARY LTD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस के नये-पुराने प्रेसिडेंट डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद और आचार्य कृपलानी

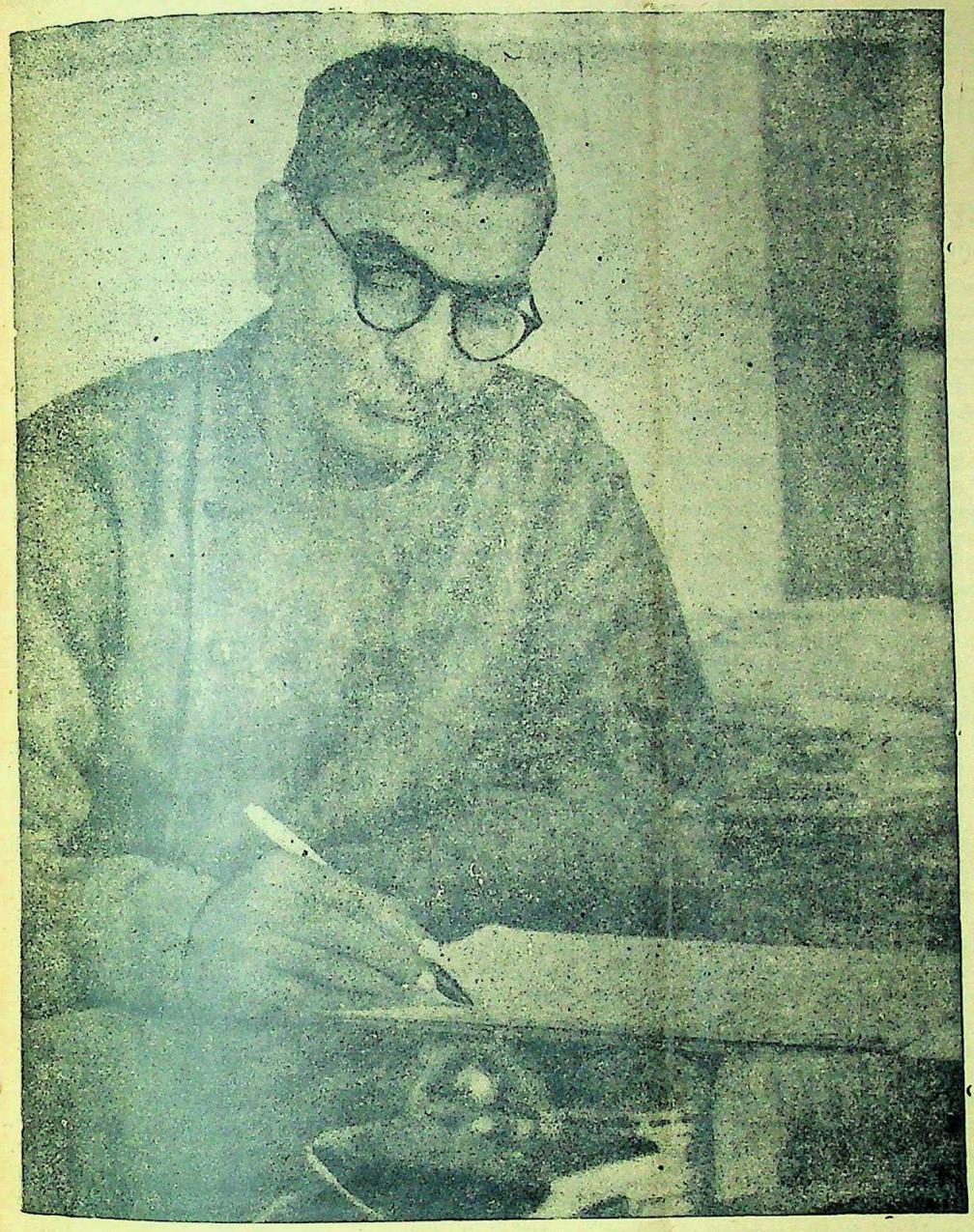

देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद, दिल्ली में होनेवाले अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में तीसरी बार भारतीय कांग्रेस के प्रेसिडेंट चुने गये हैं।

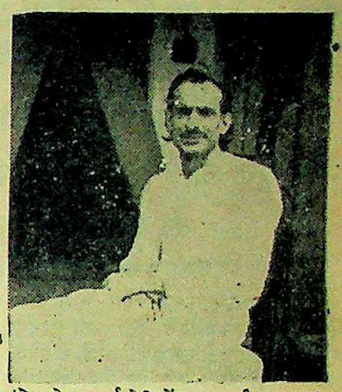

कांग्रेस के भूतपूर्व प्रेसिडेंट आचार्य कृपलानी ने प्रेसिडेंट-पद से त्यागपत्र दे दिया।

माननीय श्री मालवंकर भारतीय पार्लामेंट के सर्वसम्मति से स्पीकर चुने गये हैं।

महात्मा गांधी आजकल कन्ट्रोल उठा देने के लिये जोरदार आन्दोलन कर रहे हैं।

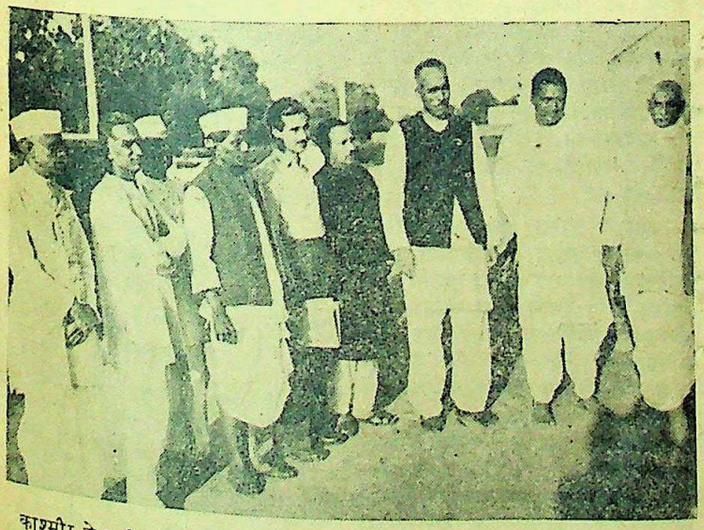

काश्मीर के राष्ट्रीय नेता शेख अब्दुल्ला पिछले दिनों दिल्ली आये थे। शेख अब्दुल्ला का दिल्ली के कांग्रेस नेता तथा नागरिक स्वागत कर रहे हैं।

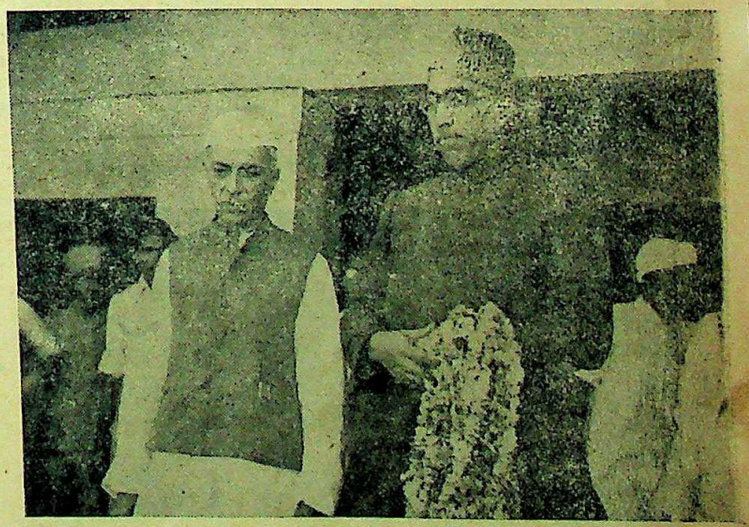

पिछले दिन काश्मीर के राष्ट्रीय नेता शेख अब्दुल्ला दिल्ली आये थे। पंडित नेहरू शेख अब्दुल्ला का स्वागत कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्प्रदायिक दंगे और महिलाएँ

गौरवपूर्ण जीवन का एक व्यस्त घंटा कीर्ति-रहित युगों से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है

लेखिका, कुमारी कृष्णाकुमारी सरीन बी० ए०, डी० टी०

१६ अगस्त १९४६ से हिन्दुस्तान में जो साम्प्रदायिक दंगों की आग भड़कती जा रही है उसने महिलाओं के लिये एक समस्या खड़ी कर दी है। वैसे तो महिलाओं की शिक्षा और समाज की व्यवस्था ही ऐसी है कि वे अब तक निर्बल, निस्सहाय और पुरुषों के लिए बोझ रूप बनी रही हैं। अपनी रक्षा में असमर्थ होने के कारण उनके दिल कमजोर हैं। फिर आप विचार कर सकते हैं कि इन दंगों से उन पर क्या बीती होगी! शहर में दंगे की खबर सुनी नहीं कि चेहरे पीले पड़ गए, दिल धड़कने लगे और वे कि-कर्त्तव्य-विमूढ़-सी हो गईं। ऐसी मानसिक दशा में गृह-कार्य सँभालना तो एक ओर रहा, बच्चों और पतियों को भी बुजदिल बनाती हुई कर्त्तव्य से विमुख करने लगीं। 'देखना कहीं बाहर न जाना। कुछ हो जाय तो और सिर पर आफत आए।' भय के मारे नेत्रों में नींद का नाम नहीं। कुछ घरों से स्त्रियों की चीत्कार सुनाई देती है। यहां तक कि दौरे पड़ने की घटनाएँ भी होती हैं।

अब इसका दूसरा पहलू भी देखिये। दंगे के कारण जिन महिलाओं के घर लुट गए हैं; जिनकी मांग का सिन्दूर पुछ चुका है; जिनके जीवन का रस सूख चुका है; जिनके बच्चे भूख से व्याकुल तड़प रहे हैं; जिनके लिये जीवन का कोई उद्देश्य नहीं रहा और जो शरणार्थी-कैम्पों में अपने पिछले सुखों को स्मरण करके आंसुओं के हार पिरोती हुई विलाप कर रही हैं; उनसे मैं कहूँगी कि ऐसा करके वे शेष जीवन को देश, जाति, समाज और अपने लिये भार-रूप बना रही हैं। यह विचारना कि दुनिया का दुःसह दुःख उन्हीं के लिये है, भ्रम है। क्या भारत की नारियों ने समय समय पर कठिन परीक्षा नहीं दी? अनेक प्रकार के भयंकर संकटों का सामना नहीं किया? इतिहास के पृष्ठ उनके वीरता-पूर्ण कृत्यों से भरे पड़े हैं। युद्ध से भागे हुए पुत्र संजय को कर्त्तव्य की ओर प्रेरित करनेवाली वीर माता विदुला, पति के साथ १४ वर्ष गहन विपिन में कांटों पर चलनेवाली महारानी सीता, मातृ-भूमि चित्तौड़ की रक्षार्थ विष का प्याला पीने-वाली कृष्णाकुमारी, मुगल-सम्राट अकबर की सेना के छक्के छुड़ानेवाली चांदबीबी, अकबर के सेनापति आसफखां को मैदान से भगानेवाली वीर रानी दुर्गावती, शत्रुओं से अकेले राज्य की रक्षा करनेवाली नीति-निपुण चतुर रानी अहिल्याबाई, वीर रमणी पद्मिनी, झांसी की रानी लक्ष्मी-बाई इत्यादि इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। वे अपने पुत्रों तथा पतियों के रग रग में जोश भरती हुई उन्हें कर्त्तव्य-पथ पर आरूढ़ करती थीं। स्वयं जीवन पर खेलकर भी उन्होंने अपने कर्त्तव्य का पालन किया।

मनुष्य-जीवन सुख-दुःख-पूर्ण है। सुख-दुःख का तांता तो लगा ही रहता है। सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख मानव-जीवन की मार्मिक कहानी है। अतः आज महिलाएँ दुःखों से न घबराएँ; अपितु डटकर उनका सामना करें। 'पंचवटी' में व्यक्त कवि मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियां विचारने योग्य हैं।

कहा राम ने कि "यह सत्य है,
सुख दुःख सब है समयाधीन।
सुख में कभी न गर्वित होवें,
सुख में कभी न होवें दीन।
जब तक संकट आप न आवें,
तब तक उनसे डर मानें।
जब वे आ जावें तब उनसे,
डट कर शूर-समर ठानें।

देश की जिन नाजुक परिस्थितियों में से हम गुज़र रहे हैं उसमें यह सम्भव नहीं कि महिलाएँ अपनी रक्षा के लिये और अधिक देर तक पुरुषों का मुंह ताकें। यह विचारने योग्य विषय है कि जब देश के लिये एक एक बच्चे, स्त्री और पुरुष की सेवा की आवश्यकता है स्त्रियों का देश की सेवा करना तो एक ओर रहा, अपनी ही सेवा करवाना कितना अनुचित है। गांधीजी ने 'हरिजन सेवक' में एक बार नहीं अनेक बार लिखा है कि बहिनें बहादुर बनें। डरपोक मर्द या औरत किसी भी मज़हब के लिये बोझरूप हैं। बहिनों को या तो बहादुर बनना होगा या मरना होगा। आज जो मुसीबत उन पर आ पड़ी है उससे फायदा उठाकर उन्हें डररूपी राक्षस को अपने दिलों से निकाल भगाना चाहिए। महिलाओं को आज अपनी रक्षा का उपाय स्वयं सोचना है। अपनी शारीरिक शक्ति को बढ़ाना है। उन्हें तलवार चलाना, लाठी चलाना, शारीरिक व्यायाम और दौड़ लगाना इत्यादि अवश्य सीखना चाहिए और नित्यप्रति वीर नारियों के जीवन-चरित्र का अध्ययन करना चाहिए। क्या प्राचीन भारत की महिलाओं के लिये कही गई इस उक्ति को वे आज सत्य प्रमाणित करने का प्रयत्न करेंगी?

दुनिया में बे-मिसाल थीं,
भारत की वीर नारियां।
देखी-सुनी न आज तक,
इनकी सी जां निसारियां।

आजाद भारत में राष्ट्र की उन्नति का जितना उत्तरदायित्व पुरुषों पर है स्त्रियों पर उससे कुछ कम नहीं। जब तक देश गुलाम रहा, वे गृह की चारदीवारी के भीतर अबला और असहाय होकर जीवन व्यतीत करती रहीं। किन्तु आज जब कि राष्ट्र की रक्षा और उन्नति का भार हमारे कंधों पर है, महिलाओं को अपना उत्तर-दायित्व संभालने के लिये शीघ्र कटिबद्ध हो जाना चाहिए। अब तक जैसा महिलाओं का जीवन रहा है उसकी कथा लेखकों के द्वारा अनेक बार कही जा चुकी है। उसको यहां दोहराने की आव-श्यकता प्रतीत नहीं होती। सत्य तो यह है कि प्रत्येक मनुष्य को—वह स्त्री हो अथवा पुरुष—समय और परिस्थिति के साथ साथ कदम बढ़ाना है। महिलाओं का पीछे रहना राष्ट्र के लिये अहितकर है। उनका पूरा पूरा सहयोग राष्ट्र की उन्नति के लिये परमावश्यक है। अतः कन्या-विद्यालयों के अधिकारियों को चाहिए कि वे अपनी संस्थाओं में कन्याओं के लिये शस्त्र चलाने और अन्य शारीरिक व्यायाम सिखाने का प्रबन्ध करें। विद्यालय के पुस्तकालय में कन्याओं को जो विलासितापूर्ण साहित्य पढ़ने को मिलता है उसके स्थान पर उनके हाथ में देश-प्रेम और वीरता के भाव जगानेवाला साहित्य देना उचित है। वस्तुतः शिक्षा का पाठ्यक्रम और शिक्षि-काओं के पढ़ाने का ढंग ऐसा होना चाहिए कि कन्याओं का शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बल बढ़े और वे राष्ट्र की समुचित सेवा कर सकें।

दंगे के कारण जिन महिलाओं के घर नष्ट हो गए हैं; जिनके पति साम्प्र-दायिक दंगे की आग में जल चुके हैं; उन्हें चाहिए कि वे देश की सेवा में अपने शेष जीवन को लगाएं। बिहार के अमर शहीद फुलेनाप्रसाद श्रीवास्तव की धर्मपत्नी तारा रानी ने सन् १९४२ की क्रांति में उसको अपने नेत्रों के सम्मुख गोलियों से मरते देखा। पति की मृत्यु के उपरांत वह वीरांगना जीवन का प्रत्येक क्षण देश-सेवा में व्यतीत कर रही है। वह दो बार जेल हो आई है। साल भर काल-कोठरी में एकान्त रहने का पुरस्कार भी प्राप्त कर चुकी है। वह दुःखितों और पीड़ितों के अन्तःकरण में प्रवेश कर उनमें आशा और जीवन का संचार कर रही है। फुलेनाप्रसाद को वहमृत नहीं मानती बल्कि निरन्तर उनकी उपस्थिति का अनुभव करती है। इन महिलाओं को श्रीमती तारा रानी के पद-चिह्नों का अनु-सरण करना चाहिए।

उनके लिये देश की सेवा का सरल कार्य यह है कि सर्वप्रथम वे कस्तूर बा स्मारक ट्रस्ट की ओर से खोले गए शिक्षणालयों में शिक्षा प्राप्त करें। दो साल का कोर्स है। इसके लिये उन्हें कुछ व्यय न करना पड़ेगा। इसका पूरा विवरण श्रीमती रामेश्वरी नेहरू लाहौर से प्राप्त किया जा सकता है। तदुपरांत वे ग्रामोद्योग का कार्य सुगमतापूर्वक कर सकती हैं। उन्हें चाहिए कि वे महिला-समाज को जागृत करें। अपनी निर्धन, अशिक्षित, अज्ञानी एवं दुःखी बहिनों की सहायता करें। उनको उनके कर्त्तव्य का ज्ञान कराएँ। उनके दिलों से सब प्रकार का डर दूर करके दिलों को मजबूत बनाएँ। उन्हें निर्भय हो जाना चाहिए। मनुष्य का जन्म मृत्यु के लिये होता है। अतः अपने धर्म की रक्षा करते हुए वीरतापूर्वक प्राण देना कायर बनकर गुण्डों के अत्याचारों का शिकार बनने से कहीं श्रेयस्कर है। उन्हें स्मरण रखना चाहिए—

One crowded hour of glorious life
is worth an age without a name.

गौरवपूर्ण जीवन का एक व्यस्त घण्टा कीर्त्ति-रहित युगों से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।

विवाह के पहले राजकुमारी एलिजबेथ अपनी वृद्धा दादी महारानी मेरी के साथ।

विवाह के बाद राजकुमारी एलिजबेथ और राजकुमार फिलिप माउंटबेटेन, डचेज और ड्यूक आफ एडिनबर्ग के नाम से पुकारे जाने लगे हैं।

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवासटी के और होम्योपैथिक होयोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं नियमावली मुफ्त मंगायें। पता:—

इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

अद्भुत कहानियाँ

दो रंगों में छपी इस सचित्र पुस्तक में एक से एक बढ़िया कहानियाँ हैं। इसमें इतिहास, स्वाभिभक्ति और भाग्य के खेल का वर्णन पढ़ते ही बनता है। मूल्य ॥≈)

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंग-मंच

कलात्मक फिल्म
हिन्दी में कब और कैसे ?

लेखक, श्री पूरन खत्री

नाट्यकला साहित्य के अन्तर्गत है। नाट्यकला की उत्पत्ति कुछ लोग यूनान से मानते हैं, तथा कुछ लोग मिस्र से। खैर, चाहे जहां से मानते हों पर भारतीय नाट्यशास्त्र का युग ईसा से हजार-आठ सौ वर्ष पूर्व माना जाता है।

हिन्दी का पहला नाटक भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के पिता बाबू गोपालचन्द्र-कृत नहुष नाटक माना जाना चाहिए, लेकिन वह ब्रजभाषा में होने के कारण लोगों के दिलों में उचित स्थान न पा सका। अब इधर पचास वर्षों से फिर इस कला ने उन्नति की है। अब अच्छे-अच्छे नाटकों का अनुवाद भी हो रहा है। यहां मुझे एक अँगरेज की लेखन शैली की बात याद आती है। वह कहता है—काव्य लोकन जाते जाते भी ब्रिटिश गवनमेंट ने, अपने दो सौ वर्षों के हिन्दुस्तान के ऊपर जो वह शोषण काम कर रहे थे, उसकी इतिश्री ऐसे काम से की जो इतिहास में अद्वितीय है। उन्होंने अपने शोषण का अन्त एक गहरी राजनीतिक चाल कहूँ या मूर्खता कहूँ, दो में से एक से किया है। और हिन्दुस्तान को काटकर उसको एक ऐसी आग में डाल दिया है जो अभी सुलग रही है और जिसके कारण मजहबी जोश का प्रभाव इतना अधिक व्यापक हो गया है कि हमारे देशवासी आपस में एक दूसरे के नाश में लगे हैं। जो हालत हिन्दुस्तान में चार-पांच महीनों में मजहबी नफरत ने पैदा की है उसका बयान मेरे शब्दों की शक्ति के बाहर है।

स्वतंत्रता एक सूरत में हमारे पास आई लेकिन जिस भयानक रूप में वह आई वह तो हमारे लिये दुखदायी है। जो हालत आज है उस पर आपको अच्छी तरह सोचना है। हिन्दुस्तान में बृटिश गवर्नमेंट की पुरानी नीति थी कि मजहब के आधार पर हिन्दू-मुसलमानों को लड़ाया जाय, उस नीति का नतीजा आज हमें देखना पड़ रहा है। हिन्दुस्तान के टुकड़े का समाज के कल्याण के सर्वि[illegible] है, वह नाटक में सबसे स्पष्ट रूप में दिखाई देता है। इस बात में किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती है कि जो समाज जितना ही उन्नत होता है, उसकी रंगशाला भी उतनी ही उन्नत होती है। यदि किसी देश में, किसी समय में बहुत ही उच्चकोटि के नाटक रहे हों, और पीछे से उन नाटकों का अन्त हो गया हो, अथवा उसमें कुछ दोष आ गये हों, तो समझना चाहिए कि इसका कारण उस देश का उस समय का नैतिक पतन है।" मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मुसलमानी राज्यों में प्रायः नाटकों का अभाव ही रहा था। परन्तु फिर भी हिन्दू राज्यों में मनो-रंजन के लिए इसकी प्रथा थी। सैनिक जब युद्ध से लौटते थे, तब युद्ध का वर्णन वह नृत्य एवं संगीत से बताते थे, जिनको लोग बड़े चाव से देखते तथा सुनते थे। आज से पचास साल पहले भी जब हिन्दु-स्तान में वास्तविक नाटकों का विकाश नहीं हुआ था, तब लोग मनोरंजन के लिए 'बंगाल की यात्रा' तथा 'ब्रज की रासलीला' करते थे। 'बंगाल की यात्रा' में उन लड़-कियों की प्रेम-कहानियां होती थीं, जिनके बारे में घर के बुजुर्ग कहा करते थे कि हाके बंगाले में जादूगरनियां आदमी को भेड़ और बकरियां बनाकर रख लेती थी। 'ब्रज की रासलीला' में श्रीकृष्ण का गोपियों से प्रेम तथा और भी कुछ इसी तरह के कथोपकथन होते थे। पर समय बदल रहा था, क्योंकि यह परिवर्तनशील है और समय के साथ-साथ मनुष्य के विचार भी बदल रहे थ। इस तरह वह युग आया जब स्वांग होने लगे। इसमें लैला-मजनू, शीरी-फरहाद, महाराणा प्रताप, राजा हरिश्चन्द्र इत्यादि हुए। यह स्वांग चौड़ी जगह तथा चौराहों पर होते थे। उनमें वास्तविकता दिखाने की कोशिश की जाती थी। उस युग का चित्रण किया जाता था जिस युग की वह वस्तु होती थी। इन स्वांगों में कुछ-कुछ साहित्य का भी पुट होने लगा। इस तरह स्वांगों के साथ-साथ, समय के साथ-साथ विचार भी बदलते गये। आज से बत्तीस साल पहले जब दादा साहब फालके ने प्रथम फिल्म कम्पनी खोली थी, उस समय साहित्य और सिनेमा का इतना मेल न था। बीते हुए युगों के पुराने ख्यालातों को दोहराया जाता था अर्थात् मनोरंजन के लिए नृत्य एवं संगीत का विकास होता था। पर जनता के विचार बदल रहे थे, विचारों के साथ-साथ दृष्टिकोण भी बदल रहे थे और इस तरह [illegible] मैंने कहा था जैसा कि शेर में कहा गया है। "मेरी तो एक एक रग तनी हुई है, प्रेम के कारण तनी है और मुझे जुन्नार की जनेऊ की आवश्यकता भी नहीं है"। यह तबीयतें मैं देखना चाहता था, लेकिन जिन्दगी का वह स्वप्न अब हट गया। वास्तविकता सामने है। वास्तविकता से हम मुंह नहीं मोड़ सकते। मैं आपको सलाह देता हूँ कि आज के जो नये खतरे हैं उनको आप गहरे दिल से देखें, आंख में पट्टी न बांधें। उनका मर्दानगी के साथ सामना करें। मर्दानगी से, लेकिन अक्ल के साथ, जान-बरपन देश में रोकना है। बहादुरी और वीरता के साथ सभी खतरों का मुकाबला करना है। मैं आशा करता हूँ कि हमारी केन्द्रीय गवर्नमेंट और हमारी सूबे की गवर्नमेंट मजबूती से काम करेंगी। जहां शक्ति नहीं है, वहां कष्ट और नाश है, लेकिन गवर्नमेंट की शक्ति का आधार तो जनता की शक्ति है। हमारी केन्द्रीय गवर्नमेंट और हमारे सूबे की गवर्नमेंट जनता की शक्ति को बढ़ाने की इस समय कोशिश करे, यह मेरी प्रार्थना है।

* * *

[illegible] बदलते-बदलते यह दिन आया है जब साहित्य और सिनेमा में चोली और दामन का साथ हुआ है। इस सम्बन्ध में देहली के नारायणप्रसाद बताब का उद्योग परम प्रशंसनीय है जिन्होंने पहले-पहल महाभारत नाटक की रचना करके और एक पारसी कम्पनी में उसका अभिनय कराके लोगों का ध्यान कुरुचिपूर्ण नाटकों की ओर से हटाया और उन्हें सुरुचिपूर्ण नाटकों की ओर प्रवृत्त किया।

साहित्य और सिनेमा की शुरुआत न्यू थिएटर्स द्वारा हुई है। सबसे पहले रवीन्द्रनाथ द्वारा लिखित "दिनेर शेषेर बेला" को मुक्ती में स्थान मिला। फिर तो क्रमशः यह कोशिश ही होने लगी कि अच्छे-अच्छे साहित्यिक नाटकों को स्थान दिया जाय। शरतचन्द्र चटरजी द्वारा लिखित देवदास, बड़ी दीदी (बड़ी बहन) तथा गृहदाह (मंजिल) ने इस अभाव की पूर्ति की। हालां कि यह नाटक नहीं थ, फिर भी इनमें नाटकों तथा उपन्यासों का मिश्रण था, क्योंकि नाटकों में भी चरित्र-चित्रण का उतना ही अधिक महत्त्व रहता है, जितना की उपन्यासों में। चरित्र-चित्रण ही नाटकों का सर्वप्रधान और स्थायी तत्त्व है। सँपेरा के कहानी-लेखक काजी नजरुल इस्लाम भी कोई कम प्रसिद्ध आदमी न थे। महाराष्ट्री साहित्यिकों की कुछ रचनाएँ प्रभात द्वारा प्रदर्शित हुईं जिनमें क्रमशः के० एन० काले तथा श्री आप्टे का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

विद्यापति में श्री देवकीकुमार बोस ने बहुत कड़ी मेहनत की थी। उसका गाना "डोले हृदय की नैया" कितना सरस तथा ओजस्विनी भाषा में तैयार किया गया था और इसके साथ-साथ इस चित्र में थी पाप और पुण्य की वास्तविक व्याख्या। फिल्म कारपोरेशन के चित्र-लेखा में :—

पेड़ों से पत्ते झड़ते ही,
भागे उनसे उनके साये !
सूखी डालें झूल गईं,
जब विपता के दिन सर पर आये ! !
इक आये इक जाये पंछी,
इक आये इक जाये।

और "नीलू कमल मुसकाये, भँवरा झूठी कसमें खाये" आदि कितने उच्चकोटि के हैं भाव का भाव, भाषा की भाषा, गीत का गीत, संगीत का संगीत है। इसे देखकर कोई भी व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि मैं मौर्यकाल के युग में नहीं हूँ। कला की सच्ची पुजारिन चित्रलेखा सम्राट् की उपस्थिति में ही दरबार से चल देती ह। चलने का कारण पूछने पर उत्तर देती ह 'यहां कला का अपमान हुआ है' इससे यह भी साबित होता है कि उस जमाने में भी कला के पुजारी थे। नाट्यकला का कितना विकास इस चित्र-द्वारा हुआ है और यह ईसा के चार सौ साल पूर्व की बात है।

इधर हाल के कुछ चित्र ऐसे बनने लगे हैं, जिनमें साहित्य की ओर कुछ विशेष 'ध्यान नहीं दिया जाता है। पुरानी 'टेकनिक' तो अब देखने को मिलती ही नहीं, बस वही लकीर के फकीर की तरह एक नाच, दो दुगाने, एक हीरो का खुश होकर गाना, एक हीरोइन का, फिर एक-एक गम और बेवफाई के गीत, एक-आध भगवान् की शिकायत खुशामद, एक आध भारतमाता की शान में आंसू न बहा माता, मोती न लुटा माता, ऐ मां तेरे चरणों में आकाश झुका देंगे, अब जाग उठे हैं हम, दूर हटो ऐ दुनियावालों आदि यह सस्ता नुस्खा अब कैसे चलेगा ?

इस युग में तो ऐसे चित्रों की आव-श्यकता है, जो जनता के हृदय में क्रान्ति उत्पन्न कर दे, जो हमारे मस्तिष्क में उथल-पुथल मचाकर बवंडर पैदा कर दे, जो हममें ऐसी भावना भर दें कि हम कुछ कर दें, हम कुछ दिखा दें और जो हमारे सोये हुए विचारों को जगा दें।

वह स्त्री गठिया से तब तक चङ्गी नहीं हुई
जब तक कि उसने क्रुशेन खाना शुरू नहीं किया
अब वह एक भिन्न स्त्री मालूम होती है

उसने सोचा कि हमें जानना चाहिए कि क्रुशेन ने हमारे लिए क्या किया ? हम सोचते हैं कि दूसरे गठिया के रोगी भी इसको भली भाँति जान गये होंगे। इस-लिए उस स्त्री का पत्र यहाँ नीचे प्रकाशित किया जाता है।

मैंने सोचा कि आप भी जान चुके होंगे कि क्रुशेन से मुझे क्या लाभ हुआ है ? मैं गठिया से सख्त बीमार थी और चंगी होने के लिए मैंने बहुत कुछ प्रयत्न किया है जिनमें काफी खर्च हुआ है। परन्तु मैं सत्य कहती हूँ कि क्रुशेन ही एक ऐसी चीज है जिससे मुझे पूरी मुक्ति मिली है। महीनों मैं चलने में असमर्थ थी, परन्तु क्रुशेन के सेवन से मैं बिलकुल बदल गई हूँ। मैं अपने सारे मित्रों से वह बतलाऊँगी जो क्रुशेन ने मेरे लिए किया है। (श्रीमती) ए० ए०

गठिया की दवा में सर्वप्रथम अँतड़ियों को साफ रखना चाहिए और मूत्राशय को खूब धोना चाहिए। क्रुशेन इन कार्यों को साधारणतः और सुरक्षित ढंग से करता है क्योंकि इसमें दो प्रकार की क्रियाशीलता है—रेचक और सामयिक।

मूत्राशय के द्वारा हानिकारक ऐसिड और जहर धोकर बाहर कर दिये जाते हैं। अँतड़ियाँ साफ कर प्राकृतिक ढंग पर काम करने लायक बना दी जाती हैं। इससे गठिया दर्द का अन्त होकर शारीरिक और मानसिक शक्ति तथा ताजगी में नवीनता आती है। आज ही क्रुशेन का सेवन शुरू कर दीजिए। थोड़े ही दिन में आपको आश्चर्यजनक परिवर्तन अनुभव होने लगेंगे। सारे रासायनिक और व्यापारियों के यहाँ १॥=) बोतल क्रुशेन बिकता है।

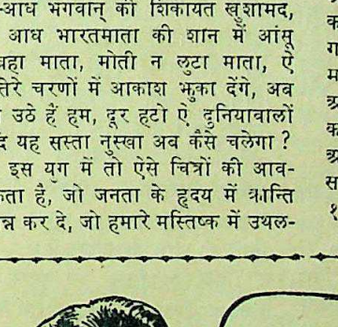

आप शीघ्र ही सफल होंगे
यदि आपके श्वास में विकार न हो !

बुरी श्वास के कारण आपको मूल्यवान् अवसर खो देना पड़ता है। पर मैं अपने दाँतों को साफ और चमकीला रखने के लिए कोलगेट डेण्टल क्रीम से दिन में कम से कम दो बार अवश्य साफ करता हूँ। मेरा सारा मुँह ताजा और सुगन्धित रहता है।

और मैं यह भी जानता हूँ कि मेरी श्वास में विकार न होगा क्योंकि कोलगेट के भीतर घुसनेवाले फेन दाँतों की दरारों में घुसकर सड़े हुए ऐसे खाने को निकाल देते हैं जिनसे श्वास में विकार पैदा हो जाता है। कालगेट डेण्टल क्रीम बिना किसी हानि के दाँतों को साफ और चिकना कर देता है।

आज ही से डेण्टल क्रीम का इस्तेमाल नियमित रूप से कई बार करना आरम्भ कर दीजिए। याद रखिए दूसरा दन्तमंजन ऐसा नहीं है।

NO BAD BREATH BEHIND HIS SPARKLING SMILE!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज का हमारा भोजन-संकट

(पेज ७ का शेष)

मध्य प्रान्त और मध्य-भारत में हजारों एकड़ जमीन पड़ी हुई है जिसमें खेती नहीं की जाती। इसका कारण है कि यहां पर सिंचाई आदि का कोई सुभीता नहीं है और दूसरे रेल व सड़कों का भी अभाव है जिसके कारण अनाज आदि सरलता से बाजारों में नहीं बेचा जा सकता। ऐसी लाखों एकड़ भूमि भारत में बेकार पड़ी हुई है। यदि इस पर भली भांति ध्यान दिया जाय तो हमारा अन्न-संकट बहुत हद्द तक कम हो सकता है।

हमारे भोजन का दूसरा मुख्य भाग दूध और दूध से बनी हुई वस्तुओं का है। दूध तो आज हमें मिलता ही नहीं। रुपये का दो सेर दूध केवल अमीर ही खा-पी सकते हैं। प्रत्येक भारतवासी को सेर-सवा सेर दूध प्रत्येक दिन पीना चाहिए और तभी हम बलवान् और स्वस्थ रह सकते हैं; परन्तु यह तभी सम्भव है जब कि दूध की मात्रा आजकल से कम से कम चौगुनी या पँचगुनी बढ़ाई जा सके और इसके लिए हमें पशुओं की ओर ध्यान देना होगा।

* * *

हमारी गायों और भैंसों की संख्या दिनों-दिन कम होती जा रही है। इस संख्या में बढ़ती होना बहुत ही आवश्यक है। गत महायुद्ध में बहुत बड़ी मात्रा में पशुवध हुआ है। इसको हमें पूर्ण करना चाहिए और दूसरे दूध देनेवाले पशुओं का वध तो बन्द ही कर देना चाहिए। हमें दुःख है कि हमारी कांग्रेस सरकार इस ओर अपना कदम बहुत ही धीरे-धीरे उठा रही है। पशु-संख्या बढ़ाने का दूसरा उपाय कृत्रिम गर्भाधान द्वारा है। इससे न केवल थोड़े ही समय में संख्या बढ़ाई जा सकती है; परन्तु हमारे पशुओं की नस्ल भी सुधारी जा सकती है। स्वाभाविक गर्भाधान के लिए अच्छी नस्ल के सांड़ मिलना बहुत ही कठिन है और दूसरे एक समय में एक सांड़ से केवल एक ही समय में पांच गायों को गर्भ रह जाता है। इसके लिए बहुत अच्छी नस्ल के सांड़ चुनने चाहिए—वे सांड़ जिनकी माता अधिक मात्रा में अच्छे किस्म का दूध देती रही हों। ऐसे सांड़ों की सन्तान भी अधिक और शक्तिवान् दूध देगी। ऐसा सुना जाता है कि रूस में इस कृत्रिम विधि द्वारा करीब ५०० लाख पशु पैदा किये गये हैं। इस क्रिया में यह आवश्यक नहीं है कि सांड़ उसी स्थान में हो जहां पर कि गर्भाधान किया जाता है। न्यू जरसी का सांड़ प्रयाग में पैदा हुई बछिया का पिता सरलता से हो सकता है, क्योंकि उस सांड़ का वीर्य निकालकर ट्यूब में ३८° फारनहाइट तापक्रम पर रखकर हवाई जहाज द्वारा प्रयाग में सरलता से भेजा जा सकता है और यहां पर कृत्रिम गर्भाधान क्रिया द्वारा गाय गाभिन हो सकती है। यदि हमें दूध का प्रश्न हल करना है तो हमें इन वैज्ञानिक साधनों का आसरा लेना होगा और साथ ही हमारी लोकप्रिय सरकार को अच्छी नस्ल के सांड़ों को रखना चाहिए जिनसे हमारे किसान बिना मूल्य अपनी गायों का कृत्रिम गर्भाधान करा सकें।

* * *

जिस प्रकार हमारे भोजन की समस्या है उसी प्रकार हमारे पशुओं के भोजन का भी हमारे सामने प्रश्न है। वे भी अध-भुखमरे पंजर हो रहे हैं। फिर भी धन्य है गऊ माता को जो कि हमें दूध दिये जाती है। यदि हम इसको पैशाचिक व्यवहार कहें तो अनुचित न होगा। यदि हम अपने पशुओं को पेट भर भोजन दिया करें तो भी दूध की मात्रा बढ़ जावेगी और इसके लिये चरागाहों की आवश्यकता है। इस विषय पर भी हमारे किसान अशिक्षित हैं। चरागाहों को कई भागों में बांट देना चाहिए और कुछ दिनों तक एक ही भाग में पशुओं को चरने देना चाहिए। इससे दूसरे भाग में चारा अच्छी तरह बढ़ता जायेगा और जब पहले भाग का चारा पशु खा चुके हों तो उन्हें दूसरे भाग में छोड़ना चाहिए। इस प्रकार बारी बारी से प्रत्येक भागों में चराना चाहिये। इस तरह से चराने से चारा नष्ट नहीं होता, क्योंकि पशु पूरे चरागाह में घास के ऊपर नहीं घूम पाते।

कुछ वैज्ञानिकों के अनुसार चरागाह रखना अधिक उपयोगी नहीं है; क्योंकि इस तरह बहुत सी जमीन जिसमें अच्छी खेती हो सकती है, केवल चारा के लिये छोड़ दी जाती है। यदि इसमें खेती की जाय तो अनाज के साथ ही साथ चारा भी हो सकता है। उनके विचार से यदि चरागाहों में ज्वार और मक्का आदि बोई जाय तो करीब तीन गुना अधिक चारा मिल सकता है और साथ ही अनाज भी पैदा हो जावेगा। इस प्रकार चरागाहों के उपयोग से मनुष्य और पशु दोनों का लाभ हो सकता है।

यदि स्थायीरूप से हमारे भोजन-संकट का निवारण होना है तो हमें व हमारी सरकार को वैज्ञानिक ढंग से हमारी खेती व पशुओं का प्रश्न हल करना होगा नहीं तो हम दूसरों से भीख ही मांगते रहेंगे।

(हिन्द-समाचार-समिति द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

युरोपमें और अमेरिकामें तैयार किये हुअे अच्छेसे अच्छे साबुनोंका अिस्तेमाल करनेके बाद दूज्य मरहूम डॉ. अॅनी बेझन्ट ने अपने "न्यू अिंडिया" समाचार पत्रमें लिखा था—

"मैंने अिस्तेमाल किये हुअे सब साबुनोंमें गोदरेज साबुन सबसे श्रेष्ठ हैं और अिसीलीये मेरे दोस्तोंको मैं उनका अिस्तेमाल ... चाहिए।

Godrej गोदरेज
साबुन
नं. १ • वतनी • सॅन्डल • लि...
टर्कीश बाथ • शेवींग ...

दुनिया में बे-मिसाल थीं,
भारत की वीर नारियां।
देखी-सुनी न आज तक,
इनकी सी जां निसारियां।

आजाद भारत में राष्ट्र की उन्नति का जितना उत्तरदायित्व पुरुषों पर है स्त्रियों पर उससे कुछ कम नहीं। जब तक देश गुलाम रहा, वे गृह की चारदीवारी के भीतर अबला और असहाय होकर जीवन व्यतीत करती रहीं। किन्तु आज जब कि राष्ट्र की रक्षा और उन्नति का भार हमारे कंधों पर है, महिलाओं को अपना उत्तरदायित्व संभालने के लिये शीघ्र कटिबद्ध हो जाना चाहिए। अब तक जैसा महिलाओं का जीवन रहा है उसकी कथा लेखकों के द्वारा अनेक बार कही जा चुकी है। उसको यहां दोहराने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। सत्य तो यह है कि प्रत्येक मनुष्य को—वह स्त्री हो अथवा पुरुष—समय और परिस्थिति के साथ साथ कदम बढ़ाना है। महिलाओं का पीछे रहना राष्ट्र के लिये अहितकर है। उनका पूरा पूरा सहयोग राष्ट्र की उन्नति के लिये परमावश्यक है। अतः कन्या-विद्यालयों के अधिकारियों को चाहिए कि वे अपनी

उनके लिये देश की सेवा का सरल कार्य यह है कि सर्वप्रथम वे कस्तूर बा स्मारक ट्रस्ट की ओर से खोले गए शिक्षणालयों में शिक्षा प्राप्त करें। दो साल का कोर्स है। इसके लिये उन्हें कुछ व्यय न करना पड़ेगा। इसका पूरा विवरण श्रीमती रामेश्वरी नेहरू लाहौर से प्राप्त किया जा सकता है। तदुपरांत वे ग्रामोद्योग का कार्य सुगमतापूर्वक कर सकती हैं। उन्हें चाहिए कि वे महिला-समाज को जागृत करें। अपनी निर्धन, अशिक्षित, अज्ञानी एवं दुःखी बहिनों की सहायता करें। उनको उनके कर्त्तव्य का ज्ञान कराएँ। उनके दिलों से सब प्रकार का डर दूर करके दिलों को मजबूत बनाएँ। उन्हें निर्भय हो जाना चाहिए। मनुष्य का जन्म मृत्यु के लिये होता है। अतः अपने धर्म की रक्षा करते हुए वीरतापूर्वक प्राण देना कायर बनकर गुण्डों के अत्याचारों का शिकार बनने से कहीं श्रेयस्कर है। उन्हें स्मरण रखना चाहिए—

One crowded hour of glorious life,
is worth an age without a name.

गौरवपूर्ण जीवन का एक व्यस्त घण्टा कीर्त्ति-रहित युगों से कहीं ...

याद रखिये
मा
किटन
दर्द छोड़ाने में सबसे ज्यादा फायदामन्द

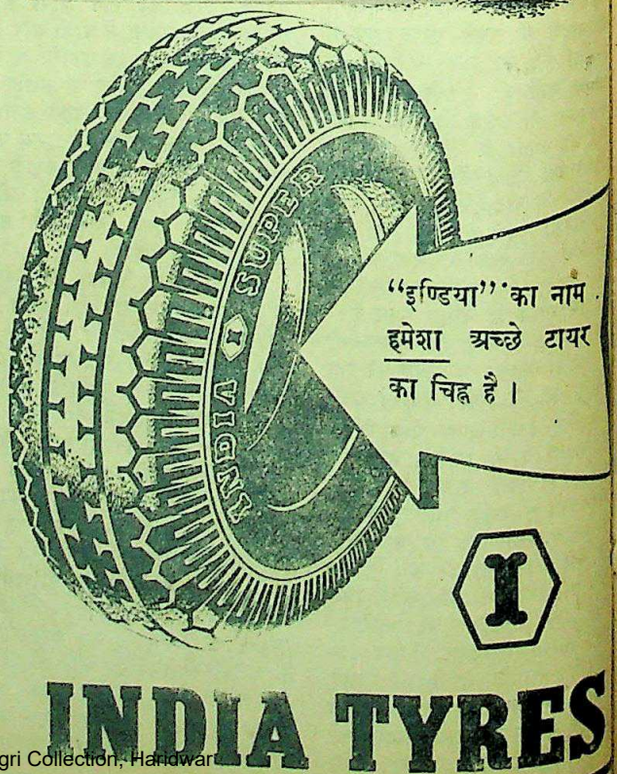

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असेम्बली का अधिवेशन

पछले अधिवेशन में माननीय टंडन जी ने क्या कहा ?

माननीय श्री पुरुषोत्तमदास जी टण्डन द्वारा युक्तप्रान्तीय धारा-सभा के नये सत्र के अवसर पर अध्यक्ष-पद से ३ नवम्बर ४७ को दिया हुआ भाषण—

लेजिस्लेटिव असेम्बली के इस नये सत्र, सेशन के आरंभ में मैं आपका स्वागत करता हूँ, मैं अधिक बोल नहीं सकता, लेकिन थोड़े से शब्दों में कुछ कहना भी जरूरी है। आज हम लोग अपने मुल्क के लिये बनाई गई एक नई दुनिया में हैं। पिछली बार जब हम लोग नैनीताल में मिले थे, उस समय से अब तक बहुत बदलाव, हो चुके हैं, जिनसे अब हमारा मुल्क बहुत वर्षों के लिये शायद सदियों के लिये, वह नहीं रहा, जो वह कुछ महीने पहले था। ब्रिटिश गवर्नमेंट ने तो, हमारी जो स्वराज्य की लड़ाई थी कुछ उसके कारण और कुछ दुनिया में जो शक्तियां इस समय काम कर रही हैं उनके कारण, हिन्दुस्तान से अपने को हटा लिया है। सम्राट्, एम्परर अब हमारे देश का कोई नहीं रहा। लेकिन जाते जाते भी ब्रिटिश गवर्नमेंट ने, अपने दो सौ वर्षों के हिन्दुस्तान के ऊपर जो वह शोषण काम कर रहे थे, उसकी इतिश्री ऐसे काम से की जो इतिहास में अद्वितीय है। उन्होंने अपने शोषण का अन्त एक गहरी राजनीतिक चाल कहूँ या मूर्खता कहूँ, दो में से एक से किया है। और हिन्दुस्तान को काटकर उसको एक ऐसी आग में डाल दिया है जो अभी सुलग रही है और जिसके कारण मजहबी जोश का प्रभाव इतना अधिक व्यापक हो गया है कि हमारे देशवासी आपस में एक दूसरे के नाश में लगे हैं। जो हालत हिन्दुस्तान में चार-पांच महीनों में मजहबी नफरत ने पैदा की है उसका बयान मेरे शब्दों की शक्ति के बाहर है।

स्वतंत्रता एक सूरत में हमारे पास आई लेकिन जिस भयानक रूप में वह आई वह तो हमारे लिये दुखदायी है। जो हालत आज है उस पर आपको अच्छी तरह सोचना है। हिन्दुस्तान में बृटिश गवर्नमेंट की पुरानी नीति थी कि मजहब के आधार पर हिन्दू-मुसलमानों को लड़ाया जाय, उस नीति का नतीजा आज हमें देखना पड़ रहा है। हिन्दुस्तान के टुकड़े मजहबी आधार पर किए गए हैं, यह निश्चय किया गया है कि मुसलमान एक तरफ जाएं और हिन्दू दूसरी तरफ जाएं। इसलाम का तरीका और तहजीब एक तरफ हो और हिन्दू-संस्कृति दूसरी तरफ हो। हिन्दुस्तान के दो टुकड़े करने की, यही बिना है और कोई दूसरा राजनीतिक सिद्धान्त इस बटवारे का नहीं है। आज मुल्क की गवर्नमेंट हमारे हाथ में है साथ ही हमारे सामने नई सूरत है उसमें हमें क्या करना है, इस सवाल पर नये ढंग से हमें सोचना है। आपका यह मुल्क इस समय मुसीबतों और खतरों से घिरा है। रोज हम देख रहे हैं। कल रात में ही हमारे नेता पं जवाहरलाल नेहरू ने कुछ खतरों का जिक्र किया है। म ब्योरों में नहीं जाऊंगा इतना ही निवेदन करता हूँ कि इस खतरे पर आप गहरी दृष्टि से विचार करें। हम कांग्रेसी जिस स्वप्न को देखा करते थे, वह तो टूट गया फिर कब आयेगा कोई नहीं कह सकता। हमारा सपना था हिन्दू-मुसलमानों को एक करने का। हम, एक होकर रहेंगे हम दोनों घुलमिल जायंगे, अपने-अपने मजहब रखते हुए भी हमारी संस्कृति एक होगी, हम मिलकर इस देश को स्वतंत्र करेंगे और उसकी रक्षा करेंगे यह हमारा स्वप्न था। वह तो बहुत दूर चला गया। कभी वह स्वप्न पूरा होगा, हम नहीं जानते। मैं तो उन लोगों में से हूँ जो दुनिया में एक गवर्नमेंट देखना चाहते हैं। इस देश और पाकिस्तान को मिलाने की बात मेरे हृदय में है। साथ ही मैं तो चाहता हूँ कि दुनिया भर की एक गवर्नमेंट हो। लेकिन आज जो परिस्थिति है उसे सामने रखकर हमें अभी काम करना है। हमारी जो बनी हुई बात थी, जो हमारा हिन्दुस्तान एक था, जहां हिन्दू-मुसलमान बहुत करीब आ रहे थे, जहां हम समझ रहे थे कि हम मिलकर एक गवर्नमेंट बनायेंगे, आज मजहबी नफरत ने और ब्रिटिश गवर्नमेंट की नीति ने वह सब खतम कर दिया। अब हमें नई सूरतों में रहना है और असलियत से भागना नहीं है। मैं स्वप्न देखनेवाला हूँ, लेकिन साथ ही साथ वास्तविकता से मैं भागा नहीं करता। चन्द महीनों की बात है इस कमरे में एक बिल पर बोलते हुये मेरा स्वप्न एक फारसी के शेर में जाहिर हुआ था मैंने यह कहा था कि :

काफिरे इश्कम मुसलमानी मरा दरकार नेस्त,
हर रगे मन तार गश्ता हाजते जुन्नार नेस्त।

"मैं इश्क का काफिर हूँ मुसलमानी मुझे नहीं चाहिये।" मैंने अपने मुसलमान भाइयों से अर्ज किया था कि मैं आप से इसीकी उम्मीद करता हूँ और हिन्दुओं से भी मैंने कहा था जैसा कि शेर में कहा गया है। "मेरी तो एक एक रग तनी हुई है, प्रेम के कारण तनी है और मुझे जुन्नार की जनेऊ की आवश्यकता भी नहीं है"। यह तबीयतें मैं देखना चाहता था, लेकिन जिन्दगी का वह स्वप्न अब हट गया। वास्तविकता सामने है। वास्तविकता से हम मुंह नहीं मोड़ सकते। मैं आपको सलाह देता हूँ कि आज के जो नये खतरे हैं उनको आप गहरे दिल से देखें, आंख में पट्टी न बांधें। उनका मर्दानगी के साथ सामना करें। मर्दानगी से, लेकिन अक्ल के साथ, जानवरपन देश में रोकना है। बहादुरी और वीरता के साथ सभी खतरों का मुकाबला करना है। मैं आशा करता हूँ कि हमारी केन्द्रीय गवर्नमेंट और हमारी सूबे की गवर्नमेंट मजबूती से काम करेंगी। जहां शक्ति नहीं है, वहां कष्ट और नाश है, लेकिन गवर्नमेंट की शक्ति का आधार तो जनता की शक्ति है। हमारी केन्द्रीय गवर्नमेंट और हमारे सूबे की गवर्नमेंट जनता की शक्ति को बढ़ाने की इस समय कोशिश करे, यह मेरी प्रार्थना है।

* * *

स्व० नरसिंह चिंतामणि केलकर का अंतिम लेख

दिनांक १५ अक्तूबर १९४७ को सवेरे ८-८॥ बजे पूज्य ससुर जी के कमरे में किसी कारणवश गई थी। देखा, वहां मेज पर झरनी (फाउंटन पेन) खुली पड़ी थी; साथ चश्मा भी था। इन चीजों को उठा रखने को मैं नीचे झुकी; तब देखा उनके नीचे लिखा हुआ कागज था। वही यह कविता! दिनांक १३।१०।४७ शाम को ६-३० के समय अस्वस्थता ज्ञात होने से पूज्य ससुर जी ऊपरी तले से नीचे पधारे और फिर कभी ऊपर न गये!! क्योंकि, १४।१० को प्रातःकाल ही में आप स्वर्ग सिधारे। इससे, जान पड़ता है, आपने यह कविता सहेतुक ही लिखी होगी।

सौ० शान्ताबाई केलकर (छोटी बहू)

झांकी दी मृत्यु ने, किन्तु वह
मुझे तनिक न डरा सकी।
उससे मिलने के मतलब को
मेरी मति तो जान चुकी।
जंगल में, ले हाथ शतघ्नी,
सीधा घुसता जाता है।
कभी न डरता देख शेर को;
उलटे, स्वागत करता है॥१॥
जनम हुआ मेरा, तब से
तनुभरणकार्य को कण कण दै।
पंचमहाभूतों का रिण वह,
मुझे चुकाना अवश्य है।
उसके बल पर सतत जिया मैं,
सुख से; अब, बस, पूरा है।
तनुत्याग से बढ़कर दूजा,
उऋणता का मार्ग न है॥२॥

(स्व० पू० न० चि० केलकरजी की अंतिम कविता का हिन्दी अनुवाद—ग० र० वैशंपायन, पुणे)

देशान्वेषण की सरल कथाएँ

नए-नए देशों का पता लगाने में संसार के कर्मवीर यात्रियों ने कैसी कैसी कठिनाइयाँ झेली हैं, उनका खासा वर्णन इस सचित्र पुस्तक में पढ़िए। मूल्य ॥।-)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ गीति-काव्य

कवि और छवि

लेखक, सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव

कविश्री बालकृष्णराव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपकी नवीनतम गीति-काव्यों का सर्वश्रेष्ठ संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्द्वंद्व से परिपूर्ण तो हैं ही साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाले हैं। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में ग्रहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम, सचित्र और सजिल्द—मूल्य केवल २) रु०।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अराजकता तथा गृह-युद्ध

(पेज ५ का शेष)

हैं जब परिस्थितियां उनको मजबूर कर देती हैं। मजदूर तथा ट्रेड यूनियन आम-तौर पर सरकार की तरफ सन्देह की दृष्टि से देखते हैं और सरकार की ओर से कोई गम्भीर प्रयत्न अब भी नहीं किया जा रहा है कि देश के पुनर्निर्माण तथा सरकार के संचालन में उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त किया जाय। नतीजा यह होता है कि हर तरफ नुकसानदेह हड़तालें सर उठाती हैं। आमतौर पर मुसलमानों को छोड़कर दूसरे अल्पसंख्यक लोग सरकार के पक्ष में हैं, पर कुछ, जैसे कि एँग्लो इंडियन तथा ईसाई अब भी एक विदेशी सभ्यता तथा दुनिया में विचरण करते हैं और इस कारण राष्ट्र की प्राण-धारा से बिछुड़े हुए हैं। इस परिस्थिति का कई छोटे राजनैतिक दल फायदा उठाना चाहते हैं। इस धांधली की धींगा-धींगी में कम्यूनिस्ट लोग बखुशी अपने शिकार फांस रहे हैं और उनका इतना प्रसन्न होना ठीक भी है, क्योंकि इस अराजकता में सबसे बड़ा फायदा उठाने का उन्हीं का मौका है।

अगस्त १५ से एक अनिघोषित गृह-युद्ध चल रहा है। अत्याचार, छुरेबाजी और दंगों की निरन्तर कथाओं से जनता पस्तहिम्मत है, पूर्ण थकी हुई। उनको ढाढ़स बँधाने के लिए अभी तक कोई पोस्ता सांस थाम लेनेवाली तजवीज पेश नहीं हुई है। सरकार की प्रचार-मशीन जंग लगी हुई और पुराने नमूने की है। खाने की कमी और वासस्थान का अभाव ऊँट के कन्धों पर आखिरी तिनके के महाविरे को चरितार्थ कर रहे हैं। मुस्लिम लीगियों की दूकानों पर विद्वेषी लोगों की बड़ी तादाद में उपस्थिति से जो आशंका पैदा होती है वह जनता को इतना घबरा रही है कि वह हर तरह के बेईमानी अमलों के लिए चिल्ला रही है। रेलवे, डाक और तार जैसे बड़े जनसेवी महकमों में नियन्त्रण कमजोर पड़ गया है। छात्रगणों को क्रान्ति-कारी साहित्य का भोजन मिलता ही था, वे आगामी क्रान्ति की पूर्ववृत्ति रूपी नाटक करने की कोशिश करके वर्तमान राजसत्ता के प्रति अपने द्वेष का प्रदर्शन कर रहे हैं। विश्व के राजनैतिक क्षेत्र में सद्यः प्रसूत युगल शिशुओं के आचरण को अन्तर्राष्ट्रीय जगत् गौर से देख रहा है। चाहे ये बच्चे अपनी सन्निहित ताकत से अपरिचित हों, पर दूसरे राष्ट्र पूरे तौर पर महसूस करते हैं यदि उन शक्तियों का समुचित विकास हो तो वे अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति संतुलन को बदल सकते हैं।

इस विस्फोटक परिस्थिति का मुकाबला हम कैसे करनेवाले हैं? जाहिर है, पहली और सबसे बड़ी बात तो यह है कि इस संकट की परिस्थिति को जिसकी कि कोई सानी नहीं है, एक युद्ध की-सी परिस्थिति माना जाय, जिसमें हर एक मिनट कीमती है और इसलिए, प्रत्येक तजवीज फौरन अमल में लाई जाय। हमारे यहां परिस्थिति, बमुकाबले कई यूरोप के मुल्कों की लड़ाइयों के समय के, अधिक गड़बड़ है। फिर भी इस संकट की गम्भीरता कहीं भी लोगों को महसूस होती नहीं दीखती। शान्ति के समय की ढीली-ढाली आदतों को छोड़कर एक तेज और पुरअसर तरीका अख्तियार करने की ओर कोई रुझाव नहीं नजर आता। मंत्रिमंडल इस बात को अस्वीकार नहीं करते कि देश एक बड़े संकट से गुजर रहा है, पर इसके लिए जो कार्रवाई की जा रही है वह मौके की अहमियत को देखते हुए कुछ भी नहीं है। यदि आप केन्द्रीय सरकार के सेक्रेटेरियट और दूसरे सरकारी दफ्तरों में जाइये तो आपको यह जान-कर बड़ा धक्का लगेगा कि अफसरों के दिमागों और दृष्टिकोणों में रत्ती भर भी बदलाव नहीं हुआ। अफसर जितना बड़ा होता है, उसका दृष्टिकोण उतना ही अधिक दकियानूसी और आस्था-रहित होता है। अगस्त १५ ने उस पर तनिक भी प्रभाव नहीं डाला है कि कोई नया परिच्छेद शुरू हुआ है। पंजाब के हत्याकाण्ड ने उसकी काम की रफ्तार तेज नहीं की है। पहले की तरह उसी लाल फीते और नौकरशाही का बोलबाला है और अफसरों का रुख भी वही है! इसी के कुछ छोटे पैमाने पर प्रान्तों में भी ऐसा ही हाल है। इस संकट की परिस्थिति को इतना गम्भीर नहीं माना जाता कि बेकार अफसराने संतुलन और प्रतितुलन के पचड़ों को फाड़कर रद्द कर दिया जाय। नतीजा यह होता है कि आवश्यक मामलों में भी बड़ी देर लग जाती है। इसके अलावा अधिकतर अफसरों का रुख लापरवाही और उत्साहहीनता का होता है। अनुशासन ढीला है। नई तजवीजों को बनाने के लिए कोई उत्साह नहीं है। इनमें से कई अफसरान सरकार की साफ साफ काट करते है और अनुशासन के हर नियम के खिलाफ सरकार के प्रति अपनी हिकारत को हर किसी के सामने व्यक्त करते है। यदि सरकारी नौकरियों में से ऐसे लोगों को निकालने के लिए जल्द ही कार्रवाई नहीं की जाती, खासतौर पर जरूरी तथा नियामक पदों से, तो सरकारी मशीन कुछ भला नहीं कर सकती। हमें चाहिए कि उनकी निश्चित उन्नति तथा उत्साह-वृद्धि करें जो, बदलाव के महत्व को समझते हैं और जिनके पास भविष्य के लिए तजवीज बनाने की कल्पना-शक्ति है। एक मजबूत और नियंत्रित मशीन के बगैर हम सामने मुंह फैलाये हुए खतरे का सामना नहीं कर सकते।

निश्चय ही प्रधान राजनैतिक समस्या मुस्लिम लीग है। हमारा भविष्य इस बात पर निर्भर है कि दो राष्ट्र के सिद्धान्त तथा पाकिस्तान के प्रसाररूपी उत्पात के साथ हम कैसे निबटारा करते हैं। इस उत्पात का विरोध करने के विषय में बुनियादी नुक्तों को बिलकुल साफ समझ लेना चाहिए। लीग के रंगे सियारों को समझा-बुझाकर उनकी राय बदलने की कोशिश बेकार है। हिटलर के नाजियों की तरह वे बाहर से मान जायेंगे या चुप बैठ रहेंगे पर उनके असली जजबात कभी नहीं बदलेंगे जब तक पाकिस्तान उनको बदलना नहीं चाहेगा।

पाकिस्तान का रुख दुश्मनी का, शरारत का, भरोसा न करने लायक तथा अमित्रतापूर्ण है। उसकी महत्त्वाकांक्षा और मनसूबे बहुत हद तक इस बात पर निर्भर हैं कि हिन्दुस्तान कितना और कैसे अपने को संगठित करता है। अगर हम अपन को मजबूत और संगठित बनाते हैं तो पाकिस्तान के अक्ल आ जायेगी और धीरे-धीरे अपने झूठे दावों को छोड़ देगा। अगर हम कमजोर, असंगठित और अनि-श्चित रहते हैं तो उसकी हिम्मत बढ़ जावेगी और वह आक्रमणशील हो जावेगा। पाकिस्तान के प्रति हमको अपना रुख दृढ़ तथा निश्चित करना पड़ेगा। जवाहरलाल नेहरू की तरह का उदार और उच्च नेता हिटलर की तरह के निष्ठुर और आत्म-वर्धक लोगों के लिए जरूरत से ज्यादा भला होता है; ये लोग अगर कोई वादा करते हैं तो केवल उसको तोड़ने के लिए और इनकी उच्चाकांक्षा की कोई सीमा नहीं होती। अब यह साफ हो गया है कि पाकिस्तान इस बात पर तुला हुआ है कि हिन्दुस्तान से लड़ाई मोल ले और हमारे लिए दिक्कतें पैदा करने में कोई कसर न उठा रक्खेगा। लीग के प्रति यदि एक दृढ़ रवैया अख्तियार किया जाय तो लोगों की महासभा तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति बढ़ती हुई सहानुभूति अवश्य कम होगी। इससे उनके प्रचार की मुख्य दलील हट जायेगी।

यह भी साफ है कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों का अधिकांश यहीं रहेगा। उनको पाकिस्तान भेजने की कोशिश न तो नीतिसंगत है न सम्भव। इसलिए, यह सर्वप्रथम और आवश्यक कार्य है कि उनमें से लीगी मुसलमानों को साफ समझा दिया जाय कि उनकी कोई वाहियात बात बर्दाश्त नहीं की जायेगी और यदि कोई भी प्रदर्शन विभाजित देशभक्ति का हुआ तो उसका निर्ममता के साथ दमन किया जायेगा। सन्देहात्मक व्यक्तियों के खिलाफ धड़ल्ले के साथ जल्दी कार्रवाई होनी चाहिए। पाकिस्तानी सरकार और मिस्टर जिन्ना को हिन्दुस्तान के मुसलमानों की तरफ से कुछ बोलने का हक अब नहीं मिलना चाहिए। वक्त की एक हद मुकर्रर करनी ही पड़ेगी जिसके बाद कोई भी नागरिक जो किसी भी मुल्क में रह गये हैं दुर्व्यवहार की ढोल पीटकर दूसरे मुल्क से मदद नहीं मांगने पायेंगे, अन्यथा दखल देने का यह निश्चित बहाना रहेगा और झगड़े को बढ़ा देगा।

अपने वर्तमान स्वरूप में मुस्लिम लीग को मुसलमानों का प्रतिनिधित्व नहीं करने दिया जा सकता। हमें चाहिए कि मुसलमानों के बीच राष्ट्रीयता के जजबात को बढ़ावा दें और इसके लिए, पहला कदम यह है कि लीगियों को किसी भी राष्ट्रीय काम में प्रतिनिधित्व न दें।

काश्मीर और हैदराबाद की घटनाओं से साफ पता चलता है कि अप्रत्यक्ष रूप से संघर्ष इस वक्त भी चालू है। अभी यह कहना मुश्किल है कि हम काश्मीर को बचा पायेंगे कि नहीं। जहां तक हैदराबाद का ताल्लुक है अगर हम मौजूदा सल्तनत को मटियामेट कर देने के लिए हाथ-पैर नहीं हिलाते हैं तो वहां प्रतिक्रिया और कट्टरपंथी के किले में झगड़े और फसाद अकसर पैदा होंगे। वहां जो शासन करने-वाले चन्द आदमी हैं, चूंकि वे तानाशाही और बेशर्मी के साथ शोषण करके जीवित हैं, इसलिए वे लड़ाई को जल्दी छिड़वाने पर तुले हुए हैं और वे अपनी ताकत बनाये रखने के लिए लूट-खसोट, हत्या या इससे भी बुरे तरीकों को अख्तियार करेंगे। इसको खत्म करना है। यह हिन्दुस्तान और उसकी संस्कृति का हमेशा से अकाट्य दुश्मन रहा है और रहेगा। जब तक हैदराबाद में मौजूदा सल्तनत रहती है तब तक हमको कभी शान्ति नहीं मिलेगी।

हमको युद्ध और अराजकता की निष्ठुर घटनाओं का मुकाबला करने के लिए तैयार होना है और हमारा प्रथम कर्तव्य अपने घर की ताकतों का पुनर्संगठन है। जो भी पार्टियां दरअसल इस मुल्क की बचत चाहते हैं, उनको चाहिए कि कुछ काल के लिए आपस में समझौता करें और पार्टियों के लक्ष्य और योजनाओं को स्थगित कर दें। समझौते की महत्तम समापवर्तक एक आम योजना होगी जिसको सब मानेंगे। राष्ट्रीय शक्ति-वृद्धि के लिए मजदूरों को सूत्रबद्ध करना होगा। छात्रगणों को एक लक्ष्य तथा अपनी शक्तियों के लिए एक निष्क्रमण मार्ग की आवश्यकता है। हमारा फर्ज है कि उन्हें उपस्थित करें ताकि उनका उत्साह बना रहे; अन्यथा उनको ध्वंसात्मक शक्तियां आसानी के साथ गलत मार्गों को ले जायेंगी।

अगर हमें सफलता के साथ वर्तमान संकट का मुकाबला करना है तो मजबूत तथा प्रभावशाली सेना तथा हवाई ताकत का होना बहुत जरूरी है। इस आवश्यक कार्य के रास्ते में पैसे की कमी का बहाना करके कोई अटकाव नहीं पड़ना चाहिए। हिन्दुस्तान जैसे बड़े मुल्क के लिए हमारी मौजूदा सेना एक रक्षक दल का केन्द्रीय बीज होने लायक भी नहीं है। वह योरप के कई छोटे मुल्कों की सेना से भी कमजोर और छोटी है। एक दरअसल आधुनिक सेना का संगठन करने के लिए हमें कई देशों से कुशल लोगों की सहायता लेनी पड़ेगी। हमारी तमाम कूटनीति और रण-नीति इस ध्येय को सामने रखकर अग्रसर होनी चाहिए।

देश के अन्दर ऐक्य और मजबूत सेना के होने से युद्ध या संघर्ष की सम्भावना चाहे न रोकी जा सके, पर तब हम उसका अधिक आत्मविश्वास—और अन्त में सफलता की निश्चिता के साथ—करेंगे।

अन्तू सरदार

भरोस सरदार के लड़की के सिवा कोई सन्तान न थी। और भरोस था ऐसा लठैत जिससे पुलिस भी डरती थी। एक जमींदार के यहाँ भरोस नौकर था। उसने अपनी बेटी को भी लाठी चलाना सिखा दिया था। इसका ब्याह जिस अन्तू (अन्त) से किया गया था वह भरोस से सवाया था। एक झमेले में बड़ी मार-काट हुई। इसमें अन्तू की स्त्री भी मारी गई और भतीजा प्रताप पागल-सा हो गया। पुलिस ने अन्तू को गिरफ्तार कर सज़ा करा दी। इधर प्रताप भी चल बसा। यह कहानी है तो बड़ों के लिए भी रोचक परन्तु बच्चों को बहुत पसन्द आयेगी। सुन्दर सरल भाषा, कई चित्र और कवर पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल बारह आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

अपने देश की बनी हुई वस्तुएँ अपनायें

भारत के होशियार कारीगरों के बनाये हुये

सुन्दर मजबूत, नया डिजायन, विश्व-सनीय, कीमत में सस्ते, काम में अच्छे, इन कैमरों से आप चाहें जिस दिलपसन्द चीज का टिकाऊ मनोहर फोटो खींच सकते हैं। इन कैमरों से बढ़िया फोटो खींचने की गारंटी है।

हर एक कैमरे के साथ, फिल्म, कार्ड, मसाला और फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त भेजी जाती है। कीमत बक्स कैमरा ४।), बढ़िया बक्स कैमरा ५॥), पोस्टेज पैकिंग १।) अलग। बढ़िया फोल्डिंग कैमरा १४), पोस्टेज पैकिंग १॥) अलग।

ग्लोब फोटो स्टूडियो (नं० ३४) अलीगढ़ सिटी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

राष्ट्रीय स्वयं-सेवक-संघ

अब से कुछ दिन पहले तक 'राष्ट्रीय स्वयं-सेवक संघ' का नाम सब लोग नहीं जानते थे। जब देश के कुछ भागों में मुस्लिम-लीगी भयंकर काण्ड हुए, तब इस ओर सबका ध्यान गया। पंजाबी लोग बतलाते हैं कि लाहौर में तथा पंजाब के दूसरे स्थानों में 'राष्ट्रीय स्वयं-सेवक-संघ' ने मुस्लिम लीगी गुण्डों का काफी मुकाबला किया है और वे कहते हैं कि यदि पुलिस तथा फौज बदमाशी पर न उतर आती तो हिन्दू वहां अपनी रक्षा स्वयं कर लेते। इतना संगठन था और शक्ति थी। इस तरह 'संघ' की प्रशंसा हम सुनते हैं।

दूसरी ओर 'संघ' को कुछ लोग बहुत बुरा बतलाकर इसे कुचल देने का आदेश और उपदेश दे रहे हैं। अभी अभी हमने सेठ दामोदरस्वरूप जी का वक्तव्य इस सम्बन्ध में अखबारों में पढ़ा। उसमें भी 'संघ' को कुचल देने का आदेश-उपदेश है। सेठ जी हमारे प्रान्त की राजनीति में प्रमुख स्थान रखते हैं। दूसरे भी कई समाजवादी तथा केवल कांग्रेसी नेताओं ने पिछले दिनों ऐसा ही कुछ कहा है। प्रान्त की सरकार ने उनकी सलाह मानकर जहां-तहां काम शुरू भी कर दिया था। सेठ जी ने कांग्रेस कमेटियों को और कांग्रेसी लोगों को भी आदेश दिया है कि 'संघ' को कुचल दो। मैंने आज तक नहीं देखा कि किसी समाजवादी या केवल कांग्रेसी नेता ने इसी तरह खुलकर मुस्लिम लीग को कुचल देने का आदेश दिया हो! कारण होगा! सेठ जी ने जो कारण दिये हैं, वे ये हैं कि 'संघ' के लोगों ने पंजाब में तथा अन्य जगहों में साम्प्रदायिक झगड़े कराये। इन झगड़ों के स्थानों के नाम पूछने पर सेठ जी पंजाब, दिल्ली तथा युक्तप्रान्त के पश्चिमी जिलों के ही नाम लेंगे।

हम सेठ जी से तथा दूसरे कांग्रेसी नेताओं से पूछना चाहते हैं कि पंजाब, दिल्ली तथा पश्चिमी युक्त-प्रान्त में ही 'संघ' ने झगड़े क्यों कराये? अन्यत्र ये झगड़े 'संघ' ने क्यों नहीं कराये? क्या और कहीं 'संघ' की शाखाएँ नहीं हैं? असल बात तो यह है कि जहां मुस्लिम-लीग ने उपद्रव कराये हैं, वहां 'संघ' ने शायद उस गुण्डागीरी का मुकाबला किया है। हिन्दू जाति में क्रियाशीलता मुसलमान भाइयों का सह्य नहीं हुई। कांग्रेस के बड़े नेताओं से शिकायत हुई और उन्होंने 'संघ' को डाटना शुरू कर दिया; क्या यह ठीक है? 'संघ' का कोई अपराध भी तो बताना चाहिए? एक अपराध तो सेठ जी यह बतलाते हैं कि 'संघ' इस देश में हिन्दू-राज्य कायम करना चाहता है और आगे कहते हैं कि अन्य अपराधों का हमें पता नहीं!

क्यों जी, क्या हिन्दू-राज्य स्थापित करने का इरादा कोई अपराध है? हिन्दु-भारत और मुस्लिम-भारत नाम से जब देश और सेना आदि का बँटवारा हुआ है, तब हिंदू भारत में हिंदू-राज्य होकर यहां भी मुसलिम-राज्य होगा और, चाहे जिस पार्टी का हो, क्या इस समय भी देश में हिन्दू-राज्य नहीं है? राज-सत्ता ग्रहण करते समय वेद-ध्वनि और मांगलिक पाठ, शंख-ध्वनि की गूंज और तिलक लगाकर पूजा-पाठ आदि का प्रयोग क्या हिन्दू-राज्य के अतिरिक्त और कहीं सम्भव है? आप वही काम करें और दूसरों के लिए वही अपराध बतावें! क्या यह ठीक है? समझ में नहीं आता कि 'संघ' के पीछे लोग क्यों इस तरह हाथ धोकर पड़े हुए हैं!

प्रजातन्त्र राज्य में सदा सत्ता इधर से उधर होती रहती है। आज एक पार्टी का शासन है, कल दूसरी का है। ऐसी दशा में पदारूढ़ कोई पार्टी यदि मदान्धता के साथ किसी दूसरी पार्टी या संस्था का दमन करेगी, तो कल उसकी भी ऐसी ही दशा हो सकती है। हां, गुण्डे-बदमाशों का दमन करो और यदि उनका कोई संगठन हो तो उसे तो निर्मूल ही कर देना चाहिए। जन-रक्षा के लिए यह तो सबसे पहला काम किसी सरकार का है। परन्तु चोर और उचक्के लोग यदि किसी चुस्त तथा कर्तव्य-परायण थानेदार को 'बदमाश' कहकर गालियां देने लगें, तो उनके शोर-गुल को प्रामाणिक मानकर उस थानेदार को ही दण्ड देने की व्यवस्था कर देना मूर्खता होगी। फिर तो उन बदमाशों की बन आयेगी; खूब खुल खेलेंगे।

इसलिए कांग्रेसी नेताओं से निवेदन है कि सोच-समझकर काम करें। जहां तक मुझे मालूम है, 'संघ' नई पीढ़ी को शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य देकर योग्य नागरिक उत्पन्न करता है। जिससे कांग्रेस का कोई मतभेद नहीं; परन्तु 'संघ' हिन्दू-संस्कृति के प्रति अनुराग भी पैदा करता है और यही 'अपराध' है, कांग्रेस की दृष्टि में। इसी से वे अन्दाजा लगाते हैं कि 'संघ' हिन्दू-राज्य इस देश में कायम करना चाहता है। इस काल्पनिक भय से ही नित्य हल्ला मचाया जाता है—हिन्दू-राज्य नहीं बन सकता! यदि जनता बनाना ही चाहे तो? कौन रोकेगा? भारत के एक भाग में मुस्लिम-राज्य है न? हां, यह आप कह सकते हैं कि हिन्दू-राज्य नहीं होना चाहिए; एक जाति का शासन ठीक नहीं। अपना-अपना मत जनता को समझाओ। परन्तु ये तो चुनाव की बातें हैं। 'संघ' अभी तक कभी राजनैतिक चुनाव में पड़ा ही नहीं। संक्षेप में यह कि बुद्धि से काम लेना चाहिए।

कनखल, —किशोरीदास वाजपेयी
१३-११-४७

* * *

महामना मालवीय स्मारक-सप्ताह-समिति

वर्तमान भारत के भीष्म पितामह, हिन्दू-विश्वविद्यालय के संस्थापक तथा कुलपति स्वर्गीय महामना मालवीय जी का प्रथम वार्षिक श्राद्धदिवस मार्गशीर्ष कृष्ण ३ संवत् २००४, १ दिसम्बर, १९४७ सोमवार को है। अपने तपःपूत युगनिर्माता महामानव की पुण्य स्मृति में इस महापर्व पर हिन्दू-विश्वविद्यालय में श्री मालवीय स्मारक-सप्ताह मनाने का आयोजन किया गया है जिससे उन वैकुण्ठवासी स्नेह श्रद्धा धर्म और देशप्रेम की प्रतिमूर्ति के प्रति जन-जन की आन्तरिक विह्वलता के पत्र-पुष्प भेंट किये जा सकें। यह उत्सव २५ नवम्बर से प्रारम्भ होकर १ दिसम्बर तक हो रहा है। प्रतिदिन प्रातःकाल स्वर्गीय महामना जी के वास-स्थान पर धार्मिक कृत्य, वेद, पुराण, महाभारतादि धर्मग्रन्थों का पाठ, हवन, कीर्तन प्रवचनादि हो रहा है और नित्य सन्ध्या समय ४॥ बजे से ७ बजे तक गांधी चबूतरे पर (रुइया छात्रावास) महामना जी के महान् उद्देश्यों तथा सन्देशों को अधिकारी विद्वानों के व्याख्यान एवं प्रवचन द्वारा हमारे जीवन में चरितार्थ करने का निर्देश किया गया है।

हिन्दू-विश्वविद्यालय, —अवधबिहारी मिश्र,
काशी प्रो०—वाइसचांसलर

इधर उधर की

स्त्री और पुरुषों के समानाधिकार

सोवियट शासन की स्थापना के समय से इस देश की स्त्रियों की हालत, जारशाही समय की स्त्रियों की तुलना में, बहुत भिन्न हो गई है। जीवन के प्रत्येक पहलू में स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हैं। सोवियट स्त्रियों को यह जानकर आश्चर्य होता है कि अन्य देशों में उसी काम को उतनी ही योग्यता के साथ, करने पर भी स्त्रियों को पुरुषों से कम वेतन मिलता है। यद्यपि किसी देश के कानून में यह नहीं कहा जाता कि वेतन के मामले में स्त्रियों और पुरुषों में भेदभाव किया जाय, पर वास्तविकता में तो यही होता है; और यह प्रथा आज तक यों ही चली आ रही है।

समान कार्य के लिए समान वेतन और स्त्री-पुरुष के वेतनों में भेदभाव न करने का प्रश्न दूसरे महायुद्ध के समय में उठा, क्योंकि उस समय युद्ध पर गये हुए पुरुषों का स्थान स्त्रियों ने लिया। इन स्त्रियों के उत्साह और योग्यता के कारण ही खेतों और कारखानों में काम पहले की तरह जारी रहा। ग्रेटब्रिटेन में व्यापार संघों ने यह मांग पेश की थी ट्राम और बसें चलानेवाली स्त्रियों को उतना ही वेतन मिले जितना इस काम के लिए पुरुषों को मिला करता था। पर इसका मतलब यह नहीं है कि प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियों और पुरुषों की एकता स्वीकार कर ली गई। यहां यह बताना आवश्यक है कि ऐसे काम, जिसे पहले पुरुष और स्त्री दोनों ही करते थे और बाद में केवल स्त्रियां, इन स्त्रियों के हितकर न सिद्ध हुए, क्योंकि इन्हें उतना ही वेतन दिया गया जितना पहले स्त्रियों को मिलता था। इस समय ब्रिटेन में मजदूर-दल की सरकार शासन कर रही है, पर स्त्रियों शो पुरुषों के समान वेतन पाने का अधिकार अभी तक सिद्धान्त रूप में नहीं माना गया। केवल यही नहीं, ब्रिटेन म सरकारी कर्मचारियों का वेतन आयु की दृष्टि से निश्चित किया जाता है।

सोवियट संघ में स्त्रियों का पुरुषों के समान वेतन पाने का अधिकार, उनका जन्मसिद्ध अधिकार माना जाता है।

सुदूर प्रान्तों में औषधि और चिकित्सा

सोवियट संघ में औषधि सबकी सम्पत्ति है और चिकित्सा सबका अधिकार; दूर दूर पर बसे हुए प्रदेशों को हवाई जहाज द्वारा चिकित्सा और चिकित्सक पहुंचाना इस देश के लिए कोई नई बात नहीं है। उदाहरण के लिए हम यूराल के चिकित्सा-केन्द्र, स्वईलोवस्क, की सैर करें। यह केन्द्र अपने हलके में रहने-वाले लोगों की देखभाल करता है और उनके स्वास्थ्य का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेता है। इसके द्वारा भेजे गये चिकित्सक हवाई जहाजों पर दूर दूर के स्थानों में निश्चित तारीख को जाते हैं और वहां के लोगों को केवल औषधि ही नहीं देते, पर स्वास्थ्य के सम्बन्ध में उन्हें उपदेश भी देते हैं। वे बीमारियों को रोकने का पूरा प्रबन्ध करते हैं। १९४६ के नौ महीनों में इस केन्द्र के डाक्टरों ने ५१९ बार हवाई जहाज पर बीमारी के स्थानों की यात्रा की और मरीजों को ९६ नश्तर लगाये।

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

'मंजरी'

सम्पादक
देवीदयाल चतुर्वेदी

प्रकाशक
इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

जनवरी १९४८ से प्रकाशित होगी

- तिरङ्गा और मोहक आवरण, दर्जनों चित्र, और कलापूर्ण छपाई,
- हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कहानी-लेखकों और अन्य प्रान्तीय भाषाओं की कलात्मक कहानियाँ,
- कहानियों के साथ-साथ कथा-साहित्य के क्रम-विकास पर गम्भीर समीक्षात्मक लेख,
- कथा-साहित्य के नवीन प्रकाशनों की निष्पक्ष समीक्षा,
- मासिक कथा-साहित्य का सिंहावलोकन,

ये सारी विशेषताएँ आप 'मंजरी' में पायँगे

दिसम्बर के अन्त तक ग्राहक और एजेण्ट हो जानेवालों की प्रतियाँ सुरक्षित रहेंगी। इसके बाद होनेवाले ग्राहकों और एजेण्टों को 'मंजरी' का पहला अङ्क दुर्लभ रहेगा। वार्षिक मूल्य ६) रु० और प्रति अङ्क ॥) आने।

आकार-प्रकार

'मंजरी' के मुद्रित पृष्ठ का आकार-प्रकार होगा ७½ इंच × ६ इंच ÷ २ कालम। स्क्रीन—११० लाइंस।

विज्ञापन-दर

चौथा आवरण	...	....	८०) रु० प्रतिबार
दूसरा या तीसरा आवरण		....	६०) ,, ,,
साधारण पूरा पृष्ठ	....	....	४०) ,, ,,
आधा पृष्ठ	....	...	२०) ,, ,,
चौथाई पृष्ठ	....	....	१०) ,, ,,
अष्टमांश पृष्ठ	...	....	५) ,, ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

हरिद्वार में पुलिस एक रहस्यमय खून के सम्बन्ध में जांच कर रही है। सबजी-मंडी से कुछ दूर गंगा तट पर एक सुन्दर लोजिंग हाउस की सीढ़ियों पर खून पड़ा पाया गया। कहा जाता है कि इस किराये के मकान में खून भरी सीढ़ियों के पास कमरों में संदिग्ध जुआरी भी रहते थे।

ज्वालापुर थाने के कोतवाल ख्वाजा साहिब जिनकी देखरेख में वहां भयंकर साम्प्रदायिक बलवा होकर अपार नर-संहार हुआ था वह सहारनपुर पुलिस लाइन में बुला लिये गये थे। अब मालूम हुआ है कि उनको ड्युटी से प्रथक (मुअत्तिल) कर दिया गया है। पर यहां सरदार जहांगीरसिंह आये हैं। जिनके आने से अब कोई शिकायत नहीं उनकी दृढ़ता के कारण अब की बार दिवाली पर जुआ भी नहीं होने पाया।

ऋषिकेश में शुद्ध दूध का अभाव देखते हुए बाबा काली कमलीवाले क्षेत्र की ओर से क्षेत्र की गौशाला का दूध सर्वसाधारण के लिये सस्ते भाव में देने का प्रबन्ध किया गया है। बाजार में जब कि मिलावटी अशुद्ध दूध रुपया सेर तक मिलता है। क्षेत्र की ओर से ॥=) सेर दिया जा रहा है। जिसकी प्रशंसा जनता और जिला कलक्टर ने भी की।

—संवाददाता

* * *

हरिद्वार में थाना ज्वालापुर गांव के हजारा में बनारस से आई खुफिया पुलिस ने एक मुसलमान के घर पर मिलिटरी की सहायता से छापा मारा और ३ बम, १ पिस्तोल, १ बन्दूक, १ छुरा और कुछ कार-तूस व बल्लमादि शस्त्र बरामद हुए और छः मुसलमानों की गिरफ्तारी हुई।

पंजाब फ्रान्टियर से आये शरणार्थी बड़ी संख्या में अभी तक ऋषिकेश में मौजूद हैं। बाबा काली कमलीवाले क्षेत्र मे जहां यात्री आकर ठहरा करते थे वह सारे स्थान भरे हुये हैं एक इंच भर जगह खाली नहीं है। शीतकाल में किसी को कष्ट न हो इसके लिये क्षेत्र के अवैतनिक सहायक मंत्री रा० ब० पंडित श्री दत्तजी स्वयं फिरकर सब का निरीक्षण करते रहते हैं और अधिकारी शरणार्थियों को भोजन वस्त्र के अतिरिक्त उनको काम पर लगाने की व्यवस्था भी की जाती है। पर इस सम्बन्ध में क्षेत्र की ओर से कोई अपील नहीं की गई और सारा भार क्षेत्र पर ही है।

—संवाददाता

* * *

हरिद्वार में मध्यप्रान्त और बरार के माननीय प्रधान मंत्री पंडित रविशंकर शुक्ल एवं गृहमंत्री पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र ने श्री श्रवणनाथ ज्ञानमंदिर के सब विभागों का निरीक्षण किया। आप दोनों महानुभावों ने ज्ञानमंदिर की उपयोगिता एवं व्यवस्था देखकर प्रसन्नता प्रकट की और इस महत्त्वपूर्ण संस्था का निर्माण करने के उपलक्ष्य में श्री महन्त शान्तानन्द नाथ जी की प्रशंसा की। आपने अपनी सम्मति इस प्रकार दी—यह उल्लेखनीय है कि मंत्री महोदयों के पास समय की अत्यन्त कमी थी। परन्तु जब श्री महन्त जी ने इस संस्था का निरीक्षण करने के लिए निवेदन किया तो उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया और पैदल ही श्री महन्त जी के साथ संस्था का निरीक्षण करने चले आये। यह है सरलता हमारे माननीय प्रधान मंत्री शुक्ल जी एवं गृहमंत्री मिश्र जी की।

—संवाददाता

* * *

फतेहपुर जिले के ग्राम खदरा में इसी सप्ताह "सुभाष-आश्रम" की स्थापना जिले के प्रमुख कांग्रेस नेता श्रीयुत पंडित दयाशंकर मिश्र "सूर्य" श्रीमती कमला-देवी वैद्या, श्रीमती जयन्तीदेवी तिवारी बी० ए० श्रीमती रामदुलारी अष्ठाना के उद्योग से हुई आप लोगों की देख-रेख व संचालन में यह आश्रम ग्रामीण नारियों में चरखा-प्रचार व खादी-प्रचार व ग्रामीण उद्योग-धंधों व शिल्पकला की उन्नति व शिक्षा प्रचार का कार्य करेगा। जनता को इसमें सहयोग देना चाहिए। आशा है कि यह आश्रम भविष्य में उन्नति करेगा।

ग्राम खदरा में एक दूकानदार ने शादीपुर के एक व्यक्ति को पांच सेर खांड़सारी शकर नम्बर ६ कंट्रोल रेट से दूना ज्यादा मुनाफा लेकर एक रुपया छः आने सेर के हिसाब से ब्लैक में चोरी से बेचा मय शकर के उसकी रिपोर्ट थाने में हो गई है। खदरा में एक ने दियासलाई कंट्रोल रेट से दूना दाम लेकर दूसरे को बेचा। मय दियासलाई के थाना कल्यानपुर में उसकी भी रिपोर्ट हो गई है। आशा है कि इन मामलों पर शीघ्र उचित कार्यवाही होगी जिससे जिले में चोर बाजारी रोकने में सहायता मिले।

—संवाददाता

* * *

सारंगढ़ में गत १९ नवम्बर को सार्व-जनिक सभा में महायोगी धर्मध्रुव गौर का भाषण हुआ। विद्यार्थियों व नवजवानों को सम्बोधित करते हुए योगिराज ने कहा कि—"देश ही को नहीं वरन समस्त संसार को आज आप लोगों की आवश्यकता है। सेवा और सहायाता के लिए पुकार है। चारों ओर हलचल मची है। लूटमार हो रही है। लोग भयभीत हैं। वातावरण आशन्तिमय है। यदि आप उचित समझते हैं कि विश्वशान्ति में हाथ बँटाना है तो अपने स्वार्थों का बलिदान करें और लोक-हित में अपने को अर्पित कर दें। तन, मन, धन और सर्वस्व प्रेमयोग में सफल होने के लिए लगा दें और आत्मबल पाने के लिए परमात्मा से अधिकाधिक प्रार्थना करें। निश्चय आप पवित्रात्मा की ज्योति से जगत् को सन्मार्ग सुझा सकेंगे।"

—संवाददाता

* * *

वृन्दाबन के प्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्त्ता व पत्रकार गोस्वामी अद्वैतकुमार जी काश्मीर की हालत को देखने व वहां की रिपोर्ट लेने के लिये एक पत्रकार के रूप में काश्मीर जा रहे हैं। इस सम्बन्ध में हवाई यात्रा आदि की सुविधाओं के लिये आपने काश्मीर के प्रधान मंत्री शेख अब्दुला को व पं० जवाहरलाल नेहरू को तार दिये हैं। गोस्वामीजी अखिल भारतीय हिन्दी पत्रकार संघ के सदस्य व कई एक पत्रों के प्रतिनिधि हैं।

वृन्दावन मण्डल कांग्रेस के नये पदा-धिकारियों का चुनाव हो गया। पं० बनवारीलाल शर्मा सभापति गोस्वामी किशोरीलाल म्यूनिसिपल कमिश्नर उप सभापति, लाला हरचरणलाल गुप्ता म्यूनिसिपल कमिश्नर मंत्री, डाक्टर कन्हैया-लाल गौतम सहायक मंत्री, डाक्टर राम प्रसाद शर्मा खजांची तथा गोस्वामी अद्वैत-कुमार पत्रकार कार्यालय मंत्री चुने गयेहैं।

—संवाददाता

* * *

रोहतक (बहादुर गढ़) से वेदप्रकाश शर्मा, 'भूषण' पं० रामलालजी शास्त्री लिखते हैं—

"मुझको वीररस की कविताओं के संग्रह करने का बहुत चाव है। यदि कोई बालगण वीररस की कविताएँ भेजने का कष्ट करें तो बहुत अच्छा हो।"

(पृष्ठ ४ का शेष)

पाया। सन् ३० में ब्रिटिश सत्ता का दमन चक्र तेजी से चल रहा था, हजारों देशभक्त जेल की चहारदिवारियों में बन्द कर दिये गये थे। मां बहिनों पर भीषण अत्याचार होने लगे थे। तब वृद्ध तपस्वी ने मतभेद को ठोकर मारी और कानून तोड़कर बम्बई के ऐतिहासिक जुलूस में शामिल हुये। फल-स्वरूप लोगों ने उन्हें जेल में पाया।

सन् १९३२ और १९३३ के कांग्रेस अधि-वेशन मालवीयजी के प्रयत्नों के फलस्वरूप ही हो सके। इन दोनों बार आपने जो अपूर्व देशभक्ति का परिचय दिया वह हमेशा कांग्रेस के इतिहास में अमर रहेगा।

ब्रिटिश सत्ता की जड़ें हिला देनेवाली भीषण आंधी के बाद शान्ति हुई। कैदी छोड़े गये। समझौता हुआ। गोलमेज कान्फ्रेंस की तैयारियां होने लगीं। महात्मा गांधी के साथ आपका भी इंगलैंड जाना निश्चित हुआ। इंगलैंड जाने के पूर्व एक सज्जन ने आप से पूछा—आपकी तबियत कैसी है? उन्होंने उत्तर दिया—मैं खाई में पड़ गया हूँ और उससे बाहर निकलने में असमर्थ हूँ; किन्तु शरीर तो मातृ-भूमि का दिया हुआ है और इसमें क्या चाहे मातृ-भूमि की सेवा में इंगलैंड में इसकी मृत्यु हो या यहां!" मालवीयजी जैसे कट्टर सनातनी प्राचीनता के पुजारी के लिये इंगलैंड जाना अपूर्व त्याग था। इसका मूल्य साधारण आदमी नहीं आंक सकता। परदेश के लिये वे क्या नहीं कर सकते थे?

सन् १९३२ में महात्मा गांधी के उपवास के अवसर पर हरिजनों की समस्या सुलझाने में उन्होंने जो परिश्रम और दौड़-धूप की, जिसके परिणाम-स्वरूप ऐसा सुन्दर समझौता हो सका उसे भुलाया नहीं जा सकता।

आपके अदम्य उत्साह, अद्भुत कार्य-शीलता अटल धर्मनिष्ठा और आदर्श सेवा-भाव ने राष्ट्र-निर्माण में जो अद्वितीय सहायता पहुँचाई, उससे देश कभी उऋण नहीं हो सकता। देश के रंगमंच पर बड़े बड़े नेता आये और चले गये, लेकिन भारत के राजनैतिक इतिहास में एक मालवीयजी ही ऐसे नेता थे, जो आदि से अन्त तक समान रूप से जनता के श्रद्धा के पात्र बने रहे। आपका समस्त जीवन स्फटिक के समान चमकता रहा, ढूंढ़ने पर भी अपवाद का दाग नहीं दिखाई देता। आपके चरित्र पर उँगली उठाने का कोई दुस्साहस नहीं कर सकता। आप भारत के समान निष्क-लंक, भीष्मपितामह के समान महारथी और दधीच के समान तपस्वी थे। विधर्मी आपकी ओर भयमिश्रित आश्चर्य से देखते रहे, सहधर्मी हिन्दू-धर्म, समाज, सभ्यता और संस्कृति का पुनरुद्धारक मानकर श्रद्धा के पुष्प चढ़ाते रहे।

इधर आप लम्बे अर्से से रोग-शय्या पर पड़े हुए थे दौड़-धूप नहीं कर सकते थे फिर भी इस वृद्ध तपस्वी की रग रग में देश-भक्ति का जोश लहरें मार रहा था। देश की नब्ज हमेशा आपके हाथ में रही, समय-समय पर अपने सत्परामर्श और वक्तव्यों से देश को सन्मार्ग दिखाते रहे।

सन् ४२ में 'अँगरेजो ;भारत छोड़ो' के देशव्यापी निनाद की गर्जना करती हुई महाक्रान्ति की प्रचण्ड आंधी आई, उसने ब्रिटिश साम्राज्य की बुनियाद को पूरी तरह झकझोर डाला। तब आपका हृदय उत्साह से भर गया आपका शरीर काम देता तो निश्चय ही आप भी अन्य नेताओं के साथ जेल की चहारदीवारी में बन्द होते आपका आशीर्वाद देश के साथ था। विद्यालय के छात्रों का सहयोग और कुर्बानी देश के इतिहास में अमर रहेगी।

जब कांग्रेस ने अस्थायी सरकार में शामिल होने का निश्चय किया तब आपने कांग्रेस के प्रति पैतृक-स्नेह उमड़ पड़ा। महात्मा गांधी से आपकी अन्तिम भेंट के दृश्य जिन्होंने देखा है, वे बड़े ही भाव-शाली थे।

महात्माजी जिस राम-राज्य को भारत-भूमि पर अवतरित होन का स्वप्न देख रहे हैं आप उसी रामराज्य के गौरव-पूर्ण आगार थे। भगवान् भारत-भूमि पर महामना मालवीयजी जैसे राष्ट्र-निर्माता नर-रत्न पुनः पुनः उत्पन्न करें।

जोधपुर में साहित्य-सदन के तत्त्वा-धान में होनेवाले अखिल भारतीय कुमार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर राजस्थान प्रान्तीय कुमार हिन्दी साहित्य सम्मेलन श्री सूर्यराजजी व्यास के सभा-पतित्व में ता० २८,२९,३० नव०कोहोगा। राजस्थान के तरुण साहित्यकारों को तथा संस्थाओं को चाहिए कि वे इस राष्ट्रभाषा 'हिन्दी' की जागृति में अपना पूरा-पूरा योग दें। मुनि श्री जिनविजयजी को उद्घाटन आमंत्रण दिया गया है।

—गोवर्धन शर्मा,

* * *

जोधपुर नगर में ता० २८,२९,व३० नवम्बर १९४७ को होनेवाले अखिल भारतवर्षीय एवम् राजस्थान प्रान्तीय कुमार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्वागत समिति की ओर से समस्त भारत के हिन्दी प्रेमी तरुण साहित्यकारों, हिन्दी प्रेमी सज्जनों, साहित्य मनीषियों व कलाकारों के नाम सम्मेलन में भाग लेने के लिये निमंत्रण दिया जा रहा है। आशा है आप इष्ट मित्रों सहित इस गौरवपूर्ण साहित्यिक पर्व पर उपस्थित होंगे।

—उपेन्द्रचंद्र भंडारी

* * *

देवरिया जिला तहसील सलेमपुर चेरी गांव में सुभाष पुस्तकालय दीपावली के अवसर पर एक विशेष जलसा श्री बांके-विहारीचन्द्र के सभापतित्व में मनाया गया। ठा० बागेश्वरीलाल ने ग्रामोन्नति के बारे में भाषण करते हुए दीपावली का उत्सव किस तरह मनाना चाहिए। अपना विचार प्रगट किये। उसके बाद श्री महा-बीर ने दीपावली का महत्व बतलाया। फिर ग्रामीण बालकों ने भाषण दिया।

* * *

लाहौर में भयंकर उपद्रवों के कारण दैनिक 'हिन्दी मिलाप' का प्रकाशन १३ अगस्त १९४७ को स्थगित करना पड़ा। इसका पुनः प्रकाशन इसी सप्ताह नई दिल्ली से हो रहा है। दैनिक 'हिन्दी मिलाप' का संचालन १९२९ में आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता श्री महात्मा खुशहालचंद जी ने किया था। ये पजाब में हिन्दी का पहला सफल दैनिक समाचार पत्र है। इसके संपादक श्री यश होंगे।

—यश, सपादक

* * *

पटना राजेन्द्र साहित्य महाविद्यालय सेवादल (पटना) की प्रबन्ध-समिति की आवश्यक बैठक विहार-सरकार के शिक्षा-मन्त्री माननीय आचार्य बदरीनाथ वर्मा के निवासस्थान मीठापुर, पटना में ता० २२-११-४७ शनिवार को हुई। इस बैठक में विद्यालय के भावी कार्य क्रम पर विशेष रूप से विचार विनिमय किया गया।

—लालसिंह त्यागी

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

कीमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।

वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

सभी दूकानों पर

Copyright

आविष्कारों की कथा

मशीनें कैसे बनीं? तरह-तरह के औजार कैसे बनें? रेल, जहाज, तार और सिनेमा वगैरह कैसे बने? नई-नई चीज़ें बनाकर या नये काम करके क्या आप दुनिया में प्रसिद्ध हो सकते हैं? इन सारी बातों को जानने के लिए यह पुस्तक जरूर पढ़िए। मूल्य १)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

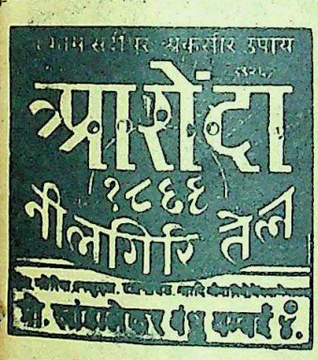

प्रसिद्ध यात्राओं की कथा

प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान से लेकर वर्तमान युग के एवरेस्ट की चोटी पर चढ़नेवाले साहसी वीरों तक की कथा इस पुस्तक में है। जिन यात्रियों ने प्राणों की बाजी लगाकर स्थल और जल के अज्ञात देशों में भ्रमण किया था और उनके परिश्रम से संसार का जो लाभ हुआ उसका रोचक वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। मूल्य ॥।-)

अपनी बात

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण वैश्य

मनुष्य के चरित्र में किस प्रकार की दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर करके वह किस प्रकार अपने जीवन को उन्नत बना सकता है, यह बात इस पुस्तक में बहुत ही ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है और लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर। अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ॥।) बारह आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग।

सिक्कों के रूप में धातुओं के प्रयोग में आ जाने के कारण लोगों के आपस के झगड़ों और मुकदमेबाज़ी से तंग आकर किसी बुद्धिमान राजा ने धातु के डलों पर मोहर लगाने की सोची जिस से धातु की शुद्धता का प्रमाण हो सके। समय के साथ साथ घटिया धातुओं की बजाय सोना चांदी की धातुएँ प्रयोग में आने लगीं और डलों का आकार भी छोटा हो गया। इस प्रकार सिक्का पहली बार प्रयोग में आया। सहस्रों वर्ष पीछे की यह बात है। परन्तु राजा प्रायः इस में असफल रहता कि लोग उस की आकृति घटिया धातु के सिक्कों पर न बनायें। यह कठिनता और भी बढ़ जाती थी यदि पुलिस अयोग्य होती या राजा रणक्षेत्र में गया होता। याद रखिए कि एक बार हुमायूं बादशाह के गंगा नदी में डुबकने पर चमड़े के टुकड़े भी सरकारी सिक्के बन गये थे। राजवंशों के बहुधा अदल-बदल से रुपये का मूल्य भी कम व अधिक होता रहा।

जब रुपये का मूल्य ऐसा अस्थिर था और राजवंश प्रायः बदलते रहते थे तो बचत करने के लिये उत्साह बढ़ाने वाले कारण कम थे। इस के अतिरिक्त जो कुछ भी बचत की जाती वह सुरक्षित रखने के विचार से भूमि में दबा दी जाती और प्रायः नष्ट हो जाती थी।

आज कल सिक्कों की अस्थिरता का कोई भय नहीं और न ही यह आवश्यक है कि बचत 'संचित धन' का ही रूप धारण करे। आप अपने रुपये को किसी उपयोगी मद में लगा कर उस में वृद्धि कर सकते हैं। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की मद में लगाया हुआ रुपया पूर्णतया सुरक्षित है और यह अवधि की समाप्ति पर ४०% बढ़ जाता है-अर्थात् प्रत्येक १०) बारह वर्ष में १४) बन जाते हैं। अब आप १) से १५०००) तक की मालियत के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं। थोड़ी बचत वाले ।), ॥) और १) मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं। अब आप सर्टिफ़िकेट १८ मास के पश्चात भी भुना सकते हैं (५ रु० के सर्टिफ़िकेट्स एक वर्ष के पश्चात भी भुनाये जा सकते हैं)।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

ये डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजेंटों और बैंकों से प्राप्त किये जा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमेरिकन ढंग का पिस्तौल

इस पिस्तौल के मुकाबले का दूसरा खिलौना पिस्तौल आपको नहीं मिलेगा। इसकी बनावट, इसकी सजावट, इसकी मजबूती और इसकी आवाज़ सब कुछ असली पिस्तौल की तरह है। इसकी नाल से छूटने वाली गोली ५० गज़ तक जाती है। इसमें ६ गोलियाँ भरी जा सकती हैं। इसकी आवाज़ से आपके दोस्त चौंक उठेंगे। इसे देखकर आपका दुश्मन दुम दबाकर भाग जायेगा। मूल्य केवल १) रु० मात्र, डाक व्यय अलग। वी० पी० से मंगाने पर ॥) रु० अधिक लगेगा। आर्डर के साथ ॥) रु० मनीआर्डर से भेजने पर डाक व्यय हमारे ज़िम्मे। आर्डर के साथ १) रु० भेजने पर डाक व्यय हमारे ज़िम्मे। आर्डर के साथ १) रु० भेजने पर डाक व्यय हमारे ज़िम्मे। आर्डर के साथ १) रु० भेजने पर डाक व्यय हमारे ज़िम्मे।

इम्पीरियल ट्रेडर्स, पोस्ट बाक्स नं० १२१ (अम्बाला)

इन सब कष्टों को १ आने में दूर कीजिये

पीठ की दर्द

सिर की दर्द

जोर जोर की दर्द व खिंचन

ऐस्प्रो

से ही ऐसा कर सकना संभव है

दर्द रोकने और हरारत दूर करने में दुनियाँ की सबसे महान औषधि

ASPRO DOES NOT HARM THE HEART

जब आपको दर्द मालूम होती है तो इसका मतलब होता है कि आपके शरीर को सहायता की जरूरत है—और वह भी उसी वक्त। 'ऐस्प्रो' फौरन् असर करती है—यह आपकी दर्द रोकती है, आराम सुख और भले चंगे होने की भावना पैदा करती है और दर्द के कारण तक जाकर उसे निकाल बाहर करने में प्रकृति की मदद करती है। 'ऐस्प्रो' कि प्रत्येक टिकिया मनुष्य की आवश्यकताओं के मुताबिक पूरी सावधानी और चतुराई से बनाई जाती है। इसीलिये यह आधुनिक औषधि इतनी फलप्रद है

बुखार की स्थिति से कष्ट पानेवालों के लिये 'ऐस्प्रो' वरदानस्वरूप है। यह ताप कम करती है व नकलीफों का निवारण करती है।

'ऐस्प्रो' समय नहीं खोती फौरन् आपकी सहायता करती है।

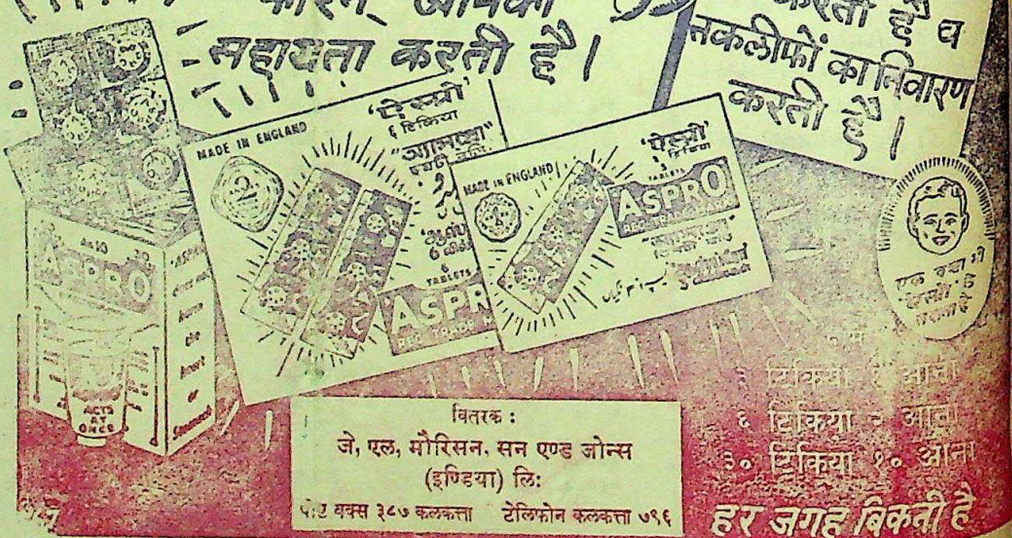

वितरक :
जे, एल, मौरिसन, सन एण्ड जोन्स (इण्डिया) लि:
पो० बक्स ३८७ कलकत्ता टेलिफोन कलकत्ता ७९६

३ टिकिया ३ आने
६ टिकिया ६ आने
३० टिकिया १० आने

हर जगह बिकती है

हो सकता है कि

आप को इस की भावना न हो

लेकिन

बर्मा-शेल हवाई

सरविस

भारत और पाकिस्तान

भर में

१०० से ज़्यादा

'हवाई जहाज़—मैदानों' में

इस्तेमाल होती है.....

बर्मा-शेल हवाई सरविस

मोटरलाइनों से

SHELL

मोटरों की सर्विस

बर्मा-शेल आइल स्टोरेज ऐंड डिस्ट्रीब्यूटिंग कम्पनी आफ़ इंडिया लि० (इंगलिस्तान में इंकार्पोरेट की गई) एजेंट्स्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १८ पलासाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मित्र

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

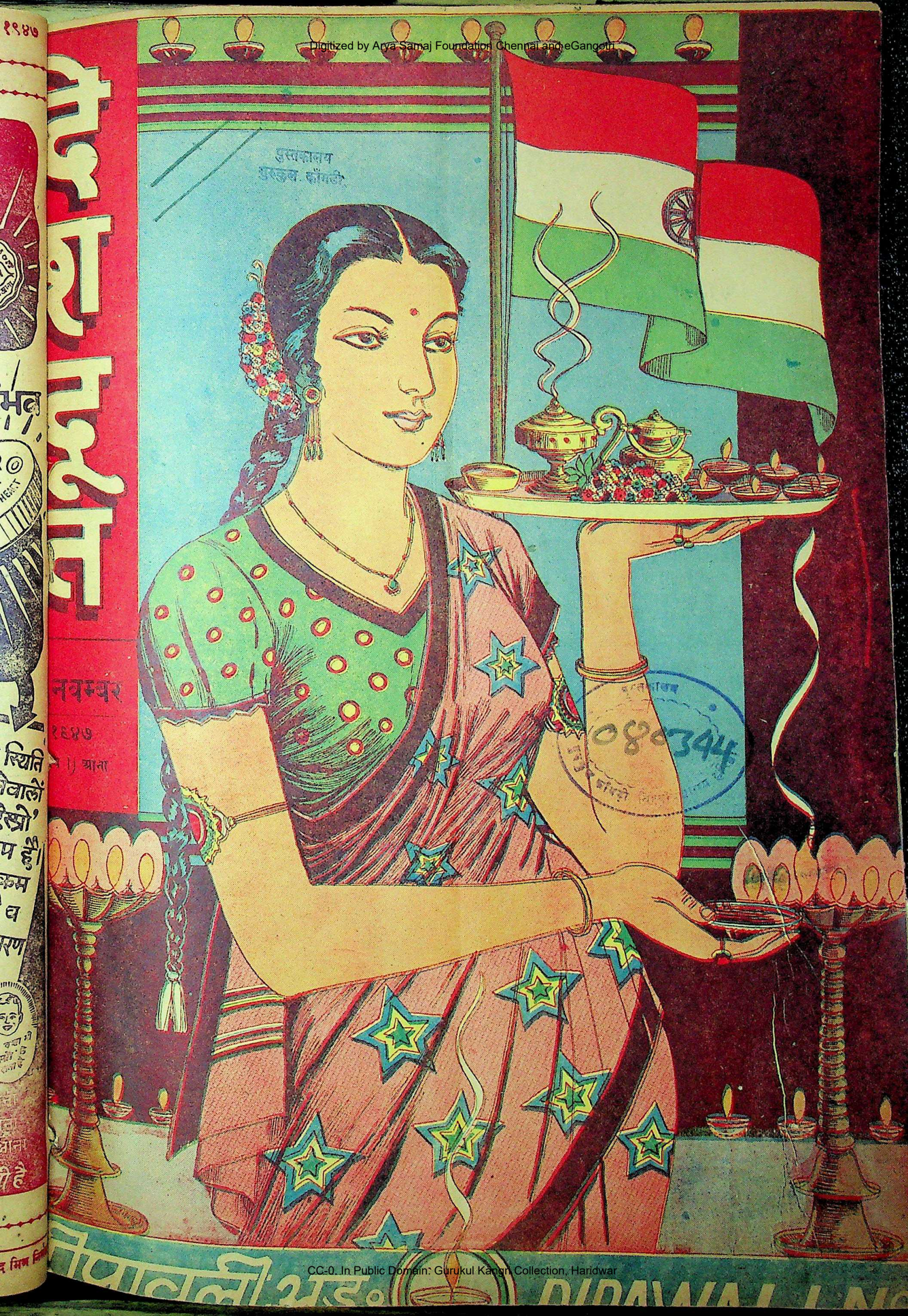

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावली की शुभ कामनाएँ अपने ग्राहक - अनुग्राहकों, शुभेच्छुओं और हितैषियों

को

दीपावली के इस पवित्र त्योहार

पर

हमारी हार्दिक शुभ कामनाएँ और अनेक बधाइयाँ

आगामी वर्ष हम सबको शुभ हो

गिरधर गोपाल टिन फैक्टरी आगरा
जी० जी० फ्रूट प्रिजर्विंग फैक्टरी आगरा
जी० जी० चोकोलेट फैक्टरी आगरा
जी० जी० टोप फैक्टरी आगरा

जी० जी० इण्डस्ट्रीज़

जी० जी० सेल्स डिपो—(१) किताब महल हार्न बी रोड, बम्बई, (२) चावड़ी बाज़ार देहली, (३) मन हाउस पी० ४० मिशन रो एक्स्टेन्शन कलकत्ता, (४) मेसर्स गिरधरलाल वकील, जनरलगंज, कानपुर, (५ मेसर्स गिरधरलाल वकील, दर्जी चौक, बरेली।

खाँसी और सर्दी

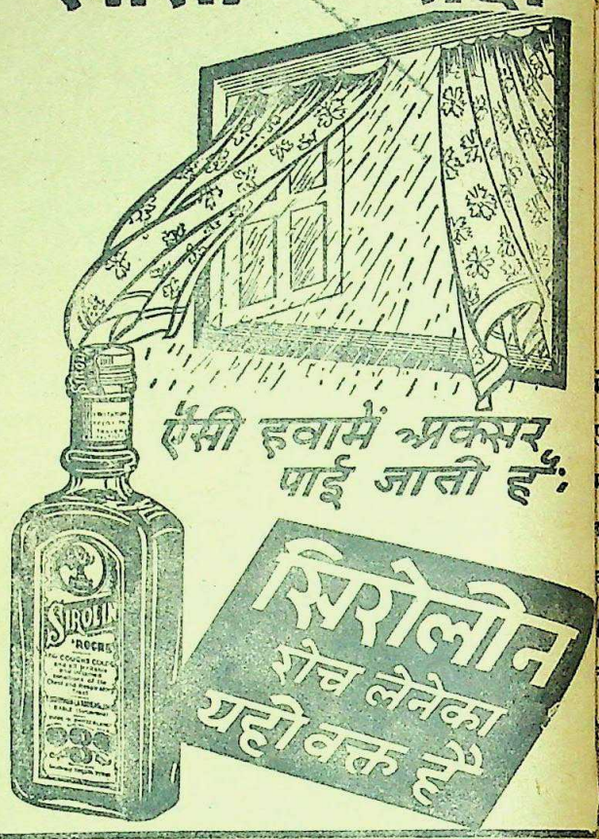

अपनी छुट्टी रोक दीजिये!

जबतक आप अपने जीर्ण और बेकार वश को फेंक न दें छुट्टी पर मत जाइये।

एक नया पैक कर लीजिये।

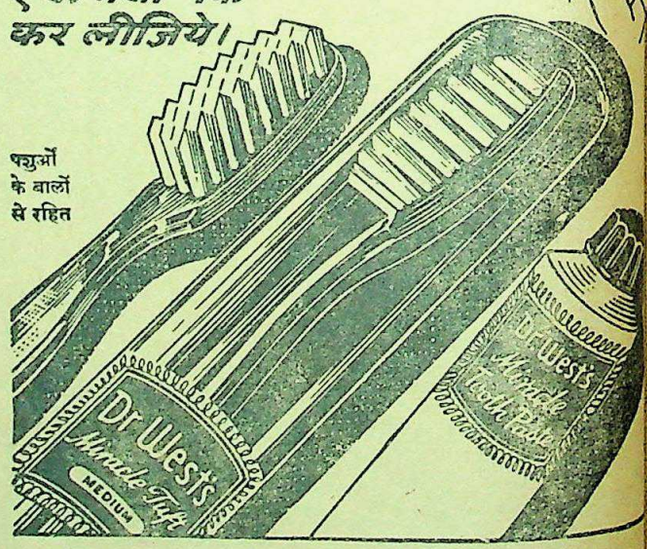

* दांतों को ६० प्रतिशत अधिक स्वच्छ करता है
* जल-अभेद्य.....नमी-विद्वेषक
* शीशे में बंद
* वर्षभर की गारंटी

डा. वेस्ट्स ट्रूथ ब्रश और ट्रूथ पेस्ट

व्यापारिक पूछताछ के लिये: एल. डी. सेमूर ऐंड कम्पनी (इंडिया) लिमिटेड
कलकत्ता - कराची - मदरास

सुन्दर गुलाबके सुगंधके समान मनमोहक, और पंखुड़ीपरके शबनम जैसा सौम्य, विनोलिया व्हाइट रोज़ — आपका प्रिय साबुन — आपकी त्वचाको सुकोमल एवं मृदु रखता है; और पुनः आपको गुलाबोंका स्मरण दिलाता है।

विनोलिया

व्हाइट रोज़ साबुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे एक मरते हुए आदमी के प्राण बचे

नीचे के लेख पर जिन्हें विश्वास न हो या इसके गुणों और प्रशंसा-पत्रों पर कोई सन्देह हो वे हमारे हेड आफिस में आकर अपना सारा सन्देह दूर कर सकते हैं।—प्रकाशक

कुछ समय पहले 'देशोपकारक' में छपा था कि नवाब बहावलपुर के श्वसुर खलीफा हयात मोहम्मद खां ने पंडित ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य से कहा कि कल्लात की एक पहाड़ी के महात्मा रत्नगिरि जी की दी हुई दवा की चन्द मात्रायें एक बार एक बूढ़े ग्वाले ने एक साथ खा ली जिससे उसे इतना बल प्राप्त हुआ कि उसने महात्मा जी की आज्ञा से बुढ़ापे में तीन विवाह किये। यह सुनकर शर्मा जी महात्मा जी के पास गये और वह योग प्राप्त कर लिया। इसे हमने भी बनाकर 'महाशक्तिदाता' के नाम से हजारों पर बर्ता। इसके सेवन करनेवालों का फैसला है कि इससे दो दिन में ही बल आने लगता है, ८ दिन में चेहरा लाल हो जाता है, २१ दिन में देह का रंग बदलकर ४० दिन में सेरों वजन बढ़ जाता है। प्रमेह, स्वप्नदोष, नपुंसकता, शरीर का पीलापन, भूख न लगना, दमा, खाँसी, नजला, जुकाम, जिगर तिल्ली के रोग, स्त्रियों का प्रदर तथा मूत्र में शकर जाना (Diabetes) आदि दूर होकर नई जवानी मिलती है। इसकी प्रशंसा में मिस्टर पी० आर० जे० एस० ए० एम० आई० एस० ई० सुपरिण्टेण्डेण्ट पैरियर डैम जानबिल्ला (मद्रास ने) लिखा है कि मेरा भारतीय दवाओं पर विश्वास नहीं था परन्तु महाशक्तिदाता के गुण देखकर हैरान हूँ। नोवास्कोटिया स्टेट मलाया के मिस्टर के० आई० कुमारन का इसी दवा से १२ पौंड वजन बढ़ गया तथा ऐसे तन्दुरुस्त हुए कि उनके मित्रों ने पहचान भी न पाया। बर्मा के मिस्टर के० के० दत्त की पुरानी बवासीर दूर होकर ८ पौंड वजन बढ़ गया तथा इतने तन्दुरुस्त हैं जितने १० साल पहले कभी नहीं थे। भोपाल से श्री मबकास बालमुकुन्द ने लिखा है कि इससे एक मरते हुए आदमी के प्राण बचे जिसने जीने की आशा छोड़ दी थी। गौताना के डाक्टर रामेश्वरदयाल जी वैद्य ने प्रकाशित किया है कि यह दवा कभी व्यर्थ जानेवाली नहीं। मैंने ३३० रोगी इससे आराम किए हैं। बरेली के मिस्टर आर० एस० ने लिखा है कि मेरे मधुमेह (Diabetes) अर्थात् मूत्र में शकर जाना आदि कई असाध्य रोग इस महाशक्तिदाता से दूर हो गए हैं और अब मैं बीस वर्ष का जवान मालूम पड़ता हूँ। अफ्रीका के श्री आर० ए० नन्दन ने तो यहाँ तक लिखा है कि महाशक्तिदाता की बराबरी दुनिया में कोई दूसरी दवा नहीं कर सकती। सिर्फ इन्होंने ही इसकी प्रशंसा नहीं की बल्कि भूतपूर्व काश्मीर गवर्नर खान बहादुर चौधरी खुशीमोहम्मद साहब, ग्वालियर राज्य के राजा साहब श्रीमान् आर० के० रंगा, राव बहादुर श्री प्रमोदराव सेक्रेटरी आफिस नैटोर राज्य; मिस्टर बी० पूर्णपलन लंका, मिस्टर एन० कृष्णस्वामी राव, मैसूर स्टेट, मिस्टर के० गोपाला कृष्णैया डिस्ट्रिक्ट कोर्ट वकील रलपेत गन्टूर, डाक्टर अविनाशचन्द्र चक्रवर्ती धौला, वैद्यवर श्री नलिनीकान्त चक्रवर्ती आयुर्वेदाचार्य बारीशाल लेडी डाक्टर श्रीमती सुशीलादेवी ढाका बंगाल आदि सैकड़ों लोगों ने महाशक्तिदाता की प्रशंसा की है, तथा भारत-सरकार ने भी महाशक्तिदाता के नाम प्रयोग, मजमून, सार्टिफिकेटों और हेडिंग आदि की रजिस्ट्री हमारे हक में कर दी है। पाठको! पूर्ण विश्वास कर आप भी ४० दिन सेवन कर चमत्कार देखें। योग यह है—

शुद्ध बुरादा फौलाद २० तोला को प्रथम १ तोला शुद्ध श्वेतमल्ल तथा १॥ माशा भीमसेनी कपूर के साथ धृतकुमारी के रस से घोंट ५ सेर कण्डों में फूँकें फिर दुबारा १ तोला हरताल वर्की शुद्ध तथा भीमसेनी कपूर १॥ मासा के साथ तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध १ तोला तथा भीमसेनी कपूर डेढ़ मासे के साथ और चौथी बार पारा शुद्ध १ तोला तथा भीमसेनी कपूर १॥ मासा के साथ पूर्ववत् फूकें तथा इसी क्रम से १२ आँचें दें फिर सब के बराबर इन्द्रवधू जलाकर उड़ा दें और ४ मास जमीन में गाड़ रक्खें। फिर पीसकर सुबह-शाम आधी-आधी रत्ती उचित अनुपान से खावें। आपमें इतना बल बढ़ेगा कि आप हैरान हो जायँगे। अगर कुछ जानना हो तो ≈)॥ के टिकट भेजकर उत्तर मँगा लें। यह महाशक्तिदाता हमारे यहाँ ही मिलेगी। मँगाना चाहें तो ४० दिन के लिए पूरी खूराक डाक-खर्चसहित ६॥॥≈) रु० में नीचे के पते से मँगा लें। विदेश से दवा मँगानेवालों को कुल रुपया डाक-खर्चसहित पेशगी भेजना चाहिए।

हमारा पता—

मैनेजर—श्यामचक्र कार्य्यालय,
(रजिस्टर्ड) नं० ६४५ बी०
शाहजहाँपुर (यू० पी०)

हमारी ब्रांच—

सिरकी मोहाल कानपुर,

हमारे एजेण्ट—

(१) हकीम रघुवीर सिंह, श्री गुरु नानक औषधालय, दशाश्वमेध रोड, बनारस।

(२) मिस्टर नाथूराम शर्मा, मैनेजर महर्षि आयुर्वेदिक कार्यालय, खारी बावली, दिल्ली।

उपरोक्त शहरों के निवासी यदि चाहें तो स्थानीय ब्रांचों से भी औषधि खरीद सकते हैं। इसके अलावा अन्य बहुत-सी औषधियाँ हमारे यहाँ हर समय तैयार रहती हैं। बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मँगाइये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

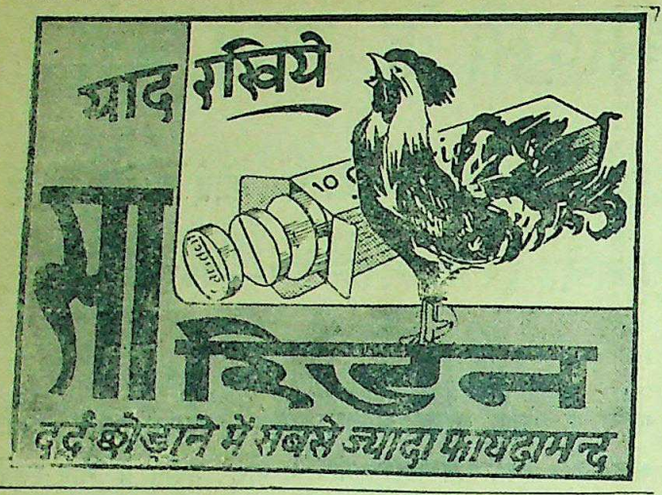

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।–) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

अपने आपको शीतल रखो

टाटा का ओ-डी-कोलोन दिन-ब-दिन पुरुषों के लिए नहाने के समय और नहाने के पश्चात् के प्रयोग की आवश्यक वस्तु बन रही है। इसको नीचे दी गई विधियों से प्रयोग में लाइये और देखिये कि कैसे यह गर्मी से छुटकारा दिलाकर ठण्डक पहुँचा देगा।

(१) प्रातः नहाने के पानी में कुछ बूँदें डाल दीजिये—इससे पानी सुगन्धित हो जायेगा।

(२) दाढ़ी बनाने के पश्चात् और कपड़े पहनते समय अपने शरीर पर लगाइये। इसकी बर्फीली ठंडक आपका श्रमापहार करेगी। अपनी रूमाल को इससे सुगन्धित कर लीजिये।

(३) दफ्तर में कठिन काम सँभालते समय अपने माथे को ठंडक पहुँचाने के लिए एक शीशी अपने मेज पर रख लीजिये।

(४) यात्रा करते समय टाटा का ओ-डी-कोलोन पास रख लीजिये। यह आपकी थकावट को दूर करने और आप को स्वच्छ रखने में सहायता देगा।

सदैव अच्छा साथी

टाटा का

ओ डी कोलोन

दी टाटा आयल मिल्स कं०, लि०

भूले हुये प्राचीन काल में एक अपूर्व बुद्धि वाले अनुद्योगी व्यक्ति ने ऐसी गणना की कठिनाइयों से तंग आकर—जैसे कि एक गधे के बदले कितने चावलों की आवश्यकता होगी – यह उपाय सोचा कि प्रत्येक वस्तु के मूल्य को जिनिस के रूप में ही दिया जावे। आज कल भी पूर्वी अफ्रीका की कुछ जातियों में ऐसा व्यवहार है। यह एक जिनिस कदाचित् बकरी थी।

एक शिकारी-चाकू १० बकरियों के तुल्य समझा जाता था। ५० केले बकरी के एक बच्चे के बदले में प्राप्त हो सकते थे। और इसी प्रकार अन्य वस्तुएं भी मिल सकती थीं। किसी व्यक्ति के धन का अनुमान बकरियों की संख्या से किया जाता था। तनिक विचार कीजिए कि माल ख़रीदने के लिये अपनी बकरियां लिये लिये फिरना कितना विचित्र और कठिन प्रतीत होता होगा। बचत भी बकरियों के रूप में ही होती थी। यह कोई विशेष लाभप्रद मद न थी। बकरियों के पालन पोषण पर भी व्यय करना पड़ता और चोरों, जंगली पशुओं और रोगों के भय का तो कहना ही क्या! एक धनी रात भर में दरिद्र हो सकता था।

इस के विपरीत आज कल माल के ख़रीदने या बचत करने में कोई विशेष असुविधा नहीं होती परन्तु लाभप्रद मद का चुनाव अभी भी सहल नहीं। एक अच्छा व्यापारी जानता है कि आज कल की रुपया लगाने की सर्वोत्तम मद नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स हैं। ये पूर्णतया सुरक्षित हैं और अवधि की समाप्ति पर इन का मूल्य ५०% बढ़ जाता है – अर्थात १० रुपये १२ वर्ष के पश्चात १५) बन जाते हैं। ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। अब सर्टिफ़िकेट्स १८ मास के पश्चात भी भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १ वर्ष के पश्चात भुनाया जा सकता है)। थोड़ी बचत वाले ।), ॥), और १) की कीमत के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

ये डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजेन्टों और सेविंग्ज ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष १०, संख्या ११] [रविवार, १६ नवम्बर, १९४७

दीपावली !

आज दिवाली का पावन पर्व है। अंधकार कोटि-कोटि प्रकाश-दीपों की लौ से आलोकित हो उठा। जगर-मगर करती हुई ज्योति के प्रशस्त अंचल के नीचे महामंत्र आर्या की प्रकाश-धर्मा संस्कृति का प्रतीक—यह पावन त्यौहार समस्त विश्व को 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का सन्देश दे रहा है। आज की रात हमारे आलोक मंडित इतिहास की कड़ियों में अपना एक निजी महत्त्व रखती है। दीपावली अंधकार पर प्रकाश, पाप पर पुण्य और असत् पर सत् की विजय का हमारा सांस्कृतिक प्रतीक है। आज की सन्ध्या समस्त संसार के सामने हमारे इस राष्ट्रीय प्रण का उद्घोष करती है।

* * *

हमारा इतिहास संसार-चक्र की विभिन्न गतियों से प्रभावित हुआ। हमारे विकास-पथ पर कितनी ही बलायें आईं कितने ही पहाड़ अड़े और कितने ही वज्रगामी मेघ गरजे। हमारे राष्ट्रीय गगन में कितनी ही उल्काएं टूटीं और कितनी ही बार बाधाओं का समूह उमड़ा, किन्तु हम सदैव आगे बढ़ते रहते क्योंकि हमारे सामने हमारा यही प्रकाश-प्रण था हमारी आत्मा में हमारे इसी व्रत-साधना की शक्ति थी। हम अपने सुख-दुख के प्रत्येक वर्ष में युग-युग से दीपावली मनाते आ रहे हैं यह दीपावली हमारी अजस्र सांस्कृतिक धारा के बीच विद्युत की धारा की भांति चिर-संगिनी रही है। हमने विजय के दीप जलाये, उल्लास के दीप जलाये शान्ति के दीप जलाये, आंसुओं के दीप जलाये और सन् ४२ की रक्ताक्त वेला में अपने शहीदों के रक्त के भी दीप जलाये; किन्तु दीप जलाये हमने अवश्य ! उसमें अपने जीवन का स्नेह सींचा। निस्सन्देह !! हम रहे दीप-व्रती और दीपमालिका रही हमारी संस्कृति की साधना का प्रकाश-केतु !

* * *

वर्ष भर के विविध कार्य-कलापों की विश्रान्ति-संध्या में हमारी शक्ति, हमारा दृष्टिकोण एक बार झिलमिल प्रकाश से स्नान कर फिर नवीन हो उठता है! हमारी भूमि का कोना-कोना दीप की प्रकाश-माला से अभिषिक्त होकर इस कुहा के दिन हमारे आलोक अभियान का स्मरण दिला जाता है !! आओ आज हम इस पुण्य घड़ी में अपनी प्रकाश-साधना के प्रण को एक बार फिर दुहरा लें।

* * *

अंचल में ज्योति की खील भरे अंधकार पर दीपों के चरण धरती हुई दीपावली आ गई ! सारा राष्ट्र आलोक की इस बेला में जगमगा रहा है। हमारे लिये आज यह एक विशिष्ट अवसर है, क्योंकि स्वतंत्र भारत की यह पहली दीवाली है। कितने आनन्द का अवसर होता, यदि आज यह अखंड भारत की प्रथम स्वतंत्र दीपावली होती और हमारे आज के इस प्रकाशोत्सव पर साम्प्रदायिकता विद्वेष, निर्दोष हत्याकांडों के करुण-चीत्कार और स्थान-स्थान पर प्रतिक्रियावादियों द्वारा पैदा की गई पाशविक अशान्ति की मलिन छाया न होती। आज काश्मीर तथा पूर्वी पंजाब की सीमाओं पर होनेवाली अमानुषिक बर्बरताओं का नग्न नृत्य, हैदराबाद जूनागढ़, मैहर तथा उत्कल की देशी रियासतों में अपनी स्वाभाविक मांगों के लिये उठाये गये जनान्दोलनों का अनुचित दमन स्थान-स्थान पर पारस्परिक घृणा और अविश्वास को उकसानेवाले छिटपुट संघर्षों का आम्फोट, संसार के सामने हमारे राजनीतिक अस्तित्व और शासन-प्रतिष्ठा पर प्रश्न-चिन्ह लगा रहा है। हमें स्वतंत्रता मिली तो, किन्तु हमारी सम्पूर्ण आत्मा के दो खंडों के मूल्य पर। हमें शासन-सूत्र मिला तो, किन्तु युद्ध शोषण और गृह-संघर्षों में ध्वस्त जीर्ण खंडहरों पर !! हम मुक्त हुए, किन्तु अपने ही भाइयों से विभाजन की रचना पर ! किन्तु हम विवश थे, हमारे सामने दूसरा मार्ग न था। कोटि-कोटि शोषित शान्ति जनता की कठोर जीवन आवश्यकताएं एक ओर मुंह बाये निगलने को तैयार थीं और दूसरी ओर हमारा अग्रपथ साम्प्रदायिक दुराग्रह की ज्वालाओं से आक्रान्त था। हम विवश होकर माता की खंडित छाती के रक्त पर चलना पड़ा, उसके ही चीर-घाव पर मरहम लगाने के लिये, उसकी ही दीर्घकालीन अंजलाओं को खंड-खंड करने के लिये, किन्तु हमारा व्रत हमारा सत्य शिव और सुन्दर की साधना निरन्तर चलता रहेगा। हमारे दृष्टि-पथ के छोर पर अब भी अखंडता का ध्रुव चमक रहा है। हम प्रकाश-वैजयन्ती ले उसी की ओर बढ़ रहे हैं। हम आज के पर्व पर यह प्रतिज्ञा करनी है हम इस आन्तरिक अव्यवस्था साम्प्रदायिक विद्वेष और जनतंत्रविरोधी शक्तियों को मिटाकर उसके स्थान पर पारस्परिक स्नेह, सौजन्य और शान्ति के रामराज्य की स्थापना करेंगे !

* * *

आज देश में शरणार्थियों का प्रश्न विकराल हो चला है। कितने मातृ-पितृ-विहीन और धन-जन-वंचित परिवार शरणार्थी-बस्तियों में अपने दिन काट रहे हैं। आज की दीपावली के प्रकाश में उनके हृदय की भी छाया व्याप्त है। हमारी आज की लक्ष्मीपूजा के पीछे उनकी असहाय छाया घूम रही है, आज के आनन्द के पीछे उनकी सजल आंखें फैली हुई हैं !! हम आज उनकी विपदाओं में अपने सहयोग का प्रण करें।

* * *

युग-युग से आशा और नवजीवन का सन्देश देनेवाली दीपमालिके ! हमारे जीर्ण-शीर्ण खंडहरों में ज्योति की वर्षा करो, हमारे क्षत-विक्षत प्राणों में सत्य-साधना की शक्ति उतारो तुम उतरो, और अंधकार की सघन छाया में हमारा प्रभा-प्रोत जन-मुक्ति के पावन-कूल पर प्रतिष्ठित हो जाय !

संदेश

श्री शङ्करराव देव, प्रधान मन्त्री, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी—

हमारा देश आज स्वतंत्र है, किन्तु इस स्वतन्त्रता-प्राप्ति के साथ देश के विभाजन की दुःखद घटना भी सम्बद्ध है। इस विभाजन के ही विषाक्त प्रभाव का यह दुष्परिणाम है कि आज दीपावली के इस प्रकाश-पर्व पर पंजाब, काश्मीर तथा अन्यान्य स्थानों के लक्ष-लक्ष गृह-दीप बुझ चुके हैं ! प्रत्येक राष्ट्र-सेवी का यह प्राथमिक कर्तव्य है कि वह उन बुझे प्रदीपों में प्रकाश की पुनर्प्रतिष्ठा करे। समस्त देश-वासियों से आज हमारा यही अनुरोध है वे इस पर्व को शान्ति और सुव्यवस्था के साथ मनाते हुए, यथा-सम्भव व्ययों से बचकर, अधिक से अधिक मात्रा में शरणार्थी-सहायता-कोष को सबल बनावें। स्वतंत्र भारत की यह प्रथम दीपावली राष्ट्र के जीवन में स्थायी प्रकाश की वर्षा करे, यही मेरी हार्दिक कामना है।

दीपावली के शुभ पर्व तथा पवित्र अवसर पर 'देशदूत' के पाठक-पाठिकाओं, ग्राहक-अनुग्राहकों, लेखकों, कवियों, हितैषियों तथा सहयोगियों को बधाई है। भारतीय स्वतन्त्रता की रक्षा की प्रतिज्ञा करना हम सबका कर्तव्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेल-जीवन के कुछ संस्मरण

पिछले २५ वर्ष के राष्ट्रीय आन्दोलन की बिखरी स्मृतियाँ

लेखक, माननीय पंडित केशवदेव मालवीय एम० एल० ए०
(मन्त्री, उन्नत-विभाग संयुक्त प्रान्त)

इस लेख के लेखक माननीय पंडित केशवदेव मालवीय

पिछले ६५ वर्ष के राष्ट्रीय आन्दोलनों में नेताओं को जेल-जीवन के विशेष तथा पूर्ण अनुभव हुए हैं। इस लेख में मालवीय जी ने अपने जेल-जीवन के कुछ ऐसे संस्मरणों का उल्लेख किया है जिससे अनेक ज्ञातव्य बातें ज्ञात होती हैं। संस्मरण अत्यन्त रोचक तथा राष्ट्रीय प्रगति पर प्रकाश डालनेवाला तथा पठनीय है।

पहली बार सन् १९२२ में मार्डन स्कूल की पेकेटिंग करते हुए मैं पकड़ा गया। मेरी अवस्था उस समय लगभग १७,१८ वर्ष की थी। बहुत से विद्यार्थियों के साथ पकड़कर थाने के लाकप में बन्द कर दिया गया। बाल्यकाल के उत्साह ने मुझे यह नहीं मालूम होने दिया कि वह कोई जेल थी। यह तो अब सोचता हूँ कि वह तो जेल की यातनाओं में से एक थी। एक छोटी सी कोठरी में लगभग ४० आदमी बन्द कर दिये गये और १२ बजे रात को डांट-डपटकर निकाल बाहर किये गये। इसके बाद फिर कुछ ही महीने बाद २३ महीने की लम्बी सजा लेकर मलाका जेल में ठूंस दिये गये। बड़े बड़े नेता साथ में थे। पं० जवाहरलाल जी, देवदास गांधी इत्यादि। ऐसे साथियों को पाकर जेल, जेल नहीं मालूम होता था। वहीं लोहे के तसले का पहले-पहल दर्शन हुआ और एक पेड़ के नीचे बैठकर आश्चर्य प्रकट कर बेहद हँसे। तसले के ही समान एक काले जेलर ने आकर हमें समझाया कि ये तसले मामूली कैदियोंके लिये बनाये गये थे और हम लोग चूंकि साधारण कैदी नहीं थे इसलिये अपने खाने के बर्तन बाहर से मँगा सकते थे। मुझे याद है कि उस समय मेरे ऊपर इसका कोई डाइस देने-वाला असर नहीं हुआ। शाम को घर का अच्छा अच्छा खाना मिला तो उसे हम लोगों ने एक अच्छी पिकनिक समझा।

हम लोग सजा काटने के लिये लखनऊ जेल भेज दिये गये। वहां पं० जवाहर-लाल जी से पहले-पहल सच्चा परिचय हुआ। अनुशासन, क्या शक्ति और क्या शिक्षा है, इस पहले आभास में मिलने का सौभाग्य मुझे पं० जवाहरलाल जी से पहले-पहल लखनऊ में जेल में प्राप्त हुआ। उन्होंने हम लोगों की दिनचर्या बनाई। देवदास जी चर्खा चलाना सिखाते थे। जवाहरलाल जी अँग्रेजी के ऐसे लिखना बताते थे और खेल-कूद का कार्य-क्रम भी उन्हीं का ही बना। शाम को बालीबाल के मैदान में संगठित पार्टियां उतर पड़ती थीं। जवाहरलाल जी ने एक अच्छे कैप्टेन का काम करना शुरू किया। दूसरी तरफ हमारे साथी हरदोई के ठा० निरं-जनसिंह रहा करते थे। मैं भी बालीबाल का एक अच्छा खिलाड़ी समझा जाने लगा। मैं जवाहरलाल जी की टीम में था। अक्सर बाली मारने में कैन बाहर चली जाती थी तो उनकी कड़ी डांट मिलती थी। बचपन के कारण कभी कभी उनकी डांट से बड़ी खीजन होती थी। इस खेल में एक दिन जवाहरलाल जी का विराट और देवतुल्य रूप देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दो-तीन बाली बिगड़ जाने से जवाहरलाल जी ने क्रोध में आकर मुझे खेल से निकाल दिया। मैं मुह फुलाकर बैरक में आकर बैठ गया और मैंने कसम खाई कि जवाहरलाल जी से अब न बोलूंगा। रात को उस दिन मैंने खाना भी अलग खाया। बाहर मैदान में सोया करता था। उस दिन सुबह बड़ी देर तक सोता रहा। करीब ७ बजे जब जवाहरलाल जी अपनी कसरत, स्नान कर चुके और पढ़ने जा रहे थे तो उन्होंने आकर मुझे धक्का देकर जगाया। मैं उठकर खड़ा हो गया। मैं तो समझा था कि जवाहरलाल जी मुझसे बहुत नाराज हैं और मैं तिरस्कृत होकर खेल की टीम से निकाल दिया गया हूँ इसलिये उस तिरस्कार का बदला उनसे न बोलकर ले लेंगे। जवाहरलाल जी ने कहा—"क्या तुम बहुत नाराज हो, अगर मेरा कोई कसूर हो तो माफ कर दो भाई।" मैं तो यह भाषा न जानता ही था और न मैं इसके लिये तैयार ही था। भौचक्का-सा रह गया और हँस पड़े। बाद में मैंने महसूस किया कि मैं बड़ा बेवकूफ था। दूसरे दिन मैंने जवाहरलाल जी से जाकर कहा कि मुझे माफ कर दीजिए। मैं तो आपसे बहुत गुस्सा हो गया था। उन्होंने मुझे एक घूसा मारा। जेल में पहली शिक्षा मिली।

चर्खा चलाने में भी मैंने देवदास जी से अच्छी शिक्षा पाई। ३८ पाइंट तक का सूत साबरमती आश्रम के चर्खे पर कातने लगा था। सूत कातकर मैंने अच्छी अच्छी मालाएँ बनाईं। उसमें से एक अपने पिता जी के पास और दूसरी एक अपने परममित्र के पास जेल से भेजी। उस अवस्था में मैं इसको ही बड़ा अच्छा काम समझता था। कुछ दिन बाद दूसरी बैरकों में जाने की इजाजत हमको हुई। हमारे जेलर मि० इब्राहीम और डिप्टी जेलर श्री रूपनारायण थे। अक्सर शाम की प्रार्थना पर उन लोगों से झगड़ा हो जाया करता था। एक दिन चिट्ठी मिलने पर रूपनारायण जी से बहुत झगड़ा हुआ। उन्होंने मुझे बुरा-भला कहा। मैं पहली बार उनसे लड़ पड़ा और रूपनारायण जी पर हाथ में लिए हुये लोटे से आक्रमण कर दिया। परिणाम में ७ दिन की तनहाई मिली और ऊपर से जवाहरलाल जी की डांट। लगभग एक साल के बाद प्रान्त के गवर्नर मेरिस ने राजनैतिक कैदियों को मुक्त कर दिया पर मेरे खिलाफ जो दफा लगी थी वह राजनैतिक जुर्म में शामिल न की गई। मुझे स्मरण है कि मैं और बाराबंकी के किदवई साहब जेल में रह गये, उस वक्त सच्चा जेल मालूम पड़ा। मुझे यह असह्य हो गया कि सब साथी तो छूट गये और मैं अकेला रह गया। कानपुर के डाक्टर जवाहरलाल ने मुझे बड़ा डाइस दिया। शाम तक मैं भी जेल से बाहर हो गया। उस दिन की सबेरे की दावत, जो छेदीलाल की धर्मशाला में की गई थी उससे मैं वंचित रहा। सीतापुर के जगन बाबू और पालन जी, झांसी के कंचन जी और मेरठ के ज्योतीप्रसाद जी से मेरी बड़ी मैत्री हो गई थी। सन् २२ की जेल ने मेरे और मेरे साथियों के ऊपर यही असर डाला कि स्वराज्य मिलते मिलते बचा। राष्ट्रीय संग्राम के अनुभव की पहली सीढ़ी में ही हम लोग थे। बहुत सी बातें जानने को थीं। जेल तो खाने-पीने, खेलने-कूदने में कटा पर देश की अवस्था ने अन्त में पस्तहिम्मती इसलिये पैदा की कि पहली हार थी और पहली हार में तबीयत में ग्लानि थी। हारने की बेशरमी अब तक लोगों ने अख्तियार न की थी।

धीरे धीरे जेल का दुबारा कैदी हो गया। सन् ३० में दो बार और सन् ३२ में तीन बार जेल जाने से प्रौढ़ कैदी हो भी गया और समझा भी जाने लगा। इन सालों की जेल-यात्रा ने हमें जेल-जीवन की झांकी बहुत अच्छी तरह दिखाई दी। जेल के अन्दर रहकर जी बहलाने को समय काटने के लिये अप्राकृतिक ढंग से ढूंढा जाने लगा। सन् २२ में तो पढ़ना-लिखना, खेलना-कूदना यही स्वाभाविक था। जेल जीवन का बोझ ऐसी कोई चीज है हमें मालूम ही नहीं था। पर सन् ३०,३२ में जेल का समय काटना है इसलिए कुछ करना है, इस प्रकार की मनोवृत्ति पैदा हुई। गाना-बजाना, ब्रिज खेलना, बालीबाल खेलना, सभा सोसायटी, मुशायरेबाजी करना यह सब समय काटने के मकसद से ही कटा था। सन् ३२ की जेल में अंतर्राष्ट्रीय राजनीति और विशेषतः रूस की क्रान्ति ने हम सब को अपनी ओर बहुत कुछ खींचा। यह एक साधारण बात थी कि विलायत की एक छोटी सी दिक्कत की हम सब बड़ी दिक्कत समझ लिया करते थे और इस छोटी दिक्कत के कारण वहां उथल-पुथल हो जाय और हम स्वतन्त्र हो जायँ। वहां का डिफिसेट बजट, वहां के बेकार मजदूरों की समस्याएँ देखकर हमारे क्रान्तिकारी नेता बड़े बड़े परिणाम निकाला करते थे। मुझे सुनकर बड़ी खुशी होती थी कि अँग्रेजी राज का अंत हो रहा है। यह दिल समझाने की बातें कभी कभी हुआ करती थीं और इसमें खूब समय कटता था। समाजवाद की विचार-धारा सन् ३२ में खूब अच्छी तरह मनन की गई और लेनिन, मार्क्स का अध्ययन बड़ी तेजी से इस काल में हुआ। जेल में पं० सुन्दर-लाल जी और मंजरअली सोख्ता साहब के रहने से बड़ी दिलचस्पी रहती थी। गांधीवाद की तसवीर की जो छटा सुन्दर-लाल जी के ओजस्वी भाषण से मिलती उससे हम लोग को बड़ा आनन्द मिलता था। नुक्ता-चीनी भी बड़े हास्यप्रद ढंग से किया करते थे। सन् ३२ में पहले पहल जेल में मुझे मंजर भाई द्वारा ग्रामो-द्योग की बातें बताई गई और जिन्हें सुनकर मुझे बड़ी हँसी आया करती थी। पर आज जब मैं उन बातों को सोचता हूँ तो मुझे उनका अनुगृहीत होना पड़ता है कि ग्रामोद्योग भी कोई विचार-धारा हमारे देश के लिये लाभप्रद हो सकती है। यह सन् ३२ में उन्होंने बताई और इसकी आवश्यकता एक सीमा के अन्दर अवश्य प्रतीत हुई। जेल में एक दूसरे को पहचानने का काम एक बड़ा रोचक काम था। आलू, घी, दूध पर किसी तरह अक्सर लड़ाई हो जाया करती थी। इसे देखकर गृहस्थ जीवन की कठिनाइयों का अनुभव प्रौढ़ावस्था में ही किया जा सकता है। उस वक्त तो इसका मजा ही लिया करते थे। अक्सर साथी लोग बहुत उतरकर काम कर डाला करते थे। पर इसमें भी लोगों को स्वभाव के परिचय के अतिरिक्त आनन्द भी आया करता था। कभी नम्बरदारों से दूध के लिये हाथापाई तो कभी कपड़े के लिये छीना-झपटी बड़ी हास्यप्रद मालूम हुआ करती थी। चिट्ठियों के आने के वक्त की बेचैनी बड़ी मजेदार बात थी। अविवाहित नवयुवक इसका बड़ा आनन्द लिया करते थे।

(अगले अंक में समाप्त)

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने पिछले २५ वर्ष के राष्ट्रीय आन्दोलन के अनेक वर्ष जेल में ही बिताये हैं।

जय हो !

लेखक, साहनलाल द्विवेदी

उस महान जीवन की जय हो !

जो पीता हो विष का प्याला
समझ अनूठी मादक हाला,
जन्म-मरण की भव बाधा से
जिसकी आत्मा मुक्त, अभय हो
उस महान जीवन की जय हो !

जो दीपक पर प्राण होमकर
सोता हो सुख की समाधि पर
जिसके चढ़े हुए प्राणों से
यह वसुमति सुरभित मधुमय हो !
उस महान जीवन की जय हो !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधीवाद क्या है ?

२५ वर्ष के राजनैतिक जीवन की एक उथल-पुथल

लेखक, डाक्टर बा० पट्टाभि सीता रमैया

गांधीवाद क्या है ? राष्ट्र के पिछले २५ वर्ष के जीवन मे गांधीवाद से राजनैतिक जीवन में कैसा क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है, इसे कौन नहीं जानता ? डाक्टर पट्टाभि राष्ट्र के एक तपे हुए त्यागी नेता हैं साथ गांधीवाद के प्रबल समर्थक तथा विचारक हैं। इस लेख में विद्वान् नेता ने गांधीवाद की महत्ता का स्पष्टीकरण बड़े सुंदर रूप में किया है, जो पठनीय तथा सामयिक है।

किसी राष्ट्र के जीवन में २५ साल पलमात्र हैं। फिर भी २५ साल के मंत्रित्व में गांधीजी ने भारत की शक्ल बदल दी है। उन दिनों उन्होंने सत्याग्रह धर्म से काम लिया जिसका प्रारंभ असहयोग के रूप में कलकत्ता में सितम्बर १९२० को किया गया था और फिर जैसे जैसे समय बदलता गया उसकी तहें बदलती गईं—पहले अहिंसात्मक ढंग की रोक (Registana) फिर सरकारी सत्ता का उल्लंघन और अंत में बिलकुल उत्कृष्ट सत्याग्रह। बहुत दिनों की अनुपस्थिति के बाद सन् १९१५ में जब गांधी जी ने भारत में पैर रक्खा तो उन्हें मालूम हुआ कि कांग्रेस की पुरानी प्रतिभाशाली नेतागीरी भारत के दो बड़े लालों—गोखले और मेहता की मृत्यु के साथ समाप्त हो चुकी थी और जब उनके उत्तराधिकारी तिलक की भी मृत्यु सन् १९२० में हो गई तो मध्य के रिक्त स्थान में गांधी जी पहली अगस्त को आत्मिक नेतृत्व के लिए आ पहुँचे। तब से इन २५ सालों में उन्होंने राष्ट्र के तमाम संस्थाओं को अपनी तल्ह के छत्र के नीचे रक्खा है। महाभारत के साधुओं की तरह इन २५ सालों में अपने सारे जीवन के अनुसार उन्होंने सचाई को तराजू के एक पलड़े में और अन्य त्यागों को दूसरे पलड़े में रखकर यह पाया कि पहला पलड़ा दूसरे से सदैव वजनदार है। उनकी अहिंसा जो सचाई धर्म की जुड़वां भाई है उन्हीं के शब्दों में "बहादुरों का गुण है।" उनके लिये हिन्दू-धर्म का तत्व सचाई है जिसकी खोज अहिंसात्मक साधनों से होती है। हिंसा बुजदिली से अच्छी भले ही हो परन्तु उनके लिये अहिंसा हिंसा से सदैव अच्छी है और इस अहिंसा के लिये यदि मतलब हल करना है तो अपने आपको कष्ट देना होता है जो कष्ट-कर्त्ता को स्वयं करना चाहिए। उसमें शुद्धता भी होनी चाहिए। सहिष्णुता की शुद्धता और उसका असर उसके दानत्व के अनुपात के अनुसार होता है, चाहे उसकी सख्त तकलीफ का देना हो, या जाति से बहिष्कृत करना हो, अथवा कुटुम्बी संपत्ति और शान का बरबाद कर देना हो। उसके लिये आत्मदमन की आवश्यकता है जहां बदला लेने की इच्छा न होनी चाहिए और उसे प्रेम तथा सेवा के हजारों रास्तों और रूपों से कार्य करना चाहिए। सुस्ती और इंद्रिय संभोग की तल्लीनता से मनुष्य यह आत्म-दमन नहीं कर सकता और उससे शारीरिक कार्य की शक्ति जाती रहती है। ऐसी फलदायी शारीरिक परिश्रम सरल रूप से कताई में प्राप्त हो सकता है। अतएव वह सिर्फ धर्म ही नहीं बल्कि धार्मिक संस्कार बन जाता है। सचाई और अहिंसा समाज का आधार हो जाते हैं और सत्याग्रह सचाई की पक्की पकड़ है। अतएव सत्याग्रही के दुश्मन नहीं होते और वह हार भी नहीं जानता। इस तरह असहयोग, निष्क्रिय रोक, सरकारी सत्ता का उल्लंघन, सत्याग्रह सचाई की खोज की विभिन्न अहिंसात्मक सीढ़ियां हैं। इस प्रकार असहयोग का अन्त शुद्ध प्रेमयत होता है और उसका सक्रिय रूप गरीबों के प्रेम में खद्दर पहनना है, दलितों के प्रेम में अस्पर्शता है और रोगियों और सिर फिरों के प्रेम के लिए मदिरा निषेध है।

गांधी जीवन राष्ट्रीय पुना संगठन दोतर्फा प्रोग्राम का है। एक तरफ तो राष्ट्र को राष्ट्रीयता के लिए जागृत करके उसे शक्तिशाली बनाना और फिर दुश्मन से समय और मौके का खयाल करके लड़ना। राष्ट्र जागृति की प्राप्ति उन्होंने विद्यार्थियों में उनकी शिक्षा-प्रणाली के विरुद्ध यह समझाकर कि उससे वे साम्राज्य के पावे बनते हैं, वकीलों के दिमागों में कचहरियों की स्ट्रेबाजी और जुआखोरी का प्रकाश डालकर और दासत्वपूर्ण धारा-सभा मेम्बरों में से राजनीतिज्ञों का एक उच्च समुदाय बनाकर सफलता प्राप्त की।

कालेज, कचहरियां और धारा-साभाएँ जो सन् १८५७ के बाद बनाये गये थे साम्राज्य-वाद के स्तंभ थे। उनका नाश गांधी जी ने ६३ वर्ष बाद सन् १९२१ के तितर्फा बाईकाट प्रोग्राम से किया। गांधी जी इस तरह की हिमालय से भी बड़े महान् कार्य के लिये कटिबद्ध हुए जिसमें उन्होंने प्रोफेसरों, वकीलों, कौंसिलरों, मिल-मालिकों, व्यापारियों, सवर्ण हिन्दुओं, शराब के ठेकेदारों, फौज व पुलिस, गवर्नमेंटी नौकरों और खिताबदारों ऐसे हित पालकों को इस पार से उस पार किया है। इस कार्य में वे अकेले रहे। बहुत सी दोस्तियां छूटी मगर वे कभी भी धीमे या हताश नहीं हुए। वे अपनी दिशा अच्छी तरह जानते थे और वे उसके रुख में बराबर अग्रसर होते गये यहां तक कि तमाम औरत मर्द उनके साथ हो लिए और इससे उनकी शक्ति बढ़ गई। उन्हें १०० ऐसे सच्चे और अच्छे आदमी चाहिए थे जो कहते वही उनका अर्थ होता और जो कहते वही करते। वे खुद बेहद विश्वासी पुरुष हैं जो एक बार किसी बात की जानकारी और कार्य में लग जाते तो अपनी तमाम शक्ति—त्याग और सेवा दोनों ही को उसी में लगा देते। मगर वे अपने आदमियों की आत्माओं को भी अपने में डुबा लेते हैं और फिर वह प्रोग्राम बन जाता है जिसमें गलती का नाम भी नहीं। यह है उनका ताकतवर टिकाऊ सहयोग। ७२ करोड़ के विदेशी कपड़े के स्थान में अपने ३५ करोड़ आदमियों को पहनाने के लिये वे मामूली चरखे और लँगोटी से शुरू करते हैं। ४॥ करोड़ हरिजनों की अस्पृश्यता दूर करने के लिये उन्होंने मृत्यु तक व्रत रक्खा क्योंकि परमात्मा ने हम सब को एक ही मानव-सूत्र में बाँधा है, हिन्दू मुस्लिम ऐक्यता पर उन्होंने २१ दिन का व्रत रक्खा। भारतीय कोष के पापी धन को बचाने के लिये उन्होंने १॥ लाख आदमियों को जेल में ठूंस दिया। अपने ५० वर्ष में उन्होंने असहयोग का बीज बोया। जिसका पहला प्रयत्न शासकों की सत्ता उल्लंघन में किया। अपने जीवन के ६० वर्ष में उन्होंने अपनी ११ बातों के लिये लड़ाई लड़ी जिनकी पहली शर्त थी नमक कर का हटाना और आखिरी हथियार लेना और उनका उपयोग करना अपने जीवन के ७०वें साल में उन्होंने भारतवर्ष को अँगरेजी बंधन से मुक्त करने का प्रयत्न किया। जब भी उन्हें अपना भाग्य जरा मंद नजर आया उनके साधनों की वृद्धि हुई और इससे हरेक हार-जीत में तबदीली होती चली गई। "भारत छोड़ो" नारे से उन्होंने राष्ट्र को क्रिप्स की आकस्मिक वापसी की बरबादी से बचाया। वे लगातार स्वराज्य मंदिर को बढ़ाते ही चले जा रहे हैं—मंजिल पर मंजिल बनाते हुए। उन्होंने रियासतों को सूबों के साथ लिया और राजा महाराजाओं को अपनी स्वतंत्रता

शेष पृष्ठ २८ पर देखिए

भारत की महान विभूति तथा गांधीवाद के जनक महात्मा गांधी।

माननीय श्री मोरार जी देसाई एम० एल० ए० गृहमन्त्री तथा अर्थ-मन्त्री बम्बई-सरकार—

देशदूत साप्ताहिक का आजादी आनेके बादका यह पहला दीपावली अंक है। आज देशमें भाई भाईके बिचमें झगडा चल रहा है और सारी हवामें अमनका अभाव दिखता है। मैं आशा रखता हूं कि "देशदूत" अमन कायम करनेके महान कार्यमें अपना हिस्सा देंगे और सच्ची आजादी प्राप्त करनेका नेक रास्ता जनताको दिखाएंगे।

मोरारजी देसाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान की देशी रियासतें

राजाओं को जनता की माँगों के अनुसार लोकप्रिय सरकारें स्थापित करनी ही होंगी

लेखक, श्री चुन्नीलाल शर्मा, एम० ए०

भारत स्वतन्त्र हो गया है, भारतीय संघ की स्थापना हो चुकी है, ऐसी दशा में रियासतों का क्या कर्तव्य है और उन्हें लोकप्रिय सरकारों की स्थापना क्यों करनी चाहिए? साथ ही भारतीय संघ में क्यों शरीक होना चाहिए? विद्वान् लेखक ने देशी राज्यों की राजनीति को व्यापक रूप में विचार किया है, जो पठनीय तथा विचारणीय है।

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने हैदराबाद को भूमिवन में सम्मिलित होने के लिये कहा है

सन १९३५ के संशोधित गवर्नमेंट आफ इंडिया एक्ट के अनुसार रियासत शब्द की परिभाषा बड़ी ही विचित्र है:—

"Indian States means any territory not being part of British India, which His Majesty recognizes as being such a state whether described as a state, an estate, a jagir, or otherwise."

अर्थात् भारतीय रियासतों का मतलब उन भूभागों से है, जो ब्रिटिश भारत का भाग नहीं हैं और जिसे सम्राट् 'स्टेट' 'इस्टेट' अथवा जागीर के रूप में स्वीकार करते हैं।

"मेमोरेन्डा आन दी इंडियन स्टेट्स" नामक पुस्तक के आधार पर भारतवर्ष भर में कुल ५६२ देशी रियासतें हैं। लोक-परिषद् के प्रकाशन में उनकी संख्या ५८४ है। सन् १९४१ की जन-गणना के अनुसार इनकी जन-संख्या ९,३१,८९,२३३ तथा क्षेत्रफल ७,१५,९९४ वर्गमील है। क्षेत्रफल के हिसाब से ये समस्त देश का ४० प्रतिशत तथा जनसंख्या के आंकड़ों के अनुसार २३, २४ फीसदी हैं। रियासतें दो प्रकार की थीं:—(१) सलामीवाली (Salutes States) (२) गैरसलामीवाली (Non salutes States) देश भर में १२० रियासतों को सलामी का अधिकार था। ४४२ रियासतों और जागीरों को सलामी का कोई भी अधिकार नहीं था। ४५४ रियासतें अथवा जागीरें इस प्रकार की हैं कि जिनका क्षेत्रफल १,००० वर्गमील से भी कम है। ४५२ रियासतों की जनसंख्या एक लाख से कम बैठती है। ३७४ की वार्षिक आय एक लाख से कम बताई गई है। हां, केवल १२ रियासतें ही इतनी बड़ी हैं जो क्षेत्रफल में १० हजार वर्गमील और आमदनी में ५० लाख से ऊपर की समझी जाती हैं। ब्रिटिश-भारत कहे जानेवाले भू-खंड की जनसंख्या तथा क्षेत्रफल क्रमशः २९,५०,८७,२२१ और १०,९४,३०० वर्गमील है। यह भाग लगभग ५०६ जिलों में विभाजित है। प्रत्येक प्रान्त का औसत क्षेत्रफल चार हजार वर्गमील तथा जन-संख्या आठ लाख के लगभग बैठती है। देशी रियासतों में से कुछ जागीरें तो इतनी छोटी हैं जिनको राज्य कहने में हँसी और तरस आता है। पंद्रह रियासतें इतनी छोटी हैं कि जिनका क्षेत्रफल पूरा एक वर्गमील भी नहीं है। लगभग २७ रियासतों का क्षेत्रफल पूरा १ वर्गमील बैठता है। आप केवल सूरत जिले को ही लीजिए। वह चौदह इतनी छोटी रियासतें या जागीरें हैं जिनकी वार्षिक आमदनी तीन हजार रुपये से से अधिक भी नहीं जाती। इनमें भी तीन की आय तो इतनी कम है कि वहां पूरे १०० मनुष्य भी नहीं हैं। पांच रियासतों की आमदनी १००) वार्षिक भी नहीं। आश्चर्य की बात है कि २०) वार्षिक आमदनी तथा ३२ मनुष्यों की जनसंख्यावाली एक जायदाद भी सूरत जिले में है जिसको राज्य के नाम से पुकारा जाता है। कुल मिलाकर साठ रियासतें ही इतनी बड़ी हैं जो जनसंख्या, क्षेत्रफल तथा आमदनी के हिसाब से ब्रिटिश भारत के एक जिले के लगभग बराबर होती हैं।

मान्टेग्यू चेम्सफोर्ड रिपोर्ट के आधार पर कुछ रियासतों का संबंध प्रायः प्रांतीय सरकारों से था। बाद में उनमें से अधिकांश गवर्नर जनरल द्वारा ही अनुशासित होने लगीं। किन्तु इनका नियंत्रण प्रायः एजेन्ट के द्वारा ही हुआ करता था। भारत-सरकार का राजनीतिक विभाग (Poitical Department) देश की सम्पूर्ण छोटी और बड़ी रियासतों के शासन के लिये उत्तरदायी था। यह सीधे वाइसराय महोदय की ही अध्यक्षता में कार्य करता था। किन्तु वे रियासतों की विस्तृत और व्यापी समस्याओं के लिये अवकाश न पाते थे। अतएव वास्तविक रूप से सभी विभागों की देख-भाल पोलिटिकल प्रधान मंत्री के ही हाथों में थी। वैसे तो इसके नीचे कार्य करनेवाले और भी अफ़सर थे, किन्तु वाइसराय को तमाम जानकारी अपने इसी सेक्रेटरी के द्वारा प्राप्त होती थी। इनको इतिहास में गवर्नर जनरल का एजंट, पोलिटिकल एजेन्ट तथा रेजीडेंट कहा गया है। गवर्नर जनरल के एजन्ट की अधीनता में अनेक रियासतें थीं। उसका संबंध सीधे वाइसराय ही से होता था। हां, उसके नीचे अनेक

नवाब साहब बहादुर जूनागढ़, भारतीय संघ में आ रहे हैं।

पोलिटिकल सहकारी होते थे। इनके भी मातहत कुछ रियासतें थीं। रेजीडेंड उस राजनीतिक अफसर को कहते थे जो अकेली बड़ी बड़ी रियासतों की शासन-प्रणाली को देखता था।

इन तमाम अफसरों को बहुत व्यापक और अलग अलग अधिकार मिले थे। इनका न तो कहीं खुलासा था, न इसका कभी यत्न ही किया गया। यह रियासत के महत्त्व, नरेश के स्वभाव और राजनीतिक अफसर की इच्छा पर निर्भर रहता था। इतिहास पर विहंगम दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि कभी कभी तो रेजीडेंट बहुत छोटी छोटी बातों में भी हस्तक्षेप करता था। कभी नरेशों से बड़े बड़े घृणित अपराध हो जाने पर और भयंकर कुशासन होने पर भी हस्तक्षेप करने से मना कर देता था। यदि कोई राजा शक्तिशाली नहीं है, तो उसके नित्य-प्रति के कार्यों में पोलिटिकल एजेन्ट टांग अड़ाने लगता था, क्योंकि उसे सदैव साम्राज्य सरकार और भारत-सरकार की नीति और आदेशों का ध्यान रखना पड़ता था। उनकी सत्ता रियासतों में आकार-प्रकार पर भी बहुत कुछ निर्भर करती थी। आमतौर से छोटी रियासतों में इन अधिकारियों को बहुत कुछ व्यापक अधिकार होते थे। पर सबसे आश्चर्य की बात तो यह थी कि कोई भी नहीं जानता था कि ये अधिकार होते क्या हैं? राज्य का सारा काम पूर्ण गुप्तरूप से होता था। जिसके कारण नरेशों पर विभाग का भयंकर आतंक रहता था पर किसी को इस पर यह अर्थ नहीं लगाना चाहिए कि यदि प्रजा-जन पोलिटिकल विभाग के पास उन नरेशों की शिकायत लेकर जावे, तो वह उनकी कुछ सहायता करेगा। वह तो अपनी सुविधानुकूल ही व्यवहार करने के लिये बाध्य था। उसका मुख्य उद्देश्य साम्राज्य को सुरक्षित रखने में था। वह नरेशों को जन-जागृति का भय दिखाता और जनता को सन्धियों तथा सुलहनामों का बहाना बताकर इनकी निरंकुशता को ज्यों का त्यों रखता था। इसी प्रकार अपनी इस दुधारी के बल पर उसने इस अपनी निरंकुशता की रक्षा की। बड़ी रियासतें—हैदराबाद, मैसूर, बड़ौदा, जम्मू तथा काश्मीर और ग्वालियर का सम्बन्ध सीधा तत्कालीन भारत-सरकार से था। वैसे तो भूटान और शिकिम का भी सम्बन्ध इसी प्रकार का था; किन्तु साधारण रियासतों की अपेक्षा इनके सम्बन्ध जरा दूसरी प्रकार थे।

बिलोचिस्तान में गवर्नर जनरल का ऐजेन्ट कलात और लासबेला रियासतों का नियन्त्रण करता था। मध्य-भारत की एजन्सी का ऐजेन्ट इन्दौर में रहता था। उसके अधीन भोपाल, बुन्देलखंड और मालवा की तीन ऐजेन्सियां थीं। इसके मातहत अट्ठाईस बड़ी, जिनके राजाओं तथा नवाबों को सलामी का

शेष पृष्ठ ३३ पर देखिए

माननीय श्री बी० जी० खेर, पूना, ३०-१०-१९४७.
प्रधान मंत्री, बंबइ-सरकार—

इतिहास सिखाता है कि मतभिन्नता पक्षोपक्षता और अविश्वास से कई देश नष्ट हुए और हिंदुस्थान भी इन झगड़ोंके परिणाम स्वरूप विनाश की ओर बढ़ रहा था। अगर हमें हमारा ध्येय हासिल करना हो और हमारे देशकी सरकारी करनी हो तो हमारे कार्योंमें और प्रयत्नोंमें एकता होनी चाहिये। स्वतंत्र भारतकी प्रथम दीपावली के निमित्त मतभेद, अविश्वास, आदिसे भरा हमारा हृदय धोकर, उसमें धैर्य, ऐक्य और उदात्त राष्ट्रवाद का चिराग प्रज्वलित करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपूर्व बलिदान की कथा

मुहम्मदशाह का न्याय

लेखक, श्री वृन्दावनलाल वर्मा बी० ए०, एल्-एल० बी०

मुस्लिम-शासनकाल में ऐसी अनेक नारियाँ हुई हैं, जिन्होंने अपने चरित्र-बल और नैतिक व्यक्तित्व से गौरव की रक्षा करते हुए अपनी बलि चढ़ा दी है। हिन्दी के सुप्रसिद्ध औपन्यासिक सम्राट् बाबू वृन्दावनलाल वर्मा के इस कहानी में एक ऐतिहासिक उज्ज्वल चरित्र का चित्रण किया है, जिसका हृदय पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। कहानी अत्यन्त सुन्दर और पठनीय है।

रामू ने नाम माता-पिता ने दिया था। इसी नाम से वह मुगल-सम्राट् मुहम्मदशाह के दफ़्तर में नौकर हुआ। बाप दूकानदारी करता था। बेटा फारसी पढ़कर मुंशी हो गया।

नौकर होने के कुछ समय पीछे कबाब, कोफ्ता और सुरा-सुन्दरी के आकर्षण ने रामजी को खुदाबख्श बना दिया।

रामजी या खुदाबख्श की हिन्दू-पत्नी मुसलमान नहीं हुई और न उसकी लड़की। खुदाबख्श ने तीन चार साल अनवरत परिश्रम किया—अर्थात जितना समय वह दफ़्तर और सुरा-सुन्दरी से बचाकर दे सकता था उतने समय में—नाना प्रकार के उपाय किए परन्तु न तो पत्नी ने इस्लाम कबूल किया और न लड़की ने। लड़की का नाम तारा था। लड़की को मुहावना फारसी नाम अख्तर खातून दिए जाने का चमत्कारपूर्ण (!) प्रलोभन भी दिया गया, पर तारा ने अख्तर खातून बनने से बिलकुल इन्कार कर दिया।

खुदाबख्श ने प्रधान काजी मुस्तफ़ीदखाँ के सामने लिखी हुई फरियाद पेश की।

'.....जब मैंने अपना मजहब बदला तब मेरी लड़की तारा नाबालिग थी। इसलिए मेरे मुसलमान होते ही वह भी इस्लामी कानून के अनुसार मुसलमान हो गई। उसको इस मामले में हां या ना करने का कोई अधिकार ही न था और न है।'

काजी ने लड़की को तलब किया। लड़की सकपकाई हुई काजी के सामने आई; परन्तु सामने आते ही उसकी सकपकाहट समाप्त हो गई। उसने देखा काजी एक लम्बी दाढ़ीवाला आदमी ही तो है।

लड़की से कहा गया 'तुम्हारे बाप ने अपना धर्म बदल दिया इसलिए तुम्हारा भी धर्म बदल गया।'

लड़की जवान थी और सुन्दर थी। उसको प्रलोभन दिया गया, 'अख्तर खातून तुम्हारा नाम हो गया है और तुम्हारी शादी किसी रूप-सरूपवाले दौलतमन्द सरदार के साथ हो जायगी।'

लड़की की आंख में आग-सी जल उठी। बोली 'मैं क्या कोई भेड़-बकरी हूँ जिसे बाप चाहे जहां काट-कूटकर फेंक दे, या खा जाय?'

काजी यों ही माननेवाला न था। शरही-कानून स्पष्ट था।

काजी ने कहा, 'तुम रजस्वला कब हुई?'

लड़की ने लाज-संकोच को एक किनारे रखकर उत्तर दिया, 'बाप के धर्म-परिवर्तन के तीन महीन बाद।'

लड़की चक गई। वह शरही-कानून को नहीं जानती थी। यदि लड़की पिता के धर्म-परिवर्तन के समय रजस्वला नहीं हुई थी तो इस्लाम-कानून के अनुसार वह भी मुसलमान हो गई!

काजी ने फैसला दिया, 'लड़की मुसलमान है। उसे अपने को हिन्दू कहने का कोई अख्तियार नहीं।'

लड़की रो पड़ी। उसके रोने का कोई प्रभाव दिल्ली के न्यायाधीश पर नहीं हुआ और अन्य काजियों पर जो कानून की छानबीन और प्रधान काजी की महायता के लिए वह इकट्ठे हुए थे। लड़की ने आंसुओं को जलाकर भरीए हुए कंठ से अपना निर्णय सुनाया 'मैं हिन्दू हूँ और हिन्दू ही रहूँगी।'

इस पर लड़की को कैदखाने में भेज दिया गया।

(२)

दिल्ली का एक बाजार उर्दू-बाजार कहलाता था। तारा के नातेदार उर्दू-बाजार में दूकानदारी करते थे। वहीं उसकी मा रहती थी। मां के क्रन्दन पर उर्दू-बाजार के दूकानदारों के कलेजे कोयला होने लगे। उन्होंने दूकानें बन्द कर दीं और हाहाकार करते हुए बादशाह मुहम्मदशाह के पास पहुँचे। यह हाहाकार और पुकार बादशाह के 'झरोखे' के नीचे केन्द्रित हुई। बादशाह ने झरोखे पर 'दर्शन' दिए। फरियाद को सुनकर उसने जांच के लिए मामले को मीर जुमला, अपने 'सदरुसदर' के सुपुर्द किया। सदरुसदर ने महल के भीतर ही जांच की। मीरजुमला ने राय दी कि रजस्वला होना ही बालिग होने का प्रमाण नहीं है और इस्लाम का कानून कहता है कि नाबालिग सन्तान ही पिता के मुसलमान होने पर अपने आप मुसलमान हो सकती है। इस पर काजी और मुफ़्ती बिगड़ गये। बड़े गरम हुए। शरह के एक-एक शब्द पर बहस हुई। बादशाह ने अन्तिम निर्णय देने तक के लिए तारा को एक हिन्दू की अभिभावकता में रख दिया।

अब खड़ा हुआ पूरा बवाल!

दूसरे दिन शुक्रवार था—जुमें की नमाज का दिन। पचास-साठ हजार मुसलमान जहांनुमा मस्जिद में इकट्ठे हो गए। उन्होंने इतना हो-हल्ला और हाय-तोबा मचाया कि बादशाह का खुतबा ही न पढ़ा जा सका—उन्होंने पढ़ने ही नहीं दिया। विपद के बादल उठते देखकर हिन्दुओं ने दूकानें बन्द कर दीं—हड़ताल कर दी, जो निस्सहायों, दलितों और त्रस्तों का एकमात्र हथियार रहा है। परन्तु दो-तीन अभागे हिन्दू उस रौरे के समय मस्जिद के सामने से निकल पड़े। भीड़ ने तुरन्त

हिन्दी के औपन्यासिक सम्राट् बाबू वृन्दावनलाल वर्मा

उनको पकड़कर, खतना करके, मुसलमान बना डाला—गनीमत हुई कि उनके सिर धड़ पर बने रहने दिये! जब मुहम्मदशाह ने इस विकट भभभड़ का हाल सुना तब उसने दूसरा निर्णय दिया—

'लड़की को हिन्दू की हिफाजत से हटाकर कैदखाने में भेज दो।'

लड़की कैदखाने में भेज दी गई।

(३)

गर्मियों के दिन थे। सन् १७२५। परन्तु सन् सवत या गर्मी-सर्दी का चक्र निरन्तर है। मनुष्य का हृदय बदल जाय तो गर्मी-सर्दी और सन सवत के पैमाने कुछ मूल्य रखते हैं; अन्यथा जैसा कल था वैसा आज।

तारा कैदखाने म एक टाट पर बैठी हुई थी। उसको मालूम था कि उद्धार की घड़ी आनेवाली है।

कैदखाने में जल्लाद आया। उसके हाथ में तेज खंजर था। लड़की ने पहचान लिया। उठकर खड़ी हो गई।

'क्या है?' लड़की ने दबे गले से व्यर्थ प्रश्न किया।

जल्लाद ने कहा, 'तैयार हो जाओ। बादशाह का हुकुम है। न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी।'

'मैंने कोई अपराध नहीं किया है।'

'तुम्हीं तो सारे फसाद की जड़ हो। तुम अगर जिन्दा रहीं तो सारी दिल्ली खाक में मिल जायगी।'

'बादशाह का यही न्याय है?'

'बिलकुल यही। हुकुम मेरी जेब में है। सुनाऊं?'

'मुझको नहीं सुनना है। परन्तु मैं जल्लाद के हाथ से नहीं मरना चाहती।'

'यह लो! तुमको मारने के लिए शाहंशाह या शाहजादा यहां आवेंगे!!'

लड़की ने प्रार्थना की, 'मैं हिन्दू-स्त्री हूँ। मरना जानती हूँ। तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ। अपना खञ्जर मुझको दे दो। अपने हाथ से छाती को छेद लूंगी।'

जल्लाद हंसा।

बोला, 'मुझको इतना बड़ा बेवकूफ समझ लिया है तुमने! खञ्जर तुम्हारे हाथ में दे दूं। और मैं निहत्था हो जाऊँ, जिसमें तुम जल्लाद बन जाओ और मेरी छाती में खञ्जर समा जाय!! हिश!!!'

लड़की ने कहा, 'हूँ!' और उसने इतनी जोर से उछलकर कैदखाने की पथरीली दीवार से अपना सिर टकराया कि सिर फट गया। वह गिर पड़ी।

जल्लाद ने नाड़ी देखी। तारा समाप्त हो गई थी।

लड़की मुसलमानी रीत-रिवाज के अनुसार दफना दी गई।

मुहम्मदशाह के न्याय ने तख्ततांऊस को बरकत दी!

स्वदेश

माननीय पंडित श्रीकृष्णदत्त पालीवाल एम० एल० ए०, सूचना तथा अर्थ-मंत्री, संयुक्तप्रांतीय सरकार—

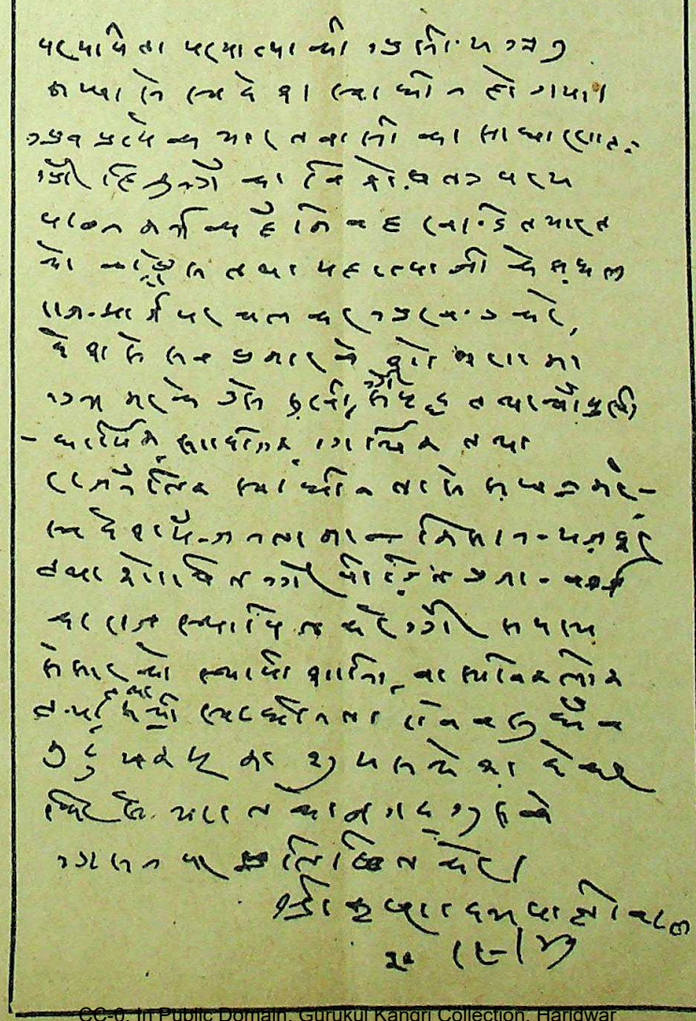

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक संस्मरण

अजेय सरदार वल्लभभाई

स्वतंत्र भारत के एक सुदृढ़ लोह-पुरुष

लेखक, प्रिंसिपल श्रीमन्नारायण अग्रवाल, एम० ए०

सरदार वल्लभभाई पटेल स्वतन्त्र भारत के एक अजेय सेनापति और लौह-पुरुष हैं। आपका प्रबल और सुदृढ़ व्यक्तित्व स्वतन्त्र भारत को शक्ति और साहस प्रदान करता है। प्रिंसिपल अग्रवाल ने इस संस्मरण में सरदार वल्लभभाई को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके व्यक्तित्व का चित्रण किया है, जो पठनीय तथा सामयिक है।

सन् १९३० ई० के जुलाई का महीना रहा होगा। असहयोग आन्दोलन चल रहा था। उस समय मैं प्रयाग-विश्वविद्यालय का विद्यार्थी था। 'हिन्दू होस्टल' के 'स्टूडेन्ट यूनियन' ने विद्यार्थियों के बीच देश की तत्कालीन परिस्थिति पर व्याख्यान देने के लिए लगभग आध दर्जन नेताओं को आमन्त्रित किया था। श्री गोविन्दवल्लभ पन्त, आचार्य कृपलानी और बाबू श्री श्रीप्रकाश के पश्चात् सरदार वल्लभभाई पटेल बोलने के लिए उठे। धीमी आवाज में बोले—'मैं किसान हूँ। भाषण-कला-चातुर्य्य में सिद्धहस्त नहीं। आप हमारे भाषण सुनते हैं। तत्पश्चात् उनकी सफलता अथवा असफलता पर मजे से नम्बर देते हैं। और फिर वह गरज उठे—'आप हमें यहां भाषण देने के लिए बुलाते हैं, जो केवल एक खेल होता है। देश में शोले भड़क रहे हैं और आपका कार्य भाषण-प्रतियोगिताओं में हमारा समय नष्ट करना है। बड़े शर्म की बात है। प्रयाग में गंगा और यमना का पवित्र संगम है। आप सबको वहां जाकर डूब मरना चाहिए।' निस्तब्धता छाई हुई थी। हम सब शर्म से सिर झुकाए हुए बैठे थे। सरदार के भाषण में तीन मिनट से अधिक समय नहीं लगा; परन्तु उससे हम लोगों का अन्तर तक कांप उठा था।

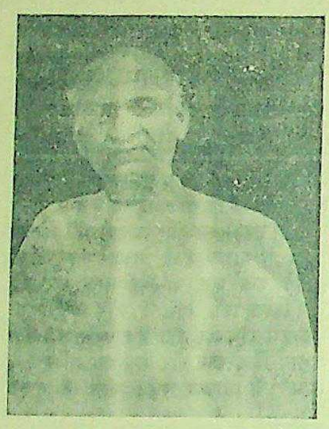

माननीय सरदार वल्लभभाई पटेल

मेरे लिए यह सरदार का प्रथम दर्शन था। पिछले आठ वर्ष के इस वर्धा-प्रवास में मुझे सरदार के सम्पर्क में बहुत निकट से आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं उन्हें जितना ही अधिक देखता हूँ उतना ही अधिक यह अनुभव करता हूँ कि भारत में राष्ट्रीय सेना के प्रधान सेनानायक वे ही हैं। वे निर्भीक सेनानी, अजेय नेता और समयानुसार राजनीतिज्ञ हैं।

सरदार पटेल गांधी जी के दाहिने हाथ हैं। यह उक्ति उनके सम्बन्ध में सब तरह से ठीक है। वे आश्चर्यजनक रूप से सफल 'आर्गनाइजर' हैं। उनकी सजग बौद्धिक शक्ति का सम्बन्ध वस्तुतः देहात से है; वे भारतीय श्रमजीवी जनता के राष्ट्रीय जीवन का उसकी सम्पूर्ण संकुलता के साथ प्रतिनिधित्व करते हैं।

मैंने सरदार को हड़बड़ाते हुए कभी नहीं देखा। उन्हें कठिनतम विषमताओं के सम्मुख भी कभी परेशानी और घबराहट नहीं हुई। वे सदैव बेफिक्र और शान्त रहते हैं; परन्तु उनमें अडिग साहस और दुर्दम्य इच्छाशक्ति है। सुस्निग्ध जीवन-प्रवाह में मुस्कान और हास आसान है; परन्तु जब जीवन का प्रत्येक क्षण-कण प्रतिकूल हो, उस समय भी ये महान सरदार केवल मुस्काने की ही नहीं बल्कि खुलकर हँसने की भी क्षमता रखते हैं। ये लौह सकल्प तथा अमंद आशावाद के प्रतीक हैं। ये अन्तरतम से निर्भीक हैं।

सरदार कहते कम हैं। वे देर तक बातचीत कभी नहीं करते। परन्तु जब वे बोलते हैं तब जितना बोलते हैं वह सब अर्थपूर्ण होता है। अधिकतर तो वे जितना कहते हैं उनका तात्पर्य उससे कहीं अधिक होता है। उनका आदर्श 'कथनी नहीं करनी' है। रिहाई से अब तक जनता के सम्मुख वे केवल कुछ ही अवसरों पर बोले हैं; परन्तु उनके सब भाषणों ने अपना एक स्थान बना लिया है। उन्होंने जनता और सरकार दोनों पर अमिट प्रभाव डाला है। ९ अगस्त पर दिया हुआ वह भाषण जिसकी भूमिका महेन्द्र चौधरी के बलिदान ने प्रस्तुत की थी, वास्तव में एक उच्चकोटि का सारगर्भित भाषण था। इस पावक-प्रचण्ड व्याख्यान ने कितने ही अन्य बन्दियों को फांसी के तख्ते से बचाया है। ब्रिटिश सरकार की दृष्टि में सरदार भारतवर्ष के नेताओं में सबसे अधिक खतरनाक हैं। वे कहते हैं—'वह गरजता नहीं बरसता है।' वास्तव में वे भयानक हैं; वे अजेय हैं।

सरदार कड़े अनुशासनवाले व्यक्ति हैं। उन्हें किसी भी प्रकार का खुराफात साह्य नहीं। यदि वे पार्लियामेंटरी बोर्ड के चेयरमैन न होते, तो कांग्रेस के कितने ही मिनिस्टर पथ-भ्रष्ट हो गये होते। सरदार का निर्णय कितना ठोस होता है, इसके प्रमाण के लिए नरीमैन और खरे के उदाहरण पर्याप्त हैं। कह यों सकते हैं कि उनकी पैनी दृष्टि सीधी अन्तर तक बेध देनेवाली होती है। वे किसी मनुष्य के अन्दर घुसकर उसके मस्तिष्क और हृदय के क्रिया-कलाप का निर्णय कर लेते हैं। उनका एकान्त उद्देश्य और केवल आकांक्षा भारतवर्ष को स्वतन्त्र देखना है। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे अहर्निशि कार्य-रत रहते हैं। यदि उनमें रूक्षता है, यदि उनमें कठोरता है तो वह केवल इसीलिए है कि वे मातृभूमि की अपहृत स्वतन्त्रता को उन विदेशियों के चंगुल से छीनने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ हैं जो इच्छापूर्वक उसे हम देने को प्रस्तुत नहीं और जो खब चालाक और मक्कार हैं।

वल्लभभाई पटेल कदाचित् सबसे अधिक गलत समझे गये नेता हैं। बहुत से कांग्रेसी भाइयों की धारणा है कि सरदार बड़ी ही तानाशाही प्रकृति के हैं। वे सदैव अपनी ही बात ऊपर रखने के इच्छुक हैं। परन्तु कदाचित वे उनके मन और मस्तिष्क के अमूल्य रत्नों—स्वर्णिम विभूतियों—से सर्वथा अपरिचित हैं। एक बार सरदार

शेष पृष्ठ ३४ पर देखिए

सफाई, तन्दुरस्ती और खूबसूरती के लिये

गोदरेज चाबी छाप

गोदरेज

रॉयलेट [नहानेके] साबुन

गोदरेज नं० १ गोदरेज सन्डल गोदरेज लिमडा गोदरेज खस
साथ साथ गोदरेज नं० २ वतनी वतनी छोटी (टिकिया) टर्कीश बाथ

शरीर साफ रखने से आप तन्दुरुस्त और सतेज बनते हैं। तन्दुरुस्त और निर्मल वदन पर ही चिरकाल खूबसूरती निर्भर रहती है। गोदरेज टॉयलेट (नहाने के) साबुन में फायदेमन्द वनस्पति तैल और दूसरी खुशबूदार चीजें इनका सुन्दर मिलाप होने के कारण उनकी खुशबू से फुलवारियाँ और सुगन्धी वनश्री, इनकी बार बार याद आती है। इन साबुनों के उत्पादन से सफाई, जोश और चमड़े की स्वाभाविक चिरकांति इनका लाभ हमें होता है।

गोदरेज कंपनी में शेविङ्ग (दाढ़ी बनाने के) साबुन (स्टिक और 'राऊण्ड') भी तैयार होते हैं।

गोदरेज सोप्स, लि०—बम्बई ११

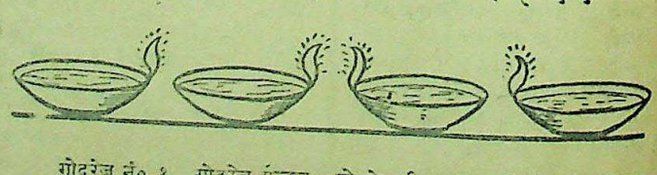

गोदरेज नं० १ गोदरेज सन्डल गोदरेज लिमडा गोदरेज खस
साथ साथ गोदरेज नं० २ वतनी वतनी (छोटी टिकियां) टर्कीश बाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाटक

नमस्कार की बात

लेखक, डाक्टर रामकुमार वर्मा, एम० ए०, पी० एच० डी०

कलाकार होना और कला की उपासना सरल नहीं है, किन्तु धनपति कलाकार तथा उसकी कला-साधना को मूल्यांकन नहीं कर पाते; वरन् कला के बहाने उनके उस भोग की ओर प्रवृत्त होते हैं। सुप्रसिद्ध एकांकी नाटककार डाक्टर वर्मा ने इस एकांकी में इसी भावना से ओत-प्रोत वातावरण का बड़ी सफलतापूर्वक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है, जिसका हृदय पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। एकांकी अत्यन्त सुन्दर और पठनीय है।

पात्र-परिचय :—

सेठ चैनसुखदास—चित्रपट के निर्माण में लगे हुए धन-संपन्न व्यवसायी।

मधुलता—एक अभिनेत्री।

राजीव—एक अभिनेता।

स्थान—बम्बई-स्थित किसी स्टूडियो के समीप का भवन।

समय—७ बजे संध्या।

एक सजा हुआ कमरा जिसमें प्रकाश वायु की यथेष्ट गति है। दीवारों पर बर्मा-शैली गांधी तथा अभिनेता एवं अभिनेत्री के चित्र सजे हुए हैं। फर्श पर अच्छा कारपेट तथा ऊनी नमदे बिछे हुए हैं। बीच में सोफा-सेट सजा हुआ है जिसकी बनावट अत्यन्त आधुनिक ढंग की है और जो पालिश से चमक रहा है। सेट के बीच में एक गोल टीपाय है जिस पर अर्धनग्न स्त्री की संगमरमर की बनी हुई एक छोटी-सी मूर्ति है। दरवाजों पर हल्के रंग के जालीदार परदे लगे हुए हैं। सारे कमरे में एक प्रातःकालीन पवित्रता है।

कुछ हटकर कोने में एक अलमारी है जिसमें कला पर लिखी हुई सुनहली जिल्दों की मोटी-मोटी पुस्तकें हैं। सामने मेण्टलपीस है, उसके नीचे अँगरेजी ढंग की लोहे के छड़ों से सुसज्जित एक अँगीठी है जिसके दोनों ओर एक-एक आरामकुर्सी पड़ी हुई है। स्टेज के बायें ओर एक खिड़की है जो रेक्टेंगुलर है जिसमें आक्टागानल शीशे लगे हुए हैं। खिड़की से वायु का झोंका, बटन दबाने पर एनक्लोजिंग केस से निकलनेवाले गुड्डे की तरह कमरे में आ जाता है।

कमरे के सामनेवाली दीवाल पर मोटे और कलात्मक अक्षरों में उत्कीर्ण है: 'संसार ही रंगमंच है'। मेण्टलपीस पर सेठ चैनसुखदास और दो तीन अभिनेत्रियों के फोटो हैं। दाहने-बायें कोने पर छोटी-छोटी तिपाइयों पर चीनी मिट्टी के दो सफेद हाथी रखे हुए हैं।

सितम्बर के महीने की शाम है। परदा उठने पर सेठ चैनसुखदास टहलते हुए दीख पड़ते हैं। वे ५० वर्ष के भरे हुए बदन के आदमी हैं। रेशमी कुरते के ऊपर नीले रंग की जवाहर वास्कट है। मलमल की धोती और पंप शू। बाल आधे से अधिक सफेद हो गये हैं जो ढंग से सँवारे हुए हैं। पाकेट से घड़ी की चेन लटक रही है। पान खाये हुए हैं। रह-रहकर वे एक छोटी-सी डिब्बी से नस्य सूंघ लेते हैं।

उनके सामने काउच पर मधुलता बैठी हुई है। १८ वर्षीया युवती है। भाव-भंगिमा में वह सुन्दरी कही जा सकती है। हल्के हरे रंग की रेशमी साड़ी है और पीले रंग का ब्लाउज। बालों में फूल गुथे हुए हैं। माथे में कुंकुम-बिन्दु है। भौंहें काली रेखा से सुडौल हैं। गले में हलकी-सी सोने की चेन है और हाथ में पतली रेशमी चूड़ियां। वह राजस्थानी चप्पलें पहने हुए है।

चैन०—(टहलते हुए) तो आज मैं तुमसे बहुत जरूरी बातें करना चाहता हूँ। (चुटकी में लेकर नस्य सूंघते हैं।)

मधु०—(मुस्कुरा कर) कीजिए।

चैन०—(रुमाल से नाक झाड़ते हुए) मिस मधुलता! आप शायद नहीं जानतीं कि मैं चित्रपट के व्यवसाय में क्यों आया? इसलिए नहीं कि मैं इस लाइन में रुपयों से अपनी तिजोरियां भर लूं। वैसा तो मैं शेयर मार्केट में भी कर सकता हूँ और किया भी है; सेठ चैनसुखदास का न्याय कौन नहीं जानता! लेकिन फिल्म-लाइन में आने का मेरा खास मतलब यही था कि मैं अपने देश की कला को अजन्ता और एलोरा की गुफाओं से निकालकर नगर-नगर में फैला दूं। मैं देश के प्राचीन गौरव को एक बार फिर से जगाना चाहता हूँ। संसार देखे कि हमारे देश के कलाकारों ने कला को कितनी गहराई से परखा है। आप समझ रही हैं मिस मधुलता?

मधु०—जी, आप कहते चलिए।

चैन०—इसीलिए मैंने महात्मा बुद्ध का चित्र बनाया, हर्षवर्धन का चरित्र उपस्थित किया, चाणक्य की राजनीति चित्रित की, अब राज्यश्री का चित्र तैयार कर रहा हूँ; जिसके लिए मैंने आपको विशेष रूप से पसन्द किया है।

मधु०—जी।

चैन०—मालूम होता है कि आप मेरी बातें ध्यान से नहीं सुन रही हैं। (नस्य सूंघते हैं।)

मधु०—मैं तो बहुत ध्यान देकर सुन रही हूँ। लेकिन इन बातों को तो मैं अनेक बार सुन चुकी हूँ।

चैन०—आप क्या, और लोग भी सुन चुके होंगे; लेकिन हमारे देश के लोग सिर्फ सुनना जानते हैं, सुनकर काम करना नहीं जानते। मैं तो कहते-कहते थक गया हूँ लेकिन लोग सुनते-सुनते नहीं थके।

मधु०—आप किसी के मन की क्या जानें।

चैन०—(मुस्कुरा कर) यही जानने के लिए तो मैं अपना सारा काम छोड़कर यहां आया हूँ। मैं जानना चाहता हूँ कि आप क्या समझती हैं। मेरा यह ख्याल आपको पसन्द है?

मधु०—मैंने कभी अपनी नापसन्दी तो जाहिर नहीं की।

चैन०—ओहो, नापसन्दी जाहिर न करना एक बात है और पसन्दी जाहिर करना दूसरी बात! मेरी तो अभिलाषा थी कि आप मेरे इस प्रस्ताव पर प्रसन्नता से झूम उठतीं कि मैं अपनी समस्त सम्पत्ति देश के प्राचीन गौरव को सजीव करने में समर्पित करने जा रहा हूँ और आपको हीरोइन का पार्ट देने जा रहा हूँ।

मधु०—यह आपकी कृपा है।

चैन०—यह मेरी कृपा नहीं। आप समझिये मिस मधुलता, यह आपकी सुन्दरता और कला की परीक्षा है। आपको यह दिखलाना होगा कि आपके अभिनय में प्राचीन सभ्यता दीपावली की भांति जगमगा रही है। आपकी मुस्कान में देश का मनुष्य हँस रहा है और आपके आंसू में देश की नारी रो रही है। आप जिस ओर देखती हैं उस ओर सुख और शान्ति के फूल खिल उठते हैं। इस गम्भीर जिम्मेदारी को समझती हैं?

मधु०—यह गम्भीर जिम्मेदारी प्राचीन काल के मनुष्यों ने ही तो संभाली थी। मैं भी संभाल सकूंगी। यह कोई असम्भव कार्य तो नहीं है!

चैन०—मैं यह सुनकर प्रसन्न हूँ। आपसे मुझे ऐसी ही आशा है। इसीलिए तो मैंने आपको राज्यश्री के पार्ट के लिए चुना है। बस, मैं यही कहना चाहता था कि आप अपनी जिम्मेदारी को समझें। बस मैं अब चलूं (नस्य फिर लेते हैं) मैंने आपका बहुत समय लिया। (चलने को उद्यत होते हैं।)

मधु०—मैं आपको नमस्कार करती हूँ। (दोनों हाथ जोड़ती है।)

चैन०—नमस्कार (दो कदम चलकर फिर लौटते हैं।) लेकिन एक बात मुझे और कहना था। आप मुझसे अधिक शिष्टाचार न करें? जी?

मधु०—शिष्टाचार? यानी?

चैन०—शिष्टाचार.....शिष्टाचार यानी ऊपरी दिखावे का व्यवहार!

मधु०—मैं ऊपरी दिखावे का व्यवहार कब करती हूँ?

चैन०—यानी आप नहीं करतीं.. लेकिन यह करती हैं न कि—यानी यहीं उठना-बैठना।

मधु०—उठना, बैठना?

चैन०—(हिचकिचाकर) यानी यहीं—मेरे आने पर उठना बैठना...

मधु०—तो अपने से उम्र में बड़ों का आदर करना.....

चैन०—तो मैं उम्र में इतना बड़ा कहां हूँ? यही कुछ बड़ा हूँ! और बाल तो आजकल बहुत झूठ बोलते हैं। इस पर न जाइये। उस छोटे राजीव को ही देखिए न! उसके भी दो-चार बाल सफेद हो गये हैं। अभी कल का लड़का!

मधु०—इस सम्बन्ध में मैं क्या कह सकती हूँ!

चैन०—तो आप कुछ न कहें। यही

दीपों की रात निखर आई!

लेखिका, श्रीमती सुमित्राकुमारी सिनहा

वसुधा के अँधियारे आँगन में अमरावती उतर आई!
लघु रज-दीपों से स्नेह भरे
नयनों की ज्योति पिलाती सी,
श्यामा के नील-वसन में तारक-
मोती पिरो सजाती सी,
तम पर प्रकाश की विजय-कामना मन मन आज लहर आई!
जगती के प्राणों में उमड़ी,
है आज स्नेह की धार नई,
आलोक-तरी चमचम करती
घन तम-कूलों के पार गई,
मेघों से घिरी अमावस में दीपों की तड़ित बिहर आई!
आलोक-तिमिर को बांध रहा,
छाया-प्रकाश से पूर्ण निशा,
जगमग जगमग हो रही आज
है अधियारी की दिशा-दिशा,
जड़ता को चेतन बना ज्योति की मधु-ऋतु एक सुघर आई,
महलों से लेकर कुटियों तक,
आलोक लालसायें फूलीं,
कण कण ने ज्योति-स्नान किया
अणु अणु में स्वप्न-परी झूलीं,
पूनम का प्यार खिला तमसा की काली घटा बिखर आई।

संदेश

हिन्दी के सुप्रसिद्ध महारथी तथा हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति श्री वियोगी हरि—

'देशदूत' ने हिन्दी-पत्रों में एक प्रतिष्ठा का स्थान बना लिया है। 'देशदूत' के कंधों पर बहुत बड़ा दायित्व है। हिन्दी की तथा भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा की स्थापना, प्रमाणिकता को अपने जीवन में देना, निष्पक्ष रीति से लोक-कल्याण की भावना से 'यथार्थ' का दिग्दर्शन कराना हिन्दी-पत्रों पर ही निर्भर है। हमें आशा है कि 'देशदूत' पूर्ववत् अपनी मर्यादा की रक्षा करते हुए राष्ट्र-भाषा हिन्दी तथा राष्ट्र की सेवा करने में सफलता प्राप्त करेगा, यही मेरी कामना है।

वियोगी हरि
३०.११.४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो मैं चाहता हूँ कि आप इस सम्बन्ध में कुछ न कहें—कुछ न सोचें।

मधु०—मुझे सोचने का अवकाश ही नहीं है।

चैन०—ओहो! मुझे कितनी प्रसन्नता है कि आपने अपनी गम्भीर जिम्मेदारी में अपने को इतना अधिक लीन कर लिया है कि आपको और कुछ सोचने का अवकाश ही नहीं है। इस सम्बन्ध में मुझे एक कहानी याद आ गई!

मधु०—वह भी कह डालिए—

चैन०—(उत्साह से) हाँ बसरा में एक स्त्री थी। उसका नाम राबआ था। उसने एक बार कहा—रसूल को मैंने एक बार सपने में देखा। रसूल ने पूछा—ऐ राबआ, तू मुझसे आत्मीयता रखती है? राबआ ने जवाब दिया—ऐ अल्लाह के रसूल! कौन है जो तुमसे मैत्री नहीं रखता; लेकिन ईश्वर के प्रेम में मैं इतनी लीन हो गई हूँ कि दूसरों के लिए मेरे मन में मित्रता या शत्रुता का स्थान ही नहीं रह गया।' उसी तरह आप हैं। (नस्य लेते हैं।)

मधु०—अच्छी कहानी है।

चैन०—ठीक है न? इसलिए राजीव से आत्मीयता का सवाल ही नहीं उठता। उससे न उसके बालों में। और मैं तो ऐसा हूँ कि मैं कलाकारों का बड़ा आदर करता हूँ। आप कलाकार हैं तो मैं आपकी कला की पूजा करता हूँ आपकी पूजा करता हूँ। आपकी सिद्धि ही मेरी साधना है।

मधु०—यह आपकी महानता है।

चैन०—मेरी महानता क्या है मधुलता! लेकिन मैं इसमें विश्वास रखता हूँ कि कलाकारों को जीवन की समस्त सुविधाएँ देनी चाहिए और यह तभी सम्भव हो सकता है जब उनसे मैं खुद आत्मीयता का सम्बन्ध रखूँ। यानी जब उन्हें अपना लिया जाय (हिचकते हुए) यानी आप मेरी बात समझती हैं न मिस मधुलता?

मधु०—जी! उनसे आत्मीयता का सम्बन्ध रखा जाय यानी उन्हें अपना लिया जाय! यह बात मैं नहीं समझी!

चैन०—इसमें कौन-सी उलझन है। (नस्य लेते हैं।) आत्मीयता का सम्बन्ध तभी हो सकता है जब उन्हें अपना लिया जाय। यानी उन्हें वही सुविधाएँ देनी चाहिए जो.....।

मधु०—कैसी सुविधाएँ?

चैन०—(हँसकर, नस्य की डिब्बी मेंण्टलपीस पर रखते हुए और गद्गद होकर हाथ मलते हुए) मालूम होता है आपको कलाकारों के जीवन से अधिक परिचय नहीं है। कोई बात नहीं, धीरे-धीरे हो जायगा। मैं यह जानना चाहता हूँ कि आप आत्मीयता के सिद्धान्त को नहीं समझीं या मेरे व्यक्तिगत दृष्टिकोण को?

मधु०—दोनों को।

चैन०—(लज्जित होकर) कोई बात नहीं। ये बातें तो धीरे ही धीरे समझ में आती हैं। अब आपके लिए मैंने अपने राज-निवास के सामने का ही बँगला निश्चित कर दिया है। धीरे-धीरे आप कलाकारों के आदर्श को समझ जायेंगी। अच्छा, अब मैं जाना चाहूँगा? (चलते हैं लेकिन फिर रुककर) हाँ, एक बात और है। मैं यह आत्मीयता का सम्बन्ध अपने ही सम्बन्ध में कह रहा हूँ, क्योंकि मैं ही आपकी कला के साधन जुटा सकता हूँ। जिससे आप देश-विदेश में आदर और सम्मान पा सकती हैं। कुछ दिनों में आप करुणा का अभिनय करनेवाली सबसे बड़ी अभिनेत्री हो सकती हैं। शकुन्तला का अभिनय कर सकती हैं, दमयन्ती का—राज्यश्री का। ऐसे आदमियों की आत्मीयता से क्या लाभ? जो आपको अपने कला के मार्ग से दूर कर देते हैं।

मधु०—ऐसे कौन से आदमी हैं?

चैन०—(सोचते हुए) अब मैं ही ऐसे नाम गिनाऊँ? (सहसा) जैसे राजीव को ही लीजिए। कल का लड़का जो अभी इंटरमीडिएट कालेज से लौटा है। बिलकुल सीधा-सादा। वह तो कहो कि मेरे मित्र का लड़का है और देखने में सुन्दर है—यों ही थोड़ा सा। मैंने मित्रता के लिहाज से उसे पार्ट दे रक्खा है। पार्ट क्या दे रक्खा है एक चांस दिया है। अगर कुछ काम कर गया और मेरा फिल्म चौपट नहीं हुआ तो ठीक है, नहीं तो ऐसे सौ राजीव आवेंगे। ऐसे कल के छोकरों से आत्मीयता बढ़ाने से आपकी कला का क्या विकास होगा! इसीलिए मैंने कहा कि ऐसे आदमियों से आप दूर ही रहें। और.....

मधु०—देखिए शायद आपको देर हो रही है!

चैन०—देर? मुझे देर क्या होगी! मैं किसी का नौकर तो हूँ नहीं। सेठ चैनसुखदास के दर्जनों नौकर हैं।

मधु०—(मुस्कुराकर) आप उन नौकरों में मुझे तो शामिल नहीं करते?

चैन०—(हँसकर उत्साह से) आपको? अरे आपको अपना नौकर! ओहो, यह बड़ी मजेदार बात कही आपने! आपका नौकर तो मैं हूँ! कलाकारों का सबसे बड़ा सेवक! इसी लिए तो अपनी आत्मीयता की बात आपसे कह रहा हूँ! आपसे—केवल आपसे ही।

मधु०—जी!

चैन०—अब मैं बहुत प्रसन्न हुआ कि धीरे-धीरे आप मुझे समझती जा रही हैं। अब मुझसे नमस्कार न कीजिएगा! अपनों से क्या नमस्कार? अच्छा तो मैं अब जाऊँगा! कोई भी बात हो, आप मुझसे कहें—और मुझसे नमस्कार न करें... (हँसते और गद्गद होते हुए)। हैं, हैं, अपनों से क्या नमस्कार... अपनों से क्या नमस्कार (कहते कहते प्रस्थान। सेठ साहब अपने नस्य की डिब्बी भूल जाते हैं।)

मधु०—(सिर से अपना हाथ टेककर) अपनों से क्या नमस्कार! इस संसार में कौन अपना है और कौन पराया! और सेठ साहब के अनुसार मुझे अपनी रुचि का कोई अधिकार नहीं।

(ठंडी साँस लेती है। फिर आलमारी से अपनी पुस्तक निकालने जाती है। मेंटलपीस पर सेठ साहब की नस्य की डिब्बी देखकर उठाती है।) अरे, यह यहीं रह गई! नस्य की डिब्बी! मैं भी इसे सूँघूँ? (खोलती है।) उफ, कैसी बदबू है? (बन्द कर रख देती है।) अपना पार्ट देखूँ! (काँपी निकालकर पढ़ते-पढ़ते अभिनयात्मक ढंग से) दुःखमय मानव-जीवन! उसे अभ्यास पड़ जाता है, इसीलिए सबके मन में तीव्र विराग नहीं होता! जिसे कभी ठोकर न लगी, वह एक ही धक्के में लड़खड़ा जाता है! पर तुम इतने दुर्बल होगे, यह मैं न जानती थी! (दुहराकर) यह मैं न जानती थी (फिर करुण स्वर में दुहराकर) यह मैं न जानती थी!

(राजीव का प्रवेश। वह कुरता, बास्कट, पैजामा और पेशावरी चप्पल पहने हुए है। देखने में सुन्दर है लेकिन अपने वेश-विन्यास में कुछ लापरवाह है। वह सीधा-सादा, 'आत्मीयता' का मतलब नहीं समझता! इंटरमीडिएट पास कर अभी फिल्म-लाइन में आया है। बोलने में बेतकल्लुफी है।)

रा०—क्या नहीं जानती थी मधुलता!

मधु०—(प्रसन्नता से उठकर) ओह! तुम हो राजीव! आओ, बड़ी देर से प्रतीक्षा कर रही थी। आज तो सेठ चैनसुखदास ने सब कुछ कह डाला!

रा०—सब कुछ—यानी!

मधु०—तुम कुछ नहीं समझते राजीव! ओफ, इतनी बड़ी-बड़ी बातें—मैं ऐसा हूँ—मैं वैसा हूँ—मैंने कला के लिए यह किया—वह किया! मैं कलाकारों का सेवक हूँ—तुम्हारा सेवक हूँ!

रा०—तुमसे यह सब कैसे कहा?

मधु०—कैसे कहा? तुम कुछ नहीं समझते राजीव! सुनो ऐसे कहा—(नस्य की डिब्बी अदा के साथ खोलकर उसमें से एक चुटकी नस्य लेकर सूँघते हुए) मेरी महानता क्या है मधुलता! लेकिन मैं इसमें विश्वास रखता हूँ कि कलाकारों को जीवन की समस्त सुविधाएँ देनी चाहिए और यह तभी सम्भव हो सकता है जब उनसे मैं खुद आत्मीयता का सम्बन्ध रखूँ! (हिचकते हुए) यानी आप मेरी बात समझीं न मधु....लता ...जी!

(दोनों जोर से हँस पड़ते हैं।)

रा०—अच्छा, आपने तो सेठ चैनसुखदास का ही पूरा अभिनय कर दिया!

मधु०—(हँसकर) ओह, वे तो ऐसी-ऐसी बातें करते हैं कि उसकी एक पूरी फिल्म बन जाय! वे क्यों राज्यश्री के और मेरे पीछे पड़े हुए हैं। कहते हैं राजीव से आत्मीयता का सम्बन्ध मत रक्खो!

राजीव—मुझसे?

मधु०—हाँ, तुमसे—भला यह भी कभी सम्भव हो सकता है?

राजीव—क्यों, क्यों नहीं हो सकता?

मधु०—कैसी बातें करते हो? कैसे हो सकता है!

राजीव—कैसे बिलकुल आसान! मैं यहाँ आया ही न करूँगा!

मधु०—तुम्हें मेरे पास आने की इच्छा न होगी?

राजीव—जब सेठ जी नहीं चाहेंगे तो मेरी इच्छा कैसे होगी?

मधु०—इच्छा भी किसी के कहने से चलती है?

राजीव—मेरी तो खूब चलती है। वे कहते हैं गाना गाओ, मैं गाना गाता हूँ—वे कहते हैं आँख बन्द करो, मैं आँखें बन्द कर लेता हूँ, वे कहेंगे मधुलता से मत मिलो—मैं नहीं मिलूँगा।

मधु०—और अगर मैं कहूँ कि मुझसे मिलो तो?

राजीव—तो मैं सेठ जी से पूछूँगा कि मिस मधुलता ऐसा कहती हैं—मैं क्या करूँ!

मधु०—तो तुम उनके पक्के नौकर हो! वे कहें अपने हाथ से अपने गाल एक तमाचा लगाओ, लगाओगे?

रा०—एक बार सोचूँगा कि लगाऊँ या न लगाऊँ!

मधु०—तो इस बात को भी सोचो! हाँ, तुम्हें तुम्हारा भाई याद हो गया? आओ बैठो!

(मधुलता काउच पर बैठती है और राजीव बगल की कुर्सी पर) तुम्हारा पार्ट तो देवगुप्त का है?

रा०—हाँ, देवगुप्त का—अभी पूरी तरह याद नहीं हो पाया!

मधु०—क्यों?

रा०—मुझे सुरमा से प्यार करना है। प्यार करने का अभिनय अभी ठीक ढंग से नहीं बन पड़ रहा है।

मधु०—(मुस्कुराकर) प्यार करने का अभिनय? प्यार भी अभिनय की वस्तु है? क्या तुम प्यार नहीं कर सकते!

रा०—क्यों नहीं कर सकता?

मधु०—उसने कभी किसी से प्यार किया है?

रा०—क्यों नहीं! अपनी बिल्ली से प्यार किया है; और अब सुरमा से प्यार करना पड़ रहा है।

मधु०—करना पड़ रहा है? मैं पूछ रही हूँ, तुमने कभी किसी से जीवन में प्यार किया है?

रा०—(सोचते हुए) मैंने? प्रयत्न नहीं किया।

मधु०—प्यार के लिए भी प्रयत्न करना पड़ता है?

रा०—तो क्या प्यार शकर की गोली है कि मुख में आई और घुल गई?

मधु०—(मुस्कुराकर) शकर की नहीं—मक्खन की।

रा०—यह घुल कैसे जाती है?

मधु०—(व्यंग्य से) सेठ चैनसुखदास की नस्य की डिब्बी से। लो, इससे वह घुल जायगी। डिब्बी देने के लिए उठती है।

रा०—अच्छा, यह नस्य की डिब्बी आपके पास आई कैसे? मैंने ध्यान ही नहीं दिया! लाइए (लेकर) मैं उन्हें यह दे दूँगा।

मधु०—हाँ, यह दे दीजिएगा और साथ ही अपना पार्ट भी!

रा०—पार्ट भी? क्यों?

मधु०—आप सुरमा से प्यार का अभिनय नहीं कर सकते?

शेष पृष्ठ ३० पर देखिए

गीत

लेखक, श्री गंगाप्रसाद पांडेय, एम० ए०

दीप-मालाओं का शृङ्गार!
सतरंगी प्रकाश किरणों का
नव वितान सा छाया,
सूरज, चाँद, सितारों का
वैभव पृथ्वी ने पाया;
धरा को मिला नया उपहार!
स्नेह-सिक्त मिट्टी के दीपों
में प्रकाश परिरम्भन,
जड़-देही में आत्मा का
ज्यों होता है संजीवन;
यही जड़-चेतन का व्यवहार!
आज अवनि में उतर सफल
है गगन समोद बिखरता,
अपना सब आलोक अखिल जग के जीवन में भरता;
स्वर्ग से बढ़कर यह संसार!
दिशि-दिशि, पग-पग, गली-गली में दीपशिखा का नर्तन
नवजीवन की नई चेतना का जग में आवर्तन,
नव स्वतन्त्रता का सम्भार!
अजर यह दीवाली त्यौहार!
दीप-मालाओं का शृङ्गार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

डाकुमेंट-केस

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

हिन्दी में 'बेढब' बनारसी की रचनाएँ में हास्य-साहित्य की दृष्टि से बेजोड़ होती हैं। इस कहानी में एक हास्य-पूर्ण चित्रण किया गया है जिससे 'डाकुमेंट-केस' का वातावरण तैयार किया गया है। कहानी अत्यन्त सुन्दर, पठनीय और रोचक है।

इस कहानी के लेखक श्रीकृष्णदेवप्रसाद गौड़ 'बेढब'।

सम्मेलन के लिये चंदा उगा रहा था। चेक और नोट सब डाकुमेंट-केस में रखता चला जाता था। उसी में रसीद, बही, उसी में जो कुछ व्यय करता था उसका हिसाब भी रखता जाता था। इस डाकुमेंट-केस का इतिहास भी मनोरंजक है। बम्बई गया था एक नाटक के सम्बन्ध में। कई दिन नाटक खेला, अभिनय की प्रशंसा लोगों ने कर दी इससे तबीयत बड़ी हुई थी। जी में उमंग इतनी भरी थी जितनी अच्छी कस्तूरी में गरमी होती है। जब हृदय में उमंग होती है और जेब में पैसा होता है तब सारा संसार सामने पानी के बुलबुले से भी सारहीन दिखाई पड़ता है। चित्त की यह अवस्था बम्बई नगर, मनोहर मित्र-मंडली स्वर्ग की प्रतिद्वंद्विता हो रही थी।

फोर्ट की एक दूकान में हम लोग चले गये। दूकान क्या थी किसी प्रदर्शनी का एक कोना था। प्रकाश की किरणें कमरे भर में नाच रही थीं और रंग-बिरंगी वस्तुएँ अपने सौन्दर्य से चित्त को मोल लेने का उपक्रम कर रही थीं। यह डाकुमेंट-केस वहीं पड़ा था। बड़े मोहक चर्मा-शैल का था। हाथ से उठाया तब जान पड़ा कि मेरी खाल भी इतनी कोमल नहीं है। जीवित खाल की सुकुमारता तो कुछ देख और बहुत कुछ पढ़ और सुन चुका था। नवनीत जो सरदी में कठोर भी हो जाता है। दयालु के हृदय से उसकी तुलना करूँ तो कभी स्पर्श नहीं किया इसलिए सम्भव है त्रुटि आ जाय। कल्पना की वस्तु से समता करने के कारण वास्तविकता से बहुत दूर चला जाऊँगा और हमारा डाकुमेंट-केस कवियों की सामग्री मात्र रह जायगी। सिरिस सुमन से कुछ-कुछ उसकी समता कर सकता हूँ। किस पशु की खाल थी, किस कला से इतना कोमल बनाया था, कह नहीं सकता। जिधर से चाहे जैसे उसे मोड़ दीजिये आपके हाथ में परवशता की भाँति मुड़ जायगा। रंग भी ऐसा कि घंटों ताकिये और आँख न हटे। मैंने उसे मोल ले लिया। उसी डाकुमेंट-केस का संकेत ऊपर कर चुका हूँ। बारह-तेरह सौ रुपये रहे होंगे और चार-पाँच सौ रुपये का हिसाब।

कल सम्मेलन था। कई दिनों से सभी लोग दौड़-धूप कर रहे थे। मैं भी लोगों से रुपये एकत्र करने में व्यस्त था। मेरे मित्र ने अपनी कार दे दी थी। कभी इनके यहाँ, कभी उनके यहाँ जाना, तकाजा करना, रुपये लाना यही मुख्य काम था। एक सज्जन ने बुलाया था। पाँच सौ मिलने की आशा थी। मोटर चली जा रही थी। बगल में शेफालिका गुप्ता बैठी हुई थीं। आप हिन्दी में एम० ए० हैं और सार्वजनिक कार्य आपको वैसे ही खींच लेते हैं जैसे यमराज रोगियों को। आप सुन्दर हैं, तरुण हैं, उत्साही हैं और आप में शक्ति है। विवाह के सम्बन्ध में आपका विचार वैसा ही है जैसा युद्ध के सम्बन्ध में महात्मा गांधी का है। आप साहित्यकार भी हैं और हिन्दी से अनुराग भी है। यों तो खद्दर पहनने, जयहिन्द कहने, गांधी टोपी लगाने के साथ-साथ हिन्दी का प्रेमी होना भी आवश्यक है। किन्तु आपको सचमुच हिन्दी के प्रति आस्था है। इसी नाते इस कार्य में आप भी मुझसे सहयोग कर रही थीं।

गाड़ी चली जा रही थी। बात चल रही थी उनकी साड़ी पर। मुझे उनकी खद्दर की साड़ी की बेल बहुत पसन्द आ रही थी। यद्यपि मेरे लिए इस प्रकार की साड़ी खरीदने की कोई सम्भावना नहीं थी, फिर भी मूल्य पूछ ही बैठा। किसी बढ़िया वस्तु का मूल्य पूछने से उसके मालिक को मन में प्रसन्नता होती है। यह वह निशाना है जो अचूक बैठता है। उन्होंने बताया इसका दाम सैंतीस रुपया है। सत्रह रुपये की साड़ी, बीस का बार्डर उनकी रुचि की प्रशंसा कर रहा था। और उनकी आँखों, चेहरे के रंग, अधरों की रेखाओं से पता चलता था कि प्रसन्नता के पारावार की तरंगों पर वह फूल रही थीं।

एकाएक मेरा हाथ डाकुमेंट-केस की ओर गया किन्तु वह तो वहाँ था नहीं, दाहिनी ओर, फिर बाईं ओर, फिर पाँव के पास मैंने देखा। चलते समय घर पर ही छोड़कर संभवतः कार पर आ गया। चालक से गाड़ी घर लौटाने को कहा। शेफालिका ने भी घबराकर पूछा क्यों क्या बात है—मैंने कहा—'डाकुमेंट-केस घर भूल आया हूँ' बस इसी के लिए इतना घबरा उठे। मैंने समझा कोई दूसरी घटना हो गई। लौटकर ले लीजियेगा—मुस्कराते हुए उन्होंने कहा।

'किन्तु मेरे लिये वह बहुत आवश्यक है। उसी में रुपये रखे हैं, हिसाब भी है, रसीदें भी तो देनी हैं कई जगह जाना है। ले ही लेना चाहिए'—मैंने कहा और गाड़ी लौटा दी।

गाड़ी घर पर पहुँची। मैंने कहा—आप बैठी रहिये मैं अभी लेता आता हूँ। ऊपर अपने कमरे में देखा। चौकी पर जहाँ उसके पड़े रहने की मुझे आशा थी, मैंने नहीं पाया। चारपाई पर भी न था। न था डेस्क पर न मेज पर। सबसे पूछा किसी ने न उठाकर रखा था न देखा था। मैं घबरा-सा गया, माथे पर पसीने की बूँदें निकल पड़ीं जैसे सम्राट देखकर वार-वनिताये अभिसार के लिये चल पड़ती हैं। बीस मिनट के ऊपर बीत चले। नीचे से वह पुकार रही थीं।

अवश्य मैंने कार्यालय में छोड़ दिया होगा। मैं नीचे आया, ड्राइवर से मैंने कहा—पहले कार्यालय चलो। शेफालिका ने कहा—'मुझे घर पहुँचाते चलिये। बहुत देर हो गई। माता जी भोजन के लिए बैठी होंगी। इस समय मैं कहीं जा न सकूँगी। यदि आपको अति शीघ्रता हो मैं रिक्शा कर लूँ।' जब कोई इस प्रकार से कहता है तब उसकी बात को अस्वीकार करना और जो कुछ हो मानवता नहीं हो सकती। किसी स्त्री की बात को अस्वीकार करना निर्दयता की सीमा को दौड़कर पार करना है। मैंने कहा चलिये पहुँचा दूँ।

कार चली जा रही थी और मेरा हृदय डाकुमेंट-केस के पीछे-पीछे घूम रहा था। निगाहों के सामने वह था, किन्तु दिखाई न देता था। स्मृति को दबा-दबा कर निचोड़ रहा था; किन्तु कुछ सामझ में नहीं आता था, कहाँ रख दिया। पन्द्रह-सोलह सौ रुपये घर से देना होगा। कल ही सम्मेलन है। खर्च का ब्योरा सब उसी में। लोग तो चोर समझेंगे ही। सार्वजनिक कार्य में इसी लिये लोग आते ही हैं। सार्वजनिक कार्य में रुपये बना लेना सबसे ईमानदारी की—चोरी है और चोरी तो एक आदमी की—होती है। जनता के पैसे-पैसे ले लेना चोरी कैसे हो सकती है? किसी के उद्यान में कुएँ में से पानी भर लेना अपराध हो सकता है; किन्तु गंगाजी में से जितना जल चाहे भर लिया जा सकता है। गाड़ी चली जा रही थी, मैं भी बैठा जा रहा था। बीच-बीच में शेफालिका जी कुछ न कुछ कहती जा रही थीं। मुझे कुछ सुनाई ही न देता था। यदि कार्यालय में भी न मिला तब क्या होगा। इसका चित्र भी नहीं बन रहा था। कुछ लोग मूर्ख कहेंगे, कुछ कहेंगे बड़ा चंट है। घरवाले मुझे क्या कहेंगे मैं जानता था, मैं अपने को क्या कहूँ; समझ में नहीं आता था। मोटर की चाल मुझे घोंघे की चाल से भी धीमी जान पड़ती थी।

उनके घर के द्वार पर पहुँचा। गाड़ी खड़ी हुई। सुन्दर साड़ी समेटती हुई वह उतरीं—और मेरी आँखों ने देखा कि उसी डाकुमेंट-केस पर वह बैठी हुई थीं।

दमा के रोगियो नोट कर लो

चित्रकूट दमा बूटी

वर्ष की किसी भी पूर्णिमा को एक ही मात्रा के सेवन से नये व पुराने सभी प्रकार के स्वाँस, दमा, खाँसी को जड़ से नष्ट करनेवाली सिद्ध महात्मा द्वारा प्राप्त वही असली अपूर्व जड़ी है जो कि चित्रकूट में लगभग १०० वर्ष से दी जा रही है आप लोग भी ता० २८-११-४७ पूर्णिमा को घर बैठे सेवन करके सदैव के लिये नीरोग हो जायँ।

श्री महात्मा मौनीबाबा

आयुर्वेदिक आश्रम, (चित्रकूट यू० पी०)

संदेश

पंडित जगनप्रसाद रावत एम० एल० ए०, प्रधान मन्त्री के पार्लामेंटरी सेक्रेटरी, संयुक्तप्रांतीय सरकार—

प्रिय निर्मल जी,

आपका पत्र मिला। मुझे हर्ष है 'देशदूत' का दीपावली अंक प्रकाशित हो रहा है। 'देशदूत' हिन्दी का एक प्रतिष्ठित पत्र है। राष्ट्र की समस्या जटिल है, हिन्दी पत्रकार तथा पत्रों पर राष्ट्र की समस्याओं के सुलझाने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। हमें आशा है कि 'देशदूत' वास्तव में देश का दूत बनकर भावी तथा वर्तमान भारत की सेवा करने में समर्थ होगा।

लखनऊ —जगनप्रसाद रावत

३१-१०-४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या विरोधी दल की जरूरत है?

शासन-प्रबन्ध की नेकनीयती से आलोचना-प्रत्यालोचना होनी चाहिए।

लेखक, श्री युगलकिशोर गुप्त, एम० ए०, बी० एल०

आजकल की राजनीति में विरोधी दल की भी ज़रूरत है। जो दल बहुमत में है, उसके लिये यह आवश्यक है कि वह विरोधी दल की बातों को सुने। किन्तु विरोधी दल की नीयत न्यायोचित हो, द्वेष तथा पक्षपातपूर्ण नहीं। विद्वान लेखक ने इस लेख में संसार के अन्य राष्ट्रों की तुलना करते हुए विरोधी दल का महत्त्व बतलाया है। लेख सुंदर और सामयिक है।

प्रत्येक अँगरेज को प्रजातंत्र का अपना विशिष्ट रूप अधिक पसन्द है। सरसरी नजर से देखने से इँगलैंड का विधान राजतंत्रीय है; परन्तु तनिक ध्यान से देखने पर ही उसका प्रजातंत्रीय आधार स्पष्ट हो जाता है। इंगलैंड के सिंहासन पर सम्राट् षष्ठम जार्ज आरूढ़ हैं और उन्हीं का वंशज इस राज्य का उत्तराधिकारी हो सकता है। शाही सेना, शाही नौ-सेना, शाही वायु-सेना, शाही टकशाल, शाही डाकखाना और तारघर इत्यादि नामों से यह धारणा हो सकती है कि सम्राट् का निरंकुश शासन है; परन्तु वास्तव में साधारण सभा (House of Commons), अधिनायक सभा (House of Lords) और सम्राट् की सम्मति बिना कोई कानून पास नहीं हो सकता; परन्तु वहां साधारण सभा अधिनायक सभा एकमत हो जायें तो सम्राट् को अपने हस्ताक्षर करने ही पड़ते हैं। चाहे वह सम्राट् को प्राणदंड का वारेन्ट ही क्यों न हो। चूंकि साधारण सभा का निर्वाचन साधारणतः पांच वर्ष के बाद होता है और अधिनायक सभा के अधिकांश सदस्य उत्तराधिकार के नियमों के अनुसार हैं इसलिये समय के प्रवाह से साधारण सभा अधिक प्रभावशाली है। इस साधारण सभा की श्रेष्ठता का भी प्रमुख कारण यह है कि उसमें कम से कम दो महत्त्वपूर्ण राजनैतिक दल होते हैं। एक दल जिसका कि साधारण सभा में बहुमत होता है मंत्रिमंडल गठित करता है और दूसरा प्रमुख दल विरोधी दल कहलाता है। उसके नेता को सम्राट् के विरोधी दल का नेता घोषित करते हैं और उसको २००० पौंड वार्षिक वेतन मिलता है। आज का विरोधी दल का नेता कल प्रधान मंत्री हो सकता है और आज का प्रधान मंत्री कल विरोधी दल का नेता होगा। आजकल मि० एटली मजदूर-दल के नेता होने की हैसियत से प्रधान मंत्री के पद पर आरूढ़ हैं और सन् १९४५ में मि० चर्चिल जो युद्धकाल में प्रधान मंत्री थे, गत चुनाव में पर्याप्त अनुयायी न होने के कारण मंत्रिमंडल संगठित नहीं कर सके और आज केवल विरोधी दल के नेता की हैसियत से अपनी जबान की कैंची चलाया करते हैं यद्यपि वह जानते हैं कि मजदूर-सरकार के कार्यों की कड़ी से कड़ी आलोचना करने पर भी आगामी चुनाव के पूर्व उसे अपदस्त नहीं कर सकते।

चूंकि भारत पर ब्रिटेन का शासन था, इसलिये सन् १८६१ से ही इँगलैंड ने भारत में पार्लमेंटरी पद्धति का श्रीगणेश किया और १९३५ के भारतीय शासन-विधान के अनुसार सन् १९३७ से भारत के विभिन्न प्रान्तों में कांग्रेस तथा मुस्लिम लीगी मंत्रिमंडल शासनसूत्र संभाले हुए थे और अब भारत के स्वतंत्र हो जाने पर भारत के विभिन्न प्रान्तों में कांग्रेसी मंत्रि-मंडल हैं और पाकिस्तान प्रान्तों में मुस्लिम लीगी मंत्रिमंडल है। भारत में पार्लमेंटरी पद्धति रहने पर भी साम्राज्यवादी मनो-वृत्ति के कारण सन् १९०९ से साम्प्रदा-यिकता के आधार पर पृथक् निर्वाचन इँगलैंड ने भारत में प्रचलित किया था। इस प्रकार मुस्लिम केवल मुसलमानों को, सिख सिक्खों को, यूरोपियन यूरोपियनों को, एँग्लो इंडियन अपनी ही जाति के लोगों को और भारतीय ईसाई केवल भारतीय ईसाइयों को चुन सकते थे। इस प्रकार व्यवस्थापिका सभाओं में यह सदस्य केवल अपने सम्प्रदाय के स्वार्थों की देख-रेख कर सकते थे; परन्तु मिल-कर कोई राजनीतिल दल नहीं बना सकते थे, जिससे कि समय आने पर शासक मंत्रिमंडल को धराशायी कर शासन-सूत्र अपने हाथों में ले सके। हर्ष का विषय है कि विधान-परिषद् में जो विधान भारत के लिये बनाया जा रहा है उसके अन्तर्गत पृथक्-निर्वाचन का अन्त कर दिया गया है। अब निर्वाचन-क्षेत्र सम्प्रदायों के आधार पर नहीं बनेंगे, वरन् प्रस्तुत या प्रस्तावित जिलों के आधार पर बनेंगे और अब हिन्दू न केवल हिन्दू या पारसी को वोट दे सकेंगे; वरन् कोई भी योग्य उम्मेदवार जो उनकी आर्थिक या राजनीतिक नीति का समर्थन करता हो, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, सिख हो या ईसाई, पारसी हो या एँग्लो इंडियन उसको वोट दे सकते हैं। व्यवस्थापिका सभाओं के सदस्यों का पारस्परिक संबंध सम्प्रदाय के आधार पर न होकर आर्थिक अथवा राजनीतिक योजनाओं के आधार पर होगा।

आज-कल कांग्रेस-राजनीतिक दल में जो खराबियां आ गई हैं और कांग्रेसी मंत्रि-मंडलों की जो कटु आलोचना हो रही है, उसका मुख्य कारण यह है कि प्रस्तुत व्यव-स्थापिका सभाओं में कांग्रेस को छोड़कर अन्य कोई राजनीतिक दल नहीं है जो कांग्रेस को हराकर उनका स्थान ग्रहण कर सके। प्रथम तो प्रान्त के कर्ण-धारों ने व्यवस्थापिका सभा के उम्मेदवार चुनते समय ही इस बात का ध्यान रखा कि योग्य व्यक्ति कम संख्या में रखे जायें जिससे मंत्रिमंडल और पार्लमेंटरी सेक्रेटरियों और कुछ ह्विपों को छोड़-कर अन्य लोग विद्रोह करके मंत्रिमंडल को कोई क्षति नहीं पहुँचा सके। अकसर देखा गया है कि यदि वर्तमान मंत्रिमंडल को पदच्युत कर दिया जाये तो कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो मंत्रिमंडल सुचारु रूप से गठित कर सके।

तदुपरान्त कांग्रेस-टिकट पर खड़ा हो-कर चुन जानेवाले सदस्य तो कांग्रेस के आभारी रहेंगे ही और बाकी जो राजनीतिक दल है---वह मुस्लिम लीग, जमींदार-दल इत्यादि ऐसे हैं जो गुट-विशेष के स्वार्थों का समर्थन करते हैं, इसलिये उनमें प्रवेश के नियम इतने कठोर हैं कि उनमें बुद्धि की आशा अत्यंत कम है। उसके साथ ही मुस्लिम लीग और जमींदार-पार्टी ब्रिटिश साम्राज्य के स्तम्भ रहने के कारण जनता उन्हें प्रतिक्रियावादी समझती है ऐसी दशा में देश का दुर्भाग्य है कि भारत के किसी भी प्रान्त में आगामी निर्वाचन तक किसी भी कांग्रेसी मंत्रिमंडल को पदच्युत नहीं किया जा सकता चाहे वह कितना ही अप्रिय काम क्यों न करे? एक शक्तिशाली विरोधी दल की अनुपस्थिति में कांग्रेसी मंत्रिमंडलों में फासिस्ट मनोवृत्ति का प्रवेश हो रहा है। कांग्रेसी मंत्रिमंडल के [illegible] की आलोचना उस प्रकार खुले रू[illegible] हो सकती जो एक शक्तिशाली [illegible] दल के रहते हो सकती। कांग्रे[illegible] तो अपने मंत्रिमंडल के अप्रिय का[illegible] कटु आलोचना स्पष्ट और निर्भीक रूप से तो कर नहीं सकते और यदि मुस्लिम लीगी और जमींदार पार्टीवाले करते हैं तो उनकी आलोचना को स्वार्थमय और प्रति-क्रियावादी कहकर ठुकरा दिया जाता है।

किसी भी राजनीतिक दल की ईमानदारी और कार्यकुशलता तभी कायम रह सकती है जब कि उसके दैनिक कार्यों पर विरोधी दल की स्पाट लाइट (Spot light) बराबर पड़ती रहे। व्यवस्थापिका सभा में प्रश्नोत्तर द्वारा, विशिष्ट प्रस्तावों द्वारा या सरकारी बिलों को वापस करके या अन्ततोगत्वा अविश्वास का प्रस्ताव उप-स्थित करके मंत्रिमंडल को सतर्क किया जा सकता है। यदि भारतवासी चाहते हैं कि उनका देश उन्नति करे तो कुछ नेताओं को चाहिए कि विशिष्ट आर्थिक योजनाओं पर गठित राजनीतिक दल अभी स्थापित किये जायें और निरंतर प्रचार द्वारा अगले चुनाव में एक विरोधी दल---जो वास्तविक अर्थों में विरोधी दल हो—निर्वाचन में भाग ले और कांग्रेस से लोहा ले। कांग्रेस ने भारत को स्वराज्य दिला दिया। उसका काम खत्म हो गया; अब वह अपने को एक राजनैतिक दल में परिणत करके और राजनैतिक दलों को भी स्वतंत्रता-पूर्वक पनपने दे। इसी प्रकार कांग्रेस में सात्विक बुद्धि और सच्चरित्रता कायम रह सकती है। यदि कांग्रेस के वर्तमान संचालकों ने देश के कल्याण को दृष्टि से ओझल कर केवल अपने निकट-भविष्य के स्वार्थों की ओर ही ध्यान रखा तो आगामी दस वर्षों में कांग्रेस का अंत हो जायेगा। आशा है, कांग्रेस के नेता अपनी स्थिति का भली भांति अध्ययन करेंगे और अपना भविष्य-प्रोग्राम घोषित करेंगे।

अब कहाँ सुनाई पड़ता है देवताओं का नाम!

लेखक, श्री गोपीकृष्ण

मनुष्य के विकास की बात देवताओं के कान तक पहुँची---
ब्रह्मा ने कहा---मनुष्य में है निर्माण की शक्ति? मनुष्य सृजन कर सकता है क्या?
उत्तर मिला---जी, आपको मीलों पीछे छोड़ गया है वह सृजन में---आपको अभिमान है कि आपने रातरानी के अन्तर में चांदी के फूल खिलाये हैं, किन्तु कभी सोचा भी है आपने कि आपके ये आसमानी फूल साधारण फूलों से भी गये-बीते हैं यानी आपके सितारों की दुनिया में हर सुबह पतझर आता है और हर शाम को बसन्त---कितने सम्मानहीन हैं आपके ये पतझर और बसन्त भी। दूसरी ओर मनुष्य का दावा है कि उसका निर्माण चिरन्तन होता है, उसे न पतझर की आशंका है और न बसन्त की अपेक्षा!
ब्रह्मा का चेहरा उतर गया।
शंकर ने अपने स्वरों के सन्धान सँभाले---और, विनाश में भी कुशल है मनुष्य?
उत्तर मिला---हाँ, यह कला भी उसे खासी आती है---वह जब चाहता है तब अपनों को भी इस तरह कुचल और मसल डालता है जैसे पाला किसी एकांकी प्रान्तर से मुस्कराकर बातें करती हुई अन्नराज गेहूँ की ताजी बालों को! किन्तु, इस पर भी मनुष्य को अपनों से बहुत मोह है बहुत! और यह कहने की बात नहीं कि उसके---अपने ए-कएक के प्राणों में आपकी सृष्टि के सारे जड़-चेतनों के स्वर एक साथ बजते हैं।
शंकर क्षण भर को अवाक् हो गये।
विष्णु ने क्षीर-सागर के लहरीले झपोलों पर अपने प्यार की थपकियों की सांसें सँभालीं---वह पालन भी कर सकता है क्या?
उत्तर मिला---उफ, कितना ओछा है तुम्हारा यह प्रश्न? इतना सवाल ही कहाँ उठता है? महान् मनुष्य के जीवन में, महान् मनुष्य के सामने!
इस पर त्रिदेव तो क्या, सारे देवताओं ने अनुभव किया कि उनके प्राण-तन्तुओं में मानवीय गाँठों के जोड़ हैं।

× × × ×

अतएव, अपनी कुशल इसी में जान, सारे देवता धरती पर उतर आये और हर आये दिन सामान्य मनुष्यों की तरह जीने-मरने लगे! होते-होते एक दिन ऐसा आया कि वे हमेशा के लिये ढेर हो गये!
देखिये न, अब कहाँ सुनाई पड़ता है देवताओं का नाम!

कपड़ा धोने का साबुन

कपड़ा धोने के लिए हमारे यहाँ का बना हुआ साबुन उत्तम माना गया है। व्यापारी हमें स्पेशल थोक रेट के लिए लिखें---

चार्य सोप वर्क्स
दारागंज, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह स्वतन्त्रता या स्वराज्य

राष्ट्र की वास्तविक माँगों को कांग्रेस को पूरा करना ही चाहिए

लेखक, श्री भूपेन्द्र सान्याल

राष्ट्र को स्वतन्त्रता या स्वराज्य तो प्राप्त हो चुका है, इसमें किसी को संदेह नहीं है। लेकिन राजनीतिक क्षेत्र में कुछ नेता यह भी कहते हैं कि जो स्वतन्त्रता हमें प्राप्त हुई है, वह राष्ट्र की माँगी के वास्तविक आदेश के पूर्ण अनुकूल नहीं है। समाजवादी नेता ने इस लेख में कांग्रेस तथा राष्ट्र के दृष्टिकोण पर प्रकाश डालते हुए कुछ सुझाव दिये हैं जो पठनीय तथा विचारणीय अवश्य हैं।

आज भारत को स्वतन्त्रता मिल गई है। लेकिन क्या यह स्वराज्य है? परतन्त्रता से हमें छुटकारा मिल गया है लेकिन साधारण जनता को स्वशा... का कोई आस्वादन नहीं है। अरुणोदय से निशीथ का अन्धकार दूर होकर जिस स्फूर्ति का स्पन्दन होता है, जिस नवजीवन का संचार होता है, स्वतन्त्र भारत में उसका कोई चिन्ह नहीं है। स्वतन्त्रता तो केवल शृंखलों से मुक्ति है, स्वराज्य है नए मार्ग की यात्रा।

लेकिन नये मार्ग के लिये उत्साह ही क्या हो—जब नवीनता का कोई संकेत हमें न दिखाई पड़ता हो—जब नवीनता का कोई लक्षण न जान पड़ता हो? वह परिवर्तन कहाँ जिसके लिये हम इतने इतने दिन प्रतीक्षा करते आ रहे हैं? स्वतन्त्र भारत में केन्द्रीय सरकार की अवस्था तो मात्र दो मास की है, उससे तो किसी चमत्कार की आशा नहीं की जा सकती। फिर सर मुड़ाते ही ओले पड़े, साम्प्रदायिकदंगों और शरणार्थियों की समस्या से ही उसको फुरसत नहीं; परन्तु प्रान्तीय शासन ने क्या किया? कुछ करके दिख... रहा, उसके दृष्टिकोण में ही ...न नहीं जान पड़ता। आई० ...सी० एस्, जेल, अदालत, ...शिक्षा, कृषि, उद्योग, श्रम किसी दिशा में कोई परिवर्तित दृष्टिकोण नजर नहीं आता।

विदेशी शासन का अन्त हो गया है लेकिन आज भी उसी व्यवस्था का हम अनुकरण कर रहे हैं। समस्याओं की हमारे देश में कोई कमी नहीं है; परन्तु बजाय उनको सुलझाने के, हम उनको और उलझाते जाते हैं और नवीन समस्याओं की हम सृष्टि करते जा रहे हैं। उनको सुलझाने के लिये एक ही साधन है—कमेटी। ब्रिटिश शासन-व्यवस्था के अनुकरण में हमने दक्षता प्राप्त की है। कमेटियों का बौछार है, भरमार है, उनकी रिपोर्ट रखने के लिए एक नये भवन की आवश्यकता होगी। कमेटियों के पास समय भी काफ़ी है। मुलतवियाँ होती ही रहती हैं; और क्यों न हो? एक ही व्यक्ति मन्त्री है, दर्जियों कमेटियों का सदस्य है और वह स्वतन्त्र भारत का विधान भी बनाता है!

अनुकरण हमको इतनी प्रिय है कि राज-दरबार की चमक-दमक हम वैसी ही रखनी चाहते हैं जैसी अंगरेज रखते थे। अंगरेजों ने खुद अपना रस्म छोड़कर इस भूल से इस रिवाज को अपनाया कि मुगल सम्राटों ने चमक-दमक से हिन्दुस्तानियों पर अपना दबदबा जमाया था। टोपी सीनेवाला सम्राट नसीरुद्दीन का अथवा प्रबल प्रतापशाली ग्रितव्ययी सम्राट औरंगजेब का उन्हें कोई ध्यान नहीं था। हमारी सरकार के दरबार में भी चमक-दमक की कोई कमी नहीं है। आलीशान महलें, भड़कीले पोषाकों में चपरासी, चमकीली मोटरें, गवर्नर के दरबार में चाय और भोजन की दावत पर परामर्श और इधर रेंगती हुई भूखी और नंगी प्रजा।

प्रश्न यह है कि क्या हम ईमानदारी से भारत में प्रजातन्त्र की स्थापना चाहते हैं? हमारे नेताओं ने तो इसका उत्तर हाँ में दे ही दिया है लेकिन इसकी नींव की रचना की अभी कोई तैयारी नहीं है। केवल गाँव-हुकूमत से प्रजातन्त्र की स्थापना नहीं होती; और इसमें भी अभी सन्देह है कि गाँव की हुकूमत साधारण गाँववाले ही करेंगे। सम्भव है कि गाँव की हुकूमत वही करें जो अब तक करते आये हैं। जहाँ एक-एक प्रान्त की जमींदारियाँ ६० करोड़ रुपये पर खरीदी जायें वहाँ की जमींदार-श्रेणी जमींदारी न रहते हुए भी पहले से एक अधिक शक्तिशाली श्रेणी बन जायगी। प्रजातन्त्र की सफलता का मूल ही है कि समाज में व्यक्तिगत या श्रेणीगत वैषम्य अत्यधिक न हो।

वास्तविकता यह है कि राष्ट्र के निर्माण में किसी आदर्श की प्रेरणा की अनुभूति हममें नहीं है। यों तो समाजवाद, राष्ट्रीयकरण, सामाजिक न्याय आदि तरह-तरह के नारे हमारे कानों में गूंजते हैं; परन्तु वास्तविकता के क्षेत्र में किसी भी आदर्श का एकान्त अभाव है। यही कारण है कि उत्पादन वृद्धि के विषय में धुआँधार भाषणों का मजदूरों के ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मजदूर अपने को राष्ट्र के संचालक के रूप में नहीं देखता है, राष्ट्र को वह अपना नहीं समझता है। वह यह नहीं समझता है कि उसका काम पेट भरने का उपायमात्र नहीं है, वह एक सामाजिक कर्तव्य भी है। देश में वह प्रेरणा नहीं है जिसके प्रभाव में लोग खुशी-खुशी तकलीफ झेलने को तैयार हों। स्वतन्त्रता तो एक साधन-मात्र है, परन्तु एक शक्तिशाली राष्ट्र के सदस्य के रूप में ही हम स्वराज्य का उपभोग कर सकते हैं। संकुचित स्वार्थ के साधन से शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकता।

जनता पर दोषारोप करना व्यर्थ है। यह कहना कि चोरबाजार में कोई खरीदनेवाला न हो तो चोरबाजार आप से आप उठ जाय, निरर्थक है। जनता तो कमजोर है ही, परन्तु व्यक्तिगत आदर्श से उनको बल प्रदान करना यह नेतृत्व का काम है। आज काम कर सकता है शिवाजी का आदर्श जो अपने सैनिकों के साथ, "कभी घी घना, कभी मुट्ठी भर चना, कभी वह भी मना" इसी में मस्त हो। आज राष्ट्र-निर्माण का संग्राम चल रहा है, सैनिक ही उसका अगुआ बन सकता है।

स्वराज्य के लिए जैसे एक आदर्श की प्रेरणा की आवश्यकता है, वैसे ही एक व्यापक और व्यवहारिक योजना की। यों तो कई प्रकार की योजनायें हमारे सामने हैं; परन्तु न तो स्वतन्त्रता और स्वराज्य के इस सन्धिकाल के लिए कोई योजना है और न कोई ऐसी योजना है जिससे समाज के मौलिक आधारभूत प्रश्नों का कोई उत्तर मिलता हो। सन्धि-काल के साम्प्रदायिक प्रश्न को ही ले लीजिये। आज लाखों की तादाद में सम्प्रदाय विशेष के लोग हिन्दुस्तान से पाकिस्तान और पाकिस्तान से हिन्दुस्तान को जा आ रहे हैं। लेकिन राष्ट्र की ओर से इस नीति के विषय में हम किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सके हैं। हम जो कुछ करते हैं, घटनाचक्र से विवश होकर करते हैं।

इस लेख के लेखक श्री भूपेन्द्र सान्याल।

मेरी समझ में तो पाकिस्तान बनने के बाद प्रादेशिक जनता की अदला-बदली में कोई दोष की बात नहीं रह जाती। मैं जानता हूँ कि हमारी राष्ट्रीय भावना को इससे चोट पहुँचती है। लेकिन जहाँ धर्म और राष्ट्र में संघर्ष हो वहाँ और कोई चारा नहीं रह जाता। मुसलमान और इस्लामी राष्ट्र अविच्छेद्य हैं। उसके लिए धर्म और राष्ट्र का यही समन्वय है। हम यदि भावावेश में इस सत्य को भूल जायें तो राष्ट्र को समूह क्षति की सम्भावना है।

अब मौलिक प्रश्नों को लीजिये। किसी भी योजना ने इसका सम्यक् उत्तर नहीं दिया है कि उत्पादन सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हो अथवा मुनाफा के लिए। यह केवल राष्ट्रीयकरण की समस्या नहीं है। एक उदाहरण से यह स्पष्ट हो जायगा। जमींदारियों का अन्त हो रहा है। सम्भवतः किसान ही जमीन के मालिक होंगे, यदि कानूनी दृष्टि से नहीं तो व्यावहारिक दृष्टि से। तो क्या किसान अपनी जमीन पर इच्छानुसार बोने के लिए स्वतन्त्र होगा या कि वह एक राष्ट्रीय योजना के अनुसार बोयेगा? राष्ट्रीय योजना का काम होगा यह निश्चय करना कि कितनी जमीन पर खाद्य शस्य बोया जाय, कितनी पर ईख, गन्ना आदि और कितनी पर बाहर भेजने के लिए व्यापारिक शस्य आदि।

देश के इस सन्धि क्षण में एक और प्रश्न पर हमें विचार करना है। वह यह है कि राष्ट्र और कांग्रेस का क्या सम्बन्ध हो? आज तो इंडियन यूनियन में कांग्रेस का ही राज्य है। कांग्रेस जनता द्वारा चुनी हुई संस्था है; परन्तु जनता ने स्वतन्त्र राष्ट्र के शासक के रूप में इसको नहीं चुना है। जनता ने कांग्रेस-जनों को उस अन्तर्वर्ती शासनकाल के लिए चुना था जब कांग्रेस का काम था विदेशी सत्ता से संग्राम और पाकिस्तान का विरोध। ज्यों-त्यों ये मसले अब हल हो गये हैं। अगले चुनाव तक तो कांग्रेस को अपने स्थान पर रहना ही है। लेकिन क्या कांग्रेस के नाम से अगला चुनाव लड़ा जाना चाहिए? कांग्रेस के ध्येय-परिवर्तन के बाद भी इस प्रयत्न से यही सिद्ध होगा कि कांग्रेस एक शासन-यन्त्र के रूप में बना रहना चाहता है और कांग्रेस-जनों की एक संकुचित श्रेणी बन

शेष पृष्ठ ३४ पर देखिए

संदेश

पंडित अमरनाथ झा, चेयरमैन पब्लिक सर्विस कमीशन तथा भूतपूर्व सभापति हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

हमारे देश में राष्ट्रभाषा के पत्रों का महत्त्व अब बहुत बढ़ गया है और उच्च कोटि के पत्रों का हमारे नित्य के जीवन में बहुत बड़ा स्थान है। इनको सर्वांग सुन्दर, मनोरम और उपयोगी बनाना पत्रकारों और प्रकाशकों का कर्तव्य है। 'देशदूत' पूर्व की भाँति जनता की और हिन्दी भाषा की सेवा करता हुआ उत्तरोत्तर उन्नति करे, यही मेरी कामना है।

प्रयाग,
२९-१०-४७

—अमरनाथ झा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या हिन्दुस्तान खतरे में है?

शहरों और गाँवों में सैनिक-शिक्षा का विस्तार जरूरी है

लेखक, पंडित मोहनलाल नेहरू

आज का एक प्रश्न है कि क्या देश खतरे में है? ऐसा नहीं है, फिर भी खतरे से सावधान तो रहना ही चाहिए, इसलिये आवश्यक है कि शहरों तथा गाँवों में सैनिक-शिक्षा का विस्तार किया जाये और राष्ट्र तथा आत्मरक्षा के लिये तैयार हो जाया जाये। पंडित नेहरू ने इस लेख में इसी आवश्यकता पर जोर दिया है।

इस लेख के लेखक पंडित मोहनलाल नेहरू

इतनी मार-काट के बाद भी लीगी नेताओं को अभी तृप्ति नहीं हुई। साम्प्रदायिक घृणा फैलाने का फल तो यह होना ही था कि नोवाखाली का बदला दूसरे प्रान्त लें और वहाँ का बदला कहीं और लिया जावे; हिन्द सरकार ने तुरन्त ही अपनी हुकूमत में इन झगड़ों की जड़ काटने के यत्न कर दिये; परन्तु पाकिस्तानी सरकार ने या तो कोई रोक-थाम न की या उसे बन्द न करा सके और आज तक गरीब अल्पसंख्यक हिन्दू नागरिकों तथा शरणार्थियों पर आक्रमण हो जाते हैं। जो बयान उच्च लीगी नेता निकालते हैं वे और भी जोश बढ़ानेवाले होते हैं। झूठ सच की उन्हें परवाह नहीं, बस अपना नेतृत्व बनाये रखने से मतलब। कुछ हिन्दुस्तानी लीगियों ने जब लीग तोड़ देने की पुकार उठाई तो जिन्ना महोदय ने उनके वास्ते कोई नया प्रोग्राम बताने का वादा किया। कुछ वह कहेंगे सही मगर जो भी कहेंगे वह अपनी आदत के अनुसार साम्प्रदायिक घृणा फैलानेवाली बात होगी। अभी तो लीग को जीवित रखने की ही आज्ञा निकली है। पाकिस्तानियों में अभी भी हिन्द लेने की चाहना बाकी है और उनके घरों से हथियारों का निकलना और मसजिदों में बम गोले बनाने के कारखाने पकड़े जाना इस बात का प्रमाण है। किसी सरकार के पास इतनी फौज और पुलिस नहीं हो सकी कि करोड़ों आदमियों पर पहरा-चौकी रख सके।

अतः जरूरी यह है कि कोई ऐसा बन्दोबस्त हो कि हर शहर, गाँव और घर में सैनिक-शिक्षा दी जाये कि यह फौज जरूरत के अवसर पर काम आये। आचार्य नरेन्द्रदेव के इस प्रस्ताव का प्रत्येक देशप्रेमी को समर्थन करना चाहिये। प्रत्येक तन्दुरुस्त स्त्री-पुरुष को सैनिक-शिक्षा देकर तैयार रखना ही बुद्धिमानी है, क्योंकि यह तो मानना ही पड़ेगा कि जिन्ना की नियत अच्छी नहीं है।

काश्मीर की मिसाल लीजिये। काश्मीर के शहर जलाये और लूटे गये। काश्मीरी मारे गये और वह महाशय कहते हैं कि काश्मीर ने हमला किया। वह अपने पाकिस्तानी चूहे हर जगह रखा चाहते हैं कि हिन्द-सरकार की जड़ काटा करें। इसी वास्ते मुस्लिम लीग को जीवित रखना चाहते हैं। हमारी सरकार दयालु है उसे इन छोटी-मोटी बातों की परवाह नहीं, इसी से धोखा खाती है। क्या वह लीगियों पर काफी सख्ती नहीं कर सकी? हिन्दू या सिक्ख जो पाकिस्तान छोड़ें तो अपनी जायदाद खो बैठें। क्यों वैसा उन मुसलमानों के खिलाफ नहीं होता जो पाकिस्तान भाग जाते हैं और वह भी बिना खबर चोरी से। क्या वह अपना माल-असबाब ले जाने पाते हैं? मारपीट में बदला लेना बुरा है, मगर यह तो न्याय है कि उस राष्ट्र में जो हमसे शत्रुता बरत रहा है, हमारे देश से माल-असबाब पैसा जेवर कुछ न पहुँचे। शराफत तुम्हारी वह समझ ही नहीं सकता, जिसमें शराफत का अंश तक नहीं। वह तुम्हें बेवकूफ ही कहेगा। आँखों का अन्धा और गाँठ का पूरा समझकर सह लूटने के पूरे यत्न करेगा। काश्मीर के बारे में धोखा खा चुके हो अब ज्यादा होशियार रहो। राष्ट्र-सेवक-संघ या होम गार्ड्स की काफी सेना बनाओ, बल्कि प्रत्येक तन्दुरुस्त स्त्री-पुरुष को सैनिक-शिक्षा दो, जो देश-सेवा में काम आ सकें।

जिन्ना के रवैये से क्या यह शक नहीं होता कि जल्दी ही कोई संघर्ष खड़ा होगा? सभी देखनेवालों की यही राय है। जरूरत यह है कि हमारी सरकार जल्दी से जल्दी कारवाई करे। यह जरूरत और भी बढ़ जाती है जब हम देखते हैं कि हमारे प्रान्त के मुस्लिम लीग से यहाँ तक पाकिस्तान बनाने का दम भरते हैं और वह भी हमारे मंत्रिमंडल और प्रतिनिधियों के सामने। नाजिमुद्दीन तो यहाँ तक कहते हैं कि केवल यह कहना कि पाकिस्तान और हिन्दोस्तान एक हो राजद्रोह है और हमारे मंत्रिमंडल यह सुनकर भी कि यहाँ पाकिस्तान बनेगा, चुप कर रहे हैं आश्चर्य है! मगर इस बात की और भी आवश्यकता हो जाती है कि घरेलू सेना तैयार रहे जिससे पाकिस्तान न हो सके।

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्तरोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए० लाहौरवाले फतेहपुरी (D. A.) देहली से मशवरा (सम्मति) मुफ्त लेकर अपना जीवन सुधार लें।

ओ धरती के बेटो जागो!

लेखक, डाक्टर ब्रजमोहन गुप्त, एम० ए०, डी० फिल०

कविश्री डाक्टर ब्रजमोहन गुप्त

आज देश में नव प्रभात है!
सदियों लम्बी निशि बीत चली
उदयाचल पर अरुणाभा फूटी,
प्रथम किरण नवदीपित रवि की
बिहँस उठी पंकज-पत्रों पर!
कलियों ने नत लोचन खोले
देखा स्वर्णिम नवल प्रात है!
आज देश में नव प्रभात है!

सदियों लम्बी निशि बीत चली
बुझते जाते अब सभी सितारे
जो निशि में नभ की छाती पर
अंगारे बन रहे दहकते!
छिपते जाते निशिचर पंछी,
बीहड़ बन खेतों में सोई
जाग उठीं फिर से पगडंडी!
त्याग बसेरा मुक्त गगन में;
उड़े विहग-दल गाते अविरल
देखो सुरभित नवल प्रात है!
आज देश में नव प्रभात है!

सदियों लम्बी निशि बीत चली
नवजीवन लहरा उठा धरा पर,
तड़क गईं पल में हथकड़ियाँ
है स्वतन्त्र तन मन जीवन अब!
उमड़ रहीं हैं असित घटाएँ
उदयाचल के आस पास पर
बालारुण की किरणें रोकें
क्या उनकी इतनी बिसात है?
आज देश में नव प्रभात है!

पर सहसा हिल उठी धरा क्यों
भू पर क्या एटम बम फूटा,
ली हिमाद्रि ने अँगड़ाई या
वज्र शीश पर कोई टूटा!
ज्वालामुखी फूटता कोई
या सागर में उठा बवंडर,
कहें इसे ताण्डव शंकर का
या आकाश फट पड़ा भू पर!
रे! सहसा हिल उठी धरा क्यों
यह कैसा भूकम्प अचानक,
नवल जागरण के प्रभात में
यह कैसा आतंक भयानक!
सदियों तक पाला-पोसा जो
हिन्दू और मुसलमानों ने
धर्म आज तो दैत्य बन गया!
धर्म सर्प बनकर मानव की
मानवता को आज डस गया!
उसी दैत्य की हुंकारों से
काँप उठी हैं सभी दिवारें,
हुंकारों में डूब गये सब
पल में मानवता के नारे!
उदयाचल की अरुणाभा से
आज मनुज का खून बरसता,
आजादी के नव प्रभात में
महानाश का दानव हँसता!
कलकंठों की नवल प्रभाती
पल में करुण पुकार बन गई,
नवजीवन की मधुर प्रभाती
आहत की चीत्कार बन गई!
यह कैसा रक्तिम प्रभात है?
आज देश में नव प्रभात है?

आज तराजू के पलड़ों पर
दानव बनकर तोल रहा है
मानव लाशों से लाशों को,
आज तराजू के पलड़ों पर
दानव बनकर तोल रहा वह
मनुज-रक्त से मनुज रक्त को,
आज नापने बैठा है वह
माँ बहनों की लुटी हुई गाल
अस्मत को, कल लुटती अस्मत?
आज नापने बैठा है
आग लगे बरबाद घरों से
आग लगे बरबाद घरों को।
ओ धरती के बेटो जागो
लाशों के अम्बार लगें यदि
फिर भी तोल न पूरी होगी,
ओ धरती के बेटो जागो
लोह के तालाब भरें यदि
फिर भी तोल न पूरी होगी!
ओ धरती के बेटो जागो
माँ-बहनों की लुटी हुई
अस्मत की नाप न पूरी होगी।
ओ धरती के बेटो जागो
नगर सभी श्मशान बने यदि
फिर भी नाप न पूरी होगी!
इसी नाप में, इसी तोल में
सारा देश उजड़ जाएगा
धरती सब खल्वाट बनेगी
फिर भी नाप न पूरी होगी
फिर भी तोल न पूरी होगी
ओ धरती के बेटो जागो!
मानवता है बड़ी धर्म से
मानवता ऊँची जीवन से
मानव बनने के इच्छुक तुम
ओ धरती के बेटो जागो!
रक्तपात में डूब न जाए
जीवन का जो नवल प्रात है,
सदियों लम्बी निशि बीत गई
उदयाचल पर अरुणाभा फूटी
रक्तपात में भूल न जाओ
आज देश में नव प्रभात है!
बीहड़ बन खेतों में सोई
जाग उठी फिर से पगडंडी
त्याग बसेरा, मुक्त गगन में
उड़े विहग-दल गाते अविरल
नवजीवन की मधुर प्रभाती
जीवन लहरा उठा धरा पर
है स्वतन्त्र तन, मन, जीवन अब!
आत्मघात यह, भूल न जाओ
आज देश में नव प्रभात है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में पुनः अन्न-संकट क्यों?

भारत-सरकार संकट दूर करने के लिये क्या उपाय कर रही है?

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

गत महायुद्ध के समय से ही भारत में अन्न-संकट व्याप रहा है। अनुमान हो रहा था कि युद्ध के बाद शांति स्थापित होगी और अन्न-संकट भी दूर होगा, किन्तु आशा निराशा में परिणत हो रही है। आजकल पुनः अन्न-संकट उत्पन्न हो गया है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने अन्न-संकट के कारणों पर विचार करते हुए भारत-सरकार का ध्यान ऐसे उपायों की ओर आकर्षित किया है जिससे वर्तमान संकट दूर हो सके। लेख विद्वत्तापूर्ण और सामयिक है।

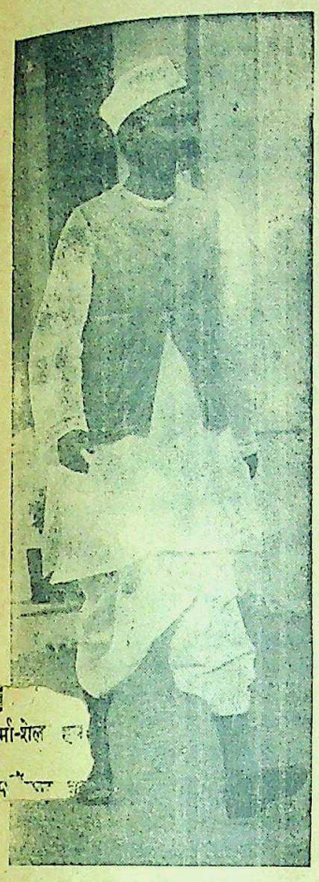

भारत-सरकार के खाद्य सदस्य डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद

पुनः अन्न-संकट भारत के द्वार पर खड़ा है। अन्न-मंत्री ने देश को चेतावनी दी है कि मध्य नवम्बर से मध्य दिसम्बर तक का काल, जब तक खरीफ की फसल बाजार में नहीं आती, अत्यन्त संकटपूर्ण है। इसमें अनेक जगह राशन भी टूट सकता है। पिछले साल १ अरब रुपया खर्च करके अनाज आयात किया गया था। इस साल पांच मास में ही ५४ कोटि रु० खर्च हो गया है। अन्न-उत्पादक समृद्ध देश 'चोरबाजार' में अपना अनाज बेच रहे हैं। कनाडा इंगलैंड को २ डालर प्रति बुशल गेहूँ देता है; यद्यपि इसका नार्मल मूल्य १·५५ डालर है; पर वह भारत को २·६५ डालर प्रति बुशल देता है। अनाज विदेश से मँगाने के लिए भारत के पास डालरों की भी कमी है। स्टर्लिंग-पावने में से दिसम्बर १९४७ तक के लिए भारत को ५४ कोटि रु० (९ कोटि रु० पाकिस्तान को) मिला है। इससे मशीनरी, दवाई आदि आवश्यक चीजें भी मँगानी हैं। अतः भारत आयात अनाज पर बहुत अधिक निर्भर नहीं रह सकता। १८ सितम्बर तक भारत १५,९१,८०० टन विविध किस्म का अनाज भी मँगा चुका है। दूसरे आस्ट्रेलिया को छोड़कर अन्य देशों का उत्पादन घट गया है। चावल-उत्पादक देशों के पास १९४७ में निर्यात के लिए २१,८०,००० टन ही चावल है जब कि लड़ाई से पहले ७८,००,००० टन चावल होता था। इसलिए अन्न-संकट अत्यन्त उग्र हो गया है। बर्मा और हिन्द-चीन युद्ध-पूर्व की अवस्था में १९५० से पहले शायद ही पहुँचे। चावल-उत्पादक देशों के उत्पादन और निर्यात के आंकड़े देखने से यह बात स्पष्ट हो जायगी। यथा :—

	युद्ध-पूर्व का औसत		१९४६-४७	
	उत्पादन (टनों में)	निर्यात	उत्पादन (टनों में)	निर्यात
बर्मा	४९,८०,०००	२९,५०,०००	३२,५०,०००	८,६५,०००
हिन्दचीन	४५,१६,०००	१३,४६,०००	३१,४८,०००	८७,०००
स्याम	३०,४५,०००	१३,७६,०००	१७,६६,०००	४,९२,०००

अन्न-संकट विश्वव्यापी क्यों है, इसके कारणों पर उपर्युक्त तालिका भली प्रकार प्रकाश डाल रही है। भारत में फसल बिगड़ जाने के अलावा अन्न-संकट के तीव्र और उग्र होने का एक और कारण उत्पन्न हो गया है। भारत विभक्त हो गया है। फिर लगभग ८० लाख जनों की अदला-बदली हुई है। पंजाब की खेती उजड़ गई है। पंजाब का आर्थिक जीवन छिन्न-विच्छिन्न हो गया है। इसके अतिरिक्त प्रान्तों के अन्न-संग्रह की योजना पूर्णरूप से फलवती नहीं हुई है। मद्रास के बचत के ६ जिलों में १९४५-४६ में १७,६६,००० टन अनाज उत्पन्न हुआ था और १९४६-४७ में वह बढ़कर २०,४०,००० टन हुआ। पर प्रान्तिक सरकार इन जिलों से ३१ अगस्त तक के दस मासों में ६,९०,००० टन ही प्राप्त कर सकी, जब कि पिछले साल उसने ९,९३,००० टन अनाज संग्रह किया था। मद्रास के अन्न-मन्त्री डा० राजन ने मद्रास असेम्बली में बताया है—३१ अगस्त १९४७ तक के दस मासों में सरकार १२,०४,३०३ टन चावल संग्रह कर सकी है, जब कि उसके संग्रह का लक्ष्य १७,८७,६०० टन था। ज्वार-बाजरे का संग्रह इसी अवधि में ८७,६९३ टन हुआ है, जब कि लक्ष्य १,४८,५६० टन था। प्रान्तिक सरकारों की अन्न-संग्रह-योजना सफल न होने के कारण भी अन्न-संकट तीव्र और उग्र हो गया है।

आशाजनक नहीं है—

बम्बई प्रान्त को शाली धान्य और दालों की लगभग ६ लाख टन कमी रहती है। बम्बई सरकार की पंचवर्षीय योजना के फलस्वरूप ३ लाख टन अधिक अनाज उत्पन्न हो सकेगा। 'अधिक अन्न उत्पादन करो' आन्दोलन पर भारत-सरकार १५ जनवरी १९४७ तक ६५·३४ लाख रु० कर्ज में और ८९५·७४ लाख रु० ग्राण्ट के रूप में खर्च कर चुकी है। पर १५ करोड़ रु० खर्च करने के बाद भी ३२,-४४,००० टन से ज्यादा अनाज का उत्पादन नहीं बढ़ाया जा सका है। १९४६-४७ में भारत में गेहूँ का उत्पादन ८९,२२,००० टन हुआ। यह १९४५-४६ की गेहूँ की उपज से १ प्रतिशत कम है। इस साल इससे भी कम होने की सम्भावना है यह शायद १९३१-३२ की सतह पर पहुँच जाय, जब कि निम्नतम था। इससे स्पष्ट है कि दिसम्बर समाप्त हो जाने के बाद भी चिन्ताजनक स्थिति बनी रहेगी। युद्ध-ध्वस्त देशों में जब तक खेती अपनी पूर्वावस्था में न आयेगी, तब तक अन्न-संकट बना रहेगा। इसलिए अन्न-मन्त्री डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने देश से अपील की है कि वैयक्तिक स्वार्थ के ऊपर राष्ट्र के स्वार्थ को स्थान दिया जाय और बाहर के देशों पर भरोसा न करके अपने पैरों पर खड़ा हुआ जाय। महात्मा गांधी प्रार्थनोत्तर भाषणों में बार-बार इस काम को दुहरा रहे हैं कि अपने पैरों पर खड़ा हुआ जाय। जनता स्वतः अपनी अनाज की समस्या हल करे। भारत देश के सामने जाकर अनाज की भीख मांग, यह गांधी जी के शब्दों में अपमानजनक है। इसके अतिरिक्त भारत-सरकार डा० राजेन्द्रप्रसाद के कथनानुसार अनाज का दाम नीचा रखने के लिए प्रतिवर्ष २०-२५ करोड़ रु० का घाटा सह रही है। कोई भी राष्ट्र प्रतिवर्ष १॥ अरब रु० की हानि नहीं सह सकता। इस हानि से बचने का एकमात्र उपाय है कि भारत अपनी आवश्यकता लायक अनाज स्वतः उत्पन्न करे। अपने पैरों पर खड़ा हो। ४५ लाख टन और अधिक अनाज उत्पन्न करना भारत के लिए कठिन न होना चाहिए। इस समय भारत १,७२,२९,-००० टन चावल और ४१,९९,७४० टन गेहूँ और पाकिस्तान ५३,६७,००० टन चावल और २७,८५,२६० टन गेहूँ उत्पन्न करता है। इसलिए भारत जैसे विशाल देश के लिए और ४५ लाख टन अनाज उत्पन्न करना कुछ कठिन न होना चाहिए।

स्वास्थ्य गिर रहा है—

स्वास्थ्य-विशेषज्ञों का मत है कि साधारणतः प्रति वयस्क पुरुष को प्रतिदिन २,६०० कैलोरीज और प्रति वयस्क स्त्री को २,१०० कैलोरीज की आवश्यकता है। पर यह प्रतिव्यक्ति के काम और उसकी प्रकृति पर निर्भर है। यथा :—

प्रतिघंटा	कैलोरीज
हल्के काम के लिए	७५
साधारण काम के लिए	७५ से १५०
कठिन कार्य के लिए	१५० से ३००
अथवा सख्त काम के लिए	३०० कैलोरीज से ऊपर

भारत में संतुलित भोजन क्या हो, इस विषय में अनेक चार्ट बनाये गये हैं। उन सबके आधार पर एक औसतन आदमी के लिए सन्तुलित भोजन इस प्रकार का होना चाहिए :—

	प्रति वयस्क प्रतिदिन (औंसों में)
शाली धान्य	१६
दालें	३
चीनी	२
शाक	६
फल	२
तेल-घृत आदि	१·५
दूध	८
या मछली, मांस व अण्डा	२·३

इसको यदि अपने सामने रखकर एक साधारण नागरिक के भोजन का विवरण तैयार किया जाय, तो मालूम होगा कि प्रतिआदमी १२ आना खर्च आता है। चार-पांच बच्चों के परिवार-वाले के व्यक्ति के लिए, प्रतिव्यक्ति १२ आना खर्च करना सम्भव नहीं है। १२ आने में खाने को क्या मिलेगा, जिससे सब विटामिनों और पौष्टिक तत्त्वों तथा प्रोटीन की जरूरत पूरी हो जाय, इसका एक चार्ट पूर्ण स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए चावलभोजियों के लिए श्री अमूल्य-रत्न चक्रवर्ती ने तैयार किया है।

शेष पृष्ठ ३८ पर देखिए

संदेश

संयुक्तप्रांत के प्रमुख उद्योगपति सर पद्मपत सिंहानिया, कानपुर

यह प्रथम दीपावली है जो कि हम स्वतन्त्र प्राणी की भाँति मनाने जा रहे हैं, लेकिन हमारे हृदय में वह प्रसन्नता नहीं है जो कि एक गौरवशाली राष्ट्र के निवासी को होनी चाहिए। हम स्वतन्त्र होते हुए भी खुश नहीं हैं। हमारी इच्छायें तथा आशायें अभी अपूर्ण हैं। वस्त्र, अन्न के प्रतिबन्धों से हम इस कदर जकड़े हुए हैं कि हमारी प्रतिदिन की आवश्यकतायें पूरी नहीं हो पातीं। आपका 'देशदूत' यदि अराजकता के युग में अपने सहयोग से मानवता के तृषित हृदय को शान्ति एवं पूर्णता प्रदान कर उसे समृद्धशाली बना सके तो वह अवश्य ही कल्याणकारी सिद्ध होगा। मेरी मनोकामना है, वह इस व्रत में पूर्ण हो तभी स्वतन्त्र भारत की दीपावली का महत्त्व है।

कमला टावर, कानपुर —पद्मपत

१८ अक्टोबर, १९४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतंत्र भारत के लिए ब्रिटिश सरकार की देन

डायरी का एक पृष्ठ

नरमेध का अंत कब होगा ?

लेखक, प्रोफेसर प्रकाशचन्द्र गुप्त, एम० ए०

दिल्ली, १५ सितम्बर, १९४७।

दिल्ली में फिर गदर है। कितनी जल्दी-जल्दी दिल्ली की हालत बदलती है! अभी महीने भर पहले यहां आजादी के जुलूस निकले थे, दिल्ली हर्ष से पागल हो उठी थी और आज? सब समां ही बदल गया है! आज दिल्ली वीरान है, मरघट बन गई है!

पश्चिमी पंजाब से निरन्तर शरणार्थियों के दल आ रहे हैं। उनकी मर्म-व्यथा से पत्थर भी पसीजता है। कितने पाशविक अनाचार मनुष्य-द्वारा मनुष्य पर हो सकते हैं! दिल दहलता है सुनकर।

लेकिन गुण्डों के कुछ दल इसी का लाभ उठाकर लूटपाट करने में लगे हैं। आज दिल्ली में कोई हुकूमत नहीं है। लूटमार को रोकनेवाला कोई नहीं है। सैनिक और पुलिस भी लूटमार में लगे हैं।

दिल्ली में कत्लेआम फिर हो रहा है। कितने कत्लेआम दिल्ली देख चुकी है! आज फिर दिल्ली के पत्थर मासूमों के खून से लाल हैं!

मैं घर में बैठा हल्ला-गुल्ला सुनता हूँ। हृदय-द्रावक चीख सुनता हूँ, किन्तु कुछ कर नहीं सकता। आततायी किसी का हस्तक्षेप नहीं बर्दाश्त करेंगे। नई दिल्ली में तो जवाहरलाल नहरू ने खाली हाथ ही गुण्डों का सामना किया और उनके थप्पड़ खाकर लुटेरे भाग भी गये। लेकिन, क्या यह हिन्दुस्तान की नई सल्तनत है, जहां लुटेरों के पास अस्त्र हों और प्रधान मंत्री केवल तमाचों से ही उनका सामना कर सके!

मैं जब इस दिल्ली की करतूत सोचता हूँ, तो आश्चर्य में आ जाता हूँ। क्या कभी इसकी नींव स्थिर न होगी? क्या कभी यह शेषनाग के माथे में गड़ी लौह-शलाका अपनी चंचलता न छोड़ेगी?

मेरे साम्राज्य यहां उलटते हैं! कैसी लक्ष्मी का आसन यहां अडिग नहीं हुआ। आज स्वाधीन भारत की सरकार पर भी आततायियों ने आक्रमण बोल रक्खा है। राजे, महाराजे, महन्त, रईस, पूंजीपति जनता की बढ़ती शक्ति से घबरा कर आज ही सर्वस्व दावँ पर लगा रहे हैं!

पूरा भारत, समस्त संसार इस दावँ के फल को सांस रोककर देख रहा है।

किन्तु मैं क्यों इस प्रकार हताश हो रहा हूँ? माना कि एक जाति के शरणार्थी नई दिल्ली में एकत्रित हैं, दूसरी के पुराने किले में; खून की नदियां दो विपरीत दिशाओं में बह रही हैं, एक पूर्व से पश्चिम को, दूसरी पश्चिम से पूर्व को; अमानुषिक अत्याचार धर्म के नाम पर एक जाति ने दूसरी पर किये हैं, देश का मस्तक संसार के सामने नीचा किया है; फिर भी मैं एशिया के आलोक, नवीन बुद्ध की वाणी भी तो सुन रहा हूँ जो इस मार-काट, अमानुषिक अनाचार के ऊपर उठ रही है, हमें गम्भीर मुद्रा से शान्ति का पाठ सिखा रही है। एशिया के नवीन बुद्ध, तुम्हारी जय हो! भारत के गांधी, तुम्हारा स्वर निरन्तर इस देश की मिट्टी में मुखरित हो! मनुष्य पशु बन गया है, लेकिन देवता बनने की भी वह क्षमता रखता है!

आज भारत को स्वतन्त्र हुए एक महीना हुआ। हे महाप्राण, तुम्हीं हमारे झंडे को ऊँचा उठाये हो! हे भारत, तुम्हें इस देश की मिट्टी का शत-शत प्रणाम है!

मैं लेखक हूँ, किन्तु आज मेरी लेखनी नहीं चलती। क्या मैं मृत्यु के गीत लिखूं? मैंने तो सदा जीवन और गति का साहित्य रचा है, आज मैं घृणा और झूठ का प्रचार कैसे करूँ?

जामिया मिल्लिया का पुस्तकालय फासिस्टों ने जलाया है। क्या जर्मनी के समान हमारे देश में भी पुस्तकों की होली होगी?

मैं जानता हूँ कि पश्चिमी पंजाब में हिन्दुओं पर पाशविक अत्याचार हुए हैं, किन्तु क्या इसका यही उत्तर है कि दिल्ली के पथ शवों से पट जावें? नहीं, मैं यह कभी स्वीकार न करूँगा। इससे अच्छा यह होगा कि मेरे ही शव के ऊपर से भारतीय जनवाद का जनाजा निकले! मैं एक साधारण प्राणी हूँ, किन्तु यह तुच्छ प्राण एशिया के नवीन बुद्ध को विश्वास दिलाता है कि नई पीढ़ी उनके जन्म दिए आलोक का अन्त न होने देगी!

हे बुद्ध, तुमने अपने प्राणों की बाजी लगाकर बंगाल को इस महासंहार से बचाया। तुम्हीं जनता में कभी आस्था नहीं खोते। तुम्हीं आज भारत के इस नरमेध को रोक सकते हो। भारत की आत्मा चिरजीवी है, क्योंकि तुम उसके प्रतीक हो! तुम भारत के प्राण हो, तुम्हारी कोटि बार जय हो!

यह एक स्केच है। प्रोफेसर गुप्त सफल स्केच लिखने में अपना सानी नहीं रखते। दिल्ली के संघर्ष का एक छाया-चित्र इस स्केच में आ जाता है, जिसका हृदय पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता।

आप सौन्दर्य का आकर्षण प्राप्त कर सकती हैं

पुरुष ने कहा, "यदि तुम्हें काश्मीर बुकेट द्वारा सौन्दर्य प्राप्त हो गया है तो मैं तुम्हारा चुम्बन सदैव लूँगा।"

काश्मीर बुकेट लिपस्टिक से चेहरे पर एक नवीन आभा दौड़ जायगी क्योंकि उसमें सौन्दर्य बढ़ाने के गुण हैं। काश्मीर बुकेट में संयुक्त लैनोलिन से होठों में कोमलता रहती है यह उन्हें चिकना और नर्म रखता है। काश्मीर बुकेट लिपस्टिक घंटों तक ठहरता है।

काश्मीर बुकेट फूल के गुच्छों के लाल चूर्ण को इस्तेमाल कीजिए। इस चूर्ण से आपके चेहरे पर जवानी का रंग दौड़ जाता है। तब आप काश्मीर बुकेट की सुगन्धित शृङ्गारिक वस्तु से अपनी आभा को परिपूर्ण करें, क्योंकि सुगन्ध को पुरुष पसन्द करता है।

Cashmere Bouquet Products WITH THE FRAGRANCE MEN LOVE

Face Powder · Cold Cream · Perfume · Talc · Brilliantine · Liquid · Vanishing Cream

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्तप्रांत का गाँव-हुकूमत-बिल

गाँवों के शासन के लिये एक नया शासन-विधान

लेखक, श्री श्यामबिहारी विरागी, बी० ए०

संयुक्तप्रांतीय सरकार ने गाँवों के शासन-प्रबन्ध के लिए 'गाँव-हुकूमत-बिल' नामक एक नई योजना स्वीकृत की है। विधान क्या है, इसकी क्या उपयोगिता है और इससे गाँववाले ही अपने गाँवों पर किस प्रकार शासन करेंगे, इसका उल्लेख इस लेख में किया गया है। लेख जानकारी से पूर्ण और पठनीय है।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित, संयुक्तप्रान्त भूतपूर्व स्वायत्त शासन की मंत्रिणी।

भारतवर्ष अधिकतर गांवों में बसा है, अतएव ग्राम्य-समस्याओं का हल और करोड़ों ग्रामीणों का सर्वांगीण विकास ही जनराज्य की सबसे बड़ी कसौटी है। १५ अगस्त के बाद 'अपने देश में अपना राज' जो कायम हुआ है उसके कर्णधारों के सामने गांवों को ठीक बनाने तथा ग्रामीणों में स्वराज्य की भावना भरने के अनेक प्रश्न मुख्य रहे हैं। जिन सूबों में कांग्रेस मिनिस्ट्री कायम है, वहां यह सतत प्रयत्न हो रहा है कि नाना प्रकार के ग्राम्य-सम्बन्धी सुधार किये जायें और ग्रामों की विचारणीय दशा शीघ्राति-शीघ्र परिवर्तित कर दी जाय। संयुक्त-[illegible]रकार भी इस दिशा में मौन [illegible] रही है। इधर कुछ वर्षों में [illegible]म्बन्धी कानून संयुक्तप्रान्तीय [illegible] द्वारा बनाये गये जिनमें संयुक्तप्रान्त का गांव-हुकूमत-बिल का एक अपना स्थान है। इस प्रकार का ग्रामोपयोगी बिल शायद इस सूबे में सर्वप्रथम स्वीकृत हुआ है और आशा है कि इसका प्रकाश और सूबों में भी शीघ्र हो जायेगा और हमारे देश के लाखों ग्राम्यों का जीवन बिलकुल बदल कर ऐसा बन जायगा जिसकी हम लोग बहुत दिनों से कल्पना कर रहे हैं।

शीर्षक, सीमा और प्रारम्भ

यह ऐक्ट संयुक्तप्रान्त का गांव-हुकूमत-ऐक्ट, सन् १९४६ ई० कहलायेगा और सिवाय देहरादून जिला के जौन-सवार बावर परगना, मिर्जापुर जिला के उस हिस्से के जो कैमूर की पहाड़ियों के दक्षिण में है और सिवाय उस क्षेत्र के जो संयुक्तप्रान्तीय म्युनिसिपैलिटियों के एक्ट १९१६ के आधीन म्युनिसि-पैलिटी, नोटिफाइड एरिया या टाउन एरिया या कैन्टोन्मेंट-ऐक्ट, सन् १९२४ के आदेशों के अधीन कैन्टोन्मेंट-ऐक्ट या संयुक्तप्रान्तीय टाउन एरिया ऐक्ट सन् १९१४ ई० के अधीन टाउन एरिया घोषित किया जा चुका है या उसमें सम्मिलित है या इसके बाद घोषित या सम्मिलित किया जाय, लागू होगा। यह ऐक्ट उस तारीख या उन तारीखों को और उस जिला या जिलों में या जिले या जिलों के किसी ऐसे भाग या भागों में लागू होगा जो प्रान्तीय सरकार गजट में सूचना देकर लागू करेगी।

स्थापन और विधान

हर ऐसे गांव के लिए जिसकी जन-संख्या २,००० से अधिक न हो, सरकार [illegible] गांव-सभा स्थापित करेगी जिसके [illegible] उस हल्का के रहनेवाले सब [illegible] होंगे। जिनका दिमाग खराब हो, [illegible] हों, सरकारी कर्मचारी हों, [illegible] मजिस्ट्रेट हों, चुनाव-सम्बन्धी [illegible] अपराध में दण्डित हों अथवा इस [illegible] दोषों से युक्त हों उन्हें सदस्य [illegible] अधिकार नहीं होगा। जहां [illegible] के गांवों में से हरएक [illegible] या एक हजार से कम हो, [illegible] बहुत से गांवों को [illegible] सभा स्थापित करेगी, [illegible] ध्यान रखा जायगा [illegible] लिए गांव-सभा स्थापित की गई हो, कुल जनसंख्या मिलाकर साधारणतया एक हजार से अधिक न हो। सरकार सूचना द्वारा गांव-सभा का नाम और उसका क्षेत्र घोषित कर देगी और किसी समय भी गजट में सूचना देकर उचित प्रार्थनापत्र पर गांव-सभा के क्षेत्र में कोई क्षेत्र सम्मिलित कर देगी या उससे किसी क्षेत्र को निकाल लेगी। हर गांव-सभा एक संयुक्त संस्था होगी, जो बराबर चलती रहेगी। इसको नियम के अन्दर चल और अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति को प्राप्त करने, दानस्वरूप स्वीकार करने, उस पर कब्जा रखने, उसका प्रबन्ध करने और उसको हस्तान्तरण करने और मुआहदा करने का अधिकार होगा और वह उसके नाम से मुकदमा चला सकेगी या उस पर उसी नाम से मुकदमा चलाया जा सकेगा। प्रत्येक गांव-सभा एक स्थायी संस्था होगी जो भंग न की जा सकेगी। यह उसी समय भंग हो सकेगी जब किसी गांव के स्थानीय क्षेत्र की जनसंख्या घट-बढ़ जाने की दशा में इस सम्बन्ध में बनाये गये भंगीकरण नियमों में आ जायेगी। कोई व्यक्ति गांव-सभा का उस समय तक मेम्बर रहेगा, जब तक कि उसकी मृत्यु न हो जाय, गांव न छोड़ दे या सदस्य न होने की शर्तें लागू न हो जायँ।

बैठकें और कार्य

हर गांव-सभा खरीफ की फसल के बाद एक वार्षिक सार्वजनिक बैठक करेगी और रबी की फसल के बाद एक अर्ध-वार्षिक सार्वजनिक बैठक करेगी। सरपंच कम से कम एक तिहाई मेम्बरों की लिखित मांग पर किसी भी समय एक असाधारण सार्वजनिक बैठक बुला सकता है। स्थापन के बाद हर ग्राम-सभा अपने मेम्बरों में से एक कार्यकारिणी कमेटी का चुनाव करेगी जो गांव-पंचायत के नाम से पुकारी जायेगी। साथ ही साथ एक सरपंच का भी चुनाव करेगी। सरपंच के अतिरिक्त गांव-पंचायत के मेम्बरों की संख्या ३० से लेकर ५१ तक होगी। गांव-पंचायतों के तिहाई मेम्बर हर वर्ष नियत ढंग के अनुसार रिटायर होंगे। हर वार्षिक बैठक में गांव-सभा अगले वर्ष के बजट पर विचार करेगी और उसको पास करेगी। अर्ध वार्षिक बैठक में वह पहले वर्ष के हिसाब-किताब पर विचार करेगी। गांव-सभा किसी भी साधारण बैठक में उपस्थित मेम्बरों के बहुमत से सरपंच को हटा सकती है और दूसरे सरपंच का चुनाव कर सकती है।

अधिकार, कर्त्तव्य, शासन-प्रबन्ध

जन-मार्ग की रक्षा तथा नये बनवाना, चिकित्सा-सम्बन्धी सहायता, संक्रामक रोगों के दूर करने के उपाय, पंचायत की इमारत की रक्षा, जन्म, मृत्यु तथा शादी विवाह के रजिस्टर रखना, जन-मार्ग या सार्वजनिक सम्पत्ति पर बेजा मदाखलत को दूर करना; पंचायती सम्पत्ति की रक्षा, मेले बाजार हाटों का प्रबन्ध, प्राइमरी स्कूल खोलना, चरागाहों का प्रबन्ध, जनता को पानी के लिए कुएँ, तालाब इत्यादि की व्यवस्था, खेतीबारी, ग्रामीण व्यापार में सहायता, दीवानी फौजदारी अदालती कार्रवाई का प्रबन्ध, जन-मार्ग के दोनों तरफ वृक्ष लगवाना, मवेशियों की नस्ल सुधारना, कुएँ बनवाना, गांव स्वयंसेवक दल का संगठन करना, सरकारी कर्जे प्राप्त करके आपस में बांटना, पुराने कर्जों का भुगतान कराना, दुर्भिक्ष तथा दूसरी विपत्तियों में सहायता, पुस्तकालय वाचनालय खोलना, सूतिका और शिशु का हितसाधन करना, अखाड़े इत्यादि का चलाना, रेडियो सेट इत्यादि का प्रबन्ध करना गांव के नैतिक और राजनीतिक विकास के लिए प्रयत्न करना इत्यादि अनेक कामों को करने का भार ग्राम-पंचायत पर होगा तथा इन कर्त्तव्यों को सुचारुरूप से चलाने के लिए उचित अधिकार भी पंचायत को मिलेंगे। गांव-पंचायत को यह अधिकार होगा कि वह अपने क्षेत्र की भलाई के सम्बन्ध में उचित अधिकारी को प्रार्थना-पत्र दे तथा किसी पटवारी की नियुक्ति या तबादले, किसी मुखिया की नियुक्ति या बर्खास्तगी और सिचाई-विभाग के पतरोल के तबादले के बारे में शिकायत करे। पंचायती क्षेत्र में रहनेवाले सिपाही, चपरासी, टीका लगानेवाले इत्यादि सरकारी मुलाजिमों के कर्त्तव्यों के पालन में दुराचरण के बारे में पंचायत को उचित अधिकारी से शिकायत करने का अधिकार होगा और उस पर उपयुक्त कार्यवाही की रिपोर्ट पंचायत को मिलेगी। पंचायत के काम को चलाने के लिए उचित आदमियों को रखने तथा निकालने का भी अधिकार पंचायत को होगा। पंचायत के मेम्बर और कर्मचारी शासक नहीं होंगे, बल्कि उन्हें जनसेवक समझा जायेगा।

भूमि, गाँव-कोष और सम्पत्ति प्राप्त करना

जब किसी गांव-पंचायत को इस ऐक्ट के किसी उद्देश्य के लिए भूमि की आवश्यकता हो तो यह पंचायत पहले ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों से बातचीत

शेष पृष्ठ २२ पर दे.खएं

संदेश

माननीय श्री ए० जी० खेर, एम० एल० ए०, मन्त्री स्वायत्त शासन तथा स्वास्थ्य विभाग, संयुक्तप्रांतीय सरकार—

लखनऊ
३०-१०-४७

प्रिय निर्मल जी,

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि 'देशदूत' का 'दीपावली अंक' विशेषांक निकलने जा रहा है। दीपावली का पर्व एक महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्व है और इस अवसर पर 'देशदूत' का सजधज कर निकलना स्वाभाविक है। आशा है प्रचलित कुप्रथाओं के मिटाने तथा इस पर्व के समुचित रूप से मनाने में आपका साप्ताहिक जनता का पथ-प्रदर्शन करेगा। मेरी शुभकामना आपके साथ है।

—ए० जी० खेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काश्मीर रियासत का आज का संकट

भारत-सरकार राज्य की रक्षा करने पर तुली हुई है

लेखक, प्रोफेसर अवधबिहारी पांडेय, एम० ए०
(इतिहास-विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय)

काश्मीर भारत का एक प्रमुख देशी राज्य है। पाकिस्तानी सरकार चाहता है कि रियासत पर अधिकार कर लिया जाये; किन्तु काश्मीरी जनता दुश्मनों को काश्मीर से खदेड़कर बाहर करने में सरकार तथा भारतीय फौजों की सहायता कर रही है। भारतीय फौजें आगे बढ़ रही हैं।

महाराजा काश्मीर सर हरीसिंह जी।

काश्मीर का वर्तमान राजवंश १०० वर्ष पुराना है। लाहौर-दर्बार ने अंगरेजी ईस्ट इण्डिया कम्पनी को हर्जाना अदा करने के लिये काश्मीर का सूबा महाराजा गुलाबसिंह को बेच दिया था। इस भांति इस राजवंश की उत्पत्ति हुई। अंगरेजी शासन-काल में प्रायः सभी देशी राज्यों के प्रति एक-सी नीति बरती जाती थी। उनको अपने यहां एक रेजीडेन्ट रखना पड़ता था, एक सहायक सेना स्वीकार करनी पड़ती थी, जिसका व्यय उन्हीं को देना पड़ता था और उनकी आंतरिक तथा वैदेशिक नीति पर वहां का रेजीडेन्ट और भारत-सरकार का पोलिटिकल डिपार्टमेण्ट सदा हावी रहता था। ब्रिटिश शासक सदा इस बात का ध्यान रखते थे कि देशी नरेश अपनी प्रजा में अधिक लोकप्रिय न होने पावें और उनका शासन पड़ोसी ब्रिटिश भारत के शासन से बदतर रहे। इसलिये सभी देशी राज्यों में रजवाड़ों के नाम से जनता पर अत्याचार किये जाते रहे बहुधा जिनकी भनक भी बाहर नहीं जा पाती थी। ऊँचे ओहदे प्रायः बाहरी लोगों को दिये जाते थे। इस भांति देशी राज्यों की प्रजा के हितों की उपेक्षा करना, देशी नरेशों की नीति का एक मुख्य अंग बना दिया गया था।

काश्मीर के भूतपूर्व महाराजा स्वर्गीय रणवीरसिंह।

फलतः ऐसा कोई भी राजा अथवा नवाब नहीं था जिससे यदि ब्रिटिश सरकार असंतुष्ट हो जाय तो कुशासन अथवा अत्याचार के जुर्म पर गद्दी से उतार न सके। राजा अथवा नवाब रेजीडेण्ट की गुड़िया की तरह होते थे, जिनसे वह जैसे चाहता खेल सकता था। अस्तु, राजा तथा प्रजा में न तो सीधा सम्पर्क हो पाता था और न वे एक दूसरे का विश्वास प्राप्त कर पाते थे।

काश्मीर राज्य की भी यही स्थिति रही। इस राज्य की एक और कठिनाई यह रही है कि यद्यपि वहां का शासक हिन्दू है; परन्तु वहां की ८५ प्रतिशत जनता मुसलमान है। हिन्दू जनता में डोंगरे, राजपूत और काश्मीरी पंडित प्रमुख हैं। मुसलमान जनता प्रायः गरीब और अपढ़ है, क्योंकि जब काश्मीर पर मुसलमानी हुकूमत कायम हुई थी उस समय छोटी जाति के गरीब हिन्दू ही अधिकतर मुसलमान हुए थे। इस राज्य की जनता में ८५ प्रतिशत मुसलमान बने रहने का श्रेय काशी के पंडितों को है, क्योंकि पिछली सदी में जब काश्मीर-नरेश ने यह चाहा कि उनकी प्रजा में से अधिकांश व्यक्ति जो केवल नाम के मुसलमान हैं और जिनका रहन-सहन प्रायः हिन्दुओं का सा है और जो दोबारा अपने पुराने धर्म को स्वीकार करना चाहते हैं उन्हें काशी के पंडितों को बुलाकर शुद्ध करवा लिया जाय, तो उन पंडितों ने अहिन्दू को हिन्दू बनाया जाना शास्त्र-विरुद्ध ठहराया।

१५ अगस्त १९४७ से भारतवर्ष खण्डित होकर स्वतन्त्र हुआ है। इसके कई वर्ष पहले से देशी राज्यों की प्रजा जन-आन्दोलन चला रही थी। काश्मीर राज्य में शेख अब्दुल्ला की अध्यक्षता में नेशनल कान्फ्रेंस ने उत्तरदायी सरकार की स्थापना के लिए आन्दोलन चलाया। दरबार ने इस आन्दोलन को बलपूर्वक दबाना चाहा और शेख अब्दुल्ला तथा उनके अनेक सहयोगी जेल में डाल दिये गये। कांग्रेस ने देशी राज्यों के जन-आन्दोलनों से सदा सहानुभूति रक्खी है यद्यपि उसने उनको आगे बढ़ाने में प्रत्यक्ष सहयोग करने में प्रायः संकोच किया है। इस नीति के विपरीत पं० जवाहरलाल नेहरू, आचार्य कृपलानी तथा महात्मा गांधी ने काश्मीर की यात्रायें कीं और शेख अब्दुल्ला की हिमायत की। फलतः काश्मीर-दरबार को अपने भूतपूर्व प्रधान मंत्री काक को हटा देना पड़ा और शेख अब्दुल्ला तथा उनके अधिकांश सहयोगी छोड़ दिये गये।

इसी बीच में एक दूसरा प्रश्न उठ खड़ा हुआ। १५ अगस्त से ब्रिटिश राज-सत्ता का भारत में अन्त हो जाने के उपरान्त सभी देशी राज्यों को पाकिस्तान तथा भारतीय संघ से अपना सम्बन्ध स्थिर करने की आवश्यकता हुई। काश्मीर राज्य के दो प्रान्तों में से उत्तरीय प्रान्त काश्मीर में मुसलमान अधिक हैं दूसरे प्रान्त जम्मू में हिन्दुओं की संख्या काफी है। इस राज्य की सबसे अधिक प्रभावशाली संस्था नेशनल कान्फ्रेंस है जिसके सदस्य सभी सम्प्रदायों के लोग हैं और जिसके आदर्श भारतीय नेशनल कांग्रेस के समीपी हैं। वहां का शासक हिन्दू है। इन सब कारणों से भारतीय संघ की यह धारणा थी कि वहां के शासक महाराज हरीसिंह, उनके कर्मचारी तथा उनकी प्रजा का बहुमत भारतीय संघ में सम्मिलित होना ही पसन्द करेगा। लेकिन न तो महाराज हरीसिंह ने संघ में शामिल होने की उत्कण्ठा प्रगट की और न भारतीय संघ ने उन पर कोई दबाव डालना ही उचित समझा।

दूसरे विपरीत पाकिस्तान के सर्वेसर्वा श्री जिन्ना का विचार था कि काश्मीर राज्य में मुस्लिम जनमत की प्रधानता और काश्मीर तथा भारतीय संघ के बीच कोई सुगम तथा सीधा स्थल-मार्ग न होने के कारण काश्मीर को पाकिस्तान में अनिवार्यतः शामिल होना चाहिए। वह न तो राजा को मत-स्वातंत्र्य का अधिकार देने के लिए राजी थे और न प्रजा को। काश्मीर राज्य ने पाकिस्तान से एक अस्थायी समझौता कर लिया जिसके आधार पर वहां का डाक तथा तार-विभाग पाकिस्तान के कर्मचारियों को सौंप दिया गया। शेख अब्दुल्ला की रिहाई के पश्चात् जब उनसे पूछा गया कि वह काश्मीर को पाकिस्तान के साथ रखना चाहेंगे कि हिन्दुस्तान के तो उन्होंने उत्तर दिया कि इसका निर्णय काश्मीर की जनता करेगी। भारतीय संघ की सरकार ने काश्मीर की स्थिति को ठीक-ठीक समझ पाया।

पाकिस्तान की सरकार [illegible] राज्य को धमका कर अपनी [illegible] के लिए एक गैर सरकारी आवरण की तैयारी की अथवा गैर सरकारी तैयारी होने दी। काश्मीर में कपड़ा, पेट्रोल तथा खाना पहुँचना कठिन हो गया। पाकिस्तान की प्रजा में से कुछ व्यक्ति काश्मीर के अन्दर घुसकर उपद्रव करने लगे। मुस्लिम लीग से सम्बद्ध मुस्लिम कान्फ्रेंस ने पूंच में एक विद्रोह खड़ा कर दिया और आजाद काश्मीर-सरकार की स्थापना की। आजाद हिन्द-फौज के भूतपूर्व अफसर मेजर कियानी की अध्यक्षता में रावलपिंडी में एक आक्रमण की योजना बनाई गई। आक्रमण करने के लिए सीमान्त कबीलों के व्यक्ति भर्ती किये गये और उनको आधुनिकतम हथियार

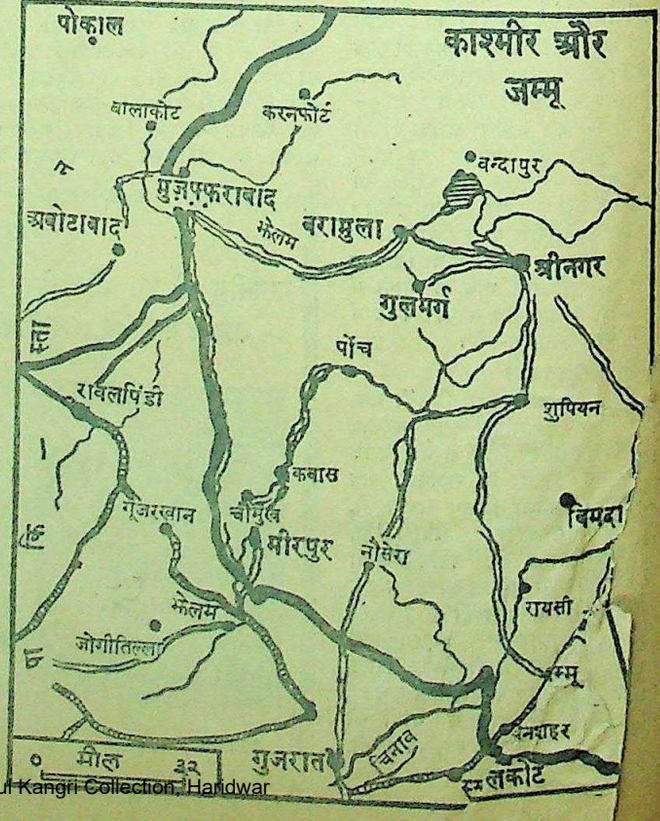

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या पाकिस्तान की कब्र यहीं बनेगी?

काश्मीरी जनता दुश्मनों से लोहा ले रही है

भारतीय संघ में काश्मीर के सम्मिलित हो जाने पर भारत-सरकार रियासत की रक्षा करने में अपनी फौजी शक्ति के साथ लगी है। दुश्मन पीछे हट गये हैं और शीघ्र ही काश्मीर दुश्मनों से मुक्त हो जायेगा! इस लेख में बड़ी योग्यता से काश्मीर की समस्या पर प्रकाश डाला गया है।

से लैस कर दिया गया। आवश्यक मोटरगाड़ियां और पेट्रोल भी प्राप्त हो गया। अब जोर के साथ यह प्रचार किया गया कि काश्मीर का हिन्दू राजा मुसलमान प्रजा की नृशंस हत्याएँ करा रहा है जिनके कारण सीमान्त जातियों में बहुत क्षोभ बढ़ रहा है। इसी समय पाकिस्तान-सरकार के पास काश्मीर-दरबार ने कई शिकायतें कीं और शान्ति बनाये रखने की अपील की। आक्रमणकारी अपने काम में लगे थे। वे सादे कपड़े पहने हुए [illegible] की ओर बढ़ने लगे और धर्मा-शेल [illegible] उनकी संख्या काफी हो गई [illegible] गांवों पर अधिकार कर [illegible] लिया और फिर मुजफ्फराबाद पर भी पैर जमा लिए। दरबार की फौज ने उनको दबाना चाहा। लेकिन उसको यह पता ही नहीं चल पाया कि वे किधर हमला करना चाहते हैं। फलतः उसकी टुकड़ियां इधर-उधर छितरा गईं और उनमें से कुछ आक्रमणकारियों से मिल गये।

इस भयावह स्थिति में काश्मीर-नरेश ने भारतीय संघ में शामिल होना और शेख अब्दुल्ला को प्रधान मंत्री बनाना स्वीकार किया। २६ अक्टूबर को यह निश्चय हुआ और भारतीय संघ ने शेख अब्दुल्ला तथा काश्मीर राज्य के अधिकारियों से विचार-विनिमय करने के पश्चात् इस प्रस्ताव को इस शर्त पर स्वीकार किया कि शान्ति स्थापित होने पर काश्मीर की जनता इसका निर्णय करेगी कि वह भारतीय संघ में रहना चाहेगी अथवा पाकिस्तान में। इसके उपरान्त भारतीय संघ के सैनिक आकाशमार्ग से काश्मीर की रक्षा के लिए भेज दिये गये और शेख अब्दुल्ला ने शासन-सूत्र सँभाल लिया। अस्तु, काश्मीर भारतीय संघ का एक भाग हो गया और वहां पर जनता की सरकार स्थापित हो गई। यदि काश्मीर की सरकार कुछ दिन पहले यह निर्णय करती तो शायद वहां की जनता को आक्रमणकारियों के अत्याचार न सहने पड़ते।

वैधानिक और नैतिक दृष्टि से भारतीय संघ ने जो कुछ किया है वह ठीक है लेकिन वह पर्याप्त भी है, इसमें सन्देह हो सकता है। पठानकोट-कठुआ का स्थल-मार्ग शीघ्र से शीघ्र ठीक करके यदि काफी संख्या म सेनायें, सैनिक-सामग्री और हवाई जहाज तुरन्त न भेजे गये तो काश्मीरी जनता की स्वतन्त्रता और भारतीय संघ की प्रतिष्ठा खटाई में पड़ सकती है।

श्रीनगर (काश्मीर) में सरदार वल्लभभाई पटेल शेख अब्दुल्ला से परामर्श कर रहे हैं।

भारतीय संघ ने जो भार अपने ऊपर लिया है वह हल्का नहीं है। उसे पूर्व निश्चित, सुसंचालित आक्रमण की योजना का विरोध करना है। पाकिस्तान की सरकार कहती है कि उसका आक्रमण-कारियों से कोई सम्बन्ध नहीं है; परन्तु यह सत्य हो अथवा न हो यह तो निर्विवाद ही है कि उनके पास मोटरों, पेट्रोल और लड़ाई का सामान बराबर पहुंच रहा है और यह सामान पाकिस्तान की हद में होकर ही जा रहा है। अस्तु या तो पाकिस्तान की सरकार स्वयं यह सामान दे रही है। या कम से कम वह इस सामान को वहां जाने देने में बाधक नहीं हो रही है। सीमाप्रान्त के प्रधान मन्त्री ने धमकी दी है कि उनके प्राप्त तथा पाकिस्तान के लोग भारतीय फौजों का काश्मीर में जाना सहन नहीं करेंगे और वह काश्मीर को पाकिस्तान में शामिल होने के लिए बाध्य करेंगे। श्री जिन्ना का कथन है कि काश्मीर का भारतीय संघ में मिलना धोखे और दबाव के कारण हुआ है अस्तु वह अवैध है और जनमत की बात निरी प्रवञ्चना है। काश्मीर में जाने के सुगम मार्ग पाकिस्तान से मिले हुए हैं। उनका प्रयोग आक्रमणकारियों को सहायता देने के लिए बराबर किया जा रहा है। काश्मीर की फौज अस्त-व्यस्त हो गई है और उससे कोई सहायता मिलने की आशा नहीं है। आक्रमणकारी अभी तक (२ नवम्बर) बढ़ ही रहे हैं। अस्तु स्थिति स्पष्टतः कठिन है और भारतीय संघ को अधिकाधिक साहस, शीघ्रता और स्थिरता से कार्य करना पड़ेगा।

अभी तक स्थिति काबू के बाहर नहीं हुई है। इसके तीन प्रमुख कारण हैं। (१) भारतीय सैनिक बराबर पहुँच रहे हैं और बड़ी तत्परता से रक्षा-कार्य में लग गये हैं (२) शेख अब्दुल्ला और उनके सहयोगियों को जनता का विश्वास प्राप्त है और वह प्राणपण से काश्मीर की स्वतन्त्रता की रक्षा में संलग्न है (३) काश्मीर की जनता बड़े धैर्य और साहस के साथ इस विषम स्थिति का सामना कर रही है।

यदि श्री जिन्ना का २७ अक्टूबर का हुक्म जिसमें उन्होंने पाकिस्तान की सेना को आक्रमण करने का आदेश दिया था आगे चलकर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में अमल में लाया गया और हिन्दुस्तान की सरकार जाड़ा बढ़ने के पहले स्थल-मार्ग को ठीक न कर पाई तो स्थिति भयावह हो सकती है।

भारतीय संघ की सरकार को इस समय केवल काश्मीर का ही ध्यान न [illegible] पाकिस्तान और भारतीय संघ में युद्ध छिड़ गया, जिसकी सम्भावना बिलकुल बेबुनियाद नहीं कही जा सकती तो उसे इंगलैंड से हथियार खरीदनेवाले और कराची से सम्बन्ध रखनेवाले निजाम, मध्य भारतीय रियासतों को संघ से अलग रखने का प्रयत्न करनेवाले नवाब भोपाल और उन असंख्य हथियार एकत्रित करनेवाले लीगियों से भी खतरा होगा जो ऊपर से भारतीय संघ की अधीनता स्वीकार करते हैं और भीतर-भीतर उसके विघटन की कामना रखते तथा पाकिस्तान की सरकार से सम्बन्ध बनाये हुए हैं। अतः इस अवसर पर प्रान्त की सरकारों तथा साधारण जनता का पूर्ण सहयोग आवश्यक है।

काश्मीर नेशनल कान्फ्रेंस के सर्वेसर्वा शेख अब्दुल्ला राज्य के प्रधान बनाये गए हैं।

भारत-सरकार काश्मीर की रक्षा के लिए दृढ़प्रतिज्ञ है। भारतीय फौजें इस वक्त काश्मीर में पाकिस्तानियों को खदेड़ने में लगी हुई हैं। भारतीय फौजों को सफलता मिल रही है। शेख अब्दुल्ला ने राज्य की रक्षा के लिए, काश्मीरी जनता से जहयोग की अपील की है।

काश्मीर के स्वर्गीय महाराजा प्रतापसिंह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्तप्रांत का गाँव-हुकूमत-बिल

(पेज १९ का शेष)

करेगी जिनका ऐसी भूमि पर अधिकार हो और यदि दोनों पक्ष ऐसा समझौता न कर सकें तो कलेक्टर के यहां पंचायत दरख्वास्त दे सकती है और कलेक्टर नियत नियमों के अनुसार भूमि प्राप्त करने की आज्ञा दे सकता है। हर एक गांव-सभा के लिए एक गांव-कोष बनाया जायेगा, जिसमें इस ऐक्ट के मुताबिक लगाये गये टैक्स की रकम, जुर्माने की रकम, वे रकमें जो अदालत के हुक्म से गांव-कोष की हैं तथा ऐसी सब आमदनी जो पंचायत को नियम के अन्दर मिलेगी जमा होंगी। टैक्स इत्यादि लगाने के अधिकार के अतिरिक्त पंचायत अपने क्षेत्र में रहनेवाले हर ऐसे पुरुष से जो १८ वर्ष से कम और २५ वर्ष से अधिक न हो, कुछ नियत समय के लिए काम ले सकती है जो वर्ष में ८ दिन या लगातार ४ दिन से अधिक न हो।

अदालती पंचायतें

प्रान्तीय सरकार या नियत अधिकारी नियत किये हुए नियमों के अनुसार किसी जिले को ऐसे क्षेत्रों में बांट सकता है, जिनमें गांव-सभाओं के अधिकार सीमा के अधीन उतने स्थानीय क्षेत्र सम्मिलित हों, जितने उसकी राय में आवश्यक हों और प्रत्येक ऐसे क्षेत्र के लिए एक अदालती पंचायत स्थापित करेगी या करेगा जैसी कि नियम में व्यवस्था की गई है। प्रत्येक गांव-सभा अदालती पंचायतों में पंचों की हैसियत से काम करने के लिए नियत योग्यता रखनेवाले पांच ऐसे प्रौढ़ चुनेगी जो साधारणतया उसके स्थानीय क्षेत्र के रहनेवाले हों। इस प्रकार के पंचों का निर्वाचनमण्डल बनेगा। ऐसे चुने हुए पंच अपने में से एक योग्य सरपंच चुन लेंगे। प्रत्येक पंच ३ वर्ष की अवधि के लिए होगा।

मुकदमे

नीचे दी हुई धाराओं के अधीन अपराध और साथ-साथ ऐसे अपराधों के करने में प्रोत्साहन देने या उनके करने का प्रयत्न करने पर अदालती पंचायत हस्तक्षेप करेगी—

भारतीय दण्ड-विधान सन १८६० ई० की धारा १४०, १४३, १४५, १४७, १५१, १५३ १६०, १७२, १७४, १७९, २७७, २७९, २८३, २८५, २८६, २८९, २९०, २९४, ३२३, ३३४, ३३६, ३४१, ३५२, ३५६, ३५७, ३५८, ३७४, ३७९, ४०३, ४११ (जब कि माल की रकम ५० रु० से अधिक न हो) ४२६, ४२८, ४३०, ४४७, ४४८, ५०४, ५०६, ५०९, ५९९ और ५१०। इस प्रकार जानवरों के अनाधिकार प्रवेश इत्यादि से सम्बन्ध रखनेवाले मुकदमे भी इसमें शामिल होंगे। इस अदालत को यह हक होगा, किसी व्यक्ति को जिससे शान्ति-भंग की सम्भावना है, जवाबतलब करे और उचित मुचलका ले जो १५ दिन से अधिक नहीं होगा। १० दिन से अधिक कारावास देने का हक इस अदालत को नहीं होगा। इस अदालती पंचायत के सामने किसी नालिश या मुकदमे में किसी फरीक की ओर से किसी कानूनपेशा व्यक्ति को या दलाल को पैरवी करने की इजाजत न होगी। कोई फरीक अदालती पंचायत के सामने स्वयं या ऐसे नौकर, हिस्सेदार, सम्बन्धी या मित्र द्वारा जिसको उसने अधिकार दिया हो, वह उसका प्रतिनिधित्व कर सकता है; उपस्थित हो सकता है। फैसले के समय सब पंचों की एक राय न होने पर बहुमत की राय मान्य होगी। किसी मुकदमे में अदालती पंचायत के लगाये हुए जुर्माने की रकम की वसूली में कठिनाई होने पर हाकिम परगना दरख्वास्त करने पर उसकी वसूली करायेगा।

ऐक्ट का प्रभाव

गांव-हुकूमत-ऐक्ट जिसका संक्षिप्त विवरण ऊपर दिया हुआ है, गांवों के लिए एक नई चीज है और ग्राम्य-जीवन पर इसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ेगा इसमें कोई शंका नहीं। स्वतन्त्र देश में पंचायती राज का होना आवश्यक है अतएव इस दिशा में यू० पी० सरकार का यह पहला कदम बहुत ही सराहनीय है। इस ऐक्ट से गांवों में राजनीतिक जागरण बहुत तेजी से फैलेगा और लोगों में अपना प्रबन्ध स्वयं करने की एक सामूहिक शक्ति पैदा होगी। अभी तक हमारे ग्रामीण अन्धकार में पड़े हुए थे। इस ऐक्ट के लागू होने पर वे समझने लगेंगे कि सचमुच देश के शासन [illegible] हैं और पंचायती राज की कृपा से [illegible] विकता के कलेवर में हमारे [illegible] नागरिकों में उच्चतम प्रजातन्त्र [illegible] योग्यता लायेगी।

हे ज्योतिर्मय !

लेखक, श्री शीतलासहाय श्रीवास्तव

हे ज्योतिर्मय ! मेरी धरती,
में न स्वर्ग के दीप जलाओ !

इन दीपों की लाल शिखायें उगल रही हैं दाहक ज्वाला,
जिसकी हर उत्तप्त लपट से झुलसी जाती तरु-वन-माला,
फुंके जा रहे कुंज पुंज ये ग्राम-नगर, पशु-मनुज-विहंगम,
सूखे जाते सिंधु-सरोवर-झील और ये सरिता-संगम,
त्राहि-त्राहिमय इन विध्वंसों में मुझको न प्रकाश चाहिए—
मेरे गायक ! स्वप्न भस्म हों ऐसा दीपक-राग न गाओ !

हे ज्योतिर्मय ! मेरी धरती,
में न स्वर्ग के दीप जलाओ !

दूर क्षितिज की छाया में लो ! फैल रहा है धूम्र-अँधेरा।
दिनकर ही मुंद रहा वहाँ जब कैसे होगा नया सबेरा।
घिरे मेघ भी चाण्डालों से भीमकाय करते गुरुगर्जन,
जिनके हाथों में चंचल असि सी करती है चपला नर्तन,
यहाँ धूम्रमय आँगन में हो रहा हिंस्र दैत्यों का जमघट—
एक सृजन के लिए न सौ नाशों का हाहाकार बुलाओ !

हे ज्योतिर्मय ! मेरी धरती,
में न स्वर्ग के दीप जलाओ !

मुझको पीड़ित ही रहने दो मेरे विक्षत घाव न देखो,
मेरे मर्मान्तक अन्तर का धायें-धायें सुलगाव न देखो,
इन पथराये से चुप नयनों से अविरल आँसू बहने दो,
दो न सहारा, ईंट-ईंट गिरकर जीवन-मंदिर ढहने दो,
सरिता के दुर्बल प्रवाह को नित्य सूखने दो तुम चाहे—
पर अनन्त जलमय सागर का गति-अवरोधक ज्वार न लाओ !

हे ज्योतिर्मय ! मेरी धरती,
में न स्वर्ग के दीप जलाओ !

पित्त और क़ब्ज़ के रोगों से, पीड़ित रहा करता था

दस बच्चों की मा "दैनिक हलकी मात्रा" की प्रशंसा करती है

पित्त दोष के आक्रमण, सिर दर्द और क़ब्ज़ ने दस बच्चोंवाली मा के जीवन को भार बना दिया था। तब उसने एक सरल आदत बना ली, जिस पर उसे कभी खेद नहीं हुआ। दस वर्ष तक क्रुशन की हलकी दैनिक खुराक ने, उसे स्वस्थ रखा, जैसा कि वह इस पत्र में लिखती है :—

"मैं क्रुशन का सेवन पिछले दस वर्ष से कर रही हूँ और अब मैं उसके बिना नहीं रह सकती। मैं पित्त दोष के दौरे, सिर दर्द और क़ब्ज़ से बीमार रहा करती थी। अच्छा होता कि मैंने क्रुशन पहले से ही सेवन किया होता। मैं इस समय ४६ वर्ष की हूँ, और मेरे १० बच्चे हैं। मैं क्रुशन को दैनिक हलकी मात्रा को धन्यवाद देती हूँ, जिसकी बदौलत मेरी अँतड़ियाँ अब सुचारु रूप से कार्य करने लगी हैं और अब मैं सभी काम बखूबी कर सकती हूँ।

—(श्रीमती) सी० एच० कवेन्टर

यह पूछना स्वाभाविक ही है कि क्रुश[illegible] से इस महिला का पित्तवर्द्धन क़ब्ज़ [illegible] सिरदर्द पूर्णतः क्यों रुक गया? इस [illegible] एक खुला रहस्य है। प्रत्येक वैद्य [illegible] व्यापार के जानने के लिए बोतल पर [illegible] लिखा है :—"प्राण शक्तिदायक छः [illegible] के नमक" यही इसका रहस्य है। छः [illegible] प्रत्येक नमक अपना विशेष प्रभाव [illegible] है। जहाँ किसी एक का प्रभाव नहीं [illegible] वहाँ दूसरे का पड़ता है। पेट, जिगर [illegible] और पाकस्थली को पूरी तरह [illegible] करता और उन्हें क्रियाशील [illegible] प्रत्येक रासायनिक और [illegible] क्रुश[illegible] साल्ट बेचता है। मूल्य १) प्रतिबोतल

आप प्रतिदिन [illegible] से परिमाण [illegible] स्वयं 'दैनिक हलकी [illegible]' का सेवन [illegible] का प्रयत्न क्यों न करते ?

क्या तुम अपने श्वास के कारण उसको (पुरुष को) चुम्बन देने से डरती हो ?

वह प्रेमपूर्ण शब्दों में बातें करता हुआ तुम्हारे पास झुकता है। परन्तु तुम्हें यह कैसे निश्चय हो सकता है कि तुम्हारा चुम्बन उसे प्रसन्न करेगा ? क्या तुम्हें निश्चय है कि तुम्हारी श्वासें मीठी और ताजी हैं। याद रखिए १० व्यक्तियों में ७ की श्वास बुरी होती है जिनको वह स्वयं नहीं जानते।

इसलिए चौकन्ना रहना चाहिए। कोलगेट डेण्टल क्रीम को इस्तेमाल कीजिए। इसके घुसनेवाले फेन आपके दाँत की दरारों के बीच घुसकर कीटाणुओं और सड़े खाने के अंशों को जो अत्यन्त बुरी श्वास, मैले दाँत, सूजे मसूड़ों और दाँतों के सड़ने के कारण हैं, को दूर कर देते हैं। कोलगेट से दाँत अच्छी तरह और सुन्दरता के साथ साफ होते, मसूड़े स्वच्छ तथा श्वास मीठी होती है।

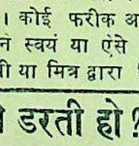

दाँतों के डाक्टर कोलगेट की सिफारिस करते हैं, क्योंकि वह दाँतों को साफ करता है और दूषित वायु को रोकता है।

प्रतिदिन भोजन के पश्चात और सोने से पूर्व कोलगेट का सेवन कीजिए।

कोलगेट दाँतों को स्वच्छ और सुन्दर बनाता है...श्वास को मधुर करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पलँग

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

असमय का काम भी जीवन में विषमता उत्पन्न कर देता है, फिर बुढ़ापे का विवाह तो विषमता की चरम सीमा है। बुढ़ऊ समता लाने की चेष्टा करते हैं, किन्तु युवती की भावना विषमता की ओर बढ़ती ही जाती है। बुढ़ऊ पलंग लाये बड़े शौक से, किन्तु युवती के लिये वह दुर्भाग्य प्रमाणित हुई। हिन्दी के प्रसिद्ध कथाकार श्रीराम शर्मा रोमांसपूर्ण कहानी लिखने में अपना सानी नहीं रखते, इस कहानी में भी उसी प्रकार की भावनाओं का मार्मिक चित्रण है। पाठकों को अवश्य रुचिकर होगी।

लाला रसिकलाल के मन में उस पलँग को देखकर, बरबस ही, यह इच्छा पैदा हुई कि वे उसे खरीद लें। नक्काशीदार पलँग के पाये थे और शीशेदार सिरहाना था। उनके मन में आया कि जब वह पलँग कमरे में बिछाया जायगा और उस पर मसहरी का पर्दा डाला जायगा, तो बड़ा अच्छा लगेगा, मालती को भी.....!

मालती उनकी पत्नी का नाम था। अपने पिया की प्यारी, अभी वर्ष भी उसे पूरा नहीं हुआ, पति के घर में आये हुए। मालती सुन्दर तो थी ही, साथ ही, शिक्षित और सुबोध भी थी। लाला रसिकलाल से वह दो पग आगे बढ़कर समाज, जाति और धर्म के ऊपर अपने विशद विचार रखती थी। उसका समाज कितना गन्दा है और कितना हीन; यह भी वह जानती थी। यही कारण था कि लाला जी उसका आदर करते थे और मन से मालती के ऊपर अपने प्राणों को उँडेल देना पसन्द करते थे। दस-पन्द्रह वर्ष साथ रहने के बाद जब पहली पत्नी का स्वर्गवास हुआ, तो लाला रसिकलाल को दूसरा विवाह करना उचित न होते हुए भी, मन से अभीष्ट [illegible] की सहायता से उन्होंने धर्मा-शेल [illegible] कर लिया। जनता ने विरोध [illegible] परन्तु पैसा तो बड़ा था, [illegible] लोगों के प्रतिरोध को कुचलकर भी लाला रसिकलाल को अपना उद्देश्य पूरा करने में सहायक बन गया। निदान, मालती उसकी दूसरी पत्नी थी—उनके रसिक मन और बुढ़ापे में सुलगती हुई वासना की भट्ठी में आग सुलगानेवाली थीं वे बूंदें!

यही कारण था कि लाला रसिकलाल ने उस पलँग को देखा, तो समझा कि मालती प्रसन्न होगी। वह किस वस्तु से प्रसन्न हो सकती है और किससे अप्रसन्न; मानो उन दिनों लाला रसिकलाल के जीवन की एक गति बन गई थी—एक लक्ष!

फलस्वरूप पलंग खरीद लिया गया। जब वह घर लाया गया तो लाला जी ने मालती को लक्ष करके कहा—'क्यों, पसन्द आया न, यह पलंग! नया होता, तो जरूर पांच सौ रुपयों में मिलता। यह इसके पाये....यह सिरहाना—हां, सभी तो अनुपम है। इस पलंग का एक-एक हिस्सा! बाजार में रखा देखा, तो सोचा, यह तुम्हारे लिए उपयुक्त होगा—तुम्हारे कमरे को सजा देगा, यह पलंग!'

पलंग देखने के साथ, मालती ने बात को सुना और जाने किस भावना के साथ, हल्का-सा मुसकरा दिया।

रसिकलाल ने कहा—'दाम तो अधिक हैं इस पुराने पलंग के; पर जरूर यह किसी बड़े घर का होगा—किसी नवाब साहब का—हां, जाने किस शौक से बनवाया गया होगा—कितनी उमंगों के साथ!'—उन्होंने कहा—'कैसी बात है यह, कोई बनवाता है, कोई खरीदता है और कोई उसे काम में लाता है।.....ठीक तो है, जिसके मुकद्दर में होता है, वही पाता है और भोगता है।' इतना कहा और लाला रसिकलाल ने ही-ही करके अपने दांतों को निपोर दिया।

किन्तु मालती को यह पसन्द नहीं आया। उसके मन में अपने आप ही विद्रोह उठ गया। यद्यपि, पलंग का रंग-रूप उसे भी प्रिय था। परन्तु उसके पति लाला रसिकलाल ने जिस दक्षता और घुमाव-फिराव के रास्ते से उस पलंग की प्रशंसा की और अपने भाग्य की सराहना में भूमिका बांधी, उसको सुनकर जो सचमुच ही, उसका मन खीज गया।

रसिकलाल ने कहा—'आजकल बाजार में ऐसी-ऐसी चीजें आती हैं कि देखने को मन करता है। जी चाहता है कि उन्हें खरीद लें।' वह बोले—'तुम्हें पता है न, मुसलमान यहां से जा रहे हैं, वहीं अपना सामान बेच रहे हैं।

किन्तु मालती को तो पता था कि जिस प्रकार हिन्दू अपने घरबार छोड़कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचे हैं, इसी प्रकार, देश के उस गन्दे वातावरण में पड़ा हुआ मुसलमान भी अपने घरों को छोड़, दूसरी जगह गया है—सुरक्षित स्थान की ओर! इस अवस्था में वह मुसलमान, वह हिन्दू कितना परेशान, कितना दीन और कितना याचक बन गया, वह कितना भयातुर और कातर दिखाई देने लगा—अखबारों को पढ़कर मालती को इसका भली भांति ज्ञान था। उसे पता था कि पुरुषों के हाथों स्थापित हुए, घरों को छोड़कर, न हिन्दू ही सुखी हुआ न मुसलमान। किन्तु वह आंधी आई, उससे जो बचा, बचा। जो उसमें आया, वह नष्ट हो गया। मर गया और सदा के लिए भीत, आतुर और छिन्न-भिन्न होकर न वहां का रहा, न यहां का। इस परिस्थिति पर उसने एक बार थोड़े ही सोचा। अनेक बार उसका ध्यान गया और मन जब-तब उसी में सब ओर से छूटकर ऐसे डूब गया मानो वही उसका स्थान था,—उसके जीवन की गति! यही कारण था कि मालती उस पलंग को देखकर हर्षित नहीं हुई। वह अपने ही गहरे मन-प्रदेश में तिरोहित हो गई। उसे लगा कि उसके पति का हृदय सचमुच ही हाड़-मांस का नहीं है...पाषाण का है। वह ही-ही करने के अतिरिक्त न रो सकता है, न कुछ देख सकता है। उसका मन सचमुच ही कांप गया कि जब उसने सोचा कि पलंग अपने साथ जाने कितने अरमान, कितनी उमंगें और कितनी चाहना लिए हुए दुर्भाग्य का मारा बाजार के चौराहे पर आ पड़ा और उसके पति के हाथों में आ गया।

मालती पलंग को देखकर प्रसन्न नहीं हुई, ऐसा नहीं था।

उसने सोचा, हाय! हाय! बाजार के चौराहे पर यह पलंग क्या बिका, अपने साथ, पूर्व मालिक की इज्जत, उसकी आबरू भी साथ लेता आया कि जिसके वैभव की गोद में यह रहा था। उसने सोचा, कैसी विपरीतता है, कितनी अमानुषिकता है यह! कोई मरा कोई उजड़ा और कोई उस लूटे हुए सामान को सस्ते में खरीद कर अपना घर भर रहा है और खुश हो रहा है। उसका मन चीखा—फिर भी कहते हैं लोग, मानव में मानवीयता है, ईश्वरीय शान और प्रतिभा.....

बलात् उसके मुंह से निकल पड़ा—'यह पलंग न लाते तो अच्छा था। कितने में लिया?'

रसिकलाल ने बताया पचास रुपयों में।

ओह, इतना सस्ता, इतना अच्छा!

'हां, यही तो कहता था, मैं। तुमने सुना क्या?'

तब मालती ने कुछ कहना चाहकर भी, मत नहीं दिया—नहीं।

* * *

मालती जानती थी कि उसके पति उसे अपने प्राणों की सेज पर बैठाते हैं। पहली पत्नी में क्या-क्या दोष थे और क्या-क्या विशेषतायें, यह बताना भी वह अपना कर्त्तव्य मानते। पहली पत्नी यशोदा उनके जीवन में किस प्रकार एक गहरी रेखा बनाकर छोड़ गई और जो भूमिका उसने अपने गार्हस्थिक काल में बनाई वह अब तक मिट नहीं गई, ऐसा मालती उस घर के जीवन में चारों ओर देखती। वह दूसरी पत्नी अवश्य थी; परन्तु जिस दास-प्रथा के साथ, वह उस घर में प्रविष्ठ हुई, उसकी वेदना और कातर भावना उसके मन में कभी भी उठ आती। मालती मध्यम वर्ग के माता-पिता की लड़की थी। उसके पिता की अवस्था अच्छी होती, तो निश्चय ही, उनकी लाड़ली पुत्री किसी सुन्दर और स्वस्थ युवक के हाथों सौंपी जाती। वह युवक उसकी भावना समझता, उसका जीवन समझता और जो उसमें सबसे विशेष बात होती, वह यह कि यौवन की दहलीज पर खड़ा हुआ वह युवक त्याग, बलिदान और मान-अपमान को भी अपनी जिन्दगी में सबसे अधिक महत्त्व देता। किन्तु दैव की बात कि मालती के पिता का व्यापार नष्ट हो गया। अभी दो बहनें और थीं उसकी, इसलिये ला० रसिकलाल से पांच हजार रुपये लेकर सुघड़, सलोनी और सुन्दर मालती को बेच दिया गया। स्वयं मालती ने यह महर्ष स्वीकार कर लिया। उसकी बहनें न बिकें, पिता की वृद्धावस्था अशान्ति और वेदना का घर न बने, केवल अपनी इसी भावना की शिला पर बरबस उसने अपने जीवन को पटक दिया। यही कारण था कि मालती के मन में जब-तब यह बात उठती तो सुई की नोक की तरह उसके कलेजे में चुभन पैदा करती। वह नारी थी। समाज, जाति में प्रतिष्ठा पाना उसकी भी अपनी इच्छा थी। रसिकलाल के घर आकर जितनी स्त्रियां उससे मिलने आतीं, निश्चय ही, उन सबकी आंखों में वेदना, तड़प और उपेक्षा के अतिरिक्त और कोई भावना न होती। लखपती पुरुष की पत्नी बनकर भी, उस नारी-समाज ने उसे भाग्य की लक्ष्मी नहीं माना...मानो निरी दुर्भागी और दीन...

यही कारण था कि मालती अपने लिए सभी प्रकार की सुविधाएं पाकर भी सुखी नहीं थी। ला० रसिकलाल उसके उदास और पीले पड़े हुए मुंह को देखकर चिन्तित बनते। कभी मालती से पूछते—बताओ, तुम्हें कोई कष्ट है, क्या?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन इतना सुनकर भी मालती मुसकराती और बरबस जैसे छाती पर घूंसा-सा खा मन-ही-मन तड़प जाती।

रसिकलाल फिर कहते—'तुम उदास हो...जैसे चिन्तित!

और सचमुच ही मालती उदास है, तथा चिन्तित। किन्तु उसके मन में क्या है, वह यह बता भी नहीं पाती। अतएव वह जब भी पति से ऐसी बात सुनती, तो टाल देती, अथवा कह देती—'न' मैं उदास नहीं, चिन्तित भी नहीं।

वैसे रसिकलाल समझते थे, यह विषमता है, जीवन का महान् अन्तर! मालती बीस वर्ष की है, मैं साठ वर्ष का।....हां, सोचती ही होगी बेचारी बूढ़े के साथ आ गई। कितना सुन्दर जीवन पाया—ऐसा उद्दाम यौवन; इसे भोगना तो क्या जीवन की एक कसक इसके अन्तराल में जाकर चुभ गई...बेचारी मालती! यही कारण था कि ला० रसिकलाल अपने जिस सूख पल्लवरूपी जीवन का मालती-सरीखे हरे-भरे यौवन से नाता जोड़ बैठे, तो उसको निभाने के प्रयत्न में अपने धन और वैभव का आश्रय ढूंढ़ते। उसी से वह मालती को प्रसन्न करना चाहते, क्योंकि उनके मन में था धन ही श्रेष्ठ है,—समस्त कामनाओं का विजता। हाय! उस पुरुष की आयु ढल रही थी, जिन्दगी रिस-रिसकर निचुड़ चुकी थी; परन्तु नित-नित मृत्यु की ओर जाती हुई वे सांसें तृष्णा और भोगेच्छा को नहीं छोड़ सकी थीं। उनके मानस में जगत्, नारी और सौन्दर्य ये तीन इकाइयां—बरबस, अपनी ओर खींचती थीं। पहली स्त्री भी मालती से किसी प्रकार कम सुन्दर नहीं थी। पर अचरज कि मालती अत्यधिक सुन्दर लगती थी। अब जिस वस्तु को भोग नहीं सकते थे, उसे पा नहीं सकते थे उसी के लिये उनमें चाह थी, भूखी तृष्णा!

लेकिन उस दिन जब वह पलंग पर लाया गया और रसिकलाल ने उसकी प्रशंसा में बहुत कुछ कह डाला, तो सचमुच ही, मालती को वह सुनना अच्छा नहीं लगा; किन्तु नारी की जिस दयनीय स्थिति में वह अपने आपको पाती, तो अनुभव करती कि उसका जीवन मिट गया, उसके पिता को पैसा मिल गया, लेकिन स्वयं मालती में जो वास्तविक ठोस पदार्थ था, वह चला गया। इसलिये लगता कि उसके अन्तर में जो प्राणों का समूह था, वह किसी ने छीन लिया और कोई अप्राकृतिक प्राण होते होंगे कि जिनका एक छोटा सा पुंज उसके शरीर में प्रतिष्ठापित कर दिया गया—उसे झिंझोड़ने और खाल नोंचने के लिए.....

निदान, मालती परेशान, चिन्तित, उन्मन। कभी-कभी जब वह समाज की अन्य युवतियों के इशारे देखती—उनकी बातों का उपहास; तो सचमुच अपने आप में गड़ जाती। उसने कई बार चाहा कि पति से कहे, वह उसे घर से बाहर न ले जाया करें। जब-तब उसन सिर-दर्द या तबीयत खराब होने का बहाना करके भी टाल दिया; परन्तु समस्या तो यह थी कि स्वयं रसिकलाल को ही यह पसन्द था। कहीं जाते हुए मालती साथ हो, यही उन्हें प्रिय था। इस प्रकार उन्हें उल्लास और गर्व का अनुभव होता था। लेकिन उनके उस उल्लास के नीचे मालती का जीवन और नारी का सम्मान किस तरह दब रहा था और उसका दम घुट रहा था, इसका उन्हें क्या पता था। वह जब भी रसिकलाल की सूखी छाती पर अपना सिर रखती और उस छाती के सफेद बालों के नीचे ममता, स्नेह को छोड़ निरा ऊजड़ और सूखा हुआ दिल पाती तो वह बरबस खो जाती। उसका मन करता कि उस छाती को नोंच ले अथवा एक पत्थर का टुकड़ा उठाकर उसे चूर-चूर कर दे। किन्तु हाय! हाय! जिस प्रकार वह अपने माता-पिता की इच्छाओं के आगे विसर्जित हो गई, उसी प्रकार वृद्ध और नारी-लोलुप पति के लिए बलि की सामग्री बन गई। जिसका परिणाम यह हुआ कि उसका स्वास्थ्य गिर गया। असमय ही यौवन का प्रवाह उतर गया। उसकी आंखों में जो मादकता थी, वह मिट गई। आंखें माथे में धंस गईं, गाल बैठ गये।

आश्चर्य कि जब से वह नया पलंग तैयार होकर कमरे में बिछाया गया, मालती ने एक बार उस पर पड़कर फिर अपने को स्वस्थ नहीं पाया।

रसिकलाल पूछते—'तुम्हें रोग क्या है, मालती?'

—तो, मालती कहती—'मुझे कोई रोग नहीं। स्वास्थ्य बिगड़ा है, ठीक हो जायगा।'

किन्तु वह स्वास्थ्य यों तो बिगड़ा नहीं था। वह कोई अर्थ रखता था। वह अन्दर ही अन्दर मालती में घुन की तरह अपना काम कर रहा था।

एक दिन जब ला० रसिकलाल दुकान से घर आये और उस सुन्दर पलंग के पास जाकर मालती का समाचार पूछने के लिए झुके तो पाया कि वहां मालती का शरीर पड़ा था, उसका प्राण जाने कितनी देर से तिरोहित हो गया था। रसिकलाल ने सिर पकड़ लिया और एक आह भरकर उसी पलंग पर अपना सिर पटक दिया।

* * *

दंगे हो ही रहे थे। वह और तीव्र गति पर चल पड़े थे। शहर में आग लगी और लूट हुई। रसिकलाल का घर और माल भी लूट लिया गया। बाजार की फुटपाथ पर सामान बिक रहा था,—लूटा हुआ माल! लेकिन जिस वस्तु पर ला० रसिकलाल की दीन और कातर दृष्टि लगी हुई थी, वह उनका पलंग था। उन्हें लगा कि जो बीत गया, वह मानो एक स्वप्न था और जो आगे आनेवाला था, वह हाहाकार.....रोदन से पूर्ण.....

विवाह के अवसर पर

साधारण उबटन से अब काम नहीं चलता

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड **रूप विलास** मंगाइए

शादी के पहले मित्रों को चाहिए कि वर-वधू की सुन्दरता बढ़ाने के लिए रूप विलास का डिब्बा मंगाकर आज ही भेंट करें ताकि उन्हें शादी पर उदास होना न पड़े और उनकी भद्दे पुराने चमड़े से छिपी हुई सौंदर्यता निखर कर असली सुन्दरता चमक आये। इसके लगाने से मुहासा, झांई, चेचक, काले-काले दाग, फुन्सी, खुश्की, बदरीनकी, झुर्रियां वगैरह जल्द आराम होती हैं। थोड़े ही दिनों के लगाने से मलीन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। यदि आप अपना चेहरा खूबसूरत बनाना चाहते हैं तो २ वर्ष की प्रचलित जगत्-प्रसिद्ध रूप विलास कम्पनी का रूप 'विलास' खरीदने की कीजिएगा। यह स्त्री-पुरुष दोनों का दिल खुश करनेवाला है। इस की गाल भी इतनी प्यारी है कि तबियत को मस्त करती है। कीमत एक तीन डिब्बा का ५॥) डाक-खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी नं० ४८१ कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रांतिकारी नाना साहब धान्धू पंत

सन् १८५७ की गदर का एक महान् क्रांतिकारी नेता

लेखक, स्वर्गीय श्री प्रकाशचन्द्र उपाध्याय, एम० ए०

नाना धान्धू पंत सन् १८५७ की गदर के एक महान् क्रांतिकारी नेता थे। उन्होंने अँगरेजी राज्य को उलट देने की पूरी योजना बनाई थी; किन्तु दुर्भाग्य से योजना पूर्ण नहीं हुई। इस लेख में नाना साहब के जीवन पर ऐतिहासिक प्रकाश डाला गया है। इस लेख के लेखक स्वर्गीय प्रकाशचन्द्र उपाध्याय विद्यार्थी-आन्दोलन के प्रमुख स्तंभ तथा प्रयाग-विश्वविद्यालय के तेजस्वी छात्र थे। आपने यह लेख दिवंगत होने के कुछ ही पूर्व हमारे पास प्रकाशनार्थ भेजा था। आशा है विद्यार्थी-वर्ग तथा पाठकों के लिये यह रुचिकर और पठनीय होगा।

लार्ड डलहौजी

बाजीराव द्वितीय मराठों के अन्तिम पेशवा थे! ईस्ट इंडिया कम्पनी की सरकार ने उन्हें कई लाख रुपया सालाना की पेन्शन दे दी थी! कुछ काल बाद पशवा, पूना छोड़कर उत्तरी भारत में बिठूर नामक स्थान पर आ गये थे, और यहीं सन् १८५१ ई० में उनकी मृत्यु हुई थी। पेशवा के कोई बाल-बच्चा न था, इस कारण उन्होंने दो लड़कों को गोद ले लिया था। धान्धू पन्त (नाना साहब), माधोराव भाऊ भट्ट के पुत्र थे, उनकी माता तथा पेशवा की स्त्री बहन थी। ७ जून सन् १८२७ ई० को पेशवा ने धान्धू पन्त को गोद लिया था तथा गोद लेने की [illegible]ओं को पूरा किया था। [illegible] दूसरा भाई बालाराव [illegible] यहां रहने लगा था। [illegible] बाजीराव ने कम्पनी की बड़ी सहायता की थी, फिर भी सरकार ने यह हुक्म निकाला था कि पेशवा की मृत्यु के बाद पेन्शन बन्द कर दी जायगी। पेशवा बाजीराव की मृत्यु के बाद नाना साहब ने बड़ा प्रयत्न किया कि पुरानी पेन्शन उनको भी मिले। उन्होंने मौलवी अज़ीमुल्ला खां को इंगलैंड भी भेजा था; परन्तु कम्पनी के डाइरेक्टरों ने कहा कि बाजीराव पेशवा के दत्तक पुत्र को हम पशवा का सच्चा उत्तराधिकारी नहीं मानते।

नानासाहब एक योग्य विद्वान् थे तथा देश में वेलेज़ली तथा डलहौजी की कूटिनीति से जो अराजकता की आग फैल रही थी, उसका पूरा अध्ययन कर रहे थे। देश में विदेशी राजसत्ता का अन्त करने का विचार उन्होंने किया तथा उनका कहना था कि अगर अपने कार्य में हम मर गये तो हमें स्वर्ग मिलेगा और अगर विजयी रहे तो भारत में स्वराज्य स्थापित हो जायगा। नानासाहब एक उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ थे। महान् क्रान्ति के लिये जनता और सेना को उत्साहित करना तथा उन्हें संगठित करना उनका पहला उद्देश्य था। इसी अभिप्राय से उन्होंने देश के समस्त भागों में साधु और फकीरों के भेष में अपने दूत भेजे। देहली, लखनऊ, फैजाबाद, बरेली, कानपुर, प्रयाग, पटना, कलकत्ता, झांसी, जालौन, ग्वालियर, बांदा तथा समस्त उत्तरी भारत में जनता और सेना एक तूफानी क्रान्ति के लिये तैयार थी। सम्राट् बहादुरशाह, अवध की बेगमें, मौलवी अहमदशाह, लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, राजा कुँवरसिंह तथा नानासाहब उस महान् क्रान्ति की विभूतियां थीं।

राष्ट्रीय क्रान्ति का पूर्ण रूप से संचालन करने के लिये नानासाहब उत्तरी भारत के समस्त मुख्य स्थानों में पुनः गये तथा नेताओं से सलाह कर भविष्य का पूरा कार्य-क्रम उन्हें बताया। देहली, लखनऊ और कानपुर से आवश्यक हथियार जनता में बांटे गये थे। क्रान्ति की पूरी खबर देने के लिये अनेक प्रकार के साधन थे। 'कमल' का फूल और 'चपाती' की प्रथा ने समस्त उत्तरी भारत में क्रान्ति की घोषणा कर दी थी। उस महान् क्रान्ति के संचालन में सबसे मुख्य बात यह थी कि यह सब कार्य बड़ी खामोशी से किया गया था और सारा संचालन गुप्त रहा। कम्पनी की सरकार को इसका कुछ भी पता न लगा। देश के समस्त नेताओं ने क्रान्ति के लिये ३१ मई १८५७ नियत किया था; परन्तु दुर्भाग्यवश १४ मई १८५७ को मेरठ की सेना ने बगावत शुरू कर दी।

नियत समय से पहले क्रान्ति प्रारम्भ हो गई थी फिर भी नेताओं ने बड़े उद्योग से क्रान्ति का संचालन किया। क्रान्ति पूरे जोश के साथ हुई। अँगरेज विद्वान् उस महान् क्रान्ति को स्वतन्त्रता का युद्ध नहीं मानते; परन्तु उनके विचारों में आपस में मतभेद है। सर जान लारेन्स क्रान्ति को सेना की क्रान्ति मानते हैं और कारतूसों की घटना को मुख्य कारण मानते हैं। सर जेम्स आउटराय उसे मुसलमानों का एक षड्यंत्र मानते हैं, जिन्होंने अपने लाभ के लिये हिन्दुओं को भी भड़का दिया था। मिस्टर इन्स का कथन है कि वह एक राजनैतिक षड्यंत्र था; परन्तु वह पूर्ण रूप से संगठित न था। रोवर्ट्स और होम्स का कथन है कि (गदर) एक सैनिक विद्रोह था; परन्तु कुछ सामाजिक और आर्थिक कारणों से जनता ने भी विद्रोहियों का साथ दिया। उनका यह भी कहना है कि नाना साहब ही एक ऐसा विद्रोही था जिसने समस्त उत्तरी भारत में विद्रोह को भड़काया और पहले से ही विद्रोहियों को संगठित करने की योजना बनाई थी।

सन् १८५७ की राष्ट्रीय क्रान्ति विफल रही। आधुनिक इतिहासकार उस विफलता के अनेक कारण मानते हैं। क्रान्तिकारियों के पास हथियारों की कमी, क्रान्तिकाारियों ने तार और डाकखानों पर अधिकार नहीं किया था, अँगरेजी सेनानायक क्रान्तिकारी नायकों से अधिक योग्य थे, तथा जनता ने पूर्ण रूप से विद्रोहियों का साथ नहीं दिया था, क्योंकि उन्होंने जनता के साथ भी अत्याचार किया था। परन्तु यह सब मानते ह कि विद्रोहियों की शक्ति ने एक बार कम्पनी के राज्य का अन्त ही कर दिया था। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी 'डिस्कवरी आफ इंडिया' में उस क्रान्ति पर अपने विचार प्रगट किये हैं। उनका कथन है कि यह एक सैनिक विद्रोह ही न था; परन्तु वह एक जनता की क्रान्ति तथा भारतीय स्वतन्त्रता का युद्ध बन गया था। भारतीय राजाओं की सहायता से क्रान्ति दबा दी गई। सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि सिक्खों ने भी सरकार की मदद की, क्योंकि कुछ ही वर्ष पहले कम्पनी ने सिक्खों के स्वतन्त्र राज्य का अन्त कर दिया था। नेपाल की सरकार ने भी उस समय अँगरेजी सरकार की सहायता की थी।

राष्ट्रीय क्रान्ति के अन्त के बाद जनवरी सन् १८५८ में मुगल सम्राट् बहादुरशाह पर अभियोग चलाया और उन्हें आजीवन कारावास का दण्ड दिया। बहादुरशाह को रंगून में भेज दिया गया जहां सन् १८६२ में उनकी मृत्यु हुई। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने ग्वालियर के किले की हार के बाद पुनः आग लगाकर जीवन का अन्त किया। मराठा ब्राह्मण-नेता तात्या टोपे अन्त में पकड़ा गया तथा उसे ग्वालियर में फांसी की सजा मिली। नाना साहब का कानपुर पर अँगरेजों के अधिकारके बाद कुछ पता नहीं चलता। उनकी मृत्यु की घटना एक ऐतिहासिक रहस्य है। नैपाल की ऐतिहासिक पुस्तकों के अध्ययन से यह बात स्पष्ट है कि नाना साहब अपने कुछ साथियों के साथ वहां गये; परन्तु अँगरेजी सरकार को उनका वहां रहना भी खतरनाक लगा। राष्ट्रीय क्रान्ति के समाप्त होने पर जब सरकार को नाना साहब का कुछ भी पता न चला तो उन्होंने उनके पकड़नेवाले के लिये एक लाख रुपये का इनाम देने की घोषणा की। नाना साहब का नैपाल का जीवन भी बड़ा रोचक और रहस्यमय था।

जुलाई सन् १८५७ में जनरल हैवलाक ने नानासाहब को कानपुर से बाहर निकाल दिया था। बिठूर में जाकर फिर उन्होंने युद्ध की तैयारी की, परन्तु अँगरेजी सेना उनका पीछा कर रही थी। कालपी के निकट अँगरेजी सेना ने उनको फिर हराया तथा सरायघाट के युद्ध के बाद नाना साहब का पता न लगा। नाना साहब, स्वर्गीय बाजीराव की विधवा, अपनी स्त्री काशीबाई, तात्या टोपे (छोटा) तथा अन्य कुछ लोगों के साथ नैपाल की सरहद में पहुँच गय थे। नाना साहब ने अपना एक दूत नैपाल के महाराजा सर जंगबहादुर के पास शरण के लिये भेजा। नैपाली शासक ने जवाब में कहलवा दिया कि वह नाना के साथ की स्त्रियों को शरण दे सकता है; परन्तु नाना तथा उनके साथ के अन्य समस्त मनुष्यों को जल्दी से जल्दी राज्य की सीमा छोड़ने का आदेश दिया। नाना साहब ने यह शर्त मंजूर कर ली।

नाना साहब जब बिठूर से निकले थे, तो उनके पास अन्तिम पेशवा के कोष के अनेक बहुमूल्य रत्न तथा जवाहरात साथ थे। उनमें सबसे मुख्य नौलख "नौलखा" था। नाना साहब उस समय आपत्ति में थे और उन्हें धन की आवश्यकता थी। 'नौलखा' को जंगबहादुर ने सिर्फ ९३,००० रुपयों में खरीद लिया। अन्त में यह हार सन् १९०१ में दरभंगा के महाराजा ने एक निर्वासित नैपाली महाराज से खरीद लिया था। नाना साहब के समस्त बहुमूल्य रत्नों को जंगबहादुर ने बहुत थोड़े दामों में खरीद लिया था। अक्टूबर सन् १८५९ में नाना साहब के छोटे भाई बालाराव की मृत्यु हो गई। उसके कुछ दिन बाद नाना साहब के कैम्प में यह खबर फैल गई कि नाना साहब भी अकस्मात् ज्वर आने से मर गये हैं। जंगबहादुर के पास एक बर्त्तन में कुछ हड्डियां भी भेज दी गईं और प्रार्थना की गई कि वे काशी में गंगा जी में अर्पित कर दी जायँ।

नैपाल के अँगरेजी रेजीडेन्ट ने ८ अक्टूबर १८५९ में भारत की सरकार को एक पत्र में नाना की मृत्यु (२४ सितम्बर १८५९) सूचना भेजी।

शेष पृष्ठ ३६ पर देखिए

इस लेख के लेखक स्वर्गीय श्री काशचन्द्र उपाध्याय।

संदेश

श्रीमती लीलावती मुंशी, एम० एल० ए०, बम्बई

मुझे प्रसन्नता है कि 'देशदूत' का 'दीपावली अंक' विशेषांक प्रकाशित हो रहा है। 'देशदूत' राष्ट्र, समाज तथा हिन्दी संसार की उपयोगी और सुन्दर सेवा कर रहा है। मैं दीपावली के राष्ट्रीय पर्व के अवसर पर बधाई देती हूँ और विशेषांक की सफलता चाहती हूँ।

२६, राइड रोड,
बंबई, १९ आक्टोबर

—लीलावती मुंशी

कैसीसिल्कसाड़ी आकर्षक डिज़ाईन

कलापूर्ण ३-४ इंच चौड़ा बार्डर
नं० ७ ८ ९ ५ गज
१८) २३) २८)

२) पेशगी बाकी वी० पी० से
थोक व्यापारियों को खास सुभीता

भारत इन्डस्ट्रीज,
जुही नं० ९ कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीरां, अकबर और तानसेन

मीरांबाई के जीवन की खोजपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ

लेखक, कुंवर सुखवीरसिंह गहलोत, एम० ए०
(हिन्दी-विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय)

मीरांबाई के जीवनकाल के सम्बन्ध में अनेक धारणाएं प्रसिद्ध हैं। इनमें ही बादशाह अकबर का मीरां से मिलना एक विवादास्पद जनश्रुति है। लेखक ने ऐतिहासिक उपलब्ध सामग्री द्वारा यह सिद्ध किया है इस जनश्रुति में कोई तथ्य नहीं है। लेखक के मीरां के जीवन पर इस प्रकार के लेख—अपने पिता राजपूताने के सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ ठाकुर जगदीशसिंह जी गहलोत की भाँति—इतिहास-प्रेमी होना बतलाते हैं।

मुगल-सम्राट् अकबर से क्या मीराबाई की भेंट हुई थी?

मीरांबाई के जीवन की बहुत-सी घटनाओं के विषय में अभी तक कोई विशेष खोज नहीं हुई है। यही कारण है कि उसके विषय में कई लोगों ने बिना सोचे समझे ही मनगढ़न्त बातें गढ़ लीं और वे अभी तक चली आ रही हैं। कोई उसका पति से द्रोह करना बतलाता है तो कोई उसे विशेष चमत्कारी बतलाता है। ऐसे ही कुछ लेखकों के अनुसार मीरांबाई और तुलसीदास जी में पत्र-व्यवहार हुआ था और इसमें विश्वास करते हुए वह मीरां का अकबर और तानसेन से भी मिलना कहते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि मीरां के जीवन की बहुत-सी घटनायें अभी तक जनता के सामने सुथरे रूप में नहीं आई हैं। इतिहास के विद्यार्थियों को इनकी वास्तविकता की खोज करना आवश्यक है।

अकबर और तानसेन का मीरां से मिलने जाना एक बहुत ही बेतुकी घटना है। यह कहा जाता है कि मीरां बहुत ही सुन्दर होने के साथ ही साथ बहुत ही अच्छी गायक भी थीं। जब आगरे के किले में लगनेवाले सुन्दरी बाजार के मुख्य खरीदार—अकबर ने यह सुना तो वह अपने मित्र तानसेन के साथ मीरां को देखने गया। इस विषय में प्रियादास जी का कथन है :—

रूप की निकाई भूप अकबर भाई हिये,
लिये संग तानसेन देखिबे को आयो है।
निरखि निहाल भयो, छवि गिरधरलाल,
पद सुखजाल एक तब ही चढ़ायो है॥

कुछ लोगों के अनुसार वह मीरां के पास कुछ राजनीतिक विषयों पर परामर्श लेने गया। अकबर और तानसेन गुप्त भेष में उससे मिले और उसकी बहु-श्रुति देखकर बहुत ही प्रभावित हुए। अकबर ने भेंट-स्वरूप मीरां को अपना बहुमूल्य हार भी दिया जिसे मीरां ने गिरधरलाल जी की सेवा में अर्पण कर दिया। बाद में जब यह बात ज्ञात हुई कि छद्म भेषधारी पुरुष मुगल बादशाह थे तो इसमें जोधपुर व मेवाड़ राजवंश की मानहानी समझी गई। इसके पश्चात्ताप-स्वरूप राणा की ओर से मीरां को आत्महत्या तक करने को कहा गया।

राजपूताने की एक दूसरी जनश्रुति के अनुसार अकबर ने तानसेन को मेवाड़-विजय के लिए मीरां से वरदान माँगने के लिए भेजा। तानसेन ने मीरां के मन्दिर में बहुत ही मधुरता से श्रीकृष्ण की मूर्ति के सामने गाया, जिससे मीरां बहुत ही प्रसन्न हुई। इसी के फलस्वरूप मीरां ने गायक से वरदान माँगने के लिए कहा। तानसेन को चाहिए ही क्या था? उसने वरदान में राणा की मेवाड़-युद्ध में पराजय और अकबर की विजय माँगी। मीरां ने भी वचनबद्ध होने के कारण इस शर्त पर वरदान दिया कि यह सब कुछ मेरे मेवाड़ छोड़ने के बाद होगा। कहते हैं कि इसी कारण अकबर ने मीरां के मेवाड़ छोड़ने के बाद ही उसे विजय किया।

यह तो हुईं जनश्रुतियाँ! अब इनको जरा इतिहास की कसौटी पर कसकर इनकी यथार्थता पर भी विचार कीजिये। और बातों को देखने के पहले मीरां, अकबर और तानसेन के जीवन की मुख्य तिथियों पर विचार करिये। मीरां का जीवनकाल सं० १५६१ (ई० सन् १५०४) से सं० १६२४ (ई० सन् १५६७) तक का है।[1] कुछ अन्य लेखकों—डाक्टर गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, ठाकुर जगदीसिंह गहलोत, मुं० देवीप्रसाद आदि के अनुसार उसका समय लगभग सं० १५५५ और वि० सं० १६०५ के बीच का है। मीरां ने मेवाड़ को सदा के लिए सं० १५९० (ई० सन् १५३३) के लगभग राणा विक्रमादित्य द्वारा सताये जाने पर छोड़ा था।

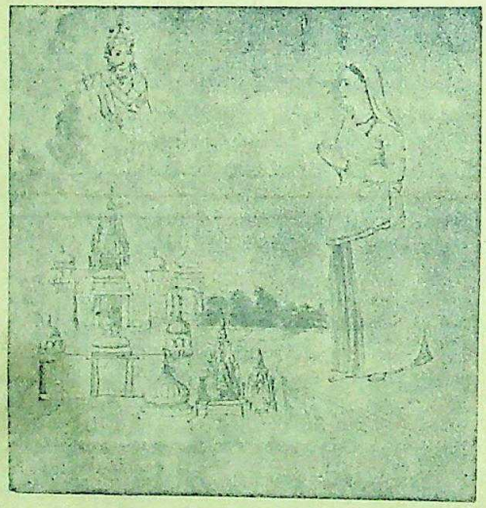

मीरांबाई का यह चित्र जोधपुर किले के प्राचीन संग्रह से प्राप्त हुआ है। चित्र में मीरां मेड़ता नगर में अपने बनवाये चार भुजा (श्रीकृष्ण) के मन्दिर के पास खड़ी है। मीरां का यह चित्र अधिक प्रामाणिक है।

मीरां इसके बाद वापस कभी भी—सं० १६२४ के लगभग राणा उदयसिंह के बुलवाने पर भी न गईं।[2] इधर अकबर का जन्म वि० सं० १५९९ कार्तिक सुदी ६ (ई० सन् १५४२ ता० १४ अक्टूबर) को हुआ था।[3] वह वि० सं० १६१२ की फागुण सुदी ४ शनिवार (ई० सन् १५५६ ता० १४ फरवरी) को राजगद्दी पर बैठा था।[4] अकबर का सर्वप्रथम राजपूताने की ओर आना वि० सं० १६१८ (ई० सन् १५६२) में हुआ था।[5] अकबर की आज्ञा से इसी समय मेड़ता को मालदेव के अधिकार से विजय किया गया। बादशाह मेड़ता विजय के पहले ही आगरा लौट गया था। इसके बाद अकबर ने वि० सं० १६२४ (ई० सन् १५६७) में स्वयं चित्तौड़-विजय में भाग लिया।[6]

इन ऐतिहासिक तिथियों पर ध्यान देने पर हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अकबर ने मीरां से मिलने का प्रयत्न सं० १६१८ (ई० सन् १५६२) और सं० १६२४ (ई० सन् १५६७) के बीच ही किया होगा। यों वह मीरां के जीवन-काल में सं० १६१८ और सं० १६२४ में ही राजपूताना की ओर आया था। दोनों ही वक्त वह युद्ध में संलग्न दिखाई देता है। पता नहीं कैसे वह मीरां से मिलने को इस विकट काल में सोचता। इस समय के लगभग मीरां की आयु भी ६० वर्ष की होगी। अब जरा सोचिये कि सैकड़ों कष्टों को झेली हुई इस आयु में मीरां क्या सुन्दर होगी जिसे अकबर देखने आता! साथ ही ऐसा मौका ही उसे क्या और कहाँ मिला होगा कि वह उसे देख सकता था? जिस वक्त वह राजपूताने की ओर आया उन दिनों वह तीर्थयात्रा कर रही थी। यदि मीरां उससे [illegible] भी तो वह अपने पदों में [illegible] कुछ उल्लेख अवश्य करती। अकबर के इतिहासकार भेंट के विषय में लिखते। इसके विपरीत किसी भी समकालीन इतिहासकार ने इस विषय पर तो क्या—मीरां की जीवनी पर भी एक शब्द तक नहीं लिखा है। मीरां के पदों व अन्य सूत्रों से ऐसा कुछ भी नहीं ज्ञात होता कि वह राजनीति-शास्त्र में निपुण थी। फिर भला क्यों अकबर जैसा सर्वविदित राजनीतिज्ञ मीरां के पास राजनीतिक विषयों पर परामर्श लेने जाता! यह तो अन्धभक्तों की केवल कपोलकल्पनामात्र जान पड़ती है।

अकबर के साथ तानसेन का मीरां से मिलने जाना भी बिल्कुल असत्य प्रतीत होता है। तानसेन का अकबर से सर्वप्रथम मिलना वि० सं० १६१९ की ज्येष्ठ सुदी १३ शनिवार (ई० सन् १५६२ को १६ मई हिजरी सन् ९६९ की १२ रमजान)

१—लेखक के देशदूत में लेख; मीरां का जन्मकाल वर्ष ७ संख्या ४८ पृ० ३१ और मीरां की मृत्युतिथि वर्ष ८ संख्या ३३ पृष्ठ १२।

२—देशदूत में मीरां की मृत्युतिथि; वर्ष ८ संख्या ३३ पृ० १२।

३—ठाकुर जगदीशसिंह गहलोत; राजपूताने का इतिहास पृ० ३१।

४—वही; पृ० ३२।

५—डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा; जोधपुर का इतिहास पृ० ३२३।

६—वही; पृ० ३२३।

शेष पृष्ठ ३४ पर देखिए

संभव है कितना परिवर्तन!

लेखिका, श्री शान्ति, एम० ए०

सच से झूठ, झूठ से माया,
सुख से दुःख, दुःख से छाया,
क्रमशः नर पाने लगता है उदासीनता में आकर्षण!
अधरों पर मधु, नयनों में जल,
हृदय-उदधि को आहों का बल,
देख किनारा पास, माँगता है लहरों से मीन विसर्जन!
कोमल बन पिघला न सका जो,
नर की श्रद्धा पा न सका जो,
आज झुका लाखों को लेता, वह ही मंदिर का पत्थर बन!

इस लेख के लेखक कुंवर सुखवीरसिंह गहलोत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-कानून क्या है?

भारत ने किन शर्तों के आधार पर समझौता किया है?

लेखिका, कुमारी शकुन्तला मेहता एम० ए०, एल० टी०

अन्तर्राष्ट्रीय शुभ-संघ क्या है और शुभ कानून-शास्त्र के अनुसार संसार में किस प्रकार का परिवर्तन और मजदूरों की स्थिति में सुधार हो रहा है। साथ ही भारत में किस प्रकार की नीति अपनाई जानेवाली है। लेख सुन्दर और जानकारी से पूर्ण है।

द्वितीय विश्व-युद्ध से पहले एक चौथाई शताब्दि की अवधि में अंतर्राष्ट्रीय श्रम-संघ के पच्चीस सम्मेलन हुए जिनमें ६७ समझौते तथा ६६ सिफारिशें स्वीकार की गईं। इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय श्रम-कानून-शास्त्र का प्रादुर्भाव हुआ। इसके द्वारा मजदूरों की स्थिति सुधारने का भरसक प्रयास किया जा रहा है। इसकी धाराओं के अनुसार कोई बालक जब तक १५ वर्ष का नहीं हो जाता, तब तक उसे किसी औद्योगिक कारखाने में नौकर नहीं रखा जा सकता। जब तक वह १६ वर्ष से कम है तब तक उससे रात को काम नहीं लिया जा सकता; किन्हीं-किन्हीं औद्योगिक कारखानों में यह आयु १८ वर्ष तक है। किसी मजदूर से प्रतिसप्ताह ४८ घंटे से अधिक काम नहीं लिया जा सकता। उसे एक दिन की साप्ताहिक छुट्टी मिलना चाहिये तथा एक वर्ष में वह छः दिन की सवैतनिक छुट्टी पाने का अधिकारी है। अगर कारखाने में काम करने के कारण उसे कोई भीषण रोग हो जाता है अथवा वह किसी दुर्घटना का शिकार होता है तो उसे कानूनन मुआवजा देने की व्यवस्था होनी चाहिए। सरकारी नियमों द्वारा उसके लिये बुढ़ापे, बीमारी तथा अंग-[illegible] की अवस्थाओं में आर्थिक सहायता [illegible] जानी चाहिए। यदि किसी [illegible] काम छूट जाता है तो काम-[illegible] संस्थाओं को रोजगार [illegible] उसकी मदद करनी चाहिए। बेकार मजदूर तथा उसके परिवार को भूखा मरने से बचाने के लिए सरकारी सहायता की योजना होनी चाहिए। यदि कोई नाविक बेकार है तो उसे रोजगार के लिये काम दिलाऊ संस्था के पास अपना प्रार्थना-पत्र भेजना चाहिए जिसकी व्यवस्था नाविकों और जहाज-मालिकों की संयुक्त देख-रेख में की जाती है। नौकरी के समय नाविक और जहाज-मालिक में एक खास समझौता होता है। यदि किसी नाविक का जहाज नष्ट हो जाता है तो बेकारी की अवधि में जहाज-मालिक को उसे मुआवजा देना पड़ेगा। नाविक को घर पहुँचाने का व्यय भी मालिक ही बर्दाश्त करेगा आदि आदि।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम-संघ ने मजदूरों की सुरक्षा के लिये कितने कानून बनवाये हैं उनका विवरण यहां स्थानाभाव के कारण देना असंभव है। जो पाठक विस्तृत वर्णन जानने के इच्छुक हों, उन्हें अंतर्राष्ट्रीय श्रम-संघ-द्वारा प्रकाशित "इंटर-नेशनल लेबर कोड" देखना चाहिए। यद्यपि संघ के सदस्य-देशों ने इसकी सभी धाराओं को अभी तक अपने विधानों में स्थान नहीं दे पाया है फिर भी उन्होंने इस दिशा में काफी दिलचस्पी ली है। उदाहरण के लिये १९१९ से १९३९ की अवधि में ६७ समझौते हुए जिनके बारे में अंतर्राष्ट्रीय श्रम-संघ के पास सदस्य-देशों से ९०२ स्वीकृतियां पहुँचीं। दूसरे शब्दों में, प्रति-समझौते के सम्बन्ध में १३ स्वीकृतियों का औसत रहा। बेकारी समस्या-सम्बन्धी समझौते को छोड़कर भारत ने १४ समझौतों को स्वीकार किया है। उनका विवरण नीचे दिया जाता है:—

(१) काम के घंटों की सीमा निर्धारित करना अर्थात् मजदूरों से प्रतिदिन ८ घंटे अथवा प्रतिसप्ताह कुल ४८ घंटे काम लेना, (२) कारखानों में स्त्रियों से रात को काम लेना; (३) लड़कों से रात में काम न लेना—भारत में १४ वर्ष या उससे कम आयु के लड़कों से रात को काम लेने की मनाही; (४) खेतिहर मजदूरों को कारखाने के मजदूरों की भांति ही अपने संगठन बनाने का अधिकार; (५) सप्ताह में एक बार पूरे चौबीस घंटे की छुट्टी; (६) १८ वर्ष से कम आयुवालों को जहाजों पर स्टोकर की नौकरी करने की मनाही; (७) डाक्टरी परीक्षा-सम्बन्धी विशेष शर्तें पूरी होने पर १८ वर्ष या उससे कम आयुवालों की जहाजी नौकरी की व्यवस्था; (८) नौकरी से उत्पन्न रोग के बारे में मुआवजा; (९) दुर्घटना-सम्बन्धी मुआवजा के लिए देशी तथा विदेशी मजदूरों के प्रति एक-सा व्यवहार व समान शर्तें; (१०) जहाज पर जिस देश का झंडा लगा है उस देश का ही अफसर विदेशियों से सम्बन्ध रखनेवाली जांच करे, (११) नाविक तथा जहाज-मालिक के बीच नौकरी की शर्तों-सम्बन्धी समझौता; (१२) जहाजों से जानेवाली भारी पार्सलों पर साफ तौर से उनका वजन लिखने-सम्बन्धी समझौता; (१३) रात को स्त्रियों से काम न लेना सम्बन्धी संशोधित समझौता तथा (१४) खानों में स्त्रियों से काम न लेने का समझौता—१९३७ से भारत इस समझौते पर अमल कर रहा था; किंतु द्वितीय विश्व-युद्ध के कारण उसने जनवरी, १९४६ तक के लिये पिछले वर्षों यह आदेश जारी किया कि स्त्रियों से खानों में काम लिया जा सकता है।

प्रतीक

ले०, श्री रामप्रसादसिंह 'आनन्द' बी० ए०

जाह्नवी के तट पर स्थित उपवन में मैं धीरे-धीरे शान्त मन से टहल रहा था। मलय-पवन शरीर से टकराकर सिहरन उत्पन्न करके मंथर गति से चला जा रहा था। ऊषा ने अँगड़ाई ली। भगवान् भास्कर ने उसके अरुण कपोलों को चूम लिया, वह लज्जा से लुप्त हो गई।

मैं थककर एक शिला-खण्ड पर बैठ गया। मेरी दृष्टि रसालों पर होते हुए अपूर्व ताण्डव की ओर आकर्षित हुई। मैं निर्निमेष नेत्रों से उस उत्सव को देखने लगा।—रसालों की कोमल वृन्तियों की नोकों पर तुहीन-बिन्दु ढुलककर नाच रहे थे; फिर रश्मियों से रंजित होकर धीरे से चू पड़ते थे। मन आन्दोलित हो उठा। हृदय का स्पन्दन तीव्र हो चला! बिखरे विचारों की कड़ियाँ शृंखलाबद्ध हो गईं।

भावना ने धीरे से कहा कि तुहीन-बिन्दुओं का नर्तन क्षण-भंगुर जीवन का "प्रतीक" है। मन में एक टीस लिए मैं वहाँ से चला गया!!!

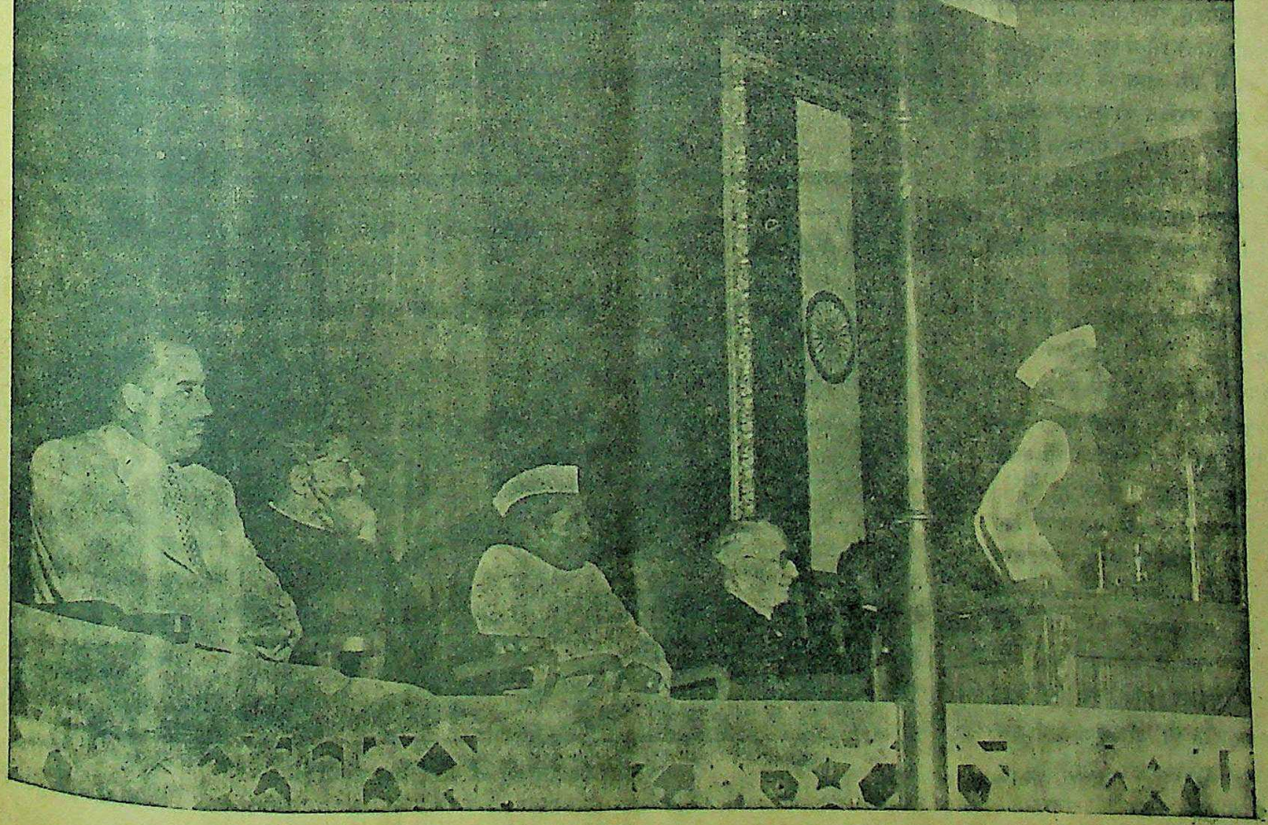

पिछले मास में दिल्ली में होनेवाले अखिल एशिया श्रम-सम्मेलन में पंडित जवाहरलाल नेहरू भाषण दे रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधीवाद क्या है ?

(पेज ७ का शेष)

और शहनशीलता की बदौलत उनकी तकलीफों के वक्त सलाह लेने के लिये वाध्य किया। वे ब्रिटिश शासन से घृणा करते हैं; परन्तु अँगरेजों से बड़ी मुहब्बत जिसके कारण कठिनाई के वक्त वे उनसे सलाह लेते हैं। कभी कभी लोग कहते हैं कि उन्हें धोखा दिया गया; परन्तु वे उस तैराक की तरह हैं जो कभी समुद्री लहर के ऊपर जोरों से तैरते हुए दिखाई देता है और कभी लहर के उतार में खो जाता है। जैसे जैसे उनका जीवन-काल दीर्घ होता जाता है, उनके खयाल गहन होते जाते हैं और उनकी योजनाएं उत्तमतर। उनकी समस्यायें धुंधली और हवाई नहीं होतीं जो सिर्फ आसमान में ही उड़ सकती हैं। उनके कल के सपने आज खयाल बन जाते हैं और वे कल के लिये योजना तथा परसों के लिये प्रोग्राम बन जाते हैं। वे वह 'फिलासफर' हैं जो अपने खयालात स्वर्ग से इस कार्य-शील दुनिया में उतर आया हो। साधारण आदमी के लिए ऐसा उतार उसके लक्ष्य का अधोपतन हो जायगा, परन्तु गांधी जी का लक्ष्य जैसे का तैसा ही रहता है—बिलकुल चमकता हुआ—साफ—जो इस परेशानी से सड़ती हुई दुनिया के दलदल में फँसी हुई मानव-जाति के लिए "सर्चलाइट" है। असलियत तो यह है कि कांग्रेस ने कभी अन्दाजा तक न किया था—इरादा तो दूर रहा—कि वह अहिंसात्मक सत्ता बन जायगी। उसने अपने धर्म में सन् १९३४ में सचाई और अहिंसा शब्दों को शान्तिमय और उचित साधनों के बदले रखने से इन्कार कर दिया था। उसने इस हक को माँगा था कि उसे हथियार वगैरह रखने और प्रयोग करने को मिलें। गांधी जी ने खुद अपनी ग्यारह बातों में से इसे अन्त में रक्खा, जिन्हें उन्होंने लार्ड अरविन को चुनौती देते वक्त पेश किया था। द्वितीय गोलमेज परिषद् में उन्होंने फौज को फिर से संगठित करने के लिए कहा; परन्तु १४ जुलाई सन् '४० को फ्रांस के हारने से उनका अहिंसात्मक राज्य में फिर से विश्वास पैदा हो उठा और उसे दोहरा-दोहराकर उन्होंने मन में पुष्ट कर लिया। अहिंसा शायद एक दिन में न प्राप्त की जा सके, क्योंकि वह वास्तव में अन्त न होकर 'दिशा' है—दिशा, जिस तरफ शायद गांधी जी अकेले ही चल रहे हैं, मगर वे चलते ही रहेंगे। यह वह शानदार स्वर्ग है जिसे पाण्डवों ने कुत्ते के भेष में यम को साथ लेकर चल, प्राप्त करने की कोशिश की थी। वे एक-एक करके "महाप्रस्थान" में गिरते गये और जब धर्मराज से यह बात कही गई तो उन्होंने मुड़कर पीछे तक न देखा और अग्रसर होते ही चले गये, यहां तक कि उन्होंने बुद्धि प्राप्त कर ली। गांधी जी इसी तरह अहिंसा के मार्ग से सचाई की तलाश में चले जा रहे हैं—चाहे उनका कोई साथी हो या नहीं—अविचल—अथक्। गांधी जी वह डायनमों हैं जो इस नये जमाने में बिजली से चलनेवाली शक्ति है। अगर स्वराज्य का अभी आरम्भ हुआ है और अन्त नहीं—अगर वह पेड़ से समय पर तोड़कर फल को पकाने का ढंग है तो गांधी जी एक होशियार (माली) बागवान हैं जो यह भली भाँति जानते हैं कि फल को कब तोड़कर पाल रक्खा जाना चाहिए। उनमें हिन्दू-धर्म के चारों वर्णों और आश्रमों का मिलाव होता है। वे नये ईसामसीह हैं जो अपनी शिक्षाओं का आदेश करते जा रहे हैं और पुरानी दुनिया को आशीर्वाद देते जा रहे हैं।

नई छपी हुई १२रंगी तस्वीरें

बढ़िया कागज़ साइज़ १४" × २०" मूल्य एक का १ रु०, दर्जन ९ रु० ज्यादा लेनेवाले को रियायत।

महात्मा गांधी, जवाहरलाल, सुभाषचन्द्र बोस, राणाप्रताप, शिवाजी महाराज और देवताओं की।

प्लेइंग कार्ड्स, स्याही की पुड़ियाँ, होल्डर्स आदि

WESTERN PLAYING CARD COMPANY INDIA BOMBAY No 4

लीथो की छपाई, काम सुन्दर और योग्य भाव से स्वीकार किया जाता है।

मॉडर्न पिक्चर्स पब्लिशर्स ऑफ इण्डिया गिरगाँव, बम्बई ४

प्रदर रोग स्त्रियों का भयानक शत्रु है

प्रदर रोग जिसको लोग लिकोरिया भी कहते हैं यह स्त्रियों की सुन्दरता और जवानी को नष्ट कर देने वाला भयानक शत्रु है। लज्जावश बेचारी रोग को छिपाये रहती हैं और दिन-रात घुला करती हैं यह उनकी भयानक रोग का इलाज कराने में लापरवाही नहीं करनी चाहिये। इस बीमारी से स्त्रियों के गुप्त शरीर से काला धुमैला या श्वेत रङ्ग का बदबूदार पानी या लेस सा निकलता रहता है, महीना ठीक समय पर नहीं होता है, जिसके कारण कमर, रीढ़, सिर में दर्द, शरीर में जलन मन मलीन, उठने बैठने में थकावट, भूख का कम लगना, बदन दुबला और कमजोर हो जाना मूर्छा बेहोशी आदि रोग हो जाते हैं और सन्तान नहीं होती और यदि होती भी है तो दुबली और कमजोर होती है। ऐसी अवस्था में भारत-विख्यात वैद्यरत्न सत्यदेव ने अपूर्व शक्ति प्रदान करनेवाली २५ वर्ष की आजमूदा नारी संजीवन नामक दवा का आविष्कार किया है जिसके द्वारा आज तक सहस्रों स्त्रियों को इस भयानक रोग के पंजे से छुड़ाया है। इस नारी संजीवन के सेवन से तमाम बीमारियाँ दूर होकर स्त्रियाँ सुन्दर और तन्दुरुस्त हो जाती हैं और सन्तानें सुन्दर बलवान् दीर्घायु पैदा होती हैं। यदि आवश्यकता हो तो आज ही पत्र डालकर एक शीशी नारी संजीवन को मंगाकर इसके अपूर्व गुणों का चमत्कार देखें। क़ीमत एक शीशी ३=) डाक-खर्च, पैकिंग-खर्च अलग।

मँगाने का पता— रूप विलास कम्पनी नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इण्डियन रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास-परिहास

भंग को तरंग

प्रान्तीय असेम्बली की भाषा हिन्दी हो गई। सुना उस दिन बहुत से लीगियों का राशन बच गया !

* * *

कुछ लोगों ने कहा हम यहीं पाकिस्तान बनायेंगे। आप पाकिस्तान बनायेंगे तो बुरका पहनकर जायगा कौन ?

* * *

कायदे आजम काश्मीर को पाकिस्तान में मिलाना चाहते हैं। हाँ, मरने पर तो विहिश्त मिलेगा ही, जीवन में भी तो स्वर्ग का आनन्द लूटना चाहिए।

* * *

लोग कहते हैं निजाम दोहरी चाल चल रहे हैं। मेरी समझ में बिल्कुल एकहरी चाल चल रहे हैं। अभी तो जोड़ी बनी ही नहीं, तैयारी हो रही है।

* * *

बर्मा-शेल [illegible] सिलापति ने असेम्बली में [illegible] विदेशी भाषा है। महात्मा [illegible] कितनी चोट इससे पहुँची होगी, आप समझ सकते हैं।

* * *

हुमायूँ कबीर कहते हैं कि आजाद के ही नेतृत्व में मुसलमानों का हित है। तब कायदे आजम क्या करेंगे ? सिन्ध में तो हरियाली भी नहीं है।

* * *

इस स्वराज में सबसे अधिक लाभ बिहार को हुआ। गुड़ और जूसी का व्यापार प्रान्त के लिए बड़ा भाग्यशाली हुआ और जगह के लोगों की पाँचों उँगलियाँ घी में रहती हैं, बिहार के मंत्रियों के दोनों हाथ शीरे में हैं !

* * *

किन्तु भाई मन भी ललचा तो जूसी और राब पर ! लोहे का परमिट होता, सिमेंट का परमिट होता; गल्ले का परमिट होता तब कुछ बात भी होती। आगे देखिये किस पर हाथ मारा जाता है ?

* * *

काशी में पी० ई० एन० की सभा हुई। वहाँ के मंच से प्रचार किया गया कि रोमन-लिपि भारत के लिए हितकर होगी। ऐसे लोगों का स्वागत किया किसने, जिसका काम है नागरी-प्रचार।

* * *

श्रीयुत वियोगी हरिजी कहते हैं विधान-परिषद् में हिन्दी देश की राजभाषा बनाई जाय। क्या महात्मा गांधी से उनका विरोध हो गया अथवा अब हवा जिधर बह रही है, उधर रुख होने लगा है ?

* * *

मध्य-प्रान्त के एक मंत्री ने कहा कि यहाँ हिन्दी और मराठी दोनों भाषायें बोली जाती हैं, इसलिए हिन्दी को प्रान्त की भाषा बना देना इस समय ठीक न होगा। ओह अँगरेजी भी तो बोली जाती है। ऐसी कठिनाई में हिन्दी कैसे वहाँ की भाषा हो सकती है ? फिर अँगरेजी भाषा और रोमन-लिपि चले।

* * *

बहुमत से राहुल जी साहित्य-सम्मेलन के सभापति चुन लिए गये। न सेठ जी का नाटक रंग लाया, न चन्नबली जी का उर्दू पर प्रहार। काम आया वही हथौड़ा और हँसिया। देखें हिन्दी पर कैसा हथौड़ा जमता है ? —जगदत्त शर्मा

आओ हे दीवाली !

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम' बी० ए०

मध्य-देश के ज्योति-काल शुभ राम-राज्य-वैभव से चर्चित,
सोम-सुरस से छकित आर्य-ऋषियों की गुरु गरिमा से अर्चित,
सीता की आँसू लड़ियों की सुधि उकसानेवाली।

व्यास-काल के कुरुक्षेत्र की स्फीत भुजाओं से चिर-परिचित,
महामंत्र मोहन की 'दर्शन-गीता' के गौरव से गर्वित,
दीनों के अग्रणी विदुर की व्यथा सुनानेवाली।

विक्रम की उदार गाथा से—हर्ष-पराक्रम से परि-पुलकित,
अफगानों के विजय-चिह्न से—मुगलों की स्मृतियों से अंकित,
साँगा, राणा, दुर्गा, शिव का शौर्य बतानेवाली।

लोकमान्य की अन्तर्ज्वाला की अंचल छाया में पोषित,
'बापू' की करुणा के नीचे शत-शत बलिदानों से तोषित,
चिर हममें सोई वस्ती में आग जगानेवाली।

क्षुधितों-तृषितों की बस्ती में आज बदलना होगा बाना।
अब जनता-जनार्दन-युग में चल न सकेगा कुछ मनमाना॥
देवि, तुम्हें बनना होगा अब क्रान्ति उठानेवाली।

अब वैभव-विलास मन्दिर में माँ, न तुम्हें होना है बन्दी,
अब तुमको आलोकित करनी हैं ये कुटियाँ टटी—गन्दी,
आओ, जन-जन में मानव की ज्योति उगानेवाली।

दीनों की आहों की लपटों से कब तक माँ, दूर बचोगी,
कब तक इन अधमरे अभागों की बस्ती में रास रचोगी,
उतरो, दीनों की हड्डी का बज्र बनानेवाली।

प्रान्तीय मुस्लिम लीगी किधर ?

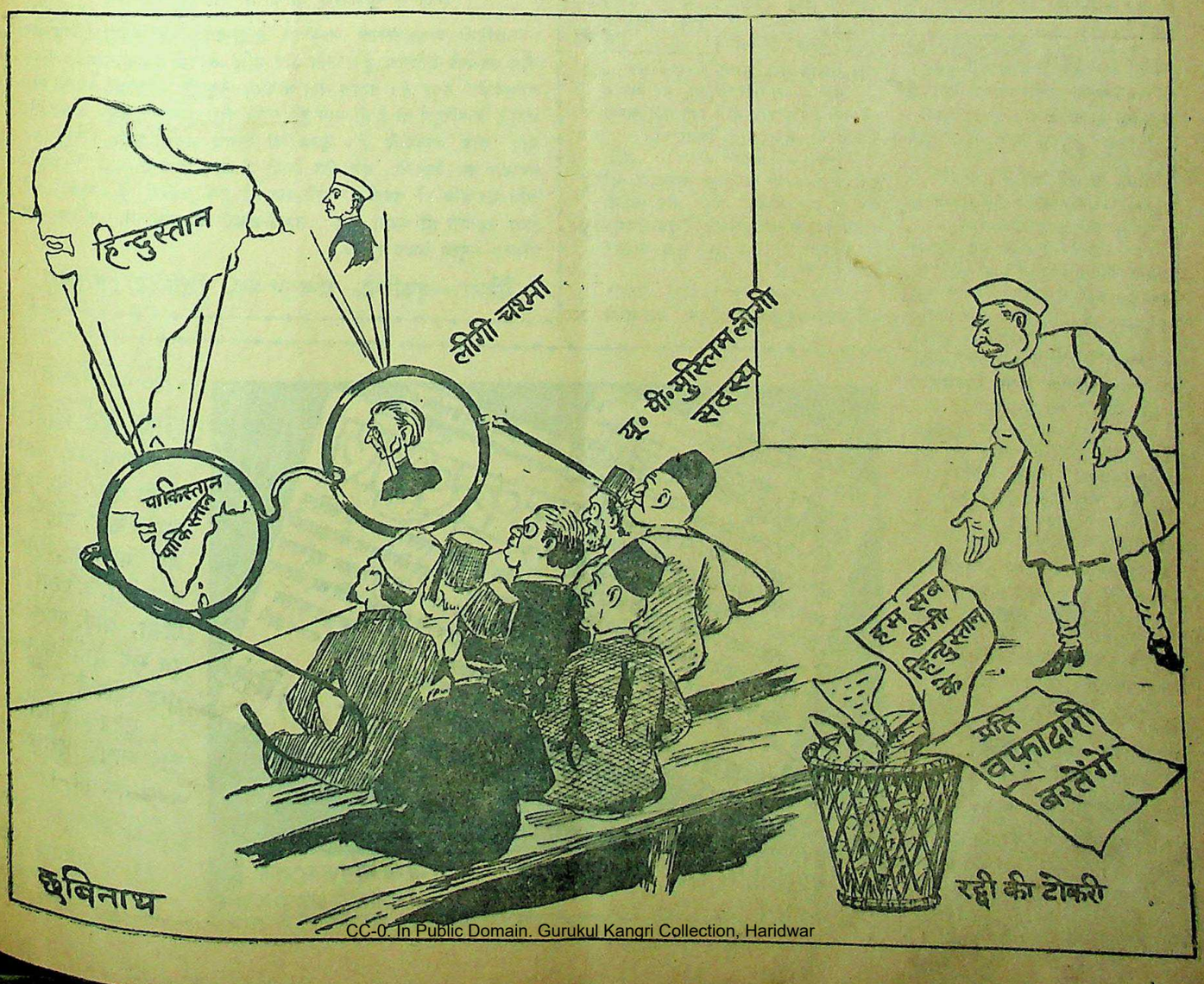

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पेज ११ का शेष)

रा०—क्यों नहीं कर सकता, मैं कोशिश करूँगा।

मधु०—किस तरह की कोशिश करेंगे?

रा०—प्रेम के सम्बन्ध में सैकड़ों पुस्तकें पढ़ूंगा। सारी लायब्रेरी!

मधु०—लायब्रेरी की पुस्तकों से आप प्रेम करना सीखेंगे?

रा०—क्यों? कौन-सा विषय है, जो पुस्तकों में नहीं है?

मधु०—कम से कम प्रेम करना तो पुस्तकों से नहीं आ सकता!

रा०—तो कैसे आ सकता है?

मधु०—मैं सिखला सकती हूँ।

रा०—आप!

मधु०—हां, मैं।

रा०—कैसे?

मधु०—आप शायद न सीख सकें!

रा०—मैं सीख के रहूँगा। अभ्यास करने से क्या नहीं होता। मैं अभ्यास करूँगा!

मधु०—प्रेम में अभ्यास नहीं होता!

रा०—तो बिना अभ्यास के कोई चीज आ भी नहीं सकती! मैंने कठिन से कठिन काम अभ्यास से कर डाला है। पिंगपांग खेल ही ले लीजिए।

मधु०—पिंगपांग? आप पूरे किंग-कांग हैं?

रा०—जी?

मधु०—कुछ नहीं।

रा० तो फिर मुझे प्रेम करना सिखलाइए।

मधु०—सीखना ही चाहते हैं?

रा०—अवश्य, नहीं तो सुरमा से प्रेम का अभिनय कैसे कर सकता हूँ!

मधु०—देखिए मेरा रुमाल गिर पड़ा, उठा दीजिए!

रा०—(शीघ्र ही उठाकर) यह लीजिए!

मधु०—(लेकर चिढ़ते हुए) यह लीजिए! आप कुछ ही सीख नहीं सकते!

रा०—क्यों, क्या रुमाल देने में कुछ गलती हो गई?

मधु०—पत्थर से गिरने में भी कोई गलती होती है?

रा०—मैं कुछ समझा नहीं!

मधु०—आप सेठ चैनसुखदास के पास जाइए और उनसे समझिए!

रा०—उनसे तो बहुत कुछ समझा हूँ। और यों मैं प्रेम की बहुत सी बातें जानता हूँ। आहें भर सकता हूँ, तारे गिन सकता हूँ—एक, दो, तीन, चार। चांद को गाली दे सकता हूँ। बिस्तर पर करवटें बदल सकता हूँ। कभी इस तरफ, कभी उस तरफ। रोते हुए गाना गा सकता हूँ। और प्रेम में क्या चाहिए?

मधु०—कुछ नहीं, आप सचमुच बहुत प्रेम कर सकते हैं। आप मेरा पार्ट सेठ चैनसुखदास को वापस दे दीजिएगा। मैं कोई पार्ट नहीं कर सकती। लीजिए।

रा०—अरे यह क्या! मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ।

मधु०—(आदेश के स्वरों में) लीजिए।

रा०—(आतंकित होकर ले लेता है) अच्छा!

मधु०—आपने मेरी उँगलियों को क्यों दबा दिया?

रा०—(सरलता से) मैंने नहीं दबाया!

मधु०—तो क्या नहीं दबाया?

रा०—(जिज्ञासा के स्वरों में उँगलियां दबाने से क्या होता है!

मधु०—राजीव! तुम जाओ—यहां से चले जाओ! मेरे सिर में दर्द हो रहा है।

रा०—कहीं 'नास' सूंघने से तो सिर में दर्द नहीं हो गया? आपने सेठ जी का अभिनय करते हुए उसे सूंघा था।

मधु०—जाओ, अपने सेठ जी के पास और चाहो तो तुम भी सूंघ डालो सेर भर नास।

रा०—(अट्टहास करते हुए) मैं! हां, सूंघने का अभ्यास करूं तो क्या नहीं कर सकता! आप कहेंगी तो अभ्यास करूंगा।

मधु०—जाओ राजीव! मेरे सिर में दर्द हो रहा है। बैठ जाती हूँ।

रा०—तो मैं अभी सेठ जी से कहकर डाक्टर बुलवाता हूँ। क्या हो गया अभी अभी! आप इतना बातें करती हैं, तभी तो सिर में दर्द हो जाता है। (नपथ्य की ओर देखकर) अरे, सेठ जी तो यहीं आ रहे हैं। (उत्सुकता से सेठजी की ओर बढ़ते हुए।)

सेठ जी!

(सेठ चैनसुखदास का प्रवेश। वह राजीव को देखते ही क्रुद्ध हो जाते हैं।)

चैन०—राजीव! तुमने अपना पार्ट याद किया? तुम यहां-वहां घूमने के बहुत शौकीन हो गए हो। मैं तुम्हें यहां से हटा दूंगा। अगर सीधे तरीके से पेश नहीं आए। मैं जितनी तुम्हारे साथ भलाई करूँ, तुम उतनी ही मूर्खता से काम करते हो। तुम्हें पार्ट याद हो गया?

रा०—(डरते हुए सहमकर) जी, याद तो हो गया लेकिन सुरमा से जो प्रेम का एक्टिंग करना है, उसके बारे में इनसे पूछने के लिए आया था तो इनका सिर दर्द करने लगा।

चैन०—मिस मधुलता के सिर में दर्द हो रहा है? क्यों मिस मधुलता! (राजीव को डाटकर) तुम इतनी बातें इनसे करते ही क्यों हो? जाओ यहां से, अपना पार्ट याद करो।

(राजीव का शीघ्रता से प्रस्थान)

चैन०—क्या आपके सिर में सचमुच दर्द है मिस मधुलता? आपने मुझसे क्यों नहीं कहा। मैं अभी अच्छे से अच्छा डाक्टर बुलवा दूं। तब तक यदि तुम्हें संकोच नहीं तो मैं ही कुछ सेवा,...

मधु०—जी नहीं, सेठजी, मेरे सिर में दर्द नहीं है। मैं राजीव से बात नहीं करना चाहती थी, मैंने बहाना किया था।

चैन०—(प्रसन्न होकर) ओह, तुम बहुत अच्छी हो मिस मधुलता, मेरे मन की बात कितनी जल्दी और कितनी अच्छी तरह से समझती हो! तुम सचमुच ही मधुलता हो! मैं तुम्हें कुछ उपहार देना चाहता हूँ!

मधु०—(नीरसता से) सेठजी, मुझे उपहार कुछ नहीं चाहिए! इस समय अपने पार्ट के संबंध में सोचने के लिये मैं एकान्त चाहती हूँ।

चैन०—जरूर, जरूर! मैं फिर आ जाऊंगा। मैं तो अपनी नास की डिब्बी भूल गया था। उसके बिना मुझे बड़ी तकलीफ होती है। यहां रह गई है?

मधु०—आपको देने के लिए राजीव ले गया है।

चैन०—राजीव ले गया? खैर, मेरे पास दूसरी डिब्बी भी है। (उसे खोलकर नस्य सूंघते हुए) कलाकार यदि नास सूंघें तो उनकी कला में मस्ती आ जाय!

मधु०—नास से तो उनका सर्वनाश ही हो जायगा।

चैन०—(हँसकर) ओहो! क्या बात कही है! वाह! (रुककर) तुम एकान्त चाहती हो! लो, मैं जाता हूँ, अभी जाता हूँ! (आगे बढ़ते हैं। रुककर) देखिये, नमस्कार मत कीजिएगा। अपनों से शिष्टाचार कैसा? हैं, हैं, शिष्टाचार कैसा! हैं, हैं, शिष्टार कैसा!

मधु०—नमस्कार!

चैन०—आप नमस्कार करती हैं! अच्छा, यह भी सही। आपका नमस्कार भी मुझे अच्छा लगता है। नमस्कार..... नमस्कार.....

(हँसते हुए जाते हैं। मधुलता शून्य में देखती रहती है।)

(परदा गिरता है।)

१००) इनाम

सिद्ध वशीकरण यन्त्र—के धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होता है। आप जिसे चाहते हैं, चाहे वह पत्थर-दिल क्यों न हो, आपके पास चली आयेगी। इससे भाग्योदय, नौकरी, धन की प्राप्ति, मुक़दमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा का २), चांदी का ३), सोने का १२) झूठा साबित करने पर १००) इनाम।

श्री बाल्मिकी आश्रम, नं० D.
पो० कतरी सराय (गया)

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं नियमावली मुफ्त मंगायें। पता:—

इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ गीति-काव्य

कवि और छवि

लेखक, सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव

कविश्री बालकृष्णराव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपकी नवीनतम गीति-काव्यों का सर्वश्रेष्ठ संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्द्वंद्व से परिपूर्ण तो है ही साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाले हैं। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संग्रहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम, सचित्र और सजिल्द—मूल्य केवल २) रु०।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

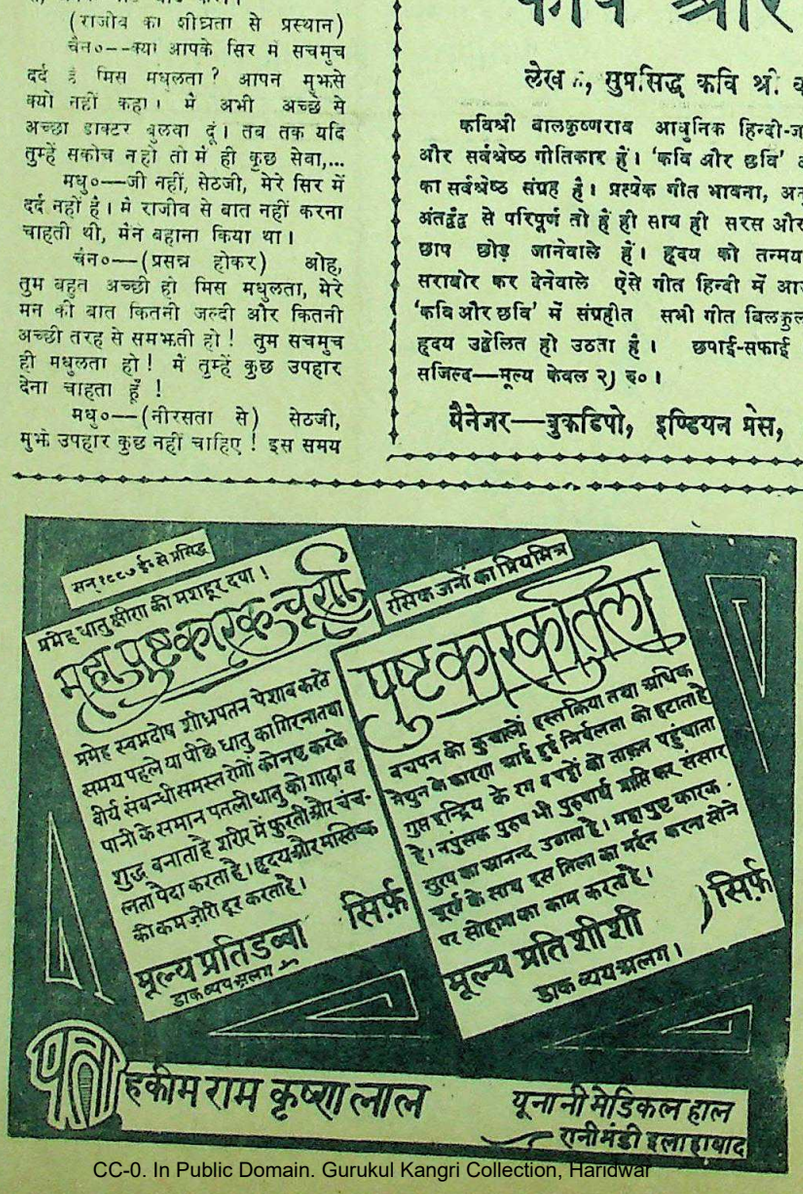

१८८७ से प्रचलित है।

शोधो हुई छोटी हरें

मन्दाग्नि, अर्जीर्ण, पतला दस्त, पेट फूलना, खट्टी डकार, वायु रुकना, जी मचलाना, अरुचि, उदरपीड़ा, जलन्धर, वायु गोला, बादी बवासीर—इन सब रोगों में अत्यन्त गुणदायक है।

मूल्य प्रति बक्स ।=) डाक-व्यय एक से तीन बक्स तक ।।।)।

हकीम रामकृष्णलाल,
यूनानी मेडिकल हाल,
रानी मंडी, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म-जगत की चार गायिकाएँ

शान्ता आप्टे, काननबाला, लोला चिटनिस और खुर्शीद

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

खुर्शीद के मधुर संगीत से किसका मन मुग्ध नहीं हो जाता ?

संगीत, भारतीय इतिहास का एक ऐसा मृदुभाषन है, जिसके कानों में पड़ते ही हमारा हृदय हिलोरें लेने लगता है—झूम उठता है। हम कैसी भी दुखद—[illegible] में क्यों न हों ? हमारा शरीर [illegible] प्रफुल्लित हो उठेगा—नाच [illegible] संगीत ने तो आर्यावर्त में [illegible] स्थापित कर लिया था। 'तानसेन' की गान-विद्या से चेतन की कौन कहे, जड़-पदार्थ भी आनन्द-विभोर हो उठते थे। दीपक में ज्योति, पानी में खौलन आदि उत्पन्न करना—यह गायन-कला का ही प्रभाव था। पर परन्तु जब मानव अपनी स्वयं की संस्कृति को भूलकर दूसरों के मुख की ओर लालायित दृष्टि से निरखने लगता है तो उसका सर्वनाश हो जाता है। वास्तविक अर्थों में न तो अब वैसे गायक ही हैं और न कला-प्रेमी। किसी-किसी स्थान पर हमें एकाध ऐसे दूरदर्शी व्यक्ति दृष्टिगोचर होते हैं तो हम अपने को धन्य समझ लें, यह बात दूसरी है। आज जो गायन बादि-रूप से प्रचलित हैं, उनमें मौलिकता एवं कला नहीं, वरन् दिखावटीपन तथा अश्लीलता रहती है।

लगभग १५ वर्षों पूर्व से भारतीय चल-चित्रों में संगीत का अनुपम आधिपत्य रहा है। भारतीय चित्रपटों को यदि हम संगीत से रहित कर दें तो हमारा चित्र मूक प्रतीत होगा। दिन भर का व्यथित मानव संध्या को 'सिनेमा-गृह' जाता है। उसे पूर्ण विश्वास है कि उसकी बेचैनी दूर होगी और उसे आनन्द प्राप्त होगा। अनेक-चित्र ऐसे देखने में आये हैं, जिनका एकमात्र केन्द्र संगीत रहा है। उदाहरणार्थ—'अनमोल-घड़ी', 'रतन' 'मीराबाई', 'परवाना', 'शाहजहाँ' इत्यादि-इत्यादि। भारतीय 'फिल्मों' में नायक व नायिकाओं, दोनों के ही गायन प्राप्त होते हैं। स्वर्गीय संगीत-सम्राट् श्री कुन्दनलाल सहगल, काननबाला आदि भारतीय छायालोक की प्रमुख

शान्ता आप्टे ने फिल्म-जगत् में श्रेष्ठ ख्याति प्राप्त की है।

[illegible] suitable for being workable units for the purpose of uniting with the provinces in a scheme of a free and federated India."

यदि हम इस प्रस्ताव को रियासतों के समीकरण का आधार मानें, तो [illegible] जागीरों से बड़ी उन रियासतों का क्या होगा, हमारे विचार से इन

[illegible] के मध्य एक फेडरल संघ होना अनिवार्य है। छोटी रियासतों का फेडरल यूनियन में शामिल होना आसानी है। भौगोलिक दृष्टि से छोटी रियासतों का एक संघ में होना उनके लिये श्रेयस्कर है। परन्तु दक्षिणी

१०८७०

परिस्थिति का सामना करने की क्षमता नहीं रखती। पूर्ण देश भर में इस प्रकार की रियासतों का संघ बनाना उनके लिये हितकर है। संघ बन जाने पर उनकी प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के लिये स्थान है। यहां स्वाभाविक ही यह प्रश्न उठता है कि ये छोटी छोटी जागीरें जैसी रियासतों को उतना ही आवश्यक है जितना कि एक डाक्टर को औषधि देने से पूर्व रोगी के रोग का।

शान्ता आप्टे

महाराष्ट्र-कुल की मान-मर्यादा कोकिलकण्ठी शान्ता आप्टे, भारतीय छायालोक की उत्कृष्ट श्रेणी की कला-कर्त्री गायिकाओं में अपना स्थान अद्वितीय रखती हैं। आप भारतीय चित्र-जगत् को डा० शान्ताराम की एक 'अनमोल' देन हैं। आपके स्वर्गीय पिता, महाराष्ट्र के किसी 'स्टेशन' के, 'स्टेशन-मास्टर' थे तथा अपनी 'शान्ता' को एक 'माडर्न-गर्ल' निर्मित करना चाहते थे। फलतः आपने 'मैट्रिक' की परीक्षा में सफलता प्राप्त की; परन्तु संगीत की सजीव प्रेमिका होने के कारण आप एक संगीतज्ञ बन गईं और भाग्यचक्र ने आप्टे जी को कला की साकार प्रेमिका के चरणों से उठाकर कला के पुजारी के करों को सौंप दिया। विवश हो पुजारी (शान्ताराम) ने अपने सर्वप्रथम, सर्वोत्तम चित्र 'अमृत-मंथन' में उस देवी (शान्ता आप्टे) को स्थान दिया। इससे प्रथम आप 'श्याम-सुन्दर' में कार्य कर चुकी थीं। 'चन्द्र-सेना', 'राज-रानी' आदि में अपनी पूर्ण प्रतिभा का परिचय देती हुई, भारतीय जनता पर अपना पूर्ण आतंक जमा लिया। 'दुनिया न माने' तथा 'अमर ज्योति' ने आपकी कला की ख्याति को भारतीय फिल्म-उद्योग के लिये "अमर" बना दिया। आपकी पूर्व कृतियों, 'गोपाल-कृष्ण', 'वहाँ', 'अपना घर', 'सावन', 'कादम्बरी', 'उत्तरा-अभिमन्यु' आदि को निरखने के पश्चात् किसी का हृदय यह कहने को कदापि न प्रस्तुत होगा कि आपने कभी भी निम्न-कोटि का अभिनय तथा अश्लील गीत गाया है। 'कादम्बरी' में आपके द्वारा किये गए कलात्मक एवं उच्च कोटि के नृत्य दर्शकों की स्मृति में एक लम्बे काल तक सजग रहेंगे।

भारतीय प्राचीन सभ्यता व संस्कृति की उपासना करना आप्टे जी का परम धर्म है तथा 'स्टूडियो' के दूषित वातावरण से दूर सतीत्व की छाँव में गम्भीर एवं शान्तिमय जीवन व्यतीत करना सीखा है। भारत के विभिन्न नगरों की यात्राओं में ('म्यूज़िक-कान्फ्रेन्स' तथा अन्य कार्यों के अवसरों पर) अपने भ्राता, बाबूराव आप्टे को सदैव साथ रखती हैं। बिना बाबूराव की आज्ञा के आप उनसे भेंट भी नहीं कर सकते। आपका प्रारम्भिक जीवन आज भी लुका-छिपा हुआ है। आपके प्रत्येक चित्र में संगीत को प्रथम सुगठित स्थान दिया गया है। श्रीमती शान्ता आप्टे को 'क्लासिकल-म्यूज़िक' से अत्यधिक रुचि है। इसका प्रमाण उनकी रचनाओं, 'अपना घर', 'गोपाल-कृष्ण', 'दुहाई' आदि में भी मिलता है। आपके प्रमुखतम होने के अन्य कितने कारण हैं ? पुजारिन की तन्मयता से प्रसन्न होकर आराध्य देवी ने पाँच भाषाओं की विज्ञता का वरदान दिया। 'बोली मधुर बंशी की' (भक्ति-रस), 'दान किये आछो तुमी' (बंगाली भाषा), 'पायल तिरी जाय' (गुजराती अथवा मराठी भाषा), 'सेहिपेन पेडाई' (मद्रासी भाषा) आदि गीत अत्यधिक प्रचलित हैं। शीघ्र ही आप "सुभद्रा" में 'सुभद्रा' के आवरण में अपनी नवीनतम कला का प्रदर्शन करती हुई आ रही हैं।

काननबाला

उज्ज्वल ललाट, रसीले अधर, मदमाती चाल, गुलाब से लाल-लाल

'बधन' और 'कंगन' फिल्म में लीला चिटनिस का मधुर संगीत आज भी फिल्म-प्रेमियों को स्मरण हो आता है।

दीवाली

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०

आज भवन भवन जगी सुभग दीपमाला।
शुभ्र चन्द्रिका विलीन,
चन्द्र-हास-श्री-विहीन,
आज सदन सदन लगी रुचिर ज्योतिशाला।
नगर नगर डगर डगर,
तन मन बिच किरन लहर,
आज बदन बदन पगी मधुर स्नेह-ज्वाला।
देवि साज रही गगन,
साज रही सदन सजन,
आज नयन नयन भरी मदिर मदिर हाला।
आज देश मध्य भगर,
जल रहे मकान नगर,
अपना कर रहा आज मानव मुख काला।

फिल्म-जगत् का सुप्रसिद्ध आभिनेत्री और गायिका काननबाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोमल कपोल तथा कौमार्य-रस में भीगी हुई अभिनेत्री कानन देवी, अपनी कोकिल संगीत-कला की प्रचुरता का परिचय देती हुई, न्यू थियेटर्सकृत 'सपेरा' में आईं। आपकी संगीत-कला से प्रभावित होकर भारतीय छायालोक के महान् चित्र-शिल्पी श्री देवकी बोस ने अपने 'विद्यापति' में स्थान दिया। 'मोरे आँगना में आए आली' 'हमरि नगरिया में', 'कैसा उजड़ा मेरा' आदि गीतों को सुनकर दर्शकों ने आपका हृदय से स्वागत किया। 'मुक्ती', 'स्ट्रीट सिंगर', 'मगव-राज' आदि में कार्य करने के पश्चात् आपने 'जवाब' में कार्य किया। संगीत-कला कलावती को प्राप्त कर धन्य हो गई। 'ऐ रोनेवालो', 'ऐ चाँद छुप न जाना', 'प्रभु जी तुम राखो' आदि गीतों को सुनकर जनता झूम उठी और आप 'बंगाल की कोयल' घोषित की गईं, परन्तु हमारा अभाग्य था कि आपके भावी पति को आपके गायन से अत्यन्त घृणा थी। परिस्थिति इतनी गम्भीर हो गई थी कि आपके भावी पति से आपका विवाह छूट गया।

सुसंस्कृति हिन्दी चित्रपटों के अतिरिक्त आपने बंगाली चल-चित्रों में भी अभिनय किया है। 'हारजीत' तथा 'कृष्ण-लीला' में कार्य करने के पश्चात् श्रीमती कानन देवी ने 'चन्द्रशेखर' 'बनफूल', 'अलिफ-लैला', 'फैसला' 'राज-लक्ष्मी' तथा 'तुम और मैं' में अपनी संगीत-कला की अनुपम छटा निखारी है। आजकल आप 'इंग्लैंड' में अपने पूर्ण कुशलता के साथ विदेशी फिल्म-उद्यो के अध्ययन में संलग्न हैं। ईश्वर आपके श्रम को सफल करे। प्रथमतः आप कानन बाला के नाम से प्रसिद्ध थीं; परन्तु आज 'कानन देवी' हो गई हैं। आपकी गणना भारत की सुविख्यात अभिनेत्री संगीत प्रेमिकाओं में होती है।

लीला चिटनिस

इंगलैंड में 'दि लाइट आफ एशिया' 'शिराज' तथा 'करामा' जैसी उत्कृ रचनाओं का निर्माण करने के पश्चात् श्री हिमांशु राय ने १९३४ ई० में भा में 'बाम्बे टाकीज लिमिटेड' की स्थाप की। अत्यधिक खोज करने के पश्च आपने 'लीला चिटनिस' तथा अशो कुमार को अपने चित्र 'आजाद' में प्रदी किया। साहित्य एवं राष्ट्र-प्रेमी 'प्रदीप' की उत्कृष्ट रचनाओं ने ली चिटनिस को लोकप्रियता की चरम सी पर सुशोभित किया। आपके अन्य चि 'कंचन', 'घर की रानी', 'अछूत कन्या', 'कंगन' आदि ने आपकी सुन्दरता व ख्याति में और चार चाँद लगा दिए। 'बंधन' तथा झूला में आप दर्शकों की समालोचना का विषय बन गईं। इसके श्रेयकर श्री 'प्रदीप' तथा स्वर्गीय हिमांशु राय जी हैं। यह आपका एक 'युग' था, जिसे सम्भवतः दर्शकगण कदापि नहीं भूल सकते। जयंत देसाई-कृत 'मनोरमा' के उच्च कोटि के अभिनय तथा भावपूर्ण गीतों—'अब किसके सहारे' तथा 'चुन फूलों से' को जनता ने सहर्ष स्वीकार किया। आपको भक्ति-रस के गीतों से अत्यन्त रुचि है। तत्पश्चात् आपने 'गजल', 'भक्त प्रह्लाद', 'देव-कन्या' आदि चित्र-पुष्पों में कार्य किया। सिनेमा-प्रेमियों के शब्दों में

हमारा रंग-मंच

कलाकार प्रेम अदीब

फिल्म-जीवन में मैंने उन्हें कैसा पाया?

लेखक, श्री गुलाबसिंह यादव 'प्रणय'

पाश्चात्य देशों के लोग अभिनेताओं का जितना सम्मान और सत्कार करते हैं, उसका दशांश भी भारत के कलाकारों को प्राप्त नहीं। फिल्मोद्योग की उन्नति-अवनति अधिकतर कलाकारों पर ही निर्भर रहती है; इसलिए उन्हें श्रेष्ठता से वंचित रखना न्यायोचित नहीं।

इसे सभी जानते हैं कि लायक से लायक अभिनेता भी समाज के कतिपय आदर्शवादियों द्वारा घृणा का पात्र ही समझा जाता है। कई सिर-फिरे तो कोढ़ और न जाने ऐसे कई चुभते हुए अपशब्द इन अभिनेताओं के लिए

प्रसिद्ध फिल्म-अभिनेता प्रेम अदीब और इस लेख के लेखक।

और आपसी फूट ने फिल्म-व्यवसाय को

रहें, तुम उतनी ही मूर्खता से काम करते हो। तुम्हें पार्ट याद हो गया?

रा०—(डरते हुए सहमकर) जी, याद तो हो गया लेकिन सुरमा से जो प्रेम का एक्टिंग करना है, उसके बारे में इनसे पूछने के लिए आया था तो इनका सिर दर्द करने लगा।

चैन०—मिस मधुलता के सिर में दर्द हो रहा है? क्यों मिस मधुलता! (राजीव को डाटकर) तुम इतनी बातें इनसे करते ही क्यों हो? जाओ यहां से, अपना पार्ट याद करो।

(राजीव का शीघ्रता से प्रस्थान)

चैन०—क्या आपके सिर में सचमुच दर्द है मिस मधुलता? आपने मुझसे क्यों नहीं कहा। मैं अभी अच्छे से अच्छा डाक्टर बुलवा दूं। तब तक यदि तुम्हें संकोच नहीं तो मैं ही कुछ सेवा,...

मधु०—जी नहीं, सेठजी, मेरे सिर में दर्द नहीं है। मैं राजीव से बात नहीं करना चाहती थी, मैंने बहाना किया था।

चैन०—(प्रसन्न होकर) ओह, तुम बहुत अच्छी हो मिस मधुलता, मेरे मन की बात कितनी जल्दी और कितनी अच्छी तरह से समझती हो! तुम सचमुच ही मधुलता हो! मैं तुम्हें कुछ उपहार देना चाहता हूँ!

मधु०—(नीरसता से) सेठजी, मुझे उपहार कुछ नहीं चाहिए! इस समय भी मुझे अच्छा लगता है। नमस्कार..... नमस्कार.....

(हँसते हुए जाते हैं। मधुलता शून्य में देखती रहती है।)

(परदा गिरता है।)

आधुनिक हिन्दी-साहित्य की

कवि और छवि

लेखक, सुप्रसिद्ध क

कविश्री बालकृष्णराव आधुनिक और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' का सर्वश्रेष्ठ संग्रह है। प्रत्येक गीत भाव अंतर्द्वंद्व से परिपूर्ण तो है ही साथ ही छाप छोड़ जानेवाले हैं। हृदय सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी 'कवि और छवि' में संग्रहीत सभी गीत हृदय उद्वेलित हो उठता है। छः सजिल्द—मूल्य केवल २) रु०।

मैनेजर—बुकडिपो, इन्दिर

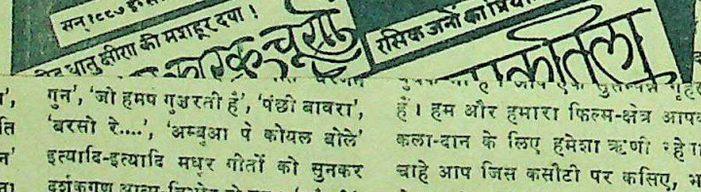

गुन', 'जो हमपे गुजरती है', 'पंछी बावरा', 'बरसो रे....', 'अम्बुआ पे कोयल बोले' इत्यादि-इत्यादि मधुर गीतों को सुनकर दर्शकगण आत्म-विभोर हो गए। 'चाँदनी', 'परदेशी', 'मुसाफिर', 'शाहंशाह बाबर' आदि में अपनी उत्कृष्टता का परिचय देकर आपने 'मिट्टी' में कार्य किया है। जिस भाँति कोयल जंगल के समस्त वातावरण पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लेती है, उसी भाँति श्रीमती खुर्शीद भी रजतपट पर रोमांचकारी स्थितियों पर छा जाने की क्षमता रखती हैं, यह किसी को अज्ञात नहीं।

आपका आगामी आकर्षण, रणजीत की भावी कला कृष्णा', 'प्रभु का प्यारा' तथा 'कुलवधू' हैं।

विचारों को आप तक पहुँचाने के लिए बधाई का पात्र है।

प्रश्न—हिन्दू-मुसलमान की खिचड़ी (मिश्रण) आपको पसन्द है या दोनों की अलग-अलग (हिन्दुस्तान-पाकिस्तान) आजादी?

उत्तर—जहाँ तक गाल का प्रश्न है, एकतासूत्र आजादी दोनों के लिए लाभदायक श्रेष्ठ होगी।

प्रश्न—आजादी और कुर्बानी का क्या सम्बन्ध है?

उत्तर—जैसे आत्मा और शरीर का होता है।

प्रश्न—विदेशी फिल्मों को हमें किस रूप में अपनाना चाहिए?

उत्तर—अपने फिल्मों की तरकी एवं टेकनिक का स्तर ऊँचा करने के लिए उनकी अच्छाइयों को सीखना चाहिए; तथा दूध की मक्खी की तरह सामाजिक विकारों को निकाल फेंकना चाहिए।

प्रश्न—आपको किस चीज का अधिक शौक है?

उत्तर—"लिखने - पढ़ने का।" लिखने-पढ़ने से आपका तात्पर्य साहित्य अध्ययन से है।

प्रश्न—क्या आप 'देहाती' जैसे सुन्दर चित्र आगे चलकर और भी बनानेवाले हैं?

उत्तर—"अगर आप सचमुच उसे सुन्दर समझते हों तब!" देहाती चित्र के प्रत्येक दर्शक को प्रेम अदीब पिक्चर्स, बिजली काटेज, अँधेरी—बम्बई के नाम अपनी सम्मति प्रगट करते हुए एक कार्ड अवश्य डालना चाहिए।

प्रश्न—आपके नजरों में लेखकों का फिल्म-क्षेत्र के नाते क्या आदर्श होना चाहिए?

उत्तर—पवित्र आँसुओं की लेखनी अपवित्र न होने पाये, इसका उन्हें सदैव ध्यान रखना चाहिए।

प्रश्न—क्या आप व्यायाम करते हैं?

उत्तर—शारीरिक बजिस पहले करता था; परन्तु अब भाई "प्रणय जी" की तरह दिमागी करता हूँ।

प्रश्न—आपकी जन्म-तारीख कौन-सी है?

उत्तर—१० अगस्त, सन् १९१६ ई० में हुआ।

हैं। हम और हमारा फिल्म-क्षेत्र आपकी कला-दान के लिए हमेशा ऋणी रहेगा। चाहे आप जिस कसौटी पर कसिए, भाई प्रेम अदीब खरे ही उतरेंगे।

आपने अपने सर्वप्रथम निर्माण 'देहाती' चित्र में प्रशंसनीय ध्येय—साक्षरता को कहानी का विषय चुना है। मध्यप्रान्त और बरार की राजधानी—नागपुर में यह चित्र उद्घाटित हुआ और आशा की जाती है कि अखिल भारत में इसका सम्मान होगा। पाठकों के लिए कुछ प्रश्नोत्तरों की प्रयोजना भी की गई है, जिससे कलाकार प्रेमअदीब और फिल्म-उपयोगिता की चर्चा के साथ-साथ मनोरंजन भी हो सके। "देशदूत" अपने "रंगमंच" द्वारा उक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पेज ८ का शेष)

भी अधिकार था, और सत्तर छोटी रियासतें थीं; जिनके नरेशों को सलामी का हक नहीं था। पंजाबी रियासतों की ऐजन्सी का निर्माण १९२१ ई० में हुआ था। इसके आधीन १४ रियासतें थीं। जिनमें भावलपुर तथा पटियाला प्रमुख थीं, सन् १९३३ ई० में खैरपुर की भी इन्हीं के साथ इस एजन्सी में सम्मिलित कर दिया था। सीमान्त एजन्सी के अधीन चित्रालसहित पांच रियासतें थीं, सीमाप्रान्त का गवर्नर ही इनके लिए एजन्ट का काम स्वयं करता था। मद्रास की रियासतें १९२२ के लगभग बनी थीं। त्रावणकोर तथा कोचीन की दो प्रमुख रियासतें इसके अन्तर्गत थीं। दक्षिणी स्टेट्स एजन्सी का निर्माण सन् १९३३ ई० में अब तक बम्बई प्रान्त की आधीनस्थ रियासतों को प्रथक करके किया गया था। इनके ऐजन्ट कोल्हापुर के रेजीडेन्ट की देखभाल में छोटी छोटी सोलह रियासतें कर दी गई थीं। गुजरात स्टेट्स एजन्सी का जन्म भी इसी वर्ष हुआ। बम्बई के आधीनस्थ ग्यारह सलामी की हकदार बड़ी रियासतों को तथा सत्तर छोटी और रियासतों और जागीरों को कर दिया गया। [illegible] इनके प्रति गवर्नर जनर्मा-शेल [illegible]। इनमें राजपीपला और [illegible] थीं। पूर्वी स्टेट्स एजन्सी [illegible] १९३३ ई० ही में हुआ। [illegible] बिहार, मध्यप्रदेश तथा उड़ीसा प्रान्त की आधीन रियासतों को इस एजन्सी में रखा गया। इनकी संख्या ४० होते हुए भी इनमें मयूरभंज, पटना, बस्तर तथा कालाहन्डी मुख्य थीं। राजपूताना की एजन्सी के अधीन बीकानेर और सिरोही थे। इसके अतिरिक्त अन्य वाईस रियासतें जयपुर और मेवाड़ के रेजीडेन्ट तथा दक्षिणी और पश्चिमी राजपूताना के एजन्ट की मातहत कर दी गईं। इनमें टोंक तथा पालनपुर के शासक मुसलिम और भरतपुर तथा धौलपुर के नरेश जाट थे। शेष में उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, और बीकानेर प्रधान राजपूत राज्य थे।

अन्त में पश्चिमी भारत की स्टेट्स एजन्सी की चर्चा करना भी आवश्यक है। इनका निर्माण १९२४ ई० में हुआ था। तब से ही काठियावाड़ की रियासतें तथा कच्छ और पालनपुर की ऐजन्सियों को बम्बई प्रांतकी आधीनता से हटाकर गवर्नर जनरल के मातहत रख दिया गया। सन् १९३३ ई० में महीकांठा एजन्सी भी इसी में मिला दी गई। राजकोट में इनके एजेन्ट की अध्यक्षता में सावरकांठा तथा पूर्वी और पश्चिमी काठियावाड़ के राजनीतिक एजेन्ट्स काम करते थे। इन्हीं सबके आधीन कच्छ, जूनागढ़, नवानगर और भावनगर-सहित, सोलह सलामीवाले नरेशों की तथा दो सौ छत्तीस रियासतें और जागीरें छोटी थीं। इन छोटी जागीरों के शासकों को सलामी का हक न था। इन सबके अतिरिक्त कुछ रियासतें प्रान्तीय सरकारों के अधीन थीं। आसाम प्रान्त में मणिपुर तथा खासी और जन्तिया की १६ पहाड़ी रियासतें प्रमुख थीं। बंगाल और पंजाब प्रान्त की लगभग बीस रियासतों में कूचबिहार, त्रिपुरा तथा बरार उल्लेखनीय हैं। युक्तप्रान्त में रामपुर, काशी तथा हिमालय की टेहरी गढ़वाल रियासतें प्रसिद्ध थीं। इनका निर्माण सन् १९११ ई० में हुआ था।

रियासतों के उपरोक्त नियन्त्रण की व्यवस्था के अध्ययन करने के पश्चात् इस पेचीदी समस्या का हल निकालना अनिवार्य हो जाता है। ब्रिटिश सरकार ने "मिलानेवाली नीति" के अनुकूल रियासतों को यथास्थान करने का यत्न किया। चूंकि उसकी स्कीम केवल काठियावाड़ की रियासतों ही के लिए थी, अतएव आज भी इनके वर्गीकरण का प्रश्न सामने आता है। जब तक संधियों, सलामी तथा चैम्बर आफ प्रिंसेस का आश्रय लेकर इस समस्या को सुलझाया जायगा, उस समय तक कठिनाइयां बनी ही रहेंगी। व्यावहारिक क्षेत्र में संधियों की चर्चा करना केवल मृतक भूतकाल को पुनः आवाहन करना है। इससे तो अनेक उलझनें ही पैदा होंगी। प्रोफेसर ज्ञानचंद के मतानुसार किसी भी रियासत के साधन इतने यथेष्ट नहीं हैं जो उसके भविष्य निर्माण में पूर्ण सहायता कर सकें। किन्तु यहां हमारा विषय अर्थशास्त्र की पेचीदगियों पर विचार करना नहीं है। अखिल भारतीय लोक-परिषद् के फरवरी १९३९ के लुधियाना के प्रस्ताव के अनुसार "Those states which have a population exceeding 20 lakhs soules or revenue exceeding 50 lakhs Rs. can maintain the standard of administration necssary and suitable for beiug workable units for the purpose of uniting with the provinces in a scheme of a free and Federated India."

यदि हम इस प्रस्ताव को रियासतों के समीकरण का आधार मानें, तो छोटी जागीरों से बड़ी उन रियासतों का क्या होगा, हमारे विचार से इन

रियासत	क्षेत्रफल वर्गमील में (१९४१ की जन-संख्या के आधार पर)	जन-संख्या	आमदनी
अकालकोट	४७३	१,०३,९०३	६,८०,०००
औंध	४८८	८८,७२३	३,२२,०००
भोर	९१०	१,५५,९६१	८,८३,०००
जामखंडी	५२२	१,२६,२७२	९,०८,०००
जांगीरा	३२६	१,०३,५५७	८,०६,०००
जाथ	९७२	१,०७,०३६	३,४५,०००
कोल्हापुर	३,२१९	१०,९२,०४६	५२,०३,०००
कुरुन्दवाद senior)	२००	५२,५५२	२,२०,०००
कुरुन्दवाद (junior)	१२६	४६,६०९	१,८३,०००
मिराज (senior)	३६८	१,०८,५४७	५,२२,०००
मिराज (junior)	१९४	४६,२९५	३,१२,०००
म्यघोल	३५०	७२,४४७	३,२१,०००
फालटन	३९१	७१,४७३	८,५६,०००
रामदुर्ग	१६६	४०,११४	१,६८,०००
सांगली	१,१४६	२,९३,३८१	१,६८,०००
सावन्तवाडी	९३७	२,५२,०५०	६,४०,०००
सावनुर	७०	२२,४४०	१,६५,०००
वाडी	१२	२,०२२	९,०००
	१०,८७०	२७,८५,४२८	१,४२,२३,०००

परिस्थिति का सामना करने की क्षमता नहीं रखती। पूर्ण देश भर में इस प्रकार की रियासतों का संघ बनाना उनके लिये हितकर है। संघ बन जाने पर उनको प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के लिये स्थान है। यहां स्वाभाविक ही यह प्रश्न उठता है कि ये छोटी छोटी जागीरें जैसी रियासतों को दोनों के मध्य एक फेडरल संघ का होना अनिवार्य है। छोटी रियासतों का एक फेडरल यूनियन में शामिल होना बुद्धिमानी है। भौगोलिक दृष्टि से छोटी छोटी रियसतों का एक संघ में होना उनके हित के लिये श्रेयस्कर है। परन्तु दक्षिणी भारत की रियासतें—कोचीन, त्रावणकोर, मैसूर ऐसी रियासतों पर लुधियाना प्रस्ताव लागू नहीं हो पाता। यहां पर इस तरह के नरेशों के लिये ब्रिटिश भारत कहें जानेवाले प्रान्तों के अंग बन जाने से सम्पूर्ण कठिनाइयां दूर हो जाती हैं। भौगोलिक बाधा उपस्थित करनेवाली रियासतें अधिक नहीं है। अपनी सुविधानुकूल उदाहरणार्थ हम दक्षिण की रियासतों को लेते हैं। आगे की सूची से रियासतों की वास्तविक वस्तुस्थिति का ज्ञान हो जाता है:—

इन आंकड़ों पर मनन करने के पश्चात् केवल कोल्हापुर रियासत ही ऐसी है जो कि जनसंख्या, आमदनी तथा क्षेत्रफल के हिसाब से ब्रिटिश भारत के छोटे से जिले के बराबर है। अन्य सब छोटी हैं। इनके लिये शासन-सूत्र का सुचारु रूप से चलाना कठिन ही नहीं वरन् नितान्त असंभव है। केवल दो रियासतों की आय ही ३० लाख है। अलग अलग इनमें से कोई भी विकट क्यों अँग्रेजी राज्य में नहीं मिलाया गया? इस विभिन्नता को क्यों कायम रखा गया? हमारी बुद्धि में प्रथक रहने देने में इनकी शक्ति कमजोर रही। श्री के० एम० पनीकर के शब्दों में काठियावाड़ की छोटी छोटी प्रभुसत्ता-प्राप्त रियासतों की प्रदर्शिनी मात्रहैं। कुछ रियासतों में सीमित उत्तर दायी शासन देकर भी वहां जनता की आर्थिक-सामाजिक तथा अन्य प्रकार की समस्यायें हल नहीं हुई। सार्वभौम सत्ता का कर्त्तव्य था कि वह विभिन्न रियासतों में उत्तरदायी सरकार स्थापित करने में हाथ बढ़ातीं परन्तु नरेशों तथा उनकी प्रजा को अपने भविष्य के प्रति उदासीन न होना चाहिए। जो रियासतें इतनी छोटी हों, कि जिनसे वहां के नरेशों तथा नवाबों की उदर-पूर्ति भी ठीक तरह न हो सके, वे तो दोनों ही के लिये भार-भूत हैं। इसलिए उनका किसी भी सरकार के साथ अपनी अपनी देशीय परिस्थितियों के अनुसार मिलना अवांछनीय है। ऐसा होने से उनके आर्थिक और सामाजिक प्रश्न ही हल न होंगे, वरन राजनीतिक संघर्ष तथा उससे आविर्भूत कलह और अशान्ति भी न रहेगी। वैसे तो उनमें से प्रत्येक अपने [illegible] निर्माण करने में समर्थवान है ही हैं। किन्तु वस्तुपरिस्थिति और घटना को सामने रखकर इन समस्याओं का हल करना होगा। उसकी एक कारण नरेशों तथा उनकी प्रजा के मध्य अतीतकाल से रही एक गहरी खाई है। इस परिवर्तन के कारण दोनों की आंखें खुली हैं। राजे लोग प्रजा की ओर सहानुभूति से बढ़े हैं। प्रजा ने शताब्दियों की गहरी निद्रा से करवट बदलना प्रारंभ किया है। नरेशों का कर्त्तव्य है कि नई नई पेचीदगियां पैदा न करके वर्तमान वायुमंडल को परखें। जनमत को अपने भविष्य निणय करने का पूरा पूरा अधिकार दें; वे देश को आगामी भयावह तथा हानिप्रद पेचीदगियों से बचाकरस सार का सिरमौर बनावें। इस कठिन काल में किसी भी प्रकार की चालें लाभदायक सिद्ध नहीं होंगी। इससे तो उनका स्वयं ही ह्रास होगा। नागरिक अधिकारों की रक्षा करें। और इससे तो साम्राज्यवाद की नींवें ढीली होने का भय था। गवर्नमेंट की इस विषैली नीति के कारण ब्रिटिश भारत में अशान्ति हुई। हमारी दृष्टि से तत्कालीन सरकार की यह संयोजित योजना थी कि बड़ी बड़ी रियासतों को संगठित करके भारत में उठी हुई स्वाधीनता की भावनाओं को रोकने में एकरक्षा-पंक्ति खड़ी की जाये।

दी वा ली

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०

आज भवन भवन जगी सुभग दीपमाला।
शुभ्र चन्द्रिका विलीन,
चन्द्र-हास-श्री-विहीन,
आज सदन सदन लगी रुचिर ज्योतिशाला।
नगर नगर डगर डगर,
तन मन बिच किरन लहर,
आज बदन बदन पगी मधुर स्नेह-ज्वाला।
देवि साज रही गगन,
साज रही सदन सजन,
आज नयन नयन भरी मदिर मदिर हाला।
आज देश मध्य भगर,
जल रहे मकान नगर,
अपना कर रहा आज मानव मुख काला।

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं। हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तैल के सेवन से बालों का पकना रुककर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह दिमाग को तरकर आँख की ज्योति को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो, मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २॥), बाल अधिक पक गया हो ३॥), सब पका हो ५) का तैल मँगा लें।

विश्व कल्याण ओषधालय,
पो० कतरी सराय (गया)

"धनकुबेर का खजाना!"

(१) १९४७ का वरुड डाइरक्टरी जिसमें भारत तथा दुनिया के हर भागों से निकलनेवाले २००० भिन्न भिन्न विषयक दैनिक, साप्ताहिक व मासिक समाचार पत्र-पत्रिकाएं, मैगेजिन आदि के नाम व पते हैं। यह अंग्रेजी में है। १ प्रति का मूल्य २) मनीआर्डर से भेजिये। डा० खर्च माफ। इसमें आपकी सर्व मनोकामना पूर्ण होगी।

(२) प्रचुर धन कमाने की १०१ रहस्य-भरी तरकीबें की सूची (बिल्कुल मुफ्त) के टिकट (स्टाम्प) भेजकर मुफ्त मँगा लें। पता:—
Proprietor Hind Mail Service,
P. B. No. 36 Mon hyr (Behar.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीरां, अकबर और तानसेन

(पेज २६ का शेष)

को हुआ था। अकबर का वह विशेष कृपापात्र इसके कुछ वर्ष बाद ही बना होगा। इस ख्याल से तानसेन अकबर के साथ राजपूताने की ओर कम से कम सं० १६१८ में तो नहीं आया होगा। फिर तो यही अटकल लगाना होगा कि वह चित्तौड़ के घेरे के वक्त सं० १६२४ में साथ होगा। यह हम इस युद्ध के वर्णन में भी नहीं पाते हैं। इधर मीरां भी उस समय के लगभग राजपूताने के बाहर तीर्थ-यात्रा में लगी हुई थी और यदि और कहीं मिलने का प्रयत्न भी किया तो वह बिल्कुल व्यर्थ था। अब वृद्ध मीरां के गले में माधुर्य ही क्या रह गया था और क्या सुन्दरता रही होगी। यदि मीरां ने तानसेन की संगीतकला पर मुग्ध होकर उसे वरदान दिया कि मुगल चित्तौड़ पर विजय प्राप्त करेंगे तो यह असम्भव है कि इस इतनी महत्त्वपूर्ण घटना का समकालीन इतिहासों में वर्णन न हो। हां, इतिहास के पृष्ठों की ओर ध्यान देने से यह अवश्य ज्ञात होता है कि अकबर ने चित्तौड़ विजय करने के विचार से उसका घेरा वि० सं० १६२४ की मंगसर वदी ६ गुरुवार (ई० सन १५६७ ता० २३ अक्टूबर = हि० सं० ९७५ ता० १९ रबिउल आखिर) को डाला था।[1] काफी मुश्किलों के बाद वह सं० १६२४ की चैत्र बदी १३ बुधवार (ई० सन् १५६८ ता० २५ फरवरी = हि० सं० ९७५ ता० २६ शाबान) को चित्तौड़ पर कब्जा कर सका।[2] बहुत सम्भव है कि किसी राजनीतिज्ञ (?) भक्त ने शायद यह देखकर इस विजय का कारण मीरां का वरदान देना गढ़ लिया हो! यह तो मीरां के जीवन को कलुषित करने का प्रयास है।

इन सब ऐतिहासिक घटनाओं को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि अकबर और तानसेन का कभी भी मीराबाई से साक्षात्कार न हुआ। यह कथा मीरां के किसी ऐतिहासिक ज्ञान-शून्य भक्त ने अपनी ओर से गढ़ ली है मीरां, अकबर और तानसेन के सं० १६२० के लगभग साधारण जनता में प्रसिद्धी प्राप्त कर लेने के कारण ही यह असत्यपूर्ण बात प्रचारित कर दी गई। ऐसी बात ... गढ़ा जाना कोई आश्चर्य की बात भी नहीं, क्योंकि ऐसा बहुधा देखा जाता है कि महापुरुषों के विषय में लोग यों ही सोच लेते हैं। मीरां के लिए भी ऐसा ही हुआ है।

१—ठाकुर जगदीशसिंह गहलौत; राजपूताने का इतिहास पृ० २३०।

२—वही; पृ० २३१।

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

"आकर्षण-शक्ति तथा सर्वार्थ-सिद्धि !"

(केवल सदस्यों के लिए)

नियम तथा "उन्नति के पथ पर" हवाई डाक से (By Air Mail) केवल छः पैसे के टिकट भेजकर मुफ्त मंगाइये।

अरविन्द—कला-मन्दिर, मंडी जैतसर (बीकानेर स्टेट)

यह स्वतन्त्रता या स्वराज्य !

(पेज १५ का शेष)

जायेगी। इस प्रकार संगठन शक्ति के बल पर देश में एक नवीन शासक श्रेणी का जन्म होगा। भारतीय समाज के वर्तमान वर्गों से भिन्न एक स्वतन्त्र श्रेणी अन्य सभी वर्गों का प्रभु बन जायेगा। यदि ऐसा हुआ तो स्वतन्त्रता और स्वराज्य का व्यवधान और बढ़ जायेगा।

एक अन्तिम बात का उल्लेख कर मैं इस लेख को समाप्त कर रहा हूँ। भारतीय मध्यम श्रेणी की दुर्दशा से एक भयावह स्थिति उत्पन्न हो रही है। मध्यम श्रेणी के त्यागते ही कांग्रेस को साफल्य-मण्डित किया है। मजदूर और किसानों का संख्याधिक्य होते हुए भी भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम में उनका कोई विशेष दान नहीं रहा है। इस संग्राम में किसानों की पूर्ण सहानुभूति रही है; परन्तु इसमें उन्होंने सक्रियरूप से कोई भाग नहीं लिया है। १९४२ के विद्रोह में किसानों ने जो भाग लिया उसको कोई सचेतन आन्दोलन नहीं कहा जा सकता। मजदूरों में आज भी राजनैतिक चेतना नहीं है। ट्रेड यूनियन की प्रणाली को मजदूरों ने पूरी तरह से अपनाया है लेकिन राजनैतिक दृष्टि से आज भी वह जागरूक नहीं है। अर्थ-बल से धनिकों ने कांग्रेस की पूरी सहायता की है लेकिन कांग्रेस का मुख्य बल रहा है मध्यम श्रेणी। शक्ति पाने के बाद कांग्रेस ने इसी श्रेणी को भुला दिया है। कांग्रेस का नेतृवर्ग, इसी श्रेणी की उपज होते हुए भी, आज एक अलग श्रेणी में परिणत हो गया है। प्रगति और प्रतिक्रिया के वर्तमान संघर्ष की स्थिति में सम्भव है कि उपेक्षित मध्यम श्रेणी प्रतिक्रिया का ही साथ दे। इस श्रेणी की आर्थिक उन्नति कोई श्रमसाध्य बात नहीं है। राष्ट्र-मर्यादा के झूठे प्रलोभन में हम जितना व्यय कर रहे हैं उतना ही इस काम में काफी सहायता पहुँचा सकता है। आज यू० एन्० ओ० का कोई महत्त्व नहीं है। दक्षिण अफ्रीका और इंडोनेशिया से हमको सबक लेना चाहिए। यू० एन्० ओ० में अर्थ व्यय न कर भी हम विदेशी राष्ट्रों से मैत्री बनाये रख सकते हैं। स्वतन्त्रता से स्वराज्य के मार्ग में मध्यम श्रेणी ही अगुआ बन सकता है।

एक बूढ़े ने तीन शादियाँ क्यों कीं

भारत के महात्माओं ने वनों और पर्वतों की कन्दराओं में रहकर वह चमत्कार दिखाये हैं कि जिनसे बड़े-बड़े वैज्ञानिक और चिकित्सक हैरत में आ गये हैं। कल्लाती पहाड़ पर विचरण करनेवाले स्वामी रतनागिरी महाराज ने बूढ़े ग्वाले को निम्नलिखित योग की ६ मात्राएं दी थीं उन छह मात्राओं को नासमझी से बूढ़े ग्वाले एक साथ खा गया था जिससे उसके शरीर में इतनी अपूर्व शक्ति आ गई थी कि उसे तीन शादियां करने की आवश्यकता पड़ी। स्वामीजी के इस आश्चर्यजनक योग को बनाने के लिये नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयात मुहम्मद खां ने बाबाजी की सेवा की और इस योग को प्राप्त कर लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। जिसका नुस्खा अभी तक आप अखबारों में देखते रहे होंगे, हमने भी इस योग को बनाकर सैकड़ों रोगियों पर अजमाया और शत-प्रतिशत फायदा पाया। हमारा दावा है कि केवल ७ दिन के सेवन से शरीर में रक्त दौड़ना नजर आवेगा, २१ दिन में शरीर का वजन बढ़ जावेगा ४० दिन बराबर सेवन करने से नपुंसकता, मधुमेह, शरीर की निर्बलता, दमा-खांसी, नजला-जुकाम, जिगर, तिल्ली आदि रोग दूर होकर पुनः जवानी आ जाती है। आप भी बनाकर फायदा उठावें यदि न बना सकें तो हमारे यहाँ से बना बनाया अपूर्व कायापलट के नाम से मंगा लें। योग इस प्रकार है—शुद्ध बुरादा फौलाद २० तोला शुद्ध श्वेत मल्ला १ तोला शुद्ध कपूर १॥ माशा को १ घंटा घृतकुमारी में घोटकर मिट्टी के कुंजे में मजबूत बंद कर ५ सेर कंडा में पूंकें ठंडा होने पर दुबारा १ तोला हरतालवर्की शुद्ध १ माशा कपूर शुद्ध में तीसरी बार गंधक आँवलासार शुद्ध १ तोला कपूर शुद्ध १॥ माशा में ऊपर की भाँति आँच दें इसी प्रकार १६ आँच दें फिर इसको कड़ाही में डालकर बराबर इन्द्रवधू डाल दें और आग जलावें जब इन्द्रवधू जलकर राख हो जावे तो हवा में उड़ा लें बस अपूर्व कायापलट महाबाजीकरण तैयार है।

मथुरा के हरिदास जी लिखते हैं कि इसके सेवन से एक ही हफ्ता में एक आदमी का वजन ४ पौंड बढ़ गया और दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख हो गया भूपाल के वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा ने इसे ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक गुणकारी पाया रत्नापुर के छोटेलालजी जैन आयुर्वेदाचार ने गृह-चिकित्सा पथ-प्रदर्शक में छापा है कि हमने इतना प्रचंड शीघ्र गुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। मित्र के सम्पादक श्री श्यामबिहारीलाल वैद्यभूषण ने इसके विषय में कहा है कि प्रतिवर्ष केवल ४० दिन ही इसका सेवन कर लिया जावे तो ८० वर्ष बुढ़ापा पास न आये। योग भली प्रकार समझा दिया गया है फिर भी यदि न बना सकें तो हमारे यहाँ से अपूर्व कायापलट मंगाकर फायदा उठावें। कीमत ४० दिन की पूरी खुराक ६॥।=) डाक-खर्च, पैकिंग अलग।

पता—रूपविलास कं० (रसायनशाला) नं० ४८१, कानपुर

अजेय सरदार वल्लभभाई

(पेज १० का शेष)

ने कहा था—'मैंने पत्रों में अपने विषय के समाचार देखने छोड़ दिये हैं। यदि उन्हें पढ़ता रहूं, तो विक्षिप्त हो जाऊं। परन्तु मुझे विश्वास है कि मेरी अन्तरात्मा पूर्ण रूप से अविकृत है। मैंने जो कुछ किया है वह राष्ट्र के सम्मान तथा भारत की स्वतन्त्रता के लिए। जिस दिन अनुभव करूँगा कि मेरा यह हृदय अब विशुद्ध और पवित्र नहीं उसी दिन आत्महत्या करने में संकोच न करूँगा!'

सरदार पटेल भारत के देशभक्तों में एक अमूल्य रत्न हैं। वे हमारे राष्ट्रीय स्वतन्त्रता-संग्राम के अक्षम शक्ति-स्तम्भ हैं। आत्म-बलिदान, अनवरत सेवा तथा औरों की दिव्य-शक्ति को चेतना देनेवाला उनका जीवन हम सबों के लिए प्रकाश-स्तम्भ की अमरज्योति है। स्वाधीन भारतवर्ष का दर्शन करने के लिए ही नहीं बल्कि संघर्ष-शिथिल जगती को आलोक-संजीवनी प्रदान करनेवाले महान भारत राष्ट्र का निर्माण करने [illegible] वल्लभभाई पटेल चिरायु [illegible] ईश्वर से यही प्रार्थना है?

मेरे श्वास में दुर्गन्धि ?

७६% नवयुवकों के मुख से दुर्गन्धि आती है!

वैज्ञानिक अनुभवों से यह निस्सन्देह सिद्ध हो गया है कि कोलगेट टूथ पाउडर के १० घटनाओं में से ७ घटनाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि मुख की दुर्गन्धि शीघ्र ही दूर हो गई।

धन की बचत—दूसरी दवाओं की अपेक्षा कोलगेट एक बड़े डिब्बे में दांत साफ करने की ३० मात्रा अधिक रहती है, उससे बड़े डिब्बे में ४६ मात्रा अधिक रहती है। परन्तु दाम वही है।

धूम्र-पान करनेवाले—कोलगेट दाँत का मंजन तम्बाकू की दुर्गन्धि और मैल को दूर करता है।

आज ही कोलगेट खरीद लीजिए।

कोलगेट टूथ पाउडर

कोलगेट आज ही खरीदिए!

CLEANS BREATH AS IT CLEANS TEETH

TP2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा नया प्रकाशन

'रवीन्द्र साहित्य सीरीज' की पुस्तकें

लेखक, डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर

योगायोग

कवीन्द्र का यह उपन्यास जैसा कवित्वमय है वैसा ही मनोविज्ञान की बारीकियों से परिपूर्ण। इसमें बंगाल के समाज का बहुत ही अपूर्व चित्रण है। नायिका है धर्म-प्राण कुमुद और नायक है राजा बहादुर मधुसूदन घोषाल जो गरीब घर का लड़का होकर अपने पौरुष से बहुत बड़ा मालदार हुआ है। अपने विरोधी घराने की बेटी से विवाह करने पर उसके चित्त में जो विरोध के बादल उमड़ते हैं उनका गर्जन और नई दुलहिन कुमुद का शान्त-शिष्ट प्रतिकार देखकर बरबस लेखक की सराहना करनी पड़ती है। इसमें गृहिणी की क्षमता का अपूर्व उदाहरण है। भाषा, भाव और कथानक सभी दृष्टियों से 'योगायोग' कवीन्द्र के उपन्यासों में सर्वश्रेष्ठ है। इसे एक बार पढ़कर दुबारा तिबारा पढ़ने को जी चाहता है। अच्छा काग़ज़, बढ़िया जिल्द, पृष्ठ सवा तीन सौ से अधिक। मूल्य केवल चार रुपये।

विश्व-परिचय

वर्मा-शेल [illegible] विज्ञान-विषयक पुस्तक है। इसमें परमाणुलोक, नक्षत्र-[illegible] ब्रह्मांडजगत्, ग्रहलोक और भूलोक आदि शीर्षकों में विषय का विशद विवेचन है। एक स्थान पर लेखक ने लिखा है "वस्तुएं सब रंगों को ग्रहण नहीं कर सकतीं, किसी किसी को वापस कर देती हैं। वह लौटाया हुआ रंग ही हम देखते हैं। ब्लाटिंग पेपर जिस रस को सोख लेता है वह किसी काम नहीं आता—जिस रस को वह ले नहीं सकता वही बचा हुआ रस हमारा प्राप्य है।" इस प्रकार सरल रीति से कठिन विषय समझाया गया है। पुस्तक बालकों के लिए होने पर भी वयस्क विद्वानों को कम आनन्द न देगी। अच्छे काग़ज़ पर छपी हुई सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

रूस की चिट्ठी

डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर वृद्धावस्था में रूस गये थे। वहाँ का आँखों देखा हाल उन्होंने चिट्ठियों में लिखकर भेजा था। वह बड़ा विचित्र है। इधर तो रूस के सम्बन्ध में बहुत सी बातें प्रकट हो गई हैं पर जिस समय रवि बाबू वहाँ गये थे, रूस का हाल हमें विकृत रूप में बताया गया था। उसको कवि ने सुन्दर भाषा में प्रकट किया है। पुस्तक सचित्र और सजिल्द है। अच्छे कागज़ पर छपी पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एस० धोलाकिया एन्ड ब्रदर्स।

हाँ, केवल एक ही दिन में।

मेजिक मिस्मरिज्म

जादूके की ज़मीन पर लिटा कर और चादर से ढक कर अजीबिन गरीब प्रश्नों के सही सही उत्तर बताना, दहकती आग पर आप चलना व दर्शकों को चलाना, किसी भी समय, पर सब दर्शकों की घड़ियाँ में घंटा इत्यादि बजा देना, दीवार में आग लगा देना, मुँह में से आग की लपटें निकालना, पानी के अन्दर आग के अङ्गारों का नाच कराना, बन्द लिफाफों के अन्दर का लिखा बता देना आदमी को उड़ा देना, बन्द सन्दूक में से आदमी का निकल जाना इत्यादि अनेक तिलस्मात जादू के अद्भुत, रहस्यपूर्ण और रोमांचकारी करिश्मे सीखकर

दूसरे ही दिन

नवाब, राजे-महाराजे, सेठ-साहूकारों को दिखाकर—बड़े २ धुरन्धर विद्वानों बुद्धि-मानों, विज्ञानवेत्ताओं और प्रोफेसरों की बुद्धि पैकर और हैरत में डालकर ठनाठन रुपये पैदा करो। मामूली हिन्दी पढ़ लेने वाला यह सब गजब का जादू एक दिन में, ही केवल एक दिन में जान जाता है और किसी भी प्रकार के अभ्यास व सिद्धि की झंझट नहीं— ऐसा हमारा दावा और गारण्टी है। फिलहाल इस पूरे कोर्स की कीमत केवल पाँच रुपया। यह सब एक दिन में न आवे तो कीमत वापिस।

देहली के प्रतिष्ठित पत्र 'वीर अर्जुन' तथा कुँवर साहिब जी' की ज़ोरदार सिफारिश के साथ सैकड़ों प्रशंसा पत्र प्राप्त।

दी यूनाइटेड वराडरफुल मेजिकल कम्पनी

(गवर्नमेंट आफ इण्डिया से रजिस्टर्ड)

विभाग नम्बर २१२, यू० पी० (इण्डिया) मुरादाबाद

कानन देवी अपनी त्वचा लक्स टॉयलेट साबुन-द्वारा निर्मल एवं सुंदर रखती है . . .

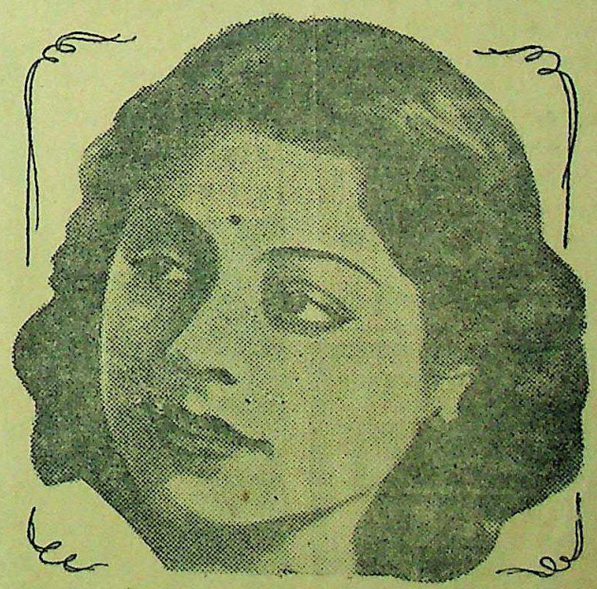

यह लोकप्रिय गायिका अभिनेत्री अपनी मृदु एवं निर्मल त्वचा की विशेषतम कदर करती है, और सदैव उसकी भलीभाँति सँभाल करती है—वह जानती है कि, नियमित रूपेण सौन्दर्य की देखभाल करनेसे ही स्थिर त्वचा-सौन्दर्य प्राप्त होता है। इस कारण कानन देवी सदैव लक्स टॉयलेट साबुन का प्रयोग करती है। आप को भी इस शुद्ध, सफेद साबुन का उपयोग करना चाहिये। आप को मालूम होगा कि, उस का सुगन्धित प्रभावशाली झाग आप की त्वचा को कोमल, सतेज तथा निर्दोष रखेगा।

पायोनियर प्रॉडक्शन्स् के "चन्द्रशेखर" चित्र में किये अभिनय से कानन देवी अपने पुराने रसिकों को खुश रखेगी, इसके अतिरिक्त उस के रसिकों में नवीनों की वृद्धि होगी।

लक्स टॉयलेट साबुन

फिल्मी स्टार्स का सौन्दर्य—साबुन

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांतिकारी नाना साहब धान्धू पंत

(पेज २५ का शेष)

परन्तु अँगरेजी सरकार को विश्वास न था कि नाना साहब मर गये हैं, क्योंकि २२ जुलाई १८६१ को नैपाल के रेजीडेंट से एक पत्र मिला था कि "अगर नाना अब भी जीवित है, तो इसका रहस्य जंगबहादुर के हृदय में है।" अँगरेजी सरकार जंगबहादुर पर संदेह करती थी और उसका विचार था कि नाना-साहब वैरागी के रूप में नैपाल में ही कहीं रहता है। जंगबहादुर ने नाना-साहब की स्त्री काशीबाई को काठमांडू में रहने के लिये एक मकान भी दे दिया था। अँगरेजों का खयाल था कि काशी-बाई जंगबहादुर की प्रयसी बन गई थी, क्योंकि वह सन् १८७२ तक अपनी मांग भरती थी तथा अपना शृङ्गार बनाती थी। अँगरेजों का खयाल था कि नाना साहब लामजंग नामक स्थान पर वैरागी के भेष में रहते थे। उनके पास फकीरी भेष में तीन सौ सिपाही भी रहते थे। काशीबाई समस्त हिन्दुस्तानी साधुओं, फकीरों को प्रतिसप्ताह भोजन कराती थी। अँगरेजी सरकार का यह भी कहना है कि सन १८८५ में प्रयाग के कुम्भ में नाना साहब आये थे और गौरक्षा सोसाइटी के सभापति के साथ मेले में उन्होंने भोजन किया था।

सबसे हास्यपूर्ण बात यह है कि सन् १८९५ में राजकोट (काठियावाड़) के निकट एक गांव बगर में एक वृद्ध मनुष्य जो कि पागल-सा लगता था, बाजार में उपद्रव कर रहा था। वह अपने आपको नानासाहब कहता था और जंगबहादुर की रक्षा चाहता था। नगर के पुलिस-कर्मचारी ने अपने कागजों से नानासाहब के हुलिया से उस मनुष्य का हुलिया मिलाया; हुलिया करीब करीब मिल गया था। पुलिस-कर्मचारी ने एक लाख रुपया इनाम पाने के लोभ में कलकत्ते तार भेजा "नानासाहब को गिरफ्तार कर लिया है हुक्म की इन्तजारी है"; परन्तु उसके दुर्भाग्य में तार से हुक्म आया, "इसी समय रिहा कर दो।" यह हुक्म तो अच्छा था; परन्तु पुलिस-कर्मचारी को बड़ा क्रोध आया।

नैपाल के जंगबहादुर ने १५७ की क्रान्ति के समय अँगरेजों की धन और मन से बड़ी सहायता की थी! अगर नानासाहब नैपाल गये और उनकी अपार सम्पत्ति के बदले अगर जंगबहादुर ने उनको अपने राज्य में एक वैरागी के रूप में मानवता से दूर पहाड़ी जंगलों में रहने दिया तो कौन सा अनिष्ट हो गया? सम्राट् बहादुरशाह, तात्या टोपे तथा असंख्य भारतवासियों के साथ जो हुआ, वह नाना के साथ भी होता। परन्तु अन्त में नाना साहब का नैपाल का जीवन एक ऐतिहासिक रहस्य ही है।

स्थापना १९२६

आरोंदा

स्वदेशी निलगिरी तेल

(र.नं. १८६९)

पडसें, सर्दी पासून अल्प मोली त्वरित बचाव.

सूर्य छाप

रजिस्टर्ड युकॅलिप पेन बाम

गजकर्ण मलम

स्वांडाळेकर बंधु, मुंबई.४.

भारत के बड़े बड़े शहरों से लेकर छोटे छोटे गावों तक में

'ऐस्प्रो'

घरेलू दवा मानी जाती है

'ऐस्प्रो' के लौटने पर, भारत के हर शहर और गांव में उसका वैसा ही स्वागत किया गया है जैसा जाने पहिचाने और विश्वासी दोस्त का होता है। यह परिवार भर की स्वास्थ्यरक्षक है।

'ऐस्प्रो' के दर्द टानने और आराम पहुँचाने के गुण को सारी दुनियां जानती है। भोगने की अब कोई जरूरत नहीं रही। प्रकृति आपको भले चंगे रखना चाहती है वक्त 'ऐस्प्रो' प्रकृति की मदद करती है। लाखों आदमी इसके आश्चर्यजनक गुण का [illegible] हैं। पीड़ा, सिरदर्द, गठिया और बात पर जादू का-सा असर करती है। इन्फ्लुएंजा, सर्दी और बुखार को रात भर में दूर कर देती है। इतना होने पर भी 'ऐस्प्रो' इतनी निश्चित फलप्रद और हानिरहित है कि छोटे बच्चों को भी दी जा सकती है।

हानिकर दवाओं को दूर फेंकिये, नक्कालों से बचिये और सिर्फ असली 'ऐस्प्रो' ही खरीदिये। अगर आपके स्थानीय दवा विक्रेता के पास 'ऐस्प्रो' न हो तो हमें लिखिये। हम उसे फौरन् भेज देंगे।

मर्द हो औरत हो या बच्चा 'ऐस्प्रो' खाकर दर्द और बुखार से छुटकारा पा सकता है

'ऐस्प्रो' हृदय या पेट को नुकसान नहीं पहुँचाती

पढ़ा लिखा आदमी अनपढ़ों, को पढ़कर सुनाये, इससे बढ़कर लाभदायक और पुण्य कर्म दूसरा नहीं।

असल 'ऐस्प्रो' ही लीजिये

'ऐस्प्रो' क्या करती है

५ मिनट में सिर दर्द रोकती है
रात भर में गठिया शान्त करती है
चन्द मिनटों में बुखार कम करती है
दांत-दर्द और स्नायुशूल फौरन् बन्द करती है
दुःख दर्द भगाती है
नींद न आनेपर मीठी नींद लाती है
चिड़चिड़ापन दूर करती है
स्त्रियों का दर्द दूर करती है
इससे कुल्ला करने पर गले की खसखसाहट दूर होती है
सर्दी और इन्फ्लुएंजा का नाश करती है
किसी भी दवा से पहले डेंगू ज्वर उतारती है
संक्रामक रोगों से दूर रखती है

सर्दी व बुखार भगाती है

'ऐस्प्रो' की हर टिकिया आश्चर्यजनक 'सीलटाइट' पुड़िया में बन्द रहती है जिससे धूल और नमी से उसकी रक्षा होती है और वह कभी खराब नहीं होती

कोई भी नकल मत लीजिये

हर जगह मिलती है

वितरक:
जे. एल. मौरिसन, सन ऐण्ड जोन्स (इण्डिया) लिमिटेड
पोस्ट बक्स ३८७ कलकत्ता
फोन कल० ७९६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य-चर्चा

सफ़ाई—घर और बाहर

स्वस्थ जीवन की यह भी एक महान् विभूति है

लेखक, श्री हरिमोहनलाल श्रीवास्तव, एम० ए०, एल० टी०, साहित्यरत्न

सफ़ाई, सादगी और सच्चाई ये तीन बातें हैं जिनसे मनुष्य की पहचान होती है। तीनों में ही अपना एक जादू है और जिस व्यक्ति में ये तीनों बातें पूर्ण-रूपेण विद्यमान हैं, वही यथार्थ एवं सम्पूर्ण मानव है—मानव क्यों, उसे तो देवता कहना चाहिए। ये वस्तुएँ जितनी बड़ी हैं, उतने ही परिश्रम से प्राप्त होती हैं; परन्तु तीनों में सफाई फिर भी सुगम है और उसे मानवता की प्रथम सीढ़ी कहा जा सकता है। समय के साथ सफाई के विषय में भी लोगों के विचार बदला करते हैं। एक समय वह था, जब दाढ़ी-मूंछ बदादुरी और मर्दानगी के चिन्ह थे, पर धीरे-धीरे दाढ़ी घुटाई जाने लगी और अब तो मूँछों में भी कुछ को गन्दगी दिखाई दी है।

[illegible]क कहावत है जिसका [illegible] भगवान् की भक्ति [illegible]ान सफ़ाई का है। [illegible]त् सफ़ाई से आत्मा शुद्ध और पवित्र होती है। इसी हेतु प्रत्येक धर्म, प्रत्येक सम्प्रदाय में आन्तरिक और वाह्य दोनों प्रकार की स्वच्छता पर बल दिया गया है। अन्तर की यह बड़ी सफ़ाई आज किसी बिरले में ही मिलती है; परन्तु कम से कम शरीर और भोजन, जल और वायु, वस्त्र और गृह की स्वच्छता पर तो प्रत्येक व्यक्ति को ध्यान देना चाहिए। एक पुरानी कहावत है—"कुत्ता भी पूंछ फटकारकर बैठता है।" यह दूसरी बात है कि कभी कहीं गर्मी से परेशान होकर किसी नाली की कीचड़ में दो-एक लोट लगाने का उसका जी चाहे!

स्वच्छता को हम स्वास्थ्य की माता कह सकते हैं। स्वच्छ जल, स्वच्छ वायु, स्वच्छ शरीर और स्वच्छ भोजन के बिना मनुष्य के जीवन का ठेला अधिक नहीं चल सकता। अँगरेजों में सफ़ाई पर्याप्त नहीं तो नियमित अवश्य है और कदाचित् इसीलिये वे 'साठा' होकर भी 'पाठा' होते हैं; परन्तु सिर पर लप-झप दो लोटे पानी डालकर ही सफ़ाई का दम भरनेवाले भारतीयों की औसत आयु बस २३ वर्ष है। जब मनुष्य अपने चारों ओर सफाई देखता है, तो उस सुन्दरता पर रीझकर उसका हृदय प्रसन्नता से भर जाता है। मोटी अक्ल का मोटा जानवर हाथी भी जब तालाब या नदी से नहा-धोकर निकलता है तो कितना प्रसन्न जान पड़ता है। झाड़-पोंछकर ढंग से सजी-सजाई दुकान की ओर ही गाहक का जी ललचाता है। धूल में खेलने-वाला छोटा बालक, जिसकी नाक बह रही है, लोगों को तभी प्यारा लगता है, जब वह नहा-धोकर सामने आता है। और तो क्या कहें, पेड़-पौधों की पत्तियाँ भी तो ताजे पानी से धुलकर भली जान पड़ती हैं।

प्रत्येक शासन का यह कर्तव्य है कि वह ग्राम और नगर में बसनेवाली अपनी प्रजा की सफाई और उसके स्वास्थ्य का ध्यान रक्खे। बड़े-बड़े नगरों में म्यूनिसिपल कमेटी का विभाग इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये सरकार की ओर से खुलवाया जाता है और कुछ चुने हुए सदस्य भी उसे सहयोग पहुँचाते हैं, किन्तु कार्य उस समय तक पूरा नहीं होता, जब तक स्वयं प्रजा के हृदय में सफाई घर न कर जाय। छोटे नगरों की चुंगी-कमेटियाँ तो और भी कम कार्य कर पाती हैं—विशेषतः वहाँ जहाँ गरीब प्रजा से कुछ कर नहीं लिया जाता। परन्तु जब इच्छाशक्ति दिखाई देती है तो वहाँ भी कुछ ऐसे सामान जुट जाते हैं कि थोड़े ही दिनों में सब कुछ दिखाई देने लगता है। आवश्यकता है उत्साही कार्यकर्त्ताओं की, जो साधारण जनता में स्वच्छता का भाव भरकर उसका स्तर ऊँचा उठाने के लिए हर समय सचेष्ट रहते हों।

जहाँ सरकार का पहला काम है कि वह सड़कों और गलियों की सफाई की देख-रेख रखें, क्योंकि धूल के गुबार और स्थान-स्थान पर कूड़े-कचरे से कितनी ही बीमारियाँ डेरा जमाती हैं, वहाँ लोगों को भी तो चाहिए कि वे हर कहीं पेशाब करने न बैठ जाया करें और आबादी के निर्जन स्थानों में पाखाना फिरने की लत न डालें। बस्ती के पानी के निकास और बीचोंबीच बहनेवाले, नाबदानों की सफाई की भी बड़ी आवश्यकता है, क्योंकि कीचड़ या दलदल में पले हुए मच्छरों की सहायता से ही तो मलेरिया बुखार हमारे देश में बारहों महीने पाँव पसारकर पड़ा रहता है। हमने अत्यन्त दुःख के साथ कुछ स्थानों पर देखा है कि लोग एक ओर तो गायों का दूध दुहकर निकाल देते हैं और दूसरी ओर पाखाने खुले रख छोड़ते हैं जिससे भूखी गायें मैले में मुँह डालती हैं और फिर उनका दूध पीकर मनुष्य अपनी कब्र आप तैयार करते हैं। दूसरी बुरी बान कुएँ के घाटों पर नहाने की है। भले ही गन्दे पानी के छींटे कुएँ में गिरकर बुरी से बुरी बीमारी फैलायें, बिना अल्मारियों के मिठाई या खोमचे पर मक्खियों का भिनकना और बिना चिक डाले हुए माँस का बेचा जाना सभी स्थानों से जितनी जल्द रोका जाना चाहिए, उतनी ही आवश्यक बस्ती के भीतर हाथियों के गाड़े जाने की मनाही होनी चाहिए।

कहीं-कहीं तो लोग गलियों में बैठकर पंगत खाने के आदी हैं; फिर इन लोगों से कैसे आशा की जा सकती है कि ये अपने घरों की सफाई पर पूरा ध्यान देंगे। यदि ईद या दीवाली न आये तो कदाचित् ही लोग अपने घरों की सफाई करना चाहें। जिस रसोईघर में मक्खियाँ भिनकती हैं और महीनों पुराने पोते से चौका दिया जाता है, उससे तो साफ-सुथरी खाट या मेज़ पर बैठकर खाना ही भला। न जाने लोग क्यों नाक-भौंह सिकोड़ते हैं! घरों के कोनों या किवाड़ों के पीछे कूड़े का जमाव, दीवालों पर पान-तम्बाकू की पीक या किसी बीमार का यहाँ-वहाँ खखार, मकान की मुँड़ेरों पर चारे के पूरे, खपरैल या छतों में मकड़ियों के काले लम्बे जाले, खूँटियों पर मैले-कुचैले कपड़ों का बोझ और आँगन में जूठे बर्तनों का ढेर—किसी भी गृहस्थी में पाया जा सकता है। भले आदमियों से चार पैर रखकर दूर कूड़ा नहीं फेंका जाता और न आठवें दिन भी घरों की लिपाई-पुताई की जाती है।

यह सच है कि बहुत-कुछ सफाई पैसे से होती है और यहाँ, स्थिति यह है कि 'नंगी क्या नहाय, क्या निचोड़े' परन्तु आदमी को उतना तो करना ही चाहिए, जितना वह कर सकता है। बात तो यह है कि आलस्य के भूत ने भारतीय मस्तिष्क को बुरी तरह दुर्बल बना दिया है। अमरीका का प्रेसीडेंट विल्सन अपने कमरे में आप झाड़ू लगा सकता था, पर काले आदमी का काला बच्चा अपना कपड़ा आप धोने में भी लजाता है। किसी ने कहा है—"यदि प्रत्येक व्यक्ति अपना द्वार साफ रखे, तो नगर भर की सफाई हो जाये।" किन्तु वर्षों से गन्दगी की गुलामी और आलस्य के आक्रमण का शिकार बने हुए व्यक्तियों की समझ सुधारकर उन्हें ऊँचा उठाने के लिए तेजी और तत्तपरता से ही कुछ किया जा सकता है और यह सोलह आना आवश्यक है; क्योंकि हमारे पड़ोसी के घर की सफाई या गन्दगी हमारे अपने स्वास्थ्य को भी बना-बिगाड़ सकती है। स्वच्छ भूषण-वसन तथा स्वच्छ रहन-सहन ही उन्नति एवं समृद्धि के द्योतक और पोषक है।

दाद, खुजली
और
हरेक मेलका चमड़ीका दर्दोंके लीए
गत ५० वर्षों से
जग-विख्यात
कपड़े खराब नहीं करती
नक्कालों से सावधान
सपट
लोशन
सपट एन्ड कुं
मुंबई, २.
R.P.C.143

किर्लोस्कर
स्वतन्त्रता की प्रथम दीपावली पर
अपने
ग्राहकों और हितचिन्तकों के लिए
हमारी शुभ कामनाएँ

किर्लोस्कर बन्धु लिमिटेड
किर्लोस्कर वाडी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पेज १७ का शेष)

श्री चक्रवर्ती जी लिखित चार्ट इस प्रकार है :—

एक दिन का भोजन

राशन की चीजें		कैलोरीज	मूल्य रु० आ० पा०
चावल	१ पाव या ८ औं०	८३०	० १ ६
आटा	१ पाव या ४ औं०	४८०	० १ ०
चीनी	१ औं०	१२०	० १ ३
		१४३०	
राशन के अतिरिक्त			
सरसों का तेल	१ औं०	२६१	० १ ०
दाल	२ औं०	१६०	० १ ०
मूंगफली	१ औं०	१६४	० १ ०
मुरमुरा	२ औं०	२१०	० १ ०
आलू	१ औं०	२७	० १ ०
या कच्चा केला	१ औं०	३४	
या हरी मटर	१ औं०	३९	
कन्द	१ औं०	२६१	० ० ६
शाक-सब्जी	८ औं०	१५	० १ ६
केला व अन्य फल	१ औं०	१९	० ० ९
नारियल की गिरी	१ औं०	१९०	० १ ६
		२५६५	० १२ ०

या २६०० कैलोरीज

भारत में जनता अल्पायु क्यों है, रोगी क्यों रहती है और क्षीण और दुर्बल शरीर क्यों है, इसका उत्तर इससे मिल जाता है। इसलिए जब तक अनाज सस्ता न होगा, खाद्य पदार्थ सुलभ न होंगे, तब तक जनता का गिरता स्वास्थ्य उन्नत नहीं हो सकता। यदि जनता के पास पौष्टिक पदार्थों और रोग-निरोधक तथा स्वास्थ्यसंवर्द्धक पदार्थों को खरीदने की शक्ति भी हो तो वह प्राप्त नहीं है। भारतीय भोजन में शाक-सब्जी, तेल-घी, दूध, फल, चीनी, मांस, मछली और अण्डे की बहुत कमी है। एक अनुमान के अनुसार ६९·९ प्रतिशत शाक-सब्जी, ७०·८ प्रतिशत घी-तेल, ६७·३ प्रतिशत दूध, चीनी १० प्रतिशत और मछली, मांस और अण्डे की ७५ प्रतिशत कमी है। असन्तुलित भोजन अल्पायु होने का कारण है। भारत में स्त्री-पुरुष की औसतन आयु १९३१ में २६·५६ और २६·९१ वर्ष है, जब कि इँगलैंड में इसी साल स्त्री की ५९·५२ और पुरुष की ५५·६२ वर्ष थी। जर्मनी, नार्वे, हालैंड और स्विटजरलैण्ड की ५५ वर्ष है। असन्तुलित भोजन की कमी भोजन में फलों का उपयोग बढ़ाने से एक बड़े अंश में दूर हो सकती है। इसके लिए केला, अनानास आदि जल्दी उत्पन्न होनेवाले फलों के वृक्ष लगाने को प्रोत्साहन देना चाहिए। दिल्ली ने वृक्ष-रोपण-सप्ताह मनाकर देश को इस दिशा में उचित नेतृत्व प्रदान किया है। बिहार के अन्दर फलों के बाग के अन्दर और ७५४३ एकड का विस्तार किया गया है और अगले साल से ३,००० टन फल उत्पन्न होने की आशा है। फलों के उद्योग को संरक्षण देने की सिफारिश टैरिफ बोर्ड ने की है। मौसम के बाद भी फल रखे जा सकें और स्वाद से खाये जा सकें, इसके फल-संरक्षण का ज्ञान फैलाना आवश्यक है। इस दृष्टि से 'इन्स्टीटयूट आफ फूट टेक्नोलाजी' की स्थापना की आवश्यकता है।

दूध की कमी भी खटकनेवाली है। प्रतिव्यक्ति दूध की खपत देखकर ही यह सहज में प्रगट हो जावेगा :—

	औंस प्रतिव्यक्ति
भारत	६·६
कनाडा	५८·८
डेन्मार्क	४०·३
ग्रेट ब्रिटेन	४०·७
न्यूजीलैंड	५५·६

भारत में पशुओं की कमी नहीं है। विश्व की कुल पशु-शक्ति का एक तिहाई भारत में है। मगर पशुओं की किस्म अच्छी नहीं है। १९०५ में भारत के अन्दर पशुओं की संख्या ९ करोड़ थी। वह १९१५ में बढ़कर १७ करोड़ हो गई। ८८·२ प्रतिशत वृद्धि हो गई। पर इसके लिए देश में चरागाह का अभाव है। उद्योगों के न होने से भूमि पर अत्यधिक भार है। आज की अवस्था में ½ से अधिक पशुओं का पालन भारत नहीं कर सकता। भारत की आज मुख्य समस्या यह है कि गायें "धरोहनी" कैसे बनें। डा० बर्न का कहना है कि उचित चारा, नस्ल सुधारने, उत्तम प्रबन्ध और रोगों का नियन्त्रण करने से दूध की पूर्ति ७५ प्रतिशत बढ़ सकती है। यदि पशुओं का पालन उचित रीति से हो तो भारतीय भोजन स्वतः सन्तुलित हो जावेगा।

भोजन को सन्तुलित करनेवाली तीसरी चीज शाक-सब्जी है। इसका उत्पादन बढ़ाने से यह सम्भव है। जहां-जहां जमीन खाली है, वहां शाक-सब्जी उगाने का प्रयत्न करना चाहिए। घरों के आंगन में भी शाक-सब्जी बोई जा सकती है। शाक-सब्जी बोने के लिए जमीन के बड़े टुकड़े नहीं चाहिए। यदि गवर्नमेंट प्रयत्न करके शाक-सब्जी बोने के क्षेत्र को दुगुना कर दे, तो यह समस्या हल हो सकती है।

मूल समस्या

अन्न-संकट का मूल कारण क्या है? दशकों से भूमि की उपजाऊ शक्ति की रक्षा की ओर ध्यान नहीं दिया गया है। भूमि भूखी है। भूमि के भूखी होने के कारण आदमी और पशु भी भूखा मर रहा है। अदमी को यदि जीवित रखना है तो पहले भूमि को जीवित रखना चाहिए। इसका उपाय क्या है? भूमि को खाद के रूप में उपजाऊपन के तत्त्व प्रदान किये जायँ। भूमि की अधिकतम आर्द्रता कायम रखी जाय। कमी को सिंचाई से पूरा किया जाय। खेती के लिए आवश्यक शक्ति—जन, जानवर और मैशीन उपलब्ध हो। ये तीनों उपाय ऐसे हैं जिनके लिए विदेशों का मुंह ताकने की जरूरत नहीं है। भारत का हर एक किसान इन तीनों उपायों को जानता है।

रासायनिक खाद भारत में कुछ साल पहले कौन जानता था? और आज भी कितने लोग जानते हैं? इसका आयात अगले पांच वर्षों में भी पर्याप्त परिमाण में सम्भव नहीं है। सिंदरा का फर्टीलाइजर प्लाण्ट पांच साल पहले शायद ही चालू हो। रासायनिक खाद यदि प्राप्त भी हुई तो उसकी लागत बहुत होगी और उसको लेना भारतीय किसान की क्षमता के बाहर होगा। इससे खेती की लागत भी बढ़ जावेगी। फिर किसान को रासायनिक खाद के लिए नगद पैसे देने पड़ेंगे। इसकी अपेक्षा यह अधिक अच्छा है कि ऐन्द्रियिक खाद को हम फिर अपनावें। इसका भारत के हर एक किसान को अनुभव है। वह जानता है कि इसका कैसे, कब और किस मात्रा में उपयोग करना चाहिए। दुर्भाग्य से गोबर जला दिया जाता है, क्योंकि किसान के पास अपना चूल्हा जलाने के लिए ईंधन नहीं है। पर फिर भी यदि सारा गोबर उपलब्ध हो, तो भी वह भारत की सारी खेती के लिए पर्याप्त न होगा। पर इसकी कमी को रात्रि-मल को खाद बनाकर इसकी कमी को पूरा किया जा सकता है। यह रासायनिक खाद के समान ही प्रभावशाली है। गांव के नर-नारी मल-मूत्र विसर्जन यदि गांव से बाहर खोदी खाइयों में करें और उस पर मिट्टी डालते जायँ, तो वे स्वतः अपने गांव की जमीन की उपजाऊ शक्ति बढ़ाने के लिए अपरिमित खाद तैयार कर लेंगे। इससे भूमि की उपजाऊ शक्ति में स्थायित्व आयेगा। गांववालों को मिलकर केवल इसके लिए श्रम करना होगा। इसको लाने-ले-जाने का भी खर्चा न होगा और इसके बनाने में भी कुछ लागत न होगी।

जमीन प्यासी है—

जमीन भूखी होने के साथ ही प्यासी है। उसकी प्यास बुझाने के लिए देश को करोड़ों रुपये की योजनाओं की प्रतीक्षा में नहीं बैठा रहना चाहिए। जब तक वे योजनाएँ पूरी नहीं होतीं, उस समय तक हाथ पर हाथ धरकर बठे रहना कापुरुषता ह। हमें अन्न-संकट को दूर करने के लिए पुरानी परिपाटी को अपनाना होगा। प्राचीन काल में तालाब या कुआं खुदवाना एक पुण्य-कार्य समझा जाता था। आज भी वह पुण्य-कार्य है। धनी लोग अपनी कीर्ति और यश की रक्षा के लिए कुएँ खुदवाते थे। वह कार्य फिर आरम्भ होना चाहिए। पर किसान धनियों का मुंह क्यों जोहें? क्यों न वे सामूहिक रूप से गांव की आवश्यकता के अनुरूप पंचायती कुओं और तालाबों का निर्माण करें? वर्षा का पानी जमा करने के लिए बांध बनायें? अगले पांच सालों के अन्दर हम पर्याप्त या बड़े परिमाण में पम्पों और इंजनों की आशा नहीं कर सकते। उनकी प्रतीक्षा में क्या जमीन प्यासी रहे? फिर किसान उनके लिए पैसे कहां से लावेगा? भारत तो उनको बनाता नहीं। डालरों का अभाव है। जमा स्टर्लिंग बट्टे-खाते में जाता हुआ नजर आता है। इसलिए सिंचाई के लिए हमें अपने प्राचीन तरीकों को अपनाना चाहिए। इसके साथ वृक्षों को लगाने के लिए आन्दोलन होना चाहिए। जितने वृक्ष काटे जायँ उससे कम से कम दुगने पेड़ लगाये जायँ, यह एक नियम बना देना चाहिए। पेड़ों के लगाने से वर्षा अधिक पड़ेगी, भूमि की आर्द्रता बनी रहेगी। गांव को जलाने के लिये ईंधन की कमी न होगी और यदि वे फलों के पेड़ हुए तो भोजन को सन्तुलित करेंगे। इसके अतिरिक्त पेड़ों की छाया मुफ्त में मिलेगी।

भारत में ट्रैक्टरों से खेती सम्भव नहीं है, चाहे वह वाञ्छनीय भी क्यों न हो। भारत में ट्रैक्टर बनते नहीं। यदि बाहर से मंगाएँ, तो उनको मरम्मत करने के लिये यहां आज मिस्त्री नहीं। उनके पुर्जों के लिये भटकते फिरना होगा। इस संकट काल में ट्रैक्टर भारत को मिल नहीं सकते। उनको आज आयात करना बुद्धिमानी भी नहीं है। तीन-चार साल तक वे बेकार हो जावेंगे। जब तक भारत स्वतः ट्रैक्टर नहीं बनाता तब तक मशीनों से खेती करने की बात कहना अयुक्त है। इसलिये खेती के लिये भारत को बैलों और उनकी सहायता के लिये आदमी पर निर्भर रहना होगा। इस दृष्टि से भी पशु-पालन की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। पशुओं की नस्ल सुधारने का आन्दोलन गांव गांव में उठना चाहिए। इसका परिणाम [illegible] दिखाई न देगा। पर यह स्मरण [illegible] चाहिए कि भारत की खेती का [illegible] हृष्ट-पुष्ट बैलों पर निर्भर है। यदि [illegible] को अच्छी तरह खिलाया जाए [illegible] उसका बड़ा सुन्दर परिणाम निक[illegible] इसके लिये चना जैसी फसल [illegible] भागों में बोनी चाहिए जो पशु [illegible] आदमी दोनों के लिये काम की [illegible] 'खाय चना रहे बना' की प्राचीन [illegible] से कहावत चली आ रही है। [illegible] अनुसार हमें काम करना चाहिए।

राष्ट्रीय इच्छा

इनमें ऐसी कोई बात नहीं जो [illegible] तीय किसान नहीं जानता। अभाव [illegible] इच्छा का है। हमें प्रबल आ[illegible] करके 'राष्ट्रीय इच्छा' को उत्पन्न [illegible] चाहिए। गांव-गांव यह नारा [illegible] चाहिए 'पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ' [illegible] मुक्ति इसी से होगी। पेड़ बड़ा होकर [illegible] को फल देगा, पशु को चारा देगा, [illegible] देगा, गोबर बचेगा और इससे [illegible] बनेगी, तथा जमीन को भोजन [illegible] इसलिये गांव-गांव यह नारा [illegible] चाहिए नर-नारी, बूढ़े, बच्चे 'पेड़ [illegible] पेड़ लगावें।' अन्न-संकट को दूर [illegible] और आज की अपमानजनक [illegible] को दूर करने तथा १ [illegible] का यही उपाय है।

अन्न-सुरक्षा

४० लाख टन और अधिक [illegible] उत्पन्न करना भारत के लिये कठि[illegible] है। यदि प्रतिएकड़ एक मन अधिक [illegible] उत्पन्न होने लगे तो आज की अन्न-सं[illegible] हो सकता है। पर यही तो काफी न[illegible] संकट का मुकाबला करने के लिये हमें [illegible] पास अन्न जमा भी रखना च[illegible] अनाज किसान जमा करके रख[illegible] पर उसके कोठारों में जमा अना[illegible] खा जाता है और अन्य कीड़े [illegible] हैं; या सील जाता है। इसलि[illegible] हंग के पंचायती कोठार अना[illegible] करने के लिये बनाने चाहिए। यह [illegible] संकट काल में काम आएगा, [illegible] काम आएगा। सरकार ने २५,४[illegible] टन अनाज को सुरक्षित रखने के [illegible] 'स्टोरेज' (कोठारों) की [illegible] बनाई है। केन्द्रीय गवर्नमेंट १,९[illegible] टन प्रान्तिक सरकारें १३,००,०[illegible] और रियासतें ११,५०,००० टन [illegible] के लिये स्टोरेज बनावेंगी। व्या[illegible] ने इसके अतिरिक्त ७७,००,०[illegible] अनाज सुरक्षित रखने लायक [illegible] सरकार को दी है। इस योजना [illegible] अधिक बढ़ाने की जरूरत है। [illegible] अनाज ही खाने को नहीं है, तब उ[illegible] किया जावेगा? इसलिये हम [illegible] फिर कर वहीं आये हैं, कि 'पेड़ [illegible] आन्दोलन को गांव-गांव और [illegible] झोपड़ी तक पहुँचावें। यही हमारी [illegible] चारा और ईंधन की समस्या को हल [illegible] और भारत की मुक्ति का कारण [illegible] अतः भारत की कृषि को पुनर्ज[illegible] करने के लिये, गांवों को सुन्दर [illegible] हरा-भरा जीवनमय बनाने के लि[illegible] आन्दोलन उठना चाहिए—'पेड़ [illegible] पेड़ लगाओ।'

प्रिंस होमियोपैथिक कालेज
बनारस
गवर्नमेंट रजिस्टर्ड और [illegible]
होमियोपैथिक, बायोकेमिक, [illegible]
तीनों डिप्लोमा (सार्टिफिकेट) [illegible]
प्राप्त करें। नियमावली मुफ्त [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धड़ाधड़ बिक रहा है। शीघ्रता कीजिए

वार्षिक बालसखा १९४७

इसकी छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएँ और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का मूल्य ३)। मासिक ग्राहकों को रियायती मूल्य २॥) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

भारी लूट !

आज ही मँगावें—अवसर मत चूकिये ३॥) में ६ नई पुस्तकें

पति-पत्नी जीवन (सचित्र)—पति-पत्नी के पढ़ने योग्य दाम्पत्य जीवन को सुखी, सन्तुष्ट बनानेवाली अपूर्व पुस्तक १।), खजाना रोजगार—अनेकों प्रकार के हुनर सीख धन पैदा कीजिये १), हुसन पैरिस—केवल विवाहितों के देखने योग्य १२ फोटो १॥), इँगलिश टीचर—घर बैठे अँगरेजी लिखना, पढ़ना, बोलना सीखो १), वशीकरण विद्या—वशीकरण मंत्रों और जादू के खेलों का संग्रह १), हारमोनियम टीचर—हारमोनियम बजाना और गान-विद्या सीखो १॥)।

६ पुस्तकों के सेट का मूल्य केवल ३॥) पोस्टेज पैकिंग ।॥) अलग।

ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (जी० ५०७) अलीगढ़ सिटी।

डॉक्टर बनने में पाँच वर्ष लगते हैं और किसी बड़े हवाई जहाज़-मैदान में बर्मा-शेल हवाई सरविस का सुपरंटेंडन्ट बनने के लिये पाँच वर्ष की सख्त शिक्षण लेनी पड़ती है।

इन पर भी भरोसा किया जा सकता है बर्मा शेल हवाई सरविस के समान

बर्मा-शेल हवाई सरविस

ग्रेयरलाइनों के भरोसे की सर्विस

SHELL

बर्मा-शेल आइल स्टोरेज अैंड डिस्ट्रीबूटींग कम्पनी आफ़ इंडिया लि० (इंगलिस्तान में इकार्पोरेट की गई)

एजंटस्.

सुशीला...वैभव की झलक...चेहरे पर स्वर्ण की अरुणिमा.....

सर्वत्र युवा स्त्रियाँ और कन्यायें प्रसुप्त लावण्य को व्यक्त करने की प्रणाली खोज रही हैं।

.....शरीर-सौन्दर्य मृदुल अंगों के लावण्य को व्यक्त करता है। पाँड्स् कोल्ड क्रीम के प्रकृत तेलों से स्वच्छ करते हुये अपने चेहरे को स्वच्छ और कोमल रखिये। उंगली के पोरों से हल्के हल्के चेहरे पर रमाइये...पाँड्स् टिशू से अलग कर दीजिये...देखिये कि दिनभर की धूल और मैल निकल जाता है! तब पाँड्स् वेनिशिंग क्रीम मलिये। यह शरीर में रमजाता है...लुप्त प्रकृत तेलों को स्थानापन्न करते हुये...आपके चेहरे को कोमल और स्वच्छ रखते हुये।

वह रूपवती है!
वह पाँड्स् का प्रयोग करती है!

पाँड्स् दिनचर्या

पाँड्स् कोल्ड क्रीम : पाँड्स् कोल्ड क्रीम को चेहरे पर कोमलता से रमाते हुये दिन में दो बार उसे साफ़ कीजिये; उंगली के कोमल पोरों से उसे थपथपाइये। पाँड्स् टिशू से स्वच्छ कर लीजिये।

पाँड्स् वेनिशिंग क्रीम : कोल्ड क्रीम को साफ़ करके उंगली के पोरों से पाँड्स् वेनिशिंग क्रीम लगाइये। त्वचा को सुरक्षा देता हुआ वह आप के प्रयोग के साथ ही अंतर्धान हो जाता है।

पाँड्स् पावडर : यदि आप की इच्छा हो तो पुष्प-पंखड़ी की भांति कोमलता के लिये पाँड्स् पावडर थपथपाइये।

पाँड्स् क्रीम्स

व्यापार-सम्बंधी पूछताछ के लिये लिखिये:
एल. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लिमि०
बम्बई - कलकत्ता - कराची - मद्रास.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Copyright: Pond's Extract Co.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के लिये

डोंगरे

बालामृत

के० टी० डोंगरे आणि कं० बुंबई ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

वार, २३ नवम्बर, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 23rd November, 1947

जूनागढ़ और काश्मीर की स्थिति
अध्यापक और किसान की समस्या

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

हमारे जेल-जीवन के कुछ संस्मरण
यह दीपक क्या संदेश सुना रहे हैं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावली— के उपलक्ष में भारी रियायत—आज ही मँगायें, ३॥) रु० में ६ नई पुस्तकें

प्रेम-जीवन—(सचित्र) केवल विवाहितों के देखने योग्य दाम्पत्य जीवन को सुखी सन्तुष्ट बनानेवाली काम विज्ञान की गुप्त पुस्तक १।)। वशीकरण विद्या—अनेकों वशीकरण मंत्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह १।)। हिन्दी-अँगरेजी शिक्षा—घर बैठे अँगरेजी लिखना, पढ़ना, बोलना सीखो १)। हारमोनियम तबला मास्टर—हारमोनियम, तबला बजाना और गान-विद्या सीखो १।)। हुस्न पैरिस—केवल पति-पत्नी के देखने योग्य १२ फोटो १।)। व्यापार की कुंजी—अनेकों हुनर सीख कौड़ियों से रुपया पैदा करो १।)।

६ पुस्तकों के सेट का मूल्य केवल ३॥) रु०, पोस्टेज पैकिंग ।॥) अलग।

ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (सी २१२) अलीगढ़ सिटी।

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। १ डिब्बा ३।–) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्त में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर हो कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक और पैकिंग खर्च

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कान

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्तरोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए० लाहौरवाले फतेहपुरी (D. A.) देहली से मशवरा (सम्मति) मुफ्त लेकर अपना जीवन सुधार लें।

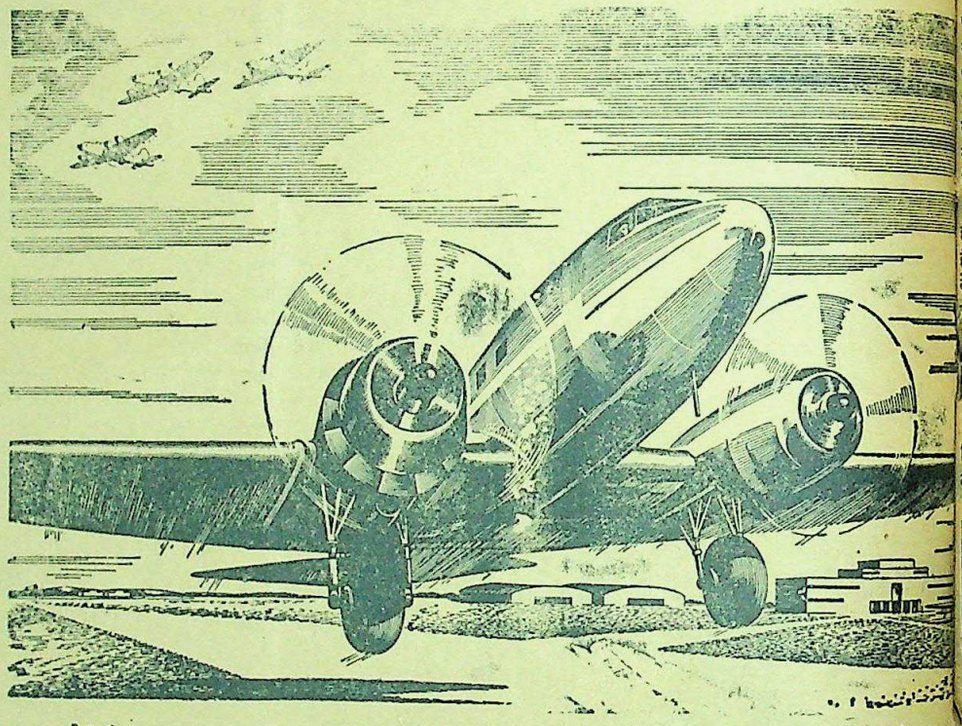

१२ सैकंड हवा में--यह थी सब से पहली सफल हवाई उड़ान जो अमरीका के एक निवासी, ओरविल राइट, ने १७ दिसम्बर १९०३ में की थी। तदनन्तर मनुष्य ने वायु मंडल पर विजय प्राप्त करने के उद्योग किये हैं। आज कल वायुयान बजाये दिनों के घंटों में ही कई एक महाद्वीपों को पार कर जाते हैं। कलकत्ता से देहली तक ९०० मील की यात्रा सुविधा और सुखपूर्वक किसी भी दिन ३ घंटे में की जा सकती है। निस्सन्देह मानुषी साहस और कल्पना शक्ति की कोई सीमा नहीं परन्तु इस उन्नति के साथ साथ बम-मार हवाई जहाज़ द्वारा भयंकर विनाश शान्ति-प्रिय जनता को तैमूर और चंगेज़ ख़ाँ के आक्रमणों से भी कहीं अधिक भयभीत करता है। क्या हवाई यात्रा का यह भयंकर प्रलय रूप बीते स्वपन की याद का रूप धारण करके रह जायेगा?–यह निर्भर है उस विवेक और बुद्धि पर जिसकी सहायता से विभिन्न राष्ट्र अन्तर-राष्ट्रीय समस्याओं का निवारण करेंगे।

विवेक और बुद्धिमत्ता द्वारा ही हम भी अपनी एक और समस्या निवृत्ति कर सकते हैं—वह समस्या है चढ़ी हुई कीमतें। कई एक ऐसी हैं जिनके बिना भी निर्वाह हो सकता है और कई ऐसी भी हैं जि आजकल की चढ़ी कीमतों पर ख़रीदना आवश्यक नहीं। ऐसी अनाव वस्तुओं को इस समय न ख़रीद कर हम कीमतें गिराने में सहाय सकते हैं और इस प्रकार रुपये के मूल्य में वृद्धि कर सकते हैं। धन अपव्यय या अरक्षित मद में लगाना कीमतों को चढ़ाने में सहायता है और यह व्यक्ति और राष्ट्र के लिये भय सूचक है। अपने धन शत्रु बनाने की अपेक्षा मित्र बनाइए।

बीमा पॉलिसी, सहकारी साख समिति, डाकख़ाने का सेविंग खाता, नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स और सरकारी लोन (कर्ज़े), धन लगाने की सुरक्षित मद हैं।

भूमि, सम्पत्ति, सोना चांदी के पासे, आभूषण, द्रव्य, माल या सट्टेबाज़ी पर रुपया व्यय न कीजिए। इन के मूल्य बहुत हुए हैं और आशा है कि शीघ्र ही कम हो जायेंगे।

चढ़ी कीमतों को रोकिए
धन का अपव्यय न कीजिए

भारत सरकार के फ़ाइनैन्स विभाग द्वारा प्रकाशित

मेरे श्वास में दुर्गन्धि?

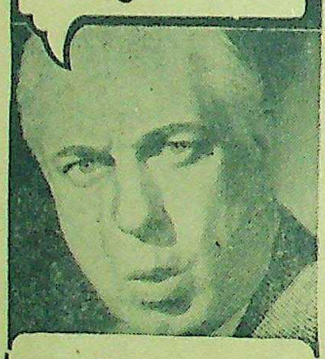

नवयुवकों की ७६% संख्या से दुर्गन्धि आती है!

वैज्ञानिक अनुभवों से यह निस्सन्देह सिद्ध हो गया है कि कोलगेट टूथ पाउडर को १० घटनाओं में से ७ घटनाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि मुख की दुर्गन्धि शीघ्र ही दूर हो गई।

धन की बचत—दूसरी दवाओं की अपेक्षा कोलगेट एक बड़े डिब्बे में दाँत साफ करने की ३० मात्रा अधिक रहती है, उससे बड़े डिब्बे में ४६ मात्रा अधिक रहती है। परन्तु दाम वही है।

धूम्र-पान करनेवाले—कोलगेट दाँत का मंजन तम्बाकू की दुर्गन्धि और मैल को दूर करता है।

आज ही कोलगेट खरीद लीजिए।

कालगेट टूथ पाउडर

कोलगेट आज ही खरीदिए!

CLEANS BREATH AS IT CLEANS TEETH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष १०, संख्या १२] [रविवार, २३ नवम्बर, १९४७

संयुक्तप्रांतीय मुसलिम लीग की कौंसिल ने प्रस्ताव पास करके मुसलमानों से अनुरोध किया है कि वह अपने वतन अर्थात् हिन्दुस्तान को छोड़कर पाकिस्तान न जाएँ। प्रस्ताव तो वाकई आदर्श से भरापूरा है, लेकिन उस आदर्श का पालन हो तब तो! आज कल प्रांतीय सरकार लीगी मुसलमानों की जांच पड़ताल में लगी है और बरामद हो रहा है बम, छुरा, बल्लम, पिस्तौल और बंदूक। अपने राम की राय में लीगरों को वतन छोड़कर भागने की जरूरत नहीं है लेकिन खुदा के नाम पर फिफ्थ कालम के काम का गुनाह करना तो छोड़ ही देना चाहिए। लेकिन दुख तो यह है कि लीगी लोग तोबा तो जल्दी बोल देते हैं लेकिन कारनामा कुत्ते की दुम की तरह टेढ़ा का टेढ़ा ही रहता है। देखना है प्रांतीय लीग कौंसिल के प्रस्ताव का क्या असर होता है ?

* * *

जब से संयुक्तप्रांत की राज-भाषा हिन्दी हुई है तब से उर्दूदाओं पर आफत आगई है। प्रांतीय सरकार की ओर से

भारत के स्थानापन्न वाइसराय चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य, दिल्ली पहुँचने पर सरदार वल्लभभाई पटेल के साथ दिखाई दे रहे हैं।

हिन्दी के जो आदेश-पत्र सरकारी दफ्तरों में आते हैं तो उर्दूदाओं को घंटों परेशान रहना पड़ता है। अपने राम की राय में उर्दूदाओं ने पिछली अर्धशताब्दी में खूब उछल-कूद मचाई लेकिन उस उछल-कूद की अब कुछ प्रतिक्रिया तो होनी ही चाहिए। तख्ता उलटना इसी को कहते हैं।

* * *

हिन्दुस्तान से अनेक भारतीय मुसलमान पाकिस्तान में बसने गये थे, किंतु धीरे धीरे अब वह पुनः हिन्दुस्तान वापस आ रहे हैं। अपने राम ने कई वापस लौटनेवालों से पूछ-ताछ की तो वह बोले— पाकिस्तान से भला तो हिन्दुस्तान ही है। यहां कम से कम भोजन तो मिल जाता है, जाघा पेट ही सही। लेकिन पाकिस्तान में तो चौदहों दंड एकादशी है। इसके सिवा पाकिस्तान के असली मुसलमान तो हिन्दुस्तान के मुसलमान को पिट्ठी समझते हैं। साथ ही जर और जोरू से हाथ धोने का भय भी बना ही रहता है। जो कुछ भी हो, अब इसका रहस्य प्रगट हो रहा है कि मुसलिम लीग की कौंसिल ने इसीलिये शायद भारतीय मुसलमानों को वतन न छोड़ने की सलाह दी है।

* * *

जूनागढ़ में नई सरकार स्थापित हो गई और नवाब-जूनागढ़ अभी तक कराची में कायदे आजम मिस्टर जिन्ना से परामर्श ही कर रहे हैं। हिन्दुस्तान में रहकर पाकिस्तान के गुन गाने का यह ज्वलंत नमूना है।

* * *

सरदार वल्लभभाई पटेल ने पिछले दिनों जूनागढ़ का दौरा किया था। उन्होंने पट्टन स्थान का भी निरीक्षण किया जहां सुप्रसिद्ध सोमनाथ का मंदिर था, और जिसे मोहम्मद गजनवी ने नष्ट किया था। कहा जाता है कि सोमनाथ का मंदिर पुनः बनवाया जायेगा। अपने राम की समझ में सोमनाथ के मंदिर का पुनः जीर्णोद्धार का काम एक ऐतिहासिक घटना है। लेकिन इस काम का श्रेय नवाब बहादुर जूनागढ़ को मिलना चाहिए, क्योंकि न वह पाकिस्तानी बनने की धूनी रमाते, न भागकर कराची जाते, न कायदे आजम से सांठ-गांठ बैठाते और न सोमनाथ के प्राचीन मंदिर के पुनः जीर्णोद्धार का प्रश्न उपस्थित होता। मुहम्मद गजनवी तो है नहीं किन्तु नवाब जूनागढ़ मौजूद हैं। उनकी मौजूदगी में ऐसा पवित्र काम हो रहा है यह कम प्रसन्नता की बात नहीं है।

* * *

संदेश

श्री शङ्कररावदेव, प्रधान मन्त्री, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी—

हमारा देश आज स्वतन्त्र है, किन्तु इस स्वतन्त्रता-प्राप्ति के साथ देश के विभाजन की दुःखद घटना भी सम्बद्ध है। इस विभाजन के ही विषाक्त प्रभाव का यह दुष्परिणाम है कि आज दीपावली के इस प्रकाश-पर्व पर पंजाब, काश्मीर तथा अन्यान्य स्थानों के लक्ष-लक्ष गृह-दीप बुझ चुके हैं! प्रत्येक राष्ट्र-सेवी का यह प्राथमिक कर्त्तव्य है कि वह उन बुझे प्रदीपों में प्रकाश की पुनर्प्रतिष्ठा करे। समस्त देश-वासियों से आज हमारा यही अनुरोध है वे इस पर्व को शान्ति और सुव्यवस्था के साथ मनाते हुए, यथा-सम्भव व्ययों से बचकर, अधिक से अधिक मात्रा में शरणार्थी-सहायता-कोष को सबल बनावें। स्वतन्त्र भारत की प्रथम दीपावली राष्ट्र के जीवन में स्थायी प्रकाश की वर्षा करे, यही मेरी हार्दिक कामना है।

शंकरराव देव
6-11-47.

काश्मीर के प्रधान मंत्री शेख अब्दुल्ला ने अपने एक वक्तव्य में कहा है कि काश्मीर पर हमला करनेवालों ने जनता को लूट, आगजनी, बरबादी और बलात्कार का शिकार बना डाला है। इस्लाम के नाम पर मस्जिदों को चकलाखाना बना दिया। शेरे-काश्मीर द्वारा यह आंखों देखा वर्णन ध्यान देने योग्य है। जान पड़ता है कि आक्रमणकारी बड़े नम्बरी धार्मिक पुरुष थे, क्योंकि जब उन्होंने मस्जिद तक को, जो खुदा का पवित्र घर समझा जाता है, चकलाखाना बना डाला तो फिर कुछ कहने की गुंजाइश ही कहां रह जाती है। इससे बेहतर था कि भारत के लीगी काश्मीर पहुँच जाते तो यह धार्मिक अनर्थ तो कम से कम न होने पाता।

* * *

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने प्रस्ताव पास किया है कि भारत सरकार को कन्ट्रोल का प्रतिबंध हटा देना चाहिए। एक दृष्टि से कन्ट्रोल तो बुरा नहीं है किन्तु अच्छा है व्यापारियों की दौड़ के लिये बाजार का मैदान साफ हो जायगा। आपसी रस्साकसी में कम से कम भ्रष्टाचार, चोर बाजारी और घूसखोरी तो किसी कदर दूर होगी, यह बहुत बड़ी बात है। कन्ट्रोल की आड़ में आज जो कुछ हो रहा है, और इस कांग्रेसी राज्य में, उससे तो नाक में दम आ गया है। देखना है कन्ट्रोल महाशय अपने नाती-पोतों के साथ कब भारत से विदाई लेते हैं?

* * *

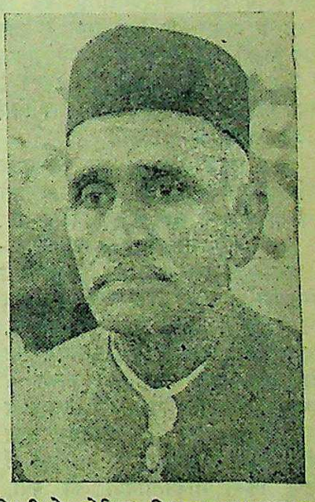

हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान व्याकरणाचार्य पंडित कामताप्रसाद गुरु का देहावसान ७३ वर्ष की आयु में हो गया।

सुना जाता है कि हैदराबाद में एक अस्थायी सरकार स्थापित करने की योजना बन रही है। यदि ऐसा हुआ तो करांची की ओर चलने के लिये निजाम साहब का समय नजदीक है। अपने राम तो पाकिस्तानी नरेशों को धन्य समझते हैं जो रियासत छोड़कर पाकिस्तान में फकीरी ग्रहण करने के लिये पिल पड़े हैं। ईस्ट इंडिया कंपनी के जमाने में देशी नरेश लंदन की ओर सिधारते थे और आज के कांग्रेसी राज्य में पाकिस्तान पहुँच रहे हैं। फिर वह पाकिस्तान जायें क्यों न? आखिर पाकिस्तान भी तो अंग्रेजों की ही कृपा से बना है? दूर जाकर जान देने से लाभ ही क्या? काश्मीर के बाद हैदराबाद की ही बारी है।

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

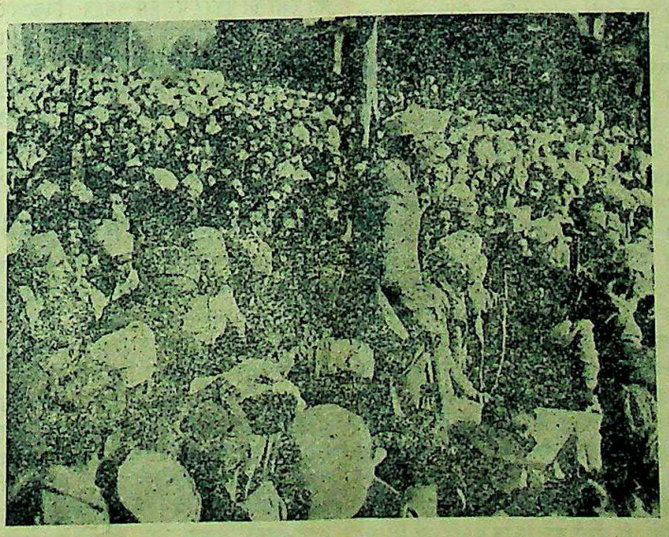

पिछले सप्ताह भारतीय संघ के प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने काश्मीर का दौरा किया था। पं० नेहरू श्रीनगर की एक जन सभा में भाषण दे रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

राष्ट्र को शक्तिशाली बनाओ !

भारत स्वतन्त्र हो गया है किन्तु राष्ट्र को पूर्ण शक्तिशाली बनाना है। अँगरेजों ने भारत को दो भागों में विभाजित करके उसे शक्तिहीन करने का जो उपक्रम रचा है, हमें उससे अब भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। जो कुछ होना था सो हो चुका है, किसी भी परिस्थिति में राष्ट्र विभाजन स्वीकार किया गया है। मुस्लिम लीग ने अँगरेजों से मिलकर राष्ट्रीय शक्ति को क्षीण करने में जो सहायता पहुँचाई है और पहुँचा रही है, वह अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से छिपी हुई नहीं है। फिर भी जो परिस्थिति हमारे सामने है, उसका मुकाबला करना ही है। राष्ट्र का आर्थिक और शारीरिक संगठन साहस और शौर्य के साथ दृढ़ करना है। अँगरेजों ने राष्ट्र को दो टुकड़ों में बांट कर जिस अराजक स्थिति में शासन की बागडोर भारतीयों के हाथ में सौंपी है, वह साधारण नहीं है। पच्चीस-छब्बीस करोड़ जनता की जिम्मेदारी राष्ट्र के ऊपर है। पिछले महायुद्ध के प्रभाव से राष्ट्र यों ही जर्जर तथा शक्ति-हीन हो चुका था। आर्थिक स्थिति सँभलने भी नहीं पाई थी कि दो उपनिवेशों की स्थापना हुई और स्थिति सुधरने के बजाय और भी भयावह हो गई। साम्प्रदायिक दुर्भावनाओं, पारस्परिक मतभेदों ने एक भयंकर अराजक स्थिति उत्पन्न कर दी है। भारतीय सरकार तथा कांग्रेस परिस्थिति सँभालने में लगी हुई है और वह समय शीघ्र आनेवाला है जब कि संकट के बादल भारतीय गगन से स्वयं लोप हो जायेंगे किन्तु आज तो हमें भविष्य के लिए सचेत होना ही है और विषम से विषम परिस्थिति का सामना करने के लिए कटिबद्ध होना है।

इस समय अँगरेजों का कठपुतला उपनिवेश पाकिस्तान तथा उसके विधाता गण जो मुस्लिम लीग के सर्वेसर्वा हैं और जो १० करोड़ मुसलमान जनता के प्रतिनिधित्व का दावा कर रहे हैं, भारतीय शक्ति को क्षीण करने में लगे हैं। पंजाब और बंगाल में लाखों जनता को लूटपाट, आगजनी तथा हत्याकांडों का शिकार होना पड़ा है और आज लाखों की संख्या में शरणार्थी असहाय अवस्था में दिखाई दे रहे हैं। हिन्दुस्तान की प्रान्तीय तथा केन्द्रीय सरकारें समस्या के सुलझाने में लगी हैं, किन्तु पाकिस्तानियों को क्या, उन्हें पाकिस्तान से क्या लेना देना, स्थिति सँभले या न सँभले, कम से कम उनका नेतृत्व तो कायम है और अँगरेजों के हाथ जिस महान् दुष्कर्म के लिए उन्होंने अपनी बुद्धि और शक्ति बेच दी है, वह तो पूरा हो ही रहा है। इस वक्त एक नई स्थिति उत्पन्न हो गई है। जूनागढ़, काश्मीर और हैदराबाद की रियासतों की राजनीति भयावह हो रही है। पाकिस्तान के शासक अपनी पूर्व नीति का परिचालन कर रहे हैं और भारत सरकार राष्ट्रीय दृष्टि से उसके प्रतिरोध के लिए सन्नद्ध हो गई है। जूनागढ़ तो भारतीय यूनियन में ले ही लिया गया है, काश्मीर में भी मुस्लिम लीगी कुचक्र को नष्ट कर दिया गया है और आक्रमणकारियों को रियासत के बाहर खदेड़ दिया गया है। अब शीघ्र ही हैदराबाद की समस्या भी व्यापक रूप ग्रहण करनेवाली है। इसमें सन्देह नहीं है कि रियासत हैदराबाद भी भारतीय संघ का एक अंग है इसलिए उसे पाकिस्तानी संघ में सम्मिलित होने का कोई अधिकार नहीं है। हैदराबाद का जनमत पाकिस्तानी नीति के विरुद्ध है, ऐसी दशा में भारत सरकार हैदराबाद के निरंकुश शासन-नीति के विरुद्ध कार्यवाही करेगी और अन्त में उसे भारतीय संघ में सम्मिलित होना ही पड़ेगा। फिर भी राष्ट्रीय शक्ति क्षीण बनाने तथा साम्प्रदायिक मतभेद को उत्तेजना देने के लिए यह सारे उपक्रम रचे जा रहे हैं। अँग्रेजों तथा मुस्लिम लीग न मिलकर ऐसे कुअवसर के उत्पन्न करने का जाल ही इसीलिये रचा था।

सच पूछा जाय तो इस समय भारत सरकार बड़ी दृढ़ता और सक्रियता से राष्ट्रीय समस्याओं के हल करने के साथ साथ राष्ट्रीय संकट को समूल रूप से दूर करने में लगी हुई है। करोड़ों जनता परेशान है, भोजन, स्वास्थ्य, आर्थिक उलझन तथा यातायात की स्थिति इतनी भयावह हो गई है कि उसमें व्यापक सुधार और परिवर्तन की आवश्यकता है किन्तु भारत सरकार करे क्या? पहले वह राष्ट्र के शत्रुओं से निबटे या जनता की इच्छा पूर्ति करे? फिर भी जिन सफल हाथों में शासन की बागडोर है, उसका संसार के किसी भी शक्तिशाली राष्ट्र के शासन से मुकाबला किया जा सकता है। भारत के वाइसराय लार्ड लुई माउंटबेटन ने पिछले दिनों लन्दन में भारतीय शासन तथा नेहरू-सरकार की जो कुछ प्रशंसा की थी, वह अत्युक्ति नहीं, सर्वांश सत्य और अनुभूति पूर्ण है। कोई भी सरकार आज की अराजक स्थिति में नहीं टिक सकती थी। संभवतः अँगरेजों को और उनके इस षड्यन्त्र में सम्मिलित होनेवाले मुस्लिम लीगरों ने इसकी कल्पना तक नहीं की थी कि राष्ट्र के नेता त्याग और तपस्या में जिस प्रकार सर्वोपरि हैं, उसी प्रकाश शासन कार्य में उनकी समता का दूसरा नहीं है। नेहरू सरकार बड़ी सफलतापूर्वक शासन-सूत्र सँभाले हुए राष्ट्र की रक्षा कर रही है, यह असाधारण गौरव का का विषय है।

इस वक्त आवश्यकता है, राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने की। हमें हर प्रकार से सजग और एक सूत्र में संगठित हो जाने के लिये कटिबद्ध हो जाना है। राष्ट्रीयता के विरोधियों को समूल बहिष्कृत करना है। हम जानते हैं कि दो राष्ट्रों के निर्माण की प्रतिक्रिया भविष्य में अत्यन्त गंभीर रूप ग्रहण कर सकती है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के निर्माण से यदि अँग्रेजों की आज की साम्प्रदायिक-नीति सफल न हुई तो भविष्य में वह और अनेक ऐसे कुचक्र रचेंगे जिससे भारतीय राष्ट्रीयता का विनाश हो। ऐसी स्थिति में हमें अभी से उस विषम स्थिति का सामना करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। युग बदल रहा है। अब हमें शासन करना है। शासन करना कमजोर हाथों का काम नहीं है। सैनिक दृष्टि से भारत को संसार का एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाना है। इसलिए शारीरिक शक्ति-संचय का हमें सामूहिक आन्दोलन करना चाहिए। सैनिक शिक्षा तथा अखाड़ों की स्थापना का आन्दोलन व्यापक रूप में फैलाना चाहिए। जनता को कायरता छोड़कर कम से कम अपनी आत्मरक्षा के लिए तैयार करना चाहिए। पारस्परिक मतभेदों को भुला देना चाहिए।

अँगरेजी राज्य तथा अँगरेजों से चाहे हम जितनी भी घृणा करें किन्तु उनसे यह शिक्षा तो हम ले ही सकते हैं कि वह अपने राष्ट्र के प्रति वफादार हैं, उनमें कोई मतभेद नहीं है। चर्चिल हों या एटली, इनमें विचारों से

माननीय डाक्टर काटजू, गवर्नर उड़ीसा

प्रयाग से भेजा गया पत्र कटक एक महीने में पहुँचा

वर्तमान पोस्ट आफिस विभाग के रवैये की एक असाधारण घटना

आजकल पोस्ट-आफिस विभाग में पत्रों के आदान-प्रदान में बड़ी अव्यवस्था उत्पन्न हो रही है। जन साधारण की बात जाने दीजिए, जब प्रांत के गवर्नर तक को, जिनके हाथों म प्रांत की बागडोर है, चिट्ठियां अनियमित और अव्यवस्थित ढंग से और लंबे अर्से के बाद मिलती हैं तो और भी आश्चर्य होता है। भारत सरकार के पोस्ट आफिस विभाग के अधिकारियों को इस ओर बड़ी मुस्तैदी और सतर्कता से ध्यान देकर अनियमित अव्यवस्था को दूर करना चाहिए। कम से कम आज के इस अस्तव्यस्त युग में पोस्ट-आफिस विभाग का अव्यवस्थित होना जनता तथा प्रांतों के सरकारी अधिकारियों दोनों के लिये हानिकारक और परेशानी उत्पन्न करनेवाला है।

हमने माननीय डाक्टर काटजू से गत १६ आक्टोबर को 'देशदूत' के दीपावली अंक के लिये कोई लेख अथवा संदेश भेजने के लिये, पत्र द्वारा, निवेदन किया था किंतु दीपावली समाप्त हो जाने पर १महीने बाद १३ नवम्बर को वह पत्र डाक्टर काटजू को मिला। डाक्टर काटजू ऐसे राष्ट्रीय नेता के लिये पोस्ट-आफिस ऐसे सरकारी विभाग की इस प्रकार की अव्यवस्था से दुख होना स्वाभाविक है। इसी प्रकार अन्य पत्र भी डाक्टर साहब के पास अव्यवस्थित रूप में असमय से पहुँचते हैं। डाक्टर साहब अपने १५ नवम्बर के पत्र में लिखते हैं—

कटक
१५ नवम्बर ४७

प्रिय निर्मलजी,

'देशदूत' के 'दीपावली अंक' में संदेश भेजने के लिये मुझे जो पत्र आपने १६ आक्टोबर को लिखा था, उस का उत्तर केवल एक पंक्ति में देते हुए मुझे दुख हो रहा है। अगर मुझे समय पर पत्र मिल

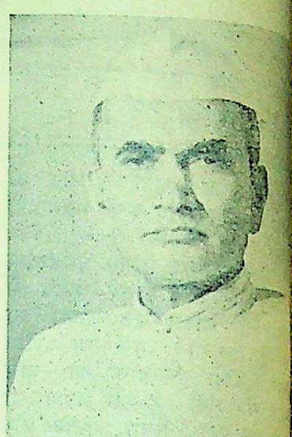

माननीय डाक्टर कैलाशनाथ काटजू
गवर्नर उड़ीसा-प्रान्त

गया होता तो मैं अवश्य ही आपकी इच्छा की पूर्ति करता किंतु आजकल पोस्ट आफिस द्वारा चिट्ठियों का आदान-प्रदान बड़े अव्यवस्थित और अनियमित ढंग से हो रहा है। यद्यपि आपका पत्र १६ आक्टोबर को प्रयाग से भेजा गया था, किंतु मुझे आज प्रातःकाल अर्थात् १३ नवम्बर को मिला। वास्तव में पत्रों के आदान-प्रदान में विलंब होने की यह भी एक बड़ी ही दुखद घटना है। मैं उच्च अधिकारियों का ध्यान अन्य मामलों के साथ इस मामले की ओर भी आकर्षित करने जा रहा हूं। मुझे आशा है कि 'देशदूत' का दीपावली अंक पूर्ण सफलता पूर्वक प्रकाशित हुआ होगा।

कटक,
(उड़ीसा)
——कैलाशनाथ काटजू

मतभेद हो सकता है, किन्तु ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार तथा उसकी रक्षा में सभी एक मत हैं। संसार के राष्ट्रों में ब्रिटिश राष्ट्र का यह एक ऐतिहासिक महत्त्व है कि उनमें ट्रेटर शायद ही कोई हुआ हो। हमें भी राष्ट्रीय दृष्टि से इसी नीति को अपनाना है। राष्ट्रीय दृष्टि से हमें सभी मतभेदों को भूल जाना चाहिए। स्वार्थों को ताक पर रख देना चाहिए और राष्ट्र की रक्षा की पुकार पर हमें सर्वस्व निछावर करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। क्योंकि संसार के साम्राज्यवादी भूखे भेड़िये आज भी भारत की ओर ताक लगाये बैठे हैं। पाकिस्तान की चिन्ता हमें छोड़ देनी चाहिए। हमें तो अब हिन्दुस्तान को देखना है। शक्तिशाली ही राष्ट्र विजयी होता है।

स्वर्गीय पण्डित कामताप्रसाद गुरु

हमें यह समाचार जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि हिन्दी संसार के वयोवृद्ध साहित्यकार व्याकरणाचार्य पंडित कामताप्रसाद गुरु का देहावसान हो गया। गुरु जी द्विवेदी-काल के उद्भट विद्वानों में प्रमुख थे। आप आलोचना, साहित्यिक निबन्ध तथा खड़ीबोली की कविताओं द्वारा हिन्दी साहित्य का भंडार अनेक वर्षों तक भरते रहे। गुरु जी कायदे-कानून और नियम के अत्यधिक पाबन्द थे। हिन्दी लेखकों की अस्त-व्यस्त भाषा तथा शब्दों के बेतुके प्रयोगों से वह अत्यन्त क्लेश का अनुभव करते थे, इसीलिये उन्होंने हिन्दी में एक वृहद् व्याकरण की रचना की जो साहित्य का अपने विषय का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ माना जाता है, तभी से गुरु जी को हिन्दी संसार ने व्याकरणाचार्य की उपाधि से विभूषित किया। हम ऐसे दुखद अवसर पर स्वर्गीय गुरु जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी आत्मा को शान्ति और कुटुम्बियों को धैर्य प्रदान करे।

'दीपावली अंक'

'देशदूत' का दीपावली अंक पाठकों के पास पहुँचा ही होगा। विशेषांक के लिये हमारे पास अत्यधिक सामाग्री आई किंतु स्थानाभाव से हम अनेक रचनाओं के उपयोग में असमर्थ रहे और इसके लिये हम रचनाकारों से क्षमा प्रार्थी हैं। रचनाएँ तथा राष्ट्र नेताओं के संदेश हमें दीपावली समाप्त हो जाने के बाद प्राप्त हुए, जिससे उनका उपयोग भी हम 'दीपावली अंक' में नहीं कर सके। यातायात की कठिनाइयों के कारण ऐसा हुआ है। इसलिये इस अंक में उनमें से कुछ का उपयोग कर रहे हैं 'दीपावली अंक' में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान मंत्री श्रीशंकरराव देव के संदेश के साथ 'श्री वियोगी हरि' का हस्ताक्षर प्रकाशित हो गया है। ऐसी भयंकर त्रुटि क्यों और कैसे हो गई, इस संबंध में केवल इतना ही कहना पर्याप्त है कि चूंकि हम स्वयं ऐसी त्रुटि के जिम्मेदार हैं, इसलिये उसके लिये क्षमाप्रार्थी हैं। श्री शंकरराव देव के संदेश को हम इस अंक में प्रकाशित कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जूनागढ़ और काश्मीर की समस्या

आजकल के पाकिस्तानी राजनीति के दो विशेष पहलू

लेखक, श्री दीनदयालु शास्त्री

आजकल पाकिस्तानी राजनीति देशी राज्यों के बीच अपना करिश्मा दिखा रही है। जूनागढ़, काश्मीर और हैदराबाद की राजनीति इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। इस लेख में विद्वान् लेखक ने जूनागढ़ और काश्मीर के सम्बन्ध में पाकिस्तानी नीति तथा कुछ ऐतिहासिक तथ्यों को स्पष्ट किया है। साथ ही यह भी बतलाया है कि भारतीय संघ तथा इन रियासतों का क्या सम्बन्ध है? लेख विचारपूर्ण, सामयिक और पठनीय है।

महाराजा सर हरीसिंह, काश्मीर-नरेश।

कुछ मास पहले तक यह देश एक था, अब वह दो भागों में विभक्त है। भाग्य से देश का यह विभाजन भाषा व संस्कृति के आधार पर नहीं, धर्म के आधार पर हुआ है और इसलिए विभक्त देशों के नाम भी हिन्दुस्तान व पाकिस्तान प्रचलित हो गये हैं। हमारी ६०० से अधिक रियासतें अब तक भारत-सरकार की सम्मति थीं, अब इनको हथियाने में दोनों देशों में होड़ लगी हुई है। हिन्दू रियासतें हिन्दुस्तान में जायें और मुस्लिम रियासतें पाकिस्तान में जायें ऐसा आमतौर पर माना जा सकता है और अधिक मामलों में ऐसा हुआ भी है; किन्तु जिन रियासतों के शासक तो मुसलमान हैं तथा उनकी प्रजाएँ पाकिस्तान से मेल न खाती थीं कहां जायें, यह एक भारी समस्या थी। सौभाग्य से ऐसी रियासतों के बुद्धिमान् शासकों ने हिन्दुस्तान में शामिल होना स्वीकार किया है। देश के वर्तमान वातावरण में रियासतों के ये मुस्लिम शासक हिन्दुस्तान के प्रति कहां तक वफादार रहेंगे, यह सोचने का समय अभी नहीं आया है। केवल हैदराबाद एक ऐसी रियासत है जो चारों ओर से घिरी हुई है और जिसकी प्रजा भी ९० प्रतिशत हिन्दू है, किन्तु जिसके मुस्लिम शासक यह निर्णय नहीं कर पाते हैं कि वे हिन्दुस्तान में शामिल हो या स्वतन्त्र रहें। लक्षण यह है कि यह रियासत चाहे कितना ही स्वतन्त्र रहने की इच्छा करे, हिन्दुस्तान से आवश्यक सम्पर्क बनाकर रहेगी।

जूनागढ़

अब रह जाती हैं केवल दो रियासतें, जिनके सम्बन्ध में पाकिस्तान व हिन्दुस्तान में संघर्ष चल रहा है। इनमें से पहली है जूनागढ़। ३३३७ वर्गमील वर्ग पौने सात लाख आबादी का यह रजवाड़ा हमारे देश के पश्चिमी प्रायद्वीप काठियावाड़ के अन्तिम छोर पर अवस्थित है। इसके निवासी गुजराती बोलते हैं और गुजराती ही पढ़ते-लिखते हैं। भाषा व संस्कृति के साथ-साथ जूनागढ़ के अधिकांश निवासियों का धर्म भी वही है जो गुजरात के अधिकांश निवासियों का है। कहने का मतलब यह है कि जूनागढ़वासी अन्य गुजरातियों की भांति हिन्दू धर्मावलम्बी हैं, किन्तु इस रजवाड़े का शासक मुसलमान है। इस शासक की पहली इच्छा तो यह थी कि वह भूमिगत सीमा के कारण हिन्दुस्तान में शामिल हो, ऐसा उसने काठियावाड़ के अनेक अपने शासक मित्रों से कहा भी था; किन्तु समय पर वह घबरा गया और मुस्लिम लीग के दबाव में आकर पाकिस्तान में शामिल हो गया। ऐसा करते समय कारण यह बतलाया गया कि जूनागढ़ से हिन्दुस्तान की राजधानी स्थलमार्ग से एक हजार मील दूरी पर है जब कि पाकिस्तान की राजधानी कराची समुद्र-मार्ग से थोड़े ही फासले पर है अतः जूनागढ़ को हिन्दुस्तान की अपेक्षा पाकिस्तान में शामिल होने में अधिक लाभ है। जूनागढ़ को इस मामले में पाकिस्तान की दाद थी—यह स्पष्ट है, किन्तु उसके ऐसा करने से काठियावाड़ की एकता भंग होती थी और हिन्दुस्तान की सीमा असुरक्षित हो जाती थी। अतः भारत सरकार ने जूनागढ़ को पाकिस्तान का अंग मानने से इनकार कर दिया। इस प्रकार एक छोटे से टुकड़े के कारण पाकिस्तान व हिन्दुस्तान में संघर्ष का बीज बोया गया।

काश्मीर

इस ढंग की दूसरी रियासत है काश्मीर। जूनागढ़ तो छोटा रजवाड़ा है किन्तु आकार व रकबे में काश्मीर इस देश की सबसे बड़ी रियासत है। उसका क्षेत्रफल ८० हजार वर्गमील से अधिक और आबादी चालीस लाख है। यदि काश्मीर का अधिक भाग पहाड़ी न होता तो काश्मीर भी हैदराबाद की भांति डेढ़ करोड़ से अधिक आबादी का प्रदेश होता। जूनागढ़ की स्थल-सीमा हिन्दुस्तान से मेल खाती है; किन्तु समुद्र द्वारा वह पाकिस्तान से सम्पर्क रख सकता है। इस समुद्र द्वारा ही वह दुनिया के अन्य देशों से मेल खा सकता है। अतः जूनागढ़ के नरेश यदि चाहते तो अपनी स्वतन्त्र सत्ता भी कायम कर सकते थे। इसके मुकाबले में काश्मीर स्थल द्वारा पाकिस्तान व हिन्दुस्तान दोनों से तो मेल खाता ही है किन्तु साथ ही अपनी पश्चिमी-उत्तरी व पूर्वी सीमा द्वारा अफगानिस्तान, चीन व तिब्बत से भी मिला हुआ है। इन सबसे मेल बनाये रखने के लिए काश्मीर की यह इच्छा थी कि वह पाकिस्तान व हिन्दुस्तान दोनों का साथ न देकर स्वतन्त्र बना रहे, किन्तु उसका ऐसा करना पाकिस्तान को पसन्द न था। पाकिस्तान का कहना था और है कि काश्मीर की ७५ प्रतिशत आबादी मुस्लिम है। इसके साथ ही उसके यातायात के साधन भी पाकिस्तान से सम्बद्ध हैं; अतः उसे स्वतंत्र न रहकर पाकिस्तान में समा जाना चाहिए। कानूनी तौर पर काश्मीर को स्वतन्त्र रहने का अधिकार था भी, किन्तु पाकिस्तान को उसका यह मार्ग पसन्द न था। इस कारण पाकिस्तान की प्रेरणा से सीमाप्रान्त के कबाइली, अफरीदी, महमूद, बजीरी व मोहमन्द काश्मीर पर चढ़ दौड़े और उसके पश्चिमी भाग पर कब्जा करने लगे। तब वहां के राष्ट्रवादी नेता शेख अब्दुल्ला की सहमति से काश्मीर ने हिन्दुस्तान में शामिल होने का ऐलान किया।

नवाब सर महावत खाँ रसूल खाँ (तृतीय) जूनागढ़। आप आजकल जूनागढ़ छोड़कर कराची में विराजमान हैं।

जनमत का प्रश्न

अब काश्मीर में पाकिस्तान व हिन्दुस्तान में परस्पर संघर्ष चल रहा है। पाकिस्तान के कायदे आजम व अन्य अधिकारी यह कहते हैं कि काश्मीर मुसलमानों का है, अतः उन्हें मिलना चाहिए। यही अधिकारी जूनागढ़ के मामले में कहा करते थे कि रियासतों को स्वतन्त्र रहने, पाकिस्तान व हिन्दुस्तान में शामिल होने के लिए दबाव न देना चाहिए। यह प्रत्येक नरेश की इच्छा है कि वह अपनी रियासत को स्वतन्त्र रक्खे या दोनों उपनिवेशों में से किसी एक में शामिल करे। पाकिस्तानी अधिकारी इस रवैये द्वारा जूनागढ़ के नरेश का पाकिस्तान में शामिल होने का समर्थन करते थे, किन्तु जब काश्मीर के नरेश ने यह अधिकार बरतना चाहा तो वे बौखला उठे। इसके विपरीत हिन्दुस्तान के प्रधान मंत्री व अधिकारियों का कहना है कि यह लौकिक है कि कानूनी तौर पर रियासतों के नरेशों को अपनी रियासत के सम्बन्ध में निर्णय का अधिकार है, किन्तु उन्हें यह अधिकार अपनी प्रजा या जनता की अनुमति से ही प्राप्त है, अतः जूनागढ़ का जनमत लिया जाना चाहिए कि वहां की जनता पाकिस्तान जाना चाहती है या हिन्दुस्तान में रहना चाहती है। काश्मीर के मामले में भी हिन्दुस्तान का रुख यह है कि बाहरी आक्रान्ताओं के निकल जाने पर काश्मीर में जनमत लिया जायेगा और वह जनता जैसा वोट करेगी वैसा किया जायेगा। यदि केवल जूनागढ़ का मामला होता तो शायद पाकिस्तानी सरकार वहां के जनमत को चुपचाप मान लेती और जनमत का परिणाम जानकर जूनागढ़ को हिन्दुस्तान में शामिल होन देती। काश्मीर के मामले में वह पाकिस्तानी सरकार जनमत का आश्रय लेने से घबराती है। उसका ख्याल यह है कि काश्मीर यदि आक्रान्ताओं से खाली हो गया तो वहां शेख अब्दुल्ला का प्रभाव बढ़ जायगा। काश्मीर की जनता अपने रक्षक शेख अब्दुल्ला को वोट करेगी, पाकिस्तान को नहीं। काश्मीर के हिन्दू पहले ही पाकिस्तान के विरोधी हैं, शेख अब्दुल्ला के सफल होने पर मुसलमान भी विरोधी हो जायेंगे और इस प्रकार संसार का स्वर्ग काश्मीर पाकिस्तान का अंग न बनकर हिन्दुस्तान का अंग बन जायगा। इस परिस्थिति के कारण ही पाकिस्तानी लोग काश्मीर में जनमत का आश्रय नहीं लेना चाहते, वे बिना उसके ही केवल मुस्लिम आबादी के नाम पर काश्मीर को हड़पना चाहते हैं।

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

संदेश

राजकुमारी अमृत कौर, सदस्या, वाइसराय की कार्य्य-कारिणी तथा स्वास्थ्य-विभाग, भारत-सरकार, नई दिल्ली से लिखती हैं

प्रिय निर्मल जी,

दीपावली सम्पूर्ण भारतवर्ष के आनन्द का पर्व है। किन्तु अखिल हिन्दू-गृहों में जलते हुए प्रदीप उस अंधकार में किस प्रकार प्रकाश भर सकेंगे जो आज सारे पूर्वी पंजाब और पाकिस्तान पर घिरा हुआ है?

अतः मेरे विचार से अगर आज दीपावली का हम लोगों के लिये कुछ अर्थ है तो यही कि हम उस सर्वशक्तिमान ईश्वर से यह आन्तरिक प्रार्थना करें कि वह विद्वेष, घृणा और प्रतिशोध की भावनाओं को दूर कर दे जो आज हमें विनाश की ओर लिये जा रही है और उनके स्थान पर हमें वह प्रकाश प्रदान करे जिससे हम उसकी भक्ति में प्रवृत्त हों और उस भक्ति के माध्यम से मानवता को प्यार कर सकें।

अगर हममें बुद्धि-शक्ति है तो सेवा-भाव की साधना से इस बुराई को अच्छाई में बदल सकते हैं। विशेषतः मैं चाहती हूँ कि हम महिलायें विधवाओं की पुनर्व्यवस्था करें जिसमें वे आज की तरह भार-स्वरूप न होकर समाज के लिये उपयोगी अंग बन जायें उन्हें परिचारिका, अध्यापिका, महिलास्वास्थ्य निरीक्षिका, डाक्टर, दाई और समाज-सेविका बनाया जा सके। इसी प्रकार अनाथ और दीन बच्चों को बुनियादी शिक्षा-प्रणाली पर शिक्षित करके देश का उपयोगी नागरिक बनाया जा सकता है। दूसरों में सेवा-भाव का संचार करने के लिये स्वयं अपने में भी उस भाव की प्रतिष्ठा करना आवश्यक है।

हमारी हार्दिक कामना है कि दीपावली हम सभी में उस त्यागपूर्ण सेवा-भाव का उद्बोध करे, जिसके अन्यतम मार्ग पर ही पूर्ण स्वतंत्रता का निवास है।

नई दिल्ली
७ नवम्बर, ४७

शुभैषिणी
—(राजकुमारी) अमृत कौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यापक और किसान की समस्या

स्वतंत्र भारत में इन दोनों वर्गों का उत्तरदायित्व कम नहीं किया जा सकता

लेखक, श्री राजेन्द्रसिंह गौड़, एम० ए०

आजकल भारत में अध्यापक और किसान की समस्या एक समान समस्या है। स्वतंत्र भारत में इन दोनों वर्गों का उत्तरदायित्व कम नहीं किया जा सकता। विद्वान् लेखक ने इन दोनों वर्गों की समस्याओं पर सुन्दर प्रकाश डाला है। लेख विचारणीय और पठनीय है।

अध्यापक और किसान प्रत्येक राष्ट्र की अतुल सम्पत्ति हैं। राष्ट्र के कल्याण में उनका प्रमुख हाथ रहता है। उनका त्याग उनकी तपस्या, उनकी उदारता, उनकी कार्यकुशलता से राष्ट्र पनपता और विकसित होता है। उनकी निस्वार्थ सेवा से राष्ट्र की कायापलट होती है। वे अपनी वाणी और अपने अनवरत परिश्रम से राष्ट्र की शुष्क नसों में जीवन-रस का संचार करते हैं और उनमें नई स्फूर्ति, नई चेतना तथा नई शक्ति भरते हैं। उनकी मौन-सेवा में भूकम्प का गर्जन, उनकी निस्वार्थ कामना में क्रान्ति की ज्वाला और उनकी निष्कपट भावना में पतितों को उठाने का मधुर दृढ़ संकल्प अन्तर्निहित रहता है। उनकी आत्माएँ औचित्य की सीमा का उल्लंघन नहीं करतीं, उनकी अभिलाषाएँ संसार में अशान्ति, अनाचार, अत्याचार और शोषण की उद्भावना नहीं कर सकतीं। उनका जीवन सार्वदेशिक होता है, सबके कल्याण के लिए होता है, सबके उत्थान के लिए होता है; उनके हृदय में अमंगल की भावना कभी नहीं उठती। उनके मस्तिष्क में साम्प्रदायिक विचार कभी नहीं आते, उनके मुख से कभी ऐसी वाणी नहीं निकलती जो विश्व-जनीन सुख और वैभव के विकास में बाधक हो। उनके मुख में अमृत, उनके हृदय में प्रेम और उनके मस्तिष्क में निष्कपट विचारों का निवास रहता है। वे राष्ट्र के लिए जीते और मरते हैं। राष्ट्र उनकी उपेक्षा भले ही करे, पर वे राष्ट्र की उपेक्षा करने का स्वप्न में भी विचार नहीं करते।

पर अध्यापक किसान नहीं है और किसान अध्यापक नहीं है। दोनों एक-दूसरे से भिन्न हैं। उनके विचारों का केन्द्र-स्थान एक होने पर भी उनके मार्ग पृथक्-पृथक् हैं। उनकी कार्यशैली में आकाश-पाताल का अन्तर है। एक का कार्य-क्षेत्र मानव को मानव बनाना है। दूसरे का कार्यक्षेत्र मानव का पोषण करना है। एक मानव-मस्तिष्क को नवीन विचारों की खाद से उर्वरा बनाता है। दूसरा सड़ी-गली सामग्री की खाद से भूमि के वक्षः-स्थल को उपजाऊ बनाता है। एक राष्ट्र की मानसिक क्षुधा शान्त करता है, दूसरा राष्ट्र की भौतिक तृष्णा एक साहित्य, विज्ञान और कला को जन्म देता है; दूसरा राष्ट्र की सम्पत्ति में अभिवृद्धि करता है। एक में अध्यात्मिकता है, दूसरे में भौतिकता। एक अशरीरी सौन्दर्य के लिए मिटता और मरता है, दूसरा भौतिक सौन्दर्य के लिए। एक राष्ट्र और विश्व का मस्तिष्क है, दूसरा उसका शरीर। राष्ट्र के उत्थान के लिए, विश्व के कल्याण के लिए दोनों का स्वस्थ होना अनिवार्य है। जर्जर शरीर में जिस प्रकार शक्तिशाली मस्तिष्क व्यर्थ सिद्ध होता है, उसी प्रकार शक्तिशाली शरीर में निर्बल मस्तिष्क। एक की निर्बलता समस्त राष्ट्र को निर्बल, अकर्मण्य, खोखला और चेतनाशून्य बना देती है। राष्ट्र के उत्थान और पतन का यही रहस्य है।

यह रहस्य जानना जितना सरल है, उतना ही कठिन है इसे जानकर दोनों वर्गों को—अध्यापकों और किसानों को—सन्तुष्ट करना। आज के युग में भौतिकता का अंश अत्यधिक है। संसार का प्रत्येक प्राणी—निर्धन हो, अथवा धनवान्—भौतिक सुख चाहता है और उसके लिये प्रातःकाल से संध्या तक अनवरत परिश्रम—दौड़-धूप करता रहता है। वह चाहता है अपने लिए विलासपूर्ण जीवन, ऐसा जीवन जो उसकी समस्त शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति कर सके। आज का अध्यापक और किसान भी यही चाहता है, उसके पास भी शरीर और मस्तिष्क है, उसके पास भी अपनी समस्याएँ हैं, अपनी इच्छाएँ हैं। वह भी चाहता है विलासपूर्ण जीवन का उन्मादी सुख-भोग और क्यों न चाहे? जब समस्त विश्व इसी रंग में रँगा हुआ है और इसी आँधी में उड़ा जा रहा है, जब प्रत्येक प्राणी ऐसे ही जीवन का सुखद स्वप्न देखता है तब वही क्यों इन सुखों से वंचित रहें। ऐसा नहीं हो सकता कि संसार का भौतिक वैभव सबके लिए हो और उन्हीं दो वर्गों के लिए न हो। यह भी असम्भव है कि समस्त संसार गुदगुदे गद्दे पर सुख की नींद सोता रहे और अध्यापक तथा किसान राष्ट्र के उत्थान की चिन्ता में अपनी नींद हराम करते रहें। विश्व की सभ्यता के इतिहास में एक समय ऐसा अवश्य था जब इन दोनों वर्गों की अवहेलना की गई थी। वह युग था निरंकुश सम्राटों का। उन्होंने अध्यापक और किसान की समस्याओं पर कभी विचार ही नहीं किया। उनकी संकुचित और स्वार्थपूर्ण दृष्टि में किसानों की समस्याओं का कुछ महत्त्व था भी, पर अध्यपाकों की ओर से तो वे एकदम उदासीन थे। उनकी योजना में अध्यापक व्यर्थ थे। जनता की शिक्षा का भार उन पर नहीं, स्वयं जनता पर था। किसान उनके विलासी जीवन के साधन थे। इसका फल हुआ उनका पतन और क्रान्ति। एक तंत्रवाद का अन्त होने पर प्रजातन्त्र का उदय हुआ। प्रजातन्त्रवाद में किसान कुछ आगे बढ़े और अध्यापकों की आवश्यकता का अनुभव होने लगा। पाठशालाएँ खुल गईं, सरकार की ओर से शिक्षा-प्रसार की योजनाएँ बनने लगीं, पहले की अपेक्षा लोगों में कुछ चेतना भी आई। नये विचार, नई कला, नये साहित्य को स्थान मिला। किसान भी जागे। उन्होंने अपनी दशा का स्वयं अनुभव किया और अपने अधिकारों की रक्षा तथा अपनी स्थि[illegible] सुधार के लिए आन्दोलन, पर इ[illegible] कुछ होने पर भी आज का किसान [illegible] से भी गया-बीता हो गया। [illegible] समस्याएँ ज्यों की त्यों बनी रहीं [illegible] अध्यापक? वह तो पहले की [illegible] कहीं अधिक पतित और हेय हो [illegible] यही कारण है कि प्रजातन्त्र—स्वरा[illegible] होने पर भी राष्ट्र के जीवन में [illegible] क्षोभ, असन्तोष, कोलाहल और हा[illegible] बना हुआ है। इसमें सन्देह नहीं कि [illegible] तंत्रवाद ने इन असन्तुष्ट वर्गों की सम[illegible] को सुलझाने की प्राण-पण से चेष्टा [illegible] परन्तु उसे अपने उद्देश्य में अभी स[illegible] नहीं मिली है। कारण स्पष्ट है।

एकतंत्रवाद का युग पूँजीवा[illegible] युग था। उस युग में दो ही वर्ग [illegible] थे—पूँजीपति और किसान। प्रजातं[illegible] के युग में एक नये वर्ग का जन्म [illegible] वह था श्रमजीवी वर्ग। इसके सा[illegible] शिक्षा-प्रसार के कारण शासन-व्यव[illegible] नई-नई योजनाओं के सन्निवेश से एक [illegible] वर्ग का भी प्रादुर्भाव हुआ। इस [illegible] शासन के कर्मचारी, क्लर्क, लेखक [illegible] अध्यापक आदि थे। शिक्षित वर्ग [illegible] दो श्रेणियों में विभक्त थे—एक सर[illegible] और दूसरे गैर सरकारी। प्रत्येक स[illegible] चाहे वह एकतंत्र हो अथवा प्रजा[illegible] अपने कर्मचारियों का ही विशेष [illegible] ध्यान रखती है। दूसरे स्थानों में [illegible] करनेवाले सदैव उसकी उपेक्षा के [illegible] रहते हैं। यही दशा भारत में भी [illegible] पूँजीपतियों की छत्र-छाया में काम [illegible] वाले सरकार की कृपा से वंचित [illegible] उनका शोषण होता रहा। ब्रिटिश सा[illegible] के अन्तर्गत उनकी जो दशा थी आ[illegible] वही दशा बनी हुई है। कोई उनकी [illegible] नहीं। अध्यापक तो और भी उपेक्षि[illegible] सरकारी पाठशालाओं में अध्यापन [illegible] करनेवाले अच्छी स्थिति में नहीं [illegible] सकते, पर जो वेतन सरकार उन्हें [illegible] है, वह उन अध्यापकों की अपेक्षा [illegible] अधिक है जो गैर-सरकारी स्कू[illegible] अध्यापक पाते हैं। अन्य सरकारी [illegible] में कार्य करनेवाले के सम्बन्ध में [illegible] की यह दुरंगी नीति—तो समझ [illegible] सकती है, पर शिक्षा-विभाग में इस [illegible] की नीति से काम लेना तो राष्ट्र की [illegible] को कमजोर ही बनाना है। शिक्षा-[illegible] में अध्ययन-अध्यापन का कार्य करने [illegible] की ओर सरकार की समदृष्टि [illegible] चाहिए। भारत में सरकारी पाठशा[illegible] की अपेक्षा गैर-सरकारी पाठशाला[illegible] अधिक हैं। इसलिए गैर-सरकारी [illegible] पकों की संख्या भी अपेक्षाकृत अधि[illegible]

शेष पृष्ठ १६ पर [illegible]

क्यों ?

लेखक, श्री गोपीकृष्ण

क्यों सितारे बोलते हैं रात भर!
जब कि साधों का बसेरा तट हुआ;
जब कि रजनी का सबेरा तट हुआ,
जब कि मैंने नाव अपनी खोल दी,
जब कि मुझसे दूर मेरा तट हुआ,
क्यों तभी बादल गगन में छा गये,
और मुझको प्यार से समझा गये—
वे सभी जो प्राणमय हैं, जड़ नहीं,
द्वार छवि के खोलते हैं रात भर!
क्यों सितारे बोलते हैं रात भर!!
जब कि मेरे दीप का जलना रुका,
जब कि मेरे प्राण का गलना रुका,
जब कि कोई आ गया मधु-स्वप्न बन,
जब कि मेरी सांस का चलना रुका,
क्यों तभी छिटकी गगन में चांदनी,
और मेरे कान में कह-सी गई—
जो नहीं मुर्दा-हुए बेजान हैं,
वे अधर रस घोलते हैं रात भर!
क्यों सितारे बोलते हैं रात भर!!
जब कि मेरी साधना मुरझा गई,
जब कि मेरी कामना कुम्हला गई,
जब झरे सब पात, पतझर आ गया,
नर्क को क्यों स्वर्ग की सुधि आ गई!
क्यों तभी यह सृष्टि सहसा रुक गई,
और सत्ता-आसमानी झुक गई,
और देवों ने कहा दिल थामकर—
पी गये तुम, हम न आंसू पी सके,
हम कि मोती रोलते हैं रात भर,
हम कि पागल डोलते हैं रातभर!
क्यों सितारे बोलते हैं रात भर!!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पारसनाथ तैल
(महासुगन्धित)
इसके सेवन से शिर दर्द, कम[illegible] दिमाग़ में चक्कर आना, आँख की [illegible] कीचड़ आना, दृष्टि की निर्बलता [illegible] लगना, आग से जल जाना, बाल [illegible] गिरना, मृर्गी, पागलपन तथा स्त्रि[illegible] हिस्ट्रीया की बीमारी में अपना [illegible] गुण दिखाता है। क़ीमत २ औंस [illegible] डाक ख़र्च ।।।)।
पं० पारसनाथ शर्मा वैद्य
दीनबन्धु औषधालय पो० गोह (ग[illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेल-जीवन के कुछ संस्मरण

पिछले २५ वर्ष के राष्ट्रीय आन्दोलन की बिखरी स्मृतियाँ

लेखक, माननीय पंडित केशवदेव मालवीय एम० एल० ए०
(मन्त्री, उद्योग-विभाग, संयुक्तप्रान्त)

पिछले ६५ वर्ष के राष्ट्रीय आन्दोलनों में नेताओं को जेल-जीवन के विशेष तथा पूर्ण अनुभव हुए हैं। इस लेख में मालवीय जी ने अपने जेल-जीवन के कुछ ऐसे संस्मरणों का उल्लेख किया है जिससे अनेक ज्ञातव्य बातें ज्ञात होती हैं। संस्मरण अत्यन्त रोचक तथा राष्ट्रीय प्रगति पर प्रकाश डालनेवाला और पठनीय है। इस लेख का प्रथम अंश गतांक में प्रकाशित हो चुका है, शेषांश यहाँ दिया जाता है।

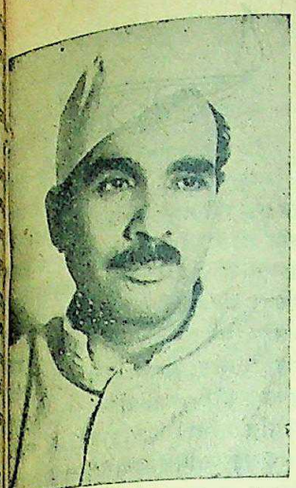

माननीय पंडित केशवदेव मालवीय

(गतांक की पूर्ति)

जेल में १५ दिन के बाद के पत्र की आशा और विशेषकर अपनी पत्नी के पत्र को पाने के लिये जो घड़ियां गिनी जाया करती थीं, उनकी बातें सुनकर जेल खूब हंसा करती थी। बैरक में अपने अपने हिस्से पर पड़े रहकर अक्सर मसखरे लोग उठकर बैठ जाया करते थे उनसे भी अधिक मसखरे कहा करते थे....'लेट जाओ भाई, कल खत आता होगा'। इस तरह का भी मजाक हुआ करता था। जेल में गाना-बजाना जाननेवालों का विशेष मान था। इस बैरक में गानमंडली थी, उसी में हम लोगों का भी वास था। इटावा के दीनदयाल जी से अकसर झड़प हो जाया करती थी। वे सबेरे ३ बजे से ही उच्च स्वर से प्रार्थना किया करते थे। हम लोग रात को एक एक बजे तक गाने-बजाने, बुज खेलने में मशगूल रहा करते थे। कभी नास्तिक और आस्तिक के भेद-भाव का भी संघर्ष हो जाया करता था। इसकी याद भी हमें कभी-कभी बड़ा आनन्द देती है। होली के झगड़े बाहर से भी अधिक उग्र रूप धारण किया करते थे। एक बार पालीवाल जी को जबरदस्ती रंग के हौदच्चे में डाल दिया। फिर दिन भर उनका सामना करने की हम लोगों में से किसी की हिम्मत न हुई। दूसरे दिन जब सबने एक स्वर से माफी मांगी, तब पालीवाल जी ने भोजन किया और फिर खुद भी खूब होली मनाई।

नैनी जेल का भी अनुभव शिक्षाप्रद था। स्वर्गीय पं० मोतीलाल जी, पं० जवाहरलाल जी, डाक्टर महमूद साहब इत्यादि विभूतियों के रहने से जेल में बड़ा गम्भीर वातावरण रहा करता था। मोतीलाल जी के दबदबे से सारे जेल-अधिकारी सशंकित रहा करते थे। उनका हुक्म जेल में चलता था। अक्सर हम लोगों को चाय पर बुलाया जाता था और बीमारी में भी जिस प्रकार मोतीलाल जी आह्लादयुक्त बातें किया करते थे, उससे बड़ा प्रोत्साहन और शक्ति मिलती थी। अपने नेता के साथ जेल काटने में स्वयंसेवक को बड़ा सन्तोष और सान्त्वना मिलती है और उससे भी अधिक शक्ति मिलती है और उससे भी चिरस्थायी शक्ति होती है। यह मेरा अनुभव है। उन बड़े नेताओं के साथ रहकर जो शक्ति-संचय हुआ, उससे मैंने समझ पाया कि किस प्रकार युद्ध-क्षेत्र में बड़े बड़े सेनापति अपने सिपाहियों में साहस और शक्ति दिया करते हैं। सन् ३२ की जेल में जेल-अधिकारियों से भीषण संग्राम हुआ। उस जेल में खेल-कूद, ड्रामा, नाटक आदि के सम्बन्ध में झगड़ा खड़ा हो गया। एक जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट महाशय ने झूठे बारांट लगाकर हममें से २२ कैदियों को कठिन सजाएँ देकर अलग अलग प्रान्त की जेलों में भर दिया। जेल की कड़ी यातना का अनुभव मुझे उसी बार हुआ। चालीस दिन तक कालकोठरी में बन्द रहा और खाने में चावल और दाल का पानी पीता रहा। हमारी कोठरी के बगल में ही फांसीवालों की भी कोठरी थी। रात को फांसीवाले मुझसे बातें किया करते थे। उस बन्द कोठरी में वे समझते थे कि हम और हमारे साथी उन्हें छुड़ा लेंगे। बाहर नम्बरदार रामायण पढ़कर सुनाया करता था। बनारस के सत्यनारायण जी को रामायण का बड़ा शौक था। नम्बरदार रामयण पढ़ता था और वे उसका अर्थ किया करते थे और मैं खटमलों से लड़ा करता था। मैंने उसी कालकोठरी में गीता और बायबिल पूरी पूरी पढ़ी। बचपन में मैं बायबिल का मखौल उड़ाता था। पर सन् ३२ की कालकोठरी ने मुझे उससे परिचित कराया। सन् ४० की जेल में मुझे देशरत्न मौलाना आजाद साहब, श्री आर० एस० पंडित, श्री बालकृष्ण शर्मा के साथ रहने का सौभाग्य मिला। मौलाना आजाद की विभूति मैंने पहले-पहल जेल में उनके साथ रहकर ही पहचानी। सचमुच मैंने इसको अपना भाग्य समझा कि ऐसी बड़ी हस्ती के साथ रहने का मौका मिला और उनकी शिक्षाप्रद बातें सुनने का मौका मिला। मौलाना साहब इतने विद्वान् हैं, यह मैं पहले न जानता था। एक बार हम, बालकृष्ण जी और लखनऊ यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर हुसेनजहीर मौलाना साहब के पास मिटीरियलिज्म और सोशलिज्म का सबक सीखने चले। बैठने पर मालूम हुआ कि मार्क्सवाद की जो एनानलिस मौलाना साहब को थी वह हममें से किसी को नहीं थी। यह जानकर बड़ी लज्जा लगी। मौलाना के प्रति बड़ी श्रद्धा बढ़ी। दूसरी ओर बनारस के कमलापति जी और गोविन्द मालवीय जी भी रहते थे। जेल में विचरने को कभी कभी आ जाते थे। १० बजे रात तक चांदनी रात में बैठकर अपने बन्दी जीवन को कोसा करते थे। विवाहितों को जेल के अन्दर कोसने में भी एक विशेष आनन्द मिलता था। कमला ही हम सबमें अविवाहित थे। वही सब लोगों को सान्त्वना देते थे, पर उससे कोई सान्त्वना होती नहीं थी। छूटनेवालों को देखकर बड़ा मजा आता था। छूटने के दिन की तैयारी तो बस चुभा ही करती थी। अक्सर लोगों का उस दिन सौम्यरूप हो जाया करता था। किसी साथी के छूटने के समय का वातावरण देखते ही बनता था। कोई खाट पर पड़ा करवटें बदलता था तो कोई पाखाने में अपना समय व्यतीत कर रहा था। कुछ मसखरे खेलने में भी व्यस्त दिखाई पड़ते थे। हममें से कुछ चिल्लाने में समय लगा दिया करते थे। किसी तरह की प्रतिक्रिया को झाड़-पोंछकर हटा ही दिया करते थे।

सन् ४२ की जेल तो बहुत ही लम्बी निकली। इसमें मुझे तो अधिकतर बीमारी के दिन ही काटने पड़े। पर लम्बी जेल के कारण बड़े लम्बे लम्बे अनुभव भी हुए और वह भी कट ही गये। सच तो यह है कि जेल-जीवन बड़े आनन्द से कटा। क्रान्ति, सुव्यवस्था, झगड़े और शांति, कम्युनिज्म और सोशलिज्म इन सबने सन् ४२ में बहुत अधिक बल पाया। खाना बनाने का अनुभव भी हमने इस जेल में खूब किया। डा० अटल साहब से जान-पहचान इसी जेल-यात्रा में हुई। वे कितने दिलचस्प आदमी हैं यह उन्हीं को मालूम हो सकता है जिन्होंने उनके समीप रहकर दुनिया के अनुभव को सुना है। पढ़ने-लिखने के वे शौकीन थे पर इससे अधिक वे खाने-पीने के शौकीन थे। उनकी समझ में नहीं आता था कि लोग खाने-पीने के मामले में आपस में झगड़ा क्यों करते हैं? इन सब चीजों से बचने के लिये उन्होंने यह नियम बना रक्खा था कि खाने-पीने में वे किसी का साथ न देते थे। अकेले खाना और और उसका प्रबन्ध करना यह उन्होंने नियम बना लिया था। रात में नींद न आने का एक विशेष रोग हम कैदियों को रहता था। अकसर लोग दो-दो बजे रात तक बातें किया करते थे या पढ़ा-लिखा करते थे। बाबू मोहनलाल जी का आश्रम पढ़नेवालों और राजनीति समझनेवालों का एक अड्डा-सा था। जेल के अन्दर मीटिंगें ऐसी गम्भीरतापूर्वक हुआ करती थीं मानो देश का भविष्य बनाया जा रहा है। गाना-बजाना, प्रस्ताव तैयार करना, स्पीचों की भरमार रहा करती थी। तमाम पाबन्दियों के बावजूद अच्छे से अच्छा नाटक हुआ। बाजों आदि का इन्तजाम भी जेल में मौजूद था। जिन्होंने लखनऊ जेल में सन् ४२ का नाटक देखा उसे वे आज भी भूले नहीं होंगे। मालूम नहीं वह उस अवस्था में अच्छा लगता था या समय के कारण व्यवस्थित रूप से इकट्ठा हो गया। उन सब चीजों ने भी समय को खूब काटा। सन् २० से जेल काटते हुए सन् ४५ में प्रौढ़ावस्था अनुभव जरूर हुआ। पर सबसे अच्छा जेल सन् २२ का था जिसमें न समय काटने की, न पढ़ने-लिखने की जिम्मेदारी ही थी। राजनैतिक जीवन तो ऐसा ही सबसे अच्छा होता है।

संदेश

डाक्टर सैयद महमूद एम० एल० ए० मंत्री, उद्योग तथा यातायात विभाग, बिहार-सरकार—

'देशदूत' के दीपावली अंक के लिये सन्देश के अनुरोध के लिये धन्यवाद!

त्याग और संघर्ष के सुदीर्घ वर्षों के पश्चात् स्वतंत्रता की प्राप्ति सम्भव हो सकी है। अब हम सभों के सामने, अपनी स्वतंत्रता की नींव को सुदृढ़ करने के लिये नई स्फूर्ति के साथ आगे बढ़ने का अवसर आ गया है। हमारा उद्देश्य केवल विभाजित भारत की स्वतंत्रता ही नहीं, वरन् अखंड भारत की निखिल जनता की स्वतंत्रता है। अगर यह विभाजन वर्तमान परिस्थितियों में स्वीकार करना ही पड़ा, तो आओ आज हम इस संक्रान्ति काल की समाप्ति और अखंड भारत के स्वाधीनता-युग की अवतारणा के लिये कटिबद्ध हो जायँ, यह उद्देश्य तभी पूर्ण हो सकता है जब भारत का प्रत्येक पुरुष और महिला साम्प्रदायिक कीटाणुओं के मिटाने को अपना वैयक्तिक और सामूहिक कर्त्तव्य समझ और सभी अल्पसंख्यकों को सुरक्षा का विश्वास दिला सके, जिसमें उनकी प्रसुप्त शक्तियों के विकास का पूर्ण अवसर मिले और एक दिन ऐसा आ जाय कि सभी हन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई सारे भारत के परिच्छिन्न भूभागों के एकीकरण का एक स्वर उठा सकें।

पटना
९ नवम्बर, ४७

—सैयद महमूद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

१००) इनाम

सिद्ध वशीकरण यन्त्र—के धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होता है। आप जिसे चाहते हैं, चाहे वह पत्थर-दिल क्यों न हो, आपके पास चली आयेगी। इससे भाग्योदय, नौकरी, धन की प्राप्ति, मुक़दमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य ताँबा का २), चाँदी का ३), सोने का १२) झूठा साबित करने पर १००) इनाम।

श्री बालामकी आश्रम, नं० D.
पो० कतरी सराय (गया)

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह दीपक संदेश सुना रहे हैं

अभी केवल पहली ही मंजिल पार हुई है किन्तु--

लेखक, श्री उमाशंकर शुक्ल, वर्धा

राष्ट्र के सामने अनेक समस्यायें हैं। अभी राष्ट्र ने भारतीय स्वतन्त्रता प्राप्त करके अपने कदम की पहली मंजिल पार की है; किन्तु अभी करना बहुत कुछ है और कठिनाइयाँ भी झेलनी हैं। इस लेख में आज की समस्याओं पर एक विहग प्रकाश डाला गया है, जो सामयिक है।

दीवाली का त्योहार हमने स्वतन्त्र भारत के नागरिक की हैसियत से मनाया है, पर न हममें कोई उत्साह रहा और न खुशी ही। आज हम संकटों के बीच घिरे हुए हैं। ऐसी जगह आ खड़े हुए हैं कि पथ नहीं सूझ रहा कि कदम किधर बढ़ावें। जिस ओर बढ़ाते हैं, उधर ही खतरा दिखाई देता है। मांटेग्यू चेम्सफोर्ड जब भारत में थे--एक बार उन्होंने तिलक से पूछा था कि भारत को अगर स्वराज्य मिल जाय तो क्या होगा--उस समय तिलक ने कहा था कि भारत को स्वराज्य मिल जाने पर उसकी जिम्मेवारी और बढ़ जायगी। वही बात आज अक्षरशः सत्य हो रही है। आज हमारी जिम्मेवारी बढ़ गई है। भारत को स्वराज्य मिला है पर उसे टिकाये रखना हमारा काम है। इसके साथ ही साथ हमें भारत से गरीबी, अज्ञानता, रोग और भुखमरी हटाना है ताकि गाँवों के करोड़ों किसानों को इस बात का भान हो जाय कि स्वराज्य से हममें कुछ परिवर्तन हुआ है। आज अगर किसी किसान से हम पूछते हैं कि क्यों भाई स्वराज्य मिल गया--तो वह हमारी ओर ध्यान से देखकर कहता है कि कैसा स्वराज्य? हमें तो भरपेट खाना नहीं मिल रहा, पहिनने को कपड़े नहीं मिल रहे और पहिले से कहीं ज्यादा चीजों के भाव बढ़े हैं। उस समय हमारा मस्तक शर्म से नीचे झुक जाता है। हम उस किसान को यह नहीं समझा सकते कि स्वराज्य मिल जाने के बाद क्या परिवर्तन देश में हुआ है।

शक्ति दूसरी तरफ लगी

इसके कई कारण हैं। १५ अगस्त के बाद हमारी जो शक्ति भारत की उन्नति में लगना चाहिए थी, वह शक्ति दूसरी तरफ ही लगी। पंजाब के दंगों ने सब चौपट कर दिया। पंजाब आज कराह रहा है; रावी, झेलम, चिनाब आदि नदियाँ चीख चीखकर कह रही हैं कि क्या डायर फिर से आ गया? पर नहीं डायर नहीं आया बल्कि उससे भी सौ गुनी क्रूर शैतानियत आई है जिसने भोले-भाले बच्चों का खून किया, मानवता के नाम पर खून बहा, और लोगों का जीवन अस्त-व्यस्त हुआ। आज हमारे सामने सबसे बड़ी समस्या शरणार्थियों को बसाने, उन्हें जिंदा रखने और उनकी रक्षा करने की है। किसी ने कल्पना भी न की थी कि तैमूरलंग और चंगेजखाँ, के कृत्यों से बढ़कर कृत्य यहाँ होंगे। पर जो कुछ हुआ, भयंकर हुआ। उसकी कल्पना नहीं की जा सकती। देश को बाहरी शत्रुओं से नहीं, किन्तु भीतरी शत्रुओं से डर पैदा हो रहा है और नेतागण उसके लिये उपाय सोच रहे हैं, काम कर रहे हैं और उनका ध्यान दूसरी बातों में उलझ गया है। स्वराज्य प्राप्ति के बाद हमारे राष्ट्रपिता, गांधीजी को शान्ति से विश्राम करना चाहिए था पर आज उनकी दशा कुछ और है और वे दिल्ली में बैठकर जगत को मानवता का संदेश सुना रहे हैं। वे कह रहे हैं कि आपस की खून-खराबी अच्छी नहीं--पर कोई उनके बताये मार्ग पर चले तब न? आज लोगों में बदले की भावना जोर पकड़ रही है। ये लक्षण अच्छे नहीं हैं और इसका परिणाम भी कुछ और ही होगा। इतिहास साक्षी है व हमारी संस्कृति सिखाती है कि हम शान्तिप्रिय हैं। हमारा साम्राज्य, हमारी विजय दूसरे ही प्रकार की रही है। हमने दूसरों को जंजीरों से, चाहे वह लोहे की हों या सोने की कभी भी बाँधने की कोशिश नहीं की। दूसरों को हमने अपने साथ लोहे की जंजीर से भी ज्यादा मजबूत, मगर सुन्दर और सुखद रेशम के धागे से बाँध रखा है और बंधन धर्म का है, संस्कृति का है और ज्ञान का है। हमारी जिंदगी और संस्कृति में वह है जिसने हमें समय के थपेड़ों के बावजूद जिंदा रहने की शक्ति दी है। अगर हम अपने आदर्शों को जिंदा रखेंगे तो हम संसार की बड़ी सेवा करेंगे।

यह कैसा पाकिस्तान

आज का समय झगड़ने का नहीं किन्तु प्रेम से हिल-मिलकर रहने का है। पाकिस्तान बन जाने से आज भारत की यह दुर्दशा हुई है। सच पूछा जाय तो पाकिस्तान का नाम ही मानवता के साथ और पवित्र इस्लाम के साथ विद्रोह करना है। अरब के जंगली और धर्महीन लोगों में जब पवित्र इस्लाम का प्रचार हुआ तब भी वह देश पाकिस्तान न कहला सका और परमपूज्य हजरत मुहम्मद भी पाकिस्तानी न कहला सके--पर जिनमें पवित्र इस्लाम की गंध भी नहीं है ऐसे कायदे आजम जिन्ना और उनके संगी-साथी आज पाकिस्तानी कहलाने में गर्व का अनुभव करते हैं यह पवित्र इस्लाम का कतना भयंकर अपमान है। क्या मजहब आपस में वैर करना सिखलाते हैं। मजहब तो प्रेम का संदेश देते हैं। क्या हिन्दुस्तान में आज यह हो रहा है। यदि होता तो पंजाब की बहिनें आज दर दर मारी क्यों घूमतीं, उनकी माँग का सिंदूर असमय में क्यों पुतता, नन्हें नन्हें दुधमुँहे बच्चे अनाथ क्यों होते, घरों और अन्धकार का साम्राज्य क्यों रहता और पंजाब के हरे-भरे खेत खून से लाल क्यों होते? क्या उत्तर है इसका?

जब हम अपने कार्यकर्ताओं व अपने देश के नागरिकों के कार्यों पर नजर दौड़ाते हैं तो निराश होना पड़ता है। वे कोई दूसरा ही रास्ता अखत्यार किये हुए हैं। आज उनमें आपस में फूट है। उनकी सारी शक्ति पार्टीबाजी, चुनाव व अन्य फालतू कामों में खर्च हो रही है। वे यह समझते हैं कि अब क्या है--अब तो स्वराज्य मिल गया है--सरकार सब कुछ ठीक कर लेगी। ऐसा सोचना बड़ी भारी भूल है। सरकार किसकी है--सरकार आपकी है। सरकार यानी जनता के चुने हुए प्रतिनिधि। अगर उन प्रतिनिधियों को जनता का बल न मिलेगा तो वे अशक्त होकर लड़-खड़ाने लगेंगे प्रतिनिधि अगर प्रज्ज्वलित दीपक हैं तो जनता तेल है। अगर दीपक को प्रज्ज्वलित रखना है तो तेल की भी जरूरत है। तेल के न होने से दीपक बुझ जाता है। अगर जनतारूपी तेल की ताकत नेतारूपी दीपक को न मिलेगी तो क्या वह प्रज्वज्लित रह सकेगा। उत्तर होगा नहीं। आज देश के हरएक नागरिक पर जवाबदारी है कि वह [illegible] स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये [illegible] सब कुछ न्योछावर कर दे। पं० जवा[illegible] लाल जी के शब्दों में हमारा ध्ये[illegible] भारत के जनसाधारण किसान [illegible] मजदूर को स्वाधीनता और सुयोग दे[illegible] अज्ञान, गरीबी और बीमारी के [illegible] लड़ना और उनको मिटाना। [illegible] संपन्न और प्रगतिशील जनतन्त्र [illegible] निर्माण करना। ऐसी राजनैतिक, [illegible] जिक और आर्थिक व्यवस्था बनाना [illegible] देश के हर नर-नारी को समुचित [illegible] कार और जीवन के पूर्ण विकास [illegible] अवसर मिल सके।

महान् देश के निवासी

यह समय आपस में लड़ने-झग[illegible] का नहीं है किन्तु भाईचारे का [illegible] हम एक महान् देश के निवासी हैं। [illegible] आगे बढ़ने को उद्यत हैं जो साहस [illegible] वीरता का काम है। हमको इस [illegible] पर सच्चा उतरना ही होगा। चाहे [illegible] किसी भी धर्म या मजहब के हों, हम [illegible] भारत माता की संतान हैं और हम [illegible] अधिकार, कर्तव्य और दायित्व बरा[illegible] हैं। आज हमने अपने भाग्य को सुधा[illegible] या बिगाड़ने की स्वतन्त्रता प्राप्त की [illegible] आज प्रत्येक नागरिक को सामा[illegible] न्याय के आधार पर एक ऐसे लोकत[illegible] वादी समाज के निर्माण में अपनी सम[illegible] शक्ति लगा देने का संकल्प करना चा[illegible] जिसमें शक्ति जनता में केन्द्रित [illegible] और प्रत्येक नागरिक को उन्नति का स[illegible] अवसर प्राप्त होगा।

सरकार की मदद करें

माना कि देश की स्थिति दिन-प्र[illegible] दिन बिगड़ती चली जा रही है--खा[illegible] समस्या विकट हो गई है। पर इ[illegible] क्या? हम निराश क्यों हों--हम [illegible] न स्थितियों का दृढ़ता से मुकाबला [illegible] सुन्दर प्रभात के पूर्व जिस तरह अ[illegible] कार रहता है--वही आज है। यह अ[illegible] कार दूर होगा और सुन्दर प्रभात [illegible] हुए हमारा स्वागत करेगा। उस [illegible] हमारा सांस्कृतिक और प्रबुद्ध भारत [illegible] को मानवता का संदेश देगा और हम[illegible] नया चक्रांकित तिरंगा झंडा गर्व [illegible] साथ लहराया हुआ विश्व पर फहर[illegible] किन्तु वह संसार के लोगों में भय न [illegible] करेगा। हमारा झंडा विश्व के [illegible] कोने में प्रेम, शांति व न्याय का [illegible] सुनायेगा। इसके लिये हमें प्रयत्न क[illegible] है। आओ, हम आज दीपावली के [illegible] यह प्रतिज्ञा करें कि भारत की शान्ति [illegible] लिये हम अपनी सरकार को मदद करें [illegible] आपस की फूट को नष्ट करेंगे ताकि [illegible] वह दिन देखने को मिले जिस दिन भा[illegible] के सात लाख गाँवों के निवासी खुश हो[illegible] विचरें और उनकी अज्ञानता, गरी[illegible] व मूर्खता दूर हो जाय। हमारा कर्त[illegible] है कि अपनी सारी ताकत इस काम [illegible] पीछे लगा दें ताकि हमारी कौमी ता[illegible] बिखरने न पाये और हमारे कदम [illegible] अलग रास्तों में बटकर गुम न हो जा[illegible]

संदेश

माननीय श्री जगलाल चौधरी, एम० एल० ए०, इक्साइज़ मिनिस्टर, बिहार-सरकार—

आधुनिक राष्ट्रों के जीवन में पत्र-पत्रिकाओं का महत्त्व उतना ही है जितना मानव-जीवन में हृदय, मस्तिष्क और मुख के सम्मिलित कार्य का है; किन्तु दूषित हृदय, बिगड़ा दिमाग और बहसा मुंह उतना ही भयंकर भी है। फिर भी इन सबों के बिना जिस तरह मानव-जीवन नष्टप्राय ही होगा, उसी तरह हमें यह भी मान लेना होगा कि आजकल पत्र-पत्रिकाओं के बिना राष्ट्र का जीवन-व्यापार रुक जायेगा। अतः हमें इस आशा पर कि ये पत्र-पत्रिकायें हमें सुविकसित मस्तिष्क, उन्नत हृदय और सुन्दर वाणी ही प्रदान करेंगी। इनका स्वागत करना तथा इन्हें प्रोत्साहित करना है; और 'देशदूत' की जरूरत तो हमें इसलिये भी है कि वह नवराष्ट्र को नवचेतना, नवभावना, नवकामना, नवप्रकाश, नवदर्शन प्रदान करे; नवराष्ट्र के निर्माता, सत्य और अहिंसा के अनन्य पुजारी का प्रेम-संदेश विश्व को दे और विश्व का शुभ आशीर्वाद इस नवराष्ट्र के लिये प्राप्त करे। मैं आशा करता हूँ कि दीपावली के अवसर पर इसका विशेषांक राष्ट्र के सभी राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक विचार-धाराओं को अपनी नई रोशनी का बहुरंगी प्रकाश प्रदान करेगा, राष्ट्र इसके आलोक से जगमगा उठेगा, जीवन-प्रदीप को पुनः स्नेहदान दे यह वर्तमान दानवी अन्धकार का अंत करेगा और राष्ट्र के सभी 'दुष्ट भावना कीट' खुद ही आकृष्ट हो इसमें जल मरेंगे।

पटना

जगलाल चौधरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कफन के लिये

लेखक, श्री महेन्द्रनाथ 'मधुकर' बी० ए०

गरीबी बुरी तो नहीं है किन्तु जिस गरीबी से जीवन भी दुर्लभ हो जाता है, वास्तव में 'ऐसी गरीबी बड़ी ही दुखदाई होती है। विनय एक श्रमजीवी लेखक था और गरीबी उसके लिये अभिशाप ही प्रमाणित हुई। कहानीकार ने इस कहानी में गरीबी के एक पहलू का ही नहीं, वरन् श्रमजीवी लेखक के जीवन की वास्तविक परिस्थितियों का भी चित्रण किया है, जो पठनीय तथा हृदयस्पर्शी है।

विनय फटे टाट के टुकड़े पर बैठा 'नरक-कुण्ड' नामक अपने अधूरे उपन्यास को पूरा कर रहा था। पास ही उसकी बीमार मां जमुना एक टूटी चारपाई पर लेटी थीं। थोड़ी ही देर पहले उनकी आंखें लगी थीं, सहसा एक बड़े जोर की खांसी आई और थूक के साथ खून के दो तीन कतरे निकल पड़े। विनय ने झट उठकर पास ही गिलास में सुराही से पानी उँड़ेलकर दिया। जमुना ने कुल्ला किया और फिर चुपचाप लेट गई। विनय ने अपनी कलम उठाई और लिखना शुरू कर दिया।

जमुना कुछ देर तक देखती रही; फिर बोली—"बेटा कितनी रात हो गई और अभी तक सोया नहीं?"

विनय ने कहा—"नींद नहीं आई, मां।"

"झूठ क्यों कहता है! यह क्यों नहीं कहता कि दवा की शीशी खाली पड़ी है और यदि आज उपन्यास पूरा न हुआ तो दवा फिर कल कहां से आयेगी।

विनय कुछ देर तक चुपचाप सिर नीचा किये सोचता रहा, फिर उसने कलम उठाकर लिखना शुरू कर दिया।

जमुना की आंखें छलछला आईं। अपने आंसुओं के वेग को रोकते हुए उन्होंने कहा—"बेटा! मैं कितनी अभागिन हूँ कि जिसे भगवान् मौत भी नहीं देता। तू रात-रात भर जागकर मेरी दवा के लिये लिखता रहता है और मैं फिर भी न तो अच्छी ही होती हूँ और न मरती हूँ। भगवान्! अब मुझसे यह नहीं सहा जाता।"

विनय ने मां के पास आकर कहा—"मां! रोओ मत, मुझे बिलकुल तकलीफ नहीं होती। तुम घबड़ाओ नहीं, जरूर अच्छी हो जाओगी; और रही मेरे लिखने की बात सो तो तुम्हारे अच्छे हो जाने के बाद भी न बन्द हो सकेगी, क्योंकि यह तो मेरे जीवन का एक अंग बन चुका है। जब तक मैं कुछ लिख नहीं लेता न जाने क्यों मेरा हृदय बेचैन रहता है। साहित्य-सेवा को ही मैंने अपने जीवन का उद्देश्य बना रक्खा है।"

मां ने कहा—"पर बेटा! तुझे एक किताब पर इतना भी तो नहीं मिलता जिससे एक महीने का खाने-पीने का खर्च तो चल जाय।"

विनय बोला—"मां! इसका दोष तो उन पर है जो हमारे खून से लिखी गई पुस्तकों को सस्ते मूल्य पर खरीदकर उनसे ऊँची-ऊँची इमारतें खड़ी करना चाहते हैं।" मां का हृदय मसोसकर रह गया। वह अपना मुंह आंचल में छिपाकर सिसकियां लेने लगी। कुछ देर बाद बोली—"बेटा! मैं तो समझती हूँ कि तू मनमोहनलाल जी की पत्नी के पास एक पत्र डाल दे। मैंने उनके यहां पांच साल नौकरी की थी और वह मुझसे बहुत खुश थीं। जब मैं चलने लगी थीं तो उन्होंने मुझसे कहा था कि जब कभी कोई जरूरत पड़े तो मुझे खत लिखना। पत्र लिखने से यदि वह कुछ रुपये भेज दें तो तुझे कुछ आराम मिल जाये नहीं तो रात-दिन लिखते लिखते तू पागल हो जायगा। उनकी बेटी मंजू के पास भी पत्र डाल दे। वह तो तुझे बहुत चाहती थी। अगर वह सिफारिश कर देगी तो रुपये जरूर आ जायेंगे।'

इस अन्तिम वाक्य से उसे ऐसा लगा कि जैसे किसी ने उसके हृदय में सोई हुई पीड़ा को जगा दिया हो। मां से केवल इतना ही कहकर कि 'हां पत्र डाल दूंगा' वह विचारसागर में लीन हो गया। सोचने लगा—'जीवन के वे कितने सुखद दिन थे जब मंजू के साथ खेलते-खेलते और बातें करते-करते उसका जी नहीं भरता था।' दोनों ने जीवन में कभी भी अलग न होने की कितनी सौगन्धें खाई थीं पर सब चूर चूर हो गईं। चलते समय मंजू ने कहा था 'कि यदि जीवित रही तो प्यारे मित्रो! तुमसे एक बार अवश्य मिलूंगी।' और इसी वाक्य ने उसे कवि और लेखक बना दिया। इसी की हृदय-पटल पर सोई स्मृति उसे बरबस कुछ न कुछ लिखने के लिय बाध्य किया करती है।

सहसा विनय की विचार-धारा टूटी। उसने मां के कथनानुसार दोनों को एक एक पत्र लिख दिया।

बेचारे विनय के जीवन को गरीबी ने अन्दर ही अन्दर खोखला कर दिया था। उसने अपने जीवन की सभी आशायें, हृदय की सारी अभिलाषायें और उमंगें मंजू से विदा होते ही सुलगा दी थीं। उसका पिता कचहरी में साधारण चपरासी था। मां ने मजदूरी करके उसे पढ़ाया-लिखाया था, क्योंकि पिता तो बचपन में ही उसे इस संसार की ठोकरें खाने के लिये छोड़कर चल बसे थे।

कई रातें जागते-जागते विनय की आंखें लाल हो गई थीं। उसे नींद आ रही थी। तीन महीने से निरन्तर रात-दिन मां की दवा के लिये लिखते रहने के कारण उसके मस्तिष्क और शरीर में भेदकर पीड़ा हो रही थी। जी में आया कि यह अब न लिखें; कल सुबह सेठजी से उधार मांग लायेगा पर सहसा जब उसे सेठजी के वे शब्द याद आये कि 'बिना रहन के एक पैसा भी नहीं मिल सकता तो उसकी एक यह नन्ही सी आशा भी निराशा के असीम और गहन अंधकार में जाकर विलीन हो गई।

उपन्यास समाप्त होने के निकट था। केवल अन्तिम परिच्छेद लिखना और शेष था। उसने अपने सारे साहस को बटोरकर लिखना शुरू किया। दो पृष्ठ लिखने के बाद सहसा पन्द्रह वर्ष पुरानी एक घटना याद आ जाने के कारण उसकी कलम फिर रुक गई। उसे याद आया कि जब वह हाईस्कूल की परीक्षा देने जा रहा था और परीक्षा की फीस जमा करने के लिये उसके पास एक पैसा भी नहीं था तब उसकी मां ने १०३° ज्वर चढ़े रहने पर भी मजदूरी करके फीस के लिये पैसे जमा किये थे। इस घटना के याद आते ही विनय के हृदय में मां के स्नेह और दुलार का एक ज्वार सा आ गया। न जाने उसमें कहां से इतनी स्फूर्ति और शक्ति आ गई कि फिर जो उसकी लेखनी उठी तो उपन्यास समाप्त होने पर ही रुकी। जैसे ही उसने उपन्यास समाप्त किया वैसे ही पास के गिरजाघर की घड़ी ने चार का घंटा बजाया। विनय ने जल्दी-

विनय अपनी माता की बीमारी से चिंतित हो उठा।

जल्दी अपने बिखरे हुये उपन्यास के पृष्ठों को सँभालकर रख दिया और फिर पास ही एक फटी चद्दर से मुंह ढांककर सो गया।

(२)

अभी आकाश में कुछ कुछ अँधेरा बाकी था दो चार तारे इधर-उधर छिटके हुये थे। कुछ दूर पर सड़क के किनारे नीम और पीपल के पेड़ों पर बैठी हुई दो-एक चिड़ियां प्रभात के आगमन की सूचना देने लगी थीं। जमुना की आंखें खुल गईं। करवट बदलकर जब उसने अपने विनय की ओर देखा कि वह केवल एक फटी सी चद्दर ओढ़े पड़ा है और सिर के नीचे तकिया भी नहीं है तो उसकी आंखों में असीम वेदना उमड़ आई। गरीबी का नग्न नृत्य उसकी आंखों के सामने हो रहा था। बड़ी देर तक वह अपने बीते जीवन की घटनाओं को सोचती रही। आंखों में आंसू की बूंदे तैरने लगीं। गला भारी हो आया। सहसा फिर एक बड़े जोर की खांसी आई। विनय की नींद उचट गई। उसने चद्दर से मुंह बाहर निकालते हुये कहा—"मां!"

"हां बेटा!"—मां ने कुछ रुँधे स्वर से कहा।

"कैसी तबीयत है?"—विनय ने उठते हुये कहा।

"अच्छी है बेटा!"—मां ने कहा।

विनय ने उठकर कमरे की खिड़की खोली। अब अँधेरा बिलकुल हट चुका था और सड़क पर इक्के-तांगे और साइकिलें चलने लगी थीं। उसने जल्दी से मुंह-हाथ धोकर, कपड़े बदले और नये उपन्यास की हस्तलिपि उठाते हुये मां से कहा—"मां, मैं थोड़ी देर में लौटूंगा। पानी तुम्हारे पास रक्खा है। दवा तुम्हारी खतम हो गई है। इस उपन्यास का निपटारा करके उधर से डाक्टर साहब के यहां से दवा भी लेता आऊँगा। कोई खास बात तो डाक्टर साहब से नहीं कहलाना चाहती हो?

मां ने डबडबाई आंखों से कहा—"बेटा! डाक्टर साहब से कह देना कि अब ऐसी दवा दें जिससे कि आंखें हमेशा के लिये बन्द हो जायें, क्योंकि अब अपने बेटे का दुःख नहीं देखा जाता!"

विनय ने मां की इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। बिना कुछ कहे चुपचाप प्रकाशक महोदय के घर की ओर चल पड़ा।

विनय ने उपन्यास-लेखक के रूप में काफी ख्याति प्राप्त कर ली थी। सारे जीवन वह अपनी रचनाओं में से ऐसे पात्रों और संसार भी सृष्टि करता रहा जिसमें आनन्द और सुख की सदा बहार रहती। उसकी रचनाओं से कभी कभी पाठकों को भ्रम हो जाता। वे सोचते कि सचमुच लेखक बड़ा सुखी होगा! उसके जीवन में मस्ती और आनन्द ही की लहरें मौजें लिया करती होंगी! उसकी बातों में उसके साथियों को मधु का सा मधुर स्वाद मिलता होगा!

कई बार उसकी मां ने जब कहा—'बेटा तू अपनी किताबों में खूब हँसी और खुशी की बातें लिखा करता है। सबका जीवन संसार बसाता रहता है, लेकिन तेरा जीवन कितना दुखी है, इसका भी कभी खयाल करता है? अपना घर तो बसा ले।"

तो विनय कह देता—"मां, अपने दुखः और गरीबी को इस तरह कुछ देर के लिये भूल जाने का प्रयत्न करता हूँ जिससे कुछ शान्ति मिल जाये, पर अब शान्ति नहीं मिलती। इसीलिये अब की बार 'नरक-कुण्ड' ऐसा उपन्यास लिख रहा हूँ। मेरा घर तो भगवान् के यहां बसेगा, इस संसार में नहीं।"

प्रकाशक महोदय का घर सामने था। वह सामने बराण्डे में बैठे अखबार पढ़ रहे थे। विनय ने हाथ उठाकर नमस्ते किया। उपन्यास को एक सरसरी दृष्टि से देखने के बाद उन्होंने विनय को उस पर २०) देने को कहा। विनय ने प्रयत्न किया कि वह कुछ और दें। पर उन्होंने एक न सुनी। मां की दवा जरूरी थी इसलिये उसने ज्यादा झंझट न करके २०) ही में उपन्यास दे दिया।

लेकिन विनय के हृदय को इससे कितना आघात पहुँचा, यह उसका हृदय ही जानता था। उसने इतने कम मूल्य में अपने उपन्यास को इस कारण और भी दे दिया कि वह गरीब है, उसके पास दुनिया को ठगने के लिये कोई डिगरी नहीं है, बड़े प्रकाशकों से मिलने जाने के लिये सूट और टाई नहीं है।

रुपये लेकर वह डाक्टर साहब के यहां गया। काफी देर हो चुकी थी, इसलिये जल्दी से दवा लेकर वह सीधे घर चला

पृ० ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया। मां की आंखें उसकी बाट जोह रही थीं।

(३)

उस दिन के बाद से जमुना की तबीयत बराबर खराब ही होती गई। विनय के पास जो कुछ था वह सब डाक्टरों की भेंट हो चुका था। परसों से तबीयत ज्यादा खराब हो गई थी। डाक्टरों ने जवाब दे दिया था। जमुना ने पड़े पड़े चारपाई पर से पूंछा—'क्यों बेटा, चिट्ठी का कोई जवाब आया ?'

विनय ने छलछलाये नेत्रों से अंगीठी पर से खिचड़ी उतारते हुये कहा—'नहीं मां,' गरीबों को लोग बहुत जल्दी भूल जाते हैं और जो याद भी रखते हैं वह उनकी मुसीबतों को सुनकर खुश होते हैं।"

मां चुप हो गई।

विनय का जीवन नीरस हो गया था। एक के बाद एक निरन्तर मुसीबत आते रहने के कारण वह अपने जीवन से ही ऊब उठा था। उसके धैर्य की सीमा टूट चुकी थी। उसकी जीवन से संघर्ष करने की शक्ति क्षीण हो चुकी थी। उसने कितनी दुआ की पर यमराज का पत्थर का हृदय तनिक भी न पिघला। दो रात निरन्तर जागते रहने के कारण आज उसकी पलकें मारे नींद के बोझ से झुकी-सी जाती थीं। मां का ज्वर काफी बढ़ चुका था। विनय ने ज्यों मुंह में थर्मामीटर लगाया त्योंही वह टूट गया। सारा शरीर ज्वर के ताप से जल रहा था। बोलने की शक्ति जाती रही थी। सहसा मां को बड़ी जोर की खांसी आई और उसके साथ ही उनकी आंखें सदा के लिये मुंद गईं। विनय चीख मारकर गिर पड़ा।

थोड़ी देर बाद जब उसे होश आया तो उसने देखा कि कमरे का दीपक भी बुझ चुका था। उसने धीरे से उठकर थोड़ा-सा रक्खा हुआ तेल डालकर दीपक फिर से जलाया। मां के कफन के ध्यान आते ही उसका हृदय रो उठा। पास में एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी। उसे ऐसा लगा कि जैसे उसकी सारी आशायें जीवन की सारी मस्ती और उमंगों का अंत उसकी मां की मृत्यु के साथ ही हो गया हो। उसने उठकर इधर उधर देखा कि कुछ कागज मिल जाये तो कुछ लिखकर ही मां के कफन के लिये प्रबन्ध कर दें। बड़ी खोज करने पर केवल चार सादे पृष्ठ मिले। दीपक की ओर देखा तो उसमें भी बहुत थोड़ा सा तेल रह गया था। बड़े साहस के साथ उसने 'गरीबी' शीर्षक एक कहानी लिखनी शुरू की। कहानी के समाप्त होते ही दीपक का तेल भी समाप्त हो गया। विनय का चित्त अशान्त हो उठा। उसे अपने जीवन से घृणा होने लगी। न जाने उसे एकाएक क्या सूझा कि उसने अपना सिर बड़ी जोर से दीवाल से लड़ा दिया। रक्त की तेज धार बह निकली। एकाएक उसे जोर से चक्कर आया और वह जमीन पर गिर पड़ा। रक्त काफी बह चुका था। उसकी श्वास अधिक देर तक न चल सकी।

दूसरे दिन प्रातःकाल चारों ओर आनन्द और हर्ष शहर में छाया हुआ था। मुहल्ले में बच्चे, स्त्री और वृद्ध सभी अपने अपने घरों में दीवाली जलाने के लिये मिट्टी के दीपक खरीद रहे थे। उसी समय मंजू का तांगा विनय के घर के पास रुका। मंजू अपने पति के साथ ज्योंही विनय के कमरे में पहुँची त्योंही उसके मुख से चीख निकल पड़ी—"बित्री! चाची!!" और दूसरे हर क्षण ज्योंही उसकी आंखें 'गरीबी' कहानी के उस पृष्ठ पर गईं जिस पर रक्त से लिखा हुआ था 'कफन के लिए,' त्योंही वह अचेत होकर विनय के ऊपर गिर पड़ी। मंजू के पति यह सब आश्चर्य से देखते रहे। विनय के कपोलों पर उनकी आंखों से दो बूंद आंसू भर चू पड़े।

अपने देश की बनी हुई वस्तुएँ अपनायें

भारत के होशियार कारीगरों के बनाये हुये

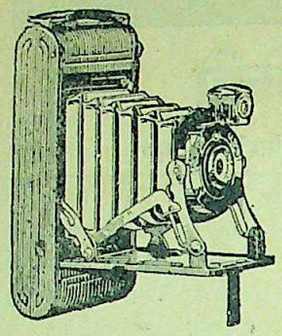

सुन्दर मजबूत, नया डिजायन, विश्वसनीय, कीमत में सस्ते, काम में अच्छे, इन कैमरों से आप चाहे जिस दिलपसन्द चीज का टिकाऊ मनोहर फोटो खींच सकते हैं। इन कैमरों से बढ़िया फोटो खींचने की गारंटी है।

हर एक कैमरे के साथ, फिल्म, कार्ड, मसाला और फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त भेजी जाती है। कीमत बक्स कैमरा ४।), बढ़िया बक्स कैमरा ५॥), पोस्टेज पैकिंग १=) अलग। बढ़िया फोल्डिंग कैमरा १४), पोस्टेज पैकिंग १॥) अलग।

ग्लोब फोटो स्टूडियो (नं० ३४) अलीगढ़ सिटी।

फैंसी सिल्क साड़ी आकर्षक डिजाइन

कलापूर्ण २-४ इंच चौड़ा बार्डर

नं० ७ ८ ९ ५ रु०

१८) २३) २८)

२) पेशगी बाकी वी० पी० से

थोक व्यापारियों को खास सुविधा

भारत इन्डस्ट्रीज,

जुही नं० ९ कानपुर

देशान्वेषण की सरल कथाएँ

नए-नए देशों का पता लगाने संसार के कर्मवीर यात्रियों ने कैसी कठिनाइयाँ झेली हैं, उनका खासा इस सचित्र पुस्तक में पढ़िए। मूल्य

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रया

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयां—

क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

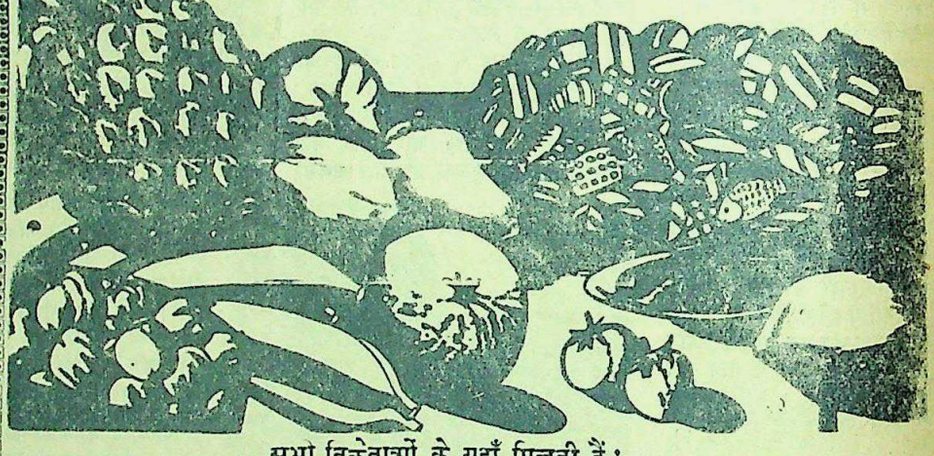

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डियन रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

नौजवानों को यही मुनासिब है

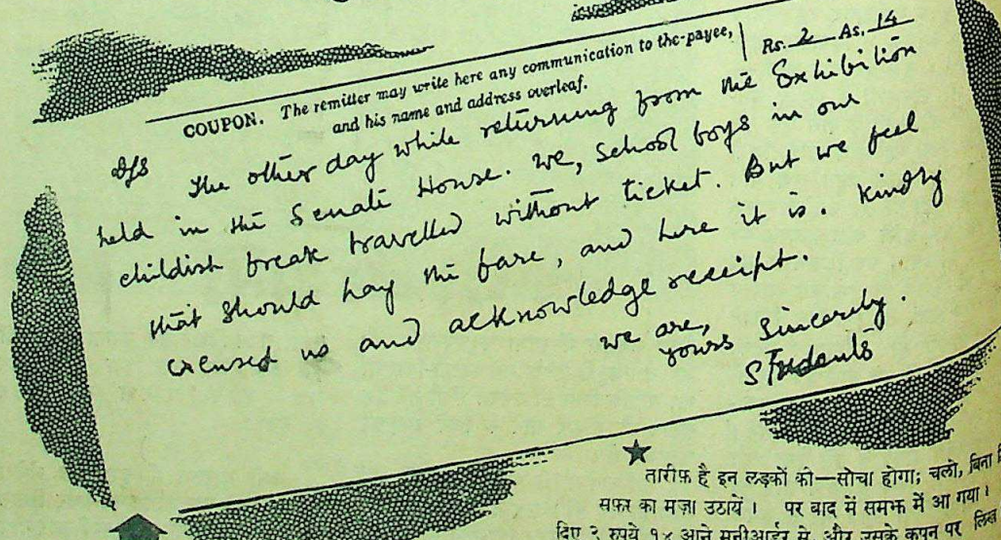

बाली इंगलिश हाई स्कूल, पोस्ट बाली, हवड़ा की श्रेणी ९ के छात्रों ने ईस्ट इण्डियन रेलवे के जेनरल मैनेजर को एक मनीआर्डर भेजा था। उस मनीआर्डर के कूपन की हूबहू नक़ल ऊपर दी गई है।

★

तारीफ़ है इन लड़कों की—सोचा होगा; चलो, बिना टिकि सफ़र का मज़ा उठायें। पर बाद में समझ में आ गया। दिए २ रुपये १४ आने मनीआर्डर से, और उसके कूपन पर लिखि मार्फ़ीनामा। शाबाश, तुम देश के सच्चे नौनिहाल हो! अब रेलें हमारे राष्ट्र की सब से बड़ी सम्पत्ति हैं। इस लिए किराया देने में द बाज़ी या फ़रेब करना राष्ट्रीय धन को हड़पने के समान है।

[पब्लिक रिलेशन्स आफिसर, कैलकटा रेलवेज द्वारा ईस्ट इण्डियन रेलवे की ओर से प्रचारित]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमंदिर

कहाँ है उसकी पत्नी ?

पतियों और पत्नियों के कर्त्तव्य

लेखक, श्री प्रेम कपूर कंचन

आज स्त्री-स्वतन्त्रता का आन्दोलन भारत में द्रुत गति से बढ़ रहा है, लेकिन अभी भी बहुत से आदमी हैं जो कि अपनी स्त्री को 'क्लब' या और किसी मन-बहलाव के स्थान पर नहीं ले जाते। वे जानते हैं कि स्त्री-स्वतन्त्रता का महत्त्व कितना है और भारत की महिलाओं पर इनका क्या असर पड़ रहा है। ऐसे कितने ही विषयों को लेकर श्रीमती शान्ता जी से बहस हो चुकी है। आज भी इसी प्रकार की एक गर्मागरम बहस हो रही थी तभी उन्होंने कहा था, "आज भी स्वतन्त्रता के इस युग में बहुत से परिवारों में यह कहावत प्रसिद्ध है कि स्त्रियों का कार्य-क्षेत्र घर है।" आगे उन्होंने फिर कहा—"कुछ दिन हुए मैं अपने एक मित्र के घर उनसे मिलने गई थी। वह अपने घर में अकेली थी। वहां न तो उसके माता-पिता थे, न सास-ससुर। अपने छोटे बच्चे को ले वह दिन बिताया करती। कितनी मनहूस परिस्थिति में वह बेचारी थी।

मैंने उससे प्रश्न किया ..."तुम यों अकेले दिन भर क्या करती हो, जब कि तुम्हारे पति सुबह १० बजे से शाम तक दफ्तर में रहते हैं और करीब नौ बजे तक मिने-धामते घर आते हैं?" उसने उत्तर दिया—"मैं दिन भर बच्चे की सेवा में लगा रहती हूँ। सुबह-शाम खाना बनाती हूँ और अवकाश के समय सीने-पिरोने का काम किया करती हूँ।" श्रीमती जी मुझसे कहने लगीं अब आप ही बताइये उस नारी के जीवन में क्या है, वह पूरे दिन यों ही बेकार बिता देती है और अपने को धन्य समझती है कि उसका पति उसके ऊपर बहुत कृपा रखता है। कभी कभी उसके लिये साड़ियां या गहने ले आता है। उस नारी ने भी एक पुत्र-रत्न को जन्म देकर अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया। बस!!

मैंने पूछा—"श्रीमती जी फिर आप ने क्या पूछा?"

श्रीमती जी कहने लगीं—कि उसके बाद मैंने पूछा—"क्या तुमको अकेलेपन से घृणा नहीं होती है?"

"नहीं अब मुझे यह पता ही नहीं चलता कि मैं अकेली हूँ, क्योंकि मेरी अब ऐसी आदत सी पड़ गई है। कभी-कभी मैं अपने मित्रों से मिलने चली जाती हूँ।"

इतना सुनकर मैं वहां से क्लब चली गई। अचानक उस स्त्री के पति वहां मिल गये। म उन्हें जानती थी शायद इसका पता उन्हें नहीं था। इस क्लब में युवतियाँ भी आती हैं। वहां स्त्रियों का विशेषतया स्वागत किया जाता है।

मैंने उनसे पूछा—"आप की शादी हो चुकी।"

उन्होंने उत्तर दिया "जी....।"

"फिर आप उन्हें क्लब में क्यों नहीं लाते..?" मैंने पूछा श्रीमती जी ने कहा।

"वह बड़ी कट्टर धार्मिक है। वह यहां कभी नहीं आयेगी।"

"पर तुम तो पुरुष हो वह तुम्हारी पत्नी है तुम उसे यहां लाने के लिए बाध्य कर सकते हो और मुझे विश्वास है कि तुम्हारे ऐसा करने से वह यहां अवश्य आयेगी।"

"नारियों के लिये घर ही उपयुक्त है।" उन्होंने शान्ति स्वर में कहा—"आप श्रीमती जी उनको यहां लाकर सभ्यता की सीढ़ियां चढ़ाने के लिये क्यों कह रही हैं?"

"इसके मतलब यह हुये कि आप उसको घरघुसनी बनी रहने देना चाहते हैं और स्वयं स्वार्थपरायण हो जीवन का आनन्द उड़ाना चाहते हैं।" मैंने तनिक चिढ़कर पूछा।

उन्होंने कहा—"माई डियर लेडी वह घर पर इतनी प्रसन्न रहती है जितनी कि एक घरेलू स्त्री को रहना चाहिए। वह किसी आनन्द की तरफ नहीं बढ़ सकती है, क्योंकि उनको इसका अनुभव नहीं। मैं उसको घर ही पर रखना चाहता हूँ। जिससे कि उसके सिर पर यह फ़ैशन का हैवान न सवार हो जाय।

"दूसरे शब्दों में इसके मतलब हैं कि आप उसके ऊपर विश्वास नहीं करते!"

"यह केवल विश्वास करने की ही बात नहीं है पर उसके विचारों के अनुकूल उसे बनाने का प्रश्न उठता है। वहां वह केवल मुझसे इतना ही चाहती है कि मैं रात को उसके साथ मधुर क्षण व्यतीत करूँ पहनने को कपड़े और गहने दूं इसी में वह प्रसन्न है। और उसे क्या चाहिए!!"

"और नारी क्या करे? पर क्या उसके हृदय में प्राण नहीं है?"

उसने दृढ़ता से पूछा..."क्या वह इस प्रकार घर पर सुखी नहीं?"

मैंने क्लब के चारों ओर देखा। सब अपने अपने व्यवसाय में व्यस्त थे। कोई ताश खेल रहे थे, कोई शराब पी रहे थे। मुझे ध्यान आया उनकी स्त्रियां क्या करती होंगी। या तो बच्चों को सँभालती होंगी या खाना तैयार कर पति का आसरा देख रही होंगी।

कहते-कहते श्रीमती जी खीज उठीं और बोलीं यही हैं उनकी पत्नियां। जिनके पिता कन्यादान के बाद उनको सौंप देते ह। विवाह के उपरान्त न केवल स्त्रियों का शरीर ही दिया जाता है, वरन् साथ साथ मन भी सौंप दिया जाता है। वह अपने पति की हो जाती है, जिस तरह एक रस्सी में बंधी हुई गाय..... वह चाहे अंधा हो पागल हो, दुराचारी हो। चाहे वह स्त्री के साथ अन्याय करे मारे-पीटे पर नारी को अपना कर्त्तव्य चुकाना ही है।

मैंने कहा माफ कीजिएगा श्रीमती जी आप परिस्थित से ऊपर की बातें कह रही हैं। भारत, इंगलैंड अमेरिका नहीं। यहां वाद-वाद नहीं चलता! सोने की चमक-चमाहट और चांदी की खनखनाहट भारत के रीत-रिवाज नहीं बदल सकतीं। भारत आध्यात्मिक उन्नति के लिये सब कुछ करता रहा है।

क्या मैं पूछ सकता हूँ, पश्चिम में नारी नाम की कोई वस्तु है? नहीं वहां नारी या स्त्री नहीं। वहां नारी के स्थान पर मजबूत वर्ग और ढीला वर्ग (stronger sex) (weaker sex) या सुन्दर वर्ग (Fair sex) और बदसूरत वर्ग (ugly sex) कहा जाता है। आपको विश्वास है कि माता-पिता क्या अंधे होते हैं, क्या बेटी उनके रक्त का भाग नहीं जो बेटी को वह अंधे या कोढ़ी पुरुष के साथ ब्याह देंगे? क्या क्लब हाउस में ही जाकर या फैशन बनाकर घूमने से नारियों की स्वतंत्रता का पूरा परिचय मिलता है? आप किस रूप में नारियों की स्वतंत्रता स्वीकार करती हैं? मैं इस बात को कभी भी स्वीकार नहीं करता कि हर व्यक्ति को अपनी पत्नी का परतंत्र होना चाहिए। स्त्रियां समाज के लिये एक वरदानस्वरूप हैं। कोई व्यक्ति विरला ही होगा जो अपनी पत्नी को दुःखी करता हो। जो व्यक्ति ऐसा करता हो उसके प्रति समाज को आवाज उठानी चाहिए। लेकिन नारियां लिपस्टिक लगा कर "डेडी-डेडी" करती क्लबघरों में नाचती फिरें। जब पति खर्चा पूरा न कर सके तो टेलीफोन आपरेटर या टाइपिस्ट बनकर जीविका उपार्जन करें। फिर बच्चों की क्या दशा होगी, शिशु-पालन के लिये शिशु-घर खुलेंगे। और इसी प्रकार उनके जीवन का रूप बदलता जायगा। फिर बताइये भारत कहां रहा। नारियों की लज्जा, सहनशीलता और संकोच कहां?

आप उनके कर्त्तव्य के बारे में बखान कर रही हैं। घर में रहकर गृहस्थी का निर्माण करना उपयुक्त है या दफ़्तर का। नारी का गौरव अपने घर में है। वह अपना कार्य एक आदर्श पत्नी के रूप में पूरा करती है। फिर हर व्यक्ति सरोजनी नायडू या मिसेज पंडित नहीं हो सकती। यह तो ईश्वरी देन है।

स्वतन्त्र भारत में सबको स्वयं सोचने की स्वतन्त्रता है। हमें पुराने लकीर के फकीर नहीं होना है। पति को चाहिए कि पत्नी को अपना सहयोगी मित्र समझे। वे दम्पति सुखी हैं जिनमें नारी अपना सर झुकाये अपने कंधों पर उत्तरदायित्व का भार लिये ठीक रास्ते का अनुसरण करती हैं। आज पति को समझना है कि नारी उसकी एक विश्वासपात्र मित्र है, वह एक मुर्चा लगी हुई बेकार सी वस्तु नहीं।

लेकिन दुःख है कि युवतियां इतनी ढीले विचार की होती हैं। उनमें विचार-शक्ति नहीं के बराबर होती है। दो-चार शब्दों में उन्हें खरीदा जा सकता है। पाश्चात्य आदर्श ने उन्हें फैशन की अंधी बना दिया है। वे इसीलिए सब कुछ कर डालने के लिये प्रस्तुत हैं पुरुष को उन्हें सुधारना है। उनकी सुध लेनी है, क्योंकि नारी ही से भावी राष्ट्र का निर्माण है। जिससे उनसे कोई यह प्रश्न न कर सके कि "उनकी पत्नी कहां है"? पत्नी का सुख पति के चरणों में है और पति का पत्नी के कपोलों पर।

ब्रिटेन की राजकुमारी एलिजबेथ

राजकुमारी एलिजबेथ का विवाह ग्रीस के राजकुमार माउंटबेटेन के साथ सम्पन्न हो गया।

NO LICENCE NEEDED

अमेरिकन मार्का पिस्टल

इस पिस्तौल के गुणों का वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाना है, क्योंकि इसका संक्षिप्त परिचय करा देना भी आवश्यक ही प्रतीत होता है—विशेषतः इसलिये यह है असली अमेरिकन पिस्तौल की भाँति ही इसमें कारतूस रखने का स्थान बना है और चलाने वाले को पकड़ बनाती हुई बनावट है। आवाज तो इतनी तेज है कि सुनने वाला थी दंग रह जाता है। अपने प्राण तथा सम्पत्ति की रक्षा के लिए यही सबसे उत्तम वस्तु है। इसमें 8 गोली के कारतूस लगाये जाते हैं। लम्बाई में लगभग 8 इंच तथा वजन में १४ औंस है। अभी तक को देखकर अपना सुन्दर ही चोर डाकू कोसों दूर भागते हैं।

मूल्य नं० २४२२-८।।) शार्ट बहिन, मूल्य नं० २३३३-८।।) लम्बा, चौकोरी शार्ट बहिन, मूल्य नं० २४४४-८।।) लेटेस्ट न्यू मॉडिल विलोड शार्ट बहिन, कारतूस की चमड़े की सुन्दर पेटी २), कारतूस ५ दर्जन का मूल्य १), सबको ले लिए तैयार ११) रोपी।

पुनवाडेड ट्रेडर्स, पोस्ट बाक्स नं० २४२ कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराजा ग्वालियर
लोकप्रिय कार्यों में दिलचस्पी

लेखक, श्री 'रियासती'

आज जब देश की राजनीति करवट बदल रही है, ब्रिटिश भारत में महामना स्वर्गीय मालवीय जी के शब्दों में 'अपने घर में अपना राज्य' आरम्भ हो गया है। तो हमारी देशी रियासतों का प्रश्न भी प्रमुख हो उठा है। कुछ उग्र राजनीतिक, जनता का भला देशी नरेशों के विनाश में देखते हैं, और आज इस उग्र राजनीति को ही राज्यों में कांग्रेस की छत्रछाया में संस्थापित 'प्रजामंडलों' द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है। लेकिन इनके अलावा सुधारवादियों का बहुसंख्यक दल ऐसा भी है, जो नरेशों के अस्तित्व को खत्म कर देने की अपेक्षा उन्हें प्रगतिशील, बौद्धिक और 'जन-हित-सेवक' बनाने में अधिक विश्वास करता है। यदि राजा विचारों से उदार है, हृदय से विनम्र है और कर्तव्य से कर्तव्यपरायण है, तो निस्संदेह उनकी शासन-व्यवस्था किसी भी तरह की प्रजातन्त्रवादी हुकूमत से सुव्यवस्थित होगी प्रजा में अमन होगा और वहाँ की विचारधारा मौलिक रूप में प्रगतिशील होगी।

देशी राज्य और वहाँ की प्रजा का प्रश्न ब्रिटिश हुकूमत और वहाँ की अपदस्थ जनता से भिन्न है। वहाँ की जनता को एक विदेशी हुकूमत से अपनी आजादी के लिए स्वातन्त्र्य संग्राम में भाग लेना पड़ा है। लेकिन देशी रियासतों की प्रजा को किसी विदेशी हुकूमत से लोहा नहीं लेना और न अपने अधिकारों के लिए किसी हिंसात्मक संग्राम की ही तैयारी करना है और यहीं ब्रिटिश भारत और देशी राज्यों की जनता में मौलिक मतभेद है। देशी रियासतों की जनता को तात्कालिक आवश्यकता अपने राज्य में सुशासन की है। छोटी-छोटी रियासतों में शासन की कमजोरी प्रायः वहाँ के नरेशों की अयोग्यता में सन्निहित रहती है। यही एक खास वजह है कि जिसके कारण वहाँ की स्थानीय जनता में असन्तोष फैल जाता है। लेकिन यदि इन देशी रियासतों में शासन सुचारुपूर्वक चलने लगे। नरेश जनता के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझने लगें, उनमें और उनकी प्रजा में सामंजस्य स्थापित हो जाये, तो यह भारी असन्तोष अपने आप खत्म हो जाये। जनता, नरेशों को अपने प्रतिनिधि के रूप में मानने लग जाये और प्रतिरोध की जगह सहयोग देने लगे।

जहाँ-जहाँ देशी नरेशों और उनकी रियाया में इस तरह का अमल है वहाँ के राजे अपनी जनता के हृदय पर न्याय और प्रगतिशीलता के कारण शासन कर रहे हैं। वहाँ उनके खिलाफ किसी प्रकार के नारे नहीं सुनने को मिलते। आज जब कि जनता का दृष्टिकोण बदल गया है उनके राजनीतिक विचार पुरोगामी हो गये हैं फिर भी कौन ग्वालियर के स्वर्गीय नरेश श्री माधवराव सिन्धिया, बड़ौदा के सयाजीराव गायकवाड़ और मैसूर के स्वर्गीय नरेश को उनकी प्रजावत्सल नीति के कारण नत होकर प्रणाम नहीं कर लेता?

श्रीमन्त ग्वालियर-नरेश ने भिंड में बिना किसी स्थानिक संस्था को मध्यवर्ती बनाये सीधा अपनी जनता से सम्पर्क बनाया था। वे स्वयं गाँवों में जाकर ग्रामीणों से उनकी कठिनाइयाँ पूछते थे और उनका तुरन्त निवारण करते थे। वे खेतों पर जाते और आवश्यकतानुसार आज की उन्नति के विषय में अधिकारियों को आज्ञा देते। भिंड में अभी आप जब एक मन्दिर में आरती के पश्चात् पुजारी से उस हरिजन को भी 'प्रसाद' वितरित करने का आग्रह किया। पुजारी अपनी संकीर्ण धार्मिक प्रवृत्ति के कारण सकुचाया। श्रीमन्त ने अविलम्ब पुजारी का हाथ हरिजन के सिर पर रखवाकर आशीर्वाद एवं 'प्रसाद' दिलवाया। मन्दसौर में जिस समय बड़ी जोर की बाढ़ आई तथा बाढ़ के कारण जनता वहाँ की आक्रान्त थी उस समय आप स्वयं वहाँ पहुँचे, स्थिति का निरीक्षण किया और अनाथ बच्चों के एक बड़े समूह को अपने साथ ले आये, जिनका रहने, खाने, पीने तथा शिक्षा का प्रबन्ध आपके निज के संरक्षण में महल में किया गया है। भिंड के तथा उसके आस-पास के निवासियों को आपने निमन्त्रित किया है कि वे अपने युवक लड़कों को सैनिक-शिक्षण के लिए राजधानी में भेजें, जहाँ उन्हें सेना-सम्बन्धी उचित शिक्षा दी जायगी और योग्यतानुसार नौकरी भी। आपने अपनी फौज में भी कबीलों की तरह ही जिरगे बना दिये प्रत्येक जिरगे के सिपाही को यह स्वतन्त्र प्राप्त है कि वह अपनी कठिनाई करे। सिपाहियों की इन कठिनाइयों निवारण जिरगे के मुखिया द्वारा कर दिया जाता है। इसी प्रकार युद्ध के मैदानों से लौटी सेनाओं बेकारी के भँवर से बचाने के लिए आजीविका का समुचित प्रबन्ध किया

भिंड में महाराजा सिन्धिया किसानों की एक सभा में शामिल होने जा रहे हैं।

महाराजा सिन्धिया भिंड में किसानों से स्वयं सम्पर्क स्थापित कर रहे हैं।

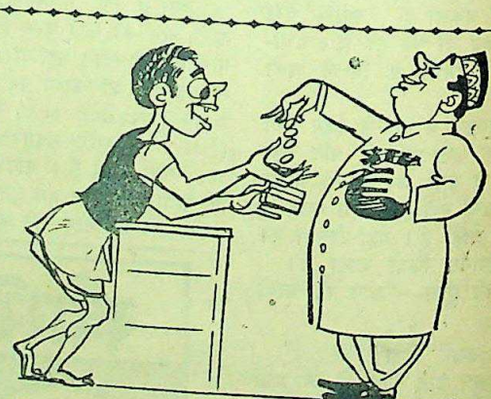

वह लोग जिन्हें रुपया सुगमता से प्राप्त होता है, वस्तुओं के मूल्य बढ़ाने का कारण बन जाते हैं और इस प्रकार साधारण लोगों को जीवन की आवश्यक वस्तुएँ तक प्राप्त नहीं होतीं।

हमाम और ५०१ साबुन को मोल लेते समय उचित फुटकर भाव से अधिक कभी न दीजिए।

हमाम और ५०१ साबुन

दी टाटा आइल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंग-मंच

'मेघदूत'

चित्र-पट पर महाकवि कालिदास की अमर रचना

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

स्वतन्त्र भारत के श्रेष्ठ चित्र-शिल्पी श्री देवकी बोस ने स्वर्गीय गुरुदेव महाकवि कालिदास की अमर काव्य-कृति 'मेघदूत' को रजतपट पर इस भांति प्रस्तुत किया है—"कालिदास जी", सम्राट् विक्रमादित्य ने गम्भीरता के साथ प्रश्न पूछते हुए कहा, "यक्ष किस अपराधवश देश से निकाला गया था?" "राजन! प्रिया का पति धनपति महाराज कुबेर के शरीर-रक्षक सैनिकों के साथ कार्य करता था। उसके गृह में दास-दासियां, धन-सम्पत्ति, नृत्य-संगीत आदि समस्त वस्तुएँ थीं। यक्ष अपने राजकाज को भूल, अपने सेनापति ताम्र-वर्ण की आज्ञा का उल्लंघन करते हुए दैव उसके साथ छाया की भांति प्रेम-गीत गाता तथा सुख-आनन्द के झूले में पेंग भरते समय व्यतीत करता था। इसी कारण-वश उसे एक दिन सैनिक-पद से विचलित कर शिव-पूजा के लिए स्वर्ण कमल लाने का कार्य सौंपा गया। वे प्रत्येक दिन प्रातः-काल होते ही घर से निकल जाते और पूजा के लिए स्वर्ण-कमल ढूँढ़कर राजा को सौंप, घर लौट आते थे। अभाग्यवश शिव-पूजा के अन्तिम-दिवस, जब कि पूजा निर्विघ्न समाप्त होते ही मानसरोवर के समस्त कमल सोने के हो जाते, प्रिया भी उसके साथ हो गई और यक्ष ने हँसी-हँसी में उस स्वर्ण-पुष्प को उसे दे दिया। उसने सोचा था कि दूसरा स्वर्ण-कमल ढूँढ़कर पूजा के लिए दे आऊँगा, परन्तु उसे यह ज्ञात न था कि पूर्ण हिमालय में प्रतिदिन एक ही स्वर्ण-कमल उत्पन्न होता है। राजा की पूजा अधूरी रह गई। इसी अपराधवश यक्ष; क वर्ष के लिए देश से निकाला गया था।" सम्राट् विक्रमादित्य के शयन-कक्ष में बैठी हुई रमणियों तथा सम्राट् के नेत्रों में अश्रु-बिन्दु उमड़ पड़े। "इसके पश्चात्....।" "यक्ष, रामगिरि पर्वत पर अकेला निवास करता था और उधर प्रिया विरहाग्नि में जलती थी। शिला पर बैठे विरही यक्ष का पर्वत की गोद में आषाढ़ के पहले मेघों को निरखते ही, उसकी विरहाग्नि धधक उठी। वह व्याकुल हो उठा। किसी भांति अपने शक्तिहीन शरीर में शक्ति एकत्रित कर वह उठ खड़ा हुआ और अपने दोनों करों में गिरिमल्लिका के पुष्पों को लेकर अंजली देते हुए गा उठा—'ओ वर्षा के पहले बादल! मेरा संदेश ले जाना।' वे पूर्व मेघ उसकी अंजली ग्रहण कर, 'मेघदूत' बन, अलकानगरी के समीप आ पहुँचे। दूसरी ओर प्रिया, सेनापति ताम्रवर्ण के अत्याचारों से पीड़ित हो आकाश-देवता का स्मरण कर रही थी। 'मेघदूत' उस नर-राक्षस पर झपटे। मेघ गरज उठे और दामिनी दमक उठी। प्रिया मूर्छित हो गई, पर वह दुष्ट जीवित रहा। घर में बिजली से लगी हुई अग्नि भी शत्रु हो, उसके वस्त्रों में लग, उसके (प्रिया) कष्टों को सदैव के लिए समाप्त कर देना चाहती थी, परन्तु विधान की इच्छानुसार—जब प्रिया ने नयन खोले तब स्वयं को अपने स्वामी की गोद में पाया और बीत गयीं सब दुख की रातें, आया सुख का सवेरा।"

महाकाव्य 'मेघदूत' को चित्रित करने के लिए कथाकार श्री देवकी बोस को कुछ परिवर्तन करने पड़े हैं 'मेघदूत' के स्वयं एक महान् कल्पित कथानक होने के कारण यह परिवर्तन सिनेमा-प्रेमियों को किंचित्मात्र भी नहीं खटकते; परन्तु साहित्य-मर्मज्ञों को कांटे के समान खटकते हैं। ऐसा करके लेखक ने स्वर्गीय आत्मा को शान्ति प्रदान करने के बजाय अपमान करने का दुस्साहस किया है; परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं है कि कहानीकार ने प्रस्तुत चित्र को अत्यधिक प्रभावशाली एवं लोकप्रिय बनाने के लिए प्रत्येक स्थान पर अपनी पूर्ण प्रतिभा का परिचय दिया है। हास्यरस के दृश्यों में उछल-कूद आ जाने के कारण उसमें 'दोष' की भी उत्पत्ति हो गई है। पंडित नरोत्तम व्यास द्वारा लिखित संवाद सुन्दर, मनोरंजक एवं सफल हैं। कथोपकथन की भाषा शुद्ध हिन्दी, मधुर तथा सुन्दर होने के कारण पूर्ण चित्र में काव्य-सा आनन्द बिखर पड़ा है। व्यास जी का परिश्रम सराहनीय है। सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री कमलादास गुप्ता के भावुक, कलात्मक व उच्च कोटि के संगीत-निर्देशन ने चित्र एवं गीतों की लोकप्रियता में और चार चांद लगा दिए हैं। मधुर साजों का प्रयोग किया गया है। चित्र-लेखन अत्यन्त कलात्मक, आकर्षक एवं उच्च श्रेणी का है। किसी-किसी स्थान पर प्रतीकवाद के चित्रण भी प्राप्त होते हैं। अनेक अवसरों पर श्री ईरानी, घोष तथा पाटिल जी की 'फोटोग्राफी' ने विदेशी 'फोटोग्राफरों' से टक्कर लिया है। कला-निर्देशक श्री चारुराय ने कला का महानतम सदुपयोग किया है। आपने 'कृष्ण-लीला' में आप अत्यधिक फबे हैं। 'भरत-मिलाप' के पश्चात् आपका अभिनय प्रस्तुत चित्र में ही देखने योग्य है। गीतों की मधुरता के लिए सुप्रसिद्ध जगमोहन (साहू मोदक के 'बैकग्राउन्डर') श्रेयकर हैं। अत्यन्त कलात्मक, स्वाभाविक तथा चिर-स्मर्णीय अभिनय व नृत्य प्रिया की कल्पना में लीला देसाई ने अभिभूत किया है। यद्यपि हास्यमुख के रूप में आगाजान ने 'एक्सीलेन्ट-ह्यूमरस-ऐक्टिंग' की है; परन्तु अत्यधिक उछल-कूद की उपस्थिति हो जाने के कारण 'दोष' की भी उत्पत्ति हो गई है। सेनापति ताम्र-वर्ण के कलाकार हरि शिवदसानी ने अस्वाभाविकता व असफलता का परिचय दिया है। महाराज कुबेर की काया के कलाकर्ता वास्ती के अभिनय में किसी भी स्थान पर सजीवता नहीं दृष्टिगोचर हुई है। शेष पात्रों का कार्य उल्लेखनीय नहीं है।

सदैव नूतनता को महत्त्व प्रदान करने-वाले ख्यातिप्राप्त लेखक–निदेशक–निर्माता श्री देवकीकुमार बोस ने ही "मेघदूत" का दिग्दर्शन किया है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि दिग्दर्शक के उच्च कोटि के कलापूर्ण-निर्देशन का रसास्वादन, दर्शक इस चित्र में आद्योपान्त करेंगे। अभाग्य-वश हमारे अनेक साहित्य-प्रेमियों को भारत के 'जीनियस' दिग्दर्शक श्री देवकी बोस किसी भी भांति सन्तुष्ट नहीं कर सके हैं।

संक्षेप में "मेघदूत" महाकवि कालि-दास की अमर रचना का कलात्मक शृंगारमय चित्र तथा दर्शनीय कृति है।

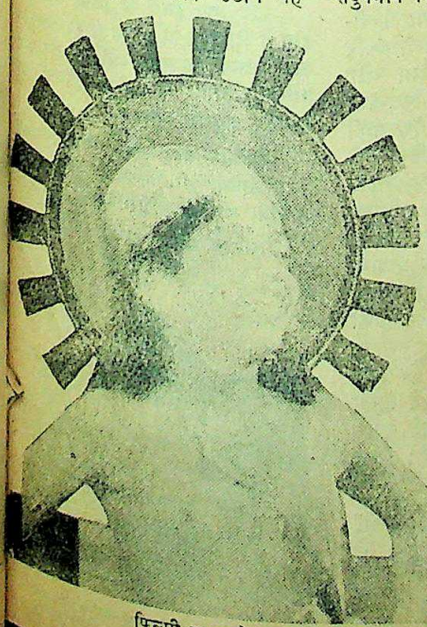

फिल्मी जगत के प्रसिद्ध अभिनेता साहूमोदक।

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं, हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तेल के सेवन से बालों का पकना रुककर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। दिमाग को तर कर आँख की ज्योति को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो मूल्य वापिस की शर्त लिखा लें। मूल्य २॥), बाल अधिक पक गया हो ३॥), सब पका हो ५) रु० का तेल मँगा लें।

आर्य्य हितैषी औषधालय
पो० बेगु सराय (मूँगेर)

अपना-पराया

पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' लिखित इस मनोरंजक उपन्यास में एक चीनी तरुणी का मेनका-नृत्य जहाँ आपको आत्म-विभोर कर देगा, वहीं तिब्बत और चीन की नैसर्गिक छटा और वहाँ के अजीबोगरीब रस्म-रिवाज भी आपके सामने नाच उठेंगे। चीन की यह रहस्यमयी तरुणी किस प्रकार भारत आती और अपने धर्म तथा स्वदेशा-भिमान की रक्षा कर, एक भारतीय नौसैनिक की सहायता से अपने देश लौट जाती है, आदि प्रसंग आपको प्रणय की रंगीनियों का सजीव परिचय देंगे। पृष्ठ २३२, सजिल्द और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २॥) रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

राष्ट्र-भाषा हिन्दी ही है

आज विश्व में आंधियां हैं, झड़ी है, वेग है, उथल-पुथल एवं भयंकर चीत्कार है। संघर्ष तथा भरण के पाटों के मध्य संसार के अनेक प्राणी पिस रहे हैं। स्वदेश में वर्षों से स्वतंत्रता प्राप्ति के हेतु जो आन्दोलनात्मक बिगुल बज रहा था वह नाद अब शान्त है। कारण? सदियों की दासत्व की लौह-शृंखलाओं को तोड़कर आज हमने अपने प्राणों की कसक एवं वेदना का बहुत अंश में चिकित्सक आयोजन किया है।

कहने की आवश्यकता नहीं चिकित्सा-विधान में अभी अनेकानेक अभाव उपस्थित हैं। स्वतंत्रता अभी अत्यन्त ही शैशवावस्था में है। हमारी तड़प, हमारी पीड़ा उस समय तक कदापि बन्द न होगी जब तक हम अपनी मातृ-भाषा का स्वागत न करेंगे। जब तक हम स्वच्छन्द रूप से उसे अपनाकर अपने विचार उसमें प्रकट न करने लगेंगे, जब तक हम अपने नेत्रों से उसका प्रसार समस्त देश में न देख लेंगे, जब तक हम अपनी जननी मातृ-भाषा में सबको बोलते न सुन लेंगे, हमारे हेतु स्वतंत्रता केवल नाम की स्वतंत्रता रहेगी। हमारी भाषा हिन्दी एवं शुद्ध हिन्दी है। कोई भी दोगली भाषा उसका अपमान करने की भी अधिकारिणी नहीं हो सकती। हिन्दुस्तानी नामक कोई भाषा ही नहीं है। यदि इस प्रकार हिन्दुस्तानी की ठूसठांस की जावेगी तो हमारी चिरंतन-मातृ-भाषा के साथ अन्याय ही न होगा, वरन् उस पर कुठाराघात करना होगा। नई वधू के पीछे गृह की लक्ष्मी का अपमान करने के तुल्य होगा।

हमारा शब्द-कोष कदापि दरिद्र नहीं। हमारी भाषा की व्यंजना-शक्ति कदापि कम नहीं। हमारी भाषा में अमूल्य रत्न हैं। हम जिस [illegible] अवगाहन [illegible] नूतन रत्न [illegible] उसमें हमा[illegible] है तो छोटी रियासतों में शासन की हम अपने[illegible] भरण-पो[illegible] इसका [illegible] विशेष [illegible] क्या हम[illegible] हमारे [illegible] है? या[illegible] क्या अ[illegible] भरा-पूर[illegible] लाप एव[illegible] नहीं, त[illegible] भंडार [illegible] साहित्य[illegible] द्योतक [illegible] कि हम[illegible] की क्ष[illegible] यह श[illegible] बात अ[illegible] किन्तु [illegible] मातृ-भ[illegible] ठहराई[illegible] जिसका[illegible] हुआ है,[illegible] हुई राष्ट्र-भाषा बन बैठे। जिस भाषा का न कोई साहित्य है न कोई विधान, वह उस उच्च आसन की अधिकारिणी हो एवं साहित्यसंपन्ना हमारी मातृ-भाषा उसका मुंह ताके। जब हमारी भाषा सब प्रकार से समृद्धशालिनी है तो क्या कारण है कि एक विचित्र भाषा का आविष्कार किया जाये यदि हमको यह भय है कि हमारे मुस्लिम भाई हिन्दी को विलम्ब से समझेंगे अथवा इसको आत्मसात न कर सकेंगे तो मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि वे हमारे हिन्दू भाइयों से भी सुगमता से हिन्दी भाषा को शीघ्र ही सीख सकेंगे। यह मानी हुई बात है कि हिन्दी, उर्दू से सरल है और हमारे मुस्लिम भाई शब्दों का उच्चारण भी स्पष्ट करते हैं। एतदर्थ उच्चारण एवं पढ़ना दोनों ही दृष्टियों से हमारे समस्त भारतीय मुस्लिम भाई एवं बहिनें हिन्दी को अति शीघ्र सीख सकेंगे। मेरे विचार से जो सज्जन 'अँगरेजी जैसी विदेशी भाषा को पढ़ सकते हैं, वे भला जिस भाषा से आठों पहर संसर्ग में रहते हैं, क्यों और कैसे न सीख सकेंगे?

यद्यपि हमारे श्रद्धेय माननीय महात्माजी केवल इसी हेतु कि दोनों जातियों में प्रेम एवं मेल रहे, राष्ट्र-भाषा हिन्दुस्तानी बनाने की अनुमति देते हैं किन्तु जब हम इस विषय पर भले प्रकार दृष्टि डालते हैं तो हिन्दी किसी प्रकार भी हमारे प्रेम-व्यवहार में बाधक सिद्ध होती नहीं दिखलाई पड़ती। यह तो सबको एक प्रेम-सूत्र में बांधने का आयोजन करेगी। हां, यदि बाधक सिद्ध होगी तो हिन्दुस्तानी ही; क्योंकि उसका न कोई साहित्य है और न इतिहास। यह खिचड़ी भाषा कभी हमें स्वतंत्रतापूर्वक विचार व्यक्त न करने देगी। जब हम अपने विचार ही ठीक ठीक एक दूसरे तक न पहुँचा सकेंगे तो स्वभावतः हम एक दूसरे के आशय को भली प्रकार न समझ सकेंगे। फलस्वरूप भ्रान्ति का बीजारोपण होगा और परिणाम वही होगा जो इस असावधानी का होना अनिवार्य है।

एतदर्थ मैं पुनः यही कहूँगी हमारी [illegible] संकीर्ण धार्मिक प्रवृत्ति के कारण से एवं [illegible] चाया। श्रीमन्त ने अविलम्ब पुजारी [illegible] हाथ हरिजन के सिर पर रखवा[illegible] आशीर्वाद एवं 'प्रसाद' दिलवाया। महि[illegible] सौर में जिस समय बड़ी जोर की [illegible] आई तथा बाढ़ के कारण जनता वहां [illegible]

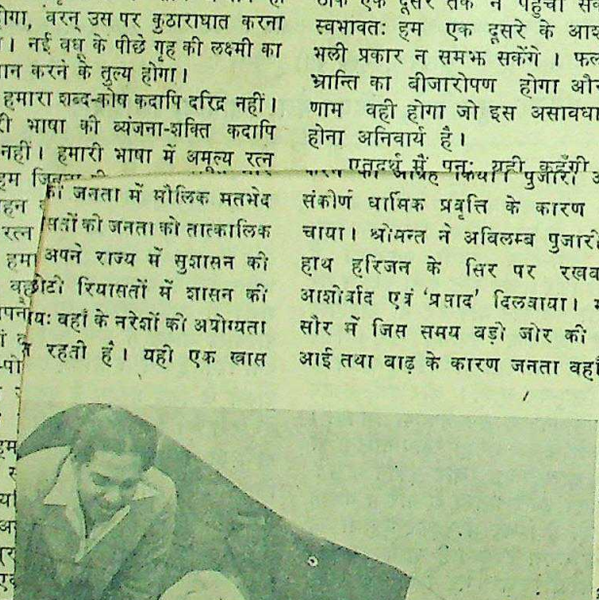

रिवाज है कि जिस परिवार में किसी की मृत्यु हुई हो, वह परिवार वर्ष भर तक कोई त्योहार नहीं मनाता, मृतक के लिये साल भर तक इस रूप में शोक प्रदर्शित किया जाता है।

दीवाली की दुपहर में चावलों और साबूं के चावलों का भात तैयार जाकर उनके बहुत से पिंड बनाते हैं और गाय, भैंस, बैल आदि पशुओं को ये पिंड उन्हें खूंटे से खोलकर खिलाये जाते हैं। उनके मस्तकों पर रोली और सींगों पर तेल लगाया जाता है, भीमल की लकड़ी के छोटे-छोटे गट्ठे परिवार के पुरुषों की संख्या मुताबिक बनाये जाते हैं और उन्हें विधिपूर्वक पूजा जाकर दीवार के सहारे खड़ा कर दिया जाता है, रात्रि में पक्वान्न बनाये जाते हैं और पुनः बायना बांटा जाता है, पर यह बायना बांटना रात्रि को गांव तक ही सीमित रहता है, भोजन करने के बाद दास लोग (बाजे बजानेवाली जाति विशेष) ढोल दमाऊँ बजाते हुए पंचायती चौक में—जो कि प्रत्येक गांव में होता है—आते हैं और तब गांव के सब लोग लकड़ी के उन गट्ठों को जिन्हें भैला कहा जाता है एक सिरे को जलाकर हाथों में लेकर उस चौक में इकट्ठा होते हैं और तब नाचते हुए "भैलो भैलो" के नारे लगाकर गांव के आस-पास कुछ दूर तक घूमते हैं और फिर लौटकर उसी पंचायती चौक में आकर भैले को जांघों के बीच घुमा-फिराकर वहां पर पटक देते हैं और कहते हैं कि हमारी सब 'रौड़ाण-झौड़ाण" दुखः दरिद्र) दूर हो जाय।

कहा जाता है कि ऐसा करने से घर में खटमल, पिस्सू आदि जीव और फोड़ा-फुन्सी-खुजली रोग नहीं होते। फिर इस त्योहार की खुशी में रात भर पांडव नृत्य होता है, कोई कोई पीठ पर रस्सी बांध कर उसके दूसरे छोर पर दोनों सिरों से जलते हुए भैले को बांधकर उकड़ू होकर पीठ के सहारे इस प्रकार घुमाते हैं कि वह शरीर को नहीं छू पाता इसके घुमाने का ढंग कलापूर्ण होता है इसे 'पिठ भैलो" कहते हैं।

दूसरे दिन लक्ष्मी-पूजा होती है, दिये जलाये जाते हैं इस रोज की दीवली को "राज वग्वाल कहते हैं, पर इस रोज बहुत कम घरों में ही उत्सव मनाया जाता है, इस नरक चतुर्दशी के बाद शुक्ल पक्ष की एकादशी को भी दीवाली (एकाश) मनाई जाती है पर धूम-धाम से नहीं।

गढ़वाल क्या दीवाली मनायेगा, दरिद्रता उसकी चिर सहचरी हो चुकी है और आज के इस मँहगाई के युग में जब बाजरा भी भरपेट नहीं मिल रहा है, क्या दीवाली होगी? पर लकीर तो पीटनी है ही।

गढ़वाल, १० नवम्बर ४७ —निर्मोही

* * *

रेडियो और हिन्दी के नवीन रचनाकार

आल इंडिया रेडियो की विगत हिन्दी-विरोधी नीति से समस्त हिन्दी-संसार परिचित है। अब समय बदला और भारत के राजनीतिक क्षितिज पर स्वतन्त्रता का नवोदय हुआ। अतः सभी नौकरशाही प्रवृत्तियां बदल रही हैं। रेडियो की नीति भी बदली है; किन्तु चूंकि उसका रोग बड़ा भीषण था इसलिए उस सन्निपात के दूर हो जाने पर भी अभी स्वास्थ्य के दिन आने में देर है। हिन्दी के प्रोग्रामों की बाढ़ तो है, पर रेडियो के अधिकारी नवीन और उदीयमान साहित्यकारों की जिस प्रकार उपेक्षा कर रहे हैं, वह साहित्य के भावी निर्माण और विकास के लिए वांछनीय नहीं। आज हमारे सामने हिन्दी के कुछ नये लेखक और कवि बड़े सुन्दर भविष्य के साथ आगे बढ़ रहे हैं। किन्तु उनके सामने सबसे बड़ी अड़चन यह है कि वे न तो कम्यूनिस्टों के प्रगतिशील लेखक-संघ के विधि सदस्य हैं और न उन्हें यूनिवर्सिटियों के दिग्गजों का आशीर्वाद ही मिल सका है। मुझे तो एक प्रवृत्ति [illegible] स्टेशन में स्पष्ट लक्षित होती है कि वहां तो वे ही बुलाये जाते हैं जिनको वे स्थाति के कारण उपेक्षित छो[illegible] नहीं जा सकता, या जिन पर 'प्रगा[illegible] 'निस्ट' आदि का विल्ला लगा है [illegible] जिनकी कोई गुटबन्दी है और [illegible] एक दूसरे को आभारी बनाते रह[illegible] इधर पत्र उनका स्तोत्र गा रहे हैं [illegible] उधर रेडियो का रूम उनके कवि[illegible] से निनादित हो रहा है। प्रयाग [illegible] कवियों में धर्मवीर भारती, [illegible] श्रीपालसिंह 'क्षेम', महेन्द्र, [illegible] नारायण शाही, कुसुम, जगदीशप्रसाद [illegible] 'विश्व', केशवचन्द्र वर्मा, गिरिधर [illegible] तथा लेखकों में श्री डाक्टर [illegible] गुप्त, रघुवंश (रिसर्च स्कालर), [illegible] पाण्डेय आदि हैं। इनकी रचनाएं [illegible] युग का निर्माण कर रही हैं। [illegible] गण्यमान्य हिन्दी के रचनाकार [illegible] जो नव-साहित्य की नींव चुन रहे [illegible] शायद रेडियो के लायक समझे [illegible] जाते। हम पूछते हैं कि आखिर [illegible] विभाग प्रगतिवाद की ओट [illegible] कम्यूनिज्म को प्रश्रय कब तक देता [illegible] और हिन्दी के नवोदित कलाकारों [illegible] कब तक उपेक्षा करता रहेगा?

प्रयाग —श्रीकंठलाल शुक्ल [illegible]
१५ नवम्बर, ४७

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं। हमारे आयुर्वे[illegible] सुगन्धित तैल के सेवन से बालों का [illegible] रुककर सफेद बाल जड़ से काला हो [illegible] है। यह दिमाग को तरकर आँख [illegible] ज्योति को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास [illegible] मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। [illegible] २॥), बाल अधिक पक गया हो [illegible] सब पका हो ५) का तैल मँगा लें।

विश्व कल्याण औषधालय,
पो० कतरी सराय (गया)

एक खुराक पेट दर्द [illegible] नष्ट करती है।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर [illegible] व्यापक ख्याति अम्लता, उदर-वायु, [illegible] दाह, पेट दर्द, वमन, पित्त-प्रकोप [illegible] पाचन-सम्बन्धी शिकायतों से पैदा [illegible] वाले अन्य रोगों में प्रभावशाली होने [illegible] मान्य प्रमाण है।

उदर-विकारों से उत्पन्न [illegible] उदासी, अनिद्रा और हृदय की तीव्र [illegible] कन में भी यह अमूल्य है।

यदि आप इनमें से किसी कष्टकर रोग से पीड़ित हैं तो आज ही कुछ मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर लीजिए और इस प्रसिद्ध औषधि की शीघ्र सांत्वना स्वयमेव अनुभव कीजिए।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर [illegible] समय "एलेक्स सी० मेकलीन" के हस्ता[illegible] पहचान लीजिए क्योंकि असली यही है।

मेकलिन ब्रांड स्टमक पाउडर सेवन कीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी का रंगमंच

मुस्लिम लीगी नेता का भारतीय संघ के विरुद्ध षड्यन्त्र

महंत दिग्विजयनाथ क्या प्रांतीय मंत्रिमंडल में आना चाहते हैं ?—शरणार्थियों पर १० लाख से अधिक—स्वास्थ्य-चिकित्सा-विशेषज्ञ समिति—प्रांतीय कांग्रेस कमेटी—प्रांतीय मुस्लिम लीगी कौंसिल की बैठक

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

चौधरी खलीकुज्जमा के भाई चौधरी मुशफीकुज्जमा की तलाशी लिए जाने पर उनके पास से बरामद कागजात से उनके संघ के विरुद्ध इस प्रान्त के कुछ मुस्लिम अफसरों के षड्यन्त्र की कुत्सित कहानी कहते हैं। ये अफसर भारत के प्रति राजभक्ति की शपथ ग्रहण कर चुके हैं और उनसे इस देश के शासन के प्रति निष्ठा की ही आशा की जा सकती है। किन्तु उन्होंने भारत में रहकर यहां के गोपनीय रहस्य पाकिस्तान को बताने और उचित अवसर पर पदत्याग करके पाकिस्तान पहुँच जाने का षड्यन्त्र करके अपने को अत्यन्त विषम स्थिति में डाल लिया है। उनका खेल खत्म हो चुका है, क्योंकि सरकार को उनके वीभत्स षड्यंत्र का पता चल गया और उनके इस देशद्रोह पर न्याय विचार करके उनको समुचित दण्ड दिया जायगा, इसमें सन्देह नहीं।

* * *

किन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि ऐसे विकट कागज-पत्र बरामद होने के बावजूद चौधरी मुशफीकुज्जमा को चला फिरने जाने दिया गया। मुशफीकुज्जमा ने यद्यपि सरकारी तौर पर कहीं भारत के प्रति राजभक्ति की शपथ नहीं ली थी और वह अपने को पाकिस्तान का नागरिक घोषित करने को स्वतन्त्र था; परन्तु पाकिस्तान अथवा विश्व के किसी भी राष्ट्र के नागरिक को यह अधिकार नहीं है कि वह किसी अन्य राष्ट्र में जाकर वहां देशद्रोह का प्रचार करे, वहां के अफसरों को शासन के विरुद्ध भड़काए अथवा उनके षड्यन्त्रों में शामिल हो। यदि वह ऐसा करता है, तो एस्पाइनेज ऐक्ट के अन्तर्गत वह दण्डनीय है।

* * *

प्रान्तीय हिन्दू-सभा के अध्यक्ष महन्त दिग्विजयनाथ मंत्रिमंडल में शामिल होने की धुन में हैं। पिछले दिनों वे लखनऊ में एक सप्ताह तक चक्कर काटते रहे। पहले तो उन्होंने दो तीन सार्वजनिक सभाओं में नेहरू को हटाकर पटेल को प्रधान मंत्री बनाने का नारा लगाया। उसको व्यर्थ जाते देखकर उन्होंने कांग्रेस मंत्रिमण्डल पर काश्मीर का हिन्दू राज्य शेख अब्दुल्ला के हाथ बेच देने का आरोप लगाया। पर यह तीर भी व्यर्थ गया, तो कहने लगे कि काश्मीर की रक्षा के लिए हिन्दू कांग्रेस मंत्रिमंडल को पूरी सहायता देने के लिए तैयार हैं, बशर्ते मंत्रिमंडलों में हिन्दू-सभा के प्रतिनिधियों को लेकर हिन्दुओं का विश्वास प्राप्त कर लिया जाए। हिन्दुओं के इस स्वयंभू नेता से कोई पूछे कि हिन्दू-सभा को हिन्दुओं का कितना विश्वास प्राप्त है? हिन्दुओं पर हिन्दू-सभा के प्रभाव की मात्रा तो विगत १ अगस्त को ही देख ली गई, जब महन्त जी गिरफ्तार हुए और एक चिड़िया भी न चिहुँकी।

* * *

प्रधान मंत्री के पार्लामेण्टरी सेक्रेटरी श्री गोविन्द सहाय का कहना है कि प्रान्तीय सरकार शरणार्थियों की सहायता पर १० लाख से अधिक रुपया व्यय कर चुकी है। प्रान्त में लगभग ३ लाख शरणार्थी हैं; किन्तु प्रायः सभी बनियापेशा, सभी व्यापार लाइसेंसों के उम्मीदवार। यदि उनमें से कुछ कारीगर वर्ग के, जैसे दर्जी, लोहार आदि होते तो उनको काम दिलाने में आसानी होती। फिर भी सरकार ने २,००० शरणार्थियों को नौकरी दिला दी है और एक लाख को व्यापार लाइसेंस दे दिए हैं। इसके अतिरिक्त जो शरणार्थी खेती के काम में लगना चाहें, उनको तराई, भावर, लखीमपुर, बुन्देलखण्ड आदि प्रदेशों में बसा दिया जाएगा और हल बैल आदि खरीदने के लिए उन्हें आर्थिक सहायता भी दी जायेगी।

* * *

इस प्रान्त में स्वास्थ्य तथा चिकित्सा-व्यवस्था के पुनर्गठन के लिए मंत्रिमंडल ने विशेषज्ञों की जो समिति नियुक्ति की थी, उसने प्रान्त में वीभत्स रोगों के विस्तार पर बड़ी आशंका प्रकट की है। समिति का कहना है कि क्षय, कोढ़ तथा वीर्यरोग प्रान्त में प्रचुर मात्रा में तथा व्यापक रूप से फैले हुए हैं। वीर्य रोग तो घर घर है और उसका मुख्य कारण अपौष्टिक भोजन है। किन्तु वीर्य रोगों के वीभत्स स्वरूप, जैसे उपदंश सुजाक आदि भी सामाजिक कुरीतियों एवं दैन्यावस्था के कारण प्रचलित हैं। साथ ही उनकी चिकित्सा की कोई समुचित व्यवस्था नहीं है। समिति ने सिफारिश की है कि लखनऊ तथा आगरा में उनकी चिकित्सा के लिए एक-एक अस्पताल खोला जाए, जिनमें रोगियों के नाम और रोग गुप्त रखकर चिकित्सा की व्यवस्था की जाए। कोढ़ के इलाज के लिए भी सरकार से एक प्रान्तीय कुष्ट अफसर नियुक्त करने की सिफारिश समिति ने की है। क्षय की चिकित्सा के लिए प्रत्येक जिला अस्पताल में व्यवस्था करने एवं कानपुर, लखनऊ आदि सात प्रमुख नगरों में प्रथम श्रेणी के क्षय-चिकित्सालय खोलने की भी समिति ने सरकार से सिफारिश की है।

* * *

प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी अपने प्रचार-कार्य एवं संघटन-कार्य के लिए वैतनिक कार्यकर्ता रखेगी और इसके लिए एक 'राष्ट्रीय सेवा-निधि' स्थापित करने का निश्चय उसने किया है। इस निधि के लिए जिला कांग्रेस कमेटियां धन संग्रह करेंगी, जो प्रान्तीय कांग्रेस को भेज दिया जायगा और वही उसका हिसाब भी रखेगी। जिस क्षेत्र से जितना धन संग्रहीत होगा, वह उसी क्षेत्र में व्यय किया जाएगा। कार्यकर्ताओं का चुनाव जिला कांग्रेस कमेटियां करेंगी और उनकी सिफारिश पर प्रान्तीय कांग्रेस उनका वेतन निर्धारित करेगी।

* * *

मुस्लिम लीग में लीगी कार्यकर्ताओं की कितनी दिलचस्पी रह गई है, यह इसी से स्पष्ट हो जाता है कि विगत रविवार को लखनऊ में प्रान्तीय लीग कौंसिल की बैठक होने पर उसके २५० सदस्यों में से केवल २१ प्रतिशत अर्थात् कुल ५४ सदस्य उपस्थित हुए और उनमें से दो चार उलेमा और धर्माचार्यों को छोड़कर अधिकांश इस मत के थे कि लीग को भंग कर दिया जाए और उसके स्थान पर कोई साम्प्रदायिकताहीन राष्ट्रवादी दल बनाया जाए।

* * *

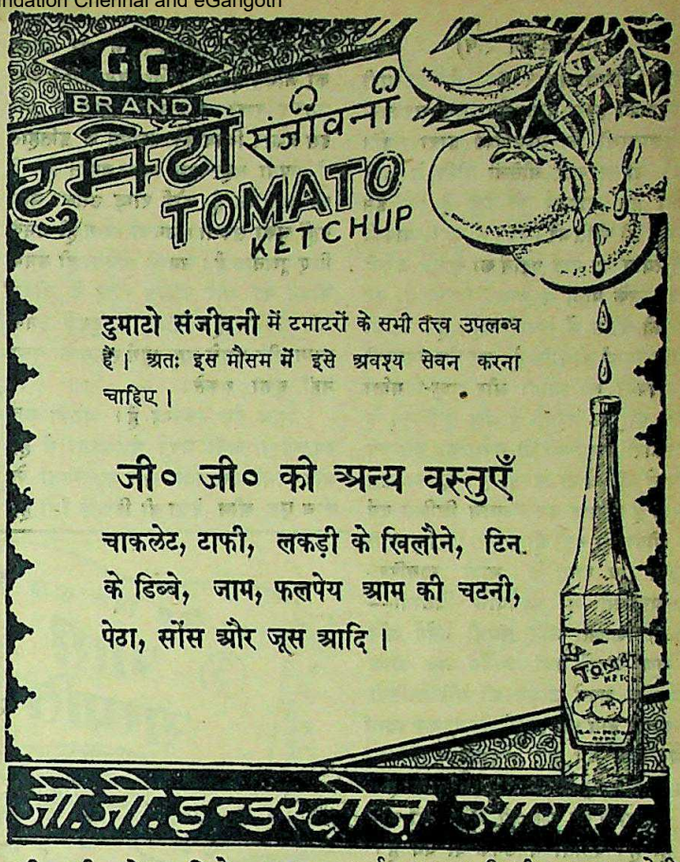

जी० जी० सेल्स डिपो—आगरा, बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, कानपुर, बरेली, ग्वालियर, अमृतसर, पटना, देहरादून, अजमेर।

Copyright
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पेज ६ का शेष)

जितना शिक्षा-प्रचार इन गैर-सरकारी अध्यापकों द्वारा होता है, उतना सरकारी पाठशालाओं के अध्यापकों द्वारा नहीं। फिर भी सरकार सौतेली नीति से काम लेती है। आश्चर्य तो यह है कि इस प्रकार की नीति बरतने पर भी वह अध्यापकों को त्याग का पाठ पढ़ाने का साहस करती है। उसके पाठों में सचाई अवश्य है, पर उसकी नीति में सचाई नहीं है। उसकी नीति स्वार्थ की नीति है। वह गैर-सरकारी अध्यापकों को त्यागी और राष्ट्र-निर्माता होने का पाठ पढ़ाती है और उसी वर्ग के सरकारी अध्यापकों को अपेक्षाकृत सुसम्पन्न बनाने की चेष्टा करती है। इसका फल स्पष्ट है। राष्ट्र का कल्याण शिक्षित वर्ग के शोषण से नहीं हो सकता। राष्ट्र तभी उठेगा जब राष्ट्र के भावी नागरिक-पाठशालाओं में पढ़नेवाले विद्यार्थी—सबल, शिक्षित और संयमी बनेंगे और ये गुण उनमें तभी आयेंगे जब उनके अध्यापक अपने जीवन की परिस्थितियों से सन्तुष्ट होंगे। समाज में उनका एक स्थान होगा और वह यह समझने लगेंगे कि वास्तव में राष्ट्र को उनकी आवश्यकता है।

किसानों की दशा भी अध्यापकों की-सी ही है। देहातों में उनके दो वर्ग हैं। कुछ ऐसे किसान हैं जिनके पास खेती के लिए पर्याप्त भूमि है और कुछ ऐसे हैं जिनके पास आवश्यकता से कम खेती है। आवश्यकता से कम खेती करनेवाले किसान मिलों और कारखानों में काम करने के लिए विवश हैं। वे किसान भी हैं और मजदूर भी। ऐसी दशा में किसानों द्वारा राष्ट्र को जो लाभ होना चाहिए वह नहीं हो रहा है। उनका शोषण सरकारी कर्मचारियों [illegible] द्वारा होता [illegible] हैं। उनकी [illegible] लाभदायक [illegible] प्रथा तोड़ [illegible] हो सकता [illegible] अन्ततोगत्वा [illegible] पर बना [illegible] हैं, वही [illegible] अपनी [illegible] है? [illegible] क्या अ [illegible] भरा-पूरा [illegible] लाप एवं [illegible] नहीं, त [illegible] भंडार [illegible] साहित्य [illegible] द्योतक [illegible] कि हम [illegible] की क्ष [illegible] यह शि [illegible] बात अ [illegible] किन्तु [illegible] मातृ-भ [illegible] ठहराई [illegible] जिसका [illegible] हुआ है, [illegible] सकते हैं, अधिकारों के कारण नहीं। राष्ट्र में उनका स्थान पारिवारिक जीवन में माता का स्थान है। माता अधिकारों के बल पर परिवार का कल्याण नहीं कर सकती। वह त्यागी बनकर ही परिवार को सुखी बना सकती है। अध्यापक और किसान का भी जीवन त्याग और साधना का जीवन है। वे पार्थिव विभूतियों से ऊँचा उठकर राष्ट्र को ऊँचा उठाते हैं और इस प्रकार विश्व की सभ्यता के इतिहास में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाते हैं। वे जो दान देते हैं, कोई राष्ट्र उसका मूल्य नहीं चुका सकता। उनका त्याग ही उनके लिए पूजनीय है। उनकी साधना ही उनके जीवन का और समस्त राष्ट्र के जीवन का आकर्षण है। चाँदी के टुकड़े उनके त्याग और उनके महत्त्वपूर्ण स्थान का मूल्य नहीं चुका सकते।

आज हम स्वतन्त्र हैं। यद्यपि यह स्वतन्त्रता अभी अपने शैशवकाल में है, और अभी परतंत्रता और स्वतन्त्रता के बीच एक क्षीण रेखा ही दिखाई देती है, तथापि उन दोनों वर्गों का उत्तरदायित्व कम नहीं किया जा सकता। यदि वे इस बात का अनुभव करते हैं कि राष्ट्र के वही वास्तविक संरक्षक और पोषक हैं तो उन्हें अपने कर्तव्यों का पालन करना होगा। उन्हें अपने त्याग और तपस्या से राष्ट्र को इस बात का अनुभव कराना होगा कि वे उसके प्रमुख अंग हैं और वे ही उसके सबल स्तम्भ हैं। उन्हें सन्तोष से काम लेना होगा और उन्हें राष्ट्र के सामने अपनी योग्यता का परिचय देना होगा। जब तक राष्ट्र को उनकी आवश्यकता का अनुभव नहीं होगा तब तक उनकी दशा में किसी प्रकार का सुधार होना स्वप्न की बात है।

अन्तू सरदार

भरोस सरदार के लड़की है कोई सन्तान न थी। और भरोस था लठैत जिससे पुलिस भी डरती थी। जमींदार के यहाँ भरोस नौकर था। अपनी बेटी को भी लाठी चलाना दिया था। इसका ब्याह जिस (अन्तू) से किया गया था वह भी सवाया था। एक झमेले में वही काट हुई। इसमें अन्तू की स्त्री भी गई और भतीजा प्रताप पागल गया। पुलिस ने अन्तू को गिरफ्तार सज़ा करा दी। इधर प्रताप भी चल यह कहानी है तो बड़ों के लिए भी परन्तु बच्चों को बहुत पसन्द आ सुन्दर सरल भाषा, कई चित्र और पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल बारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहा

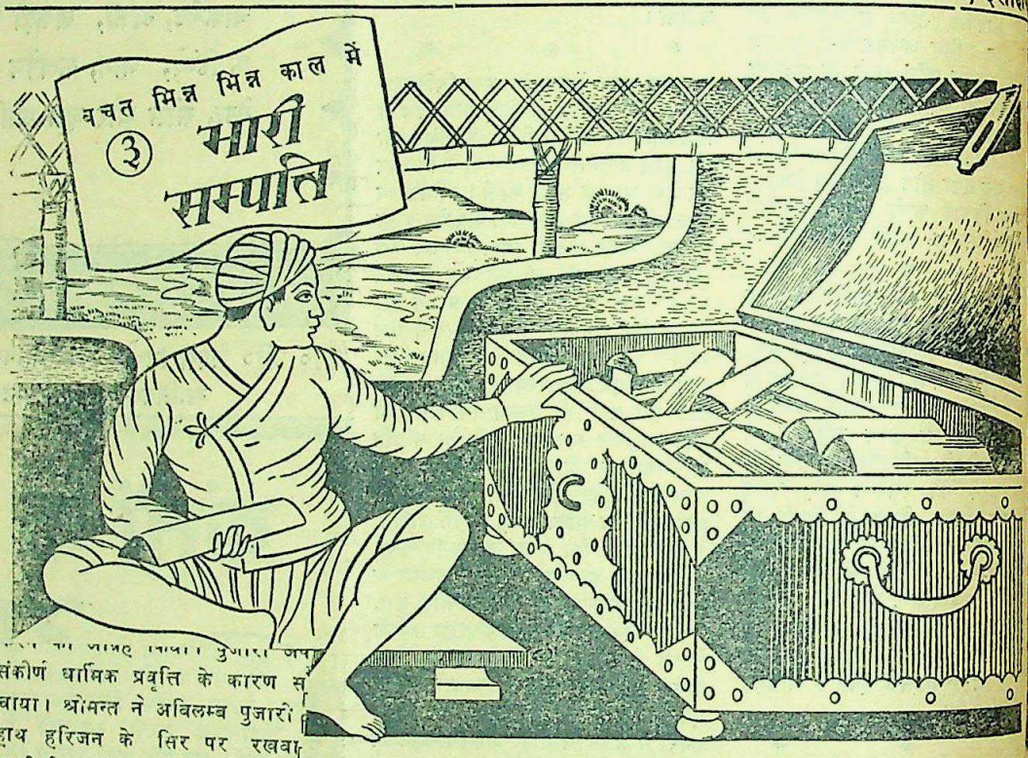

संकीर्ण धार्मिक प्रवृत्ति के कारण स चाया। श्रीमन्त ने अविलम्ब पुजारी हाथ हरिजन के सिर पर रखवा आशीर्वाद एवं 'प्रसाद' दिलवाया। म सौर में जिस समय बड़ी जोर की आई तथा बाढ़ के कारण जनता वहाँ

की बजाय सांकेतिक द्रव्य अर्थात् बकरी आदि देकर माल-खरीदने का व्यवहार के विषय में मनुष्य की उन्नति की ओर एक बड़ा महत्व पूर्ण पग था। परन्तु । सब बकरियां एक जैसी नहीं होती थीं। दुर्बल और दोषी बकरियों के बदले में समस्या बन गई। रोग, व्याधि इस सम्पत्ति को प्रायः नष्ट कर देते थे। व्यापार , जो स्वभाव से ही काल्पनिक है, कोई श्रेष्ठतर द्रव्य खोज निकालने पर विवश ओं पर पड़ी। धातु नष्ट न होने वाली और निश्चय से एक समान रहने वाली रक व्यवहार लोहे, तांबे या सीसा आदि की सलाखों या उनके ढले हुये डलों द्वारा

लिये मनुष्य को किसी न किसी धातु की भारी सलाख या डले को लिये लिये ण भविष्य के लिये बचत करने की इच्छा से लोग धातुओं का संग्रह करने लगे। न के भार से दबे हुये थे! कच्ची धातुओं की खानों में खोज की तीव्रता के साथ ा था, और नफ़ाखोर शुद्ध धातुओं को दूषित कर देते थे।

या बचत करने में विशेष करने की बजाय भविष्य के और वह अपनी बचत को ाता है। नेशनल सेविंग्ज़ ुआ धन पूर्णतया सुरक्षित है मूल्य ५०% बढ़ जाता है— न जाते हैं। इस ब्याज पर व ५) से १५,०००) तक की मालियत के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं। जिन की बचत थोड़ी हो, वे १), ॥) और १) के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

ये डाकख़ानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं। AC 212

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

देवप्रयाग श्री बद्रीनाथ मन्दिर प्रब- कमेटी ने अपनी लखनऊ की मीटिंग ली तहसील के प्रसिद्ध कांग्रेसी तथा ल श्री पुरुषोत्तम बग्वाड़ी को नया टरी नियुक्त किया है। श्री बग्वाड़ी नियुक्ति से सारे पर्वतीय प्रदेश में ता हुई है। चमोली तहसील के लोग इस छोटे से जिले को दो भागों विभाजित कर पृथक् जिले की मांग कर हैं, इस संबंध में इन लोगों की एक श्रीबद्रीनाथ पुरी में भी हुई थी और एक सम्मेलन करने की आयोजना कर रहे हैं। देवप्रयाग में मंडल-कांग्रेस टी के कार्यकर्ताओं की शक्ति-स्थापना हेतु एक आम सभा श्री खुण्यासिंह के पतित्व में हुई। प्रांतीय कांग्रेस कमेटी सदस्य श्री श्रीलाल थपलियाल, जिला ग्रेस कमेटी के उपप्रधान, श्री भगवती- ण निर्मोही, केन्द्रीय टिहरी-प्रजामंडल मंत्री श्री प्रेमलाल वैद्य, श्री रामदयालु ी, मंडल कां० कमेटी के मंत्री रमेश- स्त्री, श्री कैलाश भट्ट आदि कार्यकर्ताओं मार्मिक भाषण हुए। वक्ताओं ने अपने ण में प्रतिक्रियावादी संस्थाओं की निन्दा की और जनता से शान्ति म करने तथा हिन्दू-राज्य स्थापित करने- प्रतिक्रियावादियों से सावधान रहने हा। १ नवम्बर से १० नवम्बर तक मंडल के कार्यकर्ता तथा कौमी सेवा- क स्वयंसेवक शांति स्थापना के लिये -गांव में आम सभाओं द्वारा प्रचार ते रहे। घंडवाड़ा मंडल कांग्रेस कमेटी वार्षिक अधिवेशन घंडवाड़ा में बड़े रोहपूर्वक मनाया गया। भरतसिंह क एक व्यक्ति ने भारत-विभाजन से होकर अपनी बाईं मूंछ और दाहिनी ी मुडवाकर साफ कर दी। पूछने पर ने कहा है कि भारत का वर्तमान स्वरूप ा ही अशोभन है और जब तक भारत ठित है, तब तक चेहरे का स्वरूप ा ही रहेगा, यह मेरी प्रतिज्ञा है। पांडु- र (गढ़वाल के कुछ उत्साही कार्य- ओं ने वहां एक सार्वजनिक वाचनालय स्थापना की है। श्री काशी-विद्यापीठ रस में प्रोफेसर श्री भगवतीप्रसाद यरी एम० ए० के संपादकत्व में देहरा- से पर्वतीय राज्यों को संगठित करने वहां की प्रजा सच्ची आवाज पहुँचाने हेतु १५ अगस्त ४७ से 'युगवाणी' पाक्षिक प्रकाशन शुरू हो गया है। देवप्रयाग जनहितैषी सभा के श्री धनेश टोडरिया, टेश्वर विद्यार्थी, श्री धनुधंर विद्यार्थी, प्रसाद विद्यार्थी, रघुनाथप्रसाद पालि- ल, रामकुमार विद्यार्थी आदि युवकों ने जन-हितैषी पुस्तकालय की स्थापना । केन्द्रीय टिहरी-प्रजामंडल के ान मंत्री श्री प्रेमलाल वैद्य तथा घर अन्य मुखियों की अनुपस्थिति में सर- री कर्मचारियों ने ताले लगा दिये। ध्यान गत अगस्त माह में सरकार के टिहरी ट्रल जेल के अन्दर एक न्याय का नाटक कर इनको जुर्माने की सजा देकर ा किया था, उसी की वसूली में ताले ाये गये हैं।

—संवाददाता

* * *

सागर में विद्यार्थी कांग्रेस की ओर से शिवकुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता नेहरूजयन्ती मनाई गई। पुराने टर-स्टैण्ड पर आयोजित सभा में श्री लाल की कविता के बाद श्री महेशदत्त ने कहा—"आज लोग जवाहरलाल गोली मारने की बात कहते हैं; पर जिन्ना को गोली नहीं मारते। जवाहर- ल ने प्रयाग में गंगास्नान के लिए घाट लवाये। आज पूंजीपति नेहरू-सरकार को उलटने का यत्न कर रहे हैं।" श्री गुलाबचन्द कठल के श्रद्धाञ्जलि अर्पण के बाद श्री ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा—"पंडित नेहरू की ५८वीं वर्षगांठ पर हमें हर्ष हो रहा है। जवाहरलाल का शासन जनता का शासन है। किसी व्यक्ति-विशेष का नहीं। जवाहरलाल रूस व गांधी के बीच की उज्ज्वल कड़ी है। जवाहरलाल समानता का शासन चाहते हैं। गांधी जी का हृदय-परिवर्तन-प्रयोग चल रहा है तथा जवाहर, विधान के द्वारा पूंजीवाद को खत्म करना चाहते हैं। हमें आज राष्ट्रीय सरकार को मजबूत करना है। इसके बाद सभा-पति-द्वारा दो प्रस्ताव पास हुए। (पुराने मोटर स्टण्ड का नाम—"जवाहर चौक" रखा जाय) इसी स्थल पर सभा भराने के लिए एक स्थायी मंच तैयार किया जाय। इसके लिये कुछ प्रमुख नागरिकों की एक समिति बनी। सर्वश्री पद्मनाभ तैलंग, भैयालाल जैन, विद्यार्थी जर्नादन, स्वामी कृष्णानंद, धन्नालाल तथा सभा-पतिजी ने पं० नेहरू को श्रद्धांजलि अर्पित करके उनके दीर्घजीवन की कामना की।

* * *

सागर श्री गयाप्रसाद एम० एल० ए० की अध्यक्षता में किसान-मजदूर-सभा हुई। सर्वश्री चौधरी नन्हेंलाल वैद्य, जालमसिंह, सागरचंद, तेजसिंह, सरदारजी, जर्नादन, गणेशप्रसाद पांडेय, गोपीलाल श्रीवास्तव, पद्मनाभ जी तथा रामभरोस पाठक के भाषण किसान-मजदूर-संगठन पर हुए।

—संवाददाता

* * *

गोरखपुर ओ० टी० आर० पुलिस ने देवरिया में एक सनसनीदार ब्लैक गिरफ्तार किया है। मालगाड़ी के एक गार्ड को नकद और चंद षड्यंत्रकारी कागजों तथा एक गाड़ी में कुछ ब्लैकी कपड़ों के साथ पकड़ा है। इस ब्लैक की बड़ी ही रोमांच-कारी कहानी है। सुना जाता है कि किसी महाजन ने ८६ गांठ कपड़ा बम्बई से मँगाया था। शायद यह कपड़ा गोरखपुर तक आ भी गया था।

(यू० पी० सरकार से)

गौरीबजार (देवरिया) में एक अंगरेजी शुगर फैक्टरी है। अंगरेजी शुगर फैक्टरी होने के कारण, अधिकारियों ने यहां केनडेवलपमेंट सोसाइटी की स्थापना नहीं होने दी। जनता की प्रगति में फैक्टरी की ओर से कोई सहायता नहीं मिलती है। बीज, खाद, शिक्षा, ऋण, कृषि उन्नति के आलात इत्यादि जहां और फैक्टरियों के क्षेत्र में जनता को सुलभ होते हैं, यहां की जनता अन्धकार में पड़ी रहती है। यू० पी० की जन-प्रिय सरकार को चाहिए कि जनता के लाभार्थ इस फैक्टरी में भी सोसाइटी की स्थापना करे।

मण्डल कांग्रेस कमेटी गौरीबाजार (देवरिया) के सदस्यों में मतभेद है। इस समय मंडल का कोई सेक्रेटरी नहीं है। जिससे कार्यकर्ताओं को मेम्बरी फीस और चन्दा जिला में जमा करना पड़ रहा है। जिला कांग्रेस कमेटी को इधर ध्यान देना चाहिए।

—संवाददाता

* * *

नैनीताल पट्टी चौगढ़ में लगभग ८ साल से एक नरभक्षी बाघ लगा हुआ था, जिसने लगभग ३०-४० बच्चों तथा स्त्रियों की मौतें कर दी थीं। बाघ को १६ अक्टूबर म्यूडी नामक गांव में गोस्वामी प्रेमपुरी तथा ठा० आनसिंहजी मेहता हे० मा० मि० स्कूल ओखल काडावालों के सहयोग से मार डाला। अब एक माह बीतने पर कोई घटना इलाके में नहीं घटी।

—संवाददाता

साहित्य-चर्चा

'बल-निर्वास'—लेखक श्री गुलाब, प्रकाशक कला-कुंज ९४ इडन रोड गया; मूल्य ।।।)

गुलाब जी हिन्दी के एक तरुण कवि हैं। पहले आप काशी में विद्याध्ययन कर रहे थे। अब आप अपने निवास-स्थान गया में हैं। 'कविता' नाम से आपकी प्रकीर्ण कविताओं का एक संग्रह निकल चुका है, प्रस्तुत पुस्तक उनकी द्वितीय प्रकाशित पुस्तक एक गीति-नाट्य है। इसमें लेखक ने अपने ही शब्दों में 'पूर्वी तथा पाश्चात्य नाटकों के विविध रूपों का सम्मिश्रण' किया है। 'काव्य और छन्दों के कुछ नये प्रयोग भी' हैं।

गुलाब जी एक संवेदनशील कवि हैं अतः प्रस्तुत पुस्तक में जहां कहीं भी रूप-सौन्दर्य और मार्दव का वर्णन आया है वह उनके ही अनुरूप है। देवों के एश्वर्य-वर्णन के चित्र अत्यन्त प्रसादीय, उपयुक्त और हार्दिकतामय हैं। गुलाब जी की चित्र-विधायिनी शक्ति अत्यन्त तीव्र है। देवों के आक्रमण उनकी विशाल अर्बुद-वाहिनी के क्रिया-कलापों का चित्रण बहुत ही दृष्टि-ग्राह्य है। पुस्तक का प्रारम्भ उर्वशी के गीत—

'यदि स्वर्ग कहीं है त्रिभुवन में
तो वह मेरे ही उर में है।
कोमल मृणाल सा बाहुबंध
उड़ती अलकें ज्यों मधुप अंध
लहराती मेरे अंगों में
यौवन की मोसल स्वस्थ गंध
नन्दन जैसे सुरपुर में है। आदि

से होता है। नाटक में कुल पांच अंक हैं। पहले में इन्द्र का स्वर्ग-वैभव स्वयं इंद्र के शब्दों में—

लाखों बार मक्षिका धरती
रवि का चक्कर काट चुकी।
कलियों का आलिंगन करते
मरुत देव मलयाचल से।
कोटि-कोटि आवर्त्त भर चुके
नभ, भूलोक तलातल से
नहीं शतक्रतु कहलाने का
मिला किसी को श्रेय अभी
तत्त्वों के बल से है दैनिक
शासन-चक्र अजेय अभी.....

कहा गया है। इसी के दूसरे दृश्य में देवों का अभियान वर्णित है। इसी में देवता हारते हैं और बलि की विजय होती है। दूसरा अंक बलि के दरबार और उर्वशी के गीत से प्रारभ होता है। बलि देवताओं के महत्त्वपूर्ण स्थानों पर देवों को नियुक्त करते हैं। इसी में देवगुरु शुक्रबलि को प्रजा-पालन नीति का उपदेश देते हुए इन्द्र-पद के चिर स्थायित्व के लिए शतक्रतु होने का आदेश देते हैं।

तृतीय अंक अपेक्षाकृत छोटा और देवताओं के पराभव-जनित अवसाद की वार्ताओं से पूर्ण है। ब्रह्मा देवताओं को विष्णु के यहां सहायतार्थ भेजते हैं।

चौथा अंक अप्सराओं और विंध्या-चली के गीतों से संतुष्ट हैं। 'मधुप' के प्रति अन्योक्तियां कहकर उनमें पाठकों में विप्रलम्भ-सम्बन्धी मधुर प्रभाव की सृष्टि का प्रयत्न किया गया है। कुछ शकुन बतलाकर—

फड़कती क्यों यह बाईं आंख
जैसे मिलन-प्रहर में पुलकित खग-बाला

की पांख—जैसी पंक्तियां कथा-वस्तु के प्रवाह को आगे बढ़ाने की दृष्टि से न लिखी जाकर मात्र रस-सृष्टि और कवि के शब्दों में पूर्वी नाटक-रूपों की अवतारणा में ही अपना उद्देश्य रखती हैं।

पंचम और अन्तिम अंक शुक्राचार्य के यज्ञ-विधान, चर के वामन-विष्णु-सम्बन्धी संदेश, वामन के आने और तीन पग भूमि मांगने, शुक्र के रोकने तथा बलि के दान देने, शुक्र के अंधे होने और भगवान् के प्रकट होने की घटनाओं से निर्मित किया

पाताल
देवराज
साथ
ध है,
की
अपने
लेता
र्ष-
की
कृति

यद्यपि विदेशी हिन्दी के प्रचुर छन्द-भांडार की दृष्टि से कुछ अनिवार्य नहीं। सब मिलाकर पुस्तक सुन्दर और पठनीय तथा लेखक के भावी विकास की संकेतिका है। ६१ पृष्ठों की पुस्तक का बारह आना दाम समय के देखते हुए अधिक नहीं।

—श्रीपालसिंह 'क्षेम' बी० ए०

पंचमढ़ी में शरद-पूर्णिमा के उपलक्ष में मजदूर सेना की एक शानदार रेली हुई। पड़ाव पर मजदूर सेना का कैम्प फायर व
नामक ए
श्रीमान्
प्रसाद थे
से निभा
नाच, गा
कालूराम
गुप्ता,
प्रेमनाराय
योग्य थे

*

जोध
अ० भा०
हो रहा है
प्रारम्भ ह
विशेष आ
कवि-दरब
परिषद्,
सांस्कृतिक
भारत
चाहिए वि
में उपस्थि
सम्मेलन
जालोरीगेट
कीजिए।

*

फतह
संघ की ओ
हस्तलिखित
बालकों को अपनी रचनाएँ भेजनी चाहिए।

—हरीसिंह दूगड़ 'दिनेश'

* * *

लाहौर से प्रकाशित 'शान्ति' पत्रिका का कार्यालय सांप्रदायिक उपद्रवों के कारण लाहौर से लक्ष्मीनारायण स्ट्रीट पहाड़गंज, नई दिल्ली में आ गया है।

—व्यवस्थापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारवाड़ लोक-परिषद्

प्रतिनिधि सभा द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव

जोधपुर में मारवाड़ लोक-परिषद् की प्रतिनिधि सभा की बैठक नवम्बर के प्रारम्भ में लोक-परिषद् के प्रधान कार्यालय में श्री जयनारायण व्यास की अध्यक्षता में हुई थी जिसमें निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किये गये।

मारवाड़ की वर्तमान स्थिति

मारवाड़ लोक-परिषद् की प्रतिनिधि सभा ने मारवाड़ की वर्तमान परिस्थिति का गंभीरतापूर्वक अवलोकन किया है।

बेगार और लोगों के विरुद्ध लोक-परिषद् व किसान-सभा द्वारा जो आंशिक रूप से सफल आन्दोलन हुआ है उससे मारवाड़ के जागीरदार बहुत क्रुद्ध थे यद्यपि बेगार और निषिद्ध लागबागों का लिया जाना अभी भी जारी है। किसानों के साथ साधे हुए सम्पर्क और इस वर्ग में पैदा हुई जागृति ने जागीरदारों के क्रोध में और भी वृद्धि की है और जागीरी था के नाश की व्यापक घोषणा से वे लोक-परिषद् कांग्रेस और सामन्तशाही के विरोधी सभी संगठनों और व्यक्तियों से शत्रुता का व्यवहार करने लगे हैं और इस कार्य में जागीरदारों द्वारा शोषित आम राजपूतों को भी उसी तरह गुमराह कर रहे हैं जिस तरह मुस्लिम लीग ने आम मुसलमानों के दिमागों में जहर फैलाने का प्रयास किया था। यहां के जागीरी इलाकों में दमन और आतंक का काफी विस्तार हुआ है और हो रहा है। डाबडा-हत्याकाण्ड के अलावा जिसकी योजना में पुलिस और कई जागीरदारों का संयुक्त हाथ समझा जाता है, नेतड़िया में श्री नारायणजी चौधरी की हत्या बांडा, बिलाड़ा करवड, जोधपुर, रोटू, डीडवाना गुढा आदि के जाट, भांभी, बिस्नोई किसानों की हत्याएँ हुई जिनमें एक जाट स्त्री का भी शिकार किया गया। यह सभा उन [illegible] करती [illegible] रही है [illegible] नागौर [illegible] सभा [illegible] किसानों [illegible] है? [illegible] क्या [illegible] भरा-पूरा [illegible] लाप [illegible] नहीं, [illegible] भंडार [illegible] साहित्य [illegible] द्योतक [illegible] कि हम [illegible] की क्ष [illegible] यह शि [illegible] बात [illegible] किन्तु [illegible] मातृ-भ [illegible] ठहराई [illegible] जिसका [illegible] हुआ है [illegible] हुई हो उन्हीं के विरुद्ध दूर-दूर की अदालतों में मुकदमे चलाये जाते हैं। मारवाड़ी पुलिस में सामन्तशाही नेतृत्व का बोलबाला होने के कारण इन मुकदमों में गरीब लोगों को खर्चे से जेरबार होने पर जागीरी शोषण और अत्याचारों को चुपचाप स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पड़ता है। इस आतंकवाद का प्रभाव जनता पर ही नहीं, अधिकारियों पर भी काफी पड़ा है और जिस न्याय के प्रयास में जागीरी बन्दोबस्त का महकमा खोला गया है उस न्याय की आशा उस महकमे के बेकार किए जाने के कारण टूट गई है। खाद्य-नीति भी जागीरी हितों को ध्यान में रखकर बनाई गई है। भारत-सरकार द्वारा दी गई वस्तुओं का वितरण भी ऐसे पक्षपातपूर्ण तरीके से किया जाता है कि उससे जागीरदारों को ऐश के साधन और लाभ मिलें और ग्रामीण जनता को इस अखिल भारतीय सुविधा से वंचित रखा जाय। शिक्षा-प्रचार के जरिये भी जागीरी इलाकों में बन्द कर दिये गय हैं। वर्षों से मारवाड़ की सरकार स्कूल न खोलने की नीति पर डटी हुई है और जहां स्कूल खोलने के खानगी प्रयास किय गये हैं, वहां उन्हें पशुबल द्वारा दबा दिया गया है। इस प्रकार मारवाड़ में जहां ३ फी सैकड़ा जमीन जागीरी इलाका है, एकदम मध्यकालीन सामन्तशाही का साम्राज्य अपनी जड़ें मजबूत बना रहा है। अब मारवाड़ के केन्द्रीय शासन को भी पूर्ण सामन्ती बनाने का प्रयास किया गया है।

शासन-सुधारों के सिलसिले में परिषद् के सभापति ने श्री महाराजा साहब से दिल्ली १० अक्टूबर को मुलाकात ली थी। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया था कि मौजूदा विधान जिसमें जागीरदारों को अनुचित सुविधा देकर सत्ता हस्तगत करने का अवसर दिया गया है एवं इस निमित्त जागीरी व खलसा इलाकों की चुनाव-योग्यता भी अलग-अलग रखी गई है, किसी भी हालत में स्वीकार किये जाने लायक नहीं। उन्होंने यह भी बता दिया था कि जब तक वर्तमान प्रतिक्रियावादी धारा-सभा तथा उसका विधान मौजूद है तब तक मारवाड़ लोक-परिषद् मंत्रिमण्डल में शरीक होने को कतई तत्पर नहीं है, न यह संस्था इस धारा-सभा को प्रजा की प्रतिनिधि के रूप में मानने को तैयार [illegible] [illegible] [illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

'मंजरी'

जनवरी १९४८ से प्रकाशित होगी

- तिरङ्गा और मोहक आवरण तथा दर्जनों चित्र,
- हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कहानी-लेखकों और अन्य प्रान्तीय भाषाओं की कलात्मक कहानियाँ,
- कहानियों के साथ-साथ कथा-साहित्य के क्रम-विकास पर गम्भीर समीक्षात्मक लेख,
- कथा-साहित्य के नवीन प्रकाशनों की निष्पक्ष समीक्षा,
- मासिक कथा-साहित्य का सिंहावलोकन,
- कलापूर्ण छपाई,

ये सारी विशेषताएँ आप 'मंजरी' में पायँगे

नवम्बर के अन्त तक ग्राहक और एजेण्ट हो जानेवालों की प्रतियाँ सुरक्षित रहेंगी। इसके बाद होनेवाले ग्राहकों और एजेन्टों को 'मंजरी' का पहला अङ्क दुर्लभ रहेगा।

सम्पादक — देवीदयाल चतुर्वेदी

प्रकाशक — इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

सब दर्दों से छुटकारा

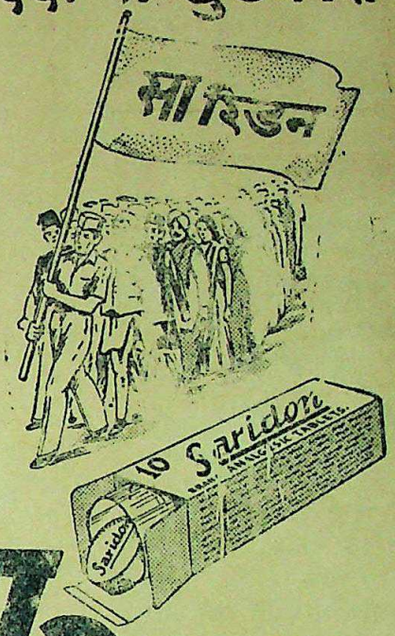

मा फिडन

सब दर्दों की एकही दवा

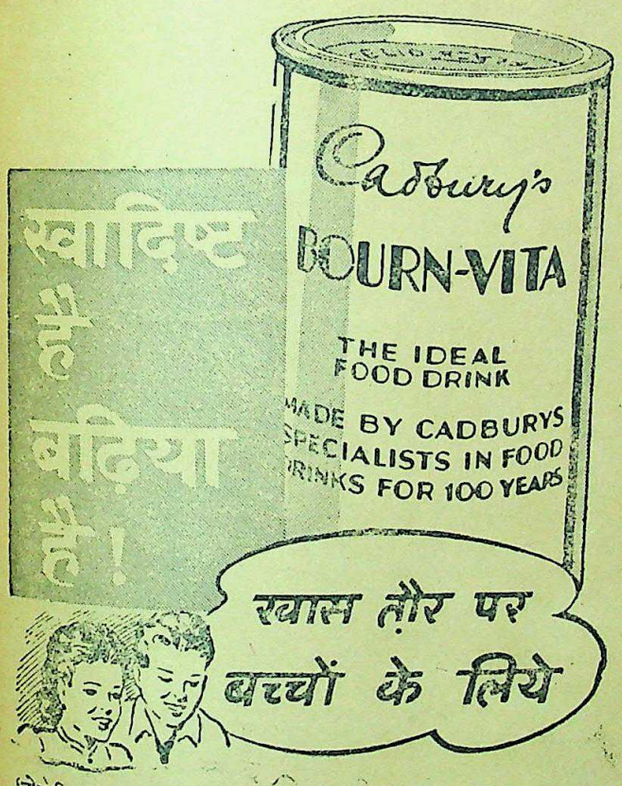

'बोर्न-विटा' का केल्सेयम और खाद्योज बढ़नेवाले बच्चों की हड्डियों को मजबूत और मांस को कडक बनाते हैं। बालिग़ों के लिये भी यह गहरी और मीठी नींद लाता और ताक़त का खज़ाना बख्शता है।

कैडबरीका

बोर्न-विटा

कैल्सेयम और खाद्योज से भरपूर

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली गुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देना किया करें।

1-WW 117—117 W. WOODWARD LTD., LONDON, ENGLAND.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं नियमावली मुफ्त मँगायें। पता:—
इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

घड़ाघड़ बिक रहा है। शीघ्रता कीजिए
वार्षिक बालसखा १९४७
इसकी छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएँ और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का मूल्य ३)। मासिक ग्राहकों को रियायती मूल्य २॥) शीघ्रता कीजिए।
मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

आरोंद
१८६६
नी भगिरि ते
श्री. खांडालेकर बंधु

दाद, खुजली
और
हरेक मेलका चमड़ीका दर्दोंके लीए
गत ५० वर्षों से
जग-विख्यात
कपड़े खराब नहीं करती
नक्कालों से सावधान
सपट
लोशन
सपट एन्ड कुं
मुंबई. २.

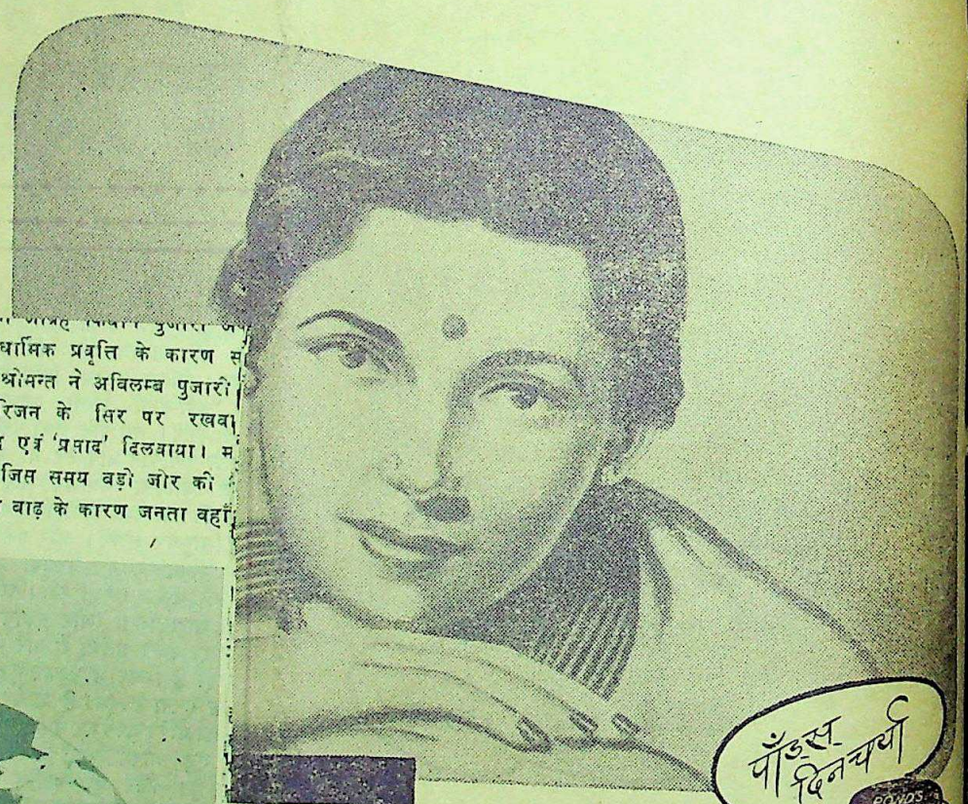

*वह रूपवती है!
वह पाँड्स का प्रयोग करती है!

*मीनाक्षी:
एक कुसुम कन्या...
मणिवत् स्वच्छ मुखमंडल...

...क्या आप भी अपने चेहरे को पाँड्स से उज्ज्वल और ताज़ा रख रही हैं? अनेक सुन्दर स्त्रियाँ और लड़कियाँ किसी अन्य क्रीम की अपेक्षा किसी भी मूल्य पर पाँड्स को ही व्यवहार में लाती हैं। याद रखिये, पूर्णरूप से स्वच्छ करना ही शरीर की सबसे महत्त्वपूर्ण सावधानी है। आज से ही पाँड्स कोल्ड क्रीम और पाँड्स वेनिशिंग क्रीम का प्रयोग शुरू कर दीजिये।

पाँड्स दिनचर्या

पाँड्स कोल्ड क्रीम: पाँड्स कोल्ड क्रीम को चेहरे पर कोमलता से रमाते हुये दिन में दो बार उसे साफ़ कीजिये; उंगली के कोमल पोरों से उसे थपथपाइये। पाँड्स टिशू से स्वच्छ कर लीजिये।

पाँड्स वेनिशिंग क्रीम: कोल्ड क्रीम को साफ़ करके उंगली के पोरों से पाँड्स वेनिशिंग क्रीम लगाइये। त्वचा को सुरक्षा देता हुआ वह आप के प्रयोग के साथ ही अंतर्धान हो जाता है।

पाँड्स पावडर: यदि आप की इच्छा हो तो पुष्प-पंखड़ी की भांति कोमलता के लिये पाँड्स पावडर थपथपाइये।

...के लिये लिखिये:
...(इंडिया) लिमि०
बम्बई - कलकत्ता - कराची - मदरास.

Copyright: Pond's Extract Co.

...जनता में मौलिक मतभेद ...सतों की जनता को तात्कालिक ...अपने राज्य में सुशासन की ...टी रियासतों में शासन की ...यः वहाँ के नरेशों की अयोग्यता ...रहती है। यही एक खास

...संकीर्ण धार्मिक प्रवृत्ति के कारण स... चाया। श्रीमन्त ने अविलम्ब पुजारी ... हाथ हरिजन के सिर पर रखवा... आशीर्वाद एवं 'प्रसाद' दिलवाया। म... सौर में जिस समय बड़ी जोर की ... आई तथा बाढ़ के कारण जनता वहाँ...

...रोडया कारपोरेशन
हज़रतगंज कैनिंग रोड
लखनऊ एलाहाबाद

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, ... प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क मूल्य ७॥)
तिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

२ नवम्बर, १९४७ 'सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 2nd November, 1947

हिन्दी भाषा भाषी
य जनता का पत्र
य २ आना

कम्यूनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय संघ क्या है ?
हिन्दी ही हमारे राष्ट्र की राष्ट्रभाषा है।

...main. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्च कोटि की सचित्र कहानी-पत्रिका

'मंजरी'

जनवरी १९४८ से प्रकाशित हो रही है

'मंजरी' हिन्दी कथा-साहित्य का कलात्मक शृङ्गार करेगी।

'मंजरी' में हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ कथाकारों की तथा अन्य भाषाओं की भी उच्च कोटि की सुरुचि-सम्पन्न कलात्मक कहानियाँ प्रकाशित होंगी।

'मंजरी' निःसंकोच रूप से माँ-बहनों के हाथों में दी जा सकेगी।

'मंजरी' प्रत्येक प्रकाशित रचना पर पर्याप्त पारिश्रमिक देगी और रचनाओं का कापी-राइट लेगी।

'मंजरी' में आद्योपान्त मात्र कहानियाँ न रहेंगी। इसका तीन-चौथाई कलेवर कहानियों के लिए और एक-चौथाई कथा-साहित्य के सभी उपांगों पर गम्भीर लेखों, नवीन प्रकाशनों की निष्पक्ष समीक्षा और मासिक कथा-साहित्य के सिंहावलोकन के लिए सुरक्षित रहेगा।

'मंजरी' का वार्षिक मूल्य ६) छः रु० और प्रत्येक अङ्क का ॥) आठ आने होगा।

ग्राहकों, एजेण्टों और विज्ञापन-दाताओं को शीघ्रतापूर्वक अपनी प्रतियाँ और स्थान आदि सुरक्षित करा लेना चाहिए, अन्यथा प्रकाशित होते ही इसके अङ्क दुर्लभ हो जायँगे।

सम्पादक
देवीदयाल चतुर्वेदी

प्रकाशक
इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

'देशदूत' का दीपावली विशेष

विज्ञापनदाता शीघ्र ही स्थान रिज़र्व करा लें

अन्य अवसरों की भाँति 'देशदूत' का यह विशेषांक बहुत ही और आकर्षक रूप में प्रकाशित होगा। इसमें अच्छे अच्छे लेख नियाँ, कविताएँ, हास्य की सामग्री और बढ़िया चित्र रहेंगे। इस पढ़ने की बहुत बढ़िया सामग्री रहेगी। एजेंट अपनी प्रतियाँ रिज़र्व क

विज्ञापन-दाताओं को इस अंक में विज्ञापन छपवाने से बहुत होगा। विज्ञापन-दर—

कवर चौथा पूरा पेज ४००)
" दूसरा या तीसरा पूरा पेज ३००)
पहला पेज पाठ्य-विषय से पहले ३००)
साधारण पूरा पेज २००)

पृष्ठ का आकार
१२½" × ४ कालम
स्क्रीन ६५

शीघ्र पत्र लिखकर स्थान रिज़र्व कराइए। विज्ञापन ५ को सन् १९४७ के बाद स्वीकार न किये जायँगे। मूल्य अग्रिम भेजिए

मैनेजर 'देशदूत', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्र

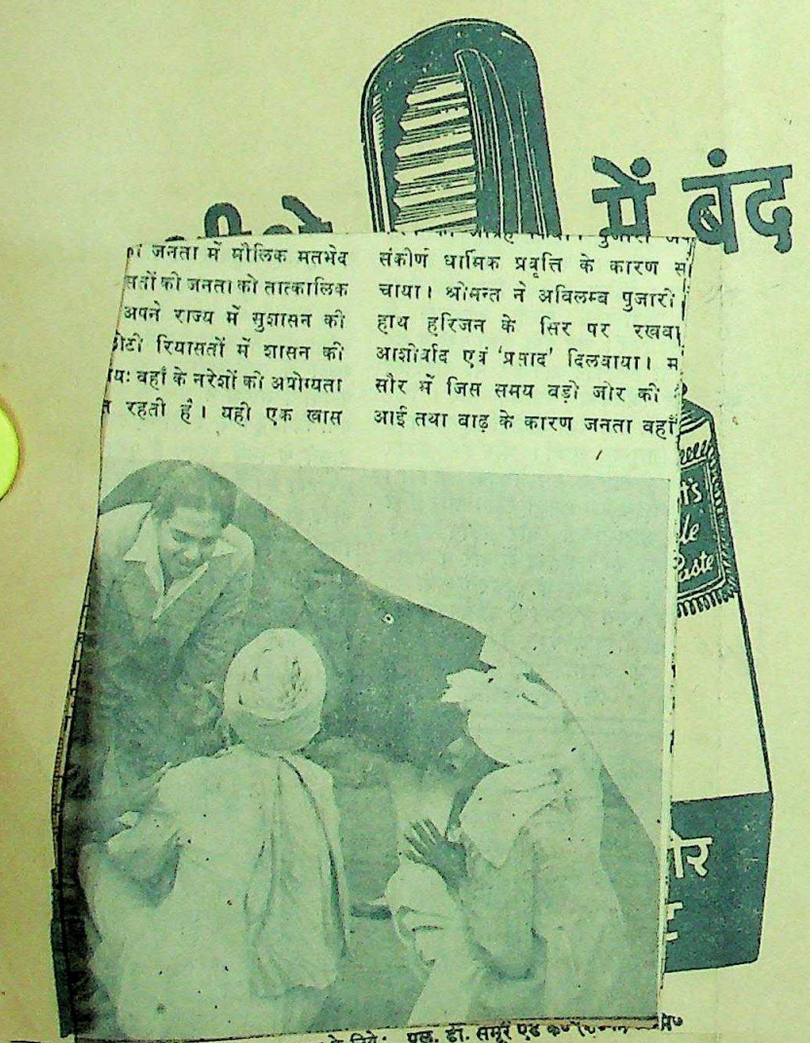

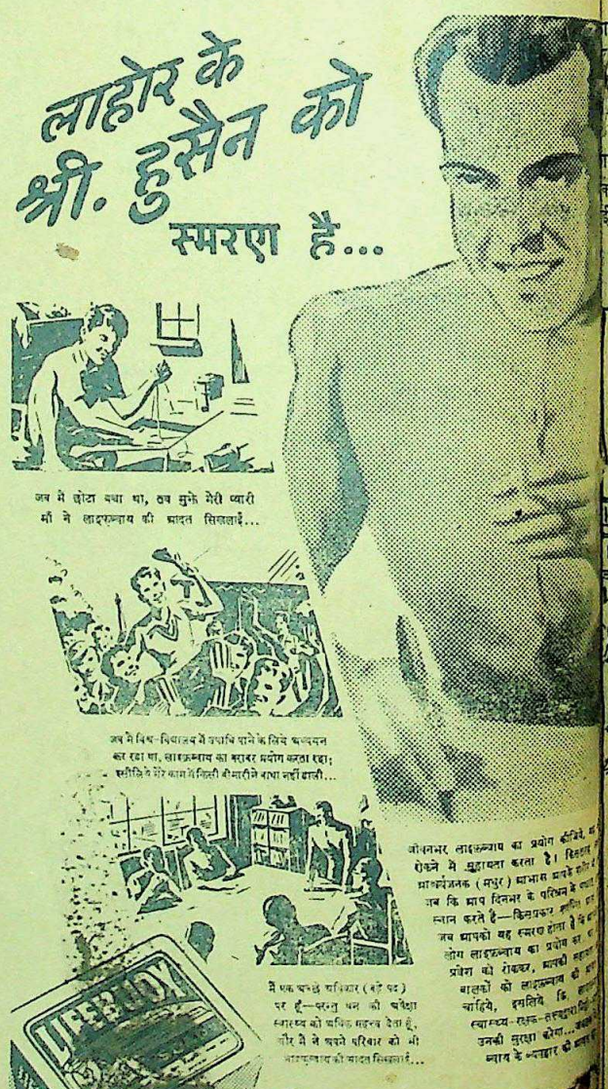

W. 583 Hin.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

वर्ष १०, संख्या ६] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, २ नवम्बर, १९४७

सीधी टेढ़ी-खरी-मजेदार

पाकिस्तानी गवर्नर जनरल मिस्टर मुहम्मदअली जिन्ना आजकल 'आ बैल मुझे मार' वाली कहावत चरितार्थ कर रहे हैं। उनका काम है कि समय-समय पर कांग्रेस और हिन्दुओं के विरुद्ध अपने दिल के गुबार निकालते रहें। अँगरेजी हुकूमत ने उन्हें यही सिखाया है और इसी बहाने पाकिस्तान की रचना भी हुई है। लेकिन भारत सरकार के तथा कांग्रेस के नेता मिस्टर जिन्ना की बकवास को पूरी तरह से बकवास ही समझते हैं। अपने राम की समझ में समझना चाहिए, क्योंकि भारत सरकार को स्वतन्त्रता प्राप्त होने पर शासन करना है और जिन्ना साहब तो गवर्नर जनरल हो गये हैं, पाकिस्तान और शासन का रक्खा ही क्या है?

* * *

मिस्टर जिन्ना ने जूनागढ़ का बदला काश्मीर से लेना चाहा। फिर क्या था पड़ी पाकिस्तानी फौज और साथ में काफातियों का दल श्रीनगर पर चढ़ाई करने के लिए। फिर इसके बाद लाहौर में काश्मीर का फसला करने के लिए लार्ड माउंट बेटेन और पंडित नेहरू की एक मीटिंग बुलाई। लेकिन मीटिंग हो गई, हवा, न पंडित नेहरू पहुँचे और न लार्ड लुई माउंट बटेन। काश्मीर भारतीय संघ में शामिल हो गया और भारतीय फौजें काश्मीर की रक्षा के लिए चढ़ दौड़ीं। पाकिस्तानी षड्यन्त्र फेल हो गया। या तो पाकिस्तानी फौजें उलटे पैरों भाग खड़ी हों या वहीं स्वाहा हो जायँ। इसके सिवा चारा ही क्या है? अपने राम की राय में पाकिस्तानी नीति का भंडाफोड़ हो गया, गनीमत यही है।

* * *

जूनागढ़ में स्वतन्त्र सरकार कायम हो गई है। वह गांव पर गांव जीतती चली जा रही है। नवाब जूनागढ़ इस वक्त कराची में मिस्टर जिन्ना से सलाह मसौदा करने गये हैं। सच तो यह है कि नवाब जूनागढ़ को कराची जाना ही चाहिए था, क्योंकि मातृभूमि पर दुश्मनों का कब्जा होता जा रहा है, इसलिये या तो मिस्टर जिन्ना मदद करें या तोबा बोल दें। बेचारे जूनागढ़ के नवाब की हैरानी एक परेशानी की बात जरूर है। अभी क्या पाकिस्तान अभी आगे जो न कराये सो थोड़ा!

हैदराबाद की हालत इस समय सांप और छँछूदर की तरह हो रही है। हैदराबाद की नवाबी भारतीय संघ में शामिल होना नहीं चाहती और यदि पाकिस्तान में शरीक होती है तो लेने के देने पड़ते हैं क्योंकि पाकिस्तान आखिर हैदराबाद की मदद अगर कुछ करना भी चाहे तो किधर से करेगा? जमीन पर पाकिस्तानियों की दाल गलेगी नहीं और आसमान पर किसी शासक की बपौती नहीं। इसके सिवा सबसे बड़ी आफत यह है कि हैदराबाद में हिन्दू प्रजा का है बहुमत। जान सांसत में है, बस असलियत यही है। अपने राम देख रहे हैं हैदराबाद दौड़ धूप तो लम्बी लम्बी कर रहा है और दिखाता यही है कि बस समझौता हुआ ही समझिये, लेकिन भीतर कुछ दाल में है काला। ऐसी स्थिति में यह निश्चय है कि हैदराबाद की उछल-कूद ज्यादा दिन चल न सकेगी, यह तो तयशुदा बात है, आगे खुदा हाफिज़!

* * *

महाराजा काश्मीर का कहना है कि पाकिस्तान के विधाता जिन्नासाहब काश्मीर को पाकिस्तान में शरीक होने का हुक्म देते हैं लेकिन ऐसे पाकिस्तान में शामिल होने का क्या परिणाम है जिसका कोई विधान ही नहीं है? महाराजा ने बात तो पते की कही लेकिन प्रश्न तो यह है कि पाकिस्तान में तो हवाई शासन होता है, विधान तो अंग्रेज बनायेंगे और सच तो यह है कि अँगरेजों को अभी फुरसत नहीं मिली। दूसरी बात यह है कि भारतीय-विधान-परिषद् पहले विधान तैयार कर ले तब पाकिस्तान का विधान तैयार किया जाये। क्योंकि लीग तथा उसके विधाता तो कांग्रेस तथा महात्मा गांधी की नकल करने में सदा से कमाल दिखाते आये हैं। अपने राम की राय में जिन्ना एण्ड कंपनी को पका पकाया माल खाने की पुरानी आदत पड़ गई है। विधान की उछलकूद जनवरी से पाकिस्तान में शुरू होगी। काश्मीर के महाराजा को पाकिस्तानी विधान की बात खूब सूझी, इसे बुद्धि की खूबी ही समझना चाहिए।

* * *

पाकिस्तानी अशांति की प्रतिक्रिया

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

चोर बाजार का अन्त

विगत महायुद्ध काल से यातायात का क्रय विक्रय तथा वस्तुओं के आदान-प्रदान की कठिनाइयों के कारण चोर बाजार का प्रदुर्भाव हुआ और आज वह सीमा पार कर चुका है। युद्ध समाप्त होने के बाद नये भारतीय विधान के अनुसार विभिन्न प्रांतों पर जनता की सरकारों का अधिकार भी हुआ किंतु चोर बाजार आज जिस पराकाष्ठा पर पहुँच गया है, वह सार्वजनिक जीवन के लिये अभिशाप प्रमाणित हो रहा है। भारत सरकार तथा प्रांतीय सरकारों ने दैनिक जीवन के उपयोग में आने वाली वस्तुओं का एक मूल्य निर्धारित कर दिया किंतु ऐसा होते ही बाजार से वह वस्तुयें लुप्त हो गईं। अर्थात निर्धारित मूल्य पर चीजों का मिलना एक प्रकार से असम्भव हो गया। ऐसी बात नहीं है कि वस्तुयें बाजार में या व्यापारियों के पास नहीं हैं, सब कुछ हैं किन्तु उनकी उपलब्धि चोर बाजार द्वारा अधिक मूल्य देने पर ही हो सकती सकती है। पहले तो चोर बाजार का कार्य बड़े बड़े व्यापारियों तक ही सीमित रहा किन्तु अब तो जनसाधारण में भी यह व्यापकरूप में फैल गया है। साधारण से साधारण क्रय विक्रय में चोर बाजारी होने लगी है। इस प्रकार से जनता की नैतिकता इतनी गिर गई है और पतन इस सीमा को पहुँच गया है कि समझ में नहीं आता कि क्या किसी प्रकार कानून द्वारा इसकी समाप्ति हो सकती है या नहीं? बड़े कारबारियों या वस्तुओं के साधारण आदान-प्रदान करनेवालों के सिवा सरकारी कर्मचारियों तक में भयंकर भ्रष्टाचार फैल गया है। जहां चोर बाजार की व्यापकता की जिम्मेदारी व्यापार करनेवालों पर आती है वहां अधिकांश सरकारी कार्यकर्त्ता तथा कर्मचारी भी ऐसे अधम कार्य से मुक्त नहीं समझे जा सकते। तात्पर्य यह है कि आज के चोर बाजार की व्यापकता के प्रति पूंजीपति व्यापारियों के अतिरिक्त थोड़ी पूंजी से व्यापार करनेवाले तथा सरकारी कार्यकर्त्ता भी अवश्य ही जिम्मेदार हैं। इसलिये कांग्रेस सरकारों के सामने यह प्रश्न आज व्यापक रूप से उत्पन्न हो गया है कि चोर बाजार का अंत कैसे किया जाये?

संयुक्त प्रांतीय धारा-सभा के आगामी अधिवेशन में चोर बाजार को समाप्त करने के उद्देश्य से सरकार की ओर से एक महत्वपूर्ण बिल स्वीकृत के लिये उपस्थित किया जानेवाला है। प्रांत के भोजन तथा रसद मंत्री श्री चन्द्रभानु गुप्त ने बड़े ओजपूर्ण स्वर में घोषित किया है कि बिल को कानूनी रूप देने पर चोर बाजार की इतिश्री होनी अनिवार्य है। जहां तक सरकार का सदुद्देश्य है वहां तक मतभेद की कतई गुंजाइश नहीं है किन्तु हम चाहते हैं कि बिल स्वीकृत हो जाने पर सरकार की ओर से ऐसा सक्रिय कदम उठाया जाना चाहिए जिससे उसकी यथार्थता में तनिक भी सन्देह न रह जाये। यह भी निश्चय है कि कानून का प्रभाव पूंजीपति व्यापारियों पर जो चोर बाजार की आड़ में व्यापार करते हैं, व्यापकरूप में पड़े बिना न रहेगा किन्तु आवश्यकता इस बात की भी है कि चोर बाजार करनेवालों के साथ ही चोर बाजार को प्रोत्साहित करनेवाली जमात के प्रति भी कड़ाई से कानूनी प्रतिबंध होना चाहिए। सरकारी बिल में इस नग्न सत्य की ओर भी ध्यान देना चाहिए। चोर बाजार का संपर्क किसी एक वर्ग से नहीं है वरन् उन कई वर्गों से है जिन के हाथों में जनता के हित की बागडोर है। क्योंकि जब चोर बाजारी के लिये प्रोत्साहन ही नहीं मिलेगा तो चोर बाजार करने का साहस भी किसी को न हो सकेगा।

सबसे प्रमुख बात यह है कि चोर बाजार की समस्या के हल का प्रश्न केवल प्रांतीय नहीं है। यह प्रश्न अखिल भारतीय है। भारत-सरकार से इसका प्रमुख संबंध है। इसलिये केन्द्रीय सरकार के द्वारा चोर बाजार के अंत के लिये जब तक सक्रिय कदम न उठाया जायेगा साथ ही कड़ाई के साथ कानून न बनेगा तब तक सामूहिक रूप से चोर बाजार की इतिश्री नहीं हो सकती। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि दैनिक जीवन की प्रायः प्रमुख वस्तुओं पर भारत सरकार द्वारा कन्ट्रोल लगाया जाता है। प्रांतीय शासन से उसका कोई संबंध नहीं है। इस प्रकार केन्द्रीय तथा प्रांतीय सरकारों का सहयोग बहुत आवश्यक है। ऐसा होने पर ही चोर बाजार के अंत की आशा की जा सकती है। फिर भी हम प्रांतीय सरकार के सदुद्देश्य की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते हैं क्योंकि चोर बाजार के अंत करने की ओर वह कम से कम अग्रसर तो हो ही रही है। इसलिये हम प्रांतीय सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं कि वह चोर बाजार के भावी बिल को जितना भी विस्तृत तथा व्यापक बनाकर कानूनी रूप दे सकेगी उतना ही जनता के हित का मार्ग प्रशस्त होगा।

दीपावली के शुभ अवसर पर

बड़ी सजधज के साथ आगामी १६ नवम्बर का अंक

'देशदूत' का विशेषांक होगा

दीपावली के अवसर पर 'देशदूत' का अत्यन्त सुन्दर, लोकप्रिय, राष्ट्रीय भावनाओं, अनेक सामयिक चित्रों, नेताओं के लेखों, कहानियों तथा कविताओं से सुसज्जित बड़ा ही बढ़िया विशेषांक प्रकाशित होगा। कार्टूनों और सामयिक चित्रों का अलबम। कवर बहुरंगा मूल्य केवल।)

मैनेजर 'देशदूत', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

बुंदेलखंडी रजवाड़े और पाकिस्त

मध्य-भारत का मैहर राज्य अभी तक प्रतिक्रियावा क्यों बना हुआ है?

लेखक, श्री जंगबहादुरसिंह

मैहर बुन्देलखंड की एक छोटी रियासत है। है तो यह छोटी, किन्तु शासन है प्रतिक्रियावादी। प्रजा की मांग है कि लोकप्रिय सरकार की स्थापना हो; शासन-नीति अवसरवाद की आड़ ले रही है और जनता की मांगों की अवहेलना जा रही है। जनता सत्याग्रह की नीति अपनाने जा रही है। इस लेख में श्री जंगबहादुर सिंह ने, जो मध्य-भारत की रियासतों में कांग्रेस कार्यकर्ता हैं, मैहर की आज की प्रतिक्रियावादी नीति पर प्रकाश डाला है, जो जानकारी से पूर्ण है।

मैहर राज्य बुन्देलखंड में, एक छोटा सा राज्य है इसकी जनसंख्या, ८० हजार, क्षेत्रफल ४०७ वर्गमील आमदनी चार लाख है, मुगलों के जमाने में इसका अस्तित्व नहीं था, बल्कि पन्ना राज्य के नरेश ने अपने एक सेवक को जागीर में दिया था। "ईस्ट इंडिया कम्पनी" ने अराजकता के जमाने में, बुन्देलखंड की रियासतों की शक्ति तोड़ने की नीति के अनुसार जागीरी हिस्से को अपना राज्य तसलीम करा दिया। अभी इस तरह शुरू से यहां के शासक प्रतिक्रियावादी नीति पर अमल करते रहे हैं, जिसका अनुभव पाकिस्तानी गुट में शरीक होने के बाद से अब तक बराबर हो रहा है।

१४ अगस्त की रात को जब कि भारतीय संघ में शामिल होने की अवधि में कुछ ही घंटे बाकी रह गये थे, मैहर भारतीय संघ में शामिल हुआ। भारतीय संघ में शामिल होने पर प्रत्येक राज्य की रक्षा, डाक, तार, तथा वैदेशिक विभाग का पूर्ण अधिकार भारतीय यूनियन को सौंपना होता है, बाकी सब विभाग शामिल होनेवाले राज्यों के अधीन रहते हैं। नागरिकता की दृष्टि से क्या प्रांतो के रहनेवाले और क्या शामिल होनेवाली रियासतों के सभी भारतीय यूनियन के नागरिक हैं? १५ अगस्त के बाद भारत स्वतन्त्र हुआ है। स्वतन्त्र भारत के विधान-सम्मेलन ने नागरिकों के विषय में अधिकारों का एक प्रस्ताव पास किया है। वह अधिकार (Fundamental Rights) भारतीय संघ के प्रत्येक नागरिक को प्राप्त होना चाहिए, चाहे वह प्रांत के रहनेवाले हों, चाहे किसी रियासत के; मैहर जैसे एक छोटे से राज्य में इन अधिकारों पर कुठाराघात हो रहा है। यदि ऐसा होता रहा तो हमें यह कहना पड़ेगा कि मैहर राज्य के निवासी सच्चे रूप से स्वतन्त्र भारत के निवासी नहीं हैं और मैहर का भारतीय संघ में शामिल होना व्यर्थ है। देखना है कि मैहर राज्य के निवासी सच्चे रूप में भारतीय संघ के नागरिक कब होते हैं?

मैहर राज्य का इतिहास जनता के लिए अहितकर रहा है, सन् १९२३ में मीटिंग करने पर श्री बद्रीप्रसाद जी द्विवेदी को जो आजकल प्रजामंडल के सभापति हैं गिरफ़्तार कर लिया गया था। सन् १९२८ में कांग्रेस के सदस्य बनाने पर १०० व्यक्ति गिरफ़्तार किये गये, उनमें से ३५ को ९ माह से लेकर ९ वर्ष तक के लिये कठिन कारावास का दंड दिया गया। सन् १९३९ में कांग्रेस का रचनात्मक कार्य करने के जुर्म में ४० व्यक्ति गिरफ़्तार किये गये। इनको सवा दो वर्ष से लेकर १८ वर्ष तक की सजायें दी गईं। जेल में अन्न की खराबी, कठिन कार्य, तथा दुर्व्यवहार के कारण छ व्यक्ति इतने कमजोर हो गये जब वह मृत्यु-शैय्या पर थे दिये गये। बाहर उनकी मृत्यु हो

सन् १९४६ में पं० जवाहर नेहरू की सलाह से मैहर राज्य में मंडल बनाया गया, उस सिलसि सदस्य बनाने के जुर्म में ५ व्यक्ति फ्तार किये गये, जिनमें एक व वर्तमान सभापति श्री बद्रीप्रसा की धर्मपत्नी, श्रीमती फूलव द्विवेदी थीं, जिनके साथ कड़ा व किया गया। यह सब २३ अगस्त १९४७ को जब अँगरेजों के चंगुल से स्वतन्त्र हो था छोड़ दिये गये।

उस बीच में ओरछा राज्य के कार्यकर्त्ता मैहर आई उनके साथ अमानुषिक व्यवहार किया गया अखबार पढ़नेवाली जनता को है सूक्ष्म में मैहर राज्य की राज जाग्रति का यही इतिहास है।

मैहर राज्य ने भारतीय शामिल होने में जो हठधर्मी है, वह सर्वविदित है, बीसों कराची में लगाये गये और इस का प्रयत्न किया गया कि वह पाकि में शामिल हो जाय। अन्य राजा भी उसने भड़काया और पाकिस्तान में शामिल करवाने का किया। जब उसके सब प्रयत्न हुए तब वह १४ अगस्त की रा भारतीय यूनियन में शामिल हुआ सब उसे झख मारकर करना अपने राज्य में जनता के साथ पुराना व्यवहार है। उसके राज्य में लगाना जुर्म है। जो अपने घर झंडा लगाता है उसके साथ वही हार होता है जो पहले होता श्री शीतलप्रसाद जी उमरलिया के वहां के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं इस जुर्म में कि उन्होंने तिरंगा अपने मकान पर लगाया था, राज्य छोड़कर जाना पड़ा, यह १५ अगस्त के बाद की है।

मैहर राज्य में मीटिंग असम्भव है, झंडा लगाना या निकालना, संगठन करना, असम्भव यह करेगा उस परमैहर राज्य का डंडा गिरेगा, इसमें कोई संदेह स्वतन्त्र भारत की एक छोटी सी मैहर राज्य में स्वतन्त्रता की यह हो, यह आश्चर्यजनक है। के रहनेवाले भी स्वतन्त्र भारत के रिक हैं। फिर उनके इन अधिकार रक्षा क्यों न हो, हमारे सामने यह हैं।

इन सब बातों को दृष्टि में हुए, तथा इनका हल निकालने के "बुन्देलखंड लोक-परिषद्" की १९ सितम्बर को सतना में हुई, प्रतिनिधि-मंडल राजा साहब से

शेष पृष्ठ १८ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिलिस्तीन का बँटवारा क्यों हुआ

बटवारा-समिति में साम्राज्यवादी राष्ट्रों का निर्णय कैसा है?

लेखक, श्री कृष्णबल्लभ व्यास

(१)

फिलिस्तीन का बटवारा हो गया। बटवारे के लिये फिलिस्तीन-सम्बन्धी विशेष समिति ने अपनी रिपोर्ट दे दी है। बहुमत से समिति ने फिलिस्तीन के सम्बन्ध में क्या निर्णय दिया है, इसका उल्लेख इस लेख में किया गया है जिससे अरब, यहूदी तथा साम्राज्यवादी राष्ट्रों की राजनीति समझने में आसानी होती है।

फिलिस्तीन की स्वतन्त्रता के अरब नेता श्री ग्रांड मुफ्ती।

अभी हाल में ही संयुक्त राष्ट्र-संघ की फिलिस्तीन सम्बन्धी विशेष समिति ने पूरे तीन मास की खोज और वाद-विवाद के पश्चात् फिलिस्तीन समस्या पर अपना निर्णय दिया है। इस समिति के बहुमत ने फिलिस्तीन को अरब और यहूदी राज्यों में विभाजित कर देने और दोनों के बीच एक आर्थिक एकता स्थापित करने तथा जेरुसलेम को किसी भी राज्य म शामिल न कर सीधे संयुक्त-राष्ट्र संघ की देख-रेख में रखने की सिफारिश की है। इस बहुमत में कनाडा, जेकोस्लोवाकिया, डेनमार्क, ग्रीक, स्वीडन और युरुगुए आदि राष्ट्र सम्मिलित हैं। इस समिति के अल्पमत में जेरुसलेम को राजधानी मानते हुए फिलिस्तीन में एक ऐसी स्वतन्त्र-संघ सरकार स्थापित करने की सिफारिश की, जिसके मातहत यहूदी और अरब प्रान्त रहेंगे और जिन्हें स्थानीय स्वायत्त शासन के अधिकार प्राप्त रहेंगे। इस अल्पमत में सम्मिलित राष्ट्र हैं—भारत, ईरान और युगोस्लाविया।

* * *

द्वितीय महायुद्ध के समाप्त होते ही फिलिस्तीन की समस्या एक बार फिर संसार के सामने आ खड़ी हुई। युद्धकाल में लाखों यहूदियों को योरप में नाजियों और फासिस्टों के द्वारा नृशंस क्रूरतायें सहनी पड़ी थीं। युद्ध के बाद पूर्वी योरप में ज्यों-ज्यों नई समाजवादी सरकारें स्थापित होती गईं, उन्होंने अपने यहां यहूदियों की रक्षा और उन्नति का पूरा आश्वासन देना आरम्भ किया, परन्तु पश्चिमी योरप और पश्चिमी जर्मनी में जातीय विद्वेष की फासिस्टी मनोवृति थोड़े बहुत अंशों में अभी भी वर्तमान है और यहूदी उन देशों को छोड़कर कहीं और, विशेषकर फिलिस्तीन, चले जाने का प्रयत्न कर रहे हैं। इसलिए आज फिलिस्तीन के और अन्य देशों के यहूदी इस बात की जोरदार मांग कर रहे हैं कि फिलिस्तीन में बाहरी यहूदियों के प्रवेश को न रोका जाय और उन्हें सुविधा दी जाय कि वे जितनी अधिक से अधिक संख्या में चाहें, उतनी संख्या में अपनी मातृभूमि में बस सकें; इस आन्दोलन ने फिलिस्तीन में एक आतंकवाद और त्रासवाद की ब्रिटिश विरोधी कार्रवाइयों की एक बड़ी जोरदार लहर भी पैदा कर दी है, ताकि अँगरेज यहूदियों की मांगें मानने के लिए मजबूर हों।

दूसरी ओर द्वितीय महायुद्ध के बाद सारे मध्यपूर्व की अरब जाति में राष्ट्रीयता की भावना का बड़ा जोरदार विकास हुआ है। मिस्र, लेबनान, सीरिया आदि राष्ट्रों के आन्दोलन इसके प्रमाण हैं। फिलिस्तीन में भी अरब-कमेटी के नेतृत्व में अरबों ने राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ा है और आज वे अपनी मांग पेश कर रहे हैं कि फिलिस्तीन को तुरन्त पूर्ण स्वतन्त्रता दी जाय, तथा फिलिस्तीन में अब बाहरी यहूदियों का प्रवेश बन्द कर दिया जाय।

उधर अमरीकी सामाज्यवाद फिलिस्तीन में अरब-यहूदी मतभेद का लाभ उठाकर मध्यपूर्व में अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश में है और इसलिए यहूदियों का पक्ष लेकर परोक्ष-अपरोक्ष रूप से समस्या को और भी जटिल बनाये दे रहा है, क्योंकि मिट्टी का तेल मध्यपूर्व का सबसे महत्त्वपूर्ण उत्पादन है और साथ ही मध्यपूर्व भी आज दुनिया की राजनीतिक चालों में अपनी स्थिति के कारण एक विशेष महत्त्व रखता है, इसलिए अमेरिका अपनी गिद्ध-दृष्टि उस पर से हटाना नहीं चाहता। सन् १९३८ में ब्रिटिश अधिकृत तेल प्रदेश में तेल का उत्पादन १,४०,००,००० टन वार्षिक था, जब कि अमेरिकन अधिकृत प्रदेश में केवल १०,५०,००० टन वार्षिक (अर्थात्, ब्रिटिश उत्पादन के दसवें भाग के बराबर) ही था; और १९४६ में अमेरिकन उत्पादन १,१०,००,००० टन हो गया जब कि ब्रिटिश उत्पादन बढ़कर केवल २,२०,००,००० टन ही हो पाया (अर्थात्, अमेरिकन उत्पादन ब्रिटिश उत्पादन का आधा हो गया है)। इसलिए अमेरिका इस ओर सतत प्रयत्नशील है कि उसके अधिकृत क्षेत्र में (अधिकृत क्षेत्र से तात्पर्य है तेल के उन कुँओं से जिनकी मालिक अमेरिकन कम्पनियां हैं) तेल का उत्पादन बराबर बढ़ता ही जाय तथा नये-नये तेल-क्षेत्र भी उसके अपने अधिकार में (ब्रिटेन के हाथ से निकलकर) अधिकाधिक आते जायें। इतना ही नहीं, उसकी इस गतिविधि से एक स्पष्ट संकेत और भी मिलता है, वह यह कि अमेरिका भूमध्यसागर में अपनी आर्थिक व सैनिक किलेबन्दियां करना चाहता है, इसीलिए वह यहूदियों के आन्दोलन में विशेष दिलचस्पी ले रहा है, जिससे कि फिलिस्तीन का सारा भूमध्यसागरीय किनारा, जो कि यहूदी बहुमतवाले क्षेत्र में पड़ता है, उसके प्रभाव में आ जाय।

* * *

फिलिस्तीन में ब्रिटिश 'मैण्डेट' (सैनिक अधिकारियों द्वारा संरक्षित) शासन के अन्त और पूर्ण स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए चलाये गये अरबों के बढ़ते हुए आन्दोलन और निर्बाध यहूदी प्रवेश व बँटवारे के लिए चलाये गये यहूदियों के बढ़ते हुए आन्दोलन ने अँगरेजों को परेशान कर रखा है। भविष्य के अवश्यंभावी संकट से बचने के प्रयत्न में अँगरेज वहां नित्य नई चाल चलते रहे हैं। भारत की तरह ही फिलिस्तीन में भी अँगरेजों की यह नीति काम करती रही है कि यहां अरबों और यहूदियों के आपसी वैमनस्य को अधिक से अधिक बढ़ाकर उन्हें अत्यन्त कटु बना देना और इस प्रकार उनके झगड़े में [illegible] अपना स्थान सुरक्षित रखकर शासन की बागडोर अपने हाथ में बनाये रखन का प्रबन्ध करना।

अपनी इसी नीति को ध्यान में रखकर कुछ दिन हुए अँगरेजों ने फिलिस्तीन के लिए अपनी एक योजना तैयार की थी, जो मोरिसन-योजना के नाम से प्रसिद्ध है। इस योजना में कहा गया था कि फिलिस्तीन ब्रिटेन के ही नियंत्रण में रहे और उसमें दो छोटे-छोटे अरब और यहूदी प्रान्त बना दिये जायँ, जो एक केन्द्रीय सरकार के अधीन हों और उस केन्द्रीय सरकार में अरबों और यहूदियों के साथ-साथ अँगरेजों का भी खासा प्रतिनिधित्व रहे। इसके अलावा इस योजना में इस बात की भी सिफारिश की गई थी कि फिलिस्तीन का पूरा दक्षिणी भाग, नागेब प्रान्त, सीधा अँगरेजों के शासन में रहे; परन्तु इस साम्राज्यवादी योजना को बनाते समय अँगरेजों ने युद्ध के पश्चात् सारे औपनिवेशिक जगत् में जन-जागरण की उठती हुई लहर को कोई महत्त्व न दिया; उन्होंने अरबों और यहूदियों की बढ़ती हुई जागृति की उपेक्षा की। इसलिए स्वभावतः इस योजना का परिणाम वही हुआ, जो होना था। अरबों और यहूदियों, दोनों ने, इस अपमानजनक योजना का बिलकुल बहिष्कार कर दिया; दोनों ने देखा कि इस योजना के कारण उनकी मांगें पूरी होना तो दूर रहा, उनके लिए कोई आन्दोलन चलाना भी असम्भव हो जायगा, इसलिए दोनों ने उसे अस्वीकार करना ही उचित समझा। अरबों और यहूदियों के इस रवैये ने अँगरेजों के लिए ऐसी कोई नई चाल चलना असम्भव कर दिया; साथ ही उन्हें यह भय होने लगा कि मोरिसन-योजना के विरोध के प्रश्न को लेकर अरबों और यहूदियों में एकता की भावना का बढ़ जाना सम्भव है, जो उनकी स्थिति के लिए खतरनाक साबित होगी। आखिरकार और कोई चारा न देख अँगरेज फिलिस्तीन के प्रश्न को संयुक्त राष्ट्र-संघ में उपस्थित करने के लिए विवश हुए।

निस्सन्देह उस साम्राज्यवादी मोरिसन योजना के संयुक्त बहिष्कार के प्रश्न को लेकर अरब और यहूदी अपनी आपस की एकता का आन्दोलन चला सकते थे और अपने आपसी वैमन्स्य को पर्याप्त मात्रा में दूर कर सकते थे। परन्तु, यह फिलिस्तीन की आम जनता का दुर्भाग्य था कि उसके दोनों दलों, अरबों और यहूदियों ने, तथा उनके नेताओं ने जब कि एक ओर ब्रिटिश योजना का बहिष्कार किया, तब दूसरी ओर आपस में किसी एके पर पहुँचने और मिलकर अँगरेजों का सामना करने से भी इन्कार कर दिया। अरब उच्च कमेटी के जरिये, जिसमें प्रतिक्रियावादियों की कमी नहीं हैं, अरबों ने अपनी 'स्वाधीनता' की मांग में किसी प्रकार के परिष्कार का हठपूर्वक विरोध किया और उसमें यहूदियों के लिए भी जनवादी अधिकारों की सुरक्षा का कोई आश्वासन देने के बजाय, उल्टे, उन्होंने अपने आघात यहूदियों और उनके प्रवेश के विरुद्ध केन्द्रित कर दिये। दूसरी ओर यहूदियों ने भी अपनी यहूदी एजेन्सी के जरिये, जिसका निकट सम्बन्ध अमेरिकन पूंजीपतियों से है, अपने सीधे आघात अरबों पर केन्द्रित कर दिये और फिलिस्तीन के बँटवारे और यहूदी राज्य की स्थापना की मांग को लेकर जोरदार आन्दोलन छेड़ दिया। निस्सन्देह, इन दोनों जातियों के प्रगतिशील व वामपक्षी दलों ने अपने प्रतिक्रियावादी नेताओं की तीव्र आलोचनाएँ की हैं और वे आज भी फिलिस्तीन के लिए पूर्ण स्वातन्त्र्य के लिए और विदेशी शासन के विरुद्ध संयुक्त आन्दोलन चलाने में विश्वास करते हैं और अरब और यहूदियों के लिए समानरूप से जनवादी अधिकारों की स्वतन्त्र फिलिस्तीन में सुरक्षा के आश्वासन की मांग करते हैं तथा यहूदियों के फिलिस्तीन प्रवेश की समस्या को आपस में समझौते के द्वारा हल करने की राय देते हैं, लेकिन अभी इन लोगों की आवाज काफी कमजोर है और इसी कारण ये संयुक्त मोर्चा बनाने की अपनी योजना में सफल न हो सके, अन्यथा इनकी सफलता के कारण निस्सन्देह फिलिस्तीन का घटनाचक्र बदल सकता था।

* * *

आखिरकार फिलिस्तीन समस्या का प्रश्न संयुक्त राष्ट्र-संघ के सम्मुख उपस्थित हुआ। संयुक्त राष्ट्र-संघ के द्वारा नियुक्त की गई फिलिस्तीन सम्बन्धी विशेष समिति के बहुमत ने फिलिस्तीन समस्या हल करने के जो सुझाव रखें हैं, उनके कुछ महत्त्वपूर्ण पहलू निम्न प्रकार से हैं, जिनसे स्पष्ट होते देर न लगेगी कि इस समिति के बहुमत के सुझावों के पीछे कैसी शैतानी साम्राज्यवादी योजना अपना काम कर रही है—

पहला सुझाव जो फिलिस्तीन समिति के बहुमत ने पेश किया है वह यह है कि फिलिस्तीन का दो 'स्वतन्त्र' राज्यों में बँटवारा कर दिया जाय; अर्थात्, अरब राज्य और यहूदी राज्य। दो ऐसे राज्यों की स्थापना हो, जो अपनी सीमा में स्वतन्त्र रहेंगे। इन दोनों राज्यों की सीमा भी निर्धारित की गई है, जिसमें इस प्रकार की स्थापना है कि प्रत्येक राज्य में दूसरी जाति के अल्पसंख्यकों का काफी बड़ा भाग आ जाता है। इसलिए दोनों राज्यों में भारत की तरह कटुता बढ़ने की पूरी सम्भावाना रहेगी; इस प्रकार दोनों के स्थायित्व में सन्देह की पर्याप्त जगह बनी रहेगी। इस सीमा निर्धारण से फिलिस्तीन की दोनों जातियों का पारस्परिक वैमनस्य घटने के बजाय बढ़ता ही जायगा। यद्यपि फिलिस्तीन में अरबों की कुल जन-संख्या १२,००,००० है और यहूदियों की कुल जन-संख्या केवल ६,२५,००० ही है, परन्तु दोनों राज्यों में संयुक्त राष्ट्र-संघ की रिपोर्ट के आधार पर निम्न प्रकार से जन-संख्या का बँटवारा होगा—

	अरब	यहूदी
यहूदी राज्य में	४,१६,०००	५,००,०००
अरब राज्य में	७,१५,०००	८,०००
जेरुसलेम में	१,०६,०००	१,००,०००

(जो संयुक्त राट्र-संघ की संरक्षिता में रहेगा)

क्या आप जानते हैं?

कि आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए० बी० ए० होम्यो-बायोकेमिक डाक्टरी किस प्रकार आसानी से पास कर सकते हैं यदि नहीं तो नियमावली मुफ़्त मँगाएँ।

इन्टर नेशनल इन्स्टीट्यूट
रजिस्टर्ड नं० १२, अलीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कायदे आजम जिन्ना का विषवमन

हिन्दुस्तान के मुसलमानों को बरगलाने के नये पैंतरे

लेखक, श्री श्यामबिहारी विरागी, बी० ए०

राष्ट्र का बटवारा हो गया। मुस्लिम लीग के कारण पाकिस्तान का निर्माण हो गया, इसलिए अब लीग को कांग्रेस से प्रतिद्वन्द्विता करने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। फिर भी कायदे आजम मिस्टर जिन्ना अपनी साम्प्रदायिक दुर्भावना को प्रगट करने में बाज नहीं आ रहे हैं। इस लेख में लेखक ने मिस्टर जिन्ना की इस नीति की आलोचना की है साथ ही भारत को एक महान् राष्ट्र बनने की आवश्यकता बतलाई है।

पाकिस्तान के गवर्नर जनरल कायदे आजम जिन्ना अपनी दूषित साम्प्रदायिक मनोवृत्ति से एक क्षण के लिए भी अलग होकर निष्पक्ष तथा निर्लेप भाव से किसी प्रश्न को नहीं देखते तथा विचार करते। उनकी हर बात तथा हर स्टेटमेंट में साम्प्रदायिकता के जहर में बुझी हुई एक ऐसी कटार छिपी रहती है जिसको देखकर शराफत, हया और इंसानियत भी एक बार सहम कर तोबा बोल उठती है। समय, परिस्थिति तथा घटनाओं के संघर्ष से मस्तिष्क में बहुधा परिवर्तन भी हुआ करते हैं, परन्तु हमारे कायदे आजम की लकीर एक है जिससे एक इंच भी इधर-उधर खिसकना उन्हें कबूल नहीं। उनकी स्पीच तथा वक्तव्यों में एक ही गाना कई सुरों से निकला करता है। ताल-सुर में भले ही फरक हो जाय परन्तु अदायें, नखरे और नजाकत हमेशा एक ही रहते हैं। दृष्टि वही, पैंतरे वही, बात वही। इधर कुछ महीनों में देश में महान् परिवर्तन हुए; लोगों के भावों में, विचारों में, व्यवस्था में तथा जीवन के हर अंगों में इन्कलाब हुआ; परन्तु पाकिस्तान के सर्वेसर्वा जिन्ना साहब अब भी वही हैं। पाकिस्तान के गवर्नर जनरल की महान् जिम्मेदारियों को देखते हुए अपने संकुचित साम्प्रदायिक दृष्टिकोण को छोड़कर पिछली दूषित राजनीतिक सतह से ऊपर उठना था परन्तु दुख है कि आज भी वे वही हैं और उसी प्रकार समय-समय पर विष-वमन कर रहे हैं।

सिद्धान्तों की हत्या

एक कपड़े का बेईमान व्यापारी अपनी दूकान पर कपड़ा नापने के दो गज रखता है। कपड़ा लेने के लिए दूसरा और देने के लिए दूसरा। हमारे कायदे आजम का भी राजनीतिक सिद्धान्त समझ में नहीं आता। मुसलमानों का फायदा जिस तरह से हो उसी के अनुसार उनके सिद्धान्त बना-बिगड़ा करते हैं। कोई सिद्धान्त नहीं, शायद कायदे आजम का यही सिद्धान्त है। उपरोक्त कपड़े के व्यापारी की तरह उनके पास दो गज हमेशा रहते हैं जिनका इस्तेमाल बेधड़क वे किया करते हैं। सबसे बड़े कायदे आजम को डर किसका है। जो मुंह से निकल जाय वह ईश्वर-वाक्य ठहरा। पैगम्बर मुहम्मद की रूह जिन्ना साहब में सदैव विराजमान रहती है अतएव उन्हें यकीन रहता है कि इस्लामी दुनिया उनकी हर बात को कुरान की आयत की तरह इज्जत करेगी। फ़िलिस्तीन के मामले पर निम्नांकित प्रश्न और कायदे आजम का जवाब गौर तलब है।

प्रश्न :—फ़िलिस्तीन में इस समय जो हो रहा है उसके सम्बन्ध में आपकी क्या राय है? अगर फ़िलिस्तीन के बटवारे से अरब और यहूदियों में संघर्ष हो जाय तो पाकिस्तान सरकार की क्या नीति होगी?

उत्तर :—फ़िलिस्तीन को बांटने की योजना अगर कार्यान्वित की जायगी तो इसकी इस्लामी दुनिया में बहुत बड़ी प्रतिक्रिया होगी। यह संघर्ष केवल अरब तथा विभाजन लादनेवाले दल के बीच ही सीमित नहीं रहेगा बल्कि तमाम इस्लामी प्रदेश इसके विरुद्ध क्रान्ति करेंगे। ऐसी परिस्थिति में पाकिस्तान के सामने अरबों की पूरी मदद देने के अलावे और कोई रास्ता नहीं रहेगा।

हिन्दुस्तान में मुसलमानों के लिए बटवारा करना था इसलिए जिन्ना साहब की दृष्टि में विभाजन ही एक रास्ता था, क्योंकि इससे मुसलमानों की स्वार्थ-सिद्धि होती थी। फ़िलस्तीन में यहूदियों के लिए बटवारा हो रहा है और मुसलमानों के स्वार्थ का हनन। इसलिए वहां बटवारे की योजना खराब है। यह है जिन्ना साहब की ईमानदारी। लेने के लिए दूसरा सिद्धान्त और देने के लिए दूसरा। मजा तो यह है कि इस प्रकार की खुली शरारत की बातें करते हुये कायदे आजम को जरा सी हया भी नहीं आती।

भारतीय एकता से घबराहट

इधर देश की जो परिस्थिति है और भारत-विभाजन से जो प्रतिक्रिया हो रही है उससे भी हमारे कायदे आजम को काफी घबराहट है। गवर्नर जनरल जिन्ना के जितने वक्तव्य इधर निकले हैं, उनमें बार बार यह दोहराया गया है कि पाकिस्तान अब टूट नहीं सकता। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा है "मैं इस बात को स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि पाकिस्तान कभी अपने को समर्पण नहीं करेगा और हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान में एकता लाने के लिए एक केन्द्र के निर्माण को नहीं मानेगा। पाकिस्तान ठहरने के लिये आया है और ठहरा रहेगा।" इस प्रकार की ऊलजलूल बातें पता नहीं जिन्ना साहब क्यों करते हैं? मुसलमानों को बरगलाकर उन्होंने भारत विभाजन कराया। अब अगर मुसलमानों की प्रतिक्रिया भारत को एक करने की हो जाय तो खण्डित भारत को अखण्ड होने से जिन्ना साहब कैसे रोक लेंगे? कायदे आजम का बार बार इस प्रकार कहना ही यह जाहिर करता है कि उन्हें खण्डित भारत की एकता का डर है जिससे बौखलाकर वे कभी-कभी प्रलाप-सा कर उठते हैं और सीधे-साधे कांग्रेस के ऊपर तमाम दोषा-रोपण किया करते हैं। उन्होंने अपनी प्रश्नोत्तरी में बताया है कि डोमिनियन आफ़ इंडिया में कुछ प्रभावशाली कांग्रेस के नेता दबाव देकर पाकिस्तान को हिन्दु-स्तान से मिलाना चाहते हैं और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे निम्नांकित प्रयत्न कर रहे हैं:—

(१) मुसलमानों को मुस्लिम लीग और पाकिस्तान के विरुद्ध क्रान्ति करने के लिए उत्तेजित करना।

(२) पाकिस्तान के नेताओं के अन्दर यह भाव पैदा करना कि वे हिन्दू मुस्लिम दो राष्ट्रों के सिद्धान्त को गलत समझने लगें और मस्तिष्क-परिवर्तन करके अखण्ड भारत की योजना में शामिल हो जायें।

(३) दोनों डोमिनियन आपस में युद्ध कर लें।

वे आगे चलकर धमकी के रूप में यह फ़रमाते हैं कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में दोस्ती का भाव तभी पैदा हो सकता है जब भारत-सरकार उपरोक्त पाकिस्तान विरोधी प्रचार को हिन्दुस्तान में बिलकुल रोक दे। कायदे आजम की मित्रता की यह शर्त्त भी बे-सिर-पैर की है और पाकिस्तान की कमजोरी जाहिर करती है। यदि पाकिस्तान की बुनियाद मजबूत है जैसा कि कायदे आजम फ़रमाते हैं तो फिर उन्हें यह क्यों डर है कि भारत के मुसलमान पाकिस्तान-विरोधी प्रचार के शिकार होकर क्रान्ति कर बैठेंगे और पाकिस्तान के नेताओं का मस्तिष्क बदलकर अखण्ड भारत की मांग को मानने लगेगा? उनके इस प्रलाप से क्या यह जाहिर नहीं होता कि वे अपने अन्तःकरण के एक अनजाने कोने में यह समझते हैं कि पाकिस्तान की बुनियाद कमजोर है और वास्तविकता मालूम होने पर कायदे आजम का भव्य महल

कायदे आजम श्री मुहम्मदअली जिन्ना हिं
स्तान के मुसलमानों को बरगला रहे

चकनाचूर हो सकता है? किसी
बहुत समय तक बेवकूफ़ बनाना
मुश्किल काम है। मुसलमानों में
धीरे यह बात ज़ाहिर हो रही है
वे मुसलिम लीग द्वारा बेवकूफ़ बन
गये हैं। पाकिस्तान की दोस्ती के लि
भारत-सरकार अब मुसलमानों
बेवकूफ़ बनाकर रखे, यह बात कहां
सम्भव है। 'मुंह में राम बगल में छ
की नीति तो कायदे आजम और
लेफ्टिनेन्टों को ही आता है। भारत
कार के कर्णधार तो गांधी जी के
हैं जो अन्दर और बाहर एक से हैं।

कायदे आजम की परेशानी

मुसलिम लीग के पिछले इतिह
को देखने से पता चलता है कि
आजम की सदैव से एक नीति रही
मुसलमानों को हिन्दुओं के प्रति उभा
और कांग्रस को हिन्दू-संस्था बता
गाली देना। उनकी इस नीति
परिणाम देश भर में अशान्ति और
जकता रही है। इस प्रकार पाकिस्
की नींव ही अशान्ति पर पड़ी हुई
देश में साम्प्रदायिक भावना ही पाकिस्
का जीवन है अतएव पाकिस्तान
ज़िन्दा रखने के लिए यह स्वाभा
है कि कायदे आजम साम्प्रदा
विषमता कायम रखें। वर्त्तमान
स्थिति में उन्हें निम्नांकित दो बातों
बहुत खतरा है :—

(१) हिन्दुस्तान में कुछ दिन
जो भयानक अशान्ति पैदा हो गई
वह अब कांग्रेस सरकारों की सतर्कता
खतम हो रही है और तेजी से देश
रण स्थिति की ओर अग्रसर हो रहा
हिन्दुस्तान से साम्प्रदायिकता नष्ट
जाय, इसका जो प्रयत्न आजकल
रहा है उसका परिणाम भी
दिखाई पड़ रहा है और यह आशा
साम्प्रदायिक विषमता जिसके शिकार

शेष पृष्ठ १८ पर

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ गीति-काव्य

कवि और छवि

लेखक, सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव

कविश्री बालकृष्णराव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपकी नवीनतम गीति-काव्यों का सर्वश्रेष्ठ संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्द्वंद्व से परिपूर्ण तो है ही साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाले हैं। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संग्रहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम, सचित्र और सजिल्द—मूल्य केवल २) ०।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय संघ

योरोप में अमरीकी और ब्रिटिश नीति के विरुद्ध सोवियट रूस का नया मोर्चा

लेखक, श्री चन्द्रोदय दीक्षित

योरोप में इस समय अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिद्वन्द्विता व्यापक रूप में चल रही है। एक ओर अमरीका तथा ब्रिटेन संयुक्त राष्ट्र-संघ की आड़ में अपनी साम्राज्यवादी नीति का विस्तार कर रहे हैं, दूसरी ओर सोवियट रूस भी कम्यूनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय संघ की स्थापना करके एक विरोधी मोर्चा तैयार कर रहा है। इस लेख में रूस के इस नये संगठन पर प्रकाश डाला गया है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

सोवियट रूस के डिक्टेटर स्टेलिन नया राष्ट्र-संघ बना रहे हैं।

योरोप में ९ राष्ट्रों की कम्युनिस्ट पार्टियों ने मिलकर नवीन कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय संघ का निर्माण किया है। यह अकेली घटना से विभिन्न देशों में विरूपेण प्रतिक्रिया हुई है। यों तो यदि हम ऊपरी तौर से देखने की चेष्टा करें तो हमें यह स्पष्ट मालूम हो जाता कि आज योरोप में दो विरुद्ध धारायें एक ही से चल रही हैं। यह बात नहीं कि दो विरोधी दलों के बीच में कोई स्थिति ही नहीं है, वरन् हम तो यह कहेंगे कि दोनों दो ध्रुवों के बीच में जो विशेष जनसंख्या है, यदि वह अपने भाग्य-निर्णय के अधिकार का स्वयं उपयोग करने लग जाय तो आज के संघर्ष की तीव्रता नष्ट हो जाय, भयंकर तृतीय महायुद्ध की सम्भावना नष्ट हो जाय और बहुत सम्भव है कि आज के भयानक संकट के स्थान पर हम शान्ति-पूर्वक नवीन समाज के सृजन के योग्य बन सकें। हमारी धारणायें हमारे निर्णयों को इतना प्रभावित कर देती हैं कि हम वस्तुगत आधार को छोड़कर केवल काल्पनिक जगत् में विचरण करने लगते हैं और लोग समाज को अपनी-अपनी धारणाओं पर चलाने के प्रयत्न किसी बहुजन हिताय के उद्देश्य से नहीं करते, वरन् अपने हित, अहं और गौरव की रक्षा के लिए करते हैं। बीच की जनता अपने दैनिक व्यावहारिक जीवन की जटिलता में इतनी परवशित हो जाती है कि वह अपने कार्य आरम्भ करने की क्षमता का भी लोप कर देती है।

पहले हम आज के ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि पर कम्युनिस्ट-आन्दोलन पर एक दृष्टि डालेंगे और तदुपरान्त हम उसके सम्बन्ध में अपना मत निश्चय करेंगे। किसी क्रान्ति की सफलता के बाद ही लेनिन ने विश्वव्यापी क्रान्ति का नेतृत्व करने के लिए कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय संघ का संगठन किया था। लेनिन की घोषणाओं से ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उस समय यदि रूसी क्रान्ति की सफलता के साथ समाजवादी क्रान्ति का स्वरूप देना है तो समस्त पूंजीवादी देशों में समाजवादी क्रान्ति का सूत्रपात हो जाना चाहिए। विभिन्न देशों में क्रान्ति के लिए असफल प्रयत्न की हुए और अन्त में लेनिन को भी यह स्वीकार करना पड़ा कि जब तक पूंजीवादी देशों का बहुमत जो कि मजदूर है, क्रान्ति के पक्ष में नहीं आ जाता, उस समय तक क्रान्ति का सफल होना मुश्किल ही नहीं, असम्भव है। इसी उद्देश्य से उसने अति वामपक्षी नीति के पीछे दौड़नेवाले कम्युनिस्टों को चेतावनी देते हुए उनकी नीति की कड़ी आलोचना की थी। सन् १९२४ में योरोप में वह क्रान्ति की लहर जिसका सूत्रपात सन् १९१७ की रूसी क्रान्ति से हुआ था ठंडी पड़ गई और योरोप पर एक बार पुनः पूंजीवादी शक्तियों का अधिकार जम गया। द्वन्द्वात्मक नीति का भी हमें यहां जीवित उदाहरण मिलता है। पूंजीवाद की प्रतिक्रिया के रूप में रूस में सोवियट शासन स्थापित हुआ, पूंजीवाद ने भी इतिहास से प्राप्त शिक्षा का उपयोग अपने जीवन की रक्षा के लिए किया और योरोप ने वैदेशिक पूंजी के सहयोग से अपने पूर्व उदार रूप को तिलांजलि देकर अधिनायकत्व-प्रणाली का आश्रय लिया। योरोप में हिटलर मुसोलिनी, पिल्सुडस्की आदि अनेक तानाशाहों का जन्म हुआ। सोवियट के सम्मुख जब उसकी प्रतिक्रिया भीषण रूप में उसके सम्मुख उपस्थित हो गई तो वह उस समय ठीक ऐसा ही त्रस्त हुआ जैसा कि क्रान्ति के विकराल रूप को देखकर जार हुआ था। अन्योन्याश्रित समाज जिसमें क्रिया और प्रतिक्रिया के रूप में विकास होता है, यही नियम बन जाता है। सोवियट को अपनी नीति में परिवर्तन करना पड़ा। यों तो सन् १९२४ में यह स्पष्ट हो जाने पर कि क्रान्ति निर्यात की वस्तु नहीं है, उसके लिए देश-विदेश की जलवायु से उत्पन्न अवस्थाओं की आवश्यकता होती है; कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय संघ की ऐतिहासिक आवश्यकता समाप्त हो गई थी और उस समय से उसका एक ही कार्य रह गया था कि वह सोवियट रूस की वैदेशिक विभाग का प्रचार-कार्य करे। ठीक उसी समय से कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय-संघ का विभिन्न देशों की श्रमिक जनता से सम्पर्क की व्यापकता भी कम होने लगी। सन् १९३४ में तो सोवियट रूस ने अमरीका को यह आश्वासन दे दिया कि वह विदेशों में क्रान्ति को नहीं कराना चाहती और उसी के बाद लीग आव नेशन्स में (राष्ट्र संघ) में, जिसे उस समय तक साम्राज्यवादियों के साझे का संघ कहा जाता था, वह स्वयं सम्मिलित हो गया। दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं की गणना न करके हम केवल इतना ही कहेंगे कि द्वितीय महायुद्ध के आरम्भ में सन्देह और द्विविधा के कारण ही लीग आव नेशन्स से रूस को पुनः निकलने पर बाध्य होना पड़ा, साथ ही प्रतिक्रियावादी साम्राज्यवादी शक्तियों के चक्र-व्यूह से बचने के लिए उसने स्वयं जर्मनी से सन्धि की। एक बार कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय ने बिना किसी सैद्धान्तिक आधार के साम्राज्यवादी युद्ध का नारा देकर विश्वक्रान्ति का नारा ही दे दिया। कहने से क्रान्तियां हुआ करतीं तो पता नहीं अब तक हमारे इस विश्व का क्या हाल हो गया होता? अन्त में घटनाओं के चक्र ने उसे मित्रराष्ट्रों में सम्मिलित होने को बाध्य कर दिया। सन् १९४३ में मित्रराष्ट्रों में एक दूसरे के विश्वास को जीतने के लिए कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय संघ को भंग कर दिया गया। इतना ही नहीं, तेहरान में तीन बड़े राजनीतिज्ञों की कान्फ्रेंस के अवसर पर अमरीका के प्रसिद्ध कम्युनिस्ट नेता अर्ल ब्राउडर ने एक नवीन सिद्धान्त की खोज की कि समाजवाद और पूंजीवाद में कोई वैषम्य नहीं है और अमरीका में तो पूंजीवादी विकास की ही बड़ी सम्भावनाएँ हैं, जिससे समस्त मानव-समाज को शान्ति और सम्पन्नता मिल सकेगी। कुछ लोगों को आश्चर्य हुआ, फिर यह भी कहा गया कि हो सकता है कि ब्राउडर महोदय के उक्त विचार केवल द्वन्द्वात्मक नीति की कोई कलाबाज़ी ही हो और बाद की घटनाओं से प्रमाणित भी यही हुआ।

मित्रराष्ट्रों अथवा संयुक्त-राष्ट्रों के बीच में मित्रता का आर्थिक आधार न होने के कारण अधिक दिन नहीं टिक सकी। योरोप के विभाजन के अवसर पर लोगों का वैषम्य तो सबको प्रकट हो गया लेकिन फिर भी दोनों ओर निबाहने की कोशिश की गई। धीरे-धीरे गुटबन्दी बनने लगी। इँगलैण्ड में युद्धोपरान्त निर्वाचन में मजदूर दल की विजय ने स्थिति को थोड़े दिन शान्त रखा। ब्रिटेन पर अमरीका और रूस दोनों ही सन्देह करने लगे, लेकिन साथ ही योरोपीय क्षेत्रों के समाजवादियों की दृष्टि नेतृत्व पाने के लिए उसी ओर जा पहुँची। रूस के लोगों में जो रूढ़िप्रियता और कट्टरपन है उसके कारण उन्होंने ब्रिटेन की और साथ ही साथ समाजवादियों की कटु आलोचना की और दूसरी ओर ब्रिटेन की वह स्थिति नहीं थी कि वह अपने देश के पूर्व शासकों द्वारा किये हुए समझौतों को एकदम रद करके अपने आर्थिक एवं राजनीतिक सम्बन्धों को नवीन रूप से स्थापित करे। अतः उसे अमरीका को भी सन्तुष्ट करने की नीति को अपनाना पड़ा। इसके साथ ही युद्ध के भार को वहन करते-करते ब्रिटेन की व्यवस्था जर्जरित हो चुकी थी उसे अपने जीवन की रक्षा के लिए कर्ज की आवश्यकता थी। अमरीका को वह इसीलिए रुष्ट नहीं कर सकता था और अन्त में उसे अपने देश का ध्यान रखते हुए जब रूस उसकी अवहेलना, उपेक्षा और तिरस्कार कर रहा था, अमरीका से अच्छे सम्बन्ध बनाने को बाध्य होना पड़ा। इसी दलबन्दी के कारण आज योरोप हमें दो गुटों में विभाजित मिलता है। एक ओर अमरीका की मार्शल-योजना उसे पूंजीवादी नियंत्रण में रखने के लिए प्रयत्नशील है और दूसरी ओर रूस के प्रोत्साहन से ९ राष्ट्रों के कम्युनिस्टों ने अन्तर्राष्ट्रीय संघ का निर्माण किया शक्तियों का इस प्रकार ध्रुवीकरण स्पष्ट होता जा रहा है।

विभिन्न गुटों का इस प्रकार संगठन और आत्मसंकोच स्थिति में सुधार उत्पन्न करने के स्थान पर स्थिति को बिगाड़ने में ही सहयोग देता है। यदि हम द्वन्द्वात्मक नीति का आधार लें तो हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आज की स्थिति के लिए कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय संघ की आवश्कयता नहीं है, वरन् आज उस शक्ति के संगठन की आवश्यकता है जिसने द्वितीय महायुद्ध में अपने संकुचित वर्ग हित की रक्षा के लिए नहीं, वरन् मानवता और प्रजातन्त्र की रक्षा के लिए अपूर्व और अपार बलिदान किये थे। युद्ध की समाप्ति के बाद संसार के विभिन्न देशों के मजदूर (व्यावसायिक) संघों ने एक महासंघ संगठित किया था। इसमें संसार के मजदूरों का प्रतिनिधित्व था और इसके कार्यों ने संकेत रूप से उन महान् कार्यों का सूत्रपात किया था जिसे आज प्रजातंत्र को पूरा करना है। यूनान में एक ओर ब्रिटेन के सैनिक वहां पर प्रजातांत्रिक आन्दोलन को दबाने के लिए गोली चलाते थे और दूसरी ओर ब्रिटेन के व्यावसायिक संघों ने यूनान में ब्रिटिश नीति के विरुद्ध प्रदर्शन किया। ब्रिटेन की सरकार को भी अपनी नीति में परिवर्तन करना पड़ा। स्पेन के विरुद्ध व्यापक प्रचार के लिए, भारत के प्रति सन्धि करने के लिए और कितने ही छोटे-छोटे अवसरों पर प्रजातंत्र को सचेत करने के कार्य को उक्त महासंघ ने किया। आज रूढ़िग्राही बनकर एक सिद्धान्त को जड़ता से पकड़कर और कछुये की भांति अपने हाथ-पैर सिकोड़कर अपने को सुरक्षित कर लेने की भावना से काम नहीं चल सकता। आज तो पूंजीवाद की निस्सारता को मार्शल-योजना अथवा अन्य किसी भी प्रकार की योजनाओं से अप्रमाणित नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत यदि पूर्व धारणाओं को अपना कर संकुचित मनोवृत्ति का परिचय देकर संकुचित एकदलीय अन्तर्राष्ट्रीय संघ की स्थापना की जाती है तो उससे प्रजातान्त्रिक शक्ति तो कुंठित होगी ही साथ ही श्रमिक जनता में भी वह विश्वास और बलिदान की तत्परता उत्पन्न नहीं हो सकेगी जिसकी आज के युग में आवश्यकता है। व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व से जो मोह होता है, उसी की रक्षा के लिए वह समिष्टि में सम्मिलित होता है और फिर यदि समिष्टि में उसको आत्मविलोप के लिए बाध्य कर दिया जाय तो वह स्वर्ग में भी रहना नहीं चाहेगा और व्यक्ति के व्यक्तित्व को फलीभूत करने के लिए ही हमें प्रजातान्त्रिक संस्थाओं और जीवित प्रजातन्त्र को अपने जीवन के प्रत्येक अंग में अपनाना पड़ेगा।

सोवियट रूस के वैदेशिक सचिव मोलोटोव संयुक्त राष्ट्र-संघ से अलग होनेवाले हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी ही राष्ट्र की राष्ट्रभाषा है

स्वतंत्र भारत के लिए एक सांस्कृतिक निर्णय होना जरूरी है

गत सप्ताह काशी में संयुक्तप्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन हुआ था। माननीय श्री सम्पूर्णानन्द जी अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष थे। स्वागताध्यक्ष के पद से श्री सम्पूर्णानन्द जी ने बड़ा ही महत्त्वपूर्ण भाषण दिया था। भाषण यहाँ दिया जाता है।

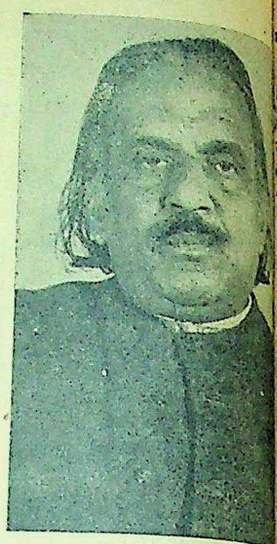

प्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के [illegible]

भारतवर्ष आज स्वतन्त्र है। दुर्भाग्य-वशात् देश के दो टुकड़े हो गये हैं, फिर भी जिस भाग में हम रहते हैं वह स्वाधीन है और हमको अब भी आशा है कि एक न एक दिन विभाजन का अन्त होगा। सामूहिक रूप से न सही पर वैयक्तिक रूप से हिन्दी साहित्य के कई प्रमुख सेवकों का स्वाधीनता के युद्ध में अग्रगण्य स्थान रहा है। हमारे मनोनीत सभापति पं० बालकृष्ण जी इस कथन के ज्वलन्त उदाहरण हैं। ऐसा होना स्वाभाविक था। साहित्यिक के चेतः प्रदेश में चतुर्दश भुवन समा जाते हैं; परन्तु वह स्वयं भूलोक-निवासी होता है। वह भले ही किसी आदर्श जगत् की कल्पना करे; परन्तु इस जगत् का रेखांकन इस वास्तविक जगत् के अट्टहास और क्रन्दन, भूख और तृप्ति, अभ्युदय और शोषण की भूमिका में ही हो सकता है। पराधीनता में लेखनी का भी गला घुटता है, हँसी की आड़ से रुलाई झांकती है, आशा पलायन का आश्रय बन जाती है। अतः साहित्य-सेवी स्वभावतः स्वाधीनता चाहता है। सम्मेलन राजनीतिक संस्था नहीं है; परन्तु मैं समझता हूँ कि यह बात तो निःशंक कही जा सकती है कि हम सब स्वाधीनता का स्वागत करते हैं और इस कष्ट-प्राप्त स्वाधीनता की रक्षा के लिए अपनी ओर से सतत यत्नशील रहेंगे।

* * *

जिस बाराणसी में हम आज मिल रहे हैं उसका भारतीय संस्कृति के इतिहास में स्थान है। ऐसा कह सकते हैं कि बाराणसी का इतिहास बेदोत्तरकालीन भारतीय संस्कृति का इतिहास है। बे त्तरकालीन कहना भी अक्षरशः यथार्थ नहीं है। ऋग्वेद काल की संस्कृति का उद्गम और विकास तो सिन्धु और सरस्वती के अन्तर्वेद में हुआ; परन्तु यजुर्वेद के ब्राह्मण यह स्पष्ट बतलाते हैं कि विद्या, राजशक्ति और संस्कृति का केन्द्र पूर्व दिशा की ओर खिसक आया था और काशी उस समय तक सांस्कृतिक आकाश का उज्ज्वल नक्षत्र बन चुकी थी। संस्कृत-भाषा इस संस्कृति का गोचर रूप है। मनुष्य-मात्र के लिए स्फूर्तिदायिनी, कल्याणकारिणी और शान्तिप्रदा है। इसी प्रकार संस्कृत भाषा भी अमर है। जो लोग उसको मृत भाषा कहते हैं वह भूल करते हैं; परन्तु यह ठीक है कि कुछ अंशों में संस्कृत का स्थान हिन्दी ने लिया है। यों तो सभी भारतीय भाषाएँ संस्कृत की दायाद हैं; परन्तु मुख्य दायित्व हिन्दी पर ही है। वह करोड़ों मनुष्यों की मातृ-भाषा है और कोई माने या न माने समूचे देश के लिए राष्ट्रभाषा है। अतः राष्ट्र की संस्कृति का वही मुख्य वाङ्मय प्रतीक है। इस संस्कृति को कई आवान्तर धाराओं ने पुष्ट किया है। साहित्य के क्षेत्र को ही लें तो हम जायसी, कबीर, रहिमन, रसखान को कदापि नहीं छोड़ सकते, वह किसी एक धर्म, एक सम्प्रदाय-मात्र से सम्बन्धित नहीं है, फिर भी यह मानना ही होगा कि इसका मूल स्रोत, इसका चिरनूतन आधार तो वही है जहां से हमारे ऋषि पूर्वजों को सामगान की प्रेरणा मिली है। हमारे ऊपर बहुत बड़ा दायित्व है। जिस पीठ पर से वशिष्ठ, विश्वामित्र भृगु, अंगिरा, व्यास, वाल्मीकि 'इमा वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः' का उपदेश दिया था, जिस मंच पर से कालिदास, भवभूति, माघ, बाण, तुलसी, सूर, कबीर, मीरा की वाणी ने समाज को ऊपर उठाया था उसी पर आज हिन्दी का साहित्यकार बैठा है। वह भले ही भविष्यत् के गगन में लम्बी उड़ान ले, भले ही दूर देशों के विद्वानों के उपदेशों से अपनी बुद्धि को परिष्कृत करे; परन्तु उसको यह समझ लेना चाहिए कि वह महती परम्परा का दायाद है। उस परम्परा का उच्छेद करके वह टूटे हुए तारे की भांति क्षण भर चमककर सदा के लिए विलीन हो जायगा। कम से कम इतनी बात तो नहीं ही भूलना चाहिए। हमारे आचार्यों ने ऐसा माना है कि काव्य का उद्देश्य शिवेतरक्षति अर्थात् शिव का विस्तार है और शिव वहीं है जहां सत्य है, अभेद है, द्वितीया द्वे भयं भवति। आज स्वाधीनता के उषःकाल में हमें यह बात दृढ़ता से हृदयंगम कर लेनी है। व्यथित जगत् के लिए हमारा यही सन्देश होना चाहिए।

* *

मुझे हिन्दी के भविष्य के विषय में कोई चिन्ता नहीं है। राजाश्रय न होते हुए भी हिन्दी पनपी है, आगे भी अपने गुणों के बल पर उन्नति करेगी। मैं जानता हूँ कि कुछ लोगों को 'हिन्दुस्तानी' ने वात-व्याधि की भांति ग्रस लिया है। उनमें महात्मा जी जैसी दूरदर्शिता नहीं है, समवेदन नहीं है, तितिक्षा नहीं है, तपस्या नहीं है, सत्यनिष्ठा नहीं है, किसी भी अंश में महत्ता नहीं है।' वह महात्मा जी के बतलाये पंथ पर अन्य बातों में दूर तक चलने में असमर्थ हैं, परन्तु हिन्दुस्तानी शब्द को उन्होंने पकड़ लिया है। ऐसे मनुष्य दया के पात्र हैं। भारत के जिस भूखंड में हम रहते हैं वह किसी के साथ अन्याय नहीं करना चाहता। यहां के अधिकतर निवासी हिन्दू हैं, परन्तु वह मुसलमानों की संस्कृति पर आघात नहीं करना चाहते। मुसलमान का धर्म सुरक्षित है, उससे कोई नहीं कहता कि वह धर्म-कृत्यों में अरबी को छोड़ दे। इतना ही नहीं, यदि वह समझता है कि उसकी कोई अपनी पृथक् संस्कृति है और उस संस्कृति के व्यक्त करने का माध्यम उर्दू है तो वह सुख से उर्दू पढ़े-पढ़ावे। परन्तु यह कहां का न्याय है कि १४ प्रतिशत की भाषा को ८६ प्रतिशत की भाषा की बराबरी की जगह दे दी जाय। स्विटजरलैण्ड का उदाहरण यहां नहीं बैठता। न तो यहां का इतिहास वैसा है, न समुदायों में वैसा अनुपात है, न हिन्दू मुसलमान, फ्रेंच, जर्मन, इटालियन की भांति भिन्न जातियां हैं। एक ही पिता की सन्तान हिन्दू और मुसलमान दोनों हो सकते हैं। मनुष्य अपने जीवन में ही हिन्दू से मुसलमान और मुसलमान से हिन्दू हो सकता है। यह बात स्विटजरलैंड में नहीं होती। वहां धर्म-परिवर्तन तो हो सकता है परन्तु किसी के लिए अपने जर्मन या फ्रेंच या इटालियन होने से पिंड छुड़ाना उतना सुकर नहीं है। अतः हमारे यहां उर्दू हिन्दी के समकक्ष नहीं हो सकती। अच्छिन्न भारत में भी वह हिन्दी के बराबर नहीं हो सकती थी अब पाकिस्तान बनने के बाद तो उसका अनुपात-प्राप्त पद और भी गिर गया। हमारे प्रान्त में तो बराबरी का प्रश्न उठता ही नहीं। अब उर्दू को छोड़कर हिन्दुस्तानी को लीजिये। यह हिन्दुस्तानी क्या है? यदि इस पद का अभिधेय हिन्दी या उर्दू में से एक है तो कौन? उर्दू हमारी मुख्य भाषा हो नहीं सकती। हिन्दी [illegible] देख पड़ता। एक समय था जब हम मेल के लिए हिन्दी नाम छोड़कर हिन्दुस्तानी नाम भी स्वीकार कर सकते थे पर अब वह दिन गए। जिससे मेल करना था वह तो हमको छोड़कर चला गया। उसने नया देश ही बना लिया है। यदि हिन्दुस्तानी दोनों से भिन्न कोई पृथक् भाषा है तो हमें कृत्रिम भाषा न चाहिए। यह भी स्मरण रखना चाहिए कि हम अपनी भाषा से उन शब्दों को हठात् नहीं निकालने जा रहे हैं जो सैकड़ों वर्षों में उसके अंग बन गये हैं। जितना समन्वय प्राकृतिक है उतना हमारी हिन्दी में [illegible]। इतना हम और स्पष्ट कर देना चाहते [illegible] क यद्यपि तर्क की सुविधा के लिए हिन्दू मुसलमानों की जनसंख्याओं का आश्रय लेना पड़ता है, परन्तु हम यह नहीं मानते कि हिन्दी केवल हिन्दुओं की भाषा है, वह इस प्रान्त के अधिकतर निवासियों की भाषा है, जिनमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सभी हैं।

जहां कुछ लोगों के लिए हिन्दुस्तानी वातव्याधि है वहां कुछ दूसरे लोगों के लिए हौआ हो रहा है। सतर्क रहना उचित है परन्तु सतर्कता का अतिमात्रता मानस रोग है। कुछ लोगों को सर्वत्र हिन्दुस्तानी ही देख पड़ती है। उनको प्रतिक्षण यही प्रतीत होता है कि हिन्दी पर गुप्त या प्रकट प्रहार हो रहा है। न उनको हिन्दी के आभ्यन्तर, नैसर्गिक गुणों पर भरोसा है, न अपने ऊपर भरोसा है, न दूसरे भारतीयों के हिन्दी-प्रेम या गुणों पर भरोसा है। स्वाधीनता की घोषणा हो गई, पाकिस्तान बन गया। हमारे प्रान्तों की सरकारों को चलानेवालों में अधिकांश हिन्दू हैं, जिनको भी हिन्दी से यथोचित स्नेह होगा ही। परन्तु हिन्दी के ये भयग्रस्त सेवक सन्तुष्ट नहीं होते। उनकी समझ में यह बात आती ही नहीं [illegible] ध्यक्ष माननीय श्री संपूर्णानन्द [illegible] कि अपने ही आदमियों को, जो [illegible] दायित्व के स्थानों पर हैं, व्याज [illegible] नासमझ, भीरु, दुर्बल या कपटी [illegible] हम हिन्दी की सेवा नहीं कर [illegible] प्रहरी को कोसना प्रहार को रोक [illegible] अच्छा उपाय नहीं है।

* *

कोई प्रहार कर रहा हो या न [illegible] रहा हो हमारे प्रान्त की—और [illegible] प्रान्तीय सम्मेलन का क्षेत्र तो यह [illegible] ही है—मुख्य भाषा तो हिन्दी है [illegible] रहेगी। हिन्दी ही हमारी संस्कृति [illegible] भावनाओं, आकांक्षाओं, आदर्शों [illegible] प्रतीक है। उसी के द्वारा हमारे उज्ज्व [illegible] अतीत और उज्ज्वलतर अनागत [illegible] समन्वय की यथार्थ अभिव्यक्ति हो [illegible] है, अब वह प्रान्त की राजभाषा भी [illegible] गई है। सैकड़ों वर्षों के बाद यह [illegible] देखने को आया है। दुःख की बात [illegible] कि कल्पित भय और आशंका ने [illegible] लोगों को इस बात की महत्ता [illegible] समझने से वंचित कर दिया है। [illegible] राजभाषा बन जाने से किसी भाषा [illegible] अभ्युदय निश्चित नहीं हो जाता; [illegible]

शेष पृष्ठ १६ पर

मुझे दाँतों और मुँह में स्वच्छता और ताजगी मालूम होती है
जब कि मैं कोलगेट डेण्टल क्रीम इस्तेमाल करती हूँ!

खाने के बाद ही मैं अपने दाँतों को कोलगेट डेण्टल क्रीम से साफ करती हूँ, वह इसलिए कि वे चमकदार और स्वच्छ रहें। मेरे सारे मुँह में ताजगी और सुगन्ध रहती है। और मैं अच्छी तरह से जान गई हूँ कि मेरे श्वास में विकार न रहेगा—कोलगेट के फेन दाँतों के छेदों के बीच घुसकर भोजन की गन्दगी को दूर करते हैं, क्योंकि यही गन्दगी दाँतों में बदबू का कारण बनी रहती है।

कोलगेट डेण्टल क्रीम—बिना किसी हानि के दाँतों को स्वच्छ करती और दाँतों के ऊपरी भागों और मसूड़ों को चमका देती है। यही कारण है कि मैं इसे नित्यप्रति इस्तेमाल करती हूँ। दिन में एक बार नहीं कम से कम दो बार।

COLGATE RIBBON DENTAL CREAM

NO BAD BREATH BEHIND HER SPARKLING SMILE!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरणार्थी

लेखिका, कुमारी कांति श्रीवास्तव, एम० ए०

आजकल भारत में शरणार्थियों की बाढ़ आ गई है। लाखों नरनारी और बच्चे अनाथ हो गये हैं। राव से रंक, धनी से निर्धन तथा घर से बेघरबार हो गये हैं। इस कहानी की रचना का आधार भी शरणार्थियों की आज की समस्या ही है। कहानी कला की दृष्टि से चाहे उत्कृष्ट न हो, किन्तु आये दिन के ज्वलंत तथा हृदयविदारक मनोभावों का चित्रण मर्मस्पर्शी ढंग से किया गया है।

"रेखा दीदी! रेखा दीदी! आज स्टेशन चलोगी?"

"क्यों? आज स्कूल से आते ही तुझे यह कैसी धुन सवार हो गई—अजब धुनी लड़की है। अरे पहले यह तो बता कौन-सा ऐसा आवश्यक कार्य आ पड़ा है"—उत्तर की प्रतीक्षा करती हुई रीता ने दैनिक पत्र को अलग रख दिया मानो वह आज के कार्य-कलाप से पूर्ण अनभिज्ञ है।

"रेखा दीदी! तुम तो कभी-कभी ऐसी बेतुकी बातें करने लगती हो कि क्या कहें, इस दैनिक पत्र में क्या कुछ नहीं निकला? तुम तो मुझसे कभी कुछ नहीं बताती पर स्कूल में राजो कहती थी दीदी.....बहुत से शरणार्थी आ रहे हैं। राजो भी जायेगी। दीदी मां से मुझे भी आज्ञा दिला दो"—एक सांस में ही रेखा सब कह गई प्रसन्नता के आवेश में उस बालिका को क्या पता कि उन शरणार्थियों के शरीर का रोम-रोम वेदना, मर्मान्तिक पीड़ा से उत्पीड़ित हैं। जो कभी संसार के सम्मुख प्रदर्शन की वस्तु नहीं थे आज उनकी प्रदर्शनी हो रही है। जीवन का उलटफेर तो यही है।

रेखा की बाल्य सुलभ चपलता एवं चंचलता को सुनकर रीता के सूखे मुखड़े पर न जाने क्यों स्मित की एक रेखा झांकने लगी; किन्तु अन्तःविषाद भला उस मुसकान के भुलावे में क्यों आने लगी अतएव रीता भी विषादो-मुख होकर बोली—"रेखा जानती हो यह शरणार्थी क्या हैं। पँचनद, लाहौर, वंगभू, दिल्ली आदि साम्प्रदायिकता की आग से झुलसने वाले देशों के झुलसे हुए मानवरूपी अंगारे हैं। भय के आवरण ने जिन्हें ढक लिया है किन्तु उनके अन्तरतम् में अब भी प्रतिशोध की ज्वाला प्रज्ज्वलित है—कब भड़क उठेगी अज्ञात। अभी कुछ दिन पूर्व ही जो सुख की नींद सोते थे, आलीशान मकानों अथवा अपने शान्ति कुटीर में रहते थे उसी व्यक्ति को आज के नवनिर्मित विश्व ने शरणार्थी की संज्ञा दी है। रेखा! तू तो अभी बच्ची है—क्या बतायें आज यह दाने-दाने के लिए दूसरों के आश्रित हैं। बस इतना ही तू समझ ले यह दया के पात्र हैं केवल देखने-दिखाने से कार्य सम्पन्न न होगा। अच्छा बोल! क्या तेरा नाम स्वयंसेवक दल में लिखा दें? कुछ करेगी?"

"हां! हां। दीदी—मैं करूँगी"—रीता के यथार्थ चित्रण को सुनकर कुछ भयातुर कंठ से रेखा ने उत्तर दिया।

"अच्छा जा! शीघ्र तैयार हो जा। गाड़ी का समय हो रहा है"—रीता ने उठते हुए कहा।

स्टेशन के प्रवेश-द्वार पर पहुँचते ही—"आजाद हिन्द की जय" की प्रतिध्वनि से दिगन्त घोषित हो गया। रीता भी शीघ्र उस ओर लपकी किन्तु देखती क्या है यात्रियों के समूह जय-जयकार करते हुए उतर रहे हैं किन्तु न जाने किस ओर से उसी समूह के अन्तराल से एक नारी की कुछ अस्पष्ट स्वर लहरी सबको उसी ओर आकर्षित कर रही है। किसी-किसी प्रकार वह नारी उस भीड़ में से निकलकर चिल्लाने लगी—"आजाद हिन्द की जय" कौन पुकार रहा है? मैं इस शब्द को नहीं सुन सकती। क्यों मैं इसकी जय मनाऊँ—क्या दिया मुझे इस आजाद-हिन्द ने। देने को कौन कहे जो कुछ मेरे पास था; धन, जन, भाई-बन्धु, पति, पुत्र सभी को तो लील लिया इसने। क्या इसी की प्रतीक्षा हम लोग इतनी विकलता तथा उत्सुकता से करते थे? भाइयो! बहनो! यह तुम लोग किसकी जय-जयकार कर रहे हो? अरे भाई आज सब लोग कहो प्रतिशोध, प्रतिशोध। जिसने मेरी लड़की को न जाने कहां किस दुनिया के कोने में छिपा दिया, मेरे नेत्रों के सम्मुख एक दो नहीं चार-चार पुत्रों को अंक से छीनकर रसातल को पहुँचा दिया—क्या मैं उससे बदला न लूंगी—मुझको ईश्वर ने प्रतिशोध लेने के लिए ही तो बचाया है"—कुछ क्षण के लिए मौन होकर वह फिर चिल्ला पड़ी—"अच्छा जल्दी बताओ कौन-कौन मेरा साथ देगा? कोई तो बोलो—"कुछ कहो.....यह क्या .....तुम सब तो चले जा रहे हो ....."

इस हृदय-विदारक चीत्कार को सुनकर रीता उस नारी के समीप करबद्ध जाकर खड़ी हो गई और बोली—"मां! मां! देखो मैं तुम्हारी पुत्री ही तो हूँ—मेरे साथ आइये—मैं सब कुछ सुनूंगी। लीजिये थोड़ा जल पी लीजिये।"

"अच्छा! तुम मेरी पुत्री हो? इतने दिन में ही तुम्हारा रूप-रंग बदल गया? बताओ क्या वास्तव में तुम मेरी हो"—विस्मय विमुग्ध नेत्रों से निर्निमेष देखती हुई बोली।

जीवन में कभी-कभी ऐसे अवसर आ जाते हैं कि मानव स्वयं अपने को नहीं समझ पाता—सत्य असत्य के भँवर में चक्कर काटा करता है किन्तु सार तत्त्व क्या छिपा सका है? रीता का हृदय भी रो उठा। उसने सोचा क्या मैं धोखा

इस शरणार्थी नारी के लिये संसार अंधकारमय है, क्योंकि यह अपना समस्त धन-जन खो चुकी है।

हूँ—पर नहीं इसमें धोखा की क्या बात! ठीक ही तो है मन में संकल्प-विकल्प करती हुई रीता बोल उठी—मां इस संसार में जितनी भी मेरी समवयस्का हैं सभी आपकी पुत्री हैं। मेरे साथ आइए।"

"हां! ठीक कहती हो। चलो कहां ले चलोगी। बेटी मेरे बांदीगण से प्रतिशोध लोगी न? यह मत सोचना कि मैं एकाकी हूँ—एक छोटी-सी टिमटिमाती हुई चिनगारी सम्पूर्ण विश्व को भस्मसात कर सकती है"—प्रश्नसूचक दृष्टि से उस नारी ने रीता की ओर देखते हुए कहा।

नारी के मर्मस्पर्शी कथन को सुनकर रीता अकचका गई लेकिन वह अपने पथ से विचलित न हुई, न कुछ उत्तर ही दिया। मौन भाव से रेखा तथा उस युवती को लेकर वह टांगे पर जा बैठी। एक रात विश्राम करने के पश्चात प्रातः ही वह नारी रीता के पास आई और कहने लगी—"बेटी तुम मुझे सब सुख देती हो किन्तु मेरी प्रतिशोध की भावना कुंठित नहीं हो रही है—मेरी आत्मा मुझे कोसती है—बिना प्रतिशोध के मैं एक क्षण भी नहीं रह सकती। न हो तुम मुझे मेरे गिरोह में पहुँचा दो। मेरा अन्तरवासी बार-बार मुझे उसी ओर प्रेरित कर रहा है"।

रीता ने नारी के कथन का समर्थन करते हुए कहा—"मां! क्या तुम, अपनी बेटी की कुछ बातें सुनोगी? वास्तव में तुम लोगों का दुःख कल्पनातीत है, पर मां जरा ठंढे मन से सोचो—अब प्रतिशोध का दीपक जलाने से क्या लाभ? निर्जीव प्राणी में पुनः रक्त-संचार करना शक्ति के सीमातीत है फिर भला बताइए उन बेगुनाह प्राणी को मारने से क्या लाभ? हत्यारे को यदि हम दन्डे दे सकें तो भी किसी हद तक उचित है किन्तु

पंजाब के शरणार्थी जिनमें स्त्री-पुरुष, बूढ़े-जवान बेघरबार हो गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके वर्ग के अन्य प्राणी को मारकर केवल पाप की गठरी को भारी करना ही है। हां! कदाचित् एक क्षण के लिये शान्ति मिल जाय पर यह शान्ति स्थायी नहीं है। तुम्हीं सोचो मां यह कहां तक न्यायसंगत है—सम्पूर्ण यात्रियों के समूह को एक साथ साफ कर दें, चलती हुई गाड़ी अचानक अबाल वृद्ध को ढेलों की भांति फेंक दें—कितना निर्मम कर्म है। अब हम परतंत्र नहीं हैं। अब तो अतीत की कठनाइयों को विस्मृति करके एका का सुदृढ़ राज्य स्थापन करना ही शोभनीय लगता है न की अशान्ति। बताओ मां! अहिंसा से रिझाये हुये भारत पर हिंसात्मक अत्याचार करना कितना अन्याय है?"

"बस बेटी, बस! अधिक मत कहो। घायल की गति घायल जान सकता है—हम लोगों के साथ रुधिर की होली खेली गई है....."

"मां, क्षमा कीजियेगा उद्दण्डता के लिये। मेरी आपके प्रति हार्दिक सहानुभूति है। एक बात मैं आपसे पूछती हूं—इस बदला-बदली के युद्ध का क्या कभी अन्त हो सकता है? शान्ति की सुदृढ़ लता को क्या पुनः लहलहा सकेंगे? कभी नहीं। इस समय तो विस्मरण, क्षमा, दया के अभय अस्त्र का यदि प्रयोग करें तो यह गृह-कलह एक पल में ही विनष्ट हो जायगी। एक बात और मां! इस प्रकार अशान्ति-पूर्ण जीवन कब तक सह्य हो सकेगा? इसके अतिरिक्त संदेह नहीं कि कोहराम से उकताकर स्वतंत्रता देव भी रूठकर प्रयाण कर जायँ। अपने विश्वसनीय नेता पर विश्वास रखकर भविष्य-निर्माण की चिन्ता करना चाहिये। मां! आप इस पर विचार करिये, पुनः सोचिये बापू के पाठ को हृदयंगम करना ही वातावरणनुकूल है तथा है श्रेयस्कर"। इतना कहते रीता, मां के चरणों पर गिर पड़ी।

"उठो बेटी! ठीक कहती हो। मेरी आंखें खुल गईं। किन्तु बेटी केवल मेरे समझने से तो काम न चलेगा आज तो प्रत्येक के निकट यही प्रश्न है। अब चलो इसी का प्रचार करें। स्वतंत्र भारत की जय। स्वतंत्र भारत की जय" कहते-कहते नारी के नेत्रों से अश्रु की धारा बहने लगी। यह अश्रु प्रसन्नता के थे अथवा अप्रसन्नता के—यह तो अश्रु ही जानें।

मां की इस वाणी को सुनकर रीता विमुग्ध मृगी के सदृश्य देखती ही रह गई।

इधर उधर की

उत्तरी ध्रुव का पता लगानेवाला सबसे पहला यात्री फ्रैंकलिन था। वह सौ वर्ष पूर्व अटलाण्टिक महासागर से ध्रुव की पता लगाने चला था। कनाडा के उत्तरी ध्रुव प्रदेशीय समुद्री सीमा से २०० मील उत्तर फासले पर वह मरा था।

* * *

सन् १६९७ से लेकर १८५१ ईसवी तक इंगलैंड में ६ से अधिक खिड़कीवाले मकानों में टैक्स लगाये गये थे। टैक्स हटने के अन्तिम वर्ष में १८,५५,००० पौंड टैक्स खिड़कीवाले मकान-मालिकों से प्राप्त हुआ था।

* * *

सूर्य का प्रकाश चन्द्रप्रकाश से ४,००,००० गुना अधिक तेज चलता है।

* * *

मनुष्य का शरीर का सबसे महत्त्वपूर्ण वस्तु हृदय है। वह हृदय सम्पूर्ण शरीर की तौल का ·४६ प्रतिशत है।

* * *

संसार का सबसे गहरा महासमुद्र प्रशान्त है। फिलीपाइन्स द्वीपसमूह के मिनडानाव द्वीप के नीचे की गहराई अब भी नहीं नापी जा सकी। अभी तक ३५,४०० फ़ीट की गहराई का रिकार्ड नापा जा सका है।

* * *

नीली ह्वेल संसार का सबसे बड़ा पशु है। यह १०० फीट लम्बा और १०० टन से ऊपर वजन में होता है।

* * *

बरमूडा ३६० छोटे-छोटे प्रवल द्वीप-समूहों का एक बड़ा द्वीप-समूह है। इसमें २० ही द्वीप-समूह ऐसे हैं जो आबाद हैं।

* * *

एक ऐसे ताले का आविष्कार हुआ है जो ६ पिन की कुंजी से खुल सकता है। इस ताले को 'कोड लाक' कहते हैं। इसकी कुंजी इसी में लगी रहती है।

* * *

आजकल ब्रिटेन में नये ढंग की नौकायें तैयार की जा रही हैं। ये चलनेवाले पंखों से बंधी रहती हैं। इन्हें "सीगुल" कहते हैं; और ये २६० मील प्रतिघंटे की गति से चलते हैं। जल पर उतरते समय इसकी रफ्तार ४० मील प्रतिघंटा हो जाती है। इस बात की शक्ति २,५०० घोड़े की है।

* * *

एक नये वायुयान का आविष्कार हुआ है। इसका नाम "केकरडिया" है। इसकी शक्ति ५५० घोड़ों की है। यह १९० मील प्रतिघंटा चल सकता है। यह ९३० पौण्ड वजन ले जाया जा सकता है।

* * *

आप भी अत्यधिक सुन्दरी हो सकती हैं

क्या तुम यह चाहती हो कि वह (पुरुष) तुमसे प्रेमविवश करे कि "प्रिये तुम मेरी हृत्तन्त्री हो?"

तब काश्मीर बुकेट फेस पाउडर इस्तेमाल करो। वह तारों के चूर्ण की भांति चिकना है। यह तुम्हारे चेहरे को कितने ही घंटों तक चमकदार रखेगा। तुम्हारे चेहरे की वास्तविक प्राकृतिक स्फूर्ति प्रदर्शित कराएगा।

इसकी आनन्ददायक सुगन्ध जल्द नहीं उड़ेगी, क्योंकि काश्मीर बुकेट में "मास डि चेमी" पदार्थ मिला है जो इस फेस पाउडर को अत्युत्तम बना देता है।

काश्मीर बुकेट की सुगन्धित शृङ्गारक वस्तु से अपने पूर्ण सौन्दर्य को विकसित करो क्योंकि सुगन्धि ही से मनुष्य प्रेम करता है।

Cashmere Bouquet Products WITH THE FRAGRANCE MEN LOVE

अन्तू सरदार

भरोस सरदार के लड़की के सिवा कोई सन्तान न थी। और भरोस था ऐसा लठैत जिससे पुलिस भी डरती थी। एक जमींदार के यहाँ भरोस नौकर था। उसने अपनी बेटी को भी लाठी चलाना सिखला दिया था। इसका ब्याह जिस अनन्त (अन्तू) से किया गया था वह भरोस से सवाया था। एक झमेले में बड़ी मार-काट हुई। इसमें अन्तू की स्त्री भी मारी गई और भतीजा प्रताप पागल-सा हो गया। पुलिस ने अन्तू को गिरफ्तार कर सज़ा करा दी। इधर प्रताप भी चल बसा। यह कहानी है तो बड़ों के लिए भी रोचक, परन्तु बच्चों को बहुत पसन्द आवेगी। सुन्दर सरल भाषा, कई चित्र और कवर-पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल बारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CB 1

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयां—

क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारा रंग-मंच

'शहनाई'

प्रतीय-छायालोक का कलंक

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

स्वतन्त्र-भारत की उन्नतिशील जनता के सम्मुख सुसंस्कृत एवं राष्ट्रीय चित्रों की घोषणा करनेवाली, भारतीय छायालोक की, निर्माण संस्था फिल्मिस्तान ने 'चल-चल रे नवजवान', 'शिकारी', 'सफर', 'आठदिन' आदि का निर्माण करने के पश्चात् 'शहनाई' को प्रदर्शित किया। कथाकार श्री प्यारेलाल 'संतोषी' ने कहानी को इस भांति प्रस्तुत किया है :--

बाबू ललिताप्रसाद, नौटंकीवाले, की चार अविवाहित तरुण-पुत्रियाँ--सरला, विमला, कमला, तथा निर्मला--संगम-ताल पर गीत गाती हुई स्नान कर बाहर आती ही रहती हैं कि सौभाग्यवश कमला अर्थात् प्रमिला का रंगपुर के नए जमींदार ठाकुर प्रतापनारायण की पुत्री की बन्दूक से निकला हुआ छर्रा लग जाता है। मिस प्रमिला कुछ अपमानजनक शब्दों का प्रयोग कर बैठती हैं। एक घटनावश बा० रामोहन का पुत्र, विक्रम डाकू, मिस प्रमिला का हार चुरा लेता है; परन्तु दुर्भाग्यवश वह इसका अभियोग ललिताप्रसाद की पुत्रियों पर लगाती है। प्रमिला के ससुर राजा महेशप्रसाद, रियासत राजनगर के महाराज के कथानुसार अपने सुपुत्र कुंवर राजेश की तिलक के शुभअवसर पर, ललित अपनी नौटंकी की प्रतिभा का प्रदर्शन करने राजनगर जाता है। कुछ कारणवश कमला और राजेश की भेंट हो जाती है। कमला स्वयं को 'प्रमिला' बताती है। अपने अपमान का प्रतिकार प्राप्त करने के कारण वह राजेश को अपने प्रेम-बंधन में बंधित कर लेती है। एक घटनावश प्रमिला और विक्रम डाकू की भेंट हो जाती है। प्रमिला उसे अपना भावी पति राजेश समझती है। वे दोनों प्रेम की बंशी बजाना प्रारम्भ करते हैं। रहस्य, अरहस्यमय हो जाता है, जिसके फलस्वरूप कुंवर साहब कमला को ठुकरा देते हैं। राजा महेश के 'सेक्रेट्री' सुखलाल के रोग की समाप्ति करने के लिए उनका विवाह कमला के बजाय विमला से हो जाता है। भेद खुल जाने पर भी प्रमिला विक्रम से प्रेम करती है। राजेश अपनी भूल का पश्चात्ताप करते हुए प्रमिला से विवाह करने के लिए कहता है। अपनी बहन कमला को प्रसन्नता प्रदान करने की चेष्टा में सरला और निर्मला तथा उनके प्रेमी ललन, ठाकुर प्रतापनारायण के भतीजे, एवं 'पुलिसइंसपेक्टर' पहली द्वारा एक शतरंज की चाल चलते हैं। वे सफलीभूत भी होते हैं। उसी समय प्रमिला और विक्रम भागने की चेष्टा में पकड़े जाते हैं। ठाकुर साहब की अप्रसन्नता द्वारा विक्रम का भेद खुलता है। अभाग्यवश ठाकुर प्रतापनारायण रक्त का घूंट पीते हुए, पूर्व पापों के प्रायश्चित-स्वरूप, प्रमिला का पाणिग्रहण विक्रम से करते हैं। सुख-शान्ति पूर्वक कमला और राजेश का विवाह हो जाता है। श्री संतोषी अपनी विद्वत्ता की विचित्रता द्वारा उन अवशेष इश्क के कीड़ों, इन्सपेक्टर का निर्मला तथा ललन का सरला, में विवाह करा दिया जाता है।

कहानी निरर्थक, अश्लील, अस्वाभाविक, अशिक्षात्मक एवं कहानीकार के दिवालियापन का साक्षात् प्रतीक है। केवल एक जोड़े विवाह के स्थान पर पाँच-जोड़े विवाह के अतिरिक्त पूर्ण चित्रपट में कोई विशेषता अथवा नूतनता नहीं है। प्रस्तुत चित्र की कहानी फिल्मिस्तान की पूर्व कृत 'शिकारी' की नकल का ज्वलंत उदाहरण है। पूर्ण चित्र में 'प्रेम का साम्राज्य' स्थापित किया किया गया है। चित्र का प्रथम दृश्य पूर्णतया मिथ्या है। यदि श्री संतोषी के सांस्कृतिक संस्कार होते तो वे मानव-जाति की उच्चतम नैतिकता का इतना घृणित चित्रण न कर बैठते। अनेक स्थानों पर कथा-लेखक ने दर्शकों में 'सेक्स' भावना को भड़काने का प्रयत्न किया है। क्या श्री संतोषी ने कुत्सित-कथा प्रस्तुत करके समाज एवं राष्ट्र के प्रति एक असहनीय विश्वासघात नहीं किया है? क्या सिने-कथाकारों का इतना नैतिक पतन हो गया ह ? आज देश में साम्प्रदायिकता की आग लगी हुई है और आप प्रेम का राग अलाप रहे हैं। बड़े

शहनाई फिल्म में अभिनय करनेवाले हास्य-अभिनेता श्री देसाई।

शर्म की बात है। ऐसे उछृङ्खल, वासनामय एवं निन्दनीय प्रेम-कहानी का अन्त भी कभी होगा अथवा नहीं? संतोषी जी ने स्वयं अश्लील, तत्त्वहीन एवं 'कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा' प्रतीत होनेवाले संवाद लिखे हैं। जैसे--'पहले समान तो लाओ', 'पहले चूल्हा तो जलाओ'। 'आजकल की लड़कियाँ तो 'इश्क' में बी० ए० 'पास' होती हैं।' कितनी सरलता से आपने एक दो टक के आदमी की भाँति लिख दिया? जिस नारी-जाति से आपकी उत्पत्ति हुई, उसी का आप दुस्साहस अपमान कर बैठे। धिक्कार है आपकी कृतियों पर ! धिक्कार है आपके परिश्रम पर !! धिक्कार है आपके जन्म पर!!! संवाद-लेखकों की इस नीचता को अब महिलाओं को और अधिक शून्य होकर सहन नहीं करना चाहिये वरन् भविष्य अंधकारमय ही दृष्टिगोचर होता है। श्री संतोषी द्वारा लिखित गीत उछृङ्खल, अश्लील, गन्दे तथा असंतोषजनक हैं। गीतों का रसास्वादन कीजिए--'छुक छुक छइयाँ छइयाँ', 'आना मेरी जान सण्डे के सण्डे', 'जवानी की रेल चली रे', 'पहली ही मुलाकात में दिल आपका हुआ, आपका हुआ आपके बाप का हुआ' इत्यादि इत्यादि। बताइये इन गीतों में क्या आदर्श दिखलाने का प्रयत्न श्री संतोषी न किया है? इस भाँति की प्रवृत्ति तो 'चवन्नी क्लास' क्या दो पैसेवाले क्लास के लिये भी मान्य नहीं--किन्तु चूंकि संतोषी जी 'रोमांस' और 'सेक्स' के ज्ञाता हैं--अतः राष्ट्रीय एवं सुरुचिपूर्ण गीतों को स्थान क्यों दें? इसके अतिरिक्त लगभग प्रत्येक गीत में 'जवानी' तथा 'इसीलिये तो कहा था बेटा' प्रयोग किया गया है। श्री सी० रामचन्द्र का संगीत-निर्देशन निम्नकोटि का है। दो गीतों के अतिरिक्त समस्त गीतों की 'ट्यून्स' इनके गाड़ीवालों से मिलती जुलती हैं। श्री के० के० कपाडिया का चित्रालेखन सुन्दर एवं संतोषजनक है; परन्तु अकलात्मक। श्री पी० आर० निकम का 'मेकअप' असंतोषजनक एवं अस्वाभाविक है। आप निकम नहीं 'निकम्मे' प्रतीत होते हैं। श्री जे० बी० जगपत की 'सेटिंग्स' रुचिकर एवं सफल है। श्री एच० आर० स्प्ले का ध्वनि-आलेखन संतोषप्रद हुआ है। 'छाया-लेखन' भी सुन्दर हुआ है। श्री प्यारेलाल संतोषी का 'दृश्य-दृश्यावलियाँ' लेखन असंतोषजनक है। श्री मुमताज-अली के नृत्य-निर्देशन में उछृङ्खलता एवं अश्लीलता का प्रदर्शन किया गया है। आपमें कला का स्पर्शमात्र भी नहीं। केवल 'कुत्सित संकेतों' की अधिकता दृष्टिगोचर हुई है।

अभिनय-कला की दृष्टि से सबसे सुन्दर अभिनय प्रमिला की भूमिका में इन्दुमती ने अभिनीत किया है। आपके हाव-भाव पूर्णतया वीरा ('शिकारी' एवं 'आठदिन' की नायिका) से मिलते-जुलते हैं। आपने 'मजदूर' में भी सफलता प्राप्त की है। विक्रम डाकू की छाया में श्रीनाथ ने स्वाभाविक कार्य किया है। कमला की कल्पना में रेहाना ने सफलता का प्रदर्शन किया है। प्रत्येक वेश-भूषा में आप अत्यधिक फबी हैं। अन्तिम-गान आपका प्रशंसनीय है। कुँवर राजेश की काया में नसीर खाँ ने अस्वाभाविक, अकलात्मक एवं निरर्थक अभिनय-अभिभूत किया है। आप किसी भी दृष्टि से एक अभिनेता होने योग्य नहीं हैं। नसीर खाँ केवल 'किराये के टट्टू' प्रतीत होते हैं। ललन के अभिनय में मुमताजअली पूर्णतय 'हिजड़े' प्रतीत होते हैं--इसका विशेष कारण आपका निम्नकोटि का 'मेक-अप' होना है। इन्सपेक्टर साहब की भूमिका में कृष्ण-कुमार ने सफलता का उदाहरण दिया है। ललिताप्रसाद नौटंकीवाले के रूप में हास्यअभिनेता बी० एच० देसाई ने सफलता प्राप्त की है। लड़कियों की माँ के आवरण में लीला मिश्रा ने स्वभाविक अभिनय किया है। ठाकुर प्रतापनारायण की छाया में एस० एल० पुरी के अभिनय की विशेषता उसका 'गदहे' की भांति हँसना है--जो पूर्णतया निरर्थक दृष्टिगोचर होता है। शेष पात्रों का कार्य उल्लेखनीय नहीं है।

प्रस्तुत चित्र का दिग्दर्शन श्री प्यारेलाल संतोषी ने किया है। प्रथमतः कहानी का नाम 'प्रतिकार' होना चाहिये 'शहनाई' नहीं। दो-चार स्थानों पर शहनाई का प्रयोग कर देने पर ही उस चित्र का नाम 'शहनाई' रख दिया जाय? 'टेकनिक' की दृष्टि से चित्र तीसरी श्रेणी से भी गिरा हुआ है। श्री संतोषी ने असाक्षर जनता की दुर्बलताओं से खिलवाड़ किया है। यह तो है संतोषी की असामयिक एवं बेसुर की घृणित 'शहनाई', जिसके बारे में ढोल पीटे जा रहे थे कि उसमें 'नवीनता' ह। पता नहीं यह क्या बला है? क्या 'प्रेम की ध्वजा' दृष्टिगोचर कराना तथा 'मार कटारी मर जाना' जैसे कई अश्लील गीतों को गवाना ही 'नूतनता' ह? यह तो ह हमारे फिल्म-उद्योग के निदशकों की नवराष्ट्र के प्रति

फिल्मिस्तान के प्रसिद्ध अभिनेता श्री अशोक कुमार।

कर्तव्य। रोना तो इस बात का है कि भारतीय दिग्दर्शक ऐसी अश्लीलता का दिग्दर्शन करके अपने आपको महान् कलाकार घोषित करते हैं। मुझे तो विश्वास नहीं होता कि प्रभात की अनमोल कृति 'हम एक हैं' का श्री संतोषी ने स्वयं निर्देशन किया होगा। इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि इस चरितार्थ-कहावत 'बदनाम होंगे तो क्या नाम न होगा ?' के आप स्वयं उदाहरण बन गये हों। आपका आगामी आकर्षण 'खिड़की' है।

यदि स्वतन्त्र भारत की सरकार तथा दर्शकों ने दिग्दर्शकों के विरुद्ध कोई रचनात्मक कार्य न किया तो यह रोग एक दिन भारत के विध्वंस का रूप अवश्य धारण करेगा, जिसे सँभालना भी टेढ़ी खीर हो जायगी और वे कुरुचिपूर्ण ए अश्लील चित्रपटों के निर्माण से सन्तुष्ट न होकर महा अश्लील तथा तीसरी श्रेणी के 'रोमान्स'वाले चित्रों का निर्माण कर सिने-संसार, भारतीय समाज व देश का अनिष्ट करते ही जायेंगे। फिल्मिस्तान की 'शहनाई' में तो केवल ११ हजार फ़ीट रील ही नष्ट की गई है--न जाने कितने ११ हजार फीट-रील इसी तरह नष्ट होती जायेंगी--आप उन्हें देखते जाइए।

आज का हिन्दुस्तान जो कुछ निर्मित होने जा रहा है--उसके लिए फिल्म-उद्योग अप्रत्यक्ष रूप से अकल्पनीय सहायता दे सकता है--जो नव-राष्ट्र-निर्माण के लिए अत्यन्त आवश्यक है। अब निर्माताओं को पूर्व की समस्त अश्लीलताओं को स्वप्न की भाँति भूल जाना चाहिए और राष्ट्रनिर्माण के शुभअवसर पर राष्ट्रीयता एवं एकता का प्रचार करते हुए राष्ट्र को सहयोग देना चाहिए। क्योंकि आज हमें भारत की क्षीण जनता में एक नूतन चेतना, एक नवीन जागरण एवं एक नये जोश लाने के लिए अत्यधिक परिश्रम एवं प्रयत्न करना है--जिससे स्वतन्त्रता का सदुपयोग हो सके।

मुफ्त

युवको ! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्तरोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए० लाहौरवाले फतेहपुरी (D. A.) देहली से मशवरा (सम्मति) मुफ्त लेकर अपना जीवन सुधार लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

अध्यापक और कांग्रेस-नीति

प्राचीन ऐतिहासिक उक्ति है कि रोम का निर्माण एक दिन में नहीं हुआ था। यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि किसी राष्ट्र या संस्था का निर्माण क्षण भर में नहीं होता है। युगों-शताब्दियों के अथक् परिश्रम, मनोयोग और आत्म-बलिदान से भी एक राष्ट्र का निर्माण-कार्य का सम्पूर्ण होना असम्भव है।

हमारा भारतवर्ष—हमारा हिन्दू राष्ट्र—जो शताब्दियों से परतन्त्रता की बेड़ियों से जकड़ा हुआ था, निकट भविष्य में स्वशासित एवं स्वतन्त्र हो जायगा। इस कार्य को सम्पन्न करने में राष्ट्रीय संस्था 'कांग्रेस' ने युगों तक अथक् उद्योग किया है। राजनीतिक जागृति उत्पन्न करने में ऐसी कठिनाइयों का सामना इस संस्था को करना पड़ा इसका इतिहास साक्षी है। इस उद्योग में वास्तव में राष्ट्रीय कर्णधारों ने, नेताओं देशसेवियों ने जो त्याग, सेवा, बलिदान किया है, वह अप्रतिम है। परन्तु राष्ट्रीय भावना को राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति में कूट-कूटकर भरने में जो कार्य शिक्षक-समुदाय न किया है वह गुप्त ही रहा। शिक्षक-समुदाय के अल्पसंख्यक व्यक्ति ही जेल गये होंगे। अधिकतर बाहर रहकर वे सतत उद्योग एवं परिश्रम से भारत की भावी राष्ट्रीय सन्तान में राष्ट्रीय भावना फूंकते रहे। आगे बढ़कर झंडा उठाकर उन्होंने अपने कार्य का कभी विज्ञापन नहीं किया। शान्तिपूर्वक राष्ट्र-निर्माण का ठोस कार्य करते रहे। जिसके परिणाम-स्वरूप आज हमारे राष्ट्र में इतनी जागृति, उत्तेजना, उत्साह एवं कार्य-पटुता के दर्शन होते हैं। इसका मूल कारण मूल आधार अथवा मूल स्रोत शिक्षक-समुदाय के अन्तस्तल में है जिसका अनुभव हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने अभी तक नहीं किया। शान्तिपूर्वक यह समुदाय अपना कार्य करता रहा। देश की दयनीय दशा को देखकर कंद-मूल फल अथवा रूखासूखा खाकर, अपनी राष्ट्रीय सन्तान की सुशिक्षा का प्रबन्ध करता रहा और धैर्यपूर्वक वह दिन देखता रहा जब कि प्रान्तों के तथा केन्द्र में स्थायी रूप से राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हो जायगी। प्रान्तों में स्थायी राष्ट्रीय सरकार की स्थापना होने पर भी ये शान्त कार्य-कर्त्तागण शान्त ही बने रहे और आशा करते रहे कि अवसर आने पर हमारी सरकार हमारा ध्यान स्वयं करेगी। मजदूरों, बलकों, व्यापारियों, किसानों आदि के सुख-सुविधा का उपाय किया। इसके पश्चात् शायद अध्यापकों और शिक्षकों का अवसर आएगा, परन्तु नहीं, आरम्भिक शिक्षा के अध्यापकों को अपने अल्प वेतन तथ अत्याचारों के लिए, जिनको वे दीर्घकाल से सहन करते चले आ रहे थे, आवाज उठाई। वह आवाज अनुभवी तथा शक्ति-सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा ठुकराई तथा दबाई जाने लगी। प्रत्यावर्तन हुआ। शिक्षक समुदाय के धैर्य का बांध टूट चुका था। वह अपनी मांगों पर डट गया। कुछ सुलझाव हुआ; परन्तु वयस्कों के शिक्षक-समुदाय का ध्यान नहीं किया गया। उन पीड़ित, दण्डित तथा त्यागी समुदाय की उपेक्षा की गई। सरकारी स्कूलों के अध्यापकों को सुविधा दी गई थी जो बेपेंदी के लोटे थे और जो सरकार की नीति के पक्षपाती थे, जिन्होंने राष्ट्रीय-शिक्षा में समयानुकूल ही हाथ बँटाया था। परन्तु सरकारी सहायता-प्राप्त तथा अन्य स्कूलों और कालेजों के अध्यापक-मण्डल जो सरकार और समाज दोनों के रुख को देखकर चलते थे, उनके लिए कोई व्यवस्था नहीं की गई। समयानुकूल इस ओर सरकार का ध्यान आकर्षित किया गया—निष्परिणाम। समाज का गला काटकर अध्यापकों का मुंह बन्द कर दिया गया। परन्तु समाज व देश की आर्थिक प्रगति इन बुभुक्षुओं तथा भुक्तभोगियों के मुंह को सर्वदा के लिए बन्द न किया जा सका। चौगुने मूल्य की वस्तु महासमर समाप्त होने तथा राष्ट्रीय सरकार के पदारूढ़ होने के वर्ष भर बाद भी चौथाई क्या आधे पर भी नहीं खरीदी जा सकी। वेतन केवल एक का सवाया ही हुआ, दुगुना, तिगुना या चौगुना नहीं। हमारी राष्ट्रीय सरकार ने वेतन-समिति बैठाई, जिसकी सिफारिशें शिक्षकों के प्रतिकूल ही रहीं। भेद-भाव की पराकाष्ठा रही। मातृभाषा के शिक्षकों की सेवाओं का पुरस्कार अपेक्षाकृत कम ही रखा गया। इन सिफारिशों को हमारी राष्ट्रीय सरकार ने स्वीकार कर लिया। क्या यह सब न्यायोचित निर्णय हैं?

अनिवार्य शिक्षा का आयोजन है। राष्ट्र-निर्माण की एक वास्तव में ठोस योजना है; परन्तु उसका संचालन कृपण-प्रणाली से करना ही वर्तमान सरकार की नीति है। सैकड़ों स्कूल में हजारों अध्यापक लाखों बालकों को प्रतिवर्ष शिक्षित करेंगे। किस प्रकार? क्या यह भी कभी सरकार ने सोचा? क्या इसी प्रकार वे राष्ट्रीय सरकार के संचालकों ने राष्ट्र के निर्माण का आयोजन किया है?

राष्ट्र का निर्माण-कार्य प्राइमरी स्कूलों से लेकर विश्वविद्यालयों तक चलता रहता है। यह शिक्षा-विभाग का कार्य अत्यन्त व्यापक रहा है। शिक्षित होने के उपरान्त ही व्यक्ति समाज के सम्मुख आता है। युद्ध हो या व्यापार, राज्य-शासन हो अथवा मजदूरी – सभी जगह बिना शिक्षा-प्राप्त व्यक्तियों का प्रवेश निषिद्ध है। बिस्मार्क का कथन "It is not Moltke & I who have won this battle but the school-masters of Germany" एक ऐतिहासिक सत्य है। यदि माना जाय तो राष्ट्रीय शिक्षा और शिक्षकों का स्थान, राष्ट्र-निर्माताओं में प्रमुख है। प्रत्येक राजनीतिक प्रमुख व्यक्ति, राष्ट्रीय नेता तथा राष्ट्र-निर्माता की शिक्षा, दीक्षा, संस्कार आदि का उत्तरदायित्व शिक्षक पर ही तो है। परन्तु उसी शिक्षक की अवहेलना, अनादर और उस पर अत्याचार अब हो रहे हैं अपने ही हाथों।

यह कथन असत्य है कि हमें शिक्षकों की स्थिति का पूरा परिज्ञान या अनुभव नहीं है। जो व्यक्ति दो-चार घंटे किसी के साथ रहता है, उसकी दशा से पूर्णतया परिचित हो जाता है। जिसने दो-चार वर्ष साथ रहकर शिक्षा प्राप्त की है वह तो उनकी वास्तविक दशा से पूर्णतया परिचित हो जाता है। और यदि वह व्यक्ति स्वयं शिक्षक रहा हो तब तो उसको अपनी ही स्थिति का परिचय दूसरों के मुंह से सुनने की क्या आवश्यकता। हां, बल-वर्धन, या चापलूसी कराना हो तो दूसरी बात है।

काशी —गोपाललाल खन्ना, एम० ए०

स्वास्थ्य-चर्चा

प्राकृतिक चिकित्सा की मर्य्यादा क्या है?

नैसर्गिक नियमों और विधान में अड़ंगा लगाना ठीक

लेखक, डाक्टर सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग, एम० ए०

कुछ दिन पहले महात्मा जी ने श्री मनु गांधी के रोग के सम्बन्ध में कुछ एक प्राकृतिक चिकित्सों से राय ली। इन सब ने आन्त्र-शोथ का न होना प्रगट किया। तदुपरान्त एक एलोपेथ डाक्टर ने शल्य-क्रिया द्वारा दाहयुक्त आन्त्र को बाहर निकाल रोगिणी को लाभ पहुँचा दिया। इस पर महात्मा जी ने प्राकृतिक चिकित्सकों को उलाहना दिया और लिखा कि प्राकृतिक चिकित्सकों के लिये शरीर-शास्त्र का जानना, रोग का निदान करना बहुत जरूरी है। दूसरे, प्राकृतिक चिकित्सा की मर्य्यादा अर्थात् सीमा है। इसकी कमी को पूरा करने के लिये शल्य-क्रिया आदि की सहायता लेना जरूरी है इत्यादि। लेखक ने तत्काल एक साधारण लम्बा पत्र लिखकर महात्मा जी की प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धिनी भ्रामक धारणाओं का निराकरण करने की चेष्टा की। पर खेद है, महात्मा जी का जो कार्ड उत्तर में लेखक को मिला, उससे ज्ञात होता है कि महात्मा जी अपने मन्तव्य पर दृढ़ हैं और प्राकृतिक चिकित्सा की मर्य्यादा मानते हुए आपरेशन की आवश्यकता समझते हैं। इस सम्बन्ध में यहाँ पर कुछ लिखा जाता है।

प्राकृतिक चिकित्सा का सिद्धान्त है कि खान-पान तथा रहन-सहन आदि में नैसर्गिक नियमों की उपेक्षा कर अस्वाभाविक जीवन व्यतीत करने से ही प्रत्येक रोग शरीर में अपनी जड़ जमाता है। आकस्मिक घटना जैसे चोट लगना आदि से भी रोगोत्पत्ति हो सकती है। दूसरा सिद्धान्त यह है कि प्रकृति स्वयं चिकित्सक है अर्थात् वह रोग दूर करने का कार्य स्वयं करती है। हाँ, एक जरूरी शर्त है। वह यह कि प्रकृति के कार्य में किसी प्रकार की छेड़-छाड़ या बाधा नहीं होनी चाहिये।

उक्त दो सिद्धान्तों को हृदय करने पर किसी भी व्यक्ति को भी रोग के लिए प्राकृतिक चिकि छोड़कर दूसरी चिकित्सा-प्रणाली नाने की आवश्यकता नहीं है। मैं अनुभव एवं अध्ययन के बल पर विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि रोग अथवा रोगी प्राकृतिक चिकि द्वारा असाध्य करार दे दिया गया, अन्य चिकित्सा-प्रणालियों के लिए साध्य नहीं बन सकता। इसके प्रतिदिन यही देखने में आता है एलोपेथी, आदि द्वारा हताश हुए असाध्य घोषित रोगी स्वाभाविक चिकि द्वारा लाभान्वित होते हैं। हर मस्सा, घाव आदि सब ही रोग किसी शल्य-क्रिया के केवल जल, वायु, आकाश तथा सूर्य-प्रकाश के चित प्रयोग से दूर हो सकते हैं। प्रा की शक्ति असीमित है। इसे मर्य्यादा मानना एक प्रकार से अज्ञ हैं। मर्य्यादा का प्रश्न सापेक्ष है

कुछ प्राकृतिक चिकित्सकों का विश्वास है कि हड्डी टूटने पर दुर्घटना द्वारा शरीर पर आघात चने की दशा में सर्जरी की सहाय आवश्यक है, पर ऐसा समझना अज्ञ एवं अनुभव की कमी होने का प्रम हैं। हड्डी के चकनाचूर हो जाने भी, यदि प्राकृतिक उपचार अपना जायें, तो वह चूरा स्वयं निकल है और जोड़-तोड़ स्वतः मिल जाते सन् १९३२ में लेखक के घुटने की टूट गई थी और विशेष प्राकृ उपचार न अपनाने पर वह स्वतः हो गई। अलबत्ता नष्ट-भ्रष्ट हुए अंग की उसी शरीर में पुनः प्राप्ति प्रकृति से आशा करना व्यर्थ है। ऐसा तो अन्य चिकित्सा-प्रणालियां करने में असमर्थ है।

सुकवि राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल्-एल०बी

की

अनमोल कृतियाँ

प्रतिमा

इस संग्रह में सुकवि राजाराम श्रीवास्तव की एक से एक बढ़िया ५० कविताएँ हैं। इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा है। क्या भाषा और क्या भाव सभी अनुपम हैं। रंगीन आवरण, बढ़िया छपाई और मूल्य केवल १) एक रुपया।

वनवास

कवि ने रामचन्द्र जी के वनवास का अनोखा वर्णन किया है। कवि राजाराम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवास की अनेक मुख्य घटनाएँ हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है। मूल्य ॥=) चौदह आने।

लक्ष्मणशक्ति

इसी लेखक द्वारा रचित एक खण्ड काव्य। इसकी कथा का आधार रामा का युद्ध-काल है जिसमें लक्ष्मण मूर्छ हो गये थे। भाषा सुनम्भी हुई और सु विरेदार है। मूल्य ॥) बारह आने।

किंकिणी

कवि की बढ़िया कविताओं का सं है। भाषा मधुर और कल्पना इतनी आक है कि पाठक कुछ क्षणों तक भावावे बना रहता है। मूल्य ॥) बारह आने

मधुस्रवा

इस अनुपम और नवीन शैली कविता-पुस्तक में जीव में मधु बरसाने की पूरा क्षमता है। आप भी इसकी रचना को पढ़कर जीवन को रसस्निग्ध बनाय मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी का रंगमंच

मुस्लिम लीग में आत्मविस्फोट के चिह्न

लखनऊ में पंडित जवाहरलाल नेहरू—प्रांतीय पुलिस का भारतीयकरण—सोशलिस्ट पार्टी किधर ?—पादरी भी हवा का रुख देखकर चले।

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

किसी पत्रकार ने लिखा था कि जवाहर बूढ़ा हो रहा है। परन्तु जवाहरलाल नेहरू को जिसने पिछले दिनों लखनऊ में देखा है, वह कभी नहीं मान सकता कि जवाहर बूढ़ा हो रहा है। जवाहर बूढ़ा नहीं हो सकता, ऐसा मेरा विश्वास है। जवाहर उसी दिन बूढ़ा माना जायगा, जिस दिन ईश्वर करे वह दिन बहुत दूर हो उसका शारीरिक अस्तित्व इस जगत् में न होगा, किन्तु जब तक जवाहर हम लोगों के अपनों के बीच में विद्यमान है, वह बूढ़ा नहीं हो सकता। केवल मात्र चेहरे की झुर्रियां ही बुढ़ापे का प्रतीक नहीं होतीं। जवाहर आयु में बूढ़ा अवश्य हो सकता है, किन्तु कर्मवीर जवाहरलाल अभी जवान है। उसके जोश, उसके उत्साह तथा उसकी कर्मठता में कोई अन्तर नहीं है। उसकी वक्तृत्व-शक्ति अब भी वैसी ही बलवती है, जैसी दस या पन्द्रह वर्ष पूर्व थी।

* * *

एक लाख से अधिक नरनारियों के बीच लगातार दो घंटा तक भाषण करके जवाहरलाल ने किसी भी स्थल पर थकावट का चिह्न प्रदर्शित न किया। भाषण के उपरान्त भी उनकी आकृति वैसी ही निर्मल और ताजगी भरी थी। अपने भाषण में जवाहरलाल ने वर्तमान राजनीतिक स्थिति का चित्रण ऐसी सरल रीति और सुबोध भाषा में किया कि निरक्षर तथा अज्ञान व्यक्ति के हृदयपट पर भी वह आसानी से अंकित हो गई। जवाहरलाल की तर्क और शैली ने उन सभी व्यक्तियों की शंकाओं का यथाविधि समाधान कर दिया, जो सम्प्रदायवादियों के कुचक्रों से प्रभावित होकर अल्पमत के विनाश अथवा स्वदेश में अशान्ति के प्रसार ही जन्मभूमि का कल्याण देख रहे थे। एक हिन्दूसभाई ने सजल नयनों से कहा कि जवाहरलाल ने मुझे बदल दिया, मैं न जाने कहां था। यह पहली सभा थी, जिसमें मुसलमान हजारों की संख्या में आये थे और अनेक मुसलमानों ने कहा कि कांग्रेस नेताओं के भाषणों का बहिष्कार करने की मनोवृत्ति ने ही हमें अब तक अन्धकार में रखा। उन्होंने स्वीकार किया कि लीग ने उनको सदा बहकावे में रखा, कांग्रेस-नेता कभी भी हिन्दू राज के पक्षपाती नहीं रहे।

* * *

मुस्लिम लीग में आत्मविस्फोट के चिह्न स्पष्ट हो रहे हैं। लीग का अस्तित्व बना रहे अथवा नहीं, इस सम्बन्ध में लीगी शिविर में बड़ी हलचल है। लीगी खलीकुज्जमा और उनका दल मुसलमानों पर अपने लुप्त होते हुए नेतृत्व को स्थिर रखने की चेष्टा में लीग को जारी रखने के पक्ष में है। किन्तु अन्य लीगी नेताओं का कहना है कि लीग को समाप्त कर देना चाहिए। लीग-दल के उपनेता श्री लारी के अनुसार लीग की उपयोगिता समाप्त हो चुकी है और भारतीय संघ में अब किसी भी साम्प्रदायिक राजनीतिक दल की आवश्यकता नहीं रह गई है। महमूदाबाद के महाराजकुमार का भी यही मत है। यह स्मरणीय है कि युक्तप्रान्तीय मुस्लिम लीग का अधिकांश काम महमूदाबाद के पैसे से ही चलता रहा है। श्री लारी का यह सुझाव मुस्लिम लीगियों के अन्तःकरण में अब अनायास प्रवेश करने लगा है कि लीग को समाप्त करके मुसलमानों को स्वतन्त्र कर दिया जाय कि आर्थिक तथा समाजवादी सिद्धान्तों के अनुसार निर्मित दलों से अपने को संयुक्त कर लें। इसमें सन्देह नहीं कि यदि मुसलमान सम्प्रदायवाद से ऊपर उठे और इस प्रकार दो राष्ट्र के सिद्धान्त से विरत हुए, तो उनके प्रति भारत के निवासियों को जो अनेक सन्देह हैं, वे समाप्त होने लगेंगे और अपने भावी आचरण से इस देश के मुसलमान अपनी कलंक-कालिमा अनायास धो सकेंगे।

* * *

पुलिस-मंत्री माननीय श्री लालबहादुर शास्त्री इस प्रान्त की पुलिस का भारतीयकरण करने में व्यस्त हैं। पुलिस में जहां सैकड़ों अँगरेज थे, अब केवल १७ रह गये हैं, जिनमें से अधिकांश चलते जा रहे हैं। कुछ ही दिनों में इंस्पेक्टर जनरल पियर्स भी चले जायँगे और हो सकता है कि दिसम्बर तक ही युक्तप्रान्तीय पुलिस का पूर्ण भारतीयकरण हो जाय। सम्भवतः श्री टी० पी० भल्ला नये इस्पेक्टर जनरल बनाये जायेंगे और श्री नरेशचन्द्र मिश्र सी० आई० डी० के अध्यक्ष होंगे। पुलिस में एकमात्र अँगरेज मेजर ग्रीग रहेंगे, जो पुलिस-सर्विस के नहीं हैं, बल्कि बेतार के तार के विशेषज्ञ हैं और उनको पांच वर्ष के ठेके पर प्रान्तीय सरकार ने अपनी पुलिस के बेतार के तार दल को संघटित करने के लिए नियुक्त किया था।

* * *

समाजवादी दल में भी इन दिनों कुछ फूट पड़ने लगी है। देश के मजदूर-आन्दोलन को लेकर ही दल के प्रमुख सदस्यों में मतभेद हुआ है। श्री हरिहरनाथ शास्त्री, राजाराम शास्त्री तथा अन्य प्रमुख समाजवादियों का रुख कांग्रेस नेताओं द्वारा स्थापित इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस में शामिल होने का था। दूसरा श्रमिक संघ आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस है, जिस पर इन दिनों कम्युनिस्टों का आधिपत्य है। समाजवादी दल की कार्यकारिणी ने अपनी नागपुर की बैठक में इन दोनों ही संघों से पृथक् रहने का निश्चय किया, जिसके फलस्वरूप उसके कुछ प्रभावशाली सदस्य उसके हाथ से निकल गये। अब श्री मोहनलाल गौतम ने तो दल से त्यागपत्र दे ही दिया है। श्री चन्द्रभानु गुप्त भी, जो इस प्रान्त में दल की रीढ़ कहे जाते हैं, उससे मतभेद रखने लगे हैं। श्री अलगूराय शास्त्री, श्री वंशीधर मिश्र, ठाकुर रामनरेशसिंह तथा श्रीमती पूर्णिमा बनर्जी भी अब उससे पृथक् होने पर विचार कर रही हैं। यह भी कहा जाता है कि ये लोग मिलकर श्री चन्द्रभानु गुप्त के नेतृत्व में धारासभा की कांग्रेस पार्टी में ही एक समाजवादी गुट का निर्माण करेंगे, तथा प्रान्त के शासन में समाजवादी सिद्धान्तों एवं विचारधारा को अधिकाधिक कार्यान्वित करने का प्रयत्न करेंगे।

* * *

देश की प्रगति का प्रभाव पादरियों पर भी विशेष रूप से पड़ा है और उन्होंने भी अब समय के साथ ही चलने का संकल्प कर लिया है। लखनऊ के रोमन कैथोलिक चर्च के बिशप कोनराद ने, जो इस प्रान्त के समस्त रोमन कैथोलिक ईसाइयों के प्रधान धर्माचार्य हैं, विगत सप्ताह अपने धार्मिक प्रवचन हिन्दी में प्रारम्भ कर दिये। बिशप कोनराद इटालियन हैं, किन्तु इस देश में उन्होंने दीर्घकाल तक निवास किया है। उन्होंने पवित्र बाइबिल के सूत्रों का लैटिन से हिन्दी में अनुवाद किया है। उन्होंने ने न केवल हिन्दी में स्तुति एवं वन्दना ही प्रारम्भ कर दी है, प्रत्युत अपने सारे धार्मिक प्रवचन, एवं गिरजाघर में होनेवाले धार्मिक संगीत की भी हिन्दी में ही व्यवस्था की है। अपने प्रथम हिन्दी प्रवचन में बिशप कोनराद ने उन ईसाई महिलाओं के आचरण को निन्ददीय बताया जो गिरजाघर में यीशु-प्रार्थना के लिए आते समय भी सौन्दर्य प्रसाधनों द्वारा अपने मुखों को रँगकर अपने स्वाभाविक और स्वस्थ सौन्दर्य को नष्ट कर देती हैं।

बिकाऊ है

एक हारन्सवी इंजन

२० हार्सपावर डबल फ्लाई ह्वील प्रायः नया बिलकुल ठीक फिट है। लेनेवाले चलाकर देख सकते हैं।

एक छोटा रसटन प्राक्टर ६ घोड़े का। डबल फ्लाई ह्वील।

एक खराद प्लेन (स्क्रूकटिंग नहीं) ५ फुट का।

हरिदास बोस, 761 कटरा, प्रयाग।

वह करवट भी नहीं बदल सकता था

कमर के दर्द से उसको रात असाध्य थी

क्रुशन ने उसको दर्द से मुक्त कर दिया

वे ही लोग कमर के दर्द को जान सकते हैं जो इससे बीमार हुए हैं और जब उन्हें इसकी दवा मालूम होती है तो वे इस समाचार को और बीमारों को उत्सुकता से सुनाते हैं। उस आदमी की सुनिए जिसको क्रुशन के सेवन पर इस भयंकर रोग से मुक्ति मिली :—

"मैं कमर के दर्द से बीमार हो गया। जब मैं चारपाई पर पड़ा तो उठने की हिम्मत न होती थी। दर्द के कारण चल न सकता था। मैं यह न जान सका कि मुझे कौन दवा खानी चाहिए और क्या करना चाहिए? मुझे क्रुशन साल्ट खाने की सलाह दी गई और मैंने उसका सेवन करना भी शुरू कर दिया। कुछ खूराक खाते ही मुझे आराम मालूम हुआ एक बड़ी बोतल के सेवन के पश्चात् तो मेरे कमर का दर्द काफूर बनकर एकदम उड़ गया। मैं यह अनुभव करता हूँ कि अब वह शायद ही लौटे। मैं उन लोगों से, जो कमर-दर्द से पीड़ित हैं, अनुरोध करूँगा कि वे क्रुशन साल्ट अवश्य सेवन करें।" जी० ए० वी०

क्रुशन प्राकृतिक खनिज नमकों का एक रसायन है जो आपके पित्ताशय और मूत्राशय को कार्य के लिए तैयार करता है। स्वास्थ्य के लिए पाचक वस्तु और उचित क्रियाशीलता को बढ़ाता है। वह भीतरी स्वच्छता बढ़ाता है, और रक्त की धमनियों को साफ करता है आपके कमजोर अंगों को रक्त पहुँचाता है। कमर-दर्द, गठिया, सिर-दर्द और अपच को दूर करता है।

क्रुशन साल्ट सारे रासायनिक और दूकानदारों की दूकानों पर बिकता है मूल्य एक रुपया दस आने प्रतिबोतल

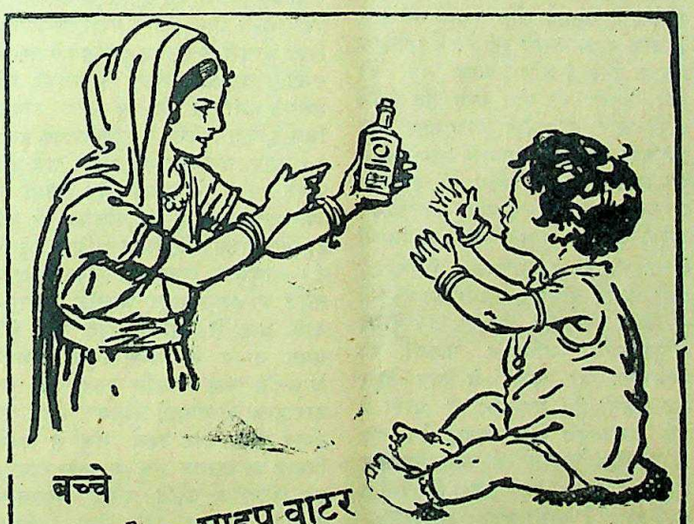

बच्चे वुड वर्ड का ग्राइप वाटर पसंद करते हैं

यह सब दर्दों को दूर करता है और बच्चों को तंदुरुस्त व खुश रखता है।

WOODWARD'S GRIPE WATER

keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 118—117 W. WOODWARD LTD. LOM DON. ENGLAND.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

'उल्का'

अंचल का एक नया उपन्यास

लेखक, श्री 'नीरव', एम० ए०

'उल्का' अंचल का एक नवीनतम उपन्यास है, जिसमें ३०४ पृष्ठ और १४ अध्याय हैं। उनकी इससे पूर्व की उपन्यास-रचना 'नई इमारत' में जीवन की चेतना का क्रियात्मक व्यापार था। 'उल्का' में जीवन-दर्शन है। उसके यथार्थ चित्र जीवन के कुछ शाश्वत सत्यों की छाया पाकर गंभीर और गुरु हो गये हैं।

'उल्का' की कथा-परिधि में तीन परिवारों का चित्रण है। 'मंजु' इस उपन्यास की सूत्रधारिणी है। भारतीय समाज के मध्यवृत्त परिवार की यह युवती अपने अतीत अन्तर्दर्शन से 'उल्का' की कहानी—जो स्वयं उसी के जीवन की कहानी है—कहना प्रारम्भ करती है। उसके सम्पर्क में आनेवाले एक व्यक्ति हैं 'चाँद' भैया। ये एक उच्च वृत्त सम्भ्रान्त परिवार के व्यक्ति हैं। लेखक ने इनके चरित्र में आचरण, शील और सौन्दर्य की प्रतिष्ठा की है। वे एक आदर्श रूप में आये हैं। 'मंजु' ने उनके सहयोग और सम्पर्क से अपने व्यक्तित्व का पूर्ण विकास किया। 'चाँद' अपनी इस बहन के लिए सदा सुख और सफलता की आकांक्षाओं के स्वप्न देखते रहे। 'मंजु' के विवाह की तिथि आ गई और जिस व्यक्ति से उसका विवाह निश्चित हुआ; वह धनधान्य से भरे एक कृपण परिवार का मखं अशिष्ट और आचरण-भ्रष्ट व्यक्ति था। मंजु के पिता धन और ऐश्वर्य के लोभ से इस परिवार पर मुग्ध थे। 'चाँद' ने 'मंजु' से इस सम्बन्ध का घोर विरोध किया और भारतीय कुमारी की मौन सहिष्णुता की परिपाटी के प्रति विद्रोह करने के लिए उत्तेजित किया। इस विवाद के बीच 'चाँद' एक बार 'मंजु' के समक्ष पति रूप में आये; किन्तु 'मंजु' की चार और बहनें थीं। वह ब्राह्मण-परिवार की कुमारी थी। समाज की इस सीमा को लाँघने का साहस वह अनेक मौन कामनायें रखते हुए भी न कर सकी। 'चाँद' अपने पराजित पुरुष का दृढ़ीभूत अभिमान लेकर उच्च शिक्षा के लिए विलायत चले गये, जहाँ उनकी असामयिक मृत्यु हो गई। 'मंजु' विवाहिता होकर पतिगृह पहुँची। विवाह के पीछे की शेष रीतियाँ भी पूर्ण हो गईं। 'मंजु' स्वामी की पत्नी और सहधर्मिणी के पद पर निश्चित हो गई। कुछ ही दिनों बाद उसे ऐसा प्रतीत होने लगा, मानो जीवन के क्षणों की गति के साथ उसके प्राणों की सबसे घनी वेदना के स्पंदन भी करवटें बदलते जा रहे हैं। वह अपने नये घर में अपमान और आत्म-पीड़ा की वह्नि से कण-कण जलने लगी। एक दिन आया कि वह अपनी ससुराल छोड़कर विवश अपनी माँ के घर आई उसके पति ने दूसरा विवाह कर लियाथा। कुछ दिनों के बाद यह स्पष्ट होने लगा कि 'मंजु' शीघ्र ही मातृत्व के पद पर पहुँचनवाली है। उसके रूढ़िवादी माँ बाप को यह असह्य हो उठा और वे उसे किसी भी मल्य पर फिर ससुराल भेजन को आतुर हो उठे। 'मंजु' जहां से पशुवता अपमान के साथ निकाल दी गई थी, उस घर जाने को तैयार नहीं हुई। 'मंजु' के एक परिचित, कवि और लेखक थे 'प्रकाश'। 'चाँद' ने अपने साहचर्य और अध्यापन के फलों में कितनी बार 'प्रकाश' की रचनायें सुन्दर कंठ से गा-गाकर सुनाई थीं। 'प्रकाश' 'चाँद' के मित्र थे। इस सम्बन्ध से कई बार 'मंजु' का उनसे साक्षात्कार भी हो चुका था। वह उन्हें देखकर एक अज्ञात श्रद्धा और अपरिमेय उल्लास से भरकर फूल उठा करती थी। उसके हृदय में प्रेम और सम्मान से पूर्ण एक पवित्र स्थान 'प्रकाश' के लिए था। समय पाकर 'मंजु' के एक पुत्री हुई, जिसका नाम 'डाली' रक्खा गया। वह अपनी इस नवजात पुत्री को लेकर 'प्रकाश' के साथ माँ के घर को छोड़कर चल दी, क्योंकि उस घर में भी उसके लिए कोई स्थान नहीं रहा। उसको ले जाने से पूर्व 'प्रकाश' ने समाज की कितनी ही ऊँच-नीच समस्याओं, प्रवादों और जन-रुचियों की ओर संकेत किये, 'मंजु' इस बार सबसे युद्ध करन के लिए 'प्रकाश' के साथ चल ही दी। वे आकर एक होटल में ठहरे हुए थे, जहाँ 'मंजु' ने अपने पति को देखा। पतिदेव एक कहारिन की लड़की को भगाकर लाये थे और उसी होटल में ठहरे हुए थे। उसके पति ने मंजु को अनधिकृत रूप में जब प्रतारणा देना प्रारम्भ किया तो उसका दर्पपूर्ण नारीत्व जाग उठा। 'प्रकाश' ने उसके पति 'किशोर' को नीचे गिरा दिया तो 'मंजु' काँप उठी। एक दिन 'प्रकाश' और 'मंजु' में विवाह की एक बात चली। 'मंजु' इस प्रस्ताव पर मौन रही। जीवन की इतनी यातनायें ढोते हुए 'मंजु' के हृदय की लोलुपता विष बनकर उसके जीवन की लोहित भावुकता को निष्प्राण बना चुकी थी और वह चाहती थी कि अपने अभाव, अपूर्णता और अवकाश को लेकर अपने समर्पण के केन्द्र-बिन्दु पर चक्कर काटती रहे। वह अपनी प्रयोगिनी प्रेरणा को विश्राम देना चाहती थी। इसी विवाद और प्रकाश की हार के बीच यात्रा करती हुई ट्रेन में उपन्यास समाप्त होता है और 'प्रकाश' 'मंजु' की बेटी 'डाली' को गोद लिए हुए अपने चारों ओर सीमाहीन परिपूर्णता और छाँहभरी श्यामल तन्मयता सघन करते हुए आगे बढ़ते हैं। संक्षेप में उपन्यास का यह कथानक है। उपन्यास का प्रारम्भ 'मंजु' 'चाँद' के स्वभाव की विशेषताओं से करती है वे चारित्रिक विशेषतायें ऐसी प्रतीत होती हैं मानो उसके पति के विषय की बातें हैं। इस प्रकार की कौतूहलजन्य अभिरुचि पाठकों को स्वभावतः ही कथा के साथ लेकर बढ़ चलती है। उपन्यास की धारा में एक उल्लासपूर्ण अटूट प्रवाह है। एक अप्रत्याशित स्थिति में जब उपन्यास अन्त पर आकर ठहर जाता है तो ऐसा ज्ञात होता है मानो जीवन अपने अनेक उत्थान-पतन और विषमताओं को लांघते हुये ऐसे स्थान पर विराम करने के लिए ठहर गया है जहां सुख और दुख मिलकर अस्तित्वहीन हो गये हैं।

उपन्यास के छोटे-बड़े सब पात्रों का अपना निजी व्यक्तित्व है। वे अपने जीवन और अपने जीवन-सिद्धान्तों को एक परम्परा प्राप्त मोह के साथ पकड़े हुये हैं। वे सब अपने मान, अपनी अंतरदृष्टि और अपनी अनुभूतियों को लिये हुये जीवन को एक स्वतंत्र दृष्टि से देखते हैं। इन पात्रों में सर्वोपरि चरित्र-विकास तीन व्यक्तियों का हुआ है। वे हैं 'मंजु' 'चाँद' और प्रकाश'। लेखक न कोमलता, उदारता और कला की दृष्टि से इन तीन चरित्र-चित्रों की पृष्ठि-भूमि में अपने सामाजिक विचार, अपन जीवन-दर्शन और अपनी स्वतंत्र अनुभूतियों को अनुरंगमय किया है। 'मंजु' एक भारतीय नारी है जो आदि से अन्त तक सुन्दर है, वह सद्भावना और सांस्कृतिक शिष्टता से पूर्ण भरी ह। वह एक भावुक युवती के रूप में अंकित की गई है, जिसकी प्रारंभिक रजत-द्राव-भावुकता जीवन-विकास के साथ साथ संतप्त विद्रोह की ज्वाला में तपती हुई निरीह और निष्प्राण पाषाण जड़ता में परिणत हो गई ह। नारी अपने सर्वोपरि प्रिय से भी दुराव कर सकती है। पुरुष निराशा, असफलता और विषाद के जिन सघन झंझावाती तूफानों को नहीं सह पाता, वह उन्हें अपने शरीर और शरीरावरणों को समेटे हुये अचल बनकर सह लेती है। जो विचार वह एक बार बना लेती है संसार की कोई शक्ति, सहृदयता की कोई करुणा और निर्ममता का कोई वीभत्स भी उसे डिगा नहीं सकता। 'मंजु' के चरित्र में यह सब विशेषतायें हैं। वह समाज की कठोरताओं एवं जीवन की निविड़ विवशताओं में अखंड विद्रोह की आग लगाती हुई चलती है। जीवन की जिन सीमाओं से उसे कुछ संतोष नहीं, वहाँ असंतोष का बोझ लादे हुए घुट-घुटकर दम तोड़ना वह जीवन और व्यक्तित्व का अपमान समझती है। उसमें नारी-सुलभ दुर्बलतायें भी हैं। कला और अमिट स्नेह से भरे हुए रूपों के प्रति वह सदा एक भावपूर्ण सत्ता से भरी रही है। उसके नारीत्व का अभिमान अतृप्त आकांक्षायें लेकर कितनी ही बार पानी पानी हुआ है। जगत् के इस भावमय क्षेत्र में उसका जीवन एक प्रयोग का जीवन रहा है। वह एक तरल प्रयसी है, अपने पूर्ण अर्थ में भारतीय पत्नी है और इन सबसे अधिक साहस से ओत-प्रोत एक सुशिक्षिता नारी है, जिसके समक्ष उसके सम्मान का मूल्य माता पिता, पति और प्रियजन सबसे अधिक है। 'मंजु' का चरित्र आजकल की पढ़ी लिखी भावुक और पराजित-अपराजिता कुमारी के अनुरूप हुआ ह। लेखक ने नारी-हृदय की समस्त भावनाओं को अत्यन्त समीप से देखा है और उनका चित्र अंकित करने में पूर्ण सफल हुआ ह। 'चाँद' उपन्यास का प्रधान पात्र है। उसके चरित्र में आदर्श और यथार्थ के समन्वयवादी रूप की प्रतिष्ठा की गई ह, जो आदर्श की ओर अधिक झुका है। आधुनिक जगत् में आचरण और संयम का अमृत-मधुर आलोक बिखेरनेवाले चाँद से व्यक्ति बहुत कम हैं। अपने जीवन के अवसानमुखी दिवसों के समीप 'मंजु' के प्रति उसका प्रेम एक बार हृदय की सीमायें तोड़कर बहने को तैयार हुआ और उसने 'मंजु' से अपने विवाह का प्रस्ताव 'मंजु' के समक्ष रक्खा। इस घटना ने उसके चरित्र में यथार्थ के प्राण भरे हैं। यदि ऐसा न किया गया होता तो लेखक की यह मनोवैज्ञानिक भूल होती। 'चाँद' पुरुषत्व की भावुकता और उसका आदर्श है। किन्तु पुरुष में भावुकता और आदर्श के अतिरिक्त और कुछ भी होता है, जिसकी अभिव्यंजना के लिए 'प्रकाश'

कवि श्री 'अंचल'

के चरित्र की अवतारणा की गई है 'प्रकाश' कलामय अभिरुचि का ए गंभीर व्यक्ति है, जो जीवन के चर चरण पर सौंदर्य्य से प्रभावित हो चलता ह। वह यथार्थवादी पुरुष है कवि होते हुए भी गद्य-लेखक के समा समाज के समक्ष तक, न्याय और निष से उपनीत परिस्थितियों की ओर बढ़ श्रेय समझता है। समाज के सा वह दुर्बल है या सबल यह स्पष्ट न हो सका। वह विवाह, पाप, पुण्य को आदर्श के प्रति अपने स्वतंत्र विचार रखत ह। उसका कण-कण स्वाभिमान झंझा से आन्दोलित रहता है। चरित्र-चित्रों के आधार पर कहा जा सक है कि व तु-व्यवहार और जीवन विभिन्न समस्याओं के प्रति लेखक अन्तरदृष्टि बड़ी सूक्ष्म रही है।

उपन्यास की भाषा मधुर भावपूर्ण है। विरोधाभास, असंग विभावना और विशेषोक्तिपूर्ण की बहुलता के कारण रचना के पृष्ठों काव्य का सा आनन्द बिखरा पड़ा शब्द-विन्यास की व्यंग्य प्रधानता पर मार्मिक आघात कर लेती है। शैली में आदि से अंत तक भावुकता प्राधान्य है। पारिवारिक समस्या पर दृष्टिपात करनेवाले सामाजि उपन्यासों में 'उल्का' का स्थान एक सम का स्थान रहेगा। हाँ अवश्य ही उपन्यास का नाम 'उल्का' से और अधि अच्छा हो सकता था। पुरुष के बन हुए समाज की कठोर पृथ्वी पर आकाश से उतरती हुई एक 'उल्' के रूप में अंकित की गई है और ही उपन्यास की समस्त घटनाओं केन्द्र है, इसलिए नाम की सार्थक स्पष्ट है। 'उल्का' के लेखक के रूप हम 'अंचल' का हार्दिक स्वागत करते हैं

* 'उल्का'—लेखक, अंचल। प्र शक—न्यूलिटरेचर २५७ चक, प्रयाग

अद्भुत कहानियाँ

दो रंगों में छपी इस सचित्र पु में एक से एक बढ़िया कहानियाँ हैं। इतिहास, स्वाभिमक्ति और भाग्य के का वर्णन पढ़ते ही बनता है। मूल्य

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत की सामयिक चित्रावली

कहाँ क्या हो रहा है ?

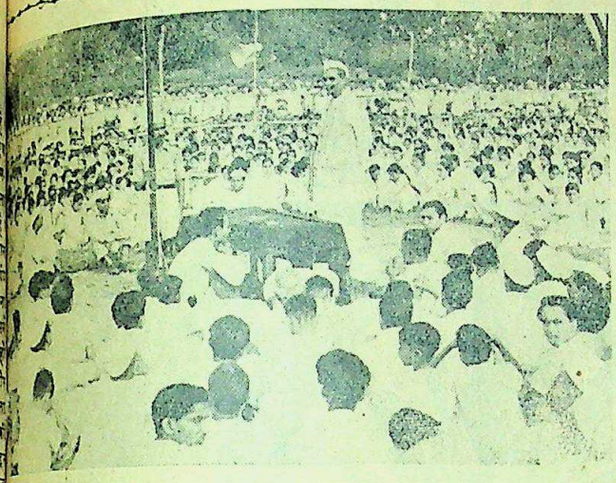

...र भोजन-सामग्री की परेशानी हो रही है। बाहर से अन्न प्राप्त होने की ...री नहीं हो रही है। भारत-सरकार के भोजन-सदस्य डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जनता को स्थिति समझा रहे हैं।

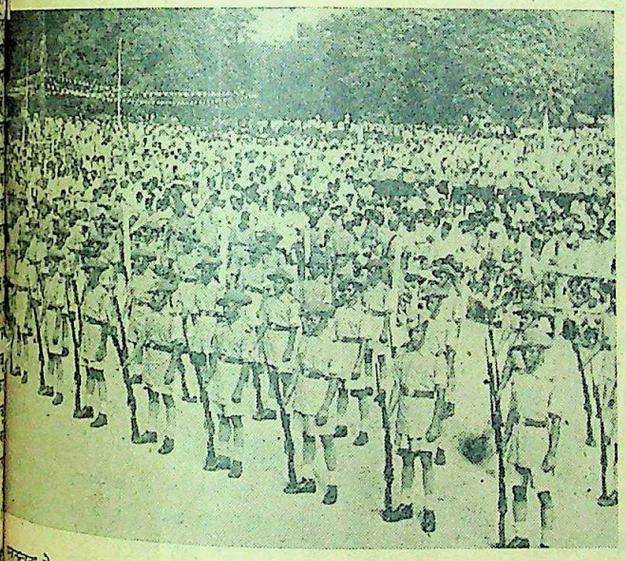

...स्वतन्त्रता के बाद हिन्दुस्तानी पुलिस की परेड। अब पुलिस लोकप्रिय सरकार के अनुरूप देशभक्त हो गई है और राष्ट्रीय झंडे की सलामी देती है।

...देश में मज़दूर-दिवस के अवसर पर मज़दूरों का विशाल जुलूस, जो अपने ... और आवश्यकताओं के लिए आन्दोलन करता है।

दिल्ली और बंगलौर के खिलाड़ियों की प्रति द्वन्द्विता का एक दृश्य।

कुमारी नीलू जी० मेहता, कलकत्ते के प्रसिद्ध व्यवसायी श्री गगनबिहारीलाल मेहता की सपुत्री हैं। आप उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अमरीका जा रही हैं।

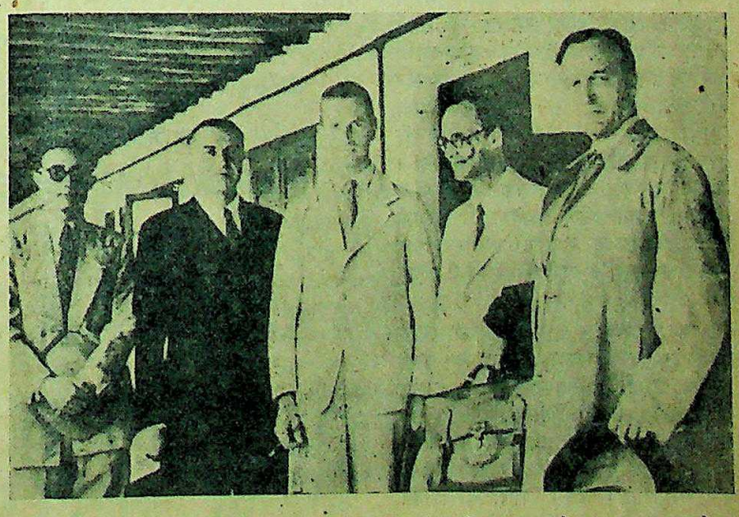

लार्ड लिस्टोवेल, जिन्होंने पिछले दिनों शांति-संदेश के प्रचार के लिए भारत और बरमा की यात्रा की थी। कराची के हवाई अड्डे पर पाकिस्तानियों के साथ आप खड़े दिखाई देते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पेज ८ का शेष)

राज्यपद की उपेक्षा भी नहीं की जा सकती। अब हमारा काम है कि एक ओर तो इस बात से यथान्याय लाभ उठावें दूसरी ओर हिन्दी को सर्वांग-सुन्दर और परिपूर्ण बनाने का यत्न करें।

यदि हिन्दी को साधारण व्यवहार, काव्य और दर्शन के लिए ही नहीं प्रत्युत विज्ञान, अर्थशास्त्र, गणित जैसे शास्त्रों के अध्ययनाध्यापन का भी माध्यम बनना है, यदि उसे सरकारी विभागों के जटिल कामों के उपयुक्त बनाना है, यदि उससे अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार में काम लेना है तो हमें उसकी ओर बहुत ध्यान देना होगा। संस्कृत हमारा आकार है? परन्तु आकार से काम लेने में भी बुद्धिमत्ता चाहिए। अभी तो हमने शब्दों से ठीक ठीक काम लेना सीखा ही नहीं है। जिन्हें 'नुआंस शेड' कहते हैं ऐसे सूक्ष्म भेदों को हम ठीक ठीक व्यक्त नहीं कर पाते। मोटर और बैलगाड़ी के टकराने से दो डाक-गाड़ियों के लड़ जाने तक संक्रामक रोग या दंगे से २....३ व्यक्तियों के मरने से १,०००-२,००० के मरने तक हम सर्वत्र एक ही विशेषण का प्रयोग करते हैं। कोई समाचारपत्र उठा लीजिए। बस वही "भीषण" मिलेगा। 'कस्टम्स' और आकट्राय के अर्थभेद को न समझने या व्यक्त न करने से तो जो क्षति होती है वह चाहे सह्य भी हो पर जब हम अच्छी लेखनियों से और प्रतिष्ठित पत्रों में 'डिप्लोमैट' को कूटनीतिज्ञ और 'डिपलोमैटिक रिलेशन' को कूटनीतिज्ञ सम्बन्ध लिखा देखते हैं तो कांप उठते हैं। हमारी भाषा ऐसी दरिद्र नहीं है परन्तु हमको सावधानी से अपने भंडार को ढूंढना होगा कि कहां क्या धरा है।

एक और बात है। यह कहा जाता है कि संस्कृतमयी हिन्दी देश की भाषा नहीं हो सकती। जो लोग ऐसा कहते हैं वह यह भी स्वीकार करते हैं कि अरबी-फारसीमयी उर्दू भी उतनी ही अग्राह्य है। इसीलिए वह सीधी-सादी बोली हिन्दुस्तानी का समर्थन करते हैं। साधारण बोली को हिन्दी क्यों न कहा जाय, यह बात मैं ठीक नहीं समझ पाता; परन्तु नाम को जाने दीजिये, भाषा के स्वरूप को लीजिए। बहुत से कामों के लिए तो साधारण बोली से काम चल जायगा; परन्तु गम्भीर विषयों के पठन-पाठन के लिए, सरकारी कामों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार के लिए, तो उसमें शब्द नहीं हैं। कहीं से नये शब्द लेने ही होंगे। फिर हम संस्कृत के सिवाय और कहां से शब्द ले सकते हैं? संस्कृत न केवल बँगला, गुजराती, मराठी, तामिल, तैलगू, मलयालम के लिए आकर भाषा है, वरन आज उसके आधार पर लंका और श्याम तक अपने यहां शब्द-सृष्टि कर रहे हैं। यह संस्कृतमयी भाषा निश्चय ही कुछ कठिन होगी; परन्तु इसका उपयोग भी तो विशेष स्थलों पर ही होगा, धीरे धीरे सुबोध भी हो जायगी। यह कौन नहीं जानता कि अँगरेजी में लिखित दर्शन और विज्ञान की पुस्तकें बहुत से सुपठित अँगरेजों के लिए भी दुर्बोध होती हैं। सभी भाषाओं में ऐसा होता है।

परन्तु एक बात में हमको सावधान भी रहना है। भाषा को हठात् दुरूह बनाना, उसको कृत्रिम बनाना है। हमको लोकवाणी, जनता की बोली, गांव बाजार की कहावतों और मुहावरों को अपनाना चाहिए। उनमें जनता की अनुभूतियां भरी पड़ी हैं। उनसे भाषा को शक्ति और स्फूर्ति मिलेगी, जनता से दूर पड़-कर हिन्दी भी उर्दू की भांति पराई हो जायगी।

इस सम्बन्ध में एक बात आपके सामने रखना चाहता हूँ। हमारी भाषा में नाम धातु बनाने की शक्ति अब नहीं रही। इसे फिर से लाना चाहिए, अँग-रेजी में यह गुण है, ग्राम बोली में है, संस्कृत में है। मोटर पर चलने के लिए अँगरेजी में 'टु मोटर' धातु बना लिया है। अभिमान करने को देहाती भाई सेखियाना कह लेते हैं। जहां हमको इतना लम्बा वाक्य बोलना पड़ता है, 'वह हिटलर जैसा आचरण करता है, वहां संस्कृत में 'से हिटलरायते' कहा जा सकता है। किसी विद्वान् को साहस करके नाम धातुओं के निर्माण और व्यवहार का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए, इससे उपकार होगा।

हमारे प्रान्त में अब चाहे किसी दल की सरकार हो; परन्तु हमको यह विश्वास रखना चाहिए कि उससे हमको हिन्दी-साहित्य के विस्तार और उन्नति में सहायता ही मिलेगी। वर्तमान सरकार ने हिन्दी को राजभाषा' घोषित ही नहीं कर दिया है, वरन् इस बात के लिए बराबर यत्न हो रहा है कि घोषणा कार्यान्वित हो। सभी विभागों के लिए उपयुक्त शब्द की खोज हो रही है। हम आशा करते हैं कि थोड़े दिनों में सभी दफ़्तर में सभी काम हिन्दी में होने लग जायँगे।

* * *

हिन्दी के साथ देवनागरी लिपि भी आती है। यों तो कोई भी भाषा किसी भी लिपि में किसी न किसी, अवसर पर लिखी जा सकती है, परन्तु जितनी प्रचलित लिपियां हैं उनमें देवनागरी अनुपम है, फिर भी समयानुसार उसमें कुछ परिवर्तन की आवश्यकता प्रतीत होने लगी है। लिपि में परिवर्तन करना दोष नहीं है। इस लिपि ने बहुत से परिवर्तन देखे हैं। आचार्य नरे की अध्यक्षता में एक कमेटी काशी-प्रचारिणी-सभा द्वारा अनुमोदित अन्य सभी प्रस्तावित परिवर्तनों विचार कर रही है।

फैंसी सिल्क-साड़ी
आकर्षक डिजाइन
कलापूर्ण ३-४ इंच चौड़ा बार्डर
नं० ७ ८ ९ ५
१८) २३) २८)
२) पेशगी बाकी वी० पी० से
थोक व्यापारियों को खास सुविधा
भारत इन्डस्ट्रीज,
जुही नं० ६ कानपुर

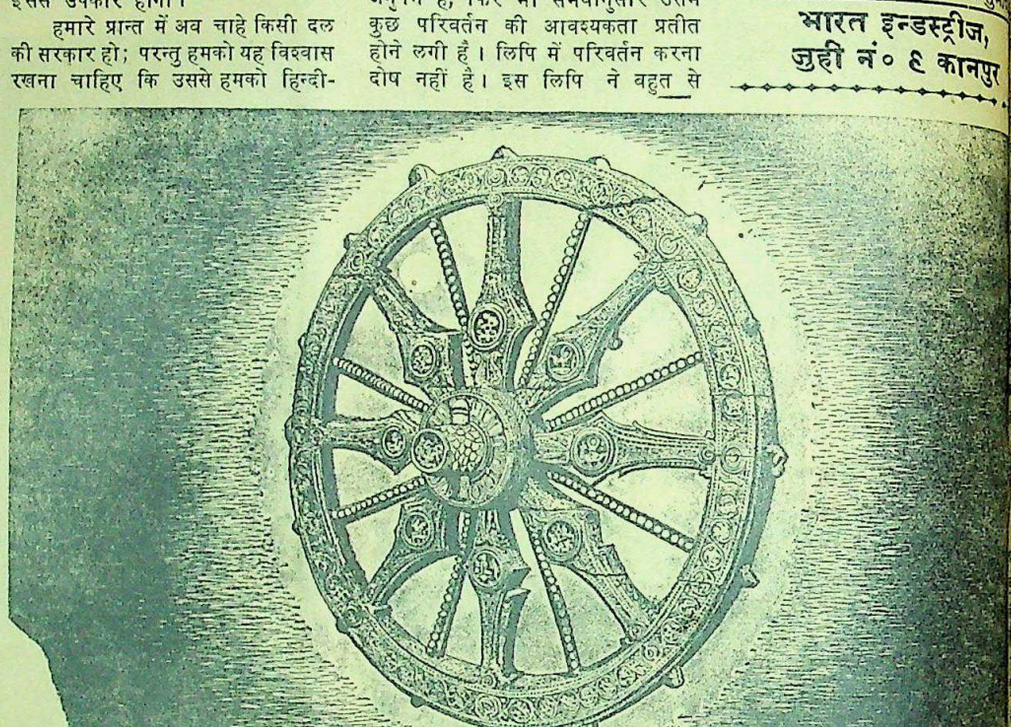

मानवी कल्पना शक्ति ने कई एक वस्तुओं का आविष्कार किया है। पहिये का आविष्कार उन में से एक है। छकड़ा, घोड़ागाड़ी, भाप से चलने वाले इंजन और मोटर गाड़ियां इसी आविष्कार का प्रताप हैं। क्या पहिये के आविष्कार के बिना सभ्यता के भौतिक सुख सार्वलौकिक बन पाते? संग्राम में प्रयोग में आने वाले प्राचीन रथ से प्रारम्भ होकर आधुनिक भयंकर शस्त्र, तोप, टैंक और बख्तर बन्द गाड़ी का आविष्कार करके मनुष्य ने पहिये से युद्ध और विनाश का काम लिया है। इस उदाहरण से हमें यह शिक्षा मिलती है कि पूर्वजों के ज्ञान और अपने साधनों का दुरुपयोग या सदुपयोग हमारे ही ऊपर निर्भर है।

इसी प्रकार अपनी बचत के धन को अत्यन्त हानिकारक या अति सुखदायक बनाना हमारे अपने हाथ का काम है। व्यर्थ अपव्यय करने या धन को किसी अनुचित मद में लगा देने से मूल्य और भी अधिक बढ़ जाते हैं और फिर अनेकों कठिनाइयों का सामना करना पड़ जाता है। इस के विपरीत बचाया हुआ धन एक मूल्यवान पूंजी बन जाता है।

विचारपूर्वक किसी सुरक्षित मद में धन लगा कर हम भारतवर्ष को सौभाग्यशाली बना सकते हैं। यह आप के अपने और राष्ट्र के लिये कल्याणकारी सिद्ध होगा।

चीज़ें पर्याप्त नहीं और इनकी कीमतें चढ़ी हुई हैं। केवल उसी समय ख़रीदिये जब यह अत्यावश्यक हों और इस प्रकार कीमतें गिराने में हमें सहयोग दीजिये। अपनी बचत को बुद्धिमत्ता पूर्वक बीमा पॉलिसी, सहकारी साख समिति, डाकख़ाने का सेविंग्ज़ खाता, नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स और सरकारी लोन (कर्ज़े) की मदों में लगाइए।

भूमि, सम्पत्ति, सोना चांदी के पांसे, आभूषण, द्रव्य, बना माल या सट्टेबाज़ी अरक्षित मद हैं। इन के मूल्य भी चढ़े हुए हैं और आशा है कि शीघ्र ही कम हो जायेंगे।

चढ़ी कीमतों को रोकिए
धन का अपव्यय न कीजिए

भारत सरकार के फ़ाइनैन्स विभाग द्वारा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

शरणार्थियों की समस्याएँ अपनी हैं!

भारतवर्ष में साम्प्रदायिकता के पिशाचन ने लाखों घरों को नष्ट कर दिया व लाखों प्राणियों का संहार कर चुका है। इस राक्षसीपन के शिकारी हमारे भाई-बहन अब आपकी ओर सहायता के लिये निहार रहे हैं। शरणार्थी भाई-बहनों की सहायता के लिये मण्डल की कार्यकारिणी ने—(१) अपनी उद्योगशाला में १०० शरणार्थियों को उद्योग देकर उनके परिवार को सहायता देना निश्चय किया है। (२) निराश्रित महिलाओं को क्षात्रावास में निःशुल्क प्रवेश देकर उनके भावी जीवन की जिम्मेदारी लेने का तथा, (३) शरणार्थियों के बच्चों को बाल-मन्दिर और 'मण्डल' की हाईस्कूल व मिडिल शालाओं में शरणार्थी बहिनों को निःशुल्क शिक्षा देने का निश्चय किया है।

धनी-मानी तथा परोपकार वृत्ति, वाले सहायकों से निवेदन है कि शरणार्थियों की दयनीय दशा में तथा संकटग्रस्तों में सहायता करने के लिये महिला-मण्डल द्वारा उठाई हुई ठोस तथा स्थायी योजना में खुले मन से धन की सहायता देकर अपने कर्त्तव्य का परिचय देंगे।

—सुशीला अग्रवाल
मंत्रिणी, महिला-मंडल, उदयपुर

* * *

देवरिया सरांव बुजुरुग के आस पास करीब ५० ग्रामों में बीज की उचित व्यवस्था न होने से खेती लायक "पांच हजार" एकड़ जमीन परती पड़ रही है। किसानों को ३ छटांक मक्का का बीज भी ठीक से नहीं मिल रहा है, जिससे वे घबड़ा गये हैं। इतना खेत अगर परती पड़ जायगा तो अगले साल अन्न से कहीं ज्यादा भयंकर अकाल सामने आयेगा। अधिकारी पुराने ढांचे के अनुसार कार्रवाई कर रहे हैं, यदि सरकार जल्द इन्तजाम नहीं करेगी तो भयंकर खतरा से उसे लड़ना पड़ेगा, जनता उचित सहायता देकर अधिकारी वर्ग इस स्थिति को सम्भाल सकते हैं। तेल, कपड़ों की व्यवस्था तो बहुत ही खराब है।

—रामाधव मिश्र "साहित्यरत्न"

* * *

बिलानी (हिन्दी साहित्य समिति बिरला कालेज) में गांधी जयन्ती के अवसर पर प्रातः प्रभातफेरी निकाली गई। बाद को कालेज हाल में श्रीशुकदेव पाण्डेय के सभापतित्व में एक सभा का आयोजन हुआ जिसमें महात्मा गांधी की जीवनी से सम्बन्धित भाषण तथा कवितायें पढ़ी गईं। कालेज के अध्यापकों व विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। गांधी जी की दीर्घायु की प्रार्थना करते हुए सभा विसर्जित हुई। दूसरे दिन कालेज हाल में श्रीयुत प्रो० कन्हैयालाल जी सहल एम० ए० के सभापतित्व में कालेज कुल की प्रथम बैठक हुई। श्रीयुत प्रो० अमरनाथ जौहरी, श्री प्रो० दयाशंकर 'विद्यार्थी' के अलावा विद्यार्थियों ने अपनी स्वरचित कवितायें सुनायीं। विद्यार्थियों की ओर से सुन्दर अनुवाचन किये गये। आयोजन बड़ा उत्साहवर्द्धक रहा।

—संवाददाता

* * *

जोधपुर के योगिराज महर्षि स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज ने देश में शान्ति स्थापित करने के लिये पांच साधन निश्चित किये हैं जिन्हें महात्मा गांधी ने सहर्ष स्वीकृत किया है। (१) धार्मिक हिन्दू-मुस्लिम नेताओं की एक सम्मिलित सभा बुलाई जावे, जो शान्ति-स्थापना के प्रभावशाली तरीकों को ढूंढ़ निकाले, जिन्हें हिन्द और पाकिस्तान दोनों की सरकारें स्वीकार कर अमल में लेने का पूर्ण प्रयत्न करें। (२) मज़हबी तास्सुब से परे हिन्दू मुस्लिम वक्ताओं की नामावली तैयार की जाकर उनके जरिये जनता में उपद्रवों के भयानक दुष्परिणाम तथा देश की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक हानियां बताकर मेल-जोल का वातावरण बनाया जावे। (३) विविध मुद्दों और दृष्टियों से शान्ति स्थापना की आवश्यकता को सर्वसाधारण ग्रामीण जनता में प्रभावशाली तरीकों से पेश किया जावे। (४) शरणार्थियों को तात्कालिक सुविधा पहुँचाने एवं उनके स्थायी जीवन साधनों को पुरस्कृत करने में जनता, राज्य और धनवानों को उत्साहित तथा आवश्यकतानुसार विवश भी किया जावे। (५) अन्तर्राष्ट्रीय प्रभावशाली, जिम्मेवार एवं ईमानदार विदेशियों को भारत आने के लिये निमंत्रित किया जावे, ताकि वे यहां होनेवाली घटनाओं की स्वयं देख सकें।

—संवाददाता

* * *

वृन्दावन के आर्य्यसमाज मंदिर में महात्मा नरायण स्वामी जी के देहावसान पर एक सार्वजनिक शोक-सभा हुई, जिसमें कि स्वामी जी के जीवन पर अद्वैतकुमार गोस्वामी नरदेव शास्त्री के भाषण हुए और शोक-प्रस्ताव पास किया गया।

भारत प्रसिद्ध धार्मिक ग्रन्थों के प्रकांड विद्वान्-संगीत के पारदर्शी माध्व गौड़ेश्वर संप्रदायाचार्य्य श्री वनमालीलाल जी गोस्वामी का दशहरा को स्वर्गवास होगया। आप काशीनिवासी संस्कृत के परम विद्वान् श्री गोस्वामी दामोदरलाल जी शास्त्री के बड़े भाई थे।

वृन्दावन की धार्मिक जनता में इस बात को लेकर बड़ा भारी असन्तोष फैल रहा है कि स्थानीय म्यू० बोर्ड के चेयरमैन साहब के पुत्र मि० हेमन्तकुमार ने जो कि अभी हाल ही में स्पेशल मजिस्ट्रेट बनाये गये हैं व जिन्हें अभी नई बन्दूक मिली है अपनी बन्दूक से दो तीन बन्दरों को मार दिया। जब कि म्यू० बोर्ड की सीमा के अन्दर किसी भी जीव का वध निशेध है। जनता ने जिला मजिस्ट्रेट व माननीय पन्त जी को लिखा है।

वृन्दावन मण्डल कांग्रेस का नया चुनाव २८ ता० को होगा। पिछले पदाधिकारियों ने सामूहिकरूप से स्तीफा दे दिया था।

—संवाददाता

* * *

बम्बई से "स्वतंत्र" भारत की सच्ची सेवा करने तथा हिन्दूसिख जाति का नवजागरण का संदेश सुनाने के लिये ही पत्र जगत में प्रवेश कर रहा है। समता, एकता तथा बांधवता की दिव्य भावनाओं का प्रसार इस निर्भीक साप्ताहिक का मुख्य उद्देश्य है। राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने का प्रत्येक प्रवृत्तियों का यह पत्र प्रचार करेगा। "स्वतन्त्र" का सम्पादन बम्बई के सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता सिख नेता और हिन्दू संगठन के प्रबल समर्थक सरदार कर्तारसिंह करेंगे। वार्षिक चन्दा, ६)—अर्धवार्षिक ३।) तथा एक प्रति का दो आना। विशेष विवरण के लिये "स्वतन्त्र" २३८ ठाकुरद्वार रोड, कमाना हाऊस, बम्बई २ के पते पर लिखिये।

—संवाददाता

* * *

बलिया साहित्य सेवा-सदन सोनबरसा के प्रधान मंत्री श्री वीरेन्द्रनाथ उपाध्याय सूचित करते हैं कि सदन के पुस्तकालय विभाग की अधिकारिणी कुमारी चम्पादेवी नियुक्त हुई हैं। और सदन का कार्यालय पं० बलदेव उपाध्याय जी के द्वार से उठकर डा० कृष्णकुमार उपाध्याय के द्वार पर आ गया है। साथ ही सदन के पदाधिकारियों के पदों में परिवर्त्तन हुआ है। सदन के सभापति और उपसभापति का पद तोड़ दिया गया। अतः सदन के निम्नलिखित पदाधिकारी हैं—वीरेन्द्रनाथ उपाध्याय (प्रधान मंत्री) सुरेन्द्रनाथलाल (प्रचार मंत्री) कुमारी चम्पादेवी (संग्रह मंत्री) श्रीदेवेन्द्र (अर्थमंत्री) सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि सदन सम्बन्धी पत्रव्यवहार निम्नलिखित पते से करें।—डा० कृष्णकुमार उपाध्याय द्वारा—साहित्य सेवा सदन सोनबरसा बैरिया बलिया।

—संवाददाता

पृथ्वी की परिक्रमा

भिन्न-भिन्न देशों के प्रधान स्थानों का मनोहर वर्णन आपको इस पुस्तक में सुन्दर भाषा में मिलेगा चिकने कागज पर छपे हुए पूरे पृष्ठ के चित्र भी इसमें हैं। मूल्य ॥)

गुदड़ी के लाल

इस पुस्तक की कहानियाँ बहुत ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद खुश होते हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों को जरूर दीजिए। मूल्य ॥)

मनोरञ्जक कहानियाँ

(दूसरा भाग)

इस पुस्तक में बहुत सी मनोरंजक और शिक्षाप्रद कहानियाँ हैं। इसके पढ़ने से बालकों को अन्य लाभ के सिवा भाषा-सम्बन्धी ज्ञान भी होता है। मूल्य ।-)॥

जानवरों की मज़ेदार कहानियाँ

मोर और कौआ, लोमड़ी और गधा, चालाक बुढ़िया, सोने की चिड़िया, सिंह और सियार आदि कहानियाँ पढ़िए और इनका चमत्कार देखिए। मोटे टाइपों में अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य ॥≈)

अपना-पराया

पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'भस्त' लिखित इस मनोरंजक उपन्यास में एक चीनी तरुणी का मेनका-नृत्य जहाँ आपको आत्म-विभोर कर देगा, वहीं तिब्बत और चीन की नैसर्गिक छटा और वहाँ के अजीबोग़रीब रस्म-रिवाज भी आपके सामने नाच उठेंगे। चीन की यह रहस्यमयी तरुणी किस प्रकार भारत आती और अपने धर्म तथा स्वदेशाभिमान की रक्षा कर, एक भारतीय नौसैनिक की सहायता से अपने देश लौट जाती है, आदि प्रसंग आपको प्रणय की रंगीनियों का सजीव परिचय देंगे। पृष्ठ २३२, सजिल्द और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २॥) रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

छप गया! छप गया!!

सुदीर्घ जेल-जीवन की नीरव साधना के फलस्वरूप लिखित

ऐतिहासिक भौतिकवाद

लेखक, भूतपूर्व काकोरी कैदी, श्री मन्मथनाथ गुप्त, और श्री रमेन्द्र वर्मा

समाजवाद के तात्त्विक अध्ययन के लिए ऐतिहासिक भौतिकवाद को समझना बहुत जरूरी है, क्योंकि मार्क्सवाद के विषयों में यही सबसे गहन है। इस विषय पर विश्वसाहित्य में बुखारिन की पुस्तक सर्वोत्तम समझी जाती थी, पर इस पुस्तक के प्रकाशन ने उसको पीछे छोड़ दिया। इस पुस्तक में वे सभी विषय तथा तथ्य हैं, जो बुखारिन के समय तक उपलब्ध थे। इनके अतिरिक्त नवीनतम ज्ञान-विज्ञान, नृतत्त्व, इतिहास में जो उन्नति हुई है, उन सबका इसमें दिग्दर्शन है। इस पुस्तक में विरोधी मतों का वर्णन करके फिर उनका खंडन करते हुए मार्क्स के मतवाद की वैज्ञानिकता सिद्ध की गई है।

इसमें आदिम काल से लेकर अति आधुनिक समय का विश्व-इतिहास आ गया है। मार्क्सवादी पुस्तकों में अकसर उदाहरण यूरोपीय इतिहास से दिये गये हैं, पर इसमें विशेषकर भारतीय तथ्य दिये गये हैं। इस प्रकार मार्क्सवाद को भारतीयों के लिए सुबोध्य करने की यह प्रथम चेष्टा है।

इतिहास की आर्थिक व्याख्या को सहस्रों उदाहरणों से समझाने के अतिरिक्त इस पुस्तक में धर्म तथा सदाचार पर अत्यन्त गम्भीर अध्याय हैं। सदाचार पर जो अध्याय हैं उसमें विस्तार के साथ बताया गया है कि सदाचार पर मार्क्सवाद का क्या प्रतिपाद्य है।

पुस्तक में लगभग पाँच सौ पृष्ठ हैं। समाजवाद समझने के लिए इसका अध्ययन अपरिहार्य है। कुछ अध्यायों के नाम यों हैं। १—व्यक्ति, व्यक्तित्व और समाज, २—इतिहास के कतिपय भ्रान्त सिद्धान्त, ३—धर्म, ४—मार्क्सवाद और सदाचार। प्रत्येक अध्याय स्वयं एक पुस्तक है। एक दर्जन अध्यायों में सम्पूर्ण। मूल्य ६) रु०

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कायदे आजम जिन्ना का विषवमन

(पेज ६ का शेष)

कायदे आजम की गहरी कूटनीति से हो गये थे, शीघ्र ही समाप्त हो जायगी। साम्प्रदायिकता का यह भयानक भूत आज जनता के सहयोग से पराजित हो रहा है और शीघ्र ही अन्तिम सांस ले लेगा।

(२) हिन्दुस्तान के मुसलमानों में जो प्रतिक्रिया हो रही है उससे भी कायदे आज़म को घबराहट है। बड़े-बड़े लीगी नेता आज पाकिस्तान में गये हैं। मुसलिम जमींदार, व्यापारी तथा रुपयेवाले बहुत कुछ पाकिस्तान पहुँच चुके हैं और बाकी जाने की तैयारी में हैं। इससे मुसलिम जनता आज अपने को अनाथ सा पा रही है और धीरे-धीरे अपनी गलतियों को समझने लगी है। पाकिस्तान मिल जाने से मुसलिम जनता को क्या लाभ हुआ यह प्रश्न आज साधारण श्रेणी के मुसलमानों के मस्तिष्क में मुख्य हो रहा है। विचार करने पर उसे गहरी निराशा दिखाई पड़ रही है।

उपरोक्त दो बातों से परेशान होकर जिन्ना साहब हिन्दुस्तान के मुसलमानों को ठगने का फिर प्रयास करना चाहते हैं जिसका अन्दाज उनके निम्नांकित प्रश्नोत्तरी से चलता है:—

प्रश्न:—पाकिस्तान के बाहर अब मुसलिम लीग का उचित कार्य क्या होना चाहिए?

उत्तर:—पाकिस्तान के निर्णाम से मुसलिम लीग का यद्यपि एक बहुत बड़ा ध्येय पूरा हो गया फिर भी उसके ऐसे अभी बहुत से काम हैं जिन्हें उसे पूर्ण करना है।...लीग का काम मुसलमानों के अधिकारों की रक्षा के लिए संगठन करना, मुसलिम जनता की एकता कायम रखना तथा दुनिया भर के इस्लामी राष्ट्रों का संगठन करना है।... हिन्दुस्तानी मुसलमानों को अभी बहुत बड़ा काम करने हैं और मैं उन्हें संगठित होने की सलाह दे रहा हूँ।.....हिन्दुस्तान में मुसलमानों का मुख्य काम यह है कि वे अपनी शक्ति सगठित करके सरकार से उचित अधिकारों की रक्षा करते रहें। पाकिस्तान सरकार भी इस काम को उनके लिए अधिक प्रभावशाली तरीकों से करेगी।

कायदे आजम का उपरोक्त जवाब हिन्दुस्तान के घबराये मुसलमानों को एक बार फिर बरगलाने के लिए है। इस बीसवीं शताब्दी में हमारे कायदे आजम केवल हिन्दुस्तान में ही नहीं बल्कि संसार के सब मुसलमानों में बीते हुए युग की धार्मिक प्रवृत्तियां लाकर धर्म की आड़ में जनता को उभार कर राजनीतिक आदर्श पूरा करना चाहते हैं। पाकिस्तान की गवर्नरी जनरली से ही जिन्ना साहब को सन्तोष नहीं। दुनिया के तमाम इस्लामी मुल्कों का खुदा बनकर अपने अरमान निकालने की धुन में हैं। कायदे आजम की इन मीठी बातों से बहुत से उनके चेलों को अवश्य ढाढ़स बँधेगा और वे खुश हो रहे होंगे। परन्तु आगे का समय बतायेगा कि कायदे आज़म की ढाल एक धोखे की टट्टी है जिसकी शक्ति पर भरोसा करके हिन्दुस्तान के मुसलमान एक बार फिर पछतायेंगे।

एक ही रास्ता

कायदे आज़म की इन विषमयी पैंतरी वारों से बचने का हमारे सामने एक ही रास्ता है। हिन्दूराष्ट्र की सामाजिक कमजोरियों को नष्ट करके हिन्दुस्तान में पूर्ण शान्ति कायम रखना। साम्प्रदायिक विषमता जो कि कायदे आजम की जान है हिन्दुस्तान के वायु-मण्डल से सदैव के लिये समाप्त कर देने से ही उनका भव्य महल एक दिन में चकनाचूर हो सकता है। हिन्दुस्तानी मुसलमान इस समय विषम परिस्थिति में हैं। हर नागरिक को इस समय सच्चा हितैषी बनकर उन्हें जीत लेना है। मुसलिम लीग के विषधर नेता जो अब भी मुसलिम जनता को बरगला रहे हैं उन्हें पहचान कर उनसे सावधान रहना है और भोली-भाली जनता जो अभी तक बरगलाई हुई थी उसे सही मार्ग बताकर एक सच्चा नागरिक बनाना है। सरकार पर पूर्ण भरोसा रखकर उसे शक्तिशाली बनाना, शान्तिप्रिय तरीकों से साधारण स्थिति कायम रखना तथा साम्प्रदायिक विषमता को हमेशा के लिए नष्ट कर देने में ही देश का हित है। जनता को इसे समझ लेना है और अपने महान् प्रयत्नों द्वारा भारत के भविष्य को उज्ज्वल बनाना है।

(पेज ५ का शेष)

गया। प्रतिनिधि-मंडल से राजा साहब ने मिलना उचित नहीं समझा। उनके मंत्री मिले और नागरिक स्वतन्त्रता के बारे में उनसे कोरा जवाब मिला। प्रतिनिधि-मंडल पर निष्काशन की आज्ञा लगा दी गई और इसका पालन न होने पर उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया। सैयद हामिदअली, प्रधान मंत्री, "मध्य-भारत, प्रादेशिक देशी राज्य लोक-परिषद्" का आगमन भी मैहर में हुआ। उन्होंने भी राजा साहब से मिलकर शान्तिपूर्वक समझौता करने का प्रयत्न किया। उनसे भी मैहर के शाहंशाह ने तानाशाही के ढंग में उत्तर दिया। आखिर मजबूर होकर "मध्य-भारत देशी राज्य लोक-परिषद्" की ओर से बुन्देलखंड के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की एक सत्याग्रह संचालन कमेटी बनाई गई, और उसमें मैहर राज्य प्रजा-मंडल की मांगों को रखकर यहां के राजा को एक अल्टीमेटम दे दिया गया और मौका दिया गया कि यदि २५ अक्टूबर तक वह पूर्ण उत्तरदायी शासन तथा नागरिक स्वतन्त्रता की घोषणा न करेगा तो आन्दोलन आरम्भ कर दिया जायगा। मैहर राज्य के आन्दोलन में बुन्देलखंड के सभी कार्यकर्त्ता आमंत्रित थे, मगर इस आन्दोलन का महत्त्व इससे कहीं बड़ा है। यह मैहर जैसे छोटे राय का आन्दोलन नहींबल्कि दो सिद्धान्तों की लड़ाई है। मैहर का राज्य "भारतीय संघ" में शामिल हुआ है इसलिये मैहर के नागरिकों को वही अधिकार प्राप्त होना चाहिए जो स्वतन्त्र भारत के नागरिकों को हैं, और जो विधान सम्मेलन निश्चित कर चुका है। उन अधिकारों का उपभोग यहां की राज्य की जनता को न करने देना भारतीय संघ के विधान का उलंघन करना है, यूनियन सरकार में बैठे हुये नेताओं को चाहिए कि हमारी ओर ध्यान दें। जिन अधिकारों के लिये हम ब्रिटिश साम्राज्य से लड़े और उसे परास्त किया यह ४ लाख की जनता का छोटा सा राज्य, उन्हीं पर आघात कर रहा है। मैहर की जनता अपने अधिकारों के लिये लड़ने को तैयार है। बुन्देलखंड की जनता इस लड़ाई में उसके साथ है।

बुन्देलखंड के जो राजा देशभक्त हैं तथा भारतीय स्वतन्त्रता के पोषक हैं और जो सच्चे दिल से भारतीय संघ में आये हैं, उनका कर्त्तव्य है कि वह मैहर गुटबन्दी से दूर रहें और अपने राज्यों में हर्षपूर्वक जनता का सहयोग शासन में प्राप्त करें।

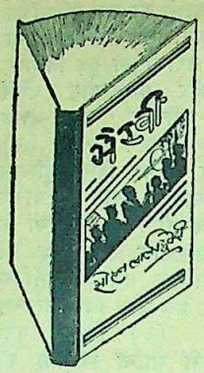

श्री सोहनलाल द्विवेदी लिखित

काव्य कृतियों

के

नवीन संस्करण

भैरवी

गांधी युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। महामालवीयजी के शब्दों में 'ऐसी कविता प्रचार देश के एक कोने से लेकर दूसरे तक होना चाहिए।' मूल्य २॥=)

वासवदत्ता

बाबू मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं 'इस रचना में बहुत प्रभावित हुआ।' स्वच्छन्दतापूर्वक प्रौढ़ता की ओर द्विवेदीजी अग्रसर हो रहे हैं, पड़ता है, स्वयं वह भी उन्हें वरण करने लिए आतुर हो रही है। 'वासवदत्ता' के प्रकाशन हिन्दी-साहित्य में एक नई क्रान्ति उत्पन्न कर है। यह स्वयं पढ़कर निर्णय कीजिए। मूल्य १

कुणाल

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सम्मति में अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल खास से—'कुणाल' के चरित्र-चित्रण में कवि कमाल किया है। शब्द-सौकुमार्य और भावोत्के साथ ही नपे तुले शब्दों के प्रयोग ने काव्य बहुत ऊँचा उठाया है। विशेष संस्करण मूल्य २

पूजागीत

राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप के लिए द्विवेदी जी का प्रचुर सम्मान त लोकप्रियता प्राप्त हुई है। ये पूजा-गीत कवि गौरव के अनुरूप ही हैं। मूल्य २)

विषपान

सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा का सरल तथा सर खंड-काव्य है। भाषा का प्रवाह, प्रसन्न शैल तथा कथा के मार्मिक घटना-क्रम की वर्णना इसे बड़ा ही हृदयग्राही बना दिया है। मूल्य १)

झरना
शिशुभारती
बाँसुरी

द्विवेदीजी पहले बालकों के कवि हैं पीछे रा के। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा माननी सम्पूर्णानन्दजी ने इन कविताओं की ब प्रशंसा की है। 'अमृत बाज़ार पत्रिका' सम्मति में—जिस प्रकार की शिक्षा बालक को देने के लिए हमारे नेता वर्षों से प्रयत्न रहे हैं, इन पुस्तकों में उसी प्रकार का साहित्य है प्रत्येक पुस्तक में कई रङ्गीन तथा अनेक चित्र हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १)

पूरे सेट का मूल्य १२ रु०

पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारी लूट !

आज ही मँगावें—अवसर मत चूकिये
३॥) में ६ नई पुस्तकें

१ पति-पत्नी जीवन (सचित्र)—पति-पत्नी के पढ़ने योग्य दाम्पत्य जीवन को सुखी, २ बनानेवाली अपूर्व पुस्तक १।), खजाना रोजगार—अनेकों प्रकार के हुनर ३ धन पैदा कीजिये १), हुसन पैरिस—केवल विवाहितों के देखने योग्य १२ फोटो ४ रंगलिया टीचर—घर बैठे अँगरेजी लिखना, पढ़ना, बोलना सीखो १), वशी- ५ करण विद्या—वशीकरण मंत्रों और जादू के खेलों का संग्रह १), हारमोनियम टीचर— ६ हारमोनियम बजाना और गान-विद्या सीखो १॥)।

६ पुस्तकों के सेट का मूल्य केवल ३॥) पोस्टेज पैकिंग ।॥) अलग।

ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (जी० ५०७) अलीगढ़ सिटी।

घड़ाघड़ बिक रहा है। शीघ्रता कीजिए

वार्षिक बालसखा १९४७

इसकी छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएँ और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का मूल्य ३)। मासिक ग्राहकों को रियायती मूल्य २॥) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

प्रेम-रहस्य

लेखक, पं० रामचन्द्र शुक्ल 'सरस'

प्रेम की महत्ता सर्वोपरि है। प्रत्येक मानव को प्रेम में आदान-प्रदान का अनुभव होता है। लेकिन प्रेम-रहस्य की गुत्थियाँ मिलते ही सुलझा पाते हैं। यह सब आपको इस ग्रंथ के उदाहरणों में मिलेगा।

प्रसिद्ध मनीषी डाक्टर अमरनाथ झा ने इस पुस्तक को हिन्दी में अपने ढँग की पहली पुस्तक कहा है।

लगभग २०० पृष्ठों की सुन्दर और सजिल्द पुस्तक का मूल्य सिर्फ दो रुपये।

प्रतिभा-मण्डल, नया कटरा, प्रयाग

आविष्कारों की कथा

मशीनें कैसे बनीं? तरह-तरह के औजार कैसे बनें? रेल, जहाज, तार और सिनेमा वगैरह कैसे बने? नई-नई चीज़ें बनाकर या नये काम करके क्या आप दुनिया में प्रसिद्ध हो सकते हैं? इन सारी बातों को जानने के लिए यह पुस्तक जरूर पढ़िए। मूल्य १)

परीदेश

यह पुस्तक खास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥)

जापान का हाल

इस महायुद्ध से पहले जापान बड़ा शक्तिशाली देश था। क्या उद्योग-धन्धे और क्या व्यापार, क्या शिक्षा और क्या युद्ध, सभी में वह एशिया खंड में सिरमौर था। महायुद्ध में उसके दाँव-पेंच देखकर यूरोप और अमरीका तक को हैरान होना पड़ा था। साठ-सत्तर वर्ष में ही उसने बेहद उन्नति कर ली थी। इस पुस्तक में वहाँ की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दशा पर काफी प्रकाश डाला गया है। मूल्य ।॥)

अन्वेषण की सरल कथाएँ

नए-नए देशों का पता लगाने में समुद्र के कर्मवीर यात्रियों ने कैसी कैसी कष्टकथाएँ झेली हैं, उनका खासा वर्णन इस अच्छित पुस्तक में पढ़िए। मूल्य ।॥।-)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

Copyright Pond's Extract Co.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चमेलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।

वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

सभी दूकानों पर

Copyright

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निश्चेलता, वीर्य पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।—) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टा, कानपुर

बिंस होमियोपैथिक कालेज
बनारस

गवर्नमेन्ट रजिस्टर्ड और एडेड से होमियोपैथिक, वायकेमिक, इंजेक्शन का तीनों डिप्लोमा (सार्टिफिकेट) लें या शिक्षा प्राप्त करें। नियमावली मुफ़्त मँगाइए।

रापट एण्ड कुं
मुंबई २

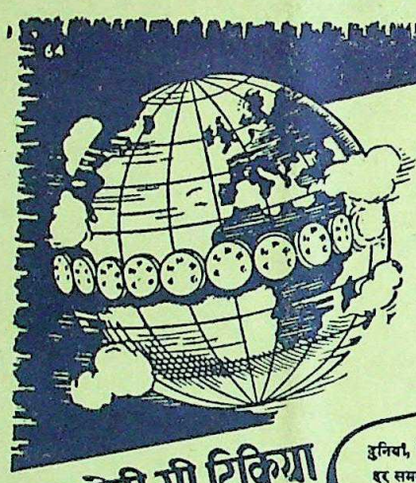

इस पेचीदी दुनियाँ में सीधी सादी चीजें ही वास्तविक हैं

दुनियाँ, पेचीदगियों से भरी हुई है। हमारे बड़े बड़े नेताओं को भी जनता की सदिच्छा की जरूरत पड़ती है। हर समस्या का समाधान है। अगर आप गहरे पैठ कर देखें तो इस पेचीदगी के पर्दे में सीधा सादा सत्य आपको छिपा मिलेगा। अस्वस्थता का मुकाबला 'ऐस्प्रो' सीधे सादे सत्य से करती है। आप भले चंगे रह सकें प्रकृति यही चाहती है। जीवन की पेचीदगियाँ ही आपके रास्ते का रोड़ा है। छोटी छोटी चीजें, जरा सा दर्द या बुखार का असर दिमाग पर पड़ता है और हाथ पैर ढीले पड़ जाते हैं। इन छोटी छोटी चीजों से आप सरलता से फौरन् छुटकारा पा सकते हैं—अद्भुत गुणवाली इन एक या दो सफेद टिकियों से। ये टिकियाँ प्रकृति की सहायता करेंगी ताकि वह अपनी पूरी ताकत के साथ आपको भला चंगा कर दे। बीमारी की भावना भाग जावगी और परिवार भर, स्वास्थ्य और सुख शान्ति का अनुभव करने लगेगा।

एक छोटी सी टिकिया आपको चंगा कर सकती है

'ऐस्प्रो' प्रकृति के साथ काम करती है उसके विपरीत नहीं

'ऐस्प्रो' हृदय को नुकसान नहीं पहुँचाती

'ऐस्प्रो'
दर्द और बुखार दूर करती है

हर जगह बिकती है

मर्द, औरत और बच्चे के लिये 'ऐस्प्रो' क्या करती है

५ मिनट में सिर दर्द रोकती है
रात भर में गठिया शान्त करती है
चन्द मिनटों में बुखार कम करती है
दांत-दर्द और स्नायुशूल फौरन् बन्द करती है
दुःख दर्द भगाती है
नींद न आनेपर मीठी नींद लाती है
चिड़चिड़ापन दूर करती है
स्त्रियों का दर्द दूर करती है
इससे कुल्ला करने पर गले की खसखसाहट दूर होती है
सर्दी और इन्फ्लूएन्जा का नाश करती है
किसी भी दवा से पहले डेंगू ज्वर उतारती है
संक्रामक रोगों से दूर रखती है

वितरक:
जे. एल. मोरिसन, सन एण्ड जोन्स (इण्डिया) लिमिटेड

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ कलाइव रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

९ नवम्बर, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 9th November 1947

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

फिलिस्तीन का बँटवारा क्यों हुआ ?
बिहार - केसरी श्री श्री कृष्णसिंह

हिन्दी भाषाभाषी भारतीय जनता का पत्र

मूल्य २ आना

महात्मा गांधी का दर्शन-शास्त्र
भारत में कुष्ठ रोग की एक समस्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

'मंजरी'

जनवरी १९४८ से प्रकाशित होगी

- तिरङ्गा और मोहक आवरण तथा दर्जनों चित्र,
- हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कहानी-लेखकों और अन्य प्रान्तीय भाषाओं की कलात्मक कहानियाँ,
- कहानियों के साथ-साथ कथा-साहित्य के क्रम-विकास पर गम्भीर समीक्षात्मक लेख,
- कथा-साहित्य के नवीन प्रकाशनों की निष्पक्ष समीक्षा,
- मासिक कथा-साहित्य का सिंहावलोकन,
- कलापूर्ण छपाई,

ये सारी विशेषताएँ आप 'मंजरी' में पायँगे

नवम्बर के अन्त तक ग्राहक और एजेण्ट हो जानेवालों की प्रतियाँ सुरक्षित रहेंगी। इसके बाद होनेवाले ग्राहकों और एजेन्टों को 'मंजरी' का पहला अङ्क दुर्लभ रहेगा।

सम्पादक — देवीदयाल चतुर्वेदी

प्रकाशक — इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

'देशदूत' का दीपावली विशेषां

विज्ञापनदाता शीघ्र ही स्थान रिज़र्व करा लें

अन्य अवसरों की भाँति 'देशदूत' का यह विशेषांक बहुत ही सु और आकर्षक रूप में प्रकाशित होगा। इसमें अच्छे अच्छे लेख, नियाँ, कविताएँ, हास्य की सामग्री और बढ़िया चित्र रहेंगे। इस अं पढ़ने की बहुत बढ़िया सामग्री रहेगी। एजेंट अपनी प्रतियाँ रिज़र्व करा

विज्ञापन-दाताओं को इस अंक में विज्ञापन छपवाने से बहुत ला होगा। विज्ञापन-दर—

कवर चौथा पूरा पेज ४००)
" दूसरा या तीसरा पूरा पेज ३००)
पहला पेज पाठ्य-विषय से पहले ३००)
साधारण पूरा पेज २००)

पृष्ठ का आकार १२½" × ४ कालम
स्कीन ६५

शीघ्र पत्र लिखकर स्थान रिज़र्व कराइए। विज्ञापन १० नवम्ब सन् १९४७ के बाद स्वीकार न किये जायँगे। मूल्य अग्रिम भेजिए।

मैनेजर 'देशदूत', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रया

- दांतों को ६० प्रतिशत अधिक स्वच्छ करता है
- जल-अभेद्य.....नमी-विद्वेषक
- शीशे में बंद
- वर्षभर की गारंटी

डा. वेस्ट्स ट्रूथ ब्रश और ट्रूथ पेस्ट

व्यापारिक पूछताछ के लिये: एल. डी. सेमूर एंड कम्पनी (इंडिया) लिमिटेड
बम्बई • कलकत्ता • कराची • मदरास

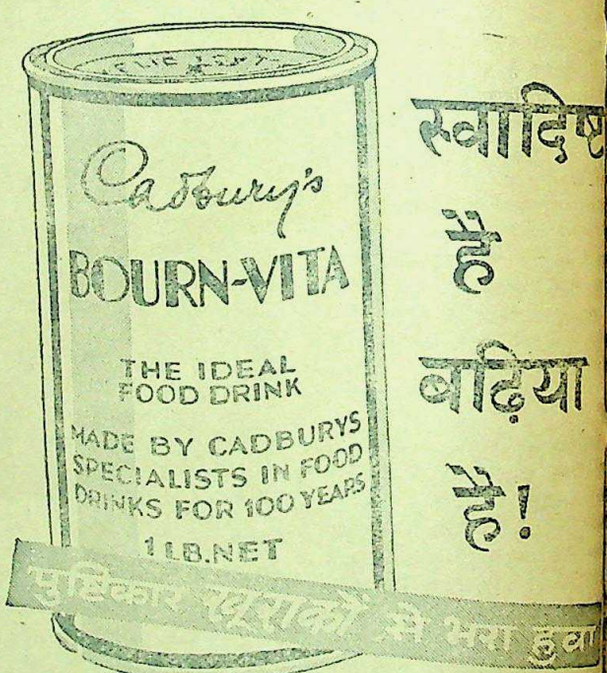

स्वादिष्ट है बढ़िया है!

'बोर्न-विटा' में हड्डी बनाने और ताक़त देनेवाले उपादन ९५ सैकड़ा से अधिक ही होते हैं। साथ ही साथ यह ऐसा मज़ेदार होता कि इससे हाज़मा तेज़ हो जाता है और मह आसानी से हज़म भी हो जाता है। ख़ास तौर पर गर्भ और स्वास्थ्य लाभ के दिनों में।

केडबरी का बौर्न-विटा

केल्सियम और स्वाद्योज से भरपूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष १०, संख्या १०] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, ९ नवम्बर, १९४७

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

हैदराबाद भारतीय संघ में शामिल ... नहीं इसे कौन जाने? हैदराबाद ... नये नये पैंतरे बदल रहा है। ... के अधिकारी प्रतिदिन गिरगिट ... रंग बदलते हैं और नया नया ... लेकर दिल्ली की ओर दौड़ लगाते ... राम की राय में भारत-सरकार ... पूर्वक निजाम साहब की पैंतरे-... रही है और सोचती है कि चला-... बहादुर कभी तो थककर बैठने की ... आयेगी ही। आखिर हैदराबाद ... की दौड़ कब तक चालू रहेगी? ... सरकार कछुये की चाल चल ... और हैदराबाद खरगोश की तरह ... भर रहा है। देखना है खरगोश ... है या कछुआ? कछुआ और ... की कहानी तो आपने पढ़ी ही ...।

* * *

जूनागढ़ की स्थिति भी बड़ी नाजुक ... रही है। जूनागढ़ की नई सरकार ... करने की ओर बढ़ रही है और ... जूनागढ़ जिन्ना साहब के यहां हाजिरी ... हैं। देखना है पाकिस्तान अपनी ... लीला कब दिखाती है? लेकिन ... की नई सरकार वह गुड़ नहीं है ... चींटे खा जायें? जूनागढ़ या तो ... संघ में शरीक होगा या फिर ... सरकार का कब्जा ही हो जायेगा? ... राम की समझ में नहीं आता कि ... के नवाब पाकिस्तान की दौड़ ... क्या रहे हैं, वहां कौन सा लड्डू रखा ... अरे, मिस्टर जिन्ना को पाकिस्तान ... की फुरसत ही नहीं जूनागढ़ के ... रोने की उन्हें कहां फुरसत?

* * *

संयुक्तप्रांत के राष्ट्रीय मुसलमानों ... परिपत्र प्रकाशित किया है कि ... मान अपनी जन्मभूमि छोड़कर ... स्तान न जायें। परिपत्र तो बहुत ... अच्छा और भला है लेकिन कहीं ऐसा ... जैसे भारत के कम्यूनिस्ट भारत ... मातृ-भूमि बना लेते हैं, लेकिन मातृ-... वह सोवियट रूस को ही समझते ... ही राष्ट्रीय मुसलमान यदि यहां ... अपनी जन्म-भूमि समझते ह तब ... ठीक ही है लेकिन मातृ-भूमि और ... को ईमानदारी से समझ लें तो ... भी बेहतर है। इससे एकता तो ... रहेगी लेकिन केवल जन्म-भूमि ... समझ-बूझ लेने से काम न चलेगा। ... जो निश्चय करना हो कर डालिये ... पाकिस्तान का दरवाजा तो खुला ... है। जिन्ना साहब की छत्रछाया में निवास ... स्वर्ग का सुख भोगिये, इससे बढ़कर ... बात क्या हो सकती है?

* * *

माननीय पंडित गोविन्दवल्लभ पंत ... हैं कि भारतीय संघ में रहनेवाले ... मानों को पंचमवर्ग का काम छोड़ ... चाहिए। राज्य के प्रति वफादारी बर-... चाहिए। उपदेश तो परम सुन्दर है ही ... जिन्हें पंचमवर्ग में काम करने की ... पड़ गई है वह जल्दी-जल्दा अपनी ... कैसे छोड़ दें? लोग पान-तंबाकू, ... शराब और गांजा-भांग की आदत ... छोड़ नहीं सकते, फिर पंचमांगी बनने

भारत-सरकार के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू काश्मीर के आक्रमण पर रेडियो से भाषण दे रहे हैं। पंडित जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि काश्मीर की रक्षा अवश्य की जायेगी। हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख-समुदाय को एक सूत्र में बँधकर काश्मीर में शांति और व्यवस्था की स्थापना करनी है।

भारत-सरकार के रक्षा-मंत्री सरदार बलदेव-सिंह काश्मीर का निरीक्षण करने श्रीनगर गये हैं।

का काम भाई मुसलिम लीगी लोग कैसे छोड़ दें? माननीय पंत जी बड़ी जल्दी मचा रहे हैं। वक्त आ रहा है। कांग्रेस सरकार को वक्त देना चाहिए। यह हिन्दुस्तान है पाकिस्तान तो है नहीं। कम से कम एकता की दृष्टि से ही पंचमांगियों को कुछ दिन बख्शा जाये तो क्या बुरा है?

* * *

चित्राल जो काश्मीर रियासत की एक छोटी रियासत है, काश्मीर के भीतर रहना नामंजूर कर दिया है। वह पाकिस्तान में शरीक होने के लिये उतावला हो रहा है। यहां का शासक मेहतर है। मेहतर-शासक का पाकिस्तान प्रेम बड़ा ही नायाब है। समझ में नहीं आता कि मेहतर-शासक को पाकिस्तान में कौन सी कोंपर मिलनेवाली है? चित्राल के भी दिन आनेवाले हैं। वह भी जूनागढ़ की तरह अपने करम का रोना रोयेंगे, एक दिन!

* * *

हमारे प्रांत के मुस्लिम लीगी नेता चौधरी खलीकुज्जमा साहब लखनऊ से पाकिस्तान के लिये ऐसे गायब हुये जैसे गधे के सर से सींग। चौधरी साहब ने पिछले दिनों जिन्ना साहब को खूब ललकारा था, किंतु जिन्ना साहब ने उन्हें विधान-परिषद् मुस्लिम लीगी पार्टी का नेता बनाकर अंटागुड़गुड़ कर दिया। इसके बाद चौधरी साहब ने फिर छूमंतर किया और महात्मा गांधी और मौलाना आजाद ने उन्हें मिलने के लिये बुला भेजा। फिर क्या था जिन्ना साहब ने फिर उन्हें एक तोहफा देने का वायदा किया। चौधरी साहब पाकिस्तान खिसक ही गये। अपने राम तो समझते थे कि प्रांत की मुसलिम लीग विधवा हो गई, किन्तु मिस्टर लारी ने उसे विधवा होने से बचा लिया, यह कम साहस की बात नहीं है। देखना है प्रांतीय लीग अपने नये पति की छत्र-छाया में कब तक फलती-फूलती है?

'देशदूत' का 'दीपावली अंक'

बड़ी सजधज से दीपावली के अवसर पर

अगला अङ्क १६ नवम्बर को निकल रहा है

दीपावली के अवसर पर 'देशदूत' का अत्यन्त सुन्दर, लोकप्रिय, राष्ट्रीय भावनाओं, अनेक सामयिक चित्रों, नेताओं के लेखों, कहानियों तथा कविताओं से सुसज्जित बड़ा ही बढ़िया विशेषांक प्रकाशित हो रहा है। काटूनों और सामयिक चित्रों का अलबम। कवर बहुरंगा, मूल्य केवल ।)

मैनेजर 'देशदूत', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

काश्मीर का संकट

काश्मीर भारत की एक महत्त्वपूर्ण रियासत है। ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से इसका महत्त्व तो है ही, राजनैतिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से भी विशेष महत्त्व कम नहीं है। भारत के उत्तर में स्थित होने के कारण इसका महत्त्व और बढ़ जाता है। काश्मीर की सीमा ही उत्तर-भारत की सीमा है। इसकी सीमा अफ़गानिस्तान, सोवियट रूस, चीन तथा मंगोलिया की सीमाओं से मिली हुई है। इसीलिये इसका सैनिक दृष्टि से भी विशेष महत्त्व है। अब तो विभाजित हिन्दुस्तान के दूसरे उपनिवेश पाकिस्तान की सीमा भी काश्मीर की सीमा से मिली हुई है। सौंदर्य की दृष्टि से तो यह स्वर्ग-भूमि है ही। अँगरेजों ने इसे अपनी क्रीड़ा-भूमि बना रखी थी।

भारतीय विभाजन के बाद हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दो उपनिवेशों की स्थापना से इस रियासत का महत्त्व और भी बढ़ गया है। ब्रिटिश शासन ने बड़ी दूरंदेशी से भारतीय प्रांतों और रियासतों का निर्माण ही ऐसी नीति से किया था कि जिससे समय पाकर वहां साम्प्रदायिकता पनप सके और विदेशी उससे लाभ उठा सकें। भारतीय बटवारे के अवसर पर भी ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों ने रियासतों के संबंध में कुछ ऐसी ही नीति निर्धारित की थी, उसी के फलस्वरूप आज हैदराबाद तथा काश्मीर का राजनैतिक महत्त्व साम्प्रदायिक दृष्टि से बढ़ रहा है। ब्रिटिश कूटनीतिज्ञ यही चाहते भी हैं कि साम्प्रदायिक-भेद भावना का प्रादुर्भाव व्यापक होता जाये जिससे आंतरिक रूप से वह सुदृढ़ बने रहें। भारतीय संघ उधर हैदराबाद से संघ में शरीक होने की वैधानिक कार्यवाही की ओर अग्रसर हो रहा था इधर पाकिस्तानी फौज तथा सीमाप्रांतीय कबीलों की फौजों ने काश्मीर पर चढ़ाई कर दी। काश्मीर पर चढ़ाई करने का अर्थ ही यही है कि उस पर अधिकार कर लिया जाये। पाकिस्तान यद्यपि इनकार ही करता रहा है कि उसकी फ़ौजों तथा काश्मीर के आक्रमणकारियों से कोई संबंध नहीं है। किन्तु अब यह प्रमाणित हो गया है कि पाकिस्तान-सरकार का इस आक्रमण में विशेष रूप से हाथ है। सीमाप्रांतीय कबीलों की जमात भी पाकिस्तानियों द्वारा काश्मीर पर आक्रमण करने के लिये उभाड़ी गई है। प्रश्न केवल तीन हैं कि यदि कबीलों का काश्मीर पर स्वतंत्र रूप से हमला हुआ है तो उन्हें आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों की प्राप्ति कहां से हुई है? पाकिस्तान के क्षेत्र में होकर ही कबीलों ने काश्मीर पर आक्रमण किया है, क्या पाकिस्तानी सरकार को इसका भी ज्ञान नहीं था? सैकड़ों मोटरों और लारियों का उपयोग आक्रमणकारियों ने आक्रमण के समय किया। आखिर उनकी प्राप्ति उन्हें कहां से हुई? इसलिये पाकिस्तानी सरकार की ओर से काश्मीर के संबंध में जितनी भी विज्ञप्तियां प्रकाशित हुई हैं वह भ्रमपूर्ण हैं। वास्तव में पाकिस्तान-सरकार जान-बूझकर, जूनागढ़ में भारत-सरकार की ओर से होनेवाली कार्यवाही के जवाब में काश्मीर पर अधिकार करने की ओर प्रवृत्त हो रही है। हमें तो यह कहने में भी संकोच नहीं है कि पाकिस्तान-सरकार की न तो कोई शक्ति है और न साहस ही जो वह ऐसे आक्रमण की ओर अग्रसर होती बल्कि ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों की यह सब चालें हैं जिनके हाथ में पाकिस्तान के शासन की बागडोर है। कायदे आजम मिस्टर मोहम्मद अली जिन्ना पाकिस्तान के वाइसराय अवश्य हैं और प्रत्यक्ष में संघ की जिम्मेदारी भी उन्हीं पर आती है, किन्तु वास्तविक कार्य-संचालन का भार उन ब्रिटिश हुक्कामों के हाथ में है जो यातो भारत से नौकरी करने की दृष्टि से पाकिस्तान गये हैं या ऐसे हुक्काम हैं जो साम्प्रदायिकता की आड़ में दोनों उपनिवेशों के बीच युद्ध कराते रहने का इंद्रजाल रच रहे हैं। अँगरेजों के लिये यह कोई नई बात नहीं है। वह इस जुझाऊ कला में बड़े ही निपुण हैं और काश्मीर में जो कुछ हो रहा है, देखने में पाकिस्तान ही अधिक जिम्मेदार है किन्तु प्रेरकशक्ति उन्हीं ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों से प्राप्त हो रही है जिन्होंने पाकिस्तानी शासन को संचालित करने का आंतरिक रूप से ठेका ले रखा है।

काश्मीर अब भारतीय संघ में शरीक हो गया है इसलिये भारतीय सरकार का यह कर्तव्य भी है कि वह काश्मीर में शांति और व्यवस्था की स्थापना में सहयोग पहुँचाये तथा दुश्मनों को काश्मीर की सीमा के बाहर खदेड़ दे। यही हो भी रहा है। काश्मीर में अब जनता की सरकार कायम हो गई है। भारतीय फौजें दुश्मन को काश्मीर की सीमा के बाहर खदेड़ने में लगी हुई हैं। अब हिन्दुस्तान और काश्मीर के बीच मार्ग भी प्रशस्त हो गया है। अब तक हवाई जहाज से ही सेना तथा अस्त्र-शस्त्र वहां पहुँचाये जा सकते थे, किन्तु अब स्थल-मार्ग भी बन गया है, इसलिये आशा की जाती है कि भारतीय फौजें अधिक से अधिक संख्या में पहुँचकर काश्मीर पर आक्रमण करनेवाली फ़ौजों को सीमा के बाहर ढकेल देंगी। भारत-सरकार बड़ी सतर्कता से इस ओर लगी हुई है।

सच तो यह है कि भारत-सरकार के मार्ग में थोड़ी-बहुत बाधायें भी अब तक रही हैं और हम कह नहीं सकते हैं कि वह बाधायें मार्ग से दूर हुईं या नहीं? सर आकिनलेक पर अभी तक दोनों राष्ट्रों के फौजी विभाग की संयुक्त रूप से जिम्मेदारी है। पता नहीं पाकिस्तानी फ़ौजों ने जब काश्मीर पर आक्रमण किया तो क्या सर आकिनलेक से इसकी सम्मति ले ली गई थी? इसका भी स्पष्टीकरण होना चाहिए। इसके सिवा अन्य अँगरेज अधिकारी भी अभी तक भारतीय फौजों की जिम्मेदारी वहन करते हैं। जब अँगरेजों की नीति सदा से साम्प्रदायिक कटुता बढ़ाकर शासन करने की रही है तब हम कैसे यह मान लें कि अँगरेज फौजी अधिकारी आज भी अपनी पुरानी नीति पर चलने का प्रयत्न न करते होंगे? १ नवम्बर से सुप्रीम कमांडर सर आकिनलेक रिटायर्ड होनेवाले थे, किन्तु कायदे आजम मिस्टर जिन्ना की कृपा से वह अभी तक मौजूद हैं। कहने का मतलब यह है कि भारत की ओर से जो फौजी कार्यवाही काश्मीर में हो रही है, वह भी दृढ़तापूर्वक नहीं जान पड़ती। इसका कारण जो भी हो, हम कह नहीं सकते। किन्तु भारत-सरकार की जिम्मेदारी अब पूर्णरूप से बढ़ गई है। उसे अपनी प्रबल फौजी शक्ति से दुश्मनों को काश्मीर की सीमा के बाहर खदेड़ कर रियासत की रक्षा करनी चाहिए। पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार बल्लभभाई पटेल तथा सरदार बल्देवसिंह अपने प्रयत्न में गाफिल नहीं हैं, किंतु फौजी मामले में थोड़ी बहुत उनके मार्ग में कठनाइयां अवश्य हैं। काश्मीर की रक्षा से ही भारत की रक्षा और शान्ति-स्थापना की पहली सीढ़ी है, इससे तो कोई राजनीतिज्ञ इनकार ही नहीं कर सकता।

रूस के स्कूलों में अध्ययन

पंचवर्षीय योजना के अनुसार बच्चों की शिक्षा हो रही है?

सोवियट रूस में बालक, बालिकाओं तथा वयस्कों की शिक्षा की योजना सफल कार्यान्वित हो रही है। योजना को सफल बनाने के लिए सोवियट संघ ने एक योजना स्वीकृत की है जिसके द्वारा वहाँ साक्षरता की उन्नति में सरकार द्वारा योग दिया जा रहा है। इस लेख में संक्षिप्त रूप से इसी सम्बन्ध में प्रकाश डाला

सोवियट रूस में पिछले एक वर्ष से प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों, विशेष कारीगरी सिखानेवाली संस्थाओं और उच्च शिक्षा के केन्द्रों में अध्ययन आरम्भ हुआ। सोवियट संघ में स्कूल इतने अधिक और भिन्न हैं कि उनमें शिक्षित छात्रों का पूरा-पूरा अनुमान लगाना कठिन है। दूर से दूर प्रदेशों में रहनेवाले, फैक्टरी और कारखानों में काम करनेवाले, गांवों में बसनेवाले और सैनिकगण—सभी अध्ययन में लगे हैं।

रूसी प्रजातन्त्र में ही, जो सोवियट संघ का सबसे बड़ा प्रजातन्त्र है, २५,००,००० बच्चे, जिनकी आयु सात वर्ष और उसके लगभग है, पहली बार भर्ती हुए हैं। यही नहीं, अन्य प्र के स्कूलों में भी छात्रों की संख्या बढ़ी-चढ़ी है। रूसी प्रजातन्त्र के और माध्यमिक स्कूलों में १,६०,० से अधिक छात्र पढ़ रहे हैं और प्रजातन्त्र में इनकी गिनती लाखों एजरबेजान में छात्रों की संख्या ००० है—जो कि पिछले वर्ष से अधिक है। बाल्टिक प्रान्त के छोटे एनियन प्रजातन्त्र में इस वर्ष प्राथमिक स्कूल, अनेकों व्यायाम और नीचे दर्जे के माध्यमिक स्कूल गये जिनमें पढ़नेवाले छात्रों की ४०,००० से अधिक की वृद्धि हुई

बच्चों की शिक्षा-सम्बन्धी देनेवाले कालेजों और संस्थाओं में हुए ३५,२९१ शिक्षकों को रूसी प्र जन शिक्षा मिनिस्ट्री ने पाठ इत्यादि में नियुक्त कर दिया है। स्थान में नये स्कूल बनाये जा रहे पुराने स्कूलों की मरम्मत की जा सरकार इसका प्रयत्न करती है कि बच्चों को अध्ययन की सब सुविधा जायँ और जनता इस काम में पूर्ण उसका हाथ बँटाती है।

लाखों युवक और बच्चे का सिखानेवाले स्कूलों, फैक्टरी, व्यवसा रेल के काम-सम्बन्धी शिक्षा दे संस्थाओं में लगे हुए हैं। इस वर्ष, इन ने ४,३४,००० लड़के और लड़कि भर्ती किया है, यद्यपि योजना के वे ४,२५,००० को ही ले सकते थे

कारीगरी और कृषि का काम वाले उन स्कूलों में, जो सायंकाल के लगते हैं, लाखों लड़के और ल पढ़ रही हैं। इन स्कूलों की सोवियट संघ में पहले-पहल युद्ध के में हुई थी। इनका तात्पर्य था कि और लड़कियों को काम करने के साथ पढ़ने का अवकाश भी मिल

सोवियट संघ की उद्योग-धंधे कृषि की शिक्षा देनवाली संस्था भी पढ़ाई शुरू हो गई है। उन की ओर, जिनकी शिल्प-शिक्षा नहीं है, विशेष ध्यान दिया जा उद्योग और कृषि में काम क लगभग सभी लोगों को किसी प्रकार की विशेष शिक्षा दी जाती है लोगों को प्राथमिक शिक्षा दी जा और जो अपने काम में निपुण हैं अधिक निपुणता प्रदान करने का किया जाता है। औद्योगिक संस्था विशेष कारीगरी सिखाने के केन्द्र स्तखानोवाइट स्कूल भी; कारीगर अपने विशेष विषयों पर दिया करते हैं; बूढ़े और अनुभवी युवकों को व्यक्तिगतरूप से काम हैं।

इस प्रकार, प्रस्तुत पंचवर्षीय के अन्तर्गत २३,००,००० ट्रैक्टर कम्बाइन (२) चलानेवाले और निपुण किसान शिक्षा पाएँगे; इसी में १,३९,००,००० औद्योगिक कारखानों में काम सीखकर

शेष पृष्ठ १८ पर

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ गीति-काव्य

कवि और छवि

लेखक, सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव

कविश्री बालकृष्णराव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपकी नवीनतम गीति-काव्यों का सर्वश्रेष्ठ संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्द्वंद्व से परिपूर्ण तो है ही साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाले हैं। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संग्रहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम, सचित्र और सजिल्द—मूल्य केवल २) रु०।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधी जी का दर्शन-शास्त्र क्या है?

संसार की मानवता, शान्ति और संस्कृति के अग्रदूत

लेखक, श्री केशवकुमार, एम० ए०

महात्मा गांधी की दर्शनिक विचारधार वस्तुतः भारतीय दर्शन-परम्परा की ही संबद्ध शृङ्खला है। वह दार्शनिक है किन्तु उनका चिंतन आज के पाश्चात्य विचार-प्रवाह से साम्य नहीं रखता। इस लेख में विद्वान् लेखक ने गांधी जी की दार्शनिकता पर सुंदर प्रकाश डाला है, जो पठनीय तथा विचारणीय है।

गांधी जी की दार्शनिक विचारधारा वस्तुतः भारतीय दर्शन-परम्परा की ही संबद्ध शृंखला है। वे दार्शनिक हैं, किन्तु उनका चिन्तन आज के पाश्चात्य विचार-प्रवाह से साम्य नहीं रखता जिसके जीवन-प्रणेता प्रोफेसर ह्वाइट हेड और ब्रेडले हैं। आज के दार्शनिक की भांति वे विश्व-मानवता के सिद्धान्तों की घोषणा नहीं करते। आधुनिक तर्क-प्रणाली से भी वे काफी हद तक परिचित नहीं हैं। लेकिन फिर भी वे बीसवीं सदी के सबसे बड़े तत्वज्ञानी हैं, जीवनद्रष्टा हैं। जीवन के प्रति उनकी एक सुनिश्चित भाव-दृष्टि है। उनकी दार्शनिक दृष्टि में जहां एक ओर कपिल और शंकराचार्य की अनुभूति का प्रकाश है, वहां दूसरी ओर प्लेटो और लिंकोन के चिन्तन जैसी दृढ़ता भी है। सृष्टि की अनन्त समस्या के हल को वे विस्तार के साथ प्रचारित करते नजर नहीं आते; किन्तु जितना ही उनके लेखों और भाषणों पर मनन किया जाता है और उनकी मूलभूत मनोवैज्ञानिक अन्तर्धाराओं पर विचार किया जाता है—उनकी आध्यात्मिक शब्दावली की पार्श्व-भूमि में जितना ही गहरा उतरा जाता है—उतना ही स्पष्ट होता जाता है कि उनके अन्तःकरण में सृष्टि के सिद्धान्त की एक सुनिश्चित और सुव्यवस्थित योजना होनी चाहिए समय और निरूपण के अभावों के कारण गांधीजी की विश्व-योजना दर्शन-प्रणाली के रूप में व्यक्त नहीं हो पाई है—गांधी जी को ऐसी अभिव्यक्ति की न तो आतुरता ही है और न लोभ—किन्तु उसका उनके ही जीवन में साक्षात्कार होता जा रहा है। उनका दर्शन सिद्धान्त के कठोर छिलके में बन्दी न रहकर उनके जीवन की प्रवृतियों में अंकुरित होता हुआ विशाल वृक्ष के रूप में विकसित होता जा रहा है।

एक दार्शनिक के सामने सदैव जीवन-संघर्ष का आमंत्रण रहता है—पग-पग पर उसकी परीक्षा की परिस्थितियां आती हैं। उसके सिद्धान्त उसकी कर्मेन्द्रियों को स्थूल रूप देने के लिए क्षण-प्रतिक्षण आग्रह करते रहते हैं। दार्शनिक को अपने स्वयं के विक्षेप से अपने को बचाने के लिए इस चुनौती को स्वीकार करना चाहिए अन्यथा तात्त्विक दृष्टि से वह अपना ही घातक शत्रु बन जाता है। आज के मनोविश्लेषण ने यह अनुसंधान किया है कि इस प्रकार के आत्म-प्रताड़ित व्यक्ति ही आत्महत्या करते देखे जाते हैं। क्योंकि कर्म के आकार में मूर्त्त ज्ञान ही वास्तव में शक्ति है, अन्यथा वह ज्ञाता को ही अपनी अग्नि में भस्म करता रहता है। अधिकांश दार्शनिकों के जीवन में इसी प्रकार की मनोवैज्ञानिक दुर्घटनाएँ घटी हैं। स्वयं टाल्स्टाय का जीवन इससे मुक्त नहीं था। अपने ही अन्तर्द्वंद्व की दुविधाओं में वे इतने उलझ गये थे कि अपनी पत्नी तक के विद्रोही मन का समाधान नहीं कर पाये। ज्ञान एवं कर्म का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध टूट जाने से ही जीवन इस प्रकार से भारस्वरूप हो जाता है।

सामंजस्य का प्रश्रय

गांधी जी का दर्शन-शास्त्र इस दौर्बल्य से मुक्त रह सका है और इसीलिए वह निस्तेज एवं आत्म-द्रोही नहीं हो पाया है; क्योंकि उनके दर्शन में ऐसी कोई कड़ी नहीं है जो कर्म की कठोर आंच में तपकर स्वर्णोज्ज्वल न हो गई हो। संघर्ष-शील बाह्य अनुभूतियों और मूलभूत मान्यताओं के सामने गांधी जी अपने प्रबुद्ध अन्तःकरण को पूरी तरह संतुलित, शान्त और स्थिर रख सके हैं। आजीवन क्रुद्ध लहरों में अपनी नाव की पतवार संभालकर वे दुर्गम पथ से गुजरे हैं, किन्तु भयानक आंधियों में भी मन की दीप-शिखा चंचल नहीं हुई है। सामंजस्य को उन्होंने अपने हाथ का सरल शस्त्र बना लिया है। यही कारण है कि उनके ही जीवन में मूर्त उनका सत्य कभी कभी उनके अन्तरंग साथियों की भी समझ में नहीं आता और वे कई बार दुविधा में पड़ जाते हैं।

आत्मा के प्रयोग

वे परिवर्तनों के साथ बड़ी द्रुतगति से सामंजस्य कर लेते हैं, उनका प्रतिरोध वे नहीं करते; किन्तु उनको आत्मघात करके एक कुशल व्यापारी के रूप में उनसे पूरा-पूरा लाभ उठा लेते हैं। इसी अद्भुत क्षमता के कारण वे परिवर्तनों के साथ सामंजस्य करते हुए भी अवसरवादिता से अस्पर्श्य रह पाये हैं। राजनीति के क्षेत्र में तो ऐसी अवसरवादिता अगणित बार आती है और बड़े-बड़े कार्यकर्त्ताओं को अपने प्रलोभनों का आखेट बना लेती हैं। लेकिन गांधी जी परिवर्तनों के साथ पक्षपात करते हुए भी जीवन में सर्वांगीण और प्रगतिशील रहे हैं, क्योंकि उनका दर्शनशास्त्र बाहर से ओढ़ा हुआ सिद्धांतों का लबादा नहीं है। वह तो उन संकल्पों की उपज है जिन्हें उन्होंने अपने जीवन में व्यक्त किया है—एक भूतत्व-वैज्ञानिक की तरह उन्होंने अपने जीवन की प्रयोग-शाला में आध्यात्मिक प्रयोग किये हैं और अपना दर्शन-शास्त्र बनाया है। जिन्हें हम परम्परा से उच्चादर्श मानते आये हैं वे मन और वाणी के ही कारावास में रहकर पंगु और हतप्रभ हो गये थे। जीवन को धारण करने की सामर्थ्य उनमें से लुप्त हो चुकी थी। कर्म की प्राण-स्फूर्ति के अभाव में वे जहां भार-स्वरूप हो गये थे, वहां उनसे सड़ान भी आने लगी थी। गांधी जी न कर्म की खराद पर चढ़ाकर उनका काया-कल्प किया और उन्हें जीवन का नया आवेग दिया।

समझौता-नीति

इस विराट् प्रयोगशाला में गांधीजी वर्षों से जो अनवरत अनुसंधान कर रहे हैं उसमें उनके आदर्श ही यंत्र अथवा साधन हैं। यहीं उनके मानसिक आरोग्य का रहस्य सन्निहित है। वे सिद्धांतों के अंध अनुगामी नहीं हैं। जीवन ही उनके लिये सर्वोपरि है। जीवन को आंख मीचकर सिद्धांतों के अर्पण कर देना आध्यात्मिक दासत्व है। दासत्व में जहां पग-पग पर क्लेश है वहां बुद्धि का भी उत्तरोत्तर पतन है। गांधीजी की विचारधारा में सिद्धांतों का जीवन की अपेक्षा गौड़ स्थान है। वे जीवन के आदेशों के अनुसार ही चलते हैं। जीवन के सामने आत्मसमर्पण करके रहते हैं, क्योंकि जीवन ही उनकी जन्मभूमि है, उनकी जन्मदात्री और पालन-पोषण करनेवाली माता है। जीवन के ही वातावरण में जीवन के ही प्राणप्रद प्रकाश में सिद्धांतों को रूप मिलता है, पोषण प्राप्त होता है और वे पूरा विकाश पाते हैं। अतः यदि सिद्धांतों के तात्विक रूप को स्पष्टता से हृदयंगम कर लिया जावे तो गांधी जी की समझौता-नीति को सरलता से समझा जा सकता है। तत्त्वदर्शन के दृष्टिकोण से समझौता उस सत्य के बाह्य प्रतीक के सिवाय और कुछ नहीं है जो संसार के अनंत वैषम्य को एक साम्य की इकाई में गूंथता है और जो अनेकांगी अभिव्यक्तियों के होते हुये भी उन सबकी मूलभूत प्रेरणा है। इस दृष्टि से जीवन का कोई भी प्रसंग, कोई भी साधन और उपकरण ऐसा नहीं है जो व्यापक सत्य की अभिव्यक्ति का आधार बन सकने में समर्थ नहीं हो। जीवन की प्रत्येक परिस्थिति इस विराट् सत्य का केन्द्र बन सकती है। यही कारण है कि गांधी जी के समझौते का क्षेत्र असीम है। उसकी परिधि निर्धारित नहीं की जा सकती। कोई भी ऐसा दृष्टिबिन्दु नहीं हो सकता जिसे वे अपने समझौता-सिद्धांत का अंग बनाने से इन्कार करते हों, किसी भी मनोवृति से वे निराश नहीं होते, किसी भी धारणा की उपेक्षा नहीं करते। किसी भी बंजर तर्क से इसीलिये वे यथासम्भव लाभ उठाने की चेष्टा करते हैं। इस भाव-भूमि पर आकर शत्रु-मित्र में कोई भेद नहीं रह जाता है—दोनों एक ही स्तर पर खड़े नजर आते हैं। यहीं गांधी जी के समत्व योग का स्पष्टीकरण होता है। किन्तु भौतिक समस्याओं में निगूढ़ लौकिक दृष्टि इस आधिभौतिक स्तर तक पहुँच नहीं सकती और इसी-लिए गांधीजी के अत्यंत निकटस्थ मित्र भी प्रायः उनसे निराश हो जाते हैं, क्योंकि वे उनमें एवं गांधीजी के विरोधियों में कोई अंतर नहीं पाते और गांधी जी भी अनेक अवसरों पर अपने मित्रों एवं अनु-गामियों की अपेक्षा अपने विरोधियों को असाधारण मान्यता देते दिखाई देते हैं।

गांधी जी और हेगेल

जिनका पाश्चात्य दर्शन-परम्परा से परिचय है वे हेगेल के सिद्धांत से गांधी जी की मनःस्थिति को भली भांति समझ सकते हैं। गांधीजी में समझौते के पक्ष में जो असाधारण आतुरता रहती है उसकी पैरवी यदि आज हेगेल होता तो बड़ी सफलता से कर पाता।

हेगेल के मतानुसार यह समस्त विश्व-परिवर्तनशील है; अतः उसमें सतत रूपान्तर के क्रम आते रहते हैं। इस क्रम-विकास की धारा में मंजता हुआ जीवन नित्य नवीन रूप ग्रहण करता रहता है। दो प्रतिकूल भावनायें रूप ग्रहण करके सामंजस्य खोजती हैं और सामंजस्य का संधान हो जाने पर वही सामंजस्य अनुकूल और प्रतिकूल भाव-नाओं को जन्म देता है—ये विरोधी भावनायें फिर अपना सामंजस्य खोजती हैं। इस प्रकार अनुकूल एवं प्रतिकूल भावनाओं का सामंजस्य और उससे फिर भावनाओं के उदय का क्रम चलता रहता है। गांधी जी भी इसी परिणाम पर आकर ठहरते हैं कि एक ही सत्य की अनेक अभिव्यक्तियों में कोई तात्विक अंतर नहीं हो सकता। इसी विस्तृत पार्श्वभूमि में गांधी जी की समझौता-नीति को समझा जा सकता है।

क्रान्ति का रूप

भविष्य गांधी जी को इस युग का सबसे बड़ा क्रांतिद्रष्टा मानकर अपना सिर झुकावेगा। किन्तु उनकी क्रांति का रूप ही दूसरा है। अन्य क्रांतिकारियों को जिस प्रकार अपने समकालीन समाज से क्षोभ एवं असंतोष रहा है, उस प्रकार गांधी जी को भी है। वे भी संसार की कायापलट करना चाहते हैं। किन्तु उनके मत से संसार में परिवर्तन तभी हो सकता है जब मनुष्य के मन में उसके अंतःकरण में, हृदय में परिवर्तन हो। समाज पर जिन लोगों का शासन है और इस शासन के कारण जो लोग कष्ट भोग रहे हैं, दोनों ही अपने आपको नहीं पहचान पा रहे हैं। सारी सामाजिक बुराइयों का एक-मात्र कारण यही है। संसार का सारा दुःख भी इस अज्ञान का ही परिणाम

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

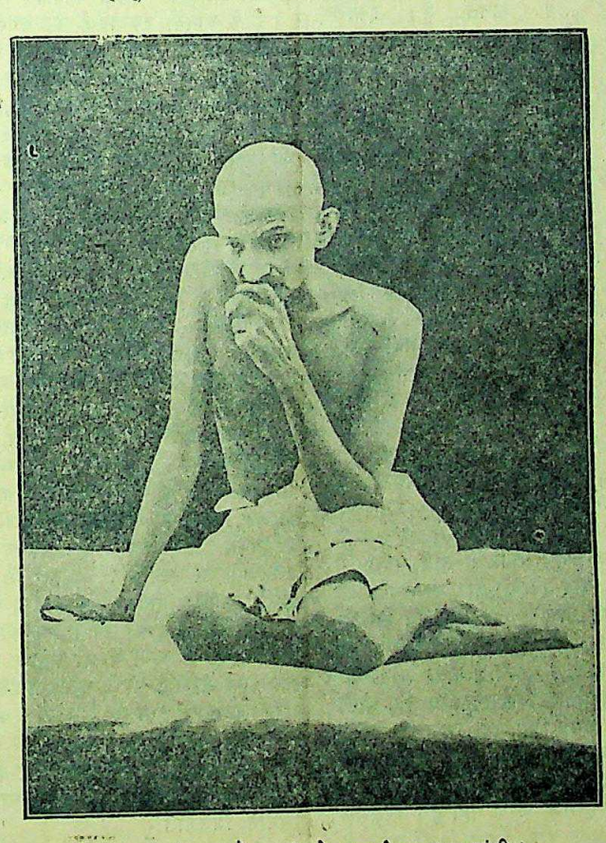

सत्य, अहिंसा और शांति के पुजारी महात्मा गांधी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में कुष्ठ रोग की समस्या

रोग-निवारण के लिए राष्ट्रीय दृष्टि से क्या करना चाहिए?

लेखक, डाक्टर जीवराज मेहता

भारतीय गाँवों में कुष्ठ रोग का प्रभाव कम नहीं है। यह रोग प्रायः खून की खराबी और छूत से होता है। भारत के प्रसिद्ध डाक्टर जीवराज मेहता ने अपने भाषण में इस रोग की उत्पत्ति और निवारण पर प्रकाश डाला है जो जानकारी से पूर्ण और सामयिक है।

मैंने बहुत अरसे से कुष्ठ रोग के मसले को ध्यान में रखा है, मगर मुझे कहना होगा कि अब तक इस बारे में सक्रिय हिस्सा लेने का मौका मुझे नहीं मिला। इंडियन रिसर्च फंड एसोसियेशन के साइंटिफिक एडवाइजरी बोर्ड तथा इसकी गवर्निंग बाडी के मेम्बर की हैसियत से इसके अधीन होनेवाले कुष्ठ रोग-सम्बन्धी रिसर्च के काम से मेरा सम्पर्क रहा है और एक मेडिकल सोशल कार्यकर्ता की हैसियत से कुष्ट रोग निवारण-क्षेत्र में जुटे हुए बहुत से मेडिकल और नांन मेडिकल कार्यकर्त्ताओं के सम्पर्क में आया हूँ, जो आज यहां आये हुए हैं। मुझे इस बात की खुशी ही नहीं, बल्कि मैं उसे अपना विशेष सम्मान समझता हूँ कि आपने मुझे इस कान्फ्रेंस का सभापति बनाकर, मुझे मौका दिया है कि देश की भलाई के इतने बड़े काम में जुटे हुए इन साथियों का मैं भी कुछ हाथ बटाऊँ और आखिर में, केन्द्र के आरोग्य-मंत्री खाते में मैंने थोड़े समय से जो फर्ज और जिम्मेदारी उठाई है, उसके कारण कुष्ठ रोग के मसले की तरफ मेरा ध्यान और भी अधिक खिंचा है। इस रोग पर काबूपाने के रास्ते में इतनी मेडिकल, आर्थिक और सामाजिक कठिनाइयां हैं कि मैं इस मसले के सब पहलुओं पर गहरा गौर करने के लिए सारे हिन्दुस्तान से आये हुए कार्यकर्ताओं के इस कान्फ्रेंस में हिस्सा लेने के इस मौके का स्वागत करता हूँ।

हिन्दुस्तान में कुष्ठ रोग के मसले का स्वरूप और विस्तार

कुष्ठ-रोग-निवारण में लगे हुए मेडिकल और दूसरे (नांन मेडिकल) जानकारों की इस सभा के सामने कुष्ट रोग के स्वरूप और विस्तार के बारे में कुछ कहने की जरूरत नहीं। मगर मैं जान-बूझकर ऐसा कहता हूँ, क्योंकि आम जनता का एक बहुत बड़ा तबका इस कान्फ्रेंस में होनेवाली चर्चा और उसके नतीजे की तरफ आंखें लगाये हुए है।

इसलिए हमारी अपील स्त्री-पुरुषों की उस बड़ी जमात के सामने होनी चाहिए कि जो जनता में और अधिकारी वर्ग में इस प्रश्न को हल करने की इच्छा जागृत कर सकते हैं। ऐसा करके वे कुष्ठ रोग निवारण की सारे देश भर की लड़ाई में हाथ बँटा सकते हैं और उसमें बहुत बड़ा हिस्सा ले सकते हैं। इसलिए यह जरूरी है कि जनता सारी हकीकत को जाने ताकि वह इस मसले को ठीक नुक्ते-निगाह से देख सके।

सारी दुनिया में करीब पचास लाख कुष्ठ रोगी हैं। उनमें से दस लाख हिन्दुस्तान में हैं। इन दस लाख में से दो लाख, पचास हजार संक्रामक (Infections) समझे जाते हैं। रोग का विस्तार हर एक जगह समान नहीं है। सबसे ज्यादा कुष्ठ रोगी पश्चिमी बंगाल, बिहार, उड़ीसा और मद्रास में पाये जाते हैं। उत्तर हिन्दुस्तान में हिमालय के दामन में कुष्ठ रोगियों की काफी संख्यावाला एक लम्बा-सा इलाका है। मध्य-भारत में भी कई जगह काफी तादाद में कुष्ठ रोगी पाये जाते हैं। जिन इलाकों में कुष्ठ रोग का बहुत जोर है, वहां जनता में २ से ५ फीसदी लोगों में यह रोग पाया जाता है। किसी किसी देहात में तो दस से पन्द्रह फीसदी लोग कुष्ठ से पीड़ित हैं।

कुष्ट रोग दो प्रकार का होता है। एक कम खतरेवाला और कम दुखदायी, जिसको न्यूरल (Neurel) कहते हैं, और दूसरा अधिक भयानक, जिसको लेप्रो मेटस (Ledpromatous) कहते हैं, देश के भिन्न-भिन्न भागों में (Neural) के और (Ledpromatous) प्रकार के रोगियों की संख्या भिन्न-भिन्न है। सारे देश भर में अधिक भयानक प्रकार का रोग १०० रोगियों में से लगभग २० रोगियों में पाया जाता है। भिन्न-भिन्न भागों में यह सैकड़ा ४ से ५० तक कहा जाता है।

जब हम कुष्ठ रोग के विस्तार को छोड़कर, इस रोग को दूर करने के लिए उचित संगठन की ओर ध्यान देते हैं तब हमें पता चलता है कि यह बात कितनी पेचीदा है। आम छूत की बीमारियां, तपेदिक और छूत की पोशीदा बीमारियां (Venereal diseases) कैसे फैलती हैं वह हम जानते हैं। इसलिए उनकी रोकथाम का इन्तजाम करना ज्यादा आसान है। रोगी के सम्पर्क में आने से कितने अर्से के बाद रोग होता है, यह भी हम बहुत सी बीमारियों के बारे में जानते हैं। इसलिए रोगी के सम्पर्क में आये हुए लोगों को जितने समय के लिए जरूरी हो समाज से अलग रखा जा सकता है, ताकि वे समाज को खतरे में न डालें। थोड़ी-सी बीमारियों को छोड़कर अच्छा होने पर मरीज बीमारी नहीं फैलाता कई बीमारियों का इलाज (Chemotherapy) केमोथेरपी से (बनाई हुई दवाइयों से) या दूसरे किसी तरह के इलाज से हम तेजी से और सफलतापूर्वक कर सकते हैं। कई तरह के टीके लगाकर कई छूत की बीमारियों से हम बच भी सकते हैं। मगर कुष्ठ रोग के बारे में बीमारी पर काबू पाने के यह रास्ते करीब-करीब बन्द हैं। हम नहीं जानते कि बीमारी सचमुच कैसे फैलती है। रोगी के साथ सम्पर्क में आने के बाद कितने अर्से में रोग प्रकट होगा, यह भी निश्चित नहीं है। रोग से बचने का टीका वगैरह नहीं। इलाज का जो तरीका हम जानते हैं उससे रोगी का दुःख कम होता है। अपाहिजपन कम होता है कुछ रोगियों को पूरी तरह से अच्छा होने में भी मदद मिलती है। मगर ऊपर बताये हुए कुछ दूसरे रोगों के इलाजों की तरह यह इलाज अचूक नहीं है। दरअसल बहुत से कुष्ठ रोगी बिना किसी तरह के इलाज के कुछ अर्से के लिए सुधरने लगते हैं और अच्छे भी हो सकते हैं।

इसलिए यह जाहिर है कि कुष्ठ रोग पर काबू पाना दूसरी बहुत सी छूत की बीमारियों की निसबत ज्यादा पेचीदा है, तो भी कुछ बातें हम जानते हैं जिनसे हमें कुष्ठ रोग के सामने लड़ाई संगठित करने में मार्ग-दर्शन मिलता है। सदभाग्य से एक से दूसरे को कुष्ठ रोग की छूत पहुँचने में काफी समय लगता है। रोगी के साथ लम्बे अर्से तक निकट-सम्पर्क में रहने से ही छूत लगती है बच्चों की निसबत बड़ों को छूत [illegible]

कम रहती है। अनन्त काल से यह तो हम जानते ही हैं कि कुष्ठ रोग को फैलने से रोकने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि रोगियों को अलग रखा जाय। मगर ऐसा करने के रास्ते में जो आर्थिक, सामाजिक और दूसरी कठिनाइयां आती हैं वह आप लोगों से छिपी नहीं हैं।

जहां पर कुष्ठ रोग का जोर है। ऐसे इलाकों में संक्रामक कुष्ठ रोगियों को अलग रखने की जरूरत है, उन्हें लम्बे अर्से तक अलाहिदा रखना होगा। इस कारण बहुत-सी समस्यायें पैदा हो जाती हैं। आर्थिक दृष्टि से और राजशासन की दृष्टि से यह समस्यायें बड़ी महत्त्वपूर्ण और पचीदा हैं मगर सबसे बड़ी रुकावट हमारे रास्ते में यह है कि कुष्ठ रोग के बारे में हमारा ज्ञान आज अधूरा है इसलिए वैज्ञानिक तरीके से काम करना मुश्किल हो जाता है। सवाल पैदा होता है कि संक्रामक कुष्ठ रोगियों से हमारा बर्ताव क्या एक-सा होना चाहिए? सफर में, सामाजिक कामों में हिस्सा लेने के लिए, घरेलू जीवन में हिस्सा लेने के लिए भी कहां तक इन संक्रामक रोगियों में फरक किया जा सका है, इसको ध्यान में रखते हुए कि कुष्ठ रोग में छूत बहुत मंद गति से फैलती है, आमतौर पर लम्बे और निकट-सम्पर्क के सिवा छूत नहीं लगती और बचपन के बाद छूत की सम्भावना प्रमाण में कम है कुष्ठ रोगियों को रेल इत्यादि में सफर करने के लिए, सामाजिक या घरेलू जीवन में हिस्सा लेने के लिए कहां तक छूट दी जा सकती है? मिसाल के तौर पर कुष्ठ रोगियों पर रेलगाड़ियों में या ऐसे दूसरे वाहनों में सफर करने के बारे में कानूनी रुकावटें हैं वह जनता की सुरक्षितता की दृष्टि से कहां तक जरूरी है? क्या खास किस्म के छूतवाले कुष्ठ रोगियों को, बच्चों को अलग करके, दूसरे घर के स्वस्थ लोगों के साथ रहने दिया जा सकता है, बशर्ते कि घर में उनके लिए रहने का अलाहदा इंतजाम हो? क्या अलग-अलग रोगियों की छूत के प्रमाण में खासा फर्क होता है? और क्या आज के हमारे ज्ञान के आधार पर राज्य-शासन इस किस्म के फर्क को रोग पर काबू पाने के उपायों में अमली रूप में महत्त्व दे सकता है? इस किस्म के और भी बहुत से सवाल उठ सकते हैं। मैं महसूस करता हूँ कि यहां पर इकटठे हुए कुष्ठ रोग के निपुण लोग इन सवालों पर प्रकाश डाल सकें तो वे देश में कुष्ठ रोग-निवारण की पालिसी बनाने में बहुत बड़ी मदद करेंगे। कान्फ्रेंस के सामने लम्बा एजेंडा है जिसमें कई विषय हैं। "छूतवाले कुष्ठ रोगियों की अलहदगी का मसला", "देहातों में और शहरों में कुष्ठ रोग निवारण और कुष्ठ रोग पर काबू पाने के उपायों का संगठन" जैसे विषयों की चर्चा में जो सवाल ऊपर उठाये गये हैं, उन पर प्रकाश डालने का मौका आयेगा। इसलिए मैं आशा करता हूँ कि इस कान्फ्रेंस की कार्रवाई के परिणाम में कुष्ठ रोग-निवारण की लड़ाई को ज्यादा सफल बनाने के लिए कुछ क्रियात्मक सूचनायें मिलेंगी।

मैं देहातों में कुष्ठ रोग के मसले की तरफ भी आपका ध्यान खींचना चाहता हूँ। शहरों की निसबत देहातों में यह रोग ज्यादा पाया जाता है और इसलिए जरूरी है कि रोगियों को अलग रखने के जो उचित तरीके सोचे जायें वे असरकारी होने के साथ-साथ सस्ते भी हों। हम सब जानते हैं कि मद्रास में डा० क्राक्रेन की अध्यक्षता में इस किस्म के कुछ तजुर्बे किये जा रहे हैं। कुछ दूसरे सूबों में भी मिसाल के तौर पर उड़ीसा में, छूतवाले, कुष्ठ रोगियों के लिए देहातों में अलाहदा आबादियां बनाने का तजुर्बा किया जा रहा है। कुष्ठ रोग के मसले के इस पहलू पर काम करनेवाले सब कार्यकर्ताओं के अनुभवों को इकट्ठा करना भविष्य के काम के लिए कीमती सिद्ध होगा। कुष्ठ रोग के साथ ताल्लुक रखनेवाले आर्थिक प्रश्न तभी हल हो सकेंगे जब जनता कुष्ठ रोग की तरफ ज्यादा समझदारी का भाव रखेगी। सबसे जरूरी यह है कि जनता यह समझे कि कुष्ठ के रोगी की उपयोगी जिन्दगी खत्म नहीं हो चुकी बीमारी से बदशकल हो जाने पर भी फिर से जीवन में उपयोगी काम कर सकता है।

कुष्ठ रोग अधिकतर देहातों का मसला है इसलिए हम जो कार्यकर्ता तैयार करें, वह भी अधिकतर देहातों के लिए चाहिए। उनके पास देहाती जीवन का देहाती हालात का ज्ञान और तजुर्बा रहेगा। इससे वे देहाती वातावरण में ठीक बैठ सकेंगे और कुष्ठ रोग निरोध के काम को बढ़ाने में मदद देंगे। इन कार्यकर्ताओं को तैयार करते समय सेवा भाव पर विशेष जोर देना होगा ताकि जो लोग पुरुष इस कार्य-क्षेत्र को पसन्द करें वे जी-जान से इस काम में जुटने के लिए तैयार होंगे।

क्या आप जानते हैं?

कि आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए० बी० ए० होम्यो-बायोकेमिक डाक्टरी किस प्रकार आसानी से पास कर सकते हैं और नहीं तो नियमावली मुफ्त मँगाएँ।

इन्टर नेशनल इन्स्टीट्यूट
रजिस्टर्ड नं० १२, अलीगढ़

हृदय-दाह?

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर की व्यापक ख्याति अम्लता, उदर-वायु, हृदय-दाह, पेट दर्द, वमन, पित्त-प्रकोप तथा पाचन-सम्बन्धी शिकायतों से पैदा होने वाले अन्य रोगों में प्रभावशाली होने का मान्य प्रमाण है।

उदर-विकारों से उत्पन्न सिरदर्द, उदासी, अनिद्रा और हृदय की तीव्र धड़कन में भी यह अमूल्य है।

यदि आप इनमें से किसी कष्टकारी रोग से पीड़ित हैं तो आज ही कुछ मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर लीजिए और इस प्रसिद्ध औषधि की शीघ्र सांत्वना का स्वयमेव अनुभव कीजिए।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर मांगते समय "एलेक्स सी० मेकलीन" के हस्ताक्षर पहचान लीजिए क्योंकि असली यही है।

मेकलिन ब्रांड स्टमक पाउडर सेवन कीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिलिस्तीन का बँटवारा क्यों हुआ ?

बँटवारा-समिति के बहुमत और अल्पमत के सुझावों का स्पष्टीकरण और लेखा-जोखा

लेखक, श्री कृष्णवल्लभ व्यास

(२)

फिलिस्तीन का बटवारा हो गया। बटवारे के लिये फिलिस्तीन-सम्बन्धी विशेष समिति ने अपनी रिपोर्ट दे दी है। समिति के बहुमत तथा अल्पमत की दृष्टि से फिलिस्तीन के सम्बन्ध में क्या निर्णय दिया है, इसका उल्लेख इस लेख में किया गया है जिससे अरब, यहूदी तथा साम्राज्यवादी राष्ट्रों की राजनीति समझने में आसानी होती है। इस लेख का पहला अंश गतांक में प्रकाशित हो चुका है।

फिलिस्तीन की स्वतन्त्रता के अरब नेता श्री ग्रांड मुफ्ती।

इसके पिछले अङ्क में बताया है कि फिलिस्तीन विभाजन में अरबों के साथ बहुत अन्याय किया गया है; अरबों की जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग यहूदी राज्य में आ जायगा—और जब कि यहूदी राज्य के अन्तर्गत सारे देश के ६० प्रतिशत से भी अधिक का भाग आ जायगा और उनकी जन-संख्या अरब राज्य की तुलना में बहुत अधिक हो जायगी। इस यहूदी राज्य में जाफा शहर भी शामिल कर लिया गया है, जो कि बिलकुल अरबों का शहर है और उनकी संस्कृति का केन्द्र है तथा जिसकी जन-संख्या लगभग ,००० है, इसके अलावा, दक्षिण का पूरा नागेब प्रान्त यहूदी राज्य के अन्तर्गत मान लिया गया है, जो वास्तव में अरब बहुमतवाला प्रान्त है। इस कार्रवाई का असली मकसद इसी बात से मालूम हो जाता है कि नागेब प्रान्त मिस्र की सीमा पर स्थित है और स्वेज नहर के बिलकुल समीप पड़ता है, इसलिए इसका राजनीतिक महत्त्व बहुत बड़ा है। अब नागेब प्रान्त, और इस प्रकार पूरा मिस्र-फिलिस्तीन सीमान्त प्रदेश यहूदी राज्य में रहेगा, अर्थात् यहूदियों के उन प्रतिक्रियावादियों के हाथ में रहेगा, जिनका अमरीकी साम्राज्यवादियों से निकट सम्बन्ध है और जो अपने आन्दोलन में उनसे सहायता प्राप्त करते रहे हैं। इसमें अमरीकी साम्राज्यवादियों का उद्देश्य बिलकुल स्पष्ट है—यहूदी राज्य के बहाने फिलिस्तीन के उत्तर में आक्रमण से लेकर मिस्र के सिकन्दरिया तक का पूरा समुद्रतट, जिसकी स्थिति राजनीतिक दृष्टि से बड़ी महत्त्वपूर्ण है, अमेरिकन प्रभाव में रहेगा और इस प्रकार स्वेज नहर तथा समीपवर्ती मध्य-पूर्व पर अमेरिका का दबदबा रह सकेगा।

दूसरा सुझाव समिति के बहुमत ने पेश किया है कि जेरूसलेम न अरब राज्य के अन्तर्गत रहे, और न यहूदी राज्य के अन्तर्गत; उसका शासन अन्तर्राष्ट्रीय संरक्षण में हो। इस समिति के बहुमत के सुझाव के ही अनुसार जेरूसलेम ठीक अरब राज्य के मध्य में पड़ता है और जहां से सारे अरब राज्य को सड़कें और रेलें गई हैं। इसके अलावा जेरूसलेम में अरबों का बहुमत भी है। लेकिन उसे अन्तर्राष्ट्र-संघ के शासन में रखा गया है, जिसका स्पष्ट उद्देश्य यह है कि वह अमेरिकन और अँगरेज साम्राज्यवादियों का एक अच्छा, राजनीतिक महत्त्ववाला अड्डा बन सके, और आज अन्तर्राष्ट्र-संघ की प्रधान समिति में अमेरिकन, अँगरेज साम्राज्यवादियों और उनके पिट्ठुओं का बहुमत देखते हुए इसकी सम्भावना में कोई सन्देह नहीं रह जाता।

तीसरे समिति के बहुमत ने सुझाव रखा है कि यहूदियों के फिलिस्तीन प्रवेश का प्रश्न दोनों राज्यों के जिम्मे छोड़ दिया और दो वर्ष के समय में, जबकि दोनों राज्यों को अपना अपना कार्य-भार सम्हालने का अवसर दिया जाय, १,५०,००० यहूदी एजन्सी की देख-रेख में फिलिस्तीन में प्रवेश करने तथा इन दो वर्षों तक फिलिस्तीन ब्रिटिश नियन्त्रण में रहेगा। इसका मतलब यह हुआ कि वहां अभी पुलिस-राज जारी रहेगा और जैसा कि होता आया है प्रत्येक तेरह आदिमियों के पीछे एक सिपाही या सैनिक तैनात रहेगा। इसके अलावा यहूदी-प्रवेश के प्रश्न पर अरबों और यहूदियों के राज्यों में कटुता बढ़ने और झगड़ा होने की सम्भावना बनी रहेगी और दोनों राज्य बराबर संयुक्त राष्ट्र-संघ अथवा अमेरिका से बीच-बचाव कराने के लिये मजबूर रहेंगे।

चौथे सुझाव के अनुसार दोनों राज्यों में आर्थिक एकता रहेगी, और दोनों राज्यों व जेरुसलेम पर एक संयुक्त आर्थिक समिति का नियंत्रण रहेगा। यह संयुक्त अर्थ समिति तीन अरब और तीन यहूदी प्रतिनिधियों तथा तीन संयुक्त राष्ट्र-संघ की आर्थिक व सामाजिक समिति के अपने प्रतिनिधियों को मिला कर बनेगी। संयुक्त राष्ट्र-संघ की अन्य समितियों की भांति इस आर्थिक व सामाजिक समिति में भी अमेरिकन साम्राज्यवादियों और उनके पिछलगुओं की बहुतायत है। इस एक और चाल के द्वारा अमेरिकन और अँगरेज साम्राज्य-वादियों ने फिलिस्तीन पर अपने आर्थिक नियंत्रण का पूरा प्रबन्ध कर लिया है और साथ ही साथ अपने पूंजीपतियों के वर्तमान फिलिस्तीन नियंत्रण को भी सुरक्षित कर लिया है; उदाहरण के लिए, इम्पीरियल केमिकल इन्डस्ट्रीज, जो कि एक अँगरेज कम्पनी है, फिलिस्तीन के प्रमुख-प्रमुख रसायन उद्योगों पर वर्षों से अधिकार जमाये हुए है; जनरल एलेक्ट्रिक और स्टील ब्रदर्स ने क्रमशः फिलिस्तीन के बिजलीघरों और निर्यात व्यापार पर अपना एकाधिपत्य जमा रखा है और ये दोनों कम्पनियां अमरीकी पूंजीपतियों की अपनी कम्पनियां हैं।

इस प्रकार इस समिति के बहुमत के द्वारा उपस्थित किये गये सुझाव और दोनों विभाजित राज्यों का सीमा-निर्धारण यहूदियों और उनके प्रमुख सहायकों, अमरीकी साम्राज्यवादियों को वास्तव में फिलिस्तीन के सच्चे शासक के रूप में रखना चाहते हैं। फिलिस्तीन के विभाजन की यह योजना वास्तव में गतवर्ष की पुरानी ब्रिटिश मोरिसन योजना का नया अमरीकी संस्करण है। अँगरेजों की मोरिसन योजना में नागेब प्रांत और जेरुसलेम को ब्रिटिश नियंत्रण में रखने की सिफारिश की गई थी।

* * *

साम्राज्यवादियों की इस उपर्युक्त शैतानी योजना के ठीक विपरीत फिलिस्तीन-समिति के प्रगतिशील और विश्व-शान्ति के सच्चे हिमायती अल्पमत ने, जिसमें भारत, ईरान और युगोस्लाविया के राष्ट्र शामिल हैं, फिलिस्तान समस्या को सुलझाने के जो सुन्दर हल उपस्थित किये हैं, वे निम्न प्रकार से हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि समिति के अल्पमत ने दोनों जातियों, अरबों और यहूदियों, के साथ कितना न्याय करने का प्रयत्न किया है, साथ ही, फिलिस्तीन की आजादी का और उसे साम्राज्यवादी चंगुल से बचाने का कितना ध्यान रखा है:—

पहला सुझाव जो इस समिति के अल्पमत ने उपस्थित किया है, वह है फिलिस्तीन में एक स्वतन्त्र संघ सरकार की स्थापना की जाय, जिसके आधीन अरब और यहूदी राज्य (प्रान्त) रहेंगे, तथा जिन्हें संघ सरकार के अन्तर्गत स्थानीय स्वायत्त-शासन के सारे अधिकार प्राप्त रहेंगे। जेरुसलेम इस पूर्ण स्वतन्त्र संघ सरकार की राजधानी रहेगा तथा जिसके दायरे में किसी प्रकार की साम्राज्यवादी लाग-डांट की सम्भावना बिलकुल न रहेगी।

दूसरे सुझाव के अनुसार दोनों, अरब और यहूदी राज्यों, जो कि मिलकर संघसरकार का निर्माण करेंगे, के अन्तर्गत तीन ऐसे क्षेत्र होंगे, जिनकी सीमा जहां तक सम्भव होगा अरब व यहूदी बहुमत के आधार पर निर्धारित की जायगी। इसके अलावा, जहां कि साम्राज्यवादी बाहर से आये हुए यहूदियों को बसाने और उनके द्वारा उन्नत किये जाने का बहाना बनाकर सारा नागेब प्रान्त यहूदी राज्य के अन्तर्गत कर देने की मांग करते हैं (वास्तव में साम्राज्यवादियों के इस तर्क की आड़ में उनकी यह पूंजीवादी मनोवृत्ति छिपी है कि उस अनुन्नत प्रान्त को उन्नत करने के बहाने वे वहां अपनी पूंजी लगाने और बाजार खोलकर सारा व्यापार हथियाने का प्रबन्ध कर लेंगे), वहां अल्पमत ने अपना यह सुझाव दिया है कि नागेब प्रान्त के उत्तरी भाग का कुछ हिस्सा यहूदियों को दे दिया जाय और दक्षिण का भाग अरबों के अधीन रहे ताकि वहां के अरब बहुमत पर यहूदी राज्य का अधिकार न हो जाय और इस प्रकार मिस्र—फिलिस्तीन सीमान्त प्रदेश भी अरबों के राज्य के अन्तर्गत रहे (न कि यहूदी राज्य के) क्योंकि इस सीमान्त-प्रदेश में दोनों ओर अरब जाति रहती है।

तीसरे सुझाव में कहा गया है कि फिलिस्तीन में यहूदी प्रवेश का प्रश्न अरब और यहूदी राज्य आपस के समझौते के द्वारा निपटा लेंगे। तीन वर्ष के अन्तरिम-काल के लिए यहूदी-प्रवेश का नियंत्रण तीन अरब, तीन यहूदी और तीन संयुक्त राष्ट्र-संघ के प्रतिनिधियों की एक विशेष अन्तर्राष्ट्रीय समिति के अधीन रहेगा। इस काल की समाप्ति के बाद इस प्रश्न का नियंत्रण फिलिस्तीन की संघ-सरकार अपने निर्णय के अनुसार करेगी।

इन सुझावों के अलावा अल्पमत ने अपने अन्य कई सुझावों के द्वारा अरब और यहूदी दोनों जातियों के लिए अधिकारों की समानता और दोनों के लिए उन्नति के समान अवसरों की मानता के साथ दोनों जातियों के समान स्वार्थों के प्रश्नों को उनके अपने सहयोग से सुलझने की पूरी सुविधा देने की सिफारिश की है। दोनों जातियों के साथ अल्पमत के सुझावों में कितना न्यायपूर्ण दृष्टिकोण प्रकट होता है उसकी इन योजनाओं से कि संघ सरकार का प्रधान जिस जाति का होगा, उसकी विपरीत जाति का व्यक्ति ही उपप्रधान हो सकेगा; मंत्रि-मंडल में दोनों जातियों का पूरा प्रतिनिधित्व रहेगा, तथा किसी भी जाति के साथ किसी प्रकार की विभेद नीति नहीं बरती जा सकेगी, आदि आदि।

इस प्रकार इस समिति के अल्पमत के द्वारा उपस्थित किये गये सुझावों से स्पष्ट प्रकट होता है कि इसकी योजना का स्पष्ट उद्देश्य है—स्वतन्त्र फिलिस्तीन में अरब-यहूदी एकता, सहयोग और मैत्री स्थापित करना, दोनों में किसी प्रकार के वैमनस्य के बढ़ने की सम्भावना

शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

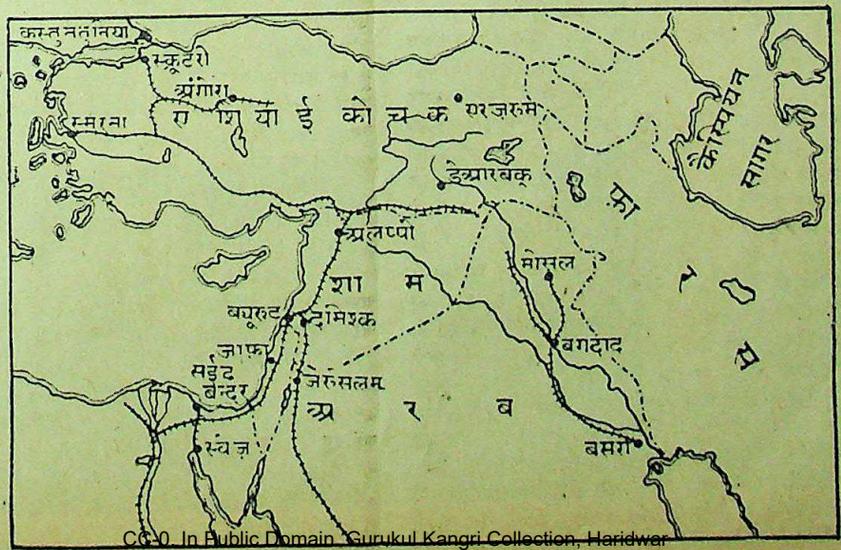

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहारकेसरी श्री श्रीकृष्णसिंह

जीवनवृत्त और राष्ट्रीय व्यक्तित्व की एक झाँकी

लेखक, श्रीरामधारीसिंह 'दिनकर'

बिहार के प्रधान मंत्री माननीय श्रीकृष्णसिंह की हीरक-जयन्ती गत सप्ताह बिहार में मनाई गई। इस लेख में विद्वान् लेखक ने बिहार-केसरी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए राजनैतिक सेवाओं का वर्णन किया है। लेख सामयिक पठनीय तथा विचारपूर्ण है।

बिहार के प्रधान मंत्री बिहारकेसरी माननीय श्रीकृष्णसिंह

स्थूल शरीर पर महीन और दूध के फेन के समान उजला कुरता, खूब महीन धोती, पांवों में चप्पल और सिर पर सजी नुकीली गांधी-टोपी, वेश-भूषा से श्री बाबू एक कला-प्रेमी रईस के समान दीखते हैं। उनकी उँगलियों में आप कभी-कभी अँगूठी भी देखेंगे और मैंने तो एक बार उनकी कनिष्ठा उँगली के नख को रँगा हुआ भी देखा था। रंग उनका गेहुँआ है; आकृति सदैव निर्लोम रहती है; आंखें चेहरे के अनुपात में कुछ छोटी हैं और कान भी बड़े नहीं हैं; लेकिन, आकृति पर जो एक मुक्त हँसी की किरण खेलती है वह बतलाती है कि हृदय के तल में मस्ती और बेफिक्री की मात्रा भरपूर है। श्री बाबू बुद्धि नहीं; भावना के अधीन जीते हैं और यह भावात्मकता उनके चेहरे पर किसी भी मनोवैज्ञानिक को विकीर्ण मिलेगी। किन्तु, अध्ययन-कक्ष में या आफिस की मेज पर उनकी आकृति की यह सहज-सरल प्रसन्नता कुछ क्षीण हो जाती है, मानों व्यस्तता और परेशानी ने उन्हें आक्रान्त कर लिया हो। कई योग्य पुरुषों को मैंने बुद्धि के कार्य-रत होते हुए भी स्वयं उन्हें कार्य-व्यस्तता से तटस्थ देखा है। किन्तु, श्री बाबू के साथ दूसरी बात है। उनकी बुद्धि जब कार्य में प्रवेश करती है तब काम की भीड़ में उनका व्यक्तित्व भी डूब जाता है। घर पर ऐसे मौकों पर अक्सर वे गंजी पहने रहते हैं तथा उस समय उनकी मूर्त्ति आत्मलग्न और अप्रसन्न-सी दीखती है। सिमटी-सिकुड़ी हुई भौंह और ललाट पर की सिकुड़ी रेखाएँ आकृति पर, मानो, गम्भीरता का धुआं बिखेर देती हैं और खाण्डु मस्तक पर जब-तब कांपते हुए कुछ विरल केश, मानो, आपको संकेत देते हैं कि "अभी नहीं, अभी नहीं। यह शासक की कठोर मूर्त्ति है; यह अध्येता की गम्भीर मुद्रा है; अभी वापस जाइये; और कभी आइयेगा।"

* * *

श्री बाबू के चरित्र और व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता उनकी ज्वलन्त देशभक्ति है। देश का अर्थ देश की जनता ही को समझना चाहिए और जनता की हितकामना को वे कभी भी नहीं भूल सकते और न अपने देश को कभी धोखा ही दे सकते हैं। कड़ा से कड़ा आलोचक भी जब उनके व्यक्तित्व के सभी परदों को चीरता हुआ उनके भीतर घुसने लगेगा तब वह उनकी देशभक्तिवाले स्तर पर आकर हार मान लेगा, क्योंकि यह स्तर दुर्भेद्य है, यह स्तर अजेय है। श्री बाबू की देशभक्ति की भावना की नींव अत्यन्त कठोर चट्टान पर पड़ी है जो हिलना नहीं जानती, जो विचलित नहीं की जा सकती। उन्होंने जिस समय जीवन में अपनी आंखें खोलीं, तब तक भारतवर्ष जाग चुका था। देश में बंग-विद्रोह की लहर गूंज रही थी और बाबू श्रीकृष्णसिंह मुंगेर में मैट्रिक के छात्र थे। कहते हैं, इसी समय मुंगेर की ट्रेनिंग एकेडेमी में एक बंगाली शिक्षक आये जिनका अभिप्राय बम-पार्टी के लिए रँगरूट भर्ती करना था। बालक श्रीकृष्ण के बेचैन हृदय ने इसी गुरु से देशभक्ति की पहली दीक्षा ली और इन्हीं के सामने एक हाथ में गीता और दूसरे में कृपाण लेकर श्री बाबू ने गंगा में प्रवेश करके शपथ खाई कि चाहे प्राण ही क्यों न चले जायँ किन्तु; देश-सेवा के मार्ग से मैं विचलित नहीं होऊँगा।

* * *

संयोग से ये गुरु महाराज शीघ्र ही मुंगेर से चले गये अन्यथा जिसे हम आज बिहार के शासनासन पर आरूढ़ देखते हैं वह पुरुष, शायद, कहीं फांसी चढ़ गया होता अथवा सशस्त्र क्रान्ति के अनेक विफल प्रयासों के बाद संन्यास ले लिया होता। किन्तु, कृपाण की दीक्षा ने श्री बाबू के हृदय पर जो ताप उत्पन्न कर दिया वह कभी बुझा नहीं। वे तभी से उग्र विचारों के प्रेमी और पोषक हो गये। अरविन्द पर उनकी असीम श्रद्धा हो गई और "वन्देमातरम्" के लेखों को वे बड़ी ही श्रद्धा के साथ पढ़ने लगे। इस समय लोकमान्य तिलक और श्री अरविन्द उनके आराध्य थे तथा इनके निबन्धों को वे पीयूष मानकर पीते थे। क्रान्तिकारियों का प्रभाव उनके हृदय पर जमकर पड़ा था और भारतीय राजनीति के तत्कालीन रहस्य को वे ठीक तिलक और अरविन्द की आंखों से देखना चाहते थे। जो लोग तिलक और अरविन्द के साथ थे, वे श्री बाबू की श्रद्धा के अधिकारी थे; जो लोग तिलक और अरविन्द को नापसन्द करते थे उनके लिए श्री बाबू के हृदय में भी अवज्ञा और अवहेलना का भाव था।

* * *

सूरत-कांग्रेस में झगड़े के बाद जब तिलक जी अपने गर्मदली सहकर्मियों को लेकर कई वर्षों के लिए कांग्रेस को छोड़कर निकल गये, तब श्री बाबू के लिए भी कांग्रेस मर गई। यहां तक कि इसी अरसे में जब पटने में कांग्रेस महाधिवेशन हुआ तब श्री बाबू ने नर्मदली कांग्रेस के प्रति अपनी उपेक्षा प्रदर्शित करने के लिए, उसमें कोई काम नहीं किया, कोई योगदान नहीं दिया और वे, यद्यपि, उस समय पटने में ही कालिज के विद्यार्थी थे तथापि ठीक अधिवेशन के अवसर पर ही पटना छोड़कर वे घर चले गये।

जब श्री बाबू पटना कालिज के छात्र थे उस समय एक बार बादशाह पंचम-जार्ज की भी सवारी पटने आई थी। बादशाह नाव पर चढ़कर गंगा के किनारे-किनारे दृश्य देखन को बाहर निकले। सारा किनारा लोगों से खचाखच भर गया। मिन्टो हिन्दू होस्टल के छात्र भी भीड़ में जा मिले। किन्तु, श्री बाबू अपने कमरे से बाहर नहीं निकले। और तुर्रा तो यह कि कहीं बादशाह के शरीर पर आंखें न पड़ जायँ, इस पाप से बचने के लिए उन्होंने अपनी कोठरी की खिड़कियां भी बन्द कर लीं।

* * *

वे तत्कालीन बंगाली और मराठी नेताओं के उत्तप्त विचारों के बड़े ही समर्थक थे और इन्हीं नेताओं के अनुकरण पर उन्होंने अपने चरित्र का भी निर्माण किया। सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के भाषणों का उनके चरित्र पर अद्भुत प्रभाव पड़ा और इस विचित्र वक्ता की कोई भी वक्तृता ऐसी नहीं हुई जिसे श्री बाबू ने बीसियों बार नहीं पढ़ा हो। मैट्रिक क्लास के छात्र की हैसियत से उन्होंने सर सुरेन्द्र को मुंगेर में आमंत्रित किया था उनके सम्मान में कितनी ही सभा आयोजन भी। यह एक बात प्रमाण हो सकती है कि अपने छात्र में ही श्री बाबू कितने प्रभावशाली थे तथा अन्त में जाकर उनकी वक्तृता इतनी ओजस्विनी क्यों हो

* * *

सन् १९१६ ई० में कालिज की समाप्त करके श्री बाबू ने मुंगेर में शुरू की। थोड़े ही दिनों में चारों से आवाजें आने लगीं कि मुंगेर के खाने में एक नई प्रतिभा ने प्रवेश है। किन्तु, राजनीति किसी सौ आधिपत्य स्वीकार करने को तयार था। इसी समय एनीबेसेन्ट के आन्दोलन ने जोर पकड़ा और अत्यन्त सहजरूप से मुंगेर में इस आ के नेता हो गये। धीरे-धीरे राज ने वकालत की नई दुलहिन का ति करना शुरू किया और १९१९ के आते तो जालियांवाला बाग के श्री बाबू आपाद-मस्तक जल उठे। घटना से उनके हृदय पर कठोर पहुँचा और वे गम्भीरता से सोचने कि इस अपमान के प्रतिशोध का उपाय है। जालियांवाला बाग श्री के दिल पर तभी से आग की तरह रहा है। इस घटना ने उन्हें अँगरेजों घोर शत्रु बना डाला और इसके के द्वारा उन्होंने लाखों मनुष्यों के में अँगरेजों के विरुद्ध घृणा की फूंक दी। १९२०-२१ के दिनों में "के वकील साहब" (आरम्भ में श्री मुंगेर जिले के गांवों में इसी नाम अभिहित किए जाते थे) सभाओं में भी जालियांवाले बाग की दर्दनाक घट का वर्णन करते थे तब वे खुद भी थे और उनके साथ अपार जनता भी बहाती थी। उन दिनों की दो-चार स की मुझे अब भी कुछ याद है और श्री की वाणी का जो जादू उस समय देखा वह फिर कभी देखना नसीब हुआ। जिसे बगावत की आग भड़क हो वह भगवान् से बाबू श्रीकृष्णसिंह सी ज्वलन्त वाणी का वरदान मांगे।

* * *

पंजाब-हत्याकाण्ड के कुछ पहले अफ्रीका के सत्याग्रही के रूप में महा गांधी का नाम भारतवर्ष में फैल था और एक मेधावी एवं जाक नवयुवक की हैसियत से श्री

शेष पृष्ठ १४ पर देखि

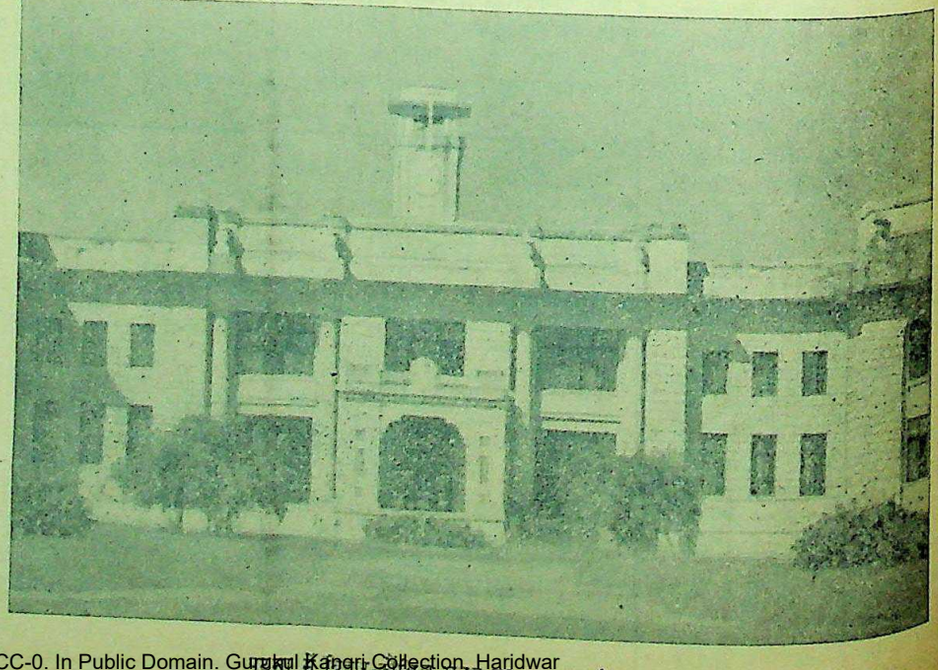

पटना में बिहार-कौंसिल भवन का एक बाहरी दृश्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देशदूत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

बैसवारे का विष

लेखक, श्री रासबिहारी अवस्थी

यह एक ऐतिहासिक कहानी है, ऐतिहासिक दृष्टि से बैसवारा प्राचीन काल से प्रसिद्ध है। यह भूमि अपनी प्राचीन वीरता तथा युद्ध-प्रवृत्ति के लिये सदा से गौरवपूर्ण स्थान रखती आई है। लेखक ने इस कहानी में लार्ड वेलेजली के समय के बैसवारे की कुछ ऐतिहासिक घटनाओं को लेकर इस कहानी की रचना की है। कहानी बड़ी रोचक, ओजपूर्ण और पठनीय है।

"जेल, भीखमसिंह, टुमारा सामने चीज का पेड़ हाय?" "हुजूर, यह पीपल है" भीषमसिंह गम्भीर मुद्रा में कहा।

"अच्चा, माटाभिक, टुम बोलो, चीज का पेड़ हाय"? "हुजूर, पिपरियै तो बा आ" [illegible] ने थोड़े से दांत निकालकर [illegible]।

"नो, नो नेई मांगटा, ये औरट माफिक बोलटा हाय, टुम लड़ाई [illegible] करने सकेगा, जाव।" "भीखमसिंह, [illegible] हमरा साठ आव" साहब कह [illegible] था।

* * *

लार्ड वेलेजली के समय का भारत। [illegible]-प्रथा' के अन्तर्गत निजाम [illegible] में एक ब्रिटिश जनरल देशी [illegible] की एक नवीन सेना के लिए [illegible] भरती कर रहा था। पेशावरी, [illegible], रुहेला, मरहठा आदि जवान [illegible] से स्थान पा जाते थे; परन्तु अन्त [illegible] जनरल के सामने एक समस्या प्रस्तुत [illegible] जब कि १५-१५ जवानों की दो [illegible] उम्मेदवारों के रूप में उसके [illegible] आई, यद्यपि स्थान केवल १५ [illegible] ही लिए अवशिष्ट था।

जनरल के मनोवैज्ञानिक अनुसंधान [illegible] दोनों ही टोलियां शारीरिक अवस्था [illegible] समान प्रतीत हुईं फिर भी उसने [illegible] प्रश्नों के उपरान्त भीषम की [illegible] को ही स्थान दिया।

लखनऊ की नवाबी में बैसवारा-[illegible] के क्षत्रिय सामन्तों में रावराजा [illegible]पालसिंह प्रमुख थे। गंगातट पर [illegible]ड़ियाखेरा उनका गढ़ था। लखनऊ [illegible] आज्ञा से उन्हें सात सौ सिपाही तथा [illegible] तोपें रखने का अधिकार था। उक्त [illegible] के सभी तालुके अपना अपना कर [illegible] रावराजा के मार्फत लखनऊ भेजते एवं [illegible] आन्तरिक प्रबन्ध के लिए रावराजा [illegible] ही समक्ष उत्तरदायी थे। रावराजा [illegible] सेना में खिजौली तालुके के बिसेन [illegible] की प्रमुखता थी।

देश का अधःपतन जनार्दन का उद्देश्य [illegible], अतएव खुशामद, चाटुकारी, [illegible] तथा अदूरदर्शितापूर्ण द्वेषभाव [illegible] जनता के परमप्रिय वस्त्राभूषण बन [illegible] थे। चुगुलखोरों की बदौलत राव-[illegible] बिसेनों से रुष्ट हो गये। बिसेन [illegible] रूपनसिंह अपने ५० कुटुम्बियों [illegible] डौंड़ियाखेरे की फौज से बर्खास्त [illegible] दिये गये।

स्वामिभक्ति और [illegible] कार्यों का ध्यान [illegible] रावराजा ने [illegible] को खिजोली तथा [illegible] तीन मौजे केवल [illegible]) वार्षिक कर लगा-[illegible] गुजारे के रूप में [illegible], साथ ही ६० सिपा-[illegible] को हथियार बांधने [illegible] भी स्वीकृति दी; [illegible] रूपनसिंह के ज्येष्ठ [illegible] भीषमसिंह ने डौंड़िया-[illegible] के गुजारे को अंगीकार [illegible] किया और १५ [illegible] सहित वे दक्खिन [illegible] चले गये। [illegible] में माताभीख के [illegible] यही भीषमसिंह [illegible]।

[illegible] वर्ष बीतने पर। [illegible] की बागडोर [illegible] रामबख्शसिंह [illegible] में आई। वृद्ध [illegible] अपने बिसेन-गढ़ में शान्ति से दिन बिता रहे थे। अपने पेंशनर पुत्र और भतीजोंसहित वे अचलेश्वर महादेव की पूजा करते; दीन-दुखियों की सेवा और गो-ब्राह्मण सेवा-भाव उनके जीवन का आदर्श था। फलतः दूर तक उनकी कीर्ति फैलने लगी। राव बाबू के चाटुकारों को रूपन के इस सात्विक ऐश्वर्य में अतुल सम्पत्ति और उन्मत्तता का भान हुआ। चुगुलखोरों के कुचक्र ने राव बाबू के विवेक को पराभूत कर दिया। रूपनसिंह पर डौंड़िया-खेरे की मदद के लिए २५ हजार रुपये की रकम तलब की गई।

बिसेन परिवार डौंड़ियाखेरे की राज-नीतिक निर्बलता पर पहले से ही क्षुब्ध था; २५ हजार की तलबी के संवाद ने घृताहुति का काम किया--बिसेनों की आंखें लाल हुईं; ओंठ फड़के और तलवार की मूठों पर हाथ पहुँच गये। डौंड़ियाखेरे के हरकारे को मालूम हुआ कि मानो वह भूल से खूंख्वार चीतों के झुण्ड में घुस आया हो; उसके प्राण संकट में थे, इसी समय रूपनसिंह दूत के सामने आ गये। उनके श्वेत सघन दाढ़ी-मूंछों तथा गम्भीर तेजोमय मुख को देखकर दूत के घबराये हुए प्राणों में अनायास ही शान्ति का संचार हुआ। एक बार पुनः उसने राज-कीय ढंग से जोहार की।

रूपन ने अपने बिसेन सरदारों से कहा--"मुझे विश्वास नहीं है कि तुममें आत्म-सम्मान-रक्षा की थोड़ी भी क्षमता है। जो उत्तेजना जितनी जल्दी मनुष्य पर चढ़ बैठती है उतनी ही शीघ्रता से वह उतर भी जाती है। दूत के सामने पाजामें से बाहर हो जाना कोई वीरता नहीं है। निश्चय ही यदि तुम्हारी आत्मा को ठेस पहुँची है; यदि वास्तव में तुम्हारे गौरव को आघात पहुँचा है तो उसके प्रतिकार का समय आगे आयेगा।"

हरकारे को संबोधित करते हुए रूपनसिंह कह रहे थे--"राव बाबू से हमारा 'जोहार' कहना और उन्हें समझाना कि रूपन बूढ़ा है; आज है तो कल नहीं, काम पड़े तो इस अंतिम समय में पृथ्वीपालसिंह का नमक अदा कर दें नहीं तो अगले जन्म में बैल बनकर खटना पड़ेगा। उस नमक के अतिरिक्त राव बाबू को देने के लिए बिसेनों के पास एक कौड़ी भी नहीं है, और अगर चुगुलखोरों का चढ़ाया हुआ रंग छूटनेवाला नहीं है तो उस रंग पर ६० बिसेनों के रक्त का लाल रंग भी चढ़कर बैसवारे का विष बन जायगा जो रावबाबू के परिताप का कारण होगा। मेरी अक्ल सठियाई हुई है इसलिये रावबाबू को हँसी आयेगी फिर भी मेरा सन्देश उनसे कहना और यह भी कहना कि आगे के दिन बुरे हैं।" दूत बिदा हो गया।

* * *

कार्तिकी पूर्णिमा !

रबी की फसल बो देने के उपरांत इस अवसर पर बैसवारा खण्ड के किसान एक बहुत बड़े काम की चिंता से निवृत्त हो जाते हैं; बैलों को भी फुर्सत मिलती है। फलतः एक से एक निराली शानवाले बैलों को सजाकर असंख्य नर-नारी, छोटे-बड़े सभी, कार्तिकी पूर्णिमा के अवसर पर गंगा-स्नान करने जाते हैं। बिसेन-परिवार भी पतित-पावनी भागीरथी तथा पौराणिक तपो-भूमि भगवती चन्द्रिका-क्षेत्र बकसर घाट को चल पड़ा।

बकसर और डौंड़ियाखेरा के बीच की तीन मील भूमि भी मेले से भरी हुई थी। इसी मेले में रूपनसिंह का भी खीमा गड़ा हुआ था। परिवा के दिन सवेरे रावबाबू के चार गुमाश्ते रूपनसिंह को निमंत्रण देते हुए बोले कि रावबाबू ने आपकी पुरानी स्वामिभक्ति की याद की है और परिवा के दिन का आतिथ्य ग्रहण करने के लिये आपसे अनुरोध किया है।

गुमाश्तों द्वारा प्राप्त संवाद पर विचार हुआ। रूपनसिंह डौंड़ियाखेरा जाने के पक्ष में थे; परन्तु भीषमसिंह कड़ा विरोध करते रहे। अंत में तय हुआ कि केवल चार साथी लेकर रूपनसिंह डौंड़ियाखेरा जा सकते हैं। गुमाश्तों के साथ रूपनसिंह उधर चले, इधर भीषम-सिंह ने पांच मिनट में सब डेराडम्बर उखड़वाकर बैलगाड़ियों पर लदाया और बिसेनगढ़ के लिये चले पड़े। इस कार्य में उन्होंने सीधा रास्ता छोड़कर चक्कर देते हुए गुप्त रास्तों से ही काम लिया। रास्ते में चचेरे भाई चेतई ने कुछ दबते दबते कहा--"भैया, कुछ समझ में न आया?"

"तू क्या जाने, अंधे होकर तलवार बन्दूक चलाना; कुश्ती लड़ना, यही तो तूने सीखा है।" भीषमसिंह दपट के साथ कह रहे थे "देख, दादा तो रावबाबू के यहां कैद हो जायँगे; यह भी डर था कि मेले में रावबाबू की कुमक आकर हम लोगों पर हमला कर देती, निमन्त्रण नहीं, वह आफत का परवाना था। हम अगर रास्ते रास्ते जाते तो निश्चय ही डौंड़ियाखेरा से छूटे हुए रिसाले हमें घेरते।"

"तो अब क्या होगा, भैया?" चेतई ने कहा।

"कुछ अच्छा नहीं होगा, लेकिन अपने यत्न में कमी न होनी चाहिए।" भीषम कहते ही गये--"ले मेरी यह दो चिट्ठियां, एक तो खजूरगांव के राना को देना, वहां तुझे घोड़ा मिल जायगा और यह १० मोहरें ले, घोड़ा पाते ही खजूरगांव से हैदराबाद चल देना, वहां दूसरी चिट्ठी देना, जा, जल्दी कर!"

भीषमसिंह बिसेनगढ़ पहुँचे तो देखा कि रावबाबू का एक सवार उनसे पहले ही वहां पहुँच गया है, उसके हाथ में एक पत्र था, और वह भीषमसिंह की प्रतिक्षा कर रहा था।

भीषमसिंह ने चिट्ठी ले ली। उसमें लिखा था--"डौंड़ियाखेरा की ज़मीन पर खीमा खड़ा करने के कारण तुम्हारे दादा रूपनसिंह हमारी हिरासत में हैं, तुमने माफी मांगने के बदले बिना इत्तला के कूच कर दिया है, लिहाजा ५० हज़ार रु० जुर्माना दाखिल करके दादा को छुड़ा ले जाओ, वर्ना बिसेनगढ़ तोपों से उड़वा दिया जायगा।"

पत्र पढ़ते ही भीषम के क्षत्रित्व में सुई-सी चुभ गई; सहज शूरहृदय तिलमिला उठा। उमंग आई कि दूत को टुकड़े-टुकड़े कर दें; परन्तु हृदय में धक्का लगा--"जो जोश जितनी जल्दी मनुष्य पर चढ़ बैठता है उतनी ही जल्दी वह उतर

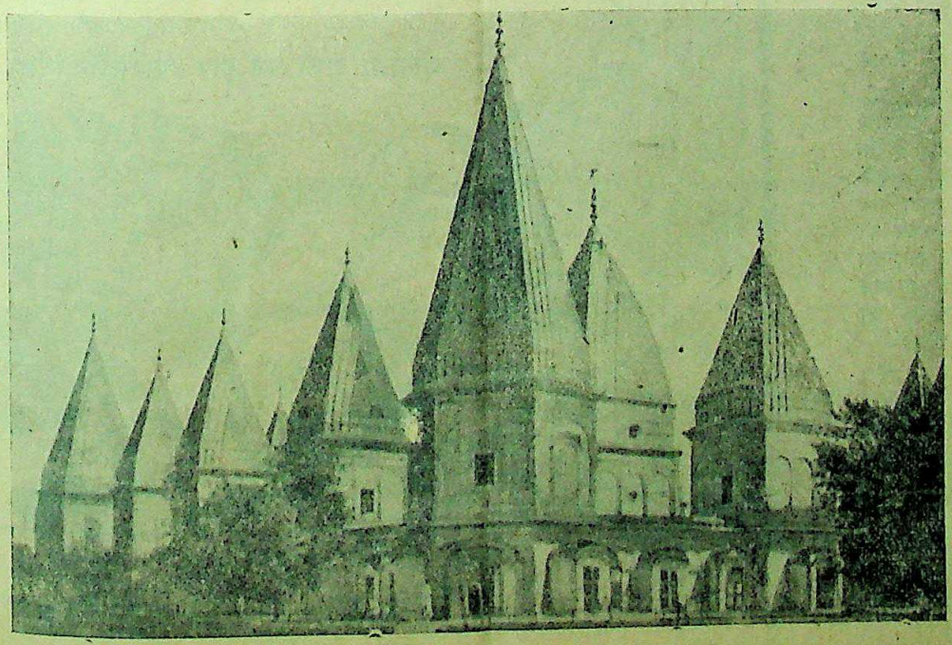

जम्मू का एक हिन्दू मन्दिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देशदूत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी जाता है।" उन्हें दादा के इन शब्दों का ध्यान हो आया। तत्क्षण भीषम ने युक्ति सोची। पत्र के उत्तर में उन्होंने लिखा—"दादा के हिरासत में लिये जाने का हमें सख्त अफसोस है, जैसे बनेगा हम उन्हें छुड़ायेंगे लेकिन राव बाबू से दरख्वास्त है कि हमें आठ दिन की मुहलत दी जाय जिससे रुपये का बन्दोबस्त कर लिया जाय।"

चेतईसिंह का पत्र पाते ही निजाम की त्योरियां चढ़ गईं, तत्काल आज्ञा हुई कि एक अँगरेज अफसर के साथ पांच सवार डौंडियाखेरा जाकर रावबाबू को हिदायत करें कि निज़ामत के पेंशनर बिसेन और उनके रिश्तेदारों को फौरन रिहा किया जाय वर्ना उन्हें लखनऊ पर निजाम व अँगरेजों की संयुक्त चढ़ाई का बाइस होना पड़ेगा।

रावबाबू साहसी थे अवश्य, किन्तु इस भीषण परिणाम तक उनकी कल्पना भी न पहुँची थी और भीषमसिंह द्वारा मांगी हुई अवधि के ठीक आठवें दिन निजाम के सवार डौंडियाखेरा पहुँचे। भीषमसिंह भी ऐन वक्त पर वहां पहुँचे। निज़ाम का फर्मान पढ़ते ही रावबाबू का शरीर थर्रा गया। रक्त का घूँट पीकर उन्होंने रूपनसिंह आदि को रिहा करते हुए बिसेनगढ़ के लिये बिदा किया। अँगरेज अफसर ने भीषमसिंह से हाथ मिलाया और वह हैदराबाद की ओर चला गया। रावबाबू ने इस दृश्य को देखा, भीषमसिंह की दृष्टि में मिलकर उनकी दृष्टि चौंधियाई; ग्लानि और विक्षोभ के मिश्रित भाव की प्रबल अनुभूति हुई। भीषम ने एक ही निमेष में सारा भाव ताड़ लिया परन्तु वे इस बात का अनुमान नहीं लगा सके कि रावबाबू ने अँगरेज अफसर की ओर—उसके बिदा होते समय—ज्वालामयी वक्र-दृष्टि से क्यों देखा था?

* * *

माघ की मौनी अमावस्या!

"दादा मौनी के अवसर पर गंगा-स्नान का बड़ा माहात्म्य है"—भीषमसिंह कह रहे थे।

"सो तो ठीक ही है बेटा, परन्तु" बूढ़े रूपनसिंह कह रहे थे—"अरगनी पर कौआ बोल रहा है, उसकी बोली में खून की प्यास जान पड़ती है" बूढ़ा अन्यमनस्क सा चुप हो गया।

"दादा, चन्द्रिका माता बलिदान चाहती होंगी, चलो ठीक है, सदा एक से दिन नहीं जाते" भीषमसिंह के मुंह से अनायास ही यह शब्द निकल गये, और एक क्षण के लिये वह स्वयं इस विचार में पड़ गया कि मैं क्या कह गया।

"देखो बेटा, दोपहर के समय में भी सूर्य का रंग पीला सा दिखाई देता रहता है, महीनों से देख रहा हूँ, दिन-दहाड़े शृगाल चिल्लाते हैं, यह सब लक्षण बुरे हैं, कोई भारी आफत की सूचना है, मेरे हृदय से तो यह नहीं निकलता कि तुम जाओ परन्तु गंगा-स्नान के लिये मना करना भी अनुचित है अतएव जा भी सकते हो।" रूपनसिंह ने कहा।

तुरंत छः बैलगाड़ियां सज गईं। १५ अन्य बिसेनों के साथ भीषमसिंह गंगा-स्नान करने गये। चेतईसिंह ने भीषमसिंह से कहा—"मैं तो रूपन दादा की सेवा में ही गंगा-स्नान का पुण्य-लाभ करता हूँ, गंगामाई से कह देना कि उनके बुलाने पर ही आऊँगा।"

भीषमसिंह चेतई की बातचीत नहीं सुन सके क्योंकि बैल दुम उठाकर चौकड़ी भरने लगे थे; उनके गले में बँधी हुई चौरासियों का "खम खम" बाद उच्च हो चुका था और गाड़ियों की खड़खड़ाहट भी पूरे वेग पर थी।

* * *

बिसेनगढ़ का घेरा!

रावबाबू रामबख्श ३०० बन्दूकबन्द सिपाहियों के साथ बिसेनगढ़ को घेरे हुए हैं। बकसर घाट में रात के समय वे पहले ही चुपचाप छापा मारकर भीषमसिंह तथा १५ अन्य बिसेनों को कत्ल करा आये थे। चुगुलखोरों द्वारा भ्रष्ट की हुई उनकी बुद्धि ठिकाने न थी, वे हिंसा-प्रतिहिंसा के लिये पागल थे। रावबाबू का एलान हुआ—"रूपनसिंह हमारे अपमान के लिये माफी मांगें, हर्जाने की रकम के साथ आत्मसमर्पण करें अन्यथा लड़ाई करके नष्ट कर दिये जायँगे।"

"रावबाबू जिस फौलाद के बने हुए हैं, बिसेन भी उसी के हैं, अंतर केवल इतना है कि राव बाबू में जंग लग सकता है पर बिसेनों में नहीं, भीषम तो कुत्ते की मौत मरा लेकिन शेष ४५ बिसेन प्रतिष्ठा की रक्षा करना जानते हैं, फौलाद से फौलाद टकरा कर रहेगी, तलवार की प्यास रक्त से ही बुझेगी" रूपनसिंह का उत्तर था।

बन्दूकें दग उठीं; एक ऊँचे टीले पर अवस्थित बिसेनगढ़ के फाटक पर कुल्हाड़ियां चल रही थीं। गढ़ की दीवारों में बने हुए छेदों से ४५ बिसेन ताक ताक कर गोली चला रहे थे; २० मिनट में रावबाबू के १२५ सिपाही ढेर हो गये, उधर फाटक भी टूट चुका था। बिसेनों ने बन्दूकें फेंक दीं और वे तलवारें लेकर फाटक की ओर झुके। एक ओर ४५ बिसेन और दूसरी ओर १७५ सिपाही। बिसेन आत्मसम्मान की रक्षा के अदम्य उत्साह में थे, न्याय और सत्य की उन पर छाया थी, राव बाबू के सिपाही नमक अदा करने आये थे, आत्मायें उनकी जानती थीं कि बिसेनों पर अत्याचार हो रहा है। बिसेनों के हाथ में वे तलवारें थीं जो कमर में बँधी रहती थीं और खुलते ही झनकार के साथ सीधी हो जाती थीं, राव बाबू के सिपाही उन बन्दूकों के सहारे थे जो बारूद की टोपी खाकर कुछ देर गज चलवाती थीं। राव बाबू के ५० सिपाही फाटक पर भी काम आये शेष भयभीत होकर पीछे हट आये। गढ़ के भीतर से शब्द हुआ—"हर हर महादेव! अचलेश्वर की जय!!" फाटक दर्जा दोयम बन्द हो गया।

रावबाबू कि-कर्त्तव्य-विमूढ़ थे, उनका हाथी दूर; मंदिर की ओट में खड़ा था। उन्हें स्वप्न में भी विश्वास न था कि इस प्रकार ४५ बिसेनों द्वारा ३०० सिपाहियों का मान-भंग हो जायगा नहीं तो दो-एक तोपें भी ले आते और पलक मारते ही बिसेनगढ़ ढह जाता। परन्तु—अब क्या हो—उन्हें यही चिंता थी, लाज कैसे बचे, वे साँप-छछूंदर की दशा में पड़ गये। लौटते हैं तो हँसी और अपमान है, लड़ते हैं तो सवा सौ हताश सिपाहियोंसहित स्वयं उन्हें भी जान बचाने की जगह नहीं है, डौंडियाखेरे खबर भेजने में भी लाज!.....। उन्होंने सुलह की झंडियां फहराईं। गढ़ के भीतर से आवाज आई "रावबाबू अब विश्वास के पात्र नहीं हैं, गाय और ब्राह्मण की बांह गहकर अचलेश्वर महादेव की साक्षी" राव बाबू ने वैसा ही किया। बिसेनों ने फाटक खोल दिया।

बिसेनगढ़ के भीतर ही रावबाबू और उनके सिपाहियों का आतिथ्य होने लगा, जलपान हुआ, हुक्का आया। भोजन के लिये तंदूर चढ़ गये। अब शाम हो चली थी, १०-५ बिसेन दिशा-जंगल को निकल गये थे शेष राव बाबू के सम्मान में व्यस्त थे अचानक रावबाबू के संकेत पर सभी बिसेनों की मुश्कें बांध ली गईं और तुरन्त बेशर्म सिपाहियों की कमीनी तलवार बेगुनाह बिसेनों की गरदनों पर चल गई! कायरता की पराकाष्ठा!! गो-ब्राह्मण और महादेव की साक्षी का अनर्थमय भीषण दृष्टान्त!!!

* * *

जुलाई सन् १८५७ ई०

बाबू रामबख्श अँगरेजों की हिरासत में हैं; उनकी मुश्कें बँधी हुई हैं, कुछ ही घड़ियों में उन्हें फांसी दी जायेगी—उनके स्मृति-पटल पर छाया हर एक रहे हैं—"बैसवारा खंड के चित्र उठ गांव में, हर एक खेत में वीर क्षत्रियों ने अँगरेजों के विरुद्ध लोहा लिया; तिल तिल जमीन रक्त-रंजित हुई, किसकी बदौलत? जानता हूँ पर निश्चय नहीं कर पाता। सभी तालुकों ने अनुरोध किया—लखनऊ का पतन हो हैं, राव बाबू अपनी ही सरदारी में बैसवारे के विद्रोहियों को संगठित कर परन्तु मेरे सलाहकारों ने—नहीं, मुझे सर्वनाश के गर्त में गिरानेके मेरी अकेले की ही शक्ति को अजेय कर नानाराव की सहायता का आश्वासन दिया, परन्तु यह बातें पहले से होती रही हैं....वफादार प्यारे भीषम! महात्मा रूपन ....." रावबाबू की आंखों में जमुना बह रही है। "बेल, टुमको अपणा काम के लिये सदमा अँगरेज संतरी ने कहा। "हां, काम के लिये ही सदमा है, संतरी तुम नहीं जानते कि वह अपना कौन सा है" राव बाबू दृढ़ता से रहे थे। स्मृति-पटल पर फिर उठने लगे—"कुवँरसिंह, शंकरबख्श शिवरतनसिंह, जगमोहनसिंह जैसे जूझे, हमारे सिपाही हताश हुए में योग्य सरदार न था, बहुत से रूपन! भीषम! उस समय तुम जरूरत थी, मैं भागा, जंगल में पकड़ने के लिये १९ अँगरेज और सिख आये थे, चेचई भगा उस तुम होते तो क्या राव बाबू अँगरेज बन्दी हो जाते? असम्भव!"

फांसी का समय

"आपको कुछ कहना है, साहब?" फंदे के पास खड़े हुए ने कहा।

"हां" राव बाबू कह रहे थे—"भीषम की आत्माशांति पावे, वे महान् बार बार उन्होंने सचेत किया मैंने.....विश्वासघात! गो-ब्राह्मण बांह, महादेव की साख! तभी तो, के ही सामने, मंदिर में ही फांसी... दो....ठी... क....!"

* *

जो दस-पांच बिसेन दिशा-जंगल लिये बाहर निकल गये थे उनके कई वंशधर प्रथम जर्मन युद्ध में शौर्य दिखा लड़े और दो एक आज भी उसी में पेंशन पा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंग-मंच

सिनेमा-शिक्षा का एक साधन है फिल्म-निर्माताओं को अब भी सावधान हो जाना चाहिए

लेखक, श्री शि० भा० दीक्षित

अमुक ग्रंथ में क्या है? पुस्तक का अमुक अंश अपने पृष्ठों में कौन सा कथानक छिपाकर हुए हैं—बिना पढ़े या सुने कोई कैसे जान? शिक्षित व्यक्ति के पास उन पुस्तकों के खरीदने को पैसा कहाँ है, उन अनपढ़ों को उन्हें पढ़ने की फुर्सत और पढ़कर सुनानेवाला व्यक्ति कहाँ है। इसके बिना हमारी पहुँच उन ग्रंथों से दूर है बहुत दूर। उन ग्रंथों में ज्ञान का, विज्ञान का कौन सा भंडार छिपा पड़ा है, उसे खोजने म हम सर्वथा असमर्थ हैं।

पर नाटक और सिनेमा एक ऐसे साधन हैं जिनके जरिये एक अपढ़ व्यक्ति भी लाभ उठा सकता है। बहुत-सी धार्मिक कथायें, जो केवल धार्मिक ग्रंथों में ही सीमित थीं, नाटक और फिल्मों द्वारा सजीव बनकर स्टेज और स्क्रीन पर उतर आई हैं, अनेक उपन्यास और ऐतिहासिक तथा कल्पित कहानियां भी कभी पुस्तकों में ही कैद थीं आज एक नया कलेवर लेकर स्क्रीन पर थिरक उठी हैं।

नाटक कम्पनियों में पारसी थिएट्रिकल कम्पनी, न्यू अलफ्रेड कम्पनी, शिवराज संगीत नाटक-मंडली, आर्यसुबोध नाटक-मंडल, व रंग बोधेच्छु आदि कम्पनियों का नाम आदर के साथ लिये जा सकते हैं। शिवराज संगीत नाटक-मंडली का 'गोरक्षा' खेल तो आज, लगभग २५-२५ वर्षों के बाद भी दर्शकों की आंखों के सामने झूल-सा रहा है। रंग-बोधेच्छु का 'एकच प्याला' (मराठी) और आर्यसुबोध का 'हेमलेट' याने खूनी-खंजर, और 'चक्रव्यूह' ऐसे अभिनय थे, जो सर्वोत्कृष्ट कहे जा सकते हैं।

नाटकों के बाद धीरे-धीरे फिल्मी-नाटक कायम हुआ। उछल-कूद, मार-पीट, पहाड़, समुद्र-जंगल आदि के सच्चे दृश्यों ने दर्शकों को अपनी ओर इतना आकर्षित कर लिया कि नाटक कम्पनियों का कायम रखना कठिन-सा हो गया। अनेक नाटक कम्पनियां टूट गईं। मिस्टर सोहराब मोदी के प्रयत्न से आर्यसुबोध नाटकमंडली, मिनरवा मूवीटोन में परिणत हो गई जिसने 'पुकार' जैसी अनूठी फिल्मों का निर्माण किया।

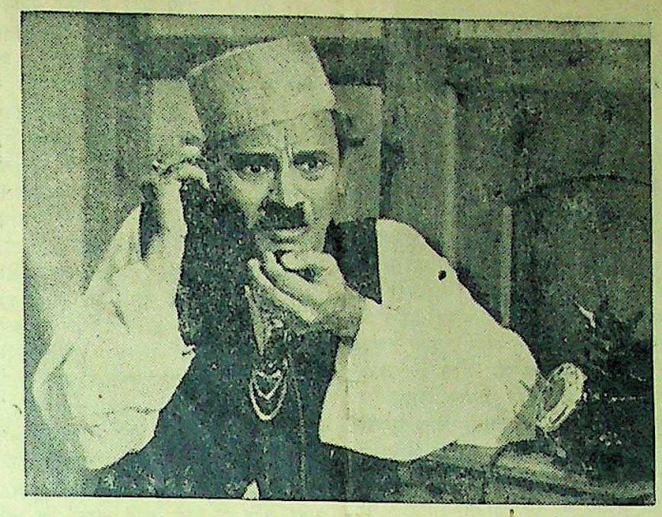

'संगम' फिल्म में आश्चर्य के अभिनय का एक दृश्य।

फिल्मों ने प्रगति की ओर, दर्शकों का पूर्ण सहयोग पाकर, बड़ी शीघ्रता से उन्होंने कदम बढ़ाया। मूक (Silence) सिनेमा के बाद 'टाकी' ने शायद १९३१ या ३२ में भारतीय स्क्रीन पर पदार्पण किया। सबसे पहले जिस फिल्म का निर्माण हुआ वह थी आलमआरा—एक उर्दू कथानक, जिसे इंपीरियल फिल्म कम्पनी ने तैयार किया था। आलमआरा को इसके पूर्व स्टेज पर भी देखा जा चुका था पर स्क्रीन पर उसमें सजीवता और दिलचस्पी अधिक मात्रा में पाई गई थी।

ग्रंथों के पढ़ने से केवल आंखों द्वारा मन को ही सन्तोष मिलता है और उन्हें सुनने से कानों को। पर बोलती फिल्मों ने दोनों को सन्तोष दिया, आनन्द दिया, प्रसन्नता दी और जानकारी दी। ग्रंथों और पुस्तकों की अपेक्षा फिल्मी चित्रों द्वारा दर्शकों के मन पर अधिक असर पड़ा है। गंदी किताबों से तो अशिक्षित और अपढ़ व्यक्ति बच सके हैं पर गंदी फिल्मों ने उन्हें भी पतन का मुह दिखाया है इस कारण देश की शिक्षा का बहुत कुछ भार फिल्म-निर्माताओं पर भी आ पड़ा है। शिक्षकों का, लेखकों का या पत्रकारों का सच्चरित्र, निश्छल आदर्श जीवन व संयमी होना जितना जरूरी है उतना ही फिल्म-निर्माताओं और नट-नटियों का होना भी आवश्यक है। सच्चरित्रता और संयम तथा आदर्श की जिस गहराई तक ये लोग पहुँचेंगे उतनी ही फिल्म अश्लीलता और शृंगार से परे बनेगी, उतनी ही उसमें सुरुचि होगी, शिक्षा होगी और होगा ज्ञान का भंडार।

पर बहुधा देखा गया है कि आजकल जिन फिल्मों का निर्माण किया जा रहा है, वे, कुछ को छोड़, अत्यन्त भद्दी, अश्लील और सुरुचि से दूर, बहुत दूर होती हैं। वे कभी भी संभ्रान्त परिवार के देखने योग्य नहीं होतीं। उनसे कोई शिक्षा, कोई पाठ या कोई सीख नहीं मिलती, बल्कि इन बेहयाई से भरी फिल्मों ने अनेक युवकों को, अनेक युवतियों को पथ-भ्रष्ट कर दिया है। फिल्मों में दिखाई देनेवाली तड़क-भड़क, शान-शौक और नग्न प्रदर्शन ने नामसझ युवक-युवतियों की रुचि को इतना भड़का-सा दिया कि वे इस धन्धे में घुसने के लिए पागल-से रहते हैं। यह हम नहीं कहते कि फिल्मी धंधा खराब है और इसमें प्रवेश करना अप्रशंसास्पद है। पर हम यह तो कह सकते हैं और दृढ़ता से कह सकते हैं कि इसे फिल्म-निर्माताओं ने चन्द चांदी के, और अब तो कागज के, चमकते टुकड़ों की घृणास्पद लालच के कारण जलील धंधे में शुमार करा दिया है। अधिक धन कमाने की महत्त्वाकांक्षा और लालच में आकर वे बहुधा फिल्मों में आदि से अन्त तक नग्नता का खासा-सा खड़ा कर देते हैं! उन्होंने कभी इस बात की परवाह नहीं की कि इन भयंकर फिल्मों से, जब ये फिल्में अपनी नग्नता का प्रदर्शन सफेद स्क्रीन पर करेंगी तो कौन-सा खौफनाक असर अपनी सन्तानों के भोले-भाले दिलों पर पड़ेगा।

ये फिल्मनिर्माता सोचें, समझें और अपने देश के भावी कर्णधार—अपनी सन्तान को पतन के गढ में गिरने से बचायें तो ही फिल्मी धंधा शिक्षा का साधन और इस कारण स्वागत की चीज हो सकता है।

साबुन संचय करनेवाले को, साबुन को कहीं भी देख पाने पर, स्वगामी प्रतिकार यही होता है कि जितना भी साबुन मिल सके संचय किया जाये।

परन्तु आपको केवल उतना साबुन मोल लेना चाहिए, जितना कि आपकी आवश्यकता को पूरा कर सके। इस प्रकार आप एक अच्छे नागरिक का कर्त्तव्य निबाह लेंगे।

हमाम और ५०१ साबुन

टी टा टा आइल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

"आकर्षण-शक्ति तथा सर्वार्थ—सिद्धि !"

(केवल सदस्यों के लिए)

नियम तथा "उन्नति के पथ पर" हवाई डाक से (By Air Mail) केवल छः पैसे के टिकट भेजकर मुफ्त मँगाइये।

अरविन्द—कला-मन्दिर, मंडी जैतसर (बीकानेर स्टेट)

मेरे श्वास में दुर्गन्धि ?

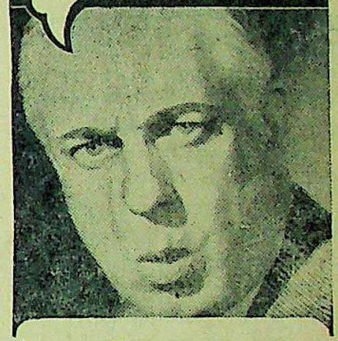

नवयुवकों की ७६% संख्या से दुर्गन्धि आती है !

वैज्ञानिक अनुभवों से यह निस्सन्देह सिद्ध हो गया है कि कोलगेट टूथ पाउडर को १० घटनाओं में से ७ घटनाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि जबानी दुर्गन्धि शीघ्र ही दूर हो गई।

धन की बचत—दूसरी दवाओं की अपेक्षा कोलगेट एक बड़े डिब्बे में दाँत साफ करने की ३० मात्रा अधिक रहती है, उससे बड़े डिब्बे में ४६ मात्रा अधिक रहती है। परन्तु दाम वही है।

धूम्र-पान करनेवाले—कोलगेट दाँत का मंजन तम्बाकू की दुर्गन्धि और मैल को दूर करता है।

आज ही कोलगेट खरीद लीजिए।

कोलगेट टूथ पाउडर

कोलगेट आज ही खरीदिए !

CLEANS BREATH AS IT CLEANS TEETH

भारी लूट ! आज ही मँगावें—अवसर मत चूकिये

३॥) में ६ नई पुस्तकें

पति-पत्नी जीवन (सचित्र)—पति-पत्नी के पढ़ने योग्य दाम्पत्य जीवन को सुखी, सन्तुष्ट बनानेवाली अपूर्व पुस्तक १।), खजाना रोजगार—अनेकों प्रकार के हुनर सीख धन पैदा कीजिये १), हुसन पैरिस—केवल विवाहितों के देखने योग्य १२ फोटो १॥), इँगलिश टीचर—घर बैठे अँगरेजी लिखना, पढ़ना, बोलना सीखो १), वशीकरण विद्या—वशीकरण मंत्रों और जादू के खेलों का संग्रह १), हारमोनियम टीचर—हारमोनियम बजाना और गान-विद्या सीखो १॥)।

६ पुस्तकों के सेट का मूल्य केवल ३॥) पोस्टेज पैकिंग ॥) अलग।

ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (जी० ५०७) अलीगढ़ सिटी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

महात्मा गांधी और हिन्दी

१७ अक्टूबर के हिन्दोस्तान टाइम्स में प्रकाशित गांधी जी का प्रार्थना के बाद दिया हुआ भाषण जो हिन्दी के सम्बन्ध में है मैंने पढ़ा। गांधी जी को यू० पी० सरकार की आज्ञा से जिसमें यह कहा गया था कि हिन्दी और देवनागरी ही प्रान्त की सरकारी भाषा और लिपि होगी, चोट पहुँची है। जिसका कारण उनके अनुसार यह है कि भारतीय संघ के मुसलिम निवासियों के एक चौथाई जनता यू० पी० में बसी है। बहुत से हिन्दू जैसे सर तेज उर्दू के विद्वान् हैं। आपका कहना है कि क्या वे उर्दू लिपि को भूल जावें? वही आप उत्तर का निर्देश करते हुए लिखते हैं कि उचित तो यह था कि दोनों हिन्दी और उर्दू लिपियां सरकारी व्यवहार में आनी चाहिए। आगे आप कहते हैं कि इस प्रकार हिन्दोस्तानी भाषा प्रान्त की भाषा हो जावेगी। जो निवासियों तथा भाषा के भण्डार को भरेगी। इसमें किसी को कोई दोष नहीं ढूंढ़ना चाहिए। इत्यादि इत्यादि।

इसमें सन्देह नहीं कि गांधी जी हिन्दोस्तानी के पुराने समर्थक हैं। पर वे यह अपनी सम्मति केवल राजनैतिक दृष्टिकोण से ही दे रहे हैं। हिन्दोस्तानी इस प्रान्त और देश की भाषा उनके व्यक्तित्व के प्रभाव से यदि हो जावे तो क्या वे समझते हैं कि हिन्दोस्तानी हमारी उन आवश्यकताओं की जो हमें साहित्यिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा बौद्धिक क्षेत्र के गम्भीर वातावरण में पड़ेगी पूरी कर सकेगी? क्या वे हमें यह बतलाने का कष्ट करेंगे कि हिन्दोस्तानी की कोई ऐतिहासिक परम्परा है? क्या उसका हमारे जातीय जीवन से अविच्छिन्न सम्बन्ध है? क्या उसका अन्य प्रान्तों म प्रचलित प्रान्तीय भाषाओं से साम्य है? किसी भी भाषा को राष्ट्रीय पद पर प्राप्त करने के लिए उपर्युक्त बातें अवश्यम्भावी ही नहीं अनिवार्य हैं। यदि यह क्षमता भाषा में नहीं है तो भाषा और भाव के बीच गहरी खाई बन जावेगी। और जातीय जीवन तथा साहित्य का अन्योन्याश्रय-सम्बन्ध टूट जायगा, जिसका फल यह होगा कि दोनों के उन्नति का मार्ग अवरुद्ध हो जायगा। यदि गांधी जी निष्पक्ष होकर विचारें तो वे निश्चय ही इस धारणा पर पहुँचेंगे कि हिन्दोस्तानी इन बातों के लिए सर्वथा अयोग्य है। इस कसौटी में केवल हिन्दी और देवनागरी लिपि ही आती है। हिन्दी भाषा की ऐतिहासिक परम्परा है, देश के जीवन की घनिष्ठता उसके प्रत्येक अंग से स्पष्ट होती है। भारतीय परिवार की गुजराती, मराठी और बंगला भाषाओं से उसका समुचित साम्य है। फिर क्यों हिन्दी के प्रति वे इतने पक्षपातपूर्ण हैं। मेरा कहना तो यह हो कि हिन्दोस्तानी क्या यह गुन उनको उर्दू में भी नहीं मिलेंगे। हिन्दी ने अपना जन्म बाजार में नहीं लिया है और न उसे किसी दरबारी ने अमीर उमरा की तफरीह के लिये गढ़ा है। वह तो उस पावन सनातन और सौम्य स्रोत से प्रवाहित हुई है जिसका उद्गम संस्कृत, पुनः प्राकृत, पुनः अपभ्रंश से हुआ है। इस आधुनिक स्वरूप में सूर, तुलसी और रहीम की भाषा है। जिसमें हमारी शताब्दियों की भारतीयता का व्यक्तित्व अक्षुण्य है और वह भाव संचित हैं जिससे हम अपनी सांस्कृतिक निधि कह सकते हैं।

किसी भी देश की राष्ट्र-भाषा ऐसी होनी चाहिए जो प्रत्येक देशवासी के लिये सरल तथा उसके बौद्धिक विकास के लिये उचित हो। "साम्य" भी भाषा का मुख्य अंग होना चाहिए। सरकारी व्यवहारों में आनेवाली भाषा को साम्य की आवश्यकता अनिवार्य रूप से है। अँग्रजी भाषा को देश की भाषा बनाने में ब्रिटिश सरकार ने जो मुख्य उद्देश्य रक्खा था वह यही था कि हर चीज हर जगह आसान हो जावे और प्रत्येक स्थान पर साम्य रहे साथ ही शासनोचित एकता का अभाव कहीं न रहे। अँग्रेजी भाषा में यह गुण हैं जिसका कारण है कि वह काफी वैज्ञानिक और सदियों की राजनैतिक तथा कूटनीति की भाषा रही है। यही कारण है कि आज वह संसार की एक प्रमुख भाषा है। अन्तर्राष्ट्रीय गुत्थियों को सुलझाने तथा अन्य राष्ट्रों से अपना सम्बन्ध स्थापित रखने के लिये हमें अँग्रेजी भाषा अपनाना ही पड़ेगा।

पर जब अब अँग्रेज देश के शासक नहीं रहे और देश की बागडोर हम लोगों को मिली है तो यह अवश्यम्भावी है कि हमें अँग्रेजी के स्थान पर ऐसी भाषा रखनी चाहिए कि जो उसका स्थान ग्रहण कर सके और जिसमें शासन के कार्य पूर्णरूप से चल सकें। आज देश में जितनी प्रचलित प्रान्तीय भाषाएँ हैं उनकी समीक्षा यदि की जाय और यह निर्णय किया जाए कि कौन सी भाषा देश की राष्ट्र-भाषा के पद के योग्य है तो निर्विवाद है कि हिन्दी ही ऐसी भाषा है जो राष्ट्र-भाषा बनाई जा सकती है। उसे राजनैतिक भाषा बनाने के लिये सन्देह नहीं, कुछ समय लगेगा पर वह ऐसी बात है जो प्रत्येक विचारशील मनुष्य को मान लेनी चाहिए। हमारे देश के प्रान्तों में प्रायः प्रान्तीय भाषायें प्रचलित हैं पर उनके प्रचलित होते हुए भी हिन्दी भी उन प्रान्तों में ऐसी भाषा है जो अपना प्रभाव समुचित रूप से वहां के निवासियों पर रखती है। आज ही नहीं हिन्दी पूर्वकाल में भी बहुत दूर तक व्यवहृत थी। वह सारे उत्तर भारत की राष्ट्र-भाषा थी क्योंकि "मैथिल कवि विद्यापति ठाकुर" ने अपने पदों को हिन्दी से मिलती-जुलती भाषा में लिखने के अतिरिक्त कुछ कविताएँ शुद्ध हिन्दी में भी रची हैं। बंग भाषा के कवि भरतचन्द्र राय ने भी हिन्दी में कविताएँ लिखी हैं। गुजराती के पुराने नाटकों में पहले पत्रों का कथोपकथन ब्रज-भाषा में कराया जाता था। अब भी गुजरात में ब्रज-भाषा काफी व्यवहार में देखी जाती है। सूर और तुलसी के भक्तमय उद्गार जो काव्य का आश्रय लेकर पदों में ढले अपना प्रवाह बहुत दूर तक मनुष्यों के क्षुधित कण्ठों में न जाने कब से उनकी पिपासा पूर्ण करते रहे हैं और आज भी काव्यामृत रसानन्द वे बहा रहे हैं। जम्बू (काश्मीर) में आज भी स्त्रियां वे पद गाती हैं—"सुदामा मंदिर देख डरे" जो हिन्दी के हैं। महाराष्ट्र दरबारों में हिन्दी कवि सम्मान पाते थे। यह सब एसे तर्क हैं जो सिद्ध करते हैं कि हिन्दी में राष्ट्र-भाषा की व्यापकता पूर्ण रूप से व्याप्त है। किसी युग में जैसा शौरसेनी और प्राकृत का व्यापक प्रभाव था वही प्रभाव हिन्दी का है इसका कारण है कि हिन्दी उसी स्रोत से निकली है। उसका व्यापक प्रसार और गौरव मान्य है, इसमें हमें कोई सन्देह या विस्मय नहीं है। उर्दू जिसमें हमें थोड़ा सा साहित्य मिलता है। यह लोकप्रियता, व्यापकता, प्रसार और गौरव कदापि नहीं है फिर हिन्दोस्तानी की क्या? जो केवल राजनैतिक रूपी बरसाती नाले का एक बबूला है वह कैसे उस पद को प्राप्त कर सकती है।

मुझे गांधी जी के वक्तव्य को पढ़कर हिन्दी के अभाग्य पर रोना आता है। मुसलिम युग में जब फारसी तथा उर्दू का बोलबाला था उस समय इस पर विघोर कुठाराघात हुए। यह देश की भाषा होते हुए भी राजाश्रय से ठुकराई गई। मुसलमानों ने इसमें धार्मिकता का विरोध देखा। आज जब गांधी जी स्वयं देश का बटवारा धार्मिक दृष्टिकोण से करा चुके हैं। मुसलिम राष्ट्र पाकिस्तान और हिन्दू राष्ट्र हिन्दुस्तान मानने में गांधी जी ने और उनके व्यक्तित्व से प्रभावित कांग्रेस हाईकमान्ड ने कोई आपत्ति नहीं की और हिन्दुओं के लिए यह राष्ट्र निर्माण हो गया फिर हमारी तुच्छ बुद्धि में यह नहीं आता कि क्यों अब हमारे ऊपर मुसलिम संस्कृति और भाषा का बन्धन लगाया जाता है। मुसलमानी युग में हिन्दुओं ने फारसी अरबी तथा उर्दू पढ़ी। १८३५ ई० से आज तक उर्दू को सरकारी दफ़्तरों में राजनैतिक भाषा का पद मिल रहा है। हमने सब भाषाएँ सीखीं जब मुसलमान चले गए और गौराङ्ग महाप्रभुओं ने हमारे भाग्य का संरक्षण अपने हाथ म लिया और अँगरेजी में हम पर लादी तब अँगरेजी भी हमने पढ़ी। पर जब अब हिन्दुओं का राष्ट्र हिन्दुस्तान बन गया तो हिन्दुओं की भाषा हिन्दी को पढ़ने में तथा राजनैतिक व्यवहार में आने के लिये लोगों को क्या संकोच होना चाहिए? यह मेरी समझ में नहीं आता। हिन्दी पढ़कर मुसलमान हिन्दू नहीं हो सकते। रहीम, रसखान, ताज आदि हिन्दी पढ़कर भी मुसलमान ही रहे। आज सैकड़ों बही-खाता रखनेवाले मुसलमान, पटवारीगीरी करनेवाले मुसलमान धड़ाके से अपने कागज हिन्दी में लिखते हैं पर जब भाषा का प्रश्न आता है तब यह क्यों रोड़े अटकाये जाते हैं।

अब युग बदल गया है। युग की गंगा अपना तीव्र प्रवाह लेकर वह निकली है, जिसकी वेगमयी धारा की उथल-पुथल में कंटकों, कंकड़ों और रोड़ों का अस्तित्व नहीं रहा। हिन्दी एक भारत की वाणी है। वह राष्ट्रभाषा होकर रहेगी। इसमें सन्देह नहीं है। आज यू० पी० सरकार ने उसे सरकारी भाषा माना है और कल भारत का विधान-परिषद् भी उसे यही पद देगा। क्यों? केवल इसीलिए कि वही ऐसी भाषा है जो इस समय अँगरेजी का स्थान समुचित रूपेण ग्रहण कर सकती है। रह गया गांधी जी के व्यक्तित्व और उनके वक्तव्यों के प्रभावों की परख यह जनता स्वयं करेगी। अब जनता को नेताओं की उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी कुछ वर्षों पूर्व थी। इस राजनैतिक उथल-पुथल में साधारण व्यक्ति भी राजनीति में काफी समझने लगा है। हम गांधी जी से यह प्रार्थना करेंगे कि वे भाषा के सम्बन्ध में कहें चाहे जो कुछ पर कांग्रेस हाईकमान्ड से दुराग्रह न करें। अन्यथा किसी उर्दू कवि का कहना सच हो जावेगा कि "इस घर को आग लग गई, घर के चिराग से।" आज हिन्दू, हिन्दुत्व तथा हिन्दू संस्कृति पर घोर संकट है जो हमारे नेताओं के निर्णय का फलस्वरूप है। हमें तो देवनागरी के लिए "आचार्य पं० महाबीरप्रसाद द्विवेदी" की पंक्तियां वेदवाक्य हैं।

माता त्वदीय शुचि संस्कृत देववानी,
वर्णावली तव मनोहररूप रूपखानी।
अत्यन्त शुद्ध लिपि होति सदैव तेरी
थोरे प्रयास तहँ सिद्धि सधै घनेरी।
एतादृशी सरल, सुन्दर, शुद्ध सो
तू नागरी जननि! जानत सर्व को
तौहू तुम्हें चढ़तिजे न जड़त्व
ते काम धेनु तजि आक दुहैं अ
बलखंडी नाका —गोवर्द्धनदास त्रि
बांदा 'साहित्यरत्न

* *

लेखक और शरणार्थी

हमारे देश में साम्प्रदायिक वि की जो अग्नि भड़क उठी है और फलस्वरूप पूर्वी और पश्चिमी प में जो भयानक हत्याकांड हुआ है, हम लेखक व्यथित और चिंतित इन घटनाओं ने हमारा मस्तक के देशों के सामने नीचा किया है, जिस उच्च आदर्शों के लिये हम सद इतिहास में प्रसिद्ध रहे हैं, उनको क्षति पहुँची है। जिस सांस्कृतिक निर्माण का हम स्वप्न देख रहे थे, वह अब दीर्घ काल के लिये स्थगित हो जाय हम अपने देशवासियों को चेतावनी हैं कि इस अशान्ति के पीछे वही प्रति शक्तियां हैं, जिन्होंने आज तक नि स्वाधीनता के आन्दोलन का विरोध था आज की परिस्थिति में यह आव है कि सभी मतभेदों को भूलकर हम राष्ट्री सरकार के हाथ मजबूत करें, ताकि हम देश को सुखी और समृद्ध बनाने आर्थिक और सांस्कृतिक योजनायें वेग से आगे बढ़ाई जा सकें और ह स्वप्न सत्य में परिणत हो सकें।

हम सभी लेखकों से शरणार्थियों मदद करने की अपील करते हैं। यह भारी समस्या आज हमारे देशवासियों सामने है और इसे हल करके ही हम निर्माण के कार्य को फिर से उठा सकें

(ह०) राहुल सांकृत्यायन, उ नाराण तिवारी, महादेवी वर्मा, ब्रजमो गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, इलाचन्द्र जो प्रकाशचन्द्र गुप्त, भारतभूषण अग्रवा नमिचन्द्र जैन, श्रीकृष्णदास, शील, सु द्विवेदी, राजवल्लभ ओझा।

* * *

दीपावली और शरणार्थी

रामलीला महोत्सव समाप्त हो चुका है। इस वक्त राजनैतिक परिस्थिति के कारण फ्रान्टियर व पंजाब के दु हिन्दुओं की सहानुभूति के लिये बहुत स्थानों में रामलीला बन्द कर हिन्दुओं इनके साथ सहानुभूति प्रगट की अब आगे दिवाली महोत्सव निकट जिस पर हिन्दू जनता अपार धन करती है। इस वर्ष उक्त परिस्थि को देखते हुये एक साधारण दीपक कर यह उत्सव मनाया जावे। खर्च बचाकर इन दुःखित पीड़ितों सहायता में खर्च किया जावे।

आशा है मेरी इस प्रार्थना पर कि रामलीला के समय पर जनता ने बचाकर इन पीड़ितों की सहायतार्थ बढ़ाया है। दीवाली उत्सव पर भी बचाकर इनकी सहायता के लिये बढ़ाकर यश और पुण्य के भागी हरिद्वार —चिरंजीलाल शर्मा प्रधान पीड़ित हिन्दू सहायक सभा

फैंसीसिल्कसाड़ी आकर्षक डिज़ाइन
कलापूर्ण ३-४ इंच चौड़ा बार्डर
नं० ७ ८ ९ ५ गज
१८) २३) २८)
२) पेशगी बाकी वी० पी० से
थोक व्यापारियों को खास सुभीता
भारत इन्डस्ट्रीज,
जुही नं० ९ कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'देशदूत' की चित्रावली

देशी तथा विदेशी राष्ट्रों की प्रगति के सामयिक चित्र

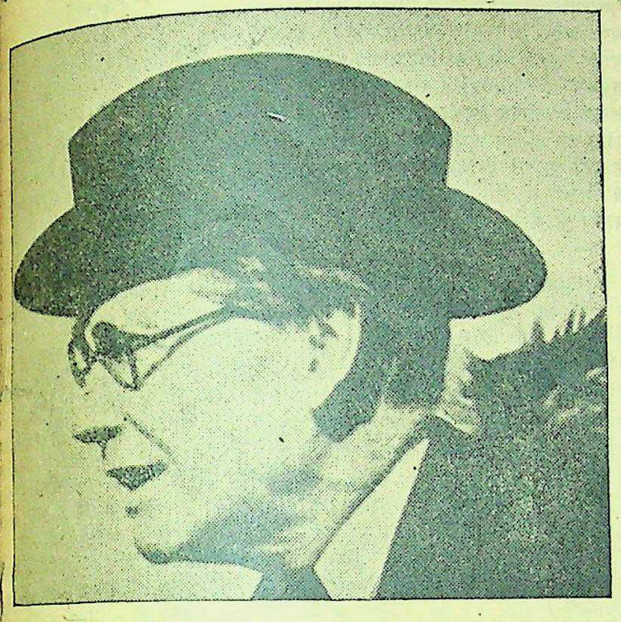

मिस्टर फिलिप नामल-चेकर कामनवेल्थ रिलेशन्स के नये मन्त्री बनाये गये हैं।

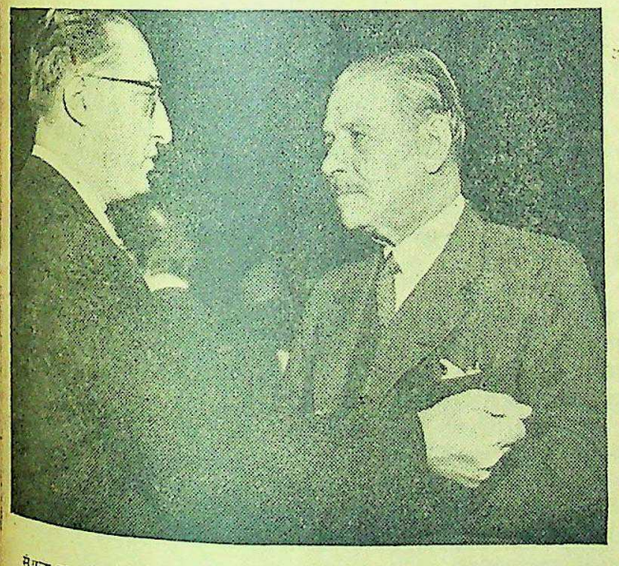

संयुक्त राष्ट्र-संघ में बाल्कन-प्रतिनिधि मण्डल के ग्रीक तथा टर्की के प्रतिनिधि।

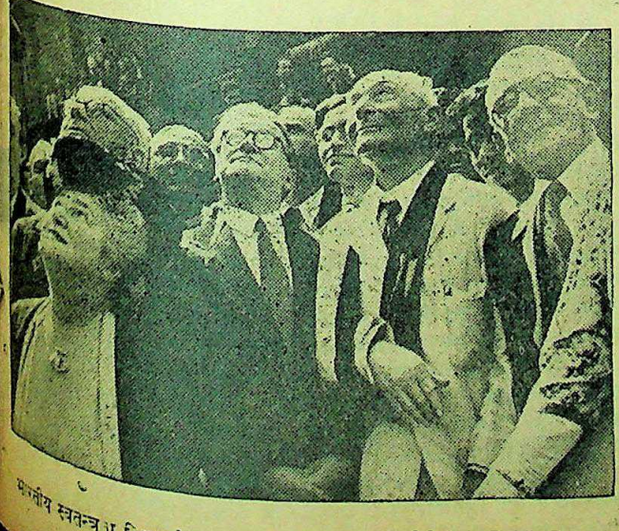

भारतीय स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर लन्दन में राष्ट्रीय ध्वजारोहण का दृश्य।

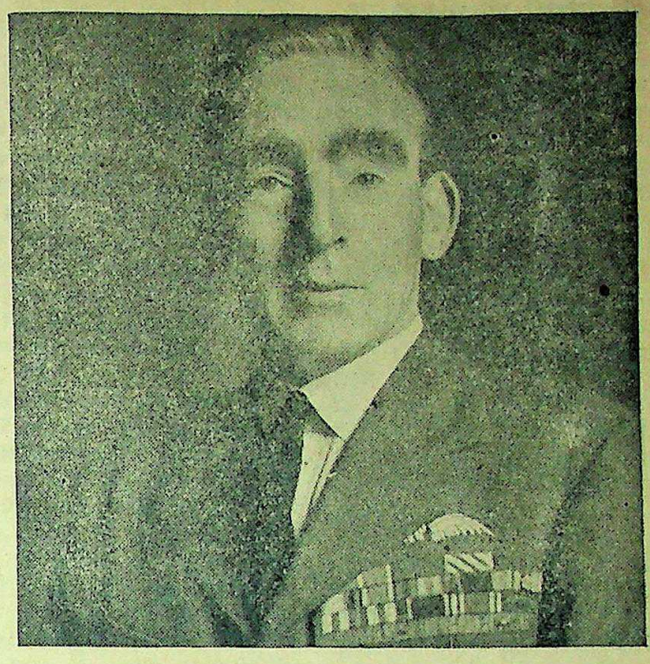

सर थामस एलिमहिस्ट, को भारत-सरकार ने हवाई बेड़े का कमांड सौंपा है। कम से कम देखने में आप बहादुर जान पड़ते हैं।

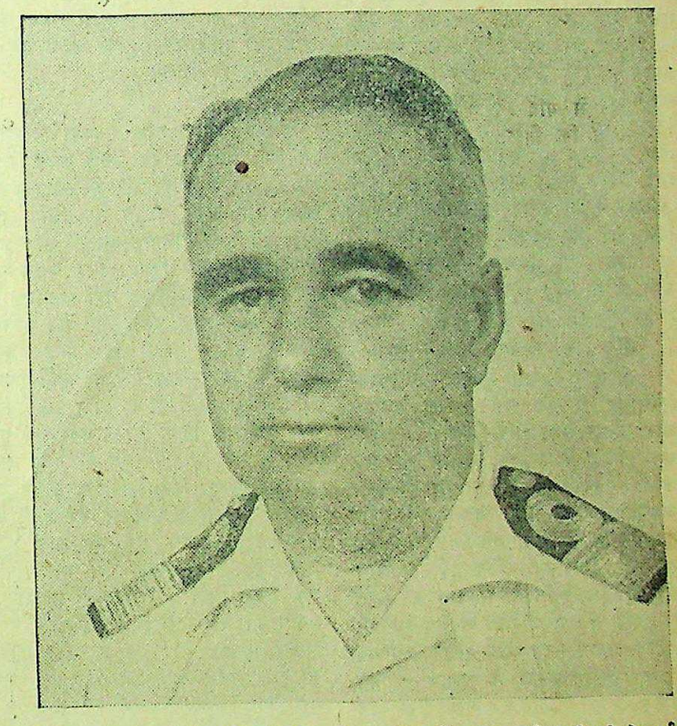

मुस्लिम लीग के पाकिस्तानी उपनिवेश की जल-सेना के प्रमुख अधिकारी श्री जेफार्ड आजकल क्या कर रहे हैं, पता नहीं चल रहा है।

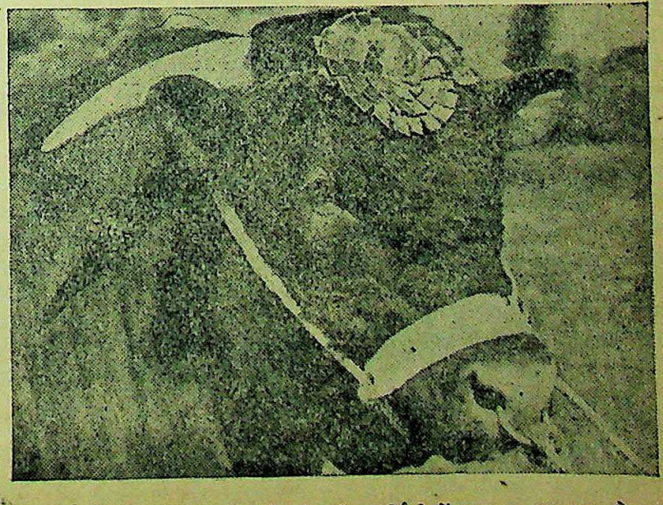

योरोप की दक्षिणी पश्चिमी देशों की कृषि-प्रदर्शिनी में पुरस्कार-प्राप्त एक बैल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहारकेसरी श्री श्रीकृष्णसिंह

(पेज ८ का शेष)

उनकी कीर्त्ति से खूब ही परिचित हो चुके थे। किन्तु, उनकी मूल आस्था का रुझान तिलक जी पर था और वे उम्मीद कर रहे थे कि अगला मुनिश्चित नेतृत्व महाराष्ट्र या बंगाल से आएगा। लेकिन, गांधी जी को देखते ही उनकी सारी श्रद्धा उनकी ओर दौड़ पड़ी। श्री बाबू ने महात्मा गांधी को पहले-पहल बनारस में देखा जब कि वे सेंट्रल हिन्दू-कालिज की सभा में अपना सुविख्यात ऐतिहासिक व्याख्यान दे रहे थे। भाषण सुनते-सुनते उन्हें ऐसा लगा कि भारत की पूर्व-निश्चित मुक्ति की घड़ी आ गई है और गांधी जी ही भारत के मुक्ति-विधाता होंगे। पीछे जब महात्मा जी चम्पारन आए, तब श्री बाबू ने उनके काम में हाथ बँटाने की पूरी चेष्टा की किन्तु, अपने छोटे भाई की असाध्य बीमारी (जिसके कारण अन्त में वे स्वर्गीय होकर रहे) के चलते वे इस कामना में कृतकार्य नहीं हो सके। आध्यात्मिक स्तर पर वे गांधी जी की ओर बड़े वेग से खिंचते जा रहे थे कि इतने ही में गांधी जी ने भारतीय-मंच पर चढ़कर बलिदान के लिए पुकार भेजी। यह १९२० का साल था। भारत की मुक्ति की घड़ी तो नहीं, श्री बाबू की प्रेरणा की नियत घड़ी आ पहुँची। इस समय वे, प्रायः अच्छे वकीलों में गिने जा रहे थे और कानून में अधिक योग्यता प्राप्त करने के लिए उन्होंने एम० एल० की परीक्षा की फीस भी जमा कर दी थी। किन्तु सारी सुविधाओं, समस्त भविष्य और घरवालों की सारी उम्मीदों पर लात मार देने के सिवा और चारा ही क्या था? आरम्भ में ही उनका आन्तरिक अस्तित्व जिस देवी के चरणों पर न्योछावर हो चुका था उसी ने उनके शरीर की भी माँग भेजी थी। क्या हृदय-दान करके शरीर चुराया जा सकता है?

* * *

श्री बाबू आँख मूँदकर असहयोग-आन्दोलन में कूद पड़े। पैदल, टमटम और बैलगाड़ियों पर चलकर उन्होंने मुंगेर जिले के हरएक भूभाग को छान डाला। पूरे जिले में बगावत की आग अद्भुत तेज के साथ जलने लगी और श्री बाबू के नेतृत्व में उस जिले की कांग्रेस इस ठोस रूप में संगठित हुई कि आज तक भी उसकी ईंट अपनी जगह पर बहुत ही दुरुस्त है। मुंगेर जिले ने हिन्दू-मुस्लिम एकता का भी बहुत बड़ा आदर्श उपस्थित किया। डिस्ट्रिक्टबोर्ड के चुनाव में जब कांग्रेस बहुमत में आई तब लोगों ने श्री बाबू से आग्रहपूर्ण अनुरोध किया कि आप बोर्ड के चेयरमैन हो जाइए। किन्तु, उन्होंने अपने हितेच्छु परामर्शदाताओं को कड़ाई के साथ डांट दिया तथा शाहजुबैर साहब को चेयरमैन बनाकर खुद उनके वाइस चेयरमैन हो गये। जब तक शाह साहब जीवित रहे, मुंगेर डिस्ट्रिक्टबोर्ड की चेयरमैनी उनके लिए सुरक्षित रही और श्री बाबू उनके अधीन रहकर आनन्द से काम करते रहे। इसी प्रकार की निःस्वार्थ सेवा और निरभिमानिता के कारण वे जिले के अप्रतिभ कर्णधार बन गये और उनकी राय की जरूरत केवल राजनीति तक ही सीमित नहीं रही, वरन् शादी-विवाह और खेत-खलिहान के सभी छोटे-बड़े मामलों में भी सारी जनता उन्हें एक स्वर से मध्यस्थ मानने लगी।

* * *

श्री बाबू का मुंगेर जिले पर जैसा अतुलनीय आधिपत्य रहा वैसा आधिपत्य किसी भी नेता को विरले ही मिला करता है। शायद, यह सुनकर लोगों को घोर आश्चर्य होगा कि डिस्ट्रिक्टबोर्ड अथवा प्रान्तीय या केन्द्रीय असेम्बलियों के लिए उम्मीदवारी के सिलसिले में श्री बाबू कभी भी अपने चुनाव-क्षेत्र में नहीं गये, न तो किसी को चिट्ठी लिखी और न कभी जाकर किसी से वोट मांगा। प्रान्त में जब जब चुनाव होता है तब तब वे अपने चुनाव-क्षेत्र से दूर रहकर दूसरों के चुनाव-क्षेत्रों में काम किया करते हैं। और उनके विरोधी नहीं रहे हों, ऐसी बात नहीं है। सन् १९३७ ई० में श्री नवद्वीप घोष (घोष जी ग्वाले हैं और श्री बाबू का चुनाव-क्षेत्र गोप-भाइयों का प्रधान गढ़ है) ने उनका विरोध किया था और जात के नाम पर भीषण आन्दोलन शुरू करके उन्होंने एक विकट परिस्थिति पैदा कर दी थी। पिछले चुनाव में भी उनके विरोधी कामरेड श्री कार्यानन्द (कम्युनिस्ट) थे जो मुंगेर जिले के तपे-तपाये कर्मठ कार्य-कर्त्ता हैं और जिनकी पीठ पर हिन्दुस्तान भर की कम्युनिस्ट शक्तियां केन्द्रित कर दी गई थीं। लोगों ने बहुत चाहा कि श्री बाबू अपने चुनाव-क्षेत्र में दो-चार दिन भी घूम जायँ। किन्तु उन्होंने किसी की एक नहीं सुनी और हस्ब-मामूल कहते ही रहे कि "मैं किसी से अपनी सिफारिश करने नहीं जाऊँगा। जनता मुझे जानती है और अगर वह आज मुझे छोड़कर किसी और को अपना प्रतिनिधि चुनना चाहती है तो अपनी इच्छा को पूर्ण करने का उसे पूरा अधिकार है।" यह है एक निःस्वार्थ देश-सेवक की अकड़; यह है त्याग और सेवा का अभिमान जिसका जोड़ा देश में ढूंढने से ही मिलेगा।

* * *

प्रान्त की जनता उनकी सेवा-वृत्ति से ऐसी मुग्ध हुई कि उसने उनके पहले से ही छोटे नाम को और भी छोटा करके उन्हें "श्री बाबू" कहना शुरू किया और बाद को उन्हें "बिहार-केसरी" की पदवी से विभूषित कर दिया। सिंह जंगल का राजा केवल इसीलिए नहीं कहलाता है कि उसके हुंकार प्रबल होते हैं। बल्कि, इसलिए भी कि उसमें चरित्र की विशेषता होती है। बिहार-केसरी ने भी अपने हुंकार और चरित्र दोनों ही के द्वारा इस पदवी को चरितार्थ किया है। राजनीति में पड़ जाने के बाद उन्होंने स्वयं ही कष्ट नहीं उठाया, किन्तु, अर्जन नहीं करने से जो विपत्ति नेताओं के परिवार पर आती है, वह उनके परिवार पर भी आई और प्रायः अत्यन्त कठोर रूप में आई। यह एक ऐसी विपत्ति है जिससे महाराणा-प्रताप की भी छाती हिल गई थी। फिर निर्धन, बेकार और भावुक श्रीकृष्णसिंह की इस समय क्या अवस्था हुई होगी, यह सिर्फ अनुमान करने की चीज है। इतना ही पर्याप्त समझिये कि अगर बाबू महेशप्रसादसिंह ने इस हिलती दीवार को आगे बढ़कर नहीं थामा होता तो आज दशा ही कुछ और होती। इस दुरवस्था में महेश बाबू ने मित्रता का सच्चा धर्म निभाया और श्री बाबू की पत्नी और बच्चों को माउर (मुंगेर) से उठाकर अपने घर (मुजफ्फरपुर) ले गये। प्रायः १९२६ से कोई दस वर्षों तक महेश बाबू का घर श्री बाबू के परिवार के लिए अपना घर रहा। महेश बाबू ने श्री बाबू को परिवार की चिन्ता से मुक्त रखा और उनके सम्मानपूर्वक राजनैतिक जीवन व्यतीत करने के लिए भी सुविधाएँ पैदा करते रहे। मैत्री का यह उदाहरण भी अपने ढंग का अनुपम है। महेश बाबू बिहार में स्वराज्य की नींव की ईंट हुए; और इसलिए वे आनेवाली सन्तानों के द्वारा आदर के साथ याद किये जायेंगे।

* * *

बिहार-केसरी में सिंह की सी ही साहसिकता और निर्भीकता भरी हुई है। भाई की ओर से [illegible]

(पेज ७ का शेष)

को दूर करना (न्यायपूर्ण सीमा-निर्धारण के द्वारा) तथा एक जाति की उन्नति की सम्भावना को दूसरी जाति को दिये गये उन्नति के अवसर और उसके साथ किये गय सहयोग पर आधारित होने का विश्वास दिला, अधिकारों की समानता

पुरस्कार मिला उसे उन्होंने हर्ष के साथ स्वीकार किया और आनन्द के साथ झेला। सब मिलाकर कारागार में उन्होंने कोई आठ वर्ष व्यतीत किए और जेल से जब भी वे बाहर रहे, सरकार के लिए भीषण आतंक बनकर रहे। अँगरेजों के ताव को बर्दाश्त करना जैसे उनके स्वभाव में ही नहीं रहा हो। देश के अँगरेज अफसर और गवर्नर कांग्रेसी हुकूमत में बिहार के प्रधान मंत्री से जितना घबराते थे उतना शायद अन्य प्रान्तों के मंत्रियों से नहीं।

* * *

वीरता का यह हाल है कि १९३० के नमक-सत्याग्रह में गढ़पुरा (बेगूसराय) में उन्होंने एक भीषण दृश्य ही उपस्थित कर दिया। श्री बाबू का स्वास्थ्य उन दिनों कुछ गिरा हुआ था और पूज्य राजेन्द्र बाबू नहीं चाहते थे कि वे सत्याग्रह का नेतृत्व स्वीकार करें। किन्तु श्री बाबू ने गांधी जी से प्रेरणा ली। जब देश का सबसे बड़ा नेता आगे जा रहा था, तब भला श्री बाबू को क्या अधिकार था कि रोग से डरकर पीछे रह जाते? वे जत्था लेकर पैदल ही बेगूसराय से गढ़पुरा की ओर चल पड़े। बीस-बाईस मील का सफर पूरा करते-करते उनके पैरों में झलके निकल आये। नियत समय पर कड़ाह चूल्हे पर चढ़ाया गया और नमक बनाने का काम शुरू हुआ। किन्तु, अभी पानी जलकर आधे पर ही आया था कि पुलिस आ गई और कड़ाह को चूल्हे पर से उतारने लगी। उसी दिन अखबार में गांधी जी का हुक्म छपा था कि 'मुट्ठी टूट जाय, पर खुले नहीं।' श्री बाबू जरा देर कि-कर्त्तव्य-विमूढ़-से दीखे। किन्तु, दूसरे ही क्षण उन्होंने जलते हुए कड़ाह की दोनों मूठें अपने हाथों से पकड़ लीं और सच्चे सत्याग्रही की भांति खौलते हुए पानी पर अपनी छाती रोप दी। जनता में एक कुहराम मच गया। श्री बाबू के हाथ और छाती में फोड़े निकल आये। लोग रोने और चिल्लाने लगे किन्तु, किसी भी तरफ से एक तिनका भी नहीं बढ़ा। क्योंकि बिहार-केसरी का हुक्म था कि "मेरी लाश भी गिर जाय तब भी तुम शान्त रहो।" उस दिन पुलिसवालों ने श्री बाबू को बड़ी बेरहमी से घसीटकर चूल्हे से अलग ले जाकर गिरफ्तार किया। गढ़पुरा के लोगों के सामने अँगरेजों का जुल्म आशकार हो गया और उन्होंने शाप दिया कि इस नादिरशाही का नाश अवश्य होगा।

श्री बाबू ने त्याग-तपस्या, सचाई, निर्भीकता, कष्टसहिष्णुता और साहसिकता की बड़ी-बड़ी परीक्षाएँ दी हैं और बराबर कामयाब उतरे हैं। कोई तीस वर्षों से उनका सिंहनाद इस प्रान्त के कोने-कोने गूंजता रहा है। स्वाधीनता के संग्राम में बिहार की जनता ने जो मोर्चे की अगली पंक्ति अख्तियार की उसमें श्री बाबू के समान निर्भीक नेताओं की प्रेरणा ही सबसे बड़ा कारण रही है। उन्होंने प्रान्त को जगाया, उसे युद्ध की ओर उन्मुख किया और स्वयं आदर्श उपस्थित करके जनता को निर्भीकता की राह दिखलाई। आज प्रान्त उनकी हीरक-जयन्ती बनाने में जो इतना उत्साह दिखा रहा है, वह एक योग्य पुरुष का योग्य सत्कार है। हम भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि वे श्री बाबू को स्वास्थ्य और दीर्घायु प्रदान करें जिससे स्वतन्त्र भारत के निर्माण में उनकी प्रतिभा [illegible]

के ठोस सिद्धान्तों के आधार पर [illegible] जातियों के आपस के सहयोग की [illegible] से अधिक सम्भावना उत्पन्न कर[illegible]

* *

ऊपर संयुक्त राष्ट्र-संघ की [illegible] फिलिस्तीन समिति के अल्पमत [illegible] बहुमत की योजनाओं का परिचय [illegible] गया है, हम दोनों के तुलनात्मक अ[illegible] से इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि [illegible] के बहुमत ने फिलिस्तीन समस्या [illegible] हल के रूप में जो सुझाव उपस्थित [illegible] हैं उनसे न तो फिलिस्तीन को स्व[illegible] ही मिल सकती है और न उनसे अर[illegible] यहूदी जातियों की किसी प्रकार [illegible] उन्नति ही सम्भव है; इन सुझावों [illegible] फिलिस्तीन और उसके निवासियों [illegible] हित की दृष्टि में रखकर नहीं उपस्थि[illegible] किया गया है, बल्कि उनकी आड़ में [illegible] गहरी साम्राज्यवादी साजिश काम [illegible] रही है। बहुमत के द्वारा उपस्थित [illegible] गई इस विभाजन योजना से एक अँगरे[illegible] अमरीकी नियंत्रण से मुक्त और अरब [illegible] यहूदियों को समान अधिकार देने [illegible] स्वतन्त्र फिलिस्तीन का उदय असम्भ[illegible] है, नितान्त असम्भव; उल्टे, इस [illegible] योजना के द्वारा, खूब सोच-विचार क[illegible] तैयार की गई इस साजिश के द्वारा, अरब [illegible] और यहूदियों का पारस्परिक वैमनस्य [illegible] बढ़ता ही जायगा और इस प्रका[illegible] साम्राज्यवादियों को फिलिस्तीन [illegible] अपना नियंत्रण रखने का अवसर अधिक [illegible] अधिक सुलभ होता जायगा;, अरब व यहू[illegible] राज्य केवल दो वैधानिक राज्य ही [illegible] सकेंगे और दोनों अँगरेज और अमरीकी साम्राज्यवादियों के आर्थिक (व सैनिक) उपनिवेश बने रहेंगे।

* *

इस शैतानी विभाजन योजना [illegible] अरबों ने बहिष्कार करने का निश्चय किया है। उनकी अरब उच्च समिति [illegible] इस योजना से अपने पूरे विरोध [illegible] घोषणा की है; उसने इस योजना [illegible] व्यर्थ, अव्यावहारिक और नितान्त [illegible] अन्यायपूर्ण सिद्ध करते हुए कहा है [illegible] अरबों को यह योजना कभी मान्य [illegible] होगी। अरबों के अन्य प्रगतिशील [illegible] ने भी इस योजना के विरोध में अपने [illegible] विचार प्रकट किये हैं। यहूदियों के बा[illegible] पक्षी और उग्रपंथी दलों, जैसे आतंक[illegible] वादियों ने भी फिलिस्तीन विभाजन [illegible] इस योजना की अपने ढंग से [illegible] आलोचनाएँ की हैं। परन्तु ऐसी सम्भाव[illegible] का सन्देह होता है कि यहूदियों [illegible] प्रमुख पार्टी, यहूदी एजेन्सी, [illegible] योजना को स्वीकार कर लेगी, क्यों[illegible] यह योजना उसके नेताओं के मनसूबों [illegible] बिलकुल अनुकूल बनी है और इ[illegible] द्वारा उनके प्रधान सहायकों का बो[illegible] बाला भी बना रह सकेगा।

विभाजन के कारण भारत में [illegible] हुई कटुता और वैमनस्य फिलिस्ती[illegible] के निवासियों के लिए इस बात [illegible] उदाहरण हो सकते हैं कि विभाजन [illegible] और विशेषकर उपर्युक्त बहुमत के सुझा[illegible] के अनुसार हुए विभाजन से, फिलिस्ती[illegible] की अपनी समस्या का कोई हल [illegible] निकल सकता, बल्कि उसके निवासि[illegible] की आपसी कटुता बढ़ती जायगी [illegible] विदेशी नियंत्रण उनके वैमनस्य [illegible] उनकी कमजोरियों का लाभ उठाने [illegible] हर सम्भव प्रयत्न करता रहेगा। विदेशी [illegible] हस्तक्षेप बन्द करना, ब्रिटिश फौजें [illegible] से तुरन्त हटाना और एक पूर्ण स्वतन्त्र [illegible] फिलिस्तीन की स्थापना करना अथ[illegible] मूल सिद्धान्तों के आधार पर बनी यो[illegible] ही फिलिस्तीन और उसके निवासि[illegible] के लिए हितकारी होगी, उनकी भल[illegible] की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने [illegible] सफल होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमंदिर

कन्या-दान

पढ़ी-लिखी लड़कियों की एक समस्या

लेखक, श्री प्रेमकपूर कंचन

प्राचीन भारत में कन्या देवी के स्वरूप स्वीकार की जाती थी। उसका जन्म का जन्म समझा जाता था। पर ीति मध्य-भारत में लुप्त हो गई नहीं समझना चाहिए। उस कहीं-कहीं पर कन्यावध की देखने को मिली है इसका कारण ी परिस्थिति थी। उसके बाद कुछ तक लोगों ने कन्या-जन्म को एक रूप में स्वीकार किया है। बालक म पर लोग हर्ष से उसका स्वागत थे पर कन्या के जन्म पर उनका दुःख से पीला पड़ जाता था। रूप-स्वरूप हमारे सामने पुराने ाजा और जमींदारों के किस्से हैं वहां लड़के के जन्म की घोषणा और ढोलों को बजाकर सुनाई जाती र वहीं अगर कन्या जन्मती थी तो लोग उसकी खबर बहुत चुपके देते थे।

के दृष्टांत के लिए श्रीमती सरोजनी नायडू एवं श्रीमती पंडित हमारे सम्मुख है। भारत की कन्यायें कितनी बड़ी राजनीतिज्ञ एव नेता बन सकती हैं, उनका कितना अधिक मान होता है, वह भारतीय नारियों ने प्रमाणित कर दिया है। आज सभ्यता के अग्रसर पश्चिमी देशों की नारियों को गवर्नर अथवा राजदूत का पद नहीं दिया गया।

कन्या का माता-पिता के साथ क्या सम्बन्ध है, वर्त्तमान काल में उनका समाज क्यों इतना अधिक आदर करता है जितना कि कुछ वर्ष पहले नहीं करता था? इसका एकमात्र कारण यही है कि उन्होंने यह समझा है कि लड़का उनके लिए विवाहोपरांत लड़का नहीं रह जाता उसका पद पिता के बराबर हो जाता है। लेकिन पिता-कन्या को जीवन भर कन्या के ही रूप में मानता है।

इतना होने पर भारतीय कन्या जो कुछ चाहती है, नहीं हो पाती। पुरानी रीति के अनुसार विवाह के पश्चात् उसे अपने माता-पिता के लिये कुछ करने का अधिकार नहीं रह जाता वह अपने सास ससुर की एकमात्र बहू कहलाती है। लेकिन यह रीति मिटती-सी मालूम हो रही है। अब अपने माता-पिता की सेवा के लिये वह अपने पति से आज्ञा प्राप्त कर लेती है।

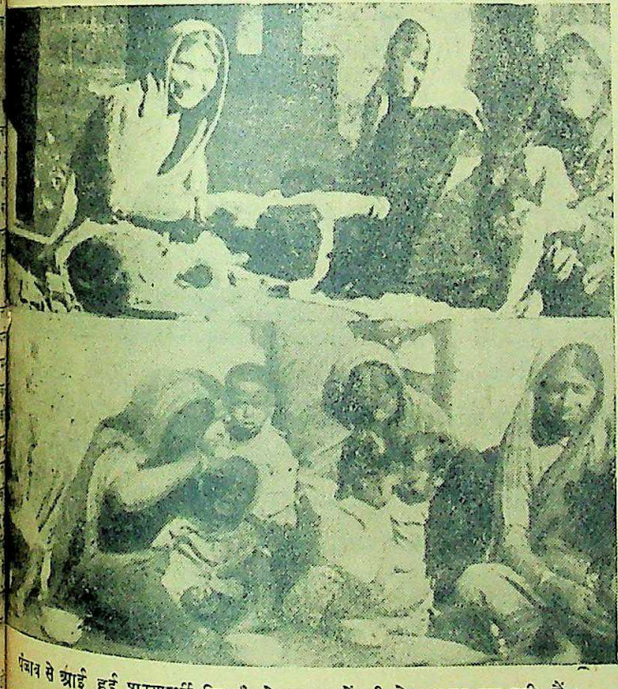

पंजाब से आई हुई शरणार्थी स्त्रियाँ जो बालबच्चों की देख भाल कर रही हैं।

आजकल लड़की के जन्म की लोग पूरि प्रसंशा ही नहीं करते, वरन् कम के लिये प्रभु से प्रार्थना भी है। गणना करने से पता चला है ौकिक परिवारों में लड़कियां उतनी होती हैं जितना कि एक लड़का। केवल एक उच्च कुल में विवाह अपने परिवार की प्रतिष्ठा नहीं वरन् वे अपनी परीक्षाओं में प्रथम आकर अपने देश के लिए कार्य कर, लाभवाले पद ग्रहण कर उत्तरदायित्व को निभा सकती में भारतीय कन्यायें अगर डाक्टर रूप में आयें तो देश उन्हें ईश्वर की के रूप में स्वीकार करेगा। अगर आदर करेगा। यदि वे नर्स में आयेंगी तो देश को उनकी है। अंतर्राष्ट्रीय विश्व

जिस प्रकार माता-पिता अपनी लड़की के प्रति कर्त्तव्य पूरा कर रहे हैं, लड़कियों को चाहिए कि वह अपने माता-पिता की सेवा करें और उनकी कीर्त्ति में बट्टा लगाने की चेष्टा न करें। हां, यह ठीक है कि पिता अपना उत्तरदायित्व विवाहोपरान्त समाप्त समझता है। विवाह के लिये सुयोज्ञ वर ढूंढ़ कर वह अपनी बेटी का धार्मिक रीति से विवाह कर देता है। माना नारी राष्ट्र की एक अमूल्य निधि है। वह भावी राष्ट्र-निर्माण में सहायक होगी उसके प्रति अधिक अन्याय होता है, बहुत-से माता-पिता शादी कर देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं, पर वर उन्हें देखने का अवसर नहीं मिलता। एक घटना मुझे याद है। कुछ समय हुआ एक मा अपनी बेटी की शादी के लिये आवश्यकता से अधिक चिंतित हो गई उसने एक बी० ए० पास लड़के को विवाह के लिये तैयार करना चाहा। लड़का विवाह के लिये तैयार न था। मा अपनी बात को पूरा करना चाहती थी उसने धन का लालच देकर उसे तैयार किया। लड़का अत्यधिक लोभी था जैसे जैसे विवाह का दिन निकट आने लगा उसने "मोटर, कपड़ा, नौकर इत्यादि बहुत सी वस्तुएँ दहेज के अतिरिक्त मांगा। माता ने समाज में विवाह की घोषणा कर दी थी। वह समाज से डरती थी उसे डर था कि अगर लड़का शादी छोड़-कर चला जायगा तो और कोई उसकी कन्या को न स्वीकार करेगा। अन्त समय पर लड़का विवाह तोड़कर जाने के लिये प्रस्तुत हो उठा। मा ने इस कठिन अवस्था में अपना धैर्य खो दिया और फूट-फूटकर रोने लगी" क्योंकि उनका भविष्य का दामाद काबुली सूदखोर की तरह बुरी तरह से उसके पीछे पड़ गया था। काफी धन लेकर किसी प्रकार विवाह पूरा करने का निश्चय किया गया। जब लड़की को इस दुःखद कहानी का पता लगा वह अपने जीवन पर खीज उठी। उसने सोचा भगवान् ने उसके हाथ-पैर दिये हैं, वह माता-पिता पर भार-स्वरूप क्योंर हे? उसने मां से कहा कि वह पढ़ना चाहती है उसके पश्चात् वह स्वयं अपना विवाह कर लेगी। माता-पिता यह सुनकर भौचक्के पड़ गये। उनके ऊपर दुःख का पहाड़ टूट पड़ा।

मैंने इस कहानी को सुना तो दूल्हा महोदय से भेंट करने गया। वहां मैंने देखा दूल्हा महोदय के मुख पर हवाई उड़ रही है। मैंने बेटी की मा को समझा-बुझाकर विवाह ठीक करा दिया। इसी प्रकार की कितनी रोमांचकारी कहा-नियां कन्या-दान के विषय में सुनी गई हैं। इन घटनाओं को सुनकर कोई विश्वास न करेगा।

अगर पिता ने कर्त्तव्य नहीं पालन किया तो आज की कन्याओं ने पिता के प्रति कौन सा बड़ा भारी उपकार कर दिया है? पुत्रियों को अपने कर्त्तव्य की रक्षा स्वयं करनी चाहिए। आज तक भारत में पिता की मृत्यु के बाद पिता के पूर्ण धन के अधिकारी उनके बेटे होते थे। पुत्रियों का उस धन में कोई अधिकार न होता था। इसके यह माने नहीं कि पिता लड़की को न मानता हो वह सब कुछ लड़की के विवाह के समय दे देता था और यदि हो सकता तो मृत्यु के प्रथम स्वयं कुछ दे जाता या लिख-पढ़ जाता था। पर आज उसकी यह आवश्यकता नहीं। जो रुपया आज वह अपने बच्चों के लिए व्यय करना चाहता है उसको चाहिए कि वह उस धन को अपने पुत्रों और पुत्रियों में बराबर बराबर बांट दे। फिर उन सबको बराबर-बराबर शिक्षा दे, वरन् इसके कि वह पुत्री का भाग उसके दहेज के लिये या कन्यादान के लिये रख छोड़े। ऐसा करने से कम से कम राष्ट्र की तो सेवा हो सकेगी। मां का गुण उनके बच्चों में तो उतर सकेगा। हमारी मातायें अशिक्षित रहकर बच्चों में मूढ़ता तो न भर सकेंगी। हमने कई एक ऐसी माताओं से बात की है जिनकी अवस्था आजकल ९० के निकट है, वे मातायें पैसे का हिसाब नहीं कर पातीं उनके पुत्रराम खूब आसानी से उनसे पैसा ऐंठते हैं। एक की चीज को सवा एवं दो का नोट पांच का, पन्द्रह आने में रुपया भुंजाते हैं।

इस प्रकार से धन उपयोग करने से कन्या का जीवन तो कम से कम सुखी हो सकेगा। पर यहीं से भारतीय नारी में दोष उत्पन्न हो जाता है। वह पढ़कर भारत को इंगलैंड और अपने को महान् समझती है। पति नाम में उनके सामने कोई मूल्यवान् वस्तु नहीं। उन्हें विद्या ग्रहण करने के पश्चात् अपने भले-बुरे को सोचने का अधिकार है। इस प्रकार कन्या-दान का भार माता-पिता के सर पर से उतर जायगा। लेकिन पढ़ी-लिखी लड़कियों को यह धारणा न बना लेनी चाहिए कि वे बिना शादी किये अपने जीवन का भार पूरा कर सकेंगी। यह असम्भव है। प्राकृतिक नियम का उल्लंघन नहीं किया जा सकता। बिना शादी के जीवन-पेड़ बे फल का होगा।

युरोपमें और अमेरिकामें तैयार किये हुये अच्छेसे अच्छे साबुनोंका अस्तेमाल करनेके बाद सुप्रसिद्ध मरहूम डॉ. ऑनी बेझन्ट ने अपने "न्यू इंडिया" समाचार पत्रमें लिखा था—

"मैंने अस्तेमाल किये हुअे सब साबुनोंमें गोदरेज साबुन सबसे श्रेष्ठ हैं और अिसीलीये मेरे दोस्तोंको मैं उनका अिस्तेमाल करनेकी सिफारस करती हूँ।"

Annie Besant
ॲनी बेझन्ट

Godrej गोदरेज
साबुन

नं. १ • वतनी • सॅन्डल • लिमडा
टर्कीश बाथ • शेविंग स्टिक
शेविंग 'राउन्ड' वगैरे।

१०० प्रतिशत शुद्ध और पशुचर्बी रहित होनेकी गारन्टी।

गोदरेज सोप्स, लि०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पेज ५ का शेष)

है। गांधीजी की क्रांति का ध्येय इस अज्ञान का ही निराकरण है। उनकी क्रांति का रूप बाहरी नहीं है। समाज में जो दुःख है उस पर वे मरहम-पट्टी करके उसे क्षण भर के लिये दबा देना हितकर नहीं समझते। यह तो रोग का स्थायी उपचार नहीं है। उनकी प्रणाली आंतरिक परिवर्तन को सर्वोपरि महत्त्व देती है। उनके मतानुसार जब तक मनुष्य के भावों और मनोवृत्तियों में क्रांति नहीं होती, तब तक बाह्य जगत् की परिस्थितियों में क्रांति लाना असम्भव है। ऐसी चेष्टा करने से कोई लाभ नहीं मिलेगा। मनुष्य जो दुख भोगते हैं। वह अपने स्वयं के मनोभावों के ही कारण भोगते हैं।

अतः समाज के बाह्य ढांचे को परिवर्तित करने से क्रांति का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। यथार्थ परिवर्तन के लिये मनुष्य के अंतर्जगत में परिवर्तन होना आवश्यक है, यहीं सारी समस्या का हल मिलेगा।

हेगेल का अभाव।

किन्तु हेगेल के सिद्धांतों और गांधी जी के दर्शन में बड़ा अन्तर है। हेगेल एकांत रूप में आदर्शवादी है, विचारक है और तर्क के प्रश्रय से अपने सिद्धांतों को पुष्ट करता है। वह संसार की समस्त समस्याओं को हल करने के साधन बताता है। गांधीजी का मार्ग इससे भिन्न है। वे आदर्शवादी अवश्य हैं; किन्तु उनका आदर्शवाद कोरी वाणी और अक्षरों का विषय न रहकर पहले कर्मक्षेत्र में अपनी परीक्षा दे चुका होता है। वे विचारक हैं, किन्तु उनके विचार पुस्तकों में बंदी नहीं रहते। जीवन की संघर्ष-भूमि में अंकुरित होकर ऐसे अमृत-फल देने वाले वृक्ष बनते हैं कि सारी विपन्न मानवता उनका सेवन करके नव-जीवन प्राप्त करती है। वे तार्किक हैं किन्तु उनका तर्क उनके अनुसंधान का एकमात्र यंत्र नहीं बन सका है। उनके अनुसंधान का आधार तो उनका कर्म-योग है जो अवसर आने पर प्राणों की भी बाजी लगा देता है। कर्म-शोधित विचारों को सुव्यवस्थित करने के लिये ही वे तर्क का प्रयोग करते हैं। हेगेल-सम्प्रदाय के विचारकों और गांधी जी में यही सबसे बड़ा अंतर है। हेगेल की अनुसंधानशाला मानस की अव्यक्त भूमि है जिसमें निराकार विचार उठकर वहीं परस्पर उलझ जाते हैं। गांधी जी की अनुसंधानशाला जीवन की संघर्ष-भूमि है, जहां कायर व्यक्ति एक क्षण भर भी ठहर नहीं सकता। जहां विचारों को आकार देने के लिये जीवन को यातनाओं का अग्निकुंड बनाना पड़ता है। मार्क्स ने अपने स्वयं में और हेगेल में जो अंतर बताया था, तत्त्वतः वही गांधी जी और हेगेलवादियों में है। मार्क्स ने लिखा था—"हेगेल की जो वादानुवाद प्रणाली है, वही मूलभूत सिद्धांत है, किन्तु उसी दशा में जब कि उसके ऊपर से रहस्यात्मकता का आवरण हटा लिया गया हो। ठीक इसी बात को लेकर मेरी और हेगेल की प्रणाली में भेद है।"

सगुणवादी भक्त

गांधी जी की दूसरी प्रमुख नीति जिसे वे स्वयं 'हृदय-परिवर्तन' की संज्ञा देते हैं शंकराचार्य के वैलक्षण्य के सिद्धांत को लेकर आसानी से समझी जा सकती है। उनकी समझौते के प्रति आतुरता और दूसरों के प्रति सहिष्णुता के बावजूद भी उनका त्याग का दृष्टिकोण सदैव विशुद्ध और गुणरहित रहता है।

वास्तविक हृदय-परिवर्तन का अभिप्राय जीवन की वर्तमान मान्यताओं को अपनी गति-दिशाओं से मोड़कर उन्हें नई दिशाओं में आरूढ़ करना है। नीत्से के दर्शन का केन्द्रीभूत भाव भी यही था, वह भी जीवन के दृष्टिकोण में परिवर्तन का पक्षपाती था। किन्तु कर्मयोगी की शुभ बुद्धि के अभाव में वह अपने विचारों को श्रेय-पथ पर आरूढ़ न कर सका और पथभ्रष्ट हो गया। इसके विपरीत गांधीजी निर्गुणवादी न होकर सगुणवादी भक्त हैं। शंकराचार्य की भांति वे निर्गुण ब्रह्म के उपासक नहीं हैं। यही कारण है कि वे तुलसीदास की भांति भारतीय संस्कृति के मूलाधार समन्वय के सिद्धांत को पग-पग पर चरितार्थ करते हुए चलते हैं। प्राणिमात्र में प्रेम-भावना उनको वैष्णव भक्तों की कोटि में प्रतिष्ठित कर देती है और यही कारण है कि वे ईसाईमत और वैष्णव सगुणवाद की ओर अधिक प्रवृत्त हैं।

बहुत ही प्राचीन काल में जब कि समाज असभ्य ही था केवल अदल-बदल का ही व्यापार होता था। जैसे - एक शिकारी बाघ की खाल दे कर बकरी या अन्न ही नहीं बल्कि पत्नि भी प्राप्त कर सकता था। और यदि किसी को बाघ की खाल की आवश्यकता न होती तो कुछ प्राप्त नहीं हो सकता था।

अनिश्चित भविष्य के लिये बचत करने की इच्छा होने पर भी ऐसी अवस्था में बचत करना न तो सहल था और न ही उचित। क्योंकि बचत विभिन्न वस्तुओं के रूप में ही की जा सकती थी, जैसे केलों के ढेर, अन्न की बोरियां, भेड़ों के समूह, इत्यादि। क्या ये सब नाश होने वाले पदार्थ नहीं? और फिर वर्ष की समाप्ति पर लाभ भी कुछ नहीं होता था।

इस के विपरीत आज कल माल के ख़रीदने में या बचत करने में कोई विशेष कठिनाई नहीं होती। बुद्धिमान ख़र्च करने की बजाय बचाना अच्छा समझता है और वह अपनी बचत को बुद्धिमत्ता पूर्वक सुरक्षित और लाभप्रद मद में लगाता है। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की मद में लगाया हुआ धन पूर्णतया सुरक्षित है और अवधि पूरी होने पर इस का मूल्य ४०% बढ़ जाता है–अर्थात १०) बारह वर्ष पूरे होने पर १५) बन जाते हैं। इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। आप अब ५) से १५,००० तक की मालियत के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं। जिनकी बचत थोड़ी हो वे ।), ।।), और १) के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं।

भविष्य के लिये बचाइए
नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए
रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

ये डाकख़ानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

कांगड़ी गुरुकुल के शरणार्थी स्नातक बन्धु

पश्चिमी पंजाब, सीमाप्रान्त और सिंध में बसे हुए कांगड़ी गुरुकुल विश्वविद्यालय के स्नातक बन्धुओं की कुशलता और प्रसन्नता जानने के लिए समस्त कुलवासी उत्सुक हैं। पिछले दिनों इन प्रदेशों पर आई विपदाओं के कारण गुरुकुल के ब्रह्मचारी बहुत चिन्तित हैं। इन प्रदेशों से लौटकर भारत में आये हुए सभी स्नातक बन्धुओं से सप्रेम निवेदन है कि वे अपना वर्तमान पता, कुलमन्त्री गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) के पते पर शीघ्रातिशीघ्र सूचित करें। जिससे समस्त गुरुकुल-परिवार के सदस्यों और मित्रों को उनके सर्वविधि समाचार भेजे जा सकें और उनकी यथायोग्य सेवा की जा सके। समस्त कुलबन्धु सुरक्षित रूप में भारत में आये हुए स्नातक भाइयों को अपने प्रेम और सद्भाव का सन्देश प्रेषित कर रहे हैं।

—शंकरदेव विद्यालंकार
आश्रम-सचिव

* * *

जिला दुर्ग (मध्यप्रान्त) में अम्बागढ़ चौकी में विजयदशमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया। जुलूस बाजा-गाजासहित जमींदार साहब के बाड़े से निकला। लगभग ११-१२ हजार दर्शक इकट्ठे हुए थे। जुलूस का समारोह रात को शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुआ। ता० २५ अक्टूबर को श्री लालचक्रधरशाह जमींदार की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर में पानाबरस स्टेट के जमींदार कुमार श्यामशाह जी जो अखिल ओड़वाना गोड़ महासभा के उपाध्यक्ष हैं, तथा जबलपुर से श्री० एम० जी उयके भी जो उस संस्था के सेक्रेटरी हैं, आये थे। दोनों महाशयों के भाषण प्रभावपूर्ण रहे। आदिवासी जनता से यह अनुरोध किया गया कि वे आपस में एकता के सूत्र में बँधे अपने समाज में जिसकी जन-संख्या कुल हिन्दुस्तान में २ करोड़ ३० लाख है, जिसमें से सिर्फ मध्यप्रान्त और बरार में ४१ लाख हैं शिक्षा का बिलकुल अभाव है। २०० पीछे एक आदमी ही पढ़ना-लिखना जानता है। शिक्षा का प्रचार इस समाज में आवश्यक है।

—ठाकुर त्रिवेणीसिंह

* * *

हरिद्वार में लगभग ५ महीने पीड़ितों की सेवा करने पर बिड़ला कैम्प बन्द हो गया। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी कलकत्ता की ओर से श्री मालीराम जी पुरोहित तथा पं० सोहनलाल जी शर्मा के प्रबन्ध में लगभग ६०० पीड़ित शरणार्थियों की सेवा बराबर हो रही है। दोनों समय भोजन और रोगी व बच्चों को दूध के अतिरिक्त स्त्रियों को सिलाई आदि के काम सिखाने का प्रबन्ध है और बच्चों की पढ़ाई की भी आयोजना की हुई है।

हरिद्वार में ज्वालापुर के इलाके के गाँव में पुलिस ने छापा मारकर एक दर्जन से अधिक बम बरामद किये और लगभग एक दर्जन आदमियों की गिरफ़्तारी की।

—संवाददाता

* * *

जोधपुर से बाल व कुमार भाई बहिनोपयोगी सचित्र मासिक पत्रिका 'करुणा' का प्रकाशन दशहरे के शुभ अवसर पर हो गया है। बाल और कुमार लेखकों, लेखिकों आदि से रचनायें भेजने का अनुरोध किया जाता है।—'करुणा' कार्यालय जोधपुर। —संवाददाता

स्वास्थ्य और व्यायाम

दीर्घायु प्राप्त कैसे हो ?

शरीर को स्वस्थ्य रखने के कुछ नियम

लेखक, श्री वीरेन्द्रनाथ उपाध्याय

(१) नियमित रूप से स्वच्छ वायु में दूर, वायु सेवनार्थ जाने से शरीर के प्रत्येक अवयव की शक्ति रोगों का सामना करने योग्य, संरक्षित रहती है।

(२) प्राणायाम, अन्य प्रकार के व्यायाम, मानसिक तथा शारीरिक परिश्रम नियत रूप से करना चाहिए।

(३) खाने-पीने और इन्द्रियों के अन्य विषयों में मिताहार सुरक्षित रखना चाहिए।

(४) जीवन को संयम से व्यतीत करना चाहिए।

(५) रोगों के अवरोध करने के लिए या वंश-परम्परा से कोई रोग हुआ हो तो उसे दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए।

(६) जीवों पर दया, सबके लिए अच्छे भाव, समता, सन्तोष आनन्दमय स्वभाव, आशावादी प्रकृति, अपना कर्त्तव्य-पालन करने में दृढ़ता होनी चाहिए। तथा क्रोध, ईर्ष्या, आत्मप्रशंसा और लोभ आदि अवगुणों से बचना चाहिए।

(७) यथासाध्य दिन का अधिक भाग खुली हवा में और यथेष्ट प्रकाशमय स्थान में व्यतीत करना चाहिए। मकान को सूखा और स्वच्छ रखना चाहिए, गीला न होने देना चाहिए, दरवाजे अधिकतर खुले रखना चाहिए।

(८) प्रत्येक आदमी के लिए यथासाध्य जल्दी सोने और प्रातः जल्दी उठने की आदत डालनी चाहिए।

(९) प्रतिदिन २४ घंटे में एक बार अवश्य शीतल जल से शरीर के प्रत्येक भाग को मल मलकर नहाते समय साफ कर लेना चाहिए। जिससे शरीर की त्वचा स्वच्छ बनी रहे।

(१०) भूले में या आरामकुर्सी में लेटकर कदापि न पढ़ना चाहिए, सीधे बैठकर ही पढ़ना चाहिए।

(११) जिस बत्ती के प्रकाश में पढ़ो उसका प्रकाश स्थिर और काफी होना चाहिए और वह प्रकाश नेत्रों पर न गिरकर पुस्तक ही पर गिरे ऐसे ढंग से कागज या कपड़े की आड़ रखनी चाहिए।

(१२) खुले पैरों से बहुत दूर तक रास्तों में चलने से जितने रोग दूर हो सकते हैं उतने रोग दूसरी किसी दवा से अच्छे नहीं होते।

(१३) हरी-हरी हरियाली की ओर कुछ समय तक टकटकी लगाकर देखते रहने से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है।

(१४) पीने के पानी को यदि एक बार थोड़ा गर्म करके छान लिया जाय तो उसके जन्तु नष्ट हो जाते हैं और अनेक रोगों से छुटकारा मिल जाता है।

(१५) जब बालक घर के बाहर धूप में और स्वच्छ वायु में खेलता रहता है तब उसकी पाचन-शक्ति घर के अन्दर रहने के बजाय २४ गुनी अधिक बढ़ती है।

(१६) कभी-कभी उपवास करते रहने से शरीर का अत्यन्त उपचार होता है। यह सम्पत्ति केवल आयुर्वेद विशारदों की नहीं, वरन् योरोपियन विद्वानों का भी यही मत है। योरप के विख्यात डाक्टर लोने नार्ड विलियम का कथन है कि कभी-कभी उपवास करते रहने से अनेक छोटे-बड़े रोग दूर होते हैं।

(१७) प्रतिदिन प्रातःकाल खुले शरीर से सूर्य के सामने बैठने से कोई रोग नहीं होता है।

(१८) निद्रा से जागकर एकदम खाट पर से कूद पड़ना हानिकारक है। नींद खुलने के बाद सोये-सोये ही कुछ समय तक परमात्मा का स्मरण करते रहन से अरोग्यता बढ़ती है।

(१९) स्वास्थ्य-रक्षा के लिए खाट से उठकर थोड़ी मात्रा में शीतल जल पीना चाहिए।

(२०) अधिक बार भोजन न करना चाहिए। चाय, शराब, अधिक खट्टी एवं कटु वस्तुएँ न खानी चाहिए।

* * *

तुलसी के गुण

तुलसी के प्रति मेरा ध्यान उस समय गया जब कि 'देशदूत' के प्रसिद्ध लेखक श्री श्री रामेशवेदी जी ने तुलसी के ऊपर एक लेख देशदूत में लिखा था। बाद में यह भी मालूम हुआ कि वेदीजी ने तुलसी के ऊपर एक बड़ी सुन्दर पुस्तक भी लिखी है। पुस्तक की प्रशंसा 'कल्याण' के सम्पादक श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार ने मुक्तकंठ से की है।

मुझे भी तुलसी के विषय में थोड़ी बहुत जानकारी प्राप्त हुई है। तुलसी किन रोगों में लाभदायक है, वह इस प्रकार है—

(१) रोगों पर अनुभूत गुण—साधारण ज्वर पर तुलसीपत्रों का रस, काली मिर्च गर्म करके उष्ण देने से आराम होता है।

(२) मलेरिया ज्वर—तुलसी-पत्र, देवदारु, पिपल्ली, धमासा, समस्त द्रव्य २-२ तोला १६ तोले जल में काढ़ा बनाकर ४ तोले रहने पर सवेरे-शाम पिलावे, अवश्य दूर होता है।

(३) कान के दर्द—तुलसीपत्रों का रस गरम कर ४ बूंद से १० बूंद तक डालने से तुरन्त आराम होता है।

(४) शिर-दर्द—तुलसी के पत्रों को सुखाकर, उसे सूंघने से आराम होता है।

(५) सर्प-विष—तत्काल ही तुलसी के पत्रों को पीस दंश-स्थान पर लगावे और उसी समय ४-४ तोला तुलसी स्वरस १० काली मिर्च डालकर गरम कर आध-आध घंटे पर पिलावे, उस समय रोगी को सोने नहीं देना चाहिए। इससे मनुष्य के शरीर के कफ के द्वारा विष बाहर निकला करता है।

(६) मूत्र-रोग—वीर्य - सम्बन्धी तथा मूत्र-सम्बन्धी विकारों में तुलसी के बीज ले उसके समान भाग मिस्री मिलाकर सेवन करने से उपयुक्त रोग के विकार दूर होते हैं।

(७) खांसी—तुलसी मंजरी को बारीक पीसकर अदरख के रस या शहद में मिलाकर देने से खांसी नष्ट होती है।

(८) बच्चों के पेट फूलने पर—तुलसी के पत्रों का रस उष्ण कर ३ से ६ माशा तक पिलाने से पेट का फूलना—गुड़गुड़ाहट आदि दूर होता है।

(९) स्नायुरोग—तुलसी के बीज और खांड समान मिला सेवन करने से उपरोक्त रोग दूर होता है।

(१०) सर्दी-जुकाम—तुलसी की चाय पीनी चाहिए।

पचमढ़ी में विजयादशमी तक प्रतिदिन दुर्गाजी का पूजन, आरती, गायन, भजन, रामायण, नाच-कीर्तन आदि के आयोजन गांधीचौक में दुर्गाजी की झांकी के सामने किया गया। गांधीचौक में यहां के हरिजन भाइयों ने "धर्म की देवी" नामक संगीत नाटक बहुत ही शान से किया। प्रातःकाल मन्दिर के सामने कन्याओं को भोजन कराया गया। विजयदशमी के दिन एक विराट् जलूस एक रथ पर जिसमें दुर्गाजी की प्रतिमा बड़ी सजावट के साथ विराजमान थी, जुलूस गांधीचौक से सुभाष-द्वार, जयप्रकाश द्वार तथा जवाहर-द्वार होते हुए गांधीचौक में इकट्ठा हुआ।

—संवाददाता

अद्भुत कहानियाँ

दो रंगों में छपी इस सचित्र पुस्तक में एक से एक बढ़िया कहानियाँ हैं। इसमें इतिहास, स्वामिभक्ति और भाग्य के खेल का वर्णन पढ़ते ही बनता है। मूल्य ॥≡)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

पृथ्वी की परिक्रमा

भिन्न-भिन्न देशों के प्रधान स्थानों का मनोहर वर्णन आपको इस पुस्तक में सुन्दर भाषा में मिलेगा। चिकने कागज पर छपे हुए पूरे पृष्ठ के चित्र भी इसमें हैं। मूल्य ॥)

गुदड़ी के लाल

इस पुस्तक की कहानियाँ बहुत ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद खुश होते हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों को जरूर दीजिए। मूल्य ॥)

मनोरञ्जक कहानियाँ

(दूसरा भाग)

इस पुस्तक में बहुत सी मनोरंजक और शिक्षाप्रद कहानियाँ हैं। इसके पढ़ने से बालकों को अन्य लाभ के सिवा भाषा-सम्बन्धी ज्ञान भी होता है। मूल्य ।-)॥

जानवरों की मज़ेदार कहानियाँ

मोर और कौआ, लोमड़ी और गधा, चालाक बुढ़िया, सोने की चिड़िया, सिंह और सियार आदि कहानियाँ पढ़िए और इनका चमत्कार देखिए। मोटे टाइपों में अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य ॥≡)

अपना-पराया

पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' लिखित इस मनोरंजक उपन्यास में एक चीनी तरुणी का मेनका-नृत्य जहाँ आपको आत्म-विभोर कर देगा, वहीं तिब्बत और चीन की नैसर्गिक छटा और वहाँ के अजीबोग़रीब रस्म-रिवाज भी आपके सामने नाच उठेंगे। चीन की यह रहस्यमयी तरुणी किस प्रकार भारत आती और अपने धर्म तथा स्वदेशाभिमान की रक्षा कर, एक भारतीय नौसैनिक की सहायता से अपने देश लौट जाती है, आदि प्रसंग आपको प्रणय की रंगीनियों का सजीव परिचय देंगे। पृष्ठ २३२, सजिल्द और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २॥) रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वायत्त शासन-विभाग

संयुक्तप्रांतीय वेतन-समिति की प्रश्नावली

स्मृति-पत्र

१ स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं के अधीन अध्यापकों और मेहतरों के कुछ वर्गों को छोड़कर अन्य नौकरियों की विभिन्न दशाओं पर विस्तारपूर्वक विचार करने के लिए सरकार ने, जैसा कि संयुक्तप्रान्तीय वेतन-समिति ने पहले सिफारिश की थी, संयुक्तप्रान्त में स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं के कर्मचारियों के लिए एक वेतन-समिति नियुक्त की है। यह समिति इस प्रश्न पर भी जांच करेगी कि नगरों में रहन-सहन के अपेक्षाकृत अधिक खर्च को पूरा करने के लिए म्युनिसिपल अध्यापकों को किस हद तक नागरिक भत्ता दिया जाय। यह समिति स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं की आर्थिक दशा पर भी विचार करेगी और उनको स्वावलम्बी बनाने के लिए उपाय बतायेगी।

२—समिति के विचारणीय विषयों के विभिन्न पहलुओं पर जन-मत प्राप्त करने के लिए इस समिति ने निम्नलिखित प्रश्नावली तैयार की है। इस प्रश्नावली का उत्तर अक्टूबर, ३१ सन् १९४७ ई० तक नीचे लिखे हुए अफसर के पास पहुँच जाना चाहिए। किसी ऐसे उत्तर पर जो उक्त तारीख के बाद प्राप्त होगा विचार न किया जायगा।

३—समयाभाव तथा शीघ्रातिशीघ्र किसी निर्णय पर पहुँचने की आवश्यकता को देखते हुए समिति मौखिक प्रमाण (जबानी शहादत) लेने का विचार नहीं करती। अतएव जहां तक हो सके उत्तर विस्तारपूर्वक देने चाहिएँ।

४—स्वायत्त शासन संस्थाओं के चेयरमैनों से प्रार्थना की जाती है कि वे प्रत्येक श्रेणी के चुने हुये कर्मचारियों की एक बैठक बुलाकर प्रश्नावली पर उनके मतों को भी अपने मतों के साथ भेजें।

भगवतनारायण भार्गव,
सेक्रेटरी,

प्रश्नावली

१—क्या आप यह मानते हैं कि स्वायत्त शासन के अन्तर्गत स्थानीय संस्थाओं की विभिन्न नौकरियों की समस्त श्रेणियों के सम्बन्ध में भर्ती और तरक्की के जो ढंग हैं वे सन्तोषजनक हैं? यदि नहीं, तो कृपया इनमें परिवर्तन होने के लिए निश्चित और विस्तृत तजवीज प्रस्तुत कीजिये ताकि इन नौकरियों का कार्य कुशलता और सुरक्षा की दृष्टि से सुधार हो सके।

२—क्या आप समझते हैं कि यदि 'लोकल सेल्फ गवर्नमेंट एक्सपर्ट कमेटी' सन् १९३८ ई० के सुधारों के आधार पर प्रान्तीय स्वायत्त शासन बोर्ड और स्वायत्त शासन पब्लिक सर्विस कमीशन स्थापित किये जायें तो इससे स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं के शासन प्रबन्ध में सुधार हो जायगा?

३—क्या आप उन सिद्धान्तों को ठीक समझते हैं जिनके आधार पर इस समय म्युनिसिपैलिटियों और डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किये गये हैं? यदि नहीं, तो स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं की विभिन्न वर्गों की, जिनमें टाउन एरियाएँ और ग्राम-पंचायतें भी शामिल हैं, श्रेणी निर्धारित करने की आपकी राय में कसौटी और मानदण्ड नियत करने का क्या आधार होना चाहिए?

४—क्या आपका मत है कि स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं की विभिन्न श्रेणी की समान नौकरियों के लिए वेतन की भिन्न भिन्न दरें होनी चाहिएँ? यदि हां, तो स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं के विभिन्न श्रेणियों और वर्गों के कर्मचारियों की, जिनमें हिन्दुस्तानी स्कूलों के अध्यापक और भंगी जिनके मामले में गवर्नमेंट ने अलग से विचार किया है, शामिल नहीं हैं, आपकी राय में आदर्श वेतन दर क्या होनी चाहिए?

५—क्या आप यह राय देते हैं कि समस्त नौकरियों के सम्बन्ध में क्रमशः बढ़ते जानेवाले टाइम स्केल की वेतन-व्यवस्था लागू की जाय?

६—तरक्की के मामले में क्रमशः योग्यता और सीनियारिटी के सिद्धान्त कहां तक स्वीकार किये जायँ?

७—सम्बन्धित स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं को इन नौकरियों के नियन्त्रण के लिए किन अधिकारों का प्रयोग करना चाहिए?

८—क्या आप पदों के महत्त्व और उनसे सम्बन्धित स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था की श्रेणी—दोनों ही के आधार पर नौकरियों को विभिन्न श्रेणियों अथवा ग्रेडों में विभाजित करने की सलाह देंगे? कृपया उन पदों को बतलाइये जो विभिन्न वर्गों की स्वायत्त शासन संस्थाओं की विभिन्न श्रेणियों की सर्विसों में शामिल किये जायँ?

९—क्या आपकी राय है कि स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं के निम्नश्रेणी के पदाधिकारियों को उच्च पदों पर तरक्कियां दी जानी चाहिए, यदि वे ऐसे पदों पर नियुक्ति के लिए आवश्यक योग्यता रखते हों?

१०—क्या आपका मत है कि स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं के अन्तर्गत कुछ खास नौकरियों का प्रान्तीयकरण होना चाहिए? यदि हां, तो वे कौन-सी हैं? क्या उनका नियन्त्रण सीधे प्रान्तीय सरकार द्वारा होना चाहिए या एक प्रान्तीय लोकल सेल्फ गवर्नमेंट बोर्ड और लोकल सेल्फ गवर्नमेंट पब्लिक सर्विस कमीशन द्वारा? प्रान्तीयकरण किन शर्तों पर किया जाना चाहिए?

११—क्या आपका मत है कि उन पदों पर की जानेवाली भर्तियों का नियंत्रण जिनका प्रान्तीयकरण न किया गया हो, प्रान्तीय लोकल सेल्फ गवर्नमेंट बोर्ड द्वारा होना चाहिए जिससे कि विभिन्न पदों के लिए चुनाव उम्मीदवारों की एक स्वीकृत सूची से किया जाय?

१२—क्या आप समझते हैं कि स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं के कर्मचारियों को, जिनमें हिन्दुस्तानी स्कूलों के अध्यापकगण भी सम्मिलित हैं, नगरों में रहन-सहन का खर्च अपेक्षाकृत अधिक होने के कारण मासिक नागरिक भत्ता दिया जाना चाहिए? यदि हां, तो कृपया आप अपने सुझाव दीजिये?

१३—स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था की विभिन्न श्रेणियों के समस्त पदों के लिए चाहे उनका प्रान्तीयकरण हुआ हो अथवा न हुआ हो, वेतन, छुट्टी, तबादला या स्थानान्तर, पेन्शन और दण्ड के क्या नियम होने चाहिए?

१४—क्या स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं के कर्मचारियों-सम्बन्धी, जिनमें अध्यापक भी सम्मिलित हैं, छुट्टी और पेन्शन के नियमों में उन नियमों से कुछ अन्तर होना चाहिए जो गवर्नमेंट के अन्तर्गत उन्हीं के समान नौकरियों पर लागू होते हैं? अगर हां, तो किन विषयों में?

१५—क्या आप यह मानते हैं कि प्राविडेंट फण्ड के वर्तमान नियम, जो स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं के विभिन्न श्रेणियों के कर्मचारियों पर लागू होते हैं, इस उद्देश्य के लिए पर्याप्त हैं कि किसी कर्मचारी के परिवार को उसके पेन्शन पाने पर ठीक व्यवस्था हो जाय या स्वयं कर्मचारी को ऐसी उचित सुविधा प्राप्त रहे जो लगभग पेन्शन-सम्बन्धी लाभों के बराबर हो? कृपया इस सम्बन्ध में अपने सुझाव विस्तार के साथ दीजिये?

१६—क्या आप यह मानते हैं कि पारितोषिक (ग्रैचुटी) क्षतिपूर्ति, भत्ते (सफर के भत्ते को सम्मिलित करके) तथा पेन्शन-सम्बन्धी लाभ, जो स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं के कर्मचारियों को प्राप्य हैं, पर्याप्त और सन्तोषजनक हैं? क्या आप इस सम्बन्ध में कोई सुझाव पेश करते हैं?

१७—क्या आप समझते हैं कि :—

(१) कर्मचारियों के एसोसियेशनों को सरकार द्वारा स्वीकृत करने तथा

(२) कर्मचारियों, व्यक्तियों अथवा अन्य लोगों द्वारा सरकार को अपील करने, प्रार्थनापत्र तथा मेमोरियल भेजने के सम्बन्ध में वर्तमान नियम, कर्मचारियों के हितों की रक्षा के लिए पर्याप्त हैं? यदि नहीं हैं, तो उनमें आप क्या वृद्धि अथवा संशोधन करने का प्रस्ताव करते हैं?

१८—मँहगाई के भत्ते के खर्च को पूरा करने के लिए जो रुपये की आवश्यकता होगी उसे प्रान्तीय आय से पूरा करना चाहिए अथवा स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं के फंड से? क्या मँहगाई के भत्ते के वर्तमान नियम और भत्ते की दरें सन्तोषजनक हैं? यदि नहीं तो उनमें आप क्या संशोधन करने का प्रस्ताव करेंगे?

१९—यदि वेतन के स्केल बढ़ा देने का निश्चय हो जाय, तो क्या आप यह सिफारिश करेंगे कि मँहगाई के भत्ते का सम्पूर्ण अथवा कोई भाग भविष्य में वेतन के स्केल देने में खपा दिया जाय?

२०—क्या आप स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं की किसी नौकरी के लिए प्रतियोगिता की परीक्षाओं के पक्ष में हैं? यदि हैं, तो किस नौकरी के लिए? क्या यह परीक्षा लोकल सेल्फ गवर्नमेंट पब्लिक सर्विस कमीशन द्वारा ली जानी चाहिए?

२१—क्या आप सिफारिश करते हैं कि स्थानीय स्वायत्त-शासन संस्थाओं के कर्मचारियों के लिए आवश्यक है कि वे किसी प्रकार का बीमा करायें? यदि हां, तो कृपया ब्योरे दीजिये?

२२—क्या आप स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं की नौकरियों की कठिनाइयों को दूर करने के लिए ऐसे कोई दूसरे सुझाव रखना चाहते हैं जिनका उल्लेख उपरोक्त प्रश्नों के जवाबों में नहीं किया जा सका है?

२३—क्या आप यह समझते हैं कि स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक है? यदि नहीं है, तो उनकी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए आप क्या उपाय करेंगे जिनमें आवश्यक रूप से कर लगाने और सार्वजनिक उपयोग-सम्बन्धी सेवायें करने का बचन दिया जाय? कर लगाने के उन अधिकारों के सम्बन्ध में विचार करने के बाद जो गांव पंचायतों और टाउन एरिया कमेटियों को प्राप्त हैं कृपया विभिन्न प्रकार की स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं के सम्बन्ध में पृथक् पृथक् प्रस्ताव दें?

२४—क्या आप यह समझते हैं कि करों के निर्धारित करने के सम्बन्ध में जो वर्तमान आदेश हैं वे उपयुक्त और पर्याप्त हैं? यदि नहीं हैं, तो क्या आप इस विचार के पक्ष में हैं कि स्थानीय असेसिंग अफसरों की एक स्वतन्त्र एजेंसी [illegible] जाय और सम्बन्धित विषयों के [illegible] करने के लिए स्वतन्त्र अधिकारी [illegible] जिसका स्थानीय संस्था से लगाव न हो?

२५—क्या आपकी यह राय है कि स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं को रुपया उधार देने की सुविधा पहुँचाने के लिए एक प्रान्तीय लोकल सेल्फ गवर्नमेंट बैंक खोला जाय?

२६—आपकी राय में ऐसे कौन से उपाय करने चाहिए जिनके द्वारा ये स्वायत्त शासन संस्थायें जो अपने [illegible] साधनों से कमेटी की सिफारिशों के अनुसार वेतन-वृद्धि के व्यय को उठाने में [illegible] हों, अविलम्ब संशोधित वेतन-दरों को लागू कर सकें तथा उस समय तक व्यय को उठाती रहें जब तक कि [illegible] आर्थिक स्थिति सुधर न जाय?

रूस के स्कूलों में अध्ययन

(पेज ४ का शेष)

अधिक निपुण बना सकने में समर्थ [illegible] ७७,००,००० नये कर्मचारी प्राप्त [illegible] शिल्प-शिक्षा पायेंगे।

गोर्की-स्थित स्टालिन इंजीनियरिंग कारखाने उन असंख्य कारखानों में [illegible] जिन्होंने इसका ठेका लिया है कि [illegible] काम करनेवाले हरएक कारीगर को [illegible] शिक्षा देकर विशेषज्ञ बनाया जाय।

ऐसे कारीगर जो अपना काम औरों की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह सीख गये हैं, [illegible] लोग जो पिछले युद्ध में सैनिक थे, [illegible] माध्यमिक शिक्षालयों से उत्तीर्ण [illegible] लोग—यह सब इस वर्ष माध्यमिक [illegible] शिल्प-सिखाओं के केन्द्रों और उच्च [illegible] की संस्थाओं में भर्ती हुए हैं। सोवियत [illegible] युवकों ने विशेष शिक्षा प्राप्त करने [illegible] जितनी प्रबल इच्छा दिखाई है उतनी [illegible] उनसे कभी आशा नहीं की जाती थी। [illegible] मास्को और निप्रोप्रेत्रोवयस्क के [illegible] स्कूलों में जहां धातु का काम सिखाया [illegible] जाता है तथा ऐसी अनेकों संस्थाओं [illegible] में जिनका काम है यातायात और [illegible] के बारे में शिक्षा देना, प्रत्येक खाली स्थान [illegible] के लिए दो या तीन अर्जियां आई थीं। [illegible] मास्को-स्थित रेलवे-यातायात की संस्था [illegible] में छः सौ नियुक्तियों के लिए तेरह सौ [illegible] अर्जियां आई थीं। कजाकस्तान की राजधानी आल्याआता के विश्वविद्यालय में [illegible] तीन सौ नियुक्तियों के लिए स्थान थे। [illegible] इसके लिए सात सौ दरख्वास्तें आईं थीं [illegible] जिनमें दो सौ कजाक युवकों और युवतियों [illegible] ने भेजी थीं।

विशेष कारीगरी सिखानेवाले माध्यमिक स्कूलों और उच्च शिक्षा की संस्थाओं [illegible] की शीघ्र से शीघ्र मरम्मत कराकर [illegible] बढ़ाने के लिए सोवियट सरकार ने बहुत [illegible] धन व्यय किया है। सोवियट संघ के [illegible] माध्यमिक विशेष शिक्षा केन्द्रों ने [illegible] वर्ष के लिए ३,७७,३०० युवकों और [illegible] युवतियों को भर्ती किया है। इस प्रकार [illegible] ऐसी संस्थाओं की छात्र-संख्या इस [illegible] १०,२७,००० हो गई है। यह बताना [illegible] आवश्यक है कि १९४०-४१ में यह संख्या [illegible] ८,१९,५०० ही थी सोवियट संघ की [illegible] उच्च शिक्षा की मिनिस्ट्री के अन्तर्गत [illegible] आनेवाले स्कूलों की छात्र-संख्या [illegible] बहुत बढ़ गई है, इस वर्ष, श्रावण और [illegible] भाद्रपद के महीनों में, शिक्षा के प्रथम वर्ष [illegible] के लिए लगभग १,९५,००० छात्रों [illegible] भर्ती हुई थी। सोवियट उच्च शिक्षा [illegible] केन्द्रों में यह संख्या अब तक यहां [illegible] कभी न पहुँच सकी थी। इस प्रकार [illegible] कुछ छात्र-संख्या ६,५०,००० है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निश्चेलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि की जड़ से नष्ट करने में हमारे **"वीर्यसंजीवनसत"** ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।–) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ **"तिला मस्ताना"** की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

खाँसी और सर्दी के लिये

सिरोलीन "रोच"

शारीरिक उष्णता के वजह से:-

यदि आपको कायमी बदहजमी और अरुचि जैसी उष्णता की शिकायतें हों, रातको बारम्बार सख्त प्यास आपको जगाती रहती हो, खाना खानेके बाद जलन होती हो और खट्टी डकारें आती हों, पित्ताशय में कायमी मन्द कब्ज़ रहती हो, सारे शरीरके अपर और अन्दर जलन रहती हो, आँखें जलती हों, हथेलियों और पाँव के तलुओं में जलन होती हो, मूत्र-मार्ग में जलन होती हो, वजन कम हो गया हो, पंडुरोग हो, सामान्य अशक्ति महसूस होती हो तो आजाही एक बोतल का सेवन शुरू की जिये, २५ से भी ज्यादा सालों से पर्लकाढ़ा ने इस दवाई को सेवन करनेवाले हजारों लोगों को अच्छा कर दिया है।

पर्लकाढ़ा जवान और बुढे स्त्री, पुरुष और बच्चे – सभीको समान रुपसे फायदा करता है। प्रसूता स्त्रियों को भी फायदा करता है।

शारीरिक उष्णता के लिये मशहूर अनुभूत इलाज!

शीतल शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

एकबार परीक्षा कर स्वयं अजमाइये!

8/45 /HI/1

पर्ल कंपनी, आयोंपधी कारखाना, राणीबाग, बम्बई २७

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड कम्पनी, बिरहना रोड, कानपूर।

अपने दान्तों के लिये गिब्स डेन्टिफ्रिस का उपयोग कीजिये क्योंकि...

यह आपके दाँत सुरक्षित रखता है—और इसलिये आप के स्वास्थ्य की रक्षा करता है

आप अपने दांत साफ़ करें, उन्हें सफ़ेद और सुरक्षित रखें तथा अपना स्वास्थ्य भी। कोयला व अन्य सख्त पदार्थ का उपयोग करने से, दाँतों को खुरोने जाने का खतरा रहेगा और खुरोचा दांत जल्द किड़ जायेगा। इसीलिये गिब्स डेन्टिफ्रिस से बदल करें। गिब्स डेन्टिफ्रिस खुरोचे बगैर (दाँत) साफ़ करने के लिये बनाया गया है। वह मधुर स्वाद रखता है और जंतुनाशक भी है, नियेमित-रूप से उस का प्रयोग करें; वह आप के दाँत सुरक्षित रखेगा और आप के स्वास्थ्य को आरोग्यप्रद रखने में सहाय करता है।

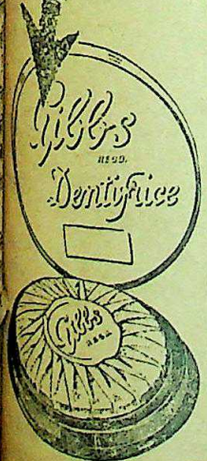

गिब्स

समस्त दंतमंजनों से अधिक समयतक चलता है और सस्ता भी है

गिब्स दांतून के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है

गिब्स डेन्टिफ्रिस

D. & W. GIBBS LIMITED, LONDON, ENGLAND

रोना

हँसना

ग्राइप वाटर के उपयोग के बाद पेट के दर्द व खट्टे डकार से छुटकारा मिलता है।

WOODWARD'S GRIPE WATER

— keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिये इसका अवश्य देख लिया करें।

I-WW 116—117 W. WOODWARD LTD. LONDON. ENGLAND.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिंस होमियोपैथिक कालेज
बनारस

गवर्नमेन्ट रजिस्टर्ड और एडेड से होमियोपैथिक, बायकेमिक, इंजेक्शन का तीनों डिप्लोमा (सार्टिफिकेट) लें या शिक्षा प्राप्त करें। नियमावली मुफ्त मँगाइए।

धड़ाधड़ बिक रहा है। शीघ्रता कीजिए

वार्षिक बालसखा १९४७

इसकी छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएँ और कहानियाँ अनेक हैं। जिल्द सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का मूल्य ३) । मासिक ग्राहकों को रियायती मूल्य २॥) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

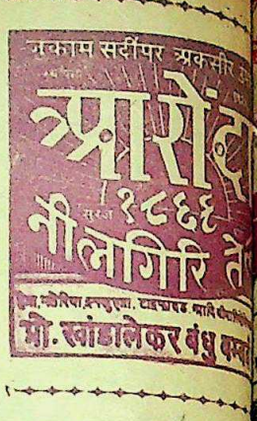

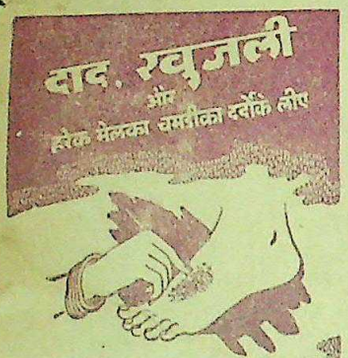

सपट एण्ड कुं
मुंबई. २

P.P.C.183

*कमला:
चमकीले बालों पर
जार्मती की झलक...
चांदनी की भांति
उज्ज्वल मुखमंडल.....

*वह रूपवती है!

वह पॉन्ड्स का प्रयोग करती है!

सर्वत्र युवा स्त्रियाँ और कन्यायें प्रसुप्त लावण्य को व्यक्त करने की प्रणाली खोज रही है।

...शरीर-सौन्दर्य मृदुल अंगों के लावण्य को व्यक्त करता है। पॉन्ड्स क्रीम के प्रकृत तेलों से स्वच्छ करते हुये अपने चेहरे को स्वच्छ और कोमल रखिये।

पॉन्ड्स दिनचर्या

पॉन्ड्स क्रीम्स

पॉन्ड्स कोल्ड क्रीम : पॉन्ड्स कोल्ड क्रीम को चेहरे पर कोमलता से रगड़ते हुये दिन में दो बार उसे साफ़ कीजिये; उंगली के कोमल पोरों से उसे थपथपा-इये। पॉन्ड्स टिशू से स्वच्छ कर लीजिये।

पॉन्ड्स वेनिशिंग क्रीम : कोल्ड क्रीम को साफ़ करके उंगली के पोरों से पॉन्ड्स वेनिशिंग क्रीम लगाइये। त्वचा को सुरक्षा देता हुआ वह आप के प्रयोग के साथ ही अंतर्धान हो जाता है।

पॉन्ड्स पाउडर : यदि आप की इच्छा हो तो पुष्प-पखड़ी की भांति कोमलता के लिये पॉन्ड्स पाउडर लगवायें।

आहार-सम्बंधी पूछताछ के लिये लिखिये:
एच. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लिमि०
बम्बई - कलकत्ता - कराची - मद्रास.

Copyright, Pond's Extract Co.

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्तल ने रेडियो प्रेस, लिमिटेड, ... मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मि...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

मूल्य ७॥)

२६ आक्टोबर, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 26th October, 1947

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना-पराया

पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' लिखित इस मनोरंजक उपन्यास में एक चीनी तरुणी का मेनका-नृत्य जहाँ आपको आत्म-विभोर कर देगा, वहीं तिब्बत और चीन की नैसर्गिक छटा और वहाँ के अजीबोग़रीब रस्म-रिवाज भी आपके सामने नाच उठेंगे। चीन की यह रहस्यमयी तरुणी किस प्रकार भारत आती और अपने धर्म तथा स्वदेशाभिमान की रक्षा कर, एक भारतीय नौसैनिक की सहायता से अपने देश लौट जाती है, आदि प्रसंग आपको प्रणय की रंगीनियों का सजीव परिचय देंगे। पृष्ठ २३२, सजिल्द और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २॥) रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

धड़ाधड़ बिक रहा है। शीघ्रता कीजिए

वार्षिक बालसखा १९४७

इसकी छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख कविताएँ और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का मूल्य ३)। मासिक ग्राहकों को रियायती मूल्य २॥) शीघ्रता कीजिए

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

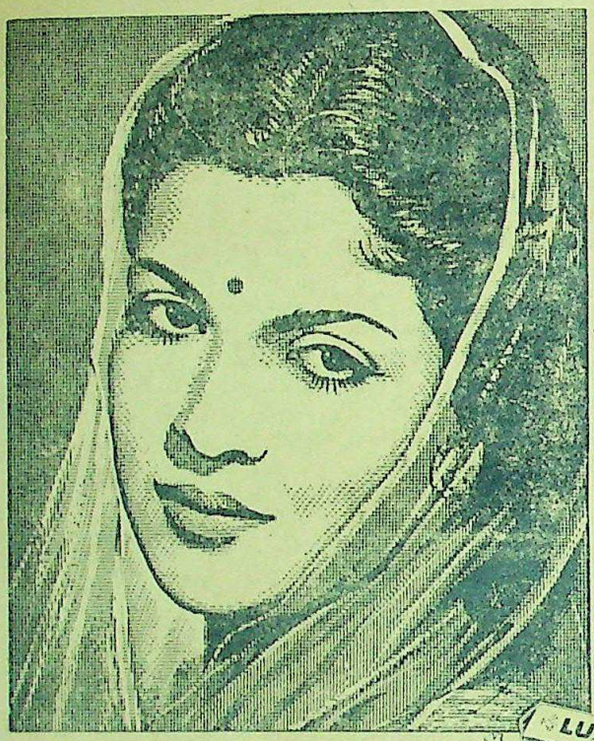

"लक्स टॉयलेट साबुन से
आपकी त्वचा साफ़सुथरी
और सुन्दर रखिये"
इन्दिरा कहती है

LTS. 167-111 III LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

पेट-दर्द का रोगी कहता है

मैं 'मेकलीन्स्' की कितनी प्रशंसा करूँ!

यदी आप मंदाग्नि मे पिडित हैं, और भोजन के बाद दर्द या अन्य कष्टदायी लक्षणों का अनुभव करते है, तो मेक्लीन ब्रांड स्टमक पावडर का सेवन कीजिये। यह रोग का तत्काल निराकरण कर देगा और पाचनशक्ति को सुधार देगा।

प्रिय महोदय

मैं आप पर यह प्रकट करने के लिये लिखता हूँ कि मैं मेकलीन्स् की कितनी प्रशंसा करता हूँ। पेट दर्द की बड़ी परेशानी में वर्षोंतक मैंने उसका प्रयोग किया .....

मैं, असल में, नहीं जानता कि यदि मेरे पास मेकलीन्स नहीं होता तो मैं क्या करता। अधिक और क्या प्रशंसा करूँ?

भवदीय, (हस्ताक्षर) डब्लू. ई. आर.

मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर की व्यापक ख्याति उसकी हृदय-दाह, उदर-वायु, मिचलाने एवं अपचन से होने वाले पेट के दर्दों के निवारण में प्रभावोत्पादकता का मान्य प्रमाण है।

"एलेक्स सी. मेकलीन" के हस्ताक्षरवाला मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर और गोलियाँ ही प्रामाणिक हैं।

गोलियों के रूप में भी

Copyright

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमाला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

इलाहाबाद के एजन्ट—
अन्तुलाल जाहरी एल० ए०
एन्ड ब्रदर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

वर्ष १०, संख्या ८] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, २६ आक्टोबर, १९४७

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

जूनागढ़ के अस्थायी सरकार के ...पति श्री श्यामलदास गांधी ने कहा ...कि जूनागढ़ के अधिकांश मुसलमान ...सरकार के साथ होते जा रहे हैं, ...नहीं उन्होंने नई सरकार को ...सहायता भी दी है। इस ...की सचाई में संदेह नहीं हो सकता, ...जनता तो अपना भोजन और ...देखती है, जूनागढ़ के नवाब की ...उसके किस काम की? भारत-...अगर जूनागढ़ को घिरवा ...है और रसद बंद हो जाता है तो ...साहब खुद ही धूल फाँकने ...मुसलिम जनता के लिए ...क्या करेंगे? लेकिन ऊँची ...पर विराजमान कायदे आजम तथा ...बाडीगार्ड लोग कुछ होने दें, तब ...वह तो स्टेटमेंट पर स्टेटमेंट ...जाते हैं और जूनागढ़ आफत में पड़ा ...मार रहा है।

* * *

...समाजवादी नेता डाक्टर ...कहते हैं कि पाकिस्तान पाँच ...में गायब हो जायेगा। अपन राम ...में अभी पाकिस्तान बन जुम्मा-...९ महीने भी नहीं बीते हैं और ...पांच वर्ष में उसे गायब होना है तो चार साल कुछ ही महीने शेष रह गये हैं। ब्रिटेन तो पाकिस्तान जिन्दा रखना चाहेगा, नहीं तो सोवियट रूस से उसकी हाथापाई किस तरह हो सकेगी? फिर भी पाकिस्तानियों की बला से पाकिस्तान गायब होता है तो हो जाये, इस वक्त तो पाकिस्तान-उपनिवेश के जिन्ना साहब गवर्नर-जनरल हैं ही। इस वक्त तो चैन से गुजर ही रही है, आकबत की खुदा जाने?

* * *

हैदराबाद राज्य को छोटा पाकिस्तान बनाने की धुन सुनाई देने लगी है। बड़ा अच्छा सुसंवाद है। बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ छोटे मियाँ सुभा नअल्लाह! बड़े पाकिस्तान की लीला तो यों ही अपरम्पार दिखाई दे रही है किन्तु छोटे पाकिस्तान आगे कैसा अभिनय करेंगे, यह भी एक नई बात तो होगी ही। लेकिन निजाम हैदराबाद करे तो क्या करे? करन का इरादा भी कम नहीं है, लेकिन हिन्दू जनता का बहुमत है और घिरा है कांग्रेसी प्रान्तों से। बस यही परेशानी है। हैदराबाद की वैसी ही स्थिति है, जिमि 'दसनन महँ जीभ बिचारी'।

* * *

आगामी जनवरी के महीने में बरमा स्वतन्त्र हो जायेगा। शासन-सत्ता जनता के प्रतिनिधियों के हाथ में सौंप दी जायेगी। संवाद तो सचमुच बड़ा ही सामयिक है। बात यह है कि इस वक्त अँगरेज योरोप से लेकर एशिया तक स्वतन्त्रता की रेवड़ी बाँट रहे हैं। लेने-वालों की कमी है। जिसने स्वतन्त्रता का नाम लिया और अँगरेजों ने उसे स्वतन्त्रता की रेवड़ी थमाई। हिन्दुस्तान को स्वतन्त्र कर ही दिया। हिन्दुस्तान और पाकिस्तानी का नाटक वह दूर से देख रहे हैं। फिलिस्तीन को भी स्वतन्त्र बना ही दिया, अरबवाले बड़बड़ाते रहें तो वह क्या करें? अब नम्बर बरमा का है। देखना है बरमा को स्वतन्त्रता मिलते-मिलते क्या शिगूफा छूटता है? अँगरेज बुद्धिजीवी हैं, बुद्धू नहीं। बुद्ध भगवान् की प्रेमी जनता को अँगरेज जरूर बुद्धि-वादी स्वतन्त्रता प्रदान करेंगे, जनवरी में पर्दाफाश होगा, समय दूर नहीं है।

* * *

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के आगामी अधिवेशन का सभापतित्व बड़ा रंग ला रहा है। समझदार लोगों की राय है कि सेठ गोविन्ददास जी को इस वर्ष सभापति बनाने से राष्ट्रभाषा हिन्दी की दृष्टि से अधिक उपयुक्त है। किन्तु काशी के पंडित चंद्रबली पाण्डेय, महा पंडित राहुल सांकृत्यायन, पंडित बाल-कृष्ण शर्मा और महादेवी वर्मा को भी सभापति बनाने की ओर भी कुछ हिन्दी-वाले धुन बाँधे हैं। किसी ने अपना नाम वापस नहीं लिया, इससे जान पड़ता है कि सभापति सबके सब एक साथ ही बन जाने के इच्छुक हैं। अपने राम की राय में अधिवेशन में बेंच पर पाँच कुर्सियाँ रखवा दी जायें और सबके सब उम्मीदवार सभापति बन बैठें तो कैसा रहे? बात यह है कि सभापति बनने का मामला है, हिन्दी के लिए सूली पर चढ़ जाने की बारी तो है नहीं? अपने देश में अपना राज और अपने राज में है सभापतित्व!

संयुक्त प्रान्तीय सरकार ने हिन्दी को राजभाषा घोषित कर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

राजभाषा हिन्दी

संयुक्तप्रांतीय सरकार के कांग्रेस मंत्रिमंडल ने हिन्दी-भाषा तथा देवनागरी को प्रांत की राजभाषा तथा लिपि स्वीकार करके एक ऐतिहासिक कदम उठाया है। सरकार की ओर से प्रांत के समस्त सरकारी विभागों तथा प्रमुख अधिकारियों के पास एक आदेश-पत्र भेजकर यह आदेश दिया है कि भविष्य में अँगरेजी तथा उर्दू के स्थान पर समस्त लिखा-पढ़ी हिन्दी तथा देवनागरी लिपि में होनी चाहिए। भारतवर्ष में संयुक्तप्रांतीय सरकार पहली सरकार है जो प्रांत की ९० प्रतिशत जनता की वास्तविक और वर्षों की माँग की पूर्ति करने में सफल हुई है। अँगरेजी हुकूमत में प्रांतों की संस्कृति, विचार-धारा, जनता की भावना तथा भाषा और लिपि पर सदा से कुठाराघात होता आया है और कहना यह चाहिए कि जनता की सांस्कृतिक विचार-धारा को वर्णसंकर अथवा पतित बनाने में कोई कोर-कसर नहीं उठा रखी गई है। मद्रास, गुजरात, बंगाल, बम्बई प्रांतों की मातृभाषाओं की फिर भी किसी न किसी प्रकार रक्षा होती रही और उन्हें यदि युद्ध करना पड़ा तो केवल अँगरेजी से; किन्तु संयुक्तप्रांत की भाषा हिन्दी को अँगरेजी तथा उर्दू से लोहा लेना पड़ा। अँगरेजी सरकार ने अँगरेजी का पक्ष तो सदा किया ही, किन्तु उसके बाद प्रांत में प्रमुख स्थान उर्दू भाषा तथा फारसी लिपि को दिया गया और ९९ प्रतिशत जनता की भाषा हिन्दी को नष्ट-भ्रष्ट करने की पूरी चेष्टा ही नहीं की गई, बल्कि क्रियात्मक उपाय भी किये गये। इसलिये संयुक्तप्रांत के साथ भाषा तथा लिपि की दृष्टि से पिछले ९० वर्ष से अँगरेजी शासकों तथा अधिकारियों की ओर से बहुत बड़ा अन्याय किया गया। यही नहीं हिन्दुस्तानी नाम की एक गढ़ी हुई भाषा को भी जनता तथा शिक्षित वर्ग के गले मढ़ा जाता रहा जिसके परिणामस्वरूप हिन्दी भाषा-भाषी जनता का नैतिक पतन अनिवार्य हो गया। मध्यप्रांत और बिहार फिर भी मातृभाषा की सुरक्षा की दृष्टि से थोड़े बहुत सुरक्षित रहे किन्तु संयुक्तप्रांत की तो पूरी तरह से बधिया बैठाली गई। प्रांत में पिछले पचास वर्ष से स्वर्गीय पंडित मदनमोहन मालवीय तथा हिन्दी-साहित्य सम्मेलन की ओर से हिन्दी तथा देवनागरी-लिपि के प्रति होनेवाले अन्यायों का समय समय पर प्रतिरोध होता रहा किन्तु प्रांतीय सरकार पर इसका कोई भी प्रभाव नहीं पड़ा। हिन्दी भाषा-भाषी जनता अपने भाषा-संबंधी अधिकारों की प्राप्ति के लिए सार्वजनिक रूप से आन्दोलन करती रही, किन्तु सरकारी सहयोग से वह वंचित रही।

एक युग के बाद हिन्दी जनता को अपनी मातृभाषा को राजभाषा बनते देख अपार हर्ष और संतोष हुआ है। हिन्दी जनता के प्रति सरकारी तौर पर यह कृपा नहीं वरन् उसके वास्तविक अधिकार को पुनः वापस किया गया है। जनता की सरकार से प्रांत का प्रत्येक मातृभाषा-प्रेमी ऐसी ही आशा करता था। कांग्रेस-मंत्रिमंडल ने हिन्दी को राजभाषा तथा देवनागरी को राजलिपि स्वीकार करके अपनी वास्तविकता प्रगट कर दी है। इसलिए वह बधाई का पात्र है। अब आवश्यकता है सरकारी आदेश के कार्यरूप में परिणत होने की; क्योंकि पिछले एक शताब्दी की जो रूढ़ि स्थापित हो गई है, हिन्दी की उपेक्षा करके अँगरेजी तथा उर्दू के प्रति जो व्यापकता बढ़ गई है, उसका अंत होना जरूरी है। सरकार ने यह आश्वासन दिया है कि आगामी दिसम्बर-जनवरी से सरकारी कागज-पत्रों में बहुत कुछ परिवर्तन किया जानेवाला है। यदि ऐसा हुआ तो देवनागरी लिपि और हिन्दी की कार्यवाहियों में स्वयं परिवर्तन होना अवश्यम्भावी है। जो लोग उर्दू तथा अँगरेजी ही के आधार पर शासन-कार्यों में योग देते थे उनके लिए हिन्दी पढ़ना तथा देवनागरी में लिखना अनिवार्य हो जायगा। एक बार प्रारम्भ में कुछ गड़बड़ी तो उत्पन्न होगी, क्योंकि परिवर्तन-काल में ऐसा होता ही है, किन्तु यदि सरकार की ओर से दृढ़ता जारी रही तो प्रांत के कोने-कोने में हिन्दी ही हिन्दी दिखाई देगी। हम प्रत्येक हिन्दी-प्रेमी सरकारी कर्मचारियों, अधिकारियों तथा कार्य करनेवालों से अनुरोध करेंगे कि उन्हें अपने प्रांत की मातृभाषा तथा प्राचीन संस्कृति की रक्षा करने में प्रांतीय सरकार के निर्माण का पूर्ण रूप तथा दृढ़ता से पालन करना चाहिए। जो अल्पसंख्यक जमात हिन्दी नहीं जानती या देवनागरी लिपि से अनभिज्ञ है, वह भी सरकारी आज्ञा का पालन करे। हिन्दी भाषा-भाषियों, नागरिकों, कार्यकर्ताओं, वकीलों तथा अध्यापकों को भी सरकारी आदेश को क्रियात्मक सहयोग देने में पूरा योग देना चाहिए और जनता की सरकार द्वारा प्राप्त सुअवसर को हाथ से कदापि न जाने देना चाहिए।

हमें बड़ा खेद है कि महात्मा गांधी को संयुक्तप्रान्तीय सरकार के को राजभाषा स्वीकृत करने पर दुख हुआ है। गांधी जी को अनिवार्य है क्योंकि उनकी हिन्दुस्तानी राजभाषा के पद कारिणी ह। महात्मा गांधी के वक्तव्य का उत्तर प्रान्त के सूचना-मंत्री पंडित श्रीकृष्णदत्त ने समुचित रूप में दे दिया है। गांधी हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभा के पक्ष में हैं और यह विषय परिषद् के आगामी अधिवेशन के लिए आनेवाला भी है, किन्तु प्रान्त की मातृभाषा तो हिन्दी है मातृभाषा के प्रति अगर प्रान्तने उचित निर्णय किया तो गांधी दुःख प्रकट करने का कोई का क्या गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल की मातृभाषा के प्रति अन्याय होता आया है जैसा कि की मातृभाषा हिन्दी के प्रति ह? यदि गुजरात में गुजराती में मराठी और बंगाल में राजभाषा की दृष्टि से उपयोग है तो संयुक्तप्रान्त की मातृभा को स्वीकार किया गया तो नई बात हो गई? राष्ट्रभाषा भाष में अन्तर तो है ही। सरकार ने प्रान्त की जनता के वाले एक संस्कृत-विरोधी अन्त कर दिया है, इसलिए से प्रशंसा की पात्र है। राष्ट्र हो जाने के बाद हिन्दुस्तान मुसलमान अल्पसंख्यक के रूप कर हैं तो उनकी उर्दू भाषा को भाषा बनाये रखना कहाँ का अँगरेजी सरकार ने अब तक बहुमत की इच्छाओं के कांग्रेस सरकार ने शासन लेते ही उसका प्रतिरोध किया आज का अवसर हमारे प्रान्त बड़ा ही महत्त्वपूर्ण और है। यह एक महान् परिवर्तन परिवर्तन की सुरक्षा करना भाषा-भाषी का एक महान्

जय-जय-जय-जय भारतवर्ष

लेखक, श्री गोपीकृष्ण

'अपनी रोटी, अपना राज,
इन्कलाब, जिन्दाबाद,'

कहनेवाला कवि है मौन?
किन्तु, वहाँ से बोला कौन—
आज हो गया पूरा सपना,
आज हो गया सब कुछ अपना!
धरती अम्बर सारे अपने,
सूरज-चाँद-सितारे अपने!
अपने पतझर और वसन्त,
अपने देवी-देव अनन्त!
अपने बादल, अपनी घाम,
अपनी सुबहें, अपनी शाम।
अपने बरगद, अपने ताड़,
अपनी नदियाँ और पहाड़।
आज कह रही माया-सीता—
मौत मर गई अपनी मौत!
आज बिछी साधों की सेज;
अपनी गरिमा, अपना तेज।
आज कह रहा सीना तान;
अपना वैभव, अपना ज्ञान—
अपना समझो स्वत्व महान,
अपना समझो हिन्दुस्तान!
अपनी जनता, अपना देश,
अपनी दुनिया, अपना देश।
अपने स्वर हैं, अपनी वाणी,
अपनी रोटी, अपना पानी।
अपना रुपया, अपनी पाई,
अपनी बहनें, अपने भाई।
अपनी ममता, अपना प्यार,
अपनी जनता की सरकार!
अपनी नई कहानी आज,
अपने राजा-रानी आज।
कैसे आँसू, कैसा खेद,
कैसा अन्तर, कैसा भेद।
जब कि 'आल्प्स', 'राँची', 'एंडीज',
आज हो गये सब नाचीज;
जब कि आज भारत के अन्दर,
लहराते हैं सात समन्दर!

खिले कमल औ' खिले पलाश,
खिला हिमालय का कैलाश।
मुस्काती है गंगा आज,
देखो, उड़ा तिरंगा आज।
आज उगा कण-कण में हर्ष,
जय-जय-जय-जय भारतवर्ष।

दीपावली के शुभ अवसर पर

'देशदूत' का लोकप्रिय विशेषांक

दीपावली के अवसर पर 'देशदूत' का अत्यन्त सुन्दर, लोकप्रिय, राष्ट्रीय भावनाओं, अनेक सामयिक चित्रों, नेताओं के लेखों, कहानियों तथा कविताओं से सुसज्जित बड़ा ही बढ़िया विशेषांक प्रकाशित होगा। कवर बहुरंगा, मूल्य केवल ।)

मैनेजर 'देशदूत', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ गीति-काव्य

कवि और छवि

लेखक, सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव

कविश्री बालकृष्णराव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपकी नवीनतम गीति-काव्यों का सर्वश्रेष्ठ संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्द्वंद्व से परिपूर्ण तो है ही साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाले हैं। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संग्रहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम, सचित्र और सजिल्द—मूल्य केवल २) रु०।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिलिस्तीन की आज की समस्या

अरबों की गुलामी की उलझन कैसे सुलझ सकती है ?

लेखक, श्री बालाजीराव जोशी, एम० ए०

फिलिस्तीन की आज की राजनीति बड़ी उलझनपूर्ण बन गई है। ब्रिटेन फिलिस्तीन के बटवारे पर डट गया है और दो राष्ट्रों के बटवारे का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। इसलिए राजनैतिक दृष्टि से अरब राष्ट्र पर एक महान् संकट उत्पन्न हो गया है। संयुक्त-राष्ट्र-संघ भी साम्राज्यवादी राष्ट्रों के कुचक्र से फिलिस्तीन के सम्बन्ध में ईमानदारी से फैसला नहीं कर रहा है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने फिलिस्तीन की राजनीति का विस्तृत वर्णन किया है, जो सामयिक और जानकारी से पूर्ण है।

फिलिस्तीन में अरब-आन्दोलन का संचालन करनेवाला नेता ग्रांड मुफ्ती।

फिलिस्तीन की समस्या दिन-प्रतिदिन ...होने के बजाय जटिल बन रही है। ...चारपत्रों में हम बहुधा पढ़ते हैं कि ...दियों ने ब्रिटिश अफसरों को भगाया ...मारा, अथवा ब्रिटिश शिविरों को ...न्त किया। हाल ही में यह भी पढ़ने ...मिला कि फिलिस्तीन के अरबों का ...मानित नेता ग्रैण्ड मुफ्ती फ्रेंचों के ...जन से मुक्त होकर ईजिप्त में आकर ...गया है। इन घटनाओं से स्वाभाविक-...फिलिस्तीन की स्थिति की ओर ...ध्यान आकृष्ट हो जाता है।

फिलिस्तीन भूमध्यसागर के पूर्व-...र है तथा पूर्व में जार्डन नदी, दक्षिण ...वेज नहर तथा इजिप्त और उत्तर में ...या की सीमाओं से युक्त है। उसका ...फल ९००० मील है। उसकी जन-...ा १८ लाख है, जिसमें यहूदियों का ...ात ⅓ है। शेष अरब हैं, जिनमें ...कांश मुसलमान हैं और कुछ ईसाई हैं।

फिलिस्तीन के जागतिक महत्त्व ...कारण केवल धार्मिक नहीं है। ...लिस्तीन एक साथ ही यहूदियों की ...भूमि, ईसा की जन्मभूमि होने के ...ईसाइयों की पुण्यभूमि तथा मुसल-...ों का "जेरूसलेम" वहीं होने के कारण ...मानों का तीर्थ स्थान है। यहूदी, ...तथा मुसलमान तीनों धर्मों के ...फिलिस्तीन की यात्रा करते हैं। ...क महत्त्व को स्वीकार करके भी ...स्पष्ट करना आवश्यक है कि फिलिस्तीन ...प्रबल महत्त्व का प्रधान कारण यह ...साम्राज्य का मुख्य मार्ग—स्वेज ...तथा अन्य हवाई रास्ते मध्य-पूर्व ...होकर जाते हैं। इसके पास ही ...लिस्तीन स्थित है, वहीं हैफा नामक ...गाह तथा नाविक या जहाजी अड्डे ...स्थान भी है। फिलिस्तीन से ही ...के नल जाते हैं। इन सभी बातों ...कारण फिलिस्तीन को इतना प्राधान्य ...हुआ है। अतएव साम्राज्य-...स्वाभाविकतया यह चाहते हैं कि ...प्रदेश अपने अधीन रहे।

फिलिस्तीन का आधुनिक इतिहास ...महायुद्ध से आरंभ होता है। ...संदेहरूप से फिलिस्तीन यहूदियों की ...भूमि थी; किन्तु दो हजार वर्ष ...रोमन सैनिकों ने यहूदियों को उनकी ...भूमि से बाहर निकाल दिया। ...यहूदियों का जीवन अस्त-व्यस्त ...हो गया है। तेरहवीं शताब्दी में ...के अरब राजाओं ने फिलिस्तीन ...आक्रमण करके उस पर कब्जा किया। ...शताब्दी में फिलिस्तीन के ...निवासी तुर्की सुलतान के शासन ...आ गये। किन्तु जब तुर्की सुलतान ...विरुद्ध अरबों में घोर असन्तोष तथा ...बढ़ा और स्वयं तुर्की साम्राज्य में अव्यवस्था आरंभ हो गई तो साम्राज्य-वादियों ने उससे लाभ उठाया। उन्होंने अरबों को धन और स्वतंत्रता का आश्वासन देकर तुर्की सुलतानों के विरुद्ध संघर्ष करने को भड़काया। इसी समय यहूदियों ने एक "जिआनिस्ट लीग" नामक संगठन स्थापित किया, जिसने निर्वासित यहूदियों की उनकी आदि भूमि—फिलिस्तीन में "राष्ट्रीय निवासस्थान" बनाने की माँग का जोरों से समर्थन किया। यह घटना अँगरेज जैसे दूरदर्शी साम्राज्यवादी के फायदे की थी। धीरे धीरे अँगरेजी फौजों ने ईजिप्त, सूडान आदि को जीतकर अरब जनता के तुर्क-विरोधी असंतोष के सहारे मध्यपूर्व के प्रदेशों को कब्जे में किया जब अरबों ने स्वतंत्रता का आश्वासन कार्यान्वित करने की प्रर्थना अँगरेजों से की तब अँगरेजों ने उसे चतुरता से इनकार कर दिया। अँगरेज अमरीका का सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य से अमरीका के सत्ताधारी वर्ग पर विशेष प्रभाव रखनेवाले धनाढ्य यहूदियों के दल का समर्थन प्राप्त करना चाहते थे। इसके अतिरिक्त वे "जिआनिस्ट लीग" के प्रधान डा० वाईजमान, जिन्होंने एक महत्त्वपूर्ण स्फोटक द्रव्य प्रदान किया था, कोई यथायोग्य पारितोषिक देना चाहते थे। यहूदियों ने उसी समय फिलिस्तीन में "राष्ट्रीय निवासस्थान" बनाने की जोरदार माँग भी पेश की थी। अतएव चतुर और दूरदर्शी अँगरेजों ने बाल्फोर के मंत्रित्व में यह घोषणा की, कि फिलिस्तीन के निवासियों को नागरिक (सैनिक छोड़कर) अधिकार दिये जायेंगे तथा यहूदियों को राष्ट्रीय निवासस्थान बनाने की दृष्टि से फिलिस्तीन में अनिर्बन्ध रूप से प्रवेश मिलेगा। फल यह हुआ कि यहूदियों की संख्या लाखों की मात्रा में बढ़ने लगी। इस संख्या-वृद्धि में जर्मनी के तानाशाह हिटलर के अत्याचारों ने भी प्रमुख योग दिया। "जिआनिस्ट लीग" यह प्रचार कर रही थी कि यहूदी अधिक से अधिक संख्या में फिलस्तीन में बसे और अपना अलग राष्ट्रीय निवासस्थान बनाने का प्रयत्न करे। पड़ोसी अरब राष्ट्रों को ब्रिटिश राष्ट्र-समूह के अन्तर्गत प्राप्त स्वतंत्रता को देखकर फिलिस्तीन के अरबों की स्वातंत्र्येच्छा भी बढ़ने लगी और वे ब्रिटिश तथा यहूदियों के विरुद्ध उग्र आन्दोलन मचाने लगे। अरबों ने समय-समय पर हड़ताल, असहयोग, बहिष्कार आदि साधनों के जरिये अपना ब्रिटिश-विरोधी रुख प्रकट किया। इसके विपरीत, यहूदियों ने भी "हॅगना" नामक एक सशस्त्र फौजी संगठन के जरिये अनेक विद्रोहात्मक आन्दोलन आरंभ करके अपना "राष्ट्रीय निवासस्थान" बनाने का निश्चय भी प्रकट किया।

यह सच है कि यहूदियों ने फिलिस्तीन की काया-पलट कर दी। उन्होंने अनेक कारखान तथा उद्योग-धन्ध खोलकर व्यापार तथा उद्योग की वृद्धि की, अमेरिका की शिक्षण-संस्थाओं के नमूने पर अनेक विद्यालय खोलकर शिक्षा का प्रचार किया, अपनी प्राचीन संस्कृति, भाषा तथा रिवाजों के विकास तथा संरक्षण की ओर ध्यान दिया तथा खेती की आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों द्वारा फिलिस्तीन की भूमि को उर्वर बनाने का सफल प्रयत्न किया है। फिर भी इससे फिलिस्तीन के अरबों, विशेषकर गरीब किसानों तथा श्रमिकों की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार नहीं हो पाया है। अरबों में कट्टर राष्ट्रीयता की भावना शुरू में नहीं थी, वह तो पड़ोसी अरब-राष्ट्रों के प्रभाव तथा यहूदियों की घोर जातीयता के कारण आने लगी। यहूदी अपने कारखानों में अरबों को नौकरी नहीं देते, वे उनकी जमीन छीन लेते या धन-बल से खरीद लेते। इस प्रकार अरब किसान आज भी गरीब और पिछड़ा है। द्वितीय महायुद्ध में मध्य-पूर्व का विशेष महत्त्व देखकर अरबों के उग्र विरोध को शांत करने और उनको मिलाने के उद्देश्य से १९३९ में ब्रिटिश सरकार ने अपने अरब-सम्बन्धी रुख में परिवर्तन करके यह घोषित किया कि (१) फिलिस्तीन को दस वर्ष के बाद स्वतंत्रता दी जायेगी और इस अवधि में लोक-नियुक्त संस्थाओं को शासन का भार धीरे धीरे सौंपा जाएगा, (२) ७५,००० यहूदियों को बसाने के बाद फिर यहूदियों को फिलिस्तीन में बसाने के प्रश्न पर अरबों की सम्मति ली जायेगी, (३) यहूदियों के "राष्ट्रीय निवासस्थान" का संरक्षण होगा, (४) अरबों की जमीनों की यहूदियों के आक्रमण से रक्षा की जायेगी।

पर इस घोषणा ने विशेष कर यहूदियों में गहरा विरोध और असन्तोष पैदा किया क्योंकि उनके फिलिस्तीन के प्रवेश पर तथा जमीनें खरीदने पर कानूनी रोक लगा दी गई थी। ध्यान देने लायक बात एक और थी कि राष्ट्रसंघ ने भी इस घोषणा को अनुचित कहा। तथापि यहूदियों का प्रवेश नाजायज तौर पर जारी ही है। उनका सशस्त्र संगठन, जिसमें हजारों स्त्री-पुरुष त्याग और कर्तव्य की भावना से सम्मिलित हैं, दिन-प्रतिदिन प्रबल हो रहा है। १९३७ में ब्रिटिश सरकार ने पीस कमीशन बैठाकर फिलिस्तीन की समस्या का हल ढूँढ़ निकालने की कोशिश की थी। कमीशन के निवेदन में फिलिस्तीन को ईसाई, अरब तथा यहूदी इन तीन धर्मावलम्बियों के बीच समान रूप से बाँटने और इस प्रकार तीन राज्य स्थापित करने की सिफारिश की गई थी; किन्तु यह सिफारिश किसी को भी मंजूर नहीं हुई। पिछले वर्ष ब्रिटिश तथा अमरीकन सरकार की ओर से एक संयुक्त कमीशन बैठाया गया। इस कमीशन में फिलिस्तीन की जनता का एक भी प्रतिनिधि उपस्थित नहीं था। कमीशन ने अपने निवेदन में निम्नलिखित सिफारिशें की थीं।

(१) किसी भी सम्प्रदाय का वचस्व न रहे। सभी सम संख्या में रहे। याने वहाँ न यहूदी-राष्ट्र बन सके और न अरब राष्ट्र ही।

(२) फिलिस्तीन अरब, यहूदी तथा ईसाई, तीनों धर्मावलम्बियों की धर्म-भूमि है, अतएव तीनों का उस पर समान अधिकार रहे। फिलिस्तीन का अन्तिम ध्येय उपर्युक्त दो सिद्धान्तों पर आधारित स्वराज्य है।

(३) यहूदियों तथा अरबों का आपसी विरोध ध्यान में रखते हुए यह संभव नहीं कि उनको स्वतन्त्रता दी जाय। अतएव जब तक संरक्षता की पद्धति कार्यान्वित नहीं होती तब तक फिलिस्तीन पूर्ववत् ब्रिटिश सरकार की देख-रेख में रहे।

(४) १९३९ में प्रकाशित घोषणा की शर्तें रद्द की जायँ और यहूदियों को जमीन खरीदने की आज्ञा दी जाय।

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

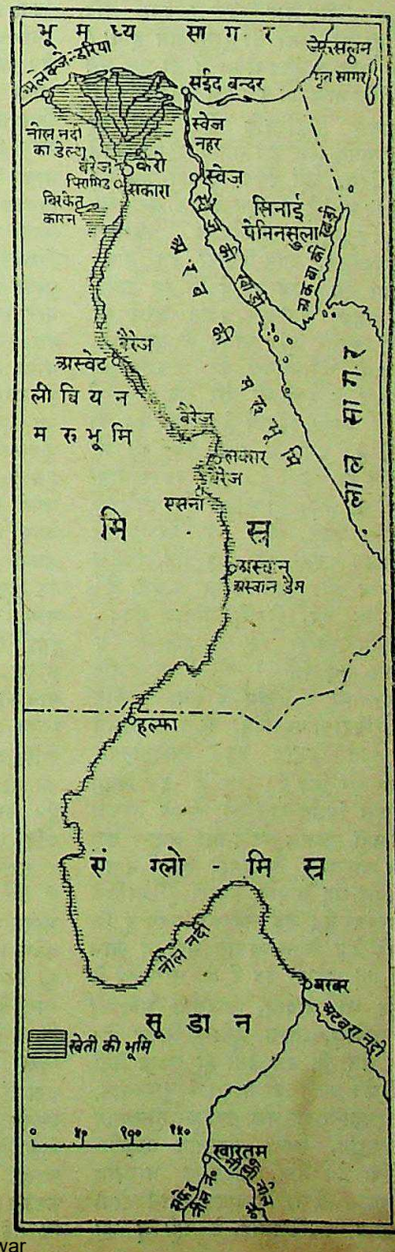

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा हिन्दी अमर है

उर्दू हिन्दुस्तानी के नाम पर हिन्दी के विकास के मार्ग में आड़े न आये

संयुक्तप्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति पंडित बालकृष्ण शर्मा ने सभापति पद से राष्ट्रभाषा हिन्दी और देवनागरी लिपि की अनिवार्यता प्रकट करते हुए बड़ा गम्भीर और तर्कपूर्ण भाषण दिया है। भाषण का प्रमुख अंश यहाँ दिया जाता है जो हिन्दी-भाषा-भाषियों के लिए विशेष रूप से पठनीय है।

काशी में होनेवाले संयुक्त-प्रांतीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के सप्तम अधिवेशन के सभापति पण्डित बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'।

हमारे जीवन का बहुत-सा भाग वाद-विवादों में बीत जाता है। यह मानना कि वादे वादे जायते तत्त्व बोधः; परन्तु इसी के साथ यह भी सत्य है कि वादे-वादे खोपड़ी फूटती है। हमारा—हम, इस राष्ट्रभाषा हिन्दी के सेवकों का – उत्तरदायित्व बहुत अधिक है। हमारी साहित्य-परंपरा और हमारी सन्त-परम्परा में कोई भेद-भाव नहीं रहा है। स्मरण रहे कि यदि हम अपनी परंपरा से विचलित होते हैं तो हम न केवल अपने उज्ज्वल साहित्यिक इतिहास के प्रति, वरन् अपने वर्त्तमान और अपने भविष्य के प्रति भी, घोर विश्वासघात करते हैं। देवो-भूत्वा देवंयजेत्—स्वयं देव-स्वरूप होकर ही अपने आराध्य देव की अर्चना करनी चाहिए। माता सरस्वती की आराधना करनेवालों के हृदय में सरस्वती-वाहन हंस की-सी शुभ्रता और नीर-क्षीर-विवेक-समर्थता यदि न हो तो माता की पूजा कैसे होगी? हम यदि साहित्य-स्रष्टा हैं तो हम प्रण करें कि आज की इस पशु बना देनेवाली भयानक परिस्थिति में भी हम पशु नहीं बनेंगे और हम मानव को पशु बनने की प्रेरणा नहीं देंगे। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि हम कायर, अकर्मण्य, आकाश-कुसुम चुननेवाले यथार्थता से अनभिज्ञ, गगन-विहारी बन जायें। इसका अर्थ केवल यह है कि हम मानव को उसका मानवत्व प्रदान करने की ओर अग्रसर हों। मानव के अन्तस्तल-निवासी गुहा-मानव को उत्क्रमण के, विकास के मार्ग की ओर अग्रसर करने ही में सच्चा पुरुषार्थ है। यही श्रेय का मार्ग है। इसी के द्वारा प्रेय की भी संपूर्त्ति हो सकती है। इसी प्रकार योग-क्षेम का वहन हो सकता है। साहित्य-निर्माण करते समय यही प्रेरणा हमें प्रणोदित करती रहे—यह मेरा विनम्र अनुरोध और मेरी विनम्र प्रार्थना है।

गत वर्ष, दिल्ली, प्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति-पद से बोलते हुए मैंने हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी के विषय में तथा सरकार की रेडियो-भाषा-संबंधी नीति के विषय में अपने विचार बहुत स्पष्टतापूर्वक व्यक्त कर दिये हैं। अतः मैं इस विषय में कुछ विशेष बात तो आपके सम्मुख रख नहीं सकता; पर इतना अवश्य कह देना चाहता हूँ कि हमारे देश में भाषा-विषयक यह मतभेद हमारी ऐतिहासिक विडम्बना है। बड़े खेद का विषय है कि हमारे देश के मुसलमान भाई न जाने क्यों यह समझ बैठे हैं कि भारतवर्ष से बाहर की भाषाएँ, भारतीय भाषाओं की अपेक्षा, उनके अधिक निकट हैं। बात जैसी है, उसे वैसी ही समझ लेनी चाहिये। आज का भारतीय मुसलमान, यानी पढ़ा-लिखा, नेता-ठप्पे का, मुसलमान अभारतीय, किंवा भारतीय संस्कृति-विरोधी है। और, आज के भारतीय मुसलमान में जो यह भारतीयता-विरोधी मानस-ग्रन्थि दिखलाई दे रही है वह कुछ नई नहीं है। उर्दू भाषा के विकास के इतिहास पर यदि हम विचार करें तो हमें पता लगेगा कि उसका यह वर्त्तमान स्वरूप भारतीयता-विरोधी मुस्लिम भावना का ही प्रतिफल है। इस समय मैं इस प्रश्न के ऊहापोह में न पड़ूँगा कि भारतीय मुसलमान समाज की भारतीयता-विरोधिनी मनोवृत्ति के ऐतिहासिक कारण क्या हैं? बिना किसी ऐतिहासिक विवेचन के यदि मैं गत वर्ष दिल्ली में व्यक्त किये गये विचारों को ही दोहरा दूँ तो आपको मेरा मन्तव्य स्पष्ट रूप से अवगत हो जायगा। इस देश में इस्लाम ने अभारतीय स्वरूप धारण किया है और दिन-प्रतिदिन भारतीयता-विरोध का यह रंग और गहरा होता जा रहा है।

मैंने गत वर्ष कहा था कि "भारतीय मुसलमान, भारतीय संस्कृति, भारतीय इतिहास, भारतीय वीर पुरुषों और भारतीय परंपराओं को विजातीय समझना ही अपने इस्लाम के प्रति भक्ति-व्यभिचारिणी का आवश्यक तत्त्व मानता है। अतः वह भारतीय भाषा को अपनी भाषा नहीं मानता। यह दुर्भाग्य का विषय है। पर है यह सत्य, यथार्थ बात। आज तुर्की का मुसलमान अपनी तुर्की भाषा से अरबी के शब्द बीन-बीनकर निकाल रहा है। आज ईरान का मुसलमान अपनी फारसी भाषा से अरबी के शब्द निकालकर अपनी भाषा को शुद्ध एवं सुसंस्कृत कर रहा है। पर आज का भारतीय मुसलमान, इस प्रमाद के वश होकर कि अभारतीयता इस्लाम-भक्ति का द्योतक है, अपनी उर्दू भाषा में अरबी शब्दों को घुसेड़ रहा है। यह हमारी विडंबना है। भारतीय मुसलमानों की इस मनोवृत्ति का कारण हम हैं—हम उच्च वर्ण के हिन्दू, जिन्होंने अपने धार्मिक संकोच के कारण तथा अपनी सड़ी-गली परिपाटी पूजा के कारण, अपनी संस्कृति को, अपने मनोभावों को विकृत कर दिया और जिसका परिणाम यह हुआ कि अन्य धर्मावलंबी जन हमारे शुद्ध स्वरूप को देख ही न पाया। कारण कुछ भी हो, भारतीय मुसलमान की इस अराष्ट्रीय अथवा अभारतीय, किंवा भारतीयता-विरोधी रुझान के अस्तित्व को स्वीकृत करके ही हमें आगे की भाषा-संबंधी नीति का निर्णय करना है। मेरा अपना यह विश्वास है कि यदि भारतीय मुसलमान को इस्लाम के सच्चे स्वरूप का दर्शन करना अभीष्ट है तो उसे अपने मन और प्राणों को भारतीयता के सांस्कृतिक रंग में रँगना पड़ेगा। जो मेरे मुसलमान मित्र मिस्र हो आये हैं और जिन्होंने वहाँ के मुसलमानों के मनोभावों को समझने का प्रयास किया है, उनका कहना है कि आज का मिस्री मुसलमान अपने पूर्वज फरऊन सम्राटों के प्रति श्रद्धा-भक्ति का, एवं उनकी अचकचा देनेवाली महती सांस्कृतिक विशालताओं में गौरव का, अनुभव करता है—हालाँकि कुरानशरीफ में फरऊन सम्राटों में से कुछ की तीव्र निन्दा की गई है। भारतीय मुसलमानों के लिए गत्यंतर नहीं है। उन्हें अच्छे, सच्चे मुसलमान बनने के लिए अच्छे सच्चे भारतीय बनने की प्रेरणा प्राप्त करनी पड़ेगी।"

मैं इस बात का घोर विरोधी हूँ कि हिन्दुस्तानी नामक किसी कपोल-कल्पित भाषा के सृजन के नाम पर हिन्दी का स्वरूप विकृत किया जाय। प्रश्न सीधा-सा है—क्या आप-हम राजनीतिक, अर्थ-शास्त्रीय, वैज्ञानिक, गणितविषयक, ज्यामिति शास्त्रीय आदि शब्दों को संस्कृत से, लेने को तैयार हैं? अथवा क्या ये नित नव, किन्तु सतत् प्रयोगों में आनेवाले, शब्द अरबी या फारसी से लिये जायँगे? मेरे देश की ऐतिहासिक परिपाटी, संस्कृति, जन-रुचि एवं जन-हित-भावना का यह आदेश है कि वर्तमान आवश्यकता एवं वर्तमान विचारधारा को व्यक्त करनेवाले अभिनव शब्द संस्कृत अथवा देशी भाषाओं से ही आयें।

आज हमारे देश की राजनैतिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ अत्यन्त तीव्र गति से परिवर्तित हो रही हैं। आज तो हमारे सम्मुख यह प्रश्न उठना ही नहीं चाहिए कि हमारे इस भारत देश की राष्ट्रभाषा क्या हो? हिन्दुस्तानी नामक भाषा का हमारे जीवन में, हमारी ऐतिहासिक शृङ्खला में, हमारी संस्कृति में, हमारी जन-रुचि में कोई स्थान नहीं है। हिन्दुस्तानी नामक कपोलकल्पित भाषा एक ऐसा उपहासस्पद प्रयास है जो सांस्कृतिक-सम्मेलन के नाम पर वास्तव में संस्कृति-सांकर्य को प्रणोदित करता है। प्रश्न यह है कि हम अरबी तथा फारसी के शब्दों का प्रचलन क्यों सहन करें? हम इस प्रकार की विजातीयता को क्यों प्रोत्साहित करें? क्या हमारी भाषा में, हमारी संस्कृत वाणी में, यह क्षमता नहीं है कि वह अभिनव विचारों को आत्मसात् कर लेने के उपरान्त उन्हें व्यक्त करे? किसका साहस है जो यह कहे कि हमारी भाषा, हमारा शब्दकोश, दरिद्र है? हमारी यह मान्यता है और हम साहस के साथ यह प्रतिपादित करते हैं कि हम प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक राजनैतिक न्याय-विधान-विषयक, आर्थिक, सामाजिक, व्यापारिक, दार्शनिक, साहित्य-सम्बन्धी एवं ललितकलाविषयक अभिनव विचारों को संस्कृत शब्दों द्वारा पूर्णरूप से व्यक्त कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में किसी भी निष्पक्ष शब्दशास्त्री को रंचमात्र भी सन्देह नहीं है। अतः जो लोग हिन्दुस्तानी नामक कल्पित भाषा का राग अलापते हैं वे वास्तव में भाषा-विषयक प्रश्न के महत्त्व को समझे बिना ही ऐसा करते हैं। प्रचलित शब्दों के आधार पर भाषा को परिवर्तित न करने की बात भी मेरी समझ में नहीं आ रही है।

आज हमारी न्याय-विधानविषयक शब्दावली फारसी के अस्वाभाविक प्रभाव से बोझिल हो गई है। हम इस बात को क्यों सहन करें? क्या यह सत्य नहीं है कि हमारे साहित्य में हमारे प्राचीन समाज-विधान में, न्यायालयों में प्रयोग होनेवाले प्रत्येक शब्द के लिए, संस्कृत शब्द विद्यमान है? तब, हम आज उन शब्दों की पुनः प्रतिष्ठा के लिये क्यों न आन्दोलन एवं प्रयास करें? हम युक्तप्रांतीय सरकार के कृतज्ञ हैं कि उसने प्रांत की भाषा हिन्दी स्वीकृत कर ली है। हम उसे बधाई देते हैं परन्तु हमारा निवेदन यह है कि स्वीकृति-मात्र ही पर्याप्त नहीं है। सिद्धान्त-मान्यता को कार्यरूप में परिणत करने के लिए हमारी प्रान्तीय सरकार को एक समिति का निर्माण नहीं, एक उद्देश्य ही करना चाहिए। और, इस उद्देश्य के अधीन समस्त शासन-सम्बन्धी कार्य के हिन्दी रूपांतर का कार्य कर देना चाहिये। यह कहना कि अरे भाई जो कानून प्रचलित हो गये हैं उन्हें यथावत् चलने दो, एक भ्रान्त वार्त्ता है। प्रचलन के नाम पर, —और प्रचलन भी एक बलात् चालू किया गया हो,—हर प्रकार की विजातीयता को सहन करेंगे।

बहुधा हिन्दुस्तानी के पक्षपाती एवं बहुजन-बुद्धि-ग्राह्यता की दुहाई देते हैं। यह सरलतावाला तर्क हमारी समझ में कभी नहीं आया। यह माना कि हमारा जनसमूह निरक्षर है, उसका शब्दकोश सीमित है एवं उसका दिङ्मण्डल अत्यन्त संकुचित है। माना कि आज वह संस्कृतनिष्ठ भाषा को समझने में कठिनाई अनुभव करता है। तब, क्या इसका यह अर्थ है कि वह फारसी-निष्ठ भाषा समझ लेता है? गत शताब्दियों के शब्द-परिचय के कारण यह हो सकता है कि उत्तर प्रदेश के दिल्ली लखनऊ के आसपास के गाँवों के निवासी कुछ फारसी शब्दों से किंचित परिचित हो गये हों, पर, क्या हम उन गत शताब्दियों के अत्यन्त सीमित अभिशाप को खोपड़ी पर लादे रहें? नहीं। हम ऐसा न करेंगे। यदि आज हमारा जनसमूह संकुचित एवं सीमित विचारोंवाला है तो क्या इस कारण हम अपनी भाषा को सदा दरिद्र बनाये रखें? क्या हम मानव को सदा अज्ञान-तिमिराच्छन्न रहने दें? क्या हम उसे नए विचार क्या हम उसका शब्द-भाण्डार न बढ़ायें? क्या हम उसके संस्कृति-सांकर्य को प्रोत्साहित करते जायँ? क़िबला, मिज़ाज मुक़द्दस? अर्ज़। "मैं पूछता हूँ यह कौन-सी सभ्यता, कौन-सी संस्कृति, कौन-सी परिपाटी, क्या इसी को हम संस्कृति-सम्मेलन के नाम से पुकारें। स्पष्टवादिता की जाय, यह संस्कृति-सम्मेलन

शेष पृष्ठ १८ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलामी की कड़ियाँ टूट चुकी हैं

राष्ट्र का पुनर्निर्माण नागरिकों की नैतिकता विशुद्ध राष्ट्रीयता पर ही निर्भर है

लेखक, श्री श्यामबिहारी विरागी, बी० ए०

भारत की आज की राजनीतिक परिस्थिति बड़ी ही संघर्षपूर्ण है। जनता तथा शासक दोनों को अशान्ति तथा अव्यवस्था का सामना करना पड़ रहा है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के निर्माण से स्थिति और भी बिगड़ती जा रही है। इस लेख में लेखक ने वर्तमान स्थिति तथा जनता के मनोभावों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है, जो पठनीय तथा सामयिक है।

भारत की सत्ता हस्तान्तरित हुए अभी दो मास भी नहीं हुए, परन्तु इस छोटी-सी अवधि में देश में जो व्यापक अशान्ति तथा अराजकता फैल गई है उसे देखकर घबराहट-सी हो रही है और आई हुई सत्ता क्या सचमुच स्वागत योग्य है, इस पर शंका-सी होने लगी है। आज देश के नागरिकों की भावनाएँ मानवता के ऊँचे स्तर से उतरकर नारकीय तथा पशुवत् रूप में व्यापित दिखाई पड़ती हैं। इसे देखकर स्वतंत्र भारत की कल्पना करनेवालों का सिर शर्म से नीचे गिर जाता है। विदेशी पत्रों में भारतीय उपद्रवों के समाचार इस रूप से छापे जाते हैं कि उन्हें पढ़कर लोगों में भारत के प्रति घृणा तथा असन्तोष का पैदा होना स्वाभाविक ही हो जाता है। यह सब आखिर क्यों है और इसके पीछे क्या रहस्य है? लगभग एक हजार वर्ष के बाद भारत को जो स्वतन्त्रता मिली है उसे आरम्भ में ही कोढ़ क्यों लग गई जब कि इसे कायम रखकर उन्नतिशील बनाने के लिए देश के महान् से महान् पुरुष एक दृष्टि तथा एक तंत्र होकर भिड़े हुए हैं? देश के जिन नेताओं के पीछे भारत की जनता अन्धी होकर आग-पानी में कूदने को तैयार रहती है, आज उन्हीं नेताओं के आदेशों का लोगों पर वह असर नहीं पड़ता जो कभी पड़ा करता था। आज हमारी आँखें बन्द हैं, कान बहरे हो चले हैं और मस्तिष्क अच्छा-बुरा सोचने में असमर्थ है। एक धारा नहीं, एक सुर नहीं, एक आवाज नहीं, एक उद्देश्य नहीं। कुछ अजीब हो गये हैं हम। आधारहीन होकर शान्तिमय परिवर्त्तन की आँधी के झोकों में मँडरा रहे हैं। कभी यहाँ कभी वहाँ, कभी इधर कभी उधर। स्थिर होना चाहते हैं परन्तु हो नहीं पाते; परिस्थितियों से टक्कर लेने की इच्छा है, परन्तु शक्ति-संचय करने में असमर्थ हैं; स्वतन्त्रता के भव्य महल की नींव मजबूत बनाने का संकल्प है, परन्तु उस महल की वास्तविक रूप-रेखा कैसी हो, निश्चत नहीं कर पाते। अजीब उलझन, अजीब परेशानी! कल क्या थे, क्या सोचते थे; आज क्या हैं क्या सोच रहे हैं? मानसिक परिवत्तन! कितना बड़ा मानसिक परिवर्त्तन!! कुछ लोग पूछते हैं क्या यही स्वराज्य है? अपने देश में अपना राज्य; फिर यह अराजकता क्यों? प्रश्न कठिन है, परन्तु समझना मुश्किल नहीं। गुलाम भारत एक जेल की तरह था और तमाम भारतीय कैदी। एक कैदी का जीवन अपना जीवन नहीं। उसका रहना कसा हो, खाना क्या हो और जीवन की तमाम छोटी-मोटी बातें किस रूप में कैसी हों इसका निर्णय करता था जेल का जेलर। जो खाना मिलता था वह उचित था या अनुचित; रोटी गेहूँ की थी या रेत की; दाल पीली होने के बदले काली क्यों थी; सब्जी का स्वाद अच्छा था या बुरा; खाना बनानेवाले ठीक बनाते हैं या नहीं; बीमार पड़ने पर दूध मिले या न मिले—इत्यादि बातें ऐसी थीं जिनके विचार-विनिमय के लिए एक अलग व्यक्ति था जो अपनी मनमानी करने में बाज नहीं आता था। कदियों का अपना अस्तित्व मिट चुका था। बन्दर-बकरे की तरह जब खाना सामने आया, वे खा लेते थे। भूख जब हो तब खाना मिल जाय यह सुविधा कैदी के लिए कहाँ थी?

आज भारत की गुलामी की कड़ियाँ टूट चुकी हैं। कैदी स्वतन्त्र हैं। जो चाहें कर, जहाँ चाहें जायँ। कल तक जेल थे, आज स्वयं मालिक हैं। क्या खाना बने, उन्हीं को सोचना है? किस प्रकार सम्पूर्ण कुटुम्ब का उचित पालन हो यह उन्हीं का काम है। हर कैदी की सोचने-समझने की शक्ति कल तक सीमित थी, आज बन्धनहीन होकर उसका मस्तिष्क तेजी से विचार-विनिमय में जुटा है। एक भाई कहता है पूरब चलो, दूसरा चिल्ला उठता है पच्छिम जाना उचित है। बहस होती है। बात बढ़ते-बढ़ते हाथापाई भी होने लगती है; कभी-कभी और बढ़कर सरफुड़ौवल की भी नौबत आ जाती है; कभी क्रोध के भयंकर आवेश में जान पर भी आ बीतती है। यही हालत है आज की जो स्वाभाविक है। पहले हर मुल्कों में हुआ है; आज भी हो रहा है और आगे भी होगा। मृत्युलोक में इन्सान इन्सान ही रहेगा और मानव-कमजोरियाँ अपना रूप दिखलाती ही रहेंगी। महान् आत्माएँ आदर्शों का सन्देश लेकर आती हैं मानवता को अधोगति से बचाने; परन्तु सम्पूर्ण मानव-कुटुम्ब को आदर्शों के स्तर पर क्रियात्मक रूप में न भूत में वे पहुँचा सकी हैं और न भविष्य में इसकी आशा है। प्रयत्न जारी रहा है और जारी रहेगा। यदि ऐसा न रहता तो मानवता अब तक विलीन हो जाती आज का संघर्ष अनहोनी नहीं। यह तो होता ही। इसका न होना ही आश्चर्य था; हो रहा है इसमें आश्चर्य कहाँ?

आज की परिस्थिति में जो क्रिया हो रही है उसकी प्रतिक्रिया भी होगी। क्रिया-प्रतिक्रिया का संघर्ष चलता रहेगा। आज भारत का पारिवारिक जीवन अशान्तिमय है। अशान्ति का परिणाम ही शान्ति का दूत बनकर वह समय लायेगा जब यह बृहद परिवार आप ही आप नियम-उपनियम की स्वयं निर्धारित शृङ्खला में बँधकर व्यवस्थित दृष्टिगोचर होगा। आज की अराजकता ही यह जाहिर करती है कि कल के गर्भ में एक ऐसी व्यवस्था बढ़ रही है जिसके द्वारा जनमत संगठित होकर एक ऐसी परिस्थिति पैदा करेगा जिससे सबका सन्तुष्टीकरण होगा। इस दिशा की ओर अनजाने हम तेजी से बढ़ रहे हैं। रास्ता आसान नहीं है। टीले, जंगल, नदी, नाले सब कुछ हैं। साथियों में कुछ पीछे भी खींच रहे हैं। कहीं-कहीं जनमत के इस काफिले पर इक्के-दुक्के हमले भी हो रहे हैं; कभी हल्के कभी गहरे कभी अगल से कभी बगल से; कभी आगे से कभी पीछे से; परन्तु नदी की धार की तरह जनमत के काफिले का यह प्रवाह रोका नहीं जा सकेगा। गर्मी और जाड़े में भले ही कोई प्रयास कुछ देर तक इसे रोककर खुश हो ले; परन्तु एक दिन बरसात आयेगी और प्रवाह की भीषणता अभद तथा अटूट बनकर अपना स्वाभाविक पथ अनुसरण करेगी।

एक हुकूमत जाने के बाद सत्ता की खाली गद्दी पर बैठने के लिए विद्रोह होता है। इस परिस्थिति में "जिसकी लाठी उसकी भैंस" का प्रसिद्ध सिद्धान्त अब तक पूर्ण रूप से चरितार्थ होता आया है और जब तक इन्सान इन्सानी कमजोरियों से परे नहीं हो जाता, भविष्य में भी चरितार्थ होता रहेगा। आज की परिस्थिति भी वही है। मानव विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। अनक राजनीतिक आदर्शों का संघर्ष सर्वत्र जारी है। भारत में भी समक्ष या परोक्ष रूप से यह संघर्ष चल रहा है। आदर्शों की इस लड़ाई में अलग-अलग हथियार इस्तेमाल किये जा रहे हैं। हथकंडों की कमी नहीं। कोई ऊँचे स्तर से लड़ता है कोई निम्न स्तर से अपनी चाल दिखाता है। कोई धर्म के नाम पर तथा कोई राजनीति के पीछे अपनी स्वार्थसिद्धि के प्रयत्न में सतर्क है। सबका उद्देश्य एक है—सत्ता की गद्दी पर कूदकर बैठ जाना यद्यपि रास्ता अलग-अलग अवश्य दिखाई पड़ता है। जो बैठ चुके हैं बैठे रहें इस फेर में; जो बैठना चाहते हैं शीघ्रातिशीघ्र बैठ जायँ इस फेर में प्रयत्नशील हैं और शक्ति संचय कर रहे हैं। संघर्ष जारी है।

किसी राष्ट्र की महानता इसमें नहीं कि वह बहुत बड़ा है या उसकी आबादी सबसे अधिक है। सहस्र नागरिकों का एक छोटा-सा द्वीप भी दुनिया का सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र समझा जा सकता है। राष्ट्र की महानता नागरिकों की ऊँचाई पर निर्भर है। जलील राजनीतिक हथकंडे राष्ट्र की बदनामी के कारण होते हैं जिससे प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचता है। अभाग्य से वर्तमान भारत की राजनीति कुछ पदलोलुप लोगों के कारण गंदी हो चली है जिससे राष्ट्र का अपमान हो रहा है। महात्मा गांधी सरीखे महान् आत्मा के रहते हुए यदि यहाँ के नागरिकों का मानसिक विकास ऊँचे स्तर का न हो सका तो यह बड़े क्षोभ की बात होगी। आबादी और स्थल की दृष्टि से भारत सबसे बड़े राष्ट्रों की श्रेणी में है, परन्तु यहाँ के नागरिकों के राजनीतिक हथकंडे को देखते हुए यह डर है कि शायद इसे हम महानता की उस सीढ़ी पर नहीं पहुँचा सकेंगे जिसकी इस देश को बड़ी आवश्यकता है। आज नागरिकों को इस अहं प्रश्न पर ठंडे दिल से विचार करना है। गंदी राजनीति पैदा करनेवाले देश के बहुत बड़े दुश्मन हैं। भावावेश में हम आज इन्हें पहचान नहीं पा रहे हैं। मगर हमें पहचानना है और राष्ट्र की मर्यादा बढ़ाने के लिए ऐसे लोगों को दूध की मक्खी की तरह भारत की राजनीति से निकाल फेंकना है।

झंडा ऊँचा रहे हमारा

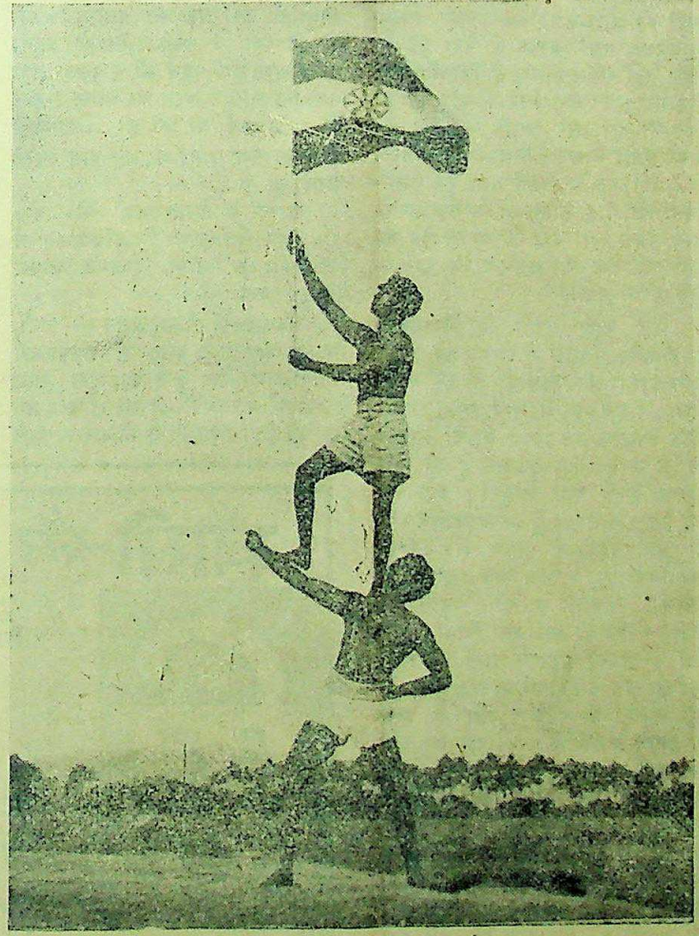

हिन्दू और मुसलमान दोनों के प्रेम और सहयोग से राष्ट्र का कल्याण है।

देशान्वेषण की सरल कथाएँ

नए-नए देशों का पता लगाने में संसार के कर्मवीर यात्रियों ने कैसी कैसी कठिनाइयाँ झेली हैं, उनका खासा वर्णन इस सचित्र पुस्तक में पढ़िए। मूल्य ॥।-)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थी-आन्दोलन की प्रगति

सरकार का रुख और विद्यार्थियों की सीधी कार्यवाही

लेखक, श्री श्यामसुन्दर राय बी० एस्-सी०

पिछले दिनों विद्यार्थी-समुदाय ने स्कूलों में फीस बढ़ाये जाने के विरोध में हड़ताल शुरू की थी। प्रसिद्ध समाजवादी नेता आचार्य नरेन्द्रदेव जी के बीचबिचाव करने पर छात्रों ने हड़ताल स्थगित कर दी। लेखक ने इस लेख में छात्र-आन्दोलन के इसी पहलू पर प्रकाश डाला है, जो सामयिक है।

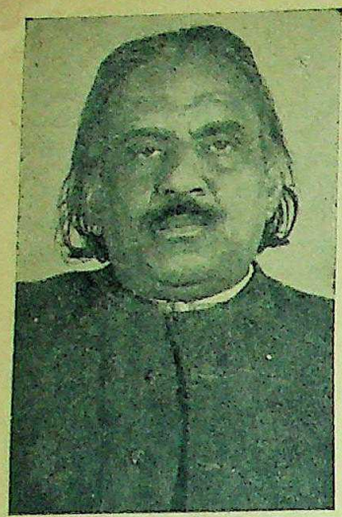

संयुक्तप्रांत के शिक्षा-मंत्री माननीय श्री संपूर्णानंद

विद्यार्थी किसी भी राष्ट्र के प्राण हैं। राष्ट्र का ही नहीं सारी दुनिया का भविष्य उनके ऊपर निर्भर करता है। सच ही कहा है कि आज के विद्यार्थी कल नागरिक होंगे। इस प्रश्न का ख्याल करते हुए यह भी आवश्यक है कि सरकार शिक्षा का प्रबन्ध उचित रूप से करे। शिक्षा में किसी तरह की शिकायत रहने का अर्थ है राष्ट्र का भविष्य अन्धकारमय होना।

धार्मिक झगड़ा तथा खाद्य-सामग्री के मोर्चों पर हमारी प्रान्तीय सरकार अभी लड़ ही रही थी कि एक तीसरा मोर्चा खुल गया जो हाईस्कूलों में फीस बढ़ जाने के कारण हुआ। यही विद्यार्थी जो कांग्रेस को देश की आजादी की लड़ाई में सहायक होते थे, उन्होंने ही युद्ध छेड़ा।

प्रान्त में २२,००० प्राइमरी स्कूल खोलने की स्कीम सरकार ने कार्य्यान्वित की। बहुत से हाई-स्कूल तथा इन्टरमीडियट स्कूल व कालेज भी खुले। कई नार्मल स्कूल प्राइमरी स्कूल के शिक्षकों की ट्रेनिङ्ग के लिए भी प्रान्त में खोले गये। इससे सरकार के शिक्षा-विभाग के बजट का बहुत बड़ा हिस्सा खर्च हुआ। इसी बीच हाईस्कूल के शिक्षकों ने हड़ताल की। उनकी माँग के अनुसार वेतन बढ़ाने से करीब ३८ लाख रुपया खर्च होता था। सरकार ने हाईस्कूल के शिक्षकों की माँग मंजूर करते समय ही स्कूलों में फीस बढ़ाने का एलान किया था। ३८ लाख रुपयों में से ९लाख रुपया तो सरकार ने देने का प्रबन्ध किया। अधिक धन देने में समर्थ न होने के कारण स्कूलों के विद्यार्थी-वर्ग की फीस बढ़ाना ही उचित समझा गया। इसके साथ ही साथ इसका भी ख्याल रखा गया था कि कतिपय गरीब छात्रों को सरकार सहायता देगी और स्कूलों में भी ५ प्रतिशत फीस माफ करने की आज्ञा को रद्द कर १७ प्रतिशत गरीब विद्यार्थियों की फीस माफ करने का प्रबन्ध किया गया था। यहाँ यह भी लिख देना बेजा न होगा कि शिक्षकों की उक्त हड़ताल में विद्यार्थियों ने भी साथ दिया था, लेकिन लड़के शिक्षकों की हड़-ताल के साथ सहानुभूति रखते हुए इस बात से कभी राजी नहीं हुए कि स्कूलों में शुल्क बढ़े। इधर सरकार ने अपनी स्कीम पर कायम रहना ही उचित समझा। उसका ख्याल था और अब भी है कि प्राथमिक शिक्षा बढ़ाकर देश का अधिक कल्याण किया जा सकता है। जनता जनार्दन की सेवा या भलाई जितनी प्राथ-मिक शिक्षा के विस्तार में है उतनी हाई-स्कूलों के बढ़ाने से नहीं। कालेज की शिक्षा से तो और कम। परिस्थितियों से विवश होकर ही माननीय संपूर्णानन्द जी ने इस अधिक से अधिक भलाईवाले पथ पर चलना उचित समझा और धैर्य के साथ आगे बढ़ । उनका यह ख्याल कभी नहीं था कि हाईस्कूलों की शिक्षा का खर्च बढ़े। उचित अवसर आते ही वे अपने विचार में परि-वर्तन करने के लिए तैयार थे।

इसके बावजूद भी हमारे प्रान्त में हड़ताल होकर ही रहेगी। हड़ताल स्कूलों के विद्यार्थियों के नेतृत्व में नहीं यूनि-वर्सिटी के छात्रों के नेतृत्व में हुई। फिर बाद में कुछ विद्यार्थियों ने जो ओछापन दिखाया वह इतना लज्जाजनक है कि लिखना उचित नहीं। लखनऊ में शिक्षा-मंत्री के घर में विद्यार्थियों की भीड़ घुस पड़ी। गोरखपुर में कचहरियों का काम कठिन हो गया। यहाँ तक कि माननीय पंत जी की गाड़ी तक इलाहाबाद में आगे न बढ़ सकी। साम्राज्यवाद अन्त हो जाने के बाद भी वे विचार तथा सोचने के ढंग वही बने रहे। यहाँ तक कि फासिस्ट मनोवृत्तियाँ भी सर उठाने लगीं। लाचार होकर सरकार ने विद्यार्थियों को जेल में भरना शुरू किया।

यह सब होते हुए भी यह कहना पड़ता है कि हमारी प्रान्तीय सरकार ने जो काम किये वह समझदारी के नहीं कहे जा सकते। अभी यही समस्या मध्यप्रान्त तथा बरार में पैदा हुई थी जिसे वहाँ की सरकार ने विद्यार्थियों से मिलकर हल कर लिया। कुछ भी हो विद्यार्थी देश और जाति के प्राण हैं। अगर हमारे माननीय शिक्षा-मंत्री लखनऊ में सेक्रेटेरियट के सामने जमा हुई विद्या-थियों की भीड़ के सामने आकर अपनी बातें कहते तथा उन्हें आश्वासन देते तो यह बुरा न होता। संभव था कि हड़ताल शुरू ही न होती।

यह कहा जाता कि विद्यार्थियों के कतिपय नेताओं ने इस हड़ताल को आगे बढ़ाया और विद्यार्थी-वर्ग को धोखा दिया। मैं इस बात को नहीं समझ पाता। अगर विद्यार्थी-वर्ग किसी बाहरी आदमी को ही अपना हितू समझते हैं तो मेरा आपका इससे क्या सम्बन्ध? क्या यह वर्ग इतना नासमझ है कि बहकाकर जो भी चाहे गलतियाँ करा ले। अगर विद्यार्थियों ने (फीस कम करने के बजाय) सरकार के फीस बढ़ाने का विरोध किया तो क्या बुरा किया? सब देशों में अपनी सरकार आने पर वहाँ पढ़ने का खर्च कम किया जाता है। बढ़ाया नहीं जाता। जो सरकार राष्ट्र के भले का ख्याल करती है वह पढ़ाई का खर्च कम करती है और पढ़नेवालों की संख्या बढ़ाती है। यह राष्ट्र की "बेसिक इन्डस्ट्री" है। हमारे माननीय शिक्षा-मंत्री ही ने कहा था कि अगर खर्च बढ़ने का सवाल है तो और भी बहुत से ऐसे काम हैं जिन्हें न कर सरकार खर्च कम कर सकती है। नैनीताल की असेम्बली का सेशन रोका जा सकता था, आदि आदि.....। मेरा तो ख्याल है कि प्रान्त में सुशिक्षित नागरिकों की संख्या बढ़ाना पुलिस महकमों की वृद्धि से लाख गुना अच्छा है। कम खर्च भी होगा। असर स्थायी होगा। इससे राष्ट्र का भला अधिक हो सकता है। शिक्षा के प्रचार से फासिस्ट मनोवृत्ति को रोका जा सकता है।

अब विद्यार्थियों की हड़ताल खतम हो चुकी है। फिर भी कुछ बातें ऐसी पैदा हो गई हैं जिससे इस घटना के ऊपर विचार करना आवश्यक हो गया है। हमारे प्रान्त के पूर्व स्वतन्त्रता-संग्राम में विद्यार्थियों ने जो विषद तथा सराहनीय हिस्सा लिया है उसका ख्याल करते हुए उन्हें चाहिए कि वे अपनी गलतियों को सुधारने का प्रयत्न करें, क्योंकि उसके बिना हमारा देश आगे नहीं बढ़ सकेगा और अगर छात्रों का यही रवैया रहा तो देश को नुकसान होने का भय है। उनकी बड़ाई इसी में है कि वे इन अभियोगों को अपने आचरण से झूठा साबित करें।

आचार्य नरेन्द्रदेव ने एक वक्तव्य में कहा है कि "ऐसे अवसर यह देखकर बड़ा ही दुःख होता है कि हमारे प्रान्त के युवक समय की प्रगति और उसकी विवशता न समझ, समस्याओं पर ठंडे दिल से विचार करने के बजाय गरमागरम बातों तथा बहसों में ही उलझे हैं। भावुकता की बाढ़ का सामना करना तो दूर रहा, वे उसके साथ ही बहना पसन्द करते हैं।" व्यर्थ की भावुकता तथा ओछापन को दूर करने की सलाह उन्होंने दी। आचार्य जी को ही विद्यार्थियों ने अपना पंच माना था, यह बात ख्याल करने की है।

बम्बई के प्रधान मंत्री श्री० बी० जी० खेर ने मद्रास विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के सामने दीक्षान्त भाषण देते हुए कहा:—

"विद्यार्थियों में अनुशासन की कमी, मेहनत और कड़े काम से भागनेवाली मनोवृत्ति को देख मुझे बड़ा दुख होता है। उनमें नेतागिरी की भी शौक बढ़ती जा रही है।" विद्यार्थियों को संकेत करते

आचार्य नरेन्द्रदेव जी, जिनके आदेश[illegible] विद्यार्थी-आन्दोलन समाप्त हुआ है

हुए उन्होंने कहा, "आप ही विचार कि युक्तप्रान्त में क्या हो रहा है।" शक नहीं, उनका इशारा यू० पी० विद्यार्थी-आन्दोलन की ओर ही इसमें कटाक्ष और मजाक उड़ाने भी प्रयत्न किया गया है। लेकिन क्यों? आखिर प्रान्त के विद्यार्थि कारनामों ने ही तो यह सब कर यही दोष है जिसे अपने कर्त्तव्य विद्यार्थी-वर्ग धो सकते हैं।

विद्यार्थियों को काम करने के की कमी नहीं। वे हिन्दू-मुसलमान कराने का कार्य गांधी जी के नेतृ कर सकते हैं। शरणार्थियों की सहा कर सकते हैं। लड़ाई-झगड़ों को रोक नेहरू-सरकार की सहायता कर हैं। दिल्ली के छात्रों ने तो यह सब भी है। वे जमींदारी-प्रथा के विरुद्ध कर सकते हैं। वे इस समय देश डाक्टरों के रूप में, इंजीनियर के सहायता पहुँचा सकते हैं। विद्यार्थि में ही इस समय कई एक पार्टियां कर रही हैं। अपने घर में मेल क्या यह छात्रों का काम नहीं?

उन्होंने कांग्रेसी नेताओं तथा आ नरेन्द्रदेव जी की राय को ध्यान में र हड़ताल समाप्त की है उससे यह बात है कि हमारे युवक देश का नुकसान कभी नहीं पसन्द करते। शायद यह समझ में आ गई है कि इस समय माँग को लेकर प्रान्त में हड़ताल कर किन शक्तियों की सहायता (अनजा ही सही) कर रहे हैं। आशा है सर भी इस अवसर को हाथ से न देंगी। छात्रों की माँग पर पूरा करेगी। लखनऊ जेल में ऊपर हुए अत्याचारों की जाँच बैठायेगी। यही तरीका है जिससे प्रान्तीय सरकार विद्यार्थियों की भाजक बन पायेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाटक

जहानआरा

लेखक, श्री कृष्णगोपाल बी० ए०, विशारद

जहानआरा मुगलकालीन राजकुमारी थी। वह विदुषी तो थी ही साथ ही कलाप्रेमी भी थी। इस एकांकी में लेखक ने कुछ ऐतिहासिक घटनाओं का आधार लेकर जहानआरा तथा उस समय की परिस्थिति का सुन्दर और मार्मिक चित्रण किया है जो पठनीय है। पाठकों के लिए यह एकांकी मनोरंजक प्रमाणिक होगा, यह निस्सन्देह है।

जहानआरा का नाट्य करनेवाली एक मुसलिम छात्रा।

स्थान—शाहदरा (देहली नगर के समीप ग्राम-समान एकाकी मुहल्ला) शिवालय और मसजिद के पास आमने-सामने दो विशाल भवन। एक पं० गिरीशचन्द्र तथा पं० गिरीशचन्द्र सपरिवार और दूसरा दो मुसलमान भाई रमजान और रहमान के परिवार-सहित अलग-अलग निवासस्थान हैं।

समय—प्रातःकाल चार बजे।

मसजिद से आवाज—

आऊजो बिल ला हि मिनश शैतानिर रदीम।.....अल्ला हो अकबर, अल्ला हो अकबर, अल्ला हो अकबर, अल्ला हो अकबर।

जहानआरा—(एक साथ जगकर) अब्बा! आज ईद का दिन है। सुबह की सहर में मुल्ला की कितनी प्यारी आवाज है। अल्ला हो अकबर—अब्बा जान!! सलाम। मैं अभी और सबको जगाती हूँ।

रमजान—ईद मुबारक, खुदा खैर करे। (स्वगत) आज का दिन कितना अच्छा है? लेकिन इन्सान की भूल है कि वह समझ नहीं सकता।

जहानआरा (अजीज के शयनगृह में उसे सोते से हिलाते हुए) भाई जान! उठिए। क्या आप आज कैलाश को अपने घर न बुलाइएगा?

अजीज (उबासी लेते हुए) क्यों? (कुछ देर रुककर) अच्छा, ईद मुबारक। जहानआरा! जाओ, सबको बुला लो। पंडित जी के आने पर तुम्हें गाना भी तो गाना पड़ेगा।

(रमजान और रहमान के घर के सारे बच्चे ईद मनाने की खुशी में एकत्रित होते हैं)

अजीज—आज की मजलिस के सदर के लिए मैं उसमान को मुन्तखिब करता हूँ। मुझे कुछ और काम करना है।

उसमान—भाई जान! मैं निहायत अदब के साथ आपकी रहनुमाई को तसलीम करता हूँ।

रोशनआरा—पंडित जी के घर आज सुशील ही नहीं है। अफसोस।

हबीब—बीबी अफसोस करती हो। अलताफ के साथ वे नोआखाली में अमन कायम करने गये हैं।

रोशनआरा—खुदा हाफिज—मुझे उम्मीद है कि वे सही-सलामत आज वापिस आ ही जावेंगे।

उसमान—मैं आप लोगों से दरख्वास्त करता हूँ कि मजलिस की बैठक शायरे में होना चाहिए। जहानआरा, मुमताज और खुर्शीद एक ओर और नीलोफर, हुसनबानू और अनीस दूसरी ओर। रोशनआरा बीच में मेरे इशारों पर गाना शुरू करेंगी और आप लोग साज सँभालेंगे।

रोशनआरा—सुबह पाँच का वक्त है। ठंडी ठंडी हवा आ रही है। तारे खिलखिलाकर अभी हँस रहे हैं।

भाई जान! क्या यह देसी राज 'चमत चलत जोगी राज' इस वक्त के लिए मौजूँ रहेगा?

हबीब—आज तो पंडित जी के खुशामदीद का गीत होना चाहिए।

रोशनआरा—हाँ तो वह जो जहानआरा कैलाश जी के आने की खुशी में उस दिन गा रही थीं सब एक साथ—हाँ, हाँ। वही। वही!!

(जहानआरा कुछ शर्मा-सी जाती है और दबे होंठ इठलाकर कहती है)

जहानआरा—किसी के आने पर दिल बोल ही उठता है।

उसमान—कबार की बातें न करो। रोशनआरा, शुरू करो। हबीब तुम तबला ले लो।

(सब एक साथ गाते हैं उसमान गीत के साथ ताली से ताल देता है)

(राग भैरवी, ताल कहरवा)

उम्मीद की दुनिया में अरमान बनके आये।
एक ख्वाब की बस्ती में महिमान बन के आये
ईमान की सच्ची ही आवाज बन के आये।
मेरे लिए तो बेबस अन्दाज बन के आये।।
होठों से मुस्कराकर हलकान बन के आये।
नाकिस जहान में क्यों एक जान बन के आये।।
दिल गुदगुदा के मेरा पैगाम बन के आये।
मेरे लिए तो मेरे अंजाम बन के आये।

उसमान—बहुत खूब। शायरी में मजा आ गया।

(जहानआरा की ओर देखते हुए) आखिर दिल की पुकार ही तो है।

अजीज (एक साथ आकर) अभी तक यहीं बैठे हो। उठो, अपना-अपना कमरा सँभालो, कपड़े बदलो और खाने-पीने का सामान मेजों पर जमाओ। मैं पंडित जी के यहाँ जा रहा हूँ।

(सब इधर-उधर हो जाते हैं)

जहानआरा—रोशनआरा, देख तू कैलाश को हाथ पकड़कर अन्दर ले आना।

रोशनआरा—मैं तो अकेली....।

जहानआरा—हाँ, हाँ। सुशील के लिए ही तेरी बातचीत करके आज तय कराऊँगी।

रोशनआरा—देखिए, मजाक अच्छी नहीं। पंडित जी कट्टर हिन्दू हैं।

जहानआरा—बेशक, लेकिन मुझे अपने कैलाश पर पूरा यकीन है।

अजीज—(तिवारी जी का द्वार खटखटाकर) तिवारी जी! तिवारी जी!!

गिरीशचन्द्र—अरे भाई अजीज! क्या कोई सुशील का समाचार है?

अजीज—सलाम! ईद मुबारक!!

गिरीशचन्द्र—खुश रहो बेटा! तुम्हारी उम्र बढ़े, तरक्की करो। मैंने सुना है कि सुशील के चोट बहुत आ चुकी है। अलत्ताफ के तार से मालूम हुआ है कि आज शान्ति स्थापित करके दोनों लौट रहे हैं।

अजीज—हाँ, चाचा जी! दोनों ने जान के खेल पर नौजवानों के सामने एक मिसाल कायम कर दी। क्या गजब की दोस्ती है। साथ रहे और सभी गुमराहों को ठीक रास्ते पर लगाकर खुशी से वापिस आ रहे हैं। खुदा परवरदिगार है।

गिरीशचन्द्र—तुम्हारे अब्बाजान तो मजे में हैं?

अजीज—आपकी रहनुमाई। अब्बाजान ने आपके पास भेजा है। दरख्वास्त की है कि आप सभी के साथ वहीं भोजन कर। ताऊ जी से भी कह दीजिए।

गिरीशचन्द्र—बहुत अच्छा। खुशी से मंजूर है। रोशनआरा से कह देना कि उसका गीत जरूर होगा। सुशील उसके स्वर के लिए सुन्दर और सुरीला कहता है।

(अजीज अपने घर वापिस जाता है, पंडित गिरीशचन्द्र अपने बड़े भाई पंडित सतीशचन्द्र के पास जाते हैं इस मध्याह्न में रमजान और रहमान की बातचीत)।

रमजान—भाई रहमान, आज पंडित जी की इस महँगाई में क्या खातिर होगी। राशन का बुरा हाल है। भरपेट खाना तक नसीब नहीं। हर चीज बहुत गिरी है। आमदनी के जरिये बहुत कम होते जाते हैं। सरकारी हाकिम तक बेईमानी पर तुले हैं। सभी जगह गरीबों को पीसा जा रहा है।

रहमान—भाई जान! यह सब कुछ तो बर्तानिया हुकूमत से चला आ रहा है। अब हालत सुधर रही है। लेकिन आज आजादी का नाजायज फायदा उठाया जा रहा है। किस कदर दंग-फसाद बढ़ रहे हैं। आज दो दिन से देहली में बड़े जोर की मारकाट शुरू हो चुकी है।

रहमान—हाँ भाई। सारा मुल्क बरबाद हो रहा है। बंगाल के बाद पंजाब खत्म हुआ और अब इधर भी।

रमजान—फिक्र न करें। सचाई के सामने कोई टिक नहीं सकता। दगा किसी का सगा नहीं होगा। कयामत का दिन नजदीक है।

(पंडित गिरीशचन्द्र पंडित सतीशचन्द्र के पास जाकर)

गिरीशचन्द्र—भैया! मौलाना के यहाँ आज की दावत है।

सतीशचन्द्र—भोज स्वीकार है। सुशील के आने की प्रसन्नता में उन सबको भी सायंकाल भोजन के लिए अपने यहाँ बुला लेना।

बेटी शोभा!

शोभा—जी, पिता जी।

सतीश०—देख, चाचा जी निमंत्रण लाये हैं।

शोभा—मैं तो कल से ही समझ रही थी। रोशनआरा मुझे कल ही बता गई थी और कह गई थी कि ताऊ जी से मेरी ओर से निवेदन कर देना कि एक बच्ची का ध्यान रक्खें। उसकी सारी खुशी उन्हीं पर मुनहसिर है।

सतीश०—मैं सब कुछ समझता हूँ, बेटी! संसार का सामना है।

गिरीश०—सुशील साम्यवाद का पक्षपाती है। इस समस्या का हल उसी पर छोड़िये।

सतीश०—गिरीश, सामाजिक रूढ़ियाँ हमें अभी जकड़े हैं।

शोभा—धर्म और समाज मनुष्य के विचार हैं पिता जी!

सतीश०—हाँ शोभा, तुम्हारी माता जी अब भी....।

शोभा—माता जी की बड़बड़ाने की आदत है।

गिरीश०—भाभी जी को मैं सहमत कर लूँगा।

सतीश०—अच्छा, मेरा नाम नहीं लेना। नहीं तो स्वीकृति भंग हो जावेगी। मेरे विचार से तुम यही कहना कि भया की इच्छा नहीं है।

गिरीश०—आप विरोध सिखाते हैं।

सतीश०—तुम अभी मेरे सामने बच्चे हो। त्रियाचरित्र की परख बड़ी कठिन है। यह मैं मानता हूँ कि तुम्हारी भाभी मेरे विपरीत कभी न जावेगी परन्तु मैं उनके हृदय को दुखाना नहीं चाहता।

गिरीश०—अच्छा मैं प्रयत्न करूँगा कि यह शुभ कार्य भी आज हो जावे।

शोभा—चलिए चाचा जी, माता जी अभी गाय दुह रही हैं।

(गिरीश और शोभा चले जाते हैं और सतीश अकेले रह जाते हैं।)

सतीश०—(एकान्त में स्वगत) संसार के सम्बन्ध बड़े आसान हैं, किन्तु निभाना अति दुर्लभ है। सत्य कहना सरल है, किन्तु सत्य सुनना कठिन है। प्रेम उत्पन्न होना स्वाभाविक है, मानवता की देन ही तो है। मेरे लिए भी तो, पंडिताइन व्याकुल रहती थीं। रोशनआरा निर्दोष है, सच्ची है, सुशील भी सुशील है। सुशील रोशन से जगत् में रोशन हो जावेगा। भगवान् तेरा सहारा हो।

(गिरीश और शोभा तारादेवी के पास आ जाते हैं।)

गिरीश०—भाभी जी, भैया सुशील के विवाह के लिए मना करते हैं।

तरादेवी—लाड़ले सुशील के लिए हैं। हमारे घर का तो वह रोशन चिराग है।

शोभा—हाँ मा! आज संसार के महान् अशोक से भी कहीं बढ़कर नोआखाली में शान्ति स्थापित करके लौट रहा है। आज के दिन यदि मैं अपने भाई के समीप.....।

तारादेवी—सुशील को अपना साथी बनाना पड़ेगा। वह स्वयं भी चतुर और समझदार है।

शोभा—परन्तु पिता जी कुछ नहीं बताते।

तारादेवी—उन्हें तो कुछ याद ही नहीं रहता।

गिरीश०—भाभी जी, वह तो खुद रोशन होने के लिए रोशन को बहुत पसन्द करता है।

भाभी जी—(एकदम चौंककर) अरे!

शोभा—माँ, मनुष्यता से डरती हो। इस समय समझदारी क्या हो सकती है?

भाभी जी—सुशील रोशन हों।

गिरीश०—भाभी जी, नमस्ते। भया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भी मैं समझा लूंगा और मौलाना साहब तो बड़े ही अच्छे हैं। बड़ा अच्छा परिवार है। (इधर-उधर हो जाते हैं)

शोभा--(दौड़ती हुई) शान्ति, सरला कहाँ हो?

शान्ति--हाँ दीदी, क्या हुआ?

शोभा--बड़ी प्रसन्नता की बात है।

सरला--सच?

शोभा--हाँ, आज सुशील और रोशनआरा की शादी होने जा रही है।

कैलाश--(अपने अध्ययन-कमरे से) क्या शोर मचाया है?

सरला--दादा, दीदी कहती हैं कि रोशनआरा मेरी भाभी होगी।

कैलाश--क्या मतलब?

शान्ति--सुशील का विवाह तय हो रहा है।

कैलाश--रोशनआरा से--अरे!

शोभा--अरे, क्या? पिता जी, माता जी और चाचा जी ने तय कर लिया।

कैलाश--उसकी बड़ी बहन अभी जहानआरा--तीनों--जहानआरा नहीं, रोशनआरा।

(सभी चली जाती हैं)

कैलाश--(एकान्त में स्वगत) जीवन की साधनाएँ स्वाभाविक सरल हो जावें तो जीवन कठिन संग्राम नहीं, किन्तु मनोविनोद हो जावे। जहानआरा मेरे जीवन की साध है। इस साध्य का साधन मेरा शलभ सरीखा प्रेम ही है। प्रेम के अंचल में रक्षा अवश्य मिलेगी और विवशता नतनयन हो अलग हो जावेगी। साम्प्रदायिक दंगे हम दोनों को अलग नहीं कर सकते।

(शोभा, शान्ति तथा सरला शीघ्र ही तैयार होकर माँ से पूछ कर रहमान के यहाँ आ जाती हैं तभी खिलखिलाती हुई 'ईद मुबारक' कह गले मिलती हैं)

जहानआरा--शोभा, तुम्हारे भैया?

रोशनआरा--क्या भाई जान सबके लिए नहीं कह आये।

शोभा--हाँ, हाँ, सभी आवेंगे और सुशील भी जो आनेवाला है।

जहानआरा--मन की मुराद पूरी हो रही है।

सरला--सुशील रोशन है।

शोभा--अभी चुप रहो, सरला।

रोशनआरा--क्या?

शोभा--(इठलाकर) क्या कुछ नहीं।

(सभी एक साथ हँस जाती हैं, रोशनआरा कमरे के अन्दर भाग जाता है)

शोभा--(गंभीर होकर) सहेलियो, आज दो हृदय मिल जावेंगे। सभी को ईद मुबारक!

जहानआरा--(विस्मय से) तुम्हारे बड़े भैया कहाँ हैं?

शोभा--सभी आते होंगे। विवाह एक ही दिन में हो जावेगा।

मुमताज--कैसे?

हुसनबानू--यों ही।

अनीस--मजाक।

शोभा--कैसे, क्यों और मजाक--यह सब फिजूल। समय का तैयारी करना जरूरी है। इस बारे में अब और बात न करो। सभी एक साथ--हमें अपनी दीदी का भरोसा है कि हमारी खुशी कायम रहेगी।

शोभा--जरा रोशनआरा को तैयार करो, उसका नाच होगा और हम मिलकर गीत गावेंगे।

शान्ति--मैं प्रोफेसर कुमुदिनी को बुलाये लाती हूँ वह शाम की गाड़ी से बम्बई जानेवाली हैं।

शोभा--हाँ, हाँ, उन्हें अपने ट्राइल में शामिल कर लें। उधर पंडित जी के घर पर (सतीश गिरीश, कैलाश, दिनेश, महेश, तरादेवी और कमला भी एकत्रित होते हैं।)

सतीश०--आज हम एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी उठाने जा रहे हैं।

महेश--बड़ा अच्छा विचार है पिता जी! जिन ब्राह्मणों ने धर्म के नाम पर ढोंग प्रारम्भ किये, जिस जाति ने हिन्दुओं को पतित कर दिया और अभी तक निराशा ही है तो क्यों न ब्राह्मण हो फिर शिरोमणि बनकर समाज का सुधार करें?

महेश--इसका फल क्या होगा?

दिनेश--(क्रोधित होकर) हिन्दू और मुसलमान दोनों ही शत्रु हो जावेंगे।

गिरीश०--बच्चे बड़ों की बातों में दखल नहीं देते हैं। तुम्हें चिन्ता नहीं करनी है। भैया, भाभी जी सहमत हैं। सुशील की माँ तो माँ का हृदय रखती हैं। मुझे इस सम्बन्ध में कोई आपत्ति नहीं। एकलौते बेटे की इच्छा पूरी करना मेरा कर्त्तव्य है। आप ही इस बात को मौलाना साहब के सामने रखिए।

सतीश--एक बार फिर सोच लो। ठीक है।

सब एक साथ--आज ईद है।

गिरीश--तो क्यों न हिन्दू और मुस्लिम एक दिल और एक दिमाग से मिलें!

(मौलाना के घर प्रोफेसर कुमुदिनी आ जाती हैं) सभी लड़कियाँ गात* गा रही हैं, रोशनआरा नृत्य कर रही है, पंडित जी भी अपने परिवार के साथ मौलाना के घर पहुँच जाते हैं, आपस में सब मिलकर एक साथ बैठ जाते हैं।

सतीश--(गंभीर होकर) मौलाना साहब, हम चाहते हैं कि आज की ईद...।

रमजान--(बात काटते हुए) हाँ, हाँ, हमारी किस्मत खुल जाय। ऐसा मौका बार-बार नहीं आता। बड़ा अच्छा हो कि कोई सम्बन्ध हो जावे।

रहमान--मुझे सुशील बड़ा प्यारा लगता है।

गिरीश०--और मुझे रोशनआरा।

सतीश०--तो आप सब तैयार हैं?

सब एक साथ--हाँ मंजूर।

सतीश०--तो अब तैयारी की जावे।

बाहर से एक आवाज--तिवारी जी!

सतीश०--कौन है?

एक स्वयंसेवक--कैलाश।

सतीश०--कैलाश! क्या बात है? कैलाश--आपसे प्राइवेट काम है।

सतीश०--अच्छा घर चलो, मैं आया।

(सतीश के घर के सामने विद्रोही रक्षक-दल के मुख्य सदस्य बैठे हैं, समय सात बज चुका है)

तिवारी (घबड़ाकर) कहिए, खैर तो है? अपने यहाँ तो हिन्दू और मुसलमान में कोई भेद नहीं?

दल--हिन्दू और मुसलमान एक हैं, पर गुण्डे बदमाश धर्म की ओट में अत्याचार कर रहे हैं।

तिवारी जी--मैं अच्छी तरह जानता हूँ। चलो कमरे में चलकर बातचीत होगी।

चिन्तू चमार--कांग्रेस सरकार से हमें कोई आशा नहीं। हमारे अम्बेदकर हमें अलग रखना चाहते हैं। हम लोगों को हिन्दुओं ने नीच और पतित समझा है।

रामसिंह--फारवर्ड दल की ओर से मैं नेता जी सुभाष बोस की याद दिलाना चाहता हूँ कि उन्होंने आजादी का द्वार खोल दिया था और अब स्वार्थी लीडर उसका अनुचित लाभ उठा रहे हैं।

रामलाल--कम्यूनिस्ट तो सदैव से ही गांधीवाद के विपरीत रहे।

वेदप्रकाश--राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघ का उद्देश्य हिन्दू-राष्ट्र को शक्तिशाली बनाना है। हित हिन्दुओं के साथ में है।

गुरुदत्तसिंह--जो जाति आज तक सगी न हो सकी तो अब क्या भरोसा किया जाय? जब तक सिक्ख की तलवार है तब तक एक-एक सिक्ख सवा लाख के बराबर है।

चिरंजीतलाल--मैं तो यही ठीक समझता हूँ कि फैसला जल्द किया जाय। मैंने सुना है कि देहली से प्रातः आठ की गाड़ी से कुछ लुटेरे, गुण्डे, बदमाश इधर भी आ रहे हैं।

सब एक साथ--तिवारी जी!

चिरंजीतलाल--हमें आपसे पूरी आशा है कि ऐसे अवसर पर क्या किया जावे।

तिवारी जी--भाइयो! मुझे अच्छी तरह मालूम है कि हमारी बहनों और माताओं पर बालात्कार किये गये। व्यक्तिगत और सामूहिक कत्ल किये गये। बच्चों को आग में भूना गया। लाखों की सम्पत्ति नष्ट हुई है। हमारे दिलों के अंगार अभी दहक रहे हैं फिर भी बड़ी समझ से काम लेना है। ठंडे होकर सोचना है। मेरा तो यह ख्याल है कि आनेवाले दल से सशस्त्र मिल लिया जावे तो अच्छा होगा। रक्षा हर प्रकार करनी है। युद्ध करना तभी ठीक होगा जब कोई न तो समझौता करे और न अपनी हरकतों से बाज आये।

(स्टेशन से एक आदमी दौड़ता हुआ)--पंडित जी एक जत्था लारी से भरकर इधर आ रहा है।

(एकदम सन्नाटा, सभी तितर-बितर हो जाते हैं, चारों ओर एक सनसनी-सी फैलकर सूनसान हो जाती है। आनेवाले दल की गोलियाँ, कहीं-कहीं रोने की आवाज, जगह-जगह से आग लग रही है। बचाओ। मारो, काटो, लूट लो। एक भयंकर कुहराम)।

कैलाश--(रमजान के पास जाकर) अब्बाजान! लुटेरे यहाँ भी आ गये।

रमजान--फिक्र मत करो, बेटा! मेरे जीवित आपमें से एक का भी बाल बाँका नहीं हो सकता। आप मेरे मेहमान हैं।

दिनेश--मेहमान हैं तो क्या?

कैलाश--दिनेश, तुम मत बोलो। सभी चुप रहें, अन्दर के कमरे में जाकर अपना अपना काम करें। मैं पिता जी के पास जाता हूँ।

तारादेवी--नहीं बेटा!

कैलाश--माँ, मैंने सुना है कि पंडित नेहरू निहत्थे गुण्डों को डराकर भगा देते हैं, तलवार छीन लेते हैं। मेरे अन्दर भी ताकत है, मैं भी देखूंगा।

रहमान--बेटा यह पिस्तौल लेते जाओ।

कैलाश लाइए! (शीघ्र ही भागता हुआ घर के बाहर आ जाता है।)

ठहरो बदमाशो! कहाँ जाते हो। एक-एक भून दूंगा।

(गोली चलने की आवाज)

कैलाश--अगर खैर चाहते हो तो हथियार जमीन पर डाल दो। इधर-उधर की आवाजें--मारो, इन्हें जिन्दा मत छोड़ो।

(कुछ और लगातार गोलियों की आवाज)

महमूद--बहादुर सिपाहियो! नल गार्ड के नाम पर धब्बा न लगने

हसन--हसन, सबक नहीं सकता।

कैलाश--(ऊँची आवाज से) तो गिनो।

तिवारी जी--(आवाज सुनकर से) कैलाश, हट जाओ। मैं समझता हिन्दुस्तान में पलनेवाले हम कौम! पूछना चाहता हूँ कि तुम्हें यह क्या है? तुम भाई की तरह आओ। क्या चाहते हो? जान-माल बड़ी से तुम्हारे प्रेम के बदले दिया जाये मैं नहीं समझता कि यह पागलपन इस्लाम बदमाशी नहीं सिखाता।

(उच्च स्वरों में चारों ओर से हर महादेव! हर हर महादेव!!)

कैलाश--बदमाशों को चारों से घेर लो।

तिवारी जी--लुटेरों के इन इन्सानों में तुम्हें बताना चाहता हूँ तुम यहाँ बच नहीं सकते।

(चारों ओर से--मारो, काटो, छोड़ो।)

तिवारी जी--मेरे भाइयो, ठहरो। यह गुमराह भाई अपने के हैं।

चारों ओर से--हम इन्हें जीते नहीं छोड़ेंगे।

महमूद--कासिम, हसन, रहीम--अपनी-अपनी टुकड़ी से कह कि वह हथियार छोड़ दे। पंडित हमारी गलती है। हमें बचाइये।

(भीड़ में से एक-दो फायर हुई जहानआरा भी आ जाती है)

जहानआरा--बदमाशो, कैलाश अकेला जानकर मारना चाहते हो। यहाँ हमारे घर नहीं छुड़ा सकते। एक हैं, एक रहेंगे।

तिवारी जी--बेटी घर जाओ। तो बड़े समझदार आदमी हैं। हम अभी आये। सुशील और अलताफ गाड़ी से ले आओ।

(जहानआरा कैलाश को देखती जाती है)

चारों ओर से आक्रमण-दल को हुए व्यक्ति--इन लोगों का हम नहीं कर सकते।

तिवारी जी--दुश्मन भी जब यार फेंक देता है तो उसे रक्षा दी ह। सहनशील बनिए। अभी आजादी की बहुत-सी परीक्षाएँ हैं। भी बहुत ऊंचा उठना है।

महमूद--हम अपनी नासमझी गलती की माफी माँगते हैं।

तिवारी जी--ठीक है। एक की बात यह है कि आज सुशील का अपने मौलाना रहमान की सुपुत्री आरा से तय हो गया है। आप सभी इस खुशी में शामिल हों। मेरा निवेदन है।

शेष पृष्ठ १२ पर

*आओ आओ संग हमारे।
जीवन पथ पर प्रेम सहारे॥
हिलमिल कर हम छा लें छाजन।
आज मिलन का दिन है साजन॥
मेरा तेरा छोटा-सा घर।
फूल बिछे हों भीतर बाहर॥
उमड़-घुमड़कर आये बदरा।
तरस-तरसकर जाय बदरा॥
कभी न आवें नीर हमारे।
बने रहें अरमान हमारे॥

फैंसी सिल्क-साड़ी
आकर्षक डिजाइन
कलापूर्ण ३-४ इंच चौड़ा बार्डर
नं० ७ ८ ९
१८) २३) २८)
२) पेशगी बाकी वी० पी० से
थोक व्यापारियों का खास सुभीता
भारत इन्डस्ट्रीज,
जुही नं० ९ कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंग-मंच

'सिंदूर'

'विधवाओं की समस्या' एक सुंदर और श्रेष्ठ सामाजिक फिल्म

लेखक, श्री राजेन्द्र निगम

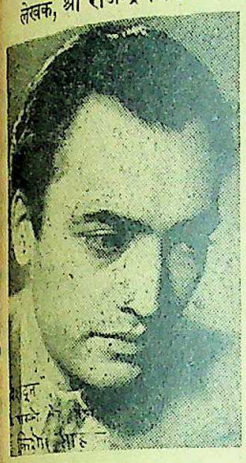

'सिंदूर' फिल्म के दिग्दर्शक श्री किशोर साहू

हिन्दू-समाज में विधवाओं की दशा अत्यन्त शोचनीय है। समाज उन्हें घृणा की दृष्टि से देखता है। शताब्दियाँ बीत गईं, स्त्रियों की इस दशा में अभी तक सुधार न हो सका। अन्य जातियों की भाँति हिन्दू-समाज में स्त्रियों को विधवा होने पर दूसरी शादी करने की आज्ञा नहीं, परन्तु पुरुष इच्छानुसार जितनी चाहे, कर सकता है।

आजकल समाज में एक परिवर्तन-सा हो रहा है। विधवा-विवाह के लिए आवाज उठाई जा रही है। समाज की इस आवाज पर नवयुवकों ने अपना कदम उठाया और वे किसी सीमा तक समाज सुधार में सहायक हो सके।

'सिंदूर' में किशोर साहू ने एक सुधारक के रूप में भारत की एक अत्यन्त जटिल, एवं समस्यापूर्ण विषय को हल किया है। 'सिंदूर' (जिसकी रक्षा के लिए स्त्री अपना सर्वस्व त्याग कर देती है) की कहानी को किशोर साहू ने बड़ी सुन्दरता से प्रस्तुत किया है। बीसवीं शताब्दी के भारतीय संस्कृति की जागृति है। चित्र का तात्त्विक पक्ष ही चित्र का आकर्षण है।

'सिंदूर' एक बुझे हुए दीपक की कहानी है जो अब भी सुलग रहा है। आशा बुझी हो कहानी का विषय बन जाता है। कहानी का अन्त भी वहीं पर और बुझी हो है। अथवा यह कहानी उस अभागी स्त्री की है जो एकाएक विधवा हो गई; परन्तु यौवनावस्था के कारण उसके हृदय में अब भी उमंगें और चाह थे, जो दबाये नहीं जा सकते हैं। जैसा कि चित्र में वह अपने बच्चे से कहती हुई दिखलाई गई है।

चित्र का कथानक इस प्रकार है :—

मीरा एक विधवा है, जिसके चार वर्ष का एक बच्चा मुन्ना है। उसकी ससुराल लखनऊ के एक ठेकेदार के यहाँ पड़ी है। ठेकेदार के दो बेटे हैं, बेनी और रतन। बेनी एक माँ से है और रतन दूसरी से। बेनी बड़ा है। दोनों मेडिकल कालेज में पढ़ते हैं। रतन की दीन दशा को देखकर बेनी के पिता से न रहा गया। उन्होंने बेनी को भेजकर मीरा को बुलवा लिया। मीरा अपने बच्चे का भविष्य कुछ उज्ज्वल देखकर लखनऊ चली आई। यहाँ पर बेनी की बढ़ती हुई सहानुभूति ने प्रेम का रूप धारण कर लिया। इसी बीच बेनी को, रतन के कुआचरण के कारण उसे घर छोड़ना पड़ा। अन्त में मुन्ना की बीमारी का समाचार पाकर बेनी घर लौट आया और उसने अपने पिता से साहसपूर्वक कह दिया कि वह मीरा से प्रेम करता है और शादी करना चाहता है। मीरा बेनी के आने के पहले ही, उसके साथ होनेवाले दुर्व्यवहारों के कारण तुलसीघाट वापस जा चुकी थी। किसी प्रकार बेनी, जो कि स्वयं एक डाक्टर है, पहुँचकर मुन्ना को अच्छा कर लेता है, फिर अन्त में दो हृदयों की धाराएँ मिल जाती हैं।

चित्र बहुत ही कुशलतापूर्वक निर्देशित किया गया है। इस चित्र में मनोरंजन भी है; परन्तु उतना नहीं जितना फिलिस्तीन के अन्य चित्रों में मिलता है। फिलिस्तान का यह प्रथम चित्र है जिसमें भावुकता कूट-कूट कर भरी हुई है।

निर्देशक किशोर साहू की प्रच्छन्न प्रतिभा इस चित्र में पूर्ण रूप से अभिव्यक्त हुई। किशोर साहू एक कलाविद् साहित्यकार है। जैसा कि उसके चुटीले वाक्यों से प्रकट होता है। वह समाज के प्रति अपने हृदय के भरे हुए उद्गारों को पूर्ण रूप से कहानी द्वारा प्रकट कर देता है। किशोर के विचार हिन्दी-साहित्य के एक महान् कलाकार मुंशी प्रेमचन्द की प्रतिभा से प्रभावित प्रतीत होते हैं। जिस प्रकार उनके विचारों में समाज के विचार तथा उनकी आवाज में समाज की आवाज थी उसी प्रकार किशोर के विचारों से प्रतीत होता है।

किशोर ने आज के कालेज के विद्यार्थियों के जीवन का चित्रण भली भाँति किया है। किन्तु चित्र को सफल बनाने के कारण थोड़ा-सा सस्तापन आ गया है। किशोर ने सिन्दूर का दिग्दर्शन भी किया है। चित्र का दिग्दर्शन उच्च कोटि का है। किशोर की इस कला का परिचय तो 'राजा' चित्र में ही मिल गया था किन्तु 'सिन्दूर' में किशोर की प्रतिभा का विकास पूर्ण रूप से हुआ है।

चित्र का कथानक निर्विघ्नता से बढ़ता है। किसी भी स्थान पर अस्वाभाविकता नहीं आती। चित्र में परिस्थितियों की शृंखला कहीं पर भी टूटती हुई नहीं मालूम होती।

किशोर चित्र का मुख्य पात्र है। वह बेनी के रूप में एक सफल अभिनेता है। उसके अभिनय में अस्वाभाविकता का लेश-मात्र भी नहीं।

'मीरा' के अभिनय में शमीम सफलता की चोटी पर पहुँच सकी। शमीम एक विधवा के अभिनय में अपने पिछले चित्रों के अभिनय से कहीं ज्यादा अनुकूल सिद्ध हो सकी।

चित्रलेखा का राजेन्द्र अपने पिछले चित्रों की अपेक्षा सिन्दूर में असफल ही रहा। उसके इस प्रकार के अभिनय से एक निराशा-सी छा जाती है। पारो सुन्दर के अभिनय में एक सफल अभिनेत्री रही। उसका चंचल अभिनय सराहनीय है।

खेमचन्द्र प्रकाश का संगीत उच्च कोटि का है। गीत सुन्दर हैं; परन्तु परिस्थितियों के अनुकूल नहीं। फोटोग्राफी तथा टेकनीक फिलिस्तान के अन्य चित्रों से अधिक विशिष्ट हैं।

किशोर का यह प्रयास सराहनीय है। 'सिन्दूर' विगत दो मास का सर्वश्रेष्ठ चित्र है।

कई लोग बहुत अधिक साबुन प्रयोग करके अपने शरीर को झाग से ढक लेते हैं परन्तु इससे क्या अधिक सफाई होती है ? नहीं।

उचित तो यह है कि अभाव के इन दिनों में साबुन को अल्प-व्ययता से प्रयोग कर हमाम और ५०१ साबुन को बचाया जाये।

हमाम और ५०१ साबुन

दी टाटा आइल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

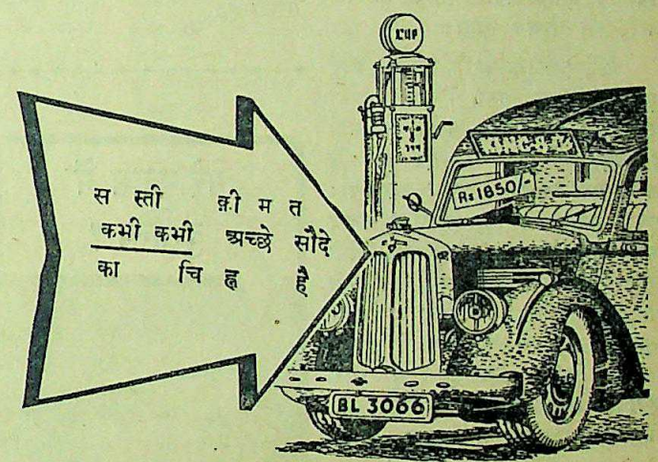

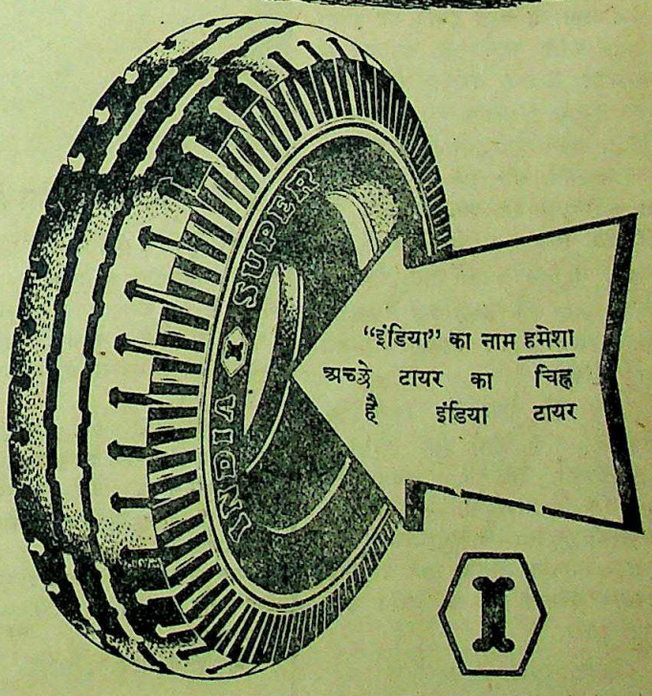

INDIA TYRES

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य व्यायाम

प्राकृतिक चिकित्सा

धैर्य और अध्यवसाय का क्या महत्व है ?

लेखक, डाक्टर सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग, एम० ए०, एन० डी०

सन् १९४२ की बात है मुझ पर भयंकर मलेरिया ज्वर का आक्रमण हुआ। यह लगभग तीन मास तक चलता रहा। रहन-सहन के सम्बन्ध में मैं यथासम्भव प्राकृतिक नियमों का पालन करता हूँ; विशेषत: भोजन के बारे में अत्यन्त सावधान रहने का प्रयत्न करता हूँ। लगभग बारह वर्ष से मैं सबेरे फल अथवा दूध और शाम को रोटी एवं शाक-भाजी खाकर रह रहा हूँ। यदा-कदा उपवास भी रखता हूँ।

हाँ, तो मलेरिया के आते ही मैं अधिक सतर्क एवं सावधान हो गया। उपवास, एनीमा-प्रयोग, नींबू का रस आदि का आश्रय लिया।

चाहिए तो यह था कि जब तक ज्वर पूर्णतया न चला जाता, मैं कुछ न खाता पर परिस्थितिवश ऐसा सम्भव नहीं था। इसलिए तीन-तीन चार-चार दिन के अन्तर पर कुछ न कुछ खाना पड़ता था। पर वाष्प-स्नान, रेड्यू-स्नान धूप-स्नान आदि प्रतिदिन अथवा जब और जैसी सुविधा एवं आवश्यकता होती, किये जाते थे। चूँकि मलेरिया के रोगी के पेट में बहुत पुराना मल एकत्रित रहता है जिसका निकलना परमावश्यक होता है और एनीमा अकसर असफल हो जाता है, मैं सनाय का काढ़ा भी पीता था। इससे मुझे लाभ भी बहुत हुआ। पर इतना इलाज करते रहने पर भी ज्वर का आक्रमण अत्यन्त भयंकर होता था। उस अवस्था का ध्यान कर मैं आज भी सिहर उठता हूँ। इससे मुक्त होने में लगभग तीन मास लग गये थे। यदि मैं चाहता तो उस ज्वर को कुनन की टिकियाँ लेकर केवल तीन दिन में दबा सकता था। कुनैन की तथा रोग को भीतर दबा देने की हानियों से अवगत होने के कारण ही मैंने प्राकृतिक चिकित्सा नहीं छोड़ी।

एक साल पहले मेरे मसूड़ों में अकस्मात् तीव्र वेदना होने लगी। वे सब एकदम सूज गये। लगभग ३६ घन्टे तक मैं पीड़ा से कराहता रहा। पीड़ा को दूर करने के लिए उपवास तथा एनीमा-प्रयोग के अलावा सभी प्राकृतिक उपचार अपनाये गये पर विशेष लाभ नहीं हुआ।

विगत जुलाई के महीने में मेरी धर्मपत्नी के एक विशेष प्रकार का चर्म-रोग हुआ। उसके दोनों हाथों पर छोटी छोटी फुन्सियाँ हो गईं और उनमें पीप पड़ने लगा। पीड़ा के अलावा दोनों हाथों में दुर्गन्ध भी पैदा हो गई। पर प्राकृतिक उपचार करते रहने से तमाम रोग दो-ढाई महीने में चला गया।

मुझे याद है कि कुछ वर्ष पूर्व मेरे पास एक रोगी आया था जिसके मस्सों में तीव्र पीड़ा थी। वह तीन दिन दर्द के मारे चिल्लाता रहा, पर उसने औषधि-चिकित्सा नहीं अपनाई।

उपरोक्त दृष्टान्तों को लेखबद्ध करने का अभिप्राय यह था कि जो लोग औषधियों तथा शल्य-चिकित्सा की हानियाँ अच्छी तरह जानते हैं, वे प्राकृतिक चिकित्सा करते अथवा कराते समय धैर्य आदि नहीं त्यागते। उनका विश्वास है कि यही चिकित्सा मुक्ति-दायक, निरापद और सस्ती है, इसी में कल्याण निहित है। रोग अकसर डाक्टर तथा वैद्य आदि को बदलते रहने पर भी समय पर ही जाता है। पीड़ा को जो पूर्वकृत पापों का प्रायश्चित्त-मात्र है, हँसते हँसते सह लेने में ही हमारा भला है। जो इस प्रायश्चित्त-रूपी पीड़ा से हमें बचाने का ढोंग रचते हैं, वे हमारे सच्चे हितैषी नहीं हैं। पीड़ा एवं कष्ट की उग्रता उपवास एवं स्वाभाविक उपचारों से ही कम की जा सकती है।

(पेज १० का शेष)

(दिन के तीन बजे मौलाना के घर पंडाल के समीप दर्शक और दोनों परिवार बैठे हैं।)

हाजी साहब—आज मेरी जिन्दगी में यह पहला मौका है कि हम एक मुसलमान के घर में हिन्दू और मुसलमान शादी के जरिये से भी रिश्ते कायम कर रहे हैं। एक ओर मौलवी हैं तो दूसरी ओर काबिल पंडित। हमें बड़ी खुशी है कि ऐसे सम्बन्ध हमेशा बढ़ते रहें। इस्लाम की रू से हर्ज इस शादी में कोई एतराज नहीं।

सभी मौलवी—आमीं, आमीं। खुदा दोनों की उम्र दराज करे।

पंडित जी—वैदिक धर्म सनातन है। यह विवाह उचित है। प्रसाद पाने के पश्चात् मंगल-गान हो।

रमजान—(हँसकर) यह तो सब कुछ होगा, मैं सुशील से सुनना चाहता हूँ कि नोआखाली का कुछ हाल बताये।

सुशील—अब्बा, चोटों की वजह से मुझसे अधिक बोला नहीं जाता। अलत्ताफ भाई आपसे बयान करेंगे। अलत्ताफ भया, आओ। कुछ अपनी बीती सुनाओ।

(मध्याह्न में पंडित विवाह-यज्ञ कर रहे हैं)

अलत्ताफ—समय की कमी की वजह से मैं आपको अधिक न बता सकूँगा। मेरी और सुशील की दिली ख्वाइश थी कि किसी तरीके से गुमराह लोगों को काबू में करें। इसमें शक नहीं कि वहाँ इंसानियत का मुँह काला किया गया था। मजहब की बदनामी और तौहीन थी। गरीब बेचारे बर्बाद किये जा रहे थे। बदमाश, लुटेरों ने सभी को परेशान कर लिया था। यह उनकी भूल थी, गलत समझे अपने मंजिले मकसूद को। हमने पूरी कोशिश की कि ज्यादा से ज्यादा लोगों से मिलकर सच्चे हालात मालूम करें। मैं नहीं कह सकता कि इस बार कितनी बुरी हालत हुई है। मेरा दिल भर आता है। तसवीरें खिंच जाती और मैं आपसे पुरजोश अपील करता कि आजादी में दुश्मनी कभी नहीं होनी चाहिए। मेरा एक ही तरीका था यह कि कोई-सा एक गीत सुनकर दोनों रामधन में लग जाते थे और को पूरी-पूरी तसल्ली देते थे।

(महिलाओं की ओर से—हम भी सुनना चाहती हैं। पंडित लोग—राजी भी अवश्य होनी चाहिए।)

अलत्ताफ—आप लोग यदि चाहते हैं तो बन्दा हाजिर है लेकिन पहले सुशील की शादी पूरी कराइए।

(सभी अलग-अलग, पंडित शीघ्रता करिये। मंत्रों के उच्चारण विवाह-कर्म समाप्त होता है।)

अलत्ताफ—तो पहले गीत सुनिये मानुष क्यों इतना भरमाये।

माटी का यह तन है सारा
माटी में मिल जाये।
पाप और अपयश की गठरी
सिर पर लादे जाये॥
कठिन राह है जीवन भी कम
क्यों इतना ललचाये।
एक मिलन की आश मनोहर
क्यों इतना सकुचाये॥
हिल-मिलकर रह प्रीति भाव से
हाथ कछू नहिं आये।
देखत देखत अनजाने से
कब कोई उठ जाये॥
राम रहीम कहो जिस धुन से
वहीं भाव मिल जाये।
अपनी अपनी करनी के बल
भवसागर तर जाये॥

अब मेरे करताल के साथ प्रेम कुछ कीर्त्तन :—

रघुपति राघव राजाराम।
पतित पावन जय जय राम॥
अल्लाह ईश्वर तेरे नाम।
सबको सन्मति दे भगवान्॥

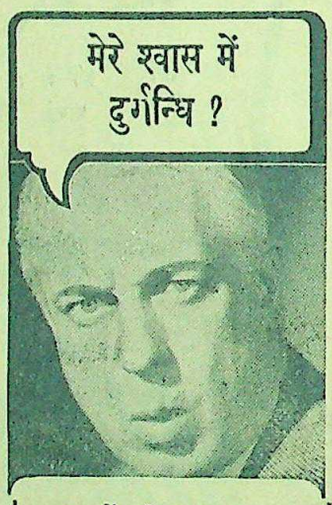

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रावली

रेलवे बोर्ड के नये सदस्य—श्री एफ० सी० बघवार, पिछले दिनों रेलवे बोर्ड के नये सदस्य बनाये गये हैं।

सर मान गे, बरमा के भूतपूर्व मिनिस्टर, बरमा और दिल्ली के बीच कूटनीतिज्ञ प्रतिनिधि नियुक्त हुए हैं।

प्रवर्तक कमर्शियल कारपोरेशन के डाइरेक्टर श्री कृष्णप्रसाद घोष, भारतीय व्यवसाय-संघ की ओर से जापान जानेवाले हैं।

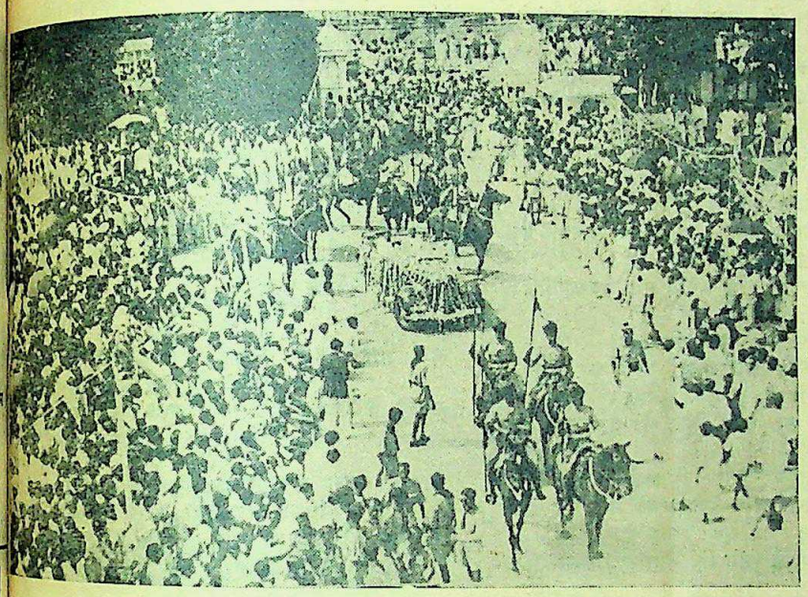

स्वतंत्रता-दिवस के अवसर पर मद्रास में भी खूब धूम-धाम हुई थी। मद्रास कांग्रेसी मंत्री राष्ट्रीय झंडे के साथ हजारों की भीड़ में नारा लगाते हुए चल रहे हैं। कई रथ भी सजाये गये थे, जो बाजार में घुमाये गये थे।

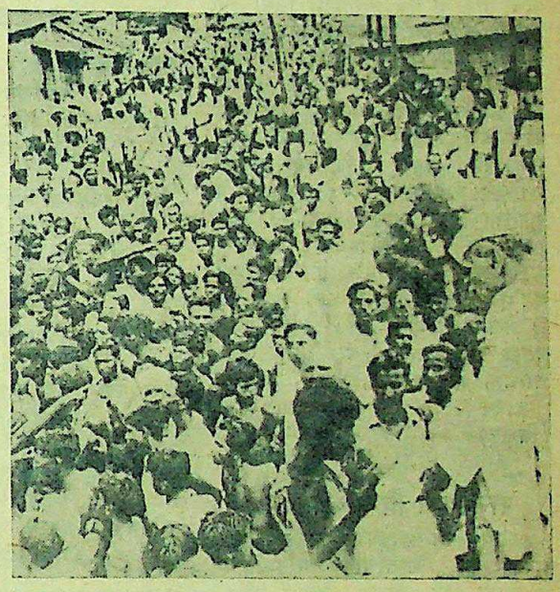

स्वतंत्रता-दिवस के अवसर पर उड़ीसा में लाखों व्यक्तियों का जुलूस निकला था। उड़ीसा के गवर्नर डाक्टर कैलाशनाथ काटजू (एकदम दाहिनी ओर) कपड़ा बाँटते हुए दिखाई दे रहे हैं।

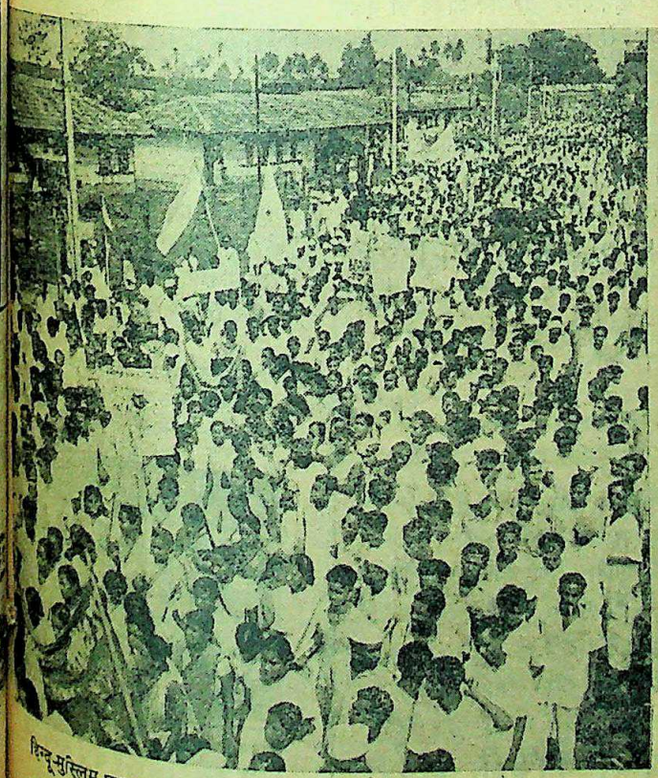

हिन्दू-मुस्लिम-एकता का प्रचार करनेवाले तीन मील लम्बे जुलूस का दृश्य।

मुस्लिम नेशनल गार्ड के सदस्य जुलूस के साथ कराची के बाजार में जाते हुए दिखाई दे रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिट्ठी-पत्री

स्वर्गीय श्री रामदास गौड़ की जीवनी

स्वर्गीय श्री रामदास जी गौड़ विज्ञानाचार्य भारत के उन उद्भट विद्वानों में से एक थे जिनका हिन्दी-संसार ही नहीं अपितु समस्त संसार ऋणी है। खेद है कि ऐसी महान् आत्मा की अभी तक कोई जीवनी नहीं लिखी गई है और उनकी रचनाएँ भी सब उपलब्ध नहीं हैं। शायद उनकी निज की लाइब्रेरी जिसमें प्रकाशित और अप्रकाशित हजारों पुस्तकें थीं, कायस्थ पाठशाला प्रयाग को दे दी गई है।

स्व० गौड़ जी मेरे फुफेरे भाई थे। अतः पूज्य श्री शिवपूजनसहाय जी के अनुरोध से तथा स्वयं अपनी अंतःप्रेरणा के वशीभूत हो मैं श्री गौड़ जी की जीवनी लिखना चाहता हूँ। इसलिए समाचार-पत्रों के सम्पादकों, अन्य प्रकाशकों, लेखकों तथा गौड़ जी के सहयोगियों, मित्रों तथा भक्तों से मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि वे मेरे इस शुभ कार्य में मेरी सहायता करें और जीवनी के योग्य सभी सामग्री जैसे उनके संस्मरण उनके कई अवस्थाओं के चित्र उनके स्वरचित पुस्तकों की एक-एक प्रति, उनके अप्रकाशित पुस्तकों की सूची तथा स्थानों के नाम जहाँ वे सुरक्षित हों, उनके जीवनी-सम्बन्धी छोटे लेखों की कापियाँ या अखबारों की कतरनें तथा उनके हाथ के लिखे पत्र एवं अन्य चीजें आदि नीचे लिखे पते से भेजने की कृपा करें। पता—गंगा-प्रसाद गौड़ "नाहर" डी० टी० एस० आफिस, पो० सोनपुर, सारन, बिहार।

सारन (बिहार) —गंगाप्रसाद गौड़ 'नाहर'

* * *

राजस्थान विश्वविद्यालय

आपके पत्र 'देशदूत' में श्री सूर्यकरण पारीक का राजस्थान यूनिवर्सिटी में हिन्दी को माध्यम बनाने आदि के सम्बन्ध में एक पत्र प्रकाशित हुआ है। मैं उनके प्रस्तावों का हृदय से अनुमोदन करता हूँ। पर कठिनाई यह है कि उक्त यूनिवर्सिटी के अफसर—जिनका विश्व-विद्यालय के निर्माण में एक बड़ा हाथ है—को हिन्दी-संस्कृत से चिढ़ है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि उनकी ही कृपा के कारण जयपुर सिविल सर्विस परीक्षा के विद्यार्थियों को हिन्दी के प्रश्न-पत्र का उत्तर अँगरेजी में लिखना पड़ता है। स्थानीय कालेज में भी उन्होंने हिन्दी-संस्कृत के साथ सौतेली माँ का-सा व्यवहार किया है। आप किसी प्रकार के विद्वान् न होने पर भी सर मिर्जा (जयपुर के भूतपूर्व दीवान) के कृपा पात्र होने के कारण यूनिवर्सिटी अफसर बना दिये गये थे। जब तक सामूहिक प्रयत्न न किया जाय, आपसे किसी विशेष सुधार की आशा करना व्यर्थ है।

जयपुर —एक जयपुरी

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्तरोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए० लाहौरवाले फतेहपुरी (D. A.) देहली से मशवरा (सम्मति) मुफ्त लेकर अपना जीवन सुधार लें।

बापू के जन्म-दिवस पर

लेखक, श्री रामचन्द्र शुक्ल 'सरस'

पाकर जिसको हुई भूमि भारत की धन्या।
होकर निधनी धनी धरा यह हुई अनन्या॥
जिससे भारत तरुण हुआ जो जीर्ण हुआ था।
यहाँ वही नर-रत्न आज अवतीर्ण हुआ था॥

सत्य-अहिंसा और त्याग में जीवन सारा।
देकर जिसने सदा शान्ति-संकल्प सँवारा॥
संकट विकट अनेक निकट जब जब आये हैं।
अनाचार के घन-घुमंड जब जब छाये हैं॥

उठी पाशविक प्रखर दमन की जब जब आँधी।
शान्ति-सलिल का जलद तभी तब लाया गांधी॥
कर अछूत को छूत पूत जिसने दिखलाया।
भेद-भाव को भुला एकता-पाठ पढ़ाया॥

फहर रही है आज उच्च जो राष्ट्र-पताका।
हुआ विश्व में व्याप्त हिन्द का सुन्दर साका॥
धाम धाम में धाक देश की जिसने बाँधी।
प्रकट हुआ था आज वही नर-पुङ्गव गांधी॥

ऊँच-नीच का भाव न जिसको छू तक पाया।
पक्षपात का पात न जिस पर कुछ हो पाया॥
ले समता की दृष्टि सृष्टि को देखा जिसने।
दमन-दृष्टि को शमन-वृष्टि सा लेखा जिसने॥

क्षमा खड्ग जो सदा साथ रण में रखता है।
जो है भीषण शत्रु मित्र उसको लखता है॥
सहन-शीलता सदा साथ जिसके रहती है।
जिसकी जगती आज जयति जय जय कहती है॥

असहयोग का शान्तिपूर्ण ले अस्त्र निराला।
रहा असम्भव उसे आज सम्भव कर डाला॥
देख देख यह कृत्य विश्व कृतकृत्य हुआ है।
राजनीति का नया हिन्द में नृत्य हुआ है॥

रहकर भी जो दूर पास रहता है सबके।
कहता सुनता और देखता जो नव ढब से॥
कांग्रेस का सर्वस्व राष्ट्र का एक पिता है।
जग कहता है जिसे कि नेता एक किता है॥

उसका नैतिक रूप जवाहर में तुम देखो।
विजय-लक्ष्मी-पूर्ति विजयलक्ष्मी में देखो॥
मुस्लिम कहते महा मुहम्मद यह आया है।
ईसाई यह कहें नहीं ईसा आया है॥

हिन्दू हित के साथ हाथ में जिसको लेते।
मोहन जिसको मान अर्चना जिसको देते॥
कर्मचन्द का चन्द महात्मा वह गांधी है।
निज सद्गुण से धाक आज जिसने बाँधी है॥

जो हम सबके लिये एक आदर्श बना है।
दैवी गुण-गण केन्द्र विश्व का पूज्य बना है॥
मेरे पथ पर चलो यही हमसे कहता है।
हमें राज्य-सुख सौंप आप दुख ही सहता है॥

भाई भाई आज लड़ाई जो लड़ते हैं।
तनिक तनिक के लिए अकड़ पथ पर अड़ते हैं॥
उनको दे उपदेश देश को आज बचाता।
आता जाता नये राष्ट्र की राह रचाता॥

जिसकी वाणी रूप हिन्द-कोकिल है प्यारी।
स्वतंत्रता-सर थी सरोजनी 'सरस' सँवारी॥
शत शत बार प्रणाम आज है उसे हमारा।
चिरजीवी हो रहे हमारा बापू प्यारा॥

भारी लूट! आज ही मँगावें—अवसर मत चूकिये

३॥) में ६ नई पुस्तकें

पति-पत्नी जीवन (सचित्र)—पति-पत्नी के पढ़ने योग्य दाम्पत्य जीवन को सुखी, सन्तुष्ट बनानेवाली अपूर्व पुस्तक १), खजाना रोजगार—अनेकों प्रकार के हुनर सीख धन पैदा कीजिये १), हुसन पैरिस—केवल विवाहितों के देखने योग्य १२ फोटो १॥), इँगलिश टीचर—घर बैठे अँगरेजी लिखना, पढ़ना, बोलना सीखो १), वशीकरण विद्या—वशीकरण मंत्रों और जादू के खेलों का संग्रह १), हारमोनियम टीचर—हारमोनियम बजाना और गान-विद्या सीखो १।)।

६ पुस्तकों के सेट का मूल्य केवल ३॥) पोस्टेज पैकिंग ।॥) अलग।

ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (जी० ५०७) अलीगढ़ सिटी।

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।—) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आप की गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

"धनकुबेर का खजाना!

(१) १९४७ का वर्ल्ड डाइरेक्ट जिसमें भारत तथा दुनिया के हर भाग निकलनेवाले २००० भिन्न भिन्न वि दैनिक, साप्ताहिक व मासिक समाचार पत्रिकाएँ, मैगेजिन आदि के नाम व हैं। यह अँगरेजी में है। १ प्रति मूल्य २) मनीआर्डर से भेजिये। खर्च माफ। इसमें आपकी सर्व मनोक पूर्ण होगी।

(२) प्रचुर धन कमाने की रहस्यमयी तरकीबें की सूची केवल -) टिकट (स्टाम्प) भेजकर मुफ्त मँगा लें

पता:—
Proprietor Hinni Mail Ser
P. B. No. 36 Monghyr (Beh

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

विवाह तो हो गया लेकिन परिणाम क्या हुआ ?

आज के समाज में दाम्पत्य जीवन की एक करुण कहानी

लेखक, श्री प्रेम कपूर कंचन

"आपको मैं किन शब्दों में उत्तर दूँ मेरी समझ में नहीं आता। आपने लिखा कि मेरे लिए शादी तय कर रहे हैं। मैं इसे अपना महान् भाग्य समझता हूँ। आपने लिखा है लड़की अपने पिता की अकेली सन्तान है, उसके घरवाले भी हैं लड़की इन्टरमीडिएट में पढ़ती है। यह सब किस लिये ?

जब कि आप मेरे पूज्य हैं, आपकी आज्ञा पालन करना मेरा कर्त्तव्य है। फिर इन छोटी-छोटी बातों में मेरा समावेश क्यों? आपका निर्णय मेरा अन्तिम निर्णय होगा। आपने लिखा है कि और सब बातें मेरे ऊपर हैं। मेरे निर्णय पर आप निर्भर हैं तो मैं संकोच क्यों करूँ ?

लड़की कैसी है इसे निरखने के लिए आपने मुझे बुलाया है, उससे प्रथम मेरा चित्र उन्होंने माँगा है। इसके मतलब सब आदेशों में आपकी होनेवाली बहू का सहयोग है। इससे मेरा यह निष्कर्ष है कि वे लोग सभ्यता के उच्चतम शिखर तक पहुँच चुके हैं।

मैं कहूँगा पिताजी इस शादी को आप तय न करें तो सुन्दर होगा। आप पूछेंगे इतना सुन्दर मिलन है। सब कुछ ठीक है वे लोग जरा छोटी जाति के हैं

पंजाब से आई हुई पीड़ित शरणार्थी स्त्रियों का एक दल।

क्या हुआ लड़की सुन्दर है, पढ़ी-लिखी है और धन भी मिलेगा। सौभाग्य से आपका पुत्र भी इस वर्ष बी० ए० पास कर लेगा। धन आपके पास भी है कोई अपनी बेटी को कुरूप नहीं कहता है, फिर आप पता नहीं क्या देखकर मोहित हो गये हैं। आप इस शादी से सुख न पा सकेंगे। उस कन्या का आपके घर में सुधार न होगा, वह आपके घर में बहू बनकर आयेगी पर और कुछ बन बैठेगी। मैं पढ़ा-लिखा होकर यह नहीं चाहता कि उजड्ड और गँवार को आपके घर में ले आऊँ। मुझे तो भारतीय आत्मा की सजीव प्रतिमा गृह-लक्ष्मी चाहिए जो मेरे घरवालों में दूध-पानी की तरह हिलमिल जाय। मुझे "डर्लिंग" की आवश्यकता नहीं पिता जी ! वह बेजन में पली, सुख-स्वप्नों में खेली माँ-बाप की एक ही संतान है। उसे मेरे यहाँ पूर्ण सुख प्राप्त न हो सकेगा; उसके उठते तूफानी आशाओं को मैं पूरा न कर सकूँगा। आशा है आप समझ चुके होंगे और इस शादी की वार्ता स्थगित कर देंगे।"

पिता उक्त पत्र पाते ही क्रोध से भर गये। उन्हें बेटे की हर बातें अल्हड़ सी प्रतीत हुईं उन्होंने बेटे को डाँटकर लिखा मैं जो तुमसे कहता हूँ उसका पालन करो, शीघ्र से शीघ्र अपना 'फोटो' भेजो और परीक्षा समाप्त होते ही चले आओ। मैं तुम्हारा पिता हूँ जो कुछ करूँगा तुम्हारी अच्छाई के लिये। समझे ! पुत्र ने आनाकानी न की।

दूसरी ओर लड़की के जीवन-स्वप्न में एक धक्का लगा। उसन उदास होकर अपने प्रेमी से कहा, "पिता जी शादी ठीक कर रहे हैं।" प्रेमी महाशय को लकवा मार गया। दोनों कुछ क्षणों तक शांत रहे। एक दिन आया कि पिता ने बेटी से कहा "आज हम लोग सिनेमा चलेंगे।"

* * *

कुछ ही क्षणों पश्चात् एक युवक सिनेमा-गृह के फाटक पर आ रुका; एक बार गम्भीरता से दृष्टि चारों ओर घूम उठी। उसके हाथों म भी एक चित्र है। उसने चित्र को एक बार फिर से देखा। खद्दर के कुरते और काली जवाहर वास्कट में उसका यौवन दमक रहा था। सहसा उसके मुख से निकल गया "भारत की गृह-लक्ष्मी डार्लिंग बन बैठी.....।"

और तभी प्रेमी के हाथों में हाथ डाले वह सामने से चली आ रही थी। सरस की आँखें उसके ऊपर कठोरता से टिक गईं। नारी की आँखें युवक की आँखों से टकरा उठीं, तिलमिलाईं और झुक गईं। युवक का हृदय एक आन्तरिक वेदना से जल उठा, वह सहन न कर सका। उसने सोचा इतने पतन की उसने कभी कल्पना न की थी। उलटे पाँव वह वहाँ से लौट आया।

इस मनहूस शहर में उसका कोई साथी भी तो नहीं। क्या करे वह घर लौट आया। लोगों ने तरह-तरह के प्रश्न किये पर उसका हृदय तो जल रहा था, लेकिन किसी ने धुएँ की एक भी रेखा उसके मुख पर न देखी। उसने भाग्य पर सब कुछ छोड़ दिया। वह जानता था पिता जी इसे स्वीकार न करेंगे।

कितने सगे-सम्बन्धियों के बीच उसको उसकी भावी पत्नी सौंप दी गई उसका हृदय रो उठा, लेकिन बेबसी ने उसके पाँव जकड़ दिये थे। मिलन की प्रथम रात्रि में वह उससे आँखें न मिला सका। चुपचाप जाकर विस्तर पर सो रहा। चारों ओर खुशी ही खुशी थी। पर दो हृदयों के बीच मिलने से प्रथम ही गाँठ पड़ गई थी।

दिन और निकल गया। अब बहू के रंग खुलने लगे। बेचारी भोली-भाली सास को कौन बताये ये कहानी। पिता अपनी गलती पर पछता उठे, उन्होंने देखा प्रणय का जीवन बदल रहा है। बहू ने न लाज रक्खी न शर्म। जब भी सरस पिता के सामने रहता और बहू सामने पड़ जाती, सास खून का घूट पीकर बैठ जाती। लेकिन उसे सिनेमा ले जानेवाला कोई न था, प्रेम के शब्द कोई सुनानेवाला न था लाज और शर्म उसे छू तक न गई थी, वेह्या-सी सर खोले वह ससुर के सामने से निकलती। हर बातों का फैसला स्वयं देखती।

सास तो घर की दासी सी बनी फिरती थी। सरस को जीवन में कहीं जगह न मिली वह मदिरा-प्रेमी बन गया। कुछ दिन बाद मायकेवाले आये और बेटी न वहाँ जाकर पिता के आगे अपने दुखों का महाभारत खोल दिया। पिता सुनते ही आगबबूला हो उठे। 'बेटी को खाना पकाने के अलावा बर्त्तन तक माँजने पड़ते हैं।' उन्होंने तय कर लिया, बेटी को वे कभी भी ससुराल न भेजेंगे।

स्वाभिमानी बेटे के पिता ने लाख मिन्नते कीं, पर वे इस बात की सफाई न दे सके कि बेटी घर के काम नहीं करती थी। दोनों ओर बातें बढ़ चलीं। पिता ने बेटे की दूसरी शादी करने की इच्छा प्रगट की पर बेटे ने मना कर दिया।

बेटी पिता के घर रहकर मौज से दिन बिताती रही। प्रेमी प्रेम की मदिरा में उसे डुबोता रहा। कलंक का उदय हुआ। प्रेमी आँचल छोड़कर भागने की चेष्टा में था, पर भाग न सका। कलंक माँ के पेट में बढ़ता रहा। प्रेमी के विश्वास पर प्रेमिका ने ससुराल छोड़ा और घर भी छोड़ने को तैयार हो गई।

पर प्रेमी ने धोखा दिया; उसने कुछ रुपये में उसे बेच दिया। अब वह एक मुसलमान की अर्धांगिनी बनी और धीरे-धीरे उसका पैर हाट के प्रकोष्ठ की ओर बढ़ता रहा। एक दिन उसने नगर के एक प्रसिद्ध छोर पर अपना एक हाल ले लिया।

अब उसका नाम बेगम गुलबदन रखा गया। वहाँ रोज समाज के ठेकेदार अपना उज्ज्वल मुँह लेकर रात्रि के अंधकार में आते और प्रातःकाल की रक्तिम किरणों में काला मुँह लेकर जाते।

भगवान् की दया से उस कुलटा के एक पुत्र एवं एक पुत्री है पर समाज उन्हें स्वीकार न करेगा। कुलटा पुत्री को सभ्य बनाने की चेष्टा में है।

दांतों के अनुकूल आकार

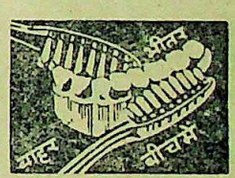

डा. वेस्ट्स चमत्कारी ब्रश
दांतों की सभी सतह को ६० प्रतिशत अधिक स्वच्छ करता है।

- जल-अभेद्य, नमी-विद्वेषक
- विकार-विरोधी शीशे में बंद
- एक वर्ष की गारंटी

पशुओं के बालों से रहित

व्यापारिक पूछताछ के लिये:
एल. डी. सेमूर एंड कं०
(इंडिया) लिमि०
बम्बई - कलकत्ता - कराची
मद्रास

डा. वेस्ट्स टूथ ब्रश और टूथ पेस्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजक चुटकुले

बकरीदी ने आलम से कहा—अजी इस वर्ष समई खाने में मजा नहीं रहा।

आलम—'चीनी कम रही होगी।'

बकरीदी—बात तो पते की कही आपने। पर एक बात और थी—'स्वतन्त्रता-दिवस' से दावत खाते-खाते ईद फीकी रह गई।

* * *

'स्वतन्त्रता-दिवस' के उपलक्ष्य में कायदे आजम के पास विदेशों से बधाई के तार पर तार आ रहे हैं। बेचारे 'ईद मुबारक' का जवाब दें कि 'आजादी योम' का।

* * *

कराची स्थित भारत के हाई कमिश्नर श्री श्रीप्रकाश ने तिरंग झण्डे के अपमान के सम्बन्ध में पाकिस्तान सरकार के विदेशी विभाग को लिखा है; परन्तु अभी तक उसकी सुनवाई उसी प्रकार हुई जैसे 'गांधी-जिन्ना अपील' का प्रभाव पाकिस्तानी प्रदेशों पर। बेचारे श्रीप्रकाश इसी डर के मारे शायद नई दिल्ली की सरकार से बातचीत करने आ रहे हैं।

* * *

बौड़म—'मध्य-प्रदेश तो सर-सब्ज हो जायगा।'

औघड़—क्यों?

बौड़म—जिसका मालिक (गवर्नर) मंगलदास है साथ ही पकवासा (तैयार भोजन) है, वहाँ दुख कैसा?

औघड़—पर निजाम की वक्र दृष्टि से बचना तो मुश्किल है।

* * *

मास्टर—'अब दो पंजाब पढ़ो मोहन।'

मोहन—'और बंगाल?'

मास्टर—'उसे भी।'

मोहन—"तब यह कहिए कि हम दो देश के नागरिक हैं।"

मास्टर—न; देश एक और अंग बहुत।

मोहन—"राग एक और अनुराग दो।"

* * *

हलवाई—"मिठाइयाँ अब न बनेंगी साहब, क्योंकि चीनी तो मिलती ही नहीं।

खरीदार—अच्छा ही हुआ। फिजूल-खर्ची से बच गए।

* * *

बढ़ई से किसी खरीदार ने कहा—"मिस्त्री आज-कल आपकी कुर्सियों का दाम चौगुने से भी अधिक है।"

बढ़ई—"बाबू जी, लड़ाई में सारे जंगल काट डाले गए। अब सामान बनने के लिए भी लकड़ी नहीं मिलती, फिर कैसे सस्ती हो?"

खरीदार—और इन कुर्सियों की लकड़ी कहाँ से आ गई है।

लकड़ी में ब्लैक मार्केटिंग। तब तो शान्त ही रहा जाय।

* * *

रोटी बनानेवाले रसोइये ने कहा—सामान खतम हो गया बाबू जी!

बाबू जी—"चलो आज एकादशी भी है। व्रत रक्खा जाय।"

रसोइया—'और कल?'

(पेज ५ का शेष)

(५) चूंकि निर्वासित यहूदियों के रहने का प्रबन्ध अन्यत्र करना कठिन है, अतएव एक लाख यहूदियों को एक वर्ष के अन्दर, तत्काल प्रवेश मिले। किन्तु इन सिफारिशों को कार्यान्वित करने के सम्बन्ध में ब्रिटेन तथा अमरीका में काफी मतभेद है। ब्रिटिश सरकार के प्रधान मंत्री एटली ने यहूदियों के नवीन प्रवेश पर विरोध प्रकट किया है। वास्तव में फिलिस्तीन की समस्या को जटिल बनाने का दायित्व मुख्य रूप स ब्रिटेन तथा अमरीका जैसे धूर्त साम्राज्यवादियों तथा गौण रूप से स्वयं अरबों तथा यहूदियों पर आ पड़ता है। अमरीका अब पहले की तरह संसार की राजनीति से अलग नहीं रहना चाहता। मध्यपूर्व में उसके अनेक आर्थिक तथा व्यापारिक हित-सम्बन्ध विद्यमान हैं। उसकी रक्षा तथा वृद्धि के लिए, उसे ब्रिटेन तथा अरब लीग से मित्रता का व्यहार करना पड़ता है। किन्तु उसने यहूदियों को विशेष रूप से अपने वश में रक्खा है, क्योंकि उसे डर है कि भविष्य में यदि अरब लीग ब्रिटिशों की पिट्ठू बन गई तो उसकी स्थिति अस्थिर बन जायगी। अमरीका के सत्ताधारी वर्ग पर धनाढ्य यहूदियों का विशेष प्रभाव भी है। अतएव अमरीका यहूदियों का अधिक से अधिक संख्या में प्रवेश कराकर फिलस्तीन में यहूदी-राष्ट्र की स्थापना में योग देना चाहता है, जिससे उसका प्रभुत्व मध्य-पूर्व में अबाधित रहे। १९३९ से ब्रिटेन ने अपना रुख बदलकर अरबों को मिलाना शुरू किया। अरब लीग, जिसमें जमींदारों तथा जागीरदारों की ही अधिकता है, को नाममात्र की स्वतंत्रता देकर ब्रिटेन अरबों को अपनी छत्रछाया में रखना चाहता है। ब्रिटेन ने महत्त्व-पूर्ण स्थानों पर फौजी दल भी रख दिये हैं। हाल ही में फ्रेंच-नियंत्रण से मुक्त ग्रैंड मुफ्ती के ईजिप्त आने पर भी, ब्रिटेन ने उसके पलायन के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की है। ग्रैंड मुफ्ती का अरब जमींदारों और जागीरदारों, जिनका अरब लीग में वर्चस्व है, गहरा प्रभाव है। ब्रिटेन मुफ्ती की सहायता से अरब प्रतिक्रिया-वादियों का संगठन मजबूत करने और इस तरह अमरीका के मध्यपूर्व में बढ़ते बल एवं प्रभाव को रोकने का इरादा रखता है। मध्यपूर्व में आज जो ब्रिटिश-विरोधी वातावरण है उसके परिणामस्वरूप यदि ईजिप्त आदि देशों से ब्रिटिशों को हटना पड़ा तो उनके लिए फिलिस्तीन का प्रदेश अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है। साम्राज्यवादी तो फिलिस्तीन की कृत्रिम समस्या को अधिक उलझाकर अपने हस्तक्षेप तथा नेतृत्व की आवश्यकता बढ़ाना चाहते हैं। साथ ही स्वयं अरबों तथा यहूदियों का भी कुछ ऐसा ऐकान्तिक रुख है जिससे समस्या के समाधान में कोई मदद नहीं मिलती। अरबों का फिलिस्तीन पर एकाधिकार रखना युक्ति-संगत नहीं, क्योंकि फिलिस्तीन में यहूदी दीर्घकाल से रहते आये हैं। उनका भी फिलिस्तीन पर हक है। इसी तरह यहूदियों की फिलिस्तीन को अपना एक-मात्र निवासस्थान बनाने की चेष्टा भी उचित नहीं। यह सच है कि विगत कुछ वर्षों में यहूदियों को नाना प्रकार की यंत्रणाएँ सहन करनी पड़ीं, जिसके फलस्वरूप वे एक निर्वासित जीवन बिता रहे हैं। उनको बसाने का प्रश्न महत्त्व-पूर्ण है। किन्तु फिलिस्तीन को यहूदियों का एकमात्र राष्ट्र बनाने पर भी उनकी समस्या का पूर्ण समाधान नहीं होता। फिलिस्तीन में इतनी जगह नहीं कि यूरोप के समस्त यहूदियों का वहाँ अनायास समावेश हो सके। फिलिस्तीन को यहूदियों का राष्ट्र बनाने पर फल यह होगा कि यूरोप में इतस्ततः बिखरे हुए यहूदी विदेशी नागरिक समझे जाने लगेंगे और उनको आज जो स्नेह-सहानुभूति प्राप्त है वह कम हो जायगी। आज यहूदियों का जो विरोध या द्वेष हो रहा है, उसका कारण यह नहीं कि यहूदियों का अपना राष्ट्र नहीं है, किन्तु यह कि यूरोप में फासिस्ट मनोवृत्ति का पूर्ण रूप से निष्कासन नहीं हो पाया है। इंग्लैंड और अमरीका आदि राष्ट्रों में भी फासिस्ट मनोवृत्ति कुछ अंशों में विद्यमान है। वर्ण-समानता पर आधारित जनसत्तात्मक प्रजातंत्र की स्थापना से ही योरोप के निर्वासित यहूदियों को वास्तविक शान्ति, सुरक्षा और नागरिकता के अधिकार, उन्नति के अवसर आदि प्राप्त हो सकते हैं। रशिया ने कई हजार यहूदियों को अपने देश में बसाया है। अमरीका, इंग्लैंड तथा अन्य उपनिवेशों में भी उनको बसान की व्यवस्था होनी चाहिए।

ऐसी परिस्थिति में यहूदियों का यह कर्तव्य हो जाता है कि वे इस तरह के प्रजातंत्र की स्थापना के प्रयत्नों और आन्दोलनों में सहर्ष एवं साभिमान भाग लें। लेकिन खेद है कि यहूदी अलिप्त रहकर अपने पार्थक्य का प्रचार करते हैं। "जिआनिस्ट लीग" जिसमें धनाढ्य तथा प्रतिगामी यहूदियों का ही वर्चस्व है, भी इस पार्थक्यवादी रुख का जोरों से समर्थन करती है।

हमारी समझ में आवश्यक तो यह है कि फिलिस्तीन की अन्तर्गत स्थिति का विचार करते समय, यूरोप के प्रताड़ित और निर्वासित यहूदियों का प्रश्न उपस्थित न करना चाहिए, क्योंकि जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है यूरोप के यहूदियों का प्रश्न फिलिस्तीन से स्वतंत्र है और उसका समाधान यूरोप की फासिस्ट मनोवृत्ति और शासन-प्रणाली के पूर्ण उच्चाटन से ही हो सकता है। फिलिस्तीन का प्रश्न वास्तव में फिलिस्तीनी यहूदी, ईसाई और अरबों का ही है और होना चाहिए। सभी को अपना वांशिक भेद दूर कर फिलिस्तीन के नागरिक या निवासी के रूप में अपनी एकता घोषित करनी चाहिए। वंश-भेद पर आधारित पृथक् राष्ट्रों की माँग के बजाय वंश-समानता और एकदेश के आधार पर संयुक्त प्रजातंत्र शासन-पद्धति की स्थापना की माँग करना ही फिलिस्तीन के अरब, तथा ईसाइयों का एकमात्र कर्तव्य है। इसी से उनको वास्तविक स्वतंत्रता और स्वराज्य मिल सकता है तथा वे फिर साम्राज्यवादियों, जो वंश-भेद को बनाकर अपना प्रभुत्व बढ़ाने में प्रयत्नशील हैं, को अपनी पुण्य भूमि से हमेशा के लिए भगा सकते हैं। इस सम्बन्ध में मेरे सुझाव निम्नलिखित हैं—(१) फिलिस्तीन पड़ोसी अरब राष्ट्रों से मित्रता का सम्बन्ध स्थापित करे, वह साम्राज्यवादियों से टक्कर ले सके। (२) वंश-समानता के आधार पर प्रजातंत्र कायम हो, इससे प्रत्येक यहूदियों का अरबों की स्थिति में योग मिलेगा। (३) १९३९ की धारा जिसका आधार वंश-भेद है, रद्द हो, क्योंकि वह विभिन्न संप्रदायों में कृत्रिम भेद भाव उत्पन्न करके राष्ट्रीय एकता में बाधक होती है। (४) जमीन पर से रोक हटे। अरबों का संरक्षण भी हो। अरब किसानों का जीवन-मान उन्नत करने के लिए जमींदारी नष्ट करना और खेती की नवीन प्रणाली को प्रचारित करना जरूरी है। (५) औद्योगिक क्षेत्रों में साम्प्रदायिक भेद को स्थान न मिले। उद्योग-धन्धों का राष्ट्रीयकरण हो और सभी को समान अवसर प्राप्त हो। (६) अरब और यहूदी अपनी भाषा, संस्कृति, शिक्षा आदि का स्वतंत्र विकास करने के अधिकारी रहें। (७) फिलिस्तीन की यात्रा तथा वास का अधिकार तीनों धर्मावलम्बियों को हो।

ये कतिपय सुझाव हैं—फिलिस्तीन की समस्या के समाधान के लिए किसी प्रजातंत्रवादी आदर्श और कार्यक्रम की आवश्यकता है उसकी आज हममें नीय कमी देखते हैं। कहीं कहीं संगठित प्रदर्शन अथवा विरोध की घटना हो पड़ती है किन्तु अभी प्रजातंत्रवादी आधार पर संयुक्त संगठन और आन्दोलन की बड़ी जरूरत है। यदि इस दिशा में जोरदार काम होता रहा तो हमें आशा ही नहीं, विश्वास है कि फिलिस्तीन की कृत्रिम समस्या सरलता से संतोषजनक रूप में हल हो सकती है।

सुकवि राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल्-एल०बी० की

अनमोल कृतियाँ

प्रतिमा

इस संग्रह में सुकवि राजाराम श्रीवास्तव की एक से एक बढ़िया ५० कविताएँ हैं। इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा है। क्या भाषा और क्या भाव सभी अनुपम हैं। रंगीन आवरण, बढ़िया छपाई और मूल्य केवल १) एक रुपया।

वनवास

कवि ने रामचन्द्र जी के वनवास का अनोखा वर्णन किया है। कवि राजाराम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवास की अनेक मुख्य घटनाएँ हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है। मूल्य ॥=) चौदह आने।

लक्ष्मणशक्ति

इसी लेखक-द्वारा रचित एक खण्ड काव्य। इसको कथा का आधार रामायण का युद्ध-काल है जिसमें लक्ष्मण मूर्छित हो गये थे। भाषा सुलझी हुई और ओज विरेदार है। मूल्य ॥) बारह आने।

किंकिणी

कवि की बढ़िया कविताओं का संग्रह है। भाषा मधुर और कल्पना इतनी ऊँची है कि पाठक कुछ क्षणों तक भावविभोर बना रहता है। मूल्य ॥) बारह आने।

मधुस्रवा

इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीव में मधु बरसाने की पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रसस्निग्ध बनाइए। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वातन्त्र्यप्राप्ति के पत्र

देवप्रयाग सबधार खालमंडल कांग्रेस कमेटी के तत्त्वावधान में कुशल सेनापति राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की वर्षगाँठ का समारोहपूर्वक निम्न स्थानों में मनाई गई सबधार खाल में प्रथम विद्यार्थियों द्वारा ध्वजा और झंडा-प्रार्थना की। फिर श्री गोविन्दराम मास्टर के सभापतित्व में आम सभा हुई श्री श्रीलाल थपलीयाल विद्यापर डंगवाल 'भिखारी' पत्रकार के भाषण हुए। कुंडी में श्री कृपालसिंह के सभापतित्व में आम सभा हुई, श्री रमेश शास्त्री तथा शालिग्राम 'आर्य' के भाषण हुए सिहाला में आम सभा श्री भगतसिंह के सभापतित्व में हुई श्री भगवतीचरण 'निर्मोही' रामचरन और कर्तेसिंह के भाषण हुए। बकरोड़ा, में श्री झगड़ासिंह के सभापतित्व में आम सभा हुई, श्री रामदयालु शर्मा वाचस्पति, प्रधानी ठाकुर रघुवीरसिंह, सरदारसिंह के भाषण हुए देवप्रयाग (वाह) में देशदल के कप्टेन श्री ललिताप्रसाद के सभापतित्व में आम सभा हुई, श्री धनेश शास्त्री प्रेमलाल वैद्य, कैलाश भट्ट के भाषण हुए प्रजामण्डल के प्रयास से देवप्रयाग (स्टेट) में श्री धनेश शास्त्री के सभापतित्व में आम सभा हुई श्री सत्यप्रसाद बी० ए०, विश्वनाथ शास्त्री आदि वक्ताओं के भाषण हुए। कांग्रेस सेवादल के स्वयंसेवक इस सारे सप्ताह गाँव-गाँव में रचनात्मक कार्यक्रम का प्रचार करते रहे। देवप्रयाग (स्वतन्त्र गढ़वाल) में श्रीमती जयदेवि देवी के प्रयास से स्थानीय महिलाओं की आम सभा हुई जिसमें सबधार मंडल कांग्रेस कमेटी के अन्तर्गत महिला कांग्रेस की स्थापना की गई। वज्वाण गाँव (बलेनस्यूं गढ़वाल) में श्री रामचरण जी के सभापतित्व में किसान दिवस बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया। श्री भगवतीचरण शर्मा तथा कैलाशनारायण के भाषण हुए। इस अवसर पर ग्राम पंचायत भी स्थापित की गई सरपंच श्री वेंकटेश्वर भट्ट मंत्री, रामचरण जी पंच सुन्दरलाल रामेश्वरप्रसाद चुने गये। देवप्रयाग (वाह) में कुछ दिन पूर्व से रात को कुछ अज्ञात गुण्डे मकानों में पत्थर फेंकते रहे, जिससे नगर के लोग बहुत परेशान और आतंकित हैं।

—संवाददाता

* * *

टिहरी राज्य की सकलाना पट्टी में सरकार-द्वारा सामूहिक जुर्मानों की वसूली के लिए भेजी गई फौज व पुलिस की ज्यादतियों के अत्याचारों के कारण राज्य की सीमा के बाहर आये हुए किसानों की एक सभा में यू० पी० के एम० एल० ए० श्री गैरोला व श्री अमरनाथ विद्याभूषण आदि ने भाषण दिया और अत्याचारियों की सहायता के लिए देहरादून में एक समिति का निर्माण किया है। देहरादून में प्रजामंडल के कार्यवाहक प्रधान मास्टर रामस्वरूप की अध्यक्षता में समिति की एक सभा हुई, जिसमें टिहरी सरकार को शीघ्र ही प्रजामण्डल की मांगें पूरी न करने पर एक सप्ताह बाद सत्याग्रह छेड़ने की चुनौती दी गई है। समिति ने सकलाना में टिहरी सरकार द्वारा किसानों पर किये गये अत्याचारों की एक रिपोर्ट तैयार कर केन्द्रीय सरकार व यू० पी० सरकार को भी भेज दी है। सकलाना में प्रजामण्डल की मांग ये है—(१) सकलाना से फौज व पुलिस वापस बुलाई जाय, (२) सभा व जलूस निकालने पर लगे हुए प्रतिबन्ध हटाये जायँ व इस सिलसिले में गिरफ्तार प्रजामण्डल के कार्यकर्ताओं को रिहा किया जाय, (३) सारी पट्टी में स्कूल, अस्पताल व सड़क बनवाई जायँ, (४) सामूहिक जुर्माने सहित हरजाने के वापस किये जायँ। प्रजामण्डल के प्रधान ने इस आन्दोलन को चलाने के लिए बाहर से धन व जन की सहायता की अपील की है।

—प्रकाशन मंत्री

* * *

ऋषिकेश में लगभग ५० वर्ष से बाबा काली कमलीवाले क्षेत्र की ओर से गंगोत्री, जमनोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ, यात्रा-लाइनों में धर्मशालाएँ, सदावर्त, प्याऊ, औषधालय चालू रहते हैं और उत्तर काशी, कुरुक्षेत्र, प्रयागराज और काशी आदि में भी सदावर्त आदि की व्यवस्था है। क्षेत्र में साधु, महात्माओं, विद्यार्थियों और आगन्तुक लोगों को भिक्षा, भोजन दिया जाता है और वस्त्र तथा अन्य बहुत तरह-तरह की चीजें भी समय-समय पर दी जाती रही हैं। अब कंट्रोल आदि के कारण चीजों के मिलने में कठिनाई होने व देश की परिस्थिति परिवर्तन होने से पंजाब, सिन्ध, फ्रांटियर तथा अन्य देशों से दान बन्द होने और खर्च अधिक होने के कारण लोकल एडवाइजरी कमेटी तथा षट्दर्शन साधु-समाज की सम्मति अनुसार कलकत्ता मीटिंग में निर्णय किया गया है कि भोजन के अतिरिक्त और सामान आमतौर से बाँटना बन्द कर दिया जाय। दूध केवल फलाहारी व रोगी साधुओं को दिया जाये। जो साधु व्यवसाय करते हैं उनको क्षेत्र की ओर से सहायता बन्द कर दी गई है।

—संवाददाता

* * *

जोधपुर में दशहरे के अवसर पर अखिल भारतवर्षीय कुमार हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का तृतीय अधिवेशन प्रोफेसर प्रभाकर माचवे की अध्यक्षता में होने जा रहा है। इस स्वर्ण अवसर पर विराट् प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया है। संस्थाओं, चित्रकारों, सम्पादकों आदि से अनुरोध है कि प्रकाशित तथा हस्तलिखित पत्र-पत्रिकाओं; रंगीन, सादे व व्यंगपूर्ण चित्रों; कलात्मक व हाथ की कारीगरी की वस्तुएँ; विभिन्न तरीकों के सिक्के, टिकट, ताश; नकशे आदि आदि प्रदर्शनी-योग्य किसी भी तरह की सामग्री भेजकर पूर्ण-रूपेण सहयोग दे। सामग्री पुनः सुरक्षित रूप में लौटा दी जायेगी। विशेष विवरण-हेतु पत्र-व्यवहार कीजिएगा—नमिचन्द्र जैन 'भावुक',—संयोजक, प्रदर्शनी (व्यवस्था-विभाग), अ० भा० कुमार हिन्दी - साहित्य-सम्मेलन अधिवेशन कार्यालय, जोधपुर।

—संवाददाता

* * *

काशी से महाशक्ति का प्रकाशन होने जा रहा है। जिसमें समस्त धर्मग्रन्थों के सारगर्भित मनोवैज्ञानिक लेखों के अतिरिक्त कविता, कहानी, जीवनी एवं सरल ज्योतिष फलादेश आदि अनेक जीवनोपयोगी विषयों का दिव्य समागम रहेगा। भाषा सरल एवं शुद्ध हिन्दी होगी। इसका मुख्य उद्देश्य प्राणीमात्र में लुप्त सभ्यता, संस्कृति के गौरव का सन्देश पहुँचाना एवं विस्मृत शक्तियों का पुनः संचार करना है।

—संवाददाता

नारायणपुर, देवरिया में जो कन्या-पाठशाला गवर्नमेंट के आदेशानुसार ११ सितम्बर को खुला है वह बाबू रामलखनराव जी भूतपूर्व मैनेजर गवर्नमेंट मिडिल स्कूल नारायणपुर के बिना किराये के दिये हुए मकान में करीब ८ गाँव की जनता के अनुरोध और समर्थन से खुला। जिसके मैनेजर उपरोक्त बाबू रामलखनराव जी जिनके लगातार १२ साल की शिक्षा-सम्बन्धी कार्यकुशलता से यह कुर्कजवार खुश है सर्वसम्मति से मैनेजर चुने गये। और इसमें अध्यापन-कार्य बोर्ड के आदेशानुसार राजधारी कुमारी कर रही हैं। स्कूल में करीब समीपवर्ती ६ ग्रामों की बालिकायें जिनकी संख्या करीब ७० के है, शिक्षा पा रही हैं।

—संवाददाता

* * *

प्रयाग फतेहपुर बिछुआ में महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम के अनुसार गाँवों में रहनेवाली जनता की, रात्रि-पाठशाला, वाचनालय, व्यायामशाला, इत्यादि के द्वारा सेवा करने और उनकी सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक और शारीरिक उन्नति करने और उनमें एकता का भाव भरने के उद्देश्य से हाशिमपुर और फतेहपुर की सम्मिलित जनता की उपस्थिति में 'ग्राम-सुधार-सभा' की स्थापना की गई। २१ सदस्यों की एक कार्यकारिणी-समिति बनाई गई और पदाधिकारियों का चुनाव हुआ—सभापति प्रकाशचन्द्र यादव उप-सभापति गिरिजानाथ जी, प्रधान मंत्री राधेश्याम भारद्वाज, सहायक मंत्री रामेश्वर-प्रसाद पटेल, कोषाध्यक्ष मोहनलाल साहु, आय-व्यय-निरीक्षक मेवालाल जी।

—प्रधान मंत्री

* * *

सेवदह (पटना) राजेन्द्र साहित्य महाविद्यालय सेवदह (पटना) में गांधी-जयन्ती के अवसर पर ता० ८ से ही ७९ घंटों का ता० ११ तक अखंड चर्खा-यज्ञ किया गया। सायंकाल ता० ११ को एक सभा हुई जिसमें गांधी जी के अब तक के कार्यों पर प्रकाश डाला गया। प्रभु से उनके दीर्घजीवी होने के लिए प्रार्थना की गई जिससे भारत का उत्थान हो।

—विद्यानंद विद्यार्थी

* * *

अन्तू सरदार

भरोस सरदार के लड़की के सिवा कोई सन्तान न थी। और भरोस था ऐसा लठैत जिससे पुलिस भी डरती थी। एक जमींदार के यहाँ भरोस नौकर था। उसने अपनी बेटी को भी लाठी चलाना सिख दिया था। इसका ब्याह जिस अनन्त (अन्तू) से किया गया था वह भरोस से सवाया था। एक झमेले में बड़ी मार-काट हुई। इसमें अन्तू की स्त्री भी मारी गई और भतीजा प्रताप पागल-सा हो गया। पुलिस ने अन्तू को गिरफ्तार कर सज़ा करा दी। इधर प्रताप भी चल बसा। यह कहानी है तो बड़ों के लिए भी रोचक, परन्तु बच्चों को बहुत पसन्द आवेगी। सुन्दर सरल भाषा, कई चित्र और कवर-पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल बारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

शारीरिक उष्णता के वजह से

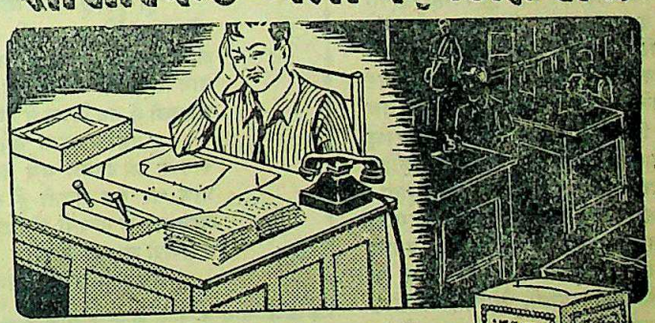

अगर आप निम्न-लिखित उष्णताकी शिकायतों से दुःखी हो रहे हों—
(१) सारे शरीर के अपर और अन्दर खूब गरमी और जलन होना, आंखों की जलन, हथेलियों और पाँव के तलुओं में जलन, ब्रान्डी के रंगके (पीले) पेशाब की जलन;
[२] खाना बेस्वाद लगना, कायमी बदहजमी और अरुचि, खाने के बाद जलन होना और खट्टी डकारें आना, पित्ताशय की मन्द पाचनशक्ति, कायमी कब्ज़;
[३] शरीर और दिमागकी थकान, निर्बलता, गरमी के कारण सम्भोगकी अयोग्यता;
तो 'पर्ल काढ़ा' की बोतलका सेवन शुरु कीजिये। २५ से भी ज्यादा सालों तक पर्ल काढ़ाने इस दवाईके सेवन करनेवाले हजारों लोगोंको अच्छा कर दिया है।
पर्लकाढ़ा जवान और बूढे स्त्री, पुरुष और बच्चे-सभीको समान रुपसे फायदा करताहै। यहांतक कि प्रसूता स्त्रियोंको भी फायदा करता है।

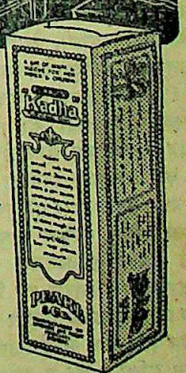

शारीरिक उष्णता के लिये मशहूर अनुभूत इलाज!

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

एकबार परीक्षा कर स्वयं अजमाइये!

HI/2

B/46 पर्ल कंपनी आयौषधी कारखाना, राणीबाग, बम्बई २७

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड कम्पनी, बिरहना रोड, कानपूर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा हिन्दी अमर है

(पेज ६ का शेष)

है, यह हमारी दासताजन्य विवशता की निशानी है।

मुझे स्वयं दुःख है कि मैं अपने नेता एवं आराध्यदेव गांधी की हिन्दुस्तानी-वाली बात को अनुचित समझने पर बाध्य हूँ। मेरी बुद्धि गांधी की इस बात को स्वीकृत नहीं करती। गांधी के विचारों के विरुद्ध अपना मत प्रतिपादित एवं प्रकट करना मेरे ऐसे जन के लिए कितना कष्टकर है, इस बात को मेरे वे समानधर्मा ही समझ सकते हैं जिन्होंने गांधी की एक मुस्कान के लिए अपने संपूर्ण यौवन का उत्सर्ग कर दिया है। मेरे लिए गीता का स्थित प्रज्ञ, संन्यासी, त्रिगुणातीत, भक्त एवं ज्ञानी कल्पना परे की वस्तु थे। गांधी के चरण-दर्शन करके ही मैं गीताकार की तत्सम्बन्धी मान्यता को संभव एवं व्यवहार्य मान सका हूँ। गांधी मेरे जीवन में और मेरे सदृश लक्षावधि जनों के जीवन में क्या रहा है और क्या है,—यह मैं क्या बताऊँ? जो महामानव अनायास ही मेरे हृदय-सिंहासन पर प्रतिष्ठित हो गया है, जिसे मैं अपना मुक्ति-मन्त्र दाता मानता हूँ, जिसे मेरी भावना एवं मेरी बुद्धि युगावतार के रूप में स्वीकृत कर चुकी है, जिसके चरणानुगमन करने का यत्किंचित् प्रयास जीवन-सफलता का सन्तोष प्रदान करता है, उस महापुरुष के विचार से सहमत न हो सकना मेरे लिए कष्टप्रद अवश्य है। किन्तु आज इस भाषा-विषयक नीति के सम्बन्ध से मैं गांधी का विरोध करने के लिए विवश हूँ। मैं समझता हूँ कि गांधी 'हिन्दुस्तानी' का उद्घोष करके देश को भ्रान्त दिशा की ओर ले जा रहा है। मेरे लिए, हम सबके लिए, भाषा का विषय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार का कोई समझौता नहीं हो सकता।

आज भारतवर्ष स्वतन्त्र है। मेरे लिए स्वतन्त्रता का कोई मूल्य नहीं रहेगा, यदि इस स्वतन्त्र वातावरण में मुझे भारतीय संस्कृति के अनुरूप अपने समाज एवं राष्ट्र के विकास का अवसर न मिले—और मुझे वह अवसर तब तक नहीं मिल सकता जब तक कि मेरे राष्ट्र की भाषा का प्रश्न मेरे राष्ट्र की सांस्कृतिक परम्परा के अनुसार निर्णीत नहीं होता। इस भारत राष्ट्र की सांस्कृतिक परम्परा संस्कृत-भाषानिष्ठ है। इसका प्रमाण यदि आप चाहें तो आप इस राष्ट्र के संस्कृत, प्राकृत, पाली, पैशाची, अपभ्रंश, एवं जानपदीय साहित्य का व्याघ्रावलोकन कर लें। आज भी हमारी प्रान्तीय भाषाओं में संस्कृतनिष्ठ शब्दों का बाहुल्य है। अतः यह स्वयंसिद्ध बात है कि भारत राष्ट्र की संस्कृति-परम्परा की रक्षा केवल उसी भाषा-द्वारा हो सकती है जिस भाषा का स्रोत संस्कृत भाषा हो और जिसका अक्षर-अभिव्यंजन देवनागरी लिपि द्वारा हो। स्मरण रहे कि जब तक हम इस प्रश्न को ठीक तरह से नहीं सुलझा लगे, तब तक हम अपने राष्ट्रीय जीवन की अन्य गुत्थियों को न सुलझा सकेंगे।

हमारे सम्मुख अभी तक हिन्दी भाषा को तथा देवनागरी लिपि को भारत की राष्ट्रभाषा एवं राष्ट्रलिपि के रूप में स्वीकृत करने का प्रस्ताव अस्वीकृत अवस्था में ही पड़ा हुआ है। आपमें से अधिकतर, अथवा यों कहूँ कि सभी, महानुभाव यह बात तो जानते ही हैं कि भारतीय विधान-परिषद् के कांग्रेस-दल ने आपके इस सेवक का यह प्रस्ताव मान लिया है कि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा राष्ट्रलिपि देवनागरी हो। परन्तु अभी तक यह प्रस्ताव विधान-परिषद् द्वारा स्वीकृत नहीं हुआ है। विधान-परिषद् के आगामी अधिवेशन में यह प्रस्ताव विचारार्थ उपस्थित किया जायगा। श्रद्धास्पद बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन के प्रयत्नों एवं भिन्न भिन्न प्रान्तों के हिन्दी-प्रेमी सदस्य बन्धुओं के सहयोग से यह प्रस्ताव विधान-परिषद् में भी स्वीकृत हो जायगा, ऐसी आशा तो है; पर, रह-रहकर मन में एक खटका भी उत्पन्न हो जाता है। गांधी जी आज भी हिन्दुस्तानी तथा देवनागरी एवं उर्दू लिपियों की बात कहते चले जा रहे हैं। और उनके एतत् विषयक अनुगामी जन, हम लोगों पर, आग्नेय नयन-बाणों की वर्षा कर रहे हैं। ऐसे समय आपका—युक्त प्रान्तीय हिन्दी-सम्मेलन का—यह कर्त्तव्य है कि बंगाल, मद्रास, बम्बई, पंजाब तथा अन्य सभी प्रान्तों के विधान-परिषद् सदस्यों को हिन्दी तथा देवनागरी के पक्ष की बातें समझाएँ और इस प्रकार आप हम हिन्दी-देवनागरी-समर्थकों को बल प्रदान करें। आपमें से कुछ महानुभाव तथा अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के भाषा-शास्त्र पंडित नेतागण विधान-परिषद् के समय दिल्ली पधारें और भिन्न भिन्न प्रान्तवासियों से संपर्क स्थापित करें। हिन्दी-हिन्दुस्तानी-विवाद का स्पष्टीकरण करनेवाली पुस्तिकाएँ अँगरेजी में भी तैयार की जानी चाहिये। हमें हिन्दी तथा देवनागरी के पक्ष में प्रबल आन्दोलन करना चाहिये। स्मरण रखिये कि बिना एक संगठित एवं शक्तिशाली आन्दोलन के हम विधान-परिषद् में अपनी बात न मनवा सकेंगे। इस कारण आप सब मित्रों को सजग एवं सतर्क रहने की परम आवश्यकता है।

विधान-परिषद् के कांग्रेस दल में एक प्रश्न यह उठ खड़ा हुआ है कि हिन्दी देवनागरी का प्रस्ताव कांग्रेस-दल ने जब बहुमत से स्वीकृत कर लिया है, तब कांग्रेस-दल के सदस्यों को विधान-परिषद् में मनमाने ढंग से मत देने की स्वतन्त्रता हो या न हो? कांग्रेस-दल के विधान-परिषदीय वे सदस्य, जो हिन्दी-देवनागरी के समर्थक हैं, यह चाहते हैं कि इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर दल के सदस्यों को प्रस्ताव के पक्ष में ही मत देने का आदेश दिया जाना चाहिए। प्रस्ताव के विपक्ष में मत देनेवाले अल्पमतीय सदस्यों को यह स्वतन्त्रता नहीं होनी चाहिए कि वे विधान-परिषद् में भी मत देते समय विपक्ष में अपनी सम्मति प्रकट करें। प्रस्ताव-विरोधियों का यह मन्तव्य है कि यह भाषाविषयक प्रश्न ऐसा महत्त्वपूर्ण एवं सात्विक है कि उसका सीधा सम्बन्ध उनके आत्मिक, आन्तरिक विश्वास के साथ है; अतः विरोधी सदस्यों को, अन्तस्थ आत्मिक विश्वास के प्रतिकूल मत देने के लिए विवश करना घोर अन्याय होगा। विधान-परिषदस्थ कांग्रेस-दल की सभा के सभापति आचार्य कृपलानी सदस्यों को मत-दान-स्वतन्त्रता देने के पक्ष में प्रतीत होते हैं। हिन्दी-देवनागरीवाले प्रस्ताव को सफलतापूर्वक पास कराने के लिए यह आवश्यक है कि न्यूनात्न्यून कांग्रेस-दल में इस विषय में फूट न पड़े। हमारी समझ में इस गुत्थी का एकमात्र सुलझाव हमें तो यही प्रतीत होता है कि विधान-परिषदस्थ कांग्रेस-दल अपने उन सदस्यों को, जो इस प्रश्न को आत्मिक-विश्वासमूलक मानते हैं, केवल इतनी स्वतन्त्रता दे दे कि वे विधान-परिषद् में वोट के समय, तटस्थ रह जायँ। किसी भी अवस्था में ऐसे सदस्यों को प्रस्ताव के विपक्ष में वोट देने की स्वतंत्रता नहीं दी जा सकती। मेरा तात्पर्य यह है कि इस समय हमारे सामने अनेक कठिनाइयाँ हैं। और, जब तक हमारे हिन्दीभाषी कर्मठ विद्वज्जन विधान-परिषद् के समय हमारी सहायता को नहीं आएँगे तब तक इस प्रश्न को हिन्दी-देवनागरी के पक्ष में निर्णीत करा लेना अत्यन्त कठिन—कदाचित् असंभव भी—होगा।

पाकिस्तान ने अपनी राष्ट्रभाषा उर्दू उद्घोषित कर दी है। पाकिस्तान की विधान-परिषद् ने चाहे इस विषय में कोई निर्णय न किया हो, पर पाकिस्तानी विद्युत् उद्घोष-विभाग ने हिन्दुस्तानी के स्थान पर उर्दू में समाचारों की घोषणा करनी प्रारंभ कर दी है। हम पाकिस्तान का अनुकरण नहीं करना चाहते। पर, हिन्दुस्तानी के आवरण में हम विजातीयता को प्रश्रय देने के घोर विरोधी हैं। इसलिए हमारा यह निश्चित मत है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा और देवनागरी को राष्ट्रलिपि के रूप में स्वीकृत करने ही में भारत-राष्ट्रसंघ का कल्याण है। भाषा और लिपि के साथ खिलवाड़ करना राष्ट्र की परम्परा एवं संस्कृति के साथ विश्वासघात करने के सदृश है।

अन्ततः, हिन्दुस्तानी भाषा है क्या? भारत-सरकार द्वारा निर्मित विद्युत् उद्घोष-परामर्श-दात्री-समिति ने हिन्दुस्तानी की व्याख्या करने का प्रयास किया था। उसके मतानुसार हिन्दुस्तानी वह भाषा है जो साधारणतः उत्तर-भारत में समझी और बोली जाती है और जो उर्दू और देवनागरी दोनों लिपियों में लिखी [illegible] है। मेरे निकट यह परिभाषा एक [illegible] परिभाषा है—भ्रष्ट इसलिए कि [illegible] अवैज्ञानिक एवं अवास्तविक है। [illegible] जार्ज ग्रियर्सन के सदृश भाषातत्त्व-विद्या[illegible] को उत्तर-भारत में हिन्दुस्तानी नाम [illegible] कोई भाषा नहीं मिली। इति[illegible] की दृष्टि से हिन्दवी अर्थात् हिन्दी [illegible] भाषा है—पर हिन्दुस्तानी का तो [illegible] अस्तित्व है ही नहीं। इसलिए [illegible] प्रकार के भ्रामक नाम के चक्कर में [illegible] कर हिन्दी भाषा के साथ अन्याय [illegible] की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करते [illegible] कहाँ का न्याय है?

हमारा अखिल भारतीय हि[illegible] साहित्य-सम्मेलन तथा हमारे भिन्न-[illegible] प्रान्तस्थ प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मे[illegible] अथवा यों कहूँ कि हम हिन्दी-भाषा भा[illegible] जन, कदापिकाल उर्दू भाषा के वि[illegible] नहीं हैं। यदि हमारे देश के कुछ निवा[illegible] भ्रमवश किंवा प्रमादवश हिन्दी [illegible] अर्थात् भारतीय परिपाटी एवं संस्कृ[illegible] का, विरोध करें तो करें। हम, भा[illegible] के लिए नितांत अस्वाभाविक, उन[illegible] उर्दू का विरोध नहीं करते हैं। हम [illegible] तो उर्दू को भी हिन्दी की एक शैली [illegible] माना है—हाँ, शैली ऐसी अवश्य [illegible] भारतीयता से विरहित एवं विजातीय[illegible] से विजड़ित है। हम चाहते हैं कि अ[illegible] स्थान पर उर्दू फले-फूले। हाँ, हम [illegible] बात का पक्ष समर्थन नहीं कर सकते [illegible] हिन्दुस्तानी के छद्मवेश में उर्दू पन[illegible] उर्दू अपने वास्तविक, यथार्थ, यथाव[illegible] रूप में, उन्नति भले ही करे। हिन्दुस्ता[illegible] के नाम पर, वह हिन्दी के विकास [illegible] मार्ग में आड़े न आवे, यही हम चाहते हैं।

गीत

लेखिका, श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा 'सुधा'

गूँजते जो स्वर्ग तक स्वर आज अन्तिम गीत सुन लो।
आज से अब सुन न पाओगे हृदय की वेदना को,
भूलती कैसे बताओ आज तक संवेदना को;
हो चुकी आहत प्रतीक्षा में हमारी क्षीण आशा,
जान लोगे तुम स्वयं ही वेदना की मूक भाषा;
हो चुकी है मन्द लय जो आज मन के मीत सुन लो।
मौन अनडोले अधर ही कह रहे बीती कथाएँ,
आज अनबोले नयन भी कह रहे बीती व्यथाएँ;
घाव रहने दो अछूते तुम नहीं सहला सकोगे,
लो चली मैं अब विजन में तुम न अब बहला सकोगे;
ह नहीं अवकाश तुमको चिर विदा के गीत सुन लो।
राग के ओ देवता, तुम देख लो यह वेश मेरा,
प्राण भर कर भेजती हूँ तुम सुनो सन्देश मेरा;
आज तक के बन्धनों को आज अपने हाथ तोड़ा,
मैं अकेली जा रही हूँ आज युग का साथ छोड़ा;
प्रथम ही अन्तिम बनी जो, हार में भी जीत सुन लो।

अद्भुत कहानियाँ

दो रंगों में छपी इस सचित्र पुस्त[illegible] में एक से एक बढ़िया कहानियाँ हैं। इस[illegible] इतिहास, स्वामिभक्ति और भाग्य के खे[illegible] का वर्णन पढ़ते ही बनता है। मूल्य ॥=)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

बिकाऊ है

एक हारन्सवी इंजन

२० हार्सपावर डबल फ्लाई ह्वील प्रायः नया बिलकुल ठीक फिट है। लेने वाले चलाकर देख सकते हैं।

एक छोटा रसटन प्राक्टर ६ घोड़े का डबल फ्लाई ह्वील।

एक खराद प्लेन (स्क्रूकटिंग नहीं) ५ फुट का।

हारदास बोस, 761 कटरा, प्रयाग।

प्रेम-रहस्य

लेखक, पं० रामचन्द्र शुक्ल 'सरस'

प्रेम की महत्ता सर्वोपरि है। प्रत्येक मानव को प्रेम में आदान-प्रदान का अनुभव होता है। लेकिन प्रेम-रहस्य की गुत्थियाँ विरले ही सुलझा पाते हैं। यह सब आपको इस ग्रंथ के उदाहरणों में मिलेगा।

प्रसिद्ध मनीषी डाक्टर अमरनाथ झा ने इस पुस्तक को हिन्दी में अपने ढंग की पहली पुस्तक कहा है।

लगभग २०० पृष्ठों की सुन्दर और सजिल्द पुस्तक का मूल्य सिर्फ दो रुपये।

प्रतिभा-मण्डल, नया कटरा, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

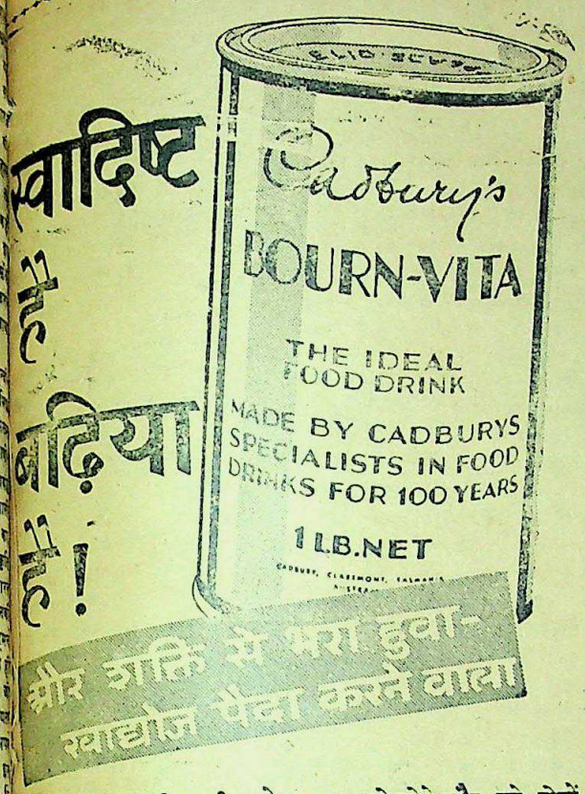

'बोर्न-विटा' की चाक्लेटवाली मज़ेदार महक को छोटे और बड़े दोनों बराबर पसन्द करते हैं। परन्तु यह गुण इसके केल्सेयम और स्वाद्योज ही का है जो अच्छी हड्डी बनाते हैं और आपको नई तन्दुरुस्ती और शक्ति का खज़ाना बख़्शते हैं।

कैडबरी का
बौर्न-विटा
केल्सेयम और स्वाद्योज से भरपूर

BK 3

उच्च कोटि की सचित्र कहानी-पत्रिका

'मंजरी'

जनवरी १९४८ से प्रकाशित हो रही है

'मंजरी' हिन्दी कथा-साहित्य का कलात्मक शृङ्गार करेगी।

'मंजरी' में हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ कथाकारों की तथा अन्य भाषाओं की भी उच्च कोटि की सुरुचि-सम्पन्न कलात्मक कहानियाँ प्रकाशित होंगी।

'मंजरी' निःसंकोच रूप से माँ-बहनों के हाथों में दी जा सकेगी।

'मंजरी' प्रत्येक प्रकाशित रचना पर पर्याप्त पारिश्रमिक देगी और रचनाओं का कापी-राइट लेगी।

'मंजरी' में आद्योपान्त मात्र कहानियाँ न रहेंगी। इसका तीन-चौथाई कलेवर कहानियों के लिए और एक-चौथाई कथा-साहित्य के सभी उपांगों पर गम्भीर लेखों, नवीन प्रकाशनों की निष्पक्ष समीक्षा और मासिक कथा-साहित्य के सिंहावलोकन के लिए, सुरक्षित रहेगा।

'मंजरी' का वार्षिक मूल्य ६) छः रु० और प्रत्येक अङ्क का ॥) आठ आने होगा।

ग्राहकों, एजेण्टों और विज्ञापन-दाताओं को शीघ्रतापूर्वक अपनी प्रतियाँ और विज्ञापन आदि सुरक्षित करा लेना चाहिए, अन्यथा प्रकाशित होते ही इसके अङ्क दुर्लभ हो जायेंगे।

सम्पादक
द्वारकादास चतुर्वेदी

'देशदूत' का दीपावली विशेषांक

विज्ञापनदाता शीघ्र ही स्थान रिज़र्व करा लें

अन्य अवसरों की भाँति 'देशदूत' का यह विशेषांक बहुत ही सुन्दर और आकर्षक रूप में प्रकाशित होगा। इसमें अच्छे अच्छे लेख, कहानियाँ, कविताएँ, हास्य की सामग्री और बढ़िया चित्र रहेंगे। इस अंक में पढ़ने की बहुत बढ़िया सामग्री रहेगी। एजेंट अपनी प्रतियाँ रिज़र्व करा लें।

विज्ञापन-दाताओं को इस अंक में विज्ञापन छपवाने से बहुत लाभ होगा। विज्ञापन-दर—

कवर चौथा पूरा पेज ४००)
" दूसरा या तीसरा पूरा पेज ३००)
पहला पेज पाठ्य-विषय से पहले ३००)
साधारण पूरा पेज २००)

पृष्ठ का आकार
१२½" × ४ कालम
स्क्रीन ६५

शीघ्र पत्र लिखकर स्थान रिज़र्व कराइए। विज्ञापन २५ अक्टूबर सन् १९४७ के बाद स्वीकार न किये जायँगे। मूल्य अग्रिम भेजिए।

मैनेजर 'देशदूत', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

बम्बई के श्री. पटेल को स्मरण है...

आप जीवनभर स्वास्थ्य की रक्षा करनेवाली लाइफ़ब्वाय की आदत का अवश्य अनुसरण कीजिये। जिससे आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, और वह आप के घर में बीमारी के प्रवेश को रोकने में मदद देगी। दिनभर परिश्रम करने के बाद लाइफ़ब्वाय से स्नान कीजिये और देखिये कि, कितनी प्रसन्नता (ताजगी) आपको मालूम होगी। उससे सारे शरीर में नया उत्साह (जीवन) भर जायेगा।

बच्चों को भी लाइफ़ब्वाय की आदत अवश्य सिखाइये। उस के विशेष स्वास्थ्य-रक्षक-तत्त्वों के कारण धूल और मैल के जंतुओं से उनकी सुरक्षा होती है। उन्हें हमेशा लाइफ़ब्वाय से नहाने धोने का स्मरण दिलाइये।

आजकल मैं अच्छे अधिकार (स्थान) पर हूँ, क्यों कि मैं ने सदैव अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखा है—और अब मेरा परिवार भी लाइफ़ब्वाय की आदत सीखे, इस ओर मैंने विशेष ध्यान दिया है।

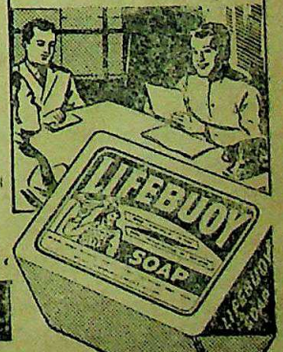

जीवनभर उपयुक्त साबुन...
लाइफ़ब्वाय

L. 91-172-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

प्रकाशक
ईंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिंस होमियोपैथिक कालेज
बनारस

गवर्नमेन्ट रजिस्टर्ड और एडेड से होमियोपैथिक, बायकेमिक, इंजेक्शन का तीनों डिप्लोमा (सार्टिफिकेट) लें या शिक्षा प्राप्त करें। नियमावली मुफ्त मँगाइए।

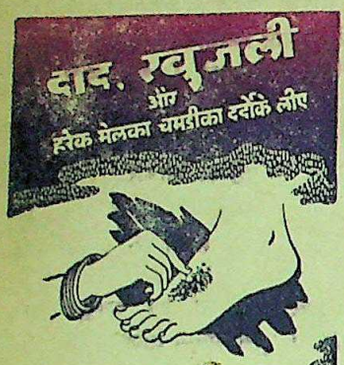

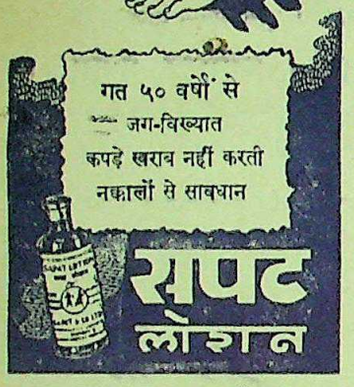

रपट एन्ड कुं
मुंबई. २.

पुरुष स्त्रियों से क्या चाहता है ?

पुरुष बड़े मनोरंजक होते हैं। वे छोटी चीजों जैसे हास्य, मन्द मुस्कान, स्थायी सुगन्धि द्वारा आकर्षित होते हैं।

काश्मीर बुकेट के टाल्क में आप मन्द सुगन्धि पायेंगे। स्नान के पश्चात् काश्मीर बुकेट टाल्क को शरीर पर छिड़किए।

इसकी शीतलता को अपने चर्म में प्रवेश करने दीजिए। यह घंटों आप में ताजगी और प्रसन्नता रक्खेगी

अब आपको अपने सौन्दर्य में सन्देह नहीं रहेगा। उस सुगन्ध को धन्यवाद है, "जिसे मनुष्य पसन्द करता है।"

Cashmere Bouquet Products WITH THE FRAGRANCE MEN LOVE

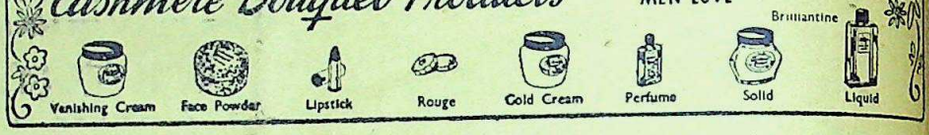

CB 3

आज भारत स्वतंत्र है

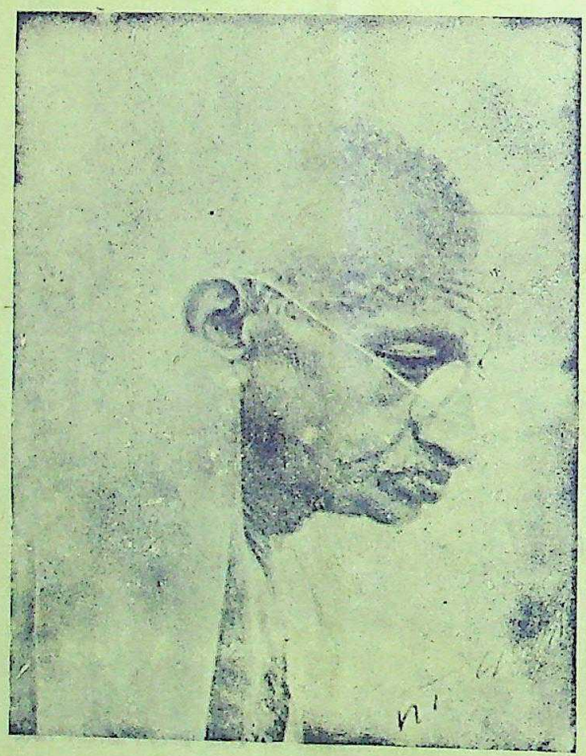

युक्तप्रान्त के शिक्षा-सदस्य जी की सम्मति—

"सेवाग्राम का प्रकाशन सुन्दर हुआ है। आप जैसे लब्धप्रतिष्ठ कवि की रचनाओं के सम्बन्ध में कुछ कहना मेरा दुस्साहस-मात्र है। हाँ, मैं इतना कह सकता हूँ कि रचनाएँ मुझे बड़ी अच्छी लगीं।

—सम्पूर्णानन्द"

यह स्वतंत्रता राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी की ही देन है

अतः

गान्धी-गौरव-गान के लिए

गांधी-अभिनन्दन-ग्र

और

सेवाग्राम

अपने प्रिय मित्रों को उपहार में दीजिए

गान्धी-अभिनन्दन-ग्रन्थ में गान्धीजी के संबंध में आज तक लिखी हुई सभी श्रेष्ठ कविताएं संगृहीत हैं। ऐसा ग्रन्थ किसी भी दूसरी भाषा में नहीं प्रकाशित हुआ! मूल्य ७॥)

× × ×

सेवाग्राम में राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप देनवाले कवि श्री सोहनलाल जी द्विवेदी की कविताएँ बड़ी सज-धज के साथ प्रकाशित की गई हैं।

"ये रचनाएँ देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक प्रेम से पढ़ी जाती हैं।

मूल्य १०)

अपनी प्रतियाँ निकट के पुस्तक-विक्रेता से माँगिए, न मिलें तो इस पते से मँगाइए

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मिश्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पलासाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य ७॥)
संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

१९ आक्टोबर, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 19th October, 1947

राज्य और स्वतंत्र भारत
की विलक्षण राजनीतिक समस्या

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

भारतीय संघ मुसलमान वफादार हैं?
राज्यभाषा हिन्दी - लिपि देवनागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिंस होमियोपैथिक कालेज
बनारस

गवर्नमेन्ट रजिस्टर्ड और एडेड से होमियोपैथिक, वायकेमिक, इंजेक्शन का तीनों डिप्लोमा (सार्टिफिकेट) लें या शिक्षा प्राप्त करें। नियमावली मुफ्त मँगाइए।

सपट एन्ड कुं
मुंबई. २.
D.P.C.143

परिवार के नवयुवक

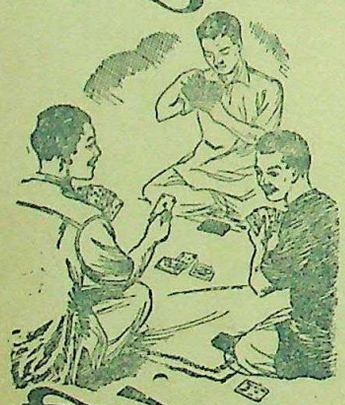

निकोटा का व्यवहार करते है।

क्योंकि निकोटा दांतों को सफेद और रख रखता है, और सुन्दर मुस्कान देता है। परिवार में यह प्रत्येक के अनुकूल पड़ता है। इसलिये यह समस्त परिवार के व्यवहार के योग्य सबसे अधिक 'किफायती' उत्तम श्रेणी का टूथपेस्ट है।

सामान्य सभी जगह एक रुपये से कम में मिलता है।

★ स्वादिष्ट
★ स्फूर्तिप्रद
★ कीटाणुनाशक,

एक सुंदर लाल बक्स में सभी केमिस्ट व व्यापारियों के यहाँ मिलता है।

पारिवारिक
टूथ पेस्ट

पुरुष स्त्रियों से क्या चाहता है ?

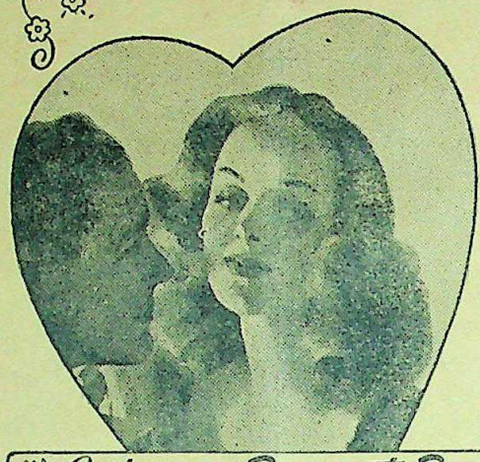

पुरुष बड़े मनोरंजक होते हैं। वे छोटी चीजों जैसे हास्य, मन्द मुस्कान, स्वाभी सुगन्धि द्वारा आकर्षित होते हैं। काश्मीर बुकेट के टाल्क में आप मन्द सुगन्धि पायेंगे। स्नान के पश्चात् काश्मीर बुकेट टाल्क को शरीर पर छिड़किए।

इसकी शीतलता को अपने चर्म में प्रवेश करने दीजिए। यह घंटों आप में ताजगी और प्रसन्नता रक्खेगी

अब आपको अपने सौन्दर्य में सन्देह नहीं रहेगा। उस सुगन्ध को धन्यवाद है, "जिसे मनुष्य पसन्द करता है।"

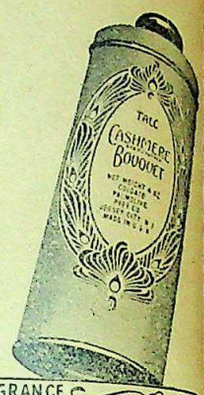

Cashmere Bouquet Products WITH THE FRAGRANCE MEN LOVE

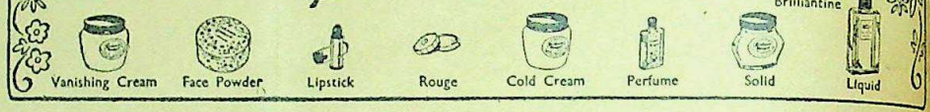

CB 3

आज भारत स्वतंत्र है

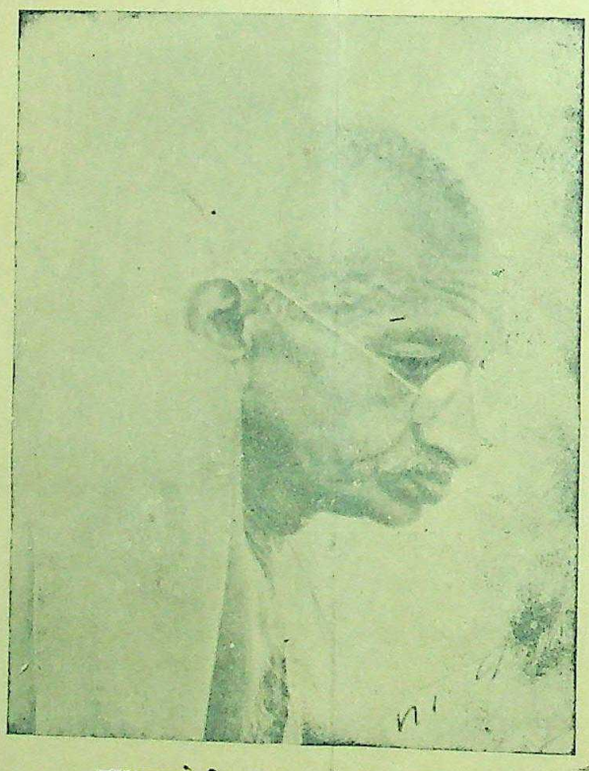

यह स्वतंत्रता राष्ट्र-पिता महात्मा गां
की ही देन है

अतः

गान्धी-गौरव-गान के लिए

गांधी-अभिनन्दन-ग्र

और

सेवाग्राम

अपने प्रिय मित्रों को उपहार में दीजि

युक्तप्रान्त के शिक्षा-सदस्य जी की सम्मति—

"सेवाग्राम का प्रकाशन सुन्दर हुआ है। आप जैसे लब्धप्रतिष्ठ कवि की रचनाओं के सम्बन्ध में कुछ कहना मेरा दुस्साहस-मात्र है। हाँ, मैं इतना कह सकता हूँ कि रचनाएँ मुझे बहुत अच्छी लगीं।

—सम्पूर्णानन्द"

गान्धी-अभिनन्दन-ग्रन्थ में गान्धीजी के संबं
आज तक लिखी हुई सभी श्रेष्ठ कवि
संगृहीत हैं। ऐसा ग्रन्थ किसी भी दूसरी भ
में नहीं प्रकाशित हुआ! मूल्य

× × ×

सेवाग्राम में राष्ट्रीय चेतना को काव्य
सच्चा स्वरूप देनेवाले कवि श्री सोहन
जी द्विवेदी की कविताएँ बड़ी सज-धज
साथ प्रकाशित की गई हैं।

ये रचनाएँ देश के एक कोने से लेकर
कोने तक प्रेम से पढ़ी जाती हैं।

मूल्य १०)

अपनी प्रतियाँ निकट के पुस्तक-विक्रेता
माँगिए, न मिलें तो इस पते से मँगाइए

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष १०, संख्या ७] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, १६ आक्टोबर, १६४७

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

संयुक्तप्रांत और बिहार में जमींदारी प्रथा का अंत होने जा रहा है। इन सरकारों ने जमींदारी प्रथा को खत्म करने की ओर जो कदम उठाया है उससे जमींदार नाराज हो गये हैं। अपने राम की राय में नाराज होने की कोई बात ही है। बेचारों की बादशाही जा रही है, अगर जमीन के बजाय उन्हें पैसा सरकार दे देगी तो उनमें और सेठों में फर्क ही क्या रह जायगा? रुपया है लेकिन प्रभुत्व तो खत्म हो जायेगा। यह सरकार आगामी चुनाव तक मामला ठंडे में डाल देती तो मसला बहुत कुछ हल हो जाता। कम से कम जमींदारों को किसी नेता असेम्बलियों और कौंसिलों का मेम्बर तो बन जाने दें।

* * *

हैदराबाद तो पाकिस्तान सरकार निकलकर अपना रंग दिखा ही रहा है लेकिन जूनागढ़ उससे भी आगे बाजी मारना चाहता है। बात तो सही ही है, हैदराबाद पाकिस्तान से जरा दूर है और जूनागढ़ नजदीक। इसलिए जूनागढ़ सर पर जादू चढ़कर बोल रहा है। हैदराबाद और जूनागढ़ तो भारतीय संघ में अंत में शामिल होंगे ही लेकिन फिलहाल अखाड़े में कुश्ती तो हो रही है, यही क्या कम है? कायदे आजम और अंगरेज चाहते भी तो यही हैं।

* * *

पाकिस्तान के प्रधान मंत्री श्री लियाकत अली खाँ लंदन जानेवाले हैं। उन्हें जाना चाहिए, फिर ऐसा अवसर उन्हें जल्दी मिलना कठिन है। अँगरेज पाकिस्तान के हिमायती हैं। इसलिए उन्हें सलाह-मशवरा भी जरूरी है। हिन्दू लीगियों ने सदा से कांग्रेस के खिलाफ आन्दोलन किया और जहर उगला यहाँ तक कि अँगरेजों ने चलते चलाते पाकिस्तान भी कायम करा लिया, इसलिए उन्हें बधाना तो है ही। इन नवाबजादों की फुरसत कहाँ है, वक्तव्य देने से। इसलिए अपने असली मालिक से राय लेने के लिए श्रीलियाकत अली खाँ को लंदन जरूर जाना चाहिए।

* * *

इस वक्त मुसलमानों की जहाँ भी जांच-पड़ताल हो रही है, वहाँ उनके पास अस्त्र शस्त्र खूब बरामद हो रहे हैं। भारतीय संघ के प्रति वफादारों की लीला का आजकल पर्दाफाश हो रहा है। अपने राम की राय में लीगी मुसलमान दोनों हाथ से आनन्द लूटना चाहते हैं। इधर भारतीय संघ के प्रति वफादारी की डींडी पीट कर या नेशनलिस्ट बनकर चैन की वंशी बजाना चाहते हैं और उधर पाकिस्तानी बन कर कायदे आजम को भी खुश करना चाहते हैं। अक्लमंद ऐसा ही करते हैं। महाकवि अकबर ने लिखा है--

शेख साहब को है,
सूरत से क्या काम।
उनको तो सिर्फ एक,
मुसम्मात चाहिए।

इस वक्त तो हिन्दुस्तान के लीगियों का मतलब हल होना चाहिए। दो नावों पर उन्होंने पैर रख छोड़ा है लेकिन दो नावों पर पैर रखनेवालों की क्या गति होती है, यह तो वक्त ही बतायेगा।

* * *

संयुक्त राष्ट्र-संघ की फजीहत शुरू हो गई है। सोवियट रूस आजकल के संयुक्तराष्ट्र-संघ के खिलाफ एक नया मोर्चा कायम कर रहा है। रूस के संगठन में कई राष्ट्र शामिल हो चुके हैं, उन राष्ट्रों में एक फ्रांस भी है। पिछली लड़ाई के पहले राष्ट्र-संघ की फजीहत में जर्मनी अगुआ बना था और इस बार संयुक्तराष्ट्र-संघ के तोड़-फोड़ में सोवियट रूस कदम बढ़ा रहा है। फिर क्या है लीजिए तीसरा महायुद्ध, अमरीका तथा सोवियट रूस के बीच। अँगरेज तो चतुर है। वह रास्ता देख रहा है। गली दिखाई पड़ी और वह निकल भागा। क्योंकि उसे अमरीका और रूस से क्या मतलब? शेख साहब का,
फकत यह मतलब है।
जिसमें रुपया मिले,
वह काम करो।
उसका मतलब हल होना चाहिए, उसकी राजनीति केवल मतलब है बस!

* * *

एक साहब सूचित करते हैं कि पंजाब के शरणार्थियों की इस वक्त संयुक्तप्रांत में बड़ी धूम है। बेचारे शरणार्थियों की मदद करने से बढ़कर इस वक्त दुनिया में और कोई पुण्य नहीं है। लेकिन पंजाब के लोगों से थोड़ा सावधान भी रहना चाहिए। पिछले दिनों एक घटना घटी। एक वकील साहब ने दो पंजाबी शरणार्थी को अपने घर टिकाया, खूब खातिरदारी उनकी की गई, लेकिन एक हफ्ते के भीतर ही वकील साहब की बीबी गायब और शरणार्थी साहबान भी रफूचक्कर। शरणार्थी महोदयों ने खाया-पिया तो ठीक ही, लेकिन ब्याज में बीबी भीले भागे। अपने राम के कहने का मतलब यह नहीं है कि सभी शरणार्थी ऐसे ही होते हैं किन्तु एक मछली तालाब गदा कर देती है। इसलिए होशियार तो रहना ही चाहिए नहीं तो भले आदमियों के हाथ पुण्य के साथ ही महापुण्य भी लगे तो आश्चर्य नहीं।

* * *

इस बार कांग्रेस के चार आने के मेम्बर मुसलमान बड़ी संख्या में बन रहे हैं। खासकर मुस्लिम लीगी कांग्रेसी बनने की ओर अग्रसर हैं। बड़े बड़े खान बहादुर हजारों रुपया खर्च करके लाखों लीगियों को कांग्रेस का मेम्बर बनवा रहे हैं। अपने राम की राय में कांग्रेस मेम्बर बनना बुरा नहीं है लेकिन यह नये नेशनलिस्ट होंगे बड़े ही खतरनाक! इन वफादारों की टोली बड़ी दूर की कौड़ी ला रही है। खुदा ही हाफिज। लेकिन इस मेल-मिलाप के जमाने में ईमानदारी की बात कहना भी देश-द्रोह से कम नहीं है।

दीपावली के शुभ अवसर पर

'देशदूत' का लोकप्रिय विशेषांक

दीपावली के अवसर पर 'देशदूत' का अत्यन्त सुन्दर, लोकप्रिय, राष्ट्रीय भावनाओं, अनेक सामयिक चित्रों, नेताओं के लेखों, कहानियों तथा कविताओं से सुसज्जित बड़ा ही बढ़िया विशेषांक प्रकाशित होगा। कवर बहुरंगा, मूल्य केवल ।)

मैनेजर 'देशदूत', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

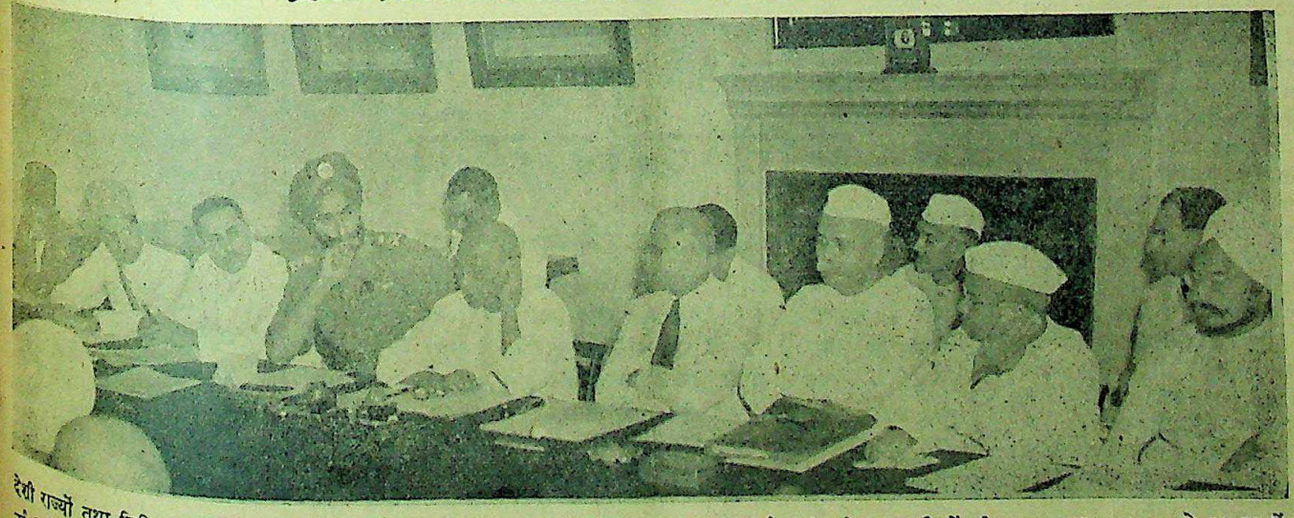

देशी राज्यों तथा विभिन्न प्रांतों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन पिछले दिनों सरदार वल्लभभाई पटेल ने शरणार्थियों की रक्षा तथा सहायता के सम्बन्ध में नई दिल्ली में बुलवाया था। बाईं ओर से दाहिनी ओर—महाराजा अलवर, (बाईं ओर से दूसरे) महाराजा भरतपुर, महाराजा पटियाला, माननीय सरदार पटेल, श्री वी० पी० मेनन, पंडित गोविन्दवल्लभ पंत, डाक्टर गोपीचंद्र भार्गव और सरदार स्वर्णसिंह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

विश्वास कैसे किया जाये ?

सचमुच यह युग सत्यता, ईमानदारी, और बंधुत्व का नहीं है। छल, कपट, धूर्तता और बेईमानी ने मानव की बुद्धि पर अपना आधिपत्य जमा रखा है। स्वार्थ इतना प्रबल हो उठा है कि सही मार्ग की ओर चलने की आवश्यकता का अनुभव ही नहीं होता। कांग्रेस का उद्देश्य सदा राष्ट्रीय दृष्टि से भाईचारे का रहा है। साम्प्रदायिक एकता तथा सद्भावना की स्थापना की ओर कांग्रेस की ओर से सदा मार्ग प्रशस्त किया गया। यद्यपि आज राष्ट्र का विभाजन हो गया है। हिन्दू तथा मुसलमान की दृष्टि से हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान दो उपनिवेशों का निर्माण कर दिया गया है, फिर भी कांग्रेस अपने पुराने सिद्धांत पर आज भी अटल है। पंजाब और बंगाल में अनाचार के पराकाष्ठा पर पहुँचने के उपरान्त भी कांग्रेस के आदर्श में अन्तर नहीं आया किन्तु उस आदर्श और ध्येय का दुरुपयोग किया जा रहा है। उस आदर्श के विपरीत आचरण हो रहा है। प्रत्येक संघ के निवासी को वहाँ की सरकार के प्रति वफादार होना अनिवार्य है। किन्तु आज क्या हो रहा है? हिन्दुस्तान के मुस्लिम लीगी बिचारों के मुसलमानों का रवैया देखकर आश्चर्य और दुख होता है? कांग्रेस की ओर से बार बार घोषणा की गई कि जो मुसलमान पाकिस्तान जाने के इच्छुक हों, उन्हें वहाँ जाने का पूरा अधिकार है किन्तु जो हिन्दुस्तान में रहना चाहें उन्हें राज्य के प्रति वफादारी निभानी पड़ेगी। कांग्रेस नेताओं का यह आदेश न्यायोचित है किन्तु मुस्लिम लीगी आज क्या कर रहे हैं? वह हिन्दुस्तान में रहने के इच्छुक हैं और राज्य के प्रति अपनी वफादारी का नक्कारा भी पीट रहे हैं किन्तु क्रियात्मक रूप से यदि देखा जाये तो वह विश्वासघात कर रहे हैं। वह मुख से कहते तो बहुत कुछ हैं लेकिन रवैया है उनका ठीक विपरीत। लीगी नेताओं तक में यह दुर्भावना कूट कूट कर भरी हुई है। संयुक्तप्रांत के लीगी नेता चौधरी खलीकुज्जमा ने पिछले दिनों ऐसा वक्तव्य दिया कि मालूम होने लगा कि भारतीय संघ के प्रति वह और उनके पीछे चलनेवाले पूर्ण वफादार हैं किन्तु कराची पहुँचकर चौधरी खलीकुज्जमा अपने असली रूप में प्रकट हो गये। जब मुस्लिम लीगी नेता के कौल-फेल का कोई ठिकाना नहीं है तो जन-साधारण लीगी का क्या ठिकाना है? लीगी मुसलमान बार बार यह कहते हैं कि कांग्रेस उनका विश्वास नहीं करती है। वह कदापि भारतीय संघ के प्रति बेवफाई नहीं कर सकते हैं।

हम पूछते हैं कि आजकल मुस्लिम लीगी लोगों की जो जांच-पड़ताल हो रही है उसमें क्या अनुभव हो रहा है? मुसलमानों ने घर-घर अस्त्र-शस्त्रों तथा विस्फोटक पदार्थों का संग्रह क्यों कर रखा है? उन्हें अस्त्र-शस्त्र और विस्फोटक पदार्थ कहाँ से मिले? उन्होंने किस उद्देश्य से हथियारों का संग्रह किया है? क्या संघ के प्रति वफादार रहने का यही प्रमाण है? जो मुसलमान भारतीय संघ के प्रति वफादार हैं, क्या उन्होंने पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों के प्रति होनेवाले अत्याचारों के प्रति भी कभी अपनी सम्मति प्रकट की? क्या पाकिस्तानी सरकार की कटु नीति की कभी भी उन्होंने आलोचना की? वह रहते हैं हिन्दुस्तान में, भारतीय संघ की राज्य-सुविधाओं से वह लाभ उठाने की ओर अग्रसर हैं किन्तु गीत गाते हैं पाकिस्तान का। क्या भारतीय संघ के प्रति वफादारी का यही प्रमाण है? वह गुप्त रूप से सशस्त्र संगठन तथा नाजायज रूप से हथियारों या विस्फोटक पदार्थों का संग्रह करते हैं। साथ ही अनेक प्रकार के आचरण करते हैं जिससे शांति और व्यवस्था में बाधा पहुँचती है, फिर भी संघ के प्रति वफादारी की घोषणा करते हैं? क्या उनके इस प्रकार के कार्य विश्वासघातक नहीं हैं? आखिर उनके ऐसे कौन से काम हैं, जिनसे उन पर विश्वास किया जा सके? अब तो ऐसी स्थिति आ रही है कि यदि मुस्लिम लीगी भावना के मुसलमान अपना रवैया नहीं बदलते हैं तो उनके प्रति अविश्वास होना अनिवार्य है। कोई भी शासन राज्य के प्रति विद्रोह सहन नहीं कर सकता। कांग्रेस सरकारों की यह उदारता है कि वह अब भी एकता तथा साम्प्रदायिक सद्भावना के पृष्ठपोषक हैं, लेकिन मुस्लिम लीगी उससे तनिक भी लाभ उठाने के इच्छुक नहीं जान पड़ते हैं।

इसलिए अब यह स्पष्ट हो रहा है कि या तो मुस्लिम लीगी अपनी नीति में परिवर्तन करें या सीधे जाकर पाकिस्तान में निवास करें, इसके सिवा और दूसरा चारा नहीं। सरदार वल्लभभाई पटेल तथा कांग्रेस के नेता बार बार यही कह रहे हैं किन्तु मुस्लिम लीगियों की प्रगति में परिवर्तन नहीं दिखाई दे रहा है? वह अपनी पुरानी नीति पर आरूढ़ हैं। कांग्रेस आज भी नहीं चाहती है कि आबादी का परिवर्तन हो, भारतीय संघ के मुसलमान अन्यत्र कहीं जाकर बसें किन्तु यदि वह आज की ही भाँति राष्ट्रद्रोह करते रहेंगे तो भारतीय संघ कितने दिनों तक अनुशासनविहीनता सहन करता रहेगा? सच तो यह है कि मुस्लिम लीगी अपने कार्यों से भारतीय संघ का विश्वास खो रहे हैं। विश्वास उत्पन्न करना उनके ही हाथ में है। जब तक वह सचाई से विश्वास की ओर अग्रसर नहीं होते हैं तब तक वह विश्वास के पात्र कैसे बन सकते हैं?

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ गीति-काव्य

कवि और छवि

लेखक, श्री सुप्रसिद्ध कवि बालकृष्ण राव

कविश्री बालकृष्णराव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार ह। 'कवि और छवि' आपकी नवीनतम गीति-काव्यों का सर्वश्रेष्ठ संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्द्वंद्व से परिपूर्ण तो हैं ही साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाले हैं। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में अ.ज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संग्रहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उ ता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम, सचित्र और सजिल्द—मल्य केवल २) ०।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

राजधानी का रंगमंच

संयुक्तप्रांत में चोर बाजार का मूलोच्छेदन होगा

चोर बाज़ारवाले किधर ?—हिन्दी के साथ अन्याय क्यों ?—जमींदारी उन्मूलन समिति की बैठक—स्वास्थ्य तथा चिकित्सा-प्रबंध में सुधार

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

एक प्रेस-कांफ्रेंस में माननीय खाद्य-मन्त्री को पत्रकारों ने सलाह दी थी कि प्रांत में चोरबाजारियों को रोकने के लिए सरकार कोई ऐसा कानून बनावे, जिससे सन्देहमात्र पर किसी भी व्यापारी को गिरफ्तार करके नजरबन्द किया जा सके। पत्रकारों ने कहा था कि इस कानून का बड़ा प्रभाव पड़ेगा और चोरबाजारियाँ बहुत जल्द समाप्त हो जावेंगी। माननीय श्री चन्द्रभानु गुप्त ने इस सुझाव को मान लिया है और उन्होंने सरकार के न्याय और विधान-विभाग को ऐसे कानून का मसविदा बनाने का आदेश दिया है। जब तक यह कानून बनेगा और धारासभाओं द्वारा स्वीकृत होगा, तब तक के लिए माननीय मंत्री उसको आर्डिनेन्स के रूप में लागू करने का विचार कर रहे हैं। चोरबाजारी के प्रमुख केन्द्र कानपुर तथा अन्य नगरों से इस समाचार से बड़ा आतंक है और इसमें सन्देह नहीं कि इस समाचार ने ही चोरबाजारी को समाप्त करने में काफी सफलता प्राप्त कर ली है।

* * *

चोरबाजारी रोकने के लिए हमको जरा कठोर बनना पड़ेगा। माननीय मंत्री ने उस प्रेस-कांफ्रेंस में बताया था कि कानपुर के कुछ नफाखोर चोरबाजारिये सरकार के पास यह प्रस्ताव लेकर आये थे कि वे किसी भी संस्था को सरकार के कहनेमात्र पर दस दस लाख रुपया तक दान देने को तैयार हैं, यदि उनके ऊपर से चोरबाजारी के चलनेवाले मुकदमों को दबा दिया जाय। किन्तु माननीय चन्द्रभानु गुप्त ने इस रिश्वत को घृणा के साथ ठुकरा दिया। माननीय मंत्री ने यह भी बताया था कि कुछ प्रख्यात कांग्रेसजनों ने भी उनसे सिफारिश की थी कि स्वतन्त्रता-दिवस के उपलक्ष में इन नफाखोरों को माफ कर दिया जाय, परन्तु उन्होंने यह भी अस्वीकार कर दिया।

परन्तु माननीय मन्त्री ने इन अनुचित आवेदनों को ठुकरा कर ही समस्या का हल नहीं कर दिया, इससे मंत्रिमंडल की प्रतिष्ठा तो अवश्य बढ़ गई है; परन्तु शंका का समाधान नहीं हुआ है। अच्छा होता यदि माननीय गुप्त जी उन नफाखोरों के नाम जनता पर प्रकट कर देते, जिन्होंने स्वयं मंत्रिमंडल के [illegible] को इस प्रकार परोक्ष रूप से धम चाही। साथ ही उन पर इसके खुली अदालत में मामला चला कर दंड भी दिया जाता। साथ ही कांग्रेसजनों के नाम भी प्रकट कर चाहिए, जो इन नफाखोरों की [illegible] और सहायता करके समाजद्रोह रहे हैं और कांग्रेस के [illegible] नाम को कलंकित करने की चेष्टा रहे हैं।

* *

युक्तप्रांत की गवर्नर श्रीमती जिनी नायडू जाने अथवा अनजाने से हिन्दी पर कुठाराघात कर ही बैठी पदग्रहण करने के बाद तुरन्त ही माय्या ने जो प्रेस कांफ्रेंस की थी, उन्होंने उर्दू की भूरि भूरि प्रशंसा हुए हिन्दी की उपेक्षा की, परन्तु के पत्रकारों द्वारा तुरन्त ही उप किये जाने पर उन्होंने अप स्वीकार कर ली। हाल ही में प्रख्यात ब्रिटिश कवि और वी० वी के आलोचक मि० मैकनीस के स्थानीय गवर्नमेंट हाउस में एक गोष्ठी का आयोजन किया, केवलमात्र उर्दू के पत्रकारों आमन्त्रित किया गया और सुशायरे का रूप दिया गया। मैकनीस स्वभावतः यह धारणा गया होगा कि इस प्रांत की रा अथवा जनभाषा उर्दू ही है। यह जा सकता है कि हैदराबाद में कारण श्रीमती नायडू को उर्दू दिलचस्पी है, परन्तु यहाँ वे केवल नायडू नहीं, बल्कि महामान्या हैं और सम्पूर्ण प्रांत का प्रतिनि करती हैं तथा उनके सभी का सार्वजनिक महत्त्व होता है।

* *

जमींदारी उन्मूलन समिति की अन्तिम रूप से समाप्त हो गई शीघ्र ही उसकी रिपोर्ट के आधा एक कानून का मसविदा अ में पेश होगा। समिति ने जमींद को बिलकुल समाप्त कर देने का नि किया है और जमींदारों को मुआ देने के लिए यह सिफारिश की २५० रु० वार्षिक की आयवाले को उसकी आय का १२ गुना तथा ऊपर की आयवालों का मुआविजा धीरे कम होता जायगा, यहाँ तक एक लाख या अधिक की आयवाले दारों को केवल एक वर्ष की समान मुआविजा मिलेगा।

* *

प्रांत के स्वास्थ्य तथा चिकि प्रबन्ध में सुधार के निमित्त सरक जो कमेटी नियुक्त की थी, उसकी में सिफारिश की गई है कि स्वास्थ्य तथा चिकित्सा-विभाग को स्वायत्त विभाग से अलग करके एक पृथक् के अधीन कर दिया जाय। इस स्वास्थ्य और चिकित्सा-प्रबन्ध उत्कर्ष के हेतु एक पंचवर्षीय की सिफारिश की है, जिस पर करोड़ रुपया व्यय होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या भारतीय संघ के मुसलमान संघ के प्रति वफादार हैं ?

गुप्त जासूसी करनेवालों तथा पंचमांगियों को राष्ट्र कभी क्षमा नहीं कर सकता है

लेखक, श्री युगलकिशोर गुप्त, एम० ए०, बी० एल०

राष्ट्र के विभाजन के बाद यह आवश्यक हो गया है कि प्रत्येक उपनिवेश का अल्पसंख्यक दल राज्य के प्रति वफादार रहे ? परिस्थिति को देखते हुए प्रश्न यह उठ रहा है कि क्या भारतीय संघ के मुसलमान संघ के प्रति वफादार हैं या नहीं ? इस लेख में विद्वान् लेखक ने इसी सम्बन्ध में अपनी सम्मति प्रगट की है और यह भी बतलाया है कि संघ के विरुद्ध षड्यन्त्र तथा द्रोह करनेवाली जमात को राष्ट्र कभी भी क्षमा नहीं कर सकता है।

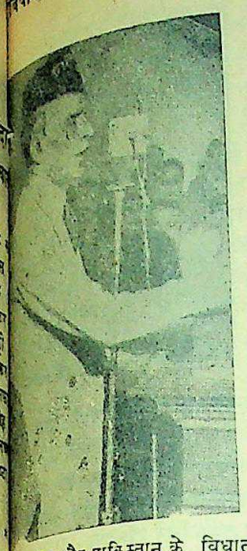

मुस्लिम लीग और पाकिस्तान के विधाता कायदे आजम श्री जिन्ना

जब तक ब्रिटिश भारत विभाजित नहीं हुआ था उस समय तक ब्रिटिश भारत का मुसलमान अधिकतर ब्रिटिश सरकार और भारतीय एजेन्टों के इशारों पर नाच रहे थे। विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ असेम्बलियों, कौंसिलों, म्युनिसिपैलिटियों, डिस्ट्रिक्ट बोर्डों तथा सरकार गैर सरकारी नौकरियों में प्राप्त कर लिया करते थे। प्रत्येक मुसलमान भारत की स्वाधीनता का शत्रु और ब्रिटिश साम्राज्य का मित्र माना जाता था और भारत को स्वतंत्रता से वंचित रखने के लिये ब्रिटेन का मोहरा बने रहना पसन्द करता था। परन्तु अब परिस्थिति बदल गई है। मुस्लिम लीग ने जिन्ना के दो-राष्ट्र सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया अर्थात् ब्रिटेन ने भी हामी—इच्छा या अनिच्छा-पूर्वक—भर दी। ब्रिटिश भारत के मुस्लिम बहुमत क्षेत्र पाकिस्तान में शामिल हो गये और हिन्दू बहुमत क्षेत्र हिन्दुस्तान में। मुसलमानियों को—विशेषतः हिन्दुओं को यह आशा थी कि अब मुस्लिम लीग डायरेक्ट एक्शन की नीति परित्याग कर देगी और जो हिन्दू या सिख पाकिस्तान में रह गये हैं वह पाकिस्तान के अच्छे नागरिक की हैसियत से उसकी उन्नति और विकास में तन, मन, धन से सहायता करेंगे और इसी प्रकार जो मुसलमान भारतीय संघ में रह गये हैं, वे भारत की वफादारी की शपथ लेंगे। पाकिस्तान के गवर्नर-जनरल कायदे आजम जिन्ना ने अल्पसंख्यकों को जो आश्वासन दिया था उससे सभी को संतोष हुआ था; परन्तु उन्हें क्या पता था कि डायरेक्ट एक्शन एक बार शुरू कर देने के बाद उसका नियंत्रण कितना कठिन हो जाता है। गुण्डेशाही को जो लूट-मार, खून-खराबी के द्वारा लाभ हुआ था उसे भला वह सहज में ही कैसे छोड़ सकते थे। साथ ही मुस्लिम लीग के कई प्रमुख व्यक्ति जो मंत्रित्व से वंचित रह गये थे, और नवाब जो अपनी सत्ता को अक्षुण्ण रखना चाहते थे और कई अँगरेज-फौजी अफसर जो यह प्रमाणित करने के लिए उत्सुक थे कि ब्रिटेन के रहते भारत में खून की नदियाँ बहने लगेंगी और लोग फिर ब्रिटिश राज्य की स्थापना के लिए प्रार्थना करेंगे—इन सभी राष्ट्र-विरोधी और प्रतिक्रियावादी शक्तियों के सम्मिलित प्रभाव से पश्चिम पंजाब, पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत और सिन्ध में हिन्दुओं और सिखों के ऊपर जो मुसीबतों के पहाड़ टूट पड़े—उनकी जानोमाल का खतरा उपस्थित हो गया—उनकी और उनकी बहू-बेटियों की इज्जत मुसलमान गुण्डों के रहम पर रह गई और उसकी प्रतिक्रिया या उत्तर-स्वरूप पूर्वी पंजाब और दिल्ली में मुसलमानों का जीवन दूभर हो गया। इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। इन नतीजों को देखते हुए सभी विचारशील व्यक्ति चाहे वह हिन्दू हों या मुसलमान यह सोचने के लिए बाध्य हो गये कि क्या सचमुच भारत का विभाजन उचित था? हमें कहना पड़ेगा कि नहीं।

जब ब्रिटिश सरकार की ३ जून की योजना स्वीकार करने के लिए दिल्ली में मुस्लिम लीग कौंसिल की बैठक हुई थी तो उसकी कार्रवाई गुप्त रखी गई थी उससे यही नतीजा निकाला जा सकता था कि उन मुसलमानों को जो समूचे पंजाब और बंगाल तथा आसाम को पाकिस्तान में घसीटना चाहते थे, सन्तुष्ट करने के लिए मियाँ जिन्ना ने अवश्य यह आश्वासन दिया होगा कि अभी बिना मेहनत, मशक्कत और कुर्बानी के तो लँगड़ा पाकिस्तान स्वीकार कर लो और फिर बाकी पंजाब और बंगाल या आसाम ही क्या समस्त हिन्दुस्तान पर ही पाकिस्तान का झंडा फहरायेगा।

पश्चिमी पाकिस्तान में जो कुछ हो रहा है वह सब इसी निष्कर्ष की पुष्टि करता है। पश्चिमी पाकिस्तान में गैर-मुसलमानों के लिए सम्मानपूर्वक जीवन बिताने के लिए कोई सुयोग नहीं है। या तो वह बिलकुल बकरों की तरह जबह कर दिये गये हैं, या वह भारतीय संघ में भाग आये हैं या इस्लाम ग्रहण कर वहीं पाकिस्तान में रह गये हैं इस प्रकार पाकिस्तान यदि भारतीय संघ पर आक्रमण करेगा तो उसे पाकिस्तान में पंचमांगियों का बिलकुल डर नहीं रहेगा। परन्तु क्या यही बात भारतीय संघ के मुसलमानों के बारे में कही जा सकती है ? हमें सभी तथ्यों का अध्ययन करके यही कहना पड़ता है कि नहीं!

बेशक महात्मा गांधी को यह सुन कर दुःख होता हो कि साधारण हिन्दू भारत-संघ के प्रत्येक मुसलमानों को पंचमांगी समझता है। उसे डर है कि यदि पाकिस्तान भारतीय संघ पर आक्रमण करेगा तो उस समय अधिकांश मुस्लिम लीगी भारतीय संघ पर पाकिस्तान का झंडा गाड़ने के लिए पंचमांगियों का काम करेंगे और भारतीय सेना, नौसेना और वायुयान की गति-विधि में, रेल, तार, डाकखाना, टेलीफोन, रेडियो में तोड़-फोड़ की नीति द्वारा हर प्रकार की बाधा पहुँचाने की कोशिश करेंगे। भारतीय संघ में प्रायः चार करोड़ मुसलमान रह गये हैं। यदि सभी पंचमांगी हो गये तो इन्हें न तो आप नजरबन्द रख सकते हैं और न ही जेलों में ठूस सकते हैं। इतनी बड़ी आबादी को—जो प्रायः इँग्लैंड की आबादी के बराबर है—खाना, कपड़ा इत्यादि जुटाना भारतीय संघ के करदाताओं के लिए संभव नहीं हो सकेगा। आप उन्हें नृशंसतापूर्वक न तो भगा सकते हैं और न कुछ और ही।

दिल्ली, कानपुर, बदायूं, एटा, इलाहाबाद, मुंगेर, जबलपुर, इत्यादि स्थानों में मुसलमानों के पास तोप, बन्दूक, स्टेनगन, मशीनगन, रिवाल्वर, गोलियाँ, कारतूस, छुरे इत्यादि जो कुछ जमीन या सुरंगों की तलाशी में बरामद हुए हैं, उससे केवल यही नतीजा निकाला जा सकता है कि जब पाकिस्तान भारतीय संघ पर आक्रमण करता तो उसी समय भारतीय संघ के विभिन्न नगरों के मुस्लिम लीगी वहाँ पर बलवा करके उन नगरों का शासन आकस्मिक रूप से अपने हाथ में कर लेते। खैर भगवान् की दया से दिल्ली में दंगा हुआ जिसके दमन के सिलसिले में भारतीय संघ के मंत्रिमंडल को इन मुसलमानों की करतूत का पता लग गया और अब भारतीय संघ की विभिन्न प्रान्तीय सरकारें गैरकानूनी अस्त्र-शस्त्र की तलाशी में संलग्न हैं; और आशा है कि शीघ्र ही विद्रोही मुसलमानों को पर्याप्त सजा मिलेगी।

प्रत्येक शासन-व्यवस्था का यह प्रथम कर्त्तव्य है कि अपना अस्तित्व कायम रखने के लिए प्रत्येक संभव उपाय का व्यवहार करे। जब यह निश्चित हो गया कि भारतीय संघ के प्रत्येक मुसलमान की वफादारी पर आँख मूँदकर विश्वास नहीं किया जा सकता और ब्रिटेन और मुल्लों की कूटनीति से

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

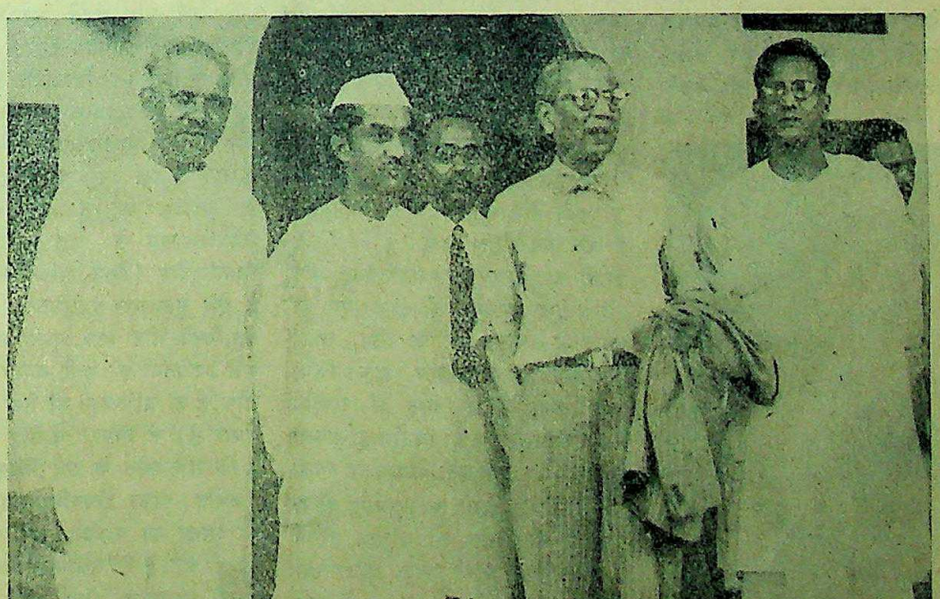

पिछले दिनों अमरीका में भारत के राजदूत श्री आसफअली को भारतीय सरकार ने परामर्श के लिये भारत वापस बुलाया। चित्र में श्री आसफअली दिल्ली के हवाई अड्डे पर पुनः अमरीका जाते समय दिखाई दे रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-प्रांतों में शिक्षा का माध्यम

राज्यभाषा हिन्दी हो और लिपि देवनागरी का प्रयोग अनिवार्य होना चाहिए

लेखक, श्री रविशंकर शुक्ल बी० ए०, एल्-एल० बी०

राष्ट्र-विभाजन के बाद राष्ट्र-भाषा का महत्त्व अन्यन्त स्पष्ट हो गया है। इसलिए भावी उन्नति के लिए आज की प्रमुख समस्या है कि हिन्दी-प्रांतों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी को क्यों न स्वीकार किया जाये ? इस लेख में विद्वान् लेखक ने यही सिद्ध किया है कि हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाना ही श्रेयस्कर है। राष्ट्रीय संगठन तथा भावी नागरिकता की उद्यति का मार्ग इसी से प्रशस्त होगा। लेख विद्वत्तापूर्ण और विचारणीय है।

राष्ट्र-भाषा की दृष्टि से अब परिस्थिति बिल्कुल बदल चुकी है। देश के विभाजन के बाद कांग्रेस के हिन्दुस्तानीवाद के लिये कोई गुंजाइश नहीं रह गई है। अधिक कहने की जरूरत नहीं। भारतीय विधान-परिषद् की कांग्रेस पार्टी ने हिन्दी और देवनागरी को राष्ट्र-भाषा और राष्ट्र-लिपि बनाने के पक्ष में फैसला देकर इस सत्य को स्वीकार कर लिया है। हमें खेद अवश्य है कि कांग्रेस की आँखें खोलने के लिए देश के विभाजन जैसी हृदय को विदीर्ण करनेवाली और कलेजा मसोसनेवाली घटना की जरूरत पड़ी। अस्तु, अब हिन्दुस्तानीवाद का सर्वथा अन्त हो जाना चाहिये। इसके बाद अब हिन्दी प्रान्तों में शिक्षा के माध्यम के रूप में केवल हिन्दी और उर्दू पर विचार करना शेष रह जाता है। परन्तु हिन्दी प्रान्तों में माध्यमिक और उच्च शिक्षा के लिए हिन्दी और उर्दू दोनों माध्यम के रूप में स्वीकृत नहीं की जा सकतीं। चाहे दोनों माध्यमवालों को 'हिन्दुस्तानी के नाम पर एक ही क्लास में पढ़ाया जाय (जैसा लखनऊ विश्वविद्यालय ने सोचा है) और चाहे हिन्दी माध्यम और उर्दू माध्यम का अलग अलग प्रबन्ध किया जाय, माध्यमिक और उच्च शिक्षा के हिन्दी और उर्दू, दो माध्यम होने से प्रान्त की एकता भंग हो जायगी प्रान्त की उन्नति रुक जायगी, प्रान्त पिछड़ जायगा, प्रान्त पर शिक्षा के व्यय का भार बढ़ जायगा; आदि, आदि। विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं। हिन्दी प्रान्तों के लिये शिक्षा के दो माध्यमों के होने से बढ़कर बुरी और घातक बात कोई दूसरी नहीं हो सकती। यह शाश्वत सत्य है, अर्थात् यह पहले भी सत्य था; परन्तु बदली हुई राजनीतिक परिस्थिति में तो हिन्दी-प्रान्तों में हिन्दी और उर्दू दोनों को माध्यमिक और उच्च शिक्षा का माध्यम कदापि, किसी हालत में स्वीकृत नहीं किया जा सकता। देश के विभाजन से हिन्दी प्रान्तों में उर्दू को शिक्षा का माध्यम स्वीकृत न करने के जो विशेष कारण उत्पन्न हो गये हैं, उनमें से एक लेखक के निजी अनुभव पर आधारित है। कुछ दिन हुए, लेखक ने एक मुसलमान रंगसाज से, जो उसके यहाँ काम करने आया था, पूछा कि तुम यहीं रहोगे या पाकिस्तान जाओगे? उसने कहा, हम तो यहीं रहेंगे, पाकिस्तान में रोजगार जमाने के लिये रुपये कहाँ से लावें? लेखक ने कहा कि इसमें कठिनता नहीं होगी, क्योंकि पाकिस्तान में व्यापारियों और कारीगरों की कमी है। उसने जवाब दिया कि हाँ साहब, यह तो ठीक है कि बड़े बड़े शहर सब निकल गये। यह एक गरीब, अपढ़ मुसलमान की मनोवृत्ति है जो स्वयं कहता है कि मुझे यहीं रहना है! वह दिल में अपने को यहाँ का नहीं वरन् पाकिस्तान का नागरिक मानता है और उसकी सहानुभूति, प्रेम तथा देशभक्ति पाकिस्तान के साथ है। लेखक ने उससे फिर पूछा, तो फिर जिन्ना साहब ने पाकिस्तान लिया क्यों? उसका उत्तर सुनकर लेखक तो स्तंभित रह गया। उसने कहा, बल्कि यों कहिये उसके मुँह से बे साख्ता निकल गया, हमें तो पूरे हिन्दुस्तान पर कब्जा करना है! प्रश्न होता है कि इस मुसलमान की मनोवृत्ति में अन्तर क्या आप उर्दू माध्यम का प्रबन्ध करके डाल सकते हैं? कदापि नहीं। वह तो केवल उसकी महत्त्वाकांक्षाओं को और प्रबल करने में, उसे अपने को अन्य प्रान्त-वासियों से पृथक् अनुभव कराने में, देश के विरुद्ध षड्यन्त्र रचाने में और पाकिस्तान से चलनेवाले संकेतों और कुचक्रों को सफलीभूत कराने में सहायक होगा। उर्दू माध्यमवाले स्कूल और कालेज (अथवा उर्दू माध्यमवाले क्लास) फिफ्त कालमवालों के स्रोत उनके शिक्षा गृह उनके अड्डे और दिमाग बन जायेंगे। उर्दू माध्यम का प्रबन्ध करना अपने हाथ से अपने पैर में कुल्हाड़ी मारना होगा। अगर हम इन मुसलमानों को अपने में मिलाना और खपाना चाहते हैं और अगर हम चाहते हैं कि हिन्दी प्रान्तों का जीवन साम्प्रदायिकता और द्वैत से मुक्त हो जाय, तो उसका एक ही उपाय है—प्रान्त भर के लिये, सबके लिये केवल हिन्दी माध्यम स्वीकृत किया जाय। इसी प्रकार प्रान्त में राष्ट्रीय और एकरस जीवन का निर्माण हो सकता है, एकता की नींव इसी आधार पर रक्खी जा सकती है, इसी प्रकार प्रान्त दो-दो भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने के दुष्परिणाम, अनन्त बखेड़े, परेशानियों और फिजूल खर्च से बच सकता है, इसी प्रकार हिन्दी और हिन्दी संस्कृति की शुद्धता की रक्षा हो सकती है, इसी प्रकार हिन्दी [illegible] करनेवाली प्रान्तीय भाषाओं की भाँति अबाध उन्नति कर सकती है और इसी प्रकार हिन्दी प्रान्त अन्य एक भाषा-भाषी प्रान्तों की भाँति उन्नति कर सकते हैं। विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं। शहरों में रहनेवाले थोड़े से मुसलमानों (और थोड़े से हिन्दुओं) के कारण हिन्दी प्रान्तों का भविष्य नहीं बिगाड़ा जा सकता और हिन्दू कर-दाताओं का रुपया नहीं लुटाया जा सकता। अल्पसंख्यकों के साथ न्याय अथवा उनके धर्म और संस्कृति की रक्षा का अर्थ यह नहीं है कि प्रान्त का जीवन दो टूक कर दिया जाय और प्रान्त के लिये असीम कठिनाइयाँ पैदा कर दी जायँ। हिन्दी प्रान्तों में मुसलमानों की संस्कृति और भाषा (उनकी मातृ-भाषा क्या है!) की रक्षा का अर्थ यही हो सकता है कि पाठ्य-क्रम में उर्दू वैकल्पिक विषय रहे ताकि जो विद्यार्थी चाहे वह उर्दू भाषा और साहित्य का विषय ले सके। अधिक से अधिक यह हो सकता है कि विशेष परस्थितियों में, जैसे एक स्कूल में एक निश्चित अनुपात से अधिक संख्या में विद्यार्थियों के माँगने पर, प्राथमिक शिक्षा उर्दू के माध्यम से भी देने की सुविधा दे दी जाय (यह सुविधा भी तभी दी जा सकती है जब पाकिस्तान में हिन्दीवालों को हिन्दी के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा दी जाय)। पाकिस्तान की सरकार भी, यदि वह अल्पसंख्यकों के प्रति बहुत उदार हुई और उसने उनकी संस्कृति की रक्षा करने के विषय में दिये हुए अपने आश्वासनों को पूरा किया तो हद से हद यह करेगी कि पाठ्य-क्रम में हिन्दी भाषा और साहित्य का विषय वैकल्पिक विषय के रूप में रख देगी; परन्तु वहाँ शिक्षा का माध्यम उर्दू ही होगा। अलीगढ़ विश्वविद्यालय के वाइसचांसलर डा० जियाउद्दीन (जिन्हें पाकिस्तान सरकार ने ऐसे मुसलमान इंजीनियरों, मुसलमान वैज्ञानिकों और अन्य मुसलमान टेकनिकल व्यक्तियों की सूची बनाने का काम सौंपा है जो पाकिस्तान की सेवा करने को तैयार हैं) ने स्पष्टतः घोषित कर दिया है कि पाकिस्तान के सब विश्वविद्यालयों (अर्थात् ढाका विश्वविद्यालय का भी) की शिक्षा का माध्यम उर्दू होगा और यह भी कहा है कि अलीगढ़ विश्वविद्यालय का भी माध्यम उर्दू होगा। सिन्ध के शिक्षा-मंत्री ने बताया है कि कराची विश्वविद्यालय की शिक्षा का माध्यम तो उर्दू होगा [illegible] पाकिस्तान भर में,

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के भू० पूर्व सभापति पण्डित माखनलाल चतुर्वेदी।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्राण [illegible] श्री पुरुषोत्तमदास टंडन।

माध्यमिक शिक्षा का भी माध्यम [illegible] होगा और उर्दू का विषय प्राथमिक [illegible] से सबके लिये अनिवार्य होगा, [illegible] प्राथमिक शिक्षा मातृ-भाषा के [illegible] से दी जायगी (यह देखना बाकी [illegible] प्राथमिक शिक्षा के लिये ही हिन्दी [illegible] माध्यम के रूप में स्वीकृत की जा[illegible] या नहीं)। सिन्ध-सरकार ने हिन्दु[illegible] शिक्षा-संस्थाओं को, जो संभव था हिन्दी [illegible] शिक्षा का माध्यम बनातीं, स्पष्ट [illegible] दी है कि यदि उन्होंने माध्यम के [illegible] में सरकारी नीति का अनुकरण न [illegible] तो सरकारी मदद बिल्कुल बन्द कर [illegible] जायगी और यह भी घोषित कर [illegible] गया है कि सिन्ध की जो भी [illegible] संस्था, चाहे उसे सरकार एक [illegible] भी मदद न देती हो, कराची [illegible] विद्यालय से अपना सम्बन्ध नहीं [illegible] (अर्थात् जो उर्दू को शिक्षा का [illegible] नहीं बनावेगी), उसे सरकारी [illegible] (recognition) प्राप्त नहीं [illegible] यहाँ यह बताना जरूरी है कि पाकि[illegible] ने उच्च शिक्षा का माध्यम केवल [illegible] रखकर अनुचित नहीं किया है। [illegible] उन्नतिशील और प्रजातांत्रिक देशों [illegible] जहाँ एक अल्पसंख्यक दल को खुश [illegible] के लिये उसके साथ विशेष व्यवहार [illegible] और उसे सिर पर बैठाना राष्ट्र[illegible] नहीं समझा जाता, ऐसा ही होता [illegible] अमरीका की ही मिसाल दी जा सक[illegible] जहाँ जर्मन, डच, फ्रांसीसी, अँगरेज [illegible] सभी नागरिकों की शिक्षा का [illegible] केवल एक अँगरेजी है। राष्ट्रीय [illegible] का निर्माण और राष्ट्र का निर्माण [illegible] प्रकार होता है और आधुनिक [illegible] किसी देश में या किसी प्रान्त [illegible] शासन-क्षेत्र (administrative [illegible]

शेष पृष्ठ १४ पर दे[illegible]

हिन्दी के सुप्रसिद्ध पत्रकार और [illegible] मंत्री पण्डित श्री कृष्णदत्त पाली[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या मैं पागल हूँ ?

लेखक, श्री गाय द मोपांसा

फ्रांस के सुप्रसिद्ध कलाकार तथा कहानी-लेखक मोपांसा ने मानव-जीवन के चित्रण में बड़ी लोकप्रियता प्राप्त की है। इस कहानी में लेखक ने एक निराश मानव का चित्रण बड़ी सुन्दरता और कुशलतापूर्वक किया है, साथ ही मानवी का भी चित्रण वास्तविकता से पूर्ण है जो कलाकार की कहानी-कला की प्रमुख विशेषता है। कहानी पठनीय तथा रोचक है।

क्षणों में उसके नेत्रों में ऐसा नीलापन छाया रहता कि मानो किसी ने उसकी आँखों को कुचल दिया हो। पुतलियाँ फैल जातीं थीं। उनकी नस-नस दिखलाई पड़ने लगती थी। उसके ओंठ फड़कने लगते—कभी कभी उसकी गुलाबी व भीगे जीगी की नोंक सर्प की गति के समान हिलती दिखलाई पड़ती। उसकी भारी पलकें धीरे से इस भाँति ऊपर को उठतीं कि उसके मुखमंडल पर की कोमलता तथा अनुराग की भावना स्पष्टतया दिखलाई पड़ती जिससे मैं पागल हो उठता। जब मैं उसे अपनी बाँहों में लेकर बैठता, मैं काँपता हुआ उसकी आँखों की ओर एकटक निहारता रहता—उसी समय मुझमें न केवल उसे पूर्ण रूप से अपने अधिकार में कर लेने की इच्छा होती, बल्कि इस पशुतुल्य जीव की जीवन-लीला समाप्त कर देने की भी।

वह उसकी दशा देख कर परेशानी से ठिठक गया।

जब वह कमरे में एक ओर से दूसरी ओर जाती उसके एक एक पदध्वनि की गूँज मेरे हृदय में सुनाई देती। जब वह अपने वस्त्रों को उतारकर (उसके वस्त्र उसके शरीर पर से गिरते हुए कितने अच्छे लगते) ओंठ मिलाने का संकेत किया—वह मुझसे झिझककर अलग हटने लगी।

"मुझे अकेली ही छोड़ दीजिए", उसने कहा, "आप बड़े भयानक व्यक्ति हैं। क्या आप मुझे कभी नहीं छोड़िएगा ?"

और तभी से मुझमें जलन की भावना उत्पन्न हो गई। एक कुत्ते की भाँति, मैं उससे गुप्त रूप से ईर्ष्या करने लगा। मुझमें एक धूर्तता भरी हुई थी; मैं एक अत्यन्त शक्की आदमी बन गया था। मैं जानता था कि उसकी काम की भावनाएँ फिर जाग्रत होंगी तथा उन्हें जगानेवाला कोई दूसरा व्यक्ति होगा। मेरी जलन बढ़ती गई यहाँ तक कि मैं अपनी मति भी खो बैठा; परन्तु मैं मतिहीन नहीं हूँ। बिलकुल नहीं। मैं उसकी ओर निहारता रहा और प्रतीक्षा करता रहा। यह बात न थी कि उसने मेरे साथ विश्वासघात किया था; परन्तु वह मेरी ओर से निःस्नेह उदासीन थी।

कभी कभी वह कहती, "मनुष्य मुझसे कितना घृणा करते हैं।" सचमुच उसके कथन में कितना सत्य था।

फिर धीरे-धीरे मैं उसके जीवन, उसके मेरे प्रति उदासीनता, उसके अकेली रातों, उसके कार्यों, उसके विचारों जिन्हें मैं जानता था कि वे अपवित्र थे आदि समस्त वस्तुओं से ईर्ष्या करने लगा—शायद उसके संबंध की मेरी कल्पना के अन्तर्गत आई हुई प्रत्येक वस्तु से घृणा करने लगा। पिछले दिनों ऐसा हुआ करता था कि हम दोनों रात साथ में ही व्यतीत करते थे और सुबह उठने पर उसकी आँखें थकी व अलसाई-सी रहतीं। उन दिनों ज्यों ही वह सुबह सोकर उठती उसे देखने से लगता मानो रात भर उसे कोई भावना सता रही थी तथा उसकी कामेच्छा अत्यन्त प्रबल थी; परन्तु अब मैं उसके जागने तथा उसे उसी भाँति भाव-प्रदर्शन करते देखकर क्रोध के मारे उतावला हो जाता और जी में आता कि उसका गला घोंट दूँ। उसी समय यह भी इच्छा होती कि उसे लात मार-मारकर अधमरा कर दूँ, उसका गला पकड़कर उससे मेरे प्रति उसके हृदय में एकत्रित समस्त गुप्त तथा कलंकित विचारों को कबुलवा लूँ।

पर क्या मैं पागल हूँ ? नहीं, नहीं।

एक रात को मैंने देखा कि वह खुश थी। मुझे ऐसा लगा, बल्कि यूँ कहना चाहिए मुझे विश्वास हो चला कि वह एक नवीन कामोत्तेजना के वशीभूत हो चली है। वह काँप रही थी जैसा कि मेरे चुम्बनों के पश्चात् किया करती थी। उसकी आँखें चमक रही थीं, उसे बुखार-सा आ गया था और उसके समस्त शरीर की गतियाँ ऐसी थीं जिनसे उसमें कामेच्छा की उपस्थिति का आभास मिलता था—वही वस्तु जो पहले मुझे पागल बना दिया करती थी।

मैंने अनभिज्ञता प्रकट की; पर मैं उसकी एक एक हरकतों को गौर से देख रहा था; परन्तु मुझे कोई विशेष बात देखने में नहीं आई। एक सप्ताह, एक माह, लगभग एक वर्ष तक मैंने प्रतीक्षा की। एक अवर्णनीय उत्साहजनित प्रसन्नता के कारण वह फूलती जा रही

शेष पृष्ठ १४ पर

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी तथा उसके शान्तिमय जीवन से यह प्रतीत होता था कि मानो वह नित्य किसी कपटी प्रेमी के अनुराग-प्रदर्शन के कारण खुश रहती थी।

अन्त में मैंने सब कुछ समझ लिया। मैं पागल नहीं हूँ। मैं शपथ लेता हूँ कि मैं पागल नहीं हूँ। उसके जीवन की इस औचित्य विचित्रता को मैं कैसे बता सकता हूँ? जो कुछ भी मैंने उसके विषय में जाना उसे मैं कैसे व्यक्त कर सकता हूँ? परन्तु फिर भी मैं प्रयत्न करूँगा।

एक रात को वह कई मीलों की घुड़सवारी करके लौटी और मेरे सामने रखी हुई कुर्सी पर थकी-माँदी धम्म से बैठ गई थी; उसके गालों पर एक अप्राकृतिक लाली आ गई थी; उसकी छाती धड़क रही थी; उसके पैर हिल रहे थे और उसकी आँखें फूल आई थीं। इस वर्णन में मैं कोई भूल नहीं कर रहा। इसके पहले भी मैंने उसे इसी अवस्था में अनेक बार देखा था। यह एक प्रेमी के उन्माद व आवेश की-सी अवस्था थी। मैं हैरान हो गया और उसे न देखने के निमित्त खिड़की की ओर मुड़ा। एक सेवक उसके घोड़े को अस्तबल की ओर ले जा रहा था और वह खड़ी खड़ी उसके उछल-कूद को देख रही थी। फिर वह घोड़ा आँखों से ओझल हो गया। इसके बाद तत्काल वह नींद में डूब गई। रात भर मैं सोचता रहा; विचित्र विचारों के सागर में गोता लगाता रहा। एक स्त्री के चरित्र के विषय में कुछ भी जान लेना कितना कठिन होता है? विशेषकर एक विवाहित स्त्री के रहस्यपूर्ण व्यवहार तथा विचित्र उमंगों के बारे में कोई क्या जान सकता है?

हर रोज प्रातःकाल वह खेतों में घोड़े पर सवार होकर निकल जाती थी तथा सुन्दर वनों तथा सुरम्य स्थानों का भ्रमण करने के पश्चात् थकी-माँदी लौट आती थी। मानो उसकी थकावट अत्यन्त दीर्घकाल तक प्रेममय जीवन व्यतीत करने के कारण उत्पन्न हुई हो। मेरी जलन अब उसके घोड़े से थी, उन हवाओं से थी जो उसके चेहरे का चुम्बन करती थीं, वृक्षों की उन झुकी हुई पत्तियों से थी जो उसके मस्तक का स्पर्श करती थीं, सूर्य की उन रश्मियों से थी जो डालियों से होकर उसके ललाट को चूमा करती थीं तथा उस जीन से थी जिस पर वह बैठती थी। यही वस्तुएँ उसके जीवन को प्रफुल्लित बनाये थीं।

मैंने प्रतिकार का प्रण किया। मैं सचेत हो चला। अब जब वह घुड़-सवारी से लौटकर वापस आती मैं उसे घोड़े पर से उतरने में सहायता देता और घोड़ा मुझे नफरत भरी दृष्टि से देखते हुए धक्का दे देता। वह उसके गले के चारों ओर प्रेमपूर्वक हाथ फेरती, उसके हिनहिनाते हुए माथे को चूमती। वह स्वयं अपने ओंठ भी नहीं पोछती थी और उसके शरीर की सुगन्धित बास, जिसकी गरमाहट से ऐसा जान पड़ता मानो वह बड़ी देर तक सोने के बाद उठकर आई हो, घोड़े की शरीर की तीव्र महक से पगे, मेरी नासिकाओं में प्रवेश कर जाती।

मैं अवसर की ताक में था। प्रत्येक दिन वह उसी मार्ग में से होकर जाती थी, सनौबर के एक छोटे से जंगल में से होकर, जो अन्त में दूर जाकर विलीन हो जाता है। एक दिन मैं तड़के उठा, अपने हाथों में एक रस्सी ली, अपने वस्त्रों के नीचे छाती के पास एक पिस्तौल छिपा ली मानो मैं किसी द्वन्द्वयुद्ध में शरीक होने जा रहा था। उसके सर्व-प्रिय मार्ग पर मैं पहले से ही पहुँच गया था। रस्सी खोलकर, सड़क के दोनों किनारों के दो वृक्षों में उसे बाँधकर, घास-फूस की एक झाड़ी में मैं छिप गया।

अपने कान भूमि पर लगाये हुए मैंने दूर से उसके घोड़े की टपटपाहट सुनी, फिर उसे वृक्षों के नीचे से होकर आते देखा। उसके ऊपर वृक्षों की डालियाँ एक वृक्षवृंद का आकार-सा बनाये थीं और वह अत्यन्त तीव्र गति से चली आ रही थी। उसके मुखमंडल पर लाली छाई हुई थी, नेत्रों में उन्माद था। वह आनन्दोल्लास में डूबी हुई थी मानो किसी दूसरे भूमंडल की जीव हो। मेरे कथन में त्रुटि का लेशमात्र भी स्थान नहीं है। तीव्रतम गति के कारण उसकी नस-नस में असीम प्रसन्नता छाई हुई थी।

घोड़े ने अपने अगले पैरों से रस्सी पर छलाँग मारी और गिर पड़ा। मैंने उसे (स्त्री) अपनी बाहों में कसकर पकड़ लिया, क्योंकि मुझमें उस समय एक भैंसे तक को उठा सकने की ताकत थी। फिर घोड़े के समीप पहुँचकर जो हम दोनों की ओर देख रहा था, उसके फिर से काटने दौड़ने का प्रयत्न करने पर, मैंने अपनी पिस्तौल उसके कान के पास ले जाकर उसे गोली मार दी।

वह मेरी ओर मुड़ी और अपनी चाबुक से उसने कसकर मेरे मुँह पर दो चोटें जमाईं जिनसे मैं बेहोश-सा हो गया। इसके बाद जब फिर वह मेरी ओर झपटी मैंने उसे गोली मार दी। मैं जानना चाहता हूँ क्या मैं पागल हूँ?*

* सतार-प्रसिद्ध फ्रेंच कलाकार "गाय द मोपांसा" की एक कहानी का अनुवाद।
अनुवादकर्त्ता श्री "स्वतन्त्र"

फैंसी सिल्क-साड़ी
आकर्षक डिजाइन
नं० ७ ८ ९
१८) २३) २८)
२) आर्डर के साथ पेशगी
बाकी वी० पी० से
थोक व्यापारियों को खास सुविधा
भारत इन्डस्ट्रीज, जुही
नं० ६ कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंग-मंच

'धन्ना-भगत'

दिग्दर्शक केदार शर्मा की एक सफल कृति

लेखक, श्री पूरन खत्री

आत्मविश्वास दुनिया की सबसे बड़ी चीज है। जिस पर हमारा विश्वास है वही हमारा सब कुछ है। हमारी आत्मा अगर पत्थर को देवता मानती है तो पत्थर ही हमारा देवता है। वही हमारे लिये सब कुछ है और प्रेम के रूप पर हमेशा दुख ही दुख है चाहे वह प्रेम किसी के भी प्रति क्यों न हो। चैन और आराम फिर इस दुनिया में है कहाँ? सिर्फ अपनी आत्मा में। जिसकी आत्मा में चैन नहीं है उसे दुनिया में कहीं चैन नहीं है। धन्ना भगत का कथानक इसी के आधार पर लिखा गया है।

बात करीब चार सौ साल पहले की है। धन्ना जाट और मुन्नी एक ही गाँव के रहनेवाले थे। साथ साथ रहने के कारण दोनों में बड़ा प्रेम था। समवयस्कता ही प्रेम का एकमात्र कारण है। गाँव में कुछ अतिथि आये जिन्होंने धन्ना और मुन्नी को भगवान् की भक्ति के बीज बोये। और इस तरह भगवान् को पाने के लिये धन्ना ने अपनी एक गाय गाँव के पंडित को सुपुर्द की। बदले में घर लेकर लौटा एक पत्थर का टुकड़ा जो धन्ना के भगवान् थे। वह उसी में लीन हो गये और इस तरह धन्ना और मुन्नी ने मिलकर भगवान् को राजी कर लिया। गाँव की जमींदारन ने देखा और भविष्य में अपनी प्राप्ति की कोई आशा न देखकर गाँव के जमींदार से शिकायत की। जिसके फलस्वरूप धन्ना को गाँव से निकाल दिया गया। धन्ना और मुन्नी बिछड़ गये, पर दोनों एक-दूसरे को भूल न सके।

दिन, हफ्ते, महीने और साल बीत गये। धन्ना और मुन्नी दोनों के माँ-बाप मर गये। धन्ना विदेशों में वैरागी की तरह घूम रहा था और मुन्नी गाँव में गाँववालों द्वारा सताई हुई यतीम की तरह रह रही थी। एक दिन एकाएक धन्ना गाँव आ पहुँचा। ठहरने का और कोई स्थान न पाकर वह मुन्नी ही के मकान में ठहर गया। गाँव के जमींदार के लड़के नन्दकिशोर की निगाह मुन्नी पर थी। उसने साम, दाम, दंड, भेद सब तरह से मुन्नी को वश में करना चाहा; पर वह अपने निश्चय ही पर अटल रही। एक जवान लड़की ने एक जवान लड़के को अपने घर रख लिया, गाँव में कोहराम सा मच गया। गाँव का पानी बन्द कर दिया गया और तब वह गाँव के बाहर दूसरे कुएँ से पानी लाने गई। धन्ना भी साथ था। पानी के साथ साथ कुएँ से निकली एक लाश। हाँ, हाँ, लाश। धन्ना और मुन्नी पर आरोप लगाया गया। जिसके फलस्वरूप धन्ना को पड़ में बाँध दिया गया और मुन्नी को शादी के लिये मजबूर किया गया। धन्ना के बचने का और कोई मार्ग न पा मुन्नी ने नन्दकिशोर से शादी कर ली। धन्ना पेड़ से बँधा था जब मुन्नी की बारात निकल रही थी। गाँव की नई जमींदारिन के हुक्म से धन्ना छोड़ दिया गया और उससे प्रार्थना की गई कि वह गाँवही में रहे, गाँव छोड़कर कहीं जाय नहीं। यह आदेश मुन्नी का था और धन्ना कहीं भी न जा सका। जो काम उसे करने को मिला, भगवान् ने उसे उसमें सहायता दी। उसके खेत में सबसे उत्तम अनाज हुआ, पर वह बीमार पड़ गया। जन्माष्टमी आई, पर मुन्नी ने धन्ना के लिये दूध भेजा, पर धोखे से रास्ते में दूध में विष मिला दिया गया। जोरों का तूफान आया। तूफान ही में मुन्नी धन्ना को बचाने के लिए चल दी, जब उसे यह मालूम हुआ कि दूध में विष मिला दिया गया है—और इस तरह तूफान में मुन्नी का मकान गिर जाने के कारण दोनों ने यह संसार छोड़ दिया।

सुप्रसिद्ध फिल्म डाइरेक्टर मास्टर विनायक, 'संगम' के एक अभिनय में।

अभिनय की दृष्टि चित्र में सर्वश्रेष्ठ अभिनय मुन्नी का कमला चटर्जी ने किया है। कमला के अभिनय में बड़ी ही गूढ़ता है। अपने पुराने सभी चित्रों से वह उसमें खरी उतरी है। हाव-भाव तथा मुखमुद्रा के संचालन में उसने बड़ी मेहनत की है और सफल भी हुई है। धन्ना का अभिनय कमाल जमींदार ने किया है जो स्वाभाविक है। पर न धन्ना ही की आत्मा का विकास लेखक ने किया है और न इसकी ही! बाकी पात्रों में एन० कबीर, बेबी मुमताज वगैरह हैं जो अपने रोल को किसी तरह निभा भर ही सके हैं। प्रशंसा करने की कोई बात नहीं है।

चित्रलेखन तथा टेकनिक सुन्दर है। चित्र-लेखक ने जो मुन्नी के मकान के अन्दर रश्मि दी है वह बड़ी ही सुन्दर है। "आउट डोर शाट्स" भी बड़ी उत्तमता से लिये गये हैं। टेकनिक के लिये केदार शर्मा मशहूर हैं। आप लोगों के दिलों पर अपनी एक अजीब छाप छोड़ जाते हैं। आपकी पुरानी परम्परा तथा टेकनिक बड़ी ही उत्तम होती है। मुझे तो गौरी के बाद आपका यही चित्र पसन्द आया। देखें नीलकमल में इनकी आत्मा क्या कहती है?

गीत और संगीत परिस्थिति-अनुकूल है। पहला गीत तो ऐसा मालूम देता है जैसे श्री देवकीकुमार बोस द्वारा दिग्दर्शित सँपेरा से चुराया गया है। कमला का एक गीत बड़ा ही उत्तम हुआ है जिसमें संगीत के साथ साथ गीत के शब्दों का उत्तम मिश्रण है। पार्श्व संगीत में कुछ शिथिलता है। धन्ना के चले जाने पर जो मुन्नी के मनोभावों का विकास पार्श्व-संगीत द्वारा किया है वह उत्तम नहीं बन पड़ा है।

ध्वनि, सम्पादन और वेश-भूषा सभी परिस्थिति के अनुकूल हैं। संवाद में कुछ उर्दू-साहित्य का मिश्रण जरूर है, परन्तु बात आज से चार सौ साल पहले की है और उस समय हिन्दी और उर्दू मिली हुई भाषा हिन्दुस्तान में बोली जाती थी इसलिये परस्थिति के अनुकूल है। चित्र मुझे काफी पसन्द आया इसलिए मैं तो चित्र के दिग्दर्शक श्री केदार शर्मा को बगैर बधाई दिये रह ही नहीं सकता और इसके साथ साथ मैं रंजीत के स्टाफ का भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अपनी सहायता देकर चित्र को सुन्दर बनाया है।

घुटना लकड़ी की तरह कड़ा

मध्यवयस्क पुरुष जो कठिनाई से चल सकता था

क्रूशन का सेवन करता है और अब १४ मील रोज चलता है

यद्यपि एक्स-रेज़ यह नहीं बतला सकी कि इस पुरुष के घुटने में कोई ख़राबी थी और वह बराबर कड़ा और अस्वस्थ रहा आया। फिर उसने क्रूशन की बात सुनी और पहली बोतल भी पूरी नहीं खा पाया था कि कड़ेपन ने उससे विदा माँग ली। वह लिखता है :—

"कुछ साल पहले मेरे घुटने का जोड़ ख़राब हो गया और कड़ा पड़ गया। लगभग तीन महीने तक मैंने इलाज किया। मैं कठिनाई से चल सकता था; वह बहुत ही ख़राब हो गया था और उसमें दर्द बहुत होता था। मैंने उसका "एक्स-रे" भी कराया; परन्तु घुटने में कोई ख़राबी न दिखी। मैंने क्रूशन साल्ट की बात सुनी, इसलिए इसकी एक बोतल प्राप्त कर ली। इस बोतल का कुछ ही साल्ट खाया था कि कड़ेपन ने पिण्ड छोड़ दिया। इसलिए अब मैं नित्य सवेरे क्रूशन का सेवन करता हूँ और रोज़ १२ अथवा १४ मील चल सकता हूँ, यद्यपि मैं मध्यवयस्क हूँ।"—ए० एम०

वातरोग साधारणतः रक्त-प्रवाह के ज़हर से हुआ करता है। यदि आप रक्त-प्रवाह शुद्ध कर सकें, ज़हर आपके जोड़ों में प्रवेश नहीं कर सकता।

यही तरीका है कि क्रूशन आपको फ़ायदा पहुँचा सकता है। क्रूशन विभिन्न खनिज क्षारों का एक सन्तुलित मिश्रण है। यह मधुर, दस्तावर और मूत्रवर्द्धक औषध है। इस दोहरी क्रिया से क्रूशन पूर्णतः भीतरी सफ़ाई करता है।

क्रूशन साल्ट सभी दवाफ़रोशों के यहाँ बेचा जाता है। क़ीमत १॥=) प्रतिबोतल।

B.C. 1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

हिन्दी—नई समस्याएँ

हिन्दी राष्ट्रभाषा होने जा रही है तो भी हिन्दी के समाचारपत्र, साप्ताहिक और मासिक इस विषय में रस नहीं ले रहे हैं कि वे सब प्रकार के लेख, विचार और विमर्श अपने यहाँ प्रकाशित करें। निश्चित-सा है कि अधिकाधिक पत्रों में कहानी, राजनैतिक लेख (जो बड़ी हलकी कलम से लिखे जाते हैं) कविताएँ और यदा-कदा गद्यगीत के सिवा और किसी विषय, समस्या अथवा पहलू पर विवेचन नहीं होता। विज्ञान, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र आदि विषयों पर, अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर हमारे पत्र नहीं के बराबर मसाला छापते हैं, अध्ययन की कमी के कारण लेखकगण भी इन विषयों पर लेखनी उठाने से हिचकिचाते हैं। यह झिझक प्रायः लेखकों में पाई जाती है। इस झिझक को दूर करने के लिए सम्पादकों का कर्तव्य होना चाहिए कि वे लेखकों का मार्ग-दर्शन करें, उन्हें सलाह दें, उनसे विचार-विनिमय करें और तत्पश्चात् उनके सुलझे हुए दृष्टिबिन्दु से लिखे गये लेख का स्वागत करें।

होता यह है कि लेखक ने रचना भेजी, सम्पादक जी ने नाम पढ़ा और देखा प्रसिद्ध लेखक है 'कापी' फौरन प्रेस को दे दी। यदा-कदा पत्रों में लिखता है—स्वीकृति भेज दी और यदि लेख के अक्षर सुन्दर हैं तो विचाराधीन रख लिया रचना को—और यदि ऊपरी तड़क-भड़क ने भी प्रभाव न डाला, तो फिर रचना रद्दी की टोकरी के हवाले या अस्वीकृत-फाइल में। अब लेखक कम से कम बारह बार लिखे तब वह रचना वापस भेजी जा सकेगी। सौजन्य तो यह होना चाहिए कि अस्वीकृत रचना फौरन वापस भेजी जाय, तथा कारणों पर भी प्रकाश डाला जाय कि वह रचना पत्र में क्यों नहीं स्थान पा सकती; परन्तु हिन्दी पत्रों के सम्पादक मेहनत से घबड़ाते हैं। कहते हैं, जब लेखों का पैसा देते हैं तो फिर ऐसे लोगों की रचना क्यों न मँगायें या छापें जो टकसाली हैं, जिनका नाम चल निकला है, या चल निकलनेवाला है।

हिन्दी-पत्र के सम्पादक इस भाव के बड़े शिकार हैं कि वे मेहनत न करें और फिर भी उनके पत्र का सम्पादन भी मँजा हुआ हो इसीलिए वे चन्द प्रसिद्ध लेखकों से दोस्ती गठकर उनके या जिनकी वे सिफारिस कर दें, लेख छापते रहते हैं। दलबन्दी है हिन्दी के पत्रों में। अमुक विशेषतावाले पत्र में निश्चित लेखकों के सिवा और किसी को स्थान नहीं मिल पाता, भले ही दूसरों के लेख सुन्दर हों, कहानी बढ़िया हो और कविता पठनीय।

सम्पादकों के इस 'वीटो' का आज तक किसी ने भी खुलकर विरोध नहीं किया। शायद इस डर से कि फिर उनके लेख कोई नहीं छापेगा—अथवा पारिश्रमिक नहीं मिलेगा—आदि ऐसी ही अन्य धारणाएँ बनाकर स्वतंत्र लेखक न कुछ कर चुप बैठ रहता है या फिर किसी पत्र-पत्रिका में सहकारी, प्रूफरीडर, अनुवादक सभी कुछ होकर जीवन-यापन का साधन जुटा लेता है और अपने मालिक को ख्याति की चाँदनी में ले जाकर खड़ा कर देता है, क्योंकि नाम मालिक का ही पत्र पर छपता है या फिर उनकी पत्नी का अथवा किसी और रिश्तेदार का!

कुछ तिकड़मी नौजवान लेखक कहीं न कहीं से पैसा जुटाकर अपना मासिक-पत्र निकालने की हिम्मत भी कर बैठते हैं और फिर उसके सहारे अपना प्रचार कर, अपनी अधिकाधिक रचनाएँ छापकर किसी अफलातूनी लड़की के नाम के आगे बी०ए० या एम० ए० लगाकर उसे पत्र की बिक्री बढ़ने का बढ़िया माध्यम मान कर उसका नाम सम्पादकों में दे बैठते हैं। यह प्रकृति मध्यवर्गी समाज के कालेज के तरुणों में अथवा कालेज छोड़कर कोई और काम न कर सकनेवाले युवकों में अधिक पाई जाती है। कालेज-जीवन के रोमानी वातावरण, हिन्दी-अँगरेजी फिल्में और बेतरतीब उपन्यास पढ़कर ये नवयुवक कवि, कहानी-लेखक, आलोचक और न जाने क्या-क्या बन जाते हैं। फिर किसी सम्पन्न व्यक्ति को साझी बनाकर ये तरुण पुस्तक एवं पत्रिका प्रकाशन प्रारम्भ कर देते हैं।

मध्यवर्गीय नवयुवकों में सेक्स-चेतना अधिक विह्वलता से पाई जाती है, इसीलिए उनकी रचनाएँ भी मन्मथ और प्रवृत्ति के प्रभाव को रचनाओं में पाने की सफल चेष्टा करती रहती हैं। तथा इस प्रकार हिन्दी-साहित्य में क्षय-ग्रस्त रचनाओं की भरमार होती चली जाती है। इस प्रकार के नवयुवकों का मार्ग-दर्शन करने के लिए, उनकी धारा को उच्छृङ्खलता की ओर न मुड़ने देने के लिए पत्रकारों एवं पत्र-सम्पादकों का कर्त्तव्य है कि वे इस समस्या की ओर अधिकाधिक ध्यान दें और नये लेखकों को गुमराह होने से बचाने में सहयोग दें।

दूसरी समस्या है पारिश्रमिक की। हिन्दी के श्रमजीवी लेखकों का बुरा हाल है। सम्पादकगण वादा कर देते हैं और फिर भी पारिश्रमिक नहीं मिलता। पत्र भेजो तो उत्तर नहीं दिया जाता। कुछ-एक पारिश्रमिक देते ही नहीं, क्योंकि उनका सम्बन्ध कुछ ऐसे लेखकों से होता है—जो या तो कहीं लेक्चरर होते हैं या किसी अच्छी तनख्वाह पानेवाली नौकरी पर अथवा वकील या फिर व्यवसायी। इस वर्ग को सामान्यतः अर्थाभाव कम खटकता है। यह वर्ग पढ़ भी काफी लेता है। इसलिए लेख लिखने की प्रेरणा सदैव जागती रहती है। इनको पारिश्रमिक न भी मिले तो कोई विशेष बात नहीं। मिल जाय तो प्रसन्नता नहीं, न मिले तो खेद नहीं! गरज यह कि इनके लिए पारिश्रमिक मामूली-सी बात है—इसलिए दूसरे लेखक जो पत्रकार जीवन और लेखकों को अपने जीवन-यापन का साधन मानकर हिन्दी-साहित्य में प्रवेश करते हैं उनकी दशा बड़ी शोचनीय रहती है। साथ ही सम्पादकों की बांधव-प्रियता और पक्षपात भी कार्य करता है, जिसके कारण कुछ लेखक काफी कमा लेते हैं और अन्य नहीं के बराबर। जिन्हें नहीं के बराबर मिलता है वे नौकरी की खोज में जुट जाते हैं और कहीं न कहीं क्लर्क-प्रूफरीडर आदि हो ही जाते हैं।

हिन्दी में कुछ ऐसे भी लेखक हैं जो पारिश्रमिक पीड़ा से दुखित होकर हलका साहित्य लिख-लिखकर कमाई प्रारम्भ कर देते हैं। इस प्रकार के साहित्य से हिन्दी की विचार-धारा का जो पराभव हो रहा है, उसका प्रभाव स्पष्ट है। जिसे देखिए वही फिल्मी कहानियों जैसी सस्ती भावुकता का आश्रय लेकर रचना करने में प्रवृत्त है। इन लेखकों का ध्यान और उनकी प्रतिभा को नष्ट होने से बचाने के लिए हिन्दी लेखकों की पारिश्रमिक व्यवस्था को भी भली भाँति माँजना पड़ेगा। अन्यथा हमारे हिन्दी के ये लेखक मशीन की नाईं एक प्रकार की परिकल्पना एवं विचार-शैली से हिन्दी का अपमान करते रहेंगे। तथा अपनी मानवता को कुचल कर 'तैयार साहित्य' लिख स्वयं अपने साथ भी अन्याय करते रहेंगे।

नई हिन्दी के सामने ये समस्याएँ मुँह बाये खड़ी हैं। इन पर हमारे सम्पादकाचार्यों तथा प्रतिष्ठित लेखकों को सोचना चाहिए तथा एक ऐसी समिति का आयोजन करना चाहिए जो इस समस्या को हाथ में लेकर इसका सुलझाव उपस्थित करे।

दरीबा, —वीरेन्द्र त्रिपाठी
दिल्ली

* * *

हाईस्कूल-बोर्ड के नियमों में सुधार

पिछले दिनों आपके 'देशदूत' में श्रीसोहवर्तासिंह चौहान की हाईस्कूल-बोर्ड के नियमों में सुधार के विषय में अपील निकली थी, हम भी बोर्ड की उदारता की बाट जोह रहे थे परन्तु जान पड़ता है कि बार बार अपील के निकलने पर भी बोर्ड के सदस्य एवं मंत्री महाशय के कानों पर जूं तक न रेंगी। इधर पंजाब के झगड़े ने बंटाढार कर दिया। पहले तो प्रश्न केवल यू० पी० वालों का ही था; परन्तु अब पंजाब से विद्यार्थियों की ऐसी बाढ़ आ गई कि बोर्ड द्वारा स्वीकृत हाईस्कूलों और मिडिल स्कू में प्रत्येक कक्षा में ३-३ सेक्शन खुल गये पर भी विद्यार्थियों को स्थानाभाव कारण प्राइवेट पाठशालाओं में प्रविष्ट होना पड़ रहा है। अब प्रश्न प्रवेश विद्यार्थियों के फार्म भेजने का है। जिस लिए बोर्ड के नियमानुसार एकमात्र अधिकार इन्स्पेक्टरों को ही है।

प्रश्न गम्भीर है, इसकी दिक्कत किसी प्राइवेट स्कूल के अध्यापक से पूछिए जो भुक्तभोगी हैं। कल्पना कीजि ऋषीकेश में प्राइवेट स्कूल है इन्स्पेक्ट साहब देहरादून या मेरठ में हैं, उन पास जाओ तो वे भी गवाही चाहेंगे। प्राइवेट पाठशालाओं की गवाहें मान्य नहीं, इसी तरह की और भी दिक्क हैं। नियम बनाना सरल है किन्तु उस कार्यरूपेण चालू करना कठिन है शिक्षा-प्रचार तथा प्रसार के लिए नियम में नरमी लानी ही चाहिए और यदि शिक्ष प्रसार का बीड़ा उठाया गया है तो सरलत लानी ही पड़ेगी। इस समय स्वतन्त्रत दिवस के उपलक्ष में बोर्ड ने जो उदारत प्रकट की वह सर्वथा स्तुत्य तथा सराहनी है। इसी तरह हम अपनी बोर्ड से तथ शिक्षा के कर्णधार मंत्रिवर से जोरदा अपील करते हैं, कि एक वर्नाक्यूलर मिडिल के लिए सबको स्वतन्त्रता परीक्षा में प्रविष्ट होने की और मैट्रिक परीक्षा के फार्म पर इन्स्पेक्ट आफ स्कूल्स के अलावा अन्य कोई मान्य, ग्राम-पंचायत के सदस्य, पटवा आनरेरी मजिस्ट्रेट और सरकारी स्क के हेडमास्टर इत्यादि को भी हस्ताक्ष करने का अधिकार देना चाहिए। इस जनता को सुविधा ही प्राप्त होगी।

टिहरी
गढ़वाल, —आनन्दमोहन शर्म

* * *

संयुक्तप्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेल

आगामी २०-२१ अक्टूबर को काशी में युक्तप्रांतीय सप्तम हिन्दी-साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन होने जा रहा है। उस अवसर पर प्रदर्शनी, सांस्कृतिक नृत्य एवं और भी सुन्दर प्रबन्धों का आयोजन किया गया है। संयुक्तप्रा के शिक्षा-मंत्री माननीय श्री संपूर्णान जी स्वागताध्यक्ष हैं। पंडित बालकृष्ण शर्मा सभापति का आसन ग्रहण करेंगे।

बड़ी पियरी, —कृष्णदेवप्रसाद गौ
काशी संयोजक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'देशदूत' की सामयिक चित्रावली

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

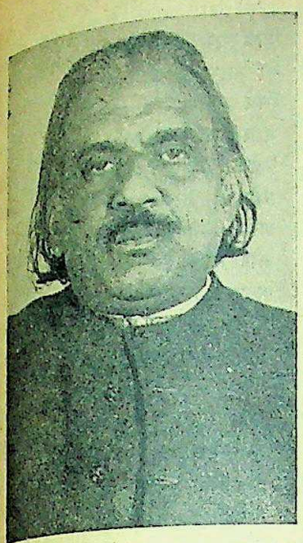

संयुक्तप्रांत के शिक्षा तथा श्रम-मंत्री माननीय श्री संपूर्णानन्द, काशी में होने-वाले प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष हैं। आप अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति भी रह चुके हैं।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि, लेखक तथा प्रांत के राष्ट्रीय नेता श्री बालकृष्ण शर्मा, प्रान्तीय सम्मेलन के सभापति चुने गये हैं।

काशी में होनेवाले संयुक्तप्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के कुछ प्रमुख अधिकारी।

पंडित कमलापति त्रिपाठी एम० एल० ए०, प्रधान सम्पादक, 'दैनिक संसार' प्रांतीय सम्मेलन के स्वागत-मंत्री हैं।

हास्यरस के सुप्रसिद्ध लेखक, , प्रिन्सिपल श्रीकृष्णदेवप्रसाद गौड़, 'बेढब' प्रांतीय सम्मेलन की स्वागत-समिति के संयोजक हैं।

सप्ताह में राजनीतिक क्षेत्र के प्रमुख व्यक्ति और महिलाएँ।

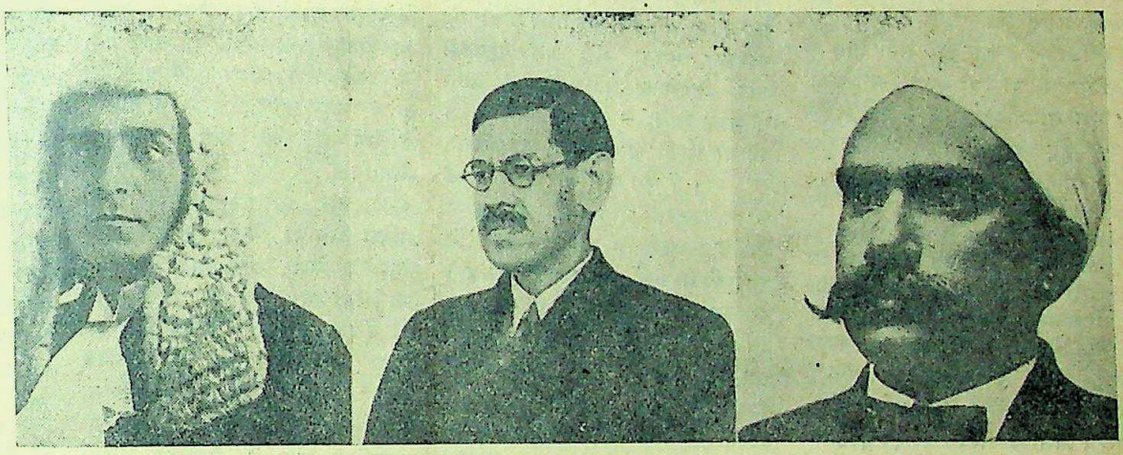

सर एस० डब्लू० हसन, आप अवध चीफकोर्ट के प्रथम भारतीय प्रधान जज थे। आपका स्वर्गवास अभी हाल में हुआ है।

श्री गुलाम यजदानी, पुरातत्त्व के प्रसिद्ध विद्वान् हैं। आप हैदराबाद में पुरातत्त्व-विभाग के डाइरेक्टर नियुक्त हुए हैं।

श्री सी० टी० मुदालियर, आप मद्रास-सरकार की ओर से प्रान्तीय ग्राम-सुधार-समिति के सदस्य नियुक्त हुए हैं।

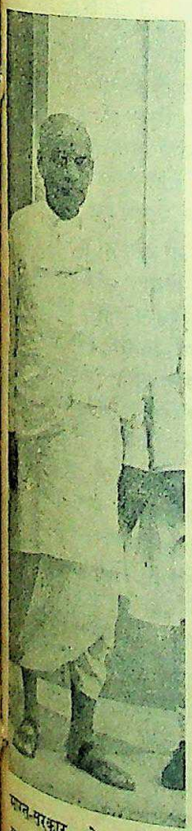

...राज्य-सरकार के गृह-मन्त्री सरदार वल्लभभाई पटेल, शान्ति-स्थापना के लिए सतत् प्रयत्नशील हैं।

संयुक्तप्रांत की गवर्नर श्रीमती सरोजनी नायडू ने आई० टी० कालेज लखनऊ का निरीक्षण किया था। चित्र में श्रीमती नायडू प्रिंसिपल तथा छात्राओं के साथ दिखाई दे रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-प्रांतों में शिक्षा का माध्यम

(पेज ८ का शेष)

में उच्च शिक्षा का काम, वैज्ञानिक और टेकनिकल अनुसंधान, वैज्ञानिक, टेकनिकल और बौद्धिक उन्नति तथा अन्य आधुनिक आवश्यकताओं की पूर्ति इसी प्रकार हो सकती है। फिर, यदि हम आज हिन्दी प्रान्तों में मुसलमानों के लिये उर्दू माध्यम स्वीकृत कर लेते हैं तो क्या कल हमें सरकारी खर्च पर ही प्रान्त में बसे हुये बंगालियों के लिये बँगला माध्यम, पंजाबियों और सिखों के लिये पंजाबी माध्यम, आदि स्वीकृत नहीं करने पड़ेंगे? इसका अन्त कहाँ होगा? हिन्दुस्तान के किन दूसरे प्रान्तों में ऐसा झमेला पाला जायगा (पाकिस्तान में तो नहीं पाला जायगा ही)? यह उदारता आदि का सवाल नहीं है। यह व्यावहारिकता, राष्ट्रीयता और आत्म-रक्षा का सवाल है। व्यावहारिकता और राष्ट्रीयता की बात पहले कही जा चुकी है। आत्म-रक्षा के विषय में दूर न जाकर अपने पड़ोसी पाकिस्तान पर नजर डालना काफी है। अभी हाल में (८ जौलाई, १९४७) श्री क० मा० मुंशी ने एक सार्वजनिक सभा में एक भाषण करते हुए कहा,"—For the sake of a wron-out and discredited nationalism of yesterday we cannot sacrifice homogeneity, otherwise we shall not be able to withstand the religious nationalism of a neighbouring nation." ये शब्द बार बार विचार करने योग्य हैं। 'Homogeneity' (एकरसता) के लिये सबसे अधिक आवश्यक है शिक्षा के माध्यम का एक ही होना स्पष्ट है, जिस परिस्थिति में संयुक्तप्रान्त की पिछली कांग्रेसी सरकार द्वारा बैठाई हुई नरेन्द्रदेव-कमेटी ने संयुक्त-प्रान्त के लिये हिन्दी और उर्दू दो माध्यमों की सिफारिश की थी (अन्य हिन्दी प्रान्तों में भी इसी सिफारिस पर चला जाता), अब वह नहीं रही। इस सिफारिश को मानना अव्यावहारिक और राष्ट्र-घातक और प्रान्त-घातक तो होगा ही, आज की परस्थिति में आत्म-हत्या होगा।

हिन्दी प्रान्तों में शिक्षा के माध्यम के प्रसंग में एक और बात ध्यान देने योग्य है। हिन्दी और उर्दू दोनों के शिक्षा के माध्यम स्वीकृत होने के बाद स्वाभाविकतया यह माँग पेश की जायगी कि हिन्दी और उर्दू दोनों प्रान्त की राजभाषा, कचहरियों, दफ़्तरों की भाषा आदि के रूप में स्वीकृत की जायँ। इससे कितनी कठिनाइयाँ उत्पन्न होंगी, इसका सहज में अनुमान किया जा सकता है। प्रान्त का काम चलना असंभव-प्राय हो जायगा (क्योंकि आड़े आने के लिये आज की भाँति अँगरेजी तो होगी नहीं।) इसके बरक्स यदि हिन्दी प्रान्तों में हमें केवल हिन्दी को राजभाषा, कचहरियों, दफ़्तरों, (असेम्बली आदि की भाषा बनाना है) संयुक्तप्रान्त की सरकार ने तो यह निर्णय कर भी लिया है), तो इसकी एक कारोलरी यह है कि हिन्दी प्रान्तों में माध्यमिक और उच्च शिक्षा का माध्यम केवल हिन्दी हो, क्योंकि तभी राजकार्य चल सकता है, कचहरियों, दफ़्तरों आदि के लिये योग्य कर्मचारी, क्लर्क आदि (हिन्दू और मुसलमान) मिल सकते हैं और प्रान्त के जीवन में सब समान रूप से भाग ले सकते हैं। यदि सबकी माध्यमिक और उच्च शिक्षा का माध्यम हिन्दी को न भी बनाया गया, तो कम से कम हिन्दी भाषा का विषय तो सबके लिये आरंभ से ही अनिवार्य करना ही पड़ेगा। फिर माध्यमिक स्टेज में पहुँच कर सबको हिन्दी के माध्यम से ही शिक्षा क्यों न दी जाय? उसमें क्या कठिनाई होगी? वहाँ उर्दू को अलग माध्यम बनाकर अनन्त परेशानियाँ और कठिनाइयाँ क्यों मोल ली जायँ? एक बात और है। हिन्दी हिन्दुस्तान की राष्ट्र-भाषा होने जा रही है। इस नाते भी हिन्दी का महत्त्व कम न होगा। देश भर में सबके लिये हिन्दी भाषा का विषय अनिवार्य होगा (जिस प्रकार आज अँगरेजी का विषय अनिवार्य है)। देश का सब केन्द्रीय काम और अन्तर्प्रान्तीयव्यवहार हिन्दी में होगा। अतः सोचना तो यह है कि सब प्रान्तों में हिन्दी को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाना कहाँ तक वांछनीय और आवश्यक है। एक ही प्रान्त में उच्च शिक्षा के दो माध्यमों के होने की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती।

अन्त में एक बात और स्पष्ट करने की आवश्यकता मालूम होती है। शायद यह कहा जाय कि 'हिन्दुस्तानी' नाम रहने दिया जाय, वह होगी हिन्दी ही। पर इसकी आवश्यकता? यह तो हद दर्जे की कमजोरी का प्रदर्शन और धोखा देना होगा। हिन्दी के लिये 'हिन्दुस्तानी' नाम कभी स्वीकृत नहीं किया जा सकता। कारण ऐतिहासिक और साहित्यिक दोनों हैं। कोई कारण नहीं यह नाम-परिवर्तन क्यों किया जाय। फिर, 'हिन्दुस्तानी' नाम रहते हिन्दी भाषा कभी आ ही नहीं सकती। (शायद इसीलिये 'हिन्दुस्तानी' पर इतना जोर दिया जाता है)। चूँकि 'हिन्दुस्तानी' ब-जात-ए-खुद कोई चीज नहीं, उसका कोई इतिहास या निजी थाती नहीं, उसका अर्थ तो या हिन्दी + उर्दू लगाया जायगा या $\frac{\text{हिन्दी} + \text{उर्दू}}{२}$। संयुक्तप्रान्त में 'हिन्दुस्तानी' साहित्य की उन्नति के लिये स्वीकृत ५०,०००) के विषय में जो सरकारी घोषणा हुई है, उसमें स्वयं सरकार ने 'हिन्दुस्तानी' का यह अर्थ लगाया है ('हिन्दी' और 'उर्दू' साफ साफ रक्खी गई है और $\frac{\text{हिन्दी} + \text{उर्दू}}{२}$ के लिये ".....and what is recognised as Hindustani" कहकर गुंजाइश रक्खी गई है)। और फिर लिपि के मामले में तो 'हिन्दुस्तानी' का अर्थ अवश्य ही देवनागरी+फारसी लिपि लगाया जायगा। यह सब अब नितान्त असह्य है। हिन्दुस्तानी-वाद के साथ साथ अब 'हिन्दुस्तानी' नाम का भी सर्वथा अन्त हो जाना चाहिये।

संक्षेप में—

(१) हिन्दी-प्रान्तों की भाषा-समस्या (जो जबरदस्ती पैदा की गई है) और लिपि-समस्या (जो हिन्दुस्तानी के झमेले के बाद भी ज्यों की त्यों रहती है) का एकमात्र व्यावहारिक और राष्ट्रीय हल, तथा देश के विभाजन से उत्पन्न होनेवाली परिस्थिति का तकाजा यह है कि हिन्दी प्रान्तों में माध्यमिक और उच्च शिक्षा का माध्यम केवल हिन्दी होना चाहिये। जो गैर-सरकारी शिक्षा-संस्था ऐसा करना स्वीकार न करे, उसे न सरकार मदद दे और न उसे सरकार स्वीकृत (recognise) करे।

(२) माध्यमिक स्टेज से हिन्दी के शिक्षा का माध्यम होने का अर्थ है कि हिन्दी भाषा का विषय प्राथमिक (primary) स्टेज से ही सबके लिये अनिवार्य हो (अन्यथा माध्यमिक स्टेज में हिन्दी के माध्यम से शिक्षा कैसे दी जायगी?), और कम से कम माध्यमिक स्टेज के अन्त तक (आजकल के इन्टरमीजिएट तक) सबके लिये अनिवार्य रहे, और तदुपरान्त आजकल की 'जेनरल इँगलिश' की भाँति 'साधारण हिन्दी' का विषय सब के लिये अनिवार्य हो।

(३) विशेष परिस्थितियों में प्राथमिक शिक्षा के लिये उर्दू, बँगला आदि के माध्यम का भी प्रबन्ध किया जा सकता है; परन्तु हिन्दी भाषा का विषय फिर भी सबके लिये अनिवार्य होगा। अवश्य ही यह उर्दू, बँगला आदि के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करनेवाले विद्यार्थियों पर एक अतिरिक्त बोझा होगा और परिणामस्वरूप अधिक से अधिक विद्यार्थी हिन्दी माध्यम से ही प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करना चाहेंगे। यह वांछनीय है।

(४) उर्दू भाषा और साहित्य का विषय माध्यमिक स्टेज से वैकल्पिक विषयों की सूची में रक्खा जाय। बँगला, पंजाबी या अन्य प्रान्तीय भाषायें भी माध्यमिक स्टेज से वैकल्पिक विषयों की सूची में रक्खी जायँ।

(५) रेडियो के स्कूली प्रोग्राम, शिक्षा-फिल्म आदि सब हिन्दी में हों और बनें।

(६) आजकल संयुक्त-प्रान्त में ऐंग्लो-वर्नाक्यूलर स्कूलों में छात्रों के लिये आठवीं कक्षा तक हिन्दी और उर्दू दोनों पढ़ने की और अध्यापकों के लिये हिन्दी और उर्दू दोनों की विभागीय परीक्षायें पास करने की जो अनिवार्यता है वह तुरन्त हट जानी चाहिये। यह हिन्दीवालों के साथ सरासर अन्याय है। हिन्दी प्रान्तों में कुछ लड़के उर्दू पढ़ते हैं, यह हिन्दीवालों का कसूर नहीं है जिसके दंडस्वरूप उन पर (यहाँ तक तक कि हिन्दी बालिकाओं पर भी) उर्दू का भी बोझ डाला जाय। किसी दूसरे प्रान्त में ऐसा नहीं होता (यहाँ तक कि पंजाब में उर्दू लेनेवालों पर वहाँ की असंदिग्ध मातृ-भाषा पंजाबी का भी बोझ नहीं डाला जाता)। जब उर्दू-प्रान्तों में उर्दूवालों के लिये हिन्दी अनिवार्य नहीं है, तब हिन्दी प्रान्तों में हिन्दीवालों के लिये उर्दू अनिवार्य करके उर्दू का अनर्गल प्रचार नहीं किया जा सकता। पहले (अर्थात् जब राजदर्बार में उर्दू का बोलबाला था) उर्दू की चाहे जो आवश्यकता रही हो, अब हिन्दी प्रान्तों में हिन्दीवालों को उर्दू की कोई आवश्यकता भी नहीं रह गई। हिन्दी राष्ट्र-भाषा है, अतः सबको पढ़ना पड़ेगी और सबकी कामन भाषा होगी। हिन्दी प्रान्तों में हिन्दी राज-भाषा, शिक्षा का माध्यम, आदि और इस कारण सबके लिये अनिवार्य विषय और सबकी कामन भाषा होगी ही। उर्दूवालों को हिन्दी पढ़नी पड़ेगी, हिन्दीवालों को उर्दू नहीं पढ़नी पड़ेगी। हिन्दीवाले अपनी बची हुई शक्ति अन्य विषयों में क्यों न लगावें? और शिक्षा का माध्यम हिन्दी होने पर अध्यापकों के लिये हिन्दी और उर्दू दोनों की विभागीय परीक्षायें पास करने की कोई आवश्यकता ही नहीं रह जाती।

(७) हिन्दुस्तानी-वाद और 'हिन्दुस्तानी' नाम का तुरन्त अन्त हो जाना चाहिये। लखनऊ और पटना विश्वविद्यालय तुरन्त अपना पारसालवाला निर्णय बदलकर देवनागरी में हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाने की घोषणा करें। स्कूलों से 'हिन्दुस्तानी बोलचाल', 'महमूद सीरीज', 'राजेन्द्र सीरीज' आदि की 'हिन्दुस्तानी' की पुस्तकों का बिलकुल बहिष्कार हो जाना चाहिये। 'ऐंग्लो हिन्दुस्तानी' स्कूलों का नामकरण 'ऐंग्लो हिन्दी स्कूल' और अँगरेजी के हटने पर 'हिन्दी स्कूल' होना चाहिये। संयुक्त प्रान्त की 'वर्नाक्युलर' सब जगह 'हिन्दी' लिखी व बताई जाय, 'हिन्दुस्तानी' नहीं। संयुक्तप्रान्त की सरकार को अपना आर्डर वापस ले लेना चाहिये जिसमें संयुक्तप्रान्त की 'वर्नाक्युलर' को 'हिन्दुस्तानी' नाम से पुकारने का आदेश दिया गया है और 'हिन्दुस्तानी' साहित्य की उन्नति के लिये स्वीकृत ५०,००० हिन्दी-साहित्य की उन्नति के लिये दे देना चाहिये। अच्छा हो यदि संयुक्तप्रान्त का नाम हिन्द-प्रान्त या हिन्द रक्खा जाय।

(८) इस पर विचार किया जाय कि देश भर में उच्च शिक्षा अर्थात् विश्वविद्यालयों की शिक्षा का माध्यम केवल एक (जो हिन्दी ही होगी) होना कहाँ तक वांछनीय आवश्यक और व्यावहारिक है। यह नहीं भूलना चाहिये कि अमेरीका और रूस में ऐसा ही है और पाकिस्तान में भी ऐसा ही होगा। कम से कम यह तो नितान्त आवश्यक है कि देश भर में विज्ञान तथा अन्य विषयों की उच्च पारिभाषिक शब्दावली एक और कामन हो। यह शब्दावली हिन्दी की ही हो सकती है। इसके निर्माण का नेतृत्व हिन्दीवालों को ही ग्रहण करना है। इस विषय में लाहौर की इंडियन नेशनल एकाडेमी आफ इण्डियन कांग्रेस के अन्तर्गत डाक्टर रघुवीर का अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा। संयुक्तप्रान्त के शिक्षा-मंत्री को चाहिये कि वे अपने पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में केवल पटना, दिल्ली और सौगोर विश्वविद्यालयों का ही नहीं, वरन् देश के विश्वविद्यालयों का सहयोग प्राप्त करें ताकि देश भर के लिये एक सर्वसम्मत कामन शब्दावली का निर्माण हो। यह शब्दावली देश भर के विश्वविद्यालयों में हिन्दी को शिक्षा का माध्यम स्वीकार कराने की ओर पहला कदम होगा। इस काम में केन्द्रीय सरकार को भी बँटाना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकायन—एक संस्कृति पीठ

स्वर्गीय पन्त के प्रयत्न से प्रयाग में नई संस्था की स्थापना

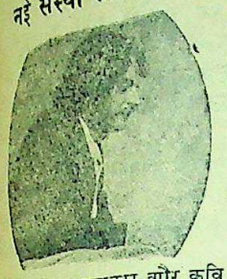

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कलाकार और कवि श्री सुमित्रानंदन पंत

पुण्यतीर्थ प्रयाग में 'लोकायन' नामक संस्कृति पीठ की स्थापना करने के अभिप्राय से, ५अक्टूबर की शाम को, हिन्दी में, एक सभा का आयोजन किया गया, जिसके लिए डा० अमरनाथ झा, डा० ताराचन्द, डा० धीरेन्द्र वर्मा, श्रीला प्रभावती त्रिपाठी तथा श्री सुमित्रानन्दन पन्त की ओर से नगर के कतिपय गण्य-मान्य साहित्यिकों एवं शिक्षा-कला-प्रेमी महानुभावों के पास निमंत्रण भेजे गये।

श्री ब्रजमोहन व्यास जी ने सभा का संचालन किया। उपस्थित सज्जनों में प्रमुख व्यक्ति थे—डा० अमरनाथ झा, डा० धीरेन्द्र वर्मा, प्रो० एस० सी० देव, डा० उमेश मिश्र, डा० सत्यप्रकाश, डा० बलभद्रप्रसाद मिश्र, श्री ब्रजमोहन व्यास, श्री इलाचन्द्र जोशी, फादर बुल्के, श्री ह० ही० वात्स्यायन, श्री श्रीपत राय, श्री श्रीनार्यसिंह, श्री ज्योतिप्रसाद अग्रवाल, श्री क्षेत्रेश चट्टोपाध्याय, श्री हरिवंशराय बच्चन, श्री राजेन्द्रनाथ रहबर, श्री सुमित्रानन्दन पन्त, प्रभृति।

पन्त जी का वक्तव्य

श्री सुमित्रानन्दन पन्त के वक्तव्य का सारांश इस प्रकार है :—

कतिपय साहित्यिकों, शिक्षा और कला-प्रेमियों का गम्भीर विचार है कि प्रयाग में एक संस्कृति पीठ स्थापित की जाय जो सांस्कृतिक शक्तियों का संगठन कर सके, जहाँ संस्कृति, कला और साहित्य के विकास के लिए मनोनीत वातावरण एवं परिस्थितियों का निर्माण किया जा सके।

पन्त जी ने उक्त संस्था की रूप-रेखा इस प्रकार सामने रखी—

इस संस्था का नाम 'लोकायन' रखना निश्चित हुआ है। लोकायन का उद्देश्य होगा, संस्कृति के विकास के लिए वातावरण निर्माण करना; भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के विरोधों से मनुष्य की चेतना को मुक्त करना तथा समस्त धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं इतर विभेदों को मानवीय एकता में ढालकर विकसित परिस्थितियों के अनुरूप जीवन की आवश्यकताओं को दुहराना और लोक-चेतना को नवीन रूप से सांस्कृतिक संगठन कर ऊर्ध्व, गम्भीर तथा व्यापक बनाने की चेष्टा करना।

इस केन्द्र की कार्यप्रणाली प्रयोगात्मक होगी—एक ओर यह प्रयोग, अध्ययन और विचार-विनिमय द्वारा लोक-संस्कृति के मानों का स्पष्टीकरण करेगा, दूसरी ओर लोक-कला के माध्यम से उनका प्रचार कर उन्हें लोक-जीवन का अंग बनाने का प्रयत्न करेगा।

विभाग होंगे

अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए 'लोकायन' में प्रारम्भ में चार विभाग खोलेगा। इन विभागों के नाम क्रमशः (१) ज्योतिद्वार, (२) संस्कृतिद्वार, (३) जीवनद्वार, (४) कलाद्वार होंगे।

(१) ज्योतिद्वार का मुख्य उद्देश्य होगा देश-विदेश के दार्शनिकों, वैज्ञानिकों एवं विद्वानों से सम्पर्क स्थापित करना और ज्ञान की वृद्धि और वृहत् समन्वय करना। इस विभाग के अन्तर्गत शोध और शिक्षा का प्रबन्ध रहेगा, जिसका व्यावहारिक रूप यह होगा कि आरम्भ में कुछ शिक्षक और शोध-विशारद (रिसर्च स्कालर) नियुक्त किये जायेंगे। वे साधारणतः केन्द्र के महत् उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता देते हुए विशेष रूप से द्वार-समिति द्वारा निर्दिष्ट विषयों पर शोध करेंगे। इस विभाग के संलग्न एक छात्रावास भी होगा, जहाँ विद्यार्थी केन्द्र के वातावरण और उसके संचालकों के सम्पर्क का लाभ उठा सकेंगे। केन्द्र की ओर से एक 'ग्रंथ पथ' का भी संचालन होगा जो इस विभाग के अधीन रहेगा।

(२) संस्कृतिद्वार के माध्यम से इस बात का प्रयत्न होगा कि जिस लोक-संस्कृति का पोषण 'लोकायन' से हो, उसका विचार-विनिमय द्वारा स्पष्टीकरण होता रहे।

इस विचार-विनिमय के लिए नियमित रूप से गोष्ठियों का आयोजन होगा और इनमें भाग लेने के लिए विशिष्ट व्यक्तियों को आमंत्रित किया जायगा। इस विवेचना का सारांश 'लोकायन' की मुखपत्रिका 'लोक - चेतना' द्वारा प्रकाशित होता रहेगा। साथ ही इन आदर्शों के प्रचार के लिए मुख्य पत्र-पत्रिकाओं का सहयोग प्राप्त किया जायगा। यथासमय इस विभाग द्वारा 'विद्यायन' सम्बन्धी प्रकाशनों का तथा सृजनात्मक साहित्य के प्रकाशन का भी प्रबन्ध होगा।

(३) जीवनद्वार 'लोकायन' की प्रयोगशाला रहेगी। ज्योति और संस्कृति द्वारों की सांस्कृतिक चेतना को जीवन-द्वार लोक-जीवन में परिणत करने का प्रयत्न करेगा। इस विभाग के अन्तर्गत एक 'विद्यायन' होगा, जिसका उद्देश्य नगर और ग्राम के नवयुवकों को कला-कौशल के माध्यम द्वारा ऐसी शिक्षा देना होगा, जिससे उनका जीवन-निर्माण व्यापक लोक-संस्कृति के अनुकूल हो सके। विद्यायन के अतिरिक्त जीवन-द्वार में यथासमय जन-साधारण के लिए भी, जो लोक-संस्कृति को दैनिक व्यवहार में लाना चाहेंगे, दीक्षा का प्रबन्ध रहेगा।

(४) कलाद्वार मुख्यतः 'लोकायन' का प्रचार-विभाग रहेगा। विद्यायन के विद्यार्थियों के लिए यह लोक-जीवन और लोक-संस्कृति के अनुकूल कलाओं का विकास करेगा और उनके माध्यम द्वारा 'लोकायन' के सांस्कृतिक ध्येयों का प्रचार करेगा। यह विभाग देश-विदेश के महान् कलाकारों से सम्पर्क बनाये रहेगा। प्रारम्भ में सांस्कृतिक जीवन का प्रचार अभिनय द्वारा किया जायगा। इस प्रकार हिन्दी में 'रंग भारत' के अभाव की पूर्ति भी हो सकेगी। नाट्यमंच को आधुनिक युग में शिक्षा-प्रसार का एक सबल साधन माना गया है। नये टेकनीक के नाट्यमंच के निर्माण की दिशा में प्रयोग के साथ 'लोकायन' के सांस्कृतिक तत्त्व का प्रचार-कार्य भी 'रंग भारत' द्वारा ही किया जायगा। इस प्रकार 'लोकायन' ग्राम और नगर की जनता के सजीव सम्पर्क में आ सकेगा। अभिनय का कार्य विशेषतः विद्यायन के विद्यार्थियों और लोकायन के कार्यकर्ताओं द्वारा होगा। विद्यायन के विद्यार्थी ग्रामगीतों एवं ग्रामनृत्यों द्वारा गाँवों में लोकोपयोगी भावनाओं का प्रचार भी करेंगे।

अखिल भारतीय रेडियो

बुखारी-गुट की नई नई चालें

मैंने 'देशदूत' में प्रकाशित पिछले पत्र में बुखारी-सोमनाथ चिब-गुट की चर्चा की थी। उनका पहला मोर्चा सफल हो गया है और उर्दू के हिमायती डा० सक्सेना की नियुक्ति एकऐसे पद पर दिल्ली में हो गई है, कि जिससे हिन्दी के हित होने की कोई सम्भावना नहीं है। हमें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अधिकारियों की आँखमिचौनी पर आश्चर्य होता है कि वे चुप क्यों हैं?

लेकिन यहाँ के साहित्यिक मित्रों ने एक रहस्यपूर्ण बात को खोज निकाला है। रेडियो के विरोध में जो सम्मेलन ने आन्दोलन चलाया था, उससे कुछ प्रमुख व्यक्ति अपनी वाहवाही चाहते थे। तथा अपने मित्रों को रेडियो में नौकरी दिलवाना चाहते थे। वे इस ओर सफल भी हुए हैं। जिन श्रमजीवी लेखकों के बल पर इसका आन्दोलन चला था, उनकी उस समय किस प्रकार उपेक्षा की गई थी, यह सभी जानते हैं। प्रयाग के एक जबर्दस्त हिन्दुस्तानी के समर्थक जो कि कुछ लोगों के तिकड़म से सम्मेलन के साहित्य-मंत्री बन गये थे, उनको लखनऊ रेडियो ने एक सम्पादन का काम सौंपा और १५०) देने की बात कही। इसी प्रकार और लोगों को भी। श्री सत्यप्रकाश और गिरजाकुमार माथुर ने इस अस्त्र से साहित्यिकों को तोड़ने की कोशिश की थी। माननीय टंडनजी ने जब १५०) की बात सुनी तथा उन दिनों मौलाना अबुलकलाम आजाद ने भी उनको इस सम्बन्ध में पत्र लिखा तो वे आन्दोलन को उठाने के पक्ष में हो गए। 'बुखारी गुट' सफल हो गया।

अब सुना है कि चिब साहब इस चक्कर में हैं कि लखनऊ में एक ऐसा स्टेशन डाइरेक्टर भेजा जाये, जो कि उन लोगों का अपना खास आदमी हो, तथा वहाँ के भीतरी विभीषणों से मिलकर इस बार फिर उठनेवाले आन्दोलन को दबा दे। आगे पटना, नागपुर तथा और स्टेशनों का 'स्टाफ' भी करीब-करीब तय हो चुका है। रावी के उस पार पश्चिम पंजाब के लोग जो कि मिस्टर बुखारी के कृपापात्र रहे हैं, उनका आज भी बोलबाला है और यदि उन लोगों का षड्यंत्र सफल हो गया तो रेडियो कभी प्रगतिशील नहीं बन सकेगा।

अतएव हमारा निवेदन है कि लखनऊ, इलाहाबाद, नागपुर तथा पटना स्टेशनों पर ७० प्रतिशत अधिकारी तथा अन्य कर्मचारी उन प्रान्तों के ही हों। अखिल भारतीय नौकरियों का ढोंग रचकर और प्रान्तों के लोगों की प्रमुखता हमें नहीं चाहिए।

हम सी० पी०, बिहार तथा यू० पी० के समाचार-पत्रों में तथा साहित्यिक संस्थाओं तथा और लोगों से अनुरोध करेंगे कि वे इस आन्दोलन को चलावें ताकि रेडियो की नई योजनाओं को बुखारी ग्रुप हथिया न ले। तथा उनसे अनुरोध करेंगे कि रेडियो के केन्द्रीय कार्यालय में कम से कम इन प्रान्तों के ९०प्रतिशत लोग रहें।

नई दिल्ली — विनीत

डाक्टर श्यामसुन्दर पी० एच-डी०

'लोकायन' हिन्दी को अपना भाषा-माध्यम बनायेगा। 'लोकायन' का भवन प्रयाग में स्थापित होना निश्चित हुआ है।

इस केन्द्र की नीति के संचालन के लिए, सदस्यों की एक समिति होगी जिसका निर्वाचन पहले तीनों वर्षों के लिए होगा। इस अवधि के अन्त में एक तिहाई सदस्य अवकाश ग्रहण करेंगे जिनके स्थान पर नये सदस्य चुन लिये जायेंगे। विभागों के संचालन के लिए द्वार-समितियों की व्यवस्था होगी और दैनिक कार्य-संचालन के लिए एक प्रबन्ध-समिति रहेगी।

डाक्टर अमरनाथ झा

डा० झा ने अपने भाषण में 'लोकायन' जैसे संस्कृति केन्द्र का महत्त्व समझाया। उन्होंने कहा कि पन्त जी कई वर्षों से इस प्रकार की संस्था प्रयाग में स्थापित करना चाह रहे थे। वह समय समय पर मुझसे परामर्श भी लेते रहे हैं। मैं इस संस्था का हृदय से स्वागत करता हूँ और उसके उद्देश्यों का पूर्ण रूप से समर्थन करता हूँ। यह संस्था प्रयाग के लिए ही नहीं, बल्कि सारे प्रान्त के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। इसे सबका सहयोग मिलना चाहिए। हिन्दुस्तान को राजनीतिक स्वतंत्रता तो मिल गई है पर वह अपनी अमूल्य संस्कृति की धरोहर से अभी अपरिचित ही है।

डा० झा ने यह भी कहा कि हमें केवल अपनी सांस्कृतिक-परम्परा का ही जीर्णोद्धार नहीं करना है बल्कि उसे नवीन परिस्थितियों के अनुरूप विकसित भी करना है। पन्त जी के वक्तव्य के अनुसार इस संस्था के उद्देश्य अत्यन्त व्यापक हैं पर हम उसको अभी आंशिक रूप से ही कार्य में परिणत करेंगे।

डा० सत्यप्रकाश, प्रो० ए० सी० देव, श्रीनार्यसिंह जी, वात्स्यायन जी, व्यास जी तथा निर्मल जी ने भी अपने भाषणों में इस संस्था के महत्त्व की ओर विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट किया और अनेक उपयोगी सुझाव भी पेश किये।

विधायिनी समिति

अन्त में 'लोकायन' का विधान बनाने के लिए ७ सदस्यों की एक अस्थायी विधायिनी समिति का चुनाव हुआ, जो आवश्यकतानुसार अन्य सदस्यों को भी संबद्ध कर सकेगी। समिति की क्षमता तीन निर्धारित हुई। यह समिति पन्द्रह दिन के भीतर विधान को बना लेगी। विधायिनी समिति के लिए निम्नलिखित सज्जन चुने गये :—डा० अमरनाथ झा (सभापति), डा० ताराचन्द्र, श्री ब्रजमोहन व्यास, प्रो० एस० सी० देव, डा० धीरेन्द्र वर्मा, श्री क्षेत्रेश चट्टोपाध्याय, श्री सुमित्रानन्दन पन्त (संयोजक)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रेम-रहस्य

लेखक, पं० रामचन्द्र शुक्ल 'सरस'

प्रेम की महत्ता सर्वोपरि है। प्रत्येक मानव को प्रेम में आदान-प्रदान का अनुभव होता है। लेकिन प्रेम-रहस्य की गुत्थियाँ विरले ही सुलझा पाते हैं। यह सब आपको इस ग्रंथ के उदाहरणों में मिलेगा।

प्रसिद्ध मनीषी डाक्टर अमरनाथ झा ने इस पुस्तक को हिन्दी में अपने ढंग की पहली पुस्तक कहा है।

लगभग २०० पृष्ठों की सुन्दर और सजिल्द पुस्तक का मूल्य सिर्फ दो रुपये।

प्रतिभा-मण्डल, नया कटरा, प्रयाग

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य व्यायाम

रोग-निदान बनाम नामकरण

प्राकृतिक चिकित्सा का महत्त्व

लेखक, डाक्टर सुरेन्द्रप्रसाद गग, एम० ए०, एन० डी०

प्रायः रोग का नामकरण ही रोग-निदान समझा जाता है। कुछ विशेष लक्षणों के समूह को ही किसी रोग-विशेष के नाम से सम्बोधित करते हैं। इस प्रकार के निदान की अनेक विधियाँ प्राचीन काल से प्रचलित हैं। इनमें मुख्य नाड़ी-विज्ञान, मूत्र-मल-जिह्वा-शब्द-स्पर्श-आँख आदि की जाँच, आकृति-निदान हैं। आधुनिक चिकित्सा-प्रणालियाँ इन्हीं जाँचों पर निर्भर हैं। यंत्रों-द्वारा भी निदान का कार्य सहज हो गया है। इन सबकी सहायता से रोगी के भीतरी एवं बाहरी शरीर का हूबहू चित्र खींचने की चेष्टा की जाती है।

पर प्राकृतिक चिकित्सा में रोग एक ही है और उसकी चिकित्सा भी एक ही। रोग कहाँ है, किन-किन अंगों में किस-किस प्रकार के विकार हो रहे हैं, विकारों का क्या रूप है आदि बातें जानने की प्राकृतिक चिकित्सा में तनिक भी आवश्यकता नहीं है। रोगी की शारीरिक एवं मानसिक स्थिति के अनुसार उपचार आदि की योजना करना ही प्राकृतिक चिकित्सा का काम है।

सच्चा निदान—रोग-निदान की इतिश्री रोग के नामकरण में नहीं है। रोगी को रोग का नाम बता देना इतना आवश्यक नहीं है जितना कि उसके कारणों का। पर खेद है आज उलटी गंगा बह रही है। डाक्टर, वैद्य, हकीम आदि यह बतलाने की कृपा नहीं करते कि रोग किन कारणों से उत्पन्न हुआ है? वस्तुतः वे स्वयं भी इस सम्बन्ध में अनभिज्ञ होते हैं। यही कारण है कि जुकाम का कारण सर्दी, गठिये या लकवे का कारण हवा बतलाया जाता है। यदि रोगी को रोग के सही कारण बतलाकर उन्हें दूर करके ही चिकित्सा की जावे, तो निःसन्देह रोगियों के लिए चिकित्सकों की जरूरत ही न रहे। पर प्राकृतिक चिकित्सक रोग के नाम से माथा-पच्ची न करके रोगी को रोग के कारण समझाकर उन्हें दूर करवाने का प्रयत्न करता है। वह भली भाँति जानता है कि रोग के मूल कारण को दूर किये बिना उससे छुटकारा दिलाना असम्भव है। वह रोगी को धोखे में नहीं डालता। उसका रोगी स्थायी रोगी न रहकर अपना और दूसरों का डाक्टर बन जाता है।

क्या आशा की जाय कि हमारे नेता जो देश के स्वास्थ्य का स्तर ऊँचा करना चाहते हैं विदेशी चिकित्सा-प्रणाली की चकाचौंध से प्रभावित न होकर इस दिव्य चिकित्सा-प्रणाली के प्रचार, प्रचार आदि के लिए प्रयत्नशील होने की कृपा करेंगे?

संवाददाताओं के पत्र

पचमढ़ी—नगर में चन्द दिन पूर्व जो साम्प्रदायिक घटनाओं व अफवाहों से यहाँ के मुसलमान भाइयों में काफी भ्रम फैल रहा था, यहाँ के मुसलमान भाई भोपाल स्टेट वगैरह भागने लगे थे! लेकिन यहाँ के सबइन्स्पेक्टर की आज्ञानुसार एक आम सभा गांधी चौक में बुलाई गई। सभापति श्रीमान् सेठ बाबूलाल जी थे। सर्वप्रथम कुंजीलाल जैन, अजीमउद्दीन, प्रेमनारायण जायसवाल, बालाराम गुप्ता, हबीबुल्ला मुंशी, गयाप्रसाद साहू व सेठ राजाराम जी चौरसिया के शानदार भाषण हुए। इन्होंने अपने भाषणों में गुण्डों की झूठी अफवाहों से बचने के लिए आगाह किया। लोगों को आश्वासन दिया गया कि वे किसी तरह घबरायें नहीं व मुसलमानों की हर तरह से यहाँ का 'मजदूर सेना-संघ' उनकी रक्षा करने की कोशिश करेगा।

—संवाददाता

* * *

होशङ्गाबाद में कुछ दिन पूर्व श्रीयुत सत्यनारायण श्रीवास्तव, सैयद कासिमअली साहित्यालंकार, अर्जुनसिंह जी बघेल के प्रयत्नों से होशंगाबाद जिला पत्रकार-संघ की स्थापना हुई थी। जिसके संयोजक श्री सत्यनारायण जी श्रीवास्तव सर्वसम्मति से चुने गये थे। इस समय इस संघ का कार्य बिलकुल निर्जीव है, इसलिए इसके संयोजक श्रीवास्तव जी ने जिले के पत्रकारों से निम्नलिखित अपील की है—"आज के युग में पूँजीपति इस क्षेत्र में घुसकर श्रमजीवी पत्रकारों को पीसे डाल रहे हैं। इस समय प्रत्येक श्रमजीवी पत्रकार का कर्तव्य है कि वह अपना संगठन दृढ़ करे। अभी कुछ दिन से हम समाचारपत्रों में देख रहे हैं कि एक श्रमजीवी पत्रकारों का डेपुटेशन प्रांतीय सरकार से मिलने जा रहा है। हमें इसके सम्बन्ध में अखबारों द्वारा ही मालूम हुआ है। कितने दुख की बात है कि उस डेपुटेशनवालों ने भी नहीं पूछा।"

आगे लिखते हुए श्रीयुत सत्यनारायण श्रीवास्तव ने कहा—"अगर श्रमजीवी पत्रकार अपना कुछ अस्तित्व रखना चाहते हों तो वे संगठन दृढ़ बनावें! विशेष अगर कुछ जनकारी पत्रकार संघ के बारे में प्राप्त करना हो तो पता निम्न है। सत्यनारायण श्रीवास्तव सत्य-सदन नरसिंहपुर, सी० पी०।"

—संवाददाता

* * *

कानपुर में आगामी स्वतंत्र भारत की प्रथम दीपावली के शुभ अवसर पर "दलित प्रकाश साप्ताहिक" प्रकाशित हो रहा है। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि यह दलितों एवं किसान-मजदूर जनता का एकमात्र राष्ट्रीय मुखपत्र होगा, जो उनका सफल प्रतिनिधित्व करेगा।

—सम्पादक

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से [illegible] नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित [illegible] फीका हो चुका हो तो भारत भर में [illegible] सिद्ध सिद्धहस्त गुप्तरोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए० लाहौरवाले [illegible] पुरी (D. A.) देहली से मंगा (सम्मति) मुफ्त लेकर अपना [illegible] सुधार लें।

श्वास दमा की अद्भुत जड़ी

चित्रकूट संजीवनी बूटी

लगभग १०० वर्ष से विश्वविख्यात [illegible] वही बूटी है जिसकी एक ही मात्रा [illegible] में एक ही बार आश्विन शरदपूर्णिमा [illegible] ता० २६-१०-४७ की रात्रि को सेवन [illegible] से श्वास दमा सदैव के लिए नष्ट हो जा [illegible] है। पत्र भेजें, नहीं पछताना होगा।

पता—महात्मा औघड़ बाबा
आयुर्वेद आश्रम, पो० चित्रकूट, यू० पी०

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।—) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आप की गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

सचित्र पारिवारिक मासिक पत्रिका

वार्षिक मूल्य ४।) **मनोरमा** एक प्रति का =)

१ ली नवम्बर, १९४७ से विशेषांक के रूप में प्रकाशित हो रही है
इस विशेषांक का मूल्य ॥) रहेगा

'मनोरमा' पुनः अपने नव रूप-रंग में सजधज के साथ महिलोपयोगी लेखों, मनोरंजक कहानियों और रोचक कविताओं से सजकर परिवार के सभी सदस्यों के लिए समान रूप से उपयोगी रहेगी। वार्षिक मूल्य ४।) मनीआर्डर से भेजकर ग्राहक हो जाइए। एजेन्ट एजेंसी के लिए शीघ्रता करें।

मैनेजर 'मनोरमा'
बेलविडियर प्रेस, प्रयाग।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—
इन्डस्ट्रियल रिसच हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एस० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

धड़ाधड़ बिक रहा है। शीघ्रता कीजिए

वार्षिक बालसखा १९४७

इसकी छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएँ और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का मूल्य ३)। मासिक ग्राहकों को रियायती मूल्य २॥) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

*जयश्री: राजकुमारी की भांति गर्वीली मरु पवन की तरह निर्मल मुख...

*वह रूपवती है! वह पॉन्ड्स का प्रयोग करती है!

...क्या आप भी अपने चेहरे को पॉन्ड्स से उज्ज्वल और ताज़ा रख रही हैं? अनेक सुन्दर स्त्रियाँ और लड़कियाँ किसी अन्य क्रीम की अपेक्षा किसी भी मूल्य पर पॉन्ड्स को ही व्यवहार में लाती हैं। याद रखिये, **पूर्णरूप से स्वच्छ करना ही** शरीर की सबसे महत्त्वपूर्ण सावधानी है। आज से ही पॉन्ड्स कोल्ड क्रीम और पॉन्ड्स वेनिशिंग क्रीम का प्रयोग शुरू कर दीजिये।

पॉन्ड्स दिनचर्या

पॉन्ड्स कोल्ड क्रीम: पॉन्ड्स कोल्ड क्रीम को चेहरे पर कोमलता से रमाते हुये दिन में दो बार उसे साफ़ कीजिये; उंगली के कोमल पोरों से उसे थपथपाइये। पॉन्ड्स टिशू से स्वच्छ कर लीजिये।

पॉन्ड्स वेनिशिंग क्रीम: कोल्ड क्रीम की साफ करके उंगली के पोरों से पॉन्ड्स वेनिशिंग क्रीम लगाइये। त्वचा को सुरक्षा देता हुआ वह आप के प्रयोग के साथही अंतर्धान हो जाता है।

पॉन्ड्स पावडर: यदि आपकी इच्छा हो तो पुंष्पंखडी की भांति कोमलता के लिये पॉन्ड्स पावडर थपथपाइये।

पॉन्ड्स क्रीम्स

व्यापार-सम्बंधी पूछताछ के लिये लिखिये:
एल. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लिमि० बम्बई - कलकत्ता - कराची - मदरास.

Copyright: Pond's Extract Co.

जुकाम सर्दीपर अक्सीर उपाय

आसोंदा नीलगिरि तैल

मी. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

मेरे श्वास में दुर्गन्धि?

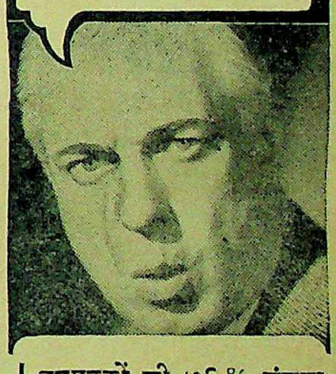

नवयुवकों की ७६% संख्या से दुर्गन्धि आती है!

वैज्ञानिक अनुभवों से यह निस्सन्देह सिद्ध हो गया है कि कोलगेट टूथ पाउडर को १० घटनाओं में से ७ घटनाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि जबानी दुर्गन्धि शीघ्र ही दूर हो गई।

धन की बचत—दूसरी दवाओं की अपेक्षा कोलगेट एक बड़े डिब्बे में दाँत साफ करने की ३० मात्रा अधिक रहती है, उससे बड़े डिब्बे में ४६ मात्रा अधिक रहती है। परन्तु दाम वही है।

धूम्र-पान करनेवाले—कोलगेट दाँत का मंजन तम्बाकू की दुर्गन्धि और मैल को दूर करता है।

आज ही कोलगेट खरीद लीजिए।

कोलगेट टूथ पाउडर
कोलगेट आज ही खरीदिए!

CLEANS BREATH AS IT CLEANS TEETH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य की सूचना

WOODWARD'S "GRIPE WATER"

वूडवर्ड्स ग्राइप वाटर का सही फुटकर दाम निम्नप्रकार है :

प्रति शीशी : २ रुपये

(इसके अतिरिक्त लोकल टैक्सेस जहाँ लागू हों)

अधिक दाम मत दें

जब आप वूडवर्ड्स ग्राइपवाटर खरीदें

तब हर शीशी पर इस ट्रेडमार्क का अवलोकन करें

नक़ली मालसे सावधान रहिये!

WW. 1-111 HI W. WOODWARD LTD., LONDON, ENGLAND

अपनी छुट्टी रोक दीजिये!

जबतक आप अपने जीर्ण और बेकार ब्रश को फेंक न दें छुट्टी पर मत जाइये।

एक नया पैक कर लीजिये।

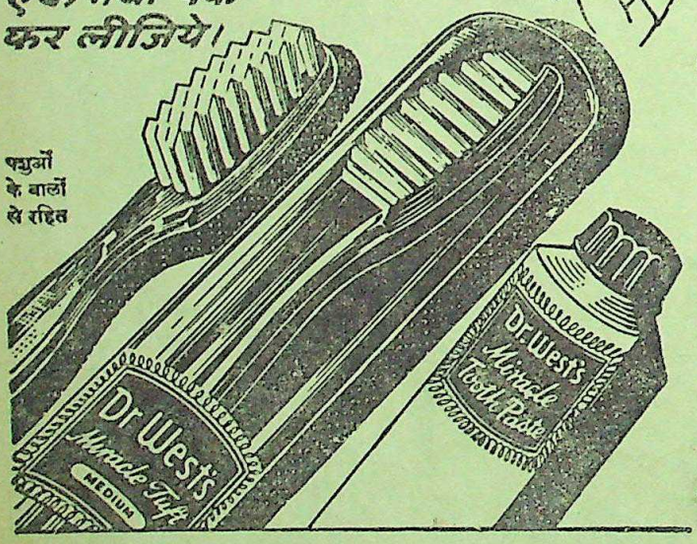

* दांतों को ६० प्रतिशत अधिक स्वच्छ करता है
* जल-अभेद्य.....नमी-विद्वेषक
* शीशे में बंद
* वर्षभर की गारंटी

डा. वेस्ट्स ट्रूथ ब्रश और ट्रूथ पेस्ट

व्यापारिक पूछताछ के लिये: एल. डी. सेमूर ऐंड कम्पनी (इंडिया) लिमिटेड
बम्बई - कलकत्ता - कराची - मदरास

'देशदूत' का दीपावली विशेषांक

विज्ञापनदाता शीघ्र ही स्थान रिज़र्व करा लें

अन्य अवसरों की भाँति 'देशदूत' का यह विशेषांक बहुत ही सुन्दर और आकर्षक रूप में प्रकाशित होगा। इसमें अच्छे अच्छे लेख, कहानियाँ, कविताएँ, हास्य की सामग्री और बढ़िया चित्र रहेंगे। इस अंक में पढ़ने की बहुत बढ़िया सामग्री रहेगी। एजेंट अपनी प्रतियाँ रिज़र्व करा लें।

विज्ञापन-दाताओं को इस अंक में विज्ञापन छपवाने से बहुत लाभ होगा। विज्ञापन-दर—

कवर चौथा पूरा पेज ४००)
" दूसरा या तीसरा पूरा पेज ३००)
पहला पेज पाठ्य-विषय से पहले ३००)
साधारण पूरा पेज २००)

पृष्ठ का आकार
१२½" × ४ कालम
स्क्रीन ६५

शीघ्र पत्र लिखकर स्थान रिज़र्व कराइए। विज्ञापन २५ अक्टूबर सन् १९४७ के बाद स्वीकार न किये जायँगे। मूल्य अग्रिम भेजिए।

मैनेजर 'देशदूत', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

उच्च कोटि की सचित्र कहानी-पत्रिका

'मंजरी'

जनवरी १९४८ से प्रकाशित हो रही है

'मंजरी' हिन्दी कथा-साहित्य का कलात्मक शृङ्गार करेगी।

'मंजरी' में हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ कथाकारों की तथा अन्य भाषाओं की भी उच्च कोटि की सुरुचि-सम्पन्न कलात्मक कहानियाँ प्रकाशित होंगी।

'मंजरी' निःसंकोच रूप से माँ-बहनों के हाथों में दी जा सकेगी।

'मंजरी' प्रत्येक प्रकाशित रचना पर पर्याप्त पारिश्रमिक देगी और रचनाओं का कॉपीराइट लेगी।

'मंजरी' में आद्योपान्त मात्र कहानियाँ न रहेंगी। इसका तीन-चौथाई कलेवर कहानियों के लिए और एक चौथाई कथा-साहित्य के सभी उपांगों पर गम्भीर लेखों, नवीन प्रकाशनों की निष्पक्ष समीक्षा और मासिक कथा-साहित्य के सिंहावलोकन के लिए सुरक्षित रहेगा।

'मंजरी' का वार्षिक मूल्य ६) छः रु० और प्रत्येक अङ्क का ।।) आठ आने होगा।

ग्राहकों, एजेंटों और विज्ञापन-दाताओं को शीघ्रतापूर्वक अपनी प्रतियों का स्थान आदि सुरक्षित करा लेना चाहिए, अन्यथा प्रकाशित होते ही इसके अङ्क दुर्लभ हो जायँगे।

सम्पादक
देवीदयाल चतुर्वेदी

प्रकाशक
इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

र, १२ आक्टोबर, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 12th October, 1947

पुस्तकालय
गुरुकुल

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अमरीका

हिन्दुओं का संगठन कैसे हो ?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

हिन्दी प्रांतों में शिक्षा का माध्यम

परमाणु शक्ति का राष्ट्रीयकरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी फ्रट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

आज भारत स्वतंत्र है

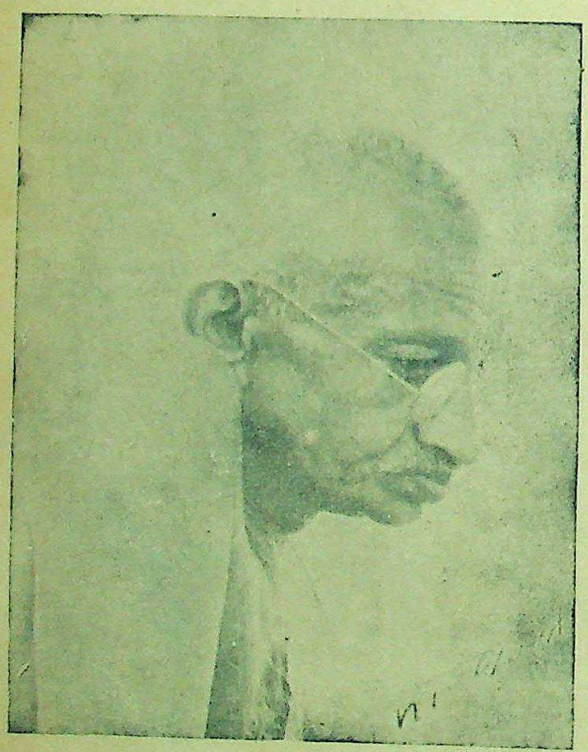

यह स्वतंत्रता राष्ट्र-पिता महात्मा गांधीजी की ही देन है

अतः

गान्धी-गौरव-गान के लिए

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ

और

सेवाग्राम

अपने प्रिय मित्रों को उपहार में दीजिए।

गान्धी-अभिनन्दन-ग्रन्थ में गान्धीजी के संबंध में आज तक लिखी हुई सभी श्रेष्ठ कविताएँ संगृहीत हैं। ऐसा ग्रन्थ किसी भी दूसरी भाषा में नहीं प्रकाशित हुआ! मूल्य ७॥)

× × ×

सेवाग्राम में राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप देनेवाले कवि श्री सोहनलाल जी द्विवेदी की कविताएँ बड़ी सज-धज के साथ प्रकाशित की गई हैं।

ये रचनाएँ देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक प्रेम से पढ़ी जाती हैं।

मूल्य १०)

अपनी प्रतियाँ निकट के पुस्तक-विक्रेता से माँगिए, न मिलें तो इस पते से मँगाइए।

युक्तप्रान्त के शिक्षा-सदस्य जी की सम्मति—

"सेवाग्राम का प्रकाशन सुन्दर हुआ है। आप जैसे लब्धप्रतिष्ठ कवि की रचनाओं के सम्बन्ध में कुछ कहना मेरा दुस्साहस-मात्र है। हाँ, मैं इतना कह सकता हूँ कि रचनाएँ मुझे बहुत अच्छी लगीं।

—सम्पूर्णानन्द"

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

प्रिंस होमियोपैथिक कालेज

बनारस

गवर्नमेन्ट रजिस्टर्ड और एकै होमियोपैथिक, वायकेमिक, इंजेक्शन तीनों डिप्लोमा (सार्टिफिकेट) लें या प्राप्त करें। नियमावली मुफ्त मँगाइए।

पचास वर्ष से विश्व-विख्यात कपड़ा ख़राब न कीजिए नक़लचियों से सावधान रहिए।

सपट लोशन

सपट एण्ड कुं

मुंबई. २.

घर की स्त्रियाँ

निकोटा

पारिवारिक टूथ पेस्ट क

व्यवहार करता है!

क्योंकि निकोटा दांतों को सफेद और सु रखता है जिससे स्त्रियां युवा दिखती हैं। सबसे अधिक 'किफायती' और समस्त परिवार के प्रथम श्रेणी का टूथ पेस्ट है।

लगभग सभी जगाह एक रुपये में मिलता है।

★ स्वा दि
★ स्फू दि
★ कीटाणुनाश

पारिवारिक

टूथ पेस्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

वर्ष १०, संख्या ६] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, १२ अक्टोबर, १९४७

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

सरदार वल्लभभाई पटेल की अपील पर अमृतसर का सिक्ख-समुदाय मुसलमानों की पूरी तरह से सहायता देने पर अमादा हो गया है। सरदार पटेल ने कहा था कि मुसलमानों को उनके देश पाकिस्तान में पहुँचाने के लिए सिक्खों को पूरा योग देना चाहिए। अमृतसर में इसीलिए सिक्खों ने एक स्वयंसेवक दल का संगठन किया है जो मुसलमानों को पाकिस्तान पहुँचाने में सहायता दे रहा है। अपने देश को इससे अधिक प्रसन्नता क्या हो सकती है कि भूले-भटकों को असली रास्ता बताया जा रहा है। मुसलमान भाइयों को अपने वतन की खबर लेनी ही है, इसलिए पड़ोसी सिक्ख भाई अगर उनके वहाँ पहुँचने का प्रबंध कर रहे हैं तो इस भ्रातृत्व के युग में इससे बढ़कर पुण्य का काम क्या हो सकता है?

* * *

महात्मा गांधी का कहना है कि नागरिक अधिकार और शक्ति हथियाने के लिए कितने ही स्थानों पर लोग सत्याग्रह के नाम पर दुराग्रह कर रहे हैं। अपने ख्याल की समझ में सच पूछा जाय तो सत्याग्रह की प्रतिक्रिया दुराग्रह है। जब सारे देश में प्रतिक्रिया की भावना फैल रही है, अहिंसा से हिंसा, सत्य से असत्य और सही से गलत की ओर जिस तरह लोग बढ़ रहे हैं उसी तरह सत्याग्रह से दुराग्रह की ओर उनका बढ़ना लाजिमी है। जिन अवसरवादियों ने सत्याग्रह के नाम पर चोरबाजारी की, वही अब दुराग्रह के नाम पर पद-लोलुपता की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। प्रतिक्रियावाद का तो यह युग ही है। महात्मा गांधी क्या करें और क्या करे कोई?

* * *

संयुक्तप्रांत के अर्थ-मंत्री पंडित कृष्णदत्त पालीवाल कहते हैं कि अगले तीन महीनों में पुलिस जमात में मुसलमानों की संख्या, जन-संख्या के अनुसार, १५ प्रतिशत कर दी जायगी। अपने राम को इससे बढ़कर प्रसन्नता और क्या होगी कि मुसलमान भाइयों को अब पुलिस में उनके असली अधिकार पाने का समय आ गया है। लेकिन प्रश्न तो यह है कि आज पुलिस-विभाग में जो ७५ प्रतिशत मुसलमान भाई विराजमान हैं और जिनकी वफादारी पाकिस्तान के प्रति बढ़ती जा रही है, क्या उन्हें पाकिस्तान भेजने का प्रबंध भी सरकार की ओर से हो रहा है या नहीं? पाकिस्तान तो मुसलिम भाइयों का असली वतन है ही, इसलिए उन्हें वतन में पहुँचाने का भी बन्दोबस्त जरूर होना चाहिए। कांग्रेस-सरकार अथवा कहना यह चाहिए कि समता की सरकार का धर्म भी यही है। आशा है पालीवाल जी इधर भी जरूर ध्यान देंगे।

* * *

योरोप में अगले युद्ध के लिए बारूदखाना बनना शुरू हो गया है। संयुक्तराष्ट्र-संघ की छीछालेदर शुरू हो गई है। रंग-ढंग से जान पड़ता है कि आज के संयुक्तराष्ट्र-संघ की हालत, पिछली लड़ाई के पहले के राष्ट्र-संघ की तरह होने ही वाली है। सभी राष्ट्र अलग अलग खिचड़ी पका रहे हैं। जैसे जैसे पिछले युद्ध में ब्रिटेन ने पैसे के बल पर विजय प्राप्त की, हिन्दुस्तान के अनेक राष्ट्रीय आन्दोलनों पैसे और पद के बल पर समाप्त किये गये वैसे ही अमरीका भी इस वक्त डालर के बल पर योरोप पर विजय प्राप्त करना चाहता है। आज अमरीका की हालत उस अफगानी की तरह हो गई है जो जबरदस्ती लोगों को ब्याज पर कर्जा देता है और पीछे डंडे के बल पर वसूल करता है। अमरीका भी इस वक्त थैली खोले हुये डालर बाँटने के लिए उतावला हो रहा है। योरोप के छोटे-मोटे राष्ट्र चक्कर में फँस भी रहे हैं। देखना है अमरीकन-डालर आगे-आगे क्या गुल खिलाता है?

* * *

सोवियट रूस अमरीका के डालर-बाँटन-लीला को बड़े गौर से देख रहा है। वह समझता तो खूब है लेकिन बोलता कम है। रूस जानता है पैसे की माया अपरम्पार है। योरोप का जो राष्ट्र डालर के फंदे में फँसा फिर उसका उबरना मुश्किल ही है। यही सब देखकर रूस संयुक्त-राष्ट्र-संघ की मीटिंगों में गरमा भी जाता है। वह संयुक्तराष्ट्र-संघ छोड़ने को भी तैयार हो जाता है लेकिन अमरीका और उसका जिगरी दोस्त ब्रिटेन दोनों बड़े प्रेम से सोवियट रूस के माथे पर ठंडी बरफ रखने की कोशिश करते हैं, साथ ही चुमकारते और पुचकारते भी हैं कि मान जा भाई, मान जा। लेकिन इस मान-मनौअल से रूस माननेवाला नहीं है। यही सब मायावी लीलाएँ हैं जिससे संयुक्तराष्ट्र-संघ अब हवा में उड़नेवाला है। असल बात तो यह है कि 'स्वारथ काह न करत कुकरमू'। स्वार्थ और धोखेबाजी का राज्य है। अधिकारों और स्वार्थों का युद्ध है। इसलिए अगर योरोप युद्ध का बारूदखाना बन जाये तो आश्चर्य की कोई बात नहीं!

* * *

पाकिस्तान के महान् नेता अब समझने लगे हैं कि दिया तले अँधेरा रहता ही है। वह अब यह भी अनुभव

प्रधान मंत्री पं० गोविन्दवल्लभ पंत।

करने लगे हैं कि जन-संख्या का परिवर्तन न होना चाहिए। लाखों आदमियों के मरने और बरबाद होने के बाद पाकिस्तानी नेताओं की अक्ल ठिकाने आई यह बड़ी विचित्र बात है। राजा गजनफर अली साहब पहले तो बड़ी लंबी छलाँग मारते रहे और कहते रहे कि पाकिस्तान ने हिन्दुस्तान को दे पटका लेकिन अब उनका सुर भी बदल गया है। गजनफर अली साहब अब फरमाते हैं कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में कोई झगड़ा नहीं हो सकता, अराजकता जल्दी से जल्दी दूर होनी चाहिए। अब सभी पाकिस्तानी नेता अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के पीर बन बै हैं। कल तक पाकिस्तान से अल्पसंख्यक मारकर भगाये जा रहे थ आज सारंगी का सुर बदल गया है। असल बात यह है कि पाकिस्तान के नेताओं की लीला निराली है। इनके कौल-फेल की कोई सीमा नहीं। इसलिए कि इनका काम हवा का ख देखना मतलब से मतलब निकालना। इस वक्त पाकिस्तान की हवा बदल रही है।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय पृष्ठ

अराजकता दूर हो !

भारत में इस समय अराजकता व्यापक रूप ग्रहण कर रही है। साम्प्रदायिक उत्तेजना, दंगा, झगड़ा-फसाद, वैमनस्य और क्रूरता अपने उग्र रूप का प्रदर्शन कर रही है। भारत के बटवारा हो जाने के बाद भी आज की अराजक स्थिति से यह स्पष्ट हो रहा है कि अँगरेजों की वास्तविक चाल सफलीभूत हो रही है। मुसलिम लीग के नेताओं को ब्रिटिश अधिकारियों ने मिलाकर आज की परिस्थिति उत्पन्न करने का श्रीगणेश वर्षों पहले से प्रारम्भ कर दिया था। यद्यपि राष्ट्र सदा से विभाजन का विरोधी रहा है और महात्मा गांधी तथा अन्य नेताओं को ब्रिटिश-नीति से भावी खतरे का अनुमान था किन्तु स्थितिवश और मुसलिम लीग के अनवरत चेष्टा से अंत में कांग्रेस को बटवारे का सिद्धान्त स्वीकार करना पड़ा। संभावना थी कि बटवारे के बाद राष्ट्र में शान्ति और सुव्यवस्था की स्थापना होगी किन्तु परिणाम उलटा ही हुआ। समस्त राष्ट्र साम्प्रदायिक कलह का आगार बन गया, लाखों व्यक्तियों के जीवन-दान देना पड़ा और करोड़ों की सम्पत्ति साम्प्रदायिकता की ज्वाला में स्वाहा हो गई। इतने पर भी अभी शान्ति-स्थापना की स्थिति दिखाई नहीं दे रही है। कहना तो यों चाहिए कि ब्रिटिश टोरियों ने भारत के विभाजन के बाद गृह-युद्धकलह के जिस स्वप्न को कल्पना की होगी, उसकी साकार तथा प्रत्यक्ष पूर्ति देखकर वह प्रसन्न हो रहे होंगे। बात है भी यही। इस समय हिन्दुस्तान बनाम पाकिस्तान का विवाद विभिन्न प्रकार के राजनैतिक रूपों में प्रदर्शित हो रहा है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की सरकारें जनता के दृष्टिकोण से एकमत होने ही नहीं पातीं। कहना यह चाहिए कि वातावरण पूरी तौर से हिंसात्मक और अराजकता से पूर्ण होता जा रहा है। भारत-सरकार बहुत कुछ जनता की सुरक्षा की दृष्टि से करना भी चाहती है किन्तु पाकिस्तानी सरकार उसमें बाधक बन कर खड़ी हो जाती है। आज यदि किसी अहम प्रश्न पर समझौता हो भी जाता है तो कल एकाएक समाप्त हो जाता है। इस प्रकार की स्थिति से परिणाम यह हो रहा है कि हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान की सरकारें शासन-व्यवस्था की दृष्टि से अस्त-व्यस्त हैं और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जहाँ प्रसन्नता का अनुभव होना चाहिए वहाँ वह अभिशाप प्रमाणित हो रहा है।

हमारी समझ में हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान की आज की नई परिस्थिति में जल्दी सुधार की आशा नहीं है। इसका सबसे बड़ा कारण, जो परोक्ष तथा प्रत्यक्ष भी है, पाकिस्तान के पीछे ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों की कूटनीति है। जब ऐसी स्थिति है तब सुधार की आशा करना फिलहाल उचित नहीं जान पड़ता। इसलिए भारत-सरकार तथा प्रांतीय सरकारों पर जो कर्मठ कांग्रेसवादियों द्वारा संचालित हो रही हैं, जनता के प्रति एक महान् जिम्मेदारी आ गई है। यह तो स्पष्ट है और इतिहास इसका साक्षी है कि अहिंसा तथा भाई-चारे की दृष्टि से कम से कम शासन सुचारु-रूप से नहीं चल सकता। संसार के पूँजीवादी राष्ट्रों ने जनता के एक वर्ग को गुमराह कर दिया है और सैकड़ों वर्षों से गुमराह करते आये हैं, इसलिए उसके सामने न तो कोई राष्ट्रीय आदर्श है और स्वतंत्रता के प्रति या अपनी सरकार के प्रति वास्तविक प्रेम। इसलिए आवश्यकता है जनता को आत्म-रक्षा के लिए तैयार करने की। हमारी राय में जनता को शस्त्र धारण करने की आज्ञा सरकार की ओर से मिलनी चाहिए। जब पाकिस्तान में लोगों को सशस्त्र बनाने की तैयारियाँ हो रही हैं, मुस्लिम लीगी दृष्टि उन्हें तैयार करने की योजना बना रही है तो कांग्रेस सरकारों को सचेत होना चाहिए। यद्यपि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के युद्ध की कदापि संभावना नहीं है फिर भी यदि ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों की कृपा से ऐसा अवसर आ ही जाय तो हमें उसका सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। दूसरी बात यह है कि स्वतंत्र देशों की जनता शस्त्र धारण करती है और भारत भी जब आज स्वतंत्र हो गया है तो वहाँ की जनता को शस्त्र-ग्रहण करने की सरकारी तौर पर कानून जारी हो जाना चाहिए। दूसरी बात यह है कि पुलिस तथा सरकारी नौकरियों में जितनी भी जल्दी हो सके अल्प-संख्यक तथा बहु-संख्यक के अनुपात से परिवर्तन किया जाय यदि सरकार जल्दी से जल्दी ऐसा नहीं करती तो उसे भविष्य में भयंकर खतरे का सामना करना पड़े तो आश्चर्य नहीं। पिछले दिनों की घटनाओं से यह प्रगट हो गया है कि भारत में रहनेवाला अल्प-संख्यक समुदाय पंचमांगी के काम में पहले ही तैयार किया जा चुका है। इसलिए हमें इस समय सरकारी तथा गैर-सरकारी दृष्टि से शक्तिशाली होने की आवश्यकता है। शक्ति के सामने अराजकता की इतिश्री होगी अशक्त तथा अव्यवस्था की स्थिति को देख कर ही अराजकता बलवती होती जाती है, किन्तु शक्ति के सामने वह पराजित होगी, यह निश्चय है।

आगामी सम्मेलन का सभापति कौन हो ?

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का आगामी अधिवेशन बंबई में होने जा रहा है। इसलिए इस बार यह प्रश्न हिन्दी प्रेमियों के सामने है कि सम्मेलन का सभापति किसे बनाया जाय ? आज हिन्दी संसार तथा हिन्दी-प्रेमियों पर इस निर्णय की बड़ी जिम्मेदारी आ गई है। समय के अनुसार यदि हम नहीं चलते और अवसर पर चूक जाते हैं तो राष्ट्र-भाषा हिन्दी का भविष्य खतरे में पड़ने की संभावना है।

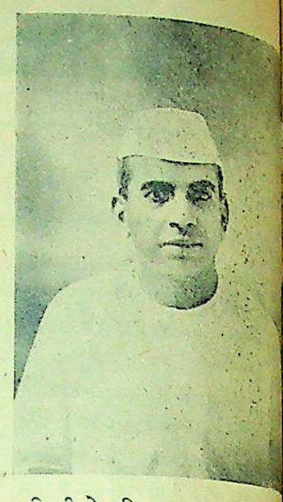

हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार और कां
नेता सेठ गोविन्ददास एम० ए० ए

हमें ऐसे व्यक्ति को सभापति चुनना है श्रेष्ठ साहित्यकार तो हो ही साथ राष्ट्रीय जगत् पर भी अपना प्र रखता हो।

भारतीय विधान-परिषद् के अधिवेशन में कांग्रेस पार्टी ने यह बहु निर्णय किया है कि हिन्दी को वैधा दृष्टि से राष्ट्रभाषा स्वीकार कर लि जाय। विधान-परिषद् के अधिवेशन में राष्ट्र-भाषा हिन्दी प्रश्न प्रमुख रूप से निर्णय के लिए वाला है। सेठ गोविन्ददास जी ने वि परिषद् में हिन्दी का प्रबल पक्ष लि और इस संबंध में सम्मेलन के प्राण मा टंडन जी को उन्होंने सदैव सहायक है, साथ ही भविष्य में वह इस का पूरी तरह से सन्नद्ध हैं। सेठ गोविन्द जी हिन्दी की पिछले ३० वर्ष से से कर रहे हैं। वह हिन्दी के प्रथम श्रेणी नाटककार हैं ही साथ ही एक मनस्वी विद्वान् साधक और कलाकार हैं। हिन्दी की सेवा में काफी धन-व्यय किया है। कई दृष्टियों से इस हमारा अनुरोध है कि हिन्दी-प्रेमी विद्वान सम्मेलन के सभापति पद के सेठ गोविन्ददास जी को ही अपना देने की कृपा करें।

—राष्ट्रभाषा

बापू से

लेखक, प्रोफेसर इन्दुशेखर एम० ए०

आज राष्ट्र के जागे भाग
देव ! जहाँ पैदल चल चलकर तुमने स्वयं बुझाई आग।
जिन माँ बहिनों की पशुवत् से लूटी पामर-दल ने लाज
तुमने सिर पर वरद हस्त रख, बापू उन्हें जिलाया आज।
कुटी कुटी में हाट-बाट में, घूम घूम कर नंगे पाँव
दीन दुखी के पोंछे आँसू, और बसाये उजड़े गाँव।
जहाँ क्रूर-कर्मों के कारण, रहा न था जीवन विश्वास
धीर बँधाता उन हृदयों में, प्रतिपल आज तुम्हारा श्वास।
रात-दिवस दोनों हाथों से बाँट रहे हो तुम अनुराग।
आज राष्ट्र की शस्य श्यामला, धरती तुमको रही निहार
हृदय हृदय में नगर-डगर में, जहाँ बहाया तुमने प्यार।
हत्यारे भी आज चकित हैं, देख तुम्हारा मानव-धर्म
स्नेह दया के अग्रदूत तुम, धन्य तुम्हारा यह सत्कर्म।
त्रस्त हृदय में साहस भर कर तुमने दिया जिन्हें सन्तोष
युग युग उन आकुल हृदयों में अक्षय रहे तुम्हारा कोष।
दो हड्डी का कृश ढाँचा है अनुपम किन्तु तुम्हारा त्याग।
आज राष्ट्र के जागे भाग॥

अन्तू सरदार

भरोस सरदार के लड़की है कोई सन्तान न थी। और भरोस था लठैत जिससे पुलिस भी डरती थी। जमींदार के यहाँ भरोस नौकर था। अपनी बेटी को भी लाठी चलाना दिया था। इसका ब्याह जिस (अन्तू) से किया गया था वह सवाया था। एक झमेले में वही काट हुई। इसमें अन्तू की स्त्री भी गई और भतीजा प्रताप भागल गया। पुलिस ने अन्तू को गिरफ्तार सज़ा करा दी। इधर प्रताप भी चल यह कहानी है तो बड़ों के लिए भी परन्तु बच्चों को बहुत पसन्द सुन्दर सरल भाषा, कई चित्र और पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल बारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहा

दीपावली के शुभ अवसर पर
'देशदूत' का लोकप्रिय विशेषांक
दीपावली के अवसर पर 'देशदूत' का अत्यन्त सुन्दर, लोकप्रिय, राष्ट्रीय भावनाओं, अनेक सामयिक चित्रों, नेताओं के लेखों, कहानियों तथा कविताओं से सुसज्जित बड़ा ही बढ़िया विशेषांक प्रकाशित होगा। कवर बहुरंगा, मूल्य केवल ।)
मैनेजर 'देशदूत', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू-संगठन की एक योजना

राष्ट्रीय दृष्टि से पूर्ण सफलता कैसे मिल सकती है ?

लेखक, श्री श्यामकृष्ण जी दर
(भूतपूर्व जज इलाहाबाद हाईकोर्ट)

राष्ट्र का विभाजन हो गया। साम्प्रदायिक आधार पर हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान दो उपनिवेशों की स्थापना हो गई; फिर भी कांग्रेस अपने राष्ट्रीय आदर्श पर स्थिर है। इतना होने पर भी हिन्दुओं के पुनर्संगठन की आवश्यकता का अनुभव प्रत्येक हिन्दू आये दिन कर रहा है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने हिन्दू-संगठन की एक योजना प्रस्तुत की है जो विचारणीय तथा पठनीय है। इस लेख का पहला अंश गतांक में प्रकाशित हो चुका है।

हिन्दू-संगठन के जनक महामना स्वर्गीय पण्डित मदनमोहन मालवीय।

सबसे हिन्दू-संगठन का उद्देश्य हिन्दू मस्तिष्क को राष्ट्रीयता तथा देशभक्ति की ओर इस प्रकार झुकाना होगा कि प्रत्येक हिन्दू अपने को एक राष्ट्र के रूप में अनुभव करे और उसी के अनुसार कार्य करे। साथ ही राष्ट्रीय मामलों में वह देश के स्वार्थ को अपने व्यक्तिगत तथा जातिगत स्वार्थों से अधिक महत्त्वपूर्ण समझे। इस उद्देश्य की पूर्ति सभी हिन्दुओं को एक जाति-रहित संगठन में एकत्रित कर सकती है। इस संगठन में राष्ट्रीयता और देश-भक्ति की प्रतिदिन शिक्षा दी जाती हो और उसका प्रत्यक्ष आचरण कराया जाता हो। इस संगठन के सदस्यों को भावनात्मक अनुभूति कराई जाय।

इस संगठन के असंख्य केन्द्र हो सकते हैं। गाँवों का समूह, मुहल्ला या नगर में मुहल्लों का समूह या विशेष वर्ग के लोग इन केन्द्रों का क्षेत्र हो सकता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक ऐसा ही केन्द्र है। जो लोग उससे सम्बन्धित हैं अपना सम्बन्ध उससे जारी रखें। जो लोग उससे सम्बन्धित नहीं हैं किन्तु उसके आदर्शों को मानते हैं वे तुरन्त उससे सम्बन्ध स्थापित करें। जिन हिन्दुओं को इसमें या ऐसे किन्हीं संगठनों में भाग लेने में कोई कठिनाई हो वे अपने अलग केन्द्र स्थापित कर उसमें शामिल हो सकते हैं। जो लोग अपने अलग केन्द्र स्थापित करना चाहते हैं, उनकी सुविधा के लिये उसके कुछ प्रमुख सिद्धान्त नीचे दिये जाते हैं। यदि किसी केन्द्र का कार्य चलाने में कोई कठिनाई प्रतीत हो, तो दूसरे संगठनों से उसमें सहायता ली जाय। इन केन्द्रों को चलाते समय ध्यान में एक बात रखना आवश्यक है और वह यह है कि उद्देश्य को सामने रखते हुये इन केन्द्रों में दी जानेवाली शिक्षा बिलकुल सही और पर्याप्त हो। सभी हिन्दू किसी न किसी संगठन में शामिल हो और कोई भी हिन्दू इन संगठनों के प्रभाव के बाहर न हो।

प्रत्येक केन्द्र में लोग दिन में कम से कम एक घंटे के लिये अवश्य एकत्रित हों। इस बैठक का कुछ भाग प्रार्थना के लिए, (ईश्वर की प्रार्थना, जो सभी को स्वीकार हो) कुछ समय कीर्त्तन (राष्ट्रीय गीतों) के लिये, कुछ समय राष्ट्रीयता तथा देश-भक्ति के पाठ, स्वार्थ त्याग, व्यक्तिगत अनुशासन और सामूहिक कार्य के लिये और बचा हुआ समय शारीरिक व्यायाम तथा कवायद के लिये दिया जाय।

गायत्री को प्रार्थना के लिये स्वीकार किया जा सकता है और बन्देमातरम् का प्रसिद्ध गीत तथा भारत की वीरता, हिन्दू एकता, तथा स्वार्थ-त्याग और देश-भक्ति को प्रकट करनेवाले गीत कीर्त्तन के लिये किये जा सकते हैं। निम्नलिखित स्वार्थत्याग के उदाहरण दिये जा सकते हैं।

(अ) गरीबों, बीमारों तथा दुखितों की सहायता।

(आ) दुर्बलों, पीड़ितों तथा शोषितों की मदद।

(इ) राष्ट्रीयता तथा देश-भक्ति

को प्रचारित करने के लिये तथा अज्ञान, अन्धविश्वास और दुर्बलता की भावना को दूर करने की शिक्षा।

(ई) सभी कार्यवाही इस प्रकार हो जिससे व्यक्तियों, संस्थाओं तथा समाजों से राष्ट्रीय प्रवृत्तियों का पता लगाकर उन्हें कमजोर और नष्ट कर दिया जाय। पाकिस्तानी अड्डों और क्षेत्रों का भी पता लगाकर उन्हें भी दुर्बल और नष्ट कर दिया जाय।

(उ) सभी काम भारत की एकता के लिये हो।

स्वार्थ-त्याग के कार्य सेवा और पूजा की तरह निष्काम और परमार्थ की दृष्टि से किये जायँ। उसमें किसी प्रकार का दुनियावी स्वार्थ न हो। संगठन के सदस्य अपने ऊपर दुनिया के कुछ काम स्वयं होकर लगा लें।

जैसे ही दो या इससे अधिक व्यक्ति ऐसे तैयार हो जायँ जो नीचे लिखी हुई हिन्दू राष्ट्रीयता पर सच्चाई से विश्वास रखते हों और वे उक्त आधारों पर कार्य करने को तैयार हों, इस प्रकार का केन्द्र स्थापित किया जा सकता है।

हिन्दू राष्ट्रीयता की परिभाषा

(१) हिन्दू उस व्यक्ति को कहते हैं जिसकी मातृभूमि या पितृभूमि भारत है और जो भारत को अपनी मातृभूमि और पितृभूमि समझता या समझती है। (२) सभी हिन्दू भाई बहन की तरह समान हैं और भारतमाता की सन्तानें हैं। कोई हिन्दू हरिजन नहीं है और कोई हिन्दू अछूत नहीं है। कोई हिन्दू नीच नहीं है। सब एक प्रकार से उच्च हैं।

(३) धर्म प्रत्येक हिन्दू का व्यक्तिगत मामला है। हिन्दू-धर्म की सभी शिक्षायें सभी प्रकार के पूजा के प्रकार हिन्दुओं, बौद्धों, जैनियों, सिखों, आर्यसमाजियों, ब्रह्मसमाजियों, राधास्वामियों आदि के लिये खुले हैं और अन्य सभी प्रकार के धार्मिक विश्वास और शिक्षायें, जिनकी उत्पत्ति और वृद्धि हिन्दू मस्तिष्क से है, हिन्दू-धर्म और हिन्दू-पूजा हैं।

(४) भोजन और विवाह में प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तिगत प्रश्न हैं। इन मामलों में जाति के प्रतिबन्ध मानने न मानने के लिये प्रत्येक हिन्दू स्वतन्त्र है। इनके मानने न मानने से कोई गुण या दोष नहीं है और न इससे कोई लाभ होता है और न कोई नुकसान ही है।

(५) सभी प्रकार के ज्ञान, सभी पेशे, सभी क्षेत्र, सभी प्रकार के मजदूरी के काम के लिये सभी हिन्दू समान रूप से अधिकारी हों। सभी प्रकार के श्रम, मजदूरी तथा नौकरी ज्ञान फौजी नौकरी कृषि व्यापार तथा उद्योग के समान ही उचित, उपयोगी और उच्च है। किसी भी क्षेत्र का चुनाव वैयक्तिक इच्छा तथा अवसर पर निर्भर करे न कि किसी व्यक्ति के जन्म पर।

(६) इस युग में प्रत्येक हिन्दू का यह अनिवार्य कर्तव्य है कि वह अपनी योग्यता तथा अवसर के अनुसार फौजी शिक्षा प्राप्त करे।

(७) इस युग में प्रत्येक हिन्दू का प्रथम कर्तव्य यह है कि वह मजबूत लोगों द्वारा दुर्बलों का होता हुआ शोषण रोके, पूँजी के द्वारा श्रम का शोषण रोके और एक जातिवर्ग के द्वारा दूसरी जाति या वर्ग का शोषण रोके। उसका यह भी कर्तव्य है कि किसी की वैयक्तिक योग्यता तथा अवसर के अनुसार किसी व्यक्ति की उन्नति होने दे और उसे सामाजिक न्याय प्राप्त हो।

उक्त विचारों से युक्त दो या इससे अधिक व्यक्ति प्रतिदिन एकत्रित होने के लिये एक सुविधाजनक स्थान निश्चित कर सकते हैं। अब वे इस स्थिति में आते जाते हैं कि वे कार्य-क्रम के प्रथम तीन अंगों को कार्य रूप में परिणत करें। वे तीन अंग ये हैं—प्रार्थना, कीर्त्तन तथा

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

सितारे धरती पर उतर आए

लेखक, श्री गोपीकृष्ण

पिछले शुक्रवार को मुझे ज्वर आ गया—'स्लो-फीवर'—
धीमा बुखार—तबीयत घबड़ाए—चैन किसी करवट नहीं—
नींद तो सबसे पहिले किनारा कसे—जी चाहे कि
किसी की गोद में सिर रख सो-लूँ, किन्तु 'किसी' के
लिए मुझसे बड़ी चीज मजबूर जिन्दगी।
खैर, बात एक कान से दो कान हुई—मुझे देखने
यह आये, वह आए, वह आए, कुछ विद्यार्थी भी
आए—कुछ ने अपनी सेवाएँ भी अर्पित कीं और
कुछ को सेवा करने का मौका भी मिला!
किंतु, आज चौथी शाम उजाले-अँधेरे के घर में
चिराग जलते ही, अपने दिल की चिनगारियाँ
कुरदते हुए, सहसा ही, सितारे मुझसे बोले—
बड़े भाग्यशाली हो तुम! एक हम हैं कि युग-
युगों से एक अज्ञात, तीव्र ज्वर से झुलसते—
कलपते चले आ रहे हैं, किंतु सेवा-शुश्रूषा की तो
बात ही क्या है, हमारी बात भी पूछने कभी कोई
नहीं आया—न इष्ट, न मित्र, न यह, न वह,
न ईश्वर, न शैतान!

मैंने उत्तर के कन्धों का सहारा लेते हुए आँखें
बन्द कर कहा—यह केवल इसलिये कि यह धरती
है और वह आकाश—यह केवल इसलिये कि धरती
धरती है और आकाश आकाश—कहने को कह
सकते हो कि हम जमीन पर रहते ह और तुम
आसमान पर किंतु हम धरतीवाले साथी—धरतीवालों
को बहुत प्यार करते हैं, बहुत—
समझे!

इस पर, मेरा वाक्य भी पूरा न हो पाया था कि,
इतने सारे-के-सारे सितारे धरती पर उतर आए
और मेरी आँखों के आगे नाचने लगे।
ऐसा मेरे जीवन में पहली बार हुआ—
मन करता है कि कहूँ—यह सम्भवतः
महामानव का भी ऐसा पहिला अनुभव होगा!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमाणु-शक्ति का राष्ट्रीयकरण

साम्राज्यवाद और साम्यवाद के बीच भयंकर युद्ध

लेखक, श्री श्यामसुन्दर राय बी० एस-सी०

अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से संसार के साम्राज्यवादी राष्ट्र अपने स्वार्थों की ओर लगे हुए हैं। अमरीकन साम्राज्य एटमबम के भय से संसार के राष्ट्रों पर अधिकार करना चाहता है। उधर रूस भी कम सतर्क नहीं है। वह भी एटमबम की स्थिति से अनभिज्ञ नहीं है। इस लेख में लेखक ने एटमबम की साम्राज्यवादी और समाजवादी दृष्टि से स्थिति को स्पष्ट किया है। लेख सुन्दर और सामयिक है।

वह दिन दूर नहीं जब परमाणु-शक्ति का उपयोग हमारे आराम के लिये होने लगेगा तब हमारी जरूरत की चीजें आसानी से मिल सकेंगी। २,६०० टन कोयले से जितनी शक्ति तैयार की जा सकती है वही एक ग्राम यूरेनियम से हमें प्राप्त हो सकेगी। हमारे मजदूर आठ घंटा काम कर आज अपनी रोटी पैदा करते हैं, उस समय हमें १ घंटा या इससे भी कम काम पर्य्याप्त होगा। एक ग्राम यूरेनियम एक ४,००० हार्स पावर इंजन को एक वर्ष तक लगातार चला सकता है। वह जीवन कितना आराम और शान्ति का होगा इसकी आज हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

कहा जा सकता है कि एक ग्राम यूरेनियम खरीदने में तना व्य व्यय होगा कि उसे खरीद कर उपयोग करना आसान काम न होगा। लेकिन उसके साथ ही साथ यह भी सवाल तो है न कि जैसे जैसे हमारे वैज्ञानिकों को समय, अवसर तथा तत्सम्बन्धी ज्ञान अवगत होते जायेंगे, एक दिन ऐसा भी आ सकता है--और निश्चय आवेगा--कि हम लोग साधारण धातुओं से ही परमाणु-शक्ति उपलब्ध कर लेंगे और तब यह बंधन भी टूटता रहेगा और आदमी के आराम की चीजों का आज के अनुपात में कोई मूल्य ही नहीं रह जायेगा। उसी दिन मानव-जाति आर्थिक गुलामी के बंधन को तोड़ेगी। न कोई किसी के शोषण का ख्याल ही कर सकता है, शोषण करना तो दूर रहा--और न तो किसी छोटे राष्ट्र को बड़े राष्ट्र का मुँह देखना होगा। थोड़े में यही हमारे परमाणु युग का छोटा सा नकशा है।

अब तक हिन्दुस्तान एक गुलाम देश रहा है और गरीबी के बोझ से लदा, ज्ञान से कोसों दूर। खबरों के सिवा हमारे ऊपर इस शक्ति का विशेष असर नहीं पड़ा है। हम लोग तो कभी कभी शान्ति भंग होने के डर से केवल घबड़ाते हैं, जब परमाणु-शक्ति के सवाल को लेकर राष्ट्रसंघ या सुरक्षा-समिति में बड़े राष्ट्रों का मल्ल-युद्ध होता सुनते हैं। हम समझते हैं, चूंकि दोनों देशों में कटुता है, इसीलिये यह झगड़ा होता है। लेकिन अगर हम केवल यही समझते हैं तो कुछ नहीं समझते। परमाणु-शक्ति का झगड़ा बुनियादी है। इस प्रश्न पर कभी मेल उसी प्रकार नही हो सकता जैसे दो नदियों के किनारे आज की परिस्थिति को देखकर यही सम्भावना मालूम होती है।

हिन्दुस्तान के विपरीत अमेरिका जैसे देशों में इस प्रश्न पर विशेष चर्चा चल रही है। वहाँ के अधिकांश धनी वर्ग इस बात को समझ चुके हैं कि परमाणु युग में साम्राज्यवाद और शोषण के लिए कोई स्थान न होगा। यह नकशा उन्हें घबराये दे रहा है। साम्यवाद का हौवा उनकी नींद हराम किये है और यही कारण है कि अमेरिका के धनी वर्ग आज इस बात पर तुले हैं कि चाहे किसी भी कीमत पर संसार से परमाणु-शक्ति की गुप्त बातें परदे के अन्दर छिपी रहें, वे नहीं चाहते कि परमाणुशक्ति का उपयोग दुनिया की भलाई के लिये हो। अभी हाल में ही पाठकों ने एक समाचार पढ़ा होगा, जिसमें परमाणु के विघटन के गुण के उपयोग से तैयार की हुई दवा, के आस्ट्रेलिया भेजे जाने के कारण अमेरिकी धनी मंडली में कितना रोष प्रकट किया गया था। अमेरिकन अखबारों का कहना था कि इस तरह अगर भविष्य में दवा के रूप में यूरेनियम से तैयार की गई दवायें बाहर भेजी गईं तो थोड़े ही दिन में परमाणु तोड़न-विधि छिपी न रह सकेगी। अतः इससे साफ जाहिर है कि उस देश के महाप्रभु दवा के रूप में भी परमाणु-शक्ति का फायदा दुनिया को उठाने देना नहीं चाहते।

परमाणु-शक्ति से चलनेवाली मशीनों के जन्मदाताओं को भी वैसी मशीन प्रचुर मात्रा में तैयार करने के लिये, अमेरिकन क़ानून के अनुसार, लाइसेन्स लेना पड़ेगा। उक्त क़ानून में यह भी कहा गया है कि उक्त व्यक्ति को यह अधिकार न होगा कि बिना लाइसेन्स लिये मशीनें तैयार करे और वह व्यक्ति दूसरों को वह मशीनें बनाने में रोक नहीं सकता। इसका अर्थ है आविष्कारों पर सरकारी अंकुश रुकावट।

सिनेटर वेन्डेनवर्ग का कहना है कि इन आविष्कारों से सारे अमेरिका पर प्रभाव पड़ सकता है। मान लिया कि किसी ने परमाणु उपयुक्त इंजिन तैयार कर लिया, वैसे परिस्थिति में सब रेलगाड़ियों के इंजिन बेकार हो जायेंगे और कोयले का कोई काम ही नहीं रह जायेगा।

राव भोरे नामक एक अमेरिकन लेखक ने "कौलियरस" नामक पत्रिका में यह राय देने का प्रयत्न किया था कि जब तक रूस से कोरिया, जर्मनी [illegible] आदि देशों के बारे में समझौता न हो जाय, परमाणु-शक्ति पर किसी प्रकार का समझौता करना मूर्खता है। यानी इसका अर्थ है अमेरिका परमाणु-शक्ति और बम का उपयोग राजनैतिक क्षेत्र में अपनी बात रूस के ऊपर लादने के लिये करे।

अब भी परमाणु बम का निर्माण बंद नहीं हुआ है। अमेरिका के व्यवसायियों के हाथ में इस बम का सारा कारबार है। इन्टरनेशनल रेडियम और यूरेनियम कनसौरटम नामक कंपनी पर कच्चा माल इकट्ठा करने का भार है। कच्ची धातुओं की सफाई का भार स्टिंग हाउस एलकट्रीक कम्पनी के हाथ में है और बम तैयार करने का पूर्ण अधिकार डुपौन्ड केमिकल ट्रस्ट को है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इन कम्पनियों के संचालक अमेरिका के चोटी के धनियों में से हैं और ये ही लोग इसकी देख-भाल करते हैं। इन्हें भला कब अच्छा लगेगा कि परमाणु-शक्ति से संसार फायदा उठाये और उनका रोजगार मारा जाये। संसार के कोने कोने में आर्थिक साम्राज्य का स्वप्न देखनेवाला यह वर्ग कैसे अपने ही हाथों अपने पैर में कुल्हाड़ी मारे। यह ख्याल कि इस अपार शक्तिशाली बम के निर्माण में अत्यधिक रुपयों की आवश्यकता है और वह बल केवल अमेरिका के ही पास है, उन्हें और निर्भीक बना दिया है। इँग्लैंड, कनाडा और अमेरिका में इस शक्ति पर पहले से ही संधि हो चुकी थी। उस समय रूस से पूछा तक भी नहीं गया था।

जहाँ यह बात है कि मानव को परमाणु-शक्ति से बनी दवाओं तक का भी [illegible] होने पाये, वहाँ पर बेशुमार व्य [illegible]कि के रूप में व्यवसायी रसा[illegible] शालाओं को दिये जा रहे हैं कि वे [illegible] खास क्षेत्र में खोज करें, जो सामा[illegible] महत्त्व तथा उपयोग रखता हो। [illegible] नूतन समाचार है कि इतने से भी [illegible] न कर अमेरिका के युद्ध महाप्रभुओं ने [illegible] अलग विभाग इसी ध्येय के लिये बना[illegible] है और उसके खर्च के लिये अतुल [illegible] उपलब्ध किया है।

इस तरह यह स्पष्ट है कि एक त[illegible] तो अमेरिका के थैलीशाह परमा[illegible] शक्ति से चलनेवाले कलों के क्रा[illegible] कारी प्रभाव से खौफ खा रहे [illegible] और सोच रहे हैं कि जब ऐसे [illegible] का बड़े [illegible]माने पर प्रयोग होने [illegible] तो उनके सब माल और [illegible] कारखानों के साथ ही साथ आर्थिक रा[illegible] का स्वप्न भी मिट्टी में मिल जाय[illegible] दूसरी ओर अमरिका के युद्ध विशेषज्ञ[illegible] शक्ति का उपयोग लड़ाई में करने [illegible] लालच में अपार धन खर्च कर रहे [illegible]

अमेरिका के सिनेटर मेकेलर [illegible] से प्रार्थना करने लगे हैं कि कहीं परमा[illegible] शक्ति के बारे में बड़े राष्ट्रों में [illegible] प्रकार का समझौता न हो जाय।

रूसी प्रतिनिधि का उत्तर देते [illegible] अमेरिकन सिनेटर लिपमैन महाशय [illegible] कहा कि रूस यह चाहता है कि अमेरिका [illegible] तो बेवकूफ बने या दुष्ट और नीच बन[illegible] स्वीकार करे। एक तरफ तो यह प्रश्न [illegible] कि अमेरिका परमाणु-बम की गुप्त [illegible] बताकर रूस की लाल सेना, जो [illegible] से ही किसी देश की सेना से कम[illegible] नहीं है, के बल को सर्वोपरि कर दे [illegible] अमेरिका दुनिया के सामने यह स्वी[illegible] करे कि वह पापी है और मक्कार है [illegible] दुनिया को अपने कब्जे में रखना चाह[illegible] है। इसमें शक नहीं कि उसने दू[illegible] रास्ता ही पसंद किया है जो वहां [illegible] धनी वर्ग के हित की बात है। वास्त[illegible] विकता यह है कि रूस की लाल सेना [illegible] डर भी अमेरिका को है जिसके का[illegible] वह परमाणु-बम की गुप्त बातों को [illegible] से कहना नहीं चाहता। शायद [illegible] शक्तियों से कड़ा मोर्चा लेने के का[illegible] अमेरिका को भय हो गया है।

अभी हाल में ही अमेरिका [illegible] पत्रों में यह प्रचार भी होने लगा [illegible] कि परमाणु-शक्तियों के आम इस्त[illegible] से मानवता का पतन होगा। अन्य बु[illegible] इयों के साथ ही साथ यह भी कहा [illegible] लगा है कि परमाणु-शक्ति के नि[illegible] सम्पर्क में आने से आदमी की संतान [illegible] करनेवाली शक्ति का नाश हो जा[illegible] विकिनी द्वीप में छोटे छोटे जानवरों [illegible] इस तरह का प्रयोग करके सिद्ध क[illegible] का प्रयास किया जा रहा है कि आद[illegible] पर भी इसी तरह के असर होंगे। [illegible] तरफ तो दवा के लिये इसका उप[illegible] रोका जा रहा है और दूसरी ओर [illegible] बुरे असरों के तिल का ताड़ बनाकर दु[illegible] को डराने की कोशिश की जा रही है। यहाँ यह भी लिख देना अनुचित न हो[illegible] कि अमेरिका के पत्रों की आवाज [illegible] के थैलीशाहों के विचार के सिवा [illegible] कुछ नहीं है; और उक्त प्रचार [illegible] वहाँ के धनी वर्ग का केवल प्रचार है।

सोवियट रूस से वैदेशिक सचिव एम० मोलोटोव संयुक्त राष्ट्र-संघ में अमरीका की डालर-नीति के विरुद्ध भाषण दे रहे हैं।

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अमरीका

सभी राष्ट्रों पर साम्राज्यवादी डालर का आक्रमण

लेखक, श्री मन्मथनाथ गुप्त

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक क्षेत्र में अमरीका इस समय अपनी प्रभुता स्थापित करने में संलग्न है, युद्ध-जर्जरित योरोपियन देशों को वह अपने डालर (पैसे) के बल पर खरीदने की चेष्टा कर रहा है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने अमरीका की वर्तमान साम्राज्यवादी नीति का उल्लेख किया है और यह बतलाया है कि समय परिवर्तित हो गया है और संसार के राष्ट्र राष्ट्रीयकरण का मार्ग अपना रहे हैं।

अमरीका के वैदेशिक मंत्री जार्ज मार्शल डालर बाँटने की योजना में व्यस्त हैं।

अभी अभी अमेरिका में विश्वराष्ट्रों की जो कान्फ्रेंस हो रही थी, केवल उसमें ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय हरएक मौके पर यह बिलकुल साफ झलक जाता है कि इस समय विश्व दो मुख्य शिविरों में बँटा हुआ है एक अमेरिका और दूसरा रूस। यह एक अजीब बात है कि जब तक जर्मनी से युद्ध होता रहा तब तक ये दोनों देश एक ही शिविर के अन्तर्गत समझे जाते थे।

पर क्या युद्धकाल में भी सचमुच इन दोनों देशों में सम्पूर्ण सहयोग था? नहीं, ऊपर को तो बहुत-सी बातें ज्ञात हुई हैं, परन्तु युद्धकाल में भी रायटर की खबरों से यह ज्ञात होता था कि भीतर भीतर कुछ और ही पक रहा है। तीन शक्तियों के जितने भी सम्मेलन युद्धकाल में हुए, उन सबमें चर्चिल और अमेरिका एक तरफ रहते थे, और रूस अकेला रहता था। इस संबंध में सबसे मार्के की बात यह है कि शक्ति का सामर्थ्य होते हुए भी ब्रिटिश तथा अमेरिकन सरकार ने योरोप में दूसरा मोर्चा खोलने से इनकार किया। अब इस सम्बन्ध में बहुत से लोगों की गुप्त-कथाएँ निकल चुकी हैं, और यह निश्चित रूप से ज्ञात हो चुका है कि इस समय में ब्रिटिश तथा अमेरिकन सरकार की नीति किस प्रकार रूस-विरोधी थी। बार बार रूस के नेता स्टालिन ने चर्चिल तथा रूजवेल्ट को यह अनुरोध किया कि वे दूसरा मोर्चा खोलें, पर इन लोगों ने अपनी शक्ति की अपराजेयता की दुहाई देकर यह कहा कि हम अभी इसकी तैयारी कर रहे हैं।

परिणाम यह हुआ कि रूस को ही जर्मन ताकत को परास्त करना पड़ा। रूस ने अपनी सारी ताकत लगाकर जर्मनों को अपने देश से निकाल दिया, और बड़ी तेजी के साथ जर्मन-अधिकृत देशों में घुस गया, यहाँ तक कि वह जर्मनी में घुस गया और अमेरिका तथा ब्रिटेन ने यह देखा कि जहाँ जहाँ भी रूस की सेना घुसती गई, वहाँ वहाँ समाजवाद का उत्थान ऊपर आते गये और पूँजीवाद का सर्वनाश होता गया, तब उन्होंने दूसरा मोर्चा खोल दिया और अमेरिका ने दूसरा मोर्चा खोला। जैसे गर्म छुरी मक्खन के अन्दर घुसती है, उसी प्रकार से इनकी सेनाएँ जर्मन-अधिकृत देशों में घुसती गईं।

अब जर्मनी की अपराजेयता कहाँ रही? असली बात तो यह थी कि अमेरिका, ब्रिटेन, रूस की दोस्ती महज एक अवसरवादी दोस्ती थी। अमेरिका और ब्रिटेन यह अवश्य चाहते थे कि नाजी ताकत समाप्त हो, पर साथ ही उनको समाजवादी रूस फूटी आँखों भी नहीं भाता था। वे चाहते थे कि हिटलर के परास्त होने के साथ साथ यदि रूस कमजोर हो जाय तो अच्छा है। वे कभी नहीं चाहते थे कि महायुद्ध के बाद रूस एक महाशक्ति के रूप में निकले।

ब्रिटेन के संबंध में हम सभी जानते हैं कि वह किस प्रकार साम्राज्यवादी रहा है। उसके संबंध में कुछ बताने की आवश्यकता नहीं है। रहा अमेरिका, उसके संबंध में बड़ी गलत-फहमियाँ हैं। अमेरिका ने खूब अपने मुँह से यह प्रचार-कार्य कर रक्खा है कि उसमें साम्राज्यवादी इच्छा बिलकुल नहीं है। वह अपने लेखकों तथा अखबारों के जरिये से इन्हीं बातों का प्रचार करता रहा। पर इस संबंध में सत्य क्या है, इसे जानने से ही अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति पर पूरा प्रकाश पड़ सकता है।

जिस समय अमेरिका पहले पहल एक राष्ट्र बना, उस समय उसका क्षेत्रफल ३,८६,००० वर्गमील था। पर यह बहुत जल्दी बढ़ा। उत्तर-पश्चिम का भू-भाग तथा ओहियो नदी का दक्खिनी भाग जल्दी ही अमेरिका में मिला लिया गया। सन् १८०३ में अमेरिका ने फ्रांस से ८,२७,९०० वर्गमील क्षेत्रफलवाला लुइसियाना प्रांत १,५०,००,००० डालर देकर खरीदा सन् १८१९ में इसने ५८,६०० वर्गमील क्षेत्रफलवाले फ्लोरिडा प्रांत को पचास लाख डालर से खरीदा। फिर १८४५ में ३,८९,००० वर्गमील क्षेत्रफलवाला प्रांत टेक्सास अमेरिका में मिला लिया गया। सन् १८४६ में ओरिगन प्रांत मिला लिये जाने से २,८६,००० वर्गमील बढ़ा। सन् १८४८ में मेक्सिको से लड़ाई कर उसे हरा कर ५,२९,००० वर्गमील का क्षेत्र याने आजकल का उटाह, अरिजोना, नवमेक्सिको, कैलिफोर्निया मिला। इसके लिए नाममात्र मूल्य डेढ़ करोड़ डालर दिया गया। सन् १८५३ में मेक्सिको से फिर ३०,००० वर्गमील एक करोड़ डालर देकर ऐंठा गया। अभी अभी अमेरिका ने दो देश और हड़पे हैं, और अब अमेरिका में १३ से शुरू कर ५० प्रान्त हो गये।

सन् १७७६ से सन् १८५३ तक संयुक्तराष्ट्र अमेरिका का क्षेत्रफल आठगुना बढ़ा। १८५३ के बाद भी १८६७ में रूस से अलास्का ७२,००,००० डालर देकर खरीदा गया। स्पेन से युद्ध के फलस्वरूप फिलिपाइन्स और कुछ छोटे से टापू ले लिये गये। यह कहा जाता है कि एक स्पेन से युद्ध के अलावा अमेरिका ने जितने भी प्रान्त लिए वे शान्तिपूर्वक लिए गये। पर सन् १९०३ में अमेरिका का जो ऐतिहासिक रजिस्टर प्रकाशित हुआ था उससे प्रमाणित करते हुए एक रूसी लेखक ने दिखलाया है कि सन् १७७५ से रूस ने ११४ लड़ाइयाँ कीं, इन लड़ाइयों में ८,६०० खंड-युद्ध हुए। अवश्य इन युद्धों में अमेरिका के गृहयुद्ध भी गिने गये हैं, पर इन भूभागों को प्राप्त करने में उसने स्पेन और मेक्सिको से युद्ध किये।

जनरल डिगाल फ्रांस के प्रमुख राजनीतिज्ञ और अमरीका के कठपुतले।

अमेरिका के गोरों ने किस प्रकार वहाँ के आदिम निवासियों को खतम किया, इसकी कहानी लुप्त कर दी गई है। कुछ उपन्यासों तथा इस प्रकार की पुस्तकों में आदिम निवासियों के साथ लड़ाई का जो वर्णन पेश किया जाता है, उसमें यही दिखाया जाता है मानो आदिम निवासी ही दोषी थे। वे राक्षस और दस्यु करके चित्रित किये गये हैं। इसमें सन्देह नहीं कि वे असभ्य थे, पर यह तो एक बहाना है। दुनिया में जो सभ्य काली तथा भूरी जातियाँ थीं, उन्हीं के साथ गोरी जातियों ने कौन-सा सलूक किया? फिर असभ्यता का कारण इतना जबरदस्त थोड़े ही है कि इस कारण उन्हें तलवार के घाट उतार दिया जाय।

इसके बाद अमेरिका का राष्ट्र जितना बड़ा है, उसके अपराधों की गाथाएँ उससे कहीं बड़ी हैं। अमेरिका में बहुत विशाल भूमि थी, पर आदमी कम थे।

अमरीका के प्रेसिडेंट ट्रूमन जो इस समय डालर बाँट रहे हैं।

गोरों को बड़े बड़े प्रलोभन देकर अमेरिका लाया जाता था, पर इनसे उतने विशाल भू-भाग का काम नहीं बनता था। इसलिए अफ्रिका से हब्शियों को जहाजों में भर-भरकर लाया जाता था। गोरों के जहाज अफ्रिका के किसी उपकूल से जाकर लगते थे। फिर उसमें से सैकड़ों गोरे उतर पड़ते थे और गाँवों पर हमला कर जिनको भी जीता पाते, उनको पकड़ कर जहाज में भरकर ले आते थे। इन लोगों को आकर गोरों का गुलाम बनना पड़ता था। इनके साथ पशुवत् व्यवहार किया जाता था। इस प्रकार से अमेरिका में उस समस्या की उत्पत्ति हुई, जिसे हब्शी-समस्या कहते हैं। अब गुलामी की प्रथा तो उठ गई, पर इस प्रकार जो हब्शी अमेरिका में बस गये, वे अब भी सब तरह के नागरिक अधिकारों से वंचित हैं। उन्हें जिन क्षेत्रों में वोट का अधिकार भी है, उन क्षेत्रों में भी कोई नागरिक अधिकार प्राप्त नहीं है, क्योंकि यदि वे उन अधिकारों को प्रयोग में लाते हैं, तो उन पर अत्याचार किया जाता है।

अमेरिकन सभ्यता ने विश्व के शब्द-भंडार में एक शब्द दिया है—लिंचिंग। लिंचिंग शब्द का यह अर्थ है कि जब हब्शी किसी कारण से कब्जे में नहीं आते, तो उन्हें किसी न किसी बहाने से, अकसर गोरी स्त्री पर आँख उठाकर देखने के बहाने से उनको पकड़कर जिन्दा जला दिया जाता है। सारा अमेरिकन सभ्य साहित्य इस पर चुपचाप है। पुलिस खड़ी खड़ी देखती है, उसके सामने ही हब्शी इस प्रकार जला दिये जाते हैं। यह न समझा जाय कि यह कोई मध्ययुग की कहानी है। हर साल अभी तक कुछ न कुछ लिंचिंग के मामले होते रहते हैं।

अब हब्शी अधिवासी बहुत शिक्षित हो गये हैं। उनमें अच्छे से अच्छे लेखक, बाक्सर आदि पैदा हुए हैं। गाने के क्षेत्र में तो उनमें बड़े प्रतिभाशाली लोग पैदा हुए हैं। फिर भी एक हब्शी बहुत निम्न कोटि का समझा जाता है।

अब हम संक्षेप में इस बात को भी देखें कि अमेरिका ने किस प्रकार डालर साम्राज्यवाद का प्रचार किया। पहले अमेरिका एक कृषि-प्रधान देश था। पर बहुत तेजी के साथ यह एक औद्योगिक देश में परिणत हो गया। सन् १८९० में ही यह औद्योगिक उत्पादन में ब्रिटेन

शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

पृष्ठ १६ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी शरणार्थियों की रक्षा करना एक कर्त्तव्य

आज के भारतीय मातृत्व पर एक महान् संकट आया है!

लेखक, श्री प्रेम कपूर कंचन

आज नगरों में जिन्हें शरणार्थी कहते हैं, उनके हृदय से पूछिए उनकी क्या दुर्दशा है? उनके मुख पर विषाद की कितनी रेखायें अंकित हैं।

वहाँ से आये हुए शरणार्थियों में कौन हैं? अधिकांश मध्यम श्रेणी के लोग और उसके बाद धनिक छोटी जातिवाले वहाँ से भागे अवश्य। पर उनमें से बहुत लूट गये, बहुत तितर-बितरकर इधर-उधर बस गये। धनिक, जिनके करोड़ों की सम्पत्ति थी, जिनके यहाँ लाखों का व्यापार होता था, उन सबको खुला छोड़कर वे बेतहासा भागे हैं और उनमें नारियों की संख्या कम है। उनके यहाँ की नारी-बालाएँ जो हर प्रहर ऐश्वर्य और सुख के संसार में निवास करती थीं आज वहीं पथ-पथ की ठोकरें खा रही हैं। कितना दुःख है उन्हें?

नारी रूप की खान और विश्व का केन्द्र कही जाती है। उसके सौन्दर्य का रहस्य क्या है? इस समय साम्प्रदायिकता में दो वस्तुओं की माँग है। "धर्म परिवर्तन" और "सम्पत्ति का लूटना।" जंगलियों की भाँति हर एक के घर में घुस जाना, वहाँ पहले पुरुष की हत्या करना, तत्पश्चात् नारी के साथ घोर अन्याय। भारत में साध्वी नारियों का निवास रहा है। उनमें कौशिल्या, शकुन्तला और सीता मुख्य हैं। उन्हीं से उत्पन्न राम, भरत और लवकुश हैं, जिन्होंने पृथ्वी का भार हलका किया। उन्हीं नारियों की यह दुर्दशा हम अपनी आँखों से देख रहे हैं। हमारे मुख पर पट्टी बँधी है।

वहाँ क्या है? कितने लोगों से आप मिले हैं? जिनसे भी आप मिले होंगे, हर एक के हृदय में एक नए एक कहानी छिपी है। उनकी आँखों में अब आँसू नहीं रहे। प्रश्न पूछने से उनके हृदय में आह के साथ अग्नि की ज्वाला निकलती है। नारियों का कोमल हृदय अब वीरान हो चुका है।

मैंने जिन शरणार्थियों से प्रश्न किया, उन्होंने एक से एक हृदयग्राही घटना का उल्लेख किया है। सब का मूल यही था, कहीं पर उनके पति की हत्याएँ हुईहैं, कितनों के पुत्रों का पता नहीं कितने बिना माँ-बाप के हो रही हैं। उनके भागने का ढंग भी निराला है। वहाँ कोई एक दूसरे को पहचानता नहीं। साथ का आदमी हिन्दू है यह जान लेना काफी है। सबको अपना प्राण प्यारा होता है, जो जिसका साथ पा लेता है भागा चला आता है।

ऐसे कठिन समय में नारी क्या करेगी? पुरुष जान लेकर भाग रहे हैं या मृत्यु के घाट उतर रहे हैं। नारियों को बचाने का उनके पास समय नहीं। नवयुवतियों की माँग सूनी करके, उनकी चूड़ियाँ तोड़कर उन्हें बलात्कार के लिए बाध्य किया जाता है।

ऐसी अवस्था में नारी आत्म-समर्पण करती है। वहाँ ना नहीं कर पाती इसलिए कितनी घटनाएँ ऐसी हुई हैं जिनमें पुरुष ने विरोधियों से रक्षा के लिए लड़ने से प्रथम अपनी माँ, बेटी और स्त्रियों को स्वयं अपने हाथ से मृत्यु के घाट उतार दिया और फिर जी खोलकर लड़े उनका डर—कि उनके बाद उनकी आबरू न लुटेगी—जाता रहा। वे आनन्द से मृत्यु की गोद में सो गये।

नारी शरणार्थियों को यात्रा में कितना कष्ट होता है इसका अनुमान नहीं किया जा सकता? जो पैदल चले हैं उनके रास्ते में जितने भी कुएँ पड़े हैं सबमें लाशें पाई गई हैं और उनमें से अधिकांश लाशें नारियों की हैं। सतीत्व की रक्षा के लिए मृत्यु से खेल जाना साध्वी स्त्री के लिए कोई बड़ी बात नहीं? उनमें से जो बच-खुचकर भारत आ गई हैं उनकी दशा पर और कुठारा घात हो रहा है। अगर किसी के साथ 'गोदी' वाला पुत्र है तो उसे पानी नहीं मिला है। उसने अपने पुत्र की प्यास अपने थूक से बुझाई है, जिसका वर्णन एक नारी शरणार्थी के मुँह से सुनकर रोएँ काँप उठे।

शरणार्थी-खेमों में ढेर के ढेर लोग पड़े हैं उनमें स्त्रियाँ भी हैं। इस समय ताकतवालों का हाथ बड़ा है। जिन नारियों के साथ उनके पति नहीं हैं, उनकी बड़ी दुर्दशा है। हर क्षण उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

भगवान् को और भी धन्यवाद है कि भारत में यह झगड़ा उस तरफ हो रहा है जहाँ के निवासी सभ्यता में बहुत आगे जा चुके हैं क्योंकि वहाँ न तो पर्दा-प्रथा है और न छुआछूत का प्रश्न। नहीं तो अगर यह प्रश्न और प्रथा प्रचलित होती तो सरकार के लिए यह और भी

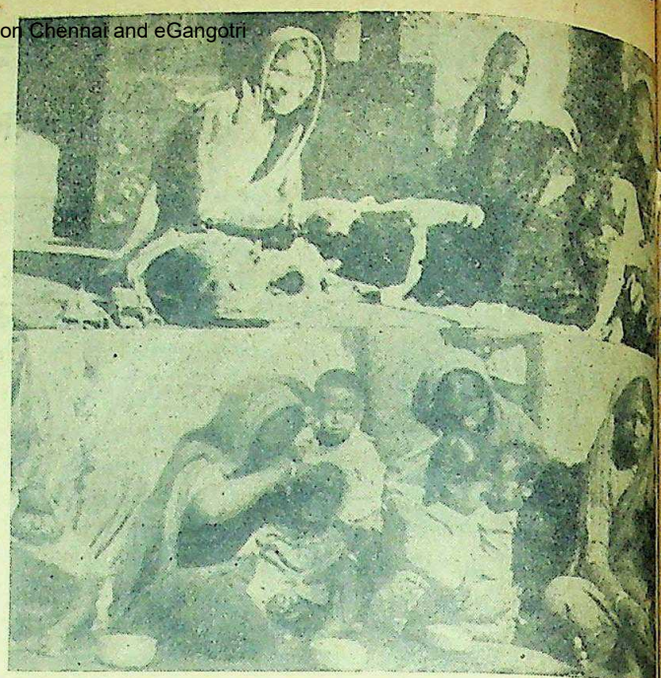

पंजाब से आई हुई शरणार्थी स्त्रियाँ अपने बाल-बच्चों में बैठी हुई दिखाई दे रही हैं

जटिल समस्या हो जाती, क्योंकि न तो खाने का प्रबन्ध हो सकता था और न रहने का।

नारी शरणार्थियों के हृदय में जितने भी घाव हैं या जो शरणार्थियों के रूप में अपने हृदय के आवरण में घाव छिपाये हैं वह किसी भी दशा में पूरे नहीं हो सकते इससे दुर्दशा और भी बढ़ती जा रही है, कामुकता एवं अत्याचार का बाजार गर्म हो उठा है और शीघ्र ही हम इन्हीं शरणार्थियों में से कितनों को व्यवसाय करते हुए प्रकोष्ठ में पायेंगे, क्योंकि पेट की ज्वाला को शान्त करने का 'अबला' नारियों के पास और कोई दूसरा उपाय नहीं? समाज उन्हें नहीं स्वीकार करेगा और भारत में वे दूसरा काम नहीं कर सकतीं। भूखों मरने से यहीं रहकर धर्म-परिवर्तन करेंगी या समाज के मुँह पर थूकने के लिए प्रकोष्ठ को जन्म देंगी, यह सब पाप का मार्ग उन नारी शरणार्थियों के लिए निर्धारित हो रहा है। इनमें से कितनी माँ बनने योग्य हैं?

इन मुसीबतों के बाद दैनिक कठिनाइयाँ आ रही हैं। उनमें से मुख्यतम खाने-पीने का प्रबन्ध है। एक ओर घर गृहस्थी-त्याग कर नारियाँ भागी हैं और दूसरी ओर गृहस्थी बसाने का विचार उन्हें खाये जा रहा है। स्थान की बहुत कमी है फिर सबसे बड़ी कठिन समस्या रहन-सहन और भाषा की है। आदमी तो अपना काम किसी प्रकार रो-गाकर चला ले जाते हैं पर खतरा तो उन बेचारी स्त्रियों की है जो भाषा अलग होने के कारण, बड़ी कठिनाई में पड़ जाती है। ठीक इसी प्रकार कपड़ा उनके अनुसार नहीं मिल रहा है। पर तो इकलाई की धोतियाँ हैं जिन्हें पहनने में उन्हें बड़ी असुविधा होती है। हर भारतवासी उनकी कठिनाइयों को हटाने की चेष्टा कर रहा है और उन्हें हमदर्दी रखता है।

नारी भारत में सदैव से पूजी गई हैं और आज भी हम उसके प्रत्येक सात्विक रूप को नमस्कार करते हैं। नारी की दुर्दशा, गृहलक्ष्मी की दुर्दशा है। हर भारतवासियों का यह प्रथम कर्तव्य है कि वे नारी को नारी के रूप में देखने का प्रयास करें, नहीं तो नारी की आह से उनका सर्वनाश हो जायगा। इस समय "महिला-संघ" की आवश्यकता है जो अपना काम पूरा कर सकती है और नारी शरणार्थियों की रक्षा उन्हीं पर निर्भर हो। हम आशा करते हैं कि हर व्यक्ति का इसमें सहयोग होगा। हमें आशा है कि 'भारतीय-महिला-संघ' इस ओर अवश्य ध्यान देगा।

प्रतिवर्ष शरद्-पूर्णिमा में यह बूटी आश्रम से दी जाती है

(श्री चित्रकूट पर्वत की दमानाशक बूटी)

श्री महात्मा १०८ एस० पी० दासजी की तैयार की हुई अनुभवसिद्ध जड़ी केवल एक ही खुराक आश्विन सुदी शरद्-पूर्णिमा ता० २६-१०-४७ की रात्रि को सेवन करने से पुराना से पुराना श्वास (दमा) सदैव के लिए नष्ट हो जाता है।

मैनेजर—श्री चित्रकूट दमानाशक आयुर्वेदिक सिद्धसेवा आश्रम पो० चित्रकूट (बाँदा) यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दहशत

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

भीषण साम्प्रदायिक दङ्गों के फलस्वरूप मानवता पर वज्रपात हो गया है। लाखों शरणार्थी धन-जन-विहीन तथा बे-घरबार हो गये हैं। साधारण जीवनयापन करनेवाले समाज पर आफत का पहाड़ टूट पड़ा है। इस कहानी में इसी सामयिक वातावरण का चित्रण किया गया है, जो पठनीय तथा हृदय पर प्रभाव डालनेवाला है।

'जी, चन्दन! अरे, ओ—'

'जी, सरकार!————,

'देखो चन्दन, हम बाहर जा रहे खबरदार रहना—समझे!'

सहमे स्वर से चन्दन ने कह दिया—'अच्छा, सरकार!'

मोटर स्टार्ट हुई और बाबू जी अपने बच्चों सहित चले गये। बँगले के सहन में खड़ा हुआ चन्दन—बाग का माली—सोचने लगा, हाय! हाय! ये बाबू—मेरे मालिक!' वह बोला—'एक बार भी नहीं कहा—'अरे, चन्दन! तू भी है—तेरे बच्चे! शहर में झगड़ा है। चल, मेरे साथ!'—चन्दन ने कहा—'स्वार्थी कहीं के! इन्हें अपनी ही फिक्र है—अपने ही बीबी-बच्चों की!'

उस बँगले पर एक धीमी-सी नजर डालकर वह चन्दन हाथ में लाठी पकड़े बँगले से बाहर निकल गया। वह अपने घर गया और एक टूटी-सी चारपाई पर बैठकर इस प्रकार हाथ की कोहनियों पर ठोढ़ी रखकर सोचने लगा कि जैसे, वह जो कुछ सोचना और कहना चाहता था, वह उसके मस्तिष्क में नहीं आ—उसे नहीं सूझ रहा था। वह चिन्तित था। अपने आप में ही डूबा जा रहा था, चन्दन! उसी समय, उसकी पत्नी रामप्यारी गोद में लड़की लिये हुए उसके पास आई और चन्दन की अवस्था पर बिना ध्यान दिये बोली—'देखो जी, यह दुलारी लाड़ली नहीं मानती। रोटी बनाती हूँ, तो आटा नहीं सानने देती। रोटी हूँ तो हँसती है—चुड़ैल! और हूँ—उसने तब चन्दन को लक्ष करके कहा—'क्या सोच रहे हो, तुम; तुम!'

यह सुनकर चन्दन ने रामप्यारी की ओर देखा। मुँह से उसने कुछ नहीं कहा, केवल अपनी रुखी आँखों को उसकी आँखों के द्वार पर टिका दिया।

शंकित स्वर में रामप्यारी ने पूछा—'कुछ हुआ क्या?'

चन्दन ने फिर अपनी आँखों को आसमान पर टिकाकर कहा—'होना क्या, कुछ नहीं!'

'उदास भी हो।'

चन्दन ने फिर आसमान की ओर देखकर कह दिया—'हाँ, उदास तो हूँ रामप्यारी! बल्कि चिन्तित!'

'क्यों,—क्यों?'

चन्दन ने उसकी ओर मुँह करके कहा—'आज मालिक—बाबू गये।'

'पर्दे, मालिक बाबू! कब?'

'अभी—अभी!'

'हे राम!' रामप्यारी ने कहा—'मैं तो मैं गई थी। मालकिन ने तो कुछ नहीं कहा।'

'हाँ, तुमसे नहीं कहा, रामप्यारी! उन को हीं सोचा होगा।'—वह बोला—'उनका क्या, रुपया है, मोटर है, क्षण में करें और क्षण में रख जायें।'

'तो————तो?'

चन्दन ने कहा—'शहर में झगड़ा है। वह इधर भी बढ़ रहा है। हाँ, तुमसे कुछ नहीं कहा, मालकिन ने?'

'कहा, खबरदार रहना। बँगला—'

'भाड़ में जाये, बँगला! वे और उनकी इज्जत!'—एकाएक क्षुण्ण बनकर रामप्यारी ने कहा—'उन्हें अपनी ही फिक्र है अपने ही प्राणों की चाह है, उनको। लिए कोई नहीं,—कुछ नहीं हम;—ओह!

चन्दन उठा और बोला—'सामान बाँध लो, हमें भी चलना है।'

पीछे से रामप्यारी ने पूछा—'कहाँ?'

जाते हुए चन्दन ने कहा—'कहीं भी।'

* * *

घर से दूर एक काफिले के साथ चलते हुए, रास्ते में रामप्यारी ने कहा 'सुनते हो, अब नहीं चला जाता।'

चन्दन ने यह सुना और रामप्यारी के हाथों में जो थोड़ा-सा सामान था, उसे भी अपने कन्धे पर रखता हुआ बोला—'कुछ और चलो। चलती चलो, रामप्यारी! यहाँ मत टिको। यहाँ मत रुको।'

बात सुनकर रामप्यारी ने सिर झुका लिया फिर उसने मुँह से कुछ नहीं कहा।

किन्तु चन्दन और रामप्यारी में अन्तर तो था ही। उसकी गोद में बच्चा था और पेट में; नवाँ मास लग रहा था। चलते-चलते पैर तो थके ही, साथ ही, प्यास के कारण मुँह भी सूख रहा था। चन्दन उसकी अवस्था को समझ रहा था लेकिन जिस विपत्ति से वह डर रहा था, उसी को सिर पर आई देख, वह धैर्य और साहस से भी काम लेने की चेष्टा कर रहा था। साथियों के साथ चलना भी उसके लिए आवश्यक था। वह रुक जायगा, तो साथियों से छूट जायगा। अकेला रह जायगा—उस बियाबान जंगल में! निदान, वह बार-बार रामप्यारी को धीरज बँधा रहा था। उससे अनेक प्रकार की बात कर रहा था।

उसी प्रसंग में उसने कहा—'रामप्यारी, यह एक बड़ा संकट आया है। हिन्दू मर रहे हैं, गाजर-मूली की तरह कट रहे हैं।'

यह सुनकर रामप्यारी ने साँस भरी और छोड़ दी।

चन्दन बोला—'पैसेवाले निर्धन और भिखारी बन रहे हैं।' 'तो वह जाति की मदद क्यों नहीं करते?'

एकाएक चन्दन ने इस का जवाब नहीं दिया। कदाचित् उससे नहीं कहा गया।

रामप्यारी ने कहा—'हमारे बाबू को ही देखो न, विपत्ति आई तो अकेले भाग गये—कायर कहीं के! कल कहती थी, रामू की माँ, मालीबाड़े के लाला धनपत से वहाँ के कुछ लोगों ने कहा कि पैसा दो तो लड़ने का सामान मँगायें। पर—धनपत थोड़े ही देनेवाले थे एक पैसा—नहीं दिया। बस, मुसलमान आये, लाला को मार गये, घर जला गये और धन लूट-कर ले गये।'

'हाँ, सब जगह ऐसा ही हो रहा है, रामप्यारी!'

उसी समय रामप्यारी एक पत्थर से टकराई, गिरी और चीख मारकर रह गई। चन्दन जब उसकी ओर झुका, तो पाया रामप्यारी दम तोड़ रही थी। कमजोर तो वह थी ही, थक भी गई थी, इसलिए गिरन के साथ पत्थर की नोक उसके पेट में लगी और वह पाँच ही मिनट में चन्दन और अपनी लाड़ली बिटिया की छोड़ उस विषम जीवन से छूट गई थी।

* * *

'दाल चाहिए—रोटी!'

शरणार्थी कैम्प में शरणार्थियों को भोजन कराया जा रहा था। चन्दन भी एक पंक्ति में बैठा था। हट्टा-कट्टा चन्दन सूख चला था। अपनी बिटिया को गोद में लिये वह उसे भी खिला रहा था और खुद भी खा रहा था। दो-तीन हजार शरणार्थियों के बीच में बसकर, वह चन्दन, भले ही, अपनी पत्नी और अपनी अवस्था की याद न करता हो, परन्तु उस बड़े परिवार में भी वह संसार की जितनी छल-कपट भरी बातें देख सका, उनको लक्ष कर, निश्चय ही, उस भोले और निरक्षर चन्दन के मन में दिन-दिन कोलाहल बढ़ता जा रहा था। विपत्ति के दलदल में फँसे हुए उस मानव-समूह में वह देखता कि वहाँ भी ईर्ष्या है, द्वेष है, छल है और दम्भ है। प्रत्येक एक दूसरे को ठगने, अपना ही पेट भरने की चिन्ता कर रहा है।

यह देख चन्दन सोचता, हाय! हाय! यह आज भी जंगली हैं...आज भी कायर और हीन! निदान, उसका मन मरने के लिए करता। वह अपने को अकेला पाता। वह जिस समाज में था, जिस आदमी की योनि से उसका जीवन बँधा था, अनुभव करता कि वह आदमी नहीं...इन्सान नहीं....

लेकिन, इन्सान तो वह था। इन्सानियत की दया भी पा रहा था। विपत्ति में उसे रोटी मिल रही थी, जगह भी मिल रही थी। इसलिए वह कृतज्ञ था। ईश्वर और उसकी सत्ता को भी स्वीकार कर रहा था। चन्दन चिन्तित था। अपना मार्ग रुँधा हुआ पाता था। भविष्य अज्ञात। बिटिया गोद में थी, इसलिए वह मरने की बात भी नहीं सोचता था।

अपनी इसी अवस्था में, जब एक दिन वह रात में पड़ा सो रहा था, तो बाहर शोर सुन वह उठकर बैठ गया। देखा, कुछ और लोग भी जगे, इकट्ठे हुए और एक वृद्धा जो सोती हुई उठकर बैठ गई, उसे समझने में लग गये। किन्तु वृद्धा जैसे डर रही थी। वह काँप रही थी। वह प्रत्येक व्यक्ति को घूर घूरकर देख रही थी और कह रही थी—'अरे तुम,—तुम! हाँ, मुझे मार दो, इन्हें नहीं,—नहीं—'एक व्यक्ति ने कहा—'अम्मा, बात भी कुछ!'

तब, कुछ सोच वह वृद्धा शान्त बन गई। वह सिर झुकाकर बैठ गई। उसके पास खड़े हुए एक व्यक्ति ने कहा—'भाई जी, पाँच पुत्र थे इसके, वे मार दिये गये। सभी कुछ नष्ट हो गया, इसका!'

इतना सुन, वह दूर खड़ा हुआ चन्दन जैसे छाती पर घूँसा सा खा तड़प गया। वह अपनी जगह जाकर बैठ गया और देखने लगा कि वह वृद्धा मुँह से कुछ नहीं कह रही थी। वह अब हाथ पर मुँह रख हुए फूट-फूटकर रो रही थी। मौत वह भी चाहती थी, लेकिन वह जीवित थी, मर नहीं रही थी।

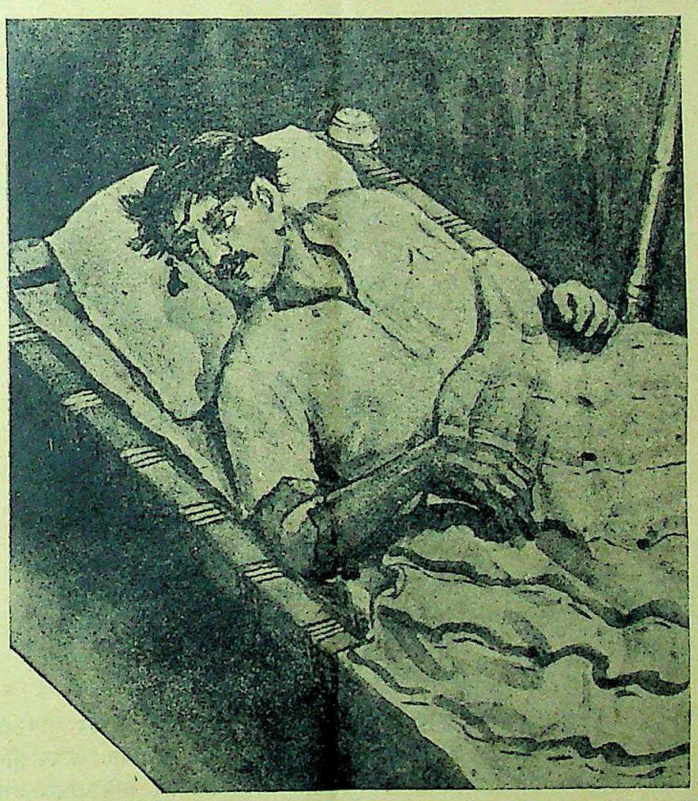

साम्प्रदायिक कलह से पीड़ित मध्यम श्रेणी का एक कामकाजी।

फैंसी सिल्क-साड़ी
आकर्षक डिजाइन
नं० ७ ८ ९ ५ गज
१८) २३) २८)
२) आर्डर के साथ पेशगी
बाकी वी० पी० से
थोक व्यापारियों को खास सुभीता
भारत इन्डस्ट्रीज, जुही
नं० ६ कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दशदूत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय कृषि-समस्या का सुधार

औद्योगीकरण की योजना के हल का एक ही मार्ग

लेखक, श्री नरेन्द्रनाथसिंह

हिन्दुस्तान स्वतंत्र हो गया, इसलिये अब आवश्यक है कि राष्ट्र को सम्पत्तिशाली बनाने के लिये खेती की समस्या को हल किया जाये। प्रांतीय सरकारें प्रांतों में औद्योगीकरण की योजनाओं को कार्यान्वित करने जा रही हैं, किन्तु उसकी सफलता भी कृषि-उन्नति पर विशेष निर्भर है। इस लेख में इसी सम्बन्ध में सुन्दर प्रकाश डाला गया है।

भारत ऐसे कृषि-प्रधान देश में बराबर अकाल पड़ना, अन्न की कमी होना, उत्तरोत्तर दरिद्रता का बढ़ना, ब्रिटिश शासन के लिए एक लज्जा और कलंक की बात रही है। आज जब प्रान्तों तथा केन्द्र में जनप्रिय सरकारें स्थापित हैं तो इस समस्या की ओर सर्वप्रथम उनका ध्यान आकर्षित होना आवश्यक है।

आज जब प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभाओं ने जमींदारी-प्रथा के नाश के प्रस्तावों को स्वीकार करना शुरू किया है तो जमींदार-वर्ग में अपने स्वार्थ की रक्षा के लिए एक महान् उथल-पुथल दिखाई दे रही है। किसान-समस्या इस देश के लिए एक नवीन वस्तु नहीं है। हर राज्य में यह समस्या किसी न किसी रूप में रही है और उसे हल किया गया है। भारत अपवाद नहीं रह सकता है और उसे भी अविलम्ब इस समस्या को हल करना है।

भारतीय कृषक आज संसार में सबसे दुखी, दरिद्र तथा अशिक्षित प्राणी है। उसकी औसत आय संसार के सभ्य देशों के मुकाबले सबसे कम है। दादाभाई नौरोजी के अनुसार यह आय २०) वार्षिक थी। अर्ल क्रोमर ने १८८२ ई० में २७) का अन्दाज लगाया था। उसके बाद डिग्बी ने प्रत्येक भारतीय की औसत आय १७) कूती थी। उसने यह भी बताया था कि 'इस आमदनी को यदि बराबर बराबर बाँट दिया जाय तो अच्छी तरह गुजर नहीं हो सकता। इससे तो पश्चिमी देशों की बड़ी पशुशालाओं के पशुओं का भी काम नहीं चल सकता।' सन् १९०२ में लार्ड कर्जन ने भारतीय कृषक की औसत आय २०) वार्षिक बताया था और १९२८ ई० में केन्द्रीय कर्ज-जाँच कमीशन ने इसे ४२।=) के लगभग बताया था जब कि अन्य सभ्य देशों के कृषकों की औसत आय इसके दस गुना से अधिक थी।

विदेशी सरकार ने हमारी कृषि की उन्नति की ओर ध्यान न दिया। युद्ध-काल से पहले भारत में प्रतिएकड़ की औसत आय २५) थी जब कि यही उपज जापान में १२५) के लगभग हुआ करती थी। अपनी दरिद्रता के कारण भारतीय कृषक का स्वास्थ्य भी सभी सभ्य देशों से अवनत दशा में है। बालकों की मृत्यु-संख्या भारत में प्रतिसहस्र १६२ है। इँगलैंड में यह संख्या ५८ और अमेरिका में ५४ है। औसत भारतीय जीवन २७ वर्ष समझा जाता है। प्रत्येक जापानी का औसत जीवन ४३ वर्ष, अमेरिकन का ६० वर्ष और अँगरेज का ६३ वर्ष है।

उपरोक्त आँकड़े भारतीय कृषक की दरिद्रता तथा अस्वस्थता प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त हैं। दरिद्रता के कारण वह कृषि की उन्नति भी स्वयं नहीं कर सकता। भूमि पर उसका स्वामित्व न होने तथा बेदखली का सदा भय बना रहने के कारण भूमि से उसका वह घना संबंध स्थापित नहीं हो सका जो होना चाहिए और जो विश्व के अन्य सभ्य देशों में वर्तमान है। लगान के रूप में उसे अपनी आय का चौथाई भाग दूसरों को दे देना पड़ता है जो किसी भी दूसरे देश में कल्पना से परे है। इनकम-टैक्स आय पर लगता है। किसी भी पेशे के छोटी आयवाले व्यक्ति कर से मुक्त हैं। कृषि में भी इस सिद्धान्त का प्रयोग उचित तथा न्याय-संगत है। पर विपरीत इसके भारत में प्रत्येक कृषक से, कितनी ही कम उसकी आय क्यों न हो, कर लिया जाता है। सोवियत-संघ की चर्चा यदि छोड़ भी दी जाय, बहुतेरे योरोपीय देशों में कृषकों को लगान के नाम पर राज्य को कानी कौड़ी भी नहीं देनी पड़ती। अन्य व्यवसायों की भाँति कृषि भी तो एक व्यवसाय ही है। आय के अनुसार इस पर टैक्स लगना चाहिए।

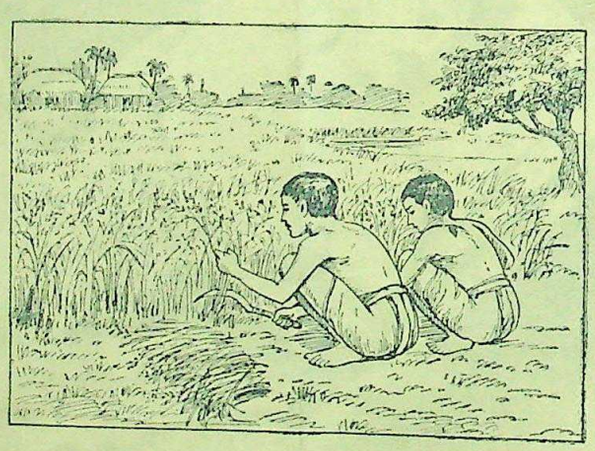

खेत की कटाई किसान कर रहे हैं।

भूमि पर पूर्ण अधिकार कृषि-उन्नति का मूल तत्त्व है। अभी पंत जी ने 'जमींदारी विघटन समिति' के समक्ष अपने भाषण में कहा कि 'किसानों की वर्तमान उदासीनता दूर करने के लिए उन्हें वर्तमान व्यवस्था के चंगुल से मुक्त करना आवश्यक है।' विश्व में नवयुग के आगमन को कोई शक्ति रोक नहीं सकती। सामन्तशाही युग का अन्त सभी जगह हो चुका है। सभी योरोपीय देशों में भूमि पर कृषकों का स्वामित्व मान लिया गया है। उनकी सम्पन्नता का यही प्रधान कारण है।

भारतवर्ष में कृषक-परिवार का यदि कोई बालक कुछ शिक्षा प्राप्त कर ले तो खेती करना उसके लिए असम्भव हो जाता है। यहाँ तो पढ़ने का अर्थ ही मानो खेती से अलग होना है। १०), २०) की नौकरी करना ही उनका ध्येय हो जाता है। कारण स्पष्ट है। आर्थिक दृष्टि से कृषि में यहाँ कोई आकर्षण नहीं रह गया है। सामाजिक दृष्टि से इसे छोटा काम समझा जाता है।

छोटे-छोटे खेतों का होना भी भारतीय कृषक की दरिद्रता तथा उदासीनता का एक कारण है। उत्तराधिकार के कानून के कारण खेत इतने विभाजित हो गये ह कि न तो उनमें मशीन का उपयोग तथा कोई खर्चीला प्रयोग हो सकता है और न तो उनसे कृषक-परिवार का भरण-पोषण हो सकता है। कृषि के वही औजार प्रयोग में लाये जा रहे हैं जो सदियों पहले से प्रयोग किये जाते रहे हैं। आज इस युग में, जब बढ़ती हुई आबादी एक विकट समस्या का रूप धारण करने जा रही है और जब भूमि की उर्वरा-शक्ति कम हो गई है, पुराने तरीके से खेती करने से अन्न की कमी और दुर्भिक्ष का प्रश्न कैसे हल हो सकता है? उत्तराधिकार के कानून में ऐसा परिवर्तन अत्यन्त आवश्यक है जिससे खेत अब और विभाजित न हो सकें। उसके बाद खेतों के एकत्रीकरण की व्यवस्था शीघ्रातिशीघ्र होनी चाहिए और सामूहिक कृषि का प्रयोग व्यापक रूप से होना चाहिए।

कृषि की उन्नति के लिए इस युग का सबसे सफल तथा क्रान्तिकारी प्रयोग सोवियट रूस में हुआ है। वहाँ सामूहिक कृ व्यापक रूप से आरम्भ हुई। पहले पहल सबसे छोटे-छोटे कृषक इसमें शामिल हुए। राज्य की ओर से मशीन और ट्रैक्टर स्टेशन खोले गये और सामूहिक कृषकों को विशेष सुविधाएँ दी गईं। उपज स्वभावतः अधिक होने लगी और धीरे-धीरे अधिकाधिक लोग शामिल होने लगे। १९४५ ई० तक एक लेखक के अनुसार ९४ प्रतिशत कृषक-परिवार सामूहिक कृषि करने लग गये थे। सामूहिक कृषकों की आय १९३३ ई० से १९३७ ई० तक चार वर्षों में १५ गुना अधिक हो चुकी थी।

रूस में सैकड़ों कृषि की प्रयोग-शालाएँ स्थापित हैं और उपज बढ़ाने तथा प्रत्येक मौसम में फसल तैयार करने के सफल प्रयोग हो रहे हैं। कृषकों के सहायतार्थ पशु-उन्नति में भी आश्चर्य-जनक तथा सफल प्रयोग किये गये हैं। सूई द्वारा एक साँड़ से हजारों गायों को बच्चे पैदा किये गये हैं जब कि साँड़ और गाय हजारों मील की दूरी थे और एक दूसरे से कभी नहीं मिले १९३८ ई० में १५३६ गायें इस द्वारा गर्भवती की गई थीं जिनसे बाछे पैदा हुए। अब तो यह अत्यन्त व्यापक रूप से प्रचलित है।

आज समय है जब हम संसार अन्य सभ्य देशों के अनुभवों से लाभ भारत की कृषि-समस्या को हल के लिए प्रभावकारी तथा लम्बा उठाना आवश्यक है। यह प्रश्न देश सभी समस्याओं में सर्वप्रथम रखता है। इसे पेवन्द लगाकर करने का प्रयत्न उचित न होगा। देर पहले हीं हो चुकी है। इस को बढ़ाना अक्षम्य होगा।

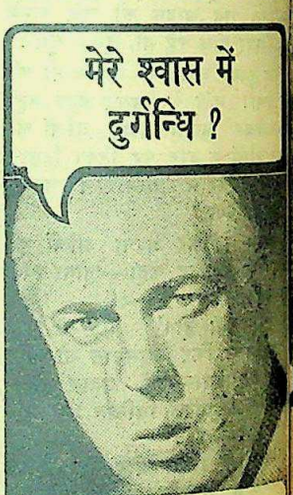

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'देशदूत' की सामयिक चित्रावली

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

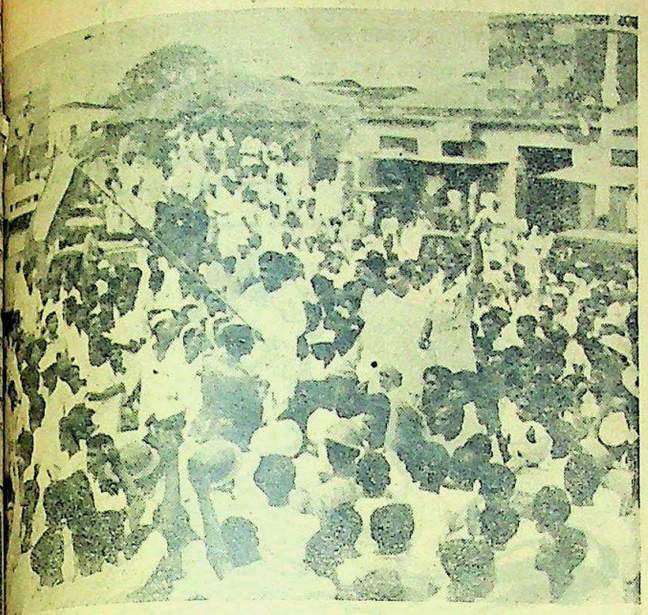

'हिन्दू-मुस्लिम एक हों' का नारा लगाते हुए एक विशाल जनसमूह, जिसका नेतृत्व जनरल शाहनवाज कर रहे हैं।

महात्मा गांधी साधारण मजदूरों के बीच में, जो आजकल के साम्प्रदायिक दंगों से विशेष हानि उठा रहे हैं।

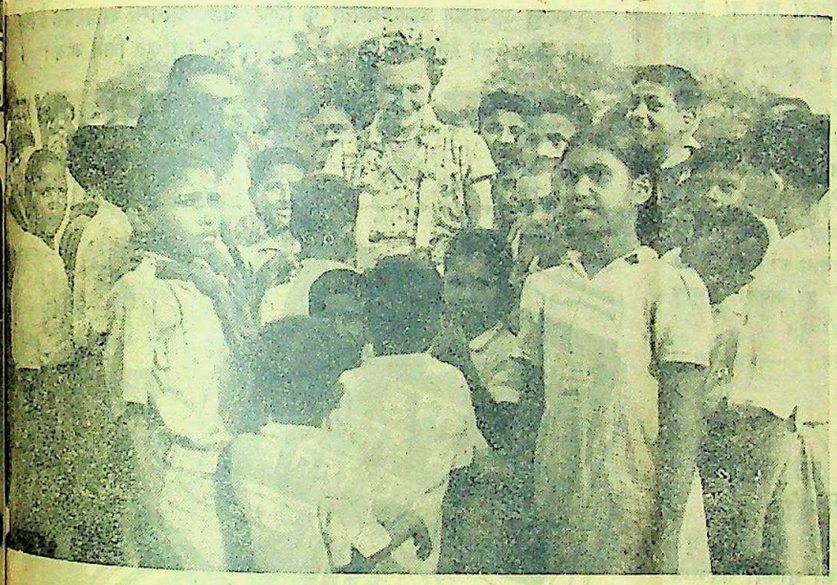

बच्चों के भवन दिल्ली में लेडी माउंट बेटेन लड़के और लड़कियों के बीच में प्रसन्नतापूर्वक उनसे बातें कर रही हैं।

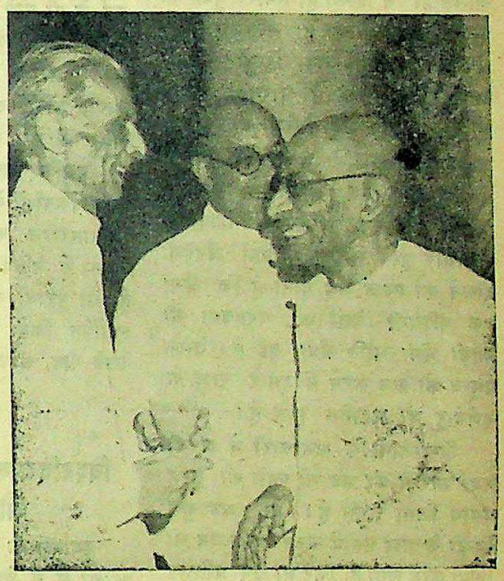

कायदे आजम मिस्टर मोहम्मद अली जिन्ना, चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य और श्री लियाकत अली खाँ प्रसन्नता के एक अवसर पर।

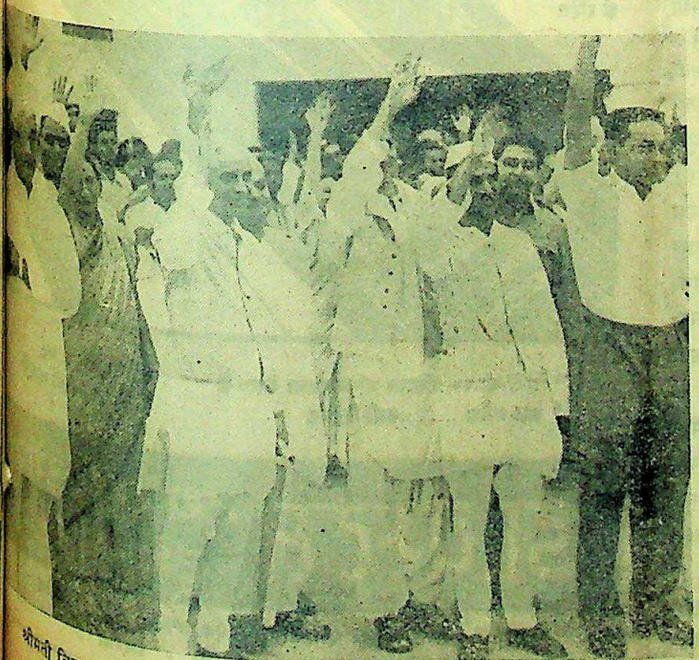

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित को, मास्को रवाना होने के अवसर पर हवाई अड्डे पर कांग्रेस के कई प्रमुख नेता विदाई दे रहे हैं।

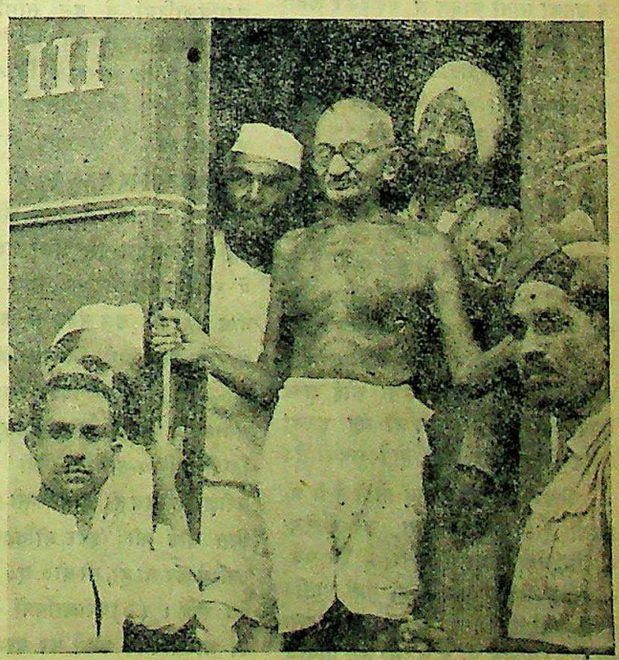

भारत में शांति-स्थापना के देवदूत महात्मा गांधी, कलकत्ता से दिल्ली पहुंचने पर स्टेशन पर यह चित्र लिया गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

क्या यही राष्ट्रीय रेडियो है ?

भारत के दो खण्ड होने के साथ ही रेडियो-स्टेशन भी विभाजित हो गये। अब केवल दो स्टेशन ही ऐसे रह गये हैं जिनमें हिन्दुस्तानी के नाम पर उर्दू बोली जाती है। बम्बई रेडियो पर भी उर्दू हिन्दुस्तानी का कुछ अंशों में प्रयोग होता है। अन्य स्टेशनों पर प्रान्तीय भाषाएँ बोली जाती हैं। वह कभी विचार भी नहीं करते कि हमको हिन्दुस्तानी नामवाली उर्दू भी बोलनी है।

रेडियो-स्टेशनों पर स्वतंत्रता-दिवस के कुछ पहले से टूटी-फूटी हिन्दी के शब्द बोलने का प्रयास किया जाने लगा है। कभी कभी 'नमस्कार' या 'जय हिन्द' भी बोल दिया जाता है।

आल इंडिया रेडियो के प्रधान केन्द्र दिल्ली को ही लीजिए। सुबह रेडियो खोलते ही "ये दिल्ली है, हमारा सुबह का प्रोग्राम शुरू होता है, लीजिए पहले अँगरेजी उसके बाद हिन्दुस्तानी में खबरें सुनिए" यह है भारतीय रेडियो की राष्ट्रीयता। उर्दू अँगरेजी की खिचड़ी का एक वाक्य—बोलने के बाद अँगरेजी में समाचार होते हैं। अखिल भारतीय रेडियो पर जहाँ प्रारम्भ में हिन्दी में समाचार होने चाहिए थे वहाँ अँगरेजी बोलने का स्पष्ट अर्थ होता है कि अभी तक पश्चिमी देशों की परतंत्रता की पगड़ी भली भाँति बँधी हुई है। उसके प्रभुत्व को कम करने में हमारे राष्ट्र के कर्णधार भी भयभीत होते हैं।

हिन्दुस्तानी के समाचारों में अरबी तथा फारसी का अब भी पहले की तरह प्रयोग किया जाता है। हाँ, अब कुछ हिन्दी के शब्द प्रयोग करने का प्रयत्न भी किया जाने लगा है, फिर भी ७५ प्रतिशत से अधिक उच्चारण पूर्णरूपेण अशुद्ध होते हैं। समाचार होते समय ऐसा ज्ञात होता है कि जो सज्जन समाचार पढ़ते हैं उनको मानो काबुल से पकड़कर लाया गया है। इसके अतिरिक्त पुस्तकों की समालोचना, विवाद, नाटक, चल-चित्रों की समालोचना आदि विषय भी अधिकतर उर्दू में ही होते हैं।

जो भाषाएँ बर्मा, मलाया तथा सुदूर-पूर्वी एशियावालों के लिए सुबह ११।। बजे शाम को ४ बजे तथा सैनिक भाइयों के लिए २। बजे और ७ बजे होती हैं वे पहले की ही भाँति 'आदाबर्ज' से प्रारम्भ होकर 'खुदा हाफिज' पर समाप्त होती हैं। उनमें अब भी शत-प्रतिशत उर्दू बोली जाती है। यदि कभी कोई शब्द हिन्दी का आ भी गया तो वह इतना अशुद्ध कि सुनकर घृणा होने लगती है।

स्त्रियों की जो सभाएँ होती हैं वे भी इतनी ही कठिन तथा उर्दू-अँगरेजी की मिश्रित भाषा में होती हैं कि सर्व-साधारण स्त्रियाँ समझ ही नहीं पातीं। कभी कभी तो जिनकी भाषा उर्दू है तथा जो कुछ शिक्षित भी हैं वे भी उस प्रोग्राम को नहीं समझ पातीं। रेडियो-विभाग में कलाकार भी अभी तक आधे से अधिक मुसलमान तथा उर्दूवाले ही भरे हैं। वे हिन्दी को भला क्यों चाहने लगे? इसके लिए आप 'सारंग' या अन्य रेडियो पत्र देख सकते हैं।

लखनऊ रेडियो-स्टेशन के लिए कुछ कहते हुए कितना आश्चर्य तथा घृणा होती है। जिस प्रान्त में ९९ प्रतिशत जनता हिन्दी बोलती है वहाँ भी यदि उर्दू रहे तो इससे अधिक और क्या अन्याय हो सकता है? यहाँ पर जितने कलाकार या एलाउन्सर हैं या समय समय पर बुलाये जाते हैं वे सभी एक दूसरे से अधिक उर्दू तथा अँगरेजी बोलने का प्रयत्न करते हैं। उर्दू बोलनेवालों की संख्या तथा मुसलमानों की संख्या ९० प्रतिशत से कम नहीं जब कि अनुपात के हिसाब से १४ प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए। स्त्रियों तथा बच्चों के प्रोग्राम उर्दू के ही होते हैं हिन्दी का भी होता है किन्तु केवल नाममात्र के लिए। हिन्दी का उच्चारण अशुद्ध होता है। बड़ी आपा, छोटी आपा, भाईजान, फुफी, खालू की धूम मची रहती है।

इसलिए जरूरत है, रेडियो-विभाग के कार्यकर्ताओं के ओवर हालिंग की और पक्षपातरहित कार्यवाही होने की? देखना है रेडियो-विभाग का सुधार होता है, या पुरानी गंदगी ही अपना प्रभुत्व स्थापित किये रहती है।

रेलवे रोड, फर्रुखाबाद —राजेन्द्रनाथ गौड़

* * *

विश्वविद्यालय की परीक्षायें और हिन्दी

स्वावलम्बी क्षात्रों को बी० ए० परीक्षा में न बैठने की सुविधा वर्तमान शिक्षा-पद्धति का एक दोष और उनके लिए तो मानो एक अभिशाप ही है। प्रश्न उठता है कि शिक्षा-विभाग के उच्च पदाधिकारियों ने इस सामयिक माँग की सर्वथा अवहेलना क्यों की है? आश्चर्य है कि भारत के विश्वविद्यालयों की निर्धारित नियमावलियों की किन्हीं भी धाराओं के अन्तर्गत, कथित क्षात्रों को (केवल शायद एम० ए० को छोड़कर) किसी भी परीक्षा में बैठने की गुंजाइश नहीं। शिक्षा के इस अभ्युदयशील काल में राष्ट्रीय सरकार के लिए यह शोभनीय नहीं है। इस संबंध में केन्द्रीय सरकार के विचारार्थ, निम्नलिखित सुझाव है:—(१) पंजाब-विश्वविद्यालय के समान, वे समस्त क्षात्र जिन्होंने प्रयाग हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की "मध्यमा" परीक्षा के साथ ही साथ किसी भी सम्मानित बोर्ड की "इंटर मीडियट" परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो, तो बी० ए० परीक्षा में बैठ सकें। (२) परीक्षार्थियों के शिक्षक या लायब्रेरियन बनने का बन्धन, अनिवार्य अब न रहे।

हमें आशा है, हमारे भारतीय शिक्षा-मंत्री श्री मौलाना आजाद इस विषय में अपनी वैयक्तिक सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए अपना क्रियात्मक सहयोग देकर इस माँग को सफल बनायेंगे।

जबलपुर —रघुनन्दन शुक्ल "विशारद"

मुफ्त मुफ्त मुफ्त
घर बैठे मामूली पढ़े-लिखे भी [illegible] मेंट रजिस्टर्ड इन्स्टीट्यूट का डाक्टरी डिप्लोमा प्राप्त कर सकते हैं नियम मुफ्त। पता—
इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अ[illegible]

बीत हुए बहुतायत के दिनों में तो उड़ाऊ व्यक्ति को क्षमा योग्य समझा जा सकता था।
परन्तु आजकल अल्पव्ययता के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमाम और ५०१ साबुन के छोटे छोटे टुकड़े भी सुरक्षित किये जायें।
हमाम और ५०१ साबुन
दी टाटा आइल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

• दांतों को ६० प्रतिशत अधिक स्वच्छ करता है • शीशे में बंद
• झल-अभेद्य.....नमी-विद्वेषक • वर्षभर की गारंटी
डा. वेस्ट्स टूथ ब्रश और टूथ पेस्ट
व्यापारिक पूछताछ के लिये: एल. डी. सेमूर एंड कम्पनी (इंडिया) लिमिटेड
बम्बई • कलकत्ता • कराची • मदरास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंगमंच

स्वर्गवासिनी दमयन्ती सहानी कौन थीं ?

फिल्मी जीवन के अभिनय और कार्यों का लेखा-जोखा

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

फिल्म-जगत् के प्रमुख कलाकार संसार से उठते जा रहे हैं। अभिनय-की सम्राज्ञी श्रीमती राजकुमारी स्वर-सम्राट् सहगल तथा कुशल नसीम जूनियर के निधन के सुनने भी न पाये थे कि भारतीय व्यवसाय पर चतुर्थ वज्रपात हुआ। छायालोक की सुप्रसिद्ध श्रीमती दमयन्ती सहानी ने अपने पुत्र, परीक्षित तथा पुत्री, शबनम श्रीयुत बलराज सहानी को रोता-छोड़कर, सोमवार २१ अप्रैल रात्रि में प्राण त्याग दिया।

श्री दमयन्ती सहानी का जन्म भारत के 'पेरिस', "लाहौर" में हुआ आपके पिता एक धनी एवं सज्जन थे। अपनी पुत्री की इच्छा तथा आज्ञा की पूर्ति के लिए आपके पिता ने श्रीमती सहानी को उच्च की शिक्षा प्राप्त कराने के लिए के गवर्नमेंट कालेज में नाम लिखाया परीक्षाओं में सफलता प्राप्त के पश्चात् श्रीमती दमयन्ती ने के विश्व-विद्यालय से बी० ए० की प्राप्त की। तत्पश्चात् आपने के शिक्षालय में अध्यापिका में कार्य किया। पति-परायण को सम्पूर्ण जगत् जानता था दमयन्ती सम्पूर्ण जगत् को थी; परन्तु न 'दमयन्ती' विश्व थी और न विश्व 'दमयन्ती' परमेश्वर की असीम आपको 'वर्धा एजूकेशन स्कीम', 'निकेतन' तथा 'सेवाग्राम' आदि में करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। तथा यौवन अनन्त काल से युवक-की भेंट कराते आये हैं। दमयन्ती के जीवन में भी उन्होंने किया। ईश्वर ने हिन्दी-साहित्यिक सुविख्यात कहानीकार श्री बल-सहानी को वरदान-स्वरूप, पति के श्रीमती सहानी के जीवन में भेजा। सोहागा मिलते ही वह चमक उठा माननीय बलराज सहानी के आपने जनता में 'आदरणीय' प्राप्त किया।

श्रीमती सहानी को जनता के सम्मुख विचार प्रकट करने की हार्दिक थी; परन्तु अभाग्यवश आपको के सम्मुख अपने स्वतन्त्र अंकित करने के बजाय रेडियो विचार अपनी मृदु वाणी करने का अवसर प्राप्त हुआ। दमयन्ती ने अपने पति के साथ, 'रेडियो-स्टेशन' बी० बी० सी० 'ब्राडकास्टिंग' का कार्य किया।

कुछ कारणवश, समस्त ललित-कलाओं का संयोग तथा बीसवीं सदी की सबसे शक्तिशाली कला, रजत-पट ने श्रीमती तथा श्रीयुत जी को अपनी ओर अत्यधिक आकर्षित किया।

भारतीय रजतपट पर अपनी कलाओं का प्रदर्शन करने के लिए ये दो विभूतियाँ भारत लौटीं। सौभाग्यवश जननाट्य-संघ के व्यवस्थापक पति-पत्नी की योग्यताओं तथा उत्सुकताओं को लक्ष्य में रखते हुए उन्हें स्थान दिया। बम्बई के जन-नाट्य-संघ के प्रसिद्ध नाटक 'जुबेदा' में पति से अधिक पत्नी के सुन्दर एवं आकर्षक अभिनय-प्रदर्शन ने दर्शकों को श्रीमती सहानी का अधिक आत्म-सम्मान करने के लिए बाध्य किया।

आपको अपने समाज तथा देश के प्रति अत्यन्त श्रद्धा थी। तत्पश्चात् श्रीमती सहानी ने देश तथा समाज को एकता संदेश सुनानेवाली सुप्रसिद्ध फिल्म-कम्पनी, पृथ्वी थियेटर्सकृत 'दीवार' में एक पाश्चात्य रमणी की कल्पना में अभिनय अभिभूत किया है। प्रस्तुत चित्र की आशातीत सफलता ने आपको लोकप्रियता की चरम सीमा पर सुशोभित किया। इसके अतिरिक्त आपको, राष्ट्रीय गीतों से विशेष चि थी। विशेष कर इसगीत से :—

तुम कल्पना करो नवीन कल्पना करो
. . .कल्पना करो।
तुम कल्पना करो निरी न कल्पना करो।
तुम.....करो॥

पिस गईं समाज की तमाम नीतियाँ,
मिट गईं मनुष्य की अतीत रीतियाँ;
दे रहीं चुनौतियाँ तुम्हें कुरीतियाँ,
निज राष्ट्र के शरीर के श्रृङ्गार के लिये।
तुम कामना करो किशोर कामना करो॥
....कल्पना करो।

जंजीर टूटती न कभी अश्रु-धार से,
दुख-दर्द भागता न कभी हाँ दुलार से;
हटती न दासता पुकार के मुहार से,
इस गंग-तीर बै कर राष्ट्र शान्ति की।
तुम साधना करो अनन्त साधना करो॥
.....कल्पना करो।

तुम प्रार्थना किये चले, नहीं दशा हिली,
तुम साधना किये चले नही दिशा टली;
इस आर्त दीन देश की न दुर्दशा हिली,
अब अश्रुदान छोड़ आज शीश दान से।
तुम अर्चना करो, अमोघ अर्चना करो॥
.....कल्पना करो।

आकाश है स्वतन्त्र, है स्वतन्त्र मेखला,
यह शृंग भी स्वतन्त्र, है खड़ा बना ठला,
है जल-प्रपात काटता सदैव शृंखला,
आनन्द शोक जन्म और मृत्यु के लिए
तुम योजना करो स्वतन्त्र योजना करो॥
.....कल्पना करो।

'संगम' में प्रसिद्ध फिल्म-डाइरेक्टर विनायक का अभिनय। डाइरेक्टर विनायक का गत मास स्वर्गवास हो गया है।

तुम कल्पना करो नवीन कल्पना करो।
.....कल्पना करो।
तुम कल्पना करो निरी न कल्पना करो..।
कल्पना करो.....कल्पना करो॥

श्रीमती दमयन्ती सहानी भारतीय फिल्म-उद्योग की एक सुसंस्कृत एवं साहित्यिक कलाकार थीं। आपको अपनी उत्कृष्ट नैतिकता पर गर्व था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आप स्नेही, उदार-हृदयी तथा मृदुभाषी थीं। जिनका प्रमाण उनकी कृतियों में दृष्टिगोचर होता है। ऐसी अभिनेत्री फिल्म-क्षेत्र में दीप लेकर ढूँढ़ने से भी सम्भवतः ही मिलेगी। वर्तमान अवस्था में तो इस क्षेत्र में भारतीय नारियों के निर्मल-विमल चरित्र से खिलवाड़ किया जाता है। इसके अतिरिक्त श्रीमती सहानी का चरित्र पवित्र तथा सांस्कृतिक संस्कार है।

सहानी अभिनय-कला की साक्षात् प्रतीक थीं। आपके चेहरे की भावुकता ने आपके अभिनय में और चार चाँद लगा दिये थे। इंडियन प्यूपिल्स थियेटर्सकृत 'धरती के लाल' में आपने विनोदिनी की भूमिका में मार्मिकता एवं भावुकता का परिचय दिया है। राधिका के पुत्र का गला घोटने जाने के समय आपका अभिनय देखने योग्य है। तत्पश्चात् आपने दुर्गा पिक्चर्सकृत 'दूर चले' में सर्वश्रेष्ठ अभिनय का प्रदर्शन किया है। 'दूर चले' में कार्य करने के पश्चात् श्रीमती सहानी ने 'रैन बसेरा' एवं 'गुड़िया' में अपने सर्वोत्कृट अभिनय-कला का प्रदर्शन किया। मृत्यु से पूर्व आप सनरिच पिक्चर्सकृत 'एक कदम' में अभिनय कर रही थीं। कुछ समय तक आप बीमार रहीं। डाक्टरों की नेक सलाह से आप अपने पति के साथ, अपना स्वास्थ्य सुधारने के लिए काश्मीर जाने के प्रयत्न में थीं कि काल ने ऐसा पाँसा फेंका, जो अमानुषता का अट्टहास कर बैठा और २१ अप्रैल, १९४७ ई० को काल ने 'हार्फेल' का रूप धारण कर सोमवार की रात्रि, श्रीमती सहानी, को मृत्यु की गाढ़ी नींद सुला दिया।

खेद है कि वह 'एक कदम' अधूरा रह गया। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि 'एक कदम' के निर्देशक-निर्माता, श्रीमती दमयन्ती सहानी की मृतात्मा को चिर शान्ति प्रदान करने के लिए किसी सुसंस्कृति एवं अनुपम फोटोग्राफर की कला द्वारा उस चित्र को अवश्य पूर्ण करेंगे।

देशान्वेषण की सरल कथाएँ

नए-नए देशों का पता लगाने में संसार के कर्मवीर यात्रियों ने कैसी कैसी कठिनाइयाँ झेली हैं, उनका खासा वर्णन इस सचित्र पुस्तक में पढ़िए। मूल्य ॥।-)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

बोर्न-विटा' का केल्सेयम और को मजबूत और मांस को कडक गहरी और मीठी नींद लाता और

स्वास्थ्य में चमकते हुये बालों के लिये

केडबरी

"सुरैया"
मुना प्राडक्शन्स कृत
"दो-दिल"

कोम... गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड ... रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।
वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

सभी दूकानों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अमेरिका

(पेज ७ का शेष)

से आगे जा चुका था। सन् १८७० में स्टेन्डर्ड आयल कम्पनी की स्थापना हुई और इस समय तो इस क्षेत्र में अमेरिका सबसे आगे है। तेल के क्षेत्र से शुरू कर प्रत्येक क्षेत्र में अमेरिका का एकाधिकार स्थापित होने लगा। अमेरिका ने यह देखा कि जितने भी भू-भाग हैं, उन पर दूसरों का कब्जा हो चुका है, इसलिए उसने अपने साम्राज्यवाद को एक अन्य दिशा याने आर्थिक दिशा दे दी।

इस क्षेत्र में अमेरिका बहुत तेजी से उन्नति करता गया। अब तो अमेरिका ने डालर को दुनिया का आर्थिक माध्यम करके स्थापित कर लिया है। सभी देशों को अब आपसी लेन-देन डालर के माध्यम से करना पड़ता है। जो भी देश चाहता है कि दूसरे देशों के साथ आर्थिक लेन-देन करे, उसे डालर के भंडार में अपना धन जमा रखना पड़ता है।

प्रथम साम्राज्यवादी महायुद्ध के दौरान में अमेरिका सामने आया, इसके पहले वह अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में पड़ना नहीं चाहता था। अवज्ञा यह केवल ढोंग था, इसका प्रमाण सुप्रसिद्ध मानरोडाक्ट्रिन है जिसके अनुसार अमेरिका ने एक तरह से दूसरे देशों को यह कह रक्खा था कि अमेरिकावाले गोलार्द्ध में कोई दूसरा देश अपना पैर न फैलावे और इन देशों में पैर फैलाना केवल अमेरिका का ही क्षेत्र है। कहना न होगा कि यह एक अत्यन्त साम्राज्यवादी नीति थी।

वस्तुस्थिति भी यह है कि अमेरिका महाद्वीप के सारे देशों में संयुक्तराष्ट्र अमेरिका ने अपना प्रभाव फैला रक्खा है और वह दिन दूर नहीं है कि जब दक्षिण और उत्तर अमेरिका के सारे देश खुल्लम-खुल्ला अमेरिकन साम्राज्य में नजर आयंगे यों तो वे संयुक्तराष्ट्र के आर्थिक दायरे में पहले ही आ चुके हैं और इसी जरिये से संयुक्तराष्ट्र उनकी सरकारों पर काफी नियन्त्रण रखता है। यह जो रोज सुनने में आता है कि दक्षिण अमेरिका के किसी देश में क्रान्ति होती ही रहती है, सो यह सब अमेरिकन पूंजी की महिमा है। ज्यों ही इन देशों की कोई सरकार कुछ स्वतंत्रता दिखाती है त्यों ही उसके विरुद्ध क्रान्ति कर दी जाती है। क्रान्ति की योजना प्लाट आदि सब अमेरिका में बन कर तैयार होते हैं और यह सारा काम किसी अन्य उद्देश्य से नहीं, किसी सिद्धान्त की पूर्ति के लिए नहीं, बल्कि अमेरिकन पूंजीवाद के विस्तार के लिए होता है।

हवाई द्वीपपुंज दुनिया के सबसे उपजाऊ तथा सुन्दर भू-भागों में समझे जाते हैं। इस भू-भाग पर कैसे कब्जा किया गया, इसकी कहानी बड़ी रोचक है। किसी तरह हवाई में १८९३ की जनवरी में एक क्रान्ति करा दी गई। बोरटन नामक एक युद्ध-जहाज की सेना फौरन देश में उतर आई। जिन लोगों ने यह विद्रोह किया था उनकी संख्या बहुत थोड़ी थी, और वे फौरन मार कर भगा दिये जाते, पर अमेरिकन सेना की उपस्थिति के कारण वे विजयी हो गये। फौरन वहां का राजा निकाल दिया गया और एक नई सरकार बना दी गई। एक घंटे के अन्दर अमेरिका की सरकार ने हवाई की इस नई सरकार को मान लिया।

पनामा, हंडुरास, हाइटी, सान-डोमिंगो, निकरागुआ आदि सभी छोटे देशों के साथ अमेरिका ने यही तरीका इस्तेमाल किया। अमेरिका में कुछ लोग ऐसे मौजूद थे जो यह समझते थे कि अमेरिका की ओर से जो कुछ उदार बातें कही जाती हैं, वे सब सही हैं। इन लोगों ने १८९३ में इसका विरोध किया पर उनकी कौन सुनता था। स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रथम युग में अमेरिका के राजनीतिज्ञों में जो उदारता थी वह इस समय तक नष्ट हो चुकी थी। अब तो साफ साफ पूंजीवादी आत्मविस्तार का युग आ चुका था।

स्पेन के साथ संयुक्तराष्ट्र अमेरिका का जो युद्ध हुआ, उसमें उसका रहा-सहा आदर्शवाद भी खतम हो गया और इसके बाद से अमेरिका की आम जनता का मन भी पूंजीवादी प्रचार-कार्य से इतना जहरीला हो गया कि अब लोग खुल्लम-खुल्ला साम्राज्यवाद का समर्थन करने लगे। स्पेन नहीं चाहता था कि युद्ध हो, वह अमेरिका की सरकार की सब शर्तें मानने के लिए तैयार था, फिर भी अमेरिका युद्ध पर उतर आया, क्योंकि उसका उद्देश्य सब कुछ हड़पना था न कि समझौता करना।

यहीं से ब्रिटिश और अमेरिकन साम्राज्यवाद का गठबन्धन शुरू होता है। ब्रिटेन ने इस अवसर पर जब कि स्पेन के साथ युद्ध बिलकुल सर पर था, अमेरिका से यह कहा कि मेरी सेना लेकर लड़ाई करो। बराबर इन दोनों देशों की सरकारों में दोस्ती बढ़ती गई। पर १९१४-१८ की लड़ाई में अमेरिका ब्रिटेन के पक्ष में लड़ा, इसका कारण न तो कोई आदर्शवाद था और न कोई भावुकतापूर्ण दोस्ती। इसका कारण यह था कि ब्रिटेन के साथ अमेरिका का आर्थिक जीवन इतना बँध चुका था कि ब्रिटेन के हारने से अमेरिका के नुकसान की सम्भावना थी।

द्वितीय साम्राज्यवादी महायुद्ध में भी अमेरिका इसी कारण से शामिल हुआ कि ब्रिटेन के डूबने से वह भी डूबता। इन शक्तियों से आदर्शवाद कोसों दूर है। अमेरिका अब मानरो सिद्धान्त को त्याग चुका है याने वह उससे आगे जाना चाहता है। यू० एन० वो० या राष्ट्र-सम्मेलन केवल एक ऊपरी वस्तु है। उसकी पीठ के पीछे न मालूम कितनी बातें हो रही हैं। अमेरिका ने इस क्षेत्र में सब पर नम्बर मार रक्खा है। प्रथम महायुद्ध के बाद भी खाद्य न देने की नीति के द्वारा हंगेरी की समाजवादी क्रान्ति को भूखा रखकर खतम कर दिया गया। अमेरिका एक पूंजीवाद राष्ट्र है। जहाँ पूंजीवादी पद्धति है, वहीं उनके डालर का डौल बैठ सकता है, समाजवादी पद्धति उसके खिलाफ पड़ती है। वह कभी नहीं चाहता है कि दुनिया में समाजवादी पद्धति फैले। इसीलिए वह जिस किसी प्रकार बनेगा इस पद्धति को रोकेगा। इसी कारण ग्रीस आदि स्थानों में अमेरिका ने हर प्रकार से हस्तक्षेप किया है। मजे की बात यह है कि नवीन राष्ट्र-संघ इस तरह की बातों को टुकुर टुकुर देखता रह गया।

बराबर अमेरिका की तरफ से सभी देशों पर साम्राज्यवादी डालर का हमला जारी है। चीन में हम विश्व के इस पहलू को अच्छी तरह प्रत्यक्ष देख सकते हैं। वहाँ के देश ही दो शिविरों में बँट गये हैं। भारतवर्ष में भी यह खतरा है कि यहाँ का देश पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दो भागों में विभक्त हो चुका है। इस प्रकार ये दो भाग विश्व के दो शिविरों में न बँट जायें याने एक अंश तो अमेरिकन पूंजीवाद गुट में शामिल हो जाय और दूसरा रूस की प्रगतिशील शक्ति के साथ रहे। इस बात की पूरी संभावना है कि पाकिस्तान अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अमेरिकन गुट में शामिल होगा। इस समय अमेरिका ही दुनिया की बड़ी प्रतिक्रियावादी शक्ति है।

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं, हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तेल के सेवन से बालों का रुककर सफेद बाल जड़ से काला हो है। दिमाग को तर कर आँख की को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वापिस की शर्त लिखा लें। मूल्य बाल अधिक पक गया हो ३॥), हो ५) रु० का तेल मँगा लें।

आर्य्य हितैषी औषधालय
पो० बेगु सराय (मे

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आ को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीम १ डिब्बा ३।-) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेंद्रि में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हक रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" का मालिश कीजिए इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ़ पैकिंग खर्च अलग

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपु

आप सौन्दर्य का आकर्षण प्राप्त कर सकती हैं

पुरुष ने कहा, "यदि तुम्हें काश्मीर बुकेट द्वारा सौन्दर्य प्राप्त हो गया है तो मैं तुम्हारा चुम्बन सदैव लूँगा।"

काश्मीर बुकेट लिपिस्टिक से चेहरे पर एक नवीन आभा दौड़ जायगी क्योंकि उसमें सौन्दर्य बढ़ाने के गुण हैं। काश्मीर बुकेट में संयुक्त लैनोलिन से होठों में कोमलता रहती है यह उन्हें चिकना और नर्म रखता है। काश्मीर बुकेट लिपिस्टक घंटों तक ठहरता है।

काश्मीर बुकेट फूल के गुच्छों के लाल चूर्ण को इस्तेमाल कीजिए। इस चूर्ण से आपके चेहरे पर जवानी का रंग दौड़ जाता है। तब आप काश्मीर बुकेट की सुगन्धित शृङ्गारिक वस्तु से अपनी आभा को परिपूर्ण करें, क्योंकि सुगन्ध को पुरुष पसन्द करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सपत्रहास

भंग की तरंग

...त्मा जी कहते हैं कि अराज-... लिए कहीं स्थान नहीं है। क्या ...न में भी नहीं है?

* *

...ना अबुल कलाम आजाद कहते ... दोनों सरकारें सच्ची स्थिति ... इसका अर्थ है कि दोनों सर-... झूठ बोल रही हैं? क्या आप ...रकार में हैं वह भी?

* *

...क्तप्रांतीय मंत्री खरे साहब ने ...ण में बताया है कि अकेला ...न सारे देश की रक्षा कर सकता ... तो ठीक है; और अपना?

* *

...याग के पुलिस के कुछ लोगों ने ...र की ओर से होनेवाली तलाशी ...चार पहले ही से पहुँचा दिया। ...रे पुलिस के जौहर खुल रहे हैं।

* *

...राची में दिन-दहाड़े कुछ जेवर ...ये गये। लूटनेवालों को दिन क्या ...त क्या सो भी पाकिस्तान में?

* *

...ना जाता है वह वकील जिन्होंने ...-समारोह में अपना उत्साह नहीं ...या अब वकील नहीं रहने ... उन्हें पाकिस्तान में जज बनाकर ...ा सकता है। रास्ता साफ है।

क्या बताऊँ हाल प्रियतम !

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

जब गया मैं तेल, चीनी और गेहूँ मोल लेने,
ठोकरें खाता हुआ मैं बन गया फुटबाल प्रियतम !
आज, मसजिद में जहाँ सिजदा कभी करते रहे वह,
है रहे बारूद गोला और गोली ढाल प्रियतम !
जो कभी बनते बहादुर थे बहुत ही साहसी थे,
भेड़ निकले ओढ़ करके सिंह की वह खाल प्रियतम !
वह गये हमको बना स्वाधीन कितना शीघ्र देखो,
पर नहीं देखा कि खेली है उन्होंने चाल प्रियतम !
दोपहर को आज आ जाना प्रिये घर पर हमारे,
आज कालेज में तुम्हारे हो गई हड़ताल प्रियतम !
मर गया होता बहुत पहले मगर बेबस बहुत हूँ,
है लगा लैसंस मिलता ही नहीं हरताल प्रियतम !
कल गया था पार्टी में एक प्रोफेसर के यहाँ मैं,
नृत्य बेटी कर रही थी बाप देता ताल प्रियतम !

दिल्ली में एक मसजिद के नीचे तहखाने में गोला-बारूद बनाने का कारखाना पकड़ा गया है। अल्ला मियाँ को कोई बड़ी लड़ाई लड़नी होगी—इसीलिए उनके बंदे हथियार तैयार करते होंगे।

* * *

'डान' कहता है कि पाकिस्तान में रहनेवाले हिन्दुओं को भारत को अपना देश नहीं समझना चाहिये। हाँ अरब को भी अपना देश समझना चाहिये।

* * *

दिल्ली में कुछ महिलाओं के घर तलाशी लेने पर बंदूकें मिलीं। कुछ नहीं मिला; उनके यहाँ तो तोपें मिलनी चाहिये थीं।

सिन्ध में शिव-मंदिर पर हमला किया गया। जान पड़ता है अभी सिन्ध में मंदिर हैं।

* * *

महात्मा जी कहते हैं कि चर्चिल ने भारत का बहुत अहित किया। चर्चिल ने ब्रिटिश राज्य के अतिरिक्त हित किसका किया, यह समझने की बात है।

* * *

पंडित जवाहरलाल नेहरू कहते हैं कि मेरे प्रधान मंत्री रहते भारत में हिन्दू-राज्य न हो सकेगा; और मुस्लिम राज्य?

* * *

दिल्ली में अस्पताल पर भी आक्रमण हुआ। कुछ दिनों में श्मशान पर भी आक्रमण होना लाजिमी है।

* * *

लखनऊ रेडियो स्टेशन पर आजकल पूरी बहार है। जिस हिन्दीवाले को टाक की जरूर हो वह उर्दू को राष्ट्र-भाषा बनाने में तल्लीन श्री सोमनाथ चिब के एजेंट श्री कौशल से सीधी लिखा-पढ़ी करे। सफलता दौड़ती फिरेगी।

* * *

संयुक्तप्रांत में शरणार्थियों की बाढ़-सी आ रही है किन्तु लखनऊ रेडियो में उनके लिये काम की गुंजाइश कहाँ? क्योंकि वहाँ के २५ अधिकारियों में केवल २० पंजाबी तो हैं ही। —अगड़वत्त शर्मा

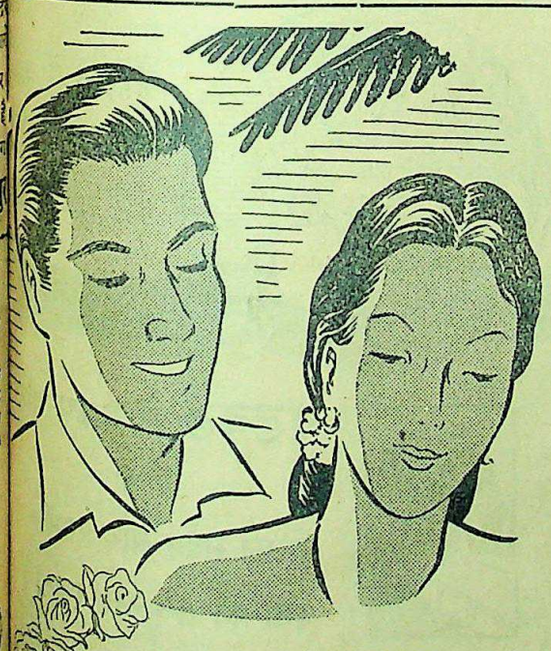

आपको फिरसे विनोलिया व्हाइट रोज़, सुन्दर भारतीय गुलाबोंके मधुर सुगन्धकी स्मृति दिलाता है। यह आपका प्रिय साबुन है, जिसका विपुल झाग आपकी त्वचाको गुलाबके पंखड़ीके समान मृदु एवं निर्मल रखता है।

विनोलिया

व्हाइट रोज़ साबुन

VINOLIA COMPANY LIMITED, LONDON, ENGLAND

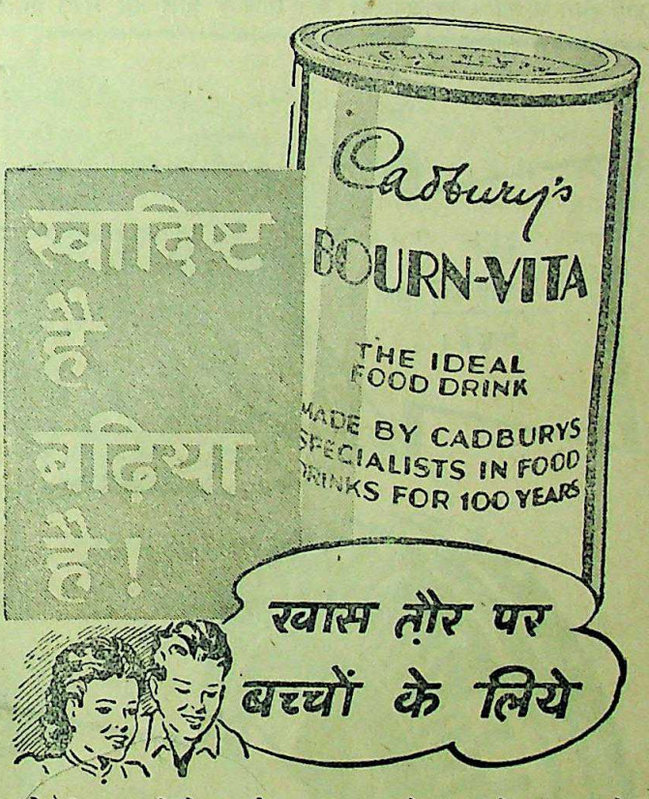
स्वादिष्ट है बढ़िया है!
Cadbury's
BOURN-VITA
THE IDEAL FOOD DRINK
MADE BY CADBURYS SPECIALISTS IN FOOD DRINKS FOR 100 YEARS
खास तौर पर बच्चों के लिये

'बोर्न-विटा' का केल्सेयम और खाद्योज बढ़नेवाले बच्चों की हड्डियों को मजबूत और मांस को कडक बनाते हैं। बालिगों के लिये भी यह गहरी और मीठी नींद लाता और ताक़त का खज़ाना बख्शता है।

केडबरी का

बोर्न-विटा

केल्सेयम और खाद्योज से भरपूर

K. B. 2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पेज ६ का शेष)

"लीबर्टी" नामक एक अमेरिका के पत्र में यहाँ तक प्रकट करने का साहस किया गया है कि परमाणु-शक्ति के साथ किसी भी तरह का प्रयोग और उसका उपयोग निषेध कर देना चाहिये जिससे कम-से-कम थोड़े दिन के लिये भी तो मानवता के पतन की समस्या टले। यह मानव प्रेम? मुझे इस बात को लिखते समय उस समय की याद आ रही है जब कि इंग्लैंड के बड़े बड़े चिमनी के भोंपो को देखकर यह चीख उठी थी कि कलों से वायु गंदा हो जायगा और इसलिये मशीनों का उपयोग मानवता की सुख-शान्ति का ख्याल करते हुये नहीं करना चाहिये।

आज समय भी यह आवाज आ रही है कि परमाणु-शक्ति के उपयोग से बेशुमार हाथ बेकार हो जायेंगे और सच पूछा जाय तो यह बात ठीक ही है कि तत्कालीन साम्राज्यवादी व्यवस्था में जिस तरह स्टीम इंजिन के आने से बहुत से लोग बेकार बन गये ठीक उसी तरह एक बहुत बड़ी बेकारी की लहर आयेगी और उसका सामना करने के लिये साम्राज्यवादी व्यवस्था के पास इतना बूता कहाँ? इस समय का कल-पुर्जा तथा आर्थिक साम्राज्य तो चौपट होगा ही। इसी दुर्दिन का ख्याल कर अमेरिका के थैलीशाह परमाणु-शक्ति के सम्बन्ध में सुलह होने देना नहीं चाहते, जिसका अर्थ परमाणु शक्ति तथा उसके उत्पादन के कारखानों पर अंतर्राष्ट्रीय अधिकार है। परमाणु-शक्ति का शान्ति के लिए प्रयोग का अर्थ है साम्राज्यवाद और पूँजीवाद का अंत।

परमाणुयुग के प्रादुर्भाव के समय प्रसव-पीड़ा जो अमेरिका में हो रही है उसी की प्रतिध्वनि हम अमेरिका तथा इंगलैंड के प्रतिनिधियों के मुँह से सुन रहे हैं। पूँजीवादी अमेरिका के पेट का बच्चा बड़ा होन पर उसी का नाश करे। यह रूस कैसे सह सकता है। लेकिन यह बात भी सच है कि ज्ञान-विज्ञान किसी भी व्यक्ति का निजी सम्पत्ति या बपौती नहीं रहा है और न कभी रहेगा ही। इसकी उन्नति सदा होती रहेगी। चाहे जिस किसी भी हाथ या देश में क्यों न हो, इसलिये भारत का हित इसी में है कि वह परमाणु-शक्ति को एक निजी चीज न रहने देकर उसे अंतर्राष्ट्रीय अधिकार में लाने का शीघ्र ही प्रयत्न करने की कोशिश करे। हिन्द को इस मोर्चे को साम्राज्यवाद के विरुद्ध का मोर्चा समझना चाहिये। यह एक रास्ता है जिससे हम संसार के पतित और पददलित मानवता के पैरों को मजबूत बनायेंगे ताकि वे शीघ्र ही स्वतंत्र हो जायँ।

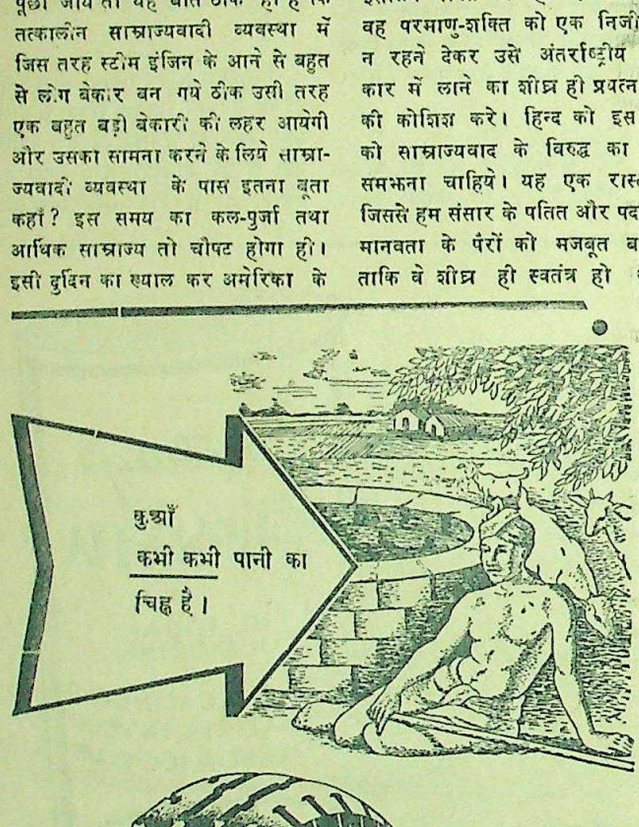

सब दर्दों से छुटकारा
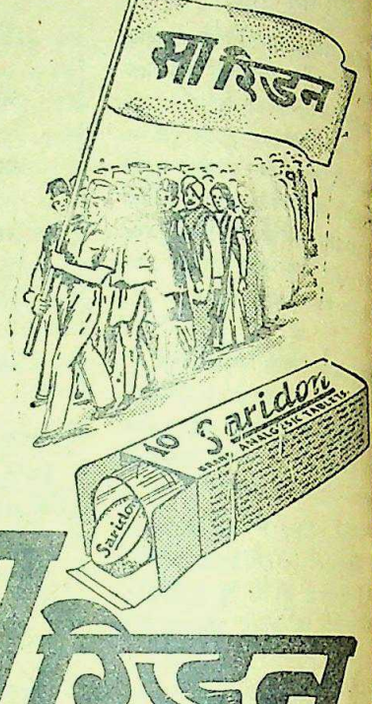

मारिडन
सब दर्दों की एकही दवा

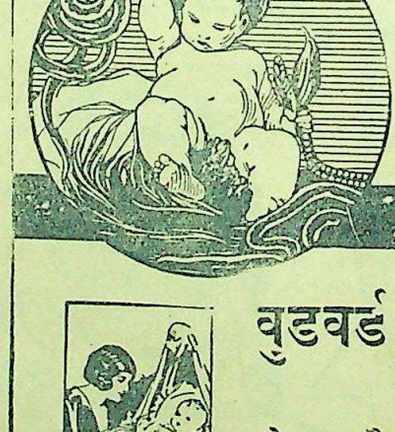
खरीदने से पहले
इस ट्रेड माक को
देखो

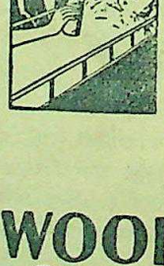
वुडवर्ड के ग्राइप वाटर
के
बोतल सदैव साथ रक्खें। यह
बच्चा का तन्दुरुस्त रखता है।

WOODWARD'S
GRIPE WATER
keeps baby well

"क्षय से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर
पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए
अवश्य देख लिया करें।

W. WOODWARD LTD. LON DON, ENGL

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

देवप्रयाग में श्री चक्रधर जी ज्योत्सी सभापतित्व में देवप्रयाग के साहित्य-[illegible] की एक सभा हुई जिसमें गढ़वाल [illegible] आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक [illegible] के हेतु देवप्रयाग से एक मासिक-[illegible] 'भानसरोवर' के प्रकाशन का आयोजन [illegible] गया। पत्रिका फिलहाल हस्त-[illegible] ही प्रकाशित होगी। इसके [illegible] एक संचालन-समिति भी [illegible] गई जो प्रेस तथा पत्र को सुचारु [illegible] चलाने की व्यवस्था करेगी। [illegible] के सम्पादक श्री सत्यप्रसाद पाँडे [illegible] ए०, विद्याधर डंगवाल भिखारी [illegible], कृष्णकान्त टोडरिया, दीना-[illegible] पालीवाल और श्री गंगाधर कोटी-[illegible] बी० ए० चुने गये।

देवप्रयाग (गढ़वाल) के सुप्रसिद्ध [illegible] तथा एम० एल० ए० डाक्टर [illegible] गैरौला पौड़ी, देलचौरी [illegible] स्थानों का दौरा करते हुये देव-[illegible] आये, सबधार मंडल कांग्रेस कमेटी [illegible] और जनता ने आपका शान-[illegible] स्वागत किया। आपके साथ [illegible] टिहरी प्रजा-मंडल के उप-प्रधान [illegible] नेता श्री दौलतराम, नागेन्द्र-[illegible] सकलानी और सितीनस्यूँ मंडल [illegible] कमेटी के प्रमुख कार्यकर्त्ता तथा [illegible] साहित्यिक श्री दयाशंकर भट्ट [illegible] भी थे। प्रथम प्रजामंडल के मंत्री [illegible] प्रेमलाल वैद्य ने आप सब लोगों को [illegible] दी और देवप्रयाग स्वतंत्र [illegible] (वाह) बाबा काली कमली-[illegible] की धर्मशाला में एक आम सभा [illegible] दयाशंकर वन्दी के सभापतित्व में [illegible] डा० गैरौला के मार्मिक भाषण [illegible] आपने अपने वक्तव्य में पाकिस्तान [illegible] भारत में हो रहे नर-संहार की तीव्र [illegible] की और लोकप्रिय सरकार को [illegible] करनेवाले गुण्डों एवं प्रति-[illegible] से जनता को हमेशा सतर्क [illegible] कहा, सभा विसर्जन के पश्चात् [illegible] श्री बद्रीनारायण के पुरोहित श्री [illegible] ध्यानी (लिही) ने एक शान-[illegible] पार्टी दी। इस अवसर पर कांग्रेस [illegible] के कैप्टेन श्री ललिताप्रसाद [illegible] तथा अन्य स्वयंसेवकों ने विशेष [illegible] प्रदान किया। उसी शाम को [illegible] डा० गैरौला देवप्रयाग मोटर से मसूरी [illegible] रवाना हो गये तो टिहरी प्रजा-[illegible] कार्यकर्ताओं की एक आम सभा [illegible] शास्त्री के मकान में किसान [illegible] श्री दौलतराम के सभापतित्व में [illegible] कांग्रेस कमेटी के सदस्य श्री [illegible] थपलियाल और जिला कांग्रेस [illegible] के उप-प्रधान श्री भगवतीचरण [illegible], दयाशंकर 'वन्दी', प्रेमलाल [illegible] आदि कार्यकर्ताओं के मार्मिक भाषण [illegible] भीषण वृष्टि हुई है जिससे गंगा [illegible] एवं अलकनन्दा का पानी दिन-[illegible] बढ़ता ही जा रहा है, देवप्रयाग [illegible] संगम पर बना हुआ श्राद्ध-भवन [illegible] प्रवाह से टूट गया है।—संवाददाता

[illegible] रुद्रपुर के राप्ती कछार [illegible] की वजह से ६५,००० [illegible] हर साल परेशान हो जाया करते हैं। इस कछार की सारी फसल इसलिए हर साल मारी जाती है कि सिरे से राप्ती नदी से अनेकों नाले बह रहे हैं। थोड़ा सा पानी आने पर ही खेतों को भर देते हैं। साथ ही राप्ती के किनारे के सारे बाँध जो किनारे-किनारे बँधे थे सब गिर गये हैं। कई स्थानों पर राप्ती नदी और कठने नदी भयंकर रूप धारण कर चुकी हैं। जैसे भेड़ी शुक्ल के पावस, कठने नदी नगवा के पास राप्ती नदी और भिरवा के पास भेड़ी शुक्ल और भिरवा के पास के नाले की भयंकरता का असर भिरवा पटवनियाँ पर आनेवाला है। संयोगवश यदि राप्ती धारा बदली तो भिरवा की खैरियत नहीं है। जैसा कि राप्ती धारा बदल-बदल कर भागड़ बनाया करती है। इसी प्रकार इस कछार के अनेकों बाँध टटे हुए हैं जिनके बँध जाने से बड़ी से बड़ी बाढ़ आने पर भी इतना फसल का नुकसान नहीं होगा। सरकार शीघ्र इस कछार की ओर ध्यान दे और इस कछार का इंजीनियर द्वारा पहले सर्वे करा के और आवश्यक बाँधों को बँधवाये। ऐसा करके सरकार अनेकों बेकार लोगों को कुछ अरसे के लिए काम भी दे देगी। बाँध बँधवाने की माँग नारायणपुर, मदनपुर, तिवई और पुर की सभाओं से प्रस्ताओं-द्वारा भी की गई है।

प्रेषक
चन्द्रबलीसिंह
—मंत्री जिला किसान-संघ

देवरिया भाटपाररानी में सेठ श्री नेवास के सभापतित्व में गांधी-जयन्ती मनाई गई। ईश-प्रार्थना के बाद कार्य आरम्भ हुआ। स्कूल के छात्रों के अलावे जनता भी काफी तादाद में इकट्ठी थी।

ठा० राजनन्दनसिंह सहायक शिक्षक द्वारा महात्मा गांधी के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डाला गया। स्कूल के हेड-मास्टर साहब ने भी लोगों को इस अवसर पर सूत कातने, देश में शान्ति-स्थापन करने की अपील की। पश्चात् सभापति महोदय का भाषण हुआ।

—संवाददाता

वृन्दावन में गांधी-जयन्ती बड़े समारोह से मनाई गई। सारे शहर में प्रभातफेरी निकली। हाईस्कूल में झंडा प्रार्थना के बाद महात्मा गांधी के चित्र का उद्घाटन किया गया। सायं सारे शहर में बापू जी के फोटो के साथ एक विराट् जलूस निकला। रात में सार्वजनिक सभा हुई, जिसमें गांधी जी के जीवन पर गोस्वामी अद्वैतकुमार जी, डा० रामप्रसाद शर्मा, गोस्वामी गौरकृष्ण शास्त्री के भाषण हुए।

वृन्दावन की पंचायती रामलीला कमेटी रंग जी के कटरा का चुनाव हो गया। पं० व्रजमोहन शुक्ल सभापति, गोस्वामी मूलचन्द एम० ए०, बाबू किशोरीलाल शर्मा, गोस्वामी अद्वैतकुमार मंत्री चुने गये। २५ आदमियों की एक कार्यकारिणी कमेटी भी बन गई है।

वृन्दावन में पंजाब के शरणार्थियों का मुफ्त इलाज गोस्वामी गौरकृष्ण वैद्य आयुर्वेदाचार्य कर रहे हैं। आप बिना किसी प्रकार की फीस लिये मरीज़ों को देख रहे हैं और दवा भी देते हैं। असहाय रोगियों को आप फल, दूध भी अभिनव चैतन्य औषधालय की ओर से दे रहे हैं। —संवाददाता

मचमढ़ी में गांधी-जयन्ती के उपलक्ष में प्रातःकाल प्रभातफेरी के आयोजन किये गये। सायंकाल एक विराट् जूलूस बड़े भारी रथ पर निकला जिसमें महात्मा गांधी की मूर्ति और फोटो बड़े सजावट के साथ विराजमान थी। जुलूस गांधी चौक से जयप्रकाश रोड, जवाहर रोड, सुभाष रोड होता हुआ गांधी चौक में समाप्त हुआ। रात को एक आम सभा श्रीमान् प्रेमनारायण जी के सभापतित्व में हुई, जिसमें सर्वप्रथम श्रीमान् कुंजीलाल जैन, श्रीमान् बालाराम गुप्ता और श्रीमान् मोहम्मद आजीम भाई के जोशीले भाषण हुये। नगर में एकादशी और अनन्तचौदस बड़ी शान और धूम से मनाई गई।

—संवाददाता

नैनीताल ओखल काराडा के हिन्दुस्तानी मिडिल स्कूल के छात्रों तथा अध्यापकों ने गांधी-जन्म-दिवस बड़े उत्साह व समारोह के साथ मनाया। सम्पूर्ण जनता का ध्यान ठोस रचनात्मक कार्यों की ओर दिलाया तथा उनकी जीवनी पर सारगर्भित भाषण हुए।

—संवाददाता

शाहजहाँपुर (बहादुरगंज) से निकलनेवाली हस्त-लिखित मासिक-पत्रिका 'प्रगति' के वार्षिकाधिवेशन के अवसर पर लेख, कहानी, कविता—इन तीनों के लिए प्रतियोगता-आयोजना की गई है। विषय स्वतंत्र हैं।

अतः लेखकों से सविनय प्रार्थना है कि लेख २२ अक्टूबर तक भेजने की कृपा करें।

—संवाददाता

झाँसी तालबेहट के मृगेन्द्र पुस्तकालय के छात्रों ने पुस्तकालय-भवन में श्री राधाकान्त झा 'कान्त' शास्त्री के सभापतित्व में एक सभा की। सर्वप्रथम विद्यार्थी ओम्प्रकाश चतुर्वेदी ने 'मृगेन्द्र' जी की कविता 'बापू तुम स्वतंत्रता आंधी' पढ़कर सुनाई। तत्पश्चात् 'मृगेन्द्र' जी ने स्वल्प भाषण दिया। अध्यक्ष कान्त जी ने अपना भाषण दिया।

—संवाददाता

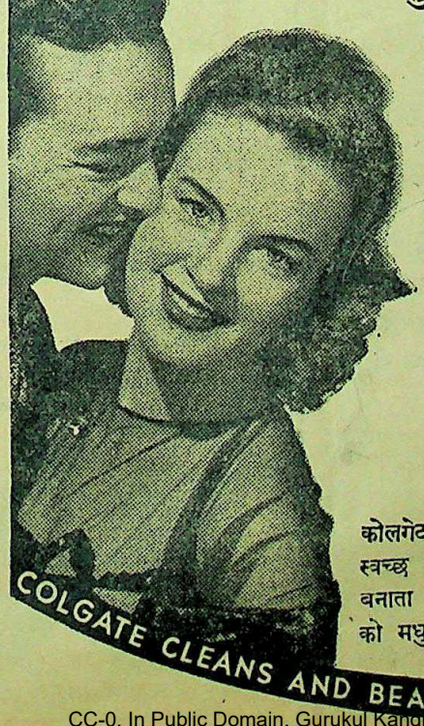

प्रेम की परीक्षा
तुम्हारे चुम्बन से विदित होती है !

जब तुम्हारे होठ उस (पुरुष) से प्रथम गहरे चुम्बन में मिलते हैं···तो ऐसा न हो कि बुरी श्वाँस तुम्हें दूसरे चुम्बन से वंचित कर दे। यह याद रक्खो कि १० व्यक्तियों में ७ के मुख से दुर्गन्धि आती है जिसको वे स्वयं नहीं जानते।

इसलिए होशियार हो जाओ। कोलगेट डेण्टल क्रीम इस्तेमाल करो। इसके छेद में प्रवेश करनेवाले फेन तुम्हारे दाँतों के बीच प्रवेश करते हैं जो कीटाणु तथा सड़े हुए खाद्य पदार्थों के वे अंश जो दुर्गन्धि, गन्दे दाँत, सूजे मसूड़ों और दाँत के सड़ने के खास कारण हैं, उनको साफ कर देते हैं। कोलगेट दाँतों को अच्छी तरह साफ करता और सुन्दर बनाता है, मसूड़ों को स्वस्थ और स्वास को मधुर रखता है।

दाँत के डाक्टर कोलगेट की सिफारिश करते हैं। यह दाँतों को साफ, बुरी श्वाँस को दूर करता है।

सोने के पहले और हर खाने के बाद प्रतिदिन कोलगेट सेवन कीजिए।

कोलगेट दाँतों को स्वच्छ और सुन्दर बनाता है···स्वास को मधुर करता है।

COLGATE RIBBON DENTAL CREAM

COLGATE CLEANS AND BEAUTIFIES TEETH ... SWEETENS BREATH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी का रंगमंच

संयुक्त प्रांतीय मंत्रिमंडल और राष्ट्रभाषा हिन्दी

सूचना विभाग का पुनर्संगठन–प्रांत के छोटे छोटे उद्योग-धंधे–हिन्द बाँध बनाने का कार्य प्रारम्भ–रेडियो की हरकतें

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

युक्त प्रांतीय मंत्रिमंडल हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने के कार्य में पूर्ण दिलचस्पी के साथ संलग्न है। अदालतों तथा पुलिस को हिन्दी में काम करने के आदेश दिये जा चुके हैं। प्रतियोगिता परीक्षायें भी हिन्दी में ही हुआ करेंगी। समान योग्यताएँ होने पर हिन्दी जाननेवाले उम्मीदवार को सरकारी नौकरी में विशेषता दी जायगी। हिन्दी न जानने वाले व्यक्ति को सरकारी नौकरी में भर्ती करनेवाले अधिकारी को इसकी विशेष कैफियत देनी पड़ेगी। सचिवालय में भी हिन्दी का अधिकाधिक उपयोग होगा। इसमें सबसे बड़ी असुविधा हिन्दी टाइपराइटरों की कमी है जो अधिकारी हिन्दी नहीं जानते उनको हिन्दी सीखने का आदेश दिया गया है और एक निर्धारित अवधि में उन्हें हिन्दी सीख लेनी पड़ेगी। आगामी शनिवार से सरकारी गजट भी हिन्दी में छपने लगेगा।

* * *

सूचना-विभाग को पुनर्गठित करने का नये सूचना-मंत्री पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल ने पूरा निश्चय कर लिया है। पालीवाल जी स्वयं पत्रकार हैं और जानते हैं कि पत्रकार की आवश्यकतायें क्या होती हैं तथा सूचना-विभाग पत्रकारों के लिये किस प्रकार उपयोगी हो सकता है। वे सूचना-विभाग को सरकारी अफसरों के पञ्जे से निकालना चाहते हैं और इस विभाग के डायरेक्टर के पद पर किसी पत्रकार को ही नियुक्त करना चाहते हैं। वे इस पद के लिये किसी योग्य पत्रकार की तलाश में हैं और शीघ्र ही कोई न कोई नियुक्ति करेंगे।

* * *

विकास-मंत्री केशवदेव मालवीय ने प्रांत के कुटीर शिल्प तथा अन्य छोटे मोटे उद्योगधन्धों को प्रोत्साहित करने के निमित्त लोगों को आर्थिक सहायता अथवा सुविधाजनक शर्तों पर ऋण देने की योजना बनाई है, जिसके अन्तर्गत बजट में एक लाख रुपये की व्यवस्था कर दी गई है किसी भी व्यक्ति को ५ हजार अथवा संस्था को १० हजार से अधिक रुपया न मिलेगा सामूहिक रूप से प्रयास करनेवाले गिरोहों तथा सहयोग-समितियों को विशेषता दी जायगी। इस सम्बन्ध में डायरेक्टर आव इण्डस्ट्रीज (कानपुर) को आवेदनपत्र भेजना चाहिये।

हिन्द बाँध बनाने का काम प्रारम्भ करने की स्वीकृति प्रान्तीय मंत्रिमंडल ने दे दी है। यह बाँध मिर्जापुर जिले के पिपरी ग्राम के समीप बनेगा, जिसके निर्माण में ६ वर्ष लगेंगे और १६ करोड़ रुपए उस पर व्यय होंगे। पिपरी में १८० वर्ग मील की एक विशाल झील बन जायगी, जिसमें मत्स्यपालन का व्यवसाय बढ़ाया जायगा। इसी बाँध पर जलविद्युत तैयार करके सस्ते दर पर इस प्रदेश में पहुँचाई जाएगी। जलविद्युत् से सिंचाई की भी व्यवस्था होगी, जिससे ४० लाख एकड़ भूमि में खेती होने लगेगी। उद्योगधन्धों का विकास होगा तथा प्रान्त के पूर्वी जिले देश के महा समृद्धिशाली प्रदेश बन जाएँगे। इस बाँध पर होनेवाले १६ करोड़ के व्यय में से दो तिहाई से अधिक स्वदेश के मजदूरों और सामग्री पर ही होगा।

* * *

आल इण्डिया रेडियो का लखनऊ स्टेशन बेहूदा हरकतों के लिये कुख्यात है। हिन्दी के प्रख्यात कवि एवं पत्रकार तथा विधान-परिषद् के सदस्य श्री बालकृष्ण शर्मा से लखनऊ रेडियो के अधिकारियों ने 'जेल के संस्मरण' शीर्षक विषय पर टाक देने को कहा। शर्मा जी ने जो टाक लिखी, उसे रेडियो अधिकारियों ने यह कहकर लौटा दिया कि 'संस्मरणों' में राजनीतिक चर्चा नहीं आनी चाहिए। शर्मा जी ने टाक देना अस्वीकार करते हुये कहा कि राजनीति बन्दियों के जेल-जीवन में राजनीतिक चर्चा ही तो मुख्य विषय थी और उसकी अवहेलना करके अपने 'संस्मरणों' को काल्पनिक एवं निष्प्राण बनाना उन्हें अभीष्ट नहीं है।

* * *

इसी स्टेशन का एक दूसरा किस्सा सुनिए। माननीय सूचना-मंत्री श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल वहाँ एक भाषण करने गये, तो रेडियो कर्मचारियों ने उनके स्वागत का आयोजन किया। उस अवसर पर एक रेडियो इंजीनियर ने सरकारी कर्मचारी होते हुये भी शासन की कटु आलोचना की। माननीय पालीवाल जी ने उसकी भर्त्सना करने के स्थान पर उसको उसकी भूल समझा दी और उसे क्षमा कर दिया।

(पेज ५ का शेष)

देशभक्ति, राष्ट्रीयता, स्वार्थत्याग, व्यक्तिगत बहादुरी अनुशासन तथा सामूहिक कार्य के पाठ। जिस दिन उन्होंने यह उद्देश्य स्वीकार कर केन्द्र को स्थापित करते हुये उसे कायम रखने की प्रतिज्ञा की, उसी दिन से उन्होंने स्काउट के मिशनरी का और साथ ही फौज के इकाई का उत्तरदायित्व ग्रहण करा लिया है।

मिशनरी होने के नाते उन्हें राष्ट्रीयता का अवश्य प्रचार करना चाहिये। उन्हें इसी उद्देश्य से प्रेरित हुये लोगों की संख्या अधिकाधिक बढ़ाते रहना चाहिये। यह उन्हें तब तक करते रहना चाहिये जब तक उक्त केन्द्र की संख्या अधिकाधिक १०० और कम से कम २५ हो जाय। स्काउट के अनुसार उन्हें हमेशा अराष्ट्रीय व्यक्तियों का पता लगाकर उन्हें बदलने, उन पर नियंत्रण करने तथा उन्हें प्रभावहीन करने की कार्यवाही करते रहना चाहिये। जैसे ही केन्द्र की कम से कम संख्या २५ हो जाय चौथे कार्यक्रम पर शारीरिक व्यायाम तथा ड्रिल करना भी शुरू करना चाहिये और इस प्रकार तीसरी फौजी इकाई की जिम्मेदारी ग्रहण करनी चाहिये।

इस अवस्था में अनुशासन करने के लिये सदस्यों में से कोई एक संचालक नियुक्त किया जाय। जब तक स प्रकार का सदस्य-संचालक न मिले तब किसी बाहरी व्यक्ति को शिक्षा के संचालक नियुक्त किया जा सकता

प्रत्येक केन्द्र में एक भगवा हो किन्तु कोई प्रतिमा, मूर्ति या और दूसरा प्रतीक न हो। केवल 'हिन्दू स्कार' को ही जो हाथ जोड़कर जाता है, वहाँ अनुमति प्राप्त हो। न कोई नेता हो और न कोई अ सभी इकाइयों, कार्यों, विचारों व्यवहारों में समान हों।

प्रत्येक केन्द्र स्वावलम्बी हो। में एक निश्चित दिवस पर गु के रूप में भगवा-ध्वज को सदस्य स्फूर्ति से चंदा दें।

१०० की संख्या पूरी होने पर आनेवाले लोग अपना नया केन्द्र करें। किन्तु प्रत्येक केन्द्र का प्रत्येक ऐसे केन्द्रों तथा उनके सदस्यों को बढ़ाने में तब तक प्रयत्न करता रहे तक गाँव, कस्बा या नगर अच्छी उसके प्रभाव में न आ जाय।

महीने में, तीन महीने में, छः में, साल में, पास के केन्द्रों की एक बैठक हो। इसमें लोग बढ़ती हुई में एक दूसरे के निकट आवें। एक बार एक क्षेत्र के सभी केन्द्रों इस प्रकार संयुक्त बैठक हो।

(हिन्द-समाचार-समिति

सर्वाधिकार सुरक्षित)

मैं भी आपका बहुत आभारी हूँ

पेट के दर्द का रोगी मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर की प्रशंसा करता है

यदि आप मंदाग्नि से पीड़ित हैं, और भोजन के बाद दर्द या अन्य कष्टदायी लक्षणों का अनुभव होता है तो मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर लीजिये। यह रोग का शीघ्र निराकरण कर देगा और पाचन-शक्ति को सुधार देगा।

प्रिय महोदय,

मैंने अभी एक दूसरे रोगी द्वारा की गई आपके स्टमक पावडर की प्रशंसा पढ़ी, और मैं अनुभव करता हूँ कि मैं भी आपका बहुत आभारी हूँ। आपके पावडर और गोलियाँ दोनों के नुस्खे वास्तविक वरदान हैं।

मैं पथ्य-भोजन पर आगरा था.....किन्तु मैंने नियमित रूप से आपके पावडर का सेवन किया, और आज मैं अपनी रुचि की प्रत्येक चीज खा सकता हूँ और अपने को स्वस्थ अनुभव करता हूँ। मैं आपके प्रति आभार प्रदर्शन करता हूँ।

(हस्ताक्षर) के. सी.

मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर की व्यापक ख्याति उदकी हृदय-दाह, उदरवा-वायु, जी मिचलाने एवं अ-चन से होने वाले पेट के दर्दों के निवारण में वह प्रभावोत्पादकता का मान्य प्रमाण है।

"एलेक्स सी. मेकलीन" के हस्ताक्षरवाला मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर और गोलियाँ ही प्रामाणिक हैं।

MACLEAN Brand Stomach Powder

गोलियों के रूप में भी

Alex C. Maclean

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना-पराया

...देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' लिखित इस मनोरंजक उपन्यास में एक चीनी ...मेनका-नृत्य जहाँ आपको आत्म-विभोर कर देगा, वहीं तिब्बत और चीन की ...छटा और वहाँ के अजीबोग़रीब रस्म-रिवाज भी आपके सामने नाच उठेंगे। ...यह रहस्यमयी तरुणी किस प्रकार भारत आती और अपने धर्म तथा स्वदेशा-...की रक्षा कर, एक भारतीय नौसैनिक की सहायता से अपने देश लौट जाती है, ...आपको प्रणय की रंगीनियों का सजीव परिचय देंगे। पृष्ठ २३२, सजिल्द ...दुरंगा आवरण, मूल्य २॥) रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

धड़ाधड़ बिक रहा है। शीघ्रता कीजिए

वार्षिक बालसखा १९४७

इसकी छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएँ और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का मूल्य ३)। मासिक ग्राहकों को रियायती मूल्य २॥) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

मेरी तरह तन्दुरुस्ती हासिल करो

...खुन को साफ करता है
डा. वामन गोपाल
आयोडाइज्ड सार्सापरिला
हर जगह मिलता है

...के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद
...जौहरी एल० एच० धोलकिया
एन्ड ब्रदर्स

...लाउडस्पीकर पर
...रखिये

...पर इस्तेमाल कीजिये

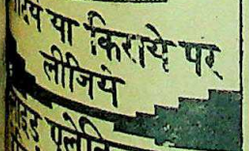

...दिये या किराये पर लीजिये

...इंडिया एलेक्ट्रिक एण्ड ...कारपोरेशन
...कैनिंग रोड
एलाहाबाद

* शिरीन—
ताज पर चांदनी
निर्मल मुखमण्डल

*वह रूपवती है! वह पाँड्स का प्रयोग करती है!

आप अपनी त्वचा के लिये कौनसे तेल पसंद करती हैं? वास्तव में प्राकृतिक तेल ही न! चेहरे को उज्ज्वल, स्वच्छ और ताज़ा रखने के लिये सुगंधित, कोमल और सेतीन-से मुलायम पाँड्स् कोल्ड क्रीम और पाँड्स् वेनिशिंग क्रीम की परीक्षा कीजिये। सर्वत्र रूपवती स्त्रियाँ पाँड्स् का ही प्रयोग करती हैं।

पाँड्स् क्रीम्स

पाँड्स् दिनचर्या

पाँड्स् कोल्ड क्रीम : पाँड्स कोल्ड क्रीम को चेहरे पर कोमलता से रमाते हुये दिन में दो बार उसे साफ़ कीजिये; उंगली के कोमल पोरों से उसे थपथपाइये। पाँड्स टिशू से स्वच्छ कर लीजिये।

पाँड्स् वेनिशिंग क्रीम : कोल्ड क्रीम को साफ़ करके उंगली के पोरों से पाँड्स वेनिशिंग क्रीम लगाइये। त्वचा को सुरक्षा देता हुआ वह आपके प्रयोग के साथ ही अंतर्धान हो जाता है।

पाँड्स् पावडर : यदि आप की इच्छा हो तो पुष्पपंखड़ी की भांति कोमलता के लिये पाँड्स् पावडर थपथपाइये।

व्यापार-सम्बंधी पूछताछ के लिये लिखिये :
एल. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लिमि० बम्बई - कलकत्ता - कराची - मदरास.

Copyright: Pond's Exports Co.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'देशदूत' का दीपावली विशेषांक

विज्ञापनदाता शीघ्र ही स्थान रिज़र्व करा लें

अन्य अवसरों की भाँति 'देशदूत' का यह विशेषांक बहुत ही सुन्दर और आकर्षक रूप में प्रकाशित होगा। इसमें अच्छे अच्छे लेख, कहानियाँ, कविताएँ, हास्य की सामग्री और बढ़िया चित्र रहेंगे। इस अंक में पढ़ने की बहुत बढ़िया सामग्री रहेगी। एजेंट अपनी प्रतियाँ रिज़र्व करा लें।

विज्ञापन-दाताओं को इस अंक में विज्ञापन छपवाने से बहुत लाभ होगा। विज्ञापन-दर—

कवर चौथा पूरा पेज ४००)
" दूसरा या तीसरा पूरा पेज ३००)
पहला पेज पाठ्य-विषय से पहले ३००)
साधारण पूरा पेज २००)

पृष्ठ का आकार
१२½" × ४ कालम
स्क्रीन ६५

शीघ्र पत्र लिखकर स्थान रिज़र्व कराइए। विज्ञापन २५ अक्टूबर सन् १९४७ के बाद स्वीकार न किये जायँगे। मूल्य अग्रिम भेजिए।

मैनेजर 'देशदूत', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

उच्च कोटि की सचित्र कहानी-पत्रिका

'मंजरी'

जनवरी १९४८ से प्रकाशित हो रही है

'मंजरी' हिन्दी कथा-साहित्य का कलात्मक शृङ्गार करेगी।

'मंजरी' में हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ कथाकारों की तथा अन्य भाषाओं की भी उच्च की सुरुचि-सम्पन्न कलात्मक कहानियाँ प्रकाशित होंगी।

'मंजरी' निःसंकोच रूप से माँ-बहनों के हाथों में दी जा सकेगी।

'मंजरी' प्रत्येक प्रकाशित रचना पर पर्याप्त पारिश्रमिक देगी और रचनाओं का राइट लेगी।

'मंजरी' में आद्योपान्त मात्र कहानियाँ न रहेंगी। इसका तीन-चौथाई कलेवर कहा के लिए और एक-चौथाई कथा-साहित्य के सभी उपांगों पर गम्भीर लेखों, प्रकाशनों की निष्पक्ष समीक्षा और मासिक कथा-साहित्य के सिंहावलोक लिए सुरक्षित रहेगा।

'मंजरी' का वार्षिक मूल्य ६) छः रु० और प्रत्येक अङ्क का ।।) आठ आने होगा।

ग्राहकों, एजेण्टों और विज्ञापन-दाताओं को शीघ्रतापूर्वक अपनी प्रतियों स्थान आदि सुरक्षित करा लेना चाहिए, अन्यथा प्रकाशित होते ही इसके अङ्क हो जायँगे।

सम्पादक
देवीदयाल चतुर्वेदी

प्रकाशक
इंडियन प्रेस, लि०, प्र

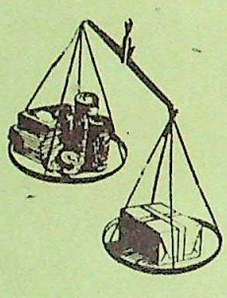

रुपये का मूल्य

क्या आपको ज्ञात है कि रुपया जितनी वस्तु ख़रीद सकता था उसका मूल्य है? इस युद्ध से पूर्व आप १० रुपये के नोट से आजकल की अपेक्षा कहीं अधिक वस्तुयें ख़रीद सकते थे। इसका कारण यह है कि दाम दुगने या तिगने चढ़े हुए हैं और रुपये का मूल्य आधा बल्कि तिहाई रह गया है। यदि दामों को चढ़ने से रोका न जायेगा तो रुपये का मूल्य और भी कम होता जायेगा। दाम कम करने के दो उपाय हैं—पहला यह कि उत्पादन अधिक किया जाय और इसका प्रबन्ध किया जा रहा है। दूसरा यह कि माल की खपत में न्यूनता हो और यह उपाय आपके करने का है। इस में आप सहायता दे सकते हैं। उस समय तक वस्तुयें न ख़रीदिए जब तक वस्तुओं की बहुतायत न हो जाय। इस बीच में जितनी भी बचत की जा सकती हो कीजिए। और इस प्रकार अपने रुपये के मूल्य में वृद्धि कीजिए।

अपनी बचत को बीमा पॉलिसी, सहकारी साख समिति, डाकखाने का डेविंग्ज़ खाता, नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स, और सरकारी लोन (कर्ज़ें) की सूदें में लगाइए। आप का रुपया सुरक्षित रहेगा और लाभप्रद भी सिद्ध होगा।

भूमि, सम्पत्ति, सोना चाँदी के गहने, द्रव्य, बना माल, या सट्टेबाज़ी पर रुपया अपव्यय न कीजिए। आज कल के दामों पर यह घाटे के सौदे हैं।

चढ़ी कीमतों को रोकिए
धन का अपव्यय न कीजिए

AC 239 भारत सरकार के पब्लिसिटी विभाग द्वारा प्रकाशित

अपने दान्तों के लिये
गिब्स
डेन्टिफ्रिस का उपयोग कीजिये क्योंकि...

योग्य पद्धतिसे (दाँत) किड़ने का निवारण होता है

आप का डॉक्टर आप से कहेगा कि, खराब दाँत बहुतसे रोगों के मूल हैं। कोयला या अन्य कठिण पदार्थ से दाँत साफ़ करने की पुरानी पद्धति से प्रायः दाँतो को खुरचने का काम रहता है...खुरचा हुआ दाँत जल्द किड़ जाता है। गिब्स डेन्टिफ्रिस खुरचे जाने के बग़ैर सुरक्षापूर्वक-दाँत-साफ़ के लिये खासकर बनाया गया है। गिब्स डेन्टिफ्रिस योग्य पद्धति से (दाँत) साफ़ किया करें और अपने दाँत किड़े जाने से सुरक्षित रखें। गिब्स जन्तुनाशक एवं स्वाद मधुर है और (यह) आप के दाँत सफ़ेद और सुन्दर साफ़ करता है।

गिब्स
अधिक सफ़ाई करता है और दाम में भी कम.....
गिब्स का उँगली से प्रयोग किया जा सकता है

गिब्स डेन्टिफ्रिस

GR 10-80 HI

B & W. (GB)36 LIMITED. LONDON, ENG.

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, ... लाकर छोड़ा गया और उन्हींकी ओर से प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

२८ सितम्बर, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 28th September, 194

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य 2 आना

माननीय श्री पंडित गोविन्दवल्लभ पन्त

भारत में कपड़े की तबाही क्यों?

शांति और व्यवस्था की स्थापना जरूरी

स्वास्थ्य-चर्चा, रंगमंच, मातृ-मन्दिर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ

सम्पादक—श्री सोहनलाल द्विवेदी

प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन

संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, बँगला, गुजराती, सिन्धी, मराठी, तामिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़, अँगरेज़ी और चीनी भाषाओं में महात्मा गांधीजी पर लिखी हुई सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह—हिन्दी भाषा में अर्थ-सहित।

बड़ा आकार, सुन्दर छपाई, पूरे पेज के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द। सर्वत्र प्रशंसित।

सादी जिल्द ६॥) कपड़े की जिल्द ७॥)

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।—) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ़ पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

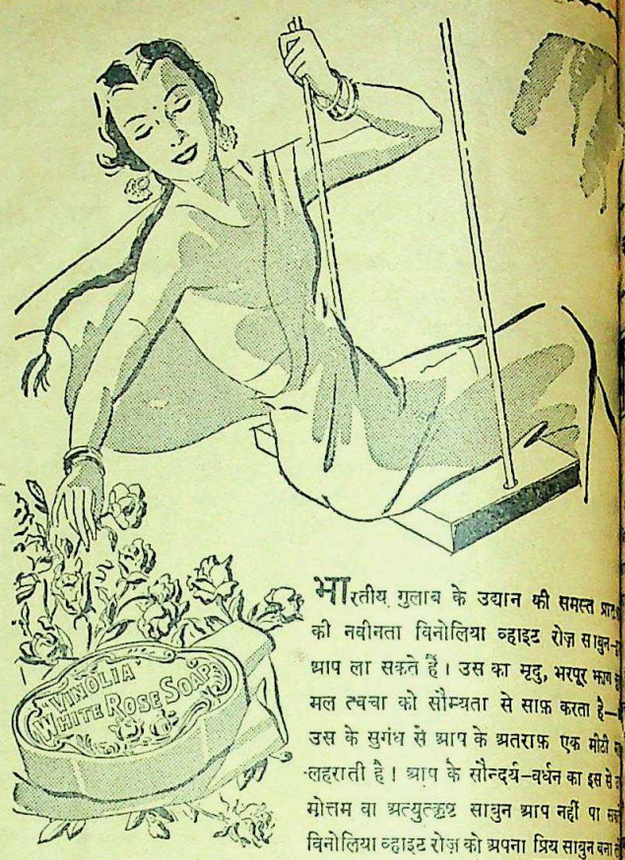

भारतीय गुलाब के उद्यान की समस्त प्राकृतिक की नवीनता विनोलिया व्हाइट रोज़ साबुन-में आप ला सकते हैं। उस का मृदु, भरपूर झाग मल त्वचा को सौम्यता से साफ़ करता है—उस के सुगंध से आप के अतराफ़ एक मीठी लहराती है। आप के सौन्दर्य-वर्धन का इस से उत्तम वा अत्युत्कृष्ट साबुन आप नहीं पा सकते विनोलिया व्हाइट रोज़ को अपना प्रिय साबुन बना

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

VWR. 10-111 III VINOLIA CO, LIMITED, LONDON, ENGLAND

जी० जी० सेल्स डिपो:—देहरादून, लाहौर, अमृतसर, अजमेर, दहली; बम्बई, कलकत्ता, कानपुर, बरेली, ग्वालियर, पटना, आगरा।

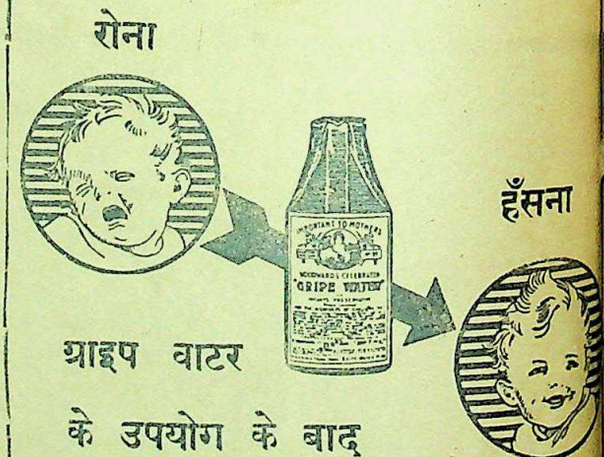

ग्राइप वाटर
के उपयोग के बाद
पेट के दर्द व खट्टे डकार से
छुटकारा मिलता है।

WOODWARD'S
GRIPE WATER
— keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली बुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिये इसे अवश्य देख लिया करें।

1-WW 116—117 W. WOODWARD LTD. LONDON, ENGLAND

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीनबन्धु

वर्ष १०, संख्या ४] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, २८ सितम्बर, १९४७

सप्तर्षि

भंग की तरंग

महात्मा जी ने हरिजन में लिखा है कि प्रांतीय सरकारें प्रांतों की भाषा तय करें। फिर हिन्दोस्तानी कहाँ की होगी?

* *

महात्मा जी कहते हैं कि मेरी मूर्ति बनवाएं। इसके बहाने कलाकार को काम मिल जायें तो क्या हानि है? बातें तो हो ही जायगा।

* *

खबर आई है कि कोई मजिस्ट्रेट पंद्रह दिन किसी को भी बंद रख सकता है। इस आज्ञा में शीघ्र यह भी संशोधन हो कि चाहे तो अपने ही घर में।

* *

गांधार बाबू के बगीचे की तलाशी ली गई। सुभाष बाबू वहीं छिपे थे?

लीगों नेताओं ने अपील की है कि बकरीद पर गो-वध न किया जाय। इससे क्या इस साल धर्म खतरे में नहीं चला जायगा!

* * *

पंडित गोविन्दवल्लभ पन्त ने कहा है कि पाकिस्तान के प्रेमियों को पाकिस्तान चले जाना चाहिए। तब यहाँ दंगे कैसे होंगे?

* * *

लखनऊ के हरिजन चाहते हैं कि लखनऊ म्युनिसिपल बोर्ड का चेयरमैन हरिजन हो। नगर को लाभ तो बहुत होने की संभावना है, यदि ऐसा किया जाय।

* * *

नई दिल्ली में पाकिस्तानी हाई कमिश्नर के यहाँ झाड़ू लगानेवाला नहीं मिल रहा है। कर्मचारी स्वयं झाड़ू लगाते हैं। महात्मा गांधी का सिद्धान्त सब लोगों को किसी न किसी रूप में मानना ही पड़ता है।

* * *

महात्मा जी कहते हैं कि मुसलमान घर न छोड़ें। उनके कहने के पहले से ही वह डटकर बैठे हैं। 'छोड़नेवाले नहीं हैं। वह भी क्या हिन्दू हैं?

* * *

हैदराबाद राज्य में निजाम साहब पाकिस्तान का संक्षिप्त संस्करण बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। आशा है सब समझदार लोग निजाम की सहायता करेंगे।

* * *

जनवरी १९४८ में बरमा पूर्ण स्वतंत्र हो जायगा। भारत छः महीने बाद पूर्ण स्वतंत्र होगा, क्योंकि अभी आंशिक स्वतंत्रता की बानगी वह देख ले।

* * *

मैसूर जेल से कई कांग्रेस कार्यकर्ता भाग गये। पता नहीं कांग्रेसी धर्म-नीति के अनुसार यह कहाँ तक उचित है?

* * *

मैसूर में हिन्दू-सभा के अध्यक्ष भी पकड़ लिये गये। कांग्रेसी तो राज्य के विरुद्ध थे ही अब हिन्दू-सभावाले भी हड़कंप मचाने लगे।

* * *

कोयला न मिलने के कारण कई स्थानों पर सिनेमा कम्पनियों को केवल एक शो करने की आज्ञा हो गई है। इससे कितने लोगों को कष्ट हुआ होगा, सरकार अनुमान नहीं कर सकती।

* * *

काशी म्यूनिसिपैलिटी ने गोवध बंद कर देने का निश्चय किया है। अब इसका लैसंस न दिया जायगा। चलते चलाते बोर्ड कुछ भला कार्य भी करता रहा है क्या?

* * *

प्रान्त के सूचना-मंत्री कहते हैं कि समाचार-पत्र सद्भावना बढ़ाएँ। समाचारों का कर्तव्य भी यही है, झूठ लिखना पड़े किन्तु मुसलमानों के विरुद्ध कुछ न लिखा जाय।

—अगड़धत्त शर्मा

आज की एक राजनैतिक कला—उँगली उठाना

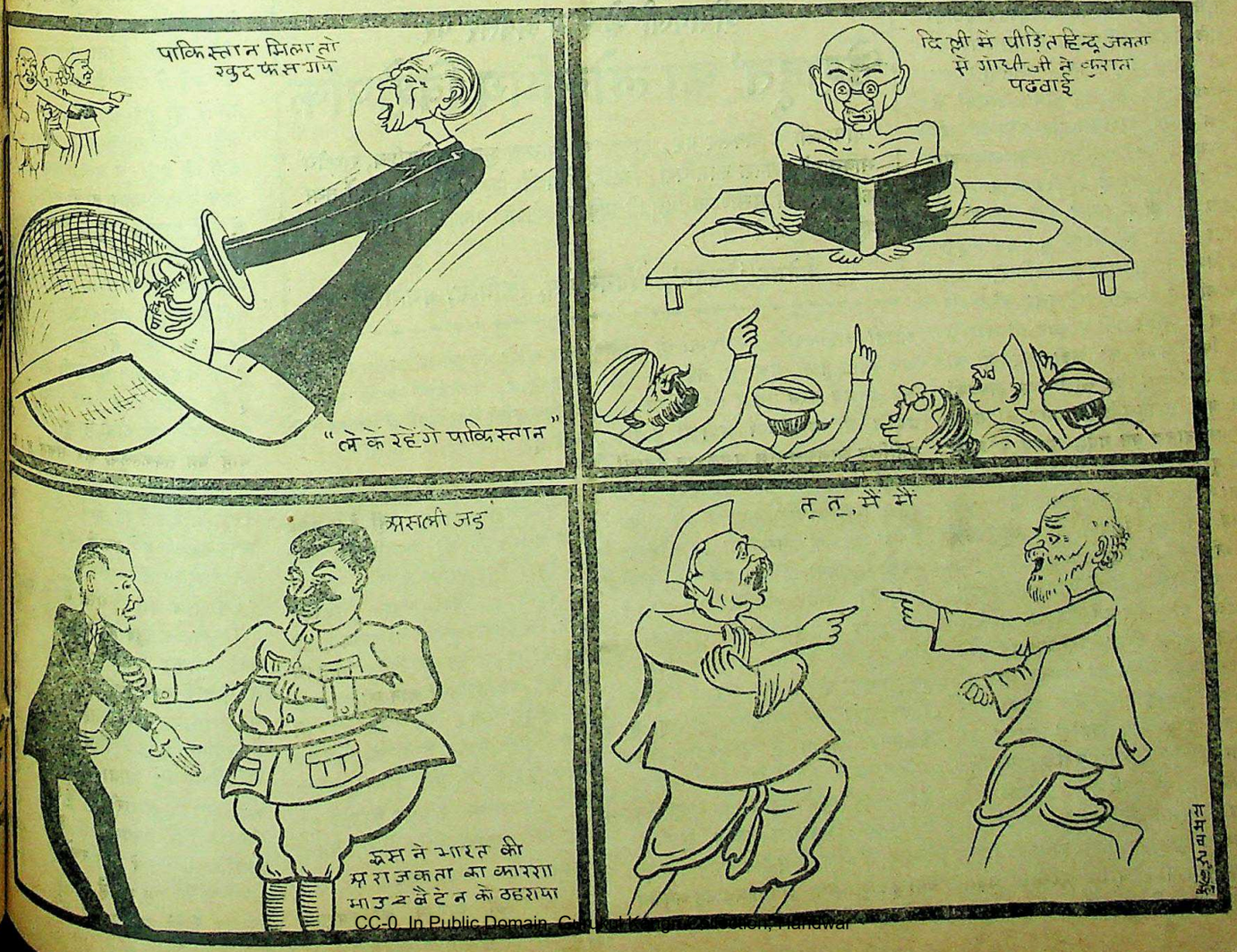

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

अक्ल दुरुस्त हो रही है

भारत के विभाजन के बाद विशुद्ध साम्प्रदायिक दाँव-पेंच की चाल चलनेवाले पाकिस्तानी अथवा मुसलिम लीगियों की अक्ल अब दुरुस्त होनी शुरू हो गई है। अल्प-संख्या जमात के नाम पर लीगियों ने जिस प्रकार का साम्प्रदायिक अंधेर आये दिन मचा रखा है, सचमुच वह असह्य हो उठा है। पश्चिमी पंजाब में हत्या, लूट, आगजनी का जो प्रलयंकर काण्ड हुआ उसका वर्णन ही असंभव है। संभवतः गुंडों की जमात तथा उन्हें प्रोत्साहन देनेवाले साम्राज्यवादी मनोवृत्ति के पृष्ठ-पोषकों ने यह समझ रखा था और अभी तक समझ रखा है कि कांग्रेस-जन तथा हिन्दू जनता नपुंसक है, इसलिए उस पर काबू पाना सरल है साथ ही कांग्रेस-सरकारों को इस प्रकार बदनाम कर दिया जाये कि वह जनता की सरकार होने की क्षमता नहीं रखती। पाकिस्तान से पीड़ित अल्पसंख्यक लाखों की संख्या में सरकार की ओर से हिन्दुस्तान लाये गये और लाये जा रहे हैं, वह भी बड़ी कठिनाई तथा खतरे को उठा कर। आज पश्चिमी पंजाब में लाखों प्राणी निरीह और बे-घर-बार हो गये हैं। उनकी लाखों की सम्पत्ति लुट चुकी है। हजारों स्त्रियाँ और बच्चों का कोई पुरसाहाल नहीं दिखाई दे रहा है, इतना होने पर भी कायदे आजम मिस्टर जिन्ना की आँखों पर परदा ही पड़ा रहा, उनके दाहने हाथ की गजनफरअली खाँ की वाचालता बढ़ती ही गई। बाह्य रूप से शांति और व्यवस्था की पुकार मचानेवाले अथवा पाकिस्तान में अल्प-संख्यकों की रक्षा की घोषणा करनेवाले इन साम्प्रदायिक या कट्टर-पंथी नेताओं के मुख से यही पारायण होता रहा कि पूर्वी पंजाब में मुसलमानों पर बड़ा अत्याचार किया जा रहा है, पश्चिमी पंजाब में कुछ भी नहीं हो रहा है, यदि कुछ हो भी रहा है तो वह नगण्य है। इन कट्टर-पंथियों ने मानवता के प्रति एक दम तिलांजलि दे दी, नर-भक्षी जमात के प्रति न पाकिस्तानी सरकार की ओर से न किसी प्रकार की कड़ी कार्रवाही की गई और न पीड़ित लाखों अल्प-संख्यकों के प्रति सहानुभूति ही प्रगट की गई। मानव दानव बन गया, मानव के प्राणों का मूल्य कौड़ी-मकोड़ों की भाँति हो गया। यही नहीं, शरणार्थियों पर बार बार हमले किये गये, उन पीड़ितों को सुव्यवस्थित स्थानों पर कठिन हो गया।

ऐसे भयंकर कांडों और पाकिस्तानी नेताओं की उपेक्षापूर्ण दृष्टि से यदि भारतीय क्षेत्रों में भी प्रतिक्रिया हुई और अल्प-संख्यक जमात पर आफत आई तो यह न तो अप्राकृतिक है और न आश्चर्य-जनक। मनुष्य पत्थर नहीं है और न वह देवता ही है। दिल्ली, पूर्वी पंजाब तथा संयुक्तप्रान्त के पश्चिमी जिलों पर पश्चिमी पंजाब के भयंकर काण्डों का व्यापक प्रभाव पड़ा और जो कुछ होना था वह हुआ भी। भारत सरकार बड़ी तत्परता से शान्ति-व्यवस्था की स्थापना में सफल हो रही है। साथ ही एक विशेष स्थिति का भंडाफोड़ भी हो रहा है। हजारों की संख्या में अल्प-संख्यक जमात-वालों के यहाँ विस्फोटक पदार्थ तथा अस्त्र-शस्त्र बरामद हुए हैं। इससे एक अनुभव तो यह निश्चय ही होता है कि हिन्दुस्तान के विभिन्न नगरों तथा शहरों में अस्तव्यस्तता, अशान्ति, दंगा तथा फसाद कराने का भयंकर षड्यंत्र बहुत पहले से रचा गया है, साम्प्रदायिक दंगाइयों का यह इरादा पहले ही रहा है कि हिंसा के बल से पाकिस्तान की स्थापना की जाये, नहीं तो भारत-सरकार आज जिस संख्या में अस्त्र-शस्त्र दंगों के क्षेत्रों से बरामद कर रही है, आखिर वह कहाँ मिले और इस व्यापक और गुप्त रूप से उनका वितरण क्यों और किस लिए किया गया? लेकिन हमें प्रसन्नता है कि भारत-सरकार तथा प्रान्तीय सरकार अब सजग हो गई है और वह स्वयं अनुभव कर रही है। इसीलिए समय के पूर्व वह सचेत भी हो गई है। इन सभी दृष्टियों से देखते हुए भारत में जो कुछ हुआ या हो रहा है, वह कुछ भी नहीं है। किन्तु जो कुछ भी हुआ है उससे पाकिस्तानी नेता भी अब प्रभावित हो उठे हैं। वह यह भी अनुभव करने लगे हैं कि भारत की बहुमत जमात यदि पाकिस्तान जमात-द्वारा किये जानेवाले अनाचारों का उत्तर देने लगेगी तो अत्यन्त ही भयावह होगा। इस स्थिति को समझ मुसलमान विशेषकर पाकिस्तानी भावनावाले मुसलमानों की अक्ल अब दुरुस्त होनी शुरू हो गई है। वह अब अनुभव करने लगे हैं कि पाकिस्तानी प्रवृत्ति की प्रतिक्रिया भयावह होगी। इसीलिए आजकल कुछ मुसलमान नेताओं के सुर बदल रहे हैं। संयुक्तप्रान्त के प्रसिद्ध लीगी खलीकुज्जमा ने तो पाकिस्तानी नीति की निन्दा की है। मौलाना हसरत मोहानी ने तो रुख ही बदल दिया है। मिस्टर गजनफरअली की भी अकड़ कुछ कम हो रही है। नवाबजादा लियाकतअली खाँ को शान्ति-स्थापना के लिए दिल्ली दौड़ना पड़ रहा है। इसके सिवा सबसे बड़ी बात यह हो रही है मुसलमान जनता ने पाकिस्तान तथा पाकिस्तान के नेतृत्व के विरुद्ध आवाज बुलंद करनी शुरू कर दी है। यहाँ तक कि मिस्टर जिन्ना का जनाजा मुसलिम जमात की ओर से एकाध जगह उठाया गया है। मुसलिम जनता अब यह अनुभव करने लगी है कि पाकिस्तान केवल दो चार लीगी नेताओं के स्वार्थ साधन का आडंबर है, मुसलमान जनता का हित आर्थिक दृष्टि से सुलझने में अत्यन्त कठिनाई है।

मुसलमान जनता की इस प्रकार की प्रतिक्रिया साधारण नहीं है। समय स्वयं पाकिस्तान की वास्तविकता प्रगट कर देगा। फिर भी हम प्रान्तीय सरकार का ध्यान इस ओर अवश्य आकर्षित करेंगे कि वह पंचम-दल से सावधान रहे और जो राजभक्ति के विरुद्ध आचरण करें उन्हें पाकिस्तान में जाने की व्यवस्था का प्रबंध रखे। भारत-सरकार तो सजग है ही। जनता को सरकार की इस मामले में पूरी सहायता करनी चाहिए क्योंकि भारत तथा प्रान्तीय सरकार पर इस वक्त साम्प्रदायकादियों ने शासन-व्यवस्था में एक अड़ंगा उत्पन्न कर दिया है। शान्ति की [illegible] स्थापना तो हर प्रकार से होनी ही चाहिए।

कांग्रेस मंत्रिमंडल सावधान !

सरकारी कर्मचारी विशेषकर मुसलमान कर्मचारियों को अपना पुराना रवैया बदलना ही होगा

लेखक, पंडित मोहनलाल नेहरू

आज के इस साम्प्रदायिक वातावरण में यह आवश्यक है कि कांग्रेस मंत्रिमंडल सावधानी से शासन-व्यवस्था का संचालन करे। सरकारी कर्मचारी विशेष कर मुसलमान कर्मचारी स्वतंत्र भारतीय सरकार की नौकरी करते हुए राज्य के प्रति वफादारी निभाने में ईमानदारी से आगे नहीं बढ़ रहे हैं। पंडित मोहनलाल नेहरू ने इस लेख में सरकार को सावधान किया है। लेख सामयिक और विचारपूर्ण है।

हँस-हँस के लिया पाकिस्तान लड़ के लेंगे 'हिन्दुस्तान' कहा जाता है कि यह नई बाँग पाकिस्तानी उपद्रवी दे रहे हैं और यही प्रचार कर रहे हैं। मगर यह नई बात नहीं है; जानकार लोग पहले से ही यह कह रहे थे कि पाकिस्तान मिलने पर माँगें बढ़ती ही जायेंगी और मुसलमान नेताओं ने कभी इसके छिपाने की भी कोशिश नहीं की। एक साहब ने तो साफ ही साफ कह डाला था कि पाकिस्तान आ जाये तो हमें बैठने का अवसर मिलेगा और वह मिल भी गया यह सच है कि बहुत से मुसलिम लीगियों ने हिन्दुस्तान के कौमी झंडे की सलामी दी और हिन्दुस्तान की वफादारी का बीड़ा उठाया, मगर कौन कह सकता है कि यह बातें केवल दिखाने की न थीं? कुछ लोगों को ही ऐसी हिम्मत हुई है, जिन्होंने पश्चिमी पंजाब की महामारी की निंदा की है मगर वह भी इस डर से कि उसके बदले में दूसरे शहरों में जहाँ मुसलमान अल्प संख्यक हैं बदला लेना न शुरू हो जाय। समझदार हिन्दू बदला लेने के तरफ नहीं है और न वह उसके लिए [illegible] को उसकाते ही हैं वे तो टंडन जी के [illegible] कल की स्थिति में, प्रचार तक को [illegible] समझते हैं लेकिन वह भी केवल [illegible] जरूर चाहते हैं कि हिन्दू अपने [illegible] अत्याचार करनेवालों का मुकाबि[illegible] करें। वे मौत कायरों की तरह न [illegible] जायें। इसमें बुराई कुछ नहीं है [illegible] जमाना खराब है, मतलब गलत ल[illegible] जा सकता है।

मगर बावजूद पंजाब हत्याकांड मुसलिम लीगी नेता हिन्दुओं पर इ[illegible] दोष आज भी थोपते हैं। मिस्टर जफ़रु[illegible] या दूसरे लीगी नेता यह भूल जाते हैं पश्चिमी पंजाब के लाखों हिन्दुओं के [illegible] जला दिये गये। उनका माल-असबाब [illegible] लिया गया। उनकी औरतें भगाई [illegible] मगर दिल्ली के उपद्रव का रोना वह [illegible] रीका में जाकर रोते हैं, जिना महो[illegible] को लाखों हिन्दुओं के बेघर होने या [illegible] जाने का अफसोस नहीं, वे मुसलमा[illegible] से इस तरह कहते हैं। बदला मत [illegible] जैसे दे सिर्फ बदला लेने का मार-[illegible] कर रहे हैं आजादी क्या आई कि [illegible] लोगों को लूट-मार की आजादी मि[illegible] और उन्होंने उसका पूरा फायदा उठाया [illegible] यहाँ भी जहाँ वे अल्पसंख्यक हैं वहाँ [illegible] उनके उपद्रव बहुधा हो ही जाते हैं। भ[illegible] में सरे बाजार गाय पर आक्रमण करने [illegible] क्या मानी! स्टेशनों पर हिन्दुओं को गोली [illegible] मारने का क्या मतलब। यह तो पाकिस्ता[illegible] नहीं जहाँ दुखी भागनेवालों पर आक्रम[illegible] किये जा सकते हैं, मेरी तो राय [illegible] है कि वे इस बात को भली भाँति जानते हैं कि कांग्रेस सरकार के दिलों में उनके वास्ते एक नर्म कोना है और वह जो भी चाहें वह तक्कल्लुफ कर सकते हैं। हम पंत जी से सहमत हैं कि हमें मुसलमान को हर तरह बचाने की चेष्टा करनी चाहिए मगर जब वही हमें दुख दें और झूठा आरोप लगावें तो हम भी आदमी हैं गुस्सा आ जाता है। गुस्से में आदमी ऐसी बातें कर बैठता है जिनसे वह खुद ही पछताता है मगर यह पछतावा अभी तक पाकिस्तानियों में दिखाई नहीं देता, नवाब जूनागढ़ की शिकायत जाम साहब ने की है कि हिन्दू जागीरदारों पर सिंधी पाकिस्तानियों के असर से धावा बोल दिया है और युद्ध की तैयारी की है। दिल्ली में मुसलमानों ने अल्पसंख्यक होते हुए भी शस्त्रों के कारखाने बना रखे थे, मास्टर तारासिंह को यह डर है कि पूर्वी पंजाब सरकार सिर्फ मुसलमानों की रक्षा है

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

दीपावली के शुभ अवसर पर
'देशदूत' का लोकप्रिय विशेषांक
दीपावली के अवसर पर 'देशदूत' का अत्यन्त सुन्दर, लोकप्रिय, राष्ट्रीय भावनाओं, अनेक सामयिक चित्रों, नेताओं के लेखों, कहानियों तथा कविताओं से सुसज्जित बड़ा ही बढ़िया विशेषांक प्रकाशित होगा। कवर बहुरंगा, मूल्य केवल ।)
मैनेजर 'देशदूत', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शांति और व्यवस्था क्यों जरूरी है

साम्प्रदायिक आग से जनता की रक्षा करनी आवश्यक है

लेखक, माननीय श्री संपूर्णानन्द

राष्ट्र-विभाजन के बाद पाकिस्तानियों की कृपा से इस वक्त साम्प्रदायिक आग भड़क उठी है, इसलिए जनता जनार्दन की शांति-व्यवस्था को खतरा उत्पन्न हो जाना आश्चर्यजनक नहीं है। इस लेख में श्री संपूर्णानन्दजी ने साम्प्रदायिक सद्भावना पर जोर देते हुए यह कहा है कि शांति-व्यवस्था की स्थापना में जनता का सहयोग जरूरी है। लेख पठनीय तथा सुन्दर है।

संयुक्त प्रांतीय सरकार के शिक्षा तथा श्रम मंत्री माननीय श्री संपूर्णानन्द।

१५ अगस्त से हम स्वतंत्र हो गये ... सारा अधिकार विदेशी हाथों से ... हमारे हाथों में आ गया है। ... हमारा है, सेना हमारी है। ... जानता हूँ कि जहाँ स्वाधीनता से ... प्रसन्नता है, वहाँ देश के विभा... से दुःख भी है। यह दुःख स्वाभा... है। हम जिस देश की स्वाधीनता ... तने दिनों से प्रयास कर रहे थे, ... देश की स्वाधीनता के लिए इतना ... आ, इतने लोगों ने अपना ... मन, धन और सर्वस्व न्योछावर ... दिया, उसके दो टुकड़े हो गये हैं। ... हम खिन्न हैं, परन्तु अब केवल शोक ... से काम नहीं चलता। भारत का ... बड़ा भाग हमको मिला है, उसको ... बिगाड़ना हमारे हाथ में है। यह ... होती है कि यदि हम अपने इस ... को सुखी और सम्पन्न बना सकें ... भाग का इसमें फिर मिल ... सुकर होगा।

इसलिये यह आवश्यक है कि हम आज ... रचनात्मक बातों को सोचते। ... और स्वास्थ्य के सम्बन्ध में कहाँ क्या ... है, कहाँ सड़कें बनवानी हैं, उद्योग ... व्यवसाय की वृद्धि कैसी की जाय, ... की कैसी उन्नति हो, अपनी जनता ... दरिद्रता को दूर करने के कौन से उपायों ... लिया जाय, इन सब कामों के लिए ... की आमदनी कैसे बढ़ाई जाय, ... विचारार्थ प्रश्न हैं। सार्वजनिक ... कर्ता तथा प्रान्तीय मन्त्रि-मंडल के ... के नाते मेरा कर्तव्य था कि आप लोगों ... इन प्रश्नों को उपस्थित करता, ... ओर से इनके सुझाव पेश करता ... आप लोगों से परामर्श लेता तथा ... और सहायता के लिए प्रर्थना ...

परन्तु दुर्भाग्य से ऐसी परिस्थिति ... है कि मुझे आपसे दूसरी ही बातें ... पड़ती हैं। रचनात्मक काम शान्त ... में ही हो सकते हैं। जहाँ ... फैली हो, लूट-मार जारी हो, ... की सम्पति, जान और इज्जत ... न हो, वहाँ फिर स्कूल ... अस्पताल किसके लिए खुलेंगे, ... से कौन काम लेगा, कौन ... और उद्योग-धन्धों को ... जब सरकार की सारी शक्ति ... फिसादों को दमन करने में लगी रहेगी, जब उसको आज इस जिले, कल उस जिले, में लूट-मार-हत्या की रोकथाम में अपना सारा समय लगाना पड़ेगा तो वह जनता की सेवा के साधनों की ओर कब ध्यान देगी और उन्नति की योजनाओं से कैसे काम ले सकेगी? यदि सरकारी खजाना पुलिस और फौज का वेतन देने और गोला बारूद खरीदने में ही खर्च हो जायगा तो लोक-सेवा के लिए रुपया कहाँ से आयेगा?

हमको इन सब बातों पर ठंडे दिल से विचार करना चाहिए। मैं जानता हूँ कि आज के दिन अपने हृदय को अनुद्विग्न रखना, ठंडा रखना, बहुत कठिन है। पंजाब की जो बातें अखबारों में पढ़ने में आती हैं वह दिल को हिला देती हैं। आज हमारे बीच में ऐसे लोग हैं जो भुक्तभोगी हैं, जिनका सर्वस्व लुट गया है, जिन्होंने अपनी आँखों अपने घरवालों की निर्दय हत्या देखी है। स्त्रियों के साथ जैसा बर्बर व्यवहार हुआ है, उसको सोचकर जी दहल उठता है। मैं भी मनुष्य हूँ, मुझ पर भी इन बातों का प्रभाव पड़ता है, परन्तु फिर भी मैं आपसे शान्ति की, क्रोध को रोकने की, अपने आवेश को जब्त करने की, अपील करता हूँ। क्रोध करने से न हम अपने प्रान्त का भला कर सकते हैं न पंजाब के दुखिया भाई-बहनों का। आग लगाना सुकर होता है, उसका बुझाना कठिन होता है। पश्चिमी पंजाब इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। अशान्ति को रोकना वहाँ की सरकार और वहाँ के नेताओं के बस के बाहर की बात हो गई है। यदि हमारे प्रान्त में वही बात उठ खड़ी हुई, यहाँ भी हत्या, आग लगाना, लूट-मार जारी हो गया, तो फिर हम भी बेबस हो जायेंगे। कई हजार आदमी मारे जायेंगे, लाखों करोड़ों की जायदाद लुट जायेगी, बहुत से बच्चे अनाथ हो जायेंगे, बहुत सी स्त्रियाँ विधवा हो जायेंगी, पर इससे किसको क्या मिलेगा? जो अपने घर में आग लगा लेगा वह दूसरे के घर की आग क्या बुझायेगा?

इस प्रान्त में हम लोग अधिकतर हिन्दू हैं। मैं हिन्दू के नाते अपने भाइयों से कहता हूँ कि हम अपने धर्म्म की मर्यादा छोड़कर हिन्दू नहीं रह सकते। प्रतिशोध बदले का भाव पागलों के लिए हैं। यहाँ यदि किसी मुसलमान का घर जला दिया गया तो पंजाब के हिन्दू के जले घर की मरम्मत तो नहीं हो सकती। यहाँ की टूटी मसजिद पंजाब के टूटे मंदिर या गुरुद्वारे की दीवार को कैसे खड़ा कर देगी? यहाँ मुसलमान स्त्री को विधवा करने से पंजाब की हिन्दू स्त्री के माथे का पुछा सिंदूर फिर कैसे लौट आयेगा? मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक हिन्दू और सिक्ख गुरु गोबिन्द सिंह के लड़कों की शहादत के समय की यह कथा याद रखें। जिस समय यह लड़के लाहौर के गर्वनर के दरबार में लाये गये उस समय वहाँ एक राजपूत भी था, जिसका पिता गुरु गोविन्दसिंहजी के हाथों मारा गया था। गवर्नर ने उससे कहा तुम अपने पिता का बदला इन लड़कों से लो। उसने उत्तर दिया मैं ऐसा नहीं कर सकता। निरपराधों से बदला लेना राजपूत का धर्म्म नहीं है।

प्रान्तीय सरकार अपनी पूरी शक्ति लगाकर शान्ति को अब तक बनाये हुए है और आगे भी इसका पूरा यत्न करेगी। उसके पास काफी शक्ति है और उसने दंगा-फिसाद रोकने का दृढ़ संकल्प कर लिया है। जरा-सी आग बढ़कर समूचे नगर को भस्म कर सकती है। कभी कभी सरकारी कार्रवाई देखने में बहुत कड़ी प्रतीत होती है, परन्तु इस बात से आप भी सहमत होंगे कि कड़ाई दिखलाकर अशान्ति की चिनगारी को आरम्भ में ही कुचल देना अच्छा होता है। बढ़ जाने पर उपद्रव को दबाने में और अधिक कड़ाई करनी पड़ती है।

परन्तु, कोई भी सरकार हो, उसकी शक्ति वहीं तक होती है जहाँ तक जनता उसके साथ है। यदि जनता सक्रिय रूप से शान्ति बनाये रखने में सहायता करे, उपद्रवकारियों की बात अनसुनी ही न कर दे, वरन् उनको आश्रय और प्रोत्साहन न दे, अधिकारियों पर भरोसा रक्खे, तो सरकार का हाथ मजबूत हो। मैं यह नहीं कहता कि सरकारी अधिकारियों से भूलें नहीं होतीं। अवश्य ही होती है; परन्तु उनकी दुरुस्ती के लिए आप प्रधान मंत्री जी या अन्य मंत्रियों को सूचना दें, कानून और शान्ति का भंग करने से सुधार नहीं हो सकता। सरकार आपकी है। जो उपाय कभी विदेशी शासकों के विरुद्ध ठीक रहे हों वह अपनी सरकार के विरुद्ध काम में लाने से घातक हो सकते हैं।

आजकल झूठी खबरें बिजली के वेग से दौड़ती हैं। लोग सच-झूठ की जाँच करने को तैयार नहीं होते। जो कुछ सुनने में आ जाय उस पर विश्वास कर लेते हैं। हमारा आपका कर्तव्य है कि ऐसे समाचारों के प्रचार को रोकें जो इस समय की आग में ईंधन का काम कर सकते हैं। मैं एक उदाहरण देता हूँ। अभी थोड़े ही दिन हुए अखबारों में यह समाचार निकल गया कि

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

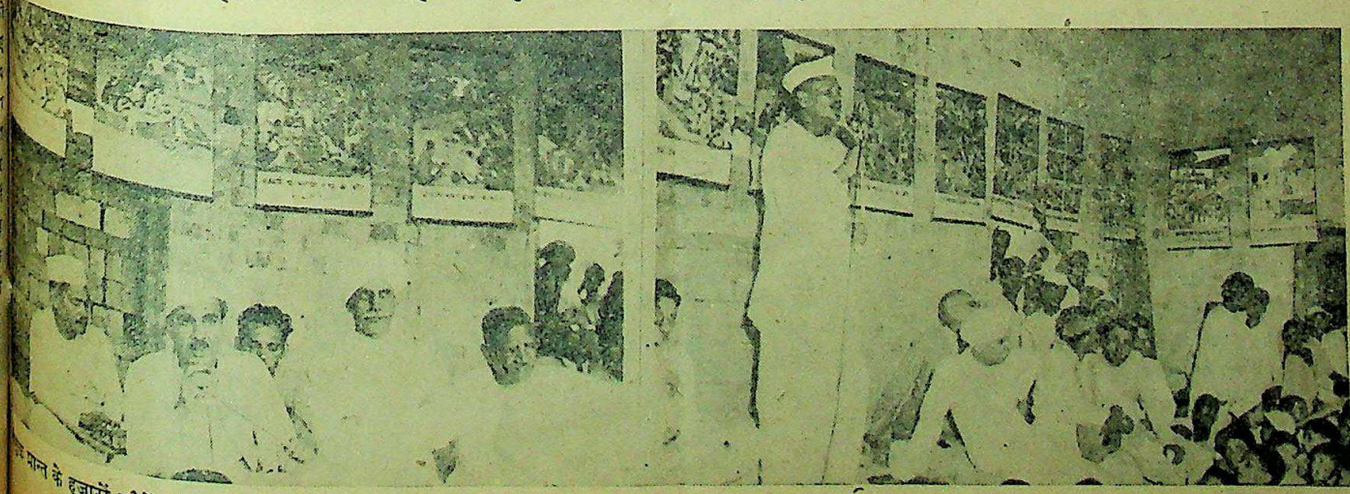

... प्रान्त के हजारों गाँवों में पिछले दिनों उन्नत-दिवस मनाया गया था। बाईं ओर—संयुक्तप्रान्त के उन्नत तथा उद्योग-मंत्री श्री केशवदेव मालवीय हरचंदपुर (रायबरेली) की एक सभा में भाषण दे रहे हैं। दाईं ओर—बछरावाँ की सभा में एक कांग्रेस-नेता भाषण दे रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोआखाली-यात्रा के संस्मरण

श्री प्यारेलाल भाई के साथ यात्रा में कुछ दिन रह-कर मैंने क्या देखा ?

लेखक, सैयद महमूद अहमद 'हुनर'

श्री प्यारेलाल जी महात्मा गांधी के प्राइवेट सेक्रेटरी हैं। पिछली बार गांधी जी ने नोआखाली (पूर्वी बंगाल) की पैदल यात्रा की थी। श्री प्यारेलाल जी, महात्मा जीके नोआखाली से चले आने पर भी, वहाँ के गाँवों में सेवा-कार्य करते रहे। इस लेख के लेखक श्री हुनर महात्मा जी की नोआखाली की यात्रा में उनके साथ थे। लेखक ने इस लेख में यात्रा तथा श्री प्यारेलाल जी के दैनिक जीवन का विस्तृत वर्णन किया है, जो पठनीय तथा सुन्दर है। इस लेख का पहला अंश गतांक में छप चुका है।

श्री प्यारेलाल भाई ने नोआखाली की यात्रा में ११-१२ दिन साथ रहने पर एक दिन नक्शे में देखकर मुझे बताया था कि आज बापू यहाँ से १० मील पर हैं, आज १८ मील पर हैं और आज हमारे गाँव से उनके कैम्प तक का फासला १४ मील हो गया। असल कूच बहुत धीरे धीरे हो रहा था, प्यारेलाल भाई के पास एक तो समय बहुत कम रहता था, दूसरे मैं यह भी सोचता था, कि शायद मेरे वहाँ रहने से प्यारेलाल भाई का अकेलापन भी कुछ दूर हो गया और जब वे रात को कभी कभी मुझे नोआखाली, बापू, महादेव भाई और कांग्रेस के अन्य नेताओं की बातें सुनाते तो मुझे उनके साथ रहने की इसलिये और भी खुशी होती कि मेरे होने से प्यारेलाल भाई काम के अलावा कुछ बातें भी कर लेते हैं। मैं न होता तो बेचारे यह बातें किससे करते ?

आखिर एक दिन नक्शे में हमें बताया कि बापू कल नन्दीग्राम नाम के गाँव पहुँचेंगे और वह गाँव भटियालपुर से सिर्फ ५ मील पर है। मैंने सोचा कि मैं कल ही बापू के पास पहुँच जाऊँ लेकिन काम अभी तक पूरा नहीं हुआ था इसलिए प्यारेलाल भाई से कहने की हिम्मत न पड़ी। नंदीग्राम में जनरल शाहनेवाज भी बापू से मिलने पहुँचे थे और उनसे मिलने की भी इच्छा थी पर वह दिन ऐसे ही बीत गया यहाँ तक कि प्यारेलाल भाई बापू से मिल भी आये और मैं भटियालपुर में ही पड़ा रहा। अब बापू रोज हमसे दूर होते गये। प्यारे-लाल भाई कभी कभी मुझसे कहा करते कि आपको मैंने बड़ी तकलीफ दी और जब मैं कहता कि यहाँ तो मैं आपके पास बहुत खुश हूँ तो उन्हें विश्वास न होता कि मैं यह बात दिल से कह रहा हूँ या यों ही उन्हें खुश करने के लिए और मैं खुद भी यह नहीं कह सकता या नहीं कहना चाहता कि मैं दिल से कहता था या महज दिखलावे के लिए कह देता था। अब आठ-दस बाड़ियों में सफाई का काम हो चुका था, कई बाड़ियों में सहभोज हो चुके थे और एक बाड़ी में प्यारेलाल भाई के कहने से वहाँ के निवासियों ने २४ घंटे का अखण्ड कीर्तन किया था उसमें शामिल होने के लिए हम लोग सुशीला पाई को बुलाने उनके गाँव गये थे। प्यारेलाल भाई ने उनसे कह रखा था कि उस कीर्तन में उन्हें अपने गाँव की सब स्त्रियों के साथ शरीक होना है। जब हम उन्हें बुलाने गये और वे अपने गाँव की स्त्रियों को साथ लेकर चलीं तो पच्चीस, तीस जवान बूढ़ी स्त्रियों का एक अच्छा खासा जलूस बन गया। सुशीला पाई ने बताया कि यह स्त्रियाँ दंगा होने के बाद आज पहली बार गाँव से बाहर निकली हैं।

उनमें यह साहस और हिम्मत सुशीला पाई के उस गाँव में रहकर काम करने का ही फल था, हम शाम को सुशीला पाई को फिर पहुँचाने के लिए उनके गाँव तक गये। आते समय अच्छा खासा अँधेरा हो चुका था लेकिन यह अँधेरा उतना गहरा नहीं था जितना आखिरी बार जब हम सुशीला पाई को करपाड़ा पहुँचा कर वापस लौटे। सुशीला बहन कस्तूर बा-स्मारक निधि के डाक्टरी विभाग की सेक्रेटरी भी हैं और वे उसी के सिलसिले में बरधा जा रही थीं, उस दिन सुशीला बहन प्यारेलाल भाई के पास दिन में आई और वहाँ से प्यारेलाल भाई और मैं उनके साथ सुशीला पाई के यहाँ गये सुशीला पाई को साथ लेकर हम जीप पर काजिरखेल पहुँचे और वहाँ से रात को कोई ९½ बजे केरुआ गाँव के लिए जीप पर चले। बापू उस दिन केरुआ में ही ठहरे थे। वह गाँव सड़क से एक ही मील पर था। हमको ठीक से रास्ते का पता नहीं था, लेकिन रास्ते में खादी प्रति-ष्ठान के पास श्री चारु चौधरी मिल गये और अपनी जीप रोक-कर हमारे ड्राइवर को रास्ता अच्छी तरह समझा दिया, लेकिन फिर भी रात इतनी अँधेरी और रास्ता ऐसा सुनसान था कि कई जगह गाड़ी रोक-रोककर हमें गांधी जी के ठहरने का स्थान पूछना पड़ा। ११ बजे के करीब उस पते पर पहुँच गये जहाँ से पैदल बापू के पड़ाव तक पहुँचना था। सड़क पर एक दर्जी की दूकान थी, वह सोने ही जा रहा था कि हम लोगों ने उससे पता पूछा और जब उसने सुशीला बहन को वहाँ तक पहुँ-चाने में कुछ आनाकानी की तो सुशीला पाई ने बँगला में उससे बात की और उसे समझाया कि मेहमान की मदद करने में कोई सङ्कोच नहीं करना चाहिए। आखिर उसने पड़ोस के दो-एक आदमियों को और साथ में लिया और लालटेन लेकर बापू के पड़ाव तक जाने को तैयार हो गया अगरचे हम यह जानते थे कि वे उस समय सो गये होंगे, मनु बहन भी सो रही होंगी और शायद ही वहाँ कोई जागता हुआ मिले। फिर भी मेरी और साथ ही सुशीला पाई की भी इच्छा थी कि हम लोग भी सुशीला बहन को कैम्प तक छोड़ते आयें और अगर

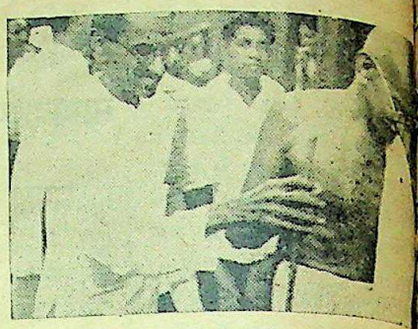

महात्मा गांधी के प्राइवेट सेक्रेटरी श्री प्यारेलाल ट्रेन में चढ़ने के लिए गांधी जी को सहारा दे रहे हैं।

प्यारेलाल भाई भी कैम्प तक जाते होते तो हम लोग भी जरूर उनके साथ जाते; पर प्यारेलाल भाई ने कहा कि थोड़ी दूर तक सुशीला बहन को पहुँचा लौट आऊँगा इसलिए हम लोग गाड़ी में बैठे रहे और प्यारेलाल भाई लौटने की राह देखने लगे।

आधे घण्टे से ज्यादा समय हो और प्यारेलाल भाई के न लौटने पर सुशीला पाई कहने लगीं कि प्यारेलाल जरूर बापू के पास तक चले गये। उन्हें शायद पहले ही से विश्वास था कि प्यारेलाल भाई जल्दी न लौटेंगे। कहने लगीं "मैं पहले ही समझ रही थी कि वे मुझे बहन को बापू तक पहुँचाये बिना न लौटेंगे।" जैसे जैसे समय बीतता जाता था, हम लोगों की घबराहट बढ़ती जाती थी। मैं सोच रहा था कि अगर प्यारेलाल भाई बापू के पास तक ही जाना था तो मुझे भी साथ लेलेते। प्रेस कैम्प में सबलोग नसोये होंगे। मैं उन लोगों से दो ही मिनट तक के लिए मिललेता और फिर निर्मल (प्रो० निर्मलकुमार बोस) अभी शायद सोये हों और अपनी डायरी लिख रहे हों उनसे भी मुलाकात हो जाती और ठीक शायद बापू भी जागते होते तो उनके भी दर्शन हो जाते। हम लोग कभी जीप से उतरकर टहलने लगते, कभी बातें करने लगते, कभी टार्च जिस तरफ प्यारेलाल भाई गये थे, उसकी रोशनी में उन्हें ढूँढने लगते। टहलते-टहलते हम थक गये। बातें खत्म गईं, बल्कि बातें करते करते ऊब गये और मैं तो यह सोचकर कि सो लूँ, जीप की अगली सीट पर बन्द करके बैठ गया तब कहीं दूर पर आहट सुनाई दी। पूरे डेढ़ बाद प्यारेलाल भाई सरदार जोगेन्द्र (जो नोआखाली में आई.एन.ए. के हियों के साथ पीड़ितों की सहायता का कर रहे थे और बापू के साथ साथ थे) के साथ आ रहे थे। वहाँ से हम जीप पर लौटे और सड़क पर जीप को कर फिर सुशीला पाई के घर उनको चाने गये। मैं काफी थक गया था पर लाल भाई तो थकने का नाम ही न थे। दो बजे हम लोग भटियालपुर और ढाई बजे के करीब जब मैं सुबह साढ़े सात बजे उठा तो देखा प्यारेलाल भाई रोज की तरह नियमि अपना काम कर चुके थे।

रोगियों की सेवा तो प्यारेलाल का सबसे प्यारा काम था उन दिनों

शेष पृष्ठ १४ पर

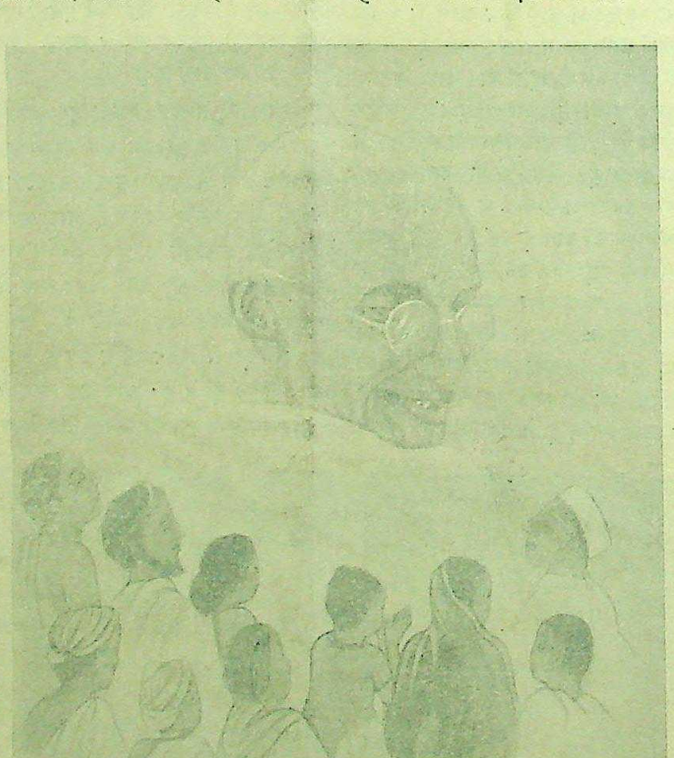

महात्मा गांधी दिल्ली की प्रार्थना-सभा में मेल-मिलाप पर भाषण दे रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...वर्षगाँठ के अवसर पर

माननीय पं० गोविन्दवल्लभ पंत

राष्ट्र के तपस्वी, त्यागी और विधानवादी नेता

लेखक, श्री गंगाधर इन्दूरकर

...के प्रधान मंत्री माननीय पंडित पंत राष्ट्र के एक तपस्वी, त्यागी, विधान-... तथा कांग्रेस के एक सुदृढ़ और महान् स्तम्भ हैं। २९ सितम्बर को आपकी ...वर्षगाँठ समारोहपूर्वक मनाई जा रही है। इस लेख में लेखक ने माननीय पंत जी ...वर्षगाँठ के अवसर पर श्रद्धांजलि भेंट की है और उनके जीवन पर भी सुन्दर प्रकाश डाला है। लेख जानकारी से पूर्ण और सामयिक है।

...बुद्धिमत्ता और धैर्य व्यक्त करनेवाली ...आँखें, हृदय की विशालता बताती ...विशाल शरीर आजानु बाहु की तरह ...होनेवाले लम्बे हाथ, ढीली धोती, ...कुरता, कम चौड़ी दीवाल की गांधी ...हाथ में एक मोटी छड़ी बातचीत ...समय शरीर में विशेषकर गर्दन में ...होने की आदत आदि कुछ ऐसी ...हैं जिनसे युक्तप्रांत के प्रधान मंत्री ...गोविन्दवल्लभ पन्त कहीं भी आसानी ...पहचाने जा सकते हैं।

पन्त जी आज अपने जीवन के ६१वें ...में पदार्पण कर रहे हैं। हम चाहते ...कम से कम अपने जीवन के सौ ...तक स्वस्थ रहें और देश के विशेषकर ...प्रांत को समृद्ध बनाने में अपना ...योग दें।

अल्मोड़ा जिला में खुंट नामक एक ...गाँव है। इस गाँव के निवासी अधि-...पन्त ब्राह्मण ही हैं। इसी गाँव में ...१८८७ में हमारे प्रधान मंत्री का जन्म ...। 'होनहार बिरवान के होत चीकने ...' इस कहावत के अनुसार अपनी ...अवस्था में ही अत्यन्त प्रतिभाशाली ...जाते थे। आपके नाना पं० बद्री-...जोशी एक प्रसिद्ध व्यक्ति थे। इन्हीं ...देख-रेख में पन्त जी ने राजनीति तथा ...शास्त्र की शिक्षा पाई। पं० पन्त ने ...के रेमेज कालेज में पाँच वर्ष तक ...किया। इसी समय पं० पन्त ...नाना पं० बद्रीदत्त जोशी की मृत्यु ...के कारण पन्त जी के अध्य-...में काफी अड़चनें उपस्थित हुईं। ...उत्तम जन विघ्न और बाधाओं ...नहीं बल्कि उसी में से अपने ...की सफलता के लिए रास्ता खोजते ...पन्त जी ने भी इसी प्रकार बीच ...अध्ययन न छोड़ा और वे इलाहाबाद ...कालेज में आकर भरती हो गये। ...के वर्तमान गवर्नर डा० कैलाश-...काटजू तथा सुन्दरलाल आपके ...थे। १९०७ में आपने कानून ...डिग्री हासिल की।

कानून की डिग्री लेने के बाद पं० पन्त ...कुमाऊँ के कोर्ट में प्रैक्टिस शुरू की। ...यह कहा जाय कि पन्त जी का ...ही वैधानिक मस्तिष्क है तो ...अत्युक्ति न होगी। कुमाऊँ कोर्ट ...कार्रवाई उस समय एक्सीक्यूटिव ...असिस्टेंट कलेक्टर, डिप्टी कमि-...तथा कमिश्नर के सामने हुआ ...थी। इन्हें वैधानिक बारीकियों ...घुसने के लिए न तो समय था ...न आवश्यकता ही। पंत जी किसी ...को थोड़े में समझाने में बहुत ही चतुर हैं। आपने इस कोर्ट में काफी नाम कमाया। आपने अपने जीवन का अधिकांश समय कुमाऊँ में बिताया। इसका कारण यह है कि आपको पहाड़ी प्रदेश से काफी प्रेम है। यदि आप सार्वजनिक जीवन में—राजनीतिक जीवन में न उतरते तो शायद आप अपना सारा जीवन ही पहाड़ी प्रदेश में बिता देते।

पंत जी को प्रारंभ से ही राजनीतिक कार्यों से दिलचस्पी थी। १९०५ में जब आप इलाहाबाद पढ़ने के लिए आये तभी से आपका कांग्रेस के साथ सम्बन्ध हुआ। किन्तु यह एक बड़े ही आश्चर्य की बात है कि आप १९४६ तक एक बार भी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य क्यों न चुने गये। हमारी समझ में इसका कारण केवल आपका संकोची स्वभाव ही है।

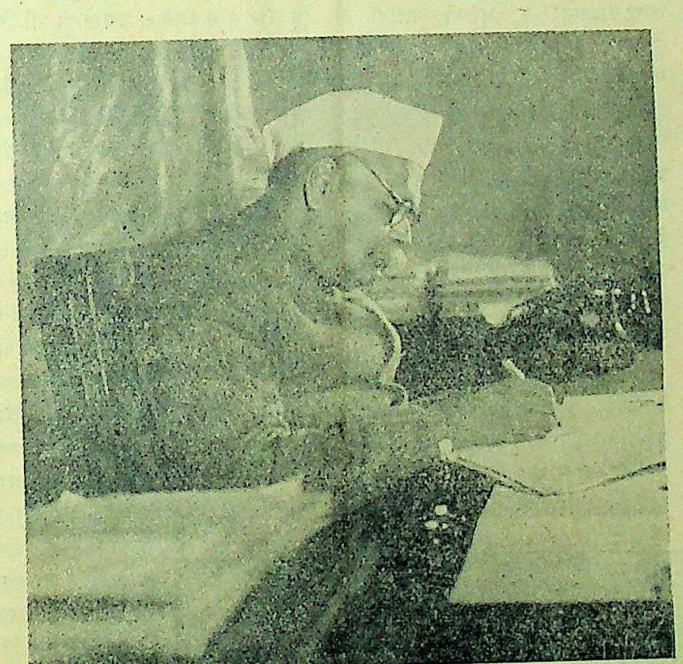

संयुक्तप्रांत के प्रधान मंत्री माननीय पंडित गोविन्दवल्लभ पन्त की ६१वीं वर्षगाँठ का उत्सव आगामी २९ सितम्बर को मनाया जा रहा है।

जो बात आपकी समझ में नहीं आती उसमें आप किसी प्रकार शामिल नहीं हो सकते। इसीलिए १९१९ में असहयोग-आन्दोलन में आप गांधी जी का साथ न दे सके। १९२३ में पं० मोतीलाल नेहरू द्वारा स्थापित स्वराज्य पार्टी में शामिल हुए और इसी वर्ष आप युक्तप्रान्तीय लेजिस्लेटिव कौंसिल में स्वराज्य पार्टी के नेता चुने गये। कौंसिल में आपसे श्री सी० वाई० चिन्तामणि से मित्रता हुई; यद्यपि दोनों के दृष्टिकोण दो छोर पर थे किन्तु इससे उनकी मित्रता में कभी बाधा नहीं पहुँची। १९३४ में आप केन्द्रीय एसेम्बली के सदस्य बनें और इस अवसर से लाभ उठाकर आपने अर्थशास्त्र में विशेष योग्यता प्राप्त की। आप आर्थिक पहलुओं के इतनी अधिक बारीकियों में जाते थे कि उस समय के अर्थ-सदस्य ने इन्हें 'शब्दों से बदला लेनेवाला प्रतिद्वन्द्वी' इस उपाधि से विभूषित किया था।

केन्द्रीय असेम्बली में आपने जो कार्य किया उसी से १९३७ में प्रांतों में जब प्रथम बार कांग्रेस का मंत्रिमंडल बना ऐसम्बली कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व की विजयमाल आपके गले में पहनाई गई। आप युक्त-प्रांत के प्रधान मंत्री बने। आपकी शासन-चतुरता देखकर ढीलीढाली धोती पहननेवाला यह पहाड़ी ब्राह्मण शासन कैसे कर सकेगा, यह लोगों का सन्देह काफूर की तरह उड़ गया।

आप वक्ता भी ऐसे हुए हैं कि कोई विरोधी भी आपकी प्रशंसा ही करे। विरोधी का खंडन करते समय न तो आप कठोर शब्दों का ही प्रयोग करते हैं और न विरोधी की हँसी ही उड़ाते हैं। बल्कि युक्ति और तर्क से आप विरोधी का खंडन करते हैं।

साम्प्रदायिकता की ज्वाला जब चारों ओर जोरों से फैल रही है उस समय युक्त-प्रान्त को उस ज्वाला से ध्वस्त न होने देने का अधिकांश श्रेय आपको ही है। यदि आपका सुयोग नेतृत्व हमारे प्रान्त को न प्राप्त हुआ होता तो पता नहीं उस आग में जलकर हम आज कहाँ होते।

अभी हाल के युक्तप्रान्त के हिन्दू-सभा के आन्दोलन को विफल बना देने में आपने जिस चतुरता और सजगता से काम लिया है उसकी भी प्रशंसा किये बगैर नहीं रहा जाता। दुश्मन की कमजोरी जानकर उस पर प्रहार करना और उसे उठने न देना यही राजनीतिज्ञता है। पं० पन्त के विचारों से कोई सहमत हो या न हो उसे यह तो मानना ही पड़ेगा कि पन्त जी ने ऐसे अवसर पर जब कि हिन्दू जनमत कांग्रेस के काफी विपक्ष में हो रहा था, युक्तप्रान्त की हिन्दू-सभा अपनी जड़

प्रधान मंत्री माननीय पंडित पन्त

मजबूत करने जा रही थी, शतरंज की ऐसी चाल खेली कि हिन्दू-सभा का आन्दोलन तो दब ही गया। हिन्दू-सभा की जमीन में घुसती हुई जड़ें फिर से उखड़ गईं।

पन्त की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि आपकी सभी बातें शान्ति और धैर्य के साथ सुनेगें। कभी उकतायेंगे नहीं किन्तु उसमें से उतनी ही बातें उनके गले के नीचे उतरेंगी जितनी काम की होंगी।

आपका आतिथ्य-सत्कार भी बहुत प्रसिद्ध है; और इसके कारण आपको बहुत तकलीफ भी उठानी पड़ती है। १९४५ में पं० नेहरू जब अल्मोड़ा जेल से छूटे बहुत से लोग उनका स्वागत करने नैनीताल पहुँचे थे। उनमें से अधिकांश लोगों ने पंत जी के ही घर पर अपना डेरा जमाया था। पन्त जी का घर मानो स्टेशन का मुसाफिरखाना बन गया था। किन्तु पन्त जी के चेहरे पर शिकन तक न थी। वे स्वयं सब मेहमानों की देख-भाल करते थे।

१ अप्रैल १९४६ को जब पन्त जी ने दूसरी बार प्रांत का नेतृत्व अपने हाथों में लिया तब उन्होंने पहली घोषणा यह की थी कि हम प्रान्त में किसी को भूखों न मरने देंगे। उस समय इस घोषणा का विशेष महत्त्व था। सारे देश में अन्न-संकट छाया हुआ था। पन्त जी ने अपना वादा पूरा किया और प्रान्त की जनता अन्न-संकट में भूखों मरने से बच गई।

अन्य कांग्रेसी नेताओं की तरह पन्त भी कई बार जेल गये हैं। किन्तु पन्त जी के साथ १९२८ में लखनऊ में साइमन कमीशन को काला झंडा दिखलाते समय एक दुःखद घटना भी हुई है जिसका वर्णन पं० नेहरू ने अपनी आत्मकथा में इस प्रकार किया है—"परन्तु दुर्भाग्यवश मुझे कोई चोट नहीं आई। हमारे कई साथी कम-बदकिस्मत थे और वे बुरी तरह घायल हो गये। गोविन्दवल्लभ पन्त जो मेरे पास ही खड़े थे, खासा अच्छा निशाना बने हुए थे और सब की खाई हुई चोट ऐसी तकलीफ छोड़ गई, जिसने उनकी कमर को लम्बे अरसे तक सीधी न होने दिया और कर्मठ जीवन में बाधा पहुँचाई। असल मारपीट ज्यादातर योरोपीय सार्जंटों ने की।" (हिन्द समाचार-समिति द्व सर्वाधिकार सुरक्षित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देशदूत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में कपड़े की तबाही क्यों है

राष्ट्रीय सरकार के सामने जनता की एक प्रधान समस्या

लेखक, श्री राजवल्लभ ओझा

भारत में आजकल कपड़े की तबाही है। युद्ध समाप्त हुए कई वर्ष गुजर गये और गत १५ अगस्त से भारत को स्वतंत्रता भी प्राप्त हो गई; किन्तु कपड़े के व्यवसाय की स्थिति आज भी पूर्ववत् ही नहीं उससे भी बदतर हो गई है। लेखक ने इस लेख में कपड़े की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए यह बतलाया है कि यह समस्या कैसे हल हो सकती है।

द्वितीय महायुद्ध के पूर्व भारत में जितना कपड़ा तैयार होता था उससे अधिक कपड़ा इस समय तैयार हो रहा है; किन्तु फिर भी अभिजात वर्ग को छोड़कर देश की अन्य जनता वस्त्र की विकट समस्या से परेशान है। मिल-मालिक वस्त्र-उत्पादन के सही आँकड़े नहीं बताते हैं ताकि, उन्हें चोरबाजारी करने का पूरा मौका मिलता रहे। सूती मिल-मालिकों का एक वर्ग तो यह प्रचार कर रहा है कि कपड़े पर से कन्ट्रोल हटाते ही यह समस्या हल हो जायगी। वस्त्र-संकट का एकमात्र कारण कन्ट्रोल है। इस प्रचार का एकमात्र उद्देश्य यह है कि कन्ट्रोल हटते ही मनमानी कीमत पर बाजार में वे अपना माल बेच सकेंगे और देश की गरीब जनता का शोषण कर वे अपनी तिजोरियाँ भरेंगे। कपड़ा-मिल के कुछ मालिक यह कहते हैं कि देश में कपड़े की बहुत कमी है और मजदूर हड़ताल करके वस्त्र-संकट को और भी गंभीर बना रहे हैं। यह दल दामों को ऊँचा रखकर अधिक नफा कमाने के लिए यह झूठा प्रचार कर रहा है। युद्धकालीन स्थिति का अवलोकन करने पर ज्ञात होगा कि मिल-मालिकों ने जनता की कठिनाइयों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उन्होंने सरकारी कानूनों की भी चिन्ता नहीं की क्योंकि रुपये के बल पर वे सब कुछ कर सकते थे। लोगों के पास तन ढकने के लिए कपड़ा नहीं था। देश के कई भागों में जब स्त्रियों को शर्म ढकने के लिए कपड़ा नहीं था तब उन्होंने आत्म-हत्या कर ली। किन्तु फिर भी मिल-मालिकों का हृदय नहीं पसीजा और उनकी चोर-बाजारी तथा मुनाफाखोरी को आज कौन नहीं जानता। भोजन और वस्त्र मनुष्य के लिए दो आवश्यक चीजें हैं। आज इन दोनों चीजों की विकट समस्या देश के सामने उपस्थित है। उपद्रवों के कारण राष्ट्रीय सरकार इन प्रश्नों की ओर ध्यान नहीं दे पाती। फलतः यह समस्या और गंभीर होती जा रही है।

हमारे देश में पहले पहल १८५१ में कपड़ा-मिल बनी थी। इस समय कुल ४२१ कपड़ा-मिलें हैं। युद्ध-काल में भारतीय कपड़ा-मिलों के करघे पहले से दुगने हो गये और साँचे पहले से ड्योढ़े। कपड़ा-मिलों में काम करनेवाले मजदूरों की संख्या बहुत बढ़ गई है। इस प्रकार तकुओं की गति-वृद्धि और हाल के करघों की संख्या में वृद्धि भी विशेष उल्लेखनीय है। आज देश की कपड़ा-मिलों में करीब १० लाख मजदूर कार्य करते हैं। इनके अतिरिक्त २० लाख बुनकर हाथ से कपड़ा तैयार करते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि ४० करोड़ नर-नारियों के लिए ३० लाख व्यक्ति कपड़ा तैयार करने में लगे हुए हैं। कपड़े का उद्योग हमारे देश का सबसे उन्नतिशील और व्यापक उद्योग-धन्धा है। प्रथम विश्व-युद्ध के बाद से लगातार हम इसमें उन्नति कर रहे हैं। ब्रिटिश साम्राज्यशाही के कारण मशीनों के उत्पादन में हमने भले ही कोई कदम न उठाया हो किन्तु कपड़े के उत्पादन में हमने अवश्य उन्नति की है और कपड़ा-मिलों की बढ़ती हुई संख्या इस बात का प्रमाण है। १९४६ में भी कुछ नई मिलें खुली हैं। इन बातों से यही प्रकट होता है कि कपड़े का उत्पादन हमारे देश में पहले से ज्यादा है किन्तु चोर-बाजारी और मुनाफाखोरी के कारण कपड़ा आज जनता को नहीं मिलता।

सरकारी आँकड़ों के अनुसार जनता के लिए आज १९३९ से अधिक कपड़ा है। १९३९ में फौज और विदेशी बाजारों के लिए जो कपड़ा दिया जाता था उसे काट दिया जाय तो भी लोगों के लिए ४ अरब गज कपड़ा बचता था। किन्तु आज ४ अरब ३० करोड़ गज कपड़ा जनता के लिए मिलना चाहिए। इसका अर्थ यह हुआ कि १९३९ में ३० करोड़ गज अधिक कपड़ा हमें मिल रहा है किन्तु मिल-मालिक कहते हैं कि देश में कपड़े की कमी है। सरकार भी इस बात को मान लेती है। यही हमारा दुर्भाग्य है; किन्तु यह बात स्पष्ट है कि कपड़े की कमी नहीं है। ऐसी स्थिति में कपड़े की समस्या हल करने के लिए दो ही रास्ते हैं। नेहरू सरकार कपड़ा-मिलों को राष्ट्र की सम्पत्ति घोषित करे और यदि वह अभी संभव न हो तो केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारें इनके प्रबन्ध-विभाग पर अपना नियंत्रण रखें। यह कितने आश्चर्य की बात है कि जब कपड़ा-मिलों में करघे पहले से दुगुने हो गये हैं और साँचे पहले से ड्योढ़े तो भी मिल-मालिकों ने सूत का उत्पादन पहले की अपेक्षा २९ प्रतिशत और कपड़े का उत्पादन १४ प्रतिशत बढ़ा हुआ बताया है। जाहिर है कि उत्पादन का तीन-चौथाई भाग मिल-मालिक दबाकर बैठ गये हैं। ऐसी स्थिति में कपड़ा-मिलों पर सरकारी नियंत्रण अनिवार्य है। यदि सरकार ने ऐसा न किया तो इसके दो ही परिणाम होंगे—(१) कपड़े का यह बनावटी अभाव दूर नहीं होगा और (२) यदि दूर हुआ तो बाजार में इतना महँगा कपड़ा मिलेगा कि लोगों की कमाई का अधिकांश भाग कपड़ा खरीदने में लग जायगा जैसा कि खाद्य-सामग्री खरीदने में लग रहा है और इस प्रकार जनता भोजन और वस्त्र के चक्कर में फँसकर अपनी सांस्कृतिक, भौतिक, और आध्यात्मिक उन्नति की ओर कोई ध्यान न दे सकेगी। इसका घातक परिणाम हमारी सामाजिक व्यवस्था पर पड़ेगा। आज जनता जीवन की आवश्यक चीजों को एक करने में फँसी रहेगी और प्रति-क्रियावादी शक्तियाँ संगठित होकर शासन-व्यवस्था पर अपना अधिकार जमायेंगी। राष्ट्रीय

कपड़ा बनाने की मिल में मशीनों से कपड़ा बनाया जा रहा है।

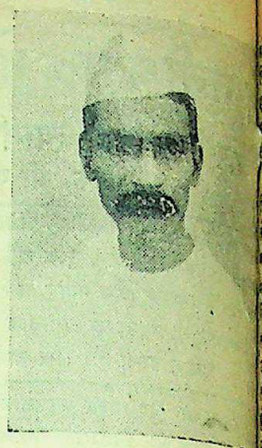

भारत-सरकार के भोजन-सदस्य डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद

जीवन में आज जनता के विरुद्ध यह षड्यंत्र रचा जा रहा है उसे हमें विफल बनाना है अन्यथा १५ अगस्त के बाद उन्नति का जो द्वार उन्मुक्त हो गया है वह पुनः अवरुद्ध हो जावेगा।

कपड़ा-संबंधी सरकारी आँकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होगा कि १९३९ में प्रत्येक भारतीय अपने कपड़ों पर औसत दो रुपये व्यय करता था। युद्ध-काल में ६।।) खर्च करने पर भी कपड़ा नहीं मिलता था। १९३९ में कपड़े के जो दामों को हम १०० मान लें तो सरकारी आँकड़ों के अनुसार बढ़ी हुई कीमत के संबंध में ये आँकड़े तैयार होते हैं—

१९४०	...	१४१
१९४१	...	१५३
१९४२	...	१९२
१९४४	...	२५४
१९४५	...	२६८
१९४६	...	२८४

इन आँकड़ों से प्रकट होता है कि युद्ध-काल में कपड़े की कीमत पहले की अपेक्षा तीनगुनी बढ़ गई थी और आज चौगुनी कीमत बढ़ी हुई है। केन्द्रीय सरकार ने कपड़ों के मूल्य पर नियंत्रण रखने के लिए एक बोर्ड नियुक्त किया किन्तु इस बोर्ड में ऐसे लोग थे जिन्हें जनता की अपेक्षा मिल-मालिकों की विशेष चिन्ता थी। फलतः मूल्य पर ऐसा नियंत्रण हुआ कि मिल-मालिकों की बन आई और बोर्ड ने कपड़े की अंधाधुंध बढ़ी हुई कीमत को ही सरकारी रूप से स्वीकार कर लिया। बोर्ड के इस निर्णय से जनता काफी क्षुब्ध थी किन्तु राष्ट्रीय सरकार ने इस प्रश्न की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया।

कपड़े का मूल्य सरकारी आँकड़ों के अनुसार जितना बढ़ा है यदि उतना ही जनता को देना पड़ता तो कुछ सन्तोष होता किन्तु यहाँ तो चोर-बाजार में कपड़ा कई गुना महँगा मिलता है। फलतः जनता के लिए तो कपड़े की कीमत बहुत बढ़ गई है। सुना तो यहाँ तक गया है कि कंट्रोल की जो साड़ी ४) की मिलती है वही साड़ी बाजार में १२ रु० तक मिलती है। यही कारण है कि देश के करोड़ों नर और स्त्री अधनंगे घूमते हैं और कपड़ा तैयार करनेवाले लाखों मजदूर आधे की जिन्दगी व्यतीत करते हैं।

शेष पृष्ठ १४ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

विश्वासघात

लेखिका, श्रीमती कमला सैटिन

यह जमाना बड़ा विचित्र है। मानवता का इतना पतन हो गया है कि उसे भले-बुरे अथवा उचित-अनुचित का ज्ञान ही नहीं रह गया है। इस कहानी में एक बुद्धिवादी और अर्थवादी के मनोभावों तथा सामाजिक जीवन में घटित होनेवाली अनुभूतियों को चित्रित किया गया है जो पठनीय तथा सुन्दर है।

"प्रभा अब मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा", कहते हुए सेठ हजारीलाल बोले, "बड़ी दुविधा में जान है। एक ओर साठ हजार रुपये का सवाल है, दूसरी ओर लड़की का। किसको छोड़ूँ, समझ में नहीं आता।"

सेठ जी काफी रईस आदमी हैं लेकिन फिर भी रुपये के लिए सब कुछ करने को तैयार रहते हैं। उनकी उम्र ५५ साल की है लेकिन अभी किसी नौजवान से कम नहीं है। उनका सबसे छोटा लड़का अभी सिर्फ साल भर का ही है। प्रभा रुपये के लालच से सेठ जी के पास रहती है, हालाँकि उसकी उम्र अभी २३ ही साल होगी। तीन स्त्रियाँ सेठ जी की मर ही चुकी हैं। एक मायके में रहती है। सेठ जी के पास आजकल प्रभा ही रहती है।

इस समय उनका ६०,०००) एक मुकदमे में फँस रहा है। जिस अधिकारी के हाथ में सब मामला है वह सेठ जी की ५० साल की लड़की से शादी करना चाहता है। उसकी उम्र भी ५० के लगभग ही है। इसीलिए सेठजी की समझ में कुछ नहीं आ रहा है।

"तो क्या वे साफ-साफ कहते हैं कि शादी कर दो?"

"हाँ, हाँ, और मैं कह ही क्या रहा हूँ। बुढ़ापे में उसे दूल्हा बनने का शौक लग रहा है। महीने भर में दो जवान बेटे और बेटी मर चुके हैं। माँ उन्हीं के दुख में पागल हो गई है और बाप को कोई फिकर नहीं है।"

"अच्छा मैं चन्द्रा को किसी प्रकार राजी कर लेने की तो सोचती हूँ लेकिन जो एक का सगा न हुआ वह इसी का क्योंकर होगा।" रुककर कुछ सोचते हुए, "एक तरकीब है, यदि चन्द्रा तैयार हो जाये तो उससे कह देंगे कि तुम्हारे पिताजी 'हाँ' कह देंगे और तुम भी उतने दिनों तक ऐसे ही दिखाती रहना। बाद में तुम कह देना कि मुझसे बिना पूछे क्यों 'हाँ' कह दिया और बात खतम हो जायेगी।"

"यह तो मैं जानता ही था कि मेरी प्रभा रानी कुछ न कुछ उपाय तो सोच ही निकालेगी इसीलिए तो मैंने राय ही ली थी" सेठ जी की बाछें खिल उठीं कि बिना नुकसान के ही उनका काम चल जायेगा। खुशी से उन्होंने प्रभा को अभी छुआ ही था कि किसी ने बाहर से आवाज लगाई।

"सेठ जी, सेठ हजारीलाल हैं क्या?"

"अभी आया साहब", आवाज पहचानते हुए सेठ जी ने उत्तर दिया।

"कौन है?" प्रभा ने पूछा।

"वही कमबख्त तुम्हारा दामाद है। जरा चन्द्रा को भी सब बातें बतलाकर किसी बहाने बाहर भेज देना।"

(२)

"चन्द्रा, बेटी क्या कर रही हो?" प्रभा ने कमरे का किवाड़ ठोकते हुए पूछा।

चन्द्रा को बड़ा आश्चर्य हुआ कि आज प्रभा उसे इतने प्यार से क्यों सम्बोधित कर रही है? उसने सादगी से प्रश्न का उत्तर दे दिया, "पढ़ रही हूँ।"

"जरा किवाड़ तो खोलो। एक जरूरी काम है।"

चन्द्रा सुन्दर तो नहीं लेकिन कुरूप भी नहीं है। रंग भी साँवला है। शरीर सुडौल है। बाप ने दुलार करके उसे बचपन से घमंडी बना दिया है। वैसे उसे आजकल प्रायः अकेले ही रहना पड़ता है। इस साल मैट्रिक में है इसलिए अँगरेजी के कुछ शब्द बीच बीच में बोल लेती है। प्रभा के आने के बाद से वह काफी सतर्क रहती आई है।

प्रभा ने कमरे में प्रवेश करके धीरे धीरे सब बातें चन्द्रा से कह सुनाई। चन्द्रा पहले तो राजी नहीं हुई पर बाद में कहने लगी, "उसमें से मेरा भी हिस्सा लगाने को तैय्यार होओ तो मैं तैय्यार हूँ।"

"खैर वे तो आपस की बातें हैं उसके लिए क्यों डरती हो", प्रभा ने फुसलाते हुए कहा।

चन्द्रा ने तुरन्त एक भड़कीली साड़ी निकाली, खूब क्रीम, पाउडर, रूज आदि लगाई और ऊँची एड़ी के सैन्डल्स पहनकर तेजी से बाहर के कमरे की ओर आई। प्रभा अपनी चाल पर मन ही मन खुश हो रही थी।

बाहर के कमरे में पैर रखते ही उसने जान बूझकर आगन्तुक की ओर ध्यान न दिया और सेठ जी को सम्बोधित कर नाराज होती हुई बोली, "पिताजी आप तो बस हर वक्त गप्पें ही लड़ाया करते हैं। सिनेमा को लेट हो जायेगा तब? मैं तो इतनी देर से तैय्यार हूँ, आपके लिए (इन्तजार) कर रही हूँ।"

"अरे बेटी, जरा सब्र से काम ले। जरा यहाँ देख तो कौन आये हैं?" हँसते हुए आगन्तुक की ओर देखकर "ऐसी पगली है यह लड़की कि क्या बताऊँ? यह भी नहीं सोचती कि मैं काम की बातें कर रहा हूँ या ऐसे ही गप्प लगा रहा हूँ। इसका काम नहीं करता हूँ तो इसे लगता है कि बेकार बैठा हूँ।"

"चन्द्रा भी यही चाहती थी कि सेठ जी किसी प्रकार उसका परिचय करा दें तो वह अपना पार्ट खेलना आरम्भ कर दे। मौका पाकर वह बड़ी गंभीरता से कहने लगी—"Oh very sorry, माफ कीजियेगा। आपका परिचय...."

"मुझे सब लोग लक्ष्मीनंदन कहते हैं। और आपका शुभ नाम" यह कहकर आगन्तुक ने बातें शुरू कीं।

"मेरा नाम है चन्द्रावती"

सेठ जी ने आगन्तुक की खुशामद करते हुए कहा, "बेटी, यही हैं वे साहब जिनसे मैं मुकदमा के लिए कहा करता हूँ। यदि इन्होंने चाहा तो यह हमारी जीत करा देंगे।"

"अरे सेठ जी, मैं क्या कर सकता हूँ।" आगन्तुक ने अपनी नम्रता दिखाते हुए कहा।

चन्द्रा ने बनते हुए कहा, "अच्छा, मुझे नहीं मालूम था। तो पिता जी इन्हें भी अपने साथ सिनेमा ले चलिए बड़ा अच्छा रहेगा। Company भी हो जायेगी।"

"अरी तुझे क्या हो गया है? तू तो समझती है कि सब तेरी ही तरह फालतू हैं। इन बेचारों को तो दिन रात काम करना पड़ता है।" सेठ जी ने फिर चापलूसी करते हुए कहा।

लक्ष्मीनन्दन तो यह चाहते ही थे तुरन्त बोल उठे, "नहीं, नहीं, कोई खास बात नहीं है। आज तो मैं फ्री हूँ। चलिए अच्छा है, मेरा समय भी अच्छा गुजर जायेगा।"

"अच्छा तो बेटी, तू थोड़ी देर मि० नन्दन से बातें कर मैं अभी कपड़े बदलकर आता हूँ।"

आखिर तीनों सिनेमा गये और उस दिन से नित्य ही मि० नन्दन की शाम सेठ जी के यहाँ ही कटती थी। वे रोज ही कुछ न कुछ खिलौने, मिठाई, कपड़े या और कोई कीमती वस्तु चन्द्रा व चन्द्रा के सौतेले भाई-बहनों के लिए लाने लगे।

(३)

मुकदमे के अब थोड़े दिन और थे। इसीलिए आजकल सेठ जी और प्रभा दोनों जीजान से लक्ष्मीनन्बन की खुशामद में लगे थे। प्रभा खूब बढ़िया बढ़िया पकवान अपने हाथ से बना-बना कर, मि० नन्दन व चन्द्रा दोनों को, सिहा सिहा कर खिलाया करती। नौकरों की भी उतनी देर आफत रहती थी।

सेठ जी को अकेला पाकर लक्ष्मीनन्दन ने बातें शुरू कीं।

"बस सेठ जी, अब तो आपही की जीत है।"

"अरे साहब, जीत क्या है, सब आप जैसे लोगों की मेहरबानी है। वरना ये गँवार इन मामलों में बड़े पक्के होते हैं; झूठी बात नहीं चलने देते।"

"अच्छा तो अब मुझे भी अपना हिस्सा लेना है।"

"हाँ, हाँ, वह तो लेना ही पड़ेगा। भला इसमें से; और आपको हिस्सा न मिले; यह कैसे संभव हो सकता है।"

"तो फिर और देर करने से कोई फायदा नहीं। अब मैं अधिक नहीं रुक सकता।"

सेठ जी ने चापलूसी करते हुए अपना मत प्रकट कर दिया।

"अरे यह तो है ही। भला शुभ कार्य में कैसी देरी? 'तुरत दान महाकल्यान' तो होना ही चाहिए।"

"आपके फैसले के दूसरे दिन पूर्णिमा है। मेरे खयाल में यही शुभ दिन उचित होगा; फिर उस दिन आप पार्टी भी करनेवाले हैं, इसलिए अच्छा रहेगा। दोनों खुशियों की दावत इकट्ठी हो जायेगी।"

"जैसी आपकी इच्छा। मुझे तो किसी बात में भी उज्र नहीं है।"

मि० नन्दन को अब पूरा विश्वास हो गया था। वे मन ही मन बड़े प्रसन्न थे कि एक ओर तो हजारों रुपयों का फायदा और दूसरी ओर जवान लड़की, दोनों चीजें मिलीं। ऐसा उल्लू तो शायद ही कोई फँसता। लेकिन उन्हें नहीं मालूम था कि यह जो आदर-सत्कार है, सब दिखावा है और चन्द्रा भी सिर्फ अभिनय कर रही है न कि दिल से उसकी यही इच्छा है। इसीलिए आज वे अपने सौभाग्य को सराह रहे थे।

(४)

सेठ जी के मुकदमे का फैसला हो गया। इसीलिए सारे घर में खुशी मनाई जा रही थी। चन्द्रा भी आज खुश थी उसे अपने सफल अभिनय का पुरस्कार मिला था। प्रभा अपने कमरे से निकलकर बाहर आ रही थी कि सेठ जी साठ

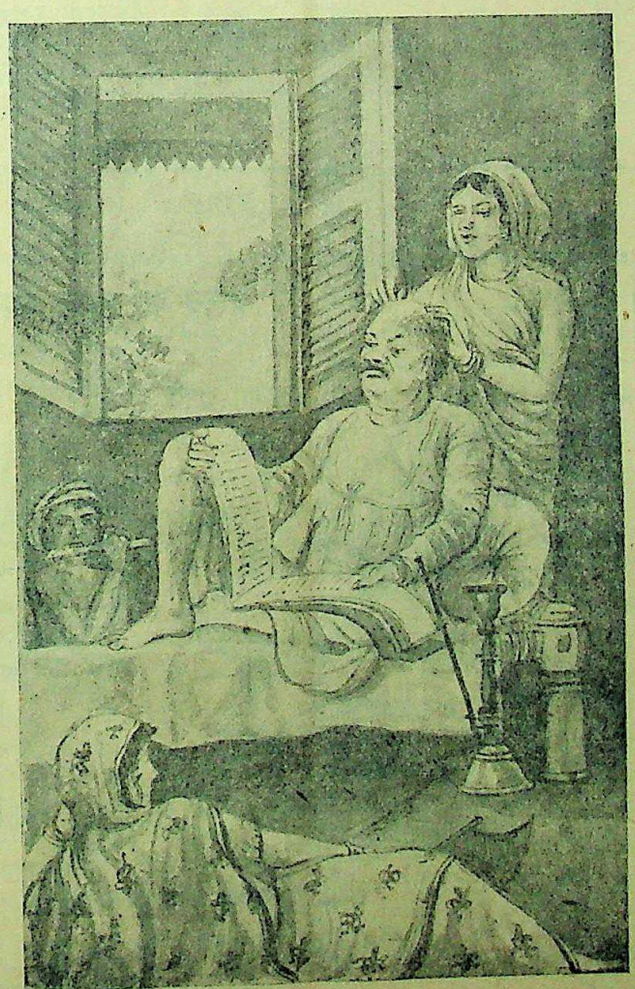

सेठ हजारीलाल बोले—प्रभा, मेरी समझ में नहीं आता कि क्या करूँ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हजार का चेक लेकर वहाँ आ पहुँचे और प्रभा को देते हुए बोले, "लो मेरी प्रभा रानी, यही तुच्छ पुरस्कार मैं तुम्हारी सूझ के लिए लाया हूँ। क्या तुम इसे स्वीकार करोगी?"

प्रभा मान करते हुए बोली, "यह तो मेरी सूझ का फल है न कि पुरस्कार? पुरस्कार तो मैं और लूँगी।"

"अरे ले लेना और मेरे पास है ही क्या, जो कुछ है वह तुम्हारा ही तो है।" सेठ जी ने प्रेमपूर्वक कहा।

इन लोगों में ये बातें हो ही रही थीं कि इतने में लक्ष्मीनन्दन आ पहुँचे और दूर से ही बोले, "बधाई है सेठजी, मैं भी मौके पर आ पहुँचा हूँ। हाँ, तो कल किस समय रस्म होगी? मैं तभी आ जाऊँगा।"

"कल पाँच बजे शाम को है पार्टी! क्या आपको निमंत्रण-पत्र नहीं मिला?"

"हाँ, लेकिन···अच्छा मैं जरा चन्द्रा के साथ बाजार हो आऊँ। उसके बाद सबसे पूछकर रस्म का समय निश्चित हो जायेगा।"

(५)

चन्द्रा और मिस्टर नन्दन दोनों बाजार गये। चन्द्रा ने करीब डेढ़-दो हजार के गहने व कपड़े खरीद डाले। जब दोनों घर लौटे तब चन्द्रा ने जल्दी जल्दी सब चीजें उठाकर रख लीं। प्रभा व सेठजी ने सब चीजें देखीं तो उन्होंने सोचा चन्द्रा अभिनय करते करते कहीं सचमुच में तो शादी नहीं करना चाहती जो इतनी खुशी खुशी सब सामान ले आई है? इतने में उन्होंने कुछ शोर-गुल सुना।

"काहे की रस्म? अरे बेटी गोद लेने के लिए तो लोगों को बुलाया जाता है फिर पंडित का क्या काम?"

और मिस्टर नन्दन इसे मजाक समझते हुए खुश होकर बोले, "अरे बेटी से अपने बाप की ही है। अब तो तुम बेटी से बढ़कर एक घर की मालकिन होने जा रही हो। बेटी तो तुम्हारे बराबर की मेरी अभी मरी है फिर मुझे बेटी की क्या आवश्यकता?"

चन्द्रा अनजान बनकर क्रोध से बोली, "आपका दिमाग भी ठिकाने है या नहीं? यदि ऐसा ही है तो अपना रास्ता नापिये?"

अब मिस्टर नन्दन की आँखें खुलीं। उन्हें अपनी गलती मालूम पड़ी कि यह सब धोखा था। वे धक् रह गये और अचानक बोल उठे, "तो क्या तुम अपने बाप के वचन को नहीं मानोगी?"

"मैं नहीं जानती, कैसा वचन? तुम्हें शर्म नहीं आती है कि अभी तुम्हारी स्त्री जीवित है। तुम पचास वर्ष के बूढ़े हो। जरा अपनी शक्ल तो देखो। आये हो एक लड़की का सर्वनाश करने, बेशर्म कहीं के।

[illegible] सेठ जी और प्रभा भी उस ओर वेग से दौड़े हुए आये। दोनों को शान्त करती हुई प्रभा बोली, "क्या बात है धीरज से बोलो। आखिर यह झगड़ा. ."

अभी बात अधूरी ही थी कि चन्द्रा बोल उठी, "देखो तो सही माँ, इस बुड्ढे खूसट का शौक। आया है मुझसे शादी करने। इसे शर्म भी नहीं आई।"

अब लक्ष्मीनन्दन को भी मौका मिला। उन्होंने भी इतनी ही तेजी के साथ सेठ जी से कहा, "भूल गये अपने वचन? चार दिन पहले पूरा परिवार अपने मतलब के लिए मेरे तलुवे चाटता था और आज सब ऐसे दूध के धोये बन रहे हैं। अब जल्दी फैसला करिए वरना...."

प्रभा ने अपनी स्थिति बचाने के ख्याल से कहा, "बेटी, जरा सब्र से काम ले। बूढ़े हैं तो क्या हुआ गुण देखना चाहिए।"

लक्ष्मीनन्दन का क्रोध अब सीमा पार कर रहा था, बोले, "देखती नहीं तेरे [illegible] ने क्या किया है? उस पर शर्म नहीं [illegible] जो मुझे बेशर्म कहती है?"

"बाप यदि कोई गलती करे तो उस[illegible] फल मैं क्यों भोगूँ? अपनी करनी की [illegible] अलग है। मेरे जीवन का सवाल है। इसमें कोई कुछ नहीं बोल सकता। यह पिता जी की गलती है कि उन्होंने मु[illegible] बिना पूछे क्यों वचन दिया?"

सेठ जी बीच ही में बोल उठे, "[illegible] भाई, यह मेरी ही गलती है जो [illegible] बालिग लड़की से नहीं पूछा। उसे [illegible] अब कानूनी अधिकार है, फिर भला [illegible] जबरदस्ती कैसे करूँ।"

"ठीक, समझा। मैंने साँप के [illegible] में हाथ डाला था यह नहीं मालूम [illegible] यह सब षड्यंत्र था। मैं अब जी-[illegible] से इसका जल्दी ही बदला लूँगा" [illegible] हुए मिस्टर नन्दन तेजी से बाहर चल दि[illegible]

आप सौन्दर्य का आकर्षण प्राप्त कर सकती हैं
पुरुष ने कहा, "यदि तुम्हें काश्मीर बुकेट द्वारा सौन्दर्य प्राप्त हो गया है तो मैं तुम्हारा चुम्बन सदैव लूँगा।"
काश्मीर बुकेट लिपिस्टिक से चेहरे पर एक नवीन आभा दौड़ जायगी क्योंकि उसमें सौन्दर्य बढ़ाने के गुण हैं। काश्मीर बुकेट में संयुक्त लैनोलिन से होठों में कोमलता रहती है यह उन्हें चिकना और नर्म रखता है। काश्मीर बुकेट लिपिस्टक घंटों तक ठहरता है।
काश्मीर बुकेट फूल के गुच्छों के लाल चूर्ण को इस्तेमाल कीजिए। इस चूर्ण से आपके चेहरे पर जवानी का रंग दौड़ जाता है। तब आप काश्मीर बुकेट की सुगन्धित शृङ्गारिक वस्तु से अपनी आभा को परिपूर्ण करें, क्योंकि सुगन्ध को पुरुष पसन्द करता है।
Cashmere Bouquet Products
WITH THE FRAGRANCE MEN LOVE
Brilliantine
Face Powder
Cold Cream
Perfume
Talc
Solid
Liquid
Vanishing Cream
CB 2

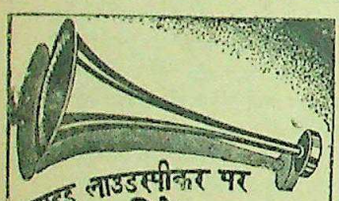
एलाइड लाउडस्पीकर पर इतमिनान रखिये

ब्याह मेले जलसे सरकस तथा हर मौके पर इस्तेमाल कीजिये
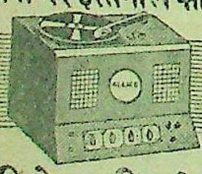
खरीदिये या किराये पर लीजिये
एलाइड एलेक्ट्रिक एण्ड रेडियो कारपोरेशन
हज़रतगंज लखनऊ
कैनिंग रोड एलाहाबाद

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

शरणार्थियों की सहायता

...सारी केन्द्रीय सरकार के सामने ...के पीड़ित, दुःखी और त्रस्त शरणा... का सवाल एक टेढ़ी और अहम् ...बनकर आ खड़ी हुई है। अभी ...सरकार को शासन की बागडोर ...१५ दिन भी नहीं हुए कि उनके ...उनके ही भाइयों की मुसीबत अपनी ...सीमा को लाँघकर आ पहुँची है। ...उसका किसी न किसी तरह से तो निरा... करना ही होगा। हालाँकि कुछ ...पंजाब जैसे हरे-भरे और सम्पन्न प्रांत ...विनाश का सारा दोष कांग्रेस के ही ...पर मढ़ते हैं। हम मुस्लिम लीग ...मौलाना जिन्ना को इस गंभीर उत्तर-...से बरी कदापि नहीं कर सकते। ...यह है कि लीगियों द्वारा बोया गया ...सांप्रदायिकता का भीषण विष आज ...के सर्वनाश का कारण हुआ है। ...आयेगा जब कि सांप्रदायिकता का ...एक दिन पाकिस्तान को भी ले बैठेगा। ...भविष्य में जो कुछ भी हो पर अब हमें ...पंजाबी भाइयों की जो कि अपना ...स्वाहा कर यहाँ फकीर बनकर ...हैं शीघ्र ही सहायता कर उन्हें ...चाहिए इस कार्य्य के लिए मैं कुछ ...प्रान्तीय व केन्द्रीय सरकार की ...में विचारार्थ पेश करता हूँ।

(१) हर एक प्रांतीय कांग्रेस सरकार ...अपने यहाँ एक शरणार्थी-विभाग शीघ्र ...कायम करना चाहिए और कुछ दिनों ...लिए इस विभाग का एक अलग ही मंत्री ...मुक्त कर दिया जाय। जिसका कि सर्व-...कार्य्य सभी संभव उपायों से शरणा-...को काम व सहायता देना होगा।

(२) केन्द्रीय सरकार को एक ...दार अपील निकालनी चाहिए। ...कि द्वारा देश के सभी प्रमुख ...पति, मिल-मालिक, कारखानों-...से आग्रह किया जाय कि वह ...यहाँ सर्वप्रथम स्थान पंजाब के ...शरणार्थियों को ही दें और ...ज्यादा से ज्यादा सुविधा देने का ...रखें।

(३) देश के समस्त भागों में जहाँ ...भी खाली जमीनें पड़ी हों, वह ...उन शरणार्थियों को दे दी ...जो कि काश्तकारी करना चाहते ...और वहाँ कि प्रान्तीय सरकारें सब ...से उनकी सहायता करें। ...भाई काश्तकारी करने में काफी ...होते हैं। जो कि उन्होंने पंजाब ...सब्ज बना दिया था।

(४) देश के प्रमुख उद्योगपतियों व ...मालिकों के यहाँ से जो दान का ...निकाला जाता है। उसकी तादाद ...होती है। अतः उन धनकुबेरों से ...की जाय कि वह उस दानराशि ...उद्योग शरणार्थियों की सुविधा ...ही करें।

(५) शरणार्थियों की जटिल समस्या ...देखते हुए व भावी अन्न-संकट से ...के लिए देश के सभी वर्गों, ...व संस्थाओं का यह कर्त्तव्य ...है कि वह कुछ दिनों के लिए और जब तक कि स्थिति साधारण ढंग पर न आ जाय, तब तक सार्वजनिक दावतों, पार्टियों व उद्यान-भोजनों का उपयोग व उन्हें प्रोत्साहन देना कतई बन्द कर दें।

(६) देश के कई स्थानों पर नये उद्योग-धंधे व कारखाने निर्माण किये जा रहे हैं। उनके संचालकों से अपील की जाय कि वह अपने यहाँ सर्वप्रथम शरणार्थियों को ही काम दें।

(७) देश के सभी देशी नरेशों व स्टेटों से भी यह कहा जाय कि वह अपने यहाँ शरणार्थियों को ज्यादा से ज्यादा सुविधा देने की कृपा करें।

(८) पाकिस्तानी पंजाब में शरणार्थियों की जो भी स्थावर व जंगम संपत्ति रह गई है उसका पूरा पूरा मुआवजा पाकिस्तान की सरकार से लिया जाय और उस मुआवजे से शरणार्थी लोग यहाँ पर अपना कोई नया काम प्रारम्भ करें।

(९) जब तक कि शरणार्थी लोगों द्वारा प्रारम्भ किये जानेवाले उद्योग-धंधे व कारखाने वगैरह पूरी तरह से स्वावलंबी न हो जायँ, तब तक उन्हें इनकम-टैक्स, सुपर-टैक्स, बिक्री-टैक्स आदि करों से मुक्त रखा जाय।

(१०) आज पंजाब के आये हुए उन लाखों शरणार्थियों की जो दयनीय व शोचनीय हालत हो रही है उसे देखते हुए हम मानवता, सभ्यता और अपनी अतिथि-प्रियता के नाते देश की सभी जनता से अपील करते हैं कि वह शरणार्थियों के साथ सहानुभूति का व्यवहार करें। हमें यह सोचकर उन लोगों के साथ पूरी हमदर्दी दिखलानी चाहिए कि आज उन लोगों के ऊपर जो मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा है; हृदय से सोचना है कि यदि ऐसी मुसीबत हम पर भी आ जाती तो हम क्या करते?

वृन्दावन —अद्वैतकुमार गोस्वामी
२० सितम्बर, ४७ पत्रकार

* * *

देवरिया की ऐतिहासिकता

देवरिया पहले गोरखपुर जिले का एक डिवीजन, अप्रैल सन् ४६ से देवरिया जिला हो गया है। इस जिले का भौगोलिक वर्णन बाबू परमहंससिंह ने किया है। पूर्व काल में यहाँ जंगल अधिक थे और इन में देवता (मुनि) लोग तप करते थे इसी से इसको 'देवराय' कहा करते थे। देवराय का शब्द अपभ्रंश होकर देवरिया हो गया, यह सिद्धान्त नितान्त अप्रासंगिक है। किसी भी स्थान का नामकरण मुख्य लक्ष्य लेकर ही पड़ता है जैसे 'सिन्ध' से 'सिन्धो' और 'सिन्धो' से 'स' के स्थान में 'ह' होकर हिन्धो और पुनः 'ध' का 'द' होकर 'हिन्दो' एवं हिन्दो से हिन्दू.....बन गया है।

देवरिया नाम पड़ने का कारण निम्नलिखित प्रमाणों से नितान्त सत्य प्रतीत होता है। जहाँ पर इस समय ओ० टी० आर० का स्टेशन है इससे ठीक उत्तर तरफ एक फर्लाङ्ग की दूरी पर अज्ञात काल से एक जंगली देवी जी का मंदिर है। प्राचीन काल में यहाँ कोसों तक जंगल ही जंगल था, बस्ती का कहीं नाम तक नहीं था केवल देवी जी के पंडे और पुजारी रहा करते थे। मंदिर के पश्चिम तरफ एक छोटा-सा तालाब था जो अब भी मौजूद है जिसका टाऊन की उदार महाजन-पार्टी ने पक्का घाट बनवा दिया है। मंदिर का भी जीर्णोद्धार करा दिया गया है, हर साल चैत्ररामनवमी के अवसर पर बड़े धूम-धाम से मेला लगता है जिसको 'देवरही' का मेला कहते हैं, 'देवरही' कहते कहते जिह्वा-सुगमता के कारण "देवरिया" शब्द हो गया है। यह समझने की बात है 'देवराय' से 'देवरिया' शब्द का बनना न्यायसंगत है अथवा 'देवी' से 'देवरही' और पुनः देवरही से 'देवरिया' पर्याप्त है।

देवी जी के प्राचीन पंक्तिपावन पंडे और पुजारी जिस स्थान पर जंगल-झाड़ी साफ कर रहने लगे वहाँ आज एक बड़ा गाँव हो गया है जो कचहरी से ३-४ फर्लांग की दूरी पर पश्चिम तरफ देवरिया खास के नाम से प्रसिद्ध है, इसके अन्तर्गत कई छोटे-छोटे गाँव और पुरवा हैं। मंदिर से ठीक दो फर्लाङ्ग की दूरी पर नालाकुनी बहता है, इस जंगल में अपनी अपनी गौओं को चरानेवाले आभीर इसी नाला में 'गौवों को पानी पिलाते थे और जहाँ पर रात के समय अपनी अपनी 'लेहड़' (झुंड) टिकाया करते थे। उसे लेहड़ कहते कहते लेहड़ा स्थान का नाम पड़ गया, बाद को 'ल' का 'म' होकर मेहड़ा बन गया जो सरकारी कागजात में इस समय दर्ज है और जिस स्थान पर आभीर रहने लगे, उसे सर्वसाधारण 'पूरवा' के नाम से अब भी पुकारते हैं। इस प्रकार स्थान का नाम मेहड़ा-पूरवा पड़ गया।

इस समय देवरिया में दो-दो हाईस्कूल हैं जिनमें एस्० एस्० वी० एस्० हाईस्कूल भूतपूर्व बाबू बनवारीलाल S.D.I. इंचार्ज का स्थापित किया हुआ संसार में अपने नाम का निराला है। बाबा राघवानन्द, कालेज का तिरंगा झंडा अपना अलग ही रंग लहरा रहा है। दो-दो संस्कृत पाठशालाएँ हैं जिनके छात्र आचार्य होकर निकलते हैं। स्वर्गीय बाबू रामेश्वरराम का 'गुरुकुल' सराहनीय है। डि० बोर्ड मिडिल मारवाड़ी विद्यालय और हाईस्कूल की बात भी विलक्षण ही दृष्टिगोचर हो रही है। प्राइमरी, लोअर प्राइमरी की बात तो साधारण है। भगवान् गौतमबुद्ध का निर्वाण-स्थान 'कुशी' नगर यहाँ से २०-२१ मील की दूरी पर जहाँ पर २१ फुट लम्बी और ३॥ फुट चौड़ी लेटी मूर्ति है। चीन, जापान और अमेरिका आदि स्थान के यात्री देवरिया से ही होकर जाते हैं, यहाँ पर मारवाड़ी समाज का बोल-बाला है। 'कंट्रोल' के पहले कपड़े का मेल लगाने में बड़ी सुविधा थी। देवरिया जिले के रेशे रेशे में इतिहास भरा पड़ा है। यदि ऐतिहासिक आधार पर भूगोल लिखा जाय तो देवरिया का भूगोल एक आदर्श हो सकता है।

तरकुलवा, —सरयूप्रसाद
देवरिया। "विशारद"

* * *

क्या भोपाल में भी सत्याग्रह होगा?

भोपाल रियासत की अधिकांश जनता ८६ प्रतिशत हिन्दू ही है। समाचारपत्रों द्वारा हमें सभी बातें इसलिए नहीं ज्ञात हो पातीं कि वहाँ हर समाचार को सेन्सर किया जाता है और उन्हें रोक दिया जाता है। एक बार इसी प्रश्न को लेकर जनता ने माँग की थी कि पोस्टमास्टर को हटाया जाय। उस समय डाक और तार-विभाग मुस्लिम लीगी सदस्य अब्दुल रब निश्तर के हाथों में था इसलिए भोपाल के नवाब ने निश्तर साहब से मिलकर मामला खटाई में डाल दिया। दूसरी बात यह है कि दैनिक समाचारपत्र हिन्दी व अँगरेजी दोनों में भोपाल रियासत के संबंध में इसलिए और नहीं जान पाते हैं कि अखबारों के संपादकों के मुँह भोपाल नवाब ने चाँदी के चंद टुकड़ों द्वारा बंद कर दिये हैं।

भोपाल स्टेट पीपुल्स कान्फ्रेंस ने वहाँ की जनता में बहुत जाग्रति की है जिसका श्रेय रियासती नेता श्रीयुत शाकिरअली खाँ को है। शाकिरअली साहब अखिल भारतीय सीमा रखते हैं। आपकी वाणी में जादू है—आपकी आँखों में आकर्षण है—आपका हृदय शिवाल और उदार है। आप काफी मिलनसार हैं और वहाँ की मजदूर-सभा के सभापति हैं। लगभग १०,००० मजदूर आपके नेतृत्व में हैं। वहाँ दूसरी राजनैतिक संस्था है स्टेट कांग्रेस जिसे कि भोपाल की जनता सरकारी कहती है। भोपाल के नवाब ने उसे अपनी तरफ अधिकारों का लालच देकर मिला लिया है। जनता पर पुलिस अत्याचार करती है। मजदूरों की सभा—जनता की आमसभा—यहाँ तक कि प्रजामंजल की कार्यकारिणी की बैठक भी अभी भी—इस समय नहीं हो सकती है जब कि भोपाल रियासत भारतीय यूनियन में सम्मिलित हो चुका है।

प्रजामंडल द्वारा सम्पादित सत्याग्रह उत्तरदायी शासन की माँग कर रहा है। नागरिकों को पूर्ण अधिकार मिलना चाहिए। उसकी माँगें पूरी होनी चाहिए अन्यथा जनता यहाँ समाजवादी सरकार कायम करेगी। इस सत्याग्रह पर सभी की नजर है।

नरसिंहपुर, —सत्यनारायण
मध्यप्रान्त श्रीवास्तव

प्रिंस होमियोपैथिक कालेज

बनारस

गवर्नमेन्ट रजिस्टर्ड और एडेड से होमियोपैथिक, वायकेमिक, इंजेक्शन का तीनों डिप्लोमा (सार्टिफिकेट) लें या शिक्षा प्राप्त करें। नियमावली मुफ्त मँगाइए।

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं, हमारे आदुर्वेदिक सुगन्धित तेल के सेवन से बालों का पकना रुककर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। दिमाग को तरकर आँख की ज्योति को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो मूल्य वापिस की शर्त लिखा लें। मूल्य २॥), बाल अधिक पक गया हो ३॥), सब पका हो ५) रु० का तेल मँगा लें।

आर्य्य हितैषी औषधालय
पो० मुकामा (पटना)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य-चर्चा

शहद स्वास्थ्य के लिए उपयोगी

इसका दैनिक सेवन करने से शरीर स्वस्थ रहता है

लेखक, श्री रामेश बेदी, आयुर्वेदालंकार

मक्खियों में स्वाद की शक्ति सम्भवतः बहुत कम उन्नत होती है। शहद इकट्ठा करने में यह पसन्द का खयाल सर्वदा नहीं करतीं। जिन पौदों को हम घृणायुक्त और दुर्गन्ध देनेवाला समझते हैं उनको ये उपेक्षा से नहीं देखतीं। विषैले फूल इसकी पहुँच से बाहर नहीं होते। शहद के गुण की बारीकी का मक्खी को विचार नहीं होता। बहुत गन्दे स्थानों पर उत्पन्न फूलों के रसों से ये नफरत नहीं करतीं। जहाँ इन्हें अधिक मात्रा में शहद मिलेगा, ये वहाँ से अनवरत इकट्ठा करने लग जायंगी। फूल खूब खिले हुए हों तो ये सूर्योदय से पूर्व छत्ता छोड़ देंगी और आमतौर पर जिस समय लौटती हैं उससे देर में लौटेंगी। फूल मुरझा जाने के बाद

इस लेख के लेखक, श्री रामेश बेदी, आयुर्वेदालंकार

यह क्रियाशीलता मन्द पड़ जाती है। इसलिए शहद के गुणों के संबंध में भी बहुत असमानता है। एक जिले की पैदावार दूसरे से भिन्न होती है। वसन्त का शहद पतझड़ के असदृश्य होता है। यहाँ तक कि साथ हो के दूसरे छत्ते में सदा एक जैसी चीज नहीं मिलती।

मौसम में जिस प्रकार के फूल अधिक होते हैं उन्हीं का रस प्रचुर परिमाण में लाये जाने के कारण उस रस से बना शहद भी उन्हीं गुणोंवाला होता है। यदि आपका मक्षिका-गृह काश्मीर में कमलों की झील के पास या किसी और ऐसे ही स्थान पर है तो कमल फूलों के खिलने की ऋतु में आप अपनी मक्खियों से कमल के रंग, गन्ध और गुण का शहद ले सकते हैं। चीड़ के जंगलों के शहद में पहाड़ों के ढालों पर ऊंचे उगे हुए चीड़ के वृक्षों में से गुजर कर आती हुई उसके तैलीय रेजिन की स्वास्थ्यप्रद वायु की गन्ध होगी। पुष्पित निम्ब-निकुंज या निम्ब-पथ से मक्खियों ने रस लिया है तो शहद में नीम के फूलों की-सी मीठी कड़वी गन्ध होगी और यह नीम के फूलों जैसा ही ईषद् हरित पीत होगा। स्वाद में यह शहद अपनी गन्ध का अनुसरण करेगा अर्थात् जरा-सा तिक्त मधुर होगा। इसे आप नीम की तरह त्वचा के रोगों में, रक्त-विकारों में, नेत्र-रोगों में और इसी तरह उन सब रोगों में लाभदायक पायेंगे जिनमें नीम का व्यवहार होता है। इसी तरह अमलतास, सप्तपर्ण, अनन्तमूल, केला, चम्पा आदि के फूलने के समय अनेक प्रकार के औषधीपयोगी गुणों और सुगन्धों का शहद प्राप्त किया जा सकता है। शिमला जिले में विश्वास किया जाता है कि शहद की मक्खी चमेली को छोड़कर प्रायः प्रत्येक फूल से रस तथा पराग लेती है और अच्छा शहद उन स्थानों पर होता है जहाँ परेब (प्लेक्ट्रेन्थस रुगोरुस) बहुत होता है।

फर्मेण्टेशन को रोकने के उपाय

शहदों को ठंडे और शुष्क स्थानों में स्टोर करना अथवा उनमें किन्हीं सुरक्षकों (प्रिजरवेटिव्स) को मिलाकर रखना आदि अनेक उपाय शहदों को खराब होने से बचाने के लिए किये गये ह। ये दोनों उपाय अक्रियात्मक या अवांछनीय होते हैं। कुछ विद्वानों का विचार है कि १६०° फ० तक शहद को गरम करने से खमीर (यीस्ट्स) मर जाते हैं और उसके बाद शहद को खमीरों के आक्रमण से बचा कर रखा जाय तो यह फर्मेण्ट नहीं होता। बोतलों में शहद भरते समय प्रायः यह तापमान कर लिया जाता है और ठीक तरह से बोतलों में बन्द शहद में फर्मेण्टेशन कभी नहीं होती।

दानेदार शहद

कुछ अपवादों को छोड़कर शेष सब द्रव शहद और बहुत से छात्र मधु, काफी समय पड़े रहें तो शीतऋतु के आने पर या शीतऋतु के बाद धुंधले और अंशतः ठोस हो जाते हैं। देशी भूरे रंग की खाँड की तरह शहद के दाने बन जाते हैं। अँगूरी खाँड (डेक्स्ट्रोज) की अधिक प्रतिशतकतावाले अधिक जल्दी स्फटिक बन जाते हैं। जैसे अल्फाल्फा का शहद। टचुपिलो (Tupelo) और मक्का के शहद जिनमें फलों की खांड (लेबुलोज) की अधिक प्रतिशतकता होती है दीर्घ-काल तक तरल बने रह सकते हैं। निस्सारित मधु उस शहद को कहते हैं जो छत्तों में से निकालकर किसी पात्र में बेचा जा रहा है। जब शहद छत्तों में ही बेचा जा रहा होता है तो उसे छात्र-मधु कहते हैं। छात्र-मधु का रिवाज हमारे देश में उतना नहीं जितना विदेशों में। हमारे देश में सामान्यतया निस्सारित मधु ही बिकता है।

निस्सारित मधु की अपेक्षा छात्र-मधु कम शीघ्रता से दानेदार बनता है और वह भी बहुत समय के बाद। यद्यपि ठोस होने पर शीतऋतु का बहुत प्रभाव पड़ता है तथापि कुछ स्थानों में और विशेषतः कुछ शहदों में गरम ऋतु में भी दाने बन जाते हैं। छत्ते से निकालने के एक मास बाद कुछ शहदों में दाने बन जाते हैं जब कि दूसरे शहद दो साल तक द्रव बने रहते हैं।

साधारण छात्र-मधु यदि अच्छी तरह पका हुआ है तो जब तक मौसम गरम है, द्रव रहेगा। उसके बाद यदि उस पर शीत का प्रभाव पड़ता है प्रत्येक कोठरी में इधर-उधर बिखरे हुए कुछ दाने बन सकते हैं। धीरे-धीरे ये संख्या में बढ़ते जाते हैं और अन्त में शहद तथा मोम आपस में मिलकर लगभग एक ठोस समुदाय बन जाते हैं। इस अवस्था में यह मार्केट और मेज के लिए अनुपयुक्त होता है।

प्राकृतिक दानेदार शहद जब रोटी पर मक्खन के साथ फैलाया जाता है तो बड़ा अच्छा लगता है और स्वादु होता है। बहुत से लोग दानेदार या अर्द्ध-ठोस दोनों अवस्था में शहद को द्रव की अपेक्षा अधिक पसन्द करते हैं। कभी कभी शहद के बहुत बड़े बड़े और कठोर दाने बन जाते हैं जिनमें से कुछ ईंट जैसे सख्त होते हैं और तब रोटी पर मक्खन के साथ फैलाने के लिए इसे कुछ द्रव बनाना आवश्यक होता है।

निस्सन्देह कुछ ऐसी अवस्थाएँ भी हैं जहाँ यह वांछनीय हो सकता है कि जितनी जल्दी शहद के दाने बनें उतना अच्छा है, क्योंकि द्रव अवस्था के शहद की अपेक्षा दाने-रूप में शहद का अधिक सुगमता से यातायात हो सकता है।

दानेदार शहद की अपेक्षा अच्छी तरह पके हुए शहद में फर्मेण्ट होने की सम्भावना कम होती है।

न्यूजीलैंड में शहद अधिकतर दार बिकता है। वहां अधिक लोग शहद को उपयोग के लिए पसन्द करते।

वमन ?

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर व्यापक ख्याति अम्लता, उदर-वायु दाह, पेट दर्द, वमन, पित्त-प्रकोप पाचन-सम्बन्धी शिकायतों से पैदा वाले अन्य रोगों में प्रभावशाली होने मान्य प्रमाण है।

उदर-विकारों से उत्पन्न उदासी, अनिद्रा और हृदय की धड़ कन में भी यह अमूल्य है।

यदि आप इनमें से किसी कष्ट रोग से पीड़ित हैं तो आज ही कुछ मेक ब्रांड स्टमक पाउडर लीजिए और प्रसिद्ध औषधि की शीघ्र सांत्वना स्वयमेव अनुभव कीजिए।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर समय "एलेक्स सी० मेकलीन" के हाथ पहचान लीजिए क्योंकि असली यही

मेकलिन ब्रांड स्टमक पाउडर सेवन कीजिए

सूर्यग्रहण के अवसर पर तैयार की हुई

दिव्य सिद्धि तांत्रिक अँगूठी

आप जो चाहेंगे हो जायगा। गरीबी दूर भाग जायगी, लक्ष्मी आपके कदम चूमेगी, आप धनवान हो जायँगे, आपकी प्रेमिका आपसे अटूट प्रेम करने लगेगी शत्रु मित्र बन जायँगे, मनचाही सन्तान होगी, बुरे ग्रहों का दोष दूर हो जायगा संसार आपकी इज्जत करेगा, लड़ाई-झगड़े में फतह होगी, विद्यार्थी परीक्षा पास होंगे, जिसे आप चाहते हैं उसी सुन्दरी से शादी होगी, नाराज हाकिम खुश होगा, वशीकरण होगा। बात यह है कि हर काम आपके इच्छानुसार होगा यह अँगूठी ग्रहण के अवसर पर शुभ मुहूर्त में तैयार होती है। बड़े परिश्रम से तैयार कराई गई है। अब परीक्षा करके लाभ उठाना आपका काम है। मूल्य २ डाक-खर्च ।।=) आना। नोट—बेकार साबित हो, तो ६ महीने तक वापिस

पता—कमल कंपनी (स) अलीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

गोस्वामी तुलसीदास और नारी-समाज

आज के समाज में स्त्रियों की उन्नति की वास्तविकता

लेखक, श्री प्रेम कपूर कंचन

हमारे देश में आजकल स्त्रियों का आदर है उनका भौतिक पतन हो है, वैसा पूर्व समय में न था। आजकल कन्या का जन्म होना बड़े दुर्भाग्य बात समझी जाती है। पिता का पर अधिक प्रेम होता है, कन्या तो भारस्वरूप होती है। तुलसीदास पूर्व आदर्श पसन्द था।

तुलसीदास ने त्रिया-चरित्र की तथा प्रबलता पर सदा आक्षेप है।

"जानि न जाय नारि गति भाई। न नारि हृदय गति जानी। नारि-अगम दुराऊ।" पार्वती के विद्या-के वर्णन से कालीदास की सम्मति शिक्षा के पक्ष में मालूम होती है। इस विषय में तुलसीदास की जानने का कुछ साधन नहीं है। इतना कहा जा सकता है कि यदि के पक्ष में होते तो उन्होंने अपने में इस पर अवश्य दृष्टिपात किया पर उन्होंने इस पर क्षणिक भी नहीं किया है। कालिदास तथा गृहणी की स्वतंत्रता के थे। परन्तु गोस्वामी तुलसीदास में स्त्री की कोई स्वतंत्रता नहीं हो सकती। वे तो "न स्त्री महति और जिमि स्वतंत्र होइ नारी" के सिद्धान्त के कायल कन्या का सारा भाग्य-निर्णय जी ने पिता ही के हाथों में छोड़ था। अपने चिरजीवन के संबंध में करने का उसे कुछ भी अधिकार आर्य-स्वयंवर का यही अर्थ था अपनी इच्छानुसार वर चुन ले; परन्तु तुलसी के सीता-स्वयंवर में यह बात न थी। सीता का विवाह उनकी इच्छा पर नहीं किन्तु धनुष टूटने पर निर्भर था। केवल एक-दो स्थानों पर तुलसीदास ने स्त्रियों की स्वतंत्रता सम्मति दिलवाई है। शंकर से पार्वती का विवाह करते समय रामचरित्र-मानस में मैना ने पति की सम्मति से मतभेद प्रकट किया था। उन्होंने कहा था—

"जो घर-वर-कुल होय अनूपा।
करिय विवाह सुता अनुरूपा॥
न तु कन्या वरु रहै कुमारी।
नाथ उमा मम प्राण-पियारी॥"

उक्त वाक्यों से यह भी पता चलता है कि कन्या के लिए योग्य वर ढूंढ़ने में माता-पिता पर कितनी जिम्मेदारी है। गुसाईं जी की सम्मति थी कि कन्या के अनरूप घर-वर और कुल देखकर विवाह करना चाहिए। कालिदास ने भी यही सम्मति दी है। इसी के आधार पर यति पार्वती से कहती है कि जो बातें वर में देखी जाती हैं वे तो शंकर में नहीं, फिर किस लिए तुम उनसे विवाह करने का हठ करती हो। अस्तु,

गोस्वामी जी ने स्त्रियों को सदा अपवित्र और भक्ति में बाधक समझा है। उन्हें अष्ट अवगुणों की खान तथा छल-कपट की मूर्ति कहा है। जड़ता तथा अज्ञान के लिए स्त्रियों की उन्होंने हर जगह निन्दा की है। साहस अनंत चपलता माया। भय अविवेक अशौच अदाया॥ नारि स्वभाव सत्य कवि कहहीं। अवगुण आठ सदा उर रहहीं॥

स्थान स्थान पर गुसाईं जी ने स्त्रियों को "नारि सहज जड़ अज्ञ" आदि उपाधियों से विभूषित किया है। उन्होंने प्रबल, अबला, अजय तथा सर्वसमर्थ कहा है। जैसे "का न करय अबला प्रबल।" यहाँ तक कि स्त्रियों को कहीं कहीं पशु के समान ताड़नीय तक बताया है। "ढोल गँवार शूद्र पशु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी॥"

बहुत लोग उक्त सम्मति को तुलसीदास जी की सम्मति नहीं मानते। यह अवश्य है गोस्वामी जी ने सीता और पार्वती के पवित्र आचरण चरित्रों को चित्रण कर उनके प्रति भक्ति प्रकट की है। तथापि साधारण स्त्री-जाति के विषय में उनके हृदय में उच्च स्थान न था उनकी धारणा यह थी कि साधारण स्त्री जाति नीचता का आगार है। सीता, कौशल्या, पार्वती तथा सुलोचना इत्यादि उनमें अपवाद-स्वरूप थीं। वे अन्धकार में प्रकाश की रेखा के समान थीं।

पतिव्रता स्त्रियों के विषय में दोनों कवियों के हृदय में अत्यन्त आदर के भाव हैं। 'सहज अपाविन नारि' के लिए पति-सेवा ही गुसाईं जी के मत में एक-मात्र शुभ गति देनेवाली है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने पातिव्रत आदर्श को बहुत ऊँचा उठाया है।

पति के अस्तित्व में अपने को भूलना ही आदर्श पतिव्रता का लक्षण है और यही गोस्वामी जी का सिद्धान्त भी था। कालिदास की सम्मति साधारण स्त्रियों के विषयों में अधिक आदरपूर्ण थी। परन्तु स्त्रियों के चरम आदर्श को गोसाईं जी तथा कालिदास दोनो ने ही समान भाव से देखा है।

अब तुलसीदासवर्णित समाज में स्त्री-समुदाय की क्या स्थिति थी इसका कुछ वर्णन सुन लीजिए, ध्यान दीजिए।

यद्यपि तुलसीदास जी की भक्ति-गति दृष्टि से स्त्री नीच तथा घृणित है तथापि उन्होंने स्त्री-चरित्र-समाज में स्त्रियों को जिस महत्त्व का स्थान दिया है उससे स्त्री-समाज की ओर अत्यन्त आदर के भाव उत्पन्न होते हैं उस चित्र से यह प्रकट होता है कि साधारण स्त्री-समाज को हेय समझते हुए भी कवि उस समाज में चरित्र स्त्री वर्ग को अत्यन्त श्रद्धा की दृष्टि से देखता था—अस्तु।

कहा जा चुका है गोस्वामी जी द्वारा स्त्री-शिक्षा के विषय में कुछ भी लिखा नहीं मिलता। कुमारियों की शिक्षा-दीक्षा आदि के विषय में कुछ वर्णन नहीं मिलता। योग्य अवस्था आने पर कुमारियों का विवाह किया जाता था। इसी प्रकार मानस में कई प्रकार के विवाहों का विविध वर्णन है। यथा—स्वयंवर, साधारण विवाह एवं राक्षस-विवाह। जैसे सीता-राम का विवाह, शिव-पार्वती का विवाह तथा रावण का "मय" की तनया से विवाह करना।

इनमें पहले और दूसरे प्रकार के विवाहों को श्रेष्ठता दी गई है।

विवाहोपरान्त पत्नी पति की दासी हो जाती थी; परन्तु उसका पद सर्वथा पति के पद से बराबर ही रहता था। वह गृहकार्यों में पति को सलाह देती थी। रानियाँ तो राज-काज के गहन विषयों में अपनी स्वतंत्र सम्मति देती थीं। कौशल्या का राज-सभा में उपस्थित होकर राज-सभा में भरत की राजगद्दी के विषय में अपनी राय देना तथा मन्दोदरी का रावण को अनेक बार राजनीति का उपदेश देकर युद्ध से विमुख करने का प्रयत्न करना—इस बात के प्रबल प्रमाण हैं। बालि की स्त्री तारा ने भी बालि को राम से युद्ध करने जाने के पूर्व ऐसी ही सलाह दी थी।

गोस्वामी जी ने परदा-प्रथा का वर्णन नहीं किया। उनके काव्य में विधवा-विवाह के उल्लेख अवश्य आये हैं तारा और मन्दोदरी का विवाह क्रमशः सुग्रीव और विभीषण के साथ होना विधवा-विवाह होने के ही उदाहरण हैं। परन्तु इस प्रकार के विवाह आदर की दृष्टि से न देखे जाते थे।

नारी शक्ति है, वेदों में यह बात कही गई है। पर गोस्वामी जी के समय में स्त्री-जाति का आचरण बहुत ही गिर चुका था। कदाचित् कालिदास के समय में ऐसा नहीं था। समय के प्रभाव से तथा स्त्री-जाति की अवनति के साथ लोगों ने उन्हें स्वतंत्र रखना बन्द कर दिया। मुसलमानों के आगमन के साथ स्त्रियों में परदा आदि स्वतन्त्रता हरणकारी बातों का प्रचार हो गया।

आज नारी-स्वतंत्रता का एक बड़ा वेग आया है पर उन्हें शीघ्र नहीं मिल सकता इनके खास कारण हैं। पहले नारी की स्वतंत्रता पति के पद से थी। पर नारी आज अपने को स्वतंत्र घोषित करती है। उसके हृदय में पत्नी-भाव नहीं वह समान पद चाहती है यही है वह मूर्खता जो नारी को उन्नति की ओर न ले जाकर गर्त में ले जा रही है। उन्हें भारत में रहना है यहाँ पाश्चात्य प्रणाली नहीं आ सकती, इसलिए उन्हें स्वतंत्रता मिले पर उनके हृदय में पति-भाव भरा हो तभी वे सफल हो सकेंगी।

फिलाडेल्फिया में होनेवाले विश्व महिला सम्मेलन में भाग लेनेवाली भारतीय प्रतिनिधियों का दल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोआखाली-यात्रा के संस्मरण

(पेज ६ का शेष)

मुसलमान उनके पास आया करता था, जिसकी दोनों आँखें खराब हो गई थीं देखने में आँखों में कोई खराबी न मालूम होती थी जैसे बेरीबेरीवाले की आँख खराब हो जाती है। प्यारेलाल भाई को उसके चेहरे पर बहुत भोलापन दिखलाई पड़ता था और वास्तव में वह था भी बहुत भोला। वह जब बाँस की एक पतली-सी छड़ी लिये हुए टटोलता हुआ प्यारेलाल भाई के पास आता तो प्यारेलाल भाई सब काम छोड़कर उसका हाल-चाल पूछने लगते, उसको दवा देते और खाने-पीने का परहेज बतलाते। आखिर में उन्होंने यह तय किया था कि उसका कुदरती इलाज करेंगे और जिस तरह बापू गीली मिट्टी अपने पेट और आँखों पर रखकर लेटते हैं उसी तरह उन्होंने भी उसके लिए इलाज सोचा था। पता नहीं उस बेचारे को कुछ फायदा हुआ या नहीं लेकिन एक दिन प्यारेलाल भाई ने रास्ते में चलते हुए कहा था, "हुनर साहब, मुझे नाचना नहीं आता लेकिन मैं उस दिन नाचूंगा जिस दिन उस अन्धे की आँखें अच्छी हो जायँगी और मेरे दिल से भी उसके अच्छे होने के लिए दुआ निकली थी अगरचे यह मैं जानता था कि मैं प्यारेलाल भाई का नाच न देख सकूँगा।

आखिर हमारा उस पुस्तक का काम किसी तरह खत्म हो ही गया लेकिन अब बापू भटियालपुर से १९-२० मील पर थे। प्यारेलाल भाई ने एक दिन कहा कि आप २२फरवरी को बापू के पास चले जाइएगा क्योंकि २२ को बापू हेम्चर पहुँच जायँगे और हेम्चर तक जीप आसानी से जाती है मैं उनकी बात मान भी गया था लेकिन फिर १८ फरवरी को उन्होंने कहा कि आप कल चले जाइए बापू सड़क से चार ही पाँच मील पर हैं और जहाँ तक सड़क है वहाँ तक जीप आपको पहुँचा ही देगी, यह बात सुबह हुई। शामको काजिर खेल से जीप आनेवाली थी पर वह नहीं आई। अब फिर प्यारेलाल भाई ने कहा कि हेम्चर जाना ही ठीक होगा और मैंने भी उनकी हाँ में हाँ मिला दी। रात को लेटते समय तक मैं यही समझे हुए था कि २२ को यहाँ से छुट्टी मिल सकेगी पर लेटने के बाद प्यारेलाल भाई कहने लगे, "मैं सोचता हूँ कि अब मैं लोभ में न पड़ूँ और आपको न रोकूँ। आप कल सुबह यहाँ से काजिर खेल चले जाइएगा और वहाँ से आपको जीप मिल जायगी। उस समय तक बापू के बिहार आने की कोई बात नहीं थी और यह सोचकर कि २-३ दिन कुछ बहुत नहीं होते, मैंने प्यारेलाल भाई से दिल से कहा कि अब २२को ही जाऊँगा। मैंने सोचा कि उस समय तक प्यारेलाल भाई भटियालपुर में तकली से सूत की कताई का जो काम शुरू करानेवाले हैं, उस समय तक उसे भी देख लूँगा पर प्यारेलाल भाई ने बहुत जोर देकर कहा कि नहीं आप कल ही चले जाइए। मैं जानता हूँ कि बापू के पास रहकर आपको कितनी खुशी होगी और जब मुझे विश्वास हो गया कि प्यारेलाल भाई मुझे कल भेज ही देंगे तब मैंने उन १९ दिनों के भटियालपुर के अपने निवास पर नजर डाली। मैं सोचने लगा कि इस बहुत अच्छे मौके से मैंने कोई खास फायदा नहीं उठाया। मेरे लिए अपने जीवन को बदलने का यह बहुत अच्छा मौका था। मैं असानी से प्यारेलाल भाई के साथ काम करके अपने को आश्रमवासी बनने के काबिल बना सकता था। जिस घर में मैं रहता था सिर्फ उसमें सुबह के वक्त झाड़ू लगा लेना कोई बात ही न थी जैसा कि मैंने पहले कहा है, अगर मैं पहले दिन ही गाँव की सफाई में हिस्सा ले लेता तो मैं रोज काम कर सकता था, पर चूँकि पहले दिन मैंने काम नहीं किया इसलिए हर रोज इसी डर से कि आज काम शुरू करने पर लोग यह न समझें कि मैंने सब की देखा-देखी काम शुरू किया है, किसी दिन भी उनके साथ गाँव की सफाई में हिस्सा नहीं लिया पर यह मानव-स्वभाव है कि आदमी अपना अपराध जल्दी नहीं मानता, शायद इसी भाव से प्रेरित होकर मैं उनसे कह बैठा--"लेकिन मुझे आपसे सख्त शिकायत है। आप अगर चाहते तो मैं यहाँ बहुत कुछ सीख सकता था। आपको चाहिए था कि आप मुझसे जबरदस्ती काम लेते। आखिर मुझे बापू के साथ ही रहना है और आश्रम के जीवन को अपनाना है। पर आपने मुझे सिर्फ मेहमान ही बनाकर रक्खा और मेरे ख्याल में आपने मेरे साथ ज्यादती की।"

उसके जवाब में प्यारेलाल भाई के चेहरे पर स्वाभाविक मुस्कुराहट खेलने लगी और पंजाबी होते हुए भी खालिस लखनवी तकल्लुफ के साथ कहा--"आप तो सचमुच हमारे मेहमान ही थे लेकिन मैं आपकी खातिर न कर सका, इसका मुझे अफसोस है लेकिन आप तो फिर भी काम कर लेते थे।"

इसके बाद मैंने इच्छा प्रकट की कि आप इजाजत दें तो मैं आपके कामों के बारे में एक लेख लिखूँ पर उन्होंने कहा कि अभी तो यहाँ कुछ काम ही नहीं हुआ। मैंने अपनी बाड़ी में काम करने की कोशिश में बहुत समय बरबाद कर दिया नहीं तो जैसे दूसरी बाड़ियों में अब काम शुरू हुआ है ऐसे ही पहले से काम करता तो अब तक बहुत काम हो चुका होता। अब मैं दूसरी बार जब बुलाऊँगा तब काम देखकर आप का जी चाहे तो लिखिएगा।

दूसरे दिन सुबह जब उन्होंने मुझे बिदा किया तो उन्हें सचमुच मेरे जाने का अफसोस हो रहा था, ऐसा उनके चेहरे से मालूम होता था और उनसे छूटते वक्त अगरचे मेरा मन बापू के पास पहुँचने के ख्याल से खुश हो रहा था फिर भी प्यारेलाल भाई से बिछुड़ते हुए मेरा मन दुखी था और मैंने दिल में एक हलके से दर्द की टीस-सी महसूस की थी।

(पेज ८ का शेष)

कपड़ा मिल-मालिकों ने युद्ध काल में जितना मुनाफा कमाया है उसका सही हिसाब मिलना कठिन है। देश की समस्त कपड़ा-मिलों में ५५करोड़ की पूँजी लगी हुई है और लड़ाई के दिनों में मिल-मालिकों ने ३ अरब ७५ करोड़ मुनाफा कमाया है। चोर-बाजारी से कमाया हुआ मुनाफा इसमें शामिल नहीं है। यदि अनुमान से उस मुनाफे को भी हम शामिल कर लें तो यह रकम बहुत बढ़ जायगी। किन्तु इसके विपरीत कपड़ा-मिलों के मजदूरों की अवस्था क्या है? वेतन-कमीशन ने कम से कम वेतन ३० रु० निश्चित किया है किन्तु बम्बई और अहमदाबाद को छोड़कर अन्य नगरों में मजदूरों को ३० रु० से कम वेतन मिलता है।

महँगाई के कारण मजदूरों की अवस्था और भी शोचनीय हो गई है। ऊपर कर्ज का बोझ लदा हुआ है। मजबूर होकर वे हड़ताल करते हैं। हड़तालों के प्रश्न पर पूँजीपतिवर्ग के व्यावसायिक पत्र, कामर्स ने लिखा है कि--"हड़तालों का मुख्य कारण यह है कि महंगी बड़ी तेजी से बढ़ रही है और उसके मुकाबिले में मजदूरों की आय बहुत कम है।"

राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के पश्चात् मजदूरों का भी यह नारा है कि "अच्छा वेतन पाना हर मजदूर का हक है और मजदूर गन्दी खोलियों में नहीं रहेंगे।" यह बिलकुल उचित माँग है और इसे पूरा करना राष्ट्रीय सरकार का कर्तव्य है। किन्तु इसके साथ ही साथ यह भी कह देना आवश्यक है कि हड़तालों के कारण आज देश में वस्त्र-संकट उपस्थित नहीं है। कपड़े की समस्या हल करने के लिए यह आवश्यक है कि मिल-मालिकों की चोर-बाजारी और मुनाफाखोरी बन्द हो तथा चोर-गोदामों में छिपा हुआ कपड़ा बाहर निकलवाया जाय। कपड़ा-समस्या हल करने के लिए भारतीय कपड़ा-मजदूर-सम्मेलन के निम्नांकित सुझावों पर ध्यान देना कितना आवश्यक है --(१) कपड़ा-मिलों का फौरन राष्ट्रीयकरण हो अथवा मिलों पर सरकार नियंत्रण कायम करे।

(२) मुनाफे पर रोक लगाई जाय और सरकार मजदूरों के सहयोग से मिलों को चलावे।

(३) मजदूरों की बुनियादी माँगें पूरी की जायँ ताकि उत्पादन में और वृद्धि करने के लिए उनमें उत्साह पैदा हो।

(४) मजदूरों और मालिकों की एक संयुक्त कमेटी की देख-रेख में मिलों से कपड़ा बाहर ले जाया जाय और उसका वितरण जनता के सहयोग से किया जाय।

(५) चोर-बाजारी बन्द करने के लिए कानून बनाये जायँ और सख्ती के साथ उन पर अमल हो।

कपड़े की समस्या हल करने के लिये सम्बन्ध में जो सुझाव ऊपर अंकित किये गये हैं वे बहुत ही व्यावहारिक हैं और इनके अनुसार काम करने से हम अवश्य ही इस समस्या को हल करेंगे। क्या नेहरू-मंडल इन सुझावों को स्वीकार करेगा?

(हिन्द समाचार समिति द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

रपट एण्ड कुं
मुंबई.२.

मेरे श्वास में दुर्गन्धि?
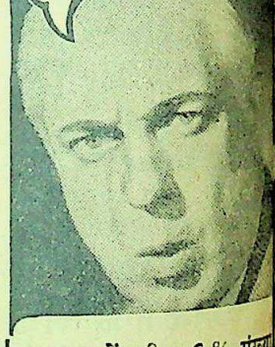
नवयुवकों की ७६% संख्या से दुर्गन्धि आती है!
वैज्ञानिक अनुभवों से यह निस्सन्देह सिद्ध हो गया है कि कोलगेट टूथ पाउडर १० घटनाओं में से ७ घटनाओं में सिद्ध कर दिया कि जबानी दुर्गन्धि ही दूर हो गई।
धन की बचत--दूसरी दवाओं की अपेक्षा कोलगेट एक बड़े डिब्बे में दाँत साफ करने की ३० मात्रा अधिक रहती है, उसके डिब्बे में ४६ मात्रा अधिक रहती है परन्तु दाम वही है।
धूम्र-पान करनेवाले--कोलगेट दाँत मंजन तम्बाकू की दुर्गन्धि और दाँत के दूर करता है।
आज ही कोलगेट खरीद लीजिए।
कोलगेट
टूथ पाउडर
कोलगेट आज ही खरीदिए!
CLEANS BREATH AS IT CLEANS TEETH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारा रंग-मंच

वसीयतनामा फिल्म कैसा है ?

दूकान का फीका पकवान !

लेखक, श्री पूरन खत्री

सन् १९३० मार्च की १८ तारीख ... कलकत्ते में 'न्यू थियेटर्स' की ... बी० एन० सरकार ने की थी। ... जानता था कि इस संस्था द्वारा ... ही नहीं वरन् दुनिया को ... चित्र मिलेंगे। समय की गति के ... उक्त संस्था को श्री देवकीकुमार ... तथा श्री नितीन बोस जैसे उच्च ... का सहयोग प्राप्त हुआ, ... ने आशातीत सफलता प्राप्त की। ... बंगाली लेखक शरत्चन्द्र चटर्जी ... उपन्यासों को चित्र में कथा- ... के लिए कठिन परिश्रम किया ... और सफलता भी मिली। 'न्यू ... ही हिन्दुस्तान में प्रथम फिल्म- ... है, जिसने साहित्य और सिनेमा ... साथ शुरुआत की। सर्वप्रथम ... सम्राट् रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा ... 'दिनेर शेषेर बेला' को श्री ... चन्द्र बरुआ द्वारा दिग्दर्शित ... में स्थान मिला और फिर यहीं ... और सिनेमा में चोली और ... का साथ हुआ।

... औपन्यासिक सम्राट् बंकिमचन्द्र के ... का वसीयतनामा' उपन्यास का ... फिल्म (चित्र) बना है। उनके पहले ... कपाल-कुण्डला का फिल्म इसी ... द्वारा प्रदर्शित हुआ था; परन्तु ... और इसमें जमीन-आसमान का ... है। कपाल-कुण्डला में लेखक की ... झलकती थी, परन्तु इसमें उसके ... नाम को बट्टा लगता है। ... कि कपाल-कुण्डला के प्रतिन्यास ... तथा दिग्दर्शक फानी मजूमदार ... काबिल आदमी थे; परन्तु इतना ... ही से तृप्ति नहीं होती, कुछ ... भी तो चाहिए। हाँ, तो चित्र ... तथा लेखक दोनों के धरातल से ... बना। वसीयतनामा के प्रतिन्यास ... तथा दिग्दर्शक सौमेन मुखर्जी ने ... बरुआ की संरक्षता में बहुत दिन ... सहायक दिग्दर्शक का काम किया है, परन्तु अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि उनमें जरा भी गुं का रूप नहीं आया। चित्र ज्यादातर इन्हीं की वजह से असफल रहा। चित्र की गति में उत्तमता नहीं थी।

उत्तमता न होने के कारण ही चित्र दर्शकों को प्रेरित न कर सका। गीतों से हृदय के भावों का विकास भी पूर्णरूप से नही होता था। मालूम देता था गीतकार कुछ झेंप रहा था, शायद इसलिये हो कि वह अच्छा लेखक नहीं था या शायद इसलिए कि न्यू थियेटर्स जैसी उच्च संस्था ने उसको गीत लिखने का सौभाग्य दिया हो। गीतों में उर्दू के शब्द भी ज्यादा आ गये थे, जो कथानक पर गहरा प्रभाव डालते थे। खैर, कुछ भी हो गीत और संवाद दोनों ही चित्र तथा कम्पनी दोनों के धरातल से नीचे थे।

सर्वश्रेष्ठ अभिनय सुमित्रा का था। उसके अभिनय में बड़ी ही उत्तमता थी। कथानक के लिहाज से उसका चुनाव भी अच्छा रहा। बड़ी बहन में मलीना का अभिनय भी इसी श्रेणी का था। भारती के अभिनय में बाजारूपन आ गया था। वह बिलकुल नहीं जँची। असीतवरन् जैसा था वैसा ही रहा। अहिन्द्र चौधरी की कला कुछ उभरी।

चित्रलेखन अटपटा और अनमना सा रहा। रश्मि ठीक से नहीं दी गई। बगीचे तथा बाहर के दृश्यों में कम तथा मकान के अन्दर तेज रश्मि दी गई है जो चित्रलेखक की काबिलियत दिखाती है। ध्वनि भी साधारण है। गीत ठीक से रेकार्ड नहीं किये गये हैं। सम्पादन का कार्य भी हलका ही है।

रायचन्द्र बोराल का संगीत सुनकर रोना आता है उनसे ऐसी आशा न थी। इससे ज्यादा अच्छा तो उनका पहला चित्र वापस था, जिसमें गीत के शब्दों तथा संगीत की धुनों में तो एकता थी। इसमें शब्द कहीं अलग भागते हैं; संगीत कहीं अलग और उस पर भी गुमान यह था कि गीतकार हुसेन साहब सहायक संगीत दिग्दर्शक भी थे। बोराल को ज्यादा कुछ सोचने का मौका दिया ही नहीं, या बोराल साहब का नाम बिका है।

इन सब बातों के रहते हुए भी चित्र में न्यू थियेटर्स की छाप है। भारती से नाराज होकर असीत के चले जाने पर असीत के दिल के भावों को आँधी द्वारा प्रकट किया है यह उत्तमता थी। असीत के चले जाने पर भारती के मनोभावों का विकास चमन उजाड़कर दिखाया है जो और भी उत्तम बन पड़ा है। न्यू थियेटर्स के ज्यादातर चित्रों की तरह इस चित्र का अन्त भी दुःखान्त किया है। और बस इसीलिए न्यू थियेटर्स से भविष्य में आशा की जा सकती है।

फिल्म-जगत् की प्रसिद्ध अभिनेत्री और गायिका कानन देवी, जो स्वास्थ्य-सुधार तथा फिल्मी व्यवसाय का अध्ययन करने के लिए अमरीका तथा अन्य योरोपीय देशों की यात्रा करनेवाली हैं।

एकादशी—लेखक, श्रीयुत नत्थाप्रसाद दीक्षित 'मिलिन्द'। इस पुस्तक में मिलिन्द जी की १२ कमनीय कविताओं का संग्रह किया गया है। ये सभी कवितायें पौराणिक आख्यायिकाओं के आधार पर नये ढंग से लिखी गई हैं। मूल्य केवल १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

चमकीले स्वस्थ बालों के लिये

... से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील ... बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और ... रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये। ... वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

सभी दूकानों पर

'देशदूत' में दीपावली विशेषांक

विज्ञापनदाता शीघ्र ही स्थान रिज़र्व करा लें

अन्य अवसरों की भाँति 'देशदूत' का यह विशेषांक बहुत ही सुन्दर और आकर्षक रूप में प्रकाशित होगा। इसमें अच्छे अच्छे लेख, कहानियाँ, कविताएँ, हास्य की सामग्री और बढ़िया चित्र रहेंगे। इस अंक में पढ़ने की बहुत बढ़िया सामग्री रहेगी। एजेंट अपनी प्रतियाँ रिज़र्व करा लें।

विज्ञापन-दाताओं को इस अंक में विज्ञापन छपवाने से बहुत लाभ होगा। विज्ञापन-दर—

कवर चौथा पूरा पेज ४००)
" दूसरा या तीसरा पूरा पेज ३००)
पहला पेज पाठ्य-विषय से पहले ३००)
साधारण पूरा पेज २००)

पृष्ठ का आकार १२" × ४ कालम स्क्रीन ६·५

शीघ्र पत्र लिखकर स्थान रिज़र्व कराइए। विज्ञापन २५ अक्टूबर सन् १९४७ के बाद स्वीकार न किये जायँगे। मूल्य अग्रिम भेजिए।

मैनेजर 'देशदूत', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी का रंगमंच

प्रांत में समस्त सरकारी लिखा-पढ़ी हिन्दी में हो

बढ़ी हुई फीस के विरोध में छात्रों का आन्दोलन—चौधरी खलीकुज्जमा की भारत-भक्ति—लीगी और गो-वध-वकीलों को हथियार थमाया जाये

(अपने विशेष संवाददाता द्वारा)

युक्तप्रान्तीय कौंसिल ने देवनागरी लिपि में हिन्दी को प्रान्त की राजभाषा मान लिया है और मन्त्रिमंडल ने इस निश्चय को कार्यान्वित करने का आश्वासन भी दिया है। इस सम्बन्ध में सरकार सर्वप्रथम अदालतों को हिन्दी में अपना काम करने का आदेश देने जा रही है। इस आदेश के अनुसार अदालतों का काम अब सिद्धान्ततः हिन्दी में ही होगा और वादियों के कहने पर उन्हें नकलें उर्दू या अँग्रेजी में मिल सकेंगी, जिनकी मूल प्रतिलिपियां हिन्दी में होंगी। हिन्दी न जाननेवाले अधिकारियों को हिन्दी सीखने का समुचित अवसर भी दिया जायगा।

* * *

यह प्रयत्न है तो स्तुत्य, किन्तु सरकार को इसे केवल सैद्धान्तिक न रखकर व्यावहारिक भी बनाना चाहिये। अब भी अदालतों के सम्मन आदि 'हिन्दी' में छपते हैं, किन्तु देखा जाय, तो उनकी लिपि देवनागरी होती है, परन्तु भाषा उर्दू और फारसी। उदाहरणार्थ सम्मन को लीजिये। फार्म पर छपा है 'समन बगरज इनफिसाल मुकदमा।' इस अदालती 'हिन्दी' को प्रान्त में कितने व्यक्ति समझते हैं? इसी प्रकार शिक्षा-विभाग के फार्म पर 'गालिबइल्म' 'सूबा मुतहद्दा' आदि शब्द होते हैं। महात्मा गांधी की हिन्दुस्तानी की भी चर्चा इस 'हिन्दी' में हमें बख्शिए!

* * *

प्रान्त के छात्रगण बढ़ी हुई फीस के विरोध में आन्दोलन करने जा रहे हैं। शिक्षा-मंत्री ने आन्दोलनकारी छात्रों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई करने का निश्चय किया है। छात्रों का आन्दोलन वास्तव में अनुपयुक्त है। प्रान्त की आर्थिक स्थिति को देखते हुए शिक्षा-मंत्री ने उनके हित में जो कुछ किया जा सकता था, उससे अधिक ही करने की चेष्टा की है। उन्होंने आश्वासन भी दिया है कि वे दो-तीन वर्ष बाद इस सम्बन्ध में पुनर्विचार करेंगे। अनेक नेताओं ने भी छात्रों के इस आन्दोलन का विरोध किया है। उनके संरक्षक भी अपने बच्चों का एक वर्ष व्यर्थ न करना चाहेंगे। यह समय संकट का है। छात्रों को इस समय अपने शासन की सहायता करना चाहिए, न कि उसकी प्रगति में अवरोध बनना।

* * *

चौधरी खलीकुज्जमा ने लखनऊ में दो महत्त्वपूर्ण वक्तव्य दिये हैं। एक में उन्होंने पंजाब में पाकिस्तान के प्रधान मंत्री लियाकतअली खाँ के वक्तव्य को असामयिक तथा भ्रामक बताया है और दूसरे में उन्होंने न्यूयार्क में सर मोहम्मद जफरुल्ला खाँ द्वारा भारत-सरकार पर लगाये गये आरोपों का खंडन किया है। चौधरी साहब का यह रुख देश-भक्तिपूर्ण है। साथ ही उन्हें चाहिये कि वे पाकिस्तान के पश्चिमी प्रदेशों में भारतीय मुसलमानों का एक प्रतिनिधि-मंडल लेकर जायें और वहाँ के हिन्दू सिक्ख शरणार्थियों को सुरक्षित रूप से भारत लाने का प्रयत्न करें। उनका यह कार्य उनकी लोकप्रियता बढ़ाएगा और उन पर हिन्दुओं का विश्वास भी बढ़ जायगा।

युक्तप्रान्तीय मुसलिम लीग के मंत्री ने मुसलमानों से अपील की है कि इदुज्जोहा के मौके पर वे गाय की कुरबानी न करके हिन्दू भावनाओं का आदर करें और अपने भाईचारे तथा विश्वास-पात्र होने का परिचय दें। यह रुख भी विश्वासोत्पादक है। किन्तु अच्छा होता कि यह अपील के रूप में न होकर प्रान्तीय लीग-द्वारा मातहत लीगों को आदेश के रूप में होता और स्थानिक लीगी कार्यकर्ता इसे अपने सहधर्मियों-द्वारा कार्यान्वित किये जाने का प्रयत्न करते।

* * *

अवध बार एसोसिएशन ने एक प्रस्ताव द्वारा सरकार से माँग की है कि प्रथम श्रेणी के वकीलों को शस्त्रास्त्र रखने की सुविधा दी जाय और वे शस्त्र कानून से बरी कर दिये जायँ, क्योंकि वे एक अत्यन्त सम्मानित पेशे के सदस्य हैं। उतने ही अधिक सम्मानित पेशे के सदस्य पत्रकार हैं, जिनके जीवन को वकीलों से अधिक संकट रहता है। क्या प्रान्तीय सरकार इन दोनों सम्मानित पेशों के सम्मानित सदस्यों की इस माँग पर ध्यान देगी?

(पेज ५ का शेष)

पाकिस्तानी सेना ने पूर्वी पंजाब के १५० गाँवों पर कब्जा कर लिया। किसी समझदार को इस पर विश्वास नहीं करना चाहिए था। दूसरे दिन समाचार भेजनेवालों ने ही खंडन किया। परन्तु बहुत से लोगों ने मान लिया कि ऐसा जरूर हुआ होगा और वह उसे फैलाते जायेंगे।

हमको अपने दिलों से भय को भगाना है। यदि हम स्वयं भयभीत रहेंगे तो पंजाब से जो शरणार्थी आये हैं, उनके भय को कैसे दूर करेंगे? याद रखिए, शरणार्थियों के लिए बहुत काम करना है। इस समय इनके ठहरने का तथा भोजनादि का प्रबन्ध करना है। इनमें से जो हमारे प्रान्त में बसना चाहेंगे उनके बसने का तथा जीविका का प्रबन्ध करना है। सरकार ने तो इस काम को हाथ में लिया है, जनता को भी हाथ बटाना होगा। यदि कहीं दंगे हुए, अशान्ति हुई तो प्रान्त के एक कोने से दूसरे कोने तक अन्न का यातायात बंद हो जायेगा। इससे सभी लोगों को कष्ट हो जायगा और शरणार्थियों की तकलीफें और बढ़ जायेंगी।

अन्त में मैं दो शब्द शरणार्थियों से भी कहना चाहता हूँ। हमको आपके साथ पूरी सहानुभूति है, परन्तु आपको हमारी कठिनाइयों का भी ख्याल करना चाहिए। आप हमारे अतिथि हैं। अपनी ओर से कोई ऐसी बात न होने दीजिए जिससे हम आपकी सेवा न कर सकें।

इस प्रकार का पागलपन बहुत दिनों तक नहीं टिक सकता। थोड़े दिनों में किसी प्रकार शान्ति हो ही जायगी, परन्तु हम हाथ पर हाथ धर कर उस दिन की प्रतीक्षा नहीं कर सकते। हमारा कर्तव्य है कि ऐसा प्रयत्न करें कि कम से कम हमारा प्रांत बचा रहे। आपने महात्मा जी का मार्मिक भाषण, जो [illegible] पर सुना होगा। एक एक [illegible] से व्यथा, दर्द टपक रहा था। उन्हें देश के दूसरे नेताओं की, प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारों की, समाज और [illegible] की सच्ची सेवा इस समय इसी में है कि हम अपने प्रान्त को, अपने जिले को, नगर को, अपने पास-पड़ोस को, इस [illegible] वह सर्वग्रासी, साम्प्रदायिक आग से बचा लें।

वह और हम

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

जिस ओर जा रहे ह हम लात खा रहे हैं।
उनको मना रहे हैं,
टेढ़ा स्वभाव उनका;
हम मानते गये हैं,
सब कुछ स्वभाव उनका।
पर गालियाँ उन्हीं की दिन-रात खा रहे हैं।
सब कुछ किया समर्पण,
घर-बार तक बिसारा;
लेकिन न ख्याल कुछ भी
आया उन्हें हमारा।
खाते पुलाव वह हैं हम भात खा रहे हैं।
विश्वास कर लिया है,
हम मित्र बन गये हैं;
हम लोग प्रेम-रस में,
सब भाँति सन गये हैं।
इस खेल खेल में ही हम मात खा रहे हैं।

खाँसी और ज़ुकाम की
सर्वाधिक लोकप्रिय दवा
सिरोलिन
'रोच'

संसार भर मे उपयोगित होती है।

वार्षिक बालसखा १९४७

...प्रस्तुत वार्षिकांक बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित किया गया है। बालक-बालिकाओं के मनोरंजन और ज्ञान-वर्द्धन के लिए लेखों, कहानियों और कविताओं का चयन बड़े विवेक के साथ किया गया है। प्रारंभ में तीन सुन्दर चित्रमय कहानियाँ हैं।...ऐसी कथाओं से बच्चों का मनोरंजन तो होगा ही, साथ ही बुद्धि का विकास भी होगा। चित्रों से सम्पूर्ण अंक भरा हुआ है। कई नयनाभिराम रंगीन चित्र भी हैं। बालक-बालिकाओं के पढ़ने लायक लगभग सात दर्जन लेख, कविता और कहानियों से युक्त ३०० पृष्ठों का यह वार्षिक अंक संग्रहणीय है। इस अंक का मूल्य तीन रुपये। (साप्ताहिक 'भारत' ३१—८—१९४७)

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतन्त्रता के पत्र

हिंदुस्तान सरकार द्वारा आलू के आयात पर लगाए हुए भारी कर के विरुद्ध बार-बार आवाज उठाने के बावजूद भी सरकार ने ध्यान नहीं दिया, तो पिछले सप्ताह से ही हिंदुस्तान-सूरी सड़क पर खिच्चर चलाने वालों ने अपनी माँगें पूरी न होने तक 'पोटोटीकर' और राहदारी कर देना बन्द कर दिया है। प्रजामंडल ने खिच्चर वालों के इस आन्दोलन को संगठित करने व वैधानिक रूप देने के लिए अपने संगठन के अन्तर्गत एक श्रमिक-विभाग खोल दिया है, जिसके संयोजक मंत्री के प्रमुख नेता श्री रामचन्द्र को नियुक्त किये गये हैं। इसी सड़क पर बुरांसकण्डा और कददखाल, दो कस्टम चौकियों पर प्रजा-मंडल ने वैकल्पिक कैम्प भी खोल दिये हैं, जहाँ स्वयंसेवक खिच्चरवालों को संगठित करने व उन्हें पुलिस की ज्यादतियों का शिकार होने से बचाने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं।

खिच्चर वालों के संघ की माँगें ये हैं :—

(१) आलू पर पहले की तरह केवल दस आना प्रतिमन के स्थान पर बारह आना प्रतिमन किया जाये।

(२) दोहरा राहदारी कर बन्द कर दिया जाये।

(३) सड़कों की मरम्मत समय-समय पर की जाये, जिनकी दुरावस्था के कारण उन्हें भारी हानि उठानी पड़ती है और वे स्थान-स्थान पर खिच्चरों के लिए पड़ाव बना दिये जायें।

(४) प्रजा-मंडल के प्रधान श्री मणिचन्द को अविलम्ब रिहा किया जाये।

जिलाधिकारियों ने इन माँगों पर विचार करने के बजाय खिच्चरवालों के संगठन को बगावत का रूप देकर उन्हें दमन करने के लिए कस्टम चौकियों पर काफी संख्या में हथियारबन्द पुलिस दल भेज दी है। प्रजा-मंडल के संगठन के संयोजक श्री रामचन्द्र ने अपने एक वक्तव्य में कहा है कि, "यह आन्दोलन अहिंसात्मक है और सरकार ने हमारी न्यायोचित माँगों पर विचार करने के स्थान पर दमन का सहारा लिया, तो वह घृणा का वातावरण पैदा करने के लिए उत्तरदायी होगी। उससे बचने के लिए प्रजा-मंडल भरसक प्रयत्न करता रहा है।"

——संवाददाता

* * *

टिहरी (सिकन्दराबाद) में एक सभा श्री भूधरलाल जी की अध्यक्षता में हुई। सर्वश्री राजाराम त्रिवेदी, [illegible] विश्व, कैलाशनाथ वाजपेयी, [illegible] त्रिपाठी, 'चंचरीक' साधू-[illegible] और मौलाना साहब के भाषण [illegible] ने पं० साधूराम जी [illegible] मंत्री जिला कांग्रेस कमेटी [illegible] की बैठकों, भेंट की। सभा में [illegible] हुए——यह सभा उन सभी वीरों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती है जिन्होंने स्वतंत्रता की लड़ाई में किसी भी प्रकार का भाग लिया है, और शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करती है तथा नेताओं को विश्वास दिलाती है कि हम लोग जैसे अब तक स्वतंत्रता-संग्राम में आपके अनुगामी रहे हैं वैसे ही भविष्य में स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए भी सदैव आज्ञानुवर्ती रहेंगे।

२——यह सभा प्रान्त की लोकप्रिय सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करती है कि वह जमींदारी प्रथा को अविलम्ब बिला मुआविजा खत्म कर दे।

३——यह सभा सभी सरकारी नौकरों से अपील करती है कि वे अब भ्रष्टाचार आदि दुष्कृत्य त्याग कर सच्चे जन-सेवक बन जायें नहीं तो इस जन-जागृति के युग में उनका निर्वाह असम्भव हो जायगा।

४——यह सभा जमींदारों से अनुरोध करती है और उन्हें चेतावनी देती है कि वे भी इस बदलते युग में बदल जायँ नहीं तो उनका जीवन अत्यधिक संकट पूर्ण बन जायगा।

शाम को पुनः एक सभा हुई जिसमें लगभग २५० आदमी एकत्र थे और प्रायः सभी मुसलमान थे। उसमें इन व्यक्तियों ने भाषण हुए,——त्रिवेदीदत्त त्रिपाठी 'चंचरीक', साधूराम शुक्ल और मौलाना साहब। वक्ताओं ने मुस्लिम जनता को समझाया कि किस प्रकार मुस्लिम जनता ने 'लीग' का साथ देकर अपना अहित किया है और लीग का साथ देने से भविष्य में उसमें अहित की सम्भावना है।

——संवाददाता

* * *

प्रतापगढ़ में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् की राजपुताना शाखा के महिला-संगठन की संयोजिका तथा उदयपुर महिला-मंडल की अध्यक्षता श्रीमती कमलाकुमारी श्रोत्रीय पार्टी-सहित यहाँ पधारीं। मोटर-स्टेंड पर आपका भव्य स्वागत हुआ। रात्रि को माणिक-चौक में श्री अमृतलाल जी की अध्यक्षता में शानदार सार्वजनिक सभा हुई जिसमें महिला-संगठन तथा सामयिक विषयों पर——श्रीमती कमल.कुमारी जी और मेवाड़ के तपे हुए पुराने नेता पं० दयाशंकर श्रोत्रीय के महत्त्वपूर्ण भाषण हुए। सभा में पाँच हजार से अधिक जनता उपस्थित थी। दूसरे दिन महिलाओं की एक सभा उत्साहपूर्ण वातावरण में हुई जिसमें श्रीमती कमलाकुमारी जी और श्री राजन देवी ने महिलाओं के उत्थान पर प्रकाश डाला। श्रीमती कमला जी प्रतापगढ़-महारानी और राज-परिवार की प्रतिष्ठित महिलाओं से भी मिलीं और पं० दयाशंकर जी श्रोत्रीय ने महाराजा से भेंट की। आप लोगों ने प्रतापगढ़ में नारी-जागरण व संगठन पर खासतौर से तवज्जह देने की अपील की।

——संवाददाता

* * *

दिल्ली के 'दैनिक वीर अर्जुन' व 'साप्ताहिक वीर अर्जुन' की प्रकाशक-संस्था, श्रद्धानन्द पब्लिक केसस लिमिटेड की ओर से आगामी १ नवम्बर १९४७ से 'मनोरंजन' नामक एक उच्च कोटि का मासिक पत्र प्रकाशित हो रहा है। यह पत्र मनोरंजन-प्रधान होगा; सुरुचिपूर्ण, कलात्मक, ज्ञानवर्धक और नैतिकता की कसौटी पर खरी उतरने-वाली होगी। मार्मिक व भावपूर्ण मौलिक कहानियों, कविताओं, एकांकी नाटकों तथा प्रहसनों के अतिरिक्त इसमें साहित्य विज्ञान, कला-कौशल, संस्कृति, इतिहास, पुरातत्त्व, राजनीति, अन्तर्राष्ट्रीय गति-विधि इत्यादि विषयों पर अधिकारी लेखकों व विद्वानों के स्थायी महत्त्व के लेख भी रहेंगे। स्त्रियोपयोगी व बालोपयोगी सामग्री विशेष रूप से प्रस्तुत की जायगी।

——चिरंजीत

* * *

झाँसी के तालबेहट-स्थित 'मृगेन्द्र' पुस्तकालय से संचालक सीताराम खत्री 'मृगेन्द्र' गत जुलाई मास से 'मृगेन्द्र पुस्तकालय पत्रिका' नाम का एक हस्तलिखित साहित्यिक हिन्दी मासिक निकालते हैं। इसके अब तक ३ अंक निकल चुके हैं। चतुर्थांक विशेषांक के रूप में गांधी जन्मोत्सव पर निकल रहा है। सहयोग वांछनीय है।

——संवाददाता

अन्तू सरदार

भरोस सरदार के लडकी के सिवा कोई सन्तान न थी। और भरोस था ऐसा लठैत जिससे पुलिस भी डरती थी। एक जमींदार के यहाँ भरोस नौकर था। उसने अपनी बेटी को भी लाठी चलाना सिखा दिया था। इसका ब्याह जिस अनन्त (अन्त) से किया गया था वह भरोस से सवाया था। एक झमेले में बड़ी मार-काट हुई। इसमें अन्तू की स्त्री भी मारी गई और भतीजा प्रताप पागल-सा हो गया। पुलिस ने अन्त को गिरफ्तार कर सज़ा करा दी। इधर प्रताप भी चल बसा। यह कहानी है तो बड़ों के लिए भी रोचक, परन्तु बच्चों को बहुत पसन्द आवेगी। सुन्दर सरल भाषा, कई चित्र और कवर-पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल बारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

वह लोग जिन्हें रुपया सुगमता से प्राप्त होता है, वस्तुओं के मूल्य बढ़ाने का कारण बन जाते हैं और इस प्रकार साधारण लोगों को जीवन की आवश्यक वस्तुएँ तक प्राप्त नहीं होतीं।

हमाम और ५०१ साबुन को मोल लेते समय उचित फुटकर भाव से अधिक कभी न दीजिए।

हमाम और ५०१ साबुन

दी टाटा आइल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ गीति-काव्य

कवि और छवि

लेखक, श्री बालकृष्ण राव

कविश्री बालकृष्णराव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपकी नवीनतम गीति-काव्यों का सर्वश्रेष्ठ संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्द्वंद्व से परिपूर्ण तो है ही साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाले हैं। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संग्रहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम, सचित्र और सजिल्द——मूल्य केवल २) रु०।

मैनेजर——बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन का सभापति कौन हो ?

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति की पिछली बैठक में सम्मेलन के आगामी वर्ष के लिए सभापति-पद के लिए ५ व्यक्तियों के नाम प्रस्तावित किये गये हैं। मेरा मत है कि अगले वर्ष सम्मेलन की बागडोर सेठ गोविन्ददास के हाथ में दी जाय। उसके कारण ये हैं—

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन ने अपने जन्मकाल से हिन्दी को राष्ट्र-भाषा और नागरी को राष्ट्र-लिपि के पद पर प्रतिष्ठित करने के उद्देश से अनवरत चेष्टा की है। उसकी सारी क्रियाशीलता इसी एक लक्ष्य पर केन्द्रीभूत रही सम्मेलन की है।

इस संबंध में सारी चेष्टाएँ उसकी सारी तपस्या सफल होगी अथवा नहीं यह महत्त्वपूर्ण प्रश्न इस समय दिल्ली में भारतीय विधान सम्मेलन के सम्मुख उपस्थित है। दुर्भाग्य से, हिन्दी के विरोध में महात्मा गान्धी का महान् व्यक्तित्व अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ जुड़ा आ है। विधान सम्मेलन के सदस्यों को हिन्दी के विपक्ष में प्रभावित करने के लिए जो संघर्ष चल रहा है उससे अधिक लोग परिचित नहीं हैं। सचमुच यह बड़ी चिन्ता का विषय है कि हिन्दी का पक्ष पुष्ट करने के लिए विधान सम्मेलन में जो महानुभाव चेष्टा कर रहे हैं उनमें अखिल-भारतीय महत्त्व प्राप्त व्यक्ति मुझे पता है, अकेले माननीय टंडन जी हैं। जब कि विरोध में भारतवर्ष के लगभग दर्जन भर महान् व्यक्ति अपनी शक्ति, प्रतिष्ठा एवं अधिकार का उपयोग कर रहे हैं। सेठ जी महाकौशलप्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान, केन्द्रीय एसेम्बली के सदस्य भारतीय विधान-परिषद् के सदस्य तथा देश के गण्यमान्य नेताओं में हैं। उनकी अनोखी साहित्य-सेवा ने हिन्दी का मस्तक ऊंचा किया है। साहित्य में वे भारतीय संस्कृति एवं परम्परा के प्रति आस्था रखने के साथ समय की गतिशीलता की ओर दृष्टि रखने का सेठ जी का गुण हिन्दी के स्वभाव के सर्वथा अनुकूल है।

हमारा पत्रदाताओं से विनम्र-निवेदन है कि वे किसी के इस महान् अवसर को देखकर सेठ जी को सम्मेलन का सभापतित्व समर्पित करें।

प्रयाग —शिवसेवक मिश्र

२१ सितंबर ४७ आचार्य हिन्दी विद्यापीठ

(पेज ४ का शेष)

प्रबंध में लगी है जब कि हिन्दू शरणार्थी बिना किसी हिफाजत के छोड़ दिये गये हैं। ख्याल यह फैला हुआ है कि जिना महोदय युद्ध कराये बगैर न मानेंगे। शायद युद्ध हो ही जाय, शुरुतो जूनागढ़ ने कर ही दिया, शायद यही अच्छा भी होगा कि उसके बाद शान्ति तो होगी।

मगर पछतावा हो या न हो, पछतावा इस वक्त तो बदला लेने का पागलपन बढ़ता ही जाता है और उसका जोर बेगुनाह गरीबों पर पड़ता है। दोनों तरफ से वे ही मारे जाते हैं जिनकी कभी नियत भी दूसरों पर हाथ उठाने की नहीं, नतीजा यह हो रहा है कि सारा कारबार रुका पड़ा है। रेलों तक पर चढ़ना खतरे से खाली नहीं रहा है। लाखों आदमियों को घर छोड़ना पड़ा है खाने-पीने को मुहताज हो गये हैं, औरतें बेइज्जत की गई हैं, बच्चों को जाने ली जा रही हैं मानो जंगली जानवरों की तरह हम लड़ रहे हैं और एक का बदला दूसरे से लेते हैं, यह हम भूल जाते हैं कि जब तक बदला लेने की इच्छा बनी रहेगी, अमन होना असम्भव है न कपड़ा मिलेगा न खाना। किसी तरफ से तो यह इच्छा छोड़नी ही पड़ेगी, अगर देश को बचाना और फि से अमन फैलाना है।

हमारी सरकार तो जो तोड़फोड़ इस बात की कोशिश कर रही है, इसमें हमें खुशी है मगर इसके लिए यह जरूरी बात है कि हमारे हाकिमों के दि में किसी उपद्रव के लिए नर्म कोना न वे ऐसी बातें मुँह से न निकालें जिससे ही सम्प्रदाय पर सारा इल्जाम हिन्दू अपना धर्म समझते हैं और उ पालन भी करते हैं दिल्ली के उपद्र कितने हो ने अपने तईं खतरे में डा अल्पसंख्यकों को शरण दी। यह मुसलमानों तक ने माना है, जब वे धर्म जानते और उसे पूरा करते हैं उन्हें यह बात कड़वी क्यों न लगे कि वे सुनें कि ९९ हिन्दू एक मुसलमान के कुरबान कर दिया जा सकता है हमें मा हैं कि किसी को ऐसी इच्छा नहीं, हमारे मंत्रिमंडल को कुछ न कुछ रहने का इतना शौक है कि वे भूल हैं कि क्या कह रहे हैं, सारे अखबार लोगों के वक्तव्यों से भरे रहते हैं इसके कि वह कुछ कर दिखावे, बड़ी बातें बनाते रहते हैं, मिसाल के सुनिये जबसे इन्हें इतिजाम का मिला कितने बार हमसे कहा गया। चार बड़े शहरों में काफी दूध का बहुत जल्द होगा। मगर दूध कम ही होता गया। कल-का खुलवाने को कितने ही वादे मगर गत दो वर्ष में एक भी न कि बेकार लोग जीविका से लग चीजों के मिलने में दिक्कतें बढ़ती मोटर कारें सब सरकार या कर्मचारियों के लिये रोक दी बाईसिकलें जिनकी जरूरत आ हर शख्स को है उन पर से सारा हट गया और वे बाबा के मोल लगीं। हमारे चुने हुए मंत्रिमंडल पुराने नौकरशाही में क्या फर्क उनकी भी दृष्टि एक ही हद तक जा और इनकी भी वही हालत देखी जा है। हमारे पालीवार महोदय राष्ट्र को तोड़ने की धमकी देते हैं मगर होमगार्ड के किसी बात का विरोध मुँह से निकालते। दूसरे मंत्र यह क है कि मुसलमानों को उनकी आबा संख्या से ज्यादा नौकरियाँ नहीं मगर पब्लिक सर्विस कमीशन को ऐसा हुकुम नहीं मिला है, यह क हमें दुःख है कि हमें इस तरह नेताओं के दोषों का बखान करना प मगर नियत हमारी यह है कि वे सुधार करें, हम चाहते हैं कि वे को जनता का नौकर समझें, वे जरूर कहते हैं मगर जो भी उनसे जाता है वह यही शिकायत करता है कि बिल्कुल रूखे लोग हैं। होगा अगर उनकी रुखाई और के वास्ते नर्म होना कांग्रेस को में नुकसान पहुँचावे। इसी अपना धर्म यह समझा कि उन्हें कर दें।

सोहनलाल द्विवेदी

सेवाग्राम

दो अक्टूबर १९४७ को न भूलिए
धूमधाम से गान्धी-जयन्ती मनाइए !

और

इसे अधिक आनन्दमय बनाने के लिए 'गान्धी-अभिनन्दन ग्रन्थ' तथा 'सेवाग्राम' का स्वाध्याय सम्मिलित कीजिए।

युक्तप्रान्त के शिक्षा-सदस्य जी की सम्मति—

"सेवाग्राम का प्रकाशन सुन्दर हुआ है। आप जैसे लब्धप्रतिष्ठ कवि की रचनाओं के सम्बन्ध में कुछ कहना मेरा दुस्साहस-मात्र है। हाँ, मैं इतना कह सकता हूँ कि रचनाएँ मुझे बहुत अच्छी लगीं।

—सम्पूर्णानन्द"

गान्धी अभिनन्दन-ग्रन्थ के सम्पादक पंडित सोहनलाल द्विवेदी की राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित कविताओं का बृहद् संग्रह 'सेवाग्राम' बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित किया जा रहा है।

'सेवाग्राम' गान्धीवाद का ही नहीं, अपितु, जन-आन्दोलन का महाकाव्य है। भैरवी में राष्ट्रीय चेतना के जिस स्वर को कवि ने उठाया था, वह सेवाग्राम में समस्वरों में गुंजायमान हुआ है।

सेवाग्राम बड़े आकार-प्रकार में प्रकाशित किया जा रहा है। पृष्ठ-संख्या लगभग तीन सौ।

सर्वश्री अवनीन्द्रनाथ ठाकुर, नंदलाल बोस, रविशंकर रावल, कुमारी अमृत शेरगिल तथा असितकुमार हलदार जैसे चूड़ान्त कलाकारों के बहुरंगे चित्रणों से ग्रन्थ अलंकृत किया गया है।

मूल्य दस रुपये

इंडियन प्रेस लिमिटेड
इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना-पराया

देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' लिखित इस मनोरंजक उपन्यास में एक चीनी ...का मेनका-नृत्य जहाँ आपको आत्म-विभोर कर देगा, वहीं तिब्बत और चीन की ...छटा, और वहाँ के अजीबोग़रीब रस्म-रिवाज भी आपके सामने नाच उठेंगे। ...की यह रहस्यमयी तरुणी किस प्रकार भारत आती और अपने धर्म तथा स्वदेशा-...की रक्षा कर, एक भारतीय नौसैनिक की सहायता से अपने देश लौट जाती है, ...प्रसंग आपको प्रणय की रंगीनियों, परिस्थितियों का विचित्र परिचय देंगे। ...२३२, सजिल्द और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २॥) रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

प्रांतीय शिक्षा-प्रसार विभाग

पुस्तकें दाखिल करने की अंतिम तारीख ३० सितम्बर है

युक्त-प्रान्तीय सरकार के गजट के चौथे भाग में २९ जुलाई सन् १९४७ को जो सूचना प्रकाशित की गई थी और जिसमें प्रांतीय शिक्षा-प्रसार विभाग के पास किताबों के भेजने की अन्तिम तारीख बतलाई गई थी? उसके सम्बन्ध में पुनः सूचित किया जाता है कि पुस्तकें दाखिल करने की अन्तिम तारीख की मियाद बढ़ा कर ३० सितम्बर सन् १९४७ तक कर दी गई है। इस सम्बन्ध का विस्तृत ब्योरा वही है जो २५ जुलाई के गजट में छप चुका है।

—ए० काजमी
शिक्षा-प्रसार अफसर युक्त-प्रान्त

ओटो पुष्पबहार

ओटो पुष्पबहार समस्त सुगन्धिओं ...है, इसको लगाते ही आपका ...की लहरों में खो जायगा, ...से आप निकलेंगे इसकी सुगन्ध ...की नजरें आप पर केन्द्रित हो ...रूमाल में लगाने से इसकी खुशबू ...नहीं जाती, यह सुगन्ध लगाकर ...मिलेंगे वह आपसे बहुत प्रभा-...हो जायगा। मूल्य प्रति शीशी ।॥) ...दर्जन ६॥) डाक खर्च १।)।

...साथ एक दर्जन शीशी मँगाने ...जोड़ी हाथ के बटनों का सेट, ...फैशन की एक चमकदार अँगूठी, ...रूमाल, एक खूबसूरत शीशा ...इनाम में मुफ्त दिया जायगा। ...केवल-प्रचार के उद्देश्य से ...है।)

...—इंडिया ट्रेडिङ्ग कंपनी, कानपुर

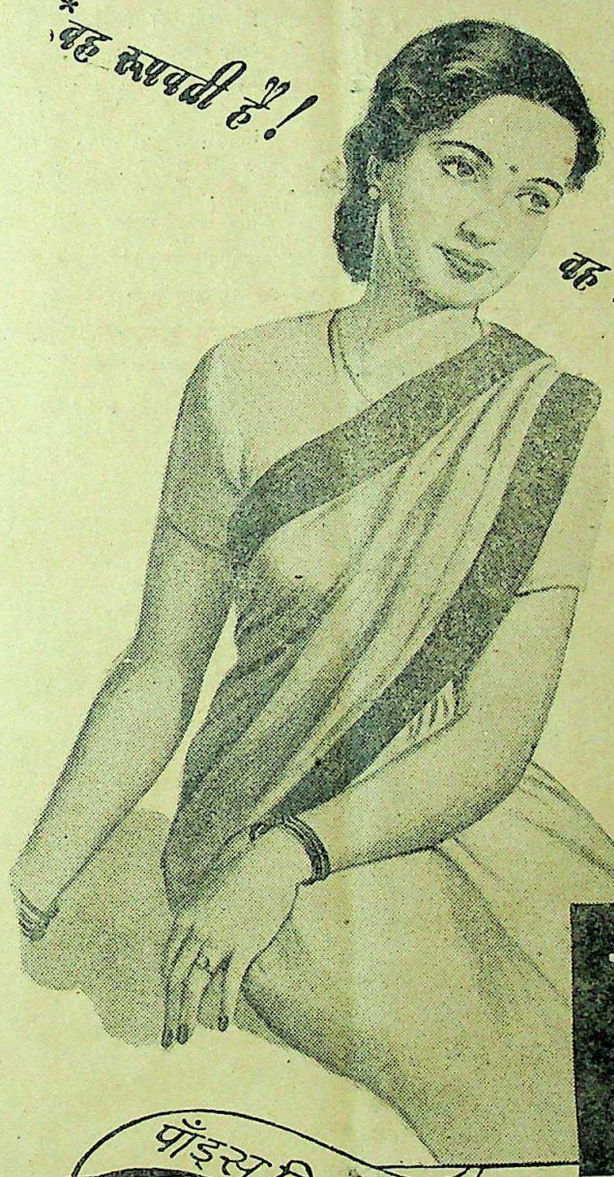
*वह रूपवती है!
वह पाँड्स का प्रयोग करती है!

*सुरेखा
लज्जाशीला और सुकुमारी
रेशम सा कोमल मुखमण्डल

.....संसार की कुछ सबसे रूपवान स्त्रियाँ पांड्स् का प्रयोग करती हैं।

.....यदि आपको अधिक स्वच्छ और कोमल चेहरे की आकांक्षा है तो आज से ही इन हल्के और सुगंधित क्रीमों का प्रयोग शुरू कर दीजिये।

पाँड्स् क्रीम्स

पाँड्स् दिनचर्या

पाँड्स् कोल्ड क्रीम : पाँड्स कोल्ड क्रीम को चेहरे पर कोमलता से रमाते हुये दिन में दो बार उसे साफ़ कीजिये; उंगली के कोमल पोरों से उसे थपथपाइये। पाँड्स् टिशू से स्वच्छ कर लीजिये।

पाँड्स् वेनिशिंग क्रीम : कोल्ड क्रीम की साफ़ करके उंगली के पोरों से पाँड्स् वेनिशिंग क्रीम लगाइये। त्वचा को सरक्षा देता हुआ वह आपके प्रयोग के साथ ही अंतर्धान हो जाता है।

पाँड्स् पावडर : यदि आप की इच्छा हो तो पुष्पपंखड़ी की भांति कोमलता के लिये पाँड्स् पावडर थपथपाइये।

व्यापार-सम्बंधी पूछताछ के लिये लिखिये :
एल. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लिमि० बम्बई - कलकत्ता - कराची - मदरास.

Copyright: Pond's Extract Co.

परिवार के नवयुवक

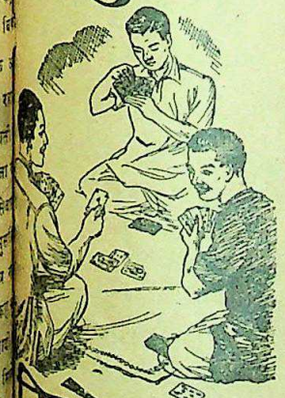

निकोटा का व्यवहार करते है।

...दाँतों का सफेद और दृढ़ रखता है, और सुन्दर मुसकान ...परिवार में वह प्रत्येक के अनुकूल पड़ता है। इसलिये ...के व्यवहार के योग्य सबसे अधिक 'किफायती' ...का टूथपेस्ट है।

...सभी जगह एक रुपये से कम ...मिलता है।

★ स्वादिष्ट
★ स्फूर्तिप्रद
★ कीटाणुनाशक

एक सुंदर लाल बक्स में सभी केमिस्ट व व्यापारियों के यहाँ मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप शीघ्र ही सफल होंगे

यदि आपके श्वास में विकार न हो !

बुरी श्वास के कारण आपको मूल्यवान् अवसर खो देना पड़ता है। पर मैं अपने दांतों को साफ और चमकीला रखने के लिए कोलगेट डेण्टल क्रीम से दिन में कम से कम दो बार अवश्य साफ करता हूँ। मेरा सारा मुँह ताजा और सुगन्धित रहता है।

और मैं यह भी जानता हूँ कि मेरी श्वास में विकार न होगा क्योंकि कोलगेट के भीतर घुसनेवाले फेन दांतों की दरारों में घुसकर सड़े हुए ऐसे खाने को निकाल देते हैं जिनसे श्वास में विकार पैदा हो जाता है। कोलगेट डेण्टल क्रीम बिना किसी हानि के दांतों को साफ और चिकना कर देता है।

आज ही से डेण्टल क्रीम का इस्तेमाल नियमित रूप से कई बार करना आरम्भ कर दीजिए। याद रखिए दूसरा दन्तमंजन ऐसा नहीं है।

NO BAD BREATH BEHIND HIS SPARKLING SMILE!

उच्च कोटि की सचित्र कहानी-पत्रिका

'मंजरी'

जनवरी १९४८ से प्रकाशित हो रही है

'मंजरी' हिन्दी कथा-साहित्य का कलात्मक शृङ्गार करेगी।

'मंजरी' में हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ कथाकारों की तथा अन्य भाषाओं की भी उच्च की सुरुचि-सम्पन्न कलात्मक कहानियाँ प्रकाशित होंगी।

'मंजरी' निःसंकोच रूप से माँ-बहनों के हाथों में दी जा सकेगी।

'मंजरी' प्रत्येक प्रकाशित रचना पर पर्याप्त पारिश्रमिक देगी और रचनाओं का राइट लेगी।

'मंजरी' में आद्योपान्त मात्र कहानियाँ न रहेंगी। इसका तीन-चौथाई कलेवर कहानी के लिए और एक-चौथाई कथा-साहित्य के सभी उपांगों पर गम्भीर लेखों, प्रकाशनों की निष्पक्ष समीक्षा और मासिक कथा-साहित्य के सिंहावलोकन लिए सुरक्षित रहेगा।

'मंजरी' का वार्षिक मूल्य ६) छः रु० और प्रत्येक अङ्क का ॥) आठ आने होगा।

ग्राहकों, एजेण्टों और विज्ञापन-दाताओं को शीघ्रतापूर्वक अपनी प्रतियाँ स्थान आदि सुरक्षित करा लेना चाहिए अन्यथा प्रकाशित होते ही इसके अङ्क हो जायँगे।

सम्पादक — देवीदयाल चतुर्वेदी

प्रकाशक — इंडियन प्रेस, लि०, प्र

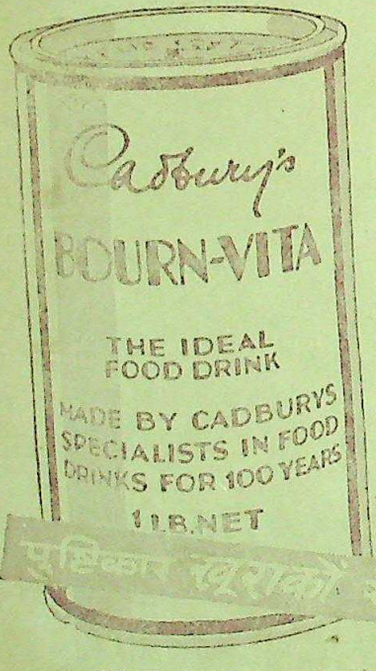

स्वादिष्ट है बढ़िया है!

पुष्टिकर खूराकों से भरा हुआ

'बोर्न-विटा' में हड्डी बनाने और ताक़त देने वाले उपादन ९५ सैंकड़ा से अधिक ही होते हैं। साथ ही साथ यह ऐसा मज़ेदार होता है कि इस से हाज़मा तेज़ हो जाता है और यह आसानी से हज़्म भी हो जाता है। ख़ास तौर पर गर्भ और स्वास्थ्य लाभ के दिनों में।

केडबरी का

बोर्न-विटा

केल्सेयम और खाद्योज से भरपूर

केडबरी का अपूर्व

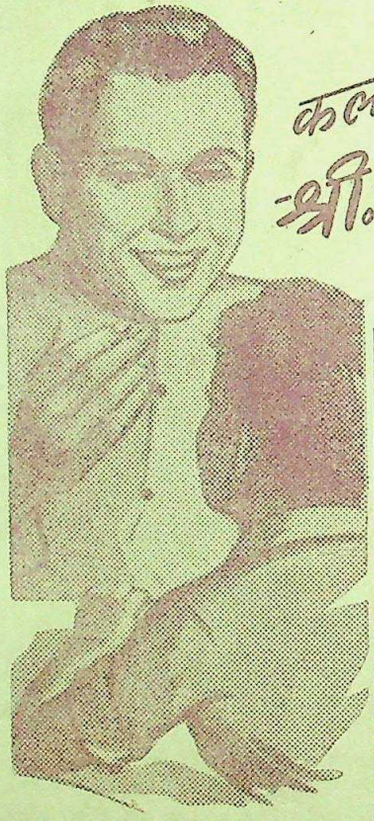

कलकत्ता के श्री. चौधरी को स्मरण है...

जब कि मैं बहुत छोटा था, तब मेरी माँने मुझे आरोग्यदायक लाइफ़ब्वाय की आदत सिखलाई...

विद्यार्थी अवस्था में मैं एक सफल व्यक्ति रहा—कॉलेज के ज़माने में मुझे स्वस्थ रखने में सहायता करनेवाली लाइफ़ब्वाय की आदत प्रशंसा के योग्य है...

इस वक्त मैं अच्छी अवस्था में हूँ, क्यों कि मैं ने स्वास्थ्य को उत्तम रखने के लिये कभी भी लापरवाही नहीं की। अब मैं इस ओर विशेष ध्यान देता हूँ कि, अपने परिवार के लोग भी लाइफ़ब्वाय की आदत का अनुसरण करें।

सुन्दर स्वास्थ्यदायक लाइफ़ब्वाय की आदत अपनी जीवनभर दैनिक आदत रखने का प्रयत्न करें। जिससे आपको चिंता करने का बिल्कुल कारण नहीं क्यों कि वह आपको और आपके परिवार के लोगों की बीमारी से सुरक्षा करने में आपकी सहायता करेगा। अतिरिक्त इसके, लाइफ़ब्वाय से नहाने के बाद आपको नवजीवन प्राप्त हुए जैसा मालूम होगा। उसकी वजह से दिनभर काम करनेपर भी आप उत्साहित रहेंगे।

आप अपने बालबच्चों को लाइफ़ब्वाय की आदत अवश्य सिखाइये उसमें विद्यमान विशिष्ट आरोग्यकारक द्रव्यांशों—द्वारा वह उनकी धूल और मैल के जंतुओं से सुरक्षा करता है। कभी भी उन्हें लाइफ़ब्वाय से हाथ-मुँह धोना भूलने न दें।

जीवनभर उपयुक्त साबुन...

लाइफ़ब्वाय

L. 90-172-10 III

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, ... प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

१४ सितम्बर, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 14th September, 1947

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

...बम और विश्व-शांति
...और गोस्वामी तुलसीदास

प्रांतीय सरकार की ग्राम-सुधार-योजना
मातृ-मन्दिर, रंगमंच, हास-परिहास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्यग्रहण के अवसर पर तैयार की हुई

दिव्य सिद्धि तांत्रिक अँगूठी

आप जो चाहेंगे हो जायगा। गरीबी दूर भाग जायगी, लक्ष्मी आपके चूमेगी, आप धनवान हो जायँगे, आपकी प्रेमिका आपसे अटूट प्रेम करने लगेगी शत्रु मित्र बन जायँगे, मनचाही सन्तान होगी, बुरे ग्रहों का दोष दूर हो जायगा संसार आपकी इज्जत करेगा, लड़ाई-झगड़े में फतह होगी, विद्यार्थी परीक्षा पास होंगे, जिसे आप चाहते हैं उसी सुन्दरी से शादी होगी, नाराज हाकिम खु होगा, वशीकरण होगा। बात यह है कि हर काम आपके इच्छानुसार होगा यह अँगूठी ग्रहण के अवसर पर शुभ मुहूर्त में तैयार होती है। बड़े परिश्रम तैयार कराई गई है। अब परीक्षा करके लाभ उठाना आपका काम है। मूल्य डाक- खर्च ।।=) आना। नोट—बेकार साबित हो, तो ६ महीने तक वापि

पता—कमल कंपनी (स) अलीगढ़

कथा-साहित्य का नवीन उपादान

अपना-पराया

लेखक—पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

इस मौलिक मनोरंजक उपन्यास में एक चीनी तरुणी का मेनका-नृत्य आपको आत्म-विभोर कर देगा, वहीं तिब्बत और चीन की नैसर्गिक छटा, वहाँ के अजीबोगरीब रस्म-रिवाज भी आपके सामने चलचित्र की तरह नाच उठेंगे। चीन की यह रहस्यमयी तरुणी किस प्रकार भारत आती और अपने धर्म तथा स्वदेशाभिमान की रक्षा का व्रत लेकर, एक भारतीय नौसैनिक की सहायता से अपने देश लौट जाती है, आदि प्रसंग एक स्वस्थ सामाजिक दृष्टिकोण के साथ आपको प्रणय की रंगीनियों, परिस्थितियों के झमेलों और जिज्ञासा के झकोरों का जो परिचय देंगे, उसे आप कभी भूल न सकेंगे।

पृष्ठ २३२, सजिल्द और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २॥) रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

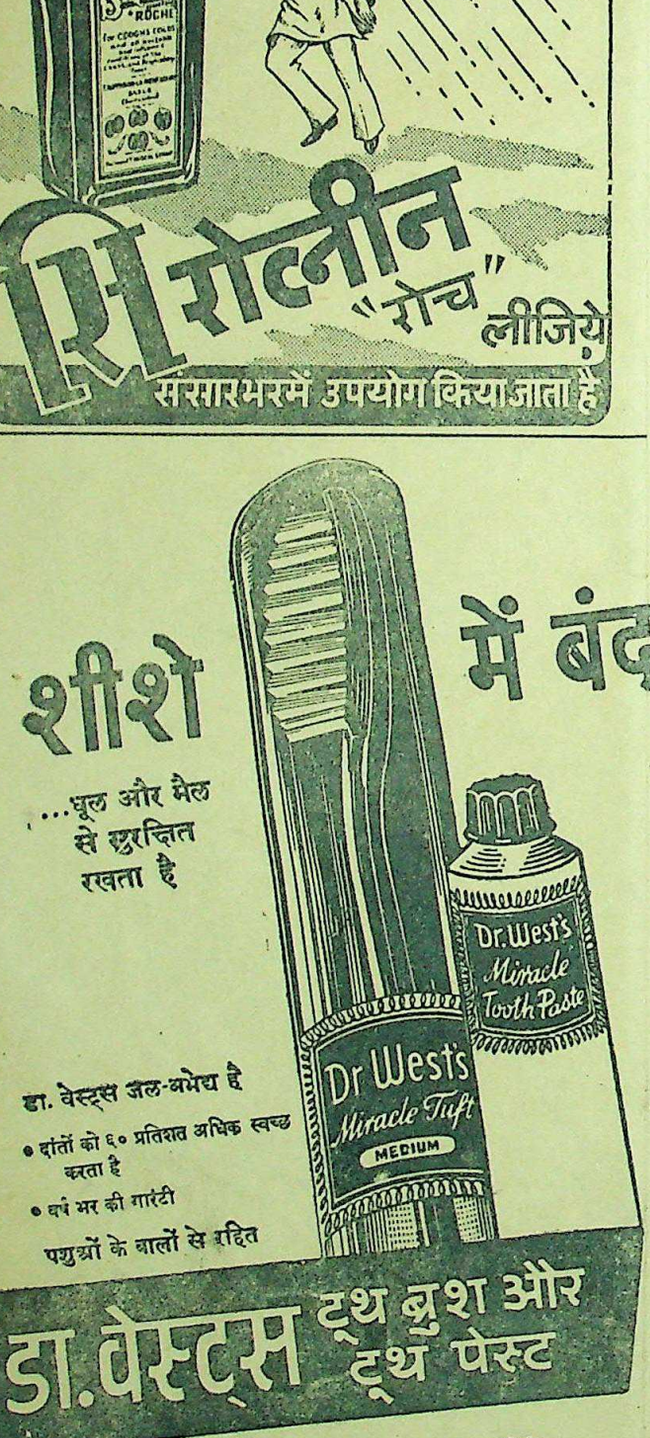

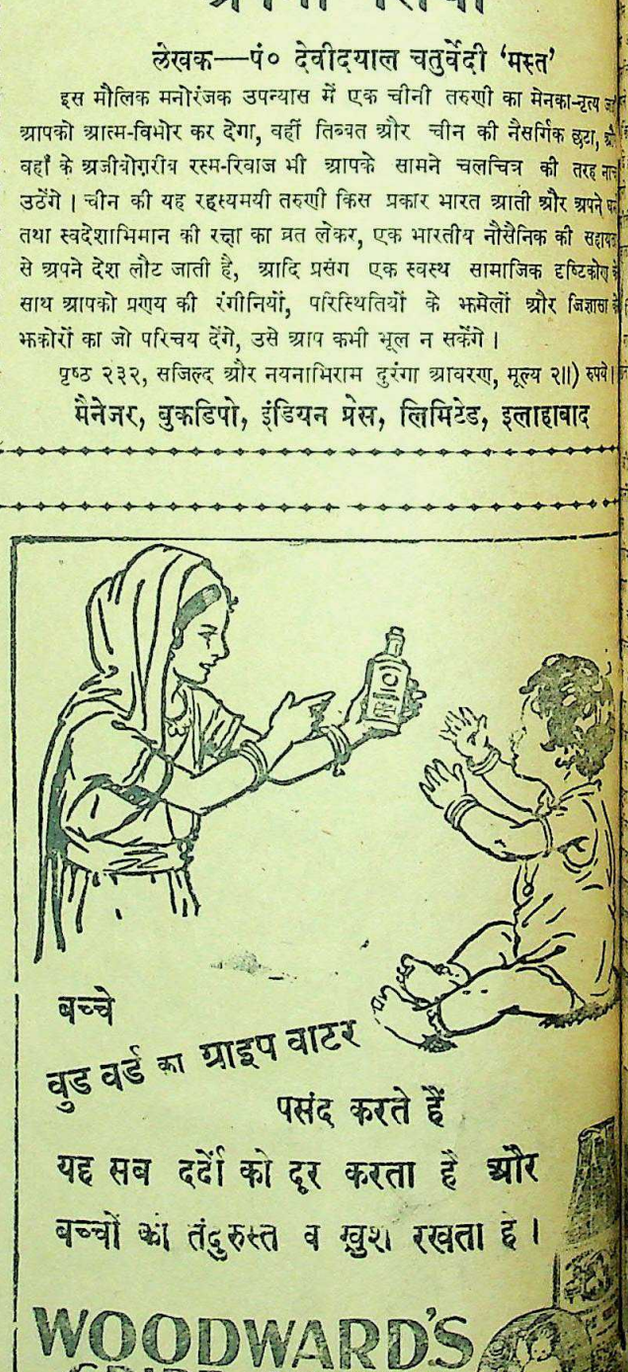

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष १०, संख्या २] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, १४ सितम्बर, १९४७

सौधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

पंजाब और लाहौर का काण्ड एक समाप्त हो रहा है तो दूसरी ओर का जोर दिल्ली की ओर बढ़ गया अब उनका निशाना दिल्ली बन रहा है वह भी हिन्दुस्तान के गवर्नर-जनरल लार्ड लुई माउंट बेटेन की नाक के नीचे। इधर तो मिस्टर जिन्ना साहब दंगे हत्याकांडों को देख-सुनकर बोल रहे हैं और उधर दिल्ली में कुछ हो रहा है उसकी तरफ सभी आंखें मूंदकर बैठे गये हैं। बात यह है कि अब तो मामला हिन्दुस्तान का है, इसमें पाकिस्तान से क्या लेना देना? इसी को कानोंकान खबर मिली है कि मुस्लिम गुंडे अभी दिल्ली की ओर और स्कीमतो ऐसी है कि मामला भी बढ़े। क्योंकि दिल्ली तो उनकी ही है न! इसके बाद आगरा ताज-आदि का नम्बर आनेवाला है। भाई, अब तो अँगरेजों ने बटवारा दिया है, पाकिस्तानी तो परम स्वतंत्र हैं, जो कुछ चाहे करें, उन्हें कौन रोकता है?

* *

दिल्ली में इधर उधमबाजी हो रही है उधर हैदराबाद के निजाम साहब स्वतंत्रता का इजहार करने पर हैं। हैदराबादी सरकार ने के कार्यकर्ताओं को जेलों में ठूँस है। साथ-साथ समझौते की वार्ता चली ही जा रही है। अपने राम कहते हैं कि ऊँट किधर करवट लेगा, निजाम बहादुर समझ सकते हैं न पाकिस्तानी। यह तो आखिरी कदम है, अगर निजाम की बंदर घुरकियों काम चल गया तो ठीक नहीं तो फिर का नाम लेकर चुपचाप भारतीय में तो शरीक हो ही जाना है। कहते हैं कि जब बैल नाथा जाने है तो पगहा तुड़ाकर इधर-उधर की कोशिश ही नहीं करता बल्कि भी फेंकता है। हैदराबाद इस अँधेरे में हाथ-पाँव मार रहा है। हैदराबादी कांग्रेस संगठन को भी वह खतम करना चाहता है और बरार को भी वह हथियाने के दाँव-पेंच लगाने की ओर दौड़ता है। लेकिन नकेल तो नाक में किसी न किसी दिन पड़नी ही है। जो कुछ हो रहा है, सब कुछ नकेल पड़ने के पहले की क्रिया है, और जहाँ नकेल पड़ी और निजाम साहब रास्ते पर आये। सो अपने राम जानते हैं कि नकेल हैदराबाद की नाक में पड़ने ही वाली है।

* *

यह सदा से चलन चलती आई है कि पड़ोसी का असर जरूर पड़ता है। इसीलिये मैसूर पर भी हैदराबाद का असर पड़ा है। जैसे हम हिन्दुस्तानियों ने अँगरेजों का उच्छिष्ट तो ग्रहण कर लिया है लेकिन गुण नहीं, आखिर वह चले भी गये। ठीक उसी तरह से मैसूर ने भी हैदराबाद का उच्छिष्ट ग्रहण कर लिया है। इसीलिये तो मैसूर में कांग्रेस के विरुद्ध कार्यवाही हो रही है? दोनों रियासतों का स्वरूप बड़े और छोटे भाई का-सा है भी। बड़ा भाई इस वक्त हाथ और पैर दोनों का प्रदर्शन कर रहा है लेकिन छोटे भाई लँगड़ा बना दिया गया है, इसलिए वह हाथ पटकने का प्रदर्शन कर रहा है। देखना है मैसूर में कांग्रेसियों का दमन कब तक जारी रहता है? बड़े भाई का असर छोटे भाई पर से जायगा तो जरूर ही लेकिन अभी तो पहली स्टेज है। चौथी स्टेज आने ही वाली है।

* *

मास्टर तारासिंह कहते हैं कि पंजाब के हत्याकांड की जिम्मेदारी पाकिस्तान की सरकार और सीमा के अँगरेज अफसरों पर है। बात तो बावन तोला पाव रत्ती है। पाकिस्तान और अँगरेज का गठबंधन भी इसीलिये पहले से ही हुआ है। यही नहीं अँगरेजों की नियुक्तियाँ भी पाकिस्तान में खूब हो रही है। ६० आई० सी० एस० अफसर अँगरेज इस वक्त पाकिस्तान में विराजमान हैं। लगभग ९० मुसलिम लीगी अधिकारियों की भी नियुक्तियाँ हुई हैं। लेकिन अपने राम यह पूछना चाहते हैं कि पाकिस्तान में अल्प-संख्यकों की रक्षा की डुगडुगी पीटनेवाले कायदेआजम साहब क्या यह बताने की मेहरबानी करेंगे कि अल्प-संख्यक जमातवालों को कितने प्रतिशत पाकिस्तानी सरकार में नौकरी दी गई है? बात यह है कि हाथी के दाँत खाने के और और दिखाने के दूसरे होते हैं। दुनिया के दस्तूर के अनुसार या यों कहिए कि जिससे हिन्दुस्तान के अल्प-संख्यकों की आराम से गुजरती जाये, इसलिए जिन्ना एंड कम्पनी अल्प-संख्यकों के प्रति जबानी जमा खर्च की सहानुभूति तो दिखा देती हैं, लेकिन पाकिस्तान में उनकी दशा ऐसी ही है जैसी हिटलर के राज में यहूदियों की। और होना भी यही चाहिए, क्योंकि पाकिस्तानियों और अँगरेजों का गठ-बंधन ही इसीलिये हुआ है; या तो पाकिस्तान में अँगरेज हाकिम ही रह लें या अल्प-संख्यक ही। पाकिस्तानी म्यान में दो तलवारें कैसे रह सकती हैं?

* *

हाँ, तो मास्टर तारासिंह के कथनानुसार पंजाब की दुर्दशा पाकिस्तानियों और अँगरेज हुक्कामों के सधे-बधे षड्यंत्र से हुई है। भीतरी मामला तो यही था कि अल्प-संख्यकों को पाकिस्तान से साफ ही कर दिया जाये, खास तौर से पाकिस्तान तथा हिन्दुस्तान की सीमा के आस-पास से, जिससे दोनों ओर मैदान साफ रहे। अच्छा है, और थोड़े दिन सही। पाकिस्तान ने बंगाल को पहले खतम किया, फिर चलते चलाते पंजाब को। लेकिन अब तो बट गया, आगे किधर की तैयारी है? अपने राम तो जानते हैं कि जिधर अँगरेज कहेंगे, पाकिस्तानी सरकार उधर ही आँख मूँदकर चलेगी, क्योंकि वही तो उनके आँख, कान, नाक और मुँह के असली डाक्टर हैं या अन्धे की लकड़ी हैं।

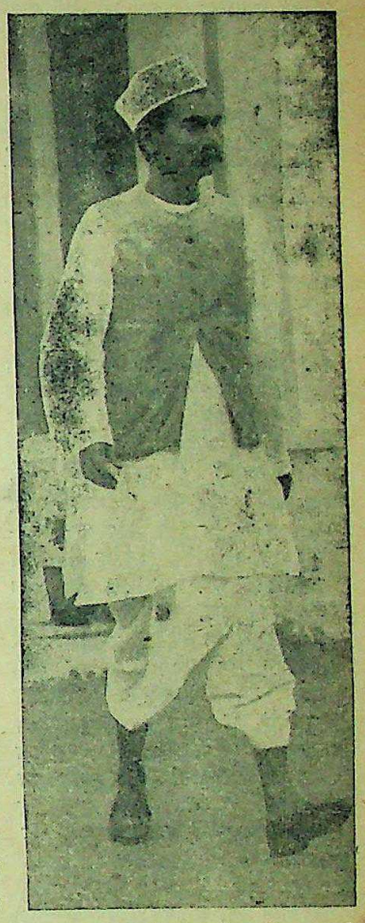

भारतीय विधान परिषद् के सभापति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद शरणार्थियों के लिये भोजन का प्रबंध कर रहे हैं।

संयुक्तप्रांतीय कांग्रेस सरकार के मंत्रिमंडल में चार नये मंत्री

श्री आत्माराम गोविन्द खेर, मंत्री, न्याय तथा सूचना।

श्री केशवदेव मालवीय, मंत्री, उन्नति तथा उद्योग-धन्धा।

श्री लालबहादुर शास्त्री, मंत्री, पुलिस तथा यातायात।

श्री चंद्रभानु गुप्त, मंत्री, भोजन और रसद-विभाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय पृष्ठ

शरणार्थियों की रक्षा

पंजाब में होनेवाले साम्प्रदायिक हत्या कांड, लूटमार और रक्तपात से सारा देश क्षुब्ध हो उठा है। ब्रिटेन ने भारत का बंटवारा जिस उद्देश्य से किया था उसकी प्रतिक्रिया पंजाब में जिस सीमा में दिखाई पड़ी है, वह वास्तव में हृदय कंपित कर देनेवाली है। न जाने कितने निरीह हिन्दुओं की जानें गईं, हजारों व्यक्ति बेघर-बार हो गये, करोड़ों की संपत्ति गुंडों ने स्वाहा कर दी, असंख्य स्त्री-बच्चों की हत्यायें होने के साथ साथ वह आज दर दर के भिखारी बन गये हैं। ऐसे लाखों निरीह प्राणी कहाँ और किधर जायें? क्या करें? दुर्दशापूर्ण घटनाओं के फलस्वरूप उपद्रव-वाले प्रान्तों की हिन्दू जनता को अपना घर-बार, सम्पत्ति आदि छोड़कर अपने और अपने परिवारवालों के प्राणों की रक्षा के लिए अन्य प्रान्तों को भागना पड़ रहा है। ये शरणार्थी मुख्यतः युक्तप्रान्त में आये हैं। सीमा प्रान्त और पंजाब के ये शरणार्थी यहाँ गत फरवरी महीने से ही आने लगे थे और उसी समय उनकी संख्या इतनी थी कि समस्या चिन्ता-योग्य बन गई थी। जून के महीने में शरणार्थियों की बाढ़ कुछ कम थी। किन्तु इधर कुछ दिनों से उनकी संख्या बहुत तेजी से बढ़ गई है जिससे सरकार के सामने कई परेशानियाँ उठ खड़ी हुई हैं। लोगों का अनुमान है कि इन शरणार्थियों की संख्या लगभग १॥ लाख के लगभग है। मनुष्यता को कलंकित करनेवाले अत्याचारों के शिकार इन शरणार्थियों के प्रति किसे सहानुभूति न होगी? घर-बार से निकाले गये, लूटे गये, सब तरह से बरबाद और पीड़ित, अपमानित देश भाइयों की सहायता करना कौन नहीं चाहेगा? युक्तप्रान्तीय सरकार और इस प्रान्त की जनता अथक परिश्रम और त्याग करके भी शरणार्थियों की सहायता करने को तत्पर हो रही है। सरकार के साथ साथ अनेक गैर-सरकारी संस्थाओं ने भी इनकी सहायता का प्रयत्न और प्रबन्ध किया है। यद्यपि अवस्था जटिल और संकटमय है तथापि इसमें सन्देह नहीं कि धीरज और साहस से समस्या का सामना किया जाय तो बिना किसी भावी संकट के, बिना किसी नई विपत्ति के उठ खड़े हुए यह समस्या हल हो सकती है।

सरकार के और गैर सरकारी संस्थाओं के इस उद्योग में सबसे अधिक सहयोग स्वयं शरणार्थी दे सकते हैं। उन्हें चाहिए कि वे इसकी भरपूर चेष्टा करें कि उनके किसी कार्य से उन पर कोई नई विपत्ति न आ पड़े और वे जहाँ बसे हैं, वह स्थान भी उपद्रवग्रस्त न हो जाय?

सरकार के सामने केवल यही समस्या नहीं है कि शरणार्थियों को भोजन-वस्त्र और रहने का स्थान मिले तथा उनकी जीविका का कोई उपाय किया जा सके। उसके सामने इनसे भी बढ़कर बड़ी समस्या सम्पूर्ण प्रान्त में शान्ति बनाये रखने की है, जिससे पंजाब की सी हालत यहाँ न होने पावे। यद्यपि जैसा प्रधान मन्त्री माननीय पंडित गोविन्दबल्लभ पन्त ने कहा है, सरकार के पास उपद्रवियों का तुरन्त दमन करने के पूरे साधन मौजूद हैं, तथापि शरणार्थियों और उनसे सम्पर्क रखनेवालों का कर्तव्य है कि वे सदा सतर्क रहें और इसका उद्योग करते रहें कि उनकी किसी लापरवाही या ना-समझी की बात से इस प्रान्त में उपद्रव न फैलने पावे। इससे न केवल शरणार्थियों का भला होगा, बल्कि जहाँ उन्हें शरण मिली है उस प्रदेश के निवासियों का भी भला होगा। यदि यहाँ उपद्रव हुआ तो उसका असर पश्चिमी पंजाब के जिलों के देहातों में बिछुड़े हुए हिन्दू-सिक्ख भाइयों पर पड़ेगा तथा इधर की ओर आनेवाले शरणार्थियों को रास्ते में विपत्ति का सामना करना पड़ सकता है।

प्रांत में आये हुए शरणार्थियों को भी चाहिये कि वह अपने अनुभवों का अतिरंजित वर्णन कर साधारण जनता में आतंक फैलाने का प्रयत्न बिलकुल न करें। अफवाह फैलाना गैर-कानूनी है। यदि कोई कानूनी पंजे से बच जाय तो उसे अपने फैलाये अफवाहों का भीषण दुष्परिणाम भी भुगतना पड़ेगा। उन्हें इस विपत्ति का धैर्य-पूर्वक सामना करना चाहिए और इसका सदा स्मरण रखना चाहिये कि जहाँ वे ठहरे हैं, वहाँ की भी वही दशा न होने पावे जो उनके मूल प्रांत की हुई है। दूसरी सहायता जो शरणार्थी कर सकते हैं वह यह है कि वे एक जगह एक जिले या प्रांत के एक भाग में अधिक संख्या में जमा न रहें। एक ही स्थान में अधिक भीड़ के जमा रहने से कई प्रकार के रोगों के फैलने की भी आशंका है। प्रधान मन्त्री माननीय पन्त जी ने इसीलिए शरणार्थियों को सलाह दी है कि वे युक्तप्रांत के पूर्वी जिलों की ओर बढ़ें, पश्चिमी जिलों में ही जमे न रहें। उन जिलों में भी उनकी ससहायता का प्रबन्ध किया गया है। शरणार्थियों की सहायता करनेवालों के काम में मदद देना भी शरणार्थियों का काम है। उन्हें चाहिये कि अपनी जरूरत इस काम के लिये नियत किये गये सरकारी अधिकारियों को बतावें। राशन, कपड़े, मकान वगैरह सभी जरूरी चीजों की पूर्ति करने का यथासाध्य प्रयत्न किया जा रहा है। यदि इसमें कोई त्रुटि हो तो उसकी ओर वे ऊँचे सरकारी अफसरों का ध्यान आकृष्ट कर सकते हैं। यदि वे स्वयं असन्तुष्ट रहकर शिकायत करते रहें और जनता में अपना असन्तोष प्रकट करते रहें तो उनका फायदा तो होगा नहीं, उल्टे नुकसान ही होगा।

इस समय देश महान् संकटग्रस्त हो रहा है। नई जिम्मेदारियों ने नई समस्याएँ पैदा कर दी हैं। जो कुछ हो रहा है वह बुरा है। इसका अन्त कर देना सम्भव है और संकट-काल से हम सहूलियत से गुजर सकते हैं। पर यह तभी सम्भव है जब हम धीरज रक्खें और उत्तेजित न हों। यदि हम शरणार्थियों की दुर्दशा से द्रवित होकर अपना कर्तव्य भूल जायेंगे तो उपद्रवों का अन्त न होगा। उन्हें चाहिये कि शरणार्थियों को सान्त्वना दें, धीरज दें, उनकी यथा-शक्ति सहायता करें और इसका भी ध्यान रखें कि हमारी तरफ से ऐसा कोई काम न हो जिससे हमारे प्रांत के सुनाम को बट्टा लगे और हमारे प्रांतवासियों की नाक कटे।

* * *

अन्तर्राष्ट्रीय गुटबन्दी

वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति इतनी उलझी हुई है कि उसे सुलझाने में नित्य-प्रति नई घटनायें घटित होती जा रही हैं। प्रत्येक साम्राज्यवादी राष्ट्र का एक-दूसरे पर दोषारोपण करना वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीयता की एक विशेष प्रकार की कला-चातुरी हो गई है। रूस और अमरीका विशेष रूप से इस कला के मर्मज्ञ कहे जा सकते हैं। इस समय किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में दोनों राष्ट्र एक दूसरे के विरोध में अड़ंगा लगाने में कमी नहीं करते। संयुक्त राष्ट्र-सम्मेलन की गत कौंसिल में रूस और अमरीका ने एक दूसरे पर इतनी छींटा-कशी की कि मानो आज ही युद्ध घोषित हो जायगा। साधारण मसलों पर बोलते हुए रूस के प्रतिनिधि ने कहा—"संयुक्त राज्य अमरीका, संसार के सारे देशों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहता है।" इसी प्रकार का उत्तर संयुक्त राज्य अमरीका की ओर से रूस को भी दिया गया। पेरिस सम्मेलन में अमरीका यूरोप की गुटबन्दी में खुलकर भाग ले रहा था। मि० चर्चिल ने फ्रांस के वैदेशिक मंत्री मिस्टर मार्सल को आगे करके फिर से नया जाल रचा है। अमरीका भी इस जाल की आड़ में खेल रहा है। आज के रूसी विरोधी प्रचार में अमरीकन राजनीतिज्ञों ने अपना प्रमुख स्थान बना लिया है।

मित्रराष्ट्रों की नियंत्रण कमेटी में स्थानापन्न रूसी सदस्य ने अमरीका के ऊपर खुला इलजाम लगाते हुए कहा है, "अमरीकनों ने कौंसिल के लिए एक तरफा रिपोर्ट बनाई है जो सिद्धान्ततः बहुत ही गलत है।" इसी प्रकार के समाचार अमरीका की ओर से भी प्रकाशित हुए हैं। कौंसिल के अमरीकन चेयरमैन ने रूसी प्रतिनिधियों को लक्ष्य करते हुए कहा है,—"आप कौंसिल के कार्य में सदा अड़ंगा लगाते रहे हैं। पर, इस देश को आदर्शवाद की आवश्यकता नहीं है।" इस प्रकार के वाद-विवाद से कौंसिल का कार्य उलझनों से भरी हुई पहेली बनी रही है। उदाहरण के लिए कोरिया को लिया जा सकता है। सारा संसार जानता है कि कुछ समय पूर्व रूस-अमरीका का एक कमीशन नियुक्त किया गया था। जिसके द्वारा उस देश के राजनैतिक जीवन को गुलाम बनाया गया है। यद्यपि कमीशन का उद्देश्य कोरिया की समस्याओं को सुलझाकर उनका भविष्य प्रकाशमय करना था, परन्तु कमीशन के सामने न तो अमरीका रूस की सुनता है और न रूस की ही। इसके परिणामस्वरूप को में एक घोषणा हुई जिसमें कहा "रूस के साथ समझौता करने छोड़ दी गई है।" इस प्रकार की स्वतंत्रता आज दोनों पारस्परिक झगड़े के बीच पिस सी है। बेचारे कोरिया-निवासी सम्पन्नता को कौन कहे सम्मान बैठने का स्थान भी नहीं पाते।

रूस के समाचार-पत्र 'प्रवदा' और 'इजवेस्तिया' सम्पादकीय कालमों के एक अमरीका के प्रति विष-वमन करते हैं। अपने एक अंक में 'इजवे ने लिखा है—"अमरीका संसार प्रभुत्व स्थापित करने के लिए क्षेत्र में सैनिक और सामरिक का कार्यक्रम बना रहा है।" इसी के कितने ही समाचार अमरीका भी प्रचारित किये किये जा मास्को में अमरीकन राजदूत ने के डेरेन बन्दरगाह को अन्त बन्दरगाह घोषित कर देने के लिए था; परन्तु रूसी सरकार ने प्रस्ताव को रद्द कर दिया। इस प्रक घटनायें आये दिन घटती रहती अमरीका के राजनीतिज्ञ रूस को ठहराने में कोई कसर नहीं रखते रूस के राजनीतिज्ञ अमरीका को। और अमरीकन पत्र एक दूसरे की कड़ी से कड़ी आलोचना करने हिचकते। इस प्रकार की आलो संयुक्त-राष्ट्र संगठन के शान्ति कार्य में कहाँ तक सहायक हो सक यह एक साधारण व्यक्ति भी समझ है। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् जो संघ स्थापित हुआ था वह दलबन्दी राष्ट्रीयता में पड़कर नष्ट हो उसके स्थान पर एक भयंकर हुआ जिसकी पीड़ा से आज भी संसार कराह रहा है। वर्तमान राष्ट्रीय स्थिति भी उससे कम रही। यदि दलगत अन्तर्राष्ट्रीयता रहीं। किसी गुलाम अथवा स्वतंत्र का सम्मान और सम्पन्नता का रक्खा गया तो यह निश्चित है कि ही कोई ऐसा विस्फोट होगा जिसमें हुआ संसार झुलसता दिखलाई

प्रांतीय शिक्षा-प्रसार विभाग

पुस्तकें दाखिल करने की अंतिम तारीख ३० सितम्बर है

युक्त-प्रान्तीय सरकार के गजट के चौथे भाग में २९ जुलाई सन् १ को जो सूचना प्रकाशित की गई थी और जिसमें प्रांतीय शिक्षा-प्रसार विभा पास किताबों के भेजने की अन्तिम तारीख बतलाई गई थी? उसके सम में पुनः सूचित किया जाता है कि पुस्तकें दाखिल करने की अन्तिम की मियाद बढ़ा कर ३० सितम्बर सन् १९४७ तक कर दी गई है। सम्बन्ध का विस्तृत ब्योरा वही है जो २५ जुलाई के गजट में छप चुका है।

—ए० काज़मी
शिक्षा-प्रसार अफसर युक्त-प्रान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतंत्र भारत का संरक्षण कैसे हो ?

अराष्ट्रीय बाधाओं तथा शांति भंग करनेवाले वातावरण को समाप्त करना जरूरी है

लेखक, श्री बालाजी राव जोशी, एम० ए०

भारत को स्वतत्रता प्राप्त हो गई है, इसलिये शासन-व्यवस्था तथा शांति-स्थापना के प्रति कांग्रेस सरकारों की जिम्मेदारी है। इस वक्त वातावरण साम्प्रदायिक भावनाओं तथा अशांति-वातावरण से प्रभावित हो रहा है, इसलिये जनता तथा सरकार दोनों के सहयोग से अशांति और अव्यवस्था के वातावरण को समाप्त कर देना है। लेखक ने इस लेख में इसी समस्या पर प्रकाश डाला है, जो सामयिक और पठनीय है।

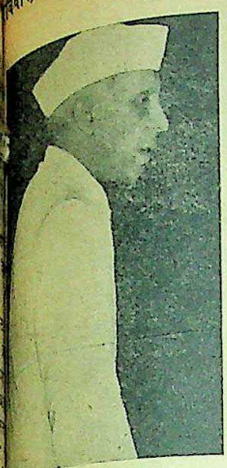

...जवाहरलाल नेहरू, प्रधान मंत्री भारतीय संघ

...वर्ष को पूर्ण स्वतंत्रता मिलने के ...स्वरूप हमें आज प्रसन्नता और ...है। हमारे डेढ़ सौ वर्षों के त्याग, ...नायक एवं सफल हुए हैं। किसी ...की सच्ची उन्नति और प्रगति ...पूर्ण राजनैतिक स्वतंत्रता की ...आवश्यकता होती है। राजनैतिक ...से विहीन देश अपनी प्रगति ...पूर्वक नहीं कर सकता। विशेष-...वर्षों में जो क्रान्तिकारी काम ...उनका प्रधान उद्देश्य भारत की ...स्वतंत्रता प्राप्त करना था। ...प्राप्ति पर हमको हर्ष और गर्व है। ...इस स्वतंत्रता-प्राप्ति से ही हमारे ...प्रश्न हल नहीं हुए हैं। स्वतंत्रता ...इतना ही है कि, हमें अपने ...प्रश्नों को हल करने तथा उसकी ...उन्नति करने की जो सुविधाएँ ...थीं, वह अब मिल गई हैं। अब ...नुसार सुधार और उत्कर्ष कर ...हमें मनाही करनेवाला कोई

...दृष्टि से हमारे सामने अनेक ...रूप धारण करके सामने खड़े ...कहा जाय तो सर्वसाधारण ...को स्वतंत्रता की प्राप्ति पर ...सन्तोष नहीं, जो कि एक ...जनता को होनी चाहिए, ...है। सैद्धान्तिक दृष्टि से हमें ...या स्वराज्य मिला है, किन्तु ...व्यावहारिक लाभों से अभी हम ...अथवा दूर है। स्वतंत्रता मिलने ...सर्वसाधारण जनता की सामाजिक, ...स्वास्थ्य-संबंधी तथा अन्य ...की स्थितियों में पहले की अपेक्षा ...उल्लेखनीय अन्तर नहीं है। दैनिक ...ताओं की पूर्ति में वही कठिनाई ...पहले थी। जीवन का मापदंड ...नीचा है। यह हम मानते हैं कि ...हालत तत्काल सुधर नहीं ...स्वतंत्रता कोई जादू नहीं ...जिससे मिनटों में चारों ओर ...ही दिखाई पड़ने लगे। ...समृद्धि का आवश्यक साधन ...अब तक तो वह हमारा साध्य ...परन्तु साधन का उपयोग और ...करते रहने से ही उससे अभीष्ट ...सकता है। फलोत्पादक ...रूप से सींचे जाने पर ही ...है। इस प्रकार जिनकी यह ...है कि, स्वराज्य या स्वतंत्रता ...ही सुख-समृद्धि है, हमारी समझ ...ठीक नहीं है। अभी हमें ...आधार प्राप्त हुआ है, जिस पर ...भवन बनाना शेष है। आधार ...का समीकरण कैसे हो सकता ...बनाने के लिए अभी अनेक ...की जरूरत है। ये साधन घर-बैठे नहीं मिलेंगे, उसके लिए घोर परिश्रम और त्याग की अपेक्षा है। बहुत से लोग सोचते हैं कि स्वतत्रता मिलने पर लड़ाई-झगड़े तथा त्याग का क्या काम है? किन्तु यह विचार गलत है। यह सच है कि यह लड़ाई और त्याग बाहरी शत्रु के विरोध में नहीं करना है, फिर भी इसकी उपयोगिता और आवश्यकता समाप्त नहीं हो जाती। हाँ, उसका उद्देश्य विध्वंसक के बजाय रचनात्मक रूप में बदल जाता है और यह रचनात्मक कार्य, जो स्वतंत्र भारत की परमोच्च शक्ति-वृद्धि तथा श्रीवृद्धि के लिए अत्यावश्यक है, बिना मेहनत और त्याग किये, कैसे पूरा हो सकता है?

भारतवर्ष की विधान-निर्मात्री परिषद् ने अपने प्रस्तावित विधान में यह निश्चय किया है कि भारत के प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार, अवसर, स्वतंत्रता और सहूलियतें मिलें, तथा भारत में एक ऐसा मजबूत केन्द्रवाला प्रजातंत्र कायम हो, जिसके अंगों को उचित स्वतंत्रता रहे। विधान का यह स्वरूप निस्सन्देह व्यापक और उदार है। अब हम—भारतीय प्रजातंत्र के जिम्मेवार नागरिकों का—यह कर्तव्य हो जाता है कि हम इस उदार विधान को कार्यान्वित करने में संलग्न अपनी राष्ट्रीय सरकार को यथाशक्ति सहयोग एवं मदद दें। भारतवर्ष को यदि अपना प्राचीन गौरव और प्रतिष्ठा प्राप्त करनी है, तो उसके शैक्षणिक साहित्यिक, आर्थिक तथा सामाजिक सभी तरह के अंगों में सुधार नहीं बल्कि पूर्ण उन्नति की जरूरत है। अँगरेजी शासन में हमारी शिक्षा का ध्येय योग्य कर्मचारी बनाना रहा, हमारे देशी उद्योग-धंधे नष्ट हो गये, हमारी शासन निपुणता जाती रही और हमारा सांस्कृतिक अधःपात जारी रहा। स्वतंत्र भारत में इन सभी प्रकार की खराबियों को रोकना है। इतना ही नहीं बल्कि एक ऐसे समाज की स्थापना करना है, जो किसी भी तरह के भेद से युक्त न हो। महात्मा गांधी के शब्दों में यह एक "जातिवर्ग-विहीन, पूर्णतया संगठित तथा अभेद्य एकता से बँधा हुआ" समाज रहेगा। हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रश्न छोड़िये, लेकिन, हिन्दू-समाज इतने व्यापक रूप से बँटा है कि वही परस्पर द्वेष, ईर्ष्या तथा संघर्ष का शिकार बना हुआ है। अगर हिन्दू-हिन्दू में पूर्ण एकता नहीं हो सकती तो मुसलमानों से एकता होना कठिन ही नहीं असंभव है। हमारा विचार है कि भारत की व्यापक एकता में जाति-भेद से गहरी बाधा पहुँचती रही है। गांधी जी की "विधायक क्रान्ति" के द्वारा यह जाति-भेद पूर्णतया समाप्त हुआ, तो निःसन्देह भारतीय संस्कृति का वह स्वरूप शीघ्र ही प्रकट होगा, जो विजातीय दलों अथवा समाजों को भी आत्मसात् और एकरूप करने में समर्थ हो। किंबहुना भारतीय संस्कृति का यह सर्व-संग्राहक तथा समावेशक स्वरूप ही भारत की व्यापक राष्ट्रीय एकता के अनेक कठिन प्रश्नों को सरलता से हल करने में तथा सभी वर्गों की स्वाभाविक आत्म-प्रेरणा के आधार पर अखण्डित भारत को स्थापित करने में प्रमुख योग देगा।

१५ अगस्त को स्वतंत्रता-दिवस के अवसर पर डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद भाषण दे रहे हैं।

निःसन्देह भारत का विभाजन नितान्त क्लेशकर और अप्रिय है। यह केवल भूमि का बँटवारा नहीं है, बल्कि माता का विच्छेदन है। निःसन्देह, यह नहीं होना चाहिए था, समझदार व्यक्तियों और दलों ने इसका निष्पक्ष विरोध किया है किन्तु फिर भी विवशतापूर्वक विभाजन स्वीकार कर ही लेना पड़ा। इसलिये हमें विभाजन के वास्तविक कारणों पर भी शान्तचित्त से विचार करना चाहिए। राष्ट्रीय महासभा को केवल बदनाम करते रहने से काम नहीं चलेगा। उसने अब तक अनेक गलतियाँ की हैं; जिसका परिणाम वह स्वयं भुगत रही है। प्रस्तुत विभाजन की जिम्मेदारी भी कुछ अंशों में उसकी अति उदार नीति का नमूना है—लेकिन फिर भी, हमें उसकी प्राप्त कठिनाइयों तथा विवशताओं को भी देखना चाहिए। सच्चे राजनीतिज्ञ से यह छिपा नहीं है कि, विभाजन के सिद्धान्त की उत्पत्ति, विकास तथा सफलता में उस प्रबल, कुटिल तथा स्वार्थपरायण विदेशी सत्ता का कितना जबर्दस्त हाथ था, जो सौभाग्य से १५ अगस्त से हट गई है। सच कहा जाय तो प्रस्तुत विभाजन के रूप में इस सत्ता ने भारतवर्ष के ऐक्यवादियों को एक सख्त ठोकर मारी है। पाकिस्तान को सार्वभौम स्वतंत्र राज्य बनाने का एकमात्र उद्देश्य साम्प्रदायिक एवं धार्मिक भेद को बद्धमूल करना और दोनों तथाकथित राष्ट्रों में संघर्ष तथा विनाश का दृश्य उपस्थित करना है।

सरदार वल्लभभाई पटेल, उपप्रधान मंत्री भारतीय संघ

इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि हम विदेशी सरकार के इस कुटिल और घातक उद्देश्य को विफल बनाने का उपाय करें। विभाजन का आधार निःसन्देह जातीय है, इससे सर्वसाधारण यही समझने लगे हैं कि हिन्दुस्तान हिन्दुओं का तथा पाकिस्तान मुसलमानों का राज्य है। विभाजन के इस कृत्रिम और कुटिलतापूर्ण आधार के अनुसार यदि हम हिन्दू-राज्य—मुसलमान-राज्य का विचार दृढ़ रक्खें तो भारत की अखण्डता का हमारा ध्येय और भी दूर चला जायगा। अँगरेज तो दिल से यही चाहते हैं कि विभाजन का जातीय आधार लोगों में दृढ़ हो जाये और फलस्वरूप उनकी मनोवृत्ति, विचार और कार्य राष्ट्रीय होने के बजाय जातीय बनने लगे। यदि हम इस धोखे से सावधान हैं, तो निःसन्देह, कभी न कभी, हम अपनी अभेद्य राष्ट्रीयता के बल पर भारत की अखण्डता स्थापित कर सकेंगे। यह सन्तोष की बात है कि अब कृत्रिम जातिभेद पैदा करने और परिपुष्ट करनेवाली विदेशी सत्ता हमारे बीच से हट गई। अब हम उसके हस्तक्षेप और प्रभाव से मुक्त हो गये हैं।

अब तक हमारे नेता हमें बताते आये हैं कि विदेशी सत्ता ने अपना स्वार्थमूलक प्रभुत्व बद्धमूल करने के लिए ही कृत्रिम भेद-भाव पैदा किये हैं और उसके हटने पर ये भेद भी स्वाभाविक

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीरांबाई और गोस्वामी तुलसीदास

दोनों के पत्र-व्यवहार की ऐतिहासिक महत्ता क्या है ?

लेखक, कुँवर सुखवीरसिंह गहलौत एम० ए०, रिसर्च स्कालर
(हिन्दी-विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय)

मीरांबाई के विषय में कई दन्तकथायें प्रचलित हैं। मीरांबाई का गोस्वामी तुलसीदास से पत्र-व्यवहार बादशाह अकबर का मीरां से मिलना, मीरां के धर्मगुरु आदि ऐसी कई कथाएँ हैं, जो अभी तक ऐतिहासिक दृष्टि से सुलझनी बाकी है। ऐसी ही महत्त्व-पूर्ण जनश्रुति पर लेखक ने विद्वतापूर्वक प्रकाश डाला है। गहलोत जी इस प्रकार के विचारात्मक तथा ऐतिहासिक लेख लिखने के लिये धन्यवाद के पात्र हैं। आशा है लेखक महोदय आगे भी अन्य जनश्रुतिओं को पाठकों के सामने सुधरे रूप में रखने का प्रयत्न करेंगे।

इस लेख के लेखक कुँवर सुख... गहलौत।

कहते हैं कि जब मीरांबाई अपने ससुराल में दिये कष्टों से ऊब गई, तब उसने गोस्वामी तुलसीदास जी को पत्र लिखकर उनसे अपने लिए ऐसी दशा में वास्तविक पथ-ग्रहण करने का रास्ता पूछा। वह पत्र निम्नलिखित पद के रूप में था—

स्वस्ति श्री तुलसी कुलभूषण,
दूषण-हरन गोसाईं।
बारहिं बार प्रणाम करहुँ,
अब हरहु सोक समुदाई।
घर के स्वजन हमारे जेते,
सबन्ह उपाधि बढ़ाई।
साधुसंग अरु भजन करत मोहिं,
देत कलेस महाई।
मेरे मात-पिता के सम हौ,
हरिभक्तन सुखदाई।
हमको कहा उचित करिबो है,
सो लिखिये समुदाई।

इस पत्र का उत्तर गोस्वामी जी ने इस पद द्वारा दिया :—

जाके प्रिय न राम वैदेही।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम,
यद्यपि परम सनेही॥
तज्यो पिता प्रहलाद,
विभीषण बंधु, भरत महतारी।
बलिगुरु तज्यो, कंत ब्रज बनिता,
भये सब मंगलकारी॥
ना तो नेह राम सों मनियत,
सुहृदय सुसेव्य जहाँ लौं।
अंजन कहा आँख जो फूटै,
बहुतक कहौं कहाँ लौं॥
तुलसी सों तब मीति परमहित,
पूज्य प्रान ते प्यारो।
जासो बढ़े सनेह रामपद,
एतो मतो हमारो॥[1]

रीवाँ-नरेश रघुराजसिंह जूदेव बघेल ने 'रामरसिकावली' में इस पद के साथ तुलसीदास जी का एक सवैया लिखना भी माना है :—

सो जननी, सो पिता, सोइ माइ, सो
भामिनी, सो सुत, सो हित मेरो।
सोइ सगो, सो सखा, सोइ सेवक,
सो गुरु, सो सुर, साहिब चेरो।
सो तुलसी प्रिय प्रान समान, कहाँ लौं
बनाइ कहौं बहुतेरो।
जौ तजि गेह को नेह को नेह
सनेह सों राम को होई सबेरो।[2]

इस पत्र-व्यवहार का निश्चित समय (वि० सं० १६१६ ई० सन् १५५९) श्री वेणीमाधवदास ने 'मूल गोसाईं-चरित' में दिया है :—

सोरह सै सोरह लगे,
कामद गिरि ढिग वास।

* * *

तब आयो मेवाड़ ते,
विप्रनाम सुखपाल।
मीरांबाई पत्रिका,
लायो प्रेम प्रबाल।
पढ़ि पाती, उत्तर लिखे,
गीत कवित्त बनाय।
सब तजि हरि भजबो भलो,
कहि दिय विप्र पठाय॥[1]

श्री शिवनन्दन सहाय के विचार में तुलसीदास जी के पास मीरां स्वयं गई थीं॥[2]

इन पदों से ऐसा ज्ञात होता है कि मीरांबाई और तुलसीदास जी में अवश्य ही पत्र-व्यवहार हुआ होगा। बहुत से लेखकों का भी यही विचार है। लेकिन यह विचार काफी सन्देहजनक है। मीरां का वह पत्ररूपी पद किसी भी उसकी रचित पुस्तक से नहीं मिला है। यों मीरां के पत्र के दो पाठ मिलते हैं। दूसरा पाठ इस प्रकार है :—

मीरांबाई का यह चित्र जोधपुर किले के प्राचीन संग्रह से प्राप्त हुआ है। चित्र में मीरां मेड़ता नगर में अपने बनवाये चार भुजा (श्रीकृष्ण) के मन्दिर के पास खड़ी है। मीरां का यह चित्र अधिक प्रामाणिक है।

श्री तुलसी सुख-निधान,
दुख हरन गुसाईं।
बारहिं बार प्रणाम करूँ,
अब हरो सोक समुदाईं।
घर के स्वजन हमारे जेते,
सबन उपाधि बढ़ाईं।
साधु संग अरु भजन करत,
मोहिं देत कलेस महाईं।
बालपने तें मीरां कीन्हीं,
गिरधरलाल मिताईं।
सो तो अब छूटत नहिं क्योंहूँ,
लगी लगन बरियाईं।
मेरे मात पिता के सम हौ,
हरिभक्तन सुखदाईं।
हमको कहा उचित करिबो है,
सो लिखियो समुझाईं।[1]

मीरां के इन पत्रों की भाषा मीरा के पदों की भाषा से मेल नहीं खाती हैं। यह भाषा काफी बाद की जान पड़ती है। अतः बहुतों को सन्देह है कि यह पत्र-रूपी पद मीरा रचित ही हो और गोस्वामी जी को भेजे गये हों।

इस पत्र-व्यवहार के विषय में कुछ सोचने के पहले हमें यह देखना है कि क्या मीरां और तुलसीदास जी के बीच पत्र-व्यवहार होने की भी कोई 'संभावना है ? मीरा का जन्म-समय वि० सं० १५६१ (ई० सन् १५०४) है।[2] इधर तुलसीदास जी के जन्मकाल के विषय में अनेक मत होते हुए भी डा० ग्रियर्सन, पं० रामगुलाम द्विवेदी आदि के मतानुसार सं० १५८९ (ई० सन् १५३२) ज्यादा ठीक समझा जाता है। अन्य जन्म-तिथियाँ मनाते हुए भी लगभग सभी गोस्वामी जी का जन्म मीरां के जन्म बाद का ही मानते हैं। अतः इनके अनुसार मीरां तुलसीदास जी के लिए माता-तुल्य थीं न कि तुलसीदास जी मीरां के लिए पिता-तुल्य थे। यों मीरां को मुख्य कष्ट दिये जाना उसके पिता रत्नसिंह राठौड़ और श्वसुर महाराणा सांगा के वि० सं० १५८४ (ई० सन् १५२७) के युद्ध में मारे जाने के बाद आरम्भ हुए।[3] मीरां को राणा विक्रमादित्य ने ही ज्यादातर कष्ट दिये जिसके कारण उसको वि० सं० १५९० (ई० सन् १५३४) के लगभग मेवाड़ ... पड़ा। ऐतिहासिक घटनाओं को ... हुए वह फिर कभी वापस मेवाड़ ... इस वक्त तक तुलसीदास जी ... हुए थे। अब भला सोचिये कि ... मीरां क्योंकर पत्र लिखती और ... मेवाड़ को सं० १५९१ में ही सदा ... छोड़ चली गई फिर कैसे सं० १... 'मूल गोसाईं चरित' के अनुसार— तब आयो मेवाड़ ते विप्र नाम सुख... मीरांबाई पत्रिका लायो प्रेम प्र...

यह तो एक अंधी सूझ ही है ... वक्त तक तुलसीदास जी भी ऐसी ... प्रसिद्धि नहीं प्राप्त कर चुके थे। ... चरित' के लेखक के अनुसार ... १६१६ के लगभग गोस्वामी जी ... पद-रचना में ही लगे थे। उनकी ... तो रामचरितमानस की रचना ... सं० १६३१ = ई० सन् १५७... बाद हुई थी। इसके पहले ... कीर्तिपताका उनके निवास-स्थल ... ही सीमित थी। वि० सं० १... के पहले ही मीरां स्वर्ग-यात्रा कर ... थी। अतः यह देखते हुए राज... की इस कवियित्री को क्या पड़ी थी ... इतनी दूर बैठे एक साधारण कवि ... भक्त से परामर्श करती?

यदि यह मान भी लिया जा... मीरां ने पत्र भेजा था, तो जरा ... ओर दृष्टि डालिए। मीरां के ... गोस्वामी जी कभी भी पिता-तुल्य ... जैसा कि उनकी आयु तथा ... आदि से ज्ञात होता है। मीरां का ... कष्ट है :—

घर के स्वजन हमारे जेते,
सबन्ह उपाधि बढ़ाई
साधु संग अरु भजन करत
मोहि देत कलेस महाई
बालपने ते मीरां कीन्हीं,
गिरधरलाल मिताई
सो तो अब छूटत नहीं क्योंहूँ
लगी लगन बरियाई

यह तो बिलकुल विश्वास-योग्य ... कि मीरां को गिरधर गोपाल की ... तथा भजन करने से रोका गया क्योंकि ... और मेड़ता के राजवंशों में उनकी ... सदा से चली आई है। दोनों ही ... वंशों में कई अनन्य भक्त भी हो चुके ... हाँ, मीरां को साधुओं के साथ ...

शेष पृष्ठ १६ पर ...

१—तुलसी ग्रंथावली दूसरा खंड—तृतीय पत्रिका पृ० ५५१। २—तुलसी ग्रंथावली दूसरा खंड—कवितावली पृ० २११।

१ श्री वेणीमाधवदास—मूल गोसाईं चरित पृष्ठ १५।
२ श्री शिवनन्दन सहाय, श्री गोस्वामी तुलसीदास पृष्ठ १११।

१ मीरांबाई की शब्दावली, पृष्ठ ४ (भूमिका)।
२ लेखक का लेख, मीरा की जन्मतिथि देशदूत वर्ष ८, संख्या १०, पृष्ठ ३१-३२।
३ ठा० जगदीशसिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास, पृष्ठ ...।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमाणु बम और विश्व-शान्ति

अमरीका और रूस की बढ़ती हुई तनातनी क्यों ?

लेखक, श्री श्यामसुन्दरराय बी० एस-सी०

साम्राज्यवादी राष्ट्रों में इस समय अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को लेकर तनातनी प्रारंभ हो गई है। अमरीका और सोवियट रूस का मतभेद तो सीमा पार कर रहा है, जिससे तीसरे महायुद्ध की आशंका होने लगी है। इस प्रकार के मतभेद हिंसात्मक शस्त्रों तथा फौजी शक्तियों को लेकर हो रहे हैं। इस लेख में लेखक ने इसी संबंध में प्रकाश डाला है; जो जानकारी से पूर्ण और पठनीय है।

सोवियट रूस के डिक्टेटर स्टेलिन

परमाणु बम के साथ ही इस पृथ्वी पर परमाणुशक्ति का प्रादुर्भाव हुआ। शक्ति ने बम को इतनी महानता की है। हाँ, निकट भविष्य में हमने उचित दिशा में प्रयत्न किया सामान्य धातुओं से भी परमाणु-निकालकर अपनी आवश्यकताओं पूर्ति कर सकते हैं। तब हमें कोयले पेट्रोल की जरूरत न रह जायगी। आवश्यक भी नहीं रह जायेगा कि दिन भर खेतों तथा कारखानों में करें। थोड़े समय काम करके हम अपनी आवश्यकताओं से कहीं चीजें उत्पन्न कर लेंगे। हमें कपड़ा आदि किसी चीज की कमी पड़ सकती और न ईश्वरीय कोप कुछ बिगाड़ सकता है। कुछ तो यहाँ तक सोचने लगे हैं कि हम के मालिक बन जायेंगे और इच्छा के अनुसार जो चाहेंगे

जहाँ इस शक्ति से हमें इतनी या सुविधा मिलने को है, वहाँ की दूसरी धार के समान कि अन्य वैज्ञानिक आविष्कारों होता आया है--हमारे लिए बहुत खतरा भी है। हानि की शंका दो की है। एक तो आन्तरिक दूसरा आन्तरिक हानि हम उसे कहेंगे हम लोगों के बीच फिर विश्व-छिड़ जाय और इस शक्ति का प्रयोग एक-दूसरे को चौपट कर डालें; साथ-साथ इस दुनिया को भी जिसे पूर्वजों ने अपूर्व त्याग तथा कष्ट सहनकर पैतृक संपत्ति के रूप में हमें प्रदान किया है। दूसरी और बाह्य आशंका हमें यह कि आगे चलकर जब हम प्रचुर मात्रा में पदार्थ के परमाणुओं में छिपी निधि का उपयोग करने लगें तो एक ऐसा भी अवसर आ सकता है जब यह परमाणु विघटन का क्रम रोकना हमारी शक्ति के बाहर हो जाय। ऐसी परिस्थिति में यह अनुमान भी नहीं किया जा सकता कि हमारे इस पृथ्वी का कितना शीघ्र नाश हो जायेगा। इस ब्रह्मांड के लिए यह खतरे का विषय हो जायेगा।

रूस के वैदेशिक मंत्री मोलोटोव

निश्चय ही हमें इस विभीषिका के निवारण के हेतु घनघोर प्रयत्न करना है। लेकिन जहाँ यह बात तय है वहाँ इस बात का ख्याल करना पड़ेगा कि जब हमें इतनी बड़ी विपत्ति का सामना करना हो तो अपनी आन्तरिक कमजोरियों को दूर करना पड़ेगा। तब सवाल यह उठता है हम किस तरह विश्वयुद्ध की आशंका बंद करें। क्योंकि अब जब कभी लड़ाई शुरू होगी, वह एक भौगोलिक या राजनैतिक सीमा में सीमित नहीं रहेगी और परमाणु बम का उपयोग खूब खुलकर होगा। क्या आप यह समझते हैं कि इस बम का निर्माण किसी भी राष्ट्र की पैतृक संपत्ति सर्वदा रह सकती है? क्या ज्ञान के लिए भी कोई सीमा है। यहाँ हमें दो रास्ते दिखाई देते हैं। एक तो यह कि युद्ध बन्द हो और परमाणु बम तथा इसी प्रकार के अन्य घातक महानाशक पदार्थ (बिषैली गैस आदि) का कदापि उपयोग न हो; और तभी हम परमाणु शक्ति के साथ जिस युग का उदय हुआ है, उसका प्रसार और उपयोग कर सकते हैं। अगर शक्ति के साथ-साथ हमारी इस सभ्यता को भी रहना तथा फलना-फूलना है तो हमें यह निश्चय जान लेना चाहिए कि परमाणु-शक्ति को हमारी चेरी बनकर ही रहना पड़ेगा, और हम मानव इसके लिए अधिक से भी अधिक त्याग और परिश्रम के लिए तैयार रहें।

वे पथ के दीप

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम' बी० ए०

जिनसे कुछ भी आलोक मिला, वे दीप अमर हों जीवन के।
तम की लहरों में सुख सोया,
आँसू से आशा-मुख धोया,
एकान्त विजन में घूम-घूम
कन-कन से अपना दुख रोया,
जिनसे जड़ता का मूल हिला, वे दीप अमर हों जीवन के।
दुख में सुख की मृदु छाँह मिली,
सुख में दुख की गलबाँह मिली,
कटुता के कुंचित शूलों पर
फूलों की मधुमय राह मिली,
जिनसे कुछ भी अवसाद धुला, वे दीप अमर हों जीवन के।
जब घेर लिया भव आतप ने,
भावों के तृषित शलभ अपने--
जिसकी रसमस-सी छाया में
देखे सुख के शीतल सपने,
जिनकी ज्वाला में स्नेह पला, वे दीप अमर हों जीवन के।
है अमर तिमिर की यह कारा,
अविरत है पर गति की धारा,
जीवन की काली रातों में
चमकें जो बनकर 'ध्रुवतारा'
जिनसे ममता का प्राण खिला, वे दीप अमर हों जीवन के।

दो एक वर्ष से अधिक होने को आये यही अहम प्रश्न राष्ट्रसंघ के सामने उपस्थित हुआ था और अब तक इस विकट सवाल का उचित उत्तर नहीं पाया जा सका है। यद्यपि आज भी हम चुप नहीं बैठे हैं। भविष्य में इस पृथ्वी पर कोई युद्ध न हो और इसमें परमाणु बम का उपयोग न हो इसके लिए दो योजनाएँ उस समय उपस्थित की गई थीं। एक बरुच योजना है जिसे अमेरिका के प्रतिनिधियों ने उपस्थित किया था और दूसरी योजना सोवियट रूस की ओर से ग्रोमिको महाशय ने उपस्थित की थी। राष्ट्रसंघ द्वारा आयोजित परमाणु-शक्ति कमीशन के समक्ष इन योजनाओं पर वाद-विवाद हुआ।

बरुच योजना--इस योजना में अंतर्राष्ट्रीय परमाणु प्रसार संघ के निर्माण की माँग की गई थी जिसका काम परमाणु-शक्ति [illegible] पदार्थों

अमरीका के प्रेसिडेंट ट्रूमन

पर, जो इस पृथ्वी पर पाये जाते हैं, कब्जा करना था। दूसरी माँग एक ऐसा अंतर्राष्ट्रीय संघ के निर्माण करने का था जो परमाणु-शक्ति का उपयोग केवल शान्तिमय उपायों के लिए ही सीमित कर देता। इसके साथ ही साथ यह भी कहा गया था कि उक्त संघ के प्रतिनिधियों को 'वीटो' का अधिकार नहीं रहेगा। उक्त संघ को ऐसे अधिकार देने का भी विचार किया गया था, जिससे कि वह चाहे जिस किसी भी देश का निरक्षण अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए बिना रोक-टोक के कर सके।

सोवियत योजना--भविष्य में लड़ाइयों से जो घातक असर हो सकता है, इसका ख्याल करते हुए इस योजना में यह प्रस्ताव किया गया था कि परमाणु बम तथा इस श्रेणी के अन्य घातक अस्त्रों का उपयोग बिलकुल निषेध कर दिया जाय। इसमें अंतर्राष्ट्रीय संघ स्थापना करने का विचार किया गया था, जिस के दो भाग होने को थे, पहले भाग को परमाणु-शक्ति का प्रसार शान्तिमय दिशाओं में, इस शक्ति सद्उपयोग तथा तत्सम्बन्धी ज्ञान विनमय का भार सौंपा गया था। परमाणु-शक्ति का कोई दुरुपयोग मानवता के संघार के लिए न हो, इसका देखरेख दूसरे भाग के जिम्मे किया गया था। इस योजना में 'वीटो' न हटाये जाने की विशेष माँग की गई थी।

सोवियट योजना में इस बात पर

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

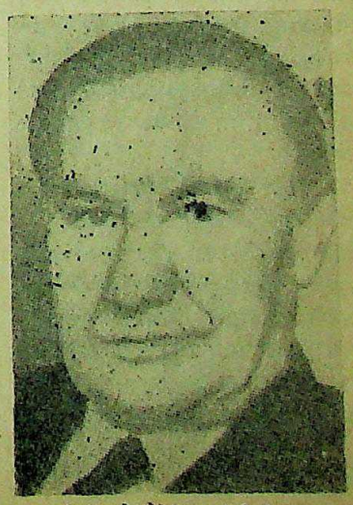

ब्रिटेन के वैदेशिक मंत्री बेविन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तीय ग्राम-सुधार-योजना

एक लाख गाँवों को खेतिहर बनाने और अन्न उपजाने की व्यापक कार्यवाही

(५)

लेखक, पंडित केशवदेव मालवीय, एम० एल० ए०

(मिनिस्टर उन्नति-विभाग यू० पी० सरकार)

'देशदूत' के १०, २४, ३१ अगस्त तथा ७ सितम्बर के अंक में इस लेखमाला के 'चार लेख प्रकाशित हो चुके हैं, यह पाँचवाँ है। संयुक्तप्रांतीय सरकार ने ग्राम-सुधार के लिए जो योजना बनाई है, उसमें १ लाख गाँवों में कृषि-उन्नति के लिये विशेष ध्यान दिया गया है। श्री मालवीयजी ने इस लेख में इसी सम्बन्ध में प्रकाश डाला है, जो ज्ञातव्य तथा जानकारी से पूर्ण है।

इस लेख के लेखक माननीय श्री केशवदेव मालवीय एम० एल० ए०

यह तो सभी जानते हैं कि हमारे सूबे में अन्न की कितनी कमी है। हमारे खेत बड़े उपजाऊ हैं और हमारे यहाँ के किसान बड़ी मेहनत भी करते हैं फिर भी कतिपय उन्नतिशील देशों में फी एकड़ हमारे प्रान्त की अपेक्षा ढाई-तीन गुना अधिक अन्न पैदा होता है। हमारे प्रान्त में लगभग एक लाख गाँव हैं जहाँ किसान बसते हैं। किसान अन्नदाता हैं और वास्तव में उसके ऊपर बड़ी जिम्मेदारी है। किन्तु वह दूसरों को कहाँ तक अन्न देगा, आज तो उसे अपने ही खाने भर को नहीं होता। किसी अँगरेज का खाना देखिए, वह एक दिन में जितना खाता है उतना एक किसान हफ्ते भर में नहीं पाता। अँगरेज आजाद देश का रहनेवाला है। वह ज्यादा मेहनत करता है, ढंग से काम करता है और ज्यादा पैदा करता है। अब हम भी आजाद हैं। हमारे रास्ते में जो बाधाएँ थीं, हट रही हैं। हमें बड़ी तेजी से आगे बढ़ना है ताकि हमारे देश में धन धान्य का बाहुल्य हो। हमारे यहाँ शीघ्र ही अन्न की अधिकता होगी और घी-दूध की नदियाँ बहेंगी। प्रान्त की सरकार इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील है। किन्तु आपके सहयोग की बड़ी आवश्यकता है। बिना आपके सहयोग के हमारा प्रयत्न अधूरा रह जायगा।

अन्न की पैदावार बढ़ाने के लिए भूमि और श्रम के अतिरिक्त सिंचाई, खाद और बीज की बड़ी आवश्यकता है। प्रस्तुत लेख में हमें इस पर विचार करना है कि हमारे प्रान्त की सरकार उपर्युक्त आवश्यकताओं की पूर्ति के निमित्त क्या क्या कर रही है?

सिंचाई

हमारे सूबे में अधिकतर सिंचाई नहरों और कुओं से होती है। नहरें पहले से थी हीं, किन्तु कांग्रेस सरकार ने इस वर्ष और अधिक नहरें बनाने का निश्चय किया है। पहले से सींची जानेवाली भूमि के अतिरिक्त ५ वर्ष के अन्दर १५ लाख एकड़ भूमि की सिंचाई का प्रबन्ध किया जायगा।

इस पंचवर्षीय योजना में ७ करोड़ रुपया खर्च किया जायगा। इन दिनों प्रान्त में लगभग ९८ लाख टन गल्ला पैदा होता है। हमारे प्रान्त की आबादी बहुत बढ़ गई है। दूसरे प्रान्तों से बहुत से शरणार्थी आ बसे हैं। हिसाब लगाने से पता चला है कि प्रति मनुष्य यदि ८ छटाँक प्रतिदिन भोजन की व्यवस्था की जाय तो लगभग १६ लाख टन गल्ले की और आवश्यकता है। यू० पी० की सरकार निम्नलिखित बाँध और नहरें निकालनेवाली है। बाँधों से दो लाभ हैं। एक तो वहाँ से बिजली निकाली जायगी और फिर उस बिजली से पानी चढ़ाकर नहरों में दिया जायगा।

नयार बाँध-योजना

नयार बाँध हरद्वार से ५० मील उत्तर नयार नदी पर बनाया जा रहा है। इस वर्ष इस पर ४३ लाख रुपया खर्च किया जायगा।

नगवा बाँध

यह बाँध कर्मनासा नदी पर मिर्जापुर जिले में बनाया जा रहा है। इस पर ३२॥ लाख रुपया खर्च किया जायगा।

ललितपुर बाँध

ललितपुर के पास सहजाद नाले पर बाँध बनाया जानेवाला है। इससे बेतवा की नहरों में पानी पहुँचाया जायगा। १ वर्ष के अन्दर ही यह काम पूरा कर दिया जायगा और इस पर २८ लाख रुपया खर्च किया जायगा।

रामगङ्गा बाँध

रामगंगा बाँध से पानी लोअर गंगा कैनाल में पहुँचाने का विचार किया जा रहा है। अभी तक लोअर गंगा कनाल में [illegible] रहा है, किन्तु इस बाँध के बन जाने पर काफी पानी मिल सकेगा। इस वर्ष इस बाँध पर ३ लाख रुपया लगाया जायगा।

कोढरी बाँध

इस बाँध से बिजली पैदा की जायगी और सिंचाई के लिए पानी दिया जायगा। इसमें कुल तीन करोड़ रुपये का खर्च है। इस वर्ष ३ लाख रुपया खर्च किया जायगा।

सारदा नहर की शाखाएँ

सारदा नहर हमारे सूबे की एक बहुत ही उपयोगी नहर है। इसकी शाखायें इस वर्ष २०० मील तक और बढ़ाई जायगी।

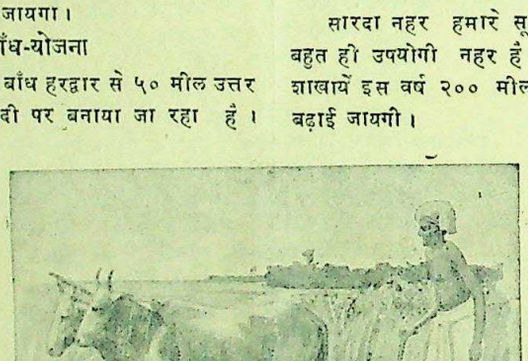

भारतीय किसान हल-बैल से ही खेती करता है

गोरखपुर कनाल

गोरखपुर में डाँडा और रोहिन नदियों से नहरें निकाली जा रही हैं। इन नहरों में अधिकतर बरसाती पानी एकत्र कर सिंचाई के काम के लिए दिया जायगा। इस योजना पर लगभग ९ लाख रुपया खर्च होगा।

घाघरा कनाल

घाघरा कनाल का लंबान ५० मील बनाने के लिए इस वर्ष २॥ लाख रुपया खर्च किया जायगा। एल्गिन ब्रिज के नीचे घाघरा नदी में पम्प द्वारा पानी चढ़ाकर बाँटा जायगा। इसमें लगभग ३॥ करोड़ का खर्चा है। इस पानी से बाराबंकी, फैजाबाद, सुल्तानपुर, आजमगढ़ और जौनपुर में सिंचाई हो सकेगी। इस नहर [illegible] शुरू हो रहा है।

रामी नहर

रामी नदी से ५३ लाख रुपये खर्चे से एक नहर निकालने का विचार किया गया है। कोना नदी से भी एक नहर निकल रही है। इन नहरों से गोरखपुर और बस्ती जिले में सिंचाई हो सकेगी।

नहरों से ग्रामीणों के उपयोग के लिए पानी के बँटवारे के संबंध में कई तरह के झगड़े उठ खड़े होते हैं। अब गाँव-पंचायतें बन रही हैं। पंचायतों के जिम्मे ही पानी के वितरण की व्यवस्था छोड़ दी गई है। ये ही पंचायतें सिंचाई का टैक्स भी वसूल करेंगी। निस्सन्देह किसी गाँव की जनता की आवश्यकताओं को उस गाँव के लोग अच्छी तरह जानते हैं। सरकार का विश्वास है कि पंचायतें पानी का उचित वितरण करके अधिक अन्न उत्पन्न करने में सहायक होंगी।

कुआँ बनाना

जिन स्थानों पर नहरें नहीं बनाई जा सकतीं वहाँ सिंचाई के लिए कुएँ बनाये जायेंगे। एक पक्का कुआँ बनाने के लिए सरकार ५०० रुपये का सामान, जिसमें कोयला, सीमेंट और लोहा होगा, देती है। जो चीजें हैं ये चीजें आज-कल आसानी से नहीं मिलतीं, फिर भी किसानों के लिए सरकार ये चीजें मँगवाती है और बँटवाती है। हाँ, यह सहायता पाने की शर्त यह है कि किसान के पास कम से कम ५ एकड़ जमीन हो जिसकी सिंचाई उस कुएँ से हो सके। किसी किसी सूरत में किसान को ५०० रुपये की नकद सहायता भी मिल सकती है। देहातों में अब भी यह प्रथा प्रचलित है कि कुआँ बनाने में गाँव भर के लोग बगैर मजदूरी लिये काम करते हैं। हमारा विश्वास है कि ५०० रुपये की सहायता एक कुआँ बनवाने के लिए काफी है, बशर्ते कि गाँववालों में भाईचारा हो।

बोरिंग कराना

एक कुएँ में बोरिंग कराने में लगभग ४०० या ५०० रुपये लगते हैं। बोरिंग हो जाने पर सरकार उसका २० फी सदी सहायता के रूप में देती है।

पानी का रहट

पानी का रहट लगाने में लगभग ३०० रुपये का खर्च है। सरकार ने कुछ से रहट तैयार कराये हैं जो विविध में भेज दिये गये हैं। रहट लग जाने पर सरकार लागत का पाँचवाँ हिस्सा सहायता-रूप में देती है।

ट्यूब वेल

युक्तप्रान्त के पश्चिमी कई में ट्यूब वेल से सिंचाई हो रही है, किन्तु अभी ये ट्यूब वेल संख्या में नहीं बन पाये हैं। लोग ट्यूब वेल अपने बनायेंगे उन्हें सरकार लगभग २५ फी सदी सहायता

इस वर्ष सूबे भर में ६,००० कुएँ बनाये जायेंगे, ६,०००

शेष पृष्ठ १४ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अँधेरे में उजाला

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

अन्धकार के बाद प्रकाश और प्रकाश के बाद अन्धकार होना अनिवार्य है। जीवन भी परिवर्तनशील है, आज दुख है तो कल सुख और आज सुख है तो कल दुख। मालती का दाम्पत्य जीवन भी अन्धकारमय था, किन्तु राष्ट्र का अन्धकार दूर होने के साथ ही उनके जीवन का अंधकार भी दूर हुआ। भाग्य ने पलटा खाया। कथाकार ने इसी भावना का चित्रण बड़ी ही सुन्दरता से इस कहानी में किया है, जो पठनीय तथा रोचक है।

मालती की दिन प्रति-दिन की परेशानी को देख-देखकर स्वयं परेशान रहने लगा।

भले ही मालती और उसके पति वातावरण में इस बात को लेकर कोई तनाव या संघर्ष नहीं चला कि वे सन्तान-हीन हैं...गोद सूनी है, मालती की! किन्तु चतुर और अपने पति की छिपी इच्छा को पहचाननेवाली मालती स्वयं ही, यह समझ चुकी थी कि उसके पति सन्तान चाहते हैं; और उसके सन्तान होती नहीं--विधाता उसकी झोली भरता नहीं! निदान, इसी से, उसने सोचा कि उसके पति दूसरा विवाह कर लें। किन्तु श्यामाचरण सदा की भाँति जब भी इस बात को सुनता, तो मुसकरा देता। कभी गम्भीर बनकर बात को टाल देता। वह चेष्टा करके ऐसा विषय ही मुँह पर न लाता कि जिससे मालती को कष्ट हो, वन्ध्या के उस कठोर सत्य की कल्पना कर किसी भी नारी की चिन्तित तथा वेदना से पूर्ण बने, इस तरह का वातावरण लाना ही वह उचित समझता था।

किन्तु पति के मुँह से भले ही कुछ न कहता, लेकिन मन में तो उसके था ही, घर का चिराग बुझ रहा है। उसके घर में ताला पड़नेवाला है। मिट जायगा उसका! यही कारण कि मालती के लिए निश्चय ही यह कोई अपराध नहीं था कि वह वन्ध्या ही बनी, पति के घर का चिराग बुझाने वाली एक नारी! वह नारी है, तो उसे मा बनना है। नारी का यही स्वभाव है, देव है, नारी की! निदान, जब उसमें इतनी शक्ति और क्षमता वह पाती तो निःसन्देह, वह उठ जाना चाहती। वह स्त्रियों में बैठकर लजाती। अपना अपमान अनुभव करती, मानो वह स्त्री नहीं थी, नारी में वह उच्छिष्ट हेय पदार्थ थी, अपने कुल का कलंक!

अपनी इस दयनीय, विषम और असहनीय अवस्था में, मालती के मन का विद्रोह रुकता या दबता नहीं था, अपितु वह उत्तरोत्तर और अधिक नग्न और कुरूप बनता जा रहा था। उठते-बैठते, सोते-जागते, जब-तब उसके मन का चोर अपना सिर उठाता, नहीं कहा जा सकता कि ऐसे अवसर पर उसे कितनी मानसिक वेदना का अनुभव होता। वैवाहिक जीवन में ऐसे अनेक अवसर आये कि जब मालती ने पति को भोजन करा दिया और स्वयं निराहार ही, दिन और रात का समय व्यतीत कर दिया। यही कारण था कि मालती का स्वास्थ्य दिन पर दिन क्षीण बनता जा रहा था, उसका गोरा और सलोना मुँह जैसे सांध्य-समय की काली-काली रेखाओं से लिप-पुत गया था।

यह देखकर श्यामाचरण का मन व्याकुल हो जाता। ऐसे अवसर पर उनके मन में जिस प्रकार का हाहाकार उठता, वह बरबस ही, उस पुरुष को मानो जीते-जी मृत्यु के आलिंगन में फेंक देने की धारणा रखता हुआ दिखाई देता, क्योंकि सचाई यह थी कि मालती वन्ध्या भले हो हो, परन्तु जितनी अर्चना, सेवा-शुश्रूषा उसे मालती से मिली, उतनी उदार और भावुक प्रवृत्ति विश्व की किसी और नारी से मिलनी संभव नहीं थी। वह उसे प्राप्त नहीं हो सकती थी। मालती ने अपने जिस आध्यात्मिक जीवन को पाकर मन, कर्म और वचन से पति के ऊपर अपने को निछावर कर दिया था, वह क्या यों ही भुलाया जा सकता था! यही कारण था कि श्यामाचरण मालती को खोकर, जीवित नहीं रह सकता था। लगता कि उसके प्राण मालती के हाथ में थे, उसकी छाती के नीचे जो छोटा-सा दिल धड़क रहा था, वह इतना स्थिर और शान्त नहीं था कि बरबस ही, मालती के जीवन से दूर होकर जीवित रह सकता। सचमुच ही, जैसे मालती का जीवन--उसका सहवास--श्यामाचरण के लिए इतना भव्य और विशाल किनारा था कि जिसके एक छोर पर टिककर उसे शान्ति मिलती थी और सुख। भले ही, उस मानस की, जो जीवन-रूपी छोटी-सी लहर थी, वह जैसे आदिकाल से जाने कितनी बार बुदबुद करते हुए पानी की तरह उठी और बैठ चुकी थी।...हाँ, मालती उससे दूर नहीं थी! वह मानो शत-शत और कोटि-कोटि जन्मों को पार करके भी आज तक उसके साथ चली आई थी। किन्तु हाय! हाय! फिर भी अकेला था, वह! निरा एकाकी! कितनी अस्तित्वहीन और सारहीन थी, वह उनके जीवन की लहर!

एक दिन जब श्यामाचरण घर आये, तो सामने ही मालती को देख, एकाएक बोला--'सुनो तुम सुस्त क्यों हो। कोई बात लिए हो?'

विजय-पर्व

लेखिका, सुश्री कांति श्रीवास्तव, एम० ए०

देवि! कब से तेरे तोरण-द्वार पर खड़ी हूँ, प्रतीक्षा में कितनी निशा व्यतीत हो गई, उषाकाल की कितनी स्वर्णिम किरणों का हास-परिहास देखा, कोमल किसलय के अंचल में कितनी कलिकाओं को विकसित संचरित होते देखा किन्तु न देखा तुझको ही।

क्या इस निर्बाधिता अकिंचना को बता सकती हो कब तक परतंत्रता की शृंखला में आबद्ध रहूँगी? अपलक नेत्र पथरा गये, हाथ-पैर सुन्न हो गये, इतनी भी शक्ति नहीं रही कि इस लौह शृंखला के कटु विलाप-आलाप के स्वराघात को सुन सकूँ। आशा! आशा! कब तक आशा करूँ उस उन्मद अमोदिता रागिनी को सुनने के लिए जिसके लिए मेरे प्यारे लाड़ले तरस रहे हैं। शताब्दि! दो शताब्दि! युग! दो युग? सभी तो घूम रहे हैं इस समय चक्र में चक्राकार। अच्छा! अब मैं समझी वेदान्तियों ने अभितृष्णा को 'मृगजल' ठीक ही कहा है।

देवि! एक बार तो बोल। क्या तू कुछ वरदान की इच्छुक है। अहिंसा से तुझे अभिरुचि नहीं--आश्चर्य किन्तु मेरे रत्न तुझे उसी अमोघ अस्त्र से वशीभूत करेंगे चाहे तू असंख्य बार उन्हें ठुकरा दे। कितनी निर्ममता है तुझमें--तेरे दर्शनार्थ अमूल्य 'मोती' लुटाया, बलिदानस्वरूपा कितने पुत्रों के रक्त-रोली से 'तिलक' लगाया पर तू अडिग, अचल है।

मेरे अन्तर्तम की गाथा को सुनकर तेरे मुखकमल पर मुसकान खेल रही है--इसका क्या आशय समझूँ--विकट अट्टहास तो मुझ पर नहीं करना चाहती। अरे! तू तो मेरी ही ओर बढ़ी आ रही है--भय से मेरे हृदय में कम्पन होने लगा।

अयँ! यह क्या? मेरे कंठ में यह कैसी पुष्प-मल्लिका? सब कुछ रहस्य से आपूरित! क्या कहा? यह कैसी ध्वनि? यह पुष्प-मल्लिका के रूप में विजय-माला है?

देवि! आज मैं यह क्या देख रही हूँ? प्राची दिशा में यह अनुरक्तता इसीलिये है क्या? किसी ने झोली से गुलाल तो नहीं बिखेर दिया? निस्तब्ध आकाश उद्वेलित हो गया, दिगन्त पक्षियों की मधुर कल-कल ध्वनि से आच्छन्न है, धीर मलय समीर थिरक रही है, कमल-कोश से स्वतंत्रता-रूपी रस छलक-छलककर प्रत्येक जड़-चेतन को अभिसिक्त कर रहा है। आज मेरा स्वा-तंत्र है।

दयामयि! श्रद्धांजलि समर्पित करती हूँ। अतीत के प्रलापों के लिए मुझे क्षमा। स्वतंत्रता! स्वतंत्रता! आ तुझे गले लगा लूँ--देखती नहीं तेरे स्वागतार्थ सुनीलाम्बर से असंख्य, अनन्त नक्षत्र पृथ्वीलोक को उतर आये हैं--तेरी अभ्यर्थना के लिए।

फा० ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालती ने चाहा कि वह बात को छोड़ दे। जो उत्तर उससे माँगा जा रहा है, उसे टाल दे, किन्तु श्यामाचरण ने फिर कहा--'मालती, जीवन को मारो मत। इसे प्यार करो... सँभालकर रक्खो, इसे!'

सुनते ही, जैसे मालती की छाती में घूँसा लग गया। वह तड़प गई। अपने मुँह को ऊपर अन्तरिक्ष की ओर उठाकर उसने एकाएक कहा--'जीवन क्या..इसका मोल!'

'ओह, इसका बहुत मोल है, मालती! यह शास्वत है। जीवन धर्म है,--एक सांस्कृतिक केन्द्र!'

लेकिन मालती की वह सुन्दर और भावपूर्ण आँखें जिस क्षितिज की ओर उठी थीं, उसी ओर देखते हुए, जैसे उसने खोजा, पाना चाहा कि कहाँ है, उसका जीवन! उसने मन में कहा--'ऐसा ही है, यह जीवन--हाय! इसी से, उसने अपना मुँह गिरा लिया और पैर के अँगूठे को जमीन के फर्श पर फेरते हुए अपने आप कहा--'जाने--हाँ, जाने कैसा है, यह जीवन!...'

उसी समय श्यामाचरण ने अपने स्वर पर जोर देकर कहा--'इस जीवन में आकर, इस शरीर को प्राप्त कर, हम हँसी-खुशी रहें, समीप बनकर रहें, मालती!'

सुनते ही, मालती ने उसकी ओर देखा और बरबस मुसकरा दिया।

उसने कहा--'हाँ, मालती! मैं तुझे उदास देखता हूँ, तो मन पकड़कर रह जाता हूँ।'

मालती ने कहा--'तुम! तुम!'

और बरबस ही, उसने विलोड़ित हुए मन के साथ अपना सिर श्यामाचरण की छाती पर टिका दिया। उसी अवस्था में उसने कहा--'मैं बेकार हूँ, मैं हीन!'

'पगली हो, तुम भूलती हो, मालती! तुम रानी हो, मेरी मालकिन!'

* * *

दिन आ रहे थे, जा रहे थे। भले ही मालती का मन थक गया था; किन्तु प्रयत्न नहीं थका था, वह सफल हुआ। विधना ने उसे भी बच्चा पैदा करने और माँ बनने का अवसर प्रदान किया। यह देखकर पड़ोसियों में उत्साह फैला। वे कहतीं--'लड़का होगा।'

मालती चुप, जैसे अज्ञात।

उससे फिर कहा जाता--'आसार ही लड़के के हैं। तुम्हारे पैर ही ऐसे पड़ रहे हैं। ....हाँ, जो लड़का जनती है, वही तो खाती हैं, ऐसी चीजें। उसी की इच्छा करती है।'

इतना सुनकर, बरबस मालती कहती--अच्छा, अच्छा! जो हो, ईश्वर की देन होगी, वह!'

'हाँ, बहन! ईश्वर की देन तो है ही? हम-तुम कौन हैं ऐसी जो चाहती हैं कि मालती बहन बन्ध्या रहें...घर का चिराग...

और मालती तब गहरी साँस छोड़ ऊपर आकाश की ओर देखती, मानो वहीं पर पाती वह शान्ति और सुख।

नौ मास बीत गये। जब दसवाँ लगा तो उस घर में खुशी का दौर-दौरा आरम्भ हो गया। मालती के पुत्र हुआ। बाबू श्यामाचरण ने मुक्तहस्त होकर निर्धनों और अपाहिजों को अन्न-वस्त्र प्रदान किया। मित्रों का खान-पान।

* * *

उसी समय अवसर आया कि शहर सज रहा था। घर-घर बहन-बेटियाँ और बहुओं के द्वारा उस खुशी के उपलक्ष में दीपकों को जलाया जा रहा था। निदान, वह उत्सव बाबू श्यामाँचरण के घर भी मनाया जा रहा था।

पड़ोस की एक बालिका ने आकर मालती को देख, उत्साह और उमंग लिये हुए स्वर में कहा--'चाची--'

'क्यों' बेटी!'

'आज खुशी का दिन है न, चाची! स्वतंत्रता का दिन! क्यों चाची, गुलामी हट गई न, आज से! भैया कहते थे, देश का अंधकार दूर हुआ, प्रकाश आ गया--देश का भाग्योदय हो गया।' यह कहते हुए उस बालिका ने पालने में सोये हुए मालती के पुत्र को उठा लिया। उसी समय, उसने कहा--'क्यों चाची, है न, यही बात!'

इतना सुन, मालती ने उसकी ओर देखा, अपने मुनुआ की ओर! तभी उसने दीपक के प्रकाश, उसकी जोत को ऊपर उठाते हुए मुसकराकर कहा--'हाँ, बेटी! देश स्वतंत्र हो गया...दूर हो गया, देश का अन्धकार!'

नहीं कहा जा सकता कि मा कितनी गद्गद थीं और कि अपने-आप में विभोर; क्योंकि के अन्धकार के साथ, उसके घर अन्धकार भी दूर हो गया था।

सेवाग्राम

रंग-बिरंगी छपाई अनेक रंगीन चित्र

रचयिता श्री सोहनलाल द्विवेदी

संरक्षक श्री घनश्यामदास बिड़ला

जनता की भाषा में, जनता के भावों का, जनता का काव्य कवि की राष्ट्रीय रचनाओं का सुन्दर संग्रह। बड़ा आकार, बढ़िया काग़ज़, कपड़े की मज़बूत जिल्द। मूल्य दस रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

सौन्दर्य का प्रताप

अर्थात् स्वस्थ त्वचा की कीर्त्ति

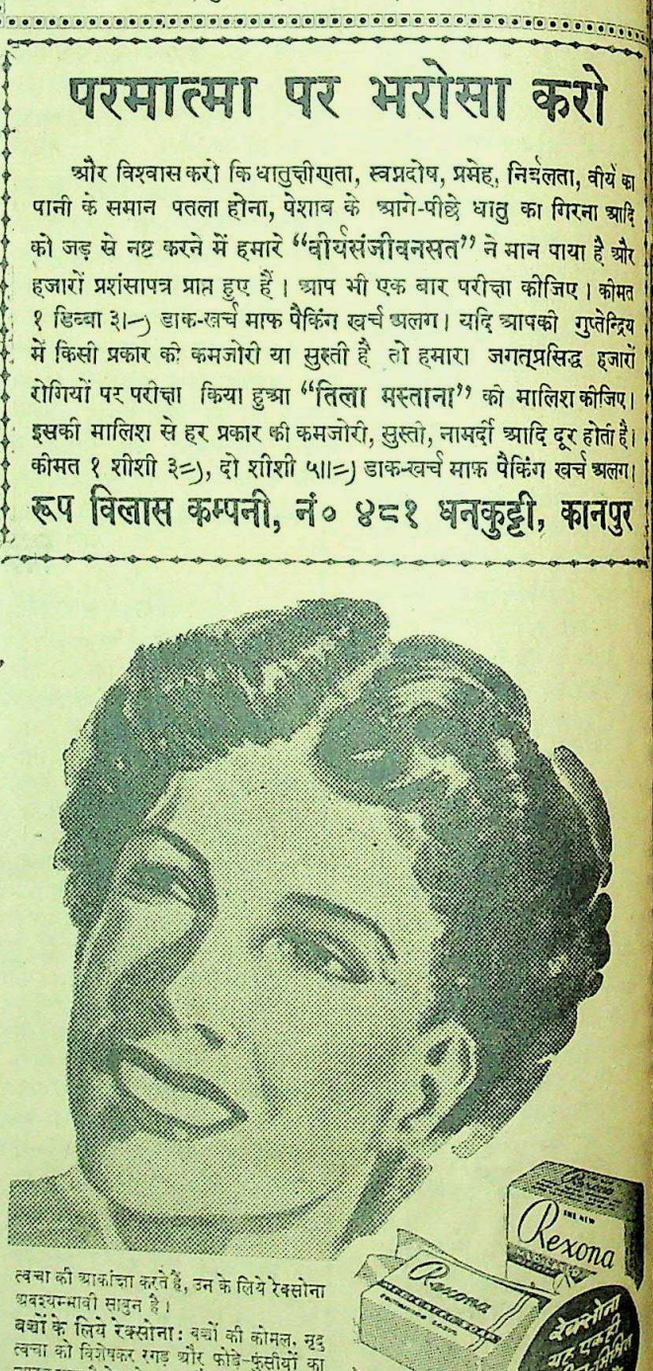

व्यक्तिगत सौन्दर्य अधिकतर मनोहर त्वचा पर अवलंबित रहता है और केवल स्वस्थ त्वचा ही त्वचा-माधुर्य की कीर्ति प्राप्त कर सकती है। रेक्सोना, न केवल त्वचा को स्वस्थ बनाये रखता है, किन्तु त्वचा-सौन्दर्य निर्माण करने में भी सहायकारी होता है; क्यों कि वह कैडील से बनाया हुआ है, जो ऍन्टिसेप्टिक त्वचा-पुष्टिकर तैलों का अभिनव शास्त्रीय मिश्रण है। रेक्सोना का विपुल फेनदार, शीघ्रोत्पादक झाग रक्त त्वचा-रक्षक कैडील को रोमरंध्रों में गहराई तक ले जाता है, जो त्वचा को शान्ति प्रदान करता है और मनोहर रखता है। रेक्सोना ही कैडील नामक औषधी से बनाया हुआ साबुन है, जो त्वचा को दूषित होनेसे बचाता है, चर्म-स्वास्थ्य की वृद्धि करता है और त्वचा-सौन्दर्य निर्माण करता है, जो प्रत्येक स्त्री की त्वचा-सौन्दर्य की अभिलाषा होती है।

पुरुष, जो आरोग्य-युक्त, कांतिमय त्वचा का महत्व जानते हैं, वे रेक्सोना के त्वचा को आनन्द देनेवाले, ओजस्वी उत्तम परिणाम का आदर करते हैं, यह सत्य कहा जा सकता है कि, जो पुरुष स्वस्थ त्वचा की आकांक्षा करते हैं, उन के लिये रेक्सोना अवश्यम्भावी साबुन है।

बच्चों के लिये रेक्सोना: बच्चों की कोमल, मृदु त्वचा को विशेषकर रगड़ और फोडे-फुंसीयों का उपद्रव रहता है, रेक्सोना का औषधीयुक्त, शान्तिप्रद झाग सर्व-साधारण त्वचा-रोगों से बच्चों के नन्हे नन्हे अवयवों की रक्षा करता है।

★ रेक्सोना का कैडील यह विशेषत: ऍन्टिसेप्टिक आरोग्य-दायक एवं पौष्टिक तैलों का औषधी मिश्रण है, जो कि, त्वचा सुरक्षित रखने के लिये खासकर बनाया गया है।

त्वचा-आरोग्य के लिये रेक्सोना

B.P. 31A-332-40 HI

REXONA PROPRIETARY LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

मजदूर स्त्रियों की दशा कैसे सुधरेगी ?

जनता के नेताओं तथा समाज के सामने एक समस्या

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

स्त्री-समाज में मजदूर स्त्रियों की स्थिति अन्य व्यवसायवाली स्त्रियों से अधिक गिरी है। विदेशों में स्त्री-समाज इतना बढ़ चुका है कि वह अपने हर कदम की उन्नति में सहायता देता है; किन्तु अभी हमारे देश का स्त्री-समाज इतनी उन्नति नहीं कर सका कि वह अपनी स्त्रियों की उन्नति, स्वास्थ्य और शिक्षा को एक प्रबल वेग से आगे बढ़ावे। मिलों में मजदूरों के काम करने के घंटे नियत हैं, चाहे वे देहात में हों अथवा शहर में; पर भारतवर्ष में बहुत कुछ विभिन्नता है। यहाँ देहात और शहरों का अलग-अलग जीवन है। दोनों क्षेत्रों को यदि एक शृंखला में देखा जाय तो कई अड़चनें पैदा होंगी, जो वह तो आवश्यक है कि उनकी स्थिति में सुधार करके उनको उन्नति की ओर अग्रसर किया जावे।

देहात में मजदूर स्त्रियों का जीवन मजदूर पुरुषों से भी गया-गुजरा है। वे रात में ३ बजे उठकर अपने परिवार के लिए चक्की पीसकर आटा तैयार करती हैं। सुबह ६ बजे सोते बच्चों को जगाकर उठा देतीं, घर के लिए पानी भरतीं, चूल्हा-चौका करतीं और इसके पश्चात वे खेतों में काम करने के लिए चल पड़ती हैं। किसी-किसी प्रान्त में वे खाना बनाकर ९ बजे निकलती हैं और शाम के ६ बजे तक कठिन परिश्रम करती हैं। किसी प्रान्त में दो पहर के समय ३ घंटे या ३ घंटे के बीच में आकर नहातीं और खाना पकातीं, परिवार और बच्चों को खिलाकर तब सोती हैं। इसके बाद उनका फिर वही काम शुरू होता है जो शाम के ६ बजे तक चलता रहता है। दिन डूबने के बाद जब वे घर लौटती हैं तो उन्हें पुनः चौका-चूल्हा और खाना पकाने की समस्या का सामना करना पड़ता है।

इन सबके बीच में उन्हें अपने छोटे-छोटे बच्चों को पानी देना, खाना देना, पेशाब-पाखाना कराना, कपड़े पहनाना तथा दुधमुँहे बच्चों को दूध पिलाना ये सब उनके दैनिक कार्य में अदृश्य कीटाणुओं की तरह चिपके रहते हैं। इन सब कार्यों के अतिरिक्त उनके पुरुषों की फरमाइशें और आज्ञाएँ भी रहती हैं जिन्हें पूर्ण करना उनके लिए अनिवार्य रहता है। हुक्का चढ़ाना, धोती कपड़े साफ करना, पीने के लिए पानी देना आदि उनकी साधारण फरमाइशें हैं। यह सब क्यों? पुरुष मजदूर जो कि ६ बजे उठता, दोपहर को काम से आकर सीधे भोजन करने लगता है क्या उसकी कोई जिम्मेदारी नहीं? क्या वह एक स्त्री के ऊपर गृहस्थी का सारा भार लादने में ही अपना पुरुषत्व समझता है? इसके अतिरिक्त मजदूर स्त्रियों के बच्चा जनने के बाद एक माह की भी छुट्टी नहीं। वे बेचारी काम न करेंगी तो खायेंगी क्या? स्त्री और पुरुष दोनों की कमाई इतनी नहीं होती जिससे वे गिरा हुआ जीवन भी बिता सकें? फिर एक के अपङ्ग हो जाने पर परिवार का खर्च कैसे चल सकता है? इसलिए देहात का मजदूर-स्त्री-वर्ग बहुत ही दुखी है। "उसको नव-जीवन अथवा मुक्ति देने के लिए ईश्वर ही साक्षात् रूप में आवे तभी कुछ हो सकता है।" से ही समस्या न हल होगी बल्कि उसके लिए बहुत कुछ पुरुषों और स्त्रियों को करना पड़ेगा।

शहरों की स्थिति देहात की अपेक्षा कुछ ही अच्छी कही जा सकती है। देहातों में समय का बन्धन सूर्योदय और सूर्यास्त तथा दोपहर माना जाता है, पर शहरों में घड़ी-घंटे के कारण समय घंटों में बँटता है। अतः

मज़दूर स्त्री खेत से रुई का बोझ ढोने के काम में—

शहर के मजदूर घंटों की दृष्टि से कार्य करते हैं। मजदूर स्त्रियाँ अथवा पुरुषों के कार्य करने के घंटे एक ही रहते हैं। उनको ६ बजे सुबह से १२ बजे दोपहर और २ बजे दिन से ६ बजे शाम तक कारखानों में काम करना पड़ता है। देहात और शहर की मजदूर-स्त्रियों में कोई अन्तर नहीं है। यदि कुछ है तो यही कि देहात की स्त्रियाँ रात में ३ बजे उठकर चक्की चलाकर आटा पीसती और शहर में चक्की की पिसाई आदि सस्ती होने से उस मेहनत से बची रहती हैं। बाकी सारे कार्य उन्हें उसी प्रकार करना पड़ता है जो देहात की मजदूर स्त्रियों को। पर एक विपदा शहर की स्त्रियों के पीछे और लगी रहती है—शहरी मजदूर स्त्रियों के पति किसी न किसी नशे के आदी होते हैं। चण्डू, शराब, गाँजा, ताड़ी आदि मादक वस्तुएँ पुरुष मजदूरों के व्यसन हैं। बेचारी स्त्रियाँ काम-काज से थकी जब घर लौटतीं और अपने घरेलू कार्यों में लग जाती हैं तो उस समय कभी-कभी नहीं बल्कि सर्वदा ही अपने पति अथवा परिवार के लोगों को नशे की मस्ती में किसी नाली-सड़क अथवा अन्य स्थलों में गिरा सुनकर उन्हें उठाने जाती हैं। उन्हें घंटों ढूँढ़ने में खर्च करना पड़ता है, कभी चोट खानी पड़ती है और कभी-कभी तो पुरुषों के जेल जाने के पीछे घर का सारा माल-असबाब तक बिक जाता है। यह सब कुछ विपदाएँ पुरुषों की बदौलत बेचारी स्त्रियों को बितानी पड़ती हैं। पर, वे इतनी बहादुर और धैर्यशीला होती हैं कि सारे संकटों को सहन करते हुए भी अपना जीवन बिता रही हैं। उनके ऐसे जीवन को सुखमय नहीं कहा जा सकता, फिर इसके लिए क्या किया जाय; आज की नहीं वरन् बहुत पुरानी समस्या है। इस विषय को हल करने के लिए हाथ बढ़ाना बहुत आवश्यक है।

मजदूर स्त्रियों की कई ऐसी समस्याएं हैं जिनका निराकरण अत्यन्त आवश्यक है। इन स्त्रियों की समस्या का हल मजदूरों की समस्या का हल करना ह, जो देश की एक जटिल समस्या है।

(१) पुरुषों और स्त्रियों की मजदूरी में अन्तर न हो। यदि हो भी तो स्त्रियों को महीने में कम से कम एक सप्ताह की छुट्टी दी जाय।

(२) दैनिक मजदूरी पानेवाली स्त्रियों को भी रियायतें दी जावें। कम से कम पुरुषों की अपेक्षा २ घंटे कम काम लिया जाय। महीने में कम से कम ५ दिन का वेतन बिना मेहनत का दिया जाय।

(३) उनके बच्चों को कुछ मजदूरी नियत कर दी जाय।

(४) मजदूर अपने स्त्रियों के रहने के स्थानों में सफाई आदि की सुव्यवस्था की जाय, क्योंकि मजदूरों को कार्य के आगे सफाई आदि का समय नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त उनके लिए सबसे बड़ी समस्या उनकी बीमारी में दवा-दारू आदि का प्रबन्ध करना है। यह समस्या शहर और देहात दोनों क्षेत्रों में है; परन्तु देहात में तो बहुत ही भयंकर है।

(५) सबसे बड़ी और जटिल समस्या मजदूर-स्त्रियों की अशिक्षा है। यदि उनमें से अशिक्षा न दूर की जायगी तो चाहे जितने सुधार हों, अधूरे रहेंगे।

अतः मजदूर स्त्रियों की समस्या एकांकी नहीं वरन् स्त्री-पुरुष दोनों को हल करने की है। देश के गण्यमान्य व्यक्ति और संभ्रान्त महिलाएँ स्त्री-समाज के इस वर्ग की ओर जब ध्यान देंगे तभी स्त्री-समाज और देश का कल्याण होगा।

प्रिंस होमियोपैथिक कालेज
बनारस
गवर्नमेन्ट रजिस्टर्ड और एडेड से होमियोपैथिक, वायकेमिक, इंजेक्शन का तीनों डिप्लोमा (सार्टिफिकेट) लें या शिक्षा प्राप्त करें। नियमावली मुफ्त मँगाइए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

टिहरी जेल में मेरा जीवन

यह वर्णन ता० १८ अगस्त का है। "तुझे तेरा भाई बुला रहा है।" यह शब्द मैंने बिस्तर पर पड़े-पड़े सुने। मैं उठा ही था कि मेरे कमरे के अन्दर, एक व्यक्ति ने प्रवेश किया। उसके आने के थोड़ी ही देर बाद कमरे के अन्दर बाहर से एक टार्च की रोशनी पड़ी। मैं अवाक् रह गया। फिर वही शब्द सुनाई पड़ा। "अच्छा आया" कहकर मैं बाहर निकला। मैं देखकर अवाक् रह गया कि पुलिस-इंस्पेक्टर मुझे बुलाने आया है, साथ में दो पुलिस के सिपाही भी हैं। चलते-चलते मुझे ऐसा जान पड़ा कि मैं आज बंदी बनने जा रहा हूँ।

"इधर चलो" थाने का रास्ता दिखाकर इंस्पेक्टर ने मुझसे कहा! मैं सोच रहा था कि "क्या पुलिस अब झूठ बोलकर गिरफ्तार करती है? मुझे मेरा भाई बुलाये और थाने में।" मैं इन विचारों में डूबा हुआ ही था कि मेरा भाई मुझे सचमुच ही थाने में दिखाई दिया। मेरी तलाशी ली गई और मैं तीन साथियों के साथ एक कोठरी में बन्द कर दिया गया। दूसरी कोठरी में भी तीन साथी रक्खे गये।

हवालात की हालत न पूछिए। पेशाब की दुर्गन्ध से नाक फटी जा रही थी। साथ ही मेरी समझ में न आया कि क्या यही भाई के बहाने बिना वारंट के गिरफ्तारी होती है? पर टिहरी में सम्भव है, क्योंकि यह रियासत स्वतंत्र है। थोड़ी देर पश्चात् एक सन्तरी ने हमें एक चटाई जो कि २॥-३ फुट की थी, दी। बस, यही स्वतंत्र रियासत में राजनैतिक बंदियों को बिछावन मिलता है।

सन्तरी ने किवाड़ खोल करके पत्तों पर रक्खी हुई रोटियों की तरफ इशारा करके कहा? "इसमें आप लोगों का भोजन है। मैंने स्नान के लिए पानी माँगा, पर कुछ जवाब न मिला, रोटी का एक कौर मुँह में डाला ही था कि सारा मुँह रेत से भर गया। मालूम पड़ा कि रोटी में बहुत-सी रेत है। जब हम खाना खा चुके तो पुनः हमें उसी कमरे में बन्द कर दिया गया।

मैंने अखबार की माँग की पर अधिकारी उस समय गूँगे बन गये थे। श्री प्रेमलाल जी को बुखार आ गया। मैंने कहा कि वैद्य जी को बुखार है डाक्टर को बुलाओ पर सब अभी मौन थे।

कुछ समय पश्चात् इंस्पैक्टर पुलिस ने पुनः दर्शन दिये। मैंने उनसे कहा कि हमें कपड़ा मिले और डाक्टर बुलाया जाय। "अच्छा" कहकर वे चले गये, फिर हम सो गये।

थोड़ी देर पश्चात् इंस्पेक्टर पुनः आये। मैंने कहा कि हम ऐसी गंदी कोठरी में नहीं रह सकते। तो एक दारोगा ने डाँटा "अजी इन्हें बँगला रहने को मिलेगा, पाजी कहीं का। जा करके सुमन चौक में विद्यार्थियों की सभा कर!" अब मुझे ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों को संगठित करने के अभियोग में मुझे जेल भेजा गया है।

रात को भी खाना आया। केवल छः रोटी जिनकी तोल २ छटाँक थी। और माँगने पर हमें उत्तर मिला "तुम्हारे लिए इतनी ही मंजूर हैं।" पेट भर खाना भी नहीं मिल रहा था। हम उन गंदे कमरों में नहीं सो सकते थे; अतः देहरी पर ही लेट गये। इस पर हमें घसीटकर कमरे में ले जाया गया। एक-दो साथियों को पीटा भी गया। साथ ही उस समय उजाला बंद कर दिया।

१९ अगस्त से हमने भूख हड़ताल कर दी। ता० २० को डाक्टर आया और हमारी हालत देखकर चला गया। फिर हमें जेल भेज दिया गया। वहाँ एक पुलिस के उच्च अधिकारी ने मुझे घर भेज दिया। घर आकर मुझे पता चला कि टिहरी सरकार ने एक नई आज्ञा निकाली है, "यदि किसी का लड़का जो कि १६ वर्ष से छोटा हो, किसी मामले में हस्तक्षेप करे तो उसके पिता को दण्ड मिलेगा। मेरी समझ में न आया कि विद्यार्थी-संगठन पर पुत्र का दण्ड पिता को कैसे मिलता है।

अब मेरा स्कूल से "इक्सपल्सन" कर दिया गया है। मुझ पर एक मुकदमा भी पुलिस की तरफ से चलाया जा रहा है। मैं रियासत से बाहर पढ़ भी नहीं सकता। यह मुझे टिहरी में विद्यार्थी-कांग्रेस खोलने का फल मिला। यहाँ तो विद्यार्थी-कांग्रेस का मतलब कांग्रेस में भाग लेना समझा जाता है।

पी० आई० कालेज —विद्यासागर
टिहरी विद्यार्थी

* * *

हिन्दी अखबार निकालिए

पश्चिमी पंजाब से उर्दू के २०-२५ अखबार निकलते थे, जिन पर हिन्दुओं का स्वामित्व था। साम्प्रदायिक झगड़ों के कारण यह सब बन्द हो गया है। अब इनमें से अधिक अखबारों को दिल्ली से निकालने का आयोजन किया जा रहा है। भारतीय संघ में सबसे अधिक बोली और लिखी जाने-वाली भाषा हिन्दी ही है। देश की नई परिस्थितियों में जब कि पाकिस्तान की भाषा उर्दू घोषित कर दी गई है, तो इधर भारतीय संघ की भाषा हिन्दी स्वीकार कर लेने के लिए अधिक जोर दिया जा रहा है; और पूर्ण आशा है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार कर लिया जायगा। इस अवस्था में भारत में उर्दू पढ़ने-पढ़ाने में जनता का झुकाव सर्वथा जाता रहेगा। समय की माँग को देखते हुए हम उर्दू पत्रों के स्वामियों से प्रार्थना करेंगे कि वे विदेशी भाषा में अखबारों को निकालने में अपनी पूँजी का दुरुपयोग न करें। जनता के हित के लिए उन्हें हिन्दी में ही अखबार निकालने आरम्भ करने चाहिए।

हरिद्वार, —चिरंजीवलाल
५ सितम्बर, ४७ शर्मा

* * *

सम्मेलन में उपेक्षा क्यों होती है?

नीमच-क्षेत्रीय-हिन्दी-साहित्य-समिति गत तीन वर्षों से यह प्रयत्न कर रही है कि समिति के अन्तर्गत हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं का केन्द्र स्थापित कर दिया जाय, जिससे क्षेत्रीय विद्यार्थियों को विशेष लाभ हो।

आगामी परीक्षाओं के लिए हिन्दी-साहित्य-समिति के अन्तर्गत महाविद्यालय द्वारा लगभग ८३ आवेदन-पत्र भरे गय हैं। और केन्द्र-व्यवस्था पत्रक भी भेरा गया है; परन्तु अभी तक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के केन्द्र-स्थापना की आज्ञा प्रदान नहीं की। गत वर्ष भी इसी प्रकार आवेदन-पत्र एवं शुल्क सम्मेलन को प्रेषित किया था; परन्तु परीक्षा समय पास आते ही अस्वीकृत हो गई।

इसी प्रकार एक ऐसी संस्था जो हिन्दी-प्रचार का अपना लक्ष्य बनाकर उस केन्द्र तक पहुँचने की तन-मन-धन अर्पित कर चुकी है उसे केन्द्र-स्थापना का अधिकार न देना कहाँ का न्याय है। बड़े दुःख की बात है कि हिन्दी की प्रतिनिधि संस्था भी जब इस प्रकार अवहेलना करने लगेगी तब क्यों न हिन्दी की जगह अन्य भाषा प्रबल होने का दावा करने लगेगी।

आशा है सम्मेलन मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान देगा।

सन्तोष-वाटिका —नागेश मेहता
नीमच 'विशारद'

* * *

"प्रवासी"

मैंने हिन्दी और अँगरेजी में "प्रवासी" नामक मासिक पत्र निकालने का संकल्प कर लिया है। इस विषय पर सर्वप्रथम मैंने भारत के राष्ट्रीय सरकार के प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल जी नेहरू को एक पत्र लिखकर अपना इरादा प्रकट किया और उनसे सहायता की याचना की। हर्ष और संतोष की बात है कि उन्होंने फौरन अपने प्रचार विभाग को आज्ञा दे दी कि मुझे इस काम में यथासंभव सहायता पहुँचाई जावे और सच पूछिए तो प्रचार-विभाग के ही उद्योग से मुझे "प्रवासी" निकालने की इजाजत मिल गई, अन्यथा इस समय नवीन अखबार निकालने के लिए भारत-सरकार से स्वीकृति प्राप्त करना दुस्तर है।

मेरे पास न साधन है और न सम्पत्ति, जो किसी अखबार के प्रकाशन के लिए आवश्यक है। पर मुझे अपने देशबासियों के सहयोग और सहायता पर पूरा भरोसा है। प्रथम वर्ष के लिए "प्रवासी" का वार्षिक मूल्य भारत के लिए दस रुपया और विदेशों के लिए एक पाउण्ड होगा। पर साल भर के बाद मूल्य बढ़ा दिया जायगा। इस समय तो "प्रवासी" को प्रोत्साहन देने के विचार से ही ग्राहक बनना चाहिए, उसके कागज और छपाई का मूल्य आँककर नहीं। "प्रवासी" हिन्दी और अँगरेजी में मासिक रूप से निकलेगा और इसमें संसार के भिन्न-भिन्न भागों में बसे हुए प्रवासी भारतीयों के सामयिक समाचार और उनकी समस्याओं पर प्रमाणिक लेख निकलते रहेंगे।

प्रवासी-भवन —भवानीदयाल संन्यासी
अजमेर

* * *

बड़ौदा-जोधपुर विवाह-सम्बन्ध

राजथास्न के तपस्वी संन्यासी ऋषिवर स्वामी माधवानन्दजी महाराज इधर गत कुछ वर्षों से राष्ट्र को संगठित करने में अकथ प्रयत्न कर रहे हैं। आर्य संस्कृति और भारतीय वाङ्मय के आप प्रकाण्ड पंडित और प्रबल समर्थक हैं। पश्चिमी और मध्य-भारत के सभी राजा-महाराजा आपको गुरु सदृश्य पूजते हैं और इन प्रदेशों की प्रजा तो आपके प्रवचन और चरण-रज को शिरोधार्य कर, एकता के सूत्र में बँध रही है।

आपकी कृपा से हिन्दू-संगठन का महान् स्वप्न अब सिद्ध हो रहा है।

स्वामी माधवानंद

मराठा और राजपूतों में अभी तक जो जाति-भेद चला आता था, वह क्षत्रिय जातियों के संगठन में बाधक रूप था। परन्तु अपने उपदेश से बड़ौदा के युवराज प्रिन्स फतेहसिंह महाराज। गायकवाड़ का विवाह जोधपुर नरेश बहन राजकुमारी राजेन्द्रकुँवर राठौड़ से होना निश्चित हो गया यह वैवाहिक संबंध संगठन के दिव्य आहुति है। इसका महत्त्व भविष्य में ज्ञात होगा।

आपके उपदेश को सुनकर राजा का जीवन सदाचारी होने लगा। गत १५ अगस्त की भारतीय योजना में सम्मिलित होने के अनेक राजाओं को आपने प्रोत्साहित दिया। आप अभी ता० १० अगस्त १९४७ ई० को जोधपुर के हिज हाइनेस के साथ हवाईजहाज से देहरा गये तो वहाँ आप धौलपुर हाउस ठहरे थे, तब नाभा, भोपाल, जैसलमेर धौलपुर, जोधपुर, ईडर, सैयर, नरसिंह गढ़, डूंगरपुर आदि के नरेश आप मिले और आप से उपर्युक्त प्रोत्साहन पाकर भोपाल के सिवाय सब भारतीय संघ में सम्मिलित हुए। सरदार वल्लभभाई पटेल भी आपके दर्शनों लिए देहली में उपस्थित हुए। स्वामी जी महाराज अनवरत भ्रमण कर प्रत्येक प्राणी को संस्कृति-रक्षा, धर्म रक्षा, गो-रक्षा और संयम-रक्षा का दान कर रहे हैं। स्वाधीन भारत पुनः रामराज्य की ओर बढ़ेगा, यह ध्रुव सत्य है।

जोधपुर —बलबीरसिंह गहलोत

ओटो पुष्पवहार

ओटो पुष्पवहार समस्त सुगन्धि का सम्राट् है, इसको लगाते ही आनन्द हृदय मस्ती की लहरों में खो जाता जिधर से आप निकलेंगे इसकी सुगन्ध पाकर सबों की नजरें आप पर केन्द्रित हो जायँगी, रूमाल में लगाने से इसकी खुश महीनों नहीं जाती; यह सुगन्ध लगाकर आप जिससे मिलेंगे वह आपसे बहुत प्रभावित हो जायगा। मूल्य प्रति शीशी ॥) एक दर्जन ६॥) डाक खर्च १।)।

एक साथ एक दर्जन शीशी मँगाने पर एक जोड़ी हाथ के बटनों का सेट बम्बई फैशन की एक चमकदार अँगूठी एक फैन्सी रूमाल, एक खूबसूरत शीशे मय कंघा इनाम में मुफ्त दिया जायगा। (यह घोषणा केवल-प्रचार के उद्देश्य की जाती है।)

पता—इंडिया ट्रेडिङ्ग कंपनी, कानपुर

सञ्चारिणी

इसमें भक्ति काल की अन्तर्चेतना, मान हिन्दी-साहित्य और शरद साहित्य की सरस सुन्दर विवेचना की गई है। इसकी भाषा-शैली और विचारों पर मुग्ध होना आचार्य शुक्ल जी के एक अनुपम आलोचक ने लिखा था कि रवि बाबू के बाद इसी पुस्तक द्वारा सुन्दर, सुपुष्ट और भावपूर्ण लेखनी का चमत्कार दिखाई पड़ता है। यह पञ्जाब विश्वविद्यालय की हिन्दी प्रभाकर-परीक्षा में कई वर्षों तक पाठ्य-पुस्तक रह चुकी है। पृष्ठ-संख्या लगभग २७५; मूल्य सजिल्द २) दो रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

'अनुष्ठान': नया उपन्यास*

...श्री हरिमोहनलाल श्रीवास्तव, ...ए०, एल्-टी०, 'साहित्यरत्न' दतिया

प्रस्तुत उपन्यास के लेखक पण्डित ...दयाल चतुर्वेदी 'मस्त' एक जागरूक ...द्रष्टा के रूप में ही हमारे सामने ...हैं। वे आज के परिवर्तनशील ...में देश के विचित्र वर्गों में उत्पन्न ...वाली प्रवृत्तियों के प्रति सजग हैं, ...जैसा हमने उनके एक अन्य उपन्यास ...मुहल' की समीक्षा करते हुए बताया ...जीवन के प्रति--समाज और राजनीति ...संबंध में लेखक का अपना दृष्टिकोण ...आचार्य शुक्ल जी के शब्दों में ...या किसी जन-समाज के बीच काल ...रीति के अनुसार जो गूढ़ और चिन्त्य ...स्थितियाँ खड़ी होती रहती हैं, उनको ...रूप में सामने लाना और कभी-...निस्तार का मार्ग भी प्रत्यक्ष करना ...न्यासों का काम है।' सन्तोष का ...है कि 'अनुष्ठान' का लेखक अपने ...के एक वर्ग-विशेष की परिस्थितियों ...गोचर-रूप में लाने में कुशल है। ...मुहल' में उसने स्वतंत्रताप्रिय नव-...ों का अहिंसा के मार्ग से विचलित ...'क्रांति' के पथ का अनुसरण करने ...प्रवृत्ति का दिग्दर्शन कराया है। अपने ...आठवें उपन्यास 'अनुष्ठान' में उसने ...महायुद्ध के दिनों में ब्रिटिश नौकर-...द्वारा शान्ति-प्रिय देश-सेवकों की ...पकड़ और शिमला-सम्मेलन की ...ता के लिए उत्तरदायी राजनीतिक ...बाजियों पर प्रकाश डाला है।

...एक शिक्षित परिवार में घटित ...वाली कुछ थोड़ी-सी घटनाओं को ...पृष्ठभूमि बनानेवाले इस 'अनु-...' की नायिका 'रम्भा' नामक एक-...है, जो तितली-सी चंचल और ...रंगीन है। मेहता बाबू की पुत्री ...ससुराल से पहली बार मायके आई ...उसकी भाभी अचला जिसने रम्भा ...के समान पाला है, अब उसके साथ ...परिहास का कुछ अभ्यास करती ...श्रीमती मेहता अपनी पुत्री रम्भा, ...अचला, नौकरानी नीला और ...बेटी रूपा के साथ प्रयाग की प्रदर्शनी ...जाती हैं। वहाँ रंग-बिरंगी फुल-...के साथ भाँति-भाँति की आतिश-...का प्रदर्शन देखकर अभावों से घिरी ...यह समझ नहीं पाती कि आज ...के कोने-कोने में जब त्राहि-त्राहि ...हुई है, और बंगाल में लाखों आदमी ...मर रहे हैं, तो यहाँ यह सजधज और ...ठाट-बाट कैसे और क्यों? तभी ...रूपा के हाथों में दबा हुआ श्रीमती ...की खरीदी हुई चीजों का बंडल ...झटके में छीनकर चम्पत हो गया। ...मेहता ने भी नीला की गोदी से झटककर अपने नाती को ले लिया और अपना सारा गुस्सा बेचारी नीला की नौकरी पर उतारा। किन्तु रम्भा की उदारता और शालीनता का पहला सजीव परिचय यहीं मिलता है, जब वह अपने कौशल से मा को समझा-बुझाकर दूसरे दिन ही नीला को उसकी नौकरी पर वापस बुला लेती है।

मैट्रिक पास रम्भा के जीवन का एक नया अध्याय प्रारम्भ होता है, जब उसके पति कौशलकिशोर की इच्छानुसार उसे ग्रेजुएट होने के लिए कालेज में भेजा जाता है। श्रीमती मेहता समाज के उन कर्णधारों का प्रतीक बनकर हमारे सामने आती हैं, जो स्त्रियों को परावलम्बन की लौह-शृंखलाओं में सदा जकड़कर रखना चाहते हैं, किन्तु वे दामाद की इच्छा के आगे विवश हो जाती हैं। कालेज में अपनी सखी नलिनी के द्वारा रम्भा का परिचय अपने एक पत्रकार-साथी नरेश से होता है, और वह पत्रकार-कला सीखने के लिए उत्सुक हो उठती है। रम्भा को अपने भाई कृपाशंकर की अनुमति सहज में ही मिल जाती है, क्योंकि वे अपनी बहन को भारतीय नारियों के लिए अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करते हुए देखना चाहते हैं।

इसी बीच में मेहता-परिवार की नौकरानी 'नीला' बीमार पड़ जाती है और मा के द्वारा 'पत्थर की प्रतिमा' कहे जाने पर डा० कृपाशंकर नीला को देखने जाते हैं और वह कुछ ही दिनों में स्वास्थ्य-लाभ करती है। 'आवर्तन' नामक अपने संग्रह में लेखक ने इस प्रकरण को यत्न-पूर्वक काट-छाँटकर एक 'कहानी' का रूप दिया है, पर करुणा की स्वाभाविक 'अपील' के कारण वहाँ वह दुःखान्त है। इधर परीक्षाएँ समाप्त होने पर कौशल-किशोर जी रम्भा की विदा की बात चलाते हैं पर पत्रकार-कला की धुन में रम्भा अपनी भाभी की सहायता से उसे कुछ दिनों के लिए स्थगित करा देती है किन्तु उसके अन्तर की नारी इससे प्रसन्न नहीं हो पाती। रम्भा बड़े मनोयोग से 'जागरण' कार्यालय में पत्रकार-कला का अभ्यास करती है और कुछ ही दिनों में वह चुभती हुई सम्पादकीय टिप्पणियाँ लिखने लगती है, जो अधिकारियों की आँखों में खटके बिना नहीं रहतीं।

विदा का मुहूर्त्त आ पहुँचता है और कांग्रेस की चुपचाप सेवाएँ करने के अपराध में कौशलकिशोर लखनऊ स्टेशन पर भारत-रक्षा विधान के अन्तर्गत गिरफ़्तार कर लिये जाते हैं, जिसकी सूचना पाकर मेहता-परिवार में सर्वत्र विषाद छा जाता है; किन्तु देश-सेवा को जीवन का प्रमुख ध्येय समझनेवाली रम्भा अपने आँसुओं को पी जाती है। प्रायः दो सप्ताह पीछे रम्भा भी गिरफ़्तार कर ली जाती है। जब राष्ट्रीय विचार-धारा के पोषक जेलों में ठूँसे जा रहे थे, मेहता-परिवार को गर्व था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के अनुष्ठान में रम्भा और कौशल-किशोर दोनों ने क्रियात्मक सहयोग देकर परिवार का मस्तक ऊँचा किया है। घटना-क्रम तेजी से चलता है; हिटलर की जीवन-लीला समाप्त होने के साथ ही योरपीय युद्ध का अन्त होता है, देश के राजनीतिक दलों को एक नई शासन-परिषद् बनाने का आमंत्रण मिलता है, शिमला-सम्मेलन का आयोजन विफल होता है और कौशलकिशोर जिस दिन द्विरागमन के लिए आते हैं, उसी दिन रम्भा की रिहाई का शुभ संवाद मिलता है। दर्पण के सामने खड़ी हुई रम्भा और उसके पास ही शृंगारदान पर हँसते हुए गुलाब के दो फूलों से उपन्यास खुलता है और उन्हीं से उसका अन्त होता है--"भाभी, अब ये गुलाब के फूल उसी दिन मेरी अलकों में आँके जायँगे, जब स्वतंत्रता-प्राप्ति को हमारा अनुष्ठान पूरा हो जायगा--गुलाम भारत आजाद हो जायगा।"

स्वतंत्रता के इस 'अनुष्ठान' के सम्पूर्ण कलेवर पर विचार करने से यह स्पष्ट विदित होता है कि उसमें घटनाओं की बहुलता नहीं, प्रत्युत उपन्यास के अंग-प्रत्यंग में एक सुडौलता है। लेखक ने नारी-जीवन की अनुभूतियों को अपने कथा-साहित्य में विशेषरूप से तौला है। यौवन के प्रवेश-द्वार में ही जीवन की रंगीनियों से विराग दिखानेवाली 'अनुष्ठान' की रम्भा को भी लेखक ने एक कर्त्तव्य-परायण वीर नारी का बाना देकर कुछ ऐसा मोहक रूप प्रदान किया है कि उसका व्यवहार और उसके विचार पाठक के मन को मुग्ध किये बिना नहीं रहते। उपन्यास के चित्रों को मूकपट से 'वाकपट' बना देनेवाला कथोपकथन भी अपने संयत मन में 'अनुष्ठान' की कथावस्तु के क्रमिक विकास में सहायक होता है, किन्तु कतिपय प्रसंग अनावश्यक विस्तार पा गये हैं, जैसे 'टेली-प्रिन्टर' और 'मुद्रा-नीति' की चर्चा। हर्ष है कि 'अनुष्ठान' में लेखक की सुन्दर और स्वाभाविक भाषा-शैली, शुद्ध साहित्यिकता की ओर झुकते हुए कुछ और भी निखर-कर प्रकट हुई है। 'हवा के पंखों पर दिन, रात, सप्ताह, पक्ष और महीने जैसे उड़ते जा रहे थे', 'इस विषाद को कम करने की क्षमता न तो वर्षा की सुहावनी बूँदों में थी, न शीतकाल की गुलाबी ठंड में'--जैसे अलंकृत प्रयोग उपन्यास में बिखरे मिलते हैं। इस प्रकार 'अनुष्ठान' हिन्दी के आधुनिक राष्ट्रीय उपन्यासों के बीच एक विशिष्ट स्थान का अधिकारी है और हर्ष तो इस बात का है कि 'मस्त' जी का यह क्रान्तिकारी उपन्यास उपयुक्त अवसर पर प्रेस से बाहर निकला है, जब सचमुच हमारे स्वातंत्र्य-युद्ध का 'अनुष्ठान' पूरा हुआ और हम स्वतंत्र आकाश के नीचे स्वतंत्र भारतीय नागरिक रूप में साँस ले रहे हैं।

'मस्त' जी प्रगति-पथ के पथिक हैं; उनकी कला उत्तरोत्तर विकसित हो रही है। इसीलिए हमें भी उनसे भविष्य में कुछ अच्छी आशाएँ हैं।

* * *

मुक्तिदूत (एक पौराणिक रोमांस) लेखक, श्री वीरेन्द्रकुमार जैन एम० ए० प्रकाशक, श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय, मंत्री, भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुंड रोड, बनारस। मूल्य ४॥।)

अंजना और पवनंजय की प्रेम-कथा एक प्रसिद्ध पौराणिक आख्यान है। प्रस्तुत उपन्यास उसी आख्यान के आधार पर लिखा गया है। लेखक ने कथा की पौराणिकता की एक सीमा बाँध ली है। उसके बाद उसने वातावरण की अक्षुण्णता में कल्पना को मुक्त रखा है। कल्पना की गहराइयों में आकर जिस चीज को लेखक ने खोजा है, वह चाहे तथ्य न हो; किन्तु सत्यता से परे नहीं है। घटनाओं का तारतम्य बड़ा ही सुन्दर है। पवनंजय का अंजना के सौंदर्य के प्रति प्रबल किन्तु अचिर आकर्षण, अंजना के संबंध में अपने निरादर को लेकर पवनंजय की गलत धारणा, परिणय, विफल सुहागरात्रि, त्याग, आकुल-स्मृति, मिलन, विच्छेद, युद्ध, खोज, हनुमान्-जन्म, पुनर्मिलन आदि संबंधी बड़ा ही रोचक और रोमांचक वर्णन इस उपन्यास में किया गया है। कहना यों चाहिए कि 'मुक्तिदूत' पवनंजय के आत्म-विकास और आत्म-सिद्धि की आकर्षक कथा है। यह उपन्यास हिन्दी-साहित्य में अपने ढंग का अकेला है। पौराणिक कथाओं तथा घटनाओं के आधार पर लिखे गये श्रेष्ठ और सफल उपन्यास नहीं के बराबर हैं। यह उपन्यास अविभाज्य मानवता को जिस धर्म, प्रेम और मुक्ति का संदेश देता है, वह हृदय की अनुभूतियों का प्रतिफल है और इसीलिए उसका प्रतिपादन बहुत ही सीधे और सरल ढंग से हुआ है। पुस्तक का संपादन श्री लक्ष्मीचंद्र जैन ने किया है, जो साहित्य के उच्च कोटि के पारखी ही नहीं विद्वान् भी हैं। उपन्यास की छपाई-सफाई सुन्दर और आकर्षक है।

--चक्रपाणि, एम० ए०

* अनुष्ठान:--लेखक, पण्डित देवी-...चतुर्वेदी 'मस्त'; प्रकाशक नवजीवन ...मन्दिर, २१, सिनेगोग स्ट्रीट, ...।

हृदय-दाह ?

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर की व्यापक ख्याति अम्लता, उदर-वायु, हृदय-दाह, पेट दर्द, वमन, पित्त-प्रकोप तथा पाचन-सम्बन्धी शिकायतों से पैदा होने-वाले अन्य रोगों में प्रभावशाली होने की मान्य प्रमाण है।

उदर-विकारों से उत्पन्न सिरदर्द, उदासी, अनिद्रा और हृदय की तीव्र धड़कन में भी यह अमूल्य है।

यदि आप इनमें से किसी कष्टकारी रोग से पीड़ित हैं तो आज ही कुछ मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर लीजिए और इस प्रसिद्ध औषधि की शीघ्र सांत्वना का स्वयमेव अनुभव कीजिए।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर माँगते समय "एलेक्स सी० मेकलीन" के हस्ताक्षर पहचान लीजिए क्योंकि असली यही है।

मेकलिन ब्रांड स्टमक पाउडर सेवन कीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तीय ग्राम-सुधार-योजना

(पेज ८ का शेष)

बोरिंग कराई जायगी और ६,००० कुओं में रहट लगाये जायेंगे।

खाद

यद्यपि हमारे सूबे के किसान प्रायः सबके सब पशु पालते हैं, जिनके गोबर और मूत्र से अच्छी से अच्छी खाद तैयार हो सकती है, फिर भी हमारे खेतों में खाद की बड़ी कमी है। किसान गोबर के उपले बनाकर जला डालते हैं और जानवरों के मूत्र का तो कोई उपयोग ही नहीं करता। यही कारण है कि खाद की इतनी कमी है और उपजाऊ खेत भी ऊसर से दिखाई देते हैं। एक तरफ तो सरकार गोबर, मूत्र और कूड़ा-करकट से खाद तैयार कराने का आन्दोलन चला रही है, दूसरी तरफ रासायनिक खादों के वितरण की व्यवस्था भी कर रही है। प्रत्येक ऐसे किसान को जो ३०० घनफीट खाद जानवरों के गोबर-मूत्र और कूड़े-करकट आदि से बनायेगा दो रुपया इनाम किसी गाँव के किसान अगर सामूहिक रूप से ५ हजार टन खाद एक वर्ष में बना दें तो उन्हें ५०० रुपया इनाम दिया जायगा। इस प्रकार इनाम बाँटने के लिए सरकार ने ७५ हजार रुपया इस वर्ष मंजूर किया है। शहरों में म्युनिसिपैल्टियों को आर्थिक प्रोत्साहन दिया जा रहा है ताकि वे शहर के मल-मूत्रादि तथा कूड़े-करकट से कम्पोस्ट की खाद बनावें। यह खाद देहातों में बाँटी जाती है और देहाती किसानों को प्रायः केवल गाड़ी का महसूल देना होता है।

खली की खाद प्रान्त भर में बीज-गोदामों द्वारा बाँटी जायगी। इस वर्ष कुल ६ लाख मन खली की खाद बँटेगी। प्रत्येक जिले के लिए खली का कोटा निर्धारित हो चुका है। किसानों के घर यह खाद उसी दाम पर दी जायगी जिस दाम पर खरीदी गई है। रासायनिक खादों में अमोनियम सल्फेट बहुत उपयोगी खाद है। इस वर्ष २५ हजार टन अमोनियम सल्फेट की खाद कीमत खरीद पर किसानों में बाँटी जायगी। हड्डी की खाद भी प्रायः सारे सूबे में बाँटी जायगी। इस वर्ष एक हजार टन खाद बँटेगी। इस खाद की कीमत खरीद १५० रुपये टन है, किन्तु किसानों को केवल ६० रुपये टन के हिसाब से बँटेगी। हरी खाद के लिए ५० हजार मन सनई का बीज बाँटा जायगा।

बीज

जो बीज आज-कल खेतों में बोये जा रहे हैं वे बहुधा खराब हो चले हैं। गेहूँ के बीज के साथ-साथ जौ, मटर, चना, सरसों आदि अनेक बीज मिले होते हैं जो उपज पर बुरा असर डालते हैं। इतना ही नहीं, साधारण किसान जो गेहूँ बोता है उसकी यदि जाँच की जाय तो पता चलेगा कि उसमें कई प्रकार के गेहूँ के बीज हैं...कोई कम उपजनेवाले, कोई अधिक उपजनेवाले, कोई कम पानी चाहनेवाले, कोई अधिक पानी चाहनेवाले, कोई जल्द पकनेवाले, कोई देर से पकनेवाले। जाहिर है कि एक ही खेत में और एक ही आबहवा में विविध प्रकार के बीज समान रूप से नहीं उपज सकते। अब नये सिरे वे शुद्ध बीज पहुँचाने का प्रबन्ध किया जा रहा है।

बीज-गोदाम हम लोगों की उन्नति-संबंधी योजनाओं के केन्द्र होंगे। इन्हीं केन्द्रों से हम अपना कार्य प्रारम्भ कर रहे हैं। कृषि-विभाग की ओर से लगभग ७५० बीज-गोदाम थे। इस वर्ष इनकी संख्या कुछ और बढ़ा दी गई है। इनके अतिरिक्त कुछ बीज-गोदाम सहकारी समितियों की ओर से भी चल रहे हैं। बीज-गोदामों से बीज तथा खाद आदि का वितरण अब अधिकतर सहकारी समितियों को सौंपा जा रहा है। हर साल सैकड़ों नये बीज-गोदाम खुलेंगे और हजारों सहकारी समितियाँ बनें ताकि ग्रामीण जनता को बीज और खाद प्राप्त करने में कोई कठिनाई न हो सके।

वीर सावरकरजी की क्रान्तिकारी अमरकृति

१९०९ में लन्दन में प्रकाशित; किन्तु भारत में बन्द; अमरीका में १५०) रु० में एक प्रति बेची गई थी।

१८५७ का भारतीय स्वातन्त्र्य समर

अनुवादक—पं० ग० र० वैशंपायनजी

सचित्र, सजिल्द, पृ० ६०० मूल्य १२॥) रु०, १ अक्टूबर को प्रकाशित होगा। किन्तु १८ सितम्बर १९४७ तक ११) रु० डाक हुंडी से मनीआर्डर भेजनेवाले के पास रजिस्ट्री करके अपने खर्च से भेज देंगे।

प्राप्तिस्थान—निर्मल साहित्य प्रकाशन ६९३
बुधवार पेठ, पुणें २, (Poona 2)

आप सौन्दर्य का आकर्षण प्राप्त कर सकती हैं

पुरुष ने कहा, "यदि तुम्हें काश्मीर बुकेट द्वारा सौन्दर्य प्राप्त हो गया है तो मैं तुम्हारा चुम्बन सदैव लूँगा।"

काश्मीर बुकेट लिपिस्टिक से चेहरे पर एक नवीन आभा दौड़ जायगी क्योंकि उसमें सौन्दर्य बढ़ाने के गुण हैं। काश्मीर बुकेट में संयुक्त लैनोलिन से होठों में कोमलता रहती है यह उन्हें चिकना और नर्म रखता है। काश्मीर बुकेट लिपिस्टक घंटों तक ठहरता है।

काश्मीर बुकेट फूल के गुच्छों के लाल चूर्ण को इस्तेमाल कीजिए। इस चूर्ण से आपके चेहरे पर जवानी का रंग दौड़ जाता है। तब आप काश्मीर बुकेट की सुगन्धित शृङ्गारिक वस्तु से अपनी आभा को परिपूर्ण करें, क्योंकि सुगन्ध को पुरुष पसन्द करता है।

Cashmere Bouquet Products WITH THE FRAGRANCE MEN LOVE

Face Powder | Cold Cream | Perfume | Talc | Solid Brilliantine | Liquid Brilliantine | Vanishing Cream

CB 2

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

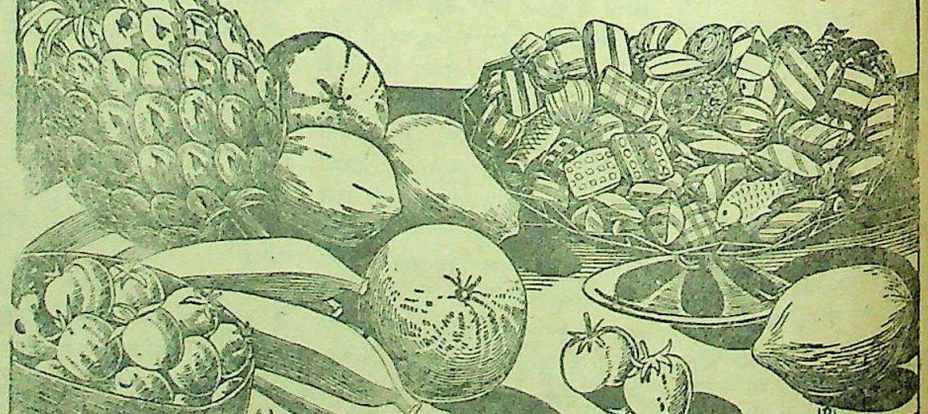

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंग-मंच

'कृष्ण-लीला'

भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं का सुन्दर चरित्र-चित्रण

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

विश्व के महान् पुरुषों का जीवन ... निराशापूर्ण ढंग से ही व्यतीत हुआ, ... जगत् के अन्य प्राणियों के लिए सहारा ... हुआ है, उनमें भगवान् श्रीकृष्ण ... भी अपना स्थान अद्वितीय रखते ... यों तो भगवान् श्रीकृष्ण की बाल-... कई बार रजतपट पर प्रदर्शित ... चुकी हैं; परन्तु गीतांजलि प्रोडक्शन-... 'कृष्ण-लीला' में यमुना-तट, वंशी-... मधुवन में गोप-गोपियों के साथ ... राधा और तरुण कृष्ण के पवित्र प्रेम ... झाँकी तथा रास-लीला का चित्रण ... गया है। कथा-लेखक श्री देवकी ... ने कहानी को इस भाँति प्रस्तुत ... है:—

ईश्वर की असीम कृपा से देवकी जी ... आठवें पुत्र, श्रीकृष्ण की जान ... है और अत्याचारी कंस मुँह ... रह जाता है। शनैः शनैः अट्ठारह ... व्यतीत हो जाता है। वृन्दावन ... गोप-गोपियाँ श्रीकृष्ण की मन-... —मुरली की तानों, यमुना-तट ... मधुवन की शीतल-चाँदनी में अपने-... भूल बैठती हैं। उन गोपियों ... राजा वृषभानु की पुत्री राधा, ... की तरह कूकती, तितली की भाँति ... तथा मयूर की तरह नृत्य करती ... धीरे-धीरे श्रीकृष्ण और राधिका ... प्रेम हो जाता है। राधिका जी, ... पर अपना सर्वस्व निछावर कर ... है—दीवानी हो जाती हैं। अभाग्य-... राधिका जी के पिता उसका विवाह ... जगह तय कर चुके थे; और एक ... राधा नेत्रों में अश्रु-बिन्दु और हृदय में ... प्रेम के अंश सहित अपने ससुराल ... है। ससुराल में वृद्ध सास एवं कुटिला ... होने पर भी राधिका अपने हृदय पर ... रखकर गृहस्थी चलाती है। अभाग्य ... भाग्यवश एक दिन राधिका जी ... हृदय में श्रीकृष्ण जी के पवित्र प्रेम ... अग्नि को बुझाने में असमर्थ ... लोक-लाज के बंधनों को तोड़कर, ... आकर, कृष्ण की लीलाओं एवं ... मधुर तानों में स्वयं को भूल ... है। वृन्दावन के अन्य लोग, ... प्रेम को कामुकता के रूप में लेकर ... की बातें करते हैं; परन्तु ... जी के पति में कोई परिवर्तन ... और राधिका जी को भी कोई ... नहीं कर पाता है।

... मथुराधीश कंस किसी भी ... श्रीकृष्ण को मृत्यु के घाट उतारने ... में रहता है; परन्तु उसको ... ही प्राप्त होती है। अन्त में ... होकर वह छल-कपट के ... अपने मंत्री, अक्रूर द्वारा

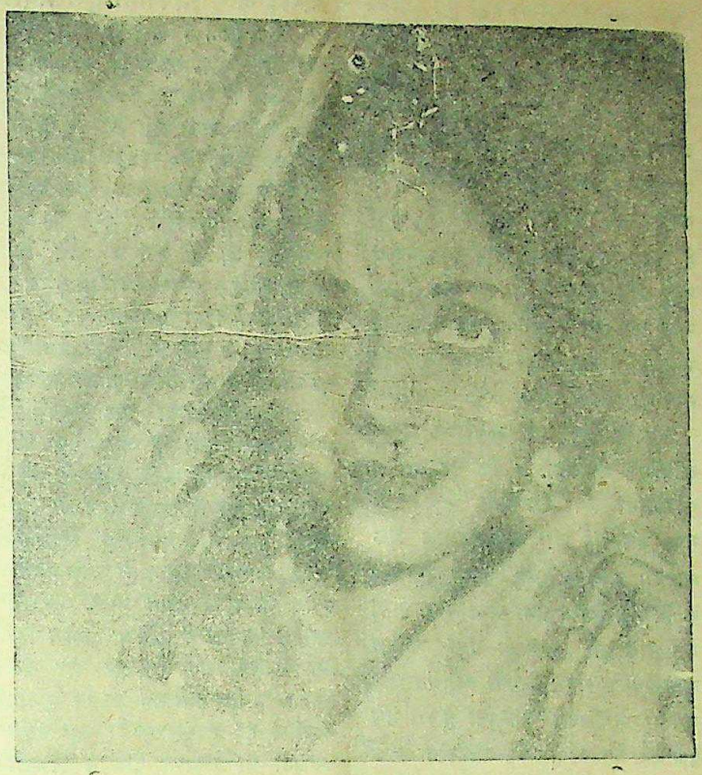

'कृष्णलीला' में राधा का अभिनय करनेवाली प्रसिद्ध अभिनेत्री काननबाला।

श्रीकृष्ण जी को, 'धनुर्यज्ञ' में निमंत्रित करके अपने साथ लाने के लिए भेजता है। इस समाचार से गोकुल में त्राहि-त्राहि मच उठती है। राधिका जी तथा गोपियों की दशा तो अत्यधिक शोचनीय हो जाती है; परन्तु भगवान् श्रीकृष्ण जी प्रेम के सम्मुख कर्तव्य को उच्चतम स्थान देते हुए निमंत्रण स्वकार कर लेते हैं। कृष्ण जी चले जाते हैं—गोपियों एवं ग्वाल-बालों को प्रेम की अग्नि में जलने के लिए। केवल कृष्ण जी के न होने के कारणवश राधिका जी को वह मधुवन, जमुना-तट एवं कुंजवन सुनसान प्रतीत होता है। कृष्ण के अभाव की पूर्ति राधिका के हृदय में धारित वंशी की मधुर टेक कृष्ण के रास-लीला की पूर्ति करती है। तत्पश्चात् राधिका जी के उपदेशामृत को सुनकर गोपिकाओं का जीवन धन्य हो उठता है। वे कृष्ण को ईश्वर का अवतार मानकर उनमें लवलीन होने की चेष्टा में संलग्न हो उठती है।

कहानीकार ने प्रत्येक स्थान पर अपनी प्रतिभा, भावुकता एवं सुन्दरता का परिचय दिया है। जिस भाँति प्रभात फिल्म-कृत 'गोकुल' में श्रीकृष्ण जी के कालीदह में गेंद के लिए कूदने की कथा तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत की गई थी—इस दोष से प्रस्तुत चित्र वंचित है। इसके साथ ही साथ किसी भी स्थान पर हमारे इतिहास, हमारी संस्कृति एवं सत्य का रक्तपात नहीं किया गया है। इसके लिए लेखक श्री देवकी बोस जी धन्यवाद के पात्र हैं। कहानी की भावुकता और आकर्षक वातावरण से प्रभावित होकर दर्शकगण भी अपने आप को भूल जाते हैं, जिस भाँति...। श्री नरेन्द्र तुली द्वारा लिखित संवाद निरर्थक, प्राणहीन, आकर्षक एवं भावुक हैं। आपने अपनी पूर्ण कुशलता का परिचय अन्त में दिया है। श्री फैयाज हश्मी तथा एम० एन० 'प्रान' के लिखे हुए गीत साधारण कोटि के हैं; परन्तु सुप्रसिद्ध कमलादास गुप्ता के संगीत-निर्देशन ने गीतों में और चार-चाँद लगा दिया है। सुन्दर, भावुक एवं आकर्षक साजों का प्रयोग किया है। मुरली बजानेवाले ने तो बस कमाल कर दिया है। श्री अजयकर जी का चित्रालेखन अत्यन्त सुन्दर, कलात्मक, भावुक एवं सफल है। रास-लीला का दृश्य अत्यधिक आकर्षक एवं कलात्मक है। नृत्यों में मौलिकता का अभाव है। कला-निर्देशक श्री चारु राय ने कला का महानतम सुदुपयोग किया है। आदि से अंत तक आदर्शवाद एवं प्रतीकवाद का चित्रण प्राप्त होता है। श्री अजयकर एवं राय जी इस सृजन के लिए अनेक बार साधुवाद के पात्र हैं। फोटोग्राफी तथा कला भी 'कृष्ण-लीला' की एक विशेषता है। श्री गौरदास जी का ध्वनि आलेखन सराहनीय है। श्री प्रहलाददत्त ने विशेष प्रभाव का कार्य कुशलता के साथ निभाया है। 'मेक-अप' स्वाभाविक, सफल एवं आकर्षक है। छाया-लेखन भी सुन्दर हुआ है।

अभिनय-कला की दृष्टि से सबसे सुन्दर, भावुक, कलात्मक एवं सफल कार्य, राधिका जी की भूमिका में कोकिल-कंठी कानन ने अभिनीत किया है। आपका संवाद कहने का ढंग तथा गीत कानों को प्रिय लगनेवाले एवं आकर्षक हैं। कृष्ण जी के रूप में प्रयाग-निवासी परेश बनर्जी ने अत्यधिक भावुक एवं प्रशंसनीय अभिनय का प्रदर्शन किया है। मथुरा जाने के समय आप पूर्णतया भगवान् श्रीकृष्ण प्रतीत हुए हैं। 'मेक-अप' कलात्मक होने के कारणवश आपके अभिनय में और भी चार-चाँद लग गए हैं। मुनि गर्ग के आवरण में बी० आर टंडन ने भी सराहनीय कार्य किया है। शेष पात्रों ने अस्वभाविक, कलात्मक निरर्थक एवं सुन्दर कार्य किया है।

कथा-लेखक एवं निर्देशक श्री देवकी बोस ने अपने वर्तमान चित्र 'कृष्ण-लीला' में कलात्मक, भावुक, आकर्षक एवं उच्च कोटि का दिग्दर्शन किया है। शृंगार-रस का चित्रण आपने अत्यधिक कुशलता के साथ चित्रित किया है। जिस भाँति भारतीय रजतपट के प्रमुख निर्देशक श्री व्ही शान्ताराम के चित्रों में अत्यधिक आदर्शवाद तथा प्रतीकवाद का चित्रण पाया गया है उसी भाँति आपके चित्र में भी। यद्यपि प्रस्तुत चित्र में मनोरंजन को कोई स्थान नहीं दिया गया है; परन्तु जिस रूप में श्री देवकी बोस ने दिग्दर्शित किया है, वह आकर्षक, उन्मादक एवं ब्रह्मानन्द में डुबो देनेवाला है। आपका आगामी आकर्षण "मेघदूत" है।

अन्त में मैं श्री देवकी बोस को उच्चकोटि, कलात्मक, भावुक एवं प्रथम श्रेणी का चित्रपट दिग्दर्शित करने के लिए हृदय से बधाई देता हूँ। आशा है वे इसी तरह हमारे सम्मुख 'देवकी-शान्ता' के रूप में आकर जनता को कला का पान कराते रहेंगे। क्यों? 'कला' जनता के लिए है। जो यह नहीं स्वीकार करता वह अमानव है।'

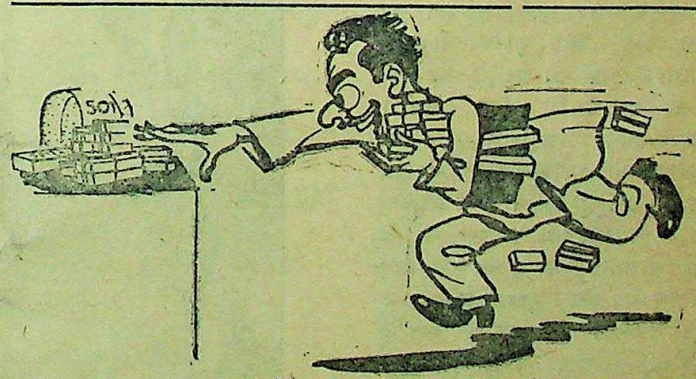

साबुन संचय करनेवाले को, साबुन को कहीं भी देख पाने पर, स्वगामी प्रतिकार यही होता है कि जितना भी साबुन मिल सके संचय किया जाये। परन्तु आपको केवल उतना साबुन मोल लेना चाहिए जितना कि आपकी आवश्यकता को पूरा कर सके। इस प्रकार आप एक अच्छे नागरिक का कर्त्तव्य निबाह लेंगे।

हमाम और ५०१ साबुन

दी टाटा आइल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमाणु बम और विश्व-शान्ति

(पेज ७ का शेष)

जोर यह समझकर दिया गया था कि विश्व - शान्ति-स्थापना, जो कि अत्यन्त आवश्यक है, के लिए 'पाँच बड़े' राष्ट्रों का सहयोग सबसे ज्यादा उच्च महत्त्व रखता था और यह 'वीटो' हटाये जाने पर संभव नहीं था। यह भी ख्याल प्रकट किया गया था कि संसार की आज की परिस्थिति का ख्याल करते हुए "वीटो" हटाने का अर्थ था सब "वीटो" अमेरिका के साथ सौंपना; क्योंकि इसमें शंका नहीं कि अमेरिका आज सबसे शक्तिशाली देश है। और रूस के सरीखे कतिपय राष्ट्रों को छोड़ कोई भी उसका प्रतिरोध नहीं कर सकता था। ऐसी हालत में अमेरिका जो भी चाहता, कर सकता था। वह संसार के सब ऐसे पदार्थों पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर सकता था, जो परमाणु बम-निर्माण में उपयुक्त होते हैं। वह मनमाने ढंग से चाहे किसी भी देश के आन्तरिक देश के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप कर सकता था। हर एक बात में अमेरिका की ही तूती बोलती। रूस को इससे सबसे अधिक खतरा था क्योंकि यह किसी से भी छिपी नहीं है, चंद पूंजीपतियों की इच्छामात्र है, जो एक समाजवादी व्यवस्थावाले राष्ट्र के लिए कभी भी लाभकर नहीं हो सकता था। "वीटो" के हटने से अमेरिका स्वतंत्र हो जाता। परमाणु बम बनाने की विधि जिसे चाहता कहता या नहीं कहता। चाहे इस बड़ी शक्ति का उपयोग वह लड़ाई ही के लिए करता। आखिर इसे रोकनेवाला कौन था? इस तरह यह निश्चय है कि "वीटो" हटने से मानवता को बहुत बड़ा धक्का लगने का अन्देशा रहता। यहाँ पर यह भी लिख देना अनुचित नहीं होगा कि आज की दुनिया में जितने भी राष्ट्र हैं उनमें सबसे अधिक सामर्थ और साधन अमेरिका के ही हैं कि वह इस क्षेत्र में दुनिया की बहुत सहायता कर सकता है और नुकसान भी। ऐसे बलशाली हाथी के सर से यह कभी सम्भव नहीं था कि अंकुश ('वीटो') हटाया जाय। (जहाँ तक अमेरिका का कड़ा निरक्षण का सवाल था उस पर रूस राजी ही नहीं था। वह इस बात की आवश्यकता भी समझता था कि विश्व में शान्ति तथा सुरक्षा के लिए परमाणु बम तथा परमाणु-शक्ति पर पूरा नियंत्रण रहे। वह इस बात के लिए भी तैयार था कि उक्त संघ को किसी देश के कारखानों की जाँच-पड़-ताल करने का अधिकार दिया जाय। उसे इस बात का डर था कि कहीं उक्त अधिकार का दुरुपयोग न हो। इसलिए उसने यह माँग की कि संघ के अधिकार स्वच्छन्द न रह, स्पष्ट रहें ताकि दुरुपयोग करने की सम्भावना एक-दम न रह जाय। (इस तनातनी के बावजूद अभी अमेरिका ने परमाणु बम का उत्पादन रोका नहीं है। ईश्वर जाने विश्व-शान्ति तथा सुरक्षा के लिए उसका प्रयोग करने का उद्योग उस देश में हो रहा है या नहीं। रूस ने यह प्रस्ताव किया कि उक्त बम का उत्पादन एकदम बन्द कर दिया जाय; क्योंकि अब जब कि युद्ध बन्द हो गया है, परमाणु बम की कोई आवश्यकता नहीं और स्टाक में जो बम बचे हैं उसे नष्ट कर देना चाहिए; अगर उसका उपयोग मानवता की भलाई के लिए नहीं हो सकता तो।

इसके उत्तर में अमेरिका अपना अधिकार समझता है कि वह रूस के कारखानों तथा सामरिक महत्त्व के गुप्त स्थानों की जाँच-पड़ताल शुरू कर दे। और तुर्रा यह कि वह उस बम के निर्माण-विधि तथा अन्य गुप्त बातों का राज भी रूस से नहीं कहना चाहता। रूस इसे अपनी स्वतंत्रता की मर्यादा के विरुद्ध समझता है। उसे इस बात का डर है कि अमेरिका उसके देश की जाँच-पड़ताल कर, बारूद आदि कारखानों तथा अन्य गुप्त बातों को जान लेने के बाद परमाणु बम की निर्माण-विधि भी नहीं कहेगा। तब अमेरिका आगामी युद्ध में रूस के सामरिक महत्त्व के स्थानों पर आसानी से बम-वर्षा कर उसे नष्ट कर दे सकता है और आगे उसे उल्लू बनना पड़ेगा।

दोनों महाराष्ट्र एक-दूसरे को शंका की नजर से देखते हैं और यही बात इस समस्या को जटिल बनाये हुए है। अभी गत जून में ही राष्ट्र-संघ की बैठक में यह मामला पेश हुआ था, लेकिन इसका कोई हल रोशनी में नहीं आया है।

मीरांबाई और गोस्वामी तुलसीदास

(पेज ६ का शेष)

घूमने की अवश्य मनाही की गई होगी। इसी कारण उसके देवर, देवरानी, ननँद आदि उसको कष्ट देते रहे होंगे। यह कष्ट-समय सं० १५८४ और सं० १५९१ के बीच रहा होगा। इस समय के लिए ऊपर ही निश्चत हो चुका कि वह तुलसीदास जी को क्यों व कैसे पत्र लिखती जो इस समय तक पैदा ही हुए थे। यदि मीरां ने मेड़ता से भी सं० १६०१ से सं० १६१३ के बीच अपने पीहरवालों से तंग आकर यह पत्र लिखा हो तो भी यह मानने में नहीं आता। इस वक्त तक भी तुलसीदास जी ने जवानी में पैर रक्खा ही था। यों उसके पीहर की ओर से उसे भजन-कीर्त्तन आदि करने की कोई रुकावट नहीं थी। हाँ, वहाँ लगातार के युद्धों के कारण अवश्य ही उसके भजन-कीर्तन में बाधा पड़ती होगी, लेकिन उसने इसका पत्र में कुछ भी उल्लेख नहीं किया। मीरां सं० १५९१ और सं० १६०१ के बीच तथा सं० १६१३ के बाद तीर्थों में ही घूमती रही[1]। वहाँ उसके 'स्वजनों' की छाया भी दुःख न देनेवाली थी। इस प्रकार मीरां के पत्र में उल्लिखित कष्ट कम ही ठीक जँचते हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि किसी मीरां-भक्त ने बाद में मीरां के जीवन की कुछ कथाएँ सुनकर यह पद पत्ररूप में लिख दिया हो।

अब तुलसीदास जी के पत्र को भी देखिए। तुलसीदास जी के यह पत्ररूपी पद कवितावली और विनय-पत्रिका में संग्रहीत हैं। कवितावली मुक्तक काव्य है; अतः प्रत्येक पद स्वतंत्र है। बहुत से लेखक कवितावली को तुलसीदास जी के फुटकर पदों का उनके किसी शिष्य का किया संग्रह मानते हैं। विनय-पत्रिका के सम्पूर्ण पद उन्होंने पत्र-रूप राम जी के लिए लिखे थे। मीरां के पत्र उत्तर में वह पद किसी भी दशा में जाते नहीं माने जा सकते हैं। यदि सचमुच में उत्तर है तो हमें यही पड़ेगा कि तुलसीदासजी पत्र का ही नहीं देना जानते थे। यह बात 'मानस' तथा 'विनयपत्रिका' के कवि लिए कैसे मान सकते हैं? तुलसीदास मीरां को उत्तर में प्रणाम का आशी तक न दें यह मानने में नहीं आता। इस पत्र में उन्होंने मीरां को क्या उपदेश या परामर्श दिया। ऐसा ज्ञात है कि मीरां को उन्होंने घर-बार, संबंधियों आदि को छोड़ने के साथ ही 'गिरधरलाल मिताई' छोड़कर 'नेह राम सों' को अपनाने के लिए कहा शायद श्रीकृष्ण के बदले अब श्री उसके सब कष्टों को दूर करेंगे। मीरां भी उनकी शिक्षा मान 'मेरे गिरधर गोपाल दूसरो न कोई' को देगी? कवितावली का सवैया भी प्रकार मीरां के पत्र का उत्तर प्रतीत होता है। सच बात तो यह है कि तुलसीदास जी ने यह पद पत्ररूप में स्वप्न में मीरां के लिए नहीं लिखे थे।

अतः यह हवाई कल्पना 'मूल गोसाईं-चरित' के रचयिता श्री वेणीमाधवदास तथा 'रामरशिकावली' के रचयिता नरेश रघुराजसिंह बघेल की ही 'मूल गोसाईं-चरित' के अनुसार हितवंश जी तथा सूरदास जी ने भी अपनी रचनाएँ आशीर्वाद माँगने के लिए तुलसीदास जी को दिखाई थीं। लेकिन प्रमाणों से यह सिद्ध हो चुका है कि भी घटनाएँ कोई वास्तविकता नहीं हैं। इन सब वार्ताओं पर विचार पर हम इसी तथ्य पर पहुँचते हैं मीरां और तुलसीदास जी के बीच पत्र-व्यवहार नहीं हुआ था।

१ लेखक का लेख:—मीरांबाई की मृत्यु कबहुई? देशदूत, वर्ष ८, संख्या ३३, पृ० १२ व १८।

क्या तुम अपने श्वास के कारण उसको (पुरुष को) चुम्बन देने से डरती हो?

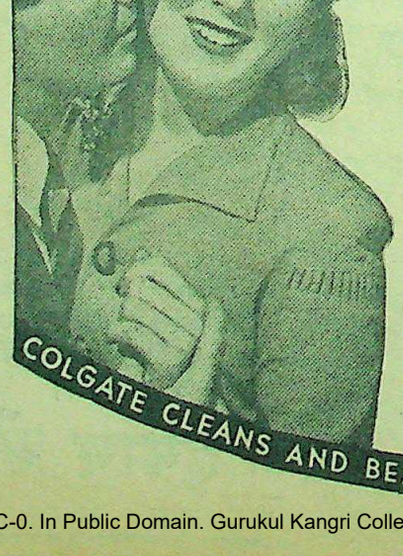

वह प्रेमपूर्ण शब्दों में बातें करता हुआ तुम्हारे पास झुकता है। परन्तु तुम्हें यह कैसे निश्चय हो सकता है कि तुम्हारा चुम्बन उसे प्रसन्न करेगा? क्या तुम्हें निश्चय है कि तुम्हारी श्वासें मीठी और ताजी हैं। याद रखिए १० व्यक्तियों में ७ की श्वास बुरी होती है जिनको वह स्वयं नहीं जानते।

इसलिए चौकन्ना रहना चाहिए। कोलगेट डेंटल क्रीम को इस्तेमाल कीजिए। इसके घुसनेवाले फेन आपके दाँत की दरारों के बीच घुसकर कीटाणुओं और सड़े खाने के अंशों को जो अत्यन्त बुरी श्वास, मैले दाँत, सूजे मसूड़ों और दाँतों के सड़ने के कारण हैं, को दूर कर देते हैं। कोलगेट से दाँत अच्छी तरह और सुन्दरता के साथ साफ होते, मसूड़े स्वच्छ तथा श्वास मीठी होती है।

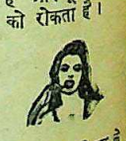

दाँतों के डाक्टर कोलगेट की सिफारिश करते हैं, क्योंकि वह दाँतों को साफ करता है और दूषित कणों को रोकता है।

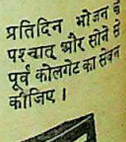

प्रतिदिन भोजन के पश्चात् और सोने से पूर्व कोलगेट का सेवन कीजिए।

कोलगेट दाँतों को स्वच्छ और सुन्दर बनाता है...श्वास को मधुर करता है।

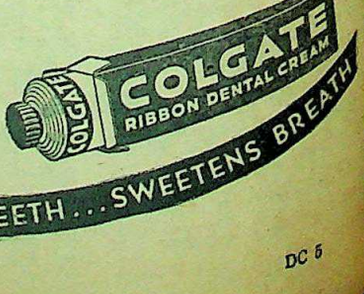

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

...णार्थियों को काम पर लगाओ

हरिद्वार से पंडित चिरंजीवलाल ... प्रधान मंत्री पीड़ित हिन्दू सहायक ... लिखते हैं—

पंजाब तथा सीमाप्रान्त के लाखों ...र्थी हरिद्वार तथा युक्तप्रान्त ...य शहरों में पहुँच गये हैं। इनमें ...रों ऐसे युवक हैं, जिन पर कोई ...देश या जाति गर्व कर सकती है! ...तक जो लोग लाखों में खेलते थे ...पैसे-पैसे को मोहताज हो गये हैं। ...बल, साहस तथा कर्मशीलता ...किसी से भी कम नहीं; परन्तु ...वही भाग्यचक्र से दूसरों की दया ...आश्रित हैं। दो कपड़ों के साथ ये लोग ...जानें लेकर आ रहे हैं। आज ...काम के लिए मारे-मारे फिरते हैं। ...उन्हें कोई काम नहीं मिलता। ...होकर इनमें से कितने ही कुलियों ...काम करने के लिए भी तैयार हो ...हैं। यदि इस समय रणवीर युवकों ...और मदद को हाथ न बढ़ाया गया ...जाति की यह धरोहर सम्पत्ति सदा ...लिए नष्ट हो जायेगी। इस समय ...युवक हिन्दू-समाज का एक शक्ति- ...और प्रगतिशील अंग बन सकते ...कल को भगवान् जाने इनकी ...पुरियाँ उन्हें क्या क्या करने पर ...कर दें?

...मेरे पास पीड़ित हिन्दू नवयुवकों के ...प्रार्थनापत्र आये हुए हैं, जो ...भी प्रकार का काम करने के लिए ...हैं। इनमें पढ़े-लिखे योग्य तथा ...घरानों के युवक भी हैं। ...लोगों ने अत्याचारों के पहाड़ों का ...से मुकाबला किया है। भविष्य ...वे देश और जाति पर आये किसी ...का मुकाबला करने को तैयार ...जो मुसीबतें और अत्याचार इन ...ने देखे हैं। इतिहास में इनका ...शायद हलाकू और चंगेज के ...में ही मिलता होगा।

...दुनिया के आधुनिक इतिहास में ...अत्याचारों की दूसरी मिसाल ...मिलती। इन व्यक्तियों में देश, ...और धर्म के लिए अपार, अथाह ...भरा पड़ा है। वे कुछ कर ...के लिए केवल अवसर चाहते ...यदि इस समय भी हमने इनके ...सहानुभूति न दिखाई तो वे निराश ...जायेंगे। सम्भव है वही नवयुवक ...निर्माणात्मक कार्य करने के ...उत्साह से भरे हैं कल की विध्वं- ...कार्य करने पर बाधिक हो जायें। ...में भारत की केन्द्रीय सरकार ...युक्तप्रान्त और पूर्वी पंजाब की ...से अपील करूँगा कि वे इन वीर ...को पुलिस और फौज में भर्ती ...इन लोगों की जो फौज बनेगी वह ...ही अदम्य होगी। शेष लोगों को ...मिलों, दफ्तरों तथा खेती- ...कामों में लगाया जा सकता है। ...इस नाजुक घड़ी में कारखानेदार ...तथा बड़े-बड़े साहूकार जरूरत को पूरा करके देश के प्रति अपना कर्त्तव्य पूरा कर सकते हैं। इतने बड़े देश में कुछ लाख वीर पुत्रों को खपाना कोई बड़ी बात नहीं। मुझे विश्वास है कि मेरी अपील बहरे कानों पर नहीं पड़ेगी। यदि आपको किसी भी काम के लिये आदमी की आवश्यकता हो तो आप मुझे लिखें, मैं आपको उत्साही आदमी दे सकता हूँ।

कालाकाँकर (अवध) की हिन्दी-समिति ने सर्व-सम्मति से निम्न प्रस्ताव स्वीकृत किया है।

युक्तप्रान्त के गवर्नर के पद पर श्रीमती नायडू की नियुक्ति से इस प्रान्त के निवासियों को बड़ी-बड़ी आशाएँ थीं और हैं भी; परन्तु उनके प्रेस कान्फ्रेंस में भाषण-संबंधी वक्तव्य से इस प्रान्त के निवासियों को बड़ी ठेस पहुँची है। ऐसे विचारों से युक्तप्रान्त ही नहीं, सारा भारतवर्ष विशेषतया मुस्लिम संस्कृति का केन्द्र बन गया है। पाकिस्तान इन्हीं विचारों का फल है। सर सप्रू यदि उर्दू के विद्वान् हैं और गवर्नर महोदया स्वयं अँगरेजी की विदुषी एवं कवि हैं तो इससे सारा देश उर्दू या अँगरेजी के बोझ से नहीं दबाया जा सकता। बंगाल के नजरुल इस्लाम को बँगला-भाषा का श्रेय तभी सार्थक हो सकता था जब कि बंगाल के टुकड़े-टुकड़े न किये गये होते। उर्दू को देश की प्रभावशाली भाषा कहने का प्रमाण गवर्नर महोदया के पास नहीं है। जबकि हिन्दू-संस्कृति का कोई अंश उर्दू में नहीं है तब हिन्दुओं के लिए इसका पढ़ना या अपनाना क्योंकर अनिवार्य कहा जा सकता है। जब कि प्रान्त की अधिकांश जनता हिन्दी भाषा-भाषी है और देवनागरी लिपि का प्रयोग करती है।

गवर्नर साहबा को 'हैदराबादी उर्दू' की हिमायत छोड़कर हिन्दी की कोमलकांत पदावली की ओर ध्यान देने की कृपा करनी चाहिए। हिन्दी-समिति को आशा है कि दूसरे वक्तव्य में भाषा-संबंधी दूसरे विचार प्रकट करते हुए हिन्दी का समर्थन और प्रान्त के निवासियों की भावना का सम्मान करेंगी। —संवाददाता

मथुरा के व्रज-साहित्य-मंडल के तत्त्वावधान में व्रज-लोक-संस्कृति-शिक्षण-शिविर बिड़ला गीता-मन्दिर में ७ सितम्बर से २२ सितम्बर तक मनाया जा रहा है। —संवाददाता

पचमढ़ी में कजलियों के उपलक्ष में एक विराट् जुलूस अखाड़ा सहित निकाला गया। इस वर्ष वृष्टि के कारण अखाड़े उठाने में कुछ ढील दिखाई दी और ऐसी आशा थी कि इस वर्ष अखाड़ा नहीं उठेगा। वहाँ के उत्साही नवयुवक कार्यकर्ता श्रीमान् बाबू टेकराज जी, श्रीमान् गयाप्रसाद जी साहू, श्रीमान् कुंजीलाल जी जैन और श्रीमान् प्रेमनारायन जी जायसवाल के प्रयत्न से अखाड़ा निकला।

जुलूस नगर के चारों ओर घूम श्रीमान् वकील एम० एल० पवार के सामने एकत्रित हुआ। वहाँ के मैदान में वहाँ के प्रमुख पहलवान तथा कुश्तियों में दिलचस्पी लेनेवालों की कुश्तियाँ हुईं। जिनमें श्रीमान् प्यारेलाल उस्ताद, श्रीमान् गूँगा ब्रह्मचर्य, श्रीमान् मुरारीलाल हरिजन, श्रीमान् सत्तीदीन साहू, श्रीमान् लाला रामलौहार और श्रीमान् पंडित भागीरथ की कुश्तियाँ देखने योग्य थीं। हर वर्ग की महिलाओं का कजलियों सहित, एक जुलूस कजलियों के गान गाते हुए नदी पहुँचा और वहाँ कजलियों के सिराने की रस्म अदा की।

रात्रि के ७॥ बजे सब वर्ग के लोग गले से गले मिले। इस अवसर में हिन्दू, मुसलमान, हरिजन, सिक्ख सबने भाग लिया और हर जगह बड़ी रवादारी से काम लिया। एक दूसरे का जगह जगह स्वागत किया गया। —संवाददाता

वृन्दावन, प्रेम महाविद्यालय, वृन्दावन के इंजीनियरिंग कालेज के समस्त छात्रों ने हड़ताल कर दी है। यह कालेज अब मथुरा वृन्दावन रोड पर बने हुए प्रेम नगर में चला गया है, छात्रों की दस माँगें हैं। उन्हें वहाँ पर काफी तकलीफ है। विद्यालय के गवर्नर राजा महेन्द्रप्रताप जी तो छात्रों की सारी बातें मानने को तैयार हैं? पर अर्थाभाव से तथा ट्रस्टियों का पूर्ण सहयोग न मिलने से राजा साहब भी असमर्थ हैं।

वृन्दावन के राधावल्लभ जी के मंदिर के एक विलास वंसी सेवा करनेवाले पुजारी गोस्वामी रूपलाल जी मंदिर में से एक ताँबे का बड़ा घड़ा उठाकर ले गये। यह घड़ा झबुआवाली रानी साहबा ने ठाकुर जी की सेवा के लिए दिया था। इसी प्रकार इससे पहले भी यही गोस्वामी रूपलाल जी मंदिर से एक चाँदी का घड़ा भी चुराकर ले गये थे, जिसकी कि डिगरी भी अदालत से आप पर हो गई है। इसी प्रकार एक बार दो बिजली के पंखे भी मंदिर से उठाकर ले गये, इससे और सब गोस्वामी लोग परेशान हैं। आशा है प्रान्तीय सरकार और जूडिसियल सेक्रेटरी इस ओर ध्यान देंगे। —संवाददाता

देवप्रयाग गत मास १९ अगस्त को टिहरा में प्रजा-मंडल के जितने भी कार्यकर्ता गिरफ्तार किये गये थे, अब केन्द्रीय प्रजा-मंडल के प्रधान श्री परिपूर्णानन्द पैन्यूली के अतिरिक्त सभी कार्यकर्ता २९ अगस्त को बिना शर्त जेल से रिहा किये गये हैं।

देवप्रयाग तथा उसके आस-पास की पट्टियों में वृष्टि न होने से चावल, मकई की फसल बुरी तरह से नष्ट हो गई है, फलस्वरूप सारे इलाके में भारी दुष्काल की संभावना हो गई है। गत कई माह पूर्व से देवप्रयाग में नमक रुपये का तीन-चार सेर से ज्यादा नहीं मिल रहा है, जिससे लोगों में हाहाकार मचा हुआ है। —संवाददाता

ग्वालियर राज्य के लोकप्रिय मंत्री, श्री तख्तमल, श्री छन्नूलाल, श्री राधेलाल व्यास, श्री गोखले को स्थानीय नूतन प्रकाशन मन्दिर की ओर से उनके स्वागतार्थ निमंत्रित किया गया। उपरोक्त सज्जनों के अतिरिक्त ग्वालियर राज्य स्टेट कांग्रेस के अध्यक्ष श्री लीलाधर जोशी तथा मंत्री श्री यशवन्तसिंह कुशवाह, डा० क्राउडे डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल आफ फीमेल एज्यूकेशन, श्री नरेन्द्र मालवीय सम्पादक, प्रजापुकार तथा जयाजीप्रताप सम्पादक, श्री रामप्रसाद भी पधारे। नूतन प्रकाशन मन्दिर के व्यवस्थापक श्री महावीरप्रसाद सक्सेना ने निमंत्रित सज्जनों का स्वागत किया। तत्पश्चात् जलपान एवं हार फूलों से उपस्थित सज्जनों को अभिनंदित किया गया। —संवाददाता

पिलानी (जयपुर) में हिन्दी-साहित्य-समिति एक प्रमुख स्थान बनाये हुए है। स्वतंत्रता-दिवस की सफलता का श्रेय इसी के कार्यकर्ताओं को दिया जायेगा। अभी अभी जैनेन्द्र जी यहाँ पधारे थे, समिति की ओर से उनका स्वागत हुआ। आपने 'प्रगतिवाद' पर भाषण दिया। प्रश्न पूछे गये। हास्य और विनोदपूर्ण उनके उत्तर रहे।

'तुलसी' एवं 'रवीन्द्र जयन्ती' भी समिति के तत्वावधान में मनाई गई। कविता-पाठ, गायन भाषण हुए। —संवाददाता

जोधपुर में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के आदेशानुसार कुमार साहित्य-परिषद् के तत्त्वावधान में धूम-धाम से हिन्दी दिवस मनाया गया। प्रस्तावों द्वारा स्वाधीन भारत की राष्ट्राभाषा हिन्दी का प्रबल समर्थन किया गया। संयोजक श्री नेमिचन्द्र जैन थे। —संवाददाता

बालों को स्वस्थ और सुंदर रखता है
Vaseline POMADE
कोमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।
वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।
सभी दूकानों पर
Copyright.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी रेडियो की चिट्ठी

यह आल इण्डिया रेडियो है

हिन्दी के प्रति अब भी विरोध जारी है

[हम रेडियो के सुननेवालों तथा अन्य हिन्दी भाषियों से अनुरोध करेंगे वे इस संबन्ध की खबरें हमें भेजते रहें तथा अपने सहयोगी पत्रों से निवेदन करेंगे कि वे इसका अधिक से अधिक प्रचार करें। रेडियो हमारे सांस्कृतिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है—संपादक]

मिस्टर सोमनाथ चिब कौन हैं ?

मिस्टर बुखारी चले गये। हिन्दी-वालों ने चिराग जलाये और सम्मेलन-वाले अपनी इस विजय पर कुम्भकर्णी नींद में सो गये। रेडियोवालों ने चन्द हिन्दी के शब्द अपना लिये और जय हिन्द के नारे लगाये तो हम खुशी से फूल उठे। किन्तु बुखारी के एजेन्ट दिल्ली में बैठकर कैसे सतरंज के खेल खेल रहे हैं यह कोई नहीं जानता। वहाँ एक केन्द्रीय सलाहकारी समिति बनाई जा रही है और यह गुट कोशिश कर रहा है कि उसमें उनके अपने आदमी रहें। यह गुट हिन्दी के विशेषज्ञ नियुक्त कर रहा है तो ऐसे लोगों को जो कि उनका विरोध न कर सकें। इस गुट के मुखिया हैं मिस्टर सोमनाथ चिब! बुखारी के प्रिय शिष्य और.....!!

मिस्टर चिब कौन हैं यह आप भी जान लें। आक्सफोर्ड प्रेस से भारत की भाषा-समस्या पर एक पुस्तक छपी है:—Language, Universities and Nationalism in India इस पुस्तक में यह बताने की चेष्टा की गई है कि राष्ट्रभाषा उर्दू होनी चाहिए और उसके लेखक मिस्टर सोमनाथ चिब हैं।

जब लखनऊ-रेडियो में हिन्दी को उचित स्थान दिलाने का प्रश्न उठा तो यह चिब साहब वहाँ उस आन्दोलन को दबाने के लिए भेजे गये थे। वह दावे के साथ कहते थे कि उन्हें हिन्दी-भाषियों की कोई आवश्यकता नहीं है।

कलकत्ते में इन्हीं महाशय ने हमारी बहनों का अनादर किया था जिसके विरोध में कि रेडियो में हफ्ते भर हड़ताल रही और उन्हें वहाँ से हटा दिया गया था। इन्हीं स्टेशन डाइरेक्टर ने कलकत्ते में वन्देमातरम् के रिकार्डों को तोड़कर कहा था कि यह रहा तुम्हारा राष्ट्रीय गीत।

जब सम्मेलन ने रेडियो का बाइकाट किया था तो बुखारी ने मिस्टर चिब को इधर-उधर आन्दोलन दबाने के लिए भेजा था। वह लोगों से कहते फिरते थे कि यह टंडन जी का पागलपन है। हमारा सुझाव तो यही है कि मिस्टर चिब सरीखे अधिकारियों को तुरंत रेडियो से हटा दिया जाना चाहिए।

मिस्टर चिब और उनके साथी दिल्ली-रेडियो को उर्दू का गढ़ बनाने जा रहे हैं। इसीलिए अभी तीन उर्दू भाषी सज्जनों का तबादला लखनऊ से दिल्ली किया गया है। उनके गुट के एक स्तंभ लखनऊ के प्रोग्राम इक्जीक्यूटिव हैं, जो कि प्रयाग-विश्वविद्यालय के ग्रेजूयेट होने का दम भरते हैं, पर वास्तव में बुखारी साहब के एजेन्ट हैं। ऐसे विभीषणों को जितनी जल्दी हटाया जा सके उतना ही उचित है। लखनऊ स्टेशन का डाइरेक्टर कोई हो, इसमें हमें कोई आपत्ति नहीं है। किन्तु ९९ प्रतिशत व्यक्तियों का

(पेज ५ का शेष)

तथा लुप्त हो जायेंगे। अब हमें इस कथन की वास्तविकता प्रत्यक्ष रूप से देखनी है। यह सच है कि साम्प्रदायिक भेद का यह विषवृक्ष तुरन्त निर्मूल होना कठिन है, उसका परिणाम कुछ समय तक जारी रहेगा परन्तु पुरानी अप्रिय घटनाओं को भूलकर यदि परस्पर सम्पर्क, आदान-प्रदान तथा सहयोगी कार्य-प्रणाली आदि के द्वारा मित्रता का संबंध बढ़ाया गया तो कोई कारण नहीं कि प्रस्तुत कटुता की मात्रा कम न हो। साथ ही यह भी आवश्यक है कि हमारी राष्ट्रीय नीति सच्चे माने में जोरदार और तेजपूर्ण हो। जब तक पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति तथा विदेशी सत्ता का लोप नहीं हुआ था, तब तक किसी हद तक उदार और पक्षपात-पूर्ण नीति का अवलम्बन क्षम्य माना जा सकता था किन्तु अब तो वह कदापि क्षम्य नहीं। कानून, व्यवस्था और शान्ति की चिरस्थायी स्थापना से ही हमारा राष्ट्र उन्नति की योजनाओं को कार्यान्वित करके बलशाली और प्रतिकार-क्षम्य हो सकता है। जो स्वतंत्र भारत के नागरिक होकर भी उसके विधान और सरकार के प्रति ईमानदार नहीं; और जो अब भी साम्प्रदायिक अशान्ति पैदा करने में संलग्न हैं, उनका हर प्रकार से कठोर दमन करना ही उचित है। शान्तिमय हितोपदेशों की भी कोई सीमा होती है; यह हम केवल जातीय दृष्टि से नहीं, बल्कि पूर्ण राष्ट्रीय दृष्टि से ही कह रहे हैं। हमारे मत में स्वतंत्र भारत को संगठित और बलशाली बनाना ही आज की आवश्यकता है। यदि हमारी नीति में अन्तर नहीं पड़ता तो संभव है कि स्वतंत्र भारत के तथा हमारी तथाकथित राष्ट्रीयता के और भी टुकड़े हों। अब हम आन्दोलनकारी नहीं रहे हैं, हमें अपने देश का शासन-प्रबन्ध करने का पूरा अधिकार प्राप्त है—ऐसी अवस्था में स्पष्ट है कि, सच्ची राष्ट्रीयता की रक्षा और वृद्धि के लिए अराष्ट्रीय मनोवृत्तियों का पूरी सख्ती से संहार किया जाय।

हम पंडित नेहरू के इस मत से पूर्णतया सहमत हैं कि स्वतंत्रता की प्राप्ति के फल-स्वरूप भारत अनेक कठिन और नवीन जिम्मेदारियों से और समस्याओं से घिर गया है। किन्तु हमें दृढ़ निश्चय और निःसीम उत्साह के साथ उनका समाधान करने और अखण्डित तथा बलशाली भारत का पुनर्निर्माण करने का अविश्रान्त प्रयत्न करना है। इस समय भारत में जो नवीन स्थिति उत्पन्न है और उस पर समस्त नागरिकों को शान्त चित्त से विचार करना जरूरी है; यदि अब भी हम समय के अनुकूल अपने को न बदल सकें तो दोष हमारा ही है। अँगरेज चाहे फिर उनकी आलोचना करते रहने से और कांग्रेस के दोषों की रट लगाने से जरा भी हित नहीं। हमें अपने स्वेच्छानुसार समुन्नत बनाने का जो चिर-प्रतीक्षित अवसर प्राप्त हुआ उससे सभी को, बिना किसी हिचक लाभ लेना और स्वतंत्र भारत को आदर्श-राष्ट्र बनाने में योग देना चा

युक्तप्रान्त से बाहर का होना हमें अखरता है। यदि सी० पी० या बिहार के ही कुछ लोग होते तो हमें संतोष होता लेकिन बुखारी गुट के लोग अभी से अपने शागिर्दों को तैयार कर रहे हैं और उनको नागपुर तथा पटना स्टेशनों के अधिकारी बनाकर भेजवाकर अपनी जड़ें मजबूत करना चाहते हैं।

सबसे दिलचस्प समाचार तो अभी अभी एक मित्र ने लखनऊ से भेजा है। वहाँ एक प्रोग्राम असिस्टेन्ट महोदय अपने मित्रों को टॉक देने का आश्वासन देकर कहते हैं कि उनका साहित्यिक प्रचार किया जाय। उनकी किताबों की समालोचनाएँ लिखी जायें—क्या रेडियो प्रोग्रामों के सहायकों का इतना पतन हो गया है?

अंत में हमें एक बात और कहनी है। श्री श्यामाचरन काला, श्री भटनागर तथा श्री पहाड़ी रेडियो से इसी से अलग हुए थे कि बुखारी गुट की हिन्दी-विरोधी नीति से वे सहमत नहीं थे। श्री पहाड़ी का रेडियो से हटाने का कोई राजनीतिक कारण भी बताया जाता है। क्या मिस्टर चौधरी इन तीनों सज्जनों का सहयोग फिर नहीं लेना चाहेंगे?

नई दिल्ली
३-९-४७ —श्यामसुन्दर एम० ए०
पी० एच० डी०

बाल-साहित्य की अनूठी पुस्तक

बच्चों के बापू

यह कविता-पुस्तक बच्चों के लोकप्रिय कवि द्विवेदीजी ने लिखी है।

'महात्मा गांधी जी इस कविता को पढ़कर बहुत हँसे।'

इस पुस्तक में आपको देश के सभी नेताओं के दर्शन प्राप्त होंगे, और उनका परिचय भी।

आगामी गांधी-जयन्ती के अवसर पर यह प्रकाशित होगी। दर्जनों चित्रों से सुसज्जित पुस्तक का मूल्य केवल एक रुपया।

प्रकाशक—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

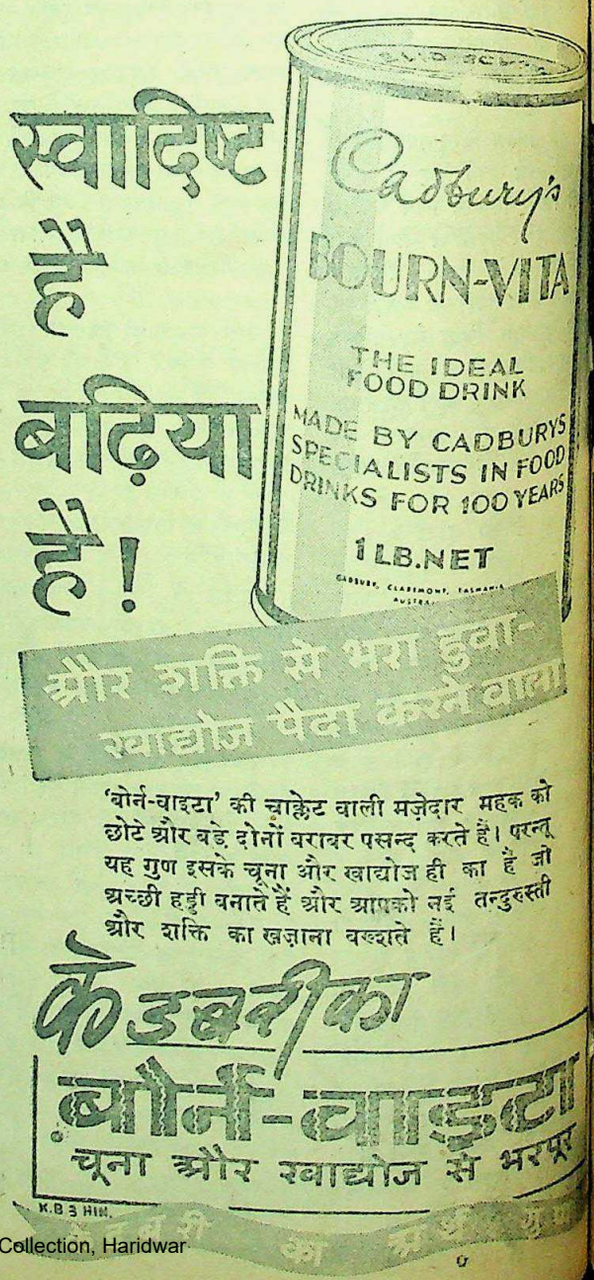

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक बालसखा १९४७

...प्रस्तुत वार्षिकांक बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित किया गया है। बालक-बालिकाओं के मनोरञ्जन और ज्ञान-वर्द्धन के लिए लेखों, कहानियों और कविताओं का चयन बड़े विवेक के साथ किया गया है। प्रारंभ में तीन सुन्दर चित्रमय कहानियाँ हैं।...ऐसी कथाओं से बच्चों का मनोरञ्जन तो होगा ही, साथ ही बुद्धि का विकास भी होगा। चित्रों से सम्पूर्ण अंक भरा हुआ है। कई नयनाभिराम रंगीन चित्र भी हैं। बालक-बालिकाओं के पढ़ने लायक़ लगभग सात दर्जन लेख, कविता और कहानियों से युक्त ३०० पृष्ठों का यह वार्षिक अंक संग्रहणीय है। इस अंक का मूल्य तीन रुपये। (साप्ताहिक 'भारत' ३१—८—१९४७)

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

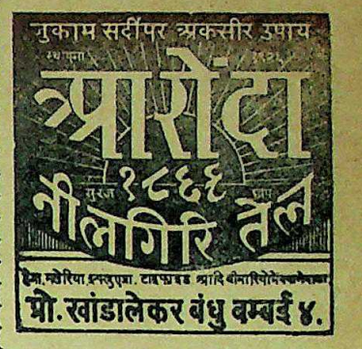

Copyright: Pond's Extract Co.

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एलाइड लाउडस्पीकर पर इतमिनान रखिये
ब्याह मेले जलसे सरकस तथा हर मौके पर इस्तेमाल कीजिये
खरीदिये या किराये पर लीजिये
एलाइड एलेक्ट्रिक एण्ड रेडियो कारपोरेशन
हज़रतगंज कैनिंग रोड
लखनऊ एलाहाबाद

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से विहीन भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

अद्भुत कहानियाँ

दो रंगों में छपी इस सचित्र पुस्तक में एक से एक बढ़िया कहानियाँ हैं। इसमें इतिहास, स्वामिभक्ति और भाग्य के खेल का वर्णन पढ़ते ही बनता है। मूल्य ॥=)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

इस्पात और भारतीय किसान

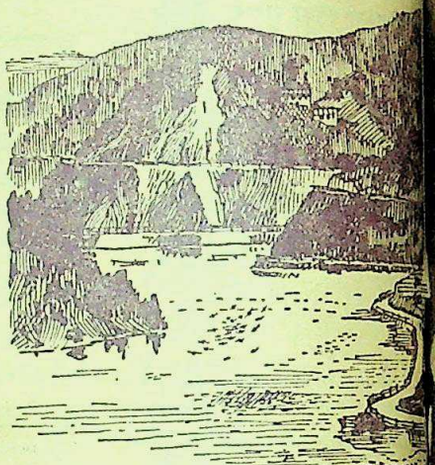

बरसात में भारतवर्ष का किसान या तो मालदार हो जाता है या बरबाद। अक्सर, बरसात का बहुत सा पानी, जो कुछ क्षेत्रों के लिए बड़े काम का है, सिंचाई की समुचित योजनाओं के अभाव में यों ही बह जाता है।

बड़े-बड़े बाँधों को बनाकर जिनमें इस्पात बहुतायत से लगता है खेतों की सिंचाई के लिए पानी को क़ाबू में लाया जा सकता है। इन बाँधों के बन जाने से सूखा पड़ने का डर भी कम रहेगा, और पानी न बरसने पर बाँधों से सिंचाई भी की जा सकेगी।

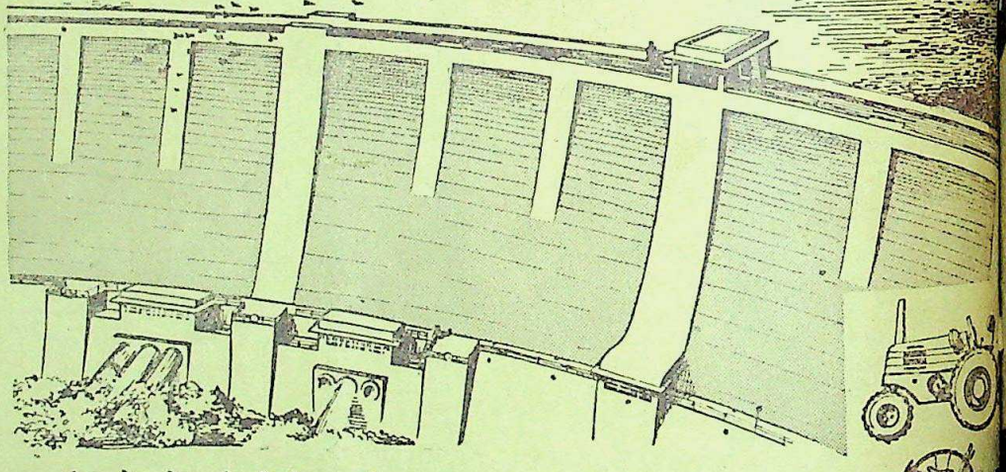

बंगाल के दामोदर बाँध की योजना इसी ढंग की है। यहाँ पर, नदी के पानी को क़ाबू में लाकर बाढ़ों को रोका जा सकेगा और पानी को सिंचाई के काम में लाया जा सकेगा।

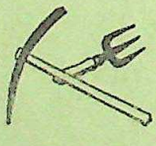

इस्पात के औज़ार और कल-पुर्जे भारतीय किसान को सहायता पहुँचायेंगे। आधुनिक ट्रैक्टरों, फसल काटनेवाले यन्त्रों और मज़बूत हलों के ज़रिये वह अपनी खेती की पैदावार को कई गुना बढ़ा सकेगा। इस्पात के बने हुए भंडारों में वह अपनी पैदावार भर कर कीड़े-मकोड़ों, चूहों और मौसम की ख़राबियों से इसका बचाव कर सकेगा।

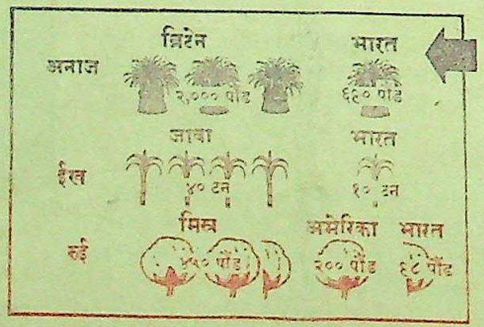

इस चित्र में दूसरे देशों के किसान दिखाये गये हैं जो आधुनिक उपायों को काम में लाकर अपनी खेती से अधिक पैदावार करते हैं। भारतीय किसान को इस हालत या इससे भी अच्छी हालत पर अपनी पैदावार को लाने में इस्पात का भी हिस्सा रहेगा।

TATA STEEL

ताता इस्पात

प्लेट, रेल, बीम, शीट, ज्वाएस्ट पाइलिंग, चक्के और ऐक्सेल, हाई काबन इस्पात, खास धातुओं और इस्पात के बने औज़ार, खेती के यन्त्र।

दि ताता आयर्न ऐण्ड स्टील कं० लि० प्रधान बिक्री कार्यालय : १०२ ए क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।

घर की स्त्रियाँ

निकोटा

पारिवारिक टूथ पेस्ट का व्यवहार करता है !

क्योंकि निकोटा दाँतों को सफेद और सुन्दर रखता है जिससे स्त्रियाँ युवा दिखती हैं। यह सबसे अधिक 'किफायती' और समस्त परिवार के लिये प्रथम श्रेणी का टूथ पेस्ट है।

लगभग सभी जगह एक रुपये से कम में मिलता है।

★ स्फूर्ति प्रद
★ स्फूर्ति प्रद
★ कीटाणुनाशक

एक सुन्दर लाल बक्स में सभी केमिस्ट व व्यापारियों के यहाँ मिलता है।

पारिवारिक टूथ पेस्ट

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा [illegible] प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

रविवार, २१ सितम्बर, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 21st September, 19

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

के देशी राज्य और जनतंत्र
लेखक सम्मेलन कैसा ?

नोआखाली में श्री प्यारेलाल के साथ
ये दंगे धर्मों की जड़ खोद रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतीय शिक्षा-प्रसार विभाग

पुस्तकें दाखिल करने की अंतिम तारीख ३० सितम्बर है

युक्त-प्रान्तीय सरकार के गजट के चौथे भाग में २९ जुलाई सन् १९४७ को जो सूचना प्रकाशित की गई थी और जिसमें प्रांतीय शिक्षा-प्रसार विभाग के पास किताबों के भेजने की अन्तिम तारीख बतलाई गई थी ? उसके सम्बन्ध में पुनः सूचित किया जाता है कि पुस्तकें दाखिल करने की अन्तिम तारीख की मियाद बढ़ा कर ३० सितम्बर सन् १९४७ तक कर दी गई है। इस सम्बन्ध का विस्तृत ब्योरा वही है जो २५ जुलाई के गजट में छप चुका है।

—ए० काजमी
शिक्षा-प्रसार अफसर युक्त-प्रान्त

वार्षिक बालसखा १९४७

...प्रस्तुत वार्षिकांक बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित किया गया है। बालक-बालिकाओं के मनोरञ्जन और ज्ञान-वर्द्धन के लिए लेखों, कहानियों और कविताओं का चयन बड़े विवेक के साथ किया गया है। प्रारंभ में तीन सुन्दर चित्रमय कहानियाँ हैं।...ऐसी कथाओं से बच्चों का मनो-रञ्जन तो होगा ही, साथ ही बुद्धि का विकास भी होगा। चित्रों से सम्पूर्ण अंक भरा हुआ है। कई नयनाभिराम रंगीन चित्र भी हैं। बालक-बालिकाओं के पढ़ने लायक़ लगभग सात दर्जन लेख, कविता और कहानियों से युक्त ३०० पृष्ठों का यह वार्षिक अंक संग्रहणीय है। इस अंक का मूल्य तीन रुपये। (साप्ताहिक 'भारत' ३१—८—१९४७)

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

मिंस होमियोपैथिक कालेज
बनारस

गवर्नमेन्ट रजिस्टर्ड और एडेड से होमियोपैथिक, बायकेमिक, इंजेक्शन का तीनों डिप्लोमा (सार्टिफिकेट) लें या शिक्षा प्राप्त करें। नियमावली मुफ़्त मँगाइए।

कमर के भयंकर दर्द के लिए
मा ने 'क्रुशन' की सलाह दी (वह) पहले ही बोतल से चंगी हो गई

उसकी मा ने यह सलाह दी कि उसको कमर-दर्द में क्रुशन साल्ट का सेवन करना चाहिए। वह तमाम दवाइयाँ सेवन कर चुकी थी पर अच्छी न हो सकी। पर ज्यों ही वह क्रुशन सेवन करने लगी, पहले ही बोतल के सेवन से उसे आराम अनुभव होने लगा। उसने पत्र लिखा है :—

"गत वर्ष इसी समय मेरी कमर में भयंकर दर्द था मैं तीन सप्ताह तक पेट के बल पड़ी थी और बिस्तर से उठ भी न सकती थी। मैंने कितनी ही प्रसिद्ध दवाइयाँ कीं परन्तु कुछ न हो सका।

'इसके बाद मैंने अपनी मा को अपने दर्द के सम्बन्ध में लिखा। उसने मुझे लिखा कि मैं क्रुशन साल्ट सेवन करूँ। मैंने तुरन्त ही एक बोतल खरीद ली। मैं कह सकती हूँ कि पाँच खुराक खाने के पहले ही मैं उठ बैठी। मैं उसे खाती रही और दो सप्ताह के अन्दर चंगी हो गई। मैं अब भी नित्यप्रति थोड़ी खुराक (खाती हूँ।" श्रीमती) ए० जी०

मूत्राशय मानव-शरीर के नाले हैं। जब वे कार्य नहीं करते, खराब गैसें बाहर होने के बजाय भीतर रक्त की धमनियों में गन्दगी पैदा कर देती हैं जिससे दुःखमय बीमारियाँ, जैसे, कमर-दर्द, गठिया और अत्यन्त थकावट पैदा हो जाती है।

क्रुशन साल्ट मूत्राशय के लिए एक मूत्रवर्द्धक और मीठी औषधि है। इसके द्वारा भीतरी गन्दगी साफ हो जाती है।

सारे रसायनिक और व्यापारी क्रुशन बेचते हैं। दाम १।।=) प्रतिबोतल।

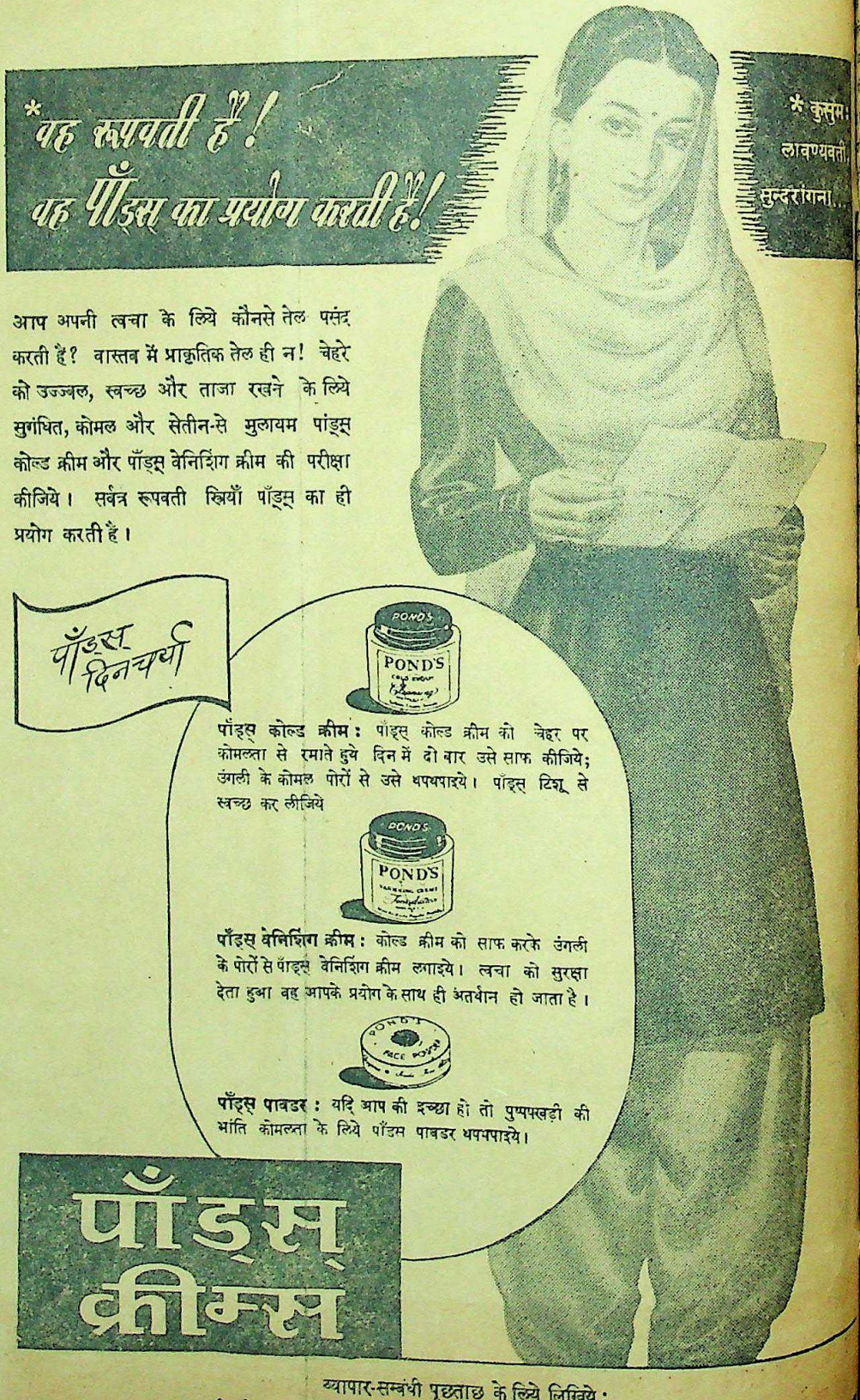

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहात

वर्ष १०, संख्या ३] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, २१ सितम्बर, १९४७

जब परेशानी आती है तो हाथ धोकर पड़ जाती है। इधर हिन्दुस्तान वालों की परेशानियों में ही व्यस्त उधर नदियों की बाढ़ मुँह बाये आ खड़ी हुई है। बंगाल, बिहार युक्तप्रांत के कई जिले नदियों की आफत में पड़ गये हैं। एक ओर सरकार शरणार्थियों की सहायता और परेशान है दूसरी ओर बाढ़ लाखों हजारों गाँववालों की सुरक्षा के लिए सर पर आकर खड़ा हो गया है। पाकिस्तान के लिए कहीं कुछ नहीं। जनता की परेशानी और न खुदाई गड़बड़। अपने राम जानते हैं कि सीधा बनकर रहना टेढ़ी खीर है। यह तो जनता की है, लेकिन पाकिस्तान वालों का। वहाँ असर ही कैसे हो?

* * *

इस वक्त प्रकृति भी गुंडों और बदमाशों को खदेड़ने में कांग्रेसी सरकार का साथ दे रही है। मेरठ के एक गाँव में कल यमुना के कारण दंगा होते होते रह गया। यमुना के एक ओर थोड़े से गुंडे और दूसरी ओर हथियारबंद हजार गुंडों का दल। लेकिन यमुना

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

ऐसी घहराई कि गुंडे नदी को पार ही नहीं कर पाये। अपने राम जानते हैं कि नेकी का फल अच्छा ही होता है। कांग्रेसी सरकार भारत को पाकिस्तान नहीं बनाना चाहती, वह सचमुच शांति की स्थापना चाहती है लेकिन गुंडों का क्या पूछना, वह तो हिन्दुस्तान को भी पाकिस्तान बनाना चाहते हैं। इसलिए अगर कांग्रेस सरकार की प्रकृति सहायता करती है तो ठीक ही है। इसमें आश्चर्य की कौन-सी बात है?

* * *

एक हिन्दी-लेखिका का कहना है कि रेडियो में गंदे गानों का प्रचार किया जाता है। अपने राम की समझ में नहीं आता कि यह कैसे? क्योंकि अब तो रेडियो में हिन्दी के महान् भक्तों का उदय हो चुका है। कहावत है कि सौ सौ चूहे खाय के बिलार भई भक्तिन। कल जो साहबान रेडियो में रंडियों और भड़ुओं को दलाली किया करते थे आज वही हिन्दी बतौर दूसरी जबान सीखकर हिन्दी के अवतारी पुरुष हो गये हैं। भला वह गंदा गाना क्या जानें? चंदन भी लगाने लगे और गंगा न सही तो गोमती तो नहा ही लेते हैं। कल तक रेडियोवाले कव्वाली में मस्त थे और आज अगर प्रेम-संगीत अलापते हैं तो क्या बुरा?

* * *

संयुक्तप्रांतीय पंचायत बिल एसेम्बली में पास हो गया था वही अब कौंसिल में स्वीकार होने के लिए उपस्थित होनेवाला है। अपने राम की राय में काम तो अच्छा हो रहा है लेकिन दुख यह है कि पटवारियों, थानों के पुलिसवालों, मुकदमा लड़वाकर अपनी रोजी कमानेवालों और जिमींदारों का क्या होगा? पंचायत में ही सब कुछ हो जायेगा तो अँगरेजी हुकूमत के यह जीते-जागते नमूने क्या करेंगे? कांग्रेस सरकार जनता की सरकार है इसलिए इन लोगों का भी खयाल उसे रखना ही चाहिए।

* * *

सर मिर्जा इस्माइल कहते हैं कि आबादी-परिवर्तन बड़ा घातक है। बात तो ठीक है लेकिन पाकिस्तान के आला ओहदेदारों को तो पहले समझाइए। वह तो चाहते हैं अल्पसंख्यक पाकिस्तान में न रह जायें जिससे चैन की बंसी बजती जाये। न रहेंगे अल्पसंख्यक और न होगी छेड़-छाड़!

* * *

सुना जाता है कि देशव्यापी रेलवे हड़ताल होनेवाली है। बात तो ठीक जान पड़ती है! क्योंकि पहले पंजाब के दंगे का जोर था, इस वक्त शरणार्थियों और नदियों की बाढ़ का जोर है। इन काण्डों के खतम होते ही रेलवे-हड़ताल का काण्ड होना चाहिए। कुछ न कुछ होता रहना चाहिए। चुपचाप बैठना तो काहिलों का काम है।

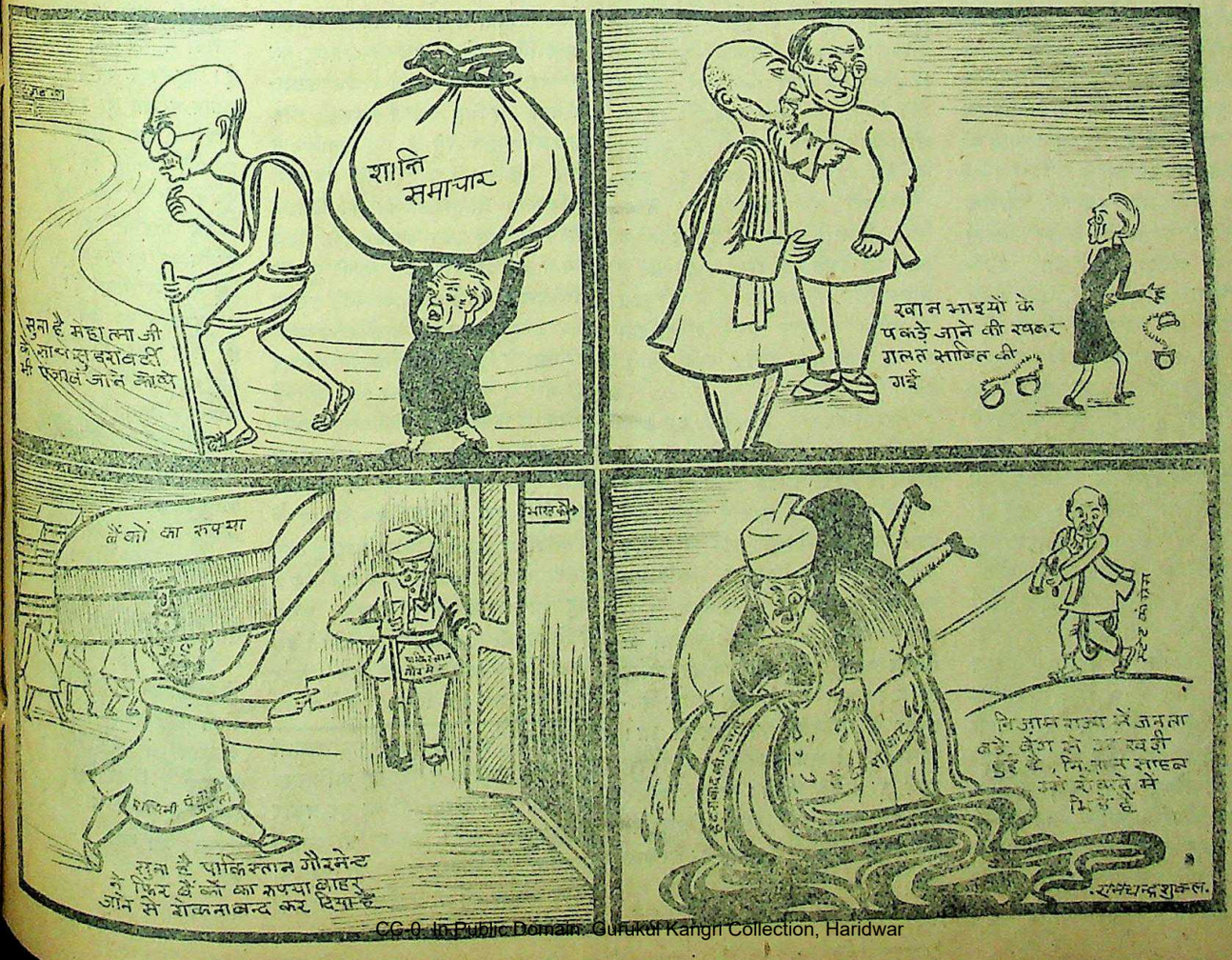

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनपदीय का पृष्ठ

प्रांत की राजभाषा हिन्दी

संयुक्तप्रांतीय कौंसिल ने बहुमत से यह निश्चय किया है कि प्रांत की राजभाषा हिन्दी है। इसका तात्पर्य यह है कि भविष्य में समस्त सरकारी कार्यवाहियों में हिन्दी ही व्यवहार में लाई जायेगी। कौंसिल में श्री परमात्मानंदसिंह समस्त हिन्दी-संसार के बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने हिन्दी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव उपस्थित किया। साथ ही प्रांत के नये अर्थ तथा सूचना-मंत्री पंडित श्री कृष्णदत्त पालीवाल भी बधाई के पात्र हैं जिन्होंने सरकार की ओर से हिन्दी का पक्ष समर्थन किया।

प्रांतीय कौंसिल ने हिन्दी को प्रांत की राजभाषा बनाने के प्रस्ताव को स्वीकृत करके वास्तव में प्रांत के बहुमत की इच्छा की ही पूर्ति नहीं की, वरन् एक जमाने से सरकारी दृष्टि से होनेवाली भयंकर भूल का परिमार्जन भी कर दिया है। यह कौन नहीं जानता कि संयुक्तप्रांत के ९९ प्रतिशत निवासियों की मातृभाषा हिन्दी ही है? अंगरेजी हुकूमत इस नग्न सत्य का सदा से गला घोंटती आई है। वह अल्पसंख्यकों की भाषा उर्दू तथा संस्कृति की आड़ में बहुमत की भाषा और संस्कृति को कुठाराघात करती आई है, क्योंकि उसे अपनी साम्प्रदायिक द्वेषप्रणाली के अनुसार प्रांत पर शासन करना था। अब हमें यह तथ्य समझ लेना चाहिए कि मातृभाषा और राष्ट्रभाषा में क्या अंतर है? यद्यपि भारतीय विधान-परिषद् की कांग्रेस पार्टी हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार कर चुकी है फिर भी यह प्रश्न अखिल भारतीय है और राष्ट्रभाषा की समस्या के सुलझाने की जिम्मेदारी राष्ट्र के नेताओं तथा कांग्रेस के निर्णय पर निर्भर है किन्तु इस बात की सचाई से कैसे इनकार किया जा सकता है कि संयुक्तप्रांत की मातृभाषा हिन्दी नहीं है? जिस प्रकार गुजरात की मातृभाषा गुजराती, महाराष्ट्र की मराठी, बंगाल की बंगाली, मद्रास की मद्रासी प्रांतीय भाषाएँ और पंजाब की गुरमुखी अथवा उर्दू है, उसी प्रकार संयुक्तप्रांत की मातृभाषा हिन्दी है। प्रांत के इस दावे को आज कांग्रेस सरकार ने स्वीकार कर लिया है, यह प्रांत के निवासियों के लिए ही नहीं हिन्दी-संसार के लिए बड़े गौरव की बात है।

रही राष्ट्रभाषा की समस्या, यह व्यापक और भारतवर्षीय है। इसमें तो तनिक भी संदेह करने की गुंजाइश नहीं है कि हिन्दी ही राष्ट्रभाषा भी होगी, आज नहीं तो कल और कल नहीं तो परसों इसका कारण केवल यह है कि हिन्दी में ऐसे प्रकृतप्रदत्त गुण हैं जिसके कारण वह प्रत्येक प्रांत में बोली और समझी जा सकती है। यदि आज हिन्दुस्तानी को राष्ट्र-भाषा कारणवश मान भी लिया जाता है तो भविष्य में वह अपना अस्तित्व स्वयं खो बैठेगी, क्योंकि अप्राकृतिक, बनावटी अथवा गढ़ी हुई भाषा कदापि लोकप्रिय नहीं हो सकती। हाँ, राष्ट्र-भाषा भाषा का सरल होना अनिवार्य है। और उसका नाम हिन्दी ही हो सकता है। सच पूछा जाये तो हिन्दुस्तानी भाषा के निर्माण का श्रेय अँगरेजी हुकूमत को प्राप्त है जो ईस्ट इंडिया कंपनी के जमाने से इसका मार्ग प्रशस्त करती आ रही है।

प्रान्तीय सरकार ने हिन्दी को प्रान्त की राजभाषा तो स्वीकार कर लिया; किन्तु कार्यरूप में परिणत करने के लिए उसे अब सक्रिय कदम उठाना चाहिए। सभी सरकारी विभागों में हिन्दी के व्यवहार का सख्ती के साथ नियम बनाना चाहिए। डिस्ट्रिक्ट बोर्डों तथा म्यूनिसिपल बोर्डों, कचहरियों, चुंगी के दफ्तरों तथा अन्यान्य सरकारी महकमों में हिन्दी का ही उपयोग होना चाहिए। सरकार को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। संयुक्तप्रान्त की मातृभाषा हिन्दी की आज की यह विजय बड़ी ही महत्त्वपूर्ण है। प्रान्त पुनः अपने पूर्व गौरव को प्राप्त करने में सफल होगा, इसमें संदेह नहीं।

* * *

जनसंख्या का परिवर्तन

भारत के विभाजन का कुफल धीरे धीरे प्रकट होने लगा है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दो उपनिवेशों के निर्माण हो जाने पर भी शान्ति नहीं दिखाई दे रही है। पाकिस्तान के लाखों अल्पसंख्यक पीड़ित अवस्था में दिखाई दे रहे हैं। जो कल राजा थे आज कंगाल हो गये हैं। घर-द्वार की कौन कहे कौड़ी के मोहताज हो गये हैं। पाकिस्तान की भाँति हिन्दुस्तान में अशान्ति व्यापक रूप नहीं ग्रहण कर सकी है फिर भी पश्चिमी पंजाब के अनाचारों का प्रभाव हिन्दुस्तान पर पड़ना अनिवार्य है, इसलिए यदि हिन्दुस्तान के अल्पसंख्यकों पर भी थोड़ी-बहुत आफत आई हो तो आश्चर्य की बात नहीं है। इस प्रकार इस समय शरणार्थियों और पीड़ितों की संख्या समुद्र की भाँति उमड़ पड़ी है। इसीलिए समय को देखते हुए दोनों उपनिवेशों के अधिकारियों ने जन-संख्या के परिवर्तन की नीति स्वीकार करके शरणार्थियों की रक्षा की ओर सक्रिय कदम बढ़ाया है।

भारत-सरकार आजकल इस कार्य में सक्रिय कदम उठा रही है। पश्चिमी पंजाब के लाखों पीड़ित शरणार्थी भारत में लाये जा रहे हैं। सरदार वल्लभभाई पटेल को इस व्यापक कार्य में विशेष सफलता प्राप्त हो रही है। यद्यपि हम जन-संख्या के परिवर्तन के सिद्धान्त से सहमत नहीं हैं; किन्तु कांग्रेस नेताओं को जिस प्रकार राष्ट्र का विभाजन अंततोगत्वा स्वीकार करना पड़ा है, उसी प्रकार जन-संख्या के परिवर्तन का सिद्धान्त भी। जान पड़ता है पाकिस्तान में अल्पसंख्यक रहने ही नहीं पायेंगे। भारत-सरकार पर इस वक्त बड़ी भारी जिम्मेदारी आ पड़ी है, क्योंकि एक राष्ट्रवादी सरकार की हैसियत से उसकी जिम्मेदारी बढ़ गई है। इसलिए हिन्दुस्तान के रईसों, जमींदारों, राजाओं और महाराजाओं से हमारा अनुरोध है कि वह पाकिस्तान से सताये हुए शरणार्थियों की हर प्रकार की सहायता करें। सरकार तो उनकी सहायता का बन्दोबस्त कर ही रही है, किन्तु जनता को भी अपने पीड़ित भाइयों [illegible] जरूरी है।

पाकिस्तान के अल्पसंख्यक

भारत-सरकार शरणार्थियों की सुरक्षा की ओर सचेष्ट

लेखक, श्री हरिगोपाल परांजपे

इस समय पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की समस्या दयनीय रूप धारण कर रही है। बहुसंख्यक जमात अल्पसंख्यकों को पाकिस्तान से खदेड़ देना चाहती है, इसलिए उन पर अत्याचार भी हो रहे हैं। इस दृष्टि से भारत-सरकार अब अल्पसंख्यकों और शरणार्थियों की सुरक्षा के लिये पूर्ण रूप से सचेष्ट हो गई है। लेखक ने इस समस्या पर इस लेख में प्रकाश डाला है, जो पठनीय तथा सामयिक है।

आजकल पाकिस्तान की अल्पसंख्यक नीति भयावह होती जा रही है। यद्यपि अभी तक पाकिस्तान विधान-परिषद् की ओर से किसी "अल्पसंख्यक विधान" का निर्माण नहीं हुआ है लेकिन इस संबंध में कायदे आजम जिन्ना के वक्तव्य ही पर्याप्त हैं। गत ११ अगस्त को पाकिस्तान विधान-परिषद् का कराची में उद्घाटन करने के उपरान्त सभापति-पद से मिस्टर जिन्ना ने जो भाषण दिया था, उसमें पाकिस्तान सरकार की अपने अल्पसंख्यकों के प्रति क्या नीति होगी, इस पर प्रकाश डाला था। जिन्ना महोदय ने कहा था कि पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों को समानाधिकार दिये जायेंगे और सरकार जाति या धर्म को प्रधानता देकर कोई कार्य न करेगी। मिस्टर जिन्ना के ये शब्द विशेष महत्त्व के हैं कि "हिन्दू और मुसलमान धार्मिक क्षेत्र में चाहे भले ही हिन्दू और मुसलमान कहलाएँ क्योंकि धर्म तो व्यक्तिगत धारणा की बात है किन्तु राजनैतिक क्षेत्र में अवश्य ही ऐसा न होगा क्योंकि राजनीति में धर्म और जाति का समावेश नहीं होता।" हम आह्वान करते हैं मिस्टर जिन्ना और उनके साथियों के इस प्रकार के वक्तव्यों का क्योंकि उनमें भी एक आदर्श राष्ट्र की कल्पना है। लेकिन जैसा कि घटनावलियों ने सिद्ध किया है ये वक्तव्य कोरे आश्वासन-मात्र रहे हैं। अत्युक्ति न होगी यदि यह कहा जाये कि संसार में पाकिस्तान की नेकनीयती का ढिंढोरा पीटने के लिए उक्त वक्तव्य प्रकट किये गये थे जब कि वास्तविक अपनी पुरानी फासिज्म से पीछे हटने का कोई इरादा न था। यही कारण है कि आज अल्पसंख्यकों की रक्षा के लिए जो पाकिस्तान सरकार की ओर से मौखिक प्रयत्न किए जा रहे हैं उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता।

क्योंकि स्पष्ट है कि पाकिस्तानी नेता एक दोतरफी नीति को अपनाये हुए हैं। एक ओर तो इस प्रकार के वक्तव्यों को प्रकाशित किया जाता है और दूसरी ओर अप्रत्यक्ष तथा प्रत्यक्ष रूप में बहुसंख्यक जातियों को उभाड़ा जाता है कि वह अल्पसंख्यकों का नामोनिशां तक मिटा दें। पण्डित नेहरू के साथ मिस्टर लियाकत अली खाँ दौरा कर रहे थे यह सच है लेकिन यह भी सच है कि जब हिन्दुस्तान से पूर्वी [illegible] के रहनेवाले अल्पसंख्यक मुस्लिम पाकिस्तान में पहुँचाये जाते थे पुलिस उनका रक्षण करती थी और पाकिस्तान से पश्चिमी पंजाब के [illegible] संख्यक हिन्दू सिक्ख हिन्दुस्तान में जाते थे तो पुलिस स्वयं उनको लूटती थी आज पाकिस्तान की फौज पाकिस्तान फासिज्म का एक साधन बन रही है इससे अधिक प्रमाण क्या हो सकता कि सीमा-कमीशन के निर्णय को स्वीकार लेने के बाद भी पाकिस्तानी फौज अपनी सीमा का उल्लंघन करके हिन्दुस्तान के गाँवों पर हमला किया। तात्पर्य यह है कि इतना होते हुए भी पाकिस्तान की नीति में कोई अन्तर नहीं आज के जिन्ना विधान-परिषद् में [illegible] देनेवाले जिन्ना नहीं। आज [illegible] वक्तव्यों में एक महान् अन्तर है और कहेंगे कि वे अपनी वास्तविकता पर हैं जब वे पश्चिमी पंजाब में हिन्दुओं अत्याचारों पर एक शब्द न कहकर यह कहते हैं—"पूर्वी पंजाब में उपद्रव हुए हैं उनका अनिवार्य रूप पश्चिमी पंजाब पर असर पड़ा और स्थानों में घटनाओं की खबर भी है। बहुसंख्यक जाति के सहनशीलता कठोर परीक्षा हो रही है।" पाकिस्तानियों की इस दुरंगी नीति को देखते हमें तो भय है कि डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी के वे शब्द कहीं ठीक न हों जिसमें उन्होंने कहा था—"पाकिस्तान की स्थापना ही लीग का अन्तिम ध्येय वह तो एक साधन है। सारे हिन्दुस्तान पर इस्लाम का वर्चस्व स्थापित ही लीग का वास्तविक उद्देश्य यहाँ पर इस बात का भी उल्लेख आवश्यक होगा कि मि० जिन्ना ने एक आबादी की अदला-बदली को और एकमात्र उपाय अपने भाषण बताया था। उनकी दुरंगी नीति परिधि में शायद यह बात भी रही कि हिन्दू और सिख अल्पसंख्यकों इतने अत्याचार किये जायें कि वे ही पाकिस्तान को छोड़ दें।

यद्यपि यह सच है कि [illegible] विभाजन स्वीकार करते समय हिन्दू सिख अल्पसंख्यकों की पाकिस्तान के हाथों में क्या दशा होगी, इस विचार न किया लेकिन आज की स्थिति में हमारी इंडियन डोमीनियन सरकार का क्या कर्तव्य है? प्रश्न बात तो यह कि हिन्दुस्तान को इन सर्वदेशव्यापी संहारों को

शेष पृष्ठ १८ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशी रियासतें और जन-तंत्र

जनता और देशी नरेशों के बीच गहरी खाई को पाटना जरूरी है

लेखक, श्री चुन्नीलाल शर्मा, एम० ए०
(देशी राज्य-विभाग, आल इंडिया कांग्रेस कमेटी)

अँगरेजों के भारत से चले जाने और गत १५ अगस्त को स्वतन्त्रता प्राप्त हो जाने के बाद जहाँ भारत की राजनैतिक स्थिति में परिवर्तन के साथ साथ देशी राज्यों की स्थिति में परिवर्तन होना अनिवार्य है, अब देशी नरेशों को जनता के सम्पर्क में आकर राज-तन्त्र में परिवर्तन करना ही होगा। इस लेख में विद्वान् लेखक ने देशी राज्यों की प्रारम्भिक नीति का उल्लेख करते हुए आज के परिवर्तन का उल्लेख किया है और यह भी बतलाया है कि देशी नरेशों को अब लोकप्रिय नीति अपनानी ही होगी। लेख सामयिक, विचारपूर्ण और पठनीय है।

सरदार वल्लभभाई पटेल, भारत-सरकार के गृहमंत्री और देशी राज्यों से संपर्क स्थापित करनेवाली समिति के अध्यक्ष।

...ी दृढ़ धारणा है कि भारतवर्ष ...देशी राज्यों की स्थिति राज-...तिक दृष्टि से ब्रिटिश सरकार के ...भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है, ...जितनी कि उन रियासतों के अपने ...तथा प्रजाजनों के लिए।"

लार्ड रिपन,
—१६ अगस्त, १८८४

...लार्ड रिपन के उपरोक्त कथन ...सहमत हैं। देशी नरेशों की स्वयं ...स्थिति और ब्रिटिश सरकार दोनों ...विशेष अन्तर नहीं था। उनकी ...की समस्यायें एक दूसरे पर ही ...थीं। ऐसा कदापि नहीं है ...का ह्रास दूसरे का उत्थान हो। ...पर गम्भीर दृष्टि से विवेचन ...परमावश्यक है। अँगरेजी राज्य ...प्लासी तथा बक्सर के युद्ध-स्थलों ...पड़ी थी, प्रायः इस कथन की सभी ...लेखक पुष्टि करते हैं। क्लाइव ...रिंग-फेंस" (Ring Fence) ...ने ईस्ट इंडिया कम्पनी की जड़ें ...करने में महान् कार्य किया। इस ...फ्रांसीसी, डच तथा पुर्तगीज सभी ...हो चुका था। आगे आनेवाले ...के सामने अब किसी विदेशी शक्ति ...करने का प्रश्न नहीं रह गया

...सहायक संधियों" (Subsidiary ...ance or treaties) के द्वारा तो ...देशी नरेशों की शक्ति और भी ...चली थी। उनमें फिर से अपने ...गौरव की झलक के दर्शन होते हैं। ...वीरता का प्रदर्शन किया। ...ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की कुशाग्र ...के सामने वे असहाय सिद्ध हुए। ...एक कारण उनका विलासी जीवन ...राज्य-वैभव भी था। यह हो सकता ...लार्ड हेस्टिंग्स ने अपने गत गवर्नर ...की नीति का यथार्थ रूप में ...न किया हो; परन्तु हस्तक्षेप न ...की नीति की 'घोषणा' करने के ...भी उसने परिस्थितियों की आड़ ...राज्यों के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप ...यदि आप उस काल के इतिहास ...दृष्टिपात करें तो निश्चय ही आपको ...जायगा कि मैसूर तथा मरहठों ...का एकमात्र कारण उसकी ...नीति ही थी। सन् १८१८ में ...इंडिया कम्पनी के सामने अधिक

...के महाराजा सर हरीसिंह, जिन्होंने ...किसी संघ की सदस्यता स्वीकार नहीं की है।

पेचीदी समस्यायें न रह गई थीं। यह निर्विवाद सिद्ध है कि अँगरेजी राज्य की नींव को दृढ़ करनेवालों में हेस्टिंग्स का नाम प्रमुख है। उसकी इस महान् नीति की आंगल जाति ने मुक्त-कंठ से प्रशंसा की। उसने देशी नरेशों को उनके घरेलू मामलों में पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करने पर भी उनके ऊपर कम्पनी के आधिपत्य की शृंखला किसी न किसी रूप में रक्खी। निसंदेह कम्पनी प्लासी के युद्ध से लेकर मरहठों के पतन के समय तक बड़ी पेचीदगियों में से होकर गुजर रही थी। इस समय कम्पनी के संचालकों तथा बोर्ड आफ कन्ट्रोल के डाइरेक्टरों ने जिस भव्य भारत की महान् कल्पना की थी, उसको आंशिक रूप में पूर्ण करनेवालों में मैटकाफ और डलहौजी का नाम स्मरणीय है।

उनके प्रारम्भ किये महान् कार्य की इतिश्री यहीं पर न हो गई, वरन् उस प्राचीन विषैली नीति का परिचय आपको सन् १८५७ की महान् क्रान्ति में मिलेगा। नरेशों में गहरे असन्तोष की भावना थी। साथ ही साथ उनकी प्रतिमा अब टिम-टिमा रही थी। श्री लीवरनर ने देशी राजाओं का जितना सुन्दर चित्रण किया है; यहाँ उसका उल्लेख आवश्यक है। उनकी दृष्टि में गदर से पूर्व देशी नरेशों का शासन-प्रबन्ध विभिन्न प्रकार की हत्या, अत्याचार तथा अन्य वीभत्स काले कारनामों से परिपूर्ण था। एक समय वह था जब कि देशी रियासतों की जनता एकदम घोर अंधकार में थी। उसे अपने अधिकार और कर्त्तव्य के प्रति चेतना तक न थी। यह हमारा विषय नहीं कि सन् १८५७ की महान् क्रांति के लिए लार्ड डलहौजी की नीति कहाँ तक जिम्मेदार थी, किन्तु यह तो निर्विवाद सिद्ध ही है कि अनेक नरेशों ने ब्रिटिश सरकार की पूर्ण सहायता की। निजाम के विषय में तो प्रसिद्ध है कि यदि उस कठिन काल में निजामी का अन्त हो तो निश्चय ही सब कुछ हाथ से चला जायगा। मिस्टर सिडनी लो की अनुमति से ब्रिटिश राज्य के सुरक्षित रह जाने का कारण निजाम हैदराबाद के अन्त न होने में निहित है।

सन् १८५७ की महान् क्रान्ति के पश्चात् ब्रिटिश गवर्नमेंट ने उसका पूरा पूरा लाभ उठाया। उसकी दृष्टि में देशी नरेश स्वयं इतने हानिकारक न थे कि जो पूर्णरूप से उनकी सत्ता तक को नष्ट कर दिया जाता; परन्तु वे तो उसके आपत्ति और कठिन काल के सहयोगी आधार स्तम्भ थे। स्वयं इँगलैंड के शासकों के हित में देशी रियासतों को सुरक्षित देखना लाभदायक था। गदर के पश्चात् लार्ड कैनिंग के ऊपर नरेश को सन्तुष्ट रखने का भार था। शासन के हित की दृष्टि से बिना कुछ हानि पहुँचाये ही उसने अनेकों राज्यों को सनदें प्रदान कीं। गोद न लेने के सिद्धान्त को सर्वदा के लिए त्याग दिया। यद्यपि इन सनदों के कारण नरेशों की स्वयं की स्वाधीन सत्ता के लिए कोई स्थान न रहा था; परन्तु तो भी उन्होंने इनको "ईश्वरीय देन" समझकर अभिवादन किया। उनको कितनी शान्ति मिली। इसकी पुष्टि ग्वालियर नरेश के इस कथन से अभि-व्यक्त है—"क्योंकि अब देशी रियासतों को अँगरेजी राज्य में मिलानेवाली नीति का अन्त हो गया है। इसलिए हम लोग अपनी असफलता तथा कमजोरियों में भी स्वच्छन्द रूप से श्वाँस ले सकते हैं।" वास्तविक दृष्टि से गदर के पश्चात् देशी नरेशों की स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। परन्तु इसके विरुद्ध उनके हाथ और भी जकड़े गये। अब दूषित शासन के लिए हस्तक्षेप करना सरकार का विशेषाधिकार हो गया और साथ ही अनैकजेशन की व्यवहारिक रूप में नीति का भी अन्त न हुआ। हमारी दृष्टि में सार्वभौम सत्ता ने और भी सुचारु रूप से देशी नरेशों को अपने अधीन कर लिया। अब तक जो उनको स्वाधीनता प्राप्त थी, वह भी काफूर हो गई और वे बिना जीवधारी शरीर के समान समझे जाने लगे।

अभी तक जनता और देशी नरेशों के बीच विशेष गहरी खाई नहीं हुई थी। उनमें अब भी प्रेम और सहानुभूति का अंकुर वर्तमान था। राजाओं का अपनी प्रजा के साथ निकट संबंध था और अपने श्रीहीन नरेशों के लुटे वैभव पर उनके अन्तःकरण में करुणा और सहानु-भूति थी। उनको अपनी सत्ता, प्रतिष्ठा तथा विशेषाधिकारों का मोह होना स्वाभाविक था। इसी एक आधार को लेकर उन्होंने अनेक बार प्राचीन संधियों की चर्चा की और उन्हीं के अनुकूल अपने साथ व्यवहार की भी आशा करते थे। वैसे तो देशी रियासतें नाम-मात्र के लिए अपने घरेलू मामलों में स्वतंत्र थीं; परन्तु विदेशी आक्रमणों तथा आन्तरिक उपद्रवों की जिम्मेदारी ब्रिटिश सार्वभौम सत्ता ने स्वयं अपने सिर पर ले रखी थी। महान् लेखक ली वारनर की सम्मति से "कोई भी देशी राज्य आन्तरिक और वैदेशिक नीति का पालन करने में पूर्ण स्वतंत्र नहीं कहा जा सकता।"

यहाँ पर संक्षेप में ब्रिटिश भारत में हुई महान् जाग्रति के प्रभाव की चर्चा करना भी आवश्यक है। सन् १८८५ में राष्ट्रीय कांग्रेस के जन्म के साथ ही साथ रियासतों की जनता ने भी करवट बदली। अपने भविष्य का धुँधला चित्र उनके सामने उपस्थित होने लगा। ब्रिटिश भारत के कार्यकर्ता तथा अहिंसक संग्राम के योद्धाओं से सम्पर्क न होने देने की भरसक चेष्टा की गई। रियासतों को ब्रिटिश भारत से पृथक् देखने के लिए ही सार्वभौम सत्ता ने उनके प्रति अपनी पूरी जिम्मेदारी और ईस्ट इंडिया कम्पनी के समय की संधियों की दुहाई दी। किन्तु उनकी इस चिन्ता से ब्रिटिश शक्ति पूर्ण परिचित थी। सार्वभौम सत्ता ने वास्तविक शक्ति को अपने ही भीतर केन्द्रीभूत करके उनकी रक्षा का भार लिया। इस समय बिना पोलिटिकल डिपार्टमेंट की अनुमति के राजे लोग आपस में मिलने के लिए भी स्वतंत्र नहीं

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

हैदराबाद निजाम के धनाधीश अपने राज्य में कांग्रेस आन्दोलन को कुचल देना चाहते हैं। मज़ा यह है कि भारतीय यूनियन में भी अभी तक आप सम्मिलित नहीं हुए हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये दंगे धर्मों की कब्र खोद रहे हैं!

समाजवादी समाज के लिए स्वयं रास्ता तैयार हो रहा है

लेखक, श्री मन्मथनाथ गुप्त

आजकल के साम्प्रदायिक दंगे राष्ट्रीयता के मार्ग में बाधक सिद्ध हो रहे हैं। प्रत्येक समझदार व्यक्ति के लिये दंगों की निन्दा करना अनिवार्य है। इस लेख में प्रसिद्ध समाजवादी लेखक ने यह साबित किया है कि धर्म के नाम पर होनेवाले ये दंगे धर्मों की जड़ खोद रहे हैं, साथ ही उस समाजवादी समाज का निर्माण कर रहे हैं जिस पर भारत का भविष्य निर्भर है। लेख सामयिक और पठनीय है।

इस लेख के लेखक श्री मन्मथनाथ

पाकिस्तान बने भी कुछ महीने हो गये। बंगाल और पंजाब के बँटवारे के संबंध में रैडक्लिफ साहब का फैसला भी निकल गया, महात्मा गांधी के रहते रहते कलकत्ते में मेल के अद्भुत दृश्य भी दिखाई दिये, पर फिर भी अभी मामला चल ही रहा है। पंजाब में तो कभी झगड़ा बन्द हुआ ही नहीं। शुरुआत तो १६ अगस्त, १९४६ से बंगाल की लीग से हुई, पर बंगाल में बहुत कुछ शान्ति भी है, पर पंजाब में जब से तिवाना मंत्रि-मंडल ने इस्तीफा दे दिया, तब से बराबर झगड़ा जारी है।

मैं पिछले जून में लाहौर, अमृतसर, जलंधर आदि स्थानों में गया था। उसी समय सारा पंजाब जल रहा था। आज तो परिस्थिति बहुत ही बिगड़ चुकी है। भागे हुए लोगों से वहाँ के संबंध में जो कहानी मालूम हो रही है, वह बहुत ही दर्दनाक है। इसलिए मन में यह प्रश्न उठता है कि पाकिस्तान तो हो गया, अब आगे क्या होगा? आखिर इन दंगाइयों का क्या उद्देश्य है कुछ समझ में नहीं आता।

महात्मा गांधी ने इस संबंध में जो अनशन की, वह इस बात का सूचक है कि अन्य तरीकों से पेश न पा सकने के कारण ही उन्होंने यह अनशन की थी। मैं स्वयं आध्यात्मिक शक्तियों के मुक्त होने में कतई विश्वास नहीं करता, फिर भी अन्य दृष्टियों से अनशन की उपयोगिता में विश्वास करता हूँ। अनशन जनमत के प्रति एक बहुत ही निविड़ तथा गहरी अपील है। इसके द्वारा जनमत से एक तरह से यह कहा जाता है कि और सब तरफ से ध्यान हटाकर इस तरफ ध्यान दो, नहीं तो मैं प्राण दिये देता हूँ। इस प्रकार अनशन एक बहुत उचित राजनैतिक अस्त्र है और यदि ढंग से प्रयोग किया जाय तो यह फलोत्पादक हो सकता है। अक्सर राज-नैतिक कैदी जेलों के अन्दर इसका उपयोग करते थे और उनके अनशन से बाहर जो खलबली मचती, उससे घबरा-कर सरकार उनकी माँगों को मान भी लेती थी।

गांधी जी की अनशन इस दृष्टि से देखने पर एक बहुत ही उचित अस्त्र प्रतीत हुआ है। जब उनके बंगाल के अनशन की खबर लोगों में फैली, तब हजारों की नींद हराम हो गई। इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दू-जनता पर इसका असर पड़ा। पर पाकिस्तान के मुसलमानों पर इसका क्या असर पड़ा यह गुप्त है। अनशन का अस्त्र ऐसे लोगों में ही सफल हो सकता है जिनमें भीतर भीतर कुछ प्रेम-संबंध रह गया है। माँ-बेटा और पति-पत्नी में अनशन सबसे अधिक सफल होता है। इनमें तो तुरन्त असर होता है, पर जिनमें सब प्रेम-संबंध खतम हो चुका है, उनमें इसका असर होना अनिवार्य नहीं है। बहुत संभव है उल्टा असर हो। महात्मा जी का संसार से उठ जाना उन्हीं लोगों के लिए महान् दुःखदायी हो सकता है जो उन्हें प्यार तथा सम्मान की दृष्टि से देखते हैं, पर जो उन्हें अपना शत्रु समझते हैं, वे उनके अनशन से किस हद तक प्रभावित हो सकते हैं, यह विचारार्थ है।

महात्मा गांधी के कलकत्ते का अनशन समाप्त हुए कई दिन हो गये, साथ ही बंगाल में अब पहले से शान्ति भी है। पर एक बात समझने की है कि इससे यह मान लेना बिलकुल गलत होगा कि हिन्दू तथा मुसलमानों में आगे स्थायी सद्भाव स्थापित हो जायेगा। जिस विष-वृक्ष को गत ४० साल से यत्नपूर्वक सींचा गया है, उसकी जड़ें इतनी मोटी हो चुकी हैं कि उस पर एक-आध कुल्हाड़ी पड़ने से कुछ नहीं होने का। फिर कुल्हाड़ी जड़ में पड़े तब तो कुछ हो। अनशन का कदम कोई जड़ का इलाज नहीं करता, बल्कि ऊपर-ऊपर एक वार-मात्र करता है।

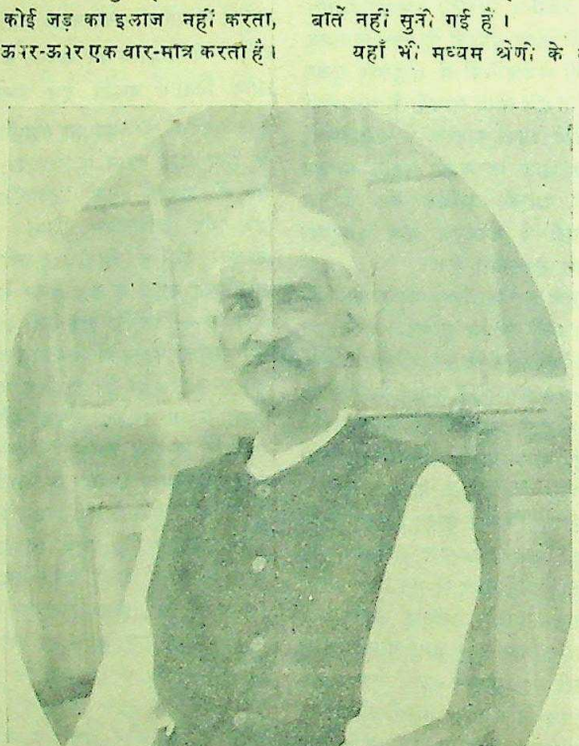

कांग्रेस समाजवादी दल के प्रमुख नेता आचार्य नरेन्द्रदेव

हमें यह देखना पड़ेगा कि जिन कारणों से हम इस परिस्थिति पर पहुँचे हैं, वे कारण दूर हो रहे हैं या नहीं? मैं समझता हूँ अब यह नारा देने का समय आ गया है कि धर्म ही इन सारे झगड़ों की जड़ में है। बहुत से बुद्धिमान् व्यक्ति गम्भीरता के साथ इस बात को सोचने लगे हैं कि जब धर्म के नाम और धर्म के कारण ऐसी भयंकर घटनायें होती हैं, तो क्या यह अच्छा न होगा कि वह खतम हो जाय? खतम होने का अर्थ यह नहीं है कि सब लोग नास्तिक ही हो जायें; बल्कि धर्म के खतम होने का मतलब इस क्षेत्र में इतना ही है कि लोग धर्म को एक वैयक्तिक मामला समझें और उसे गम्भीरता के साथ न लें।

योरोप और अमेरिका में लोग धर्म को नहीं मानते, ऐसी बात तो नहीं है। वहाँ भी लोग अपने को ईसाई कहते हैं, और उनमें प्रोटेस्टेन्ट, रोमन कैथलिक आदि के अलावा सैकड़ों अन्य फिर्के हैं पर वहाँ धर्म सम्पूर्ण रूप से वैयक्तिक है। मध्य-युग में योरोप में भी धार्मिक लड़ाइयाँ हुई हैं, पर आधुनिक युग के प्रारम्भ के साथ साथ वहाँ इस प्रकार की बातें नहीं सुनी गई हैं।

यहाँ भी मध्यम श्रेणी के लोगों में धर्म इसी प्रकार का एक वैयक्तिक मामला सा हो चला था। यहाँ मध्यम श्रेणी से मतलब हिन्दू मध्यम श्रेणी से ही है, क्योंकि मुसलमानों में तो इस प्रकार के विचारों के लिए गुंजाइश बहुत कम रही है। पर जब से दंगे अधिक संख्या में होने लगे हैं, तब से मध्यवित्त मध्यम-श्रेणी के भी कान खड़े हो गये। और तो और वस्तु-स्थिति कुछ ऐसी है कि मेरे जैसे जो लोग खुल्लमखुल्ला किसी धर्म को नहीं मानते

समझते हैं क्योंकि वे लोगों को संग्राम से बेखबर कर देते हैं, वे के दिनों में सावधानी से चलने लिए बाध्य होते हैं। बात यह है विचारों को देखनेवाला कोई वहाँ तो यही देखा जायगा कि अमुक व्यक्ति हिन्दू जँचता है या बातचीत के पहले ही पीठ पर हो जाता है।

महात्मा गांधी बहुत उदार चरितवाले और समदर्शी पुरु वे भी धर्म मानते हैं। वे रूप से धार्मिक हैं, पर उनका धर्म हारिक क्षेत्र में इतना उदार समदर्शी हैं। किसी धर्म का मा हो उसमें भेद नहीं करते। यदि इसी दृष्टिकोण से धर्म मानते, कम से कम जिस प्रकार के दंगे वह न होते।

पर धर्म में कुछ ऐसी विशे जिसके बारे में हमें जानने की आव नहीं है कि आम आदमियों में ज्यों ही जाता है त्यों ही उसकी नष्ट हो जाती है। विभिन्न धर्मों एक विशेष धर्म को मानने का मतलब यह होता है कि अन्य धर्म यह धर्म श्रेष्ठ है। यदि एक विशे को मानने के पीछे यह विचार न तो उस धर्म को अपनाने का कोई अर्थ होता ही नहीं। इस प्रकार स्पष्ट है कि जितना भी सर्व धर्म स किया जाय, सब धर्मों में लड़ाई के अन्तर्निहित है।

दुःख का विषय है कि अन्य पहलू को लोग कम समझते हैं और नतीजा यह है कि असली दवा को ढूँढ़ पा रहा है। सब इधर-उधर रहे हैं और पैबंदबाजी कर रहे हैं लोग आज धार्मिक कट्टरपन का लेकर हिन्दुओं और मुसलमानों को रहे हैं, वे इस बात को नहीं समझ कि वे इस प्रकार धर्म की ही जड़ रहे हैं। ऐसे ही लोगों ने योरोप की कब्र खोदी दी और वहाँ धर्म कुछ अनुष्ठान और शिष्टाचार ए है। इसके अतिरिक्त वहीं के में मार्क्सवाद की उत्पत्ति हुई, वैज्ञानिक रूप से धर्म की जड़ को कर फेंक दिया। यह बात जरूर भारतवर्ष में अभी लोग देर में पर ये दंगे एक अजीब तरीके से

शेष पृष्ठ १७ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोआखाली-यात्रा के संस्मरण

श्री प्यारेलाल भाई के साथ यात्रा में कुछ दिन रहकर मैंने क्या देखा?

लेखक, सैयद महमूद अहमद 'हुनर'

श्री प्यारेलाल जी महात्मा गांधी के प्राइवेट सेक्रेटरी हैं। पिछली बार गांधी जी के नोआखाली (पूर्वी बंगाल) की पैदल यात्रा की थी। श्री प्यारेलाल जी, महात्मा जी के नोआखाली से चले आने पर भी, वहाँ के गाँवों में सेवा-कार्य करते रहे। इस लेख के लेखक श्री हुनर महात्मा जी की नोआखाली की यात्रा में उनके साथ थे। लेखक ने इस लेख में यात्रा तथा श्री प्यारेलाल जी के दैनिक जीवन का विस्तृत वर्णन किया है, जो पठनीय तथा सुन्दर है।

महात्मा गांधी को ट्रेन पर चढ़ने के लिये, उनके प्राइवेट सेक्रेटरी श्री प्यारेलाल सहारा दे रहे हैं।

भटियालपुर नोआखाली के उस गाँव का नाम था, जिसमें गांधी जी के प्राइवेट सेक्रेटरी श्री प्यारेलाल नय्यर दंगापीड़ितों की सहायता और उन्हें दोबारा बसाने का काम कर रहे थे। मुझे गांधी जी के पास गये हुए १० ही दिन हुए थे, कि प्यारेलाल भाई बापू से मिलने आये और मुझे एक दिन के लिए बापू से माँग लिया। अमीशापाड़ा नाम के गाँव से जब दूसरे दिन सुबह ७ बजे आगे यात्रा के लिए चले, तब मैं भी प्यारेलाल भाई के साथ हो लिया। मैंने यह समझा था कि उस नए गाँव से प्यारेलाल भाई का पत्र करीब ही पड़ता होगा और हम वहाँ से सीधे भटियालपुर चले जायँगे। लेकिन वहाँ पहुँचने पर मालूम हुआ कि हमें फिर वापस अमीशापाड़ा जाना है। वहीं पर जीप मिलेगी, जो हमें भटियालपुर पहुँचा देगी। प्यारेलाल भाई ने पाँच-छः मील की पैदल यात्रा सिर्फ इसलिए की थी कि घंटा सवा घंटा और बापू की सेवा में बीत जाय, आखिर में एक गाड़ी को लेकर अपने बिस्तर के साथ फिर अमीशापाड़ा वापस आया। वहाँ सड़क पर एक दुकान पर बैठकर प्यारेलाल भाई की राह देखने लगा। डेढ़ घंटे बाद प्यारेलाल भाई भी पहुँचे। एक घंटे के बाद जीप आ गई। आजाद हिन्द फौज के चार-पाँच मुसलिम सिपाही भी आ गये। जिन्हें अपने साथ ही जीप पर काजिरखेल जाना था। जीप के आने पर पीछे की तरफ तीन आदमी बैठे। आगे ड्राइवर के बगल में और प्यारेलाल भाई बैठ गये। ड्राइवर के दूसरी तरफ बिल्कुल किनारे बैठा था। प्यारेलाल भाई बीच और ड्राइवर के बीच में बैठे थे। जीप चली और १९-२० मील चलकर काजिरखेल पहुँची। रास्ते भर बैठे-बैठे मेरा सब थक गये। जब मैं उतरा तो मेरा एक पैर कुछ देर तक बिल्कुल सुन्न रहा। काजिरखेल में प्यारेलाल भाई का एक अलग कमरा था। वहाँ पहुँचकर उन्होंने सबसे पहले खादी आश्रम का बने हुए जमे हुए दूध का बड़ा गिलास शरबत बनाकर मुझे पिलाया और खुद भी पिया। भटियालपुर अब मोटर से कुछ ही सात मील रह गया था। प्यारेलाल भाई को अपनी बहन डा० सुशीला नय्यर का इन्तजार था क्योंकि वे भी किसी दूसरे सेन्टर से आकर अपने साथ ही गाँव जानेवाली थीं। यह तय हुआ था कि वे हमें जीप पर भटियालपुर पहुँचाकर अपने गाँव चली जायँगी। शाम को साढ़े पाँच बजे के करीब हम लोग जीप पर सवार हुए। जीप में सिर्फ पाँच आदमी थे। प्यारेलाल भाई, सुशीला बहन के साथ रहनेवाला एक मुसलमान सिपाही, प्यारेलाल भाई के साथ रहनेवाले गुरबचनसिंह नाम के एक भाई और सुशीला बहन आगे बठ गईं और हम चारों आदमी पीछे बैठ गए। जीप चली और थोड़ी-थोड़ी दूर पर बने लकड़ी के पुलों पर चढ़ने-उतरने लगी।

थोड़ी दूर चलने पर मेरे लिए सड़क के किनारे के दृश्यों में कोई आकर्षण न रहा। मेरी दिलचस्पी का केन्द्र सुशीला बहन बन गईं। मैं देख रहा था कि किस इत्मीनान और बेफिक्री के साथ वे अपनी सीट पर बैठी हुई थीं। न उन्हें सड़क के गड्ढों में पड़कर जीप के उछलने-कूदने का डर था और न थोड़ी-थोड़ी दूर पर पुल पर जीप के चढ़ने-उतरने से लगनेवाले धक्कों की परवाह थी। एकाएक मुझे ख्याल आया कि जब मैं दिन में जीप पर काजिरखेल आ रहा था तो प्यारेलाल भाई किस तरह शुरू से आखिर तक आगे बैठे हुए कभी जीप के आगे शीशे के पास लगे हुए लोहे को पकड़ लेते थे और कभी दूसरे हाथ को आगे शीशे के चौखटे में टेक लेते थे। लोहे पर टेक लेते थे। मैं सोचने लगा और यह सोच-सोचकर हैरान होने लगा कि प्यारेलाल भाई आखिर पुरुष थे और सुशीला बहन अगर्चे नोआखाली के गुस्से में भरे हुए मुसलमानों के बीच बड़ी मर्दानगी से काम कर रही थीं, फिर भी आखिर में स्त्री थी, पतली-दुबली और शारीरिक हैसियत से कमजोर। फिर आखिर क्यों वे इस तरह इत्मीनान से बैठी हुई थीं? क्यों प्यारेलाल भाई मेरे और ड्राइवर के बीच में बैठे होने पर भी इस तरह डरे हुए थे। मैंने प्यारेलाल भाई से कहा भी था कि आप इस तरह क्यों बैठे हैं? इस सहारे की क्या जरूरत है; तो प्यारेलाल भाई ने मुझसे सिर्फ इतना ही कहा था कि एक बार धक्का लगने से मेरे सिर में चोट आ चुकी है। लेकिन असल परिस्थिति का मुझे उस समय ज्ञान हुआ जब हम भटियालपुर पहुँच गए। सुशीला बहन भी हम लोगों को विदा करने के लिए जीप पर से उतरीं। तब मैंने गौर से उस सीट को देखा जहाँ वे बैठी थीं। मुझे बड़ी शर्मिन्दगी हुई। कि क्यों मैं दिन में इस सीट पर बैठा था। यह कहने में मुझे तनिक भी संकोच नहीं कि इससे पहले मैंने जीप को कभी इतने पास से नहीं देखा था, क्योंकि जीप का उपयोग लड़ाई के वक्त केवल फौज में होता था। फौज या फौजी गाड़ियों के प्रति हिन्दुस्तानियों के मन में दो ही भाव रहते थे। एक तो भय का और दूसरे घृणा का। जैसी ड्राइवर की सीट थी, बिल्कुल वैसी ही उसके बगल में एक दूसरी सीट थी सिर्फ एक आदमी के बैठने के लिए और उस एक सीट पर मैं और प्यारेलाल भाई बैठकर उन्नीस-बीस मील चले थे। स्पष्ट है कि जब उस सीट पर मैं बैठ गया था तो प्यारेलाल भाई के बैठने के लिए कहाँ से जगह निकलती। फिर भी दो तीन इंच जगह पर वे किसी तरह अपने को टेककर बैठ गये थे। यदि गाड़ी में कोई धक्का न लगता तब भी उन्हें बिना किसी सहारे के बैठना नामुमकिन था। जब सुशीला बहन चली गईं और हम प्यारेलाल भाई के साथ उनके गाँव पहुँच गए तब भी बड़ी देर तक मुझे शर्म और ग्लानि सताती रही। फिर भी मेरी हिम्मत न पड़ी कि मैं जब तक प्यारेलाल भाई के साथ रहा, उनसे कभी यह कहता कि आपने क्यों मेरे लिए इतना कष्ट उठाया।

बिहार में पीड़ितों के लिये एक अंधा गांधी जी को चन्दा दे रहा है। इस लेख के लेखक भी हुनर गांधी टोपी लगाये दिखाई देते हैं।

भटियालपुर बाड़ियों के एक समूह का नाम था, और प्यारेलाल भाई जिस जिस बाड़ी में रहते थे, वह व्यापारी बाड़ी के नाम से मशहूर थी। प्यारेलाल भाई उसी घर में रहते थे, जिसमें अपनी यात्रा के समय बापू ठहरे थे। टीन का छाया हुआ एक छोटा सा घर था जिसमें तीन कमरे थे। एक कमरे में मकान मालिक का कुछ सामान था और दो कमरे प्यारेलाल भाई के इस्तेमाल के लिए थे। अन्दर के कमरे में छोटी सी मेज पर किताबें और अखबारों की फाइल रखी हुई थीं। क्योंकि बापू की अधिकतर डाक प्यारेलाल भाई के पास ही आती थी। रात हो चुकी थी और अँधेरा छा चुका था। पहले तो प्यारेलाल भाई ने लालटेन जलाई और फिर पड़ोस के एक बंगाली के घर में भोजन करने के बाद वे पेट्रोमैक्स जलाने लगे। मैंने समझा शायद किसी सभा का आयोजन है। पेट्रोमैक्स का तीव्र प्रकाश वहाँ काम देगा, लेकिन प्यारेलाल भाई ने बताया कि वे रात में मामूली रोशनी में न लिख सकते हैं और न पढ़ सकते हैं। जिस काम के लिए मैं उनके पास गया था, उसे प्यारेलाल भाई ने दूसरे दिन शुरू करने को कहा। मैं थोड़ी देर अपनी बँगला प्राइमर में नये पाठ का अभ्यास करने के बाद सो गया। सुबह मुझे किसी ने जगाया नहीं, क्योंकि आज सुबह उठते ही बिस्तर आदि बाँधकर मुझे ठीक सात बजे बापू के साथ कूँच नहीं करना था। साढ़े सात बजे के करीब आँख खुली तो मैंने देखा कि प्यारेलाल भाई गाँवों के दो-तीन आदमियों को साथ लेकर बाड़ी में झाड़ू लगा रहे हैं। उनका साथ देने की मेरी हिम्मत न पड़ी। अफसोस कि पहले दिन की इस कमजोरी ने मुझे किसी दिन भी उनके साथ गाँव की सफाई में हिस्सा लेने के योग्य न रक्खा। मैं कमरे में बैठा रहा और बाहर तक न निकला। जब प्यारेलाल भाई बाड़ी की हर गली और हर रास्ते की सफाई करके और कूड़ा इकट्ठा करके एक जगह फेंककर कमरे में आये तो उन्होंने मुझसे कहा चलिये चलकर नहा लें। एक पक्के घाटवाले तालाब में नहाकर आने के बाद हमने जलपान किया। प्यारेलाल भाई ने स्टोव जलाकर मेरे और अपने लिए एक-एक गिलास दुध तैयार किया। उनके घर के बगल ही में एक दूसरा घर था। जिसमें शिवसरनसिंह और मलिकीर्तसिंह रहते थे। शिवसरनसिंह गाजीपुर के रहनेवाले थे और मलिकीर्तसिंह पंजाब के सिक्ख थे। ये दोनों प्यारेलाल भाई के साथ सफाई वगैरह में पूरा हिस्सा लेते थे। ग्यारह बजे के करीब प्यारेलाल भाई ने वह

शेष पृष्ठ १५ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रगतिशील लेखक-सम्मेलन

"हाथी आया, हाथी आया, हाथी बोला पों"

अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक-सम्मेलन का एक संस्मरण और लेखा-जोखा

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम', बी० ए०

बड़ा शोर था कि 'प्रगतिशील-लेखक-संघ' की ओर से प्रयाग में अखिल भारत-वर्षीय रैमाने पर एक बृहद् आयोजन होने जा रहा है। उसमें भारतवर्ष के सभी गण्यमान्य धुरन्धर साहित्य-कर्मी उपस्थित होकर हिन्दी-साहित्य की वर्तमान समस्याओं पर विचार कर भविष्य के लिए कोई मार्ग निकालेंगे। पुराने अनुभवों की विद्यमानता में भी एक बार मेरे सन्दिग्ध मन ने अपने को पूर्ण दृढ़ता के साथ सन्नद्ध किया। एक बहुत बड़ा व्यक्तित्व वहाँ उपस्थित होनेवाला था। अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध महापंडित राहुल सांकृत्यायन जी का दर्शन ही इस महाकार्य की सिद्धि थी। ६ जुलाई को प्रयाग के अग्रवाल विद्यालय में देखने पर लगी भीड़ का सबसे सघन अंश द्वार पर ही था, जिनमें अधिकांश सज्जन स्वयंसेवकों का बिल्ला लगाये अतिथियों का मार्ग-प्रदर्शन कर रहे थे। भीतर जाकर देखा, करीब सौ-सवा सौ की उपस्थिति थी। भीड़ समय के व्यतीत होने के साथ-साथ भारतीय पद्धति के अनुसार बढ़ती आ रही थी। सहसा देखा कि एक विशालकाय, मन्दगामी, प्रशस्त ललाट व्यक्तित्व आगे-आगे चला आ रहा था। लोगों में एक उत्सुकता की लहर दौड़ गई। हमारे पूज्य महापंडित जी आ गये। उनके आसन पर आते ही जनता ने करतल-ध्वनि से उनका स्वागत किया। पूर्व-घोषणा के अनुसार श्री डा० पं० अमरनाथ झा भी उद्घाटन के लिए मंच पर गये। सांकृत्यायन जी की दूसरी ओर श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन समारोह की गम्भीरता को बढ़ा रहे थे। माननीय झा साहब ने अस्वस्थता के कारण लिखित भाषण तो नहीं दिया, पर अपने गम्भीर सुनिश्चित मत के अनुसार प्रभावपूर्ण शब्दों में हिन्दी की समस्याओं उर्दू-सबधी भ्रान्तियों और तथा कथित 'प्रगति-शीलता' पर अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने अपने उत्तरदायित्वपूर्ण ढंग से प्रगतिशीलता के अन्तर्विरोधों का संकेत किया और कहा कि साहित्यिक तो अपने वास्तविक रूप में सदैव प्रगतिशील है। हाँ, प्रगतिशीलता की यदि कुछ विशिष्ट अर्थ-सीमा मानी जाय तो यह प्रश्न एक गम्भीर चिन्तन का विषय होगा।

इसके बाद स्वागताध्यक्ष श्री कौसल्यायन जी ने अपना सारगर्भित लिखित भाषण पढ़ा। आपने साँधारण औपचारिक शिष्टाचार के उपरान्त हिन्दी की वर्तमान समस्याओं पर प्रकाश डाला, जो उनके जैसे दूरदर्शी और गम्भीर व्यक्ति के लिए उपयुक्त ही था। उन्होंने माननीय झा साहब के द्वारा उठाये गये प्रश्नों पर विचार करते हुए यह कथन किया कि हिन्दी ही हमारी राष्ट्र-भाषा हो सकती है; किन्तु हिन्दी साहित्य को 'स्थिति-शीलता' को छोड़कर 'प्रगतिशीलता' को अपनाना ही होगा। उन्होंने आगे उसे दो घास के गट्ठर ढोनेवाले मजदूरों की कथा से स्पष्ट किया कि स्थितिशील साहित्यिक उस मजदूर के समान है जो सदैव घास का ही गट्ठर होना पसन्द करता है, पर प्रगतिशील साहित्यिक उस बोझ ढोनेवाले के समान है जो

अ० भा० प्रगतिशील लेखक सम्मेलन के सभापति प्रसिद्ध विद्वान् महापण्डित राहुल सांकृत्यायन।

राह में रुई अथवा अन्य बहुमूल्य उपयोगी वस्तुओं का गट्ठर उठा लेता है। एक सत्यशील तटस्थ विवेचक के नाते इतना तो उन्होंने स्पष्ट स्वीकार किया कि आधुनिक प्रगतिशील साहित्य बहुत कुछ अपनी प्रतिक्रियात्मक अवस्था में है। अब उसे ध्वंस के मार्ग को छोड़कर सर्जन के पथ पर अग्रसर होना है, जिसका अर्थ सीधे शब्दों में यही होता है कि तथाकथित प्रगतिशील साहित्य को अब अपना सहज स्वस्थ रूप प्राप्त करने के लिए सांस्कृतिक दृष्टि से भी अपना स्थान निश्चित करना है। उन्होंने यह स्वीकार किया कि जनता की जीवन-प्रतिध्वनि होने के साथ ही उसमें विकार और विक्षोभ भी स्वभावतः आगये हैं। उन्होंने बड़े मनोरंजक ढंग से आधुनिक साहित्यकारों की दयनीय दशा की ओर संकेत किया।

भदन्त जी के भाषण के बाद प्रगतिशील-साहित्य की जो एक धारणा मन में बनी, जाने क्यों मुझे लगा, वह बहुत अंशों में उस साहित्य से भिन्न लगी जिस पर प्रगतिशीलता का बिल्ला लगाकर खुलेआम प्रचार किया जाता है। इसके बाद श्री सज्जाद जहीर का भाषण और 'उर्दू-प्रगतिशील (परगतिशील, जैसा कि मुझे सुनाई पड़ा!) —'लेखक-संघ' का संदेश सामने आया। दोनों से जो प्रश्न सामने आये उनसे समस्या बजाय सुलझने के और भी उलझ गई। संदेश, जिसे एक छोटा-सा प्रबंध कहें तो अच्छा हो, यह घोषित कर रहा था कि हिन्दी और उर्दू न केवल भाषा की दृष्टि से वरन् सांस्कृतिक आदान-प्रदान की दृष्टि से भी एक हैं। उनकी माँगें थीं कि उर्दू को भी उसके वर्तमान रूप में स्वेच्छा से चलते दिया जाय। हाँ, दोनों को आगे चलकर निकट लाने में लिपि की दृष्टि से 'रोमन' या 'देवनागरी' भी सहायक सिद्ध हो सकती है'। हिन्दी के समर्थक श्री भदन्त, उर्दू के हिमायती 'उर्दू के प्रगतिशील लेखक-संघ' और इन दोनों की खिचड़ी इस 'प्रगतिशील-लेखक-संघ' की तीन भिन्न स्थितियों से एक अजब-सी खीझ उत्पन्न हुई। मुझे लगा अवश्य इस 'प्रगतिशील' नामधारी मंच के पीछे कोई साहित्येतर प्रेरणा है जो कहीं के ईटों और कहीं के रोड़ों से भानमती का कुनवा जोड़ रही है।

अन्त में श्री महापंडित राहुल जी ने अपना सभापति का लिखित भाषण प्रारम्भ किया। अवश्य ही उन विस्तृत-चेता के मन में साहित्य के अलावा राजनीतिक प्रश्नों की चेतना प्रधान थी। उन्होंने भी 'प्रगति-शीलता' की व्याख्या की और पुरातन रूढ़िवाद को छोड़कर जन-जीवन के निरन्तर विकास के सरल कल्याण-मार्ग का अनुगमन प्रगतिशीलता का लक्षण माना। इसके बाद अन्य अनुपस्थित साहित्य-कर्मिओं के शुभ-संदेश पढ़े गये।

* * *

दूसरे दिन बड़ी सजगता के साथ अग्रवाल विद्यालय पहुँच ही गया। ऊपर कोठे के फर्श पर सम्मेलन की व्यवस्था थी। सर्वश्री राहुल जी और कौसल्यायन जी के अतिरिक्त 'अज्ञेय', भगवत्-शरण उपाध्याय, प्रभाकर माचवे, रामविलास शर्मा, गंगाप्रसाद मिश्र और मुक्तिबोध तथा पंजाब से आये हुए एक विद्वान् सज्जन भी उपस्थित थे। सबसे पहले श्री प्रकाशचन्द्र जी गुप्त का 'आलोचना' पर निबन्ध पढ़ा गया, जिसमें उन्होंने भारतेन्दु के नाटक-संबंधी प्रथम प्रयास से लेकर, द्विवेदी जी, मिश्र-बन्धु पद्मसिंह शर्मा, कृष्णबिहारी मिश्र, आदरणीय 'शुक्ल' जी, हजारी-प्रसाद द्विवेदी, बख्शी जी, रामकुमार वर्मा आदि के होते हुए तथाकथित प्रगतिवादी आलोचक रामविलास शर्मा, शिवदानसिंह चौहान तथा प्रभाकर माचवे आदि तक ने अपनी विहंगम दृष्टि डाली। उन्होंने कहा कि अपनी सारी गम्भीर शास्त्रीय चिन्तना और सहृदयता की तल-स्पर्शी दृष्टि के होते हुए भी 'शुक्ल' जी की अपनी सीमाएँ रही हैं। पाश्चात्य शास्त्र से सुपरिचित होकर भी वे 'पन्त' और 'निराला' को अपनी सहृदयता न दे सके। उसके बाद उन्होंने डा० रामविलास शर्मा और श्री शिवदान-सिंह चौहान के बीच उठ पड़े विवाद का उल्लेख करते हुए बतलाया कि जहाँ शर्मा जी प्रगतिवादी साहित्य का मूल जीवन और समाज के प्रति नवीन मार्क्सवादी दृष्टिकोण को मानते हैं वहाँ चौहान जी उसमें 'कलात्मकता के लिए भी स्थान अक्षुण्ण रखना चाहते हैं।' उन्होंने वर्तमान आलोचकों में पं० हजारीप्रसाद जी द्विवेदी और डा० रामकुमार वर्मा को स्थितिशील आलोचकों की श्रेणी में रखते हुए भी यह माना है कि आधुनिक साहित्य के प्रति उनका सहानुभूति का भी दृष्टिकोण है। इसका विरोध उदयपुर की घटना का उल्लेख कर स्वयं भदन्त जी ने ही किया, जिसका उत्तर प्रकाशचन्द्र जी ने यह दिया कि आधुनिक साहित्य से उनका मतलब शत-प्रतिशत 'प्रगतशील साहित्य' से नहीं है। इसी सम्बंध में श्री भगवतशरण उपाध्याय और प्रभाकर माचवे ने यह समस्या उपस्थित की कि अन्ततः इस प्रगतिवादी साहित्य के मूल्यांकन का भी कोई निश्चित मापदंड होना चाहिए जिससे हमारे सामने प्रगतिवाद का भी एक आदर्श हो। अश्लील, विक्षोभ और विकृति की आवजनीय रचनाओं को

प्रसिद्ध विद्वान् डाक्टर अकरनाथ झा प्रगतिशील सम्मेलन का उद्घाटन कि

कुछ भी स्थायित्व न दे पायेंगी। प्र
युग का साहित्य उस युग का प्रति
तो होता ही है, किन्तु क्या वह
रूप में दूसरे युग के लिए मृत
हो जाता है। आज भी हम अन्य
साहित्य को पढ़ते हैं। तब अपने
के साहित्य का भी रूप कुछ इंगित
होना ही चाहिए। इसी बीच एक बात
मनोरंजक रही कि प्रगतिशीलों में
गोरा बादल जी अपना आचार-
लेकर उतर पड़े। उन्होंने कहा कि प्र
शील साहित्यिकों को कुछ चरित्र
भी ध्यान रखना चाहिए, तभी वे
रुचि को अपनी ओर खींच सकें
किन्तु डा० रामविलास शर्मा ने सब
पानी फेर दिया। अपने यौढेय
में परिहास का पुट देते हुए
मत उपस्थित किया, उसका अर्थ
यही था कि उनके और शिवदान
बीच चले विवाद तो ऐसे ही
हैं। उनसे घबड़ाकर स्वयं प्रगतिशी
को किसी निश्चित आदर्श के
में न पड़ जाना चाहिए। वे तो
समय की गति के साथ अपना स्वर
हुए जब जो समझते हैं, कहते चलते
जो कुछ भी मार्क्सवादी दृष्टिकोण
जनता के लिए लिखा जा रहा है
साहित्य है और उच्च साहित्य है।
कल्याण सबसे बड़ी कसौटी है।
सभी प्रगतिशीलों का ध्येय होना चाहि
हाँ, उन्हें (उनके शब्दों में) प्रतिक्रि
वादियों से अपने अस्तित्व की रक्षा
लिए अन्य युगों के साहित्य पर भी
न कुछ लिखते रहना चाहिए। कदा
इसलिए कि यद्यपि वह उनकी
में सच्चा साहित्य नहीं, किन्तु जन-
रण को भ्रम में रखने के लिए अपने
सांस्कृतिक परम्परा से सम्बन्धित
करना एक सफल कूटनीति होगी।
रही श्री शर्मा जी की आलोचक
स्थिति।

इसके पश्चात् प्रसिद्ध प्रगति
कथाकार श्री यशपाल जी ने सन् ३६
सन् ४६ तक के दश वर्षों के हिन्दी-
साहित्य की प्रगति पर अपना
अथवा सद्यः अर्धलिखित निबंध
यशपाल जी की दृष्टि पैनी और
विद्रूपमयी थी। उन्होंने अपनी क्षमा-
में (जिसकी उन्हीं के शब्दों में उन्हें
नहीं) कहा कि जिनका नाम उन्होंने
लिया, उनके प्रति उनकी हीन
नहीं, वरन् विषय की एक सीमा
और कदाचित् अन्त में निबंध
वे ही अधिक प्रसन्न हों जिनका
न आया होगा। स्वयं राहुल जी,
नाम उन्होंने सर्वप्रथम 'बाल्मा
तक' के रचनाकार के रूप में
कहानीकार नहीं हैं। उन्हें एक
उपदेशक कहा जा सकता है।

शेष पृष्ठ १६ पर

अ० भा प्रगतिशील लेखक सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्रीभदन्त आनन्द कौसल्यायन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्म-कुंडली

लेखक, चक्रवर्ती श्री सी० राजगोपालाचारी
अनुवादक, प्रोफेसर श्रीनारायण अग्रवाल, एम० ए० बी० काम

यह एक तामिल कहानी है और इसके मूल लेखक चक्रवर्ती श्रीराजगोपालाचारी राष्ट्र के नेता ही नहीं वरन् एक श्रेष्ठ कहानीकार भी हैं। आपने दर्जनों कहानियाँ अपनी मातृ-भाषा में लिखकर साहित्यिक यश प्राप्त किया है। आपकी यह कहानी यद्यपि छोटी है, किन्तु अत्यन्त रोचक, कलात्मक और सुन्दर है।

वान् होगा, धनी-व्यापारी होगा; परन्तु उससे उसके पिता को कोई लाभ नहीं होगा।"

* * *

अय्यर मास्टर के घर अन्य कोई स्त्री नहीं थी। अखिला के नौ महीने पूरे होने आये थे। अय्यर के मित्रों ने उन्हें सलाह दी कि अखिला को मदरास के 'एगमोर मेटरनिटी होम' में दाखिल कर देना चाहिए। अय्यर ने उनकी सलाह को अमलीजामा पहना दिया। कुछ दिनों बाद--एक दिन रात को नौ बजे--अखिला ने पुत्र प्रसव किया। नर्स ने अस्पताल के नियमानुसार तुरन्त ही बच्चे को उठाया और उसका वजन करने के लिए आफिस में ले गई।

उसी रात को; उसी क्षण; अस्पताल में तीन बच्चों का जन्म हुआ। यह देखकर नर्सों को अति आनन्द हुआ। वह खुशी से कार्य में संलग्न थीं। बच्चों की अदल-बदल न हो जाय इस डर से अस्पताल की प्रथानुसार हरएक बालक की कमर में एक नंबर लटकाया गया।

इन बालकों में से एक का रंग गेहुँआ था। बाकी दो गौरवर्ण के थे; परन्तु वजन तीनों का समान ही था। जो नर्स अखिला के शिशु को वजन करने के लिए ले गई थी, वह वजन होने के पश्चात् उसे वापस ले आई। बालक को पलने पर लिटाकर वह चली गई। इतने में दूसरी नर्स आई। उसने उस बच्चे को भी उसी पलने पर लिटा दिया। इन दोनों बच्चों की कमर से लटके हुए 'परिचय-पत्र' खुलकर अलग पड़े हुए हैं--इस ओर किसी का भी ध्यान नहीं गया।

इतने ही में स्वामीनाथ अय्यर अस्पताल में आ पहुँचे। 'सिस्टर' से उन्होंने अपने बच्चे की कुशल-क्षेम पूछी और उसे देखने की इच्छा प्रगट की।

सिस्टर ने एक चपरासी को बुलाया और अखिला के बालक को लाने का हुक्म दिया। चपरासी नर्सिंग क्वार्टर में गया। वहाँ शोर-गुल मचा हुआ था। कौन-सा बालक किसका है? यही समझ में नहीं आता था। पहली नर्स ने अखिला का बालक लाकर रखा था; वह बालक एक मुसलमान स्त्री का है, ऐसा वह जोर देकर कह रही थी। नर्सों का आपसी वाद-विवाद चल ही रहा था कि 'बड़ी नर्स' आई। उसने उनका झगड़ा मिटा दिया। एक ही समय जन्मे हुए तीन बच्चों को तीन परिचय-पत्र बाँध दिये गये। उसमें से एक बच्चे को उठाकर चपरासी की गोद में दे दिया गया और अखिला को देने के लिए कह दिया गया।

यह घटना नर्सों के अलावा अन्य किसी को मालूम न थी। बेचारी अखिला और उसका पति स्वामीनाथ कुछ दिनों बाद उस मुसलमान बालक को लेकर घर आ गये और अब्दुल तैयब जी की बीबी अखिला के बालक को अपने घर ले आई। दोनों माताएँ अपने अपने बालकों का लाड़-प्यार करने में मग्न थीं।

शौकत तैयब जी धनवान् थे। अपने बच्चे का लालन-पालन उन्होंने सेठ-साहूकारों की शान-शौकत और रईसी ढंग से किया। अखिला ने भी अपने छोटे से घर में 'अपने बच्चे' को फूल के समान रक्खा। दोनों बच्चों के पिता बालकों पर बेहद खुश थे।

* * *

२२ वर्ष बीत गये इस बात को। तैयब जी सेठ की मृत्यु के पश्चात् उसके फर्जन्द ने--'सुलेमान'--ने अपने पिता का व्यापार सँभाला। मदरास के लख-पतियों में आज उनकी गिनती है। शहर के एक 'धनी-मानी रईस' की प्रसिद्धि आज उन्होंने प्राप्त कर ली है।

श्री अय्यर का नारायण बड़ी मुश्किल से मैट्रिक पास हुआ। बंबई, कलकत्ता में और अन्य शहरों में उसने नौकरी करने का प्रयत्न किया; परन्तु कहीं नौकरी न मिली। अतः वह घर आ गया। श्री अय्यर अपना सिर पीटते और भाग्य को दोष देते हुए कहते,--"यह ज्योतिष-वोतिस--सब--सब--झूठ है! मेरा कोई विश्वास नहीं है उस पर!!"

* * *

आप ही कहिए, ज्योतिष-शास्त्र सही है या झूठा है--या अय्यर बाबू झूठे हैं?

गो-रक्षा कैसे हो?

हिन्दू कर्त्तव्य का पालन करें

लेखक, श्री अद्वैतकुमार गोस्वामी

आज भारतवर्ष में चारों ओर से गो-रक्षा की जो प्रबल आवाज सुनाई पड़ रही है इससे पहले इतनी जोरदार आवाज सामूहिक रूप से कभी भी नहीं उठी थी। यह हमारे लिए बड़े हर्ष और सौभाग्य का विषय है कि भारत के हिन्दुओं ने गोमाता की उपयोगिता को समझा तो सही। अब एक ओर जहाँ कि हम अपनी कांग्रेस सरकार पर गोवध-निषेध कानून के लिए जोर दे रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर हमारा भी तो कुछ कर्त्तव्य हो जाता है। हमारे उसी कर्त्तव्य की ओर पूज्य महात्मा गांधी हमारा ध्यान कई बार यह कहकर दिला चुके हैं कि--कानूनन गोवध-निषेध बन्द करना उचित न होगा। उस समय तो हम पूज्य बापू के इस वक्तव्य पर काफी उत्तेजित हुए और समय के प्रभाव में बहकर उनके इस कथन को अनुचित भी बतलाया, पर वास्तव में और अपने विवेक पर जरा जोर देकर सोचा जाय तो असलियत में गांधी जी का कथन ठीक था। यह हम हिन्दू-मात्र के लिए कितनी शर्म, लज्जा और दुःख की बात है कि हम सरकार से कानूनन गोवध बन्द कराना चाहते हैं जब कि हम इसके लिए स्वतः ही कुछ चेष्टा करने के लिए तैयार नहीं। यदि आज भारत के सारे हिन्दू-मात्र चाहें तो कल से ही गोवध बन्द हो सकता है और वह भी बड़ी शान और मर्यादा के साथ। इसके लिए हिन्दू भाइयों को कुछ त्याग करना पड़ेगा, अपनी आरामतलबी को छोड़ना होगा और सच्चे दिल से गो-माता की रक्षा करने की प्रतिज्ञा लेनी होगी। तब कहीं जाकर हम अपने उद्देश्य में सफल होंगे।

इस कार्य के लिए मैं सिर्फ तीन बातों की ओर हिन्दू-मात्र का ध्यान आकर्षित करता हूँ। यदि प्रत्येक हिन्दू सच्चे दिल से इन बातों का पालन करे तो बहुत शीघ्र ही गो-वध बन्द हो सकता है।

(१) प्रत्येक हिन्दू-मात्र अपने अपने घर में एक गो अवश्य रक्खें।

(२) अनादि काल से गोदान की जो मर्यादा चली आ रही है वह गो-दान हम वास्तव में ऐसे आदमी को दें, जो कि सत्पात्र हो और उस गो को स्वयं अपने यहाँ रखे।

(३) अनाथ-बूढ़ी और कमजोर गो की रक्षा की व्यवस्था करें।

इन तीनों बातों के अन्दर वह सारी योजनाएँ आ जाती हैं, जिनके द्वारा हम गो-रक्षा करना चाहते हैं। अब तक के अनुभवों से तो हमारा यही विश्वास है कि गो-दान की विशालता से ही हम गो-हत्या को ज्यादा प्रोत्साहन दे रहे हैं। मुझे अपने यहाँ वृन्दावन का काफी अनुभव है और मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि गो-दान में प्राप्त ५० प्रतिशत गायें बूचड़खाने में पहुँच जाती हैं बाज बाज

शेष पृष्ठ १३ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य और व्यायाम

मवेशियों की चिकित्सा

साफ हवा, जल और चारा का प्रबन्ध

लेखक, श्री डाक्टर सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग, एम० ए०

यह अत्यन्त खेद का विषय है कि ज्यों-ज्यों हम उन्नति के बहाने नूतन आविष्कारों को अपनाते जाते हैं त्यों-त्यों हमारे स्वास्थ्य का भारी ह्रास होता जा रहा है। हमारे नेता भी कृत्रिमता एवं पाश्चात्य विज्ञान की लहर में बहे जाते हैं। उन्हें यह सोचने और समझने को समय ही नहीं है कि आखिर आज से पहले भी लोग बिना दवा, शल्यक्रिया तथा इंजेक्शन की सहायता के स्वास्थ्य एवं आनन्द का उपभोग करते हुए दीर्घ काल तक जीवित रहते थे। फिर आज ही क्या हो गया जो केवल हमें ही नहीं अपितु हमारे पालतू मवेशियों को भी दवा, इंजेक्शन आदि की आवश्यकता होने लगी।

जयपुर के दैनिक "लोकवाणी" के पिछले किसी अंक में हमने पढ़ा था कि अजमेर के किसी गाँव में वेक्सीनेटरों ने दो बैलों के टीके (चेचक के) लगाये। टीके लगाते ही उनकी मृत्यु हो गई। ऐसे अनेक दृष्टान्त प्रतिदिन देखने तथा सुनने में आते हैं। पर हमारी आँखें नहीं खुलतीं। दिनोंदिन मवेशियों के शफाखानों की संख्या बढ़ती जा रही है और साथ ही मवेशियों की मृत्यु-संख्या भी।

मवेशियों के रोगी होने के कारण वही हैं जो हमारे अस्वस्थ होने के हैं। आदमी की अपेक्षा जानवर को अधिक स्वच्छ वायु, सूर्य का प्रकाश, स्वाभाविक खाद्य एवं जल चाहिए पर उन बेजबान मवेशियों की कोई नहीं सुनता। उन्हें बन्द बदबूदार सील के कामरों में रखा जाता है। उन्हें हरे घास व पत्ती के स्थान पर सूखा व पुराना चारा, दाना, खड़-कौंकड़े, यहाँ तक कि बासी रोटियाँ और सड़ा-गला अन्न भी दिया जाता है। जल भी चाहे जैसा पिलाया जाता है। ऐसी परिस्थिति में यदि वे रोगी होकर जल्द न मरें तो क्या करें?

उक्त बातों के अलावा रोग के कारणों को दूर न करके दवाओं आदि का खुलकर प्रयोग होता है। इनसे मवेशी और भी जल्दी मर जाते हैं। यदि दवाओं के स्थान पर मवेशियों के बीमार पड़ने पर साफ हवा, जल और उपवास आदि के सहज प्रयोग किये जावें, तो निःसन्देह बहुत कम मवेशी मरें।

क्या हमारे तथोक्त स्वास्थ्य-रक्षक हमारे आवेदन पर ध्यान देने की कृपा करेंगे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

प्रान्तीय सरकार और लाल फीता

हमारी कांग्रेस प्रान्तीय सरकार ने ...कार पदारूढ़ होते ही कई योजनाएँ ...चारपत्रों में प्रकाशित कीं। पर ...से कौन कौन-सी योजनाएँ कार्य्य-...में परिणत हो रही हैं, वह जनता ...अंगुलियों पर गिनी जा सकती हैं। ...योजनाएँ रह गईं वह अभी तक शायद ...कौंसिल हाउस के कमरों में लाल ...की फाइल को सुशोभित कर रही ...। प्रान्त की जनता उस दिन को, ...बहुत भाग्यशाली दिन समझेगी ...दिन कि हमारी सरकार लाल फीते-...फाइलों के चक्कर से मुक्त होगी। ...सरकार की दिक्कतों को समझते ...उसके सर पर जो जो जिम्मेदारियाँ ...भी हम जानते हैं, पर जन-साधारण ...उनसे कहीं ज्यादा जो दिक्कतें और ...उठानी पड़ रही हैं उस ओर ...जनता की सरकार को सोचना ...समझना चाहिए। ऐसी हालत ...जनता के अन्दर अकुलाहट होना ...विक है। हमारी प्रांतीय सरकार ...का उच्चारण कर चुनाव-...में विजयी हुई थी वह विनाश-...जमींदारी-प्रथा अभी तक विद्य-...है। न जाने वह कब ...होगी। प्रान्तीय सरकार ...किसानों को कुछ नपे-तुले ढंग ...की घोषणा की गई थी, इसी प्रकार ...३-४ महीने पहले हमारे माननीय ...मंत्री जी ने पत्रकारों, विद्वानों और ...की सहायता के लिये एक ...पत्रों में तथा सरकारी गजट में ...की थी। पर उस योजना के ...क्या कार्य किया जा रहा है, ...तक पता नहीं लगा। वह कौन ...भाग्यशाली पत्रकार या साहित्यिक ...कि उस योजना के अनुसार सहायता ...? कहीं हमारे माननीय शिक्षा-...की यह योजना भी उस निकलने-...राष्ट्रीय पंचांग की तरह लाल फीतों ...में ही न रह जाय? जिस ...कि हमारी प्रान्तीय सरकार ने ...राष्ट्रीय पंचांग निकालने की सुन्दर ...बनाई थी; और इस कार्य्य के ...के लिए बनारस के किसी प्रसिद्ध ...शास्त्री को भी नियुक्त कर दिया ...पर सरकारी दफ्तरों की लाल ...फाइल इस पंचांग की योजना ...गर्भ में छिपाये रही और उधर ...निकालने का समय निकल गया। ...प्रान्त के माननीय शिक्षा-...एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त ...साहित्यिक हैं और साहित्यिकों ...की दयनीय हालत से भी ...भाँति परिचित हैं। आज ...साहित्यकार अपना तिल-तिल होम ...सरस्वती की आराधना करते ...स्वाभिमान कायम रखे हुए ...हालत में तो हमारी प्रान्तीय ...को स्वतः ही साहित्यिकों की मान-रक्षा के लिए उनकी अविलंब सहायता करनी चाहिए।

यदि हमारी कांग्रेस सरकार ने वास्तव में जनता की सेवा करने का व्रत लिया है तो उसे जनता की दिक्कतों को देखते हुए शीघ्र ही अपना साहसपूर्ण कदम उठाना चाहिए। तभी वह अपने शासन में सफल होगी।

वृन्दावन —अद्वैतकुमार गोस्वामी
१० सितम्बर, ४७

* * *

आचार्य द्विवेदी जी की वसीयत

पंडित किशोरीदास वाजपेयी ने "आचार्य द्विवेदी की वसीयत" शीर्षक अभी हाल में एक लेख लिखा है। श्री वाजपेयी जी काशी-नागरी-प्रचारणी सभा के प्रेमी हैं इसीलिये वे समय समय पर उस पर अपने स्वभावानुसार टीका-टिप्पणी करते रहते हैं। इसके लिए सभा उनकी ऋणी है पर लेख लिखने से पहले यदि वह सभा कार्यालय से पत्र-व्यवहार कर लिया करें तो संभवतः उन्हें लिखने का कष्ट ही न उठाना पड़े। उदाहरणतः गत वर्ष उन्होंने सभा-भवन के हाल में जो चित्र लगे हैं उनके संबंध में एक लेख लिख डाला था, पर लेख छपने से पहले ही जो वह चाहते थे वह हो चुका था, क्योंकि सभा उस पर एक वर्ष पहले ही विचार कर चुकी थी। थोड़ा बहुत जो विलम्ब हुआ वह चित्रों के देर में मिलने से। जब इस बात की सूचना मैंने श्री वाजपेयी जी को दी तब उन्होंने उदारतापूर्वक यह स्वीकार किया कि उन्हें मुझसे पहले पूछकर लेख लिखना चाहिये था।

यही बात इस बार भी हुई है। श्री वाजपेयी जी के लेख लिखने से बहुत पहले द्विवेदी-संग्रह की एक-एक पुस्तक बाहर निकलवाकर उसकी सूची बनाई गई है जो तैयार है। यह काम पं० हजारीप्रसाद जी द्विवेदी के भाई ने किया है। कागज मिलते ही यह सूची प्रकाशित की जाएगी। सभा का विचार है कि सब विशेष संग्रहों की पूरी सूची छपवा डाली जाए तब विद्वानों के मन में किसी प्रकार का संदेह नहीं रहेगा। श्री वाजपेयी जी के दर्शन मुझे होते रहते हैं। यदि उन्होंने मुझसे पूछा होता तो मैं उन्हें वस्तुस्थिति बतला देता।

अब रही स्वर्गीय द्विवेदी जी की सामग्री के उपयोग की उनकी योजना। श्री वाजपेयी जी का इस संबंध में सुझाव बड़ा ही उत्तम है। मेरा यह भी विश्वास है कि इस काम को श्री वाजपेयीजी स्वयं अच्छी तरह से कर सकते हैं पर आर्थिक कठिनाई के कारण अन्य कई उपयोगी योजनाओं के साथ यह भी योजना भविष्य की गोद में रखी हुई है। क्या ही अच्छा होता यदि किसी धनी-मानी साहित्यप्रेमी का स्वर्गीय द्विवेदी जी की स्मृति की रक्षा में सहयोग प्राप्त हो जाता।

श्री वाजपेयी जी विश्वास रखें, ईश्वर ने चाहा तो यह शुभ काय अवश्य होगा।

काशी—रामनारायण मिश्र

* * *

कांग्रेस और हिन्दू-दृष्टिकोण

भारतवर्ष अब स्वतन्त्र हो गया है। स्वतन्त्रता-रूपी अमृत के साथ हमें एक विष भी मिला है। देश को 'हिन्दुस्तान' तथा 'पाकिस्तान' इन दो हिस्सों में बाँट दिया गया है। 'पाकिस्तान' मुसलमानों का देश होगा। वहाँ के राज्य का धर्म इस्लाम होगा। वहाँ जो नियम बनेंगे, जो शासन होगा, सब इस्लाम के दृष्टि-कोण से होगा। 'हिन्दुस्तान' के ४॥ करोड़ मुसलमान 'पाकिस्तान' को ही अपना देश समझेंगे और सदा उधर दृष्टि लगाये रहा करेंगे। इधर 'हिन्दुस्तान' का शासन-सूत्र कांग्रेस के हाथ में रहेगा जो अपने को हिन्दू-संस्था घोषित करने के लिए, अथवा देश को हिन्दुओं का देश मानने के लिए तैयार नहीं। इसका परिणाम यह होगा कि 'पाकिस्तान' दिनों-दिन अधिकाधिक प्रबल होता जायगा और 'हिन्दुस्तान' दिनोंदिन निर्बल होता जायगा।

इस सङ्कट को दूर करने के लिए आवश्यक है कि हम सब लोग ऐसे प्रयत्न में फौरन लग जायँ जिससे कांग्रेस प्रबल बन जाय। कांग्रेस ने देश की स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए जो त्याग तथा तपस्या की है उसके कारण कांग्रेस का सम्मान प्रत्येक हिन्दू के हृदय में है; परन्तु कांग्रेस की मुसलमानों को सन्तुष्ट करने की वर्तमान नीति से सभी असन्तुष्ट हैं। इसका एकमात्र उपाय यह है कि कांग्रेस में इस प्रकार के सदस्य अधिक संख्या में भर्ती किये जायँ जो भारतीय राजनीति में हिन्दू-सभ्यता, संस्कृति तथा हिन्दुत्व की भावना को प्रबल बनाने के पक्ष में हो। कांग्रेस के प्राथमिक सदस्य बनने की तिथि ३० सितम्बर १९४७ तक है। अतः हम सब को एकदम हजारों की संख्या में कांग्रेस के ऐसे सदस्य बनाने में जुट जाना चाहिए जो कांग्रेस की नीति को, उसकी विचार-धारा को भीतर से ही बदल दें।

६० राजपुर—सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार
रोड, देहरादून

'हिन्दी-सेवी-संसार'

हिंदी-जगत् के इस परिचयात्मक संदर्भ-ग्रंथ का प्रथम संस्करण सन् १९४४ में प्रकाशित हुआ था। अब हमने इसका परिवर्द्धित संस्करण निकालने का निश्चय किया है। हमारा समस्त हिंदी-भाषियों, हिंदी-सेवियों और हिंदी-सेवा से संबंधित सार्वजनिक संस्थाओं के संचालकों से विनम्र निवेदन है कि अपना और अपने से संबंधित पत्र या संस्था का परिचय तथा उक्त विषयों के संबंध में समस्त ज्ञातव्य सूचनाएँ भेजने की कृपा करें। पत्र-व्यवहार का पता—प्रेमनारायण टंडन, एम० ए०, साहित्य-रत्न, संपादक 'हिंदी-सेवी-संसार' विद्यामंदिर, रानीकटरा, लखनऊ। —कालिदास कपूर

—प्रेमनारायण टंडन

दाद, खुजली और हरेक मेलका चमड़ीका दर्दोंके लीए
पचास वर्ष से विश्व-विख्यात कपड़ा ख़राब न कीजिए नक़लचियों से सावधान रहिए।
सपट लोशन
सपट एण्ड कुं
मुंबई. २.
R.D.C.142

एन. आई. पी. से (हिन्दी में) प्रकाशित
राजनीतिक, भक्ति इत्यादि दृष्टि कोणों के सात एकांकी
लेखक
डॉ. रामकुमार वर्मा
सफे = १६५
मूल्य ३ रु.
मूल्य २॥= रु.
सफे = १७४
प्रेम कहानियां
लेखक
उपेन्द्रनाथ अश्क
पास के पुस्तक भंडार में तलाश करें या सीधे लिखें
नेशनल इन्फ़रमेशन एण्ड पब्लिकेशन्स लिमिटेड
नेशनल हाऊस, अपोलो बंदर, बम्बई १.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध-प्रचार-सम्बन्धी फिल्मों पर प्रतिबन्ध क्यों नहीं ?

अँगरेजों के हिन्दुस्तान से चले जाने के बाद भी ऐसा क्यों हो रहा है ?

लेखक, श्री शिवचरणलाल मालवीय

ता० १५ अगस्त १९४७ के पूर्व भारत के भाग्य की बागडोर ब्रिटिशों के हाथ में थी--उन ब्रिटिशों के जो अपना स्वार्थ पहले देखते थे, बाद में देश का--भारत का। देश में केवल वे ही प्रदर्शन हो पाते थे जिनके द्वारा देश-हित में ठेस पहुँचे और राज्य-सत्ता की मजबूती में सेहत मिले--मदद मिले। ब्रिटिशों की हाँ में हाँ मिलानेवालों को भी विवशता-वश केवल वही कार्य करने पड़ते थे जिनके द्वारा ये अँगरेज महाप्रभु प्रसन्न रहें--खुश रहें और अपनी कृपादृष्टि के फूल बरसाते रहें।

इन जी-हुजूरों में कुछ ऐसे फिल्म-निर्माताओं की भी गणना की जा सकती है, जिन्होंने गत युद्ध-काल में कुछ ऐसे चित्र तैयार किये थे जिनके प्रदर्शन से युद्ध का प्रचार हो, जापानियों के प्रति (जर्मनों के प्रति नहीं) घृणा फैले--उन जापानियों के प्रति जो हमारे एशिया के ही निवासी हैं। ऐसी अनेक फिल्में देखने में आई हैं जिनमें युद्ध के मोहक दृश्य दिखाये गये हैं, जिनमें सिपाहियों की भरती का लालचपूर्ण और सब्ज बागों से भरा हुआ प्रचार है। फिल्म-निर्माताओं ने यह एक परिपाटी-सी बना ली है कि जब प्रेमी अपनी प्रेमिका को पाने से निराश हुआ कि गया वह मिलिट्री में भरती होने। इसके बहाने मिलिट्रीमैनों के बढ़ेचढ़े वेतन, भड़कती ड्रेस, नाच-रंग, आमोद-प्रमोद आदि के दृश्य दिखा-कर जीवन से निराश युवकों को फौज की तरफ मोड़ने का प्रचार अच्छा हो जाता है। हो सकता है, ऐसे प्रचार का निर्माण कर फिल्म-निर्माताओं ने या तो उस समय की सरकार में प्रतिष्ठा पाने की ठकुर-सुहातीपूर्ण कोशिश की हो या सेंसर बोर्ड से कृपा और अनुग्रह की भीख माँगी हो। स्पष्ट है कि राष्ट्रीय फिल्म के प्रदर्शन की स्वीकृति में जितना कष्ट उठाना पड़ता है, जितना विलम्ब लगता है और फिल्म पर कैंची चलाकर उसे जितना बरबाद कर दिया जाता है उतना इन प्रकार-फिल्मों की स्वीकृति के लिए न तो कष्ट उठाना पड़ता है, न विलम्ब लगता है और न फिल्म काटकर फेंकी ही जाती है। हमें स्मरण है, 'धर्मात्मा' फिल्म का बहुत-सा हिस्सा सेंसर द्वारा कटने के बाद ही वह स्क्रीन पर उतर पाई थी। जिन फिल्मों से सरकार के प्रचार-विभाग को लाभ न मिले वे भला स्क्रीन पर क्यों, किस लिए आ सकती हैं और विपरीत जो फिल्में सरकारी प्रचार-विभाग के लिए फायदे-मंद ठहरती हैं वे भला स्क्रीन पर उतरने से कैसे रोकी जा सकती हैं ?

'पन्ना' एक ऐसी फिल्म है जो प्रारंभ से अन्त तक प्रचार-फिल्म कही जा सकती है। इस फिल्म के द्वारा जापानियों के खिलाफ गलत और गंदा प्रचार किया गया है और हिन्दू-मुसलमानों को जापानियों के--एशिया-निवासी जापानियों के खिलाफ भड़काया गया है। फिल्म का कथानक कहता है कि पन्ना नामक एक लड़की अपनी अस्मत बचाते समय एक गुंडे का खून करने के कारण कालेपानी की सजा पाती है और अन्दमान द्वीप में भेजी जाती है। अंदमान-जेल में एक आजाद नामी कैदी भी पन्ना को मिलता है। पन्ना, आजाद की लापरवाह प्रवृत्ति से प्रभावित होती है। इतने ही में जापानियों का हमला अंदमान द्वीप पर होता है और उक्त द्वीप जापानियों के कब्जे में चला जाता है तथा अँगरेजों की हुकूमत वहाँ खत्म हो जाती है।

जापानी अफसर के द्वारा, जो अंदमान के प्रवासी कैदियों की देख-रेख के लिए तैनात किया जाता है, आजाद को जापानी 'फिफ्थ-कालम' में शामिल हो जाने का लालच दिलाया जाता है। आजाद के इनकार करने पर वह जापानी गोली का शिकार बना दिया जाता है।

जापानी अफसर, मुसलमान जेलर की लड़की की अस्मत पर हमला करते हुए दिखलाया गया है, पर लड़की खिड़की की राह समुद्र में कूदकर अपने सतीत्व की रक्षा करती है। जब पन्ना

'संगम' फिल्म का एक कलाकार अभिनय करते समय आश्चर्य से

की बारी आती है तो वह 'आना सकना, जाना सकना' कहकर फरेब से जापानियों का खून कर एक जहाज द्वारा भारत वापस आती है। रास्ते में, जहाज में पन्ना का परिचय हीरा नामक एक नाचने-वाली लड़की से होता है। हीरा वास्तव में जापानी पाँचवें कालम की सदस्या थी। वह अपने ग्रामोफोननुमा रेडियो द्वारा टोकियो से आदेश पाती रहती थी।

अन्त में एक इंस्पेक्टर और पन्ना के द्वारा सभी जापानी 'फिफ्थ कालमिस्ट' गिरफ्तार कर लिये जाते हैं।

इस तरह मुसलमान जेलर की लड़की पर अत्याचार कराकर मुसलमानों को भी, जापानियों के खिलाफ भड़काने की कोशिश की गई है। 'मिस देवी', 'परिन्दे' आदि अनेक ऐसी ही प्रचार-फिल्में हैं जिनके द्वारा यह प्रचार-कार्य बड़ी खूबी से साधा गया है।

जापान एशिया का एक देश है, उसी एशिया का जिसका भारत भी एक देश है। और भारत 'जलियाँवाला बाग' और चौराचौरी को भूला नहीं है। वह सन् १९४२ को भी भूल नहीं सकता। उसे रौलट ऐक्ट भी याद है। 'मिस देवी' 'पन्ना' फिल्म में जहाँ जापान के [illegible] प्रोपेगेंडा किया गया है वहाँ जर्मनी एकदम अछूता रक्खा गया है। किस लिए ? क्या जर्मनी ब्रिटेन दुश्मन नहीं है ? क्या जर्मनी के [illegible] कालम के सदस्य भारत में नहीं केवल इसीलिए न कि जर्मनी उसी का टुकड़ा है जिसका ब्रिटेन है ?

अब ब्रिटिश राज्य की नींव [illegible] से ढह चुकी है, अब देश में भारतीय राज्य है--एशिया-निवासियों का है। ऐसे राज्य में एशिया-निवासियों ही प्रति फिल्मों द्वारा या अन्य किस तरीके से घृणापूर्ण प्रचार प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता। अतः यह आवश्यक प्रतीत हो गया है कि भारत में ऐसी फिल्मों के प्रदर्शन और निर्माण-कार्य पर [illegible] लगाया जाय जिनमें ब्रिटिश फौज-सम्बन्धी दृश्य हों या जापान के विरुद्ध गंदा [illegible] हो। भविष्य में न तो ऐसी किसी [illegible] का निर्माण होना चाहिए और न [illegible] प्रदर्शन ही होना चाहिए।

पुरुष स्त्रियों से क्या चाहता है ?

पुरुष बड़े मनोरंजक होते हैं। वे छोटी चीजों जैसे हास्य, मन्द मुस्कान, स्थायी सुगन्धि द्वारा आकर्षित होते हैं। काश्मीर बुकेट के टाल्क में आप मन्द सुगन्धि पायेंगे। स्नान के पश्चात् काश्मीर बुकेट टाल्क को शरीर पर छिड़किए।

इसकी शीतलता को अपने चर्म में प्रवेश करने दीजिए। यह घंटों आप में ताजगी और प्रसन्नता रक्खेगी

अब आपको अपने सौन्दर्य में सन्देह नहीं रहेगा। उस सुगन्ध को धन्यवाद है, "जिसे मनुष्य पसन्द करता है।"

Cashmere Bouquet Products WITH THE FRAGRANCE MEN LOVE

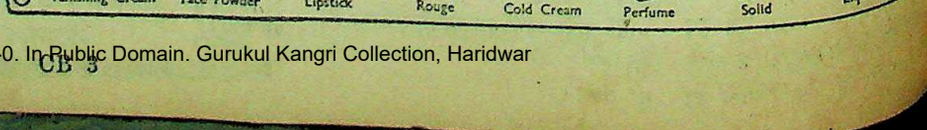

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...में स्वतन्त्रता-दिवस
...को नागरिकों की सभा

...श्री कमलाप्रसाद (फीजी)

...अगस्त, १९४७ के दिन फीजी ...अभूतपूर्व समारोह के साथ स्व-...दिवस मनाया गया, वह मेरे लिये ...वैज्ञानिक पहेली है जिसे मैं ...नहीं सकता। यहाँ का राजनैतिक ...सामाजिक वातावरण इस राष्ट्रीय ...के अनुकूल नहीं था। फीजी में ...की संख्या १,२०,४१४ है ...करीब एक लाख भारतीय यहीं ...हुए हैं, जिन्हें भारतवर्ष के दर्शन ...प्राप्त नहीं हुआ है। यहाँ ...कार-द्वारा नियन्त्रित विद्यालयों ...वर्ष का इतिहास नहीं पढ़ाया ...तथा यहाँ बहुत कम लोग भारत ...नैतिक परिस्थित से परिचित ...खिताबधारी व्यक्ति अनेक ...को उपस्थित करते हुए फीजी ...-दिवस मनाने का घोर विरोध ...थे। कुछ सज्जन मुसलिम लीग ...पर मुसलमानों से अनुरोध कर ...कि वे १५ अगस्त के समारोह में ...प्रकार का भाग न लें। ऐसे वातावरण ...की अधिक सफलता की आशा ...जा सकती थी।

...अगस्त को प्रातःकाल पाँच ...कोलाहल के कारण मेरी ...गई। मैं बाहर निकलकर देखता ...तीन खुली लारियाँ जा रही हैं ...पर तिरंगे झंडे लिये हुए अनेक ...'हिन्दुस्तान जिन्दाबाद', 'जय ...आदि नारे लगाते जा रहे हैं। कुछ ...लारियों का एक ताँता-सा बँध ...सी० एस० आर० कंपनी का एक ...लौतोका शहर की ओर जा ...जिसकी गाड़ियों में झंडे लिये हुए ...का दल बैठा है। 'जय हिन्द' के ...प्रातःकालीन वायुमंडल को भेद-...तक सुनाई पड़ रहे हैं। ...कार्यवाहियों (यहाँ के आदिम ...) का एक गाँव है। सड़क के ...अनेक काईबीती स्त्रियाँ, बच्चे ...खड़े हैं। उन्हें इतना पता ...आज से 'इंडिया' में अंग्रेजों की ...हिन्दुस्तानी 'हाकिम' होंगे। वे ...तब लारी खड़ी करके शहर जा ...तमाशा देखने के लिये। अनेक काईबीतियों के हाथों में भी तिरंगा झंडा है। लारी-सर्विस के संचालकों ने आज के लिए किराया माफ कर दिया है। आज कोई भी व्यक्ति किसी भी शहर में मुफ्त जा सकता है।

मेरे गाँव में उत्सव का कार्य-क्रम चार बजे से था, जिससे गाँव के लोग शहर के जुलूस में शामिल हो सकें। मैं लौतोका जाने के लिए लारी की प्रतीक्षा में शहर के किनारे खड़ा था। लारियों के बाद लारियाँ झंडों से सजी हुई निकल रही थीं 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' 'वंदेमातरम्' आदि गाते हुए व्यक्तियों से भरी हुई। अंत में साढ़े नौ बजे एक लारी खड़ी हुई जिसके भीतर तिरंगे तथा अर्द्धचन्द्र-तारा-युक्त दुरंगे झंडे लिये हुए अनेक व्यक्ति बैठे थे। लारी-चालक एक मुसलमान था। लारी में बैठे हुए एक वृद्ध मुसलमान का कहना था कि 'फीजी में हिन्दू और मुसलमानों ने साथ-साथ 'गिरमिट' काटी है। उन्हें कोई अलग नहीं कर सकता।

लारी चल रही थी। भारी भीड़ पैदल ही शहर की ओर रवाना हो रही थी। सड़क के दोनों ओर घरों पर झंडे फहरा रहे थे। कुछ दूर पर स्त्रियों का एक दल कुछ गाता हुआ चला आ रहा था। गीत क्या था, पता नहीं, किन्तु प्रत्येक पद के पीछे 'चरखवा चालू रहे' स्पष्ट सुनाई पड़ता था। शहर समीप आ गया है। सन्मुख 'सवेनी' गाँव के नवयुवकों का दल 'बैंड' के साथ 'मार्च' करता हुआ शहर में प्रविष्ट हो रहा था। और लौतोका शहर? पिछले चौबीस घंटों में वह बिलकुल बदल चुका था। तिरंगे कागजों से सजी हुई दूकानों पर तिरंगे झंडे फहरा रहे थे। चीनी व्यापारियों की भी दूकानें बन्द थीं, तथा उनकी दूकानों पर चीन की राष्ट्रीय पताका फहरा रही थी। प्रत्येक चीनी के मुख पर एक स्पष्ट उल्लास था। वे जुलूस में शामिल होने के लिए 'चर्चिल पार्क' की ओर चल रहे थे।

चर्चिल पार्क खचाखच भर गया था। फिर भी भीड़ आती ही जा रही थी। विभिन्न विद्यालयों के छात्र और छात्राओं का दल दूर तक दिखलाई पड़ रहा था। लोग कहते थे कि फीजी के इतिहास में लौतोका शहर में इतनी भीड़ कभी एकत्रित नहीं हुई थी। एक चार वर्ष का बालक सहसा 'फुटपाथ' पर गिर पड़ा किन्तु शीघ्र ही उठकर नाक से निकलते हुए खून को बाँहों से पोंछता हुआ 'पार्क' की ओर जा रहा था। घर से बाहर कम निकलनेवाली नारियाँ भी झंडाभिवादन के लिए श्रेणी में खड़ी हुई थीं। किन्तु—एक वृद्ध ग्रामीण जिसका आधा शरीर, दो वर्ष हुआ, लकवा से मारा गया था; जो बिना सहारा के खाट पर भी उठकर बैठ नहीं सकता, जिसे खाट पर आराम करने के लिए डाक्टरों ने सख्त आज्ञा दी थी, जो गत वर्ष अपने पुत्र के विवाह के समय खाट पर ही रहा, दो व्यक्तियों का सहारा लेकर 'टेक्सी' पर चढ़कर वहाँ आया था और उन्हीं के सहारे भीड़ के पीछे खड़ा हुआ था।

१५ अगस्त, १९४७ के दिन फीजी के इतने प्रतिकूल वातावरण में भी इतनी प्रचंड जन-शक्ति किस प्रकार फूट पड़ी, यह मेरे लिए एक पहेली है।

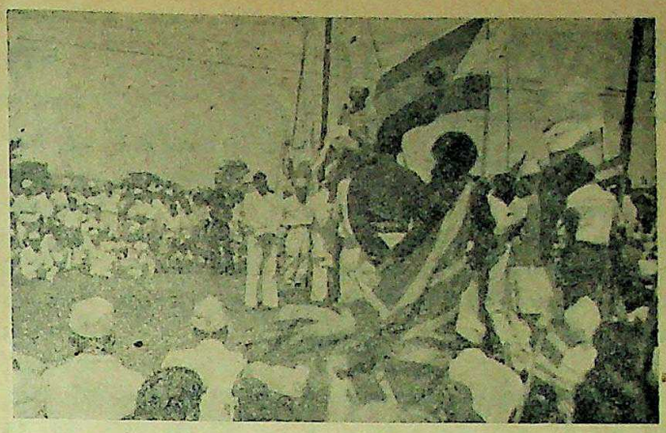

नाँदी शहर (फीजी) में स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर का एक दृश्य

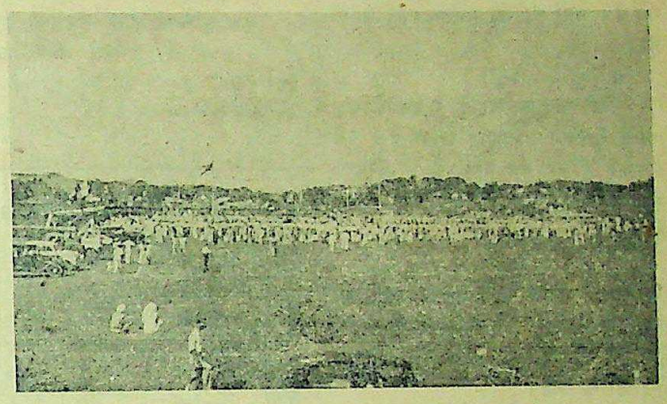

लौतोका (फीजी) में स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर होनेवाले समारोह का एक दृश्य

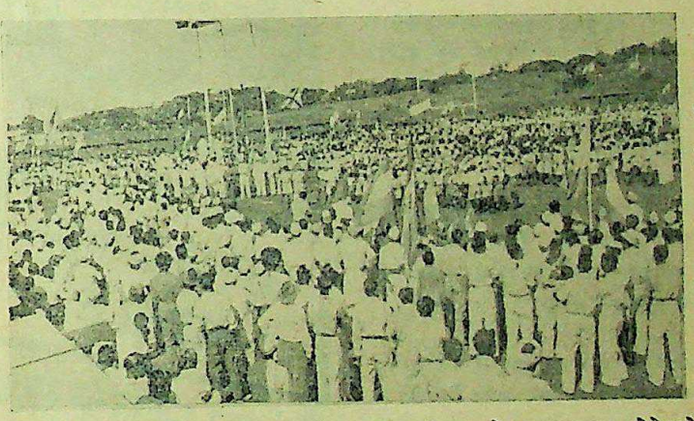

लौतोका शहर (फीजी) में १५ अगस्त को स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर होनेवाले झंडाभिवादन का एक दृश्य।

(पेज ९ का शेष)

उदाहरण तो ऐसे देखने को आये कि गो-दान के ८ दिन बाद ही वह गाय कसाई के हाथ बेंच दी गई। इसका कारण क्या है? धनी-मानी सेठ-साहूकार लोग ऐसे अपात्रों को गो-दान करते हैं जो कि उस गाय का ठीक किसी तरह से भरण-पोषण नहीं कर सकते। अंत में वह गाय कसाई के खूँटे पर पहुँच जाती है।

हमारी कुछ गौशालाएँ भी ठीक तरह से अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करतीं। गोशालाओं के संचालकगण अपने व्यवसाय के लिए सिर्फ उन्हीं गौ की ओर ज्यादा ध्यान रखते हैं जो कि ज्यादा दूध देती हैं और उन्हीं की रक्षा समुचित रूप से करते हैं। गौशालाओं में रहनेवाली भी बहुत-सी अनाथ बूढ़ी और कमजोर गायें इधर-उधर मारी मारी फिरती रहती हैं; और कालान्तर में वह भी कटघरे में मरनेवाली गौओं की संख्या बढ़ाती हैं। हम जितना समय और संगठन गौ-माता की रक्षा के लिए दे सकते हैं या कर सकते हैं उतनी ही जल्दी भारत से गो-हत्या बन्द हो सकती है यह हमारा ध्रुव विश्वास है।

कथा-साहित्य का नवीन उपादान

अपना-पराया

लेखक—पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

इस मौलिक मनोरंजक उपन्यास में एक चीनी तरुणी का मेनका-नृत्य जहाँ आपको आत्म-विभोर कर देगा, वहीं तिब्बत और चीन की नैसर्गिक छटा, और ...के अजीबोग़रीब रस्म-रिवाज भी आपके सामने चलचित्र की तरह नाच ...। चीन की यह रहस्यमयी तरुणी किस प्रकार भारत आती और अपने धर्म ...स्वदेशाभिमान की रक्षा का व्रत लेकर, एक भारतीय नौसैनिक की सहायता ...अपने देश लौट जाती है, आदि प्रसंग एक स्वस्थ सामाजिक दृष्टिकोण के ...आपको प्रणय की रंगीनियों, परिस्थितियों के झमेलों और जिज्ञासा के ...का जो परिचय देंगे, उसे आप कभी भूल न सकेंगे।

पृष्ठ २३२, सजिल्द और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २॥) रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास परिहास

भङ्ग को तरङ्ग

पश्चिमी-पंजाब में हिन्दू और सिख कोई बाकी बचा या नहीं, इसकी जानकारी के लिए भारत-सरकार को एक कमीशन बैठा देना चाहिए, जल्दी से जल्दी और शीघ्रातिशीघ्र।

* * *

आसफअली साहब अमरीका से भारत लौट आये हैं। अच्छा हुआ। केन्द्रीय सरकार में दो ही मुसलमान सदस्य रह गये हैं। वहाँ भी तो आवश्यकता पड़ेगी ही।

* * *

श्री आसफअली के संबंध में एक पत्र ने विचित्र समाचार छापा है। हम समझते हैं वह सब गलत है। परिवार और पत्नी का प्रेम उन्हें यहाँ खींच लाया है।

* * *

हमारे प्रान्त की गवर्नर महोदया कहती हैं कि उर्दू बहुत उन्नतिशील भाषा है। हमारा भी यही विचार है, किन्तु अँगरेजी के बाद।

* * *

पंजाब में मसजिदों पर तोपें चढ़ाई गई थीं हिन्दुओं पर गोला बरसाने के लिए। हमें इस पर विश्वास नहीं होता। वह कायदे आजम को सलामी दागने के लिए चढ़ाई गई होंगी, न कि हिन्दुओं पर गोला बरसाने के लिए?

* * *

पंडित पंत कहते हैं कि भ्रष्टाचारी अकसर शीघ्र दंडित होंगे। हमारे प्रान्त में क्या भ्रष्टाचारी अफसर भी हैं, वह भी इस स्वाधीनता के युग में? असंभव!!!

* * *

बरेली में केवल हिन्दुओं पर करफ्यू लगाया गया। न हिन्दू बाहर निकलेंगे न मारे जायेंगे। हमारी सरकार को हिन्दुओं की रक्षा का सचमुच बहुत बड़ा ध्यान है।

* * *

महात्मा गांधी का हाल-चाल जानने के लिए सम्राट् ने संदेश भेजा है। सम्राट् महोदय अहिंसावादी हो रहे हैं इसमें सन्देह नहीं।

* * *

मैसूर में सब रेलें बन्द हो गई हैं। क्या वहाँ सर सी० पी० के समान कोई चतुर दीवान नहीं है?

* * *

मसूरी में भी दंगा होने की बात सुनी जाती है। युवकों तथा युवतियों के रंग-स्वल में दंगा हो गया? दंगाइयों को रोमांस में कुछ भी आनन्द नहीं आता क्या?

* * *

अमरीकी सिपाहियों ने एक जापानी युवती को पुल के नीचे फेंक दिया। ठीक किया। ठीक ही है, उस युवती ने सिपाहियों के साथ जाने से इनकार किया होगा। पराजित विजयी की आज्ञा मानने से इनकार कैसे कर सकता है?

बेढब दोहावली

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

दो पत्नी हैं तो नहीं, इसमें तनिक विषाद;
एक समझ लो मूल है, और एक अनुवाद।
बाहर कुछ भी है नहीं, भीतर का है मोल;
चतुर परखते हैं सदा, ही जूते की सोल।
गैया देती दूध है, खा खा करके घास,
क्यों न वनस्पति में बसे, फिर सबका विश्वास?
मिला हमारा देश है बेढब हमको दान;
बड़ी दया है दे दिया, हमको हिन्दुस्तान।
जहाँ बैठ माला जपें, वह है हिन्दुस्तान;
जहाँ रक्त-सरिता बहे, वह है पाकिस्तान।

एक मुस्लिम लीगी पत्र का कहना है कि गांधी जी ने हमें बचा लिया। क्या इसमें महात्मा जी ने कोई नई बात की है?

* * *

पाकिस्तान में रेलें तेल से चलेंगी। पाकिस्तान में रेल की आवश्यकता ही क्या है? वहाँ तो ऊँटों के काफिले चलने चाहिए।

* * *

मास्को-दूतावास के लिए श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित गई हुई थीं। मास्को में चीजें अधिक हैं। कालीन भारत से है। पाँव के नीचे रहनेवाली भारत से जानी ही चाहिए।

* *

लखनऊ रेडियो से हिन्दी प्रोग्राम ब्राडकास्ट किये जाते हैं देवियों के या थर्ड क्लास एक होते हैं। रेडियो में हिन्दी की यह बढ़िया रास्ता अपनाया

—अ

अद्भुत कहानियाँ

दो रंगों में छपी इस में एक से एक बढ़िया कहानि इतिहास, स्वामिभक्ति और का वर्णन पढ़ते ही बनता है।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाबी-यात्रा के संस्मरण

(पेज ७ का शेष)

पुस्तक निकाली जिसकी मुझे देखनी थी। थोड़ा-सा और लिखने के बाद वह पुस्तक को छापने के लिए दे देनी थी। उस पुस्तक प्यारेलाल भाई के "हरिजन" में लिखे हुए उन लेखों का संग्रह थी जिन्हें उन्होंने सन् १९३८ में पठानों के बीच गांधी जी के दौरे पर दिये थे और जो खुदाई खिदमत-गारों के संगठन में अहिंसा को अपनानेवाले थे। बात चीत की थी, उसका बड़े रोचक और सुन्दर ढंग से प्यारेलाल ने वर्णन किया था। जैसा उन्होंने लिखा था वैसा ही अनुवादक ने अनुवाद किया था। उर्दू में कहीं-कहीं संशोधन की जरूरत मुझे दिखाई दी। मैं प्यारेलाल भाई की इस राय से सहमत न हुआ कि इसकी भाषा और सरल बना दी जाय। मेरा कहना यह था कि इसको उर्दू में ज्यों का त्यों छपवा दिया जाय, ताकि उर्दू के पढ़नेवाले साहित्य के प्रेमी इसका पूरा आनन्द ले सकें। हाँ, यह हो सकता है कि इसके बाद हिन्दी-उर्दू में छपने के लिए अलग से इसे हिन्दुस्तानी में लिख दिया जाय। आखिर प्यारेलाल भाई ने मेरी राय मान ली और उन्होंने मुझसे कह दिया कि मैं आज इसे शुरू से आखिर तक पढ़ जाऊं। इसमें जहाँ कहीं लिखने में कोई गलती रह गई हो उसे ठीक कर दूं। मेरे लिए उस पुस्तक का पढ़ना एक अत्यन्त सुखद और आनन्द-दायक कार्य था। उसको पढ़ते समय मैं इतनी तल्लीन हो जाता कि अपने को बंगाल में नहीं बल्कि उत्तर पश्चिमी सीमा पर बापू के साथ भ्रमण करते हुए पाता था। कभी मेरे सामने खुदाई खिदमतगारों का ट्रेनिंग कैम्प आ जाता जिसमें बापू बातचीत करते होते, कभी प्यारेलाल भाई की मोटर मेरी आँखों के सामने पठानों के देश के सुन्दर पहाड़ी दृश्य और रंग-बिरंगे फूलों के बागों के दृश्य उपस्थित कर देती। कभी सीमांत गांधी खान अब्दुल गफ्फार खां की बापू से भक्ति से ओत-प्रोत बातचीत सुनने लगता और कभी मैं तक्षशिला के सुन्दर दृश्य देखने लगता। प्यारेलाल भाई ने बड़ा ही सुन्दर और रोचक वर्णन किया था। जिस दिन उस पुस्तक के पढ़ने और भटियाल-पुर की अन्य बाढ़ियों को देखने में बीत गया हमारी बाढ़ी के अधिकांश निवासी जमींदार (छोटे जमींदार) थे, और इसी कारण प्यारेलाल भाई को ग्राम-सुधार के कामों में उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त नहीं हो पाता था। गाँवों के कुछ लोग ही और केवल दो-तीन आदमी ही बाढ़ की सफाई में भाग लेते थे। पहले दिन तो कई दिन. प्यारेलाल भाई अकेले ही सारी बाढ़ी में झाड़ू लगाते रहे थे। उस समय उनके साथ न तो शिवसिंह और शिवसरनसिंह भी नहीं आये थे। दो तीन आदमी तो प्यारेलाल भाई को बहुत समझाने और आग्रह करने के बाद सत्याग्रह की धमकी देने के बाद काम करने को तैयार हो गए थे। प्यारेलाल भाई की महीने की मेहनत भी गाँववालों के स्वभाव में कोई परिवर्तन न कर सकी थी। हाँ, उस बाढ़ी के चन्द्रशेखर नाम के डाक्टर को मैंने पूरी भक्ति, सचाई और पूरी ईमानदारी से प्यारेलाल भाई के साथ काम करते देखा। वह केवल अपनी बाढ़ी में नहीं बल्कि दूर-दूर प्यारेलाल भाई के साथ जाते थे, रोगियों को देखते थे और दूसरी बाढ़ियों में भी लोगों को सफाई के काम के लिए तैयार करते थे। बापू की पार्टी में केवल प्यारेलाल भाई ही एक ऐसे सदस्य थे जो अब तक बँगलाभाषा न सीख सके थे। नहीं तो सुशीला बहन, सुश्री सुशीला पाई, अमतुस्सलाम बहन और कुछ कुछ मनु बहन भी बँगला बोल लेती थीं। कनु भाई तो अपनी बँगाली धर्म-पत्नी श्रीमती आभा गांधी के कारण पहले से ही बँगला में धाराप्रवाह बातचीत कर लेते थे; किन्तु प्यारेलाल भाई के पास इतना समय ही न रहता था कि वे इस ओर ध्यान दे सकते; इसीलिए डाक्टर चन्द्रशेखर उनके दुभाषिये का काम भी करते थे।

अब पुस्तक का काम बिल्कुल रुक गया था। मैं खुद प्यारेलाल भाई के रचनात्मक कार्यों का अध्ययन करने लगा था। प्यारेलाल भाई सुबह चार बजे से उठ जाते थे और कभी कभी रात के ग्यारह-बारह बजे तक सोते थे। चलने की तो जैसे उन्हें आदत पड़ गई थी। छः-छः सात-सात मील पैदल जाना और पैदल लौट आना उनके लिए कोई बात ही न थी। हमारी बाढ़ी से ढाई-तीन मील पर करपाड़ा नाम के गाँव में सुशीला पाई रहती थीं, वे कभी-कभी हमारे यहाँ आ जाती थीं और उनके आ जाने से कुछ देर के लिए बड़ी चहल-पहल हो जाती थी। मैं उनके गाँव भी गया, बहुत ही गरीब लोगों के बीच में अकेली रहकर काम कर रही थीं। सिर्फ तेरह-चौदह वर्ष का एक बंगाली लड़का उनके साथ रहने के लिए उन्हें दे दिया गया था। उन्होंने भी अपने गाँव में लोगों को गाँव की सफाई, तालाबों की सफाई आदि के बारे में बहुत कुछ समझा-बुझाकर उनसे काम लेना शुरू कर दिया था। स्त्री होने के नाते और बँगला में अपनी बात भली भाँति कह लेने और दूसरों की समझ सकने के कारण उन्हें स्त्रियों में काम करने में बड़ी कामयाबी हुई थी। लेकिन गाँव-वालों की हद से बढ़ी हुई गरीबी के कारण वे उनसे उतना काम न ले सकती थीं जितना प्यारेलाल भाई लेना चाहते थे। प्यारेलाल भाई के गाँव के निवासियों और परकरपाड़ा के गरीब निवासियों की मनोवृत्ति के अन्तर का पता उस समय तुरन्त मालूम हो जाता था। जब कोई भी नया आदमी दोनों गाँव में पहुँच जाता था, भटियालपुर में मेरे उन्नीस दिन के निवास के बीच सुशीला पाई चार-पाँच बार आई लेकिन एक बार भी गाँव के किसी व्यक्ति ने उनकी खातिर करना जरूरी नहीं समझा। यद्यपि वहाँ किसी नवागन्तुक की खातिर में एक नारियल तोड़कर उसका पानी निकालकर पिला देना बहुत साधारण-सी बात समझी जाती है। हम लोग यानी मैं, प्यारे-लाल भाई, उनके दोनों साथी और डाक्टर चन्द्रशेखर पाँच-पाँच आदमी तक सुशीला पाई के गाँव गए और जब भी हम गए हमारे लिए तुरन्त बड़े-बड़े ताजे डाब (नारियल) वहाँ के गरीब निवासी ले आते थे और उनका प्रेम और श्रद्धा देखकर कभी-कभी ऐसा भी हुआ कि जी न चाहते हुए भी प्यारेलाल भाई को डाब पी लेना पड़ा। यह कहने से मेरा यह मतलब नहीं कि हमें अपनी या अपने मेहमानों की खातिर की चाह थी; बल्कि इससे पाठकों को यह अनुमान हो जायगा कि प्यारेलाल भाई को कैसे लोगों के बीच काम करना पड़ रहा था अब तक सफाई में साथ देनेवाले वही दो तीन आदमी थे और उनकी तादाद में कोई बढ़ती न हुई। प्यारेलाल भाई एक तरह से उन लोगों से निराश हो चुके थे, फिर भी सुबह की सफाई का काम नियमपूर्वक चल ही रहा था।

अब उन्होंने आसपास की बाढ़ियों में जाना शुरू कर दिया और वहाँ भी सफाई का काम शुरू हो चुका था। प्यारे लाल भाई सात बजे तक अपनी बाढ़ी का काम खतम करके और झाड़ू टोकनी लेकर अपने साथियों के साथ पास की किसी बाढ़ी में चले जाते और वहाँ के आदमियों को साथ लेकर खुद सफाई का काम शुरू कर देते। दो-एक दिन के बाद वे मुझे उस नई बाढ़ी में ले जाते और वहाँ की सफाई दिखलाते। उन लोगों के उत्साह की प्रशंसा करते हुए अक्सर वे अपनी बाढ़ी के लोगों की काहिली और सुस्ती की बात भी कर जाते और मैं देखता कि सचमुच दूसरी बाढ़ियों के लोग कैसे जोश और कैसे उत्साह से काम कर रहे हैं। जब दो-तीन बाढ़ियों में सफाई का काम हो गया तो दूसरी बाढ़ी के लोग आप ही आप प्यारेलाल भाई के पास आने लगे और अपनी बाढ़ी में आमंत्रित करने लगे। प्यारेलाल भाई ने लोगों के इस शौक से फायदा उठाया और हर नई बाढ़ीवालों से वे कहने लगे कि पहले आप लोग उन बाढ़ियों में जाकर सफाई का काम कीजिए जहाँ पहले से सफाई का काम हो रहा है। उसके बाद उसी तरह अपने गाँव में सफाई कीजिए और तब मैं आपके यहाँ चलूँगा। लोग ऐसा करने लगे फिर प्यारेलाल भाई ने इस बात पर जोर दिया कि अपने-अपने गाँव के लोग सुबह सात बजे इकट्ठा हो जायँ। पहले रामधुन करें फिर सफाई शुरू करें। लोगों को जमा करने के लिए थाली या घंटी बजाई जाती थी। फिर सब लोग जमा होकर रामधुन शुरू करते थे और झाड़ू और टोकरे लेकर दूसरे गाँव में सफाई करने निकल पड़ते थे।

यह न समझिएगा कि प्यारेलाल भाई को सिर्फ झाड़ने-बटोरने ही से दिलचस्पी थी, वे शरणार्थियों के लिए अधिकारियों से लिखा-पढ़ी भी करते रहते थे। छोटे-मोटे रोगियों को दवाइयाँ भी देते थे और बड़े रोगियों के लिए डाक्टर को सिपार्सी चिट्ठियाँ भी लिखते थे। वास्तव में वे गाँववालों में सामूहिक रूप से काम करने की आदत डलवाना चाहते थे। रामधुन उन्होंने इसलिए शुरू कराई थी कि लोगों में धार्मिक भावनाएँ उत्पन्न हों और राम के सिवा वे मन में किसी से न डरें।

मुझे वे हर रोज अपने साथ न ले जाते लेकिन बाद में मैं खुद उनके साथ जाने लगा। अब लोगों के उत्साह का यह हाल था कि जब हम अपने यहाँ सफाई का काम खत्म करके दूसरी बाढ़ियों में जाते तो वहाँ के लोग भी अपना काम खत्म कर चुके होते। अब प्यारेलाल भाई का काम एक इंस्पेक्टर की तरह उनके काम का निरीक्षण करना रह जाता और वे उन लोगों को बतलाते कि कहाँ-कहाँ सफाई ठीक हुई है और कहाँ और अच्छी होनी चाहिए। वे लोगों को जगह-जगह पाखाना फिर-कर गन्दगी फैलाने के नुकसान बताते और गड्ढे खोदकर उनमें पाखाना फिरने और उस पर मिट्टी छोड़ते जाने के फायदे समझाते। बच्चों को साफ रखने पर जोर देते और स्त्रियों को भी अपने कपड़ों की रोज सफाई कर लेने की बात समझाते।

पूर्वी बंगाल की हर एक बाढ़ी में दो-तीन तालाब जरूर होते हैं। प्यारेलाल भाई इस बात पर खास जोर देते थे कि एक तालाब सिर्फ पीने का पानी लेने के काम के लिए रक्खा जाय। उसमें न कोई नहाये न कपड़े धोये और न दूसरी कोई गन्दगी पैदा होने दे। ज्यादातर लोगों को काम करके दिखलाना होता था कि ऐसे काम करो। अतः एक गाँव में मलिकीतसिंह के साथ मैंने भी पाखाने के लिए गड्ढे खोदे। प्यारेलाल भाई हर गाँव में ऐसे पाखाने बनवा देना चाहते थे, एक चीज जरूर उनके लिए चिन्ताजनक हो गई थी कि बरसात में उन पाखानों का क्या होगा जब कि वहाँ पानी इतना इकट्ठा हो जाता है कि एक बाढ़ी से दूसरी बाढ़ी में भी लोग नौका पर बैठकर जाते हैं। अब गाँवों से भागे हुए लोग भी आकर धीरे-धीरे बसने लगे थे और प्यारेलाल भाई की कोशिश यह थी कि उनमें ऐसा एका पैदा कर दें, ऐसी शक्ति भर दें, भगवान् के प्रति उनके मन में इतना विश्वास उत्पन्न कर दें कि भविष्य में वे इस तरह डरकर कभी न भागें। इसके लिए रामधुन, अखण्ड संकीर्तन और सहभोज आदि की वे प्रत्येक बाढ़ी में व्यवस्था करने लगे। बंगाल में छूत-छात

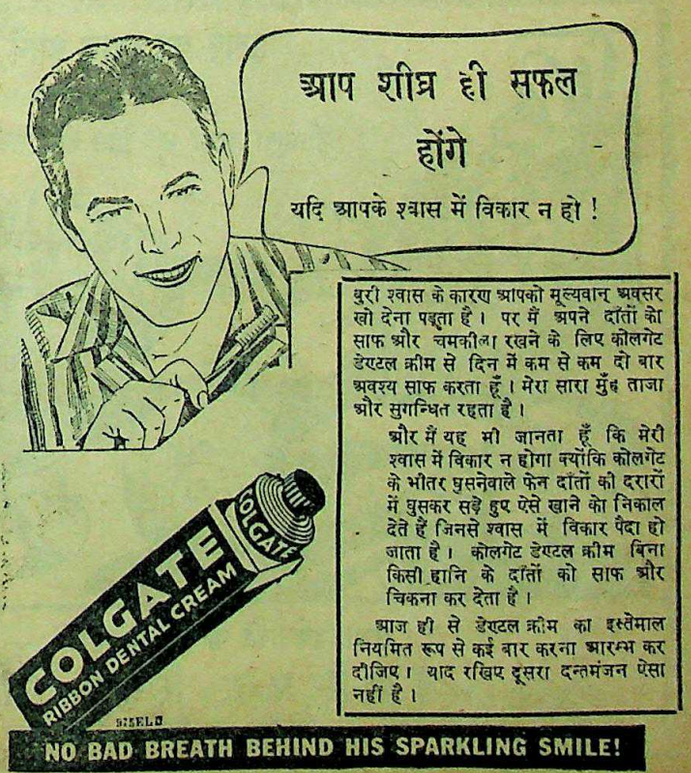

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अब भी बहुत जोर है अब तक वहाँ ऐसे कट्टरपंथी हिन्दू मौजूद हैं जो अछूतों की छायामात्र से अपवित्र हो जाते हैं। प्यारेलाल भाई ने जोर दिया कि सहभोज में प्रत्येक जाति के लोग सम्मिलित हों और इसमें उन्हें पूरी सफलता भी मिली। यहाँ तक कि माली (भंगी) बाड़ी में भी जो सहभोज हुआ उसमें सब लोग बड़ी खुशी से शरीक हुए एक पनि एक सहभोज में हम लोग भोजन के लिए बैठनेवाले थे कि कुछ दूर सड़क पर से नारे-ए-तकबीर और पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे सुनाई दिये। लोगों में बड़ी सनसनी फैल गई। बहुत रोकने पर भी लोग रुके नहीं और सड़क की तरफ हम लोगों के साथ चले, अब आवाज आगे बढ़ती जा रही थी और जब प्यारेलाल भाई ने लोगों से यह कहा कि मैं अभी देखकर आता हूँ कि क्या बात है तब साथ चलनेवालों की तादाद बहुत थोड़ी रह गई और जब प्यारेलाल भाई, मलकीतसिंह और मैं कुछ आगे बढ़े तो साथ के सभी लोग बिलकुल पीछे रह गये।

जुलूस बहुत आगे था। हम लोग बहुत तेज कदम बढ़ाते हुए उसका पीछा कर रहे थे, लेकिन हम सबसे आगे प्यारेलाल भाई ही चल रहे थे। कभी-कभी वे थोड़ी-थोड़ी दूर दौड़ भी जाते और उनका साथ देने के लिए हम सबको भी दौड़ना पड़ता था। प्यारेलाल भाई नंगे पैर थे, नंगे पैर चलने में वहाँ की जमीन पर कोई तकलीफ भी नहीं थी क्योंकि जमीन काफी नम रहती है और ईंट-कंकर बिलकुल नहीं होते। वहाँ बापू भी अधिकतर नंगे पैर ही चलते थे, और एक बार तो अपने इन्हीं गुणों के कारण बापू ने नोआखाली की उस धरती को मखमल की-सी नर्म जमीन का हक दिया था। लेकिन प्यारेलाल भाई उस दिन इसलिए नंगे पैर थे कि चप्पल पहन ही न सकते थे। एड़ी में कोई काँटा गड़ जाने के कारण उनकी एड़ी पक गई थी, जिसका उन्होंने उसी दिन सुबह डाढ़ी बनानेवाले ब्लेड से आपरेशन करके मवाद निकाला था, उस घाव के कारण वे कुछ लँगड़ा भी रहे थे। कोई ढाई मील चलने के बाद एक बाजार में हमें वह जुलूस मिला। जुलूस में अधिकतर लड़के ही थे कुछ सयाने आदमियों में से एक ने जो प्यारेलाल भाई को जानता था हमें बतलाया कि इस जुलूस का संबंध बंगाल मुस्लिम लीग के नये चुनाव से था जो वहाँ के सेक्रेटरी के विरोध के लिए निकाला गया था। अब पीछे रहनेवाले कुछ बंगाली भी वहाँ पहुँच चुके थे और उनके द्वारा प्यारेलाल भाई ने जुलूस के प्रमुख लोगों से कहा कि आप इस तरह नारे न लगायें कि डरी हुई हिन्दू जनता में और डर पैदा हो। जुलूसवालों ने उन्हें विश्वास दिलाया कि हम इसका ध्यान रक्खेंगे। वहाँ से लौटकर सहभोज में एकत्रित लोगों से सवाल किये। पहले उन्होंने मर्दों से पूछा कि आप लोग जलूस के नारे सुनकर डर रहे थे और कौन-कौन डरा था। जिनको डर लगा हो वे अपने अपने हाथ उठायें। आठ-दस हाथ एक-एक करके उठ गये, इसके बाद उन्होंने औरतों से यही सवाल किया। लेकिन उनमें से किसी ने हाथ नहीं उठाया, उस पर प्यारेलाल ने कहा तो फिर इन स्त्रियों के कपड़े उन पुरुषों को पहन लेने चाहिए, जो डर गये। अब सब पुरुषों ने भी प्यारेलाल भाई को विश्वास दिलाना शुरू किया कि हम डरे नहीं वहाँ से आकर अगरचे जुलूस के निकलने से हिन्दुओं में कोई सनसनी न फैलने की तरफ से प्यारेलाल भाई को सन्तोष था, लेकिन उन्हें यह बात खटक रही थी कि दफा १४४ लगी रहने पर भी यह जुलूस निकला कैसे और इस बारे में उन्होंने वहाँ के जिला मैजिस्ट्रेट को एक खत भी लिखा।

(पेज ८ का शेष)

अज्ञेय व्यक्तिवादी हैं; अतः भूल को पकड़ पाने में अपने व्यक्तित्व के चारों ओर घूमकर भी उसी प्रकार असमर्थ रह जाते हैं जैसे अपनी दुम को पकड़ने के प्रयत्न में असफल कुत्ता। श्री इलाचन्द्र जोशी जी अवचेतन के चक्कर में अवचेतन की ही वस्तु रह जाते हैं और उनका कथानक फलतः चूल्हा-चारपाई से पूर्ण। भगवतीचरण वर्मा चित्रलेखा में कवि अधिक और 'टेढ़े-मेढ़े रास्ते में' स्वयं उन्हीं कमजोरियों से ग्रस्त हैं जिनका आरोप वे भ्रमवश प्रगतिवादियों पर करते हैं। 'अश्क' उन्हें अधिक सुलझा हुआ लगा। अंचल और गंगाप्रसाद मिश्र तथा श्रीकृष्णदास अधकचरे और असमय में ही अधिक बोझिल, विशेषतः श्री कृष्णदास उस टट्टू की भाँति हैं जिसकी टाँगें कच्ची उम्र में ही अधिक बोझ पड़ने से टेढ़ी हो गई हों। प्रेमचंद की प्रतिभा 'के वे कायल अवश्य हैं, पर 'कफन' और गोदान' को लेकर 'वे' अधिक प्रगतिशील हो गये हैं। जैनेन्द्र युग और परिस्थिति से अब बहुत पीछे हैं। उनके उपन्यास समाज के प्रति क्षोभ-मात्र दिखला कर खतम हो जाते हैं, कोई क्रियात्मक सुझाव नहीं रखते। इसी से वे अब पाठकों से बहुत दूर हैं।

यशपाल ने अपने विषय में जो कहा वह कटुता की पूर्व-पीठिका के कारण गंगाप्रसाद मिश्र जैसे लोगों को कटु अवश्य लगा, किन्तु था वह सत्य। श्री पहाड़ी जी की शिकायत थी कि हम किस प्रकार यह कहें कि हम प्रेमचन्द से आगे हैं। 'रोज' जैसी कहानियों को अपवाद मानकर हम सम्मिलित और टूटे परिवार की दृष्टि से कथानकों में वही हैं। इस प्रकार निबन्ध-पाठ का अन्त हुआ।

* * *

शेष दो विषय क्रमशः जन-नाट्य-प्रदर्शन और कवि-सम्मेलन थे। कवि-सम्मेलन तो सबकी पूर्णाहुति थी। श्री शील जी की यह सगर्व घोषणा थी कि जनता बैठी होगी और हम वहीं 'चेलेंज' करेंगे कि जो अपने को कवि कहें वह आवें जनता के सामने। वैसे शील जी हैं दूर-दर्शी। जनता से नेकर बेचकर के लिए रुपये इकट्ठा करने की सफल नीति क्या हो सकती है और निराला को सभापतित्व में अधिक से अधिक बिक्री की जाय। अज्ञातनामा कवियों के बाद, जिनका आशा है शीघ्र ही पार्टी-पेपर के लोगों के कान में पारे-सा ठूँस दिया जाय। श्री सुमन जी ने अपनी 'एशिया की सुनाई।' कविता का प्राण कवि ओजस्वी स्वर से मिलकर श्रोताओं अवश्य बाँध सका। किन्तु बाद संचालक महोदय की कला-विशेषता से अवधी के प्रसिद्ध जनकवि श्री जी शुक्ल इस प्रकार करतल-ध्वनि स्वागत-सम्पन्न बना दिये गये कि टूटकर रह गया। इसके बाद प्रेम माचवे और फिर अन्त में श्रीयुत ने कविता सुनाई। मैं मनमें यह हुआ उठ आया कि बच्चन जी, अज्ञेय तथा डा० रामविलास ने क्यों नहीं सुनाई। वंशीधर जनकवि की 'हूटिंग' पर सोचने यदि संचालक महोदय की रुचि के 'गोरखपुर की बहिया' 'जमींदार की अथवा 'राम मड़ैया' सुनाते तो अधिक मनोयोगपूर्वक सुनकर सीख पाती। किन्तु वहाँ तो प्रगतिशील के नाम पर आचार्य नरेन्द्रदेव को आवश्यक था। इस प्रकार आयोजन अंत हुआ कुछ समझ में न समस्या उलझी। यदि वह 'पार्टी का एक 'फ्रंट' ही था, तब तो अन्यथा यदि साहित्यिक समस्या के का प्रश्न था तो सोचना पड़ेगा। तो सब मिलाकर यह हाथी का ही लगा।

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं, हमारे आदुर्वे सुगन्धित तेल के सेवन से बालों का रुककर सफेद बाल जड़ से काला हो है। दिमाग को तरकर आँख की को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वापिस की शर्त लिखा लें। मूल्य बाल अधिक पक गया हो ३॥), सब हो ५) रु० का तेल मँगा लें।

आर्य्य हितैषी औषधालय
पो० मुकामा (पटना)

झूठे विज्ञापनों से सावधान
गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड और असली

हिष्टीरिया-मृगी रोग

फकीरी दवा

यह कोई यन्त्र मन्त्र व ऐसी वस्तु नहीं है जिससे कि छींकने से किसी किस्म का कीड़ा निकल बल्कि आपबीती एक अनुभूत प्रभाव आश्चर्यजनक औषधि है, जिसके विधि सेवन करने से यह भयङ्कर हमेशा के लिए जड़ से मिट जाता है खुराक दवा के लिए लिखिये। के लिये एक प्रशंसापत्र का नमूना जाता है) श्रीयुत सुमरणदास जी यर्ड नाजिर जबलपुर लिखते हैं नाती जो ६ साल से इस रोग से था अच्छा हो गया ५०) रु० रूप में देता हूँ।

मँगाने का पता—कुँवर बदरी शुभचिन्तक कार्यालय चित्रकूट,

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

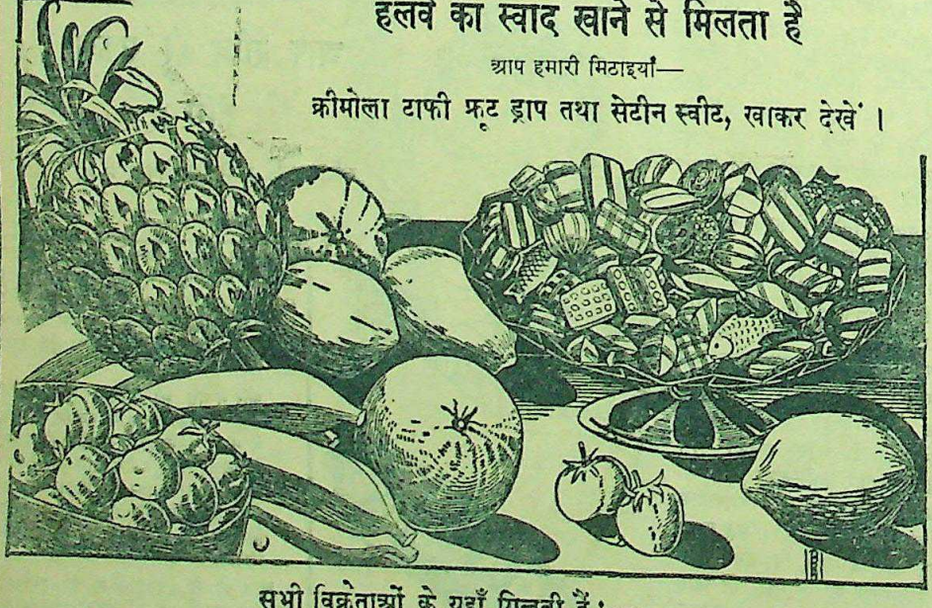

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...वाददाताओं के पत्र

...प्रयाग—श्रीकृष्ण जन्माष्टमी ...के सुअवसर पर टिहरी केन्द्रीय ...के प्रधान मंत्री श्री प्रेमलाल ...टिहरी सेन्ट्रल जेल से छूटकर देव-...आये। जनता ने आपका स्वागत ...और शाम को मंडल सवधार ...कमेटी तथा प्रजा-मंडल देवप्रयाग ...से एक आम सभा श्री राधाकृष्ण ...के सभापतित्व में हुई। जिला ...कमेटी गढ़वाल के उप-प्रधान ...वतीचरण निर्मोही तथा प्रान्तीय ...कमेटी के सदस्य श्री श्रीलाल ...ने अपने भाषण में राज्य में ...की निन्दा की तथा एक ...द्वारा प्रजा-मंडल के प्रधान श्री ...पैन्यूली को शीघ्र रिहा करने ...उत्तरदायी शासन की माँग ...।

...मंडल का एक डेपुटेशन कार्य-...श्री मास्टर रामसरूप की अध्यक्षता ...हो दरबार से बातचीत करने ...राज्य की वर्तमान राजधानी नरेन्द्र-...जा रहा है। मालूम हुआ है ...मन्दिर बद्रीनाथ प्रबन्धक-कमेटी ...२४ सितम्बर को पुरी बद्रीनाथ ...इस अवसर पर कमेटी के प्रधान ...गोविन्द पन्त तथा कमेटी के अन्य ...के पहुँचने की पूरी पूरी ...ना है।

...प्रयाग (वाह) में सवधार-मंडल ...प्रयाग प्रजा-मंडल के प्रयास से ...साम्प्रदायिक अमन-चैन कायम ...के लिए एक शान्ति समिति का ...किया गया, जिसके प्रधान श्री ...चरण 'निर्मोही', उप-प्रधान श्री ...बलूनी, मंत्री धनेश शास्त्री, ...माणिकलाल मिश्रा और कोषा-...रहीम बक्स चुने गये। इसके ...विशेष सदस्य ला० श्री भगवती-...अग्रवाल, गोविन्दप्रसाद टोडरिया ...रमेश शास्त्री, नन्दराम मिश्र, ...प्रसाद भट्ट, रामेश्वरप्रसाद मिश्रा, ...श्रीदत्त मिश्रा, ला० मथुराप्रसाद ...श्यामलाल अग्रवाल चुने गये। ...पर पश्चिमी पंजाब से आये ...शरणार्थियों की सहायतार्थ ...कैम्प की व्यवस्था भी की जा ...। देवप्रयाग रघुनाथ हाईस्कूल ...कर्ताओं ने देवस्थल मैदान के ...हाथ से तमाम जंगल काटा ...स्कूल की बिल्डिंग बनाने में कुछ ...मिले।

...सवधार कांग्रेस कमेटी के ...में कांग्रेस सेवा-दल की एक ...टिहरी प्रजा मंडल के प्रधान ...प्रेमलाल वैद्य के सभापतित्व में ...विद्याधर भिखारी के ...निम्न लिखित जवानों ने सेवा-दल ...से भर्ती होने को कहा—...लालताप्रसाद बाबुलिया, चन्द्र-...आजाद, रामनारायण मेवाड़गुर, ...ध्यानी, ज्योतिप्रसाद त्रिपाठी, ...डंगवाल, दीनानाथ पंचपुरी, ...नेवाड़ी, मगनलाल टोडरिया, ...अग्रवाल आदि।—संवाददाता

हरद्वार से कर्मवीर पं० चिरंजीवलाल जी शर्मा मंत्री युक्तप्रान्तीय सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा तथा पीड़ित हिन्दू-सहायक सभा हरिद्वार ने एक प्रेस वक्तव्य देते हुए भारतवर्ष की समस्त सनातन-धर्मी जनता से निम्न अपील की है—

पिछले एक वर्ष से भारतवर्ष में साम्प्रदायिक झगड़े भयानक रूप धारण किये हुए हैं। नोवाखाली, बंगाल, सीमा-प्रान्त तथा पश्चिमी पंजाब में हिन्दू स्त्री-पुरुष और बच्चों के कत्लेआम, लूट-मार, अग्निकांड, हिन्दू देवियों के अपहरण, बलात्कार, व्यभिचार तथा धर्म-परिवर्तन आदि जो अत्याचार हुए तथा हो रहे हैं, वह वर्णनातीत हैं। इस आग में हिन्दुओं की अरबों रुपयों की संपत्ति का सर्वनाश हुआ है। हजारों और लाखों देवियों के माथे से सिन्दूर और सुहाग लुट गये हैं। लाखों माताओं की गोदें बच्चों से खाली हो गई हैं। भाई बहनों से बिछड़ गये हैं। हमारे करोड़ों भाई अपने घर से बे-घर होकर मारे-मारे फिर रहे हैं। कल जो लाखों और करोड़ों के मालिक थे वे आज कपड़े और रोटियों के लिए तरस रहे हैं।

इसलिए हिन्दू-समाज की इस घोर आपत्ति के समय भारतवर्ष के समस्त सनातन-धर्मियों से प्रार्थना करता हूँ कि वे ऐसे संकट-काल में अपने बिछुड़े भाई, बहनों और बच्चों के नाम पर सहानुभूति प्रकट करते हुए इस वर्ष रामलीला त्यौहार न मनावें और रामलीला पर खर्च होनेवाले धन की बचत करके अपने समीपवर्ती रिलीफ सेंटर को, जहाँ आपके हिन्दू भाई, बहन और बच्चे निःसहाय अवस्था में विपत्ति के दिन व्यतीत कर रहे हैं, सहायता भिजवाकर सच्ची जाति-सेवा का आदर्श उपस्थित करें।

—संवाददाता

मथुरा जिले के कांग्रेस कार्यकर्ता अब स्वराज्य मिल जाने पर चोर-बाजार करने में काफी नाम और पैसा कमा रहे हैं। जिला कांग्रेस कमेटी मथुरा का ध्यान भी इस ओर आकर्षित है। वह कई बार ऐसे कांग्रेस कार्यकर्ताओं को चेतावनी भी दे चुकी है। वृन्दावन बोर्ड के कई कांग्रेसी सदस्य भी चोर-बाजारी में काफी सिद्धहस्त हैं और कांग्रेस में चोर-बाजार करनेवालों के एक नेता ने तो वृन्दावन बोर्ड की सदस्यता से स्तीफा भी दे दिया। आप पर चीनी व सरसों की चोर-बाजारी करने के दो मुकदमे चल रहे हैं।

—संवाददाता

इंदौर (गौराकुंड) श्री वीर सार्वजनिक वाचनालय में प्रथमा एवं मध्यमा की कक्षाएँ प्रारम्भ हो गई हैं। आजकल ६६ छात्र एवं २४ छात्राएँ संस्था के विद्यालय से लाभ उठा रही हैं। संस्था को १ अध्यापिका एवं १० अध्यापकों का निःशुल्क सहयोग उपलब्ध है। उदार महानुभावों ने इस कार्य के लिए संस्था को आर्थिक सहायता भी प्रदान की है।

—प्रचार-मंत्री

मोठ (झाँसी) से शीघ्र ही "नायी-मित्र" नाम का मासिक पत्र प्रकाशित होगा। वार्षिक मूल्य केवल १।) रुपया रहेगा।

—संवाददाता

दिल्ली से भारतीय विधान-परिषद् द्वारा नियुक्त ट्राइबल और बहिष्कृत प्रदेश संबंधी उप-समिति १६ सितम्बर से १९ सितम्बर तक जौनसार बाबर की जाँच के लिए आई। इस कमेटी के अध्यक्ष पूज्य ठक्कर बापा थे। कमेटी अशोक-आश्रम, चकरौता और नागथात भी गई। चकरौता में १७ सितम्बर को दिन के ३ बजे से एक विराट् कोल्टा कान्फ्रेंस में पूज्य ठक्कर बापा और कमेटी के सदस्यों ने भाषण दिया। नागथात में ठक्कर बापा ने माता कस्तूर बा-गांधी महिला औषधालय का निरीक्षण किया। कान्फ्रेंस को सफल बनाने के लिए श्री सोमप्रकाश मिश्र, ठा० सेवकसिंह और श्री क्षेमचन्द्र जी आदि ने पूरा प्रयत्न किया।

—व्यवस्थापक

ग्वालियर के श्री श्यामलाल शर्मा बी० ए० एल-एल्० बी० इंस्पेक्टर म्युनिसिपैलिटीज गत १८ अगस्त को लश्कर से बम्बई के लिए रवाना हुए। जहाँ से वे स्वायत्त शासन की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए ता० २२ अगस्त को स्टर्थ मोर नामक समुद्री जहाज द्वारा आक्सफोर्डः इँगलैंड गये।

—संवाददाता

(पेज ६ का शेष)

ढंग से समाजवादी समाज के लिए रास्ता तैयार कर रहे हैं। मुझे अपने हाल के दौरों में कुछ हिन्दू तथा मुसलमान भागे हुए लोगों से इन्हीं बल्कि इस प्रकार की बातों को सुनने का मौका मिला और मुझे आश्चर्य हुआ कि किस प्रकार इतिहास की शक्तियाँ अपना कार्य करती हैं। सभी मामलों में Short cuts या जल्दी पहुँचने के मार्ग नहीं हुआ करते। जनता अपने तजुर्बों से ही सीखती है, वह धीरे-धीरे सीखती है, पर सीखती अवश्य है।

पचमढ़ी में जन्माष्टमी के उपलक्ष में खुशियाँ मनाई गईं। जगह जगह श्रीकृष्ण भगवान्, साथ में भारत-माता और हिन्दुस्तान की झाँकी बनाई गई थी। श्रीमान् लक्ष्मणप्रसाद गुप्ता और प्यारेलाल गुप्ता की झाँकी देखने योग्य थी। एक जुलूस निकाला, जिनमें बच्चों को मूमफली लुटाई गई। बड़ा ही सुन्दर दृश्य था।

—संवाददाता

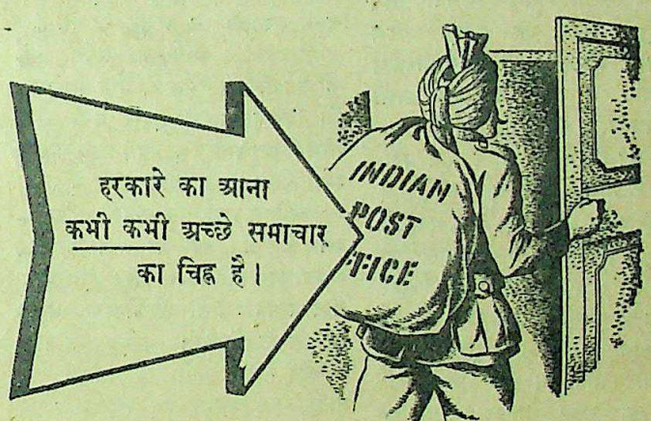
हरकारे का आना
कभी कभी अच्छे समाचार
का चिह्न है।

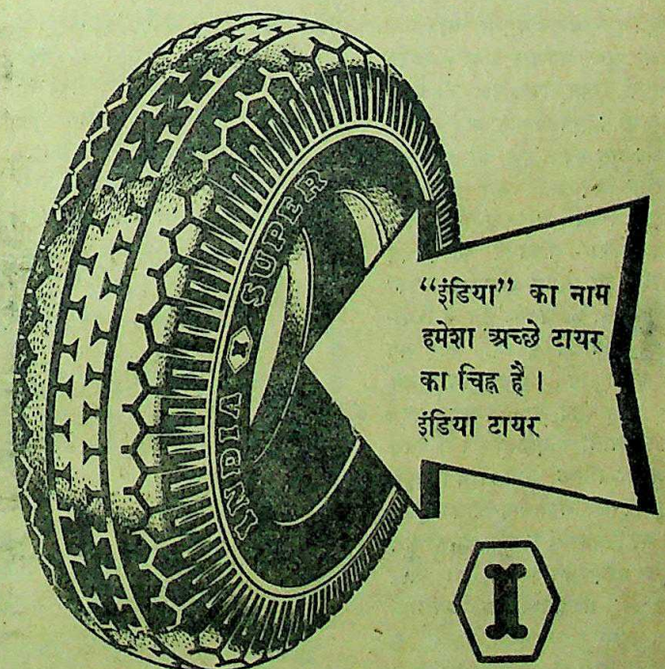

"इंडिया" का नाम
हमेशा अच्छे टायर
का चिह्न है।
इंडिया टायर

INDIA TYRES

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशी रियासतें और जन-तंत्र

(पेज ५ का शेष)

थे। सन् १९२१ में नरेन्द्र-मंडल की स्थापना के पश्चात् हवा ने रुख बदला। नरेशों ने समझा कि अब उनका कुछ सम्मान हो चला है। परन्तु वास्तव में मंडल की स्थापना से तो देशी नरेश और भी सुन्दरता से सार्वभौम सत्ता के अधीन हो गये। इसके प्रमाण की पुष्टि में बटलर कमेटी की दिसम्बर सन् १९२७ की रिपोर्ट उल्लेखनीय है। नरेश असहाय चीत्कार करते रह गये हैं। सार्वभौम सत्ता ने "हस्तक्षेप न करने की नीति" की आड़ में बराबर मनमाना हस्तक्षेप किया है। और रियासतों के राजे आँसू-भरी आखों से ही उसे देखकर और मन मसोसकर रह गये हैं। हैदराबाद काश्मीर मैसूर और ग्वालियर आदि की सम्मान-पूर्ण संधियाँ ठुकरा दी गईं और कालान्तर में उन्हीं जैसा अनेकों रियासतों को अँग-रेजी राज्य की शक्तिशाली सत्ता के सामने घुटने टेकने पड़े। वहाँ उनकी विनती और प्रार्थनायें व्यर्थ सिद्ध हुईं। वे प्रलाप ही करते रह गये।

राजनीति सत्ता का क्षेत्र है। वैभव और विलास उसके पास कम फटक पाते हैं। वहाँ कर्त्तव्य, धर्म, वचनों का स्मरण कराना अधिक उपयोगी सिद्ध नहीं होता। इंदौर के भूतपूर्व नरेश तुकोजी राव होल्कर, श्रीमन्त मल्हारराव गायकवाड के उदाहरण इसके साक्षी हैं। नाभा और भरतपुर नरेशों के राज्य-त्याग सार्वभौम सत्ता की दयनीय परा-धीनता के ज्वलन्त प्रमाण हैं। सन् १९३५ में अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की दुहाई देनेवाले निजाम हैदराबाद को लिखा लार्ड रीडिंग का पत्र उस जैसे ही अनेक बड़े बड़े वीर राजाओं की बेबसी और लाचारी के स्वय-सिद्ध सबूत हैं। हाँ सनयानुकूल उनकी छोटी-छोटी माँगों की पूर्ति अवश्य की गई। वह केवल शासन-प्रणाली को सुरक्षित रखने ही के कारण सरकार के लिए यह अनिवार्य भी था।

देशी राज्य वर्तमान राष्ट्रीय आन्दो-लनों के अतिरिक्त अपनी प्रजा की बढ़ती हुई जागृति से पूर्ण अवगत थे। इसी के फलस्वरूप उन्हें अपनी प्रजा को जिम्मेदार सरकार के लिए अनेक बार आश्वासन देना पड़ा है। उनमें से बहुतों ने घोषणायें की। महाराजा बीकानेर की १९२९ की प्रजाहित की उत्कट अभिलाषा उनकी विशाल हृदयता की द्योतक है। वे रिया-सतों को ब्रिटिश इंडिया का अंग देखना चाहते थे। एक संघ-शासन का रूप उन्हें पसंद था। सम्पूर्ण भारत के शासन-प्रणाली के एक ही सूत्र में बँधने में वह अपनी प्रतिष्ठा समझते थे। महा-राज अलवर तत्कालीन वाइसराय महोदय अरविन को रियासतों के प्रति उनकी शुभ प्रेरणा के लिए बधाई देते हैं। और साम्राज्य की संरक्षता तथा छत्रछाया में ब्रिटिश भारत के साथ-साथ रियासतों के भी उचित स्थान की आशा करते हैं। दोनों की शक्ति के एकीकरण ही में वह सम्पूर्ण देश का कल्याण समझते हैं। परन्तु राज्य-लिप्सा का त्याग साधारण त्याग नहीं है। वैधानिक रूप से राजे लोग संघ-शासन का अंग बनने में अपने गौरव को ठेस लगी अनुभव करते हैं। यह मनुष्य की आन्तरिक प्रवृत्तियों को स्मरण कराता है। वे अपनी प्राचीन मर्यादा और प्रणाली का एकदम त्याग होते देख निश्चेष्ट से होने लगते हैं।

देशी नरेशों की इस परेशानी को हल करने की दृष्टि और ब्रिटिश सार्वभौम सत्ता को दूसरे ढग से जमाने के लिए ही सन् १९३५ का शासन-विधान उपस्थित किया गया। राष्ट्रीय नेताओं की नाईं वे भी असंतुष्ट हो रहे। अखिल भारतीय कांग्रेस के सन् १९३६ के लखनऊ-प्रस्ताव से प्रकट है कि देशी रियासतों की इस स्थिति का अधिक समय तक कायम रहना परिवर्तनशील जगत् में कलंक है, क्योंकि विदेशी राज्य की गोद में पलकर उनका निज गौरव चूर चूर हो चुका है। इसलिए वर्तमान राजनीति, सामाजिक तथा आर्थिक ढाँचे में उनका सामंजस्य नये ढग से होना अनिवार्य है। किन्तु यहीं पर लार्ड लिनलिथगो की आलोचना और रियासतों के प्रति सद्भावना के दर्शन कर लेना भी आवश्यक है। उनकी दृष्टि में रियासतें निकम्मी और प्राचीन खंडहर नहीं, वरन् भार-तीय राजनीतिक क्षेत्र में विशेष स्थान रखती हैं। वाइसराय महोदय का इतने मुक्तकंठ से नरेशों की प्रशंसा के राग अलापना उनकी गत दो सौ वर्षों की उस चाणक्य नीति की याद दिलाता है कि जिसके कारण हमारे देशी राज्य आज केवल खंडहर ही नहीं, वरन् साक्षात् श्मशान से भी भयावने प्रतीत होते हैं।

चलिए जरा क्रिप्स-योजना के भी दर्शन कर लें। वहाँ भी नरेशों को कोई आश्वासन नहीं दिया गया। हाँ, भाषा और अभिनय में तो आपको महान् अन्तर की झाँकी मिलेगी; परन्तु मूल नीति में कोई भी परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं होता। १५ अगस्त सन् १९४७ से पूर्व अँगरेज क्रिप्स-योजना ही की भाषा में बोलते रहे; परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति और अपनी घरेलू समस्याओं ने उनको इतना बाध्य कर दिया कि २२ मई १९४६ में केबिनेट डेलीगेशन को देशी राज्यों के संबंध में भी घोषणा करनी ही पड़ी। पाठक स्वयं ही विचार करें कि अपने असहाय मित्रों तथा आश्रितों

(पेज ४ का शेष)

साम्प्रदायिक दंगे न समझ बैठे वरन् वह इन्हें दो पारस्परिक राज्यों के संगठित युद्ध के रूप में देखें और फलतः अपनी नीति में पर्याप्त दृढ़ता लायें। जब दो राज्यों का सर्वरूप से विभिन्न शासन और सीमा निर्धारित हो चुकी है तब समझ में नहीं आता कि हमारे नेतागण पाकिस्तानी सैन्य का हिन्दुस्तानी सीमा में प्रवेश कर गोली चलाना किस प्रकार सहन कर लेते हैं? अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का उल्लंघन किया जाना पारस्परिक युद्ध के लिए चुनौती मानी जाती है। हिन्दुस्तान सरकार का प्राथमिक कर्तव्य यह है कि वह पाकिस्तान सरकार को सावधान कर दे और एक चेतावनी दे कि "यदि वह

को इस दीनावस्था को पहुँचा देना जगत् में प्रजातंत्र की दुहाई देनेवाली आंग्ल जाति के लिए कहाँ तक शोभापूर्ण है? निःसंदेह सभी भारत-निवासी संघ-शासन में उनके शामिल होने में अपना और देश का गौरव अनुभव करते हैं। देश का विभाजन होने पर भी इंडियन यूनियन और पाकिस्तान सरकार का अंग बन जाना नरेशों के लिए स्वयं भी हितकर है। अधिक संख्या में तो किसी न किसी रूप में रियासतों ने अपना अपना स्थान ढूंढ ही लिया है। किन्तु खेद का विषय है कि अब भी हैदरा-बाद से बड़े और धनधान्य सम्पन्न राज्य ने स्वयं ही सार्वभौम सत्ताधारी समझने में अपना गौरव माना है और वहाँ की पीड़ित पददलित प्रजा को तहस-नहस करने में अपनी शान समझी है। नाग-रिकता का गला घोंटने से तो अपने ही पतन को निमंत्रण देना है। आज तो निजाम सरकार को सहर्ष जनतंत्र के हाथ में राज्य-सत्ता सुपुर्द करके अपना औदार्य दिखाना चाहिए था। कहाँ तक यह गुत्थी सुलझेगी? यह हमारा विषय नहीं। हाँ, यह तो निश्चय है ही कि उन्हीं देशी राज्यों का भविष्य उज्ज्वल है जो प्रजातंत्र के आधार पर समस्त जनवर्ग के हित ही में अपना कल्याण समझते हैं। यह समय उनकी कसौटी का है। इसी में सम्पूर्ण देश का गौरव और सुख-समृद्धि निहित है।

पाकिस्तान के अल्पसंख्यकों के का कार्यरूप प्रबन्ध नहीं करती है कि हिन्दुस्तान में भी मुस्लिम के साथ वही गुजरे" क्योंकि कांग्रेस सरकार को यह अच्छी तरह लेना चाहिए कि यदि अभी तक आदर्श विधान को केवल मौलिक वरन् कार्य-रूप रख सकी तो वह जातियों के सहयोग के कारण बहुसंख्यकों की सहनशीलता कभी का हो चुका है। हम यह देना चाहेंगे कि हिन्दुस्तान के अल्पसंख्यक मुसलमानों को जिन्होंने स्तान के पक्ष में वोट दिये थे अब कि वे कायदे आजम से इस बात की करें कि वह पाकिस्तान के अल्प हिन्दू और सिखों की पूरी रक्षा इस प्रकार की प्रार्थनाएँ बिहार यू० पी० के लीगी नेता करते और यह अच्छा ही है।

हिन्दुस्तान की सरकार भी अब रुख कड़ा बना रही है जैसा कि अभी नेहरू और पटेल के वक्तव्यों से प्रकट है और आशा है कि लीग के हर आगे आत्मसमर्पण करनेवाली को कांग्रेस छोड़कर अल्पसंख्यकों को शीघ्र हल कर लेगी।

दुर्गन्धि मुझ में?

७६% नवयुवकों में दुर्गन्धि रहती है!

वैज्ञानिक परीक्षण से निस्संदेह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ के मुख की दुर्गंधि को कोलगेट टूथ पाउडर ने शीघ्र ही दूर कर दिया।

धन की बचत—दूसरी दवा की अपेक्षा कोलगेट के एक बड़े डिब्बे में दाँत साफ करने की ३०० मात्रायें अधिक रहती हैं और छोटे डिब्बे में ४६ मात्रायें अधिक रहती हैं और इतने पर भी मूल्य एक पैसा अधिक नहीं।

साँस की दुर्गंधि आपको समाज में नीचे गिराती, अप्रिय बनाती और अप्रसन्न रखती है। किसी भी दाम का कोई दंतमंजन आपके दाँतों को इतनी जल्दी और इतनी अच्छी तरह कोलगेट टूथ पाउडर की भाँति साफ नहीं कर सकता।

आज ही कोलगेट खरीद लीजिए।

CLEANS BREATH AS IT CLEANS TEETH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ांसी और जुक़ाम की
सर्वाधिक लोकप्रिय दवा

सिरोलिन
'रोच'

संसार भर मे उपयोगित होती है।

सूर्यग्रहण के अवसर पर तैयार की हुई

...व्य सिद्धि तांत्रिक अँगूठी

...जो चाहेंगे हो जायगा। गरीबी दूर भाग जायगी, लक्ष्मी आपके कदम ...आप धनवान हो जायँगे, आपकी प्रेमिका आपसे अटूट प्रेम करने लगेगी, ...न जायँगे, मनचाही सन्तान होगी, बुरे ग्रहों का दोष दूर हो जायगा, ...की इज्जत करेगा, लड़ाई-झगड़े में फतह होगी, विद्यार्थी परीक्षा में ...जिसे आप चाहते हैं उसी सुन्दरी से शादी होगी, नाराज हाकिम खुश ...करण होगा। बात यह है कि हर काम आपके इच्छानुसार होगा। ...ग्रहण के अवसर पर शुभ मुहूर्त में तैयार होती है। बड़े परिश्रम से ...गई है। अब परीक्षा करके लाभ उठाना आपका काम है। मूल्य २॥) ...॥=) आना। नोट—बेकार साबित हो, तो ६ महीने तक वापिस।

पता—कमल कंपनी (स) अलीगढ़।

...नी छुट्टी रोक दीजिये!

...तक आप अपने जीर्ण और ...कार ब्रश को फेंक न दें छुट्टी पर मत जाइये।

...नया पैक ...लीजिये।

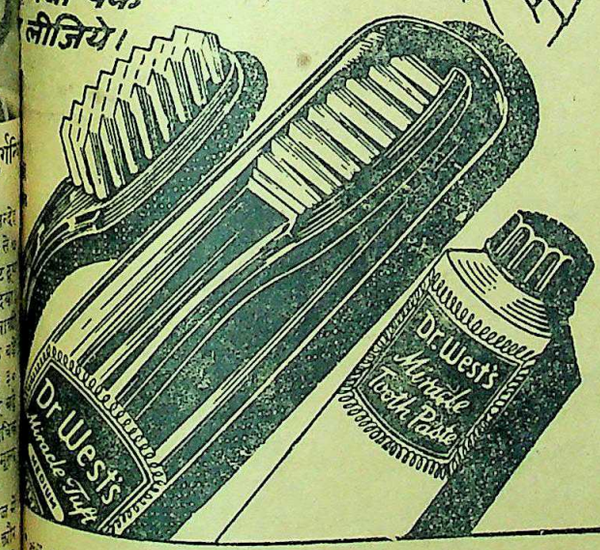

...को ६० प्रतिशत अधिक स्वच्छ करता है
...अभेद्य.....नमी-विद्वेषक

* शीशे में बंद
* वर्षभर की गारंटी

डा. वेस्ट्स टूथ ब्रश और टूथ पेस्ट

व्यापारिक पूछताछ के लिये: एल. डी. सेमूर एंड कम्पनी (इंडिया) लिमिटेड
बम्बई - कलकत्ता - कराची - मदरास

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

भारत सरकार द्वारा

डिसपोज़लज़् का पाक्षिक बुलेटिन

अब प्रकाशित हो रहा है

यदि आप को निम्न लिखित बातों में दिलचस्पी है:—

१. पब्लिक के सामने टैंडर खोल कर सुरक्षित मूल्य से सब से अधिक दाम के टैंडर देने वाले के हाथ बची हुई बिकाऊ सामग्री की सूची।
२. विशेष प्रकार की थोक और मिश्रित वस्तुओं के आवश्यक नीलाम और इन की विशेष बिक्री के विषय में सूचना।
३. सामान बेचने के बारे में विवरण, टैंडर देने के नियम और टैंडर देने की अन्तिम तारीख़।
४. बची हुई सामग्री के बारे में आवश्यक सूचना।

तो नीचे छपा कूपन अँग्रेज़ी में भर कर अपना नाम ग्राहकों में लिखवा लीजिए। ६ मास का चन्दा ५) मनीआर्डर या बिना क्रॉस किये पोस्टल आर्डर द्वारा पेशगी भेजिए। चैक या डाकख़ाने के स्टाम्प्स द्वारा चन्दा स्वीकार न किया जावेगा।

प्रत्येक अँक की परिमित प्रतियां आठ आने प्रति के दर से नई देहली, बम्बई, कलकत्ता, लाहौर, कानपूर, मद्रास, और कराची नगरों में डिसपोज़लज़् के दफ़्तरों से भी प्राप्त हो सकती हैं। यह प्रतियां प्राप्त करने के लिये स्वयं जाना होगा।

COUPON

CUT HERE ..... CUT HERE

The Director of Publicity,
Directorate-General of Disposals,
Shahjahan Road, NEW DELHI.

Please enrol me as a subscriber for the Disposals Fortnightly Bulletin. Money Order No.————has been sent to you separately/Postal Order for Rs. 5/- is enclosed herewith, being my subscription for six months.

Name (in Block letters)

Representing Firms

Address (in Block letters)

Town (in Block letters)

Name of Trade Association or Chamber of Commerce

CUT HERE AC 269

Issued by the Directorate-General of Disposals, Industries and Supplies Department, New Delhi.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से विहीन भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।
मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

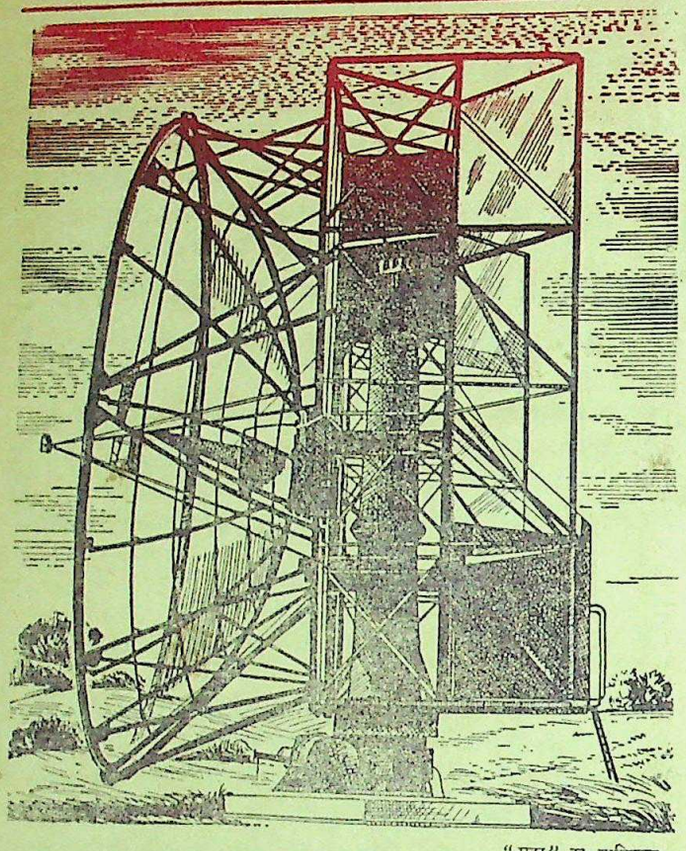

"राडर" का आविष्कार

तार, टेलीफ़ोन और वायरलॅस के पश्चात ध्वनि का एक चमत्कार "राडर" (Radar) का आविष्कार है। रेडियो की सूक्ष्म से सूक्ष्म तरंगों की सहायता से दूर के तथा अदृश्य पदार्थों का भी पता चल जाता है। इस प्रकार राडर द्वारा दूरी, अन्धेरे या धुन्ध के कारण छिपी वस्तु भी दीख पड़ती है। आक्रमण करने वाले बम-मार जहाज़ों की खोज करने के लिये इस शस्त्र का आविष्कार आत्म-रक्षा के निमित्त किया गया और यह युद्ध में विजय प्राप्त करने में वर्तानिआ का सहायक सिद्ध हुआ। तदनन्तर इस ने आक्रमण करने में बड़ी सहायता दी और शत्रु की शक्तिशाली युद्ध सामग्री को नष्ट करने में उपयोगी सिद्ध हुआ।

शान्ति-काल में भी इस के विविध प्रयोग हैं। इस की सहायता से समुद्री जहाज़ यात्रा कर सकते हैं। वायुयान राडर की तरंग के साथ साथ उड़ान करते हुये अपने लक्ष्य पर सुगमता और कुशलता पूर्वक पहुँच सकते हैं। इस प्रकार आधुनिक यात्रा सम्बन्धी अनेकों बाधाओं पर विजय प्राप्त कर ली गई है। युद्ध संग्राम का यह शस्त्र शान्ति-काल का उपयोगी यन्त्र सिद्ध हो रहा है।

आप के पास भी एक शक्तिशाली शस्त्र है जिसका दुरुपयोग सहस्रों के लिये दुखदाई और सदुपयोग सुखदाई सिद्ध हो सकता है। यह शस्त्र है आप के धन की बचत। यदि आप इस बचत का अपव्यय करेंगे या इसे किसी अनुचित मद में लगायेंगे तो आपका धन व्यक्ति गत तथा राष्ट्रीय परिस्थिति के लिये हानिकारक सिद्ध होगा, चीज़ों के दाम और भी अधिक चढ़ जायेंगे। इसके विपरीत यदि आप धन बचायेंगे तो राष्ट्रीय सम्पत्ति की वृद्धि होगी और आपकी अपनी आर्थिक दशा भी उन्नत होगी।

आजकल वस्तुओं की कमी है। इन के मूल्य भी चढ़े हुये हैं। आप माल का खरीदना उस समय तक स्थगित क्यों नहीं कर देते जब तक श्रेष्ठतर वस्तुएं सुलभ नहीं हो पातीं? बीमा पॉलिसी, सहकारी साख समिति, डाकखाने का सेविंग्ज़ खाता, नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स, और सरकारी लोन (कर्ज़े), धन लगाने की सुरक्षित मद हैं।

भूमि, सम्पत्ति, सोने चांदी के पांसे, आभूषण, द्रव्य, बना माल, और सट्टेबाज़ी पर रुपया न लगाइए। इन के मूल्य शीघ्र ही कम हो जायंगे।

चढ़ी कीमतों को रोकिए
धन का अपव्यय न कीजिए
भारत सरकार के फ़ाइनैन्स विभाग द्वारा प्रकाशित

AC. 173

सिर्फ १० मिनिटमें

दर्द से आराम को

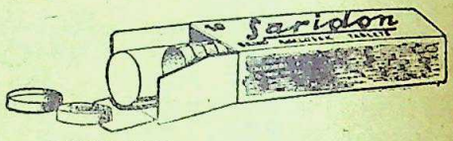

सारिडॉन
विख्यात दर्द विनाशक

लक्स टॉयलेट साबुन
गीता निज़ामी की
त्वचा को ताज़ा तथा कोमल रखता है।

यह मनोहर एवं बुद्धिमति अभिनेत्री, अपनी त्वचा के लिये नियमित सौन्दर्य-परिपाठ किसप्रकार महत्त्वकारी है, यह जानती है। वह सदैव अपनी कोमल एवं मनोहर रंगरूप की लक्स टॉयलेट साबुन से सौम्य सुरक्षा करती है। वह कहती है कि, उस की राय में अपनी त्वचा को निर्मल एवं निर्दोष रखने का यही उत्तम मार्ग है। आप इसका अनुभव क्यों नहीं करते? आप इस शुद्ध, सफ़ेद साबुन का मुलायम मलाईदार झाग लुभायेगा।

गीता निज़ामी ने हाल में नवयुग फ़िल्म प्रॉडक्शन के "रिटर्न ऑफ़ पद्मा" में अभिनय किया है, जो उसकी एक नायिका भूमिका सिद्ध हुई है।

लक्स टॉयलेट साबुन
फ़िल्मी स्टार्स का सौन्दर्य-साबुन!

LTS. 165-50-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मिश्र-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पत्रकार रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साप्ताहिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =) ॥

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

७ सितम्बर, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 7th September, 194

इंडोनेशिया की स्वतन्त्रता का युद्ध
हैदराबाद रियासत की निरंकुशता

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

पंजाब और बंगाल की सीमा का निर्णय
भारतीय सरकार की ग्राम-सुधार-योजना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खांसी और जुकाम की
सर्वाधिक लोकप्रिय दवा
सिरोलिन
'रोच'
संसार भर मे उपयोगित होती है।

* दांतों को ६० प्रतिशत अधिक स्वच्छ करता है
* जल-अभेद्य.....नमी-विद्वेषक
* शीशे में बंद
* वर्षभर की गारंटी

डा. वेस्ट्स ट्रूथ ब्रश और ट्रूथ पेस्ट

व्यापारिक पूछताछ के लिये: एल. डी. सेमूर एंड कम्पनी (इंडिया) लिमिटेड
बम्बई • कलकत्ता • कराची • मदरास

झूठो दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

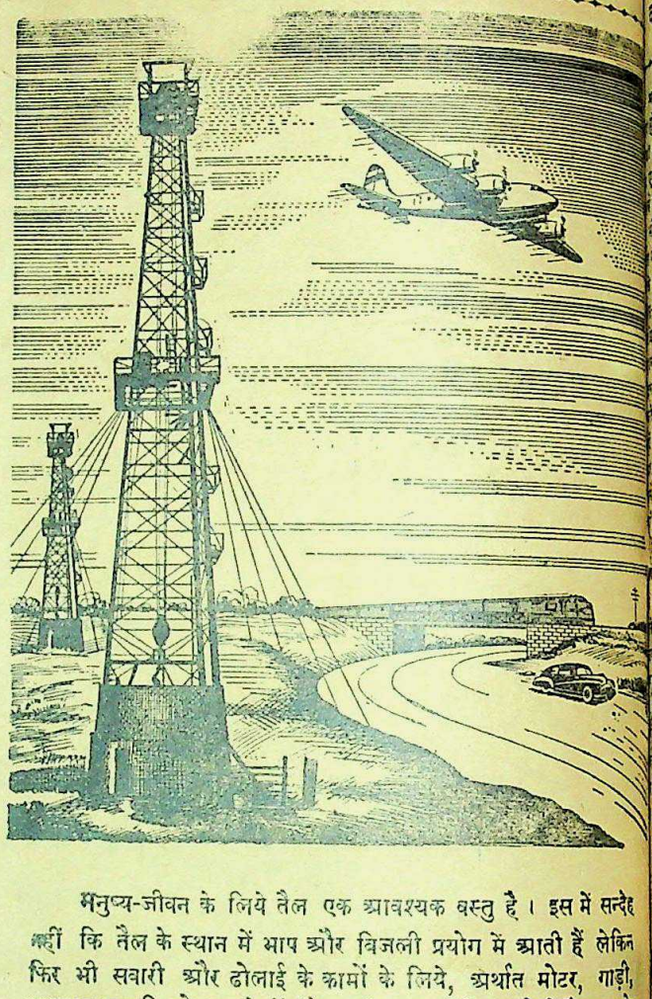

मनुष्य-जीवन के लिये तैल एक आवश्यक वस्तु है। इस में सन्देह नहीं कि तैल के स्थान में भाप और बिजली प्रयोग में आती हैं लेकिन फिर भी सवारी और ढोलाई के कामों के लिये, अर्थात मोटर, गाड़ी, वायुयान इत्यादि को चलाने में तैल भी उतना ही उपयोगी है। इस के अतिरिक्त औद्योगिक और घरेलू काम में आने वाली बिजली के उत्पादन में तैल सहायक होता है। भारतवर्ष के छोटे छोटे नगरों, ग्रामों, सड़कों और घरों में प्रकाश के लिये अभी तक तैल ही से काम लिया जाता है। वास्तव में मनुष्य के लिये तैल, प्रकृति की एक अनुपम देन है। परन्तु दुर्भाग्य ! ऐसी विचित्र देन को भी अत्यन्त विनाशकारी रूप से प्रयोग में लाया गया है।

हवाई, जल तथा स्थल सेनाओं ने तैल से इन्धन का काम लेकर युद्ध की प्रलय रूपी ज्वाला से लाखों सुखी कुटुम्बों, सहस्रों ग्रामों, नगरों और प्रदेशों को विध्वंस कर दिया। इस प्रकार भगवान की अमृत रूपी देन भी दुरुपयोग से मनुष्य जाति के लिये हलाहल विष बन जाती है।

कभी आप ने यह भी सोचा कि आप की बचत का धन लाभप्रद होने के विपरीत हानिकारक सिद्ध हो सकता है? आजकल वस्तुएं पर्याप्त नहीं और आने जाने की सुविधायें भी कम हैं। धन को व्यर्थ व्यय कर देने से या किसी अनुपयोगी मद में लगा देने से आप महँगे दामों को और भी चढ़ा देते हैं। क़ीमतों का बढ़ना आप के और राष्ट्र के लिये भी भयसूचक है। कुछ काल के लिये माल ख़रीदना बन्द कर दीजिये और इस प्रकार क़ीमतें गिराने में सहयोग दीजिये। इस के साथ ही अपना धन भी सुरक्षित रखिये।

अपनी बचत को बुद्धिमत्ता पूर्वक लगाइए। बीमा पॉलिसी, सहकारी साख समिति, डाकख़ाने का सेविंज़ खाता, नेशनल सेविंज़ सर्टिफ़िकेट्स और सरकारी लोन (कर्ज़े), धन लगाने की सुरक्षित मद हैं।

भूमि, सम्पत्ति, सोना चांदी के पांसे, आभूषण, द्रव्य, बना माल, या सट्टेबाज़ी पर रुपया व्यय न कीजिये। इन के मूल्य बहुत चढ़े हुये हैं और आशा है कि शीघ्र ही कम हो जायंगे।

चढ़ी कीमतों को रोकिए
धन का अपव्यय न कीजिए
भारत सरकार के फ़ाइनैन्स विभाग द्वारा प्रकाशित
AC 172

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष १०, संख्या १] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, ७ सितम्बर, १९४७

महात्मा गांधी ने कलकत्ता में दुबारा
जाने के कारण अनशन आरंभ कर
दंगे का प्रारम्भ इस तरह हुआ
हिन्दू घायल कर दिया गया।
राम की समझ में यह आया है कि
पाकिस्तानियों की नई सूझ है।
है कि गांधी जी नोआखाली जाने
और उनके साथ होते मशहूर
मिस्टर सोहरावर्दी। सर
जो पूर्वी बंगाल के लीगी
बन बैठे हैं, वह मिस्टर
को फूटी आँखों नहीं देख
इसलिए यह कहने में संकोच
कलकत्ता में दुबारा दंगा कराया
महात्माजी को नोआखाली
रोकने का सबसे बढ़िया तरीका
था। महात्माजी पहले ही दिल्ली
खाली के लिए चले थे, लेकिन
की हालत देखकर वहीं रुक
उनके नोआखाली पहुँचने की बला
तो यों टली और अब जब वह
से नोआखाली चले तो दूसरा
खूब हो गया। यह लीग की
है कि गांधी जी पाकिस्तान में
न पायें. बस। यदि महात्मा
करते हैं तो पाकिस्तान को क्या
होगा हिन्दुओं और हिन्दुस्तान
की बात यही है।

* * *

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

लार्ड लुई माउंटबेटेन को पंजाब की संयुक्त सुरक्षा की फौजी कमेटी में शामिल होकर दिल्ली लौटे ही थे कि खबर मिली कि हिन्दुस्तान की सीमा में घुसकर मुसलिमगार्डों ने अस्त्र-शस्त्रों से कई गाँवों पर कब्जा कर लिया और कई गाँव बरबाद कर दिये। प्रधानमंत्री पंडित नेहरू बेचारे अभी पंजाब में ही शान्ति-स्थापना के काम में लगे हैं, और हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल साहब सकुशल दिल्ली में विराजमान हैं। अपने राम की समझ में नहीं आता कि लार्ड माउंटबेटन को गवर्नर जनरल बनाया किसलिए गया है? हिन्दुस्तान की सीमा के पार होकर गवर्नर जनरल की नाक के नीचे अंधेर खाता सचा हुआ है और गवर्नर जनरल साहब बटवारा करके चुप्पी साधकर बैठ गये हैं? क्या बटवारा के पहले गवर्नर जनरल साहब इस तरह के हमलों को यों ही तरह दे सकते थे? लेकिन नहीं, गवर्नर जनरल साहब देख रहे हैं तमाशा और विभाजन से पैदा होनेवाले आनन्द का ले रहे हैं रस। इसके सिवा और कहा क्या जाये?

* * *

भारत में जिस तरह का विभाजन हुआ है ठीक उसी तरह का विभाजन फिलिस्तीन का भी होने ही वाला है। भारत में अँगरेजों ने जिस तरह हिन्दू राज्य और मुसलिम राज्य बनाया उसी तरह फिलिस्तीन में भी अरब राज्य और यहूदी राज्य कायम करने जा रहे हैं। दो वर्ष तक संयुक्त राष्ट्रों की ओर से दोनों राज्यों का संचालन ब्रिटेन करेगा। दो वर्ष के बाद दोनों राष्ट्र स्वतंत्र हो जायेंगे। जरुसलम का नगर स्वतंत्र रहेगा। अपने रामकी समझ में फिलिस्तीन का विभाजन हो जाने के बाद दो वर्ष तक शासन करके अँगरेज उसे ऐसा बना देंगे कि अरब और यहूदी जूतं पैजार जारी रक्खेंगे और फिर स्वतंत्र भी हो जायँगे। दो वर्ष के बाद दोनों राज्यों को बढ़िया स्वतंत्रता देकर जरुसलम में चुपचाप अँगरेज बैठकर आनन्द की वंशी बजाते हुए अरब-यहूदी मुड़कुचौअल का अवलोकन करते रहेंगे। धन्य हैं ब्रिटिश राज्य और उसकी स्वतंत्रता। भारत को स्वतंत्र करके अब ब्रिटिश लोग फिलिस्तीन को स्वतंत्र बनाने जा रहे हैं। बधाई हैं।

* * *

संयुक्तप्रांत की गवर्नर जब से श्रीमती सरोजिनी नायडू बनी हैं, तबसे अल्पसंख्यकों विशेषकर मुसलमानों म बड़ी जबरदस्त राष्ट्रीयता फूट पड़ी है। खास कर उर्दू जबान की वकालत भी जोर मारने लगी है। श्रीमती नायडू संसार के साहित्य क्षेत्र की अग्रणी कलाकार जरूर हैं लेकिन राजनीतिज्ञ नहीं। यदि देवीजी राजनीतिज्ञ होतीं तो आज गवर्नर के पद से जो बातें वह कह रही हैं—चाहे उसमें सचाई ही होती—कभी न कहतीं। क्योंकि सही बातें भी कही ही नहीं जातीं। राजनीति के यह खिलाफ है। यह संयुक्तप्रान्त बड़ा विचित्र सूबा है। यह लीडर-विहीन प्रान्त है और परम स्वतंत्र न सर पर कोई वाली कहावत ही यहाँ चरितार्थ होती है। यहाँ न गांधीवादियों की चलती है, न सोशलिस्टों की और न कम्यूनिस्टों की, फिर चलती किसकी है, भगवान जाने। श्रीमती नायडू की उर्दू की वकालत इस प्रान्त के रहनेलवाले बहुमत की भावना के विरुद्ध है। लेकिन कौन समझाये, अपने बूते का रोग तो यह है नहीं क्योंकि एक तो वह अपने प्रांत की गवर्नर हैं, इसलिए यों भी डर लगता ही है, क्योंकि न जाने कब और किस घड़ी रपट दिये जायें, दूसरे आल इंडिया फेम की लीडर हैं। लेकिन कहना ही पड़ता है कि यह संयुक्त प्रांत है, यहाँ तो सँभल सँभल पग धरियो भाई! अगर पगड़ी और टोपी सँभालना है।

* * *

हैदराबाद में दमन-चक्र जोरों पर जारी है। राष्ट्र-प्रेमियों और कांग्रेस कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारियाँ हो रही हैं। अपने राम की समझ में नहीं आ रहा है कि जब भोपाल के नवाब साहब भारतीय संघ में शरीक हो गये और लंदन से दिल्ली की दौड़ लगाने के बाद भी उनकी अकड़ जाती रही तब निजाम साहब किस बिरते पर अपनी अकड़ नहीं छोड़ रहे है? ठीक भी है भोपाल की अकड़ छोटी थी इसलिए वह तो धराशायी हो गये लेकिन निजाम साहब तो पूरे अकड़ूखाँ है, फिर जब उन्हें पाकिस्तानियों और ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों का भरोसा है, तब वह आसानी से धराशायी होनेवाले नहीं। लेकिन बकरी कब तक खैर मनाएगी, भारतीय यूनियन में उसे शरीक होना ही पड़ेगा। पापड़ जब तक बेलना हो बेल ले। निजामसाही बहुत दिनों चलने की नहीं।

ताड़ से गिरे तो खजूर में अटकने चले!

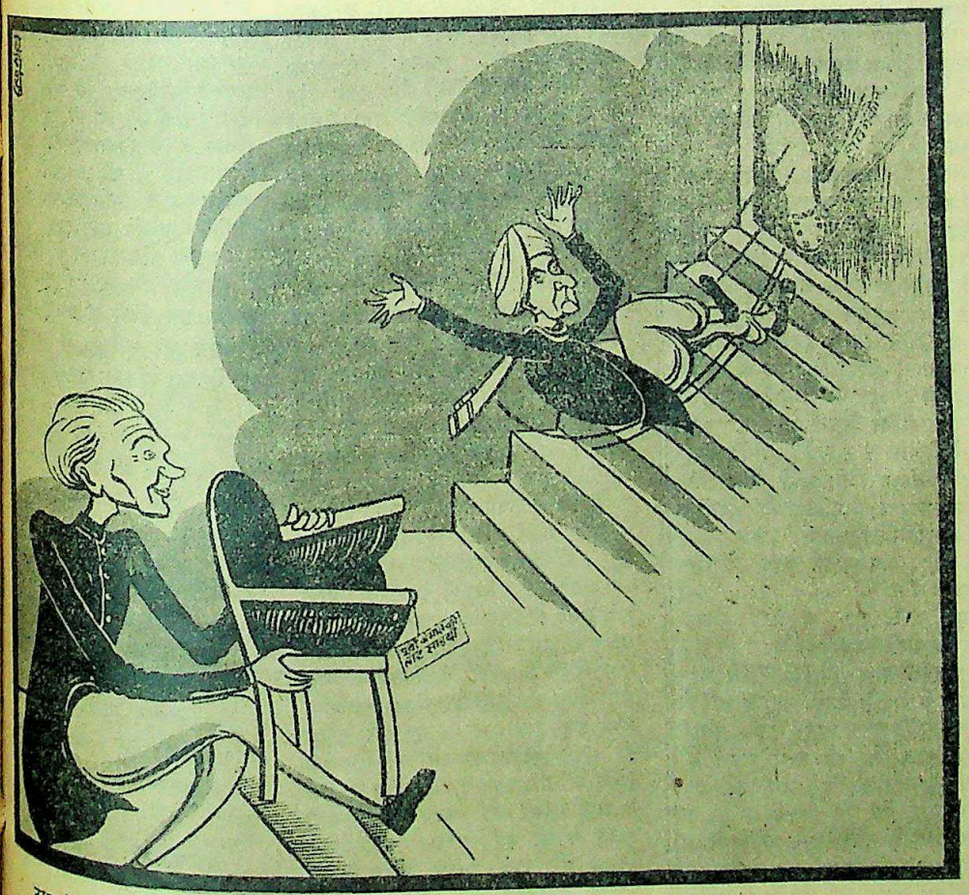

ट्रावन्कोर के दीवान सर सी० पी० रामस्वामी अय्यर, सुना जाता है मिस्टर जिन्ना की शरण में जा रहे हैं। मिस्टर जिन्ना, सुना जाता है कि सर सी० पी० को पूर्वी बंगाल की गवर्नरी की कुर्सी पर बैठाने के लिये उनका स्वागत करनेवाले हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्यपात्रक का पृष्ठ

साम्प्रदायिकता क्यों ?

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की स्थापना तथा सीमा-कमीशन के निर्णय को कांग्रेस और मुस्लिम लीग द्वारा स्वीकृत कर लेने के बाद राष्ट्र में साम्प्रदायिक प्रतिक्रिया का श्रीगणेश प्रारम्भ हो गया है। महात्मा गांधी ने कलकत्ता में शान्ति-स्थापना के कार्य में जो सफलता प्राप्त की थी, वह मुस्लिम लीग तथा उनके पीछे रहनेवाले ब्रिटिश शक्ति को सह्य नहीं हुई। गांधी जी नोआखाली की यात्रा करने ही वाले थे कि कलकत्ता में पुनः साम्प्रदायिक दंगा प्रारम्भ हो गया। दंगे का प्रारम्भ मुसलमानों की ओर से हुआ जिसमें एक हिन्दू घायल कर दिया गया था। इस काण्ड के परिणामस्वरूप कलकत्ता पुनः एकाएक साम्प्रदायिक दंगे का क्षेत्र बन बैठा है। इसी उपद्रव के कारण महात्मा जी ने अनशन प्रारम्भ कर दिया है। वह अपना अनशन उस वक्त तक नहीं छोड़ेंगे जब तक पुनः कलकत्ता की शान्ति की स्थापना न हो जायगी। उधर पंजाब की स्थिति तो अत्यन्त भयावह थी ही किन्तु अब और भी भयावह होती जा रही है। पिछले सप्ताह ही हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान की सीमा की संयुक्त फौजी शक्तियों का अन्त किया गया है साथ ही दोनों उपनिवेशों की सीमा की रक्षा का भार हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान की फौजों के सिपुर्द किया गया। इस संबंध में किसी भी प्रकार के क्रियात्मक कदम उठाये जाने के पूर्व ही समाचार मिला कि हिन्दुस्तान की सीमा को पार करके कई गाँवों पर पाकिस्तानी मुसलमानों के शस्त्रास्त्र दल ने कब्जा कर लिया। कितने ही व्यक्ति मार डाले गये, गाँव के गाँव जला कर स्वाहा कर दिये गये। पीड़ितों की संख्या बढ़ती जा रही है।

हम यहाँ पर विशेष कुछ न कहकर दो-तीन बातों की ओर अवश्य ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। बंगाल में जो काण्ड प्रारम्भ किया गया है, संभवतः उसका पहले ही निश्चय हो चुका रहा होगा। बात यह है कि महात्मा गांधी को, पाकिस्तानी लोग-विशेष सर नाजिमुद्दीन, नोवाखाली जाने देना नहीं चाहते हैं। महात्माजी के साथ श्री सोहरावर्दी भी नवाखाली जानेवाले थे। मिस्टर सोहरावर्दी सर नाजिमुद्दीन के विरोधी हैं, ऐसी हालत में सर नाजिमुद्दीन यह कैसे सहन कर सकते थे कि महात्मा नोवाखाली जाते और उनके साथ उनका विरोधी श्री सोहरावर्दी भी। घटनाओं पर विचार करने से यह स्पष्ट है कि इसी प्रकार के षड्यंत्र के कारण ह. गांधी जी के मार्ग में बाधा डाली गई और कलकत्ता की शान्ति को पुनः गृह-युद्ध में परिणत कराया गया. सच तो यह है कि ब्रिटिश अधिकारी इस समय फैसला तो देते जा रहे हैं किन्तु उसे अमल में लाने का अवसर नहीं दे रहे हैं। नहीं तो इसका क्या अर्थ है कि कल ही लार्ड माउंटबेटेन तथा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के उप-निवेशों के प्रधान अधिकारी तथा फौजी अफसर एक दिन बैठकर पंजाब का सीमा-संबंधी निर्णय करते हैं और दूसरे दिन समाचार मिलता है कि पूर्वी हिन्दुस्तान के कई गाँवों पर मुस्लिम दल ने कब्जा कर लिया। कब्जा करते समय उन्होंने तोपों का भी उपयोग किया।

यह समझने की बात है कि हमला करनेवालों को तोपें कहाँ से मिल गईं? हो सकता है कि अस्त्र-शस्त्र उन्हीं फौजियों द्वारा प्राप्त की गई हों जो संयुक्त सुरक्षा के लिए सीमा पर पहले से नियुक्त थीं। इस प्रकार किसी न किसी रूप में पंजाब में भी गृह-युद्ध प्रारम्भ ही करा दिया गया। संभवतः अब महात्मा गांधी के वहाँ भी जाने की नौबत नहीं आयेगी। बंगाल और पंजाब में जो कुछ भी हो रहा है उसकी जिम्मेदारी जहाँ मुस्लिम लीग के कर्णधारों पर है वहाँ उन कूटनीतिज्ञ अँगरेजों पर भी है जिन्होंने पाकिस्तान को संगठित करने का ठेका लिया है। देखा जा रहा है कि विभाजन के बाद पाकि-स्तान की नीति कुछ ऐसी हो रही है जो बड़ी ही भयावह है। पाकिस्तान सीमा में प्रयत्न यह हो रहा है कि जहाँ तक हो अल्पसंख्यक जातियों का सफाया कर दिया जाये। पूर्वी बंगाल में यह नीति बरती जा रही है। पश्चिमी पंजाब में भी यह नीति पूरी तरह चालू है। पंजाब में हिन्दुस्तान की सीमा के करीब जितने भी नगर पाकिस्तानी सीमा के भीतर हैं, जहाँ हिन्दुओं की संख्या कुछ अधिक है, उनकी विशेष दुर्दशा की जा रही है। नोआखाली में भी पता चला है कि अल्पसंख्यकों को खुलेआम कहा जा रहा है कि वह पश्चिमी बंगाल में चले जायें। ऐसी हालत में पाकिस्तानियों से यह कैसे आशा की जा सकती है कि वह महात्मा गांधी ऐसे व्यक्ति का अपनी सीमा के भीतर घुसने देंगे? वह भविष्य में अधिक से अधिक बाधाएँ उत्पन्न करेंगे। महात्मा गांधी के उपवास की नैतिकता का पाकिस्तानियों पर कुछ भी असर नहीं पड़ सकता। उसका प्रभाव हिन्दुस्तान पर पड़ना अनिवार्य है।

अब प्रश्न यह है कि होना क्या चाहिए? किस प्रकार शान्ति की स्थापना हो? हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का बँटवारा हो जाने पर भी गृह-युद्ध तथा साम्प्रदायिकता क्यों इतनी व्याप्त हो रही है? हिन्दू तथा मुस्लिम दृष्टि से जब राष्ट्र का बँटवारा हो गया तो अब प्रतिद्वंद्विता किस बात की है? वास्तव में इस संबंध में जितना भी विचार किया जाये उतना ही स्पष्ट करने की आवश्य-कता का अनुभव होता है। किन्तु एक बात तो सचमुच है कि ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों ने हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की स्थापना करके दो राष्ट्रों के लड़ाते रहने का जो ताना-बाना बुना है, वह साकार रूप में दिखाई दे रहा है। कांग्रेस ईमान-दारी से बँटवारा हो जाने के बाद भी, शान्ति-स्थापना का अनुभव करती है, वह साम्प्रदायिकता को समाप्त करने की ओर अग्रसर हो रही है किन्तु मुस्लिम लीग की ओर दुराग्रह और गृह-युद्ध जारी है। संभव है लीग के नेता भी शान्ति-स्थापना के इच्छुक हों किन्तु उनके पीछे ब्रिटिश शक्ति भी है जो उन्हें शान्ति से बैठने नहीं दे रही है। इसलिए पाकिस्तान तथा उसके नेताओं से हम कुछ कह भी नहीं सकते हैं। हाँ, हिन्दुस्तान के लिए अब वह समय आ गया है जब कि केवल शान्ति की गुहार लगाने तथा पीस-कमेटियों की स्थापना से काम न चलेगा। पंजाब और बंगाल की सीमा पर अधिक से अधिक फौजी शक्ति की स्थापना का तुरन्त प्रबन्ध होना चाहिए साथ ही राष्ट्र विरोधी अत्याचारों के निर्मूल करने के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए।

अहिंसात्मक ढंग से प्राप्त स्वतंत्रता प्राप्त हुई है तो उसी आधार पर हिन्दुस्तान की रक्षा की जा सकेगी यह आदर्श समझ में नहीं आता। ब्रिटेन को तो अपना मतलब साधना है। उसने राष्ट्र का विभाजन शान्ति-स्थापना के लिए नहीं किया। उसने भारत पर सदा हिंसा, आतंक और डंडे के बल पर राज्य किया है। वह अपनी शक्ति दृढ़ बनाने के लिए पाकिस्तान के संगठन में लगा है। ऐसी हालत में हिन्दुस्तान की रक्षा अहिंसा के आधार पर कब तक हो सकती है? अब राज्य सँभालना है और शासन करना है, आक्रमणकारी को दमन करना है। शान्ति की स्थापना करनी है। जनता को संघर्ष से बचाना है। कांग्रेस सरकारों को अब सचेत होना चाहिए। अब ढुलमुल नीति से काम नहीं चलेगा, क्योंकि अनाचार और हिंसा का दमन अहिंसा से नहीं हो सकता।

* * *

विधान-परिषद् में संयुक्त निर्वाचन

भारत का साम्प्रदयिक ढंग से आज का विभाजन, बनावटी विभाजन है। क्योंकि किसी भी देश का विभाजन साम्प्रदायिकता पर नहीं बल्कि राष्ट्रीयता के आधार पर हो सकता है। भारत भौगोलिक दृष्टि से सर्वदा एक रहा है जिसे अँगरेज नेताओं ने भी स्वीकार किया है। श्री सरदार बल्लभभाई पटेल ने विधान-परिषद् में अल्पसंख्यकों के अधिकारों के संबंध में प्रस्ताव पेश करते हुए जो वक्तव्य दिया है वह बहुत ही स्पष्ट है। परन्तु एक प्रश्न यह भी है कि दोनों राज्यों में अल्पमत में हिन्दू-मुसलमानों की संख्या कम नहीं है, इसका हल अभी तक नहीं निकला। भारत-सरकार संघीय प्रदेशों की जिम्मेदारियाँ लेती है परन्तु पाकिस्तानी प्रदेशों में जहाँ कत्लेआम और लूट-खसोट जारी है वहाँ किसी प्रकार की रक्षा अथवा जन-सुरक्षा का प्रबन्ध नहीं कर रही है। ऐसी दशा में क्या किया जावेगा? पाकिस्तानी प्रदेशवाले कहते हैं कि उनके मातहत २ करोड़ हिन्दू हैं और भारतीय संघ का दावा है कि उसके अन्दर (रियासतों को छोड़कर) ४ करोड़ मुसलमान हैं। समझने की बात है कि आबादी का इस प्रकार का विभाजन कितना बेतुका है। यदि रियासतों को भी जोड़ लिया जाय तो भारतीय संघ में मुसलमानों की संख्या ५ करोड़ के लगभग पहुँच जायेगी जो पाकिस्तानी प्रदेशों के मुसलमानों के बराबर होगी। इसके अतिरिक्त यदि कश्मीर और कलात की रियासतें अलग मानी जायें तो भारतीय संघ के मुसल-मानों की जन-संख्या पाकिस्तानी मुसल-मानों से कहीं अधिक होगी। इसलिए भारत में अगल-बगल दो स्वतंत्र राज्य साम्प्रदायिक दृष्टि से स्थापित होना एक दूसरे के लिए बहुत ही घातक है। यूरोप में इसी प्रकार की साम्प्रदायिकता पैदा करके अँगरेजों ने कितने ही युद्ध करा दिये हैं। पोलैंड, जेकोस्लेवाकिया तथा इसी प्रकार के अन्य छोटे राष्ट्रों का जन्म यूरोप की शान्ति को सर्वदा खतरे में डाले रहने के लिए हुआ ही है। वे राष्ट्र अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रखते बल्कि वह युद्धग्रस्त जीवन के साधन हैं। इसी प्रकार भारत के दो स्वतंत्र उपनिवेश राष्ट्रीयता के आधार पर नहीं, बल्कि भारतीय नीति के सामने अँगरेजी नीति की पराजय के उत्पादन में यह कहा जाता है कि भारत ने बिना अस्त्र उठाये स्वतंत्रता प्राप्त की है।

इस विजय पर अँगरेजों की कूट अथवा विभाजन-नीति अपना प्रहार कर रही है। सम्भव सफलता मिल जाय। क्योंकि पा दिमाग सारे भारत पर शासन लिए उकसाया जाता होगा। कहा जाता होगा—"तुम आधे से उस भाग में बस हो तो फिर अधिकार करते।" इस लीगियों में नवीनता और उत्साह आता होगा। पर माननीय पटेल ने विधान-परिषद् में एक सदस्य के संशोधन का उत्तर कहा था—"उनकी नीति ने देश विभाजित कर दिया है। अब कोई ऐसी बात बर्दाश्त नहीं कर जो लोग संघ के प्रस्ताव को नहीं पसन्द उनके लिए इस देश में जगह नहीं है पाकिस्तान में चला जाना चाहिए।

जब तक दोनों सरकारें एक बैठकर अल्पमत के संबंध में कोई नहीं बना लेतीं तब तक यह अराजक बनी रहेगी। दोनों सरकारों के अल्पमत की दो ही मुख्य समस्या पड़ती है—राजनैतिक और आर्थि प्रस्ताव में राजनैतिक समस्या में अ को तीन भागों में बाँटा गया है। उन्हें ब और स ग्रूप रक्खे गये हैं। भा संघ में अ ग्रूप उस सम्प्रदाय को है जिनकी जन-संख्या आधे प्र से भी कम है। ब ग्रूप के वे आते हैं जो आधे प्रति अधिक हैं। स ग्रूप के सम्प्रदा हैं जो डेढ़ प्रतिशत की जनसं हैं। प्रथम दो ग्रूपों को धारा-क में रिजर्व सीट देने के संबंध के प्र रद्द कर दिये गये हैं। किस्टि को केन्द्रीय धारा-सभा, मदरास बम्बई प्रान्तों में कुछ सीटें रि कर दी गई हैं, सिक्खों के संबंध में अभी विचाराधीन हैं। स ग्रूप में मुसलमान आते हैं जिनकी जन- संयुक्त निर्वाचन में आ जाती है। ने उस संशोधन को भी रद्द कर दि जिसमें यह कहा गया था कि अल्पमत उम्मीदवार को अपनी जाति कम से कम ३० प्रतिशत वोट प्राप्त चाहिए। इसके अतिरिक्त अल्पमत एक दूसरा संशोधन यह था कि मंत्रि में अल्पमत की जगहें निर्धारित कर जायँ। इन दोनों संशोधनों से अ (विशेष कर मुस्लिम लीग) को बल मिलता था। यह देश में पुनः वि की एक छिपी आवाज थी सरदार पटेल ने कड़ी आलोचना और विभाजन की आवाज को बन्द दिया। इसके अतिरिक्त कमेटी सन् १९३५ के ऐक्ट के अन्दर के उस अधिकार को मान लिया जिसमें वह प्रान्तीय मंत्रिमंडल अल्पमत के प्रतिनिधित्व न होने ऐसी व्यवस्था करेगा जिसमें अल्पमत असन्तोष न हो। इसलिए केन्द्र, में अल्पमत के लिए एक स्पेशल नियुक्त करेगा जो अल्पमत की और अधिकारों की निगरानी रहेगा।

संघ-कमेटी ने ऐसे प्रस्तावों परिषद के सामने रखकर विभा अथवा वैषम्य का अन्त कर दिया साथ ही अल्पमत के अधिकारों पक्षा का भी एक अच्छा-सा निकाला है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडोनेशिया का स्वाधीनता-संग्राम

डच-साम्राज्य उसे क्यों गुलाम बनाये रखना चाहता है?

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

अन्तरिम मंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू।

इंडोनेशिया की स्वतन्त्रता युद्ध का संचालन करनेवाले डाक्टर सोकार्नो

इंडोनेशिया की स्वतन्त्रता का युद्ध एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है। विदेशी साम्राज्य इंडोनेशिया को गुलाम बनाये रखना चाहता है; किन्तु इंडोनेशिया आज भी अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये कटिबद्ध है। इस लेख में विद्वान् ने लेखक इंडोनेशिया की स्वतन्त्रता के युद्ध पर प्रकाश डालते हुए उसकी आंतरिक्त और आर्थिक स्थिति को स्पष्ट किया है। लेख विचारणीय तथा ज्ञातव्य है।

...र २० जुलाई को आग्नेय ...ी महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हुईं। ...तारीख को आँगसान समेत ...ए कर दिये गये। २० जुलाई ...हिन्देशिया की रिपब्लिकन ...विरुद्ध हमला बोल दिया। ...हिन्देशिया गवर्नमेंट के बीच ...बातचीत का सहसा अन्त हो ...क्यों भंग हुई?

...शांति करार के बाद इस वर्ष ...से नीदरलैंड-इण्डोनेशियन ...स्थापना का प्रस्ताव हालैंड ...जिसमें बोर्नियो, ईस्ट इंडीज, ...देशिया के रिपब्लिक सम्मिलित ...देशिया की रिपब्लिकन गवर्नमेंट ...अपने प्रतिनिधि नियुक्त करना ...मगर हालैंड ने इसको नहीं ...यूनाइटेड स्टेट्स आफ इण्डोनेशिया' ...कैसे ही इस पर दोनों पक्षों ...उत्पन्न हुआ। हिन्देशिया ...लिक गवर्नमेंट का विस्तार ...हता था और अन्य रिपब्लिकनों ...लित करना चाहता था। ...स गवर्नमेंट के समर्थकों को, ...वर्नमेंट बोर्नियो और पूर्वीय ...स्थापित की गई थी, स्थापित ...हता था। नीदरलैंड चाहता ...स गवर्नर-जनरल नई गवर्नमेंट ...ट हो, क्योंकि हालैंड रूस का ...। हिन्देशियन चाहते थे कि ...रल ब्रिटिश डोमीनियनों के ...नमात्र हो। पर डच ...ी नहीं माने। हिन्देशियन ...हर एक बात मानती गई। ...कुछ परेशान हुए। आर्थिक ...भी डचों की बात मानी गई। ...न, सीसान के प्लानटेशनों पर ...धिकियत थी। मगर हिन्देशिया ...आत्मसमर्पण के बाद अधिकार ...था। डच मालिक उनको ...चाहते थे। रिपब्लिकनों ने ...मान लिया। मगर गैस, जल, ...कर्मों को, जो पहले डचों के पास ...और उनका राष्ट्रीकरण करने ...किया। मगर बातचीत टूटी ...कर जैसा कि मि० बेबिन ने ...डचों का आग्रह था कि समस्त ...के लिए एक पुलिस हो, जिसमें ...शामिल होंगे। रिपब्लिकनों ...मंजूर था कि यूनियन का सुरक्षा मंत्री हो जो विभिन्न राज्यों की पुलिस में एकसूत्रता लावे। मगर प्रत्येक स्टेट के अन्दर पुलिस का नियन्त्रण उसके पास ही रहे। डच-प्रस्ताव को मानने का अर्थ था कि शासन-सत्ता पुनः हालैंड को वापस कर दी जाय। डच वस्तुतः यही चाहते थे। डच सेना के कमाण्डर जनरल स्पूर ने १४ फरवरी को घोषणा की थी :—

"हमारा इरादा सीमित उद्देश्य के सिलसिलेवार युद्ध-कार्यों को लेना है। इस प्रकार हम आशा करते हैं कि विस्तृत इलाके में अशान्ति उत्पन्न हुई और हम प्रतिरोध का अन्त कर देंगे। इस समय हमारे पास १,००,००० सैनिक हैं और वे इस काम के लिए पर्याप्त हैं।"

इससे स्पष्ट है कि डच हिन्देशिया को पुनः विजय करना चाहते थे। स्वभावतः इससे प्रश्न उठता है कि डच ऐसा क्यों चाहते हैं?

समृद्धि का आकर्षण—यों तो अपने गुणों से ही कहा जाता है। हिन्देशिया की समृद्धि ही डचों को और अन्य श्वेतांग देशों को वहाँ टिके रहने के लिए आकृष्ट करती है। यहाँ की भूमि में अन्य देशों से लाकर जो वृक्ष बोया गया वह सब प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होने लगा है। विदेशों से लाकर बोई गई चीजों के कारण द्वीप का महत्त्व और भी अधिक बढ़ गया है। १८५९ में सिनकोना पेरू से लाया गया और क्यूनीन बनाई जाने लगी। १८८२ में रबड़ ब्राजील से लाया गया और खूब फूला-फला। वेस्ट अफ्रीका से आयल-पाम लाया गया और इंडोनेशिया की यह महत्त्वपूर्ण खेती हो गया। अरब से काफी लाकर बोई गई। अमरीका से मकई, सागूदाना और सीसस (सन के समान एक चीज) और सन की खेती खूब फूली-फली। हिन्देशिया के अन्दर विभिन्न जलवायु होने के कारण डचों ने जो बोया उसी से वे मालामाल हो गए।

सिनकोना से डच ईस्ट इंडीज को क्यूनीन के बाजार पर एकाधिकार प्राप्त हो गया है। रबड़ का कुल निर्यात में तीसरा स्थान है। मकई की खेती दूसरे नम्बर पर, चावल की प्रथम और सागूदाने की तीसरे नम्बर पर होती है। सागूदाना हिन्देशियनों का मुख्य भोजन बन रहा है। चावल से भी अधिक सागूदाना खाया जाने लगा है। यह प्रतिव्यक्ति की खपत को देखने से स्पष्ट हो जायगा।

	सागूदाना	चावल
१९१६–२४	२९५	२१९
१९२६–३०	२७८	१९४
१९३४–३८	३०६	१८१

आर्थिक महत्त्व—द्वितीय महायुद्ध में जब जापान ने हिन्देशिया पर अधिकार कर लिया तब मित्रराष्ट्रों को नीदरलैंड ईस्ट इंडीज का आर्थिक महत्त्व मालूम हुआ। विश्व के कुल उत्पादन में हिन्देशिया का सिनकोना ९० प्रतिशत, काली मिर्च का $\frac{5}{6}$ कैमाक (कपास जैसी एक चीज) का $\frac{1}{4}$, रबड़ का $\frac{1}{3}$, नारियल $\frac{1}{3}$, पाम आयल और नारियल उत्पन्न चीजों का $\frac{1}{4}$, चाय और सीसल $\frac{1}{6}$ भाग है। इसके अतिरिक्त चीनी, काफी, टीन, तम्बाकू और पेट्रोलियम भी प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होता है। पर हिन्देशिया के निवासियों के लिए इन चीजों का होना और न होना बराबर है, क्योंकि अधिकांश उत्पन्न पदार्थ निर्यात हो जाते हैं। जैसे—

	हिन्देशिया में खपत (प्रतिशत)	निर्यात (प्रतिशत)
टीन		१००
गैसोलाइन	६ से १०	९४ से ९०
किरोसिन	२० से ४०	८० से ६०
रबड़	..	१८०
चाय	१०	९०
चीनी	२०	८०
नारियल	३०	७०
काफी	३०	७०
सिनकोना	१२	८८
तम्बाकू की पत्ती	४	९६

खनिज पदार्थों का उत्पादन विदेशियों या डच गवर्नमेंट के हाथ में है। खेती का उत्पादन भी अधिकतर डचों के हाथ में है। खेती की उत्पन्न चीजों के निर्यात में हिन्देशियन लोगों का कितना भाग है यह इससे स्पष्ट हो जायगा :—

	प्रतिशत
१८९४	११
१९२४	२५
१९३२	४०

१९१८ के बाद से खेती की चीजों का उत्पादन घटने लगा और खनिज पदार्थों का उत्पादन बढ़ने लगा; अतः हिन्देशियनों का खेती की उत्पन्न चीजों के निर्यात में भाग भी बढ़ गया। पर खनिज पदार्थों का निर्यात कुल निर्यात का एक-तिहाई हो गया, और चीनी आदि का निर्यात घट गया।

खेती भर करते हैं

हिन्देशियनों के हाथ में मुख्यतः अन्य धान की खेती है। कितने अंश की खेती कितनी जमीन में होती है, यह निम्न तालिका से ज्ञात होगा :—

	प्रतिशत
चावल	४४
मकई	२५
सागूदाना	१०
सोयाबीन	४
शकरकन्द	२·५
मूँगफली	२·५

८-९ प्रतिशत जमीन व्यवसायिक धान्यों के लिए रह जाती है; पर डच गवर्नमेंट हिन्देशियनों को केवल अन्य धान्य की खेती के लिए बाध्य करती है। इन चीजों का हिन्देशिया में खपत और इनका निर्यात निम्न-तालिका से ज्ञात होगा :—

	हिन्देशिया में खपत (प्रतिशत)	निर्यात (प्रतिशत)
चावल	९७	३
मकई	९४	६
शकरकन्द	१००	..
सोयाबीन	९७	३
सागूदाना	८९	११
मूँगफली	७०	३०

हिन्देशियनों के खेत छोटे छोटे टुकड़ों में विभक्त हैं। वे आधुनिक ढंग की खेती के अनुकूल नहीं हैं। खेती की जमीन का $\frac{1}{10}$ डचों के पास है और शेष सब हिन्देशियनों के पास है। गवर्नमेंट-कानून उनको व्यवसायिक फसलें नहीं बोने देती। १९३४-४८ में कानून था कि हिन्देशियनों को रबड़ के निर्यात में डचों के प्लानटेशन से ७१·५ प्रतिशत से अधिक न होना चाहिए। हिन्देशियनों के उत्पादन और निर्यात पर निर्यात-कर लगाया जाता था।

कर्जदार की अर्थ-नीति

डच अर्थशास्त्री प्रो० वान मेल्डेरेन का कहना है कि "उपनिवेशों का आर्थिक तन्त्र कर्जदार का आर्थिक मन्त्र है। उपनिवेश में उसका शासक देश-पूँजी लगाता है, यह केवल अल्प-मात्रा में कोष जमा करता है और जब नई जरूरत होती है, बाहर से धन लाकर पूरी करनी पड़ती है। मुनाफा बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनको निर्यात-कर दिया जाता है, जिन्होंने पूंजी लगाई है।" इसका अर्थ है कि उपनिवेश न केवल डिविडेण्ड दे, पर उद्योग के विस्तार की हर अवस्था में बाहर से कर्ज ले और मुनाफे को जमा न करे। डच ईस्ट इंडीज में लगी पूंजी दो तरह की है! एक निजू और दूसरी सरकारी अर्थात् डच गवर्नमेंट। गवर्नमेंट विदेशी पूंजी पर चलती है फलतः पूंजी लगानेवाले विदेशियों के हित में द्वीप का शासन होता है। डा० मेल्डेरेन के अनुसार १९३९ में डच ईस्ट इंडीज में विदेशी पूंजी ३,५०,००,००,००० गिल्ड से लगी हुई थी, जिसमें २,६०,००,००,००० गिल्डर्स डच थी। इसके अतिरिक्त सरकारी लोनों १,४०,००,००,००० गिल्ड से लगी हुई है। सब कर्ज हालैंड में लिये गये हैं।

डचों को लाभ--इस विशाल पूंजी को लगाने का डचों को बहुत लाभ मिलता है। डच उद्योगों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से ८०,००० डच लगे हुए हैं और लगभग १६,००,००,००० डालर हिन्देशिया से नीदरलैंड को जाता है, इसका अर्थ हुआ इस मुनाफे को खाने के लिए और ८०,००० आदमी लगे हुए हैं। वस्तुतः ४,००,००० डचों के लिए हिन्देशिया की समस्या मक्खन-रोटी की समस्या है। इसका अर्थ है कि प्रति बीस आदमियों के पीछे एक डच ईस्ट इंडीज पर निर्भर है।

श्वेत मजदूर हैं--हिन्देशियन पहले डचों के लिए व्यवसायिक फसलें बोते थे। १८३० के बाद से वे गवर्नमेंट के लिए खेती करने लगे। यह हालैंड को निर्यात कर दिया जाता था। डच इसके बदले हिन्देशियनों को कपड़ा और आधुनिक उद्योगों की उत्पन्न अवांछनीय चीजें देते थे। १८७० के बाद से हिन्देशियन विदेशी माल पर आश्रित हो गये और सरकार को पया देने के कारण मजदूर बनकर काम करने को बाध्य हुए। प्लानटेशन और खानों में वे मजदूरी करने लगे। फलतः ३५ हिन्देशियन मौसमी मजदूर हैं, ५० प्रतिशत पश्चिमी उद्योगों में काम करनेवाले मजदूर हैं और २ प्रतिशत सरकारी नौकरी में हैं। इससे प्रकट है कि हिन्देशियन की आधी आबादी मजदूरी करके जीती है। इससे डचों को सस्ते मजदूर मिलते हैं। ४७ प्रतिशत भू-स्वामी किसान हैं और केवल ३ प्रतिशत उच्च वर्ग के किसान हैं।

आश्रित बनाए गए--हिन्देशियनों की धन की आवश्यकता बढ़ा कर उनको पराश्रित बनाये गये। १८१८ में भूमि-कर अनाज में न लिया जाकर पैसे में लिया जाने लगा। बाद में और प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर लगाये गये। आय-कर, वेतन-कर, गृह-कर, सम्पत्ति-कर, भूमि-आय-कर, कसाईखाना-कर, स्टाम्प ड्यूटी, एक्साइज टैक्स आदि कर ३०,००,००,००० गिल्डर्स के लगाये गये। हिन्देशियन इनके लिए डच प्लानटेशन और उद्योगों में मजदूरी करने को बाध्य हुए। क्यूनीन, नमक और अफीम-कर सरकार का एकाधिकार था। इसको पाने के लिए भी उनको पैसा चाहिए था। अकेले नमक पर हिन्देशियन १,८०,००,००० गिल्डर्स खर्च करते हैं। डचों ने हिन्देशियन 'बेक' पोशाक का बनाना मना कर दिया और उनको हालैंड के वस्त्र लेने को बाध्य किया। मूंगफली या रेड़ी के तेल की जगह पेट्रोलियम ने ली। तेल की फैक्टरियों ने हिन्देशियन नारियल के तेल की जगह ली। चावल कूटने की ढेकी की जगह चावल की मिलों ने ली। इस प्रकार हिन्देशियन जीवन के लिए सब तरह डचों के आश्रित हो गए।

कर्ज--हिन्देशियनों के खर्च से निर्यात बढ़ाया गया, मगर उसका हिन्देशियनों की जेब में नहीं गया; पर सरकार का खर्च चलाने के काम में आया। सरकार पर १,४४,००,००,००० गिल्डर्स कर्ज था। यह सब कर्ज प्रायः कर के हालैंड में लिया गया था। टीक के जंगल, सिनकोना, अफीम और नमक के उत्पादन पर सरकार का एकाधिकार था। सरकार उत्पादक चीजों में रबड़, चाय, सोना, चाँदी, टीन और कोयला भी है। गवर्नमेंट सर्विसों में रेलवे, बिजली की पूर्ति, यातायात, डाक और बन्दरगाह की सुविधा, सर्वे और छपाई सम्मिलित हैं। इनका खर्च असाधारण माना जाता है और इन पर १८६७ से १९३६ के ६० सालों में १,७६,९०,००,००० गिल्डर्स हुआ है, अर्थात् प्रतिवर्ष ३,००,००,००० गिल्डर्स।

१९१७ तक इनसे कोई आमदनी नहीं थी। १९३१ तक औसतन ५५,००,००० गिल्डर्स आमदनी थी। १९३२ में बाद से ये आमदनी के एक बड़े स्रोत हो गये। इनकी आय असाधारण आय मानी गई। इनसे ५,००,००,००० गिल्डर्स प्रतिवर्ष आमदनी थी और यह साधारण आय का १/७ था, सरकार की आमदनी के अन्य स्रोत हैं--कर, प्रबन्धात्मक आय, सरकारी एकाधिकार और विविध। इन स्रोतों से सरकार को कितनी आमदनी है, यह नीचे की तालिका से ज्ञात होगा:--

	कर	प्रबन्ध	एकाधिकार	विविध
	प्रतिशत	प्रतिशत	प्रतिशत	प्रतिशत
१९३१	४४·८	३०·९	१३·९	५·४
१९३२	४९·१	२३·०	२३·५	४·४
१९३३	५१·२	२२·०	२०·६	६·१
१९३४	५४·९	२०·०	१७·२	७·१
१९३५	५३·०	२४·१	१६·४	६·५
१९३६	५३·६	२३·६	१६·३	६·५

१९३१ के बाद से करों की आमदनी में अप्रत्यक्ष करों का भाग ६० प्रतिशत था। दियासलाई, पेट्रोलियम, गैसोलाइन, अलकोहल, बीयर और तम्बाकू पर लगाई एक्साइज ड्यूटी की आमदनी करों की कुल आय का १/६ थी। हिन्देशियनों को भारी बलिदान करने के लिए बाध्य किया गया।

खर्च--हिन्देशिया की डच गवर्नमेंट का खर्च इस प्रकार बँटा हुआ था। पाँचवाँ भाग अर्थ-विभाग में, एक पाँचवाँ भाग सेना और नौसेना और तीसरा पाँचवाँ भाग सिविल सर्विस। अर्थ-विभाग का

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

हैदराबाद राज्य की निरंकुशता

भारतीय संघ में निजाम शामिल क्यों नहीं हुआ?

लेखक, श्री चुन्नीलाल शर्मा, एम० ए०

१५ अगस्त समाप्त हो गया। भारतवर्ष ने शताब्दियों की खोई हुई स्वाधीनता पुनः प्राप्त कर ली। इस देश को पराधीनता में रखकर आंग्ल जाति ने संसार के सामने जो कलंक अपने सिर लिया था, वह इस महान् परिवर्तन के साथ ही साथ समाप्त हो गया। संसार के किसी भी राज्य ने इतनी सुन्दरता से पराधीन देशों को स्वतंत्र नहीं किया, जितना कि ब्रिटिश नौकरशाही ने। आज उनके इस शुभ कार्य मे भारत और ब्रिटेन दोनो मित्रराष्ट्र हो गये हैं। दोनों ही में सदेच्छा का प्रादुर्भाव हो चला है; परन्तु भारत के इतिहास में पाकिस्तान तथा हिन्दुस्तान दो राष्ट्रों की स्थापना सदा अमर रहेगी। जब तक इन दोनों का एकीकरण नहीं हो जाता, उस समय तक पूर्ण सुख-समृद्धि की आशा करना केवल स्वप्नमात्र होगा। ब्रिटिश द्वारा जो साम्प्रदायिक विषैला बीजारोपण हुआ है, वह तभी जड़ से समाप्त हो सकता है, जब कि समाज का भविष्य आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक ढाँचे पर बने। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महान् परिवर्तन की आवश्यकता है। अभी बड़ी जटिल समस्याओं का सामना करना है। देशी रियासतों की अपनी पृथक् समस्याएँ हैं। कितनी ही तो सद्भावना को लेकर संघ-शासन का अंग बन गई हैं; परन्तु अभी हैदराबाद और काश्मीर दो बड़ी रियासतों की गम्भीर उलझन सामने है।

हैदराबाद के निजाम अभी तक भारतीय संघ में सम्मिलित नहीं हुए हैं।

हैदराबाद में जिस निरंकुशता का आज साम्राज्य है, वह कल्पना के परे की बात है। दीन, पीड़ित जनवर्ग प्रजातंत्र के लिए कराह रहा है; परन्तु आज तो निजामशाही की मदान्धता ने उनको और भी पददलित कर दिया है। हैदराबाद स्टेट आज निरंकुश-राज्य हो गया है। वहाँ न तो किसी सती के सतीत्व की रक्षा का ही कोई उपाय है, न अनाथ, दलित मानव की चीत्कार ही कोई सुनता है। वैसे तो नागरिक स्वतंत्रता की दुहाई दी जा रही है; किन्तु घोर अत्याचार का बोलबाला है। दिन-दहाड़े ललनाओं के सतीत्व पर आक्रमण होता है। अनाथ शिशु मृत्यु के ग्रास हो रहे हैं। गुंडों का ही सर्वत्र राज्य है। अभी १५ अगस्त की गुलबर्गा की घटना उल्लेखनीय है। भारतीय संघ से चली रेलगाड़ियों पर सरकारी झंडे का अपमान जिस प्रकार निजाम-राज्य में हो रहा है, वह अकथनीय है। रेल के गार्ड को अनेक प्रकार की धमकियाँ दी गईं। यात्रियों को नंगी तलवारें दिखाई जाती हैं। उनको मृत्यु का भय दिखलाया जाता है। आज भी हैदराबादी पुलिस उसी प्रकार राष्ट्रीय झंडे का अपमान करने पर तुली है, जिस प्रकार कि १५ अगस्त से पूर्व ब्रिटिश भारत की पुलिस। सिर्फ ही सरकारी कर्मचारी भी रंग बदला करते हैं। हैदराबाद कांग्रेस का कथन है कि गुलबर्गा पर यात्रियों को नंगी तलवारें दि मृत्यु का भय दिलाया गया। हथकड़ियाँ डाल दी जाती हैं। पुलिस का व्यवहार केवल स से नीचे ही गिरा हुआ नहीं है, शत्रु-जैसा है। क्या मिस्टर अहमद का ब्रिटिश पोस्टआफिस हजार सशस्त्र मुस्लिम जनता को चढ़ाई करना और आसफिया फहराना निन्दनीय कार्य नहीं है यही नागरिकता की रक्षा है भारतीय झंडे के अपमान ही में की पैरामाउन्टसी की परीक्षा

सत्याग्रही पुलिस और मुस्लिम द्वारा बुरी तरह पीटे जाते हैं। उनको और जल से भी वंचित रखा जाता है। हालही में हैदराबाद के होम मंत्री मंत्री ने जेल का दौरा किया; वहाँ के राजनीतिक बंदियों को मिलने तक की भी सुविधा प्राप्त है। जेलों में इन वीर देश-भक्तों प्रति क्या दुर्व्यवहार हो रहा है, कौन सुननेवाला है। नगर में को बिना सूचित किये ही कर्फ्यू लगा दिया जाता है। इसका प्रमाण पुतलीबावली तथा बाजार हैं। इसी प्रकार का व्यवहार तमाम हैदराबाद राज्य रहा है। यह हमारा विषय नहीं निजाम गवर्नमेंट किस कारण से संघ में सम्मिलित नहीं हुई। हाँ, निवेदन तो अवश्य ही है कि जिनका इस गुत्थी को सुलझाया जाय, ही निजाम-प्रजा को सुख मिले। देवियों पर बलात्कार बन्द हो। बच्चों की निर्मम हत्या न हो। सुख और शान्ति मिले। निजाम मस्तक झुके और पददलित हिन्दू तथा सभी नागरिकों के स्वत्वों हो। अन्त में हम निजाम सरकार भी आगाह कर देना चाहते हैं कि अपनी कुनीति को बदले, अन्यथा को एकदम स्वप्न होन दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल-पंजाब की सीमा का निर्णय

सीमा-कमीशन द्वारा ब्रिटिश बँटवारे की साम्प्रदायिक प्रतिक्रिया प्रारंभ हो गई है

लेखक, श्री राजवल्लभ ओझा

हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान में भारत के विभाजित हो जाने के बाद यह आवश्यक था कि दोनों उपनिवेशों की सीमा का निर्णय भी हो जाये। फलतः दो सीमा-निर्धारण कमीशनों की नियुक्तियाँ हुईं और उनका निर्णय भी हो गया। यद्यपि सीमा-निर्धारण कमीशन का फैसला संतोषजनक नहीं है; किन्तु कांग्रेस और लीग के नेताओं को वचनबद्ध होने के कारण उसे स्वीकार करना पड़ा है। इस लेख में सीमा-कमीशन के निर्णय के संबंध में पूर्ण विवेचन किया गया है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

भारत के रक्षामंत्री सरदार बलदेवसिंह, पंजाब की स्थिति से परेशान हैं।

...स्तान के सर्वेसर्वा मिस्टर जिन्ना की ...कानी नीति का श्रीगणेश हो गया है। ...हिन्दुओं और मुसलमानों के मतभेदों ...ावना उठाकर ब्रिटिश सरकार ने ...ा को शक्ति हस्तान्तरित करने के ...ी साथ देश की प्रगति में बाधा ...ने के लिए इसे दो भागों में विभक्त ...या है। इसके अतिरिक्त माउंटबेटेन-...ना में कठपुतली राजाओं और नवाबों ...को भारतीय संघ से अलग रहने की ...लाह दे दी गई है। ३ जून की घोषणा ...नुसार ब्रिटिश सरकार ने खुशी से ...धिकार नहीं दिया है। कांग्रेस ...ों के प्रबल दबाव, मजदूरों, किसानों, ...सियों और रियासती जनता के ...ों के अतिरिक्त आजाद हिन्द फौज ...ांतिकारी-विद्रोह से घबड़ाकर अँगरेजों ...राजसत्ता हमारे हाथों में सौंपने ...निश्चय किया। किन्तु वे हमारी ...तियों को अच्छी तरह जानते थे। ...ग और लीग के पारस्परिक मतभेदों ...ायदा उठाकर उन्होंने देश में दंगे ...ये। किन्तु जब जनता की साम्राज्य-...वादना को वे न रोक पाये तो मजबूर ...ये स्वतन्त्रता-सम्बन्धी माँग स्वीकार ...करनी पड़ी। इस घोषणा के अनुसार ...जाब तथा बंगाल के विभाजन का निर्णय ...किया गया और कांग्रेस तथा लीग ने ...इस निर्णय को स्वीकार कर लिया।

...१८ अगस्त को इन कमीशनों के ...मुख ने सीमा-सम्बन्धी अपनी रिपोर्ट ...वायसराय को भेजते हुए लिखा कि ...मेरे सहयोगियों में इतना अधिक ...मतभेद था कि सीमा की समस्या का ...कोई पूर्ण हल नहीं प्राप्त हो सका। ...इस परिस्थिति में विचार-विमर्श ...के लिये में मेरे सहयोगी इस बात ...पर सहमत हुए कि मैं स्वयं अपना ...निर्णय कर दूँ।"

...भारतीय स्वाधीनता ऐक्ट में बँटवारे ...की चर्चा लार्ड माउंटबेटेन को बना ...दिया गया है और ३१ मार्च, १९४८ ...तक जितने सवाल पैदा होंगे जिन पर ...पाकिस्तान और भारतीय संघ की ...सरकारों में मतभेद होगा, उनका निर्णय ...लार्ड माउंटबेटेन स्वयं करेंगे। इसी ...प्रकार भारत और पाकिस्तान के बीच ...सीमा-निर्णय करने का अधिकार भी एक ...तरह से हमने दे दिया था। हम आपस ...में मिलकर स्वयं इस प्रश्न को नहीं हल

पृ० ४

कर सके--यह दुर्भाग्य नहीं तो और क्या है। इस निर्णय का एकमात्र उद्देश्य हिन्दुओं, मुसलमानों और सिक्खों के आपसी सम्बन्ध को खराब बनाना है। पाकिस्तान और भारत के बीच गहरा मतभेद पैदा करके दोनों राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्ध को कटु बनाना ही सर सीरील रैड क्लिफ की मंशा थी ताकि ब्रिटिश सरकार हमारी कमजोरियों, कठिनाइयों और राष्ट्रीय मोर्चे की तमाम दरारों से फायदा उठाकर हमारी आजादी को कागजी आजादी बना दे। सीमा-कमीशन के निर्णय से यह बहुत बड़ा खतरा पैदा हो गया है।

बँटवारे के प्रश्न पर कांग्रेस और लीग-नेताओं ने यह स्वीकार किया था कि बँटवारा हिन्दू और मुस्लिम बहुमत-वाले इलाकों के आधार पर होना चाहिए। महात्मा गांधी और कायदे आजम जिन्ना ने चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य की यह योजना स्वीकार कर ली थी। कि "हिन्दुस्तान के उत्तर-पश्चिम और पूर्वी क्षेत्रों के जो जिले एक दूसरे से सटे हुए हैं और जहाँ मुसलमानों का स्पष्ट बहुमत है, उनकी सीमा निर्धारित करने के लिए युद्ध के पश्चात् एक कमीशन नियुक्त किया जायगा। इस प्रकार अलग किये हुए क्षेत्रों की तमाम जनता के मत से इस प्रश्न का निर्णय किया जायेगा कि वे हिन्दुस्तान से पृथक् होंगे अथवा नहीं। यदि बहुमत ने निर्णय किया कि ये क्षेत्र हिन्दुस्तान से पृथक् एक स्वतन्त्र राज्य की स्थापना करेंगे तो इस निर्णय पर अमल किया जायेगा। किन्तु सीमा पर स्थित जिलों को यह स्वतंत्रता होगी कि ये जिस राज्य में चाहें उसमें सम्मिलित हो जायें।"

भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा निर्धारित करने के लिए भी राजा जी की योजना को आधार बनाया जा सकता था; किन्तु सर सीरील रैड क्लिफ ने न तो इसे आधार बनाया है और न दोनों राज्यों के बीच प्राकृतिक सीमा निर्धारित की है। सीमाएँ निर्दिष्ट करने में उन्होंने किसी सिद्धान्त को नहीं अपनाया है बल्कि बँटे हुए भागों को एक दूसरे का शत्रु बनाने का कुचक्र रचा गया है।

पंजाब-प्रान्त में कुल ५ कमिश्नरियाँ--अम्बाला कमिश्नरी, जालन्धर कमिश्नरी, लाहौर कमिश्नरी, रावलपिण्डी कमिश्नरी और मुलतान कमिश्नरी है। पंजाब सीमा-कमीशन के निर्णय के फलस्वरूप पश्चिमी पंजाब में समस्त मुलतान और रावलपिंडी कमिश्नरी, लाहौर कमिश्नरी के गुजरानवाला, शेखपुरा तथा स्यालकोट जिले रहेंगे।

पूर्वी पंजाब में समस्त जालन्धर और अम्बाला कमिश्नरी तथा लाहौर कमिश्नरी का अमृतसर जिला रहेगा।

लाहौर डिवीजन के गुरुदासपुर तथा लाहौर जिले दोनों नये प्रान्तों में बाँट दिये गये हैं। गुरुदासपुर जिले की शंकरगढ़ की तहसील जो रावी नदी के पश्चिम में है, पश्चिमी पंजाब में शामिल कर दी गई है। तथा पठानकोट, गुरुदासपुर और बटाला तहसीलें जो रावी नदी के पूर्व में हैं, पूर्वी पंजाब में शामिल की गई हैं। कासर तहसील दोनों नये प्रान्तों में बाँट दी गई है। अपरबारी दोआब नहर खेदकरन रेलवे स्टेशन के निकट जहाँ पर तहसीलें प्रवेश करती हैं वहाँ से लेकर मसते के गाँव तक, जहाँ पर नहर सतलज नदी में मिलती है, गाँवों के हद्द के किनारे सीमा निर्धारित की गई है।

पंजाब की पाँच कमिश्नरियों में से दो-दो पूरी कमिश्नरियाँ पाकिस्तान और भारत को दे दी गई हैं। लाहौर कमिश्नरी का बँटवारा हुआ है। इस विभाजन से अकाली सिक्ख बहुत क्षुब्ध हैं। लीगियों का कहना है कि पश्चिमी पंजाब को कुछ नहीं मिला, बल्कि गुरुदासपुर जिले की तीन समृद्धशाली तहसीलें पूर्वी पंजाब को दे दी गई हैं। किन्तु लीग का यह आरोप निराधार है। गुरुदासपुर जिले में मुसलमानों की आबादी ५०·२३ प्रतिशत है; और हिन्दुओं तथा सिक्खों की आबादी करीब ४५ प्रतिशत है। इस जिले की जिन तीन तहसीलों को पूर्वी पंजाब में शामिल किया गया है, वहाँ हिन्दुओं तथा सिक्खों की आबादी मुसलमानों से ज्यादा है।

सिक्खों और हिन्दुओं ने यह माँग की थी कि पूर्वी पंजाब की सीमा चिनाब नदी तक होनी चाहिए। लीग ने यह दावा किया था कि पश्चिमी पंजाब की सीमा सतलज नदी तक होनी चाहिए। ये दोनों दावे अनुचित थे। पंजाब-सीमा-कमीशन का यह फर्ज था कि वह, मुस्लिम तथा गैर मुस्लिम परस्पर मिले हुए प्रदेशों का पता लगाकर सीमा निर्दिष्ट करने के समय उन बातों पर भी ध्यान रखता है। शेखपुरा जिले में सिक्खों के दो प्रसिद्ध गुरुद्वारे ननकाना साहब और सच्चा सौदा है। उन्होंने मांटगोमरी और लायलपुर की नहरों से सरसब्ज किया था। किन्तु ये जिले उनके हाथ से निकल गये हैं। पंजाब के प्रायः सारे औद्योगिक केन्द्र, मुख्य-मुख्य नहरें मिल और कारखाने पश्चिमी पंजाब को दिये गये हैं। गुजरानवाला में सूती कपड़े की मिलें हैं। स्यालकोट में खेलने का सामान तैयार होता है। लाहौर में पूरे पंजाब का ८० प्रतिशत उद्योग-धंधे हैं और ये सब नगर पश्चिमी पंजाब में शामिल किये गये हैं। यह कमीशन ने बहुत बड़ा अन्याय किया है।

यदि मुस्लिम एवं हिन्दू बहुमतवाले इलाकों के आधार पर बंगाल का विभाजन होता तो नदिया मुर्शिदाबाद, जैसोर, राजशाही, रंगपुर, बोगारा, पबना, पालदा, ढाका, मैमनसिंह, फरीदपुर, बालरगंज, टिपरा, नोआखाली और चटगाँव पूर्वी बंगाल में तथा बर्दवान, वीरभूम, बाँकुड़ा, मिदनापुर, हुगली, हावड़ा, हावड़ा शहर, चौबीस परगना, ढाका शहर, कलकत्ता, कलकत्ता के उपनगर, खुलना, जलपाईगुड़ी, दार्जिलिंग और दिनाजपुर, पश्चिमी बंगाल में होते; किन्तु ऐसा न करके नदिया, जैसोर, दीनापुर, जलपाईगुड़ी और पालदा गाँव, पाँच जिलों को दोनों नये प्रान्तों में बाँट दिया गया है। खुलना जिला जहाँ हिन्दुओं की आबादी मुसलमानों से अधिक है, पूर्वी पंजाब में शामिल किया गया है। जलपाईगुड़ी में १९४१ की जनगणना के अनुसार मुसलमानों की आबादी ३३·९९ प्रतिशत है किन्तु इसे भी बाँट दिया गया है। इसके विपरीत नदियाँ, जैसोर मालया, में जो मुस्लिम बहुमत क्षेत्र है और जिन्हें बाँटा गया है, मुसलमानों की आबादी क्रमशः ६१·६७ प्रतिशत, ६१·१६ प्रतिशत और ५४·२८ प्रतिशत है। फलतः इन्हें बाँटकर सीमा-कमीशन ने मुसलमानों के साथ कोई बड़ा अन्याय नहीं किया है। किन्तु खुलना जैसे महत्त्वपूर्ण जिले को पूर्वी बंगाल में शामिल कर तथा जलपाईगुड़ी को बाँटकर सर सीरील रैड क्लिफ ने बहुत ही अनुचित कार्य किया है।

नदिया हिन्दुओं का बहुत ही पुरातन सांस्कृतिक केन्द्र है। सीमा-कमीशन की सृष्टि के समय लार्ड माउंटबेटेन ने जो घोषणा की उसमें कहा गया

शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देशदूत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तीय ग्रामसुधार-योजना

राष्ट्र-निर्माण में ग्रामवासियों के लिए शिक्षा-दीक्षा का महत्त्व अधिक है

(४)

लेखक, पंडित केशवदेव मालवीय, एम० एल० ए०
(पार्लमेन्टरी सेक्रेटरी, सूचना तथा उन्नति-विभाग यू० पी० सरकार)

'देशदूत' के १०, २४ तथा ३१ अगस्त के अंक में इस लेखमाला के तीन लेख प्रकाशित हो चुके हैं, यह चौथा है। संयुक्तप्रांतीय सरकार ने ग्राम-सुधार के लिये जो योजना बनाई है, उसमें ग्रामीणों के लिये शिक्षा की उन्नति की ओर भी ध्यान दिया गया है। श्री मालवीयजी ने इस लेख में इसी सम्बन्ध में प्रकाश डाला है, जो ज्ञातव्य तथा जानकारी से पूर्ण है।

राष्ट्र-निर्माण की दिशा में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सबसे आरम्भिक और आवश्यक प्रयत्न शिक्षा के विकास के क्षेत्र में होना चाहिए। शिक्षा-प्रसार की आवश्यकता का ध्यान रखते हुए कांग्रेस ने अपने चुनाव-सम्बन्धी घोषणा-पत्र में कहा है....."जनता के मानसिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और नैतिक धरातल को ऊँचा करने और उसे भविष्य में आनेवाली नई प्रकार की सेवाओं तथा कार्यों के लिए उपयुक्त बनाने के लिए जन-शिक्षा का समुचित प्रबन्ध अवश्य होना चाहिए।"

हमारे सूबे में ऐसे बच्चों की संख्या जो स्कूल जाने की उम्र के हैं, लगभग ६६ लाख है। आजकल जो स्कूल चल रहे हैं उनमें अधिक से अधिक १४ लाख बच्चों की पढ़ाई का प्रबन्ध हो सकता है। जाहिर है कि जो ५२ लाख बच्चे नहीं पढ़ पाते हैं उनमें अधिकतर बेकार घूमा करते हैं। आगे चलकर के अच्छे नागरिक नहीं बन पाते। बहुतों का जीवन तो भारस्वरूप हो जाता है। इन बच्चों की शिक्षा के लिए सरकार ने एक दशवर्षीय योजना तैयार की है। इसके अनुसार प्रत्येक वर्ष २,२०० आरम्भिक स्कूल खोले जायेंगे और इस प्रकार १० वर्ष में प्रायः प्रत्येक दो गाँवों के पीछे एक स्कूल हो जायगा। इस योजना का पहले वर्ष का कार्यक्रम कार्यान्वित हो चुका है और प्रत्येक जिले में ४० या अधिक नये स्कूल खुल गये हैं।

पहले वर्ष में इनमें एक अध्यापक रक्खा जायगा और तीन वर्ष में तीन अध्यापक हो जायेंगे। अब तक इस प्रान्त में केवल ७, ८ नार्मल स्कूल थे। अब प्रत्येक जिले के लिए एक नार्मल स्कूल खोलने का प्रबन्ध हो रहा है। अब तक ३५ जिलों में नार्मल स्कूल खुल गये हैं और अगले वर्ष तक संख्या पूर्ण हो जायगी।

जो शिक्षक बिना ट्रेनिंग के काम कर रहे थे, उनकी शिक्षण कुशलता की परीक्षा लेकर उन्हें ए० टी० सी० (सक्रिय शिक्षण) का प्रमाणपत्र दिये जाने की व्यवस्था की गई है। युवकों के लिए समाज-सेवा और शिक्षण-शास्त्र की ट्रेनिंग का और व्यापक प्रबन्ध किया जा रहा है। चलते-फिरते ट्रेनिंग स्कूलों का भी आयोजन हो रहा है और श्री तिलक जी इसकी विस्तृत योजना बना रहे हैं।

जन-शिक्षा के प्रसार के लिए जो प्रयत्न किये जा रहे हैं, उसमें जनता भी पर्याप्त सहयोग दे रही है। किन्तु अभी और सहयोग अपेक्षित है। इस बजट में प्रत्येक नये स्कूल की इमारत के लिए १,००० रुपये की सरकारी सहायता की व्यवस्था की गई है। इमारत बनाने का भार ग्रामीणों पर ही सौंपा गया है। इमारत तैयार हो जाने पर यह सहायता दे दी जायगी। इस प्रकार केवल इमारतों पर २१ लाख का वार्षिक व्यय है। इसके अतिरिक्त ३ लाख ९६ हजार चालू खर्च और २ लाख २० हजार के एकमुश्त खर्च का भी आयोजन किया गया है।

अधिकांश स्थानों में इमारतें बन गई हैं। जहाँ नहीं बन पाई हैं, वहाँ पर किराये की इमारत में स्कूल खोल दिये गये हैं। मेज-कुर्सियों की भी व्यवस्था कर दी गई है।

इन स्कूलों के साथ एक पुस्तकालय और वाचनालय खोलने की भी योजना है, जिससे साक्षर या अर्द्ध शिक्षित लोग पढ़ाई भूल न जायँ। गाँवों के सांस्कृतिक जीवन को ऊँचा करने के लिए कहीं-कहीं रेडियो आदि की भी व्यवस्था होगी। बच्चों के स्वास्थ्य को सुधारने और प्रौढ़ों में सामूहिक जीवन की प्रवृत्ति विकसित करने के लिए और उन्हें स्वतन्त्र भारत का वीर नागरिक बनाने के लिए स्कूलों के पास अखाड़े भी खोले जायेंगे।

प्रौढ़-शिक्षा

प्रौढ़-शिक्षा के प्रसार के लिए शिक्षा-प्रसार अफसर अलग अपनी योजना बना रहे हैं। गाँवों के क्लब की पद्धति पर या पथिक जी की "कीवर्ड कोरस" पद्धति पर प्रयोग किया जा रहा है और जहाँ जनता स्वयं प्रौढ़ शिक्षण केन्द्र की माँग करती है और योग्य अध्यापक भी चुन लेती है, वहाँ १५ रुपये मासिक के हिसाब से सहायता दी जाती है और साहित्य का भी वितरण किया जाता है। शिक्षा-प्रसार-विभाग पुस्तकालयों की संख्या बढ़ाने और उन्हें अधिक उपादेय बनाने का प्रयत्न कर रहा है। इस बात का भी प्रयत्न किया जा रहा है कि नाटकों, लोकगीतों और व्याख्यानों द्वारा जनता की नागरिक जागृति बढ़ाई जाय।

माध्यमिक शिक्षा

माध्यमिक शिक्षा के पुनःसंगठन की भी योजना बन गई है। हिन्दुस्तानी और एँग्लो हिन्दुस्तानी स्कूलों में जो बहुत बड़ा अन्तर था, वह समाप्त कर दिया जायगा और प्राइमरी स्कूल की चौथी कक्षा के बाद लोग एँग्लो हिन्दुस्तानी स्कूलों की पाँचवीं कक्षा में भरती हो सकेंगे, जिनमें अँगरेजी वैकल्पिक विषय होगा। स्मरण रहे कि अब तक हिन्दुस्तानी स्कूलों की चौथी कक्षा के बाद लड़के एँग्लो हिन्दुस्तानी की तीसरी कक्षा में भरती किये जाते थे।

माध्यमिक शिक्षा के बाद ही अधिकांश लोग विभिन्न पेशों को अपना सकेंगे। विश्वविद्यालयों में केवल चुने हुए विशेष प्रतिभाशाली छात्र ही भरती किये जायेंगे। अब तक तो शिक्षा की व्यवस्था में विश्वविद्यालय शिक्षण पर ही अधिक ध्यान दिया गया था; परन्तु अब प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षा को अपना उचित स्थान मिलेगा। जन-शिक्षा के प्रचार के लिए यह दृष्टिकोण नितान्त आवश्यक है।

शिक्षकों की स्थिति को सुधारने के लिए सरकार ने १ जुलाई १९४६ ई० से सरकारी सहायता पानेवाली एँग्लो हिन्दुस्तानी स्कूलों के ७० रुपये मासिक तक वेतन पानेवाले शिक्षकों को महँगाई का भत्ता देना स्वीकार किया है। इन संस्थाओं में काम करनेवाले शिक्षकों के, जिनका वेतन २०० रु० से कम है, लड़कों या दूसरे आश्रितों की शिक्षा-शुल्क माफ करने की आज्ञा जारी की गई है।

शिक्षकों का समाज के निर्माण में एक प्रमुख और सम्मानपूर्ण स्थान है। सरकार उनके महत्त्व को समझती है और चाहती है कि वे अपना कार्य सम्मानपूर्वक करें; परन्तु फिर भी यदि शिक्षण-संस्थाओं में हड़तालें हों या शिक्षक स्वयं अपने उत्तरदायित्व से गिरें तो देश का अभाग्य होगा।

शिक्षा-विभाग की व्यवस्था

गाँव में होनेवाली एक प्रदर्शिनी में अच्छी गायों और बछड़ों का प्रदर्शन।

इस लेख के लेखक श्री केशवदेव मालवीय।

में भी बहुत अन्तर हो गया है। डाइरेक्टर आफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन का नाम रजिस्ट्रेक्टर आफ एज्युकेशन हो गया है। प्रत्येक जिले में एक प्रमुख शिक्षा-अफसर रख दिया गया है जो जिले की प्रारम्भिक शिक्षा-सम्बन्धी प्रगति के लिए उत्तरदायी होगा। अब डिप्टी इंस्पेक्टरों और डिप्टी इंस्पेक्टरों को प्रबन्ध से कुछ अवकाश मिल सकेगा और निरीक्षण-कार्य अधिक सुचारुरूप से चल सकेगा।

परिस्थितियों से विवश होकर अध्यापकों की दशा का ध्यान रखकर शिक्षा-शुल्क को ५० प्रतिशत तक बढ़ा पड़ा है, क्योंकि उनके वेतन को बढ़ाने के लिए आवश्यक धन की व्यवस्था किसी दूसरे प्रकार सम्भव नहीं हुई है; परन्तु स्कूलों में चलनेवाले कई मदों का [illegible] घटाने का विचार किया जा रहा है [illegible] अधिक विद्यार्थियों की आधी या पूरी फीस माफ करने का भी विचार हो रहा है।

शिक्षा का दृष्टिकोण अब व्यापक हो जायगा और वह जनता के समूचे सांस्कृतिक जीवन का परिष्कार करेगी।

देश के भविष्य निर्माण में अब [illegible] का अधिकाधिक हाथ होगा, पर जब वह सरकार की राष्ट्र-निर्माण-सम्बन्धी योजना में पूर्ण सहयोग न देगी, तब तक कोई उन्नति सम्भव नहीं। सरकारी अधिकारियों को, जो जनता के सेवक हैं, सरकार के अफसर हैं, इस नवीन दृष्टि से जनता के पास पहुँचना चाहिए।

अध्यापकों, जनता और अधिकारियों को दृढ़ अनुशासन की ओर सबसे अधिक ध्यान देना चाहिए। संक्रान्ति काल में जो भी अव्यवस्थाएँ आ गई हैं उन्हें [illegible] करना होगा और राष्ट्र के लिए स्वतन्त्र, प्रबुद्ध और अनुशासनप्रिय भावी नागरिकों को तैयार करना होगा।

मुफ्त मुफ्त
घर बैठे मामूली पढ़े-लिखे भी गवर्नमेंट रजिस्टर्ड इन्स्टीट्यूट का होम्योपैथिक कालेमिक का डाक्टरी का डिप्लोमा प्राप्त कर सकते हैं नियमावली मुफ्त मँगायें।
पता:—इंटरनेशनलइंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) नं० १२, [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देशदूत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

खूनी झंडा

लेखिका, कुमारी ईशु पांडेय, बी० ए०

राष्ट्र-सेवकों का जीवन ही कुछ और है। उन्हें जीवन में निराशा कहाँ? आशावादी होना उनके लिए अनिवार्य है। आज के समाज में वास्तविक त्यागी और श्रमिक उपेक्षा से देखा जाता है और पाखंडी की बन आती है। गोविन्द भी एक कर्मठ व्यक्ति था, किन्तु उसका जीवन कैसे बीता और अंत में उसकी क्या गति हुई, इस कहानी में इसका जो चित्रण है, वह श्रेष्ठ, सुंदर और हृदयग्राही है। कहानी रोचक और पठनीय है।

गोविन्द की माता बेटे के रँडु आपन से दुखी है।

...के हलके प्रकाश में छोटे-से ...का सामान और भी अधिक अस्त-...-सा प्रतीत हो रहा था। ढीली-सी ...की बुनी चारपाई में अधमैली चादर ...लेटा हुआ था। उसके सिर पर, ...में और बाहुओं में सफेद पट्टी बँधी ...लेटा हुआ व्यक्ति न हिल रहा था ...। देखनेवाले को भ्रम हो ...कि वह सो रहा है। बाहर बरामदे ...कि एक कोने में रसोई भी ...एक बुढ़िया काम-काज करने में ...थी।

बिस्तरे पर के व्यक्ति ने बाहर ...हट सुनी तो वह एकदम उठने ...उपक्रम-सा करने लगा। पर 'हाय'! ...लेट रहा और बोला, "माँ कौन ..." "कोई भी नहीं, मैं!" कहते ...एक अप-टू-डेट युवती ने कमरे में ...में पर्स लिये प्रवेश किया। साथ ...जख्मी की वृद्धा माँ भी थी। ...बनी अवाक् होकर उस युवती ...हारती-सी चौखट पर खड़ी रही। "अर....र....र....आप?" ...के मुख से निकला और वह शीघ्रता ...लगा। "चुप। लेटे रहो गोविन्द ...!" युवती ने डपटकर कहा। ...पीड़ा से कराहकर बिस्तरे ...चुका था। युवती उसकी ...पर पैताने बैठ गई।

"यही उपयुक्त और सिर्फ एक ...मेरे पास...." उसने कहा। "पर सबसे श्रेष्ठ है।" उसने इधर-...देखकर कहा, "कितना अँधेरा है ...गली से बाहर तो अभी किसी ...प्रकाश जलाने की आवश्यकता ...है।

"प्रकाश भी रोता है और लजाता ...तो।" अपने उस नेत्र से जो कि ...की लपेट से बच गया था युवती ...देखता हुआ वह बोला, "तुम्हें तो ...दीपक का प्रकाश बड़ा अजीब लग ...होगा?" जिज्ञासा थी उसकी ...में।

"जी नहीं!" अपना आश्चर्य और ...छिपाती वह बोली—"ऐसे ...करोड़ों कमरों में, बल्कि इससे ...निकृष्ट कमरों में तुम्हारे भारत के ...जन रहते हैं। न तुम्हें न तुम्हारे ...जैसे उँगली पर गिनने योग्य दूसरे ...को उनकी दशा का ज्ञान है। ...सच यह है कि प्रतिदिन जो भोजन ...थाली में परसा जाता है वह ...ही खून का टुकड़ा होता है।" ...कठोर हो रहा था।

"हाय कितनी बार ताना देते ...मैं....मैं...भी अब शीघ्र ...को त्याग यहीं आकर रहना ...है!" अति दीन होकर वह ...

"आ सकोगी?" कड़ा प्रश्न हुआ, ...एंजिल पढ़ा है तुमने?" वह हँसा, ...और करना, दोनों में बड़ा ...है।"

"क्यों नहीं? जब तुम रह सकते ...असंख्य प्राणी रह सकते हैं तो... ...मनुष्य हूँ और फिर अब तो समय आ ही रहा है कि हमारी श्रेणी को अपना ऐश्वर्य छोड़ना ही पड़ेगा?" वह रुकी।

"क्या करूँ मेरी एक आँख! खैर... हाँ तुम गलत बिलकुल गलत बोल गई। समझी।" सिर की पट्टी को हाथ से टटोलता वह बोला।

"क्या गलती.....?" कौतूहल-वश उसने पूछा।

"मानव उन्नति कर रहा है, अवनति नहीं। इस कारण अब हम ऐसी दशा में नहीं रहेंगे। किन्तु तुम्हारी तरह सुख-पूर्वक जीवन बितायेंगे।" वह प्रसन्न हो गया।

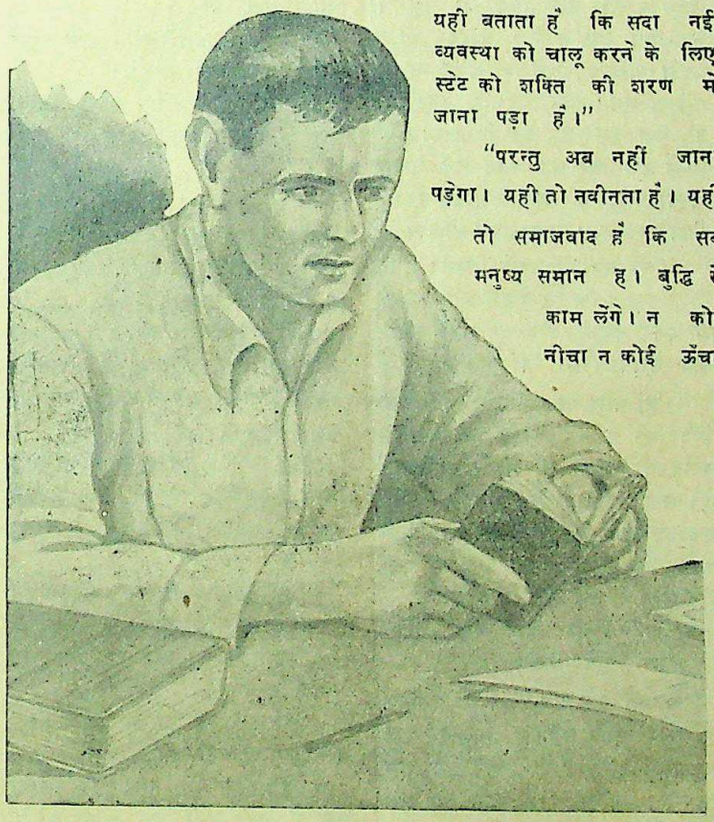

गोविन्द ने सोचा कि कल मजदूरों का नेतृत्व किस तरह करना चाहिए।

"दुःख के समय लद गये।"

"तब? तब अब हमारी बारी होगी दुःख भोगने की?"

"अवश्य! क्यों नहीं? क्या अत्याचार नहीं किये तुम्हारे भाई पिता ने हम पर। अब भोगो फल अपनी करनी का।" वह मुस्कराया।

"ठीक है खूब भली प्रकार बदला लेना चाहिए इनसे यद्यपि मैं भी अत्याचारी की सन्तान हूँ, तथापि मुझे तनिक भी कष्ट न होगा अपने निधन भाइयों के हाथ सजा खाने में।" वह कुछ उत्तेजित हो गई।

"सचमुच?" युवक हँस पड़ा "पगली हो तुम! आज तक मानव बदला लेने और सजा देने के मार्गों को अपनाता रहा; परन्तु क्या कुछ कल्याण हुआ उनसे? क्या हम भी जो मानवता के सच्चे समर्थक होने का दावा करते हैं उन्हीं पुराने सड़े हथियारों द्वारा अपनी समाज-व्यवस्था को कायम करें?" उसने प्रश्न-वाचक नेत्र से उसे देखा।

"करना तो नहीं चाहिए फिर भी करना पड़ेगा। अब तक का इतिहास यही बताता है कि सदा नई व्यवस्था को चालू करने के लिए स्टेट को शक्ति की शरण में जाना पड़ा है।"

"परन्तु अब नहीं जाना पड़ेगा। यही तो नवीनता है। यही तो समाजवाद है कि सब मनुष्य समान है। बुद्धि से काम लेंगे। न कोई नीचा न कोई ऊँचा, या ऊँचा अपनी स्थिति को कायम रखने के लिए शारीरिक बल का या शस्त्रों का व्यवहार करे।"

"तुम्हारी बात समझ में नहीं आती.....बिल्कुल असम्भव है यह।

"अच्छा उस आले में जो पुस्तकें हैं, उन्हें पढ़ना, ले जाओ....।"

द्वार पर खटके की ध्वनि ने युवक का ध्यान आकर्षित किया। वह खिल-खिला पड़ा। युवती आश्चर्य में आ एक-टक उसे निहारने लगी। "क्यों हँसते हो....मैं मूर्ख हूँ इस कारण।" वह कुछ क्रोध में आकर बोली।

युवक ने शीघ्र हँसी रोककर द्वार की ओर संकेत करके कहा, "माँ को देखो तुम्हारे ऊपर लट्टू है। तब से तुम्हें निहारती हुई बैठी है और अब ऊँघने लगी। चूल्हे में शायद सब्जी जल रही है। लेकिन उसे कुछ सुध नहीं।" वह फिर हँस पड़ा।

उसकी खिलखिलाहट ने माँ को सचेत कर दिया। वह खिसियाकर रसोई-घर में चली गई।

"माँ है मेरी पचास वर्ष की बूढ़ी! उसके विचार और भी बूढ़े हैं।"

"कितनी देर हो गई मुझे? एक घंटा! मालूम है मैं घर से किस बहाने पर आई हूँ.....पुस्तकें खरीदने के बहाने से!"

"कोई आश्चर्य नहीं! रोक-थाम कोई ठीक तरीका नहीं है। बल्कि उलटे व्यक्ति को लुका....छिपी तौर पर 'पाप' करने को प्रवृत कराता है।"

"आई थी आपका हाल पूछने। अकस्मात् हो गया यह झगड़ा। लोगों के आँखें नहीं होतीं कि निरपराधियों को कष्ट पहुँचाने में तुले रहते हैं। क्या अपराध था आपका?"

"सिर्फ मेरा नहीं, बहुत लोगों का 'सत्य' का प्रकाश फैलाना।"

"अब कैसी तबियत है?"

"देखती नहीं हो?" वह हँस पड़ा, "बिलकुल स्वस्थ मनुष्य जैसा बोल रहा हूँ।"

"वह तो बोलोगे ही। काम ही बोलने का है।"

"झूठ हम सिर्फ बोलते ही नहीं, यह झूठा आक्षेप है।"

"नहीं ऐसा मैं नहीं कहती। मृत्यु पर्यन्त तुम लोग संघर्ष करते रहते हो। दूसरा ज्ञात भी नहीं कर पाता कि कितनी शक्ति क्षीण हो गई।"

"यह बात है? तब हम सच्चे सैनिक होने का दावा कर सकते हैं। मेरी बहन को भी देखोगी?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्पताल में वार्ड नं० बीस में देखना।" उसने बात टाली।

"वह! बारहवर्षीया कन्या। देखूंगी! अब आज्ञा दो।"

"अच्छा! मुझे दुःख है मैं हिल भी नहीं सकता वर्ना....."

"कोई आवश्यकता नहीं है?" वह विद्युत्-वेग से उठी और बाहर माँ से एक-आध वाक्य बोलकर खटपट करती चल दी।

वृद्धा ने देखा कि नित्य नये लोग गोविन्द को देखने आने लगे। आनेवालों में अनेक आकार-प्रकार के व्यक्ति होते थे। वह बहुधा बाहर रसोई में बैठकर देखती रहती थी कि वे लोग चाहे सफेद चिट्टे वस्त्रोंवाले हों या अधमैले वस्त्रोंवाले, उनकी वाणियों में अन्तर होता। उनके बोलने के ढंग में भिन्नता होती; परन्तु वे सब कोई एक ही विषय की बातें करते। वृद्धा चुपके-चुपके उनकी बातों को सुनने-समझने की चेष्टा करती लेकिन कुछ समझ न पाती। तिस पर भी वह निराश नहीं हुई, और ध्यान से सुनती। दूसरे दिन वह कुछ अजीब ढंग से नई सुनी बातचीत को अवकाश के समय अपने पड़ोसियों से करती और बताती कि अमुक मनुष्य यह पहनकर आया था और यह बातें उसने कीं। पड़ोसिनें उसके फटे हालों से परिचित थीं। इस कारण उन्हें विश्वास न आता कि कोई कुलीन इनके घरों आयेगा। आस-पास के सब लोगों का यह विचार था कि गोविन्द "आवारा-गर्द" है। इस कारण अकसर पड़ोस की युवती वधुएँ और कन्याएँ तो उसके सम्मुख अड़ती ही न थीं; परन्तु माँ को गर्व होता कि उसका पुत्र इतने प्राणियों का प्रियपात्र है। बेटे के जख्मी होने का उसे घोर दुःख था। हाँ इतना सन्तोष अवश्य था कि वह अपनी पड़ोसिनों को बता दे कि उसका पुत्र सच्चरित्र न होता तो इतने कुलीन उस ही की आयु के युवक उसके यहाँ न आते।

लेकिन उस दिन प्रथम बार एक युवती को अपने कमरे में देखा और भी देखा कि कितनी स्वच्छन्दतापूर्वक वह गोविन्द की चारपाई पर बैठ गई तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वह एक सुसज्जित सुन्दर युवती थी, इस कारण वह एकटक उसे निहारती रही। वह बीच में कुछ बोल न सकी, उसे अपने पुत्र का स्वभाव मालूम था। वह उसे रोक-टोक करते देख डपट देता। परन्तु उसके चले जाने के बाद भी उसमें साहस न आ सका कि वह उसके विषय में कुछ पूछ सके। इस प्रकार लगातार सोचते रहने के पश्चात् वह इस निर्णय पर पहुँची कि हो न हो यही वह 'स्त्री' है जिसके कारण उसका पुत्र आधी-आधी रात्रि को घर आता है। जिसके चरणों पर वह आधे से अधिक वेतन चढ़ा देता है। वह क्रोध में भुन उठी। उसे विश्वास था कि उसके पूछने पर भी गोविन्द उसे कुछ बताने-वाला नहीं है। इस कारण पूछना ही व्यर्थ था। परन्तु अन्त में उसकी धारणा विश्वास में पलट गई कि गोविन्द इसी 'राक्षसिनी' के कारण अविवाहित था।

समय के साथ आनेवालों की संख्या में वृद्धि होती गई। गोविन्द को चोट लगने पर आनेवाले लोग अब सदा ही आने लगे। वे आकर घंटों बहस करते। यदा-कदा तो बहस करते हुए उत्तेजित भी हो जाते। मा डर जाती। कहीं यह छोकरे झगड़ न पड़ें। कहीं रक्तपात न हो जाय; और लोगों से सुनी-सुनाई बात कि यह तो बदमाशों का अड्डा है, पूरी न हो जाये; परन्तु ऐसा कभी न होता। लोग धीरे-धीरे शान्त हो जाते और हँसते-मुस्कुराते प्रसन्नवदन वापस चले जाते। अब तो कभी-कभी एकआध लड़कियाँ भी आतीं। बहस में भाग लेतीं। माँ आरम्भ में तो अवाक् होकर उन निर्लज्ज लड़कियों की ओर देखती ही रह जाती। कभी झल्ला उठती उनकी निर्लज्जता पर। आनेवाली लड़कियों में सबसे अधिक उस रातवाली युवती आती थी। उसी के साथ कभी-कभी एक या दो उस ही तरह की, परन्तु अधिक सजी सुसज्जित युवतियाँ होतीं। अब वह सोचने लगी यह सब तो यहाँ सिर्फ एकत्रित ही होते हैं। कोई बुरी बातें करते कभी दिखाई नहीं देते।

आने-जानेवाले लोग अब तो गोविन्द के घर पर न होने पर भी घंटों ठहरकर उसकी प्रतीक्षा करते। इसी बीच के समय में कोई-कोई माता जी से भी एक-आध बातें करते। बुढ़िया माँ भी उनसे परिचय करने की चेष्टा करती। परिचय-सूत्र आरम्भ होता, कहाँ रहते हो, क्या करते हो, क्या बिरादरी है की बातों से। सब कुछ जान लेने के बाद अपनी उत्सुकता छिपाती-सी लापरवाही दिखाकर कहती, "बाल-बच्चे भी होंगे?"

"जी नहीं।" उत्तर मिलता।"

"तुम तो सब रँड़ुये ही रहोगे!" वह खीझकर कहती और चुप लगा जाती। यदि उत्तर होता "जी हाँ।"

'हाँ भला लायक लड़के अपने माता पिता का कहना क्यों न मानें? शादी-ब्याह तो संसार की ही रीति-रिवाज है। भला इससे किसी के काम में क्या रुकावट पड़े है? यह गोविन्द ही रँड़ुवा रहवे। भला इनके पिता होते तो ऐसा होवे था। मैं राँड़ के ही भाग फूटे थे!" आदि आदि। फिर बन्द होनी कठिन हो जाती उसकी बात।

महीनों बाद उस रात्रि को गोविन्द अपेक्षाकृत शीघ्र घर पर आ गया था। वह उस दिन प्रसन्न था। धीरे-धीरे कुछ गुनगुनाता जाता था। आते ही सीधे कमरे में न जाकर रसोई में झाँककर बोला, "माँ आज तो मैं भी ठीक समय पर आ गया। मेरा बड़ा अच्छा भाग्य है।"

"हाँ बेटा, भाग्य तो अच्छा ही है। तुम्हीं ने उसे बुरा बना रखा है।" वह बोली।

"कहाँ बना रखा है बुरा? गर्म भोजन किसे न भाता होगा? आऊँ खाने?"

"हाँ हाँ आ जा।" उसने पटड़ा ठीक करते हुए गिलास में जल निकाला।

जूता द्वार पर छोड़कर गोविन्द पटड़ा सरकाने ही वाला था कि वह चिल्ला पड़ी, "हाँ हाँ, जा मुँह हाथ और पैर धोकर आ। दरिद्र कहीं का।"

गोविन्द छोटे बालक की तरह लज्जित होकर बाहर आता हुआ अपनी भूल छिपाने के लिये बोला, "हाथ तो अच्छे ही हैं माँ! उनमें क्या लगा है?"

"हाँ, हाँ बस जा। धो आ! नित रात्रि को भी तू ऐसे ही भोजन करता होगा। पर मैं तो अपनी रसोई में घुसने न दूँगी। रात्रि के एक-दो बजे तक कौन बैठा रहे तेरे लिए।"

गोविन्द गया और हाथ, मुँह और पैर भली प्रकार धो आकर भोजन करने बैठ गया। वह माता के झुर्रीदार चेहरे, पीली पड़ गई नेत्र की पुतली, पतली पतली कलाई और भोजन परोसने की लगन को ध्यानपूर्वक देखता हुआ भोजन करने लगा। आज वर्षों बाद उसके मस्तिष्क को सोचने का मौका मिला था कि माँ बूढ़ी हो गई, निर्बल हो गई। समय का बीतना उसे देखकर अनुमान किया जा सकता है। माँ ने मौन भंग किया, बोली, "मेरे बाद कौन तुझे गर्म-गर्म भोजन देगा। तब ही तो चाहती हूँ बहू का मुँह देखकर शान्तिपूर्वक मरूँ!"

"और माँ, मैं चाहता हूँ जीवन भर तुम्हीं मुझे खिलाया करो। भला माँ के अतिरिक्त कौन खिला सकता है अपने बच्चे को!"

"माँ सदा नहीं रहती! इसी कारण कहती हूँ विवाह कर ले।"

"माँ क्या मैं भोजन के लिए विवाह करूँ? इतना भारी बोझ सिर पर लादूँ?"

"हाँ, यह कह कि अपनी पत्नी को भला क्यों कष्ट दूँ। वह तो बस बैठी ही रहे। अरे भई तू ऐसा ही करना किसी से विवाह तो कर।"

गोविन्द बेचारा भला क्या कहता? ऐसी बातों का आदी न था। लजा-सा गया। थोड़ी देर बाद माँ बोली, "आजकल वह ऊषा कहाँ है?"

वह अपना संकोच दबाने के लिए किसी बात की खोज में था। माँ ने आरम्भ किया तो फिर जोश से बोला, "ननिहाल गई है।"

"आई नहीं अभी तक लौटकर।" माँ ने जिज्ञासा में पूछा।

"कहाँ आई? आई होती तो यहाँ अवश्य आती।"

"हाँ जानेवाले दिन आई थी। बोली बीकानेर जा रही हूँ।"

"बीकानेर के नाम पर तुम्हारे मुख में पानी नहीं भर आया माँ?" वह मुस्कराया।

"आने से क्या होता! तुझे किसके भरोसे छोड़ जाऊँ?"

"अरे मुझे? मेरी चिन्ता छोड़ देतीं। उसके साथ चली जातीं।"

"आई भी तो आखिरी समय में! मैंने बता दिया है उसे अपना मोहल्ला। बीकानेर के साथ सारी पुरानी बातें याद आती हैं एक-एक करके! अब तो न माँ है न लाला जी! मेरी सखियाँ तो तब ही जाने कहाँ-कहाँ चल दी थीं। एक थी वह बेचारी सुभद्रा। वह भी थी बेचारी भाग्य की मारी। पति के व्यापार में हानि हुई तो पटक छोड़ा उसे मा... वह माँ बननेवाली थी। माता... कंगाल थे। कुछ भी दया न आई क... को उसके पति को। अपने आप... दिया कलकत्ते।" उसने दीर्घ... लिया। "याद है तुम्हें उसकी कु... पूछने लगी।

"याद है। थोड़ी थोड़ी!"

"तब हुआ कन्या राधा का... और पिता को उधर मुनाफा हुआ... कई बार वह उसे लेने आया। पर... माता-पिता थे पुराने समय के। ... आन पर अड़े रहे। भेजा नहीं! ... बेचारी क्या करती? विवश थी। ... थी वहाँ मेरी सखी! एक दिन ... उसने वचन भराया कि राधा को ... अपनी पुत्रवधू बनाऊँगी। अपनी ... के तो विरुद्ध ही था फिर भी मैंने ... भर ली। चार वर्ष बाद बेचारी मृत्यु ... प्राप्त हुई। राधा को उसका पिता ... गया। अब न जाने बेचारी कहाँ होगी ... कितने बालकों की माँ होगी!"

"तब ही तो अब मुझे विवाह ... करना चाहिए माँ। एक बार हो गया ... वह हँस पड़ा।

"चल पगले! वह राधा भी ... ऊषा जितनी होगी। मैंने उसे ... बात बताई है। कहने लगी मैं अ... राधा को ढूँढ़ निकालूँगी।"

"कहाँ ढूँढ़ती फिरेगी, मरे हुए ... कहीं जीवित होते हैं?"

"वह ऊषा भला अपना काम छोड़... अकस्मात् क्यों चली गई?" उत्सु... होकर उसने पूछा।

"सुना था कि उसका विवाह हो... वाला था। वह करना नहीं चाह... टल गई।"

"अच्छा भला विवाह न कराना ... यह कोई ठीक है।" वह सोचने लगी। थो... देर बाद बोली—"कुछ तो ठीक भी ... वह भी निर्धनों की सेवा करना चाह... है। तुम क्यों नहीं कर लेते उससे विवाह ... एक से हो जाओगे दोनों।"

"मैं?" वह जैसे आकाश से ... पड़ा हो "वह एक बहादुर लड़की है। ... विवाह की क्या आवश्यकता? भीरुओं ... लिए है विवाह का बन्धन। और फिर ... और फिर.....कहाँ एक मिल-मालिक ... की लड़की कहाँ मैं एक मजदूर। अ... मर्यादा को कोई भी तोड़ना नहीं चाहता।"

"हाँ।" दीर्घ निश्वास निकला "... क्या कोई सभा है?" उसने पूछा।

"कल से मिल की हड़ताल जो आर... है। इस ही कारण आज शीघ्र छुट्टी मि... गई।" हँसकर उसने कहा, "फिर ... जानता है क्या होगा?" वह उठ ... हुआ।

"करो जो इच्छा हो। रमा ... बहन के पास भेजा था अब वह ... रहेगी।" उसकी वाणी में कुछ झुँझला... थी।

गोविन्द भोजन समाप्त कर चु... था। बाहर आकर, हाथ धोकर अ... कमरे में चला गया और काम में ... हो गया। माँ अपने काम-काज में ... रही। दूसरे दिन से मिल की जब...

शेष पृष्ठ १४ पर दे...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

प्रगतिशील लेखकों का समारोह

हिन्दी के लेखक चिरकाल से जनता के साथ रहे हैं। उन्होंने उसके साथ रहे हैं। कबीर, दादू, भारतेन्दु, प्रेमचन्द और प्रेमचन्द की परम्परा के उत्तराधिकारी हैं। पिछले वर्षों में प्रगतिशील लेखकों ने स्वाधीनता और सामाजिक न्याय के युद्ध में सक्रिय भाग लिया है, और साहित्य में शालीनता और स्वच्छता की निरन्तर माँग की है। प्रगतिशील आन्दोलन के फलस्वरूप लेखकों ने आगे बढ़कर अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाह किया है। आज भी हमें लेखकों की संख्या कम है, वे हमें लेखकों की संख्या कम है, वे हमें दंतदांत के मीनारों में रहकर ही कला-साधना सफल समझते हैं।

लखनऊ में होनेवाले अ० भा० प्रगतिशील लेखक सम्मेलन के अध्यक्ष राहुल सांकृत्यायन

आज हमारे देशवासियों को अपने देश का स्वयं निपटारा करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ है। यह राष्ट्र-निर्माण का अवसर बड़े महत्त्व और उत्तरदायित्व का है। वास्तव में हमारे संघर्ष के एक युग का अन्त हुआ है, और दूसरा शुरू हुआ है। भारतीय राष्ट्र के सांस्कृतिक नवोत्थान की अगुवाई हमारे लेखकों और कलाकारों को करनी है। भारतीय लेखक अब सदियों के बाद फिर अपनी गौरवमय परम्परा को उच्चतम स्तरों तक पहुँचायेगा। सदियों के रुद्ध द्वार-रास्ते आज उसके सामने खुल रहे हैं।

इस परिस्थिति में भारतीय लेखकों का कर्तव्य है कि वे अपने भविष्य का कार्यक्रम निश्चित करें, ताकि वे कला के माध्यम से राष्ट्र के नव-निर्माण में अपनी परम्परा के अनुरूप योग दे सकें, और अपने साहित्य को नये आयाम के अभूतपूर्व पथों पर ले जा सकें।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रगतिशील लेखक सम्मेलन, जो प्रयाग में ६, ७, ८ सितम्बर को अग्रवाल विद्यालय में महापंडित राहुल सांकृत्यायन के सभापतित्व में हो रहा है, हिन्दी-साहित्य के पिछले वर्षों की गति-विधि पर विचार करेगा और भारत की सामाजिक परिस्थितियों में लेखकार को उसके महान् दायित्व को समझने करने का प्रयास करेगा। अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक-संघ सभी लेखकों का सहयोग माँगता है और सम्मेलन में उनकी उपस्थिति और अमूल्य सम्मति का आह्वान करता है। प्रयाग भारत का प्राचीन सांस्कृतिक गढ़ है। हम आशा करते हैं कि इस परम्परा के अनुरूप ही इस लेखक-सम्मेलन को हम सफल बना सकेंगे।

——प्रकाशचन्द्र गुप्त, एम० ए०
मंत्री, अ० भा० हिन्दी प्रगतिशील लेखक-कान्फ्रेंस।

* * *

घरेलू शत्रुओं से छुटकारा मिलना ही असली स्वतंत्रता है

बाहरी शत्रुओं से हमारा देश आजाद हो गया, अब पूर्ण स्वतंत्रता जब हो आयेगी जब घरेलू शत्रुओं से उसे छुटकारा मिले। आप पूछेंगे घरेलू शत्रु कौन हैं। घरेलू शत्रु हैं वह जो आपे से बाहर होकर हर एक से मुठभेड़ को तैयार हो जाते हैं। कोई भी इन्तजाम हो उसे तोड़ना ही स्वाधीनता समझते हैं। मिसाल के तौर पर मैं गवर्नमेंट हाउस में १५ तारीख-वाली बदइन्तजामी को दिखाना चाहता हूँ। न तो जनता पुलिस की सुनती थी और न अपने लीडरों की। उसे जो आदत लाठीचार्ज की पड़ी है उसी को दुहराना चाहती थी रस्सियाँ बाँधकर हर एक के वास्ते जगहें बनाई गई थीं। मगर रस्सी को उठाकर जिसे देखो आगे ही जाना चाहता था चाहे उसे स्त्रियों के सिर पर से ही क्यों न जाना पड़ता। दरख्तों पर बन्दरों की तरह बैठना, कवायद के मैदान को घेरना तो जैसे कोई बात ही नहीं थी। कमरों के अन्दर कोचों पर कूदना जैसे झूले पर बैठे हैं। चीनी के बर्तनों का तोड़ना जैसे वह पराया माल हो। धक्के-मुक्के देकर बे-रास्ते चलना यह सब भीतरी शत्रुता के चिह्न हैं। यही नहीं। देखा गया है कि गाड़ी-मोटर आते देखकर रास्ते से पैदल चलनेवाले हटते नहीं कि गाड़ीवाले बचायेंगे और कहीं धक्का लग भी गया तो लड़ने को तैयार हो जाते हैं। और लीजिए, हर हड़ताल में हड़तालियों से सहानुभूति दिखाना और स्वयं उनकी शिकायत दूर करनेवालों की सहायता करना। मिसाल के लिए सुनिए——अध्यापकों की हड़ताल में छात्रगणों ने सहानुभूति दिखाई ठीक भी है। गवर्नमेंट को स्वयं उनसे सहानुभूति है, उन्हें देने को पैसा चाहिए। गवर्नमेंट ने कहा अच्छी बात है उनकी तनख्वाहें बढ़ेंगी, मगर तुम्हें फीसें ज्यादा देनी होंगी बस हड़ताल बोल दी गई। पैसा कहाँ से आये? न दोगे और न देने दोगे। यह हड़तालों के दिन हैं, जिसे देखो हड़ताल कराने की कोशिश। कपड़ेवाले के कारखाने बन्द करा दो, शकर बनने न दो और फिर चाहो कि सरकार तुम्हें कपड़ा पहनावे और खूब मीठा खिलावे। कहाँ से आवे? इसलिए दोस्तो घर की शत्रुता यही है कि बाहर के शत्रु को निकालनेवालों के हर काम में अड़ंगा देना। जिन देशों ने आजादी प्राप्त की है और उनमें हुकूमत को मानने का ढंग नहीं आया वे आजादी को कायम रख नहीं सकते। हुकूमत की हर बात में अड़ंगा लगाना देश से शत्रुता करना है। इन बातों से या तो बाहरी शत्रु को फिर से कबजा जमाने का अवसर मिल जायेगा, या कोई डिक्टेटर पैदा होगा जो दोनों बातें शायद आप पसन्द न करेंगे। हुकूमत लेना एक बात है कायम रखना दूसरी। लेनेवालों की कुरबानियों से तो हम स्वाधीन हुए अब हम अपने दुराचरण से उसे खो बैठेंगे। अगर हम अपनी आदतें सँभाल न सके। शायद डिक्टेटर का पैदा होना उससे अच्छा है कि विदेशी फिर से आ बैठें। इस वक्त तो हममें से हर व्यक्ति अपनी मनमानी पर उतारू है वरना उसे आजादी सुभती नहीं और दुःख तो ज्यादा तब होता है जब यह भावना नवयुवकों में पाई जाती है क्योंकि वही आगे नेता होंगे और उन्हें ही आजादी को मजबूत करना होगा।

प्रयाग १ सितम्बर ४७——मोहनलाल नेहरू

* * *

राष्ट्रभाषा और हिन्दी-हिन्दुस्तानी

सारे हिन्दी-जगत् और हिन्दी-प्रेमियों को यह जानकर अत्यन्त खेद हो रहा है कि दिल्ली के रंगमंच पर पर्दे के पीछे हिन्दी के विरोध में और हिन्दुस्तानी के पक्ष में प्रबल वातावरण तैयार किया जा रहा है। हमारी समझ में नहीं आता है कि जब भारतीय विधान परिषद् की कांग्रेस पार्टी में यह सवाल भारी बहुमत से तय हो गया कि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी ही होगी तब फिर क्यों उस निर्णय को हिन्दुस्तानी के पक्ष में बदलवाने के लिए कांग्रेस पार्टी में आपस में मतभेद हो रहा है? और उस घोषित निर्णय की अवहेलना की जानेवाली है। हम अपने देश के कर्णधारों से यह साफ कह देना चाहते हैं कि अब वह मुसलमानों को खुश करने की अपनी नीति का परित्याग कर दें और हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा मान लें नहीं तो खंडित भारत से और पंजाब के अत्याचारों से दुःखी और पीड़ित जनता विद्रोह का रूप धारण करके कहीं नेताओं की लोकप्रियता नष्ट न कर दे! जब कि सारे भारत में चारों ओर से हिन्दी के पक्ष में प्रबल आवाज सुनाई पड़ रही है तब फिर क्यों हमारे कुछ नेता हिन्दुस्तानी के तीव्र हलाहल को जनता के गले के नीचे उतारना चाहते हैं। अब तक इस प्रश्न को विधान-परिषद् में क्यों नहीं रखा गया जब कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानने का प्रस्ताव कांग्रेस पार्टी की मीटिंग में कभी का पास हो चुका है। इतमें देरी करने का साफ खुला मतलब यह है कि हमारे कुछ नेता कुछ सदस्यों को इधर-उधर से तोड़कर फिर हिन्दुस्तानी को ही राष्ट्रभाषा बनाना चाहते हैं। यदि इस षड्यंत्र में हिन्दी की हत्या कर दी गई तो फिर कांग्रेस के अन्दर वह फूट पड़ जायेगी जैसी कि दलबन्दी लखनऊ कांग्रेस के अवसर पर भी न हुई होगी। इसलिए हम समय रहते ही कांग्रेस हाई कमाण्ड को आगाह कर देना चाहते हैं कि वह इस हिन्दी-हिन्दुस्तानी के तुच्छ मामले पर ही अपनी लोकप्रियता को नष्ट न होने दें। क्योंकि आगे चलकर अभी हमारे कर्णधारों को जनता के सहयोग की बहुत आवश्यकता पड़ेगी। इस समय जन-मत को ठुकरा देने का मतलब आग से खेलना होगा।

हमारी राष्ट्रभाषा तो हिन्दी ही होगी। चाहे आज हो या आज के १० वर्ष बाद। पर हम यह नहीं चाहते कि वर्तमान समय जब कि जनता के दिल और दिमाग कांग्रेस की तरफ से नाना प्रकार के सन्देहों से भरे हुए पड़े हैं, उस समय यह निर्णय कहीं आग में घी का काम न करे?

वृन्दावन ——अद्वैतकुमार गोस्वामी
२५ अगस्त ४७ पत्रकार

मुझे दाँतों और मुँह में स्वच्छता और ताजगी मालूम होती है
जब कि मैं कोलगेट डेण्टल क्रीम इस्तेमाल करती हूँ!

खाने के बाद ही मैं अपने दाँतों को कोलगेट डेण्टल क्रीम से साफ करती हूँ, वह इसलिए कि वे चमकदार और स्वच्छ रहें। मेरे सारे मुँह में ताजगी और सुगन्ध रहती है! और मैं अच्छी तरह से जान गई हूँ कि मेरे श्वास में विकार न रहेगा——कोलगेट के फेन दाँतों के छेदों के बीच घुसकर भोजन का गन्दगी को दूर करते हैं, क्योंकि यही गन्दगी दाँतों में बदबू का कारण बनी रहती है।

कोलगेट डेण्टल क्रीम——बिना किसी हानि के दाँतों को स्वच्छ करती और दाँतों के ऊपरी भागों और मसूड़ों को चमका देती है। यही कारण है कि मैं इसे नित्यप्रति इस्तेमाल करती हूँ। दिन में एक बार नहीं कम से कम दो बार!

NO BAD BREATH BEHIND HER SPARKLING SMILE!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंग-मंच

'आरसी' फिल्म कैसा है ? सामाजिक दृष्टि से एक अच्छी और सुन्दर कृति

लेखक, श्री पूरन खत्री

प्रेम मूक होता है, इसको समझने के लिए कोई परिभाषा भी नहीं होती दुनिया में सिर्फ आँखें ही प्रेम के वास्तविक रूप को दर्शा पाती हैं। आरसी के कथाकार शरशार सैलानी ने कथा को इसी के आधार पर लिखा है। कथानक इस प्रकार है--

नरेश गाँव के साहूकार का लड़का शहर में उच्च शिक्षा प्राप्त करने आया था, परन्तु उसका मन गाँव की अमरायों में डालती हुई एक बड़ी ही शोख लड़की में उलझा रहता जिसको गाँववाले आरसी के नाम से पुकारते थे। नाम सुन्दर है वह भी सुन्दर थी और जवान। नरेश अपनी सालगिरह के समय गाँव आया। गाँव में आते ही रास्ते ही में उतरकर उसने पहले आरसी से मुलाकात की जिसके दिन उसकी (नरेश) याद में वर्षों की तरह बीत रहे थे। आरसी के पिता साहूकार के कर्जदार थे। प्रथम बार साहू ने आरसी को सालगिरह के जलसे में देखा। बधिक ने हिरनी को देखा। शहर वापस लौटते समय नरेश ने अपनी मा की अँगूठी आरसी के हाथों में पहना दी। दोनों ने कभी न भूलने के वादे किये और आँखों की मौन भाषा में दोनों ने एक-दूसरे को समझा-कर खूब समझा दिया।

आरसी के पिता साहूकार के कर्ज-दार थे और साहूकार ने आरसी को देखा था। ऐसे मौके पर उसने भी वही प्रस्ताव रखा जो दुनिया के हर अमीर गरीब के सामने रखते हैं यानी रूप और जवानी का सौदा। बूढ़े के दिल में नन्हें से पितृत्व का दिल था, उस दिल में आरसी के लिए बड़ी जगह थी, क्योंकि इस दुनिया में आरसी को छोड़ उसका और कोई हाथ बटानेवाला न था। उसने किसी सूरत में साहूकार का प्रस्ताव न माना। गरीब होकर अमीर की बात ठुकरा दे, इससे बढ़कर दूसरा अपमान अमीर अपना नहीं समझता। उसने आरसी के पिता का सब माल जब्त कर उसे गाँव से निकाल दिया। भूख और गरीबी से तड़पकर बूढ़े ने असार संसार को त्याग दिया; परन्तु मरते वक्त वह अपने छोटे लड़के का हाथ आरसी के हाथों में पकड़ा गया। उस नन्हे बच्चे का सिवाय आरसी के और कोई न था। भूख से तड़पकर आरसी उस अँगूठी को बेचने गाँव गई। गाँव के सुनार ने अँगूठी को पहचानकर साहूकार को खबर दी। लोग आरसी को पकड़कर साहूकार के पास ले गये जहाँ बात बढ़ जाने पर आरसी ने साहू-कार का खून कर दिया। हाँ, आरसी ने साहूकार का खून कर दिया।

पिता के मरने की खबर सुनकर नरेश गाँव आया। यहाँ उसने पिता के कार्य पर पश्चात्ताप कर सब गरीबों के हेण्डनोट फाड़ डाले। आरसी को चौदह साल की सजा हो गई। उसने अपने भाई का हाथ नरेश के हाथों में पकड़ा दिया। दुनिया बदली--बसन्त आये और गये। नरेश की संरक्षता में आरसी का भाई अब अशोक बाबू हो गया। बसन्त की हवा में सुन्दर गुन-गुनाहट सुनाई दी और वह शारदा नामक एक कालेज की लड़की से प्रेम का पक्का सौदा कर बैठा। नरेश ने सब पुरानी बातें छिपा लीं। यहाँ तक कि वह चौदह साल बाद आरसी को अपने मकान में दासी के रूप में लाया। शारदा के पिता डाक्टर लाल ने शादी पक्की करने के लिए अशोक के घर आकर आरसी और नरेश को एक ही कोच पर बैठे देखा। इस कारण पतित समझकर उसने शारदा की शादी का प्रस्ताव ठुकरा दिया। अशोक के दिल पर ठेस लगी उसने मार कर दासी को निकाल दिया। नरेश ने रोका; परन्तु भेद खुल जाने के कारण खामोश हो गया। आरसी हँसती आई थी रोती चली गई। उसके चले जाने पर नरेश ने अशोक को पूरी बातें बताईं। अशोक को पश्चात्ताप हुआ, उसने आरसी की खोज की पर वह न मिल सकी। आरसी मोटर से टकरा-कर डाक्टर लाल के अस्पताल में इलाज के लिए पहुँची। जहाँ अच्छी होने पर उसने अपने और अशोक के नाते को बता दिया। जिसको सुनकर डाक्टर खुश होकर अपनी लड़की शारदा समेत नरेश के मकान पर पहुँचा। जहाँ उसने शारदा का हाथ अशोक को तथा नरेश को आरसी सौंप दी।

चरित्र-चित्रण तथा अभिनय की दृष्टि से चित्र उत्तम रहा। वास्तव में अगर देखा जाय तो चरित्र-चित्रण ही इस चित्र की उच्चता है। श्रेष्ठ अभि-नय नरेश के रोल में अलनासिर का है। अभिनय के द्वारा बहुत ही अच्छे ढंग से उसने मनोभावों का विकास किया है। आरसी के रोल में मीना भी जँची हैं, परन्तु उसके अभिनय में भावों की गूढ़ता नहीं है। बाकी पात्रों में प्रान, आशा पोशले, कक्कू तथा अजमल वगैरह हैं। इन लोगों ने किसी तरह अपने पार्ट ही अदा किये हैं। कोई प्रशंसनीय बात नहीं है।

चित्र-लेखन तथा टेकनिक में अगर अच्छाइयाँ नहीं हैं तो बुराइयाँ भी नहीं हैं। चित्र के धरातल के मुताबिक दोनों ही चीजें प्रशंसनीय हैं। कैमरा-मेन मेहरोत्रा ने खासकर प्रेम के 'शाट्स' लाइट एण्ड शेड में दिखाये हैं जो बड़े ही उत्तम बन पड़े हैं। 'आउट डोर शूटिंग' में भी काफी समय खर्च किया गया है। पर्दे के 'शाट्स' कम हैं। दो एक जगह 'आर्ट आफ सिम्बोलिस्म' से

प्रसिद्ध सुन्दरी और अभिनेत्री नसीम फिल्म में आ रही हैं।

भी काम लिया गया है; परन्तु टचजेज पुराने हैं। फिर भी दिग्दर्शक दाऊदचाँद की काबिलि-जाहिर करते हैं।

गीत और संगीत शिथिल हैं। देता है गीतकार सैलानी ने गीतों कमरे में बैठकर दिमाग की खोज लिख मारा है।

धर्मवीर की संरक्षता में सम्पा का कार्य भी उत्तम हुआ है। आरसी (मीना) को चमकाने कोशिश ज्यादा की है। चित्र तथा प्रशंसा करने योग्य है।

आप भी अत्यधिक सुन्दरी हो सकती हैं

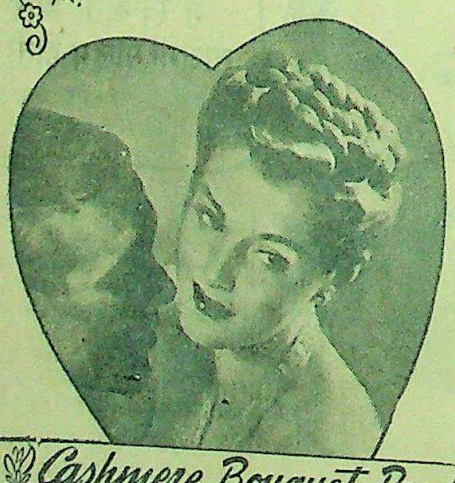

क्या तुम यह चाहती हो कि वह (पुरुष) तुमसे प्रेमविनय करे कि "प्रिये तुम मेरी हृत्तन्त्री हो ?"

तब काश्मीर बुकेट फेस पाउडर इस्तेमाल करो। वह तारों के चूर्ण की भाँति चिकना है। यह तुम्हारे चेहरे को कितने ही घंटों तक चमकदार रक्खेगा। तुम्हारे चेहरे को वास्तविक प्राकृतिक स्फूर्ति प्रदर्शित करायेगा।

इसकी आनन्ददायक सुगन्ध जल्द नहीं उड़ेगी, क्योंकि काश्मीर बुकेट में "मास डि चेमी" पदार्थ मिला है जो इस फेस पाउडर को अत्युत्तम बना देता है।

काश्मीर बुकेट की सुगन्धित शृङ्गारिक वस्तु से अपने पूर्ण सौन्दर्य को विकसित करो क्योंकि सुगन्धि ही से मनुष्य प्रेम करता है।

Cashmere Bouquet Products WITH THE FRAGRANCE MEN LOVE

वह सदैव थका और बीमार रहता था

तीन शिकायतों ने उसके लिए संसार में जो शीत उपस्थित कर दिया था कुशन की कृपा से अब जीवन सुखमय है

वह आदमी तीन बीमारियों से ग्रस्त बीमार रहता था—उनमें मूत्राशय की अ व्यस्तता, पैरों और पुट्ठों में दर्द गठिया उसको परेशान करती थी। बीमारियों से वह कैसे मुक्ति पा सका उसने अपने पत्र में बतलाया है कि सप्ताह में कुशन साल्ट ने आमूल परिव किया।

"एक माह अथवा ऐसा ही समय मैं मूत्राशय की अस्तव्यस्तता, कूल्हों जंघे के दर्द तथा गठिया से लगातार रहता था। इतना कमजोर हो गया था चेहरे का रंग उतर गया। मैं अत्यन्त गया और दवाओं के आसरे रहने मैंने कितनी ही दवाएँ कीं, पर जब कुशन साल्ट का सेवन नहीं किया बेकार गई। चार सप्ताह के अन्दर के सेवन से आमूल परिवर्तन हो गया। अच्छी भूख लगती है और जीवन में अनुभव करता हूँ।" एस० बी० एन०

मूत्रेन्द्रिय मानव-शरीर की छलनी यदि मूत्राशय आलसी हो जायँ तो खराबि रक्त की धमनियों में प्रवेश कर हैं, जो कितनी ही साधारण बीमारि की जड़ है।

कुशन में नमकों के वैज्ञानिक से मूत्राशय स्वस्थ हो जाते और असली स्थिति में काम करने लगते इसके शीघ्र परिणाम से सिद्ध हुआ पूर्व के सारे रोगों से मुक्ति मिल जाती आप जीवन में पुनः आनन्द का अनु करेंगे।

कुशन साल्ट सारे रसायनिक व्यापारियों की दूकानों पर बेचा है। दाम १॥=) प्रतिबोतल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

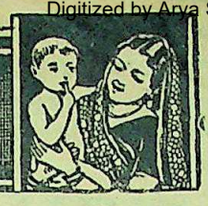

मातृमण्डल

कन्याओं को शिक्षित क्यों बनाना चाहिए?

पारिवारिक तथा गृह-जीवन को सुखी बनाने का यही सफल मार्ग है

लेखिका, कुमारी लीला कार्किं, भोपाल

...क्षा वह वस्तु है जो मनुष्य में ...ता प्रदान करती है। शिक्षा का ...पुस्तकों को भली भाँति पढ़ लेने ...ह सीमित नहीं है। शिक्षा ...न को परिष्कृत करती है, प्रतिभा ...र्मार्जित करती है और अन्त ...चारशील बनाती है। यदि ...शिक्षा प्राप्त करने पर भी ...ील न हुआ तो शिक्षा नितान्त ...है।

...ती जाति मानव-समाज का प्रमुख ...। इस अंग के बिना मानव-समाज ...न प्रतीत होता है। जिस प्रकार से ...को सुन्दर बनाने के लिए हर ...की आवश्यकता होती है, उसी ...है यदि पुरुष का साथी अर्थात् ...क्षित न हो, तो उसका जोड़ा ...सुन्दर नहीं प्रतीत होता है। आज ...संसार में जो शील, सौजन्य एवं ...हमको दिखती है, वह केवल ...की देन है। पुरुषों की पाशविकता ...ठोरता को सहन करने ...क्ति केवल नारी जाति में ही है। ...रण है कि समय समय पर संसार ...न भिन्न संस्कृतियों ने अपने ...क जीवन की शक्तियों का ...सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मी के रूप में ...ता है और आज का संसार भी ...बहुत अधिक भौतिक हो गया है जीवन में मधुरता लान के लिए नारी जाति का ही मुँह ताकता है।

जब मनुष्य को विद्या प्रदान करने-वाली ही देवी सरस्वती है तो स्त्री-जाति ही क्यों शिक्षा से दूर रहे। स्त्री-पुरुष संसार में दोनों ईश्वर के बनाये हुए हैं। जिस प्रकार एक गाड़ी को खींचने में दो पहियों की आवश्यकता होती है और यदि एक पहिया ढीला हो गया तो गाड़ी का आगे चलना वहीं समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार से यदि किसी घर की स्त्री अनपढ़ हो तो उस घर की अवनति भावी है और अवनति यहाँ तक होती है कि उस अशिक्षा का प्रभाव उसकी भविष्य की होनेवाली संतान पर भी होता है। इस प्रकार से अशिक्षितों की वृद्धि होती जाती है, क्योंकि संतान पर माता का प्रभाव अधिक पड़ता है।

जब स्त्री पर ही औरों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने का उत्तरदायित्व है तो वह क्यों पुरुषों की तुलना में तुच्छ दृष्टि से देखी जाय। स्त्री की शिक्षा पुरुष की शिक्षा से भी ज्यादा आवश्यक है। भारतवर्ष का अतिष्य तब तक उज्ज्वल नहीं होगा जब तक स्त्री को पुरुष के समान ही शिक्षा न दी जायगी।

प्रत्येक स्त्री को इतनी शिक्षा तो देनी ही चाहिए कि कम से कम वह संसार की परिस्थिति का सामना कर सके। स्त्री को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए कि वह सफल पत्नी और माता बन सके और घर के कार्य को अच्छी तरह चला सके। उसको गृह-शास्त्र से पूर्ण अभिज्ञ होना चाहिए। वह सफल गृहिणी होने के नाते एक अच्छी सलाह-कार बन सके; परन्तु विशेष प्रतिभा-सम्पन्न स्त्रियों पुरुषों ही के समान यदि शिक्षा प्राप्त करने का आग्रह करें तो उनको इस अधिकार से वंचित रखने का साहस कौन कर सकता है? आज-कल भारत-कोकिला, सरोजिनी नायडू और श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित की समता करने का साहस कितने पुरुष कर सकते हैं? वीर रमणी ताराबाई से मल्ल-युद्ध कितने वीर कर सकते थे?

यदि यह कहा जाय कि प्राचीन समय में स्त्रियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी तो यह ऐतिहासिक तथ्य का गला घोंटना होगा। प्राचीन काल में स्त्रियों को आधुनिक समय से ज्यादा शिक्षा दी जाती थी। हम पुस्तकों में पढ़ते हैं कि रानियाँ दरबार में राजाओं के साथ बैठती थीं और राज्य-कार्य में भाग लेती थीं और पंडिता विद्योत्तमा ने यही प्रतिज्ञा की थी कि जो कोई मुझे शास्त्रार्थ में जीतेगा उसी से अपना विवाह करूँगा। अन्त में दूसरे लोग, उसकी शादी, द्वेष के कारण, एक मूर्ख से करवा देते हैं, और वह मूर्ख उसी विद्योत्तमा के कारण महाकवि कालिदास कहलाता है। फिर हम कैसे कह सकते हैं कि प्राचीन समय में स्त्रियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी।

स्त्री-शिक्षा के संबंध में बहुत लोगों का कहना है कि स्त्रियों को शिक्षा देने से वह सफल पत्नियाँ और माताएँ नहीं होती हैं और अच्छी जीवन-साथी भी सिद्ध नहीं होती हैं। परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वे शिक्षा के कारण बिगड़ जाती हैं; परन्तु आज-कल की शिक्षा में यह खराबी है कि स्त्री-पुरुष दोनों ही पश्चिमी सभ्यता को जल्दी ग्रहण कर लेते हैं। यह तो

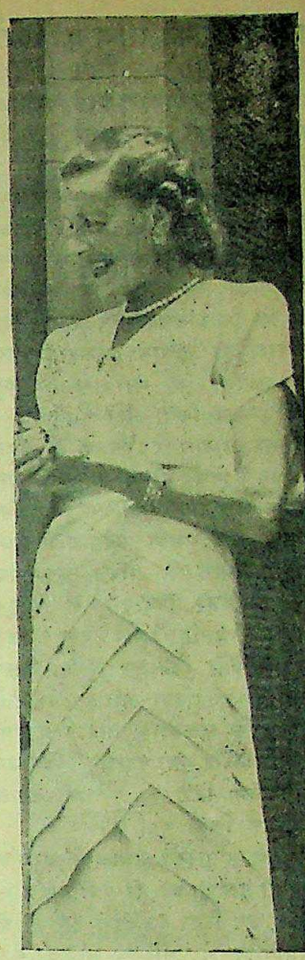

लेडी माउंटबेटेन, जिन्होंने गत सप्ताह पंजाब के दंगे से पीड़ित क्षेत्रों का दौरा किया था।

मनुष्य का ही स्वभाव होता है कि मीठी चीज मनुष्य जल्दी खाता है, बनिस्बत कड़वी चीज के। वह मीठी वस्तु खाते समय यह नहीं विचार करता है कि इस मिठास का परिणाम कटु होता है।

वास्तविक बात यह है कि ईश्वरप्रदत्त विभूतियाँ, क्या स्त्री, क्या पुरुष सभी में रहती हैं और सतताभ्यास से परि-वर्द्धित एवं परिष्कृत होती हैं।

जहाँ तक मेरा विचार है तब तक भारतवर्ष का भविष्य उज्ज्वल नहीं हो सकता जब तक कि भारतीय नारी के लिए भी शिक्षा का महत्त्व उतना ही नहीं प्रदान किया जाता जितना पुरुषों को प्राप्त है, क्योंकि शिक्षा मनुष्य को मनुष्यता प्रदान करती है।

मुफ़्त

असली फाउन्टेनपेन और असली रिस्ट-वाच गारन्टी १२ साल, मुफ़्त हासिल करने के लिए आज ही लिखिए। वरना मौका हाथ न आयेगा।

(D. A.) इम्पीरियल कारपोरेशन
धर्मशाला

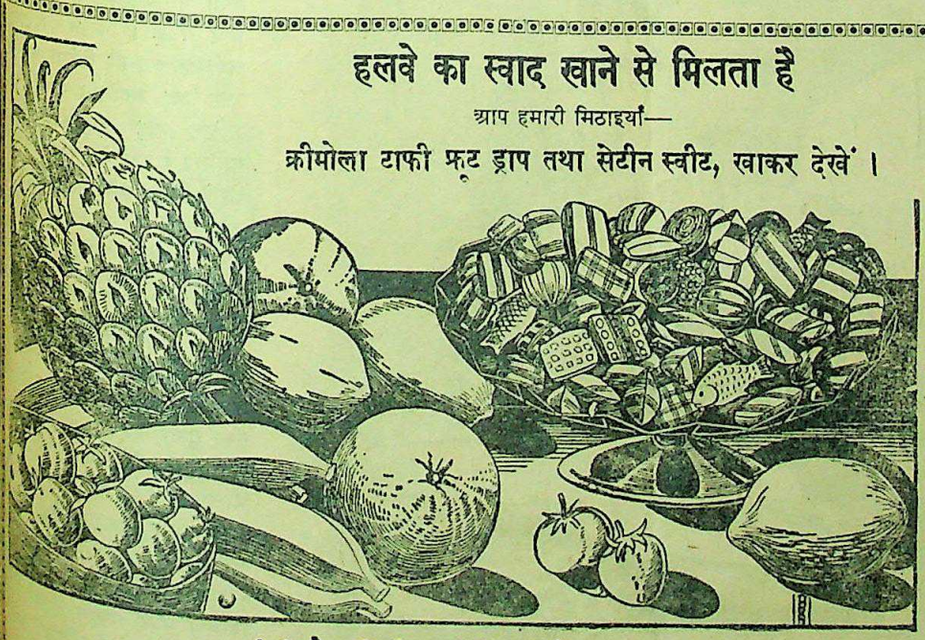

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल-पंजाब की सीमा का निर्णय

(पेज ७ का शेष)

था कि सीमा निर्धारित करते यसम और बातों पर भी ध्यान दिया जायेगा और यदि इसी आधार पर नदिया को बाँटा गया है तो खुलना तथा जलपाईगुड़ी को बाँटने का क्या कारण है? पश्चिमी बंगाल और आसाम के बीच जलपाईगुड़ी के द्वारा सम्बन्ध कायम रखा जा सकता था; किन्तु इस निर्णय से हम अब कूचबिहार के द्वारा ही आसाम से सम्पर्क कायम रख सकते हैं। यह भारत के साथ बहुत बड़ा अन्याय किया गया है।

सर सीरील रैड क्लिफ ने बंगाल कमीशन के निर्णय में पूर्वी बंगाल में समस्त चटगाँव और ढाका डिवीजन को शामिल किया है और समस्त बर्दवान डिवीजन पश्चिमी बंगाल में शामिल किया गया है। राजशाही डिवीजन के रंगपुर, बोगरा, राजशाही और पबना जिले तथा प्रेसीडेंसी डिवीजन खुलना जिला पूर्वी बंगाल को दिया गया है। प्रेसीडेंसी डिवीजन के कलकत्ता, चौबीस परगना और मुर्शिदाबाद तथा राजशाही डिवीजन के दार्जिलिंग जिले को पश्चिमी बंगाल में शामिल किया गया है।

इसके अतिरिक्त अध्यक्ष ने चटगाँव के पहाड़ी इलाका को भी पूर्वी बंगाल में शामिल कर दिया है। इन इलाकों में ९८ प्रतिशत गैर मुस्लिम आबादी है। यह एक स्वतन्त्र इलाका था और पूर्वी बंगाल के मुसलमानों से इनका कोई सम्बन्ध नहीं था। जिन जिन देशों के आधार पर कमीशन को अपना निर्णय देना था उनके ये इलाके शामिल नहीं थे। फलतः इन इलाकों को पूर्वी बंगाल में शामिल करके सर सीरील रैड क्लिफ ने अनुचित ही नहीं वरन् अवैध कार्य किया है।

सर सीरील इस बात को जानते थे कि सारे दलों ने सीमा-कमीशनों के निर्णय को स्वीकार कर लेने का वचन दे दिया है; और इस निर्णय पर पंचायती अदालत में अपील नहीं की जा सकती। फलतः उन्होंने मनमाना निर्णय हमारे ऊपर लाद दिया है।

सिलहट जिले के सम्बन्ध में हमें कोई शिकायत नहीं है। लोकमत संग्रह चाहे स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष हुआ हो अथवा नहीं। यह जिला बंगाली जिलों से बहुत मिलता-जुलता है और वहाँ की आबादी में मुसलमानों का बहुमत है। फलतः इस जिले के चार हिन्दू बहुमत-वाले थानों को छोड़कर शेष भाग पाकिस्तान में शामिल करना अनुचित नहीं कहा जायेगा।

खुलना और जलपाईगुड़ी के छीनने के बाद भी पश्चिमी बंगाल की आर्थिक स्थिति पूर्वी बंगाल से अच्छी रहेगी; क्योंकि पाट, लोहा, कोयला और मुख्य-मुख्य उद्योग-धंधे इसी भाग चौबीस परगना, हावड़ा, हुगली और बर्दवान जिले में हैं। सारे हिन्दुस्तान के उद्योग-धन्धों में से ३० प्रतिशत उद्योग-धंधे इसी क्षेत्र में है।

ब्रिटिश साम्राज्य की योजना के कारण देश का विभाजन हो गया है और पंजाब तथा बंगाल का बँटवारा भी हो गया। हमें दुःख है कि आपसी समझौते के द्वारा हम भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा निर्धारित न कर सके। हमने अँगरेजों को भी इस मामले में दखल देने का मौका दिया। आत्म-निर्णय के आधार पर नहीं बल्कि साम्प्रदायिक आधार पर देश का बँटवारा हो चुका है। फलतः बालकन प्रदेशों की भाँति पाकिस्तान और भारत के बीच भी संघर्ष पैदा होने की सम्भावना से हम आँख नहीं मोड़ सकते। ऐसी स्थिति में हमारा कर्तव्य यह है कि हम आपसी समझौते के द्वारा बाद में इस प्रश्न को न्यायोचित ढंग से हल करें। पाकिस्तान और भारत के लिए यही हितकर नीति सिद्ध होगी अन्यथा दोनों राष्ट्र एक दूसरे के शत्रु हो जायँगे और अँगरेजों की साजिश पूरी तरह से सफल हो जायेगी।

(हिन्द-समाचार-समिति द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

सनलाइट साबुन से धोये हुये कपड़े हमेशा पहले से भी ज़्यादा साफ़ और सफ़ेद दिखाई देते हैं। सनलाइट का विपुल झाग सभी वस्त्र-तंतुओं में घुस जाता है और पटके जाने के बग़ैर तमाम मैल निकाल देता है—उसीतरह अधिक मैले भागोंमें से भी! सनलाइट साबुन कपड़ों को मनमोहक और नये जैसे बना देता है और सुवासित करता है—आप को मालूम होगा कि, वह आप के हाथों के लिये भी अच्छा है!

सनलाइट साबुन

S. 88-173 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

(पेज १० का शेष)

हड़ताल आरम्भ होनेवाली थी। सें नंगे, आधा पेट खानेवाले मजदूरों की माँगों को टाला ही गया अन्त में थककर मजदूरों ने हड़ताल करने का निश्चय किया। गोकिल हड़ताल-कमेटी का मेम्बर था। सवेरे अँधेरे से उसे काम में जुट था। वह काम समाप्त कर सो

दूसरे दिन शहर में जबर्दस्त हुई। एक भी मजदूर मिल न बाजार में चारों ओर जुलूस मालिकों ने हड़ताल तोड़ने की कोशिश की, हड़ताल बन्द करने कहा और अन्त में गोली चलाने धमकी दी। मजदूर अड़े रहे। मार्ग वर्ना हम हड़ताल नहीं बन्द करते। मालिकों के वफादार भक्त पुलिस गोली चला दी। अनेक घायल हुए। मारे गये। गोविन्द भी काम

माँ बेसुध पड़ी थी। संध्या हो थी। घर में अँधेरा था। वृद्धा थी। हड़ताली मृतक नेता के घर का किसका साहस? माँ कभी रो कभी बेसुध हो जाती। वह ऐसे ही थी कुछ विक्षिप्त-सी कि उसने किसी जूतों की आहट सुनी। पगली-सी उठी "कौन? गोविन्द! आ गये बेटा

आनेवाला ठिठका, अपनी लि को संयत कर स्त्री-वाणी ने कहा, नहीं मैं हूँ। राधा....."

"राधा?" आश्चर्य में आकर एक बार प्रफुल्लित हो अपना दुःख सी गई। "तुम? कैसे?" फिर से उसे देखकर बोली, "चल कम्बख्त पिता ने गोविन्द का खून कराया! तू...राधा है!"

"हाँ माँ! मैं राधा हूँ सुभद्रा पुत्री हूँ।.....मैं पिता..... उस मिल-मालिक की कोई नहीं! अपने रक्त से गोविन्द के लगाये पौदे सींचूँगी! माँ अब मैं तुम्हारी हूँ। देखो उनके रक्त से रंजित झंडा हाथ में है।" उसने कहा रुकी अब यह तब ही गिरेगा जब मेरा रक्त बह जायेगा। इसमें मिल अधिक गाढ़ा हो जायेगा!" गोविन्द के रक्त से लथपथ वे वस्त्र जिन्हें उसने सवेरे पहना था। माँ कर वस्त्रों को छाती से लगा होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी।

सञ्चारिणी

इसमें भक्ति काल की अन्तर्चेतना, मान हिन्दी-साहित्य और शरद-साहित्य सरस सुन्दर विवेचना की गई है। भाषा-शैली और विचारों पर मुख आचार्य शुक्ल जी के एक अनु आलोचक ने लिखा था कि रवि बाबू बाद इसी पुस्तक द्वारा सुन्दर, सुपुष्ट भावपूर्ण लेखनी का चमत्कार दि पड़ता है। यह पञ्जाब विश्वविद्यालय हिन्दी प्रभाकर-परीक्षा में कई वर्षों पाठ्य-पुस्तक रह चुकी है। पृष्ठ-संख्या भग २७५; मूल्य सजिल्द २) दो रुपये

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सपरिहास

भङ्ग की तरङ्ग

श्री श्रीप्रकाश जी की कृपा से मुसलमान लोग बनारस जेल से छोड़ दिये और जनाब पाकिस्तान में यों ही आपको भेजा गया है।

* * *

सुना जाता है कि बाबू श्रीप्रकाश जी नमाज पढ़ना सीख रहे हैं; पाकिस्तान में संध्या-पूजा तो नहीं है और ईश्वरभक्त श्रीप्रकाश ईश्वर का भजन करना छोड़ नहीं पाकिस्तान में यह क्रिया नमाज हो सकती है।

* * *

खबर है कि लाहौर के दौरे में सरदार बलदेवसिंह पर पुलिस चला दी। उन्होंने समझा भी उपद्रवी हैं। जब उपद्रवी आते हैं तब यह लोग समझते हैं रक्षक-दल है, इसलिए गोली चलाते।

* * *

...वाले कहते हैं कि ब्रिटेन को आर्थिक पद्धति सुधारनी हो तो ...दृढ़ कर लो। इसका अर्थ है ...से संबंध-विच्छेद कर लो। ...के लिए जब गिरना ही है तब ...क्या खाई।

* * *

...बादवाले तिरंगे का अपमान ...तुल गये हैं। जान पड़ता है ...यह समझा है कि स्वतंत्रता में ...का अपमान करना ही ठीक है। ...उन्हें सोच भी लेना चाहिए।

* * *

...आजम अब कहते हैं कि ...व्यक्तिगत वस्तु है। बहुत दिनों के बाद यह बात आपकी समझ में आई। देखना है कितने दिनों के लिए ?

* * *

कहा जाता है कि कराची जानेवाली रेल में कुछ लोगों ने हमला किया और कुछ लोगों को मार डाला। यदि ऐसा ही हाल रहा तो शान्ति-स्थापन के लिए महात्मा जी को रेल में सदा यात्रा करनी पड़ेगी।

* * *

सिंध विश्वविद्यालय ने हिन्दू-संस्कृति की रक्षा के लिए एक समिति बनाई है। ठीक किया। सिंध में हिन्दू न रह जायँगे तो कम से कम उनकी संस्कृति की रक्षा तो करनी ही चाहिए, धन्य है पाकिस्तान !

* * *

चीनी राजदूत कहते हैं कि भारत की स्वतंत्रता संसार का बहुत बड़ा आश्चर्य है। चीनी ही नहीं मिश्री भी ऐसा ही कहते हैं।

* * *

कायदे आजम कहते हैं कि पाकिस्तान रक्तपात तथा अराजकता से मुक्त रहेगा। किन्तु यदि पाकिस्तानी लोग पाकिस्तान के बाहर वैसा करते रहे तब तो कोई हानि नहीं है ?

* * *

लोग कहते हैं कि सीमा-प्रान्त के गवर्नर कनिंघम अवैधानिक कार्य करने में बहुत पटु हैं। अँगरेज कर्मचारी क्या करने में पटु नहीं होते यह भी समझ लेने की बात है।

* * *

कांग्रेस-विरोधी हिन्दू पाकिस्तान में कारखाना खोलेंगे। यह तो कोई बड़ी बात नहीं है। यहाँ जयचन्द और मानसिंह हो चुके हैं।

* * *

पंजाब से भागकर लोग इधर आ बसे हैं। इनकी रक्षा का तो प्रश्न है ही अपने भी मकान, नौकरों इत्यादि का प्रश्न सुलझाना चाहिए।

स्वास्थ्य व्यायाम

ज्वर का कारण और चिकित्सा

रोगी का रहन-सहन और उपचार

लेखक, डाक्टर सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग, एम० ए०

जो कुछ हम खाते अथवा पीते हैं, उसका कुछ भाग तो रक्त, मज्जा आदि के रूप में परिणत हो जाता है और कुछ पाखाना, पेशाब पसीना तथा श्वास द्वारा बाहर निकल जाता है। यह शरीर के लिए अनावश्यक अंश शरीर में जमा होता रहता है। अनुचित भोजन तथा अधिक खाने दूषित पदार्थों के बाहर न निकलने से यह अनावश्यक विष जिसे विजातीय द्रव्य कहते हैं, बहुत ज्यादा जमा हो जाता है। शरीर का यह नियम है कि वह अपने भीतर किसी भी प्रकार के विष को नहीं रहने देता और ज्वर, फोड़ा-फुंसी, दर्द आदि के द्वारा उसे बाहर निकालता है। कहने का तात्पर्य यह है कि शरीर में विजातीय द्रव्य के एकत्रित होने पर ही ज्वर का आक्रमण होता है और यह शरीर की सफाई का साधन-मात्र है। इस बात को समझनेवाले ज्वर को अपना शत्रु नहीं मित्र समझते हैं। यह बात क्षयरोग में होनेवाले ज्वर को छोड़कर सब प्रकार के ज्वरों पर लागू होती है।

रोग का दबाना—ज्वर से लाभ उठाने और दीर्घायु प्राप्त करने के लिए ज्वरावस्था में कुछ खा-पीकर अलग दवा लेकर रोग को दबाना नहीं चाहिए। उस समय कुछ हवा लेने से प्रकृति के सफाई के कार्य में बड़ी बाधा पहुँचती है और रोग के जाने में समय लग जाता है। दवाओं का परिणाम तो और भी घातक है। दवाएँ तीव्र रोग को जीर्ण रूप में बदल देती हैं। अर्थात् साधारण ज्वर को दबाने से मियादी ज्वर, निमोनिया आदि हो जाते हैं। यदि इन्हें भी दबा दिया जाय, तो क्षय-रोग का हो जाना सम्भव होता है।

ठीक चिकित्सा—ज्वरावस्था में कुछ खाकर थोड़ा-थोड़ा ठण्डा जल पीते रहना ही सबसे अच्छा इलाज है। उपवास से रोग भगता हुआ नजर आता है। जल पीने से सफाई के कार्य में सहायता पहुँचती है। जल के साथ नीबू का रस लिया जा सकता है। पेट की सफाई भी बहुत जरूरी है। एनीमा के प्रयोग से पुराना मल सहज ही बाहर निकल आता है। एनीमा न मिलने पर रेचक वनस्पतियों का काढ़ा लिया जा सकता है।

कुछ उपचार—ज्वर की भयंकरता होने तथा रोग से जल्दी छुटकारा पाने के लिए पेड़ू पर मिट्टी की पट्टी चढ़ाना, धड़ पर गीले वस्त्र की पट्टी लगाना तथा पेड़ू स्नान करना लाभदायक है। ज्वर में रोगी को स्नान न कराना भारी भूल है।

रोगी को साफ हवा में रखना और उसके मुँह को न ढाँपना भी जरूरी है।

परिवार के नवयुवक

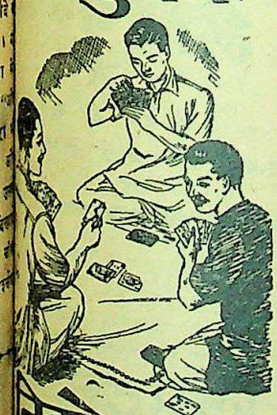

निकोटा का व्यवहार करते है।

...सफेद और दृढ़ रखता है, और सुन्दर मुसकान ...में यह प्रत्येक के अनुकूल पड़ता है। इसलिये ...के व्यवहार के योग्य सबसे अधिक 'किफायती' ...है।

...सभी जगह एक रुपये से कम ...मिलता है।

★ स्वादिष्ट
★ स्फूर्तिप्रद
★ कीटाणुनाशक

एक सुंदर लाल बक्स में सभी केमिस्ट व व्यापारियों के यहाँ मिलता है।

...पेस्ट

वार्षिक बालसखा १९४७

...प्रस्तुत वार्षिकांक बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित किया गया है। बालक-बालिकाओं के मनोरञ्जन और ज्ञान-वर्द्धन के लिए लेखों, कहानियों और कविताओं का चयन बड़े विवेक के साथ किया गया है। प्रारंभ में तीन सुन्दर चित्रमय कहानियाँ हैं।...ऐसी कथाओं से बच्चों का मनोरञ्जन तो होगा ही, साथ ही बुद्धि का विकास भी होगा। चित्रों से सम्पूर्ण अंक भरा हुआ है। कई नयनाभिराम रंगीन चित्र भी हैं। बालक-बालिकाओं के पढ़ने लायक लगभग सात दर्जन लेख, कविता और कहानियों से युक्त ३०० पृष्ठों का यह वार्षिक अंक संग्रहणीय है। इस अंक का मूल्य तीन रुपये। (साप्ताहिक 'भारत' ३१—८—१९४७)

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

बालों को सुश्रृंगारिक रूप से बनाकर रखिये
जीत प्राडक्शन्स कृत "तोहफ़ा" का नायक "रहमान"

कोमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।
वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड का ही नाम दीजिये।
सभी दूकानों पर
Copyright.

एक खुराक पेट दर्द को नष्ट करती है।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर की व्यापक ख्याति अम्लता, उदर-वायु, हृदय-दाह, पेट दर्द, वमन, पित्त-प्रकोप तथा पाचन-सम्बन्धी शिकायतों से पैदा होनेवाले अन्य रोगों में प्रभावशाली होने की मान्य प्रमाण है।

उदर-विकारों से उत्पन्न सिरदर्द, उदासी, अनिद्रा और हृदय की तीव्र धड़कन में भी यह अमूल्य है।

यदि आप इनमें से किसी कष्टकारी रोग से पीड़ित हैं तो आज ही कुछ मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर लीजिए और इस प्रसिद्ध औषधि की शीघ्र सांत्वना का स्वयमेव अनुभव कीजिए।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर माँगते समय "एलेक्स सी० मेकलीन" के हस्ताक्षर पहचान लीजिए क्योंकि असली यही है।

मेकलिन ब्रांड स्टमक पाउडर सेवन कीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाधीन भारत

लेखक, श्री शरद्चन्द्र 'राकेश'

क्लेशप्रद शीत काल के बाद, यथा आता है सुखद वसन्त,
प्रकृति के अटल नियम से अहो, दास्य का भी आया अब अन्त।
मेघ से होवे नभ आच्छन्न, तिमिर का हो भीषण उत्पात;
न अब है भय का कोई हेतु, विमल प्राची में हुआ प्रभात।
स्वप्न से थे जो हृद्गत-भाव, शीघ्र पूरे होंगे वे सभी,
देश-भक्तों का अनुपम त्याग, न जा सकता है निष्फल कभी।
प्राप्त कर दास्य-पङ्क से मुक्ति, अमल स्वातन्त्र्य-जाह्नवी धार,
करेंगे अवगाहन हो मुदित, फेंक देंगे कलुषों का भार।
अखिल प्रभु ने हो जिसे प्रसन्न, दिया है प्राकृत-सम्पति दान,
रम्य जो पावन भारत देश, उसी का है हमको अभिमान।
'विभाजन' का भी होगा अन्त, बँधेंगे प्रेम-सूत्र हो एक,
एक हो जननी के सब लाल, त्याग कर भ्रम-पूरित अविवेक।
प्रेम हो होगा धर्मप्रधान, मिलेगा नहीं कलह का लेश,
भरा-पूरा हो एक कुटुम्ब, लसित होगा त्यों सारा देश।
न होगा दैव छोड़ आतिथ्य, दुर्गुणों का ही बस दारिद्र्य;
सभी होंगे पूरित धन धान्य, और होगा उज्ज्वल चारित्र्य।
देख मनुजों का सुन्दर वेश, स्वर्ण-सी दीप्ति, अनोखी कान्ति,
प्रेम-मय वचन, सरल व्यवहार, देख देवों को होगी भ्रान्ति।
मातृ-भगिनी पत्नी का प्रेम, बहेगा सतत् सुधा-रस-धार,
जिसे पा करके मनुज-समाज, कर्म-कण्टक पथ करता पार।
पढ़ायेंगी स्वदेश का पाठ, लाड़ से ले शिशुओं को गोद,
सुनाकर मीठे कोमल बोल, हृदय में मातायें भर मोद।
"यही है भारत-भूमि पवित्र, जहाँ पर राम कृष्ण गोपाल;
तुम्हीं से नन्हे बनकर, लाल, मुदित हो खेले धूल उछाल।
विधाता के कौशल के बीच, न कोई ऐसा अनुपम देश;
भूलना तात, न इसको कभी, मिले कोई भी जीवन-क्लेश।"
पिता माता पर सुत की भक्ति, अटल पति-पत्नी की अनुरक्ति,
शिष्य पर गुरु का अमित-स्नेह, शिष्य की गुरु पर अनुपम भक्ति—
स्वामि-सेवक का निश्छल भाव, धनी का निर्धन पर अनुराग,
भ्रातृ-भगिनी का निर्मल प्रेम, पती का अविचल योग विराग।
ईश का प्रेम, भोग का त्याग, दीन जीवों पर दया अनन्त;
दिखावें निःश्रेयस का मार्ग, शान्त सेवा-रत निश्छल सन्त।
पुनः होंगे, जब देश स्वतन्त्र, दासता का छूटा अभिशाप,
दास्य ही है उन सबका मूल, जगत् में जो जितने हैं पाप।
देशवासी नर नारी बाल, नागरिक जो उनके अधिकार,
न उनसे वंचित होंगे कभी, न होगा यह कलुषित व्यापार।
मिटेंगे जाति-पाँति के भेद, बनावेंगे ऊँचा गुण-कर्म,
करेंगे नारी का सम्मान, समझ नर उसको परम स्वधर्म।
न होगा कोई भी अस्पृश्य, बढ़ेगा मानवता का मान,
धर्म के जो उदार हैं भाव, उन्हीं पर होगा सबका ध्यान।
अनेकों पथ से वह ज्यों नीर, जलधि से करता है सम्मिलन,
भिन्न रुचि हेतु मार्ग ले भिन्न, पथिक सब पाते प्रभु का सदन।
हृदय में रख ऐसा विश्वास, दिखावेंगे धार्मिक औदार्य्य,
बाल-नर-नारी द्वेष-विहीन, यही शिक्षा देंगे आचार्य।
रहेगा आत्म-शान्ति का हेतु, किसी का जो धार्मिक विश्वास,
देश की शासन-नीति परन्तु, रहेगी उससे निपट उदास।
प्रजा से पाकर शक्ति अदम्य, सुदृढ़ होगा शासन जन-तन्त्र,
कर्मचारी कर्तव्य विचार, प्रथम लेंगे सेवा का मन्त्र।
देश-द्रोही बन साधे स्वार्थ, न होंगे गुण्डे, चोर, लबार,
मिटेगा पूँजी-पति का गर्व जिमीदारी का अत्याचार।
भवन हो उन्नत भव्य विशाल, लगावेंगे मेघों से होड़,
कह रहे मानो वे भी यही, दास्य के बन्धन डाले तोड़।
बने होंगे शुच सुन्दर मार्ग, भूलकर आते धूल न चोर,
निरापद आते वायु-प्रकाश, लगे तरु पुष्पित दोनों ओर।
पौर-जन ग्राम्य-जनों की भीड़, चलेगी जब उन्नत कर भाल,
कान्त वपु शान्त मनोहर वेष, देश-अभिमान भरी सी चाल।
देखकर होंगे परम विमुग्ध, दूर देशों से आये लोग,
कहेंगे प्रगटित कर निज हर्ष—"पुण्य से आया यह संयोग।"
कर्म-मय प्रेम-शान्ति के धाम, बनेंगे सुरुचिपूर्ण सब ग्राम,
न कोई होगा जिनमें दीन, न होगा कहीं द्वेष का नाम।
चिकित्सालय विद्यालय जहाँ, पढ़ाते जन-सेवा का पाठ,
जहाँ का जीवन त्याग प्रधान, करेगा लज्जित धन का ठाठ।
जहाँ तक जावे मानव-दृष्टि, हरित शस्यों के पूरित क्षेत्र,
दिखाई देंगे दे आश्वास—हृदय को, शीतल करके नेत्र।
करेंगे ऐसा उचित प्रबन्ध, देश के कर्ण-धार सप्रयत्न,
महामारी का भय न अकाल, न बिखरेंगे जीवन के रत्न।
सघन कुंजों में कर विश्राम, देख फल-पुष्पों के उद्यान,
निर्झरों का पी शीतल नीर, आयेगी नन्दन-कानन ध्यान।
न होंगे हिंसा-रत अघ जान, मनुज इस दग्धोदर के हेतु,
सन्त जीवों पर करते दया, जान उसको भवसागर सेतु।
देख गौएँ चरते स्वच्छन्द, मुदित फिरते ग्वालों के बाल,
यमुन तट की आयेगी याद, बजाते जहाँ वेणु गोपाल।
बहेगी पूर्वकाल की भाँति, दुग्ध-दधि-घृत की अमृत धार,
तभी हम हो तन-मन से पुष्ट, विजय का पावेंगे उपहार।
देख शिशुओं को क्रीड़ा-निरत, गेह हो उपवन वा उद्यान,
प्रकट होगा धर रूप अनेक, पुनः लीला करते भगवान।
गेह विद्यालय होकर एक, तजेंगे दाहक दण्ड-विधान,
प्रणय का पाकर नीरा लोक, बाल पङ्कज होंगे छविमान।
न होगा कोई नगर न ग्राम, मार्ग से दूर निवासस्थान,
चलेंगी स्थल पर द्रुतगति रेल, चलेंगे सागर पर जल-यान।
वेग से नभ-मण्डल को चीर, सहस्रों दौड़ेंगे जब यान,
दिखाई देंगे वे इस भाँति, उड़े जाते हों देव-विमान।
वायु-यानों पर चढ़ सानन्द, निडर नर-नारी बालक-वृन्द,
देश की अनुपम शोभा देख, कहेंगे हर्षित हो "जयहिन्द!"
देश का सुनकर गौरव-गान, हृदय में दे भारत को मान,
विदेशी आयेंगे बन शिष्य, जगत्गुरु से लेने को ज्ञान।
कला-कौशल की उन्नति देख, चकित होंगे तज निज अभिमान,
देख विज्ञान-नवाविष्कार, कहेंगे 'भारत! धन्य! महान!'
न कोई भी नर-नारी कहीं, मिलेगा, जो हो शिक्षाहीन,
नागरिक शिक्षित जन को देख, ग्राम्यजन अब न बनेंगे दीन।
पुस्तकालय की होगी धूम, वाचनालय होंगे सर्वत्र,
जहाँ पर मौन सहस्रों मनुज, पढ़ेंगे सुन्दर पुस्तक पत्र।
विश्व-विद्या के जो भण्डार, विश्वविद्यालय खड़े अनेक,
करेंगे सन्तत विद्या-दान, मिटा अज्ञान-तिमिर का खेद।
जहाँ शिक्षा देंगे आचार्य, प्रेम से शिष्यों पर कर कृपा,
जिन्हें हो कर—आमलक समान, जगत्सम्पूर्ण, न कुछ भी छिपा।
छात्र होंगे तन-मन से पुष्ट, सदा गुरु को जो देवें मान,
ध्येय हो जिनका विद्या-प्राप्ति, संतत उन्नत चरित्र का ध्यान।
देश की रक्षा करने हेतु, बनेगी सेना सुदृढ़ विशाल,
चलेगी जब पद-क्रम को बाँध, प्रकट होगा, आया भूचाल।
वीरवर देश-भक्ति से पूर्ण, करेंगे सेना का नेतृत्व,
करेंगे कभी न वे अन्याय, बचावेंगे हाँ, अपना स्वत्व।
करेगा यदि कोई आक्रमण, देश पर करने अत्याचार,
करोड़ों सम्मुख होंगे वीर, मातृ-भू पर प्राणों को वार।
हमारी पुण्य-भूमि है यही, कि जिसका रखना हमको मान,
ध्येय जीवन का हो बस, यही, रहें प्रस्तुत होने बलिदान।
जायँगे परवशता के क्लेश, अहो! जब होगा पूर्ण स्वराज्य,
वस्तु-कथा अद्भुत है स्वातन्त्र्य, देश अपने में अपना राज्य।
जोड़कर हाथ, नवाकर शीश, हमारी विनती है प्रभु यही,
देश हो उन्नत मस्तक सदा, धन्य हो जिसको पाकर मही।
शस्त्र फैलावे जग में कीर्ति, दीन दुखियों का [illegible] प्राण,
कर अत्याचारों का दमन, लोक का हो जिससे कल्याण।

भारत का स्फूर्तिदायक पेय

चाय
सहन शक्ति लाने वाली
इण्डियन टी मार्केट
एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

लिपटन माने अच्छी चाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...दाताओं के पत्र

...टिहरी राज्य प्रजामंडल के प्रमुख ...श्री सुन्दरलाल बहुगुणा, जिन्होंने ...से पुलिस द्वारा टिहरीनगर में ...पर अनुचित रोक लगाये जाने ...में नगर के प्रवेश द्वार पर ...की थी, कल दोपहर को ...पहरा हट जाने पर नगर में ...किया और भूख-हड़ताल छोड़ ...आपके नगर में प्रवेश करते ही नगर ...और उत्साह की एक नई लहर ...। भूख-हड़ताल के दौरान में ...एक वक्तव्य द्वारा यह घोषित ...था कि "टिहरी की जनता के ...अधिकारों की रक्षा के लिए ...श्री देव 'सुमन' के आदर्श ...में मुझे गौरव है। पुलिस ...हुक्मों की वेदी पर हम अपनी ...स्वतंत्रता का बलिदान नहीं ...टिहरी की जनता अधिक देर ...पशुतुल्य व्यवहार को सहन नहीं ...

...ता० से टिहरी नगर में बाहर के ...प्रमुख दैनिक पत्र नहीं आ रहे ...में सभी समाचारपत्र डाक ...आते थे। नागरिकों के डाक-...से इस संबंध की शिकायत करने ...मिला कि "डाक द्वारा आज-...समाचार-पत्र नहीं आ रहे हैं।" ...टिहरी नगर के निकटवर्ती इलाके ...पर वर्षा न होने के कारण ...से अनाज मिलने की उचित ...न होने के कारण, अकाल ...है, दरबार की ओर से अन्न-...की नियमित व्यवस्था न होने ...आ रही है। बाजरे का ...रु० मन तक चढ़ गया है और ...तो कहीं देखने तक को नहीं ...

—संवाददाता

...पुर पो० रूनीसैदपुर, ...बेनीपुर में गत १५ अगस्त मासिक ...प्रजातन्त्र का प्रकाशन ...चन्द्रसिंह विद्यार्थी के सम्पाद-...शुरू हो गया है। स्मरण होगा ...४२ के बाद से यहीं से 'शहीद' ...करता था जो बाद में अत्यधिक ...के कारण बन्द हो गया था।

—संवाददाता

...प्रयाग, टिहरी केन्द्रीय प्रजा-...के कार्यालय से प्राप्त समाचारों ...मालूम हुआ है कि श्री बुद्धिसागर ...में भूख-हड़ताल किये हुए ...माँगें निम्न प्रकार हैं—(१) ...(२) नहाने और कपड़े साफ ...की सुविधा, (३) पढ़ने-लिखने ...(४) सब राजबन्दी एक ...रक्खे जायें। बतलाया जाता है ...शंकरदत्त डोमाल की हालत ...चिन्ताजनक है। विश्वस्त-सूत्र ...हुआ है कि सब राजबन्दी ...सुरक्षा' कानून के अन्तर्गत ...किये गए हैं।

...मंत्री श्री बुद्धिसागर के ...विद्यासागर के घरवालों को ...दबाव डाला गया कि वे विद्या-...की जमानत दें। यहाँ पर ऐसा ...बताया जाता है कि यदि १६ ...कम का लड़का 'अपराध' करे ...मा-बापों को सजा दी जाती है, ...डरा-धमकाकर ५००) रु० ...पर रिहा किया गया है। ...१५ अगस्त को भेजे गये टिहरी ...शीर्षक समाचार में ...के स्थान पर भूल से ...लिखा गया है। तथा सब ...न जो भूख-हड़ताल की थी वह बाद को ज्ञात हुआ कि सिर्फ बुद्धिसागर ही लम्बी भूख हड़ताल किये हुए हैं।

—संवाददाता

हरिद्वार में पीड़ितों के रिलीफ कार्य के सम्बन्ध में कर्मवीर श्री पं० चिरञ्जीवलाल शर्मा इंचार्ज पंजाब महावीर-दल शाखा कार्यालय हरिद्वार ने अपने प्रेस वक्तव्य में बताया है कि पंजाब, सीमाप्रान्त और सिंध में साम्प्रदायिक अशान्ति के कारण जब से पीड़ित शरणार्थियों का हरिद्वार आना प्रारम्भ हुआ है तब से यू० पी० सरकार की ओर से इनकी सुन्दर व्यवस्था हुई है। हरिद्वार में इतनी बड़ी संख्या में शरणार्थियों के होने के बावजूद भी उनके कैम्पों में सफाई का संतोषजनक प्रबंध हो रहा है जो कि सरकार के सच्चे प्रयत्न का फल है। हरिद्वार में इस समय पाँच स्कूल शरणार्थियों के बच्चों के पढ़ाने के लिए खोले गए हैं। जिनमें पच्चीस अध्यापिकायें और काम कर रही हैं। लगभग डेढ़ हजार बच्चे शिक्षा पा रहे हैं। इसी प्रकार कनखल, ज्वालापुर और हरिद्वार आदि स्थानों में भी उनके लिए उत्तम प्रबंध किया गया है। पन्नालाल भल्ला इंटर कालेज में भी लड़कों को शिक्षा देने का प्रबंध किया गया है।

हरिद्वार से चार मील की दूरी पर पर्वत की तराई में स्थल रानीपुर में जिसको फौजी शिक्षा देने के लिए भारत सरकार ने आबाद किया था; वहाँ चार हजार शरणार्थियों के रहने का प्रबन्ध किया गया है वहाँ दो स्कूल खोले गए हैं जिसमें ४०० के लगभग बच्चे पढ़ते हैं। वहाँ जाने के लिए सवारी आदि का पूरा प्रबन्ध है और भोजन मुफ्त दिया जा रहा है। इन कैम्पों और अन्य स्थानों में रहनेवाले शरणार्थियों के प्रबन्ध में पं० लक्ष्मणदास भार्गव टाउन राशनिंग अफसर और रायसाहब फूलसिंह कश्यप रिलीफ अफसर इस दिशा में अधिक प्रयत्नशील हैं। समय समय पर सेजर जे० ओ० एन शुक्ल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट सहारनपुर और डा० दक्षसिंह गहलोत एस० डी० एम० रुड़की आकर यहाँ शरणार्थियों के कैम्प आदि का निरीक्षण कर उनके प्रबन्ध के विषय में सुझाव देते रहते हैं। इस समय राशन कार्ड मुफ्त वितरण किए जा रहे हैं और मकानों के किरायों पर भी कन्ट्रोल किया जा रहा है। जच्चा और बच्चा के अस्पताल खोले गए हैं और उनकी खास तौर पर निगरानी की जा रही है। छोटे से छोटे और बड़े से बड़ा कार्य जिस तत्परता और कर्तव्य की भावना से किए जा रहे हैं, उन्हें देखकर कोई भी मनुष्य यू० पी० सरकार की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता और कोई सच्ची सरकार इसी तरह ही जनता की निष्काम सेवा करके अपने को योग्य सरकार कहलाने का हकदार बन सकती है।

परन्तु अब लाहौर, वजीराबाद और स्यालकोट आदि नगरों से जो अधिक संख्या में शरणार्थी आ रहे हैं उनके लिए अब प्रबन्ध की विषेश आवश्यकता है। आशा है यू० पी० सरकार उनके लिए भी सन्तोषजनक व्यवस्था करने का प्रयत्न करेगी।

—संवाददाता

हरिद्वार में मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी कैम्प कनखल में पीड़ित शरणार्थी ब्राह्मण-कन्या का इसी कैम्प में शरणार्थी ब्राह्मण वर से विवाह कराया गया। दोनों और का सारा खर्च सोसायटी की ओर से किया गया: पं० मालीराम शर्मा व पं० सोहनलाल के उद्योग से यह कार्य सम्पन्न हुआ।

—संवाददाता

हरिद्वार के महन्त श्री घनश्याम गिरि म्यु० कमिश्नर का यह प्रस्ताव ७ अगस्त का म्यु० बोर्ड में सर्वसम्मति से पास हुआ—हरिद्वार म्यु० बोर्ड की तमाम कार्यवाही हिन्दी भाषा व देवनागरी लिपि में होनी चाहिये और बोर्ड के तमाम कर्मचारियो को नोटिस दी जाये कि वे हिन्दी सीखें। इस कार्य के लिए उन्हें तीन मास का समय दिया जाये, जो कर्मचारी तीन मास के अन्दर सीखने में असमर्थ हों, उनका मामला विचारार्थ बोर्ड में उपस्थित किया जाये। बोर्ड के इस प्रस्ताव से हरिद्वार यूनियन की जनता अत्यधिक प्रसन्न है।

—संवाददाता

देवरिया रुद्रपुर की बाढ़ अपनी भयंकर सीमा पर पहुँच गई है। अब भी ९७ गाँव पानी से बिलकुल घिर गए हैं। ये सभी गाँव आज बीस दिन से डूबे हुए हैं। गत पाँच दिनों से श्री बाबूरामजी-सहाय एम० एल० ए०, चन्द्रबलीसिंह मंत्री जिला किसान संघ देवरिया, सभापति मं० कां० क० बाबू हीरासिंह और एस० के० रुद्रपुर ने इन सभी डूबे हुए गाँवों का नाव द्वारा आकर निरीक्षण किया। बाढ़ आने के पहले से लोग भूख से तंग आकर घर छोड़ रहे थे किन्तु बाढ़ आने से सभी पुरुष अपने चौपायों को लेकर बाँगर की ओर भागे आ रहे हैं। इस भगदड़ में अधिकांश चौपाये मरे जा रहे हैं। इस बाढ़ से ६५ हजार के करीब आदमी क्षतिग्रस्त हुए हैं। जिसमें करीब ३०-३५ हजार आदमी खाने बिना बेदम हो रहे हैं। कुछ भी सहायता मिलना असम्भव हो गया है। जिला अधिकारियों ने कछार के दस रुपया से अधिक लगान मालगुजारी देनेवालों को अनाज न देने का निश्चय किया है। जब कि ५० बीघे जोतनेवालों के घर उपवास हो रहा है। गत वर्ष बाढ़ और रबी के नष्ट हो जाने के कारण किसान पहले ही बर्बाद हो चुके हैं। ऐसी हालत में कछार के कुछ लोगों को अनाज न देना घोर अत्याचार होगा। प्रान्तीय सरकार से अनुरोध है कि कछार के प्रत्येक व्यक्ति को इस विपत्ति काल में अन्न देने की कृपा करे। चारे की भी बेहद कमी है। चारे का भी सरकार प्रबंध करे।

—संवाददाता

वृन्दावन के समस्त संस्कृत छात्रों व पंडितों की एक आम सभा भगवानदास बागला विद्यालय में पं० श्री प्रपन्नाचार्य जी शास्त्री के सभापतित्व में हुई। जिसमें कि देश को आजादी मिलने पर प्रसन्नता प्रगट की और स्वतंत्रता के विषय पर गोस्वामी रासबिहारी शास्त्री, पं० सोहनलाल गर्ग शास्त्री, पं० लीलाधर शास्त्री के भाषण हुए। एक प्रस्ताव भी पास किया गया।

वृन्दावन में १५ ता० को स्वाधीनता का महोत्सव बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया था। इसके लिए उस दिन की मीटिंग में प्रो० कृष्णचन्द्र जी एम० एल० ए० चेयरमैन बोर्ड ने शहर के सब नागरिकों को मंडल कांग्रेस कमेटी को बोर्ड के स्टाफ तथा हलवाई संघ को धन्यवाद दिया। तथा विशेष धन्यवाद लाला हरचरनलाल गुप्त कप्तान जिला कौमी सेवादल को इनके परिश्रम पर दिया।

महाराजा भरतपुर २७ ता० को वृन्दावन के मंदिरों के दर्शन करने आये। उनके साथ में रियासत की काफी फौज व पुलिस थी। वृन्दावन की भी पुलिस का प्रबन्ध अच्छा था। राजा साहब वृन्दावन के सारे पुलिस स्टाफ को २०० रु० इनाम के दे गये। पत्र-प्रतिनिधि गोस्वामी अद्वैतकुमार जी ने राजा साहब से मेवों की समस्या पर मुलाकात की।

—संवाददाता

किशनगढ़ (राजपूताना) में विश्व-शान्ति के प्रचारक श्री श्री महायोगी धर्म्मध्रुव गौर पधारे। आपने अपने भाषण में कहा कि "स्वराज्य" तो किसी हद में प्राप्त हो गया है पर 'सुराज्य' अभी बहुत दूर है इसके लिए हमें व्यक्तिगत तौर पर अपने मन में बसे हुए "काम" को दमन करना है और स्वार्थभावना को त्याग कर दूसरों के हितों का खयाल करना है। जब हममें मानवोचित प्रेम की मात्रा बढ़ने लगेगी तो हम एक सच्ची शान्ति का अनुभव करने लगेंगे।

—संवाददाता

सीतापुर महौली में विद्यार्थियों की प्रभातफेरी निकली। स्वतंत्रता की शुभकामना के लिए वैदिक रीति से हवन किया गया। १५ अगस्त को भी जुलूस निकला। १०½ बजे राष्ट्रीय झंडा फहराया गया। उपस्थित जनता को प्रसाद वितरण किया गया। शाम को श्री चौधरी साहब मार्केटिंग इन्स्पेक्टर की अध्यक्षता में एक सभा हुई। विद्वानों के अनेक प्रभावशाली व्याख्यान हुए। ता० १६ को मिडिल स्कूल में बच्चों के खेल हुए। और पारितोषिक वितरण हुए। १००) मूल्य की छात्रोपयोगी वस्तुएँ बालक और बालिकाओं को पारितोषिक रूप में दिये गये तथा मिठाई वितरण की गई।

—संवाददाता

ग्वालियर के श्रीश्यामलाल शर्मा बी० ए० एल-ए० बी० इन्स्पेक्टर म्युनिसिपैल्टीज ग्वालियर स्टेट गत १८ अगस्त को लश्कर से बम्बई को रवाना हुए जहाँ से वे स्वायत्त-शासन की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए ता० २२ अगस्त को स्टर्थमोर नामक समुद्री जहाज द्वारा ऑक्सफोर्ड (इँगलेंड) को चले गये।

—संवाददाता

प्रयाग से श्रीपूर्णचन्द्र गुप्त लिखते हैं—"मैं आपके सम्मानित पत्र द्वारा पं० जयराम मिश्र एम० ए०, एल० टी०, साहित्य-रत्न को धन्यवाद देना चाहता हूँ। आपने साहित्य के क्षेत्र में सम्मेलन परीक्षा विद्यालय खोलकर बड़ा भारी कार्य किया है।

—संवाददाता

बड़ौदा में ता० २८ अगस्त को शाम को ४। बजे उस ऐतिहासिक संबंध का तिलक समारोह स्थानीय लक्ष्मी विलास पैलेस में हो गया, जिसके अनुसार सदियों से बिछड़े हुए मराठा राजपूत और राजस्थानी राजपूत एक सूत्र में बँध गये। इस अवसर पर भारत की इन प्रमुख दो सैनिक जातियों को एकता के सूत्र में जोड़नेवाले स्वामी माधवानन्द जी महाराज भी बड़ौदा और जोधपुर के नरेशों द्वारा आमंत्रित होकर यहाँ उपस्थित थे। दिन में ११॥ बजे हवाई जहाज से श्रीमान् जोधपुर नरेश बड़ौदा एरोड्राम पर पधारे, जहाँ महाराजा गायकवाड़ ने प्रमुख अधिकारियों एवं नागरिकों सहित उनका स्वागत किया। तीसरे पहर एक विशाल जुलूस जिसे देखने लाखों नर-नारी रास्तों पर खड़े थे, निकला और लक्ष्मी-विलास में पहुँचकर तिलक समारोह के रूप में बदल गया। इस अवसर पर श्रीमान् बड़ौदा-नरेश और उनके प्रमुख सरदारों की उपस्थिति में श्रीमान् जोधपुरनरेश ने युवराज साहब बड़ौदा को तिलक किया। स्वामी जी महाराज के आशीर्वाद प्रदान के साथ समारोह विसर्जित हुआ।

—संवाददाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी का रंगमंच

गवर्नर श्रीमती सरोजिनी नायडू और उर्दू

मंत्रियों को ३००) का बँगला—प्रांतीय सरकार और शिया जमात—मेडिकल कालेज के तीन डाक्टर मुअत्तल—हिन्दी के पृथक् विभाग की स्थापना की माँग—प्रांतीय कौंसिल का अधिवेशन—सर वजीर-हसन का स्वर्गवास

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

विगत सप्ताह स्थानीय गवर्नमेंट हाउस में पत्रकारों से बातचीत करते हुए युक्तप्रान्त की गवर्नर श्रीमती सरोजिनी नायडू ने भाषा-संबंधी विवादग्रस्त प्रश्न पर अपना निजी मंतव्य प्रकट करके एक अनावश्यक वितंडावाद प्रारम्भ कर दिया। श्रीमती नायडू इस प्रान्त की वैधानिक गवर्नर हैं और १५ अगस्त के पश्चात् की नवव्यवस्था के अन्तर्गत उनकी अधिकार-सत्ता सीमित है, उनकी निजी राय का प्रान्त की शासन स्थिति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता और उन्हें अपना काम मंत्रिमंडल की सम्मति से ही करना चाहिए। मंत्रिमंडल ने अभी तक भाषा के सम्बन्ध में कोई निश्चित नीति निर्धारित नहीं की है। अतएव श्रीमती नायडू द्वारा उर्दू के पक्ष में अपना मन्तव्य प्रकाश करना मंत्रिमंडल की भाषा नीति पर पूर्व प्रभाव डालने की चेष्टा करना है, जो लोकतंत्र के सिद्धान्तों के सर्वथा विपरीत है।

* * *

श्रीमती नायडू ने उर्दू के पक्ष में बोलते हुए अत्यन्त लचर दलीलें दी हैं। उनका कहना है कि बंगाल गुजराती, तामिल, तेलेगू, मलयलम आदि भाषाओं में अनेक मुहिस्लम साहित्यकार हैं और उन प्रदेशों के मुसलमान उन भाषाओं को ही लिखते-बोलते हैं। यदि काजी नजरुल इस्लाम बँगला के राष्ट्रकवि हो सकते हैं तो क्या कारण है कि युक्तप्रान्त के हिन्दू उर्दू को नहीं अपना सकते, जिसकी प्रशंसा सर तेज-बहादुर सप्रू आदि तक करते हैं। श्रीमती नायडू ने तर्क किया। यह तर्क तो हास्या-स्पद है। बँगला, गुजराती, तामिल, तेलेगू आदि उन प्रदेशों के बहुमत की भाषायें हैं और यदि मुसलमानों ने उनको अपनाया तो उचित ही किया। इसी प्रकार हिन्दी इस प्रान्त की बहुमत की भाषा है और इसीलिए मुसलमानों को इसी भाषा को अपनाना चाहिए, न कि हिन्दू उर्दू को अपनाये। यदि इस प्रान्त के हिन्दुओं से श्रीमती नायडू उर्दू भाषा के अपनाने की आशा करती हैं, तो उन्हें कहना चाहिए था कि बंगला गुजराती, तामिल, तेलेगू के प्रदेशों में भी बहुमत ने उर्दू भाषा को अपना लिया है।

* * *

युक्तप्रांत के मंत्रिमंडल ने अपना व्यय करने के निमित्त निश्चय किया है कि जो मंत्री सरकारी बँगलों में नहीं रहते अथवा सरकारी कोठियों के अभाव में जिनके लिए प्राइवेट बंगले किराए पर लिए जाते हैं, उनको ३०० रु० मासिक किराए से ऊपर के बँगलों में न रखा जायगा। अभी तक श्रीमती पंडित जिस बँगले में रहती थीं, उसका किराया ६०० रु० मासिक था। किसी भी सरकारी अधिकारी के वेतन का ४० प्रतिशत उसके निवासस्थान के किराये में खर्च करना वास्तव में अपव्यय की हद थी और सन्तोष की बात है कि लोकप्रिय मंत्रिमंडल के नेता पं० गोविन्दवल्लभ पन्त ने इस ओर उचित ध्यान दिया है। इसके अतिरिक्त यह भी निर्धारित कर दिया गया है कि किसी भी मंत्री को राजधानी में अपने दैनिक कार्य के लिए ७२ गैलन मासिक से अधिक पैट्रोल न दिया जायगा और न किसी मंत्री के लिए १० हजार रुपए से अधिक मूल्य की कार ही खरीदी जायगी।

* * *

युक्तप्रांत के शियों ने प्रांतीय सरकार को एक करोड़ रुपए के उस ट्रस्ट का स्मरण दिलाया है, जो अवध के पुराने नवाबी वंश के शाह अमजदअली ने ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रबन्ध में स्थापित किया था। इस ट्रस्ट के मूलधन पर १६,००० रु० मासिक सूद मिलता है, जिससे शाह अमजदअली ने ईराक और भारत के शिया धर्मार्थ संस्थाओं की सहायता कराने की व्यवस्था की थी, परन्तु अभी तक इस रुपये से ब्रिटिश कर्मचारी ईराक तथा भारत में ब्रिटिश प्रचार ही करते थे। सर्वदल शिया सम्मेलन के अध्यक्ष श्री हुसैनभाई लालजी ने इस सम्बन्ध में पं० नेहरू तथा पं० पन्त का ध्यान आकर्षित किया है, जिन्होंने उन्हें विश्वास दिलाया है कि ब्रिटेन से अन्तिम आर्थिक लेखा-जोखा करते समय इस एक करोड़ रुपए तथा उसके अब तक के सूद और उसके आय-व्यय का पूरा हिसाब कर लिया जायगा। यह उल्लेखनीय है कि इस ट्रस्ट को स्थापित हुए १६० वर्ष बीत गए।

* * *

स्थानीय मेडिकल कालेज के तीन डाक्टरों को उस जाँच कमेटी के सिफारिश पर मुअत्तल कर दिया गया है, जिसकी नियुक्ति लखनउ विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी ने श्री चन्द्रभानु गुप्त की अध्यक्षता में की थी। इन डाक्टरों में कालेज अस्पताल के सुपरिन्टेन्डेन्ट डा० बरकतराम भी हैं। इन डाक्टरों पर रोगियों के प्रति लापरवाही तथा निर्दयता दिखाने के आरोप थे और महिला रोगिणियों के प्रति असम्मान प्रकट करने एवं व्यभिचार तक करने के दोष आरोपित किए गए थे। अभी इस कालेज के कुछ और डाक्टरों के सम्बन्ध में भी रहस्यमय उद्घाटन होने की आशा है।

* * *

लखनऊ विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा विश्वविद्यालय में हिन्दी का पृथक् विभाग स्थापित करने की माँग नई नहीं है। दीर्घकाल से हिन्दीप्रेमी इस यूनिवर्सिटी में एक पृथक् हिन्दी विभाग की स्थापना की माँग करते आ रहे हैं। यह वास्तव में आश्चर्य की बात है कि मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम स्वीकार करनेवाली यह प्रथम यूनिवर्सिटी राष्ट्रभाषा का पृथक् विभाग नहीं स्थापित कर पा रही है।

* * *

युक्तप्रांतीय कौंसिल का आगामी अधिवेशन बुधवार १० सितम्बर से यहाँ प्रारम्भ होगा। जिस में गांव हुकूमत बिल को, जो एसेम्बली द्वारा स्वीकृत हो चुका है, कौंसिल के विचारार्थ पेश किया जायगा। बिल में वर्णित संयुक्त निर्वाचन-प्रणाली पर अब अधिक विरोध न होगा, क्योंकि केन्द्रीय विधान-परिषद ही उसको स्वीकार कर चुका है। कुछ थोड़े से संशोधन सरकार की ही ओर से पेश किए जाएँगे, जो स्वीकृत हो जाएँगे

(पेज ६ का शेष)

मुख्यतः खर्च कर-संग्रह में था। १९३१ से इस महकमे पर ६,००,००,००० गिल्डर्स खर्च होता था। अवकाश लेकर हालैंड वापस गए लोगों की पेंशन पर साधारण आमदनी का १/७ वाँ भाग खर्च होता था। डच ईस्ट इंडीज की अपनी सेना थी। मगर हालैंड की नौ-सेना ही इसकी नौसेना थी। १९३६ के बाद से इन पर खर्च दुगना हो गया। सिविल सर्विस में सब ऊँची जगहें डचों के पास थीं।

गवर्नमेंट के खर्च का एक बड़ा भाग लिये गये कर्ज को चुकाने और सूद देने में खर्च होता था। साधारण आय का कितना भाग कर्ज चुकाने और सूद देने में खर्च होता था, यह निम्न तालिका से ज्ञात होगा :—

कर्ज चुकाने और ब्याज देने में साधारण आय का भाग

	प्रतिशत
१९३१	११·६
१९३२	१४·८
१९३३	१९·१
१९३४	१८·१
१९३५	१५·९
१९३६	६५·४

१९४० में जब कर्ज घटकर १,४४,००,००,००० गिल्डर्स रह गया तब ४,००,००,००० गिल्डर्स ब्याज में दिये गए थे और ३७,८००,००,०० गिल्डर्स कर्ज चुकाने में दिये गये थे। धन के इस सतत प्रवाह ने हिन्देशिया को दरिद्र बना दिया। प्राकृतिक दृष्टि से समृद्ध होकर भी वहाँ के निवासी गरीब हैं। इस अवस्था का अन्त करने के लिए हिन्देशियन लोगों ने औपनिवेशिक शासन का अन्त करने का बीड़ा उ... है। पर हालैंड भी द्वीप-समू... छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। ... का निजू पैसा बड़ी मात्रा में ल... चीनी में ४०,००,००,००० रु... ४५,००,००,००० कृषि उधार दि... ३५,००,००,००० पेट्रोलियम ... ५०,००,००,००० गिल्डर्स लगे हुए... इसके अतिरिक्त जहाज, रेलवे और ... आदि में २५,००,००,००० गिल्डर्स ... हुए हैं, सरकारी लोन में हैं, सो ... हैं। इस विशाल सम्पत्ति और इससे ... वाले लाभ को हालैंड छोड़ने को ... नहीं है। इस लूट में साथ देने ... ब्रिटेन और अमरीका भी तैयार ... हैं। इसी कारण हिन्देशिया में युद्ध ... आग धधक रही है।

संयुक्त राष्ट्र-संघ की सुरक्षा-कौंसि... के आदेश के बाद भी हिन्देशिया में ... बन्द नहीं हुई है। हिन्देशिया के ... मंत्री डा० सरीमुद्दीन के कथनानुस... ४ अगस्त की विराम-संधि के बाद ... डच सेना २१ अगस्त तक पश्चिमी ... में लगभग ८२ मील, केन्द्रीय जावा ... ४४ मील, पूर्वीय जावा में ९४ ... और सुमात्रा में ३० मील आगे ... है। इसका डच गवर्नमेंट ने प्रतिवाद ... किया है। इससे स्पष्ट है कि डच ... समझौता नहीं चाहते। एँग्लो-अमरी... भी समझौता नहीं चाहते। दोनों ... के बड़े पूँजीपति चाहते हैं, जैसा कि ... एम० ने लिखा है; हिन्देशिया का ... रोध जल्दी से जल्दी समाप्त हो ... पर वे अपने देश के जनमत के विरु... जाने और हिन्देशियनों की 'क्षार-... के भय से खुल्लम-खुल्ला डच गवर्नमेंट ... समर्थन करने का साहस नहीं ... इस कारण दोनों काला पहाड़ की ... ग्रहण कर रहे हैं।

दोनों के बीच समझौता होने ... मार्ग में एक और बाधा है। हिन्देशि... का आग्रह और भी है कि दोनों के ... का फैसला और उसकी जाँच अन्तर्रा... पंचायत करे। डच गवर्नमेंट समझ... है कि यह मामला घरेलू है और ... राष्ट्रीय पंचायत की नियुक्ति से ... प्रभुत्व पर आँच आयगी। इसका ... स्पष्ट है कि डच गवर्नमेंट हिन्देशि... को आज भी अपनी सम्पत्ति मान... है। इसलिए जब तक डच-गवर्न... हिन्देशिया की स्वाधीनता स्वीकार ... करती और भारत के प्रधान मंत्री ... जवाहरलाल द्वारा प्रतिपादित ... एशियाई-मनरोसिद्धान्त को—कि यूरोपि... और किसी विदेशी या श्वेतांग सेना ... एशिया के किसी भाग में रहने का ... कार नहीं है—नहीं मानती, तब ... हिन्देशिया में धधकती स्वतंत्रता ... आग जिसमें दुनिया का सबसे ... चाय का बाग भी भस्म हो गया है ... नहीं बुझेगी।

कौंसिल का अधिवेशन प्रायः १५ दिन होने की आशा है, जिसके पश्चात् ही एसेम्बली का अधिवेशन बुलाए जाने की भी सम्भावना है, क्योंकि संशोधित गाँव हुकूमत बिल को पुनः एसेम्बली में पास कराना है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण विधान भी एसेम्बली में पेश होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

* * *

सर वजीरहसन की मृत्यु से युक्तप्रांत का न केवल एक प्रमुख विधानशास्त्री ही उठ गया है, बल्कि देश को एक प्रमुख राष्ट्रवादी का अभाव अनुभव करना पड़ा है। सर वजीरहसन लखनऊ और इलाहाबाद में बहुत दिन वकालत करते रहे हैं। अवध चीफ कोर्ट के जज के पद से रिटायर होने के पश्चात तो वे अधिकांशतः इलाहाबाद में ही वकालत करते रहे और गत वर्ष तक इलाहाबाद हाईकोर्ट को अपनी प्रतिभा से चमत्कृत करते रहे थे, वे १९१३ में मुस्लिम लीग के प्रधान मंत्री चुने गए और १९१९ तक उस पद पर रहे। १९१६ का लखनऊ पैक्ट सर वजीरहसन के ही प्रयत्नों का फल था। १९३६ में वे अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के अध्यक्ष चुने गए। किन्तु १९३७ में जब मियाँ मोहम्मदअली जिन्ना ने लीग नेतृत्व हथियाकर उसको संकुचित साम्प्रदायिक मनोवृत्ति पर चलने के लिए विवश किया, तो सर वजीरहसन उससे पृथक् हो गए। सर वजीरहसन तब से लेकर मृत्युपर्यन्त कांग्रेस के नेतृत्व में विश्वास करते रहे।

अद्भुत कहानियाँ
दो रंगों में छपी इस सचित्र पु... में एक से एक बढ़िया कहानियाँ हैं, ... इतिहास, स्वामिभक्ति और भाग्य के ... का वर्णन पढ़ते ही बनता है। मूल्य ... इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निबलता, वीर्य का के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत ला ३।-) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपको गुप्तेन्द्रिय प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" का मालिश कीजिए। मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होता है। १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग।

विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

अपने दान्तों के लिये
गिब्स
डेन्टिफ्रिस का उपयोग
कीजिये क्योंकि...
योग्य पद्धति ही नीरोगी
दान्तों को
सुरक्षित रखती है

यदि आप अपने दान्त कोयला या किसी सख्त पदार्थ से साफ़ करते हैं, तो आप उन्हें खुरचे जाने के खतरे में डाल देते हैं... और खुरचा हुआ दान्त जल्दी किड़ जाता है। आप का डॉक्टर कहेगा कि, किसप्रकार किड़े हुए दान्त - खराब दान्त - आप का स्वास्थ्य नष्ट कर देते हैं। गिब्स डेन्टिप्रिस खुरचने के बगैर (दान्त) सुरक्षितता से साफ़ करने के लिये खासकर बनाया गया है। अब से गिब्स डेन्टिफ्रिस का प्रयोग करो और आप के दान्त नीरोगी रहते हैं, इसकी खात्री करो; यह जंतु-नाशक, स्वाद में आल्हाद-दायक है और आप के दान्त श्वेत एवं सुरक्षितता से साफ़ करेगा।

गिब्स अधिक समयतक चलता है और अन्य दन्तमंजनोंसे सस्ता है

गिब्स बच्चों के लिये आदर्श है

गिब्स डेन्टिफ्रिस

D. & W. GIBBS LIMITED, LONDON, ENGLAND

श्री सोहनलाल द्विवेदी लिखित
काव्य कृतियों के नवीन संस्करण

भैरवी

गांधी युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। महामना मालवीयजी के शब्दों में 'ऐसी कविता का प्रचार देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक होना चाहिए।' मूल्य २॥=)

वासवदत्ता

बाबू मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं 'इस रचना से मैं बहुत प्रभावित हुआ।' स्वच्छन्दतापूर्वक जिस प्रौढ़ता की ओर द्विवेदीजी अग्रसर हो रहे हैं, जान पड़ता है, स्वयं वह भी उन्हें वरण करने के लिए आतुर हो रही है। 'वासवदत्ता' के प्रकाशन ने हिन्दी-साहित्य में एक नई क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। यह स्वयं पढ़कर निर्णय कीजिए। मूल्य १॥)

कुणाल

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सम्मति में—अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल खास तौर से—'कुणाल' के चरित्र-चित्रण में कवि ने कमाल किया है। शब्द-सौकुमार्य और भावोत्कर्ष के साथ ही नपे तुले शब्दों के प्रयोग ने काव्य को बहुत ऊँचा उठाया है। विशेष संस्करण मूल्य २॥)

पूजागीत

राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप देने के लिए द्विवेदी जी को प्रचुर सम्मान तथा लोकप्रियता प्राप्त हुई है। ये पूजा-गीत कवि के गौरव के अनुरूप ही हैं। मूल्य २)

विषपान

सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा का सरल तथा सबल खंड-काव्य है। भाषा का प्रवाह, प्रसन्न शैली तथा कथा के मार्मिक घटना-क्रम को वर्णना ने इसे बड़ा ही हृदयग्राही बना दिया है। मूल्य १)

झरना
शिशुभारती
बाँसुरी

द्विवेदीजी पहले बालकों के कवि हैं पीछे राष्ट्र के। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा माननीय सम्पूर्णानन्दजी ने इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा की है। 'अमृत बाज़ार पत्रिका' की सम्मति में—जिस प्रकार की शिक्षा बालकों को देने के लिए हमारे नेता वर्षों से प्रयत्न कर रहे हैं, इन पुस्तकों में उसी प्रकार का साहित्य है। प्रत्येक पुस्तक में कई रङ्गीन तथा अनेक सादे चित्र हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १)

पूरे सेट का मूल्य
१२ रु०

पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिंस होमियोपैथिक कालेज
बनारस

गवर्नमेन्ट रजिस्टर्ड और एडेड से होमियोपैथिक, वायकेमिक, इंजेक्शन का तीनों डिप्लोमा (सार्टिफिकेट) लें या शिक्षा प्राप्त करें। नियमावली मुफ्त मंगाइए।

रिस्टवाच मुफ्त

अमेरिकन डीलकस हेयर आयल नं० ५५५ के लगाने से बाल उमर भर काले रहते हैं। आँखों और दिमाग को ठंढक पहुँचाता है। गंजापन दूर करता है।

कीमत १ शीशी २॥) २ शीशी ५)। इस दवाई को मशहूर करने के लिए हर शीशी के साथ १ फैंसी रिस्टवाच जिसकी पायदारी और खूबसूरती की गारंटी १० साल है, मुफ्त दी जायेगी।

दो शीशी के खरीदार को डाकखर्च मुआफ। दो रिस्टवाच मुफ्त दी जायेंगी।

(D. A.) संन्यासी आयुर्वेदिक फार्मेसी, धर्मशाला

मेरे श्वास में दुर्गन्धि ?

७६% नवयुवकों में दुर्गन्धि रहती है !

वैज्ञानिक अनुभवों ने निस्सन्देह यह सिद्ध कर दिया है कि कोलगेट दाँत के मंजन ने १० घटनाओं में ७ घटनाओं को शीघ्र ही मुक्त कर दिया। उनसे शीघ्र ही दुर्गन्धि जाती रही।

धन की बचत—अन्य अच्छे मंजनों की तुलना में कोलगेट के एक बड़े डिब्बे में ३० मात्रा अधिक रहती है और वैसे ही भारी डिब्बे में ४६ मात्रा अधिक बिना एक पैसे अधिक मूल्य के।

दुर्गन्धि से आपका सामाजिक पतन हो जाता है, आप अप्रिय हो जाते और अप्रसन्न रहते हैं। किसी भी दाम का कोई दन्तमंजन आपके दाँतों को इतना अच्छा और शीघ्रता से साफ नहीं कर सकता जितना कि—

कोलगेट
टूथ पाउडर
आज ही खरीद लीजिए !

CLEANS BREATH AS IT CLEANS TEETH

भारत के बड़े बड़े शहरों से लेकर छोटे छोटे गावों तक में

'ऐस्प्रो'

घरेलू दवा मानी जाती है

'ऐस्प्रो' के लौटने पर, भारत के हर शहर और गाँव में उसका वैसा ही स्वागत किया गया है जैसा पहिचाने और विश्वासी दोस्त का होता है। यह परिवार भर की स्वास्थ्यरक्षक है।

'ऐस्प्रो' के दर्द टानने और आराम पहुँचाने के गुण को सारी दुनियाँ जानती है। दर्द या भोगने की अब कोई जरूरत नहीं रही। प्रकृति आपको भले चंगे रखना चाहती है और उस वक्त 'ऐस्प्रो' प्रकृति की मदद करती है। लाखों आदमी इसके आश्चर्यजनक गुण का अनुभव कर हैं। पीड़ा, सिरदर्द, गठिया और बात पर जादू का-सा असर करती है। इन्फ्लुएंजा, सर्दी बुखार को रात भर में दूर कर देती है। इतना होने पर भी 'ऐस्प्रो' इतनी निश्चित फलप्रद हानिरहित है कि छोटे बच्चों को भी दी जा सकती है।

हानिकर दवाओं को दूर फेंकिये; नक्कालों से बचिये और सिर्फ असली 'ऐस्प्रो' ही खरीदिये। आपके स्थानीय दवा विक्रेता के पास 'ऐस्प्रो' न हो तो हमें लिखिये। हम उसे फौरन् भेज देंगे।

मर्द हो औरत हो या बच्चा 'ऐस्प्रो' खाकर दर्द और बुखार से छुटकारा पा सकता है

'ऐस्प्रो' हृदय या पेट को नुकसान नहीं पहुँचाती

पढ़ा लिखा आदमी अनपढ़ों, को पढ़कर सुनाये, इससे बढ़कर लाभदायक और पुण्य कर्म दूसरा नहीं।

असल 'ऐस्प्रो' ही लीजिये

'ऐस्प्रो' क्या करती है

५ मिनट में सिर दर्द रोकती है
रात भर में गठिया शान्त करती है
चन्द मिनटों में बुखार कम करती है
दांत-दर्द और स्नायुशूल फौरन् बन्द करती है
दुःख दर्द भगाती है
नींद न आनेपर मीठी नींद लाती है
चिड़चिड़ापन दूर करती है
स्त्रियों का दर्द दूर करती है
इससे कुल्ला करने पर गले की खसखसाहट दूर होती है
सर्दी और इन्फ्लुएंजा का नाश करती है
किसी भी दवा से पहले डेंगू ज्वर उतारती है
संक्रामक रोगों से दूर रखती है

सर्दी व बुखार भगाती है

वितरक :
जे. एल. मौरिसन, सन ऐण्ड जोन्स (इण्डिया) लिमिटेड
पोस्ट बक्स ३८७ कलकत्ता
फोन कल० ७९६

'ऐस्प्रो' की हर टिकिया आश्चर्यजनक 'सीलटाइट' पुड़िया में बन्द रहती है जिससे धूल और नमी से उसकी रक्षा होती है और वह कभी खराब नहीं होती

कोई भी नकल मत लीजिये

हर जगह मिलती है

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ एस लाल रोड ...] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

३ अगस्त, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 3rd August, 1947

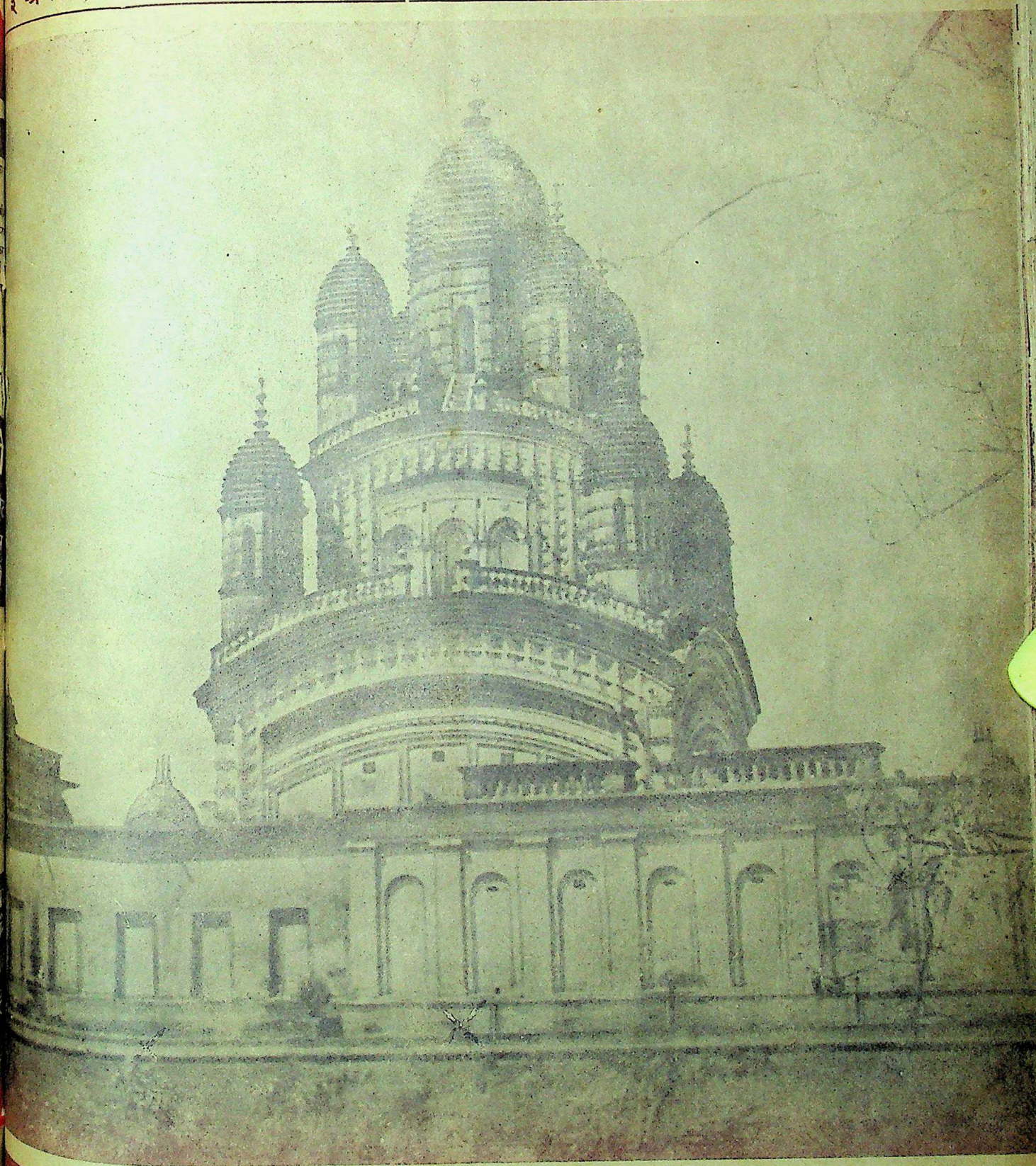

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

साम्राज्य बाल गंगाधर तिलक
भारतीय विधान क्या और कैसा है ?

संयुक्तप्रांत में ग्राम-सुधार-योजना
बरमा का भीषण हत्याकाण्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिक्री के लिए तैयार है

वार्षिक बालसखा १९४७

इसकी सजधज अनूठी और नयन-मनोहर है। छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएँ और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द भी सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आद्य से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का मूल्य ३)। मासिक ग्राहकों को रियायती मूल्य २॥) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

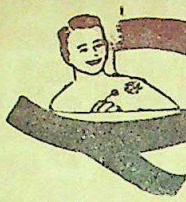

सफ्त लोशन

दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.

सफ्त ऐंड कं. लि. बम्बई नं २.

मुफ्त

अपने न्यू गाल्ड को लोकप्रिय बनाने के लिए हम लोगों ने कुछ समय के लिए ६ तोला न्यू गोल्ड का एक सेट नमूना जिसमें १ लाकेट, २ जोड़ी इयर रिङ्ग, २ जोड़ी फैंसी चूड़ी, २ अँगूठियाँ हैं, देने का निश्चय किया है। ये सभी चीज बहुत आकर्षक हैं और उन्हीं को दी जायेंगी जो रियायत की अवधि के पहले आवेदन करेंगे। मुफ्त—सचित्र सूचीपत्र और ब्योरा मुफ्त।

फ्रेंच कारपोरेशन, लायलपुर (पंजाब)
French Corporation (D. D.)
Lavalpur, (Punjab)

जवाहरों द्वारा निर्मित लिवरवाली घड़ियाँ

समस्त घड़ियाँ स्विटजरलैंड की बनी हुई, सच्चा समय बतानेवाली, मज़बूत पुर्ज़ों से सुसज्जित, दीर्घकाल तक ठहरनेवाली और सोफियानी हैं। प्रत्येक की ७ वर्ष की गारंटी है।

क्रोमियम केस २०), ऊँचे दर्जे की २५), सर्वोत्तम ३०), ५ जवाहराती चौखूँटे चमकदार क्रोमियम ३५), ७ जवाहराती ४०), रोल्डगोल्ड १० साल की गारंटीवाले ७ जवाहराती ६०), १५ जवाहराती ९०), पोस्टेज ॥), बैण्ड मुफ्त।

यू० एस०, ए० फाउण्टेनपेन

विभिन्न रंगों से रंजित और नवीन ढंग के बने १४ के टी निब ४॥) मध्यम ५॥), सर्वोत्तम ६), पोस्टेज ॥) सूचीपत्र अप्राप्य। पत्र-व्यवहार अँगरेजी में कीजिए।

कलकत्ता वाच कं०, (सेक्सन ०२४) पो० बाक्स नं० १२२०३, कलकत्ता ५।

इलाहाबाद के एजन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एम० धोलकिया एण्ड ब्रदर्स

*सुशीला...वैभव की झलक...चेहरे पर स्वर्ण की अरुणिमा.....

सर्वत्र युवा स्त्रियाँ और कन्यायें प्रसुप्त लावण्य को व्यक्त करने की प्रणाली खोज रही हैं।

.....शरीर-सौन्दर्य मृदुल अंगों के लावण्य को व्यक्त करता है। पॉण्ड्स कोल्ड क्रीम के प्रकृत तेलों से स्वच्छ करते हुये अपने चेहरे को स्वच्छ और कोमल रखिये। उंगली के पोरों से हल्के हल्के चेहरे पर रमाइये...पॉण्ड्स टिशू से अलग कर दीजिये...देखिये कि दिनभर की धूल और मैल निकल जाता है! तब पॉण्ड्स वेनिशिंग क्रीम मलिये। यह शरीर में रमजाता है...लुप्त प्रकृत तेलों को स्थानापन्न करते हुये...आपके चेहरे को कोमल और स्वच्छ रखते हुये!

वह रूपवती है!
वह पॉण्ड्स का प्रयोग करती है!

पॉण्ड्स दिनचर्या

पॉण्ड्स
क्रीम्स

पॉण्ड्स कोल्ड क्रीम : पॉण्ड्स कोल्ड क्रीम को चेहरे पर कोमलता से रमाते हुये दिन में दो बार उसे साफ़ कीजिये; उंगली के कोमल पोरों से उसे थपथपाइये। पॉण्ड्स टिशू से स्वच्छ कर लीजिये।

पॉण्ड्स वेनिशिंग क्रीम : कोल्ड क्रीम को साफ़ करके उंगली के पोरों से पॉण्ड्स वेनिशिंग क्रीम लगाइये। त्वचा को सुरक्षा देता हुआ वह आप के प्रयोग के साथ ही अंतर्धान हो जाता है।

पॉण्ड्स पावडर : यदि आप की इच्छा हो तो पुष्प-पंखड़ी की भांति कोमलता के लिये पॉण्ड्स पावडर

व्यापार-सम्बंधी पूछताछ के लिये लिखिये:
एल. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लिमि०
बम्बई - कलकत्ता - कराची - मद्रास.

Copyright: Pond's Extract Co.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

[illegible] ६, संख्या ४६] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, ३ अगस्त, १९४७

[illegible]सारों के नेता अल्लामामशरिकी [illegible]सार-आन्दोलन को समाप्त [illegible] लेकिन खाकसार अब भी [illegible] पुरानी रफ्तार जारी किये हुए [illegible] दिनों दिल्ली की जामा मसजिद [illegible]सारों ने अच्छा ऊधम मचाया [illegible] सरकार ने उनसे फावड़ा रखवा ही [illegible] अपने राम की समझ में भी यह [illegible] भी है कि अल्लामाशारिकी [illegible] खाकसार-आन्दोलन तो खतम [illegible] लेकिन यह न बताया कि [illegible]वाले कहाँ जायें और क्या [illegible] असल बात यह है कि इन खाक-[illegible] अब वर्दी-पेटी उतार कर रख [illegible]हिए और पाकिस्तान में जाकर [illegible] करना चाहिए। यह रास्ता [illegible] है। रह गया, हिन्दुस्तान में, [illegible] खाकसारी नहीं चलेगी। यहाँ [illegible] और वर्दी-पेटी उतरवाकर [illegible] का रास्ता दिखाया गया। इसके [illegible] और हो ही क्या सकता है?

* *

[illegible]किस्तान में पुराने और घाघ अँगरेजों [illegible] बनाया जा रहा है। सीमा-[illegible] और सिंध के ख्यातिप्राप्त गवर्नर [illegible] पाकिस्तानी प्रान्तों के गवर्नर [illegible]। अपने राम की समझ में यह [illegible] बात नहीं हो रही है। अँगरेजों [illegible] पाकिस्तान बनाया है तो [illegible] उजरत भी वह मय सूद-दर [illegible] वसूल भी तो करेंगे। इसके सिवा [illegible] सही है कि मुस्लिम लीग में [illegible] चार-छः महापुरुष हैं। [illegible] बनें कि प्रीमियर बनें या [illegible] के केन्द्रीय सरकार में रहकर [illegible] मचायें। आदमी कहीं नहीं हैं [illegible] पाकिस्तान में इस वक्त पदों [illegible] की बाढ़ आ गई है। ऐसी [illegible] में सिवा अँगरेज के पाकिस्तान का [illegible] कौन है? अँगरेज अगर [illegible] से जा रहे हैं तो क्या पाकि-[illegible] भी चले जायेंगे, यह कैसे हो [illegible] है? मिस्टर जिन्ना गवर्नर-जनरल हैं ही। पाकिस्तानी विधान-परिषद् का काम चालू ही होनेवाला है, ऐसी हालत में बिना अँगरेज की मदद के काम आगे खिसकना मुश्किल भी है। इसलिए सब कुछ हो रहा है। और होना भी चाहिए क्योंकि जिनकी बदौलत पाकिस्तान मिला, उनका भी ख्याल रखना ही चाहिए।

* * *

देशी रियासतों के अकड़बाज राजाओं की अक्ल अब ठिकाने पर लग रही है। कांग्रेस नेता जब तक अक्ल की बात और भारतीय-संघ में शामिल होने की उनसे अपील करते रहे तब तक वह रेगिस्तानी ऊँट की तरह पश्चिम में ही भागते रहे लेकिन पिछले सप्ताह जब लार्ड लुई माउंटबेटेन ने दिल्ली में गरम चाय पिला-पिलाकर ललकारा तो उनकी अक्ल ठिकाने पर आने लगी। अब ट्रावण-कोर, निजाम और भूपाल की हवा खिसक रही है। स्वतंत्र होने की उनकी उछल-कूद खतम हो रही है। बात यह है कि अँगरेज का मामला जो ठहरा। कांग्रेस तो खिलाफ है ही अब अगर अँगरेज भी खिलाफ हो गया तो फिर उनकी सुनेगा कौन? इसलिए अब वह जल्दी ही दुनिया गोल है का ककहरा पढ़ने जा रहे हैं खैर सुबह का भूला अगर शाम को आ जाये तो उसे भूला न समझना चाहिए।

* * *

आजकल निजाम हदराबाद का पेट काफी बढ़ गया है। खिसकर राष्ट्र के बँटवारे के बाद पेट फूलने लगा है। निजाम ने सोचा कि अँगरेज जा ही रहे हैं इसलिए पास-पड़ोस में जो मिले, उसे हथिया लिया जाये। इसीलिए बरार की ओर निजाम की लोलुप दृष्टि लगी हुई है। उधर बरार-केसरी श्री ब्रजलाल बियाणी निजाम को लल-कार रहे हैं। हिन्दू महासभा भी निजाम के पीछे हाथ धोकर पड़ी है। देखना है बरार निजाम के हाथ आता है या जाता है। असल बात यह है कि निजाम की हालत इस वक्त साँप और छछूँदर की हो गई है। रियासत में आबादी हिन्दुओं की है, इसलिए अगर निजाम सरकार भारतीय-विधान परिषद् में नहीं शामिल होती है तो जनता उलटा चलती है और अगर निजाम साहब पाकिस्तानी विधान-परिषद् में नहीं शामिल होते तो भी यह बेवफाई है, क्योंकि रियासत के सर्वेसर्वा मुसलमान हैं। अपने राम को इसलिए देखना है कि ऊँट किस करवट बैठता है? है मामला पेंचदार।

* * *

इसी तरह का हाल है जनाब मियाँ नवाब भूपाल साहब बहादुर का। नवाब भूपाल ने उछल-कूद तो इतनी मचाई कि लंदन तक जा पहुँचे और न जाने क्या कुलाबे भिड़ाये गये लेकिन अंत में हवा खिसक गई। लार्ड लुई माउंटबेटेन ने राजाओं को इकट्ठा करके उन्हें उप-देश क्या दिया उनके बढ़ते हुए अरमानों पर पानी फेर दिया। इस वक्त चाहे निजाम हों, चाहे भूपाल हों या जनाग सर सी० पी० रामस्वामी अय्यर हों, सबके दिमाग ठिकाने लग रहे हैं। दो-चार दिन में वह अपना फैसला देते ही नजर आते हैं। क्योंकि अब तो अँगरेज बोल चुका है। अँगरेज की बोली के खिलाफ बगावत हुई और उनकी गर्दन नापी गई।

* * *

मुसलमान नेता तो इस वक्त बड़े ऊँचे पैमाने पर बातें कर रहे हैं लेकिन लीगी जनता अपनी धाँधली से बाज नहीं आ रही है। पूर्वी बंगाल के अल्प-संख्यक समुदाय के लोग भय और आशंका से अपना घर-बार छोड़कर पश्चिमी बंगाल या कलकत्ता की ओर भागे आ रहे हैं। क्योंकि लीगी जनता कहती है कि १५ अगस्त के बाद तो पाकिस्तान अपनी असलियत पर आ जायेगा। वहाँ की जर-जोरू-जमीन सभी कुछ लीगी मुसलमानों की हो जायगी। अपने राम की समझ में नहीं आता कि मिस्टर जिन्ना ने पिछले दिनों आश्वासन दिया था 'पाकिस्तान में अल्पसंख्यक से उचित व्यवहार होगा।' मिस्टर जिन्ना ने जो कुछ कहा है, पता नहीं क्रियात्मक रूप से उसका कहाँ तक पालन होगा? क्योंकि कराँची की जो खबरें आ रही हैं, उससे जान पड़ता है कि पाकिस्तानी प्रान्तों में अल्पसंख्यकों की बड़ी दुर्दशा होगी। देखिए न पूर्वी बंगाल में। ढाका में लड़कों की पढ़ाई-लिखाई ताक पर रख दी गई है। स्कूलों तथा होस्टलों पर कब्जा कर लिया गया है, क्योंकि वहाँ पाकिस्तानी सरकार कायम करनी है। १५ अगस्त के बाद असलियत का पता चलेगा, देर ही कितनी है?

झण्डा-गान—

रचयिता, श्री सुधीन्द्र एम० ए०

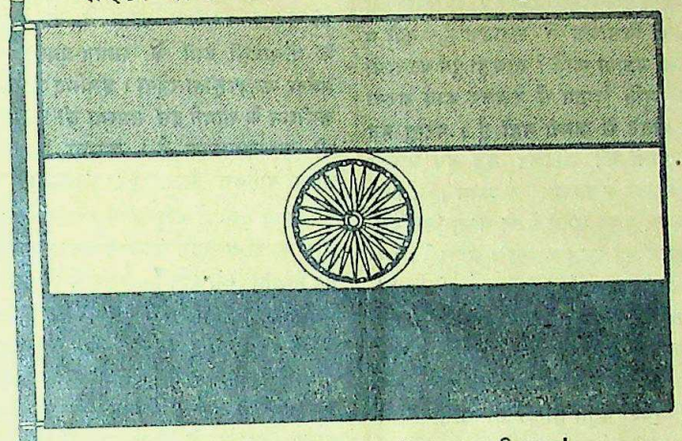

अमर अखण्ड देश भारत का तू हो एक निशान!
फहर फहर ओ तरल तिरंगे! वीरों के बलिदान!!
पूरब पच्छिम में तू फहरे—अटल हिमालय पर तू लहरे,
तेरे आगे शीश झुकाता सारा हिन्दुस्तान ! फहर फहर..
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध पारसी हैं सब भाई?
धर्म, कौम, वर्गों के टुकड़े हैं तुझ पर कुरबान ! फहर फहर..
तू प्रतीक है मानवता का, पीड़ित जन की तुही पताका,
'सबका उदय—सभी की समता !'—यही हमारा गान । फहर फहर..
तू आजादी की अगवानी, शान्ति-न्याय की अमर निशानी।
तुझमें पावें अपनी आशा धरती के इन्सान ! फहर फहर..

[illegible] में राष्ट्रीय झंडे की स्वीकृति [illegible] प्रस्तावक पंडित नेहरू।

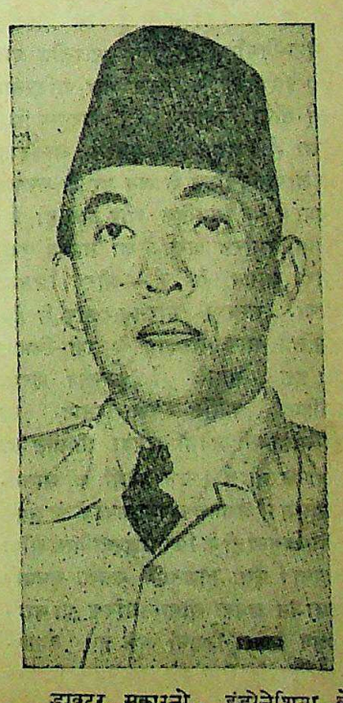

डाक्टर सुकारनो, इंडोनेशिया के प्रजातंत्रवादी नेता जिन्होंने डच-साम्राज्य-वादियों को युद्ध के लिये ललकारा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

दो राष्ट्रों की सीमाओं का निर्णय

बंगाल और पंजाब के विभाजन से जहाँ एक ओर प्रसन्नता थी वहाँ आज दूसरी ओर की सीमा निर्धारित करने में महान् कठिनाई हो रही है। सीमा निर्धारित करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने कमीशन नियुक्त कर दिया है। कमीशन ने बंगाल में बटवारे का कार्य भी शुरू कर दिया है। बंगाल में एक ओर कांग्रेस के प्रतिनिधि और दूसरी ओर मुस्लिम लीग के प्रतिनिधि पैरवी कर रहे हैं। पूर्वी और पश्चिमी पंजाब की सीमा निर्धारित करने के सम्बन्ध में लीगी नेताओं के जो वक्तव्य प्रकाशित हुए हैं उनमें स्पष्ट रूप से कहा गया है कि दोनों प्रान्तों की सीमा सतलज नदी होनी चाहिए। सच पूछा जाय तो दोनों राष्ट्रों के प्रांतीय बँटवारे का कार्य सरल नहीं है। मान लिया जाय कि पूर्वी बंगाल के किसी जिले की दो तहसीलें, जो पश्चिमी जिले की सीमा से मिली हों और जिनमें पश्चिमी बंगाल के हिन्दुओं की जनसंख्या अधिक हो तो क्या उसे पश्चिमी बंगाल में रहना चाहिए? इसके सम्बन्ध में कमीशन का क्या रुख होगा? इसी प्रकार हिन्दू-प्रधान देशों के सीमावर्ती जिलों में मुस्लिम-प्रधान जनसंख्यावाले तहसीलों को कहाँ रखना चाहिए? इन समस्याओं से सीमा-निर्धारण में कितनी कठिनाई पैदा हो सकती है। इस समस्या को किस प्रकार हल किया जा सकता है? इस सम्बन्ध में जल्दबाजी करना अथवा किसी विशेष संस्था की राय मान लेना ही लाभप्रद न होगा। अतः इस पर गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

प्रान्तों की सीमा-निर्धारण करने की समस्या स्थानीय प्रश्न नहीं है। इस समस्या के आधारभूत सिद्धान्तों पर दृष्टि डालने से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रान्तीय सीमा-निर्धारण का प्रश्न भारतीय प्रश्न है। इसकी तह में भारत और पाकिस्तान की सीमा निर्धारित करने कारहस्य छिपा हुआ है। अछूत नेता डाक्टर अम्बेदकर ने सीमा-निर्धारण के प्रश्न पर जो वक्तव्य दिया है वह सामयिक और ठीक ही है। सीमा-निर्धारण करने का तात्पर्य रक्षा और शासन से है,—और उसका सीधा सम्बन्ध भारत-सरकार से है। इसलिये भारत-सरकार के रक्षा-विभाग को इस मामले में हस्तक्षेप करना चाहिए, क्योंकि रक्षा-विभाग को ही सीमावर्ती प्रदेशों अथवा सीमान्त की रक्षा करनी है। उन प्रदेशों की शासन-व्यवस्था में अशान्त अथवा उपद्रव के समय रक्षा-विभाग ही के सिर उत्तरदायित्व सौंपा जायगा। ऐसी हालत में उसका चुपचाप विभाजन अथवा सीमानिर्धारण का कार्य-कलाप देखना कितनी भूल है। बंगाल-विभाजन के लिए जो कमीशन नियुक्त हुआ है उसके सामने जो जो गवाहियाँ पेश हो रही हैं उनमें जिम्मेदारी कांग्रेस और लीग के सिर है। कांग्रेस-योजना के अनुसार पश्चिमी बंगाल में ४०,१३७ वर्गमील क्षेत्र और २,८०,३२,००० जनसंख्या है; परन्तु हिन्दू-सभा तथा अन्य गैरमुस्लिम-संस्थाओं की योजना में, जो कि सीमा-विभाजन में सहायक हो सकती हैं, ४१,४०९ वर्गमील क्षेत्र और २९,१३,४०० जनसंख्या है। इस प्रकार दोनों योजनाओं से जो विभाजन में सहायक हैं, क्यों न लाभ उठाया जाये? साथ ही पूर्व घटनाओं की स्मृति दिमाग़ में रखकर कार्य करना भी खतरे से खाली नहीं है। परन्तु इन चिन्ताओं को छोड़कर जब हम डाक्टर अम्बेदकर के वक्तव्य पर ध्यान देते हैं और उस पर मनन करते हैं तो सीमा-निर्धारण-समस्या का पहलू ही बदल जाता है। इसलिये सीमा-निर्धारण के समय हमें निम्नांकित बातों का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है।

(१) पंजाब और बंगाल का विभाजन अथवा दोनों प्रान्तों की सीमा निर्धारित करना स्थानीय विषय नहीं है। (२) एक प्रान्त के बहुमत आबादीवाले क्षेत्र को दूसरे प्रान्त में घसीटने का अर्थ सीमा को विकृत करना और समस्या को जटिल बनाना है। (३) यदि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों देश सार्वभौम सत्तावाले देश न होते तो सीमा को जनसंख्या के बाहुल्य पर विभाजित करना बुरा नहीं था; परन्तु चूँकि दोनों देश सार्वभौम सत्ता के अधिकारी हैं; अतः सीमा-निर्धारण का निश्चय सोच-समझकर करना है। (४) पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की सरकारें दो पार्टियों के रूप में सीमा-कमीशन के सामने पेश होनी चाहिएँ, क्योंकि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की सीमाएँ ही दोनों की सीमा होंगी। अतः भारत-सरकार के रक्षा-विभाग को चाहिए कि वह सीमा-कमीशन को प्रेरित करे, कि सीमा निर्धारण में सेना के अफसरों को अपना सलाहकार बनाये। जैसा कि दो देशों के झगड़ों के निबटारे में सर्वदा से होता आया है। (५) इस मामले में भारत-सरकार के रक्षा-विभाग को बहुत पहले पड़ना चाहिए था। अब भी उसका कर्त्तव्य है कि वह सीमा की रक्षा और शासन-प्रबन्ध की दृष्टि से उसमें शीघ्र ही हाथ बटायें। (६) दो देशों की सीमा निर्धारित करने में प्राकृतिक तत्थ्यों का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है। उदाहरणार्थ—नदियाँ अथवा पर्वत-मालायें। यह इसलिए कि बिना प्राकृतिक सीमा के दो देशों के सीमावर्ती देशों के शासन-प्रबन्ध में सर्वदा झगड़ा होता रहेगा। इसलिए सीमा-कमीशन के सामने इस समस्या को रखना भी अत्यन्तावश्यक है। अन्यथा उनका सारा परिश्रम बेकार हो जायगा।

ऐसी दशा में यदि सीमा-निर्धारण की ओर भारत-सरकार का ध्यान न गया तो वह सिद्धांत जिसे आगे रखकर कांग्रेस अथवा शान्तिप्रिय देशवासियों ने देश का बटवारा कबूल कर लिया है व्यर्थ हो जायगा और आये दिन दोनों देशों के सीमावर्ती प्रदेश पारस्परिक कलह से शिकार होते रहेंगे। शासन-व्यवस्था के लिए करोड़ों रुपये व्यर्थ में खर्च होंगे फिर भी शान्ति स्थापित होने में शंका ही बनी रहेगी।

* * *

गीत

लेखक, श्री मोती, बी० ए०

बादल,—
क्यों न प्यास बुझाए।
मैं प्यासा हूँ दिल में मेरे रस की आग लगी है
प्रीत लालसा अँगड़ाई ले मन में आज जगी है
ओ रे बादल, क्यों न हृदय में कुछ रस बूँद गिराए!
बादल,—
क्यों न प्यास बुझाए!
मैं गाता हूँ मेरे स्वर में गीत सधे हैं तेरे
जान न पाता किस बन्धन में प्राण बँधे हैं मेरे
ओ रे बादल, क्यों न विकल हो प्रिय के गीत सुनाए
बादल,—
क्यों न प्यास बुझाए!
प्यासी आँखों के सागर में तिरता रूप तुम्हारा
किस युग से तुझमें डूबा हूँ, मेरा कौन सहारा
ओ रे बादल, रूप प्रिया का क्षण भर क्यों न दिखाए
बादल,—
क्यों न प्यास बुझाए!

नया भारतीय विधान

भारतीय विधान-परिषद् अपना काम तेजी से कर रही है। जान पड़ता है कि स्वतंत्र भारत का विधान अक्टूबर तक पूर्ण हो जायगा। इसी दृष्टि से विधान-परिषद् की कार्रवाई आगे बढ़ रही है। यह सत्य है कि भारतवर्ष ब्रिटेन के साथ औपनिवेशिक स्वराज्य-प्राप्त देशों की तरह नहीं रह सकता। ब्रिटेन की ओर से हर प्रकार के आश्वासन और भारत की भलाई की घोषणाएँ हो रही हैं पर हमारी समझ में यह उचित नहीं जान पड़ता कि एक विश्व-कल्याणकारी और शान्तिप्रिय देश दूसरे साम्राज्यवादी का साझीदार बना रहे। हाँ, भारतवर्ष ब्रिटेन के साथ हार्दिक मैत्री चाहता है और चाहता है कि वह मैत्री विश्व-कल्याण की दृष्टि से टिकाऊ

भारत के स्वतंत्र विधान के भारतीय-संघ का प्रधान राष्ट्र कहलायेगा। राष्ट्रपति, संघ राष्ट्रीय धारा-सभाओं, सारी इ की व्यवस्थापिका सभाओं के द्वारा चुना जायगा। के चुनाव में यद्यपि अब मतभेद हो सकता, परन्तु यदि राष्ट्रपति मताधिकार के आधार पर सार्व चुनाव द्वारा चुना जाये तो अधिक हो। क्योंकि रियासतों और जमींदारोंवाली कौंसिलों में सर्वसा के अनुपात का बहुत कम प्रतिनि रहता है। राष्ट्रपति अपने मंत्रिमंड राय से शासन-कार्य चलायेगा। मंत्रि ही जनता का सच्चा प्रतीक है। मंत्रिमंडल और राष्ट्रपति में कुछ भेद हो तो ऐसी दशा में क्या होगा? हमारी समझ में प्रजातं अधिकार मंत्रिमंडल के हाथों रहे तो है। भारतीय विधान-विशारदों ने रीका, ब्रिटेन और स्विटजरलैण्ड के साथ कनाडा और आस्ट्रेलिया के प्र का आश्रय लिया है और यह अच्छा परन्तु सर्वसाधारण को भारतीय रा से हजारों कोस दूर रक्खा ग आवश्यकता पड़ने पर आर्डिनेन्स की शक्ति राष्ट्रपति के हाथों में कर दी गई है। आर्डिनेन्स वह की गम्भीरता के समय अपने मंडल की राय से बनायेगा। मामलों में हमारा कोई ऐसा बड़ा भेद नहीं है।

प्रान्तीय विधान के सम्बन्ध में एक बात विशेष रूप से खटक रही प्रान्तीय गवर्नरों को भी विशेष कार दिये गये हैं। यद्यपि प्रा गवर्नर, बालिगमताधिकार के आधार सर्वसाधारण चुनाव रा चुना मंत्रिमंडल भी जनता द्वारा चुना शासक होगा। ऐसी स्थिति में दो श जब कभी अपनी सत्ता आजमाइश की स्पर्धा करने लगेंगी तो शा भी दोहरी नीति बरती जायगी। प्रा विधान कमेटी ने गवर्नर को अधिकार भी दिये हैं। परन्तु अधिकार ठीक नहीं, क्योंकि मं भी जनता द्वारा चुना हुआ प्रति मंडल होगा। संयुक्तराज्य अ में गवर्नर जनता द्वारा चुना हुआ होता है परन्तु वहाँ ऐसा विधान गया है कि जिससे शासन-प्रबंध में गड़बड़ी न पैदा हो। प्रान्तीय विधा दो प्रकार के विधानों के आदर्श मुठभेड़ है—अमरीकन और ब्रि सदस्यों के वक्तव्यों और प्रस्ता प्रगट होता है कि प्रान्तीय विधान १९३५ के इंडिया ऐक्ट से संयुक्त सच तो यह है कि इंडिया ऐक्ट के सार बना हुआ गवर्नर ब्रिटिश का एकमात्र प्रतिनिधि बनाया ग जिससे समय-समय पर मंत्रिमंड मतभेद ही रहता था, फिर ऐसे की नकल क्या आज भी आवश्यक आज जब कि जनतंत्रात्मक मंत्रिमंड रहे हैं, उस स्थिति में यह आवश्यक

शेष पृष्ठ १६ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

राष्ट्र-निर्माण में उनके महान् बलिदान की अमर कथा

लेखक, श्री रामचन्द्र वासुदेव भावे

स्वर्गीय लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की २७वीं निधन-तिथि आगामी १ अगस्त को पड़ी है। इस अवसर पर समस्त राष्ट्र ने स्वर्गीय आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि भेंट की है। इस लेख में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए यह बतलाया गया है कि राष्ट्रनिर्माण में लोकमान्य का क्या हाथ रहा है। लेख विचारपूर्ण तथा पठनीय है।

स्वर्गीय लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक राजनीति के रणक्षेत्र में उतरे उस युग में राजनीति के रणक्षेत्र में उतरे उस युग में राजनीति के रणक्षेत्र में उतरे उस युग में

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्तप्रांत में ग्राम-सुधार

कांग्रेस सरकार की ग्राम-सुधार योजना क्या है ?

लेखक, पंडित केशवदेव मालवीय एम० एल० ए०
(पार्लामेंटरी सेक्रेटरी, उन्नति-विभाग, यू० पी० सरकार)

[१]

पंडित केशवदेव मालवीय एम० एल० ए०।

गाँव ही हमारे राष्ट्र की रीढ़ है। गाँवों की उन्नति से ही शहरों की उन्नति संभव है। इसी दृष्टि से संयुक्तप्रांतीय सरकार ने नई युधार-योजना के अनुसार गाँवों के संगठन तथा उनकी उन्नति में योग देने का संकल्प किया है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने सरकारी योजना का स्पष्टीकरण किया है और उन्नति के उपायों का उल्लेख किया है। लेख सामयिक, ज्ञातव्य और पठनीय है।

हमारे सूबे की प्रायः ८० प्रतिशत जनता छोटे-छोटे गाँवों में रहती है और खेती-बारी करती है। जाहिर है प्रान्त की उन्नति-सम्बन्धी योजनाओं पर विचार करते समय सबसे पहले ध्यान देहातों पर ही जाना चाहिए। कांग्रेस-सरकार के पदासीन होने से पहले जो सरकारें थीं, उन्होंने नगरों के सुधार की ओर विशेष ध्यान दिया। नगरों में कल-कारखाने चालू हुए, स्कूल और कालेज खोले गये, म्युनिसिपैलिटियाँ टाऊन एरिया कायम हुई और जहाँ-तहाँ इम्प्रूवमेंट ट्रस्टों की स्थापना हुई। नागरिकों को अधिकाधिक नागरिक अधिकार दिये गये जिससे उनमें राजनीतिक चेतना भी अपेक्षाकृत अधिक आई। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि नगरों में सुधार की आवश्यकता है ही नहीं। हाँ इतना अवश्य कह सकते हैं कि नगरों की हालत देहातों से अच्छी है और अब देहातों की ओर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। नगरों में रहनेवाली बीस प्रतिशत जनता का सुधार हुआ तो क्या हुआ, आवश्यकता है प्रान्त का व्यापक रूप से सुधार करने की। ८० प्रतिशत जनता क्योंकर पिछड़ी रहे। फिर नगरों का भी सुधार पूर्णरूपेण असम्भव है, यदि गाँवों के सुधार की ओर ध्यान न दिया गया।

"बैक टू विलेजेज" कांग्रेस की पुरानी नीति रही है। कांग्रेस के चुनाव-सम्बन्धी घोषणा-पत्र में कहा गया है..."भूमि और उद्योग-धन्धों के विकास के सम्बन्ध में नगर और देहात के आर्थिक साधनों का समुचित एकीकरण और सन्तुलन होना चाहिए। अब तक देहातों का आर्थिक ह्रास हुआ है और नगरों की उन्नति होती गई है। इस विषमता का अन्त होना चाहिए और ऐसा प्रयत्न होना चाहिए कि नागरिकों और देहातियों का जीवन-मान समान हो जाय। कतिपय प्रान्तों में उद्योग-धन्धों का केन्द्रीकरण न होना चाहिए। केन्द्रीकरण रोकने से प्रत्येक प्रान्त के आर्थिक स्तर में संतुलन होगा। जहाँ तक सम्भव हो, उद्योग-धन्धों का विकेन्द्रीकरण होना चाहिए, हाँ इस बात का ध्यान रखना होगा कि उत्पादन में कोई कमी न आने पावे।

नगरों और उद्योग-धन्धों का विकास तथा जनता की शारीरिक और आर्थिक उन्नति के लिए इस बात की आवश्यकता है कि हम भारत की बड़ी बड़ी नदियों की निहित शक्ति को केन्द्रित कर उसका सदुपयोग करें।

उपर्युक्त घोषणा से नागरिक और देहाती जनता दोनों के आर्थिक विकास की कुछ रूप-रेखा मिल जाती है। युक्त-प्रान्त की सरकार इन्हीं सूत्रों को लेकर ग्रामीण जनता के आर्थिक, शारीरिक, मानसिक और औद्योगिक विकास के लिए जो योजनाएँ चला रही है उनका इस लेख-माला में उल्लेख किया जायगा।

जिला डेवलपमेंट एसोसियेशन

देहातों में उन्नति-विभागों का काम पहले भी था, किन्तु यद्यपि कुछ माने में उनका उद्देश्य समान था। उनका कार्य-क्रम अलग-अलग था। कृषि, ग्राम-सुधार, कोआपरेटिव, गुड़-विभाग, स्वास्थ्य-विभाग आदि के कार्यकर्ता जहाँ-तहाँ अपना काम स्वतंत्र रूप से किया करते थे। जाहिर है अलग अलग काम करने से कहीं अच्छा एक में मिलकर काम करना है। सरकार ने निश्चय किया है कि इन सब मुहकमों की एक सूत्र में बाँध दिया जाय। इसी उद्देश्य से हर जिले में एक जिला डेवलपमेंट एसोसिएशन स्थापित किया गया। इस एसोसिएशन के सदस्य होंगे जिले के एग्रिकल्चर अफसर, कोआपरेटिव अफसर, पशु-रक्षा-विभाग के प्रधान अफसर, शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन, हैल्थ अफसर, जिला मजिस्ट्रेट या उनका नामजद अफसर तथा सारे एम० एल० ए० और एम० एल० सी०। एसोसिएशन के प्रधान गैर-सरकारी आदमी होंगे। जिलों के लिए प्रधानों की नामजदगी हो चुकी है और प्रायः ऐसे ही लोग प्रधान रक्खे गये हैं, जिन्होंने ग्राम-सुधार का काफी काम किया है अथवा जिन्हें ग्राम-सुधार का काम करने की बड़ी लगन है। इस सम्बन्ध में यह भी ध्यान रखने योग्य है कि ग्राम-सुधार-विषयक प्रत्येक योजना के सफल संचालन के लिए गैर-सरकारी सदस्यों की सहायता और सहयोग की बड़ी आवश्यकता है और सरकार चाहती है कि जिन लोगों को ग्राम-सुधार जैसे महत्त्वपूर्ण विषय से अनुराग है वे आगे आवें और इस पुण्य-काम में वे सरकार का हाथ बँटावें।

प्रान्त में एक डेवलपमेन्ट कौंसिल बनी है जिसमें राष्ट्र-निर्माण से संबद्ध समस्त विभागों के मंत्री और डेवलपमेन्ट-विभाग के पार्लियामेन्टरी सेक्रेटरी रहेंगे। एक प्रान्तीय डेवलपमेंन्ट बोर्ड कौंसिल की सहायता के लिए बनेगा जिसमें प्रधान मंत्री, उन्नति-विभाग के मंत्री, उन्नति-विभाग के पार्लियामेन्टरी सेक्रेटरी, एसेम्बली द्वारा निर्वाचित ८ सदस्य, कौंसिल द्वारा निर्वाचित ३ सदस्य, सरकार द्वारा नामजद ७ गैर-सरकारी सदस्य और कृषि, जंगल, गन्ना, कोआपरेटिव, स्वास्थ्य, पशु-रक्षा, उद्योग, शिक्षा और इंजीनियरिंग महकमे के प्रधान अफसर रहेंगे। प्रान्तीय डेवलपमेन्ट बोर्ड बड़े-बड़े उद्योग-धन्धों के संचालन पर भी नियंत्रण रक्खेगा। सरकार का उद्देश्य है कि घरेलू उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहन दिया जाय ताकि देहातियों की आर्थिक स्थिति में अधिकाधिक सुधार हो। किन्तु सरकार यह भी चाहती है कि बड़े बड़े उद्योग-धन्धों को पूर्णतः विकसित किया जाय ताकि साधारण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विदेशों का आश्रित न रहे।

सरकार ने एक प्लानिंग ऐडवाइजर, एक इंडस्ट्रियल ऐडवाइजर, एक [illegible] लोजिकल ऐडवाइजर और एक [illegible] रियल रिसोर्सेज अफसर की नियुक्ति की है। ये अफसर अपने विभागों के विशेषज्ञ होंगे। इन्हें भी प्रान्तीय डेवलपमेंट बोर्ड में रक्खा जायगा।

प्रारम्भिक कार्य-प्रणाली

किन्तु सारे प्रान्त की कायापलट हम एक दिन में नहीं कर सकते। इसलिए यह निश्चय किया गया है कि पहले योजना चले तो प्रान्त के सारे जिलों में किन्तु सारे गाँवों में अभी यह चालू की जाय। हमारे प्रान्त में लगभग १५, १६ लाख गाँव हैं। लगभग १५, १६ हजार गाँवों को पहले वर्ष लिया जाय फिर इतने ही गाँवों को दूसरे वर्ष इस प्रकार प्रायः ६ वर्ष में प्रान्त भर सुधार की ये योजनाएँ लागू हो मोटे तौर पर यह निश्चय किया गया कि सरकारी बीज-गोदामों के चारों स्थित १४, १५ गाँवों को ही बनाया जाय। बीज-गोदामों की लगभग साढ़े सात सौ है। कुछ नये गोदाम इसी वर्ष खोले जा रहे हैं इस प्रकार उनकी संख्या लगभग कर दी जायगी।

सहकारी समितियाँ

यह सही है कि कृषि और उद्योग-धन्धों के विकास में देहातों उन्नति हो सकती है। किन्तु देहाती जनता को कई ऐसी चीजों की जरूरत है जो बाहर से मँगानी पड़ती हैं इससे अधिक जरूरत है उनके उत्पादन की खपत के लिए व्यवस्था करने की। देहातों में अभी शिक्षा का प्रचार कम है शहरातियों की चालें अभी उन्होंने नहीं सीखी हैं, बनिया जब उनका माल खरीदता है तो एक सेर के बदले सवा सेर तौलता है; और जब किसान उनके यहाँ कुछ खरीदने जाता है तब वह एक सेर के बदले तीन पाव ही देता है।

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

कानपुर के एग्रिकल्चर कालेज का एक दृश्य जहाँ खेती-सम्बन्धी वैज्ञानिक शिक्षा दी जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा अनुकरणीय प्रांतीय विधान

स्वतन्त्र हिन्दुस्तान की वैधानिक रूप-रेखा का महत्व

लेखक, माननीय श्री बी० जी० खेर, प्रधान मंत्री, बम्बई

भारतीय विधान-परिषद् स्वतन्त्र हिन्दुस्तान का नया विधान बनाने में अग्रसर है। पिछले दिनों परिषद् ने प्रान्तों के लिये भावी विधान भी स्वीकृत किया है। इस लेख में माननीय श्री खेर ने उसी प्रान्तीय विधान की रूप-रेखा प्रस्तुत की है, जिसका भविष्य में कानूनी रूप दिया जानेवाला है। लेख सामयिक और जानकारी से पूर्ण है।

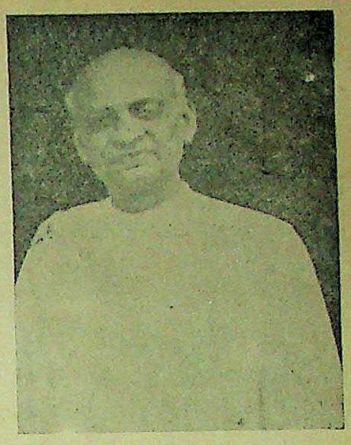

भारत-सरकार के गृह-मन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल।

हिन्दुस्तान ने अब स्वतंत्रता तो [illegible] है, पर यह उस तरह से [illegible] हम चाहते थे। हम ऐसे [illegible] रहे हैं जो घटनाओं और [illegible] परिपूर्ण है। हिन्दुस्तान की [illegible] जो कानून पास हुआ है [illegible] के लिए पूर्ण औपनिवेशिक [illegible] की कल्पना की गई है। फिल- [illegible] आफ इंडिया ऐक्ट की [illegible] से सम्बन्ध रखनेवाली [illegible] व्यवस्थाएँ चालू रहेंगी। [illegible]-परिषद् स्वतंत्र भारत के [illegible] हिस्से अलग हो गये [illegible] के लिए वह एक विधान [illegible] मेरी इस राय से सहमत [illegible] ऐसे दृढ़ केन्द्र की आव- [illegible] विशृंखल होने की समस्त [illegible] नियंत्रण रख सके।

[illegible] बनाने का काम हमेशा ही [illegible] करता है पर हमारे जैसे [illegible] और वर्तमान समय में विधान [illegible] खास तौर से मुश्किल काम [illegible] काम में मदद देने के लिए विधान- [illegible] कई समितियाँ बना रखी हैं। [illegible] समितियों में एक प्रान्तीय विधान [illegible] है। जिसका सदस्य होने का [illegible] प्राप्त है। यह समिति इसलिए [illegible] गई थी कि भारतीय संघ [illegible] के लिए वह एक अनुकरणीय [illegible] तैयार करें।

[illegible] समिति में २५ सदस्य हैं और [illegible] हैं सरदार वल्लभभाई पटेल। [illegible] उन्हीं के पथ-प्रदर्शन और [illegible] एवं दृढ़तापूर्ण कार्य-संचालन का [illegible] कि समिति इतनी जल्दी अपनी [illegible] कर सकी। जून के प्रारम्भ [illegible] अपना काम शुरू किया था [illegible] साहब ने गत मंगलवार को [illegible] विधान-परिषद् के सामने [illegible] दी।

[illegible] के इंडिया ऐक्ट में जो अभी [illegible] है एक ऐसे विधान की व्यवस्था [illegible] जिससे प्रान्तीय सरकारों को बहुत [illegible] शासन स्वातंत्र्य प्राप्त था पर [illegible] करनेवाली व्यवस्था यह थी कि [illegible] सरकार अँगरेज गवर्नरों को दिये [illegible] थे इन मामलों में केवल गवर्नर [illegible] या उसके जरिये भारत-मंत्री [illegible] के ही अधीन थे। व्यावहारिक [illegible] इन विशेषाधिकारों का उपयोग [illegible] कुछ गवर्नरों के निजी विवेक पर [illegible] करता था। उन गवर्नरों के साथ जिनसे मिलकर मुझे काम करना पड़ा था--ऐसे पाँच गवर्नर थे--मेरे सम्बन्ध में बड़े ही अच्छे थे। परन्तु यह बात बहुत ही आपत्तिजनक थी कि जनता के सम्मानित प्रतिनिधियों को संदेह की दृष्टि से देखा जाय कि उन पर एक विदेशी अधिकारी का नियंत्रण रहे। इसके अलावा साम्प्रदायिक स्वार्थों को, कबाइली हितों को, यूरोपियन हितों को, सिविल सर्विसवालों के हितों तथा रियासती हितों को तो प्रधानता दी जाती है और देशवासियों के हितों को गौण समझा जाता था। उस विधान में यही सबसे बड़ा दोष था और हम सबों ने स्वयं यह देखा है कि कतिपय प्रान्तों में इसने सब कुछ सत्यानाश कर डाला, सिविल सर्विसवाले कर्मचारी केवल गवर्नर को ही अपने हितों का रक्षक समझते थे। १९३९ में मंत्रिमंडल के पदत्याग के बाद १९३७ के मंत्रिमंडल के प्रति निष्ठा रखने के कारण बहुतों को अनेक कष्ट भोगने पड़े थे। परमात्मा को धन्यवाद है कि अब इसकी पुनरावृत्ति न हो सकेगी।

बम्बई के प्रधान मन्त्री माननीय श्री बी० जी० खेर।

प्रान्तीय विधान-समिति ने ऐसे वास्तविक लोकतांत्रिक विधान की वांछनीयता को सदा ध्यान में रखा है जिससे एक स्थायी और कार्यक्षम शासन की स्थापना सुनिश्चित हो जाय। समिति ने प्रारम्भ में ही यह निश्चय किया कि भावी शासन-पद्धति संघीय ढंग की हो इससे यह होगा कि प्रान्त अपनी सारी शक्ति लगावेंगे, अपनी स्थानीय समस्यायों को सुलझाने में जब कि केन्द्रीय सरकार खास तौर पर उन्हीं मामलों पर सोच-विचार करेगी जिनका सम्बन्ध सारे हिन्दुस्तान से है। उदाहरणार्थ रक्षा, वैदेशिक मामले, मुद्रा और विदेशी व्यापार इत्यादि।

साधारणतया प्रत्येक विधान में इस बात की व्यवस्था रखी जाती है कि शासन-प्रबंध-सम्बन्धी, कानून-निर्माण-सम्बन्धी और न्याय-सम्बन्धी राजकीय-कर्त्तव्यों का पूर्णतया पालन किया जा सके। संक्षेप में मैं यहाँ उन व्यवस्थाओं का उल्लेख करूँगा जिन्हें प्रान्तीय विधान-समिति ने उपरोक्त कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में स्वीकार किये हैं।

ऐसा प्रस्ताव किया गया है कि व्यवस्थापिका एक सभा वाली हो जिसमें वयस्क मताधिकार के आधार पर एक लाख वोटरों पर एक सदस्य चुना जाय पर शर्त यह है कि सभासदों की कम से कम संख्या ६० हो और ज्यादा से ज्यादा ३००। शासन-प्रबंधकारिणी में वयस्क मताधिकार के आधार पर निर्वाचित एक गवर्नर तथा प्रधान मंत्री व अन्य मंत्रियों का एक मंत्रिमंडल होगा। मंत्रियों की नियुक्ति प्रधान मंत्री की सिफारिश पर की जायगी। रियासत का प्रधान शासनकर्त्ता गवर्नर होगा और हुकूमत की सारी कार्यवाहियों के सम्बन्ध में यह समझा जायगा कि वह गवर्नर की आज्ञा से हुई है। परन्तु गवर्नर को सदा मंत्रिमंडल की सलाह से काम करना होगा।

दुर्भाग्य के इस संकट की उपेक्षा नहीं की जा सकती कि हमारे जैसे देश में राजनैतिक दलबंदी धारा-सभा में कभी-कभी अनुचित महत्त्व धारण कर सकती है, देश के मुख्य हितों की उपेक्षा की जा सकती है और ऐसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है जो प्रान्त की रक्षा और शान्ति के लिए घातक सिद्ध हो। गवर्नर धारा-सभा की राजनैतिक दलबंदी के दबाव के अधीन नहीं होगा। यह स्वयं ऐसा व्यक्ति होगा जिसे जनता का विश्वास प्राप्त होगा। ऐसे गवर्नर का प्रभाव और उसके अधिकार इस तरह के होंगे कि उनसे इन आशंकाओं का निराकरण हो सकेगा। जब कभी गवर्नर ऐसी आकस्मिक स्थितियों के निराकरण के लिए धारा-सभा का समर्थन न पायेगा तो उसे यह अधिकार होना चाहिए कि वह संघ के अध्यक्ष को इसकी सूचना दे दे। संघ के अध्यक्ष को ऐसे अधिकार दिये जाने चाहिए जिससे वह ऐसी परिस्थितियों को सँभाल सके।

प्रान्तीय विधान-सिमित ने दूसरी सभा के रखे जाने के गुण-दोषों पर पूरी तरह से विचार किया। अपने कार्यक्षेत्र में उच्च स्थान पाये हुए तथा विशेष हितों का प्रतिनिधित्व करनेवाले व्यक्ति, हो सकता है कि, निर्वाचन-सम्बन्धी कठिनाइयों और निर्वाचन-व्यय के कारण चुनाव से दूर ही रहें। ऊपरवाली सभा में पुनर्विचार का काम होगा और उसके द्वारा राज्य ऐसे व्यक्तियों के परिपक्व अनुभवों से लाभ उठा सकेगा। यह निश्चय किया गया कि जो भी प्रान्त चाहे आयरलैण्ड के ढंग पर दूसरी सभा चुन सकता है।

समिति ने न्याय-विभाग के सम्बन्ध में यह सिफारिश की है कि संघ का अध्यक्ष सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश प्रान्त के गवर्नर तथा प्रान्त के हाईकोर्ट के प्रधान न्यायाधीश की सलाह से हाईकोर्ट के न्यायाधीशों की नियुक्ति करेंगे इससे यह होगा कि हाईकोर्ट के न्यायाधीशों की नियुक्ति राजनतिक या दलबंदी के दबाव से स्वतंत्र रहेगी। इस देश में ब्रिटिश राज्य द्वारा स्थापित संस्थाओं में से एक न्याय-विभाग है जो साधारणतया निष्पक्ष और न्याय-युक्त हुआ करता है। निष्पक्ष न्याय दृढ़ शासन का आधार है और इस परम्परा का पोषण करना हमारा कर्त्तव्य होना चाहिए।

विधान-परिषद् द्वारा प्रान्तीय विधान के सिद्धान्तों और अल्पसंख्यकों की सलाहकार समिति की सिफारिश के स्वीकृत हो जाने पर एक बिल का मसविदा तैयार किया जायगा। मुझे आशा है कि अब अल्पसंख्यकों के अधिकार और कर्त्तव्य-सम्बन्धी समस्या का संतोषजनक समाधान निकल आयगा इन समस्याओं को अँगरेजों ने पैदा किया था और इसके जरिये इन्होंने देश का शोषण किया था। इस वर्ष के समाप्त होने के पहले ही विधान-परिषद् द्वारा बिल का मसविदा तैयार कर लिया जावेगा और मुझे आशा है कि सन् १९४८ ई० के अंत में अथवा सन् १९४९ के प्रारम्भ में वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनाव होगा, समिति ने यह सिफारिश की है कि तब तक वर्त्तमान मंत्रिमंडल और धारा-सभाओं को चालू रखा जाय।

विधान-निर्माण तथा उसके प्रारम्भिक प्रयोग से ही हमारा काम समाप्त नहीं

शेष पृष्ठ १५ पर देखिए

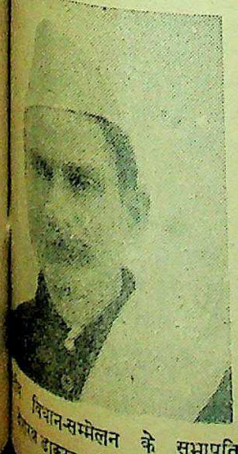

विधान-सम्मेलन के सभापति [illegible] डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर्मा का भीषण हत्याकांड

प्रधान मन्त्री जनरल आंगसान की नारकीय हत्या

लेखक, श्री मिथिलेश कांति

पिछले दिनों बर्मा के प्रधान मंत्री जनरल आंगसान तथा उनके साथियों पर नारकीय हमला किया गया जिससे उनकी मृत्यु हो गई। यह घटना संसार के हत्या-कांडों में अपनी विशेषता रखती है। इस लेख में लेखक ने इसी हत्या-कांड की चर्चा की है और जनरल आंगसान के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की है, जो पठनीय तथा सामयिक है।

संसार में अनेक व्यक्तिगत, राजनैतिक, ऐतिहासिक हत्याकांड हुए हैं, पर बर्मा का हत्याकांड उन तमाम हत्याकांडों से अपना एक अलग महत्त्व रखता है। साधारण और महत्त्वपूर्ण हत्याकांडों में यह हत्याकांड संसार की राजनीति और इतिहास में अमर रहेगा। गत १९ जुलाई बर्मा के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण तिथि है। इस दिन की एक घटना ने राजनतिक संसार को आश्चर्य में डाल दिया। संसार इसके लिए तैयार नहीं था; बर्मा इसके लिए तैयार नहीं था। बर्मा का महान् सेनानायक, राजनीतिज्ञ जनरल आंगसान और बर्मा कार्यकारिणी के सात सदस्य एक राजनतिक षड्यंत्र के जाल में फँस के दो मिनट में इहलोक लीला समाप्त कर अमर पथ के गामी हुए। संसार ने एक महान नेता खोया परन्तु बर्मा तो अनाथ ही हो गया।

सन् १९४० से बर्मा को शान्ति नहीं। बेचारे बर्मा-निवासी प्रथम तो जापानी हमलों के शिकार हुए। बर्मा जीत लिया गया अभी यह घाव भर भी न पाया था कि अँगरेजों की और फिर जापानियों की बमबारी ने बर्मा की रीढ़ ही तोड़ डाली। जिस समय बर्मा फिर से जीता गया वह अर्धमृत था। अँगरेजों ने जर्जर बर्मा को गुलाम रखना चाहा तो जनरल आंगसान ने बर्मा के कानों में स्वतंत्रता का मंत्र फूँक दिया; इस महा अग्नि ने एक देश में एक ऐसी आग लगाई; ऐसी हड़ताल कराई कि संसार के इतिहास में वह महाशक्ति और वह महान् हड़ताल अमर रहेगी। अंगरेजों के लिए राज्य करना असंभव हो गया और उन्होंने इस प्रचंड ज्वाला को सरकार बनाने के लिए निमंत्रित किया। सरकार बनी और यह महान् प्रलयकारी जनरल आंगसान प्रधान मंत्री हुए।

सरकार बन गई। एक सम्मिलित दल सरकार। परन्तु बहुमत आंगसान की पार्टी का था। यह दूसरे दल की नजरों में खटक रही थी। फोड़ा पक रहा था। जहर बन रहा था। षड्यंत्र चल रहे थे। अवसर की बाट थी और वह उचित अथवा अनुचित अवसर भी आ गया। बर्मा का भाग्य या अभाग्य।

गत महायुद्ध में टूटा हुआ बर्मा, अशस्त्र रूप में, नवीन युद्ध के लिए तैयार न था और न ब्रिटिश सरकार ही इसके लिए तैयार थी। दोनों भूखे थे और उनके बीच में था बर्मा। एक का मातृ-भूमि रूपी अधिकार और दूसरे का पूर्व शक्ति और नवीन विजय रूपी अधिकार था पर हिलने में दोनों असमर्थ थे। तब वही हुआ जो होता है। समझौते की बातचीत चलने लगी। बर्मा ने कुछ अपनी माँगें पेश कीं। आंगसान लंदन गये। कुछ माँगें पूरी हुईं और कुछ नहीं। विधान सम्मेलन, जो कि अपना स्वतंत्र विधान बनाएगा उसकी बात तय हुई; परन्तु फौरन पूर्ण स्वतंत्रता की बात पूरी नहीं हुई। अतः यू सा और बा सेन ने समझौता को नामंजूर करके कार्यकारिणी से इस्तीफा दिया और आंगसान को 'अँगरेजों की 'कठपुतली', 'देशद्रोही' आदि का दोषरोपण किया। जनरल आंगसान ने उन्हें उत्तर दिया—'मैं एक निष्पक्ष अदालत के सम्मुख खड़ा होने के लिए तैयार हूँ' 'यदि यह अदालत मुझे दोषी ठहराती है तो उसके निर्णय के अनसार मैं अपने अपराध की सजा पाने के लिए तैयार हूँ। चाहे फिर वह सजा फाँसी ही क्यों न हो। परन्तु मैं गीदड़ धमकियों से डरनेवाला नहीं।'

बर्मा के विधान-सम्मेलन ने अपने ध्येय के प्रस्ताव में ब्रिटिश राज्य-सत्ता के बाहर बर्मा को पूर्ण स्वाधीन रक्खा। अभी यह कार्य जारी था और जारी था यू सा व बा सेन का षड्यंत्र। इन दोनों की एक छोटी-सी फौज थी और उस दिन जब बर्मी कार्यकारिणी की बैठक हो रही थी तो यह अद्भुत घटना घटी। उन दो मिनटों में बर्मा के सात मंत्री शहीद होगये। बचनेवालों में से एक ने कहा 'मानो हम सब पर बिजली टूट पड़ी हो।' बैठक आरम्भ ही हुई थी कि फौजी वर्दी पहने चार मनुष्य जबरदस्ती अन्दर घुस आये और 'स्टेनगन' से दनादन गोलियाँ निकलने लगीं। क्षण भर में वह कौंसिल भवन कसाई-खाना हो गया। यू सा और उनके साथी एक गहरी लड़ाई के बाद गिरफ़्तार कर लिये गये। नई सरकार बनी और बर्मा अनाथ हो गया।

ऐसे समय में पंडित नेहरू ने एक वक्तव्य दिया जो कि बर्मा, भारत और संसार के लिए लाभदायक होगा। पंडित जी ने कहा—'बर्मा के प्रिय नेताओं की हत्या, जबकि वे स्वतंत्रता के द्वार पर पहुँच गये हैं एक शब्दों से प्रकट करने-वाली घटना नहीं है।' हत्याकांड के विषय में कहते हुए उन्होंने कहा 'मैं अपने मित्र और साथी आंगसान के लिए रोता हूँ जो कि अपनी युवा अवस्था ही में बर्मी स्वतंत्रता का स्तंभ और उनका प्रिय नेता बन गया था। मैं उनके मृत्यु साथियों के लिए रोता हूँ।' मैं बर्मा के लिए रोता हूँ जिससे इस संकटमय स्थिति में उनका नेता छिन गया। मैं एशिया के लिए रोता हूँ जिसका एक अत्यंत बहादुर

पृष्ठ ... पर देखिए

सुप्रसिद्ध नाटककार और कवि पण्डित उदयशंकर भट्ट

उद्बोधन

लेखक, पण्डित उदयशंकर भट्ट

इस जग का भार वहन करते
साँसों का चलना हुआ भार;
हिल्लोल उठी मन-सागर में
मरुभूमि हुई, वह हुई क्षार;
नाचते स्वप्न जो आँखों में
पीड़ा के सागर बन आये;
सौन्दर्य कटाक्ष प्राणघाती
हृद्दाह हृदय में भर लाये;
तू कहाँ अभाव सेमझ
खोजता निज-स्मृति का
तू कौन कहाँ कंकाल
खोजता मारण धन का
आ, आ, मैं तुझको
तू अपना ही अभिशाप
अन्तर की जड़ता, छल
जीवन का घातक पाप

तू ने समाज को बाँध लिया नाशक, निष्प्राण विचार दिया;
तू ने जड़ से सिर टकराकर केवल अतीत को प्यार किया;
तू रहा न पर रहता आया, तू जिया न पर जीता आया;
जो अपने अंग कटे, बिलगे उनको न जोड़ सीना आया;

जो पाया वह भी रख न सका, जो खोया वह फिर पा न सका;
सभ्यता, धर्म का स्वच्छ भोग्य खाया पर उसे पचा न सका;
जुड़ गई उँगलियाँ वज्र बनीं नाखून जान जिनको काटा;
उन हाथों का खा रहे खूब, निर्लज्ज, आज रह रह चांटा;

तेरा ही देश कट गया रे, तेरा ही अंग घट गया रे?
तेरी जमीन से तेरा ही सारा अधिकार हट गया रे?
तू तो अखंड का हामी था वह खण्डित हिन्दुस्तान हुआ;
माँ का कर गल गल टूट गया बहकर वह 'पाकिस्तान' हुआ (?)

तू रघु को भूल गया पगले, तू चंद्रगुप्त को भूल गया;
तू ने अशोक को भुला दिया तू व्यर्थ दर्प में फूल गया;
तू भूल गया शक, हूण यहाँ आये मिल तेरे संग चले;
सभ्यता, धर्म को अपनाकर वे तेरे बनकर अंग चले;

जो चंद्रगुप्त ने रोपा था जिसको अशोक ने था पाया;
उसकी रह सकी नहीं सत्ता उसकी रह सकी नहीं छाया;
यह क्योंकि अहिंसा पर कोई रह सका राष्ट्र है नहीं खड़ा;
यह क्योंकि व्यर्थ का दया, दम्भ उन्नति के पथ में सदा अड़ा?

है राजनीति में साम, दाम, औ' दण्ड, भेद ही मुख्य ध्येय;
क्या बना कहीं है कभी राष्ट्र ले दया, अहिंसा, सत्य, प्रेम?
नीतिज्ञ कृष्ण मंदिर में था पर उसको भी तू भूल गया;
विश्वास पालता रहा झूठ गीता का ज्ञान समूल गया;

तू शुक्र और चाणक्य विज्ञ जो मिले उन्हें भी पढ़ न सका;
तू जीवन-पथ पर हार गया, गिर गया, देश पर अड़ न सका;
सावन के अंधे मनुज सदृश तू रहा देखता हरा-हरा;
तेरी अब खाली गागर है उसका घट अपने आप भरा;

तू ने जो मरकर पाया है उसने वह जीकर पाया है;
तेरा सब स्वप्न आज उसकी जागृति ने स्वयं बताया है;
तू शत नायक भी हार गया, तेरा सब खाली वार गया;
तू बहुमत में भी अल्प बना वह अल्प जाति को तार गया;

विश्वास नये लेकर तू उठ, आकाश नये लेकर तू उठ;
जो तेरे संग चले उनके उल्लास नये लेकर तू उठ;
रण गान नये लेकर तू उठ, बलिदान नये लेकर तू उठ;
अपमानित, पीड़ित पद-पद पर वे प्राण नये तू लेकर उठ;

तू ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र का भूल भेद अभिमान न कर;
तू जैन, सिक्ख औ' आर्य समाजी बन अपना अपमान न कर;
तू प्राणवान है; हिन्दू है, तू ज्ञानवान है; हिन्दू है;
तू खड्ग धनी है, हिन्दू है तू एक जाति है; हिन्दू है;

'हिन्दुत्व' एक ही राग उठे, 'हिन्दुत्व' देश में जाग उठे;
खोया सब पुनः प्राप्त कर ले फागुन की खूनी फाग उठे;
मैं विद्रोही हो उठा आज, सहृदयता से विश्वास गया;
वह उठा हृदय का क्षोभ नया, पग उठा नया, उल्लास नया।

कैसल बाग, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

क्या यही मानवता है ?

लेखक, श्री श्यामबिहारी विरागी, बी० ए०

राष्ट्र को जहाँ एक ओर स्वतन्त्रता प्राप्त हो रही है वहाँ दूसरी ओर सामाजिक व्यवस्था के अमूल परिवर्तन की भी महान् आवश्यकता है। मानव-मात्र को मानवता की रक्षा तो करनी ही चाहिए। इस कहानी में भी समाज में घटित एक अमानवता-पूर्ण मार्मिक घटना का चित्रण किया गया है, जो नोआखाली में घटित हुई थी। कहानी अत्यन्त सुन्दर और पठनीय है।

रघुआ और सुखिया दिन भर करके जब शाम को घर लौटते काफी थके होते। परन्तु अपनी झोपड़ी में पहुँचते ही उनकी न जाने कहाँ गायब हो जाती। का प्रश्न यदि उनके सामने न होता शायद वे अपनी स्वर्ग से बढ़कर झोपड़ी न छोड़ते। दिन में का बिछोह उनके लिए असह्य परन्तु दिल पर पत्थर रखकर भावनाओं को समेटे वे जुटे रहते काम पर। इस ८ घंटे की अवधि बार याद आती सुखिया रघुआ और रघुआ सुखिया को।

१० वर्ष पहले बहुत धूम-धाम सुखिया आई थी, रघुआ के जीवन में। दूसरे को पाकर दोनों खिल उठे थे प्रतिक्षण अनुभव करने लगे थे एक स्वर्गिक आनन्द। समय बीतता और दोनों आते गये एक-दूसरे के। आज वे दो शरीर और दो होते हुए भी एक हैं—एक की दूसरे को पीड़ित करती है और मुसकान भर देती ह दूसरे के जीवन में, वसन्त का सौरभ। होते हुए भी मस्त हैं अपनी दुनिया में।

पहली तारीख को अपनी मजदूरी सुखिया ठीक समय से घर पहुँच गई, थी। एक महीने की कड़ी मेह- का पुरस्कार आज उसे मिला था रख देगी अपने सर्वस्व के हाथों ६ बजे शाम तक भी रघुआ नहीं तो सुखिया परेशान हो झोपड़ी दरवाजे पर इधर-उधर देखने लगी। लिए एक-एक मिनट पहाड़ हो था। अभी तक वह रोज की तरह तक गई भी नहीं। छः बजे तक तो रघुआ को कुछ न कुछ बनाकर देती थी। आज उसकी अजीब थी। वह परेशान होकर चारपाई लेट गई।

"सुखिया !" सहसा किसी ने लगाई। सुखिया ने देखा उसका सर्वस्व सामने खड़ा था।

"कहाँ थे अब तक ? तुम बड़े वैसे हो।" सुखिया ने रूठकर कहा मत रानी ! यह लो। तुम्हारे यह साड़ी खरीदने गया था।" हुए रघुआ ने दे दिया सुखिया के में एक सुन्दर साड़ी।

"कितनी सुन्दर है यह साड़ी।" हँस रही थी और बरस रही थी साड़ी के हर सूत से रघुआ की

"और मेरे लिए क्या खरीदा है ?" रघुआ पूछ बैठा।

"कुछ नहीं।" सुखिया कुछ लज्जित- बोल उठी।

"कुछ नहीं !"

"हाँ, यह लो मेरी मजदूरी। जो आवे खरीद लो।" कहती हुई सुखिया भगी चौके में।

"अरे, अभी तक कुछ नाश्ता भी बना ?" रघुआ ने चौके में जाकर

"तुम समय से आये नहीं। मैं परेशान और भूल गई नाश्ता बनाना।"

"यह बुरी बात है। इसके लिए तुम्हें सजा मिलेगी।" रघुआ की वाणी में बनावटी गम्भीरता थी।

"तो देते क्यों नहीं सजा।" सुखिया पैर के अँगूठे से जमीन खुरच रही थी।

"यह है तुम्हारी सजा।" कहते हुए रघुआ ने सुखिया के मुख में एक मोती-चूर का लड्डू डाल दिया।

"तुम कितने अच्छे हो ! मगर..." सुखिया का चेहरा उदास था—और रघुआ ने देखा सुखिया की आँखों में आँसू तैर रहे थे।

"पगली कहीं की !" रघुआ ने हँसने की चेष्टा की।

"आज हमारे घर में यह मिठाई खानेवाला नहीं।" सुखिया का मातृत्व भड़क उठा।

"जाने दो इन बातों को।" रघुआ बात बदलने की कोशिश करने लगा।

"आज हमारी गोद सूनी है। तुम भले न कहो; परन्तु तुम्हारा चेहरा कह रहा है कि यह मिठाई मेरे लिए नहीं।" सुखिया बोल उठी।

"जब तक तुम हो। मुझे कुछ नहीं चाहिए सुखिया ! भगवान् की जो इच्छा। सोच किस बात का।" रघुआ की उँगलियाँ सुखिया के बालों से आँखमिचौनी खेल रही थीं।

* * *

स्त्री के अन्दर माता बनने की अभिलाषा स्वाभाविक है। यदि ऐसा न होता तो शायद ब्रह्मा को सृष्टि-निर्माण करने में काफी परेशानी होती। सुखिया के मन में पुत्र की अभिलाषा दिन पर दिन बढ़ती जाय तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं। कोई देवता नहीं, कोई देवी नहीं, जिनकी मनौती सुखिया ने न मानी हो। कोई ओझा नहीं, कोई सोखा नहीं जिसकी खुशामद सुखिया ने न की हो। फिर भी उसका मनोरथ पूर्ण नहीं हुआ। उसकी उद्विग्नता अपनी चरम सीमा पर पहुँचकर परिणत हो गई भयानक चिन्ता में। सुख तो मन का खेल है। चिन्तारहित सुखिया पहले कितनी सुखी थी ! परिस्थितियाँ वही, सब कुछ वही; परन्तु सुखिया अब उदास रहती है और उदास रहता है रघुआ। इसलिए नहीं कि उसे सन्तान नहीं है, बल्कि इसलिए कि सुखिया की चिन्ता जहर बनकर नष्ट कर रही है, उसका सुखमय दाम्पत्य-जीवन।

"तुमने सुना है ? सुखिया !" रघुआ एक दिन पूछ बैठा।

"क्या ?" सुखिया की वाणी में उत्सुकता थी।

"गाँव के पच्छिमवाले बाग में एक संन्यासी आये हैं। जहाँ लोगों की प्रतिदिन बड़ी भीड़ जमा होती है।"

"तो ?"

"हमने सुना है कि वे दवा भी देते हैं और उनके इलाज से लोग अच्छे होते जा रहे हैं। कितनी ही बाँझ औरतों का भी इलाज उन्होंने किया है।"

"मेरा इलाज भला वे क्या करेंगे ? संन्यासियों को तो हमारी छाया से भी परेशानी होगी।"

"सब संन्यासी एक-से नहीं, होते सुखिया ! चलो, चलने में क्या हर्ज है ?"

"अच्छा, चलो।"

थोड़ी देर में दोनों पहुँच गये उस बाग में, जहाँ संन्यासी ठहरे हुए थे। एक वट-वृक्ष के नीचे लगा था संन्यासी का आसन और चारों तरफ से ग्रामीण स्त्री-पुरुष बैठे थे घेरकर। सबसे प्रेम से बात करना। समान दृष्टि से देखना तथा सबके मंगल की इच्छा रखना संन्यासी की विशेषता थी। रघुआ और उसकी स्त्री वट-वृक्ष से कुछ दूर पर बैठकर भीड़ समाप्त होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। बैठे-बैठे उन्हें काफी देर हो गई। एक जाता दूसरा आता। दोनों व्यग्र थे संन्यासी के सामने पहुँचने के लिए। परन्तु हिम्मत की कमी तथा समाज का डर उन्हें आगे बढ़ने से मजबूर करता। आने-जानेवाले लोगों की निगाह जाती दूर बैठे हुए इन दो प्राणियों पर और घृणा की एक रेखा दौड़ जाती उन लोगों के चेहरों पर। जब काफी देर हो चुकी तो रघुआ ने साहस का संचय किया और जाकर खड़ा हो गया कुछ दूर पर संन्यासी के सामने।

"कहाँ बढ़े आ रहे हो ?" भीड़ के एक आदमी ने डपटकर कहा।

"सरकार...!" रघुआ भय और आशंका से काँप रहा था।

"कौन हो भाई ? क्या चाहते हो ?" संन्यासी के मृदुल शब्दों ने रघुआ के जीवन में एक स्फूर्ति भर दी।

"यह भंगी...अछूत ह, महाराज !" भीड़ से एक आदमी जिसकी वाणी में तिरस्कार की गंध आ रही थी, बोल उठा।

"ईश्वर की कोई संतान अछूत नहीं।" कहते हुए संन्यासी उठे और पहुँच गये रघुआ के पास।

"महाराज !" रघुआ लोट रहा था संन्यासी के चरणों पर।

"मंगल हो ! कहो, क्या चाहते हो ?" आशीर्वाद देते हुए संन्यासी ने रघुआ को हाथ पकड़कर उठाया।

"मैं सन्तानहीन हूँ स्वामी जी ! आपका आशीर्वाद चाहता हूँ।" हाथ जोड़कर निवेदन किया रघुआ ने।

सुखिया अपने बच्चों की लिये खड़ी है और पति के आने की बाट देख रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह लो जड़ी। इसे सात हिस्सा करके रोज सुबह पानी में पीसकर पिलाना अपनी स्त्री को।" संन्यासी ने झोले से जड़ी निकालकर दी और हाथ बढ़ाकर ले ली रघुआ ने वह संजीवनी बूटी।

"महाराज! गुस्ताखी माफ हो तो एक बिनती और...।" रघुआ डरते-डरते बोल गया।

"अवश्य! निर्भय होकर कहो।" संन्यासी की वाणी रघुआ को अभय-दान दे रही थी।

"महाराज! हमारी इच्छा है कि एक दिन हमारी झोपड़ी आप पवित्र करें।"

"तुम्हारी इच्छा पूरी होगी। आज से ठीक ५ वर्ष बाद शरद्पूर्णिमा की शाम को मैं आऊंगा तुम्हारे घर।"

"महाराज! आप कितने अच्छे हैं।" रघुआ का रोम-रोम प्रफुल्लता का अनुभव कर रहा था। आनन्द की लहरों में डूबता-उतराता चल पड़ा रघुआ सुखिया को लेकर घर की ओर। उनका कुम्हलाया हुआ जीवन एक बार फिर खिल उठा।

* * *

सुखिया की झोपड़ी में अब काफी चहल-पहल रहती है। उसका मुन्ना अब लगभग ४ साल का हो चला है। वह काफी नटखट है। माँ को तंग करना तथा बाप से आये दिन किसी न किसी चीज के लिए जिद करना तो उसका रोज का काम है। सुखिया और रघुआ के जीवन में अब कोई अभाव नहीं। वे मस्त हैं अपनी छोटी-सी दुनिया में और मस्त है उनका मुन्ना अपने माता-पिता का अगाध-प्रेम पाकर।

कल शरद्पूर्णिमा है। संन्यासी आयेंगे उसकी झोपड़ी में। रघुआ और सुखिया की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं। दुनिया के लिए वह संन्यासी हैं पर उनके लिए तो भगवान् ही हैं। कल आयेंगे उनके भगवान् और वे करेंगे पूजा उनकी दिल खोलकर। वे रख देंगे अपने प्राण प्यारे मुन्ना को संन्यासी के चरणों पर। मुन्ना आया है उन्हीं की कृपा से। संन्यासी का उचित स्वागत भी करना है। सुखिया लीप-पोतकर स्वर्ग बना देगी अपनी झोपड़ी। आज उनकी आँखों में नींद कहाँ और इन्द्रियाँ थकान क्या जानें। संन्यासी को क्या खिलायेंगे, कहाँ बिठायेंगे, क्या बातें करेंगे इत्यादि समस्याओं को सोचते और प्रबन्ध करते बीत गई सारी रात और प्रारम्भ हुआ वह दिन जिसकी प्रतीक्षा में कितने व्यग्र थे सुखिया और रघुआ।

आज शरद्पूर्णिमा है। सुखिया चटकल नहीं जायगी। उसे संन्यासी के स्वागत का प्रबन्ध करना है। रघुआ जायगा काम पर और मुन्ना भी जायगा अपने पिता के साथ। घर पर मुन्ना सुखिया को काम नहीं करने देगा। शाम को आयेंगे संन्यासी और आ जायेंगे मुन्ना और रघुआ और स्वर्ग बन जायगी उनकी झोपड़ी।

ठीक पाँच बजे शाम को संन्यासी आ धमके रघुआ के दरवाजे पर और उन्हें देखते ही दौड़ पड़ी सुखिया उनका चरण-रज लेकर माथे पर लगाने।

"महाराज!" कहती हुई झुक गई सुखिया संन्यासी के चरणों पर।

"जय हो! कहाँ है रघुआ!" संन्यासी ने पूछा।

"काम पर गया है। आता ही होगा महाराज मुन्ना के साथ।" सुखिया ने कुछ शर्माते हुए कहा।

"कब हुआ मुन्ना?" संन्यासी ने पूछा।

"चार साल का अब हो चला, महाराज।" सुखिया के चेहरे पर प्रसन्नता नाच रही थी।

"तब तो मुझे मिठाई खाने को मिलेगी।" संन्यासी हँस रहे थे।

"अवश्य, मुन्ना कह रहा था वह अपने हाथों महाराज को मिठाई खिलाएगा। वह देखिए, आ रहा है...।" सुखिया का दिल बाग-बाग हो रहा था।

कुछ दूर पर दिखाई पड़ा रघुआ मुन्ना को गोद में लिए हुए। उसके पीछे आ रही थी १५-२० आदमियों की भीड़ वे थोड़ी देर में आ पहुँचे संन्यासी के पास।

"क्या मुन्ना सो रहा है?" सुखिया का कलेजा धक-सा हो गया।

"सो गया मुन्ना हमेशा के लिए।" कहते हुए गिर पड़ा रघुआ बेहोश होकर।

सब ने देखा मुन्ना की लाश पड़ी थी संन्यासी के चरणों पर और लाश को पकड़े बेहोश पड़े थे रघुआ और सुखिया।

* * *

दूसरे दिन अखबारों में "धर्म के नाम पर" शीर्षक में यह खबर छपी—रघुआ भंगी का चार साल का लड़का स्वदेशी जूट मिल के पासवाले तालाब में डूबकर मर गया। डूबते समय बहुत से लोग किनारे पर थे परन्तु उसे बचाने की किसी ने कोशिश नहीं की, क्योंकि वह भंगी का लड़का था और उसे छूने से लोगों का धर्म नष्ट हो जाता।"

इधर उधर की

जर्मनी में द्वितीय युद्ध के अन्त में १,२०,००,००० आश्रयहीन व्यक्ति थे। और सब तो किसी न किसी कार्य में लग गये। १०,००,००० व्यक्ति बेकार रह गये थे। इनको ब्रिटेन अपने यहाँ कारखानों में काम देगा, हर हफ्ते वे इंगलैंड जा रहे हैं। वे वहाँ इंगलैंड की प्रजा होकर रहेंगे।

* * *

युद्ध पूर्व इंगलैंड के ९ लाख किसान एक करोड़ ५० लाख आदमियों के लिए अनाज पैदा करते थे। आजकल दस लाख से कुछ ऊपर किसान ३ करोड़ व्यक्तियों के लिए अनाज पैदा कर रहे हैं।

* * *

इंगलैंड के रायलनेवी (राजकीय जहाजी सेना) में ४०० घंटे बिकेंगे। इन घंटों का वजन ५ पौण्ड से १४८ पौंड तक है। जिनकी कीमत १ पौंड से १० पौंड तक होगी।

* * *

संसार के आविष्कार का ४० प्रतिशत ब्रिटेन से आता है।

* * *

लन्दन शहर का प्रत्येक क्षेत्र १ वर्ग-मील भूमि से कम नहीं है।

* * *

किसी दिन उत्तरी यूरोप के लोग दक्षिण यूरोप तक समुद्री मार्ग द्वारा शीघ्र ही पहुँच जायेंगे। क्योंकि वालगा नदी और राइन नदी जिनका फासला १०७ मील का है जिनको लुडविग कनाल जोड़ती है। इसमें जहाजरानी का प्रयत्न हो रहा है।

* * *

एक करोड़ यात्री लन्दन की प्रतिदिन यात्रा करते हैं।

गत वर्ष इंगलैंड और वेल्स में २१,८-०,००,००० पौंड की रकम एक साल के किराया के लिए अदा की गई थी।

जुकाम सर्दीपर अचूक इलाज
श्री सेंट
सुरभि १८६६
नीलगिरि तेल
हिमा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, टाइफाइड आदि बीमारियों
श्री. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

क्या आज आपने मेकलीन्स से दाँत साफ़ किये हैं?

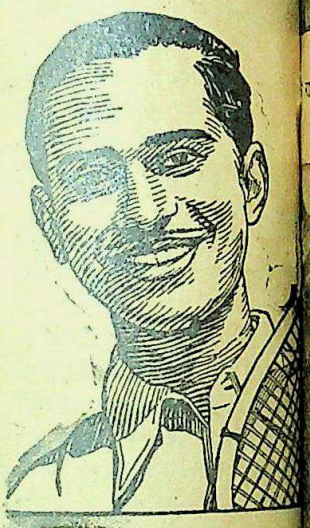

हाँ, यही तो मेरे अनुकूल पड़ता है।
मेकलीन्स
पेराक्साइड
टूथ पेस्ट
सभी केमिस्टों के पास व स्टोरों में मिलता

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इण्डियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'देशदूत' चित्रावली

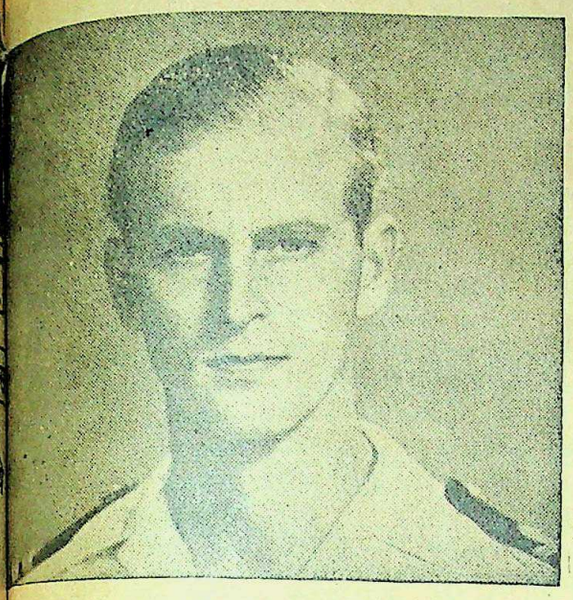

युवराजकुमार लेफ्टिनेंट फिलिप माउंटबेटेन का विवाह इँगलैण्ड की राजकुमारी एलिजबेथ से होने जा रहा है।

भारत के गवर्नर जनरल लार्ड लुई माउंटबेटेन, अपने कुटुम्ब के साथ। साथ में लेडी माउंटबेटेन और कुमारी माउंटबेटेन दिखाई दे रही हैं।

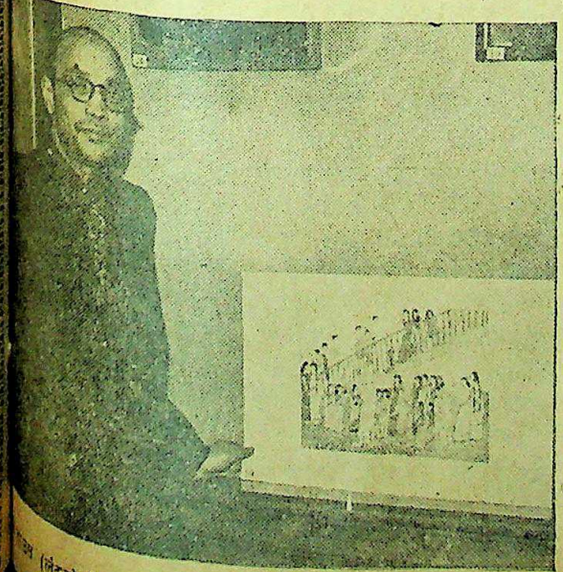

इंडिया हाउस (लंदन) में होनेवाली भारतीय कला-प्रदर्शिनी में श्री समेन्द्र चक्रवर्ती अपनी पुत्री कल्याणी के चित्रों का प्रदर्शन कर रहे हैं।

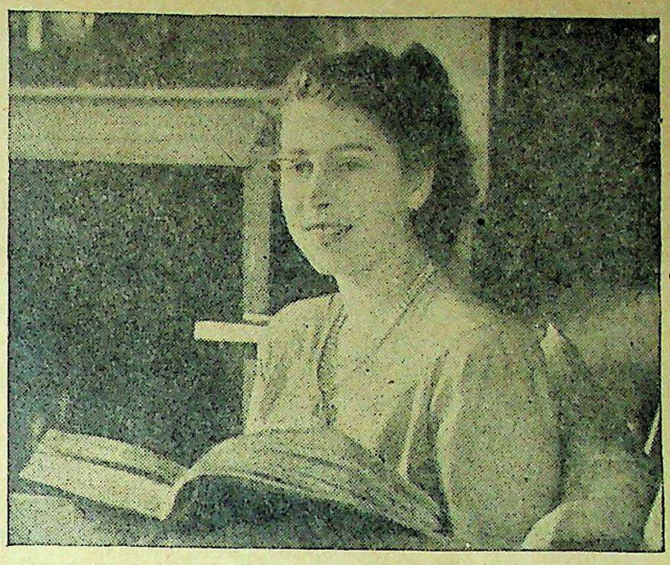

इँगलैण्ड की राजकुमारी एलिजबेथ का विवाह लेफ्टिनेंट फिलिप माउंटबेटेन से होने जा रहा है।

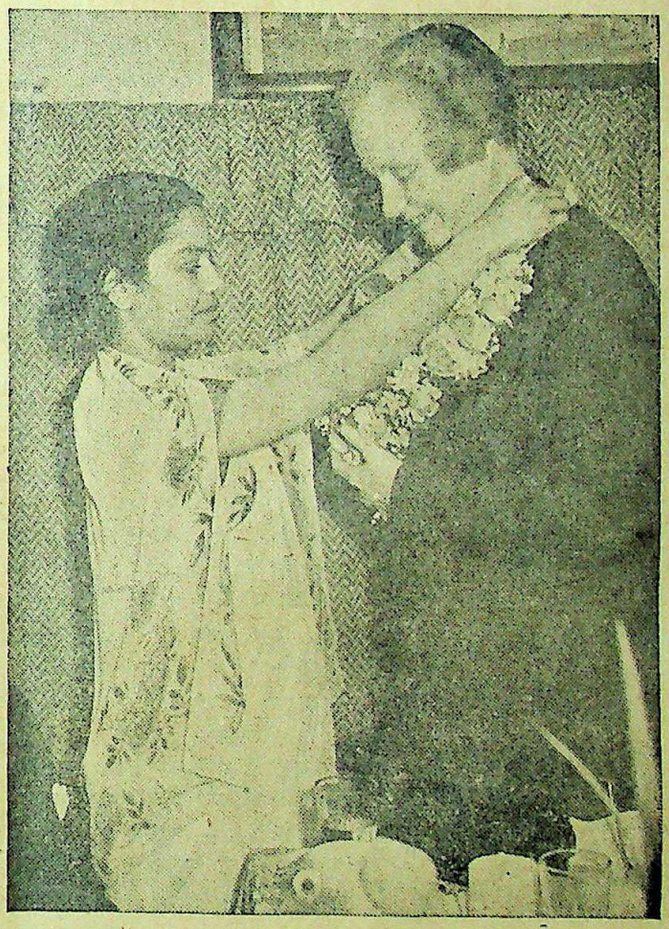

लंदन में भारतीय विद्यार्थी यूनियन तथा होस्टल में लेडी सर स्टेफर्ड क्रिप्स। मद्रास की डाक्टर लीलावती स्वागत-माला पहना रही हैं।

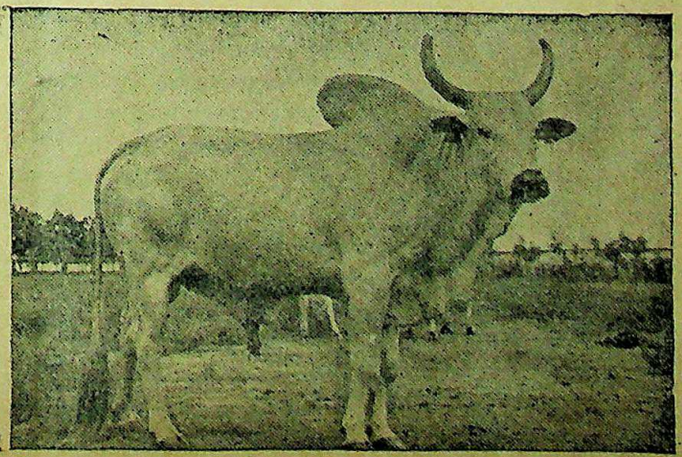

इंडिया हाउस (लंदन) की कला-प्रदर्शिनी में दिखाये जानेवाले हिसार (पंजाब) के एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

'पाकिस्तान'*

सेठ गोविन्ददास का अनूठा और श्रेष्ठ नाटक !

लेखक, श्री ओंकारनाथ शरद

सन् ४२ के मई के महीने के 'साहित्य-संदेश' में डा० ब्रजमोहन गुप्त ने 'सेठ गोविन्ददास के एकांकी नाटक' शीर्षक लेख में सेठ जी के ये अंश उद्धृत किये थे—"जिस एकांकी में जितना बड़ा विचार होगा, उस विचार के विकास के लिए जितना स्पष्ट और तीव्र संघर्ष होगा, इस विचार और संघर्ष के लिए जितनी स्पष्ट और मनोरंजक कथा होगी, जितने कम चरित्र और उन चरित्रों का जितना स्पष्ट और विषद चित्रण होगा तथा जितनी स्वाभाविक कृति एवं कथोपकथन होंगे वह उतना ही सफल होगा।"

नाटक-कला के विषय में सेठ गोविन्ददास के यही विचार हैं। इस तरह इस चौखटे में कसे जाने पर 'पाकिस्तान' बहुत सफल नाटक है। पाकिस्तान की

हिन्दी के सुप्रसिद्ध नाटककार सेठ गोविन्ददास।

कथा वही है जो आज भारतवर्ष की राजनीति है। भारत के विभाजन का प्रश्न—हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दो भिन्न राष्ट्रों की स्थापना और इन दो राष्ट्रों में रहनेवाले अल्पसंख्यक निवासियों के निर्वाह का प्रश्न—यही 'पाकिस्तान' के कथानक की भूमि है।

'पाकिस्तान' नाटक—नाटक के लिए और साहित्य के लिए कहाँ तक सफल या असफल है इसका विचार हम पीछे करेंगे। सबसे बड़ी और आश्चर्यजनक वस्तु जो इस पुस्तक में है—वह यह कि—नाटक का रचनाकाल सन् ४२ के नवम्बर का महीना है। यद्यपि पुस्तक प्रकाशित हुई है सन् ४६ में। फिर भी हमें यह विचार करना है कि सन् ४२ में जब कांग्रेस और देश के अन्य नेताओं का 'पाकिस्तान' न बनने देने का दृढ़ निश्चय था—उस समय, तत्कालीन राजनीति को देखकर यह भाँप लेना कि समय के गर्भ में पाकिस्तान शरीर धारण कर रहा है और शीघ्र ही वह अपना जन्म पा जायेगा—यह बात बड़ी असंगत और राष्ट्र के लिए हानिकारक कही जाती थी। अतः इस प्रकार लिख डालना कि पाकिस्तान की स्थापना होगी—बड़े साहस का काम था। यही नहीं, वरन् हमें तो कहना चाहिए कि यह तो जैसे किसी ज्योतिषी के कलम की लिखावट हो गई जब आज हम देखते हैं कि कांग्रेस और देश के नेताओं को लाख न चाहने पर भी परिस्थितियाँ ऐसी आईं कि 'पाकिस्तान' की स्थापना करनी ही पड़ी—हिन्दुस्तान का बँटवारा दो राष्ट्रों में करना ही पड़ा।

सेठ गोविन्ददास स्वयं एक राष्ट्र-सेवक और कांग्रेस महासभा के नेता हैं। अतः इन्होंने यह बात कैसे सोची, यही आश्चर्य का विषय है। सन् ४२ की मई में अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति की जो बैठक प्रयाग में हुई थी उसमें श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य के इस प्रस्ताव पर कि भारतीय मुसलमानों के 'पाकिस्तान' की माँग को स्वीकार कर लिया जाय, देशरत्न राजेन्द्रप्रसाद, सरदार पटेल आदि नेताओं के भाषणों ने जो वातावरण बना दिया था उससे तो स्पष्ट हो गया था कि पाकिस्तान की संभावना नहीं हो सकती। और यही वातावरण करीब-करीब सन् ४६ में होनेवाली शिमला कान्फ्रेंस तक था और कांग्रेस की नीति 'अखंड हिन्दुस्तान' के लिए स्पष्ट थी। पर उसके बाद राजनीति में जो एक के बाद एक घटनाएँ घटीं कि फिर आज हम देख रहे हैं दो राष्ट्रों की अलग-अलग सरकार अपना काम कर रही है।

पाकिस्तान का कथानक बहुत सुलझा हुआ है। जहाँनारा और शान्तिप्रिय दो भिन्न जातियों की सन्तानें बहन और भाई की तरह मिल-जुलकर रहते हैं। परन्तु क्लब में जब पाकिस्तान की चर्चा चलती है तो धर्म और जाति के नाम पर तकरार होती है—हिन्दू अलग और मुसलमान अलग। शान्तिप्रिय हिन्दू के पक्ष में बोलता है जहाँनारा पूर्ण रूप से मुस्लिम लीग के। अमरनाथ नामक राष्ट्रवादी युवक कांग्रेस की नीति पर पाकिस्तान की कटु आलोचना करता है और उपस्थित हिन्दू मुसलमान मित्रों पर यह प्रभाव डालने की कोशिश करता है कि पाकिस्तान और विभाजन की चर्चा न करें। पर उसकी कुछ नहीं चल पाती। मन में मैल बढ़ती है। जहाँनारा का समर्थन पीरबख्श नामक एक मुस्लिम युवक करता है और शान्तिप्रिय का दुर्गा नामक एक राष्ट्र-सेविका। ये दोनों ही दल अलग-अलग हिन्दू और मुस्लिम राष्ट्र की स्थापना के लिए नारे बुलन्द करते हैं। जहाँनारा के दिल में हिन्दुओं के प्रति इतना क्रोध आता है कि वह अपने प्रिय तोता—जिसका नाम शान्तिप्रिय ने गंगाराम रखा था—बदल कर सूबे-रातीं रखने की कोशिश करती है और शान्तिप्रिय अपनी कुतिया का नाम रूबी से बदल कर टाइग्रेस (सिहनी) रखना चाहता है।

यहाँ यह निश्चय होता है कि सारे राष्ट्र में चुनाव किया जाय—जहाँ मुसलमान जीतें वहाँ पाकिस्तान यानी मुस्लिम राज्य और जहाँ हिन्दू बहुमत में हों वहाँ हिन्दुस्तान—हिन्दू राज्य। चुनाव के लिए पीरबख्श संयुक्तप्रान्त के एक देहात में मुसलमानों को पाकिस्तान की बातें बताकर चुनाव में मुस्लिम लीग की मदद दिलाने जाता है। वहाँ उससे महफूज खाँ नामक एक राष्ट्रवादी मुसलमान से भेंट होती है जिसके कारण गाँव में पीरबख्श की नहीं चलती। सभी हिन्दू और मुसलमान उसके विरुद्ध बिगड़ जाते हैं और उसे गाँव से भागना पड़ता है। पीरबख्श देहातियों को गुमराह करता है—"हिन्दू और मुसलमान दो कौमें हैं।"

महफूज खाँ—लेकिन दो कौमें हैं कहाँ? दो मजहबों के माननेवाले एक ही देश में एक ही कौम के लोग सैकड़ों वर्षों से रह रहे हैं।"

पीरबख्श—"यही तो गलतफहमी है। हिन्दू-मुसलमानों की न एक कौम है और न हिन्दुस्तान सब मुल्क ही है।"

और इसी प्रकार हिन्दू-मुसलमानों को अलग कहकर अलग बना दिया गया।

पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दो राष्ट्र स्थापित हुए। पाकिस्तान के मंत्रिमंडल में जहाँनारा प्रधान और पीरबख्श मन्त्री होता है तथा हिन्दुस्तान के शान्तिप्रिय और दुर्गादेवी।

राष्ट्रों का अलग होना—झगड़ा लगवानेवालों की जीत होती है। पर अन्त में वही होता है जिसका भय था और कांग्रेसवाले जिसकी चेतावनी शुरू से दे रहे थे। अमरनाथ और महफूज खाँ दोनों राष्ट्रवादी कार्यकर्त्ता हैं। उनकी किसी ने न मानी पर जब दोनों राष्ट्रों में रहनेवाले अल्पसंख्यकों को लेकर झगड़ा शुरू हुआ और अल्पसंख्यकों का असंतोष दोनों राष्ट्रों के लिए एक समस्या हो गई तब हिन्दुस्तान में मुस्लिम और पाकिस्तान में हिन्दू और सिक्खों को कष्ट मिलने लगा। स्वाभाविक रूप में ही राष्ट्रों की सरकार के विरुद्ध आवाज उठाई गई और अन्त में ऊबकर कांग्रेस की 'एकराष्ट्र' की नीति को मानकर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के मन्त्रियों को इस्तीफा देना पड़ा और राष्ट्रीयता से दूर धार्मिकता की भीति पर जमें राष्ट्रों के विरुद्ध 'एकराष्ट्र' आन्दोलन शुरू हुआ।

और आज यही समस्या भारत के भाग्य पर नागिन बनकर छाई है। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की स्थापना हो चुकी है। मन्त्रियों का चुनाव भी शीघ्र ही होगा। और अल्पसंख्यक निवासियों में अभी से असंतोष फैलने लगा है। रोज ही कांग्रेस हाईकमांड और मि० जिन्ना के वक्तव्य प्रकाशित होते हैं कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों के जान-माल, संस्कृति और धर्म की रक्षा होगी: पर यह भी स्पष्ट है कि अल्पसंख्यक निवासियों को इन वक्तव्यों पर भरोसा नहीं है।

स्पष्ट है कि इस प्रश्न पर झगड़ा होगा—जनता बहुत आगे है। कुचली जाकर भी अपनी आवाज उठावेगी ही। और तब हमें देखना है कि जनता की आवाज कहाँ तक अनसुनी करके पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की सरकार कायम रह सकेगी? और इस [illegible] हम सेठ गोविन्ददास जी के 'पाकि[illegible] को आज की दोनों सरकार के लिए प्रदर्शक कह सकते हैं।

एक साहित्यिक की लेखनी उपन्यास, कविता, कहानी आदि हो को नहीं है—वह तरवार ही है, की कुरीतियों को काटती है। भी है—गंदगी साफ करती है और ही एक ज्योतिषी की तरह पथ-भी है—हमें बताती है—संकेत है—उन कठिनाइयों से जो आज मँडरा रही है कल अवश्य ही फट

पाकिस्तान केवल 'नाटक' पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के चेतावनी है—बड़ा संकट सिर पर उसे बचाना है। पाकिस्तान को एक पीढ़ी भी नहीं बीते कि विष इस बुरी तरह हमारे सारे में फैल गया है कि उसका निवारण श्यक ही है। इस विष के फलस्वरूप अखण्ड भारत खण्डित होकर दो में बाँटा गया है। काश फिर ये दो मिल सकें। भारत फिर एक साँस ले।

पूजागीत—द्विवेदी जी की नई राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह। कविता जीवन में स्फूर्ति का संचार है। फेदरवेट पीले काग़ज़ पर छपी पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर—(बुकडिपो) इंडियन लिमिटेड, प्रयाग।

---

*पाकिस्तान (नाटक) लेखक—सेठ गोविन्ददास, प्रकाशक, किताब महल, प्रयाग। मूल्य ३), छपाई, सेट-अप सुन्दर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंगमंच

फिल्म-कलाकारों में बंधुत्व तथा भ्रातृत्व क्यों नहीं ?

सहिष्णुता, विवेकशीलता और सद्भावना का अभाव

लेखक, श्री उमेश जोशी

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेत्री वासन्ती।

...की इस प्रसिद्ध अभिनेत्री को पहचानिए। क्या नाम है?

...बहुत दुख के साथ कहना ...कि फिल्म-कलाकारों में बन्धुत्व ...नहीं है। वे स्वार्थ की दुनिया ...आगे बढ़े हुए हैं कि उनको ...के उज्ज्वल आदर्शों का कुछ ...नहीं। वह अपने ही गुमान में ...। जिससे जिसका मतलब निकलता ...के पीछे-पीछे रातदिन फिरता ...मतलब निकल जाने के बाद ...एक दूसरे को टकासेर भी नहीं ...कितनी शर्म की बात है कि आज ...इन्सानियत से इतने गिर गये ...उनको अपनी प्रतिष्ठा का ख्याल ...में यह बात जो लिख रहा ...सुनी हुई या पढ़ी हुई नहीं है, ...यह मेरा निजी अनुभव है। मैंने ...दुनिया को अच्छी तरह से देखा ...में डंके की चोट पर कहता हूँ ...फिल्मी-कलाकारों के अन्दर सहिष्णुता, ...शीलता तथा सहानुभूति बिलकुल ...वे हमेशा दौलत के नशे में ही ...रहते हैं और अपनी इन्सानियत ...गँवा बैठते हैं। जिस कलाकार ...इन्सानियत नहीं वह कला-...होने के योग्य ही नहीं। हालीवुड ...कारों के अन्दर एक दूसरे के ...सद्भावना इतनी रहती है कि वे ...में रोज मिलते-जुलते हैं। हाली-...तो एक कलाकार-क्लब भी है, ...रोजाना प्रत्येक कलाकार आता ...एक-दूसरे की बातों से परिचित ...। ऐसी व्यवस्था हिन्दुस्तान में ...। हालीवुड के एक सुप्रसिद्ध डाइ-...मिस्टर डबलू० जेड० एलियन ...साल पहले भारतवर्ष आये ...उन्होंने फिल्मी-दुनिया को आँखें ...देखा। हिन्दुस्तान से लौट-...उन्होंने "अमेरिकन पिक्चर" में ...लिखा, जिसका शीर्षक ...भारतीय फिल्म-कलाकारों में ...भावना की कमी" लेख का ...इस प्रकार है—"मैं भारतीय ...से मिला। मैंने उनके अन्दर ...देखी। उनके चेहरों पर प्रफु-...बिलकुल नहीं थी और न ...अन्दर इन्सानियत। वे एक-दूसरे ...करते हुए पाये गये। अपने ...मिट्टू बनना भारतीय कला-...की आदत है। एक-दूसरे के प्रति ...का बरताव करना तो वे जानते ही नहीं। कला के लबादे में वह हवानियत छिपाये हुए हैं। अभी भारतीय कलाकारों की कला प्रशस्तता के पंथ पर प्रयाण नहीं कर पाई है।"

यह कथन एक विदेशी निर्देशक का है। इस डायरेक्टर को भारत आये हुए चार साल गुजर गये। उसने जो बात आज से चार साल पहले लिखी थी, वही बात आज भी भारतीय कलाकारों पर लागू होती है। आज फिल्मी कलाकारों की स्थिति यही है। हमारे कई कलाकार हालीवुड भी हो आये हैं, लेकिन उनका हालीवुड जाना बेकार रहा, क्योंकि वे हालीवुड से कुछ सीख न सके। हालीवुड के कर्मचारियों में कितनी भाई-चारे की भावना है, यह भी हमारे कलाकार न जान पाये।

अभी कुछ दिन हुए सिनेमा-संसार की सुप्रसिद्ध अभिनेत्री राजकुमारी शुक्ला का स्वर्गवास हो गया था। आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि राजकुमारी शुक्ला की लाश उठाने के लिए आदमी पैदा नहीं हुए—उसी राजकुमारी शुक्ला के, जिसके कि मकान के सामने नित्यप्रति मोटरों की कतारें लगी रहती थीं; जिसके स्वागत के लिए हमारे निर्मातागण हर समय तैयार रहा करते थे और उसी फिल्म-अभिनेत्री की आँख मुँदने पर यह हालत हुई कि उसके मकान पर एक निर्माता भी न फटका। कितनी लज्जा और शर्म की बात है। जिस राजकुमारी के कार्य से निर्माताओं ने करोड़ों रुपये कमाये, उसी राजकुमारी की ठटरी उठाने के लिए कोई भी व्यक्ति प्रस्तुत न हुआ। फिल्मी-दुनिया में सिर्फ पृथ्वीराज कपूर ही एक ऐसे व्यक्ति हैं जो कि सबके दुख-दर्द में शरीक होते हैं। उनके अन्दर इन्सानियत कूट-कूटकर भरी है। जिसका कोई न हो, उसके लिये मिस्टर कपूर हैं। इसी से वे बहुत लोकप्रिय हो गये हैं। जब उन्होंने यह सुना कि राजकुमारी शुक्ला का स्वर्गवास हो गया और घर पर लाश पड़ी हुई है—कोई भी व्यक्ति शव को मरघट तक पहुँचाने के लिए नहीं है, तो मिस्टर कपूर का हृदय द्रवित हो गया, उनसे न रहा गया। वे अपने दलबल के सहित श्रीमती शुक्ला के मकान पर पहुँच गये। मिस्टर कपूर ने श्रीमती शुक्ला को ठिकाने लगा दिया। बाद में श्री कपूर को देखकर और भी व्यक्ति आ गये। इसी तरह से मिस्टर कपूर हर जगह पहुँच जाते हैं, जहाँ भी उनकी जरूरत पड़ती है। उनको अपने बड़प्पन का तनिक भी ख्याल नहीं। मिस्टर कपूर वास्तव में मानव-जाति के बहुत बड़े हमदर्द हैं। उनका हृदय दिव्य भावनाओं का केन्द्र है। दरअसल वे ही एक सच्चे भारतीय कलाकार हैं। वही जान पाये हैं भारतीय कला की वास्तविकता।

अन्त में हमारा भारतीय कलाकारों से यही निवेदन है कि वे मिस्टर कपूर को अपना पथप्रदर्शक बनायें तथा उनसे भाई-चारे का बरताव करना सीखें। यदि वे एक सफल कलाकार बनना चाहते हैं तो सबसे पहले उन्हें एक सफल इन्सान बनना पड़ेगा। सफल इन्सान बनने के लिए उन्हें इन्सानियत अपनानी होगी।

रेक्सोना अर्थात् चर्म-स्वास्थ्य ...स्वस्थ त्वचा अर्थात् सौन्दर्य

रेक्सोना यह एक ही कैडील-मिश्रित साबुन है

चर्म-स्वाथ्य यह मनोहर त्वचा का रहस्य है, और आप अपनी त्वचा आरोग्य-रहित हो तो, सौन्दर्य प्राप्त नहीं कर सकते। यहां वही रेक्सोना का विपुल शीघ्रोत्पादक झाग है जो कैडील नामक औषधी से बनाया गया है और त्वचा-आरोग्य के लिये मूल्यवान् (उत्तम) है। यह ॲन्टिसेप्टिक, शांति-दायक, त्वचा-पृष्टिकर तैलों से विशेषरूपेण बनाया हुआ है, रेक्सोना का शीघ्रोत्पादक फेनदार झाग, उक्त कैडील को नन्हे नन्हे त्वचा-रंध्रों में गहराईतक ले जाता है, वहां की मलीनता को हटाके, त्वचा को साफ़-सुथरी करता है, उसको (त्वचा को) शांति प्रदान करता है और सुंदर बनाता है। इस में लेषमात्र भी शंका नहीं कि, चर्म-स्वास्थ्य त्वचा-माधुर्य (सौन्दर्य) की नींव है, और उक्त रेक्सोना का औषधी (मिश्रित) झाग त्वचा-सौन्दर्य की वृद्धि करता है।

पुरुषों के लिये रेक्सोना: आप कभी यह विचार न करें कि, रेक्सोना यह केवल स्त्रियों के लिये उपयुक्त साबुन है, अपितु वह पुरुषों के लिये भी अत्यंत आवश्यक साबुन है। पुरुष कांतिमय स्वास्थ्य में गर्व करता है, जो कि स्वस्थ त्वचा की देन है, चर्म-स्वास्थ्य एक पूंजी है, जो आरोग्यकर, ॲन्टिसेप्टिक रेक्सोना के कैडील की सम्पति है, वह (कैडील) चर्म-स्वास्थ्य बनाये रखता है।

बच्चों के लिये रेक्सोना: रेक्सोना का संरक्षक मृदु झाग बच्चों की कोमल त्वचा को शांत करता है। रेक्सोना का कैडील (बच्चों के) नन्हे नन्हे अवयवों की रगड़ (खुजली) और फुंसियों से सुरक्षा करता है। रेक्सोना, बच्चों के लिये उत्कृष्ट साबुन है।

★ रेक्सोनाका कैडील, यह विशेषतः ॲन्टिसेप्टिक आरोग्यकर एवं पौष्टिक तैलों का मिश्रण है; जो कि, त्वचा की सुरक्षा के लिये खासकर बनाया गया है।

RP. 30-392 HY

REXONA PROPRIETARY LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य-चर्चा

भारत में क्षय का प्रकोप इतना क्यों है ?

क्या इस जन-विध्वन्सकारी रोग पर विजय सम्भव है ?

लेखक, श्री कृष्णकुमार गुप्त, बी० काम०

आज मानव को गर्व है कि वह सभ्य है। सभ्य है वह अवश्य परन्तु किस काम की वह सभ्यता जिसमें गुण कम हों और दोष अधिक। सभ्यता के विकास के साथ-साथ, फैशन, भीड़-भाड़, मद्य-पान, तम्बाकू, भोग-विलास, हर प्रकार की क्षति इत्यादि की भाँति, रोगों का परिवर्धन भी निश्चयात्मक प्रकार से हुआ है। फलस्वरूप क्षयनामक राजरोग जन-साधारण की बीमारी हो गई है और सर्वत्र, क्या वृद्ध, क्या बालक, क्या स्त्री क्या पुरुष, क्या धनी, क्या निर्धन इस भयंकर, कष्टसाध्य और घातक रोग से आहत होकर एक बड़ी संख्या में काल के गाल में चले जा रहे हैं।

अनुमान लगाया गया है कि इस भीषण मानव-संहार की बलिवेदी पर संयुक्तराज्य में प्रतिवर्ष दो लाख मनुष्य अर्पण होते हैं। संसार में प्रति सेकंड एक मनुष्य क्षय रोग से प्राण त्यागता है। इस रोग से अभागे भारत में द्वितीय महायुद्ध के पूर्व प्रतिवर्ष ५ लाख मनुष्य मरते थे। संभवतः वह संख्या बढ़कर १० लाख मनुष्य प्रतिवर्ष हो गई है। व्यवसायिक केन्द्रों में मृत्यु का दर और अधिक है। क्षय रोग से मरनेवाला एक मनुष्य पाँच अन्य मनुष्यों को अपने रोग के कीटाणु प्रदान कर देता है। इस प्रकार मृत्यु-संख्या के आधार पर ज्ञात होता है कि भारत में प्रतिवर्ष पचास लाख मनुष्यों को यह रोग लग जाता है। जो मनुष्य इनमें से जीवित बच रहते हैं वे भी अपना रोग दूसरों को देते हैं।

क्षय-रोग सम्बन्धी हमारे देश की अवस्था वास्तव में अति भयावह है। जहाँ विदेशों में वहाँ के प्रयत्नशील, कर्त्तव्यनिष्ट और उन्नत विज्ञानवेत्ताओं और डाक्टरों ने संयुक्त मोर्चे और क्षय युद्ध द्वारा इस उड़नी बड़ी संक्रामक सरलता से लगनेवाली बीमारी को न केवल साध्य सिद्ध करके रोक लिया है अपितु किसी सीमा तक दूर भी कर दिया है, यहाँ पूर्ववत् उदासीनता बनी है। न प्रान्तीय कांग्रेस सरकारों का ध्यान इस ओर गया है और न अन्तः-कालीन सरकार का। न प्रजा ने तत्परता से सामना किया है और न चिकित्सक महोदय ही निस्वार्थ भाव से इस दशा में अग्रसर हुए हैं। इस निकृष्ट रोग से निवारणार्थ समस्त देश में केवल ६,६०० बेलंग, ७० सनीटोरियम, १२४ क्लीनिक्स और केवल दो केन्द्र स्वास्थ्य निरीक्षकों की शिक्षा के लिए हैं। लेडी लिनलिथगो ने द्वितीय महायुद्ध छिड़ने से पूर्व क्षय के नाम पर देश में एक अच्छी रकम एकत्र की थी, परन्तु वह भी कुछ न कर सकी।

बैसीलिस ट्यूबर कुलोसिस का होना ही क्षय अथवा राजयक्ष्मा का कारण है। क्षय के रूपों में फेफड़े का क्षय प्रधान है। राजयक्ष्मा फेफड़ों में सूक्ष्म गिल्टियों या कीटाणुओं की स्थिति से उत्पन्न होता है। यह कीटाणु फेफड़े में घाव डाल देते हैं और शनैः शनैः उसका नाश कर देते हैं। Toxin नामी एक विषैले पदार्थ को भी उत्पन्न कर देते हैं। वे थूक में कुछ रंगीन पदार्थ के साथ सूक्ष्मदर्शक यन्त्र द्वारा देखे जा सकते हैं। वे श्वास के साथ फेफड़ों में, गन्दे भोजन के साथ आमाशय में और घाव के द्वारा रुधिर में प्रवेश करते हैं। क्षय के रोगी के थूक में अनेक कीटाणु होते हैं। वह थूक इधर-उधर पड़ा रह-कर सूख जाता है। सूखकर हवा में उड़ता है और उस हवा को श्वास लेनेवाला मनुष्य भी क्षय का शिकार हो जाता है।

अपर्याप्त प्रकाश, अस्वच्छ वायु, धूप की कमी, मैले-कुचैले कपड़ों का व्यवहार, उत्तम पुष्टकारी भरपेट भोजन न मिलना, अति परिश्रम, मादक वस्तुओं का प्रयोग, स्वास्थ्यदायक मकानों की कमी और चिन्ता इत्यादि क्षय रोग का आवाहन करते हैं। क्षय रोग पशुओं के विषैले दूध अथवा मांस से भी प्राप्त होता है। शहरों में दुकानों पर कांच के गिलासों का प्रयोग भी सर्वथा अनुचित है। धर्म-ग्रन्थों को चूमना उसी प्रकार हानिकारक हो सकता है जिस प्रकार मुख-चुम्बन। रोगी के कीटाणु मुख-चुम्बन द्वारा निरोगी के अवश्य लगते हैं। घर की चहारदीवारी में बन्द रहने का उपहार भी क्षय है। पर्दा माननेवाली जातियाँ अधिक क्षय वरण करती हैं। बाहर घूमने फिरनेवाली स्त्रियाँ बुरके से ढकी मुसलमान स्त्रियों से कम क्षयी हैं। बेहूदे वस्त्रों का प्रचार भी आजकल बहुत बढ़ गया है जिनसे रुधिर प्रवाह में बाधा पड़ती है और काफी आक्सीजन नहीं मिलता। डाक्टर एस० एडोल्फ़स नाम के अनुसार पुरुषों को अत्यधिक ऊँचे तंग तथा गला घोटू कालर और गुलूबन्द का प्रयोग न करना चाहिए कारण कि वे वायु के आवागमन में बाधक होते हैं और मस्तिष्क की नसों पर दबाव डालते हैं जिससे सिर-दर्द तथा घुमरी प्राप्त होती है। स्त्रियों के लिए झाड़ लगानेवाले लँहगे और वैसे ही पुरुषों के पेन्ट भी वर्जित हैं। संयम की कमी या असंयम का डंका क्षय का सबसे बड़ा कारण है। एक वाक्य में कहा जा सकता है कि स्वास्थ्य-सम्बन्धी समस्त साधारण नियमों की अवज्ञा क्षय को लाती और उनका पालन क्षय को और क्षय के सन्देह को दूर करता है।

कभी कभी बात का बढ़कर बतंगड़ हो जाता है। रोग के कारण और लक्षण साधारण हैं परन्तु उन पर ध्यान न देने से ही एक दिन पूर्ण क्षय रोग हो जाता है। सदैव और शीघ्र थकावट होना, दिन प्रति दिन का सर्दी जुकाम, कार्य में अरुचि, भूख न लगना इत्यादि क्षय के छोटे छोटे किन्तु मुख्य लक्षण हैं। चिरकालीन खाँसी, हरितता, मुख पर लाली, पीलापन, तीसरे पहर ज्वर होना अन्य प्रधान लक्षण हैं। क्षय पकड़नेवाले मनुष्य को कैसा भी विनोद नहीं भाता। जो साधारण कष्ट को सहने में भी कठि-नाई अनुभव करते हैं, वे क्षय से कदापि नहीं बचते।

क्षय रोग के कारणों एवं लक्षणों पर विचार करने के पश्चात् क्षय रोग से बचने के उपायों पर दृष्टिपात करना आवश्यक है। क्षय रोग निश्चय ही साध्य है; परन्तु यह सदैव अच्छा है कि किसी रोग को आने ही न दिया जाय अपेक्षा इसके कि पहले उसको निमंत्रित किया जाय और उसके पश्चात् उसको भगाने के लिए युद्ध किया जाय। यदि हम अपना रहन-सहन स्वास्थ्यकर बना सकें तो रोग और रोग की जड़ ही कट जायगी। वास्तव में क्षय से बचने के लिए हमारी सबसे बड़ी आवश्यकताएँ पर्याप्त, निर्मल और स्वच्छ वायु, लाभ-दायक और पवित्र भोजन और आराम के लिए हमारी सबसे बड़ी आवश्यकताएँ पर्याप्त, निर्मल और स्वच्छ वायु, लाभ-दायक और पवित्र भोजन और आराम हैं। ठीक ही कहा गया है, संसार भर की औषधियाँ एक ओर और स्वास्थ्य के नियमानुसार संयमपूर्ण जीवन एक ओर। अपने को स्वस्थ्य रखने की यही विधि प्राकृतिक चिकित्सा का मूल मन्त्र है। हमें चाहिए कि हम कुछ व्यायाम भी नित्य किया करें। श्वास के व्यायाम बड़े लाभदायक होते हैं। कंठ और फेफड़ों को शक्तिशाली बनाने के लिए खुली हवा में गाना और जोर से पढ़ना चाहिए। रोग प्रकट हो जाने पर योग्य डाक्टरों की सहायता ली जानी चाहिए और रोगी को अनुकूल जलवायु के स्थान में रखना चाहिए। रोगी को चिकित्सक पर विश्वास करके और मित्रों तथा कुटुम्बियों की सलाह मानकर, अपना कर्त्तव्य पालन करना चाहिए। क्षय के रोगी को अपने थूक को धातु के पानी भरे पीकदानों में गिराना चाहिए। यह पीकदान ढके रहने चाहिए और नित्यप्रति किसी परि-शोधक द्वारा साफ किये जाने चाहिए। बुरादेवाले पीकदानों के बुरादे को जला देना चाहिए। मक्खियाँ सब प्रकार के रोग और मुख्यतया क्षय रोग फैलाने में बड़ी सहायक होती हैं। उनका दमन करना आवश्यक है। आस-पास प्रथम तो कूड़ा-कर्कट एकत्रित न रहना चाहिए और यदि हो तो उस पर चूना, मिट्टी का तेल या अन्य कोई सस्ती दवा छिड़कवा देनी चाहिए। रोगी से प्रेम और सद्भाव प्रकट किया जाय और उसे आनन्दित और आशापूर्ण रक्खा जाय, परन्तु फिर भी उससे सटकर न बैठकर तीन-चार फीट की दूरी पर बैठना उचित है। रोगी के अलग कमरे में सूक्ष्मातिसूक्ष्म वस्तुएँ हों और उनको अपने काम में न लाना चाहिए। रोगी की मृत्यु के पश्चात् उसके कमरे और उसके सामान का पूरा परिशोधन आवश्यक है।

सादा किन्तु स्वास्थ्यप्रद और भर पेट समय पर भोजन, स्वच्छ निर्मल जल, मादक पदार्थों का त्याग, नित्य स्नान, आँतों और शरीर की सफाई, पूरी नींद, [illegible] सुख और समृद्धि, अच्छे घर और उचित जीविकार्जन के [illegible] क्षय को कभी हमारे पास आने ही [illegible] दे सकते। स्त्रियों और बालकों की [illegible] कानून द्वारा बन्द होनी चाहिए। [illegible] ही मजदूरों की शारीरिक परीक्षा [illegible] शिक्षा, रक्षा और चिकित्सा का [illegible] होना चाहिए।

अन्त में क्षय रूपी जनविध्वंसक [illegible] कठिन रोग के विरुद्ध युद्ध करने [illegible] बात आती है। भारत एक बड़ा देश [illegible] जिसकी जन-संख्या संसार का [illegible] भाग है। क्षय युद्ध की समस्या भी [illegible] बड़ी है। इसके लिए अनवरत परि[illegible] दृढ़ संकल्प और एक विपुल धन [illegible] चाहिए। साथ ही नवीनतम वैज्ञा[illegible] उन्नति के आधार पर एक योजना [illegible] होना भी वांछनीय है। उदासीन [illegible] वासियों के मध्य क्षय-सम्बन्धी प्र[illegible] होना चाहिए। यह समाचारपत्रों, [illegible] स्थानों, रेडियो, सिनेमा, इत्या[illegible] इत्यादि द्वारा हो सकता है। जनता [illegible] क्षय के प्रकोप का ज्ञान कराने के [illegible] पूर्व नियोजित योजना के अनुसार [illegible] त्सालय और आरोग्यशालाएँ खोल[illegible] लिए स्थान इत्यादि नियुक्त होने चा[illegible] भारतीय क्षय सभा और उससे सम्ब[illegible] संस्थाओं को अपने में नवजीवन [illegible] चाहिए। डाक्टरों और स्वास्थ्य नि[illegible] की कमी है जिनकी संख्या बढ़ाने के [illegible] कुछ योग्य मनुष्य विदेश भेजे [illegible] चाहिए और कुछ के लिए देश में [illegible] शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिए। [illegible] को क्षय से बचाने के लिए टीका [illegible] उपयोगी है। नैपाल स्थित [illegible] डी० दासगुप्ता का मत है कि क्ष[illegible] बचाव के लिए, भारत में आव[illegible] रूप से, बीसा कराने का कानून [illegible] चाहिए। एक बहुत छोटा चन्दा ही [illegible] बड़ी रकम उपलब्ध कर सकता [illegible] उस रकम से न केवल क्षय के रो[illegible] की चिकित्सा वरन् उनके कुटुम्बियों [illegible] सहायता भी हो सकती है। जहाँ [illegible] रुपये का प्रश्न है उस पर अधिक [illegible] करने की आवश्यकता नहीं। टा[illegible] बिड़लाओं एवं डालमियाओं के दे[illegible] जन-सेवा और समाज-हित के क[illegible] लिए धन की कभी कमी नहीं। [illegible] कार्यकर्त्ताओं की एक प्रकार से [illegible] है। क्या स्वतन्त्रता के द्वार पर [illegible] जानेवाला, प्रायः स्वतन्त्रता पा [illegible] वाला, भारत अपने को क्षय से [illegible] न करेगा ?

श्रीकृष्ण-चरित्र—लेखक, राववा[illegible] काशीनाथ, एम० ए०, एम० बी० [illegible] पतितपावन भगवान् श्रीकृष्ण [illegible] पावन चरित्र इस पुस्तक में महा[illegible] के अनुसार वर्णन किया गया [illegible] जिसे पढ़ने पर उपन्यास का मजा [illegible] है। भाषा प्रांजल और परिमार्जित [illegible] कृष्ण की जीवनी पर विवेचनात्म[illegible] ढंग से प्रकाश डालनेवाली हिन्दी [illegible] अपने ढंग की यह प्रथम पुस्तक [illegible] मूल्य ३।–) तीन रुपये पाँच आने। [illegible] मैनेजर बुकडिपो इंडियन प्रेस, लि०, [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

आज की साम्प्रदायिकता और महिलाएँ

जीवन की रक्षा करने में इनकी सहायता अनिवार्य

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

...वर्ष में साम्प्रदायिकता का ...नी ही शताब्दियों पूर्व हो ...कभी-कभी वह दब जाता और ...प्रबल हो उठता कि उसके ...हत्याएँ हो जाती थीं। ...की दो शाखाएँ कही जा ...—हिन्दू और बौद्ध। इन दोनों ...में सर्वदा ही द्वन्द्व होता रहा ...महिलायें साम्प्रदायिकता से ...थीं। कभी-कभी तो वे दो सम्प्र-...पारस्परिक कलह को मिटाने ...न्यायाधीश का कार्य करती ...मिश्र की स्त्री ने शंकराचार्य ...बीच होनेवाले धार्मिक वाद-...पंच का कार्य किया था। यह

...सरोजिनी नायडू साम्प्रदायिक ...की ओर प्रयत्नशील हैं।

...इसलिए थी कि उस समय ...में गहरा संघर्ष चल रहा ...ओर से हजारों हत्याएँ हो ...इस संहार से बचने के लिए ...रमणी ने मध्यस्थता स्वीकार ...आज वही साम्प्रदायिकता ...पराकाष्ठा पर पहुँच चुकी है। ...का नहीं, बल्कि, हिन्दू-मुसल-...ऐसा जटिल रूप धारण ...है। साम्प्रदायिकता का विष ...मुसलमान अथवा हिन्दू ...बल्कि, अँगरेजों की देन है जो ...के लिए काँटा बन गई ...साम्प्रदायिकता की आड़ में भले ...का कुछ भला हो जाता हो ...सर्वथा इससे दूर रही हैं। ...साहस और धैर्य नहीं जो ...हजार में एक-दो स्त्री का ...होना कोई बड़ी बात नहीं। ...के लिए यह प्रयत्न करना ...वे सुरक्षित रह सकें। यह ...कायम रह सकती है जब ...साम्प्रदायिकता के पचड़े से ...। उन्हें सारे सम्प्रदाय का ...करना चाहिए। पुरुष ...होते हैं कि वह पुरुषों के सामना करने में हार कर स्त्रियों के ऊपर आघात करने से नहीं हिचकते। स्त्रियाँ परदे के अन्दर रहकर इतनी कायर हो गई हैं कि वे पुरुषों के सम्मुख आत्म-समर्पण कर देती हैं। एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय पर आक्रमणकारी होते ही स्त्रियों पर सर्वप्रथम आक्रमण करने का प्रयत्न करता है। साम्प्रदायिकता से परे नारियाँ इसका मुकाबिला करने में सफल हो सकती हैं।

श्रीमती सरोजनी नायडू ने एक बार कहा था—"आप लोग जानती हैं कि आप प्रान्तीय हैं और इतनी सीमित बुद्धि रखती हैं कि आपका प्रसार केवल आपके शहर, आपकी जाति, आपकी उप-जाति, कालेज, घर, सम्बन्धियों और अपने तक सीमित हैं। मैं यह जानती हूँ कि मैं सत्य कह रही हूँ क्योंकि मैं भी अपनी यौवनावस्था में उसी प्रेम के सीमित दृष्टिकोण से प्रभावित थी। मैंने अपने प्रेम को बढ़ाकर, सहानुभूति को विस्तृत कर, विभिन्न जातियों और विभिन्न धर्मों, विभिन्न सभ्यताओं, मित्रों के विचारों के सम्पर्क में आई हूँ। जब तक तुम छात्राएँ यह न जान लोगी कि मातृत्व की प्रबल प्रेरणा ही प्रान्तों से परे भी निहित है उस समय में ऐसा शक प्रयोग करने का साहस कर सकूँगी कि तुम लोग अब राष्ट्रीय हो सकोगी। अतः महिला-आन्दोलन कारियों का ऐसे समय क्या कर्त्तव्य है? क्या वे अपने पति, बच्चों और भाइयों को नोआखाली और टिपरा जैसी घटनाओं की पुनरावृत्ति की ओर प्रेरित करें अथवा पंजाब का नया दृश्य उपस्थित करने की सलाह दें? यदि ऐसी घटनाएँ हों तो फिर स्त्रियों के मातृत्व का महत्त्व ही क्या? हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों में रक्त-धारा बहती रहेगी, महिलाओं का अपमान होता रहेगा। उस समय जिम्मेदारियाँ किसकी होंगी? सबसे अधिक स्त्रियों की कही जा सकती हैं, क्योंकि स्त्रियों के नादान बच्चे, पति और भाई तो मारे ही जायेंगे। उनकी भी कम दुर्गति न होगी। ऐसी स्थिति में महिला-आन्दोलन-कारिणी महिलाओं का कर्त्तव्य है कि इस समय अपने पति, पुत्रों और भाइयों को साम्प्रदायिक आग में कूदने और सुलगाने से बचावें।

श्रीमती सरोजनी नायडू ने अपने सम्बन्ध में कहा था—'मैं न तो बंगाली हूँ, न मद्रासी और न हैदराबादी। मैं न तो ब्राह्मण हूँ न हिन्दू बल्कि एक भारतीय हूँ जिसको एक मुसलमान उसी तरह बहन मानता है जिस प्रकार हमारे हिन्दू। यह सार्वभौमिक शब्द कितने प्रिय हैं इनमें साम्प्रदायिकता का लेशमात्र भी स्थान नहीं। फिर ऐसे आदर्श यदि हमारे नारी-समाज में आ जायें तो वह कटुता जो आज हिन्दू और मुसलमानों में घर किये बैठी ह शीघ्र ही दूर हो जायगी। अभी कुछ दिनों पूर्व तक ब्राह्मण या उच्च कुलीन कही जानवाली स्त्रियाँ क्लबों अथवा सिनेमाघरों में एक दूसरे से दूर बैठकर इतनी अपरिचित रहती थीं कि उनमें पारस्परिक प्रेम होना बहुत असम्भव था। आज यही स्थिति हिन्दू-मुसलमानों में मौजूद है जिसके कारण वे आपस में मिल नहीं सकते। इन कारणों ने हिन्दू और मुसलमानों को एक-दूसरे से दूर कर रक्खा है। यदि स्त्रियाँ इस काय-भार को अपने सिर ले लें अथवा स्त्रियाँ अपने पति और पुत्रों पर साम्प्रदायिकता से परे रखने के लिए दबाव डालें तो आज का वमनस्य अथवा तनातनी कपूर बनकर हवा में उड़ जायगा।

साम्प्रदायिक वातावरण की दूषित वायु बहुत जल्दी ही प्रभावित कर जाती है परन्तु माँ का प्यार और स्त्री का प्रेम तथा बहनों का मातृत्व वायुमंडल को दूषित होने से बचा सकता है। अतः यह आवश्यक है कि महिलाएँ साम्प्रदायिक विचारों को दबाकर हमारे राष्ट्रीय जीवन की रक्षा करें। आज की स्त्रियों का कर्त्तव्य है कि वे साम्प्रदायिकता के जाल से बचकर एकता का प्रयत्न करें जिससे देश ही का नहीं बल्कि संसार का कल्याण करने में वह समर्थ हो सकें।

(पेज ७ का शेष)

हो जाती है, स्वाधीनता के पदार्पण से सच्ची जन-स्वतंत्रता का संघर्ष अब आरम्भ हुआ है। जो स्वाधीनता हमें मिली है वह हमारी भलाई और संसार की भलाई का पथप्रदर्शन करने के लिए है। कुछ ऐसी घटनाएँ हुई हैं जिनका मुझे हार्दिक दुख है पर मुझे इसमें रंचमात्र भी संदेह नहीं है कि हमारी मातृभूमि का भविष्य उज्ज्वल है। मुझे तो उस निराशा का कोई कारण नहीं दिखलाई देता जिसे कुछ लोग प्रसारित करने की और उससे राजनतिक लाभ उठाने की चेष्टा कर रहे हैं। सारे देशवासियों से मेरा यह विनम्र निवेदन है कि वे बीते हुए विभाजनों को भूल जायँ और अपने आधुनिक नर-नारियों को लेकर एक महान् राष्ट्र का निर्माण करने के लिए एक हो जायँ। इस व्यग्र संसार को वे धर्म का मार्ग दिखला दें। धर्म ही सुख का एक-मात्र सच्चा रास्ता है।

एकादशी—लेखक, श्रीयुत नत्थाप्रसाद दीक्षित 'मिलिन्द'। इस पुस्तक में मिलिन्द जी की १२ कमनीय कविताओं का संग्रह किया गया है। ये सभी कवितायें पौराणिक आख्यायिकाओं के आधार पर नये ढंग से लिखी गई हैं।

मूल्य केवल १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

भारत का एकमात्र पेय

चाय

आगतों का स्वागत करने वाली

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 287

लिपटन माने अच्छी चाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(पेज ५ का शेष)

स्कूल की स्थापना भी पूने में की थी। यहाँ स्कूल अब भी चल रहा है।

राष्ट्र को उद्योग-धंधों से पूर्ण बनाने का भी आपको पूरा ध्यान था। श्री तिलक प्रत्येक व्यक्ति को औद्योगिक शिक्षा देने पर जोर देते थे। विदेश से आनेवाली चीनी हड्डी से साफ की जाती है, यह प्रचार कर विदेशी चीनी का बहिष्कार करने का आन्दोलन जब हो रहा था तब एक सभा में भाषण देते हुए लोकमान्य ने कहा कि यह हो सकता है कि भविष्य में कोई यह सिद्ध कर देगा कि विदेशी चीनी हड्डी से साफ नहीं की जाती। किन्तु इससे वह हमें स्वीकार है ऐसी बात नहीं। हमारे देश में भी अच्छी चीनी बन सकती है। किन्तु विदेशी सरकार उसे यहाँ केवल इसलिए नहीं बनने देती कि फिर उससे होनेवाला लाभ यहीं के देश-निवासियों को मिलेगा। आप कहते थे कि विदेशी माल ख़रीदना स्वदेशी का खून पीना है। तिलक जी ने स्वयं एक कारखाना भी खोला था। किन्तु बाद में सार्वजनिक कार्यों से अवकाश न मिलने के कारण वे उसे चला न सके।

'केसरी' तथा 'मराठा' पत्र का उल्लेख किये बिना तिलक के जीवन की आलोचना पूर्ण नहीं हो सकती। 'बंग-वासी' के बाद भारत का केसरी ही शायद ऐसा पत्र था जिसने सरकार को नाकों चने चबवा दिये। किसी भी विषय पर स्पष्ट और साफ लिखना फिर वह चाहे सरकार को पसन्द हो या न हो, जनता को को अच्छा लगे या न लगे, यह तिलक का ही काम था। उनके सामने हमेशा यही आदर्श रहता था कि "वरं जनहितं ध्येयं केवला न जन स्तुतिः।" इस आदर्श को सामने रखने के लिए तिलक जी को अनगिनित कष्ट—जनता और सरकार दोनों की ओर से—सहने पड़े, किन्तु उन्होंने उसकी कभी परवाह न की। वे अपने पथ पर निर्भीकता के साथ डटे रहे।

श्री तिलक के सामने ही महात्मा गांधी की आध्यात्मिक राजनीति का प्रारम्भ किसी न किसी रूप में हो चुका था। एक बार गांधी जी तिलक जी से मिलने गये थे। गांधी जी के जाने के बाद तिलक जी ने कहा कि यह व्यक्ति अजीब लगन का है। यह अपनी धुन का तो पक्का है किन्तु इसमें व्यावहारिकता की मुझे बड़ी कमी मालूम पड़ती है।

१ अगस्त १९२० को श्री तिलक जी की मृत्यु हुई। आज २७ वर्ष के बाद हमें उनके जीवन से क्या कुछ सीखना शेष नहीं है?

(हिन्द समाचार-समिति द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित।)

तुलसी रत्नावली—गोस्वामी जी के समस्त ग्रन्थों का अध्ययन कर इसके विद्वान् सम्पादक ने कुछ रत्न ढूँढ़ निकाले हैं, उन्हीं का यह संग्रह है। दूसरे शब्दों में गोस्वामी जी की समस्त रचनाओं का यह निचोड़ है। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

(पेज ६ का शेष)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसान रुपया माँगता है तो साहूकार १०० रुपया देकर बहुधा सवा सौ या डेढ़ सौ का कागज लिखवाता है। गरज का बावला किसान कागज लिख देता है और ऊँचे ब्याज पर रुपया पाता है। ऐसा कर्ज चुकाये नहीं चुकता है और यदि आप देहातों में जायें तो देखेंगे कि ९० प्रतिशत किसान कर्जे से दबे हुए हैं। बाप बेटे को नकद नहीं छोड़ जाता। वह तो कर्जे की भारी वसीयत दे जाता है और यह कर्जा पुश्त-दर-पुश्त चला जाता है।

सरकार का निश्चित मत है कि ठगों और साहूकारों से जनता की रक्षा केवल सहकारी समितियों द्वारा ही हो सकती है। सरकार का उद्देश्य है कि जल्द प्रान्त भर में सहकारी समितियों का एक जाल-सा बिछा दिया जाय। गाँव-गाँव में सहकारी समितियाँ हों, जो न केवल ग्रामीणों को कम ब्याज पर कर्ज दें बल्कि उनकी उन्नति के लिए बहुमुखी प्रयत्न करें। उनकी आमदनी बढ़ायें, उनके खेत की उपज बढ़ायें, उनके लिए उपयोगी चीजें मँगायें, उनके उत्पादन की बिक्री कर दें, उनके रुपया को अच्छे कारबार में लगावें, उनके स्वास्थ्य-सुधार की व्यवस्था करें, उनके खेतों की चकबन्दी करावें, आदि आदि।

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति जिन समितियों द्वारा होती है। उन्हें बहुधन्धी सहकारी समिति कहा गया है। सरकार का उद्देश्य है कि उन सारे गाँवों में, जो बीज-गोदामों के पास हों और जहाँ नवीन योजना के अन्तर्गत ग्रामीणों के उन्नति का कार्य चल रहा हो, एक-एक सहकारी समिति बनाई जाय। छोटे-छोटे गाँव दो-तीन मिलकर सहकारी समिति बना सकते हैं। ये समितियाँ बहुधंधी समितियाँ होंगी जो लेन-देन, कृष्योन्नति, उत्पादन की बिक्री, पशु-सुधार, डेयरी फार्मिंग, कताई और दैनिक उपयोग की चीजों की बिक्री का काम करेंगी। यदि कोई किसान बीज, खाद, हथियार, पशु आदि के लिए रुपया चाहता है तो इन समितियों से उन चीजों को प्राप्त कर सकेगा। रुपया भरसक न दिया जायगा। ऐसा देखा गया है कि कभी-कभी किसान ने पशु के खरीदने के लिए कर्जा देनेवाली समिति (क्रेडिट सोसाइटी) से रुपया लिया और पशु न खरीद कर उसे दूसरे गैर जरूरी कामों में लगा दिया। बहुधंधी समितियाँ गाँव भर की उपज की बिक्री का प्रबन्ध करेंगी। इसलिए यह जरूरी मालूम होता है कि गाँव में जितने लोग बसते हों सब के सब एक समिति के सदस्य हो जायें। समितियों द्वारा दैनिक उपयोग की सारी चीजें जो आजकल मुश्किल से मिलती हैं, गाँव-गाँव पहुँचेंगी। समितियों को सरकार और भी सुविधायें देने को तैयार है। बीज-गोदामों के चारों ओर जो गाँव चुने जायेंगे वहाँ तो इसके पहले कि बीज, खाद या अन्य आवश्यक चीजें बाँटी जायें, यह आवश्यक होगा कि वहाँ सहकारी समिति स्थापित हो जाय, सरकार का विश्वास है कि इन बहुधंधी सहकारी समितियों में स्वयं इतने लाभ हैं कि ग्रामीण जनता उनका स्वागत करेगी और अपने गाँवों में ऐसी समितियाँ बनाकर जल्द से जल्द लाभ उठायेगी।

इन दिनों विविध केन्द्रों पर ५०० कोआपरेटिव सुपरवाइजरों की ट्रेनिंग हो रही है। दो-ढाई महीने में उनकी ट्रेनिंग समाप्त हो गायगी। फिर वे सुपरवाइजर देहातों में नियुक्त कर दिये जायेंगे। वे ग्रामीणों को सहकारी समितियों के सिद्धान्त बतलायेंगे, देहाती जनता में मिलकर रहेंगे और उन्हें सहकारी समितियाँ बनाने में सहायता देंगे।

डेवलपमेंट-दिवस

हम बड़े भीषण काल से गुजर रहे हैं और यद्यपि सामने बहुत ही उज्ज्वल भविष्य है, वर्तमान काल में भाँति-भाँति के संकट हमको घेरे हुए हैं। कहीं गल्ले की कमी, कहीं नमक की कमी, कहीं कपड़े की कमी; गरज कि कमी हर चीज की है। ऐसे समय में जनता का कर्त्तव्य है कि वह साधनों का उपयोग करे, सरकार द्वारा दी गई सुविधाओं को समझे उनसे लाभ उठाये और इस प्रकार अपना उत्पादन बढ़ावे। तब जनता की भलाई होगी, प्रान्त की भलाई होगी और देश की भलाई होगी।

५ अगस्त को प्रान्त भर में डेवलपमेंट-दिवस मनाया जा रहा है। उस दिन ग्रामोन्नति के लिए चुने गये क्षेत्र की जनता किसी उपर्युक्त स्थान पर एकत्र होकर आगामी वर्ष के लिए अपने कार्यक्रम की रूप-रेखा तैयार करे। इस अवसर पर ग्रामीण जनता को यह भी बतलाया जायगा कि उनके ऊपर क्या-क्या जिम्मेदारियाँ हैं, और उसे कितना काम करना है।

—क्रमशः

(पेज ४ का शेष)

कि गवर्नर को कोई विशेष दिये जायँ। गवर्नर को अपने मंत्रिमंडल की राय से करता तो अधिक अच्छा होता। यदि गवर्नर जनता द्वारा चुना तो यह अवश्यम्भावी है कि और गवर्नरों में आये दिन कुछ मतभेद की गुंजाइश हो सकती है। की नियुक्तियाँ आस्ट्रेलिया अथवा के विधान के अनुसार अच्छी होंगी। कनाडा का विधान उत्तम कहा सकता है। पर, शायद समय और अभी वैसे विधान बनने से रोक है। इसी से हमारे नेता उसे स्वीकार कर रहे हैं। समय आने पर इनमें वर्तन होगा। पर आज हमें ब्रिटिश शक्ति लेकर किसी तरह स्वतंत्र होना

श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी की रचना

सञ्चारिणी

इसमें भक्तिकाल की अन्तर्चेतना मान हिन्दी-साहित्य और शरद-साहित्य सरस सुन्दर विवेचना की गई है। भाषा-शैली और विचारों पर मुख्य आचार्य शुक्ल जी के एक ग्रन्थ आलोचक ने लिखा था कि रवि बाद इसी पुस्तक द्वारा सुन्दर, सुपुष्ट भावपूर्ण लेखनी का चमत्कार पड़ता है। यह पञ्जाब विश्वविद्यालय हिन्दी प्रभाकर-परीक्षा में कई वर्षों पाठ्य-पुस्तक रह चुकी है। पृष्ठ-संख्या भग २७५; मूल्य सजिल्द २) दो

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इला

हमारी दो अनमोल पुस्तकें

महाराष्ट्र-जीवन-प्रभात

श्री रमेशचन्द्र दत्त के इस उपन्यास में कूटनीति-विशारद औरंगजेब और छत्रपति शिवाजी के दाँव-पेंचों का बहुत ही सरस और सुन्दर ऐतिहासिक वर्णन है। पौने दो सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

राजपूत-जीवन-सन्ध्या

इस उपन्यास में राजपूतों और मुग़लों के विकट युद्ध का वर्णन है। मुग़लों के पक्ष के हिन्दुओं ने भी राजपूतों का विरोध कर हिन्दू-राज्य को हानि पहुँचाने का जो प्रयत्न किया था उसका वर्णन भी इसमें आपको मिलेगा। सवा दो सौ से अधिक पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्तहास

भङ्ग की तरङ्ग

...गांधी कहते हैं कि हिन्दुस्तान ...राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी हो। इससे ...आशा करते हैं कि पाकिस्तान-...आगे चलकर मिल जायेंगे। इस ...में उर्दू राष्ट्रभाषा रखना ठीक ...मिलने की सम्भावना और ...इससे हो जायगी।

* *

...से चार हिन्दी दैनिक पत्र ...रहे हैं और चार और निकलने-...। इतने पर भी राष्ट्रभाषा के ...हिन्दुस्तानी बैठनेवाली है। ...का भी कोई पत्र कहीं से ...ता है?

* *

...अगस्त को हिन्दू-सभा स्वतंत्रता ...नहीं मनायेगी। उसे उस दिन ...को मनाना चाहिए।

* *

अमरीका से कम्युनिस्ट लोगों को निर्वासित करने का आयोजन हो रहा है। अच्छा है यह कार्य जल्द हो जाना चाहिए। लड़ाई समाप्त हुए तीन-चार साल बीत गये और दूसरे युद्ध का श्रीगणेश भी नहीं हुआ।

* * *

कहा जाता है कि सर सी० पी० के मुँह पर किसी ने गुप्ती से वार किया। वार करनेवाले का क्या उद्देश्य रहा कहा नहीं जा सकता। ऐसे लोगों को मारना ठीक नहीं। वध हुआ भी था तो रावण का, विभीषण का तो राजतिलक हुआ था।

* * *

पन्द्रह अगस्त को इलाहाबाद किले से १०१ तोपों की सलामी होगी। १५ अगस्त को १५०० तोपों की सलामी हो या कम से कम उतनी तो होनी ही चाहिए जितने साल भारत परतंत्र रहा।

* * *

श्रीमती पंडित कहती हैं कि हमें अपने टूटे दिलों को जोड़ना चाहिए।

बहक

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

अगरेज़ जा रहे हैं स्वाधीन हो रहे हैं,
आनन्द आ रहा है हम पीन हो रहे हैं।
यह देश बँट गया है बिगड़ा तमाम नकशा,
हमको न दुख, नहीं हम गमगीन हो रहे हैं।
वह रोज कर रहे हैं हम पर नवीन घातें,
जापान वह बने हैं हम चीन हो रहे हैं।
सोना नहीं नज़र में है बात सप्न की वह,
चाँदी न कट सकेगी हम टीन हो रहे हैं।
पंजाब पर ज़रा सा दौड़ाइये नज़र तो,
कितने कुबेर कौड़ी के तीन हो रहे हैं।
उनकी तमाम चालों के केंद्र हैं बने हम,
वह फिल्म—हैं बने हम स्क्रीन हो रहे हैं।
वह बीस रँग रहे हैं अपना 'हेनाल' लेकर,
है बात क्या कि वह यों शौकीन हो रहे है।
सागर विशाल मस्ती का गिर्द है हमारे,
बेढब इसी महो दधि के मीन हो रहे हैं।

...के निवासी पूछते हैं कि ...वाटर वर्क्स के कर्मचारियों के ...पानी का मीटर क्यों नहीं लगा ...ईश्वर कहीं ईश्वर की पूजा ...?

* *

...संगीत-समिति द्वारा विष्णु-...एकाडमी संचालित होती है। ...अध्यक्ष का वेतन १००) मासिक ...वाले को इतना अधिक वेतन? ...कोई मिनिस्टर है? कला की ...करने में न पड़नेवाले सज्जन ...कि संगीत को रुपये की क्या ...ता है?

* *

...का क्या होगा? क्या ...उखाड़कर पाकिस्तान में लोग ...? सुना है पाकिस्तानी ...इस कला की सोच में हैं कि इसे ...उखाड़ा जाये?

* *

मरहम कहीं बढ़िया मिले तो अवश्य जुड़ जायेगा।

* * *

बस्ती में बहुत से किसानों ने कलक्टरी कचहरी पर धावा बोल दिया। जब कलक्टर साहब मस्ती में हैं, तब किसान बेचारे क्या करें?

* * *

सिन्ध के प्रधान मंत्री सिन्ध के गवर्नर बनाये गये हैं। सुना है अपने प्रान्त में भी यही होनेवाला है। अच्छा है एक बार सब प्रधान मंत्री गवर्नर बन जायें।

* * *

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने डाक्टर शहरयार को बड़ी सांत्वना दी है। स्वतंत्र भारत की ओर से यह पहली सहायता होगी। क्यों न कांग्रेसी वालंटियरों की एक सेना डचों से लड़ने के लिए भेज दी जाय?

* * *

राजधानी का रंगमंच

श्रीमती पंडित की विदाई १५ अगस्त की प्रतीक्षा

(अपने विशेष प्रतिनिधि-द्वारा)

लखनऊ पर इन्द्रदेव की विशेष अकृपा है और इसी कारण पिछले एक पखवारे से कोई दिन ऐसा नहीं गया, जब युक्तप्रान्त की राजधानी को मूसलाधार वर्षा से तर न कर दिया गया हो। इस तरी के साथ-साथ लखनऊ की जरी अर्थात् वसीकेदार बेगमों के रहनेवाले महलनुमाँ पुराने खंडहर भी ऐसे तर हो गए कि प्रसन्नता के भार से फूलकर धराशायी हो गए और लगभग २००० नवाब और बेगमें बेघरबार दरख्तों के साये में दस्तरखाने बिछाए टुकड़े तोड़ती हैं, हालाँ कि इन दरख्तों के नीचे भी मेंह से खैर नहीं। नगर के सभी निचले भाग पानी से घिरे हुए हैं। सिविल लाइन्स का एक भाग भी गोमती के पानी में कई दिन तक डूबा रहा और अनेक महल तथा अफसरों के निवासस्थान रहने के काबिल न रहे। अधिकारियों ने शहर के उन मकानों के गिराने की योजना बनाई है, जो इस वर्षा में गिर पड़ने के लायक हो गए हैं और जिनमें रहना खतरनाक है।

* * *

श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित को मास्को जाने से पूर्व लखनऊ में एक विदा-भोज दिया गया। लखनऊ के सामाजिक जीवन में इतना बड़ा उत्सव अनेक वर्षों से नहीं हुआ था। मंत्रियों तथा उनके पार्लियामेंटरी सेक्रेटरियों के अतिरिक्त नगर के प्रायः सभी प्रमुख अधिकारी, पत्रकार, व्यवसायी, वकील, बैरिस्टर, प्रोफेसर तथा राजनीतिक कार्यकर्त्ता इस अवसर पर उपस्थित थे। श्रीमती पंडित ने प्रायः सभी से मिलकर विदा ली।

* * *

वर्षा से भीगा और श्रीमती पंडित के विरह से व्याकुल लखनऊ अब १५ अगस्त की प्रतीक्षा में है, जब भारत के इतिहास में प्रथम बार भारतीय जनता गवर्नमेन्ट हाउस में प्रवेश कर सकेगी। उस दिन गवर्नमेंट हाउस पर प्रान्त के नये गवर्नर अथवा प्रधानमंत्री राष्ट्रीय झंडा फहरायेंगे और पुलिस उस झंडे को सलामी देते हुए उसके समक्ष कवायद करेगी। बाद में प्रान्तपति अथवा प्रधान मन्त्री पुलिस की सलामी ग्रहण करेंगे। पन्त जी इस सम्बन्ध में भी विचार कर रहे हैं कि उस दिन का भाषण अँगरेजी के बजाय हिन्दी में ही हो।

* * *

पुलिस थानों के जो मुंशी मूँछें ऐंठते हुए कलम उठाकर उर्दू में रिपोर्ट घसीटा करते थे, उनको अब झख मार-कर हिन्दी पढ़नी होगी। गृह-विभाग ने जिला सुपरिंटेंडेंटों को लिख दिया है कि जो हेडकांस्टेबिल अथवा मुंशी हिन्दी न जानते हों, उनको हिन्दी सीखने के लिए मजबूर किया जाय। इसके लिए पुलिस लाइनों में शिक्षण-कक्षायें खोलने की अनुमति दे दी गई है। प्रत्येक शिक्षण-कक्षा तीन मास में एक दर्जन पुलिस-वालों को हिन्दी में दक्ष किया करेगी। छः मास बाद किसी भी थाने में एक भी ऐसा रपटमुंशी न होगा, जो हिन्दी में रिपोर्ट न लिख सके।

* * *

युक्तप्रान्त के बैंकों की आजकल चकाचक है। पंजाब से भागे हुए शरणार्थी साथ में इतना रुपया लाये हैं कि केवल मसूरी, देहरादून तथा हरद्वार के बकों में ही ५ करोड़ रुपया नकद जमा हुआ है। खातों के तबादले से न जाने कितना रुपया आया होगा। इसी प्रकार ही जेवर तथा रत्न भी काफी संख्या में लाए हैं। केवल लखनऊ के ही एक बैंक के तहखाने में एक करोड़ से अधिक के रत्न और आभूषण सुरक्षा के निमित्त जमा कराए गये हैं, और प्रायः इतने ही के रत्नों को जमा करने से इनकार कर दिया गया, क्योंकि बैंक के तहखाने में इतना अधिक स्थान न था।

* * *

प्रान्तीय सेक्रेटेरिएट में शीघ्र ही समस्त काम हिन्दी में होने लगेगा। एक प्रमुख अधिकारी ने मुझे बताया है कि सेक्रेटेरिएट में आदेश दे दिए गये हैं कि सेक्रेटेरिएट के प्रत्येक कमरे में अधिकारियों के नामपट्ट हिन्दी में ही अंकित किये जायँ। बहुतेरे पार्लियामेन्टरी सेक्रेटरियों ने तो हिन्दी में आज्ञायें आदि लिखना भी प्रारम्भ कर दिया है

* * *

कांग्रेस मंत्रिमंडल को पाकिस्तान की सरकार की ईमानदारी पर विश्वास नहीं है। इसीलिए उसने अपने लाहौर स्थित खाद्य प्रतिनिधि को आदेश दिया है कि पंजाब में युक्तप्रान्तीय सरकार द्वारा खरीदा हुआ जो ७,००० टन जौ पड़ा हुआ है, उसे तत्काल उठाने का प्रयत्न किया जाय और हर हालत में १५ अगस्त से पूर्व उसको वहाँ से लद जाना चाहिए। यह जौ प्रान्तीय सरकार मद्रास को दे रही है, जहाँ के अकाल-पीड़ितों में वह बाँटा जायगा।

अब सत्याग्रह होगा नहीं इसलिए लाठी खाने का युग गया। बेकार बैठे रहने से दुर्बलता आ जायगी। इसलिए वहीं चलकर जूझें।

—अगड़धत्त शर्मा

अपनी बात

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण वैश्य

मनुष्य के चरित्र में किस प्रकार की दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर करके वह किस प्रकार अपने जीवन को उन्नत बना सकता है, यह बात इस पुस्तक में बहुत ही ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है और लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर। अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) बारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

हरिद्वार में मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के कैम्प में यज्ञोपवीत संस्कार-समारोह बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। श्रीमान् लाला केदारनाथ मेहरा की धर्मपत्नी श्रीमती यशोदादेवी की ओर से और सोसाइटी के कार्यकर्त्ता श्री मालीराम शर्मा, सोहनलाल शर्मा के प्रबन्ध से ११ ब्राह्मण-कुमारों का यज्ञोपवीत संस्कार कर्मकाण्डी ब्राह्मणों के हाथों कराया गया और ब्रह्मभोज भी हुआ। कैम्पों में भी पीड़ित शरणार्थियों के बच्चों के यज्ञोपवीत संस्कार कराने की आयोजना की जा रही है।

—संवाददाता

* * *

हरिद्वार में मारवाड़ी रिलीफ-सोसाइटी जो पीड़ित शरणार्थियों की सेवा कर रही है, उसको निम्न महानुभावों की ओर से सहायता मिली है। ५००) बिश्वम्भर सहाय जी, मुजफ्फरनगर, २००) पंजाबी सभा, इलाहाबाद, १००) सागरमल जी बियानी, सीकर, २५) श्रीमती प्रकाशदेवी हरिद्वार सम्मेलन, २६) मनीआर्डर द्वारा एक महानुभाव से।

—संवाददाता

* * *

पचमढ़ी नगर में जनता को पहले फी आदमी वर्ष में १२ गज कपड़ा मिलता था। लगभग दो माह से जनता के लिए सरकार ने १२ गज के बजाय ५ गज कर दिया है, इससे जनता को बड़ा कष्ट है।

—संवाददाता

* * *

नीमच में विद्या के विकास की पूर्ति करने के लिए यहाँ "श्री ललित-साहित्य-सदन" खोला गया है। सदन द्वारा हिन्दी पुस्तकों का प्रकाशन भी यथासम्भव किया जायगा।

—संवाददाता

* * *

सीतापुर में कस्बा मछरेहटा की जनता को तेल और शकर करीब १ साल हो गया नहीं मिला। जिला सीतापुर का सप्लाई विभाग यहाँ की ५ हजार जनता के साथ यह अन्याय कर रहा है। इससे जनता में काफी असंतोष पैदा हो गया है।

—संवाददाता

* * *

श्रीगङ्गानगर (बीकानेर स्टेट) में श्री सनातनधर्म युवक-सभा द्वारा श्री गौरीशंकराचार्य जी के सभापतित्व में सार्वजनिक सभा हुई; जिसमें विद्वानों ने गऊ के गुणों को बताया और उसकी रक्षा करने के लिए विशेष जोर दिया और यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ कि "यह सभा भारतीय विधान-परिषद् के अध्यक्ष और भारतीय सरकार से यह अपील करती है कि भविष्य में लागू होनेवाले नये विधान में गऊ-वध को कानून द्वारा बंद करा दिया जाय, क्योंकि गऊ-वध जारी रहने से गोवंश राष्ट्र के स्वास्थ्य, कृषि-सम्पत्ति और जनता का बौद्धिक ह्रास होता जा रहा है। अतः राष्ट्र की रक्षा के लिए गोरक्षा आवश्यक है।"

सभापति ने जनता से अपील की कि १ अगस्त १९४७ को "हिन्दी-दिवस" बड़ी धूम-धाम से मनायें और भारतीय विधान-परिषद् के अध्यक्ष से माँग करें कि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी हो।

—संवाददाता

* * *

बद्रीनाथ गढ़वाल में जनमत की उपेक्षा के साथ बनाये गये तथा जनता की इच्छा के प्रतिकूल लागू किये जानेवाले सेनीटेशन एण्ड इम्प्रूवमेण्ट ऐक्ट का घोर विरोध बराबर सार्वजनिक सभाओं द्वारा किया जा रहा है। यहाँ नागरिक-संघ के तत्त्वाधान में पुरी बद्रीनाथ निवासियों तथा यात्रीगणों की सार्वजनिक सभा उक्त घातक ऐक्ट के विरोध में प्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्त्ता तथा महावीर कार्यालय के संस्थापक श्री मनोहरलाल जी शाह बागेश्वर अल्मोड़ा निवासी की अध्यक्षता में हुई।

सर्व-सम्मति से उक्त ऐक्ट का जोरदार विरोध किया गया तथा प्रस्ताव द्वारा यू० पी० की जनप्रिय सरकार और मंदिर बद्रीनाथ कमेटी से प्रार्थना की गई कि वे गलत सुझाव द्वारा हैलेट-शाही के जमाने में बनाये गये इस ऐक्ट को यहाँ लागू होने से रोक दें, अन्यथा असन्तोष के फलस्वरूप जनता को शान्तिपूर्ण सविनय आन्दोलन छेड़ने को बाध्य होना पड़ेगा।

—रामदयालु शर्मा

* * *

लक्ष्मणगढ़ (सीकर) में बाल-पुस्तकालय बालकों की सेवा लगभग १० महीने से बड़े सुचारुरूप से कर रहा है। यहाँ बालोपयोगी साहित्य-संगृहीत है और हिन्दुस्तान में प्रकाशित होनेवाले प्रायः सभी पत्र आते हैं। बाल-साहित्य-प्रेमी महाशय तथा बालोपयोगी पत्र का पता भेजने की कृपा करें।

—'चंचल'

* * *

वृन्दावन में गत २० ता० की रात को सेठ गिरजमल पंसारी का कोई खून कर गया। वह आध घंटे बाद ही मर गये। सेठ जी यहाँ के धनी आदमियों में से थे। इस घटना से शहर में सनसनी है। इधर शहर में चोरियाँ भी काफी हो रही हैं। पर यहाँ की पुलिस हाथ रखे बैठी है। जनता में असन्तोष है।

वृन्दावन के हिन्दी-प्रेमियों ने गांधी तथा विधान-सभा के के पास तार दिये हैं कि हिन्दी राष्ट्रभाषा मानी जाय और को लिपि।

—सं

आदर्श महापुरुष

इस पुस्तक में गौतम बुद्ध, स्वामी, मुहम्मद साहब, स्वामी चार्य, चैतन्य महाप्रभु, सन्त स्वामी दयानन्द आदि १७ महा का जीवन-चरित्र तथा उनके मुख्य मुख्य विशेषताओं का किया गया है। लेखक का उद्देश सतों की शिक्षाओं और विशेषता पाठकों को परिचित कराना है के बड़े-बड़े मत किन बातों में हैं और किन में भिन्न हैं निर्णय भी पाठक इस पुस्तक को कर सकेंगे। सवा सौ से ऊपर सचित्र पुस्तक का मूल्य केवल रुपया!

ईंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

एन. आई. पी. के हिन्दी प्रकाशन

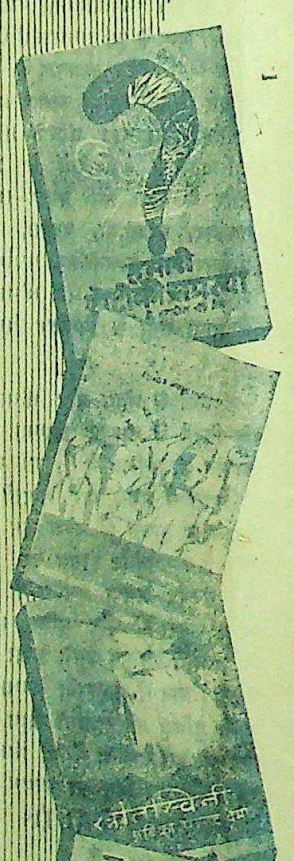

प्रकाशित

हमारी रोटी की समस्या
लेखक : डा० जगदीशचन्द्र जैन; सफ़े ५२; क़ीमत ।।।)

आज़ाद वतन
[१९४२ में ज़ब्त हुए राष्ट्रीय गानें]
लेखक : सैयद क़ासिम अली, भूमिका—रफ़ी अहमद क़िदवई, यूं मंत्री यू० पी०; सफ़े ६९; क़ीमत १)

स्रोतस्विनी
[पद्य-संग्रह] लेखक : अंबिकाप्रसाद वर्मा, 'दिव्य'; भूमिका—बनारसीदास चतुर्वेदी; सफ़े १०६; क़ीमत १।।।)

रोज़ा लुक्ज़ेम्बुर्ग
[लेनिन के समकालीन जर्मनी की श्रेष्ठतम् समाजवादी महिला, रोज़ा लुक्ज़ेम्बुर्ग, की जीवनी] लेखक, श्री रामवृक्ष बेनीपुरी; भूमिका—जयप्रकाश नारायण; सफ़े १९४; क़ीमत ३।)

"इस पुस्तक से समाजवाद, मार्क्सवाद आदि सिद्धान्तों को समझने में बड़ी सहायता मिलती है।" "यह पुस्तक ध्यान से पढ़ने लायक है·····यह एक अनमोल रत्न है।" "पुस्तक पठनीय, मननीय और संग्रहणीय है।"

शीघ्र ही प्रकाशित हो रही हैं

निशानियाँ
[प्रेम—कहानियाँ]
लेखक : उपेन्द्रनाथ अश्क; सफ़े लगभग १७५; क़ीमत २॥=)

सप्त किरण
[सात एकांकी]
लेखक : डा० रामकुमार वर्मा; सफ़े लगभग २००; क़ीमत लगभग ३)

आहुति
[कहानियाँ]
लेखक : इलाचन्द्र जोशी; सफ़े लगभग २००; क़ीमत लगभग २॥=)

राजनीतिक ज्ञान-कोष
सम्पादक : डा० बूलचन्द; सफ़े लगभग ४००
इस ग्रन्थ में राजनीति से सम्बन्धित व्यक्तियों, संस्थाओं आदि का संक्षिप्त वर्णन है। हिन्दी भाषा की पहली-एकता पुस्तक होगी।

एजेंसी के लिए लिखें :—
सेक्रेटरी बिक्री-विभाग
नेशनल इन्फरमेशन ऐन्ड पब्लिकेशन्स लिमिटेड,
नेशनल हाउस, ६, तुलक रोड,
अपोलो बंदर बम्बई-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पेज ८ का शेष)

और दूरदर्शी पुत्र संसार से उठ गया। यह हत्याकांड हमको हिंसा की भयानकता और उसके द्वारा लाई विपत्ति को दिखलाता है। ये स्वतंत्रता के शत्रु हैं और इनके फल अराजकता और दुख हैं। भारत में ऐसे अनेक भयानक दिनों के बीच से हम गुजरे। अराजकता और हिंसा से भरे हुए वे दिन थे। हम अपने हृदय को टटोलें और देखें कि वह रास्ता हमें किस ओर ले जाता है। भारत, बर्मा और एशिया अपनी स्वतंत्रता के मूल्य पर हिंसक हो रहे हैं। 'हमारे सारे स्वप्न टूट जायँगे यदि इस कठिन समय पर हम बुद्धि से विचार और कार्य न करेंगे।'

'सबसे बढ़कर, हम सबको मिलकर, इस कांड को बन्द करना होगा और साथ साथ तमाम समाज शत्रुओं का सामना और उनके कार्यों को रोकना होगा। यह समय कानूनी या व्यक्तिगत शत्रुता का नहीं है। वर्त्तमान तमाम विभीषकताओं और भविष्य की आशाओं के साथ खड़ा हूँ। हमें वर्त्तमान में कार्य करना चाहिए जिससे भविष्य रहने योग्य बन सके।'

'बर्मा के मनुष्यों के प्रति मैं अपनी और भारत की सहानुभूति प्रकट करता हूँ। भविष्य के कठिन दिनों में भारत उनके साथ होगा।'

आज बर्मा में आंगसान नहीं हैं। अपने परिश्रमों का फल इस भाँति अपने हाथ से निकलते देखकर आंगसान की हड्डियाँ ज़हाँ कहीं भी होंगी, शायद काँप उठें। बर्मा ने आंगसान को खो दिया पर यह न भूलना चाहिए कि वह बलिदान भी फल लायेगा। बर्मा के इन शहीदों की एक एक रक्त-बूँद से सहस्त्रों आंगसान पैदा हो जायँगे।

ऐतिहासिक भौतिकवाद

लेखक, भूतपूर्व काकोरी-कैदी

श्री मन्मथनाथ गुप्त और श्री रमेन्द्र वर्मा

लगभग ५०० पृष्ठों के सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य केवल ६) रुपये।

...वाद में ऐतिहासिक भौतिकवाद की गहनता को सरलतापूर्वक समझने ...इस ग्रन्थ की उपयोगिता अद्वितीय है। समाजवाद समझनेवालों के लिए इसका अध्ययन अपरिहार्य है।

...नेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

परमात्मा पर भरोसा करो

...और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का ...के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि ...से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और ...प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत ...३।-) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय ...प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों ...पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। ...मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। ...१ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग।

...विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

बालों को स्वस्थ और सुंदर रखता है

मनराइज पिक्चर्स की "अमर आशा" का नायक उमाकांत

कोमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।

वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

कथा-साहित्य का नवीन उपादान

अपना-पराया

लेखक—पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

...मौलिक मनोरंजक उपन्यास में एक चीनी तरुणी का मेनका-नृत्य जहाँ ...आत्म-विभोर कर देगा, वहीं तिब्बत और चीन की नैसर्गिक छटा, और ...अजीबोग़रीब रस्म-रिवाज भी आपके सामने चलचित्र की तरह नाच ...चीन की यह रहस्यमयी तरुणी किस प्रकार भारत आती और अपने धर्म ...अभिमान की रक्षा का व्रत लेकर, एक भारतीय नौसैनिक की सहायता ...देश लौट जाती है, आदि प्रसंग एक स्वस्थ सामाजिक दृष्टिकोण के ...प्रणय की रंगीनियों, परिस्थितियों के झमेलों और जिज्ञासा के ...जो परिचय देंगे, उसे आप कभी भूल न सकेंगे।

...२३२, सजिल्द और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २॥) रुपये।

...नेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

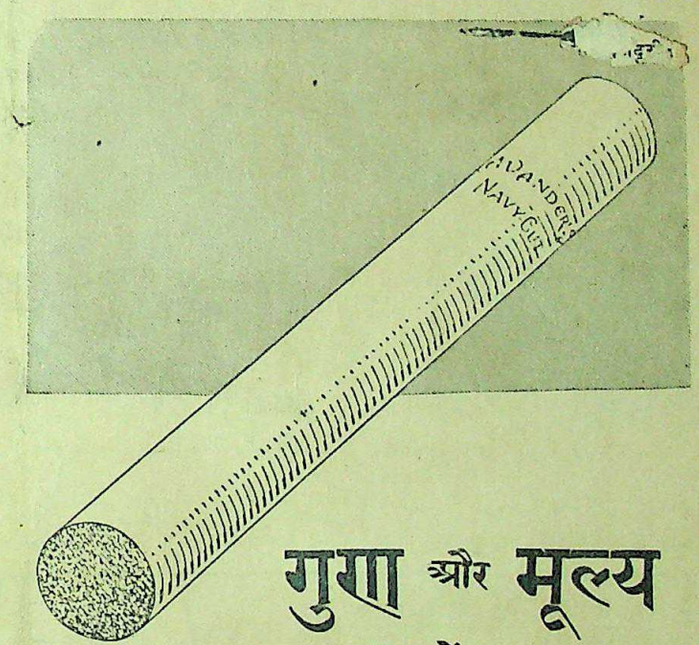

गुण और मूल्य में कोई परिवर्तन नहीं

CAVANDER'S MAGNUMS

अधिक बड़ी सिगरेट

१० के पैकेट के लिए ५ आने
५० के टिन के लिए १॥=)
इसके अलावा स्थानीय टैक्स जहाँ लागू हो

हिन्दुस्तान के लिए एजेण्ट
डि० मैक्रोपोलो ऐण्ड कं० लि०
बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

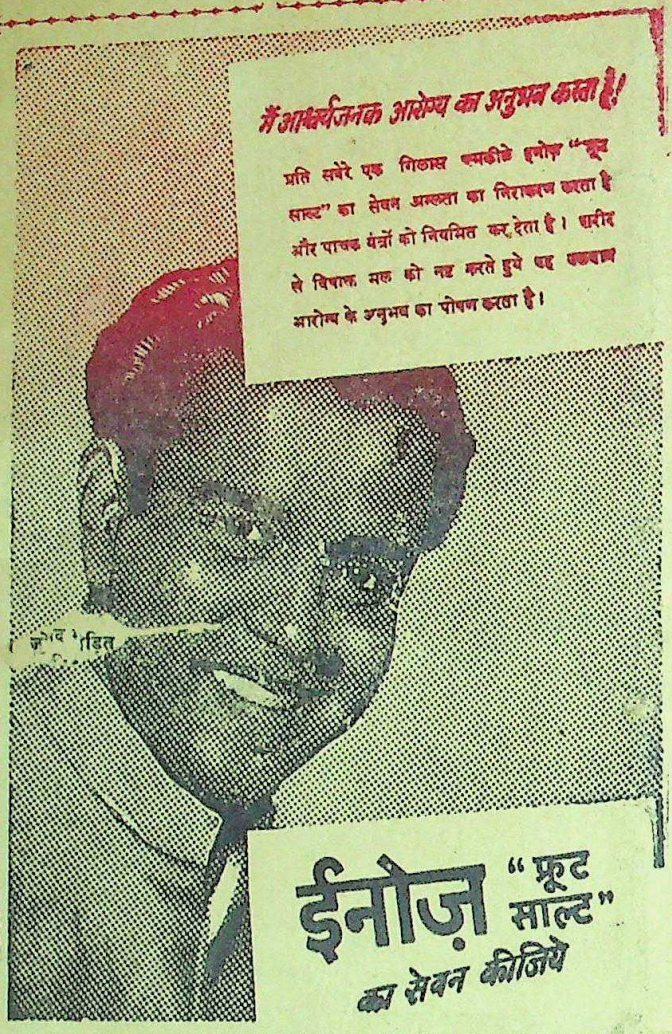
मैं आश्चर्यजनक आरोग्य का अनुभव करता हूँ!
प्रति सवेरे एक गिलास चमकीले इनोज़ "फ्रूट साल्ट" का सेवन अम्लता का निराकरण करता है और पाचक यंत्रों को नियमित कर देता है। शरीर से विषाक्त मल को नष्ट करते हुये यह बलवान आरोग्य के अनुभव का पोषण करता है।
ईनोज़ "फ्रूट साल्ट"
का सेवन कीजिये

अरसाती
रपाँसी
और सर्दी के लि
SIROLIN
ROCHE
सिरोलीन
"रोच" लीजि
संसारभरमें उपयोग किया जा

पेट-दर्द का रोगी कहता है

मैं 'मेकलीन्स्' की कितनी प्रशंसा करूँ!

यदी आप मंदाग्नि मे पिडित हैं, और भोजन के बाद दर्द या अन्य कष्टदायी लक्षणों का अनुभव करते है, तो मेक्लीन ब्रांड स्टमक पावडर का सेवन कीजिये। यह रोग का तत्काल निराकरण कर देगा और पाचनशक्ति को सुधार देगा।

प्रिय महोदय

मैं आप पर यह प्रकट करने के लिये लिखता हूँ कि मैं मेकलीन्स् की कितनी प्रशंसा करता हूँ। पेट दर्द की बड़ी परेशानी में वर्षोंतक मैंने उसका प्रयोग किया .....

मैं, असल में, नहीं जानता कि यदि मेरे पास मेकलीन्स नहीं होता तो मैं क्या करता। अधिक और क्या प्रशंसा करूँ?

भवदीय, (हस्ताक्षर) डब्लू. ई. आर.

मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर की व्यापक ख्याति उसकी हृदय दाह, उदर वायु, जी मिचलाने एवं अपचन से होने वाले पेट के दर्दों के निवारण में प्रभावोत्पादकता का मान्य प्रमाण है।

"एलेक्स सी. मेकलीन" के हस्ताक्षरवाला मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर और गोलियाँ ही प्रामाणिक हैं।

MACLEAN Brand Stomach Powder
Alex. C. Maclean

गोलियों के रूप में भी.

दांतों के अनुकूल आकार

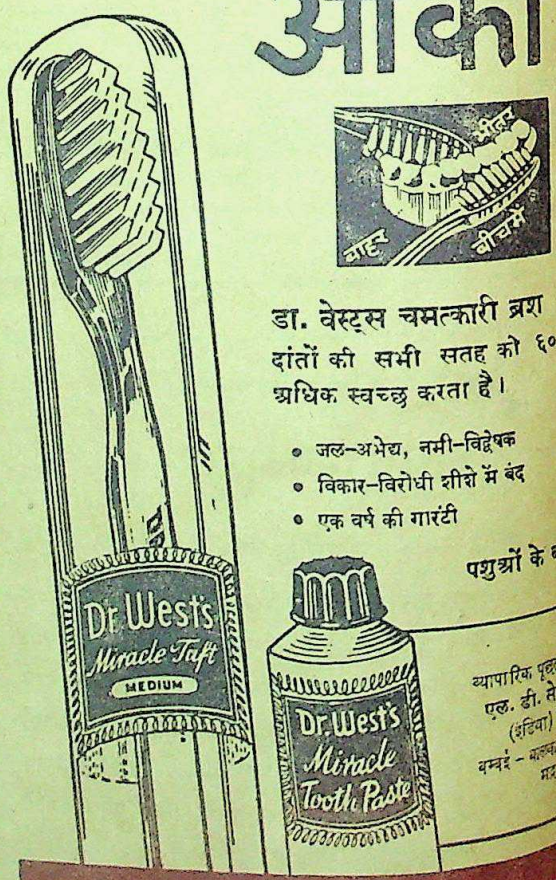

डा. वेस्ट्स चमत्कारी ब्रश
दांतों की सभी सतह को ६० प्रति
अधिक स्वच्छ करता है।

- जल-अभेद्य, नमी-विद्वेषक
- विकार-विरोधी शीशे में बंद
- एक वर्ष की गारंटी

पशुओं के बालों से

व्यापारिक पूछताछ के
एल. डी. सेमूर
(इंडिया) लिमि
बम्बई - कलकत्ता -
मद्रास

डा. वेस्ट्स टूथ ब्रश
टूथ पेस्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

१० अगस्त, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 10th August, 194

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

का भयंकर हत्याकाण्ड
साम्प्रदायिकता क्यों है ?

कांग्रेसी सरकार की सहायता करो
संघ-विधान - कमेटी की सिफारिशें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।–) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

खांसी और जुकाम की सर्वाधिक लोकप्रिय दवा

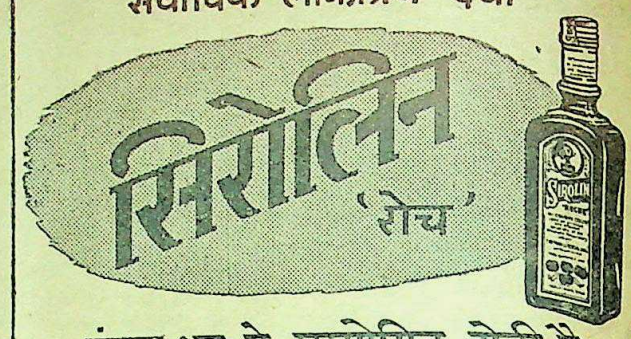

संसार भर मे उपयोगित होती है।

भा र त स र का र

डिसपोज़लज़ नीलाम

नीलाम द्वारा बिक्री

भविष्य में डायरैक्टोरेट जैनरल ऑफ़ डिसपोज़लज़ द्वारा बचे हुए अच्छे और उपयोगी माल का थोक के रूप में नीलाम नियम पूर्वक हुआ करेगा।

नीलाम द्वारा माल बेचने के दो मुख्य साधन होंगे :—

[अ] नियत समय पर माल के स्थान पर नीलाम—किसी एक भण्डार या एक केन्द्र के विभिन्न भण्डारों में संचित बचा हुआ अच्छा माल नियत समय पर नीलाम द्वारा बेचा जावेगा जब तक सारा माल न बिक जावे।

यह बचा हुआ माल उचित भागों में बांट कर बेचा जावेगा इन भागों का मूल्य प्रायः २५,०००) से १००,०००) रु० तक होगा।

[ब] नीलाम द्वारा बिक्री जो इन दो प्रकार के माल की हुआ करेगी:—(i) बचा हुआ और अनुपयोगी माल सालवेज डीपू में (ii) बचा हुआ माल जो समय समय पर संचय होता रहेगा।

दोनों प्रकार के नीलाम की तारीख़, समय, नीलाम का स्थान, माल तथा बिक्री सम्बन्धी विवरण, नियत समय पर समाचार पत्रों, विशेषतया स्थानीय पत्रों में प्रकाशित होगा।

ऐसी सूचना डायरैक्टोरेट जैनरल आफ़ डिसपोज़लज़, नई देहली द्वारा प्रकाशित डिसपोज़लज़ के पाक्षिक बुलेटिन में भी प्रकाशित होगी। यह बुलेटिन ६ मास का ५) रु० चन्दा पेशगी देने वालों को प्राप्त हो सकता है।

इस के अतिरिक्त नीलाम की सूचना विज्ञापनों और पोस्टरों द्वारा भी दी जावेगी।

सूचना की प्रतीक्षा कीजिए - नीलाम सम्बन्धी विवरण, प्रोग्राम और नियम इत्यादि के लिये रिजनल कमिश्नर से मिलिए

भारत सरकार के डायरैक्टोरेट जैनरल ऑफ़ डिसपोज़लज़, नई देहली द्वारा प्रकाशित A.C. 292

[illegible] का नवीन उपादान

अपना-पराया

लेखक—पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

इस मौलिक मनोरंजक उपन्यास में एक चीनी तरुणी का मैनका-नृत्य जहाँ आपको आत्म-विभोर कर देगा, वहीं तिब्बत और चीन की नैसर्गिक छटा, और वहाँ के अजीबोग़रीब रस्म-रिवाज भी आपके सामने चलचित्र की तरह नाच उठेंगे। चीन की यह रहस्यमयी तरुणी किस प्रकार भारत आती और अपने धर्म तथा स्वदेशाभिमान की रक्षा का व्रत लेकर, एक भारतीय नौसैनिक की सहायता से अपने देश लौट जाती है, आदि प्रसंग एक स्वस्थ सामाजिक दृष्टिकोण के साथ आपको प्रणय की रंगीनियों, परिस्थितियों के झमेलों और जिज्ञासा के झकोरों का जो परिचय देंगे, उसे आप कभी भूल न सकेंगे।

पृष्ठ २३२, सजिल्द और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २॥) रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

प्रणय-जगत् में हलचल मचा देनेवाली पुस्तक

प्रेम-रहस्य

लेखक—पं० रामचन्द्र शुक्ल "सरस"

प्रेम की महत्ता इस संसार में सर्वोपरि है। प्रत्येक मानव को संयोग-वियोग, राग-विराग और प्रेम में आदान-प्रदान का अनुभव होता है। लेकिन प्रेम-रहस्य की गुत्थियाँ विरले ही सुलझा पाते हैं।

लौकिक, अलौकिक, सात्विक, राजस और तामस प्रेम के रहस्योद्घाटन के साथ-साथ हिन्दी, संस्कृत और उर्दू भाषाओं में चुने हुए उदाहरण आपको प्रेम की पावन गंगा में गोते लगाने को विवश कर देंगे।

प्रयाग-विश्व-विद्यालय के भूतपूर्व वाइस चांसलर तथा हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति डाक्टर अमरनाथजी झा ने इस पुस्तक को हिन्दी में अपने ढंग की पहली पुस्तक कहा है और पुस्तक-प्रणयन की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है।

लगभग २०० पृष्ठों की सुन्दर और सजिल्द पुस्तक का मूल्य सिर्फ दो रुपये। पुस्तक धड़ल्ले से बिक रही है। आप भी आज ही मँगवाकर इससे लाभ उठाइए।

प्रतिभा-मण्डल, नया कटरा, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूत

वर्ष ६, संख्या १०] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, १० अगस्त, १९४७

सप्ताह के समाचार

नई नियुक्तियों पर सरकारी घोषणा हुई। पं० जवाहरलाल नेहरू--प्रधान मंत्री तथा विदेश मंत्री। सरदार वल्लभभाई पटेल--डिप्टी प्रधान मंत्री, गृह और सूचना विभाग। सर षण्मुखम् चेट्टी--वित्त विभाग। डा० राजेन्द्रप्रसाद--खाद्य विभाग। मौलाना अबुल कलाम आजाद--शिक्षा विभाग। राजकुमारी अमृतकौर--स्वास्थ्य विभाग। मि० एन० वी० गाडगिल--व्यापार विभाग। श्री आई० मुहम्मद किदवई--कारखाने, खान, खनिज। सरदार बल्देवसिंह--रक्षा। श्री जगजीवनराम--श्रम। सरदार सन्तोख सिंह--डाक और तार। डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी--उद्योग और सप्लाई। डा० बी० आर० अम्बेडकर--कानून। श्री रफी अहमद किदवई--रेल और यातायात।

* * *

हिन्दुस्तान के समस्त प्रान्तों के लिए नये गवर्नरों की घोषणा भी हो गई। बम्बई--सर कौलविल। मद्रास--सर आर्ची वोल्डनाय। संयुक्तप्रान्त--डा० विधानचन्द्र राय। मध्यप्रान्त--श्री हरिदास पकवासा। बिहार--श्री जयरामदास दौलतराम। पश्चिमी बंगाल--डा० राजागोपालाचार्य। पूर्वी पंजाब--श्री चंदूलाल त्रिवेदी। उड़ीसा--डा० हरेकृष्णाय काटजू। आसाम--सर अकबर हैदरी।

* * *

डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया ने अपने वक्तव्य देते हुए देशी नरेशों से अपील की है कि वे सब राजनीतिक कैदियों को रिहा कर दें और जनता के साथ अच्छा सम्बन्ध स्थापित करें।

* * *

एक सरकारी घोषणा में कहा गया है कि अँगरेजी सेना भारत और पाकिस्तान से शीघ्र ही हटेगी। अँगरेजी सेना का अन्तिम जत्था एक परेड दिखाने के बाद ३१ अगस्त को बम्बई से रवाना हो जायगा।

* * *

ज्ञात हुआ है कि युक्तप्रान्तीय सरकार ने प्रान्त के समस्त तीर्थ-स्थानों में वेश्या बन्द कर दिये जाने का निर्णय किया है। सरकार के अत्यंत निकट सम्पर्क में रहनेवाले एक सूत्र से ज्ञात हुआ है कि १५ अगस्त को प्रधान मंत्री श्री गोविन्दवल्लभ पन्त एक महत्त्वपूर्ण घोषणा करेंगे। पहली और सबसे महत्त्वपूर्ण घोषणा यह होगी कि इस दिशा में पहली कार्रवाई के तौर पर युक्तप्रान्त के समस्त तीर्थ नगरों में वेश्या बन्द कर दिया जायगा।

* * *

विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि प्रान्तीय गवर्नरों को ५,५००) वेतन के रूप में दिये जायँगे। साथ ही उनको आवश्यक भत्ता भी दिया जायगा।

* * *

संयुक्तप्रान्त के प्रधान मंत्री श्री गोविन्दवल्लभ पंत ने एक भाषण में कहा है कि हिन्दू महासभा ने जो खुला मोर्चा प्रारम्भ किया है वह जनता के विरुद्ध आन्दोलन है। यह आन्दोलन स्वतन्त्रता के कट्टर दुश्मनों द्वारा प्रारम्भ किया गया है। आज जब भारत ने बहुत बड़ी कुर्बानी करके स्वतन्त्रता प्राप्त की है तो उस स्वतन्त्रता में बाधा डालना देशद्रोह करना है। आज जब भारत गुलामी की जंजीरें तोड़ने जा रहा है तो इससे बढ़कर खुशी का दिन और कौन-सा हो सका है। धर्म खतरे में है का नारा लगाकर ये हिन्दू महासभा के नेता लोगों को धोखे में डालना चाहते हैं।

* * *

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित रूसी राजदूत का पद ग्रहण करने के लिए मास्को रवाना हो गईं। श्रीमती पंडित के कार्यक्रम के अनुसार वे रूस के विदेश मंत्री श्री मो० मोलोटोव से मिलकर अपने कागज पेश करने का दिवस निश्चित करेंगी। वे १५ अगस्त को रूस में भारत स्वतन्त्रता दिवस मनायेंगी। इसके लिए वे राष्ट्रीय झण्डे साथ ले गई हैं।

* * *

अगली १४ अगस्त की आधी रात के ठीक एक मिनट बाद स्वतन्त्र भारत का पहला मन्त्रिमण्डल शपथ ग्रहण करेगा। ज्योतिषियों के विचार से १५ अगस्त के सबेरे इस महान् शुभ काम के लिए शुभ मुहूर्त नहीं है। आधी राज्य के बाद यह काम होने से अँगरेजी योजना भली भाँति पूरी होगी। इन्हीं ज्योतिषियों ने शिमला-सम्मेलन की असफलता की गणना की थी।

* * *

महात्मा गांधी १ अगस्त को काश्मीर पहुँच गये। काश्मीर नेशनल कांफ्रेंस के अध्यक्ष शेख अब्दुल्ला ने गांधी जी का स्वागत किया। गांधी जी जहाँ ठहरे हैं, वहाँ काफी भीड़ होती है। राज्य के प्रधान मन्त्री श्री काक भी महात्मा जी से मिले। ३ अगस्त को काश्मीर नरेश ने भी गांधी जी से भेंट की।

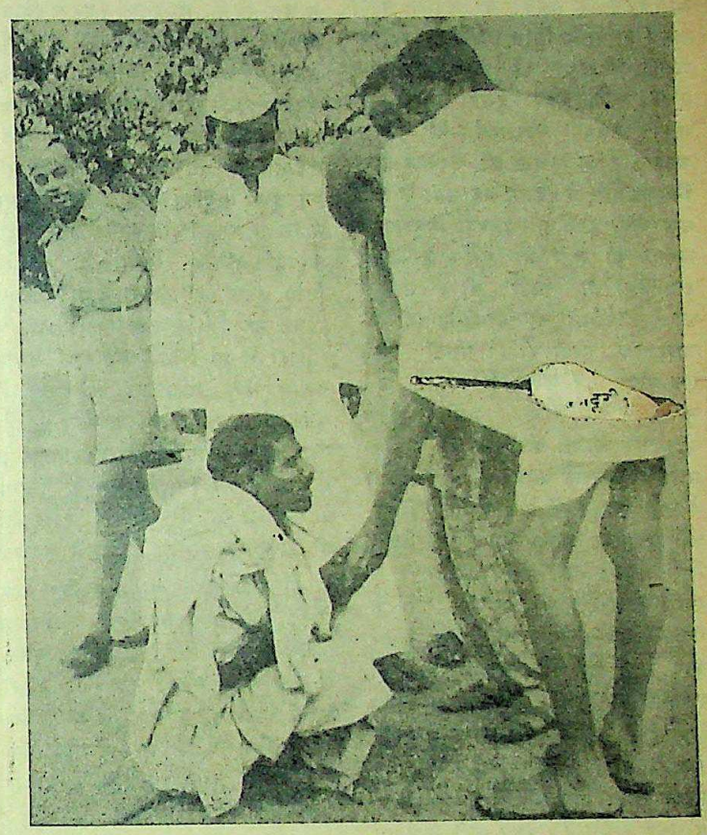

बिहार के साम्प्रदायिक दंगे से पीड़ितों की सहायता के लिए एक अंधा हिन्दू भिखारी महात्मा गांधी को चन्दा दे रहा है।

असमय संघर्ष

(हिन्दू महासभाइयों के प्रति)

लेखक, श्री सोहनलाल द्विवेदी एम० ए०

आजादी के उषाकाल की हुई न अब तक अगवानी,
यह असमय संघर्ष तुम्हारा, यह असमय रण की वाणी!

अभी अभी तो अपने घर में आजादी आने को है,
अभी अभी तो कालरात्रि भी अम्बर से जाने को है,
अभी अभी तो शासन-सत्ता हाथों में आना ही है,
नया संतुलन, नई व्यवस्था, नया सृजन लाना ही है,
क्यों इतनी शीघ्रता तुम्हें, कुछ बात नहीं जाती जानी;
यह असमय संघर्ष तुम्हारा, यह असमय रण की वाणी।

हुआ कौन अभिनव प्रहार है, जो इतना विक्षोभ हुआ?
इन मंगल घड़ियों में अपनों से लड़ने का लोभ हुआ,
अब तक तुम थे मौन, कौन पीड़ा अब झनकार उठी?
आज मुक्ति के पुण्य पर्व में, रणभेरी हुंकार उठी।
तुम्हें नहीं शोभा देती है, यह असमय की कुर्बानी!
यह असमय संघर्ष तुम्हारा, यह असमय रण की वाणी॥

बुरा न मानो, तो पूछें, कितना तुमने बलिदान किया?
बुरा न मानो, तो पूछें, कितने शीशों का दान दिया?
बुरा न मानो, तो पूछें अब तक क्यों खुला न गर्जन था?
जब नृशंसता, बर्बरता का घर में भीषण तर्जन था;
जब हम रण से हटे, बढ़े तुम, लिए धनुर्धर का पानी
यह असमय संघर्ष तुम्हारा, यह असमय रण की वाणी॥

ठहरो जरा, बनो मत आतुर, कुछ तो सोच-विचार करो
जनमत जाग्रत करो, जाति में नया रक्त संचार करो,
रक्त तुम्हारा ही बहता है हममें, घायल प्राणों में,
अभी पड़ा बंगाल और पांचाल विष बुझे बाणों में।
आजादी के पायल की झनकार न तुमने पहचानी,
यह असमय संघर्ष तुम्हारा, यह असमय रण की वाणी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

हमारे नये गवर्नर

प्रान्तों में नये गवर्नरों की नियुक्तियों का स्वागत हो रहा है। विशेषता इस बात की है कि गवर्नरों की नियुक्ति करते समय प्रान्तों के विभिन्न प्रधानमंत्रियों से सलाह ले ली गई है। आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ। प्रान्तों के गवर्नर अथवा भारतवर्ष के गवर्नर-जनरल सर्वदा सम्राट की सरकार द्वारा नियुक्त होते थे। इससे वह उसी के प्रति उत्तरदायी होते थे। उनकी नियुक्ति में जनता की जरा भी पूछ-ताछ अथवा राय नहीं ली जाती थी। गवर्नरों की कार्यशैली की टीका-टिप्पणी भी खतरनाक होती थी। प्रान्तों के वे एक-मात्र [illegible] थे। भूतपूर्व सर मारिस हैलेट और सर ओलफ कैरो विदेशी शासन-सत्ता के ज्वलन्त प्रमाण थे। महात्मा जी ने सन् १९४२ में ८ अगस्त को नौकर-शाही सरकार के लिए जो शब्द इस्तेमाल किये थे वह शासकों के अधिकारों के स्पष्ट चित्र हैं। महात्मा जी ने कहा था—"इंगलैण्ड का राजा जितना अधिकार अपने देश और साम्राज्य में नहीं रखता उससे कहीं अधिक अधिकार हिन्दुस्तान का वायसराय हिन्दुस्तान के ऊपर, गवर्नर अपने शासित प्रान्त के ऊपर, कलक्टर जिले पर, तहसीलदार तहसील के ऊपर रखता है। यही नहीं थानेदार अपने थानों के हल्के में तथा चौकीदार और मुखिया तक विशेष अधिकार रखते हैं। एक प्रकार से उन्हें अपने क्षेत्र का सम्राट् कहा जा सकता है।" भारतवर्ष के एक अनुभवी महापुरुष की यह वाणी अक्षरशः सत्य है। इसी नौकरशाही के विरुद्ध कांग्रेस ने गान्धी जी के नेतृत्व में स्वातंत्र्य संग्राम छेड़ा है। आज से पूर्व के होनेवाले गवर्नरों का कर्त्तव्य ब्रिटिश सरकार की सत्ता को कायम रखना था। वे ही गवर्नर सफल शासक माने जाते थे जो भारतीय राष्ट्रीयता के कुचलने और ब्रिटिश सत्ता को बढ़ाने में कमी नहीं करते थे। ब्रिटिश शासन में उन्हीं गवर्नरों को पदवियाँ भी अधिक मिलती रही हैं जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के गौरव को बढ़ाने में जनता के खून से होलियाँ खेली हैं। ऐसे गवर्नर ब्रिटिश-साम्राज्य की रीढ़ रहे हैं। अब संसार की परिस्थिति ने अँगरेजों को हमारी स्वतंत्रता घोषित करने के लिए विवश कर दिया। उसी घोषणा के फलस्वरूप हमारे यहाँ नये नवर्गर नियुक्त हुए हैं। नियुक्तियों की यह घोषणा नवयुग का प्रथम प्रभात है।

सरकार को इस गवर्नरों के चुनाव के लिए बधाई देते हैं। भारत को जिन संकटों का सामना करना पड़ा है उनमें अधिकतर हाथ ब्रिटिश गवर्नरों का ही था। बंगाल के लाखों आदमी बिना मौत के दुर्भिक्ष के गाल में काल कवलित हो गये। हमें यह विश्वास है कि बंगाल के नवनियुक्त गवर्नर श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, जो भारतीय स्वतंत्रता के लिए ब्रिटिश कारागारों में बन्द रहे हैं, का बंगाल हृदय से स्वागत करेगा। वे ब्रिटिश नौकरशाही के गवर्नर नहीं बल्कि अपनी जनता के अग्रणी नेता हैं। उनके नेतृत्व में बंगाल को अच्छा ही दिन देखने को मिलेगा। उड़ीसा के लिए डाक्टर कैलाशनाथ काटजू की नियुक्ति हुई है। डाक्टर साहब ने कितने अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भारत का प्रतिनिधित्व किया है। प्रतिनिधि मंडलों में आप प्रायः अध्यक्ष होकर रहे हैं। आजाद हिन्द सेना के सैनिकों के मामलों में आप एक प्रधान वकील थे। मध्यप्रान्त के लिए श्री मंगलदास पकवासा की नियुक्ति हुई है, ऐसा समझा जाता है कि हैदराबाद के निजाम से भी इस नियुक्ति के सम्बन्ध में राय ली गई थी, क्योंकि बरार का जो झगड़ा चल रहा है उसके सम्बन्ध में श्री पकवासा योग्यतम व्यक्ति सिद्ध होंगे। श्री जयरामदास दौलतराम कितने ही वर्षों से कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी के एक मान्य सदस्य रहे हैं। उनकी सेवायें भारत की आजादी के लिए अँगरेजों से निरन्तर युद्ध करने में निहित हैं। हमारे अपने प्रान्त युक्तप्रान्त में डाक्टर विधानचन्द्र राय नियुक्त हुए हैं। आप दो माह तक अपनी ड्यूटी पर नहीं आ सकते। उस समय तक आप की जगह श्रीमती सरोजनी नायडू कार्य-भार सँभालेंगीं। श्रीमती नायडू उन इन गिनी महिलाओं में हैं जिन्होंने भारत के मस्तक को संसार के सामने ऊँचा रखने में अपनी सारी शक्ति समर्पित कर दी है। डाक्टर विधानचन्द्र केवल राजनीतिज्ञ ही नहीं बल्कि एक सफल डाक्टर हैं जिनके अनुभवों से दूसरे देश-वाले भी प्रभावित हैं। हमारा प्रान्त अभी तक पिछली सरकार में स्वास्थ्य की दृष्टि से जितना पीछे रहा है, डाक्टर साहब के अनुभवों और सहयोग से स्वास्थ्यलाभ में अवश्य उन्नति करेगा। हमें पूर्ण आशा है कि माननीय पन्त जैसे लोकप्रिय प्रधानमंत्री, अन्य मंत्रियों तथा डाक्टर राय में अच्छा सहयोग रहेगा। उनके सहयोग के शासन में यह प्रान्त हर प्रकार से फूले-फलेगा।

हमें नेताओं की सहायता करनी

साम्प्रदायिक भेद और भावना का बहिष्कार ही सच्ची राष्ट्रीयता है

लेखक, पंडित मोहनलाल नेहरू

इस वक्त कांग्रेस के विरुद्ध कुछ साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के कथित नेता गड़बड़ कर जनता में भ्रम फैला रहे हैं और राष्ट्रीयता के मार्ग में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। गलत है। ज़रूरत है इस समय एक सामूहिक संगठन की। पंडित नेहरू ने इस लेख इसी समस्या पर अपने विचार प्रकट किये हैं जो सामयिक और पठनीय हैं।

इस लेख के लेखक पं० मोहनलाल नेहरू।

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि हमारी कांग्रेस सरकार ने यह मान लिया कि आगे सरकारी नौकरियों में मुसलमान अपनी जन-संख्या के हिसाब से अधिक न रखे जावेंगे। जनता की चुनी हुई सरकार को चाहिए भी ऐसा ही था। हिन्दू यह नहीं चाहते कि किसी के हक मारे जावें न उन्होंने कभी ऐसा आन्दोलन ही उठाया मगर जो भी सरकार उनके हक मारेगी उसके खिलाफ आन्दोलन क्यों न उठे? पुलिस में लगभग ५० हजार आदमी हैं। इस हिसाब से मुसलमान ७,००० से अधिक नहीं होने चाहिए और हैं लगभग २६,००० के। बरसों में जाकर उनकी संख्या आबादी के हिसाब से पूरी होगी। खयाल तो यह था कि सन् १९४२ के अत्याचार करनेवालों को अलग होना पड़ेगा। मगर हमारे गृह-मंत्री कहते हैं कि उन लोगों ने काफी सेवा दिखाकर प्रायश्चित्त कर लिया है। हमें इस बात पर विश्वास कर लेना ही चाहिए।

मगर अभी तक सारे ही मुस्लिम कर्मचारी पाकिस्तानी स्वभाव के हैं, ऐसा सरदार पटेल हमें बता चुके हैं और हम भी जानते हैं। ज्यादा सम्भव है कि आगे आनेवाले कर्मचारी भी उसी स्वभाव के हों क्योंकि मुस्लिम विद्यार्थी तक वही स्वभाव रखते हैं, न केवल लड़के वरन् लड़कियाँ भी। इसलिए हमारी राय है कि आगे नौकर रखने की एक [illegible] यह भी होनी चाहिए कि भावी नौकर इस बात का इकरार करें कि वह हिन्दुस्तान हैं और अपने देश की सेवा में जाति धर्म का विचार न करेंगे। यह इकरार हिन्दू, मुसलमान तथा ईसाई सभी लेना चाहिए।

हमें कांग्रेस सरकार पर कटाक्ष करने में कोई सुख नहीं होता। मगर पिछले रवैया देखकर हमें कटाक्ष करना ही पड़ा था क्योंकि हमें दुःख था कि वे जनता अपना विरोधी बना रहे हैं। हिन्दू-राजों, रईसों या उनके पिट्ठुओं की है जनता की वह सेवा उस तरह नहीं सकती जैसे मुस्लिम लीग। हमें तो विश्वास है कि मुस्लिम लीग धोखा देर-सवेर खुलेगा। राजा, नवा रईस भला क्यों अपने पैर में कुल्हाड़ी मा जो नीचे गिरे लोगों को ऊपर उठा कांग्रेस उन्हीं गरीबों की संस्था है अगर वे 'धर्म खतरे में' के फंदे में आ तो उसी तरह उन्हें पछताना पड़ेगा भारतवर्ष के दो टुकड़े होने से मुसल को कम से कम हिन्दुस्तान के मुसल को। असली धर्म कभी खतरे में हो ही सकता। दिखावे का धर्म हमेशा खतरे है। जो धर्म महमूद गजनवी या औरंग के वक्त खतरे में न पड़ा वह कैसे अ हुकूमत में पड़ सकता है? हिन्दू-सभा जमींदारी खतम होते होते रुक जा और मिल-मालिकों का जोर बढ़ जा जो इस वक्त घट रहा है। जहाँ हिन्दुओं से कांग्रेस गवर्नमेंट की सहा करने को कहते हैं वहाँ मंत्रियों से चाहते हैं कि वे सब ही धर्मों, संस्थाओं के साथ इंसाफ का बर्ताव और सर्वप्रिय बनें। वोट भी अब हि मुसलमान साथ ही देंगे। मुसल जिन्हें कांग्रेस टिकट दे वे ही चुने चाहिएँ चाहे म्युनिसिपैलिटी हो कौंसिल। इसी में जनता का भला अलहदा चुनाव बहुत नुकसान चुका है। कांग्रेस ही फिर बिछुड़ी मिला सकती है। किसी दूसरी संस्था यह काम हो नहीं सकता।

मसल है सिर मुँड़ाते ही ओले सो हिन्दू-सभा के आन्दोलन से पूरी रही है। जिस संस्था ने कोई कुरबानी नहीं की वह कुरबानी करनेवालों जीत देखकर अड़ंगा लगाने को तैयार गई। जब आजादी की लड़ाई चल थी तब यह लोग कहाँ थे? कौन-सी

शेष पृष्ठ १८ पर

'देशदूत' का अगला अंक
'स्वतंत्र भारत' विशेषांक होगा
१५ अगस्त को, स्वतंत्रता-दिवस के अवसर पर यह विशेषांक सुन्दर, आकर्षक और बड़ी सजधज से प्रकाशित होगा। एजेंटों से अपनी अपनी कापियाँ अभी से रिजर्व करा लीजिए।
मैनेजर 'देशदूत' इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...रूप से 'देशदूत' के लिए

पंजाब का भयंकर दंगा

...कता, हत्या और लूटमार का रोमांचकारी वर्णन

लेखिका, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

...में होनेवाले दंग का एक ऐतिहासिक महत्त्व है। श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ने ...पीड़ित क्षेत्रों को अपनी आँखों देखा है, इसलिये इस लेख में जो कुछ वर्णन ...है उसमें वास्तविकता है। इस लेखमाला का पहला लेख 'देशदूत' के २० ...अंक में प्रकाशित हो चुका है। लेख अत्यन्त मार्मिक तथा जानकारी से पूर्ण है।

...सारे मूढ़ और अमानुषी आचरण ...परिणाम हुआ। एक विद्वान् ...ई ने मुझे लिखा था कि "जिस ...अंगरेज पिछले २०० वर्षों में ...हुए थे उसमें आज उस समय ...हैं जब वे यहाँ से जा रहे हैं ...स्वतंत्रता के द्वार तक पहुँच ...जिस अखंड भारत की मूर्ति ...वर्षों से हम पूजा कर रहे थे, ...हमारे हृदय-पट पर अंकित ...सुंदर भारत मूर्तिमान होकर ...साहित्य का एक अंग बन गया ...की चर्चा हम इतिहास में पढ़-...मानते थे—जिसकी पूर्ण ...के हम रात-दिन स्वप्न देखा ...वही प्यारा भारत आज टुकड़ों ...हो रहा है और हम अपनी ...अपने हाथ से यह सब करने ...हुए हैं। दुःखी दिल से रुधिर

...लेखिका श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

...हाते हुए हमारे नेता बँटवारा ...में बैठकर अपने-अपने हिस्से ...कर रहे हैं। जहाँ तक मैं देख ...बँटवारे से न हिन्दू खुश हैं न ...। दोनों ही को ऐसा लग रहा ...कोई बाहरी अदृश्य शक्ति ...न रहते हुए भी उनको ...काम के करने के लिए ...रही है। जो कल तक एक था ...दो और शायद दो से भी ...किये जा रहे हैं। अनुभवी ...चिकित्सक हाथ में छुरी लेकर ...के शरीर को काटने के ...हैं। किस स्थान से काटा जावे, ...जावे, कहाँ तक काटा ...को कितनी गहराई तक ...इसके मशविरे हो रहे हैं।

जो एक हो, जिसकी जड़ एक हो, जिसका जीवन एक हो, जो एकता की बुनियादों पर बढ़ा और फला-फूला हो, उसके टुकड़े-टुकड़े करना कुछ सहज नहीं है। परन्तु अपने वैद्य की सलाह यही है कि काट-फाँस ही इस घातक रोग का एक-मात्र इलाज है इसलिए उसे करने पर सब राजी हो गये हैं—परन्तु बुद्धि कहती है, हृदय कहता है कि जो कुछ हो रहा है ठीक नहीं है। रोगी के लिए यह लाभकारी सिद्ध हो इसमें बहुत संदेह है। जो कुछ आज हो रहा है वह पिछले ९ महीने के अस्थायी सरकार के अनुभव और बंगाल, बिहार और विशेष करके पंजाब के दंगों का परिणाम है—एकता में लोगों का विश्वास जाता रहा है। मुस्लिम लीगी और दूसरे लोगों का मिलकर काम करना कुछ असम्भव-सा लगने लगा। भारत के लिए आजकल एक-एक दिन बड़ा मूल्यवान् है। हमको वर्षों का काम महीनों में करना है। उजड़े भारत को बसाना है, जंगल को बाग बनाना है; इसलिए ऐसे नाजुक समय में यदि हम काम को तेजी से आगे न बढ़ा सके तो हमारे लिए अधिकार पाना व्यर्थ है। हमारे नेताओं ने देखा कि ९ लम्बे महीने बीत गये; परन्तु मुस्लिम लीगी वजीरों के अड़ंगा डालने से काम रुका रहा। जब अपने ही साथी अड़चनें डालने लगे तो काम रुके नहीं तो क्या हो? उधर पंजाब के इस प्रचंड हत्या-कांड ने यह सिद्ध कर दिया कि उन्नति के स्थान पर हम अवनति कर रहे हैं और बड़ी तेजी से अधोगति के गढ़े की तरफ चले जा रहे ह।

उसी निराशा की दशा में बँटवारे के प्रस्ताव को मंजूर किया गया। उसका अच्छा फल होगा या बुरा यह भविष्य ही सिद्ध करेगा। बुराई से भलाई भी निकल सकती है। यदि हम सच्चे और निस्वार्थ भाव से काम करने में सफल हुए तो हो सकता है कि इस समय का यह अँधेरा प्रकाश में बदल जावे। हम एक बार फिर अपने भारत को उन्नति के शिखिर पर पहुँचा सकें और वह एक जीतां-जागता शक्ति-शाली देश बनकर संसार में रह सके।

जो कुछ हुआ और हो रहा है उस पर केवल आँसू बहाना ही हमारा काम नहीं है, हमको ठंडे दिल से यह सोचना चाहिए कि इसका कारण क्या है। हमें अपने व्यक्तिगत और सामूहिक आचार-व्यवहार पर गहरी दृष्टि डालकर अपने हृदय को गहराई से टटोल कर देख लेना चाहिए कि हमने कौन-सी भल की जिसका यह फल मिला। यदि हम केवल इतने ही से सन्तुष्ट हो जाते हैं कि अँगरेजी सरकार की फूट डलवाने-वाली नीति अथवा मुस्लिम लीग की उद्दंडता इसका कारण है तो इससे हमको कोई लाभ नहीं होता है, दूसरों को अपराधी मान लेने से ही हमारा काम नहीं चलेगा। यह एक सर्वमान्य सत्य है कि जो छ हम भोग रहे हैं वह सब हमारे ही कर्मों का फल है। इसलिए हमको बड़े ध्यान से अपनी भूलों को समझ लेना चाहिए और आगे के लिए उनका सुधार कर लेना चाहिए।

मैं ऐसा समझती हूँ कि इन उपद्रवों की जड़ केवल राजनैतिक ही नहीं, धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक भी है। यह धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक कारण हमको सतह पर दिखाई न दें फिर भी यह मान लेना चाहिए कि नीचे दूर जड़ों में वे विद्यमान हैं।

पहले मैं धार्मिक और सामाजिक कारण लूँगी। हमने अपने धार्मिक और सामाजिक जीवन में इतनी संकीर्णता का व्यवहार किया कि बहुत बड़ी संख्या में हमारे ही सहधर्मी और साथी हमको छोड़कर हमसे अलग हो गये। छुआ-छूत, ऊँच और नीच की भावना, जाति-पाँति का भेदभाव, स्त्रियों के प्रति संकीर्ण व्यवहार—इन सबका परिणाम यह हुआ कि हममें परस्पर वह मेल और एकता न रही जो जाति को मजबूत और संगठित बनाती है। हजारों-लाखों की संख्या में स्त्री-पुरुष विधर्मी बन गये। ऐसा मानना कि हिन्दू तलवार के जोर से मुसलमान बने हैं ठीक न होगा। इतिहास में कभी-कभी ऐसा हुआ अवश्य है कि धर्मान्ध अधिकारियों ने तलवार के जोर से लोगों को मुसलमान बनाया है; परन्तु यह कहना गलत नहीं कि अधिक-तर हमारे दरिद्र और पददलित जातियों के लोग अपनी इच्छा से विधर्मी बने हैं। साथियों को खोकर इतनी बड़ी चोट खाकर भी हम जगे नहीं हैं। छुआ-छूत अभी तक हममें बराबर कायम है। विधान-परिषद् के कानून बना देने से या कुछ मंदिरों के हरिजनों के लिए खुल जाने से हमको ऐसा नहीं मान लेना चाहिए कि हममें से अस्पृश्यता निकल गई। वह अभी तक कायम है और उसको छोड़ने की हमारी गति बहुत मंद है। महात्मा गांधी के यह शब्द हमको कभी न भूलने चाहिए कि यदि अस्पृश्यता रही तो हिन्दू-धर्म कायम नहीं रह सकता। अस्पृश्यता दूर किये बिना हिन्दू-जाति कभी मजबूत नहीं हो सकती।

ठीक यही बात जातिभेद पर लागू होती है। अनेक उपजातियों में बँटे रहकर हम सच्चे रूप से एक जाति कैसे बन सकते हैं। इसके लिए दलील देने की अधिक आवश्यकता नहीं है। हमने अपने विशाल और पवित्र धर्म को भी इतना संकीर्ण बना रक्खा है कि धर्म के नाम पर अनेक अधर्म किया करते हैं। चौके, चूल्हे और तीर्थ-मन्दिरों तक ही हमारा धर्म सीमित है। विधर्मियों को अपवित्र मानकर उनसे खान-पान का परहेज करते हैं। वे हमारी प्रार्थना में शरीक नहीं हो सकते हैं, हमारे मन्दिरों में नहीं घुस सकते, परस्पर शादी-ब्याह नहीं कर सकते। सारांश यह कि अलग करनेवाली इन सब बातों को अपनाकर हमने अपनों को पराया बना लिया। एक देश के, एक खून और हड्डी के, एक जाति और धरती के होते हुए भी हम अलग अलग हो गये। इन्हीं कारणों से अँगरेज इतनी आसानी से हममें फूट डलवा सके। यदि हम एक होते, यदि हमारा परस्पर मित्र और प्रेम-भाव होता, हम दिल से अपने आपको एक ही जाति का मानते तो कौन हमको लड़वा सकता था और जिन्ना साहब के कायदे आजम होने पर भी अपनी दो जातिवाली दलील को माननेवाले ढूँढ़ने से भी न मिलते।

आर्थिक दृष्टि से जो कुछ हुआ उसको आर्थिक विप्लव नहीं कह सकते; परन्तु बारीकी से देखने से आर्थिक कारणों की झलक इसमें अवश्य दिखाई देती है।

झेलम [illegible] में मैंने एक अजीब बात देखी। [illegible] तर हिन्दुओं के मकान पक्के और साथ-साथ बने हैं और मुसलमानों के उनसे कुछ दूरी पर कच्चे झोंपड़े दिखाई देते थे। अल्पसंख्यक हिन्दू तिजारत पेशा, साहूकार और छोटे जमींदार थे। मुसल-मान काश्तकार और जमींदारों के मुजारे अर्थात् उनके tenant थे। यह बात मुझे कुछ चुभ गई। एक ही गाँव में गरीबी-अमीरी का यह अन्तर धर्म की बुनियादों पर क्यों है? मैं इस बात को सोचने लगी। उसी इलाके के लोगों की कुछ साधारण और सरल बातों में मुझे भारी मर्म छिपा हुआ मालूम दिया। जिन बातों का प्रभाव मेरे दिल पर हुआ उनमें से कुछ नीचे लिखती हूँ।

झेलम जिले की चकवाल तहसील से एक अच्छे पढ़े-लिखे सिक्ख भाई जो काफी खुशहाल दिखाई देते थे हमारे साथ मोटर पर हो लिये। वह उसी इलाके के रहनेवाले थे और जब से उपद्रव हुआ था गाँव-गाँव घूमकर निस्वार्थ सेवा कर रहे थे। वह हमको उपद्रवों का हाल सुनाते हुए कहने लगे—"अभी बहुत दिनों की बात नहीं है, इस उपद्रव से चार दिन पहले इन मुसलमानों पर हमारा पूरा शासन था। जो काम चाहते इनसे कराते थे। नहीं मानते तो गाली और ठोकर देकर काम लेते थे। इनकी मजाल नहीं थी कि हमारे सामने बोलते। वह हमसे डरते थे। अब तो यह हालत है कि उनकी शकल देखकर हमको डर मालूम होता है।" मैंने चुपचाप यह बात सुन ली, कुछ न बोली। परन्तु मन में सोचा कि यदि ऐसा था तो जो कुछ हुआ उसके लिए किसको दोषी ठहराया जा सकता है?

रावलपिंडी के थीहा खालसा गाँव की एक स्त्री थी। उसका पति कपड़े की दूकान करता था। अच्छा खाता-पीता, सम्पन्न घराना था। जब थीहा खालसा गाँव लटा व जलाया गया तो उसमें इसके पति की दूकान भी लूटी गई। घर जल गया, पति और कुटुम्ब के दूसरे लोग मारे गये। यह बेचारी दो बालिकाओं

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री सुमित्रानंदन पंत से भेंट

राजनैतिक, साहित्यिक और सामाजिक स्थिति पर एक वार्ता

लेखक, श्री पुरुषोत्तमदास टंडन (पत्रकार)

पंडित सुमित्रानन्दन पन्त आधुनिक हिन्दी के महान् कलाकार ही नहीं निर्माता भी हैं। आज की राजनीतिक तथा साहित्यिक प्रगति पर भी आपका एकमत है। उन्हीं मतों को लेखक ने इस इंटरव्यू में व्यक्त किया है। यह इंटरव्यू पन्त जी को अन्तिम रूप से दिखाकर प्रकाशित की जा रही है। लेख अत्यन्त सामयिक और विचारणीय है।

कवि श्री पन्त

तीन वर्ष पूर्व कतिपय उत्साही संवाददाताओं ने कुछ समाचारपत्रों के कालमों को इस सूचना से रँग दिया था कि पं० सुमित्रानन्दन पन्त का देहावसान हो [illegible]। पन्त जी लम्बे अर्से से [illegible] और जब यह समाचार छपा तो लोगों ने उसको सच समझकर पन्त जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पण करने के लिए सभाएँ कीं और शोक-प्रस्ताव पास किये। हिन्दी-प्रेमियों के ऊपर यह वज्राघात था और प्रयाग में कई व्यक्तियों ने अपने स्नेही बन्धु पन्त के लिए आँसू बहाये। पर जब यह पता चला कि समाचारपत्रों के संवाददाताओं ने पन्त जी के विषय में अवश्यम्भावी भविष्य को वर्तमान में परिणत करने का विफल प्रयास-मात्र किया तो लोगों को बड़ी प्रसन्नता हुई। कई महीनों तक सांघातिक रोग से ग्रस्त रहने के बाद पन्त जी का एक प्रकार से पुनर्जन्म हुआ और आज पन्त जी हृष्ट और पुष्ट हैं--सम्भवतः वे इतने स्वस्थ कभी नहीं थे। मैं पन्त जी के साथ सन् १९४५ में डाक्टर जोशी के प्रसिद्ध चिकित्सालय में दिल्ली में मिला था। उस समय वे अस्थिपिंजर-मात्र थे, पर उनके नेत्रों में एक प्रभा थी और चेहरे पर मृत्यु-प्रतिघातिनी आकांक्षा। धीरे-धीरे मैंने उनको बताया कि हाल ही में कुछ संवादपत्रों ने उनके महाप्रयाण की सूचना दी थी। एक क्षीण मुस्कुराहट उनके मुख पर झलक उठी और वे कोमल स्वर में बोले, "अभी जीवित हूँ।"

कुछ दिन पूर्व मैं पन्त जी के साथ एडेल्फी में फिर मिला और उनको स्वस्थ और प्रसन्न देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई। मैंने कहा--"आइए पन्त जी आज हम लोग बैठकर आप ही के विषय में बातचीत करें--आपकी काव्य-प्रतिभा, प्रारम्भिक प्रयास, हिन्दी-साहित्य को आपकी देन, जीवन के अन्यतम संघर्ष, आदि।" मेरे इस अनुरोध पर वे कुछ विस्मित से हुए पर अपनी नैसर्गिक शालीनतावश बोले, "जैसी आपकी की इच्छा।" आराम-कुर्सी पर वे भावगम्य मुद्रा से बैठे हुए थे और मुझको सहसा रवीन्द्र ठाकुर का स्मरण हो आया जिनसे मैं दस वर्ष पूर्व मिला था। उनका आकार सुन्दर डीलडौल था और उनका रेशमी लबादा वायु से संचालित होकर तरङ्गित जलाशय के समान था।

"आपने अपने कवित्व का परिचय स्वयं कब पाया?" मैंने पूछा।

"मेरे ई कवि थे। वे मेघदूत का पारायण किया करते थे। मैं उनको सुना करता था और इससे मुझे रसोद्रेग का अनुभव हुआ। मैं अकसर भाव-लहरी में उतराता था। सन् १९१५ में हिन्दी ने अल्मोड़ा को अभिभूत कर दिया था और लोगों ने इस भाषा के प्रति अतीव चाव प्रदर्शित किया। स्वामी सत्यदेव हिन्दी के विषय में भाषण दिया करते थे और जनता में सर्वत्र हिन्दी की चर्चा होती थी। मैं भी हिन्दी के विषय में उद्बोधित हुआ, काव्य पढ़े और कुछ स्वयं लिखने की इच्छा हुई। आरम्भ में मैंने अपनी काव्यात्मक प्रवृत्तियों की अभिव्यंजना गद्य में की। मेरी प्राथमिक कविता अपने एक सम्बन्धी को लिखे हुए पत्र में है। मेरे पास अब वह नहीं रही। मेरी अन्य कविताएँ 'तम्बाकू का धुआँ' और 'कागज के फूल' थे जो अल्मोड़ा के एक पत्र में प्रकाशित हुई और जिनसे मुझको स्थानीय ख्याति मिली। मुझको शेली, कीट्स, वर्ड्सवर्थ, टेनीसन और शेक्सपीयर से बहुत प्रेरणा मिली। उन्नीसवीं शताब्दी के कवियों का मुझ पर काफी प्रभाव पड़ा। मैंने टैगोर की रचनाओं को तब पढ़ा जब मैं हाई-स्कूल का विद्यार्थी था और उपनिषदों को भी पढ़ते समय मैं लघुवयस्क था।"

पन्त जी ने मुझे बतलाया कि शुरू में उनकी राजनैतिक प्रवृत्ति नहीं थी, पर सन् १९२१ के असहयोग-आन्दोलन में उन्होंने अपना विद्यार्थी जीवन समाप्त कर दिया। आनन्द-भवन में एक सभा हो रही थी और गांधी जी ने स्कूल छोड़ देने की राय दी थी। पन्त जी के कुछ सहाध्यायियों ने उस सभा में अपने हाथ उठाये और पढ़ाई बन्द करने का वादा किया। उनसे भी न रहा गया, हाथ उठा ही तो दिया और विद्यालय को तिलांजलि दे दी। वे म्योर कालेज के छात्र थे और हिन्दू होस्टल में रहते थे। उन्होंने कविता-देवी की उपासना शुरू कर दी और ख्याति भी प्राप्त की।

सन् १९२६ में 'पल्लव' ने उनकी कीर्ति को स्थायी बना दिया और समस्त हिन्दी-जगत् ने इस नये कवि को अङ्गीकार किया। पर मस्त जी की अपनी राय यह है कि उनकी उच्चतम कृतियाँ "स्वर्णकिरण", "सूर्योदय" और "परिवर्त्तन" हैं। इनमें प्रथम दो शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली हैं। वे नाटकों के प्रति भी आकृष्ट हुए हैं। उनके कई नाटकों का एक संग्रह जल्द ही प्रकाशित किया जायगा। पन्त जी ने मुझसे कहा कि दिल्ली के प्रसिद्ध सर्जन डा० नीलाम्बर जोशी और उनके सहायक डा० नवीनचन्द्र पाण्डेय के वे बहुत अनुग्रहीत हैं जिन्होंने उनकी बीमारी में महीनों तक बड़ी अनुकम्पा और योग्यतापूर्वक उनकी चिकित्सा और तीमारदारी की। उनकी इस कृपा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए पन्त जी ने अपनी दो नवीनतम पुस्तकों को डाक्टर जोशी और डाक्टर पाण्डेय को समर्पित किया है और वे शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली हैं।

"आप जब इतने सांघातिक रूप से बीमार थे तो आपके भाव कैसे थे?" मैंने पूछा।

"मैंने शारीरिक पुनरुत्थान की आशा छोड़ दी थी। कई दिनों तक टेम्परेचर १०७° था; पर, मानसिक शान्ति बनी हुई थी। सन्निपात ज्वर ने मुझको तीन बार वापस आ-आकर ग्रस्त किया पर इस मानसिक शान्ति ने मेरी प्राण-रक्षा की। जब मेरे मानस पर विचारों और भावनाओं का आक्रमण होता था तो उनको लेखनीबद्ध करने की अशक्तता मुझको खिन्न करती थी। फिर भी इस बीमारी ने मेरा एक प्रकार से भला किया है। मेरे कई मिथ्या भाव छिन्न हो गये हैं। मेरी नूतन कृतियों में एक बदला हुआ दृष्टिकोण है। दूसरी घटना जिसका मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा सन् १९४२ का विद्रोह था। अँगरेजों की बर्बरता ने मुझको हिला दिया और अपने चारों तरफ दुःख और अत्याचार देखकर मुझको बड़ी चोट पहुँची। मैं शान्ति के लिए तरसता था और अल्मोड़े में कालयापन कर रहा था। उदयशंकर के संस्कृति-केन्द्र ने मुझे आकर्षित किया और मैं उसमें शामिल हो गया। वे नाटकों को शुरू करना चाहते थे और मेरी भी इस ओर रुचि थी। पर वह योजना गिर गई। बाद में मैंने उदयशंकर के नृत्यचित्र 'कल्पना' के लिए कुछ गीत लिखे जो जल्द ही आपके सामने आयेंगे। मैं सन् १९४३ में शामिल हुआ था और करीब एक साल तक वहाँ रहा।"

बीमारी के उपरान्त पन्त जी शान्ति की खोज में रहे और श्री अरविन्द के आश्रम में गये। वहाँ वे कई हफ्तों तक रहे। पांडीचेरी के वातावरण को

इस लेख के लेखक श्री पुरुषोत्तमदास

उन्होंने बेहद पसन्द किया और अरविन्द का उन पर गहरा [illegible] पड़ा। वे कहते हैं, "पांडीचेरी में बहुत लाभ हुआ। मेरी [illegible] कई ध्वस्त अंशों का उद्धार हो मार्क्सवाद की ओर कुछ [illegible] होते हुए भी मेरी आर्यदर्शन में आस्था थी। पांडीचेरी में उसके का मुझे और भी अधिक [illegible] हुआ। श्री अरविन्द का आश्रम और ज्ञान का क्षेत्र है। श्री स्वयं देवमूर्ति हैं, मैं उनको भावी दार्शनिक मानता हूँ और विश्व का जैसा सर्वाङ्गीण उन्होंने किया है वैसा किसी नहीं किया। वे पूर्ववर्ती दार्शनिकों कहीं ऊँचे हैं। आज वे ७४ [illegible] पर स्वास्थ्य अति उत्तम है। लिखते हैं और लोगों से नहीं वे बड़े भारी योगी हैं, शायद के सबसे बड़े। वे एक उच्च और उनके लेख अनन्य और रहते हैं।"

सन् १९४२ में अपनी इज्जत को फिर से बटोरने हिन्दुस्तान की कम्यूनिस्ट पार्टी साहित्यिक 'मोर्चा' बनाया और तथा कवियों का सहयोग प्राप्त की चेष्टा की। उन्होंने पन्त को भी अपने 'गुट' का [illegible] पर बहुत कम लोगों ने इस पर किया। इस मुलाकात में मैंने से पूछा कि वे हिन्दुस्तान की पार्टी के विषय में क्या राय रखते क्या वे भी कभी इन लाल पार्टी सहवर्ती थे?

पन्त जी ने कहा, "सन् में कम्यूनिस्ट पार्टी एकाङ्गी थी। उसने अपने को जनता से कर लिया था। आन्दोलन हमको उसकी भ्रांतियों चला। उसका प्रगतिवाद यांत्रिक है, वह जीवित सकता; क्योंकि उसमें परवर्ती योरोपीय साहित्य की नकल है। वे भारतीयों पर विचारों को लादना चाहते हैं उनकी आत्मा से मेल नहीं खाते वाद के प्रति उनका मशीनवादी

शेष पृष्ठ १६ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ-विधान-कमेटी की सिफारिश

१५ अगस्त के बाद शासन-प्रबन्ध में पूर्ण स्वतन्त्रता होगी

लेखक, माननीय पंडित गोविन्दवल्लभ पन्त

भारतीय विधान-परिषद् की संघ-विधान-कमेटी ने स्वतन्त्र भारत की जो रूपरेखा प्रस्तुत की है, माननीय पन्त जी ने इस लेख में उसका बड़ी सुन्दरता से उल्लेख किया है। लेख में यह बताया गया है कि १५ अगस्त के बाद भारत का शासन स्वतन्त्रता-पूर्वक होगा। लेख जानकारी से पूर्ण और सुन्दर है।

माननीय पंडित गोविन्दवल्लभ पंत।

हमें इस बात की प्रसन्नता है कि कुछ कहने का मुझे यह अवसर यह समय अनुकूल है और क्षण आशाओं और सम्भाव- परिपूर्ण है। हमारी स्वतंत्रता स्वरूप ग्रहण कर रही है। उपद्रवों और आपत्तियों के बाव- पुरानी परिपाटी बदल रही है और युग का प्रादुर्भाव हो रहा है। की विदेशी सत्ता के बाद, प्राचीन देश अब सच्ची स्वतंत्रता और जीवनप्रद वातावरण में लेने जा रहा है। इसी सप्ताह में दिन विधान-परिषद् ने सर्व- से भारतीय संघ की पताका के राष्ट्रीय झंडे को अपनाया है। भी इस ऐतिहासिक घटना का अवश्य ही सुना होगा, जिससे में उत्साह की एक लहर दौड़ है। हमारे स्वातंत्र्य संग्राम में यह झंडा सदा ही आगे रहा है। अब यह हमारे स्वतंत्र होने के दृढ़ और निश्चय का केवल प्रतीत मात्र रहा यह झंडा राष्ट्र का प्रतीक मान क्या है और यह बात उस लक्ष्य का मूर्त्तिमान प्रदर्शन है जिसके कई पीढ़ियों ने अधिक परिश्रम है और कितनों ने अपना सर्वस्व कर दिया है। आगामी १५ को यह तिरंगा झंडा देश भर फहराया जायगा। सभी सरकारी पर, सभी राजकीय और सार्व- भवनों पर वर्त्तमान झंडे की यह तिरंगा झंडा लहरायेगा। भारतीय संघ धीरे-धीरे अपना ग्रहण करता जा रहा है और यही झंडा इसका मूर्त्तिमान प्रतीक मुझसे कहा गया है कि भारतीय वैधानिक स्वरूप के सम्बन्ध में मैं बातऊँ। संघ-विधान-कमेटी प्रस्तुत योजना के अनुसार भारतीय में पाकिस्तानवाले इलाकों को सम्पूर्ण भारत—मय देशी के—शामिल होगा। हम सभी चाहते हैं कि हमारे देश की एकता यों बनी रहती। हम सबों के यह घोर वेदना और परिताप है कि पश्चिमोत्तर तथा पूर्वी के कुछ इलाके संघ में नहीं शामिल हमको यह आशा करनी चाहिए जाई जल्द ही पट जायगी और जो आज अलग हो रहे हैं वे स्वेच्छा से वापस आकर पुनः इसकी पूर्णता कहेंगे। पर हमें यह न भूलना कि अलग होनेवाले प्रदेश समूचे केवल छोटे अंश हैं और इनके हो जाने पर भी भारतीय संघ का एक विशालतम राज्य रहेगा। की ४० करोड़ जन-संख्या में से कम ३० करोड़ भारतीय संघ होंगे और बहुत सम्भव है संख्या इससे भी कहीं ज्यादा के किसी भी राज्य की जन- बड़ी नहीं है। मद्रास, बम्बई, बंगाल, संयुक्तप्रान्त, बिहार, मध्यप्रान्त और बरार, उड़ीसा, दिल्ली, अजमेर मेर-

पृ० ४

वाड़ा व कुर्ग के प्रान्त और अंडमान निकोबार के द्वीपसमूह तथा बहुत-सी रियासतें इस संघ के अन्तर्गत रहेंगी। बहुत-सी रियासतों के प्रतिनिधि विधान-परिषद् में शामिल हो चुके हैं और इन रियासतों की आबादी ६ करोड़ से भी ऊपर है। भारतीय संघ के सामने उन्नति की बड़ी सम्भावनायें हैं.....

इसके सामने एक महान् शक्तिशाली भविष्य है और हम इस बात का विश्वास कर सकते हैं कि भारतीय संघ बहुत जल्द ही अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में तथा राष्ट्रों की सभा में एक ऊँचा स्थान प्राप्त कर लेगा।

स्वभावतः आप यह जानना चाहेंगे कि उस राज्य-संघ का स्वरूप क्या होगा। इस सम्बन्ध में मैं आपका ध्यान लक्ष्य-

भारतीय प्रजातन्त्र के प्रथम प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू।

सम्बन्धी प्रस्ताव की ओर आकृष्ट करूँगा, जिसे परिषद् ने गत दिसम्बर में स्वीकार किया था। उस समय विधान-परिषद् ने अपना यह दृढ़ और गम्भीर निश्चय प्रकट किया था कि वह भारत को स्वतंत्र सर्वसत्ता सम्पन्न प्रजातंत्र घोषित करेगी, जिसमें सभी अधिकार और क्षमता राज्य को जनता-द्वारा प्राप्त होगी, जिसमें जनता को सामाजिक आर्थिक व राजनैतिक न्याय के अधिकार, वैयक्तिक स्थिति व सुविधा के अधिकार तथा विचारों की, विचारों को प्रकट करने की, विश्वास व धर्म की, ईश्वरो-पासना की, काम-धंधे की, संघ बनाने व काम करने की स्वतंत्रता के अधिकार प्राप्त होंगे और जिसमें सभी अल्प-संख्यकों के लिए, पिछड़ी हुई और दलित जातियों के लिए संरक्षण की पर्याप्त व्यवस्था रहेगी ताकि यह प्राचीन देश संसार में अपना योग्य व सम्मानित स्थान प्राप्त करे और संसार में शान्ति स्थापित करने और मानवजाति का हित-साधन करने में स्वेच्छा से पूर्ण योग दे।

जैसा कि आप अवश्य ही जानते हैं, प्रारम्भ में केन्द्र के अधिकार बहुत सीमित थे। मंत्रिमंडल की १६ मई वाली योजना के अनुसार रक्षा, वैदेशिक मामले तथा यातायात के सिवा और कोई विषय राज्यसंघ के केन्द्र के हाथ में नहीं रखा गया था। अवशिष्ट अधिकार प्रान्तों को दे दिये गये थे तथा किसी भी बड़े साम्प्रदायिक प्रश्न पर बिना दोनों प्रमुख सम्प्रदायों के बहुमत की स्वीकृति के कोई फैसला नहीं किया जा सकता था। तब से बड़े-बड़े महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं जिनके परि-णामस्वरूप विधान-परिषद् कानून की निगाह में तथा वास्तविकता की दृष्टि में भी एक सर्वसत्ता सम्पन्न संस्था बन-गई है। अब यह किसी नियंत्रण या पाबन्दी के अधीन नहीं है। इसकी अधिकार सीमा तथा इसके अधिकार असीम और अति महान् हैं। १६ मई वाली योजना की पाबंदियों से अब यह युक्त है और इसलिए संघ-विधान-कमेटी ने यह तय किया है कि [illegible] संघ का केन्द्रीय शासन सुदृढ़ [illegible] जो संघ की शक्ति, उसके अधिकार तथा उसकी कार्यक्षमता के लिए आवश्यक हैं, अब संघीय विषयों की सूची में शामिल कर लिए गये हैं। तदनुसार ८७ विषय इसमें अब तक शामिल किये जा चुके हैं। इसके अलावा संहगामी विषयों की भी एक तालिका होगी और अवशिष्ट अधिकार केन्द्र को प्राप्त होंगे। फिर भी इसलिए कि संघ में रियासतें सुविधा से शामिल हो सकें और उन्हें किसी आशंका की सम्भावना न रह जाय। रियासतों के सम्बन्ध में अवशिष्ट अधि-कार उन्हीं को प्राप्त होंगे और सिवा उन अधिकारों के जिनका उल्लेख १६ मई वाली योजना में आया है और अन्य व्यापक अधिकार केन्द्र को सौंपना उनके लिए आवश्यक नहीं है। अपनी अधिकार सीमा में सभी मामलों के सम्बन्ध में, जो राज्य-संघ के विषयों की सूची में सम्मिलित हों, राज्य-संघ को अपने निर्णय को प्रयोग में लाने के लिए सभी प्रबंध सम्बन्धी अधिकार होंगे। इसके अतिरिक्त राज्य की रक्षा व उसके पोषण के सम्बन्ध में तथा संघ के सभी प्रदेशों में सुख शान्ति बनाये रखने के बारे में उसके अन्तिम अधिकार होंगे तथा उसी का अंतिम उत्तरदायित्व भी होगा।

राज्य-संघ का अधिकार अध्यक्ष तथा राष्ट्रीय असेम्बली में स्थित होगा। जिसमें दो सभायें होंगी यानी राजसभा और लोकसभा। अध्यक्ष के पद की अवधि साधारणतया ५ वर्ष की होगी और कोई भी अध्यक्ष चुनाव के लिए एक बार से अधिक खड़ा न हो सकेगा। अध्यक्ष का निर्वाचन राज्य-संघ की राष्ट्रीय असेम्बली के सदस्य और सभी प्रदेशों की व्यस्थापिकाओं के सदस्य करेंगे और जहाँ कहीं व्यवस्थापिका की दो सभायें हों तो नीचे की सभा के सदस्य के वोट का महत्त्व साधारणतया उसके निर्वाचन-क्षेत्र के मतदाताओं की संख्या के अनुसार होगा। अध्यक्ष ३५ वर्ष से कम आयु का न होगा। राजसभा

शेष पृष्ठ १२ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देशदूत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिर इतनी साम्प्रदायिकता क्यों?

राष्ट्रीयता के मार्ग में जबरदस्ती रोड़ा अटकाना उचित नहीं

लेखक, श्री दामोदरदास अग्रवाल, एम० ए०
(सम्पादक, दैनिक 'अधिकार')

संयुक्तप्रान्तीय हिन्दू-सभा ने सीधी कार्यवाही की जो घोषणा की वह सरासर असामयिक रही, उसी के परिणामस्वरूप हिन्दू-सभा के कथित नेताओं को जेल की हवा खानी पड़ रही है। सचमुच हिन्दू-सभाई हिन्दुओं की आड़ लेकर असामयिक कार्य करने की ओर अग्रसर ही नहीं हो रहे थे वरन् स्वतन्त्र भारत के मार्ग में बाधा उत्पन्न करने की ओर सचेष्ट हो रहे थे। लेखक ने हिन्दू-सभा की साम्प्रदायिक प्रवृत्ति की आलोचना की है। लेख सामयिक और पठनीय है।

संयुक्तप्रान्तीय हिन्दू-सभा ने एक संघर्ष-समिति बनाई है। क्यों? इसलिए नहीं कि वह हैदराबाद अथवा भोपाल ऐसे राज्यों में जाकर ९० प्रतिशत हिन्दुओं पर मनमानी शासन करनेवाले मुस्लिम शासकों तथा मुस्लिम अफसरों के विरुद्ध जन-आन्दोलन का संचालन करे। यह काम तो कांग्रेस नेताओं पर ही छोड़ दिया गया है। हैदराबाद की राज्य कांग्रेस तथा देशी राज्य प्रजा-परिषद् के स्थानापन्न अध्यक्ष तथा कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया ही हैदराबाद में प्रजा-तन्त्रात्मक शासन स्थापित करने तथा हैदराबाद को भारतीय संघ में शामिल कराने के लिए प्रयत्नशील हैं। हिन्दू-महासभा के किसी भी नेता को हैदराबाद की परवाह नहीं। हमारे प्रान्त के हिन्दू-सभा के नेताओं को उन हिन्दू भाइयों की ओर भी तनिक ध्यान नहीं जो अभाग्यवश पाकिस्तान में हैं। उनके कष्टों को दूर करने के लिए, उनको संगठित करने के लिए तथा साम्प्रदायिक शासन के विरुद्ध पाकिस्तान में जन-आन्दोलन आरम्भ करने की बात हमारे नामधारी हिन्दू-नेता स्वप्न में भी नहीं सोचते। वे कभी ऐसी बात नहीं सोचते जिससे पाकिस्तान के हिन्दुओं की भलाई हो। इसके विपरीत वे ऐसी ही बात सोचते हैं जिससे पाकिस्तान के हिन्दुओं के हितों पर कुठाराघात हो। उदाहरण के तौर पर संयुक्तप्रान्तीय हिन्दू-सभा की यह माँग है कि हमारे प्रान्त के "समस्त महत्त्वपूर्ण पदों पर केवल हिन्दू ही नियुक्त किये जायें और वर्तमान मुस्लिम अफसरों को हटाया जाय।" वे यह नहीं समझते कि इस माँग तथा ऐसे कार्य की पाकिस्तान में क्या प्रतिक्रिया होगी? क्या वहाँ मुस्लिम लीग भी इसी प्रकार की माँग न करेगी कि वहाँ सभी महत्त्वपूर्ण पदों पर केवल मुस्लिम अफसर नियुक्त किये जायें। अथवा यदि मिस्टर जिन्ना ऐसा करते हैं तो क्या हम उनके इस कार्य का सफलता और दृढ़तापूर्वक विरोध कर सकेंगे जब कि हम अपने प्रान्तों में मुसलमान अफसरों को हटाकर केवल हिन्दू अफसरों को ही स्थान देते हैं।

हिन्दू-महासभा के नेता डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी केन्द्रीय सरकार में सम्मिलित हो गये हैं।

हम यह मानते हैं कि अधिकांश मुस्लिम अफसरों में राष्ट्रीयता की भावना नहीं है और वे केवल साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से अधिकांश कार्य करते हैं। परन्तु इसका यह हल नहीं है कि हम उनको नौकरी से हटा दें। वे अब तक इस दूषित साम्प्रदायिक वातावरण के शिकार थे जो अभाग्यवश ब्रिटिश शासकों ने मुस्लिम लोग के जरिये पैदा किया था। अब हमारा यह पहला काम होगा कि हम इस दूषित साम्प्रदायिक वातावरण के स्थान पर स्वस्थ राष्ट्रीय वातावरण स्थापित करें। हमारे कांग्रेस नेता इसी प्रयत्न में हैं। इस ओर उनका सबसे पहला कार्य यह होगा कि पृथक् निर्वाचन-प्रणाली के स्थान पर, जिसके कारण हमारे राजनैतिक आकाश में अत्यन्त दूषित साम्प्रदायिक बादल छाये हुए हैं, संयुक्त निर्वाचन-प्रणाली कायम करें, जिसके कारण साम्प्रदायिक वातावरण दूर हो जायगा और उसके स्थान पर राष्ट्रीय भावनाओं का प्रसार होगा। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि संयुक्त निर्वाचन-प्रणाली पर एक चुनाव हो जाने पर मुसलमानों में भी राष्ट्रीयता की लहर दौड़ने लगेगी। अभी तक केवल वही मुसलमान चुनाव में सफल होने की आशा कर सकता है जो अपने को मुस्लिम हितों का सबसे बड़ा समर्थक साबित कर सके और जो हिन्दुओं को अधिक से अधिक गालियाँ दे सके; क्योंकि उसे केवल मुसलमानों के ही वोट प्राप्त करने हैं। परिणामस्वरूप चुनाव के समय मुसलमानों में अत्यन्त भीषण साम्प्रदायिक विष का प्रचार किया जाता है। परन्तु संयुक्त निर्वाचन-प्रणाली स्थापित हो जाने पर साम्प्रदायिकता का स्थान राष्ट्रीयता ग्रहण कर लेगी। उस समय मुसलमान उम्मीदवार को हिन्दू-मुसलमान दोनों के वोट प्राप्त करने होंगे। परिणामस्वरूप वह राष्ट्रीयता का राग अलापना शुरू करेगा और कहेगा कि हिन्दू और मुसलमान भाई-भाई हैं। वह दोनों के हितों का समर्थक बनेगा। परिणामस्वरूप मुस्लिम जनता में राष्ट्रीयता की भावना का प्रचार होगा और उसके साथ ही साथ मुस्लिम अफसरों की मनोवृत्ति में भी परिवर्तन होगा। अतएव हमारी माँग होनी चाहिए कि पृथक् निर्वाचन-प्रणाली के स्थान पर संयुक्त निर्वाचन-प्रणाली स्थापित की जाय। मुस्लिम लीग इसका अवश्य ही तीव्र विरोध करेगी, परन्तु हमें अपने निश्चय पर अटल रहना चाहिए और किसी भी रूप में उस पृथक् निर्वाचन-प्रणाली को स्थान न देना चाहिए। जिसको स्थापित कर तथा हमें आपस में लड़ाकर अँगरेजों ने अब तक हम पर राज्य किया और अन्त में हमारे प्यारे देश को दो टुकड़ों में करा दिया। केवल संयुक्त निर्वाचन-प्रणाली स्थापित कर तथा राष्ट्रीयता का प्रचार कर हम यह आशा कर सकते हैं कि भारतवर्ष फिर से एक हो सकेगा। पाकिस्तान में हिन्दू अल्पमत में हैं, फिर भी उन्हें चाहिए कि वहाँ भी वे संयुक्त निर्वाचन-प्रणाली की माँग रखें, क्योंकि इसी जरिये से वे साम्प्रदायिकता से मोर्चा लेकर राष्ट्रीयता का प्रचार कर सकेंगे।

हमारी प्रान्तीय सरकार ने नौकरियों के सम्बन्ध में अत्यन्त दूरदर्शितापूर्ण निर्णय किया है कि मुख्य-मुख्य नौकरियों में उनकी भरती प्रतियोगिता के आधार पर होगी केवल योग्यता का ही ध्यान रखा जाय। जिन नौकरियों में सरकारी नियुक्तियाँ होती हैं उनमें जन-संख्या के अनुपात से हिन्दू-मुसलमान भरती किये जायेंगे। किसी भी व्यक्ति को इस निर्णय के विरुद्ध शिकायत नहीं हो सकती।

संयुक्तप्रान्तीय हिन्दू-सभा की संघर्ष-समिति ने यह माँग पेश की है कि गृहमंत्री का पद मंत्रिमंडल के किसी हिन्दू सदस्य को दिया जाय। वास्तव में यह माँग अत्यन्त संकीर्ण मनोवृत्ति का परिचय देती है। श्री रफी अहमद किदवई प्रान्त के पुराने कांग्रेस नेता हैं। वे सदा से साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के विरोधी रहे हैं। वे राष्ट्रीयता के अनन्य उपासक हैं। उनके विरुद्ध साम्प्रदायिकता का आरोप केवल वे ही लगा सकते हैं जो अत्यन्त दूषित भावनाओं के शिकार हैं।

संघर्ष-समिति की यह माँग भी कि कचहरी, पुलिस और अन्य सरकारी विभागों में हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा और राज्यभाषा के रूप में स्वीकार किया जाय। समिति को मालूम होना चाहिए कि सरकारी तौर पर हिन्दी पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि जनता तथा हिन्दू अफसर इस ओर अपना कर्त्तव्य पालन करें और सारी कार्यवाही हिन्दी में ही करें। हाल ही में एक मुंसिफ ने हिन्दी में फैसला लिखा। सभी हिन्दू जजों तथा अफसरों को ऐसा ही करना चाहिए। इसमें कोई संशय नहीं कि बहुत ही शीघ्र हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान प्राप्त हो जायगा और

संयुक्तप्रांत के गृहमंत्री श्री रफी अहमद किदवई केन्द्रीय सरकार में जा रहे हैं।

इसके लिए किसी आन्दोलन की आवश्यकता भी न पड़ेगी।

संघर्ष-समिति ने एक पर्चा वितरित किया है जिसमें लिखा है "हिन्दुओं में भय की लहर दौड़ गई है और गांधी की शिक्षा में पला हिन्दू वयनोय अहिंसा में भीषण चीत्कार करने लगा है।... आज की गंभीर स्थिति और अत्यन्त महान् संकट पर विचार करके प्रान्तीय हिन्दू-महासभा ने निम्न [illegible] यू० पी० सरकार से की है और चेतावनी दी है कि १ अगस्त तक न माना गया तो हिन्दू-सभा की [illegible] यू० पी० सरकार पर अविश्वास करा कर जनता द्वारा इस सरकार तोड़ देने का आन्दोलन आरम्भ दिया जायगा।" माँगें ९ हैं। एक माँग यह है कि सरकारी नौकरियों में जन-संख्या के अनुपात से दी जायें, [illegible] में कहा गया है कि सशस्त्र पुलिस केवल हिन्दू भर्ती किये जायें, हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने, महत्त्वपूर्ण पदों से मुसलमान को हटाकर हिन्दुओं को नियुक्त पाँचवीं में युवकों के लिए सैनिक-[illegible] अनिवार्य करने, छटीं में शस्त्र-[illegible] में संशोधन करने, सातवीं में गृहमंत्री पद पर हिन्दू को नियुक्त करने, [illegible] में सीमाप्रान्त तथा पंजाब के शरणार्थी भाइयों की सुव्यवस्था करने तथा [illegible] सरकारी नौकरों को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में भाग लेने की स्वतंत्रता देने पर जोर दिया गया है।

शेष पृष्ठ १२ पर

संयुक्तप्रांत के शिक्षा और श्रम मंत्री श्री संपूर्णानंद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

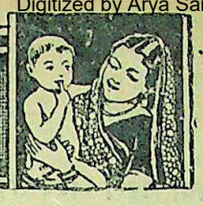

मातृमण्डल

भारतीय प्रजातन्त्र में महिलाएँ

...य जागरण और विधान-निर्माण में सक्रिय सहयोग

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

...आज से २५ वर्ष पूर्व विदेशियों को ...ना न थी कि भारतीय महिलाएँ ...जल्दी जगत्प्रसिद्ध होकर भारत ...ऊँचा कर सकेंगी। गत इन ...में महात्मा गांधी के अहिंसात्मक ...की दृढ़ता ने नारियों के लिए ...अधिक मार्ग प्रशस्त किया। भारतीय ...को विदेशों में जिस ओछी दृष्टि से ...जाता था वे ही रमणियाँ हमारे ...संग्राम में इतनी कुशल और ...हो चुकी हैं कि वे विदेशों में ...अधिकारों के लिए लड़ने में बड़े-...राजनीतिज्ञों के छक्के छुड़ा ...। इन सब त्याग और बलिदानों ...क्या है? इस पर विवाद चल ...इसी समय अँगरेजों ने भारत ...घोषित की। ८ दिसम्बर को ...परिषद् की बैठक होनेवाली थी। ...को असन्तोष था कि हमारे ...प्रमुख राजनैतिक दल कांग्रेस ...ने परिषद् में स्त्रियों का प्रति-...बहुत कम रक्खा है। दो सौ से ...सदस्यों में महिलाओं की संख्या ...दर्जन के लगभग है। इस स्थिति ...लाओं के अधिकारों की परवाह ...गई। इन सबका यह अर्थ नहीं ...पुरुषों के सभी कार्यों में हस्तक्षेप ...। बल्कि यों कहना चाहिए कि ...स्त्रियाँ इतनी कुशल हो रही ...विधान बनाने में पुरुषों का हाथ ...चाहती हैं।

...के आधुनिक काल और ...काल में कोई भी ऐसा देश नहीं ...विधान बनाने में स्त्रियों को ...हो। भारतवर्ष ही पहला देश ...स्वतन्त्र प्रजातन्त्र-संघ का विधान ...महिलाएँ योग दे रही हैं। यह ...भारतीय स्त्रियों को है। ...अधिक श्रेय पुरुषों को है जिसने ...विधान बनाने में स्त्रियों को अधिक ...दिया है। विदुषी महिलाओं ...सरोजिनी नायडू, अमृतकौर, ...पंडित, हंसा मेहता, कमला-...ऐसी स्त्रियाँ हैं जिन्होंने ...भारतवर्ष का सिर ऊँचा किया ...नायडू की कविताओं को ...जनता ने हृदयंगम करके ...दिया है कि आज वह बहुत ...दृष्टि से देखी जाती है। राज-...अमृतकौर एक राजवंश-कन्या हैं ...और लेखों में उनकी इस ...बहुत कुछ आभास मिल जाता ...जब वे पेरिस-सम्मेलन में थीं तो ...से प्रतिनिधि-मंडल के लोग ...हुए थे कि वे सर राधा-कृष्णन पिल्लई के स्थान पर प्रतिनिधि-मंडल की नेता चुनी गई थीं। श्रीमती पंडित ने तो दक्षिण अफ्रीका के मामले को लेकर संसार को चकित कर दिया था। उन्हीं विदुषी देवियों ने भारत की आजादी को निकट लाया है।

विधान-परिषद् भारतवर्ष के स्वतन्त्र प्रजातंत्र का निर्माण करने जा रही है। फिर स्त्रियों को उसमें क्यों न स्थान मिले। विधान-परिषद् की ओर से जो कमेटियाँ बन रही हैं उनमें भारतीय स्त्रियों को भी उचित स्थान मिलना चाहिए। श्रीमती नायडू, विजयलक्ष्मी पंडित और राजकुमारी अमृतकौर जैसी नारियों को महत्त्वपूर्ण कमेटियों में रहना चाहिए। विधान-परिषद् में तीन कमेटियाँ बड़े महत्त्व की हैं। प्रारम्भिक अधिकार कमेटी; अल्पमत कमेटी और सलाहकार कमेटियाँ विधान-परिषद् की जान हैं। इनमें नारियों का होना जरूरी था। कुछ में तो हैं किन्तु कुछ में नहीं हैं। यह इसलिए नहीं कि स्त्रियों की राय की अवहेलना की गई है बल्कि भारतीय स्थिति के दृष्टिकोण से स्त्रियाँ कुछ दूर हैं, फिर भी भारतीय महिला नेत्रियाँ महात्मा जी की अनुगामिनी हैं। उन्हीं का आदर्श स्त्रियों के लिए उच्च आदर्श है।

स्त्रियों की निम्नांकित माँगें (१) चौदह वर्ष की अवस्था के भीतर के लड़कों को खानों, कारखानों और दूसरी हानिकारी नौकरियों में काम न करना चाहिए। (२) अछूतपन (अस्पृश्यता) मिट जानी चाहिए। स्त्रियों ने 'अस्पृश्यता मिटाने' वाले शब्द को प्रारम्भिक अधिकार में जोड़ दिया है।

भारतीय स्त्रियों की प्रशंसा आजकल विदेशी लोग कर रहे हैं। परन्तु अपने देश की स्त्रियाँ ही उतना ध्यान नहीं देती कि वे क्या हैं। उन्हें इस बात की जरा भी परवाह नहीं रहती कि उनके कर्तव्यों का सारा श्रेय पुरुष छीन रहे हैं।

यह आशा बढ़ती जाती है कि जब देश स्वतन्त्र होकर संयुक्त-राष्ट्र-संघ में एक स्वतंत्र परिवार की तरह मिलेगा उस समय संसार की स्त्रियों को भी भारत की सहायता मिलेगी; क्योंकि भारतीय विधान में महिलाओं को काफी अधिकार मिले हैं। उन अधिकारों को भारतीय स्त्रियाँ उपयोग कर रही हैं। विधान-परिषद् ने भारतीय रमणियों को प्रारम्भिक अधिकार में निम्नांकित अधिकार प्रदान कर दिये हैं:—

(क) स्त्रियाँ बराबरी के मामले में पुरुषों के बराबर हैं।

(ख) स्त्रियों को सरकारी नौकरियों में पुरुषों की तरह समझा जाय।

(ग) स्त्रियों को शासन में भी समान अधिकार मिले।

इन माँगों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि ज्यों-ज्यों योग्यतम स्त्रियाँ मिलती जाती हैं, त्यों-त्यों उनके अधिकार उन्हें सौंपे जा रहे हैं। ब्रिटिश सरकार ने भारतीय सत्ता सौंपने का आश्वासन दिया। विधान-परिषद् बनाई। उसी समय से आज तक हमने अपनी महिलाओं को भी उनके वास्तविक अधिकार दिये और विधान-परिषद् में उनको स्थान दिया गया। संसार की व्यवस्था के निर्माण में जितने प्रतिनिधि-मंडल भेजे गये उनमें स्त्रियों की ही प्रधानता रही है। प्रान्तों और केन्द्र के शासन-प्रबन्ध में स्त्रियों को काफी भाग दिया गया है। प्रान्तों में उनको मिनिस्टर बनाया गया, पार्लियामेण्टरी सेक्रेटरी के पद पर भी कार्य करती हैं। श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित, लीलावती मुंशी इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं। आज प्रजातन्त्र का स्पष्ट नकशा बनने जा रहा है। इसमें उनके अधिकार सुरक्षित ही हैं। अभी अभी समाचारपत्रों में प्रकाशित हुआ है कि श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर भारत-संघ सरकार की एक मिनिस्टर होंगी। राजदूतों में भी महिलाओं को प्रमुख स्थान दिया जा रहा है। रूस का राजदूत होना कम महत्त्व की चीज नहीं। श्रीमती पंडित रूस में भारत की राजदूतिका बनकर गई हैं। श्रीमती सरोजिनी नायडू ने एशियाई संघ की अध्यक्षता की थी। इन तमाम कार्यों को देखकर कहा जा सकता है कि स्वतन्त्र भारत-प्रजातंत्र में नारियों के अधिकार सुरक्षित हैं। कुछ बातों में पौराणिक बन्धनों के कारण स्त्रियाँ पीछे रही हैं। मनु के मतानुसार स्त्रियों के अधिकतर अधिकार पुरुषों से निहित थे। परन्तु अब वे सब पुनः स्त्रियों को दे दिये गये हैं। मनु के मतानुसार नारी को बाल्यकाल में पिता के नियंत्रण में रहना चाहिए, नवयुवती होने पर पति के और विधवा वृद्धा होने पर पुत्र के नियन्त्रण में रहना अत्यन्त आवश्यक था। पर भारत प्रजातन्त्र के नवविधान में स्त्रियों को सभी बंधनों से मुक्त कर दिया गया है। अब जो अधिकार एक पुरुष को है वही स्त्री को भी रहेगा। इस अधिकार को पश्चिम की नारियों ने पुरुषों से बड़े युद्ध के पश्चात् प्राप्त किया था परन्तु भारतीय नारियों को यहाँ के पुरुषों ने बिना किसी युद्ध के सारे अधिकार समर्पित कर दिये। पश्चिम के हिंसात्मक विज्ञान और हमारे अहिंसात्मक मानव-प्रेम में बहुत अन्तर है, इसी से तो कहा जाता है—पश्चिम पीछे रहेगा और पूर्व पहले। पर, यह सारी जिम्मेदारियाँ सभी स्त्रियाँ नहीं वहन कर सकतीं। अभी स्त्रियों में शिक्षा की बहुत कमी है। इसलिए आज की जिम्मेदारी शिक्षिता महिलाओं के कन्धों पर पड़ रही है। पर, अशिक्षिता महिलाओं को समान अधिकार का पाठ पढ़ाना भी कोई छोटा कार्य नहीं है। फिर भी हम यह कहने में गर्व रखते हैं, कि हम संसार की मानवता और आत्मनिर्णय का समर्थन दिखावटी नहीं करते बल्कि अपने ही घर से प्रारम्भ करते हैं।

भूतपूर्व राजबन्दी श्री मोहितकुमार बनर्जी का शुभ-विवाह श्रीमती दुर्गादेवी के साथ काशी में सम्पन्न हुआ। वर काशी के प्रसिद्ध डाक्टर स्व० ताराचरन बनर्जी के पुत्र और क्रान्तिकारी शहीद श्री मनीन्द्रनाथ बनर्जी के छोटे भाई हैं। वधू संयुक्त-प्रांत के इन्स्पेक्टर आव स्कूल श्री जगदीशचन्द्र मुकर्जी की भतीजी हैं। दम्पति को आर्शीवाद भेजनेवालों में से राष्ट्रपति कृपलानी और श्री सुचिता कृपलानी का नाम उल्लेखनीय है।

आविष्कारों की कथा

मशीनें कैसे बनीं? तरह-तरह के औजार कैसे बनें? रेल, जहाज, तार और सिनेमा वगैरह कैसे बने? नई-नई चीज़ें बनाकर या नये काम करके क्या आप दुनिया में प्रसिद्ध हो सकते हैं? इन सारी बातों को जानने के लिए यह पुस्तक जरूर पढ़िए। मूल्य १)

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥)

देशान्वेषण की सरल कथाएँ

नए-नए देशों का पता लगाने में संसार के कर्मवीर यात्रियों ने कैसी कैसी कठिनाइयाँ झेली हैं, उनका खासा वर्णन इस सचित्र पुस्तक में पढ़िए। मूल्य ॥।-)

जापान का हाल

इस महायुद्ध से पहले जापान बड़ा भाग्यशाली देश था। क्या उद्योग-धन्धे और क्या व्यापार, क्या शिक्षा और क्या युद्ध, सभी में वह एशिया खंड में सिरमौर था। महायुद्ध में उसके दाँव-पेंच देखकर योरप और अमरीका तक को हैरान होना पड़ा था। साठ-सत्तर वर्ष में ही उसने बेहद उन्नति कर ली थी। इस पुस्तक में वहाँ की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दशा पर काफी प्रकाश डाला गया है। मूल्य ॥।)

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

हम विश्वास क्यों खोयें ?

लोग पूछते ह कि जब देश के "पाकिस्तान" और "हिन्दुस्तान" नाम से दो टुकड़े हो चुके, तब राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी का क्या होगा ? आपकी नीति म कोई फर्क होगा या नहीं ? पाकिस्तान में तो मुसलमानों का राज्य होगा । वहाँ सब जगह उर्दू ही चलेगी। वहाँ का राज भी शायद इस्लाम की शरीयत के मुताबिक ही चलेगा। ऐसी हालत में बाकी बचे हिन्दुस्तानी की राष्ट्रभाषा कैसी होगी ? उसकी लिपि कौन-सी होगी ?

देश की स्थिति का और देश के भविष्य का पूरा विचार करके हमने तो तय किया है कि आज तक जो नीति हमने चलाई, आयंदा के लिए भी वही सही है। वही हम चलायेंगे। यानी जहाँ तक हिन्दुस्तानी प्रचार सभा का ताल्लुक है, हम [illegible] सहल उर्दू के [illegible] हिन्दुस्तानी बनती है, उसी को राष्ट्रभाषा मानेंगे और उसके लिए नागरी और उर्दू--दोनों लिपियाँ लाजमी तौर पर सीखना जरूरी मानेंगे।

पाकिस्तान में लीगी मुसलमानों का बहुमत होगा, लेकिन वह सारा मुल्क मुसलमानों का नहीं है। वहाँ रहनेवाले मुसलमान, हिन्दू, क्रिस्ती आदि सब का वह मुल्क होगा।

और जो असली देश है, जिसे हम "हिन्दुस्तान" कहने के बजाय "हिन्द" कहना ज्यादा पसन्द करते हैं, उसमें हिन्दुओं की तादाद भले ही सबसे ज्यादा हो, लेकिन वह भी सिर्फ हिन्दुओं का मुल्क नहीं है। यहाँ रहनेवाले हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी सभी लोगों का यह देश है। यहाँ हम सब लोग अपने को एक राष्ट्र मानते हैं। अपनी एक कौमियत दिन-ब-दिन मजबूत करके उसे बढ़ाने की हम कोशिश करेंगे। यहाँ के जो मुसलमान अपने को परदेशी समझेंगे उनकी बात वे जाने। हम तो हिन्दुस्तान के सब बाशिन्दों को एक ही समझते हैं।

अपने देश की संस्कृति को पहले-पहल हम आर्य-संस्कृति कहते थे। जो आर्य नहीं थे उन्हें "अनार्य" या "दस्यु" कहकर हम दूर रखते थे। बाद में यह नीति बदलकर हम लोगों ने सभी का स्वीकार करनेवाली हिन्दू-संस्कृति की स्थापना की; जिसमें आर्य, अनार्य, शक, हूण, मंगोलियन सब एक हो गये।

अब इतिहास-क्रम में एक कदम आगे बढ़ने के दिन आ गये हैं। अब हम हिन्दू-संस्कृति की जगह हिन्दुस्तानी-संस्कृति की स्थापना करने जा रहे हैं। साठ साल से कांग्रेस यही काम करती आई है। पाकिस्तान बन जाने से हिन्द का मिशन बदल नहीं सकता। हिन्द में मुसलमान, क्रिस्ती, पारसी आदि लोगों को बाहरी या आश्रित न समझकर उनके साथ हम संस्कृति के बारे में एक-रूप बनना चाहते हैं। हमारा उनका राष्ट्रीय जीवन ओतप्रोत और एक ही होगा। "जुदा-जुदा चुनाव" का जहर--जिसने यह सारी बला खड़ी कर दी है--हमें दूर करना होगा। सभी को सन्तोष हो, सभी को आत्म-विकास के लिए न्याययुक्त अवकाश मिले, ऐसा इन्तजाम करना पड़ेगा। सामाजिक दृष्टि से या शिक्षा के बारे में जो पिछड़े हुए हैं उन्हें आगे लाने के लिए पूरी कोशिशें करनी होंगी।

मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान हासिल किया इसलिए हमारे सवाल बदल नहीं गये हैं। सुलझ भी नहीं गये हैं। लेकिन अब हम अपनी अन्दरूनी एकता ज्यादा अच्छी तरह से मजबूत कर सकेंगे। और अगर हम अपनी सैकड़ों और हजारों बरस की कमजोरियाँ दूर कर सके और हिन्द को एक-जीव, एक-प्राण बना सके तो किसी दिन पाकिस्तान के लोगों को भी अपनी ओर खींच सकेंगे। इतना ही नहीं, बल्कि लीग के चलाये हुए द्वेष और अविश्वास के वायुमण्डल को हटाकर सारी दुनिया को बन्धुभाव का सन्देश भी दे सकेंगे।

हमारे देश के आज टुकड़े हो गये हैं, यह कोई मामूली बात नहीं है। इस दुर्घटना से अगर हम सबक न सीखे और संकुचित हो गये, तो जो फूट आज शुरू हुई है वह आगे बढ़ती जायगी और हमें विनाश की ओर ले जायगी। तुरन्त की लाभ-हानि की दृष्टि से देखने के ये दिन नहीं हैं। आज हमारी मानवता को बचाने का सवाल सबसे बड़ा है। अब हम हिन्दू-धर्म और हिन्दू-संस्कृति को लेकर बैठ नहीं सकते हैं। अब हमें हिन्दुस्तानी-संस्कृति की ओर बढ़ना है। इसके लिए हमें मिश्रित शैली की हिन्दुस्तानी का दोनों लिपियों के साथ प्रचार करना चाहिए। हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा के इम्तिहानों में नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों का सीखना जरूरी होगा। हमारी प्रचार-सभा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान--सारे मुल्क को यही नसीहत देगी कि दोनों लिपियों के साथ हिन्दुस्तानी सीखें। मानना या न मानना लोगों की मरजी की बात है। अगर लोग मान जायेंगे तो सरकारों को भी मानना पड़ेगा। तब तक प्रान्तीय सरकारों का यह फर्ज होगा कि जनता जहाँ तक जाने के लिए तैयार हो वहाँ तक उसे जाने के लिए वे हर तरह का प्रोत्साहन दें। और फूट की ओर ले जानेवाली जितनी भी ताकतें हों उनका मुकाबिला करती रहें।

दुनिया की अब स्थिति ऐसी हो गई है कि या तो सब देश आपस में लड़कर मनुष्य-जाति को ही खत्म कर दें या अपने होश सँभाल कर सबके साथ मेलजोल करके बन्धुता को कायम करें। हमारा फर्ज हमारे सामने स्पष्ट है। हमें तो हिन्द की भी सेवा करनी है और पाकिस्तान के लोगों की भी। हम अपना विश्वास क्यों खोयें ? आज जो लोग नहीं मानते हैं वे भी कल हमारे पास आयेंगे। हमें अपनी नीति संकुचित नहीं करनी है।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा --काका कालेलकर

* * *

क्या टिहरी राज्य संयुक्तप्रांत से अलग होगा ?

सन् १९३७ से पहले टिहरी राज्य संयुक्तप्रान्त के गवर्नर की देख-रेख में था, परन्तु पोलिटिकल डिपार्टमेंट की सुविधा के लिए टिहरी को पंजाब हिल स्टेट्स एजेंसी में मिला दिया गया था। आज भी शासन व्यवस्था-सम्बन्धी बातों को छोड़कर शिक्षा, संस्कृति, बोलचाल और वेश-भूषा के लिहाज से टिहरी संयुक्त-प्रान्त के एक अंग है। हाँ, राजनैतिक विभाग के भंग होने पर टिहरी की जनता की ओर से स्वभावतया यह प्रश्न उठाया जा रहा है कि टिहरी को फिर से युक्त-प्रान्त में मिला दिया जावे।

एक कांग्रेसी प्रान्त के साथ मिलना सम्भवतः टिहरी नरेश कभी भी पसन्द न करेंगे, इसलिए सम्भवतः सामन्तशाही कायम रखने के लिए एक नई ही चाल चली जा रही है। बिलासपुर (पंजाब) आदि कुछ रियासतों के राजाओं से मिलकर पंजाब की रियासतों का एक संघ बनाने की योजना हो रही है, जिसमें हित सुरक्षित रहें। अपने इन्हीं स्वप्नों पर लोकमत का जामा पहनाने के लिए टिहरी-नरेश ने अपनी कठपुतली असेम्बली की स्वीकृति भी ले ली है।

टिहरी असेम्बली के संकुचित मताधिकार और नाममात्र के अधिकार होने के कारण, जनता के एकमात्र राजनैतिक संगठन प्रजामण्डल ने असेम्बली के चुनावों का बहिष्कार कर दिया था, जिसके फलस्वरूप राजा को अपने पिट्ठुओं को असेम्बली में भरने का अच्छा अवसर मिल गया और एक दो स्थानों को छोड़कर अधिकांश निर्वाचन-क्षेत्रों में मतदान की भी आवश्यकता नहीं पड़ी। चुनाव के दौरान में सरकारी पिट्ठुओं के पक्ष खुल्लमखुल्ला प्रचार करने के लिए पुलिस तक का प्रयोग किया गया और एक निर्वाचन क्षेत्र में पोलिंग अफसर पुलिस के एक उच्च अधिकारी थे। प्रगतिशील तत्त्वों को असेम्बली से बाहर रखने के लिए कई व्यक्तियों के नामजदगी के पर्चे तक रद्द कर दिये गये।

अपनी इस असेम्बली के बल-बूते पर राजा ने विधान-परिषद में शामिल होना स्वीकार कर बाहर दुनिया के सामने अपने को सुधारवादी सिद्ध करना चाहा। विधान-परिषद में टिहरी राज्य के प्रतिनिधित्व के लिए पंजाब की कई रियासतों (१४वें ग्रुप) में मिलाया गया था, जिनका टिहरी की जनता नाम तक नहीं जानती। इसी असेम्बली के प्रतिनिधियों ने दूसरे प्रतिक्रियावादी तत्त्वों के साथ मिलकर टिहरी-नरेश के छोटे भाई और बिलासपुर के राजा को इस ग्रुप विधान-परिषद में प्रतिनिधि बनाकर भेजा, इस ग्रुप के चुनाव में हुई धाँधली इसी से स्पष्ट हो जाती है कि बिलासपुर के राजा के पक्षपाती रवये के विरोध में सदस्यों में से १८ ने 'वाक आउट' दिया था, केवल १३ सदस्यों हुए ये माध्यमिक सामन्तशाह दिवाला निकाल कर, विधान-परि रियासती मूक जनता के प्रतिनि दम भरते हैं'?

चुनाव के पश्चात् इस असेम्ब पहली बैठक में राजा के इशारे पर वाले चन्द पिट्ठुओं ने टिहरी रा पंजाब में मिलाने की योजना का किया है। टिहरी नरेश देशव्यापी का फायदा उठाकर, दुनिया की के पीछे अपने पंजाब में शामिल फैसले पर मुहर लगाना चाहते हैं, तो यह जानकर होती है कि ज टिहरी-राज्य के अधिकांश भाग में और भुखमरी का प्रकोप है, इस को उससे कुछ सरोकार ही नहीं। नरेश के चाचा इसके स्थायी प्रेसीडे

टिहरी जैसी रियासतें आज जनता बदनाम हो चुकी हैं, हमें आश्चर्य है कि अखिल भारतीय देशी राज्य परिद और प्रजामण्डल इन रियास मामलों को क्यों चुपचाप दूर से देख हैं ? यदि अवस्था ऐसी ही रही रियासतें निकटवर्ती ब्रिटिश-भार प्रतिक्रियावादियों को फुसलाकर भारत के लिए भी खतरनाक सकती हैं।

मंसूरी --सुन्दरलाल

* * *

दिल्ली को संयुक्तप्रांत में मिलाया

भारत के स्वतंत्र होते ही हर प्रान्त अपनी सीमा के विस्तार का अलापने लगा है। चाहे उसकी भौगो स्थिति या आर्थिक स्थिति इस हो या न हो। खास कर दिल्ली को तो अपने विस्तार की काफी पीड़ा हो रही है। हम दिल्ली के नीतिज्ञों से यह साफ कह देना हैं कि आगरा और मेरठ कमिश्नरी मिलाने का स्वप्न वह भूल जावे किसी भी हालत में संभव नहीं हो हाँ, हम इतनी उदारता कर सक कि दिल्ली को युक्तप्रान्त में उसकी एक और अलग कमिश्नरी जाय। इस प्रकार जहाँ संयुक्तप्रा आज १० कमिश्नरियाँ हैं वहाँ ११वीं कमिश्नरी दिल्ली और हो इस मेल में दिल्लीवालों को भी रहेगा। वह भारत-सरकार की तब भी रह सकती है। यह बात है कि यदि आगरा और मेरठ कमि दिल्ली में मिला भी दी जायें तो भी प्रान्त स्वावलंबी न रह सकेगा हमेशा उसे केन्द्र की सहायता की देखना होगा। अतः दिल्लीवालों संयुक्तप्रान्त के साथ मिल जाने सुरक्षित रहेगा।

वृन्दावन, —अद्वैतकुमार २५ जुलाई, ४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

लहसुन और प्याज

श्री रामरत्न पाठक, आचार्य गुरुकुल कांगड़ी कालेज गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी।

करीब दो हजार साल पहले की है। भारत के एक प्रदेश में बारह का अकाल पड़ा। लोग उस जगह छोड़कर अधिक घने जंगलों के अन्दर गये। बहुत कमजोर, चलने-फिरने चार, दन्तविहीन एक बूढ़ा वहीं गया। भाग्यवश उसे कहीं नीली के समान पत्तोंवाले बहुत से पौदे गये। भूख से सताये उस बूढ़े ऋषि ने ही खाना शुरू कर दिया। छः तक वह उन्हें खाता रहा। फिर महीने तक उसने उनकी जड़ों के पर गुजारा किया। अकाल दूर र जब सुदिन आये तो सब लोग जगह इकट्ठे हो गये। वह भी अब जवान बना हुआ वहाँ गया था। उसको देखकर सबने से देखा कि केवल लहसुन खाते से ही उसकी काया पलट गई थी। हसुन का सेवन करने से काया-करने के इस पुराने उदाहरण को रामेश बेदी ने अपनी 'लहसुन और पुस्तक के पृष्ठ १३३-१३४ पर किया है। पेनिसिलीन से भी प्रभावशाली एक दवा 'भारत वैज्ञानिक संस्था' (इण्डियन इंस्टिट्यूट साइन्स) में लहसुन से बनाई जा है (पृष्ठ १३३)। डबलिन, न्यूयार्क, आदि में तपेदिक जैसे नामुराद की सफल चिकित्सा करके शरीर नवयौवन डाल देने की वैज्ञानिक से परिपूर्ण लहसुन-चिकित्सा में १२४-१३१) श्रीयुत बेदी ने ता है कि तपेदिक के कीटाणुओं हाथ, पैर, रीढ़ आदि की हड्डियों तरह खाया जाने पर भी (पृष्ठ लहसुन ने उन्हें काटकर अलग ने से बचा लिया।

कायाकल्प के इन नये उदाहरणों में इस देखते हैं कि आधुनिक वैज्ञानिक तरह असाध्य रोगियों को लहसुन योग से नये अंग और नया प्रदान करने की कोशिशों में सफलता प्राप्त कर रहे हैं तो हमें दो साल पहले के उस बुड्ढे की काया हो जाने के उदाहरण पर भी विश्वास करना पड़ता है।

न्यूयार्क मेट्रोपोलिटन हास्पिटल में के १०८२ रोगियों की लहसुन सफल चिकित्सा (पृ० १२४) उल्लेख करते हुए श्रीयुत बेदी बताते कि तपेदिक चाहे फेफड़े का हो या रोगों का अथवा 'ग्रन्थियों का लहसुन प्रकार के और प्रत्येक अंग के क्षय लाभदायक रूप से लाभ करता रोगों को अत्यधिक कष्ट देनेवाली खाँसी (हूपिंग कफ) के अनेक रोगियों को लेखक ने लहसुन से ठीक किया है (पृ० ११३-११५)। अपने अनुभवों का स्थान-स्थान पर उल्लेख करते हुए बेदी जी ने बताया है कि निमोनिया, गठिया, वायु के रोग, लकवा, डिस्थेरिया, मेदे तथा अँतड़ियों के रोग, प्रजनन संस्थान के रोग, स्त्रियों के रोग, जख्म, चोट, हड्डी टूटना, त्वचा के रोग, नाक, कान और गले आदि के रोगों में लहसुन और प्याज के द्वारा ही किस तरह इलाज किया जा सकता है। लहसुन तपेदिक आदि क्षीण कर देनेवाले रोगों से मुकाबला करने की शक्ति प्रदान करता है और कई देशों में असाधारण लम्बी नीरोग आयु का रहस्य लहसुन का निरन्तर सेवन ही बताया गया है। हमारे राष्ट्र की स्वास्थ्य-सम्बन्धी आवश्यकताएँ बहुत अधिक बढ़ी हुई हैं, इसलिए हमारे देश में इस सस्ते रसायन का प्रयोग स्वास्थ्य के स्तर को ऊँचा ले जाने में काफी सहायक हो सकता है। भोजनों में तथा सरल औषधियों में स्वस्थ अथवा रोगी व्यक्ति लहसुन और प्याज का प्रयोग बढ़ाकर किस तरह देश के स्वास्थ्य को उन्नत कर सकते हैं यह इस पुस्तक को पढ़ने से सुगमता से पता चल जाता है।

जनता में यह आम विश्वास प्रचलित है कि लहसुन ब्रह्मचर्य का नाश करता है और इसी से अनेक लोग इसे उपयोगी समझते हुए भी खाना नहीं चाहते। इस युग के महान् ऋषि पूज्य महात्मा गांधी ने और उनके आश्रम-निवासियों ने, क्योंकि ब्रह्मचर्य की साधना करते हुए भी इसका खूब सेवन किया है इसलिए बेदी जी ने उनके जिन अनुभवों को दिया है वे वस्तुतः बहुत महत्त्वपूर्ण हैं और हम लोगों में इस विषयक फैली हुई भ्रान्तियों को दूर करने में अवश्य वांछनीय कार्य करेंगे।

इस पुस्तक में लहसुन, एकपोतिया लहसुन और प्याज का तीन अलग-अलग अध्यायों में प्रायः डेढ़ सौ शीर्षकों के अन्दर वर्णन किया गया है। लहसुन और प्याज खाने की अनेक विधियाँ, इनकी मात्राएँ, कायाकल्प करने के तरीके, रासायनिक संघटन, इतिहास, जातियाँ, भोजनों में इनका महत्त्व और चिकित्सा में उपयोग आदि विषयों को बहुत विस्तार से प्रतिपादन किया गया है। इस पुस्तक का कुछ अंश तीस से अधिक लेखों के रूप में देश की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में छपा था। यह तथ्य बताता है कि जनता में इस पुस्तक की पाठ्य-सामग्री की कितनी माँग है। इन पत्र-पत्रिकाओं के पाठक समय-समय पर जो बातें पूछते रहे हैं लेखक ने अपने विस्तृत अनुभव और गम्भीर अध्ययन के आधार पर उनका भी समुचित स्पष्टीकरण इसमें दिया है।

भारतीय द्रव्यगुण ग्रन्थमाला की यह छठी पुस्तक है। तुलसी, त्रिफला (दूसरा संस्करण), अंजीर (दूसरा संस्करण), सोंठ (दूसरा संस्करण) और देहाती इलाज पहले प्रकाशित हो चुकी हैं। 'लहसुन और प्याज' बेदी जी के विस्तृत अनुभव तथा गम्भीर अध्ययन का साक्षी है और इस विषय का प्रामाणिक ज्ञान-कोष (ए-साइक्लोपीडिया) है। इसे लिखने में बेदी जी ने संस्कृत और अँगरेजी के विशाल साहित्य से सहायता ली है। लेखनशैली पूर्ण वैज्ञानिक होते हुए भी सरल और रोचक है। पुस्तक के अन्त में नौ पृष्ठों के अन्दर विषयानुक्रमणिका भी दी है जिससे आसानी से जान सकते हैं कि अमुक रोग का इलाज अमुक पृष्ठ पर दिया गया है।

भारतीय द्रव्य-गुणग्रन्थमाला के अन्तर्गत बेदी जी भोजन के प्रत्येक द्रव्य और वनस्पति पर इसी प्रकार की प्रामाणिक पुस्तकें प्रकाशित करने का विचार रखते हैं। यह कार्य बहुत बड़ा है और जब पूर्ण होगा तो निस्सन्देह हिन्दी-साहित्य का गौरव होगा। हम चाहते हैं कि भारतीय द्रव्य-गुण-ग्रन्थमाला की पुस्तकों का व्यापक प्रचार हो और बेदी जी का महान् संकल्प शीघ्र पूरा हो।*

* * *

महत्त्व किसे—लेखक, सेठ गोविन्ददास। प्रकाशक—साहित्य भवन लि०, प्रयाग। पृष्ठ-संख्या ९८। मूल्य १)

महत्त्व किसे सेठ गोविन्ददास का अत्यन्त उत्तम नाटक है। एकांकी नाटकों में आपकी जिस नाट्य-कला का जिन पाठकों ने अनुभव किया है उससे प्रस्तुत नाटक ओत-प्रोत है। इसमें हमारी वर्तमान समस्याओं का स्पष्ट चित्र हुआ है। कथावस्तु बिलकुल नवीन, शैली उत्कृष्ट और पात्र चिन्ताशील और राष्ट्रीय हैं। सामाजिक भावभूमि पर राष्ट्रीय समस्याएँ इतनी सुन्दरता से अंकित की गई हैं कि पाठक को उनमें विशेष आनन्द मिलने लगता है।

सम्पूर्ण नाटक चार अंकों में विभाजित है। दृश्य का कम न होना नवीन शैली का सूचक है। रंगमंच की दृष्टि से प्रस्तुत नाटक का स्थान अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं हो सकता, पर नाट्य-कला इसमें अवश्य है। भाषा सरल और चलती हुई है। छपाई इत्यादि की दृष्टि से पुस्तक अपने विषय के समान ही सुन्दर है। आशा है हिन्दी-साहित्य-प्रेमी इसका आनन्द लेंगे।

*लहसुन और प्याज, लेखक—श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालङ्कार। २२९ पृष्ठ, मूल्य ढाई रुपये। प्राप्ति-स्थान—हिमालय हर्बल इंस्टिट्यूट, गुरुकुल कांगड़ी।

उपनिषदों की कहानियाँ—लेखक, श्री पं० रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री, प्रकाशक—साहित्य भवन लि०, प्रयाग। पृष्ठ-संख्या १६४। मूल्य २।)

वर्तमान युग परिवर्तन युग है और इस युग में हम अपने उत्थान के लिए प्राचीन ग्रन्थों की खोज कर रहे हैं। संस्कृत-साहित्य हमसे इतनी दूर हो गया है कि हम उससे लाभ नहीं उठा सकते। अतएव आवश्यकता है उस साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करने की। प्रस्तुत पुस्तक इसी आशय से लिखी गई है। बालकों के लिए इस पुस्तक की कहानियाँ अत्यन्त उपयोगी और शिक्षाप्रद हो सकती हैं। इन कहानियों से चरित्र-निर्माण की जैसी शिक्षा मिलती है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। इसके अतिरिक्त धार्मिक भावना भी जागृत होती है। ऐसी पुस्तकों का स्कूलों में प्रवेश होना चाहिए।

प्रस्तुत पुस्तक में उपनिषदों की ११ कहानियाँ [illegible] भाषा और शैली में लिखी गई [illegible] ने प्रत्येक कहानी को रोचक बनाने और उसे बाल-मस्तिष्क पर अंकित करने के लिए एक ही उपनिषद् का सहारा न लेकर कई उपनिषदों से कहानियाँ ली हैं और सभी कहानियाँ रोचक और शिक्षाप्रद हैं। आशा है भारतीय बालक इससे लाभ उठाने की चेष्टा करेंगे।

—राजेन्द्रसिंह गौड़, एम० ए०

प्रसिद्ध यात्राओं की कथा

प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान से लेकर वर्तमान युग के एवरेस्ट की चोटी पर चढ़नेवाले साहसी वीरों तक की कथा इस पुस्तक में है। जिन यात्रियों ने प्राणों की बाजी लगाकर स्थल और जल के अज्ञात देशों में भ्रमण किया था, और उनके परिश्रम से संसार का जो लाभ हुआ उसका रोचक वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। मूल्य ॥।-)

ध्रुवयात्रा

यह पुस्तक क्या है, एक तरह से दक्षिणी और उत्तरी ध्रुव का भूगोल है। ध्रुव प्रदेशों में कौन से जीव-जन्तु रहते हैं और वनस्पतियाँ होती हैं, ध्रुव क्या है, किसने उनका पता किस प्रकार लगाया, आदि बातें आप इसमें पढ़ें। पुस्तक संवाद रूप में है। इससे और भी रोचक है। मूल्य ॥।-)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

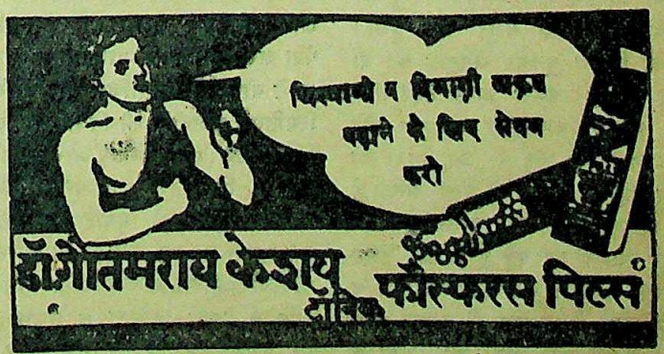

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एस० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब का भयंकर दंगा

(पेज ५ का शेष)

को लेकर अकेली रह गई। रावलपिंडी के शरणार्थी केन्द्र में रहती थी। जब मैं इससे मिली अपने मन हीं मन जैसे कोई सोचता हो उसने कहा, "जी, हमने भी तो इनके साथ कुछ थोड़ा नहीं किया था। ।।।=) गज जो लट्ठा बिकता था उसको ढाई रुपये, तीन रुपये गज बेचा था। उनसे बहुत मुनाफा उठाया था। इसी पाप का बदला हमको मिला है। एक आततायीमुसलमान जबहमारी दूकान लूट रहा था उसने पुरुषों से कहा, तुम्हारी स्त्रियाँ रेशम पहनें और हमारे बालक फटे चीथड़ों में घूमें। हमारे मर्दों को कफन नसीब न हो। आज इस अत्याचार का बदला तुमसे चुका रहे ह। इसी गाँव में पहले यह हो चुका था कि किसी गरीब कुटुम्ब के मुर्दे के लिए कफन नहीं मिला था। दूकानदारों के पास कपड़ा था; परन्तु [illegible] पटाने पर [illegible] और लोगों ने चन्दे से भारी दाम देकर जैसे-तैसे उस मुर्दे का अन्तिम संस्कार किया।

मेरी एक मित्र बहन रावलपिंडी जिले की रहनेवाली हैं। बड़ी निस्वार्थ सेविका हैं। सारा जीवन ही पर-सेवा की एक लम्बी कहानी है। दंगा कि शुरू होते ही वे सेवा और सहायता के काम में लग गईं और अभी तक उसमें लगी हैं। इन्हीं अमानुषी घटनाओं की जब हम लोग चर्चा कर रही थीं तब आत्म-विवेचन करते हुए उन्होंने कहा, "सच बात यह है कि हमारा स्वार्थी व्यवहार भी चरम सीमा तक पहुँच गया था और अब भी वह वैसा ही है।" दुखी स्वर में सोचते हुए बोलीं, "मेरा ससुराल-घराना शाहों का था। वह सूद-ब्याज और दूकानदारी करते थे। जब मैं ब्याह कर अपने घर आई तो कई घटनाएँ मैंने ऐसी देखीं जिनका चित्र अभी तक मेरे हृदय पर खिंचा है। मेरे ससुर ने किसी दरिद्र किसान को डेढ़ मन दाने (अनाज) कर्ज दिये। वह डेढ़ मन अनाज उन्होंने उससे कई बार वसूल किया लेकिन वह सब ब्याज में था। मूल कर्जा किसान के सिर बना ही रहा। इसी प्रकार कुछ थोड़ी-सी रकम देकर किसी दूसरे किसान की बकरियाँ रहन रक्खीं। किसान की स्त्री बारबार हमारे घर आई। रो-रोकर विनय करती कि मेरे बच्चे दूध को तरस गये। इनमें से दूध देनेवाली एक बकरी मुझे वापस दे दो जिससे मैं अपने छोटे बच्चों को दूध पिला सकूँ। परन्तु मेरे घरवालों को यह मंजूर नहीं हुआ। उसकी बिनती सुनकर अनसुनी कर दी और उसकी बकरी वापस नहीं की। मेरे कोमल बाल-हृदय पर बड़ी चोट लगी और अब तक मैं उस घटना को भूली नहीं हूँ। मुझे तो ऐसा लगता है कि यह हमारे ही पाप मूर्त्तिमान होकर हमारे सामने आ रहे हैं। यदि हमने निर्दयता से वर्षों तक इनका शोषण न किया होता, दुख-सुख में इनका साथ दिया होता तो आन की आन में हमारे साथ यह इतनी घोर शत्रुता का व्यवहार कभी न करते।

श्री सुमित्रानंदन पंत से भेंट

(पेज ६ का शेष)

कोण हमको प्रभावित नहीं कर सकता और विसृष्ट्यात्मक लेखकों के लिए वह मृत्यु है। पार्टी ने यह कोशिश की कि लेखक और कवि एक अच्छी खासी संख्या में उनके शिकंजे में फँस जायँ। वे उनकी आयोजनाओं में सम्मिलित भी होते थे। कुछ लोगों ने यह भी समझा कि वे उनकी पार्टी के सदस्य हैं। पर यह सरासर गलती थी। अच्छे लेखक और कवियों को पार्टी की रस्सी से नहीं बाँधा जा सकता और वे किसी पार्टी के मशीन-नुमा रटाये हुए तोताशाही प्रचार के शिकार नहीं हो सकते। सद्यः भाव-ग्राही लेखक और कवि धीरे-धीरे उनसे दूर जा भटके।"

जीवन में पन्त जी को अकथनीय आर्थिक झंझटों का सामना करना पड़ा। इस देश में अधिकांश कलाकारों के भाग्य इस विषय में अनिर्वचनीय रहे हैं। पर आश्चर्य तो यह है कि इस विषम द्वन्द्व की एक भी प्रतारणा का कवि की आत्मा पर घाव नहीं पड़ा और उनकी लेखनी ने कभी उसकी ओर इङ्गित नहीं किया।

वे बोले, "अब वस्तुस्थिति अच्छी है। कुछ प्रकाशकों का व्यवहार बड़ा निन्द्य रहा है, और एक ने तो ग्यारह बरस तक कोई हिसाब नहीं दिया। मेरी रचनाओं में मेरे मानसिक संघर्ष की छाया परिलक्षित होती है पर जीवन-संघर्ष का उनमें वस्तुतः अभाव है। अपनी कृतियों में मैंने अपने वैयक्तिक संघर्षों और वैयक्तिक कामनाओं की अभिव्यक्ति कभी नहीं की। मैंने दिक्कतों का हँसते हुए सामना किया। आखिर, लाखों बुभुक्षित नर-नारियों के संकट के मुकाबले में मेरी कठिनाइयों का क्या मूल्य है?"

मैंने कई 'प्रेम के पुजारी' कवियों की चर्चा करते हुए पन्त जी से पूछा कि कवि का समाज के प्रति क्या कर्त्तव्य है?

वे बोले, "कवि एक द्रष्टा है। उसको उच्चतर आन्तरिक सत्य की झलकियाँ दिखानी पड़ती हैं और जीवन के सगुण विकास में सहयोग देना पड़ता है। उसको चाहिए कि समाज की समानान्तरित वृद्धि में सहायता दे। कवि को चाहिए कि लोगों का प्रवेश उच्च स्तरों में कराये और उनको महत्तर कार्यों की ओर प्रवृत्त करे। कवि को भी उतना देशभक्त होना चाहिए जितना किसी अन्य व्यक्ति को। उसके गीतों की स्वर-लहरी लोगों में प्राण फूँक सके और वे दासत्व तथा निर्धनता से घृणा करना सीखें। हममें से कुछ लोगों ने ऐसी कविता लिखी है।"

पन्त जी भलमनसाहत और सादगी की मूर्त्ति हैं। वे लोगों पर सन्देह नहीं करते और सर्वथा उनकी बात को सच मानने लगते हैं। कई वर्ष पूर्व एक दिन वे एक साहित्यिक धूर्त्त की प्रशंसा करने लगे और बोले, "अरे वह भला आदमी बेहद ईमानदार है। उसने हाल ही में एम० ए० पास किया और उस सुन्दर युवती से शादी की। उसकी कविता कितनी सुन्दर है। उसने कई पुस्तकें लिखी हैं।" मैं इस ठग को जानता था और मेरे चेहरे पर साफ नाइत्तिफाक झलकने लगा। पन्त जी ने कहा, "मालूम पड़ता है आप मुझसे सहमत नहीं हैं। क्या मैं सही नहीं कह रहा हूँ?" मैंने उनसे कहा कि उनके प्यारे जन्तु की विशेषता सफेद झूठ बोलना है। न उसने कभी एम० ए० पास किया, न उस लड़की से शादी की। कभी कोई पुस्तक नहीं लिखी। जब मैंने उनसे यह सब कहा तो पन्त जी भौचक्के रह गये। वे बहुत ताज्जुब के साथ बोले, "क्या लोग ऐसी झूठ भी बोलते हैं?"

पन्त जी की भारतीय दर्शन-शास्त्र में अच्छी प्रगति है और उसका वे बड़ा सम्मान भी करते हैं। वे उसकी महत्ता जानते हैं और उसकी कमी से भी परिचित हैं। वे महसूस करते हैं कि भारतीय दर्शन में आधुनिक जीवन की बाह्य हलचलों का अच्छा पर्यालोचन नहीं है इस कारण लोग मार्क्सवाद के प्रति आकर्षित होते हैं जिसमें इतिहास का वैज्ञानिक विश्लेषण है। अपनी "ग्राम्या" और "युगवाणी" में उन्होंने मार्क्सवाद को भारतीय मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि देकर अंकित किया है। उनका कहना है कि भारतीय संस्कृति की भिन्न प्रणाली है और हम भारत में मार्क्सवाद को रूसी रूप-रेखा के साथ अवतरित नहीं कर सकते।

उनका कहना है कि "मार्क्सवाद आत्मा के सत्य का निषेध करता है, और मैं इससे असहमत हूँ। संसार में एक नूतन सांस्कृतिक शक्ति की वृद्धि होनी चाहिए जो बाह्य और आभ्यन्तर जीवनों में समन्वय स्थापित करे। ऐसा सामंजस्य अवश्यम्भावी है।"

पन्त जी की राय है कि पाश्चात्य संसार, जहाँ बाह्य तत्त्वों का इतना अच्छा संगठन है, आन्तरिक जीवन की दृष्टि से खोखला है और वहाँ के आन्तरिक जीवन का संस्कार करने में भारत को बहुत हाथ बँटाना पड़ेगा। वे कहते हैं, "मैं महसूस करता हूँ कि दुनिया में मानवता में ऐक्य स्थापित करने और जीवन की वास्तविकताओं को बेहतर बनाने के लिए एक नई सांस्कृतिक शक्ति का अवतरण होना चाहिए। बाह्य जीवन में संतुलन आवश्यक है पर आन्तरिक जीवन का विकास भी करना है।"

"आपकी एक कवि की हैसियत से महत्त्वाकांक्षा क्या है?" मैंने पूछा। वे कुछ संकोच-सा करते हुए प्रतीत पर उत्तर दिया, "मुझे ऐसा ज्ञात है कि मैं यदि भारतीय आत्मा की व्याख्या कर सकूँ तो मुझे सन्तोष जायगा। इसे मैं उच्चतम सेवा मा हूँ। मेरा ध्येय भारतीय आत्मा की व्याख्या करना है।"

पन्त जी एक सांस्कृतिक स्थापित करना चाहते हैं। वे राष्ट्र नेताओं से सम्पर्क स्थापित करेंगे उनसे सहयोग माँगेंगे। जल्द ही वे पत्रिका प्रकाशित करनेवाले हैं वे अपने विचारों और दृष्टिकोण व्यक्त करेंगे। तीन या चार महीनों वे प्रयाग में रहेंगे और साहित्य-सृ करेंगे। उनको प्रयाग बहुत पसन्द है

महान् कल्पनाओं का सृष्टा अजर सन्देशों का यह गायक कभी सा को बहुत कुछ देने की क्षमता र है। पन्त वस्तुतः अब अपना वास्त स्वरूप की झलकियाँ दे रहा है। महानतम कृति अभी भविष्य के ग है। वे राष्ट्र के गौरव और हि सर्वस्व हैं। उनका आह्वान है चलिए, भविष्य आपको बधाई

सारे कुटुम्ब को अपच

जो कुछ उन्होंने खाया बीमार ही

अब सब बहुत अच्छे हैं

चार बच्चे की एक माँ ने लिखा है— "मैं और मेरे कुटुम्ब के चार अपच से बीमार पड़ गये। कमर में और अपच के अन्य दर्दों से हम दुखी थे। मैंने जो कुछ दवा की उल्टा फल निकला। परन्तु जब से महीने से) मैंने क्रुशेन खाना शुरू तब से हम प्रत्येक चीज खा सकते सारे भोजन का स्वाद पाते हैं। लोगों में किसी प्रकार का अपच रहता। मुझे यह बड़ा ही आश्चर्य पड़ता है। इसका बुरा परिणाम मालूम हुआ। चाहे जो कुछ हम पर, क्रुशेन नहीं छोड़ते।

जब आपके शरीर के अन्दर रस कम हो जाते हैं, उस समय भोजन पचने के बजाय आपके जमा हो विषैला और हानिकारक है। उस समय आपको जो औषधि की आवश्यकता होती है प्रकृति की अपनी शक्तिदायिनी है। वह प्राकृतिक खनिज नमक तत्त्वों में निहित है।

क्रुशेन के अन्दर आपको ये खनिज नमक मिलेंगे। और प्रत्येक अपनी एक निजी क्रियाशीलता मिलेगी इसका प्रथम कार्य तो यह है कि यह अथवा राल बढ़ाता है जिससे भूख है। दूसरा कार्य यह कि पेट के पाचनशक्ति प्रदान करके उन्नति देता जिससे जमा भोजन को बाहर होने शीघ्रता होती है। इस नमक से क्रिया में सहायता मिलती है।

क्रुशेन साल्ट सभी रासायनिक दूकानदारों की दूकान पर मिलता है दाम १॥=) प्रति बोतल।

मनुष्य-समाज में किसी भी घटना का एक ही कारण नहीं होता। कई कारण मिलकर अच्छा या बुरा फल पैदा करते हैं। इनमें राजनीतिक कारण सबसे गौण है। सामाजिक और आर्थिक स्थितियाँ, राजनीति को निर्धारित करती हैं, इसलिए यह निर्विवाद और निस्संदेह सत्य ह कि धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में हमारे अन्यायपूर्ण कुव्यवहारों का यह फल है कि मुस्लिम लीग और अँगरेज सरकार अपनी चाणक्य नीति में इतनी आसानी से सफल हुई ह। इसको हम तब ही जीत सकते हैं जब अपनी आत्मशुद्धि करके इन पापों का प्रायश्चित्त कर लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...वाददाताओं के पत्र

...प्रयाग (गढ़वाल) २५ जुलाई ... स्वाधीनता की बलिवेदी ... गढ़वाल के मैकिस्वनी ... श्री श्रीदेव सुमन का तृतीय ... टिहरी प्रजामंडल देवप्रयाग ... मंडल कांग्रेस कमेटी देव-... के कार्यकर्त्ताओं ने बड़े ... तथा धूम-धाम से मनाया। ... तथा अन्य कार्यकर्त्ता श्री सत्य-... शास्त्री, धनेश शास्त्री, कृष्ण-... टोडरिया, गयाप्रसाद पंचभैया, ... कानपुरिया, जयनारायण ... मगनलाल टोडरिया, ... त्रिपाठी, ज्योतिप्रसाद ... दीनानाथ पंचपुरी, रामप्रसाद ... दूधाधारी डंगवाल और ... कोटीयाल आदि प्रगति-... युवकों ने प्रभात-फेरी, झंडा-... चर्खा-दंगल में विशेष उत्साह ... काम किया। शाम को एक ... निकाला गया और फिर ... चौसरे में एक आम सभा श्री ... शास्त्री के सभापतित्व में ... थपलियाल तथा धनेश ... मिक भाषण हुए। वक्ताओं ... के कार्य तथा जीवन पर ... और जनता से उनके अपूर्ण ... करने की अपील की। ... से मालूम हुआ है कि ... सम्भवतः अब कुछ वर्षों ... में निवास करेंगे। इस ... उनकी अमेरिकन शिष्या ... आजकल | प्रतापनगर में ... हैं, जो टिहरी सरकार का ... है। इससे पूर्व वे टिहरी ... काशी की ओर भी गई ... की जलवायु उन्हें अनुकूल ... हुई।

—संवाददाता

* *

... (डाक से) गढ़वाल के ... अमरशहीद श्री श्रीदेवसुमन ... निधन-तिथि टिहरी राज्य के ... बहुत शानदार और गंभीरता ... गई। प्रजामंडल के प्रधान ... लाल जी वैद्य द्वारा मालूम ... सुमनदिवस से एक रोज पहले ... को टिहरी नगर के मुख्य ... रास्तों पर सख्त पहरा बैठा ... था। तथा काँटेदार तारों ... दिये गये थे। श्री शंकरदत्त ... भक्त कृपालसिंह को जो कि ... टिहरी आ रहे थे गंगा ... रोक लिया गया। फल-... पुल पर ही अनशन और ... फौजियों ने उन्हें हटाने ... किन्तु वे टस से मस न ... अधिकारियों को हार ... जाने देना पड़ा। ... चबूतरे में एक आम ... डंगवाल 'भिखारी' ... में हुई जिसमें केन्द्रीय ... (टिहरी) प्रधान मंत्री श्री ... के सुमन-दिवस पर टिहरी नगर में हुई वारदातों की तीव्र निन्दा की। श्री धनेश शास्त्री तथा विश्वनाथ शास्त्री के भाषणों के पश्चात् दो प्रस्ताव श्री कैलाशनारायण भट्ट, रामप्रसाद डवराल, कृष्णकान्त टोडरिया तथा दीनानाथ पंचपुरी ने देवप्रयाग की वर्तमान टाउन एरिया कमेटी तथा प्रौफशनल टैक्स का विरोध किया और टिहरी सरकार से माँग की गई कि सरकार ही कमेटी का नया चुनाव कर जनता के लोकप्रिय प्रतिनिधियों को भेजने की खुली छूट दे दे।

—संवाददाता

* * *

हरिद्वार गढ़वाल के एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता श्री चन्दनसिंह विष्ट के उद्योग से ऋषिकेश से १२ मील दूर गढ़वाल में श्री बद्रीनारायण-यात्रा-पथ पर मोहनचट्टी नामक एक सुरम्य और स्वास्थ्य-प्रद स्थान में एक हिन्दी, अँग-रेजी स्कूल की स्थापना की गई है। इस वर्ष वहाँ कक्षा ५-६ खुली है। इस समय तक कुछ स्कूल-भवन भी तैयार हो गया है। और स्कूल के कार्य-संचालन का भार एक विश्वसनीय कमेटी के हाथ में है। शिक्षा-विभाग गढ़वाल से भी अनुमति मिल गई है।

यह सब कार्य दानी-मानी सज्जनों की सहायता पर हो रहा है। देश के निर्धन व पंजाब वगैरह की तरफ से आये हुए शरणार्थी लोगों के बच्चों के लिए रहने तथा शिक्षा का निःशुल्क प्रबन्ध है। विशेष जानकारी, पत्र-व्यवहार तथा दानादि मिम्न पते से करें।

केवल हिन्दी अपर प्राइमरी पास विद्यार्थी प्रवेश पा सकेंगे।

पता इस प्रकार है—ठाकुर चन्दन-सिंह विष्ट मैनेजर हिन्दी मिडिल स्कूल—मोहनचट्टी पो० खेड़ा (गढ़वाल) या श्री पारेश्वर शर्मा मेम्बर स्कूल कमेटी मोहनचट्टीहाल—भारती भवन, हरिद्वार।

—संवाददाता

* * *

राजपूताना अखिल भारतवर्षीय देशी राज्य लोक-परिषद् की राजपूताना प्रान्तीय कार्य-समिति के महिला-विभाग द्वारा आयोजित राजपूताने के १॥ मास के दौरे में मुझे सब जगह के प्रजामंडलों के नेताओं व कार्यकर्त्ताओं, अन्य संस्थाओं के सहयोगियों, पत्रों के सम्पादकों तथा कृपालु सज्जनों ने महिला-जागृति और संगठन-कार्य में स्नेहपूर्ण सहयोग देकर प्रान्त में जो वातावरण बनाने में सहायता की है वह मैं भूल नहीं सकती। अलग-अलग आभार न मानकर मैं पत्र-द्वारा हार्दिक आधार मान रही हूँ, आशा है आप स्वीकारेंगे।

विश्वास है भविष्य में भी आपका स्नेहपूर्ण सहयोग मुझे इसी प्रकार मिलेगा, धन्यवाद।

—कमलाकुमारी श्रोत्रिय

* * *

उदयपुर महिला-मंडल की कार्य-कारिणी में आनेवाली महिलाओं का चुनाव पं० लक्ष्मीलाल जोशी, एम० ए०, एल्-एल० बी० की अध्यक्षता में हुआ। चुनाव में महिलाओं ने सोत्साह भाग लिया, चुनाव-संचालन श्री शम्भूलाल शर्मा बी० ए० बी० टी० के निरीक्षण में हुआ।

विधानानुसार आगामी तीन वर्षों के लिए ता० २६-७-४७ को कार्य-कारिणी के पदाधिकारियों व सदस्यों का चुनाव निम्न प्रकार से श्रीमान् बलवन्तसिंह जी की अध्यक्षता में हुआ।

अध्यक्षा—श्रीमती कमलादेवी श्रोत्रिया, उपाध्यक्षा—श्रीमती विजया-लक्ष्मी नागर और श्रीमती पानबाई मोहता, प्रधान मंत्री तथा व्यवस्थापक—श्री दयाशंकर जी श्रोत्रिय, संयुक्त मंत्रिणी—श्री सुशीलाकुमारी अग्रवाल, अर्थ-मंत्री—श्री गनेशलाल जी मेहता, सुपरवाइजर—श्री शंभूलाल जी शर्मा बी० ए० बी० टी०, आय-व्यय निरीक्षक—श्री हीरालाल जी कोठारी, सदस्य—श्री यशवन्तसिंह जी मेहता, श्री लक्ष्मी लाल जी जोशी, एम० ए० एल्-एल० बी०, सदस्य—श्री मोहनलाल जी सुखा-ड़िया, श्री बलवन्तसिंह जी मेहता, श्री रामबहिन बी० ए० बी० टी०, श्री इन्दुबाला सुखाड़िया, श्री राधादेवी शर्मा, श्री मोहनदेवी शर्मा, श्री सुमन-देवी भारतीय।

—संवाददाता

* * *

मंडावा (जयपुर) श्री युवक-सभा का वार्षिक अधिवेशन श्री सीताराम जी हरला लंका की अध्यक्षता में हुआ जिससे पदाधिकारी आगामी वर्ष के लिए चुने गये। सभापति श्री सत्यदेव जी खेमाणी, उपसभापति श्री बालुराम जी लडिया व श्री शंकरलाल जी शाह, प्रधान मंत्री श्री सावरमल जी मिश्र, स० मंत्री श्री विश्वनाथ खेमाणी व श्री बबु-लाल जी मिश्र, कोषाध्यक्ष श्री नथमल जी नाटाणी, पुस्तकालय-मंत्री श्री भगवतीप्रसाद जी लडिया। सेवा-मंत्री पं० किशोरलाल जी मिश्र, प्रचार-मंत्री श्री केशवदेव जी ढंढ। हरिजन पाठशाला के मंत्री श्री सावरमल जी जोशी।

—संवाददाता

* * *

बम्बई के बड़ौदा हाउस में जोधपुर की महाराजकुमारी श्री राजेन्द्रकुमारी का वागदान (सगाई) सम्बन्ध बड़ौदा के युवराज श्री फतेहसिंह जी गायकवाड़ के साथ अधिकृत रूप से घोषित होना, गत सप्ताह की एक मुख्य और महत्त्वपूर्ण सामाजिक घटना है। इस सम्बन्ध के रूप में सदियों से पिछड़े हुए मराठा क्षत्रियों का राजपूतों के साथ मिलना भारत की आज की स्थिति में जितना महत्त्वपूर्ण है, उतना ही भविष्य के लिए शुभमय।

स्मरण रहे, राजपूत मराठा सम्बन्ध को कल्पना से इस वास्तविक रूप में लाने के लिए अब तक मराठासंघ, महा-राजा ग्वालियर, महाराजा बड़ौदा, महाराजा देवास तथा दक्षिण भारत के बड़े-बड़े हिन्दू-नेता प्रयत्न करते रहे हैं। किन्तु इस कार्य में जोधपुर के सुप्रसिद्ध योगिराज महर्षि स्वामी माधवानन्द जी महाराज को पूर्ण सफलता मिली, जिन्होंने बड़ौदा एवं जोधपुर नरेश के आग्रह पर इस ऐतिहासिक सम्बन्ध के समय बम्बई के बड़ौदा हाउस में उपस्थित होकर दोनों राज-परिवारों एवं भावी वर-वधू को इस सामयिक सुधार के लिए धन्यवाद दिया। हिन्दू-संगठन तथा सुधार की दिशा में इसके अच्छे परिणाम आँके जा रहे हैं।

—संवाददाता

* * *

उन्नाव में बिहार कांग्रेस के प्रमुख कार्यकर्त्ता पं० महावीरप्रसाद पाण्डेय के सभापतित्व में एक विराट् सभा हुई जिसमें अनेक कार्यकर्त्ता और ग्रामीण जनता का जमाव हुआ। सभा में कुछ निर्णय इस प्रकार हुए—

राष्ट्र की बुनियाद ग्रामीण जनता कांग्रेस के अथक परिश्रम एवं कार्य-तत्परता से सहयोग करते हुए अपने प्रमुख लक्ष स्वतंत्रता के निकट पहुँच चुकी है। किन्तु इस संक्रान्तिकाल में विश्वासप्राप्त अपनी [illegible] कांग्रेस जिसकी बदौलत यह सुअवसर [illegible] को सम्मुख आ रहा है उसके (कांग्रेस) अधिकांश कतिपय उच्छृंखल कल के सच्चे सेवक परिश्रमी कार्यकर्त्ता अपने व्यवहार और भ्रमात्मक प्रचार से अविश्वास की भावना भरकर राष्ट्र की बुनियाद को खोखली बना रहे हैं ऐसा प्रतीत होता है। अतः जनता ऐसे कार्य-कर्त्ताओं से सचेत रहे और उनके बहकावे में न आये। तभी हम और आप अपनी विश्वासपात्र कांग्रेस के साथ रहकर अपनी सरकार के देशप्रिय संचालन के वास्तविक अंग होकर राष्ट्र का कल्याण कर सकेंगे। यह सभा भागूखेड़ा मण्डल के सभापति श्री चन्द्रिकाप्रसाद जी पर पुलिस तथा जमींदारों द्वारा घातक हमला करने की निन्दा करती है और अधिकारियों से यह आशा करती है कि वे इस मामले की उचित कार्रवाई करेंगे।

—उमाशंकर वर्मा

* * *

पीलीभीत "पी० वाई० एम० ए० पुस्तकालय की ओर से १५ अगस्त के शुभ अवसर पर अन्य विशाल आयोज-नाओं के साथ हिन्दी पत्रों और पत्रि-काओं की प्रदर्शनी करने का आयोजन किया गया है। आशा है समस्त हिन्दी-संसार इस शुभ और स्मरणीय अवसर पर पुस्तकालय की पुनीत आयोजना में यथायोग्य सहायता देकर उत्साह बढ़ावेगा।"

—संवाददाता

* * *

इंदौर श्री वीर सार्वजनिक वाचनालय में "हिन्दी-दिवस" श्री शिखरचंद जी जैन साहित्यरत्न के सभापतित्व में मनाया गया। इस सभा में पंडित नाथूलाल जी साहित्यरत्न, श्री जानकीप्रसाद पुरोहित एवं रायरत्न शिवसेवक जी तिवारी के विषय को प्रतिपादित करते हुए सार-गर्भित भाषण हुए। कविवर 'कुंज' ने अपनी मनोरंजक कविताओं का पाठ किया। श्री सभापति ने विषय का पूर्ण विवेचन कर विधान-परिषद् राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं राष्ट्रलिपि देवनागरी स्वीकार कर लेवे, इस सम्बन्ध का प्रस्ताव उपस्थित किया जो कि सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

—प्रचारमंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार

प्रयाग हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति की बैठक में निम्न निश्चय स्वीकृत हुआ।

(१) भारतीय विधान-परिषद् द्वारा यह स्वीकार कर लिया जाय कि भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि देवनागरी हो।

(२) समस्त अन्तःप्रान्तीय और केन्द्रीय कार्य के लिए जिन विभागों तथा कार्यक्षेत्रों में अब तक अंगरेजी अथवा अन्य किसी भाषा का व्यवहार होता हो वहाँ सर्वत्र हिन्दी भाषा का और जहाँ रोमन या फारसी लिपि का प्रयोग होता हो वहाँ देवनागरी का व्यवहार किया जाय।

(३) हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों (संयुक्तप्रान्त, बिहार, मध्यप्रान्त, पूर्वी पंजाब, दिल्ली, अजमेर-मेरवाड़ा तथा मध्य भारत, राजपूताना आदि और उपर्युक्त प्रान्तों की अन्तर्वर्ती रियासतों) में सर्वत्र देवनागरी लिपि के द्वारा हिन्दी-भाषा की अनिवार्य शिक्षा दी जाय। और उर्दू तथा अँगरेजी की अनिवार्यता तुरन्त समाप्त की जाय। प्रान्तीय तथा रियासती शासनों के सभी विभागों में हिन्दी-भाषा और देवनागरी लिपि का व्यवहार अनिवार्य कर दिया जाय, अन्य प्रान्तों और रजवाड़ों में वहाँ की भाषाएँ शासन-कार्यों में मान्य रहेंगी।

सम्मेलन की स्थायी समिति संयुक्त-प्रान्तीय शिक्षा-विभाग से साग्रह अनुरोध करती है कि वह इस प्रान्त के ऐंग्लो-हिन्दुस्तानी स्कूलों की कक्षा ५ से ८ तक के छात्रों को अनिवार्य रूप से उर्दू पढ़ाने की व्यवस्था को तुरन्त रद कर दे। साथ ही समिति का यह भी अनुरोध है कि उर्दू की अनिवार्य द्वितीय भाषा के रूप में जो शिक्षा इस प्रान्त में दी जाती है उसे तुरन्त बन्द कर दिया जावे।

संयुक्तप्रान्त की सरकार ने, पुलिस-थानों में जो सूचनाएँ लिखाई जाती हैं उन्हें लिखानेवालों की इच्छा के अनुसार हिन्दी में लिखे जाने की आज्ञा तो प्रचलित कर दी है, किन्तु इसे व्यवहार में नहीं लाया जा रहा है। अतः सम्मेलन की स्थायी समिति को सन्तोष नहीं है। समिति सरकार से अनुरोध करती है कि बिना लिखानेवाले के कहे भी अपने आप थानों के लेखक हिन्दी में ही सूचना लिखा करें और हिन्दी में ही उसकी प्रतिलिपि दिया करें।

सम्मेलन की स्थायी समिति संयुक्त-प्रान्त के शिक्षा-विभाग से अनुरोध करती है कि वह हिन्दुस्तानी के सम्बन्ध में अपनी वर्तमान नीति में आमूल परिवर्तन करे और उसने जो ५०,०००) रुपया इस वर्ष के बजट में हिन्दुस्तानी के प्रचार के लिए रखे हैं उनका उपयोग हिन्दी-साहित्य के निर्माण के लिए करे।

—संवाददाता

लखनादौन (मध्यभारत) से श्री मंत्री, गोरक्षा-प्रचार-विभाग लिखते हैं—संतोष की बात है। गोवध हटा देने का आन्दोलन जोर पकड़ता जा रहा है। भारत की म्युनिसिपैलिटियों ने भी इस दिशा में अमली कदम उठाना शुरू कर दिया है। जब तक गोवध की घातक बुराई सदा के लिए नेस्तनाबूद नहीं बना दी जाती, तब तक यह आन्दोलन बराबर जारी रखा जायगा। हिन्दुत्व-प्रधान भारत में हिन्दू संस्कृति को कलंकित करनेवाला गोवध का राष्ट्रीय पाप अब एक क्षण के लिए भी बर्दाश्त नहीं किया जा सकेगा। यह तयशुदा बात है। स्वतंत्र भारत में न कसाई का पेशा करनेवाले रह सकेंगे, न नारकीय क़साई-खाने। गोवध ने राष्ट्र की अपरिमित क्षति की है। इस बुराई को हर हालत में दूर करना होगा। हमें खेती की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने के लिए गोबर गोमूत्र खाद के रूप में। खेती का विस्तार बढ़ाने के लिए काफी बैल और जिन्दा रहने के लिए अन्न के साथ घी, दूध भी पर्याप्त मात्रा में चाहिए। जिसकी पूर्ति गोवंश को बचाकर ही की जा सकेगी। भगवान् की कृपा से भारत गुलामी के अभिशाप से मुक्त हो चुका है। स्वतंत्र भारत की स्वतंत्र पार्लियामेंट के सामने पहला प्रस्ताव पेश होगा तत्काल गोवध हटा दिये जाने का। गोवध का बंद किया जाना ही सर्वसाधारण की दृष्टि में स्वराज्य मिल जाने का बड़ा सबूत होगा। यही समय है। जब हम गोरक्षा के लिए अन्तिम निर्णय करा सकेंगे।

अस्तु, स्थान-स्थान पर सार्वजनिक सभाएँ करके भारत से तत्काल गोवध हटाये जाने की सामूहिक माँग माननीय अध्यक्ष विधान-निर्मात्री परिषद् नई दिल्ली के पते से भेजना चाहिए।

* * *

नई दिल्ली अखिल भारतीय हिन्दू महासम्मेलन का अधिवेशन आगामी ता० ९, १० अगस्त हिन्दू महासभा भवन रीडिंग रोड, नई दिल्ली में हो रहा है। आपसे साग्रह निवेदन है कि महासम्मेलन में सम्मिलित होने का कष्ट करें। आपके सहयोग से सम्मेलन को जो बल मिलेगा और आपके परामर्श से जो लाभ होगा, उसके लिए हम आभारी होंगे। ऐसा ही निमन्त्रण-पत्र कतिपय नरेशों की ओर से सब हिन्दू-नरेशों की सेवा में भी भेजा गया है और आशा है कि उनमें से बहुत से महासम्मेलन में पधार कर शोभा बढ़ावेंगे। इसके साथ ही साथ एक गोवध-निवारण-संघ का अधिवेशन भी होगा जिसका सभापतित्व श्री सेठ रामकृष्ण डालमिया ने स्वीकार कर लिया है। यह संघ राजनैतिक कार्यों से सर्वथा पृथक् रहेगा और इसमें सम्मिलित होने के लिए सब राजनैतिक दलों के अनेक मुख्य व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक अपनी स्वीकृति दी है। ता० १० अगस्त को समस्त भारतवर्ष में गोवध-निवारण-दिवस मनाने का निश्चय भी किया गया है और हमारा निवेदन है कि देश के कोने-कोने में, सब स्थानों पर लोग इसमें सहयोग दें और सभाएँ करके गोवध-निवारण के लिए बल दें।

—संवाददाता

(पेज ४ का शेष)

अब नई पैदा हो गई जिससे उन्हें आन्दोलन उठाना पड़ा। हमारी कांग्रेसी सरकार सारी पुरानी बुराइयाँ दूर कर रही है मगर हिन्दू-सभा के जवान सन्तुष्ट नहीं। एक ही दिन में सारी बुराइयाँ सैकड़ों वर्षों से जो चली आ रही हैं दूर क्यों नहीं होतीं। हिन्दुस्तान के दो टुकड़े हो गये क्या इसमें हिन्दू-सभा के नेता डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी का हाथ न था? क्या यह ज्यादा अच्छा होता कि रोज छुरेबाजी बढ़ती जाती?

सरकार को नेक सलाह देना ठीक है मगर शासन-प्रबन्ध बदलवाना ठीक नहीं कि फलाँ मंत्री को निकालो फलाँ को रखो।

मेरा तो खयाल ऐसा है कि हिन्दू जनता को इस बात की काफी अक्ल है कि कौन-सी संस्था ने उन्हें आजादी दिलाई और कौन उसे कायम रख सकती है। जिन्होंने आजादी लेने में हाथ न बँटाया वे कायम नहीं रह सकते यह याद रखना चाहिए। हमें इस समय अपने जँचे हुए नेताओं को पूरी सहायता देनी चाहिए।

ब्यावर जैन गुरुकुल में हिन्दी-संकेत-लिपि की शिक्षा का सुन्दर आयोजन किया गया है। शिक्षार्थी को अँगरेजी जानना आवश्यक नहीं, अच्छा हिन्दी ज्ञान होना ही पर्याप्त है। काफी लम्बा अनुभव रखनेवाले शिक्षक की व्यवस्था कर ली गई है।

—अधिष्ठाता

मनोरंजक चुटकुले

इक्केवाले ने पुलिस से "अब ऐसी गलती न होगी पुलिस—"तुमने कई बार चार सवारियाँ बिठलाई हैं।

इक्केवाला—"तीन तो चाहिए, पर जब आप बैठ क्या तीन ही गिनती होती

* *

एक सभा में प्रस्ताव हुआ— पुलिस की लाल पगड़ी बदल जनता में कुछ साहस बढ़

दूसरे सज्जन—क्या सरकार आदत थोड़े ही बदल देगी?"

* *

अध्यापक—हुजूर मेरी बदली दला) दूर हो गई है मेरी ख्याल किया जाय।

चेयरमैन—अभी तक तो ही घर के पास थे, फिर भी नहीं दूर हुई। शायद अब दूर ही दूर हो जाये।

* *

खरीदार—"तेल बहुत गया है।"

व्यापारी—महँगी में भी की बात सोचते हैं।

* *

बिजलीवाला—बिजली में दस रुपये लगेंगे।

मकान-मालिक—कम्पनी देना कि वह कनेक्शन काट हूँ फिर भी महीने में आधे रहता है।

* *

सुकवि राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल्-एल्०

की

अनमोल कृतियाँ

प्रतिमा

इस संग्रह में सुकवि राजाराम श्रीवास्तव की एक से एक बढ़िया ५० कविताएँ हैं। इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा है। क्या भाषा और क्या भाव सभी अनुपम हैं। रंगीन आवरण, बढ़िया छपाई और मूल्य केवल १) एक रुपया।

वनवास

कवि ने रामचन्द्र जी के वनवास का अनोखा वर्णन किया है। कवि राजाराम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवास की अनेक मुख्य घटनाएँ हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है। मूल्य ।।।=) चौदह आने।

लक्ष्मणशक्ति

इसी लेखक-द्वारा रचित एक खण्ड-काव्य। इसकी कथा का आधार रामायण का युद्ध-काल है जिसमें लक्ष्मण हो गये थे। भाषा सुलझी हुई विरेदार है। मूल्य ।।।) बारह

किंकिणी

कवि की बढ़िया कविताओं है। भाषा मधुर और आकर्षक है कि पाठक भावविभोर बना रहता है। बारह आने।

मधुस्रवा

इस अनुपम और कविता-पुस्तक में जीव में मधु पूरी क्षमता है। आप भी को पढ़कर जीवन को मूल्य १।–) एक रुपया

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...-साहित्य

...ुत कहानियाँ

...ी हुई इस सचित्र पुस्तक ...ें बढ़िया कहानियाँ हैं। इसमें ...ाकि और भाग्य के खेल ...ी ही बनता है। मूल्य ॥≡)

...ी मज़ेदार कहानियाँ

...ीआ, लोमड़ी और गधा, ...ोने की चिड़िया, सिंह ...दि कहानियाँ पढ़िए और ...र देखिए। मोटे टाइपों में ...र छपी पुस्तक का मूल्य ॥≡)

...ल्हा-ऊदल

...ीरता और साहस की पाँच ...ुर। भारत के पुराने वीर ...ऊदल के युद्ध का वर्णन पढ़-...शिक्षा लीजिए। सचित्र ...ल ≡)

...ाल-द्विवेदी

...ित महावीरप्रसाद द्विवेदी ...ी के यहाँ पैदा होकर भी ...किस प्रकार नाम कमाया, ...ने पुस्तक में पढ़िए और ...महान् बनने की शिक्षा ...॥)

...ी की कहानी

...ली, पृथ्वी पर पहले-पहल ...न्दर्या, पहाड़, जंगल, रेगि-...रेत, जानवर, पक्षी और ...ें, धर्म और जातियाँ, राजा ...ियाँ बने; पुरानी यादगारें, ...ाना, पृथ्वी का अन्त आदि ...इस पुस्तक में बड़े अच्छे ...या है। मूल्य ॥≡॥)

...ी की परिक्रमा

...देशों के प्रधान स्थानों का ...ाओं इस पुस्तक में सुन्दर ...। चिकने कागज पर छपे ...चित्र भी इसमें हैं। मूल्य ॥)

...क कहानियाँ

...रा भाग)

...में बहुत सी मनोरंजक ...हानियाँ हैं। इसके पढ़ने ...लाभ के सिवा भाषा-...होता है। मूल्य ।-)॥

...ी के लाल

...की कहानियाँ बहुत ही ...भाषा में लिखी गई ...बच्चे बेहद खुश होते ...अपने बच्चों को जरूर ...॥)

...र बुकडिपो, ...स, लि०, प्रयाग

...ँखिनी

...ँखिनी ...ँखिनी ...ँखिनी

...ँखिनी ...ँखिनी ...ँखिनी

...ँखिनी ...ँखिनी

अपट लोशन

दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.

अपट ऐण्ड कं. लि. बम्बई नं. २

कोमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये। वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

सभी दुकानों पर

Copyright.

रोना

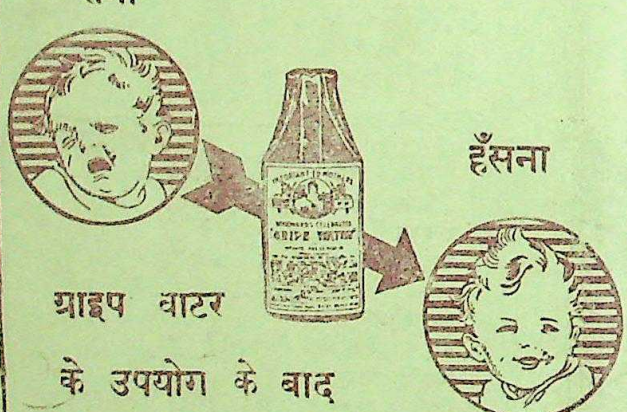

हँसना

ग्राइप वाटर के उपयोग के बाद पेट के दर्द व खट्टे डकार से छुटकारा मिलता है।

WOODWARD'S GRIPE WATER

— keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली बुढ़ बड़े ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 116—117 W. WOODWARD LTD. LONDON, ENGLAND.

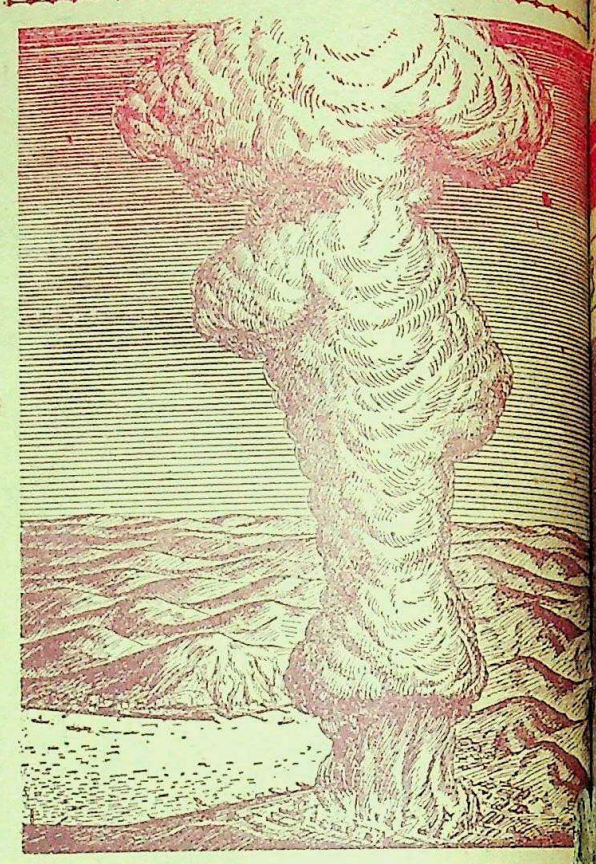

६ अगस्त १९४५ के दिन सारा संसार इस गुप्त रहस्य के [illegible] चकित रह गया कि जापान का एक नगर हिरोशिमा, जिस में [illegible] २५०,००० प्राणी रहते थे, ऐटम बम के गिरने से पूर्ण रूप से नष्ट हो [illegible] दूसरा ऐटम बम जो जापान पर गिराया गया उस ने नागासकी नगर [illegible] कर दिया। आज सारा संसार इस भयंकर विनाशकारी शस्त्र से [illegible]

ऐटम की शक्ति शान्ति-काल में विभिन्न लाभप्रद प्रयोगों में लाई [illegible] है। यह कोयला, तैल और बिजली के स्थान पर प्रयोग हो सकती है [illegible] पर ख़र्च इन सब चीज़ों से बहुत ही कम बैठता है। मनुष्य मात्र की [illegible] सम्पत्ति और सर्व सामान्य के हित के लिये ऐटम की शक्ति अपरिमित [illegible] यह युग सम्बन्धी आविष्कार प्राणीमात्र के कल्याण या आधुनिक सभ्यता [illegible] के लिये प्रयोग में लाया जायेगा - यह बात मनुष्य जाति की बुद्धि पर [illegible]

न्याय-सिद्ध बुद्धि ही दुखित मनुष्यों की एक और अति आवश्यक समस्या का निवारण कर सकती है—यह समस्या है चढ़ी हुई कीमतों का भय। यदि आप अपने धन को व्यर्थ चीज़ों पर अपव्यय कर देंगे या असावधानी से किसी मद में लगा देंगे तो निस्सन्देह आप कीमतों को चढ़ाने में सहायता देंगे। इस के विपरीत यदि कुछ काल के लिये चीज़ों का ख़रीदना बन्द करके रुपया बचायें तो आपको लाभ होगा और ऐसा करने से आप कीमतें गिराने में भी हमारी सहायता करेंगे। याद रखिये कि चढ़े दामों पर चीज़ें ख़रीदना घाटे का सौदा है। आवश्यकता के बिना कोई भी वस्तु न ख़रीदिये।

अपनी बचत को बीमा [illegible] सहकारी साख समिति, [illegible] सेविंग्ज़ खाता, नेशनल सेविंग [illegible] फ़िकेट्स और सरकारी लोन [illegible] की सुरक्षित मदों में लगा

भूमि, सम्पत्ति, सोना चाँदी [illegible] आभूषण, द्रव्य, बना माल का [illegible] पर धन का अपव्यय न [illegible] इन के मूल्य चढ़े हुए हैं [illegible] है कि शीघ्र ही कम हो [illegible]

चढ़ी कीमतों को रोकिए
धन का अपव्यय न कीजिए

भारत सरकार के फ़ाइनैन्स विभाग द्वारा प्रकाशित

प्रबन्ध सम्पादक—एच पी० घोष [के० मित्रा द्वारा इंडियन प्रेस लि[illegible] प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—उमेशप्रसाद [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

२४ अगस्त, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 24th August, 1947

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

स्त्रियों का स्वातंत्र्य युद्ध
सरकार ग्राम-सुधार-योजना

मध्यप्रांत का बटवारा कैसे हो !
लोकतंत्र और आधुनिक नैपाल राज्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खांसी और जुकाम की
सर्वाधिक लोकप्रिय दवा

सिरोलिन
'रोच'

संसार भर मे उपयोगित होती है।

भा र त स र का र

डिसपोज़लज़ नीलाम

नीलाम द्वारा बिक्री

भविष्य में डायरैक्टोरेट जैनरल ऑफ़ डिसपोज़लज़ द्वारा बचे हुए अच्छे और उपयोगी माल का थोक के रूप में नीलाम नियम पूर्वक हुआ करेगा।

नीलाम द्वारा माल बेचने के दो मुख्य साधन होंगे:—

[अ] नियत समय पर माल के स्थान पर नीलाम—किसी एक भण्डार या एक केन्द्र के विभिन्न भण्डारों में संचित बचा हुआ अच्छा माल नियत समय पर नीलाम द्वारा बेचा जावेगा जब तक सारा माल न बिक जावे।

यह बचा हुआ माल उचित भागों में बांट कर बेचा जावेगा इन भागों का मूल्य प्रायः २५,०००) से १००,०००) रु० तक होगा।

[ब] नीलाम द्वारा बिक्री जो इन दो प्रकार के माल की हुआ करेगी:—(i) बचा हुआ और अनुपयोगी माल सालवेज डीपू में (ii) बचा हुआ माल जो समय समय पर संचय होता रहेगा।

दोनों प्रकार के नीलाम की तारीख़, समय, नीलाम का स्थान, माल तथा बिक्री सम्बन्धी विवरण, नियत समय पर समाचार पत्रों, विशेषतया स्थानीय पत्रों में प्रकाशित होगा।

ऐसी सूचना डायरैक्टोरेट जैनरल आफ़ डिसपोज़लज़, नई देहली द्वारा प्रकाशित डिसपोज़लज़ के पाक्षिक बुलेटिन में भी प्रकाशित होगी। यह बुलेटिन ६ मास का ५) रु० चन्दा पेशगी देने वालों को प्राप्त हो सकता है।

इस के अतिरिक्त नीलाम की सूचना विज्ञापनों और पोस्टरों द्वारा भी दी जावेगी।

सूचना की प्रतीक्षा कीजिए - नीलाम सम्बन्धी विवरण, प्रोग्राम और नियम इत्यादि के लिये रिजनल कमिश्नर से मिलिए

DGD

भारत सरकार के डायरैक्टोरेट जैनरल ऑफ़ डिसपोज़लज़, नई देहली द्वारा प्रकाशित

A.C. 292

दुर्गन्धित श्वाँस से बचकर असफलता से बचिये!

चूँकि बुरी श्वाँस भी व्यापारिक और सामाजिक असुविधाओं में से है, इसलिए मैं कोलगेट डेण्टल क्रीम से दिन में कम से कम दो बार अपने दाँतों को साफ़ करता हूँ।

कोलगेट डेण्टल क्रीम—बिना किसी प्रकार की हानि पहुँचाये हुए दाँतों के पर्तों को साफ करता और मसूड़ों को नर्म रखता है। कोलगेट के छेदों में प्रवेश करनेवाले फेन आपके दाँतों के दरारों के भीतर घुसकर खाद्य पदार्थों के उन अंशों को हटाने में मदद करते हैं जिनसे श्वाँस में दुर्गन्धि पैदा हो जाती है।

कोलगेट डेण्टल क्रीम का आज ही से नित्यप्रति बार बार इस्तेमाल करना शुरू कर दीजिए यह नोट कर लीजिए कि यह दाँतों को वास्तव में किस प्रकार पूर्ण रूप से साफ़ और चमकदार बना देता है तथा मसूड़ों को स्वस्थ और श्वाँस को किस प्रकार मधुर कर देता है।

DC 4

धन बचाइए

कदाचित आप एक मितव्ययी व्यक्ति हों और स्वाभाविक रूप से रुपये का आदर करते हों या विलास सम्बन्धी वस्तुओं पर ख़र्च करने का शौक रखते हों। आप चाहे अमितव्ययी हों या मितव्ययी, आप यह कदापि नहीं चाहते कि दाम आजकल जैसे चढ़े रहें क्योंकि रुपये का बहुत ही कम मूल्य प्राप्त होता है। चढ़े हुए दामों को कम करने में आप हमारी सहायता क्यों न करें? विधि अति सरल है-कोई भी अनावश्यक वस्तु न ख़रीदिये।

जितनी बचत कर सकते हैं कीजिये और अपनी बचत को निम्न लिखित किसी मद में लगाइए:—

बीमा पॉलिसी, सहकारी साख समिति, डाकख़ाने का सेविंग्ज़ खाता, नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स, और सरकारी लोन (कर्ज़)। इस प्रकार आप का धन सुरक्षित रहेगा और लाभप्रद भी सिद्ध होगा।

भूमि, सम्पत्ति, सोना चांदी के पांसे, द्रव्य, बना आल, या सट्टेबाज़ी पर रुपया अपव्यय न कीजिए। ये आज कल बहुत बाढ़े के मद हैं।

चढ़ी कीमतों को रोकिए
धन का अपव्यय न कीजिए

AC 231 भारत सरकार के फाइनैन्स विभाग द्वारा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

...६, संख्या ५२] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, २४ अगस्त, १९४७

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

...स्तान को स्वतन्त्रता प्राप्त हो ...और गाँवों में स्वतन्त्रता दिवस ...मच गई, अहिंसात्मक ढंग से ...ते रहने के बाद एक महान् ...प्राप्त हो गई किन्तु कहते नहीं ...कि शासन के पुराने कल-पुर्जों ...वही बेढंगी चली जा रही ह। ...करनेवाले अधिकांश अधिकारी ...-फार में ही पड़े हुए हैं, और ...में आसमान की ओर देखने लगे ...देखते-देखते यह क्या हो गया? ...तथा अधिकारियों ने कांग्रेस-...सलामी जरूर दी लेकिन अकड़ ...पुरानी बनी हुई ह। रस्सी ...लेकिन ऐंठन न गई। अपने राम ...में सच तो यह है कि अँगरेज ...से विदा जरूर हो गये लेकिन ...अभी ज्यों की त्यों बरकरार ...हैं हृदय-परिवर्तन की, तभी ...भाग्योदय होगा। नहीं तो ...नेहरू-पटेल दौड़ते फिरेंगे? ...लीगी मनोवृत्ति के मुस्लिम ...को खुदा के नाम पर अब ...जाना चाहिए। नहीं तो पाकिस्तान ...खुला हुआ ह। हिन्दुस्तान तो ...ही बनकर रहेगा, भाइयो ...!

* *

...रेज हिन्दुस्तान से चले गये, लेकिन ...अपने करिश्मे दिखाने में लगे ...ताजा उदाहरण हैं पंजाब और ...की सीमा कमीशन का फैसला। ...कमीशन की ओर से बंगाल और ...की सीमा निर्धारित करने के ...में जो घोषणा की गई है, वह ...की बन्दर-बाँट चाल का जीता-...नमूना ह। सीमा का निर्धारण ...दृष्टि से होना चाहिए था किन्तु ...ऐसी की गई कि दाढ़ी-चोटी ...का काम निहायत माकूल ...जारी रहे। सीमा कमीशन ने ...निर्धारण की जो घोषणा की है, ...मती के कुनबा जोड़ने की ही ...। पंजाब और बंगाल के जिलों ...कमिश्नरियों को काट-छाँटकर ऐसा ...किया गया है कि भगवान् जाने ...नतीजा निकले! अपने राम ...में अँगरेज जाते-जाते भी कुछ ...जाना चाहते हैं कि आग भड़कने ...पाये लेकिन सुलगती जरूर रहे। ...को दो उपनिवेश जरूर बन ...स्वतन्त्र हो गये लेकिन सीमा-...ने एक नई बला सामने लाकर ...कर दी है। इस बला से पिंड ...छूटेगा, इसे अँगरेज ही ज्यादा समझ ...।

* *

...कमंडलाचार्य की एक मनोरंजक कथा ...है। सीमा निर्धारण के मामले में अँगरेज-निर्णायक ने कमंडलाचार्य का पार्ट अदा किया है। कमंडलाचार्य की कथा यों है कि साधुओं की एक जमात में एक साधु ऐसा था जिसकी आदत कुछ न कुछ करते रहने की थी। रात को जब सब साधु सो जाते तो भी उस साधु को कुछ न कुछ करते रहने की आदत थी। वह और कुछ तो न करता किन्तु सोते हुए साधुओं के कमंडलों का अदल-बदल कर रख देता। एक का कमंडल दूसरे के पास, दूसरे का तीसरे के पास और तीसरे का चौथे के पास। प्रातः-काल होते ही सभी साधु अपने कमंडलों के लिए परेशान होते लेकिन ढूँढ़-खोज़ के बाद सबके कमंडल मिल जाते। एक दिन रात को कमंडलों के अदला-बदली करनेवाला साधु पकड़ा गया। तब से साधुओं ने उस साधु का नाम कमंडलाचार्य रख दिया। कमंडलाचार्य की आदत ही ऐसी थी, साधु करते ही क्या? ठीक यही दशा इस समय अँगरेजों की है। वह अपनी आदत से लाचार है, उनकी तो हिन्दू-मुसलमान के नाम पर कुछ न कुछ करते रहने की आदत है। वह अपनी आदत से बाज नहीं आ सकते। १५ अगस्त के बाद और कुछ नहीं तो सीमा-कमीशन की ही आड़ में कुछ गपड़-चौथ करने लगे। उन्हें तो कुछ न कुछ करते रहना चाहिए, क्या करें आदत से लाचार हैं।

* * *

अँगरेजों की इधर की उधर करने की आदत कभी छूटनेवाली नहीं है। यदि वह हिन्दुस्तान से चले गये हैं तो क्या हुआ पाकिस्तान में तो उन्होंने अड्डा जमा ही लिया है। हिन्दुस्तान में यदि वह कुछ न कर पायेंगे तो पाकिस्तान में ही वह अपना पुराना रवैया जारी ही रक्खेंगे। कौन नहीं जानता कि बिच्छू का काम डंक मारना है। डंक मारे बिना उनसे रहा ही नहीं जा सकता। अँगरेज बिना डंक मारे जिन्दा नहीं रह सकते। हिन्दुस्तान में यदि वह डंक न मार सकेंगे तो पाकिस्तान को वह यों ही न छोड़ देंगे। १५ अगस्त को बीते अभी एक सप्ताह ही हुआ है, इसलिए सीमा-कमीशन का एक नया शिगूफा उन्होंने छोड़ दिया ह। अब कुछ दिन सीमा-कमीशन की लबड़धोंधों चलेगी, और अँगरेज तमाशा देख-देखकर खुश होंगे। मान लीजिए सीमा कमीशन का मामला कुछ सुलझा तो पाकिस्तान में अपनी उधेड़बुन शुरू करेंगे। वह कुछ न कुछ करेंगे जरूर। यह हो नहीं सकता है कि वह चुपचाप बैठे रहें। अँगरेज की यह खूबी है कि वह आज की बात देखता है, कल की कल पर छोड़ देता है। वह किसी का सगा नहीं, न हिन्दुस्तान का और न पाकिस्तान का। उसे तो अपने मतलब से मतलब। हिन्दुस्तान चाहे हिमालय में गल जाये और पाकिस्तान चाहे समुद्र में डूब मरे, उसे क्या लेना देना। अखाड़ा कायम रहना चाहिए, जोड़ छूटते रहना चाहिए, अँगरेजों को प्रसन्नता प्राप्त होती रहे। देखते जाइये, अभी तो औपनिवेशिक स्वराज्य अँगरेजों ने दिया है, पूर्ण स्वतन्त्रता तो अभी बाकी ही है।

* * *

महात्मा गांधी आजकल कलकत्ता में साम्प्रदायिक सद्भावना का स्थापना में लगे हैं।

महात्मा गांधी इस वक्त कलकत्ता में साम्प्रदायिक सद्भावना की स्थापना में लगे हैं। महात्मा जी के इस आदर्श उद्देश्य से कौन इनकार कर सकता है? लेकिन आश्चर्य तो यह है कि मियाँ सुहरावर्दी भी अब साम्प्रदायिक सद्भावना की स्थापना के सरगना बन रहे हैं। यह वही मियाँ सोहरावर्दी हैं जो १६ अगस्त सन् १९४६ में कलकत्ते में मुस्लिम लीग द्वारा होनेवाली सीधी कार्यवाही के सरगना बने हुए थे। सोहरावर्दी के लीगी मंत्रिमंडल के कारनामों से कौन परिचित नहीं ह? लेकिन समय का फेर देखिये, वही मियाँ सोहरावर्दी अब 'पीस-मेकर' बन गये ह। अपने राम मियाँ सोहरावर्दी के रहस्य को जानते ह। एक तो पूर्वी बंगाल के प्रधान मंत्री बने हैं मियाँ सुहरावर्दी के विरोधी मिस्टर नाजिमुद्दीन। दूसरे वह रहनेवाले हैं पश्चिमी बंगाल के जो हिन्दुस्तानी बंगाल में है, इसलिए यदि इस वक्त मियाँ सोहरावर्दी 'पीस-मेकरी' न करें तो क्या अपने प्राण दें? इसी लिए उन्होंने आज कल इत्तिहादी बनने का चोगा पहन लिया, और अब मिल गया ह, महात्मा गांधी का सहारा। बहती गंगा में वह हाथ धो रहे ह।

गीत

लेखिका, श्रीमती सुमित्राकुमारी सिनहा

नव भारत की जय हो, जय हो!
शताब्दियों से जो बिछुड़ी थी,
पराधीनता-गाँठ जुड़ी थी,
कठिन तपस्या से घर लौटी यह स्वतन्त्रता मंगलमय हो!
अन्धकारमय रात्रि भगी है,
ऊषा ले आलोक जगी है,
स्वर्णिम आशा के नवयुग में जनता राष्ट्र-भक्ति में लय हो!
मातृभूमि की मुख-मसि छूटी,
परतत्रता-शृंखला टूटी,
तिलक कर रहा किरन-करों से स्वतंत्रता का सूर्य उदय हो!
आज तिरंगी चक्र-पताका,
ले संदेश विश्व-समता का,
ऊँचे अम्बर तक फहराये राष्ट्र हमारा अब निर्भय हो!
जो हो गये राष्ट्र से न्यारे,
हैं हमको वे अब भी प्यारे,
माता की हम भंग-मूर्ति की पूर्ति करेंगे दृढ़ निश्चय हो!
शान्ति-वृष्टि के बादल घुमड़ें,
सुख के सातों सागर उमड़ें,
अब युग युग के पददलितों के सकल दुःख तापों का क्षय हो!
नया पृष्ठ इतिहास खोलता,
कोटि हृदय उल्लास डोलता,
देश हमारा शक्ति, तेज, सद्भावों का अभिमान-निलय हो!
आज भूमि आकाश हमारा,
स्वतंत्रता में वास हमारा,
आज अमर बलि-पथ के पथिकों की श्रद्धांजलि का संचय हो!
नव भारत की जय हो, जय हो!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय पृष्ठ

१५ अगस्त और उसके बाद

भारत में स्वाधीनता-दिवस का समारोह १५ अगस्त को बड़ी धूम-धाम से समाप्त हो गया। हिन्दुस्तान के कोने-कोने में शहरों से गाँवों तक स्वतन्त्रता-प्राप्ति की दुंदुभी बज उठी। यों तो स्वतन्त्रता-दिवस प्रतिवर्ष कांग्रेस के आदेशानुसार भी मनाया जाता रहा है, किन्तु इस बार की धूम-धाम में एक महान् परिवर्तन दिखाई पड़ता था। जनता तथा सरकारी नौकर सभी ने सामूहिक रूप से स्वतन्त्रता-दिवस-समारोहों में भाग लिया। साथ ही हिन्दुस्तान के समस्त सरकारी तथा गैरसरकारी इमारतों, किलों, भवनों तथा मकानों पर राष्ट्रीय झंडे फहराये गये। इसलिए १५ अगस्त के स्वतन्त्रता-दिवस तथा पहले मनाये जानेवाले स्वतन्त्रता-दिवस में महान् अंतर दिखाई पड़ता है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि आज भारत को जिस प्रकार की स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है, वह भारत ही नहीं संसार के लिए ऐतिहासिक है। १५० वर्ष की ब्रिटिश गुलामी तथा साम्राज्यवादी शोषण की अंत्येष्टि का यह दिन बड़े सौभाग्य से देखने को मिला है। अब केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों की बागडोर पूर्ण रूप से भारतीयों के हाथ में आ गई है। अँगरेज शासक जिनके हाथ में शासन की नकेल रहती थी, वह केन्द्र तथा प्रांतों से चले गये हैं। कांग्रेस ने पिछले ६० वर्षों से स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए जिस अहिंसात्मक युद्ध का संचालन किया था, उसका साक्षात फल आज भारतीयों को देखने को मिला है। इसलिए आज का राजनैतिक परिवर्तन साधारण नहीं महान् है। महात्मा गांधी तथा कांग्रेस-नेताओं के महान् त्याग और बलिदान के परिणामस्वरूप हमें यह स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है। अँगरेज-जाति एक शासक-जाति है। यह जाति संसार के समस्त राष्ट्रों को समय-समय पर गहरा चूना लगाती आई है, उसने किसी भी राष्ट्र से हार नहीं मानी है, किन्तु आज वह भी भारतीयों के त्याग के सामने पराजित हो गई। इसलिए आज की विजय भारतीयों की एक महान् विजय है।

इस प्रकार स्वतन्त्रता तो हमें प्राप्त हो गई है, किन्तु उसकी भविष्य में रक्षा करना कांग्रेस-कर्मियों का ही नहीं प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है। राष्ट्र के मार्ग में इस समय अनेक संकट उपस्थित हैं। हमारे नेताओं ने ऐसे अवसर पर यह स्वाधीनता प्राप्त की है जो राष्ट्र के लिए बड़े संकट और संघर्ष का है। इस वक्त राष्ट्र के सामने सबसे बड़ा संकट है भोजन तथा वस्त्र का। इस समस्या को जल्दी से जल्दी सुलझाना है। अशान्ति और संघर्ष की समाप्ति के लिए इन समस्याओं का सुलझाना अत्यन्त आवश्यक है। इसके सिवा समझने की बात यह है कि अँगरेज हिन्दुस्तान से तो चले गये किन्तु हमारे पड़ोसी राष्ट्र पाकिस्तान की भूमि को अभी वह पवित्र कर रहे हैं। इसका मतलब यह है कि हिन्दुस्तान में (बँटे हुए हिन्दुस्तान में नहीं) आज भी वह मौजूद है। यह भी खतरे से खाली नहीं है। सच तो यह है कि १५० वर्ष की ब्रिटिश गुलामी के कारण नैतिक दृष्टि से लोग पतित हो गये हैं। घूसखोरी, चोरबाजारी, स्वार्थ इतना अधिक व्याप्त हो चुका है कि उसकी समाप्ति जल्दी-जल्दी दिखाई नहीं देती। अँगरेज यद्यपि चले गये और चले जा रहे हैं किन्तु अँगरेजियत अभी शत प्रतिशत विद्यमान है। सरकारी शासक यद्यपि अब भारतीय सरकार के आधीन हैं, किन्तु वह इतने रूढ़िवादी हो गये हैं, अँगरेज और अँगरेजियत के इतने कायल हैं, कि उनकी बुद्धि और प्रवृत्ति असमंजस में है। नैतिक दृष्टि से वह इतने गिर गये हैं कि आज की स्वतन्त्रता के प्रति उनकी हार्दिक सहानुभूति नहीं है। मौखिक दृष्टि से वह नई सरकार के प्रति वफादार अवश्य हैं किन्तु उनके हृदय में अभी विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। इसलिए यह समय बड़े ही संघर्ष का है। कांग्रेस सरकार पर जनता के प्रति एक महान् जिम्मेदारी आ गई है। भारत तथा प्रान्तीय सरकारों को बड़ी सावधानी तथा दृढ़ता से शासन की बागडोर सँभालनी होगी।

इसके सिवा हमें एक आवश्यक समस्या की ओर कांग्रेस सरकारों का ध्यान आकर्षित करना है। शहरों की बात जाने दीजिए। भारत के लाखों ग्रामों की समस्या जटिल है। देहातों में अभी तक १५ अगस्त के स्वतन्त्रता-प्राप्ति के सम्बन्ध में व्यापक रूप में प्रचार-कार्य नहीं किया गया। ग्रामीणों को अभी पूरी तौर से यह पता नहीं है कि जो स्वतन्त्रता राष्ट्र को प्राप्त हुई है, उसकी क्या महत्ता है? चोरों, डाकुओं और नंगों का प्रभाव बढ़ रहा है। वह समझ रहे हैं कि अँगरेजी राज्य गया अब तो स्वराज्य मिल गया है, इसलिए खुलकर खेलना चाहिए। हिन्दुस्तानी शासन करने की क्षमता नहीं रखते। अँगरेजों ने आतंक और दमन से सदा शासन किया है जिससे गुंडे भयभीत रहते थे, किन्तु अब उनकी स्थिति बदल रही है। गुप्त रूप से पुराने अधिकारी उनके सहायक भी बन रहे हैं। इसलिए आवश्यक है कांग्रेस सरकार के लिए करोड़ों गाँवों में संगठित प्रचार-कार्य की, लाखों की संख्या में स्वतन्त्रता प्राप्ति के महत्त्व को समझाने की, साथ ही अधिकारियों को अपने कर्तव्य तथा सरकार के प्रति वफादार रहने की चेतावनी की। शान्ति-स्थापना और अशान्ति के दमन की घोषणा करने की अत्यन्त आवश्यकता है। शहरों की अराजकता तथा अशान्ति को सरकार अपने साधनों से काबू में कर सकती है किन्तु जमींदारों, पूंजीपतियों तथा छोटे-मोटे अधिकारियों, गुंडों, चोरों तथा आतंक के बल पर लूट-मार करनेवालों के प्रति भी उसकी महान् जिम्मेदारी है। करोड़ों किसानों और निरीह जनता की रक्षा करना कांग्रेस-सरकार का महान् कर्तव्य है। संयुक्तप्रान्तीय सरकार को तो इस स्पष्ट सत्य की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए। हम जानते हैं कि यह संक्रान्ति काल है, फिर भी यदि कांग्रेस-सरकार करोड़ों ग्रामवासियों में स्वतन्त्रता की महत्ता तथा अशान्ति के उन्मूलन के प्रति प्रचार-कार्य की ओर उद्यत होगी तो किसानों का विशेष हित होगा। क्योंकि वह स्वयं अपनी रक्षा करने में समर्थ हैं। केवल कांग्रेस-सरकार का शक्तिशाली नैतिक बल उन्हें चाहिए।

व्यथा कैसे दूर हो?

लेखक, श्री वृन्दाबनलाल वर्मा बी० ए०, एल-एल० बी०

जब वह मुस्कराते थे, ऐसा भान होता था कि अपने वातावरण को एक उमगानेवाली विभूति प्रदान कर रहे हैं। मैंने अपनी उपस्थिति में तो यह देखा ही, परन्तु मैंने सोचा कि देखूँ दूसरे लोगों को भी इस विभूति की कोई अनुभूति है या नहीं?

जिनको प्रकृति ने हृदय दिया है उनको अनुभव करने की भी शक्ति दी है। इसलिए कुछ लोगों की सहृदयता उनको इस अनुभूति का सुख प्राप्त करने के लिए मजबूर करती थी। वह मुस्कराते और हँसते भी थे। पुष्पपुंज में मुक्ताएँ बिखेरते बटोरते रहते थे, और वे लोग सब देखते रहते थे, परन्तु उनके सतेज आतङ्क के कारण उन मुक्ताओं के ऊपर किसी प्रकार के भी अधिकार का हाथ पसारने का उनमें साहस न था। क्योंकि वे उनको पा नहीं सकते थे।

मेरे सामने जो मुस्कराहट होती थी उसमें आतङ्क न होता था। उस समय कोमलता का जो वैभव, मृदुलता का जो सम्पन्नत्व, मधुरता का जो प्राचुर्य बरसता था, उसे मैं ही जानता हूँ। और लोग शायद उस मेघ को मेरी उपस्थिति में भी समझ तक न पाते थे जो ऐसी वरदायिनी वर्षा करता था।

मैंने छिपकर उनको एक दिन मुस्कराते देखा। प्रवाल पल्लवों की भीतर मुक्तावली उसी तरह से खिली परन्तु वह वैसी श्री-सम्पन्न न थी जैसी मैं अपने सामने देखा करता था। मैं उनके सामने प्रकट हो गया। तब उन्होंने पुष्पपुंज में अपने मोतियों को छिपा लिया। केवल प्रवाल-पल्लवों के कोनों पर उस भागती हुई श्री को थोड़ा-सा रख छोड़ा था। परन्तु मेरी ओर देखकर उनके नेत्रों में जो स्नेह का ओज दिखलाई पड़ा उसीने मुझको बहुत कुछ दे दिया। मुझको बड़ा अभिमान हुआ।

एक दिन वह मेरे सामने भी उदास ही बने रहे। अपनी पीड़ा का वर्णन उनके स्वभाव के बाहर है। उन्होंने न कहा। परन्तु उनके शुभ्रनेत्रों में उनकी सहज सरल उत्फुल्ल वृत्ति न थी, इसलिए मुझको आभास हो गया कि वह किसी व्यथा से युद्ध कर रहे हैं।

उनको भी व्यथा! गुलाब को भी लू! मेरे पूछने पर उन्होंने कहा, "कोई व्यथा नहीं है। मजे में हूँ। है।"

पहले मैंने सोचा कि कहीं कोई कार्य तो उनकी व्यथा का नहीं हुआ है, परन्तु यह शङ्का तिरोहित हो गई, क्योंकि मैं जा कि मेरा वकील जो उनके भेजा है मुझको अपराध करने पर भी क्षमा करवा देगा।

तब वह क्या था? मैं तत्थ के लिए व्याकुल हो उठा।

क्या मुझमें इतना भी सामर्थ्य कि उनकी व्यथा को दूर कर सकूँ? यह नहीं कह सकता हूँ कि मेरा शरीर उनके किसी काम आ सके, क्योंकि वह इस तरह की संसार में और लोगों को आपस में सुन चुके होंगे, और इस तरह के में अब सिवाय अहमन्यता और के और कुछ नहीं समझा जाता। लिए उनसे नहीं कहा।

मैं यदि उनकी व्यथा दूर नहीं सकूँगा तो देवताओं से उसके दूर के लिए प्रार्थना तो अवश्य ही

मैं उनको उदास देखने की नहीं रखता हूँ। उनको जरा-सा भी देखते कलेजा भीतर ही भीतर लगता है और न मालूम क्यों दाह होने लगता है?

और उस समय की क्या कहूँ उनको उदास देखकर भी यह प्रश्न नहीं कर आता कि उदास क्यों कण्ठों का घूट पीकर रह जाता है। तब कैसे मालूम हो कि उनको व्यथा है और वह कैसे दूर हो? दूर हो?

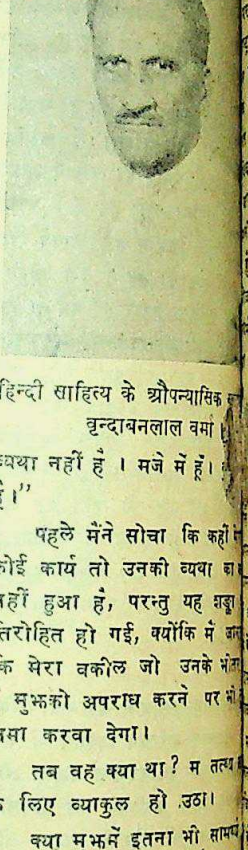

हिन्दी साहित्य के औपन्यासिक
वृन्दाबनलाल वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त महाराष्ट्र की समस्याएँ

आखिर मध्यप्रान्त का विभाजन किस प्रकार से हो ?

लेखक, श्री रामगोपाल माहेश्वरी बी० ए०, एल्-एल० बी०

मध्यप्रान्त की आज की एक समस्या है—मराठी मध्यप्रान्त-विदर्भ संयुक्त महाराष्ट्र के निर्माण में अपनी हस्ती विलीन कर दे या इन प्रदेशों का एक स्वतन्त्र प्रांत नये भारतीय विधान के अन्तर्गत बनाया जाये—इसी समस्या के सम्बन्ध में लेखक ने इस लेख में प्रकाश डाला है, जिसमें कांग्रेस हाईकमांड तथा विधान-सम्मेलन के नेताओं का ध्यान आकर्षित किया गया है। लेख विचारणीय है।

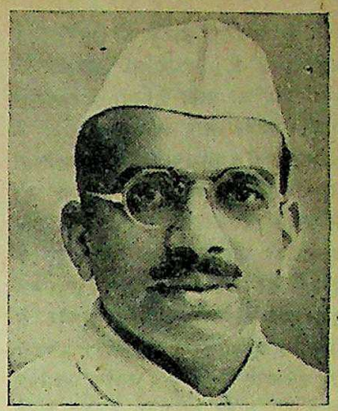

मध्यप्रांतीय कांग्रेस कमेटी के सभापति सेठ गोविन्ददास एम० एल० ए० (केन्द्रीय)

कांग्रेस सरकार के प्रधान मंत्री पंडित रविशंकर शुक्ल

...र यह प्रश्न जोर पकड़ रहा है ...राठी मध्यप्रान्त-विदर्भ संयुक्त ...के निर्माण में अपनी हस्ती ...कर दे या इन प्रदेशों का एक ...प्रान्त नये भारतीय विधान के ...बनाया जाये, जिसका नाम ...र्भ' या 'नागविदर्भ' इनमें से कोई ...। विदर्भ प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ...गत बैठक में यह निर्णय ...कि संयुक्त महाराष्ट्र व्यवहार्य ...नीय नहीं है, इसीलिए नागपुर ...का अपना अलग स्वतन्त्र प्रान्त ...जाना चाहिए। विदर्भ के अनेक ...सेवक महाविदर्भ प्रान्त की ...के पक्ष में हैं, इसमें कोई सन्देह ...ाई पड़ता।

...पुर प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने ...रविवार की बैठक में इस विषय ...ना मंतव्य प्रकट कर दिया है। ...ाव कमेटी में स्वीकृत हुआ है ...हा गया है कि नागपुर और ...समस्त मराठी जिलों को मिला- ...प्रदेश का अलग स्वतन्त्र प्रान्त ...र्भ नाम से बनाया जाय। इसके ...राठी मध्यप्रान्त के कई प्रमुख ...ओं ने एक वक्तव्य निकालकर ...र्भ' की ही स्थापना पर जोर ...। मराठी मध्यप्रान्त और विदर्भ ...समुदाय संयुक्त महाराष्ट्र में ...अपना अस्तित्व लोप करने या ...ाने को तैयार नहीं हैं, बल्कि ...नये स्वतन्त्र प्रान्त के आविर्भाव ...ती हैं; यह इन तमाम बातों से ...जाहिर होता है।

...युक्त महाराष्ट्र की कल्पना आकर्षक ...कारण अभी भी इस विवाद का ...हुआ तो आश्चर्य नहीं; तथापि ...विचारोपरान्त कोई व्यक्ति संयुक्त ...के रूप में एक लम्बे प्रान्त के ...पर जोर नहीं दे सकता। हमने, ...विवाद की शुरुआत में ही, अपने ...इस विषय में स्पष्टतः व्यक्त किये ...कथन था कि गोवा से गोंदिया ...० मील लम्बा प्रान्त शासन की ...व क्षमता, भौगोलिक स्थिति ...ासिक परम्परा आदि के कारण ...नहीं है। जब कि इस विषय ...का सवाल आ रहा है, हमारे ...राजनैतिक कार्यकर्त्ता व धुरीण ...को अधिक स्पष्टता के साथ ...हैं, यह खुशी की बात है।

...युक्त महाराष्ट्र के पक्ष में इस विषय ...व समर्थक जो दलीलें दे ...ते व भ्रामक हैं। मुख्य दलील ...जाती है कि समस्त मराठी भाषा-भाषी जनता यदि एक ही बड़े व विस्तृत प्रान्त के शासन के अन्तर्गत आ जावे, तो यह बड़ी भव्य बात होगी। यह प्रस्ताव भव्य है पर उतना ही घातक भी, यह हम पुनः उच्चारण करना आवश्यक समझते हैं। हिन्दीभाषी जनता भारत में १६ करोड़ से अधिक है। यदि उसका एक ही प्रान्त हो तो यह कितना सुन्दर हो यह कल्पना भव्य है, तथापि व्यवहार्य नहीं। इसी प्रकार मराठी भाषी जनता एक ही प्रान्त की सीमा में आबद्ध रहे यह भी चाहे आकर्षक हो, परन्तु प्रयोजनीय नहीं है। मराठी भाषियों का एक ही प्रान्त रहे इसमें चाहे कुछ सुभीते हों, पर उनकी तुलना में जो दोष पैदा होंगे ये अधिक हैं। प्रान्त-निर्माण के पीछे सबसे बड़ा आधार शासन के उपयुक्त घटक का विचार रहना है। जो लोग यह कल्पना करते हैं कि ८०० मील लम्बे प्रदेश का एक प्रान्त शासन का उपयुक्त घटक है, वे शासन की भूल कल्पना के विशिष्ट मोह में गिरकर जान-बूझकर भुला रहे हैं। कहा यह गया है कि वायुयान के समान द्रुत वाहन के इस जमाने में प्रदेश की विस्तीर्णता एक छोटी चीज रह गई है। हम यह मानने को तैयार नहीं हैं। पूना में स्थित राजधानी के सेक्रेटेरियट बिल्डिंग में बैठे हुए शासन-सूत्रधार गोन्दिया या चाँदा में यदि कोई गम्भीर स्थिति पैदा हो जाय, तो उसकी तजवीज उतनी क्षमता से नहीं कर सकते जो नागपुर या अमरावती ये शहर राजधानी हों तो हो सकती हैं। इसी प्रकार, संयुक्त महाराष्ट्र की यदि नागपुर राजधानी रहे तो गोवा के कोंकण या सतारा जिले की स्थिति से पूरी तरह परिचित रहना या तत्काल कोई पर्याप्त प्रबन्ध करना सम्भव नहीं है। न यह सम्भव है कि दूरवर्ती जनता शासन के प्रति वह विश्वास व सम्पर्क अनुभव करे जो सामान्य दूरी पर राजधानी रहने से अनुभव हो सकता है। इस प्रकार, दूरवर्ती प्रदेशों का एक विस्तृत प्रान्त बनाने से विस्तार का मोह चाहे मूर्तरूप धारण कर ले; परन्तु इसके द्वारा शासन का मूलाधार ही नष्ट हो जाता है। यातायात के द्रुतगामी साधन राजकारभार की समस्त पेचीदगियों को नहीं सुलझा सकते। वे शहरों को परस्पर से चाहे कुछ नजदीक कर दें पर नगर व ग्राम का अन्तर उतना कम नहीं करते। पुलिस, फौज, सामान, सामग्री का आवागमन हवाई अड्डों से ही हल नहीं हो सकता।

महाराष्ट्र व मराठी मध्यप्रान्त-विदर्भ ऐतिहासिक परम्परा से अपने आपको एक अविभाज्य घटक अनुभव नहीं करते। इन प्रदेशों का अस्तित्व अनन्त काल से पृथक् रहा है और आज भी दोनों प्रदेशों को अपने भिन्न अस्तित्व की प्रतीति है। किसी एक प्रदेश का दूसरे प्रदेश पर प्रभुत्व आज भी किसी को शायद ही बर्दास्त हो। कहा जाता है कि यह तजवीज की जा सकती है कि दोनों का एक 'फेडरेशन' हो जिसके नीचे दोनों की प्रान्तीय स्वतन्त्रता हो। हमें यह कल्पना भी व्यवहार्य नहीं प्रतीत होती। भारत का एक संघ होगा। उस संघ के अन्तर्गत दो प्रान्तों का एक अलग संघ शासन की उलझन बढ़ानेवाली घटना है। इस तजवीज के द्वारा कुछ मंत्री-पद बढ़ सकते हैं पर जनता का वास्तविक कोई हित साध्य नहीं हो सकता। प्रान्तीय शा... ...दिप्रान्तीय संघ के अन्तर्गत जिला क... ...दूरी ... गौण व सामर्थ्यविहीन बन जायगा।

महाविदर्भ प्रान्त बनाये जाने के विरोध में यह दलील पेश की जाती है कि यह प्रान्त बहुत छोटा होगा। यह दलील भी गलत है। पूर्वीय खानदेश के दो जिले महाविदर्भ में मिला दिये जायँ तो इस प्रान्त की लोक-संख्या एक करोड़ से अधिक बन जाती है। एक करोड़ जनता का यह उपजाऊ व केन्द्रीय प्रदेश अपने शासन का खर्च निश्चय ही बर्दास्त कर सकता है। यहाँ की न केवल भूमि ही उर्वरा है, बल्कि जंगल, खनिज पदार्थ—कोयला, मगनीज, लोहा, सीमेंट आदि भी यहाँ प्रचुर प्रमाण में है। इस प्रदेश की औद्योगिक कायापलट बहुत जल्दी हो सकती है और खेती की पैदाइश भी उतना ही उत्कर्ष दिखला सकती है। भारत के केन्द्रीय प्रान्त के नाते यातायात व व्यापार में इसका अपना विशेष स्थान बन रहा है और अधिक बनता जायगा। इन तमाम बातों को देखते हुए यह कल्पना

शेष पृष्ठ १९ पर देखिए

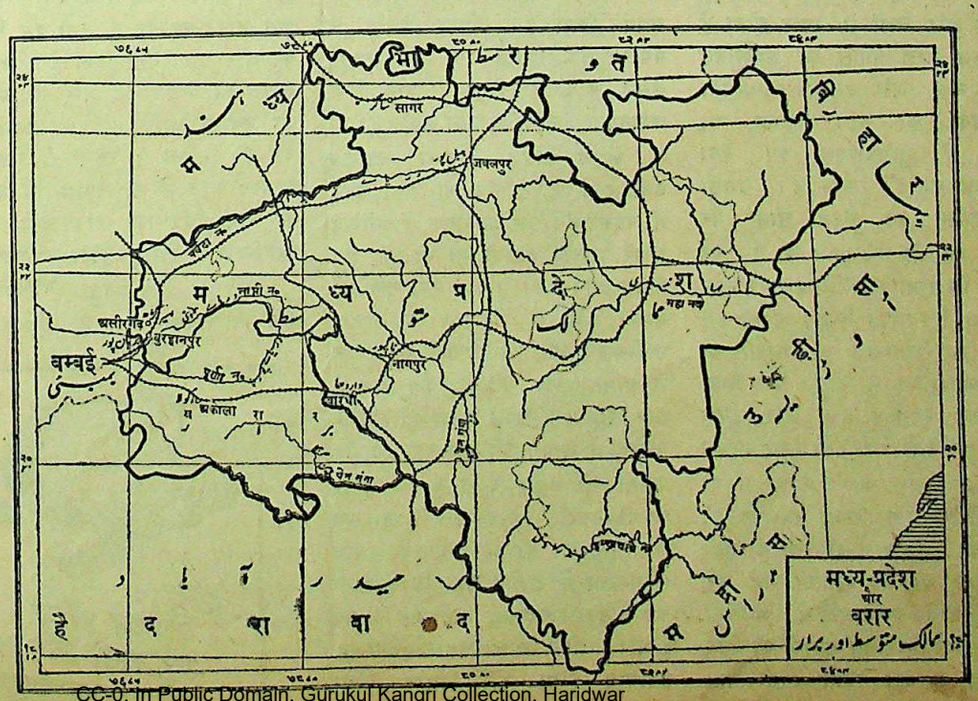

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक नैपाल राज्य

आज का लोकतन्त्र और नवीन शासन-सुधार योजना

लेखक, श्री प्रकाशचन्द्र उपाध्याय एम० ए०

नैपाल विशाल हिन्दू-राज्य है। आजकल यहाँ के महाराजा शासन-सुधार की ओर अग्रसर हैं। लेखक ने इस लेख में नैपाल के लोकसत्तात्मक व्यवस्था की स्थापना की आवश्यकता बतलाई है, साथ ही यह स्पष्ट किया है कि ऐसा करने से ही राजा तथा प्रजा दोनों का कल्याण हो सकता है।

नैपाल राज्य भारत की उत्तरी सीमा पर स्थित है। अठारहवीं शताब्दी में इस राज्य को मल्ल क्षत्रियों से जीतकर पृथ्वीनारायण साह नामक गोरखा के क्षत्रिय राजा ने अपने अधिकार में कर लिया था। गोरखा विजेता के वंशजों की अयोग्यता के कारण कुछ समय के बाद राज्य की बागडोर राना जंगबहादुर के हाथ में चली गई और वे प्रधान मंत्री बन गये। प्रधान मंत्री हो एक प्रकार से सारे देश का अधिपति हो गया। प्रजा ने उसे स्वीकार किया और शान्ति स्थापित करने में उसकी सफलता देखकर सहर्ष राज्याधिकार उसे सौंप दिया। उस समय से आज तक राना-वंश, जिसकी स्थापना जंगबहादुर ने की थी, नैपाल में वास्तविक शासन कर रहा है। जिस स्थिति में जंगबहादुर ने अपनी सत्ता स्थापित की थी वह भयंकर थी। देश में मजबूत शासन की आवश्यकता थी। इसलिए [illegible] को अपनाया, बड़े बड़े पदों पर रानावंश के लोगों को नियुक्त किया और विरोधियों के प्रयत्नों को विफल किया। शासन-प्रणाली आरम्भ में मुगलों अथवा राजपूतों की-सी थी। राज के बड़े बड़े पदाधिकारी सिविल मिलिटरी दोनों पदों पर नियुक्त होते थे। राना-वंश ने एकतंत्र शासन स्थापित किया।

महाराज वीर शमशेर, चन्द्र शमशेर, भीम शमशेर, जुद्ध शमशेर नैपाल के प्रसिद्ध शासक हुए हैं। महाराज चन्द्र की कीर्ति अभी तक चारों ओर बखानी जाती है। राष्ट्रीय मामलों में उनके विचार आधुनिक नहीं थे; परन्तु प्रजा के हित का उन्हें काफी ध्यान था। इतिहास का अवलोकन करने से पता लगता है कि जिस प्रकार राना-वंश ने नैपाल की स्वाधीनता की रक्षा की है, नैपाल-नरेश बराबर इस बात का प्रयत्न करते रहे हैं। सन् १९२३ में महाराज चन्द्र ने अँगरेजों के साथ नये रूप से सन्धि की और फिर महाराज जुद्ध के समय में इस स्वाधीनता की पूर्ण रीति से पुष्टि की गई। नैपाल नरेशों और बड़े अँगरेज शासकों के भाषणों और लेखों से स्पष्ट होता है कि किस तरह नैपाल को सम्मानित बनाया गया और उसकी स्वाधीनता की रक्षा की गई। शासन को नैपाल में सुव्यवस्थित रूप देना राना-वंश का ही काम है। उसकी सैनिक-शक्ति को चरम सीमा पर पहुँचाने का श्रेय भी उसी को है। यह सत्य है कि राना लोगों ने प्रजातंत्रात्मक शासन नहीं स्थापित किया; परन्तु इस आधार पर राना-वंश की महत्ता को घटाना न्यायसंगत न होगा। जिस समय यह राज्य स्थापित हुआ और उसके बाद भी पूर्वी देशों में कहीं भी प्रजातंत्रात्मक शासन नहीं था। केवल नैपाल में ही किस प्रकार ऐसा राज्य स्थापित हो सकता था? भारत में अँगरेजों की तूती बोल रही थी। हिन्दुस्तानी बड़े बड़े ओहदों से वंचित रक्खे जाते थे। कौंसिलों में प्रजा द्वारा निर्वाचित सदस्यों को बहुत आन्दोलन के बाद स्थान मिला था। रुपया-पैसा अँगरेज ही लूटते थे। बड़े बड़े वेतन अँगरेजों को ही मिलते थे। हिन्दुस्तानियों के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार होता था। देशी राज्यों में शासन इतना व्यवस्थित नहीं था; नैपाल-राज्य में फिर नई संस्थाओं का समावेश किस तरह हो सकता था। महाराज चन्द्र ने सती-प्रथा को तथा दासता को बन्द किया। देश भर में विरोध हुआ, परन्तु उन्होंने कुछ भी परवाह नहीं की। महाराज जुद्ध ने अपने समय में शासन-प्रबन्ध में कई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किये जिनसे प्रजा को लाभ हुआ, शिक्षा की उन्नति हुई, उद्योग-धन्धों की उन्नति के लिए अनेक उपाय किये गये, समाज-सुधार भी किया गया। वर्तमान महाराज ने भी ऐसी नीति का अवलम्बन किया है जो सर्वथा प्रजा के लिए हितकर है। महाराज स्वयं सादगी से जीवन व्यतीत करते हैं। उन्हें ऐश-आराम बिलकुल पसन्द नहीं। थोड़े ही दिनों में आपने कई लाख रुपया प्रजा के हित के कामों में खर्च किया है। अपने प्रोत्साहन से काठमाण्डू में पहले-पहल लड़कियों का स्कूल खोला गया है जिसमें लगभग ७०० लड़कियाँ शिक्षा पाती हैं और नये स्कूल खोलने में प्राइवेट संस्थाओं को सहायता देने के लिए नियम बना दिये हैं। सबसे मार्के की बात यह है कि आपने घोषणा कर दी है कि आपका उद्देश्य क्रमशः उत्तरदायित्व शासन स्थापित करना है। इससे जनता को बड़ा सन्तोष हुआ है। राना-वंश के अग्रगण्य सज्जनों में से अधिकांश ने महाराज की नीति का समर्थन किया है। नैपाल उन्नति के पथ पर चल रहा है और यदि क्षमता, समझ तथा दूरदर्शिता से काम लिया जायगा तो देश का कल्याण अवश्य होगा।

नैपाल कांग्रेस जिसका आफिस बनारस में है, राष्ट्रीय आन्दोलन करने में अग्रसर है। इस आन्दोलन में कतिपय हमारे राष्ट्रीय नेताओं का भी हाथ है। नैपाल कांग्रेस की माँग जहाँ तक हमें मालूम हुआ है महाराज के सम्मुख उपस्थित है और उस पर बड़ी सहानुभूति के साथ विचार हो रहा है। हाल में बाबू श्रीप्रकाश नैपाल पधारे थे। उन्होंने कालेज में भाषण देते हुए कहा था कि जनता को महाराज के साथ सहयोग करना चाहिए और इस हिन्दू-राज्य की कीर्ति को बढ़ाना चाहिए। विधान के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि सिद्धान्त रूप से उनकी बहुत-सी बातें मान ली गई हैं और आशा है कि जो विधान बनेगा वह सर्वमान्य होगा। कोई विधान हमेशा के लिए नहीं [illegible] समयानुसार उसमें परिवर्तन होते ही रहते हैं और होने चाहिए; परन्तु नैपाल जैसे रूढ़िवादी देश में जहाँ जनता राजनीतिक मामलों से अनभिज्ञ है विधान का श्रीगणेश होना ही बड़े हर्ष की बात है। म्यूनिसिपैलिटी में बालिग़ वोट का अधिकार दिया गया है। इन सब बातों के देखते हुए यह प्रतीत होता है कि नैपाल गवर्नमेंट अपना दृष्टिकोण विस्तृत कर रही है और जो लहरें संसार में व्याप्त हो रही हैं उनकी प्रगति को किसी प्रकार की अवहेलना नहीं करती। नैपाल के देशभक्त सज्जनों को नये विधान को स्वीकार कर उसे योग्यता के साथ कार्य-रूप में परिणत करना चाहिए।

भारत का नैपाल के प्रति क्या कर्त्तव्य है? नैपाल हमारी सीमा पर है। नैपाल में फौजी शक्ति है। हमारी स्थिति इस समय कठिन है। नैपाल के साथ हमारे धर्म और संस्कृति का प्राचीन संबंध है। इसका हमें ध्यान रखना चाहिए और कोई काम ऐसा न करना चाहिए जिससे नैपाल का सुदृढ़ शासन दुर्बल हो जाय और हमें उससे आवश्यकता पड़ने पर मदद न मिल सके। नैपाल हिन्दू-राज्य है। हिन्दू संस्कृति की वहाँ अब भी दुन्दुभी बज रही है। यदि भारतीय सरकार कभी नैपाल से मदद माँगेगी तो नैपाल बैठा न रहेगा। अँगरेजों को नैपाल ने कठिन समय पड़ने पर सदा मदद दी है। इसके लिए बड़े बड़े अँगरेज अफसरों ने उसकी भूरि भूरि प्रशंसा की है। हमें तो आशा है कि अब यह मदद दसगुनी होगी और बड़े उत्साह के साथ दी जायगी। क्या भारत-सरकार ने अभी इस विषय की ओर ध्यान नहीं दिया है? भारत-नैपाल की मित्रता को और भी अधिक दृढ़ बनाना चाहिए। इस सीमास्थित देश की मित्रता से लाभ ही होगा—प्राचीन काल में भी नैपाल का भारत के साथ मित्र-भाव था। यही स्रोत शताब्दियों से प्रवाहित होता आ रहा है।

भारतीय हिन्दू-जनता में नैपाल के प्रति सद्भावना ही रही है। इसको

नैपाल के महाराज पद्मशमशेरजंग बहादुर

जाग्रत् रखना ही हमारे लिए हि[illegible] है। अपने अधिकार के लिए [illegible] बुरी बात नहीं है। व्यक्तिगत स्वत[illegible] न्याय-प्रबन्ध, शासन-सुधार इत्यादि [illegible] किसी तरह भी अनुचित नहीं कही [illegible] सकतीं। नैपाल-सरकार को [illegible] की अवहेलना नहीं करनी चा[illegible] हमें जहाँ तक ज्ञात हुआ है नैपाल [illegible] राजनीतिज्ञ प्रजा को सन्तुष्ट ही [illegible] चाहते हैं। उनकी यह कदापि इच्छा [illegible] है कि वे उसी प्रणाली से काम लें [illegible] जिसका अनुशीलन महाराज जंगबह[illegible] ने किया है। वे समयानुकूल परि[illegible] तथा संशोधन करने के पक्ष में हैं। [illegible] हालत में प्रजा का भी यह कर्त्तव्य है [illegible] सरकार के साथ सहयोग करे। हमारा [illegible] गोरखा राज्य को हटाना नहीं वरन् [illegible] शासन-प्रणाली में सुधार होना चाहि[illegible] इस लक्ष्य की पूर्ति अन्य साधनों से [illegible] सकती है। हमें आशा है कि देश[illegible] सज्जन इस प्रश्न पर गंभीरता से वि[illegible] करेंगे और ऐसी नीति का अवल[illegible] न करेंगे जिससे देश को किसी प्र[illegible] की क्षति पहुँचे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमती विद्यावती कोकिल

कहानी

अनोखा मज़दूर

लेखिका, श्रीमती विद्यावती 'कोकिल'

वाहवाही के इस युग में श्रमजीवी की दुर्दशा अधिक ही है कम नहीं। फिर ऐसा श्रमजीवी जो सुपठित और वास्तविक साहित्यकार है, उसकी तो दुर्दशा है ही। इस कहानी में श्रीमती कोकिल ने एक साहित्यिक श्रमजीवी का सुदर चित्रण किया है, जो हृदय पर एक मार्मिक प्रभाव छोड़ जानेवाला है। कहानी सुंदर और पठनीय है।

न पूछो, पर लखनऊ शहर के ...लय की बात है। मिनिस्टर ...थे। ग्रांट माँगने का नाजुक ...सामने था। जैसे भी हो उनके ...पर पूरा-पूरा असर जमाना था—— ...तड़क-भड़क से, भीतरी कला- ...से, उनकी अथक् प्रशंसा से और ...प्रेय की महत्ता से फिर अन्त में ...दरिद्रता के आर्तरुदन से उनको ...करना था।

...तो रातों-रात वह करके दिखाना ...आज तक कभी न हुआ हो। ...झाड़-झंखाड़ साफ होकर बाग ...पाम, अशोक, गेंदे, गुलाब और ...घास का चिरस्थायी साम्राज्य ...गह से नष्ट कर दिया। कीट- ...इस क्षणिक व्यवस्था पर असन्तोष ...किया, कुछ ने विद्रोह करके वहीं ...दिये और कुछ पीछे से बदला ...लिए इधर-उधर जा छिपे। ...और छतों से सैकड़ों कीड़ों-मकोड़ों ...बरबाद कर दिये गये, मानो एक ...हों आ गया हो।

...यह सब तमाशा किसके बूते पर ...? केवल मजदूरों के ही बूते ...! जो अपनी मेहनत से रात को ...मिनट को घंटा बना देते हैं। ...चार आने ही अधिक पाकर ...! वे क्या जानें कि उनकी मेहनत ...वाहवाही कौन लूटनेवाला है। ...यदि उनका भी पेट भरा होता ...वाहवाही की कद्र दो-चार आने ...कहीं अधिक करते। सबकी बिगड़ी ...भी आत्मा को यों मारकर न ...मट्ठी में गढ़ा खोदकर वे पेट का ...भर लेते हैं पर कोई पूछता है ...उनके मस्तिष्क के गढ़ों की क्या ...है?

...ओर मजदूर ही मंजदूर दिखाई ...दे—कहीं पोताई, कहीं गोड़ाई, ...कटाई, कहीं खुदाई और कहीं ...। मुझे उस दिन ढुलाई ही पसन्द ...। कम मेहनत और मालिक की आँखों ...। दोनों बातें अच्छी थीं। एक जगह ...मट्ठे ढोकर दूसरी जगह सजा ...था।

...मजदूरी करने कहाँ से आ टपका ...नवीं कथा है। फिर भी यह तो ...ही समझा जा सकता है कि नवीं

पृ० ५

कक्षा में पहुँचते-पहुँचते जिसके पिता की मृत्यु हो गई हो और छठवें ही महीने, बड़ा भाई, जिसकी लम्बी और असाध्य बीमारी से घबराकर असहाय पिता ने प्राण-त्याग किया था, वह भी चल बसे तो मुझ जैसे अभागे की क्या दशा होगी? जो बालक सदा किताबों से ही चिपका रहा हो, खाने के समय जो न कभी मित्रमंडली में पकड़ा गया हो और न खेल के मैदान में; इसके एकदम विपरीत घर के किसी कोने में चुपचाप पढ़ता पाया गया हो या दूर बाग में किसी पेड़ के नीचे। ऐसे अजनबी जीव से कौन-सी नौकरी की उम्मीद की जा सकती है। मेरी पढ़ने की अबाध रुचि देखकर माँ ने एक दिन अपने हाथ का आखिरी छल्ला लाकर जब मेरे आगे रखते हुए कहा, 'ले इसे बेचकर दसवीं में अपना नाम लिखा ले' तब उनका गम्भीर चेहरा देखकर मेरे ऊपर जो बीती उसे मैं ही जानता हूँ। अब मेरे आगे दो समस्याएँ थीं। एक तो माँ को यह दिखाना था कि——मैं भी कुछ कमा सकता हूँ, दूसरे अपने प्यारे साहित्य-देवता को यह भी दिखाना था, कि उनसे मेरी लगन कितनी सच्ची है—केवल इम्तहान पास करने में ही कर्तव्य की इतिश्री नहीं समझता हूँ। मैं इम्तहान पास करने का विचार छोड़कर एक बड़ी पब्लिक लाइब्रेरी का मेम्बर भर बन गया। मैंने जी-जान से चाहा कि मेरे दोनों ध्येय एक हों निशाने से पूरे हो जायँ। लेख लिखे, कहानियाँ लिखीं और कविताएँ भी लिखीं। महीनों सम्पादकों के चक्कर में बरबाद किये। लेने के वक्त तो वे मुझको एक अमर लेखक की ऊँची पदवी दे देते थे पर वे कब और कहाँ छपीं इसकी मुझे कुछ भी सूचना न मिलती। वे कहीं छपतीं भी तो दूसरे के नाम से और मेरे नाम से छपीं तो ऐसा नहीं मिलता। मुझे उतना अवकाश और सामर्थ्य कहाँ कि मैं उन्हें ढूँढ़ निकालूँ और उन पर नालिश करूँ। हताश में इस ओर से निराश हो गया।

वह अपनी कविता सुनाने के लिए मंच की ओर बढ़ा।

इस बड़े शहर में भाई की बीमारी के कारण बस जाना पड़ा था। पर अब लौटने को मेरा जी न होता था। परदेश में बिना जान-पहचान के भला कौन नौकरी धरी थी, फिर मैं कोई ग्रेजुएट भी नहीं था। लड़ाई की वजह से लखनऊ में मजदूरों का बड़ा बोलबाला था। लखनऊ फिर एक बार अपनी जवानी पर था——तरह-तरह की स्कीमें बन रही थीं, नये-नये भवनों का निर्माण हो रहा था। हजारों-लाखों मजदूरों की खपत थी। इधर एक दिन भी बिना कमाये चलना कठिन था, फिर हिचकिचाहट का मौका ही न था। विधवा भाभी और उसकी गोद का दुधमुँहा बच्चा, मेरी बड़ी बहन जिसकी एक आँख देवी को अर्पण हो चुकी थी और बूढ़ी माँ जो पीसा-कूटी और सिलाई करके दिन काट रही थी।

मैं अपने पड़ोसी कल्लू पासी के साथ जब छिपकर मजदूरी पर जाने लगा और नित्य शाम को मजदूरी [illegible] माँ के हाथ पर रख देने लगा [illegible] में जो धड़कन होती थी वह सुख की थी, या दुख की या दोनों की यह मैं नहीं कह सकता। हाँ उसके मौन मुख के सामने मैं अधिक देर नहीं ठहर पाता था। बस नित्य का यही नियम चलने लगा। सब थककर सो जाते थे, मैं सड़क की रोशनी में देर तक बैठकर लिखा-पढ़ा करता।

कल्लू की सलाह से मैंने खोमचा भी धरा और दूकान में नौकरी भी की, पर मेरे मस्तिष्क में विचारों की ऐसी झड़ी लगी रहती है कि क्या बताऊँ? मेरा खोमचा गाय आकर कब चट कर जाती है, मुझे पता ही न लगता और दूकान की नौकरी में भी नित्य हिसाब देने में दूकानदार से झिकझिक करनी पड़ती। मुझसे ये काम न सधेंगे मैं जान गया। बस अब सबसे भली थी मजदूरी—— ईंटा ढोया, गारा ढोया और भी जो पड़ा ढो डाला। उस समय कौन पूछता है कि मैं चुप क्यों हूँ और क्या सोच रहा हूँ। काम हो रहा है, विचार चल रहे हैं। चुप ही चुप में कितनी कहानियों के प्लाट, कितने उपन्यासों के पात्र और कविताओं की प्रथम पंक्ति सोच डालता था। चुपचाप जीवन की विषमताओं का निरीक्षण करता और शाम को मजदूरी लेकर घर आता। काम चल रहा था, दिन कट रहे थे।

पर कहना और लिखना आने की लत बुरी है बग़ैर कहे जबान नहीं मानती और न बग़ैर लिखे लेखनी। जैसे कोई मजबूरी हो गई हो। कल्लू जब थकता तब दम लगा लेता, पर मेरा तो जीवन में एक ही नशा है——लिखना। जेब से कागज निकाला, पेंसिल निकाली और कुछ नोट कर लिया। कल्लू हँसा और बोला कि क्या मैनेजर का पता लिख रहे हो? 'नहीं उसका वारंट' मैं बोला।

'ऐसा न करना भैया रोजी चली जायगी' नहीं दादा, भला कहीं ऐसा हो सकता है। बस मैंने जो लाइन सोची थी नोट कर ली और आगे बढ़ा। दस बजते काम बन्द कर देने का हुक्म हो गया। ग्यारह बजे मिनिस्टर साहब आनेवाले थे। काम बन्द करके सारे मजदूर घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल दिये। मैंने कल्लू से कहा तुम भी चलो मैं थोड़ी देर में आऊँगा।

मैं दूर एक पेड़ के नीचे जा बैठा और अपनी कविता पूरी करने में लग गया। मिनटों में घंटा समाप्त हो गया। जय-जयकार की ध्वनि गूँज उठी। मैं उठ खड़ा हुआ। वे आ गये थे।

एक-एक करके सबों ने स्वागत करना शुरू किया। माला-फूल, कविताएँ, व्याख्यान, एक के बाद एक आने लगे। एक से एक भाव-भाषाहीन कविताएँ। चापलूसी या अपने दुखड़े से भरी हुई। असल दुखड़ा कहाँ है यह कितने लीडर जानते हैं। अब मेरा धीरज जाता रहा। मैं अपनी कविता अवश्य पढ़ूँगा—मन ने एकाएक यह निश्चय कर लिया। एक कविता दो कविता, एक व्याख्यान दो व्याख्यान, यह तीसरा खत्म होने को था। मेरी आकुलता अब चोटी पर पहुँच चुकी थी पर मैं इजाजत किससे माँगू, वह मुझे मिलेगी नहीं यह मैं जानता था। मैं एक झटके [illegible] हुआ सीधे मिनिस्टर साहब के पास जा पहुँचा और इससे पहले कि लोग मुझे ढकेलकर नीचे उतार दें, मैंने उनसे ही कुछ कहने की आज्ञा माँग ली।

फिर क्या था एक ही साँस में सिर नीचा करके एक स्टेंजा पढ़ गया। फिर जो तनिक सिर उठाया तो देखता क्या हूँ कि ये सैकड़ों-हजारों निगाहें मुझको ही घूर रही हैं और खासतौर पर यह सामने बैठी हुई युवती जो एक एक अक्षर को समझकर दाद दे रही है। जब उसकी आँखों से मेरी आँखें मिल गईं तो मैं काँप गया। फिर तो मैंने निगाह ऊपर उठाई ही नहीं। मैं कविता समाप्त करके वहाँ से भाग निकला। मैं जानता था कि मैनेजर देख लेगा तो मारे बिना न छोड़ेगा।

कल्लू मजदूरी लेने गया पर मैं नहीं गया। वह लौटकर आया तो जरा नाराज होते हुए बोला, 'क्या तुमने सचमुच मैनेजर को वारंट भिजवा दिया था। वह बिगड़ रहा था और तुम्हारी मजदूरी भी नहीं दी।' मैं चुप था, वह फिर बोला—'जाकर माफी माँग लेना; भला, भूलना मत। कल ही चले जाना।'

पर मैं गया नहीं। मैंने अखबारों में जो रिपोर्टें पढ़ी थीं, वह अच्छी न थीं। स्कूल के मैनेजर उससे हतोत्साह होंगे। सबसे खराब बात थी मेरी कविता की प्रशंसा। इस पर तो अधिकारीगण जलकर खाक ही हो गये होंगे।

पर शाम को जब मैनेजर मेरे घर के सामने खड़ा दिखाई दिया तब तो मेरे डर और घबराहट की सीमा न रही। उसने कहा सरकार के यहाँ से तुम्हारी बुलाहट आई है, कल चलना होगा। १० बजे मेरे घर पर आ जाना। मैं कुछ समझा नहीं, सिर हिला दिया। जी हुआ कि मजदूरी माँग लूँ पर मन में डरता था कि माँ-भाभी के आगे कहीं कुछ कह न बैठे। वह चला गया।

मैं दूसरे दिन सवेरे जब उसके यहाँ पहुँचा तो मेरे आश्चर्य की सीमा न थी। मेरी मजदूरी के पैसे लाकर उसने चुपचाप दे दिये और कहा—'भाई तुम तो छिपे रुस्तम निकले। मिनिस्टर साहब ने तुम्हारी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। आज वहाँ चलना भी है; यह काम मुझे सौंपा गया है। तुम्हारी तो अब चाँदी है। देखना भाई मुझे भी न भूल जाना।' अब मैं क्या कहता?

हम दोनों उनके बँगले पर पहुँचे। मैनेजर तो वापस कर दिया गया। अब रहा मैं अकेला। यों तो मैंने बहुत दुनिया देखी है और सैकड़ों उपन्यास भी पढ़े हैं। पर बड़े लोगों के सम्मुख जाकर मिलने का यह पहला ही अवसर था। मैं अकेले कैसे मिलूँगा—क्या बातें करूँगा—यही सोच रहा था कि मौन तोड़ता हुआ अर्दली बोल उठा और मोटर में उसने मेरी और मेरी कविता की प्रशंसा के बारे में जो सुना था कह सुनाया। मेरा कुछ उत्साह बढ़ा। मैं किस बात में कम हूँ। विद्या, बुद्धि और जात सभी में मैं उनके बराबर हूँ। मेरा आत्माभिमान जाग उठा। पर अपनी निपट गरीबी की याद आते ही जीवन का सारा कूड़ा-कचरा याद आ गया—धूल, धूल सब धूल कितनी धूल खाई, कितनी ओढ़ी और कितनी बिछाई। तन में, मन में सब जगह धूल ही धूल दिखाई पड़ी। जी घुटने लगा जैसे अब आँसू निकले और तब निकले।

इतने में ही बुलाहट आ गई। मैं भीतर गया। पर यह क्या? यहाँ तो मुझे एक औरत का सामना करना पड़ गया यह तो कभी न सोचा था। यह तो वही युवती है। इन्हें सब कुमारी साहिबा कहते हैं। सो ये मिनिस्टर साहब की पुत्री हैं। मैं काँप गया जैसे मेरे कंपन को उस दिन की याद आ गई हो। लेकिन उन्होंने मेरा ऐसा स्वाभाविक सत्कार किया कि मैं भूल गया कि मैं किसी बड़े घर की कन्या के पास आया हूँ। ठाट से एक कुर्सी पर बैठकर ऐसा जी खोलकर बातें करने लगा कि मानो मेरी बरसों की परिचित हैं। उनकी सहानुभूति में न जाने कैसी मिठास थी, कैसा आकर्षण था कि मुझे किसी भी प्रश्न के उत्तर में क्या कहूँ और क्या न कहूँ, सोचना ही नहीं पड़ा।

मुझे तो लगा कि आज मुझको, मेरे साहित्य को, मेरे हृदय को किसी पारखी ने परख लिया है और मैं अपना सोना-चाँदी और जवाहरात फैलाकर बैठ गया हूँ। उस वातावरण में मुझे लगा कि पानी बरस रहा है और मेरी धूल, कोने-कोने की धूल बैठी जा रही है और हरियाली ही हरियाली दिखलाई पड़ती है। वे लक्ष्मी थीं साक्षात् लक्ष्मी।

इतने में ही हँसी का फुहारा छोड़ता उस स्वर्गीय गम्भीरता को नष्ट-भ्रष्ट करता हुआ एक युवक उस कमरे में आया। ठीक है यह भी तो विद्यालय में गया था और ठीक कुमारी की बगल ही में बैठा था। पर यह उनका भाई तो लगता नहीं। उसने मुझे देखकर आश्चर्य से कहा, 'ये अच्छा, ये आये हैं, कविता तो अच्छी कर लेंगे जो कोशिश करें।' यह भी कोई कवि हैं क्या? अरे भाई तुम्हारे कांग्रेस फंड में कोई कवियों के लिए चंदा-वंदा नहीं दिया जाता? 'हिन्दी भी खूब चीज है कि पढ़े-अनपढ़े अजूर-मजूर सभी साहित्यिक बन जाते हैं।' यह सुनना था कि कुमारी मेरा पक्ष लेकर बिगड़ खड़ी हुईं। मेरा आत्माभिमान घायल हो-होकर रह गया। मुझे जैसे किसी ने जोर से झकझोर दिया हो। मुझे अपने गन्दे कपड़ों की याद आ गई, अपनी गरीबी से संकोच हो उठा और मुझे अब दिखाई पड़ा कि मैं इन गन्दे कपड़ों से इस मखमली कुर्सी पर कैसे बैठ गया। बस, मुझे एक मिनट भी बैठना भार हो गया—मैं क्या करने यहाँ आया? जैसे मैं मजदूर ही भला था? बहस बढ़ती गई, कुमारी मेरे और गरीबों के पक्ष से बोल रही थीं और वह तर्कहीन खोखली शब्द-योजना में अपने शारीरिक बल का जोर भर रहा था। मैं तो आज्ञा माँगकर चल दिया। पर उन्होंने कल आने का वादा करा लेना चाहा मैंने सिर भर हिला दिया।

मैं रास्ते भर विचार करता रहा—यह युवक कौन होगा, कहीं इसका भावी पति हुआ तो सर्वनाश! यह तो जनम भर में भी कुमारी को न समझ पायेगा। एम० ए० में पढ़ता पर [illegible] छूकर नहीं निकली। यह भी कोई [illegible] होगा तभी इतना साहित्य संगीत [illegible] विहीन है। पर कुमारी! उस [illegible] का कमल है।

कुमारी! तो क्या कल [illegible] मिलने फिर आ पाऊँगा मेरा [illegible] अब न आने देगा; और कल न [illegible] कभी न आऊँगा। यह उद्धत युवक [illegible] कौन था, यह तो मेरे रोम-रोम [illegible] की तरह गड़ रहा है। तुम्हीं ने [illegible] आत्माभिमान जगाया है फिर मैं [illegible] मान जाऊँ। मैं इस पवित्र स्नेह [illegible] रहकर पा लूँगा, यहाँ इसकी रक्षा [illegible] कठिन है। पर वह सम्मान, यश, [illegible] और जीवन की अनेक सुविधाएँ [illegible] लोगों के संसर्ग से मिलनेवाली [illegible] माँ सुनेगी तो कितनी खुश होगी। [illegible] उसे अपने बेटे की कीमत का पता [illegible] उसके जीवन का कीचड़ पुछ जा[illegible] मेरे भीतर से कोई बोल उठा—ओ [illegible] तेरा रास्ता दूसरा है। यह रास्ता [illegible] से भरा हुआ है। हो सकता है तुझे [illegible] गिरना पड़े। तेरा संतुलन कम-बढ़ [illegible] कि खतरा है। सँभालकर आगे बढ़ [illegible] में हाथ न पड़ जाय। तू अपने साधन [illegible] रास्ते पर चला चल विश्वास और [illegible] से। यत्न करने पर और पा जाने [illegible] युवक कुमारी को नहीं पहचान [illegible]

बस मैंने रास्ते में ही निश्च[illegible] कि शहर छोड़ दूँगा और आज की [illegible] की बाबत माँ से कुछ नहीं कहूँगा। [illegible] ही मन में कुमारी की सहृदयता [illegible] गया और तैरकर मानो उसके चरण [illegible] लिये और मैं महान् और पवित्र हो [illegible]

माँ और भाभी के लाख सम[illegible] पर भी मैं रुका नहीं। युवक की [illegible] मेरा हृदय विदीर्ण कर रहीं थीं। मैं [illegible] चैन, सम्मान और यश को सोता छो[illegible] चल दिया। आँसुओं का समुद्र, [illegible] भरी आँधियाँ और मुसीबतों के पहाड़ [illegible] पीछे हो लिये। मैं चल पड़ा एक अन[illegible] दिशा की ओर।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

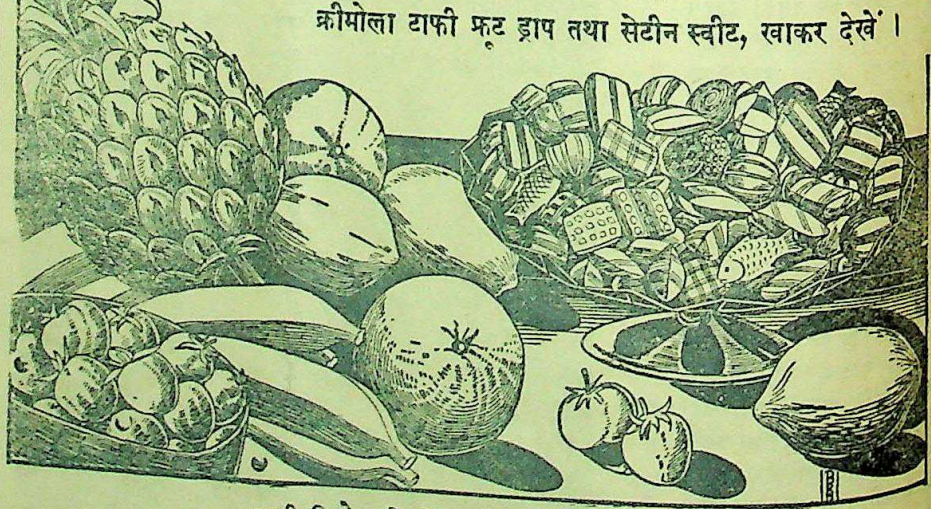

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिलाओं का स्वराज्य क्या है?

स्त्रियों को डटकर स्वयं लड़ना और स्वतन्त्रता लेना है

लेखिका, श्रीमती माया गुप्ता, बी० ए०

इस लेख की लेखिका श्रीमती माया गुप्ता।

समस्याओं के सम्बन्ध में कहीं पर कोई विशेष चेतना नहीं है। भारतीय यूनियन का जो विधान बना है उसमें स्त्रियों को पुरुषों के समान करार दिया गया है और यह कहा गया है कि वे स्त्री होने के कारण किसी कार्य के लिए अयोग्य नहीं समझी जायँगी।

कहना न होगा कि विधान का यह आश्वासन बहुत सुन्दर है, किन्तु केवल इस वैधानिक आश्वासन से ही स्त्रियाँ पुरुषों के बराबर नहीं हुई जातीं। करीब-करीब बहुत से आधुनिक देशों के विधानों में इस तरह के कानून बने हुए हैं, पर इससे कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। जिन देशों में स्त्रियों में आम शिक्षा भी है, उन देशों में भी स्त्रियाँ सब तरह के सार्वजनिक जीवन में बिलकुल पिछड़ी हुई हैं। ब्रिटेन और अमेरिका में भी जहाँ स्त्रियाँ करीब-करीब सौ फीसदी शिक्षिता हैं, वहाँ भी राजनीति में स्त्रियों का कोई स्थान नहीं है। पार्लियामेंटों में दस-बीस स्त्रियों के पहुँच जाने से ही कोई स्त्रियों की मुक्ति नहीं हो जाती।

मजदूर-किसान स्त्रियों की समस्या जहाँ तक आर्थिक है, वहाँ तक वह उन श्रेणियों के पुरुषों की समस्या से बहुत अलग नहीं है। इन वर्गों की स्त्रियाँ तथा पुरुष दोनों वर्तमान शोषणमूलक पद्धति के शिकार हैं। अवश्य उसमें भी कुछ फर्क है। स्त्रियों की मजदूरी प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों से कम है। यदि विधान-सम्मेलन अस्पष्ट रूप से स्त्रियों तथा पुरुषों को बराबर घोषित करने के बजाय एक काम में स्त्रियों और पुरुषों की मजदूरी बराबर घोषित कर देती तो यह कहीं अधिक उपयोगी और सार्थक होता। मजदूर-स्त्रियों की लड़ाई का सबसे बड़ा ध्येय यह है कि पुरुष और स्त्री की मजदूरी बराबर हो जाय।

पर यहीं पर यह लड़ाई खतम नहीं होती। स्त्रियों की स्त्री होने के कारण इस सम्बन्ध में कुछ विशेष माँगें भी हैं। प्रकृति के तकाजे के कारण स्त्रियाँ ही गर्भधारण करती हैं। इस कर्त्तव्य के कारण स्त्रियों में कुछ स्वाभाविक कमियाँ बल्कि कहना चाहिए असुविधाएँ उत्पन्न हो गई हैं। इन असुविधाओं में सबसे बड़ी तो यह है कि प्रसव के कुछ समय पहले तथा कुछ समय बाद तक स्त्रियाँ अपना दैनिक कार्य, नौकरी या मजदूरी नहीं कर सकतीं। यदि इस समय के लिए स्त्रियों के साथ वही नियम लागू किया जाय कि काम नहीं तो मजदूरी नहीं, जो पुरुषों के साथ लागू किया जाता है, तो यह उनके लिए बहुत ही असुविधाजनक होगा।

समाजवादी रूस में यह मान लिया गया है कि गर्भधारण का कार्य एक सामाजिक कार्य है और यह मजदूरी से कम महत्त्वपूर्ण सामाजिक कार्य नहीं है, इसलिए ऐसे कार्य के कारण उनको कोई असुविधा नहीं होनी चाहिए। तदनुसार रूस में प्रसव के छः सप्ताह पहले तथा छः सप्ताह बाद तक के लिए प्रत्येक स्त्री को पूरी तनख्वाह पर छुट्टी दी जाती है। जिस समय रूस में गर्भपात करा लेना कानूनी था, उस समय स्त्री को गर्भपात कराने के बाद तीन सप्ताह की पूरी छुट्टी मिलती थी। किसी-किसी कोलखोस या सामूहिक फार्म में स्त्रियों के प्रसव के तीन महीने पहले और तीन महीने बाद तक छुट्टी दी जाती थी।

इस प्रकार की छुट्टी के अतिरिक्त रूस में राष्ट्र इस बात की देख-रेख करता है कि कहीं गर्भधारण के कारण स्त्रियों को कोई अधिक खर्च तो नहीं करना पड़ता। यदि केवल आमदनी उतनी ही रही और खर्च बढ़ गया तो वह भी आमदनी घटने के ही तुल्य है, इस अत्यन्त सूक्ष्म बात को वहाँ के समाजवादी राष्ट्र ने समझा है और इसकी भी व्यवस्था की है। गर्भिणी अवस्था में स्त्री को जो कुछ भी दवा-दारू की जरूरत होती है, वह सब राष्ट्र की तरफ से दिया जाता है। यह कर्त्तव्य केवल जिले में एक स्त्री अस्पताल खोलकर टाल नहीं दिया गया है, बल्कि प्रत्येक जानकार तथा प्रत्यक्षदर्शी का यह कहना है कि वहाँ सचमुच प्रत्येक गर्भिणी स्त्री को दवा-दारू की सहायता पहुँचाई जाती है, तथा उनके प्रत्येक वजन आदि का चार्ट तैयार होता है।

इस प्रकार स्त्रियों को बराबर मानने से ही, या उनके [illegible] मानने से ही काम न चलेगा, उनके जो विशेष कर्त्तव्य हैं, उनके लिए उनको इस प्रकार से सुविधा देनी पड़ेगी कि उन्हें कोई कष्ट न हो। भारतीय विधान-परिषद् ने या भारतीय नेताओं ने तो यह भी नहीं दिखलाया कि वे स्त्रियों की इन समस्याओं से अपरिचित हैं। दुःख की बात है कि कांग्रेस के हाईकमांड में श्रीमती सरोजिनी तथा विजयलक्ष्मी के होते हुए इन समस्याओं के सम्बन्ध में विधान-परिषद् ने कोई नेतृत्व नहीं दिया और केवल कुछ अस्पष्ट बातें करके छुट्टी ले ली।

किसान-स्त्रियों की समस्या प्राथमिक रूप से आर्थिक है और वे किसान-पुरुषों की समस्याओं से अलग नहीं हैं। जमींदारी-प्रथा के कार्यतः उच्छेद से तथा जमीन के ढंग के बँटवारे किये जाने से ही इस समस्या का समाधान हो सकता है। जिस प्रकार से जमींदारी के उच्छेद का नारा दिया जा रहा है और उसे कार्य-रूप में परिणत किया जा रहा है, उससे किसानों की समस्या कोई विशेष सुलझती हुई ज्ञात नहीं होती। इस विषय पर इतना ही कहकर मैं आगे बढ़ जाऊँगी, क्योंकि यह विशेषकर किसान-स्त्रियों की समस्या नहीं है।

सभी दूकानों पर
कोमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।
वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसान और मजदूर-स्त्रियों की सबसे बड़ी असुविधा यह है कि वे सांस्कृतिक सभी सुविधाओं से वंचित रहती हैं। पहले के युगों में बहुत सांस्कृतिक वस्तुएँ कुछ लोगों तक ही जा सकती थीं, पर छापेखाने, रेडियो, सिनेमा, अखबार, पुस्तकालय आदि के कारण अब गरीब से गरीब व्यक्तियों को भी कुछ सांस्कृतिक द्रव्य प्राप्त होने चाहिए। पर ऐसा कहाँ होता है? हमारे देश के किसान-मजदूर जिस प्रकार पूंजीवादी, सामन्तवादी पद्धति के शिकार हैं, उसी प्रकार इंगलैण्ड आदि के मजदूर भी हैं, पर यहाँ के मजदूरों को सांस्कृतिक चीजें बहुत कुछ प्राप्त है। यह पूछा जा सकता है कि जो स्वराज्य होने जा रहा है उसमें इनके लिए क्या व्यवस्था होने जा रही है? कितने वर्षों में यह उम्मीद की जा सकती है कि यह समस्या हल होगी। सार्वजनिक साक्षरता के लिए क्या [illegible] जायगा और कितने [illegible] लोग साक्षर हो जायेंगे?

पर संस्कृति और साक्षरता से भी कहीं बढ़कर समस्या तो स्त्रियों के अर्थात् किसान-मजदूर-स्त्रियों को उपयुक्त दवा आदि पहुँचाने की है। लोग शिक्षित हों या न हों, यह जरूरी है कि वे वैसी हालत में न रहें और न पलें जिससे कि भविष्य की संतानें रोगी, अंधी, अपाहिज के रूप में पैदा होती रहें। भारतवर्ष की गरीब स्त्रियों की हालत इतनी खराब है कि जिसकी कल्पना ही नहीं की जा सकती। वे हर प्रकार की रोगों की घर हो रही हैं। लड़ाई के युग ने इन्हें और भी पंगु बना दिया है। प्रत्येक चेहरे को देखिए यह ज्ञात होगा कि जैसे उन्हें खाने को ही नहीं मिला है। अनाज महँगा होने से किसानों की हालत सुधरने की जो कहानी है, वह बहुत ही हानिकर है। अवश्य मोटे किसान जिनके पास काफी जमीन है और फालतू अन्न उत्पन्न होता था, वे जरूर और भी मोटे हो गये पर आम किसान जहाँ का तहाँ बना है। यदि खेती से हर मजदूर की मजदूरी कुछ बढ़ी है तो उसी अनुपात से वह जिन चीजों को खरीदता है उनका भी दाम बढ़ा है। यदि वह एक तरफ कुछ अधिक पा रहा है, तो उसे उससे अधिक देना पड़ रहा है।

युद्धकाल की सारी आफतों का बोझा स्त्रियों तथा बच्चों पर ही अधिक पड़ा है। स्त्रियों का जहाँ तक सम्बन्ध है, इसका कारण उनका मातृत्व है। यदि पुरुष ने वर्षों औसत तरीके से खाया-पिया है, तो दो चार साल केवल पेट भरते जाने से उसका विशेष कुछ नहीं बिगड़ेगा, पर ऐसी स्त्री जो गर्भ-धारण करती जा रही है, उसे बराबर अच्छे खाने-पीने की आवश्यकता है। युद्धकाल में यह न हो सका, इस कारण गरीब वर्गों में स्त्रियों का स्वास्थ्य अधिक गिरा है। इनमें से जो थोड़ी-बहुत स्त्रियाँ बड़े घरों में नौकरानी आदि के रूप में खाती-पीती रही हैं; इनके अलावा बाकी सभी स्त्रियाँ बिलकुल गिरी हुई ज्ञात होती हैं। बहुतों में तरह-तरह के रोग भी हो गये हैं।

युद्धकाल में जिन स्थानों में छावनियाँ थीं, उनकी कृपा से उधर के सारे इलाकों की स्त्रियों में बहुत से कुरोग फैल गये हैं और जैसा कि इन रोगों का स्वभाव है, बराबर इनके शिकारों की संख्या बढ़ती जा रही है। यदि ठीक से रोक-थाम नहीं की गई तो डर है कि पाश्चात्य देशों की तरह भारतवर्ष में भी प्रत्येक दूसरे या तीसरे व्यक्ति को ये रोग हो जायेंगे। इस विषय में देरी करना बहुत ही खतरनाक सिद्ध हो सकता है। सुना गया है कि भारतीय यूनियन के प्रत्येक राजदूत के साथ नौकर, बाबर्ची, मंत्री आदि के रूप में दर्जनों आदमी गये हैं। भारत की तरह एक गरीब राष्ट्र को यह शोभा नहीं देता। यहाँ के राष्ट्र-नेताओं को चाहिए कि हर पैसे को दाँत से पकड़ें और उसे बचाकर राष्ट्र-निर्माण के कार्य में लगायें। दूसरे देशों के सामने ज्ञान बघारने की बात नहीं है। यह कौन नहीं जानता कि सैकड़ों वर्ष तक हम चूसे और लूटे गये हैं, यह कौन नहीं जानता कि हमारे यहाँ दुर्भिक्ष में लाखों की तादाद में लोग मरते हैं और अब भी हम दुर्भिक्ष के सम्मुख खड़े हैं।

अब मैं पढ़े-लिखे वर्ग की स्त्रियों की समस्याओं पर आती हूँ। उनकी समस्या भी बहुत विकट है यद्यपि वे सांस्कृतिक दृष्टि से उतनी वंचित नहीं हैं और उन्हें दवा-दारू भी एक हद तक मिल जाती है; फिर भी उनके सामने जीवन की समस्या उतनी ही विकट है। सांस्कृतिक रूप से सचेतन होने के कारण उनके दुःख किसान-मजदूर-स्त्रियों से जाकर कम नहीं पड़ते। इनके सामने यह समस्या है कि पति की थोड़ी सी आमदनी को इज्जत बचाते हुए किस प्रकार बढ़ाया जाय। इस वर्ग में एक-एक बच्चा होने का अर्थ आर्थिक रूप से एक-एक आफत बढ़ाना है, इस कारण आर्थिक समस्या के हल के साथ ही इनमें जन्मनिरोध की शिक्षा का प्रचार अवश्य हो। व्यर्थ में रोगी-अपाहिज बच्चों का पैदा होना रोकना चाहिए। मध्यवर्ती श्रेणी में बल्कि पढ़े-लिखे वर्ग में स्त्रियों को अभी पर्दा से ही छुटकारा नहीं मिला, अन्य मुक्ति की बात तो जाने दी जाय। देखने में जहाँ पर्दा नहीं है, वहाँ ध्यान से देखिए पर्दा मिलेगा। अवश्य ये समस्याएँ सामाजिक हैं, पर राष्ट्र अधिक से अधिक स्त्रियों को घर से निकलने का मौका दे सकता है। इस सम्बन्ध में एक परिष्कृत योजना की और बहुत नीरव तथा ठोस कार्य की आवश्यकता है।

राजनैतिक दलों की जैसी अवस्था है, उसमें मुझे यह बताया गया है कि स्त्रियों के लिए केवल योग्यता और देश-सेवा के द्वारा आगे बढ़ना मुश्किल है। या तो किसी प्रभावशाली व्यक्ति की बहन या स्त्री या मित्राणी हुए बगैर राजनैतिक क्षेत्र में आगे बढ़ना संभव नहीं है। यदि परिस्थिति ऐसी है तो स्त्रियों के लिए आफत ही है। जिस गंदे वातावरण में स्थानीय राजनीति हुआ करती है, उसमें कई स्त्रियाँ सिद्धहस्त दृष्टिगोचर होती हैं, पर सभी स्त्रियों के लिए इस प्रकार का वातावरण उपादेय नहीं हो सकता और न तो वे इसमें भाग ही ले सकती हैं। कई क्षेत्रों में तो पार्टी को गंदगी के अतिरिक्त स्त्रियों से दूसरी तरह की गंदगी की आशा की जाती है। इसी कारण बहुत-सी स्त्रियाँ राजनीति से हिचकती हैं और राजनीति के बगैर बहुत बड़े ओहदों पर स्त्रियों का पहुँचना संभव नहीं है।

इन सबके विरुद्ध स्त्रियों को [illegible] कर खुद लड़ना है। स्वतंत्रता [illegible] को दी नहीं जाती, वह ली जाती है। स्त्रियों को दूसरों के भरोसे या [illegible] की आशा पर बैठे नहीं रहना चाहिए। उन्हें सोच-समझकर मजदूर-किसान स्त्रियों को अपने साथ करके [illegible] तथा समाजवाद के लिए लड़ना है, यही उन्हें मुक्ति दिला सकता है।

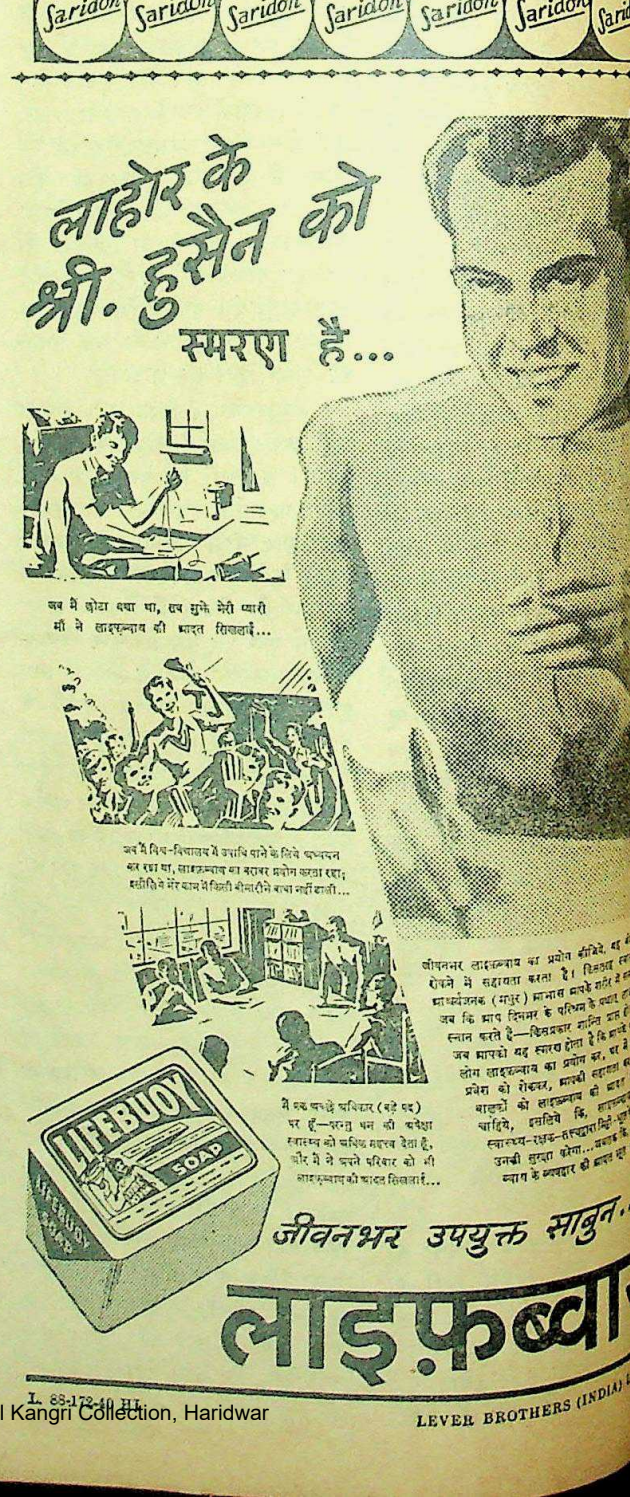

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...र उधर की

...संसार में सबसे अधिक चाँदी मेक्सिको ...निकलती है।

* *

...इंग्लैण्ड की दक्षिणी रेलवे में इतने ...सफर करते हैं जितना अमरीका ...सारी रेलवे लाइनों में।

* *

...पार्लियामेण्ट के एक प्रश्न-अधिवेशन ...,००० प्रश्न किये गये थे।

* *

...कहवा का पेय योरोप को अरबों ...लगाया।

*

...ब्रिटेन में प्रतिवर्ष बिजली का खर्च ...,००,००,००० यूनिट है।

* *

...अब राडर से पानीवाले खेतों में ...बताया जायगा।

* *

...होलैण्ड के सब इंजीनियर ने प्रति-...एक मकान बनाने की पद्धति ...है, यदि यह पद्धति प्रयोगात्मक ...बड़े बड़े सिनेमाघर, फैक्टरियाँ ...कारखाने एक माह के अन्दर ...गये।

* *

...ब्रिटेन का हाउस आफ कामन्स ...की १९४१ की बमवर्षा से नष्ट-...हो गया था। अब वह बन रहा है। ...यह कार्य ४ वर्षों में पूरा हो ...।

* *

...अपने यहाँ टेलीफोन और ...सामानों पर ५,००,००० पौंड ...करने जा रहे हैं। ये सारे सामान ...से मँगाये जा रहे हैं।

* *

...फूल बन्दरगाह में समुद्री ...के कण्ट्रोल रेट पर राडर दिये ...।

* *

...हाउस आफ कामन्स में ९३९ ...। पुराने में १३७ जगहें कम थीं।

* *

...युद्ध-क्षेत्र में जाने के लिए ...अँगरेजी शब्दों का ज्ञान बहुत ...है।

* *

...हंगरी, बलगारिया, रूमा-...और फिनलैण्ड के साथ जो संधि ...है, उस संधि के लिए बड़ी लम्बी ...करनी पड़ी है। इस संधि के लिए ...मील की लम्बी यात्रा करनी ...है।

* *

...में इतना कपड़ा है कि ...अमरीका की ९ लाख रुई की गाँठ ...उससे चुकता कर सकता है।

* *

...में पाकिस्तानी हाई कमिश्नर ...काम करने के लिए केवल १० ...तैयार हुए हैं।

पेरिस के डाक्टरों ने तपेदिक का इलाज ढूँढ़ लिया है। उन्होंने प्रारम्भिक बीमारों की ९५% जन-संख्या को बचाया है। अधिक दिन बीमारों की २०% से ३०% तक को बचा सके हैं।

ह्वेल मछली नहीं, बल्कि एक पशु है। वह अपने बच्चे को दूध पिलाती है।

* * *

ब्रिटेन के कारखानों से ३०,००,००० टन कालिख प्रतिवर्ष उड़कर हवा में विलीन हो जाती है।

सन् १९३८ में इँगलैण्ड में १६,२१९ पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं।

* * *

सन् १९३८ में ७ हजार व्यक्तियों की प्रतिवर्ष की आमदनी टैक्स निकालने पर ६,००० पौण्ड थी।

आधी शताब्दीकी राष्ट्रसेवा

नैसर्गिक समृद्धिमें हमारा देश जैसा बेजोड़ है वैसाही दरिद्रतामें भी बेजोड़ है। खुदने स्थापित किये हुअे राष्ट्रीय स्वयंसमृद्धि तत्वपर उन्नति करनेवाले धंदेका साहस अेक आदर्श मार्गदर्शककी प्रेरणासे पचास साल पहले हुआ। कम-से-कम हमें यही कहना ज़रूरी है कि अिसी दृष्टीसे उनका काम ठोस है क्योंकि मालको सुरक्षित रखनेकी धातुकी चीजोंकी और साबुनोंकी आयात अब नाममात्र रह गअी है।

राष्ट्रीय योजनामें शास्त्रीय रीतीसे बनाये हुअे टिकाउ और संकुचित अर्थव्यवस्था रखनेवालोंको भी साध्य होनेके लिये माफ़क क़ीमतवाली, संरक्षक और कार्यक्षम सामग्रीकी देशको जरूरत है। राष्ट्रीय योजनामें शुद्ध वनस्पतीके तैलके सस्ते साबुनोंके सारे देशमें उपयोगसे स्वास्थ्यरक्षाकी ज़रूरत है। गोदरेज अिसी राष्ट्रीय जरूरतको पूरी कर सकती है क्योंकि गोदरेज राष्ट्रीय संस्था है।

पौर्वात्य देशोंमें धातुके माल बनानेवालोंमें गोदरेज **सबसे बड़े** दस्तकार हैं और आज उनके साबुनोंने अिस 'गोदरेज' शब्दको सारे देशमें अपनासा बना दिया है।

Godrej Regd. गोदरेज

चाबी छाप

साबुन

शेविंग (दाढी बनानेके) साबुन

ग्लिसरीन

धातु - सामान

गोदरेज अॅण्ड बॉअीस मॅन्यु० कं०, लि०

गोदरेज सोप्स, लि०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

टिहरी राज्य के स्कूल कालेज

सन् १९३७ से टिहरी राज्य का संयुक्तप्रान्त से राजनैतिक सम्बन्ध टूट जाने के बावजूद भी वहाँ की शिक्षा-संस्थाएँ प्रान्तीय शिक्षा-विभाग से सम्बन्धित हैं; परन्तु टिहरी राज्य के स्कूलों को यूरोपियन स्कूलों के इन्सपेक्टर के अधीन रखकर, यू० पी० सरकार भी आज तक इस ओर विशेष ध्यान नहीं देती रही है। इस उपेक्षा का प्रभाव यह हुआ कि टिहरी राज्य की निरंकुश सामन्तशाही वहाँ की शिक्षण-संस्थाओं की भी नौकरशाही के कल-पुर्जे तैयार करने की मशीनों की तरह से करती आ रही है।

सारी रियासत की साढ़े पाँच लाख जनता के लिए ५ मिडिल स्कूल और एक इण्टरमिडिएट कालेज है। इस कालेज की स्थापना हुए आज ६ वर्ष हो चुके हैं [illegible]म्भ से ही विद्यार्थियों ने अपना संघ खोलने की माँग की थी, परन्तु विद्यार्थियों की इस न्यायपूर्ण माँग को ठुकराकर उनमें से कुछ को कालेज से निकालकर व कुछ पर भारी-भारी जुर्माने कर तथा दो को जेल में ठूँसकर कुचला गया। उसके पश्चात् प्रगतिशील विद्यार्थियों पर कड़ी नजर रखी गई और कालेज के अधिकारियों ने उन्हें जेल भिजवाने में पुलिस का पार्ट अदा किया।

हरानगी तो यह जानकर होती है कि आज जब कि हिन्दुस्तान से देशी नरेशों के रक्षक अँगरेजों का बोरिया-बिस्तर बँध गया है और सारे देश ने आजादी प्राप्त कर चैन की साँस ले ली है, वहाँ के विद्यार्थियों पर सभाओं में जाने के लिए भारी-भारी जुर्माने किये जा रहे हैं और विद्यार्थी-संगठन की बात तो दूर की है। टिहरी में विद्यार्थी संघ की माँग कर वहाँ के विद्यार्थियों का अभिप्राय किसी राजनैतिक दल को कायम करना नहीं है। यह तो आज सभी स्वीकार करते हैं कि विद्यार्थियों के विकास के लिए उनका स्वतन्त्र रूप से मिल-जुलकर विचार-विनिमय करना आवश्यक है। आज की शिक्षा-प्रणाली में सामाजिक शिक्षा की कमी को भी विद्यार्थी संघ ही पूरा कर सकते हैं। यह बात स्कूल के मास्टर के डंडे के नीचे नहीं सीखी जा सकती। शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् वहाँ के विद्यार्थियों के लिए वहाँ की नौकरशाही का शस्त्र बनने के सिवा कोई और चारा ही नहीं।

कालेज में अध्यापकों के द्वारा ऐसी शिक्षा जिससे कि विद्यार्थियों को उच्च आदर्शों पर चलने की प्रेरणा मिले, पाने की आशा करना दुराशामात्र है। उसके विपरीत एकमात्र खादी के वस्त्र पहनने के कारण ही कई विद्यार्थियों को उनकी कोप दृष्टि का शिकार होना पड़ता है। आखिर उनके सामने भी तो रोटी का प्रश्न है। इण्टरमिडिएट की कक्षाओं को पढ़ानेवाले अध्यापकों को केवल ६०)-७०) ₹० मासिक वेतन मिलता है, उनसे समता की आशा करना दुराशामात्र है। इसका सबूत वहाँ के कालेज से इण्टर-मिडिएट की परीक्षा में शामिल होनेवाले विद्यार्थियों के पिछले ५-६ साल के नतीजों से मिल सकता है।

मिडिल स्कूलों की दशा तो इससे भी दयनीय है। यदि आज कांग्रेसी सरकार के अधीन शिक्षा-विभाग से सम्बन्धित स्कूल और कालेजों की यह दशा रहती है तो हमारे लिए और सहारा ही क्या रह जाता है। यदि शिक्षा-संस्थाओं का अकेले टिहरी की निरंकुश सरकार से ही सम्बन्ध होता और उसके मातहत स्कूल और कालेज में पढ़नेवाले विद्यार्थियों के जीवन के साथ खिलवाड़ होता तो उस शासन को बदलने के सिवा हमें कुछ और कहना ही न था। टिहरी राज्य की जनता यू० पी० को एक भाग होने के नाते वहाँ की कांग्रेसी सरकार से अपनी विरासत में पाई हुई इस गुलामी से मुक्ति पाने की बड़ाई में सहायता पाने की बड़ी-बड़ी आशाएँ लगाये बैठी है। हमें आशा है कि यू० पी० सरकार के शिक्षा-विभाग के मंत्री अपने विभाग पर टिहरी राज्य के स्कूल और कालेज से लगे हुए इस कलंक को सहन न कर सकेंगे और यू० पी० के शिक्षा-विभाग से सम्बन्धित वहाँ की शिक्षण-संस्थाओं की जाँच करवाकर, कई विद्यार्थियों का भविष्य नष्ट होने से बचावेंगे।

मलंगार, मसूरी
१२-८-४७ —सुन्दरलाल बहुगुणा

* * *

'समता'

वर्तमान युग संघर्ष का, कृतित्व का, वैचारिक साहसों का काल है। 'समता' इस नई प्रगतिशील चेतना का साहित्यिक माध्यम होने के साथ ही साथ हिन्दी की चिर प्रवहनशील साहित्यिक परंपरा के आलोचन, उन्नयन तथा विकास में सहायक होने का प्रयत्न करेगी।

बदलते हुए युग-जीवन का यह तकाजा है कि नवीन परिस्थिति के अनुकूल अभिव्यंजना शैली का भी विकास हो। साहित्य और कला के नव-नवीन प्रयोगों का 'समता' स्वागत करेगी। साहित्य का अन्य कलाओं के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए संगीत, नाटक, जननाट्य, लोक-गीत तथा लोक-कलाओं की भी उपेक्षा नहीं की जावेगी। उसी तरह विदेशी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के कलाकारों की कला तथा साहित्य का अध्ययन 'समता' में नियमित रूप से मिलेगा।

'समता' में साहित्यिक विषयों के अतिरिक्त दर्शन, पुरातत्त्व, इतिहास, राजनीति आदि विषयों पर गंभीर लेख मिलेंगे। 'समता' को हिन्दी के श्रेष्ठ विचारकों तथा लेखकों का सहयोग प्राप्त है। नई प्रतिभाओं के लिए उसके पृष्ठ खुले हुए हैं। 'समता' का प्रथम अंक ता० १५ सितम्बर को प्रकाशित होगा। 'समता' की प्रत्येक पुस्तिका का मूल्य १) है तथा सालाना चंदा १०) है। पत्र-व्यवहार का पता—वसंत पुराणिक प्रबन्ध-सम्पादक 'समता' ६०१ गोल बाजार जबलपुर।

—नन्ददुलारे बाजपेयी, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', शिवदानसिंह चौहान, डा० नारायण विष्णु जोशी, गोपीकृष्ण प्रसाद, गजानन माधव मुक्तिबोध।

* * *

हम स्वाधीन हुए

हमारा देश शताब्दियों की दासता की जंजीरों को तोड़कर ता० १५ अगस्त को स्वतन्त्र हो गया है। जिस स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए हजारों वीरों ने अपना बलिदान किया और असंख्य देश-सेवकों ने नाना प्रकार के कष्ट सहन किये उसके परिणामस्वरूप ही हमारे स्वतन्त्रता के स्वप्न ने वास्तविक रूप ग्रहण किया है। इससे सारे देश में हर्षोल्लास छा जाना स्वाभाविक है।

मैं संयुक्तप्रान्तीय षड्दर्शन साधु मंडल की ओर से समस्त साधु-समाज के अखाड़ों, आश्रमों, मठों तथा मंदिरों के संचालक एवं व्यवस्थापकों को [illegible] देता हूँ कि उन्होंने अपने-अपने स्थान [illegible] १५ अगस्त को स्वतन्त्रता-दिवस [illegible] से मनाया। उस दिन राष्ट्रीय झं[illegible] सम्मानपूर्वक फहराया। रात को दी[illegible] मनाया। हर प्रकार से इस महान् [illegible] को उत्साहपूर्वक मनाया। साथ ही भग[illegible] से प्रार्थना भी की कि हमारा देश [illegible] अतीत गौरव को प्राप्त कर विश्व [illegible] सम्मानित राष्ट्रों में अपना प्रमुख [illegible] प्राप्त करे।

हरिद्वार —धनश्याम

रिस्टवाच मुफ्त

अमेरिकन ढीलकस हेयर आयल [illegible] यूयूयू के लगाने से बाल उमर भर [illegible] रहते हैं। आँखों और दिमाग को [illegible] पहुँचाता है। गंजापन दूर करता है।

कीमत १ शीशी २॥) २ शीशी [illegible] इस दवाई को मशहूर करने के लि[illegible] हर शीशी के साथ १ फैंसी रिस्ट[illegible] जिसकी पायदारी और खूबसूरती की [illegible] १० साल है, मुफ्त दी जायेगी।

दो शीशी के खरीदार को डाक[illegible] मुआफ। दो रिस्टवाच मुफ्त दी जाएँगी

(D. A.) संन्यासी आयुर्वेदिक फार्मे[illegible]
धर्मशाला

पुरुष स्त्रियों से क्या चाहता है ?

पुरुष बड़े मनोरंजक होते हैं। वे छोटी चीजों जैसे हास्य, मन्द मुस्कान, स्थायी सुगन्धि द्वारा आकर्षित होते हैं।

काश्मीर बुकेट के टाल्क में आप मन्द सुगन्धि पायेंगे। स्नान के पश्चात् काश्मीर बुकेट टाल्क को शरीर पर छिड़किए।

इसकी शीतलता को अपने चर्म में प्रवेश करने दीजिए। यह घंटों आप में ताजगी और प्रसन्नता रक्खेगी।

अब आपको अपने सौन्दर्य में सन्देह नहीं रहेगा। उस सुगन्ध को धन्यवाद है, "जिसे मनुष्य पसन्द करता है।"

Cashmere Bouquet Products WITH THE FRAGRANCE MEN LOVE

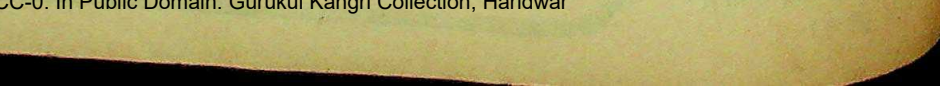

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्तरिहास

भङ्ग की तरङ्ग

स्वतंत्रता-दिवस पर कलकत्ते में ...ी और हिन्दू-मुसलमान दोनों ने ...सानंद मनाया। युद्ध में एक दिन ...विराम हो जाय तो अच्छा ही है।

* *

पंजाब और बंगाल-प्रान्तों का ...न हो गया। और तो कोई बात ...भूगोल पढ़नेवालों की कठिनाई ...ई है।

* *

दिल्ली से एक अपील प्रकाशित हुई ...हिंसा बंद की जाय। गांधी-जिन्ना ...का क्या प्रभाव हुआ इसकी जाँच ...भी एक कमीशन बैठाना चाहिए।

* *

काश्मीर के डाकखाने पर पाकिस्तान ...लगाया गया था किन्तु स्वर्गिस्तान ...लगाना चाहिए था। बाबर ने ...था कि यह स्वर्ग है।

मुसलमान जनता ने क्या कहा, भाषा हिन्दी है या उर्दू?

लखनऊ में गवर्नर के पद-ग्रहण करने का जो उत्सव मनाया गया उसका निमंत्रण-पत्र हिंदी में छपा था। अफसोस है कि इतना भी ख्याल लोगों ने नहीं किया कि एक ओर उर्दू में भी छपवा देते।

* *

वाजिदअली शाह के सबसे बड़े पौत्र अवध की गद्दी लेना चाहते हैं। सुना है महल बनवाना उन्होंने आरंभ कर दिया है। इन्होंने इरादा किया है कि केवल सौ बीबियाँ रखी जायँ। सुधार का युग है न!

* * *

बहुत जगहों में शंख-ध्वनि से स्वाधीनता-दिवस का स्वागत किया गया। इस पर मुसलमान भाइयों ने आपत्ति नहीं उठाई। प्रेम का यह भी उदाहरण बलवान् है।

* * *

कानपुर में स्वतंत्रता के दिन एक बालिका भीड़ में दबकर मर गई।

हिन्दी भाषा

लेखक, श्री 'वेढब' बनारसी

...ही जोश की भाषा, बिना ही दोष की भाषा;
...संतोष की भाषा, विजय के घोष की भाषा;
हमारे चाव की भाषा, हमारे भाव की भाषा;
हमारे हाव की भाषा, यही है ताव की भाषा;
...कालाव की भाषा, यही उमराव की भाषा;
...रंक औ' राव की भाषा, यही है साव की भाषा;
नहीं अलगाव की भाषा, नहीं बिलगाव की भाषा;
नहीं बहकाव की भाषा, नहीं उलझाव की भाषा;
...यह घाव की भाषा, भले बरताव की भाषा;
...की गाँव की भाषा, यही सब ठाँव की भाषा;
यही है ज्ञान की भाषा, सभी के त्रान की भाषा;
यही है शान की भाषा, यही विद्वान की भाषा;
...अभिमान की भाषा, यही सम्मान की भाषा;
...उत्थान की भाषा, यही वरदान की भाषा;
भले इन्सान की भाषा, य् हो कल्यान की भाषा;
य् हिन्दुस्तान की भाषा, व पाकिस्तान की भाषा;

(नोट:—यह तुकबंदी करने की स्फूर्ति 'भ्रमर' जी की कविता देखकर ...—वेढब)

...महात्मा गांधी ने कहा है कि चंद्र-...में सत्याग्रह नहीं होना चाहिए। ...महात्मा जी का यह अभिप्राय ...होगा कि सत्याग्रह अँगरेजों के ...के लिए है, फ्रेंच के लिए नहीं।

* *

पाकिस्तान में भारत के दूतावास ...तिरंगा झंडा फहराया गया। दूता-...पर चाहिए था पाकिस्तानी झंडा ...फहराना, बिरादराना प्रेम इससे ...जाता।

* *

दिल्ली में सरकारी भोज के अवसर ...पंडित जवाहरलाल ने किंग जार्ज की ...कामना की। समय कितनी जल्दी ...है। दस दिन पहले किंग जार्ज ...भी कोई कांग्रेसी नहीं लेता था।

* *

...बिहार के गवर्नर ने हिंदी में भाषण ...। अभी समाचार नहीं आया कि

स्वतंत्रता के पहले भी बलिदान की आवश्यकता पड़ती है और समय पर भी पड़ती है।

* * *

ग्वालियर सरकार ने शासन-सुधार किया है। कार्यकारिणी कौंसिल में सदस्य ग्यारह होंगे जिनमें पाँच गैर-सरकारी होंगे। इतना कम सुधार है?

* * *

पाकिस्तान के मंत्रियों का कहना है कि विभाजन की सीमा निर्धारित करके अँगरेजों ने अंतिम ठोकर मारी। क्या पहले भी एकआध ठोकर दी थी?

* * *

कहा जाता है कि भोपाल के नवाब साहब गद्दी छोड़नेवाले हैं। पहले छोड़ते तो पाकिस्तान में कहीं गवर्नर बन जाते। अब तो कुछ दिन यों हीं संतोष करना पड़ेगा।

—अगड़धत्त शर्म्मा

संवाददाताओं के पत्र

स्वतंत्रता-दिवस के समारोह

हरिद्वार में श्री श्रवणनाथमठ में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। ता० १५ को प्रातःकाल मठ में हरिद्वार के सुप्रतिष्ठित वैदिक विद्वानों द्वारा वैदिक अर्चन कराया गया। भगवान् से प्रार्थना की गई कि भारत की स्वतंत्रता चिरस्थायी हो और देश में सुख-शान्ति का साम्राज्य हो। श्री महन्त शान्तानन्दनाथ जी ने मठ की ओर से एक हजार रु० का मिष्ठान्न मंडल कांग्रेस कमेटी के द्वारा स्थानीय शिक्षण-संस्थाओं, शरणार्थियों तथा अन्य नागरिकों को वितरित कराया। शाम को खूब धूमधाम से दीवाली मनाई गई। —संवाददाता

पचमढ़ी में स्वतंत्रता-दिवस के उपलक्ष में प्रातःकाल प्रभात-फेरी हुई। गांधी चौक में मि० लेफ्टिनेन्ट कर्नल एच थामस ने तिरंगा झन्डा फहराया। कर्नल एच थामस, मिलिटरी, मजदूर-संघ ने तथा सबने झंडे का अभिवादन किया। बाद में कर्नल एच थामस, श्रीमान् नायब तहसीलदार साहब के व्याख्यान हुए। जगह-जगह मिठाई बाँटी गई। बाद में सरदार ज्वालासिंह एक्जीक्यूटिव अफसर साहब ने गांधी चौक में एक स्मारक की नींव डाली।

सायंकाल एक विराट् जुलूस २४ बैल और एक शानदार घोड़े पर रथ निकाला, जिसमें महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा सब नेताओं की फोटो विराजमान थी। जुलूस गांधी चौक में, जवाहर रोड होता हुआ गोल बाजार, जयप्रकाश रोड होते हुए गांधी चौक में समाप्त हुआ। रात्रि को एक आम सभा श्रीमान् दुर्गाप्रसाद जायसवाल के सभापतित्व में हुई जिसमें श्रीमान् प्रेमनारायण जी ने राष्ट्रीय वन्दना की और श्रीमान् जहूरबक्स, साहबउद्दीन, श्रीमान् बुल्लाशाह ने 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' नामक गायन गाया। श्रीमान् स्वामीजी, श्रीमान् कुंजीलाल जैन, श्रीमान् बाबूलाल पंडित, श्रीमान् बालाराम गुप्ता, श्रीमान् गयाप्रसाद और श्रीमान् वंशीधर जी के जोरदार भाषण हुए।

१७-८-४७ —संवाददाता

वृन्दावन में ता० १५ को स्वाधीनता का पर्व समारोह के साथ मनाया गया। ता० १४ को महिलाओं और लड़कियों का बहुत बड़ा जुलूस निकला। रात १२ बजे सारे मंदिरों में घंटा, शंख, घड़ियाल बजे और बन्दूक चलाई गई। ता० १५ को सुबह सारे शहर में प्रभात-फेरियाँ हुईं। म्युनिसिपलवार्ड—पोस्टआफिस और थाने पर झंडे लगाये गये। दोपहर ३ बजे एक बहुत बड़ा जुलूस गांधी जी की फोटो के साथ निकला, जुलूस में सभी वर्गों के आदमी थे। धार्मिक कीर्त्तन-मंडलियाँ भी थीं। जनता ने जुलूस का शर्बत-पान से स्वागत किया। रात में सभा हुई, जिसमें कि देश की आजादी पर प्रो० कृष्णचन्द्र जी एम० एल० ए०, गोस्वामी अद्वैतकुमार जी, श्री नरदेव जी शास्त्री के भाषण हुए।

१५ ता० की रात को सारा वृन्दावन शहर सजाया गया। दीपदान हुआ। प्रत्येक बाजार में दरवाजे बनाये गये। सबसे अच्छी सजावट राधारमण मंदिर के दरवाजे पर हुई। वहाँ पर एक सुन्दर हिंडोले में तीनों नेता महात्मा गांधी-नेहरू जी व नेताजी को झुलाया गया। यहाँ के भूतपूर्व आनरेरी मजिस्ट्रेट गोस्वामी आचार्य मदनमोहन जी ने भी एक सबसे सुन्दर दरवाजा बनाया। स्थानीय बोर्ड और शाहजी के मंदिर में भी अच्छी रोशनी रही।

१६ ता० को प्रेम महाविद्यालय में प्रेम क्लब ने शहर के कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओं को दावत दी। हलवाई-संघ ने भी सब कांग्रेसवालों को दावत दी। सबसे शानदार टी पार्टी शाह गौरशरण गुप्त एडवोकेट ने दी, जिसमें कि कांग्रेसी नेता और मथुरा के सरकारी अफसर थे।

—स[illegible]

प्रयाग जसरा बाजार में स्वतंत्रता-दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। केसरवानी विद्यालय से जुलूस आरम्भ हुआ, बाजार घूमता हुआ जुलूस नई बाजार से होकर पोस्टआफिस पहुँचा। मंडल कांग्रेस कमेटी जारी के मंत्री ब्रजमोहनलाल शुक्ल ने पोस्टआफिस पर झंडा फहराया। जुलूस रेलवे स्टेशन पर पहुँचा, वहाँ भी झंडा फहराया गया। केसरवानी विद्यालय की इमारत पर विद्यालय के प्रधानाध्यापक ठा० सत्यनारायण सिंह ने झंडा फहराया। विद्यार्थियों की एक सभा दीनानाथ गुप्त के सभापतित्व में हुई जिसमें बन्देमातरम् से कार्य शुरू हुआ। पं० कृष्णानंद पांडेय ने स्वतंत्रता पर रोचक गाना सुनाया। सभा में श्री पीताम्बरलाल गुप्त, ब्रजमोहनलाल शुक्ल तथा हेडमास्टर ठा० सत्यनारायणसिंह का प्रभावशाली भाषण हुआ। शाम को एक सार्वजनिक सभा जिला कांग्रेस कमेटी के मंत्री श्री पं० दीनबन्धु जी पाठक के सभापतित्व में हुई। जिसमें ब्रजमोहनलाल शुक्ल, पीताम्बरलाल गुप्त तथा पाठक जी का भाषण हुआ। —संवाददाता

अमरोहा में किसानों की एक सभा स्वतंत्रता दिवस के उपलक्षय में ब्रजमोहनलाल शुक्ल के सभापतित्व में हुई। सभा में पं० शारदाप्रसाद पाण्डेय मास्टर, पं० शारदाप्रसाद शास्त्री तथा महादेवप्रसाद गुप्त का ओजस्वी भाषण हुआ।

—संवाददाता

पूर्णियाँ से निकलनेवाला प्रगतिशील राष्ट्रीय साप्ताहिक पत्र 'राष्ट्र-संदेश', जिसका प्रकाशन १९४२ के अगस्त-क्रान्तिकाल में बन्द कर दिया गया था, पुनः १५ अगस्त से प्रकाशित हो रहा है।

—कमलदेव नारायण सिनहा

प्रतावगढ़ (साँगीपुर) हिन्दी दिवसोत्सव के उपलक्ष्य में स्वतन्त्र कवि-मंडल साँगीपुर द्वारा मिडिल स्कूल साँगीपुर प्रतावगढ़ में सभा हुई और कई प्रस्ताव पास हुए। —संवाददाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाद दाताओं के पत्र

देवप्रयाग (गढ़वाल) देवप्रयाग रघुनाथ कीर्ति महाविद्यालय के तत्त्वावधान में "राष्ट्रभाषा-हिन्दी-दिवस" बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया। प्रातः विद्यालय, रघुनाथ हाईस्कूल, कन्यापाठशाला और अपर प्राइमरी पाठशालाओं के बालक-बालिकाओं द्वारा एक विराट् जुलूस (बाह) देवप्रयाग तथा देवप्रयाग (स्टेट) में निकाला गया। तत्पश्चात् राष्ट्रीय झंडे की प्रार्थना की गई और फिर विद्यालय के विशाल प्रांगण में एक आम सभा श्री मुरलीधर शास्त्री, 'मधुर' के सभापतित्व में हुई। श्री शिवानन्द शास्त्री, धनेशशास्त्री केन्द्रीय, टिहरी प्रजामंडल के प्रधान मंत्री प्रेमलाल वैद्य, दीनानाथ पालीवाल, सत्यप्रसाद पांडे [illegible], मास्टर गोविन्दराम और सत्यनारायण शास्त्री के मार्मिक भाषण हुए, वक्ताओं ने अपने भाषणों में हिन्दी का महत्त्व समझाया। 'राष्ट्रभाषा हिन्दी हो' प्रस्ताव की प्रतिलिपियां केन्द्रीय सरकार के उपा० पं० नेहरू, गृह-सदस्य सरदार वल्लभभाई पटेल, रक्षा-सदस्य सरदार बलदेवसिंह, प्रान्तीय सरकार और भारतीय विधान-परिषद् को भेजी गई हैं। महाविद्यालय के प्रधानाध्यक्ष श्री विश्वनाथ शास्त्री ने अपने भाषण के पश्चात् एक दूसरा प्रस्ताव रखा जिसमें संस्कृत के पाठ्यक्रम में परिवर्तन कर दिया जाय जिससे संस्कृत के विद्वान् राष्ट्रभाषा के विद्वानों की भांति सुविधा एवं महत्त्व प्राप्त कर सकें। श्री शिवानन्द शास्त्री के समर्थन के पश्चात् प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया।

---संवाददाता

* * *

इटावा भर्थना में सार्वजनिक पुस्तकालय बालीखुर्द के तत्त्वावधान में हिन्दी-दिवस बड़े समारोह के साथ मनाया गया। सर्वप्रथम प्रातःकाल प्रभात-फेरी हुई, तत्पश्चात् प्रभात-फेरी का जुलूस एक आम सभा के रूप में परिणत हो गया। जनता ने काफी सहयोग दिया। सभा के अन्दर हिन्दी के रूप और महत्त्व पर प्रकाश डाला गया तथा अपनी जनप्रिय सरकार से प्रस्ताव द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की मांग की गई।

---गौरीशंकर "विशारद"

* * *

नीमच क्षेत्रीय हिन्दी-साहित्य-समिति की ओर से हिन्दी महाविद्यालय के तत्त्वावधान में हिन्दी-दिवस मनाया गया। प्रातःकाल श्रीयुत 'चन्द्र' जी के संचालकत्व में 'जय हिन्दी जय हिन्दुस्तान' गान के साथ नीमच नगर से नीमच छावनी के प्रमुख बाजारों में बड़े उत्साह के साथ प्रभात-फेरी निकाली गई। प्रभात-फेरी में जनता ने खूब उत्साह दिखाया। श्रीमान् ओमप्रकाश सक्सेना बी० ए०, एल्०-एल० बी० न्यायाधीश की अध्यक्षता में विराट् आयोजन किया गया था। इस समारोह में मंदसौर प्रान्त शिक्षा-विभाग के इन्स्पेक्टर महोदय, नायब तहसीलदार साहब जाधव एवं कई प्रमुख जन-प्रतिनिधियों ने अत्यन्त तल्लीनता के साथ सहयोग दिया। सर्वश्री कुलकर्णी जी, सक्सेना जी, माणिक्यलाल जी शर्मा 'विशारद' नागेश मेहता, सज्जनसिंहजी चौधरी इत्यादि के भाषणों का जनता पर सुन्दर प्रभाव पड़ा। बीच-बीच में बालकों का कविता-पाठ बहुत ही सुन्दर रहा।

---संवाददाता

* * *

छिंदवाड़ा में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के आदेशानुसार नागरिकों ने स्थानीय हिन्दी प्रचारिणी समिति एवं मित्र-मण्डल पुस्तकालय की ओर से आयोजित सभा में सर्वसम्मति से यह निश्चय किया है कि राष्ट्र की भाषा "हिन्दी" और राष्ट्र लिपि "नागरी" ही विधान-परिषद् द्वारा मान्य की जाये।

---संवाददाता

* * *

मथुरा में देशबन्धु पुस्तकालय मथुरा का चतुर्थ वार्षिक अधिवेशन ता० ३ अगस्त रविवार को लक्ष्मीदास हाल में समारोहपूर्वक मनाया गया। उत्सव में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्राण श्रद्धेय बाबू पुरुषोत्तमदास जी टंडन, कांग्रेस के महामंत्री श्री आचार्य जुगलकिशोर तथा हिन्दी-साहित्य के विद्वान् कवि पं० बालकृष्ण शर्मा जी 'नवीन' ने पधारकर उत्सव को पूर्ण सफल बनाया था। हाल दर्शकों से खचाखच भरा था।

उत्सव का उद्घाटन करते हुए आचार्य जुगलकिशोर जी ने पुस्तकालयों की उपयोगिता पर भाषण देते हुए कहा कि मनुष्य की सांस्कृतिक उन्नति में पुस्तकालयों का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। पुस्तकों का संग्रहमात्र कर लेना काफी नहीं है। पुस्तकालयों से समाज में ज्ञान-वृद्धि हो, उनमें ऐसी कक्षायें हों जो प्रौढ़ शिक्षण में सहायता दे सकें। अन्य देशों में ये जनता की भारी सेवा करते हैं। हमारे देश की जनता के लिए ज्यादा से ज्यादा पुस्तकालयों की आवश्यकता है। इस ओर सरकार भी सहायता दे रही है। जनता को भी इस सेवा के कार्य में सहायता देनी चाहिए।

उत्सव के सभापति पं० बालकृष्ण शर्मा जी 'नवीन' ने ओजस्वी और सामयिक भाषण दिया।

माननीय श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन (स्पीकर यु० प्रा० एसेम्बली) ने पुस्तकालय के लाभ बताये और कहा कि पुस्तकालयों का समाज में भावनायें जाग्रत करने और प्रेरणा देने का काम है। इससे बहुत भारी जन-कल्याण होता है। यह दुख की बात है कि हम धर्मग्रंथों का स्वाँग निकालते हैं। हम वेदों, पुराणों और गुरुग्रन्थ साहब की सवारी निकालते हैं। हमारे धर्मग्रंथ पढ़ने की शिक्षा देते हैं, न कि सवारियां निकालने की। ये ग्रन्थ केवल पूजा और सवारी-मात्र की वस्तु नहीं हैं। यह मनोवृत्ति हमारे अधःपतन का कारण है। भारत में आज महान् परिवर्तन हो रहा है। हमें अपनी सामाजिक बुराइयाँ अवश्य ही दूर करनी चाहिए। मैं हिन्दुओं के इस धार्मिक गढ़ मथुरा में बैठकर ऊँची आवाज से घोषणा करता हूँ कि यहाँ के समस्त मंदिर हरिजनों के लिए खोल दिये जायँ। और जो हिन्दू धर्म के बाहर चले गये हैं उन्हें शीघ्र वापस किया जाय। लाखों बिछुड़े भाई वापस हिन्दू-धर्म स्वीकार करने को तैयार हैं।

---संवाददाता

* * *

उदयपुर महिला-मंडल की नवनिर्वाचिता अध्यक्षा श्रीमती कमला देवी श्रोत्रिय ने बधाई तथा अभिनन्दन के उत्साहवर्द्धक वातावरण में अध्यक्षा-पद से अपने अभिभाषण में कहा---अध्यक्षा पद पर चुनकर भाइयों तथा बहनों ने आत्मीयता का ही परिचय दिया है। इन मित्रों, लोकनायकों तथा आत्मीय जनों के सहयोग तथा शुभ भावनाओं का ही यह फल है। मेरी दृष्टि से तो अध्यक्षा-पद पर कोई अन्य बहन होती तो श्रेष्ठतर था, क्योंकि हमें एक सुयोग्य बहन का सहयोग मिलता। अन्त में अध्यक्षा ने कहा---"मैं बधाई के साथ-साथ सहायता, सेवाएँ तथा सहयोग चाहती हूँ। मण्डल पर अभी १०,०००) रु० का कर्ज है और भी अन्य कई कठिनाइयाँ हैं। किन्तु महिला-मंडल का कार्य इतना आवश्यक और उपयोगी है कि इन कठिनाइयों के होते हुए भी इसे करने में गर्व और हर्ष प्रतीत होता है।

---संवाददाता

* * *

पिलानी बिड़ला कालेज में हिन्दी-साहित्य-समिति का चुनाव निम्न प्रकार से हुआ---सभापति सर्वश्री प्रो० कन्हैयालाल जी सरल एम० ए०, उपसभापति श्री शिवदयाल जी बी० ए० (फा०) मंत्री भीमसेन वर्मा विद्यार्थी बी० ए०, संयुक्त-मंत्री केशरदेव शर्मा बी० ए० प्रीविएस; कोषाध्यक्ष मूलसिंह। कार्यकारिणी सभा की बैठक निकट भविष्य में ही होनेवाली है जिसमें अन्य पदाधिकारियों का चुनाव होगा।

---संवाददाता

* * *

मंडावा (जयपुर) शेखावाटी में वर्षा न होने के कारण अनाज की चिन्ताजनक हालत होती जा रही है। बाजरा ऽ१।। गेहूँ ऽ१८ के बिक रहे हैं। पशुओं के लिए चारा व पूलों का अभाव भी हो गया है। ऐसी परिस्थिति रही तो जनता व पशु भूखों मर जायँगे। युवक सभा की ओर से एक प्रतिनिधि मंडल शेखावाटी की बिगड़ती हुई अनाज-समस्या की जानकारी कराने के लिए जयपुर के लोकप्रिय सप्लाई-मंत्री के पास गया है। यहाँ सभा की ओर से गायों के लिए पूलों का इन्तजाम किया गया है और १५ के भाव से दिये जाते हैं। जयपुर-सरकार इस विकट समस्या की ओर जल्द ध्यान देगी।

---भगवतीप्रसाद

* * *

सवाई माधोपुर (जयपुर) राज[illegible] का भ्रमण करते हुए श्री श्री महा[illegible] धर्म्म ध्रुव महाराज यहाँ पधारे [illegible] एक बड़ी संख्या में उपस्थित जनता [illegible] सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत आज आनन्द मनाया जा रहा है [illegible] कि अँगरेज यहाँ से जा रहे हैं। पर [illegible] आनन्द तभी मनाया जा सकता है [illegible] शैतान इस देश से चला जाय। जब [illegible] हम अपने देश में पुनः आर्य-संस्कृति [illegible] सभ्यता का वातावरण नहीं ला देते [illegible] तक स्वतन्त्रता अर्थात् वास्तविक [illegible] सुख हमसे कोसों दूर है।

---संवाद[illegible]

* * *

धौलपुर हाउस में भोपाल, [illegible] धौलपुर, महीयर, जेसलमेर, इडर [illegible] जोधपुर प्रभृति नरेशों ने स्वामी [illegible] नन्द जी महाराज से मुलाकात की। स्व[illegible] जी ने उन्हें भारतीय संघ में शरीक होन[illegible] उसे सुदृढ़ बनाने की नेक सलाह [illegible] जिसके फलस्वरूप यह आशा की [illegible] है कि उक्त नरेशों में से वे नरेश [illegible] अब तक संघ में शरीक नहीं हुए [illegible] हो जायेंगे। ---सं[illegible]

* *

मथुरा के देशबन्धु पुस्तकालय [illegible] वार्षिक नव-निर्वाचन इस प्रकार हुआ---सभापति—लाला केदारनाथ जी [illegible] उपसभापति—ज्योतिषी राधेश्याम [illegible] प्रधान मंत्री—बिहारीलाल, प्रचार-[illegible] डा० जगदीशप्रसाद गुप्ता, प्रबन्ध-[illegible] बैजनाथ जी दानी, उपमंत्री—[illegible] जी गर्ग, कोषाध्यक्ष—श्रीनिवास जी [illegible] पुस्तकाध्यक्ष---श्रीनिवास जी [illegible] सम्पादक---श्री प्रपन्नाचार्य जी, निरी[illegible] श्री शिवचरनलाल जी गोयल, सह[illegible] श्री शर्मनलाल जी एम० ए०, श्री बाबू [illegible] जी वर्मा, श्री रामबाबू जी बजाज, [illegible] रामो जी, श्री गोपीनाथ जी चतुर्व[illegible]

---सं[illegible]

* * *

प्रयाग श्री पांडलेश्वरनाथ में [illegible] सीताराम जी पाठक, प्रधानाध्या[illegible] श्री सरयूपारीण ब्राह्मण संस्कृत पाठशा[illegible] प्रयाग के सभापतित्व में एक सनात[illegible] धर्म-सम्मेलन हुआ जिसमें पं० केदार[illegible] तिवारी, पं० हनुमद्दत्त तिवारी, पं० [illegible] नारायण मिश्र तथा अन्य कई वि[illegible] के सनातन-धर्म से सम्बन्ध रखने [illegible] भिन्न-भिन्न विषयों पर व्याख्यान हु[illegible]

---संवाद[illegible]

* * *

उदयपुर से १५ अगस्त से [illegible] पत्र "वीर-भूमि" साप्ताहिक प्रका[illegible] हो रहा है। पत्र का मुख्य उद्देश्य [illegible] में उत्तरदायी शासन की माँग, [illegible] का प्रचार और हिन्दुत्व की रक्षा [illegible] होगा। पत्र का वार्षिक मूल्य ६) [illegible]

---संवाद[illegible]

* *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पेज ७ का शेष)

...हैं कि यह प्रान्त अपने शासन का ...सहन नहीं कर सकता।

मराठीभाषी एक ही प्रान्त में ...रहने से जनता का कोई विशेष ...साध्य होगा; यह बात नहीं है। ...संघ में यदि एक के बजाय ...मराठी प्रान्तों का समावेश हो, तो ...मराठी प्रदेश की महत्ता घटती ...बल्कि बढ़ती है। भाषा और संस्कृति ...से भी दो अलग अलग प्रान्त बनने ...नहीं हैं। जिन विषयों में इन ...के समान हैं, वे विषय दोनों की ...कमेटियों के द्वारा अधिक सुविधा-...हल किये जा सकते हैं।

...इस प्रकार, प्रत्येक दृष्टि से एक ...व विस्तृत संयुक्तप्रान्त के निर्माण ...अपेक्षा मराठीभाषियों के अलग ...दो स्वतन्त्र प्रान्तीय शासन बनाना ...अधिक श्रेयस्कर हैं। तर्क और स्वाभा-...दोनों दृष्टियों से अलग अलग ...प्रान्तों के आविर्भाव में ही इन प्रदेशों ...जनता का अधिक कल्याण है। इस ...पर मोह या दबाव की अपेक्षा मुक्त ...व स्वाभाविकता के साथ ही निर्णय ...चाहिए। आशा है, इस विषय का ...निर्णय अब शीघ्र कर लिया ...।

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ़ पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

मेरी तरह तंदरुस्ती हासिल करो
खराब खून को साफ करता है
डा. वामन गोपाल
आयोडाइज्ड सार्सापरिला
हर जगह मिलता है

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एल० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

मेरे श्वास में दुर्गन्धि ?

...युवकों की ७६% संख्या से दुर्गन्धि आती है !

...अनुभवों से यह निस्सन्देह सिद्ध ...है कि कोलगेट टूथ पाउडर को ...घटनाओं में से ७ घटनाओं ने यह ...कर दिया कि जवानी दुर्गन्धि शीघ्र ...हो गई।

...बचत—दूसरी दवाओं की अपेक्षा ...एक बड़े डिब्बे में दाँत साफ करने ...मात्रा अधिक रहती है, उससे बड़े ...में ४६ मात्रा अधिक रहती है। ...दाम वही है।

...करनेवाले—कोलगेट दाँत का ...की दुर्गन्धि और मैल को ...है।

...ही कोलगेट खरीद लीजिए।

कोलगेट टूथ पाउडर ...ही खरीदिए!

CLEANS BREATH AS IT CLEANS TEETH

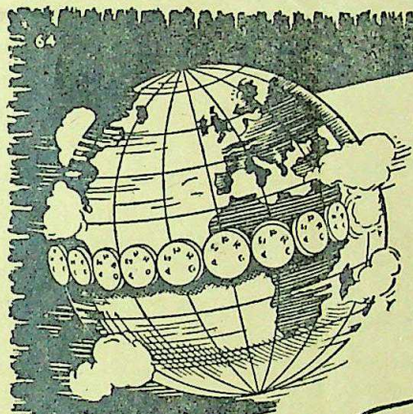

इस पेचीदी दुनियाँ में सीधी सादी चीजें ही वास्तविक हैं

दुनियाँ, पेचीदगियों से भरी हुई है। हमारे बड़े बड़े नेताओं को भी जनता की सदिच्छा की जरूरत पड़ती है। परन्तु हर समस्या का समाधान है। अगर आप गहरे पैठ कर देखें तो इस पेचीदगी के पर्दे में सीधा सादा सत्य आपको छिपा मिलेगा। अस्वस्थता का मुकाबला 'ऐस्प्रो' सीधे सादे सत्य से करती है। आप भले चंगे रह सकते हैं प्रकृति यही चाहती है। जीवन की पेचीदगियाँ ही आपके रास्ते का रोड़ा हैं। छोटी छोटी चीजें, जरा सा दर्द या बुखार का असर दिमाग पर पड़ता है और हाथ पैर ढीले पड़ जाते हैं। इन छोटी छोटी चीजों से आप सरलता से फौरन् छुटकारा पा सकते हैं—अद्भुत गुणवाली इन एक या दो सफेद टिकियों से। ये टिकियाँ प्रकृति की सहायता करेंगी ताकि वह अपनी पूरी ताकत के साथ आपको भला चंगा कर दे। बीमारी की भावना भाग जायगी और परिवार भर, स्वास्थ्य और सुख शान्ति का अनुभव करने लगेगा।

एक छोटी सी टिकिया आपको चंगा कर सकती है

'ऐस्प्रो' प्रकृति के साथ काम करती है उसके विपरीत नहीं

'ऐस्प्रो' हृदय को नुकसान नहीं पहुँचाती

'ऐस्प्रो'
दर्द और बुखार दूर करती है

हर जगह बिकती है

मर्द, औरत और बच्चे के लिये 'ऐस्प्रो' क्या करती है

५ मिनट में सिर दर्द रोकती है
रात भर में गठिया शान्त करती है
चन्द मिनटों में बुखार कम करती है
दाँत-दर्द और स्नायुशूल फौरन् बन्द करती है
दुःख दर्द भगाती है
नींद न आनेपर मीठी नींद लाती है
चिड़चिड़ापन दूर करती है
स्त्रियों का दर्द दूर करती है
इससे कुल्ला करने पर गले की खसखसाहट दूर होती है
सर्दी और इन्फ्लुएंजा का नाश करती है
किसी भी दवा से पहले डेंगू ज्वर उतारती है
संक्रामक रोगों से दूर रखती है

वितरक :
जे. एल. मौरिसन, सन ऐण्ड जोन्स (इण्डिया) लिमिटेड
पोस्ट बक्स ३८७ कलकत्ता फ़ोन कलकत्ता ७९६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिक्री के लिए तैयार है

वार्षिक बालसखा १९४७

इसकी सजधज अनूठी और नयन-मनोहर है। छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएँ और कहानियाँ अनु जिल्द भी सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का मूल्य ३)। मासिक ग्राहकों को रियायती मूल्य २॥) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

भारत सरकार द्वारा

डिसपोज़लज़ का पाक्षिक बुलेटिन

अब प्रकाशित हो रहा है

यदि आप को निम्न लिखित बातों में दिलचस्पी है :--

१. पब्लिक के सामने टेंडर खोल कर सुरक्षित मूल्य से सब से अधिक दाम के टेंडर देने वाले के हाथ बची हुई बिकाऊ सामग्री की सूची।

२. विशेष प्रकार की थोक और मिश्रित वस्तुओं के आवश्यक नीलाम और इन की विशेष बिक्री के विषय में सूचना।

३. सामान बेचने के बारे में विवरण, टेंडर देने के नियम और टेंडर देने की अन्तिम तारीख़।

४. बची हुई सामग्री के बारे में आवश्यक सूचना।

तो नीचे छपा कूपन अंग्रेज़ी में भर कर अपना नाम ग्राहकों में लिखवा लीजिए। ६ मास का चन्दा ५) मनीआर्डर या बिना कॉस किये पोस्टल आर्डर द्वारा पेशगी भेजिए। चैक या डाकख़ाने के स्टाम्प्स द्वारा चन्दा स्वीकार न किया जावेगा।

प्रत्येक अंक की परिमित प्रतियां आठ आने प्रति के दर से नई देहली, बम्बई, कलकत्ता, लाहौर, कानपुर, मद्रास, और कराची नगरों में डिसपोजलज़ के दफ़्तरों से भी प्राप्त हो सकती हैं। यह प्रतियां प्राप्त करने के लिये स्वयं जाना होगा।

COUPON

CUT HERE ..... CUT HERE

The Director of Publicity,
Directorate-General of Disposals,
Shahjahan Road, NEW DELHI.

Please enrol me as a subscriber for the Disposals Fortnightly Bulletin. Money Order No.————has been sent to you separately/Postal Order for Rs. 5/- is enclosed herewith, being my subscription for six months.

Name (in Block letters)

Representing Firms

Address (in Block letters)

Town (in Block letters)

Name of Trade Association or Chamber of Commerce

CUT HERE AC 269

Issued by the Directorate-General of Disposals, Industries and Supplies Department, New Delhi.

फिल्मी स्टार्स का सौंदर्य साबुन

"लक्स टॉयलेट साबुन के मलाईदार, सुगन्धित झाग से त्वचा-सौन्दर्य सुरक्षित रखिये" — सुलोचना चटर्जी कहती

LTS. 171-111-40 HI LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

भारत माता

अपने बच्चों से कहो ! कि वुड वर्ड का ग्राइप वाटर बच्चों को तंदुरुस्त रखता है

WOODWARD'S GRIPE WATER
keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी ! आप अपने बालक के हित के लिए अवश्य देख लिया करें।

1-WW 117—117 W. WOODWARD LTD., LONDON.

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, [illegible] प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद निम
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य ७॥)
=)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

अगस्त, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 31th August, 1947

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

नया विधान कैसा है?
भारत की परराष्ट्र नीति

भारतीय सरकार की ग्राम-सुधार-योजना
रंगमंच, मातृ-मंदिर, हास-परिहास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

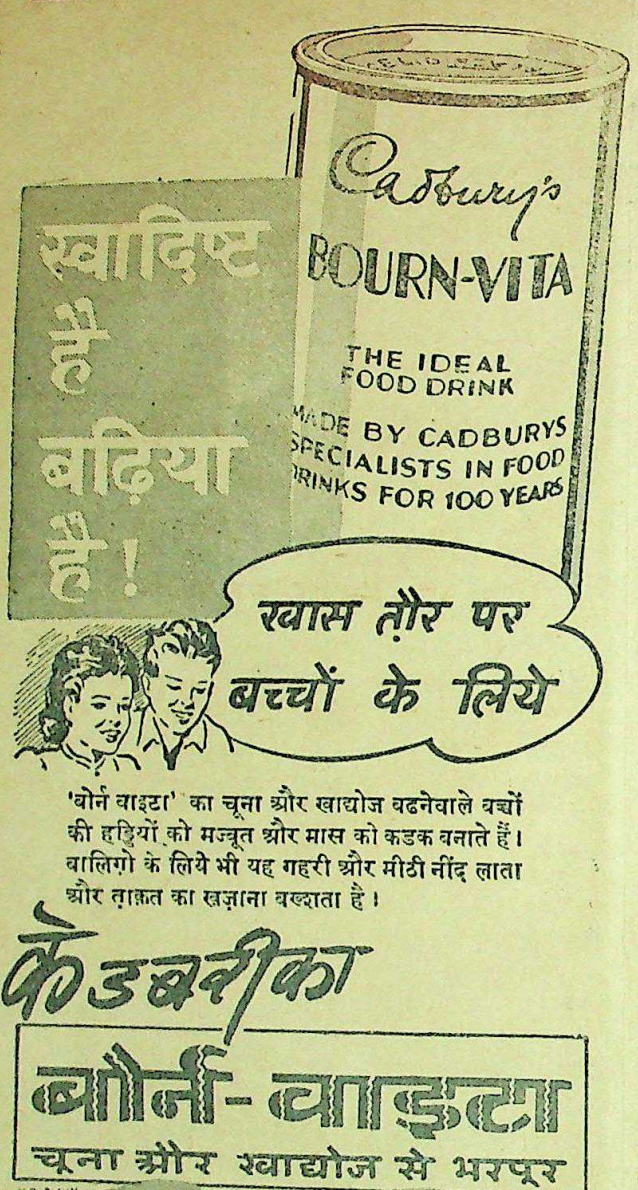

'बोर्न वाइटा' का चूना और खाद्योज बढनेवाले बच्चों की हड्डियों को मज़्बूत और मास को कडक बनाते हैं। बालिगों के लिये भी यह गहरी और मीठी नींद लाता और ताक़त का खज़ाना बख्शता है।

केडबरीका

बौर्न-वाइटा

चूना और खाद्योज से भरपूर

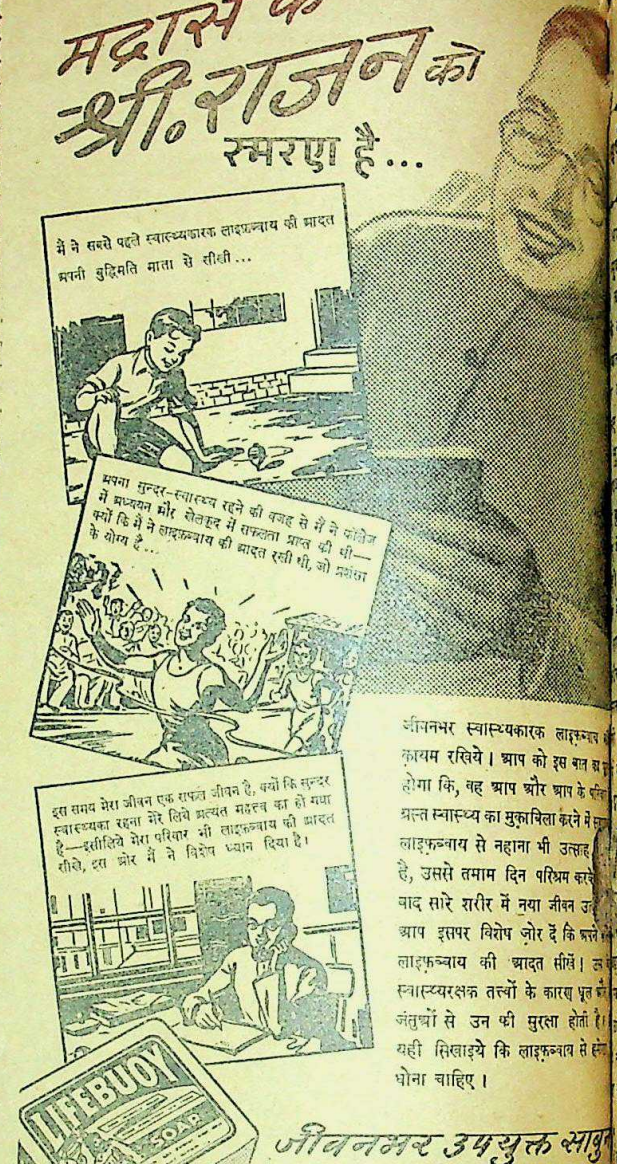

जीवनभर स्वास्थ्यकारक लाइफ़ब्वाय क़ायम रखिये। आप को इस बात का होगा कि, वह आप और आप के अन्त स्वास्थ्य का मुक़ाबिला करने में लाइफ़ब्वाय से नहाना भी उत्साह है, उससे तमाम दिन परिश्रम कार्य बाद सारे शरीर में नया जीवन उ आप इसपर विशेष ज़ोर दें कि अपने लाइफ़ब्वाय की आदत सीखें। उ स्वास्थ्यरक्षक तत्वों के कारण धूल जंतुओं से उन की सुरक्षा होती है। यही सिखाइये कि लाइफ़ब्वाय से धोना चाहिए।

जीवनभर उपयुक्त साबुन

लाइफ़ब्वाय

L. 89-172-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA)

मुफ्त मुफ्त मुफ्त

घर बैठे मामूली पढ़े-लिखे भी गवर्नमेंट रजिस्टर्ड इन्स्टीट्यूट का होम्योपैथिक बायोकैमिक का डाक्टरी का डिप्लोमा प्राप्त कर सकते हैं नियमावली मुफ्त मँगायें।

पता:—इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) नं० १२, अलीगढ़

सञ्चारिणी

इसमें भक्ति काल की अन्तर्चेतना, वर्तमान हिन्दी-साहित्य और शरद-साहित्य की सरस सुन्दर विवेचना की गई है। इसकी भाषा-शैली और विचारों पर मुग्ध होकर आचार्य शुक्ल जी के एक अनुयायी आलोचक ने लिखा था कि रवि बाबू के बाद इसी पुस्तक द्वारा सुन्दर, सुपुष्ट और भावपूर्ण लेखनी का चमत्कार दिखाई पड़ता है। यह पञ्जाब विश्वविद्यालय की हिन्दी प्रभाकर-परीक्षा में कई वर्षों तक पाठ्य-पुस्तक रह चुकी है। पृष्ठ-संख्या लगभग २७५; मूल्य सजिल्द २) दो रुपये।

मैनेजर बुकडिपो
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

क्या तुम अपने श्वास के कारण उसका (पुरुष को) चुम्बन देने से डरती हो

वह प्रेमपूर्ण शब्दों में बातें करता हुआ तुम्हारे पास झुकता है। परन्तु तुम्हें यह कैसे निश्चय हो सकता है कि तुम्हारा चुम्बन उसे प्रसन्न करेगा? क्या तुम्हें निश्चय है कि तुम्हारी श्वासें मीठी और ताजी हैं। याद रखिए १० व्यक्तियों में ७ की श्वास बुरी होती है जिनको वह स्वयं नहीं जानते।

इसलिए चौकन्ना रहना चाहिए। कोलगेट डेण्टल क्रीम को इस्तेमाल कीजिए। इसके घुसनेवाले फेन आपके दाँत की दरारों के बीच घुसकर कीटाणुओं और सड़े खाने के अंशों को जो अत्यन्त बुरी श्वास, मैले दाँत, सूजे मसूड़ों और दाँतों के सड़ने के कारण हैं, को दूर कर देते हैं। कोलगेट से दाँत अच्छी तरह और सुन्दरता के साथ साफ होते, मसूड़े स्वच्छ तथा श्वास मीठी होती है।

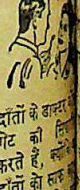

दाँतों के डाक्टर गेट की सिफ़ारिश करते हैं, क्योंकि दाँतों को साफ़ करता है और इनमें सड़न को रोकता है।

प्रतिदिन भोजन के पश्चात् और रात को सोने से पूर्व कोलगेट का प्रयोग कीजिए।

कोलगेट दाँतों को स्वच्छ और सुन्दर बनाता है...श्वास को मधुर करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

वर्ष ६, संख्या ५३] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, ३१ अगस्त, १९४७

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

महात्मा गांधी का कहना है कि विभिन्न प्रान्तों के जो नये गवर्नर हुए हैं, उन्हें झोपड़ियों में रहना चाहिए। देखना है गांधी जी के इस आदर्श का कांग्रेसी गवर्नर लोग कहाँ तक पालन करते हैं? लेकिन अपने राम की समझ में यह आता है कि स्वतन्त्रता मिले अभी जुम्मा जुम्मा पन्द्रह ही दिन हुए हैं, यदि वह झोपड़ियों में रहने लगेंगे तो इन गवर्नमेंट हाउसों का क्या होगा? वह कबूतरखाना बन जायेगा। फिर लंच, डिनर, टी, बेडिंग आदि का नफीस प्रदर्शन झोपड़ियों में कहाँ से हो सकेगा? १५ दिन पहले तो वह बढ़िया माल चाभते रहे, आनन्द से जिन्दगी बिताते रहे और आज जब गवर्नर हो गये तो क्या वह रमतेराम बन जायें? गवर्नर क्या हुए मानो एक आफत मोल ले ली। भगवान रामचन्द्र जी ने सीता जी के साथ ब्याह क्यों किया १४ वर्ष के वनवास की आफत मोल ले ली। प्रान्तों के गवर्नर लोग अगर यह पहले से जानते कि उन्हें झोपड़ियों में रहने का आदेश दिया जायेगा तो क्या उन्हें दुनिया में और कोई धंधा ही नहीं था? इसलिए कि गवर्नर तो गवर्नर ही हैं, वह महात्मा जी नहीं हो सकते।

* * *

कराची और चटगाँव के बन्दरगाह पाकिस्तानी उपनिवेश में पड़े हैं, इसलिए हिन्दुस्तान के लिए, अपने राम की राय में, ज्यादा अच्छा नहीं हुआ। क्योंकि जहाँ विदेशों से माल आया और पाकिस्तानी सरकार की ओर से खीस निपोरने की रस्म और भिखमँगाई शुरू हुई। ताजा उदाहरण है कि १५०० टन चावल बर्मा से हिन्दुस्तान आ रहा था। पूर्वी बंगाल के प्रधान मंत्री सर नाजिमुद्दीन ने देखा कि मौका अच्छा है, कुछ हड़पना चाहिए। महात्मा गांधी के सामने मामला गया, उन्होंने भी भारत-सरकार के भोजन-मंत्री डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद से अपील की है कि ५०० टन चावल पूर्वी बंगाल को दे दिया जाये। अपने राम की राय में न हर्रा लगा न फिटकरी, बैठे बिठाये सर नाजिमुद्दीन साहब वाहवाही लूट लेना चाहते हैं। पाकिस्तानी सरकार के चलाने का यह अच्छा खासा नमूना है। भूखों को भोजन देना बुरा नहीं लेकिन पाकिस्तानी सरकार को, जिसने बंगाल को बरबाद और तबाह कर दिया, उसे भूखों के नाम पर मदद देना शुद्ध जुआ खेलना है। राष्ट्र का बँटवारा कराते हुए लीगियों ने समझा कि पकवान उड़ाने का दिन आ गया। लेकिन उर्द-अरहर का भाव अब मालूम हो रहा है। अभी क्या हिन्दुस्तान सरकार को धीरे-धीरे पाकिस्तानी सरकार की लीला देखने को मिलेगी, जरा ठहरिये तो सही।

* * *

पंजाब में बँटवारा होने के पहले और अभी तक साथ ही क्वेटा में अल्प-

श्रीमती अरुणा आसफअली अपने पति से मिलने के लिये लंदन जा रही हैं।

संख्यकों के साथ बहुमत ने कैसा अन्याय किया, हिंसा, हत्याकाण्ड और आगजनी से अल्पसंख्यकों के जान-माल की कितनी हानि हुई इसका कोई अन्दाज नहीं। कहना यह चाहिए पश्चिमी पाकिस्तान से अल्पसंख्यकों की एक तरह से सफाई हो गई है। अपने राम की राय में यह सफाई जान-बूझकर की गई है कि न रहेगा बाँस और न बजेगी बाँसुरी। पाकिस्तानियों ने सोचा कि अल्पसंख्यक हैं झगड़े की जड़, इसलिए कुछ को करो साफ और कुछ यों ही भाग खड़े होंगे, फिर तो अपने देश में अपना राज्य होगा। मजा यह है कि इन भयंकर हत्याकाण्डों से पाकिस्तानियों को कोई सहानुभूति भी नहीं है। इसका तरोताजा उदाहरण है कायदे आजम मियाँ जिन्ना की अपील।

* * *

कायदे आजम जिन्ना ने पंजाब में हत्याकाण्डों के शिकार होनेवाले मुसलमानों के प्रति अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रगट की है क्योंकि वह पाकिस्तान के गवर्नर जनरल ही नहीं, पाकिस्तानी विधान परिषद् के सभापति हैं, मुस्लिम लीग के प्रेसीडेंट हैं साथ ही पाकिस्तान के वैधानिक सलाहकार भी हैं। यानी पाकिस्तानी उपनिवेश के वह सभी कुछ हैं। ऐसी हालत में पंजाब के हों या सीमाप्रान्त के, क्वेटा के हों या सिंध के, सिलहट के हों या पूर्वी बंगाल के कहीं के भी हों, मुसलमानों के प्रति सहानुभूति दिखाने का उन्हें पूरा हक है। लेकिन पाकिस्तान के अल्पसंख्यकों के प्रति कायदे आजम की क्या राय है, इसे कौन जाने? इधर हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल हैं लार्ड लुई माउंट बेटेन, भला उन्हीं के मुखारविन्द से पंजाब और क्वेटा के पीड़ित अल्पसंख्यकों के प्रति सहानुभूति के चंद अल्फाज निकल आते तो क्या बात थी, लेकिन उन्हें क्या? बेचारे पंडित नेहरू फटफटा रहे हैं, पाकिस्तान के अल्पसंख्यकों की सिवा अल्लामियाँ के और कौन सुननेवाला है।

अथ पाकिस्तानी-नीति प्रारम्भः

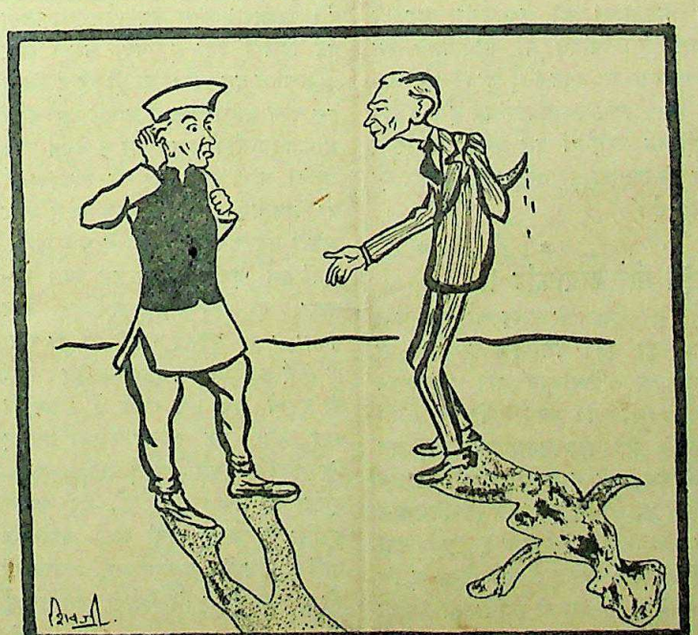

आनेवाले भविष्य ने अपनी परछाईं पहले से ही दिखान प्रारम्भ कर दी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

पहला पाकिस्तानी फरमान

सीमाप्रान्त के स्वाभिमानी पठानों का सर्वप्रिय मंत्रिमंडल आखिरकार भंग कर दिया गया। पाकिस्तान के सर्वेसर्वा कायदे आजम ने, जो कि अपने को आत्म-निर्णय का प्रबल समर्थक कहते हैं, इसी सिद्धान्त पर पाकिस्तान प्राप्त किया है। परन्तु आज निर्भीक, राष्ट्रवादी और भारतीय स्वतन्त्रता के लिए बलिदान देनेवाली पठान जाति पर पाकिस्तान के गवर्नर जनरल और अँगरेज गवर्नर द्वारा जो प्रहार हुआ है क्या सभ्य और शान्तिप्रिय देश इस कार्य की प्रशंसा करेंगे? जिस सिद्धान्त पर पाकिस्तान प्राप्त हुआ है वह केवल साम्प्रदायिकता ही है। फिर एक मुसलमान अपने भाई दूसरे मुसलमान के मूलभूत अधिकारों को इस प्रकार जबरदस्ती अपहरण कर ले यह कहाँ का न्याय है? इसके अतिरिक्त सत्ता हस्तान्तरित करते समय दो स्वतन्त्र राज्यों, भारत और पाकिस्तान की राज-धानियों से यह भी घोषणा की गई थी कि गवर्नर अथवा गवर्नर जनरल अपने सर्व-प्रिय मंत्रिमंडलों की राय से प्रान्तों और उपनिवेशों पर शासन करेंगे। अभी तक सीमाप्रान्त में ऐसी कोई स्थिति नहीं पैदा हुई थी कि मंत्रिमंडल भंग कर दिया जाता। डाक्टर खान साहब और उनके साथी सर्वदा ललकारते रहे हैं कि मंत्रि-मंडल में व्यवस्थापिका सभा का पूर्ण विश्वास है फिर कांग्रेस मंत्रिमंडल को इस प्रकार बिना कारण के भंग कर देना कहाँ तक न्यायसंगत है?

सीमाप्रान्त के गवर्नर सर जार्ज कनिंघम युक्तप्रान्त के मारिस हैलेट से कहीं अधिक अनाचारी शासक हैं। इससे भी पहले मिस्टर कनिंघम ने डाक्टर खान के मंत्रिमंडल के पूर्व भी कांग्रेस सदस्यों को जेल में रखकर लीगी मंत्रि-मंडल की स्थापना में अनैतिक सहयोग दिया था। डाक्टर खान साहब के शासन-प्रबन्ध और मंत्रिमंडल के कार्यों में अँगरेज गवर्नर सर्वदा अड़ंगा लगाता रहा है। इसी पक्षपाती नीति से ऊबकर मत-विभाजन के समय डाक्टर खान साहब और उनके सहयोगियों ने मिस्टर कनिंघम के दो हफ्ते पहले ही प्रान्त छोड़ देने की माँग की थी। हुआ भी वही, जो पठान चाहते थे। कनिंघम को प्रान्त से हटना पड़ा। पाकिस्तान सरकार और उसके गवर्नर जनरल ने कनिंघम को पुनः सीमाप्रान्त के गवर्नरी आसन पर ला बिठाया। आखिरकार कनिंघम और कायदे आजम दोनों के षड्यंत्र से सीमाप्रान्त के सर्वप्रिय मंत्रिमंडल को भंग कर दिया गया। गवर्नर जनरल अथवा गवर्नर को ऐसे अधिकार नहीं हैं कि वह मंत्रिमंडल बिना जनता की राय लिये भंग कर दे। किन्तु फासिस्टवादी नीति के सामने न्याय की आशा की आशा ही कैसे की जा सकती है?

मिस्टर अब्दुल कयूम खाँ, जिनकी ओजस्विनी वक्तृता किसी दिन दिल्ली के गवर्नमेंट हाउस में अँगरेजों को दहलाती थी, आजादी पर कुरबान होने-वालों के समर्थन में देश का मस्तक ऊँचा करती थी, आज वही मियाँ कयूम पद के लोभ में देश और सीमाप्रान्त की जनप्रिय सरकार के लिए कुठार हो गये हैं। दिल्ली में गवर्नमेंट हाउस के उनके वे वक्तव्य कभी भी नहीं भूले जा सकते जिसे उन्होंने सन् १९४२ के आन्दोलन के सम्बन्ध में दिये गये थे। उन्होंने सरकार को लक्षित करते हुए कहा था—"आप हमसे युद्ध सहायता चाहते हैं। पर, क्या आप इस बात को भी भूल जाते हैं कि हमारे देश के स्वतन्त्रताप्रिय नागरिकों पर बलिया में बमवर्षा की जा रही है। फिर सहायता की बात कैसी?" मियाँ कयूम को तो स्वयं यह चाहिए था कि आत्मनिर्णय को पसन्द करनेवाली मुस्लिम लीग को गलत निर्णय के लिए रोकते। पर वे तो स्वयं ही मंत्रिमण्डल बनाने के लिए तुल गये हैं। क्या उन्हें यह विश्वास है कि वे अपने मंत्रिमंडल को अधिक दिन चला सकेंगे? किसी उर्दू शायर का यह कहना कि, 'नाव कागज की कभी चलती नहीं?' हमारी तो यही राय और विश्वास है कि महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय मुसलमानों को जो राय दी है उन्हें वही करना अधिक श्रेयस्कर है। गांधी जी ने कहा है कि, "वे मुस्लिम लीग में सम्मिलित होकर उसे प्रतिक्रियावादी और दकियानूसी सिद्धान्तों से बचावें।" मंत्रिमंडल भंग होने के बाद खान साहब अथवा उनके साथी बिना कुछ कहे अपने-अपने घरों को चले गये हैं। यह शान्ति अपना प्रभाव अवश्य दिख-लायेगी। पठानों के पक्ष का समर्थन अफगान सरकार भी कर रही है। संयुक्त-राष्ट्र संघ के लिए अफगान प्रतिनिधि सरदार अब्दुल हमीद खाँ ने कहा है कि "जब तक पख्तूनों के अधिकार न मिलेंगे अफगान राष्ट्र चुप न बैठेगा। यह हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम सीमाप्रान्त के अधिकारों की रक्षा करें।" इन वाक्यों से सीमाप्रान्त का एकाकीपन दूर हो जाता है। भारत तो सीमाप्रान्त की स्वतन्त्रता का समर्थक है ही। पर वहाँ के पठान स्वयं स्वतन्त्रताप्रिय हैं। वे चुप नहीं बैठ सकते हाँ इस समय पाकिस्तान की निरंकुशता तो उन्हें परेशान कर ही रही है।

* * *

ये दंगे और हत्याकांड !

१५ अगस्त से राष्ट्र को स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई। वैधानिक दृष्टि से दो उपनिवेश—हिन्दुस्तान और पाकिस्तान स्थापित हो गये। अब तक तो कहा जाता था कि दंगों और हत्याकाण्डों की जड़ प्रतिक्रियावादी ह जो भारत का विभाजन चाहते ह, लेकिने अब जब कि विभाजन हो गया, तब फिर पुरानी हाय हाय क्यों गतिशील हो रही है? सच तो यह ह कि जब किसी भी देश को स्वाधीनता मिलती है तो वहाँ एक बार उथल-पुथल होती ही ह। भारत के लिए यह संक्रान्ति काल है। साम्प्रदायिकता इधर-उधर उभड़ती हुई दिखाई देती है, दंगे, फसाद और हत्याकाण्ड इधर-उधर हो ही रहे हैं किन्तु इस वक्त आवश्यकता है प्रान्तीय सरकारों और जनता दोनों के एक सूत्र में बँधने की। शान्ति और सुव्यवस्था की स्थापना न तो लोकप्रिय सरकार के सान का है और अकेले जनता के ही। कम से कम कांग्रेस जनों तथा जनसेवकों को इस वक्त दल-बन्दी, पद-लोलुपता, स्वार्थपरता और गंदगी से दूर होकर राष्ट्रीयता की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए। नहीं तो पुराने तथा नये राज्य में अन्तर ही क्या रहेगा। यह स्मरण रखना चाहिए कि अँगरेज चले गये हैं लेकिन उनके एजेंटों की संख्या अपार है, वह अपनी पुरानी आदत से जल्दी बाज आनेवाले नहीं हैं। दंगों, हत्याकाण्डों, अनाचारों को दूर करने की जिम्मेदारी उन पर है जो राष्ट्रवादी ह। जनता उनके साथ है, उन्हें सक्रिय कदम उठाने की जरूरत ह।

हिन्दी ही राष्ट्रभाषा क्यों हो

भारतीय संस्कृति, विचारधारा और राष्ट्रीयता की

लेखक, श्री चुन्नीलाल शर्मा, एम० ए०

हिन्दी का जन्म हिन्दू के जन्म के साथ है। राष्ट्रीयता हिन्दुत्व के साथ बँधी है। चाहे हिन्दी भाषा-भाषी विद्वान् राष्ट्रभाषा का जन्म संस्कृत से मानें, अथवा प्राकृतिक और अपभ्रंश भाषा ही को इसकी जननी माने, किन्तु यह तो निस्संदेह सिद्ध है ही कि हिन्दी इस देश की बोलचाल की भाषा अनादि काल से रही है। ग्रामीण जन-वर्ग के सम्पर्क में विदेशी भाषाएँ—आँग्ल, फारसी तथा अरबी—काम नहीं दे सकतीं। वहाँ तो हिन्दी ही उनका एकमात्र आश्रय है। ब्रजभाषा का रसपान करना है तो ब्रज-भ्रमण करके देख लीजिए। वहाँ आज भी श्रीकृष्ण तथा गोपियों की रासलीला इसी भाषा में होती है। सूरदास के ऊधो न रहे हों किन्तु अब भी ब्रजभूमि की धूलि को अनेक पवित्र गृहस्थ और संन्यासी मस्तक नवाते हैं। उनके पद, ब्रज के बाल-गोपालों की नित्य नूतन कहानियाँ बन गये हैं। इस अधोन्मुख राष्ट्रीयता के कुछ कण अब भी आपको द्वापर के कृष्ण में न सही परन्तु कलियुग के कंकाल ब्रज के पीड़ित कृषकों में अवश्य मिलेंगे। माखनचोर यशोदानन्दन खोजे न मिलें किन्तु माखन चुराकर क्रीड़ा करने-वाले शिशु अब भी मिलेंगे। इसी को कहते हैं भाषा और राष्ट्रीयता का समन्वय होना। अवधी अवध की भाषा है। वहाँ तुलसी न हों, परन्तु आज भी उनके व्यवहार की भाषा वही है। उत्तरी भारत के कोने-कोने में श्रीमद्-रामचरितमानस का पाठ प्रायः प्रत्येक हिन्दू घराने में किया जाता है। इसी प्रकार आप प्रान्तीय भाषाओं की विशेषता का उनके विभिन्न प्रदेशों से अनुमान लगा सकते हैं। क्योंकि वे ही उनके जीवन की एकमात्र अधिष्ठात्री हैं। यदि एक पंजाबी तथा बंगाली सज्जन को अपनी जातीय भाषा का ज्ञान नहीं है तो वह अपनी राष्ट्रीयता से भी अवश्य हाथ धो [illegible] उनकी वेश-भाषा ही उनके चरित्र [illegible] चय देने के लिए यथेष्ट न होगी। [illegible] आवश्यकता इस बात की है कि [illegible] प्रान्तीय भाषा का प्रवेश किस [illegible] हो चला है। कहाँ तक उनके [illegible] के जीवन का सामंजस्य अपनी [illegible] प्रति हो गया है। कोई उड़िया, [illegible] बिहारी अथवा पश्तो भाषा-भाषी [illegible] का मनुष्य तभी अपनी प्रान्तीय [illegible] पूर्ण परिचय दे सकता है, जब हि [illegible] जीवन में उड़िया-मलयालम, तेलगु, [illegible] बिहारी तथा मराठी आदि प्रान्तीय [illegible] ने विशेष स्थान प्राप्त कर लिया [illegible] उत्तर-पश्चिमी प्रान्तवाले भाई हे [illegible] उसका केवल लम्बा कद ही अ [illegible] नहीं, किन्तु उसके जीवन में [illegible] भाषा तथा राष्ट्रीयता का समन्व [illegible] तक हुआ है, यह प्रमुख होना [illegible] इसी प्रकार सम्पूर्ण भारत की [illegible] प्रान्तीय भाषाओं से वहाँ के नि [illegible] का ज्ञान होता है। यहाँ प्रश्न यह [illegible] होता है कि क्या एक प्रान्तीय [illegible] में अपनी एकदेशीय भाषा से [illegible] सकता है? हमारे दृष्टिकोण से [illegible] नितान्त असम्भव तथा हास्यास्पद [illegible] वहाँ उसको अपनी भाषा का [illegible] करने में कठिनाई और बाधा दे [illegible] का सामना करना पड़ेगा। यह तो [illegible] ही हुआ जैसे कि किसी गूँगे के [illegible] गुड़ दिया जाय अथवा किसी बहिरे [illegible] से सुनने के लिए हठ किया जाय। उस [illegible] को तो ऐसे स्थान से मूक लौटने के [illegible] रिक्त और कोई चारा ही नहीं [illegible] तब आप ही विचार कीजिए कि [illegible] समन्वय के प्रान्तीय भाषाएँ भी [illegible] प्रान्तों की रानी रहकर सम्पूर्ण [illegible] वसुन्धरा की सम्राज्ञी नहीं हो [illegible] यह अधिकार तो हिन्दी के लि [illegible] धरोहर के रूप में सुरक्षित है।

राष्ट्रीयता की परिभाषा बड़ी [illegible] तथा व्यापक है। अनेक इतिहास-[illegible] ने इसको विभिन्न रूपों से अलंकृत [illegible] है। पश्चिमी देशवालों के लिए [illegible] राष्ट्र की संस्कृति, भाषा और [illegible] में ही उनके जीवन की कहानी समा [illegible] है। चीन के मनुष्यों में डा० सुनियत [illegible] तथा उनके पूर्वजों की भाषा और [illegible] ही उनकी राष्ट्रीयता है। सुदूरपूर्व [illegible] ईस्ट) वालों के लिए वहाँ की [illegible] भाषाएँ ही उनकी राष्ट्रीयता का [illegible] देती हैं। हो सकता है अखिल भार [illegible] राष्ट्रीय कांग्रेस की राष्ट्रीयता की [illegible] भाषा हिन्दुस्तान की विभिन्न जाति [illegible] समीकरण में हो। मुसलमान [illegible] सभ्यता को ही आधार-स्तम्भ [illegible] अपनी राष्ट्रीयता की व्याख्या [illegible] अन्य अल्पसंख्यक जातियाँ भी भार [illegible] राष्ट्रीयता के नारे से अपने को [illegible]

शेष पृष्ठ १८ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान का नया विधान

संसार के समाजवादी दृष्टिकोण से नये विधान के कुछ पहलुओं की नाप-तोल

लेखक, श्री मन्मथनाथ गुप्त

भारतीय विधान-परिषद् स्वतन्त्र भारत के लिए विधान तैयार कर रही है। जो विधान तैयार हो रहा है वह ब्रिटिश तथा अमरीकन विधान के नमूने के अनुसार है। इस लेख में प्रसिद्ध समाजवादी विचारक श्री गुप्त ने नये विधान के दो-एक पहलुओं की नाप-तोल की है और यह बतलाया है कि जो विधान आज बन रहा है जनतन्त्र की दृष्टि से उसमें परिवर्तन होना अनिवार्य है। लेख विचारणीय तथा पठनीय है।

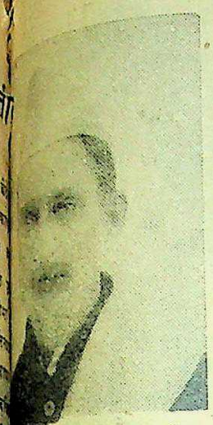

विधान-परिषद् के सभापति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद।

भारतीय उपनिवेश के उपप्रधान मन्त्री सरदार बल्लभ भाई पटेल।

...वर्ष विभाजित होकर कथित ... और पाकिस्तान में बँट ... १५ अगस्त से भारतवर्ष दो ... के रूप में काम करने ... भारतीय विधान-सम्मेलन ... बना रहा है। यही विधान ... में लागू किया जायेगा ... का अलग विधान-सम्मेलन ... वहाँ का विधान शीघ्र ही ... हम यहाँ पर इस विषय में ... नहीं करेंगे कि पाकिस्तान का ... किस प्रकार का विधान ... पर लीग के नेताओं ... आदि से ज्ञात होता ... पाकिस्तान का विधान भी शायद ... के विधान के अनुसार ही बने। ... विधान बनने से ही शासन ... ऐसी कोई बात नहीं है। ... इस सम्बन्ध में एक बहुत ... घटना संवादपत्रों के पाठकों के ... है। यद्यपि इस घटना के ... यह कहा जाता है कि यह ... घटित हुई, फिर भी प्रत्येक ... इस बात को भली भाँति समझ ... भारतवर्ष में भी किसी भी ... घटना घटित हो सकती थी। ... है कि चीनी केन्द्रीय सरकार ... अमेरिका भ्रमण करने ... जाकर वे इतने प्रभावित ... उन्होंने यह तय कर लिया कि ... भी इसी नमूने पर बनाना है। ... उन्होंने लौटकर यह नारा दिया ... चीन में रात की रोशनी की ... उन्नत किया जाय। उन्हें ... रहते समय ऐसा मालूम हुआ ... देश की रोशनी-पद्धति जितनी ... वह देश उतना ही आधुनिक ... है। तदनुसार उनके प्रभाव ... सरकार ने १० लाख डालर ... कि पहले किसी एक शहर से ... को शुरू किया जाय। ... विचारने पर इस काम के ... शहर चुना गया। ... जो गवर्नर थे उनको बुलाकर ... कि हम लोगों ने यह तय किया ... शहर की रोशनी-पद्धति को ... आधुनिक बनाया जाय। जिस ... दिमाग में यह योजना पहले ... थी ये १० लाख उन्हीं के ... गये थे। इन महाशय ने गवर्नर ... कहा कि देखिए सरकार ने पिकिंग को चुना है। सरकार चाहती तो और किसी शहर को चुनती; मैं आपको ७½ लाख डालर इस काम के लिए देता हूँ। गवर्नर ने अपने मातहत सेक्रेटरी को बुलाकर कहा कि सरकार ने ५ लाख डालर पिकिंग की रोशनी के लिए खर्च करने का निश्चय किया है। आप कृपया जल्दी से जल्दी इस कार्य को कर दें।

सेक्रेटरी ने पिकिंग के मेयर को बुलाकर कहा कि देखिए घर बैठे आपको नाम कमाने का अच्छा मौका लगा है। सरकार बहादुर ने पिकिंग शहर की रोशनी-पद्धति को आधुनिक बनाने के लिए २½ लाख डालर दिये हैं। यह रकम आपके सुपुर्द की जाती है। आप कृपया जल्दी से जल्दी इस कार्य को कर डालें।

तब मेयर ने पुलिस कप्तान को बुलाकर कहा कि सरकार बहादुर की यह इच्छा है कि पिकिंग शहर की रोशनी-पद्धति की उन्नति की जाय। सरकार ने इसके लिए जो ५० हजार डालर मंजूर किये हैं, वे आपके सुपुर्द किये जाते हैं। आप कृपया जल्दी से जल्दी इसकी व्यवस्था करें। तब पिकिंग के पुलिस कप्तान ने सब पुलिसवाले सिपाहियों को अपने सामने बुलाया और कहा कि सरकार की राय में पिकिंग की सड़कों में जितनी रोशनी रहती है, वह नाकाफी है, इसलिए अब से तुमको यह ताकत दी जाती है कि जो दूकानदार अपनी दूकान के सामने एक बत्ती रात भर न जलावे, या जो मकानवाला अपने मकान के सामने रात भर एक बत्ती न जलावे उससे तुम उसकी हैसियत के मुताबिक जुर्माना वसूल कर सकते हो। इस प्रकार से पिकिंग शहर को आधुनिक बनाया गया।

इस घटना से स्पष्ट है कि केवल सुन्दर विधानों से कोई कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। विधान सुन्दर बनने के साथ-साथ उसे काम में लाने के लिए सही संगठन होना चाहिए। पर यहाँ तो हम योंही इस बात पर निकल आये। हम तो विधान-सम्मेलन द्वारा बनाये हुए विधान की मोटी-मोटी बातों पर दिग्दर्शन कराकर यह देखना चाहते हैं कि कहाँ तक विधान सही बना। विधान-सम्मेलन ने जो विधान अब तक बनाया उसके सम्बन्ध में सबसे पहली बात जो हमारी दृष्टि के सामने आती है, वह यह है कि इसमें ब्रिटिश नमूने और अमेरिकन नमूने को सामने रखकर काम किया गया है। दुनिया में इस समय जो लोकतान्त्रिक देश है, उन्हें मुख्यतः दो भागों में बाँटा जा सकता है, एक तो पूँजीवादी लोकतान्त्रिक देश और दूसरे समाजवादी लोकतान्त्रिक देश। पूँजीवादी लोकतान्त्रिक देशों में ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस आदि हैं। इन देशों में प्रत्येक व्यक्ति को वोटाधिकार होते हुए भी उत्पादन के साधन एक विशेष वर्ग के हाथों में रहने के कारण यह वोटाधिकार बहुत कुछ व्यर्थ-सा हो गया है। जनता को दो या तीन पूँजीवादी दलों में से एक के नामजद किये हुए व्यक्ति को अपने प्रतिनिधि के रूप में चुनना पड़ता है। हैराल्ड लास्की ऐसे पूँजीवादी लेखक को भी यह माननी पड़ा है कि इँगलैंड आदि देशों के विधानों में सार्वजनिक वोटाधिकार होते हुए भी, उन देशों में असली सार्वजनिक प्रतिनिधियों को पार्लियामेंटों में पहुँचने की कोई गुंजाइश नहीं है।

इसके विपरीत रूस का विधान दूसरी ही नींव पर बना हुआ है। वहाँ वोट को उतना अधिक महत्त्व नहीं दिया गया जितना कि इस बात को दिया गया कि उत्पादन के साधन सही रूप में जनता के हाथों में आवें और फिर उसे वोट का भी अधिकार मिले। वार्गिक विषमता तथा समाज का शोषक और शोषित दो वर्गों में विभाजित होना और साथ ही सबको वोट के अधिकार होने का कोई अर्थ नहीं होता। इसीलिए रूस में वास्तविक लोकतंत्र सम्भव हुआ है। वहाँ के लोगों में शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति की जितनी उन्नति हुई है और जितने थोड़े समय के अन्दर हुई है, वह अभूतपूर्व है। इस बात को समाजवाद के सब विरोधी भी मानते हैं।

दुख है कि भारतीय विधान-परिषद् ने प्रथम नमूने का ही अनुसरण किया; पर दुख की बात भले ही हो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। जब बार-बार कांग्रेस के कुछ नेताओं की तरफ से किसान-मजदूर-राज्य का नारा दिया गया था, तब हमने इसका विश्लेषण करते हुए कहा था कि यह नारा सही नहीं हो सकता। मैंने 'अगस्त-क्रान्ति और प्रति क्रान्ति' में मार्क्स के इन वचनों को उद्धृत किया था "जैसा कि वैयक्तिक जीवन में हम इस बात में फर्क करते हैं कि एक आदमी अपने विषय में क्या सोचता है और क्या कहता है तथा वह वास्तविक रूप से क्या है और कैसे काम करता है, उसी प्रकार दल या गुट्ट ऐतिहासिक संग्रामों में जो नारे देते हैं, तथा उनकी

शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

बिजली गिरनेवाली थी !

लेखक, श्री भरत व्यास

भड़क उठा था सघन समुन्दर, नाव नहीं तिरनेवाली थी !
हाय ! न रोके रुकी, एक दिन जो किस्मत फिरनेवाली थी !
गरज रहे थे मेघ गगन में, प्रलय-घटा घिरनेवाली थी !
कड़क रही थी हाय ! एक दिन यह बिजली गिरनेवाली थी !
घुटने टेक दिये 'झण्डे' ने, टूट गई जय की रणभेरी !
अपने बच्चों के हाथों से फूट गई किस्मत माँ तेरी !
ये जलील-बच्चे माँ तेरे, आज परस्पर भेद कर गये !
कुत्ते ! जिस थाली में खाते थे उस ही में छेद कर गये !
तेरी छाती का पय पीकर ये बेशर्म कृतघ्न पले हैं,
रो ले ! तेरी ही छाती पर आज इन्होंने मूँग दले हैं !
आँख बदलते नमकहरामों को कण भर भी लाज न आई।
तुम्हें चीर डाला चोरों ने, और जरा आवाज न आई !
आसमान ! तूने देखा दो टुकड़े होते पर न फटा तू !
वृद्ध हिमालय ! नाक कटी पर एक इंच भी नहीं कटा तू !
काशी ! इस तेरे शंकर की आज तीसरी आँख न जागी !
गंगे ! इन तेरी लहरों में आज निगोड़ी आग न लागी !
युग बदला, 'नक्शा' बदला, लो ! बदल गया, इतिहास तुम्हारा,
घर बदले, धरती बदली, औ' बदल गया आकाश तुम्हारा,
मन बदले, आँखें बदलीं, बदला युग-युग का प्यार तुम्हारा !
'राष्ट्र-गीत' बदले, 'ध्वज' बदले, बदल गया संसार तुम्हारा !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय आजादी के बाद

ठोस आजादी के लिए एक शक्तिशाली संगठन

लेखक, श्री श्यामबिहारी विरागी, बी० ए०

१५ अगस्त को स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई किन्तु अब कांग्रेस को ही नहीं प्रत्येक भारतीय को उसकी रक्षा ही नहीं करनी है बल्कि परेशानियों में पड़ी हुई करोड़ों जनता का संकट दूर करना है। इस लेख में १५ अगस्त का महत्त्व बतलाते हुए जनता को आगाह किया गया है कि वह राष्ट्रीय सरकारों की सहायता करे। लेख सामयिक है।

"हमने अपनी आजादी के प्रथम प्रभात को देश भर में पूर्ण समारोह, सज-धज तथा उत्साह के साथ मनाया है। हमारा नया तिरंगा झंडा उस नये राष्ट्र-निर्माण का एक-मात्र चिह्न है जिसमें हम १६ अगस्त से प्रवेश कर चुके हैं। मुझे आशा है कि इस सूबे का हर नागरिक स्वतंत्रता-दिवस की महत्ता तथा गौरव को समझगया होगा पिछले लगभग १,००० वर्षों में ऐसा दिन कभी नहीं आया जो भारत के उज्वल भविष्य की ओर स्पष्टरूप से संकेत करता। हमारी आशाएं बहुत बड़ी हैं। हम अपने राष्ट्र को संसार के अन्य राष्ट्रों क बराबर केवल खड़ा ही करना नहीं चाहते बल्कि संसार के अन्य राष्ट्रों में अमर शान्ति कायम करने में अपना प्रमुख हाथ रखना चाहते हैं।" उपरोक्त वाक्यों को संयुक्तप्रान्त के प्रधान मंत्री माननीय पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त ने अभी हाल में पत्रकारों के एक सम्मेलन में कहा था। जैसा कि सबको ज्ञात है कि १५ अगस्त को अँगरेजों ने भारत तथा पाकिस्तान के औपनिवेशों को शासन हस्तान्तरित करके कांग्रेस के ९ अगस्त सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव को पूरा किया है। राष्ट्रीय दृष्टि से यह दिन सचमुच बड़ी खुशी का दिन था।

दृष्टिकोण-परिवर्त्तन की आवश्यकता

सैकड़ों वर्ष से हमारी आदत सरकार से लड़ने की बन गई है। पिछली सरकार विदेशी थी। उसे हटाना हमारा फर्ज था। परन्तु अब परिस्थिति बिलकुल दूसरी है। १५ अगस्त से जो सरकार बनी है वह राष्ट्र की है। जनता की इस सरकार को हम उसी वक्त सफल बना सकेंगे जब हमारा दृष्टिकोण पूर्ण परिवर्त्तित होकर सरकार को अपना समझने का हो जायगा। वदेशी सरकार से लड़ना शोभा देता था अपनी सरकार से लड़ना अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारना है। समय का तकाजा है कि हम हृदय से सरकार-भक्त बनें ताकि हमारी नई सरकार कुछ ठोस कार्य करके जनता को लाभ पहुँचा सके। इस नई सरकार को एक आदर्श संस्कार कायम करना है। यह काम आसान नहीं। इसके लिए मिनिस्टरों को अथक परिश्रम करना होगा। सरकार की जो वर्तमान व्यवस्था है वह बिलकुल सन्तोषप्रद नहीं। बहुत से सरकारी कर्मचारियों में अभी भी वही मनोवृत्ति काम कर रही है। मिनिस्टरों को पूरी सरकारी का कायाकल्प करना पड़ेगा। ऐसी परिस्थिति में जनता की ओर से सरकार के कर्णधारों के पथ में रुकावट ले आना श्रेयस्कर नहीं। अभी तक हम गुलाम देश थे अब हम स्वतंत्र राष्ट्र बने हैं। स्वतंत्र राष्ट्र के नागरिकों की तरह हमें अपना दृष्टिकोण बनाना होगा। दास प्रवृत्तियाँ हमारे अन्दर घुसकर घर बना चुकी हैं। इन्हें निकालना होगा। एक-एक क्षण हमें सोचना है कि हम स्वतंत्र हैं।

हिन्दू-महासभा गलत रास्ते पर

हिन्दू-महासभा की "जंगी कमेटी" ने अभी हाल में एक प्रस्ताव द्वारा यू० पी० सरकार के विरुद्ध खुली कार्यवाही' करने का निश्चय किया था; यह बात सही है कि भारत-विभाजन से हिन्दुओं को बहुत ठेस पहुँची है और मुस्लिम लीग की गुण्डागिरी से हिन्दुओं की बहुत बड़ी क्षति हुई है; परन्तु इसका बदला यू० पी० सरकार के विरुद्ध आन्दोलन करके तो नहीं निकाला जा सकता। कांग्रेस तो आज भी भारत को एक करने के लिए तैयार है। इसके लिए तो मुस्लिम लीग के कर्णधार नहीं तैयार हैं। पन्त जी ने हिन्दू-महासभा के आन्दोलन की ओर संकेत करते हुए ठीक ही कहा है कि अगर भारत और पाकिस्तान को फिर मिलाना है तो इसके आन्दोलन के लिए यू० पी० क्षेत्र नहीं। हिन्दू-महासभा का वास्तविक क्षेत्र तो पाकिस्तान है जहाँ हिन्दुओं को शक्ति की आवश्यकता है। हिन्दू-महासभा फिर क्यों नहीं

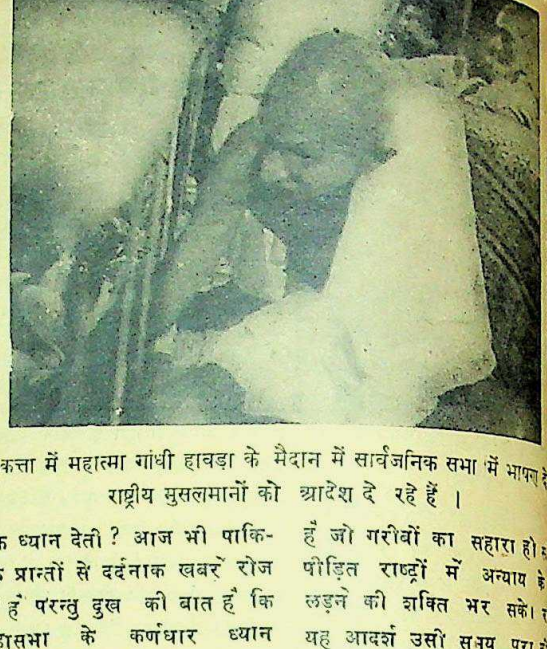

कलकत्ता में महात्मा गांधी हावड़ा के मैदान में सार्वजनिक सभा में भाषण देते राष्ट्रीय मुसलमानों को आदेश दे रहे हैं।

इस तरफ ध्यान देती? आज भी पाकिस्तान के प्रान्तों से दर्दनाक खबरें रोज आ रही हैं परन्तु दुख की बात है कि हिन्दू-महासभा के कर्णधार ध्यान नहीं देते। यू० पी० में मुसलमान कर ही क्या सकते हैं? यहाँ हिन्दुओं के स्वार्थ-हनन का क्या डर है? ऐसे समय में जब कि देश का शासन अँगरेजों से निकलकर भारतीयों के हाथ में आ गया है; सर्वत्र व्यापक अशान्ति फैली हुई है और महँगी तथा चीजों की कमी से जनता परेशान है, महासभा का यह रुख बिलकुल मुनासिब नहीं था। यह समय तो सरकार के साथ पूर्ण सहयोग देने का है ताकि शीघ्र से शीघ्र जनता की मुसीबतें कम हों और भूखे भारत को भर पेट अन्न मिल सके।

हमारी आगामी जिम्मेदारियाँ

१५ अगस्त भारतीय आजादी का प्रथम दिन था। इसी दिन हमने एक ऐसे राष्ट्र-निर्माण की नींव दी है जो अन्य राष्ट्रों के सम्मुख कंवल बराबर में खड़ा ही न हो बल्कि संसार की बढ़ती हुई अशान्ति को रोककर अमरशान्ति का पाठ पढ़ा सके। भारत को तमाम शोषित तथा पीड़ित राष्ट्रों को सहारा देना है। उसे एक ऐसी शक्ति बननी है जो गरीबों का सहारा हो और पीड़ित राष्ट्रों में अन्याय के लड़ने की शक्ति भर सके। यह आदर्श उसी समय पूरा होगा देश की एकमुखी शक्ति जो राष्ट्रीय सरकार की सहायता में भिड़ जायगी। राष्ट्र का निर्माण नागरिक करते हैं। समझना है तमाम शक्ति हममें है। भविष्य हाथ में है चाहे उसे हम अच्छा या बुरा। राष्ट्र-निर्माण के हम हैं और हमें स्वयं एक ऐसा बनाना है जिसकी प्रतिष्ठा केवल नहीं बल्कि सारा विश्व करे प्रकाश बनकर संसार का कर सके।

मिल गई महानता

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव बी० एस-सी०, एल्-एल० बी०

देश हो गया स्वतन्त्र, मुक्ति मिल गई,
विश्व-सैन्य को अपूर्व युक्ति मिल गई,
प्रात मिल गया, नवीन रात मिल गई,
मौन मात दे नवीन बात मिल गई
दीन देह को नवीन साँस मिल गई,
आज मिल गई महीन को महानता।

ऊँच-नीच के सभी विभेद मिट चले,
द्वेष-भाव मिट चले विरोध मिट चले,
दासता मिटी, कुदास्य-भाव मिट चले
देश से विदेश के प्रभाव मिट चले
आज से हजार के सिफर बिगड़ चले,
आज मिल गई विभिन्न को समानता।

रक्त से खिची मधुर प्रभात की गली,
शुष्क डाल रो पड़ी खिली मधुर कली
आत्म-त्याग में सदैव ही विजय पली,
दीनता सदैव फूलती फली चली,
दीन धूल आज शीषफूल बन गई
आज मिल गई मलीन को प्रधानता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतंत्र भारत की परराष्ट्र नीति

साम्राज्यवादियों की शोषण-नीति अब आगे नहीं चलेगी

लेखक, श्री चन्द्रकुमार, बी० ए०

१५ अगस्त से भारत स्वतन्त्र हो गया है, इसलिए परराष्ट्र तथा अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भी वह स्वतन्त्र तथा जनप्रिय नीति का ही अनुसरण करेगा। विश्व-रंगमंच पर इस वक्त दो शिविर हैं—एक प्रगति और स्वतन्त्रता का प्रतिनिधित्व करता है और दूसरा प्रभुता तथा प्रतिक्रियावाद का प्रतीक है। भारत ने प्रगति तथा स्वतन्त्रता का सदा से पक्ष किया है और भविष्य में भी उसकी वही नीति होगी। इस लेख में योग्य लेखक ने भारत की भावी परराष्ट्र नीति पर सुन्दर प्रकाश डाला है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

...अगस्त को सारे भारत में अत्यन्त ...के साथ स्वतन्त्रता-दिवस मनाया ...इस स्वातन्त्र्य-समारोह का आज ...महत्त्व है। जहाँ वह दो सौ वर्षों ...निकृष्टतम गुलामी शोषण और ...की परिसमाप्ति तथा जनवादी, ...और सार्वभौम भारतीय राष्ट्र ...का द्योतक है, वहाँ वह कुचक्री ...वादियों द्वारा शोषण एवं सत्ता-...की तुष्टि के लिए विश्व-रंग-...रचे जानेवाले षड्यन्त्रों के ध्वंस ...सूचक भी है। स्वतन्त्रता के द्वार ...रखते ही भारत ने अपने ...बन्धु—इंडोनेशिया की स्वतन्त्रता ...एवं विश्वासघातपूर्ण आक्रमण ...उच्च साम्राज्यशाहों की दुर्नीति ...राष्ट्रों के सम्मुख निराकरण ...जिस तत्परता, साहस और ...का परिचय दिया उससे ...शाहों के दिलों में हड़कम्प मच ...।

...के पूर्व विदेशी राष्ट्रों से भारत ...सम्पर्क कभी नहीं हुआ था। ...देशों से था भी वह भारत ...ब्रिटिश साम्राज्यशाहों के माध्यम ...अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भारत ...निधित्व प्राप्त जरूर था लेकिन ...लनों में राष्ट्रीय भारत की ...नहीं सुनाई पड़ती थी। भारत ...निधि अपने प्रभु अँगरेजों की हाँ ...लाते थे और उनके साम्राज्यवादी ...को ही दृढ़ बनाते थे। सन् १९४५ ...फ्रांसिस्को-सम्मेलन और १९४६ ...मास में पेरिस में होनेवाले शान्ति ...में भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल ...मशहूर प्रतिक्रियावादी और ...के वफादार सेवक रामास्वामी ...ने किया था। जनवादी हितों ...उन्हें सदा वोट देते देखकर ...प्रतिनिधि श्री मोलोटोव को ...था कि यह राष्ट्रीय भारत की ...नहीं है और वह दिन शीघ्र आयेगा ...अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारत ...प्रतिनिधि सम्मिलित होंगे। ...दिन शीघ्र आ गया। गत वर्ष ...दिसम्बर मास में सैनफ्रांसिस्को ...भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल गया ...स्वरूप दूसरा ही था। श्रीमती ...नेतृत्व में गये प्रतिनिधि-मण्डल ...भारत और भारतीय जनता का ...प्रतिनिधि था, प्रवासी भारतीयों ...संयुक्त-राष्ट्र संघ के जनवादी ...को ऊँचा किया।

...हाथ में राज्य-सत्ता लेते ही ...पश्चिमी साम्राज्यवादियों द्वारा ...राष्ट्र के विरुद्ध किये गये ...के विरुद्ध संयुक्तराष्ट्र-संघ का ...खटखटाकर अपनी परराष्ट्र ...दिशा की ओर संकेत किया ...बताता है कि भारतीय अपनी ...स्वतन्त्रता का उपयोग भारत ...स्वतन्त्र, समृद्ध और जनवादी ...में परिणत करने में लगायेंगे ...के स्वातन्त्र्य-संग्राम में अपनी ...सांस्कृतिक परम्परा के अनुसार ...में खड़ा होकर विश्व से गुलामी, शोषण और उत्पीड़न के खात्मे के लिए युद्ध करेगा।

प्रश्न यह उठता है कि जहाँ साम्राज्य-विरोध, शोषण और प्रकट अन्याय जैसी कोई बात न हो ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भारत कौन-सी नीति बर्तेगा? पंडित जवाहरलाल नेहरू ने गत वर्ष सितम्बर मास में भारत की प्रथम अन्तरिम राष्ट्रीय सरकार के परराष्ट्र मंत्री की हैसियत से भारत की परराष्ट्र नीति के सम्बन्ध में अधिकारी रूप से जो पहला भाषण किया था उसमें उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत विश्व की प्रमुख शक्तियों—अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन से सद्भावनापूर्ण सम्बन्ध रखेगा। वह किसी गुट्ट में शामिल न होकर अन्तर्राष्ट्रीय दलबन्दियों को समाप्त कर स्थायी शान्ति स्थापित करने की ओर प्रयत्नशील रहेगा। पंडित जवाहरलाल जी ने साथ ही यह भी कहा था कि अपने निकटवर्ती पड़ोसी—रूस, चीन तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के प्रजातन्त्रों से भारत अधिक घनिष्ट सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश करेगा। पंडित जवाहरलाल जी ने भारत सरकार के प्रवक्ता की हैसियत से विश्व के सभी प्रमुख राष्ट्रों से मैत्री-सम्बन्ध बनाये रखने की जो बात कही थी, वह 'रस्मी इजहार' था; इसमें किसी को संशय नहीं होना चाहिए। स्पष्ट है कि स्वतन्त्र भारत किसी विदेशी राष्ट्र के प्रति आक्रमणशील नीति बर्तने की इच्छा नहीं रखता; लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि किसी विदेशी राष्ट्र अथवा विदेशी राष्ट्रों के एक विशिष्ट गुट्ट द्वारा स्वाधीनता और जनवाद के सिद्धान्तों के विरुद्ध कुचक्र रचे जाने पर वह उसका विरोध नहीं करेगा। सभी राष्ट्रों के प्रति भारत की सद्भावना का अर्थ है इन राष्ट्रों की स्वातन्त्र्य-प्रिय जनता के प्रति सद्भावना। भारत की परराष्ट्र नीति तो अब स्थिर हो रही है लेकिन राष्ट्रीय भारत की पचास साल की जनवादी परम्परा हमारे उक्त कथन की समर्थक है। ब्रिटेन को अपना कट्टर शत्रु मानते हुए भी भारत ने अँगरेज जनता के प्रति कभी दुर्भावना नहीं रखी। राष्ट्र-नेता महात्मा गांधी के वक्तव्यों और भाषणों में एकाधिक बार यह चीज प्रकट हुई है। आज स्वतन्त्रता और जनवाद का दावा करनेवाले पश्चिमी राष्ट्र जब फासिज्म के जहरीले नाग को दूध पिलाकर पाल रहे थे और अबीसीनिया की लूट-खसोट को, स्पेन में प्रजातन्त्र के ऊपर बलात्कार को और दुर्दान्त जापानियों द्वारा चीन का नष्ट-भ्रष्ट किये जाने की ओर से आँखें मूँदे फासिस्टवाद को अपनी शक्ति बढ़ाने का मौका दे रहे थे तब भी, आज से दस वर्ष पूर्व भारत ने, हमारी राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस ने इन कृत्यों की घोर निन्दा की थी। फैजपुर कांग्रेस के अवसर पर पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अध्यक्ष-पद से फासिज्म का विरोध किया था। इतना ही नहीं कांग्रेस ने चीन के प्रति सक्रिय सहानुभूति प्रदर्शन करने के लिए एक डाक्टरी सहायता-दल भेजा था और स्पेन की रणभूमि में स्वयं पंडित जवाहरलाल उपस्थित हुए थे। भारत की इसी भावना को अधिक स्पष्टता से कांग्रेस ने १९३९-४६ के फासिस्ट-विरोधी महासमर के सम्बन्ध में प्रदर्शित किया था। कांग्रेस ने अपने ८ अगस्त १९४२ वाले प्रस्ताव में फासिज्म के नाश के लिए मित्रराष्ट्रों से सहयोग की इच्छा प्रकट करते हुए फासिस्ट दानव के तत्कालीन लक्ष्य रूस और चीन के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए उनके विजय की कामना की थी।

अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में और विशेष रूप से संयुक्तराष्ट्र-संघ में भारत अपनी इसी परम्परा को निभायेगा और इस तरह यह स्वाभाविक ही है कि वह उन राष्ट्रों की पंक्ति में हो जो जनवादी सिद्धान्तों की रक्षा के लिए पश्चिमी राष्ट्रों के विरुद्ध संघर्ष कर रहे हैं। यह पथ चुनने में हिचकिचाहट की जरूरत नहीं है। विश्व रंगमंच पर इस वक्त निश्चय ही दो शिविर हैं—एक प्रगति और स्वतन्त्रता का प्रतिनिधित्व करता है, दूसरा प्रभुता और प्रतिक्रियावाद का प्रतीक है। स्वतन्त्रता और जनवादी सिद्धान्तों की रक्षा के लिए संघर्ष करने का स्पष्ट अर्थ है प्रभुतावादी गुट्ट, एँग्लो-अमेरिकन साम्राज्यशाहों से शत्रुता मोल लेना। जैसा हमने भारतीय स्वतन्त्रता के संग्राम में देखा और जैसा इंडोनेशिया के प्रश्न को संयुक्त-राष्ट्र-संघ में उपस्थित करने के अवसर पर देखा। आज की स्थिति में एँग्लो-अमेरिकन साम्राज्यवादी पश्चिमी ईसाई-सभ्यता की रक्षा (स्मट्स का गत सैन-फ्रांसिस्को-सम्मेलन में भाषण) की आवाज उठाकर नये फासिस्टवाद को जन्म दे रहे हैं और स्वतन्त्र भारत को अपनी अन्तर्राष्ट्रीय नीति में इस नई फासिज्म का उतना ही प्रचण्ड विरोध करना चाहिए जितना कि हमने पुरानी फासिज्म का किया था।

संयुक्तराष्ट्र-संघ में भारत ने जो रुख आज अख्तियार किया है उसे जारी रखना होगा और साथ ही विश्व की जनवादी और प्रगतिशील शक्तियों में एकता स्थापित करने की कोशिश करनी होगी। अभी तक सोवियत रूस इस कार्य को अकेला कर रहा था अब भारत के पदार्पण से प्रतिक्रियावाद और प्रभुता-विरोधी मोर्चे को बल मिलेगा ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है।

भारतीय सरकार के प्रधान तथा परराष्ट्र-मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तीय ग्रामसुधार-योजना

आर्थिक अवस्था सुधारनेवाले विविध उद्योग-धन्धे

(३)

लेखक, पंडित केशवदेव मालवीय, एम० एल० ए०
(पार्लामेन्टरी सेक्रेटरी, सूचना तथा उन्नति-विभाग यू० पी० सरकार)

'देशदूत' के १० तथा २४ अगस्त के अंक में इस लेखमाला के दो लेख प्रकाशित हो चुके हैं, यह तीसरा है। संयुक्तप्रांतीय सरकार ने ग्राम-सुधार की जो योजना बनाई है, उसमें उद्योग-धंधों की उन्नति की ओर विशेष ध्यान दिया गया है, विशेषरूप से विविध उद्योग-धन्धों पर। श्री मालवीयजी ने इस लेख में इसी सम्बन्ध में प्रकाश डाला है, जो ज्ञातव्य तथा जानकारी से पूर्ण है।

खादी के अतिरिक्त और कई ऐसे उद्योग-धंधे हैं, जिनको सरकार प्रोत्साहन दे रही है। उद्योग-विभाग की ओर से २३ सरकारी संस्थाओं का संचालन हो रहा है और ५२ गैर-सरकारी संस्थाओं को आर्थिक सहायता दी जा रही है। इन संस्थाओं में विविध उद्योग-धंधों के विकास के लिए प्रयत्न हो रहा है और विद्यार्थियों को ट्रेनिंग दी जाती है तथा स्थायी रूप से उत्पादन किया जा रहा है। इन दिनों जिन उद्योगों की ओर सरकार का विशेष ध्यान है वे हैं—(१) करघा, (२) हाथ का कागज, (३) मिट्टी के बर्तन का काम, (४) तेल निकालने का काम, (५) कपड़े पर छपाई, (६) कसीदाकशी और (७) चरसा बनाने का काम।

करघा

सरकार आजकल ७ स्थानों पर करघे चला रही है। वे चाँदपुर, मऊ, टाँडा, अमरोहा, बुलन्दशहर, गाजीपुर और खलीलाबाद में हैं। टेक्सटाइल कमिश्नर २३३ गाँठ सूत इन केन्द्रों को प्रतिमास देते हैं। इस सूत से कपड़ा तैयार कराया जाता है। यह कपड़ा सस्ता और अच्छा होता है। सरकार करघे के उत्पादन की तरक्की देना चाहती है, इसलिए इस वर्ष के बजट में २ लाख २० हजार रुपया इस काम के लिए निकौला गया है। करघे के उत्पादन के बिक्री की भी समुचित व्यवस्था की गई है। यह बिक्री यू० पी० हैंडिक्राफ्ट के द्वारा होती है। इस व्यवसाय को बढ़ाने के निमित्त २४ लाख रुपया निकाला गया है। करघा एक महत्त्वपूर्ण घरेलू व्यवसाय है जो आर्थिक दृष्टिकोण से जुलाहों के लिए बड़े लाभ का सिद्ध होगा। एक समय था जब हमारे देश के जुलाहे पर्याप्त मात्रा में कपड़ा तैयार करते थे, और ऐसा कपड़ा तयार करते थे जैसा कहीं अन्यत्र नहीं बनता था और जिसकी माँग विदेशों में बहुत अधिक थी। जब अँगरेजों की हुकूमत आई तो सिद्धहस्त जुलाहों पर तरह-तरह के प्रतिबन्ध लगाये गये। परिणाम यह हुआ कि जुलाहों का काम प्रायः बन्द-सा हो गया और हम विदेशों से कपड़ा मँगाने लगे। अब अँगरेजी हुकूमत का अन्त हो गया, अब समय है कि हम अपने पुराने उद्योग-धन्धों को, उन धंधों को जिनके कारण भारत किसी जमाने में समृद्धिशाली देशों में गिना जाता था, प्रोत्साहन दें। भारतवर्ष एक बहुत बड़ी मंडी है, योरप और अमेरिका इस मंडी पर अधिकार जमाने की कोशिश कर रहे हैं। हमारे सामने बड़ा भारी खतरा है। सैकड़ों वर्षों से हमारे देश का धन-धान्य विदेशों में खिचता गया है। हम बहुत-सा उपयोगी माल मँगाते रहे हैं। हमें चाहिए कि अपने उत्पादन को यहाँ तक बढ़ावें कि विदेशों की मंडियों पर हमारा अधिकार हो जाय। मैं कोई वजह नहीं देखता कि हमारा करघे का व्यवसाय इतना विकसित न हो जाय, जितना वह पहले था।

हाथ का बना कागज

कागज की इतनी कमी है, इससे सब लोग भली भाँति परिचित हैं। हमारे देश में पुस्तकों और समाचार-पत्रों का प्रकाशन इतना कम है फिर भी कागज नहीं अँटता। यह सही है कि कागज का उत्पादन बढ़ाने के लिए कागज बनाने की मिलों को प्रोत्साहन देना होगा, किन्तु हाथ के बने कागज से भी बहुतेरा काम निकल सकता है। उन्नत विधियों पर जहाँ हाथ से कागज बनता है, वह बहुत अच्छा होता है। सरकार की ओर से फैजाबाद और कालपी में दो ऐसे केन्द्रों का संचालन होगा जहाँ विद्यार्थियों को ट्रेनिंग दी जायगी और कागज बनाया भी जायगा। प्रतिवर्ष ४८ विद्यार्थियों की ट्रेनिंग होगी। उन्हें १५ रुपये मासिक वृत्ति मिलेगी। इसके अतिरिक्त कुछ गैर-सरकारी संस्थाओं को भी आर्थिक सहायता दी जाती है। इस वर्ष के बजट में १ लाख १६ हजार रुपया इस धंधे को प्रोत्साहन देने के लिए निकाला गया है।

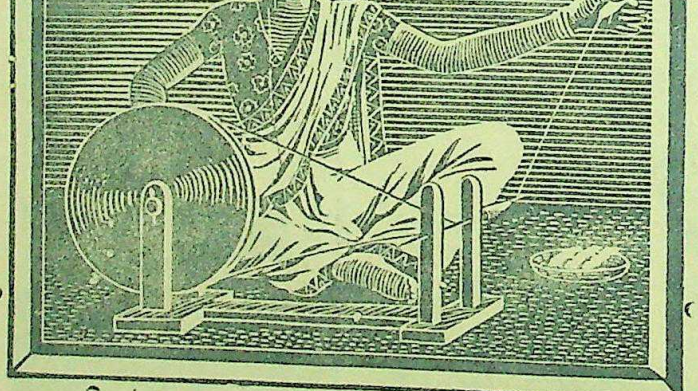

मिट्टी के बर्तन बनाना

हमारे प्रान्त में मिट्टी के बर्तन बहुत बनते हैं किन्तु बर्तन बनाने की विधियों में बहुत सुधार की गुंजाइश है। निश्चय किया गया है कि जिन स्थानों पर बर्तन बनाने के लिए अच्छी मिट्टी मिले, उसे एकत्र करके पीसा जाय और तब उचित मूल्य पर उसे बर्तन बनानेवालों में बाँट दिया जाय। बर्तन पकाने के लिए तकावी पर भट्ठियाँ भी बाँटी जायँगी। इस काम के लिए ५३ हजार रुपया इस वर्ष खर्च किया जायगा।

तेल निकालने का काम

१९३७-३८ में ग्राम-सुधार-विभाग की ओर से बड़ा कोल्हू बनाने की योजना को बड़े जोरों पर चलाया गया था। देहात के तेलियों के पास जो कोल्हू आजकल हैं, उनमें बहुत कम तेलहन पड़ता है और बैल पर बड़ी मेहनत पड़ती है। नये कोल्हुओं में १२-१४ सेर तेलहन पड़ सकेगा। इन दिनों कई बढ़इयों को अच्छे ढंग के कोल्हू बनाने की शिक्षा दी जा रही है। तेलियों को बगैर सूद आर्थिक सहायता दी गायगी ताकि वे अपना कोल्हू बदल सकें। इस योजना में इस वर्ष ३६॥ हजार रुपया लगाया जायगा। कोल्हू का वितरण इलाहाबाद, गोरखपुर, बरेली, झाँसी और आगरा से होगा।

कपड़े की छपाई

कपड़े की छपाई का धंधा आजकल ठीक नहीं चल रहा है। इन दिनों यह काम नगरों तक ही सीमित है। आवश्यकता इस बात की है कि देहातियों को भी इस व्यवसाय में उचित भाग दिया जाय। उद्योग-विभाग ने ४ ऐसे केन्द्रों को खोलने का निश्चय किया है जहाँ मिल का कपड़ा और करघे का कपड़ा रँगा जा सके। यह कपड़ा अधिकतर देहातों में ही बाँटा जायगा। रँगाई का काम कुछ अधिक वैज्ञानिक ढंग पर होगा। इस धंधे पर इस वर्ष लगभग ३॥ लाख रुपये लगाये जायगा।

इस लेख के लेखक पंडित केशवदेव मालवीय एम० एल० ए०।

कसीदाकशी

कसीदे का काम लखनऊ तथा आस-पास अच्छा होता रहा है। काम अधिकतर पर्दानशीन करती हैं; किन्तु उन्हें न उचित कच्चा माल मिल पाता है और न तैयार किये माल की बिक्री की व्यवस्था है। प्रान्त की सरकार ने धंधे को आगे बढ़ाने का निश्च है। कच्चा माल बाँटने और तैय की बिक्री का प्रबन्ध किया इस योजना में इस वर्ष कुल रुपये लगेंगे।

चरसा

देहातों में सिंचाई के लिए से पानी निकालने के निमित्त कई चरसे का उपयोग हो रहा है। जो देहात में चलते हैं, उनका चमड़ा खराब है कि वे अधिक दिनों तक चल पाते और उनकी बनावट बेतुकी है कि जब उनमें पानी कुएँ से निकालने लगते हैं तब मूँह तक आते-आते प्रायः आधा गिर जाता है। इसमें बहुत अधिक बर्बाद होती है। अच्छे ढंग के बरसे बनाये गये हैं और ऐसे चरसे अधिक संख्या में बनाने के निमित्त, ट्रेनिंग जायगी। इस योजना में इस वर्ष रुपया खर्च किया जायगा।

घरेलू उद्योगों के विकास के लिये ट्रेनिंग

घरेलू उद्योगों के विकास के सरकार पारसाल से ५० शिक्षा-केन्द्र रही थी। इस वर्ष शिक्षा-केन्द्रों की बढ़ाकर ८० कर दी गई है। ये १९ में काम कर रहे हैं। जब एक स्थान ट्रेनिंग का काम समाप्त हो जायगा शिक्षा-केन्द्र दूसरे स्थान पर चला जायगा। जो लोग इन केन्द्रों पर शिक्षा करेंगे उनकी सहकारी समितियाँ बना जायँगी। उन्हें हथियार दिये जायँगे आर्थिक सहायता भी दी जायगी वे सुचारुरूप से अपना उत्पादन सकें। इन समितियों को कच्चा माल दिया जायगा और जो माल वहाँ तैयार होगा उसकी बिक्री की व्यवस्था जायगी। शिक्षा-केन्द्रों में उद्योग

शेष पृष्ठ १४ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राखी के तार

लेखक, श्री प्रेम कपूर कंचन

रक्षाबन्धन भारतवर्ष का पवित्र और प्राचीन त्योहार है। यह त्योहार उन वीर नारियों का स्मरण दिलाता है जिन्होंने रणभूमि में सहस्त्रों भाइयों को भेजकर शत्रुओं से राष्ट्र की रक्षा की थी। यह कहानी भी इसी भावना के आधार पर लिखी गई है, जो सामयिक और सुन्दर है।

पता नहीं था। बादल बरस कर चले गये। शीतल पवन भी न रुक सका, लू के झोंके ने सर्वत्र अग्निकण भर दिया। देश में हथकड़ियाँ झंकार उठीं, दमनचक्र घूम चला। धाँय-धाँय कर गोलियाँ गरज उठीं। अमर प्रतीक हवा में लहरा रहा था अत्याचार की चक्की चल पड़ी।

वह फरार हो गया था। पुलिस उसके पीछे थी। रक्षाबंधन का त्योहार था। वह क्रांति की प्रतीक्षा में घड़ियाँ गिनते दिन काट रही थी। सहसा उसके कान बज उठे उसे लगा कोई कह रहा है—"तेरा भैया नहीं आयेगा।" तभी वह सोच उठती इस बार न जाने कितने के भैया नहीं आयेंगे शायद इसी प्रकार क्रान्ति भी.....।"

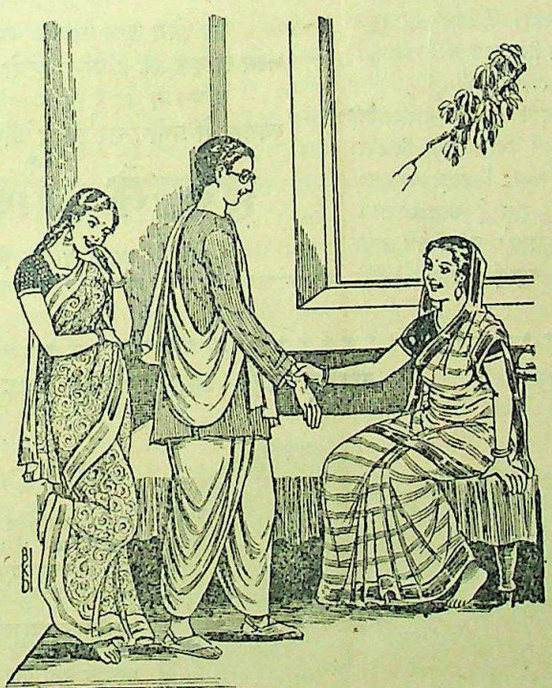

वर्षों की आशा को छिपाये वह क्रान्ति के करों में राखी बाँधने चली।

हैं कौन आ सकता है। अपनी धारणा बनाकर वह फिर गुनगुना उठी।

लेकिन इस बार छाया साफ झलक रही थी। उसने शब्द सुने।.....

वह सिहर उठी।.....

"कल्पना.....।"

"कौन...?" कौन उसकी लड़-खड़ाती जबान से निकल गया।

"किवाड़ खोलो।"

उसकी आँखों में विश्व नाचता-सा दीख पड़ा।

"तुम इतनी रात में!"

वह न जाने क्या कल्पना कर उठी। नारी-हृदय किवाड़ खोलने को तत्पर न था। पर तब तक वह खिड़की से भीतर आ गया। डर ने कल्पना का गला घोंट देना चाहा। वह क्रान्ति के शब्द सुनना नहीं चाहती थी, पता नहीं वह किस भावना से प्रेरित हो आया हो।

क्रान्ति कह उठा—"ला राखी तैयार कर चुकी, शीघ्रता से बाँध दे।"

"इतनी शीघ्रता की क्या आवश्यकता है जरा बैठ भी जाओ।"

"नहीं आज नहीं, फिर कभी।"

"क्यों....?"

"क्यों क्या, जल्दी कर नहीं तो.....,"

"नहीं तो क्या .....?"

"ओफ हो! देखती नहीं रात ढल चुकी है और हमें काम पर जाना है।"

पर कल्पना सकुचा रही थी....

"देर न कर जल्दी से राखी बाँध दे और किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं।"

उसके हाथ उठे और भाई के कर से जा लगे।

क्रान्ति भविष्य की कल्पना कर काँप उठा। अन्धकार-भविष्य अपना विकराल मुंह खोले उसी तरफ बढ़ रहा था।

उसके मुख पर सिकुड़न पड़ गई। आँखें जलकणों से खेलकर किनारे लग गईं।

कल्पना के मुख पर एक रेखा आई पर वह क्रान्ति के आँसू देखकर लुप्त हो गई।

"भैया.....!" कहकर उसने अपना सिर भैया के हाथों पर डाल दिया....." तुम रोते हो।"

"मेरी बहन! संसार में बहुत खोकर मैंने तुम्हें पाया था पर अब प्रभु को यह भी मंजूर नहीं....!

"भैया" वह चीख उठी।

बहन को शान्त करते हुए उसने अपनी अँगूठी बहन के उँगलियों में डाल दी।

"मेरे भैया इसे रख लो। इसकी क्या आवश्यकता है? कठिन समय में बहिन की भेंट समझ कर इसका उपयोग करना।"

उसने उत्तर दिया—"भैया की भी कोई साध होती है।"

सब चित्रपट की तरह चित्रित होता चला गया। दूसरी ओर पूर्णमासी का रक्त-रंजित सूर्य उदय हो रहा था।.....

सूर्य ही के आवरण में अन्धकार रहता है और उसी अन्धकार के साथ-साथ कल्पना के जीवन का अंधकार शुरू हो गया। हर प्रहर का खिला हुआ मुखड़ा मुरझा कर झुक गया। उसे देखकर माँ-बाप का हृदय भर आता। उनके हृदय में शंका ने स्थान बना लिया था।

कल्पना ने सुना लोग कह रहे हैं कि कल्पना किसी की प्रेम-पुजारिन बन चुकी है। इसे सुनकर वह भीतर ही भीतर सिहर उठती। कल्पना प्रेम करती है अवश्य, पर उस पवित्र पावन स्नेह के अन्दर कौन गोता खा सकता था? उसके वियोग की परिभाषा कोई जान कैसे पाता?

अन्त में जो होना था वही हुआ। कल्पना की शादी विज्ञान के साथ हो गई।

इस नवीन जीवन में उसकी नई परिभाषा थी। विज्ञान एक छबीला युवक है एवं विश्वविद्यालय का प्रमुख छात्र—उसमें विश्व के अनेक गुण अवश्य हैं—पर वह कल्पना को न भाया।

पन्ने पर पन्ने रँगते गये और विज्ञान कल्पना को हर्षित न कर सका। दैनिक पत्र चीख-चीख कर पुकार रहे थे—"क्रान्ति पर दस हजार रुपया इनाम।" विश्व में एक भूत आया था लोग अपने आपसे घबड़ा उठे। कल्पना आशा-दीप लिए अपने प्रिय भैया की शुभ कामना मनाती रहती।

विज्ञान ने देखा विज्ञापन। उसने सोचा वह अभी विद्यार्थी है, उसके पास धन नहीं शायद इसीलिए वह अभी तक कल्पना को हर्षित न कर सका। पर धन इतनी शीघ्रता से आयेगा कैसे।

चोरी....। डाका.....नहीं नहीं वह यह न करेगा।

हर समय वह देखता कल्पना का सूखा-साखा मुंह और उसे याद आता....पैसा! पैसा!! पैसा!!!

वह पैसेवालों का स्वप्न देखता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचानक उसके विचार बदल गये। उसने कहा—"कल्पना!" अब मैं तुम्हें दुखी नहीं देख सकता। हमने बड़ी अच्छी युक्ति निकाली है।

"क्या.....?"

"बस तुम मुस्करा दो एक बार।"

वह मुस्कराने का विफल प्रयास करती रही।

"हाँ! अब सब ठीक हो जायगा।"

"कैसे.....?"

"हमारे भाग्य चमक उठेंगे।"

दिन बीतते गये विज्ञान अखबार के विज्ञापन को हल करने के प्रयास में संलग्न था।

जब उसे पता लगता क्रान्तिकारियों का वह होटल अड्डा है तब वह उस ओर भागता। उसे पता लगता कि अमुक स्थान पर उसकी गुप्त कोठरी है, वह उसके भीतर जाता, पर झाँककर लौट आता। उसके मुख से निकलता "मेरा दुर्भाग्य। जहाँ-जहाँ जाओ वहीं से उनका डेरा-डंडा उठ जाता है।" कितने ही दिन मास बनकर रह गये पर वह विफल ही रहा।

विज्ञान ने सुना कि क्रान्ति की एक बहन है वह वहाँ रक्षाबन्धन के दिन अवश्य आयेगी। पर वह पता न पा सका कि उसकी बहन कहाँ और कौन-सी है। वह प्रतीक्षा की खोज में चल पड़ा।

क्रान्ति को पता लगा उसके पीछे बहुत से दौड़नेवाले हैं, पर वह इसकी परवाह न करता। कोई उसके निकट तक नहीं पहुँच पाया था।

एक दिन उसने सुना कि एक व्यक्ति उसके पास तक आ चुका है। उसे पता लगा उसका पीछा करनेवाला और कोई नहीं केवल उस अभागे की बहन का पति है। उसने लाख चेष्टा की कि विज्ञान उसके रास्ते में न आये। पर विज्ञान भी अपनी धुन का पक्का था। उसने धमकी की कुछ भी परवाह न की।

दिन और निकला और निकलता रहा।

काले-काले बादल फिर टकरा उठे। बिजलियाँ हवा में लहरा गईं। कल्पना सोते से चौंक उठी। ठंडी हवा ने प्रकोष्ठ में प्रवेश किया। उसने उठकर खिड़कियाँ भेड़ दीं।

उसकी निगाह घूम गई, जी धक से हो उठा, अन्दर एक छाया आज फिर आ रही थी। पति घर में नहीं, क्या होगा वह कल्पना न कर सकी।

उसने पहचानने के लिए आँखें उठाईं आज फिर उसकी आँखें दो काली-काली आँखों से जा टकराईं।

वह क्षण भर दृष्टि गड़ाये निहारती रही। उसकी स्मृति पलटी एक चीख निकली "भैया।" और वह भैया की गोद में जा पहुँची।

हाथ से थपथपाते हुए क्रान्ति ने पीठ ठोंकी।

"तुम्हारी यह दशा।" कल्पना पूछ रही थी।

"कुछ तो नहीं....।"

"पागलों से बने फिरते हो और फिर भी कहते हो कुछ नहीं? ये मैली-कुचैली फटी कमीज दाढ़ी इतनी बढ़ी, बालों में ये धूल।"

"इन सबकी तो अब आदत-सी हो गई है।"

कल्पना नतमस्तक-सी हो उठी और जाकर थाली सजाने लगी।

"आज शीघ्रता की कोई आवश्यकता नहीं है कल्पना।"

तब तक वह पर्दे की ओट में जा चुकी थी।

क्रान्ति प्रकोष्ठ में चहल कदमी कर रहा था। सामने वह विज्ञान के चित्र से जा टकराया। उसने चित्र उठाते हुए कहा—"आज मैं तुम्हें सौंपने आया हूँ। जानते हो क्यों बहन का स्नेह घसीट लाया है यहाँ तक फिर भी तुम मुझे पकड़ न पाओगे। लेकिन.....

आज मैं बहन को क्या भेंट करूँगा। .....मेरे पास तो कुछ भी नहीं .....।"

वह बकता जा रहा था। कल्पना तब तक आ पहुँची। "क्या कह रहे हो भैया?"

"कुछ नहीं।" कहकर वह शान्त हो गया।

आकाश-गंगा की कालिमा घट रही थी। सूर्य का प्रखर वैभव गगन में खिल रहा था। अचानक उसका हृदय काँप उठा। कल्पना न समझ सकी, वह अपने हृदय की गति गिनने लगी, उसे कोई भावी आशंका प्रेरित कर रही थी फिर भी.....

राखी के सुनहरे तार फिर क्रान्ति की कलाइयों पर चमक उठे। माथे पर तिलक जगमगा उठा। उसने कल्पना की ओर बड़ी आशा भरी दृष्टि से निहारा और संकोच के शब्दों में कहा—"बहन आज मेरे पास तेरे लिए कुछ भी नहीं रहा पर फिर भी.....।"

इतने में विज्ञान चीखता-चिल्लाता आ पहुँचा, कल्पना आज हम विजयी होंगे। पता लग गया; विद्रोही पास ही कहीं है। अभी जा रहा है फोन लाओ।

अचानक रुक गया। वह सोचने लगा शायद स्वप्न देख रहा है। उसकी आँखें तिलमिला उठीं।

शिकारी और शिकार स्तब्ध खड़े थे।

कल्पना हल्ला सुनकर हड़बड़ा कर सामने आ पहुँची।

विज्ञान से कुछ करते न बना।

इतने में पुलिस ने आवाज दी "ज्ञान बाबू तैयार हो।" पर उत्तर में कोई शब्द न गया।

पुलिस अफसर स्वयं अन्दर आ पहुँचा पर स्थिति का ध्यान कर विज्ञान ने कहा—वह कहाँ है विद्रोही?

मैंने उसे पकड़ रक्खा है।

विज्ञान क्रान्ति के निकट गया। विज्ञान ने कहा क्रान्ति बाबू—"आपने मुझे पकड़ा अफसोस नहीं और मैं स्वयं चाहता था कि मैं अपनी बहन को भेंट करूँ जीवन जो मेरे लिए घड़ियाँ गिन-गिनकर काट रही है। पर वादा करो आगे किसी के पीछे न पड़ोगे।

विज्ञान चौंक उठा। उसे अपने सुख के लिए बड़ा अपराध किया है। दिन बीत गया।

विज्ञान को पुरस्कार के साथ अच्छी नौकरी मिली। वह हर्ष से उठा पर उसे याद आया कुछ—बड़ी आँखें चौड़ा विशाल मस्तक उस रक्तिम रोली और अक्षत से तिलक तथा राखी के तारों से कलाई नाच गई।

नाच उठे वे तार जिसमें बहन के लाखों अरमान भरे थे। हथकड़ी भरते समय सिपाही ने पृथ्वी पर डाल पैरों से कुचल दिया।

कल्पना के हृदय से बिजली के के साथ चीख निकलती और तार बनकर भैया के कलाई से रहती, अनजाने कितने वर्षों तक।

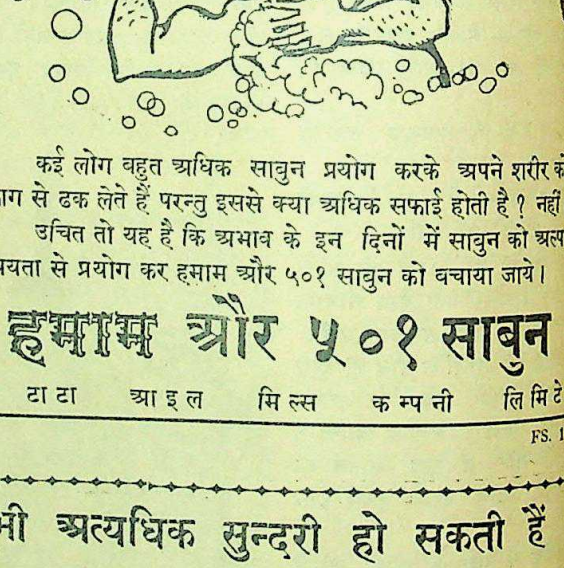

कई लोग बहुत अधिक साबुन प्रयोग करके अपने शरीर को झाग से ढक लेते हैं परन्तु इससे क्या अधिक सफाई होती है? नहीं।

उचित तो यह है कि अभाव के इन दिनों में साबुन को अल्प-व्ययता से प्रयोग कर हमाम और ५०१ साबुन को बचाया जाये।

हमाम और ५०१ साबुन

दी टाटा आइल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

FS. 1052

आप भी अत्यधिक सुन्दरी हो सकती हैं

क्या तुम यह चाहती हो कि वह (पुरुष) तुमसे प्रेमविवश करे कि "प्रिये तुम मेरी हृत्तन्त्री हो?"

तब काश्मीर बुकेट फेस पाउडर इस्तेमाल करो। वह तारों के चूर्ण की भाँ चिकना है। यह तुम्हारे चेहरे को कितने ही घंटों तक चमकदार रक्खेगा। तुम्हारे चेहरे की वास्तविक प्राकृतिक स्फूर्ति प्रदर्शित करायेगा।

इसकी आनन्ददायक सुगन्ध जल्द नहीं उड़ेगी, क्योंकि काश्मीर बुकेट में "मास डि चेमो" पदार्थ मिला है जो इस फेस पाउडर को अत्युत्तम बना देता है।

काश्मीर बुकेट की सुगन्धित शृङ्गारिक वस्तु से अपने पूर्ण सौन्दर्य को विकसित करो क्योंकि सुगन्धित ही से मनुष्य प्रेम करता है।

Cashmere Bouquet Products WITH THE FRAGRANCE MEN LOVE

Vanishing Cream Lipstick Rouge Cold Cream Perfume Talc Brilliantine Solid Liquid

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

स्वाधीनता-संग्राम में तीन प्रमुख भारतीय वीरांगनाएँ

श्रीमती नायडू, श्रीमती पंडित और राजकुमारी अमृतकौर

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

...न्त की अस्थायी गवर्नर श्रीमती सरोजनी नायडू।

...संसार के किसी भी संग्राम में ...का महत्त्वपूर्ण हाथ रहा है। इस ...महासंग्राम में तो ब्रिटेन ने अपनी ...से जबरदस्ती युद्ध-कार्य लिया ...परन्तु ब्रिटेन की नारियों के कार्य ...को गुलाम बनाने तथा सृष्टि को ...करने के लिए कहे जा सकते हैं। ...उन नारियों को वीरांगना ...कहा जायगा क्योंकि वे समरांगण ...के मुकाबले में डटकर लोहा ...रही हैं। ऐसे उदाहरण समाजवादी ...राष्ट्रों की नारियों के भी हैं। पर, ...नारियों का कार्यक्षेत्र उन ...से भिन्न रहा है। भारतवर्ष प्राचीन ...दार्शनिक रहा है। उस दर्शन के ...पर उसने अपनी धार्मिक प्रवृत्ति ...रखी थी। महाराज दशरथ के साथ ...में कैकेयी ने सहायता की, ...में कुन्ती और द्रौपदी ने ...की बहुत कुछ सहायता की थी। ...वे समरांगण में नहीं जाती थीं। ...युग बीतता गया और समाज में ...आती गई त्यों-त्यों नारियाँ भी ...होती गईं। सन् १८५७ में झाँसी ...लक्ष्मीबाई अँगरेजों के साथ ...हुई मारी गई थीं, रानी दुर्गावती ...के वीर सेनानियों के छक्के ...दिये थे। इन नारियों ने भारतीय ...में धक्का नहीं लगने दिया। ...महात्मा जी द्वारा चलाये गये इस ...संग्राम में नारियाँ क्यों भाग ...। स्त्रियों का स्वभाव आदतन ...होता है वे कठोरता और नृशंसता ...सहन कर सकतीं। उन्हें किसी भी ...निर्बल व्यक्ति अथवा राष्ट्र पर ...आक्रमण घृणास्पद बन जाते ...वे उस व्यक्ति अथवा राष्ट्र से ...नहीं करने लगतीं बल्कि उसकी ...जाती हैं। यूनान के स्पर्टा प्रदेश ...की माताएँ अपने बच्चों को ...से ही वीरता का पाठ पढ़ाती ...थीं। ऐसी ही कहानी 'शिवाजी' ...उनकी माँ की है। फिर जब कि ...ललनाओं के बच्चे, भाई और ...ब्रिटिश संगीनों और कारागारों के शिकार हों, उस समय वे चूड़ियाँ पहनकर घर में कैसे बैठी रहतीं? सन् १९२० में महात्मा जी के कांग्रेसी मंच पर आते ही पुरुष ही नहीं बल्कि नारियों के लिए भी द्वार खुल गया। वे स्वतन्त्रता-संग्राम में निर्भीक होकर कूद पड़ीं। आज हमारे प्रान्त में श्रीमती सरोजनी नायडू गवर्नर का पद सुशोभित करती हैं किसी दिन वे ब्रिटिश कारागारों में बन्द थीं। इसलिए प्रत्येक भारतवासी भारतीय नारियों के लिए गर्व से कह सकता है कि वे वीरांगना हैं और उनका देश-प्रेम पुरुषों से कम नहीं है।

हमारे स्वतन्त्रता-संग्राम की वीरांगनाएँ पश्चिमी देशों की नारियों से एक पृथक् स्थान रखती हैं। पश्चिमी नारियाँ दूसरे निर्बल अथवा गुलाम राष्ट्रों को घृणा करती हैं, पर हमारी भारतीय नारियाँ हर मामलों में उनसे आगे हैं। सन् १९३०-३२ के आन्दोलनों में जब गांधी जी देश का नेतृत्व करते थे उस समय पंडित जवाहरलाल नेहरू की धर्मपत्नी श्रीमती कमला नेहरू अपने आरामों को त्यागकर प्रयाग के कपड़ों की दूकानों पर धरना देती थीं। उन कार्यों में किसी को सताना न था। उसमें सिद्धान्त था—'भाई अपने गरीब देशवासियों के लिए 'खादी' खरीदिए, नशा छोड़ दीजिए।' ये ही उनके वाक्य थे। श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित, श्रीमती सरोजनी नायडू, श्रीमती उमा नेहरू, लेडी नेलीसेन गुप्ता, कमलादेवी चट्टोपाध्याय और अरुणा आसफअली जैसी नारियों ने भारत-स्वतंत्रता-संग्राम में अपना बहुत बड़ा नुकसान उठाया है। ब्रिटिश नौकरशाही ने उनको बुरे-भले शब्दों से जितना अपमानित किया उसकी इन वीरांगनाओं ने तनिक भी परवाह न की। आज तक वे हमारे स्वतन्त्रता-संग्राम की एक अग्रणी वीरांगना रही हैं। देश के स्वतन्त्रता-संग्राम के लिए जो भी मंत्रिमंडल (वर्किंग कमेटी) बनती थी उनमें श्रीमती सरोजनी नायडू तो सर्वदा एक सदस्या रही हैं। इनके अतिरिक्त कमलादेवी चट्टोपाध्याय, श्रीमती विजयलक्ष्मी और राजकुमारी अमृतकौर को समय-समय पर आमंत्रित किया जाता रहा है। भारत की इन वीरांगनाओं में तीन नारियों का आज के हमारे स्वतन्त्र भारत के शासन-कार्य में प्रमुख हाथ है। उन वीरांगनाओं में श्रीमती सरोजनी नायडू, श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित और राजकुमारी अमृतकौर हैं।

श्रीमती सरोजनी नायडू भारत की उन प्रमुख महिलाओं में हैं जिनका नाम देश के भीतर ही नहीं वरन् विदेशों में भी सम्मान के साथ लिया जाता है। अँगरेजी काव्य-कला में श्रीमती नायडू एक प्रमुख स्थान रखती हैं। उनकी काव्य-कला से मुग्ध होकर देश ने उन्हें 'भारत कोकिला' की उपाधि दी थी। अँगरेजों की धूर्तता ने विदेशों में स्त्रियों के प्रति भारत का जो अपमान कर रक्खा था श्रीमती नायडू ने उसे धो दिया। संसार के सभ्य देशों में शायद भारत ही पहला देश है जिसकी एक महान् राजनैतिक संस्था की अध्यक्षा एक महिला हुई है। श्रीमती नायडू कानपुर के कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षा थीं। तब से आज तक वे वर्किंग कमेटी की एक सम्मानित सदस्या बनी रही हैं। एशियाई-सम्मेलन की अध्यक्षता का उत्तरदायित्व श्रीमती नायडू ने जिस प्रकार पूर्ण किया है वह संसार के लिए एक आदर्श है। एशियाई-सम्मेलन में उनका यह वाक्य संसार के लिए एक महामंत्र है—"मेरे पिता ने कहा था—शरीर के भीतर की आत्मा कभी नहीं मरती फिर इस शरीर की चिन्ता क्या! इसलिए ऐ एशियावासियो, अपने देश की आजादी के लिए अपने को न्योछावर कर दो।" आज वही वीरांगना युक्तप्रान्त की गवर्नरी पर नियुक्त है। स्वतत्रन्ता की पुजारिणी अपने देश की स्वतन्त्रता की रक्षा में डटी है।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित भारत की इनी-गिनी स्त्रियों में से हैं। सन् १९३२ से लेकर १९४२ ईसवी के आन्दोलनों तक कई बार जेल गईं और जेल से छूटीं। कांग्रेस की प्रथम मिनिस्टरी में श्रीमती पंडित युक्तप्रान्त में स्वायत्त शासन की मंत्रिणी थीं। स्वतन्त्रता के लिए श्रीमती पंडित ने संसार की अपनी सर्वप्रिय वस्तु (पति श्रीयुत रणजीत पंडित) को खो दिया। यद्यपि आज रणजीत पंडित इस संसार में नहीं हैं फिर भी उनकी धर्मपत्नी जो देश के स्वतन्त्रता-संग्राम के सेनानी की बहन हैं, आज भी राष्ट्रीय गौरव के लिए अनवरत कार्य कर रही है। सेन फ्रांसिसको-सम्मेलन ने विजयलक्ष्मी जी को संसार की एक विख्यात राजनीतिज्ञ बना दिया। न्यूयार्क-सम्मेलन में अफ्रीका के भारतीया प्रश्न से तो श्रीमती पंडित संसार की एक विश्वप्रिय महिला हो गई हैं। आज वे मास्को में भारत के राजदूत-पद पर कार्य करने गई हैं भारत का राष्ट्रध्वज प्रथम बार विदेशी राजदूतावास पर फहराने का श्रेय श्रीमती पंडित ही को है।

सोवियट रूस में भारत की राजदूत श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित।

श्री राजकुमारी अमृतकौर पटियाला-नरेश की ईसाई बहन हैं। इनकी माँ स्वतन्त्र देश फ्रांस की एक सम्भ्रान्त महिला थीं। राजकुमारी अमृतकौर महात्मा जी की शिष्या हैं। गांधी जी की अहिंसा में उनका अटल विश्वास है। पेरिस के संस्कृति-सम्मेलन में राजकुमारी भारतीय प्रतिनिधि-मंडल की उपाध्यक्षा थीं—सर राधाकृष्णन की अनुपस्थिति में वे प्रतिनिधि-मंडल की अध्यक्षा का कार्य करती थीं। आज वे भारतीय संघ की औपनिवेशिक सरकार के मंत्रिमंडल में एक मिनिस्टर का कार्य कर रही हैं।

उपर्युक्त महिलाओं के कार्यों ने मिस मेयो और अँगरेजों की धूर्तता पर स्याही पोत दी है। हमारे स्वतन्त्रता-संग्राम की हजारों नारियों ने भारत की गुलामी के बन्धन तोड़ने में हाथ बँटाये हैं। आज हम स्वतन्त्र हैं। हमारे देश ने लिंगभेद का अधिकार हटा दिया है। कोई भी नारी गाँव के एक पंच से लेकर राष्ट्रपति तक हो सकती है। हमें अपने देश की नारियों पर पूर्वकाल से आज तक गर्व रहा है और भविष्य में भी हमें उनके कार्यों पर भरोसा रहेगा।

प्रसिद्ध यात्राओं की कथा

प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान से लेकर वर्तमान युग के एवरेस्ट की चोटी पर चढ़नेवाले साहसी वीरों तक की कथा इस पुस्तक में है। जिन यात्रियों ने प्राणों की बाजी लगाकर स्थल और जल के अज्ञात देशों में भ्रमण किया था, और उनके परिश्रम से संसार का जो लाभ हुआ उसका रोचक वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। मूल्य ॥।-)

ध्रुवयात्रा

यह पुस्तक क्या है, एक तरह से दक्षिणी और उत्तरी ध्रुव का भूगोल है। ध्रुव प्रदेशों में कौन से जीव-जन्तु रहते हैं और वनस्पतियाँ होती हैं, ध्रुव क्या है, किसने उनका पता किस प्रकार लगाया, आदि बातें आप इसमें पढ़ें। पुस्तक संवाद रूप में है, इससे और भी रोचक है। मूल्य ॥।-)

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

श्री नरहरि विष्णु गाडगिल कौन हैं ?

हिन्दुस्तान के केन्द्रीय मंत्रिमंडल में श्री नरहरि गाडगिल व्यापार-विभाग के लिए नियुक्त हुए ह। आप श्री चुन्द्रीगर के स्थान पर जो पाकिस्तानवासी हो गये हैं, नियुक्त हुए हैं। संयोगवश श्री चुन्द्रीगर और श्री गाडगिल एक ही साथ, १९२० में, एल्-एल० बी० की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए थे। आपकी आयु इस समय ५३ वर्ष की है। जिस युवक ने १९१८ में इतिहास और अर्थशास्त्र लेकर पूना के फर्ग्युसन कालेज से बी० ए० दूसरी श्रेणी में उत्तीर्ण किया था दो वर्ष के बाद आप वकील बने सही; किन्तु धनार्जन के लिए आपने उस ज्ञान का उपयोग नहीं किया। आप लोकमान्य तिलक के भक्त थे इसी से उन्हीं के पद-चिह्नों पर चलकर आपने राजनैतिक क्षेत्र को अपनाया। कुछ वर्षों तक आप 'केसरी-मराठा' पत्रों के सम्पादन-विभाग में आगामी देश-सेवा की शिक्षा पा रहे थे।

१९२९ के अन्त में जब लाहौर के कांग्रेस-अधिवेशन में सम्पूर्ण स्वाधीनता का निश्चय हुआ तब आपने सम्पादन का स्थिर कार्य छोड़ दिया। क्योंकि स्वाधीनता-संग्राम में सबसे आगे रहने की लगन आपको एक जगह बैठने न देती थी।

जब कांग्रेस का यह अधिवेशन दिल्ली में हुआ, जो अवैध करार दिया गया था, श्री गाडगिल जी ने सत्याग्रह किया और पकड़े गये। दिल्ली की पुलिस ने श्री गाडगिल जी के साथ बुरा सलूक किया। बेड़ियाँ पहनाकर आपको चलाया गया। व्यवस्थापिका-सभा-भवन के सामने से आप आगे बढ़े। आपने केन्द्रीय धारा-सभा के चुनाव में एक बार कहा था, 'यही वह हाथ है, जिसमें बेड़ियाँ थीं; असेम्बली-भवन के सामने से मैं जा रहा था। अब गांधी जी की आज्ञा से उसी धारा सभा-भवन के अन्दर जाने का मैं इच्छुक हूँ। यदि आप लोग मुझे अपने मत दें, जिसका मुझे विश्वास है, तो मैं वहाँ जाकर वाइसराय के सामने यही हाथ दिखलाऊँगा और कहूँगा.....'

यह आपकी वक्तृता और समय की सूझ का एक उदाहरण है। आप केवल मराठी और अँगरेजी के नहीं, हिन्दी के वक्ता ह ।

हमारे देश के केन्द्रीय मंत्रिमंडल में श्री गाडगिल का जाना हिन्दी की दृष्टि से बहुत लाभकारी है। आपका जन्म राजपूताने में हुआ। मालवे में आपको हिन्दी आ गई, छुट्टी में जो पढ़ी थी! और व्यक्तिगत कहूँ तो लेखक के लिए गर्व की बात है, कि हिन्दी-प्रचार-संघ की (पूना) स्थापना में सबसे प्रथम श्री गाडगिल जी ने सहयोग दिया; एक वर्ष तक अपने घर में जगह दी और स्वयं हिन्दी बोलनेवाले नौसिखियों की सभा में बोलते थे। अब आपको जो भी विभाग सौंपा जायगा, आप उसमें हिन्दी का सार्वत्रिक उपयोग कर हमारी राष्ट्रभाषा को राजभाषा बना देंगे।

आपने जेल में लगभग ६-७ वर्ष काटे हैं। महाराष्ट्र के बाहर सिवनी जेल में रखा था; वहाँ आपको मारपीट भी हुई थी। देश के लिए, तिलक-भक्त को ऐसे कष्ट तो उसकी साधना का तप होता है! किन्तु इस कारागार की कोठरी का अच्छा उपयोग कर लिया।

आपने 'ग्यानबा का अर्थशास्त्र' (किसान-मजदूर-अनपढ़ की दृष्टि से) 'राज्यशास्त्र', 'सभाशास्त्र' आदि ग्रंथ लिखे हैं, जो अनूठे हैं।

मंत्रिमंडल में गाडगिल जी ही एक व्यक्ति हैं, जिन्होंने देश के लिए बहुत कठिन आर्थिक हानि को निमंत्रण दिया। महाराष्ट्र ऐसे भी गरीब प्रान्त है; किन्तु गाडगिल जी ने तो देश-सेवा के कारण अपने परिवार की भी चिन्ता न की। स्पष्टवादिता ने भी अपना काम किया। यदि आप में बापू की हाँ में हाँ मिलाने की धुन होती तो आज आप भारत की हरावल के नेता होते।

आपके दृढ़ व्रत के कारण विपक्षियों में भी आपके लिए आदर है। सार्वजनीन व्यवहार में आप अपने सिद्धान्त का समर्थन करने में कभी-कभी कड़ी भाषा भी प्रयोग करते हैं; किन्तु किसी से द्वेष या कीना नहीं रखते।

समय की सूझ तो आपका विशेष गुण है। अभी-अभी लियाकतअली खाँ केन्द्रीय धारा-सभा में नमक-कर हटाने के विषय में बोल रहे थे। किसी ने पूछा आप किसका नमक खाते हैं? गाडगिल जी ने कहा, 'ही टेक्स् समरसॉल्ट्स्' (वे कलामुंडी खाते हैं—कभी हिन्दुस्तान तो कभी पाकिस्तान का नमक हलाल करते हैं) सारा भवन हँसी से गूँज उठा।

आपने पूँजीपति और मजदूर के राजनैतिक दलों के लिए बड़े सुन्दर शब्द बनाये हैं:—

'हैवाले' और नावाले'! हैवाले जब हैवान तथा नावाले जब नादान बनते हैं, तब मालिक-मजदूर झगड़ा चालू होता है।

इसी से लेखक को विश्वास है कि आप अन्य सभी नेताओं की अपेक्षा पूज्य राजेन्द्रप्रसाद जी को छोड़, हिन्दी के सुन्दर शब्द गढ़कर राज्य-प्रबन्ध में उसका उपयोग करने की अधिक क्षमता रखते हैं। क्या लेखक की आशा पूरी होगी?

पूना —ग० र० वैशम्पायन
२० अगस्त, ४७

* * *

सीमा-कमीशन का निर्णय

पंजाब और बंगाल की सीमा निर्धारित करने की समस्या केवल उन प्रान्तों के बँटवारे ही की समस्या नहीं थी बल्कि डाक्टर अम्बेदकर के विचार से वह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की सीमा निर्धारित करने का प्रश्न था। वाइसराय द्वारा जो सीमा-कमीशन नियुक्त हुआ था उसके अध्यक्ष श्री सर सीरिल रैडक्लिफ ने कमीशन का फैसला सुनाते हुए कहा है कि उनके पास जो रिपोर्ट दी है उसमें कहा है—"सीमा के सम्बन्ध में मेरे सहयोगियों की राय में गहरा मतभेद था। वे किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सके। अन्त में उन्होंने अपना विवाद बन्द करते हुए सारा निर्णय मेरे ऊपर छोड़ दिया।" वह निर्णय सामने है। यद्यपि उस निर्णय से देश में सन्तोष नहीं है और उससे क्षोभ बढ़ता ही रहेगा फिर भी हम उस निर्णय को मानने के लिए बाध्य हैं, क्योंकि दोनों पक्ष ने सीमा-कमीशन का निर्णय मानने में अपनी स्वीकृति दे दी थी; परन्तु वह इसलिए न थी कि उससे देश में गहरा असन्तोष हो। पंजाब में सिक्खों को दो भागों में विभाजित कर दिया गया ह, वहाँ की नहरें, सड़कें और रेलों को भी बहुत कुछ विभाजित करना पड़ा है। रावी नदी के पूर्व में बहुत दूर तक का पंजाब पाकिस्तान में चला गया। पंजाब की नहरों को सिक्खों ने अपने कठिन परिश्रम से तैयार किया था। आज वे उनसे दूर कर दी गई हैं। यही स्थिति बंगाल की भी ह। बंगालकी हिन्दू प्राधान्य जनसंख्यावाले बहुत से क्षेत्र पाकिस्तानी इलाके में रख दिये गये हैं। खुलना जिला जो कलकत्ता जैसे बड़े शहर को हटाकर पूर्वी बंगाल में कर दिया गया ह। जलपाई-गुडी से लेकर दक्षिणी बंगाल तक के कितने ही क्षेत्र बिना वहाँ की जनता की इच्छा के पाकिस्तानी घोषित कर दिये गये हैं। फिर भी हमें सीमा-कमीशन के निर्णय और वक्तव्य से प्रकट होता है कि यह देश प्राकृतिक दृष्टि से विभाजित नहीं हो सकता। जितनी भी सीमा निर्धारित की गई है वह सब केवल कामचलाऊ है। यह सीमा उसी प्रकार की होगी जैसे कनाडा और संयुक्तराज्य अमरीका की है। ऐसी दशा में दोनों देशों को सर्वदा एक-दूसरे से भय बना रहेगा। सीमा निर्धारण करने का वाद-विवाद कल ही खतम हुआ है, उससे दो दिन भी अधिक नहीं बीतने पाये कि अमृतसर के गाँवों पर पश्चिम की ओर से मोटर पर चढ़े हुए आक्रमणकारियों ने हमला कर दिया। यदि सेना न होती तो शायद वे कितने ही गाँवों को लूटकर हजारों को मार डालते। पर, वे सब अधिकतर पकड़ लिये गये हैं। इस प्रकार के आक्रमण दोनों उपनिवेशों पर होते रहने की बहुत कुछ सम्भावना है। ऐसे आक्रमण तभी रुक सकते हैं जब दोनों राज्यों की सीमाएँ प्राकृतिक आधार पर निर्धारित हों जैसा कि अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धान्त है कि दो स्वतन्त्र राज्यों की सीमाएँ ऐसे प्राकृतिक आधारों पर निर्धारित होनी चाहिए कि वे एक-दूसरे से अपनी रक्षा कर सकें; परन्तु इस सीमा-कमीशन के निर्णय में इस सिद्धान्त की पूरी अवहेलना की गई ह। इसलिए यदि दोनों राष्ट्र रक्षा के मामले में एक-दूसरे पर अवलम्बित न रहेंगे तो दोनों का अस्तित्व समाप्त हो सकता ह। दोनों देशों की सीमा सर्वदा खुली रहेगी और उनका आवागमन भी अमरीका और कनाडा की भाँति निर्बाध रखना होगा। दोनों पक्षों के अनेक महत्त्व-पूर्ण सांस्कृतिक और व्यापारिक केन्द्र, देश विभाजन के फलस्वरूप कट गये ह। सिक्खों के अनेक पवित्र स्थान, पाकि... में चले गये हैं। बंगाल में भी गंगा... ब्रह्मपुत्र और पद्मा नदियाँ पाकि... में चली गई हैं वैसे ही मुसलमान... अजमेर शरीफ हिन्दुस्तान में है। प्रकार के विभाजन से दोनों पक्ष के... टूट गये हैं और जब तक वे न ... सर्वदा कमजोर रहेंगे। अतः संसार में... बलशाली राष्ट्र बनाने के लिए... के दोनों उपनिवेशों को मिलकर... चाहिए। अब वाद-विवाद को... कर हम सबको देश के संगठन... सम्पन्नता में जुट जाना है। तभी... संसार में कुछ कर सकते हैं।

प्रयाग —दीनबंधु
२१ अगस्त, ४७

* * *

राष्ट्रभाषा हिन्दी

अपने गुणों के कारण 'हिन्दी' ... राष्ट्रभाषा और 'नागरी' राष्ट्रलिपि... और आज की परिस्थिति में तो ... अतिरिक्त और कुछ सोचना उपहासास्... है। प्रसन्नता का विषय है कि कांग्रेस... बहुमत हिन्दी को राष्ट्रभाषा और ... को राष्ट्रलिपि स्वीकार करने के ... है, किन्तु अभी विधान-परिषद् में ... के बहुमत के इस निर्णय पर स्वीकृ... मुहर लगनी बाकी है। हम सबका ... है कि इस बीच में पत्र, प्रस्ताव और ... द्वारा विधान-परिषद् के सभापति ... सदस्यों के पास इतना अधिक जन... पहुँचा दें जिससे विधान-परिषद् में ... को राष्ट्रभाषा और देवनागरी को ... लिपि स्वीकार करने में किसी भी प्र... की बाधा उपस्थित न हो।

आशा है आप नीचे लिखे पते पर ... प्रस्ताव अथवा तार भेजकर अपना ... भाषा-प्रेम आवेलम्ब व्यक्त करेंगे। प... माननीय डा० राजेन्द्रप्रसाद सभा... विधान-परिषद्, नई देहली।

—आनन्द कौसल्या...
मंत्री, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, ...

मुफ़्त

असली फाउन्टेनपेन और असली ... वाच गारन्टी १२ साल, मुफ़्त हासिल ... के लिए आज ही लिखिए। वरना ... हाथ न आयेगा।

(D. A.) इम्पीरियल कारपोरेशन
धर्मशाला

अपनी बात

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण वैद्य

मनुष्य के चरित्र में किस प्रकार दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर करके किस प्रकार अपने जीवन को उन्नत ... सकता है, यह बात इस पुस्तक में बहुत ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है ... लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के ... पर। अपने चरित्र का निर्माण करने के ... प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार ... पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) बारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंग-मंच

महाराणा प्रताप-फिल्म कैसा है?

अपूर्व वीरत्व और साहस का सुन्दर चित्रण

लेखक श्री गोपाल मेहरोत्रा

अकबर की कूटनीति द्वारा भारतवर्ष की शक्तियाँ लुप्त हो गई थीं और की रक्षा के लिए राजपूतों की ध्यान में न थीं, समस्त प्रज्वलित हो उठा था; भारत के देश में अग्निकांड प्रारम्भ हो चुका था। अकबर ने उन सबको मृत्यु की गोद में सुला देने की चेष्टा की; परन्तु एक पाँसा फेंका, जो अमानुषता

बम्बई के चित्र-जगत् का प्रसिद्ध अभिनेता श्री ईश्वरलाल।

हम घास पर सोयेंगे और पत्तल में खाएँगे। कुछ कारणवश प्रताप के छोटे भ्राता, शक्तिसिंह, गर्व के वशीभूत होकर, देशद्रोही बनकर तथा अकबर से मित्रता का हाथ बढ़ाकर—मानसिंह तथा सलीमसिंह के साथ, अपने भ्राता से युद्ध करने के लिए हल्दीघाटी की ओर बढ़ता है। विश्वासघाती शक्तिसिंह अपनी धर्म-पत्नी, वीणा, के साथ कपट करता है। महावत खाँ की अध्यक्षता में, २० हजार राजपूतों के मुकाबले ८० हजार मुगल-सेना का, भीषण युद्ध होता है। मुगल-सेना विजयी होती है। निरन्तर युद्ध करने के कारणवश महाराणा, युद्धस्थल में ही, थक तथा घायल हो जाते हैं। स्वामिभक्त चेतक उन्हें सुरक्षित दशा में ले जाकर उस स्थान पर महाराणा को छोड़कर परलोक सिधारता है जहाँ पर प्रतापसिंह की पतिव्रता स्त्री, लक्ष्मी ने अपने पति को युद्ध के लिए विदा किया था। अभाग्यवश तथा अन्य कारणोवश शक्तिसिंह अपने भ्राता का शीश काटने के लिए आता है। महावत खाँ भी उसके पीछे आता है। परन्तु भाई की ऐसी असहनीय दशा को निरखकर शक्तिसिंह अपने भाई के साथ रहकर मेवाड़ को स्वाधीन करने की प्रतिज्ञा करता है। घायल भाई का प्रेम अथाह समुद्र की भाँति उमड़ आता है। महावत खाँ उनको सहायता देने का वचन देता है। निर्दोष महावत खाँ तथा शक्तिसिंह को वीणा अपनी युक्तिपूर्ण दलीलों से उन दोनों को निरपराधी सिद्ध करती है। अर्थ के अभाव में प्रताप की दशा सोचनीय हो जाती है; परन्तु स्वामिभक्त भामाशाह की सहायतावश विजय प्राप्त करते हुए महाराणा प्रतापसिंह चित्तौर के समीप आ जाते हैं। निरन्तर युद्ध के अभाव से उनका स्वास्थ्य गिर जाता है। यही पूर्ण चित्र की कहानी का मूल तत्त्व है।

कथा-लेखक ने प्रस्तुत चित्र की कहानी को पूर्णतया इतिहास-सम्मत तथा महाराणा प्रताप के गौरव को उच्चता की चरम सीमा पर पहुँचाने की पूर्णतया चेष्टा की है और आप उसमें उत्तीर्ण प्रतीत हुए हैं। जो हिन्दुओं की भविष्य-पीढ़ियों के लिए एक आदर्श बन गया है। कहानीकार ने किसी भी स्थान पर हमारे साहित्य, इतिहास तथा सत्यता पर कुठाराघात करने का प्रयत्न नहीं किया है जिसके लिए कथाकार धन्यवाद के पात्र हैं। यद्यपि शाहंशाह अकबर तथा वीरबल का साधु के वेष में महाराणा से भेंट की घटना इतिहास में लिखित नहीं है। असत्य होने पर भी कहानी में भावुकता एवं रोचकता का संचार करती है; परन्तु पूर्ण चित्र में एक बात निरन्तर खटकती रहती है—कथा-लेखक ने राजपूत-रमणी के आदर्श को परिहास का खिलौना सिद्ध कर दिया है। श्री मुंशी दिल द्वारा लिखित पटकथा एवं संवाद अत्यधिक सुन्दर, हृदयग्राही, स्वाभाविक, असामयिक एवं हास्यपूर्ण हैं। संवादों की भाषा अधिकतर उर्दू है। स्थान-स्थान पर 'जय हिन्द' 'जय हिन्द' कहा जाना असामयिक एवं परिहासपूर्ण प्रतीत होता है। श्री स्वामी रामानन्दजी द्वारा लिखित गीत सुन्दर, सामयिक एवं चित्ताकर्षक हैं। तीन गीत अधिक प्रशंसनीय हैं। संगीत-निर्देशक श्रीराम गंगुल ने भावुकता एवं सफलता का प्रदर्शन किया है। इस गीत की टयून अत्यधिक आकर्षक है—'अच्छा नहीं भगवान् गरीबों को सताना'। श्री के० एच० क्षेम का 'मेक-अप' सुन्दर एवं स्वाभाविक है। श्री डी० एम० पिल्ला का साउन्ड-कार्य सराहनीय है। श्री द्रोणाचार्य की फोटोग्राफी सुन्दर एवं सराहनीय है। युद्ध-स्थल के दृश्य रुचिकर हैं। सेट-सेटिंग्स भव्य हैं। छाया-लेखन अदोषपूर्ण है। ध्वनि-आलेखन संतोषजनक है।

अभिनय-कला की दृष्टि से सबसे सुन्दर, स्वाभाविक, गम्भीर एवं कलात्मक अभिनय महाराणा प्रताप की भूमिका में साल्वी ने अभिनीत किया है। यद्यपि साल्वी के स्थान पर गुलाम मुहम्मद होते तो चित्र में और चार चाँद लग जाते। कथाकार एवं दिग्दर्शक श्री ईश्वरलाल ने शक्तिसिंह के रूप में सफल, सुन्दर एवं आकर्षक अभिनय का प्रदर्शन किया है। वीणा की भूमिका में खुरशीद ने न्यूनाधिक कोटि की 'एक्टिंग' का चित्रण किया है। शाहंशाह अकबर की कल्पना में मुबारक ने अत्यधिक सुन्दर, प्रशंसनीय, स्वाभाविक एवं कलात्मक अभिनय अभिभूत किया है। आपके चरित्र-चित्रण में अत्यधिक सतर्कता का उदाहरण प्राप्त होता है। लक्ष्मी की काया की अभिनेत्री ने कला एवं सतर्कता के साथ अपना पार्ट अदा किया है। शेष पात्रों ने भी सफल एवं सन्तोषप्रद कार्य किया है।

प्रस्तुत चित्र की कहानी जटिल तथा अद्भुत घटनाओं से पूर्ण होने पर भी निर्देशक-निर्माता श्री जयन्त देसाई ने उसको ऐसी कुशलता के साथ रजतपट पर उपस्थित किया है कि दर्शकों के नेत्र आदि से अन्त तक रंगमंच पर रोचकता के साथ स्थिर रहते हैं; परन्तु पात्रों के चयन तथा राजपूत-रमणी के चरित्र-चित्रण में श्री देसाई जी ने यह सिद्ध कर दिया है मानो आपने इससे पूर्व किसी भी चित्र का निर्देशन न किया हो तथा आप यह भी न जानते होंगे कि मेवाड़ अथवा उदयपुर किस दिशा में है? यद्यपि 'महाराणा प्रताप' आपकी पूर्व कृतियों 'भक्तराज' अथवा 'मनोरमा' की उच्चता तक नहीं पहुँच सका, परन्तु स्वयं में 'महाराणा प्रताप' एक अनूठी, उत्कृष्ट एवं निरखने योग्य रचना है।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान का नया विधान

(पेज ५ का शेष)

जो वास्तविक धारणाएँ तथा स्वार्थ हैं, उनमें फर्क किया जाना चाहिए।"

मैंने उसी पुस्तक में यह कहा था कि "कोई क्रान्तिकारी नारा कहाँ तक ईमानदारी के साथ दिया गया है इस बात को जानने के लिए यह देखना पड़ेगा कि कौन किस वर्ग के पक्ष में इस नारे को दिया जा रहा है।" इसी कसौटी पर कसते हुए मैंने यह भविष्यवाणी करने का साहस किया था कि कांग्रेस जो विधान बनायेगी उसके सम्बन्ध में समाजवादी दृष्टि होने पर भी, वह कभी बुर्जुवा दायरे से निकल नहीं सकता। विधान-सम्मेलन के बनाये हुए विधान से यह बात बिलकुल स्पष्ट हो गई। इधर अन्तर्कालीन सरकार ने जो थोड़े से हुक्मनामें निकाले हैं, उनसे भी इसका स्पष्टीकरण हो गया। अभी-अभी अन्तर्कालीन सरकार ने बहुत से विदेशी द्रव्यों का भारतवर्ष में आना बन्द किया है। देखने में तो यह हुक्मनामा स्वदेशी द्रव्यों के प्रोत्साहन के लिए है पर एक उदाहरण लिया जाय। सरकार ने बाहर से पूरी साइकल का आना बन्द कर दिया। स्मरण रहे कि हुक्मनामें में पूरी साइकल शब्द आता है। इसका अर्थ यह है कि बाहर से साइकल के हिस्से मँगाकर उन्हें देशी रूप में बेचने की—और इस दौरान में उसका दाम दुगना करने की सम्भावना हो गई। हमें एक प्रचलित देशी साइकल के सम्बन्ध में जो कुछ मालूम है उससे हम यह कह सकते हैं कि भविष्य के लिए विशेष आशा नहीं बँध रही है। हमारे देश के पूँजीपतियों का ध्यान दूसरे देश के ही पूंजीपतियों की तरह केवल अपने मुनाफे की रकम को बढ़ाने की ओर ज्ञात होती है। कहना न होगा कि विधान या सरकार का उद्देश्य देशी पूँजीपतियों को मुनाफा बढ़ाने देना नहीं होना चाहिए, बल्कि उनका उद्देश्य देश के उद्योग-धंधों की वास्तविक उन्नति होनी चाहिए। इसका कहाँ तक पालन होगा, इसमें सन्देह है।

तो सबसे बड़ी आलोचना हमारी तरफ से यह है कि देश का जो विधान बनाया गया, वह पूँजीवादी देशों के नमूने पर है। ब्रिटिश सरकार ने पाकिस्तान का झगड़ा पैदा कर तथा अन्य अनेक बखेड़े पैदा कर भारतीय यूनियन को ऐसी हालत में कर दिया है कि वह सिर न उठा सके और मौका मिले तो एक पूँजीवादी देश जैसे साम्राज्यवाद की ओर बढ़ाता है उसी प्रकार भारतवर्ष का साम्राज्यवाद की ओर बढ़ना अवश्यम्भावी है। अवश्य जैसा कि हमने कहा ऐसा होने में विपुल बाधाएँ हैं। अभी तो अपने पैर पर खड़े होते ही न मालूम कितना वक्त लगे।

दूसरी बात यह है कि यद्यपि भारतवर्ष में पूँजीवादी राष्ट्र कायम हुए; फिर भी यह उसकी आदर्शवादी अवस्था है। इस समय महात्मा गांधी, पंडित नेहरू आदि आदर्शवादी नेता मौजूद हैं, इस कारण कुछ दिनों तक वह विश्व के रंगमंच पर साम्राज्यवादी रूप में नहीं आ सकता। वाशिंगटन के जमाने में अमेरिका भी ऐसा ही था। पर हम ट्रूमेन के अमेरिका को देखें। वह एक बदतर साम्राज्यवादी राष्ट्र हो रहा है—और भी हम इस सम्बन्ध में चीन को देख सकते हैं। संयुक्तराष्ट्र-संघ के सामने अभी-अभी जब इंडोनेशिया की समस्या आई तो उसमें चीन के प्रतिनिधि ने रूस तथा भारत का साथ न देकर उच्च प्रतिनिधियों का दिया। अभी भारतीय यूनियन एक नई यूनियन है। उससे किसी से मित्रता-शत्रुता नहीं है, पंडित नेहरू ऐसे नेता उसके सिर पर हैं, इस कारण वह भले ही कुछ दिनों तक अपने इस आदर्शवादी ढंग पर बना रहें पर समय पाकर यदि इस बीच में यहाँ पर समाजवाद स्थापित न हुआ, तो चीन की तरह उसका पतन होना कोई अस्वाभाविक बात नहीं है। कोई भी संस्था एक जगह पर खड़ी नहीं रह सकती। वह या तो आगे बढ़ेगी या पीछे हटेगी।

अब हम यहाँ के विधान के कुछ ब्योरे पर जायेंगे। इस विधान में यह तय हुआ है कि जो प्रान्त चाहे, वह अपने यहाँ पार्लियामेंट के दो चेम्बर रख सकता है। समझ में नहीं आता कि विधान में यह बात क्यों रखी गई? लोकतंत्र के सबसे आगे बढ़े हुए विचारों के अनुसार इस प्रकार दो चेम्बरों का होना बिलकुल गलत हो चुका है।

इस विधान में गवर्नर तथा उप-गवर्नर भी रखे गये हैं और उनको बहुत अधिक ताकत दी गई है। जहाँ तक इस बात का सम्बन्ध है, यह अंश अमेरिका के विधान के अनुसार बना है। यह सभी जानते हैं कि अमेरिका में राष्ट्रपति की शक्ति मंत्रिमंडल से कहीं अधिक है। मंत्रिमंडल तो वहाँ एक तरह से राष्ट्रपति के मुँह की ओर ताक-कर तभी कोई काम करता है। यह देखा गया है कि इस प्रकार के विधान से एक व्यक्ति को बहुत अधिक महत्त्व प्राप्त होता है। पता नहीं क्यों विधान-परिषद् ने इसकी गुंजाइश रखी है। कुछ लोगों ने यह जो कहा है कि ऐसा कुछ बड़ी नौकरियों को बढ़ाने के लिए किया गया है, यह किसी प्रकार अवज्ञा करके उड़ा नहीं दिया जा सकता। आखिर इस पद की सृष्टि से शासन-कार्य में कौन-सी सुविधा हो गई और जनता को इससे क्या फायदा हुआ? फिर केवल गवर्नर ही नहीं, एक उपगवर्नर भी रखा गया।

गवर्नर को बहुत विस्तृत अधिकार दिये गये हैं, यहाँ तक कि वह मंत्रिमंडल के विरुद्ध अपनी राय से काम कर सकता है। गवर्नर जिस वक्त जरूरत समझे, उस वक्त आर्डिनेन्स भी बना सकता है। आखिर एक जनप्रिय सरकार में इस प्रकार की शक्तियों की क्या जरूरत थी? धारा-सभा तो मंत्रिमंडल पर देख-रेख करने के लिए, तथा धारा-सभा पर देख-रेख करने के लिए जनता है, ऐसी हालत में गवर्नर को इतनी शक्ति देने का एक ही उद्देश्य ज्ञात होता है, वह यह कि गवर्नर हाई कमाण्ड का आदमी होगा और यदि मंत्रिमंडल किसी मामले में गवर्नर का विरोध करे या उसके विरुद्ध आचरण करे तो गवर्नर को यह अधिकार होगा कि वह उसके सिर पर से काम करें। कम से कम कानून बनाने का गवर्नर को जो अधिकार दिया गया है, वह बिलकुल अवांछनीय है।

विधान-परिषद् ने झंडे को बदल-कर और उसमें चर्खे की जगह अशोक-चक्र लगवाकर बड़ी राजनीतिज्ञता का परिचय दिया है। यद्यपि चर्खेवाले तिरंगे झंडे के ही मातहत कांग्रेस की सारी लड़ाइयाँ, यहाँ तक कि आजाद हिन्द फौज की लड़ाइयाँ लड़ी गईं, इसलिए भावुक दृष्टि से स्वतन्त्र भारत में उसी का झंडा के रूप में स्वीकृत होना उचित होता, पर बहुत से लोगों को इस चर्खे से सचमुच कम प्रेम है। फिर चर्खे को स्वतन्त्रता की प्राप्ति के साधन के रूप में बताया गया था। अब जब कि कांग्रेस के अनुसार स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई, तो भावुक कारण रहते हुए भी उसका हट जाना उचित होता। अशोक-चक्र का चुनाव इस सम्बन्ध में बहुत ही बुद्धिमत्तापूर्ण है। पर ये बातें विधान की असली अन्तर्गत वस्तु के मुकाबिले में बहुत कम महत्त्वपूर्ण हैं। फिर जैसा कि हम दिखा चुके विधान जितना अच्छा है, उतने का भी कहाँ तक पालन होता है, यह देखने की बात है।

प्रान्तीय ग्रामसुधार-योजना

(पेज ८ का शेष)

की शिक्षा देने के लिए निम्नलिखि
संख्या में केन्द्र खोले जायेंगे।

करघे की शिक्षा	१५
चमड़े की ट्रेनिंग	१५
रँगाई, छपाई	१०
बढ़ईगीरी	१०
कम्बल बनाई	५
लोहे का काम	५
चमड़े का काम	५
लकड़ी के खिलौने	५
मिट्टी के बर्तन	५
फुटकर	५

इन शिक्षा-केन्द्रों में उद्योग की उन्नत विधियाँ बताई जा निश्चय किया गया है कि प्रान्त भर वर्ष के अन्दर २०० शिक्षा के केन्द्र दिये जायँ। जाहिर है ज्यों-ज्यों केन्द्र बढ़ेंगे, शिक्षित कारीगरों की बढ़ेगी। कारीगरों की सहकारी स भी उसी अनुपात में बढ़ेंगी और प्रकार एक ओर तो उद्योग-धंधों विकास होगा, दूसरी ओर उत्पादन बिक्री बनियों के हाथ से नि सहकारी समितियों के हाथ चली

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निबलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।—) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३।—), दो शीशी ५॥।—) डाक-खर्च माफ़ पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

स्वतंत्रता-दिवस के समारोह

देवप्रयाग (गढ़वाल) में कांग्रेस-मंडल टिहरी राज्य प्रजामंडल द्वारा स्वतन्त्रता-समारोह धूमधाम से मनाया गया। ... से १५ अगस्त तक प्रभातफेरी ... गई। १४ अगस्त रात को श्री ... बांकेलाल टोडरिया की अध्यक्षता ... शुरू हुआ, इसके बाद स्वस्ति-... बन्दूकों की सलामियाँ दी गईं, ... कांग्रेस तथा प्रजामंडल के कार्य-... का जुलूस श्री रघुनाथ कीर्ति ... में गया। वहाँ पुण्यावाचन ... पंडित मुरलीधर शास्त्री द्वारा ... झंडा फहराने की रश्म अदा की ... फिर वहीं जूलूस प्राइमरी स्कूल में ... हुआ और पंडित कैलाशनारायण ... झंडा फहराया गया। श्री रघुनाथ ... हाईस्कूल में श्रीमती जैदेई देवी ... द्वारा झंडा फहराया गया। ... का एक खासा लम्बा जुलूस वाह ... में स्थानीय मंडल कांग्रेस कमेटी ... के सामने पहुँचा और राष्ट्रीय ... समारोहपूर्वक स्थानीय ... श्री धनेश शास्त्री के द्वारा मनाया ... राष्ट्रीय गायन के साथ वह जुलूस ... नारे लगाते हुए देवप्रयाग ... राज्य) में पहुँचा। पत्रकार तथा ... में टिहरी के जेलयात्री श्री ... डंगवाल भिखारी के हाथों से ... फहराने व सलामी की रश्म अदा की ... जुलूस फिर श्री रघुनाथ जी के मंदिर ... वहाँ पर भारत-सरकार की ... के लिए बधाई दी गई। ... कांग्रेस कमेटी के सदस्य श्री ... थपलियाल, शालिग्राम वलूणी ... शास्त्री तमाम गाँवों का दौरा ... हुए गाजे-बाजे के साथ ग्रामीण ... को एकत्रित कर देवप्रयाग आये। ... मंडल घंडवाड़ा के सदस्य विशेष ... आमंत्रित थे। शाम को एक आम ... काली कमलीवाले के विशाल ... में श्री धनेश शास्त्री की अध्यक्षता ... हुई। कार्यकर्ताओं एवं विद्वानों ... भाषण हुए। श्री ललिताप्रसाद ... "ललित" तथा सत्यप्रसाद ... बी० ए० ने कवितायें सुनाईं। रात ... एवं देवप्रयाग में शानदार दिवाली ... गई। इसके अतिरिक्त श्री सत्य-... शास्त्री, कृष्णकान्त टोडरिया, ... डबराल, भगनलाल टोडरिया, ... तेवाड़ी, कैलाशनारायण भट्ट, ... तेवाड़ी, दीनानाथ पंचपुरी, ... डंगवाल, दीनानाथ पालीवाल, ... बंडोलिया, तथा धनेश शास्त्री ... रोज तक प्रभातफेरी एवं अन्य ... में विशेष सहयोग दिया। टिहरी ... के स्थानीय अधिकारियों द्वारा ... तथा पुलिस थाने में राष्ट्रीय ... फहराया गया; किन्तु प्रजामंडल, ... कांग्रेस कमेटी और स्थानीय जनता ... प्रकार सहयोग नहीं लिया गया, ... डुगडुगी द्वारा आम जनता को ... मनाने का एलान किया गया।

—संवाददाता

टिहरी राज्य में, स्वतंत्रता-दिवस के अवसर पर टिहरी सरकार ने प्रजामण्डल के प्रधान श्री परिपूर्णानन्द पैन्यूली को गिरफ़्तार कर लिया जो पिछले पाँच-छः महीने से फरार थे। श्री पैन्यूली जी ने अ० भा० देशी राज्य लोक-परिषद् के प्रधान के उस भाषण के आधार पर जिसमें उन्होंने देशी नरेशों को रियासती प्रजा को पिछली बातें भूलकर नई परिस्थितियों के अनुसार चलने की सलाह दी थी, के आधार पर राज्य की सीमा के अन्दर प्रवेश किया था। इस गिरफ़्तारी के विरुद्ध टिहरी नगर में पूर्ण हड़ताल रही। हड़ताल में भाग लेनेवाले तथा विद्यार्थियों का संगठन करनेवाले एक प्रगतिशील विद्यार्थी को कालेज से निकाल दिया गया और प्रजामण्डल के प्रमुख कार्यकर्ताओं को पब्लिक-सेफ़्टी आर्डिनेंस के मातहत गिरफ़्तार कर लिया गया। स्मरण रहे कि १० जुलाई को प्रजामण्डल ने एक प्रस्ताव द्वारा टिहरी नरेश से एक उत्तरदायी शासन की स्थापना मौजूदा असेम्बली को भंग करके की माँग को पूरा न करने पर राज्य में आन्दोलन छेड़ने की धमकी दी थी; परन्तु सरकार ने कार्यकर्ताओं को गिरफ़्तार कर उसे टालना चाहा है। प्रजामण्डल ने, प्रजामण्डल के कार्यकारिणी के बाकी सदस्यों की एक आवश्यक मीटिंग बुलाई है। प्रजामण्डल के कार्यकर्ताओं की गिरफ़्तारी से राज्य में बड़ा असन्तोष फैल गया है। सरकार ने जनता को आतङ्कित करने के लिए टिहरी नगर के चारों ओर सशस्त्र पुलिस व फौज के पहरे बैठा दिये हैं।

श्रीपरिपूर्णानन्द पैन्यूली नरेन्द्र-नगर हवालात में हैं और बाकी कार्यकर्ता टिहरी सेन्ट्रल जेल में। जिनमें से श्री शंकरदत्त जी डोमाल की अवस्था चिन्ताजनक है।

—संवाददाता

* * *

तहसील सोराम इलाहाबाद में सिंहगढ़ मंडल कांग्रेस कमेटी के तत्त्वावधान में १५ अगस्त को स्वतन्त्रता समारोह के उपलक्ष में एक सार्वजनिक सभा गेंदा उमरिया गाँव में हुई। मंडल के सभापति पंडित ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल ने राष्ट्रीय झंडा फहराया तथा स्वतन्त्रता-दिवस के महत्त्व को बतलाया। सभा में ७६ गाँवों के किसान तथा कांग्रेस कार्यकर्ता भारी संख्या में उपस्थित थे। मंडल कांग्रेस कमेटी के मंत्री श्री जगदीशनारायण शुक्ल ने भी किसानों को स्वतन्त्रता-दिवस का महत्त्व बतलाया।

नसरतपुर कोट में १५ अगस्त को स्वतन्त्रता-दिवस मनाया गया। कोट पर कुँवर उत्तमनारायणसिंह ने राष्ट्रीय झंडा फहराया और अभिवादन किया। कुँवर साहब ने स्वतन्त्रता-दिवस के उपलक्ष में गरीबों पर कटाई गई कुछ डिगरियों को माफ कर दिया और नौकरों के वेतन भी बढ़ाये गये। शाम को कोट पर रोशनी हुई। संगीतज्ञों ने संगीत का प्रदर्शन भी किया।

—संवाददाता

इलाहाबाद तहसील करछना की तहसीली इमारत पर परगना हाकिम जुन्नूरैन ने झण्डा फहराया और वहाँ की सभा में सर्वश्री पंडित शीतलादीन द्विवेदी, रामनरेश मिश्र, माताम्बर द्विवेदी और फौजदार पाण्डेय तथा करछना ग्राम के ठाकुर अभयराजसिंह और पंडित श्यामाकान्त वैद्य ने जनता को स्वतन्त्रता-दिवस की महत्ता समझाया। करमा में बाबू सालिग्राम जायसवाल एम० एल० ए० ने शहीद बचऊ महाराज के परिवार को धन्यवाद दिया कि उनके पूर्वज इस महान् कार्य में काम आयें और स्वतन्त्रता-दिवस का महत्त्व समझाया। शंकरगढ़ में श्री दीनबन्धु पाठक ने कांग्रेस दफ़्तर तथा अन्य सार्वजनिक इमारतों पर झण्डा फहराया। राजा बारा ने अपने खेल के मैदान में राष्ट्रीय झंडा फहराया और उसकी सलामी ली। शाम को एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें देश के स्वातंत्र्य-संग्राम पर सर्वश्री सोमनाथ समदरिया, महावीरप्रसाद, भुल्ली महाराज और कमलाप्रसाद जी ने काफी प्रकाश डाला। लालापुर में पंडित विष्णुराम तिवारी और श्री जगदम्बाप्रसाद पाण्डे तथा ललईराम ने सभा की और स्वतन्त्रता-दिवस मनाया। जसरा में श्री व्रजमोहन शुक्ल और पीताम्बरलाल के साथ पं० शारदाप्रसाद पाण्डेय ने स्वतन्त्रता-दिवस बड़े धूमधाम से मनाया।

—संवाददाता

* * *

वृन्दावन के प्रसिद्ध वैद्य गोस्वामी गौरकृष्ण शास्त्री काव्यतीर्थ में एक सनातनधर्म आयुर्वेद महाविद्यालय और औषधालय स्थापित करने जा रहे हैं। आपको इस कार्य में अनेक गण्यमान महानुभावों का सहयोग और आशीर्वाद प्राप्त है। १५ ता० के स्वाधीनता-दिवस की खुशी में वृन्दावन के अभिनव चैतन्य औषधालय ने अपने यहाँ की सारी औषधियाँ एक मास तक मुफ़्त वितरण करने का निश्चय किया है। औषधालय के मालिक गोस्वामी गौरकृष्ण वैद्य ने १५ ता० के जुलूस में अपने यहाँ की बहुत सी कीमती औषधियाँ मुफ़्त वितरण कीं। वृन्दावन के रासधारी स्वामी प्रियासरन की पत्नी कुआँ में गिरकर मर गईं। स्वामी जी जब रात को रास करके आये तब उन्हें इसका पता चला।

—संवाददाता

* * *

उन्नाव में १६ अगस्त '४७ को स्वतन्त्र भारत-समारोह के शुभ अवसर पर गांधी-हाल में स्त्रियों की एक सार्वजनिक सभा हुई। श्रीमती ज्ञाननाथ रैना, जिलाधीश ने अध्यक्षता सम्पन्न करते हुए 'भारतीय-नारी-सेवा-संघ' संस्था की स्थापना की। सभा का प्रारम्भ बालिकाओं के वन्दे-मातरम् गान तथा श्री सुमित्राकुमारी सिनहा के 'गगन तक फहर चक्रधारी तिरंगे' से हुआ। श्रीमती श्यामकुमारी सेठ ने नारी-जागरण पर महत्त्वपूर्ण भाषण दिया। श्रीमती हरीकृष्ण कौल ने स्त्रियों की शिक्षा-प्रसार पर भाषण दिया। श्रीमती हसनरजा ने भारतीय नारी-सेवा-संघ जैसी संस्था की आवश्यकता पर जोर दिया। श्रीमती ज्ञाननाथ रैना, जिलाधीश ने स्त्रियों के संगठन और रचनात्मक कार्य पर महत्त्वपूर्ण भाषण दिया।

—संवाददाता

* * *

बिहार (उन्नाव) में १५ अगस्त को स्वतन्त्रता-दिवस धूमधाम के साथ मनाया गया। प्रातःकाल प्रभातफेरी में कांग्रेस कार्यकर्ताओं तथा नागरिकों द्वारा समारोहपूर्वक राष्ट्रीय झाँकी निकाली गई। श्री हिन्दी छात्र पुस्तकालय, स्टेशन, मिडिल, प्राइमरी, कन्या पाठशाला तथा कई धार्मिक स्थानों पर झंडे फहराये गये। स्कूलों तथा कन्या पाठशालाओं के लड़के और लड़कियों ने जुलूस में भाग लिया। कन्या-पाठशाला की हेड मिस्ट्रेस मिसेज सैमुअल भी राष्ट्रीय पताका हाथ में लिये हुए आगे-आगे चल रही थीं। फिर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने सभा की और भाषण दिये। हाँ प्रबन्ध दुरुस्त नहीं था। शाम को ठाकुरद्वारे में सभा की गई हरिकीर्तन भी हुआ और ६ बजे शाम को उसी मन्दिर में ताल्लुकदार ठाकुर जगदीशबख्शसिंह रईस की आज्ञानुसार हरिजन प्रवेश भी हुआ। ७ बजे शाम को ठाकुरद्वारा, बाबा गौरीशंकर जी का मंदिर तथा बाबा विद्याधर जी के मंदिर में ग्रामपंचायत बिहार की तरफ से मिठाई बाँटी गई। रात में फाटकों, देवस्थानों, मंदिरों तथा मसजिदों में दीवाली जलाई गई। पंडित रामसागर त्रिवेदी संयोजक "बुनियादी संगठन पंचायत केन्द्र" बिहार ने उस दिन "सुखद संदेश" नामक पर्चे बाँटे।

—संवाददाता

* * *

मंडावा (जयपुर) स्वतन्त्रता-दिवस मंडावा में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। आजाद चौक में श्री रामेश्वर रामगडिया युवक सभा भवन पर श्री सत्यदेव खेमाणी और प्रजामंडल कार्यालय पर श्री सावरमल जोशी ने झंडारोहण किया। राष्ट्रीय पताकाओं से बाजार शोभायमान हो रहा था। शाम को युवक सभा-भवन, प्रजामंडल कार्यालय, दूकानों, मस्जिदों एवं अन्य सार्वजनिक स्थानों पर रोशनी हो रही थी। रात को आठ बजे युवक सभा-भवन से एक विशाल जुलूस मशालों के साथ निकला जिसमें हिन्दू-मुस्लिम आदि सभी सम्प्रदाय के लोग एक बड़ी संख्या में शामिल थे। श्री रामेश्वरजी रामगडिया की अध्यक्षता में सभा की कार्यवाही प्रारम्भ हुई, जिसमें श्री शंकरलाल जी शाह, श्री शुभकरण जी शर्मा आदि के भाषण हुए।

—संवाददाता

* * *

मैनपुरी में मण्डल कांग्रेस कमेटी आर्यपुर खेडा में स्वतन्त्रता-दिवस १५-१६ अगस्त को धूमधाम से मनाया गया। हिन्दू तथा मुसलमानों सभी ने मिलकर भाग लिया। जुलूस चार फर्लांग लम्बा था। सुबह प्रभातफेरी हर ग्राम में हुई। सरकारी, अर्ध सरकारी इमारतों पर झंडा फहराया गया। रात को दीपमालिका हुई।

—संवाददाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाद दाताओं के पत्र

भवाली के आर्यसमाजियों तथा नगर-निवासियों की एक सार्वजनिक सभा श्री शम्भूनाथ रामेश्वरी सार्वजनिक पुस्तकालय हाल में श्री खुशीराम एम० एल० ए० की अध्यक्षता में हुई। सभा में श्री हरीसिंह प्रधान (आर्यसमाज भवाली) का सामाजिक संगठन पर व्याख्यान हुआ। श्री भूमित्र आर्य (मंत्री आर्यसमाज भवाली) ने भवाली में आर्यसमाज भवन-निर्माण की आवश्यकता बताते हुए भवाली नोटीफाइड एरिया के अन्तर्गत शिल्पकारों को जमीन देकर उनमें वास्तविक सुधार की योजना उपस्थित की, जो सर्वसम्मति से स्वीकृत की गई। निश्चय किया गया कि उक्त योजना को शीघ्रातिशीघ्र सरकार के पास भेज दिया जाये।

श्री हरीलाल साह ने नगर-सुधार नोटीफाइड कमेटी के कर्त्तव्य, जनता को संगठित होने के लिए अधिकारों को प्राप्त करने के लिए प्रभावशाली वक्तृता दी।

ठाकुर मानसिंह सभापति कांग्रेस कमेटी भवाली ने आर्यसमाज-भवन के निर्माण की आवश्यकता बतलाई। सभापति श्री खुशीराम एम० एल० ए० ने देश की आजादी का उपभोग करने, आर्य सिद्धान्तों का पालन करने, आर्थिक तथा सामाजिक सुधार के विषय में गम्भीर भाषण देते हुए शिल्पकारों को जमीन देने के लिये सरकार की ओर से आये हुए पत्र-व्यवहार का दिग्दर्शन करते हुए सभा विसर्जित की।

—संवाददाता

* * *

वृन्दावन विद्यापीठ हाईस्कूल में तुलसी-जयन्ती बड़े समारोह के साथ मनाई गई। श्री लज्जाराम 'ललाम' और अतुलकृष्ण गोस्वामी के भाषण हुए। बिड़ला गीता-मंदिर में ब्रज-साहित्य-मण्डल मथुरा की ओर से १५ रोज का एक शिक्षण-शिविर चल रहा है। डा० राजेन्द्रप्रसाद से उद्घाटन करने की प्रार्थना की गई है। ब्रज-साहित्य-मण्डल ने दो हजार रुपये के खर्च का बजट बनाया है, जिसमें ५००) रु० वृन्दावन के प्रसिद्ध साहित्यिक शाह गौरशरण गुप्त ने दिया है। सारे आयोजन को सफल बनाने के लिए एक स्वागत-समिति का निर्माण कर दिया गया है। जिसके सभापति शाह गौरशरण जी गुप्त हैं। प्रधान स्वागत-मंत्री पं० दानबिहारीलाल शर्मा चुने गये हैं। स्वागत-समिति का दफ्तर वृन्दावन में खुल गया है। ६ सितम्बर से स्वागत-समिति का कार्यालय बिड़ला गीता मंदिर में खुल जाएगा। इंचार्ज गोस्वामी अद्वैतकुमार जी चुने गये हैं। साहित्यिक दृष्टि से यह पहला ही शिक्षण-कैम्प है।

—संवाददाता

* * *

नगोही (पीलीभीत) १५ अगस्त स्वतन्त्रता-दिवस पर थाना नगोही थाने के थानेदार ने झंडे को सलामी दी और बच्चों को मिठाइयाँ बँटवाने का प्रबन्ध किया तथा पैसा बँटवाया। शाम को सारे कस्बे में रोशनी का प्रबन्ध किया गया। हर मकानों पर झण्डा लहराया गया। नगोही मिडिल स्कूल के हेडमास्टर ने स्कूल पर झण्डा फहराया। मगर पोस्टमास्टर साहब पोस्टआफिस पर झण्डा फहराने से उदासीन रहे।

—संवाददाता

* * *

ऋषिकेश में बाबा काली कमलीवाले क्षेत्र में सनसनीदार डाका पड़ा। कहा जाता है कि कुछ गुंडे साधू के भेष में क्षेत्र के भंडार में घुस गये और आटा, दूध आदि खाद्य पदार्थ लूटकर ले गये। पुलिस में मामला जाने पर रमाईनाथ, लाभसिंह, द्वारकागिरि, बैजनाथगिरि और आत्मानन्द इन पाँच भगवा भेषधारियों की गिरफ्तारी हुई। जिनको हवालात में रखा गया। इस घटना से ऋषिकेश में बड़ी सनसनी और बेचैनी है।

हरिद्वार में हर की पैड़ी पर पीपलवाली हवेली में लक्ष्मीनामी सिधन स्त्री रहती है, जिसका चाल-चलन संदिग्ध बतलाया जाता है। हरिद्वार जैसे पवित्र तीर्थ में जहाँ कि अन्य यात्रियों का भी ठहरना होता हो, ऐसी स्त्री का रहना बड़ा खतरनाक है। आशा है कि म्यु० अधिकारी म्यु० ऐक्ट रूल नं० १६ के अनुसार इधर ध्यान देंगे।

—संवाददाता

* * *

मंडावा (जयपुर) युवक सभा-भवन में पंडित मुरलीधर ढंढ की अध्यक्षता में महात्मा तुलसीदास जी की जयंती समारोहपूर्वक मनाई गई। पंडित श्री सालिग्राम ने तुलसीदास जी के जीवन पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाला। आपने उनके जीवन से शिक्षा ग्रहण करने की अपील की। तत्पश्चात् स्कूल के छात्रों द्वारा कविता-पाठ एवं भाषण-प्रतियोगिता हुई। श्री सुभकरण शर्मा ने 'प्राचीन रामायण आदि ग्रंथों में अमूल्य ज्ञान भरा पड़ा है' उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला। अन्त में सभापति जी ने अपने भाषण में गोस्वामी जी के ग्रंथों में जो त्याग की भावना निहित है, उसका दिग्दर्शन कराया।

—संवाददाता

* * *

सिकन्दराबाद गुरुकुल की प्रबन्धकर्त्री सभा ने गुरुकुल में नवीन छात्रों का प्रवेश दो माह के लिए और बढ़ा दिया है। प्रवेशार्थियों के अभिभावकों को चाहिए कि वे नियमावली आदि के सम्बन्ध में मन्त्री, गुरुकुल सिकन्दराबाद, बुलन्दशहर के पते पर पत्र-व्यवहार करें।

—लक्ष्मीनारायण नागर

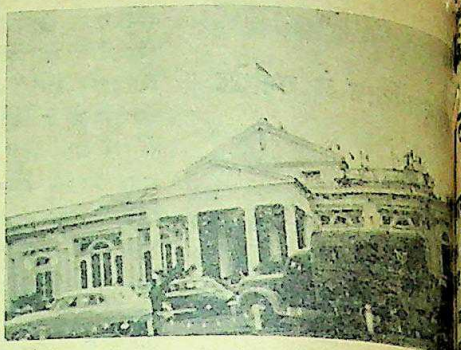

प्रयाग का गवर्नमेंट हाउस, जिसके भवन पर गत १५ अगस्त को माननीय श्री संपूर्णानंद ने राष्ट्रीय झंडा फहराया था।

दिल्ली की अखिल भारतीय मलेरिया (जाड़ा-बुखार) रक्षा-समिति ने इस साल एक लाख रोगियों को मौसमी बुखार की मुफ्त दवा बाँटने का प्रबन्ध किया है। कोई भी सज्जन जो अपने यहाँ दवा मुफ्त बाँटना चाहें, इस पते से बाँटने के नियम तथा दवा मुफ्त मँगा सकते हैं। रामजीवन प्राणाचार्य मंत्री—अ० भा० मलेरिया रक्षा-समिति, ५२६ ए, गांधी स्ट्रीट, देहली।

—संवाददाता

* * *

इटावा पालीखुर्द आर्यसमाज ने निम्न प्रस्ताव स्वीकृत किया है—यह सभा भारतीय विधान-निर्मात्री-परिषद् से अनुरोध करती है कि वह हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा तथा देवनागरी लिपि को राष्ट्रलिपि के रूप में स्वीकार करे। यह सभा भारतीय विधान-निर्मात्री-परिषद् से अनुरोध करती है कि वह देश की आर्थिक उन्नति के निमित्त गोवंश की रक्षा तथा वृद्धि को आवश्यक समझते हुए भारतीय विधान में गोवध का निषेध करनेवाली धारा का समावेश करे।

—संवाददाता

प्रिंस होमियोपैथिक कालेज
बनारस

गवर्नमेन्ट रजिस्टर्ड और एडेड होमियोपैथिक, वायकेमिक, इंजेक्शन तीनों डिप्लोमा (सार्टिफिकेट) लें या शिक्षा प्राप्त करें। नियमावली मुफ्त मंगाइए।

रिस्टवाच मुफ्त

अमेरिकन ढीलकस हेयर आयल ५५५ के लगाने से बाल उमर भर रहते हैं। आँखों और दिमाग को ठंडा पहुँचाता है। गंजापन दूर करता है।

कीमत १ शीशी २॥) २ शीशी ५) इस दवाई को मशहूर करने के लिए शीशी के साथ १ फैंसी रिस्टवाच जिसकी पायदारी और खूबसूरती की गारंटी १ साल है, मुफ्त दी जायेगी।

दो शीशी के खरीदार को डाकखर्च मुआफ। दो रिस्टवाच मुफ्त दी जायेंगी।

(D. A.) संन्यासी आयुर्वेदिक फार्मेसी धर्मशाला

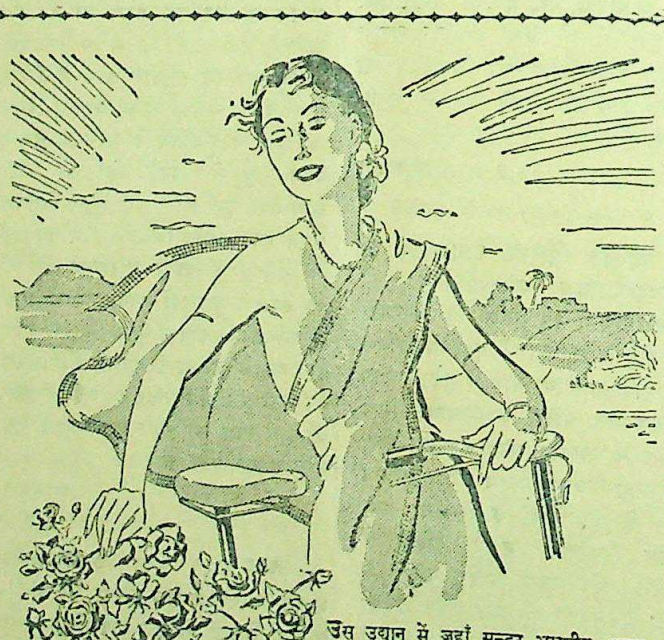

उस उद्यान में जहाँ सुन्दर भारतीय गुलाब के फूल उषःकाल में अपने प्रथम बहार में विकसित होते हैं... तो आप के मन में विनोलिया व्हाइट रोज़ के विचार आजाते हैं। मृदु एवं फ़ेनदार विनोलिया आप के अतराफ़ एक मीठी महक उत्पन्न करता है—और वह सुकोमल त्वचा को सौम्यता-पूर्वक निर्मल कर देता है। आप के सौन्दर्य की वृद्धि करनेवाला इस से उत्तमोत्तम वा अत्युत्कृष्ट प्रिय साबुन नहीं है।

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

VWR. 22-111 HI. VINOLIA COMPANY LIMITED, LONDON, ENGLAND

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...स्थ्य ई-व्यायाम

...नस्पति घी

...स्थ्य के लिये हानिकर

...वैद्यराज ब्रह्मदत्त शर्मा, आयुर्वेदा-...भूतपूर्व प्रोफेसर गुरुकुल कांगड़ी

...बार डब्बा, कलापूर्ण ढंग से बना ...हुआ लेबल, सुन्दर तथा आकर्षक ...प्रतिशत भरोसा तथा विश्वास ...ले आकर्षक विज्ञापन, सुन्दर ...पैकिंग, मक्खन जैसा उजला ...जैसा हलकी पीतिमा लिए रंग ...घी से भी बढ़िया भीनी सुगन्ध ...पर भी असली घी से थोड़े दाम— ...'वनस्पति घी', जो दरिद्रनारायण ...व्यक्ति की अण्टी या क्रयशक्ति ...होने के कारण आज असली ...अधिक लोकप्रिय होता जा रहा ...में औसत मध्यम श्रेणी के व्यक्ति ...घी के सर्वथा न मिलने या बहुत ...होने के कारण इस तथाकथित ...स्पति' को ही खरीदकर खाते ...आज कुछ-कुछ जानते-बूझते तथा ...बिक बेसमझे-बूझे अपने स्वास्थ्य ...हत्या करते चले जा रहे हैं। ...स्वास्थ्य तथा 'वनस्पति' की ...के सम्बन्ध में आज हम पाठकों ...कुछ प्रकाश डालने जा रहे हैं।

...यह है क्या ?

...स्पति' वह असली घी नहीं है, ...दूध से निकले मक्खन से प्राप्त ...जाता है। यद्यपि विज्ञापनों के ...या टेढ़े तरीके से यही प्रभाव ...डालने का प्रयत्न किया जाता ...स्पति' असली घी ही है; परन्तु ...तो है नाना प्रकार के वानस्प-...और प्राणिजन्य चर्बियों आदि ...धित तथा सज्जीकृत मिश्रण। ...की मशीनी प्रक्रियाओं तथा ...पदार्थों के मिश्रण आदि से इसे ...की शकल में प्रायः धोखे के ...से ही पहुँचाया जाता है। ...वानस्पतिक तैलों से तैयार ...कारण इसे पहले-पहल 'घासलेटी ...जाता था और घृणा की दृष्टि से ...था; परन्तु आज इन विज्ञापनों ...के कारण इसे घी की प्रतिष्ठा ...ही प्राप्त होती जा रही है, ...मूल्य चुकाना पड़ रहा है ...को अपने यत्किञ्चित् ...की बलि देकर !

...तथा समानता

...प्रकार के स्नेहों (fats) ...दो श्रेणियों में विभक्त किया ...—प्राणित और वानस्पतिक। ...) वसा-मज्जा प्राणिज स्नेह ...मूँगफली, नारियल, सरसों, तिल, ...आदि के खाद्य तैल वानस्पतिक ...घी तथा वनस्पति में इतनी ...है कि दोनों स्नेहवर्ग (fat) ...दोनों में विभेद यह होता है ...घी तो शुद्धतया प्राणिज स्नेह है और वानस्पतिक घी मुख्यतया वनस्पति-जन्य होता है। यद्यपि वनस्पति के कई मार्कों में तो प्राणिज वसा आदि भी डाल दी जाती है, जिससे पूरा ही 'गड़बड़-घोटाला' हो जाता है।

रासायनिक दृष्टि से सभी प्रकार के स्नेहों के घटक मुख्यतया दो श्रेणियों के होते ह—वसाम्ल तथा ग्लिसरोल (fatty acid and glycerol)। कुछ एक मुख्य-मुख्य वसाम्ल ये हैं—पामिटिक, ओलीइक, स्टीयरिक, ब्यूटिरिक अम्ल आदि-आदि। इन अम्लों के ग्लिसरोल के साथ बने समास अर्थात् 'उस वसाम्ल के ग्लिसराइड' को ही विशिष्ट-विशिष्ट स्नेहों के नाम दिये जाते हैं। इन वसाम्लों की घनता परस्पर विभिन्न होने के कारण इनसे बने स्नेहों की घनता भी भिन्न-भिन्न होती है। उदाहरणार्थ, पामिटिक अम्ल की अधिकता से बने स्नेह का रूप ठोस होता ह तथा ओलीइक अम्ल से बने स्नेह का रूप तरल। सरसों-तिल आदि के स्नेहों में तरलता होती है और शुद्ध घी—चरबी आदि स्नेह ठोस होते हैं।

एक और दृष्टि से भी स्नेहों के रासायनिक विश्लेषण का अध्ययन किया जा सकता है। सभी ऐन्द्रियिक या कार्बनिक द्रव्यों की तरह से इन स्नेहों में भी ऐन्द्रियिक उद्भव (यद्यपि वैजलीन आदि स्नेह खनिज उद्भव के होते हैं) होने के कारण कार्बन तत्त्व अवश्य होता है। इसके अलावा इनमें उदजन (Hydrogen) और ओषजन (Oxygen) भी हुआ करती है। कार्बन और ओषजन की मात्रा की दृष्टि से तो शुद्ध घी और वनस्पति में परस्पर सादृश्य होता है; परन्तु उदजन की मात्रा की दृष्टि से इन दोनों में परस्पर विभेद होता है। वनस्पति में उदजन की मात्रा अपेक्षया न्यून होने के कारण तरलता अधिक होती है। अतः उसे शुद्ध घी की तरह घन-ठोस रूप देने के लिए तथा शरीर में उसकी तापोत्पादक शक्ति (Calorific Value) बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि उसमें कृत्रिम साधनों से उदजन की मात्रा बढ़ाई जावे।

इसके अतिरिक्त, अच्छी तरह बने 'वनस्पति' में उदजन की कृत्रिम विधि से डाली हुई अधिकता के कारण बिना अग्नि की सहायता के उसे पिघलाना कठिनप्राय होता है। अर्थात् वनस्पति सामान्य तापमान पर गर्मियों में भी प्रायः ठोस ही रहता है, जब कि शुद्ध घी प्रायः पिघल जाता है।

रूप-परिवर्तन क्यों ?

हमने अभी देखा है कि शुद्ध घी की अपेक्षा वानस्पतिक तैलों में उदजन-तत्त्व की मात्रा कम होती है, जिससे उनके स्वरूप तथा तापोत्पादक शक्ति में परस्पर विभेद होता है। इस विभेद को दूर करके सादृश्य लाने के लिए यह आवश्यक है कि उनमें उदजन की मात्रा कृत्रिम साधनों से बढ़ाई जाये और इस प्रकार से रूप-परिवर्तन किया जाये।

वानस्पतिक तैल अधिकतर तरल होते हैं; अतः भौतिक दृष्टि से उनमें शुद्ध घी की तरह दाने-दाने नहीं होते। परस्पर सादृश्य लाने के लिए इन वानस्पतिक तैलों को रूपान्तरित करके दानेदार ठोस घी-सदृश द्रव्य के रूप में लाया जाता है।

वानस्पतिक खाद्य तैलों में एक विशेष प्रकार का भूरा-पीला-सा रंग होता है जिसे दूर करने पर ही उनका रंग घी-जैसा हो सकता है। अतः उनका यह प्राकृतिक रंग उड़ाना जरूरी है।

वानस्पतिक तैलों में विशेष-विशेष प्रकार की गंध हुआ करती है, जिन्हें दूर न करने पर वे ठोस हो जाने पर भी शुद्ध घी जैसे नहीं लग सकते। अतः उनकी गन्ध को भी व्यापारिक दृष्टि से दूर करना जरूरी है।

इस प्रकार, हमने देखा कि वानस्पतिक तैलों को घी के नाम से बेचने के मार्ग में कुछ कावटें हैं, तद्यथा—उनमें उदजन की न्यून मात्रा, उनकी तरलता, उनका रंग, गन्ध आदि-आदि। इनको दूर करने पर ही घी के नाम और लगभग वैसे दाम पर वानस्पतिक तैलों को बेचा जा सकता है, इसलिए व्यापारियों के लिए इन रुकावटों (?) को दूर करना जरूरी हो गया। हमारा भाव यह है कि वानस्पतिक तैलों के रूप-परिवर्तन का उद्देश्य मुख्यतया व्यापारिक धोखा-धड़ी है। इस रूप परिवर्तन को कुछ वैज्ञानिक आधार देने की भी कोशिश और तथाकथित वैज्ञानिक आधार पर इसकी वकालत भी की गई है; परन्तु हम आगे देखेंगे कि यह सब सत्य वैज्ञानिक दृष्टि से देखने पर मिथ्या आलाप ही रह जाता है।

निर्माण-विधि

हम यहाँ पर वनस्पति की निर्माण-विधि की मुख्य-मुख्य तथा आवश्यक प्रक्रियाओं को ही देखेंगे।

सर्वप्रथम विधि वानस्पतिक खाद्य तैलों (मूँगफली, नारियल, सरसों आदि) तथा चर्बियों को भी मिश्रित करके तरल रूप में संग्रह किया जाता है। यद्यपि कहा जाता है कि इस मिश्रण में केवल वानस्पतिक तैल ही होते हैं; परन्तु तथ्य यह है कि शायद बहुत ही थोड़ा अंश इस मिश्रण में वानस्पतिक खाद्य तैलों का होता है। अस्तु—

इस मिश्रण को बड़े-बड़े ड्रमों या कूपों में संग्रह करके ऊपर से कास्टिक सोडे का जल में विलयन बनाकर डाला जाता है। प्रयोजन यह होता है कि मिश्रण के विशेष रंग-गन्ध तथा गन्दगी को दूर किया जाये ताकि मिश्रण यथासम्भव स्वच्छ (और पारदर्शक) हो जाये। स्नेह तथा गन्दगी के साथ सोडे का मिश्रण मिलकर साबुन बन जाता है जो ड्रमों या कूपों में नीचे संगृहीत होता है। इस प्रकार 'एक पंथ दो काज' वाली कहावत चरितार्थ की जाती है। इस प्रक्रिया से एक तो वानस्पतिक तैलों का संशोधन हो गया (उनका अरुचिकर रंग, गन्ध, गन्द आदि जाता रहा), दूसरे साबुन मुफ्त में बन गया, जिसे अच्छे दामों बेचा जा सकता है।

उदजन की न्यून मात्रावाली कमी को दूर करने के लिए इस मिश्रण के अन्दर सर्वप्रथम रासायनिक सहायक (Catalytic Agent) के रूप में निकल-धातु के अति सूक्ष्म कणों को अवलम्बनस्थ किया जाता है। इससे मिश्रण का कार्यसह पृष्ठ बढ़ जाता है, जिस पर कोई रासायनिक द्रव्य अधिक मात्रा में कार्य कर सकता है। अब इस मिश्रण के अन्दर भरपूर मात्रा में उदजन गैस डाली जाती है। निकल-धातु के अवलम्बनस्थ सूक्ष्म कणों के सहारे इस गैस को मिश्रण में घुसने का अधिक धरातल मिल जाता है और इस धातु की रासायनिक सहायता से उदजन मिश्रण के अन्दर रासायनिक रूप में स्थित हो जाती है। परिणाम यह होता है कि उदजन की जो मात्रा इस मिश्रण में पहले न्यून थी, वह यथासम्भव लगभग पूरी हो जाती है और मिश्रण की घनता भी तरल से ठोस रूप में आ जाती है। इस प्रयोजन की सिद्धि के बाद निकल-धातु के सूक्ष्म कणों को मिश्रण में से निकाल लिया जाता है।

इस मिश्रण में घी-जैसे दाने (granules) बनाने के लिए इसे एक विशेष तापमान पर जल आदि के द्वारा विशेष प्रक्रिया से ठण्डा किया जाता है, जिससे दाने बन जाते हैं।

उसके बाद इस मिश्रण में एक प्रकार का हलका पीला रंग कई मार्केवाले मिलाते हैं कि वह बिलकुल गाय के घी-जैसा दीखता है।

सबसे अन्त में, इस मिश्रण के अन्दर इस प्रकार की सैण्ट डाल दी जाती है कि जिससे गन्ध तथा गन्धानुसारी वाद में यह बिलकुल विशुद्ध घी-जैसा हो जाता ह।

बस, बन गया वह वनस्पति घी, जो आज बेचारे भारत के गरीब लोगों के स्वास्थ्य की बुरी तरह से चटनी बनाये डाल रहा है।

चिरस्थायी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ. गौतमराव केशव टॉनिक फॉस्फरस पिल्स
डॉ. वामन गोपाळ सासपिरिळा डेपो मुंबई नं. २
इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एस० धोलकिया एन्ड ब्रदस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी ही राष्ट्रभाषा क्य

(पेज ४ का शेष)

होते देखने के लिए उद्यत न होंगी; परन्तु क्या यही राष्ट्रीयता है? नहीं। वास्तव में भारतीय राष्ट्रीयता का उद्गम-स्थान हिन्दू-जाति के गर्भ में निहित है। वैदिक काल से ही इसकी उत्पत्ति समझनी अधिक उपयुक्त होगी। शास्त्रों तथा पुराणों में इसके यथेष्ट प्रमाण खोजने से मिलेंगे। हिन्दू-धर्म-ग्रन्थ ही भारतीय राष्ट्रीयता के जनक कहलाये जाने के अधिकारी हो सकते हैं। सारांश यह है कि जिस अनादि काल से हिन्दू-जाति की सभ्यता और संस्कृति का श्रीगणेश हुआ हो, उसी के साथ-साथ हिन्दी और राष्ट्रीयता का भी जन्म स्वयं सिद्ध है। राष्ट्रीयता तथा भाषा का अटूट सम्बन्ध है। आंग्ल जाति की राष्ट्रीयता का प्रादुर्भाव लैटिन तथा आंग्ल भाषा ही को लेकर हुआ। फ्रांस-निवासियों का चरित्रगठन फ्रेंच भाषा द्वारा ही हुआ। संसार की अन्य भाषाओं के सम्बन्ध में भी यही नियम लागू होता है।

पाठक, उत्सुक होंगे कि यदि भाषा तथा वेशभूषा का परस्पर इतना गहरा सम्बन्ध है तो भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी ही क्यों न समझी जाय। फिर हिन्दुस्तानी प्रचार की इतनी धुन क्यों और यह घोर परिश्रम क्यों? प्रान्तीय भाषाओं के विषय में हम संक्षेप से वर्णन कर ही चुके हैं। प्रत्यक्ष को प्रमाण की विशेष आवश्यकता नहीं हुआ करती। आप एक प्रान्त से दूसरे में कहीं भी चले जायँ। वहाँ आपको कुछ न कुछ हिन्दी-प्रेमी अवश्य ही मिल जायँगे। यदि एक बंगाली, पंजाब तथा दक्षिण भारत में यात्रा करने चला जाय वहाँ के मनुष्यों के हावभावों के समझने में विशेष कठिनाई न होगी, क्योंकि हिन्दी में उनकी सभी प्रान्तीय भाषाओं का निचोड़ है। क्या कारण है कि हिन्दी इस राष्ट्र में गहरा प्रवेश करके सर्वव्यापी हो सकी? प्रथम तो हिन्दी की देवनागरी लिपि इतनी सुलभ और सौजन्यपूर्ण है कि उसका सम्मिश्रण भारत की प्रायः प्रत्येक एक-देशी भाषा में मिलेगा। इन विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं की जननी संस्कृत ही तो है। अरबी, उर्दू तथा अन्य विदेशी भाषाएँ तो इसकी सौतेली माँ ही कही जायँगी। संस्कृत की गोदी में बड़े लाड़-चाव के साथ इसका लालन-पालन हुआ है। अतः संस्कृत लिपि तथा भाषा का प्रभाव इनके ऊपर पड़ना आवश्यम्भावी है। संस्कृत आर्यों की जन्मदात्री है। इसके जन्म के साथ ही साथ आर्यावर्त की राष्ट्रीयता, संस्कृति और सभ्यता का विकास हुआ है। यदि गम्भीर दृष्टि से विवेचन किया जाय तो वास्तव में राष्ट्र-भाषा सम्बन्धी प्रश्न तो भाषा-विज्ञान के पंडितों का ही विषय है। हिन्दुस्तानी की राग अलापनेवाले भाषा-शास्त्री नहीं कहे जा सकते। उनका काम तो राज-नीतिक दाँव-पेंचों को सुलझाना है। हिन्दी में वाल्मीकि, कालिदास और व्यास की प्रणाली भरी है। हिन्दी में भारतीय संस्कृति का पोषक सुन्दर साहित्य लबालब है। रसखान, रहीम, कबीर और लगभग ३५० मुस्लिम कवियों ने इसी भाषा में कविता की है। कदाचित् आपको आश्चर्य हो, भारत को शुद्ध भाषा-रूप देनेवाले फारसी कवि अमीर खुसरो ही थे।

उत्तरी भारत विशेष रूप से हिन्दी का केन्द्रस्थान रहा है। यहाँ की शस्य-श्यामला में पलकर अनेक कवि तथा लेखकों ने हिन्दी को गौरव प्रदान किया है। चन्दवरदाई, मलिक मुहम्मद जायसी, कबीर, रहीम तथा तुलसी आदि सभी ने हिन्दी को उत्थान के सोपान पर लाकर बैठाया। आधुनिक वर्तमान कवि और लेखकों ने भी अपनी लेखनी इसकी रक्षा करने में उठाने का भरसक प्रयत्न किया है। इसका साहित्य-आकर्षण तथा मोहिनी शक्ति से अलंकृत है। अनेक तीर्थस्थान भी इसी आर्यावर्त में बहुधा पाये जाते हैं। यहाँ देश के प्रत्येक कोने से धार्मिक भावनाओं से परिपूर्ण हिन्दू-जाति तीर्थ-पर्यटन करने आती है। निश्चय ही उन पर हिन्दी का प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। वह तो वह, परन्तु अन्य विदेशी भाषाओं के देशवाले भी इसके चंगुल से नहीं बच पाये। इसके प्रमाण की खोज अँगरेज भारतीय शासकों में मिलेगी। इसी कारण भारत विभिन्न आक्रमणों से आक्रान्त तथा विदेशी जातियों के पदार्पण होने पर भी आज तक अपनी भाषा, राष्ट्रीयता तथा प्राच्य संस्कृति की रक्षा किए हुए है। एक दूसरे के हाव-भाव को तभी समझने में सुलभता हो सकती है जब कि उस प्रान्तीय भाषा तथा हिन्दी में शब्दों की परस्पर समानता हो। हम पहले ही निवेदन कर चुके हैं कि विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं पर प्रायः संस्कृत का प्रभाव किसी न किसी रूप में अवश्य पड़ा है। सारांश यह है कि उत्तरी भारत के तीर्थस्थान, यहाँ की हिन्दी प्रचुरता तथा प्राच्य संस्कृति सभी ने अन्य देशी भाषाओं पर अपनी छाप छोड़ी है। भाषा के साथ-साथ ही राष्ट्रीयता का निर्माण होता है। हमारी दृष्टि से हिन्दी को यदि जनवर्ग की भाषा अथवा भारतीय राष्ट्रीयता की जननी कहें तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। हर्ष का विषय है कि इस क्रान्तिकारी युग में भारतीय नेताओं ने हिन्दी को ही उसका खोया हुआ पद पुनः प्राप्त कराने की चेष्टा की है। राष्ट्रध्वजा के साथ-साथ स्वाधीनतारूपी स्वर्णयुग तथा संस्कृत की पुत्री दोनों ही ने नये सिरे से सुषुप्त भारत-वासियों को उद्बुद्ध किया है।

कलामे हजरत

लेखक, राजेन्द्रसिंह गौड़, एम० ए०

देखकर कंट्रोल में सूरत किसी मेहमान की।
याद आ जाती है मुझको यकबयक शैतान की॥
हिन्द में रहते हैं, पर गाते हैं पाकिस्तान की।
बात खुलती ही नहीं कोई मिया रमजान की॥
घर में बैठे रो रहे हैं आजकल ईमानदार।
चैन से कटती है लेकिन उम्र बेईमान की॥
हमने जिनके टेंट में कौड़ी कभी देखी नहीं।
वह भी रस्में खा रहे हैं आज गौहरजान की॥
बे गुनाहों के लहू से सींचकर अपनी जमीं।
काटते हैं खूब फसलें शेख पाकिस्तान की॥
मगरबी तालीम का बेटों पै इतना है असर।
घर में होती है मरम्मत खूब अब्बाजान की॥
फँस गया जो उनके फन्दे में निकलता ही नहीं।
मिस की जुल्फें गोया आँतें हैं किसी शैतान की॥
हिचकियाँ आती हैं मुस्लिम लीग की सरकार को।
शेख को जब याद आ जाती है पाकिस्तान की॥
ढूँढ़िए पण्डित जी अपना आप भी जरिया मुआश।
कोर्ट में होगी अदा अब रस्म कन्यादान की॥
अब न शौहर से गरज उनको न चूल्हे से गरज
बीबियाँ पढ़कर हुई हैं मेम इँगलिस्तान की॥
जब से हजरत को स्वदेशी मिस से कुछ उल्फत हुई।
तब से भाती हैं उन्हें हर चीज हिन्दुस्तान की॥

मनोरंजक चुटकुले

एक आदमी का नाम कल्लू था। उसके लड़के का रंग काला। एक कुछ लोग बैठकर आपस में कह रहे थे कि कल्लू के लड़के का रखा जाय? एक ने कहा—उसे को काला कहना चाहिए। बस नाम काला हुआ और बात

* *

एक हिन्दू, मुसलमान हो गया दिन वह एक दावत में गया। था, कुछ लोग खा रहे थे। माँग लेते थे "पोलाव" लाओ। खाकर उठे और वह हिन्दू भी तो उसने भी माँगना शुरू किया। न जानता था कि लोग पोलाव अथवा पिलाओ? इस पर उसने 'लाओ पिलाओ।'

जब लोग एक बर्तन में पोलाव तो वह हिन्दू ढंग से अपने होंठ लगाकर झुक गया। परसनेवाले लगे। वह फिर से बोला—"पिलाते क्यों नहीं?"

* *

एक आदमी मद्रास से आया था। नाम था मंसूर। उसके दोस्त ने पूछा—"भाई मंसूर हो

मंसूर कुछ बहरे थे, उन्होंने "मद्रास से आ रहा हूँ मंसूर ही नहीं।"

* *

पुजारी—"भगवान् को भोग लगा महन्त जी।"

महन्त—"तुम लगा देना, जाओ।"

पुजारी—"आप ही ने कहा कि बिना भगवान् के भोग के किया जावे।"

महन्त—"पर जलपान कर वह महत्त्व महन्त के लिए नहीं है। पुजारी को करना चाहिए।"

* *

हलवाई—"चीनी तो नहीं। फिर तीन रुपये सेर मिठाई पाप क्यों?"

खरीदार—"इसलिए कि तीन रुपये सेर बेच सकते हो, तो वाला खाने में क्यों हिचके?"

* *

धनी ने गरीब मजदूरों से "आलू की कचौड़ी बड़ी अच्छी

मजदूर—"आलू तो सरकार चीज है। हम लोग खाते ही

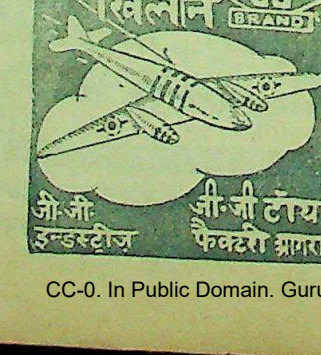

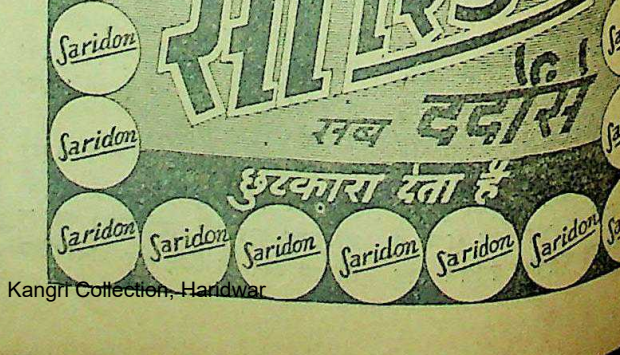

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी विविध विषय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

हिन्दी साहित्य—यह हिन्दी साहित्य का परिवर्द्धित और परिमार्जित संस्करण है। पहले की दो आवृत्तियों में यह हिन्दी भाषा और साहित्य के नाम से प्रकाशित हुआ था, किन्तु अब इसे स्वतन्त्र रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। कवियों के विषय में जो नये अनुसंधान हुए हैं उन सबका इसमें समावेश किया गया है। साहित्यिक स्थिति के वर्णन में भी आवश्यक परिवर्तन किये गये हैं। हिन्दी साहित्य के प्रत्येक विद्यार्थी को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ४) चार रुपये।

काव्यकला—साहित्यालोचन का यह संक्षिप्त संस्करण है। लोगों का कथन है कि इस नवीन रूप में इस पुस्तक का उपयोग ऊँची श्रेणी के विद्यार्थी सफलतापूर्वक कर सकते हैं। इसमें साहित्य-शास्त्र के सभी अंगोपांगों का विवेचन तो है किन्तु साथ ही वे अंश निकाल दिये गये हैं जो जटिल और खंडन-मंडनात्मक हैं। इसके संकलनकार भी लेखक के पुत्र श्री गोपाललाल खन्ना हैं। मूल्य २) दो रुपये।

चिन्तामणि—(पहला भाग) लेखक, आचार्य पंडित रामचन्द्रजी शुक्ल। इस पुस्तक में आचार्य शुक्ल जी ने भिन्न-भिन्न विषयों पर लिखे गये अपने सत्रह निबन्धों का संग्रह किया है। ये सभी निबन्ध बहुत ही गंभीर और अध्ययनपूर्ण हैं, जिनके द्वारा मनुष्य की विभिन्न प्रकार की आन्तरिक भावनाओं पर आलोचनात्मक ढंग से प्रकाश डाला गया है। इस रचना पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिल चुका है। मूल्य २) दो रुपये।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस पुस्तक में विश्व-कवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रामाणिक जीवनी और उनकी समस्त कृतियों—कविता-संग्रह, नाटक-नाटिका, कहानियाँ उपन्यास, यात्रा-वर्णन, विज्ञान के ग्रंथ, निबन्ध, साहित्यिक समालोचना, चित्रकला आदि—का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। उदाहरणों में कवि की प्रायः समस्त सुप्रसिद्ध और चुनी हुई रचनायें आ गई हैं। फुटनोट में उनके सरल अर्थ दिये गये हैं। इसके द्वारा आप रवीन्द्रनाथ और उनकी काव्य-कृतियों का पूरा-पूरा परिचय प्राप्त कर सकते हैं। विश्वभारती (शान्तिनिकेतन) के विद्वानों ने भी इसकी प्रशंसा की है। मूल्य केवल ५) पाँच रुपये।

द्विवेदी मीमांसा—लेखक, श्रीयुत प्रेम-नारायण टण्डन। हिन्दी के नवीन युग की धाराओं और प्रवृत्तियों के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। साधारण पाठकों के अतिरिक्त सम्मेलन के परीक्षार्थियों व विश्वविद्यालयों के छात्रों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य २) दो रुपये।

पं० शान्तिप्रिय द्विवेदी की कुछ पुस्तकें

कवि और काव्य—श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ने काव्य के गुण-दोष से सम्बन्ध रखने-वाले कितने ही उपयोगी विषयों का इसमें विशद्रूप से विवेचन किया है। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

शकुन्तला—लेखक, श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी। यह श्रेष्ठ रचना अभी अभी पाठकों के सामने आई है। इसमें वैदिक-काल से लेकर आज के संक्रांति-काल तक की साहित्यिक चेतनाओं का मर्म स्पर्श है। मूल्य २) दो रुपये।

युग और साहित्य—लेखक, श्री शान्ति-प्रिय द्विवेदी। 'युग और साहित्य' भी हिन्दी-निबन्धों का एक आदर्श उपस्थित करती है। इसमें १३ मौलिक निबंध हैं, जिन्हें विद्वानों ने बहुत पसन्द किया है। मूल्य २॥) दो रुपये ग्यारह आने।

देवपुरस्कार-विजेता हरदयालुसिंह की कुछ व्रजकाव्य की समीक्षायें

देवदर्शन—देवपुरस्कार - विजेता श्री हरदयालुसिंह लिखित व्रजकाव्य समीक्षाएँ—इसमें व्रजभाषा के प्रख्यात कवि देव की जीवनी और उनके समस्त काव्यों का आलोचनात्मक परिचय दिया गया है। व्रजकाव्य के प्रेमियों के अतिरिक्त साहित्य के विद्यार्थियों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

पूर्ण-पराग—इसमें व्रजभाषा के प्रसिद्ध आधुनिक कवि श्री देवीप्रसाद 'पूर्ण' की जीवनी और उनके काव्य का समालोचनात्मक परिचय है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

मतिराम-मकरन्द—इसमें काव्यालोचन के साथ-साथ कवि मतिराम के ३ प्रसिद्ध ग्रंथों—मतिराम सतसई, ललित-ललाम और रसराज का संक्षिप्त सरस संग्रह भी कर दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

बिहारी-बिभव—इसमें महाकवि बिहारी की कविता का आलोचनात्मक परिचय, उनकी जीवनी तथा सतसई के चुने हुए दोहे संकलित हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

भूषण-भारती—इसमें महाकवि भूषण की जीवनी और उनके समस्त काव्य ग्रन्थों—का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

महादेवी का विवेचनात्मक गद्य—संकलनकर्त्ता, श्री गंगाप्रसाद पांडेय, एम० ए०, साहित्य की नवीन शैली का अध्ययन करनेवालों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥।) दो रुपये बारह आने।

आलोचनादर्श—इस पुस्तक के लेखक हैं डाक्टर रामशंकर शुक्ल 'रसाल', एम० ए० डी० लिट। इसमें आलोचना-कला का मार्मिक और शास्त्रीय विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

साहित्य-प्रकाश—यह पुस्तक भी डाक्टर रसाल की ही लिखी है। इसमें साहित्यिक सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

साहित्य-समीक्षा—इस पुस्तक में हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुत कालिदास कपूर, एम० ए० एल-टी० के साहित्यिक तथा समालोचनात्मक लेखों का संग्रह किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

प्राचीन साहित्य—इस पुस्तक में रवीन्द्र बाबू के कई प्राचीन साहित्य, विशेषतः संस्कृत साहित्य के आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह है। मूल्य १) एक रुपया।

महाकवि अकबर—उर्दू के प्रसिद्ध कवि अकबर का आलोचनात्मक परिचय तथा उनकी उत्कृष्ट रचनाओं का अर्थ-सहित संग्रह। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

शिक्षा—हम अपने बालकों तथा बालिकाओं को किस तरह सुशिक्षित तथा सदाचारी बना सकते हैं, यह बात इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक समझाई गई है। इसके मूल लेखक सुप्रसिद्ध दार्शनिक 'हर्बर्ट स्पेन्सर' हैं और अनुवादक स्वर्गीय आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी। मूल्य ४॥) चार रुपये ग्यारह आने।

भारतवर्ष में पश्चिमी शिक्षा—वर्त्तमान शिक्षा-विभाग के क्रम-विकास का संक्षिप्त इतिहास। मूल्य ।।) आठ आने।

अर्थमेटिक शिक्षा-प्रणाली—यह पुस्तक नार्मल स्कूलों और ट्रेनिंग क्लासों के विद्यार्थियों तथा स्कूलों के अध्यापकों को अर्थमेटिक पढ़ाने के उत्तम से उत्तम ढंग सिखलाने के उद्देश्य से लिखी गई है। मूल्य १) एक रुपया।

संगीत-सम्बन्धी पुस्तकें

ध्रुपद-स्वर-लिपि—इस पुस्तक के लेखक काशीनिवासी श्री हरिनारायण मुकुर्जी ध्रुपद के विशेषज्ञ हैं। मूल्य २॥) दो रुपये ग्यारह आने।

संगीत-सुदर्शन—सब प्रकार की राग-रागिनियों का शास्त्रीय-विवेचन। मूल्य १॥) एक रुपया ग्यारह आने।

विविध विषय की पुस्तकें

मन की अद्भुत शक्ति—अपने मन की अद्भुत शक्तियों पर पूर्णरूप से अधिकार प्राप्त करके तथा उनका सदुपयोग करके मनुष्य किस प्रकार अपने जीवन को अधिक से अधिक सार्थक बना सकता है, इस बात की इस पुस्तक में विवेचना की गई है। मूल्य ।।।–) तेरह आने।

ऋद्धि—जो लोग धनहीन हैं, ऋण-ग्रस्त हैं, बहु-कुटुम्बी हैं, साथ ही आय भी बहुत कम है, वे इस पुस्तक के उपदेश के अनुसार चलकर सुख से जीवन बिता सकते हैं। मूल्य २।–) दो रुपये पाँच आने।

मानसिक आकर्षण-द्वारा व्यापारिक सफलता—व्यापारिक सफलता के लिए संपर्क में आनेवाले व्यक्तियों पर मानसिक आकर्षण की शक्ति का प्रयोग करने की विधि। मूल्य ।–) पाँच आने।

गोपालन—विभिन्न प्रकार की गौओं के रूप-रंग तथा गुण-दोष का विस्तृत वर्णन। इसमें गौओं का पालन-पोषण करने तथा उन्हें अधिक से अधिक दुधार बनाने की विधि बतलाई गई है। मूल्य १) एक रुपया।

लकड़ी के दाम निकालने की जंत्री—इस पुस्तक की सहायता से लकड़ी का दाम सरलतापूर्वक निकाला जा सकता है। मूल्य २) दो रुपये।

बहीखाता—हिसाब-किताब रखने का उत्तम से उत्तम ढंग। मूल्य ॥–) नौ आने।

भारतीय चित्रकला-पद्धति—कलात्मक चित्र, कार्टून आदि बनाने की आसान विधि। मूल्य १) एक रुपया।

स्काउट मास्टरी और ट्रूप संचालन—पुस्तक में स्काउट मास्टरों के लिए बहुत-सी व्यावहारिक बातें बताई गई हैं। इस पुस्तक के अनुसार चलनेवाले स्काउट मास्टर ट्रूप संचालन में निस्सन्देह सफल होंगे। मूल्य १) एक रुपये।

अग्निकांड में सेवा—अग्निकांड में स्काउट लोग किस प्रकार सफलतापूर्वक दूसरों के जीवन और संपत्ति की रक्षा कर सकते हैं यह बात इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक लिखी गई है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य १) एक रुपया।

स्काउट ड्रिल और खेल—यह पुस्तक अपने ढंग की बिलकुल अकेली है। स्काउटों के लिए जितने प्रकार के भी ड्रिल और खेल आवश्यक हैं, वे सभी इसमें विस्तारपूर्वक बतलाये गये हैं। उनके नियमों तथा उपयोग आदि पर भी समुचित प्रकाश डाला गया है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य पहला भाग १) एक रुपया दूसरा भाग २) दो रुपये।

बाल शब्द-सागर—रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, बी० ए० ने हिन्दी का यह शब्द-कोष विशेष रूप से विद्यार्थियों के उपयोग के लिए बनाया है। किन्तु अपनी व्यावहारिक उपयोगिता के कारण यह सभी के काम आ सकता है। मूल्य २॥) दो रुपये ग्यारह आने।

कुछ संस्कृत पुस्तकें

प्रबन्ध प्रकाश—लेखक, मंगलदेव शास्त्री। इस पुस्तक के प्रारम्भ में सरल संस्कृत भाषा में प्रबन्ध रचना सम्बन्धी आवश्यक नियम दिये हैं। इसके पश्चात् उदाहरण-स्वरूप सुप्रसिद्ध प्राचीन तथा आधुनिक विद्वानों के तथा स्वयं ग्रन्थकार के लिखे हुए परीक्षोपयोगी निबन्ध दिये गये हैं। पुस्तक के अन्त में गद्य-पद्यमय सुभाषित तथा लोकन्याय दिये गये हैं। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

संस्कृत गद्य रत्नावली—पंडित अमरनाथ झा, वाइसचान्सलर प्रयाग विश्व-विद्यालय। यह पुस्तक संस्कृत गद्य की विभिन्न प्रकार की शैलियों का नमूना है। संस्कृत के सभी प्रतिष्ठित ग्रन्थों से अवतरण लिये गये हैं; किन्तु इस बात का ध्यान रखा गया है कि कोई अवतरण कठिन न हो। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

मेघदूत—यह महाकवि कालिदास के मेघदूत का बहुत ही उत्तम और उपयोगी संस्करण है। हर एक श्लोक के सामने राजा लक्ष्मणसिंह का किया हुआ पद्यानुवाद दिया गया है। गद्य में बहुत ही सरल और विस्तृत अर्थ भी दिया गया है। पाद टिप्पणियों में संस्कृत के कठिन शब्दों के समास, विग्रह तथा प्रतिशब्द आदि भी दिये गये हैं। मूल्य ।।।–) तेरह आने।

पंचतंत्र—संस्कृत में यह पुस्तक बहुत ही प्रसिद्ध है। इसके सुन्दर संस्करण का अभाव देखकर हमने इसे प्रकाशित किया है। आवश्यक टिप्पणियाँ देने के बाद अन्त में हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित किया गया है। मूल्य ।।) ग्यारह आने।

संक्षिप्त वाल्मीकीय रामायण—स्वर्गीय रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा संपादित आदि कवि वाल्मीकि मुनि प्रणीत वाल्मीकीय रामायण संस्कृत में बहुत बड़ी पुस्तक है। श्री रवीन्द्रनाथ जी ने इसे संक्षिप्त किया है। किन्तु पुस्तक का क्रम कहीं भी टूटने नहीं पाया है। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

कादम्बरी—सम्पादक स्वर्गीय महामहोपाध्याय पंडित गंगानाथ झा और पंडित काशीराम एम० ए०। बाणभट्ट की कादम्बरी संस्कृत में बेजोड़ पुस्तक है। परन्तु यह ग्रन्थ इतना बड़ा है कि इस युग के लोगों के लिए कठिन भी हो गया है। इस कठिनाई को हटाने के लिए इसका यह संक्षिप्त संस्करण निकाला गया है। मूल्य १) एक रुपया।

संक्षिप्त बिहारी—महाकवि बिहारी के दोहों का यह बहुत अच्छा संस्करण है। बिहारी की सतसई में जितने अधिक अश्लील दोहे थे, वे छाँटकर इसमें से निकाल दिये गये हैं। मूल्य २) दो रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक बालसखा १९४७

इसकी सजधज अनूठी और नयन-मनोहर है। छपाई कई रंगों में हुई ह।।चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएँ और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द भी सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का मूल्य ३)। मासिक ग्राहकों को रियायती मूल्य २॥) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

*चित्रा :

आँखों में निशाकी सघनता...चेहरे पर उषा की अरुणाई...

आप भी यह जानती हैं न कि परिपूर्ण स्वच्छता ही शरीर की सबसे बड़ी आवश्यकता है! चेहरे को उज्ज्वल, स्वच्छ, और ताज़ा रखने के लिये कोमल, सुवासित पॉन्ड्स् क्रीम्स् की सहायता लीजिये।

*वह रूपवती है!
वह पॉन्ड्स का प्रयोग करती है!

पॉन्ड्स दिनचर्या

पॉन्ड्स कोल्ड क्रीम : पॉन्ड्स कोल्ड क्रीम को चेहरे पर कोमलता से रमाते हुये दिन में दो बार उसे साफ़ कीजिये; उंगली के कोमल पोरों से उसे थपथपाइये। पॉन्ड्स टिशू से स्वच्छ कर लीजिये।

पॉन्ड्स वेनिशिंग क्रीम : कोल्ड क्रीम को साफ़ करके उंगली के पोरों से पॉन्ड्स वेनिशिंग क्रीम लगाइये। त्वचा को सुरक्षा देता हुआ वह आप के प्रयोग के साथही अंतर्धान हो जाता है।

पॉन्ड्स पाउडर : यदि आप की इच्छा हो तो पुष्प-पंखड़ी की भाँति कोमलता के लिये पॉन्ड्स पाउडर लगाइये।

पॉन्ड्स क्रीम्स

व्यापार-सम्बंधी पूछताछ के लिये लिखिये:
एल. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लिमि०
बम्बई - कलकत्ता - कराची - मदरास

मेरे श्वास में दुर्गन्धि ?

७६% नवयुवकों में दुर्गन्धि रहती है!

वैज्ञानिक अनुभवों ने निस्सन्देह यह सिद्ध कर दिया है कि कोलगेट दाँत के मंजन ने १० घटनाओं में ७ घटनाओं को शीघ्र ही मुक्त कर दिया। उनसे शीघ्र ही दुर्गन्धि जाती रही।

धन की बचत—अन्य अच्छे मंजनों की तुलना में कोलगेट के एक बड़े डिब्बे में ३० मात्रा अधिक रहती है और वैसे ही भारी डिब्बे में ४६ मात्रा अधिक··· बिना एक पैसे अधिक मूल्य के।

दुर्गन्धि से आपका सामाजिक पतन हो जाता है, आप अप्रिय हो जाते और अप्रसन्न रहते हैं। किसी भी दाम का कोई दन्तमंजन आपके दाँतों को इतना अच्छा और शीघ्रता से साफ नहीं कर सकता जितना कि—

कोलगेट टूथ पाउडर

आज ही खरीद लीजिए!

CLEANS BREATH AS IT CLEANS TEETH

Copyright, Pond's Extract Co.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पंचानन घोष रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मित्र

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य ७॥)
संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

६ जुलाई, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 6th July, 1947

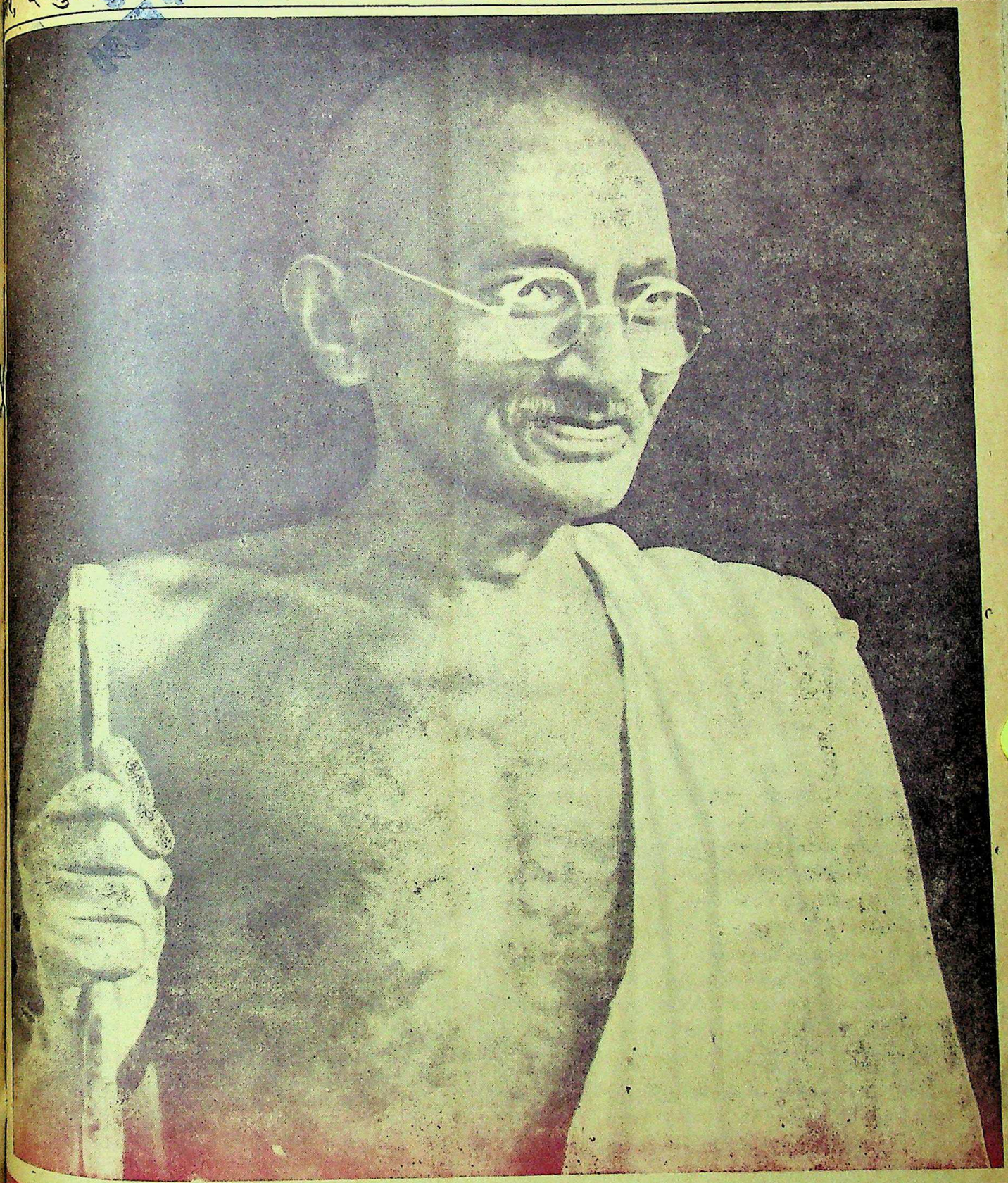

का पंजाब और पाकिस्तान
के नये और पुराने साहब।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय मजदूर आन्दोलन की प्रगति
रंगमंच, हासपरिहास और मातृमन्दिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथा-साहित्य का नवीन उपादान

अपना-पराया

लेखक—पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

अवकाश के क्षणों में अपना मनोरंजन करने के लिए यदि आप स्वस्थ मानसिक भोजन चाहते हैं, तो हमारा नवप्रकाशित, मौलिक, मनोरंक उपन्यास "अपना-पराया" पढ़िये।

सुप्रसिद्ध साप्ताहिक "योगी" (पटना, ता० २७ जून १९४७) इस उपन्यास के सम्बन्ध में लिखता है :—"मस्तजी हिन्दी के ख्याति-लब्ध कथाकारों में से हैं। प्रस्तुत उपन्यास में आपने भारतीय वातावरण से किंचित् भिन्न तिब्बत और चीन के सामाजिक जीवन का चित्रांकन भी किया है। शाही नौसेना के सैनिक बेचनसिंह के चरित्र-चित्रण में लेखक को पर्याप्त सफलता मिली है। उपन्यास के अन्त में तो बेचनसिंह का चरित्र धीरोदात्त नायकों की तरह अपनी उज्ज्वल आभा और आचरण की सुगन्ध बिखेरने लगता है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में योग-राग और उद्दाम वासना का चित्रण देख मैंने डरते-डरते पुस्तक पढ़ना प्रारम्भ किया था, पर ग्रन्थ की समाप्ति पर ऐसा लगा कि परिश्रम सार्थक हुआ और मनोरंजन भी हुआ। ग्रन्थ की छपाई-सफाई, मुख पृष्ठ का चित्र और भाषा शैली आकर्षक है। आशा है, हिन्दी-संसार में इसका स्वागत होगा।"

पृष्ठ २३२, सजिल्द और नयनाभिराम तुरंगा आवरण, मूल्य २॥) रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

भारत माता

अपने बच्चों से कहो ! कि
बुड वर्ड का ग्राइप वाटर
बच्चों को तंदुरुस्त रखता है

WOODWARD'S
GRIPE WATER
keeps baby well

"दर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली बुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी ! आप अपने बालक के हित के लिए इसका अवश्य देख लिया करें।

1-WW 117—117 W. WOODWARD LTD., LONDON, ENGLAND

७२ करोड़ रुपये से अधिक के सर्टिफ़िकेट्स बिक चुके हैं

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स

ये पूर्णतया सुरक्षित हैं। ब्याज और मूल दोनों का उत्तरदायित्व सरकार पर है। १२ वर्ष में इन का मूल्य ५०% बढ़ जाता है। इस प्रकार प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है - सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की मदों पर जो ब्याज दिया जाता है यह सब से अधिक दर है। इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। जिन की बचत थोड़ी है वे १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं।

सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स डाकख़ानों, सरकार द्वारा अधिकृत एजेंटों अथवा सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

आजकलकी रुपया लगाने की सर्वोत्तम स्कीम

AC 260

स्कूल के बालकों के लिये पाठ-के अच्छी तरह ब्रश करने से दांत भी अधिक अच्छे रहते हैं

पशुओं के बालों से रहित

• दांतों को ६० प्रतिशत अधिक स्वच्छ करता है
• जल-अभेद्य..... नमी-विद्वेषक
• शीशे में बंद
• वर्षभर की गारंटी

डा. वेस्ट्स ट्रूथ ब्रश और ट्रूथ पेस्ट

व्यापारिक पूछताछ के लिये : एल. डी. सेमूर एंड कम्पनी (इंडिया) लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान

वर्ष ६, संख्या ४५] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, ६ जुलाई, १९४७

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

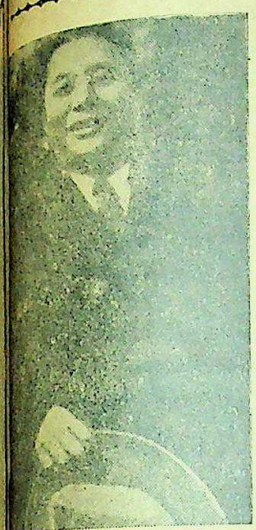

चीन के सेनापति जनरल च्यांग चुन

सिन्धप्रान्त आजकल पाकिस्तान बनता बन रहा है। जब से पाकिस्तान बना है, तब से सिन्ध मुस्लिम लीगी फिर फूले नहीं समा रहे हैं। अब जल्दी से जल्दी वहाँ के सारे पाकिस्तानी मसले एक लहमें में हल कर डालना चाहते हैं। आर्डिनेंसों की शुरुआत हो गई है और चल-अचल सम्पत्ति पर कब्जा किया जा रहा है। यही नहीं बिजली सामान आदि भी जब्त कर लिये गये। अपने राम की समझ में यह आता है कि कराँची पाकिस्तान की राजधानी बननेवाली है न, इसीलिए शायद यह करतब दिखाया जा रहा है। हिन्दू कांग्रेसी लोग कराँची छोड़ दें और हिदायततुल्ला एण्ड कम्पनी जिससे चाहे खेलें और पाकिस्तान के नाम पर खून की बंसी बजायें।

* * *

मिस्टर जिन्ना ने अपने एक बयान में कहा है कि पाकिस्तान में रहनेवाले अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा की जायेगी। अपने राम भी अब खूब समझ गये हैं कि पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों के साथ क्या सुलूक होगा। इसका नमूना अभी हाल सिन्ध का लीगी मंत्रिमंडल दुनिया के सामने पेश कर रहा है। सिंध सरकार के कारनामों से वहाँ के अल्पसंख्यकों में आतंक की लहर फैल गई है। वहाँ के बड़े बड़े व्यापारियों ने गत सप्ताह करोड़ रुपया दूसरे प्रान्तों में भेजा बताइये यह पाकिस्तान है जहाँ माल और जान की खैरियत नहीं जिसकी जर-जमीन मिले छीन लो पाकिस्तान कायम करो। धन्य है पाकिस्तान, आखिर यह धाँधली कितने दिन चलेगी? अगर यही हाल रहा तो पाकिस्तान किसी न किसी दिन दिवालिस्तान बन जाये तो ताज्जुब क्या है?

* * *

एक साहब ने प्रश्न किया कि बलूचिस्तान पाकिस्तान में चला गया। अपने राम ने जवाब दिया कि जहाँ अँगरेज एजेंट सरपंच बनकर बैठेगा और सरकारपरस्तों से हाथ उठवाकर अन्तिम फैसला कराने पर आमादा होगा वह प्रान्त पाकिस्तान में नहीं जायेगा तो क्या हिन्दुस्तान में? इसीलिए बिलोचिस्तान ने सीधा पाकिस्तान का रास्ता नापा। क्योंकि अँगरेज एजेंट की मंशा ही यही थी। फिर टाट उलटे तो कैसे उलटे?

* * *

भारत की सैकड़ों बड़ी-छोटी रियासतें भारतीय विधान-परिषद् में शरीक हो रही हैं लेकिन हैदराबाद और ट्रावन्कोर रियासतें, नहीं-नहीं उनके दीवान अपनी खिचड़ी अलग पका रहे हैं। ट्रावंकोर के दीवान सर रामस्वामी आजकल स्वतन्त्रता के सिपहसालार बन बैठे हैं और दौड़ लगा रहे हैं पाकिस्तान के शहंशाह मिस्टर जिन्ना के पास। लेकिन मिस्टर जिन्ना करेंगे क्या? एक कहावत प्रसिद्ध है कि ऊँट जब बौंड़ियाता है तो पश्चिमकी तरफ आँख मूँद कर भागता है। सर रामस्वामी भी आजकल बौंडिया गये हैं। इसीलिए वह मिस्टर जिन्ना की ओर सरपट भाग रहे हैं लेकिन रियासत की जनता अन्त में उनका बौंडियाना सँभालेगी क्योंकि रियासत जनता की है और महाराजा उसके प्रधान एजेण्ट। उस वक्त सर रामस्वामी कहाँ जायेंगे? कहावत है कि साहब से ज्यादा पूछ तो बैरे की होती है। सो इस वक्त सर रामस्वामी जो हैं सो क्या कर रहे हैं, इसको समझ लेना जरूर चाहिए।

* * *

बादशाह खान ने अपने एक वक्तव्य में कहा है कि ब्रिटिश-सेनापति जनरल मांटगोमरी के भारत आने का रहस्य है कि अँगरेज सीमाप्रान्त को फौजी केन्द्र बनाना चाहते हैं जिससे रूस कोई गड़बड़-शड़बड़ करे तो उसकी खबर ली जाये। बादशाह खान ने यह भी कहा है कि मि० जिन्ना-मान्टगोमरी मिलन में भी कुछ ऐसा ही रहस्य है। अपने राम को वाकई इस रहस्य-उद्घाटन से बड़ा आश्चर्य हुआ। बात कुछ समझ में भी आती है कि इस वक्त हिन्दुस्तान में ऐसा कौन-सा महान् जंग छिड़ा है कि इतने बड़े सिपहसालार यहाँ तशरीफ का टोकरा लाते। मिस्टर जिन्ना जाने और माण्टगोमरी साहब जाने अपने राम को क्या लेना-देना। अँगरेज और मुस्लिम लीग एक जान दो कालिब हैं ही, इसमें तो शक है ही नहीं।

* * *

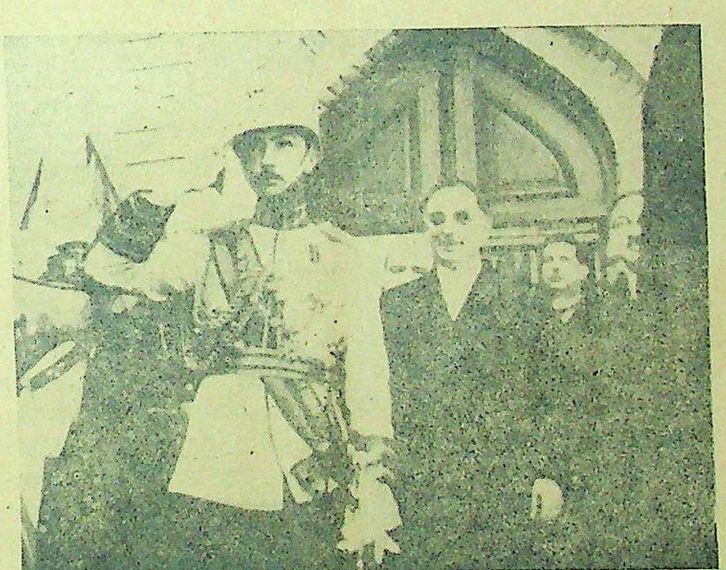

इराक के रीज़ेंट अब्दुलअल्लाह और प्रधान मंत्री नूरी इसेद पाशा।

कई देशी रियासतों में प्रतिगामी चाल चलनेवाले लोग इस वक्त लन्दन में पैंतरा बदल रहे हैं। ऐसे लोगों की जमघट में प्रसिद्ध पोलोबाज आगा खाँ भी शरीक हुए थे। अपने राम को यह जानकर खुशी हुई कि सर आगा खाँ लन्दन में बिगड़ैल रियासतियों की मजलिस में शरीक हुए। हमें याद है कि एक बार सर आगा खाँ हिन्दुस्तान में मिस्टर जिन्ना को राजनीति में पछाड़ने के लिए पधारे थे लेकिन अन्त में सोने से अपने को तुलवाकर वापस तशरीफ ले गये। अब कुछ न कुछ फिर होने ही वाला है। इस बार नवाब साहब भूपाल का जान पड़ता है मुकाबला किया जायेगा क्या? आमीन।

* * *

भारत-सरकार ने सभी विभागों में काम करनेवालों से पूछ-ताछ की है कि कौन साहबान पाकिस्तान में काम करने के लिए जाना चाहते हैं और कौन हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं? अपने राम की राय में सरकार निहायत चुस्त और दुरुस्त काम कर रही है? अब पता चल जायेगा कि सरकारी कर्मचारियों में कितने पाकिस्तान के सच्चे और वफादार पुजारी निकलते हैं? अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में सरदार वल्लभभाई पटेल ने कहा था कि पिछले नौ महीने के शासन में मैंने यह अनुभव किया है कि ऊँचे से ऊँचे मुसलमान सरकारी अफसर से चपरासी तक—विशेष को छोड़कर—मुस्लिम लीगी दिमाग के हैं। ऐसी हालत में अपने राम की राय है कि भारत-सरकार ने उन्हें पूछताँछ का अच्छा मौका दिया है। लीगी दिमागवाले पाकिस्तान में चले जायें तो बहुत ही बढ़िया है। पाकिस्तान कायम ही हो गया है। इसलिए देशभक्ति इसी में है कि फौरन पाकिस्तान के लिए कूच कर दिया जाये। हिन्दुस्तान में क्या रखा है? पाकिस्तान में हलुआ, सलाव, मालपुआ और पोलाव मिलेगा ही, लेकिन हिन्दुस्तान में तो सिर्फ ठर्री रोटी। जुलाई में पता चल जायेगा कि लीगी सरकारी नौकर कहाँ तक पाकिस्तान के लिए जाँनिसारी का इजहार करते हैं।

* * *

अगली पहली अगस्त से कपड़े पर से कन्ट्रोल हटनेवाला है, यह सुनकर ब्लेक मारकेटवालों और घूसखोरों का हृदय गद्गद हो गया है। अपने राम जानते हैं कि कन्ट्रोल उठने पर कम से कम चार-छः महीने के लिए तो पूरा स्वराज्य रहेगा। क्योंकि जब कपड़ा बाजार में उसी तरह फैलेगा जिस तरह आजकल जापानी कंघियाँ और गुब्बारे,' तभी ब्लेक मारकेटरों और घूसखोरों की तोंद पिचकेगी, इसके सिवा और दूसरा कोई चारा नहीं।

सागर और स्वर

लेखक, श्री गोपीकृष्ण

नीले आसमान के सितारों की आँखों ने समुद्र की एक नीलम लहर से कहा—तू देखती है? तेरे आँखें भी हैं क्या?

आसमानी लहर ने आस-पास की चट्टानों के अन्तर की आँखों से कहा—मैं देखती हूँ या नहीं, यह तो जाने जीवन के सपने, किन्तु, हाँ, यदि मेरे आँखें होतीं तो मुझमें चमक तो होती परन्तु मेरे नीचे-ऊपर का सारा संसार धुआँ होता!

× × ×

इसी समय आसमान की छाया में समुद्र के किनारे बैठे कवि के अन्तर की आँखों से एक धुआँ उठा और आँखों के अन्तर में लहरों-सा लहरा गया—

कहते हैं कि यह था जीवन!

वाल्टेयर, २० जून, ४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

पठानिस्तान बनाम पाकिस्तान

राष्ट्र की आँखें इस समय सिलहट और सीमाप्रान्त की ओर लगी हुई हैं। सिलहट की समस्या सीमाप्रान्त से भिन्न नहीं है। ब्रिटिश कूटनीति ने देश को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया है। यह देश के पूर्व और पश्चिम के ओर-छोर पर होनेवाले दंगों से स्पष्ट हो रहा है। अँगरेजों की सर्वव्यापक नीति है कि वह किसी न किसी अँगरेज-परस्त को राष्ट्र, प्रान्त अथवा समूह का उत्तरदायी बनाकर जबर्दस्ती शासन करना चाहते हैं। मिस्र की राजनीति में अब्दुलरशीद फिलिस्तीन में यहूदी, पाकिस्तान के लिए मिस्टर जिन्ना, ट्रावनकोर में सर सी० पी० रामस्वामी ऐयर, सीमाप्रान्त में नश्तर साहब और अब्दुल कयूम जैसे व्यक्ति भी आज भारतीय राष्ट्रीयता के घातक बन रहे हैं। सीमाप्रान्त पठानों का देश है जिसने खान बन्धुओं के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता का बीड़ा उठाया है। उस प्रान्त के वीर पठानों ने अपनी कुरबानियों और आत्म-त्याग से अभी तक भारत का मस्तक ऊँचा कर रक्खा है। मिस्टर जिन्ना जो कि पाकिस्तानी प्रान्तों में किसी भी प्रान्त के न तो नागरिक हैं और न उत्तरदायी व्यक्ति, फिर भी अँगरेजों की कूटनीति ने उनको पाकिस्तानी प्रान्तों का एक-मात्र शाहंशाह बना रक्खा है। यदि मिस्टर जिन्ना के तर्क के अनुसार 'पाकिस्तानी प्रान्तों को आत्मनिर्णय का अधिकार है' तो क्या कारण है कि सीमाप्रान्त उस आत्म-निर्णय से वंचित रहे? सीमाप्रान्त के पठान अपने प्रान्त को पठानिस्तान क्यों न बनायें जब कि उनकी स्वतंत्रता के साथ खेलवाड़ किया जा रहा है? बिना उनकी रजामन्दी के सीमाप्रान्त को जबरदस्ती पाकिस्तान में सम्मिलित होने की धमकी देना 'आत्म-निर्णय के सिद्धान्त' का हनन करना है, इसके अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है? ऐसी स्थिति में यदि खान अब्दुल गफ़्फ़ार खाँ तथा उनके अनुयायियों ने एक स्वतंत्र 'पठानिस्तान' राज्य की माँग की है तो इसमें मिस्टर जिन्ना की नाराजगी क्यों? क्या मिस्टर जिन्ना ने स्वयं भारत के अन्दर एक स्वतंत्र पाकिस्तान राज्य की माँग करके राष्ट्र के साथ द्रोह नहीं किया? यदि वे उसे विश्वासघात अथवा देशद्रोह नहीं समझते, और उसे आज आत्म-निर्णय कहकर प्रवञ्चना करते हैं तो फिर सीमाप्रान्त में 'पठानिनिस्तान' की आवाज प्रवञ्चना अथवा धोखेबाजी कैसे कही जा सकती है? पाकिस्तान को यदि भारत से अलग रहने के लिए आत्म-निर्णय का अधिकार है तो पठानिस्तान को भी पाकिस्तान से अलग रहने के लिए आत्म-निर्णय का अधिकार है? यह स्पष्ट सत्य है और उचित भी है।

कांग्रेस ने खान बन्धुओं के पठानिस्तान की माँग का समर्थन किया है। इसलिए नहीं कि कांग्रेस उन्हें भुलावा दे रही है। जब पठानों की आवाज रुक नहीं सकी तो वाइसराय ने घोषित किया कि यदि दो दलों में से कोई दल उनकी माँग का समर्थन करेगा तो वह उसे मानने के लिये तैयार हैं। वाइसराय को यह विश्वास रहा है कि ३ जून के उनके मसविदे को कांग्रेस ने मान लिया है, और मिस्टर जिन्ना को भी सही जँचा है। परन्तु क्या वाइसराय और मिस्टर जिन्ना यह उत्तर दे सकेंगे कि जिस ब्रिटिश सरकार के प्रधान मंत्री ने संयुक्त भारतीय-संघ की घोषणा की थी वह घोषणा क्यों बार-बार बदली जा रही है? मिस्टर जिन्ना ने भी विधान-परिषद में सम्मिलित होने के लिए १६ मई की घोषणा को मान लिया था फिर वह उस समझौते से मुकर कर परिषद् में क्यों सम्मिलित नहीं हो सके? क्या यह धोखेबाजी नहीं थी? यदि यह आत्म-निर्णय के विरुद्ध दबाव मान लिया गया है तो फिर कोई कारण नहीं है कि वाइसराय के वक्तव्य पर कांग्रेस विचार न करती। सीमाप्रान्त में आज भी कांग्रेस का अडिग मंत्रिमंडल है। उस प्रान्त में पठान अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य हैं। उन्होंने कांग्रेस के आदेश पर देश के लिए कुरबानियाँ की हैं। आज से १७ वर्ष पूर्व से जिन खान बन्धुओं ने कांग्रेस के आदेश पर फौज और पुलिस की गोलियों से मुकाबला करने के लिए निरस्त्र पठानों को तैयार ही नहीं किया था वरन् उनके द्वारा स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़कर संसार को दिखलया है कि सीमाप्रान्त के पठान स्वतन्त्रता-प्राप्ति में भारत के अन्य प्रान्तों के साथ हैं। ऐसी स्थिति में कांग्रेस और महात्मा जी पर यदि मिस्टर जिन्ना दोषारोपण करें तो उसे संसार किस प्रकार उचित समझ सकता है? १७ वर्षों से स्वतन्त्रता के लिए लड़नेवाले पठानों को जिन्ना की दी हुई ब्रिटिश भीख की गुलामी कब पसन्द होगी? जब वे अपने प्रान्त और देश से अँगरेजों को निकाल देने के लिए लड़ रहे हैं फिर वे किस प्रकार से अपने को उसी गुलामी में रक्खेंगे जिसमें उन्हें शताब्दियों से रहना पड़ रहा है? कांग्रेस अथवा महात्मा जी किसी को गुलाम रखना नहीं चाहते और न किसी को गुलाम देखना चाहते हैं फिर सीमाप्रान्त जो भारतीय यूनियन की एक इकाई रहा है और जिसने झूठी स्वतन्त्रता के नाम पर मिस्टर जिन्ना और उनकी कम्पनी की राय तक नहीं ली वह किस प्रकार से उस प्रदेश को गुलामी की जंजीर में डाल देने को तैयार हो जायें? कांग्रेस सीमाप्रान्त की स्वतन्त्रता का केवल मौखिक समर्थन ही नहीं कर रही है बल्कि उसकी स्वतन्त्रता के लिए जहाँ तक हो सकेगा बलिदान देने में भी कमी न करेगी।

सीमाप्रांत की स्वतन्त्रता का मसला सामने है और लीगी नेता व्यर्थ में उस प्रदेश को स्वार्थपरता के नाम पर झगड़े की रंगभूमि बना रहे हैं। जब जब बँटवारे का प्रश्न उपस्थित हुआ लीगी नेताओं ने हिंसात्मक कार्रवाइयाँ की हैं। भारत में शान्ति-स्थापना के लिए महात्मा गांधी और मिस्टर जिन्ना का जो संयुक्त वक्तव्य निकलवाया गया था, मिस्टर जिन्ना और उनके अनुयायी सीमाप्रान्त में जिस निर्दयता से उसका उल्लंघन कर रहे हैं यदि इस मामले को किसी निष्पक्ष न्यायालय में पेश किया जाये तो परिणाम कुछ और ही दिखाई देगा। परन्तु निष्पक्ष न्यायालय है कहाँ? फिलस्तीन का मामला संयुक्त-राष्ट्र-संघ के सामने होते हुए भी ब्रिटेन के हाथ में है। संघ की एक बैठक में श्री आसफअली ने पूछा था—"क्या ब्रिटेन संयुक्तराष्ट्र-संघ का फैसला मान लेगा?" ब्रिटेन के प्रतिनिधि बगलें झाँकने लगे। फिर ब्रिटेन अथवा ब्रिटेन के एजेण्ट इस प्रस्ताव को कैसे स्वीकार कर सकते हैं? सीमाप्रान्त के निवासियों की अपनी स्वतन्त्र भाषा है, संस्कृति है और है मानवता के प्रति प्रेम। फिर उनके आन्तरिक मामलों में वाह्य शक्तियों का हस्तक्षेप करना मानवता के प्रति विश्वासघात करना है। पठान इस बात को स्वीकार नहीं कर सकते और न उन्हें करना ही चाहिए। इस दृष्टि से 'सीमाप्रान्त पठानिस्तान के रूप में बदल जाये' इससे कोई भी स्वतन्त्र तथा मानवता-प्रेमी व्यक्ति इनकार नहीं कर सकता। इसलिए हम कह सकते हैं कि खान बन्धु और पठान यदि अपनी माँग पर अड़े हैं तो वह उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। इस दृष्टि से आज की मतगणना का वहिष्कार भी उनके आदर्श के अनुकूल ही है।

* * *

प्रान्तीय सरकारी नौकरियाँ

युक्तप्रान्तीय लेजिस्लेटिव कौंसिल में एक गैर-सरकारी प्रस्ताव द्वारा सरकार से यह सिफारिश की गई थी कि वह सरकारी नौकरियों में जातियों का अनुपात निर्धारित कर दे। इस प्रस्ताव पर बोलते हुए माननीय पंडित गोविन्दवल्लभ पन्त ने सभा को जो सूचना दी उसमें उन्होंने ऐसे सिद्धान्त बतलाये जिन पर किसी को एतराज नहीं हो सकता। पन्त जी ने कहा था—सरकार तीन सिद्धान्तों पर सरकारी नौकरियाँ देती अथवा सरकारी कमेटियाँ बनाती रही है। (१) जहाँ तक उन्नति देकर खाली जगहों के भरने का सम्बन्ध है वह किसी दूसरी कसौटी द्वारा नहीं बल्कि गुण द्वारा भरी जाती हैं। (२) जहाँ तक जगहों के भरने का सम्बन्ध है पब्लिक सर्विस कमीशन अथवा चुनाव बोर्डों द्वारा तुलनात्मक आधार पर या योग्यता की तुलना द्वारा किया गया है। (३) जहाँ तक इन जगहों के भरने का सम्बन्ध है जो न तो तुलनात्मक ढंग से भरी गई हैं और न गुणों द्वारा ऐसे जगहों को पंचायती मानना पड़ा है और ऐसा होना उचित भी है।

माननीय पन्त जी के वक्तव्य से किसी को वास्तव में असन्तोष नहीं हो सकता। उन्होंने यह भी कहा कि यदि कोई जगह रिजर्व रक्खी जा सकती है तो वह पिछड़ी हुई जातियों के लिए बात ठीक ही है। इस पर किसी एतराज ही क्या हो सकता है? पर एक बड़ी बात जो हम सामने देखते वह यह है कि पन्त जी, सरकारी नौकरियों की भरती-नीति को अभी तक क्यों नहीं सके? संयुक्तप्रान्त में कांग्रेस सरकार स्थापित हुए साल भर से अधिक हुए परन्तु सरकार ने पुरानी पद्धति में इंच भी हेर-फेर नहीं किया, बल्कि अक्षरशः पुरानी पद्धति को वह अपनाती जा रही है। मुसलमानों के लिए अब भी रिजर्व हैं। उनके लिए विशेष प्रतिबन्ध नहीं लागू होता फिर गुण, योग्यता और तुलना का प्रश्न ही कहाँ उठता है?

अपनी वक्तृता में माननीय पंत ने जनता की वर्तमान माँग का हवाला देते हुए कहा है—"प्रत्येक सरकारी नौकर का कर्तव्य है कि समय को व्यर्थ की बातों में न बितावें। जिस काम में नियुक्त हुआ है उसे सेवा, सच्ची लगन और भक्ति से करना चाहिए। प्रत्येक नौकर का यह प्रारम्भिक अधिकार है कि देश और समाज के प्रति वफादार हो फिर ऐसे समय में जब कि समस्या आज के लिए नहीं वरन् भविष्य की शताब्दियों के लिए नया रूप धारण करने जा रही हैं।

इस प्रान्त के मुसलमान अधिकतर मुस्लिम लीग से प्रभावित हैं। विशेष कर वे जो कि सरकारी नौकरियों अथवा वह किसी संस्था के कर्मचारी हैं। ऐसे लोग पाकिस्तान के नाम पर प्रान्त की सेवा नहीं करते, वरन् उसके प्रतिकूल आचरण करते हैं। वह न तो जनता के काम का उत्तरदायित्व लेते हैं और न अपने कर्तव्य की परवाह करते हैं। ऐसे ही लोग सरकारी नौकरियों में रहकर जासूसी का कार्य भी करते हैं। ऐसे ही लोग योग्यता, गुण अथवा अन्य खूबियों की परवाह न करके पाकिस्तान के नाम पर अँगरेजों की सहायता करते हैं। ऐसी स्थिति में वे तीन सिद्धान्त जिन्हें माननीय पन्त जी ने व्यवस्थापिका सभा में बताये हैं केवल कोरे कागजी ही रहेंगे। इसलिए यह आवश्यक है कि उन सिद्धान्तों को कार्यरूप में परिणत करने के लिए राष्ट्रीयता के विरोधियों को स्थान न दिया जाय क्योंकि जितनी लगन उन्हें विभाजित भारत (पाकिस्तान) से है उतनी हिन्दुस्तान से नहीं हो सकती। अतः ऐसी जमातवाले राष्ट्र अथवा जन-सेवी कहे ही कैसे जा सकते हैं? इसलिए हम सरकार का ध्यान सरकारी नौकरियों में नई भरती की ओर आकर्षित करना चाहते हैं कि वह ऐसे लोगों को जो कि भारतीय राष्ट्रीयता के घातक हैं सरकारी नौकरियों में स्थान न दें। जब उनकी आँखें खुल जायेंगी तो वे स्वयं सोचेंगे कि उनका क्या कर्तव्य है?

ज्योतिष्मती—इस संग्रह में ठाकुर साहब की नवीन प्रकार की कवितायें संगृहीत की गई है, जो हिन्दी-साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती हैं। खासकर इसमें संग्रह किये गये छोटे-छोटे गीत बहुत ही मधुर और भावपूर्ण हैं। मूल्य २।) दो रुपये पाँच आने।
मैनेजर बुकडिपो इंडियन प्रेस, लि०,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज का पंजाब और पाकिस्तान

अराजकता और बर्बरता का आँखों देखा वर्णन

लेखक, श्री मन्मथनाथ गुप्त

पंजाब और पाकिस्तान की आज क्या स्थिति है ? अराजकता, बर्बरता और आतंक ने वहाँ जो नग्न नृत्य दिखाया है, वह प्रत्यक्ष है। प्रसिद्ध समाजवादी श्री गुप्त ने पिछले दिनों पंजाब की यात्रा की थी, इस लेख में उन्होंने जो कुछ देखा उसी का वर्णन किया गया है। लेख रोचक तथा जानकारी से पूर्ण है।

इस लेख के लेखक प्रसिद्ध समाजवादी श्री मन्मथनाथ गुप्त।

...से लीग ने १६ अगस्त १९४६ ...संग्राम-दिवस का सूत्रपात ...है, तब से हिन्दू-मुस्लिम दंगों ने ...भयंकर रूप धारणा किया है। ...कलकत्ता, बिहार, रावल-...लाहौर, अमृतसर से दंगे की जो ...आती रहीं, उनसे किसी भी बुद्धि-...आदमी का माथा ठनकना बिलकुल ...विक था। पर अखबार की खबरों ...वे खबरें कितनी भी अतिरंजित ...वस्तुस्थिति कहीं भयंकर है इस ...का पता मुझे तब लगा जब कि ...की बार बम्बई से लेकर लाहौर ...का दौरा किया।

...यह जानता था कि रोग बहुत ...आधार धारण कर चुका है, ...करीब-करीब १०० फी सदी लोग ...खो चुके हैं। इस बात का प्रत्यक्ष ...मुझे इस दौरे से ही हुआ। मैंने ...कि यद्यपि हम मि० जिन्ना के दो ...सिद्धान्त का विरोध करते रहे ...वह सारे भारतवर्ष में विशेषकर ...में वास्तविक हो चुका है।

...मैंने बम्बई ऐसे शहर में जहाँ कई ...के लोग रहते हैं यह देखा कि जिस ...शान्ति रहती है, उस दिन भी ...को तो कौन कहे दिन को भी हिन्दू-...में मुसलमान और मुसलमान ...में हिन्दू जाने से हिचकते हैं। ...परिस्थिति महीनों से कायम है और ...कार लोग तो यह बताते थे कि यदि ...कोई वारदात न भी हो, तो भी ...में पारस्परिक अविश्वास इतना ...चुका है कि लोग शायद फिर भी ...दूसरे का साथ करने से डरें।

...जब मैं पंजाब में पहुँचा तो मैंने ...स्थिति और ी विकट पाई। वहाँ ...दोनों तरफ से चीजें छुरेबाजी से ...आगे बढ़ चुकी थीं। हिन्दू तथा ...मान दोनों बन्दूक तथा तमंचों से ...थे। जब मैंने इस बात पर ध्यान से ...तो यह समझ में आया कि जब ...लोग जिस जमाने में आतंकवादी ...कारी आन्दोलन के सिलसिले में ...पर कफन बाँधकर घूमा करते थे, ...हममें से बहुत से हथेली पर हर ...जान लिये फिरते थे, उस समय भी मुँहमाँगा दाम देने पर भी, साथ ही विदेशों से हथियार मँगाने पर भी हम इतनी आसानी से बन्दूक और तमंचा इकट्ठा नहीं कर पाते थे और यदि कुछ इकट्ठा कर भी पाते थे तो पुलिस के मारे वे रह नहीं पाते थे। पर आज क्या वजह है कि पुलिस का संगठन पहले से कहीं अधिक होने पर भी इस तरह लोगों के पास हथियार मौजूद हैं? इस प्रश्न का उत्तर देने में हमें देर नहीं हुई। हम समझ गये कि यह सब ब्रिटिश साम्राज्यवाद की महिमा है।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने १९४२ के आन्दोलन के साथ ही बाद को सेना में जो हालत उत्पन्न हुई, उसे देखकर यह समझ लिया कि पुराने ढर्रे पर उसका भारत में रहना असम्भव है। तदनुसार उसने बहुत सोचकर ऊपरी तौर पर भारत छोड़ने का निर्णय कर लिया। ऊपरी तौर पर इसलिए कि असल में ब्रिटिश साम्राज्यवाद भारत से जाने का कतई इरादा नहीं रखता।

राजनैतिक पहलू पर विचार करने के पहले मैंने पंजाब में जो कुछ देखा और सुना उसके सम्बन्ध में दो-एक मार्के की बातें और बता दूँ। मैंने जब इस बात की खोज की कि इतनी बन्दूकें आदि कहाँ से आ रही हैं, इतने बम कैसे बन रहे हैं, तो हमें बड़ी रहस्यजनक बातें मालूम हुईं। हमें यह पता लगा कि मुसलमानों को अस्त्र-शस्त्र आजाद कबीलों के इलाकों से मिल रहा है और हिन्दू तथा सिक्खों को कुछ सिक्ख तथा हिन्दू रजवाड़ों से मिल रहा है। मुझे यह सारी बातें अत्यंत रहस्यजनक और भयानक ज्ञात हुईं।

मुझे अपने इस दौरे में कुछ सुलझे हुए मुसलमानों से भी बातचीत करने का मौका मिला। यदि उनकी बातों पर विश्वास किया जाय तो परिस्थिति की भयंकरता और भी स्पष्ट हो जाती है। विशेषकर पंजाब के सम्बन्ध में इनका यह कहना था कि लीग ने ही वहाँ तैयारी के साथ मार-काट के कार्यक्रम को शुरू किया। यह तब की बात है जब खिजिर हयात खाँ का मंत्रिमंडल कार्य कर रहा था। इन लोगों के कथनानुसार खिजिर हयात लीग से बहुत परेशान था, पर वह शुरू में न तो लीगी था और न लीग का साथ देना चाहता था। वह जानता था कि लीग के इस सारे तूफान का मतलब यह है कि खिजिर हयात खाँ मंत्रिमंडल इस्तीफा दे दे, और उसकी जगह पर लीगी मंत्रिमंडल आ जाय। लीगवालों के मार-काट के कार्यक्रम का यही उद्देश्य था।

लीगवालों ने खिजिर हयात पर व्यक्तिगत रूप से भी बहुत जोर का दबाव डाला। यहाँ तक कि खिजिर के घर की बुढ़ियों तक ने उसे यह कहकर कोसा कि बेटा मुसलमानों की आह क्यों लेते हो, पाकिस्तान क्यों नहीं होने देते? इस प्रकार खिजिर बहुत परेशान था। कहा जाता है कि उसने कई बार हिन्दू तथा सिक्ख नेताओं से घुमाव-फिराव के साथ यह बात कही कि तुम लोग भी मार-काट शुरू कर दो, तब हमारे लिए रास्ता साफ हो और हम बच जायँ, नहीं तो प्रान्त में लीगी मंत्रिमंडल कायम होगा। पर हिन्दू तथा सिक्ख नेताओं ने ऐसा करने से इनकार किया।

फलस्वरूप २० फरवरी की ब्रिटेन के भारत त्यागवाली घोषणा का बहाना मिलते ही खिजिर ने मंत्रिमंडल तोड़ दिया। मुझे यह विश्वास दिलाया गया और मुझे इसमें सब बातों को सुनने के बाद कुछ विश्वास भी हुआ कि मंत्रिमंडल तोड़ देते समय खिजिर न तो लीग के इशारे पर नाच रहा था और न उसने लीग के कहने पर ही ऐसा किया था, बल्कि सच तो यह है कि लीग से परेशान होकर तथा हिन्दुओं और सिक्खों को अपने प्रति सहानुभूति न पाकर ही उसने मंत्रिमंडल त्याग दिया। इस सम्बन्ध में यह बात तो सभी को मालूम है कि खिजिर ने बहुत दिनों तक लीग से सहयोग करना स्वीकार नहीं किया था। यदि शुरू में ही वह लीग से सहयोग करता तो पंजाब में लीग का मंत्रिमंडल शायद बन जाता।

खिजिर के मंत्रिमंडल के भंग हो जाने के बाद भयंकर मार-काट शुरू हो गई। इसमें खैर लीग का तो हाथ था ही, लीग ब्रिटिश गवर्नर के साथ ही हिन्दुओं तथा सिक्खों को यह विश्वास दिलाना चाहती थी कि लीग के हाथों में आत्म-समर्पण में ही कल्याण है। यह तो लीग का उद्देश्य था, पर गवर्नर की गद्दी पर बैठे हुए जेंनकिन्स ने इस प्रकार मार-काट होने दिया, इसमें ब्रिटिश साम्राज्यवाद के भी कुछ उद्देश्य थे। वह उद्देश्य क्या था यह भारतवर्ष के हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान दो अंशों में बाँटे जाने तथा अन्य बातों से धीरे धीरे साफ होता जा रहा है।

भारतवर्ष दो नहीं दो सौ हिस्सों में बँटे और उनमें परस्पर सहयोग तथा सद्भाव हो तो उससे ब्रिटिश साम्राज्यवाद का काम नहीं बन सकता था। भारतवर्ष में इस कारण ब्रिटिश साम्राज्यवाद की कूटनीति का यही उद्देश्य हो सकता था कि देश आपस में लड़नेवाले हिस्सों में बँट जाय। पाकिस्तान तथा हिन्दुस्तान में भारत का बाँटा जाना उतना खतरनाक नहीं है जितना कि उनको उस हालत में बाँटना खतरनाक है जब कि वे एक दूसरे से लड़ने के लिए तैयार हों।

और यही आज की परिस्थिति है। इसी परिस्थिति को उत्पन्न करने के लिए नोआखाली से लेकर सीमाप्रान्त

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

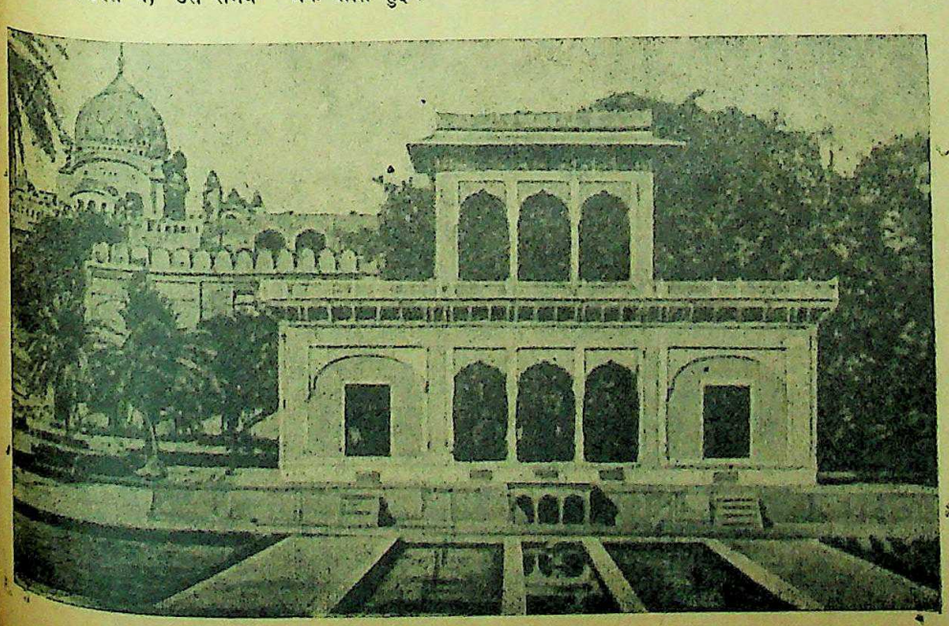

लाहौर में पंजाबकेसरी स्वर्गीय महाराजा रणजीतसिंह की समाधि का एक दृश्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय मज़दूर-आन्दोलन

श्रमिका-वर्ग के संगठन का एक संयुक्त मोर्चा ज़रूरी है

लेखक, श्री चन्द्रोदय दीक्षित

इस देश के श्रमिक-वर्ग की परिस्थिति सदा से डावाँडोल रही है। श्रमिकों का आन्दोलन और संगठन विभिन्न राजनैतिक दलों द्वारा संचालित होता रहा है किन्तु अभी हाल में कांग्रेसी दृष्टि से मज़दूरों के नवीन संगठन के लिये राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन की स्थापना हुई है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने मज़दूर आन्दोलन के इतिहास का वर्णन करते हुए यह बतलाया है कि श्रमिक-वर्ग का एक संयुक्त मोर्चा स्थापित होना चाहिए। लेख जानकारी से पूर्ण तथा पठनीय है।

आचार्य नरेन्द्रदेव ने मज़दूर-आन्दोलन को शक्तिशाली बनाया है।

भारतीय मजदूर-आन्दोलन का क्रमिक विकास सन् १९२० से आरम्भ हो जाता है। यों तो जब से सूती मिलों का खुलना शुरू हुआ था उसी समय से मजदूर संघर्ष के अनिवार्य हो जाने पर नवीन संगठनों को जन्म देते थे कि जो अपने क्षणिक स्वरूप के कारण ही संघर्ष के नष्ट होते ही समाप्त हो जाते थे। सन् १९२० के बाद धीरे-धीरे संगठित मजदूर-आन्दोलन व्यापक रूप से आगे बढ़ा। केन्द्रीय व्यवसायिक संघ अखिल भारती ट्रेड यूनियन कांग्रेस का संगठन हुआ। ट्रेड यूनियन कांग्रेस के झंडे के नीचे मजदूर-एकता संगठित होती गई और धीरे धीरे उनके संगठन का प्रभाव मजदूरों के दैनिक संघर्षों पर स्पष्ट रूप से पड़ने लगा। मजदूरों में उसके प्रति आकर्षण और विश्वास उत्पन्न होने लगा। उसके उपरान्त देश में नवीन विचारधारा का आगमन हुआ और ऐसे नवयुवकों की संख्या बढ़ने लगी जो समाजवादी विचारधारा के प्रभाव में आये और उसके फलस्वरूप उन्होंने अपने कार्यक्षेत्र को मजदूर-वर्ग के संघर्ष-शील जीवन को बनाया। हमारे देश के मजदूर-आन्दोलन का श्रीगणेश करने में उदारदली मानव सेवा की भावना से अनुप्राणित होकर आनेवाले सुधार-वादी लोगों ने किया था जो मजदूरों के दुःखों से प्रभावित थे और उन्हें प्राप्त कानूनी सुविधाओं को पूर्णरूप से दिलाना चाहते थे। जो पूँजीपति लोग मजदूरों के अपढ़ होने से नहीं देते थे साथ ही उनमें शिक्षा तथा अन्य उन्नति के कामों को शुरू करके उनमें मानव अधिकार की शिक्षा भर देना चाहते थे। हमारे देश के मजदूर-आन्दोलन के आरम्भ में इस सुधारवादी मनोवृत्ति के आधार से काम करना आरम्भ करनेवालों में सबसे प्रथम नाम श्री एन० एम० जोशी का है। भारतीय मजदूर-आन्दोलन को यदि राजनीतिक प्रभाव को दूर करके देखें तो हम श्री एन० एम० जोशी के व्यक्तित्व में मूर्त-रूप में पायेंगे। मजदूर-आन्दोलन में पहले सन् १९२९ में संकट आया था उस समय एक ओर कम्युनिस्ट पूर्ण क्रान्तिकारी मजदूर-संगठन का स्वप्न देखते थे और दूसरी ओर पूर्णरूप से सुधारवादी मजदूर-आन्दोलन के लिए उद्योग करने-वाले लोग थे। कम्युनिस्टों ने लाल ट्रेड यूनियन कांग्रेस का और सुधारवादियों ने लेबर-फेडरेशन का संगठन किया। इसके साथ ही कुछ ऐसे भी लोग थे जो केन्द्रीय अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन में ही बने रहे। बाद में मजदूरों के व्यापक संघर्ष ने सभी मजदूर-संस्थाओं को एक ही स्थल पर पुनः संगठित होने के लिए बाध्य कर दिया और पुनः तीनों अखिल भारतीय मजदूर संस्थायें मिलकर एक हो गईं। और उसी समय यह समझौता भी हो गया कि राजनीतिक दृष्टिकोण में मतभेद होने के कारण विभिन्न दल केवल आंशिक बहुमत से कोई राजनीतिक प्रस्ताव पास नहीं किया जायगा और यदि राजनीतिक प्रस्ताव पास हो गया तो उसके लिए कम से कम ७५ प्रतिशत बहुमत आवश्यक होगा। इसी आधार पर सभी राजनीतिक दल अखिल भार-तीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस में काम करते रहे। यहाँ पर यह बतलाना अनुचित न होगा कि तीनों मजदूर संस्थाओं के एक हो जाने पर अहमदाबाद मजदूर महाजन को भी ट्रेड यूनियन में सम्मि-लित होने के लिए निमंत्रित किया गया। मजदूर महाजन अहमदाबाद के सूती कारखानों में काम करनेवाले मजदूरों की संस्था है इसका संगठन महात्मा गांधी की देख-रेख में गांधी-सेवा संघ की मजदूर उपसमिति ने किया था। आगे चलकर हिन्दुस्तान मजदूर सेवक-संघ के रूप में इसी संस्था ने अपने बृहत् स्वरूप को प्रकट किया। अहमदा-बाद की यह मजदूर-संस्था ट्रेड यूनियन कांग्रेस में कभी सम्मिलित नहीं हुई और न उसने हड़ताल को ही अपना प्रधान अस्त्र बनाया। यहाँ पर गांधी जी के आदेशानुसार मिल-मालिक को ट्रस्टी के रूप में देखने की शिक्षा दी जाती थी। मजदूर का हित मिल-मालिक के हित के विरुद्ध नहीं समझा जाता वरन् मजदूरों में यह विश्वास जमाया जाता है कि मिल-मालिक स्वतः मजदूरों की इच्छाओं को पूरा करेंगे और मालिकों को मजदूरों की इच्छाओं से अवगत कराने का काम मजदूर महाजन (संघ) का काम होगा। यह लोग सदैव संगठित मजदूर संगठन के विरुद्ध रहे, क्योंकि इनके सिद्धान्तों के अनुसार अन्य मजदूर-संस्थायें गैर ज़िम्मेदार उपद्रवकारियों के प्रभाव में थीं जो सदैव हड़ताल ही किया तेकरहैं।

राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी, हिन्दुस्तानी मजदूर सेवक-संघ की जनरल कौंसल के सदस्यों की एक सभा में भाषण दे रहे हैं।

समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने मजदूर-आन्दोलन को बल दिया है।

भारतीय मजदूर-आन्दोलन में अहमदाबाद की मजदूर संस्थाओं के सम्मिलित न होने के बावजूद अधिकांश मजदूर अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस में ही संगठित थे और उसने राष्ट्रीय संगठनों में भी भारतीय ट्रेड यूनियन को ही प्रतिनिधित्व दिलाया था। मजदूरों का यह एका निरन्तर सन् १९४० तक बना रहा।

सन् १९३९ में द्वितीय महायुद्ध आरम्भ हो गया। उद्योगपतियों को युद्धकाल में बड़े बड़े लाभ की आशा थी अतः वे किसी प्रकार से मजदूरों से संघर्ष आरम्भ न करना चाहते थे और छोटी मोटी माँगों को यों ही पूरा करने के लिये राजी हो जाते थे। द्वितीय महायुद्ध के आरम्भ होने के साथ ही साथ देश का राजनीतिक संकट तीव्र रूप लेने लगा। विभिन्न राजनीतिक दलों ने अपने भिन्न स्वरूप को प्रकट किया जिसके फलस्वरूप अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के अन्दर उभयपक्षीय आलोचना बढ़ गई। सन् १९४० में भारत में साम्यवादी लित धारा का विरोध करते हुए मानवेन्द्रनाथ राय ने युद्ध के स्वरूप को फासिस्ट-विरोधी जनता का युद्ध बतलाया और इसके फलस्वरूप उन्होंने देश के स्थान स्थान पर फासिस्ट-विरोधी प्रचार करने का नारा दिया। श्री राय कांग्रेस और ट्रेड यूनियन कांग्रेस दोनों ही को अपने मत से प्रभावित करना चाहते थे परन्तु असफल होने पर उन्हें दोनों ही स्थानों को रिक्त करना पड़ा। श्री राय के मत की आलोचना करना मेरा मन्तव्य नहीं है फिर भी इतना कहना अनुपयुक्त न होगा कि द्वितीय महायुद्ध के बीच में श्री राय ने ही सबसे पहले राजनीतिक संकट की महत्ता पर जोर देकर मजदूरों की एकता को समाप्त कर दिया। आपका कथन था कि द्वितीय महायुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय गृह-युद्ध है और मजदूरों को उस युद्ध में प्रगतिशील शक्तियों के साथ चलकर युद्ध-उद्योग में पूर्ण सहयोग देकर फासिज्म के विरुद्ध विजय प्राप्त करनी चाहिए। उनके कथनानुसार अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस पर राष्ट्रीयता की पूरी छाप है और वह उसी के प्रभाव में प्रगतिशील मार्ग का अनुसरण करने में असफल है। इसके बाद सन् १९४२ में श्री राय ने एक नवीन अखिल भारतीय मजदूर संघ की नींव डाली। इंडियन फेडरेशन ऑफ

शेष पृष्ठ १८ पर

खून पी करके कभी पनपी न डाली

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव बी० एस-सी० एल्-एल० बी०

खून पी करके कभी पनपी न डाली।
तू समर की नीति क्या जाने अभागे,
शेर आता है तड़प ललकार आगे,
रात में लुक-छिप झपट करती शृगाली।
खून पीकर जोंक कीचड़ की फली है,
खून से तर एक दोजख की गली है,
खून ने कब प्रेम की बुनियाद डाली।
कौन समझा था पड़ोसी काल होगा,
प्राण-घातक नाक का ही बाल होगा,
रक्त लावेगी मगर निर्दोष लाली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४७ के साहब बहादुर !

नये और पुराने साहब बहादुरों के रवैयों का एक मनोरंजक लेखा-जोखा

लेखिका, कुमारी मालती माथुर, बी० ए० एल्-टी०

आजकल साहब बहादुरों की बड़ी विचित्र नीति है। वह अवसर को देखकर ही आगे कदम बढ़ाते हैं। दुनिया में प्रजातंत्र की हवा बह रही है, इसलिये उनका आसन डोल उठा है। इसीलिये आजकल वह भाषणों और बातचीत में पक्के प्रजातंत्रवादी बन गये है लेकिन उनका भीतरी कार्य पूरा साम्राज्यवादी है। इस लेख में पुराने और नये साहब बहादुरों का मनोरंजक खाका खींचा गया है।

...प्रेसीडेन्ट ट्रूमन में नये साहबों के गुण मौजूद हैं।

...टिश साम्राज्यवादियों को जितना ...आजकल यह कहने में मिलता है ...समय उनकी सत्ता केवल उनके ...में है उतना और किसी में नहीं, ...यह सोचना ठीक न होगा कि ...और कर्जन के समय के साहब ...रहे। हाँ, ऐसे लोग हैं और ...के छत्र पर सुख के दिन बिता ...। भारत में ब्रिटिश शासन की ...के पहले जो लड़ाइयाँ लड़ी गई ...का आल्हा गाने में ही वे अपना ...बिताते हैं। इसी में वे अपनी विद्वत्ता ...हैं। कभी-कभी सभाओं में वे ...को यह समझाने का प्रयत्न ...कि पूर्व पूर्व ही रहेगा। वे बतलाते ...पूर्वी देशों को सभ्य बनाने के लिए ...ने कितने बलिदान किये हैं। ...भाषणों के मुख्य विषयों में दो ...मुख्य विषयों का उल्लेख करना ...है। एक तो यह है, चर्चिल और ...की नीति का समर्थन और दूसरा ...खतरे की पुरानी कहानी। ...उतना ही घमण्ड है और उतनी ...सहनशीलता है जितनी पहले ...पर इनका महत्त्व इस युग में बहुत ...हो गया है। सरकारी नीति और ...वादी शासन की दृष्टि में ये ...हैं। इन पुराने साहबों के विचार ...इंगलैण्ड के विचार नहीं कहे जा ...

* *

...नये साहबों को यह मालूम है कि वे ...इंगलैण्ड के प्रतिनिधियों में

...मंत्री लार्ड लिस्टोवेल भी नये ...बहादुरों के दल में शरीक हैं।

गिने जाते हैं। वे बोलते बहुत हैं और ओजस्वी भाषण देने का प्रयत्न करते हैं। जनतंत्रवादी भाषा बोलने में वे अभ्यस्त हैं। "साम्राज्य" शब्द का वे प्रयोग नहीं करते। अपने भाषणों और लेखों में वे साम्राज्यवाद के अस्तित्व को अस्वीकार करते हैं और भारतवर्ष की पूर्ण स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं। ये दिखावे का तो ऐसा प्रयत्न करते हैं कि भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन की उग्रता उन्हें नापसन्द नहीं है। कभी-

वाइसराय लार्ड लुई माउंटबेटेन नये साहब बहादुरों के अगुआ बन रहे हैं।

कभी पुराने ब्रिटिश शासकों की वे कड़ी आलोचना भी कर बैठते हैं।

साधारण रूप से उन्हें या तो प्रतिशील कंजरवेटिव कहना उचित होगा अथवा मजदूर-दल के साधारण कर्मचारी। ये नये साहब या तो व्यापार-संघों के बड़े अफसरान होते हैं या कालेजों के प्रोफेसर। बहुधा महात्मा गांधी और पण्डित नेहरू की पुस्तकों से ये भली भाँति परिचित होते हैं। कांग्रेस और मुस्लिम लीग की तनातनी पर ये आँसू बहाते हैं। इस बात को यह कभी न मानेंगे कि ब्रिटेन भारत की स्वतंत्रता के मार्ग में रुकावट है। ये नये साहब बहादुर कुछ भी क्यों न हों, किन्तु यथार्थवादी ये अवश्य हैं और कूटनीतिज्ञ भी। लेबर पार्टी के साहब का भारत की ओर जो दृष्टिकोण है। वह न ब्रिटिश-भारतीय व्यापारियों का दृष्टिकोण है और न पेंशन पानेवाले पुराने सैनिक अफसरों का। उनका दृष्टिकोण है लेबर पार्टी के उच्च वर्ग का जिसका वास्तविक रूप लेनिन ने कई वर्षों पहले दिखलाया था। प्रथम महायुद्ध के पहले ही लेनिन ने इस बात पर जोर दिया था कि उपनिवेशों—विशेषतः भारत—से प्राप्त हुए धन का नशा ब्रिटिश उच्च वर्ग पर इतना गहरा पड़ा कि उसने मजदूरों के उच्च वर्ग को भी साम्राज्यवाद का समर्थक बना डाला। मजदूर-दल के उच्च वर्ग में यह विधार-धारा अभी तक प्रवाहित हो रही है और पहले से कहीं अधिक तीव्र गति से। ब्रिटिश लेबर के उच्च वर्ग का यह विश्वास है कि साम्राज्य के अन्य लाभों में एक यह है कि ब्रिटिश मजदूर-वर्ग का रहन-सहन और ढंग पूँजीवादी योरप के अन्य देशों की तुलना में कहीं बढ़ा-चढ़ा है। वे यह भी जानते हैं कि उनकी यह स्थिति उसी समय तक रह सकती है जब तक साम्राज्य के लाभों को हाथ से न जाने दिया जाय, चाहे साम्राज्य को किसी भी नये नाम से क्यों न पुकारा जाये।

* * *

ब्रिटिश नीति के निर्धारकों और विधाताओं का यह एक गूढ़ रहस्य है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह सिद्धान्त सरकारी वक्तव्यों में प्रकाशित नहीं किया जाता और न समाचारपत्रों के रूप में यह जनता के सामने आता है। यह सिद्धान्त लेबर पार्टी के शासक-वर्गों की सम्पत्ति है और उनकी भी जो इसका रहस्य जानते हैं। कभी-कभी लेबर पार्टी के छोटे-मोटे अफसर भी इस सिद्धान्त का उपयोग करते हैं—केवल उन सच्चे ब्रिटिश मजदूरों से तर्क करने में जो दिल से चाहते हैं कि साम्राज्यवादी भावनाओं का अन्त हो। कुछ भी हो, यह सिद्धान्त आज के ब्रिटिश शासकों का अटल सिद्धान्त है। नये साहब बहादुर को चाहे एमरी और चर्चिल की सजी-धजी विक्टोरियन भाषा भले ही पसन्द न हो पर वे डरते हैं कि यदि हिन्दुस्तान उनके हाथ से चला गया तो उनके रहने का ढंग बहुत गिर जायेगा और उनके हाथों से शक्ति चली जायेगी।

यह है भूमिका उन नये सीधे-सादे भोले-भाले साहब बहादुरों की जिन्हें उपनिवेशों की स्वतंत्रता के आन्दोलनों ने बड़े चक्कर में डाल दिया है। ऐसी स्थिति में उनके नये साम्राज्यवादी उद्देश्यों की सफलता किस प्रकार मिल सकती है? ये नये तरीकों का उपयोग करते हैं और आधुनिकता के अनुरूप ही नये सैनिक और राजनैतिक अस्त्रों से वार करते हैं। इन्हें मालूम है कि

ब्रिटिश कट्टरपंथी दल के नेता मिस्टर चर्चिल पुराने साहब बहादुरों के नेता हैं।

आजकल एक देश का दूसरे पर शासन करना आसान नहीं है और जनमत को ऐसा करना स्वीकार भी नहीं हो सकता। पर दूसरे देशों में, देश को शत्रु से बचाने के बहाने, उसके यातायात की देख-भाल करने के बहाने तथा सैकड़ों वर्ष पुराने वचन को पूरा करने के बहाने सैनिक अड्डे अवश्य रक्खे जा सकते हैं।

* * *

सारे संसार में अमेरिका आजकल यही कर रहा है। पर अमेरिका न एक औपनिवेशिक शक्ति है और न उसमें साहबों की प्रथा ही चली आ रही है। आइसलैंड, इटली, ग्रीस, तुर्की चीन, फिलिस्तीन, कनाडा इत्यादि में अमेरिका के सैनिक अड्डे हैं। अमेरिका सारे संसार में एटामिक केन्द्र स्थापित करना चाहता है—यहाँ तक कि इंगलैण्ड में भी। अमेरिका ने अपने को अन्य देशों का रक्षक, उन्हें "बोल्शेविक" खतरे से बचानेवाला समझ रक्खा है।

जो देश अमेरिका से शरण नहीं माँगता और जिसे उसके डालरों की आवश्यकता नहीं होती अमेरिका की नजरों में वह जनतन्त्रवादी नहीं है। जिस प्रकार कि नये ब्रिटिश साहब एक ओर तो फिलिस्तीन, मिस्र और ट्रान्सजार्डन में सैनिक अड्डे स्थापित करते हैं और दूसरी ओर साम्राज्यवाद का विरोध करते हैं उसी प्रकार अमेरिकन साहब भी कहते हैं कि वे साम्राज्यवादी नहीं हैं।

सच बात तो यह है कि आधुनिक युग में अमेरिका और ब्रिटेन एक नये

ब्रिटिश प्रधान मंत्री मिस्ट एटली ने 'भारत छोड़ो' का नारा लगाकर नई साहबी का परिचय दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान विश्वविद्यालय

हिन्दी के प्रतिष्ठान के लिए जनव्यापी आन्दोलन की आवश्यकता

लेखक, सूर्यराज व्यास बी० ए०, विशारद
प्रधान मंत्री राजस्थान हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, हिन्दी प्रचारिणी सभा, जोधपुर

राजस्थान विश्वविद्यालय की स्थापना के कुछ भी कारण रहे हों पर जिस समय इसकी स्थापना के समाचार मिले तो साधारण जनता को बड़ी प्रसन्नता हुई। इस प्रसन्नता का मुख्य कारण था राजस्थानी बालकों की उच्च शिक्षा के लिए सुविधा। भारत का शिक्षित समाज यह भली प्रकार जानता है कि शिक्षा के क्षेत्र में भी किस प्रकार भिन्न-भिन्न प्रान्तों के मेडिकल, इंजीनियरिंग, एग्रिकल्चर आदि कालेजों में केवल प्रवेश प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को कितना कष्ट उठाना पड़ता है और कई कई परिस्थितियों में तो इन कालेजों में प्रवेश पाना केवल इसलिए असम्भव-सा है कि अमुक विद्यार्थी या तो किसी रियासत का निवासी है या उस प्रान्त का निवासी नहीं है जहाँ कालेज स्थापित है। राजपूताना प्रान्त को इस बात का बड़ा ही कटु अनुभव है। अनेक विद्यार्थी केवल इसीलिए उच्च शिक्षा न पा सके कि उनके पास इन प्रान्तीय रुकावटों को दूर करने के साधन नहीं थे अथवा उनके पास इतनी धन-राशि नहीं थी जो वे प्रान्तीय कालेज अन्य प्रान्तीय व रियासती विद्यार्थियों से माँगते हैं। इस माने में राजस्थान ने बड़ी देर के बाद भी सही अपना निजी विश्वविद्यालय स्थापित कर राजस्थानीय जनता की एक बड़ी आवश्यक माँग की पूर्ति की है; अतः जनता तथा उच्च शिक्षा-अभिलाषी विद्यार्थियों को इससे संतोष व प्रसन्नता हो, इसमें कोई नई बात नहीं है।

यह सभी जानते हैं कि राजस्थान हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्त है। राजस्थानी भाषा ने हिन्दी-भाषा के निर्माण में कितनी सहायता दी है यह इस लेख का विषय नहीं है; परन्तु इतना मान लेना आवश्यक है कि हिन्दी के निर्माण में राजस्थान और राजस्थान-वासियों का प्रमुख हाथ रहा है। ऐसी स्थिति में जब राजस्थान का अपना विश्वविद्यालय स्थापित होने जा रहा है तो हर हिन्दी-प्रेमी राजस्थानी बन्धु अपना यह कर्त्तव्य समझता है कि वह यह पूछे कि राजस्थान विश्वविद्यालय में हिन्दी की कितनी प्रतिष्ठा होगी।

यह जानी-मानी बात है कि भारत की स्वतंत्रता के साथ-साथ अखिल भारतीय और अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का प्रश्न भी देश के सम्मुख उपस्थित है और समय-समय पर इस समस्या को सुलझाने के यत्न किये जाते रहे हैं, और यह निश्चित-सा मान लिया गया है कि हमारी मातृभाषा हिन्दी है और भारत या हिन्दुस्तान की भाषा हिन्दी है और हिन्दी ही रहेगी। यही कारण है कि शनैः-शनैः शिक्षा के माध्यम के लिए कतिपय विश्वविद्यालय अँगरेजी के स्थान पर हिन्दी की प्रतिष्ठा का निश्चय कर चुके हैं। इस सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न विषयों के ग्रन्थ हिन्दी में निर्माण करने का आयोजन किया गया है; और वह समय दूर नहीं है, जब इन विश्वविद्यालयों में उच्च से उच्च शिक्षा हिन्दी में दी जाने लगेगी।

ऐसी स्थिति में राजस्थान विश्वविद्यालय को भी अपना कर्त्तव्य निश्चित रूप से समझना है। हम अभी नहीं कह सकते कि राजस्थान विश्वविद्यालय के कर्णधारों का इस सम्बन्ध में क्या रवैया रहेगा; परन्तु यह उचित प्रतीत होता है कि जनता अपना निर्णय इस सम्बन्ध में पहले ही से स्पष्ट कर दे ताकि राजस्थान विश्वविद्यालय को अपनी नीति निर्धारित करने में न तो देर लगे और न कोई बाधा ही हो।

ऐसा सुनने में आया है कि राजस्थान विश्वविद्यालय में बदलते हुए जमाने, आज तक के शिक्षण अनुभवों तथा मनोवैज्ञानिक तत्त्वों की माँग की, और अभी से ध्यान देने की आवश्यकता नहीं समझी जा रही है। यहाँ तक सुनने में आया है कि विद्यार्थियों को जो सुविधाएँ राजपूताना बोर्ड की मैट्रिक व इण्टर आदि परीक्षाओं में अब तक प्राप्त थीं, वे सुविधाएँ भी अब उन्हें राजस्थान विश्वविद्यालय में नहीं मिलेंगी। यदि यह सत्य है तो यह अच्छी बात नहीं है और जो भी विद्वान् इस योजना के लिए जिम्मेदार हैं उन्हें इस ओर पूरा ध्यान देने की आवश्यकता है। इस प्रकार की संदेह भूमि ही राजस्थान के हिन्दी-प्रेमियों के लिए यह नितान्त आवश्यक बना देती है कि वे अपनी माँग विश्वविद्यालय के सम्मुख रखें।

इस सम्बन्ध में निश्चित है कि राजस्थानी बन्धु राजस्थान विश्वविद्यालय से दो बातों की माँग करेंगे।

१—शिक्षा का माध्यम हिन्दी भाषा हो।

२—पंजाब विश्वविद्यालय की नाईं यहाँ भी हिन्दी परीक्षाओं का प्रबन्ध किया जाय।

और हमारा कर्त्तव्य है कि हम इन दो माँगों को विश्वविद्यालय के सम्मुख बल के साथ उपस्थित करें। इसके लिए समूचे राजस्थान में एक सुव्यवस्थित व दृढ़ आन्दोलन की परम आवश्यकता है।

हम यहाँ पहली माँग के सम्बन्ध में विशेष नहीं कहेंगे, कारण यह समस्त देश की माँग है इस माँग के सम्बन्ध में कोई दो राय नहीं हैं और हमें पूरा विश्वास है कि देश की परिस्थितियाँ अपने आप इस माँग की पूर्ति का रास्ता निकालेंगी।

परन्तु दूसरी आवश्यकता, हमारी विशेष चिन्तनीय है और वह माँग की निजी है।

सभी जानते हैं कि बंगाली, गुजराती, महाराष्ट्री, तथा अन्य दक्षिण भाषाओं का साहित्य पनपा हुआ है, वहाँ अपने-अपने प्रान्त में अपनी-अपनी भाषा का प्रतिष्ठान है, लोगों की शिक्षा की ओर रुचि है, उनका अपना साहित्य सम्पन्न है और स्त्रियों की शिक्षा में भी वे अधिक पीछे नहीं हैं। पर दुर्भाग्य राजस्थान इन सभी बातों में पिछड़ा हुआ है। शिक्षित जनता के आँकड़े देख लीजिए, महिला-समाज की स्थिति देख लीजिए, राजस्थानी भाषा की गति देख लीजिए, आपको स्पष्ट हो जायगा कि राजस्थान में शिक्षा की कमी ही उसके उत्थान में सर्वोपरि बाधा रही है; अतः यह नितान्त आवश्यक है कि जनता की रुचि शिक्षा की ओर अधिक से अधिक बढ़ाई जाय। इसके लिए जो साधन हैं उनमें से हिन्दी की भिन्न-भिन्न परीक्षाओं की स्थापना प्रमुख, सहज तथा परमोपयोगी है। इसका अनुभव अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने किया है, बीकानेर राज्य हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन कर रहा है; तथा महिला विद्यापीठ प्रयाग की प्रवेशिका, विद्याविनोदिनी, विदुषी आदि पंजाब की रत्न, भूषण, प्रभाकर परीक्षाएँ इसकी उपादेयता का ज्वलन्त उदाहरण है। इस क्षेत्र में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने हिन्दी की जो सेवा की है वह देश के इतिहास में अमर रहेगी और किसी भी रूप में व किसी भी कारण से पंजाब विश्वविद्यालय ने अपनी रत्न, भूषण व प्रभाकर परीक्षाओं द्वारा पंजाब, दिल्ली, राजपूताना आदि प्रान्त-वासियों में और विशेष कर महिला-समाज में जो हिन्दी का प्रचार व प्रसार किया है, वह भूला जा नहीं सकेगा। परन्तु पंजाब की ये परीक्षाएँ देश के सौभाग्य से समझिए या दुर्भाग्य से, जहाँ तक पुरुषों का सम्बन्ध है, पंजाब तक ही सीमित है। अन्य प्रान्त-वासी चोरी से, धोखे से, पंजाबी बनकर ही ये परीक्षाएँ दे सकते हैं और सैकड़ों हजारों की तादाद में प्रतिवर्ष देते हैं; परन्तु ऐसा करने में उन्हें किन किन उपायों को काम में लाना पड़ता है तथा कितना धन स्वाहा करना पड़ता है ये जाननेवाले भली प्रकार जानते हैं। हाँ महिलाओं के लिए ये परीक्षाएँ भारत भर के लिए खुली हैं पर उनके लिए भी ये उतनी सहायक और सरल नहीं हो सकतीं जैसी अपनी निजी परीक्षाएँ। इसके लिए दो प्रमुख कारण हैं। पहला [illegible] कि पंजाब-प्रान्त के बाहर इन [illegible] का केन्द्र नहीं है, दूसरा यह कि [illegible] में अभी स्त्री-शिक्षा की ओर [illegible] कम ध्यान दिया जाता है। ऐसी [illegible] में राजस्थान की बहुत ही कम [illegible] इन परीक्षाओं से लाभ उठाती [illegible]

राजस्थान में जनता में [illegible] प्रसार की दृष्टि से तथा विशेषकर [illegible] समाज में शिक्षा की अभिरुचि [illegible] के लिए यह नितान्त आवश्यक [illegible] राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा [illegible] की कुछ इसी प्रकार की परीक्षाओं [illegible] स्थापना हो, इसके लिए राजस्थान [illegible] साहित्य-सम्मेलन की सभी शाखाओं [illegible] उससे सम्बन्धित सभी संस्थाओं, [illegible] नेर राज्य साहित्य-सम्मेलन, जयपुर [illegible] साहित्य-सम्मेलन, भारतेन्दु समिति [illegible] साहित्य-परिषद् अलवर, हिन्दी-[illegible] समिति डूंगरपुर, हिन्दी प्रचारिणी [illegible] जोधपुर आदि सभी सार्वजनिक [illegible] तथा अन्य सार्वजनिक संस्थाओं, [illegible] मंडलों, समाचारपत्रों, विद्वानों व [illegible] हिन्दी-प्रेमी बंधुओं की सेवा में यह [illegible] दन है कि वे कृपा करें। राजस्थान [illegible] विद्यालय में हिन्दी प्रतिष्ठान के [illegible] एक जन-आन्दोलन की योजना [illegible] यह आन्दोलन सम्यक् रूप से सुव्यवस्थित और संगठित हो और समूचे प्रान्त [illegible] इसमें सहयोग प्राप्त किया जाय।

हम इस सम्बन्ध में जोधपुर [illegible] स्थापित हिन्दी परीक्षा आन्दोलन [illegible] की स्थापना का स्वागत करते हैं; पर [illegible] में यह भी कह देना उचित समझते [illegible] कि इस प्रकार अलग-अलग छोटी-[illegible] संस्थाएँ खड़ी कर देने से पूर्व प्रति[illegible] संस्थाओं की शक्ति बढ़ने के स्थान [illegible] शिथिल होती है और एक जन-आन्दो[illegible] को जो बल मिलना चाहिए उससे [illegible] रह जाती है। फिर भी जैसे-तैसे [illegible] हमें अपनी उपरोक्त माँग पूरी [illegible] के साथ प्रस्तुत करनी है और [illegible] सफल होना है।

प्रकार के साम्राज्यवाद में विश्वास करते हैं—किसी देश पर जबरदस्ती आर्थिक आधिपत्य जमाना। जो लोग अमेरिका और ब्रिटेन की भिन्न साम्राज्यवादी नीति से लाभ उठाना चहते हैं वे एक झूठा स्वप्न देख रहे हैं।

.....कुछ भी भेद हो नये और पुराने साहबों में—पर यह मानना पड़ेगा कि नये साहब साम्राज्य को हाथ से नहीं जाने देना चाहते। —टास

तुलसी रत्नावली—गोस्वामी जी के समस्त ग्रन्थों का अध्ययन कर इनके विद्वान् सम्पादक ने कुछ रत्न [illegible] निकाले हैं, उन्हीं का यह संग्रह है। दूसरे शब्दों में गोस्वामी जी की समस्त रचनाओं का यह निचोड़ है। मूल्य १।) एक रुपया आठ आने।
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

प्रकाशित हो गया !
वार्षिक बालसखा १९४७
बालक-बालिकाओं के लिए ज्ञान-विज्ञान का अनोखा भण्डार। विविध सामग्री, सैकड़ों चित्र, अच्छी जिल्द, ३०० पृष्ठ। मासिक बालसखा के ग्राहक रियायत के लिए अपना नम्बर लिखें। मूल्य ३)।
शीघ्रता कीजिए। प्रतियाँ अधिक नहीं छपी हैं।
मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

बेचारी मनोरमा !

लेखक, श्री राजेन्द्रनाथ गुप्त, एम० ए०

साम्प्रदायिक दंगों में कितनी ही घटनायें ऐसी घटी हैं, जिन्हें सुनकर रोमांच हो आता है और हृदय को तकलीफ़ होती है। पंजाब में ऐसी घटनायें कमन हीं हुईं। ऐसे कटु वातावरण में किसके साथ न्याय होता है और किसके साथ अन्याय इसका निर्णय कौन करे? इस कहानी में भी ऐसी ही घटना का चित्रण किया गया है, जो सामयिक, सुंदर और पठनीय है।

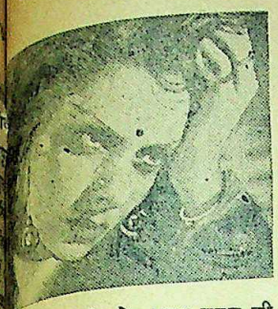

...री मनोरमा जिसने मृतक युवक की सेवा की थी।

...अनारकली के एक दुमंजिले मकान ...नीचे रात के अँधेरे में कोई अपरिचित ...ड़ खटखटा रहा था। विलास का ...याम नगर लाहौर निद्रादेवी की ...में शांति से सो रहा था। कभी-कभी ...पैट्रोल की सीटियाँ बजतीं और ...सन्नाटा छा जाता। शहर में २४ ...का करफ्यू लगा था।

...इतनी रात रहे, झगड़े के दिनों में ...कौन व्यक्ति हो सकता है जो आकर ...ड़ खटखटाये—मनोरमा देवी ने ...। वह सोच ही रही थी कि इतने में ...घायल की चीत्कार सुनाई दी। "कहीं ...मेरे पति तो नहीं हैं"—मनोरमा ...शंका हुई। "परन्तु नहीं यह कैसे हो ...ता है, वह तो दिल्ली गये ...हैं; सात दिन में लौटने को कह ...हैं; अभी तो तीन दिन ही बीते हैं। ...तो हो नहीं सकते। फिर यह ...घर के द्वार पर कराह रहा ...कुछ भी हो यह हमारा कर्त्तव्य है ...हम आगन्तुक की, विशेष रूप से जब ...घायल हो, सेवा और शुश्रूषा करें"—...मा का स्त्री-सहज कोमल हृदय ...; और वह तत्काल लालटेन लेकर ...से नीचे उतरने लगी।

...अंतिम सीढ़ी पर आते ही किवाड़ ...राज में से मनोरमा को कुछ प्रकाश ...पड़ा और कान लगाकर ध्यान ...ने से ज्ञात हुआ कि दो-तीन व्यक्ति ...वार्तालाप कर रहे हैं :—

...एक—"रफीक यार यह तो कोई ...मोहल्ला मालूम देता है?"

...दूसरा—"जो हो, या अल्लाह..."

...तीसरा—"शायद सिक्खों की बस्ती ...?"

...एक—"यहाँ से चलना चाहिए।"

...दूसरा—(कराह रहा है)

...तीसरा—"यही तो मेरी भी सलाह ...। हम परदेशी ठहरे। कौन जाने ...जैसा हमारा भी हाल हो?"

...एक—"लेकिन मुनीर, शहर में तो ...घंटे का करफ्यू लगा है, कहीं पुलिस ...ले नहीं तो लेने के देने पड़ जायँ। ...भी तो पास नहीं जो ले-देकर पीछा ...सकें!"

...तीसरा—"मैंने तो स्टेशन पर ही ...था कि लौट चलो, लेकिन ...सुनते ही कभी किसी की? रफीक ...जान से गया, अब कुछ और भी ...है? अहमद, अब क्या करें? रफीक ...तरह पड़े हुए छोड़ा नहीं जाता और ...पुलिस का भी डर है। इधर गिरें ...और उधर गिरें तो खाई।"

...अरे यह तो गुंडे जान पड़ते हैं। इन्हें ...कैसे दी जा सकती है? कहीं कोई आफत कर बैठें तो। घर पर कोई आदमी भी तो नहीं है जो सँभाल ले। और फिर हम हिन्दू। इन्हीं गुंडों ने ही तो हमारे हजारों भाइयों, स्त्री और बच्चों का नोआखाली और कलकत्ते में खून कर दिया। हमारे अमृतसर और लाहौर में आग लगा दी और क्या अत्याचार नहीं किया? हमारे मंदिरों और पूज्य स्थानों को अपवित्र किया। ऐसे हिंसकों को घर में आश्रय कैसे दूँ? कहीं कुछ कर बैठें तो ....." मनोरमा का मुख तमतमाने लगा और नेत्र बंद हो गये। इतने में फिर आवाज आने लगी :—

अहमद—"अब यही एक रास्ता है कि हम और तुम भाग चलें और सुबह तक कहीं किसी दूकान या नाली में छिपे रहें, सुबह देखा जायगा। रफीक तो मर ही रहा है। अल्लाह ही मालिक है। बोलो मुनीर क्या सलाह है?"

मुनीर—"अहमद तुम्हें शर्म नहीं आती कि एक घायल साथी को परदेश में हिन्दुस्तानी मोहल्ले में छोड़कर हम भाग जायँ। ऐसा नहीं हो सकता। घर पर लोगों को क्या मुँह दिखायेंगे। तुम जहाँ चाहो चले जाओ, मैं तो यहीं रफीक के साथ मरते दम तक बना रहूँगा।"

अहमद—"पागल हो गये हो क्या मुनीर! क्या मुझे रफीक का ख्याल नहीं है; लेकिन वक्त का भी तो ख्याल करो। कहीं कोई सिक्ख या हिन्दू आ जाय तो! एक आदमी के लिए दो और मारे जायँ यह कहाँ की अक्लमंदी है? और फिर रफीक तो बेहोश पड़ा है उसे महसूस ही नहीं होगा कि हमने उसे धोखा दिया। देखो सीटी बज रही है; पुलिस आती ही होगी। चलते हो या यहीं मरना है?"

यह कहते हुए अहमद मुनीर की बाँह घसीटते हुए न जाने कहाँ अँधेरे में अदृश्य हो गया। मनोरमा ने देखा कि उसके घर के द्वार पर एक घायल बेहोश पड़ा है और उसके अन्तिम समय पर उसके स्वार्थी साथी भी नौ-दो ग्यारह हो चुके हैं। मनोरमा के हृदय में राम जगे। धीरे से किवाड़ खोले तो देखा कि सामने एक गौरवर्ण, हृष्ट-पुष्ट, अति सुन्दर मुसलमान नौजवान लम्बी रेशमी कमीज, लाल-फैज टोपी, सूती सलवार पहने खून से लथपथ बेहोश पड़ा है और उसके पेट में एक लम्बा छुरा घुसा हुआ है। यह वीभत्स दृश्य देखकर मनोरमा एकबारगी चीत्कार करके गिर पड़ी।

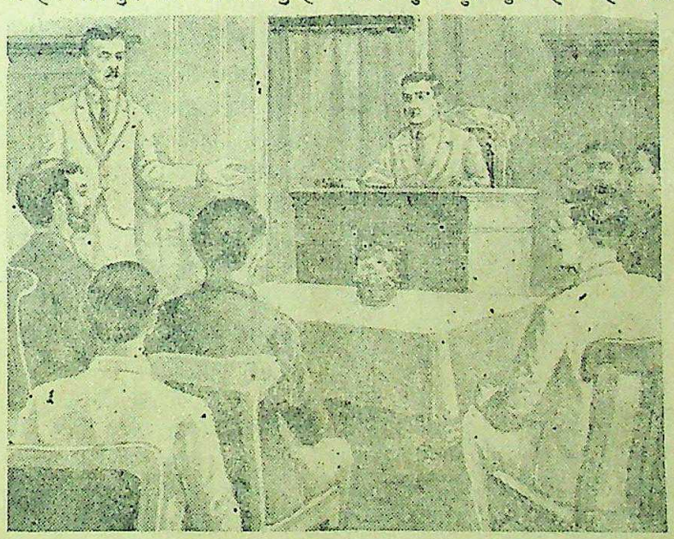

अदालत में मनोरमा के मुकदमें में उपस्थित दोनों फरीकों के वकील और दर्शक।

× × ×

"सरदार जी, ओ सरदार जी..... देखिए खून!"—पुलिस के एक सवार ने टुकड़ी के दूसरे सवार से कहा।

"अरे यह दो लाशें कैसी हैं जी?—....किसी और ने कहा।

"शायद कोई love affair (प्रेम-लीला) मालूम देता है....." दरोगा इमामबक्श ने कहा कुछ सिर खुजलाते हुए।

घोड़ों से नीचे उतरकर पुलिस-सवारों ने जब ध्यानपूर्वक देखा तो उन्हें ज्ञात हुआ कि वास्तव में वे दोनों स्त्री-पुरुष मरे नहीं थे—बल्कि बेहोश पड़े थे।

स्त्री केवल अचेत थी उसके शरीर पर किंचित घाव नहीं थे परन्तु युवक के पेट में एक कृपाण घुसा हुआ था। एक हिन्दू युवती एक मुसलमान युवक के ऊपर इस दशा में पड़ी हुई! क्या कारण हो सकता है?

थाने में बहुत देर बाद मनोरमा को चेत हुआ और इस दशा में अपने को थाने में बंदी पाकर बड़ा आश्चर्य होने लगा। वह सोचने लगी कि पुलिसवाले भी कैसे होते हैं—उन्हें मेरे मकान के खुले किवाड़ों का ख्याल तक नहीं आया। खैर—अब क्या किया जाय? लोग क्या कहेंगे? इस घटना की चर्चा तो हमारे हिन्दू पिता और सिक्ख पति के घराने में तो होगी ही। वह मुसलमान युवक कहाँ है—कदाचित् अब तक मर चुका होगा। उसके स्वार्थी साथी कहाँ गये? आदि।

मनोरमा विचारमग्न थी। इतने ही में पुलिस के थानेदार और नायब ने हवालात की कोठरी में प्रवेश किया। अभी तारे चमक रहे थे परन्तु अधिकांश रात्रि बीत चुकी थी।

"तुम्हारा क्या नाम है?"—थानेदार इमामबक्श ने कड़ककर पूछा।

"मनोरमा देवी, सरदार तेगबहादुर की धर्मपत्नी"—सिर ढँकते हुए मनोरमा ने उत्तर दिया।

"कौन तेगबहादुर?"

"पंजाब नेशनल बैंक के छोटे मैनेजर।"

"वह कहाँ हैं?"

"दिल्ली गये हैं, चार दिन बाद वापस आनेवाले हैं।"

"क्या तुम बतला सकती हो यह मुसलमान युवक कौन था?"

"जी नहीं; मैं उसे नहीं जानती। मैंने तो उसे....."

"तो फिर इतनी रात रहे तुम दोनों का खुलेआम सड़क पर इस तरह पड़े रहने का क्या सबब हो सकता है?"—बात काटते हुए नायब ने कहा।

"सच बताओ, क्या तुम्हारा उस युवक से प्रेम था? याद रक्खो तुम पुलिस के सामने बयान दे रही हो, यदि झूठ बोला तो अच्छा नहीं होगा। क्या उस युवक ने तुम्हें धोखा दिया था, या बदचलन साबित हुआ था। वह कैसे मारा गया? ठीक बता दो; छुटकारा मिल सकता है। नहीं तो....."

"दारोगा जी मैं सच बयान करती हूँ मैं उस नवयुवक को बिलकुल नहीं जानती। मैंने तो उसे घायल दशा में अपने घर के द्वार पर पड़ा पाया था। उसके बाद क्या हुआ यह मुझे मालूम नहीं। मेरी समझ में नहीं आता कि आप मुझे यहाँ क्यों घसीट लाए हैं?"—सिसकते हुए मनोरमा ने कहा।

"अच्छा तो आपने उस जवान को अपने दरवाजे पर घायल पड़ा पाया; लेकिन मेहरबानी करके यह तो बताइए कि आधी रात में आपके घर से निकलने का सबब? क्या आपको यह नहीं मालूम था शहर में चौबीस घंटे का करफ्यू लगा है और फिर घर से बाहर निकलने में जान का खतरा भी तो था। क्या दंगे की भी आपको खबर नहीं थी—आप तो पढ़ी-लिखी मालूम देती हैं—"नायब अब्दुल ताना मारने लगा।

"जी बात यह थी कि मैं घर का काम-काज समाप्त कर सोने जा रही थी कि इतने में नीचे किसी ने किवाड़ खटखटाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देशदूत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्यारह बजे होंगे। नीचे की मंजिल में गोदाम था और वह बन्द था। पास-पड़ोसी सभी सो रहे थे। मेरे पति सरदार तेगबहादुर जी दिल्ली गये हुए थे। कोई साथ नहीं था। नीचे उतरने का साहस नहीं होता था...परन्तु....."

"परन्तु क्या....आशिक से मिलना तो जरूरी था; इससे अच्छा समय और क्या हो सकता था। मैदान खाली था। मियाँ दिल्ली गये हुए थे, घर पर, इधर-उधर कोई टोकनेवाला था ही नहीं—और रात का वक्त—कर्फ्यू शहर में किसी के आ जाने का भी डर नहीं। क्यों न हो?" ठहाका मारते हुए नायब ने कहा।

"खामोश शराबी; क्या होश में नहीं हैं। जबान सँभालकर बोलना नहीं तो...." कुपित स्वर से मनोरमा ने कहा।

"होश तो आपके गायब थे जो गली में आशिक के पास इस बेशर्मी से पड़ी थीं। तब आपकी हया कहाँ गई थी?"—नायब खिसियाता-सा बोला।

अब्दुल को चुप होने का संकेत करते हुए, थानेदार इमामबक्श ने मनोरमा की ओर मुड़कर कहा—"देखिए, हमारा मतलब आपका अपमान करना नहीं है....."

"और नहीं तो क्या? आपको क्या शर्म नहीं आती कि एक बेकसूर स्त्री को पकड़कर अकेले में जो उससे ऐसे बेहूदा सवाल कर रहे हैं?"

"माफ कीजिए सरदारिन। हम पुलिस के आदमी हैं, अपनी ड्यूटी अदा कर रहे हैं। आप एक संगीन मामले में फँसी हैं, आपको हमारे सवालों का जवाब देना ही होगा। यह बताइए कि यह कृपाण जो उस नौजवान के पेट में लगी थी आपको कहाँ से मिली? क्या वह आपके पति की थी?" थानेदार ने पूछा।

"मैं नहीं जानती थी कि पुलिसवाले ऐसे मूर्ख होते हैं। एक ओर आप कह रहे हैं कि मेरा उस युवक से प्रेम था और मैं उससे लिपटी बेहया बनकर सड़क पर पड़ी थीं; और दूसरी ओर आप मुझ पर उसकी हत्या करने का झूठा इलजाम भी लगा रहे हैं। मैंने आपसे साफ कह दिया कि मुझे वह युवक घायल पड़ा सड़क पर मिला उसकी कराह सुनकर मैं उसके पास गई थी। फिर मुझे मालूम नहीं क्या हुआ। हाँ उस घायल के दो साथी कोई और थे...."

"कौन?"

"मैं नहीं बता सकती। आप मुझे अधिक तंग न करें। मेहरबानी करके मेरे पति को खबर कर दें, घर पर बच्चे अकेले होंगे।"

× × ×

प्रातःकाल होते ही लहनासिंह, हरी-सिंह, और लालसिंह तीन पुलिस पेट्रोल के सिपाहियों ने थानेदार इमामबक्श को सलाम कर यह सूचना दी—

"हुजूर रात को अनारकली में जो एक कत्ल हुआ था उसके सिलसिले में हमने दो क़ातिलों को पकड़ा है!"

"हाजिर करो।"

"तुम कौन हो?"

"पठान, हमारा नाम अहमद और मुनीर है।"

"कहाँ रहते हो?"

"मुलतान। हुजूर हम रँगरेज हैं, रेशम की रँगाई करते हैं। इसी सिलसिले में लाहौर आये थे। तब तक यहाँ दंगा हो गया और हम न इधर के रहे न उधर के।"

"क्या तुम बता सकते हो कि तुम रात भर एक दूकान में क्यों छिपे रहे?"

"जी हमारे एक साथी का कत्ल हो गया था। भूल से हम हिन्दुस्तानी मोहल्ले में आ गये थे। हमें डर था कि कहीं हम भी न मारे जायँ; और फिर करफ्यू का भी डर था।"

"यह तुम्हारा साथी जिसका कत्ल हुआ, कौन था?"

"रफीक, हमारे साझीदार का बड़ा लड़का।"

"अगर तुम्हारे साथी का कत्ल हो गया था, तो तुम्हें उसकी खबर पुलिस में करनी चाहिए थी—न कि भागना। अच्छा तुम्हारा मामला अदालत में रक्खा जावेगा।"

× × ×

"परन्तु माई लार्ड! क्या सज्जनता और दया का यही परिणाम होता है? क्या घर के द्वार पर घायल शरणागत की सेवा करना; उसकी दर्दभरी चीत्कार सुन तत्काल उसके पास पहुँचना कोई अपराध है? क्या साम्प्रदायिकता के ऊपर मानवता का प्रभुत्व असम्भव है? मनोरमा देवी एक न्याय-शील व्यक्ति की स्त्री हैं; उनके निर्मल जीवन में ऐसी कोई घटना नहीं घटी जिससे यह सिद्ध किया जा सके कि वह एक पुरुष की हत्या कर सकती हैं। फिर हत्या कर उनके वहीं पड़े रहने का क्या कारण हो सकता है? हत्या कर हत्यारे का पहला प्रयत्न भागने का होता है। मनोरमा देवी के अचेत होने से तो यही सिद्ध होता है कि वह कितनी कोमल-हृदया थीं! वह कदापि ऐसा जघन्य अपराध नहीं कर सकती थीं।"

"पुलिस की रिपोर्ट से यह ज्ञात होता है कि शव के पास अहमद और मुनीर नाम के दो व्यक्ति और भी थे जो रफीक के घायल होने पर भाग खड़े हुए थे और तत्पश्चात् पुलिस द्वारा प्रातःकाल एक दूकान में छिपे मिले थे। रफीक के घायल होने पर उसके साथियों द्वारा पुलिस में कोई रिपोर्ट न होने से स्वाभाविक रूप से उन पर से सन्देह होता है। उनके भाग खड़े होने पर यह सन्देह और भी पक्का होता है। सिपाही लहनासिंह, हरीसिंह और लालसिंह के बयान से भी यही सिद्ध होता है कि रफीक के हत्यारे अहमद और मुनीर ही हैं।"

"माई लार्ड, इस घटना के सभी अंगों पर विचार करने से यही प्रकट होता है कि मुनीर और अहमद दोनों ने अपने साथी रफीक की हत्या करने का एक उपाय पहले ही से सोच लिया था। दंगे के समय लाहौर में उनका आना और कृपाण से रफीक की हत्या करना अपने को बचाने की एक चाल थी। यदि अहमद और मुनीर पुलिस द्वारा कहीं पकड़ नहीं लिये गये होते तो वह घर पर जाकर यही कहते कि दंगे में किसी सिक्ख ने रफीक की हत्या कर दी।

"इसके साथ ही यह कहना भी आवश्यक है कि पुलिस ने इस मुकद्दमे में गवाहों पर बेजा जोर डाला है। पुलिस थानेदार इमामबक्श और उनके नायब का वक्तव्य साम्प्रदायिकता की दुर्गन्ध से भरा पड़ा है। सरदार तेगबहादुर के बयान से यह भी सिद्ध होता है कि पुलिस ने उनसे घूस माँगी थी और उनके घूस न देने पर पुलिस ने अपनी प्रतिहिंसात्मक वृत्ति का परिचय दिया था"—बहस करते हुए मनोरमा के वकील सर चन्द्रशेखर ने कहा।

विचारपति एक उच्च आसन पर विराजमान थे। कटघरे में एक ओर मनोरमा और दूसरी ओर मुनीर और अहमद बंदी थे। भारी भीड़ जमा थी। एक ओर सरदार तेगबहादुर अपने साथियों के साथ ध्यानमग्न थे। विचारपति के अगल-बगल दोनों वकील बहस कर रहे थे। बहस का उत्तर देते हुए सरकारी वकील ने कहा—"माई लार्ड इस हत्या का मूल कारण साम्प्रदायिक है। इतनी लम्बी बहस के बाद भी विपक्षी वकील साहब यह सिद्ध नहीं कर सके कि रफीक के हत्यारे अहमद और मुनीर थे। घूस का जो दोष पुलिस पर लगाया गया है वह निराधार है और वह केवल पुलिस के वक्तव्य को झूठा ठहराने के लिए गढ़ा गया है।"

"रफीक की हत्या करने का अहमद और मुनीर का जो उपाय बतलाया गया है वह सर्वथा निर्जीव और बनावटी है। अहमद और मुनीर की रफीक से कोई शत्रुता सिद्ध नहीं की गई है। अहमद और मुनीर के पास परदेश में सिक्खों का अस्त्र कृपाण का होना विश्वसनीय नहीं है। लाहौर का हिन्दू-मुस्लिम दंगा अचानक ही हो गया था अतः पहले से उसके विषय में कोई उपाय नहीं गढ़ा जा सकता था। फिर रफीक की हत्या होने पर उसके साथियों के मन में भय होना और कहीं छिप जाना स्वाभाविक ही था। सिपाही लहनासिंह, हरीसिंह और लाल-सिंह के बयान से केवल यह मालूम होता है कि मुनीर और अहमद के कपड़े खून से लाल थे जो कि रफीक को गोद में लेने और उसकी पट्टी बाँधने में रँग गये थे।"

"मनोरमा के केवल अचेत होने से यह नहीं सिद्ध किया जा सकता कि वह निर्दोष थी। हत्या करने के बाद परिणाम-भय से उसकी यह दशा हुई। तेगबहादुर के बयान से विदित होता है मनोरमा प्रतिदिन नोआखाली और कलकत्ते की घटनाएँ समाचारपत्रों में पढ़कर उत्तेजित हो जाया करती थी—कि रूप से हिन्दू-स्त्रियों पर मुसलमानों वहाँ जो अत्याचार किये थे उनके समाचार पढ़कर। अतः निर्मल जीवन व्यतीत करनेवाली, एक न्यायशील व्यक्ति की धर्मपत्नी भी, ऐसी दशा में ऐसा जघन्य अपराध कर सकती है।"

"अन्त में अनारकली पुलिस चौकी के थानेदार का आँखों देखा बयान हमारे सामने है—जिस पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं हो सकता।"

बहस होती रही। बहुत दिन हो गये। सरदार तेगबहादुर ने पानी की तरह अपनी गाढ़ी कमाई बहाई। बड़ी दौड़-धूप की। रात-दिन यही चिन्ता। नींद नहीं आती—परन्तु अन्त में वही हुआ जो बदा था।

छः सप्ताह के बाद न्यायाधीश ने अपना फैसला सुना दिया। रफीक के हत्यारे अहमद को निर्दोष ठहराया और पुलिस के बयान पर पूरा भरोसा किया गया और उसी के आधार पर मनोरमा को कालेपानी की सजा सुना दी।

अदालत में सन्नाटा छा गया। लाहौर शहर में इसकी चर्चा हुई।

रत्न जड़ी हुई कलाई घड़ी

प्रत्येक घड़ी स्विटजरलैण्ड की बनी और उसकी लिवर मशीन रत्नों से जड़ी हुई है। घड़ी की पाँच साल की गारण्टी है। गोल क्रोमियम डिब्बे मूल्य २५) रुपये, वर्गाकार ३०) रुपये, सबसे अच्छे ३३) रुपये, आयताकार रुपये, रोल्ड-गोल्डवाली वर्ष की गारण्टी का मूल्य रुपये, सबसे अच्छी ६५) रुपये, १५ रत्नवाली क्रोमियम डिब्बे कार डिब्बे ८५) रुपये, ९०) रुपये, महिलाओं के ९०) रुपये, रोल्ड-गोल्ड वाले क्रोमियम डिब्बे ५५) रुपए, ७०) रुपये, १५ रत्नवाले क्रोमियम ९५) रुपये, रोल्ड-गोल्ड ११०) डाक-खर्च ।।।) बारह आने। पत्र-व्यवहार अँगरेजी में कीजिए।

परागान वाच कम्पनी

पोस्ट बाक्स नं० ११४१६, कलकत्ता

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे **"वीर्यसंजीवनसत"** ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।—) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ **"तिला मस्ताना"** की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ घनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामयिक चित्रावली

हैदराबाद रियासत आजकल स्वतंत्र होने की चेष्टा कर रही है। श्री एम० ए० रिजवी निजाम हैदराबाद के नये चीफ सेक्रेटरी नियुक्त हुए हैं।

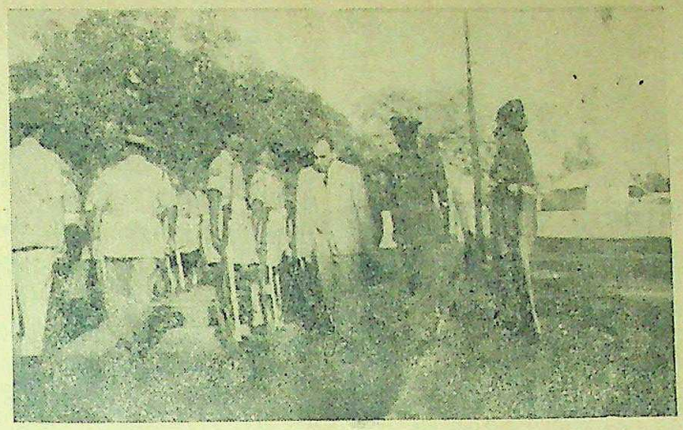

उड़ीसा के गवर्नर सर चंदूलाल त्रिवेदी, उत्कल विश्वविद्यालय में दी जानेवाली हवाई जहाज की ट्रेनिंग का निरीक्षण कर रहे हैं।

श्री आशुतोष भट्टाचार्य भारतीय प्रतिनिधि-मंडल के सदस्य नियुक्त हुए हैं जो चावल की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का अध्ययन करने के लिए विदेश जा रहा है।

कुमारी मनु गांधी का, दिल्ली आगमन पर स्टेशन पर स्वागत।

एम० टी० राजू आई० सी० एस०, केन्द्र-सरकार के कृषि विभाग के संयुक्त सेक्रेटर, व्यवसाय और कामर्स-विभाग के डाइरेक्टर नियुक्त हुए हैं।

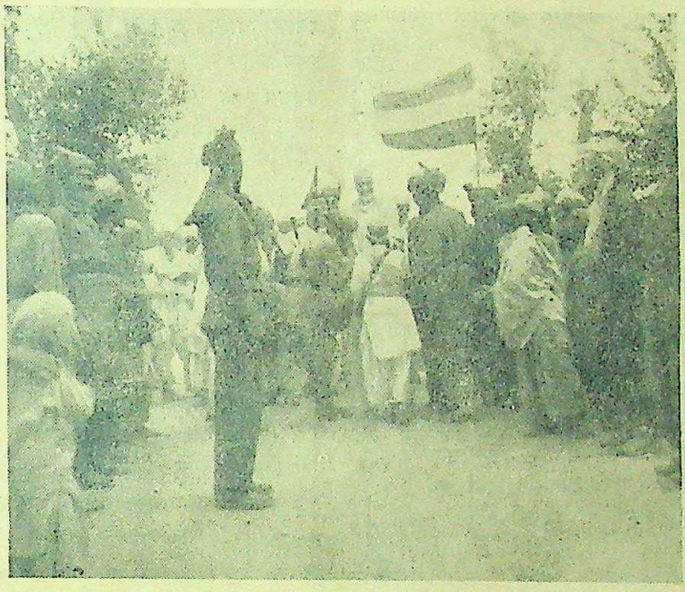

सीमाप्रान्त के नेता खान अब्दुल गफ्फार खाँ और काजी अताउल्ला अर्थ-मन्त्री सीमाप्रान्तीय सरकार गाँवों में दौरा करके शान्ति-स्थापना का उद्योग कर रहे हैं।

ज़ूरिच में भारतीय विद्यार्थी स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहे हैं।

हिमालय का एक विहग दृश्य। यह चित्र एवरेस्ट की चोटी के ऊपर से उड़ते हुए हवाई जहाज पर से लिया गया है। तेज हवा, बर्फ और बादलों के मेल से चित्र में हिमालय का एक विचित्र दृश्य दिखाई दे रहा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'माँ-बाप की लाज' में अभिनेत्री स्वर्णलता

भारतीय नारी का चरित्र-चित्रण और आकर्षक अभिनय

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

भारतवर्ष की नारियाँ सदैव भारतीय ही रहेंगी। वह कौटुम्बिक एवं सामाजिक-बन्धनों तथा भारतीय संस्कृति से मुक्त नहीं हो सकतीं। जिस घर की लक्ष्मी निरन्तर दुखी हो उस घर में श्री का निवास कदापि नहीं हो सकता। भारतीय नारी आदर्श की साक्षात् प्रतीक है। वह पति की, कुल की तथा स्वाभिमान की लाज-रक्षा के लिए समय आने पर अपने प्राण की आहुति देने में नाम-मात्र का क्षोभ नहीं करती है। इन समस्याओं तथा पुरातन-स्मृतियों को अनूठे, भावपूर्ण तथा मनोरंजक ढंग से दिग्दर्शक श्री नानाभाई भट्ट ने हिन्द पिक्चर्स कृत 'माँ-बाप की लाज' में दिग्दर्शित किया है। फिल्म के निर्माता नजीर हैं। श्री प्रभुलाल द्विवेदी जी ने फिल्म की कहानी इस भाँति प्रस्तुत की है—

दो बहनें, विमला एवं कमला, तथा उनका बड़ा भाई, मनोहर, अपनी विधवा माँ द्वारा पाले जाते तथा शिक्षा पाते हैं। माँ लड़कियों के वर ढूँढ़ने की चिन्ता में है। बड़ी लड़की, विमला, 'लव-मैरेज' को महत्त्व देती है। छोटी लड़की, कमला, विवाह के बारे में माँ-बाप के विचारों का समर्थन करती है। सौभाग्यवश कमला का विवाह मुकुन्द-लाल के सुपुत्र, अनूप, के साथ पक्का होता है। मँगनी के दिन विमला अपनी विधवा माँ तथा स्वर्गवासी पिता की मर्यादा तथा कुल की परम्परा पर कठोर आघात पहुँचाते हुए अपनी इच्छानुसार एक अन्य तरुण युवक, शरत, से 'सिविल-मैरेज' कर लेती है। इस उलझनपूर्ण घड़ी में कमला अपने कुटुम्ब की मर्यादा तथा माँ-बाप की लाज रखने के लिए विमला के चुने हुए पति से विवाह करने के लिए अपनी आहुति देती है: सौभाग्यवश कमला की सभ्यता, उसके लक्ष्मीपन, उसकी नम्रता तथा वाक्य-चातुरी से प्रभावित होकर विमला का भावी पति अनूप, कमला से विवाह करने के लिए राजी होता है। विवाह के पश्चात् अभाग्य से कमला के ससुर को व्यापार में पाँच लाख का घाटा होता है। कमला की सास गंगू, अपनी बहू कमला को इस अभाग्य का कारण समझकर उसे कोसना प्रारम्भ करती है।

इधर विमला की शादी सुखद सिद्ध होती है; परन्तु विमला का द्वितीय विलल्ला-प्रेमी मुरारी, अपनी ईर्ष्यापूर्ण चालों द्वारा उसके पति तथा उसके बीच द्वेष एवं घृणा का बीजारोपण कर देता है। पति-पत्नी की कटुता इस सीमा तक पहुँच जाती है कि एक रोज पति, पत्नी को घर से निकाल देता है। विमला अपनी विधवा माँ के पास आती है। माँ की ममता बेटी को गोद में लेकर उसकी दुखपूर्ण कहानी सुनती है। माँ विमला को यह समझाकर पति के घर जाने के लिए कहती है—'शादी के पहले बेटी का घर माँ का घर होता है। परन्तु जब उसकी शादी हो जाती है तो उसके पति का ही घर उसका सर्वस्व होता है। विवाहित नारियाँ वहाँ से मृत्यु के पश्चात् ही निकलती हैं।' शादी के पश्चात् अच्छी बेटियाँ घरेलू झगड़ों को स्वयं सुलझाती हैं और कमला उन पति-पत्नी के झगड़ों को अपनी चतुरता से स्वयं सुलझाती है। अविश्वास दूर हो जाने पर विमला तथा शरत मिल-जुलकर आनन्द का जीवन बिताते हैं।

कमला की सास सदैव उसे अपशब्द कहती, कोसती तथा मारती; परन्तु वह बेदारी...। परिस्थिति इतनी भयानक हो जाती कि अनूप अपनी माँ के इस अन्याय से कमला को वंचित रखने के लिए दूसरे घर में रहने का निश्चय करता है। कमला इसका विरोध यह कहकर करती है—'किसी भी दशा में बुजुर्गों की कृपा-दृष्टि से ओझल नहीं रहा जा सकता।' सौभाग्यवश कमला अपनी नम्रता द्वारा घाटे को फायदे में परिणत कर देती है। सब एक ही घर में सुखद जीवन बिताने लगते हैं।

प्रसिद्ध अभिनेत्री और नर्तकी अजूरी अपने दल के साथ।

यद्यपि हमारे सम्मुख इस फिल्म से मिलते-जुलते चित्र, 'आइना', 'मनोरमा' आदि, प्रदर्शित हो चुके हैं; परन्तु कुशलता के साथ इतने अधिक पहलुओं को प्रस्तुत करने के लिए श्री द्विवेदी जी बधाई के पात्र हैं। संवाद-लेखक पं० फानी चित्र में एक नूतन जीवन का संचार करने में पूर्णतया सफल हुए हैं। आपके लिखे हुए संवादों में व्यंग्य के साथ मानवता का तीखापन भी है। संवादों में भावावेश उपस्थित हो जाने के कारण दर्शकों के नेत्रों से अश्रुओं की धारा बह निकलती है जिसका श्रेय पूर्णतया अभिनेत्री स्वर्णलता को ही मिलना चाहिए। संवाद मौलिक, मनोरंजक, चित्ताकर्षक, भावपूर्ण तथा हृदयग्राही हैं। श्री मिनन अजीज तथा पं० फानी के लिखे हुए गीत केवल सफल कहे जा सकते हैं। संगीत-निर्देशक श्री ए० आर० कुरेशी ने सड़कों पर गानेवालों से मिलती-जुलती 'टयून्स' का प्रदर्शन नहीं किया है। श्री दोली दारूवाला की फोटोग्राफी 'अनबन' चित्र से भी निम्नकोटि की है। श्री बहादुर मिस्त्री की सेटसेटिंग्स सुन्दर हैं। सम्पादन-कार्य श्री विट्ठल बैंकर का सराहनीय है।

अभिनय-कला की दृष्टि से सबसे सुन्दर, कलात्मक, स्वाभाविक एवं सर्वोत्कृष्ट अभिनय स्वर्णलता द्वारा अभिनीत कमला की भूमिका में है। आपका संवाद कहने का ढंग दर्शकों की स्मृति में एक लम्बे काल तक सजग रहेगा। प्रस्तुत चित्र का अभिनय देखकर यह पूर्णरूप से प्रतीत होता है कि मुसलमान हो जाने पर भी आप में हिन्दुत्व का रक्त सुरक्षित है। अनूप के रूप में नजीर ने असंतोष-जनक साधारण कार्य किया है। शरत की भूमिका में जयन्त घूमते हुए काठ-गोदाम प्रतीत होते हैं। आप में कला का नाममात्र भी नहीं है। विमला की कल्पना में कुसुम देशपाण्डे ने कला का गला घोटने का प्रयत्न किया है। इसके अतिरिक्त आपके 'बैक-ग्राउण्ड' ने आपका सत्यानाश कर दिया है। मुकुन्दलाल की काया में मजीद ने सुन्दर तथा सफल अभिनय अभिनीत किया है। गंगू बीबी के रूप में श्रीमती गुलाब ने सास का अभिनय बड़ी ही उत्तमता से अभिनीत किया है। विधवा माँ की भूमिका में अनवरी ने सफल, सुन्दर तथा श्रेष्ठ अभिनय किया है। मनोहर की कला में मलिक ने हास्य की भूमिका का सुन्दर एवं सफल प्रदर्शन किया है।

नवे विचारवालों के उपदेशस्वरूप इस चित्र का निर्माण किया गया है। पाश्चात्य शिक्षा तथा प्रणाली के आवरण में पुरुष भारतीय नारी को देखना चाहते हैं। इस सन्देश को प्रत्येक घरों में पहुँचाने के लिए निर्देशक श्री भुत नानाभाई भट्ट धन्यवाद के पात्र हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

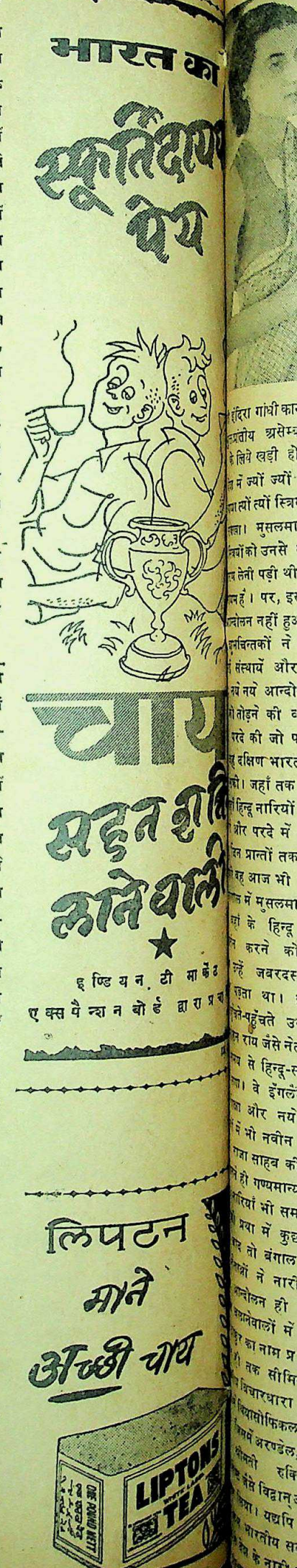

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

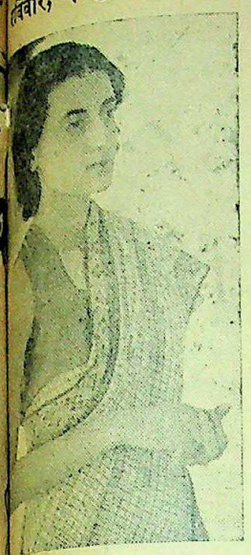

इंदिरा गांधी कानपुर के देहाती क्षेत्र [illegible] असेम्बली की सदस्यता के लिये खड़ी होनेवाली हैं।

मातृमण्डल

वर्तमान आन्दोलन और भारतीय महिलाएँ

राष्ट्रीय संस्थाओं ने ही नारी-आन्दोलन को बढ़ाया है

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित सोवियट रूस में भारतीय राजदूत नियुक्त हुई हैं। पंडित, संयुक्तराष्ट्र-संघ में भारतीय प्रतिनिधि-मंडल की नेत्री थीं। पेरिस में राजकुमारी अमृतकौर ने कई राजनैतिक सभाओं में भारत की ओर से नेतृत्व-कार्य किया है। सुश्री सरोजिनी नायडू, हंसा मेहता, कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने भारतीय स्त्रियों का कितने ही सम्मानित पदों पर प्रतिनिधित्व किया है। इसलिए हम कह सकते हैं कि हमारे देश के नारी-जागरण को प्रोत्साहन देनेवाली ब्रह्म-समाज, थियासोफिकल सोसाइटी, आर्यसमाज और कांग्रेस हैं। उन्होंने देश की महिलाओं के स्तर को ऊँचा उठाने में अत्यधिक आन्दोलन किये हैं।

इन संस्थाओं के अग्रणी और स्वयं-सेवकदेश में आन्दोलन कर रहे हैं। इन संस्थाओं ने भारतीय नारियों के स्तर को ऊँचा उठाने और समाज-सुधार में जो सहयोग किया है वह कभी भुलाया नहीं जा सकता। इस प्रकार ब्रिटिश शासन के आदि काल में ब्रह्मसमाज थियासोफिकल ने नारी-जागरण का आन्दोलन आरम्भ किया था। कांग्रेस उस युग में शैशव काल से गुजर रही थी। ज्यों ही वह बढ़ी उसके कार्यक्षेत्र भी आगे बढ़े। आज उसका इतना विकास हो गया है कि उसमें कितनी ही लाख नारियाँ भाग ले रही हैं। कांग्रेस ने भारतीय स्वतन्त्रता के लिए जितने भी आन्दोलन किये नारियों ने उन आन्दोलनों को अपनी शक्ति भर चलाया है। सन् १९४२ की जनक्रान्ति में अरुणा, पूर्णिमा और अन्य वीर नारियों ने युद्ध के कड़े और वीर सैनिकों जैसा कार्य किया है। सन् १९४१ के व्यक्तिगत आन्दोलन में श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित युक्तप्रान्त के आन्दोलन की संचालिका थीं। सन् १९३० में श्रीमती उमा नेहरू भी प्रान्त के आन्दोलन की संचालिका चुनी गई थीं। इस प्रकार, कमला नेहरू सन् १८६० के आस-पास राजा राममोहन राय ने जो आन्दोलन चलाया था वह नारी-आन्दोलन आज प्रौढ़ावस्था को पहुँच चुका, उनकी माँगें पूर्ण हो रही हैं। कितनी ही स्त्रियाँ साहित्य-कला के साथ ही साथ साइंस (विज्ञान) लेकर आगे बढ़ रही हैं। विशेष शिक्षा के लिए छात्राओं को चुन-चुनकर विदेश भेजा जा रहा है। वह इसलिए नहीं कि उन पर दया की जा रही है। सन् १९३०-३२ के आन्दोलन में महिलायें पुरुषों के समक्ष पिकेटिंग करती हुई डंडे खा रही थीं, जेल यातनायें तो सर्व-साधारण हो गई थी। सन् १९४२ की जन-क्रान्ति में स्त्रियों की तपस्या कमनहीं थी। इसी तपस्या का फल है कि इस देश ने संसार में महिलाओं को सर्वप्रथम ऊँचा स्थान दिया है। शासन-कार्य में स्त्रियाँ मिनिस्टर, पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी और एम० एल० ए० तक चुनी गई हैं। विधान-परिषद् में भी उनको स्थान दिया गया है अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडलों में भारत ने महिलाओं को ऊँचे से ऊँचा स्थान मिला है। श्रीमती विजयलक्ष्मी

[illegible] में ज्यों ज्यों राजनैतिक विकास [illegible] त्यों त्यों स्त्रियों ने अपने को पीछे [illegible]। मुसलमानी शासन-काल में [illegible] नारियों को उनसे बचाने के लिए परदे [illegible] लेनी पड़ी थी। वह पद्धति आज [illegible] है। पर, इस कुप्रथा के विरुद्ध [illegible] आन्दोलन नहीं हुआ। देश के नेताओं [illegible] चिन्तकों ने इसके विरोध में [illegible] संस्थायें और समाज स्थापित [illegible] नये नये आन्दोलन किये, साथ ही [illegible] तोड़ने की व्यवस्था भी करनी [illegible] परदे की जो पद्धति उत्तर भारत [illegible] दक्षिण भारत के छोर तक न [illegible]। जहाँ तक मुसलमानी प्रभाव [illegible] हिन्दू नारियों को घर की चहार-[illegible] और परदे में बन्द रहना पड़ा। [illegible] प्रान्तों तक उनकी पहुँच न [illegible] वह आज भी परदे से कोसों दूर [illegible] में मुसलमानी प्रभाव बढ़ गया [illegible] के हिन्दू नर-नारी धर्म-[illegible] करने को तैयार नहीं थे [illegible] जबरदस्ती धर्म-परिवर्तन [illegible] था। इस विषम स्थिति [illegible] पहुँचते उस प्रान्त में राजा [illegible] राय जैसे नेता का जन्म हुआ। [illegible] से हिन्दू-समाज का ढोंग दूर [illegible]। वे इंगलैंड गये। प्रान्त में [illegible] और नये परिवर्तन किये। [illegible] में भी नवीन युग का प्रादुर्भाव [illegible] राजा साहब की देखादेखो बंगाल [illegible] ही गण्यमान्य पुरुष इस ओर [illegible] नारियाँ भी समाज में आने लगीं। [illegible] प्रथा में कुछ ढीलापन हुआ। [illegible] तो बंगाल में साहित्यकारों [illegible] ने नारी-जागरण का एक [illegible] आन्दोलन ही शुरू कर दिया। [illegible] चलानेवालों में विश्वकवि रवीन्द्र-[illegible] का नाम प्रमुख है। वह लहर [illegible] तक सीमित न रह सकी। [illegible] विचारधारा और पूर्व के मिश्रण [illegible] थियासोफिकल सोसाइटी का जन्म [illegible] कर्नल अरुण्डेल, डाक्टर भगवान-[illegible] श्रीमती रुक्मिणीदेवी, श्रीमती [illegible] जैसे विद्वान् और विदुषी स्त्रियों-[illegible]। यद्यपि इस सोसाइटी के [illegible] भारतीय सदस्य हैं; परन्तु इस [illegible] के नारी-जागरण को बहुत [illegible] मिला है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

वाह रे 'नया हिन्द'!

दिल्ली के संवाददाता ने पंडित सुन्दरलाल द्वारा सम्पादित 'नया हिन्द' मासिक पत्र के सम्बन्ध में एक रहस्य का उद्घाटन किया है। आजकल मुस्लिम रियासतें, मुस्लिम संस्कृति तथा उर्दू भाषा के प्रचार के लिए विभिन्न प्रान्तों से प्रकाशित होनेवाले अखबारों तथा पत्र-पत्रिकाओं को आर्थिक सहायता देती है। इलाहाबाद से निकलनेवाला 'नया हिन्द' भी ऐसे ही पत्रों में एक है। 'नया हिन्द' के संचालक और सम्पादक प्रसिद्ध राष्ट्रकर्मी पंडित सुन्दरलाल हैं। इस पत्र को निजाम हैदराबाद से आर्थिक सहायता मिली है या मिलती है। वास्तव में पत्रों में जब मैंने यह खबर पढ़ी तो मैं दंग रह गया।

'नया हिन्द' हिन्दुस्तानी भाषा के प्रचार का रिसाला है। महात्मा गांधी का इसे आशीर्वाद प्राप्त है। ऐसे पत्र को निजाम हैदराबाद की ओर से आर्थिक सहायता मिले यह सचमुच बड़े अचरज की बात है। यदि यह बात सच है तो हिन्दुस्तानी की आड़ में उर्दू के प्रचार का यह अच्छा तरीका निकाला गया है। इसके बावजूद भी 'नया हिन्द' को देख और पढ़कर यह साफ और स्पष्ट हो जाता

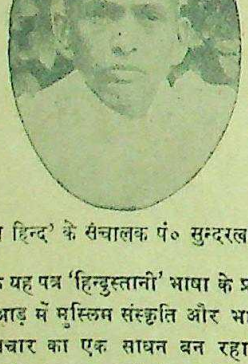

'नया हिन्द' के संचालक पं० सुन्दरलाल।

है कि यह पत्र 'हिन्दुस्तानी' भाषा के प्रचार की आड़ में मुस्लिम संस्कृति और भावना के प्रचार का एक साधन बन रहा है। साथ ही महात्मा गांधी के आशीर्वाद का दुरुपयोग भी किया जा रहा है। इसका एक प्रमाण यह भी है कि अब तक इस पत्र के जितने अंक निकले हैं यदि गणना की जाये तो मुसलमान लेखकों की संख्या ज्यादा निकलेगी। कविताएँ और लेख दोनों उर्दू लेखकों के ज्यादा मिलेंगे। हम उर्दू लेखकों तथा उनकी रचनाओं के विरोधी नहीं हैं। वह सब अपनी अपनी जगह पर दुरुस्त है; किन्तु कहावत है कि खत का मजमून भाँप लेते हैं लिफाफा देखकर। 'नया हिन्द' को देख और पढ़कर ही असलियत का पता चल जाता है। हम पूछते हैं कि क्या हिन्दी के लेखक 'हिन्दुस्तानी' के पक्षपाती नहीं हैं? उनकी रचनाओं का इसमें कितना अंश होता है? हाँ, ऐसे 'हिन्दी-प्रेमियों' की रचना, कभी-कभी देखने को मिल जाती है जिनका भाषा के सम्बन्ध में कोई वसूल नहीं है। दूसरे इस बात की जानकारी के लिये भी हिन्दीवाले उत्सुक हैं कि इस 'नये हिन्द' के पढ़नेवाले कितने होंगे? कौन-सी हिन्दी जमात इस पत्र को पढ़कर तृप्त होती होगी? हिन्दी भाषा-भाषी विशेषकर उत्तर-भारत के निवासियों को इस पर्चे की क्या उपयोगिता है? जब कि बड़े से बड़े हिन्दी के पत्र आर्थिक दृष्टि से अभी तक अपनी नींव मजबूत तक नहीं बना सके हैं और 'नया हिन्द' अपनी अदायें महीने-महीने दिखाता जा रहा है, इससे भी प्रमाणित है कि दाल में कुछ काला है क्योंकि ग्राहक तो पठनीय सामग्री चाहता है, तब वह पैसा देता है। हिन्दी भाषा-भाषी, उर्दू संस्कृति तथा भावना से सराबोर पत्र को पढ़कर अपना दिमाग क्यों खराब करेगा?

हम महात्मा गांधी का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करते हैं। सच तो यह है कि महात्मा गांधी की हिन्दुस्तानी से अधिकांश हिन्दीवालों का विरोध नहीं है और सच पूछा जाय तो अब तक गांधी जी की हिन्दुस्तानी को हिन्दी-संसार के सहयोग से बड़ा बल मिलता किन्तु 'नया हिन्द' जिस हिन्दुस्तानी का प्रचार कर रहा है वह गांधी जी की हिन्दुस्तानी नहीं है बल्कि शुद्ध उर्दू है। 'नया हिन्द' की नीति गांधी जी की भाषा-सम्बन्धी विचार-धारा तथा हिन्दी की विचार-धारा के बीच एक जबरदस्त खाई तैयार करना है जिससे दोनों में भिड़ंत बनी रहे और दोनों मिल न सकें। भाषा-सम्बन्धी झगड़े चलते रहें और 'नया हिन्द' 'हिन्दुस्तानी' तथा महात्मा गांधी जी के आशीर्वाद की आड़ में हिन्दी-उर्दू के झूठे मेल-मिलाप का प्रचार करता रहे। पिछले डेढ़ सौ वर्ष से अँगरेजों की भी यही नीति हिन्दुस्तान में रही है। हमें दुख है कि 'नया हिन्द' वास्तविक हिन्दुस्तानी नहीं उर्दू तथा मुस्लिम संस्कृति और भावना के प्रचार में पूरी सफलता प्राप्त कर रहा है और यदि इसके लिए उसे निजाम हैदराबाद से आर्थिक सहायता प्राप्त होती हो तो वह अपने धर्म-कर्म को ही निभा रहा है। क्या 'नया हिन्द' इसकी सफाई देगा?

मथुरा —अद्दैतकुमार गोस्वामी
२८ जून, ४७

* * *

श्री गणेशशङ्कर हृदय-तीर्थ, चिरगाँव

गणेशशंकर विद्यार्थी उन ज्योतिर्मय आत्माओं में थे जिनके बलिदान ने हमको नया बल और नया विश्वास प्रदान किया है। उनके अपूर्व आत्मोत्सर्ग को १६ वर्ष से ऊपर हो गये। लज्जा की बात है कि आज तक हम उनके प्रति अपनी श्रद्धा को यथोचित रूप में प्रकट नहीं कर सके। उनकी पवित्र स्मृति जागरूक रखने के लिए गाँव-गाँव में व्यापक प्रयत्न की आवश्यकता है। चिरगाँव का 'श्री गणेशशङ्कर हृदय-तीर्थ' इस दिशा में यत्किंचित् आयोजन है।

अमर हुतात्मा को चिरगाँव से घर जैसा ही प्रेम था। जिस तिथि को अपने बलिदान से उन्होंने एक राष्ट्रीय पर्व बना दिया है उस दिन उनके यहाँ होने की बात थी। दैव-दुर्विपाक से ही उस दिन [illegible] इसलिए चिरगाँव में उनकी स्मृति को साकार रूप देने का जो उद्योग इस संस्था के द्वारा किया जा रहा है उसका महत्त्व-मात्र स्थानीय नहीं है। यह संस्था आप सबके संरक्षण और साहाय्य की अधिकारिणी है।

श्री गणेश शङ्कर हृदय-तीर्थ की स्थापना स्वल्प साधनों के बल पर ही की गई है। अभी तक कुछ अधिक नहीं किया जा सका है। स्फूर्तिदायक साहित्य का प्रसार करने के लिए दो पुस्तकालय चलाये जा रहे हैं। "भारती भवन" नाम से एक विद्यालय नियमित रूप से संचालित है। व्यायामशाला की नींव भी पड़ रही है। ग्रामसेवा, ग्रामोद्योग और शिक्षा-प्रसार के साथ-साथ सांस्कृतिक सेवा इस संस्था का मुख्य उद्देश है। इसके द्वारा साम्प्रदायिक सद्भावना दूर दूर तक फैलाने का प्रयत्न किया जायगा।

पूरी योजना को कार्यान्वित करने के लिए जो विशेष साधन आवश्यक होते हैं उनके अभाव में भी अब तक जो कुछ भी किया गया है उसके लिए अनेक महानुभावों और आदरणीय नेताओं से संस्था को जो प्रोत्साहन मिला है उसने कार्यकर्ताओं को नई स्फूर्ति और नया साहस प्रदान किया है और यही कारण है जो आज आपकी सहायता के लिए संस्था के विनम्र सेवक आपकी सेवा में उपस्थित हो रहे हैं।

संस्था को अविलम्ब अपने निज के भवन की आवश्यकता है, जिसके द्वारा केन्द्रीय वाचनालय, व्यायामशाला और ग्रामोद्योग के कार्य सुचारु रूप से चलाये जा सकें। उसका उपयोग सभाभवन के रूप में भी हो सके और उसी के साथ एक विराम-वन (पार्क) भी रहे, जहाँ हृदय-तीर्थ की छाया में नागरिक जन साँझ-सबेरे शुद्ध वातावरण का लाभ ले सकें। हर्ष की बात है कि विगत कस्तूर बा स्मृति-दिवस संवत् २००२ वि० के अवसर पर इस भवन का शिलान्यास राष्ट्रनायक पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा हो चुका है। इस अवसर पर ५,६०० रुपये की निधि चिरगाँव-निवासियों ने इस संस्था द्वारा उन्हें अर्पित की थी। पूज्य पंडित जी ने उसे इसी भवन के लिए देकर इस संस्था को गौरवान्वित किया है। इस निधि से उसी नींव पर भवन का थोड़ा-सा भाग बन चुका है। पूरे निर्माण में ६०,००० रुपये के लगभग व्यय होगा।

इसी के साथ गणेशशङ्कर स्मृति-ग्रन्थ के प्रकाशन का उद्योग भी चल रहा है। प्रारम्भ में ही इसके लिए विश्ववन्द्य बापू का आशीर्वाद प्राप्त हो चुका है। बड़े आकार के प्रस्तावित ग्रन्थ में १५,००० से कम व्यय न होगा। हृदय-तीर्थ के द्वारा पुस्तकालय, वाचनालय, शिक्षा, मन्दिर, दातव्य औषधालय एवं अनेक प्रकार के रचनात्मक कार्य भी होने को हैं। गणेशशङ्कर जी की एक विशाल मूर्ति प्रस्तुत कराने की भी योजना है। इन सभी कार्यों के लिए कम से कम २५,००० रुपये तो चाहिए ही।

विद्वान् हैं गणेशशङ्कर जैसे महापुरुष की स्मृति में अर्पित होनेवाली यह एक लाख रुपये की निधि न समझी जावेगी और उसकी पूर्ति में विलम्ब न होगा।

——पुरुषोत्तमदास टण्डन, [illegible] वल्लभ पन्त, नरेन्द्र देव, रफीअहमद किदवई, सम्पूर्णानन्द, कैलाशनाथ काटजू, [illegible] लक्ष्मी, बदरीनाथ वर्मा, द्वारकाप्रसाद मिश्र, श्रीप्रकाश, भवानीदयाल संन्यासी, बालकृष्ण शर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी, श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, श्रीराम शर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी, वृन्दावनलाल वर्मा, नाथूराम प्रेमी, जैनेन्द्रकुमार, शिवसहाय, नवलकिशोर भरतिया, [illegible] अग्रवाल, रामस्वरूप गुप्त, [illegible] विद्यार्थी, डा० जवाहरलाल, शिवनारायण टण्डन, र० वि० धुलेकर, [illegible] गोविन्द खैर, कुंजबिहारीलाल [illegible] भगवन्नारायण भार्गव, कालिकाप्रसाद अग्रवाल, चतुर्भुज शर्मा, (राय) कृष्णदास, सियारामशरण गुप्त, मैथिलीशरण [illegible]

* *

माननीय टंडन जी का आह्वान

कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी और [illegible] भारतीय कांग्रेस कमेटी के बहुसंख्यक [illegible] छोड़कर भारत, देश पर लादे गये विभाजन के विरुद्ध है। अब मुसलमानों की ओर से कहा जाने लगा है कि "हँस के लिया पाकिस्तान, लड़ के लेंगे हिन्दुस्तान"। सूक्ष्म में हिन्दू-समाज की पूर्ण सत्ता खतरे में है। भारत के विभाजन को अराजकता से उत्तम समझना [illegible] की एक भूल भी है। अनुभव के आधार पर प्रत्येक भारतीय राजनीति का विद्यार्थी कह सकता है कि वह तो केवल अधिक उपद्रव का बीजारोपण है।

माननीय टण्डन जी के लिए [illegible] रक्षक-दल संगठन करने की [illegible] कहना कांग्रेस में होते हुए कांग्रेस को चेतावनी देने का प्रयत्न है। हो [illegible] हैं उनके यू० पी० असेम्बली के [illegible] पद से इस्तीफा देने का समाचार निकल न हो। टण्डन जी हिन्दू-हित के इस कार्य को करके अपना नाम सदैव के लिए अमर कर लेंगे।

यह प्रथम अवसर नहीं जब टंडन जी ने कांग्रेस की नीति का विरोध किया। कुछ समय पूर्व झाँसी में दिये हुये व्याख्यान को उन्होंने झाँसी में ही दुहराया है। एक बार फिर देश के नवयुवकों से विशेषतया विद्यार्थियों से अखण्ड भारत के स्वप्न को पूरा करने की पुकार की है। उनके अनुसार हमारे लिए अपने [illegible] के आक्रमण से रक्षार्थ शस्त्र-शिक्षा करने की अत्यावश्यकता है। हिन्दू [illegible] में परिवर्तित समय के अनुकूल एक [illegible] उत्साह, साहस और लग्न का [illegible] होना चाहिए। दूसरों पर आश्रित [illegible] चाहे वह सरकार ही क्यों न हो, [illegible] तक जीवित रह सकते हैं? टण्डन जी [illegible] शारीरिक और सैनिक शिक्षा-[illegible] योजना सर्वथा प्रशंसनीय है।

—कृष्णकुमार

पूजागीत—द्विवेदी जी की [illegible] राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह। [illegible] कविता जीवन में स्फूर्ति का संचार [illegible] है। फेदरवेट पीले कागज [illegible] पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये। मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, [illegible] इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...धानी की चिट्ठी

...प्रांत में २,२०० नई पाठशालायें खुल गईं

...की नई स्कीम—बालिकाओं की शिक्षा की व्यवस्था—व्यायाम-विभाग—ग्राम रक्षा-दल—होमगार्ड्स का—गाँवों और शहरों में रेडियो-सेट—जमींदारी उन्मूलन—एडवोकेट जनरल साहब सीमा कमीशन में मुसलिम लीग की पैरवी को चले।

(अपने विशेष प्रतिनिधि-द्वारा)

...सप्ताह युक्तप्रान्त में २,२०० ...लायें खुल गई हैं, जिनमें ६,६०,- ...१ जुलाई से विद्याध्ययन करने ...शिक्षा-मंत्री सम्पूर्णानन्द ने प्रान्त ...सार की जो १० वर्षीय अभि-...योजना बनाई है, यह उसकी ...त है। अब प्रतिवर्ष २,२०० ...शालायें खुलती जायँगी और ...पिछले छात्रों के अतिरिक्त ६,६०,-

प्रांतीय सरकार के शिक्षा-मन्त्री माननीय श्री संपूर्णानन्द।

...बालक भर्ती होते जायँगे। १० ...उपरान्त ६६ लाख बालकों को ...शिक्षा देने योग्य पाठशालायें ...र में हो जायँगी। जनसंख्या के ...र प्रतिवर्ष प्रायः इतने ही बालक ...वय को प्राप्त करेंगे। इस प्रकार ...उपरान्त की पीढ़ी में कोई भी ...न रहेगा।

* *

...लिकाओं की शिक्षा की भी ...जी ने उपयुक्त व्यवस्था की ...लिकाओं की शिक्षा की वर्तमान ...को वे न तो उपयुक्त ही समझते ...न पर्याप्त। वास्तव में है भी ऐसा ...लिकाओं को व्यावहारिक ज्ञान की ...ने के बजाय उन पर दुनिया भर ...के विषय लाद दिये जाते हैं, ...केवल किताबी शिक्षा ही प्राप्त ...ती हैं और परिवार तथा समाज ...विशेष लाभ नहीं पहुँचता। ...ने श्रीमती जोशी को इस ...में उपयुक्त योजना का निर्माण ...का भार दिया था। इस योजना ...कन्याओं की शिक्षा-पद्धति में, ...परिवर्तन हो जायँगे। उनको ...ज्ञान के अतिरिक्त पारिवारिक ...प्राथमिक चिकित्सा तथा नागरिकता ...ज्ञान लाभ कराया जा सकेगा ...सद्गृहिणी तथा सुयोग्य मातायें ...।

* *

...लिकाओं की जैसी शारीरिक अवस्था ...में है, वैसी कहीं न होगी। स्वास्थ्य ...शायद ही १० प्रतिशत महिलाओं में हो सकें, अन्यथा अधिकांश रोगिणी ही दिखती हैं। इसका कारण उनमें व्यायाम की कमी है, जो पर्दा-प्रथा के कारण और भी जोर पकड़े हुए हैं। अब प्रान्तीय व्यायाम कौंसिल के, जो एक सरकारी संस्था है, अन्तर्गत एक महिला व्यायाम-विभाग भी खोला गया है, जिसकी ओर से प्रत्येक जिले में महिला-व्यायाम सुपरिन्टेन्डेंट रहेगी और वे अपने-अपने क्षेत्र की महिलाओं में व्यायाम का प्रचार करेंगी तथा इसके लिए व्यावहारिक उपकरणों की व्यवस्था की जायगी।

* * *

प्रान्त तथा देश की वर्तमान अशान्त स्थिति को देखते हुए ऐसे दलों के संघटन की आवश्यकता है जो संकट-काल में जनता के जान-माल की रक्षा कर सकें। श्री पुरुषोत्तमदास टंडन ने हिन्दसेवा दल की स्थापना का सुझाव दिया है। कांग्रेस सेवा-दल राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघ, मुस्लिम लीगी नेशनल गार्ड्स आदि, अनेक संघटन इस दिशा में प्रयत्नशील हैं, जिनमें अन्तिम संघटन पूर्णतया साम्प्रदायिक है तथा उसके विपरीत आक्षेप और आरोप भी बहुत हैं। प्रान्तीयसरकार ने ग्रामों की रक्षा के प्रति चिन्तित होकर, जहाँ पिछले दिनों से अशान्ति शहरों की अपेक्षा अधिक है, ग्राम रक्षा-दल बनाने का विचार किया है। ग्रामों के नौजवानों को संघटित करके उनको स्काउटिंग तथा रक्षा की शिक्षा दी जायगी और अपने-अपने ग्राम की रक्षा करना उनका कर्तव्य होगा।

* * *

होमगार्ड्स का संघटन गाँवों के लिए भी हो रहा है और प्रायः डेढ़ दर्जन जिलों में १२,००० होमगार्ड्स की भर्ती होगी। उनका संघटन शहरों जैसा ही होगा। इसके लिए सरकार ने कुछ शहरी होमगार्ड्स कमांडिंग अफसरों को समुचित व्यवस्था करने का आदेश दिया है।

* * *

ग्रामों और शहरों में समाचारों का सुनना सुलभ करने के अभिप्राय तथा अन्य राष्ट्रीय प्रचार के हेतु प्रान्तीय सरकार ने वहाँ रेडियो-सेटों की व्यवस्था करने का निश्चय किया है। शहरों में ३०० तथा ग्रामों में २०० रेडियो-सेट सरकारी व्यय से लगाये जायँगे, जहाँ जनता सामूहिक रूप से एकत्रित होकर सुन सकेगी। सरकार ने लखनऊ रेडियो के ग्रामीण कार्यक्रम को अपने कर्मचारियों द्वारा निर्धारित कराने का निश्चय किया है। इसके लिए उपयुक्त व्यवस्था हो रही है।

* * *

जमींदारी उन्मूलन-समिति की प्राथमिक कार्रवाई पिछले रविवार को समाप्त हो गई। अब तम वह कई दर्जन राजनीतिज्ञों, अर्थशास्त्रियों, प्रोफेसरों तथा विधानवेत्ता बैरिस्टरों से बयान ले चुकी है और अब इन बयानों के आधार पर वह सरकार को अपनी रिपोर्ट बनाकर देगी कि जमींदारी मिटाने की व्यवस्था कैसी की जाय। अधिकांश गवाहों ने, जिन्होंने समिति के समक्ष बयान दिये हैं, बिना मुआविजे अथवा बहुत थोड़े मुआविजे पर ही जमींदारी मिटाने की राय दी है।

* * *

लीगी नेता चौधरी खलीकुज्जमा के बहनोई तथा युक्तप्रान्त के एडवोकेट जनरल चौधरी मोहम्मद वसीम पंजाब के सीमा कमीशन में मुस्लिम लीग की पैरवी के लिए उसके वकील बनकर जायँगे। एक प्रान्तीय एडवोकेट जनरल के लिए यदि विधानतः ऐसा सम्भव भी हो, तो भी राजनीतिक कारणों से ऐसा नहीं होना चाहिए। एडवोकेट जनरल का पद राजनीतिक होता है और मंत्रिमंडल द्वारा ही उसकी नियुक्ति तथा उसके भंग होने के साथ ही इस अधिकारी के भी पदत्याग कर दिये जाने की परम्परा प्रजातन्त्रवादी देशों में चली आती है। श्री वसीम की नियुक्ति मारिस हैलेट ने की थी, किन्तु कांग्रेस सरकार ने उनको बना रहने दिया। प्रजातन्त्रवादी व्यवस्था में एडवोकेट जनरल मंत्रिमंडल का प्रवक्ता भी होता है। इस प्रान्त का मंत्रिमंडल विभाजन का समर्थक नहीं घोर विरोधी है, ऐसी दशा में श्री वसीम का विभाजन के पक्ष में पैरवी करना कहाँ तक उचित कहा जा सकता है।

हास परिहास

भङ्ग की तरङ्ग

देशी नरेश कहते हैं कि हम स्वतन्त्र राज बन जायँगे। आप तो बहुत दिनों से स्वतन्त्र थे, अब नई बात क्या होगी? क्या अब छः महीने के बजाय साल भर पेरिस में रहेंगे?

* * *

लाहौर में साठ घंटे का करफ्यू लगाया गया है। करफ्यू से दंगा बन्द होता है! क्या इसके पहले लाहौर में करफ्यू नहीं लगा था?

* * *

खबर है कि देशी रियासतें सेना बढ़ा रही हैं। सेना बढ़ा रही हैं, सीमा बढ़ा रही हैं। साथ ही विपत्ति बढ़ रही है कि नहीं, इसे भी समझ लेना चाहिए।

* * *

सर अकबर हैदरी ने कहा है कि कालीन में अनेक रंग मिलकर सुन्दरता पैदा करते हैं, केवल एक रंग भद्दा होता है इसलिए सभी जातियों को यहाँ रहना चाहिए। तब पाकिस्तान कैसी कालीन होगी? वह कालीन होगी कि चटाई?

* * *

आचार्य कृपलानी साहब कलकत्ता गये थे कि देखें कि विभाजन पर वोट ठीक तरह से दिये जाते हैं कि नहीं। कृपलानी साहब की दया हुई और ठीक ही हो गया।

* * *

महंत दिग्विजयनाथ कहते हैं कि कांग्रेस जब तक अपने को हिन्दू-संस्था नहीं कहती, हिन्दुस्तान का विधान बनाने का उसे क्या अधिकार है? जान पड़ता है अँगरेजों ने अपने को हिन्दू कह दिया है?

* * *

सेठ रामकृष्ण डालमियाँ कारोबार से अलग हो गये। आप अब एक संसार के निर्माण के लिए पत्रों द्वारा चेष्टा करेंगे। आप सब बातें एक चाहते हैं, सिवाय विवाह के।

* * *

गोरखपुर की म्यूनिसिपैलिटी की लोग शिकायत कर रहे हैं, क्या किसी म्यूनिसिपैलिटी की प्रशंसा भी कोई कर रहा है?

* * *

म्यूनिसिपैलिटियों के सुधार की अभी बारी आई नहीं है। इस विभाग की मंत्रिणी महोदया ने गाँवों के सुधार से आरम्भ किया है। इस बीच मास्को इत्यादि से लौट आने दीजिये तब इस ओर भी देखा जायगा।

* * *

अमेरिका में एक सज्जन ने प्रस्ताव किया है कि विख्यात अभिनेता चार्ली चैपलिन को अमेरिका से निकाल दिया जाय। इनके कारण हालीवुड के सामाजिक जीवन को हानि पहुँच रही है। क्या अमेरिका में और जितने अभिनेता तथा अभिनेत्रियाँ हैं, उनसे सामाजिक जीवन बहुत उन्नत हो रहा है?

* * *

कांग्रेस के नेता कहते हैं कि त्रावंकोर राज के विरुद्ध कड़े आर्थिक प्रतिबन्ध लगेंगे। तो क्या कायदे आजम उनकी सहायता नहीं करेंगे? अभी-अभी पाकिस्तान में सोने की खान का पता लगा है।

* * *

इंदौर-राज्य में मुसलमानों को विशेष सुविधा दी जा रही है। देनी भी चाहिये। वहाँ तो पाकिस्तान बन नहीं रहा है इसलिए अल्पसंख्यकों के लिए रियायत करनी ही चाहिए।

* * *

सुना जाता है कि मिस्टर जिन्ना अगले महीने जब कराची जायँगे तब तोपखाने में ठहरेंगे? मयखाने में नहीं ठहरेंगे यही क्या कम है?

* * *

खबर आई है कि काबुल में हिन्दुओं का बड़ा अपमान हुआ है। लोग समझते थे कि काबुल में क्या हिन्दुओं की पूजा होगी?

—अगड़धत्त शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

'नई इमारत'

(आलोचना)

लेखक, श्री 'नीरव' एम० ए०

हिन्दी के प्रख्यात प्रगतिवादी कवि श्रीयुत 'अंचल' का नया उपन्यास 'नई इमारत' आज हिन्दी-जगत् के सामने है। हम उनके प्रथम उपन्यास 'चढ़ती धूप' में उनकी विकासोन्मुखी प्रतिभा के दर्शन कर चुके हैं। 'नई इमारत' में उनकी कला एक सुदृढ़ और सुव्यवस्थित ध्येय की ओर अभिमुख होकर बढ़ी है और उसकी प्रगति में प्रेम, त्याग, आत्म-बलिदान और अदम्य साहस की रक्त-लोहित भावुकता के कितने ही ऐसे सजीव चित्र आये हैं जो पराजित चेतना को प्रेरणा का बल देते हैं। इस पुस्तक में चार सौ बासठ पृष्ठ और बाईस अध्याय हैं जिनमें कथा के समस्त सूत्र एक से एक सटकर कर्म और मर्यादा के अनेक आदर्श-बन्धनों में जीवन और समाज का नग्न से नग्न यथार्थ परिधान सम्हाले हुए हैं। हमारा सामाजिक संस्थान एक छप्पर की झोपड़ी है, जिसके समयाबृत स्थूणों को दीमकों ने खाकर खोखला कर दिया है, जिसके शरीर की तृण-प्रधान मांसलता को करवट बदलते हुए युग के कितने ही तूफानी झंझावात उड़ा ले गये हैं। आज वर्षा की एक बूँद भी छत को तोड़कर 'टप' से नीचे आ गिरती है। तापविदग्ध वातायन को चीरकर आती हुई एक मध्याह्न किरण भी—कीड़े-मकोड़ों की तरह कुलबुलाते हुए उसके निवासियों को ज्वराक्रान्त कर देती है। इस झोंपड़ी तो तोड़-फोड़कर आधुनिक ढंग की कस्सी से कटी-छटी एक गगनचुम्बी नई इमारत बनने की आवश्यकता है जिसके रहनेवाले पृथ्वी से कुछ ऊँचा उठकर जब इधर-उधर दृष्टिपात करें तो भूमि के समस्त पोखर, खड्ड, पटपर, टीले और वन-निर्जन समान दिखाई दें। परिवर्तन प्रगति है और प्रगति का ही नाम जीवन एवं जीवन का विकास है। जो स्थिर है, जो परिवर्त्तन का स्वागत नहीं करते थे मृत्यु के समीप हैं। हमें युग की बदलती हुई आकांक्षाओं के साथ व्यक्ति और समाज के शासन-संविधान बदल देने पड़ते हैं। यही 'नई इमारत' की कथा का आधार है जिसकी गतिमान परिधि अपनी सीमा में जाति, समाज और राष्ट्र की सचेष्ट राजनीतियों को बाँधे हुए हमारे एक स्वतंत्रता-संग्राम के केन्द्र पर घूम रही है।

भारतवर्ष की स्वतंत्रता के इतिहास में सन् बयालीस एक ऐसा वर्ष आया है जिसकी पावनस्मृति किसी दिवंगत प्रिय के समान अमर तो है किन्तु वेदनापूर्ण भी है। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि हम अपनी असफलता का भार जब प्रत्यक्ष नहीं ले पाते तो कल्पना के अंचल में उसकी क्रूरता से जी भर लड़ने की कामना किया करते हैं। 'नई इमारत' का उपन्यासकार इसी प्रतिक्रिया से प्रभावित होकर उन भीषण अत्याचारों, निर्मम बर्बरताओं और विदेशी शासन की दिगन्तव्यापिनी क्रूरताओं के संवाद भारत के गृह-गृह और प्राण-प्राण में पहुँचा देना चाहता है कि हम अपनी पराजय का प्रतिशोध लेना भूल न जायँ। 'नई इमारत' में इस प्रकार कल्पनातत्व इतिहासतत्व से अनुस्यूत होकर और भी अधिक महान् हो गया है।

पर्वतपुर में पुराने जमींदार का एक संभ्रान्त परिवार था। बलराज, शीला और आरती इस परिवार के जाज्वल्य-मान रत्न थे। इसी परिवार ने भाग्य और परिस्थिति के मारे हुए एक युवक महमूद और उसकी बहिन की देखरेख की थी। महमूद और आरती का साहचर्य स्नेह शनैः शनैः सत्य और भावुकता से सने हुए गंभीर प्रणय के रूप में बदल गया। महमूद स्वतंत्र विचारों का देश-भक्त युवक था; उसकी अनुगामिनी आरती भी उसके पदचिह्नों का अनुसरण करती हुई अपनी साधना के पथ पर मग्न मन बढ़ती रही। आरती के भाई बलराज और भाभी शीला ने दो प्रेमियों को एक करने के लिए पिता से विद्रोह किया, गृह-द्वार छोड़ा और कितनी ही यातनाएँ उठाईं। इसी घटनाचक्र में देश के राजनैतिक वातावरण ने करवट बदली और शीला तथा अन्य उस रंग-मंच के अभिनेता शासन की क्रूरता के काम आ गये। महमूद और आरती मानो समय की प्रत्यागमन अवधि तक क्रान्ति की पुनरावृत्ति का आवाहन करने के लिए अवशेष रह गये। संक्षेप में यह उपन्यास की कथावस्तु की पृष्ठभूमि है। कथा का आरंभ सन्यासिनी और महमूद के संवादों से होता है जिनके बीच ऐसा प्रतीत होता है मानो कोई लम्बी कहानी पहले से चली आ रही है। इस प्रकार के प्रारम्भ में कौतूहल की एक निश्चित मात्रा है जिससे पाठक की जिज्ञासा पर सीधा प्रभाव पड़ता है। इन संवादों के दोनों चरित्र समाज की अनुदार शृंखलाओं और शासन के अनेक अत्याचारों के प्रति विद्रोह का ज्वालामुखी संभाले हुए मानो अंगार उगलते हैं। कथा की समाप्ति शहीदों की चितामालाओं पर होती है। फेफड़ों की सारी शक्ति लगाकर उच्छ्वसित कंठ से जयनाद करते हुए स्त्री-पुरुषों के बीच महमूद और आरती मार्ग के मौन आतंक को चीरते हुए पर्वतपुर की ओर जाने लगते हैं। उपन्यास की इस समाप्ति में ऐसा ज्ञात होता है मानो कथा के कुछ अंश अवशेष रह गये हैं जो कल कहे जायँगे।

उपन्यास के चरित्रचित्र अत्यन्त स्वाभाविक और सजीव बने हैं। सबमें समान रूप से स्वतंत्रता की आकांक्षा जाग रही है जिसके समक्ष जीवन के परमोत्कृष्ट प्राप्य का त्याग किया जा सकता है। इन कर्त्तव्य-प्राण चरित्रों में कथा के अधिनायकों को छोड़कर शीला का चरित्र अत्यधिक प्रभावपूर्ण बना है। जीवन के छोर में गृहस्थी का अतुल भार हँसकर ढोती हुई नारी की यह सजीव प्रतिमा बोलने में विश्वास नहीं रखती। वह आदि से अन्त तक कर्ममय है। लेखक [illegible] कर सके कि देश के पीड़ितों के प्रति इस मौन तपस्विनी के हृदय में कितनी आग है। जब एक बड़े जन-समूह का नेतृत्व करती हुई शीला गोली खाकर भूमि पर गिरी है तभी लोक ने उसके आदर्श और कर्म की महत्ता को जाना है। उपन्यास का दूसरा अनुकरणीय और प्रशंसनीय आदर्श-चरित्र है 'संन्यासिनी'। संन्यासिनी एक भावुक नारी है जिसकी सारी भावुकता वेदना की वाष्प और आँसुओं के नीर में हृदय से बाहर निकल गई है, वह रह गई है कठोर कर्म-गामिनी मात्र। देश पर प्राण देना उसके हृदय की प्रेरणा ही नहीं प्रतिशोध की आग है, ऐसे जागृत प्रतिशोध की ज्वाला जो अपने ध्येय की प्राप्ति के लिए सब कुछ कर सकती है। जिस क्रूर कारागार की लौह-शृंखलाओं के बीच उसके प्रिय के प्राण विसर्जित हुए हैं वह उसकी कड़ियों को एक बार चट-चट करती हुई चिता की अस्थियों को चबानेवाली अग्नि के सामने चबा जाने की कामना करती है। विद्रोह, राज्य-क्रान्ति, सत्ताविनाश उसके जीवन के परम ध्येय बन गये हैं। वह सारी घटना के केन्द्र-सूत्रों को अपने हाथ से सँभाले रही है और महमूद, बलराज शील, आरती आदि जन-नायकों और जन-समूहों को उसी के शब्दों ने प्रेरणा दी है।

उपन्यास के पृष्ठों पर सर्वत्र स्वतंत्रता का वातावरण है, षड्यंत्र, नीतिविधान और कर्म-मार्ग के कितने ही तर्कपूर्ण तथ्यों का विवेचन बुद्धिमत्ता के साथ किया गया है, कांग्रेस, कम्यूनिज्म, समाजवाद और फासिज्य की मूल रूपरेखाओं पर गंभीर विचार-विनिमय हुए हैं। उपन्यास के सूत्रधारी पात्र प्रायः उच्च-शिक्षा पाये हुए व्यक्ति हैं जिनके व्यक्तित्व में आदर्श और यथार्थ की ग्राह्य, सीमाओं का सुव्यवस्थित समन्वय दिखलाया गया है। 'नई इमारत' का विस्तार-क्षेत्र व्यापक है। ग्रामों की निरीह प्रकृति से लेकर नगरों की आकाशगामिनी धुआँ उगलती हुई चिमनियों तक की कल्पना में उपन्यासकार ने आज के समाज के विभिन्न वर्गों के बड़े मार्मिक चित्र अंकित किये हैं जिनमें पीड़ितों, असहायों और दलितों के प्रति मूक संवेदना के स्वर मुखर हो उठे हैं। आदि से अंत तक उपन्यास की कथा में एक तीव्र गति है। प्रत्येक व्यक्ति कर्म में संलग्न दिखाई देता है मानो उसके समीप सब कुछ कर्म-रत ही है, अकर्मण्यता के लिए जीवन में कोई स्थान नहीं और प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का एक निश्चित ध्येय है। एक परतंत्र देश में वह ध्येय इससे अधिक गौरवपूर्ण और क्या हो सकता है कि उसका प्रत्येक व्यक्ति देश की स्वतंत्रता के लिए युद्ध करने को ही जीवन समझे, पात्रों के शब्दों में लेखक के कुछ अपने संदेश हैं जो सत्कार और सराहना के पात्र हैं। अकर्मण्य होकर उद्देश्य की गतिशीलता को भूल बैठना मृत्यु है। उद्देश्य के प्रति जागरूक रहनेवाले कर्म-वीर जन-जागरण के लिए जनता के साथ सचेष्ट सम्पर्क बनाकर आगे बढ़ते हैं। वे [illegible] आर्तनाद, आत्मीय जनों के अपमान और होनहार युवकों के अभिशप्त संकल्पों के अंतर में

'नई इमारत' के लेखक 'अंचल'

छिपी हाहाकार करती हुई [illegible] अर्थ समझा करते हैं। 'नई इमा[illegible] एक पार्श्व में इस प्रकार कर्मठ [illegible] और देश की स्वतंत्रता का [illegible] और दूसरे पार्श्व में मुक्ति की [illegible] लेने के लिए छटपटाते हुए [illegible] प्रेरणा के शब्द-संकेत। दोनों को [illegible] व्यवस्था से प्रस्तुत नवनिर्माण [illegible] पर मानव मानव के अधिकार [illegible] चानकर धर्म, पाखण्ड और [illegible] समाधि बना सकेगा। ऐसा [illegible] विश्वास है।

'नई इमारत' में बोलनेवा[illegible] भाषा पर कुछ आपत्ति हो सक[illegible] वह गरिष्ठ है और उसमें [illegible] की उग्र गंध है किन्तु उसमें एक [illegible] एक अटूट प्रवाह है जिसने उप[illegible] कथावस्तु को गति दान की [illegible] निस्संकोच कह सकते हैं कि [illegible] अवसर के अनुकूल व्यंग्य [illegible] बात कहने की पटुता प्राप्त [illegible] प्रणय के वार्तालापों, दम्पतियों [illegible] परिहासों और मित्रों के संलापों [illegible] जान जाते हैं कि उपन्यास और [illegible] के मन और मानसिक संस्थान [illegible] चानने की शक्ति रखता है। उसे [illegible] वर्ग और स्तर के व्यक्तियों की [illegible] शक्ति का ज्ञान है। किसी और [illegible] कहता मुझे तो उपन्यास की [illegible] चरण-चरण पर आरती का प्रण[illegible] हार पीड़ा देता रहा है। यह कठोर [illegible] हैं कि जीवित राजनीति में अंत[illegible] और अंतर-सांस्कृतीय सम्बन्धों [illegible] हरण हैं किन्तु वे उदाहरण स्व[illegible] जीर्ण कंकाल पर, स्वेच्छाचरि[illegible] कलंक-वर्णावशेषों के समान [illegible] मात्र रह गये हैं, व्यापक नियम नहीं [illegible] सके। हमारे समाज को हमारी [illegible] प्राणता ने यों ही निष्प्राण बना दि[illegible] ऐसी स्थिति में जहाँ हमारा [illegible] यथार्थ इतना अनुदार है कि हमारी [illegible] किसी कृत्य का समर्थन नहीं कर[illegible] कल्पना का प्रश्रय लेनेवाले साहि[illegible] और हम आँख बढ़ाते हैं कि वहीं [illegible] ऐसे उदाहरण दें जिनसे हमें कुछ [illegible] हन हो। दिन दिन लूटी जाती हुई [illegible] में साहित्यिक तबलीग के ऐसे उदा[illegible] का हम घोर विरोध करते हैं।

कथा-संगठन, चरित्र-चित्रण [illegible] ध्येय की महानता के विचार से [illegible] इमारत' हिन्दी-साहित्य में सदा [illegible] एक नियत गौरव का स्थान [illegible] और जब तक स्वतंत्रता के संघ[illegible] जीवन का उत्सर्ग करनेवाली [illegible] आत्मायें देश को विह्वल प्रेरणा [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतन्त्रता के पत्र

नारी" मासिक पत्रिका

स्वतन्त्र हो रहा
सभी दिशाओं में जागरण के
तर हो रहे हैं। नारी-समाज
देशों के उत्थान में सहायक
आज भी हम अनुभव करते हैं
नारी-समाज को केवल नाम
नहीं वरन् सभी क्षेत्रों तथा
अर्धाङ्गिनी नाम को सार्थक
हुए। इस देश के सभी कार्यों में
सक्रिय सहयोग देना आव-
तः निम्नलिखित उद्देश्यों को
रखकर हमने 'नारी' नाम की
आगामी अगस्त से प्रकाशित
आयोजन किया। 'नारी' के
उद्देश्य हैं——

महिला-जगत् में सामाजिक,
तथा सांस्कृतिक चेतना उत्पन्न
(२) अपने राष्ट्र तथा समस्त
के प्रति बन्धुत्व की भावना
करना। (३) आधुनिक युग
सामंजस्य रखते हुए भारतीय
परम्परा का अनुसरण करने
कुलाओं को बनाना। (४)
समाज को सामयिक समस्याओं
ल कराते हुए उनके समाधान
योग्य बनाना। (५) आर्थिक
वंचित नारी-समाज में गृह
या कलाकौशल द्वारा आर्थिक
प्रदान करना। (६) घरेलू जीवन
स्वस्थ, सुखदायक, वैज्ञानिक
पूर्ण बनाना। (७) अशिक्षित
रूप में शिक्षा का प्रसार। (८)
नूतन नारी-समाज के जीवन-
ज्वलन करना। (९) शिशुपालन
विज्ञान तथा शिशु-शिक्षा के
से परिचित कराना।

है कि उपर्युक्त उद्देश्यों की
नत देश के सभी विद्वान् तथा
देश-समाज के प्रेमी तथा
सुधारक सभी प्रकार की सहायता प्रदान करेंगे। इस मासिक पत्रिका का वार्षिक मूल्य ८) प्रतिअंक ।।।) होगा। पता——नारी-कार्यालय, कमच्छा बनारस।

——विजयालक्ष्मी पंडित (स्वायत्त शासन तथा स्वास्थ्य मंत्रिणी यू० पी०) सुभद्राकुमारी चौहान एम० एल० ए०। कुमारी हरदेवी मलकानी एम० ए०, बी० टी०।

* * *

नेपाली हिन्दू और सिक्ख संघ

नेपाल की सारी राष्ट्रीय संस्थाओं के संयोजक और अन्तर एशियाई सम्मेलन के नेपाली जन-प्रतिनिधि-मंडल के प्रतिनिधि पंडित अग्निप्रसाद शर्मा ज्योतिषाचार्य हिन्दू, सिक्ख और गुरखों का एक संयुक्त संघ बनाने में जुटे हैं। इस संघ का उद्देश्य है कि नेपाली लोग गुरखा सैनिकों द्वारा भारतीयों की यथाशक्ति सहायता करें और साथ ही नेपालियों और हिन्दू तथा सिक्खों में गहरी मित्रता स्थापित हो।

पंडित अग्निप्रसाद शर्मा जो इस संघ के बड़े संचालक हैं। देश में चारों ओर दौड़ा कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में दिल्ली जाकर उन्होंनेसरदारपटेल और कांग्रेस के अन्य उच्च कर्मचारियों से बातें भी की हैं। उन्होंने दिल्ली में रुकनेवाले हिन्दू महासभा के नेताओं से भी वार्ता की और वे शीघ्र ही इस प्रान्त के कांग्रेस और हिन्दू महासभा के नेताओं से विचार-विनिमय करनेवाले हैं। ——संवाददाता

* * *

हरिद्वार में महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू और श्रीमती, इन्दरा गांधी हरिद्वार पधारीं और पीड़ित व शरणार्थियों के कैम्पों का निरीक्षण किया। कुछ शरारतियों की ओर से इनके विरुद्ध प्रदर्शन किया गया। निरीक्षण के समय त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी, महाराज और पीड़ित हिन्दू-सहायक सभा के कार्यकर्ताश्री बाबू पन्नालाल जी भल्ला, पंडित गंगाप्रसाद जी, पंडित शिवशंकर जी, पंडित चिरंजीवलाल शर्मा, पंडित शंकरानन्द जी प्रधान मंडल कांग्रेस कमेटी, बाबू आनन्दस्वरूप जी बी० ए०, पंडित सूर्यप्रकाश जी, पंडित राजाराम जी, पंडित सीताराम जी महन्त विशनदास जी और महन्त श्यामदास जी आदि ने पंडित जी का स्वागत किया और कैम्पों का निरीक्षण कराया। महात्मा गांधी जी और श्री नेहरू जी के आने पर सब प्रबन्ध हिन्दू सेवक-दल की ओर से दल के संयोजक श्री किशोरसिंह जी और शाखा इंचार्ज श्री राजाराम जी की अध्यक्षता में प्रबन्ध हुआ। शाम कोम्युनिसिपल बोर्ड की ओर से मानपत्र और चाय पार्टी का प्रबन्ध था पर लाउड स्पीकर की खराबी और बोर्ड की बदइन्तजामी के कारण भाषण न हो सका और लगभग पचास हजार जनता को निराश वापस लौटना पड़ा। ——संवाददाता

* * *

हरिद्वार ऋषिकुल में अर्धरात्रि के समय जब कि गहरी निद्रा में सब सो रहे थे, फूस बँगले में जो सड़क के किनारे पर है और जिसमें वहाँ का जमादार सपरिवार रहता है, अचानक आग लग गई। खतरे का एलार्म बजने पर ऋषिकुल के कार्य कर्ता, ब्रह्मचारी, पास के कैम्प से हिन्दू सहायता-समिति और यू० पी० किराना-समिति के सेवा कार्यकर्ता पहुँचे और आग को बढ़ने से रोका फिर भी दो बँगले जलकर राख हो गये और बहुत से सामान की हानि हो गई। ——संवाददाता

* * *

इटावा पालीखुर्द, आर्यसमाज ने दो प्रस्ताव पास किये। यह सभा सरकार से अनुरोध करती है कि वर्तमान साम्प्रदायिक समस्याओं को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक है कि संयुक्तप्रान्त में सरकारी नौकरियों में विशेषतया पुलिस-विभाग में जन-संख्या के अनुसार हिन्दू और मुसलमानों का अनुपात होना चाहिए जब तक यह अनुपात ठीक न हो जावे तब तक मुसलमानों की भर्ती बिलकुल बन्द कर दी जाये।

——गौरीशंकर यादव मंत्री

* *

जोधपुर से बाल और कुमार साहित्य की अपने ही ढंग की प्रमुख सचित्र मासिक पत्रिका 'झरना' का प्रकाशन होनेवाला है। प्रथम अंक अगस्तन में प्रकाशित होगा। कवियों और लेखकों से बालोपयोगी व कुमारोपयोगी रचनाएँ भेजने हेतु अनुरोध है। पता——नेमिचन्द्र जैन 'भावुक' मिरची बाजार, जोधपुर। ——संवाददाता

* * *

जयपुर में सेवा-समिति नवयुवक मण्डल में श्रीयुत गिण्डाराम वर्मा 'चंचल' के नगर में पधारने के उपलक्ष में एक साहित्य गोष्ठी हुई——जिसमें नगर के प्रायः सभी विद्वान् उपस्थित थे।

——राधाकृष्ण

* * *

भरतपुर राजस्थानी महिलाओं के संगठन के कार्यक्रम को लेकर राजस्थान के दौरे के दरम्यान श्रीमती कमलाकुमारी श्रोत्रिय का जयपुर से यहाँ आगमन हुआ। महिला-मण्डल की ओर से श्री शान्तिदेवी की अध्यक्षता में महिला-सम्मेलन का विशेष और सफल आयोजन हुआ। अध्यक्षा के परिचयात्मक भाषण के बाद श्रीमती कमलाकुमारी श्रोत्रिय और श्री दयाशंकर श्रोत्रिय के महिला जागृति पर भाषण हुए।

——संवाददाता

* * *

पंडित जवाहरलाल नेहरू, इन्दिरा नेहरू गांधी के साथ यू० पी० किराना सेवा-समिति तथा हिन्दू सहायता समिति कानपुर के रिलीफ कैम्प का निरीक्षण करने ऋषिकुल कालेज गये और ५०० शरणार्थियों के हित का कार्य देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर समिति के रजिस्टर में अपनी लेखनी से शुभ सम्मति प्रदान की। साथ ही श्रीमती इन्दिरा नेहरू गांधी ने भी अपने हस्ताक्षर किये। समिति के कार्यों के लिए पूज्य गांधी जी ने भी अपना शुभाशीर्वाद प्रदान किया। ——संवाददाता

भारतीय विधान-सम्मेलन में भाग लेनेवाले रियासत ग्वालियर के प्रतिनिधि

कर्नल श्री ब्रजराजनारायण,
इंडस्ट्रीज, कामर्स और
आप ग्वालियर धारा
सदस्यों की संयुक्त बैठक में
विधान परिषद् के सदस्य निर्वा-

श्री एम० ए० श्री निवासन्, ग्वालियर-सरकार की इक्जिक्यूटिव कौंसिल के वाइस चेयरमैन हैं। महाराजा ग्वालियर ने आपको विधान परिषद् की सदस्यता के लिए प्रतिनिधि चुना है। आप विधान परिषद् में ग्वालियर के प्रतिनिधित्व का नेतृत्व भी करेंगे।

श्री गोपीकृष्ण विजयवर्गीय (कांग्रेस प्रतिनिधि) ग्वालियर धारा सभाओं के सदस्यों की संयुक्त बैठक में भारतीय विधान सभा के लिए प्रतिनिधि चुने गये हैं।

श्री रामसहाय (कांग्रेस प्रतिनिधि) ग्वालियर धारा सभाओं के सदस्यों की संयुक्त बैठक में भारतीय विधान परिषद् के सदस्य चुने गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज का पंजाब और पाकिस्तान

(पेज ५ का शेष)

तक बहुत बड़े पैमाने पर एक दूसरे सम्प्रदाय को खतम करनेवाले दंगे सम्भव हुए। क्या अँगरेजों के विरुद्ध इस प्रकार के दंगे सम्भव होते? अधिक दूर जाने की आवश्यकता नहीं, १९४२ में सब तरह की ब्रिटिश-विरोधी शक्तियाँ भयंकर रूप से उठीं, पर कितने अँगरेज तथा उनके पिट्ठुओं का मारा जाना सम्भव हुआ?

इसलिए हम लीग को तथा संघ आदि अन्य साम्प्रदायिक संस्थाओं को दंगों के लिए कुछ भी दोष दे दें, पर ये संस्थाएँ अपनी दुष्ट इच्छाओं को कार्यरूप में परिणत करने में सम्भव रहीं, इसकी सारी जिम्मेदारी ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर है। यह बिलकुल पक्की बात है कि यदि ब्रिटिश साम्राज्यवाद इन दंगों को न चाहता तो ये कभी न हो सकते थे।

इस सम्बन्ध में मैंने अमृतसर में दंगे का जो रूप देखा, वह उल्लेख करने योग्य है। वहाँ दिन ९ बजे तक करफ्यू रहता था, फिर भी वहाँ रोज वारदातें होती थीं। और यह तो कुछ भी नहीं है। मैंने देखा कि मुहल्ले के मुहल्ले इस तरह खंडहर बना दिये गये हैं कि देखने से यह ज्ञात होता था कि हजारों आदमियों ने घंटों और शायद कई दिनों तक लूटपाट तथा आग लगाने का कार्य किया तब इन स्थानों की ऐसी हालत हुई होगी। मैंने अपने अमृतसर के मित्रों से पूछा कि भाई जब यह सब हो रहा था तो पुलिस कहाँ थी? उसकी बन्दूकें, तोप, तमंचे कहाँ थे? मालूम हुआ कि इन घटनाओं के समय पुलिस का कहीं पता नहीं था।

वहाँ मुझे यह भी पता लगा कि जनता में भय समाया हुआ है और गरीबों की तो हालत बिलकुल खराब हो रही है क्योंकि उनके सारे रोजगार खतम हो गये और उनके पास पूँजी नहीं है कि वे बैठकर खावें। मालूम हुआ कि दोनों तरफ कुछ संस्थायें रुपये देकर वारदातें करा रही हैं। मैं ३० मई के दिन अमृतसर में था। उसी समय साइकिल पर से या मोटर पर से पिस्तौल मारकर भाग जाने की वारदातें शुरू हो गई थीं। पूरा जंगल कानून चल रहा था। आखिर ये संस्थाएं तथा इसके सदस्य क्यों बाहर घूम रहे हैं? क्या मुझे दस दिन में जो बातें मालूम हो गई, सरकार को वे बातें मालूम नहीं हो सकती थीं?

मुझे तो अपने क्रान्तिकारी जीवन में कुछ और ही तजरबा हुआ था।

ऊपर जो कुछ लिखा गया उससे यह बिलकुल साफ है कि इन झगड़ों के पीछे गहरी चालें हैं, और चालें यह हैं कि भारत छोड़ने का नाम करते हुए भी ब्रिटन को भारत न छोड़ना पड़े। ३ जून की घोषणा के पहले ही परिस्थिति ऐसी थी कि भारत का विभाजन खतरनाक था, और विभाजन न करना भी खतरनाक था। आज हम उस बात को प्रत्यक्ष देख रहे हैं। पाकिस्तान तो हो गया पर फिर भी दंगे जारी हैं। कहना न होगा कि यह बहुत खतरनाक सम्भावनाओं से पूर्ण है।

मैं उस जगह पर रियासतों की बात न छेड़ूँगा, पर पाकिस्तान और हिन्दुस्तान ये जो दो राष्ट्र हो गये हैं, ये यदि मित्रराष्ट्र न हुए, जैसा कि अब तक कोई सम्भावना मालूम नहीं होती, तो भारतवर्ष की क्या हालत होगी, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। मि० चर्चिल ने ३ जून की योजना को आशीर्वाद दिया है, इससे और भी खतरा मालूम होता है। हम चीन और फिलिस्तीन से परिचित हैं, पर भारतवर्ष में उससे भी भयंकर हालत होने की सम्भावना है क्योंकि पाकिस्तान में हिन्दुओं के रूप में, तथा हिन्दुस्तान में मुसलमानों के रूप में बड़े जबरदस्त पाँचवें दस्ते मौजूद रहेंगे और उस हालत में लड़ाई का रूप नोआखाली, बिहार, रावलपिंडी से कहीं खराब होगा।

अब तक जो झगड़े तथा दंगे होते थे, उनमें कहीं दो-चार बन्दूकें इस्तेमाल हो गईं तो हो गईं, पर आगे तो दोनों तरफ से आधुनिकतम अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित सेनाओं के लड़ने की सम्भावना है। उस सम्भावना को सोचकर मेरे ऐसे व्यक्ति के भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं और एक बार यह विचार मन में बिना आये नहीं रहता कि इस प्रकार ब्रिटेन के भारत त्याग से कहीं अच्छी शायद पहले की हालत थी। इसमें सन्देह नहीं कि हमारे आगे का इतिहास बहुत ही खतरनाक सम्भावनाओं से पूर्ण है क्योंकि लड़ानेवाली तीसरी शक्ति के रूप में केवल अब ब्रिटेन नहीं बल्कि बहुत-सी शक्तियाँ रहेंगी।

हमारी दुरवस्था की हद तो यह है कि हम इन सम्भावनाओं को देख नहीं रहे हैं। कांग्रेस साम्प्रदायिक संस्था नहीं है, फिर भी उसे भारतवर्ष के साम्प्रदायिक बँटवारे पर राजी होना पड़ा। इसी प्रकार यदि साम्राज्यवादों के बहकावे में आकर पाकिस्तान हिन्दुस्तान पर चढ़ाई कर दे, तो वह क्या करेगी? पंजाब से मैं यथेष्ट निराश होकर लौटा हूँ। सबसे बड़ी आफत तो यह है कि दोनों में से एक भी पक्ष हम समाजवादियों की बात सुनने पर तैयार नहीं है। पर कुछ लोगों में [illegible] रही है।

भारतीय मज़दूर-आन्दोलन

(पेज ६ का शेष)

लेबर में श्री राय, डाक्टर अम्बेदकर की इंडिपेन्डेन्ट लेबरपार्टी, जमनादास मेहता, गुरुस्वामी आदि भी सम्मिलित हुए। यह सभी लोग युद्ध-उद्योगों में सहायता करने के पक्ष में थे।

अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के सन् १९४२ के कानपुर के अधिवेशन के समय कम्युनिस्ट दल की युद्ध-नीति में परिवर्तन हो चुका था और वे भी युद्ध को जनता का युद्ध कहने लगे थे। कम्युनिस्टों ने यह चेष्टा की कि कानपुर में उनकी युद्ध-नीति के अनुसार ट्रेड यूनियन कांग्रेस में भी प्रस्ताव पास हो जाय परन्तु वे उसमें बुरी तरह असफल हुए। इस समय भारत में ब्रिटिश विरोधी भावनायें अपनी चरम सीमा पर थीं और जापान के वर्मा तक आ जाने से इनमें और भी कटुता आ गई थी ऐसी स्थिति में यदि कम्युनिस्ट दल की ओर से ट्रेड यूनियन में टुकड़े करनेवाली नीति का अनुसरण किया गया होता तो उनका जनता से समस्त लगाव समाप्त हो जाता और वे अपनी नीति का थोड़ा भी प्रचार न कर सकते। कुछ ऐसे ही कारणों से अपनी असफलता की अपेक्षा करते हुए भी वे ट्रेड यूनियन कांग्रेस में ही बने रहे।

सन् १९४२ का आन्दोलन आया और बीत गया लेकिन देश की संकटकालीन स्थिति का अन्त नहीं हुआ। जेल से निकलने के बाद समझौते पर समझौते होते रहे दूसरी ओर अपरिपक्व समाजवादी तथा मिथ्या क्रान्तिकारी नारों के बल पर जनता में अपने को क्रान्तिकारी कहलाये जानेवालों की बाढ़-सी आ गई। इन्कलाब के निस्सार प्रयोग ने उसे अर्थहीन बना दिया। कांग्रेस समाजवादी दल के लोग इस समय ट्रेड यूनियन कांग्रेस पर अधिकार करना चाहते थे और इस शुभ कार्य में कांग्रेस के सभी लोगों का सहयोग चाहते थे परन्तु उन्हें ऐच्छिक सहायता नहीं मिली। अकेले यह कार्य पूरा नहीं हो सकता था। कांग्रेस के नेतृत्वमंडल ने एक दूसरा प्रस्ताव किया कि पहले समाजवादी हिन्दुस्तान मजदूर सेवक-संघ को मजबूत करें और बाद में हो सके तो दोनों मिलकर अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस पर अधिकार कर लेंगे। लेकिन राष्ट्र-मंच पर बीच के ही अपना अधिकार कर लेने के कारण कांग्रेस के अधिकारी एक नवीन अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन संस्था को संगठित करने के लिए तैयार हो गये। राष्ट्र-मंच पर शान्तिपूर्ण ढंग से अधिकृत हो जाने पर यदि किसी भी सामाजिक अंश में विद्रोह की आशा की जा सकती है तो वह श्रमिक-वर्ग ही है क्योंकि इसकी समस्याओं का अन्त तो पूँजीवादी पद्धति के साथ ही होता है और दूसरे क्रान्तिकारी विचारधारा का सबसे अधिक प्रभाव भी इसी अंश में होता है। कांग्रेस और लीग दोनों ने ही जमींदारी के नाश करने की शपथ खाकर किसानों के [illegible] को तो जीत लिया है; परन्तु मजदूरों पर भी कुछ ऐसा प्रभाव हो जिससे कांग्रेस की ओर आकर्षित हो जाय तो फिर [illegible] के उपद्रव की बात नहीं सोची जा [illegible] इन्हीं कारणों से अपने राजनीतिक [illegible] की पूर्त्ति के लिए कांग्रेस के [illegible] ने जो सदैव संगठित मजदूर आन्दो[illegible] विरुद्ध थे उन्होंने राष्ट्रीय ट्रेड [illegible] कांग्रेस को संगठित किया है।

समाजवादी दल अब फिर [illegible] में पड़ गया—क्या करे और [illegible] करे। अपने को पूर्ण क्रान्तिकारी [illegible] का दावा करने के कारण [illegible] कार्यकर्त्ता मजदूर-संगठन की [illegible] नष्ट नहीं करना चाहते थे परन्तु [illegible] के सम्बन्ध और कांग्रेस के [illegible] दबाव से वह अपने निश्चयों का [illegible] वित नहीं रख सकी। आज हम [illegible] के मजदूर-आन्दोलन के अनेक [illegible] गये हैं। प्रत्येक राजनीतिक [illegible] मजदूर अलग-अलग संगठित [illegible] लगे हैं। समाजवादी भी सम्भव [illegible] कि उन्होंने अभी निश्चय किया [illegible] अपना स्वतंत्र मजदूर संगठन [illegible] पुनः कांग्रेस द्वारा संगठित राष्ट्रीय [illegible] यूनियन कांग्रेस में ही सम्मिलित [illegible] जाय। परन्तु मजदूर-आन्दोलन [illegible] विभाजन का बड़ा घातक प्रभाव [illegible] देश पर पड़ा। आज तो मुस्लिम [illegible] और हिन्दू-सभा की ओर से [illegible] के साम्प्रदायिक संगठन करने [illegible] भी चलनी लगी हैं। मजदूर-आ[illegible] आज केवल एकाई के रूप में [illegible] चुका है। हमारे देश की रा[illegible] संकटकालीन परिस्थिति ने हमारे [illegible] जिक जीवन के प्रत्येक अंग को [illegible] कर दिया है। हमारे प्रत्येक [illegible] अब निश्चित विचारधारा [illegible] कर चलना होगा।

मजदूर-आन्दोलन स्वाभाविक [illegible] से समाजवादी होता है उसके [illegible] प्राप्ति के साधन भिन्न हो सकते [illegible] समाजवादी व्यवस्था की मौलिक [illegible] श्यकताओं को तो सभी को [illegible] करना पड़ेगा इसके लिए पूँजी[illegible] नष्ट करके उसके साथ [illegible] स्थापित करने के लिए वर्ग [illegible] आधारभूत सिद्धान्त को स्वीकार [illegible] पड़ेगा। देश में आज स्वतंत्र [illegible] आन्दोलन को समाजवादी सिद्धान्त [illegible] अनुसार संगठित करने की ऐतिहासिक आवश्यकता है यदि मजदूर [illegible] ओर ध्यान नहीं देंगे तो उन्हें [illegible] करने की चेष्टायें की जायेंगी।

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय
आरोग्य
१८६६
नीलगिरि तेल
प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४

अमेरिकन
माडेल
मिस्टल

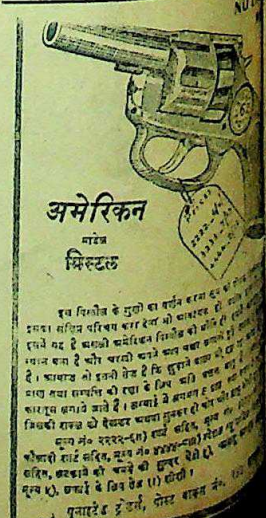

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नायु पीड़ा से
स्वास्थ्य और सुख
नष्ट न होने दें।

जब स्नायु थक जानेके कारण जब
आप चिड़चिड़े और दुःखी हो
उठें तब आपको पुष्टिकर खाद्य लेनेमें
देर नहीं करनी चाहिये।

स्नायु को ताक़त पहुंचाने के लिये
नियमित रूपसे स्वादिष्ट 'ओवल्टीन'
का सेवन करें। स्नायुकी क्षीण शक्ति
को यह हर प्रकारसे ताक़त पहुंचायेगा।
इसके अलावा शरीर और मस्तिष्क
की शक्तिको कायम रखता है।
ओवल्टीन के जौके गुदे, गायके
ताज़ेदार दूध और बहुमूल्य प्राकृतिक
विटामिनसे तैयार किया जाता है।

खानेके पहले एक प्याला 'ओवल्टीन' पीने से गाढ़ी नींद
आती है और सवेरे तरो-ताज़ा रखता है।

ओवल्टीन
OVALTINE शक्तिप्रद स्वाद्य पानीय

वितरक : ग्रेहम्स ट्रेडिंग कं० इण्डिया लि०, ६
लाएन्सरेंज कलकत्ता; बम्बई, कराची, मद्रास भी

मधुस्रवा—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल्-एल० बी०। इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

अपने दान्तों के लिये
गिब्स
डेन्टिफ्रिस का उपयोग
कीजिये क्योंकि...

योग्य पद्धति ही नीरोगी
दान्तों को
सुरक्षित रखती है

यदि आप अपने दान्त कोयला या किसी सख्त पदार्थ से साफ़ करते हैं, तो आप उन्हें खुरचे जाने के ख़तरे में डाल देते हैं... और खुरचा हुआ दान्त जल्दी घिस जाता है। आप का डॉक्टर कहेगा कि, किसप्रकार घिसे हुए दान्त—ख़राब दान्त—आप का स्वास्थ्य नष्ट कर देते हैं। गिब्स डेन्टिफ्रिस खुरचने के बग़ैर (दान्त) सुरक्षितता से साफ़ करने के लिये खासकर बनाया गया है। अब से गिब्स डेन्टिफ्रिस का प्रयोग करो और आप के दान्त नीरोगी रहते हैं, इसकी ख़ात्री करो; यह जंतु-नाशक, स्वाद में आल्हाद-दायक है और आप के दान्त श्वेत एवं सुरक्षितता से साफ़ करेगा।

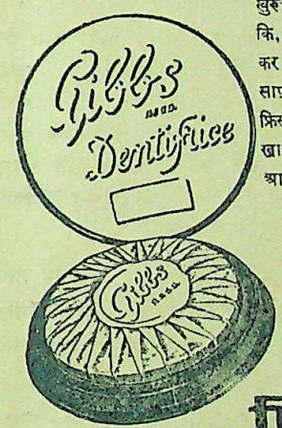

गिब्स अधिक समयतक चलता है और अन्य दन्तमंजनोंसे सस्ता है

गिब्स बच्चों के लिये आदर्श है

गिब्स डेन्टिफ्रिस

ED. 15-33 HI

D. & W. GIBBS LIMITED, LONDON, ENGLAND

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

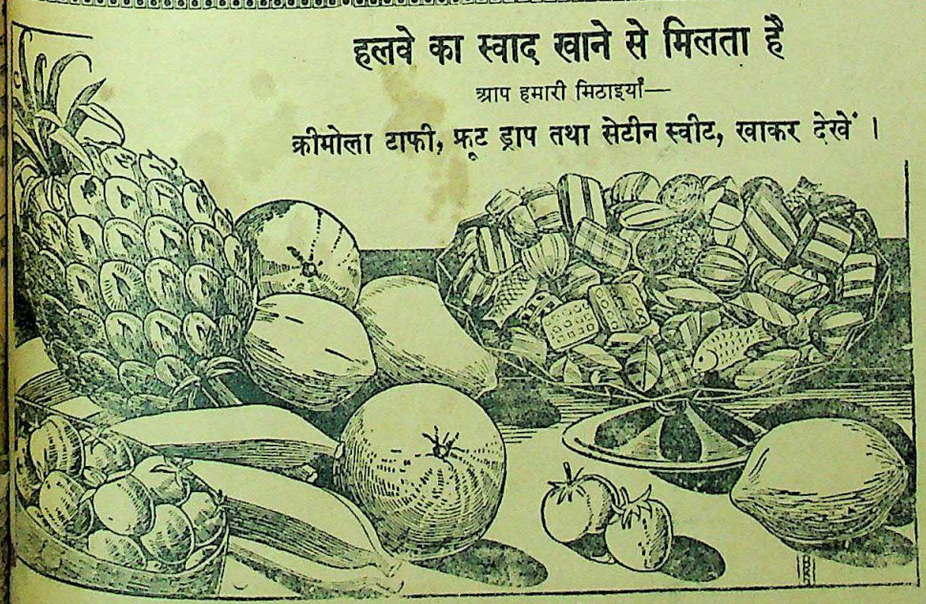

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

जवाहरों द्वारा निर्मित लिवरवाली घड़ियाँ

समस्त घड़ियाँ स्विटजरलैंड की बनी हुई, सच्चा समय बतानेवाली, मज़बूत पुर्ज़ों से सुसज्जित, दीर्घकाल तक ठहरनेवाली और सेफियानी हैं। प्रत्येक की ७ वर्ष की गारंटी है।

क्रोमियम केस २०), ऊँचे दर्जे की २५), सर्वोत्तम ३०), ५ जवाहराती चौखूँटे चमकदार क्रोमियम ३५), ७ जवाहराती ४०), रोल्डगोल्ड १० साल की गारंटीवाले ७ जवाहराती ६०), १५ जवाहराती ९०), पोस्टेज ।।।), वैल्यू मुफ़्त।

यू० एस० ए० फ़ाउण्टेनपेन

विभिन्न रंगों से रंजित और नवीन ढंग के बने १४ के टी निब ४।।), मध्यम ५।।), सर्वोत्तम ६), पोस्टेज ।।।)। सूचीपत्र अप्राप्य। पत्र-व्यवहार अँगरेजी में कीजिए।
कलकत्ता वाच कं०, (सेक्सन ०२४)
पो० बाक्स न० १२२०३, कलकत्ता ५।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सपट लोशन
दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.
सपट अँड कं. लि.
बम्बई नं. २.

भारी लूट !

आज ही मँगावें—अवसर मत चूकें
३॥) में ६ नई पुस्तकें

पति-पत्नी जीवन (सचित्र)—पति-पत्नी के पढ़ने योग्य दाम्पत्य जीवन संतुष्ट बनानेवाली अपूर्व पुस्तक १।)। इँग्लिश टीचर—घर बैठे अँगरेजी लिखना बोलना सीखो १)। महावशीकरण—अनेकों प्रकार के वशीकरण मंत्रों का खजाने की कुंजी—अनेकों प्रकार के हुनर सीख धन पैदा कीजिये १)। हारमोनियम टीचर—घर बैठे हारमोनियम बजाना, गाना सीखो १॥)। जादू बंगाल की सफाई के आश्चर्यजनक खेल करना १)। ६ पुस्तकों के सेट का मूल्य ३॥) पैकिंग ।॥) अलग।

पता—ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (D. A. २१) अलीगढ़ सिटी

श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी की रचना

सञ्चारिणी

इसमें भक्तमाल की अन्तर्चेतना, वर्तमान हिन्दी-साहित्य और शरद-साहित्य की सरस सुन्दर विवेचना की गई है। इसकी भाषा-शैली और विचारों पर मुग्ध होकर आचार्य शुक्ल जी के एक अनुयायी आलोचक ने लिखा था कि रवि बाबू के बाद इसी पुस्तक द्वारा सुन्दर, सुपुष्ट और भावपूर्ण लेखनी का चमत्कार दिखाई पड़ता है। यह पञ्जाब विश्वविद्यालय की हिन्दी प्रभाकर-परीक्षा में कई वर्षों तक पाठ्य-पुस्तक रह चुकी है। पृष्ठ-संख्या लगभग २७५; मूल्य सजिल्द २) दो रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

एलाइड लाउडस्पीकर पर इतमिनान रखिये

ब्याह मेले जलसे सरकस तथा हर मौके पर इस्तेमाल कीजिये

खरीदिये या किराये पर लीजिये

एलाइड एलेक्ट्रिक एण्ड रेडियो कारपोरेशन
हज़रतगंज लखनऊ
कैनिंग रोड एलाहाबाद

*जयश्री: राजकुमारी की भांति गर्वीली मरु पवन की तरह निर्मल मुख...

*वह रूपवती है! वह पाँड्स् का प्रयोग करती

...क्या आप भी अपने चेहरे को पाँड्स् से ... और ताज़ा रख रही हैं? अनेक सुन्दर स्त्रियाँ और लड़कियाँ किसी अन्य क्रीम की अपेक्षा किसी मूल्य पर पाँड्स् को ही व्यवहार में लाती हैं। याद रखिये, पूर्णरूप से स्वच्छ करना ही शरीर की सबसे महत्त्वपूर्ण सावधानी है। आज से ही पाँड्स् कोल्ड क्रीम और पाँड्स् वेनिशिंग क्रीम का प्रयोग शुरू कर दीजिये।

पाँड्स् दिनचर्या

पाँड्स् कोल्ड क्रीम: पाँड्स् कोल्ड क्रीम को चेहरे पर कोमलता से रमाते हुये दिन में दो बार उसे साफ़ कीजिये; उंगली के कोमल पोरों से उसे थपथपाइये। पाँड्स् टिशू से स्वच्छ कर लीजिये।

पाँड्स् वेनिशिंग क्रीम: कोल्ड क्रीम साफ करके उंगली के पोरों से वेनिशिंग क्रीम लगाइये। त्वचा को देता हुआ वह आप के प्रयोग के अंतर्धान हो जाता है।

पाँड्स् पावडर: यदि आपकी इच्छा हो तो पुष्पपंखडी की भांति कोमलता के लिये पाँड्स् पावडर थपथपाइये।

पाँड्स् क्रीम्स

व्यापार-सम्बंधी पूछताछ के लिये लिखिये:
एल. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लिमि० बम्बई - कलकत्ता - कराची - मदरास.

Copyright: Pond's Extract Co.

प्रबन्ध सम्पादक—एच पी० घोषाल, मित्रा-हाल ... लिमिटेड, ... पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य ७॥)
मूल्य =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

रविवार, १३ जुलाई, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 13th July, 1947

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मूल्य २ आना

...तीय साधु धर्मानन्द कौसाम्बी
...त के राष्ट्रीय झंडे का प्रश्न

ब्रिटिश सरकार की नई घोषणा।
...पंच, हासपरिहास और मातृमन्दिर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या मुझसे दुर्गन्धि आती है ?

नवयुवकों की ७६% संख्या से दुर्गन्धि आती है !

वैज्ञानिक अनुभवों से यह निस्सन्देह सिद्ध हो गया है कि कोलगेट टूथ पाउडर की १० घटनाओं में से ७ घटनाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि जबानी दुर्गन्धि शीघ्र ही दूर हो गई।

धन की बचत—दूसरी दवाओं की अपेक्षा कोलगेट एक बड़े डिब्बे में दाँत साफ करने की ३० मात्रा अधिक रहती है, उससे बड़े डिब्बे में ४६ मात्रा अधिक रहती है। परन्तु दाम वही है।

धूम्र-पान करनेवाले—कोलगेट दाँत का मंजन तम्बाकू की दुर्गन्धि और मैल को दूर करता है।

आज ही कोलगेट खरीद लीजिए।

कोलगेट
टूथ पाउडर
कोलगेट आज ही खरीदिए!

CLEANS BREATH AS IT CLEANS TEETH

मुफ्त

अपने न्यू गोल्ड को लोकप्रिय
के लिए हम लोगों ने कुछ समय के
६ तोला न्यू गोल्ड का एक सेट
जिसमें १ लाकेट, २ जोड़ी इयर
जोड़ी फैंसी चूड़ी, २ अँगूठियाँ
निश्चय किया है। ये सभी चीज
आकर्षक हैं और उन्हीं को दी जायेंगी
रियायत की अवधि के पहले आवेदन
मुफ्त—सचित्र सूचीपत्र और योग

फ्रेंच कारपोरेशन, लायलपुर (पंजाब)
French Corporation (D.D
Layalpur, (Punjab)

*वह रूपवती है!
वह पौंड्स का प्रयोग करती है!

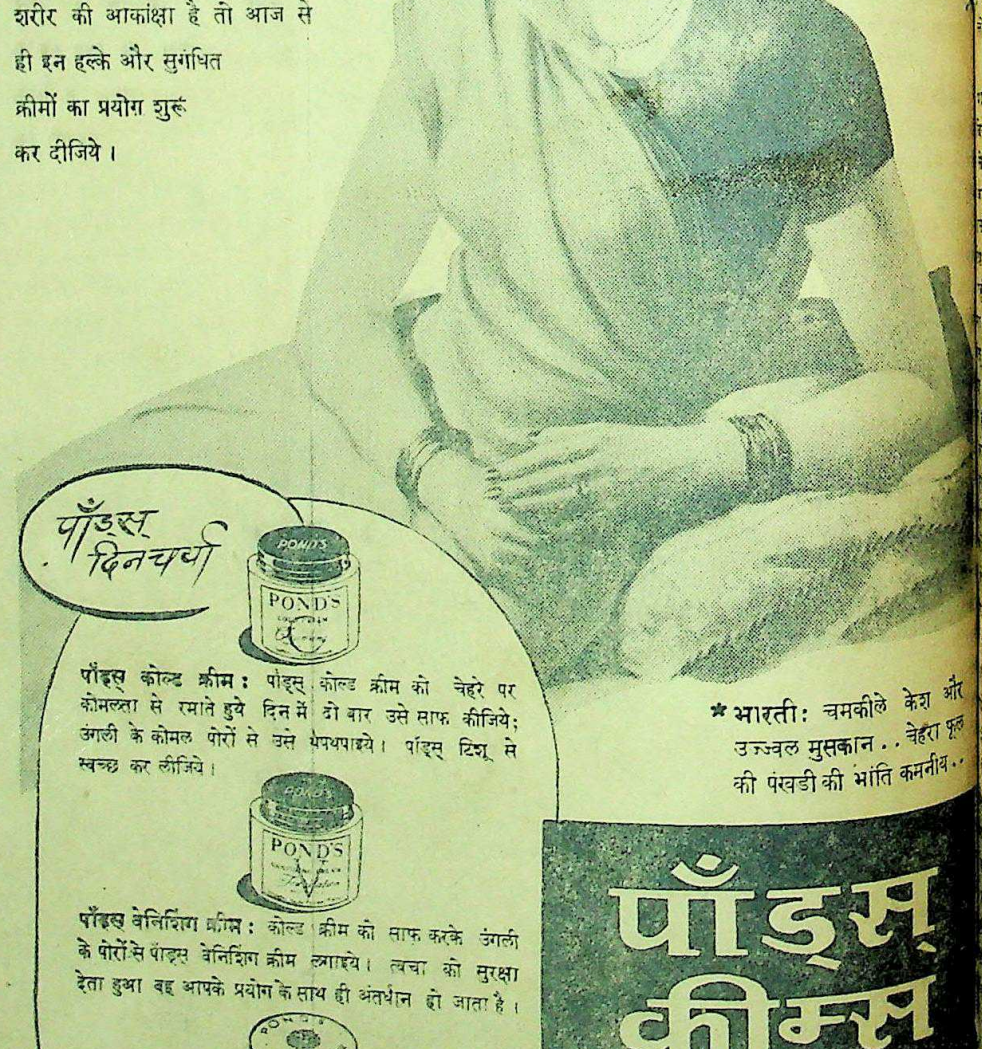

...संसार की कुछ सबसे रूपवान स्त्रियाँ पौंड्स का प्रयोग करती हैं।...यदि आपको अधिक स्वच्छ और कोमल शरीर की आकांक्षा है तो आज से ही इन हल्के और सुगंधित क्रीमों का प्रयोग शुरू कर दीजिये।

*भारती: चमकीले केश और उज्ज्वल मुसकान..चेहरा फूल की पंखडी की भांति कमनीय..

पौंड्स दिनचर्या

पौंड्स कोल्ड क्रीम: पौंड्स कोल्ड क्रीम को चेहरे पर कोमलता से रमाते हुये दिन में दो बार उसे साफ कीजिये; उंगली के कोमल पोरों से उसे थपथपाइये। पौंड्स टिशू से स्वच्छ कर लीजिये।

पौंड्स वेनिशिंग क्रीम: कोल्ड क्रीम को साफ करके उंगली के पोरों से पौंड्स वेनिशिंग क्रीम लगाइये। त्वचा की सुरक्षा देता हुआ वह आपके प्रयोग के साथ ही अंतर्धान हो जाता है।

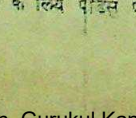

पौंड्स पाउडर: यदि आप की इच्छा हो तो पुष्पपंखड़ी की भांति कोमलता के लिये पौंड्स पाउडर थपथपाइये।

पौंड्स क्रीम्स

व्यापार-सम्बंधी पूछताछ के लिये लिखिये:
एल. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लिमि०
बम्बई - कलकत्ता - कराची - मद्रास

Copyright Pond's Extract Co.

बालकों को स्वस्थ रखता है!

नित सवेरे इनोज़ "फ्रूट साल्ट" पीनेवाले बालकों के लिये सही चीज है। वह अम्लता का प्रतिरोध करता है, पाचक यंत्रों को नियमित करता है और सरलता से शरीर की वृद्धि करता है। बालक उसकी स्फूर्तिप्रद चमक को चाहते हैं।

इनोज़ "फ्रूट साल्ट" का सेवन कीजिये!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

वर्ष ६, संख्या ४६] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, १३ जुलाई, १९४७

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

समाजवादी नेता डाक्टर राममनोहर लोहिया और श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय।

पार्लियामेंट में भारतीय स्वाधीनता बिल पेश हो गया है। सरकार की ओर से कहा गया है कि २० जुलाई तक कानून बन जायगा। अपने राम को इससे अधिक प्रसन्नता क्या होगी कि सरकार भारत को स्वतंत्र बनाने जा रही है किन्तु विधान के पंडितों का कहना है कि बिल में कई बुराइयाँ हैं और अपलेबाजियाँ हैं, उसका दूर हो जाना जरूरी है। बात है तो ठीक लेकिन किसी तरह पार्लियामेंट में पास हो जाये, यही गनीमत है क्योंकि बिल का एक बिलबिला जाने का भी भय हो सकता है। मिस्टर चर्चिल, टोरी मंडली अभी बिल के पक्ष में हैं, ऐसा न हो टोरी जमात ही बिल बन बैठे? लेकिन अब टोरियों से उम्मीद है नहीं, क्योंकि पाकिस्तान बन गया है, टोरी लोग अपना लासा ही रहेंगे, भारत में उनके रहने का बहुत ठौर हो ही गया है, फिर बिल का विरोध क्यों करने लगे? आशा है बिल बिलबिलाने न पाये और वह पास होकर ही रहेगा। बिल की बुराइयों के दूर करने का, उसे ब्रिटिश सरकार बाद में संशोधन से साफ कर देगी, क्योंकि संशोधन के मामले में ब्रिटिश अधिकारियों का मुकाबला संसार का कोई राष्ट्र नहीं कर सकता, सोवियट को छोड़कर।

* * *

सिंध की मुस्लिम लीगी सरकार जोरों से छलाँगें मार रही है। अभी तक वहाँ पाकिस्तान वैधानिक रूप से कायम नहीं हुआ है, क्योंकि पाकिस्तानी बिल तो अभी पार्लियामेंट के गले में अटका है, फिर भी लीगी मंत्री पाकिस्तान पर अपनी जान कुरबान करने में जुट गये हैं। लीगी मंत्रिमंडल पलक मारते सब कुछ करने पर उतारू हो गया है। जायदादों की जब्ती के आर्डिनेंस तो निकाले ही जा चुके हैं किन्तु अब मालूम हुआ है कि उसने अन्नाभाव-वाले प्रान्तों को गेहूँ और चावल भेजे जाने पर प्रतिबंध भी लगा दिया है। हिन्दुस्तान-सरकार के साथ सहयोग करने का यह नमूना बेहतरीन है। सिंध के लीगी फरमाते हैं कि यह प्रतिबंध तब तक है जब तक कि हिन्दुस्तान-सरकार से कोई समझौता नहीं हो जाता है। यह है पाकिस्तानी सरकार का करिश्मा, जिसके अस्तित्व का अभी कुछ ठीक-ठिकाना नहीं है और जब ठीक-ठिकाना हो जायेगा तब तो सिंध के लीगी धरती पर शायद ही चलें। क्यों न हो, जहाँ फ्रांसिस मुडी जैसे गवर्नर और मिस्टर हिदायतुल्ला जैसे प्रधान जी हों वहाँ पाकिस्तान अपने असली रूप में न दिखाई देगा तो फिर और कहाँ?

* * *

पत्रों में खबर छपी है कि मुस्लिम लीग अटलांटिक से लेकर अफगानिस्तान तथा सीमाप्रान्त तक पाकिस्तान कायम करने के फेर में पड़ गई है। इसीलिए शायद सीमाप्रान्त की ओर लीगी नेता दलबल सहित पिले हुए जान पड़ते हैं। खबर में सचाई भी हो सकती है क्योंकि मिस्टर जिन्ना पाकिस्तान के फेर-फार में मिस्र आदि भी हो ही आये हैं। लेकिन इस कथित पाकिस्तान की खोपड़ी पर सोवियट रूस जो जमकर बैठा हुआ है, वह कहाँ जायगा? इसके सिवा, टर्की, मिस्र, अरब, ईरान, ईराक और अफगानिस्तान क्या अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता छोड़कर पाकिस्तान दलदल में अपने हाथ-पर फँसायेंगे? क्योंकि कौन नहीं जानता कि मिस्टर जिन्ना और उनकी मुस्लिम लीग ब्रिटेन की पिछलग्गू हैं? फिर सोवियट रूस भी आँख में पट्टी नहीं बाँधे है, वह भी ताक-झाँक में लगा है। लँगड़ा पाकिस्तान पंजाब और बंगाल में कायम हो सकता है, इसके आगे पाकिस्तान ने कदम बढ़ाया और मामला खटाई में पड़ा।

* * *

ओ० टी० रेलवे में आज-कल भयंकर चोरियाँ बहुत हो रही हैं। डिब्बों में माल लाद तो दिया जाता है लेकिन असली जगह पहुँचते-पहुँचते उसके तीन-तेरह होने की नौबत आ जाती है। बात यह है कि ओ० टी० आर० है भी मजेदार रेलवे। चढ़ते-उतरते, खाते-पीते, गाते-बजाते चले जाइए और वापस भी आ जाइए, बड़े आराम के साथ, पूरी छकड़ा-गाड़ी है। इसके सिवा चौर्य-कला-विशारद भी जानते हैं कि ओ० टी० आर० देखने में छकड़ागाड़ी है लेकिन आमदनी के अनुसार इसका पेट लंबा है। अपने राम तो सिर्फ यह जानना चाहते हैं कि इस रेलवे का भी भारत में कोई राजी-साथी है या नहीं? हाँ लावारिस रेलवे यह नहीं है, इतना तो ध्रुव सत्य है।

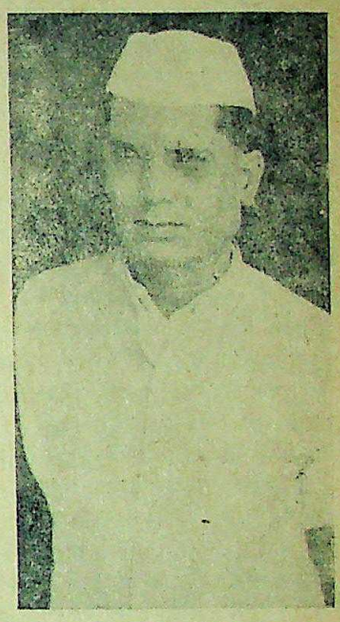

सुप्रसिद्ध कांग्रेस समाजवादी नेता श्री जयप्रकाशनारायण अब अहिंसात्मक दृष्टि से समाजवादी क्रांति का आन्दोलन कर रहे हैं।

* * *

सीमाप्रान्त का जनमत-संग्रह फौजी अफसरों तथा फौजों की देख-रेख में हो रहा है। जनमत-संग्रह के लिए वाकई यह योजना बड़ी ही नायाब है। बात यह है कि वह सीमाप्रान्त है, संयक्त-प्रान्त या बिहार नहीं। लोहा से लोहा बजने की बात है। बादशाह खान कहते हैं कि पठान पठानिस्तान कायम करना चाहते हैं और मुस्लिम लीगी पाकिस्तान। और यह भी मानी हुई बात है कि अँगरेज पाकिस्तान के हिमायती भी हैं। इसके सिवा सीमाप्रान्त में इस वक्त कांग्रेस-मंत्रिमंडल कायम है, बादशाह खान भी गाँवों के दौरे में पिल पड़े थे, इसलिए पाकिस्तान के लिए संभव है खतरा उत्पन्न होता। इसीलिए अँगरेज बहादुरों ने फौजी इन्तजाम वहाँ किया है। उम्मीद है कि अँगरेजों के फौजी इन्तजाम से सीमाप्रान्त पाकिस्तान आने लायक बन जायगा। ऐसे सुसुंदर जनमत-संग्रह के लिए लार्ड माउंटबेटेन बधाई के पात्र हैं।

* * *

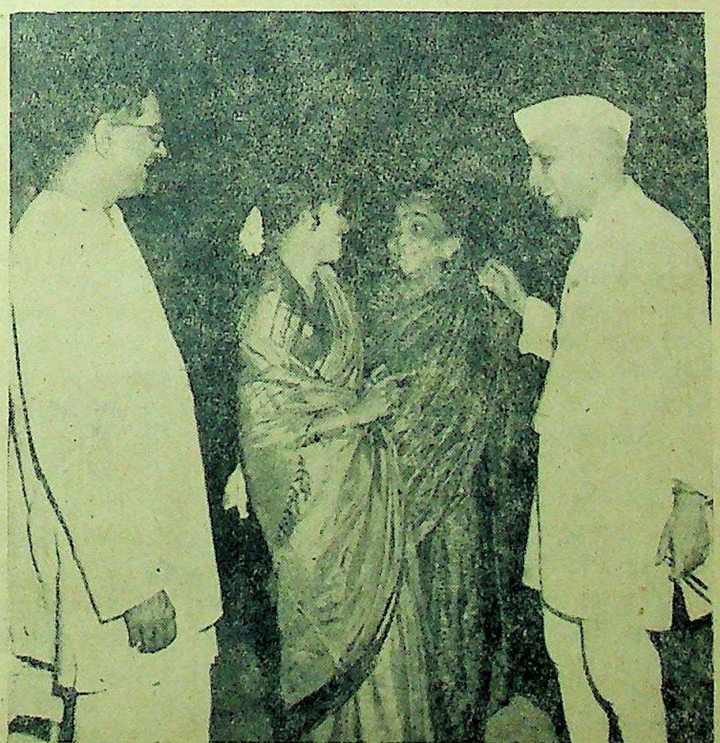

पंडित जवाहरलाल नेहरू और श्रीमती सरोजिनी नायडू दक्षिण भारत की प्रसिद्ध कला विशारदा श्रीमती सुब्बालक्ष्मी से बातें कर रही हैं जिन्होंने 'भक्त मीरा' फिल्म का निर्माण किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

१५ अगस्त भी दूर नहीं है

ब्रिटिश सरकार भारत छोड़ने की अपनी प्रतिज्ञा को कार्यान्वित करने जा रही है। आगामी १५ अगस्त को भारत दो स्वतंत्र राज्यों में विभाजित हो जायगा। ब्रिटिश पार्लियामेंट में भारतीय स्वतंत्रता का बिल पेश हो गया है और उसके पास होने में किंचित्मात्र भी सन्देह नहीं है। पर, आश्चर्य यह है कि ब्रिटेन के जो कट्टरपंथी भारतीय स्वतंत्रता के सदा से प्रबल विरोधी रहे हैं, वही आज मौन होकर उस स्वतंत्रता को क्यों स्वीकार करते जा रहे हैं? इसमें कुछ रहस्य भी हो सकता है। पर, उस रहस्य के लिए हम इस वक्त उतने चिन्तित नहीं हैं जितना कि नये स्वतंत्रता-विधान के स्वीकृत हो जाने से। नये बिल के स्वीकृत हो जाने पर १५ अगस्त से भारत के अन्दर दो स्वतंत्र उपनिवेश स्थापित हो जायेंगे। जिनका नाम हिन्दुस्तान और पाकिस्तान होगा। हिन्दुस्तान में वह प्रदेश होंगे जो ब्रिटिश भारत की सीमा के अन्दर अपनी व्यवस्थापिका सभाओं और सर्वप्रिय जनमत संग्रह के निर्णयों द्वारा शामिल होंगे। इसके प्रतिकूल जो प्रदेश हिन्दुस्तान में शामिल नहीं होना चाहेंगे, वह पाकिस्तान में रहेंगे। इन स्वतंत्र उपनिवेशों की वैधानिक सभाएँ जो विधान बनायेंगी वह उस क्षेत्र के म्युनिसिपल और देहाती क्षेत्रों में लागू होगा।

हाँ, पार्लियामेंट में पेश होनेवाले नये विधान में इस बात की कहीं भी चर्चा नहीं की गई कि हिन्दुस्तान अथवा पाकिस्तान कब ब्रिटेन से सम्बन्ध-विच्छेद करेंगे? ब्रिटिश प्रधान मंत्री और दूसरे मंत्रियों की घोषणाओं से यह आभास अवश्य मिलता है कि हिन्दुस्तान अथवा पाकिस्तान को अन्य उपनिवेशों की तरह ब्रिटिश साम्राज्य में रहने अथवा अलग हो जाने का अधिकार रहेगा। दोनों उपनिवेश यदि चाहें तो अपनी विधान सभाओं अथवा व्यवस्थापिका सभाओं द्वारा निर्णय करके अलग हो सकते हैं। दोनों राज्यों के लिए एक गवर्नर जनरल होगा जो सम्राट् की ओर से नियुक्त किया जायगा। ज्योंही दोनों राज्यों की विधान सभायें अपना अपना विधान बना लेंगी, उस समय कुछ हेर-फेर हो सकता है और यह संभव है कि एक ही गवर्नर जनरल दोनों राज्यों का कार्य-भार सँभाले रहें। हाँ, गवर्नर जनरल की अब वह शक्ति न रहेगी जिससे किसी बिल को पास होते हुए भी रद्द कर सके। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि अब गवर्नर जनरल दोनों राज्यों के सर्वप्रिय मंत्रिमंडलों के द्वारा राज्यकाज चलायेगा। इन परिवर्तनों के साथ ही यह भी स्पष्ट हो जाता है कि अब सम्राट् भारत के दोनों राज्यों के 'सम्राट्' न रह जायेंगे और न उन्हें राजकीय ढंग की उपाधियाँ ही दी जायेंगी।

१५ अगस्त से ब्रिटिश सरकार उन सीमाओं का उत्तरदायित्व भी न [illegible] जो ब्रिटिश भारत के अन्दर हैं। इस [illegible] तात्पर्य यह नहीं कि साम्राज्य से जिनका सम्बन्ध बना है उनके सम्बन्ध में भी ब्रिटिश सरकार मौन रहेगी। जब तक यह राज्य ब्रिटिश कामनवेल्थ (साम्राज्य) में रहेंगे तब तक इँगलैण्ड के राजा का शासन माना जायगा। यहाँ के रहने-वाले इँगलैण्ड के सम्राट् की प्रजा रहेंगे: यह वैसा ही सम्बन्ध है जैसा कि अन्य उपनिवेशों में आज भी है। फिर भी दोनों राज्य विधान-परिषद् अथवा व्यवस्थापिका सभाओं द्वारा स्थान, निवास-स्थान तथा रहने आदि अन्य मामले और अन्तरंग विधान को बनाने में स्वतंत्र रहेंगे। हाँ, १५ अगस्त तक गवर्नर-जनरल और ब्रिटिश सरकार पर शासन की पूरी जिम्मेदारी है। १५ अगस्त के बाद भी जब तक विधान-परिषदें अपना कार्य पूर्ण न कर लेंगी तब तक ब्रिटिश सरकार और ब्रिटिश पार्लियामेंट का उत्तरदायित्व गवर्नर-जनरल में निहित होगा। गवर्नर जनरल के ऐसे अधिकार को सम्राट् के अधिकार से कम नहीं कहा जा सकता।

भारतीय स्वतंत्रता-बिल से रियासतों और सीमावर्ती क्षेत्रों में रहनेवाली जातियों को भी काफी प्रोत्साहन मिलता है। यद्यपि लार्ड लिस्टोवल, भारत-मंत्री ने घोषित करते हुए कहा है कि हम रियासतों को ऐसी घोषणाओं के लिए प्रोत्साहित न करेंगे, जिनसे भारतीय संघ अथवा पाकिस्तान में संघर्ष की सम्भावना हो। भारतीय रियासतों को दो विधान-परिषदों में से किसी के साथ रहना ही चाहिए। इसके लिए उन्हें स्वतंत्रता होगी; परन्तु उन्हें इन दोनों विधान-परिषदों के बाहर रहने की गुंजाइश नहीं है। ऐसी दशा में भी बिल में रियासतों को जो आश्वासन मिले हैं, वे उन्हें दोनों से अलग रहने की ओर संकेत करते हैं। मंत्रिदल की १२ और १६ मई की घोषणा में भारत का एक मानचित्र अंकित करती है, किन्तु मंत्रिदल के इँगलैण्ड वापस जाते ही ब्रिटिश प्रधान मंत्री और भारत-मंत्री की घोषणाओं में क्षण क्षण पर परिवर्तन होता रहा। विशेषाधिकारों के कम करने की भी चर्चा थी, किन्तु स्वतंत्रता बिल में उन रियासतों को चुंगी यातायात, पोस्ट और टेलीफोन आदि में केन्द्र अथवा उपनिवेशों के आधीन रक्खा गया है। साथ ही उन रियासतों की मैत्री अथवा सन्धिवार्ता के साथ। भला कौन सी रियासतें इस विधान की स्वीकृति पर मुहर लगा सकती हैं? हैदराबाद और ट्रावनकोर अभी से अपनी स्वतंत्रता घोषित कर रही हैं। १५ अगस्त तक तो उनमें क्या से क्या परिवर्तन हो सकता है? हाँ, यह निसन्देह कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता बिल में किसी भी राज्य की डोमिनियन पद (औपनिवेशिक स्वराज्य पद, देने की चर्चा नहीं की गई है। इस पर भी इन रियासतों को स्वतंत्रता बिल से क्या दिलचस्पी हो सकती है?

देशी राज्यों की तरह सीमावर्ती जातियों को भी अँगरेजों ने आश्वासन दे रक्खा है। सन् १९३५ के इंडिया ऐक्ट में जिन जातियों को टाइबल एरिया (सीमावर्ती क्षेत्रों की जातियाँ) कहा गया है। यह जातियाँ अपनी सीमाओं की विधान-परिषद् में यदि चाहें तो सम्मिलित हो सकती हैं; परन्तु उसके अन्दर उनकी स्वतंत्रता का कोई विधान नहीं है। इस समस्या को खुला छोड़ दिया गया है, जिसे हिन्दुस्तान अथवा पाकिस्तान हल करेंगे। इसके अतिरिक्त इन राज्यों की स्वतंत्रता का प्रश्न भी है। मिस्टर जिन्ना तो ब्रिटिश कामनवेल्थ (साम्राज्य) में रहना पसन्द करते हैं। शेष भारत की बात तो पाकिस्तान के बिलकुल प्रतिकूल है। भारतीय यूनियन की विधान-परिषद् में भारत को एक सार्वभौमिक प्रजातंत्र स्वीकार किया गया है। इस पर परिषद् ने सर्वसम्मति की मुहर लगा दी थी। १५ अगस्त दूर नहीं है। ज्यों ही वह बिल विधान बनकर सामने आयेगा, हिन्दुस्तान की विधान परिषद् ब्रिटिश शासन को स्वीकार नहीं कर सकेगी। पर पाकिस्तान की क्या नीति होगी? यह वैसी ही समस्या है जैसा कि अँगरेजों के भारत छोड़ने की प्रतिज्ञा के खोखलेपन की। देखना है १५ अगस्त किस रूप में सामने आता है। स्वतंत्रता बिल भारत को स्वतंत्रता देता है, अथवा भारत को टुकड़ों में बाँट-कर मिस्र से लेकर इण्डोनेशिया तक खण्डित होनेवाले कितने ही राष्ट्रों की गुलामी की शृंखला में जोड़ता है? हिन्दुस्तान की आँखें स्वतंत्रता की घोषणाओं के बावजूद भी लन्दन ह्वाइटहाल की ओर लगी है, ह्वाइट हाल १५ अगस्त को कौन से करिश्मे दिखलाता है, यही देखना बाकी है। साथ ही यह भी देखना है कि स्वतंत्रता बिल कौन-सा रूप धारण करता है? लंदन का ह्वाइटहाल तो वह गिरगिट है जो रंग बदलने में बड़ा निपुण है, साथ ही ब्रिटिश घोषणाओं के स्पष्टीकरण में अपना सानी नहीं रखता। भारतीय स्वतंत्रता बिल में जो दोष हैं, देखना है ब्रिटिश सरकार उसे दूर करती है अथवा स्पष्टीकरण के द्वारा उन्हें बहाल रखती है?

* * *

प्रान्तीय गवर्नरों की नियुक्तियाँ

वह दिन दूर नहीं है जब कि भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य पद प्राप्त हो जायगा। उस समय देश में प्रान्तों के गवर्नरों की नियुक्तियों का प्रश्न सामने आयेगा। केन्द्रीय सरकार यद्यपि गवर्नर-जनरल के मातहत होगी, परन्तु, वह भी एक वैधानिक सलाहकार के रूप में, जैसा कि अन्य उपनिवेशों में है। गवर्नर-जनरल, ब्रिटिश साम्राज्य का प्रतिनिधि होगा और प्रान्त के गवर्नर उपनिवेश के प्रतिनिधि होंगे। ऐसी स्थिति में गवर्नरों की नियुक्ति के संबंध में इस समय एक वाद-विवाद उठ खड़ा हुआ है। गवर्नरों की नियुक्तियाँ अभी तक ब्रिटिश मंत्रिमंडल करता आया है, परन्तु अब जब कि शासन-सत्ता भारतीयों के हाथ में आ रही है क्या गवर्नरों की नियुक्तियाँ अब भी ह्वाइट हाल से होती रहेंगी? अब न तो गवर्नर-जनरल ब्रिटिश सरकार का एजेण्ट होगा और न गवर्नर हो। ऐसी स्थिति में वह स्वराज्य-प्राप्त उपनिवेश के प्रधान मंत्री की राय से नियुक्त होंगे। उनकी नियुक्ति में [illegible] प्रधान मंत्री अथवा ब्रिटिश मंत्रि[illegible] का हाथ नहीं रहेगा। फिर गवर्नरों [illegible] नियुक्ति किस प्रकार होगी [illegible] प्रश्न है? यदि गवर्नरों का किसी [illegible] का व्यक्तिगत उत्तरदायित्व हो[illegible] उन्हें प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से [illegible] कर नियुक्त करना है। ऐसे चुनाव [illegible] लिए कई प्रकार के विधान हमारे [illegible] हैं, संयक्तराज्य अमरीका में [illegible] की स्थिति प्रान्त के प्रधान मंत्री की [illegible] है। वह जनता द्वारा चुना जाता [illegible] वह अपने शासन-काल तक के लिए [illegible] चल रहता है। उसमें किसी प्रकार [illegible] अविश्वास नहीं किया जा सकता। [illegible] मातहत कार्य करनेवालों की वह नि[illegible] करता है। विभागों के बड़े अफसरों [illegible] नियुक्ति अथवा सीधा सम्बन्ध गवर्नर [illegible] रहता है। परन्तु भारतवर्ष में वह [illegible] अनुकूल न होगी क्योंकि हमारे वैधा[illegible] विशेषज्ञ मंत्रिमंडल के सम्बन्ध में [illegible] का विधान लागू करना चाहते हैं। [illegible] लिए गवनर का चनाव--चाहे वह [illegible] हो अथवा अप्रत्यक्ष--होना बहुत [illegible] श्यक है।

संयक्तराज्य अमरीका में [illegible] गवर्नर ही सारे उत्तरदायित्व का [illegible] वहन करता है। यदि भारत में [illegible] पद्धति प्रयोग में लाई गई तो [illegible] बड़ी आलोचना हो सकती है और [illegible] चना का होना स्वाभाविक ही है। [illegible] व्यक्ति के ऊपर एक समूचे प्रान्त [illegible] उत्तरदायित्व दे देना कितना हानिकर [illegible] यह अनुमानतः सिद्ध होता है। फिर [illegible] गलती के पीछे क्यों पड़ा जाय? इस [illegible] प्रश्न उठता है कि क्या गवर्नर की नि[illegible] उपनिवेश के प्रधान मंत्री के हाथ में [illegible] कनाडा में प्रान्त का प्रधान लेफ्टि[illegible] गवर्नर होता है जिसको राज्य का प्र[illegible] मंत्री नियुक्त करता है। आस्ट्रेलिया [illegible] एक औपनिवेशिक स्वराज्यप्राप्त [illegible] है। वहाँ के गवर्नर उस देश की प्रा[illegible] सरकारों के प्रधान मंत्रियों द्वारा नाम[illegible] होते हैं। कनाडा और आस्ट्रेलिया [illegible] बहुत कुछ अन्तर हो गया है। इस [illegible] ब्रिटेन भारत को शासन-सत्ता सौंप [illegible] है, औपनिवेशिक स्वराज्यप्राप्त सरकारें [illegible] अपने अपने राज्य में शीघ्र ही स्था[illegible] होंगी उस समय प्रान्तों को गवर्नर [illegible] की धुन सवार हो सकती है। इस [illegible] यह आवश्यक है कि एक सुदृढ़ के[illegible] सरकार बनाने के लिए गवर्नर की नि[illegible] कनाडा के आधार पर केन्द्रीय प्र[illegible] मंत्री द्वारा हो। वह गवर्नर प्रान्त [illegible] उत्तरदायी व्यक्ति होगा।

इस प्रकार की स्थिति पर वि[illegible] करते हुए यह कहना अनुपयुक्त है [illegible] गवर्नर को ऊँचा राजनीतिज्ञ होना [illegible] श्यक नहीं है। यह विचार भ्रमोत्पा[illegible] है। राष्ट्रीय अड़चनों पर गवर्नर ही [illegible] ऐसा व्यक्ति हो जो मामले का निर्णय [illegible] सके। उदाहरण के लिए यदि किसी [illegible] मंडल में सभा का विश्वास घट गया [illegible] उस समय गवर्नर ही एक ऐसा [illegible] जो दोनों दलों का विश्वास प्राप्त कर [illegible] है। सरकारी कार्यों का सूत्रपात [illegible] वाला गवर्नर के सिवा कौन हो [illegible]

(शेष पृष्ठ १८ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटेन की ३ जून की घोषणा

क्या भारतीय स्वाधीनता की समस्या हल होगी ही ?

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

ब्रिटेन की ३ जून की घोषणा कैसी रही ? क्या उस घोषणा तथा पार्लामेंट में भारतीय औपनिवेशिक स्वराज्य-सम्बन्धी जो बिल पेश है, उसके स्वीकार हो जाने पर वास्तविक स्वतन्त्रता भारत को प्राप्त हो जायेगी ? यही आज की समस्या है। इस लेख में लेखक ने अपने दृष्टिकोण से इस सम्बन्ध में विस्तृत प्रकाश डाला है, जो पठनीय तथा विचारणीय है।

...कांग्रेस महासमिति ने माउण्टबेटेन-... की ३ जून की योजना पर:—

	मत
...के पक्ष में	१५७
...के विरोध में	२९
	३२
...में होते हुए जो मतदान के समय उपस्थित नहीं हुए	३२
	२५०

...तिहाई अधिक मतों से अपनी ...की मोहर लगा दी। यह एक ...संयोग है कि चर्चिल, कायदे ...जिन्ना और नेहरू सब एक राय ...इससे स्वभावतः प्रश्न उठता है, ...वस्तुतः ३ जून को घोषित भारतीय ...की योजना भारतीय स्वाधीनता ...आर्डर है—अधिकार-पत्र है ? ...भी विक्टोरिया की घोषणा के ...भारतीय दासता का पट्टा है ? ...पार्श्व-भूमि—प्रश्न यह है कि ...किन परिस्थितियों और वाता-...में तैयार की गई ? गांधी जी ने ...है कि कांग्रेस कार्य-समिति ने इस ...को स्वीकार करके गलती की है। ...ही गांधी जी कहते हैं कि ये ...के पुराने सेवक हैं; कांग्रेस को ...बनाया है; अतः इनको इस बार ...कर दो, और उसके प्रस्ताव को ...करके उसकी इज्जत, उसके ...और उसकी प्रतिष्ठा की रक्षा ...। प्रश्न उत्पन्न होता है, इसकी ...कता क्यों उत्पन्न हुई ? सरदार ...ने इसका जवाब दिया है कि यदि ...योजना स्वीकार नहीं की जाती, तो ...हमने जो प्राप्त किया है, उसके ...जाने की आशंका थी, अतः ...समुत्पन्ने अर्द्धं त्यजति पण्डितः" ...३ जून की योजना को स्वी-...कर लिया है। सरदार पटेल ने यह ...कि पिछले नौ मास से शासन-...की तहाँ ठप पड़ी है, चपरासी ...लियाकतअली खाँ तक सब ...लीगी हैं और वे कुछ करने ...। केन्द्रीय गवर्नमेंट की सत्ता ...नहीं है। दिल्ली से २५ मील दूर ...जिले में मेवे उपद्रव कर रहे ...पाट कर रहे हैं, गाँवों में आग ...रहे हैं, वहाँ की मुसलमान पुलिस ...रियों का साथ दे रही है, पर ...गवर्नमेंट निर्दोष और निःशस्त्र ...अहीरों और गूजरों को बचाने के ...नहीं कर सकती। इस अवस्था ...क्या किया जाय। श्री जवाहर-...नेहरू ने रावलपिण्डी में घटित अमानुषिक काण्डों का जिक्र किया, जहाँ जीते-जी लोग तेल की खौलती कड़ाही में भून दिये गये; स्त्रियाँ अपने सतीत्व की रक्षा के लिए कुएँ में कूद पड़ीं, बच्चों की बोटी-बोटी काट दी गई; अतः प्रश्न यह था कि निर्दोष नर-नारियाँ और बच्चों की रक्षा के लिए क्या इसको स्वीकार न करें ? आचार्य कृपलानी ने कहा कि जिन जिलों में शासन-सूत्र अँगरेजों के हाथों में है, वहाँ दंगा शान्त नहीं होता और बढ़ता जाता है। गांधी जी भी आज की हालत में कोई उपाय बताने में असमर्थ हैं, अतः कांग्रेस के पास ३ जून की योजना को स्वीकार करने के अलावा और कोई मार्ग नहीं रहा है। कांग्रेस ने डा० चोइथराम गिडवानी के शब्दों में लीग द्वारा संगठित गुण्डापन के आगे आत्म-समर्पण कर दिया ! श्रद्धेय टण्डन जी के शब्दों में कांग्रेस ने अपने आदर्श, जीवन-सूत्र और अपने जीवन भर के सिद्धान्तों की बलि दे दी ! कायदे आजम को प्रसन्न करने के लिए वे क्या प्रसन्न हुए ? क्या दंगे शान्त हुए ? क्या निर्दोष नर-नारियों का वध बन्द हुआ ? क्या बमों का धुआँ, जलते घरों की आग की लपटें शान्त हुईं ?

क्या यह शान्ति है ?—४ जून को लार्ड माउण्टबेटेन ने प्रेस-कान्फ्रेंस बुलाई थी। उसमें वाइसराय ने कहा था—"उनके मन्त्रिमंडल के प्रत्येक व्यक्ति ने, वैयक्तिक रूप से और सामूहिक रूप से, अपनी जबर्दस्त इच्छा प्रकट की है कि और अधिक रक्तपात न हो, इसके लिए भारत की सशस्त्र सेना का इस्तेमाल किया जाय।" समाचार में आगे कहा गया है—"गृह-सदस्य सरदार वल्लभ-भाई पटेल से सलाह करने के बाद वाइसराय ने प्रकट किया कि अन्तरिम गवर्नमेंट ने हाल ही में सर्वसम्मति से निश्चय किया है कि अब हम और हिंसा या हड़ताल को सहन न करेंगे।" इस पर एक पत्रकार ने पूछा—क्या इसका यह मतलब है कि अब तक दंगे सरकार की इच्छा से हुए हैं ? वाइसराय ने जवाब दिया जहाँ तक सचाई का सम्बन्ध है, सच यही है।

पर यह कोई नई बात नहीं है। आयरलैण्ड में यही हुआ। ३जून की घोषणा की आलोचना करते हुए डबलिन के आयरिशपत्र "आयरिश साइन्स" ने यही लिखा कि आयरलैण्ड का विभाजन करने से पहले डबलिन आदि शहरों में ब्रिटिश सरकार के संकेत से भीषण दंगे हुए। इन दंगों ने कास्प्रेव और ग्रिफिथ जैसे नेताओं को अलस्टर को शेष आयरलैण्ड से अलग रखना मानने को विवश कर दिया। भारत में भी उसकी पुनरावृत्ति हुई है। अलस्टर के अलग होने से आयर में शान्ति हो गई, पर क्या भारत में भी शान्ति हुई ? इसका उत्तर निम्न समाचारों से मिल जाता है—

१—लाहौर में एक अस्पताल पर बम फेंका गया—४६ की जान खतरे में है।

२—मोटर-बस में चलते हुए एक आदमी के दिन-दहाड़े छुरा भोंका गया।

३—अमृतसर में ६ घर नष्ट हो गये; चाकू और बन्दूकों का खुलकर इस्तेमाल किया गया; बमों के फटने के समाचार आये हैं।

४—कानपुर में नवाबगंज के एक मुहल्ले में तलाशी लेने पर २५ बम बरामद हुए।

श्री नेहरू ने कहा था कि निर्दोष नागरिकों की हत्या से देश का विभाजन अधिक अच्छा है। पर क्या भारत का विभाजन होने से देश में शान्ति हुई ? यह न भूलना चाहिए कि मुस्लिम लीग का २९ जुलाई १९४६ का 'सीधी लड़ाई' का प्रस्ताव 'डिमास्थनीज की तलवार' के समान आज भी भारत के राजनीतिक शरीर पर लटक रही है। वह प्रस्ताव अभी लीग ने लौटाया नहीं है। लीग द्वारा लड़ाई की घोषणा लौटाये बगैर देश के विभाजन के पक्ष में सम्मति देना उचित हुआ है।

समस्या हल नहीं हुई—नेता जी सुभाषचन्द्र बोस ने बर्मा में एक स्थान पर बोलते हुए यह भविष्यवाणी की थी—मुझे निश्चय है कि यदि पाकिस्तान स्वीकार किया गया, तो इससे हमारी समस्या हल न होगी। लीग अँगरेजों से कभी न लड़ेगी, जैसे हम लड़ते हैं। वह जो कुछ चाहती है वह यह है कि भारत का हिन्दू और मुस्लिम भागों में विभाजन हो जाय, जो कि ब्रिटिश-प्रभाव में रहेगा। इसलिए एक गुलाम भारत की जगह में चार मुस्लिम राज्य होंगे, जो ब्रिटेन के पक्षपाती और उसके सहायक होंगे।...अँगरेजों के साथ किसी तरह का समझौता न होना चाहिए। हमारी दैवीय सत्ता का अंग-भंग न होना चाहिए। क्या नेता जी की यह भविष्यवाणी सच सिद्ध नहीं हो रही है ? भारत के विभाजन से साम्प्रदायिक समस्या का हल हो गया ? १९४१ की जन-गणना के अनुसार—

	मुसलमान	सवर्ण हिन्दू	हरिजन
पश्चिमी पंजाब	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	(७३ प्रति०)	(१२ प्रति०)	

पंडित जवाहरलाल नेहरू, वाइसराय की कार्य-कारिणी के उप-सभापति।

	सिक्ख	ईसाई व अन्य	हरिजन
	१६८३८५५	४२५०८३	३३६९४३
	(१० प्रति०)	(३ प्रति०)	(२ प्रति०)
पूर्वीय पंजाब		३८५३५७३	४३६५४०१
		(३२ प्रति०)	(३७ प्रति०)
	२०७३५४६	६०९४५	१२५५३७७
	(१८ प्रति०)	(२ प्रति०)	(११ प्रति०)

बंगाल ७७००० वर्गमील का प्रदेश है। इसमें २५०५९०२४ हिन्दू और ३३००५४३४ मुसलमान बसते हैं। इसमें से पश्चिमी बंगाल में २४००० वर्गमील और आबादी २½ करोड़ होगी और इसमें ८० लाख मुसलमान होंगे। इसका अर्थ है कि पश्चिमी बंगाल और पूर्वीय पंजाब में मुसलमान और गैर-मुस्लिम के बीच अनुपात क्रमशः ४:१५ और ४:८ का होगा ! इसके मुकाबले पूर्वीय बंगाल और पश्चिमी पंजाब में गैर मुस्लिम और मुसलमान के बीच अनुपात क्रमशः १२:२९ और ५:१२ का होगा। इस प्रकार देश के विभाजन से साम्प्रदायिक समस्या हल नहीं होगी, बल्कि इसके विरुद्ध और अधिक विकट होगी। क्योंकि जो लोग इस विभाजन के कारण अपने सहधर्मियों से अलग हो गये हैं, वे असन्तुष्ट रहेंगे और उनको असन्तोष किसी न किसी रूप में अवश्य प्रकट होगा। इसके अतिरिक्त माउण्टबेटेन-एटली-योजना से कोई पक्ष सन्तुष्ट नहीं है। लीग ने इस आशा के साथ इसको स्वीकार किया है कि यह सारे भारत को इसको अड्डा और आधार बनाकर विजय कर सकेगी और मुगल साम्राज्य के समान अपना साम्राज्य पुनः स्थापित कर सकेगी। कांग्रेस ने इस आशा से स्वीकार किया है कि एक दिन भारत पुनः संयुक्त हो जायगा। टण्डन जी ने झाँसी में छात्रों के सामने

शेष पृष्ठ १२ पर देखिए

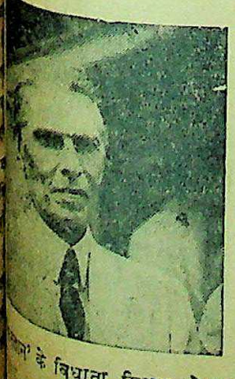

...के विधाता मिस्टर मोहम्मद-अली जिन्ना।

सरदार बल्देवसिंह भारत-सरकार के रक्षा-सदस्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तपस्वी साधु धर्मानंद कौसाम्बी

भारत को एक महान् और दार्शनिक विभूति का स्वर्गवास

लेखक, श्री उमाशंकर शुक्ल, वर्धा

साधु धर्मानंद कौसाम्बी इस असार संसार से विदा हो गये हैं किन्तु उनके त्याग और तपस्या की अनुभूतियाँ आज भी विद्यमान हैं। इस लेख में विद्वान् लेखक ने साधु धर्मानंद कौसाम्बी के आध्यात्मिक तथा तपस्वी-जीवन पर सुन्दर प्रकाश डाला है जो पठनीय, ज्ञातव्य तथा जानकारी से पूर्ण है।

आज से ठीक दस साल पहले आचार्य धर्मानन्द जी कौसांबी का नाम मैंने सुना था और चार माह पूर्व सेवाग्राम आश्रम में उनके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। यों तो फिर बाद में मैं उनके पास घंटों बैठा और विभिन्न विषयों पर उनकी अमृतवाणी सुनने का अवसर मिला। दस साल पहले अमरावती में सार्वदेशिक सत्य समाज-सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन हुआ था और उसके अध्यक्ष बनाये गये थे आचार्य धर्मानन्द जी। और यों तो बाद में उनके बारे में कभी कभी समाचारपत्रों में कुछ छपा देखा करता था। समाचारपत्रों में भी नाम बहुत कम आता था। अकसर लोगों की यह धारणा बन जाया करती है कि जिसका नाम अखबारों में खूब आवे वह बड़ा भारी कार्यकर्ता या नेता माना जाता है और बहुत से लोग इस बात की कोशिश करते हैं कि येनकेन प्रकारेण उनका नाम अखबारों में आवे और लोग उन्हें जानने लग जायँ। कई व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो अपने नाम की तनिक भी पब्लिसिटी कराना पसन्द नहीं करते। वही बात मैंने धर्मानन्द जी के बारे में पाई। जब मैं उनसे पहली बार सेवाग्राम-आश्रम में मिला तो मालूम हुआ कि वे बीमार हैं और अपना इलाज करवाने आये हुए हैं। मैंने एक पत्रकार के कर्तव्य को पूर्ण करने के लिए उनकी बीमारी की खबर अखबारों को दे दी। फल यह हुआ कि उनके पास ढेरों खत पहुँचने लगे और उन पत्रों में कौसांबी जी के स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता व विस्तृत बातें जानने की उत्सुकता प्रकट होती थी। कुछ पत्रों में कौसांबी जी के प्रति प्यार भी उँडेला गया था। इससे जाना जा सकता है कि भारतवासी उन्हें कितना चाहते थे। फिर तो मुझे पता है कि उनके पास अन्तिम समय तक बराबर पत्र आते रहे और जब मैंने उन पर एक स्केच लिखकर छपवाया तो भेंट होने पर कौसांबी जी ने आत्मीयता के शब्दों में कहा कि मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे बारे में कुछ न लिखें, लोगों को फजूल चिन्ता हो जाती है। आप मेरी मृत्यु के बाद ही जो कुछ लिखना चाहें, लिखें। आज जब उनके वे शब्द याद आते हैं तो आँखों में आँसू छलछला आते हैं।

* * *

एक दिन मैं सेवाग्राम-आश्रम कुछ काम से गया था। बापू की नई कुटिया में जिसे जमनालाल जी ने अपने रहने के लिए बनवाया था—आचार्य काका कालेलकर किसी बूढ़े से बातें कर रहे थे। बूढ़ा व्यक्ति लेटे-लेटे बातें कर रहा था। मैं वहीं पास में करीब पन्द्रह गज़ के फासले से यह सब कुछ देख रहा था और इस बात की फिक्र में था कि अच्छा होता यह मालूम हो जाता कि यह बूढ़ा व्यक्ति कौन है? सामने से महात्मा जी के प्राइवेट सेक्रेटरी श्री प्यारेलाल की बहन डा० सुशीला नायर आ रही थीं। मैंने उनसे पूछा कि आचार्य काका साहब किससे बातें कर रहे हैं। सुशीला बेन ने कहा कि आप नहीं जानते—काका साहब बौद्ध-धर्म के सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य धर्मानन्द कौसांबी से बातें कर रहे हैं। मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ कि आज इस विभूति के दर्शन किये जिसका कि नाम मैं दस वर्षों से सुनता चला आ रहा हूँ। शाम हो गई थी—काका साहब और कौसांबी जी की बात चल रही थी—मैंने बीच में विघ्न देना उचित न समझा। वर्धा लौट आना उचित समझा और दूसरे दिन जाकर मैं उनसे मिला। मुझे याद आता है कि कितने प्यार से वे मुझसे मिले और बातें कीं। मैंने कई प्रश्न उनसे पूछे और सब प्रश्नों का उत्तर उन्होंने दिया। बाद में मैं करीब पाँच-छः बार उनसे मिला और उनके चरणों में बैठकर बहुत कुछ इतना सीखा जितना कि सीखने के लिए दूसरे के पास महीनों लग सकते थे।

* * *

साधु कौसांबी जी को देखकर हमें पुराने ऋषि-मुनियों की याद आ गई। पुराने ऋषि-मुनियों को तो हमें सिर्फ कल्पना का ही सहारा लेना पड़ता है। कौसांबी जी ऋषि तुल्य दिखाई देते थे। कौसांबी जी गौरवर्ण, दुबले-पतले, विशाल मस्तिष्क, बड़ी बड़ी आँखोंवाले एक तेजस्वी पुरुष थे। उनके मुख से एक प्रकार की गुरुता टपकती थी। उनकी मृत्यु आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को हुई है। वे ज्येष्ठ पूर्णिमा को ही महाप्रयाण करनेवाले थे। काका कालेलकर ने बताया है कि कौसांबी जी ने जाने के लिए ज्येष्ठ पूर्णिमा ही तय किया था। पूर्णिमा के दिन मैं उनसे आकर भेंट करूँगा ऐसी उन्हें आशा थी। अर्धरात्रि तक उन्होंने उस दिन मृत्यु की बाट जोही और बाद में सबको सोने के लिए कहा। सबेरे पाँच बजे उन्होंने कहा कि अब तीन-चार घंटे ही रह गये हैं, और प्रतिपदा को मैं उनसे मिला। दस बजे थे। हाथ के इशारों से उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की। मैंने पूछा कि पुत्र और पुत्री को अन्तिम समय देख जाने की आज्ञा है क्या? उन्होंने सीधा नहीं कहा। मैं घंटे भर उनके पास बैठा रहा। पत्र-व्यवहार में उन्होंने लिखा था कि मृत्यु के समय शोक विह्वलता न हो। श्वास रुक गई। वे चले गये।"

उनके निधन से भारत की एक महान् विभूति उठ गई है। कौसांबी जी की इच्छा थी कि उनका देहावसान सेवाग्राम की पुण्य भूमि में हो और इसलिए वे यहाँ आये थे। संसार से मोह छूट गया था और वे चाहते थे कि इससे जल्दी छुटकारा हो जाय। वे यह चाहते थे कि पाण्डवों की तरह वन में जाकर शरीर त्याग किया जाय ताकि उनके लिए किसी को कष्ट न हो। कुछ समय पूर्व युक्त-प्रांत के दोहरीघाट आश्रम में अनशन करके देह त्याग करने का संकल्प किया था। अनशन शुरू भी कर दिया था, पर यह बात गांधी जी को जब मालूम हुई तो उन्होंने ऐसा न करने के लिए उन्हें लिखा। उन्होंने गांधी जी की बात मान ली। वहाँ से वे बम्बई अपनी पुत्री के यहाँ आये। संसार से तो उन्हें वैराग्य हो ही गया था। उनका स्वास्थ्य खराब हो गया था। वे जो कुछ खाते थे, पचता नहीं था। सेवाग्राम में इलाज शुरू हुआ। डा० सुशीला नायर ने उनकी परीक्षा की—अन्य डाक्टरों ने भी उन्हें तपासा। उनका आग्रह था कि कुटुंबी-जन मेरे पास न हों; परन्तु सेवाग्राम के आश्रमवासियों ने उनकी सेवा-शुश्रूषा इतनी की कि कुटुंबियों की कमी महसूस ही नहीं होने दी। मृत्यु के पूर्व बत्तीस दिनों तक उन्होंने कुछ न खाया था। सिर्फ पानी पर रहे थे। दूध पचा नहीं, फलों का रस भी छोड़ दिया गया, भाजी का पानी भी नहीं ले सके—सिर्फ उनका जीवनाधार था पानी। पानी का दूसरा नाम है जीवन। अन्त के तीन दिन तो वे पानी भी नहीं ले सके।

मृत्यु के कुछ दिनों पूर्व उन्होंने बता दिया था कि उनके शरीर की अन्त्येष्टि क्रिया कैसे करना। उन्होंने सूचना दी थी कि मृत्यु के अनन्तर मुख में गंगाजल की दो बूँदें छोड़ना, मेरे लिए प्रार्थना या मंत्र न हो, लाश ढकने के लिए नया वस्त्र काम में न लाया जाय आदि आदि। मृत्यु से बचने के लिए भले-बुरे उपाय करनेवाले लोग इस संसार में असंख्य हैं, मृत्यु की परवाह न कर काम करनेवाले भी कितने ही पर अपना जीवन-कार्य समाप्त होने पर मृत्यु को आमंत्रण देनेवाले बहुत कम मिलेंगे। कौसांबी जी उन व्यक्तियों में से थे जिन्होंने मृत्यु को भी आमंत्रित किया था।

* * *

आपका जन्म ९ अक्टूबर १८७५ को कौसांबी (गोआ) पुर्तगाल राज्य, महाराष्ट्र घराने में हुआ था। तेंतीस वर्ष की अवस्था में भगवान् बुद्ध के चरित्र से प्रभावित होकर उन्हीं की तरह अपनी सहधर्मिणी का त्याग कर उन्हीं की तरह शिक्षाओं की ज्ञान-प्राप्ति के लिए, अपनी जन्मभूमि से प्रस्थान किया। पालि साहित्य के अध्ययन के लिए संस्कृत की गहरी जानकारी अनिवार्य समझकर सबसे पहले ग्वालियर और वहाँ से [illegible] के अन्य छेत्रों में भोजन करते हुए [illegible] डेढ़-दो साल में उन्होंने बड़े परिश्रम संस्कृत, व्याकरण और साहित्य का अध्ययन किया। बाद में आपने भगवान् बुद्ध की जन्मभूमि लुंबिया (नेपाल) की यात्रा इस आशा से कि वहाँ बौद्धधर्म के [illegible] जीवित अवशेष होंगे, किन्तु उनको निराशा हुई। वहाँ से बुद्ध-गया पहुँचे। किसी [illegible] द्वारा उन्हें ज्ञात हुआ कि यदि [illegible] साहित्य का यथार्थ ज्ञान प्राप्त [illegible] चाहें तो सिंहल जायँ। अनेक कष्टों का सामना करते हुए आप सिंहल पहुँचे। कोलम्बो के विद्योदय परिवेण में [illegible] स्थविर सुमंगलाचार्य से आपने [illegible] ग्रहण की और उन्हीं की अधीनता में पालि-ग्रंथों का अभ्यास करना शुरू किया। एक साल के बाद मद्रास आये और वहाँ से वर्मा चले गये। वर्मा-निवास के

शेष पृष्ठ १६ पर

मुझे दाँतों और मुँह में स्वच्छता और ताजगी मालूम होती है जब कि मैं कोलगेट डेण्टल क्रीम इस्तेमाल करती हूँ!

खाने के बाद ही मैं अपने दाँतों को कोलगेट डेण्टल क्रीम से साफ करती हूँ, वह सुनिश्चित करती है कि वे चमकदार और स्वच्छ रहें, मेरे मुँह में ताजगी और सुगन्ध रहता है। इसीलिए मैं अच्छी तरह से जान गई हूँ कि मेरे बाल में विकार न रहेगा, क्योंकि कोलगेट के फेन दाँतों व छेदों के बीच घुसकर भोजन के गन्दगी को दूर करते हैं, क्योंकि यही गन्दगी दाँतों में बदबू का कारण बनी रहती है।

कोलगेट डेण्टल क्रीम—बिना किसी हानि के दाँतों को स्वच्छ करती और दाँतों के ऊपरी भागों और मसूड़ों को चमका देती है। यही कारण है कि मैं इसे नित्यप्रति इस्तेमाल करती हूँ। कि में एक बार नहीं कम से कम दो बार।

COLGATE RIBBON DENTAL CREAM

SOLD

NO BAD BREATH BEHIND HER SPARKLING SMILE!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योरप के बाजार पर अमेरिका

जार्ज मार्शल की योजना को सोवियट रूस ने क्यों अस्वीकार किया ?

लेखक, श्री श्यामबिहारी बिरागी, बी० ए०

पेरिस में होनेवाले चार महान् राष्ट्रों—अमरीका, ब्रिटेन, रूस और फ्रांस—के प्रतिनिधियों की बैठक असफल सिद्ध हो गई। अमरीका योरोप में अपनी आर्थिक योजना कार्यान्वित करना चाहता था किन्तु सोवियट रूस विरोधी था। इस लेख में लेखक ने यह बतलाया है कि अमरीका की क्या नीति थी और सभा क्यों भंग हो गई ? लेख सामयिक और सुन्दर है।

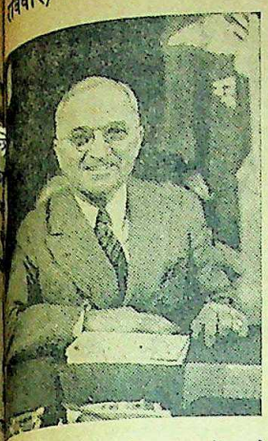

ब्रिटेन के टोरी प्रधान मन्त्री मिस्टर चर्चिल ने योरप संघ का नारा बुलन्द किया है।

...तिद्र मन ने संसार के बाजार को अपने ...कार में रखने की योजना बना ली है। ...अमेरिका के परराष्ट्र सचिव जार्ज ...की योरप को आर्थिक सहायता ...योजना पर विचार करने के लिए ...हाल में रूस, ब्रिटेन और फ्रांस के ...ष्ट्र सचिवों की जो बैठक हुई थी, ...असफल हो गई। ब्रिटेन के परराष्ट्र ...बेविन तथा फ्रांस के परराष्ट्र ...जार्ज बिडल्ट एक राय होकर ...चाहते थे कि मार्शल साहब की योजना ...ली जाय और योरप के सब राष्ट्र ...कर एक संयुक्त योजना आर्थिक ...ना लेने की बनावें और अमेरिका ...प्रदान किये गये इस अवसर से फायदा ...। ब्रिटेन और फ्रांस के परराष्ट्र ...ों ने इस योजना की खुलकर ...की और बहुत कोशिश की कि ...इसे मान ले।

...-योजना के पीछे रहस्य

अमेरिका आज संसार में सबसे बड़ा ...देश है। पिछली लड़ाई ने अमेरिका ...र भी धनी बना दिया है। यह सब ...तरह जानते हैं कि जार्ज मार्शल ...का से जो सहायता देना चाहते ...के पीछे अमेरिका की केवल निःस्वार्थ ...की भावना नहीं है बल्कि उसका ...व्यापारिक दृष्टिकोण भी है। इस ...में मानव-सेवा से प्रभावित हो कोई ...दूसरे राष्ट्रों की सहायता करे, इसे ...प्रमाणित नहीं करता। अतएव ...सही मान लेना मुनासिब नहीं। ...अमेरिका का दृष्टिकोण निःस्वार्थ ...-सेवा है तो वह संसार के अन्य ...की क्यों नहीं सहायता करता? ...सहायता केवल योरप के ही राष्ट्रों में ...सीमित है? चीन, भारत तथा ...के अन्य शोषित राष्ट्रों की आर्थिक अवस्था योरप से कहीं अधिक खराब है। फिर अमेरिका की दया-दृष्टि इन देशों पर क्यों नहीं हो रही है? कारण बहुत कुछ स्पष्ट है। लड़ाई के जमाने में अमेरिका की उत्पादक-शक्ति काफी बढ़ गई थी जिसे लड़ाई के बाद कम करके पूर्व लड़ाई की अवस्था में ले आना बहुत असम्भव है। आँकड़ों से पता चलता है कि प्रतिमास लगभग एक हजार मिलियन डालर का माल बिक नहीं पाता और लगभग इतना ही डालर प्रतिमास अमेरिका के बजट में खर्च से अधिक बच जाता है। इस प्रकार अमेरिका अगर चाहता तो अपने यहाँ जनता पर लगाये गये करों को कम कर देता। इस तरह करने से वहाँ की जनता की खरीदने की शक्ति बढ़ जाती और बढ़े हुए उत्पादन से पैदा हुई परिस्थिति सुधर जाती। परन्तु अमेरिका की नीति तो और देशों से सोना-चाँदी खींचकर अपने देश में ले आने की है। योरप की आर्थिक अवस्था लड़ाई के बाद काफी खराब हो चली है। जार्ज मार्शल की योजना योरप की इस अवस्था से फायदा उठाकर अपने व्यापार को योरप में फैलानें की है। इस योजना के अनुसार यदि योरप के कई राष्ट्र मिलकर अपनी आर्थिक जरूरियातों को यदि अमेरिका के सामने रखेंगे तो वह उन्हें करोड़ों रुपये का सामान दानस्वरूप दे देगा।

रूस के वैदेशिक मन्त्री श्री मोलोटोव इँगलैंड और अमरीका की आँख के काँटा हो रहे हैं।

एक गोली से दो शिकार

दुनिया में व्यापारिक विज्ञापन के कई तरीके हैं। एक तरीका यह भी है कि जिस माल को बेचना हो उसे जनता में मुफ़्त बाँट दिया जाय। आये दिन सड़कों पर मुफ़्त में सिगरेट के डिब्बे बाँटे जाते हैं। चायवाले मुफ़्त में गरम चाय पिला रहे हैं। अमेरिका ने भी अगर इस तरह का एक नया तरीका अख्तियार किया है तो इसमें बुराई ही क्या है? इस तरीके से एक गोली में दो शिकार गिरते हैं। एक तरफ योरप के राष्ट्रों पर अमेरिका का एक जबर्दस्त एहसान हो जाता है और दूसरी ओर जो माल अमेरिका में बनकर रखा हुआ है वह तमाम योरप में बिना मेहनत के बँट जाता है जिससे वहाँ के लोग उन चीजों के कुछ दिनों में आदी हो जायेंगे और भविष्य में उनके अन्दर उन्हीं चीजों को इस्तेमाल करने की लालसा बढ़ जायगी। इस योजना से अमेरिका को एक और फायदा है जिसका व्यापारिक महत्त्व बहुत ज्यादा है। अर्थशास्त्र के नियम के अनुसार यदि खपत से अधिक उत्पादन हो जाता है तो चीजों की कीमत बहुत गिर जाती है। अमेरिका इस परिस्थिति को भी बचाना चाहता है। चीजों की कीमत गिर जाने से अमेरिकन राष्ट्र का बहुत बड़ा नुकसान होगा। अतएव व्यापारिक बुद्धिमानी इसी में है कि कुछ करोड़ रुपयों का नुकसान उठाकर राष्ट्र के अरबों के नुकसान को रोक लिया जाय। व्यापारिक कम्पनियाँ व्यापार बढ़ाने के लिए लाखों रुपये विज्ञापन में फूँक देती हैं। अमेरिका यदि कुछ करोड़ रुपये इसमें खर्च कर देता है तो इसमें उसका बिगड़ता ही क्या है? वास्तव में यह तो उसकी एक बहुत बड़ी व्यापारिक विजय ही है।

मार्शल-योजना से रूस को घबड़ाहट

एक तरफ ब्रिटेन और फ्रांस के परराष्ट्र सचिव मार्शल-योजना को सफल बनाने के लिए तुले हुए हैं और दूसरी ओर रूस के परराष्ट्र सचिव इस योजना को प्लेग की बीमारी समझकर योरप को इससे दूर रखना चाहते हैं। मोलोटोव का कहना है कि इस योजना से योरप के राष्ट्रों में आपसी प्रेम-भाव बढ़ने के बजाय घटेगा क्योंकि कुछ शक्तिशाली राज्य अपनी इच्छा को कमजोर राष्ट्रों पर लादने की कोशिश करेंगे। यदि रूस इस योजना से घबड़ाता है तो इसमें आश्चर्य ही क्या है। पूँजीवाद इस समय अमेरिका में अपनी चरम सीमा पर पहुँचा हुआ है। रुपये के जोर से अमेरिका योरप को खरीदकर पूँजीवाद का एक अखाड़ा बनाना चाहता है और रूस के आधिपत्य को जो योरप में लड़ाई के बाद काफी बढ़ गया है, कम करके साम्यवाद को कमजोर बनाना चाहता है। ब्रिटेन और फ्रांस की भी नीति इस योजना से सफल हो रही है। यही कारण है कि ये दोनों रूस के असहयोग करने पर भी इस योजना को सफल बनाने के लिए योरप के अन्य राष्ट्रों को निमंत्रित कर रहे हैं। ब्रिटेन और फ्रांस प्रतिष्ठित राष्ट्र हैं।

आज वे अपनी प्रतिष्ठा को ताक में रखकर अमेरिका से दान लेने के लिए मुंह फैलाये हैं। किसी राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र से भिक्षास्वरूप दान लेना राष्ट्र की मर्यादा को घटाना है, वहाँ के नागरिकों के स्वाभिमान को मिट्टी में मिलाना है। आज योरप को इस अधोगति पर पहुँचाकर भी ब्रिटेन और फ्रांस की आँख नहीं खुलती। योरप की यह परिस्थिति संसार के सामने पतन का एक ऐसा नमूना है जिसे देखकर मानव-प्रतिष्ठा को भी झुक जाना पड़ रहा है।

...अली ने संयुक्त राष्ट्र-संघ में फिलि... की समस्या को लेकर अँगरेजों की ...नीति का भंडाफोड़ किया है।

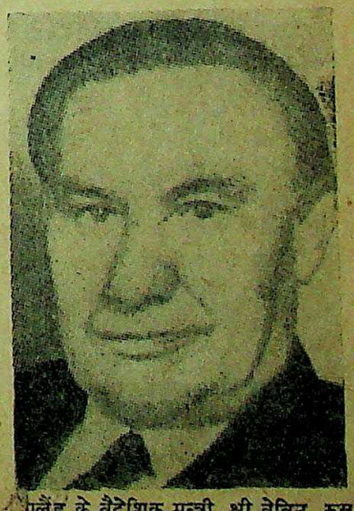

...लैंड के वैदेशिक मन्त्री श्री बेविन, रूस की नीति से परेशान हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

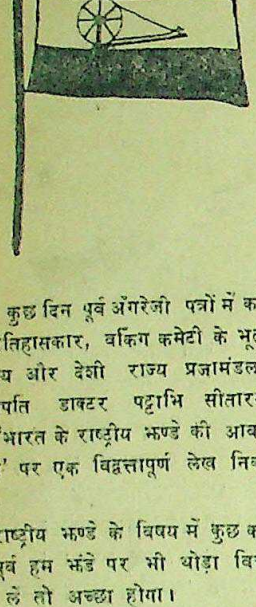

हिन्दुस्तान का राष्ट्रीय झंडा

रंगों के परिवर्तन में राष्ट्रीय दृष्टिकोण की जरूरत है

लेखक, श्री मिथलेश कान्ति

प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्रीय झंडे पर गर्व करता है। भारतीय स्वाधीनता का भी अपना एक राष्ट्रीय तिरंगा झंडा है। किन्तु ब्रिटेन की नई घोषणा तथा राष्ट्र के बँटवारा हो जाने के बाद इस राष्ट्रीय झंडे के रूप-परिवर्तन का प्रश्न भी आज राष्ट्र के नेताओं के सामने उपस्थित है। लेख में राष्ट्रीय झंडे के महत्त्व को प्रकट करते हुए उसके परिवर्तित रूप पर दृष्टिपात किया गया है।

कुछ दिन पूर्व अँगरेजी पत्रों में कांग्रेस के इतिहासकार, बकिंग कमेटी के भूतपूर्व सदस्य और देशी राज्य प्रजामंडल के सभापति डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया का 'भारत के राष्ट्रीय झण्डे की आवश्यकता' पर एक विद्वत्तापूर्ण लेख निकला था।

राष्ट्रीय झण्डे के विषय में कुछ कहने के पूर्व हम झंडे पर भी थोड़ा विचार कर लें तो अच्छा होगा।

झण्डे का महत्त्व बहुपार्श्वी है। यदि हम इसकी परिभाषा कपड़े का भिन्न रंगीन टुकड़ा, कोई विशेष चिह्न से युक्त अथवा बिना किसी चिह्न का करें तो हमें शीघ्र ही अपनी गलती मालूम हो जायेगी। हमारी परिभाषा प्रथम से अन्त तक गलत है। क्योंकि झंडा एक रंगीन टुकड़े से बहुत बड़ी वस्तु है। रंगीन टुकड़े हम बहुत देखते हैं पर क्या कभी इन रंगीन टुकड़ों को देखकर सड़क के पथिक का हृदय खुशी से उछल पड़ता है? क्या कोई है और रंगीन टुकड़ा जिसे देखकर मई की चिलचिलाती धूप में तारकोल की नंगी सड़क पर भुनते पैरों से ठेला खींचते हुए मजदूर के हृदय में आशा की एक ज्योति जल उठे? कहाँ है कोई और टुकड़ा जिसकी रक्षा के लिए देश के नवयुवक अमृत से भी मूल्यवान् अपने रुधिर को पानी के समान बहा सकें? झंडा एक महान् वस्तु है, पवित्र वस्तु है। यह देश के असंख्य नागरिकों की आशा और पूजा और मूक जिह्वा है जो कि अमर वाणी बोलती है और जिसे सारा संसार समझ सकता है। जब हम प्रसन्न होते हैं, हम विजयी होते हैं तो हमारा झंडा संसार के ऊपर इठलाता है। हमारे दुख के साथ झंडा रोता है, सहानुभूति प्रकट करता है और नव-आशा का संचार करता है। वह राष्ट्र का प्राण है। फिर कौन कह सकता है कि वह कपड़े का एक टुकड़ा है।

राष्ट्र के लिए भी झंडे का एक विशेष महत्त्व है। स्वतन्त्र होने पर अमरीका ने, जर्मनी ने, आस्ट्रिया-हंगरी ने और फ्रांस ने साम्राज्यशाही से छुटकारा पाने पर अपने अलग-अलग झंडे बनाये पल्लवित करने के लिए यह झंडे रक्त से सींचे गये। इसी झंडे की इज्जत के लिए यह महायुद्ध हुआ; फिर कौन कह सकता है कि यह केवल एक कपड़े का टुकड़ा है?

सन् ६ में कांग्रेस के सामने झंडे का सवाल पूर्ण रूप से आया। कि किसी राष्ट्रीय कार्य के लिए एक कारगर, एक नेता और एक झंडे की आवश्यकता होती है। और कांग्रेस ने काफी कठिनाई के बाद आज का झंडा, हमारा प्यारा तिरंगा झंडा 'कांग्रेस का झंडा' नहीं, 'राष्ट्र का झंडा' अपनाया।

राष्ट्रीय झंडे के तीन रंग के अलग अलग अर्थ लगाये गये हैं। कुछ ने इसे साम्प्रदायिक रंग दिया और मुझे कहने में हिचकिचाहट नहीं कि यह एक बड़ी भारी गलती थी। यह राष्ट्रीय झंडे का अपमान था। झंडे का 'केसरिया' हिन्दुओं के लिए, 'हरा' मुसलमानों के लिए और सफेद शेष धर्म-सम्प्रदायों के लिए मानना एक मूर्खतापूर्ण विचार है। यह सत्य है कि हिन्दुओं के लिए 'केसरिया' एक विशेष महत्त्व रखता था और हरा मुसलमानों के लिए प्रिय है। परन्तु राष्ट्र और राष्ट्रीय कार्यों में यह अन्तर कैसा? हमने साम्प्रदायिकता को राष्ट्रीयता के बराबर स्थान दिया है और उसका फल प्रत्यक्ष है। राष्ट्रीय झंडे के तीन रंग त्याग, शान्ति और सुख, वैभव, वीरता आदि का प्रतिनिधित्व करते हैं। सुप्रसिद्ध दार्शनिक सर राधा कृष्णन का भी यही मत है। और झंडे के बीच का चर्खा गरीब जनता की आशाओं का द्योतक है। किसी भी मनुष्य को इस पर आपत्ति न होनी चाहिए और विशेष कर जो कि इसमें साम्प्रदायिकता को घुसेड़ना चाहते हैं, उनको हमारा एक ही जवाब होगा; तुम देशद्रोही हो। तुम्हें देश में कोई स्थान नहीं मुस्लिम लीग के विषय में तो हमें सोचना ही नहीं चाहिए। उसका कार्य सदैव उलटे जाना है और वह जायगी। प्रथम तो साम्प्रदायिक संस्था होने के कारण और द्वितीय हिन्दुस्तान को अपना राष्ट्र न समझने के कारण उसे इस विषय पर कुछ बोलने का अधिकार नहीं और यदि फिर भी वह अपनी टाँग अड़ाती है तो उसे, हमें उखाड़ डालना होगा। बस एक यही रास्ता है।

जहाँ तक स्टेट की बात है जो कि कुछ हद तक हिन्दुस्तान को अपना राष्ट्र समझते हैं। यह झंडे में अपना प्रतिनिधित्व न होने के कारण 'तिरंगे' को राष्ट्रीय झंडा समझने में हिचकते हैं, उनके लिए हम एक कदम आगे जा सकते हैं। स्टेट से मेरा मतलब हिन्दुस्तान की ६०० छोटी-मोटी स्टेट से नहीं; परन्तु अलग अलग बड़ी स्टेट या उनके समूह से मतलब है। उनके लिए मेरा निम्नलिखित सुझाव है।

हिन्दुस्तान की सब स्टेट सामूहिक रूप से मिलकर अपना एक विशेष चिह्न मान लें और वह तिरंगे में चर्खे के पास ही किसी उचित स्थान पर रक्खा जाय अथवा बड़ी बड़ी स्टेटें [illegible] छोटी स्टेटें अपना [illegible] बना लें और भारतीय त्याग की सर्वश्रेष्ठ निशानी 'वज्र' अथवा पवित्रता का चिह्न 'कमल' चर्खे के साथ साथ रहे। और इस वज्र की प्रत्येक अस्थियाँ कमल की प्रत्येक पंखुड़ी एक एक स्टेट या उनके समूह की द्योतक होंगी। मेरे विचार से यह न्याययुक्त है और स्टेट को कोई इतराज न होना चाहिये। परन्तु साथ ही हमें यह भी बता देना चाहिये कि हम इससे आगे जाने के लिए तैयार नहीं। इसके आगे जाने का सवाल भी नहीं उठता क्योंकि यह झंडा कांग्रेस का नहीं हिन्दुस्तान का है। अगर हमने उस झंडे में कोई बहुत बड़ी तबदीली की तो यह विश्वासघात होगा। राष्ट्र का अपमान होगा। उन हजारों शहीदों का जिनकी हड्डियाँ भारतीय स्वतन्त्रता रक्खी है, जिनका रुधिर में सनी मांस-मज्जा से [illegible] भारत की एक एक ईंट जुड़ी है। क्या हम राष्ट्रीय झंडे को बदलते समय हम सहस्रों मनुष्यों को भूल जायेंगे जिन्होंने इस झंडे की रक्षा के लिए अपनी छातियों पर अत्याचार सहे। क्या हम बार इस झंडे को बदलते देखकर शहीदों की लाशें कब्र में करवट न लेंगी, उनकी समाधि और गंगा की [illegible] में मिली राख काँप न उठेगी? तिरंगा राष्ट्रीय झंडा है और इसके बदलने का अधिकार किसी को नहीं। केवल अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी इस और कदम बढ़ा सकती है। परन्तु अन्तिम अधिकार तो चालीस करोड़ जनता को है। यह तिरंगा, राष्ट्रीय झंडे की सभी योग्यता पूरी करता है और स्वतन्त्र भारत का यही झंडा होगा। इसमें मामूली परिवर्तन हो सकता है; परन्तु किसी एक सम्प्रदाय या स्टेट को प्रसन्न रखने के लिए 'तिरंगे' का परिवर्तन राष्ट्र सहन न करेगा।

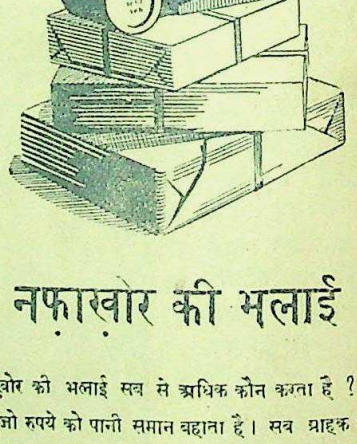

नफ़ाख़ोर की भलाई

नफ़ाख़ोर की भलाई सब से अधिक कौन करता है? निस्सन्देह वह व्यक्ति जो रुपये को पानी समान बहाता है। सब ग्राहक अमितव्ययी नहीं होते और न ही सब दूकानदार नफ़ाख़ोर। परन्तु समझ लीजिए कि आजकल वस्तुएं पर्याप्त नहीं और यही कारण है कि इन के दाम चढ़े हुये हैं। सम्भव है कि हम में से कुछ व्यक्तियों के पास इतना अधिक धन हो कि इन चढ़े दामों पर भी जो चाहें ख़रीद सकें परन्तु लाखों बल्कि करोड़ों व्यक्ति ऐसे हैं जो इन दामों पर जीवन की आवश्यकीय वस्तुओं को भी नहीं ख़रीद सकते।

नफ़ाख़ोरों के अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति की यही इच्छा है कि वस्तुओं के दाम अवश्य कम होने चाहियें और रुपये का मूल्य बढ़ना चाहिए। अनावश्यक वस्तुओं का ख़रीदना कुछ काल के लिये बन्द करके जितनी भी आप बचत कर सकते हैं कीजिए और हमें इस उद्देश्य की पूर्ति में सहायता दीजिए।

अपनी बचत बीमा पालिसी, सहकारी साख समिति, डाकखाने का सेविंग्ज खाता, नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स, और सरकारी लोन (कर्ज़े) की मदों में लगाइए। आप का धन सुरक्षित रहेगा और लाभप्रद भी सिद्ध होगा।

भूमि, सम्पत्ति, सोना चांदी के पानी, द्रव्य, बनामाल, या सट्टेबाजी पर रुपया अपव्यय न कीजिए। ये आजकल बहुत घाटे के मद हैं।

चढ़ी कीमतों को रोकिए

धन का अपव्यय न कीजिए

भारत सरकार के फ़ाइनैन्स विभाग द्वारा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोड़ा लुई

अनुवादक, श्री नानकचन्द्र टंडन

हिन्दी का कथा-साहित्य विभिन्न दृष्टिकोणों से अभी अपूर्ण है। किन्तु विदेशी कथा-लेखकों की लेखन-रुचि समाज की विभिन्न प्रवृत्ति के चरित्र-चित्रण की ओर भी पहुँच चुकी है। अधिकांश हिन्दी-लेखकों ने अपनी कहानियों को प्रेमालाप की सीमा तक बाँध रखा है। हिन्दी-कहानी-साहित्य की यह कमी है। इस कहानी में एक ऐसी प्रवृत्ति का चित्रण किया गया है जो आश्चर्यजनक है, किन्तु है सत्य। कहानी पठनीय तथा सुन्दर है।

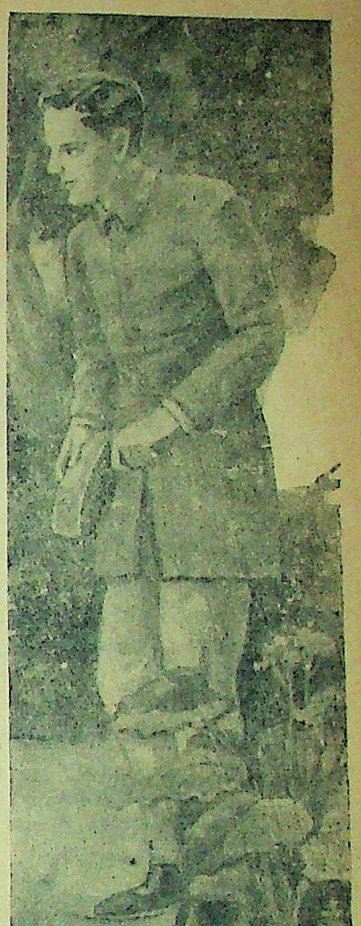

'घोड़ा लुई' जो घोड़ों से बातचीत की कला में निपुण था।

दस वर्ष की अवस्था से मेरा छोटा 'घोड़ा लुई' के नाम से पुकारा था। वह घोड़ों के साथ रहता, के संग खाता-पीता और उन्हीं के देखता था। उसके मुख में हर घोड़ों की ही चर्चा रहती थी। घोड़ा लुई' के अनोखे नाम का रहस्य था। वह घोड़ों से कुछ कहता और वे उसे उत्तर भी देते थे। इसका आरंभ उस समय हुआ जब से सान डियगो के छोटे से प्राइवेट में पढ़ने भेजा। स्कूल के घोड़े निवासियों से खरीदे गये थे। ओं को अपने पूर्व जीवन में अधिक न पड़ा था इसलिए इनकी निरं- की सीमा नहीं थी। पर लुई को टू पकड़ने में कुछ भी मुसीबत ती। एक रस्सी लेकर वह घोड़े के जाता और फिर उसे बाँध ही ग्यारह वर्ष की अवस्था में ही चलते घोड़े के ऊपर खड़ा हो जाता

एक दिन मैं कैलिन्टे की घुड़दौड़ था। वहाँ अकस्मात् लुई से मेरी हो गई। स्कूल एक दिन के लिए और स्कूली लड़के तमाशा देखने ड़ के मैदान में पहुँच गये थे। वे में पैसे का खेल खेल रहे थे। उन्हें तख्ते पर लिखे नम्बरों की चिंता । लुई को घोड़ा चुनना पड़ता था पर चार और एक का दाँव लगता कि लुई का दाँव एक का रहता समझा वह खूब हारा होगा। कितने पैसे हारे?" मैंने एकाएक

एक भी नहीं!" उसने चकित कहा।

छने पर पता चला वह बत्तीस ता था। बात यह थी कि हर बार बताया हुआ घोड़ा जीतता था। से अगली दौड़ के बारे में पूछा। बढ़कर उसने दौड़ के लिए जाते को देखा--जैसे वह प्रत्येक से छ रहा हो। घोड़ों ने भी गर्दन कर उसकी ओर देखा और अपनी खाहटवाले स्वर में उसके प्रश्न त्तर दिया।

वह नम्बर चार" उसने कहा, हज भाव से जैसे वह घड़ी का बता रहा हो।

म्बर चार पर बारह और एक ांव लगा था। वही जीता। अब तीन दौड़ें बाकी थीं। 'घोड़ा लुई' समें भी मेरे लिए घोड़ों का चुनाव ा। बस इसी तरह--वह घोड़ों से ता था, वे उसे उत्तर देते थे और मैं पर दाँव लगाता था। उस दिन मैं खुशी-खुशी घर वापस आया। मैंने इस रहस्य का उद्घाटन करने ता की। वह किसी भी तरह इसे समझ पाया। कम से कम मैं उसका समझ पा रहा था। | |

वे मुझे बता देते हैं," उसने सहज हा।

वे क्या कहते हैं?"

क यही, वे कहते हैं कि उनकी कैसी है, वे दौड़ना चाहते हैं सवार के बारे में उनका क्या विचार है, और दौड़ की जमीन कैसी है, आदि। यही सब बातचीत होती है।"

मुझे उस पर विश्वास न हुआ। मुझे बेवकूफ बना रहा है, मैंने सोचा। अथवा वह स्वयं ही एक बड़े भ्रम में है, मेरी बुद्धि ने कहा। मैंने उसे स्कूल से छुट्टी दिला दी और अपने साथ उसे फिर घुड़दौड़ के मैदान में ले गया। फिर हम घोड़ों के घेरे के बाहर जा खड़े हुए।

"अब उनसे पूछो," मैंने कहा।

उस दौड़ में आठ घोड़े थे। उसने छः से बात की, उन्होंने उसे जवाब भी दिया।

मुड़कर उसने मुझसे कहा--"आप जानना चाहते हैं, कौन घोड़ा जीतेगा? वही नम्बर तीन।"

मैंने काले तख्ते की ओर देखा आठ और एक का दाँव था।

"तुम्हें कैसे पता चला?" मैंने सशंकित होकर पूछा।

उसने मेरी ओर एक तेज दृष्टि फेरी। "आप ही ने तो मुझसे पूछने को कहा था?"

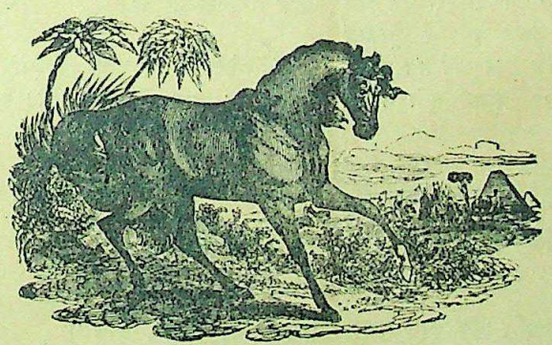

जंगली घोड़ा जो दौड़ में भाग लेता था।

"वे क्या कहते हैं?"

"नम्बर एक ने कहा कि उसे बड़ी गर्मी लग रही है, और उसे अपना सवार भी पसंद नहीं है। नम्बर दो ने केवल 'नहीं' कहा। तीसरे ने कहा कि 'कोई साला मुझे पछाड़ नहीं सकता।' चौथे को हारने-जीतने की अधिक पर्वाह न थी। पाँचवें की पीठ में बड़ा दर्द था। छठे ने कहा कि वह मन लगाकर दौड़ेगा तो, पर तीसरे से जीत न पायेगा। बाकी दो से पूछना बेकार था। सभी ने कहा था कि वे घुड़दौड़-लायक नहीं हैं।" पर मैंने उसका ध्यान एक ओर आकर्षित किया।

"नम्बर पाँच झूठ बोलता है! देखो तो उसकी चाल! हम तुमसे अधिक वह घायल किसी प्रकार नहीं है।"

"पर उसे झूठ बोलने की जरूरत ही क्या है?"--लुई ने सहज ही पूछा। "वह कहता है कि वह घायल है, तो इसमें हमें संदेह ही क्यों हो?"

नम्बर तीन ही प्रथम आया। नम्बर पाँच ने बीच में ही दम तोड़ दिया और लँगड़ाने लगा।

उस दिन लुई ने आठ में छः दौड़ों का फल ठीक बताया। एक दौड़ में उसका घोड़ा द्वितीय आ गया। लुई गुस्से से लाल हो उठा।

"बदमाश, पाजी!" वह चीखा। "उसका सवार ही चोर है, उसने घोड़े को खींच लिया!" उसकी आँखों में आँसू भर आये थे। बात भी ठीक थी, सवार की शरारत थी। लुई दौड़ के आरंभ होने के समय से ही सवारों पर दूरबीन लगाये रहता था, घोड़ों को देखने की उसे जरूरत ही न पड़ती थी। अन्तिम दौड़ में दो-दो साल के नये बछेड़े थे। उनसे लुई ने पूछ-ताछ तो की। पर उसने कहा--"इन पर विश्वास नहीं किया जा सकता। सभी समझते हैं कि हम जीत जायेंगे।"

× ×

गर्मियों में स्कूल बंद रहा और हम रोज ही घुड़दौड़ देखने जाते। मुझे शर्म आती है यह कबूलते कि उन दिनों मेरे बैंक की जमा में काफ़ी वृद्धि हुई थी। लुई को तो सट्टेबाजी से कोई सरोकार ही न था, उसे घोड़ों की गति-विधि लक्ष्य करने में आनंद प्राप्त होता था। वह उनके निकट रहना और उनसे बात करना चाहता था। कितने ही प्रातःकाल वह तीन बजे उठ पड़ता और बर्फ के ऊपर पच्चीस मील फिसलता हुआ चला जाता--घुड़दौड़ की रेलिंग के किनारे स्टाप-वाच (सेकंड-घड़ी) हाथ में लेकर बैठने के लिए। वह सवार बनना चाहता था पर उसकी हड्डियाँ बहुत बड़ी थीं। फिर मैंने उसे 'ट्रेनर' (शिक्षक) बनाना चाहा और इस अभिप्राय से उसे पुस्तकें भी खरीद दीं। मैंने घोड़ों के मालिकों से उसका परिचय करा दिया। मेरा विचार है कि यदि उसके लिए घोड़ा बनना संभव होता तो वह ऐसा भी करता।

मुझे वह दिन भली भाँति याद है जब उसने जाक ह्विटने से कहा था--"वह आपका पहलेवाला घोड़ा अगली दौड़ जीतेगा।" जाक ने नाक-भौं सिकोड़ी। उस घोड़े पर २२ और १ का दाँव था। जाक को दूसरे घोड़े पर ज्यादा भरोसा था। लुई ने कहा कि जाक के पसंद का घोड़ा लँगड़ाता है। जाक ने ध्यानपूर्वक घोड़े को देखा, फिर लुई को सम्बोधन कर कहा--"लड़के, वह घोड़ा तुझसे अधिक अच्छी हालत में है।"

पर जीता वही २२ और १ के दाँववाला। जाक ने जिसे विजय का हकदार माना था वह तीसरे ही फर्लांग में लँगड़ाने लगा।

एक दिन एक फिल्म डायरेक्टर साम उड ने मुझसे लुई को साथ ले जाने की अनुमति चाही। "आप भी आइए," उन्होंने कहा। घेरे में खड़े घोड़ों से लुई ने वार्तालाप किया। फिर लुई ने कहा--नम्बर सात। उस पर तीस और एक का दाँव लगा था। साम ने चुपके से उस घोड़े पर दो सौ रुपये लगा दिये। कहना न होगा चार हजार से ऊपर साम के हाथ लगा।

दूसरी दौड़ में लुई ने नम्बर चार बताया और उसका कहना ठीक निकला। इस प्रकार एक के बाद एक दौड़ में साम रुपया बटोरता रहा।

छठी दौड़ में लुई ने अपनी असमर्थता प्रकट की। "कोई भी जीत सकता है,"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने कहा—"सभी समझते हैं कि वही जीतेंगे।"

हम लोगों ने काफी जोर दिया कि वह कुछ बताये।

"मैं नहीं बता सकता," उसने चीख-कर कहा। "दौड़नेवाले घोड़े स्वयं नहीं जानते।"

हम लोगों ने बाजी लगाई और हार गये। सातवीं और आठवीं बार भी यही हाल रहा। हाँ, आखिरी दौड़ में किसी ने बहुत जोर देकर हमारा सारा रुपया एक घोड़े पर लगवा दिया और हम सब कुछ गँवाकर घर लौटे।

पर लुई पूर्ण रूप से संतुष्ट था। उसे घोड़ों से गप लड़ाने में बड़ा मजा आया था, उसे इससे अधिक से मतलब न था।

और इस प्रकार उसका नाम "घोड़ा लुई" पड़ा। जब उसके स्कूल छोड़ने का समय आया, उसके साथियों (घोड़ों) ने बहुत शोक प्रकट किया। लुई के खास टट्टू ने तो बहुत पैर पटके। पर आखिर लुई को तो उनसे बिदा होना ही था।

सोलह वर्ष की अवस्था में लुई ने घोड़ों से बात करना बंद कर दिया। और यह कहने पर भी कि "तुम पहले घोड़ों से बात करते थे" वह चिढ़ जाता था। वह पिछली बातों को याद करने की चेष्टा करता, फिर झुँझलाकर कहता—"मैं नहीं समझ पाता आप लोग मेरा मजाक बनाने पर क्यों तुले हैं?"

पर इतना तो अभी भी है कि वह शैतान से शैतान पशु को भी चुमकार-पुचकार कर काबू में कर लेता है—आँख के इशारे से। घोड़ों से उसे अभी तक स्नेह है।

पर अब न वह उनसे कुछ कहता है, न वे ही उसे उत्तर देते हैं।

और आपको यह सुनकर शोक होगा कि भरी जवानी में ही पिछले महायुद्ध में मेरा भाई, जो एक विमान-चालक था, मुझे छोड़कर चल बसा।

(मार्टन टामसन द्वारा लिखित एक सच्ची कहानी का अनुवाद)

इधर उधर की

ब्रिटेन में ४०,००,००० नवयुवक व युवतियों की २० संस्थाएँ हैं। इन संस्थाओं के किसी भी सदस्य ने किसी को सम्मिलित होने के लिए आग्रह नहीं किया। सभी सदस्यों ने अपनी रजामन्दी से संस्थाओं की सदस्यता स्वीकार की है।

* * *

भारतवर्ष में ऐसे झरने हैं जिनसे रोग दूर हो सकते हैं। इन रोगों में चर्मरोग, गठिया, कुष्ठ आदि रोग हैं जो इन झरनों के पानी के सेवन से बिलकुल नष्ट हो जायेंगे। ऐसे झरनों में हजारी-बाग जिले का सूरजकुंड नामक झरने में गन्धक की प्रचुर मात्रा मौजूद है, इससे गैस निकलती है जो स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

* * *

मार्च सन् १९४७ तक भारतीय सेना से १५,०५,१०७ सैनिक निकाले जा चुके हैं। इनमें २७,७४६ ब्रिटिश और भारतीय अफसर, १२,१७७ महिला सहायक दल के अफसर ३९,०३९ ब्रिटिश सैनिक तथा १४,०५,१०९ भारतीय साधारण सैनिक थे।

* * *

पेरिस में अन्तर्राष्ट्रीय डाक कांग्रेस के ११वें अधिवेशन में यह तय हुआ है कि हवाई डाक की दर दूरी के आधार पर होगी।

* * *

सन् १९४५-४६ में भारतवर्ष के अन्दर बिना टिकट चलनेवाले ४६ लाख यात्रियों को पकड़ा गया।

* * *

सन् १९४७ की जनवरी से मार्च तक ४०,००० एकड़ भूमि में मूँगफली बोई गई है जबकि गत वर्ष इस अवधि में केवल ३०,८०० एकड़ भूमि में ही बोई गई थी।

* * *

संयुक्तप्रान्त में इस वर्ष कम चावल पैदा होगा। अनुमान है कि इस वर्ष लगभग १७,८१,२७० टन चावल पैदा होगा जब कि गत वर्ष १८,३०,८२९ टन पैदा हुआ था।

* * *

भारतवर्ष की सारी रेलों में काम करनेवाले कर्मचारियों की संख्या ११,-७५,८८८ है।

* * *

झाँसी से ६० मील दक्षिण ललितपुर के पास शहजाद नदी की दूसरी ओर फौजी दस्ते बाँध तैयार कर रहे हैं। यह बाँध १ मील लम्बा, ५० फीट ऊँचा और ३०० फीट चौड़ा होगा। इससे जालौन और हमीरपुर जिलों की ३०,००० एकड़ भूमि को सींचा जा सकेगा।

* * *

भारतवर्ष के प्रान्तों की भाषाओं में हिन्दी उर्दू से अधिक बोली जाती है। हिन्दी में ५७ पत्र-पत्रिकाएँ और उर्दू में ४३ पत्र-पत्रिकायें प्रकाशित होती हैं।

* * *

पूर्वी अफ्रीका के भारतीयों ने भारत को खाद्य भेजने के लिए कोष इकट्ठा किया है। इस कोष में अब तक ३,४५,-००० रुपये बैंक में जमा हो गये हैं।

* * *

ब्रिटेन में ३ माह के अन्दर १,९६,-६२,५०,००० टिकट बिके।

* * *

इस समय ब्रिटेन में ३ माह के भीतर ३५,००० मोटरें बनती हैं।

* * *

अनुभव के लिए लन्दन, मिडलैण्ड और अन्य एक्सप्रेस गाड़ियाँ लन्दन और ग्लासगो के बीच चलेंगी। इनके इंजिल का वजन २५० टन होगा और ये १०० मील प्रतिघंटा दौड़ेगी।

* * *

इँगलैण्ड के विद्यार्थी छुट्टियों में कोयले की खान में काम करेंगे। वहाँ की सरकार उन विद्यार्थियों की ट्रेनिंग का प्रबन्ध कर रही है।

सबसे बड़े जल-पोत

जल-यात्रा में बड़ा ही आनन्द है परन्तु समुद्री यात्रा में छोटे-मोटे [illegible] का टिकना असंभव है फिर ऐसे [illegible] जब कि युद्ध के बादल गरजते हों। [illegible] समय नौकाओं द्वारा कार्य नहीं [illegible] सकता। चार जलपोत जिनकी [illegible] २५,००,००० पौंड है, पूर्व में जापान [illegible] हराने में लगे थे। जापान के अस्त्र [illegible] देने पर वे ब्रिटेन को वापस लौटे [illegible] माल्टा में उनकी गुप्तरूप से मरम्मत हो रही है।

* * *

संसार की वायु-शक्ति में [illegible] ई० एम० डोनाल्सन ने ६१६ मील [illegible] घंटे उड़ने का रिकार्ड रक्खा था। [illegible] वही महाशय नया रेकार्ड रखने जा [illegible] हैं। अब की बार वे ७०० मील [illegible] घंटे का रिकार्ड रक्खेंगे।

भारत का एकमात्र पेय

चाय आगतों का स्वागत करने वाली

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

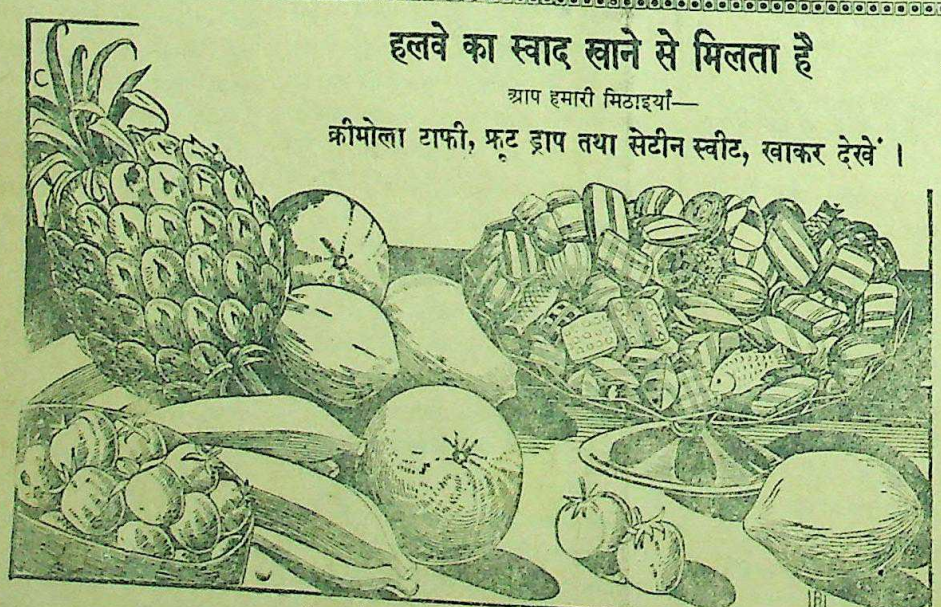

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारा रंग-मंच

पठान क्या चाहते हैं ?

अभिनेता पृथ्वीराज 'पठान' फिल्म की रूपरेखा तैयार

लेखक, श्री उमेश जोशी

पठान क्या चाहते हैं ? इस समस्या को लेकर हमारे सामने श्रीयुत पृथ्वीराज कपूर आये हैं। उन्होंने "पठान" चित्र की कहानी बना ली है। इस चित्र के लेखक भी भाई खिदमतगार पठान हैं। बड़ी समझदारी के साथ पठानों की समस्याएं कहानी के रूप में दिग्दर्शित की हैं। "पठान" चित्र को देखकर मालूम हो जायेगा कि पठान क्या चाहते हैं ? पठानों ने स्पष्ट घोषित कर दिया है कि "हम न तो हिन्दुस्तान चाहते हैं न पाकिस्तान, हम तो पठानिस्तान चाहते हैं, और इसके बाद विचार करेंगे कि हम इन दो में से किसके साथ अपना सम्बन्ध जोड़ें। अँगरेजों ने हमारे साथ धोखा किया—वे मुस्लिम लीग से मिले। इसीलिए सीमाप्रान्त में जो चुनाव हो रहा है, वह साम्प्रदायिक आधार पर हो रहा है। उस चुनाव का हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान पर कोई असर नहीं पड़ेगा—यह अँगरेजों की चाल है। वाइसराय ने ईमानदारी के साथ हमारी समस्याएँ हल नहीं कीं। इस कारण पठानों की उलझनें और भी बढ़ जायेंगी। इसलिए बादशाह खान तथा अन्य पठान नेताओं ने वाइसराय की इस चाल के खिलाफ आवाज बुलन्द की है और जनता को एक कठोर चेतावनी दी है कि यदि वे मुस्लिम लीग तथा अँगरेजों के भुलावे में आ गये तो वे कहीं के न रहेंगे। उनको फिर दुनिया के सामने लज्जित होना पड़ेगा। इसलिए पठानों को बड़ी सावधानी के साथ काम करना चाहिए। यह समय उनकी परीक्षा का है। थोथे मजहब के उफान में आकर इन्सानियत को कुरबान कर देना चाहिए। हम जो बीस साल से ब्रिटेन के खिलाफ आजादी प्राप्त करने के लिए आन्दोलन कर रहे हैं—क्या वह अब निष्फल जायेगा ? क्या हम चन्द मुस्लिम लीगियों के सामने माथा टेक देंगे, ऐसा हर्गिज नहीं होगा। इसका मतलब यह नहीं कि हम देश में अशान्ति व अराजकता चाहते हैं। हम तो शान्तिपूर्वक अपनी समस्याओं का हल चाहते हैं। हम देख रहे हैं कि वाइसराय ने हमारी घरेलू समस्याओं को और भी अधिक उलझा दिया। सीमाप्रान्त में जब तक एक भी खुदाई खिदमतगार रहेगा, तब तक सीमाप्रान्त के ऊपर पाकिस्तान नहीं लादा जा सकता, इस बात की गवाही आनेवाला समय देगा। हम किसी भी अन्यायपूर्ण फैसले को स्वीकार न करेंगे।"

फिल्मी दुनिया में सिर्फ पृथ्वीराज कपूर ने ही पठानों की हाल की घटनाओं का चित्रण रजतपट पर लाने का साहस किया है। इसके लिए उनको तमाम हिन्दुस्तान की ओर से बधाई है। इस चित्र के डायलॉग विशेष प्रभावशाली हैं। ऐसा मालूम होता है कि मानो हम स्वयं पठानों के बीच में बैठे हुए उन्हीं

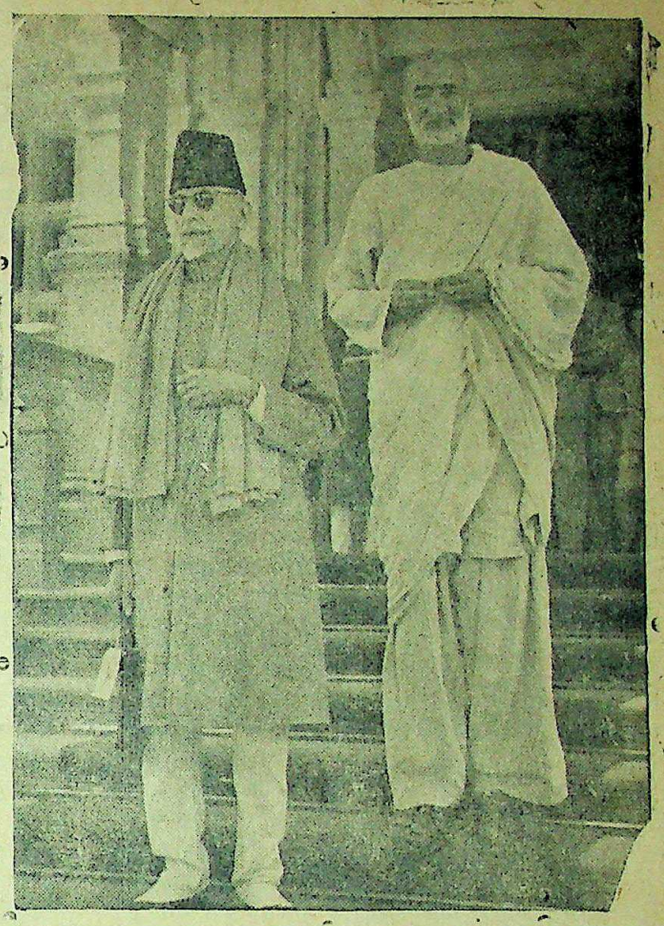

सीमाप्रान्त में पठानिस्तान की स्थापना करनेवाले बादशाह खान, मौलाना आजाद के साथ

के मुँह से उनकी समस्यायें सुन रहे हैं। इस चित्र की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि पठानों की जिन्दगी की वास्तविकता का पूर्णरूप से पालन किया गया है। चित्र में बादशाह खान का सन्देश भी जनता के लिए है—वह सन्देश यही है—"मेरे प्यारे पठानो, आज मायूस होकर बैठने का समय नहीं है। तुमको अपनी सारी मायूसी को दफना देना चाहिए तभी तुम्हारी विजय होगी। तुमको एक बात याद रखनी चाहिए कि गुलामी के जीवन से तो मर जाना कहीं श्रेयस्कर है। जब तक शरीर में खून का एक कतरा भी रहे, तब तक पाकिस्तान के खिलाफ अपनी आवाज बुलन्द करते रहो, क्योंकि यह अँगरेजों की देन है। अँगरेज लोग पाकिस्तान की ओट में अपने स्वार्थ पूरा करना चाहते हैं। वे दूसरे के घर में आग लगाकर स्वयं तमाशा देखना चाहते हैं, इसलिए किसी भी पठान को पाकिस्तान के लिए वोट न देना चाहिए। एक बार पाकिस्तान में सम्मलित हो जाने से पठान-राष्ट्र की मृत्यु हो जायेगी, इस बात को पठानों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।"

इसी प्रकार के अन्य पठानी नेताओं के सन्देश "पठान" चित्र में दिये गये हैं। पठान चित्र का सारा लब्बो-लुआब यही है। हमें उम्मीद है कि जनता इस चित्र को देखकर पठानों की समस्याओं में दिलचस्पी लेगी। यह चित्र पेशावर तथा अन्य सीमाप्रान्त के शहरों में भी दिखाया जायेगा, ताकि पठान लोग किसी के भुलावे में न आ जायें। चित्र के गाने भी पठानी ढंग से लिखे गये हैं। रजतपट के अलावा "पठान" चित्र की कहानी को स्टेज पर भी बम्बई में प्रदर्शित कर रहे हैं। हिन्दुस्तान में इस किस्म का एक नया चित्र है। सामयिक समस्याओं पर आज तक किसी भी फिल्म-निर्माता ने चित्र नहीं बनाया। पृथ्वीराज कपूर ने पठान चित्र निर्मित करके एक बहुत बड़ा काम किया है जो कि प्रशंसनीय है। क्या हम उम्मीद रखें कि अन्य फिल्म-निर्माता भी पृथ्वीराज कपूर का अनुकरण करेंगे ? वास्तव में पृथ्वीराज कपूर देश की समस्याओं में बड़ी दिलचस्पी लेते हैं। हम फिर एक बार मिस्टर कपूर को हिन्दुस्तान की जनता की ओर से धन्यवाद देते हैं और उम्मीद रखते हैं कि मिस्टर कपूर भविष्य में भी इसी प्रकार के उ[illegible] चित्र हमको देते रहेंगे।

मैं भी आपका बहुत आभारी हूँ

पेट के दर्द का रोगी मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर की प्रशंसा करता है

यदि आप मंदाग्नि से पीड़ित हैं, और भोजन के बाद दर्द या अन्य कष्टदायी लक्षणों का अनुभव होता है तो मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर लीजिये। यह रोग का शीघ्र निराकरण कर देगा और पाचन-शक्ति को सुधार देगा।

प्रिय महोदय,
मैंने अभी एक दूसरे रोगी द्वारा की गई आपके स्टमक पावडर की प्रशंसा पढ़ी, और मैं अनुभव करता हूँ कि मैं भी आपका बहुत आभारी हूँ। आपके पावडर और गोलियों ने मेरे लिये वास्तविक वरदान हैं।

मैं एक दिन भोजन पर आगया था.....किन्तु मैंने नियमित रूप से आपके पावडर का सेवन किया, और आज मैं अपनी रुचि की प्रत्येक चीज खा सकता हूँ और अपने को स्वस्थ अनुभव करता हूँ। मैं आपके प्रति आभार प्रदर्शन करता हूँ।

(हस्ताक्षर) जे. डी.

मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर की व्यापक ख्याति उसकी हृदय-दाह, उदर-वायु, जी मिचलाने एवं आफरन से होने वाले पेट के दर्दों के निवारण और आमवात एवं उदर-अन्त्र के विशुद्ध सुरक्षित रखने में वह प्रभावोत्पादकता का मान्य प्रमाण है।

"एलेक्स सी. मेकलीन" के हस्ताक्षरवाला मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर और गोलियाँ ही प्रामाणिक हैं।

MACLEAN Brand Stomach Powder

Alex. C. Maclean

गोलियों के रूप में भी

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय

अगदी १८६६ पासून

नीलगिरि तेल

हेमा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, दाह फ्लू इ. आदि बीमारियोंवर फलदायक.

प्रो. खांडेलेकर बंधु बम्बई ४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटेन की ३ जून की घोषणा

(पेज ५ का शेष)

भाषण देते हुए कहा है कि वे अलग हो रहे भारत को विजय करने के लिए तैयार हो जायें। आचार्य कृपलानी ने कलकत्ता में कहा है कि जब तक भारत संयुक्त न होगा तब तक भारतीय स्वाधीनता का संग्राम पूर्ण न होगा। इससे स्पष्ट है माउण्टबेटेन-एटली योजना ने देश की समस्या को हल नहीं किया है।

जन-क्रान्ति को रोकने के लिए—इस अवस्था में स्वभावतः प्रश्न उठता है कि फिर भारतीय नेताओं, कांग्रेस और लीग के नेताओं ने इस योजना को क्यों मान लिया? इसका उत्तर बहुत सीधा है। अहमदनगर और आगा खाँ महल के फाटक जब से खुले हैं, और कांग्रेस कार्य-समिति के सदस्य और गांधी जी नजरबन्दी से निकलकर स्वतंत्र हुए हैं, तब से अब तक का इतिहास इसका स्पष्ट उत्तर दे देता है। अगस्त १९४२ में सब नेताओं के जेलों में बन्द होने पर भी, देश के अन्दर एक भीषण तूफान आया। ब्रिटिश सत्ता को उसने झकझोर दिया। एक अमरीकन पत्रकार के अनुसार यदि वह एक सप्ताह और चलता तो ब्रिटिश सरकार को भारत के सामने घुटने टेक देने पड़ते। इस आन्दोलन के नेता कौन थे? इस संग्राम का संचालन किसने किया? किसी प्रकार के पथ-प्रदर्शन के अभाव में यह विराट् आन्दोलन कैसे चला? यह जन-क्रान्ति थी। यह जनता की पुकार और हुंकार थी। जनता ने इसका संचालन किया था। कांग्रेस कार्य-समिति और गांधी जी ने इस आन्दोलन का उत्तरदायित्व अपने ऊपर नहीं लिया। गांधी जी के श्री मुख से इस आन्दोलन की प्रशंसा में एक शब्द भी नहीं निकला। स्पेन और चीन की लड़ाई से सहानुभूति प्रकट करनेवाली और ब्रिटेन की सहयता के लिए १९४० में शस्त्र पकड़ने के लिए उद्यत कांग्रेस कार्य-समिति ने भी अहिंसा के प्रति अपनी निष्ठा प्रकट करने के लिए इसकी निन्दा करने में अपना शब्दकोष खाली कर दिया। कांग्रेस नेता साम्प्रदायिकता से शिमला में समझौता करने में व्यस्त रहे। हिन्दचीन और इण्डोनेशिया की सहानुभूति में कलकत्ता के अन्दर छात्रों और मजदूरों ने विराट् हड़ताल की। उस पर निर्ममता के साथ गोली चलाई गई। गोरी फौज ने क्रान्ति के अग्रदूत युवकों को भून दिया। पर कांग्रेस-नेता यही कहते रहे कि आखिरी लड़ाई के वास्ते शक्ति संचित करके रखो। उन्होंने हड़ताल को फैलने न दिया। छात्रों के आन्दोलन को बढ़ने नहीं दिया। यही नीति उन्होंने नौसैनिकों के विद्रोह के प्रति बरती। ब्रिटिश सरकार को इस देश से भगाने के लिए क्रान्ति का यह मार्ग नहीं पकड़ा। जब सेना, मजदूर, छात्र और सरकारी कर्मचारी क्रान्ति के झण्डे के नीचे जमा हो रहे थे, तब कांग्रेस-नेता इसे प्रण और धैर्य को तोड़ने और ब्रिटिश सरकार से समझौता करने का प्रयत्न कर रहे थे। आज का नेतृ-मण्डल यह नहीं चाहता कि [illegible] की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था पलट जाय और शक्ति उनके हाथ से निकलकर वस्तुतः जनता के हाथ में चली जाय। फलतः कांग्रेस और लीग दोनों ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद से समझौता करने में ही अपनी जीवन-रक्षा समझी। अगस्त में उठी जन-क्रान्ति को इस प्रकार कुचल दिया गया। अब क्या होगा? पाकिस्तान के नेता पाकिस्तान में इस्लामी और शरियत का राज्य की स्थापना का नारा लगाकर—भारत में मुसलमानों पर अत्याचार हो रहा है—की आवाज लगाकर जनता का ध्यान असली समस्या से हटाये रखने का यत्न करेंगे। वे पाकिस्तान को भारत पर चढ़ाई करने के लिए तैयार करेंगे। दूसरी ओर भारत में बौद्धिक राज्य और राम-राज्य की स्थापना का नारा लगाया जायगा और 'पान-इस्लाम' का रौद्ररूप खड़ा करके उससे मुकाबला करने के लिए तैयार रहने के लिए कहा जायगा। जब जीवन का अस्तित्व ही खतरे में हो तब अन्य समस्याओं की ओर कैसे ध्यान दिया जा सकता है? इस प्रकार प्राचीन इस्लाम और प्राचीन भारत के गौरव के भुलावे में जनता को रखकर जन-क्रान्ति को रोका जायगा और जब तक जनता का भय दूर न होगा, यह क्रान्ति रुकी रहेगी। इससे जहाँ वर्तमान नेतृ-मण्डल का नेतृत्व कायम रहेगा वहाँ ब्रिटिश साम्राज्यवाद भी भारत और एशिया में सुरक्षित रहेगा, क्योंकि पाकिस्तान और भारत दोनों एक दूसरे के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार की सहायता माँगेंगे। इस प्रकार भारत पर ब्रिटिश प्रभुत्व कायम रहेगा।

एक पैर कायम रहेगा—यह कल्पना नहीं है। ३ जून की योजना के अगले दिन लन्दन से 'न्यूयार्क टाइम्स' को योजना की प्रतिक्रिया भेजते हुए उसके संवाददाता ने लिखा—"सर्वतोपरि अँगरेज भारतीय नेताओं को भली भाँति सोचने-विचारने का अवसर दिये बगैर सब काम जल्दी से पूरा कर देना चाहते हैं।" इसके बाद संवाददाता ने यह महत्त्वपूर्ण टिप्पणी की—"भारतीय दरवाजे के अन्दर एक पैर अँगरेज रखने में सफल हो गये।" १८४४ में लखनऊ के लारेंस ने लिखा था—"हम भारत को सदा के वास्ते अधीन बनाकर रखने की आशा नहीं कर सकते। हमको उसी तरह का व्यवहार करना चाहिए जिससे जब इस सम्बन्ध का अन्त हो, तब अकड़न, पैदा न हो, बल्कि पारस्परिक सम्मान और प्रेम उत्पन्न हो और तब इँगलैण्ड का भारत एक भद्र मित्र हो।"

क्या माउण्टबेटेन-एटली-योजना से लारेन्स की यह शुभेच्छा पूरी हुई? यह तो नहीं हुई, मगर अँगरेजों के पैर इस देश में जम गये। ब्रिटिश रविवार के पत्र 'आवजर्वर' यह कहता है और मानता है। 'आवजर्वर' ने लिखा है—"यदि भारत के विभाजन के प्रश्न को हमारे भारत छोड़ने तक के लिए छोड़ दिया जाता, तब कामनवेल्थ के अन्दर प्रवेश करने की इच्छा करनेवाले के लिए दूसरे भाग के बाहर रहते हुए कामनवेल्थ में आना अत्यन्त कठिन हो जाता। अब यदि मुसलमान ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर रहना चाहें, तो उनको उससे बाहर निकालने का कोई सम्भावित विचार तक नहीं है।" सण्डे टाइम्स में स्कूटेटर ने आशा प्रकट की है कि "पाकिस्तान ब्रिटिश कामनवेल्थ के अन्तर्गत रहेगा। हिन्दुस्तान के नेता भी जब अपनी पूरी जिम्मेदारी पर विचार करेंगे, तब वे भी सम्भवतः यही करेंगे।" इस प्रकार आयरिश टाइम्स का लिखना सत्य हो गया। कनाडा अभी तक संयुक्त-राष्ट्र अमरीका से नहीं मिल सका। आयर का विभाजन हुए सत्ताईस साल हो गये और अभी तक बना हुआ है। इसलिए जो लोग संयुक्त भारत की शीघ्र आशा करते हैं, वे अत्यन्त भ्रम में हैं। स्वाधीनता प्रस्ताव के प्रस्तावक, "इण्डीपेण्डेंस लीग के संस्थापक" श्री जवाहरलाल नेहरू भी अब करने लगे हैं कि डुमीनियन स्टेट्स बनाम स्वाधीनता का बहस अब व्यर्थ है, इस समय मुख्य प्रश्न तो निर्दोष लोगों की रक्षा है। इससे स्पष्ट है कि भारत-संघ भी अब ब्रिटिश साम्राज्य के बाहर न जा सकेगा। और इसी कारण से मि० चर्चिल ने ३ जून की योजना का हार्दिक समर्थन किया है।

योजना पूर्ण—यहाँ सम्भवतः प्रश्न उठता है कि एक साल पहले जिस ब्रिटेन ने १६ मई १९४६ के राजकीय पत्र द्वारा भारत के विभाजन को अव्यवहारिक बताया था, उसने आज सहसा यह रवैया क्यों ग्रहण कर लिया? बात यह है कि सर स्टैफर्ड क्रिप्स को उस समय भी लीग के प्रति सहानुभूति थी। मगर लार्ड पेथिक लारेन्स का ख्याल करके वह नहीं किया गया था। अब लार्ड पेथिक लारेन्स रंगमंच से हट गये, भारत-मंत्री नहीं रहे, तब ब्रिटिश मन्त्रिमंडल ने योजना को अमल में लाने का उचित अवसर समझा। सामरिक दृष्टि से लार्ड वेवेल भी भारत के विभाजन के विरुद्ध थे। इनकी जगह एडमिरल लार्ड माउण्टबेटेन ने ली; क्योंकि ब्रिटेन मुसलमानों को नाखुश रखने की सामर्थ्य नहीं रखता। मुसलमानों को अप्रसन्न करना उसके लिए असम्भव है। अमरीका और सोवियट रूस मध्यपूर्व में अपना पैर जमा रहे हैं। मित्र चिढ़ा हुआ है और नाराज है। फिलस्तीन के अरब क्रुद्ध हैं। फिलस्तीन और मिश्र की समस्या आज सुलझ नहीं रही है। यदि ब्रिटेन के कठपुतली नरेश हशमाइर बलवान् होते और इनका सामना करने में समर्थ होते, तब बात दूसरी थी। बृहत्तर सीरिया की योजना सफल नहीं हुई। इसलिए यदि ब्रिटेन इस्लामी दुनिया को प्रसन्न न करेगा, तो उसको भय है कि अमरीका और रूस मध्यपूर्व में दाखिल हो जायँगे। इस कारण भारत में भी अँगरेजों ने मुस्लिम लीग से समझौता किया है। यह लार्ड टेम्पलवुड की प्रेरणा से और सर एडवर्ड बेंथल से १९३१ में ही हो गया था। उसका चरम विकास यह पाकिस्तान के रूप में परिणत हुआ है। मध्य-एशिया में यह ब्रिटेन का सामरिक अड्डा होगा। सोशलिस्ट ब्रिटेन ने इस प्रकार दूसरा 'हशमाइर ब्लाक' उत्पन्न किया है। यह ब्रिटिश व्यापार [illegible] उद्योग-धंधे को प्रोत्साहन देगा।

जंजीरों में—मार्च के अन्त में दिल्ली के अन्दर पाण्डवों के [illegible] एशियाई कान्फरेन्स हुई थी और [illegible] के अन्दर स्वाधीनता की एक [illegible] दार लहर उठी थी। मालूम होता [illegible] कि एशिया से श्वेताङ्गों का प्रभुत्व [illegible] हो जायगा। पर आज क्या देख [illegible] हिन्दचीन में फ्रांस द्वैधनीति [illegible] कर रहा है और देश का विभाजन [illegible] पर तुला हुआ है। इण्डोनेशिया [illegible] इसी नीति का अनुसरण कर [illegible] इण्डोनेशिया रिपब्लिक के विरुद्ध [illegible] छोटे राज्यों को विद्रोह करने [illegible] उकसा रहे हैं। अँगरेज भारत [illegible] नीति का अनुसरण कर रहे हैं। [illegible] संघ को कमजोर करने के लिए [illegible] त्रावणकोर और निजाम हैदराबाद [illegible] स्वाधीनता घोषित करने का [illegible] दिया जा रहा है। नवाब भूपाल [illegible] तीसरा 'राजस्थान राज्य' बनाने [illegible] योजना का समर्थन कर रहा है। [illegible] काश्मीर को पाकिस्तान में [illegible] होने की प्रेरणा करने के लिए खुद [illegible] राय लार्ड माउण्टबेटेन श्रीनगर [illegible] पाकिस्तान में काश्मीर को [illegible] होने के लिए क्यों बाध्य किया [illegible] है? 'आवजर्वर' यह आशा क्यों [illegible] कर रहा है कि बाहर से मिलने [illegible] द्वार बन्द हो जाने के कारण [illegible] पाकिस्तान में सम्मिलित होना [illegible] करेगा? नूतन पाकिस्तान [illegible] काश्मीर मोहकमे में देने को लार्ड [illegible] बेटेन इतने अधिक उत्सुक क्यों [illegible] गिलगीम में आज ब्रिटिश छावनी [illegible] ब्रिटिश हवाई अड्डा है। रूस और [illegible] की यहाँ सीमा मिलती है। इस [illegible] पूर्ण सामरिक स्थान को ब्रिटेन [illegible] नहीं चाहता। इसलिए उसका यह [illegible] है कि काश्मीर पाकिस्तान में [illegible] हो। वह भूपाल और हैदराबाद के [illegible] भी अनुसरण न करे। हैदराबाद [illegible] स्वाधीन रहने से ही वहाँ अँगरेज [illegible] वैधानिक अड्डे और तोपखाने [illegible] खाने मिल सकेंगे। निजाम [illegible] काल में भरती की गई एक लाख [illegible] की सेना आज भी कायम है। [illegible] जुकोव जितने अँगरेज हैदराबाद [illegible] दिखाई दिये उतने भारत में [illegible] नहीं दिखाई दिये। निजाम यदि [illegible] संघ में सम्मिलित होंगे तब [illegible] सम्भव हो सकेगा? फिर [illegible] चटगाँव, त्रनकोमल्ली, कोलम्बो, [illegible] मुम्बासा आदि जगहों में ब्रिटिश [illegible] और हवाई अड्डे रहते हुए क्या [illegible] अपने को स्वाधीन अनुभव कर [illegible] है? भारत वस्तुतः आज ब्रिटिश [illegible] घिरा हुआ है और नजरबन्द है। [illegible] सागर, हिन्द महासागर और [illegible] खाड़ी पर जब तक भारत का [illegible] स्थापित नहीं होता और ब्रिटिश [illegible] यहाँ से हटाया नहीं जाता, तब तक [illegible] अपने को स्वाधीन नहीं मान [illegible] इसलिए ३ जून की घोषित [illegible] भारतीय स्वाधीनता का बार्दर [illegible] भूल होगी। भारतीय स्वाधीनता [illegible] दूर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशदूत चित्रावली

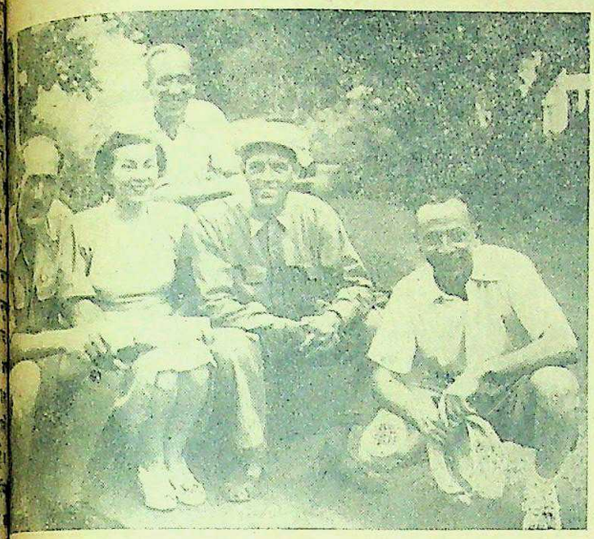

...ड के पाँच यात्रियों का एक दल, जो पिछले दिनों दिल्ली आया था। ...ी-दल ने चार महीने में हिमालय की यात्रा की योजना बनाई है।

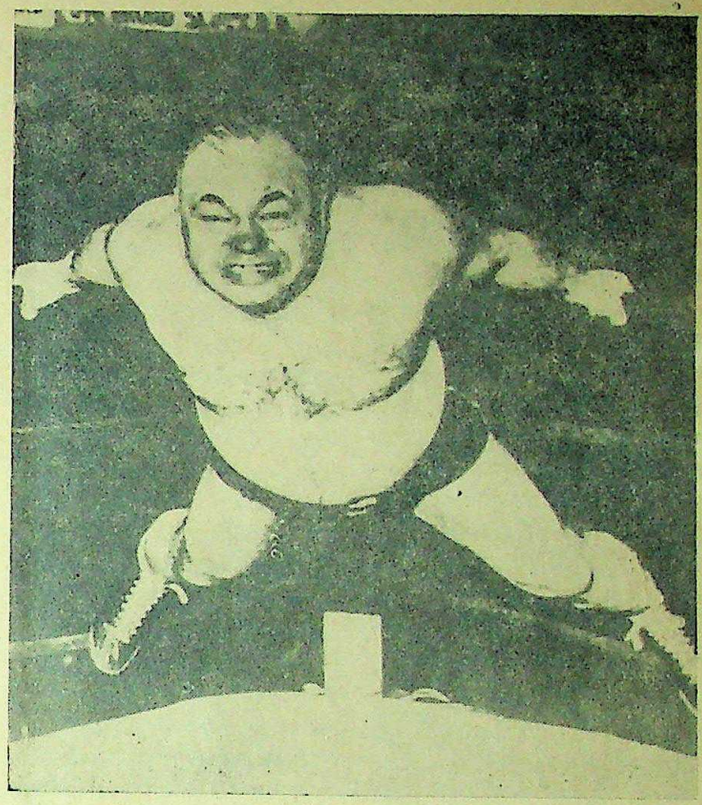

संसार का सुप्रसिद्ध घूँसेबाज़ 'टू-टोन' टोनी ने आजकल कसरत करने तथा पहलवानी में नाम कमाने का अपना नया पेशा प्रारम्भ कर दिया है।

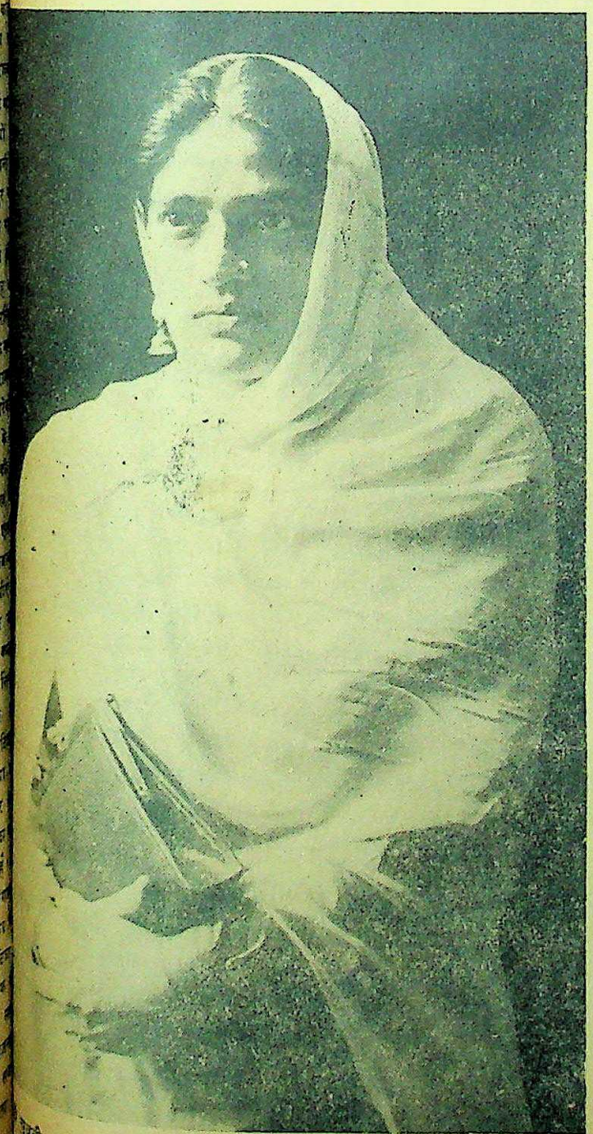

...वती मुमताज बेगम जिन्होंने ८,५०,२०६ रुपये का संसार-प्रसिद्ध फ़ुटबाल ...गिता में, पारितोषिक प्राप्त किया है। आप एक पर्देनशीन महिला हैं।

श्रीयुत ए० नियाजी, आपने चिड़ियों, जानवरों और कीड़े-मकोड़ों की तरह-तरह की स्वाभाविक बोलियाँ बोलने में ख्याति प्राप्त की है। ...पने बोलियाँ बोलने की कला में अनेक पारितोषिक भी प्राप्त किये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

लोकनायक पंडित जयनारायण व्यास की स्वर्ण-जयन्ती

फरवरी १९४८ में व्यासजी अपने अमूल्य जीवन के ५० वर्ष पूरे कर चुकेंगे। वे अखिल भारतीय देशी-राज्य प्रजा-परिषद् के बारह वर्षों से मंत्रित्व के जिम्मेदार पद पर आसीन हैं और इसी नाते मुल्क की तमाम रियासतों का उनसे घनिष्ठ सम्पर्क रहा है। रियासतों में चलनेवाले आन्दोलनों तथा हर एक तरह की पेचीदी समस्याओं को सुलझाने में वे अपूर्व दिलचस्पी से भाग लेते रहे हैं। इसमें कोई शक नहीं कि वे रियासती मुल्क के एक प्रभावशाली एवं तेजस्वी नेता तथा उद्दीप्त प्रकाशपुंज हैं। वे हैं राजस्थान के प्रान्तपति और मारवाड़ के गांधी श्री जयनारायण व्यास।

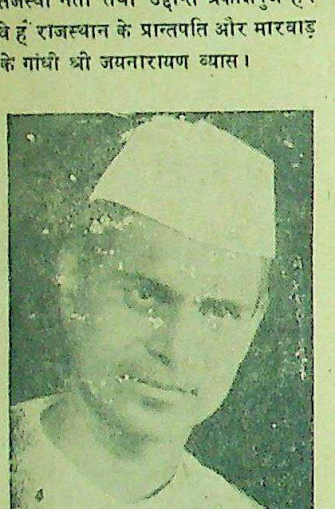

लोकनायक पंडित जयनारायण व्यास

श्री व्यास जी आज भारतीय विधान-परिषद् में मारवाड़ का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। उन्होंने मारवाड़ में जो जो काम किये हैं वे अभूतपूर्व एवं तवारीखों में लिखने काबिल हैं। उन्होंने अपने खून से मारवाड़ का इतिहास लिखा है और उस ऊसर धरती में भी अपने अथक परिश्रम से ऐसे-ऐसे चोटी के नेता पैदा किये हैं जो कार्य-शक्ति में किसी भी उपजाऊ जमीन के उन्नायकों से कम नहीं। मारवाड़ के बच्चे-बच्चे की जबान पर तो वे हैं ही, लेकिन अब वे केवल मारवाड़ और देशी रियासतों के ही नहीं बल्कि सारे हिन्दुस्तान के हो गये हैं। उनके सोचने और विचारने के तौर-तरीके महान् और असीम हो गये हैं। उनके कार्य की संकुचित रेखाएँ टूट-तड़क गई हैं। उनकी कार्यप्रणालियाँ अब मारवाड़ के संकीर्ण दायरे को पीछे छोड़कर बहुत आगे बढ़ गई हैं, बहुत आगे।

अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद् के उदयपुर-अधिवेशन में अपने लिए दिये जानेवाले धन्यवाद भाषण को रोककर पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था "मेरे विषय में आप कुछ मत कहिए। मैंने आपको कुछ भी सहयोग नहीं दिया है। आपके जलसे की सफलता का श्रेय श्री जयनारायण व्यास को है। अतः धन्यवाद के अधिकारी वे हैं, आप उनका धन्यवाद कीजिए।"

यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि श्री व्यास जी ने अँधेरे में रहनेवाले राज्यों में जागरण की मशालें जगाकर उजाला बिखेर दिया और कई रहस्यमयी पेचीदी गुत्थियों का पर्दा फाश कर जनता को सही पगडंडियाँ दिखलाईं। उनका जीवन शुरू से लेकर अब तक क्रान्तियों का जमघट रहा है। उन्होंने मारवाड़ जैसे दस शताब्दि पीछे चलनेवाले राज्य में बहुत मुसीबतें उठाकर तिरंगे की शान रखी है। उनको राज्य के दकियानूसी और अन्धे शासन को खतम करने के लिए कई आन्दोलन चलाने पड़े हैं। उन्हें कई घड़ियाँ कई महीने और कई वर्ष जेल के सीखचों में बन्द रहकर बिताने पड़े हैं। अपने जलते हुए जजबातों को जनता तक पहुँचाते समय सरकार द्वारा देशनिकाले का आदेश पाकर उन्हें एक अनिश्चित पर लम्बे अरसे तक अपनी प्यारी मातृभूमि मारवाड़ से भी अलग रहना पड़ा है। लेकिन फिर भी उनके दिल में यह तमन्ना थी, यह ख्वाहिश थी कि कीमत चाहे जो चुकानी पड़े, लेकिन हम उत्तरदायी शासन लिए बिना चैन नहीं लेंगे और इसी उद्देश्य को लेकर वे बराबर पथरीले कँटीले मार्ग पर बढ़ते गये, बढ़ते ही गये।

और आज तो वे वहाँ उस मंजिल पर पहुँच गये हैं जहाँ से वे तमाम रियासतों के दिन बदलेंगे, रातें बदलेंगे, इतिहास और झंडे बदलेंगे और तब खत्म हो जायेंगी ये जुल्मी जागीरें ये अत्याचारी रजवाड़े और ये राजतंत्र प्रणालियाँ और तब कायम होगी जिम्मेवार हुकूमत जमींदाराना हुकूमत एवं उत्तरदायी शासन।

व्यास जी ने अब तक हँस-हँसकर मुसीबतों का मुकाबला किया और अपनी सेवाएँ रियासत मुल्क को दीं। साथ साथ हिन्दुस्तान के आजादी के जंग में भी उन्होंने तहेदिल से सहयोग दिया और अपनी पूरी ताकत के साथ उस जंग को आगे बढ़ाया। इस तरह यदि आप उनके जीवन का अध्ययन करें तो मालूम होगा वह त्याग तपस्या और साधना का जीवन है। अँधेरे भू-प्रदेश को उजाले में लाने के लिए उन्होंने दीपक की तरह जल-जलकर अपना जीवन बिताया है।

कल फरवरी आ जायेगी वह ५१वें वर्ष में प्रवेश करेंगे। उनका काम, उनकी जिन्दगी इसी तरह आगे बढ़ती जायेगी, बढ़ती जायेगी। वे हमेशा की तरह जल-जलकर हम सबको रोशनी देते जायेंगे, लेकिन मेरा सवाल है हमने उनकी कितनी कद्र की, कितना सम्मान किया, कितनी इज्जत की, कुछ नहीं।

वे मारवाड़ के हैं, वे राजस्थान के हैं, वे हिन्दुस्तान के हैं और इस नाते हम सब उनके ऋणी हैं। आइए, राजस्थान के प्रान्तपति की स्वर्ण-जयन्ती मनाकर उनका सम्मान कर—जानेवाली फरवरी में राज्य राज्य और प्रान्त प्रान्त में यह आयोजन कीजिए तथा अपनी सलाह, सुझाव भेजकर जोधपुर में होनेवाले उस विराट् उत्सव को सफल बनाने में सहयोग दीजिए।

जोधपुर, —श्रीमंतकुमार व्यास
१ जुलाई, ४७

* * *

राष्ट्र-निर्माण और हिन्दी

भारतवर्ष शताब्दियों से परतंत्रता की जंजीरों में जकड़ा रहा और उससे मुक्त होने के लिए यह उत्तरोत्तर प्रयत्नशील रहा। परन्तु अभाग्यवश वह अब तक अपनी लक्ष्य-प्राप्ति में सफल न हो सका। भारत के भाग्य-निर्णयात्मक इन जटिल समस्याओं के सुलझाने में अत्यन्त व्यस्त होने के कारण हिन्दी को राष्ट्र-भाषा का स्थान देने का हमारा प्रयास भी कल्पना तक ही सीमित रहा। प्रत्येक देश का राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास उसकी राष्ट्रभाषा पर ही अवलम्बित रहता है। जिसके द्वारा हम उस राष्ट्र की सेवा सुचारुरूप से कर सकते हैं।

भाषा के प्रश्न को लेकर हमारे देश में नाना प्रकार की विचारधारायें चल पड़ी हैं। गत वर्ष रेडियो की भाषा-संबंधी नीति की आलोचना की समाचार-पत्रों में धूम मची हुई थी। निस्सन्देह रेडियो की घातक नीति ने हिन्दी पर पर्याप्त कुठाराघात किया है।

मुगल साम्राज्य-काल के लगभग ३०० वर्षों में (१५०० से १८०० ई० तक) फारसी और उर्दू को ही राज-भाषा का स्थान मिला था। मुगल-साम्राज्य के पतन और अँगरेजों के आगमन के साथ-साथ अँगरेजों को राज-भाषा का गौरव प्राप्त हुआ। यद्यपि इन ४५० वर्षों में ी हिन्दी का सांस्कृतिक विकास उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया; परन्तु हिन्दी राष्ट्रभाषा के स्थान से वंचित रही। वर्तमान अँगरेजी राज्यकाल में हिन्दी, उर्दू का संघर्ष प्रारम्भ हुआ। यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि न केवल हिन्दी-उर्दू के परस्पर संघर्ष का मूल कारण अँगरेजी शासन की कूटनीति थी, अपितु हिन्दू-मुस्लिम-कटुता की उत्तरोत्तर वृद्धि का भी मुख्य कारण वही थी, जिसके परिणामस्वरूप भारत के भिन्न-भिन्न भागों से जन-संहार का तांडव-नृत्य हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं।

वर्तमान राजनैतिक वातावरण से पता चलता है कि गांधी जी के नेतृत्व में गत २७ वर्षों के कठिन संघर्ष के फल-स्वरूप अब हम स्वतंत्रता की ओर अग्रसर हुए हैं। शासनसत्ता को हस्तान्तरित करने का निर्णय और देश-विभाजन के साथ-साथ यह बात स्पष्ट हो कि अब हिन्दुस्तानी का समर्थन केवल अहितकर ही न होगा, किन्तु के साथ घोर अन्याय करना भारत-विभाजन की घोषणा का हमें स्वप्न में भी अनुमान न जिन परिस्थितियों में हमें स्वाधीन पड़ा है और जिसके परिणाम हम अखंड भारत को हिन्दुस्तान पाकिस्तान के रूप में देखने को उससे यह तो स्पष्ट हो गया है हमें हिन्दी की उपेक्षा न करनी हिन्दुस्तानी के समर्थकों के वर्तमान परिस्थिति में केवल राष्ट्रभाषा बनाना श्रेयस्कर

केन्द्रीय सरकार-द्वारा पंजाब बंगाल आदि के लिए आवश्यक नियुक्त कर दी गई हैं और कार्य भी प्रारम्भ हो गया है। प्रश्न आज हमारे सम्मुख बड़ा ही का प्रश्न है। हिन्दी भाषा का विकास हमारी प्राचीन और संस्कृत भाषा की छत्रछाया में है; अतः हमें अपनी उस प्राचीन को यथास्थान सुरक्षित रखने हिन्दुस्तान में हिन्दी को ही का स्थान देना चाहिए। हिन्दुस्तान पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की और सांस्कृतिक सुरक्षा की क्या होगी। यह प्रश्न भविष्य पर परन्तु राष्ट्रभाषा के प्रश्न का निर्णय करके उसे राष्ट्र भाषा से सुशोभित करना परमावश्यक इसका यह तात्पर्य नहीं कि हम या उर्दू से घृणा करते हैं। उर्दू देश की एक मुख्य भाषा है, प्रगति में हम बाधा उपस्थित नहीं चाहते; पर उसका स्थान हिन्दी के समकक्ष होने की ी नहीं कर सकते।

अन्ततः देश के साहित्यिकों निवेदन है कि राष्ट्र-निर्माण के युग में हिन्दी को राष्ट्र भाषा के प्रतिष्ठित करने के लिए निर्भीक प्रयत्न करें। इस सम्बन्ध में शैथिल्य से महान् राष्ट्रीय की आशंका है। आशा है, देशवासी इस शुभ भावना से प्रेरित हो में अग्रसर होंगे और उन्हें का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

स्वराज-भवन, —रामवर
प्रयाग

भारी लूट! आज ही मँगावें—अवसर मत चूकें
३॥) में ६ नई पुस्तकें
पति-पत्नी जीवन (सचित्र)—पति-पत्नी के पढ़ने योग्य दाम्पत्य जीवन को संतुष्ट बनानेवाली अपूर्व पुस्तक १॥)। इँग्लिश टीचर—घर बैठे अँगरेजी लिखना बोलना सीखो १)। महावशीकरण—अनेकों प्रकार के वशीकरण मंत्रों का खजाने की कुंजी—अनेकों प्रकार के हुनर सीख धन पैदा कीजिये १)। हारमोनियम टीचर—घर बैठे हारमोनियम बजाना, गाना सीखो १॥)। जादू की सफाई के आश्चर्यजनक खेल करना १)। ६ पुस्तकों के सेट का मूल्य ३॥) पैकिंग ॥) अलग।
पता—ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (D. A. २१) अलीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

भारतीय स्त्रियों की कुछ प्रमुख समस्याएँ

पढ़ी-लिखी नारियाँ छोटी और अपढ़ नारियों का दर्जा क्यों नहीं ऊँचा करतीं ?

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

पश्चिमीय देशों की अपेक्षा हमारे देश की नारियों को बहुत कुछ कार्य करना है। पश्चिमीय देशों में नारी-जागरण का युग कई शताब्दियों पूर्व ही प्रारम्भ हो गया था। इसलिए यदि आज उनमें नवोत्साह की कमी पाकर बातें करती हैं तो कोई आश्चर्य नहीं; क्योंकि भारतीय नारियों को अभी कई सीढ़ियाँ तय करनी हैं। इसके अतिरिक्त एक नवीन समस्या और उपस्थित हुई है—पूर्व-पश्चिम की आर्थिक और सामाजिक समस्याओं की विभिन्नता। पश्चिमीय देशों का समाज पूर्व (भारत) के समाज से बहुत ही भिन्न है। वहाँ न तो बाल-विवाह जैसी कुप्रथाएँ हैं और न स्त्रियों को अपनी उस प्राचीन और पवित्र परम्परा से बन्धन। इसलिए इस देश में सुरक्षित रखने के लिए नारियों का अभाव हो जाता है। हिन्दी को ही राष्ट्र-भाषा के प्रश्न का कठोर कार्य करने में वे थक जाती हैं। हिन्दुस्तान में पर्दा ने देश के आधे भाग को चहारदीवारी में बन्द कर दिया है। अल्पसंख्यकों की रक्षा के प्रश्न को खुलकर पुरुषों का साथ नहीं देना चाहिए। अभी हाल में जब कि लार्ड माउण्टबेटेन भारत के वाइसराय होकर आये और भद्र पुरुषों के सत्कार और वार्ताओं में जो समय माउण्टबेटेन ने लिया वह राष्ट्रीयता की देन है। यद्यपि यह देश में भी अब बहुत कुछ दूर हो गया है फिर भी हमारे नारी-समाज के लिए अभी तक वह एक अभिशाप दूर है और किसी अंश में वह अभिशाप दूर है। इन कुरीतियों के अतिरिक्त भारतीय नारियों ही के सामने एक समूचे भारत के सम्मुख गरीबी का एक बड़ा प्रश्न है, जब तक यह प्रश्न हल नहीं हो जाता हमारे देश का दुर्भाग्य साँप बनकर हमें सताता रहेगा। इस स्थिति में हम अपने नारी-समाज के सम्मुख कई कठिनाइयाँ देखते हैं जिनको हमें और हमारे नारी-समाज को दूर करना है। उन कठिनाइयों में पर्दा, बाल-विवाह, गरीबी से मुक्ति, छोटों के प्रति बड़ों की घृणा, पेशे अथवा कार्य से अभिरुचि आदि हैं। इन पर हमें विचार करना चाहिए जिससे हमारे नारी-समाज के लिए सुधारवादी मार्ग निकले।

भारतीय नारियों में प्रगतिशीलता बढ़ रही है। परन्तु वे अपने समाज को उन्नति की ओर ले चलने के बजाय स्वयं को ही उन्नति तक सीमित रखना चाहती हैं। भारतीय स्त्रियाँ राजनैतिक क्षेत्र के अतिरिक्त अन्य क्षेत्र से आज भी घृणा करती हैं। यदि वे कुछ और भी पसन्द करती हैं तो अस्पतालों में नर्सिङ्ग। कुछ ईसाई अथवा ऐंग्लो इंडियन महिलाएँ टाइपिंग और अन्य कार्यों की ओर झुकी हुई हैं, परन्तु हमारे देश की जन-संख्या इतनी बड़ी है कि कुछ स्त्रियों के ऐसे कामों से जुट जाने से पूरा नारी-समाज कुर्सीवाले अथवा कागजी कार्यों में नहीं जुट सकता। यहाँ तो हरिजन नारियाँ अपने अपने पेशे में दत्तचित्त हो कार्य करती हैं। फिर भी उनमें बीमारियाँ, गन्दगी और भुखमरी का साम्राज्य छाया रहता है। मेहतरों की स्त्रियाँ दिन भर अपने कार्य करती हैं उन्हें यह भी नहीं मालूम कि उनका क्या अस्तित्व है। ऐसे ही सैकड़ों उदाहरण देश की दुर्दशा के सामने भरे पड़े हैं। जब तक देशवासियों का ध्यान इस ओर न जायेगा इस देश का नारी-समाज बहुत पीछे पड़ा रहेगा।

भारतीय नारियों में उच्च शिक्षा प्राप्त ग्रेजुएट स्त्रियों की संख्या बढ़ रही है।

नारियों के सामाजिक विकास में जितना दोष पुरुषों का नहीं उतना स्वयं स्त्रियों का है। नारियों को चाहिए कि वे ऐसे आन्दोलन को जन्म दें जिसके द्वारा वे गाँव-गाँव, मुहल्ले-मुहल्ले पहुँचकर स्त्रियों की सभाओं अथवा अन्तरंग बैठकों का आयोजन करके स्त्रियों में नवजीवन डालें। परन्तु स्त्रियाँ स्वयं इतनी आराम-पसन्द हो गई हैं कि वे इस कार्य की ओर बहुत कम प्रभावित होती हैं। उन्हें तो केवल कुर्सियों पर वकृता देना अथवा किसी दफ्तर में बैठकर कुछ शब्द लिख देना ही काफी है। फिर नारी-आन्दोलन की जिम्मेदारी किसके सिर दी जा सकती है ? आधुनिक नारियों में अब भी पश्चिमीय वायुमण्डल गूँज रहा है। वे इँगलैंड, अमेरिका अथवा अन्य प्रजातन्त्रात्मक देशों के आदेश को लेकर लड़ने लगती हैं साथ ही यह भी चाहती हैं कि वे उन देशों की मौलिकता को सीधे-सीधे भारत में ढाल दें। परन्तु यह असम्भव है। वह पश्चिम है और यह पूर्व। दोनों की अलग-अलग परम्पराएँ हैं, दोनों अलग अलग सभ्यता के साथ वर्षों से इस संसार में पल रहे हैं। फिर हर बात में पश्चिम की नकल करना केवल मूर्खता है। हमारी वे नारियाँ जिनको हम सभ्य कहते हैं और जो ऐसे क्षेत्र में आई हैं अब भी हमारी उन बहनों से घृणा करती हैं जो हमारे गार्हस्थ्य जीवन को सफल बनाने में प्रतिक्षण हमारा साथ देने को तैयार हैं। हरिजन-स्त्रियाँ जिनमें मेहतर हैं अपने प्राणों का मोह छोड़कर हमारी गन्दगी साफ करें, इस पर भी, हम उनसे घृणा करें, हैं। यह कैसा अनुभव है ! क्या इस मनोवृत्ति से समाज में परिवर्तन हो सकता है ? ऐसे ही कितने ही उदाहरण हैं जिनसे पढ़े-लिखे लोगों से भी घृणा पैदा होती है। पढ़ी-लिखी लड़कियाँ भी कम अभिमानी नहीं।

उपर्युक्त विवरण से हम जान सकते हैं कि हमारे नारी-समाज में कौन कौन-सी ऐसी बातें हैं जिनको हम दूर कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह भी जानना जरूरी है कि क्या नारी-समाज का उत्थान उन्हीं चीजों तक सीमित है। इस पर विचार करने से प्रकट होता है कि हमारा नारी-समाज दो भागों में बाँटा जा सकता है, उन दो भागों में एक धनिक और ऊँची स्थितिवाली नारियाँ दूसरे गरीब और छोटी स्थितिवाली नारियाँ। जब तक भारतीय नारी-समाज छोटी नारी-जाति का उत्थान न सोचेगा नारी-जागरण का ढोंग चलता रहेगा। इसलिए यह आवश्यक है कि हमारी शिक्षिता महिलाएँ उन झोपड़ियों तक जावें जहाँ कि अशिक्षा, गन्दगी और अविद्या का साम्राज्य छाया हुआ है। इन बुराइयों की जिम्मेदारी यद्यपि बहुत कुछ पुरुषों पर निर्भर करती है, परन्तु हमारी नारियाँ जो अपने को जागरूक कहती हैं, इसलिए जिम्मेदारी से बरी नहीं हो सकतीं। पर, उन नारियों में उस प्रेम का अभाव है जो वास्तविक होना चाहिए। प्रत्येक सम्भ्रान्त महिला का कर्तव्य है कि वे उन झोपड़ियों तक जावें जहाँ उनकी बहिनें आने-वाले युग के लिए क्रान्तिकारी परिवर्तन चाहती हैं। देश के सभ्य पुरुषों और स्त्रियों का कर्तव्य है कि वे अपने देश के अर्द्ध भाग को बचाने के लिए उन टूटी और गन्दी झोपड़ियों तक जावें और वहाँ की अशिक्षा और अन्धकार को दूर करें, देश की महिलाओं के सम्मुख यह समस्या पुरुषों की अपेक्षा अधिक गम्भीरता रखती है।

Godrej 'CHAVI' BRAND गोदरेज चाबी छाप साबुन का

वाजबी दाम

हर एक साबुन के चित्र के नीचे बट्टी का वाजबी खुदरा दाम लिखा हुआ है। जहाँ चुङ्गी, आक्ट्राय, टरमीनल टैक्स या और कोई भी दूसरा कर लिया जाता है वहाँ साबुनों का दाम जरा अधिक होगा। कच्चा माल का दाम बढ़ने से हमको भी ता० १०-४-४७ स लाचारी से ज्यादातर माल का दाम बढ़ाना पड़ा है।

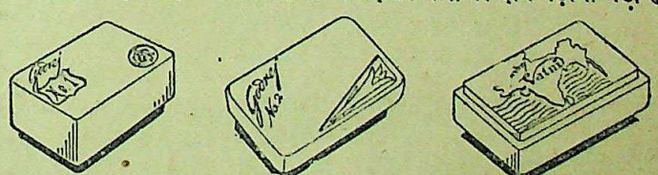

नं० १—११ आना नं० २—८½ आना 'वतनी'—६ आना
छोटा ('बेबी') 'वतनी'—१¾ आना

सण्डल—७ आना लिमडा—७ आना खस—७ आना

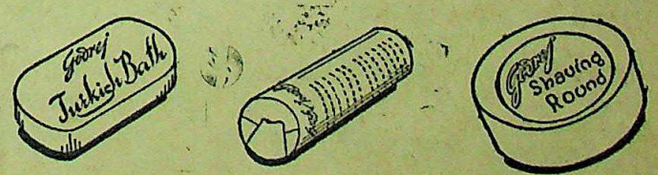

टर्किश बाथ—४½ आना शेविंग स्टिक (कारटन) ७½ आना [दाम बढ़ा नहीं] शेविंग स्टिक (टिन)—१० आना शेविंग 'राउण्ड'—४½ आना [दाम बढ़ा नहीं]

गोदरेज सोप्स, लि०
विश्व में सबसे बड़े हैवलेट (महीन का) साबुन बनानेवाले अग्रगण्य निर्माता।

CC-0. In Public Domain. Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय स्वाधीनता काबिल पार्लामेंट में पेश बिल की मुख्य बातें

भारतीय स्वाधीनता-बिल की धाराओं के अनुसार, जो आज पार्लियामेंट में पेश हुआ है, १५ अगस्त, १९४७ को हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान नामक दो स्वतन्त्र डोमिनियनों की स्थापना होगी।

पाकिस्तान में डोमिनियन में वे क्षेत्र रहेंगे, जो १५ अगस्त को पूर्वी बंगाल तथा पश्चिमी बंगाल के प्रान्तों में शामिल कर दिये जायेंगे; (२) सिंध तथा ब्रिटिश बलूचिस्तान तथा (३) यदि उत्तर-पश्चिमी सीमाप्रान्त ने पाकिस्तान विधान-सम्मेलन में शामिल होने का निश्चय किया तो उत्तर-पश्चिमी सीमाप्रान्त।

१९३५ के भारत-विधान के अन्तर्गत निर्मित बंगाल प्रान्त तोड़ दिया जायगा। पूर्वी बंगाल तथा पश्चिमी बंगाल नामक नये प्रान्त बनेंगे।

प्रत्येक डोमिनियन के लिए बादशाह एक गवर्नर जनरल नियुक्त करेंगे। हाँ, यदि दोनों डोमिनियनों में से किसी डोमिनियन की धारा-सभा यह निश्चय करेगी कि दोनों डोमिनियनों के गवर्नर जनरल एक ही व्यक्ति नियुक्त किये जायँ, तो बात दूसरी है।

दोनों नये डोमिनियनों की धारासभाओं को आन्तरिक मामलों में तथा वैदेशिक मामलों में कानून बनाने का पूर्ण अधिकार होगा और कोई कानून इस आधार पर नाजायज नहीं माना जायगा कि ब्रिटिश कानून के विरुद्ध है।

ब्रिटिश सरकार १५ अगस्त को ब्रिटिश भारत में शामिल सभी क्षेत्रों के शासन की जिम्मेदारी हस्तान्तरित कर देगी।

देशी रियासतों पर सम्राट् का प्रभुत्व समाप्त हो जायगा और उनके साथ की गई सभी सन्धियाँ तथा समझौते भी समाप्त हो जायेंगे।

दोनों डोमिनियनों की विधान-सभायें, विधान बनाने के अलावा, डोमिनियन धारा-स ा का भी कार्य करेंगी।

बिल में कहा गया है कि १९३५ भारत-विधान के अन्तर्गत कोई प्रान्तीय बिल बादशाह के अनुमोदन के लिए नहीं रिजर्व रखा जा सकता और बादशाह किसी प्रान्तीय कानून को रोक नहीं सकते।

गवर्नर जनरल को अधिकार दिया गया है कि इस कानून की धाराओं को कार्यान्वित करने के लिए जैसी कारवाई ठीक समझें, करें।

गवर्नर जनरल आज्ञा देकर भारतीय सेनाओं का विभाजन दोनों डोमिनियनों में करेंगे। गवर्नर जनरल विभाजन होने तक सेना के कमान तथा अनुशासन की व्यवस्था करेंगे।

शासन-सत्ता हस्तान्तरित कर दिये जाने के बाद दोनों डोमिनियनों में किसी भी डोमिनियन में जो ब्रिटिश सेनायें रह जायेंगी, उन पर भारतीय स्वाधीनता बिल के फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार के नियंत्रण में कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

बिल में अधिकार दिया गया है कि भारत-मंत्री इस समय जो कार्य करते हैं वह कार्य दूसरे सेक्रेटरी आफ स्टेट या अन्य मंत्री करें।

बंगाल की भाँति पंजाब प्रांत भी तोड़ दिया जायगा और पश्चिमी पंजाब तथा पूर्वी पंजाब नामक दो नये प्रान्त बनेंगे।

नये प्रान्तों की सीमाएँ गवर्नर जनरल द्वारा नियुक्त सीमा कमीशनों के फैसलों से निर्धारित होंगी।

बिल में कहा गया है कि आसाम प्रान्त के सिलहट जिले की जनता यदि मत संग्रह में निर्णय करेगी तो सिलहट जिला पूर्वी बंगाल के नये प्रान्त में शामिल कर दिया जायगा, जो पाकिस्तान डोमिनियन का एक अंग होगा।

शासन-सत्ता हस्तान्तरित कर देने के दिन या उसके बाद ब्रिटिश पार्लियामेंट में पास किया गया कोई कानून नये डोमिनियनों पर नहीं लागू होगा।

तपस्वी साधु धर्मानंद कौसांबी

(पेज ६ का शेष)

आप योगाभ्यास करते रहे। वहाँ की जलवायु उनके अनुकूल न हुई, इसलिए वे भारत लौट आये। आप इस समय पीत वस्त्र पहने हुए थे। यहाँ भगवान् बुद्ध के चरणों से पूतकुशिनारा, सारनाथ, लुंबिनीतन—कपिलवस्तु आदि बौद्ध-तीर्थों की यात्रा की। माण्डले शहर में बौद्ध-ग्रंथों का अध्ययन करते रहे और १९०६ में आप कलकत्ता लौटे।

बंग-भंग के कारण राष्ट्रीय आन्दोलन को उन दिनों गति मिली और कलकत्ते में नेशनल कालेज खुला। आप उसी कालेज तथा कलकत्ता यूनिवर्सिटी में पालि के अध्यापक नियुक्त हुए। आपने पीले कपड़े पहनना छोड़ दिया था। आपकी इच्छा थी कि महाराष्ट्र में बौद्ध-धर्म का प्रचार किया जाय। श्रीमंत महाराज गायकवाड़ को जब इसका पता लगा तो उन्होंने तार द्वारा सन्देश भेजा—आप महाराष्ट्र के किसी भी शहर में रहें। आपको बड़ौदा-सरकार की ओर से ५०) मासिक बराबर मिलते रहेंगे। यह सहायता तीन वर्षों तक चालू रहेगी। हाँ, प्रतिवर्ष एक पुस्तक आप बड़ौदा-सरकार के लिए तैयार कर देंगे। बहुत सोच-विचार के बाद कौसांबी जी ने स्वयं लिखा कि प्रतिमास २५०) की कलकत्ता यूनिवर्सिटी की नौकरी छोड़कर ५०) माहवार का श्रीमंत गायकवाड़ का दिया वेतन स्वीकार करने से मुझे कभी पश्चात्ताप नहीं हुआ। यह वेतन अस्वीकार करता तो डा० वुड्स से परिचय न होता। पूना आकर रहने से डा० भण्डारकर से निकट-सम्बन्ध स्थापित हुआ और उनके प्रयत्न से बम्बई यूनिवर्सिटी में पालि को स्थान मिला।

आप अमेरिका, रूस आदि देशों में भी गये और आपके पांडित्य का लोहा दूसरे देशवासियों ने माना। आप अमेरिका में वर्षों तक रहे हैं। वहाँ पर उन्होंने 'विशुद्ध मग्गो' नामक पालि-ग्रंथ का संशोधन और सम्पादन किया। वहाँ से लौटने पर १९२२ से १९२५ तक गांधी जी द्वारा आरम्भ किये हुए गुजरात विद्यापीठ के पुरातत्त्व मंदिर शाखा में पालि भाषा के आचार्य की हैसियत से कार्य करते रहे।

आपने कई पुस्तकें लिखी हैं। 'निवेदन' और 'खुलासा' ये दो किताबें उन्होंने आत्मचरित्र पर लिखी हैं। हिन्दू संस्कृति और अहिंसा इनका मौलिक ग्रंथ है। १९३० में आप लेनिनग्राड से भारत लौटे और गांधी जी के नमक-सत्याग्रह में भाग लिया और गिरफ़्तार किये गये। हाईकोर्ट द्वारा आप छोड़ दिये

अहिंसा के सम्बन्ध में आप करते थे कि अहिंसा की सच्ची कीड़ों-मकोड़ों के बचाव में नहीं बहुजन समाज के अत्याचारों करने में है। इसलिए किसी भी हिंसा का महत्त्व बतलाना अधिक समझा जाना चाहिए। वास्तविक संयम और आत्मशुद्धि में है। विकास एक दूसरे की सेवा में होना

जात्यभिमान, सम्प्रदाय देशाभिमान ये सब अभिमान परम शत्रु हैं। एक जाति, एक देश दूसरे की अपेक्षा न तो उच्च। सबको परस्पर सेवा अपना शौर्य दिखाने की छुट्टी दिखाकर प्रतियोगिता करना पीट पर आ जाना अत्यन्त निंद्य बहुजन समाज की भावना होना और उसकी अभिवृद्धि के लिए सम्प्रदायों के सदस्यों को प्रयत्न चाहिए। आज मनुष्य समाज के खासकर इस देश के लिए ऐसे बहुत जरूरत है जो हमारे हृदयों हुए जात्याभिमान, पंथाभिमान दूर हटाकर सबको शुद्ध मनुष्य अभिमान को जिन्होंने जीत लिया ही सच्चे मानी हैं—वे ही सच्चे ते मानिनो विजयिनश्च त ये मानशत्रु विजयाय, वर्हति ये तं स्फुरंतमपि मानरिपुं कामं जने जयफलं प्रति

* * *

आचार्य धर्मानन्द कौसांबी के अनन्य भक्तों में से थे। गांधी बहुत चाहते थे। उन्होंने पटना लिखा था कि आप जिएँ तो सेवा और मरें तो कर्मवशात्। उनके वृद्ध भारत की एक अपूरणीय क्षति ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति

(भारतेन्दु हिन्दी सेन्डिकेट, व

श्रीकृष्ण-चरित्र—लेखक, काशीनाथ, एम० ए०, एम० बी० पतितपावन भगवान् श्रीकृष्ण पावन चरित्र इस पुस्तक में के अनुसार वर्णन किया गया जिसे पढ़ने पर उपन्यास का मज़ा है। भाषा प्राजल और परिमार्जित कृष्ण की जीवनी पर विवेचन ढंग से प्रकाश डालनेवाली हिं अपने ढंग की यह प्रथम पुस्त मूल्य ३।–) तीन रुपये पाँच आने मैनेजर—(बुकडिपो) इंडियन लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ददाताओं के पत्र

...ाग हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की ...सम्बन्धी मान्यतायें अभी नहीं के ...हैं। केन्द्रीय सरकार ने इसकी ...अवहेलना की है। क्या एक 'मध्यमा' ...छात्र की योग्यता, किसी भी ...विश्वविद्यालय के सम्मानित ...से न्यून आँकी जा सकती है? ...विषय है कि शिक्षा-विभाग तथा ...सम्मेलन के उच्च पदाधिकारी ...कानों में तेल डाले निर्द्वन्द्व सो ...प्रश्न उठता है कि सम्मेलन ...दशा में ऐसा कौन-सा प्रशंसनीय ...किया है। 'हिन्दी' के नाम पर, ...हिन्दी-भाषा, राष्ट्रीयता के गौरव-...पर आसीन होने जा रही है। ...शिक्षा-विभाग के कर्मठ विद्या-...शिक्षा-प्रसार के पृष्ठपोषक, इस ...ध्यान देंगे कि वे मध्यमा-उत्तीर्ण ...को, आगामी वर्ष में होनेवाली ...लय की बी० ए० परीक्षा में ...होने की अनुमति प्रदान करें, ...कम से कम हाईस्कूल की ...न एवं किसी भी सम्मानित ...इंटरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण ...हो?

—रघुनन्दन शुक्ल 'विशारद',
जबलपुर

* * *

...फरपुर (बिहार) के प्रसिद्ध ...तथा कांग्रेसवादी श्री नीती-...सिंह—जो कि सुप्रसिद्ध साम्य-...श्री अवधेश्वरप्रसादसिंह के ...हैं—की शादी आरा निवासी ...सिंह रिटायर्ड एक्साइज ...की सुपुत्री श्रीमती शान्ति ...साथ पिछले दिन हो गई। ...उपस्थित प्रमुख व्यक्तियों में ...श्री अनुग्रहनारायणसिंह अर्थ-...नीय श्री विन्देश्वरीप्रसाद ...कर बिहार लेजिस्लेटिव ...श्री रामेश्वरप्रसादसिंह, एम० ...द्वीपनारायणसिंह एम० ...ठाकुर रामनन्दनसिंह एम० ...रायसाहब बाबू भागवत-...ब्रजनन्दन आजाद सम्पादक ...पं० शम्भूनाथ झा सहकारी ...इंडियन नेशन, उमानाथ ...अफसर गवर्नमेंट आफ बिहार, ...पुरी, रामधारीसिंह दिनकर ...विशेष उल्लेखनीय है। हिन्दु-...प्रसिद्ध गायक भी बारात में ...

—संवाददाता

* * *

...श्रीमती कमलाकुमारी ...ताने की महिलाओं को ...का आयोजन करती हुई ...सहित पहुँचीं। आपके सम्मान में प्रजा-परिषद् बूँदी के अध्यक्ष और राजस्थान के प्रमुख पत्रकार श्री ऋषीदत्त, श्री मेहता की अध्यक्षता में आजाद पार्क में सार्वजनिक सभा हुई। श्री मेहताब ने श्रीमती श्रोत्रिय की सेवाओं और कार्यों का परिचय कराया। श्रीमती श्रोत्रिय ने अपने भाषण में भारत के नवनिर्माण में राजस्थानियों की अपनी महिलाओं सहित अपना उचित कर्तव्य निभाने के लिए सचेत किया। श्री विद्याधर जी के गायन तथा श्री मेहता बाई के भाषण के बाद श्री दयाशंकर श्रोत्रिय का सामयिक एवं ओजस्वी भाषण हुआ।

—संवाददाता

* * *

नाहिल (शाहजहाँपुर) के कृष्ण-पुस्तकालय में शिक्षा-प्रसार वाचनालय की स्थापना मंत्री श्री कृष्ण जी ने सोत्साह की। इसी अवसर पर श्री शिव शर्मा वाजपेयी, श्री नन्दलाल वाजपेयी, श्री बाबूराम गुप्त, श्री शिवदर्शनलाल ने कुछ पुस्तकें शिक्षा-प्रसार कृष्ण-पुस्तकालय के लिए भेंटस्वरूप प्रदान कीं।

—संवाददाता

जोधपुर मारवाड़ के तरुण कुमारों की एकमात्र साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था साहित्य-सदन ने कुमारों की साहित्यिक, कलात्मक तथा प्रगतिशील प्रवृतियों को संगठित एवं विकसित करने के लिए समय-समय पर सर्वांगपूर्ण बुलेटिन प्रकाशित करने का निश्चय किया है। इस प्रयास में सदन को हिन्दी-संसार के माने हुए विद्वानों का सक्रिय सहयोग प्राप्त हो चुका है।

—संवाददाता

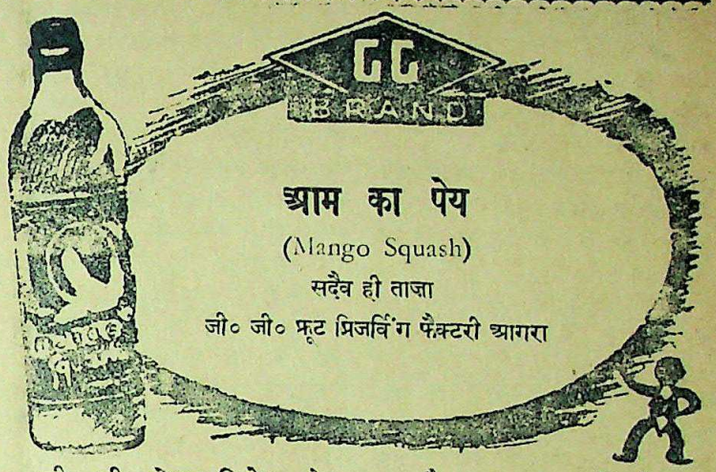

जी० जी० सेल्स डिपो:—देहरादून, लाहौर, अमृतसर, अजमेर, देहली; बम्बई, कलकत्ता, कानपुर, बरेली, ग्वालियर, पटना, आगरा।

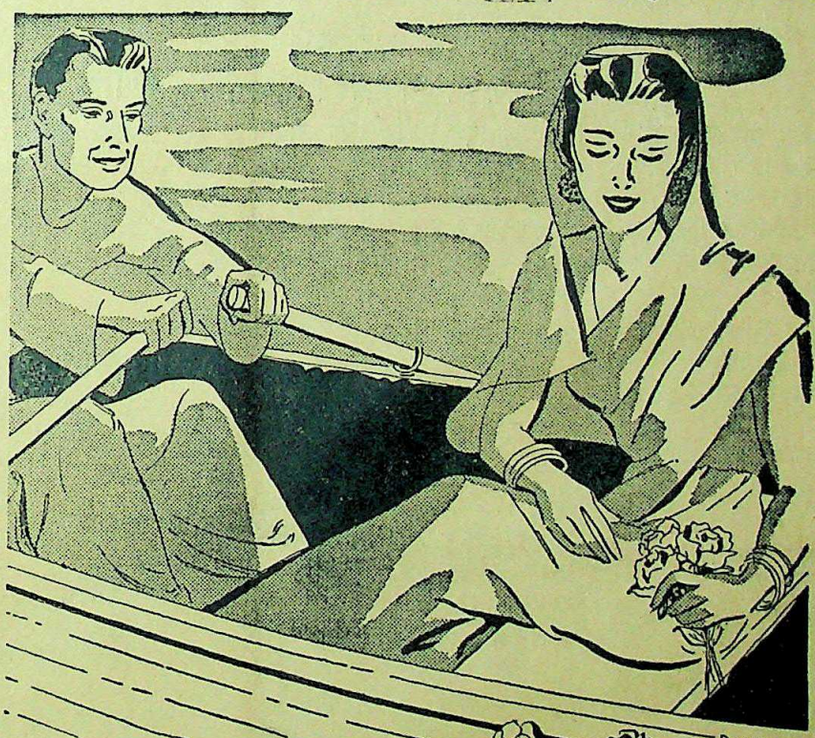

जब आप ताज़ा और सुन्दर भारतीय गुलाबों को शाम के सन्धिप्रकाश में सिर हिलाते देखते हैं, तब आप को अपना प्रिय साबुन विनोलिया व्हाइट रोज़ का स्मरण आयेगा। आप के सौन्दर्य-वर्धन के लिये इस से उत्तमोत्तम वा अत्युत्कृष्ट सुगन्धित साबुन नहीं हो सकता। मृदु एवं फेनदार विनोलिया अतिशय कोमल त्वचा को सौम्यतापूर्वक साफ़ करता है...और आप के अतराफ़ सुगन्ध की एक मीठी महक लहराती है।

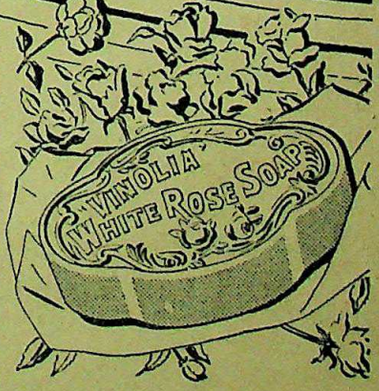

विनोलिया व्हाइट रोज़ साबुन

VWR. 20-33 MI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरञ्जक चुटकुले

जज—"क्या तुम यह कह सकते हो कि अभियुक्त ने जुर्म नहीं किया ?" अभियुक्त के गवाह ने उत्तर दिया—'जानता तो सब कुछ हूँ। पर अभियुक्त को बचाना जो है !'

जज—"इसका तात्पर्य यह कि अभियुक्त अपराधी है।"

अभियुक्त अपने गवाह का मुंह देखता अवाक् खड़ा रह गया।

* * *

किसी किताब खरीदनेवाले ने बुकसेलर की दूकान पर जाकर कहा—'आप लोग तो किताबों के लिए बहुत परेशान करते हैं।'

बुकसेलर—और आप लोग दाम के लिए।

* * *

राजा—"बदमाशों को कड़ा दण्ड देना चाहिए।"

मंत्री—"पर इन्हीं की बदौलत आप दमन करके राजा बने हैं।"

* * *

घोड़े का मालिक—(साईस से) घोड़ा दुबला होता जा रहा है। मालूम होता है तुम इसके दाने में कमी करते हो।

साईस—क्या राशनिंग में घोड़े का राशन कम न होना चाहिए।

* * *

शादी होते समय पंडित ने कहा—'गोबर आ जाता तो गोर बन जाती।'

उस घर में एक लड़के का नाम गोबर था। घरवाले जाकर उसे बुला लाये। गोबर ने कहा—"का बात है पंडित जी ?"

पंडित जी ने हँसते हुए कहा—"अजी गौ का गोबर।"

* * *

दो स्त्रियाँ बैठी बातें कर रही थीं, एक ने कहा—रातरानी तुमने न देखी होगी ?

दूसरी स्त्री—वह तो मेरी छोटी बहन है आजकल अपने ससुराल गई है।

पहली स्त्री खिलखिलाकर हँसती हुई—वह जो एक फूल है।

* * *

बेटा—माँ, बाबू जी आज उदास बैठे हैं। क्या बात है ?"

माँ—"तुम क्यों परेशान हो रहे हो ?"

बेटा—"मैंने उनसे घर चलने को कहा। इस पर उन्होंने तुम्हारी ओर इशारा करके कहा—"उनसे पूछो।"

माँ—हँसती हुई कहने लगी—"जाओ बुला लाओ वे अब न उदास होंगे।"

* * *

एक सज्जन ने अपने मित्र से कहा—"सुरेश, जो लोग दिखावटी बातें करते हैं उनसे मुझे बड़ी चिढ़ है।"

सुरेश—"आप भी तो दिखावटी आदमी हैं। फिर आप अपने ऊपर क्यों नहीं चिढ़ते ?"

सज्जन ने कहा—"मैं ?"

सुरेश—"हाँ, हाँ, आप।"

सज्जन—"यह तो आप कई बातें करते हैं।"

सुरेश—"आपने अपने बड़े [illegible] के

(पेज ४ का शेष)

है। प्रधान मंत्री द्वारा नामजद करने की प्रथा का अर्थ यह नहीं कि गवर्नर सदा इँगलैण्ड के प्रधान मंत्री द्वारा अथवा वहाँ के भारत-मंत्री द्वारा नियुक्त होता रहे। भारत में न्यायालय जीवन की अपनी एक महासभा होगी इसके अतिरिक्त ऐसे व्यक्ति जो प्रान्त अथवा राज्य के शासन कार्य से विश्राम ग्रहण करते हों, उन्हें राजनैतिक जीवन का पूर्ण अनुभव हो ऐसे ही व्यक्ति प्रान्त अथवा राज्यों के गवर्नर नियुक्त किये जा सकते हैं। उनमें शासन-भार सँभालने की क्षमता होनी आवश्यक है परन्तु ऐसी समता नहीं जो नौकरशाही शासन-काल में प्राप्त हुई हो। वह क्षमता ऐसी हो जिसमें सर्वप्रियता के गुण मौजूद हों। ऐसे ही गवर्नर भारतीय राजनीति और अर्थ-नीति को उन्नति की ओर ले जा सकते हैं।

की शादी में चौदह हजार रुपये दायज में लिया था कि नहीं ?"

सज्जन—"हाँ तो क्या हुआ ?"

सुरेश—परन्तु आपने उस समय तो सर्वसाधारण को केवल एक रुपया दिखलाया था।

वह स्त्री गठिया से तब तक चङ्गी नहीं हुई

जब तक कि उसने क्रुशेन खाना शुरू नहीं किया

अब वह एक भिन्न स्त्री मालूम होती है

उसने सोचा कि हमें जानना चाहिए कि क्रुशेन ने हमारे लिए क्या किया ? हम सोचते हैं कि दूसरे गठिया के रोगी भी इसको भली भाँति जान गये होंगे। इसलिए उस स्त्री का पत्र यहाँ नीचे प्रकाशित किया जाता है।

मैंने सोचा कि आप भी जान चुके होंगे कि क्रुशेन से मुझे क्या लाभ हुआ है ? मैं गठिया से सख्त बीमार थी और चंगी होने के लिए मैंने बहुत कुछ प्रयत्न किया है जिनमें काफी खर्च हुआ है। परन्तु मैं सत्य कहती हूँ कि क्रुशेन ही एक ऐसी चीज है जिससे मुझे पूरी मुक्ति मिली है। महीनों मैं चलने में असमर्थ थी, परन्तु क्रुशेन के सेवन से मैं बिलकुल बदल गई हूँ। मैं अपने सारे मित्रों से यह बतलाऊँगी जो क्रुशेन ने मेरे लिए किया है। (श्रीमती) ए० ए०

गठिया की दवा में सर्वप्रथम अंतड़ियों को साफ रखना चाहिए और मूत्राशय को खूब धोना चाहिए। क्रुशेन इन कार्यों को साधारणतः और सुरक्षित ढंग से करता है क्योंकि इसमें दो प्रकार की क्रियाशीलता है—रेचक और सामयिक।

मूत्राशय के द्वारा हानिकारक ऐसिड और जहर धोकर बाहर कर दिये जाते हैं। अँतड़ियाँ साफ कर प्राकृतिक ढंग पर काम करने लायक बना दी जाती हैं। इससे गठिया दर्द का अन्त होकर शारीरिक और मानसिक शक्ति तथा ताजगी में नवीनता आती है। आज ही क्रुशेन का सेवन शुरू कर दीजिए। थोड़े ही दिन में आपको आश्चर्यजनक परिवर्तन अनुभव होने लगेगा। सारे रासायनिक और व्यापारियों के यहाँ १॥≡) बोतल क्रुशेन बिकता है।

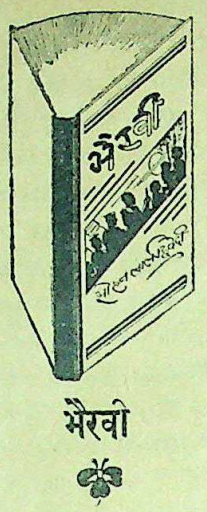

श्री सोहनलाल द्विवेदी लिखित काव्य कृतियों के नवीन संस्करण

भैरवी

गांधी युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। मालवीयजी के शब्दों में 'ऐसी कविता प्रचार देश के एक कोने से लेकर दूसरे तक होना चाहिए।' मूल्य २॥≡)

वासवदत्ता

बाबू मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं 'इस रचना में बहुत प्रभावित हुआ।' स्वच्छन्दतापूर्वक प्रौढ़ता की ओर द्विवेदीजी अग्रसर हो रहे हैं, पड़ता है, स्वयं वह भी उन्हें वरण करने लिए आतुर हो रही है। 'वासवदत्ता' के प्रकाश हिन्दी-साहित्य में एक नई क्रान्ति उत्पन्न कर है। यह स्वयं पढ़कर निर्णय कीजिए। मूल्य

कुणाल

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सम्मति अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल खण्ड से—'कुणाल' के चरित्र-चित्रण में कमाल किया है। शब्द-सौकुमार्य और भाव के साथ ही नपे तुले शब्दों के प्रयोग ने काव्य बहुत ऊँचा उठाया है। विशेष संस्करण मूल्य

पूजागीत

राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप के लिए द्विवेदी जी को प्रचुर सम्मान लोकप्रियता प्राप्त हुई है। ये पूजा-गीत गौरव के अनुरूप ही हैं। मूल्य २)

विषपान

सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा का सरल तथा खंड-काव्य है। भाषा का प्रवाह, प्रसन्न तथा कथा के मार्मिक घटना-क्रम की वर्ण इसे बड़ा ही हृदयग्राही बना दिया है। मूल्य

झरना
शिशुभारती
बाँसुरी

द्विवेदीजी पहले बालकों के कवि हैं पि के। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा सम्पूर्णानन्दजी ने इन कविताओं की प्रशंसा की है। 'अमृत बाज़ार पत्रिका सम्मति में—जिस प्रकार की शिक्षा को देने के लिए हमारे नेता वर्षों से प्र रहे हैं, इन पुस्तकों में उसी प्रकार का प्रत्येक पुस्तक में कई रङ्गीन तथा चित्र हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १)

पूरे सेट का मूल्य १२

पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथा-साहित्य का नवीन उपादान

अपना-पराया

लेखक—पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

...काश के क्षणों में अपना मनोरंजन करने के लिए यदि आप स्वस्थ ...क भोजन चाहते हैं, तो हमारा नवप्रकाशित, मौलिक, मनोरंजक उपन्यास ...ना-पराया" पढ़िए।

...प्रसिद्ध साप्ताहिक "योगी" (पटना, ता० २७ जून १९४७) इस उपन्यास ...न्ध में लिखता है :—"मस्तजी हिन्दी के ख्याति-लब्ध कथाकारों में से ...स्तुत उपन्यास में आपने भारतीय वातावरण से किंचित् भिन्न तिब्बत और ...के सामाजिक जीवन का चित्रांकन भी किया है। शाही नौसेना के सैनिक ...सिंह के चरित्र-चित्रण में लेखक को पर्याप्त सफलता मिली है। उपन्यास के ...में तो बेचनसिंह का चरित्र धीरोदात्त नायकों की तरह अपनी उज्ज्वल ...और आचरण की सुगन्ध बिखेरने लगता है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में भोग-...और उद्दाम वासना का चित्रण देख मैंने डरते-डरते इसे पढ़ना प्रारम्भ ...था, पर ग्रन्थ की समाप्ति पर ऐसा लगा कि परिश्रम सार्थक हुआ और ...न भी हुआ। ग्रन्थ की छपाई-सफाई, मुख-पृष्ठ का चित्र और भाषा-शैली ...क है। आशा है, हिन्दी-संसार में इसका स्वागत होगा।"

...ष्ठ २३२, सजिल्द और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २॥) रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

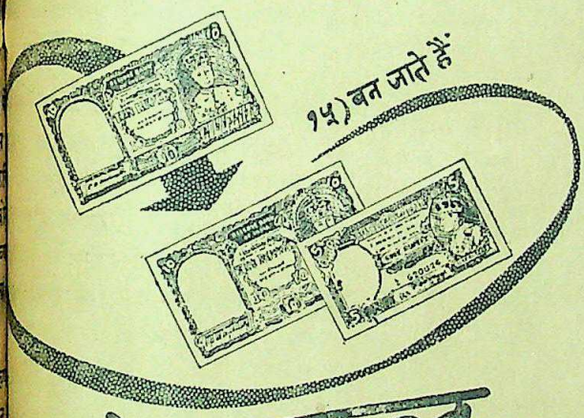

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स

...सुरक्षित हैं। ब्याज और ...का उत्तरदायित्व सरकार ...वर्ष में इन का मूल्य ...जाता है। इस प्रकार ...रुपया १॥) बन जाता है। ...प्रचलित रुपया लगाने ...जो ब्याज दिया जाता ...से अधिक दर है। इस ...टैक्स नहीं लगता। ...थोड़ी है वे १), ॥), ...स्टाम्पस, ख़रीद

...और स्टाम्पस डाकख़ानों, ...अधिकृत एजंटों अथवा ...प्राप्त हो सकते हैं।

आजकलकी रुपया लगानेकी सर्व प्रिय मद

AC 261

मधुस्रवा—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल्-एल० बी०। इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ़ पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

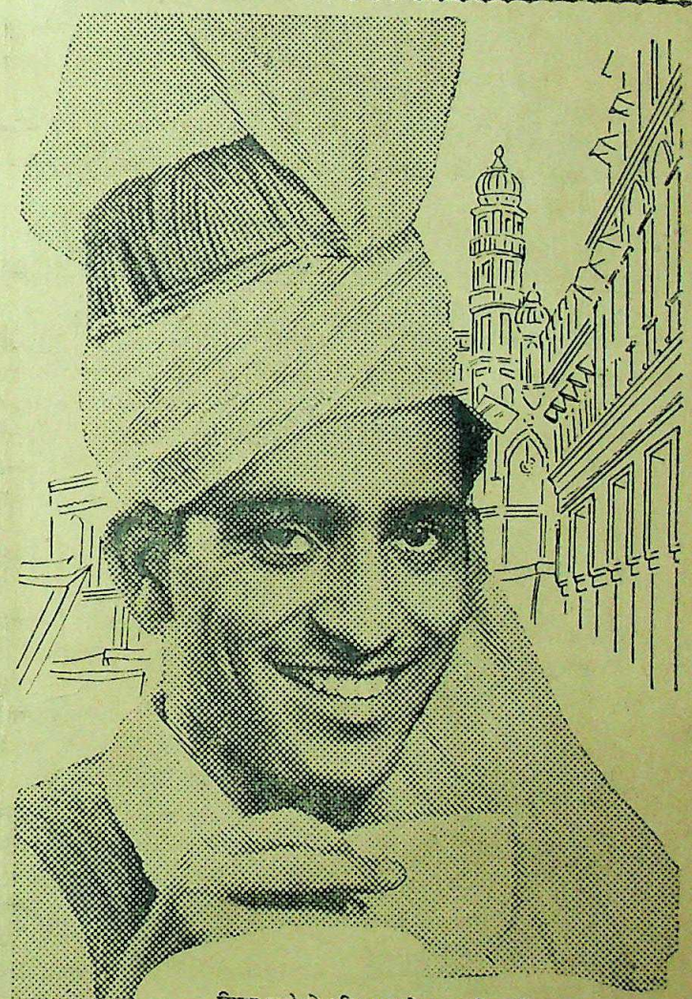

सिन्ध नदी से पश्चिम प्रदेश का निवासी बलवान पठान अपने बाप-दादों के प्रिय रिवाज चाय-पान की अब जी क़द करता है।

अपनी ताज़गी और सुगन्ध के कारण भारतवर्ष के अन्य भागों की भाँति उत्तर-पश्चिम सीमाप्रान्त में भी ब्रुक बाण्ड चाय की बहुत अधिक माँग है।

ब्रुक बाँड

दो पत्तियाँ और एक कली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानन देवी अपनी त्वचा लक्स टॉयलेट साबुन-द्वारा निर्मल एवं सुंदर रखती है . . .

यह लोकप्रिय गायिका अभिनेत्री अपनी मृदु एवं निर्मल त्वचा की विशेषतम कदर करती है, और सदैव उसकी भलीभाँति सँभाल करती है-वह जानती है कि, नियमित रूपेण सौन्दर्य की देखभाल करनेसे ही स्थिर त्वचा-सौन्दर्य प्राप्त होता है। इस कारण कानन देवी सदैव लक्स टॉयलेट साबुन का प्रयोग करती है। आप को भी इस शुद्ध, सफेद साबुन का उपयोग करना चाहिये। आप को मालूम होगा कि, उस का सुगन्धित प्रभावशाली झाग आप की त्वचा को कोमल, सतेज तथा निर्दोष रखेगा।

पायोनियर प्रॉडक्शन्स के "चन्द्रशेखर" चित्र में किये अभिनय से कानन देवी अपने पुराने रसिकों को खुश रखेगी, इसके अतिरिक्त उस के रसिकों में नवीनों की वृद्धि होगी।

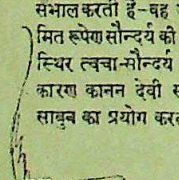

लक्स टॉयलेट साबुन
फिल्मी स्टार्स का सौन्दर्य—साबुन

LTS. 163-50-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

प्रकाशित हो गया !

वार्षिक बालसखा १९४७

बालक-बालिकाओं के लिए ज्ञान-विज्ञान का अनोखा भण्डार। विविध सामग्री, सैकड़ों चित्र, अच्छी जिल्द, २०० पृष्ठ। मासिक बालसखा के ग्राहक रियायत के लिए अपना नम्बर लिखें। मूल्य ३)।

शीघ्रता कीजिए। प्रतियाँ अधिक नहीं छपी हैं।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

भारत सरकार

डिसपोज़लज़ का पाक्षिक बुलेटिन

अब प्रकाशित हो रहा है

यदि आप को निम्न लिखित बातों में दिलचस्पी है:--

१. पब्लिक के सामने टैंडर खोल कर सुरक्षित मूल्य से सब से अधि के टैंडर देने वाले के हाथ बची हुई विकाऊ सामग्री की सूची।
२. विशेष प्रकार की थोक और मिश्रित वस्तुओं के आवश्यक नोट इन की विशेष बिक्री के विषय में सूचना।
३. सामान बेचने के बारे में विवरण, टैंडर देने के नियम और ति की अन्तिम तारीख़।
४. बची हुई सामग्री के बारे में आवश्यक सूचना।

तो नीचे छपा कूपन अँग्रेज़ी में भर कर अपना नाम ग्राहकों में लिखा लीजिए। ६ मास का चन्दा ५) मनीआर्डर या बिना क्रॉस किये आर्डर द्वारा पेशगी भेजिए। चैक या डाकख़ाने के स्टाम्प्स द्वारा चन्दा न किया जावेगा।

प्रत्येक अंक की परिमित प्रतियां आठ आने प्रति के दर से नई देहली, बम्बई, लाहौर, कानपूर, मद्रास, और कराची नगरों में डिसपोज़लज़ के दफ़्तरों से मिल सकती हैं। यह प्रतियां प्राप्त करने के लिये स्वयं जाना होगा।

COUPON

CUT HERE ..... CUT HERE

The Director of Publicity,
Directorate-General of Disposals,
Shahjahan Road, NEW DELHI.

Please enrol me as a subscriber for the Disposals Bulletin. Money Order No.———— sent to you separately/Postal Order for Rs. 5/- is enclosed herewith, being my subscription for six months.

Name (in Block letters)

Representing Firms

Address (in Block letters)

Town (in Block letters)

Name of Trade Association or Chamber of Commerce

CUT HERE

Issued by the Directorate-General of Disposals, Industries and Supplies Department, New Delhi

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

[illegible] मुद्रित तथा प्रकाशित | प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

२० जुलाई, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 20th July, 1947

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित कौन हैं ?

'भारत छोड़ो' का प्रारम्भ शुरू हो गया

पंजाब की भयंकर अराजकता और दंगा

रंगमंच, हास्यपरिहास और मातृमन्दिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

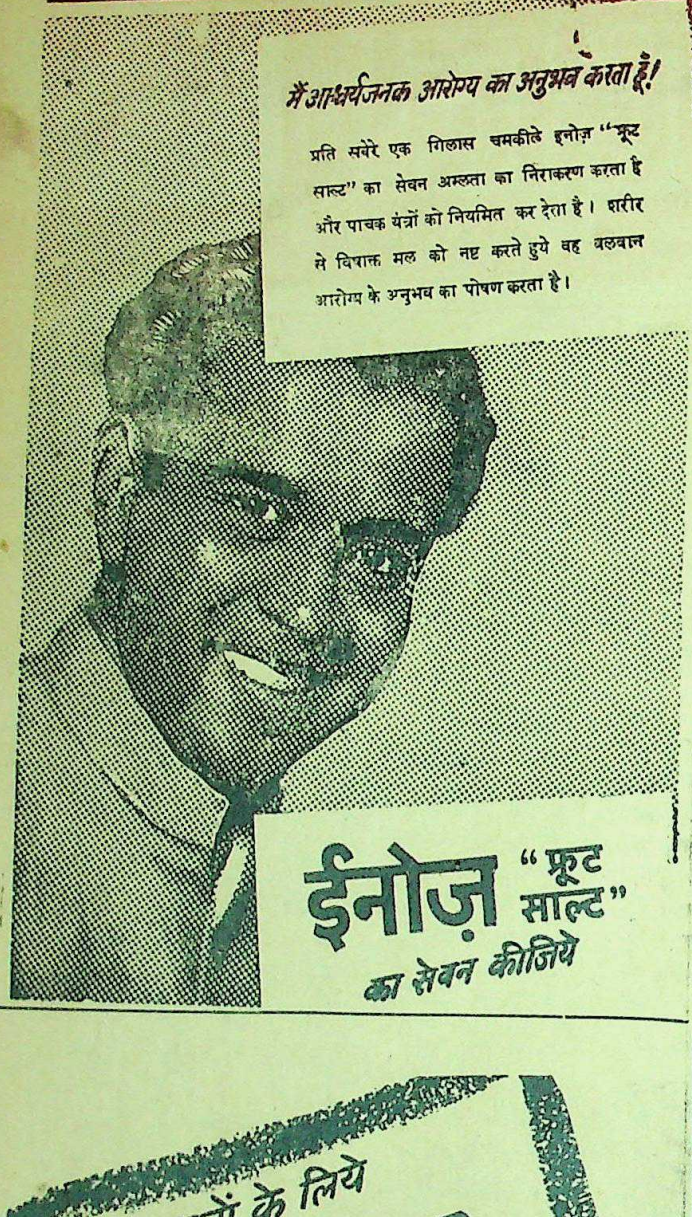

मैं आश्चर्यजनक आरोग्य का अनुभव करता हूँ!

प्रति सवेरे एक गिलास चमकीले इनोज़ "फ्रूट साल्ट" का सेवन अम्लता का निराकरण करता है और पाचक यंत्रों को नियमित कर देता है। शरीर से विषाक्त मल को नष्ट करते हुये वह बलवान आरोग्य के अनुभव का पोषण करता है।

इनोज़ "फ्रूट साल्ट" का सेवन कीजिये

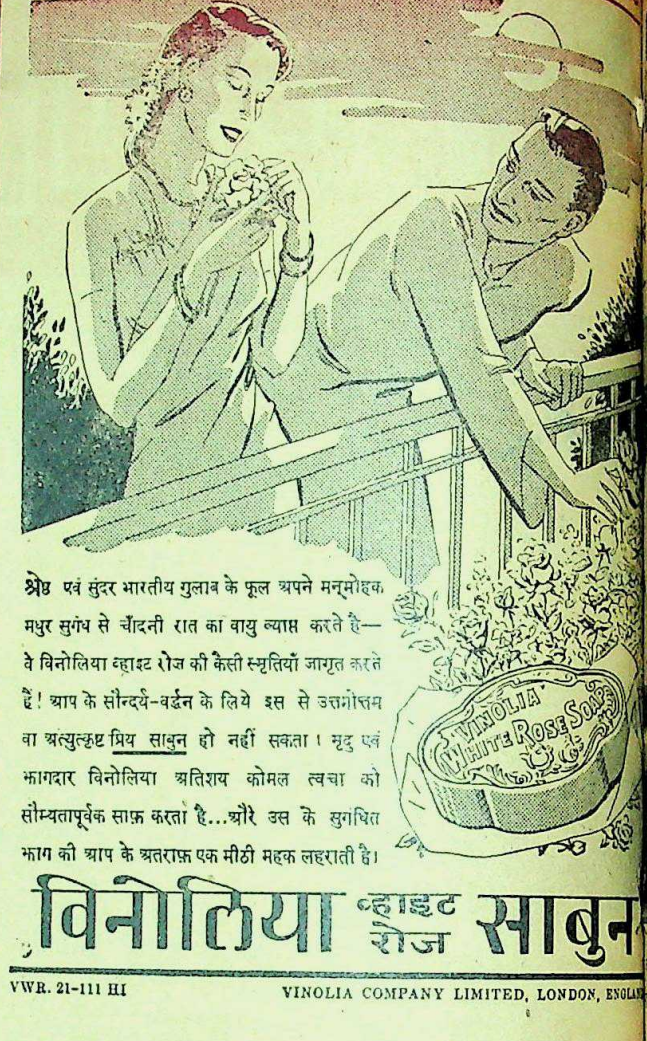

श्रेष्ठ एवं सुंदर भारतीय गुलाब के फूल अपने मनमोहक मधुर सुगंध से चाँदनी रात का वायु व्याप्त करते है— वे विनोलिया व्हाइट रोज की कैसी स्मृतियाँ जागृत करते हैं! आप के सौन्दर्य-वर्द्धन के लिये इस से उत्तमोत्तम वा अत्युत्कृष्ट प्रिय साबुन हो नहीं सकता। मृदु एवं झागदार विनोलिया अतिशय कोमल त्वचा को सौम्यतापूर्वक साफ़ करता है...और उस के सुगंधित झाग की आप के अतराफ़ एक मीठी महक लहराती है।

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

VWR. 21-111 HI VINOLIA COMPANY LIMITED, LONDON, ENGLAND

अपने दान्तों के लिये

गिब्स

डेन्टिफ्रिस का उपयोग कीजिये क्योंकि...

योग्य पद्धतिसे (दाँत) किड़ने का निवारण होता है

आप का डॉक्टर आप से कहेगा कि, खराब दाँत बहुतसे रोगों के मूल हैं। कोयला या अन्य कठिण पदार्थ से दाँत साफ़ करने की पुरानी पद्धति से प्रायः दाँतो को खुरचने का खतरा रहता है...खुरचा हुआ दाँत जल्द किड़ जाता है। गिब्स डेन्टिफ्रिस खुरचे जाने के बग़ैर सुरक्षापूर्वक-दाँत-साफ़ करने के लिये खासकर बनाया गया है। गिब्स डेन्टिफ्रिस-द्वारा योग्य पद्धति से (दाँत) साफ़ किया करें और अपने दाँतो को किड़े जाने से सुरक्षित रखें। गिब्स जन्तुनाशक एवं स्वाद में मधुर है और (वह) आप के दाँत सफ़ेद और सुरक्षित रख, साफ़ करता है।

गिब्स
अधिक समय चलता है और दाम में भी कम.....
गिब्स का उँगली से प्रयोग किया जा सकता है

गिब्स डेन्टिफ्रिस

अपनी छुट्टी रोक दीजिये!

जबतक आप अपने जीर्ण और बेकार ब्रश को फेंक न दें छुट्टी पर मत जाइये।

एक नया पैक कर लीजिये।

* दांतों को ६० प्रतिशत अधिक स्वच्छ करता है
* जल-अभेद्य.....नमी-विद्वेषक
* शीशे में बंद
* वर्षभर की गारंटी

डा. वेस्ट्स ट्रूथ ब्रश और ट्रूथ पेस्ट

व्यापारिक पूछताछ के लिये: एल. डी. सेमूर एंड कम्पनी (इंडिया) लिमिटेड
बम्बई - कलकत्ता - कराची - मदरास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

संख्या ४७] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, २० जुलाई, १९४७

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

...हरलाल नेहरू पाकिस्तानियों ...रवैयों से परेशानी का अनुभव कर रहे हैं।

...त है कि खुदा जिसकी बढ़ती ... छप्पर फाड़कर। मुस्लिम लीग ...ा मिस्टर जिन्ना को भी अँगरेजों ...या और छप्पर फाड़कर दिया। ...न का राग अलापते-अलापते ...र ब्रिटेन ने पाकिस्तान बना ही ...ही नहीं पाकिस्तान बनते ही ...होम्मद अली जिन्ना वहाँ के ...नरल भी घोषित कर दिये गये। ...ह काम बड़ी जल्दी किया गया ...पाकिस्तान का तो अभी पार्लामेंट ...ी पास हुआ है और मिस्टर जिन्ना ...नरल पहले ही बना दिये गये। ...ं पाकिस्तान तो आगे-पीछे बनता ..., गवर्नर-जनरल तो जिन्ना ...क ही बार बन पाते। अच्छा ...पाकिस्तान-प्राप्ति का यह भारी ...तोहफा दिया गया है। अपने ...एक भलेमानस ने सवाल किया ...जी जिन्ना साहब तो गवर्नर-...ही गये? अपने राम ने जवाब ...हिन्दुस्तान में गवर्नर जनरल ही ...सबसे बड़ा है और इसके बाद ...पद। जिन्ना साहब गवर्नर-जनरल ...र हो गये लेकिन उनके लिए खुदा ...ो अभी बाकी ही है। देखना है ...खुदा के पद को भी मिस्टर जिन्ना ...ं कामयाब होते हैं या नहीं?

* *

...र जिन्ना ने एक प्रेस-कान्फ्रेंस ...पाक से कहा है कि पाकिस्तान ...ंख्यकों के सत्व की पूरी रक्षा की ...आर्थिक तथा राजनैतिक दृष्टि ...अधिकारों को सुरक्षित रखा ...। मिस्टर जिन्ना के इस कथन ...ने ही मेल-मिलापी कांग्रेसी ...ही नहीं पड़े बल्कि निहायत खुश हो उठे हैं। लेकिन अपने राम तो मिस्टर जिन्ना की बातों को सही तब समझें जब सचमुच पाकिस्तान के अल्पसंख्यकों के लिए सुरक्षा का काम होने लगे। अन्धा तब विश्वास करे जब कि उसे आँखें मिल जायें। आज सिन्ध में अल्पसंख्यकों के प्रति मुस्लिम लीगी जो पापड़ बेल रहे हैं, वह किसी से छिपा नहीं है। इसलिए अपने राम की राय में हाथी के दाँत दिखाने के और तथा खाने के दूसरे होते हैं। अल्पसंख्यकों की रक्षा का ढिंढोरा पीटने का काम मि० जिन्ना ने ले रखा है और उनके बलिदान का काम जिन्ना साहब के बाडीगार्डों ने। सिन्ध के मुस्लिम लीगी मंत्रिमण्डल को इस वक्त चारों ओर जंग ही जंग दिखाई दे रहा है; क्योंकि पाकिस्तान बनने का जितना असर सिन्ध मंत्रिमण्डल पर पड़ा है उतना शायद ही किसी लीगी प्रान्त पर पड़ा हो। अभी कुछ दिन हुए सिन्ध के अल्पसंख्यक अपनी माँग लेकर जिन्ना के पास पहुँचे थे। मिस्टर जिन्ना ने उनकी एक नहीं सुनी। और आज जब कि वह गवर्नर-जनरल बना दिये गये हैं, पाकिस्तान के अल्पसंख्यकों के हिमायत का दम भरने लगे हैं। पाकिस्तानी राज के नमूने अब सामने आने लगे हैं। देखना है ऊँट किस करवट बैठता है?

* * *

पार्लामेंट में उप भारत-मंत्री ने घोषित किया है कि बरार हैदराबाद को वापस कर दिया जायेगा, कानूनी तौर से यह जायज है। फिर भी भारत-सरकार तथा मध्यप्रान्तीय सरकार निजाम सरकार से वार्ता चलायेंगी कि वहाँ का शासन किस प्रकार हो? अपने राम को यह खबर सुनकर आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि ब्रिटिश सरकार इस वक्त पाकिस्तान का पलड़ा भारी करने के लिए तुली हुई है और ऐसा करना उसके लिए कोई बड़ी बात नहीं है। सिलहट तो पाकिस्तान में गया ही, सीमाप्रान्त के पाकिस्तान में जाने की बारी है और घेलवे में निजाम को बरार भी दे दिया गया। लेकिन सवाल तो यह है कि अँगरेज बहादुर जो कुछ हेर-फेर कर रहे हैं उसकी किसी से पूछ-ताछ भी करते हैं या अपनी तबीअत से यह गपड़चौथ कर रहे हैं? सच तो यह है कि राष्ट्र का असली बँटवारा हो ही गया है। अब घेलवेवाले बँटवारों का सिलसिला जारी है। इसलिए अभी क्या है, देखते रहिए, अँगरेज बहादुरों की दया रही तो हेर-फेर यों ही जारी रहेगा।

* * *

खबर मिली है कि रूस में लोहे की वर्षा हुई है। अपने राम को यह सुनकर अफसोस हुआ कि इँगलैण्ड में ऐसी ही वर्षा होती तो और भी अच्छा होता। बात यह है कि जमाना आ रहा है जब कि लोहे से लोहा बजनेवाला है और अगर रूस में इसी तरह की लोहे की वर्षा होती रही तो अमरीका और इँगलैण्ड क्या करेंगे? वहाँ भी अगर कुछ लोहे की वर्षा हो जाये तब तो सोवियट का मुकाबला किया जा सकेगा?

* * *

लार्ड लुई माउण्टबेटेन मजे के जीव हैं। इस वक्त वह पराठा भी खा रहे हैं और हलुआ-पूड़ी भी। कांग्रेस नेता भी उनसे प्रसन्न हैं और मुस्लिम लीगी भी। कांग्रेसवाले तो बेहद खुश जान पड़ते हैं क्योंकि उन्हें हिन्दुस्तान का गवर्नर बना रहने दिया गया है। एक ओर वह महात्मा गांधी से भी मिलते और घंटों गपशप करते हैं और दूसरी ओर मिस्टर जिन्ना एण्ड कम्पनी से भी मिलकर गप्पाष्टक होती है। लंच, डिनर का तो पूछना ही क्या? वाइसराय का हाउस क्या है बढ़िया खासा होटल बन गया है। बड़े भाग्य से हिन्दुस्तान को ऐसा वाइसराय मिला है। फिर वाइसराइन तो और भी बढ़ी-चढ़ी हैं। ऐसी हालत में अगर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को पूरा स्वराज्य मिल जाये तो आश्चर्य क्या है? कहावत है कि जो हँसा सो फँसा। इस वक्त कांग्रेसवाले खासतौर से हँस रहे हैं। अपने राम तो यह समझते हैं कि वह हँस नहीं रहे हैं बल्कि फँस रहे हैं।

* * *

दिल्ली कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक में महात्मा गांधी मौलाना अबुल कलाम आजाद से बातें कर रहे हैं। गांधी जी की बगल में राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी और श्रीशंकरराव देव दिखाई दे रहे हैं।

भ्रम

लेखक, श्री बालकृष्णराव, आई० सी० एस०

कोकिल का रोदन और गान जग केवल कलकूजन समझा।
फूलों में छिपकर शूल चढ़े पर [प्रतिमा ने पूजन समझा॥
परिचित हो सका न सागर से जग तट से लहरें देख देख;
अस्थिरता को ही प्रगति मान जीने को ही जीवन समझा॥
जग की भाषा के भार शब्द आधार बने कवि के स्वर के;
कवि ने माना था लक्ष्य, किन्तु जग अनुभव को साधन समझा॥
सह सकी न दृष्टि प्रकाश कभी, तम अपनी छवि न दिखा पाया।
जग दिवस-निशा ही जान सका—तरु-लता-सुमन को वन समझा॥
रजनी के अलसित, अरुण नयन भ्रम हुआ देख अरुणोदय का।
माँग रही थी विदा, किन्तु कवि पुनर्मिलन का प्रण समझा॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

जनता सावधान !

ब्रिटिश सरकार ने जब से राष्ट्र के बँटवारे की घोषणा की है, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की स्थापना का निर्णय जब से कांग्रेस ने स्वीकार किया है तब से एक ऐसी हवा बही है जो नेतृत्व के वातावरण से पूर्ण बन बैठी है। इस समय कथित नेताओं और उपदेशकों का एक जास-सा बिछ गया है। कथित नेतागण मौखिक दृष्टि से जनता को संगठित होने का उपदेश ही नहीं दे रहे हैं बल्कि कांग्रेस नेताओं तथा कांग्रेस मंत्रिमंडलों के विरुद्ध भ्रम भी फैला रहे हैं। यह सच है कि मुस्लिम लीग तथा साम्प्रदायिक मुसलमानों की ओर से बंगाल और पंजाब में जो अनाचार हुआ है, उसकी प्रतिक्रियास्वरूप जनता उत्तेजित तो थी ही साथ ही 'अखण्ड भारत' से स्तर से उतरकर कांग्रेस ने भारत के विभाजन का जो सिद्धान्त स्वीकार किया इसने भी जन-प्रतिक्रिया की ज्वाला में घी का काम किया। सच पूछा जाये तो आज के उत्तेजित वातावरण का यही प्रधान कारण है। कथित नेतृत्ववाले व्यक्ति यह कहते हुए सुने जाते हैं कि कांग्रेस ने हिन्दू जनता को धोखा दिया और अपनी समझौतेवाली तथा ढुलमुल नीति के कारण राष्ट्र का बँटवारा स्वीकार कर लिया। इसलिए अब हिन्दुओं को सजग होकर संगठित होना चाहिए और इस बात का प्रयत्न करना चाहिए कि कांग्रेस सरकारें अपनी पुरानी नीति में परिवर्तन करें।

जहाँ तक कांग्रेस के बँटवारे के सिद्धांत को स्वीकृत करने का प्रश्न है वहाँ तक हम पहले भी कह चुके हैं कि कांग्रेस नेताओं ने अपनी इच्छा के विपरीत भारत का विभाजन स्वीकार किया है। यदि वह विभाजन स्वीकार न करते तो जो कुछ आज मिला है, उसका कई अंश हाथ से गया हुआ दिखाई देता। अभी अँगरेजी राज्य खत्म नहीं हुआ है। अँगरेजों का भला भारत-विभाजन से ही हो सकता था। फिर ऐसी हालत में जब मुस्लिम लीग पाकिस्तान की प्राप्ति के लिए वैध और अवैध सभी उपायों से तुली बैठी थी। इसलिए अँगरेजों ने जब भारत-विभाजन का निश्चय कर लिया तब यदि कांग्रेस ऐसे अवसर पर मुकर जाती तो वास्तव में राष्ट्र की जो हानि होती उसका अनुमान लगाया जा सकता है। इसलिए कांग्रेस को बँटवारे के निर्णय की स्वीकृति परिस्थितिवश देनी पड़ी। किन्तु अब तो बँटवारा हो ही गया है। इसलिए आगे स्थिति की सँभालना आवश्यक है।

राष्ट्र विभाजन से वास्तव में परिस्थिति बदल गई है। इसलिए यह अनिवार्य है कि कांग्रेस या कांग्रेस सरकारों को अपनी पिछली शासन-नीति में परिवर्तन करना अनिवार्य है। कथित नेताओं के कथनानुसार एक ही दिन में शासन-नीति का परिवर्तन नहीं हो सकता। जरूरत है इस समय क्रियात्मक सुझाव की। केवल मौखिक भाषणों से जनता में भ्रम उत्पन्न होना अनिवार्य है। अब तो स्वतः आबादी के अनुसार प्रान्तीय शासन-नीति में परिवर्तन करना ही होगा, पुलिस हो या अन्य कोई सरकारी विभाग। साथ ही यह प्रश्न केवल प्रान्तीय ही नहीं अखिल भारतीय भी है। इसलिए इस वक्त आवश्यक है कांग्रेस तथा कांग्रेस मंत्रिमंडलों को क्रियात्मक तथा व्यापक सुझाव दिये जाने की जिससे उन्हें भावी-नीति निर्धारण में सहायता प्राप्त हो किन्तु दुःख है कि आज के कथित नेता जनता में भ्रम तथा अशान्ति फैलाने में अधिक दिलचस्पी ले रहे हैं। इस गरमागरम समय में हमें ऐसे नेतृत्व के दर्शन भी हो रहे हैं जो कम्यूनिस्टों की भाँति कभी कांग्रेस को कोसते हुए दिखाई देते हैं तो कभी ब्रिटेन को। कुछ नेतृत्व तो ऐसे हैं जिनका एडवाइजरी राज्य में कहीं अस्तित्व नहीं था, किन्तु जनता की सरकार आई और बरसाती मेंढकों की भाँति वह भी मैदान में निकल कर लगी टर्राने। इस प्रकार के कथित नेतृत्व से वातावरण दूषित ही होगा वह विचारणीय है। जरूरत है क्रियात्मक, संगठित तथा गुप्त रूप से कार्य करने की, क्योंकि यह संक्रान्तिकाल है।

* * *

ब्रिटिश नीति और उसके एजेण्ट

भारत की तरह फिलिस्तीन भी अँगरेजों की आँख का काँटा बना हुआ है। भारत को उन्होंने वि ाजित कर दिया, पर, फिलिस्तीन को अ ी खटाई में डाल रखा है। इसका कारण जो हो पर यह मानना ही पड़ेगा कि आनेवाले युद्ध की पृष्ठभूमि एशिया और योरोप की सीमाएँ होंगी। फिलिस्तीन की समस्या को सुलझाने में अफ़्रीका के जनरल स्मट्स सबसे आगे बढ़ते हैं। यह इसलिए नहीं कि वे फिलिस्तीन के शुभचिन्तक हैं। फिलिस्तीन-सम्बन्धी मामलों की अन्तर्राष्ट्रीय समिति के न तो वे मेम्बर हैं और न उनसे किसी ने राय अथवा सहानुभूति ही माँगी। फिर उनके हृदय में एकाएक ऐसी दया क्यों पैदा हो गई? जबकि वे दक्षिण अफ़्रीका में भारतीय प्रश्न को आज तक न हल कर सके। जनरल स्मट्स का यह निर्णय है कि फिलिस्तीन के झगड़े की समस्या केवल बँटवारे से ही हल होगी कोई नई सूझ नहीं। क्योंकि पील कमीशन की भी यही सिफारिश थी कि फिलिस्तीन का मामला बँटवारे से ही हल हो सकता है। परन्तु यह हल अरबों को मान्य न हो सका और वह पील कमीशन-योजना असफल हो गई। स्मट्स साहब ने यहूदियों के पक्ष के समर्थन में ही शायद यह हल निकाला, जो लगातार २५ वर्षों से फिलिस्तीन को अपना नया राष्ट्र बनाना चाहते हैं। इस नये राष्ट्र के पीछे ब्रिटेन और अमरीका की चालें छिपी नहीं। अथवा यों कहा जाय कि ब्रिटिश नेताओं ने यहूदियों के साथ जो समझौता किया था उसका अर्थ फिलिस्तीन को यहूदियों का घरेलू राष्ट्र कबूल किया था। जनरल स्मट्स उसी के रेकार्ड-मात्र जान पड़ते हैं। परन्तु अरब ऐसी योजनाएँ क्योंकर मानने लगे। वे यहूदियों को अपने देश के अन्दर घुसने देना कभी पसन्द न करेंगे और न अपने देश के किसी भाग को दूसरे लोगों को उपनिवेश होने देंगे। ब्रिटिश लोग फिलिस्तीन को अपने साम्राज्य के अन्तर्गत प्रतिनिधित्व स्वीकार कर उस पर अधिकार रखना चाहते हैं। पर, यह योजना कार्यान्वित करना सरल नहीं है। अरब लोग जनरल स्मट्स अथवा किसी अन्य उपदेशक के ऐसे उपदेश को कैसे स्वीकार कर सकते हैं। क्योंकि ऐसे उपदेश का अर्थ ब्रिटिश के सामने आत्म-समर्पण कर देना है।

ऐसे हल जिनमें गुलामी की वही जंजीर पाँवों में पड़ी रहे किसी भी स्वतंत्रता-प्रिय राष्ट्र के लिए कितनी पसन्द होगी। जनरल स्मट्स दूसरों को उपदेश करते हैं और कहते हैं कि दक्षिण अफ्रीका इस प्रकार के झगड़ों से मुक्त है। परन्तु रंग-भेद अथवा जातीय झगड़े जितना दक्षिण अफ्रीका में हैं उतना शायद ही अन्य देश में होंगे। फिर जनरल स्मट्स जैसे व्यक्ति अपने मुँह ऐसे उपदेश करके कहाँ तक सफल हो सकते हैं अथवा यह कहा जा सकता है कि उनका उपदेश उनके और उनके देश के ऊपर कलंक लगाने के अतिरिक्त कोई उचित दवा न होगी। दक्षिण अफ्रीका के विस्तृत क्षेत्र में मध्य योरोप के यहूदियों की सारी आबादी को बसाया जा सकता है फिर जनरल स्मट्स क्या इस पर नहीं सोच सकते थे। अरब लोग फिलिस्तीन के अन्दर बँटवारे को कदापि पसन्द न करेंगे। यह योजना लागू हो सकती है। उस समय गृहयुद्ध ही इस योजना का स्वागतकारी होगा। ब्रिटिश कूटनीति को अपन साम्राज्य में इस समय यही उपाय सूझा है। परन्तु आश्चर्य यह है कि संसार के अन्य पापी भी उसके समर्थन से मुख नहीं मोड़ते।

* * *

सिलहट का भाग्य-निर्णय

आसाम प्रांत में सिलहट में होनेवाले जन-मत-संग्रह का कार्य समाप्त हो गया। सरकारी सूचना के अनुसार सिलहट पूर्वी बंगाल अर्थात् पाकिस्तानी बंगाल में सम्मिलित होगा, क्योंकि पूर्वी बंगाल में सम्मिलित होने के पक्ष में उसे अधिक मत प्राप्त हुए। ब्रिटिश सरकार ने मतगणना के अनुसार जिन प्रांतों के

पेरिस में होनेवाले खाद्य-सम्मेलन में भाग लेने के लिए जानेवाले भारतीय प्रतिनिधि—बाईं ओर से दाहनी ओर—डाक्टर बी० एम० पिपलानी, सर सोन्ती राममूर्ति, माननीय डाक्टर कैलाशनाथ काटजू (न्यायमंत्री संयुक्तप्रान्त), श्री भगवानसहाय (खाद्य कमिश्नर संयुक्तप्रांत) और श्री डब्लू० आर० नाटू।

मिस्टर हेनरी ग्रेडी, भारत में [illegible] राजदूत नियुक्त हुए हैं।

भाग्य-निर्णय का निश्चय [illegible] उसका यह पहला नमूना है। आसाम में है और वहाँ इस समय मंत्रिमंडल है। कांग्रेस मंत्रिमंडल इच्छा होते हुए भी सिलहट [illegible] में पहुँचा ही दिया गया। [illegible] मत-संग्रह में मुस्लिम लीग तथा नेशनल गार्डों की ओर से कितनी [illegible] की गई है, इसका यह प्रत्यक्ष [illegible] कि सिलहट पूर्वी बंगाल में पहुँचा गया। यही नहीं कहना यहाँ तक कि अँगरेजों की मंशा भी यही [illegible] मत संग्रहवाले प्रांत या शहर [illegible] में ही सम्मिलित कराये जायें। [illegible] प्रांत में भी आज धाँधली से [illegible] संग्रह हो रहा है। ब्रिटिश अधिकारी और फौजों की छत्रछाया में [illegible] मत-संग्रह होगा, वहाँ राष्ट्रीय [illegible] विपरीत कार्य होना अनिवार्य है। [illegible] प्रकार का मत-संग्रह तो वास्तविक संग्रह नहीं कहा जा सकता है [illegible] जनता का मत-संग्रह। तो किसी [illegible] कहा ही नहीं जा सकता। ऐसी [illegible] में सीमा प्रांतीय कांग्रेसी [illegible] संग्रह का जो बहिष्कार [illegible] वह भविष्य को देखते हुए [illegible] पूर्ण है। सच तो यह है कि [illegible] मत-संग्रह का भी प्रारंभ ही से [illegible] होना चाहिए था। क्योंकि [illegible] को तो पाकिस्तान में जाना [illegible] वास्तव में सिलहट का निर्णय [illegible] है। सिलहट आसाम प्रांत का [illegible] भाग है। कायदे से उसे आसाम [illegible] अलग ही नहीं किया जा सकता [illegible] ब्रिटेन पूर्व और पश्चिम में [illegible] और पाकिस्तान की आड़ में [illegible] रच रहा है उसी के दृश्य [illegible] रहे हैं। सिलहट का भाग्य [illegible] समाप्त हुआ और अब सीमा [illegible] भाग्य-निर्णय की बारी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषरूप से 'देशदूत' के लिये

पंजाब का भयंकर दंगा

अराजकता, हत्या और लूटमार का रोमांचकारी वर्णन

लेखिका, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

पंजाब के भयंकर दंगे की भी एक रोमांचक कहानी है। अराजकता, हत्या, लूट-मार, आगजनी तथा धन-जन के महानाश का काण्ड अमानवतापूर्ण ही नहीं, ऐतिहासिक भी है। श्रीमती रामेश्वरी नेहरू भारतीय नारी-आन्दोलन की प्रमुख कार्यकर्त्री हैं। आपने बड़े ही सुन्दर और वास्तविक ढंग से इस लेख में अनेक घटनाओं का आँखों देखा वर्णन किया है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

...की लेखिका श्रीमती रामेश्वरी नेहरू।

...१९४७ में पंजाब का भयंकर ...ऐसी अनहोनी घटना थी कि ...इतिहास के पन्नों में कम ...। कलकत्ता, नोआखाली, ...की घटनाएँ हो चुकी थीं। ...वातावरण बिगड़ चुका था। ...दंगों के समाचार सारे देश ...रहते थे। लेकिन पंजाब बचा ...वैसे तो १९४५ के चुनाव के ...खिजिर हयात की मिनिस्टरी ...थी और कांग्रेस अकाली और ...पार्टी की सम्मिलित सरकार ...तब से ही प्रान्त का वातावरण ...था। असेम्बली में मुस्लिम ...की कसरत थी, फिर भी वे ...मेण्ट न बना सके थे। इस ...उनको भारी दुःख था; परन्तु ...सेम्बली के भीतर और बाहर ...आन्दोलन सम्मिलित (कोए-...शासन के खिलाफ चलाया। ...करके अपने निशाने का वार ...हयात और उसके मुसलमान ...साथियों पर किया था। जनवरी ...में जब पंजाब गवर्नमेंट ने ...मुस्लिम गार्ड और राष्ट्रीय स्वयं-...के दफ्तरों पर छापा मारा ...को गैर कानूनी करार ...मुस्लिम लीग का आन्दोलन ...मिनिस्टरी के खिलाफ था और ...एलान कर दिया था, कि ...का यह आन्दोलन हिन्दुओं ...नहीं और साम्प्रदायिकता ...कोई संबन्ध नहीं; परन्तु ...को असेम्बली में बहुमत ...बावजूद सर खिजिर हयात के ...स्तीफा देने के कारण प्रान्त ...वरण एकदम बिगड़ गया। ...की साम्प्रदायिक मिनिस्टरी

...पूर्व प्रधान मन्त्री मलिक ...खिजिर हयात खाँ।

बनने की सम्भावना दिखाई देने लगी। और हिन्दू, सिक्ख, अछूतों ने मिलकर पाकिस्तान के और मुस्लिम लीग मिनिस्टरी के खिलाफ आन्दोलन शुरू करने की घोषणा की।

३ मार्च को लाहौर में एक सार्वजनिक सभा में यह घोषणा हुई और ४ को डी० ए० वी० कालेज के युवक विद्यार्थियों ने पाकिस्तान और मुस्लिम मिनिस्टरी के खिलाफ एक जूलूस निकाला, जिस पर पुलिस ने गोली चला दी। अभी कुछ ही दिन हुए थे कि प्रति दिन मुस्लिम लीग के गैर कानूनी जूलूस जिनमें स्त्री, पुरुष, बच्चे सब ही होते थे, सड़कों पर निकला करते थे। उनको पुलिस सावधानी से जाने देती। किसी निश्चित स्थान पर रोककर पाँच-सात अगुआओं को पकड़ लेती थी। बाकियों को बिखरा देती थी। न गोली चलती थी, न लाठी मारी जाती थी। पुलिस और मुस्लिम लीगियों का यह खेल बराबर ३४ दिनों तक चलता रहा। इसी से जब हिन्दू लड़कों के पहले ही जूलूस पर गोली चला दी गई तो इस पक्षपातपूर्ण व्यवहार से जनता में काफी नाराजगी फैली। सर खिजरहयात और दूसरे यूनियनिस्ट मिनिस्टरों ने तो पहले ही यह त्याग कर दिया था। अब अकाली और कांग्रेस मिनिस्टर भी अलग हो गए और दफा ९३ के नीचे प्रान्त में गवर्नर का राज्य कायम हुआ। पुलिस की गोलियों के साथ ही दंगा फैल गया और बहुत जल्द इसका साम्प्रदायिक रूप बन गया। ४ मार्च को लाहौर में गोली गली, ५ को अमृतसर में आग लगी, ६ तक आधा अमृतसर जलकर राख बन गया। लाहौर में कर्फ्यू लग गया। पुलिस का राज्य हुआ और दंगा बढ़ता ही गया। देखते ही देखते मुलतान, रावलपिंडी से भयानक समाचार आने लगे। परन्तु कुछ ठीक पता नहीं लगता था।

तार डाक सब बन्द थे। अखबारों में भी दंगे के समाचार छापने बन्द कर दिये गये थे। चारों तरफ अँधेरा छाया हुआ था। "या अली" और "सत्य श्री अकाल" के नारे शाम पीछे सुनाई देते थे और अक्सर आस-पास से गोली चलने की आवाज आती थी। हमारे मकान के साथ ही मुस्लिम आबादी थी जहाँ नारों का शोर रहता था। धीरे-धीरे अँधेरा कुछ कम हुआ। रावलपिंडी, झेलम और मुलतान आदि के सनसनी पैदा करनेवाले रोमांचकारी समाचारों का विश्वास करना कठिन था; और ऐसा जान पड़ता था कि लोग बात को बढ़ाकर कह रहे हैं।

१८ मार्च को कुछ बहनों को साथ लेकर मैं अमृतसर पहुँची, अमृतसर व्यापार का केन्द्र है। लाहौर के बाद पंजाब का यह दूसरा सबसे बड़ा शहर है। इसलिए वहाँ के लोग बड़े पैसेवाले हैं। छोटे-बड़े बहुत से कारखाने भी मीलों तक फैले हुए हैं। घटना-स्थल पर जाकर देखा कि इस विशाल नगर के बड़े बड़े बाजार जहाँ रात-दिन चहल-पहल रहती थी और हजारों का व्यापार प्रति दिन चलता था, खंडहर के ढेर बने पड़े थे वहाँ सरकारी अफसरों और फौज के सिपाहियों की मदद से मलबा उठाया जा रहा है और पथिकों के चलने को रस्ता साफ किया जा रहा है। पाँच मार्च की रात को आग लगाई गई और दो दिन तक प्रचंड अग्नि के प्रकोप में अमृतसर का प्रसिद्ध और सुन्दर शहर जलता रहा। करोड़ों का नुकसान हुआ, व्यापारी तबाह हो गये हजारों स्त्री, पुरुष, बच्चे घरों से बेघर हो गये। परन्तु मैंने देखा कि लोगों ने हिम्मत नहीं हारी और अपने ही भरोसे पर भारी संकट का मुकाबला किया। वे अधिकतर पैसेवाले लोग थे इसलिए जीवन का पुनर्संगठन करने के लिए उन्हें किसी बाहरवाले का मुँह नहीं ताकना पड़ा।

२२ अप्रैल को मैं फिर अपनी कुछ साथिनियों को झेकर झेलम और रावलपिंडी गई। ३० तारीख तक इन दोनों जिलों के गाँवों में फिरती रही। जो कुछ देखा और सुना उसका लिखना कठिन है। इसके सिवा आजकल के वातावरण में इन बातों को बयान करने से कोई लाभ भी नहीं है। भारत के इतिहास में अँगरेजी राज्य का यह सबसे काला अध्याय होगा। जो बातें घटीं उनका भले आदमियों के विचार में आना भी कठिन है। वे सब अकस्मात् अचानक हो गईं। ४ मार्च से लेकर पूरे दो सप्ताह तक सारा पश्चिमी पंजाब दावानल के समान प्रचंड नारकीय अग्नि में जल उठा। हजारों स्त्री-पुरुष बच्चे मारे गये, जलाये गये, उनके खून और जली हुई हड्डियों और खोपड़ियों से धरती भर गई। मैं घटना के १०-१२ दिनों बाद पहुँची थी उस वक्त तक दूर के गाँवों में लाशें पड़ी सड़ रही थीं। फौजी सिपाहियों की सहायता से रिलीफ संस्थायें उनको उठाने और उनके दाह-कर्म के काम में लगी हुई थीं।

रावलपिंडी के जिले के चार को छोड़कर वे सब ही गाँव जिनमें हिन्दू-आबादी थी नाश कर दिये गये। झेलम जिले में ३०-३१ गाँव तबाह हुए। अटक जिले के ५ गाँ... ...हो गये। इनमें से बहुत से गाँव कितने खुशहाल थे, कम से कम वहाँ के हिन्दू-निवासी कितने पैसेवाले थे, यह देखकर मैं हैरान रह गई।

झेलम शहर से ७० मील पर ढुठियाल नाम का एक गाँव है जिसका अधिक से ज्यादा हिस्सा जलकर राख हो गया। घटना के १३-१४ के दिन बाद मैं गई तब भी धुआँ निकल रहा था। यहाँ के सब ही मकान पक्के थे और जो भाग शेष रह गया था उसको देखने से अनुमान किया जा सकता था कि वह साधारण गाँव नहीं था। वहाँ अधिकतर हिन्दू व्यापारी रहते थे जो भारत से बाहर जाकर दौलत कमा लाये थे। वहाँ के निवासियों में कई ऐसे थे जिनका व्यापार समरकन्द, बुखारा, काबुल, ईरान, ईराक और दक्षिण अफरीका में था। एक नवयुवक ने कहा उसके लाखों रुपयों के सामान में से एक १०,०००) का कालीन बचा है। मैंने अनुभव किया कि उन लोगों का साहस नहीं टूटा था। वे निराश नहीं हुए थे। जीवन के पुनर्संगठन की और फिर से पैसा कम लेने की आशाएँ मन में थीं। उसी तरफ के इलाके में गुथ नाम का एक छोटा-सा गाँव था। वहाँ जो अनर्थ हुए थे, वह भयंकर रोमांचकारी थे। गाँव के दस-पाँच को छोड़कर सब ही पुरुष मार डाले गये थे। गाँव श्मशान बन गया था। बची खुची यहाँ की स्त्रियाँ और बालक शरणार्थी केन्द्रों में चले गये थे। बहुत से पास के चकवाल कस्बे में ठहरे थे। इन स्त्रियों व बच्चों की दशा देखी नहीं जाती थी। सिक्ख गुरुद्वारे के विशाल भवन में उनको ठहराया गया था। मैं उन दुखी बहनों का हाल पूछ रही थी। उनकी हृदय-विदारक कहानियाँ सुन रही थी कि इतने में ही उसी गाँव से १०-१२ स्त्रियों का एक गुट बच्चों-सहित आ पहुँचा। कई दिनों बाद जिन दिनों में उनके सिरों से महाप्रलय बीत चुका था अपने गाँव की साथिनों का यह पुनर्मिलन का हृदय-विदारक दृश्य देखा नहीं जाता था। आततायियों के आक्रमण करने पर यह बहनें जिसको जिधर रास्ता मिला, उधर भाग निकलीं। खेतों में छिपती हुई सुनसान जंगलों को पार करती हुई दुश्मन से बचती हुई कितने ही दिनों बाद चकवाल पहुँचीं। उनको अपनी साथिनों का कोई हाल मालूम नहीं था। एक-दूसरे से मिलकर वह

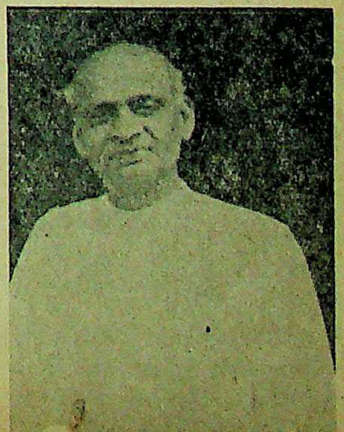

भारत-सरकार के गृह-मन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'भारत छोड़ो' का कार्य प्रारम्भ हुआ

मिस्टर जिन्ना पाकिस्तान के गवर्नर-जनरल बन गये

लेखक, श्री श्यामबिहारी विरागी, बी० ए०

भारत के बटवारा हो जाने के बाद ब्रिटिश सरकार ने 'भारत छोड़ो' के कार्य का प्रारम्भ कर दिया है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के वाइसरायों के नामों की घोषणा हो चुकी है। इस लेख में लेखक ने यह बतलाया है कि ब्रिटेन जिस ढंग से आगे बढ़ रहा है उससे राजनैतिक स्थिति कितनी सुधरेगी, इसका आभास मिल जाता है। लेख सुन्दर और सामयिक है।

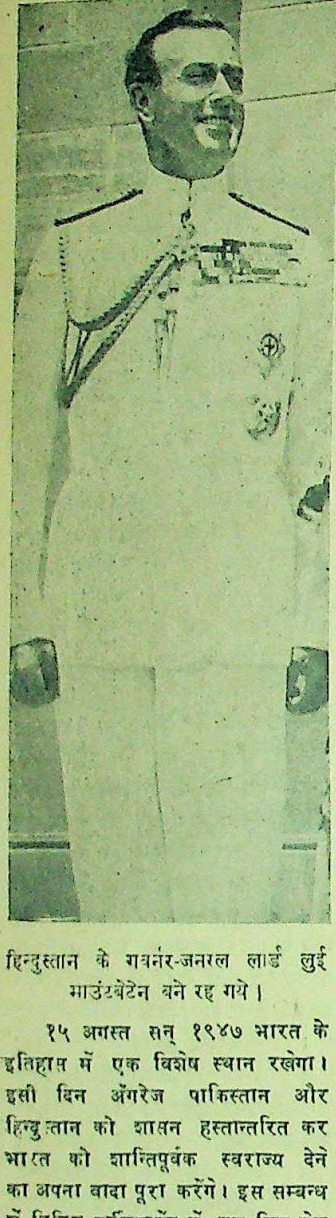

हिन्दुस्तान के गवर्नर-जनरल लार्ड लुई माउंटबेटेन बने रह गये।

१५ अगस्त सन् १९४७ भारत के इतिहास में एक विशेष स्थान रखेगा। इसी दिन अँगरेज पाकिस्तान और हिन्दुस्तान को शासन हस्तान्तरित कर भारत को शान्तिपूर्वक स्वराज्य देने का अपना वादा पूरा करेंगे। इस सम्बन्ध में ब्रिटिश पार्लियामेंट में एक बिल पेश हुआ है जो शीघ्र ही पास हो जायगा। पार्लियामेंट में यह आशा की जाती है कि इस बिल का विरोध बिलकुल नहीं होगा क्योंकि विरोधी दल के नेता मिस्टर चर्चिल भी—जिस उपाय से भारत को शासन हस्तान्तरित किया जा रहा है—उसे पसन्द करते हैं और वे एटली साहब की वर्तमान भारत-सम्बन्धी नीति से सन्तुष्ट हैं। १० जुलाई सन् १९४७ को हाउस आफ कामन्स में एटली साहब ने भारत के आगामी गति-विधि पर जो वक्तव्य दिया है उसकी सराहना करते हुए टोरी दल के दूल्हा मिस्टर चर्चिल के एक एजेन्ट मिस्टर हारोल्ड मैकमिलन ने कहा, "स्वशासन सँभालने के पथ पर भारत को तैयार करने के प्रश्न पर इँगलैंड में कभी भी दो मत नहीं रहा है। भारत स्वशासन की ओर जाय यह हमारा सबका ध्येय है परन्तु किस प्रकार इसे कार्यान्वित किया जाय, यह प्रश्न अवश्य झगड़े का रहा है।" मैकमिलन साहब तथा चर्चिल की पिछली बातों से यह झगड़ेवाला प्रश्न भी अब खतम हो गया और इस समय पार्लियामेंट के सब मेम्बर एक-मत होकर भारत को शासन हस्तान्तरित करनेवाले तरीकों की दाद कर रहे हैं। आज चर्चिल और एटली में कोई अन्तर नहीं दिखाई पड़ रहा है। भारत के पक्ष पर दोनों की एक राय है और दोनों बहुत खुश हैं।

चर्चिल की इच्छा पूर्ण

भारत के सबसे बड़े मिस्टर चर्चिल की जो नीति रही है और जिसके अनुसार वे भारत को आजादी देना चाहते हैं वे सब बातें आज चरितार्थ हो रही हैं। चर्चिल साहब यह चाहते थे कि अँगरेज भारत को उसी परिस्थिति में लाकर छोड़ें जिसमें उन्होंने हमें दास बनाया था। आज हमारी परिस्थिति ठीक वैसी ही है। जिस समय भारत गुलाम हुआ था उस समय आपस की फूट हमारी सबसे बड़ी कमजोरी थी। जिसके कारण हम २०० वर्ष तक पराधीनता की बेड़ी से जकड़े रहे। आज उसी कमजोरी को फिर हमारे अन्दर डालकर अँगरेज जाने का बहाना कर रहा है। अँगरेज यह डींग मारा करते थे कि उनके शासन-काल में बिखरा हुआ भारत एक सूत्र में बँध गया था। आज उनकी डींग कहाँ गई? हिन्दुस्तान में आपसी फूट जो इस समय पैदा हुई है इसकी जिम्मेदारी आखिर किस पर है? भाई-भाई एक दूसरे का गला काट रहे हैं, अखण्ड भारत टुकड़े टुकड़े में खण्डित किया जा रहा है और भारतीय एकता नष्ट-भ्रष्ट हो रही है। भारत की यह बुरी परिस्थिति आखिर किसने पैदा की? अँगरेज इस आपसी फूट की जिम्मेदारी भारतीय नेताओं पर मढ़ने की भले ही कोशिश करें; परन्तु भारत का अगला इतिहास दुनिया को डंके की चोट पर बतलायेगा कि ब्रिटिश हुकूमत कितनी मक्कार थी और अपनी जहरीली चालों से किस प्रकार भारतीय एकता को उसने भंग किया। भारत ने बहुत से बुरे दिन देखे हैं। आज की जो परिस्थिति है यह भी ठीक होगी। परन्तु दुख यह है कि इसका श्रेय अँगरेजों को नहीं मिलेगा।

जिन्ना पाकिस्तान के बड़े लाट

१५ अगस्त को भारत तथा पाकिस्तान के औपनिवेशिक राज्य कायम हो जायँगे। नियम के अनुसार हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान दोनों के लिए एक बड़े लाट नियत हो सकते थे। कांग्रेस को एक बड़े लार्ड रखने में कोई एतराज नहीं था; परन्तु मुस्लिम लीग कायदे आजम जिन्ना को पाकिस्तान का शाहंशाह बनाना चाहती थी। अतएव उसने इसे नामंजूर किया और जिन्ना साहब का नाम पाकिस्तान के बड़े लाट के लिए पेश किया गया। इस सम्बन्ध में यह कहना कि जिन्ना साहब की राय नहीं ली गई होगी, गलत होगा। जिन्ना साहब तो इस पद को चाहते ही थे और अँगरेजों की भी हिजमजेस्टी की सरकार की ओर से जिन्ना साहब को अपना प्रतिनिधि चुनने में कोई एतराज नहीं हो सकता था। अँगरेज तो यह जानते ही हैं कि उनका हित जिन्ना साहब के हाथों में बिलकुल सुरक्षित है। वैधानिक नियमों के अनुसार उपनिवेश के बड़े लाट अँगरेजों के प्रतिनिधि होते हैं और वे लार्ड-समुदाय के आदमी होते हैं। जिन्ना साहब को बड़े लाट होने में दो लालच हैं। एक तरफ वह अब लार्ड जिन्ना हो जायँगे और दूसरी तरफ अँगरेजों का प्रतिनिधि बनकर अपना रिश्ता अँगरेजों से और घनिष्ठ रूप में कायम रख सकेंगे। पाकिस्तान अँगरेजों की दया से मिला है और वह उन्हीं की कृपा से कायम रह

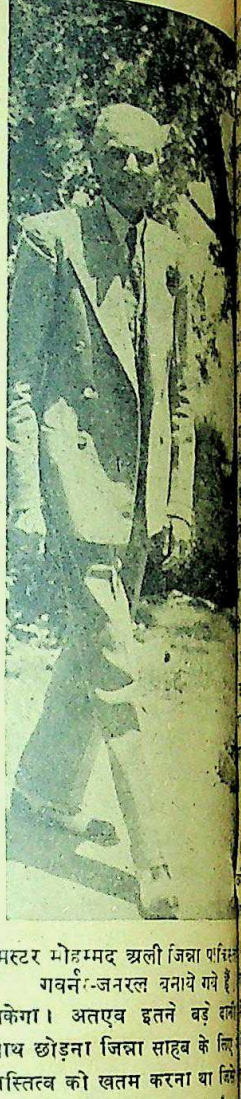

मिस्टर मोहम्मद अली जिन्ना पाकिस्तान के गवर्नर-जनरल बनाये गये हैं

सकेगा। अतएव इतने बड़े दर्जे के साथ छोड़ना जिन्ना साहब के लिए अस्तित्व को खतम करना था जिसे भी कैसे पसन्द कर सकता है।

हिन्दुस्तान के बड़े लाट लार्ड माउंटबेटेन साहब ही रहेंगे। हिन्दुस्तान गवर्नर-जनरल अँगरेज और पाकिस्तान का जिन्ना साहब—यह देखकर कुछ लोगों को भले ही आश्चर्य होगा और कांग्रेस को कोसेंगे। परन्तु अँगरेज जो हैं इस प्रकार के आश्चर्यों का होना आश्चर्य नहीं। वैधानिक दृष्टि से निवेश का बड़ा लाट कोई शासन विशेष महत्त्व नहीं रखता; परन्तु स्तान में जिन्ना साहब के लिए भना शायद मुनासिब नहीं। जिन्ना तो मुस्लिम लीग के प्राण हैं उनको बड़ा लाट बना देने में का पूरा शासन उन्हीं के हाथ में चाहिए। यह भी अँगरेजों की का एक नमूना है।

कांग्रेस की नीति

इस समय कांग्रेस ने जो है उससे बहुत से लोग बिगड़ उनका बिगड़ना स्वाभाविक भी यदि ठण्डे दिल से देखा जाय तो जो कुछ कर रही है उसे वर्तमान स्थिति में टाला नहीं जा सकता यह समझना कि जो कुछ हो उसे कांग्रेस के नेता ठीक मुनासिब नहीं। कांग्रेस के समय बड़ा धर्म-संकट है। जो नहीं चाहिए उसे भी कांग्रेस मान केवल इसलिए कि किसी तरह के नेता शासन-सूत्र अपने हाथ अँगरेजों को यहाँ से हटाना यह एक सत्य है कि अँगरेजों

गीत

लेखक श्री मोती, बी० ए०

अपनी प्रीति सँभालो!

आँसू में क्या रस, पहचानो—
अधरों में क्या विष, यह जानो!
कविता में आनन्द भरा क्या—
जीवन में रहस्य क्या, जानो!

फिर, मेरी धड़कन के स्वर में स्वर भरकर चाहे जो गा लो।

कितनी शक्ति भरी पीड़ा में,
कितनी प्रीति भरी पीड़ा में—
कितनी इच्छाएँ तड़पन में,
कितनी हार-जीत पीड़ा में।

पहले मन की थाह लगा लो फिर जो भी चाहो अपना लो।

प्रीत बिना जीवन सूना है,
प्रीत बिना यौवन सूना है,
प्रीत बिना जगतीतल सूना—
प्रीत बिना सब कुछ सूना है,

मगर, प्रीत करने के पहले ही आँखों का जल बरसा लो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित

सोवियट रूस में हिन्दुस्तान की प्रथम स्त्री–राजदूत

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित सोवियट रूस में भारत की ओर से राजदूत नियुक्त हुई हैं। भारतीय महिलाओं के लिये, श्रीमती पण्डित की नियुक्ति, गौरवपूर्ण है। इस लेख में लेखक ने भारतीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से श्रीमती पण्डित के कार्यों का उल्लेख किया है। लेख सामयिक और जानकारी से पूर्ण है।

...के सभी देशों में भारत के ...दूत पहुँच रहे हैं। अभी तक ...में राजदूतों की नियुक्तियाँ ...स्वतंत्र हैं और जिनका संसार ...ति में प्रमुख हाथ है। आज की ...राजनीति में अमरीका, रूस ...की प्रधानता हो रही है, चीन ...को भी महान् शक्तियों में गिना ...पर ये राष्ट्र अपने घरेलू कलह ...जैसे ही कहे जा सकते हैं जैसे, ...ारों का दिल्ली जाना।' फिर ...ता की दृष्टि से चीन और ...दूसरे राष्ट्रों के प्रति जो सहानु... ...अमरीका और ब्रिटेन में नहीं ...यदि फ्रांस, चीन और रूस ...कर संसार की राजनीति में ...और भारत को भी साथ ले ...में उनका कोई मुकाबला ...सकता। पर, स्थिति दूसरी है; ...समय में भारत को इन देशों ...ऐसे कूटनीतिज्ञों की आवश्यकता ...देशों की सच्ची सहानुभूति ...की वर्तमान स्थिति से मिला ...की स्थिति बहुत पहले से ...दिशा की ओर जा रही है ...की लपटों का एक नाशकारी ...इस स्थिति को पैदा करनेवाले ...और अमरीका हैं। रूस संसार ...ता का समर्थक है और भारत- ...इसलिए यह स्वाभाविक है कि ...की प्रगाढ़ मैत्री हो। दोनों देश ...एक दूसरे के समर्थक रहे हैं। ...फ्रांसिस्को-सम्मेलन में रूस ...के साथ जो सहानुभूति दिख- ...ये दोनों देश और घनिष्ठ ...आज रूस और भारत नजदीक ...दूसरे के साथ राजदूत-सम्बन्ध ...कर रहे हैं। इस मैत्री का अधिक- ...श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ...होंने बिना प्रतिनिधित्व के ही ...सच्चा चित्र सेन्फ्रांसिस्को ...में उपस्थित किया था। आज ...केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार कार्य ...और उसके सामने यह गम्भीर ...विदेशों में किनको राजदूत ...नियुक्त किया जाय? राष्ट्रीय ...बहुत सोच-विचार कर श्रीमती ...पंडित को नियुक्त किया ...उनकी नियुक्ति अमरीका में ...थी; परन्तु कुछ राजनैतिक ...उनको रोक लिया गया। ...के राजदूत श्री आसफअली ...हुए। राष्ट्रीय सरकार ने ...को रूस का राजदूत नियुक्त ...स्वीकृति ब्रिटिश सरकार से ली। ...विजयलक्ष्मी पंडित का ...तो नेहरू-परिवार के साथ ...फिर भी संक्षेप में उनके जीवन ...डालने से उनके कार्यों का ...आ जायगा। पंडित मोती- ...यह नहीं चाहते थे कि उनके ...शताब्दी में भी पिछड़ी हुई ...प्रतीक रहें। अतः उन्होंने अपने ...लेकर कितनी ही बार विदेश- ...श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ...पेरिस के 'सौन्दर्य-सम्मेलन' ...थीं। संसार की उस समय की ...में विजयलक्ष्मी द्वितीय

थीं। सन् १९१७ में श्रीमती एनी बीसेण्ट के होमरूल-आन्दोलन में पंडित मोतीलाल नेहरू भी भाग ले रहे थे। सन् १९२१ में भारत के राजनीतिक गगन पर गान्धी जी के उदय होते हुए एक नया प्रकाश फैल गया। जो राजनीतिज्ञ वक्ता के रूप में आते थे उनकी आवश्यकता जाती रही। जेल जाने और कष्ट सहने का युग आया। इस युग में नेहरू-परिवार ने भारतीय स्वतंत्रता के लिए जो बलिदान और त्याग किये हैं वे अमर रहेंगे। पंडित मोतीलाल जी की छोटी पुत्री श्रीमती कृष्णा हथीसिंह ने अपने पिता के अन्तिम वाक्य नोट कर रक्खे हैं–"भारत का भाग्य स्वराज्य-भवन में निर्णय कीजिए, वह मेरे सामने ही निर्णय हो, मुझे अपनी मातृभूमि के भाग्य-निर्णय का एक सदस्य होना चाहिए।" यद्यपि पंडित मोतीलाल नेहरू इस संसार में नहीं हैं और न भारत का भाग्य स्वराज्य-भवन में ही निर्णय हुआ। परन्तु मातृभूमि को भाग्य का निर्णय उनके परिवार के द्वारा हो रहा है यह कम महत्त्व की बात नहीं। शिक्षा की दृष्टि से विजयलक्ष्मी पंडित यद्यपि विश्व-विद्यालय की स्नातिका नहीं हैं फिर भी उनमें वह ज्ञान और बुद्धि एक स्नातक अथवा स्नातिका से कहीं अधिक है। विजयलक्ष्मी कश्मीरी पंडित की लड़की हैं परन्तु उनकी शादी राजस्थानी ब्राह्मण श्री रणजीत सीताराम पंडित से हुई। श्री रणजीत इँगलैण्ड से बैरिस्टरी पास थे। उन्हें कई भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। संस्कृत के भी वह पंडित थे। उन्होंने संस्कृत के पंडित कल्हण की राजतरंगिणी का अनुवाद अँगरेजी भाषा में करके अपनी विद्वत्ता का अच्छा परिचय दिया था। सन् १९३६ के प्रान्तीय धारा-सभा के चुनाव में पति-पत्नी दोनों युक्त-प्रान्तीय धारा-सभा के सदस्य चुने गये। दुर्भाग्य से सन् १९४४ में श्री रणजीत पंडित इस संसार से चल बसे। जेल में कितने ही महीने बीमार रहने पर भी ब्रिटिश सरकार ने उन्हें मुक्त न किया। अन्ततोगत्वा जेल से बाहर कई महीने की बीमारी के पश्चात् उनका देहान्त हो गया। पंडित जी की मृत्यु से विजयलक्ष्मी जी तथा जवाहरलाल जी को बड़ा दुःख हुआ, पर किया क्या जा सकता है। मृत्यु के आगे किसी का वश नहीं।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित सोवियट रूस में भारत की राजदूत नियुक्त हुई हैं।

शादी होने पर भी विजयलक्ष्मी और उनके पति प्रयाग ही में रहते थे। श्रीयुत रणजीत पंडित हाईकोर्ट में वकालत करते और शेष समय देश के चलते हुए स्वातन्त्र्य संग्राम में देते थे। विजयलक्ष्मी पंडित ने अपने माता-पिता और भाई तथा भावज के साथ देश में चलते हुए स्वतंत्रता-आन्दोलन में भाग लिया है। सन् १९३७ में जब प्रान्तीय धारा-सभाओं में कांग्रेस का बहुमत हुआ उस समय यह विवाद चल रहा था कि कांग्रेस को पद-ग्रहण करना चाहिए अथवा नहीं? स्वयं पंडित जवाहरलाल नेहरू और उनकी बहन श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित समाजवादी विचारों के कारण इस विषय में मिनिस्टरी-ग्रहण के विरोधी थे। परन्तु कांग्रेस के प्रस्ताव पास कर देने पर पंडित जवाहरलाल जी ने स्वयं अपनी बहन को उस अनुशासन को मानने के लिए एक मिनिस्टर नियुक्त किया। जिसको विजयलक्ष्मी जी ने बड़ी योग्यता के साथ सन् १९३९ तक चलाया। कांग्रेस युद्ध-विरोधी-प्रस्ताव पास कर मंत्रिमडलों से कांग्रेस-जनों को हट जाने का आदेश दिया। श्रीमती विजयलक्ष्मी जी अपने अन्य साथियों के साथ शीघ्र ही मिनिस्टरी की गद्दी त्याग कर स्वतंत्रता-संग्राम में जुट गईं। सन् १९४० में चलते हुए व्यक्तिगत आन्दोलन में महात्मा जी ने यू० पी० के आन्दोलन की जिम्मेदारी श्रीमती विजयलक्ष्मी जी को दे रक्खी थी, उस आन्दोलन में युक्तप्रान्त ने कितने ही हजार सत्याग्रही जेल भेजे स्वयं विजयलक्ष्मी जी जेल गईं और कई महीने तक उस चहारदीवारी में रहीं।

सन् १९४२ की जनक्रान्ति में देश के नेता बहुत पहले ही पकड़ लिये गये। विजयलक्ष्मी जी भी उस आन्दोलन में पकड़ी गईं। नैनी जेल की चहारदीवारियाँ ऐसी वीरांगना की तपस्या का इतिहास कहती रहेंगी। उनकी गिरफ्तारी के बाद उनकी लड़कियों की शिक्षा का कोई खास प्रबन्धक न रह गया। श्रीमती इन्दिरा गांधी और श्री फीरोज गांधी, जो नेहरू-परिवार में जेल जाने से बच चुके थे वे भी जेल पहुँच गये। इससे उनका कोई संरक्षक न रह गया। जेल-अधिकारियों ने श्रीमती विजयलक्ष्मी जी को जेल से मुक्त कर दिया। वही मुक्ति भारत को अँगरेजों की गुलामी से मुक्ति देने की प्रेरणा थी। जेल से मुक्त होकर विजयलक्ष्मी जी ने अमरीका में अपनी दो लड़कियों की शिक्षा का प्रबन्ध कर वहाँ भेज दिया। इसके पश्चात् वे पुनः जेल में दाखिल हो गईं।

सन् १९४३ में जेल से छूटकर श्रीमती विजयलक्ष्मी जी को अपने रोग-ग्रसित पति की सेवा में जुट जाना पड़ा। सन् १९४४ का सन् नेहरू और पंडित-परिवार के लिए गहरे शोक का वर्ष कहा जा सकता है। श्री रणजीत पंडित ने लखनऊ के अस्पताल में अपने जीवन की अन्तिम साँस ली। विजयलक्ष्मी जी को पति की मृत्यु का अपार शोक हुआ। बेचारी राजनैतिक जीवन से मौन ग्रहण किये बैठी थीं परन्तु कुछ पति-शोक और कुछ लड़कियों के विछोह ने उन्हें भारत में चैन से न बैठने दिया। महात्मा जी के पास जाकर उन्होंने अमरीका जाने का प्रस्ताव रक्खा। गांधी जी ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। विजयलक्ष्मी जी भारत से

शेष पृष्ठ १२ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पेज ५ का शेष)

फूट-फूट और चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगीं। हमारी आँखों से भी आँसू जारी थे। कौन ऐसा पाषाण-हृदय होगा जो ऐसे समय आँसू रोक सके।

यहाँ १०-१२ वर्ष की एक छोटी लड़की थी उसके भी बरछी के जखम लगे थे। उसने अपने पिता के मारे जाने का हाल यों सुनाया कि आततायियों ने पहले बरछी की नोक से उसकी आँखें निकालीं, फिर उसके अंग काटकर, जलती आग में झोंक दिया। ऐसी-ऐसी अनेक बातें मैंने शरणार्थियों की जबानी सुनी हैं। उनको विस्तार से लिखना मैं उचित नहीं समझती, इतना समझ लेना चाहिए जो कुछ हुआ वह अमानुषी था। उसको पाशविक भी नहीं कहा जा सकता। जंगलों के पशु एक-दूसरे को मारते हैं सही; परन्तु उनका यह स्वभाव ही है। उनका जीवन ही दूसरे को मारकर खाने पर कायम है। उनके शरीर की यह एक अनिवार्य्य आवश्यकता है। उसके बिना वह अपने शरीर का पालन नहीं कर सकते; परन्तु वह त्रास नहीं देते। वे द्वेष से प्रेरित होकर अत्याचार नहीं करते। इसीलिए जो कुछ किया गया उसको पाशविक भी नहीं कहा जा सकता। राक्षसी कहें तो कहें; परन्तु सच तो यह है कि उसके लिए कोई उपयुक्त शब्द मिलता ही नहीं।

इस सारे हत्याकांड को बारीकी से देखने से यह साफ दिखाई देता है कि इसके पीछे देर से सोची-समझी हुई और तैयार की हुई स्कीम थी। जो कुछ हुआ उसको साम्प्रदायिक झगड़े का नाम देना लोगों को मोह में डालना है, इसका रूप अवश्य साम्प्रदायिक था क्योंकि सीधे-सादे लोगों को धर्म के नाम पर उकसाया गया था। "इस्लाम खतरे में है धर्म की रक्षा करो" के जिस नारे पर मुस्लिम लीग ने १९४५ का चुनाव लड़ा था उसी नारे के जोर पर यह काण्ड रचा गया। मैं ऐसा मानती हूँ कि बड़ी संख्या में गरीब साधारण लोग संगठित होकर अपनी प्रेरणा से कभी किसी ऐसे काम को करने के लिए तैयार नहीं होते जिससे न उनका निजी स्वार्थ सिद्ध हो न उनकी धार्मिक भावना को शान्ति मिले। भारत की जनता क्या हिन्दू क्या मुसलमान धर्मपरायण है। वह मुट्ठी भर लोग जिनके हाथ में आज मुस्लिम लीग की बागडोर है, गरीब सीधे-सादे जन-साधारण को अपने हाथ में कभी नहीं ले सकते थे जब तक कि वे इन ग्रामीणों की धर्मवृत्ति को जाग्रत् न करते और सच या झूठ उनको इस बात का विश्वास न दिलाने की यह सब हत्याएँ करना उनके धर्म्म के बचाव और प्रसार के लिए जरूरी है। यदि ऐसा न करते तो शताब्दियों से साथ रहनेवाले पड़ोसी जो एक-दूसरे को चाचा, भाई, ताया कहकर पुकारते थे, जो एक दूसरे का सदा साथ देते थे, जिनका जीवन परस्पर के सहयोग पर ही कायम था वे कभी ऐसा अत्याचार न करते जैसा कि उन्होंने किया।

साम्प्रदायिक दंगे तो भारत में कई बार पहले भी हो चुके हैं। किसी विशेष घटना पर उत्तेजित होकर, क्षणभंगुर गुस्से में आकर एक दूसरे को मारना और एक दूसरे का नुकसान करना साम्प्रदायिक दंगा कहा जा सकता है, परन्तु संगठित होकर हजारों की संख्या में हथियारों से सुसज्जित एक सम्प्रदाय की जनता का फौजी ढंग से आना और गाँव के गाँवों को एक ही ढंग से तहस-नहस करना साम्प्रदायिक दंगा नहीं कहा जा सकता। यह तो एक नई तरकीब ही रची गई थी जिसको कोई नया नाम ही देना पड़ेगा। मुझे इतिहास में कोई ऐसी घटना याद नहीं आती जिसकी उपमा इससे दी जावे।

लीग के मुखियों ने जोर-जबरदस्ती, दंगा, हत्या, हिंसा करके अपना राज्य जमाना चाहा। इसीलिए तो उनके नेता इतने दिनों खुले हिंसा का प्रचार करते रहे और यह कहते रहे कि पाकिस्तान हमें न मिला तो हत्या, हिंसा में हम चंगेज खाँ और हलाकू खाँ को मात करेंगे। ऐसा लगता है कि पंजाब में तो उनकी तरकीब यह थी कि जिन जिन इलाकों में हिन्दू अल्पसंख्या में हैं वहाँ से उनको मारकर उनके दिलों में आतंक जमाकर उनको डराकर उन स्थानों से भगा दिया जावे और जो शेष रहें, उन्हें जबरदस्ती मुसलमान बनाया जावे। इस तरह वैधानिक और कानूनी फैसले का इन्तजाम किये बिना ही व्यवहार में पाकिस्तान कायम कर लिया जावे। इसी नीति से कम से कम सीमाप्रान्त में और रावलपिंडी में तो उन्हें सफलता मिली है। वहाँ हिन्दुओं की संख्या अब बहुत थोड़ी रह गई है। इतना होने पर भी, डेराइस्माइल खाँ में भयानक मृत्यु-काण्ड के होते हुए जिन्ना साहब का कहना है कि सीमाप्रान्त में मुस्लिम लीगी आन्दोलन अहिंसात्मक रहा? इस प्रकार जब सच्चाई का खून किया जावे तो कोई क्या कर सकता है।

इस काण्ड का अपराध केवल मुस्लिम लीग के सिर मढ़ना भी गलती होगी। इस बड़े काम को मुस्लिम लीग अपने ही बिरते पर नहीं कर सकती थी। यह बात किसी से छिपी नहीं है कि इसमें पुलिस का भारी हाथ था। लोग साफ साफ और खुले-खुले कह रहे हैं कि हर स्थान पर पुलिस बलवाइयों की मदद करती हुई देखी गई है। पुलिस की लारियों में से पेट्रोल लेकर आग लगाई गई है। लाहौर और अमृतसर के शहरों में तो आग लगानेवालों के पीछे पुलिसवाले उनकी सहायता करते हुए देखे गये हैं। गाँवों में अधिकतर स्थानों पर गाँव के सरकारी नौकर इनामदार, नम्बरदार, जेलदार कहीं-कहीं तहसीलदारों ने भी खुले बलवाइयों की सहायता की है। क्या यह कभी सम्भव है कि इतना कुछ हो जाये और जिले के अफसरों को इसकी खबर न हो और वे इसको रोक न सकें? १२, १५ दिन तो बहुत होते हैं। ऐसी चीज तो १२, १५ घंटे भी चलनी नहीं चाहिए थी। यह भी एक अजीब और संदेहजनक बात है कि जिन जिलों में बलवों का जोर रहा और जहाँ हत्या अधिक हुई वहाँ अँगरेज ही हाकिम थे।

सन् १९१९ में रौलट एक्ट को रद्द कराने के आन्दोलन में दो अँगरेजों के मारे जाने पर जलियानवाला बाग का हत्याकाण्ड हो गया था। मार्शल-ला लगा दिया गया था। दम के दम में सारी हिंसा बंद कर दी गई थी। सन् १९४२ के हिंसात्मक आन्दोलन के खिलाफ कितनी सख्ती और तत्परता से काम लिया गया था। फिर क्या कारण है कि दिन पर दिन बीतते जाते हैं और यह हिंसा का ताण्डव-नृत्य बंद होने में नहीं आता? एक से दूसरी और दूसरी से तीसरी जगह फैलता ही जाता है। स्पष्ट है कि अधिकारीगण इसे रोकना नहीं चाहते। केवल इतना ही नहीं वे पुलिस के पक्षपात और नाजायज व्यवहार को देख-सुनकर भी अनजान बन जाते हैं, इस तरह जब रक्षक ही भक्षक बन जावें तो जनता की रक्षा कौन करे? पुलिस के और दूसरे बड़े अफसर लोगों से यह कहने में जरा भी संकोच नहीं करते कि हमारे पास क्यों आते हो? गान्धी जवाहरलाल के पास जाओ, हमें देश से निकालना चाहते थे अब हम जा रहे हैं, तुम्हें तुम्हारी मुँहमाँगी, स्वतंत्रता मिल गई। अब हमसे सहायता चाहनी तुम्हें शोभा नहीं देती। ऐसा कहते हुए वे इस बात को भूल जाते हैं कि अभी तो सब अधिकार उन्हीं का है। गवर्नमेण्ट उनकी है। शासन उनका है तो उसके साथ ही जनता की रक्षा का उत्तरदायित्व भी तो उन्हीं का है, और उनका धर्म है कि वे अपनी इस जिम्मेवारी को आखिरी समय तक पूरा-पूरा निभावें।

बात असल में यह है कि इँगलैण्ड की सरकार और भारत के वायसराय चाहे सच्चे मन से भारत छोड़ना चाहें; परन्तु प्रान्तीय अँगरेज अफसर भारत से जाना नहीं चाहता। उसने इतने वर्षों निरंकुश शासन का सुख भोगा है। अब उसको छोड़कर जाने के ध्यान से ही उसको दुःख होता है। इसलिए वह उन लोगों से घृणा करता है जो खुले उसके चले जाने की माँग करते रहे हैं और यह सिद्ध करना चाहता है कि भारतवासी स्वयं शासन के अयोग्य हैं। इन सब हत्याकाण्डों को पर्दे के पीछे रहकर वह उत्तेजना देता है और जन-साधारण से यह कहलवाना चाहता है कि अँगरेज का शासन न्यायपूर्ण था और वही कायम रहना चाहिए। उसके लिए रावलपिंडी के वाह कैम्प के शरणार्थियों में शुरू-शुरू में प्रचार किया गया और लाहौर में भी कुछ मुहल्लेवालों का ऐसा कहना है कि उनसे एक बड़े अँगरेज अफसर ने कहा कि अपनी रक्षा चाहते हो तो हमें लिखकर दो कि हम अँगरेजों का भारत में रहना पसन्द करते हैं।

परन्तु स्थिति ऐसी है और इँगलैण्ड की सरकार और आजकल के वायसराय का रवैया ऐसा है कि उनकी यह चाल चल नहीं पाई और इसको वे आगे न बढ़ा सके। इस जरिये से अपने मतलब को सिद्ध करने की उनको कोई मूर्खता दिखाई नहीं दी। इसीलिए इस आन्दोलन को छेड़ना पड़ा। [illegible] उद्दण्डता को रोकने और [illegible] में उनका मन नहीं है और [illegible] यमराज का यह नारकीय काण्ड [illegible] होने में नहीं आता।

जवाहरों द्वारा निर्मित लि[illegible] घड़ियाँ

समस्त घड़ियाँ स्विटजरलैंड [illegible] हुई, सच्चा समय बतानेवाली, [illegible] से सुसज्जित, दीर्घकाल तक [illegible] और सोफियानी हैं। प्रत्येक की [illegible] गारंटी है।

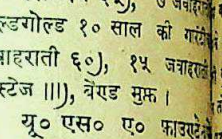

क्रौमियम केस २०), ऊँचे दर्जे [illegible] सर्वोत्तम ३०), ५ जवाहराती चौखूँटे [illegible] दार क्रौमियम ३५), ७ जवाहराती [illegible] रोल्डगोल्ड १० साल की गारंटी [illegible] जवाहराती ६०), १५ जवाहराती [illegible] पोस्टेज ।।।), बैण्ड मुफ्त।

यू० एस० ए० फाउण्टेन [illegible]

विभिन्न रंगों से रंजित और [illegible] ढंग के बने १४ के टी निब ४।।) [illegible] ५।।), सर्वोत्तम ६), पोस्टेज ।।।) [illegible] अप्राप्य। पत्र-व्यवहार अँगरेजी में [illegible]

कलकत्ता वाच कं०, (सेक्सन [illegible] पो० बाक्स न० १२२०३, कलकत्ता

क्यों!

ब्रिल्क्रीम

अपने आसपास देखिये और उन [illegible] का पता लगाइये जो ब्रिल्क्रीम [illegible] लाते हैं। स्वच्छ एवं स्वस्थ [illegible] उनका पता आसानी से लग [illegible] ब्रिल्क्रीम वालों को अपने स्थान [illegible] है और उन्हें सुन्दर चमक देता है। आज ही एक बोतल खरीदिये

ब्रिल्क्रीम

परिपूर्णकेश-शृंगार

BRYLCREEM

THE PERFECT HAIRDRESS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

भूख की मार

लेखक, श्री प्रेमकपूर कंचन

भारत एक निर्धन देश है। राष्ट्र की अधिकांश जन-संख्या खेतिहर होते हुए भी भूखी रहती है। लावारिस स्त्री का कोई अवलंब नहीं। फिर वह क्या करे, अपना पेट कैसे भरे? ऐसी दशा में अगर दूसरे के पेट की चिन्ता हुई तब तो और भी कठिनाई है। इस कहानी में इसी भावना का चित्रण किया गया है, जिससे आज के सामाजिक जीवन की एक तस्वीर सामने आ जाती है।

"बालू का यह गुण है कि उसे जितने ...ोर से पकड़ो उतनी ही शीघ्रता से ...ट्ठी से सरक जाता है और संसार ...ी यही नियम है कि जिस वस्तु को ...ने ही जोर से पकड़ो उतनी ही वह ...से बाहर हो जायगी।" ऐसे ही ...ने फूहड़ विचार उसके मस्तिष्क ...कर मारते रहे, पर वह अपनी ...ता तक न पहुँच पाई थी।

...ों तो सभी कहते हैं कि मानव-...में अनेक कहानियाँ भरी पड़ी हैं ...सका जीवन-दीप जलने से प्रथम ...ुझ चुका हो, जो वैभव के अंचल ...ी हो, वह इस कथन में कितना ...नहीं आँक सकता। पर वह सुलझ ...पाई थी की पालने पर सोता हुआ ...ो पड़ा।

...सका हृदय द्रवित हो उठा, हर ...की तरह आज भी जटिल समस्या ...ी खड़ी थी। इतने समय में वह ...कुछ समझ चुकी है पर एक ही ...तो उसे खाये जाता है। वह अपने ...र तवा बाँध लेगी लेकिन उसका ...ा बच्चा क्यों दुःख उठाये?

...च्चे को गोद में उठाते हुए प्रश्न ..."क्या हुआ मुनुआ को?"

"बली दोल थे भूत लदी है माँ।" ...वह सिसकने लगा।

...ह इसी उत्तर को तो नहीं सुनना ...ी थी। इसी से तो वह रात-...ुखी मरती थी। मँहगी के समय ...ी कुछ काम भी तो न था। किसी ...वह लोगों का आटा पीस देती, ...चावल बीन देती इसी प्रकार के ...रके वह रोटी की मार को सहती।

"अच्छा अभी देती हूँ।" कहकर ...च्चे को पालने पर से उतार दिया।

...ोईघर में जाकर एक बरतन ...टकर सूखे मटर-मक्कई की बनी ...ी निकाली। वह हाथ से उसे दबाने ...पत्थरों के कलेजे के समान वह ...ो चुकी थी। बेटे की पुकार ...कानों में गूँज रही थी। माँ को ...बालक दौड़ पड़ा, तथा उसके ...से लिपट गया। अपने कलेजे ...को कलेजे से चिपकाकर उसने ...कोमल करों में इन्द्र का वज्र थमा

...लक रोटी को मुँह के भीतर ...भरसक चेष्टा करता पर बार-बार ...फल रह जाता। माँ बेटे के इस ...को नयन-जलों से निरखती ...उसके होंठ आप ही आप बुदबुदा ...शायद रोटी काफी कड़ी है।" वह ...क-सी हो उठी।

...ना ने उसके कलेजे पर ठेस मारी, ...नन्हें-नन्हें चार दाँत और यह ...मक्कई का टुकड़ा। वह अगाध ...में गोते लगाने लगी।

...ने कुछ समय पूर्व मालिक के ...को पीसकर रक्खा था, वह अभी ...रियों पर अपना साम्राज्य जमाये ...मस्तक ऊँचा किये सफेदी फेंक रहे ...उन्हीं में खोई जा रही थी। उस ...के भीतर वह रह रही है मनों ...उसने पीस डाला और उनकी ...में उसे क्या मिला केवल चन्द पैसे।

क्या उनसे वह अपनी भूख मिटा सकी कभी-कभी तो उसके वह पैसे भी काट लिये जाते।

उसकी आँखों में आशा जाग उठी। उसका व्यथित मन हिलोरें लेने लगा। ममता उसे अन्धा बना रही थी। पाप-पुण्य उसके लिए नहीं रहा। उसके मन ने जोर मारा उसने शीघ्रता से आटों में अपना हाथ डाल दिया। वह तड़प उठी। उसने हाथ झटक दिया। मन उसे "पिशाचिनी" कहने से नहीं रुका। वह सिहर उठी। मानो उसने भारी अपराध कर दिया हो। उसके कान फटने लगे। वह सुन रही थी लोग उसे चोर कह रहे हैं। लोग काम न देंगे तो और उसकी रोजी पर आघात होगा।

इधर वह उलझी थी और उधर बालक रोटियों के टुकड़ों से भूख की मार रोकने में असमर्थ था। दोनों ओर द्वन्द्व चल रहा था। आखिर बालक असमर्थ हो गया। उसने अपना साहस छोड़ दिया। रोटी का टुकड़ा उसने माँ की तरफ फेंक दिया और फूट-फूटकर रोने लगा। वह न समझ सकी कि यह रोटी की मार है या भूख की? वह देख रही थी, बालक रो रहा है। वह खीज उठी। तड़ा...तड़... तड़ा....तड़ उसने चार तमाचे उसके सुन्दर मुलायम गालों पर जड़ दिया और वहीं उसे रोता छोड़कर दूसरी ओर चली गई। पर कुछ ही समय में उसकी आत्मा उसे धिक्कारने लगी। उसने बालक पर हाथ उठाया उसकी आत्मा द्रवित हो रही थी। बालक, अनाथ, भूखा बे पिता का, और वह माँ जो उसे खाना तक न दे सके, उसे मारने का क्या अधिकार? उसके मन ने प्रश्न किया लेकिन "यह परिवर्तन हुआ क्यों कर?"

"भूख सब कुछ करा देती है, मनुष्य की आत्मा बिकवा देती है, स्त्री से स्त्रित्व का व्यापार करा देती है। भूख के सामने लोग धर्म भूल जाते हैं। धर्म के बिना मनुष्य का जीवन सफल नहीं होता; पर भूख से मनुष्य का जीवन ही दुर्लभ है। भूख सर्वोपरि है। धर्म-कर्म बाद में। लेकिन भूख के लिए वह पाप नहीं कर सकती, वह भगवान् को खुश करेगी। वह उस बालक की भी परवाह न करेगी जिसके लिए उसने अनेकों साधुओं गरीबों और फकीरों की जेब गर्म किये थे। पर वह शान्ति न पा सकी।

कमरे भर में उसने चहलकदमी शुरू कर दी थी। बालक रोते-रोते सो गया था। वह टकटकी बाँधे उसकी ओर निरखती रही। उसकी आँखें जल-कणों से क्रीड़ा कर एक किनारे लग गई थीं। अभी वह सो भी न पाई थी कि शीत का नन्हा-सा झोंका आकर उसके शरीर को कँपा गया। वह चौंक पड़ी। लिहाफ उठाकर उसने बालक को ढँक दिया और चक्की के पास आ बैठी।

इस समय चन्द्रमा का पूर्ण साम्राज्य था। वह उसकी तरफ निहारने लगी शायद चन्द्र उसकी विवशता पर खिल-खिला रहा था। वह देखती रह गई। और चन्द्रमा के काले दाग में वह कुछ ढूँढ़ने की चेष्टा करने लगी। चन्द्रमा की किरणें उसके पुरातन जीवन को हिला-हिलाकर जगाने में व्यस्त थीं।

उसकी चेतना वापस आई उसे याद आया। ऐसे ही तो एक दिन वर्षों पहले वह अपने आँगन में खड़ी थी और वह चाँद के साथ-साथ हँस रही थी। पति की आँखों से प्रथम बार विश्व को देखने की चेष्टा की थी उसने। पर चन्द्र अगर मेरे साथ-साथ तुम भी दुखित होते तो संसार तुमसे घृणा करने लग जाता।

वह उसी प्रकार शीत में खड़ी कल्पना के पंखों पर उड़ रही थी; लेकिन उसे ख्याल आया पुराना लिहाफ है, बच्चे को अवश्य ठंड लग रही होगी। वह शीघ्रता से उसके पास पहुँची। बालक गहरी निद्रा में हिलोरें ले रहा था। उसकी बगल में पहुँचकर कल्पना की उड़ान और तेज हो गई, वह सोच रही थी। कुछ समय पूर्व तो ऐसा न था। क्या परिवतन हो गया है उसमें। वह कुछ खोई खोई सी रहती ह। उसने देखा सब कुछ वैसे ही तो है; पर उसके पास उसका पति नहीं।

बचपन में उसने माँ-बाप का प्यार देखा था पर ईश्वर को यह न जँचा, भगवान् ने उनको छीन लिया और उसके बाद हमेशा वह दुःख ही में रही। चाचा-चाची ने उसके सुख-दुःख की चेष्टा न की। पर एक दिन उसने सुना उसकी शादी की बातचीत चल रही है, मन मचल उठा; पर भगवान् ने, सोहाग, नारी का एकमात्र साधन उसे भी न रहने दिया। उसका मन बोल उठा उसकी एक आदत खराब है। "हर वस्तु को प्रकाश में देखती है और यह नहीं ध्यान रखती प्रकाश के बाद ही अन्धकार है और अन्धकार का आवरण प्रकाश है। अब तू विधवा है। प्रकाश समाप्त हो चुका। घोर अन्धकार में तू रहने लगी है, टिमटिमाता हुआ दीपक तेरे साथ है उसकी रक्षा करनी है तुझे।

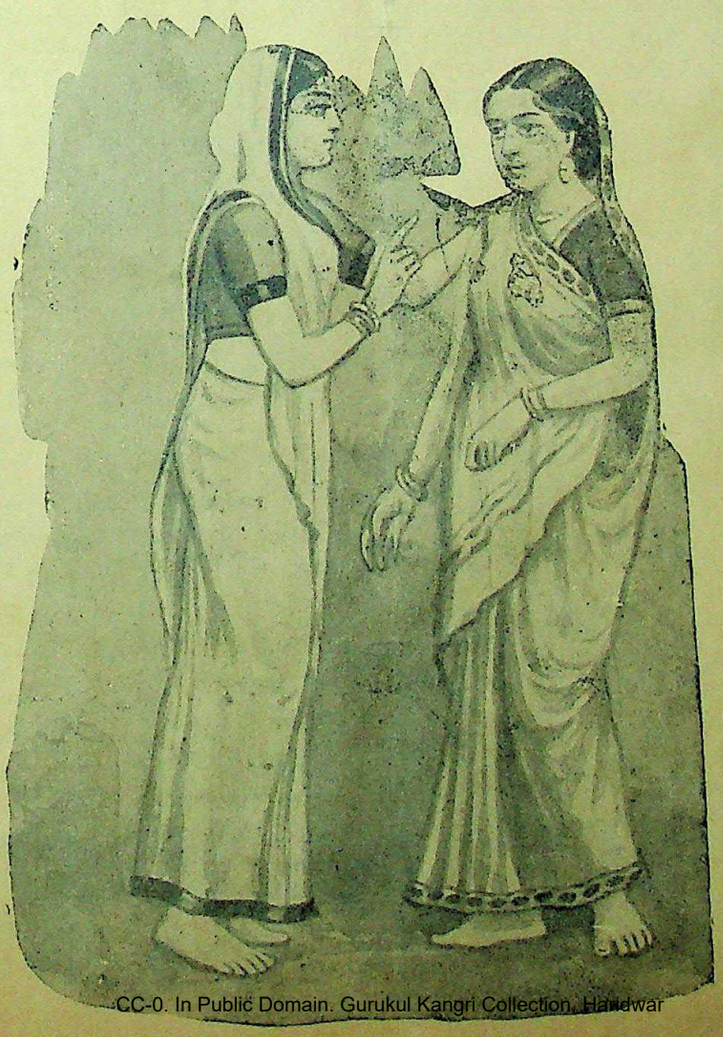

उसने कहा—बहिन भूख सब कुछ करा देती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तू जीवित है इससे भी किसी को डर है। चाचा सोचते होंगे कि तेरे मर जाने के बाद बेटे का भार उन्हीं पर ही पड़ेगा। उसे ख्याल आया। चाचा ने कहा था जब वह बिदा कर रहे थे—"बेटी तुम्हें मालूम है, मेरी आमदनी ज्यादा नहीं तेरे बाप की जायदाद और रुपये-पैसे से मैंने तुम्हें पाला-पोशा और तेरी शादी भी की अब मेरे पास तुम्हारा कुछ नहीं है।"

"क्या कह रहे हो चाचा जी? आप तो मेरे पिता के समान हैं, मैं तो तुम्हारा इसी प्रकार आदर करूँगी।"

"ठीक है लेकिन शादी के बाद लड़की का घर ससुराल होता है मैका नहीं। अब इस घर में तुम्हारा कुछ नहीं।" चाचा की आज्ञा समझकर खुश हुई थी वह पर उसकी समझ में आज आया कि चाचा का आशय क्या था। पति की मृत्यु के बाद उसके ससुराल का दरवाजा बन्द हो गया, चाचा के घर जाना व्यर्थ था। लेकिन आज एक भी दर नहीं कि वह बालक की भूख की मार शान्त कर सके।

वह सोचती रही कुछमनगढ़न्त कथायें जो महत्त्वहीन हैं। उसे दिमाग में चक्कर लगाते रहना कोई बुद्धिमता नहीं है। वह सोच में पड़ी थी कि बुद्धि भी तो कोई वस्तु है, उस कसौटी पर उसने क्या कसा? सत्य और असत्य की तुलना उसने क्या की? वह समझ न सकी। वह क्या करे कि कोई भी उपाय या प्रयत्न उसे न सूझा। वह बीस सेर आटा या मन भर दाल छानने-बीनने के अलावा कुछ भी नहीं कर सकती। क्यों न वह उसमें से पावभर आटा निकालकर जौ का मिलो दे। तब उसका काम मजे में चल सकता है। लेकिन वह विवश है। पाप-पुण्य क्या सब कुछ बराबर कर देगी।

उसकी आत्मा ने झकझोर डाला पाप-पुण्य कुछ नहीं। सब समझ की धोखे की टट्टी है। अगर संसार में रहना है और अपने लिये पग भर स्थान निकालना है तो उसे अवश्य करना होगा, कोई किसी का हक हड़प जाय पाप नहीं, वह भूखों मर जाय पाप नहीं।

खाना सामने रक्खा रहे, उसका बालक खा न सके यह पाप नहीं है किन्तु अगर थोड़ा सा लेकर उसे दे दे तो पाप है। अब वह हृदय के विरुद्ध न थी, उसी के प्रवाह में वह गोते लगाने लगी। उसकी आँखों से चिंगारी निकलने लगी, मन में भयानक विचार चक्कर काट रहे थे।

धीरे-धीरे उसने रात बिता दी। सारी रात उसका बालक उससे चिपटा हुआ गरम साँसों से उसे सेक रहा था। मन और बुद्धि में द्वन्द्व युद्ध चल रहा था।

गलियों में कुत्ते भूँक रहे थे, वह सोचते-सोचते चौंक पड़ती थी। भूख से उसके पेट में यही हो रहा था, मुर्ग बाँग देने लगे वह चौंक उठी। प्रातःकाल शुरू हो गया, क्षण भर के लिए तमाम वायुमंडल में हलचल-सी मच गई।

उसकी आँखों में नींद की कड़ आहट समा रही थी। कई-कई रातें वह यों ही गुजार देती है। पति के मरने के बाद कभी भी वह चैन से नहीं सो पाई क्योंकि शायद उसका भाग श्मशान में सो रहा है। उसकी अँगुलियाँ बालक के पेट रौंद रही थीं, शायद वह बालक की भूख का अन्दाजा लगा रही है।

उसने सोचा क्या सूर्यदेव फिर प्रगट होंगे? क्या बालक फिर भूख की मारसे रोटी माँगेगा? क्या देगी वह। उसे सुबह ही आवश्यकता होगी।

वह उस प्रकाश को नहीं देखना चाहती थी जो मृत्यु का संदेश दे। परन्तु प्रकाश अवश्य उठेगा, बालक रोटी जरूर माँगेगा और वह काँप रही थी।

उसके पुरातन जीवन पर परदा पड़ चुका था। उसे एक फैसला करना पड़ेगा।

विश्व में रक्तिम आभा दौड़ने लगी। आँख मिचमिचाकर वह उठी। उसने सोचा था कि अगर वह ज्यादा रोयेगा तो वह गेहूँ में अवश्य जौ मिलावेगी। फिर वह सोचने लगी, वह देख रही थी उसका बहुमूल्य आदर्श कौड़ियों का बिकने को है। लेकिन भूख की मार प्रबल पड़ी।

बालक के उठने से प्रथम ही उसने सब कुछ कर डाला। उसके दिल ने उसे धिक्कारा और मन ने उसे कोसा। उसे लगा जैसे उसने खून किया हो, आत्मा की तरह वह छटपटा रही। सब कुछ कर वह बालक के पास जाकर खड़ी हो गई।

"क्या है बेटा! वह रो रही थी।

"भूख—लगी—है माँ!"

"अच्छा अभी लाई।"

कुछ समय उपरान्त चूल्हे में चिनगारियाँ सुलग रही थीं। उसके कलेजे की आग से मद्धिम पड़ उसने भूख की मार के सामने खाई थी।

मुफ्त

अपने न्यू गोल्ड को लोकप्रिय के लिए हम लोगों ने कुछ समय के ६ तोला न्यू गोल्ड का एक सेट जिसमें १ लाकेट, २ जोड़ी इयर रिंग, जोड़ी फैंसी चूड़ी, २ अँगूठियाँ हैं, है निश्चय किया है। ये सभी चीजें आकर्षक हैं और उन्हीं को दी जायेंगी रियायत की अवधि के पहले आवेदन मुफ्त—सचित्र सूचीपत्र और ब्योरा

फ्रेंच कारपोरेशन, लायलपुर (पंजा
French Corporation (D.D
Layalpur, (Punjab)

खरीदने मे पहले
इस ट्रेड माक का
देखो

वुडवर्ड के ग्राइप वाटर
के
बोतल सदैव साथ रक्खें। यह
बच्चा का तन्दुरुस्त रखता है!

WOODWARD'S
GRIPE WATER
keeps baby well

"क्षण से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 105—117

W. WOODWARD LTD. LON DON. ENGLAND

हर जगह डाक्टर और नर्स बीमारीके बाद स्वास्थ्य और शक्ति शीघ्र प्राप्त करनेके लिये 'ओवल्टीन' की विशेष उपयोगिता बताते हैं।

'ओवल्टीन' की सुगन्धिको रोगी पसन्द करता है और 'ओवल्टीन' बड़ी आसानी से पच जाता है और बीमारीके बाद या हर प्रकारसे शरीरके लिये उपयुक्त है।

'ओवल्टीन' पके जौके गूदे, गायके ताजे मलाईदार दूध और अन्य प्राकृतिक विटामिनसे प्रस्तुत किया गया है। दूसरी चीज लेनेसे इन्कार कर दें।

डिस्ट्रिब्यूटर्स—
ग्राहम्स ट्रेडिंग कं०
(इण्डिया) लि०
६ लाएसरेंज कलकत्ता,
बम्बई, करांची और
मद्रास भी

ओवल्टीन
OVALTINE शक्तिप्रद खाद्य पानीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत चित्रावली

र उम्मेदसिंह, महाराजा जोधपुर का गत मास स्वर्गवास हो गया।

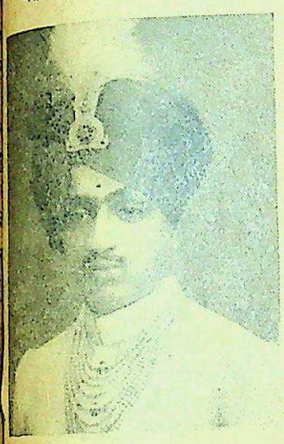

राजा (बड़ोदा) ने शरणार्थियों के लिए ० हज़ार रुपये का दान दिया है।

राजा जाम साहब (नवानगर) सर दिग्विजयसिंह का नया तैलचित्र।

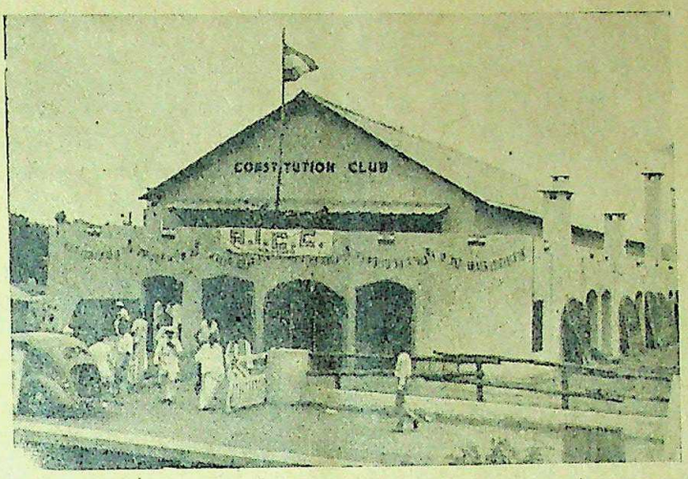

दिल्ली में विधान-क्लब का एक बाहरी दृश्य। इसी क्लब में पिछले दिनों अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन हुआ था जिसमें ब्रिटिश सरकार की भारत-विभाजन-सम्बन्धी घोषणा को बहुमत से स्वीकार किया गया था।

पंजाब सिविल सप्लाई-विभाग के मन्त्री श्री एम० आर० सचदेव आई० सी० एस० भारत-सम्बन्धी ब्रिटेन की नई योजना के अनुसार पंजाब के विभाजन के लिए विभाजन-कमिश्नर बनाये गये हैं।

नीचे के चित्र का परिचय—बंगाल-विभाजन के समय हिन्दू बहुमतप्रांत के एकत्रित मददाता। सभा के सभापति महाराजा बर्दवान विभाजन-नीति का स्पष्टीकरण कर रहे हैं। दाहिनी ओर से बाईं ओर—श्री कालीपद मुकर्जी, श्री धीरेन्द्रनारायण मुकर्जी, श्री एच० एस० सोहरावर्दी और डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी दिखाई दे रहे हैं।

छतारी (संयुक्तप्रांत) के नवाब सर अहमद सैयद खाँ हैदराबाद के पुन. प्रधान मन्त्री बनाये गये हैं।

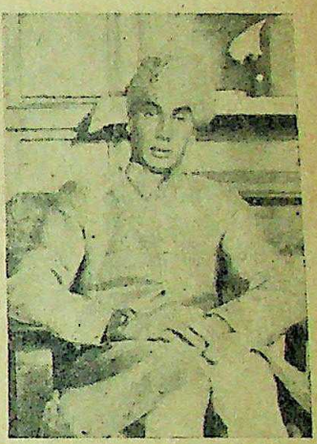

टिक्काप्रकाशचन्द्र, काश्मीर में चिन्नानी राज्य के अधिकारी बनाये गये हैं।

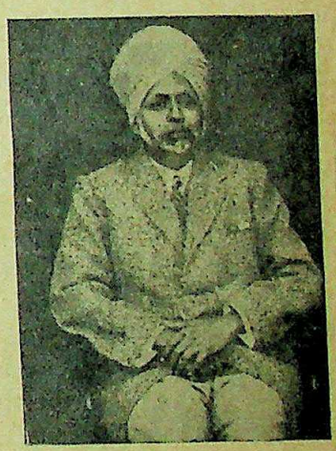

राजा सर अवधनारायण बिसारिया भूपाल राज्य के नये प्रधान मन्त्री बनाये गये हैं।

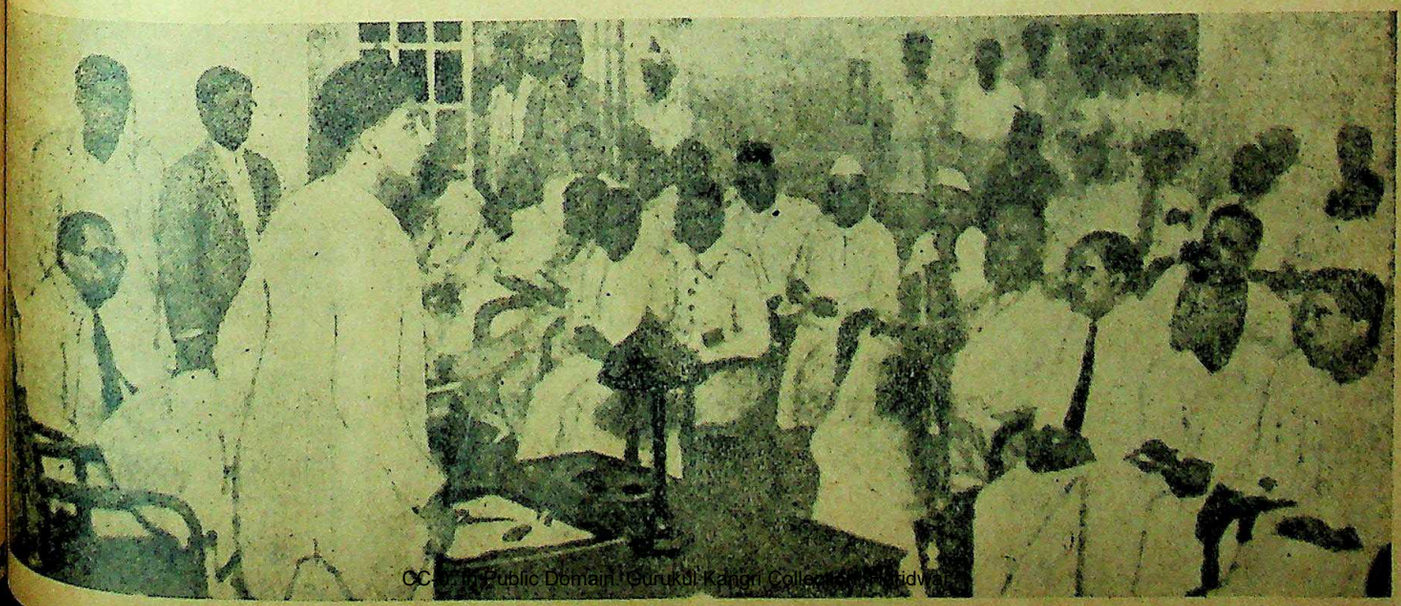

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित

(पेज ७ का शेष)

अमरीका पहुँचीं। पुत्रियों से मिलते ही उनमें मातृत्व जाग उठा और मातृभूमि की याद आ गई। उन्होंने अमरीका के शहरों में घूम-घूमकर भारत की स्वतंत्रता का खूब प्रचार किया। इसी मौके पर सेनफ्रांसिस्को में सयुक्त-राष्ट्र संस्था का सम्मेलन हो रहा था। विजयलक्ष्मी जी ने इस स्वर्ण सुअवसर को हाथ से छोड़ना अच्छा न समझा। अमरीका-स्थित भारतीयों की इंडिया लीग ने सेनफ्रांसिस्को-सम्मेलन के लिए नये प्रस्ताव बनाकर प्रत्येक राष्ट्र के प्रतिनिधियों को दिया। उस सम्मेलन में भारत के प्रतिनिधि-मंडल में सर फीरोज खाँ नून और सर रामस्वामी मुदालियर जैसे प्रतिक्रियावादी लोग मौजूद थे। प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व सर रामस्वामी मुदालियर के हाथ में था। पर, श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित और अमरीका की इंडिया लीग ने प्रति-निधिमंडल को गहरी मात दी। रूस के वैदेशिक मंत्री मोशिये मोलोटोव ने सेनफ्रांसिस्को-सम्मेलन में बड़ी दृढ़ता के साथ भारतीय स्वतंत्रता का समर्थन किया। अमरीका और अन्य देश चौंक उठे। लार्ड हैलीफैक्स जैसे कूटनीतिज्ञ—जो अमरीका में ब्रिटेन के राजदूत थे—लाखों रुपये खर्च करने पर भी भारत की सत्यता को संसार से छिपा न सके। अमरीका में भारत-विरोधी बहाया हुआ रुपया व्यर्थ गया। विजय-लक्ष्मी जी का प्रयत्न सफल हुआ। उनके भारत लौटने तक नेताओं के छोड़ने की व्यवस्था प्रारम्भ हो गई थी। सभी नेता छूट रहे थे साथ ही ब्रिटिश सरकार से समझौते का द्वार खोला जा चुका था। ब्रिटिश प्रधान मंत्री ने भारतीय स्वतंत्रता और एकता की घोषणा कर देश में एक नवीन वायुमंडल पैदा करने का प्रयत्न किया साथ ही मंत्रिदल को समझौता के लिए भारत भेजा। वायसराय ने देश की प्रान्तीय धारा-सभाओं के नये चुनाव की घोषणा की। विजयलक्ष्मी जी पुनः निर्विरोध चुन ली गईं और अपने पूर्व पद पर मिनिस्टर होकर कार्य करने लगीं। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में परिवर्तन हो गया। ब्रिटेन को समझौता के आधार पर केन्द्र में अस्थायी राष्ट्रीय सरकार का निर्माण करना पड़ा। इसी बीच अमरीका के न्यूयार्क शहर में संयुक्तराष्ट्र संगठन के दूसरे अधिवेशन की तिथि भी नज-दीक आ गई। अँगरेज हिन्दुस्तान में अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति से घबराकर कुछ करने पर विवश थे परन्तु उन्हीं के भाई-बन्धु अफ्रीका में रंगभेद के चक्कर में पड़कर एशियावासियों (खास कर भार-तीयों) पर घोर अत्याचार कर रहे थे। भारत-सरकार के पास दक्षिण अफ्रीका से दुखद समाचार के तार पर तार आते थे। केन्द्रीय सरकार के पूर्व भारत सरकार प्रवासियों के इंचार्ज अथवा मिनिस्टर डाक्टर खरे ने दक्षिण अफ्रीका की सर-कार से सम्बन्ध-विच्छेद कर वहाँ से भारत का हाई कमिश्नर वापस बुला लिया था। इस स्थिति से भी भयंकर स्थिति अस्थायी सरकार के सामने आ पहुँची थी। अस्थायी सरकार ने इस मामले के सम्बन्ध में दक्षिण अफ्रीका की स्मट्स-सरकार को बहुत कुछ नम्र शब्दों में लिखा; पर, रंगभेद के कारण कोई सुनवाई न हुई। इसके बाद यदि कोई चारा रह गया था तो संयुक्तराष्ट्र संगठन में इस मामले को भेजना ही था। मामला संगठन के सामने पेश होने के लिए भेज दिया गया परन्तु एक ऐसे नेता की आवश्यकता थी जो उस मामले को ठीक ढंग से अधिवेशन में रख सके। साथ ही उसे पास भी करावे। कई योग्यतम व्यक्तियों के नाम सामने आये; परन्तु विजयलक्ष्मी जी को इस कार्य के लिए अधिक उपयुक्त समझा गया। जस्टिस छागला तथा अन्य सदस्यों के सहयोग से विजयलक्ष्मी जी ने संयुक्तराष्ट्र संगठन में रंगभेद पर 'जीत' का सेहरा भारत के सिर बाँध दिया। जिस अम-रीका में उन्होंने बिना प्रतिनिधित्व के भारत का सच्चा प्रतिनिधित्व किया था वहीं भारत का मस्तक पुनः ऊँचा किया। रूस के वैदेशिक सचिव मो० मोलोटोव और ग्रोम्पोस्की से उनकी मित्रता हुई, उन लोगों ने भारत के पक्ष का समर्थन किया। वहाँ से लौटकर भारत आने पर विजयलक्ष्मी का खूब स्वागत हुआ। संयुक्तराष्ट्र संगठन में रूसी पक्ष को भारत की ओर करने का श्रेय विजय-लक्ष्मी जी को है। रूस में राजदूत नियुक्त होने के कारणों में वहाँ के नेताओं से विजयलक्ष्मी की मित्रता भी एक कारण है।

विजयलक्ष्मी जी प्रजातन्त्र की जीती-जागती मूर्ति हैं। युक्तप्रान्त में वे स्वायत्त-शासन की मिनिस्टर हैं। उन्होंने ग्राम-हुकूमत बिल को जिस योग्यता से असेम्बली में पेश किया, वह सराहनीय है। ग्रामों को अपने अधिकार प्राप्त करने और उनका उपयोग करते समय ग्रामीण भाई विजय-लक्ष्मी जी की इस कृति को याद रक्खेंगे। प्रजातंत्र के लिए लड़ने में विजयलक्ष्मी जी अपने भाई पं० जवाहरलाल नेहरू से पीछे नहीं हैं। सन् १९३८ में जब जर्मनी जेकोस्लेवाकिया पर आक्रमण कर रहा था, पंडित जवाहरलाल जी उस देश में जाकर वहाँ के निवासियों में उत्साह भर रहे थे। विजयलक्ष्मी जी भी अपने भाई की सहायता को वहाँ पहुँची थीं। ऐसे अदम्य उत्साहवाली महिला आज हमारे देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए रूस जा रही हैं। उसके कार्यों और बुद्धि से हमारे देश को उन्नति और बल प्राप्त होने की बहुत बड़ी आशा है।

हाँ, यही तो मेरे अनुकूल पड़ता है।
मेकलीन्स
पेराक्साइड
टूथ पेस्ट
सभी केमिस्टों के पास व स्टोरों में मिलता है

खाँसी और ज़ुकाम की
सर्वाधिक लोकप्रिय दवा
सिरोलिन
'रोच'
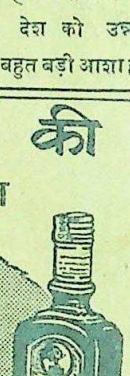
संसार भर मे उपयोगित होती है।

हमारी दो अनमोल पुस्तकें

महाराष्ट्र-जीवन-प्रभात

श्री रमेशचन्द्र दत्त के इस उपन्यास में कूटनीति-विशारद औरंग-जेब और छत्रपति शिवाजी के दाँव-पेंचों का बहुत ही सरस और सुन्दर ऐतिहासिक वर्णन है। पौने दो सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

राजपूत-जीवन-सन्ध्या

इस उपन्यास में राजपूतों और मुग़लों के विकट युद्ध का वर्णन है। मुग़लों के पक्ष के हिन्दुओं ने भी राजपूतों का विरोध कर हिन्दू-राज्य को हानि पहुँचाने का जो प्रयत्न किया था उसका वर्णन भी इसमें आपको मिलेगा। सवा दो सौ से अधिक पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

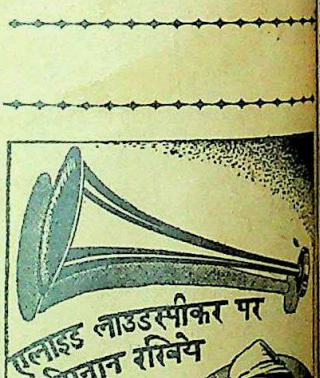

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंग-मंच

प्रदर्शन-गृहों का प्रबन्ध दर्शकों को पूरी सुविधा मिलनी चाहिए

लेखक, श्री उमेश जोशी

आजकल चित्र-प्रदर्शन-गृहों का प्रबन्ध बहुत ही बुरा है। चाहे आप किसी भी शहर में चले जाइये, आपको सन्तोष-जनक प्रबन्ध प्रदर्शन-गृहों में न मिलेगा। सभी जगह दूषित वातावरण का बोल-बाला मिलेगा। गुंडे, बदमाशों का जमघट रहा करता है। ये गुंडे मदमाश शराब के नशे में चूर रहते हैं। भले घर की बहू-बेटियों को छेड़ना इनका मुख्य काम होता है। फिर भी महिलायें सिनेमा देखने के प्रलोभन को संवरण नहीं कर पातीं। आजकल बहुत घटनायें इस प्रकार की प्रदर्शन-गृहों में हो जाया करती हैं। इन गुंडों ने जैसे ही किसी सुन्दर लड़की को देखा, फिर क्या है? ये कमबख्त उसके पीछे पड़ जाते हैं और उसको अपने चंगुल में फँसा ही लेते हैं। अनेक औरतें प्रदर्शन-गृहों से लापता हो गईं। जिनका कि कभी नामोनिशान तक नहीं मिला। इसलिए प्रदर्शन-गृहों के मालिकों को चाहिए कि वे इन गुंडों एवं बदमाशों पर कड़ी निगाह रक्खें। नहीं तो महिलाओं का आना बड़ा मुश्किल हो जायगा। महिलाओं को भी सतर्क रहना चाहिए। उनको भी साहस के साथ इन गुंडों से

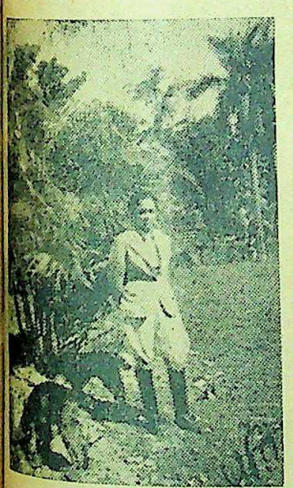

प्रसिद्ध अभिनेत्री प्रतिभादास गुप्त, एक फिल्म के अभिनय में।

लोहा लेना चाहिए। प्रदर्शन-गृह वही अच्छा समझा जायगा जिसका प्रबन्ध भी श्रेष्ठ होगा। श्रेष्ठ बिल्डिंग से ही कोई प्रदर्शन-गृह अच्छा नहीं हो सकता? प्रदर्शन-गृहों की भव्यता कायम करने के लिए हमें मानव-जीवन के उच्च आदर्शों का पालन करना होगा। आज के सिनेमा-घरों के मालिकों की मनोवृत्तियाँ बड़ी ही निम्नकोटि की हैं। वे पूँजी बढ़ाने की धुन में मानव-जीवन के पवित्र सिद्धान्तों का ही खून कर बैठते हैं। जनता की सुविधाओं का उनको तनिक भी ख्याल नहीं रहता। आज के प्रदर्शन-गृहों में जनता को बड़ी असुविधाएँ हैं। पहली असुविधा यह है कि पैसे खर्च करने के

अभिनेत्री स्नेहप्रभा आजकल कई फिल्मों में अभिनय कर रही हैं।

बाद भी बैठने के लिए उचित व अच्छी जगह नहीं मिलती। दस आनेवाले क्लास को सभी प्रदर्शन-गृहों के मालिकों ने सवा रुपया कर दिया है—और उस पर भी फिर दस आने क्लास में बहुत ही कम सीटें रहती हैं। जिसमें कि अधिक दर्शकों की आने की आशा होती है, और फर्स्ट क्लास में जिसमें कि बहुत कम इने-गिने दर्शक आते हैं उसमें जगह काफी रहती है। जो दर्शक घर से दस आनों में बैठने के ख्याल से चलता है। फिर उसी की मजबूर होकर सवा रुपये का टिकट खरीदना पड़ता है, क्योंकि फिर वह प्रदर्शन-गृह तक आकर घर वापस लौटना बुरा समझता है।

जब दस आनेवाले क्लास की इतनी बुरी हालत है, तब थर्ड या पाँच आने-वाले क्लास का क्या कहना? उसकी तो पूरी तरह से मिट्टी पलीद है। दर-असल जहाँ आजकल दस आने का क्लास है उस जगह पर पाँच आनेवाला क्लास होना चाहिए, क्योंकि थर्ड क्लास बिल-कुल पर्दे से सटा दिया जाता है। दर्शकों को बड़ी असुविधा होती है। स्क्रीन से थर्ड क्लास कम से कम पन्द्रह गज की दूरी पर होना चाहिए, ताकि बिजली का प्रभाव दर्शकों की आँखों पर बुरा न पड़े। अमरीका, हालैंड तथा रूस में स्क्रीन से बीस गज की दूरी पर दर्शकों के बैठने का प्रबन्ध होता है। परन्तु हमारे भारतीय प्रदर्शन-गृहों के मालिक दौलत कमाने की धुन में जनता की सुविधा का ध्यान लेशमात्र भी नहीं करते। किसी किसी सिनेमा-घरों के मालिक इतने मक्खीचूस होते हैं कि वे सफाई या फर्नीचर का भी ध्यान नहीं रखते। बहुत से प्रदर्शन-गृह ऐसे देखे गये हैं जिनमें सफाई बिलकुल नहीं है। कूड़ा-करकट ज्यों का त्यों पड़ा रहता है। फर्नीचर भी टूटा-फूटा कबाड़खाने का रखते हैं। कभी कभी ऐसा देखा गया है कि दर्शकों के बैठने से कुर्सियाँ टूट भी जाती हैं, और दर्शक बेचारा जमीन चाटने लग जाता है। यू० पी० के सिनेमा-घरों की हालत तो और भी गई गुजरी है। मैंने कई एक सिनेमा-घरों के मालिकों से इस सम्बन्ध में बातचीत भी की है, लेकिन वे कह देते हैं—"हम क्या करें साहब यहाँ की जनता ऐसी बदमाश है कि वह कुर्सियों पर बैठना तक नहीं जानती है। हम कहाँ तक फर्नीचर ठीक करते फिरें। सफाई तो हम करवाते ही हैं जितनी हमसे हो सकती है, लेकिन आप ही सोचिए जन-साधारण के स्थानों पर बिलकुल ठीक सफाई कैसे हो सकती है?" इसी प्रकार के जवाब हमको प्रत्येक प्रदर्शन-गृहों के मालिकों से मिलते हैं। वे अपने बचाव के लिए दुनिया भर के बहाने बनाते हैं। लेकिन अब उनको पूर्ण रूप से समझ लेना चाहिए कि अब उनकी अधिक और दाल न गलेगी। इस तरह की धाँधलेबाजी अब जनता सहन नहीं कर सकती उनको समय के परिवर्त्तन का ध्यान करना चाहिए आज की जनता बहुत समझदार तथा सुशिक्षित हो गई, इसलिए अब उनकी आँखों में धूल नहीं झोंकी जा सकती।

यह भी सुनने में आया है कि कई एक सिनेमा-घरों के मालिक गुण्डों को नौकर रखते हैं, वह इसलिए कि उनको छोटी-छोटी क्लासों की टिकटें दे दी जाती हैं, और फिर वे जनता में उनका चोर बाजार करते हैं—टिकटघर पर वे लोग भीड़ रखते हैं ताकि जनता परे-शान होकर चोर बाजार से टिकट खरीदे। यदि इस प्रकार की हरकत प्रदर्शन-गृहों के मालिक दर्शकों के प्रति करते हैं, तो उनके लिए बड़ी शर्म की बात है। हमारा उन लोगों से यही विनम्र निवेदन है कि वे इस प्रकार के दूषित कर्म न करें, यदि उन्होंने ठीक रास्ते का अवलम्बन नहीं किया, तो उनको बड़ा भारी आर्थिक नुकसान भी होगा। जनता उन प्रदर्शन-गृहों के मालिकों के प्रति आन्दोलन संगठित रूप से करने को तैयार है—यह उनके लिए एक चेतावनी है। इस चेतावनी से ही उनको सजग हो जाना चाहिए।

भारी लूट! आज ही मँगावें—अवसर मत चूकिये

३॥) में ६ नई पुस्तकें

पति-पत्नी जीवन (सचित्र)—पति-पत्नी के पढ़ने योग्य दाम्पत्य जीवन को सुखी संतुष्ट बनानेवाली अपूर्व पुस्तक १।)। इँग्लिश टीचर—घर बैठे अँगरेजी लिखना, पढ़ना, बोलना सीखो १)। महावशीकरण—अनेकों प्रकार के वशीकरण मंत्रों का संग्रह १॥) खजाने की कुंजी—अनेकों प्रकार के हुनर सीख धन पैदा कीजिये १)। हारमोनियम टीचर—घर बैठे हारमोनियम बजाना, गाना सीखो १॥)। जादू बंगाल—हाथ की सफाई के आश्चर्यजनक खेल करना १)। ६ पुस्तकों के सेट का मूल्य ३॥)। पोस्टेज पैकिंग ।॥) अलग।

पता—ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (D. A. २१) अलीगढ़ सिटी

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

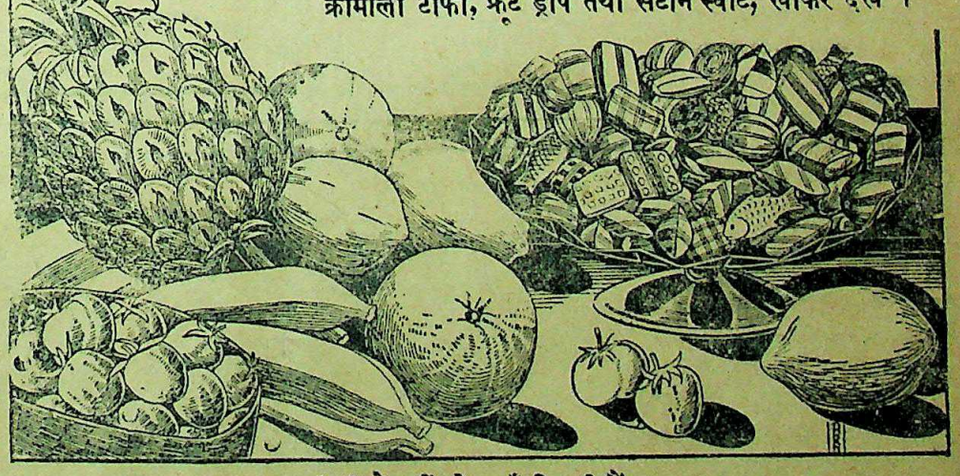

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

हरिया पेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लन्दन में १७,६०० मुहल्ले, ३४३ थियेटर और सिनेमा, ३०० से ऊपर रेलवे स्टेशन हैं।

इंगलैण्ड के ५,००० प्रेस युद्ध से नष्ट-भ्रष्ट हो गये हैं।

ब्रिटेन का सबसे ऊँचा पहाड़ नेविस ४,४०६ फीट ऊँचा है।

* * * * * * *

इधर उधर की

सेण्ट मेरी अस्पताल लन्दन के टीका लगानेवाले विभाग में इनफ्लुएंजा की दवा निकाली गई है। इस कार्य में काफी सफलता मिली है। इनफ्लुएंजा दो प्रकार का होता है, अ और ब। ब अधिक खतरनाक होता है जिसकी दवा मिल गई है। चूंकि यह समझा जाने लगा है कि सन्निपात इनफ्लुएंजा से ही पैदा हो जाता है। अतः टीका पर और अधिक खोज हो रही है। जिससे ब्रांक्वो-निमोनिया (गहरा सन्निपात) भी चंगा किया जा सकता है।

* * *

एक ऐसी नौका तैयार की गई है जिसमें हवा के चार इंजिन लगे हैं। इस नौका में २४ यात्रियों के लिए रात्रि में सोने की सीटें बनाई गई हैं। दिन में उसमें ३० यात्री बैठ सकते हैं। यह बोट २१३ मील प्रतिघंटे के हिसाब से उड़ सकता है और बिना कहीं रुके हुए २,३०० मील का सफर कर सकता है।

* * *

ब्रिटन में वायु-सर्विस में २० लाख कर्मचारी कार्य करते हैं। पूरी संख्या की १५ प्रतिशत स्त्रियाँ हैं।

* * *

संयुक्तराष्ट्र-संघ ने तय किया है कि एक अन्तर्राष्ट्रीय दल रक्खा जाय। इसकी योजना बन रही है।

* * *

लिवरपूल और बर्केनहेड गुप्त रेल मार्गों और गुप्त जल-मार्गों द्वारा जुड़े हुए हैं।

* * *

कनाडा ही एक ऐसा देश है जिसमें जस्ता की धातु बहुत अधिक तादाद में निकलती है।

* * *

द्वितीय युद्ध के पूर्व ब्रिटेन में दाँत-रोग की अपेक्षा पैर का रोग अधिक था।

* * *

आज के हाउस कामन्स में ६३९ सीटें हैं जो कि पिछले हाउस आफ कामन्स की सीटों से १३७ अधिक हैं।

* * *

किसी भी चलते हुए संग्राम में भाग लेने के लिए ४०० बेसिक अंगरेजी शब्दों की आवश्यकता है।

* * *

लन्दन छोटे छोटे २९ शहरों से मिलकर बड़ा शहर बना है। २८ छोटे बड़े कस्बे और एक स्वयं छोटा शहर।

* * *

साधारण समय में संसार के अन्दर कागज का सालाना खर्च २,००,००,००० टन के लगभग था।

* * *

युद्धपूर्व, इंगलैंड के समाचारपत्रों के लिए प्रतिवर्ष १३,००,००० टन कागज खर्च होता था।

* * *

संसार में आजकल सोने का प्रतिवर्ष का उत्पादन २,७०,००,००० ट्राय औंस है।

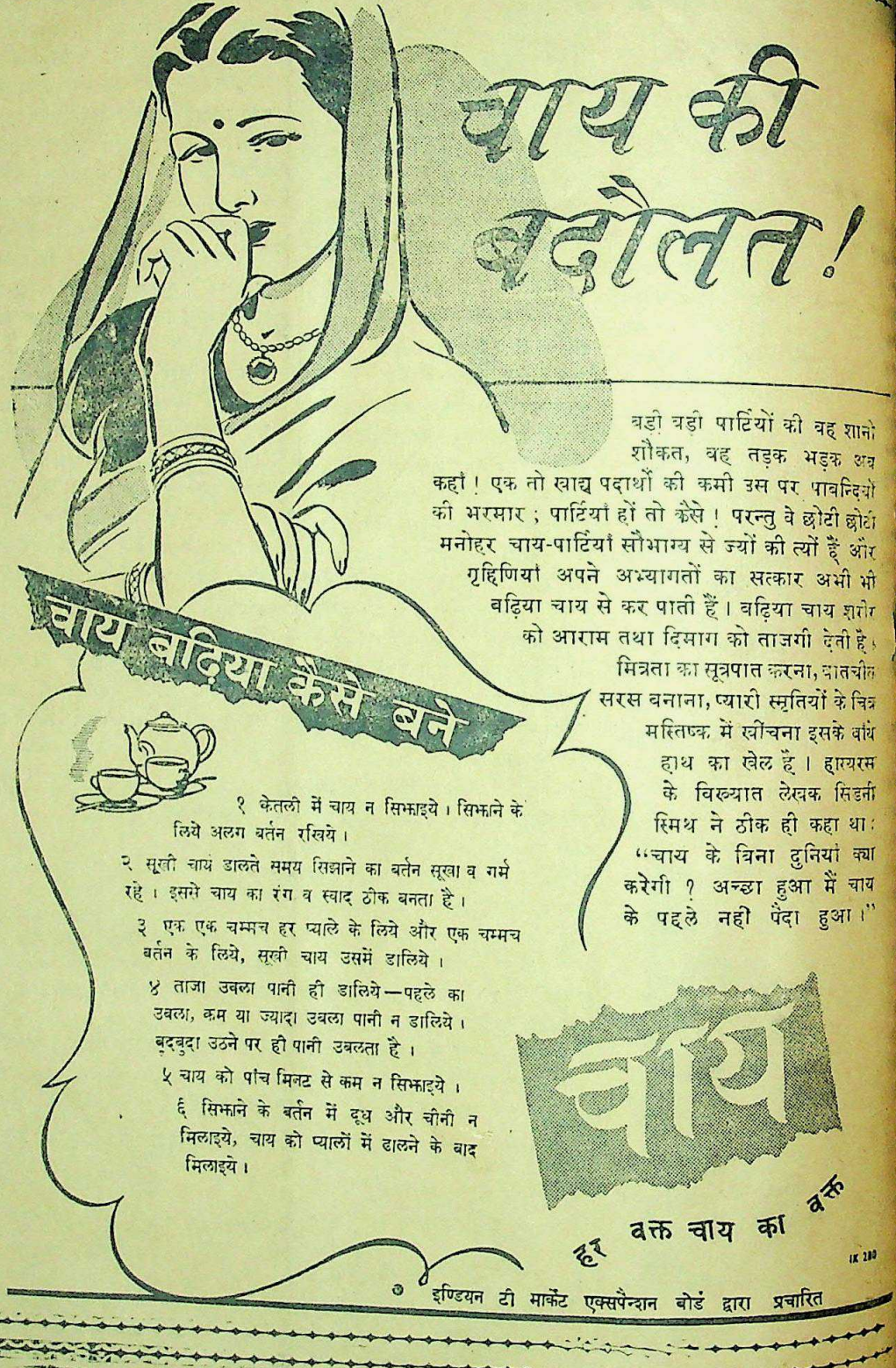

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

पर्दा-प्रथा हटाने की आवश्यकता क्यों है ?

भारतीय स्त्रियों की सामाजिक उन्नति का एक मार्ग

लेखिका, कुमारी विमलादेवी राजदान, बी० ए०

पर्दा रखने की प्रथा बहुत प्राचीन ...जान पड़ती। ऋषि-मुनियों के समय में ...कोई उदाहरण नहीं मिलता। कालि-...के शकुन्तला, मेघदूत और रघुवंश ...ाव्यों में जो भी वर्णन है उनमें ...पुरुषों के साथ खुलकर बातें ...तथा उनके साथ बराबर कार्य करती ...ाई गई हैं। वही स्थिति बौद्ध-...में बनी थी। अशोक के लड़के-...विदेशों में धर्म-प्रचारार्थ गये थे। ...न के समय हिन्दुत्व फिर से पनप ...था। मण्डन मिश्र की स्त्री ने ...चार्य और अपने पति के शास्त्रार्थ ...न्यायाधीश का कार्य किया था। ...समय में इस पर्दे की कुप्रथा का ...न था। दसवीं और ग्यारहवीं ...दी में यद्यपि हिन्दुस्तान पर मुसल-...आक्रमण प्रारम्भ हो गये थे फिर ...आर्य-सभ्यता में वही परम्परा ...थी जो प्राचीन काल में बरती जाती ...जयचन्द की पुत्री संयोगिता का ...र इस बात का प्रमाण है कि उस ...में भी देश पर्दे से मुक्त था। पृथ्वी-...की पराजय के पश्चात् मुसलमानी ...का प्रादुर्भाव हुआ। जयचन्द ...अन्य हिन्दू राजाओं का भी पराभव ...था। उस पराभव से मुसलमानी ...का प्रसार बढ़ा। साथ ही यह ...होने लगा कि मुसलमान शासक ...को भी छीनते और अपहरण ...। इस नीति ने हिन्दुओं को अपनी ...को घर के अन्दर रखने के लिए ...कर दिया। पर, यह नहीं कहा ...सकता कि हिन्दुओं के अतिरिक्त ...न ही पर्दे के समर्थक थे। अल्त-...की बेटी रजिया बेगम अपने सर-...के साथ शिकार खेलने जाया करती ...राज-काज में पर्दा-रहित होकर ...ती थी। इसके पश्चात् जहाँगीर ...नूरजहाँ ने भी शासन में भाग ...और खुलकर फैसला करने का ...उपस्थित किया। फिर यह कैसे ...सकता है कि मुसलमानी शासकों ...ने भारत में पर्दे का श्रीगणेश ...। आल्हा-ऊदल और पृथ्वीराज जैसे ...राजाओं की मनोवृत्ति और लड़ाई-...अथवा युद्धों से पता चलता है कि ...भी स्त्री-लोलुप थे और इसी ...वश दूसरे राज्यों, गढ़ों अथवा ...पर आक्रमण करते थे। इन ...की मनोवृत्ति में जो भाव ...सिपाहियों अथवा सरदारों से छिपे ...। राजा, सेनापति अथवा सैनिक ...सब अपने योग्य स्त्रियों को वरण ...कर लेते थे। यही भावना ...समय मुसलमान शासकों और उनके ...में कार्य कर रही थी। अतः यह कहा जा सकता है कि दसवीं शताब्दी से सत्रहवीं शताब्दी तक स्त्री-अपहरण का युग था। इस युग से पर्दे-प्रथा की परम्परा प्रारम्भ हुई। लगातार ८०० वर्षों के स्त्रियों पर पुरुषों के आक्रमण ने स्त्रियों को इतना कायर बना दिया कि वे इस स्वतंत्र युग में भी पर्दे के अन्दर रहना ही पसन्द करती हैं।

यदि पर्देवाली किसी स्त्री से इस सम्बन्ध में कहा जाय—'यह बुरी पद्धति है।' वह स्त्री झट कह उठेगी—"आप का क्या यही अर्थ है कि आवारा हो जायँ?" ऐसे उत्तर पर बेचारे सुधारक स्वयं परेशान हो जाते हैं। परन्तु यदि वे पर्दे के इतिहास पर दृष्टि डालें तो उन्हें नये-नये उत्तर मिल जायँगे जिसके द्वारा उन्हें इस कुप्रथा को दूर करने में सहायता मिलेगी। एक बार मैंने पर्दे-वाली एक महिला से कहा—"क्यों माँ अब तो तुम बूढ़ी हो गई हो फिर भी इतना पर्दा करती हो?"

बूढ़ी स्त्री ने आश्चर्यमय होकर उत्तर दिया—"तुम मेरे सामने पैदा हुए हो। देखती हूँ आज की स्त्रियाँ इतनी बेशरम होती जा रही हैं कि वे छोटों की कौन कहे बड़ों की भी शर्म नहीं करतीं।"

मैं—"तो तुम्हारा मतलब है कि स्त्रियाँ घर की चहारदीवारी में बन्द रहें?"

बूढ़ी माँ—"स्त्रियों के लिए और क्या चाहिए? पेट, पर्दा और बच्चों की सेवा।"

मैं तो दंग रह गया। एक बूढ़ी स्त्री अपने आनेवाली पीढ़ी को कठोर नियंत्रण में रखकर पर्दे की शिक्षा देती है फिर किस प्रकार देश का उद्धार होगा। मैंने फिर कहा—"माँ अब युग बदल गया है ऐसी शिक्षा मत दिया करो।"

बूढ़ी माँ—"यह तो मैं समझ चुकी हूँ कि अब स्त्रियाँ शृंगार बनाकर दिखाने को निकला करती हैं उन्हें कोई रोक नहीं सकता।"

मेरे हृदय में एक आशा पैदा हुई। मैंने सोचा इन बूढ़ियों और पुराने लोगों की विचार-धाराओं के प्रतिकूल भी स्त्रियों में नवजागरण बढ़ता जाता ह तो अच्छा ही है। परन्तु वह जागरण केवल इनी-गिनी स्त्रियों तक ही रह गया तो ठीक नहीं।

पर्दा हटाने की समस्या कोई बड़ी समस्या नहीं। यदि आँकड़ा लगाया जाय तो देश की करीब आधी स्त्रियाँ पर्दे से रहित हो गई हैं। इनमें

(१) नीची श्रेणी की स्त्रियाँ—मजदूरनी जो खेती, कारखानों, चाय अथवा कहवा के बगीचों में काम करती हैं।

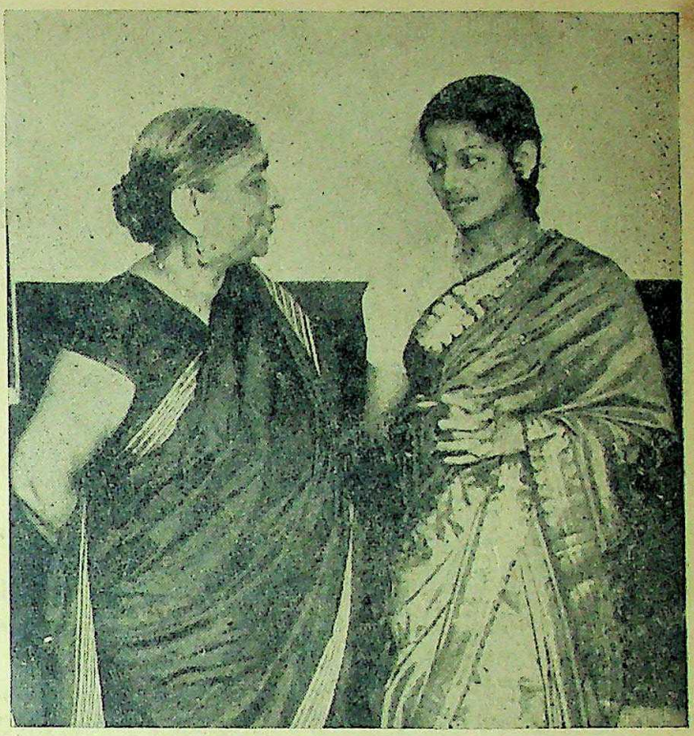

श्रीमती सरोजिनी नायडू श्रीमती सुब्बालक्ष्मी से वार्ता कर रही हैं। श्रीमती सुब्बा लक्ष्मी दक्षिण-भारत की हैं और 'मीरा बाई' फिल्म की निर्मात्री हैं।

(२) कुछ नर्सिंग और टाइपिस्ट, क्लर्की में भरती हो गई हैं।

(३) नये युग के क्रान्तिकारी वायुमण्डल ने स्त्रियों को शिक्षा-अध्ययन, सिनेमा अथवा कला की ओर झुका दिया है। जिससे आज का नारी-समाज बहुत कुछ पर्दे से दूर हो गया है। पर, आवश्यकता है उस वर्ग से पर्दा उड़ा देने की जो न तो धनी है, न स्वयं ही रोजी पैदा कर अपना और अपने बाल-बच्चों का पालन-पोषण कर सकता है।

किसानों में पर्दे की क्या आवश्यकता? परन्तु अभी तक उनमें वह पर्दा बना है जो केवल एक ढोंग ह। अब चूँकि मजदूरों की कमी हो रही है, जागरण का युग है सभी प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारें मजदूरों के लिए नये-नये कारखाने खोलेंगी उस समय देहात से बहुत से आदमी कारखानों में चले जायँगे। जो वर्ग बचेगा वह अकेला कार्य नहीं कर सकता। स्त्री-पुरुष दोनों के सहयोग से ही कार्य पूरा होगा। अतः वह पर्दा अपने आप अवश्य टूटेगा।

मध्यम और ऊँचे वर्ग की स्त्रियों में पर्दे का इतना जोर इसलिए अधिक है कि उनके पति और घरेलू मालिक बिना किसी परिश्रम के रुपये पैदा कर लेते हैं। उनमें ऐशो अशरत और बड़प्पन की बू अधिक है। वे अपनी स्त्रियों को घर से बाहर जाने में अपनी बेइज्जती समझते हैं। ऐसी स्थिति में स्त्रियाँ अकेली क्या कर सकती हैं? यह सोच-कर वे चुप रहें तो उनकी मूर्खता है। आखिर घर में बन्द रहकर वे क्या करती हैं—जब कि उनके घर में कितने ही नौकर और नौकरानियाँ कार्य करती हैं। आजकल ऊँचे घरों से पर्दे का अन्त होता हुआ दिखलाई दे रहा है, क्योंकि शिक्षा का जोर ऊँचे घरानों में बढ़ रहा है। इससे पर्दे का ढोंग भी दूर होता जा रहा है। अभी मध्यमवर्ग में उतना सुधार नहीं हुआ, ... आन्दो... ने उन्हें भी आन्दोलित कर दिया। अब वे शिक्षा की ओर अग्रसर हो पड़े हैं। इससे पर्दे का अन्धकार दूर होने का समय आ गया है।

उपर्युक्त स्थिति हिन्दू अथवा गैर मुस्लिम घरानों की है। मुसलमानों में दसवर्षीया बालिका से लेकर बूढ़ी औरतें तक पर्दा करती हैं। किसी मुसलमान कुलीन घर में छोटे, मध्यम और बड़े साइज के बुरके अवश्य मिलेंगे। अतः पर्दा हटाने का प्रश्न मुसलमानों के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है। साधारण मुसलमान भी अपनी स्त्री के लिए इतने जोरों का पर्दा रखता है मानो कोई उसकी स्त्री को छीन ले जायगा। इसलिए पर्दा हटाने का आन्दोलन सबसे अधिक मुसलमानों में होना चाहिए। चूँकि अभी तक मुसल-मानों में शिक्षा की कमी रही है अतः उनमें पर्दा अधिक है। अभी तक मुसल-मान स्त्रियाँ घर के अन्दर रहती थीं, परन्तु इधर पाकिस्तानी आन्दोलन ने उनमें भी नवजागरण पैदा कर दिया। बुरके के अन्दर रहकर भी मुसलमान स्त्रियाँ आजकल जन-सेवा-कार्यों की ओर निकल रही हैं। बड़े नेताओं की स्त्रियाँ अब पर्दे से बाहर आ रही हैं। उनकी देखा-देखी और स्त्रियाँ भी आयेंगी। पंजाब के विगत दंगे में कितनी ही स्त्रियों ने सेक्रेटेरियट पर धरना दिया और जुलूसों में भाग लिया था। इस प्रकार वे जन-सेवा के लिए बाह्य क्षेत्र में आने लगी हैं। परन्तु बाहर आने से ही सारी दिक्कतें दूर न होंगी। इसलिए यह आवश्यक है कि पर्दे का अन्त हो जाय। अब वह युग नहीं रहा जिसमें आल्हा-ऊदल अथवा मुसलमानी बादशाह स्त्रियों के लिए युद्ध किया करते थे।

पूजागीत—द्विवेदी जी की नवीनतम राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह। प्रत्येक कविता जीवन में स्फूर्ति का संचार करती है। फेदरवेट पीले कागज पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।
मैनेजर बुकडिपो इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल एसेम्बली हाउस के बाहर एसेम्बली के सदस्यों का जमघट जो बंगाल के बटवारे की समस्या के निर्णय के लिये एकत्रित हुए थे।

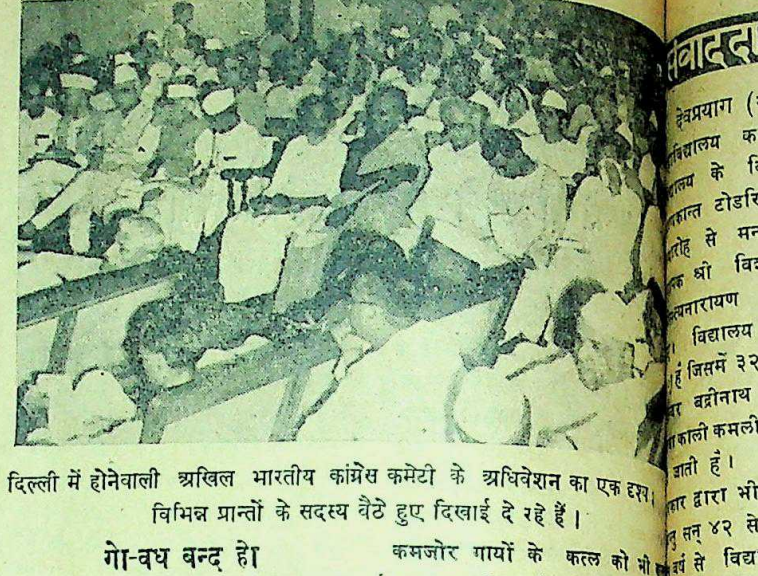

दिल्ली में होनेवाली अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन का एक दृश्य। विभिन्न प्रान्तों के सदस्य बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं।

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

स्वर्गीय राजा प्रेमप्रतापसिंह

१३ जून ४७ को हाथरस स्टेट के मालिक तथा राजा महेन्द्रप्रतापसिंह के एकमात्र पुत्र श्री. प्रेमप्रतापसिंह जी का शाम को ४ बजे अचानक स्वर्गवास हो गया। आपका जन्म सन् १९१३ में पंजाब की जींद स्टेट की राजधानी संगरूर में हुआ था। राजा साहब के जापान चले जाने के बाद भारत-सरकार ने एक स्पेशल एक्ट द्वारा उनकी स्टेट का मालिक प्रेमप्रतापसिंह को ही बना दिया। तब से लेकर अब तक स्टेट के यही मालिक थे। दिवंगत राजा प्रेम-प्रताप वीर जाट जाति के ज्वलन्त उदाहरण थे। इधर कुछ दिनों से उनका स्वास्थ्य बराबर गिर रहा था। पर डाक्टरों के बार बार चेतावनी देने पर भी इधर उन्होंने ध्यान नहीं दिया।

राजा प्रेमप्रताप पोलो के नामी खिलाड़ियों में से थे। मोटर, घोड़ों और कुत्तों का आपको काफी शौक था। साथ ही हिन्दुत्व के आप कट्टर सेवक थे। स्वभाव में अपने पिता की ही तरह अपनी बात पर अड़ना जानते थे। साथ ही दूसरी ओर दिल के अत्यंत कोमल भी थे। राजा महेन्द्रप्रताप जी के विदेश से वापस आने के बाद आप प्रायः उनकी सेवा के लिए सर्वदा तत्पर रहते थे।

यह किसी को मालूम नहीं था कि अपने चिर निर्वासित पिता की संरक्षकता में जीवन बिताने का अवसर जब से प्राप्त होगा तभी उनकी ऐहिक लीला का अवसान हो जायगा।

स्वर्गीय राजा साहब अपने पीछे अपने दुःखी पिता, विधवा रानी और दो सन्तान जिनमें एक लड़का तथा एक लड़की है, छोड़ गये ह। रियासत में गद्दी-नशीनी का रिवाज है; अतः उसके अनुसार ६ वर्ष के कुँवर अमरनाथप्रताप-सिंह रियासत की गद्दी पर आसीन हुए हैं। गत २२ जून को वृन्दावन के प्रेम महाविद्यालय भवन में आपको राजतिलक करके पगड़ी बाँध दी गई। बालक अमरप्रताप आजकल देहरादून में अपनी माँ के साथ निवास कर रहे हैं।

वृन्दावन —अद्वैतकुमार गोस्वामी
१० जुलाई, ४७

* * *

लेफ्टिनेंट कर्नल ब्रिजराजनारायण

ग्वालियर राज्य की ओर से भारतीय विधान-परिषद् में सम्मिलित होनेवाले जनता की ओर से निर्वाचित और सरकारी नामजद सदस्यों में सबसे अल्पवयस्क लेफ्टिनेंट कर्नल ब्रिजराजनारायण हैं।

कर्नल ब्रिजराजनारायण, ग्वालियर राज्य के भूतपूर्व चीफ इंजीनियर स्वर्गीय श्री भगतनारायण के पुत्र हैं। आपका प्रारम्भिक शिक्षण मध्य-भारत में हुआ। आपने प्रयाग-विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की है। ग्वालियर राज्य की सर्विस आपने अगस्त सन् १९२९ से आरम्भ की। सन् १९३६ में जब वर्तमान ग्वालियर-नरेश शासनारूढ़ हुए, तो उन्होंने आपको अपने पर्सनल स्टाफ में ले लिया। यहीं से आपका क्रमिक विकास हुआ और आप असिस्टेंट हुजूर सेक्रेटरी, सन् १९४० में पोलीटिकल सेक्रेटरी तथा राज्य के चीफ सेक्रेटरी के स्थान पर नियुक्त हुए। आजकल आप सूचना-विभाग के डायरेक्टर और स्थानापन्न उद्योग, व्यापार और यातायात-विभाग के सचिव भी हैं।

लश्कर, —शंभुनाथ सक्सेना
ग्वालियर

* * *

गो-वध बन्द हो

देश के करोड़ों लोग गो-वध को धार्मिक दृष्टि से बहुत ही बुरा समझते हैं। हजारों लोगों ने गो-रक्षा के लिए प्राण दिये तथा बरबाद हुए। आज भी धार्मिक विचार के लोग करोड़ों रुपया गायों के नाम पर खर्च कर रहे हैं। गाय का धार्मिक ही नहीं आर्थिक व शारीरिक महत्त्व तथा आवश्यकता भी है। गौ से ही दूध, घी तथा बैल मिलते हैं। आज दूध, घी तथा अन्न की कमी का मुख्य कारण गो-वध ही है।

कट्टर राष्ट्रवादी कहलानेवाले लोग गो-वध-निषेध का नियम रखने से साम्प्रदायिकता का भय न करें। हमारे पड़ोसी चीन देश की सरकार ने जहाँ लाखों मुसलमान तथा करोड़ों ऐसे लोग बसते हैं जिनका गो-रक्षा से धार्मिक सम्बन्ध नहीं; अच्छी ही नहीं पर अपाहिज और कमजोर गायों के कत्ल को भी बन्द कर दिया है। केन्द्रीय सरकार, बंगाल, सिन्ध, आसाम की मुस्लिम सरकारों तथा हैदराबाद इत्यादि मुस्लिम रियासतों ने भारत-रक्षा-कानून के अनुसार १० वर्ष तक के गायों, बैलों तथा ब्याभन व दुधारू गायों के वध करने वाले यात्रियों वध कराने में मदद देनेवाले को ३ महीने कैद का नियम रखा था। बाबर, अकबर, मोहम्मदशाह तथा जहाँगीर इत्यादि कितने ही मुसलमान बादशाहों ने गो-वध बन्द किया। अब जब कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान अलग-अलग हो गये तो गो-वध निषेध का नियम रखने में कतई संकोच या सन्देह न होना चाहिए।

करौलबाग, —मंत्री
दिल्ली पशु हितकारिणी सभा

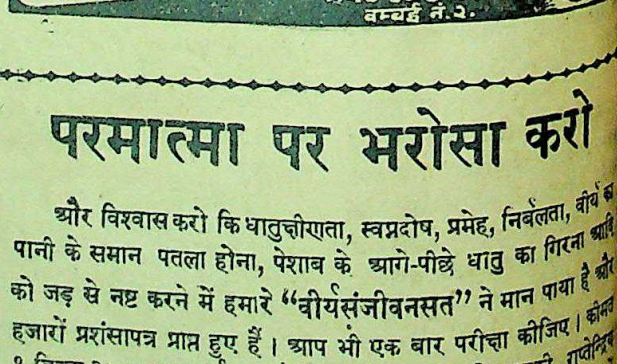

इस खिलौने के गुणों का वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाना है तथापि इसका संक्षिप्त परिचय करा देना भी आवश्यक ही प्रतीत होता है— विशेषता इसमें यह है कि असली अमेरिकन पिस्तौल का भीतर ही इसमें कारतूस रखने का स्थान बना है और चाबी अपने आप लगती हुई असली, ६ कारतूस चलती है। आवाज भी इतनी जैसे है कि खिलौने वाला भी दंग रह जाता है अपने माल तथा असली की रक्षा के लिये अति उत्तम वस्तु है। इसमें ६ गोलियां लगाये जाने हैं, लगाई में लगभग ८ इंच तथा वजन में १८ औंस है, जिसकी शक्ल और देखावट अथवा सुमका ही चोर और डाकू दोनों दूर भागते हैं।

मूल्य नं० २२२२-६॥) शार्ट सहित मूल्य नं० १३३२-७॥=) उत्तम पीतली शार्ट सहित मूल्य नं० ४४४४ ८॥) रंगदार न्यू मार्डल पिस्तौल शार्ट सहित सटकाने की चमड़े की सुन्दर पेटी रु. फालतू, कारतूस ४ दर्जन का मूल्य १), सफाई के लिये तेल १।) शीशी।

यूनाइटेड इम्पोरियम, कानपुर।

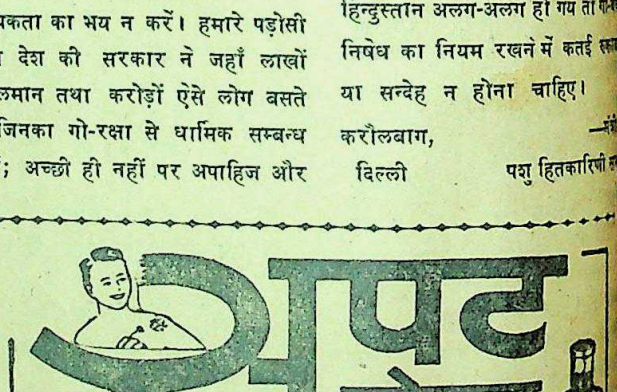

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।—) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

देवप्रयाग (गढ़वाल) रघुनाथ-कीर्त्ति विद्यालय का वार्षिक अधिवेशन विद्यालय के विशाल प्राङ्गण में श्री कान्त टोडरिया की अध्यक्षता में उत्साह से मनाया गया। प्रधानाध्यापक श्री विश्वनाथ शास्त्री तथा नारायण शास्त्री के भाषण विद्यालय की स्थायी आय हैं जिसमें ३२६) प्रांतीय सरकार ९६) बद्रीनाथ ६०) जिला बोर्ड २५) काली कमली द्वारा वार्षिक सहायता जाती है। १००) वार्षिक टिहरी द्वारा भी सहायता दी जाती थी सन् ४२ से यह बन्द कर दी गई, वर्ष से विद्यालय में हिन्दी विश्वविद्यालय की परीक्षाएँ होनी भी शुरू हो हैं। श्री बद्रीनाथ-यात्रा से लौटे हुए यों द्वारा मालूम हुआ है कि बद्रीनाथ ६०) मन चावल और ६०) मन आटा रहा है। जिससे गरीब और कम वाले यात्रियों की भारी दुर्दशा हो है।

देवप्रयाग (गढ़वाल) विश्वस्त सूत्र मालूम हुआ है कि टिहरी-राज्य धारा-का चुनाव टिहरी-राज्य हाईकोर्ट जज साहब खुद देवप्रयाग आकर थे। जनता के उम्मीदवार मुँह रह गये। उन्हें कतई मालूम नहीं कि चुनाव कब और कैसे हुआ? देवप्रयाग स्टेट में सार्वजनिक श्री-पुस्तकालय राज्य-कमचारियों द्वारा में जब्त कर लिया गया था। राज्य द्वारा पुस्तकालय वापस देने मालूम आया है, किन्तु कांग्रेस का साहित्य तथा अन्य राजनैतिक पुस्तकें देने की आज्ञा दी गई है।

गढ़वाल में रेलगाड़ी की व्यवस्था— हुआ है कि संयुक्तप्रान्तीय सर-ने ऋषिकेश से व्यासघाट मरोड़ा तक एक रेलगाड़ी सड़क बनाने निश्चय किया है। इस सड़क से गढ़-के गरीबों की आर्थिक अवस्था काफी जायगी।

विश्वस्तसूत्र से मालूम हुआ है स्थान-नेता श्री दौलतराम जी तीन हिरासत में रखकर छोड़ दिये हैं।

—संवाददाता

हरिद्वार में कन्याओं की प्रसिद्ध महिला विद्यालय, सतीकुण्ड, (हरिद्वार) गर्मियों की के बाद अब १५ जुलाई को खुला है। यह विद्यालय हाईस्कूल सरकार से स्वीकृत है। बोर्डिंग हाउस छात्राओं के रहने का भी बहुत उत्तम है। सब काम स्त्रियों की देख-रेख होता है। संस्था की आचार्य श्री देवी जी बहुत आचार्य से काम करती हैं। यहाँ बच्चों को के साथ सीना, कढ़ाई, बुनाई, तथा अन्य घरेलू कामों की भी जाती है।

मिस लक्ष्मी देवी पीडित शरणार्थी रुग्ण देवियों की चिकित्सा बिना फीस मुफ्त करती हैं।

—संवाददाता

हरिद्वार में महाराजा नाभा तथा गोस्वामी गणेशदत्तजी ने यू० पी० किराना-सेवा-समिति तथा हिन्दू सहायता-समिति के रिलीफ कैम्प का निरीक्षण करने के बाद शरणार्थियों को सान्त्वना प्रदान की। रिलीफ कैम्प के सेवामय कार्य को देखकर धन्यवाद दिया। श्री महाराजा साहब नाभा ने शरणार्थियों को अपने राज्य में बसाने का भी बचन दिया है।

संवाददाता

जालौन में पटवारी एसोसिएशन का द्वितीय अधिवेशन श्री मन्नीलाल श्रीवास्तव सदस्य प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सभापति ने पटवारियों का ध्यान देश की बदलती हुई परिस्थितियों की तरफ खींचा और अपील की कि पटवारी लोग पूरी निष्ठा के साथ बल्कि उससे भी अधिक वफादारी के साथ सरकार की नीति पर अमल करें। उन्होंने बतलाया कि यदि वे पुनः जन-सेवक बन जायँ तो गाँव का नेतृत्व निश्चय ही उनके हाथों में आ जायगा। उन्होंने पटवारियों को नैतिक सुधार करने और गाँव में राष्ट्रोपयोगी कार्यों में दिलचस्पी लेने की सलाह दी। सर्वसम्मति से जिला पटवारी एसोसिएशन का चुनाव हुआ—

सभापति श्री शिवशंकर लाल जालौन, उपसभापति श्री छोटेलाल कालपी, प्रधानमंत्री श्री हरिश्चन्द्र सकसेना डरई, उपप्रधान मंत्री श्री साधुराम सकसेना जालौन, श्री किशोरीलाल जी कोंच, कोषाध्यक्ष श्री बदलूप्रसाद जी कोंच।

—संवाददाता

नौरोजाबाद (मध्यभारत) से अपने आश्रम कोंहजरी (कानपुर) जाते समय श्री योगिराज धर्म्मध्रुव गौर ने विराट् सार्वजनिक सभा में भाषण देते हुए कहा कि "मि० जिन्ना ने एक हद तक अपनी मनोकामना पूर्ण कर ली। आप भी यदि अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल होना चाहते हैं तो इसी प्रकार लगन और उत्साह से काम लें। धैर्य तथा साहस न खोयें। आपने अपने आध्यात्मिक विषय को पेश करते हुए कहा कि "सब प्रकार की दुर्बलता दूर करने का एकमात्र साधन "आत्मबल" है।

—संवाददाता

इन्दौर राज्य प्रजामंडल के सभापति श्री दि० मा० परूलेकर ने एक वक्तव्य में कहा है—

मेरा ध्यान श्री हार्टन साहब ने हाल ही में लन्दन में एक पत्र के प्रतिनिधि के सामने वक्तव्य के रूप में जो उद्गार प्रकट किये हैं और जो यहाँ के पत्रों में प्रकाशित किये हैं उनकी ओर दिलाया गया है। सत्य तो यह है कि मैं उसमें से किसी प्रकार का अर्थ नहीं निकाल सका। सिवाय इसके कि श्री हार्टन साहब लन्दन जाने के पहले जिस तरह अँधेरे में गोते लगा रहे थे उसी तरह आज भी लगा रहे हैं।

अतएव इन्दौर-राज्य को सब दृष्टि से भारतीय यूनियन में सम्मिलित होने के अलावा कोई चारा नहीं है। यह प्रकट सत्य है। इस सम्बन्ध में विदेशों में बैठकर गैरों की सलाह से किये जानेवाले फैसले स्थिति को सही रास्ते पर लाने में सहायक नहीं होंगे। ये फैसले जनता की इच्छानुसार श्रीमन्त की छत्रछाया में इन्दौर की जमीन पर ही होने चाहिए। इसी में राजा और प्रजा का भला है।

—संवाददाता

टिहरी राज्य के रमोली ओण और भदूरा पट्टियों के बाढ़ के सम्बन्ध में मैं और पंडित पुरुषोत्तमदत्त रतूड़ी माननीय प्रधान मन्त्री पंडित गोविन्दवल्लभ पन्त से मिले।

(१) यू० पी० सरकार कृपापूर्वक बाढ़-पीड़ित जनता को पाँच हजार मन गल्ले का परमिट देने की कृपा करे।

(२) उक्त मंजूर हुए अनाज को— सरकार टिहरी शहर तक अपने खर्चे पर लदान करने की कृपा करे।

(३) प्रधान मन्त्री पं० पन्त जी टिहरी-सरकार को बाढ़-पीड़ित जनता को सहायता पहुँचाने के लिए निम्न प्रकार से जोर देने की कृपा करें—

बाढ़-पीड़ित जनता के लिए टहरी-सरकार सहायता तथा तकावी मंजूर करे। बाढ़-पीड़ित जनता को बिना नजराने की जमीन दे दी जाय। वहाँ पर सेटिलमेंट के जरिये पीड़ित जनता की परेशानियों को और भी बढ़ा दिया गया है—सरकार इसलिए पैमाइश और नजरानावसूली का काम तुरन्त ही बन्द कर दे।

असमर्थता है कि प्रधान मन्त्री पं० पन्त ने हमारी दोनों मुलाकातों में अच्छी दिलचस्पी लेते हुए हमें विश्वास दिलाया कि वे शीघ्र से शीघ्र अनाज का परमिट देंगे तथा टिहरी दरबार को इस बात के लिए जोर देंगे जिससे वह बाढ़-पीड़ित प्रान्त की जनता की ज्यादा से ज्यादा सहायता करने को बाध्य हो जाय।

—नत्थासिंह कश्यप

प्रयाग दारागंज में पं० श्री मुकुन्द मालवीय जी के विचार द्वारा परम विश्व-कल्याणार्थ श्री स्वामी जयदेव मिश्र जपाचार्य की अध्यक्षता में उन्हीं के निवासस्थान बक्शी (दारागंज) में स्वयं तथा कतिपय प्रमुख पण्डित ब्राह्मणों द्वारा अनुष्ठान हो रहा है। इसी से सम्बन्धित श्री दशाश्वमेध, श्री अलोपशङ्करी, श्री ललिता पीठ-स्थान, श्री वासुकी जी तथा श्री भारद्वाज आश्रम पर यथोचित ब्राह्मणों द्वारा विविध प्रकार का कार्य-क्रम चल रहा है।

—अमरनाथ मिश्र, विबुधेश जी, किशोरीशरन

प्रयाग कोठापारचा मुहल्ले के 'मित्रमंडल' की बैठक श्री जवाहरलाल जी की अध्यक्षता में हुई, जिसमें पदाधिकारियों का चुनाव हुआ। सभापति पं० पुरुषोत्तमदास मिश्र, उपसभापति जवाहरलाल जी, मंत्री बाबू कामताप्रसाद श्रीवास्तव, सदस्य माधवलाल वर्मा, बीरेन्द्रकुमार, शिवशंकर। —संवाददाता

भीलवाड़ा में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् की राजस्थान शाखा की महिला-विभाग की संयोजिका श्रीमती [illegible] राजस्थानी महिलाओं का संगठन-सम्बन्धी कार्य

गुलाबपुरा होती हुई आईं। सुपरिचित समाज-सेवी श्री केसरपुरी जी की अध्यक्षता में सार्वजनिक सभा का आयोजन हुआ। श्रीमती श्रोत्रिय की सेवाओं और कार्यों का परिचय देते हुए अध्यक्ष जी ने आपके आने का उद्देश्य बताया।

—संवाददाता

फतेहपुर जिले के प्रमुख कांग्रेस-नेता पं० दयाशंकर मिश्र, "सूर्य्य" को फतेहपुर जिला जेल का गैर-सरकारी जेल-निरीक्षक ३१ मार्च सन् ४७ से लेकर सन् ४९ के ३१ मार्च के लिए दो वर्ष को नामजद किया गया है। श्रीयुत मिश्र जी गत वर्ष की प्रान्तीय सरकार की ओर से गैर-सरकारी जेल-निरीक्षक नामजद किये गये थे। इसी सप्ताह आपको प्रान्तीय सरकार ने जिलाडेवलपमेंट बोर्ड का भी फतेहपुर के लिए सदस्य नामजद किया है। आप संयुक्त-प्रान्तीय फारवर्ड ब्लाक कार्य-समिति व आल इंडिया फारवर्ड ब्लाक कौंसिल के भी प्रमुख सदस्य हैं। आप जिला ऐन्टी-करपशन कमेटी के भी सदस्य हैं।

—संवाददाता

जयपुर (मंडावा) युवक-सभा पुस्तकालय को स्थापित हुए ९ वर्ष हो गये। वर्तमान ३६२५ पुस्तकें हैं। श्री गंगाधर जी केडिया ने १२० रु० की पुस्तकें एवं एक बिजली का पंखा, श्री सत्यनारायण जी सुरोलिया ने ५८) रु० की पुस्तकें प्रदान की थीं। योजना चलते-फिरते पुस्तकालय की भी है। —भगवतीप्रसाद लडिया

जयपुर से 'प्रभात-साप्ताहिक' पत्र जो स्थितिवश पिछले दिनों बन्द हो गया था श्री बाबा नृसिंहदास के सम्पादन व संचालन में पुनः प्रकाशित होने जा रहा है।

—संवाददाता

मण्डावा (जयपुर) की साहित्यिक संस्था छात्र-साहित्य-संघ के अवधान में एक साहित्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया। श्री 'चंचल' ने साहित्यक संगठन के प्रयत्न का दिग्दर्शन कराते हुए उसकी आवश्यकता बतलाई। आमंत्रित कविवर श्री मदन शर्मा 'सुधाकर' आशु कवि (सीकर) का परिचय दिया। पश्चात् सर्वश्री विष्णुदत्त और रामावतार खेमानी ने कविता पढ़कर सुनाई।

सभापति पं० शालिगराम जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य ने श्रोताओं का ध्यान वैदिक साहित्य की ओर आकृष्ट किया। —प्रधान प्रचार-मंत्री

चित्तौड़ राजस्थान की महिलाओं के संगठन-सम्बन्धी कार्य के लिए कई रियासतों का तूफानी दौरा करती हुई महिला-मण्डल उदयपुर की प्रधान मंत्रिणी और देशी राज्य लोक-परिषद् की राजपूताना प्रान्तीय कार्य-समिति की महिला-विभाग की संयोजिका श्रीमती कमला कुमारी श्रोत्रिय आज अपनी पार्टी-सहित यहाँ पधारीं। आपके आगमन पर श्री केसरीलाल जी शर्मा एम० ए० बी० टी० की अध्यक्षता में सार्वजनिक सभा हुई।

—संवाददाता

आगरा से 'कांग्रेस' नाम का एक नया साप्ताहिक पत्र शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है। पत्र 'कांग्रेस' नीति का समर्थक तथा ग्रामीण क्षेत्रों का पूर्ण प्रतिनिधित्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्ताह के समाचार

सेनाओं का बँटवारा

एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि बँटवारा कौंसिल ने सशस्त्र सेना को हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान की भावी सरकारों के बीच बाँटने के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय कर लिया है।

बँटवारा कौंसिल द्वारा प्रकाशित विज्ञप्ति के अनुसार सशस्त्र सेना की पुनर्रचना दो चरणों में होगी। इस समय जो निर्णय हुआ है उसका सम्बन्ध पहले चरण से है अर्थात् साम्प्रदायिक आधार पर मोटे तौर पर विभाजन से।

इन निर्णयों से दूसरे चरण पर कोई बुरा प्रभाव न पड़ेगा। दूसरे भाग में सैनिकों द्वारा स्वेच्छा से किये गये निर्णय के आधार पर दस्तों की पुनर्रचना की जायगी।

ये निर्णय सशस्त्र सेना पुनर्निर्माण उपसमिति तथा सशस्त्र सेना पुनर्रचना उपसमिति की सर्वसम्मति सिफारिशों के आधार पर किये गये हैं। इन समितियों की कार्यवाही की एक उल्लेखनीय बात सद्भावना तथा सहयोग की मनोवृत्ति थी।

बँटवारा कौंसिल ने शाही भारतीय हवाई सेना तथा भारतीय सेना के कुछ यूनिटों की पुनर्रचना के सम्बन्ध में अब तक सिफारिशें नहीं की हैं।

भारतीय नौसेना के जहाजों का विभाजन साधारणतः इस प्रकार होगा :—

भारत

स्लूप्स—(छोटे जहाज) सतलज, जमना, कृष्णा, कावेरी।

फ्रिग्रेट्स्—तीर तथा कुकरी।

सुरंग हटानेवाले जहाज—उड़ीसा, दक्षिण, बिहार तथा कुमाऊँ, खैबर, रोहिलखंड, कर्नाटक, राजपूताना, कोंकण, बम्बई, बंगाल, मदरास।

कार्वेटीस (लड़ाकू जहाज)—आसाम।

निरीक्षक जहाज—इन्वेस्टिगेटोर।

ट्रालर—नासिक, कलकत्ता, कोचीन, तथा अमृतसर।

सुरंग हटानेवाले मोटर जहाज—संख्या में चार।

बन्दरगाह की रक्षा करनेवाली मोटर लांच—चार। किनारे पर लगनेवाले वर्तमान सभी जहाज।

पाकिस्तान

स्लूप्स (छोटे जहाज)—नर्मदा, गोदावरी।

फ्रिगेट्स—हंगेर तथा डानुष।

सुरंग हटानेवाली—काठियावाड़, बलूचिस्तान, मालवा तथा अवध।

ट्रालर—रामपुर तथा बड़ौदा।

सुरंग हटानेवाले मोटर जहाज—संख्या में दो।

बन्दरगाह की रक्षा करनेवाली मोटर लांच—संख्या में चार।

भारतीय सेना

भारत को १५ पैदल रेजीमेंट, कवचधारी कोर के १२ दस्ते, १८॥ तोपखाने की रेजीमेंट और ६१ इंजीनियर यूनिटें दी गई हैं।

पाकिस्तान को आठ पैदल रेजीमेंट, [illegible] कवचधारी कोर के दस्ते, साढ़े [illegible]

तोपखाने की रेजीमेंट तथा ३४ इंजीनियर यूनिटें दी गई हैं।

जहाज आदि देते समय प्रत्येक उपनिवेश की आवश्यकता का विशेष ध्यान रखा गया है और प्रत्येक उपनिवेश को उचित हिस्सा प्राप्त हो यह भी सावधानी बरती गई है। इसी प्रकार पैदल, कवचधारी कोर, तोपखाना तथा इंजीनियर यूनिटें बाँटने में भी ध्यान रखा गया है।

सिलहट पाकिस्तान में

सरकारी तौर पर घोषित किया गया है कि सिलहट ने पाकिस्तान में शामिल होने का निश्चय किया है। वाइसराय भवन से प्रकाशित एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि सिलहट की मतगणना का नतीजा इस प्रकार हुआ है—

पूर्वी बंगाल में शामिल होने के पक्ष में २,३९,६१९ वोट। आसाम में बने रहने के पक्ष में—१,८४,४०१ वोट। इस प्रकार ५५,५७८ वोटों का बहुमत पाकिस्तान के पक्ष में हुआ है।

मिस्टर जिन्ना की परीक्षा

दिल्ली की प्रार्थना-सभा में भाषण देते हुए महात्मा गांधी ने कहा कि समाचारपत्रों द्वारा यह समाचार सभी को भली भाँति प्रकट हो गया है कि पहले हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों ने ही एक गवर्नर-जनरल के रूप में लार्ड माउन्टबेटेन को रखना स्वीकार किया था, किन्तु अन्तिम समय मि० जिन्ना ने अपना विचार बदल कर अपने आपको नामजद कर लिया। कांग्रेस नेता भी ऐसा कर सकते थे किन्तु वे अपनी बात से वापस नहीं जाना चाहते थे। मैं समझता हूँ कि इससे कुछ अनुचित नहीं है।

महात्मा गांधी ने आगे कहा कि इस नये पद पर लार्ड माउन्टबेटेन कसौटी पर कसे जायेंगे, क्योंकि वे एक सरकार के वैधानिक सलाहकार मात्र होंगे। आपने यह आशा प्रकट की कि लार्ड माउन्टबेटेन जनता के सेवक बनकर जिस कार्य के लिए वह पद है, कसौटी पर खरे उतरेंगे।

महात्मा गांधी ने यह भी कहा कि पाकिस्तान के गवर्नर-जनरल का पद मि० जिन्ना को भी एक परीक्षा होगी। इसमें सन्देह नहीं कि वे इस पद को इसलिए ले रहे हैं कि वे संसार को दिखा दें कि उन्होंने एक इस्लामी राष्ट्र प्राप्त कर लिया है। किन्तु यदि महान् खलीफा का अनुसरण न किया गया तो केवल राष्ट्र प्राप्त करने का कोई अर्थ नहीं होगा। गवर्नर-जनरल के पद का ऋण केवल मिस्टर जिन्ना पर ही नहीं इस्लाम पर भी है। आशा है वे इसे भली प्रकार चुकायेंगे।

अल्पसंख्यकों को आश्वासन

पाकिस्तान के मनोनीत गवर्नर-जनरल मि० एम० ए० जिन्ना ने आज प्रातःकाल पत्रकारों के एक सम्मेलन में पाकिस्तान डोमिनियन के अल्पसंख्यकों को आश्वासन दिया कि उनके धर्म, उनके जान-माल तथा उनकी संस्कृति का ध्यान रखते हुए उनका संरक्षण किया जायगा। वे सभी पहलुओं से बिना किसी भेद-भाव के पाकिस्तान के नागरिक होंगे और इसके साथ ही निस्सन्देह उन्हें नागरिकता के उत्तरदायित्वों को निभाना पड़ेगा। अल्पसंख्यकों [illegible] वफादार होना पड़ेगा और राज्य में सच्ची भक्ति रखनी पड़ेगी।

मिस्टर जिन्ना ने जोर दिया कि यही सिद्धान्त हिन्दुस्तान के अल्पसंख्यकों पर भी लागू होगा। राज्य में ऐसे अल्पसंख्यक नहीं रखे जा सकते हैं जो राज्य के प्रति वफादार न हों तथा राज्य को नष्ट करनेवाले हों। प्रत्येक नागरिक को अपने राज्य के प्रति वफादार होना चाहिए।

मि० जिन्ना ने आशा व्यक्त की कि पाकिस्तान और भारत के सम्बन्ध मित्रतापूर्ण तथा सौजन्यता होंगे। पाकिस्तान की ओर से सद्भावना का अभाव नहीं होगा, ऐसा आपने आश्वासन दिया।

श्रीमती पंडित रूस को

रूस में नियुक्त सर्वप्रथम भारतीय राजदूत श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित वर्तमान कार्यक्रम के अनुसार आगामी ३ अगस्त को यहाँ से मास्को के लिए रवाना होंगी। आपके साथ मिस्टर ए० बी० पायी आई० सी० एस०, जो कि आपके सर्वप्रथम सलाहकार की भाँति कार्य करेंगे, एक सीनियर अफसर तथा रूसी भाषा का ज्ञाता एक भारतीय दुभाषिया जायेगा।

* * *

युवराज्ञी एलिजाबेथ की शादी

लन्दन के जानकार क्षेत्रों से ज्ञात हुआ है कि सम्राट् जार्ज षष्टम अपनी सुपुत्री युवराज्ञी एलिजाबेथ के विवाह में समस्त डोमिनियनों के जिनमें हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के डोमिनियन भी शामिल हैं, प्रधान मंत्रियों को आमंत्रित करेंगे। चूँकि अभी विवाह की तिथि निश्चित नहीं की गई है अतएव निमंत्रणों का भेजना अभी बाकी है। किन्तु राजनीतिक हल्कों का ख्याल है कि डोमिनियनों के अधिकांश प्रधान मंत्री ब्रिटिश प्रधान मंत्री के साथ विवाह समारोह में सम्मिलित हो सकेंगे।

यदि शादी आगामी अक्टूबर मास में हुई तो सम्भवतः ब्रिटिश सरकार प्रधान मंत्रियों की उपस्थिति में सुरक्षा आर्थिक तथा अन्य विषयों से सम्बन्धित एक कामनवेल्थ कान्फ्रेंस आयोजित करने का प्रयत्न करे।

मध्य-प्रान्त की शिक्षा मातृभाषा में

मध्य-प्रान्त के मंत्रिमंडल ने अपनी कल की बैठक में यह निश्चय किया है कि प्रान्त के गवर्नमेंट हाईस्कूलों में शिक्षा का माध्यम अँगरेजी न रखी जाय।

इस निश्चय का असर यह होगा कि जो विद्यार्थी इस साल हाईस्कूलों में गये हैं, वे अपनी मातृभाषा द्वारा शिक्षा प्राप्त करेंगे।

साधनमाला

विदेशियों की दृष्टि में भारत एक रहस्यमय देश रहा है। इस रहस्यमय भारत की जो वस्तु है, वह है उसकी मंत्रविद्या। मंत्र-साधना का अपना अनूठा महत्त्व है। सर जॉन उडरफ जैसे विदेशी यहाँ आये और जीवन भर इस साधना की खोज में लगे रहे। अंत में 'तांत्रिक टेक्स्ट' नाम ग्रंथमाला भी उन्होंने प्रकाशित की जिसमें भारत का रहस्य इसे ही बताया किया है। मंत्र-साधना का रहस्य यह है कि इसका ज्ञान हो जाने पर भी रहस्यमय ही बनी रहती है। इस के सम्बन्ध में यह दावा किया गया कि इसके अनुगामियों को ६ महीने के अंदर-अंदर इष्ट-सिद्धि की प्राप्ति निश्चयतः होती है और भोग तथा मोक्ष करतलगत रहते हैं। यह साधना तक संस्कृत और कुछ इने-गिने ग्रंथों में ही वर्णित रही है, परन्तु 'साधनमाला' नामक एक हिन्दी द्वारा इसे हिंदी में भी प्रकाशित जा रहा है। इससे इस 'रहस्य' को साधारण भी समझ सकेंगे। 'भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव' तथा युगधर्म सिद्धान्तों का प्रतिपादन करनेवाली सचित्र मासिक साधनमाला का मूल्य ८), छमाही ५) और एक प्रति १) होगा। पता यह है—कल्याण-भवन कटरा, इलाहाबाद।

—संवाद

वमन ?

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर व्यापक ख्याति अम्लता, उदर-वायु, दाह, पेट दर्द, वमन, पित्त-प्रकोप पाचन-सम्बन्धी शिकायतों से पैदा वाले अन्य रोगों में प्रभावशाली मान्य प्रमाण है।

उदर-विकारों से उत्पन्न उदासी, अनिद्रा और हृदय की कन में भी यह अमूल्य है।

यदि आप इनमें से किसी रोग से पीड़ित हैं तो आज ही ब्रांड स्टमक पाउडर लीजिए प्रसिद्ध औषधि की शीघ्र स्वयमेव अनुभव कीजिए।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर समय "एलेक्स सी० मेकलीन" पहचान लीजिए क्योंकि असली

मेकलिन ब्रांड स्टमक पाउडर सेवन कीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष हम सब का घर है,
घर को रणक्षेत्र नहीं बनाओ।

हाउसहोल्ड साबुन

सब सूक्ष्म कपड़ों के लिए

दी टाटा आएल मिल्स कम्पनी लिमिटेड।

सभी ऋतुओं और प्रदेशों में चाय वास्तविक ताज़गी ला देती है।
इस कारण ब्रुक बाण्ड की चाय, अपनी प्राकृतिक ताज़गी और सुगन्ध के कारण, भारतवर्ष के अन्य प्रान्तों की भाँति युक्तप्रान्त में भी साल भर स्फूर्ति के लिए पी जाती है और बहुत लोकप्रिय है।

ब्रुक बाँड

दो प त्ति याँ औ र ए क क ली

कथा-साहित्य का नवीन उपादान

अपना-पराया

लेखक—पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

अवकाश के क्षणों में अपना मनोरंजन करने के लिए यदि आप स्वस्थ मानसिक भोजन चाहते हैं, तो हमारा नवप्रकाशित, मौलिक, मनोरंजक उपन्यास "अपना-पराया" पढ़िए।

सुप्रसिद्ध साप्ताहिक "योगी" (पटना, ता० २७ जून १९४७) इस उपन्यास के सम्बन्ध में लिखता है:—"मस्तजी हिन्दी के ख्याति-लब्ध कथाकारों में से हैं। प्रस्तुत उपन्यास में आपने भारतीय वातावरण से किंचित् भिन्न तिब्बत और चीन के सामाजिक जीवन का चित्रांकन भी किया है। शाही नौसेना के सैनिक बेचनसिंह के चरित्र-चित्रण में लेखक को पर्याप्त सफलता मिली है। उपन्यास के अन्त में तो बेचनसिंह का चरित्र धीरोदात्त नायकों की तरह अपनी उज्ज्वल आभा और आचरण की सुगन्ध बिखेरने लगता है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में भोग-राग और उद्दाम वासना का चित्रण देख मैंने डरते-डरते इसे पढ़ना प्रारम्भ किया था, पर ग्रन्थ की समाप्ति पर ऐसा लगा कि परिश्रम सार्थक हुआ और मनोरंजन भी हुआ। ग्रन्थ की छपाई-सफाई, मुख-पृष्ठ का चित्र और भाषा-शैली आकर्षक है। आशा है, हिन्दी-संसार में इसका स्वागत होगा।"

पृष्ठ २३२, सजिल्द और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २॥) रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

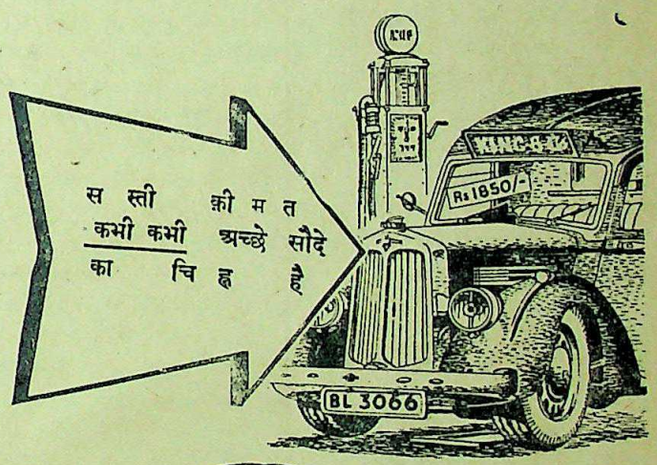
स स्ती क़ी म त
कभी कभी अच्छे सौदे
का चि ह्न है

"इंडिया" का नाम हमेशा
अच्छे टायर का चिह्न
है इंडिया टायर

INDIA TYRES

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया !

वार्षिक बालसखा १९४७

बालक-बालिकाओं के लिए ज्ञान-विज्ञान का अनोखा भण्डार। विविध सामग्री, सैकड़ों चित्र, अच्छी जिल्द, ३०० पृष्ठ। मासिक बालसखा के ग्राहक रियायत के लिए अपना नम्बर लिखें। मूल्य ३)।

शीघ्रता कीजिए। प्रतियाँ अधिक नहीं छपी हैं।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

Saridon

सारिडन

सब दर्दों से छुटकारा देता है

रत्न जड़ी हुई कलाई घड़ी

प्रत्येक घड़ी स्विटजरलैण्ड की बनी है और उसकी लिवर मशीन रत्नों से जड़ी हुई है। घड़ी की पाँच साल की गारण्टी है। गोल क्रोमियम डिब्बे का मूल्य २५) रुपये, वर्गाकार का ३०) रुपये, सबसे अच्छे का ३३) रुपये, आयताकार ४५) रुपये, रोल्ड-गोल्डवाली १० वर्ष की गारण्टी का मूल्य ६०) रुपये, सबसे अच्छी ६५) रुपये १५ रत्नवाली क्रोमियम आयताकार डिब्बे ८५) रुपये, सर्वोत्तम ९०) रुपये, महिलाओं के आकार वाले क्रोमियम डिब्बे ५५) रुपए, रोल्ड-गोल्ड ७०) रुपये, १५ रत्नवाले क्रोमियम डिब्बे ९५) रुपये, रोल्ड-गोल्ड ११०) रुपये, डाक-खर्च ।।।) बारह आने। पत्र-व्यवहार अँगरेजी में कीजिए।

परागान वाच कम्पनी

पोस्ट बाक्स नं० ११४१९, कलकत्ता (डी०)

घर की स्त्रियाँ

निकोटा

पारिवारिक टूथ पेस्ट का व्यवहार करता है !

क्योंकि निकोटा दाँतों को सफेद और सुन्दर रखता है जिससे स्त्रियां युवा दिखती हैं। यह सबसे अधिक 'किफायती' और समस्त परिवार के लिये प्रथम श्रेणी का टूथ पेस्ट है।

लगभग सभी जगह एक रुपये से कम में मिलता है।

★ स्वादिष्ट
★ स्फूर्तिप्रद
★ कीटाणुनाशक

एक सुंदर लाल बक्स में सभी केमिस्ट व स्थायियों के यहाँ मिलता है।

पारिवारिक टूथ पेस्ट

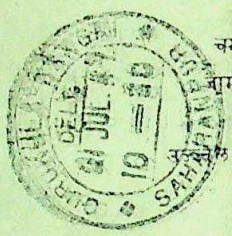

★ कमला : चमकीले बालों पर जामती की झलक... चांदनी की भांति उज्ज्वल मुखमंडल.....

★ वह रूपवती है !

वह पाँड्स का प्रयोग करती है !

सर्वत्र युवा स्त्रियाँ और कन्यायें प्रसुप्त लावण्य को व्यक्त करने की प्रणाली खोज रही है।

...शरीर-सौन्दर्य मृदुल अंगों के लावण्य को व्यक्त करता है। पाँड्स क्रीम के प्रकृत तेलों से स्वच्छ करते हुये अपने चेहरे को स्वच्छ और कोमल रखिये।

पाँड्स क्रीम्स

पाँड्स कोल्ड क्रीम : पाँड्स कोल्ड क्रीम को चेहरे पर कोमलता से रमाते हुये दिन में दो बार उसे साफ़ कीजिये; उंगली के कोमल पोरों से उसे थपथपाइये। पाँड्स टिशू से स्वच्छ कर लीजिये।

पाँड्स वेनिशिंग क्रीम : कोल्ड क्रीम को साफ़ करके उंगली के पोरों से पाँड्स वेनिशिंग क्रीम लगाइये। त्वचा को सुरक्षा देता हुआ वह आप के प्रयोग के साथ ही अंतर्धान हो जाता है।

पाँड्स पावडर : यदि आप की इच्छा हो तो पुष्प-पंखुरी की भांति कोमलता के लिये पाँड्स पावडर थपथपाइये।

व्यापार-सम्बंधी पूछताछ के लिये लिखिये :
एल. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लिमि०
बम्बई - कलकत्ता - कराची - मदरास.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क मूल्य ७॥)
वर्ष संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

२७ जुलाई, १९४७ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 27th July, 1947

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र

राज्यों की सार्वभौम सत्ता
भारत की एक कल्पना

भारतीय राष्ट्र के भावी शासक
रंगमंच, मातृमन्दिर, सम्पादक को पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मूल्य २ आना

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुस्रवा—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल्-एल० बी०। इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

प्रणय-जगत् में हलचल मचा देनेवाली पुस्तक

प्रेम-रहस्य

लेखक—पं० रामचन्द्र शुक्ल "सरस"

प्रेम की महत्ता इस संसार में सर्वोपरि है। प्रत्येक मानव को संयोग-वियोग, राग-विराग और प्रेम में आदान-प्रदान का अनुभव होता है। लेकिन प्रेम-रहस्य की गुत्थियाँ विरले ही सुलझा पाते हैं।

लौकिक, अलौकिक, सात्विक, राजस और तामस प्रेम के रहस्योद्घाटन के साथ-साथ हिन्दी, संस्कृत और उर्दू भाषाओं में चुने हुए उदाहरण आपको प्रेम की पावन गंगा में गोते लगाने को विवश कर देंगे।

प्रयाग-विश्व-विद्यालय के भूतपूर्व वाइस चांसलर तथा हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति डाक्टर अमरनाथजी झा ने इस पुस्तक को हिन्दी में अपने ढंग की पहली पुस्तक कहा है और पुस्तक-प्रणयन की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है।

लगभग २०० पृष्ठों की सुन्दर और सजिल्द पुस्तक का मूल्य सिर्फ दो रुपये। पुस्तक धड़ल्ले से बिक रही है। आप भी आज ही मगवाकर इससे लाभ उठाइए।

प्रतिभा-मण्डल, नया कटरा, इलाहाबाद

दांतों के अनुकूल आकार

डा. वेस्ट्स चमत्कारी ब्रश
दांतों की सभी सतह को ६० प्रतिशत अधिक स्वच्छ करता है।

- जल-अभेद्य, नमी-विद्वेषक
- विकार-विरोधी शीशे में बंद
- एक वर्ष की गारंटी

पशुओं के बालों से रहित

व्यापारिक पूछताछ के लिये:
एल. डी. सेमूर एंड कं०
(इंडिया) लिमि०
बम्बई - कलकत्ता - कराची
मद्रास

डा. वेस्ट्स टूथ ब्रश और टूथ पेस्ट

सपट लोशन

दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.

सपट ॲन्ड कं. लि.
बम्बई नं. २.

बच्चे
वुड वर्ड का ग्राइप वाटर
पसंद करते हैं
यह सब दर्दों को दूर करता है और
बच्चों को तंदुरुस्त व खुश रखता है।

WOODWARD'S
GRIPE WATER
keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 113—117 W. WOODWARD LTD. LONDON. ENGLAND

हमारी दो अनमोल पुस्तकें

महाराष्ट्र-जीवन-प्रभात

श्री रमेशचन्द्र दत्त के इस उपन्यास में कूटनीति-विशारद औरंगज़ेब और छत्रपति शिवाजी के दाँव-पेंचों का बहुत ही सरस और सुन्दर ऐतिहासिक वर्णन है। पौने दो सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

राजपूत-जीवन-सन्ध्या

इस उपन्यास में राजपूतों और मुग़लों के विकट युद्ध का वर्णन है। मुग़लों के पक्ष के हिन्दुओं ने भी राजपूतों का विरोध कर हिन्दू-राज्य को हानि पहुँचाने का जो प्रयत्न किया था उसका वर्णन भी इसमें आपको मिलेगा। सवा दो सौ से अधिक पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष ६, संख्या ४८] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, २७ जुलाई, १९४७

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

भारत स्वतंत्र होने जा रहा है। वह ...ता के किनारे पहुँच गया है, फिर भी ...तक विभीषणों का दौर बदस्तूर जारी ...भारत में सबसे पहले विभीषण तो ...र जिन्ना हैं, जिन्होंने ब्रिटेन का ...जन्ट बनकर देश का बँटवारा ...दिया लेकिन पंजाब में आजकल ...अजीबो गरीब विभीषण का उदय ...है। मजहबी सिक्ख नेता सरदार हरी-...सरबेट मिस्टर जिन्ना से जा मिले ...यही नहीं आपने मिस्टर जिन्ना से ...फरमाया है कि १० लाख मजहबी ...पाकिस्तान की मदद करेंगे। ...राम की समझ में नहीं आता कि ...स्तान के यह नये मददगार कहाँ ...टपक पड़े? जब जिन्ना साहब की मदद ...सरकार ही कर रही है तब यह ...बी महाशय की उन्हें क्या परवाह ...एक मजहबी मिस्टर और दूसरे ...सरदार हरीसिंह साहब और ...मजहबी अँगरेज। इन तीनों ...वियों के गुट्ट से खुदा ही बचाये।

* * *

सिंध की राजधानी कराची में इस ...पाकिस्तान क्या बन रहा है मानो ...र में तूफान आ गया है। रहने का, ...करने का और बैठने का कहीं ठौर ...नहीं है लेकिन पाकिस्तान की ...कायम हो रही है। पता नहीं ...कायम हो रही है या जमीन पर? ...कायम हो रही है, इसमें तो शक ...नहीं। बेचारी रंडियों का मकान ...नहीं बचने पा रहा है। भँड़ुओं के ...पर कब्जा किया जा रहा है। ...कार बड़े जोर-शोर से कायम हो ...पाकिस्तानी गवर्नमेंट। यह अच्छी ...है, जो रंडियों और भँड़ुओं के ...को भी नहीं छोड़ रही है। ...राम को खबर मिली है कि भड़ुओं ...जत्था सत्याग्रह करने जा रहा ...उनकी एक पल्टन लार्ड लुई ...टेन से मिलने जा रही है। ...छ समझ में आती भी है कि जो ...भँड़ुओं पर भी रहम नहीं करती ...के हिन्दुओं पर कैसे दया ...यह समझने की बात है? ...कराची में एक ओर भँड़ुओं ...बढ़ रहा है और दूसरी ओर ...सरकार का। मुकाबला ...अच्छा रहेगा।

* * *

...तक सर आगा खाँ ही हिन्दुस्तान ...तोले जाते रहे हैं लेकिन अब ...जिन्ना के तोले जाने के दिन दिखाई दे रहे हैं। कराची के पाकिस्तानी इस वक्त जो न कर डालें सो थोड़ा। वह जिन्ना साहब को अब बिना तराजू पर बिठाये माननेवाले नहीं हैं। सर आगा खाँ की तकदीर अच्छी है कि वह हमेशा हिन्दुस्तान में सोने से ही तौले जाते रहे हैं। लेकिन चूँकि सिंध के पाकिस्तानी अभी सोने और चाँदी का बन्दोबस्त नहीं कर पाये हैं, और सारा रुपया पाकिस्तानी सरकार ठौर-ठिकाने पर लगाने में खर्च हो रहा है, इसलिए मिस्टर जिन्ना लोहे से तौले जायँगे। अपने राम के कहने का मतलब यह है कि कराची के असली पाकिस्तानी बिना तोले मिस्टर जिन्ना को बख्शनेवाले नहीं। सोने चाँदी से तौले जाते तो मिस्टर जिन्ना को वह भेंट कर दिया जाता लेकिन वजनी लोहा बटोरकर जिन्ना साहब क्या करेंगे? इसलिए उस लोहे को दान दे दिया जायेगा। कराची के पाकिस्तानियों को ऐसी नायाब सूझ पर जरूर बधाई मिलनी चाहिए।

* * *

सीमाप्रांत के पठानिस्तान के पुजारी आगामी १५ अगस्त को स्वतंत्र पठानिस्तान की घोषणा करेंगे। अपने राम की समझ में भी यही आता है कि इस तरह की घोषणा होनी ही चाहिए। जब सत-संग्रह में पाकिस्तान को केवल ५० प्रतिशत वोट मिले हैं तो पठानिस्तान-वालों को यह पूर्ण हक है कि वह सीमाप्रांत में स्वतंत्र पठानिस्तान की घोषणा करें, हैदराबाद और ट्रावणकोर ऐसी रियासतें जब अपनी झूठी स्वतंत्रता का दावा कर सकती हैं, तो पठानिस्तान के प्रेमी तो आधे के हकदार हैं, वह क्यों पाकिस्तान एण्ड कम्पनी के शेयर होल्डर बनें? दुनिया का दस्तूर भी है कि लोहे को लोहा ही काटता है। पठान लोग कराची के भँड़ुए तो हैं नहीं कि मकानों पर दिन-दहाड़े कब्जा करके पाकिस्तानी सरकार कायम कर लिया। सीमाप्रांत में पठान बसते हैं। वह हिन्दुस्तान के पाकिस्तानी नहीं हैं जो ब्रिटिश की नाक के बाल बने रहे हैं।

महात्मा गांधी अपने दल के साथ ट्रेन से उतरकर भंगी-बस्ती की ओर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारत-सरकार के श्रम-मंत्री श्री जगजीवनराम वायुयान-दुर्घटना में पड़कर भी सुरक्षित बच गये, साथ ही उनके साथी भी। यह बड़ी ही प्रसन्नता की बात है। ईमान की बात तो यह है कि अच्छे काम का फल भी अच्छा ही मिलता है। श्री जगजीवनराम का मृत्यु के मुख से सुरक्षित रह जाना, इसका ज्वलंत उदाहरण है। खुदा के यहाँ न्याय है अन्याय नहीं, वाकई यह सही है।

* * *

राष्ट्र-विभाजन हो जाने के बाद हिन्दुओं को उपदेश देनेवाले नेताओं का जोर इतना बढ़ गया है कि जितना आजकल बरसाती मेढक। अपने राम पूछते हैं कि सन् ४२ में और गवर्नरी राज्य में हिन्दुओं के अवतारी उपदेशक महाशय लोग किस माँद में छिपे थे? सीधी कार्यवाही करनेवाले उस वक्त किस घोंसले में अंडे दे रहे थे। बात यह है कि इस देश के लोगों की यह भी एक विशेषता है कि अपना ही अपनों का दुश्मन गला काटता है। विदेशी सरकार के आगे उपदेशक महाशय दुम दबाये घूमते रहे और अगर कहीं फँस गये तो दाँत निपोड़ कर छुट्टी पा गये। लेकिन अब तो कांग्रेस का राज है न। अब डर काहे का? पकड़े जायँगे तो नेता बन जायँगे और न पकड़े गये तो नेता हैं ही। जनता को ऐसे उपदेशकों से सावधान रहना चाहिए। दिमाग फेरनेवाले तो उधार खाये बैठे चक्कर काट रहे हैं।

* * *

भारत-सरकार ने राष्ट्र-विभाजन के बाद प्रांतीय सरकारों के केन्द्रीय दफ्तरों में काम करनेवालों से यह पूछा था कि जो कार्यकर्त्ता पाकिस्तान में काम करने के लिए जाना चाहें, वह जा सकते हैं। कितने ही मुसलमान कार्यकर्त्ता तो भारत-सरकार का हुक्म पाते ही पाकिस्तान में जाने के लिए इतने उतावले हो उठे कि कुछ पूछिए ही नहीं। उन्होंने सोचा कि मुसलमान होने के नाते पाकिस्तान में उन्हें दोनों हाथों से लड्डू खाने को मिलेगा। उन्होंने अपना नाम भारत-सरकार के यहाँ पाकिस्तान में जाने के लिए भेज दिया। लेकिन इधर पाकिस्तान सरकार की जो खबरें आ रही हैं उससे अब पाकिस्तान के प्रेमी घबराने लगे हैं। क्योंकि जब सिंध सरकार रंडियों और भँड़ुओं का घर खाली कराकर अपने रहने का ठौर बना रही है, तब तो बेचारे जो मुस्लिम कार्यकर्त्ता संयुक्तप्रांत या बहुमत हिन्दू प्रांत से वहाँ जायँगे, उनका तो खुदा ही हाफिज है। अब पाकिस्तान के प्रेमी, जो पाकिस्तान की सफर के आशिक थे, पंजाब और सिंध में लड्डू के बजाय हिन्दुस्तान में रहकर सूखी रोटी खाना पसंद कर रहे हैं। सचमुच पाकिस्तान की असलियत आगे आगे खुलेगी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

राष्ट्रभाषा हिन्दी

भारतीय विधान-परिषद् ने बहुमत से यह स्वीकार कर लिया कि स्वतंत्र हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा हिन्दी होगी और लिपि देवनागरी। समस्त हिन्दी-संसार के लिए यह गौरव की बात है। विधान-सम्मेलन में राष्ट्रभाषा हिन्दी की भावी रूप-रेखा स्थिर करने के लिए एक उपयुक्त कमेटी का भी निर्माण किया गया है। विधान-परिषद् का निर्णय वास्तव में जनता के बहुमत के अनुसार ही हुआ है। संयुक्तप्रांत, बिहार, मध्य-प्रदेश, राजपूताना, मध्यभारत की करोड़ों जनता हिन्दी बोलती और देवनागरी लिपि का प्रयोग करती है। हिन्दी का जन्म संस्कृत से हुआ है। संस्कृत किसी समय में इस देश की राष्ट्रभाषा थी, इसलिए यदि आज हिन्दी को राष्ट्र-भाषा का पद प्राप्त हुआ है तो वह उसके प्राचीन अधिकार और सत्व की बदौलत ही। हिन्दी भारत की करोड़ों जनता की बोलचाल की भाषा है। उसमें प्राकृतिक रूप से ऐसे गुण हैं कि उसका लोकप्रिय होना अनिवार्य है। जिन प्रांतों में अन्य प्रांतीय भाषाएँ बोली जाती हैं, वहाँ भी हिन्दी सरलता के साथ समझ में आ जाती है। बंगाल, महाराष्ट्र, पंजाब, सीमाप्रांत, सुदूर प्रांतों में भी हिन्दी के समझने में लोगों को कठिनाई नहीं होती। हिन्दी भाषा के प्रकृत-प्रदत्त गुणों की यह सबसे बड़ी आकर्षण शक्ति है। इसी प्रकार से देवनागरी लिपि भी सर्वजन सुलभ है।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए पिछली अर्द्ध शताब्दी से आन्दोलन हो रहा है। उसे ब्रिटिश शासकों की ओर से कभी भी सहयोग प्राप्त नहीं हुआ है। उसे सदा हमारे देश के शासकों की ओर से पदच्युत करने की चेष्टाएँ जारी रही हैं। उन्होंने जिस प्रकार साम्प्रदायिकता की आड़ लेकर इस देश पर शासन किया उसी प्रकार वह राष्ट्र-भाषा के संबंध में भी अपनी भेद नीति का उपयोग करते आये हैं। अँगरेज शासकों ने जब से इस देश में पदार्पण किया है, तब से राष्ट्रभाषा के संबंध की उनकी ओर से दोहरी नीति बरती गई है। वे अल्पसंख्यकों के बल पर इस देश पर ज्यों-ज्यों अपनी शक्ति मजबूत करते गये त्यों-त्यों अल्पसंख्यकों की भाषा का भी प्रभुत्व बढ़ाते गये। बहुमत की भाषा की सदा उपेक्षा करते गये और एक तीसरी भाषा "हिन्दुस्तानी" का निर्माण करके उर्दू को अधिक से अधिक प्रश्रय देते रहे साथ ही हिन्दी के बल को नष्ट करने की चेष्टाएँ करते रहे। अँगरेजों की इस नीति के अनुसार अँगरेजी का प्रभुत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया साथ ही हिन्दुस्तानी के नाम पर उर्दू का प्रचार भी होता रहा। इसलिए यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि हिन्दी को कुचलने की चेष्टायें पिछले डेढ़ सौ वर्ष से जारी हैं और इस पर भी यदि वह आज जीवित है तो अपनी प्राकृतिक शक्ति, लोकप्रियता तथा जनता के बल पर। किंतु अब समय बदला है। समय ने स्वयं उसके लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया है। इसलिए अब स्वतंत्र भारत में सिवा हिन्दी के राष्ट्रभाषा दूसरी कौन-सी भाषा हो सकती है?

सच तो यह है हमारे देश की राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस भी हिन्दी के प्रति अब तक उपेक्षा करती आई है। उसने हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया है। किन्तु अब राष्ट्र की परिस्थिति बदल गई है। हिन्दू और मुसलमान की दृष्टि से इतने बड़े राष्ट्र का बँटवारा हो चुका है। कांग्रेस ने भी बटवारे के सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया है। ऐसी स्थिति में कांग्रेस नेताओं के विचारों में परिवर्तन होना अनिवार्य है। हम यह मानते हैं कि अखंड भारत की एकता की दृष्टि से ही कांग्रेस ने राष्ट्र भाषा के संबंध में अपनी व्यापक नीति बनाई है और इसी दृष्टि से बोलचाल की हिन्दुस्तानी को वह राष्ट्रभाषा मानती आई है किन्तु परिस्थितियों के वशीभूत होकर अब कांग्रेस नेताओं के विचारों में भी परिवर्तन हुआ है। यह स्पष्ट है कि पाकिस्तान की राष्ट्रभाषा उर्दू घोषित की गई है, ऐसी दशा में हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हो सकती ह, इसमें तो संदेह है ही नहीं। परिस्थिति बदलने पर भी यदि हम उर्दू प्रधान हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा मानने की पुरानी लकीर पीटते रहें तो यह न तो शोभाजनक है और न क्रियात्मक तथा व्यावहारिक दृष्टि से ही श्रेयस्कर है।

कुछ राष्ट्रीय मुसलमानों को विधान-परिषद् के हिन्दी को राष्ट्रभाषा मान लेने पर खेद हुआ है किन्तु प्रश्न तो यह है कि विभाजन होने के बाद हिन्दुस्तान में मुसलमान अल्पसंख्यक की हैसियत से रहेंगे। उनकी व्यावहारिक भाषा उर्दू होगी और यह भी सही है कि कांग्रेस राज्य में अल्पसंख्यक मुसलमानों की भाषा और संस्कृति पर आघात किसी प्रकार भी नहीं होगा किन्तु यह कैसे हो सकता है बहुमत की भाषा हिन्दी की अवहेलना की जाये और हिन्दुस्तानी की आड़ में डेढ़ सौ वर्ष से होनेवाली अँगरेजों की भाषा संबंधी दोरंगी नीति को जारी रहने दिया जाये? जो मुसलमान 'हिन्दुस्तानी' को राष्ट्रभाषा बनाने का दावा कर रहे हैं, उनसे स्पष्टरूप से अब यह पूछा जा सकता है कि डेढ़ सौ वर्ष की विदेशी भाषा की गुलामी में मुस्लिम सभ्यता और भाषा का बलिदान उन्हें नहीं अखरा ह लेकिन आज जब अपने देश के बहुमत की भाषा अँगरेजी का स्थान ले रही है तब उन्हें क्यों परेशानी हो रही है कि हिन्दी राष्ट्रभाषा न हो वरन् हिन्दुस्तानी हो? हमारी समझ में मुसलमानों ने जिस प्रकार अँगरेजी का समर्थन किया है यदि अब वह उसी प्रकार हिन्दी का समर्थन करें तो वह समय शीघ्र ही आयेगा जब कि हिन्दी-उर्दू तथा हिन्दुस्तानी के विवाद की एकदम इतिश्री हो जायगी। दोनों की संस्कृतियों और भाषाओं में एक मामंजस्य स्थापित होगा।

इसलिए राष्ट्रभाषा का पद हिन्दी को यदि प्राप्त हुआ है तो हिन्दुस्तान के करोड़ों जनता की यही वास्तविक आवाज है। राष्ट्र के विभाजन हो जाने के बाद भी, यदि करोड़ों जनता भाषा के मामले में भी कबीरपंथी बनी रहे तो यह न तो समयानुकूल है और न युक्ति संगत ही। इसलिए हम भारतीय विधान-सम्मेलन के निर्णय का स्वागत करते हैं और जनता से १ अगस्त को 'हिन्दी-दिवस' सार्वजनिक रूप से मनाये जाने की अपील करते हैं।

* * *

सरकारी नौकरियों में नई नीति

संयुक्तप्रान्तीय सरकारी नौकरियों के सम्बन्ध में कितने ही दिनों से वाद-विवाद चल रहा है। इस वाद-विवाद का मुख्य आधार सिन्ध की मुस्लिम लीगी सरकार की प्रान्तीय नीति ही प्रधान है किन्तु अब तो जनता इस विवाद पर और भी गम्भीरतापूर्वक विचार करने लगी है। चारों ओर की आवाज है कि जब साम्प्रदायिकता के आधार पर देश विभाजित हो गया तब फिर सरकारी नौकरियों में वही संरक्षण और बाँट रखने की क्या आवश्यकता है? इस विवाद पर नैनीताल में कौंसिल की बैठक में माननीय प्रधान मंत्री पंडित गोविन्द-वल्लभ पन्त ने सरकारी नीति का स्पष्टीकरण कर दिया था जिसका समर्थन सभी व्यक्ति करते हैं। सच तो यह है कि नौकरियों की चालू नीति कांग्रेस अथवा कांग्रेस-मंत्रिमंडलों की नहीं है वरन् उस विदेशी हुकूमत की है जिसने अपने पैर जमाने के लिए 'विभाजन और शासन' की पद्धति कायम कर रक्खी थी। इसी दृष्टि से ब्रिटिश सरकार ने भारत की नौकरियों में पक्षपात और साम्प्रदायिक भावना को उत्तेजित करने की नीति अपनाई थी। परन्तु युक्तप्रान्तीय सरकार पिछले दिनों तक इस सम्बन्ध में मौन थी। अब जब कि जनता को यह मालूम हो गया है कि सरकार साम्प्रदायिकता के आधार पर नहीं बल्कि योग्यता के आधार पर नौकरियाँ देगी तो उसे सन्तोष ही हुआ है। अब तो सरकारी घोषणा भी हो गई है कि "प्रान्तीय सरकारी नौकरियों में योग्यता का ख्याल रक्खा जायगा। केवल उन्हीं लोगों को संरक्षण प्राप्त होगा जो पिछड़े हुए अथवा अछूत हैं।"

इँगलैंड में भी कितने ही धर्म और सम्प्रदाय हैं। प्युरिटन, रोमन कैथोलिक, तथा अन्य यूरोपीय जातियों के लोग, पर वहाँ न तो साम्प्रदायिकता का कोई आधार है और न नौकरियों में ही कोई संरक्षण। फिर ब्रिटेन ने इस देश में इस प्रकार के संरक्षण क्यों प्रदान किये? चूँकि ब्रिटेन ने इस देश में 'विभाजन और शासन' की नीति अपना रक्खी थी, इसलिए उसके लिये यह आवश्यक था कि वहाँ किसी न किसी रूप में पक्षपात होता रहे। भय यदि हो सकता था तो बहुमत का। इस प्रान्त के अल्पमत मुसलमानों को अँगरेजों की ओर से सर्वदा प्रोत्साहन मिलता रहा है।

महात्मा गांधी ने भारतवर्ष की सरकारी नौकरियों के सम्बन्ध में कहा है—'अभी तक ब्रिटिश द्वारा अल्पमत को जो भी प्रोत्साहन दिया गया है वह 'विभाजन और शासन' के नाम पर रिश्वत ही कहा जा सकता है परन्तु भविष्य में इसका अन्त हो जाना चाहिए। भारत में किसी प्रकार के कानून को जन्म न देना चाहिए। केवल उन्हीं लोगों को विशेष सुविधा मिलनी चाहिए जो गरीब और दलित हैं।' इसी उद्देश्य को लेकर युक्तप्रान्तीय सरकार ने सरकारी नौकरियों में हरिजनों अथवा दलितों के लिए १० प्रतिशत का संरक्षण अनिवार्य कर दिया है। इस प्रान्त के मुसलमान अल्पमत सम्प्रदाय कहे जा सकते हैं परन्तु वे पिछड़े हुए नहीं हैं। कोई कारण नहीं है कि शिक्षित नवयुवक मुसलमान प्रतियोगिता में आ सकें और ऊँची जगहें न प्राप्त कर सकें। इसलिए हमें बिहार के डाक्टर सैयद महमूद की बात मान लेनी चाहिए। डाक्टर साहब ने कहा है कि "भारतीय संघ के मुसलमानों को चाहिए कि वे अपने प्रान्तों के नागरिक, आर्थिक और सामाजिक जीवन में पूर्ण रूप से भाग लें और दूसरे सम्प्रदाय और जातियों के प्रति अपने को ऐसा बनावें कि वे उनके साम्प्रदायिक भलाई में उन्हें दूसरा समझें।" अब संरक्षण और विभाजन का समय निकल गया। अब तो आवश्यक यह है कि पृथक् निर्वाचन को भी अन्त हो जाना चाहिए। क्योंकि पृथक् निर्वाचन ही संरक्षण का मूल आधार है। कोई भी प्रजातंत्र राज्य साम्प्रदायिक निर्वाचन द्वारा स्थापित नहीं हो सकता। थोड़े से मुस्लिम लीगी लीडर निरीह जनता को धर्म के नाम पर बहका कर उनका अहित ही कर रहे हैं। जब तक पृथक् निर्वाचन न होगा, संरक्षण अथवा विभाजन की माँगों के नाम पर लीगी मनोवृत्ति बनी रहेगी। नौकरियों अथवा स्वार्थों का हल तभी हो सकता है जब दोनों वर्ग एक मिलकर भारतीय संघ के कल्याण की बात सोचें। इसलिए नौकरियों में संरक्षण अथवा विभाजनको हटाने के लिए पृथक् निर्वाचनप्रणाली का अन्त करके संयुक्त निर्वाचनप्रणाली जारी करना अत्यन्तावश्यक है।

तुलसी रत्नावली—गोस्वामी जी के समस्त ग्रन्थों का अध्ययन कर के विद्वान् सम्पादक ने कुछ रत्न निकाले हैं, उन्हीं का यह संग्रह है। दूसरे शब्दों में गोस्वामी जी की रचनाओं का यह निचोड़ है। १।।) एक रुपया आठ आने।

चारण—इस पद्यमय पुस्तक में प्राकृतिक दृश्यों के मनोरंजक वर्णनों के अतिरिक्त राजपूताना के कुछ प्रसिद्ध वीरों का गुणगान किया गया है। मूल्य पाँच आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशी राज्यों की सार्वभौमिक सत्ता

संधियों, शपथों और नरेन्द्र-मंडल की स्थापना का रहस्य

लेखक, श्री कुमारयोगी एम० ए०

राष्ट्र-विभाजन के बाद देशी राज्यों की राजनैतिक स्थिति में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है, इससे कौन इनकार कर सकता है, इस लेख में विद्वान् लेखक ने इतिहास की दृष्टि से यह प्रमाणित किया है कि देशी रियासतों की संधियाँ शपथें और नरेन्द्र-मण्डल की स्थापना का रहस्य ब्रिटिश-नीति के नमूने मात्र हैं। इसलिये उसमें समय को देखते हुए परिवर्तन अनिवार्य है। लेख पठनीय तथा विचारणीय है।

दृढ़ती सार्वभौम सत्ता के समर्थक लार्ड लुई माउंटबेटेन

दो उद्देश्यों की प्रेरणा थी। पहला उद्देश्य अपने व्यापार की वृद्धि करना था और दूसरा भारत में अँगरेजी राज्य का जो शिलान्यास हो चुका था उस पर एक विशाल इमारत खड़ी करनी थी। रियासतों के साथ ईस्ट इंडिया कम्पनी ने वैर-प्रीति का जब-जब जैसा भी व्यवहार किया उसका मुख्य उद्देश्य यही था। यही कारण है कि प्रारम्भिक अवस्था में जब ब्रिटिश साम्राज्य का पौधा भारत में अपनी जड़ें फैला रहा था तो ईस्ट इंडिया कम्पनी ने देशी नरेशों के प्रति मैत्री-पूर्ण सम्बन्धों का ही परिचय दिया—आवश्यकता को देखकर यह अनिवार्य भी था। ज्यों-ज्यों उन्हें देशी नरेशों की आंतरिक निर्बलता का पता लगता गया और वे विदेशियों की संरक्षिणी छाया में अपने स्वाभिमान को भुलाते गये त्यों-त्यों अँगरेजों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आता गया और देशी राज्यों के आंतरिक मामलों में भी उन्होंने निःसंकोच हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे नरेशों की कमजोरी का पोषण पाते हुए छोटा-सा अंकुर एक विशाल वृक्ष बन गया। मुट्ठी भर अँगरेजों ने देशी नरेशों की अकर्मण्यता और पारस्परिक फूट से लाभ उठाकर एक साम्राज्य खड़ा कर लिया।

निजाम हैदराबाद रियासती सार्वभौम सत्ता को कायम रखना चाहते हैं।

कम्पनी-सरकार ने सारे भारत पर अपनी संरक्षण-छाया फैला दी थी—वही सारे भारत की निर्विवाद स्वामिनी थी। यदि वह चाहती तो सारे देशी राज्यों को एक ही बार में समाप्त कर देती—किन्तु ऐसा करने के बजाय उसने और नई-नई रियासतों का निर्माण किया और कुशासन के बावजूद भी उनके अधिकारों में कमी नहीं आने दी। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद को देशी नरेशों से हार्दिक प्रेम था—संधियों में लिखित मैत्री कार्यरूप में परिणत की जा रही थी। देशी नरेश जो आज ऐसी धारणाएँ बनाकर बैठे हैं, अपनी मूर्खता का परिचय दे रहे हैं। ईस्ट इंडिया कम्पनी की राजनीतिक आवश्यकताओं से विवश होकर यह करना पड़ रहा था। नरेशों के हित के बजाय स्वयं ब्रिटिश सरकार के हित की प्रेरणाएँ ही इस औदार्य्य और मैत्री का कारण थीं।

कूटनीतिक कदम

सर विलियम ली-वार्नर भारतीय देशी राज्यों के वैधानिक मामलों के सबसे बड़े पंडित माने जाते हैं। सार्वभौम सत्ता की सबसे पहली परिभाषा ली-वार्नर ने ही बनाई थी। ली-वार्नर ने ब्रिटेन का पक्ष लेकर यह सिद्ध किया है कि देशी राज्यों को कम्पनी ने अपने साम्राज्य में इसलिए नहीं मिलाया कि नरेशों के साथ जो मैत्री हुई थी उसमें सरकार किसी प्रकार का व्यतिक्रम डालना नहीं चाहती थी। किन्तु इस दावे में सच्चाई नहीं है। डलहौजी की हड़प-नीति और देशी राज्यों के आंतरिक मामलों में कम्पनी के शासकों का उत्तरोत्तर हस्तक्षेप ली-वार्नर के दावे को निराधार साबित कर देते हैं। इतिहासकार एल्फिन्स्टन ने इसके विपरीत अपनी राय दी है—"देशी रियासतों को इसलिए अछूता रखा गया कि भारत में जो कूड़ा-करकट भरा हुआ है उसे फेंकने के लिए वे गड्ढे का काम दें—यदि हम ऐसा न करें तो गंदगी के निकास को रोकने से जो मैल जमेगा उसे हमें स्वीकार कर लेना होगा।"

इस प्रकार भारत के देशी नरेश ब्रिटिश गवर्नमेंट के रचना हैं। ब्रिटिश हितों को सुरक्षित रखने, समृद्ध करने

पण्डित नेहरू ने अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् उप सभापतित्व से त्याग-पत्र दे दिया है।

के लिए ही उनको बनाया और उनके अस्तित्व को कायम रक्खा गया है। संधियों की जो दुहाइयाँ दी जाती हैं वे 'पवित्र संधियाँ' भी केवल शर्तें और प्रतिबंध-मात्र हैं जो नरेशों पर लादे गये थे। राजाओं को मैत्रीवश अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए नहीं वरन् सार्वभौम सत्ता को व्यापक और सर्वशक्तिमान बनाने के अभिप्राय से ब्रिटिश सरकार ने यह कूटनीतिक कदम उठाया था।

यही कारण है कि राजाओं के साथ ब्रिटिश सरकार ने जो संधियाँ की हैं उसमें जनता के हितों का प्रश्न ही नहीं रक्खा गया है। ये सभी संधियाँ राजाओं के साथ व्यक्तिगत रूप से की गई थीं। इनका अभिप्राय नरेशों को बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित ही नहीं रखना था किन्तु अपनी प्रजा के विद्रोह से भी बचाना था। अंतर्राष्ट्रीय कानून के पंडित हाल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'इटर नेशनल ला' में स्पष्ट लिखा है—"ये

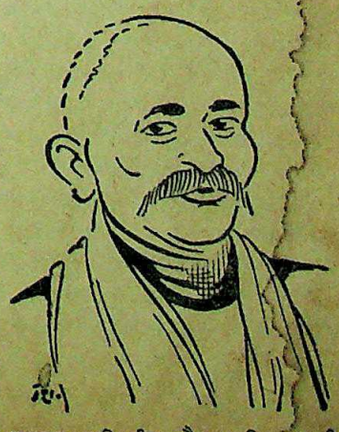

डाक्टर पट्टाभि सीता रमैया, अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् के सभापति।

वी० पी० मेनन, देशी राज्य लोक-परिषद् के प्रधान मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संधियाँ स्वयं ही यह गुंजाइश रखती हैं कि जब साम्राज्य के महत्त्वपूर्ण हितों का सवाल आये तो उनको अस्वीकार कर दिया जाये। वस्तुतः ये संधियाँ प्रतिबंधों से सम्बंधित वक्तव्यों के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं। सम्राट् की सरकार किसी खास परिस्थिति के अतिरिक्त इन संधियों को कार्यान्वित भी नहीं करती।"

सन्धियों का आडम्बर

देशी नरेशों की ब्रिटिश सरकार के साथ जो संधियाँ हुई हैं उनमें स्पष्ट है कि सरकार राज्यों के आंतरिक शासन-प्रबंध में हस्तक्षेप नहीं करेगी। अंदरूनी मामलों में नरेशों को अखंड राज्यसत्ता के अधिकार दे दिये गये हैं। नरेशों ने इस उल्लेख-मात्र को अपना दैवी अधिकार समझ लिया एवं तिल का ताड़ बनाने के लिए करोड़ों रुपया वकीलों और बैरिस्टरों की जेबों में डाले। इन वकीलों ने कई तरह की दलीलें पेश करके यह साबित कर दिया कि संधियों के सारे उल्लेख पवित्र शपथ के प्रतीक हैं और नरेश उनकी दुहाई दे सकते हैं। किन्तु ब्रिटेन और देशी नरेशों के पारस्परिक सम्बन्धों का वास्तविक इतिहास वकीलों के इस निर्णय के प्रतिकूल पड़ता है। अनेक बार सरकार ने देशी नरेशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप किया है और संधि में उल्लिखित सपथों की कोई चिन्ता नहीं की है। सन् १८०० ई० में निजाम के साथ जो संधि हुई थी उसमें स्पष्ट था कि ब्रिटिश सरकार राज्य के आंतरिक प्रबंध में हस्तक्षेप नहीं करेगी किन्तु सन् १८०४ और १८२० में सरकार ने हैदराबाद के आंतरिक मामलों में पूरा-पूरा दखल दिया। उस समय हैदराबाद का शासन-प्रबंध बहुत खराब था और प्रजा में विद्रोह की भावनाएँ प्रबल हो रही थीं। त्रावणकोर से सन् १८०५ ई० में जो संधि हुई थी उसके ९वें उपनियम में स्पष्ट है कि "राजा को उन सभी सम्मतियों को विशेष रूप से कार्यान्वित करना चाहिए जो उसे समय-समय पर सम्राट् की सरकार के द्वारा मिलती रहती हैं।" इसी प्रकार सन् १८०९ में कोचीन की संधि के ९वें नियम में कोचीन-नरेश को कठोर चेतावनी दी गई है कि ब्रिटिश गवर्नमेंट की सलाह के बिना राज्य-प्रबंध में कोई भी परिवर्तन न किया जाये।

यह देशी नरेशों की उन 'पवित्र शपथों' का इतिहास रहा है जिन पर वे फूले नहीं समाया करते हैं और जिनसे लाभ उठाने के लिए उन्होंने अपनी रिआया की गाढ़े पसीने की कमाई पानी की तरह बहाया है। आज ब्रिटिश गवर्नमेंट नरेशों की चिन्ता किये बिना ही संधियाँ तोड़कर नरेशों के अपने विवेक और भाग्य के हवाले छोड़ रही है। संधियों का असली मूल्य बताने का यह आखिरी प्रयत्न ब्रिटिश सरकार ने किया है—क्या नरेश समय के तकाजे को समझेंगे?

नरेन्द्र-मण्डल का ढोंग

सन् १९१७ में मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों में परिवर्तन करने के विषय में भारतीय नेताओं से मत-विनिमय के लिए जब मि० मांटेग्यू भारत आये तो प्रमुख-प्रमुख देशी नरेशों से भी उन्होंने विचार-विमर्श किया। करीब-करीब सभी नरेशों ने अपने प्रतिबंधों के प्रति असंतुष्ट भावनाओं को व्यक्त किया और महाराजा बीकानेर (स्वर्गीय सर गंगासिंह) एवं महाराजा अलवर (स्वर्गीय) ने एक ऐसी संस्था के निर्माण पर जोर दिया जहाँ सारे नरेश एकत्र होकर अपने-अपने संतोष को व्यक्त कर सकें और विशेषकर आर्थिक क्षेत्र में आनेवाली समस्याओं पर परस्पर विचार-विनिमय कर सकें। ब्रिटिश भारत में प्रबल राष्ट्रवाद के भावी रूप की कल्पना से भयभीत होकर ब्रिटिश सरकार ने देशी नरेशों को अपने पक्ष में रखना आवश्यक समझा। मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड रिपोर्ट में एक अध्याय (दसवाँ अध्याय) और जोड़ दिया गया और हिज रायल एक्सेलेंसी डचूक आफ कनाट के द्वारा नरेन्द्र-मंडल की स्थापना हुई। किन्तु यह संस्था एक उपहास-मात्र ही रही है। इसमें जो भी कार्रवाई होती है उसकी किसी पर भी जिम्मेदारी नहीं रहती। बड़ी-बड़ी रियासतों ने इसमें भाग लेना उचित नहीं समझा और छोटी-छोटी रियासतों को भी अपने प्रतिनिधि ही भेजने का अधिकार है। इसमें स्वीकृत प्रस्तावों को मानने के लिए कोई भी रियासत बाध्य नहीं है। वे रियासतें भी नहीं जिन्होंने उसे अपने वोट देकर स्वीकार किया है। नरेशों को व्यक्तिगत या सामूहिक रूप में किसी खास रियासत की माँग को प्रोत्साहन देने का भी अधिकार नहीं है। राजाओं या अपने गौरांग महाप्रभुओं की मृत्यु पर शोक-प्रस्ताव पास करने या किसी नरेश या व्यक्ति विशेष की प्रस्तर मूर्त्ति बनाने का निश्चय करने के सिवाय नरेन्द्रमंडल की परिषदों में कोई महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं हुआ है।

नाम में परिवर्तन

ब्रिटिश भारत में राष्ट्रीय कांग्रेस के तत्त्वावधान में राष्ट्रवाद उत्तरोत्तर विकास पाता जा रहा था और उसकी इस तीव्र प्रगति से ब्रिटिश गवनमेंट को अपनी भावी सुरक्षा की चिन्ता हो गई थी। अतः उसने नरेशों को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न किया। यह सन्तोष नाममात्र का ही था। देहली दरबार के समय तक रियासती भारत का नाम ब्रिटिश गवर्नमेंट के रिकार्डों और वक्तव्यों में 'सामन्तीय भारत' था, उसे बदलकर 'नरेशों का भारत' कर दिया गया और 'राजा' 'नवाब' आदि विशेषणों को 'शासक' विशेषण से स्थानापन्न कर दिया गया। देशी नरेशों को इस सम्मान से पर्याप्त सन्तोष मिला और नरेन्द्र-मंडल ने एक कृतज्ञता और सन्तोष-सूचक प्रस्ताव भी पास कर दिया। वस्तुतः असहाय और विवश नरेशों के लिए तो यह बड़ी भारी विजय थी—उन्हें अपमान और उपेक्षा के सिवाय अभी तक अपने स्वामियों से कुछ और मिला भी नहीं था—उन्हीं स्वामियों द्वारा इतनी उदारता का परिचय उनके लिए परम सौभाग्य की बात थी!

भारत-विभाजन की बुनियाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ब्रिटेन ने भारतीय नरेशों की स्थिति को सुरक्षित और निरापद करने की ओर ध्यान दिया। पहले तो उनके बिखरे हुए सम्बन्धों को केन्द्रीभूत किया गया, और दूसरे ब्रिटिश इंडिया में वाइसराय के दो विभाग कर दिये गये—'ताज' के प्रतिनिधि की सत्ता गवर्नर-जनरल की सत्ता से अलग कर दी गई। उदाहरणार्थ लार्ड कर्जन के शासन-काल में त्रावणकोर का सारा नियंत्रण मद्रास के गवर्नर के हाथों में था। यह मध्यवर्ती शृंखला तोड़ दी गई और त्रावणकोर एक पोलिटिकल एजेन्ट के माध्यम से सीधी ताज-प्रतिनिधि के निरीक्षण में आ गया। भारत को दो भागों में विभक्त करके अपने अधिकार में रखने का यह पहला प्रयत्न था। इसी के बिलकुल समानान्तर मुस्लिम लीग को प्रोत्साहन देने की अनवरत कोशिशें भी जारी थीं।

जब लार्ड चेम्सफोर्ड ने नरेन्द्र-मंडल का संगठन किया तो नरेशों और उनके सलाहकारों ने परस्पर समान हित का वातावरण अनुभव किया और ट्रेड यूनियन-प्रणाली के सिद्धान्तों को कार्यान्वित देखकर उन्हें पर्याप्त आत्मतुष्टि मिली। उन्हें जमींदारी-जैसी स्थिति पर वादी स्वार्थों के संरक्षण की चिन्ता हो

शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

भावी भारत की कल्पना

रामराज्य की स्थापना होनेवाली है

लेखक, श्री रामचरण पांडेय

प्रभात-कालीन स्वर्णिम रेखाओं से रंजित हमारे भविष्य का क्षितिज हमें अतीत के भयानक निशान्त की सूचना दे रहा है। शताब्दियों की परतंत्रता की घोर निद्रा से जागृत भारत आज करवट लेने लगा है। हम आज अपने देश के उस युग में पदार्पण करने जा रहे हैं जिसकी तयारी हम पिछले लगभग ६५ वर्षों से कर रहे थे। जिस कार्य-कुशलता, तत्परता और निर्भयता से हम इस कार्य में अद्यावधि तल्लीन रहे उसकी कल्पना करके चित्त पुलकित हो उठता है; पर जब हम वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति का विवेचन करते हैं तो इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि हमारा भविश्य अतीत की अपेक्षा अधिक कष्टमय और विद्रोहात्मक प्रतीत होता है। उन बाधाओं से मुक्त होने के लिए अभी हमें इस दिशा मे अन्तिम प्रयास करना ही है।

प्रारम्भ ही से भारत की एकता के हम समर्थक रहे हैं और उसी शक्ति से हम इस देश को स्वतंत्र करने का साहस करते आये हैं। आज वह हमारी शक्ति छिन्न-भिन्न हो गई है। अखण्ड भारत की आज दो प्रतिमाएँ हमारे सम्मुख हैं—हिन्दुस्तान और पाकिस्तान। यद्यपि हम भारत की अखंड और एकमात्र ही प्रतिमा के अनन्य पुजारी थे परन्तु परिस्थितियों ने हमें उसके दोनों स्वरूपों के अस्तित्व को स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। अतः हमने हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की योजना स्वीकार की और भी "इस्तान" की ध्वनि देश के कोने कोने में गूँज रही है जिनका भविष्य जनता के अवलंबित है।

विभाजन के अन्तर्गत अल्पसंख्यकों के धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मौलिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए विधान-परिषद् के तीसरे अधिवेशन में जो जो आश्वासन दिये और निर्णय किये हैं उन पर विस्तार से विचार करने की यहाँ आवश्यकता नहीं है। विधान-परिषद् ने एक सब-समेटी भी नियुक्त कर दी है जो अल्पसंख्यक वर्गों के मौलिक अधिकारों के सम्बन्ध में समय समय पर अपने सुझाव प्रस्तुत करती रहेगी। पंडित नेहरू ने उपर्युक्त अधिवेशन में उक्त सम्बन्धी प्रस्ताव पर बड़ी गंभीरता और दृढ़ता से कहा था:—

"यह प्रस्ताव एक प्रतिज्ञा है, एक दायित्व है और हम सबके लिए, जो विश्वास है कि, यह व्रत है।" पंडित जी के इन सारगर्भित उद्गारों के ही स्वरूप मौलिक अधिकारों की सबने इस पर अपनी वैधानिक स्वीकृति की छाप लगा दी है। अतः भारत के प्रजातंत्र पर अल्पसंख्यकों की रक्षा का भार वैधानिक रूप से आ है। भारत-विभाजन की घोषणा ने अनेक समस्याओं को जन्म दिया है, ये ही आजकल हमारे विचार का विषय हो रही हैं और हमारे भ की रूपरेखा निश्चित करेंगी।

इसी सप्ताह में ब्रिटिश पार्लि ने भारतीय स्वतन्त्रता बिल की घोषणा की है जिसमें हिन्दुस्तान पाकिस्तान दो पृथक् स्वतंत्र राज्यों व्यवस्था की गई है। इधर नई दिल्ली विधान-परिषद् के चौथे और महत्त्वपूर्ण अधिवेशन में भारत के और प्रान्तीय विधान-सम्बन्धी रिपोर्टों अन्तिम निर्णय होने जा रहा है। तीव्र घटना-प्रवाह हमें अपने का स्पष्ट चित्र खींचने में बाधा डाल है। आगामी १५ अगस्त से हम नई में प्रवेश करने जा रहे हैं। संक्रमण-काल हमारा जीवन सुखमय एवं हमारे धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन समुचित विकास पूर्णरूप से होगा, सन्देह प्रतीत होता है। हम परमेश्व से प्रार्थी हैं कि वह हमारे अन्धकारम भविष्य को अपनी दिव्य ज्योति आलोकित करे और हमें उपर्युक्त समस्याओं को सुलझाने में सुबुद्धि प्र कर हमारी स्वतन्त्रता का मार्ग बाधा रहित और सुखमय बनाये।

वस्तुतः जिस भावी भारत का हमारे मानस-पटल पर अंकित है हम गांधी जी के शब्दों में रामराज्य कहकर सम्बोधित कर सकते हैं। राज्य जिसमें हमें अपने आन्तरिक अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों को हल करने पूर्ण स्वतंत्रता हो, जिसमें विभिन्न से सन्धि और विग्रह करने का हमें अधिकार हो; जिसमें हमारे स्वार्थ धर्म और मर्यादा की रक्षा हो और हमारे दैनिक जीवन की गूढ़ समस्या को सुलझाने की उचित व्यवस्था हो। ऐसे स्वतन्त्र राज्य की शुद्ध और वायु के स्पर्श सुख की, हमारी विरह प्रबल अभिलाषा क्या भगवान् अब पूरी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे राष्ट्र के भावी शासक

आर्थिक गुलामी से जनता की मुक्ति कब होगी ?

लेखक, श्री चन्द्रोदय दीक्षित

स्वतन्त्र भारत का नया विधान स्वीकृत हो रहा है। स्वतन्त्र भारत में जनता तथा श्रमजीवी वर्ग अधिक सुखी रहेगा, इसमें संदेह नहीं। आर्थिक गुलामी से उनकी मुक्ति होगी, यह भी सही है। इस लेख में योग्य लेखक ने स्पष्ट रूप से यह बतलाया है कि ब्रिटिश राज्य की भाँति स्वतन्त्र भारत में आर्थिक दृष्टि से जनता किस प्रकार सुखी रह सकती है और इस वक्त मार्ग में किस प्रकार की बाधायें हैं। लेख सामयिक और विचारपूर्ण है।

निकट भविष्य में हमारे देश की वर्तमान आर्थिक व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं हो रहा है यद्यपि कांग्रेस और लीग दोनों ने ही जमींदारी प्रथा को समाप्त करने का नारा दिया है। दोनों ही ओर से जिन साधनों से जमींदारी को समाप्त करने की योजनाएँ बनाई जा रही हैं उन्हें यदि हम पूँजीवाद द्वारा सामन्तवादी पद्धति को आत्मसात् करने का एकत्रित एवं केन्द्रीयकरण का प्रश्न है। जमींदारी प्रथा के नष्ट कर दिये जाने से उन लोगों को मिलनेवाली मुआविजे की भारी रकम पूँजी के संचय करने में सहायक होगी। इस प्रकार जमींदारी प्रथा का नाश किसानों के लिए कितना हितकर होगा यह प्रश्न नहीं रहा है वरन् पूँजीवादी वर्ग अपने साधनों और शक्ति को संगठित करना चाहता है।

महात्मा गांधी जो अहिन्सात्मक समाजवाद के समर्थक और पक्षपाती हैं।

प्रयत्न कहें तो अत्युक्ति न होगी। बम्बई-योजना के नियोजकों ने भी इस प्रकार का प्रस्ताव किया था। बम्बई-योजना में जमींदारी प्रथा को मुआवजा देने का विधान किया गया था। आज के युग में भूमि में लगी हुई पूँजी उतना लाभ नहीं देती जितना उद्योगों में लगी हुई पूँजी से लाभ होता है। इस प्रकार पूँजीवाद सामन्तवाद के स्वरूप को तो समाप्त करने की बात करता है परन्तु उसके प्राणों को अपने शरीर में ही धारण कर लेता है अर्थात् शोषण करने में वह उसी भाँति निरंकुश होना चाहता है जैसा सामन्तवाद था। इसके साथ ही एक बात और भी है, सामन्तवाद औपनिवेशिक शोषण के यंत्र के रूप में यहाँ विदेशी शासकों द्वारा संगठित किया गया था लेकिन अब तो वह शासन-प्रणाली समाप्त हो रही है। नवीन व्यवस्था में पूँजीवादी व्यवस्था के सम्मुख पूँजी के

हमारे देश का पूँजीवाद अन्य देशों से पिछड़ा होते हुए भी अनुभव में अन्तर्राष्ट्रीय पूँजीवाद के अनुभवों का पूर्ण अधिकारी है। आज वह एकदेशीय रूप से भारत में पूँजीवाद की बात नहीं सोचता वह अन्तर्राष्ट्रीय पूँजीवादी गठबन्धन में सक्रिय भाग लेना चाहता है। एक ओर वह राष्ट्र को केन्द्रीय, सुगठित और दृढ़ बनाने के लिए व्याकुल है और दूसरी ओर अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रतिक्रियावादी पूँजीवादी गुट में रहने का इच्छुक है। राष्ट्र की जिस कल्पना को हमारे देश का पूँजीवादी करता है उसका आधार पूँजीवादी अर्थ-पद्धति है और वह पूँजीवाद अर्थ-पद्धति जो अपने विकास की सम्पूर्ण सम्भावनाओं को खो चुकी हो। भारत की समस्याओं का, बढ़ती हुई गरीबी, बेकारी, तेजी और आर्थिक जीवन की अस्थिरता बढ़ती तेजी से बढ़ती जा रही है कि पूँजीवाद अपने निदानों के द्वारा इसे दूर नहीं कर सकता। पूँजीवाद का आज का एकाधिकारी स्वरूप है उसमें वह कुछ गुटों में (कार्टेल) ट्रस्ट अथवा (ग्रुप में) विभाजित होकर योजित रूप से समाज के आर्थिक जीवन पर पूरा अधिकार एवं नियंत्रण स्थापित कर लेता है। बम्बई-योजना में भी यह स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया है कि योजना को सफल बनाने के लिए नागरिक अधिकारों को संकुचित करना पड़ेगा, साथ ही देश को कुछ बलिदान भी करना पड़ेगा। देश की जनता का मुंह बन्द करके और उनसे बलिदान लेकर जिस सामाजिक व्यवस्था का संगठन होगा उसमें एकाधिकारी पूँजीवादियों के लाभ और हित को प्रथम स्थान दिया जायेगा। अब हम संक्षेप में कुछ आँकड़े देकर यह दिखलायेंगे कि युद्ध-काल में पूँजीपतियों की पूँजी में कितनी तेजी से वृद्धि हुई है और दूसरी ओर श्रमिक जनता की स्थिति कितनी खराब होती गई है। सन् १९३९ में भारत में १७० बैंक थे, उनकी जमानती पूँजी १,५८९ लाख थी और जमा-पूँजी १०,१०१ लाख थी इस संख्या में बर्मा के बैंक और पूँजी की भी गणना थी। सन् १९४३ म भारत में बैंकों की संख्या २४४ होगी उनकी जमानती पूँजी २,९६४ लाख और जमा-पूँजी ३५,९८९ लाख हो गई। इक्सचेंज बैंक जो विदेशी समझे जाते हैं की संख्या १९३९ में १९ और १९४० में २० थी। वह १९४३ में कम होकर १६ रह गई। इम्पीरियल बैंक की सन् १९३९ में जमानती पूँजी १,१२३ लाख और जमा-पूँजी ८,७८४ लाख थी। सन् १९४३ में जमानती पूँजी १,१४८ लाख और जमा-पूँजी २१,४५३ लाख हो गई। इसके साथ ही विभिन्न व्यवसायों में लगी हुई पूँजी में भी अपार वृद्धि हुई। बीमा-कम्पनियों में देशी पूँजीवाली कम्पनियों में वृद्धि हुई और उनकी पूँजी में भी पहले से अधिक वृद्धि हुई। सन् १९४३ में भारत में १९१ देशी बीमा-कम्पनियाँ थीं और उनकी पूँजी का अनुमान १०,६८० लाख रुपया है। विदेशी बीमा कम्पनियों ने तुलनात्मक दृष्टि से उतनी वृद्धि नहीं

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

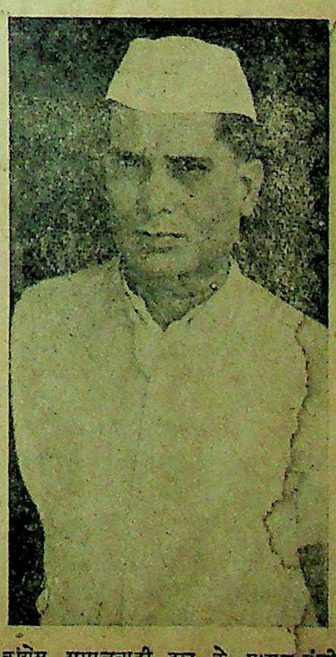

कांग्रेस समाजवादी दल के प्रधान मंत्री श्री जयप्रकाश नारायण।

समाजवादी दल के प्रसिद्ध नेता लोहिया और श्रीमती चट्टोपाध्याय

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Gurukul Kangri Vishwavidyalaya

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशों को आम भेजना व्यवसाय

भारत की राष्ट्रीय सम्पत्ति के विस्तार में एक सफल उपाय

लेखक, श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालङ्कार
(हार्वल इंस्टीट्यूट, गुरुकुल कांगड़ी)

भारत स्वतन्त्र हो रहा है। स्वतन्त्र भारत में भारतीय व्यवसाय की प्रगति में व्यापक उन्नति होगी, इसमें संदेह नहीं। इस सामयिक लेख में लेखक ने आम के व्यवसाय तथा उसकी उपयोगिता की ओर व्यवसायियों का ध्यान आकर्षित किया है। आम भारत का सर्वश्रेष्ठ फल है। लेख व्यापारिक तथा आर्थिक दृष्टि से सामयिक और विचारणीय है।

भारत में आम की खेती मानवीय स्मृति से पहले से हो रही है। फलों की खेती किये जाने की विद्या के विद्वानों और ऐतिहासिकों का विश्वास है कि भारत इस फल का आदि घर है। इसकी प्राचीनता का यह प्रमाण काफी है कि इस देश में आम की पाँच सौ से अधिक किस्में बोई जा रही हैं। आम की पैदावार में भारत का नैसर्गिक एकाधिकार है। इस एकाधिकार का कारण यह है कि जलवायु और भूमि की अवस्थाएँ इस स्वादु फल को पैदा करने में विशेष रूप से अनुकूल हैं। यह फल और वृक्ष इस देश में इतना पवित्र समझा जाता है कि इसके पत्ते और फूल बहुत से धार्मिक कार्यों में प्रयुक्त होते हैं। बसन्त में आमों की मंजरी विष्णु को भेंट की जाती है और शिवरात्रि पर शिवजी के ऊपर चढ़ाई जाती है। शिव-पुराण में आम के पके फलों को देवता पर समर्पित करने का बड़ा महत्त्व लिखा है। आम के अलावा बहुत कम ऐसे फल होंगे जो हमारे देश के लोकगीतों और धार्मिक उत्सवों में आम की तरह घुल-मिल गये हों। भारतीय कवि तो जैसे आम पर लट्टू थे। अकबर के शासन-काल में दरभंगा के पास लाख बाग में आम के जो एक लाख पौदे लगाये थे और तुगलक शासकों के काल में जो पौदे रोपे गये थे उससे इस फल की लोकप्रियता की साक्षी कभी धूमिल नहीं हो सकती। करीब छः सौ साल पहले मुहम्मद तुगलकशाह के समय एक पर्शियन कवि अमीर खुसरो ने कहा था—'आम बगीचे का अभिमान है, भारत के चुने हुए फलों में यह सर्वोत्कृष्ट है। दूसरे फलों को तो पकने पर खाने से सन्तुष्टि होती है परन्तु आम विकास की हर अवस्था में अच्छा होता है।' पोपीनो लिखता है 'समशीतोष्ण उत्तरी अमेरिका में सेब का जो महत्त्व समझा जाता है उसकी तुलना में गरम देशों में रहनेवाले करोड़ों आदमियों के लिए आम कहीं अधिक महत्त्व की चीज है।'

आम भारत में एक विशेष मौसम में पैदा होते हैं और यह मौसम थोड़े समय तक ही रहता है। आम पड़े रहने से आठ-दस दिन बाद खराब हो जाते हैं इसलिए आमों की बहुतायत के दिनों में सारी पैदावार का ठीक-ठीक उपयोग हो नहीं पाता। विदेशों में आम नहीं पैदा होता और वहाँ इसकी माँग है। यदि इसे विदेशों में भेजने के तरीके मालूम कर लिए जायँ तो हमारा देश इस देहाती धन्धे से को बाजार में समुचित रूप से खपाने का आयोजन करनेवाले भारत-सरकार के एग्रिकल्चरल मार्केटिंग एडवाइजर की रिपोर्ट के अनुसार भारत में सब प्रकार के फलों की खेती के लिए कुल क्षेत्र सोलह लाख एकड़ से कुछ अधिक है। इस सूची में आम का नम्बर सबसे ऊपर है और यह ९,६७,३४० एकड़ जमीन में बोया जा रहा है। एक और सूचना के अनुसार यह ग्यारह लाख एकड़ से अधिक भूमि में लगाया जा रहा है। एक एकड़ में औसत पचास वृक्ष गिने जायँ और प्रतिवृक्ष से हर साल दो मन पैदावार लगाई जाय तो भारत में आम की पैदावार ग्यारह करोड़ मन जा पहुँचती है।

बम्बई के कृषि-विभाग ने आमों को बाहर भेजने की कोशिशें की हैं। बाहर भेजने के लिए अल्फान्जो सबसे अच्छी किस्म साबित हुई है, क्योंकि यह पैक करने, रखने और निर्यात के प्रभावों से सबसे कम प्रभावित होता है। पूरा पकने से पहले फलों का रंग जब जैतूनी होता है तब फल तोड़ लिये जाने चाहिए। इँगलैंड भेजने के लिए इस अवस्था के फल सबसे अच्छे रहते हैं। यह बहुत गौर से देख लेना चाहिए कि विदेश भेजने के लिए जो फल चुने गये हैं वे रोग, कीड़ों के आक्रमण, दाग, धब्बे या किसी भी प्रकार की चोट से सर्वथा बचे हुए तो हैं। बम्बई से जो आम इँगलैंड भेजे गये थे, कीड़ों और रोगों के विशेषज्ञों (एण्टोपोलोजिस्ट और पैकोलोजिस्ट) ने उनकी परीक्षा कर ली थी। उसके बाद उनके दो ग्रेड बनाये थ—(१) विशेष और (२) व्यापारी। अठ्ठाईस तोला या इससे अधिक भार के फलों को पहले ग्रेड में रखा गया। दूसरे ग्रेड में फलों को भार के अनुसार दो श्रेणियों में बाँट दिया गया था। चौबीस से अट्ठाइस तोला तक भार के फलों को पहली श्रेणी में और बीस से चौबीस तोला तक के फलों को दूसरी श्रेणी में रखा गया।

ग्रेड बनाये हुए फलों को सिम्बल की लकड़ी से बने विशेष प्रकार के बक्सों में बन्द किया गया। प्रत्येक बक्स इतना ही बड़ा था कि इसमें एक दर्जन फलों की एक तह आ जाय। एक तह में दो पंक्तियाँ रखी जाती थीं। दोनों पंक्तियों के बीच में लकड़ी की एक पट्टी रखी होती थी जिससे बक्से के दो खाने बन जाते थे। ये बक्से ऐसे बनाये गये थे जिनमें हवा आने के लिए छिद्र [illegible]

बक्स में रखने से पहले प्रत्येक आम बीच के खाली स्थान में लकड़ी की बहुत बढ़िया किस्म की छीलन भरी जाती थी। इससे फल अपनी जगह से हिल-डुल नहीं सकते थे। ऐसे पाँच बक्सों को बाँधकर एक पैकेट बनाया जाता था। ये पैकेट इँगलैण्ड भेजने के लिए जहाजों पर लाद दिये गये।

यह देखा गया है कि जहाज के ठण्डे कमरों में रखे हुए फल डेक पर रखे हुए फलों के मुकाबलों में बहुत अच्छी हालत में पहुँचे। तीन-चार सप्ताह तक आमों को अच्छी अवस्था में रखे रहने देने के लिए ४०°-४५° फ़ार्नहाइट तापमान काफी अच्छा रहता है। बम्बई से लन्दन तक पहुँचने में स्टीमर को इतना ही समय लग जाता है। इँग्लैण्ड में पहुँचकर अल्फ़ान्जो आम सवा आठ आने का एक के हिसाब से बिक जाता है।

बम्बई-सरकार के परीक्षणों में जब आम इँग्लैण्ड पहुँचे तो उनमें से कुछ फल लन्दन के साम्राज्य-व्यापार-पटल (इम्पायर मार्केटिंग बोर्ड) को परामर्श और सुझावों के लिए भेंट कर दिये गये थे और कुछ फल खाद्योज (विटामिन) की खोज के लिए लन्दन की लिस्टर इंस्टीट्यूट को भेज दिये गये थे। खाद्योजों का अध्ययन बताता है कि अल्फान्जो आमों में खाद्योज ए और सी बहुत अधिक होते हैं और विश्वास किया जाता है कि सुप्रसिद्ध ब्रेम्ले सेबों (Bramley apple) की तुलना में भी बहुत अधिक होते हैं। इस तथ्य के कारण और योरोपियन बाजार के लिए यह एक नया पुष्टिदायक फल है इसलिए भी डेन्मार्क, जर्मनी, फ्रांस आदि में इसकी माँग पैदा हो गई थी।

बम्बई-सरकार के परीक्षणों को हम संक्षेप में कह सकते हैं कि इन प्रयत्नों में देखा गया है—आम का फल यदि ठंडे कमरों में रखा जाय तो इँगलैंड अच्छी हालत में पहुँच सकता है। लेकिन डेक पर फल खराब हो जाता है। चौबीस से अट्ठाईस तोला भार के फलों की कीमत अधिक मिलती है। हवाई जहाज के द्वारा भेजे जायँ तो खर्च इतना पड़ जाता है कि इस सौदे में मुनाफा लेने की कोई गुंजाइश नहीं रहती। समुद्र के सीधे मार्ग द्वारा भेजने से लाभ रहता है। अभी इस बात की आवश्यकता है कि लम्बी यात्रा में स्थान-स्थान पर आमों की परीक्षा करके उनके खराब होने के कारणों की पूर्ण वैज्ञानिक खोज की जाय। इंगलैंड में पहुँचकर आम एक सप्ताह तक दूकानों पर ठीक अवस्था में रह सकता इँगलैंड में उनकी सन्तोषजनक [illegible] प्रबन्ध पहले से ही कर लेना चाहिए। इँगलैंड में पहुँचते ही इसे जितना [illegible] हो जल्दी बिक जाना चाहिए। एक [illegible] और ध्यान देने योग्य यह है कि पैकेट में अधिक लोगों के लिए यह नया [illegible] है, इसलिए जिन स्थानों पर इसे [illegible] के लिए लोगों का झुकाव नहीं है [illegible] इसके लिए स्वाद पैदा करना [illegible] सामान्यतया यह फल सब जगह [illegible] पसन्द किया गया है इसलिए व्यापारी [illegible] को चाहिए कि बाहर के देशों को [illegible] के लिए वे बहुत बढ़िया किस्म के फलों [illegible] ही चुनने का विशेष ध्यान रखें। [illegible] इस फल की माँग उत्तरोत्तर बढ़ती [illegible] जाय।

भारत में फलों का व्यवसाय [illegible] पूर्णतया अशिक्षित लोगों के हाथों में [illegible] है, इसीलिए हमारे देश का यह [illegible] भारी व्यवसाय सदा उपेक्षित रहा [illegible] विश्वविद्यालयों से कृषि और [illegible] धन्धों की शिक्षा प्राप्त करके जो नवयुवक निकल रहे हैं उनका ध्यान फल-संरक्षण जैसे महत्त्वपूर्ण उद्योग की ओर तो [illegible] है जिसके परिणामस्वरूप हम फल-संरक्षण के कुछ कारखानों को सफलतापूर्वक [illegible] करता हुआ देखते हैं। इन शिक्षित युवकों का ध्यान हम आमों को बाहर भेजने [illegible] इस नये धन्धे की ओर खींचना चाहें जिससे बढ़िया किस्म के आमों की [illegible] को प्रोत्साहन मिले और हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति बढ़े।

मुफ्त मुफ्त
घर बैठे मामूली पढ़े-लिखे भी गवर्नमेंट रजिस्टर्ड इन्स्टीट्यूट का होम्योपैथिक कैमिक का डाक्टरी का डिप्लोमा प्राप्त कर सकते हैं नियमावली मुफ्त मँगायें।
पता:—इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजि.) नं० १२,

आखिरी आँसू

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०

हाय नाता टूटता ही जा रहा है।
साथ खे लेते समुन्दर पार होता,
किन्तु अब तो 'एक गज' मँझधार होता,
तुम विरोधी डाँड़ लेकर चल रहे हो हाय साहिल छूटता ही जा रहा है।
हो गये मजबूर, दो धागे लिपट कर,
हो गये मजबूत, दो कमजोर मिलकर,
पर कँटीले तार में कब से उलझ कर हाय तागा टूटता ही जा रहा है।
आज मेरी भी कमर कसने लगी कुछ,
है अहिंसा व्यंग से हँसने लगी कुछ,
फेंकता हूँ प्रेम पर मिलती घृणा है हाय नाता टूटता ही जा रहा है।

एकादशी—लेखक, श्रीयुत [illegible] दीक्षित 'मिलिन्द'। इस पुस्तक में मिलिन्द जी की १२ कमनीय कविताओं का संग्रह किया गया है। ये कवितायें पौराणिक आख्यायिकाओं के आधार पर नये ढंग से लिखी गई हैं। मूल्य केवल १।-) एक रुपया पाँच आने
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड
इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

दो सखियाँ

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

जीवन के उतार-चढ़ाव की स्थिति ही विचित्र होती है। आज कुछ है और कल कुछ। आज की साध कल पूरी होकर रहेगी, इसे कौन जाने? ललिता और किशोरी का जीवन भी कुछ ऐसा ही रहा। जीवन-संघर्ष से उन्हें निराशा ही हुई। इस कहानी में कथाकार ने दो सखियों के विगत और आगत जीवन के मनोभावों का अंकन बड़ी ही कुशलता से किया है। कहानी सुन्दर, रोचक और पठनीय है।

और किशोरी विवाह के बाद एक दिन मिलीं।

किशोरी बालाएँ जब खेलती-कूदती पास आईं तो एक ने दूसरी की देखा। जानना चाहा—तू कौन? किशोरी।"

ललिता।"

अच्छा, सामनेवाले मकानवाली! रायेदार—"

और तू?"

मुद्दत से हूँ, उस नीले मकान में! और भी हैं मेरी सखियाँ।"

अच्छा, आऊँगी।"

उन दो लड़कियों की बात और परिचय, आत्मीयता में हो गई। किशोरी और ललिता को देखकर हँसीं और फिर घरों में चली गईं।

दिन ललिता ने किशोरी को पर बुलाकर, अपनी गुड़िया, दिखाया और कहा—"उस दिन था, इनका! खाना-पीना।"

किशोरी ने कहा—"अच्छा!"

नहीं तो!"—ललिता बोली—कहती थी, तेरी गुड़िया गुड्डे हो, और किसी को पता न बात क्या! वह ब्याह क्या!"

—"मेरी गुड़िया ससुराल गई, रही और दूसरे दिन पीनस में लौट आई।"

किशोरी मुँह में धोती का छोर थी। कुछ लजाई, यों, वह एकाएक नहीं कह पाई।

ललिता ने कहा—"और किशोरी, भी तो ऐसे ही जायँगी, ससुराल गायें, बजायेंगे, खाये-पियेंगे और जायेंगे, सब लोग!"

किशोरी ने पूछा—"कहाँ? कैसे?"

पगली! बड़ी नन्हीं है न, तू!"

—जानती नहीं कि तू भी जायेगी। अपने पिया की साथिन बहू बनेगी, तू।

किशोरी जोर से हँसी। ललिता की ओर देख, जैसे किसी अचरज से भर गई। निश्चय ही, नहीं समझ पाई, उस विवाह बहू का!

× ×

उन दोनों बालाओं का जीवन नहीं तक तो था, नहीं, उन्हें आगे बढ़ना था। उन्हें समझना था विवाह और नारी का जीवन! जब किशोर अवस्था को छोड़ उन्होंने यौवन में प्रवेश किया, तो उन्हें पता चला कि उनके जीवन की माँग है,—यौवन; और उनका कोई साथी है;—यौवन को भोगने और उसके जीवन में मिल कर बैठनेवाला साथी! निदान, अपने मा-बाप, भाई-बहन और अन्य साथियों के बीच रहकर भी; ऐसा मत बन गया कि उन्हें वहाँ से जाना है। उनका विवाह होना है और किसी एक अपरिचित, दूर देश के वासी; पति की पत्नी बनकर उसके घर को ही अपना घर समझना है। उनमें जो विसर्जन और आत्म-भाव है, जो एकनिष्ठा और प्यार है उस पति को ही अपना देवता मानकर जीवन सौंप देना है। फिर बच्चे होंगे;....मा बनेंगी वे,—सुकुमार बच्चे की मार! उसे गोद में खिलायेंगी, लोरियाँ गायेंगी—सोजा रे, मेरे सुकुमार.....

निश्चय ही, उन दोनों लड़कियों में, उस यौवन के आने पर, जब भी वार्ता चली, तो उस बचपन को छोड़कर उसकी ओर से मुँह मोड़कर, यह अच्छा भी नहीं लगता था कि उसे देखा जाय...फिर प्यार किया जाय, बचपन को! उन्हें गुड्डे-गुड़ियों के विवाह करने और खेल-कूद में रस नहीं मिल रहा था। उनकी कल्पना जिस वितान पर बैठी हुई आकाश की सैर करती और आनन्द पाती थी, निश्चय ही, वह जीवन में, अनुपम, अमोल और मुग्धकारी काल था। मानो सारा विश्व ही उसी एक आनन्द में डूब रहा था। पड़ोस में किसी लड़की का विवाह होता, घोड़े पर चढ़ा हुआ दूल्हा आता, तो उस दूल्हे को देखने पर कितना पसन्द आता, उन लड़कियों को! मानो, उसका देखना उन्हें इसलिए भी पसन्द था कि दूल्हा सुन्दर तो है...नहीं; यह देखना आवश्यक था।

एक दिन मुहल्ले में बारात आई थी। दूल्हा घोड़े पर चढ़ा आ रहा था। किशोरी और ललिता के पास और भी लड़कियाँ बैठी हुई थीं। उसी समय, जब दूल्हा सामने से निकला, तो एक लड़की ने ललिता को टंकोरकर कहा—"अरी, देख दूल्हा!"

किशोरी ने ससुराल पहुँचकर अपनी सास के चरण छुए।

ललिता ने उस ओर देखा।

लड़की ने पूछा—"अच्छा लगा?"

ललिता चुप।

"क्यों, बोल न!"

ललिता फिर भी चुप।

"अरी, बोलती नहीं! कुछ नहीं कहती?"

ललिता ने साँस भरी और कहा—"क्या कहूँ री, नन्दी!" और उसने बरबस ही, अपनी बात को दबा लिया। मानो उसे जो कुछ कहना था, वह प्रिय नहीं था।

उसी समय किशोरी बोली—"काला है, लंगूर जैसा!"

"और जिसको ब्याहने आया है, लेने आया है, वह?" एकाएक ललिता ने प्रश्न किया।

किशोरी बोली—रोयेगी, बेचारी!"

उसी समय ललिता ने फिर साँस भरकर कहा—"रोयेगी तो, हँसे तो, साथ इसी के जायेगी। वह रंग नहीं देखेगी, किशोरी!"

एक लड़की ने कहा—"उम्र भी ज्यादा है।"

ललिता ने तुरन्त ही कह दिया—"तो क्या!"

"हूँ, खुद तो अच्छी लड़की चाहिए, नई,—रूप की परी जैसी—खुद लंगूर!"

ललिता मुस्कराई। जिस लड़की ने उससे बात कही, वह उसकी ओर देखकर बोली—"गुस्सा आ गया, रजनी!"

रजनी ने कहा—हाँ, बात ही गुस्से की है! चाहूँ तो इसका मुँह नोंच लूँ। वह बोली—"देख तो, घोड़े पर बैठा हुआ आँख चला रहा है—कम्बख्त! आया है, दूल्हा बनकर!"

लेकिन तदन्तर ही, किशोरी और ललिता वहाँ से उठकर चलीं, तो रास्ते में किशोरी ने कहा—"चलो, विन्दो भी गई!"

ललिता ने—"तेरी तैयारी है।"

"हाँ, सुना तो है।"

"बी० ए० पास है, तेरा दूल्हा!"

किशोरी—"और सुना, कुछ?"

"क्या.....?"

"वह मुझे देखना चाहते हैं।"

"सच! किसने कहा?"

"माँ कह रही थी।"

"तब!"—ललिता बोली—देख ले न। पसन्द न आये, तो बात! किन्तु उस समय किशोरी के मन में यह बात उठ रही थी कि यह कैसा अन्धेर है? लड़के लड़की को तो देख लें और लड़की न देख सकती है, न कुछ कह सकती है—बेजान जैसी!

बेचारी किशोरी!

× × ×

किशोरी का विवाह हो गया। बाद में ललिता का। दोनों का जब बिछुड़न हुआ, तो सचमुच, उन्हें लगा कि अब मिलन नहीं होगा। जीवन में इतने दिन साथ-साथ रहीं, वह सभी छूट जायगा। लेकिन, उस समय, उस पीड़ा के साथ, जो एक आन्तरिक सुख और उल्लास फूटा पड़ रहा था, वह भी अलभ्य था। पिया के घर जाने की साध, पिया का मिलन—मानो पीछे के समस्त जीवन पर पानी फेरने में समर्थ हो गया था। निदान, उनका साथ छूट गया। दोनों सुसराल गईं और साथ ही क्या छूटा, नैहर का सभी कुछ छूट गया।

कई वर्ष बाद समय आया कि अकस्मात् किशोरी और ललिता का मिलन आ। दोनों की गोद भरी थी। पिया-मिलन के साथ, दोनों की माँ बनने की साध भी पूर्ण हो चुकी थी। किन्तु, हाय! हाय! उन्होंने जितना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाया, अब लगा उन्हें कि उससे अधिक खो भी दिया। जब दोनों ने एक-दूसरे को देखा, तो अनुभव किया कि उन्होंने कुछ पाने की साध में जितना खोया, वह नहीं मिल सकता, पाया भी नहीं जा सकता।

देखते ही ललिता ने पूछा—"लड़का है?"

किशोरी ने कहा—"हाँ। और तेरा?"

"लड़का ही।"

"अच्छा!" और दोनों ने एक-दूसरे के बच्चे को अपनी-अपनी गोद में बदल लिया।

ललिता ने कहा—"तू दुबली हो गई।"

"और तू?"

"हाँ, मैं भी।"

"बता तो, कैसी बीतती है?"

"ठीक ही है।"

"न, कुछ है।"

"क्या.....?"

"कुछ!"

किशोरी साँस भरकर बोली—"जीवन बदल गया, ललिता! बचपन छूट गया।"—उसने कहा—"कैसा अच्छा था, वह जीवन!"

ललिता ने उसका उत्तर नहीं दिया। उसने अपनी दुर्बल और रूखी आँखों को आसमान की ओर उठा दिया। निश्चय ही, उसने कहा नहीं, परन्तु जिस जीवन का बोझ उसके सिर पर आ गया, वह उससे छूट जाये, दूर हो जाये, ऐसा भाव बरबस ही, उसके अन्तर में आन्दोलित हो उठा।

किशोरी ने कहा—"जीवन है, जैसे एक चक्की!"

"अरे, यह कुछ भी नहीं, बहन! वहाँ तो दिया जाता है, लिया कुछ नहीं जाता!"

उसी समय, उन दोनों के मुँह पर जो उस यौवन की भरी दोपहरी में असमय ही, संध्या जैसी धूमिलता आ गई थी, निश्चय ही, वह कह रही थी, इन्हें सन्तोष नहीं, सुख नहीं, चैन नहीं।

ललिता ने कहा—"जितनी साध थी, वह मिट गई—दब गई।"

किशोरी ने कहा—तू समझ ले कि किशोरी मर गई।

और बरबस, दोनों ने एक-दूसरी की ओर देखा, इस प्रकार अपना सिर झुका लिया, कि मानो वही सत्य था, वही शिव।

मनोरञ्जक चुटकुले

कांग्रेसी—"अब तो सन्देह नहीं रहा कि स्वराज्य न होगा?"

साधारण आदमी—"यह भी सन्देह नहीं रह गया कि पाकिस्तान नहीं हुआ।"

* * *

मास्टर—"भारत की सीमा बतलाओ प्रभात?"

प्रभात—"पूर्व में ब्रह्म देश...।" कहकर आगे बढ़ना चाहता था कि मास्टर ने रोक दिया।

मास्टर—अब सीमा बदल गई प्रभात, पूर्व में पाकिस्तान और ब्रह्म देश कहना चाहिए। पश्चिम में पाकिस्तान और अरब सागर।"

प्रभात—परन्तु अभी तो उस देश की न कोई राजधानी है और न कोई आकार फिर, उसे पाकिस्तान न कहकर यदि स्वप्निस्तान कहें तो क्या बुरा!"

* * *

पत्र-प्रतिनिधि—"कांग्रेस सरकार ने इलाहाबाद पर लगे जुर्माने को माफ कर दिया।"

पब्लिक—"मुझे छः माह की सजा और १००) जुर्माना हुआ था वह तो नहीं माफ हुआ।"

पत्र-प्रतिनिधि—"दान की दूसरी बेला में उसका भी ख्याल रक्खा जायगा।"

* * *

खरीदार—"कुर्सियाँ कैसे दीं?"

बढ़ई—"कुर्सियाँ तो बड़ी सस्ती हैं बाबू जी, केवल १२) की एक।"

खरीदार—"तब तो बिना कुर्सी के ही ठीक है।"

बढ़ई—"दफ्तर के लिए तो बड़ी ही उपयुक्त हैं।"

खरीदार—"पर मैं तो घर के लिए चाहता हूँ, दफ्तर खोलना होगा तो देखा जायगा।"

* * *

यात्री—"शिव-मन्दिर के नीचे नाव लगाना।"

मल्लाह—"अब तो वह मसजिद में बदल गया।"

यात्री—"फिर तो लौटाओ।"

मल्लाह—"अजी कहीं देवता बदला करते हैं। क्या हिन्दुओं के देवता छुई-मुई हैं?"

* * *

पापी—"पंडित जी मेरे घर पर अनुष्ठान है। चले आइएगा।"

पंडित जी (चौंककर)—"अनुष्ठान?"

पापी—"हाँ जी।"

पंडित जी—"यह कब से? क्या अब आपने पाप करना छोड़ दिया?"

पापी—"तो क्या अनुष्ठान और पुण्य करना भी पाप है?"

* * *

पोस्टमास्टर—"क्या चाहते हो?"

आगन्तुक—"चिट्ठी भेजना।"

पोस्टमास्टर—"मैं तो टिकट बेचता हूँ। बक्स में डाल दो।"

आगन्तुक—"वहाँ से कैसे जायगी? टाइम हो रहा है।"

पोस्टमास्टर—"तब पहले आते।"

आगन्तुक—यह कहिए कि आप व्यापारी हैं।

पोस्टमास्टर साहब चुप रह गये।

* * *

पुस्तक-विक्रेता ने जिल्दसाज से कहा—"तुमने इतनी रद्दी जिल्द बाँधी थी कि किताबें महीनों न बिक सकीं। पर, दाम माँगने में तुम्हारे दसों तकाजों हो गये।"

जिल्दसाज—"पर, अब तो बिक गई हैं।"

विक्रेता—"तुमने कैसे जान लिया कि किताबें बिक गईं?"

जिल्दसाज—"यही कि आप दाम नहीं देना चाहते। इसी से समझ लिया कि किताबें बिक चुकी हैं।"

विक्रेता—"यदि तुम्हें दाम मिल जाय तो क्या पुस्तकें बिकने का तुझे विश्वास हो जायगा।"

जिल्दसाज—"दाम तो मुझे मिले या न मिले पर पुस्तकों के बिकने का मुझे विश्वास हो गया है। क्योंकि मेरी जिल्द-साजी बहुत बढ़िया थी।"

* * *

धनी—देवतादीन तुम दाम नहीं देना चाहते।"

कर्जदार—"आपके पास था तो मुझे दिया, ज्योंही मेरे पास हुआ मैं भी आपको वापस कर दूँगा।"

* * *

मालिक (रसोइया से)—"तुमने चावल खराब कर दिया।"

रसोइया—"वह तो पहले ही से खराब था। खराबी में अच्छाई कैसी?"

* * *

घसिहारा—"आप नहीं खरीदना चाहते फिर क्यों परेशान करते हैं?"

घोड़ेवाला—"आखिर तुम तो बेचना चाहते हो।"

घसिहारा—"पर आप जैसे खरीदारों के हाथ नहीं, क्योंकि आपके पास घोड़ा नहीं मालूम होता।"

* * *

रमेश ने मोहन से पूछा—"सुना है तुम परीक्षा में अव्वल पास हुए हो?"

मोहन—"ऐसा ही मैंने भी सुना है।"

रमेश—"फिर मिठाई खिलाओ।"

मोहन—"अजी मिठाई तो तुमको [illegible] भी अव्वल पास होता रहूँ।"

BRYLCREEM
THE PERFECT HAIRDRESS

अपने आसपास देखिये और उन [illegible] का पता लगाइये जो ब्रिल्क्रीम [illegible] लाते हैं। स्वच्छ एवं स्वस्थ [illegible] उनका पता आसानी से लग सकता [illegible] ब्रिल्क्रीम वालों को अपने स्थान [illegible] है और उन्हें सुन्दर चमक देता है।

आज ही एक बोतल खरीदिये

ब्रिल्क्रीम

परिपूर्ण कश-शृंगार

"उनके पास [illegible] है, जो हमारे [illegible] नहीं है?"

क्यों!

ब्रिल्क्रीम

परिवार के

नवयुवक

निकोटा का व्यवहार करते हैं

क्योंकि निकोटा दांतों को सफेद और दृढ़ रखता है, और [illegible] देता है। परिवार में वह प्रत्येक के अनुकूल पड़ता है। यह समस्त परिवार के व्यवहार के योग्य सबसे अधिक [illegible] प्रथम श्रेणी का टूथपेस्ट है।

लगभग सभी जगह एक रुपये के [illegible] में मिलता है।

★ स्वादिष्ट
★ स्फूर्तिप्रद
★ कीटाणुनाशक

NICOTA

पारिवारिक

टूथ पेस्ट

Saridon
सारिडन
सब दर्दों से
छुटकारा देता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रावली

इटली की राजनीति के वर्तमान नेता—ट्रावंकोर में युद्ध-नृत्य का एक दृश्य—बंगाल के प्रचार के लिये असेम्बली के सदस्यों की बैठक।

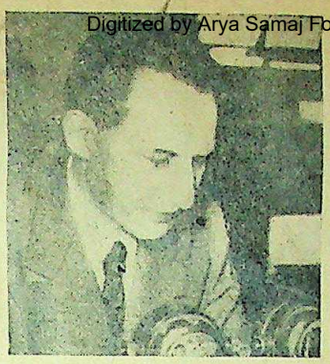

इटली के प्रधान मन्त्री एलसिडे डी गास्पेरी ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया है। आप अमरीका के प्रेसिडेंट ट्रूमन की नीति के पक्षपाती हैं।

इटली के नये प्रधान मंत्री फ्रांसिस्को सेवेटियो निट्टी। आपकी उम्र इस समय ७६ वर्ष की है। आपने नया मंत्रि-मंडल बनाया है।

इटली में कम्यूनिस्ट दल के नेता पामिरो टोगलिटी जो इस समय विरोधी दल के शक्तिशाली नेता हैं।

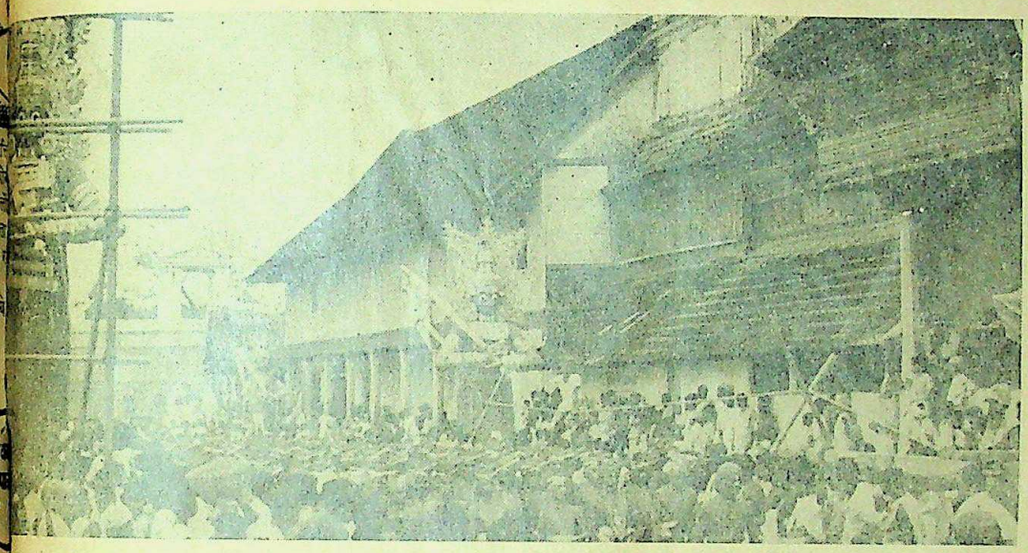

कोर (दक्षिण) में प्रसिद्ध पद्मनाभ स्वामी मन्दिर के सामने युद्ध-नृत्य वर्ष में दो बार होता है। चित्र में, युद्ध-नृत्य करनेवालों की भीड़ मन्दिर के सामने दिखाई दे रही है।

काशी के प्रसिद्ध दुर्गा जी के मन्दिर का घण्टा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

कुब्जा सुंदरी और दूसरी कहानियाँ—मूल-लेखक, श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, अनुवादिका, श्रीमती शांति भटनागर एम० ए०; प्रकाशक, सस्ता साहित्य-मंडल, नई दिल्ली। मूल्य २)।

भारत के सुप्रसिद्ध नेता श्री राजगोपालाचार्य राष्ट्रीयता तथा देशभक्ति में जिस प्रकार अपना सानी नहीं रखते उसी प्रकार साहित्य तथा कलात्मक रचना के सृजन में भी बे-जोड़ हैं। अपनी मातृभाषा तामिल में राजा जी ने बे-जोड़ साहित्यिक रचनाएँ की हैं। कथा-कहानियाँ भी लिखी हैं। उन्हीं कहानियों में से १६ कहानियों का यह संग्रह है। अर्द्धनारी, कुब्जा सुन्दरी, मनहूस गाड़ी, पुनर्जन्म, स्पर्धा, भविष्यवाणी, पाश्चात्ताप, मा, शांति, देवयानी, चुनाव, देव-दर्शन, अबोध बालक, सीताराम, पटाखे और जगदीश शास्त्री का सपना यही १६ कहानियाँ हैं। कहानियाँ सभी अत्यन्त सुन्दर और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त मनोहारी तथा आकर्षक हैं। सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक वातावरण में विभिन्न कहानियों का सृजन हुआ है। राजा जी की विद्वत्ता, व्यंग की पुट और वास्तविकता का चित्रण प्रायः प्रत्येक कहानी में निखर आया है। इन कहानियों में जहाँ हमें श्रेष्ठ कला का दर्शन होता है, वहाँ वास्तविकता तथा दैनिक जीवन की विकसित भावनाओं के भी दर्शन होते हैं, जो हृदय पर अपनी छाप छोड़ जाते हैं। कहानियाँ प्रायः सचित्र हैं। चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य की यह कहानियाँ तामिल-साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती हैं। इनका अनुवाद अँगरेजी में भी हो चुका है। यह हिन्दी अनुवाद भी सुंदर और सौष्ठवपूर्ण है। पुस्तक की छपाई-सफाई सुंदर और आवरण-पृष्ठ आकर्षक है।

* * *

धर्मपालन—संपादक, श्री प्रभुदास गांधी; प्रकाशक, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली। मूल्य १॥)

नई दिल्ली में निवास करते समय ३ अप्रैल से १६ जून १९१४ तक महात्मा गांधी ने प्रार्थना-सभाओं में जो भाषण दिये हैं, उन्हें इस ग्रंथ में संग्रह किया गया है। इसके संपादक श्री प्रभुदास गांधी ने पुस्तक की भूमिका में लिखा है—"इन प्रवचनों में अगर कोई बात शुरू से आखिर तक कही गई है तो वह वही है कि 'धर्म-रक्षा' केवल नारे लगाने से नहीं होती। आततायियों के दोषों का वर्णन करना ही पुरुषार्थ नहीं है। अगर हम अपने धर्म के प्रति सच्चे हैं—संजीदा हैं—तो हमारा एक-मात्र कर्त्तव्य है अपने धर्म का पालन। धर्म की ओर से पीठ फेरकर पुरुषार्थी कहलाना असंभव है। धर्म-रक्षा की ढिलाई में स्वरक्षा की बात करना व्यर्थ है। हिन्दू-धर्म को बचाना हो, अपनी मान-मर्यादा की रक्षा करनी हो, तो इसी 'धर्मपालन' द्वारा उन्हें बचाया जा सकता है।" इस अवतरण से इस पुस्तक का तत्त्व स्पष्ट हो जाता है। इसके अतिरिक्त महात्मा जी के यह भाषण राष्ट्रीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण ही नहीं, ऐतिहासिक भी हैं। भाषणों में गांधी जी ने ऐसे विचार व्यक्त किये हैं जिनका अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व है। गांधी जी के भाषणों के ऐसे उपयोगी संग्रह के लिए संपादक ही नहीं, प्रकाशक भी बधाई के पात्र हैं। पुस्तक की छपाई सुंदर और आकर्षक है। पुस्तक का नामकरण भी 'धर्मपालन' नाम अत्यन्त उपयुक्त और सामयिक है।

* * *

पतझड़ (कहानी-संग्रह) लेखक, श्री शंभुनाथ सक्सेना; प्रकाशक, नूतन प्रकाशन मंदिर, मदने की गोट, लश्कर (ग्वालियर) मूल्य १॥)।

श्री शंभुनाथ सक्सेना हिन्दी के उन उदीयमान कथाकारों में हैं जिन्होंने अपनी कलात्मक कहानियों द्वारा हिन्दी-संसार में एक महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है। आपका पहला कथा-संग्रह 'वेचहदे' का हिन्दी-संसार में अच्छा आदर हुआ है। यह लेखक की श्रेष्ठ कहानियों का दूसरा संग्रह है। इस संग्रह में पतझड़, कलाकार की पत्नी, चंडूल जी, कसेरू, पति-पत्नी, मिर्जा अयूब बेग, अलविदा, पीरू, अर्न्तदाह और दो पिल्ले १० कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ सभी आकर्षक और श्रेष्ठ हैं। चरित्र-चित्रण बड़ा स्वाभाविक और भाषा परिमार्जित और प्रवाहपूर्ण है। अनुभवों की तीव्रता और उनका यथार्थ निरूपण एवं बारीक वर्णनों की फोटोग्राफी, श्री शंभुनाथ जी की लेखन-शैली की विशेषता है। कहानियाँ मानव-जीवन के दैनिक घात-प्रतिघातों, भावनाओ और अनुभूतियों से ओतप्रोत हैं, काल्पनिक नहीं वास्तविकता से पूर्ण हैं जो हृदय पर एक छाप छोड़ जानेवाली हैं। यों तो कहानियाँ सभी सुन्दर और पाठनीय हैं किन्तु 'चंडूल जी' कहानी हमें सबसे अधिक प्रिय लगी। जिस महामानव का चित्रण इस कहानी में किया गया है वह वास्तव में धन्य ही नहीं, दर्शनीय भी है। छपाई, सफाई अच्छी और पुस्तक सजिल्द है।

* * *

आजाद वतन (राष्ट्रीय गान) लेखक, श्री सैयद कासिम अली; प्रकाशक, नेशनल इन्फरमेशन एण्ड पब्लिकेशन्स लिमिटेड, नेशनल हाउस, इतुलक रोड, अपोलो बंदर बम्बई नं १। मूल्य १।)

इस पुस्तक में राष्ट्रीय गानों का संग्रह किया गया है। यह पुस्तक पहले भी प्रकाशित हुई थी किन्तु सन् १९४२ की क्रांन्ति के समय ब्रिटिश नौकरशाही द्वारा जब्त कर ली गई थी। प्रांतों में कांग्रेसी सरकारों के पदारूढ़ होने पर जब्त पुस्तक पर से प्रतिबंध उठा लिया गया। इससे इसका पुनः प्रकाशन किया गया है। इस पुस्तक की भूमिका संयुक्तप्रांत के गृह-मंत्री श्री रफी अहमद किदवई ने लिखी है। इस पुस्तक में ५० राष्ट्रीय गानों का संग्रह किया गया है। प्रत्येक गाने प्रभावशाली, हृदय में राष्ट्रीय भावनाओं को भरनेवाले और जोशीले हैं। सार्वजनिक जीवन में इन गानों की विशेष महत्ता है। भाषा भी गानों की हिन्दी-उर्दू मिश्रित अर्थात् हिन्दुस्तानी है। पुस्तक के संग्रहीत गानों का विशेष आनंद गाकर ही प्राप्त किया जा सकता है। पुस्तक बड़ी ही सामयिक और साधारण पढ़े-लिखे लोगों के लिए उपयोगी है। छपाई, सफाई सुंदर और कवर भी वीररस से ओत-प्रोत है।

—चक्रपाणि

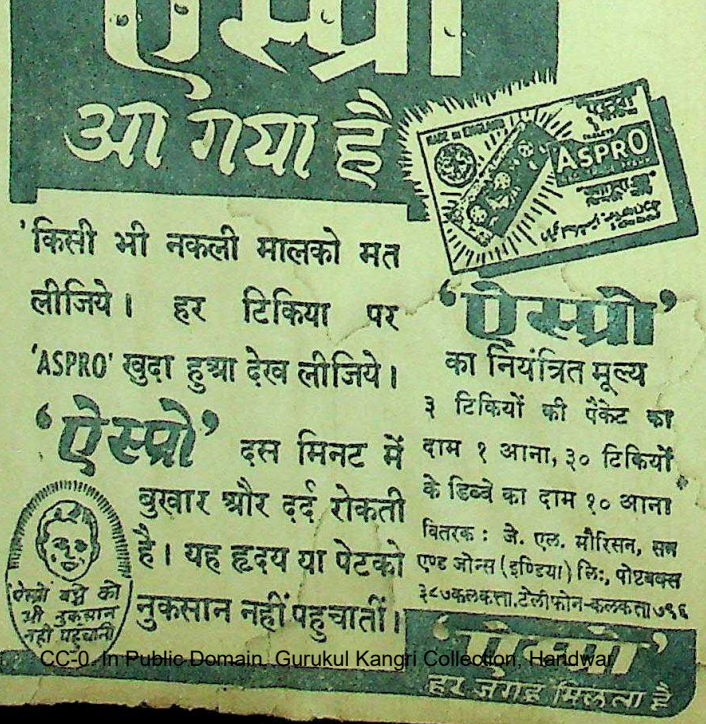

'ऐस्प्रो' आ गया है

'किसी भी नकली मालको मत लीजिये। हर टिकिया पर 'ASPRO' खुदा हुआ देख लीजिये।

'ऐस्प्रो' दस मिनट में बुखार और दर्द रोकती है। यह हृदय या पेटको नुकसान नहीं पहुचातीं।

ऐस्प्रो बच्चे को भी नुकसान नहीं पहुचाती

'ऐस्प्रो' का नियंत्रित मूल्य

३ टिकियों की पैकेट का दाम १ आना, ३० टिकियों के डिब्बे का दाम १० आना

वितरक : जे. एल. मौरिसन, सन एण्ड जोन्स (इण्डिया) लि:, पोष्टबक्स ३८७कलकत्ता, टेलीफोन-कलकत्ता ७९६

'ऐस्प्रो' हर जगह मिलता है

'बालसखा' का वार्षिकांक

लेखक, पंडित कृष्णविहारी मिश्र, बी० ए०, एल्-एल० बी०

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि हिन्दी में बाल-साहित्य का सृजन सुचारु रूप से हो रहा है। बालकों का मनोरंजन और ज्ञानवर्धन करानेवाले ग्रंथ समय समय पर प्रकाशित होते रहते हैं। इनमें से कोई कोई ग्रंथ तो बड़े ही उपादेय और बाल-समाज के लिए यथेष्ट रुचिकर होते हैं। पुस्तक प्रकाशन के अतिरिक्त बालकों के उपयुक्त अनेक मासिकपत्र भी निकल रहे हैं। इन पत्रों का प्रकाशन बाल-समाज के लिए अत्यन्त उपकारी है। ऐसे पत्रों में प्रयाग के इंडियन प्रेस से प्रकाशित 'बाल-सखा' का प्रमुख स्थान है। 'बाल-सखा' वर्षों से बाल-समाज की सेवा कर रहा है। उसकी पाठ्य-सामग्री का संग्रह बड़ी सावधानी से किया जाता है। पिछले कई वर्षों से 'बाल-सखा' का एक वार्षिक अतिरिक्त अङ्क भी प्रकाशित होने लगा है। इस अङ्क की सज-धज अनूठी और नयनाभिराम होती है। इस समय सन् १९४७ का वार्षिक 'बाल-सखा' हमारे सामने है। इसमें ३०० पृष्ठों में, बड़े ही सुन्दर ढंग से बाल-मनोवृत्ति और चित्रण के अनुकूल पाठ्य-सामग्री का संग्रह किया गया है। इंडियन प्रेस की छपाई तो प्रसिद्ध ही है फिर यह अङ्क तो और भी सतर्कता से छापा गया है। काली, नीली और लाल रोशनाई में छपे और भाँति भाँति के सुन्दर आकर्षक चित्रों से ओतप्रोत इस अङ्क के पृष्ठ बड़े ही सुहावने लगते हैं। हिन्दी पढ़ सकने में समर्थ कौन ऐसा बालक होगा जो इस अङ्क को पाकर फिर 'अथ' से 'इति' तक पढ़े बिना इसे छोड़ दे। लेख, कविता, कहानी आदि का चुनाव बहुत बढ़िया बन पड़ा है। जान पड़ता है, पत्र के सम्पादक महोदय को बाल-मनोवृत्ति का अच्छा अनुभव है और इस विषय का उन्होंने गम्भीर अध्ययन किया है। खेद है Child Psychology पर हिन्दी में अभी तक उच्च कोटि के ग्रंथ नहीं प्रकाशित हुए हैं क्या ही अच्छा हो यदि इस विषय पर कोई ग्रंथ लिखा जाय। एतादृश ग्रंथ के प्रकाशन से हिन्दी साहित्य का लाभ तो होगा ही पर साथ ही बालकोपयोगी साहित्य के निर्माण में भी सुभीता होगा। वार्षिक बालसखा के लेखों और कविताओं की संख्या ८ है। इसमें २३-२४ कविताएँ और प्रायः इतनी ही कहानियाँ हैं। कई कहानियाँ सचित्र हैं। इनका चारुचयन प्रशंसनीय है। वार्षिक अङ्क की जिल्दबन्दी सजीव आकर्षक और बाल-रुचि के सर्वथा अनुकूल है। १९४७ के वार्षिक बालसखा को पढ़कर हमको अत्यन्त हर्ष और आन्तरिक सन्तोष हुआ। ऐसे उत्तम अङ्क के निकालने के उपलक्ष्य में हम 'बाल-सखा' के सम्पादक महोदय एवं प्रबन्ध सम्पादक श्री हरिकेशव घोष को बधाई दिये बिना नहीं रह सकते। बालसमाज की अनुपम सेवा सब प्रकार से आदरणीय है।

गंधौली (सीतापुर)
शुद्ध श्रावण, कृष्ण ११
सं० २००४ वि०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज की फिल्मी दुनिया कैसी है ?

अभिनेता पृथ्वीराज कपूर से मनोरञ्जक वार्ता

लेखक, श्री अवधबिहारी गुप्त

आचार्य प्रोडक्शन की सुप्रसिद्ध अभिनेत्री अंजली देवी।

त मई महीने में संसार के श्रेष्ठ र और पृथ्वी के अध्यक्ष श्री व कपूर अपनी वर्षों से बाल-सखा साथ जबलपुर । उसकी पाठ्य-सामग्री उस समय मुझे वधानी से किया था। निकट सम्पर्क में र्षों से 'बाल-सखा' का स्वर्ण-अवसर रिक्त अङ्क भी प्रकाशित पृथ्वीराज की अङ्क की सज-धज कैसी कला मेरे मन में होती है। इस कामना घर कर चुकी धिक 'बाल-सखा' हेतु नके व्यक्तिगत ३०० पृष्ठों में, बड़े में भी मुझे बहुत ल-मनोवृत्ति और खोज किया। -सामग्री का संग्रह कुछ दिन बातों ही मिस की छपाई तो प्रारम्भ में उनसे कुछ ङ्क तो और भी सतर्कता बैठा। मेरे । काली, नीली उत्तर में श्री छपे और भाँति भाँति ने फिल्मी क चित्रों से ओतप्रोत के सम्बन्ध में बड़े ही सुहावने महत्त्वपूर्ण बातें कने में समर्थ कौन ? उन्हें पाठकों स अङ्क को पाकर जाने के लिए लेख का रूप दे क पढ़े बिना इसे ।

—फिल्मी दुनिया के सम्बन्ध या बन पड़ा है। प्रकार की उलटी-सीधी बातें सम्पादक महोदय ने हैं। क्या वे सत्य हैं ?

—इसमें तो तनिक भी सन्देह फिल्मी दुनिया में बड़ी गंदगी है। उन्होंने गम्भीर अध्ययन Child Psychology लोगों को भूलकर भी वहाँ रखना चाहिए। किन्तु इसका नहीं कि सभी अभिनेता, अभि- निर्माताओं और दिग्दर्शकों का पतन हो चुकता है। कीचड़ में तो खिलता है। प्रत्येक कलाकार ले अपने को मानव समझें तो सुधार हो सकता है। किन्तु रुपये की भरमार लोगों को देती है।

—तो क्या इस वातावरण में र न होगा ?

—जमाने की रफ़्तार से कौन ता है ? भले घर के लड़के लड़की संसार में पहुँचकर अपना निजी निर्माण करें तो दूसरे लोग भी सुधर सकते हैं। मैंने स्वतः जब बनने का निश्चय किया था, परिवार ने मेरे प्रस्ताव का तीव्र किया था। किन्तु मैंने चरित्र-भ्रष्ट की शपथ ली थी। आज पहले- नवान् देखकर सभी लोग मुझ करते हैं। वैसे मैं बहुत छोटा, आदमी हूँ।

—आपकी सर्वश्रेष्ठ फिल्म कौन-

—यह तो बड़ा टेढ़ा सवाल है। मैंने जिन फिल्मों में काम किया है, उनमें बहुत कम देखी हैं; वैसे अब तक ५५ फिल्मों में काम कर चुका हूँ। सच बात यह है कि जब तक कहानी-लेखक, फिल्म-निर्माता, निर्देशक और अभिनेता एक-सी विचार-धारा रखनेवाले नहीं होते, तब तक श्रेष्ठ फिल्म नहीं बन पाती। ऐसा बहुत कम सम्भव होता है। मेरी पत्नी को 'विद्यापति' और 'सीता' में मेरा अभिनय बड़ा अच्छा लगा। मुझे 'सिकन्दर' और 'वाल्मीकि' के अभिनय से काफी सन्तोष है।

प्रश्न—आपकी दृष्टि में सर्वश्रेष्ठ निर्देशक कौन है ?

उत्तर—देवकी बोस कला की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं और टेकनीक की दृष्टि से शान्ताराम।

प्रश्न—और अभिनेत्री ?

उत्तर—यह भी बड़ा उलझनेवाला सवाल है। मैं यह नहीं कह सकता कि कौन-सी अभिनेत्री सर्वश्रेष्ठ है, किन्तु इतना अवश्य है कि काननदेवी ने 'विद्यापति', वनमाला ने 'कादम्बरी' और शान्ता आप्टे ने 'वाल्मीकि' में अच्छा अभिनय किया है। दुर्गा खोटे बड़ी मँजी हुई अभिनेत्री हैं।

प्रश्न—अभिनेताओं में आप किसे अच्छा समझते हैं ?

उत्तर—सभी अच्छा काम करते हैं। 'सहगल' बड़े अच्छे गायक थे। उनकी पूर्ति निकटभविष्य में सम्भव नहीं। ज्ञानी और जगदीश सेठी बड़ा जमा हुआ अभिनय करते हैं। 'आलम' में ज्ञानी ने बाप का सर्वश्रेष्ठ अभिनय किया है। 'बरुआ' एरोस्टोक्रेट ऐक्टर हैं। उनके पैर जमीन पर नहीं रहते जैसे सदा कल्पना-लोक में उड़ा करते हैं।

प्रश्न—आपने सबसे अधिक रुपया लेकर कौन-सी फिल्म में काम किया ?

उत्तर—"पृथ्वीराज-संयोगिता" में १४० हजार का कांटरेक्ट था, किन्तु ९० हजार तो मिले ही नहीं।

प्रश्न—क्यों ? प्रोडयूसर पर मुकदमा क्यों नहीं चलाया आपने ?

उत्तर—जितना मेरे भाग्य का था मिल गया। पैसे के लिए अदालत की सीढ़ी चढ़ना मेरे लिए बड़ा अपमानजनक है। मैंने पैसे को जीवन में कभी महत्त्व नहीं दिया।

प्रश्न—क्या अब आप फिल्म में काम करना बन्द कर देंगे ?

उत्तर—नहीं तो। 'आजादी की राह पर' में काम कर रहा हूँ। अभी हाल ही कांटरेक्ट हुआ है। पृथ्वी थियेटर तो घाटे में चल रहा है। सिनेमा की कमाई थियेटर में लगाता जा रहा हूँ।

प्रश्न—पृथ्वी थियेटर से फिर आपको लाभ क्या है ?

उत्तर—सभी काम पैसा कमाने के लिए नहीं किये जाते। पृथ्वी थियेटर के द्वारा मैं देश की सेवा करना चाहता हूँ। आये दिन कितने अभिनेता पैदा होकर नहीं मरते। मरने के बाद भी लोगों की जबान पर मेरा नाम रहे, इसीलिए इतना घाटा सहकर थियेटर चला रहा हूँ। सिनेमा ने रंगमंच का गला घोंट दिया है, मैं उसमें प्राण फूँकने की कोशिश कर रहा हूँ।

५५ साल के बुढ़ापे में भी पूर्ण स्वस्थ

पति और पत्नी क्रूशन साल्ट का सम्मान करते हैं

'रुपया बुद्धिमानी से खर्च किया गया'

बहुत-से पुरुषों और स्त्रियों को आधी ज़िन्दगी पार करते-करते पेट की शिकायतों से थोड़ा-बहुत दर्द और पीड़ा होने लगती है। लेकिन श्रीयुत और श्रीमती पैट्रिक को नहीं। उनका स्वास्थ्य २० साल से अच्छा है और इसका जो रहस्य है, उसे हर कोई बिना किसी कष्ट के और थोड़े से ही खर्च में जानकर लाभ उठा सकता है। श्रीमती पैट्रिक लिखती हैं :—

'पिछले २० वर्षों में हमने नित्य सवेरे चाय के प्याले में क्रूशन साल्ट की थोड़ी-सी मात्रा का सेवन किया है—हम कभी नागा नहीं करते, छुट्टी के दिन भी नहीं। मैं और मेरे पति का जो अच्छा स्वास्थ्य है, वह इसी कारण है और यह कहने में हमें कोई संकोच नहीं। हमारे डाक्टर का 'बिल' वस्तुतः नगण्य रह गया है और मेरे पति, यद्यपि ५५ वर्ष के हो चुके हैं, लेकिन ४५ वर्ष से अधिक के नहीं दिखते। पूर्ण स्वास्थ्य के वह प्रतीक हैं, हालाँकि उनका काम उन्हें हर मौसम में बाहर ले जाता है। क्रूशन इस्तेमाल करने के पूर्व उनकी भुजा में वात रोग था। परन्तु यह रोग सालों पहले ठीक हो जाने पर भी, वह क्रूशन का सेवन बन्द नहीं करते। क्रूशन साल्ट पर हमने जो खर्च किया है, वह रुपया बुद्धिमानी से खर्च किया गया है।'

—(श्रीमती) एल० सी० पैट्रिक।

क्रूशन छः प्राकृतिक नमकों का ऐसा मिश्रण है, जो आपके यकृत को उद्दीपक बना देता है; मूत्राशय और पाचन-नली को स्वस्थ तथा नियमित क्रियाशील बना देता है। इससे भीतरी सफ़ाई होती और रक्त-प्रवाह विशुद्ध रहता है। सभी दवा-फ़रोश क्रूशन साल्ट बेचते हैं; कीमत १॥=) प्रतिबोतल।

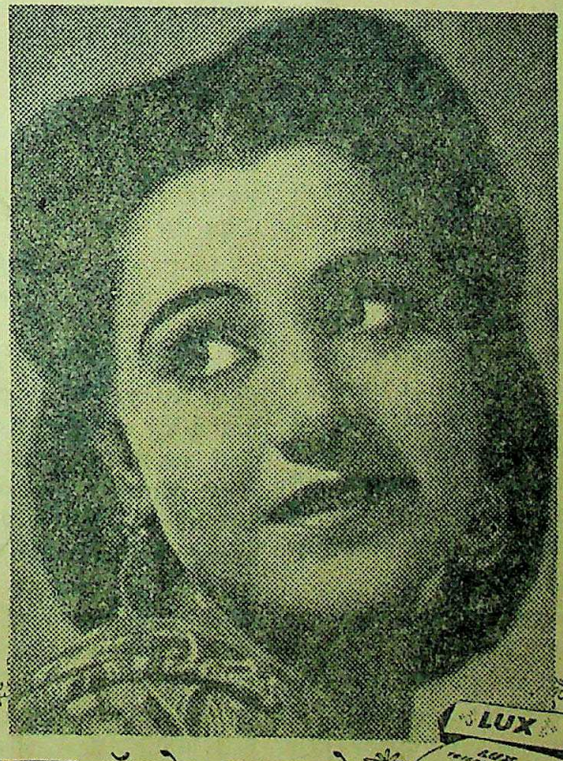

"लक्स टॉयलेट साबुन से आपके त्वचा की सौम्य सुरक्षा कीजिये" रेहाना कहती है

LTS 169-111-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'नयाहिन्द' का प्रकाशन

पंडित सुंदरलाल जी की सफाई

इलाहाबाद से प्रकाशित होनेवाले 'नयाहिन्द' जो हिन्दुस्तानी जबान का रिसाला है, के सम्पादक पंडित सुन्दरलाल जी ने नीचे लिखा वक्तव्य हमारे पास प्रकाशनार्थ भेजा है, जिसे हम यहाँ दे रहे हैं। इसी वक्तव्य को आपने 'भारत' में भी प्रकाशनार्थ भेजा है। पिछले दिनों 'भारत' में इस आशय का समाचार छपा था कि 'नयाहिन्द' को निजाम हैदराबाद से आर्थिक सहायता मिलती है। पं० सुन्दरलाल ने इस वक्तव्य में 'नया हिन्द' तथा अपने ऊपर लगाये गये आरोपों का उत्तर दिया है—

लगभग सात हफ्ते बाहर रहने के बाद ९ जुलाई को मैं इलाहाबाद वापिस आया तो मालूम हुआ कि 'भारत' के किसी अंक में 'नयाहिन्द' की बाबत कोई खास खबर छपी है। १० को सबेरे एक जरूरी काम से मुझे फिर दिल्ली के लिए चल देना पड़ा। यहाँ ११ तारीख को मुझे 'भारत' का वह अंक पढ़ने को मिला जिसमें नई दिल्ली से २५ जून को भेजी हुई आपके 'विशेष प्रतिनिधि' की कुछ मार्के की खबर 'हिन्दुस्तान में लीग कुचक्र' शीर्षक से छपी है। उसी खबर के आधार पर सम्पादक के नाम श्री सुबोधकुमार एम० ए० का बनारस से भेजा हुआ पत्र भी 'भारत' के एक बाद के अंक में पढ़ने को मिला। मैं यहाँ सिर्फ आपके प्रतिनिधि की भेजी हुई उस मूल खबर की ही बात करना चाहता हूँ। उसमें सबसे बड़ी बात जिस पर सारी इमारत खड़ी की गई है यह है कि—

"मुझे विश्वस्तसूत्र से ज्ञात हुआ है, चौदहवीं सदी की मुस्लिम संस्कृति का स्वप्न देखनेवाले हैदराबाद राज्य की ओर से मुस्लिम संस्कृति का गुणगान करने तथा कांग्रेस के नेताओं की कटु आलोचना करने के लिए हिन्दुस्तान के जिन पत्रों को पर्याप्त आर्थिक सहायता दी गई है और भविष्य में भी बराबर दी जाने का आश्वासन दिया गया है उनमें इलाहाबाद का 'नयाहिन्द' प्रमुख है।"

इस बारे में सिर्फ इतना कह देना जरूरी है कि 'नयाहिन्द' हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी इलाहाबाद का मुख पत्र है। मैं उस सोसाइटी का सेक्रेटरी हूँ। हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी को या 'नया हिन्द' को या मुझे आज तक कभी एक पैसा भी किसी रूप में निजाम या उनकी सरकार से नहीं मिला और न आगे के लिए किसी तरह का 'आश्वासन' ही मिला है।

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी कोई हिन्दू या मुस्लिम या किसी एक फिरके की संस्था नहीं है। उसके मेम्बरों और पदाधिकारियों में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और पारसी सब धर्मों के ऐसे लोग शामिल हैं जो मुल्क में अपनी जगह रखते हैं उसका एक अपना मिशन है। वह मिशन है सब धर्मों और पंथों के लोगों में मेल-मिलाप एकता का बढ़ाना और फैलाना। इसलिए हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी को किसी से भी अपने मिशन के लिए चन्दा स्वीकार करने में कोई इनकार न होगा। मैंने जो ऊपर निजाम से अब तक एक पैसा न मिलने की बात लिखी है वह केवल आपके प्रतिनिधि की जानकारी को ठीक करने के लिये।

मैं यह भी बता दूँ कि हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी को अभी तक सबसे बड़ी धन की सहायता दिल्ली सरकार से मिली है। श्री राजगोपालाचारी के वजीरे तालीम होने के दिनों में हमें पिछले साल के बजट से ६ हजार रुपये की रकम मिली थी और आगे के लिए अधिक 'आश्वासन' भी दिया गया था। चुनांचे मौलाना अबुल कलाम आजाद के चार्ज लेने के बाद सोसाइटी के लिए अगले तीन साल में मिलाकर पचास हजार की रकम और मंजूर की गई है। 'नया हिन्द' की फाइल से जाहिर है कि अगर दिल्ली-सरकार की मदद, जिसके लिए हम उनके मशकूर हैं, 'नयाहिन्द' को उस सरकार या उसके मेम्बरों की, अपनी राय के मुताबिक, कड़ी 'आलोचना' करने से नहीं रोक सकी तो किसी भी हिन्दू या मुसलमान, राजा या रईस की मदद उसे उस बात के कहने से नहीं रोक सकती। जिसे वह सच और देश के लिए फायदे की समझता है।

दूसरी अजीब बात जो उस खबर में छपी है यह है—

"कहा जाता है कि यह गतिविधि देखकर गांधी जी को भी चोट पहुँची है और उन्होंने इस सम्बन्ध में कुछ पूछताछ भी की है; किन्तु जानकार क्षेत्रों का खयाल है कि इसका भी 'नयाहिन्द' के कारनामों पर कोई असर न पड़ेगा।"

इसका सम्बन्ध गांधी जी से था। मैं उस दिन दिल्ली में था। मेरा फर्ज था कि आपके अखबार की कतरन गांधी जी को दिखा दूँ। उसे पढ़कर गांधी जी को उतना ही दुख हुआ जितना मुझे। आपके 'विशेष प्रतिनिधि' की भेजी हुई खबर का यह हिस्सा भी बिलकुल गलत और बे-बुनियाद है।

खबर के तीसरे हिस्से में ऊपर की बातों से कुछ नतीजे निकाले गये हैं और कुछ राय जाहिर की गई है जिस पर मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

अब रहा जून के 'नयाहिन्द' का वह नोट जिस पर खफा होकर यह सब गलत बयानियों की इमारत खड़ी की गई। मैंने उस नोट को फिर से पढ़ा। गांधी जी को भी दिखाया। मैंने जो कुछ उसमें लिखा है मेरी अब भी वही पक्की राय है। मैं टंडन जी को आज चालीस बरस से पूरी घनिष्ठता के साथ जानता हूँ। उनके अनेक गुणों के लिए मेरे दिल में आदर है। मैं उन्हें अपना मित्र और बड़ा भाई मानता हूँ। पर जिस तरह की हिंसा या प्रतिहिंसा की तैयारी में वह इस वक्त देश के लोगों को लगाना चाहते हैं वह उस कांग्रेस की निगाह से, जो देश के सब लोगों की मिली-जुली संस्था है और जिसने अभी तक भी अहिंसा को अपना असूल बना रखा है, हरगिज ठीक नहीं। यह बिलकुल पक्की बात है कि कांग्रेस अगर एक बार इस तरह के हिंसा के मार्ग पर चल पड़ी तो वह दूसरी हिन्दू महासभा बने बगैर नहीं रह सकती। अगर हमारे दिल में ऐसा न भी हो तब भी हिन्दुस्तान के अन्दर हिन्दुओं का जबरदस्त बहुमत होने की वजह से यह रास्ता हमें उस मंजिल तक पहुँचाये बिना नहीं रह सकता। अगर, भगवान् न करें, ऐसा हुआ तो देश के सब रहनेवालों की मिली-जुली कांग्रेस मर जायगी। मैं इसे इस देश के लिए सबसे बड़ी बदकिस्मती मानता हूँ।

रही जबान की बात 'नयाहिन्द' हिन्दी और उर्दू के मेल से बनी हुई एक मिली-जुली बामहावरा हिन्दुस्तानी का समर्थक है और उसके लिए नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों को अपनाये हुए है। 'नयाहिन्द' के जीवन का यह एक खास मकसद है। हाल के बँटवारे के बाद भी मुझे देश का भला इसी में दिखाई देता है। यही गांधी जी की भी राय है और मैं समझता हूँ, 'नयाहिन्द' के उन प्रेमियों की भी जिनके सहारे 'नयाहिन्द' चल रहा है।

मेरी यह भी साफ राय है कि मुल्क में दो सरकारें कायम हो जाने के बाद हमारी जिम्मेवारी और भी बढ़ गई है; अब पहले से भी ज्यादा हिन्दुस्तान सरकार की भलमनसी, बड़प्पन और सलामती इसी में है कि वह अपने अमल से यह दिखलावे कि उसका राज मुसलमानों, ईसाइयों और दूसरों के लिए ठीक वैसा ही और उतने ही फायदे का है जितना हिन्दुओं के लिए, इसी तरह पाकिस्तान सरकार की भलमनसी, बड़प्पन और सलामती इसी में है कि वह यह दिखला दे कि उसके राज में मुस्लिम और गैर मुस्लिम के लिए किसी तरह का कोई फरक नहीं, हम अगर चाहें तो इस बँटवारे से भी फायदा उठाकर मुल्क को स्वर्ग बना सकते हैं। इसके खिलाफ सोचना और अमल करना मुल्क को बरबादी की तरफ ले जाना है।

मैं इन बातों पर इससे ज्यादा बहस नहीं करना चाहता। कोई भाई समझने समझाने के लिए लिखना चाहें तो 'नया-हिन्द' के कालम खुले हुए हैं।

मैं यह खत गांधी जी को दिखला कर और उनकी रजामन्दी से भेज रहा हूँ।

आपका भाई
सुन्दरलाल

(पेज ५ का शेष)

शासक-सत्ता का मुलम्मा चढ़ा दिया [illegible] दफ्तरी रिकार्डों में भी उन्हें [illegible] के स्थान पर शासक लिखा जाने [illegible] था। नरेशों का शाही राजधानी में [illegible] अधिकाधिक बढ़ता गया और [illegible] की गर्वोन्नत-चेतनाएँ भी मर्यादा [illegible] उल्लंघन करते हुए अधिकाधिक [illegible] की आकांक्षा करने लगीं। [illegible] के स्टेशन पर बिछाये गये लाल [illegible] पर जैसे ही कोई नरेश कदम रखता [illegible] ही उसे तोपों की सलामी दी जाती [illegible] मजेदार बात यही है कि इस सलामी [illegible] सारा खर्च स्वयं नरेश को ही देना पड़ता [illegible] था! उसके ही खर्चे से उसके [illegible] सम्मान का आडम्बर किया जाता [illegible] आजकल यह सलामी बन्द हो गई है [illegible] हाँ, इस शाही रस्म का इतना अंश [illegible] शेष रह गया है कि जब असिस्टेंट [illegible] मास्टर को किसी नरेश के आगमन [illegible] सूचना मिलती है तो वह लाल [illegible] के बिछाने का प्रबन्ध कर दिया करता [illegible]

निरर्थक और आडम्बरमयी [illegible] नरेन्द्र-मंडल में व्यर्थ बकवास और [illegible] के अतिरिक्त और कुछ भी ठोस [illegible] नहीं हुआ—सिर्फ महाराजा अलवर [illegible] सिफारिश से संधियों और समझौ [illegible] कानूनी पक्ष की जाँच करने के लिए [illegible] कमेटी बिठाई गई। क्योंकि देशी [illegible] के आन्तरिक मामलों में सरकार [illegible] हस्तक्षेप बढ़ता जा रहा था और [illegible] और शर्तनामों द्वारा कायम की [illegible] मर्यादाओं का कोई खयाल नहीं [illegible] जा रहा था। नरेशों के कानूनी [illegible] सम्बन्धित प्रश्नों का साक्षात्कार [illegible] रीडिंग की निजाम के नाम पर [illegible] गई घोषणाओं द्वारा हुआ जब कि [illegible] ने सार्वभौम सत्ता के साथ समान [illegible] खड़े होकर अपने दावे के छानबीन [illegible] बातचीत की—फेडरेशन बनाने के [illegible] में भी सरकार ने जिस दृष्टिकोण [illegible] परिचय दिया उसमें भी ये ही [illegible]

कथा-साहित्य का नवीन उपादान

अपना-पराया

लेखक—पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

इस मौलिक मनोरंजक उपन्यास में एक चीनी तरुणी का मेनका-रूप [illegible] आपको आत्म-विभोर कर देगा, वहीं तिब्बत और चीन की नैसर्गिक छटा, [illegible] वहाँ के अजीबोगरीब रस्म-रिवाज भी आपके सामने चलचित्र की तरह [illegible] उठेंगे। चीन की यह रहस्यमयी तरुणी किस प्रकार भारत आती और अपने [illegible] तथा स्वदेशाभिमान की रक्षा का व्रत लेकर, एक भारतीय नौसैनिक की [illegible] से अपने देश लौट जाती है, आदि प्रसंग एक स्वस्थ सामाजिक दृष्टिकोण [illegible] साथ आपको प्रणय की रंगीनियों, परिस्थितियों के झमेलों और विद्रोह [illegible] झकोरों का जो परिचय देंगे, उसे आप कभी भूल न सकेंगे।

पृष्ठ २३२, सजिल्द और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २॥)

मैनेजर, पुस्तक-विभाग, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनाथ बच्चों के लिए महिलाओं के कर्त्तव्य

का भावना लेकर स्त्रियाँ आगे क्यों नहीं बढ़तीं ?

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

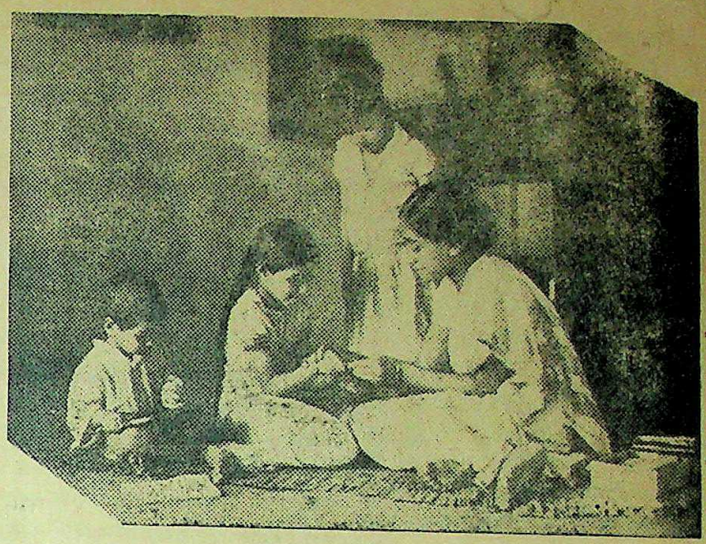

माता अपने छोटे बच्चों को कलात्मक ढंग से शिक्षा दे रही है।

गायें यदि अपने ही बच्चे के पोषण तक सीमित रह जायँ उनके मातृत्व से संसार को क्या इसके अतिरिक्त उन माताओं तो और भी बुरा कहना चाहिए के बच्चों का भोजन छीनकर बच्चों को खिला दें। पर, ऐसा देखा गया है। भारतवर्ष में तो व्यवहार बहुत कम किया जाता है। दूसरे देशों ने अपनी माताओं से बच्चों की हत्यायें कराने में कोई कसर नहीं उठा रक्खी। द्वितीय युद्ध में वायुयानों में उड़कर आकाश शहरों पर बम बरसाती थीं। यद्यपि मातृत्व की कमी न थी; परन्तु राज्य-लिप्सा ने उनके मातृत्व को ठेस दिया। उन्हें विवश कर दिया कि वे युद्धक्षेत्रों में जाकर निरीह नर-नारी बूढ़े-बच्चों का संहार कर दें। जापान ने भी पश्चिमीय देशों से प्रेरित होकर यही कार्य किया। योरोपाई देशों के रहनेवाले बहुत कुछ दोष से अछूते रहे हैं। इन घृणित कार्यों की अपेक्षा स्त्रियों को पालन-पोषण का कार्य अधिक उपयुक्त है इसलिए कि उनमें नाशकारी, वीरत्व भावनाओं के विपरीत दयालुता की भावना अधिक होती है और स्वाभावतः पालन-पोषण का सुचारु रूप से कर सकती हैं। युद्ध में हमारे ही देश के अन्दर सारे संसार में अनाथ बच्चों की संख्या बढ़ी जा रही है। जिनके पालन-पोषण का उत्तरदायित्व आज के नारी और पुरुष दोनों समाज पर है। पर पुरुष तो पालन-पोषण से दूर रहने का प्रयत्न करता है, स्त्रियाँ पालन-पोषण की साक्षात् देवी हैं। अतः आज के नारी-समाज के सामने अपने देशीय अनाथों का भी कम उत्तरदायित्व नहीं। इस उत्तरदायित्व के निभाने के लिए यदि हम विदेशी नारी-समाज का कुछ आदर्श सामने लें तो हम यह समझ सकते हैं कि हमारा नारी समाज इस कार्य को किस कुशलता से पूरा कर सकता है।

स्विटजरलैण्ड एक ऐसा देश है जहाँ रेडक्रास अधिक उन्नति पर है। यूरोप में करीब २ करोड़ अनाथ बच्चे हैं जिनके माता-पिता विगत महायुद्ध में मारे गये थे। उनका जीवन इस समय संसार के लिए एक भार है। परन्तु स्विटजरलैण्ड में यह काम एक परोपकारी भावना से शुरू हो गया है। वहाँ एक दम्पति को १६ बच्चों के पालन-पोषण के लिए नियुक्त किया गया है। वह दम्पति उन १६ बच्चों के पालन-पोषण का भार अपने ऊपर लेते हैं। वे ही उन बच्चोंवाले घर अथवा कुटुम्ब के पोषक माता-पिता रहते हैं। ऐसे घरों को मिलाकर एक गाँव बसाया गया है और गाँव में २४ घर बनाये गये हैं। यूरोप में ऐसी योजना अन्य देशों में भी लागू की जायगी। इस योजना को पुरुष पूरा नहीं कर सकते। क्योंकि बच्चों को प्यार और प्रेम, हँसी-खेल, आदेश और अनुशासन, प्रशंसा और सत्यता चाहिए। ये ही बातें अन्य देश के अनाथ बच्चों के लिए भी लागू हैं। भारतवर्ष के सामने तो एक और बड़ी टेढ़ी समस्या है वह यह कि इस देश में गरीबी एक बड़ा अभिशाप है। यहाँ के लाखों अनाथ बच्चे बिना किसी आश्रय के अधिकतर मर जाते अथवा दूसरों की गुलामी में रहकर जीवित रहते हैं। शहरों में शायद ही एक-दो प्रतिशत इस पाप से बचते हों; परन्तु इस देश में अभी तक अनाथ बच्चों की ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। बच्चों को खेल-कूद और हँसना-दौड़ना पसन्द है; परन्तु जब तक उनका पेट नहीं भरेगा वे न तो खेल-कूद सकते हैं और न हँस-दौड़ सकते हैं। प्यार और प्रेम भी बिना भोजन के अच्छा नहीं लगता। अतः बच्चों को सबसे अधिक आकर्षक वस्तु प्यार और प्रेम के अतिरिक्त भोजन है। भोजन देनेवाला यदि प्यार नहीं करता तो बच्चा किसी प्रकार खा-पीकर लेट जायगा; परन्तु बच्चे को प्रेम और प्यार चाहिए। यह वस्तु माता से ही प्राप्त हो सकती है। इसी उद्देश्य से स्विटजरलैण्ड निवासियों ने ऐसी पद्धति सोची है जिससे उनके देश के अनाथ बच्चे माता-पिता के सुख से वंचित न रहें। स्विटजरलैण्ड-निवासियों की संक्षिप्त योजना यों है :—

बच्चे किसी अँधेरे घरवाले स्कूल में न पढ़ाये जायँ और न अँधेरी कोठरियों अथवा मकान में रक्खे जायँ। उन्हें ऐसे स्थान में रक्खा जाय जहाँ एक गृहस्थ परिवार अपना जीवन बिताता हो। शाम को गायें रँभाती आती हों अथवा खेल-कूद के लिए बच्चे इकट्ठे हों। रात में उनके समय से सुलाने के लिए मातृत्व का प्यार चाहिए। प्रभात भी उनके सामने सुनहले ढंग से आवें कि उन्हें किसी प्रकार की ऐसी ठेस न मालूम हो कि उनके माँ-बाप इस लोक में नहीं हैं। यह कार्य स्त्रियाँ बड़े सुचारुरूप से कर सकती हैं। अब चूँकि थोड़े ही दिनों के अन्दर देश के अन्तर्गत—राष्ट्रीय सरकारों की स्थापना हो जायगी जो अपने प्रान्तों और पूरे राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी होंगी। उस स्थिति में ऐसे दम्पति इस कार्य के लिए रक्खे जायँ जो राष्ट्र की भावी सम्पत्ति बच्चों के पालन-पोषण का भार ग्रहण करें। जब तक सरकार और देश की प्रगतिशील संस्थायें इस ओर ध्यान न देंगी तब तक यह विचार केवल कागजों तक सीमित रह जायगा। देश की प्रगतिशील संस्थाओं में पुरुषों की कितनी भी संस्थायें हैं। पर, स्त्रियों की केवल एक ही संस्था है। अतः उसे इस विषय को लेकर नारियों में आन्दोलन करना चाहिए। इसके अतिरिक्त देश की तमाम नारियों का कर्तव्य है कि वे अनाथ बच्चों के पालन-पोषण का भार स्वयं अपने कंधों पर लें, जिसके लिए उन्हें कोई बुरा नहीं कह सकता, साथ ही देश की भावी सन्तानों की उन्नति होगी। स्विटजरलैण्ड की भाँति संसार के अन्य राष्ट्रों को भी इस ओर बढ़ना चाहिए। महिलायें मातृत्व की भावना लेकर आगे आवें और देश की बिलखती हुई अनाथ बच्चों की अपार सम्पत्ति को नष्ट होने से बचावें।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

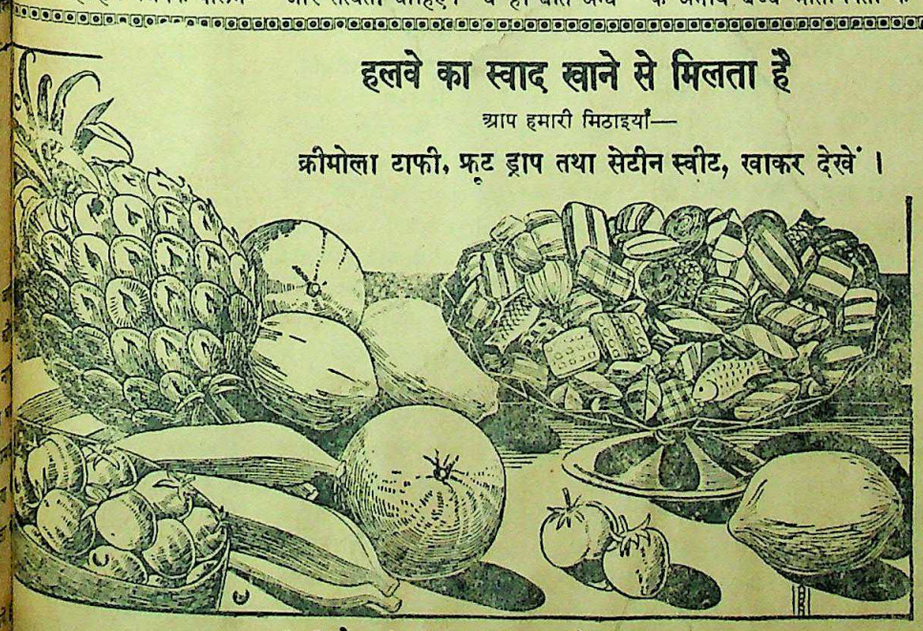

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

पूजागीत—द्विवेदी जी की नवीनतम राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह। प्रत्येक कविता जीवन में स्फूर्ति का संचार करती है। फेदर वेट पीले कागज पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर बुकडिपो इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

अमर शहीद श्री देव 'सुमन'

ता० २५ जुलाई का दिन देशी राज्यों के स्वातन्त्र्य संग्राम के इतिहास में विशेष महत्त्व का है, क्योंकि सन् १९४४ के इसी दिन टिहरी राज्य की नरक-तुल्य जेल में ८४ दिन की भूख-हड़ताल के पश्चात् अमर शहीद श्री। देव 'सुमन' का निधन हुआ था। देशी राज्यों ही नहीं बल्कि भारत के स्वतन्त्रता की लड़ाई में श्री देव 'सुमन' का बलिदान अनुपम था, 'सुमन' जी ने टिहरी राज्य की जनता के नागरिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए अनसन किया था और इस प्रकार अमर शहीद श्री देव 'सुमन' का बलिदान टिहरी राज्य ही नहीं बल्कि समस्त देशी राज्यों की सामन्तशाही के विरुद्ध एक चुनौती थी; जिसके द्वारा यह स्पष्ट घोषित किया गया था कि हम अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी अपने अधिकारों की रक्षा करने के लिए तत्पर हैं।

'सुमन जी ने अपने जीवन-काल में भी बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य किया, उनका जन्म टिहरी राज्य में हुआ था, वहीं की निरंकुश सामन्तशाही के नीचे कराहती हुई निरीह जनता की वेदना ने बचपन ही में उनके हृदय में पर एक गहरी चोट लगा दी थी, इसी प्रकार हिमालय की गोद में बसी हुई दूसरी छोटी-छोटी रियासतों की जनता की भी वही दशा थी। पहाड़ों की ओट में छिपी हुई इन रियासतों की ओर बाहरी दुनिया ने कभी नहीं देखा और न इनके सम्बन्ध में किसी को कुछ ज्ञात ही था। सदियों से यहाँ की जनता के ऊपर शासन करनेवाले तानाशाह इस बीसवीं शताब्दी में भी अपनी मनमानी से शासन कर प्रजा का शोषण कर रहे थे। 'सुमन' जी ने अपना साहित्यक जीवन छोड़कर, राजनीति में प्रवेश किया। निर्जन वन और पहाड़ियों को लाँघते हुए यहाँ की जनता को गांधी का सन्देश सुनाया। अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् में इन पहाड़ी राज्यों का प्रतिनिधित्व कर उन्होंने बाहर की दुनिया का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। यही नहीं वहाँ की जनता को संगठित करने के लिए हिमालय सेवा-संघ और अखिल भारतीय देशी राज्य-लोक-परिषद् की हिमालयन रिजनल कौंसिल की स्थापना भी की।

'सुमन' जी को बाल्यावस्था में ही घर छोड़ना पड़ा था। बाहर आकर उनके सामने दो समस्याएँ थीं--अध्ययन और पहाड़ी प्रान्तों की जनता का संगठन। ये दोनों बातें साथ-साथ चलती रहीं। छोटी ही अवस्था में वे अपने अथक परिश्रम, लगन, त्याग और सरल स्वभाव के कारण सभी नेताओं के कृपापात्र बन गये। साहित्यिक सूची ने उन्हें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की ओर खींचा। इसी दौरान में वे कई पत्रों में भी कार्य करते रहे। परन्तु उनका असली क्षेत्र तो राजनीति था, इसलिए उन्होंने अपनी सारी शक्ति जनता के संगठन में लगा दी। सन् १९४२ तक उन्होंने टिहरी राज्य की अँधेरी घाटियों में कई उत्साही युवकों को तैयार कर लिया था, जिन्होंने टिहरी में 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव के साथ-साथ 'अँगरेजों से नाता तोड़ो' और 'जनता से नाता जोड़ो' का नारा बुलन्द किया था, वे इन दिनों आगरा जेल में थे।

आगरा जेल से रिहा होने के पश्चात् 'सुमन' जी टिहरी आये; परन्तु टिहरी सरकार राज्य में उनकी उपस्थिति सहन न कर सकी। फलतः वे २६ दिसम्बर १९४३ को गिरफ्तार किये गये और जेल ही में उन पर राजद्रोह का अभियोग लगाकर मुकदमा चलाया गया। गिरफ्तारी के बाद 'सुमन' जी ८ महीने तक जेल में रहे। इस दौरान में उनके ऊपर किये गिये अमानुषिक अत्याचार आज भी भुलाये नहीं जा सकते; परन्तु वे अपने उद्देश्य पर हिमालय की तरह दृढ़ रहे और अन्त में उन्होंने अपने प्राणों की आहुति ही दे दी। जेल जाने से पहले उन्होंने टिहरी-सरकार को स्पष्ट शब्दों में चुनौती दे दी थी कि "तुम मुझे तोड़ सकते हो मोड़ नहीं सकते"। उनकी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई।

परन्तु टिहरी की सरकार द्वारा तोड़ा हुआ 'सुमन' टूटा नहीं; वह तो सबके हृदय में समाकर अमर बन गया था। 'सुमन' जी के बलिदान के पश्चात् टिहरी राज्य में हुई अभूतपूर्व राजनैतिक प्रगति ने टिहरी की निरंकुश सामन्तशाही के आसन को हिला दिया। उसे विवश होकर प्रजामण्डल को वैधानिक घोषित करना पड़ा और बरा, बेगार आदि की माध्यमिक युगी प्रथाओं को मिटाना पड़ा।

प्रत्येक वर्ष का २५ जुलाई का दिन हमें उस वीर शहीद की अमर बलिदान की याद दिलाकर, देशी राज्यों में उत्तर-दायी शासन की प्राप्ति के लिए होनेवाले आन्दोलन को आगे बढ़ाने की प्रेरणा दे जाता है। इस वर्ष भी २५ जुलाई को समस्त भारत के देशी राज्यों में उस वीर शहीद के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने के लिए 'सुमन दिवस' मनाया जायगा।

मसूरी --सुन्दरलाल बहुगुणा
१५ जुलाई, ४७

* * *

रेडियो में सुधार कब होगा ?

अखिल भारतीय रेडियो की भाषा सम्बन्धी नीति में सुधार के लिए भारत-सरकार की ओर से सरदार वल्लभभाई पटेल ने जो घोषणा की थी उसे चार महीने पूरे हो रहे हैं; किन्तु आज भी रेडियो-विभाग में उसकी किस प्रकार उपेक्षा हो रही है यह रेडियो सुननेवालों से छिपा नहीं है।

खबरों की भाषा में कोई उल्लेखनीय या निश्चित परिवर्तन नहीं हुआ है। वही लिखनेवाले हैं, वही पढ़नेवाले। स्टाफ में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है और पुराने स्टाफ से किसी सुधार की आशा करना दुराशा मात्र है। यहाँ तक कि कोई घोषक (announcer) भी, जो स्थायी छोड़ अस्थायी नौकर भी नहीं हैं अर्थात् कलाकारों की भाँति नियुक्त किये जाते हैं, नहीं बदला गया है। 'हिन्दुस्तानी' की सब लिखाई पूर्ववत् उर्दू लिपि में हो रही है और उच्चारण का भी वही हाल है। रेडियो के किसी घोषक के मुँह से 'रामायण' या 'नारायण' तो स्वप्न में भी नहीं निकल सकता। 'हिन्दी और उर्दू दोनों का जानना आवश्यक होगा', यह केवल फाइलों में धरा हुआ है। स्वयं सरकार ने अभी तक 'हिन्दुस्तानी' की परामर्श-समिति का निर्माण नहीं किया है। कब कमेटी बनेगी, कब वह बैठेगी और कब वह 'हिन्दुस्तानी' का निर्माण करेगी! एक ओर राष्ट्रीय सरकार हिन्दी में खबरें देने को तैयार नहीं, दूसरी ओर रेडियो की वर्तमान 'हिन्दुस्तानी' बदलने के लिए क्रियाशील नहीं। निचोड़ यह है कि हम 'राष्ट्रीय सरकार' के व्यर्थ, अनुचित और निराधार हिन्दुस्तानीवाद के कारण इसी वर्तमान 'हिन्दुस्तानी' नामधारी उर्दू को सुनने के लिए विवश हैं। 'हिन्दुस्तानी' की सूचनाओं, घोषणाओं, आदि की भाषा में तो कोई अन्तर हुआ ही नहीं है। केवल लखनऊ से (दिल्ली से वह भी नहीं) 'मजलिस' शब्द निकाल दिया गया है, परन्तु चूँकि हिन्दुस्तानी 'सभा' नहीं समझ सकते, उसके स्थान में 'सुबह का प्रोग्राम', 'दोपहर का प्रोग्राम' और 'शाम का प्रोग्राम' धर दिया गया है। 'हिन्दुस्तानी' की चीजें पूर्ववत् उर्दूवालों और मुसलमानों को दी जा रही हैं और उनकी भाषा पूर्ववत् शुद्ध उर्दू है जिसका अर्थ यह है कि उर्दू पेशावर, लाहौर, दिल्ली और लखनऊ में ४५, ५६½, ४० और २० प्रतिशत नहीं, ५०, ६३¾, ६० और ३० प्रतिशत है, और बम्बई, कलकत्ता और ढाका में हिन्दी के बराबर नहीं, दूनी है, और स्त्रियों, बालकों आदि के तथाकथित हिन्दी प्रोग्रामों का दो-तिहाई भाग उर्दू में होता है। पेशावर और बम्बई में स्त्रियों, बालकों आदि के प्रोग्रामों को हिन्दी में अलग किया ही नहीं गया है। अर्थात् वहाँ वे पूर्ववत् केवल 'हिन्दुस्तानी' अर्थात् उर्दू में हो रहे हैं। इसी प्रकार सैनिकों के प्रोग्राम, प्रवासी भारतीयों के प्रोग्राम, आदि भी हिन्दी में अलग नहीं किये गये हैं और पूर्ववत् केवल 'हिन्दुस्तानी' अर्थात् उर्दू में हो रहे हैं। हिन्दीवालों को उनके पत्रों के उत्तर भी 'पयामी,' 'जवाबी' गण पूर्ववत् अपनी 'हिन्दुस्तानी' अर्थात् उर्दू में सुना रहे हैं। रेडियो की किसी पत्रिका से यह भी पता नहीं चल सकता कि कौन सा स्त्रियों या बालकों का प्रोग्राम हिन्दी का है, और कौन सा उर्दू का। रेडियोवालों की राय में दोनों प्रोग्राम सब स्त्रियों या बच्चों के लिए एक समान उपयुक्त हैं और सरकार ने महज मजाक के लिए इन प्रोग्रामों को अलग-अलग हिन्दी और उर्दू में करने के लिए कहा है, और इसीलिये सप्ताह के दोनों स्त्रियों (या बालकों) के प्रोग्रामों में कोई अन्तर नहीं--दोनों के संचालक वही पुराने उर्दूदाँ लोग ('आपा', 'बाजी', आदि) हैं जो हिन्दी के पत्रों के उत्तर भी पहले दफ्तर से उनकी उर्दू में नकल कराकर देते हैं, दोनों में वही 'आदाबअर्ज' चलता है और दोनों में हिन्दी और उर्दू की चीजें मिली-जुली होती हैं, अर्थात् केवल एक बार के बजाय दो बार प्रोग्राम होता है और कुछ नहीं। प्रत्येक [illegible] समय भी पहले का आदा है। [illegible] और 'खुदा हाफिज है' का [illegible] में पूर्ववत् प्रयोग हो रहा है। [illegible] वालों की राय में पेशावर से [illegible] और दिल्ली से जबलपुर तक [illegible] में यही अभिवादन 'आमतौर से [illegible] है, और 'नमस्कार' 'नमस्ते', [illegible] या 'राम राम' केवल दो-चार [illegible] पंडित करते हैं। संगीत का [illegible] हाल है। पन्द्रह दिन का संगीत का [illegible] देख डालिए, उर्दू का ऐसा कोई [illegible] मिलेगा जिसका 'कलाम' [illegible] न गाया गया हो, परन्तु हिन्दी के [illegible] कवियों में केवल तुलसी, सूर और [illegible] के और आधुनिक कवियों में [illegible] बच्चन, कोकिल और एक-दो [illegible] नाम मिलेंगे और वे भी कहीं [illegible] कभी कभी। शायद रेडियोवाले [illegible] के किसी और कवि का नाम [illegible] नहीं। पूर्ववत् अब्दुलमाजिद भट्टी, [illegible] भछलीशहरी, हफीज जलधरी, [illegible] अख्तर शीरानी, अल्ताफ, [illegible] आदि उर्दू कवियों के सड़े हुए, [illegible] बिना सिर-पैर के थोड़े से हिन्दी [illegible] गाये जा रहे हैं। इन कवियों ने फूल का [illegible] जीवन और आकाश जैसे दो-तीन [illegible] हिन्दी शब्द याद कर लिए हैं और [illegible] कला की पराकाष्ठा है इन [illegible] घुमा फिराकर किसी प्रकार [illegible] में पिरो देना। हिन्दी कवियों ने [illegible] कवि हैं!

यह कहना अत्युक्ति न [illegible] अमल में सरकारी घोषणा ने [illegible] की दुनिया में कोई उल्लेखनीय [illegible] हुआ है।

लखनऊ --रविशंकर
२० जुलाई, ४७

श्रीकृष्ण-चरित्र--लेखक, [illegible] काशीनाथ, एम० ए०, एम० [illegible] पतितपावन भगवान् श्रीकृष्ण [illegible] पावन चरित्र इस पुस्तक में [illegible] के अनुसार वर्णन किया [illegible] जिसे पढ़ने पर उपन्यास का मजा [illegible] है। भाषा प्रांजल और परिमार्जित [illegible] कृष्ण की जीवनी पर विभिन्न [illegible] ढंग से प्रकाश डालनेवाली [illegible] अपने ढंग की यह प्रथम पुस्तक [illegible] मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने
मैनेजर--(बुकडिपो) इंडियन [illegible] लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

प्रयाग (गढ़वाल) पुरी बद्रीनाथ
टेशन-इम्प्रूमेन्ट' ऐक्ट जो कि
ही का नमूना अवशेष है, का
इसके जन्मकाल से ही होता
है। किन्तु सरकार की उपेक्षा
ण जनता में दिन-प्रतिदिन
की भावना फैल रही है।
ट के द्वारा जनता के नागरिक
तो छीन ही लिये गये हैं—
ी० सी० गढ़वाल को एक माल
ी बनाकर एक संघ शासन का
ी कायम किया गया है। आज-
सम्बन्ध में देवप्रयाग पुरी बद्री-
अन्य स्थानों में विरोधी सभाएँ
हैं और गढ़वाल जिला कांग्रेस
या दूसरी संस्थायें भी अपना
कट कर चुकी हैं। अतः सरकार
उचित समय पर इस ओर
की कृपा करेगी। देवप्रयाग
श्री शिवानन्द जी शास्त्री के
रघुनाथ महा-विद्यालय के
एक हाईस्कूल का निर्माण
कूल का उद्घाटन पं० दौलत-
आकाश जैसे दो-तीन
पर एक आमसभा श्री डा०
एम० बी० बी० एस० के
में हुई सर्वश्री वृन्दावन
युक्त-प्रांतीय कांग्रेस कमेटी
श्रीलाल थपलियाल के मार्मिक
पुरी बद्रीनाथ से प्राप्त समा-
मालूम हुआ है कि गत ७
बद्रीनाथ में भीषण वृष्टि
पुरी से डेढ़ मील नीचे कंचन
नदी के अचानक बढ़ जाने
में डूब कर ९ व्यक्तियों की
और ४ सख्त घायल हुए
बद्रीनाथ प्रबन्धक-कमेटी का
निम्न प्रकार हुआ—गढ़-
बोर्ड से ठा० पदमेन्द्रसिंह
ील, ठा० चन्द्रसिंह गुसाईं
सेम्बली के मेम्बरों से श्री
ह नेगी वकील, (गढ़वाल)
नारायण उपाध्याय (बनारस)
मिल के मेम्बरों से ला० दीप-
फरनगर) प्रांतीय सरकार
द पं० हरगोविन्द पन्त एम०
(प्रधान) श्री बृजनाथ शर्मा
लखनऊ), पं० हीरावल्लभ
हरिद्वार) विश्वस्त सूत्र से
है कि टिहरी राज्य के चार
में ठा० सुरवीरसिंह, ठा०
पं० इन्द्रदत्त सकलानी
श्रीदास चुने गये।

—संवाददाता

में तंवरावाटी के जीलो गाँव
राव साहब पाटन के सभा-
एक बहुत बड़ा सैनिक जाति
समान संकट से अपने प्रांत
रखने के उपायों पर विचार
दो दिन तक हुआ। सम्मेलन
राजपूत, जाट, अहीर, गूजर
सैनिक जातियों के लोग
हजार की तादाद में उपस्थित
इन राजपूत विद्यालय झौट-
यों द्वारा ईश्वर-गायन होने
पर राजस्थान क्षत्रिय महासभा के सहायक मंत्री पं० सम्पत्कुमार मिश्र ने परिचयात्मक भाषण देते हुए बताया कि सैनिक जातियों पर देश की रक्षा की जो जिम्मेवारी है, उसके पालन का सर्वश्रेष्ठ समय आज है। पूज्य योगिराज स्वामी माधवानन्द जी महाराज ने जो इस सम्मेलन पर खास तौर से निमंत्रित किये गये थे, भाषण शुरू करते हुए कहा कि तंवरावाटी हमेशा से वीरों का प्रांत रहा है, आज तंवरावाटी की वीरता के सदुपयोग का समय उपस्थित है निरपराध का वध, वीरता का दुरुपयोग और आततायी का वध वीरता का सदुपयोग है। प्रान्त की भौगोलिक स्थिति बता रही है कि जो विषैली हवा उत्तरी-पूर्वी भारत में चल रही है, यदि वह उत्तरी भारत से सटे हुए तंवरावाटी म आ जाये तो सैनिक जातियों को अपने प्रान्त, धर्म और समाज की रक्षा के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

भुकुन्दमोहन मालवीय ने हिन्दू संगठन पर बड़ा जोशीला भाषण दिया। श्री पृथ्वीसिंह जी सरवड़ी, श्री० कुं० भीमसिंह जी मंडावा, श्री श्यामलाल जी वर्मा, श्रीमान् ठा० कल्याणसिंहजी मोरीजा, राव साहब पाटन के भाषणोपरान्त सभा विसर्जित हुई।

—संवाददाता

मसूरी में १२ और १३ जुलाई को श्री नारायणदत्त डंगवाल की अध्यक्षता में संयुक्त गढ़वाल-सम्मेलन सफलतापूर्वक हो गया। जिसमें टिहरी (गढ़वाल) राज्य, ब्रिटिश गढ़वाल, जिला देहरादून, जौनसार बाबर, भारत के प्रमुख नगरों में स्थापित गढ़वाली संस्थाओं के प्रतिनिधि तथा गढ़वाल के राजनैतिक सामाजिक और साहित्यिक क्षेत्र में कार्य करनेवाले सभी गण्यमान्य सज्जनों ने भाग लिया। संयुक्त गढ़वाल की योजना के अनुसार टिहरी राज्य, ब्रिटिश गढ़वाल, देहरादून जिला और इनके निकटवर्ती वह भाग नहीं पर लोगों के रस्म-रवाज एक से हैं, को मिलाकर एक इकाई बनाने की माँग की जा रही है, जिसका गढ़वाल के कोने-कोने में स्वागत हुआ है।

सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष ठा० तेजपालसिंह जी ने प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए १५० साल से गोरखा युद्ध के पश्चात् छिन्न-भिन्न हुए गढ़वाल और गढ़वालियों की दुर्दशा का करुण चित्र खींचा, संयुक्त गढ़वाल की योजना का उद्देश्य समझा था। आपने गढ़वालियों की स्वतंत्रता-प्रिय परम्परा का उल्लेख किया।

टिहरी राज्य प्रजामण्डल के प्रधान मास्टर रामस्वरूप ने टिहरी राज्य में निरंकुश सामन्तशाही के कारण लोगों की दुर्दशा का चित्र खींचा और उसी को कायम रखने के लिए टिहरी राज्य को पंजाब में मिलाने की चाल को नाकाम करने के लिए संयुक्त गढ़वाल की योजना को सफल बनाने पर जोर दिया।

सम्मेलन के सभापति श्री नारायण दत्त डंगवाल के अतिरिक्त देहरादून के कांग्रेस की प्रधान कुमारी मंगली उपाध्याय, श्री नत्थीराम समगाई, किसान नेता श्री दौलतराम व श्री बालकृष्ण 'मधुर' ने अपने भाषणों में विधान-परिषद् में गढ़वाल के प्रतिनिधित्व की माँग की।

संयुक्त गढ़वाल की योजना को सफल बानने के लिये व विधान-परिषद् से बातचीत करने ए गढ़वाल की प्रमुख संस्थाओं और ब हितों के प्रतिनिधियों की एक समिति का निर्माण किया गया और एक प्रस्ताव द्वारा विधान-परिषद् में कम से कम गढ़वाल का एक प्रतिनिधि लेने की माँग की गई। इसके अतिरिक्त अलग-अलग प्रस्तावों द्वारा अमर शहीद श्री देव 'सुमन' के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई व यू० पी० सरकार से मसूरी में मजदूरों की दुरवस्था को सुधारने की माँग की गई।

—संवाददाता

सागर में नागपुर हाईकोर्ट की आज्ञानुसार श्री गोविन्दराव नाखरे के कातिल व पिछले साम्प्रदायिक दंगे के ९ बरी हुए अभियुक्तों में से छः, ता० १२ को पुलिस की अपील होने के कारण बिला जमानत बिना वारंट गिरफ्तार किये गये। सुना है, तीन अभियुक्त फरार हो गये; पर वे जबलपुर में पकड़ लिये गये।

कहा जाता है कि ता० १२ की रात को कथित गुंडों ने श्री भैयालाल गोदरे अध्यक्ष हिन्दूसभा को कत्ल करने का विफल प्रयास किया।

प्रान्तीय सरकार के आदेश से जनता के सभी हथियार वापस किये जा रहे हैं। लोगों को अपने हथियार वापस ले लेना चाहिए।

म्युनिसिपल कमेटी सागर में बड़ा कुप्रबन्ध मचा हुआ है। शिक्षकों का ३।५।८।व ५) स्पेशल तथा ३० रुपया बुनियादी वेतन, एक साल का बकाया अब तक नहीं दिया गया। हालाँकि प्रान्तीय सरकार ने म्यु० कमेटी को अनेक बार लिखा—ऐसा कहा जाता है। शुक्रवारी प्रायमिक शाला में करीब १। माह से दो शिक्षकों के स्थान खाली पड़े हैं। शालाओं को सामान भी यथासमय नहीं मिलता; जिससे पढ़ाई में बाधाएँ उपस्थित होती हैं। म्यु० कमेटी को शिक्षकों की पिछली महँगाई, बुनियादी वेतन तथा अन्य जरूरतें पूरी करनी चाहिए।

श्री बी० एम० मिश्र क्लाथ-कन्ट्रोलर ने कपड़ा के व्यापारियों को आदेश दिया है कि रेडीमेड माल उठा लें; वरना माल दूसरों को दे दिया जायगा व व्यापारियों पर कड़ी कार्रवाई होगी। व्यापारियों ने अपनी एक बैठक में एक इस आशय का प्रस्ताव भेजा है कि रेडीमेड की कमीज ३।।।) में व हाफपेंट ३।) में जनता को महँगा पड़ेगा। यदि सरकार यह कपड़ा देना ही चाहती है, तो इसे कोटे से अलग दिया जावे व कमीज व हाफपेंट की कीमत कम से कम २) रखी जाय! यह भी माँग की गई कि प्रतिमाह के कोटे का पूरा कपड़ा दिया जावे तथा अगस्त में पहले उन लोगों को कपड़ा देने का हुक्म दिया जावे, जिन्हें

—संवाददाता

वृन्दावन के नागरिकों का एक डेपुटेशन शीघ्र ही गोस्वामी अद्वैतकुमार के नेतृत्व में दिल्ली जा रहा है। यह प्रतिनिधि मंडल वहाँ जाकर कांग्रेस हाई-कमांड तथा गांधी जी से यह प्रार्थना करेगा कि मथुरा जिला और किसी प्रान्त में न मिलाया जाय, युक्तप्रान्त में ही रहे।

वृन्दावन में आजकल चोरों के एक संगठित दल द्वारा भारी चोरियाँ हो रहीं हैं। यह चोरियाँ अब तक पंजाब के शरणार्थियों की हीं हुई हैं तीन-चार चोरियों में एक लाख रुपयों से ज्यादा का माल चोरी गया है। पुलिस अब तक चोरी का पता नहीं लगा सकी।

वृन्दावन के कांग्रेस कार्यकर्त्ता १५ अगस्त का समारोह एक बड़े आयोजन के साथ मनाने का प्रोग्राम बना रहे हैं। ५ आदमियों की एक कमेटी श्री अद्वैतकुमार के सभापतित्व में बना दी गई है, जो कि उस दिन का सारा कार्यक्रम तैयार करेगी। मथुरा के जिला मजिस्ट्रेट ने घोषणा की है कि श्रावण के यात्री इस बार मथुरा वृन्दावन न आयें। यहाँ की हालत खराब है और ठहरने के लिए स्थान का अभाव है।

—संवाददाता

हरिद्वार में मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी का रिलीफ कैम्प कंखल रोड पर लगभग डेढ़ मास से सेवा-कार्य कर रहा है। कैम्प में ५०० से अधिक पीड़ित शरणार्थियों के निवास, भोजन और वस्त्रों का प्रबन्ध है। और चाय के अतिरिक्त बच्चों व रोगियों के लिए दूध की भी व्यवस्था है। कैम्प में ही अस्पताल खोला गया है जिसमें डाक्टर, लेडी डाक्टर दोनों रोगियों की सेवा में दिन रात तैनात रहते हैं। कैम्प में लड़के-लड़कियों की शिक्षा के लिए पाठशालाएँ खोल दी गई हैं। और स्त्रियों को बुनाई, सिलाई आदि दस्तकारी की शिक्षा का प्रबन्ध है और सब शरणार्थियों को कैम्प में साप्ताहिक तेल, साबुन मिलता है। सोसायटी की ओर से ला० केदारनाथ मेहरा, मालीराम शर्मा संलग्नता से सेवा-कार्य कर रहे हैं। पीड़ित हिन्दू सहायक सभा के प्रधान मंत्री पं० चिरंजीवलाल जी शर्मा समय-समय पर कैम्प का निरीक्षण कर उचित परामर्श देते रहते हैं।

—संवाददाता

आदर्श महापुरुष

इस पुस्तक में गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, मुहम्मद साहब, स्वामी शंकराचार्य, चैतन्य महाप्रभु, सन्त कबीर स्वामी दयानन्द आदि १७ महापुरुषों का जीवन-चरित्र तथा उनके मार्ग की मख्य मुख्य विशेषताओं का निरूपण किया गया है। लेखक का उद्देश प्रसिद्ध मतों की शिक्षाओं और विशेषताओं से पाठकों को परिचित कराना है। संसार के बड़े-बड़े मत किन बातों में समान हैं और किन में भिन्न हैं इसका निर्णय भी पाठक इस पुस्तक को पढ़कर कर सकेंगे। सवा सौ से ऊपर पृष्ठों की सचित्र पुस्तक का मूल्य केवल एक रुपया।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी का रंग मंच

१५ अगस्त को स्वतन्त्रता-दिवस का समारोह

गाँवों का उन्नति-दिवस—सभावादियों की खिचड़ी अलग—चोर बाजार का अन्त—दो अँगरेज़ आई० सी० एस० पाकिस्तान की ओर—चोरी की वारदातें।

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

आगामी १५ अगस्त को प्रांत भर में उन्नति-दिवस मनाया जावेगा, इस आशय की घोषणा करते हुए उन्नति मन्त्री के पार्लमेन्टरी सेक्रेटरी श्री केशव-देव मालवीय ने एक प्रेस कान्फ्रेंस में उन्नति-सम्बन्धी कुछ योजनाएँ बताईं। श्री मालवीय ने बताया कि प्रांत के ८०० बीज-भंडारों के साथ, जो इस उन्नति-कार्य के केन्द्र होंगे, दस-दस या पन्द्रह-पन्द्रह ग्राम संयुक्त कर दिये जायेंगे और एक वर्ष में उनको समुन्नत बनाने का प्रयत्न किया जायगा। एक वर्ष के पश्चात् दस-दस या पन्द्रह-पन्द्रह ग्रामों के दूसरे समूह इन बीज-भंडारों से संयुक्त किये जायेंगे। इन बीज-भंडारों में ग्रामीणों के कार्य की सभी वस्तुएँ जैसे बीज देशी-विदेशी, हल, बैल, सुअर, मुर्गी, हरी तथा रसायनिक खाद एवं अन्य वस्तुएँ मिलेंगी।

* * *

प्रथम वर्ष में १०० नलकूप तथा ६००० नये पक्के कुएँ बनाये जायेंगे और ६००० पुराने कुओं की मरम्मत की जायगी। किसानों को गाय, भैंस आदि लेने के लिए तकावी दी जायगी, जिसको सामान्य किश्तों में वसूल किया जायगा। नस्ल सुधारने के लिए उत्कृष्ट साँड़ वितरित किये जायेंगे। कुटी शिल्प का विस्तार किया जायगा और उसके लिए एक विद्यालय की स्थापना की जायगी, जहाँ से निकलने पर उनको आर्थिक सहायता देकर काम प्रारम्भ करने की सुविधा दी जायगी। ग्रामों में नालियाँ खोदने तथा पगडंडियों के बनाने का काम भी किया जायगा।

इसके दस दिन बाद ही प्रांत भर में स्वतन्त्रता-दिवस मनाया जायगा। यद्यपि अभी तक इस सम्बन्ध में कोई सरकारी कार्यक्रम प्रकाशित नहीं हुआ है, किन्तु सूचना-विभाग उसका कार्यक्रम बना रहा है और हो सकता है कि इन पंक्तियों के छपते-छपते वह घोषित हो जाय। परन्तु अधिकारियों की बात-चीत से ज्ञात होता है कि १५ अगस्त इस प्रांत में शानदार ढंग से मनाया जायगा। उस दिन प्रांत में सार्वजनिक छुट्टी होगी तथा १००० बन्दियों को क्षमादान करके जेल से रिहा कर दिया जायगा। जेलों में जो बन्दी रह भी जावेंगे, उनको भी उस दिन छुट्टी मिलेगी तथा उस दिन की खुशी में उनको विशेष खाना भी दिया जायगा। छात्रों को मिठाई मिलेगी तथा सभी सरकारी एवं सार्वजनिक भवनों पर तिरंगा फहराया जावेगा। पुलीस और फौजों की परेडें भी होंगी, जिनमें वे इस नए झंडे को सलामी देंगे।

* * *

प्रांत की करोड़ों जनता जब स्वतन्त्रता-प्राप्ति की प्रसन्नता में हर्ष मना रही होगी, चन्द हिन्दू भाई उस दिन शोक-दिवस मनायेंगे। वे हड़तालें रखेंगे और काले झंडे उड़ायेंगे। इससे एक पक्ष पूर्व से ही जनता के ये 'प्रतिनिधि,' जिनमें अधिकांश हैलेट के जमाने में फौजी ठेके प्राप्त किये हुए थे, कांग्रेस मंत्रिमंडल की 'हिन्दू-विरोधी नीति' के विरोध प्रदर्शनार्थ १ अगस्त से सत्याग्रह प्रारम्भ कर देंगे। इसके लिए उन्होंने ५० सहस्र स्वयंसेवक भर्ती करने का निश्चय किया है। देखना है कि महासभा इसमें कहाँ तक सफल होती है। इस प्रांत के बाहर से भी उसको सहायता के आश्वासन मिले हैं। बड़ौदा कन्या-विद्यालय की १०० छात्राएँ तथा पूना की श्रीमती जानकी बाई जोशी भी १०० महिलाओं के जत्थे लेकर आ रही हैं। सभावादी अपना सत्याग्रह शस्त्र-कानून तोड़कर प्रारम्भ करेंगे।

* * *

चोरबाजारी तथा चुरा कर माल ले जाने की प्रवृत्ति को रोकने के लिए सरकार ने जिस एंटी स्मगलिङ्ग दल का संगठन किया है, उसको बताया जाता है कि पुलिस का पूरा सहयोग नहीं मिल रहा है। पुलिसवाले घूस ले-लेकर बहुत सा माल प्रांत से बाहर भेजने में सहायता देते हैं। आगरा की ओर अरहर के बड़े-बड़े स्टाक हैं और बताया जाता है कि वहाँ से प्रतिदिन ढाई-तीन हजार मन अरहर ग्वालियर, भरतपुर तथा धौलपुर रियासतों को जाती है। युक्तप्रांत में अरहर का भाव १२ से १६ रुपये मन तक है, किन्तु इन रियासतों की मार्फत यहाँ के चोरबाजारिए उसको ३० से ३५ रुपये मन के भाव पर मद्रास और बम्बई को भेजते हैं। रियासतों में उन्हें परमिट मिलने में आसानी होती है।

एक जमाना था जब प्रांत की जेलें ठसाठस भरी हुई थीं और आज जेल-अधिकारियों का रोना है कि जेलों की आबादी घट रही है। उनका कहना है कि लोकप्रिय मंत्रिमंडल की उदार क्षमानीति के कारण जेलों की आबादी ३२ हजार से घटकर केवल २४ हजार रह गई है और उसमें से भी ५०० इसी मास तथा १००० आगामी १५ अगस्त को रिहा होनेवाले हैं। इस प्रकार जेलों की जन-संख्या कम हो जाने के कारण वहाँ काम करनेवालों की कमी पड़ गई है और जेलों के बाग तथा खेत सूख रहे हैं और जेल-उद्योगों के लिए भी आदमियों की कमी पड़ रही है।

१९४२ में अपने अत्याचारपूर्ण कृत्यों से प्रांत में त्राहि-त्राहि की पुकार मचवा देनेवाले दो ब्रिटिश आई० सी० एस० अफसर आज दुनिया में अकेले हैं। हार्डी और डिक्सन के नाम १९४२ में प्रांत के पूर्वी तथा पश्चिमी जिलों में शतान की भाँति मशहूर हो गये थे। उक्त [illegible] स्वतन्त्र होने से पूर्व ब्रिटिश तथा औपनिवेशिक सिविल सर्विसों में नौकरी की चेष्टा की थी। उनके अन्य अनेकों बन्धुओं को ब्रिटेन, केन्या, उगान्डा, दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैण्ड में स्थान मिल गया परन्तु इन अभागों को कहीं स्थान न मिला। युक्तप्रांत के ब्रिटिश आई० सी० एस० अफसरों में केवल यही दो व्यक्ति हैं जो सब ओर से लाचार होकर मोहम्मद-अली जिन्ना की शरण लेने पाकिस्तान जा रहे हैं।

मसजिदों में जूता चुराये जाने की घटनाएँ प्रायः ही सुनने को मिलती हैं, अब मिलादशरीफ में मिठाई चुराने का समाचार मिला है। अमीना-बाद पार्क में मुसलमानों का वार्षिक मिलाद (एक प्रकार की कथा) हो रही थी। वहाँ मिठाई बँटने के समय मिठाई चुराने की चेष्टा में दराबशाह नामक एक युवक को गिरफ़्तार किया गया है। दराबशाह देखने-सुनने में सम्भ्रान्त घराने का लगता है और अपने को एम० ए० बताता है। सिटी मजिस्ट्रेट ने उससे नेकचलनी का मुचलका देने को कहा, पर वह न दे सका और इसलिए हवालात भेज दिया गया।

हमारे राष्ट्र के भावी शासक

(पेज ७ का शेष)

की जितनी देशी कम्पनियों ने की है। इसी प्रकार औद्योगिक कम्पनियों में लगी हुई पूँजी में भी अपार वृद्धि हुई है। सन् १९२०-२१ में देश में ४०९३ कम्पनियाँ और उसमें १५,०५४ लाख रुपये की पूँजी लगी हुई थी। सन् १९३६-३७ में कम्पनियों की संख्या १०,०६१ और उसमें लगी हुई पूँजी २७,२२४ लाख रुपये हो गई। सन् १९४२-४३ में कम्पनियों की संख्या ११,७८३ और लगी हुई पूँजी ३१,६३८ लाख हो गई। यहाँ पर एक बात और ध्यान में रखने की है कि युद्ध-काल में नवीन उद्योगों के खुलने में अनेक बाधाएँ थीं न तो सरकार कम्पनियाँ खोलने की स्वीकृति देती थी और न बाहर से मशीनें वगैरह ही आ सकती थीं ऐसी दशा है। सन् १९४३-४७ के बीच में होनेवाली वृद्धि का सही अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

भारत की आर्थिक गुलामी के सम्बन्ध में भी दो-एक बात कहनी अत्यन्त आवश्यक है। द्वितीय महायुद्ध के बीच में अँगरेजी सरकार ने मनमाना सामान हमसे उधार ले लिया और दाम अपने बहीखाते में जमा करते गये। इस प्रकार भारत का स्टर्लिंग पावना इँगलैण्ड में एकत्रित हो गया। इससे इँगलैण्ड और भारत का आर्थिक सम्बन्धों पर बहुत अधिक [illegible] पड़ा। हमारे ऊपर लदा हुआ ऋण समाप्त हो गया। इसके [illegible] हमारे देश की रेल, तार, नह [illegible] म्युनिसिपल बोर्डों का कर्ज सम [illegible] गया। इसके बाद भारत में [illegible] वैदेशिक पूँजी द्वितीय महायुद्ध के [illegible] गणना के अनुसार ७०० औ [illegible] करोड़ के बीच में थी। युद्ध-काल में [illegible] के मूल्य बढ़ जाने से कारखानों [illegible] हुईपूँजी स्वतः बढ़ गई। विदेशी व्य [illegible] ने इसका लाभ उठाया। इसके प [illegible] हमने देखा कि हमारे देश के [illegible] ब्रिटिश कम्पनियों पर देशी पू [illegible] का अधिकार हो गया ह। बम्बई [illegible] ग्रुप पर देशी पूँजीपतियों का [illegible] हो गया है। डालमिया-जैन व [illegible] गुट ने अनेक ब्रिटिश कम्पनि [illegible] ली है एलनबरी, गोवन ब्रदर्स, टा [illegible] इंडिया आदि। बिहारीलाल [illegible] व्यवसायिक गुट ने भी व [illegible] कलकत्ते की कुछ कम्पनियों [illegible] लिया है। कानपुर की स्वदे [illegible] मिल जो मुख्यतः विदेशी के [illegible] में थी उस पर जैपुरिया ब्रदर्स [illegible] हो गया है। सूती और जूट [illegible] उद्योग पर पूर्णरूप से देशी [illegible] अधिकार है। सीमेंट, पेपर, [illegible] शकर आदि के उद्योगों में भी [illegible] पूँजी लगी हुई है। इसके साथ [illegible] बाग और दूसरे स्थानों पर [illegible] पूँजी भी धीरे से भारतीय अ [illegible] आती जा रही है। भारतीय पू [illegible] और महत्त्वपूर्ण विकास हो र [illegible] है गुटबन्दी का। हमारे देश में ए [illegible] पूँजीवादी गुट विभिन्न उद्योगों [illegible] एकाधिकार स्थापित करते च [illegible] हैं। इस प्रकार कुछ दिनों में [illegible] कि हमारे रश के आर्थिक जीव [illegible] इन्हीं इने-गिने गुटों का पूरा अ [illegible] जायेगा। वे जैसा चाहेंगे हमा [illegible] को उसी के अनुकूल झुक ज [illegible] करेगा। हमारे देश में भी फ्रांस [illegible] परिवार, इँगलैंड के १०० प [illegible] अमरीका के १६ परिवारों [illegible] केवल ८ या १० परिवारों का ए [illegible] अधिकार स्थापित हो जायेगा। [illegible] के केन्द्रीय मंडल केवल एक ए [illegible] के संकेतों पर कार्य करते हैं; [illegible] सामाजिक जीवन पर इन्हीं [illegible] निरंकुश अधिकार हो जायेगा [illegible] राष्ट्रीय नेता परोक्ष रूप से [illegible] हित-साधना करेंगे और वास्तव [illegible] के यही भावी शासक होंगे।

बिक्री के लिए तैयार है

वार्षिक बालसखा १९४

इसकी सजधज अनूठी और नयन-मनोहर है। छपाई कई र [illegible] हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएँ और कहानियाँ अनुपम [illegible] जिल्द भी सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा [illegible] बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना [illegible] रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का मूल्य ३)। मासिक ग्राहकों को रि [illegible] मूल्य २॥) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज आपने
न्स से दांत साफ़
किये हैं ?

प्रत्येक के प्रोग्राम
पर है।

हिणी जो वर्तमान की गति से
ती है नियमित रूप से मेक-
योग करती है। वह जानती
न्स दांतों एवं मुंह को पूरी
करता है एवं संक्रमण से
रूप से सुरक्षा देता है। आज ही
और वास्तव
सदैव होंगे।

CLEANS
TOOTH PASTE

सभी केमिस्टों
एवं स्टोरों में
मिलता है।

IWT

खांसी और जुकाम की
सर्वाधिक लोकप्रिय दवा

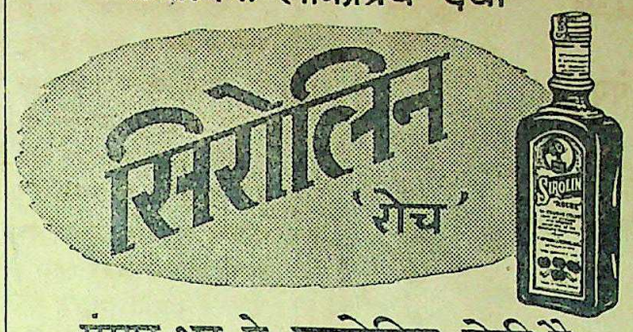

संसार भर मे उपयोगित होती है।

श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी की
रचना
सञ्चारिणी

इसमें भक्तमाल की अन्तर्चेतना, वर्तमान हिन्दी-साहित्य और शरद-साहित्य की सरस सुन्दर विवेचना की गई है। इसकी भाषा-शैली और विचारों पर मुग्ध होकर आचार्य शुक्ल जी के एक अनुयायी आलोचक ने लिखा था कि रवि बाबू के बाद इसी पुस्तक द्वारा सुन्दर, सुपुष्ट और भावपूर्ण लेखनी का चमत्कार दिखाई पड़ता है। यह पञ्जाब विश्वविद्यालय की हिन्दी प्रभाकर-परीक्षा में कई वर्षों तक पाठ्य-पुस्तक रह चुकी है। पृष्ठ-संख्या लगभग २७५; मूल्य सजिल्द २) दो रुपये।
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

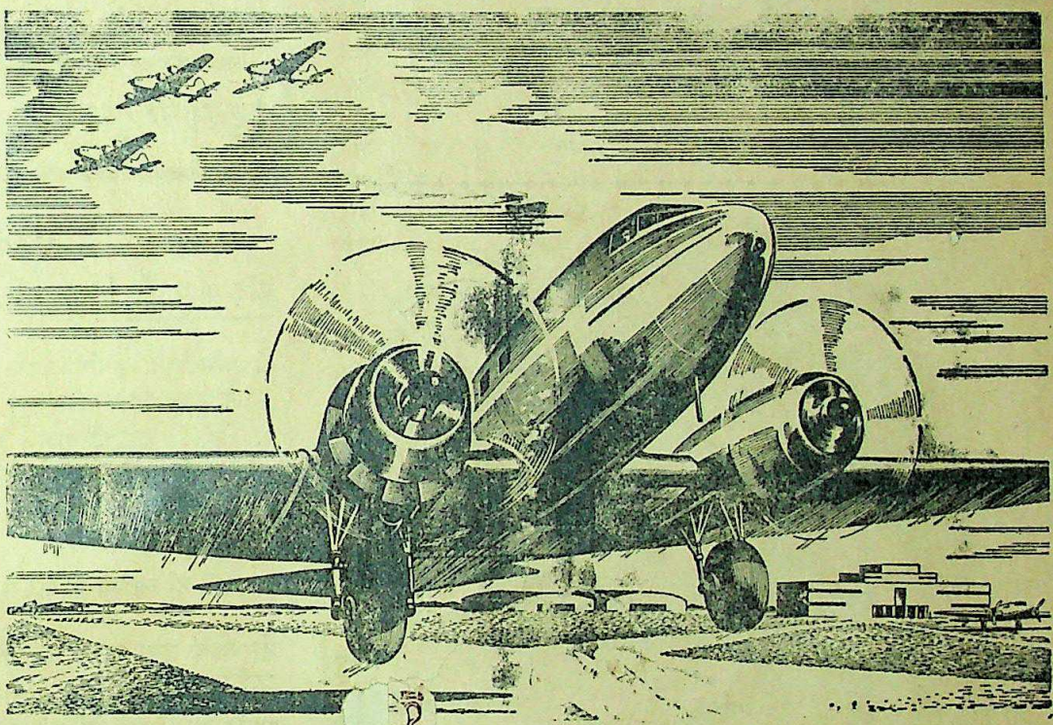

१२ सेकंड हवा में--यह थी सब से फल हवाई उड़ान जो अमरीका के एक निवासी, . राइट, ने १७ दिसम्बर १९०३ में की थी। तदन मनुष्य ने वायु मंडल पर विजय प्राप्त करने के उद्योग हैं। आज कल वायुयान बजाये दिनों के घं तक महाद्वीपों को पार कर ज हैं। कलकत्ता ९०० मील की यात्रा सुविधा व सुखपूर्वक दि ता भी दिन ३ घंटे में की जा सकती है। निस्सन नुषी साहस और कल्पना शक्ति की कोई सीमा नहीं परन्तु इस उन्नति के साथ साथ बम-मार हवाई जह द्वारा भयंकर विनाश शान्ति-प्रिय जनता को तैमूर और चंगेज़ के आक्रमणों से भी कहीं अधिक भयभीत करता है। ह हवाई यात्रा का यह भयंकर प्रलय रूप बीते स्वपन की याद रूप धारण करके रह जायेगा ?—यह निर्भर है उस विवेक और बुद्धि पर जिसकी सहायता से विभिन्न राष्ट्र अन्तर-राष्ट्रीय समस्याओं का निवारण करेंगे।

विवेक और बुद्धिमत्ता द्वारा ही हम भी अपनी एक और समस्या की निवृत्ति कर सकते हैं—वह समस्या है चढ़ी हुई कीमतें। कई एक वस्तुएं ऐसी हैं जिनके बिना भी निर्वाह हो सकता है और कई ऐसी भी हैं जिन का आजकल की चढ़ी कीमतों पर खरीदना आवश्यक नहीं। ऐसी अनावश्यक वस्तुओं को इस समय न ख़रीद कर हम कीमतें गिराने में सहायता दे सकते हैं और इस प्रकार रुपये के मूल्य में वृद्धि कर सकते हैं। धन का अपव्यय या अरक्षित मद में लगाना कीमतों को चढ़ाने में सहायता देना है और यह व्यक्ति और राष्ट्र के लिये भय सूचक है। अपने धन को शत्रु बनाने की अपेक्षा मित्र बनाइए।

बीमा पॉलिसी, सहकारी साख समिति, डाकख़ाने का सेविंग्ज़ खाता, नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स और सरकारी लोन (कर्ज़े), धन लगाने की सुरक्षित मद हैं।

भूमि, सम्पत्ति, सोना चांदी के पांसे, आभूषण, द्रव्य, बना माल या सट्टेबाज़ी पर रुपयां व्यय न कीजिए। इन के मूल्य बहुत चढ़े हुए हैं और आशा है कि शीघ्र ही कम हो जायेंगे।

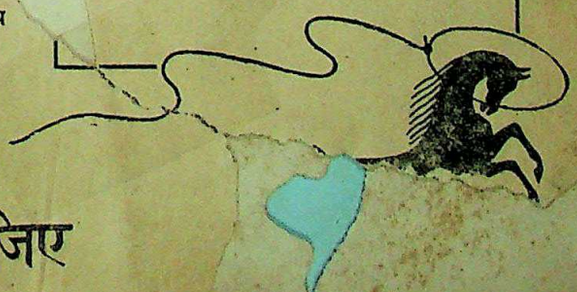

चढ़ी कीमतों को रोकिए
धन का अपव्यय न कीजिए

भारत सरकार के फाइनेंस विभाग द्वारा प्रकाशित

AC 176

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Registered No. A—295

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रविवार, २७ जुलाई, १९

GG BRAND

आम का पेय

(Mango Squash)

सदैव ही ताज़ा

जी० जी० फ्रूट प्रिजर्विंग फैक्टरी आगरा

जी० जी० सेल्स डिपो :— देहरादून, लाहौर, अमृतसर, अजमेर, देहली; बम्बई, कलकत्ता, कानपुर, बरेली, ग्वालियर, पटना, आगरा।

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना अ को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। की १ डिब्बा ३।—) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेंद्रि में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हज रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजि इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ़ पैकिंग खर्च अल

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कान

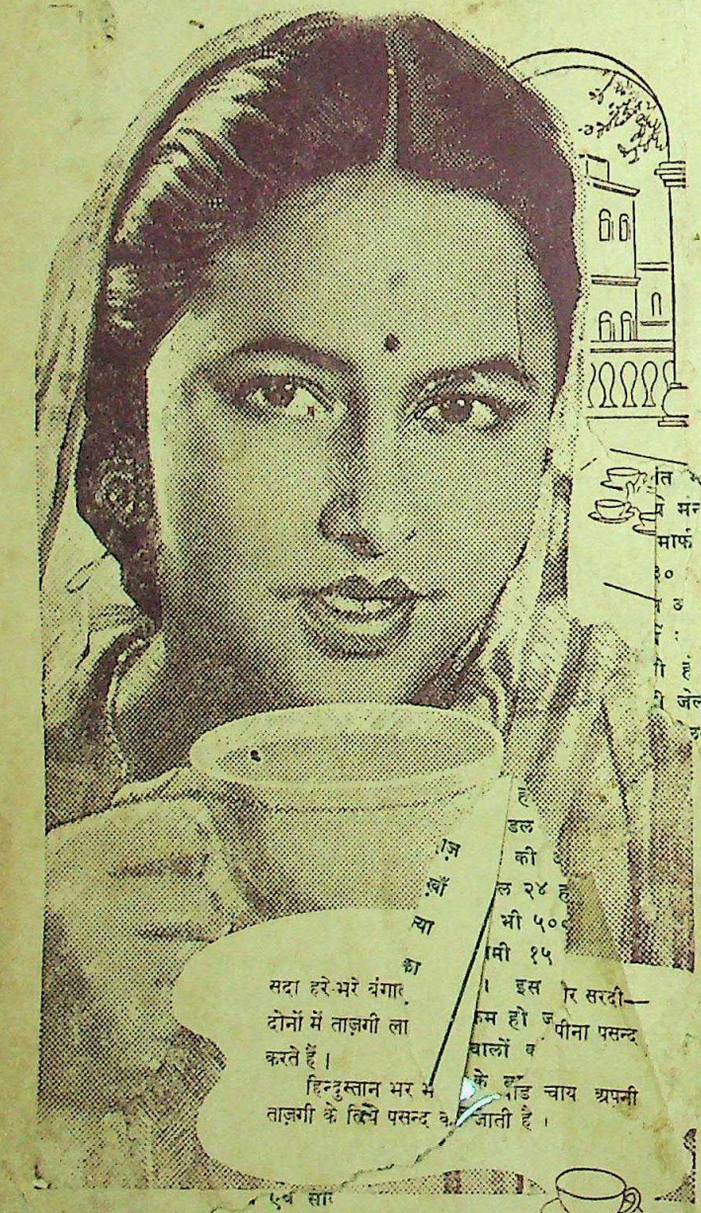

सदा हरे-भरे बंगाल ... दोनों में ताज़गी ला ... करते हैं।

हिन्दुस्तान भर में ... चाय अपनी ताज़गी के लिये पसन्द ... जाती है।

... तिरंगा फहराया जावे ... पुलीस और फौजों की परेटें भी हो ... जिनमें वे इस नए झंडे को सलामी दे

* * *

प्रांत की करोड़ों जनता जब स्वतन्त्रता प्राप्ति की प्रसन्नता में हर्ष मना रही होगी, चन्द हिन्दू सभाई उस दिन शोक

क बाँड

भा र त स र का र द्वा

डिसपोज़लज़् का पाक्षिक बुले

अब प्रकाशित हो रहा है

यदि आप को निम्न लिखित बातों में दिलचस्पी है :—

१. पब्लिक के सामने टैंडर खोल कर सुरक्षित मूल्य से सब से अ के टैंडर देने वाले के हाथ बची हुई बिकाऊ सामग्री की सूची।
२. विशेष प्रकार की थोक और मिश्रित वस्तुओं के आवश्यक नी इन की विशेष बिक्री के विषय में सूचना।
३. सामान बेचने के बारे में विवरण, टैंडर देने के नियम और की अन्तिम तारीख़।
४. बची हुई सामग्री के बारे में आवश्यक सूचना।

तो नीचे छपा कूपन अँग्रेज़ी में भर कर अपना नाम ग्राहकों लीजिए। ६ मास का चन्दा ५) मनीआर्डर या बिना क्रॉस कि आर्डर द्वारा पेशगी भेजिए। चैक या डाकख़ाने के स्टाम्प्स द्वारा चन्द न किया जावेगा।

प्रत्येक अंक की परिमित प्रतियां आठ आने प्रति के दर से नई देहली, बम्ब हौर, कानपूर, मद्रास, और कराची नगरों में डिसपोज़लज़् के दफ़्तरों से ... ती हैं। यह प्रतियां प्राप्त करने के लिये स्वयं जाना होगा।

COUPON

CUT ..... CUT HER

The Dir... of Publicity,
Direct... -General of Disposals,
Shahjahan Road, NEW DELHI.

Please enrol me as a subscriber for the Disposa nightly Bulletin. Money Order No.——————h sent to you separately/Postal Order for Rs. 5/- is herewith, being my subscription for six months.

Name (in Block letters)

Representing Firms

Address (in Block letters)

Town (in Block letters)

Name of Trade Association or Chamber of Commerce

CUT HERE

CUT HERE

Issued by the Directorate General of D... Industries and Supplie...

...प्रेस, लिमिटेड, इलाहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फहरिस्त
परचे भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

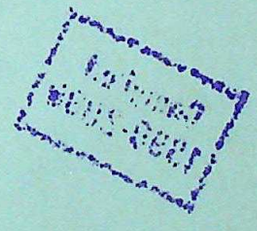

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

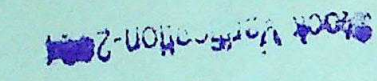

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar